7·5

डॉ॰ रजनी जैन

३१·१·८६

पौराणिक कोश

पौराणिक कोश

राणाप्रसाद शर्मा

वाराणसी
ज्ञानमण्डल लिमिटेड

मूल्य तीस रुपये

ज्ञानमण्डल लिमिटेड
संशोधित मूल्य
रु. 40/-

प्रथम संस्करण संवत् २०१९

© ज्ञानमण्डल लिमिटेड

प्रकाशक—ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी-१
मुद्रक—ओम्प्रकाश कपूर, ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी ६९२९-२६

आमुख

वेद, पुराण, रामायण, महाभारत-आदि ग्रंथ अनन्तकालसे इस देशके निवासियोंके जीवनको अपने आदर्श पुरुषोंके चरित्रोंसे प्रभावित करते आ रहे हैं। हिन्दी साहित्यमें हमारे धार्मिक ग्रंथोंके पात्रों तथा कथाओंका सर्वत्र उल्लेख मिलता है। ऐसे स्थलोंको समझनेमें पाठकोंको बड़ी कठिनाई पड़ती है। उन्हें यथार्थ अर्थ जाननेके लिए विद्वानोंकी शरण लेनी पड़ती है, फिर भी प्रायः निराश ही होना पड़ता है। क्योंकि प्रकाण्ड विद्वानोंके लिए भी यह सम्भव नहीं है कि उन्हें सारी कथाएँ सदा याद रहें। ऐसी स्थितिमें यह अत्यन्त आवश्यक है कि प्राचीन पात्रों और कथाओंका वर्णानुक्रमिक संग्रह कोशके रूपमें पाठकोंके समक्ष उपस्थित किया जाय। उसी आवश्यकताकी पूर्तिके लिए प्रस्तुत कोशकी रचना 'पौराणिक कोश'के नामसे की गयी है। मराठी, गुजराती तथा बंग साहित्यमें इस अभावकी पूर्त्ति बहुत पहले की जा चुकी है। हिन्दी जगत्‌में भी कतिपय साहित्यानुरागियोंने इसकी पूर्त्तिके लिए प्रयास किया है; तथापि प्रस्तुत कोशकी नितान्त आवश्यकता थी, इसका अनुभव पाठकगण अवश्य करेंगे।

इस कोशमें पुराणादिके पात्रों, स्थानों तथा कथाओंका परिचय दिया गया है। प्रमुख पात्रोंका परिचय विस्तृत रूपसे तथा साधारण पात्रोंका परिचय संक्षिप्त रूपसे देनेका प्रयास किया गया है। इस बातका पूरा ध्यान रखा गया है कि ग्रंथका कलेवर इतना अधिक न बढ़ जाय कि पाठकोंके लिए उसे क्रय करना दुरूह हो जाय। पात्रोंका विस्तृत परिचय जाननेके लिए ग्रंथका नाम, अध्याय तथा श्लोक संख्याका उल्लेख कर दिया गया है। कौनसी कथा कहाँ-कहाँ किन-किन ग्रंथोंमें है, इसका भी उद्धरण दे दिया गया है। इस कोशसे पाठकगण हिन्दी साहित्य अथवा संस्कृत साहित्यमें वर्णित कोई भी अन्तर्कथा सरलतासे जान-समझ सकेंगे। परिशिष्टमें दी गयी अप्रचलित भौगोलिक नामोंकी अकारादि क्रमसे व्याख्या सहित सूची, संक्षिप्त व्याख्या सहित बौद्ध धर्म, जैन धर्म, इस्लाम धर्म, ईसाई और पारसी धर्मके कुछ ऐसे प्रचलित शब्द जिनके प्रयोग हिन्दी साहित्यमें किये गये हैं, कौरवों-पाण्डवोंका वंशवृक्ष, चन्द्रवंशी क्षत्रियोंका वंशवृक्ष, सूर्यवंशी क्षत्रियोंका वंशवृक्ष, कालिदासके वर्णनानुसार श्री रामचन्द्रका वंशवृक्ष आदि सामग्री कहीं-कहीं उत्पन्न होनेवाली उलझनोंको सुलझानेमें सहायक होगी।

अन्तमें मैं पं० श्रीकृष्ण पंतके प्रति आभार प्रकट करता हूँ। पंतजीने इस कोशकी पूरी पाण्डुलिपिका संशोधन-परिवर्द्धन बड़े परिश्रम और निष्ठाके साथ किया है। आपने उद्धरणोंकी त्रुटियाँ दूर करनेमें ग्रंथोंको छान डालनेका कष्ट उठाया है। ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसीके प्रबन्धकारी संचालक श्री सत्येन्द्र कुमार गुप्तने इस कोशका संशोधन तथा सुन्दर प्रकाशन करानेमें जिस धैर्यसे काम लिया है, उसके लिए मैं उनका कृतज्ञ हूँ। यदि इस ग्रंथकी सहायतासे पुस्तकोंमें बिखरे हुए पुराण-पात्रों, कथाओंका स्पष्टीकरण सन्तोषजनक हो सका तो मैं अपना कई वर्षोंका किया हुआ परिश्रम सफल समझूँगा।

पटना
आषाढ़ शुक्ल २ (रथयात्रा)
संवत् २०२८ वि०

राणाप्रसाद शर्मा

पौराणिक कोश

अ

अ—कंठसे उत्पन्न होनेवाला प्रथम स्वर, एकाक्षरी कोशके अनुसार वासुदेव, अक्षरोंमें यह सर्वश्रेष्ठ तथा सब अक्षरोंका उत्स माना गया है, उपनिषदोंमें इसकी बड़ी महिमा गायी गयी है, अकार ब्रह्माजीका रूप है और ब्रह्मा ही इसके देवता हैं, गीतामें श्रीकृष्णने कहा है—'अक्षराणामकारोस्मि'। तंत्रशास्त्रानुसार इस अक्षरसे सृष्टिके पहले सृष्टिकर्त्ताकी अकुल अवस्थाका बोध होता है (वायु० २०.८; २६. २८. २९)।

अंकधारी—वि० [सं०] विष्णु के कुछ उपासक तप्तमुद्रा अर्थात् शंख, चक्र, गदा, पद्मके चिह्न शरीरपर छपवाते हैं। दक्षिणमें शंकरके भी भक्त त्रिशूल या शिवलिंगके चिह्न छपवाते हैं। इस प्रथाका महत्त्व रामानुज-संप्रदायमें अधिक है और द्वारका इसका केन्द्र माना गया है (भाग०)।

अंकपादतीर्थ—पु० [सं०] उज्जयिनीमें सिप्रा नदी तथा महाकालका क्षेत्र। अवंतीमें यह तीर्थ है, जहाँ श्रीकृष्णके युगल पदचिह्न हैं। यहाँ मरनेवालेको यमराजका भय नहीं रहता (स्कंद पु० आवंत्य खंड—अवंती क्षेत्र माहात्म्य)।

अंकिल—पु० [सं०] वृपोत्सर्गमें दागकर छोड़ा गया साँड़ या बछड़ा, यह शुभ माना गया है। (शिव पु०; काशी खंड)।

अंकुशा—स्त्री० [सं०] द्राविणिका मुद्राकी एक शक्तिका नाम (ब्रह्मां० ४.३६-७६)।

अंकुशेश्वर—पु० [सं०] नर्मदा क्षेत्रके एक तीर्थका नाम (मत्स्य० १९३.१०)।

अंकोल—पु० [सं०] एक तीर्थका नाम (मत्स्य० १९०. ११८-२५)।

अंग—पु० [सं०] (१) वेनके पिताका नाम, जिन्हें कृष्णकी योगशक्तिका ज्ञान था (भाग० २.७.४३; विष्णु० १.१३.६.)। उल्मुक (कुरु और आग्नेयी) का पुत्र। मृत्युकी क्रूर आकृतिवाली पुत्री सुनीथा इनकी पत्नी थी। पुत्रके निर्दयतापूर्ण व्यवहार तथा अयोग्यतासे दुखी हो यह नगर छोड़ चले गये थे (भाग० ४.१३.१७-१८)। इन्होंने अश्वमेध यज्ञ किया, पर देवतांओंने हव्य स्वीकार नहीं किया। पूछे जानेपर विद्वानोंने कहा कि आप निःसन्तान हैं इसलिए देवताओंने आपका हव्य ग्रहण नहीं किया। आप हरिकी उपासना करें उससे आपको पुत्रप्राप्ति होगी। तदनुसार पुत्र-प्राप्ति हुई, लेकिन पुत्र इतना उपद्रवी था कि उसके कारण इन्हें नगरतक छोड़ना पड़ा। खोज करनेपर भी इनका पता नहीं चला (भाग० ४.१३.२४-४९)। विष्णुकी भक्तिने जोर पकड़ा और यह उनकी शरणमें चले गये (भाग० ४.२१.२८; १०.६०.४१)। ब्रह्मां०, मत्स्य० और वायु पुराणोंके अनुसार यह उरु और आग्नेयीके पुत्र थे (ब्रह्मां० २.३६.१०८, १२६; वायु० ६२.९२-३; मत्स्य० ४.४४)। स्वायंभुव मनुके वंशके यह एक प्रजापति थे (वायु० ६२.१०७; मत्स्य० १०.३-४)। (२) बलिके क्षेत्रज पुत्रका नाम जो बलिपत्नी सुदेष्णामें दीर्घतमासे उत्पन्न हुआ था। यह खनपानका (वायुपुराणानुसार अनापनका) पिता था (भाग० ९.२३.५,६; मत्स्य० ४८.२५.९; वायु० ९९.२८.८५; ब्रह्मां० ३.७४.२७,८७)। अंग देशका नामकरण इसीके नामपर हुआ (विष्णु० ४.१८. १३.१४)। दधिवाहन, जिसे अपान (गुदा) ही नहीं था, के पिताका नाम (ब्रह्मां० ३.७४.१०२; वायु० ९९.१००)। इस वंशका अंतिम राजा वृषसेन था (विष्णु० ४.१८.२५)। (३) भागलपुरके निकटका बंगाल देश—दे० कर्ण। (४) पूर्वमें स्थित एक राज्य, जहाँके राजाको देवताओंसे हाथी प्राप्त हुए थे (ब्रह्मां० २.१६.५१; १८.५१; ३.७. ३४९; ७४.२१३; मत्स्य० ११४.४४; १२१.५०; वायु० ४७.४८; ९९.४०२)। (५) हविर्धानके एक पुत्रका नाम (मत्स्य० ४.४५)। (६) विश्वजित् जन्मेजयके पुत्र तथा कर्णके पिताका नाम (मत्स्य० ४८.१०२; वायु० ९९.११२)।

अंगज—पु० [सं०] कामदेवका एक नाम। स्त्री-पुरुष संयोगकी प्रेरणा करनेवाला एक पौराणिक देवता। 'रति' इसकी स्त्री, 'वसन्त' इसका साथी तथा 'कोकिल' वाहन है। इसका शस्त्र धनुषबाण (फूलोंका बना) है। 'उन्मादन', 'शोषण', 'तापन', 'संमोहन' और 'स्तंभन' इसके पाँच बाण कहे गये हैं। देवताओंने इसे शंकरकी समाधि भंग करनेके लिए भेजा था। मना करनेपर भी जब इसने नहीं माना, तब योगिराज शंकरने इसे जलाकर भस्म कर दिया। तबसे कामदेवका नाम अनंग पड़ा (भाग० ३.१२.२९; मत्स्य० ७.२३; २३.३०; १५४.२७२; २९१.३२; वायु० १०४.४८)। तदुपरान्त रतिके विलाप तथा प्रार्थनासे प्रसन्न हुए शंकरके वरदानसे इसका जन्म श्रीकृष्णके पुत्र प्रद्युम्नके घर द्वारकामें हुआ। प्रद्युम्न-सुत अनिरुद्धको कामदेवका अवतार कहा गया है (ब्रह्मपु० कामदेवका दाह; दे० मन्मथ)।

नोट विशेष—अंग्रेजी साहित्यका 'क्यूपिड' यही कामदेव है। वहाँ इसे आँखोंपर पट्टी बाँधे तथा दो डैनोंसे युक्त बतलाया गया है, जो अपने शस्त्र धनुष-बाणके साथ आकाशमें उड़ता रहता है और आँखोंपर पट्टी बँधी रहनेके कारण पात्रको समझे बिना उसपर अपना बाण चला देता है। इसीके इस खेलवाड़के कारण संसारमें लैला और मजनूके सदृश बेजोड़ प्रेमी भी दीखते हैं।

अंगजा—स्त्री० [सं०] ब्रह्माकी पुत्रीका नाम (मत्स्य० ३.१२)।

अंगति—पु० [सं०] दे० ब्रह्मा, विष्णु, अग्नि।

अंगद—पु० [सं०] (१) एक बन्दरका नाम, जो रामायणके

अनुसार वालिका पुत्र था। इसका विवाह मैंदकी वड़ी पुत्रीसे हुआ था, उससे उसका महावली पुत्र हुआ, जिसका नाम था ध्रुव (ब्रह्मां० ३.७. २१९-२०)। श्रीरामके अभिषेकके समय यह उपस्थित था (विष्णु० ४.४.१००)। यह रामकी सेनामें था (रामायण—किष्किंधाका० ४१-४)। राम-रावंण युद्धमें इसने रामकी वड़ी सहायता की थी (भाग० ९.१०. १९–२०)। श्री रामजीके वनवाससे अयोध्या लौटनेपर भरत आदि जव रामकी पादुका आदि लेकर चले तव यह तलवार लेकर चला था (भाग० ९.१०.४४)। (२) लक्ष्मणके दो पुत्रोंमेंसे एकका नाम (भाग० ९.११.१२; विष्णु० ४.४.१०४)। अंगद राज्यकी राजधानी अंगदा, जो कारयन या कारापथमें थी (ब्रह्मां० ३.६३.१८८; वायु० ८८. १८७-८)। (३) वृहदुक्थकी पुत्री वृहतीके गर्भसे उत्पन्न पुरुके एक पुत्रका नाम (ब्रह्मां० ३.७१.२५६; वायु० ९६.२४७)। (४) एक राज्यका नाम जहाँकी राजधानी कारयन थी (ब्रह्मां० ३.६३.१८९)।

अंगदीया—स्त्री० [सं०] एक नगरी, जो लक्ष्मणके पुत्र अंगदको मिली थी। यह कारापथ देशमें है (वायु० ८८.१८८)।

अंगदेव्यन्तर—पु० [सं०] हृदय देवी आदि शक्तियोंका निवास स्थान (ब्रह्मां० ४.३७.४०)।

अंगद्वीप—पु० [सं०] जम्बू द्वीपका विविध रत्नोंका आकर एक खंड, जहाँ म्लेच्छ लोग निवास करते हैं (वायु० ४८.१४-१८)।

अंगना—स्त्री० [सं०] वामन नामक दिग्गजकी पत्नी (ब्रह्मां० ३.७.३३९)।

अंगभूत—पु० [सं०] एक तीर्थ स्थान, जो पितृगणके श्राद्धके लिए अति प्रशस्त माना गया है (मत्स्य० २२.५१)।

अंगराज—पु० [सं०] (१) कुन्तीका सवसे वड़ा पुत्र कर्ण, जो अंग देशका राजा था। यह महाभारत युद्धमें अर्जुनके द्वारा मारा गया (महाभारत कर्ण पर्व ९१. ५१; विष्णु० ५.३८. ४७)। (२) राजा लोमपाद, जो महाराज दशरथके मित्र थे (वा०रा०वा०का० ११-४)।

अंगलोकवर—पु० [सं०] एक जातिका नाम (वायु० ४७-४३)।

अंगलोक्य—पु० [सं०] एक राज्यका नाम (मत्स्य० १२१. ४४)।

अंगलौहिक—पु० [सं०] उत्तरी प्रदेशका एक राज्य (ब्रह्मां० २.१६.४९)।

अंगहीन—वि० [सं०] कामदेवका एक नाम। शंकर द्वारा जला देनेके पश्चात् शरीरका विनाश हो जानेके कारण यह नाम पड़ा। दे० अंगज; ब्रह्म पु० कामदेव दाह।

अंगारकचतुर्थी—स्त्री० [सं०] एक व्रत, जो माघ शु० ४ को मनाया जाता है। इसमें मंगलवारको ‘अंगारकाय भौमाय नमः’का जप किया जाता है (मत्स्य० ७२, १-४५)।

अंगारपातन—पु० [सं०] एक नरकका नाम (ब्रह्मां० ४.३३. ६१)।

अंगारवाहिका—स्त्री० [सं०] यह नदी पितृतीर्थ है, यहाँ स्नान और दान करना उत्तम है तथा पितरोंके लिए किया गया श्राद्ध अनन्तफल और अति प्रशस्त माना गया है (मत्स्य० २२.३५)।

अंगारवाहिनी—स्त्री० [सं०] भद्राश्व महादेशकी एक नदी (वायु० ४३.२६)।

अंगिरस्—पु० [सं०] (१) दस प्रजापतियोंमेंसे एकका नाम। इन्हें अथर्ववेदका प्रादुर्भावकर्त्ता कहा जाता है, अतः इन्हें ‘अथर्वा’ भी कहते हैं। एक मतसे यह उरु और आग्नेयीके पुत्र ठहरते हैं, पर अन्य मतसे यह ब्रह्माके मानस पुत्र हैं, जिनका जन्म ब्रह्माके मुखसे हुआ था (भाग० ३.१२. २२-२४; ब्रह्मां० २.३२.९६; मत्स्य० ३.६;५.१४.१५;१६)। कर्दम ऋषिकी पुत्री श्रद्धासे इनका विवाह हुआ था (भाग० ३.२४. २२; विष्णु० १.७.५–७; १५.१३६)। इनकी चार पुत्रियाँ थीं और उतथ्य तथा वृहस्पति नामके दो पुत्र थे (भाग० ४.१. ३४-३५; मत्स्य०१०२.१";१०६.१७)। कहते हैं—इन्हें इस समयतक ब्रह्मज्ञानकी प्राप्ति नहीं हुई थी (भाग० ४.२९.४३)। भीष्म पितामह जव शरशय्यापर थे, यह अपने शिष्यों सहित उनसे भेंट करने गये (भाग० १.९.८)। राजा परीक्षितके प्रायोपवेशके समय यह उनसे मिलने गये थे (भाग० १. १९.८)। स्वधा और सती नामकी दक्षकी दो पुत्रियोंसे इन्होंने विवाह किया। इनके पितृगण और अथर्वांगिरस पुत्र हुए। अंगिरस्को प्रजापति कहते हैं (भाग० ६.६.२,१९; ब्रह्मां० २.३७.४५; मत्स्य १६७.४३; १७१.२७; वायु० १.१३७; ३.३;२५.८२; ३०.४८; ६५.९७-१०१)। एक वार यह शौरसेन नरेश चित्रकेतुके पास आये जो निःसंतान थे। इनके आशीर्वादसे पहली रानीको एक पुत्र हुआ जिसे चित्रकेतुकी अन्य रानियोंने विप देकर मार डाला। इनका विलाप सुन अंगिरस् और नारद अवधूतके रूपमें आये और अंगिरस्ने भोजराजकी कथा चित्रकेतुको सुनायी (भाग० ६.१४.१४-३०, ३७-६१; १५.१०–१२, १७-२६; १-४)। फिर नारदके साथ ब्रह्मलोक चले गये (भाग० ६.१६.२६)। इनसे राजा पृषदश्वके पुत्र राजा रथीतर, जो निःसन्तान थे, की रानीमें पुत्र उत्पन्न करनेके लिए प्रार्थना की गयी (भाग० ९.६.२)। **श्रावण महीनेमें सूर्यरथपर रहनेवाले सौर गणके यह एक ऋषि हैं** (भाग० १२.११.३७; मत्स्य० १२६.१०)। वामनके संस्कारके समय यह उपस्थित थे (भाग० ८.२३. २०)। स्यमंतपंचकमें यह श्रीकृष्णसे मिलने आये थे (भाग० १०.८४.५)। द्वारका जाकर इन्होंने श्रीकृष्णसे स्वर्ग लौट जानेको कहा (भाग० ११.६.२.)। संवर्त नामका इनका एक और पुत्र था (भाग० ९.२.२६)। इनका उपहास करनेके फलस्वरूप विद्याधर सुदर्शनको शाप दे इन्होंने सर्प वना दिया (भाग० १०.३४.१३-१५)। इन्होंने अन्य ऋषि और देवताओंके साथ आकाशको त्रिपुरारिके रथके रक्षार्थ आवरण (खोल) वनाया एवं उसके पहियेके रक्षार्थ खड़े रहे। यह काशी, प्रयाग आदि स्थानोंमें रहे। यह महर्षि तथा मंत्रद्रष्ट थे (मत्स्य० १३३.२०,६१,६७; १४५.९०.१०१; १४६.१७; १८४.१५; १९२.१०; वायु० ५९.९८)। (२) वृहस्पतिका एक नाम। (३) उल्मुकके एक पुत्रका नाम (भाग० ४.१३.-१७)। (४) अंगिरस कल्पके ग्रंथकार और अथर्व संहिताके प्रादुर्भावकर्ता (भाग० १२.७.४)। (५) पिंडारक जानेवाले ऋषियोंमेंसे एक (भाग० ११.१.१२)। (६) वारुण यज्ञमें हविष्य देते समय अंगारसे इनकी उत्पत्ति हुई थी इसीसे यह नाम पड़ा। अग्निने इन्हें अपना पुत्र माना और इनके वंशज ‘आग्नेय’ कहलाये। भारद्वाज और गौतम इसी कुलके थे। इन्होंने अमरकंटकमें तप किया, सोमकी स्तुति की तथा दारु-

वनमें अपने पुत्र संयु या शंयुसे श्राद्धकल्पकी व्याख्या कही (ब्रह्मां० २.९.१८.२३; ३.१.२१, ३९-४२, १०१; १३.५; २०.१९; ४.२.३३,४७; वायु० ६४.२; ७३.६१; ७५,५६; ७७.५; ८८.७; ब्रह्मां० २.२७.१०३)। मरीचिकी पुत्रीसुरूपाके गर्भसे इनके दस पुत्र हुए (वायु० ६५.१०'१-८; मत्स्य १९५.९; १९६.१; २४५.८६)। (७) कश्यपके एक पुत्रका नाम। इनका विवाह स्मृतिसे हुआ जिससे दो पुत्र और चार पुत्रियाँ हुईं (ब्रह्मां० २.९.५५; ११.१७; वायु० १८-१४)। स्वायंभुव मन्वंतरके सप्तर्षियोंमेंसे एक (वायु० ३१.१६; ३०.८६; ब्रह्मां० २.११.१७; १३.५३)। (८) चौथे द्वापरके व्यासका नाम जब कि भगवान्‌का सुहोत्र अवतार हुआ (वायु० २३.१२६)। (९) रैवत अंतरके ऋषियोंमेंसे एक जो ब्रह्माके हवन करते समय जलते अंगारसे उत्पन्न हुए, अतः अग्निके पुत्र कहलाये तथा इनके वंशज आग्नेय कहलाये (अंगिरस् ६; ब्रह्मां० २.३६.६२; ३.१.४०-४२)। (१०) नवें द्वापरमें भगवान्‌के अवतार ऋषभके एक पुत्रका नाम (वायु० २३.१४४)। (११) अथर्वाके एक पुत्र (वायु० २९.९) जिसे अथर्वण कहते हैं (वायु० ६५.९८; ब्रह्मां० १.५.७०)।

अंगिरस–पु० [सं०] (१) आग्नेयी तथा उरु (कुरु–विष्णु पु०) के एक पुत्रका नाम (मत्स्य ४.४३; विष्णु० १.१३.६)। (२) अथर्ववेदके चौथे खण्डका नाम (विष्णु० ३.६.१४)। (३) एक देवगणका नाम (ब्रह्मां० ३.१.५०)। (४) तैंतीस ऋषियोंका समूह जिसमें प्रत्येक मंत्रद्रष्टा था (वायु० पु० ५९.१०२)।

अंगिरस–पु० [सं०] रथीकरकी स्त्रीके गर्भसे उत्पन्न अंगिरस्‌के पुत्रगण जो ब्राह्म-क्षत्रिय रक्तके थे (भाग० ९.६.३)।

अंगिरसकल्प–पु० [सं०] अथर्ववेदके कुछ हिस्सेका नाम (वायु० ६१.५४; ब्रह्मां० २.३५.६२,८२)।

अंगुलीय–पु० [सं०] सामवेदकी २४ शाखाओंके प्रवर्तक कृतके २४ शिष्योंमें एकका नाम (ब्रह्मां० २.३५.५३; वायु० ६१.४६)।

अंगुलीय–पु० [सं०] वृक्षोत्सवके समय उपहार स्वरूप दी जानेवाली अँगूठियाँ (मत्स्य० ५९.१४)।

अंगुष्ठ–पु० [सं०] श्राद्धमें उपहार देना, उपहार लेना, होम, भोजन कराना, बलि देना आदि सब कृत्य अंगुष्ठ सहित करने चाहिये ताकि राक्षसोंको प्राप्त न हों। (वायु० ७९-८८)।

अंजन–पु० [सं०] (१) एक सर्पका नाम जो पुराणानुसार कश्यपकी स्त्री कद्रूसे उत्पन्न हुआ था—दे० कद्रू। (२) वामदेव सामके वर्गका एक हाथी जो दक्षिण-पश्चिम कोणका दिग्गज कहा गया है। यह इरावतीका पुत्र और सुनहले रंगका है (ब्रह्मां० ३.७.२९२, ३२७,३३९)। (३) एक सामन् (ब्रह्मां० ३.७.३४३)। (४) एक पहाड़ीका नाम जो सितोद सरके पश्चिममें स्थित है (वायु० ३६.२८)। यहाँ उरगोंका निवास कहा गया है (वायु० ३९.५९)। यह हाथियोंके जंगलके नामसे विख्यात है (वायु० ६९.२३८)। (५) कृतिके एक पुत्रका नाम जो कुरुजित्‌का पिता था (विष्णु० ४.५.३१)।

अंजनसिद्धि–स्त्री० [सं०] एकयोगसिद्धिका नाम (ब्रह्मां० ४.३६.५२)।

अंजना–स्त्री० [सं०] रामभक्त हनुमानकी माताका नाम। कहीं-कहीं अंजनाको गौतम ऋषिकी पुत्री लिखा है, पर यह कुंजर नामक बन्दरकी पुत्री और केसरी नामक बन्दरकी पत्नी ठहरती है (ब्रह्मां० ३.७.२२४-५)। कुंजरको कहीं विरज भी नाम दिया गया है। पुराणानुसार अंजना और केसरीकी कथा इस प्रकार है:—एक दिन महेन्द्रकी सभामें जहाँ पुञ्जिकस्थली अप्सरा भी थी, महर्षि दुर्वासा पधारे थे (भाग० १२.८.२६; ११.३४; ब्रह्मां० २.२३.४; ३.७.१४; ४.३३.१९; वायु० ५२.४; ६९.४९)। पुञ्जिकस्थली ऋषिके सामने ही कई बार सभासे बाहर गयी और फिर चली आयी। उसकी इस चंचलतासे रुष्ट होकर दुर्वासाने उसे शाप दिया—'तू वंदरियोंके समान चंचल है, अतः वानरी हो जा।' इस शापसे घबड़ाकर पुञ्जिकस्थलीके बहुत विनय करनेपर ऋषिने उसे स्वेच्छापूर्वक रूप धारण करने तथा तीनों लोकोंमें जाने आनेका वर दिया। वरदानके अनुसार विरज वंदरकी पत्नीके गर्भसे पुञ्जिकस्थली अप्सराका जन्म हुआ जिसका नाम अंजना रखा गया। इसका विवाह केसरी वानरसे हुआ था। एक समय प्रभास तीर्थमें शंखशवल नामक हाथी आकर यज्ञादिमें विघ्न डालने लगा। उसने बहुतसे ऋषियोंको मार भी डाला। संयोगसे केसरी घूमते फिरते वहाँ पहुँचे और गजका उपद्रव देख इन्होंने उसके दोनों बड़े दाँत उखाड़ उसे मार डाला। इससे प्रसन्न हो ऋषियोंने केसरीको उसके इच्छानुसार 'मनके अनुकूल रूप धारण करनेवाला, पवनके ऐसा पराक्रमी तथा रुद्रके समान शत्रुके लिए असह्य पुत्र होनेका' वरदान दिया। इसी वरदानके अनुसार रुद्रके सहयोगसे तथा पवनके अंशसे अंजनाके गर्भसे श्री हनुमानका जन्म हुआ—दे० हनुमान, केसरी, कुंजर। भूमिवाराहखंडके वेंकटाचल माहात्म्यके अनुसार मतंग ऋषिके कहनेसे गंगातीर्थमें अंजनाने तपस्यासे वायु देवताको प्रसन्न कर महावीर नामक पुत्र प्राप्त किया—दे० पैशाचतीर्थ।

अंजनानंदन–पु० [सं०] अंजना तथा केसरीके पुत्र पवनसुत हनुमानका नाम—दे० अंजना।

अंजनावती–स्त्री० [सं०] अंजन हाथीसे उत्पन्न। इसके प्रथितायु और अज दो सुन्दर पुत्र थे (वायु० ६९.२२७२८; ब्रह्मां० ३.७.३४३-४)।

अंजनी–स्त्री० [सं०] रामभक्त हनुमानकी माताका नाम (वायु० ६०.७३)।

अंजिष्ठ–पु० [सं०] सुतारवर्गके एक देवताका नाम (ब्रह्मां० ४.१.८९)।

अंड–पु० [सं०] कामदेवका एक नाम—वि० दे० कामदेव।

अंतक–पु० [सं०] (१) यमकी एक उपाधि। पितृगणों द्वारा पृथ्वीका दोहन होनेपर ये दोग्धा थे (भाग० ६.१०.१५; ब्रह्मां० २.३६.२०९; मत्स्य० १०.१९; २१३.६)। (२) प्रलयके समय सारी सृष्टिका अन्त करनेवाले शंकरका एक नाम (ब्रह्मां० ३.३.८१)। (३) वसुमित्रका एक पुत्र जिसने केवल दो वर्ष राज्य किया (मत्स्य० २७१.२८)।

अंतकारी—स्त्री० [सं०] स्वयंभूकी तामसिक तनु (वायु० ६६.१०३)।

अंतकृत्–पु० [सं०] धर्मराजका एक नाम (स्कन्द पु०) स्वयम्भूके तीन रूपोंमें एक (वायु० ६६.१०२)।

अंतर–पु० [सं०] पृथुश्रवाके पुत्रका नाम, जो पूर्वजन्ममें

यज्ञके पुत्र थे। इन्हें उशना भी कहते हैं। इन्होंने १०० अश्वमेध यज्ञ किये थे (वायु० ९५.२२–२३)।

अंतरअयन–पु० [सं०] तीर्थोंकी एक विशेप प्रकारकी परिक्रमा जिसे अन्तर्गृह भी कहते हैं (हिं॰श॰सा; काशीखण्ड)।

अंतरसंक्षय–पु० [सं०] चाक्षुप अन्तरका प्रलय जब कि सारा जगत् एकार्णव हो जाता है (मत्स्य० २.१-१४)।

अंतरा–स्त्री० [सं०] ४४ अप्सराओंमेंसे एकका नाम (वायु० ६९.४)।

अंतराय–पु० [सं०] (१) व्याधि, स्त्यान, संशय, प्रमाद, आलस्य, अविरति, भ्रान्तिदर्शन, अलब्ध-भूमिकत्व और अनवस्थितत्व–योगके उपर्युक्त नौ विघ्नोंके नाम–योगदर्शन-समीक्षा। (२) कहीं ये दस कहे गये हैं—आलस्य, व्याधि, प्रमाद, संशय, चित्तानवस्थिति, अश्रद्धा, भ्रान्तिदर्शन, त्रिविध दुःख–आध्यात्मिक, आधिभौतिक और आधिदैविक दुःख–, दौर्मनस्य तथा योग्यायोग्यका अविवेक–योगके १० विघ्न (लि० पु० ९)। जैनोंके अनुसार दर्शनावरणीय मूल कर्मका एक भेद। ये अन्तराय कर्म ५ प्रकारके बतलाये गये हैं—वि० दे० परिशिष्ट।

अंतरिक्ष–पु० [सं०] (१) जयन्तीके गर्भसे उत्पन्न ऋपभके सौ पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम जो भरतका भाई था। यह विष्णुभक्त तथा ऋपि था (भा० ५.४.११; ११.२.२१)। इन्होंने निमिको 'माया' की व्याख्या समझायी थी तथा विशुद्ध ज्ञानके महत्त्वको बतलाया था (भाग० ११.३.२ (१-४)–१६)। (२) मुरके एक पुत्रका नाम। श्रीकृष्ण द्वारा पिताके मारे जानेपर यह उनसे युद्ध करने गया था (भाग० १०.५९.१२। (३) पुष्करके पुत्र तथा सुतपा (सुतपस्) के पिताका नाम (भाग० ९.१२.१२)। (४) वैवस्वत मन्वन्तरके तेरहवें द्वापरके वेदव्यासका नाम (ब्रह्मां० २.३५.१२०; विष्णु० ३.३.१४)। इन्होंने त्रिविष्टसे पुराण सुनकर त्रैय्यारुणिको सुनाया (चर्पि० वायु०)। (५) एक आद्यदेव, एक देवगणका नाम (ब्रह्मां० २.३६. ६९; वायु० ६२.५९)। (६) किन्नराश्व (किन्नर वायु०) के पुत्रका नाम यह सुपर्ण (सुपेण–मत्स्य०) के पिता थे (मत्स्य० २७१.९, वायु० ९९.२८५; विष्णु० ४.२२.५)।

अंतरिक्ष–पु० [सं०] भुवर्लोक अथवा स्वर्ग और पृथ्वीके बीचका स्थान (वायु० २३.१०७; २४.१८; ३०.९८; ४७.२९; ६४.१०; १०१.१९; ११०.४९)। कहते हैं—स्वर्गसे लौटाये जानेपर महाराज ययातिने यहाँ अपना निवासस्थान बनाया था (मत्स्य० ३५.४; ३८.२०; ३९.११; ४१.८,१०)। राजमहलोंके निर्माणके पूर्व इसे सन्तुष्ट करनेके लिए पूजा होती है (मत्स्य० २६८.१२)।

अन्तर्गृही–स्त्री० [सं०] तीर्थोंकी एक विशेप परिक्रमा। इस घेरेमें पड़नेवाले सब स्थान पवित्र समझे जाते हैं (भाग०)।

अंतर्दशाह–पु० [सं०] हिन्दू शास्त्रानुसार मृत्युके पश्चात् दस दिनोंतक मृतककी आत्मा प्रेतरूपमें रहती है। इन दस दिनोंमें इसकी शान्तिके लिए जो कर्म किये जाते हैं उन्हें अन्तर्दशाह कहते हैं—कृत्यकल्पतरु-श्राद्धखण्ड।

अंतर्धान–पु० [सं०] (१) विजिताश्वकी एक उपाधि। इन्द्रके वरदानसे यह बिना दिखे विचरण कर सकते थे (भाग० ४.२४.५)। (२) अन्तर्द्धि—पृथुके एक पुत्रका नाम। इनकी पत्नीका नाम शिखण्डिनी था, उसके गर्भसे इनके हविर्धान और मारीच दो पुत्र हुए (ब्रह्मां० २.३७.२३; मत्स्य० ४.४५; वायु० ६३.२२. विष्णु० १.१४.१)।

अंतरनर्मद–पु० [सं०] पश्चिमका एक देश; नर्मद जाति विशेप (ब्रह्मां० २.१६.६१; मत्स्य १४०.५०)।

अंतविदारण–पु० [सं०] सूर्य और चन्द्र ग्रहणके दस मोक्षोंमेंसे एकका नाम। वाराहमिहिरके मतानुसार यह मध्य देशकी हानि और आश्विनकी खेतीका नाश करनेवाला होता है—वाराहमिहिर।

अंतशिला–स्त्री० [सं०] विन्ध्याचल पर्वतसे निकलनेवाली एक नदीका नाम (वायु० ४५.१०३)।

अंतावसायी–पु० [सं०] अछूतोंका एक नाम—दे० अन्त्यावसायी।

अंतिक–पु० [सं०] यदुके एक पुत्रका नाम (मत्स्य ४३.७)।

अंतिनार–पु० [सं०] (१) ज्वलना और औचेयुके पुत्रका नाम। मनस्विनी इनकी पत्नी थी जिनसे दो पुत्र और एक पुत्री गौरी हुई, जो मानधातृकी माता थी (मत्स्य ४९.७.८)। (२) ऋतपुके पुत्र तथा सुमति आदि तीन पुत्रोंके पिताका नाम (विष्णु० ४.१९.३-४)।

अंत्य–पु० [सं०] (१) भृगुके एक पुत्र तथा एक देवका नाम (ब्रह्मां० ३.१.८९)। (२) जन्मना—चतुर्थ वर्णके मनुष्य (मत्स्य० २०७.१९; २२७.५४; २५५.१४)।

अंत्यज–पु० [सं०] पूर्वजोंकी वृत्ति करनेवाला अन्त्य योनि।

अंत्यायन–पु० [सं०] भृगुके १२ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र। भृगुके बारहों पुत्र यज्ञदेव थे (ब्रह्मां० ३.१.८९)।

अंत्यावसायी–पु० [सं०] चाण्डाल–मनुके अनुसार निपाद स्त्री और चाण्डाल पुरुपसे उत्पन्न, अंगिराके मतानुसार चाण्डाल, श्वपच, क्षत्ता, सूत, वैदेहक, मागध और योगव–ये सात जातियाँ भी इसीके अन्तर्गत हैं (ब्रह्मां० ३.१४.८८; वायु० ७९.२४)।

अंध–पु० [सं०] भारतवर्पके एक नदका नाम (भाग० ५.-१९.१८)।

अंधक–पु० [सं०] (१) दितिके गर्भसे उत्पन्न कश्यप ऋपिका पुत्र एक सहस्र सिरवाला दैत्य। नेत्र रहते हुए भी यह मदान्ध होनेके कारण अन्धोंकी तरह चलता था। इसीसे इसका यह नाम पड़ा। आड़ि और बक इसके पुत्र थे। अवन्तिके महाकालवनमें यह शिवके सामने ही देवीको ले भागना चाहता था। शंकरके पाशुपतास्त्रसे घायल होनेपर इसके रक्तसे अनेक अन्धक उत्पन्न हुए। शिवने घबड़ाकर अनेक मातृकाएँ उत्पन्न कीं पर काम न चला। अन्तमें वासुदेवने एक शुष्करेवती उत्पन्न की जिसने अन्धकका सारा रक्त पी लिया। अब अन्धक दबा और शिवका गण बन गया (मत्स्य० ५५.१६; १५६. ११-१२; १७९.२-२०; २५२.५-१९; मत्स्य० १७९.७-३७)। (२) युधाजितके पुत्र तथा क्रोष्टु नामक यादवके पौत्रका नाम। अंधक नामक यादवोंकी शाखा इन्हींसे चली (मत्स्य० ४४. ६१-८५; ४७.३३)। इनके भाईका नाम वृष्णि था जिनके वंशज वृष्णिवंशी कहलाये। श्री कृष्णचन्द्र इन्हींकी शाखाके थे। इसने अक्रूरको लौटा लानेकी सलाह दी थी जिसे सब सदस्योंने मान लिया था (विष्णु० ४.१३.११४–१३७)। (३) महातपा नामके एक ऋषि। यह बृहस्पतिके ज्येष्ठ भ्रात

उतथ्य ऋषिके पुत्र थे। इनकी माताका नाम ममता था (दे० ममता)। (४) अनुके पुत्रका नाम तथा कपोतरोमाके पौत्र (भाग० ९.२४.२०)—दे० अनु। (५) दुंदभि इसका पुत्र था। (६) सात्वत सात्त्वती और कौशल्याके पुत्रका नाम। इसने स्यमंतक मणि चुरानेका सन्देह कृष्णपर किया था—(भाग० ९.२४.६; विष्णु ४.१३.१; ब्रह्मां० ३.७१.१-२६,५३; वायु० ९६.२)। यह वड़ा खानेवाला था, इसका विवाह कंककी पुत्रीसे हुआ जिससे इसे कुकुर आदि चार पुत्र हुए (मत्स्य० ४४.४८–६१; विष्णु० ४.१४.१२)। (७) विलोमका एक पुत्र जो तुम्वुरुका मित्र था। इसे चन्दनोदक दुंदभि भी कहते हैं (ब्रह्मां० ३.७१.११८)। (८) भण्डके एक सेनापतिका नाम (ब्रह्मां० ४.२१.८२)। (९) अन्धक युद्धके पश्चात् आठवाँ संग्राम जिसमें त्र्यम्वकने हजारों असुरोंका वध किया (मत्स्य० ४७.४४–५०)। यह वराहकल्पमें हुआ था (वायु० ९७.७५; ब्रह्मां० ३.७२.-७५-८२)।

अंधकगण—पु० [सं०] (१) यादव जातिकी वीर जनता जिसने द्वारकाकी रक्षा की थी। द्वारावतीमें इनके नायक उग्रसेन थे (भाग० १.११.११, १४.२५; २.४.२०; वायु० ८६.२८; भाग० १०.१.६”; ३९.२५; ४५.१५)। इन लोगोंने कृष्णकी वड़ी प्रशंसा की थी (भाग० ९.२४.६३)। कंसकी मृत्युके पश्चात् इन्हें शान्ति मिली (भाग० (१०.४५.१५)। आपसमें युद्धकर ये सव मर गये (भाग० ११.२९.३९; ३०.१८)। श्रीकृष्ण भी अन्धक-वंशके थे—दे० अन्धक २; ब्रह्मां० ३.-६१.२३; ७१.८५, १४३–४४। ये श्रीकृष्ण और वलरामको द्वारका ले आये थे (वायु० ९६.८४)। (२) शंकरके पाशुपतास्त्रसे विदीर्ण अन्धक असुरके रक्तसे उत्पन्न असुरोंका समूह, जो शंकरसे लड़ा था—दे० अन्धक १; मत्स्य० १७९.७-३७।

अंधकरिपु—पु० [सं०] अन्धक नामक दैत्यके शत्रु = शंकरका एक नाम—दे० अंधक १।

अंधकार—पु० [सं०] (१) क्रौञ्चद्वीपेश्वर द्युतिमान्के पुत्रका नाम जिसके नामपर इसके राज्यका नामकरण हुआ आन्धकार (ब्रह्मां० २.१४.२२-२५)। (२) देवों और असुरोंके आठवें संग्रामका नाम (ब्रह्मां० ३.७२.७५-८२; वायु० ९७.७५; दे० अन्धक ८)।

अंधकारक—पु० [सं०] (१) क्रौंच द्वीपके एक राज्यका नाम। इस नामका एक पहाड़ भी इसी द्वीपमें है (ब्रह्मां० २.१४.-२५; १९.६७.७२; मत्स्य० १२२.८१.८५; वायु० ४९.६१.-६७)। (२) क्रौंच द्वीपके एक पर्वतका नाम (मत्स्य० १२२.-८१; विष्णु० २.४.५०)। (३) द्युतिमानके एक पुत्रका नाम जिनके नामपर एक जनपद भी है (वायु० ३३.२१,२३; विष्णु० २.४.४८)।

अंधकासुरमर्दिन्—पु० [सं०] शिवकी एक उपाधि (ब्रह्मां० ३.२५.१२; अन्धकरिपु, अन्धक १)।

अंधकूप—पु० [सं०] २८ नरकोंमेंसे एक। अनियमित आचार-विचार भ्रष्ट व्यक्ति जिनमें दयाका सर्वदा अभाव रहता है, वे ही इसके भागी होते हैं (भाग० ५.२६.७,१७)।

अंधतामिस्र—पु० [सं०] २१ वड़े नरकोंमेंसे दूसरेका नाम। सांख्यके अनुसार इच्छित वातके करनेकी अशक्तिको विपर्यय कहते हैं। इसके पाँच भेद वताये गये हैं और अन्धतामिस्र या अभिनिवेश अन्तिम है। पतिको धोखा दे किसीकी स्त्री तथा सम्पत्ति हरण करनेवाला इसका भागी होता है (भाग० ३.३०.२८; :३; वायु० २६.७.४)।

अंधतामिश्र—पु० [सं०] एक नरकका नाम—दे० विष्णु० १.६.४१; अन्धतामिस्र।

अंधिनी—स्त्री० [सं०] ललिताके किरिचक्ररथेन्द्रके तीसरे पर्वपर स्थित पाँच देवियोंमेंसे एकका नाम (ब्रह्मां० ४.२०.९, ८३)।

अंध्र—पु० [सं०] (१) वलिकी पत्नीके गर्भसे उत्पन्न दीर्घतमस्के पुत्रका नाम (ओड्र)—भाग० ९.२३.५। (२) वृषदश्व (वृषदश्व० वायु०) के पुत्रका नाम (ब्रह्मां० ३.६३.२७; वायु० ८८.२६)। (३) देवरक्षितके अधीन एक जनपदका नाम—(वायु० ९९.३८५; विष्णु० ४.२४.६४)।

अंध्रगण—पु० [सं०] एक दुष्ट तथा पापात्मा जातिके लोग जो विष्णुकी उपासना कर शुद्ध हुए थे (भा० २.४.१८)। दक्षिण देशपर इनका ३०० वर्षोंतक राज्य था (भाग० १२.१.३२; वायु० ४५.१२७; ४९.४४, ७८.६९; ९९.२६८, ३६१)। भरतने इन्हें युद्धमें पराजित किया था (भाग० ९.२०.३०)।

अंध्रवाक—पु० [सं०] एक पूर्वीय राज्य (देश) का नाम (ब्रह्मां० २.१६.५३; वायु० ४०.१.२२)।

अंब—स्त्री० [सं०] दे० अंबा।

अंबर—पु० [सं०] (१) यह देवासुर संग्राममें वृत्रासुरकी ओरसे लड़ा था (भाग० ६.१०.१९)। (२) विश्वकाय देवीसे सम्बन्धित एक पवित्र स्थान (मत्स्य० १३.२७)।

अंबरनदी—स्त्री० [सं०] मेरु पर्वतसे निकली एक नदी जो देवभ्राज, महाभ्राज तथा वैभ्राज महावनको सींचती हुई सितोदक झीलमें गिरती है। तदुपरान्त सुपक्ष पहाड़ी, शिखि पर्वत, कंक, वैदूर्यपर्वत, कपिल, गन्धमादन, पिंजर, सरस, कुमुदाचल, मधुमन्त, मुकुट, कृष्ण, श्वेत, सहस्रशिखर और पारिजात पर्वतोंसे होती केतुमाल महाद्वीपको प्लावित करती हुई पश्चिम सागरमें गिरती है (वायु० ४२.४४-५७)।

अंबरीष—पु० [सं०] (१) विष्णुका एक नाम। (२) शिव तथा सूर्यका एक नाम। (३) एक नरक विशेषका नाम। (४) सूर्यवंशी प्रशुश्रकके पुत्र तथा अयोध्याके एक राजा। यह इक्ष्वाकुसे २८ वीं पीढ़ीमें हुए थे। इन्हींके कारण भगवान् विष्णुके चक्रने दुर्वासा ऋषिका पीछा किया था। महाभारत, भागवत और हरिवंशके अनुसार यह नाभागके पुत्र थे, पर रामायणका मत इसके विरुद्ध है (भाग० ९.४.३५–७१; ९.-५.१–२२, महाभारत, हरिवंश और रामायण)। यद्यपि यह सात महादेशोंके राजा थे, पर इन्हें यह पता था कि संसारके वैभव नश्वर हैं, अतः यह विष्णुभक्त हो गये थे। इन्होंने मरुभूमिमें अश्वमेध यज्ञ किया जिसमें सरस्वती वहाँ वहने लगीं। एक वर्ष द्वादशी व्रत भी किया था। तदुपरान्त ब्राह्मणभोजनकी तैयारी हो रही थी। दुर्वासा ऋषि भी आमन्त्रित थे, पर जव यमुना स्नान करने गये तव वहीं ध्यानमग्न वैठ रहे। अम्वरीषने इनकी प्रतीक्षामें केवल जल ग्रहण किया। दुर्वासा आये और क्रोधमें अम्वरीषका नाश करनेपर तुल गये। विष्णुके चक्रने दुर्वासा द्वारा उत्पन्न कृत्याको नष्ट कर ऋषिका पीछा किया। दुर्वासा इधर उधर भागते फिरे और अन्तमें त्रिमूर्ति की शरणमें गये, पर वेकार (भाग० ९.४.१३-७१; २.७.४४; ब्रह्मां० ३.३४.३९; वायु० ८८.१७१)। अन्त-

में ऋषिको राजासे क्षमा माँगनी पड़ी तव प्राण वचा। उसके बाद दुर्वासाने भोजन किया और आशीर्वाद दे ब्रह्मलोक चले गये। इसके पश्चात् राज्य पुत्रोंको दे अम्वरीप तपस्या करने वनमें चले गये (भाग० ९.५.२६)। इनके विरूप आदि तीन पुत्र थे। यह मन्त्रद्रष्टा थे और इन्होंने १६ महादान किये थे (भाग० ९.६.१; ब्रह्मां० ३.६३.६, १७०-१७२; विष्णु० ४.२.६.७; ४.३६; मत्स्य० १२.२०-४५; १४५.१०२; २७४.११)। (५) विन्दुमतीके गर्भसे उत्पन्न मानधातृके पुत्र तथा युवनाश्व (मानधातृके पिता युवनाश्व नहीं) के पिता (भाग० ९.६.३८; ७.१; ब्रह्मां० ३.६३.७२; वायु० ८८.७२; विष्णु० ४.२.६७; ३.२)। (६) एक अंगिरस और मन्त्रकृत् (ब्रह्मां० २.३२.१०८; वायु० ५९.९९)। (७) एक काद्रवेयनाग (ब्रह्मां० ३.७.३६; वायु० ६९.७३)। (८) क्षमाके गर्भसे उत्पन्न पुलहका पुत्र (वायु० २८.२६)।

अंबष्ठ—पु० [सं०] (१) कुवलयापीड़के महावतका नाम जो श्रीकृष्ण द्वारा मारा गया था (भाग० १०.४३.२.४)। (२) सुव्रत राज्यकी राजधानी। यहाँका राजा लक्ष्मणाके स्वयम्वरमें मत्स्य-भेदन करनेमें असमर्थ रहा था (भाग० १०.८३.२३; ब्रह्मां० ३.७४.२२; मत्स्य० ४८.२१; वायु० ९९.२२)। (३) अम्वष्ठ देशके निवासी (भाग० १०.८३.२३; विष्णु० २.३.१८)।

अंवा—स्त्री० [सं०] (१) काशीनरेश इन्द्रद्युम्नकी सबसे बड़ी पुत्री। महाभारतके अनुसार भीष्मपितामह इसे अपने भाई विचित्रवीर्यके लिए हर लाये थे (भाग० १०.६०.४७, विष्णु० ४.२०.३६)। अम्वा राजा शाल्वसे विवाह करना चाहती थी, अतः भीष्मने उसके इच्छानुकूल उसे वहीं भेज दिया। पर जब शाल्वने उसे ग्रहण करनेसे इनकार किया तव हताश होकर वह लौट आयी और तप करने लगी। शंकरने प्रसन्न हो वरदान दिया कि तू दूसरे जन्ममें भीष्मसे वदला लेगी। यही दूसरे जन्ममें शिखण्डी हुई जिसके कारण भीष्म मारे गये—महाभारत आदि पर्व। (२) "ससुरखेदरी" नदी। यह यमुनाकी सहायक नदी है जो फतहपुरके पाससे निकली है। ऐसा कहा जाता है कि यह इन्द्रद्युम्नकी कन्या अम्वा है जो गंगाके शापके डरसे भागी थी (स्कंद० पु० मा० कु० खण्ड)। (३) संसारकी रक्षा करनेवाली देवी। इनके पुरुष सदाशिव इनके सहायक हैं (ब्रह्मां० ४.८.३३, १९.८१, ३३.१७)। (४) वर्षाऋतुकी रानी (ब्रह्मां० ४.३२.२९)।

अंबालिका—स्त्री० [सं०] काशीराज इंद्रद्युम्नकी तीसरी और सबसे छोटी कन्या। भीष्म इसे अपने भाई विचित्रवीर्यके लिए हर लाये थे। यह पाण्डुकी माता थी (दे० विचित्रवीर्य, महाभारत आदिपर्व, भीष्मका पराक्रम)।

अंविका—स्त्री० [सं०] (१) देवी भगवती, पार्वती या दुर्गा। शिवकी पत्नी (भाग० ३.१२,१३)। यह दक्षकी पुत्री थीं जो मेनकाके गर्भसे उत्पन्न हुई थीं (भाग० ४.७.५८)। चित्रकेतुने इन्हें शान्त किया था (भाग० ६.१७.१७)। पार्वती और योगमायाकी उपाधि, अम्विका है (भाग० १०.२.१२)। इन्होंने वामनको भिक्षा दी थी (भाग० ८.१८.१७)। इनकी प्रतिष्ठाके उपलक्ष्यमें एक पर्व जिस स्थानपर मनाया गया था उसे अम्विकावन कहते हैं (भाग० १०.३४.१-३)। शिव अग्नि हैं और यह सोम हैं (ब्रह्मां० २.२७.११२, ४.१४.६, १५.५२, ४४.८६)। सरोवर वनवानेसे पूर्व इनकी पूजा होती है (मत्स्य० ५८.२६)। (२) काशीके राजा इन्द्रद्युम्नकी मँझली पुत्री जो अम्वालिकासे वड़ी और अम्वासे छोटी थी। भीष्म पितामह इसे अपने छोटे भाई विचित्रवीर्यके लिए हर लाये थे (भाग० ९.२२.२४, विष्णु० ४.२०.३६)। व्यासजीके नियोग करनेपर इनके गर्भसे धृतराष्ट्र उत्पन्न हुए थे (भाग० १०.४८.३४, विचित्रवीर्य)।

अंविकावन—पु० [सं०] (१) पुराण-प्रसिद्ध एक स्थान जहाँ जानेसे पुरुप स्त्री हो जाते हैं। यह इलावृत्तखण्डमें स्थित कहा गया है। (२) व्रजके अन्तर्गत एक वन। सरस्वती नदीके किनारेका वन जहाँ अम्विकाके उपलक्ष्यमें एक पर्व मनाया गया था जिसमें नन्द आदि सम्मिलित हुए थे। वहाँ नन्दजीको एक भारी सर्पने पकड़ लिया था जिससे श्रीकृष्णने छुड़ाया था। (भाग० १०.३४.१-१८)। विवाहसे पूर्व रुक्मिणी इनका पूजन करने गयी थी (भाग० १०.५३.३९)।

अंविकेय—पु० [सं०] (१) शाकद्वीपका एक पहाड़ी किला (ब्रह्मां० २.१९.८९)। (२) अम्विकाके पुत्रका नाम (क) गणेश, (ख) कार्त्तिकेय। (३) धृतराष्ट्र—दे० अम्विका और विचित्रवीर्य।

अंवुक—पु० [सं०] ब्रह्मधानका एक पुत्र (ब्रह्मां० ३.७.९८)।

अंबुजेक्षण—पु० [सं०] विष्णुका एक विशेषण (ब्रह्मां० ४.३४.८४)।

अंवुधारा—स्त्री० [सं०] आयुष्मत्की पत्नी और ऋपभ (हरि) की माता (भाग० ८.१३.२०)।

अंभारि—पु० [सं०] अग्निका नाम=अंगारि अग्नि (ब्रह्मां० २.१२.३०)।

अंश—पु० [सं०] (१) एक तुपित देवता (ब्रह्मां० २.२३. १६, ३६.११)। (२) एक आदित्य (वायु० ६६.६६, विष्णु० १.१५.१३१)। (३) एक राक्षस जो मार्गशीर्षमें सूर्यके रथपर रहता है (विष्णु० २.१०.१३)।

अंशु—पु० [सं०] (१) श्रीकृष्णका एक वालसखा (भाग० १०.२२.३१)। (२) मार्गशीर्षके महीनेमें सूर्यका नाम (भाग० १२.११.४१)। चैत्रके आदित्यका नाम जिसकी ७००० किरणें हैं। एक आदित्य—(ब्रह्मां० २.२४.३४, ३८; ब्रह्मां० ३.३.६७; विष्णु० १.१५.१३१)। (३) हरितगणके १० देवोंमेंसे एक (वायु० १००.८९)। (४) पुरुमित्रके पुत्र और सत्वतके पिताका नाम (विष्णु० ४.१२.४३)।

अंशुमत्—पु० [सं०] (१) दिलीपके पिता (भाग० ९.९.१-२; ब्रह्मां० ३.५६.३०; ६३.१६५; विष्णु० ४.४.३४) तथा भगीरथके दादा और असमंजसके पुत्र। यह अपने दादा सगरके वड़े भक्त थे (भाग० ९.८.१५; ब्रह्मां० ३.५१. ५१; ५२.१; मत्स्य० १२.४३; वायु० ८८.१६६; विष्णु० ४.४.७-३२)। यह सगरके मंत्राभिपिक्त घोड़ेकी खोजमें जब गये थे तव कपिल मुनिसे मिले (भाग० ९.८.१९-२७; ब्रह्मां० ३.५४.१७.५१)। इनकी स्तुतिसे प्रसन्न हो कपिलने घोड़ा छोड़ दिया और कहा था कि गंगासे ही भस्म हुए राजकुमारोंका उद्धार होगा (भाग० ९.८.२८-२९; ब्रह्मां० ३.५६.२९)। सगरके पश्चात् यह राजा हुए थे (भाग० ९.८.२८.३१)। अपने चाचा आदिकी मुक्तिके लिए तपस्या करते करते फलप्राप्तिके पहले ही यह मर गये। (२) एक यादवका नाम जो

श्रीकृष्णके यज्ञके घोड़ेके साथ रक्षार्थ भेजा गया था (भाग० १०.८९.२२;३)। (३) एक आदित्यका नाम (मत्स्य० ६.४.)। (४) पंचजनके पुत्रका नाम जिसका विवाह हविष्मंत पितृकी मानस-पुत्रीसे हुआ था। (५) कैशिकके एक पुत्रका नाम। पूर्वजन्ममें यह मानसमें चक्रवाक था (मत्स्य० २०.१८)।

अंशुमान–पु० [सं०] (१) सूर्यका एक नाम। (२) असमंजसके पुत्र तथा राजा सगरके पौत्रका नाम। राजा सगरके अश्वमेध यज्ञका घोड़ा यही ढूँढ़कर लाये थे। महाराज सगरके ६०,००० पुत्रोंके शवको इन्होंने पाया था। (नारदपुराण-पूर्व भाग, प्रथम पाद तथा विष्णुपुराण चतुर्थ अंश)।

अकंपन–पु० [सं०] एक राक्षस जो रावणका अनुचर था और खरके वधका समाचार रावणसे इसीने कहा था (रामायण-बालका० दो० १८०)। कुमुद नामक वानरने इसका वध किया था (स्कंद० ब्राह्मखंड, सेतुमाहात्म्य)।

अकम्पन–पु० [सं०] हिरण्यकशिपुकी सभाके एक असुरका नाम (मत्स्य० १६१-८१)। यह खशाके गर्भसे उत्पन्न एक राक्षसका पुत्र था (ब्रह्मा० ३.७.१३६; वायु०—६९-१६७)।

अकल्मष–पु० [सं०] तामस मनुके एक पुत्रका नाम जो चौथे मनु थे—मत्स्य० ९.१७।

अकोप–पु० [सं०] अयोध्यापति दशरथके ८ मंत्रियोंमेंसे एक—रामायण।

अक्रिय–पु० [सं०] गंभीरके पुत्रका नाम। ब्राह्मण नामक इनका एक पुत्र था (भाग०—९.१७.१०)।

अक्रूर–पु० [सं०] (१) एक यादवका नाम जो श्रीकृष्णके चाचा लगते थे। यह श्वफलक और गांदिनीके पुत्र थे। स्कंदपुराणानुसार पूर्वजन्ममें यह चंद्र नामक ब्राह्मण थे। हरिद्वार-निवासी देवशर्मा नामक अत्रिकुलोत्पन्न ब्राह्मणके यह शिष्य तथा जामाता थे जिनकी गुणवती नामक पुत्री ब्याही थी। श्रीकृष्ण और बलदेव इन्हीं (अक्रूर) के साथ मथुरा गये थे। सत्राजितकी स्यमंतक मणि लेकर यह काशी चले गये थे। उपदेव नामक इनका एक पुत्र था (स्कंद० वैष्णवखंड कार्त्तिक-मा०)।

(२) एक यादव राजकुमारका नाम जो कृष्ण और बलदेवके हस्तिनापुरसे लौटनेपर वसुदेव आदिके साथ नगरके बाहर स्वागतार्थ उपस्थित थे और उनको बाजेगाजेके साथ द्वारका ले गये थे (भाग० १.११.१६; १४.२८)। उग्रसेनकी एक पुत्रीसे इनका विवाह हुआ था जिसके गर्भसे देववान और उपदेव नामक इनके दो पुत्र उत्पन्न हुए थे (भाग० ९. २४.१५.१७.१८; ब्रह्मां० ३.७१.११३; विष्णु० ४.१३.१२६; १४.७.१०; वायु० ९६.११२)। कंसके उत्पीड़नसे यादवोंके अन्यान्य देशोंको चले जानेपर यह मथुरामें ही रह गये थे (भाग० १०.२.४)। कहते हैं यह एक बार "ब्रह्महृद" (प्रथम वर्गके १९ नक्षत्रोंमेंसे एक जिसे अँगरेजीमें कैपेल्ला कहते हैं) गये थे (भाग० १०.२८.१६)। कंसने श्रीकृष्ण और बलरामको धनुर्यज्ञके अवसरपर मथुरा बुला लानेका भार इन्हीं पर सौंपा था (भाग० १०.३६.२७-४०)। गोपियोंको जब यह पता चला तो वे अक्रूरको क्रूर कहने लगी थीं क्योंकि कृष्ण-बलदेवका वियोग उनके लिए असह्य था (भाग० १०.३९.२१-२६)। श्रीकृष्ण तथा बलराम को लेकर अक्रूरने प्रातःकाल मथुराके लिए प्रस्थान किया था। यमुनाके किनारे पहुँचनेपर अक्रूर कृष्ण तथा बलराम को रथपर बैठनेका आदेश दे स्वयम् स्नान करने गये। पर जब जलमें, रथपर सर्वत्र कृष्ण ही कृष्ण दिखलायी पड़े तब अक्रूरके आश्चर्यकी सीमा न रही (भाग० १०.३९. ३२-५७; विष्णु० ५.१८.११-१९)। भगवान् विष्णुके दर्शन पाकर वे कृतकृत्य हो स्तुति करते हुए सबको लेकर सूर्यास्तके पहले मथुरा पहुँच गये (भाग० १०.४१.४-६)। कंसको कृष्णके आनेकी सूचना देकर अक्रूर अपने घर चले गये। धनुर्यज्ञके समय यह यज्ञ स्थलपर थे। कंस वधके पश्चात् कृष्ण, बलराम और उद्धव इनके घर गये। इन्होंने उनका राजसी स्वागत किया (भाग० १०.४८.१२-२८)। श्रीकृष्ण इन्हें अपना गुरु मानते थे तथा संकटकालमें इनके आदेशोंकी प्रतीक्षा करते थे। पाण्डवोंकी स्थितिका पूर्णरूपेण अध्ययन करनेके लिए श्री कृष्णकी प्रार्थनापर वह हस्तिनापुर गये थे (भाग० १०.४८.२९-३५)। कुन्तीसे भेंट कर तथा धृतराष्ट्रकी कूटनीति समझकर यह लौट आये थे (भाग० १०.४९.१-३१)। जरासन्धके युद्धके समय श्री कृष्णने इनसे परामर्श किया था। यह यादव सभाके सभासद थे। स्यमंतक मणिके सम्बन्धमें झगड़ा होनेपर शतधन्वाने कृष्ण के विरुद्ध इनकी सहायता चाही थी पर यही सहमत नहीं हुए। शतधन्वाने सत्राजित्‌का वधकर स्यमंतक मणि प्राप्त किया पर उसे अक्रूरके ही पास सुरक्षित छोड़ दिया था (भाग० १०.५७.१४-१८)। श्रीकृष्ण तथा बलरामके हाथों जब शतधन्वा मारा गया तब यह बहुत डर गये और द्वारका छोड़ स्यमंतक मणि ले काशी चले गये थे। अक्रूरके चले जानेपर अनावृष्टि तथा अनेक उपद्रव होने लगे। श्रीकृष्ण की प्रार्थनापर यह पुनः द्वारका लौट आये और अपने पासकी स्यमंतक मणि शंका निवारणार्थ इन्होंने भगवान् कृष्णको दी। भगवान्ने बन्धु-बान्धवोंकी भरी सभामें सबको दिखलाकर अपना अयश मिटाकर मणि अक्रूरको लौटा दी (भाग० १०.५७.३३-४१)। राजसूय यज्ञके समय यह द्वारकामें थे (भाग० १०.७६.१४)। यादवोंकी आपसी लड़ाईमें यह प्रभास नामक स्थानपर मारे गये थे (भाग० ११.३०.१६)। (३) एक काद्रवेय नागका नाम (ब्रह्मां० ३.७.३६)। (४) महासेन एक वरमूर्त्ति (ब्रह्मां० ४.४४.५०)। (५) अनमित्र-वंशज जयंतके एक पुत्रका नाम जिसका विवाह शैव्याकी पुत्री रत्नासे हुआ था। उससे इसके ग्यारह पुत्र हुए (मत्स्य० ४५.२७-८)।

अक्रोधन–पु०[सं०] (१) त्वरितायु या आयुके पुत्रका नाम (मत्स्य० ५०.३७)। (२) अयुतायुके पुत्रका नाम। यह देवातिथिके पिता थे (वायु० ९९.२३२)।

अक्ष–पु० [सं०] (१) लंकापति रावणका पुत्र अक्षयकुमार जिसका बध लंका उजाड़ते समय हनुमानने किया था (रामायण सुन्दरकाण्ड दो० १७.१८) (२) विष्णुवाहन गरुड़का एक नाम (भाग०)। (३) पासेका खेल जिसे ऋतुपर्णसे राजा नलने सीखा था (मत्स्य० १५४.५२०; २२०.८)। ऋतुपर्ण इस खेलमें दक्ष थे। (४) दनु दानवका एक पुत्र (ब्रह्मां० ३.६.११)। (५) सत्यभामाके गर्भसे उत्पन्न श्रीकृष्णके एक पुत्रका नाम (ब्रह्मां० ३.७१-२४७; वायु० ९६.२३८)।

अक्षयकुमार–पु० [सं०] –दे० अक्ष १।

अक्षपाद—पु० [सं०] (१) गौतमऋषिका एक नाम जिन्होंने न्यायशास्त्रकी रचना की। व्यासजोने इनके मतका खण्डन किया था। कहते हैं इससे रुष्ट होकर इन्होंने व्यासजीका मुख न देखनेकी प्रतिज्ञा की थी। यह विदित होनेपर व्यासजीने इन्हें प्रसन्न कर लिया, तव गौतमने अपने चरणोंमें नेत्र करके व्यासको देखा था। इसीसे गौतमको "अक्षपाद" कहते हैं—गौतम न्यायदर्शन। (२) सोमशर्माके पुत्रका नाम। इन्हें विष्णुका अवतार माना जाता है जो प्रभास क्षेत्रमें हुआ था यह २७ वें द्वापरके व्यास जातूकर्ण्यके समकालीन थे (वायु० २३.२१६)।

अक्षमाला—स्त्री० [सं०] (१) वशिष्ठ ऋपिकी पत्नीका एक नाम। इनका प्रसिद्ध नाम अरुंधती था (मनुस्मृ० ९.२२-२३)। (२) शेपकी अक्षमाला जपमाला (वायु० ५०.५० अक्षसूत्र)।

अक्षयकुमार—पु० [सं०] —दे० अक्ष १।

अक्षयतृतीया—स्त्री० [सं०] वैशाख शुक्ल तृतीया। सतयुगका आरम्भ इसी तिथिसे माना जाता है। यदि इस दिन गौरी-व्रत भी हो तो गणेश चतुर्थीका सहयोग अधिक शुभ होता है (गौरी विनायकोपेता)। यदि इस तिथिको सोमवार, कृत्तिका या रोहिणी नक्षत्र पड़े तो इस तिथिका महत्त्व और अधिक वढ़ जाता है। इस तिथिमें सक्तु भाण्डोंका दान-संकल्प विशेप फलदायक है। अक्षयतृतीया अति पवित्र और महान् फल देनेवाली है (मत्स्य० ६५.१-७)। 'व्रतपरिचय'। इस दिन वदरीनाथमें वड़ा उत्सव मनाया जाता है।

"यत्किञ्चिद् दीयते दानम् स्वल्पं वा यदि वा वहु।
तत् सर्वमक्षयं यस्मात् तेनेयमक्षया स्मृता॥"—भविष्य०।

अक्षयनवमी—स्त्री० [सं०] कार्त्तिक शुक्ला नवमी। इसमें पूर्वाह्णव्यापिनी तिथि ली जाती है। इस दिनका किया पूजा-पाठ और दान-पुण्य अक्षय होता है। इस तिथिसे त्रेतायुगकी उत्पत्ति मानी गयी है। इसे 'धात्रीनवमी' या 'कूष्माण्डनवमी' भी कहते हैं। इस दिन आँवलेके वृक्षके नीचे भोजन करनेका वड़ा माहात्म्य है। इससे एक वर्पतक अन्न संसर्गसे उत्पन्न पापका नाश होता है—दे० स्कंद० कार्त्तिक-मा०; हेमाद्रि; देवी पुराण; मत्स्य० १७.४।

अक्षयबट—पु० [सं०] प्रयाग और गयामें एक वटवृक्ष है। पौराणिकोंके मतानुसार प्रलयकालमें भी इसका नाश नहीं होता इसलिए इसे अक्षयवट कहते हैं (वायु० १०५.४५; १०९.१६; वायु० १११.७९-८३)।

अक्षयवृक्ष—पु० [सं०] दे० अक्षयवट।

अक्षया—स्त्री० [सं०] एक ब्रह्मराक्षसीका नाम (वायु० ६९.-१३४)।

अक्षय्योदक—पु० [सं०] श्राद्धमें पिंडदान आदिके पश्चात् ब्राह्मणके हाथपर "अक्षय हो" कहकर छोड़ा जानेवाला जल (श्राद्धचंद्रिका)।

अक्षर—पु० [सं०] (१) सुयज्ञके पुत्रका नाम (सुयज्ञ; ब्रह्मां० ३.७०.२३)। (२) मत्स्य० २४८.३९ के अनुसार इससे 'हरि'का वोध होता है और वायु० ३२.१ के अनुसार स्वयम् ब्रह्माका अर्थ देता है। (३) सृष्टि करते समय ध्यानमग्न ब्रह्माके कण्ठसे निकला स्वर (वायु० २६.११)। भागवत १२.६.-४३,४४ के अनुसार समाधिस्थ ब्रह्माके हृदयाकाशसे नादका आविर्भाव हुआ जिसकी उपासनासे ब्रह्मयोगी आत्ममलका नाशकर मुक्तिको प्राप्त होते हैं। उससे ओंकार हुआ उससे ब्रह्माने अक्षर समाम्नाय रचा इस प्रकार ब्रह्मा द्वारा रचित अक्षरोंका समाम्नाय।

अक्षरी—पु० [सं०] वायु० १९.४३; २०.४ के अनुसार ओंकारमय सवसे वड़े योगीको अक्षरी कहते हैं।

अक्षसूत्र—पु० [सं०] यह पुलह द्वारा वामनको मिला। इससे अगस्त्य ऋपिकी प्रतिष्ठा वढ़ी थी (मत्स्य० ६१.३६; २४५.-८७; दे० अक्षमाला)।

अक्षसेन—पु० [सं०] भारतवर्पके एक प्राचीन राजाका नाम जिसका उल्लेख मैत्र्युपनिपद्में मिलता है—मैत्र्युपनिषद्।

अक्षी—स्त्री० [सं०] रोहिणीके गर्भसे उत्पन्न आनकदुंदभि की एक पुत्रीका नाम (मत्स्य पुराण ४६.१२)।

अखती—स्त्री० अखयतीज—दे० अक्षयतृतीया।

अखतीज—स्त्री० दे० अक्षयतृतीया।

अखैबर—पु० [सं० अक्षयवट] दे० अक्षयवट।

अगज—पु० [सं०] मृग नामक हाथीके एक पुत्रका नाम (ब्रह्मां० ३.७.३३२)।

अगरु—पु० [सं०] कुरु देशके एक वन विशेपका नाम जो चन्द्रकांत और सूर्यकांत नामक दो पहाड़ोंके वीच स्थित है (वायु० ४५.३१)।

अगस्त्य—पु० [सं०] (१) यह एक वड़े प्रभावशाली ऋपि थे और इनके पिताका नाम मित्रवरुण था। ऋग्वेदके अनुसार उर्वशी अप्सराको देख मित्रवरुण कामपीड़ित हो गये जिससे वीर्यपात हुआ। अगस्त्यका जन्म इसीसे हुआ था। श्री सायणाचार्यके भाष्यके अनुसार अगस्त्यकी उत्पत्ति एक घड़ेसे हुई, इसीसे इन्हें मैत्रावरुणि, और्वशेय, कुम्भसम्भव, घटोद्भव, कुम्भज आदि नामसे पुकारते हैं। पुराणानुसार इन्होंने एक वार वढ़ते हुए विन्ध्याचलपर्वतको लिटा दिया था जिससे इन्हें विन्ध्यगुरु भी कहते हैं। तारक तथा दूसरे असुरों द्वारा पीड़ित संसारका कष्ट देखकर एक वार यह समुद्रको चुल्लूमें भरकर पी गये थे जिससे इनका नाम "समुद्रचुलुक" और "पीताब्धि" भी पड़ गया। पुराणोंमें इन्हें कहीं-कहीं पुलस्त्यका पुत्र भी कहा गया है—दे० अगस्त्य ३। यह वहुत प्रसिद्ध गोत्रकार ऋपि हो गये हैं जिनकी ऋग्वेदमें कई ऋचाएँ मिलती हैं।

दक्षिणके तामिल साहित्यमें अगस्त्यका एक प्रधान स्थान है। डाक्टर कॉडवेलके अनुसार और भाग० ६.१८.५; ब्रह्मां० ४.५.३८ तथा मत्स्य० ६१.२१-३१; २०१.२९; २०२.१ के अनुसार यह वशिष्ठ ऋपिके भाई होते थे। कहते हैं इन्होंने लंकामें अपना घर वनवाया था। अपनी स्त्री लोपामुद्राके साथ मलयगिरिपर वहुत दिनोंतक इन्होंने घोर तपस्या की थी। इनका रंगश्वेत तथा हाथ चार थे। अक्षमाला और कमण्डलुसे युक्त ही घटसे उत्पन्न हुए थे। इन्होंने अजामिलकी कथा कही थी (भाग० ६.३.३५; मत्स्य० ६१.१७; ३६.-४१; ब्रह्मां० ३.५६.५३)। पुराणानुसार यह श्री रामके अभिपेकके समय वहाँ उपस्थित थे (विष्णु० ४.४.९९)। नागराज शेपसे इन्होंने "कृष्णप्रेमामृतम्" स्तोत्र सुना था जिसकी दीक्षा इन्होंने परशुरामको दी थी। भक्तिके तीनों रूप तथा उसकी विशेपताओंका उपदेश भी परशुरामको दिया

था (ब्रह्मां० २.३२. ११९; ३.३४.५०; ३५.३४,४१-४८; ३६.१-५९, ३७.२;५३.२३)। वैखानसमें दक्ष, ब्रह्मिष्ठ, तथा वैदिक ज्ञानके पूर्ण पण्डित यह एक देवऋषि थे (मत्स्य० १४५.९३,११४)। अगस्त्य एक बार इल्वलके अतिथि हुए जिसने इन्हें अपने भाई वातापिका मांस खिलाया—(दे० इल्वल, आतापि, वातापि); भाग० ६.१८,१५। देशाटन करते जब यह काँची पहुँचे, वहाँ इन्होंने कामाक्षी तथा एकाम्रशिवकी स्तुति की। यहाँ चिर काल तपस्या कर इन्हें हयग्रीव विष्णुके दर्शन हुए जिनसे जनताकी अज्ञानता दूर करनेके उपाय मिले। हयग्रीवसे ये शक्तिके रहस्यका भेद जान सके ब्रह्मां०४.५.३-२९; ६.१; ३९.७। त्रिपुरका नाश करनेके लिए शिवकी प्रशंसा की। मत्स्य० ११३.६७ तथा मत्स्य० ६१.४४-५५ के अनुसार जो अगस्त्यकी उपासना करता है वह सातों लोकका स्वामी होता है। (२) भादोंके महीनेमें सिंहके सूर्यपर उदय होनेवाला एक प्रसिद्ध तारा। यह दक्षिणमें निकलता है और उत्तरके निवासी इसे नहीं देख पाते। इसके उदय होनेके पश्चात् वर्षा ऋतुका अंत समझा जाता है—'उदित अगस्त्य पंथ जल सोखा'—तुलसी रामायण किष्किंधा का० दो० १५ (चौ० २)। यह लुब्धक तारासे ३५° दक्षिणपर उदित होता है। यह जब तक अस्त रहता है तब तक विवाह आदि शुभ कर्म स्थगित रहते हैं। इसे अँगरेजीमें कनोपस कहते हैं (ब्रह्मां० २.२१.१०१; वायु० ५०.१५५)। (३) पुलस्त्य तथा हविर्भूके पुत्र। ये पूर्व जन्ममें दहर—अग्नि तथा महातपस्वी विश्रवस् थे (भाग० ४.१.३६)। (४) श्रीकृष्ण और श्री बलरामके समकालीन एक ऋषि जो मलयगिरिपर रहते थे। बलराम इनसे भेंट करने गये थे (भाग० १०.७९.१७)। यह कृष्णसे मिलने स्यमंतपंचक आये थे भाग० १०.८४.५। (५) मलयध्वज पाण्ड्यकी प्रथम पुत्री धृतवृता इन्हें ब्याही थी जिससे दृढ़च्युत नामका इनका एक पुत्र था (भाग० ४.२८.३२)। पाण्ड्यवंशोत्पन्न राजा इन्द्रद्युम्नको शाप दे इन्होंने हाथी बना दिया था (भाग० ८.४.९-१०)। (६) एक पहाड़ विशेपका नाम (मत्स्य० १२४.९६)। (७) गर्भके पुत्र; तत्पश्चात् दत्तालि नामसे जन्म (वायु० २८.२२; विष्णु० १.१०.९)। इनका निवास महामलयपर लिखा है। (वायु० ४८.२३)। यह उद्यन्तक पहाड़ ले आये थे, इस कार्यमें इनकी पत्नीने इनकी सहायता की थी (वायु० १०८.४४,५३)।

अगस्त्यकुंड—पु० [सं०) यह उद्यंतक पर्वतमालाके बीच स्थित है जहाँ आठ ऋषियोंने कठिन तपस्या कर मोक्ष प्राप्त किया था (वायु० १०८.४५)।

अगस्त्यकूट—पु० [सं०] दक्षिण मद्रासका एक पर्वत जिससे ताम्रपर्णी नदी निकली है—दे० मानचित्र।

अगस्त्यगृह—[सं०] कुञ्जर नामका पहाड़ जिसे हिरण्यकशिपुने नष्ट-भ्रष्ट कर डाला था (मत्स्य १६२-७८)।

अंगस्त्यपद—पु० [सं०] गयाजीमें स्थित एक तीर्थ स्थान जिसका उल्लेख पुराणोंमें है (वायु० १०९.१९;१११.५३; विष्णु० २.८.८५)।

अगस्त्यभवन—पु० [सं०] दे० अगस्त्यमुनि—(मत्स्य० १६३.७४)।

अगस्त्यमुनि—पु० [सं०] केदारनाथके मार्गमें समुद्रसे ३००० फुटकी ऊँचाईपर स्थित एक स्थान जहाँ अगस्त्य ऋषिका एक आश्रम था। यहाँ हवाई जहाजका एक अड्डा भी है—वि० दे० (मत्स्य० १६२.७४)।

अगस्त्येश्वर—पु० [सं०] नर्मदा क्षेत्रमें स्थित एक तीर्थ जहाँ स्नान, दान तथा शिवलिङ्गको घृतस्नान करानेका बड़ा माहात्म्य है (मत्स्य० १९०.१५-१८)।

अगिया—पु० [सं०] महाराज विक्रमादित्यके दो बेतालोंमेंसे एक बेतालका नाम। दे० अगिया-कोइलिया, कथासरित्सागर तथा बेतालपचीसी।

अगिया-कोइलिया—पु० [सं०] महाराज विक्रमादित्यके दो प्रसिद्ध बेताल जिन्हें महाराजने मंत्र द्वारा सिद्ध किया था और स्मरण करते ही उनकी सेवामें उपस्थित हो जाते थे—दे० बेतालपचीसी तथा कथासरित्सागर।

अगियाबेताल—पु० [सं० अग्नि] [संस्कृत अग्नि=प्राकृत अग्गि+बेताल] विक्रमादित्यके दो बेतालोंमेंसे एक। दे० अगिया।

अग्नायी—स्त्री० [सं०] अग्निकी स्त्रीका नाम। स्वाहाका नाम।

अग्नि—स्त्री० [सं०] (१) पंच महाभूतोंमेंसे एक। 'क्षिति जल पावक गगन समीरा' ये पंचमहाभूतोंके नाम हैं। इसे हुताशन, हव्यवाहन और वह्नि भी कहते हैं (भाग० १.१५.८; ब्रह्मा० ३.१०.२४-३५)। सरस्वती क्षेत्रमें अग्निका एक विशेप पवित्र स्थान है जहाँ विदुरजी गये थे (भाग० ३.१.२२), संसारको वरदान तथा शाप देनेवाले देवताओंमेंसे एक (भाग० ४.१४.२६-२७) तथा (ब्रह्मां० ३.७.३५२)। शिशुमारकी पूँछपर इनका निवास माना गया है (भाग० ५.२३.५; ब्रह्मां० २.३.१०४)। यह सत्त्वप्रधान है, रजोगुण और तमोगुणका इनमें स्पर्श नहीं है फिर भी भगवान्‌की मायासे स्पृष्ट होनेके कारण हरि भगवान्‌की इच्छा तथा कार्यका सही भान नहीं हो पाता (भाग० ६.३.१४.१५)। यह संसारके अभिभावक यानी लोकपाल कहे गये हैं (भाग० ८.१०.२६)। इन्हें सर्वदेवमय हरिका मुख कहा गया है (भाग० ८.१६.९)। ब्राह्मणके अन्यायपूर्वक लिये गये धनको अति तेजस्वी अग्नि भी पचा नहीं सकते (भाग० १०.६४.३२)। उमाशंकर संबंधमें विघ्न डालनेके कारण इन्होंने एक बार गंगा द्वारा वहन किया शंकरका वीर्य निगल लिया था, पर उसे हजम न कर सके और एक सरकाननमें उगल दिया जहाँसे कुमार कार्त्तिकेयका जन्म हुआ (भाग० ४७.६४; ६६.१४; ब्रह्मां० ४.१५.२१; २०.४६; २६.५३)। इन्होंने महाराज पृथुको "आजगव" धनुष प्रदान किया था (भाग० ४.१५.१८)। दक्ष प्रजापतिकी एक कन्यासे इनका विवाह हुआ था (भाग० ४.१.४८)—दे० 'स्वाहा'। 'कुशद्वीप'में इनकी उपासना होती है (भाग० ५.२१.१६)। स्वारोचिष मनु (दूसरे मनुका नाम) इनके पुत्र कहे गये हैं (भाग० ८.१.१९)। देवासुर संग्राममें यह पुलोमासे लड़े थे (भाग० ८.१०.३१)। श्रीकृष्ण जब स्वर्गसे पारिजात ले आये थे, तब इन्द्रकी सेनाके साथ यह भी थे, पर कृष्ण द्वारा परास्त होनेपर यह रणक्षेत्रसे भाग निकले थे (विष्णु० ५.३०.६२;६६ (५).२७.२३)। द्वारकाके एक ब्राह्मणके मृत पुत्रको ढूँढ़ते हुए इन्द्र इनकी नगरीमें गये थे (भाग० १०.८९.४४)।

(२) वेदोक्त अग्नि, वायु और सूर्य इन तीन देवताओंमेंसे एक। ऋग्वेदका प्रादुर्भाव अग्निसे ही माना गया है। अग्निकी सात जिह्वाएँ मानी गयी हैं जिनके नाम ये हैं—"काली, कराली, मनोजवा, सुलोहिता, धूम्रवर्णा, उग्रा और प्रदीप्ता (बृहत्संहिता)। हर ग्रंथमें नाम भिन्न-भिन्न मिलते हैं, पर संख्यामें भेद नहीं मिलता—मुंडकोपनिषद् तथा बृहत्संहिता—दे० 'अग्निजिह्वा' १। इस देवताको हिन्दू लोग दक्षिण-पूर्व कोण (अग्निकोण) का अधिपति मानते हैं। यह आठ लोकपालोंमेंसे एक है। पुराणानुसार यह वसुसे उत्पन्न धर्मका पुत्र है। 'स्वाहा' इसकी पत्नी है जिससे पावक, पवमान और शुचि अग्निके तीन पुत्र हुए (भाग० ४.१.६०)। इन तीनोंके चौवालीस पुत्र माने गये हैं (मत्स्य ५१.६)। वायु पुराणानुसार ४९ अग्नि माने गये हैं। (३) त्रिपुरमें बच्चों तथा स्त्रियोंको जला इन्होंने भस्म कर दिया (मत्स्य० १८८.२९-५७)। मत्स्यपुराणके ५१वें अध्यायमें अग्निकी वंशावली दी हुई है (दे० महाभारत)। भागवत पुराणानुसार भी ४९ अग्नि हैं—दे० अग्नि २ यज्ञोंमें इन सबकी पूजा होती है। ब्रह्मां० २.२४.६; २१.५३.५६ तथा वायु० ५३.५ के अनुसार अग्निके ये भेद माने गये हैं—दिव्य, भौतिक या अब्योनि और पार्थिव। (४) यह वसुओंमें एक हैं तथा इनकी पत्नीका नाम वसोर्धारा लिखा है। द्रविणक आदि इनके पुत्र कहे गये हैं (भाग० ६.६.११-१३)। अग्निको हरिका ही रूप माना गया है (भाग० ११.१६.१३; मत्स्य० ८.४)। (५) इनका विवाह विकेशीसे हुआ था। ये ऊर्ज जातिकी अप्सराओंके पिता कहे गये हैं। बलवान् नल वानरश्रेष्ठ कनकविन्दुके क्षेत्रमें उत्पन्न इन्हींके पुत्र थे जो बादमें नक्षत्र बन गये (ब्रह्मां० २.२४.९१; ३.७.२१.२२९)। (६) तामस नामके चौथे मन्वन्तरके सात प्रसिद्ध ऋषियोंमेंसे एक (ब्रह्मां० २.३६.४७; मत्स्य० ९.१५; वायु० ६२.४१)। (७) आग्नेयी और ऊरुके एक पुत्र, इनकी पुत्री सुच्छायाका विवाह शिष्टसे हुआ था जो ध्रुवका लड़का था (मत्स्य० ४.-३८.४३; १९६.९)। (८) अग्नि उर्फ ऋतु (ब्रह्मां० २.१३.-२३) के अनुसार यह संवत्सरके पुत्र थे। दक्ष प्रजापतिकी स्वाहा नामकी पुत्रीसे इनका विवाह हुआ था (वायु० १.७६; ब्रह्मां० २.९.५६; १२.१)। (९) ४९ मरुतोंमेंसे एकका नाम (मत्स्य० १०.५२)। (१०) स्वायंभुव अन्तरमें उत्पन्न ब्रह्माके सबसे बड़े मानसपुत्र (वायु० २९.१; विष्णु० १.-१०.१४)। महादेवके आठ तनुओंमेंसे एक (वायु० २७.-३५)। इनसे ४९ अग्निकी उत्पत्ति हुई (विष्णु० १.१०.-१५-७)। (११) (भूतपति)—गंधर्वलोक प्राप्त करनेके हेतु त्रेता युगमें 'ऐल'ने अग्निके तीन खण्ड किये। यज्ञ करनेके लिए गन्धर्वोंके द्वारा इन्हें एक अग्निपात्र मिला। अरणिपर धरते ही इसमेंसे एक अश्वत्थ निकला। गन्धर्वोंके आदेशानुसार इसमेंसे अग्नि निकले। उनके तीन भाग कर उन्होंने विविध यज्ञ किये और गन्धर्वलोक पाया (वायु० ९१-४८; १०१.२१)। (१२) दे० अनिल (विष्णु० १.१५.११४)। (१३) एक महापुराणका नाम (आग्नेय) (विष्णु० ३.६.२२)।

अग्निका—स्त्री० [सं०] विक्रान्तकी तीन कन्याओंमेंसे एकका नाम। गन्धर्वोंके आग्नेयगणोंकी उत्पत्ति इसीसे हुई (वायु० ६९.२१-२३)।

अग्निकुंड—पु० [सं०] (१) अग्निका वह कुण्ड जिसमेंसे निर्गत होकर भगवान् शिवने दक्षको दर्शन दिया था (वायु० ३०.-१७२)। (२) ब्रह्माका अग्निकुण्ड जिससे तिलोत्तमा प्रकट हुई थी (वायु० ६९.५९; दे० तिलोत्तमा)।

अग्निकुमार—पु० [सं०] कार्त्तिकेय। षडाननका एक नाम—दे० कार्त्तिकेय।

अग्निकुल—पु० [सं०] ऋषियोंके तपमें दैत्य लोग स्वभावानुसार विघ्न डालने लगे जिसके निवारणार्थ इन लोगोंने वशिष्ठजीकी अध्यक्षतामें आबू पर्वतपर एक यज्ञ किया। यज्ञकुण्डसे एक-एक करके चार पुरुष उत्पन्न हुए जिनसे प्रमार, परिहार, चालुक्य या सोलंकी और चौहान ये चार वंश चले और इन क्षत्रियोंका कुल अग्निकुल माना गया।

अग्निकेतु—पु० [सं०] (१) शिवका एक नाम। (२) रावणकी सेनाका एक राक्षस विशेष—रामायण।

अग्निकोण—पु० [सं०] दश दिशाओंमेंसे एक जो दक्षिण-पूर्वका कोण माना गया है। इसका अधिपति अग्नि है, अतः यह नाम पड़ा—दे० अग्नि २।

अग्निक्षेत्र—पु० [सं०] जनकपुरका वह स्थान जहाँसे सीता प्रकट हुई थीं (वायु० ८९.१७)।

अग्निचक्र—पु० [सं०] योगशास्त्रानुसार शरीरके भीतर छः चक्र माने गये हैं। यह चक्र दोनों भृकुटियोंके मध्यमें स्थित है। इसका रंग बिजलीके सदृश है और परमात्मा इसके देवता हैं। इस चक्रमें स्थित कमल केवल दो दलोंका है और "ह" और "क्ष" इसके दो अक्षर हैं—योग-दर्शन।

अग्निजिह्वा—स्त्री० [सं०] (१) अग्निदेवकी सात जिह्वाएँ। मुण्डकोपनिषद्के अनुसार इनके नाम ये हैं:—काली, कराली, मनोजवा, लोहिता, धूम्रवर्णा, स्फुलिंगिनी और विश्वरूपिणी। परन्तु बृहत्संहितामें स्फुलिंगिनी और विश्वरूपिणीके स्थानपर क्रमशः उग्रा और प्रदीप्ता नाम दिया है। (२) महातल (नीचेके लोकोंमें पाँचवाँ) में निवास करनेवाला एक दैत्य (अग्निजिह्व) (ब्रह्मां० २.२०.३६; वायु० ५०.३५)। (३) एक त्र्यार्षेय प्रवर विशेष (मत्स्य० १९६.४३)।

अग्निज्वाल—पु० [सं०] एक नरकका नाम जहाँ ऋषियोंके आश्रमकी शान्ति भंग करनेवाले जाते हैं (ब्रह्मां० ४.२.१४९, १७४) जो ऋषि आश्रमोंके नियम तोड़ते हैं या अनियमित जीवन व्यतीत करते हैं, उन्हें भी यहीं जाना पड़ता है (वायु० १०१.१४८, १७१)।

अग्नितीर्थ—पु० [सं०] (१) यमुना नदीके दक्षिण तटपर स्थित एक तीर्थ (मत्स्य० १०८.२७)। (२) स्कन्दपुराणानुसार गन्धमादन पर्वतपर स्थित एक तीर्थ जहाँ श्री रामने रावणको मार कर विभीषणको राजा बना अग्निका आवाहन किया था। यहीं अग्निदेव प्रकट हुए थे (स्कन्द० ब्राह्म-खण्ड, सेतु-माहा०)।

अग्नितेजस्—पु० [सं०] धर्मसावर्णि नामक ग्यारहवें मन्वन्तरके समयके सप्तर्षियोंमेंसे एक ऋषिका नाम (विष्णु० ३.२.३१)।

अग्निपरीक्षा—स्त्री० [सं०] पुराणोंमें अग्निपरीक्षाके कई उदाहरण मिलते हैं। प्राचीन कालमें किसी अपराधीको आगपर चला कर परीक्षा लेते थे। निर्दोष व्यक्तिका आगसे कुछ नहीं बिगड़ता था और वह निष्कलंक घोषित होता था। जानकी-

जीकी भी अग्निपरीक्षा इसी विश्वासके कारण हुई थी—दे० सीतासरोवर, रामायण, स्कन्द० ब्राह्मखण्ड सेतु-मा० ।

विशेष :—उड़ीसामें कटकसे ३० मील दूर महानदीके किनारे चर्चिका देवीके मन्दिरमें प्रत्येक वर्ष वैशाखके पहले दिन एक मेला लगता है जिसे झामू-यात्रा या अग्नि-उत्सव कहते हैं। इसमें अनेक साधारण मनुष्य दहकते हुए अंगारोंपर नंगे पैर सौ-सौ गजतक चलते हैं। चलनेसे उनके पैरमें न तो फफोले ही पड़ते हैं और न किसी प्रकारके जलनेके चिह्न ही दीखते हैं। आगपर चलनेवालोंका मन्दिरसे कोई सम्बन्ध नहीं रहता तथा तन्त्र-मन्त्रादिसे भी वे अनभिज्ञ ही रहते हैं। आजकलके वस्तुवादी युगमें अंगारोंपर चलना वह भी नंगे पैर विस्मयकारी नहीं तो और क्या है। जिस व्यक्तिकी इच्छा देवीकी कृपासे पूर्ण होती है वही मनौतीको पूर्ण करनेके हेतु आगपर चल सीधे देवी (चर्चिका देवी) के समीप जा प्रण पूर्ण होनेकी सूचना देवीको दे आशीर्वाद माँगता है। भक्त लोग इसे चर्चिका देवीकी महिमा कहते हैं, क्योंकि अंगारोंपर चलनेवाले झामुआ (जिस व्यक्तिकी इच्छा पूर्ण हुई है और जिसने अग्निपर चलनेकी प्रतिज्ञा की हो) के पैरोंकी डाक्टरी परीक्षा भी करायी जा चुकी है। और जलनेका कोई चिह्न नहीं मिल सका है।

अग्निपुराण—पु० [सं०] अट्ठारह पुराणोंमेंसे एक अर्थात् (विष्णुपु० के अनुसार) आठवाँ पुराण, जिसमें अग्निदेवने पहले-पहल महर्षि वशिष्ठसे ईशान-कल्पका वर्णन किया है; इसीसे इसका यह नाम पड़ा (भाग० १२.७.३२)। इसमें लगभग १६००० श्लोक हैं। इसमें शिवमाहात्म्यका वर्णन अधिक है (मत्स्य० ५३.२८-३०)। भाग० १२.७.२३; १३.५ के अनुसार इसमें १५४०० श्लोक हैं—वि० दे० विष्णु० ३.६.२२। कर्मकाण्ड,राजनीति, धर्मशास्त्र तथा छन्दशास्त्रादि अनेक फुटकर विषय भी इसमें दिये गये हैं।

अग्निप्रवेश—पु० [सं०]—ब्रह्मां० २.४७.८२ के अनुसार पतिके मरनेपर स्त्रीका चिताप्रवेश करना।

अग्निप्रस्कंदन—पु० [सं०] एकप्रकारक उदररोग 'डायरिया'। महाराजा ययातिके शापसे उनके पुत्र अनु इसी रोगसे ग्रसित हुए थे (मत्स्य० ३३.२४)।

अग्निबाण—पु० [सं०] यह मन्त्रकी सहायतासे चलाया जाता है, जिससे अग्निकी वर्षा होती है। राम-रावण युद्ध तथा लव-कुश युद्धमें इस बाणका प्रयोग हुआ था—रामायण-लंकाकाण्ड—दो० ४६, चौ० २।

अग्निबाहु—पु० [सं०] (१) स्वायंभुव मनुके दस पुत्रोंमेंसे एकका नाम (ब्रह्मां० २.१३.१०४; मत्स्य० ९.४)। (२) प्रजापतिके दस पुत्रोंमेंसे एक (ब्रह्मां० २.१४.९)। (३) भार्गव भौत्य मनु (चौदहवें मनु) के पुत्र। भौत्य मन्वन्तरके एक प्रसिद्ध ऋषिका नाम (ब्रह्मां० ४.१.११३; वायु० १००.११६)। (४) प्रियव्रतके पुत्रका नाम (विष्णु० २.१.७)। इन्हें राजनीतिमें अरुचि थी, अतः योग-साधन करने लगे (विष्णु० २.१.९)। चौदहवें मन्वन्तरके ये एक प्रसिद्ध ऋषि थे (विष्णु० ३.२.४४)।

अग्निभाव—पु० [सं०] एक अमिताभ देवका नाम (ब्रह्मां० २.३६.५३)।

अग्निभास—पु० [सं०] चारिष्णव अन्तरके अन्तर्गत वशिष्ठ प्रजापतिके चौदह पुत्रोंमेंसे एकका नाम (वायु० ६२.४६)।

अग्निभू—पु० [सं०] स्वामी कार्तिकेयका एक नाम—दे० कार्तिकेय।

अग्निमंत्र—पु० [सं०] राज्यपर आनेवाली विपत्तियोंके निवारणार्थ हवन, यज्ञादिमें उच्चारण किये जानेवाले मन्त्रविशेष (मत्स्य० २३०.११)।

अग्निमाढ़क या अग्निमाठर—पु० [सं०] वाष्कलके एक शिष्यका नाम, जिन्हें ऋग्वेदकी द्वितीय शाखाकी शिक्षा मिली थी—वायु० ६०.२६; विष्णु० ३.४.१८।

अग्निमातृ—स्त्री० [सं०] वाष्कल आचार्यके एक दूसरे शिष्यका नाम। यह भी ऋग्वेदकी एक शाखाके अधिकारी थे (ब्रह्मां० २.३४.२७)।

अग्निमारुति—पु० [सं०] अगस्त्य ऋषिका एक नाम— हि० श० सा०; अगस्त्य।

अग्निमित्र—पु० [सं०] (१) पुष्यमित्र, जो बृहद्रथका सेनापति था और अपने स्वामीको मार कर स्वयं राजा बन बैठा, का एक पुत्र तथा सुज्येष्ठका पिता (भाग० १२.१.१६ विष्णु० ४.२४.३४-३५)। इसने आठ वर्षोंतक राज्य किया (ब्रह्मां० ३.७४.१५१)। (२) वाष्कल ऋषिके एक शिष्यका नाम (भाग० १२.६.५४)।

अग्निमुख—पु० [सं०] एक असुरका नाम, जिसका निवास नीचेके लोकोंमें तीसरे लोकमें (तृतीय तलमें) है (ब्रह्मां० २.२०.२६)।

अग्निर्बाहु—पु० [सं०] चौदहवें मनुके मन्वन्तरके एक ऋषिका नाम=अग्निबाहु (भाग० ८. १३.३४)।

अग्निलिंग—पु० [सं०] मत्स्य० ५३.३७-८ के अनुसार इसीके मध्यसे महेश्वरने लिंगपुराण कहा था।

अग्निवर्चस—पु० [सं०] एक ऋषिका नाम (ब्रह्मां० २.३५.६४)। यह व्यासशिष्य रोमहर्षणके शिष्य थे (विष्णु० ३.६.१७)।

अग्निवर्ण—पु० [सं०] इक्ष्वाकु वंशके एक राजाका नाम, जो सुदर्शनका पुत्र तथा ध्रुवसन्धिका पौत्र तथा पुष्पका प्रपौत्र था (विष्णु० सूर्यवंशी वंशवृक्ष ४.४.१०८)।

अग्निविद्या—पु० [सं०] मन्त्रोक्त अग्निकी उपासना विधि, जो प्रातःकाल और सायंकाल होती है। छांदोग्य उपनिषद्के अनुसार सूर्य, बादल, पृथ्वी, पुरुष और सती सम्बन्धी विज्ञानको ही पञ्चाग्नि विद्या कहते हैं। छांदोग्य उपनिषद्।

अग्निविश्वरूप—पु० [सं०] केतुताराओंका एक भेद जो संख्यामें कुल १२० कहे गये हैं (बृहत्संहिता)।

अग्निवेष्य, अग्निवेश्य—पु० [सं०] (१) देवदत्तके पुत्र एक प्राचीन ऋषि जो अग्निके अवतार कहे गये हैं। यह आयुर्वेदके ज्ञाता थे और इसके आचार्य माने जाते हैं। इन्हें कानीन या जातुकर्ण्य भी कहते हैं। यह अग्निवेश्यायनके ब्राह्मण कुलके प्रवर्तक कहे गये हैं (भाग० ९.२.२१-२२; ब्रह्मां० ३.४७.४९); त्र्यार्षेय प्रवर विशेष (मत्स्य० १९५-१२)। (२) शूलीके पुत्र जो २४वें द्वापरमें थे (वायु० २३.२०७)।

अग्निव्रत—पु० [सं०] एक वैदिक ऋचाका नाम।

अग्निशर्मन्—पु० [सं०] ब्रह्माके यज्ञके एक मानस ऋत्विक्। अपने मुँहसे इन्होंने पाँच अग्नि निकाले थे (वायु० १०६.-

३३-४१)।

अग्निशर्मायण–पु० [सं०] कश्यप गोत्रके एक गोत्रकारक ऋषि (मत्स्य० १९९.७)।

अग्निष्टुत्–पु० [सं०] (१) एक ही दिनमें पूरा हो जानेवाला एक यज्ञ। इसका आविष्कार ब्रह्माने किया था (भाग० ३.१२.४०)। (२) चाक्षुष मनुके नड्वलामें उत्पन्न ९ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (ब्रह्मां० २.३६.७९,१०६; मत्स्य० ४.४२; वायु० ६२-६७, ९१)।

अग्निष्टोम–पु० [सं०] (१) स्वर्ग प्राप्त करनेकी इच्छासे किया जानेवाला एक प्रकारका यज्ञ, जिसकी उत्पत्ति ब्रह्माके पहले मुखसे हुई, जिसे प्रायः अग्निहोत्री ब्राह्मण ही कर सकते हैं। इसमें ऋत्विज् १६ हैं और इसकी पूर्णाहुति पाँच दिनोंमें होती है (ब्रह्मां० २.८.५०; वायु० ९.४९; वि० १.५.५३)। इससे पितृगणका मान बढ़ता है और वे सन्तुष्ट रहते हैं। यह यज्ञ वालीने किया था (ब्रह्मां० ३.७.२६८; ११.४३; १५.११)। इस यज्ञमें पशुवलि आवश्यक है (मत्स्य० ५३.-३३; ५८.५३; २३९.३०)। (२) चाक्षुप मनु और नड्वलाके एक पुत्र (भाग० ४.१३.१६; विष्णु० १.१३.५)।

अग्निष्वात्त–पु० (सं०) एक पितृगणका नाम जिसका निवास वैवस्वतकी दिशामें कहा गया है। इनकी पत्नीका नाम स्वधा है (भाग० ४.१.६३; ५.२६.५; विष्णु० १.१०.१८; २.१२.-१३; ब्रह्मां० २.१३.६; वायु० ७३.२; ११०.१०)। वे अयज्वा यानी अनाहिताग्निगृहस्थ कहे गये हैं (ब्रह्मां० २.१३, ६-७; २३.७५-७७; २८.४, १६, १९, २०, ७३; वायु० ३०.६.-२७; ५२.६७-८; ५६.१३-१५, ६८; ७३.२-४)। जो पितृगण विरज लोकमें निवासकरते थे उनकी पीवरी नामकी मानस पुत्रीका विवाह व्यास-पुत्र शुकदेवसे हुआ (ब्रह्मां० ३.१०.-७५-८०)। मेना नाम्नी इनकी मानस पुत्री हिमवान्‌को व्याही गयी (वायु० ३०.२७-९, ३१; ५६.१३, ६८; विष्णु० १.-१०.१९; ब्रह्मां० २.१३.३१)। हिमवान् अन्य पितृगणका राजा कहा गया है (मत्स्य० १४.२; १८.२१; १९.५; १०२.-२०; १२६.६९; १४१.४, १३ और १६)।

अग्निसंभवा–स्त्री० [सं०] एक कन्याका नाम जो ऊर्जाके गर्भसे उत्पन्न मनुकी कन्या थी (वायु० ६९.५४)।

अग्निसंस्कार–पु० [सं०] मृत्युके उपरान्त शवको शास्त्रोक्त विधिसे भस्म करनेकी क्रिया ('अन्त्येष्टिकर्मपद्धति'-आश्चर्यनाथ पाण्डेयकृत।

अग्निसखा–पु० [सं०] अग्निको प्रज्वलित करनेवाला उसका सहायक—पवनदेवका एक नाम—वि० दे० पवनदेव, अग्नि।

अग्निसाक्षिक–वि० [सं०] हिन्दूशास्त्रानुसार अग्निको साक्षी मानकर कही गयी बातें अटल समझी जाती हैं। विवाहमें वर-कन्या अग्निको ही साक्षी देकर आमरण आवद्ध रहनेकी प्रतिज्ञा करते हैं (विवाहपद्धतिः, चतुर्थीलालकृत)।

अग्निसोमयमाप्यायन–पु० [सं०] अग्नि, सोम और यमको श्राद्धमें 'आप्यायन' अर्पण करनेकी क्रिया, उसका स्थान निश्चित है। अग्निमें, विप्रयाणिमें अथवा जलमें (मत्स्य० १५.३२; १६.३३)।

अग्निहोत्र–पु० [सं०] (१) वेदमन्त्रानुसार यज्ञ करनेकी क्रिया जो नित्य और नैमित्तिक दो प्रकारकी होती है। इस प्रकारका हवन करनेवाले ब्राह्मणोंको अग्निहोत्री कहते हैं (अग्निहोत्रचन्द्रिका–वामनशास्त्री विरचित)। (२) सविताके गर्भसे उत्पन्न इन्हें पृश्निका पुत्र माना गया है (भाग० ६.-१८.१)। यह एक वैदिक यज्ञ है (भाग० ३, १३, ३७), जिसे भरतने किया था (भाग० ५.७.५; तथा ७,१५,४८) में इसकी विशेषताओं और प्रभावका उल्लेख है। इसके करनेवाले पितृयान मार्गसे परलोक प्रयाण करते हैं, जिसका फल पुनर्जन्म है (ब्रह्मां० २.२१.१६०; ३०.१३; ३.१४. २; २६.१४; ३५.४४; ४४.५; ६६.२; मत्स्य० १२४.९८)। इसे शुक्रने तथा अजमीढ़की निःसन्तान पत्नी धूमिनीने किया था (मत्स्य० ११.५८; २५. ३४; ५०.१८; १०७. १६; १८३.८१)। पुरूरवाने भी यह यज्ञ किया था (वायु० ९१.-२; १०७.१८; ७७.९)। इसका फल एक बार विष्णुपुराण सुननेके बराबर होता है (विष्णु० ६.८.३०)।

अग्नीध्र (अग्निध्र)–पु० [सं०] (१) धिष्णियोंमें उत्पन्न नदीपुत्र अग्नि विशेष जो धिष्णि कहे जाते हैं (ब्रह्मां० २. १२.२०; वायु० २९.१८.२६)। (२) स्वायंभुव मनुके दस पुत्रोंमेंसे एक राजाका नाम। यह जम्बूद्वीपका राजा था (वायु० ३१.१७; ३३.९-११)। (३) प्रियव्रतका पुत्र—दे० आग्नीध्र।

अग्नीपोमविधिज्ञ–पु० [सं०] शिवकी विशेषता, अग्निसोमसे लक्ष्य ब्राह्मणका है (ब्रह्मां० ३.७२.१८८; ४.४३.७६)।

अग्न्याधानक्रिया–स्त्री० [सं०] पर्वसन्धियोंपर प्रारम्भ होनेवाले वैदिक कृत्य (मत्स्य० १४१.३२)।

अग्र्य–पु० [सं०] पातालका एक भाग जहाँकी मिट्टी सुनहली है (विष्णु० २.५.२, ३)।

अघ—पु० (सं०) श्रीकृष्णके मामा मथुरापति कंसके सेनापतिका नाम। यह रूप बदलकर कृष्ण, उनके साथी तथा पशुओंको मारने वृन्दावन गया था। इसके मुखको भूभाग समझ सब ग्वालवाल इसके मुखमें प्रवेश कर गये थे। श्रीकृष्णने इसका गला रोध कर इसे मार डाला था। यह अघासुर नामसे विख्यात था। इसे मोक्ष प्राप्त हुआ था (भाग० १०.१२. १३-३८; १३.४; १४.६०)।

अघमर्पण–पु० [सं०] (१) ऋग्वेदका एक मन्त्र जिसका उच्चारण पाप-मुक्त होनेके लिए सन्ध्यावन्दनके समय करते हैं। (२) विन्ध्याचलकी तलहटीमें स्थित एक तीर्थस्थान जहाँ दक्षने तपस्या कर विष्णुको प्रसन्न किया था (भाग० ६.४.-२१, ३५)। (३) विश्वामित्रके वंशज एक ऋपि (ब्रह्मां० २.-३२.११७; मत्स्य० १४५.११२, १९८.१२)।

अघविनाशिनी–स्त्री० [सं०] एक देवीका नाम, जिनकी अन्धकासुरके रक्तपानके लिए शिवजीने सृष्टि की, उनमेंसे एक (मत्स्य० पु० १७९.२८)।

अघासुर–पु० [सं०] दे० अघ।

अघोर–पु० [सं०] (१) ३२वें कल्पमें महेश्वरका स्वरूप जो बिल्कुल काला कहा गया है (वायु० २३. २९, ७६)। (२) एक पंथ जिसके अनुयायी मांस-मदिरा अधिक सेवन करते हैं और नरमांस, मल-मूत्रादिसे भी घृणा नहीं करते। ये लोग बड़े सिद्ध पुरुप होते हैं। कीनाराम इस मतके प्रसिद्ध महात्मा हुए हैं। इस सम्प्रदायके लोग अघोरी कहलाते हैं। (३) हिरण्याक्षकी सेनाका एक असुर जिसका वध कार्त्तिकेयने किया था (पद्म० सृष्टि ७५)।

अघोरकल्प–पु० [सं०] मत्स्यपुराण ५३.३१ के अनुसार इसका विवरण भविष्यपुराणमें है।

अचल–पु० [सं०] (१) पहाड़ोंकी विशेषता तथा नाम (ब्रह्मां० २.७.११)। (२) "किरिचक्र"के प्रहरी रक्षक दस भैरव श्रेष्ठोंमेंसे एक भैरवका नाम (ब्रह्मां० ४. २०.८२)। (३) प्रत्यूषके पुत्र एक देवर्पिका नाम (वायु० ६१.८४)। (५) महानेत्रके पुत्रका नाम जिसने ३२ वर्षोंतक राज किया (मत्स्य० २७०.२८)।

अचलासप्तमी—स्त्री० [सं०] माघ शुक्ला सप्तमी जिसे सौर सप्तमी भी कहते हैं। यह पापनाशक, सौभाग्य तथा सौन्दर्यदायक तिथि है, इस दिन दान-पुण्यका वड़ा फल लिखा है। षष्ठीको एक वार भोजन और सप्तमीको उपवास कर सूर्यकी पूजाका विधान है। इस दिन प्रयाग त्रिवेणी स्नानका माहात्म्य है। इसे सर्वप्रथम वशिष्ठजीने चलाया था। सूर्यने मन्वन्तरके आदिमें इसी दिन अपना प्रकाश दिया था। सूर्यपूजा प्रधान होनेके कारण इसे अर्क, अचला, रथ, सूर्य या भानु सप्तमी भी कहते हैं। यह अरुणोदयव्यापिनी ली जाती है। इस दिन नमक और तेल वर्जित है।

विशेष :—महती सप्तमी = मत्स्यपुराणानुसार इस व्रतसे सात जन्मके पाप दूर होते हैं। यही रथसप्तमी भी है। पुत्रसप्तमी = आदित्यपुराणानुसार माघ शु० ६ को व्रत और सप्तमीको सूर्यका पूजन। इसी प्रकार कृष्ण पक्षमें भी। इससे उत्तम पुत्रकी प्राप्ति होती है–'व्रत परिचय, व्रतकल्पद्रुम'।

अचेतना–स्त्री० [सं०] मनुकी पत्नीका नाम (ब्रह्मां० ३.१.८२)।

अच्छ–पु० [सं०] दे० अक्ष।

अच्छावाक—पु० [सं०] (१) भुवःस्थानक अग्नि (वायु० २९.२८)। (२) पद्मपुराणके अनुसार ब्रह्माके पुष्करतीर्थके यज्ञके होताओंमेंसे एक ऋत्विक् (भवि०)।

अच्छुप्ता–स्त्री० [सं० अक्षुप्ता] एक देवीका नाम जो जैनियोंकी सोलह देवियोंमेंसे एक कही गयी हैं।

अच्छोद–पु० [सं०] चंद्रप्रभा पहाड़की तलहटीमें स्थित एक झीलका नाम (वायु० ४७.५.७; मत्स्य० १२१, ६-७)। पितृकन्या अच्छोदा यहीं उत्पन्न हुई थी और पुनः मत्स्य योनिमें उसका जन्म हुआ (वायु० ७७.७६-७७)। अद्रिका अप्सराका निवास स्थान यहीं था (वायु० ७३.३)।

अच्छोदा–स्त्री० [सं०] (१) अग्निष्वात्त पितृगणकी मानसी पुत्रीका नाम जिसके नामपर झीलका नामकरण हुआ। अपने पितरोंका पता बिना लगाये अमावसुको अपना पिता मान लेनेके कारण इसका योग-बल नष्ट हो गया। त्रसरेणु के रूपमें अपने पितरोंको देख उद्धार करनेकी प्रार्थना की। उनके अनुसार २८ वें द्वापरमें यह मत्स्य (अद्रिका) की पुत्री हुई। तदुपरांत महाराज शांतनुसे विवाह हुआ और विचित्रवीर्य तथा चित्रांगदकी माता बनी। इसके पश्चात् पितृलोकमें इसे अष्टक स्थान मिला। मछुएके घर इसका नाम मत्स्यगंधा, सत्यवती था (दे० मत्स्यगंधा)। ब्रह्मां० ३.१०.५४-७४; वायु० ७३.२-२१; मत्स्य० १४.२-१८ (२) अच्छोद झीलसे निकली एक नदी (वायु० ४७.५-७)।

अच्युत–पु० [सं०] (१) चाक्षुषमन्वन्तरके लेख-परिवार या देवसमूहके एक देवताका नाम (ब्रह्मां० २.३६.७५)। (२) जो अपने स्थानसे न गिरा हो अर्थात् विष्णुकी विशेषता (ब्रह्मां० २.३६.१७८; ४.२९.७१; ४३,७०; विष्णु० १.११.४३; मत्स्य० ४७.५; २४५.४९.२४६.३३-६०; २४८.३५)। (३) इसे प्रजापतिने पश्चिमदिशाके प्रदेशोंका स्वामी बनाया तथा यह प्रजापतिका पुत्र है। इसे केतुमान् भी कहते हैं (वायु० ७०.१७)।

अच्युतकुल–पु० [सं०] वैष्णवोंकी शिष्य परम्परा विशेषकर रामानन्दी संप्रदायके वैष्णव। विष्णुके आधारपर ये अपनेको अच्युतकुल तथा अच्युतगोत्रीय बतलाते हैं।

अच्युतगोत्र–पु० [सं०] दे० अच्युतकुल।

अच्युताग्रज–पु० [सं०] भगवान् विष्णुके बड़े भाई = इन्द्र या श्रीकृष्णके बड़े भाई बलरामका एक नाम। विष्णुपुराण

अछयकुमार–पु० [सं० अक्षयकुमार] दे० अक्षयकुमार।

अज–पु० [सं०] (१) जन्मके बंधनसे मुक्त होनेके कारण ब्रह्मा, विष्णु, शिव तथा कामदेवको अज कहते हैं (भाग० २.४.१९; वायु० ७३.६०; ९८, ५४)। (२) एक सूर्यवंशी राजाका नाम जो दशरथके पिता थे। वाल्मीकि रामायण के अनुसार राजा अज नाभागके पुत्र थे पर रघुवंश आदि ग्रंथोंमें अजको राजा रघुका पुत्र लिखा है (भाग० ९.१०.१; ब्रह्मां० ३.६३ १८४; वायु० ८८.१८३; विष्णु० ४.४.८५)। बर्नौफके मतानुसार अज पृथुश्रवस्के पुत्र थे। अजकी पत्नीका नाम इंदुमती था जो विदर्भ राजाकी बहिन थी (दे० इंदुमती)। (३) प्रतिहर्त्ता और स्तुतिके एक पुत्रका नाम (भाग० ५.१५.५)। (४) एक रुद्र, भूत और सरूपाके करोड़ों पुत्र रुद्रोंमेंसे एक (भाग० ६.६ १७)। (५) ऊर्ध्वकेतुका पुत्र तथा पुरुजित्का पिता (भाग० ९.१३.२२)। (६) स्वारोचिप मन्वन्तरके तुपितोंमेंसे एक तुपित देव (ब्रह्मां० २.३६.१०)। (७) उत्तम मनुके तेरह पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (ब्रह्मां० २.३६.३९; वायु० ६१.१८५; ६२.९,३५; विष्णु० ३.१.१५)। (८) कूष्माण्ड पिशाच, कपिके दो लड़कोंमेंसे एक। इसकी जंतुधाना या यातुधाना नामकी एक पुत्री थी (ब्रह्मां० ३.७.७४-८५)। (९) क्रौंचपर्वत को गिरा देने तथा तारकको मार डालनेपर कार्त्तिकेय कुमारको ब्रह्माने उपायनरूपमें दिया (ब्रह्मां० ३.१०.४८)। (१०) वैवस्वत मन्वन्तरके १२ सुधर्माओंमेंसे एक सुधर्मादेवका नाम (ब्रह्मा० ४.१.६०)। (११) चन्द्रमाके रथके दस घोड़ोंमेंसे एक घोड़ा (मत्स्य० १२६.५२)। (१२) अज और अजा—एक देव तथा देवी। अजा आठअक्षर, सोलह हाथ और पैर, चार मुख, बालकी तीन गाँठे तथा एक सींगवाली माया (वायु० २०.२८-२९)। (१३) भृगुके १२ देवपुत्रोंमेंसे एक का नाम (वायु० ६५.८७)। (१४) रात्रिके १५ विभागों (मुहूर्त्तों) मेंसे एक विभाग—वायु० ६६.४३। (१५) दनुके विप्रचितिप्रभृति १०० पुत्रोंमेंसे एक पुत्र दानवका नाम (वायु० ६८.११)। (१६) धन्वंतरिका एक नाम। समुद्रमंथनके समय यह अमृतका घड़ा लिये निकले थे (वायु० ९२.१०)।

अजक–पु० [सं०] (१) बलाकके पुत्र तथा कुशके पिताका नाम (भाग० ९.१५.३-४)। (२) जह्नुपुत्र सुनह (वायु० सुहोत्र) (विष्णु० सुमन्तु) के पुत्र तथा बलाकाश्वके पिताका नाम। इसने २१ वर्ष राज्य किया (ब्रह्मां० ३.६६.३०;७४-१२६; वायु०९१.६०-६१; ९९.३१३ विष्णु० ४.७.८;। (३)

दिलीपके पुत्रका नाम (मत्स्य० १२.४८)।

अजकर्ण–पु० [सं०] मय और रंभाके छह पुत्रोंमेंसे एकका नाम (ब्रह्मां० ३.६.२९)।

अजगंधा–स्त्री० [सं०] एक अप्सराका नाम (ब्रह्मां० ३.७.८)।

अजगव–पु० [सं०] शिवके धनुपका नाम (मत्स्य० २३.३७; वायु० ९०.३१)।

अजगैबीनाथ–पु० [सं०] भागलपुर जिलांतर्गत सुल्तानगंजमें गंगा नदीके बीचमें स्थित पहाड़परका एक शिवमन्दिर। कहते हैं ब्रह्मर्षि जह्नुका आश्रम यहीं था जहाँ यह भगीरथकी लायी गंगाको पी गये थे। वि० दे० गंगा, जह्नु।

अजतुंग–पु० [सं०] श्राद्ध करनेके लिए उपयुक्त स्थान जो विरजा वृक्षके कारण विख्यात है (ब्रह्मां ३.१३.४८) पर्वोंमें यहाँ देवताओंकी छायाका दर्शन होता है। (वायु० ७७.४८) के अनुसार पाण्डवोंने यहाँ श्राद्ध किया था।

अजन–पु० [सं०] श्रीकृष्ण, हरिका नाम (भाग० १०.३.१,५; ६.२३)।

अजनाभ–पु० [सं०] ऋषभदेवके राज्यका नाम जिसे बादको भरतके शासनानन्तर भारत कहने लगे (भाग० ५.४.३; ७.३)।

अजबस्त–पु० [सं०] सामवेदके शाखाप्रवर्तक कृतके एक शिष्यका नाम (ब्रह्मा० २.३५.५२)।

अजभूः–पु० [सं०] महाराज उग्रसेनके ९ पुत्रोंमेंसे एकका नाम (मत्स्य० ४४.७५)।

अजमीढ़–पु० [सं०] (१) हस्तिन् राजाके एक पुत्रका नाम। इनकी तीन रानियाँ कुरुवंशकी थीं नीलिनी, केशिनी और धूमिनी। प्रियमेधा तथा अन्य ब्राह्मण इन्हींके वंशके कहे जाते हैं। कण्व तथा बृहदिपु इन्हींके पुत्र थे (भाग० ९.२१.२१-२२; वायु० ९९.१६६; विष्णु० ४.१९. २९-३०, ३३; मत्स्य० ४९.४३-५)। नलिनीके गर्भसे उत्पन्न नील नामक इनका एक पुत्र था (भाग० ९.२१-३०; वायु० ९९.१९४; विष्णु० ४.१९.५६)। इनका एक पुत्र ऋक्ष भी था (भाग० ९.२२.३; मत्स्य० ५०.१९; विष्णु० १४.१९.७४)। (२) यह आंगिरस तथा मंत्रकृत् कहे गये हैं। यह क्षत्रिय-द्विज थे—ये राजर्षि महती सिद्धिको प्राप्त थे (ब्रह्मां० २.३२.१०९; ३.६६.८७)। अंगिरस् आदि ३३ जिनमें अजमीढ़ भी है। अंगिरसोंमे श्रेष्ठ तथा मन्त्रद्रष्टा थे (मत्स्य० १४५.१०३; वायु० ९१.११६.५९, १००)।

अजमुखिया–**(अजमुखिका)** स्त्री० [सं०] एक मानसपुत्री मातृका (मत्स्य० १७९.२४)।

अजय–पु० [सं०] दर्भकके पुत्र तथा नंदिवर्धनके पिताका नाम (भाग० १२.१.६,७)।

अजवीथि–पु० [सं०] एक नक्षत्र विशेप जिसके दक्षिणमें पितृयान मार्ग बताते हैं (ब्रह्मां० २.२१.७६, १५९; ३.३.५१; मत्स्य० १२३.५२-१; वायु० १.९३; ६६.५१; विष्णु० २.८.८५)।

अजस्य–पु० [सं०] सुरूपाके गर्भसे उत्पन्न अंगिरसके एक पुत्रका नाम जो गोत्रकार थे (मत्स्य० १९६.४)।

अजांबिका–स्त्री० [सं०] भाद्रपद कृष्ण एकादशीका नाम जिसे जया एकादशी भी कहते हैं। इस दिन उपवास करके द्वादशीके दिन विभिन्न उपचारोंमे भगवान् उपेन्द्रकी पूजा की जाती है। इससे इह लोकमें सम्पूर्ण उत्तम भोग भोगकर अन्तमें वैष्णव धाम मिलता है—नारद पुराण, पूर्व भाग—चतुर्थपाद।

अजा–स्त्री० [सं०] (१) भाद्रपद एकादशीको 'अजा' कहते हैं—दे० अजांबिका। (२) यशोदाके गर्भसे उत्पन्न 'माया' का नाम (भाग० १०.३.४७; १३.५२)। सृष्टिकर्त्ताकी सारी शक्ति इसीमें निहित कही गयी है तथा हरिके नौ रूप बतलाये गये हैं (भाग० ११.९.२८; १२.११.३१)।

अजाएकादशी–स्त्री० [सं०] भाद्रपद कृष्णा एकादशी जिससे पूर्वजन्मकी बाधाएँ दूर होती हैं। महाराज हरिश्चन्द्रने इसी व्रतसे उद्धार पाया था—ब्रह्मवैवर्त पु०।

अजाकर्ण–पु० [सं०] श्राद्धादि करनेके लिए उपयुक्त स्थान—मत्स्य० १५.३३।

अजात–पु० [सं०] यादव राजकुमार हृदीकके दस पुत्रोंमेंसे एकका नाम। इनके सुदंष्ट, सुनाभ और कृष्ण नामके तीन अति बलवान पुत्र थे (मत्स्य० ४४. ८२-४)।

अजातशत्रु–पु० [सं०] (१) अर्भकके पिता तथा उदयनके दादा (विष्णु० ४.२४.१५-१६। (२) उपनिषद्के अनुसार काशीका एक क्षत्रिय राजा जो बड़ा ज्ञानी था। इसने गार्ग्य-बालाकि ऋषिको बहुतसे उपदेश दिये थे। (३) मगधनरेश बिम्बसारका पुत्र जो गौतम बुद्धका समकालीन था। (४) विधिसारके पुत्र तथा दर्भक (विष्णु० अर्भक) के पिताका नाम (भाग० १२.१.६; विष्णु० ४.२४.१४१५)। (५) भूमिमित्रके पुत्रकानाम (वायु० ९९.३१७) इसने लगभग २५ वर्ष-मत्स्यके अनुसार २७ वर्षतक राज किया (ब्रह्मां० ३.७४.१३१; मत्स्य० २७२.१०)।

अजामिल–पु० [सं०] एक ब्राह्मणका नाम जो पहले बड़ा कर्मनिष्ठ तथा शास्त्रोंके ज्ञानके लिए प्रसिद्ध था। पुराणानुसार इसका प्रेम एक दासीसे अकस्मात हो गया था। यह कान्यकुब्ज देशमें रहता था और दासीसे प्रेम होनेके उपरांत इसने अपनी पहली पत्नीको छोड़ दिया था। दासीसे विवाहके पश्चात् यह निंदित जीविकासे जीवन निर्वाह करने लग गया था। दासीसे इसके दस पुत्र थे जिनमें सबसे छोटेका नाम नारायण था। अजामिल इस बालकके स्नेहपाशमें जकड़ा हुआ था और अन्तमें मरनेके समय इसी बालकको पुकारनेके कारण मोक्ष प्राप्त कर सका। नारायणका नाम लेनेसे इसके सारे पाप धुल गये। धर्मका वास्तविक रहस्य यही कहा जाता है जिससे धर्मराज भी सहमत हो गये। यमराजके दूत इसका कुछ बिगाड़ न सके और नारायण (भगवान् विष्णु) की कृपासे यह तर गया। कहते हैं इसने गंगाद्वारमें तप भी किया था जिससे इसे अन्तमें विष्णुलोक प्राप्त हुआ और यह पापमुक्त समझा गया (भाग० ६.१.२० से अन्त तक; भाग० ६ अध्याय २ और ३)।

अजामुख–पु० [सं०] (१) दनुके एक पुत्रका नाम (वायु० ६८.५)। (२) अजामुख या अधोमुख—पिशाचोंकी एक जाति (ब्रह्मां० ३.७.३८१; वायु० ६९.२६३-२६७)।

अजित–पु० [सं०] (१) चाक्षुप मनुके समयमें हरिका एक अवतार। इसी समयमें क्षीरोद-मंथन हुआ जिससे अमृत मिला था (भाग० २.२.५; ८.५.९-१०)। विष्णुने असुरोंकी सहायतासे समुद्र-मंथन कर अमृत प्राप्त किया जिससे देवता-

गण असुरोंपर विजय पा सके थे (भाग० ८.६.१८-२५)। जब सबके प्रयाससे अमृत नहीं मिला तब विष्णुने अमृत-मंथनमें स्वयम् भाग लिया (भाग० ८.७.१६; १०.२-२०; १०.४१-४८)। (२) एक पृथुक देव (ब्रह्मां० २.३६.७४)। (३) स्वारोचिप मन्वंतरमें तुपिताके गर्भसे उत्पन्न विष्णुके एक अवतारका नाम (ब्रह्मां० ३.३.११४)।

अजिता—स्त्री० [सं०] (१) भादों बदी एकादशीका नाम (द्रि० अजांबिका)। (२) भवमालिनीकी अनुगामिनी आठ देवियोंमेंसे एकका नाम (मत्स्य० १७९.७१)। (३) अजितवर्गके देवोंकी माताका नाम (वायु० ६७.३३)।

अजितागण—पु० [सं०] (१) आयुष्मंतवर्गके देवतागण जिन्हें मिलाकर चौदह गण होते हैं। इनका निवास महर्लोक (सात ऊर्ध्व लोकोंमें चौथा) में है। यहींसे ये जनलोकको जाते हैं (ब्रह्मां० ३.४.२७; ४.१.१२२)। (२) एक देवगण जिनके नाम ये हैं—असम, उग्रदृष्टि, सुनय, शुचिश्रवा, केवल, विश्वरूप, सुदक्ष, मधुप, तुरीय, तथा इंद्रयुक् (ब्रह्मां० २.९.४६; १३.९०)। वायु० ३१.४ के अनुसार ये ब्रह्मा तथा स्वायंभुवके मानस पुत्र हैं। (३) स्वायंभुव मन्वन्तरमें अजित और रुचिके पुत्रोंके नाम (वायु० ६७.३३)।

अजिन—पु० [सं०] हविर्धान और आग्नेयीका एक पुत्र (ब्रह्मां० २.३७.२४; वायु० ६३.२३; विष्णु० १.१४.२)।

अजिर—पु० [सं०] शुक्रवर्गका एक देव (वायु० ३१.९)।

अजिह्म—पु० [सं०] एक परावतवर्गका देव (ब्रह्मां० २.३६.-१३; वायु० ६२.१२)।

अजीगर्त—पु० [सं०] इस नामके ब्राह्मण हो गये हैं जो शुनःशेफके पिता थे। इन्होंने स्वपुत्र शुनःशेफको अपने स्थानपर बलि देनेके लिए रोहितके हाथ बेच दिया था (भाग० ९.७.२०-२१; ९.१६.३०)।

अजेय—पु० [सं०] (१) एक परावतवर्गका देव। (२) एक विकुण्ठवर्गका देव (ब्रह्मां० २.३६.१४, ५७)।

अजेश—पु० [सं०] ग्यारह रुद्रोंमेंसे एकका नाम (मत्स्य० १५२.१९)। (२) ३६ अक्षर पदोंमें न्यसनीय शिवके ३६ नामोंमेंसे एक नाम (ब्रह्मां० ४.४४.५२)।

अजैकपाद्—पु० [सं०] (१) भूत तथा सरूपासे उत्पन्न करोड़ों रुद्रोंमेंसे एक रुद्र तथा कश्यपसे सुरभिमें उत्पन्न ग्यारह रुद्रोंमेंसे एक। यह गणेश्वर थे (भाग० ६.६.१८; ब्रह्मां० ३.३.-७१; वायु० ६६.६९; मत्स्य० ५.२९)। (२) शालामुखीयक (वायु० के अनुसार शालामुखीयक) अग्नि—ब्रह्मां० २.१२.-२५; वायु० २९.२४ तथा उपस्थेय अग्नि। (३) रात्रिके १ ५ मुहूर्तोंमेंसे एक महूर्त्त—ब्रह्मां० ३.३.४२।

अटमान—पु० [सं०] मेवस्वातिके पुत्र तथा अनिष्टकर्माके पिता (भाग० १२.१.२२)।

अट्टहासी—पु० [सं०] अट्टहासिन् भण्डका एक सेनापति (ब्रह्मां० ४.२१.८८)।

अट्टहास—पु० [सं०] (१) बीसवें द्वापरमें भगवान्का एक अवतार। हिमालयकी 'अट्टहास' पहाड़ीमें जनताको अट्टहास ही जब रुचिकर होता है, तब उसपर सिद्ध, चारण तथा योगीगण उपस्थित रहते हैं (वायु० २३.१९०-१)। (२) हिमालयकी एक पहाड़ीका नाम जहाँ भगवान्का 'अट्टहास' अवतार हुआ (वायु० २३.१९१)। (३) 'अट्टहास' नामक एक तीर्थस्थान जो पितृगणोंके श्राद्धके लिए अति पवित्र समझा जाता है—यहाँ श्राद्ध करनेवाले परम पद पाते हैं (मत्स्य० २२.६८; वायु० २३.१९१)।

अणिमा—स्त्री० [सं०] (१) अष्ट सिद्धियोंमें सर्वप्रथम। इसीकी सहायतासे योगी लोग अति सूक्ष्म रूप धारण कर लेते हैं और अगोचर हो जाते हैं। (२) उत्तम सिद्धियोंमें से एक। चक्रराजरथेन्द्रके नवें पर्वमें स्थित एक सिद्धि देवी (ब्रह्मां० ४.१९.४; २५.५९; ३५.१०४; ३६.५; ४४.१०८)।

अणिमादिक—स्त्री० [सं०] अष्ट सिद्धियाँ—अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकम्य, ईशित्व तथा वशित्व (ब्रह्मां० १.२.३९; २.२९.८२; ३.३.६५; ३६.१७; ६७.१६; वायु० २.३९; १३.३,१०; ५७.७६; ९२.१५)।

अणु—पु० [सं०] (१) समयकी एक नाप—जिसमें दो परमाणु होते हैं (भाग० ३.११.५)। (२) शर्मिष्ठाके गर्भसे उत्पन्न ययातिके पुत्र—दे० अनु।

अणुह—पु० [सं०] (१) विभ्राजके पुत्रका नाम। शुककी पुत्री कीर्ति इनकी स्त्री तथा ब्रह्मदत्त इनका पुत्र कहा गया है (विष्णु० ४.१९.४३-५)। (२) नीपका ज्येष्ठ पुत्र जिसका विवाह शुककी पुत्री कृत्वीसे हुआ था। यह ब्रह्मदत्तके पिता थे (भाग० ९.२१.२४-२५)। (३) शुककी पुत्री कीर्त्तिमतीका पति जिससे ब्रह्मदत्त नामक पुत्र हुआ (ब्रह्मां० ३.८.९४; १०.-८२; वायु० ७३.३१)। (४) विभ्राजके पुत्र, शुक-पुत्री कृत्वीके पति जिसकी दूसरी पत्नी (ऋची) थी (मत्स्य० ४९.-५६-७; वायु० ९९.१७९)।

अण्ड—पु० [सं०] अण्डेके आकारकी पृथ्वी जिसे विष्णुका व्यक्त रूप कहा गया है—दे० पुरुप। (विष्णु० १.२.४५-६०)। (२) यह आलोकान्त अर्थात् लोकान्ततकको व्याप्त करके स्थित है। इसके अन्दर पृथ्वी आदि सातों लोक हैं, सातों द्वीप हैं जो बादलोंके समुद्रसे घिरे हैं (ब्रह्मां० १.१.-४३; २.१९.१५४-५, १६०; २१.२४; ३.५९.२७.४.२.-२३०-१)। ईश्वरके वीर्यसे इस स्वर्ण अण्डकी उत्पत्ति हुई और प्रकृति (योनिमें) प्रवेश हुआ जिसे नारायणका ही स्वरूप कहा गया है। आगे चलकर यही स्वर्ग और पृथ्वी बने जिनके मध्यमें आकाश है (मत्स्य० २.२९-३२; २४७.४३; २४८.१)। इसका ऊपरी भाग अण्डके दसगुने जलसे घिरा है तदुपरांत वायु, आकाश और भूतादि हैं। इसके पश्चात् महत् और फिर अव्यक्त है—प्रत्येक पहिलेका दस गुना है। अव्यक्त ही क्षेत्र है और ब्रह्मा क्षेत्रज्ञ (वायु० १.५०-५२; ४.८२-९; १०१.२२७)। ब्रह्मां० १.३.२६; वायु० ९.१२२ के अनुसार ब्रह्मा इसीसे उत्पन्न हुए। (३) शुक्ल पक्षके आरम्भमें कुम्भ राशिके चन्द्रमाकी तरह बहुतसे अण्ड हैं जिनमें प्रत्येक प्रकृतिकी दस विशेपताओंसे घिरे हैं (वायु० ४९.१४७-५१)।

अण्डकटाह—पु० [सं०] इसमें भूर्लोक, भुवः, स्वर्, महर्, जन, तप और सत्य हैं—प्रत्येक छातेके आकारके हैं और प्रकृतिके दस रूपोंसे घिरे हैं (वायु० ५०.७८-८१; विष्णु० २.४.९५; ७.२२-५)।

अतल—पु० [सं०] पाताल सात हैं जिनमें यह दूसरा है। इसे पुरुषकी जाँघ कहा है जो उनकी कमरपर आधारित है (भाग० २.१.२७; २.५.४०)। इस पातालपर मायावी मयके पुत्र असुर बलका राज्य है (भाग० ५.२४.७-१६)। ब्रह्मां०

२.२०.१२, १४, ३२-३४के अनुसार यह पीत वर्णकी मिट्टी-वाला चौथा लोक कालनेमि आदि अनेक दैत्योंका निवास स्थान कहा गया है। (२) एक पाताल जिसकी मिट्टी काली है। यहाँ नमुचि जिसे असुरोंका इन्द्र कहते हैं, रहता है। शंकुकर्ण, नागों तथा राक्षसोंका निवास है वायु० ५०.११, १३, १५-१९; विष्णु० २.५.२-४।

अतिकपिल–पु० [सं०] ज्योतिष्मत्का एक पुत्र जिसके नाम-पर इसका नामकरण हुआ (विष्णु० २.४.३६)।

अतिकाय–पु० [सं०] लंकापति रावणके एक पुत्रका नाम जिसे लंकाके युद्धमें श्री रामके अनुज लक्ष्मणने मारा था (भाग० ९.१०.१८; रामा० बालका० दोहा १८०)।

अतिकृच्छ्र–पु० [सं०] इसमें ९ दिन एक-एक ग्रास भोजन करे तथा तीन दिन उपवासका विधान है। गोदान आवश्यक है—धर्मशास्त्र, मनुस्मृति।

अतिक्रांतभावनीय–पु० [सं०] योगदर्शनके अनुसार योगी चार प्रकारके माने गये हैं—यह चारोंमेंसे एक है।

अतिगुल्म–पु० [सं०] बलरामके एक पुत्रका नाम (ब्रह्मां० ३.७१.१६७)।

अतितान–पु० [सं०] एक देवसंगीत (गांधर्व) जो ब्रह्मलोक-में 'हाहा और हूहू' द्वारा गाया जाता है (विष्णु० ४.१.६८)।

अतितेजस–पु० [सं०] (पौलह) तीसरे सावर्णि मनुके काल-के एक ऋषि (ब्रह्मां० ४.१.८०)।

अतिथि–पु० [सं०] (१) आद्यवर्गके एक देवता (ब्रह्मां० २.-३६.६९)। (२) श्राद्धादिमें आया व्यक्ति (वायु० ७९.७.१९, ब्रह्मां० ३.१५.४-२०;२१.४६; विष्णु० ३.९.१५; ११. ५८–७४, ७८, १०६-११०)। (३) अयोध्याके राजा जो कुशके पुत्र तथा श्रीरामके पौत्र थे। निषध इनका पुत्र था (भाग० ९.१२.१, ब्रह्मां० ३.६३.२०१, मत्स्य० १२.५२, वायु० ८८.२०१, विष्णु० ४.४.१०५)।

अतिथीश–पु० [सं०] एक वरमूर्त्ति (ब्रह्मां० ४.४४.४९)।

अतिनाभ–पु० [सं०] हिरण्याक्ष नामके दैत्यके नौ पुत्रोंमेंसे एक (रामा०, भाग०) महानाभ मिलता है (भाग० ७.२.-१९, ब्रह्मां० ५.३०, वायु० ६७-६७-८)।

अतिनामा–पु० [सं०] पौलस्त्य जो चाक्षुप मन्वन्तरके एक ऋपि थे (ब्रह्मां० २.३६.७८, मत्स्य० ९.२३, विष्णु० ३.-१.२८)।

अतिपातक–पु० [सं०] धर्मशास्त्रोक्त नौ पातकोंमें सबसे बढ़ा-चढ़ा पातक। पुरुपके लिए माता, बेटी तथा पुत्रवधूके साथ प्रसंग करना और स्त्रीके लिए बेटा, बाप और दामादके साथ गमन करना—प्रायश्चित्तेन्दुशेखर-नागेश भट्ट तथा कुण्डार्क केशव विरचित।

अतिबल–पु० [सं०] गन्धर्वोंके एक राजाका नाम (वायु० ६२.१९२)।

अतिबला–स्त्री० [सं०] (१) एक अतिप्राचीन युद्ध-विद्याका नाम जिससे श्रम और ज्वरादिका भय नष्ट हो पराक्रम बढ़ता है। श्रीरामने विश्वामित्रसे इसे सीखा था—रामायण। (२) अन्धकासुर वधके समय महादेव द्वारा सृष्ट एक मानस मातृकाका नाम (मत्स्य० १७८.१२)। (३) सहदेवी आदि अष्ट महौपधियोंमेंसे एक जिसका उपयोग महास्नानोंमें किया जाता है (मत्स्य० २६६. १२-१४)।

अतिबाहु–पु० [सं०] स्वायंभुव मनुके एक पुत्रका नाम (वायु० ३१.१७)।

अतिभानु–पु० [सं०] सत्यभामाके गर्भसे उत्पन्न श्रीकृष्णका एक पुत्र (भाग० १०.६१.१०)।

अतिमान–पु० [सं०] पौलस्त्य चाक्षुप मन्वन्तरका एक ऋपि (वायु० ६२.६६)।

अतिमाय–पु० [सं०] भण्डका एक पुत्र तथा सेनापति (ब्रह्मां० ४.२१.८४; २६.४९)।

अतिरथ–पु० [सं०] सत्यकर्मन्के पुत्रका नाम। पृथा द्वारा त्यागा हुआ एक बच्चा गंगाके किनारे इन्हें पिटारीमें मिला था। यह कर्ण था—वि० दे० विष्णु० ४.१८.२७-८।

अतिरात्र–पु० [सं०] (१) ज्योतिष्टोम यज्ञका एक अंग। (२) नड्वलाके गर्भसे उत्पन्न चाक्षुप मनुके १० पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (भग० ४.१३.१६; ब्रह्मां० २.३६.७९, १०६; मत्स्य० ४.४२; विष्णु० १.१३.५)। (३) एक मन्त्र जो अतिरात्र यज्ञके अन्तमें पढ़ा जाता है। (४) सृष्टिकर्ता द्वारा पश्चिम मुखसे सृष्ट एक यज्ञ (भाग० ३.१२.४०; वायु० ९.५१; ६२.६७.९१: ६७.५०)। कहते हैं सर्वप्रथम इसे कश्यप ऋपिने किया था उसमें हिरण्यकशिपुने प्रथम ऋत्विकका आसन ग्रहण किया था, उसमें हिरण्यकशिपुने एक ऋत्विकका आसन ग्रहण किया था, इसीसे उसका नाम हिरण्यकशिपु पड़ा (ब्रह्मां० ३.५.४; मत्स्य० ४४.६५; ५८.५३)।

अतिराष्ट्र–पु० [सं०] पुराणानुसार एक नागका नाम।

अतिविभूति–पु० [सं०] खनिनेत्रके पुत्रका नाम जो करंधमके पिता थे (विष्णु० ४.१.२८-९)।

अतिसांतपनकृच्छ्र–पु० [सं०] शास्त्रोक्त विधिके प्रायश्चित्त निमित्त एक व्रत विशेष जिसमें दो दिन गोमूत्र, दो दिन गोबर, दो दिन दूध, दो दिन दही, दो दिन घी और दो दिन कुशका जल पीनेका विधान है। तदुपरान्त ३ दिनों-तक उपवास करना पड़ता है—'याज्ञवल्क्य'।

अत्रि–पु० [सं०] अत्रि मुनि ब्रह्माके पुत्र कहे जाते हैं जिनका जन्म ब्रह्माकी आँखोंमेंसे हुआ था। ये वैवस्वत मन्वन्तरके महर्पियोंमेंसे एक थे (भाग० ३.१२.२१-२३; मत्स्य० ३.६; ९.२७)। कर्दम तथा देवहूतीतिकी पुत्री अनसूया अत्रिको ब्याही थी। इनसे दत्तात्रेय, दुर्वासा और सोम नामके तीन पुत्र हुए (भाग० ९.१४.२-३; ब्रह्मां० २.९.५६; ३.६५.१,४७; वायु० १.१३८; ३.३; ३०.४)। यह बहुत प्रतापी ऋपि थे और इनका नाम दस प्रजपतियोंमें आता है। इनका आश्रम दण्डकवनमें था जहाँ चित्रकूटसे पञ्चवटी जाते समय श्रीराम जानकी तथा लक्ष्मण सहित पधारे थे। अनसूयाने सीता-जीको अनेक उपदेश दिये और कई प्रकारके लेप तथा अंग-रागादि लगा दिये जिससे राजकुमारीके शरीरपर जंगली हवाका कोई प्रभाव न पड़े—रामायण : अरण्य का० दो० ६ तक। इनके पुत्र दत्तात्रेयने अलर्क तथा प्रह्लादादिको आन्वीक्षिकी विद्या बतलायी थी (भाग० १.३.११; ३.२४.-२२; ब्रह्मां० २.९.५६)। भीष्म जब बाणोंपर पड़े अन्तिम घड़ियाँ गिन रहे थे अत्रि उनसे भेंट करने गये थे (भाग० १.९.७)। प्रायोपवेशनके समय यह परीक्षितसे मिलने आये थे (भाग० १.१९.९)। ऋक्ष पर्वतपर अपनी पत्नी सहित

पुत्रकी प्राप्तिके हेतु इन्होंने घोर तपस्या की थी। इनकी स्तुतिसे प्रसन्न हो त्रिमूर्ति (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) इनके समक्ष आये और तीनोंने ३ पुत्रोंका वरदान दिया जो उन्हींके अंशोंसे उत्पन्न हुए, अतः दत्तात्रेय (विष्णुके), दुर्वासा (शिवके) और सोम (ब्रह्माके) अंशसे उत्पन्न हुए (भाग० ४.१.१५-३३; विष्णु० ४.६.५-६)। इन्द्र जब यज्ञके अभिमन्त्रित घोड़ेको लेकर दो बार भागनेको थे तब इन्होंने महाराज पृथुके पुत्रको संकेत किया तथा मारनेको प्रोत्साहित किया था (भाग० ४.१९.१२-१५, २१)। वैवस्वत मनुके मन्वन्तरके यह सप्तर्षियोंमें एक ऋषि थे (भाग० ८.१३.५; ब्रह्मां० २.३८.२८)। यह श्रीकृष्णके साथ मिथिला गये थे (भाग० १०.८६.१८)। ज्येष्ठ महीनेमें यह सूर्यरथमें अधिष्ठित कहे गये हैं (भाग० १२.११.३५; ब्रह्मां० २.२३.५; वायु० ५२.६; विष्णु० २.१०.७; ३.१.३२)। यह एक मन्त्रद्रष्टा ऋषि थे। उत्तानपादपर इनका पुत्रवत् प्रेम था (ब्रह्मां० २.२७.१०४; ३२.९६.११३)। इनकी एक पुत्री ब्रह्मवादिनी थी। इन्होंने तपस्यामें रत परशुरामसे भेंट की थी (ब्रह्मां० ३.२३.४)। अपने पुत्र सोमका राजयक्ष्मा इन्होंने पितरोंको श्राद्धादिसे प्रसन्नकर छुड़ा दिया था (ब्रह्मां० ३.१०.१११; वायु० ७३.६३)।

ब्रह्माने इनसे जब संसारकी सृष्टि करनेको कहा तब यह अनुत्तम नामक तपस्या करने लगे। सोमके राजसूय यज्ञमें इन्होंने होताका काम किया (मत्स्य० २३.२०)। इनके हिमालयवाले आश्रममें पुरूरवा गये थे (मत्स्य० १०१.१८; ११७.६२-७७; १२०.४५; १२५.७)। त्रिपुरका नाश करनेके लिए इन्होंने शिवकी स्तुति कर उन्हें प्रसन्न किया (मत्स्य० १३२.६७)। (२) अत्रि नामका एक तारा जो सप्तर्षि-समूहमेंसे एक है। (३) पिण्डारक जानेवाले ऋषियोंमेंसे एकका नाम (भाग० ११.१.१२)। (४) स्वायम्भुव मन्वन्तरके सप्तर्षियोंमें तीसरे ऋषिका नाम जो 'अहं-तृतीय' (मैं तीसरा) कहते हुए ब्रह्मा द्वारा अपने शुक्रके अग्निमें हवन करनेपर उत्पन्न हुए थे, इसीलिए 'अत्रि' कहलाये (ब्रह्मां० १.१.११७; ५.७०; २.९ १८.२३; वायु० ३१.१६; ३४.६२; ६५.४५; विष्णु० ५.१.१७)। (५) उत्तर दिशामें स्थित एक राज्यविशेष (ब्रह्मां० २.१६.५०)। (६) वारुण यज्ञ, जिसे वारुणी मूर्तिधारी भगवान्ने किया था, की अग्निकी लपटोंसे उत्पन्न एक ऋषि (ब्रह्मां० ३.१.२१.४४,८,७३; मत्स्य० १७१.२७; १९२.१०; १९५.९; वायु० ६२.१७; ६४.२७; विष्णु० १.७.५.७)। इनकी दस सुन्दर तथा पतिव्रता पत्नियाँ थीं जो सब भद्राश्व और घृताची (अप्सरा) की पुत्रियाँ थीं। इनके दसोंके पुत्र आत्रेय नामसे विख्यात थे। उनमें दत्तात्रेय ज्येष्ठ और दुर्वासा उनसे छोटे थे (वायु० ७०.६७-७६)। यह महर्षि तथा मन्त्रकृत् थे। इन्हें, वशिष्ठ और जातुकर्ण्यको मिलाकर प्रसिद्ध "त्र्यार्षेयप्रवर" था। वृद्धगर्गके यह समकालीन थे (मत्स्य० १४५.९०, १०७-९; १९७.१-४; २००.१९; २२९.२-३; वायु० ५९.१०४)। वास्तुशास्त्र स्थापत्यकला (स्थापत्यवेद) के अठारह उपदेशकोंमेंसे एक (मत्स्य० २५२.२); २८५.६ मत्स्य० के अनुसार विश्वचक्रमें इनका स्थान है। (७) बारहवें द्वापरका एक विष्णु अवतार जो हैमक वनमें हुआ था (वायु० २३.१५५)। (८) चौदहवें द्वापरमें अंगिरसश्रेष्ठ गौतम, जिन्हें विष्णुका अवतार माना जाता है और जिनके सम्बन्धसे गौतम-वन विख्यात और पुण्य हुआ, के चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (वायु० २३.२६४)।

अत्रिधन–पु० [सं०] अत्रि ऋषिके नामपर किये जानेवाले यज्ञोंमेंका एक कृत्यविशेष (वायु० ७०.७३)।

अत्रिनेत्रज–पु० [सं०] चन्द्रमाका जन्म अत्रि ऋषिके नेत्रसे हुआ था इसीसे यह अत्रिनेत्रज कहलाये (भाग० ४.१.१५-३३; विष्णु० ४.६.५-६)।

अत्रिप्रिया–स्त्री० [सं०] कर्दम ऋषिकी पुत्री अनसूयाका एक नाम। इनका विवाह अत्रि ऋषिसे हुआ था—दे० अत्रि।

अथर्वा–पु० [सं०] (१) सारे संसारमें यज्ञोंकी प्रथा चलानेवाले ऋषिका नाम (भाग० ३.२४.२४)। इनका ब्याह कर्दम ऋषिकी पुत्री चित्तिसे हुआ था। दध्यञ्च इनका पुत्र था जिसका सिर घोड़ेका था (भाग० ४.१.४२)। (२) एक ब्राह्मण पुरोहितका नाम जिसे महाराज युधिष्ठिरने अपने राजसूय यज्ञमें बुलाया था (भाग० १०.७४.९)। (३) एक लौकिकाग्नि—भृगु। दर्पहाके पिता। यह दध्यङ्ङाथर्वणकी श्रेणीका है (वायु० २९.८.९; ब्रह्मां० २.१२.९)।

अथर्ववेद–पु० [सं०] वेद चार हैं, अथर्व इनमें चौथा है (भाग० १०.५३.१२; वायु० ९.५१; ६०.१५,१९]। भृगु या अंगिरा गोत्रवाले इसके ऋषि थे। इसमें ब्रह्माके कार्यका प्रधान उल्लेख होनेके कारण, इसे कुछ लोग ब्रह्मवेद कहते हैं। पैप्पला, दांता, प्रदांता, स्नौता, औता, ब्रह्मदापलाशा, शौनकी, देवादर्शी और चारणविद्या इसकी नौ शाखाएँ हैं। उपर्युक्त शाखाओंमेंसे सात नहीं मिलती। केवल पैप्पलादशाखा और शौनकीय दो ही उपलब्ध हैं। इसके २० काण्ड, १११ अनुवाक, ७३१ सूक्त और ४७९३ मन्त्र हैं। अथर्वका उपवेद धनुर्वेद है। इसके प्रधान उपनिषद प्रश्न, मुण्डक और माण्डूक्य हैं। इसका गोपथब्राह्मण आजकल प्राप्त है। कर्मकाण्डियोंके लिए इसका ज्ञान आवश्यक है।

व्यासके निरीक्षणमें सुमन्तुने इसे पाँच भागोंमें ठीक कर विभक्त किया (भाग० १.४.२२; १२.७.१; ब्रह्मां० २.३४.१५; विष्णु० ३.४.९, १४, ६.८, १३-१४)। इसे विष्णुका रूप माना गया है (विष्णु० ५.१.३४-३६)। इसमें युद्धसम्बन्धी मन्त्र अधिक हैं (ब्रह्मां० ४.२०.१०४)। ब्रह्माके चतुर्थ मुखसे २१ अथर्वोंकी सृष्टि हुई (ब्रह्मां० २.८.५३)।

अथर्वशिर–स्त्री० [सं०] (१) वेदकी एक ऋचाका नाम। (२) यह एक प्रकारकी ईंट थी जो तैत्तिरीय-शाखाके समयमें यज्ञवेदी बनानेके काममें ली जाती थी।

अथर्वांगिरस–पु० [सं०] प्रजापति अंगिरस और सतीके पुत्रके रूपमें वेदका साकार रूप (भाग० ६.६.१९; वायु० ६५.९८)। सोमकी स्तुति है (ब्रह्मां० ३.६५.१२)। किसी मन्दिरके निर्माण करते समय इसका पढ़ना आवश्यक है (मत्स्य० २६५.२८)।

अथर्वांगिरसी–पु० [सं०] सामसंहिता, इसे व्यासने सुमन्तुको पढ़ाया था (भाग० १२.६.५३)।

अदूम–पु० [सं०] एक दानवका नाम (ब्रह्मां० ३.६.१०)।

अदर्शना–स्त्री० [सं०] एक शिव-मानस-पुत्री मातृका (मत्स्य० १७९.२७)।

अदिति–स्त्री० [सं०] (१) पुराणानुसार दक्ष प्रजापतिकी पुत्री जो मरीचिके पुत्र कश्यप ऋषिको व्याही थी (भाग० ९.१.१०, विष्णु० १-१५.१२६; ब्रह्मां० २.३३.१७; ३.३. ५६, ११७; ७१. २००; विष्णु० १.१५.१२६; ३.१.४२)। इनके गर्भसे सूर्य आदि ३३ देवता उत्पन्न हुए थे; अर्यमा इन्हींके पुत्र थे—दे० अर्यमा (१)। वामन भगवान्का अवतार भी इन्हींके गर्भसे हुआ था (भाग० ६.६.३९; १८.९; ८.१३.६; १०.३.४२; विष्णु० १.१५.१३१; मत्स्य० १७२.६; १७८.२०; वायु० ९६.१९६; ९७. २३)। अदितिको देवताओंकी माता कहते हैं (मत्स्य० १७९.१५)। पुराणोंमें तथा शुकोक्तिसुधासागरमें इनके सम्वन्धमें अनेक लेख दिये हुए हैं। अदितिसुतसे देवताओंका ही वोध होता है। श्रीकृष्णकी माता देवकीको इन्हींका अवतार माना गया है (भाग० ३.१. ३३; ३.२.१२-१६; ३.५.१८-५१ आदि)।

दैत्योंके भयसे देवताओंके अमरावती छोड़ देनेसे इन्हें वड़ी चिन्ता हुई थी। कश्यपने इन्हें "पयोव्रत" करनेको कहा था। १२ दिन व्रत करनेपर विष्णुके दर्शन हुए और हरि इनके गर्भसे उत्पन्न हुए जिनकी स्तुति ब्रह्माने की (भाग० ८.१६.१७)। भोजनादिकी प्राप्तिके लिए इनकी उपासना करते हैं तथा इनके पुत्रोंकी पूजा स्वर्गप्राप्तिके लिए होती है (भाग० ८.१८.१३-१९; २.३.४; मत्स्य० १७१.५५-८)। इनके कानोंके कुण्डल नरकासुर चुरा ले गया था जिन्हें श्रीकृष्ण और सत्यभामाने ला दिया था (भाग० १०.५८.३८; [६५ (५) ६-१०]; विष्णु० ५.२९. ११-३५; ३० पूरा)। गृह-निर्माणके समय इनकी उपासना होती है (मत्स्य० २५३.२७)। यह १२ आदित्योंकी माता हैं जिन्हें पहले जयदेव कहते थे (ब्रह्मां० ३.४.३४; वायु० ६६.५५; ६०.६५)। (२) दक्षकी पुत्री तथा विवस्वान्की माताका नाम (विष्णु० पु० ४.१.६)।

अदीन–पु० [सं०] सहदेवके एक पुत्रका नाम जो जयत्सेनके पिता और वड़े धर्मात्मा थे (वायु० ९३.१०; विष्णु० ४. ९.२७)।

अदृश्यन्ती–स्त्री० [सं०] शक्तिकी स्त्री तथा पराशरकी माता (ब्रह्मां० १.२.१२; ३.८.९१; वायु० २.१२; ७०.८३)।

अदेह–पु० [सं०] शंकरद्वारा शरीर भस्म हो जानेके कारण कामदेवका नाम। दे० अनंग (मत्स्य० ७.२३; २३.३०; १५४.२७२; २९१.३२; वायु० १०४.४८)।

अद्भुत–पु० [सं०] (१) नवें रोहित मन्वन्तरके इन्द्रका नाम (भाग० ८.१३.१९–२०; ब्रह्मां० ४.१.६१; विष्णु० ३.२. २२)। (२) सवनाग्निके पुत्र तथा विविचिके (ब्रह्माण्डके अनुसार विविधि) पिताका नाम (वायु० २९.३८; ब्रह्मां० २.१२.४१)।

अद्रिका–स्त्री० [सं०] (१) एक अप्सराका नाम जो अच्छोद झीलमें रहती थी। व्यास-माता मत्स्यगन्धाका जन्म इसीके गर्भसे हुआ था (ब्रह्मां० ३.७.७; १०.५७-६८; वायु० ६९.६; ७३.३)। (२) पिशाचोंके राजा अद्रिकी माता एक शापभ्रष्ट अप्सरा जो केसरी वानरकी अंजनाके अतिरिक्त दूसरी पत्नी थी। इसका मुँह विल्लीका-सा था—दे० पैशाचतीर्थ।

अद्रितनया–स्त्री० [सं०] पार्वतीजी या गंगाजीका एक नाम, क्योंकि दोनों हिमालयकी ही पुत्रियाँ हैं।

अद्विषेण–पु० [सं०] मन्त्रकृत् २१ ऋषियोंमेंसे एक ऋषिका नाम (वायु० ५९.९७)।

अद्वैतवाद–पु० [सं०] एक सिद्धान्त विशेष जिसके अनुसार हम अज्ञानवश ईश्वरके स्वरूपको नहीं पहचानते हैं और संसारको ही सव कुछ मान लेते हैं। अज्ञान दूर होनेपर सव ब्रह्ममय प्रतीत होता है। (अद्वैतसिद्धान्तविद्योतन ब्रह्मानन्दसरस्वती प्रणीत)।

अधर्म–पु० [सं०] (१) यह ब्रह्माकी पीठसे उत्पन्न हुए थे (भाग० ३.१२.२५)। इनका विवाह मृपासे हुआ था (भाग० ४.८.२)। इनकी तीन मुख्य विशेपताएँ—अहंकार, सुखी जीवन और मद्यपान (भाग० १.१७.२४)। दम्भ इनका पुत्र तथा माया पुत्री है जिन्हें "निर्ऋति" ने गोद ले लिया (भाग० ४.८.२)। इसकी ५ शाखाएँ हैं—विधर्म, परधर्म, आभास, उपमा और छल (भाग० ७.१५.१२-१४)। (२) हिंसाके पतिका नाम (विष्णु०के अनुसार)। पुत्र–निकृति तथा अनृत हैं। विष्णु० में निकृतिको पुत्री लिखा है) (ब्रह्मां० २.९.६३; वायु० १०.३९; विष्णु० १.७.३२)।

अधश्शिर–पु० [सं०] एक नरकका नाम जिसे अधोमुख भी कहते हैं (ब्रह्मां० ४.२.१४८; १६३; वायु० १०१.१४७, १६१; विष्णु० २.६.४, १८)।

अधिदांत–पु० [सं०] स्वयंभोजके पुत्र हृदिकके १० पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (ब्रह्मां० ३.७१.१४१)।

अधिपत्ति–पु० [सं०] एक भृगु देवका नाम जो भृगुके १२ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र थे (ब्रह्मां० ३.१.९०; वायु० ६५.८७)।

अधिपुरुष–पु० [सं०] अपने निर्मल चरित्रके कारण स्वायंभुव मनुकी एक उपाधि (मत्स्य० ३.४५)।

अधिमास–पु० [सं०] हर तीसरे वर्ष एक महीना वढ़ जाता है जिसे मलमास (अधिकमास) कहते हैं। कहीं-कहीं इसे लौन्द कहते हैं। इसमें गया तथा राजगृहमें पिण्डदानका महत्त्व है (वायु० ५०.२०१; ८३.४२; १०५.१८)।

अधिरथ–पु० [सं०] सत्यकर्मा (भाग०के अनुसार सत्कर्मा) के पुत्र तथा धृतराष्ट्रके सारथिका नाम। इनकी स्त्रीका नाम राधा था। इन्होंने कुन्तीसुत कर्णको पाला था दे०—कर्ण और राधा (भाग० ९.२३.१२-१३; मत्स्य० ४८. १०८)।

अधिराज–पु० [सं०] महाराज पृथु राजसूय यज्ञ करनेके कारण इससे अभिपिक्त हुए थे (ब्रह्मां० ३.८.२५)।

अधिसामकृष्ण या अधिसीमकृष्ण–पु० [सं०] अश्वमेधदत्तके पुत्रका नाम। इन्होंने कुरुक्षेत्रमें एक यज्ञ किया था जो तीन वर्षोंतक चलता रहा। यह पौरव थे तथा निचक्नु (वायु० के अनुसार निर्वक्त्र) के पिता थे (वायु० ९९.२५८, २७०; विष्णु० ४.२१.६–७)।

अधिसोमकृष्ण–पु० [सं०] शतानीकके पुत्रका नाम जिसने तीन वड़े यज्ञ किये—पहला पुष्करक्षेत्रमें जो तीन वर्षोंतक चला; दूसरा कुरुक्षेत्रमें और तीसरा दृषद्वतीमें, ये दोनों दो ही सालतक चलते रहे। यह विवक्षुके पिता थे (मत्स्य० ५०.६६.७८)।

अधीति–पु० [सं०] ब्रह्माके एक पुत्रका नाम जो मन्त्रशरीर थे (वायु० ६७.६)।

अधीष्ट–पु० [सं०] ब्रह्माके एक पुत्रका नाम जो मन्त्र-

शरीर थे (वायु० ६७.६)।

अधृति–पु० [सं०] आभूतरय वर्गके एक देवताका नाम (ब्रह्मां० २.३६.५५)।

अधोक्षज–पु० [सं०] विष्णु, राम या श्रीकृष्णका एक नाम (भाग० ९.१०.५४)।

अधोमुख–पु० [सं०] अधश्शिर (ब्रह्मां० ४.२.१६३)।

अध्यवसाय–पु० [सं०] महत्तत्त्वकी दो वृत्तियोंमेंसे एक (वायु० ४.४६)।

अध्वनि (ध्वनि)–पु० [सं०] "आप"का एक पुत्र (विष्णु० १.१५.१११)।

अध्वर—पु० [सं०] यज्ञोंके विविधनामोंमेंसे एक (वायु० २९.४१)।

अध्वर्यु—पु० [सं०] यज्ञके १६ ऋत्विजोंमेंसे एक जो रामके यज्ञमें नारायणकी भुजासे प्रकट हुआ था। इसे पश्चिम दिशाका आधिपत्य मिला (भाग० ९.११.२; १६.२१; मत्स्य० १६७.७; २६५.२६)। सोमके राजसूय यज्ञमें भृगु अध्वर्यु थे (मत्स्य० २३.२०)।

अनंग–पु० [सं०] (१) एक मध्यमाध्वर्यु (ब्रह्मां० २.३३.१७)। (२) दे० अंगज। इसे इन्द्रने गन्धमादन पर्वतपर तप कर रहे धर्मपुत्र विष्णुकी तपस्यामें विघ्न डालकर भंग करनेके लिए वसन्त तथा अनेक अप्सराओंके साथ भेजा था (मत्स्य० ७.२३; २३.३०; १५४.२७२; २९१.३२; वायु० १०४.४८)।

अनंगदानव्रत–पु० [सं०] तेरह महीनोंमें पूरा होनेवाला एक व्रत विशेष जो हरिको प्रिय है। इसे इंद्रने वताया था जो रविवारको जव हस्त, पुष्य या पुनर्वसु उच्चका होता है तव आरम्भ किया जाता है (भविष्योत्तर०)।

अनंगत्रयोदशी–स्त्री० [सं०] मार्गशीर्ष शु० १३ को अनंग नर्मदेश्वर महादेवका पूजन करने तथा व्रत करनेका विधान है (भविष्योत्तर०)।

अनंगमदना–स्त्री० [सं०] चक्ररथेन्द्रके सातवें पर्वपर स्थित एक शक्ति देवीका नाम (ब्रह्मां० ४.१९.२५; ४४.१२४)।

अनंगमदनातुरा–स्त्री० [सं०] चक्रराजरथके सातवें पर्वपर स्थित एक शक्तिदेवीका नाम (ब्रह्मां० ४.१९.२५;४४.१२४)।

अनंगमालिनी–स्त्री० [सं०] चक्रराजरथके सातवें पर्वपर स्थित एक शक्ति देवीका नाम (ब्रह्मां० ४.१९.२६)।

अनंगमेखला–स्त्री० [सं०] एक शक्ति देवी का नाम (ब्रह्मां० ४.४४.१२४)।

अनंगरेखा–स्त्री० [सं०] एक शक्ति देवी (ब्रह्मां० ४.४४.१२५)।

अनंगलेखा–स्त्री० [सं०] चक्रराजरथके सातवें पर्वपर स्थित एक शक्ति देवीका नाम (ब्रह्मां० ४.१९.२५)।

अनंगवती–स्त्री० [सं०] (एक वेश्या) इसने विभूति द्वादशी व्रत करके दूसरे जन्ममें कामदेवकी पत्नीका स्थान प्राप्त किया था। इसका नाम प्रीति पड़ा और यह रतिकी सौत वनी (मत्स्य० १००.१८, ३२)।

अनंगवेगा–स्त्री० [सं०] चक्रराजरथके सातवें पर्वपर स्थित एक शक्ति देवीका नाम (ब्रह्मां० ४.१९.२५)।

अनंगांकुशा–स्त्री० [सं०] चक्रराजरथके सातवें पर्वपर स्थित एक शक्ति देवी (ब्रह्मां० ४.१९.२५; ४४.१२५)।

अनंगाधारमालिनी–स्त्री० [सं०] एक शक्ति देवी (ब्रह्मां० ४.४४.१२५)।

अनंगारि–पु० [सं०] कामदेवका नाश करनेके कारण शंकरका एक नाम (मत्स्य० ७.२३; २३.३०; १५४.२७२; २९१.३२)।

अनंगी–पु० [सं०] कामदेवका एक नाम—दे० अंगज।

अनंत–पु० [सं०] (१) शेषनागका एक नाम। (२) हरिकी तामसी कला। सात्वततंत्रके अनुयायी इसे संकर्षण कहते हैं। इसके १००० फन हैं जिनमेंसे एकपर यह पृथ्वीको धारण किये है। इसकी क्रोधपूर्ण भृकुटियोंके मध्यसे रुद्र अपने ग्यारह रूपोंमें प्रकट हुए। नागवंशके राजकुमार इसके आशीर्वादके लिए इसकी उपासना करते हैं। इसके गलेमें वैजयन्तीमाला है और नारद तथा तुम्बुरु विष्णुके समक्ष इसका गुणगान करते हैं। इसे शेष भी कहते हैं (भाग० ३.२६.२५; ४.९.१४; ५.२५.१-११; ७.७.१०-११; विष्णु० २.५.१३-२७; मत्स्य० २७६.८)। देवकीके सातवें पुत्र वलराम इनके अवतार कहे गये हैं (भाग० १.१४.३५; १०.१.४२; २.५; विष्णु० ५.२५.३; ३५.३। महाप्रलयके समय पृथ्वीको यह अपने पास खींच लेते हैं (भाग० १०.६८.४६)। (३) वीतिहोत्रके या वीरहोत्रके पुत्र और दुर्जयके पिताका नाम (ब्रह्मां० ३.६९.५३; वायु० ९४.५३)।

अनंतचतुर्दशी–स्त्री० [सं०] भादोंके शुक्लपक्षकी चतुर्दशी जिस दिन अनन्त भगवानकी पूजा तथा व्रत करते हैं। "उदये त्रिमुहूर्तापि ग्राह्यानन्तव्रते तिथिः"। पूर्णिमाके सहयोगसे फल वढ़ जाता है। इस दिन चौदह सूतके अनंत सूत्रको जिसमें चौदह ही गाँठें वँधी होती हैं विधिवत् पूजन कर पुरुष दाहिनी भुजापर और स्त्रियाँ वाँई भुजापर वाँधती हैं तथा अलोना भोजन करनेका विधान है। इस सूत्रकी १४ गाँठें सूचित करती हैं कि भगवान १४ भुवनोंका मालिक है और इससे छिपाकर कोई काम नहीं किया जा सकता। ईश्वर सर्वव्यापक तथा सर्वज्ञ है (स्कंद-ब्रह्म-भविष्यादि)।

अनंततृतीयाव्रत–पु० [सं०] दे० गिरितनयाव्रत (मत्स्य० ६२-३३)।

अनंतदृष्टि–पु० [सं०] देवताओंके राजा इन्द्रका एक नाम। एक समय इन्द्रने छलसे गौतमपत्नी अहल्याका सतीत्व नष्ट किया था और चन्द्रमाने इस कार्यमें इन्द्रकी सहायता की थी। पता चलनेपर गौतमने शाप दे इन्द्रके सारे शरीरमें योनि आकारके चिह्न वना दिये। इन्द्रके बहुत प्रार्थनापर ऋषिने योनि-चिह्नोंको नेत्रोंमें वदल दिया था। सारे शरीरमें नेत्र ही नेत्र होनेके कारण इन्द्रका यह नाम पड़ा—दे० अहल्या, गौतम।

अनंतभागी–पु० [सं०] एक भार्गव गोत्रकार (मत्स्य० १९५.२०)।

अनंतशयन–पु० [सं०] शेषशायी विष्णुका एक नाम (मत्स्य० २७६.८)।

अनंतविजय–पु० [सं०] युधिष्ठिरके शंखका नाम (महाभा०–गीता १-१६)।

अनंता–स्त्री० [सं०] स्वायंभुव मनुकी पत्नीका नाम (अनन्ती पाठ मिलता है) (मत्स्य० ४.३३)।

अनघ–पु० [सं०] (१) उपदानवीके पुत्र, पांचालके राजा वैभ्राज, जो ब्रह्मदत्तके पिता थे (मत्स्य० २१.११)। (२) एक मौनेय देवगन्धर्व (वायु० ६९.१)। (कश्यप मुनिकी संतति गन्धर्व और अप्सराओंको मौनेय कहते हैं)। (३) त्रसुके एक पुत्रका नाम (वायु० ९९.१३३)। मनुके ग्यारहवें मन्वंतरके सप्तर्षियोंमेंसे एक ऋषिका नाम जो ऊर्जाके गर्भसे उत्पन्न वशिष्ठके पुत्र थे (विष्णु० १.१०.१३; ३.२.३१)।

अनघा–स्त्री० [सं०] शाकद्वीपकी एक नदीका नाम (भाग० ५.२०.२६)।

अनघाव्रत–पु० [सं०] मार्गशीर्ष कृष्णाष्टमीको होनेवाला एक व्रत—हेमाद्रि।

अनन्यज–पु० [सं०] कामदेवका एक नाम—दे० कामदेव, अंगज।

अनपान–पु० [सं०] (१) दे० दधिवाहन (ब्रह्मां० ३.७४.१०२)। (२) अंगका पुत्र और दिविरथका पिता (विष्णु० ४.१८.१५; ब्रह्मां० ३.७४.१०३)।

अनपाया–स्त्री० [सं०] एक अप्सराका नाम (ब्रह्मां० ३.७.५)।

अनमित्र–पु० [सं०] (१) युधाजित्के पौत्र शिनिके पुत्रका नाम जो निम्नके पिता थे (भाग० ९.२४. १२; ब्रह्मां० ३.७१.२०; विष्णु० ४.१४.१-४)। (२) निघ्नके एक पुत्र जो तप करने वन चले गये थे (मत्स्य० १२.४७-८)। (३) माद्री और वृष्णिका कनिष्ठ पुत्र। वृष्णिकी दो पत्नियाँ थीं गान्धारी और माद्री। गान्धारीसे एक पुत्र हुआ सुमित्र और माद्रीसे पाँच पुत्र हुए—युधाजित्, देवमीढुष, अनमित्र, शिवि और कृत। इनके निघ्न, शिनि, युधाजित्, वृषभ और क्षत्र ५ पुत्र थे। इनकी पत्नीका नाम पृथ्वी था (मत्स्य० ४५.२-३; २२, २५; वायु० ९६.९९; विष्णु० ४.१३.९; १४.१)।

अनरक–पु० [सं०] नर्मदा नदीके एक क्षेत्रका नाम जहाँ स्नान कर लेनेपर नरकका भय नहीं रहता (मत्स्य० १९२.१-३; १९३.१७)।

अनरण्य–पु० [सं०] (१) त्रसद्दस्युके पुत्रका नाम जो हर्यश्व (पृषदश्व–विष्णु०) का पिता था। दिग्विजय करते समय रावणने इसे मारा था। (भाग० ९.७.४; विष्णु० ४.३.१७-१८)। (२) सम्भूतके पुत्रका नाम जिसे रावणने मारा था (ब्रह्मां० ३.६३.७४; वायु० ८८.७५-६)। (३) कल्माषपादके पुत्र सर्वकर्माका पुत्र (मत्स्य० १२.४७)।

अनर्क–पु० [सं०] पिशाचोंकी १६ जातियोंमेंसे एक जाति (वायु० ६९.२६४)।

अनर्वा–पु० [सं०] वृत्र-इन्द्र युद्धमें वृत्रके एक अनुयायीका नाम (भाग० ६.१०.१९,३१)।

अनल–पु० [सं०] (१) माली राक्षसका पुत्र तथा विभीषणका मन्त्री (दे० रामायण)। अनेकजन्मजनन नामक इसका एक पुत्र था (मत्स्य० २०३-६)। (२) वसुके आठ पुत्र वसुओंमेंसे एक वसुका नाम। स्वाहासे कुमार नामक इसे एक पुत्र हुआ। शाख, विशाख और नैगमेय इसके अन्य पुत्र थे। हरिकी पुत्री शिवासे इन्हें दो पुत्र हुए जो अग्निके समान थे। यह स्कंद तथा सनत्कुमारके पिता थे (ब्रह्मां० ३.३.२१; मत्स्य० ५.२१-५; २०३.३; विष्णु० १.१५.११०, ११५; वायु० ६६.१०, २४)। (३) राक्षसोंके एक पहाड़का नाम (वायु० ३९.५३)। (४) अग्नि–पुरूरवाके कहनेपर यह तीन खंडोंमें विभक्त हो गयी (विष्णु० ४.६.९४) यह स्वर्णका अधिपति है (विष्णु० ५.१.१४) अग्निके दिव्य, भौतिक, आप्य, पार्थिव आदि भेदोंसे अनेक प्रकार हैं। वाणासुर-संग्राममें श्रीकृष्णने इसपर विजय प्राप्त की थी (विष्णु० ५.३३.२०; वायु० ५३.५)। (५) निषधके पुत्रका नाम जो नभसके पिता थे (विष्णु० ४.४.१०६)। (६) किष्किन्धाधिपति वालीका सेनापति या सामन्त एक महाबली वानर (ब्रह्मां० ३.७.२३५)।

अनला–स्त्री० [सं०] [१] सुरभिपुत्री रोहिणीकी दो कन्याओंमेंसे एक (महाभा० सभा० ६६.६०)। इसे इला भी कहते हैं। (२) दक्ष प्रजापतिकी साठ पुत्रियोंमेंसे एक जो अपनी अन्य १२ बहिनोंके साथ कश्यप प्रजापतिको व्याही थी। अनला फलवाले सम्पूर्ण वृक्षोंकी माता कही जाती हैं (ब्रह्मां० ३.७.४५९-६३, ४६८; मत्स्य० ६.२.४६; १४६.१८; वायु० ६९.३३९-४२; विष्णु० १.१५.१२५; २१.२४)। (३) माल्यवानकी एक पुत्री (रामायण सु० काण्ड)।

अनवद्या–पु० [सं०] एक अप्सराका नाम (वायु० ६९.४८)।

अनव–पु० [सं०] चकोरके पुत्र तथा शिवस्वातिके पिताका नाम (भाग० १२.१.२६)।

अनवशा–स्त्री० [सं०] एक अप्सराका नाम (वायु० ६९.४८)।

अनसूय–पु० [सं०] त्र्यार्षेय तथा काश्यप (मत्स्य० १९९.१२)।

अनसूया–पु० [सं०] देवहूतिके गर्भसे उत्पन्न कर्दम (दक्ष–वायु० तथा विष्णु०) ऋषिकी पुत्रीका नाम। इनका विवाह अत्रि ऋषिसे हुआ था तथा यह अपने पातिव्रत धर्मके लिए विख्यात हैं। चित्रकूटसे पंचवटी जाते समय श्रीराम सपत्नीक इनके आश्रमपर पधारे थे तब इन्होंने जानकीको नारीधर्मकी अनेक शिक्षाएँ दी थीं। अत्रि-पुत्र दत्तात्रेय, दुर्वासा तथा सोम इन्हींके गर्भसे उत्पन्न हुए थे (भाग० १.३.११; ३.२४.२२; ४.१.१५; विष्णु० १.७.७.२५)। यह पाँच 'आत्रेय पुत्रों' तथा 'श्रुति' पुत्रीकी माता थी (वायु० १०.२८,३१; २८.१८,१९; ब्रह्मां० २.९.५२; ११.२२)।

अनाधृष्ट (दृष्ट)–पु० [सं०] (१) वसुदेवके नौ भाइयोंमेंसे एक भाई। (२) एक राजर्षिका नाम, इनके पुत्रका नाम रेवेयु था (वायु० ९६.१४८; ९९.१२७)।

अनाधृष्टि (दृष्टि)–पु० [सं०] (१) उग्रसेनके पुत्रका नाम जो यादवोंका सेनापति था। (२) अस्मकीके पुत्रका नाम (वायु० ९६.१८६)। (३) शूर और भोजाका पुत्र (ब्रह्मां० ३.७१.१४९, १८९; मत्स्य० ४६.३)।

अनायु–स्त्री० [सं०] दक्षकी एक पुत्रीका नाम जो कश्यपकी पत्नी तथा देवताओंकी माता थी (?)। यह भोजन करनेके लिए प्रसिद्ध 'ह्यनायुर्भक्षणेरता' थीं (ब्रह्मां० ३.३.५६; ७.४६८; मत्स्य० १७१.२८)।

अनायुषा–स्त्री० [सं०] यह रोगोंकी माता कही गयी हैं (मत्स्य० १७१.५९)। इसके अरु आदि पाँच पुत्र थे (ब्रह्मां० ३.६.३०)।

अनारण्य (अन ?)–पु० [सं०] इक्ष्वाकुवंशोत्पन्न अयोध्याके एक

राजाका नाम। रामायणानुसार यह लंकापति रावणके हाथों युद्धमें मारे गये थे। इन्होंने मरते समय रावणको अपने ही वंशके राम द्वारा मारे जानेका शाप दिया था।

अनाशकफल—पु० [सं०] एक विशेष नियमानुसार प्रयागमें एक महीनेतक स्नानसे प्राप्त फल (मत्स्य० १०८.२,१४)।

अनाहिताग्नि—पु० [सं०] वे जो अग्निहोत्री नहीं हैं। ये अग्निहोत्रियोंसे भिन्न अनग्निहोत्री होते हैं (वायु० ३०.६)।

अनिरुद्ध—पु० [सं०] (१) अनिरुद्ध रुक्मवतीके गर्भसे उत्पन्न प्रद्युम्नके पुत्र और श्रीकृष्णके पौत्र थे। यह कामदेवके समान सुन्दर थे। राजा वलिके ज्येष्ठ पुत्र वाणासुरकी पुत्री ऊपा इन्हें व्याही थी। ऊषाके कहनेपर ही उसकी सखी चित्रलेखा अनिरुद्धको वायुयान द्वारा उसके महलमें ले गयी थी। पता चलनेपर वाणासुरने अनिरुद्धको वन्दी कर लिया, अतः श्रीकृष्ण और वाणासुरमें घोर युद्ध हुआ जिसमें वाणासुर मारा गया। (शुकोक्तिसुधासागर दशम स्कंध उत्तरार्ध)।

रुक्मीकी पोती रोचनासे भोजकटमें इनका विवाह हुआ था जिसमें श्रीकृष्ण तथा वलरामादि गये थे (भाग० १०.६१.१८, २३, २५-२६, ४०)। ऊपाने अनिरुद्धको स्वप्नमें देखा और उसकी सखी चित्रलेखाने इनका चित्र अंकित कर दिया और अनिरुद्धको शोणितपुर ऊपाके पास यही ले गयी थी। पता चलनेपर वाणने इन्हें वन्दी कर लिया (भाग० १०.६२.१२, २०-२७, ३५)। नारदने अनिरुद्धके वन्दी होनेकी सूचना श्रीकृष्ण तथा वृष्णिको दी थी। घोर युद्धोपरान्त ऊपाको व्याह कर सव द्वारका आये (भाग० १०. ६३ अध्याय पूरा) वज्र इनका पुत्र था (भाग० १०.९०.३३, ३६-३७)। सूर्यग्रहणमें यह भी स्यमंतपंचक गये थे (भाग० १०.८२.७)। प्रभासमें सात्यकिसे इनका युद्ध हुआ था (भाग० ११.३०.१६) पाँच वंशवीरोंमें एक यह भी थे (ब्रह्मां० ३.७२.२)। मृगकेतन इनके एक पुत्र थे जिनका स्थापत्य कलापर आधिपत्य था (मत्स्य० ४७.२३; ९३.५१; २४८.४९; २५२.३)। (२) एक वंशवीर (वायु० ९७.२; १११.२१)। (३) हरिके चार रूपोंमेंसे एक (भाग० १.५.३७; १०.१६.४५; ४०.२१; १२.११.२१; मत्स्य० २७६.९)। यह शब्दयोनि थे और चित्त, अहंकार, बुद्धि तथा मन रूपसे चार प्रकारके अन्तःकरणके वासुदेव, संकर्षण, प्रद्युम्नमें चौथे देवता कहे जाते हैं (भाग० ३.१.३४)। सव ज्ञानेन्द्रियोंके यह एकमात्र अधिपति थे (भाग० ३.२६.२८; ४.२४.३६)। ललिता-भण्ड-युद्धमें श्री ललितादेवीसे यह उत्पन्न हुए (ब्रह्मां ४.२९.१२८)।

अनिल—पु० [सं०] (१) वायु देवता—वायव्य दिशाके अधिपति (भाग० ३.६.१६)। वायुका एक नाम (ब्रह्मां० २.२५.-१२)। यह भीमसेनके पिता थे (विष्णु० ४.१४.३५; भाग० ९.२२.२७)। (२) ईशान नामक शिवकी चौथी वायुमूर्ति जिसका विवाह शिवासे हुआ था। मनोजव और अविज्ञातगति इनके दो पुत्र थे—दे० ईशान; (ब्रह्मां० २.१०.८०)। (३) अष्ट वसुओंमेंसे एक वसुका नाम (ब्रह्मां० ३.३.२१; मत्स्य० ५.२१; २०३.३; वायु० ६६.२०.२५; विष्णु० १.१५.११०, ११४)। (४) वायुपुराण जिसे पवनदेवने समास, वन्ध, मात्रिकगतिके साथ सुनाया था (वायु० ३·८)। इसमें २३००० पद्य हैं (वायु० १०४.७)। (५) मित्रविंदाके गर्भसे उत्पन्न कृष्णके एक पुत्रका नाम (भाग० १०.६१.१६)।

अनिष्टकर्मा—पु० [सं०] अटमानके पुत्र तथा हालेयके पिताका नाम (भाग० १२.१.२३)।

अनीक—पु० [सं०] प्रथम सावर्णि मनुके नौ पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (ब्रह्मां० ४.१.६५)।

अनीकवान्—पु० [सं०] अर्क नामक अग्निके एक पुत्रका नाम (वायु० २९.४०; ब्रह्मां० २.१२.४३)।

अनीचक—पु० [सं०] श्याम पर्वतके आसपासके देशका नाम। इसका आनन्दक नाम भी है (मत्स्य० १२२.२३)।

अनीह—पु० [सं०] श्रीरामकी सातवीं पीढ़ीके वंशज देवानीकके पुत्र तथा पारियात्रके पिताका नाम (भाग० ९.१२.२)।

अनु—पु० [सं०] (१) स्वायंभुव मनुके एक पुत्रका नाम जिसे हरिकी योग-शक्तिका ज्ञान था (भाग० २.७.४४)। (२) शर्मिष्ठाके गर्भसे उत्पन्न महाराज ययातिके एक पुत्रका नाम जिसने अपनी जवानी पिताको देना अस्वीकार किया था (भाग० ९.१८.३३, ४१; ब्रह्मां० १.१.१३३; ३.६८.१६-१७, ५१-७९, ८४; मत्स्य० २४.५४; ३२.१०; विष्णु० ४.१०.१०-१५)। यह राज्यके उत्तरी भागके अधिपति हुए (भाग० ९.१९.२२; ब्रह्मां० ३.६९.९०; ७३.१२६; वायु० १.१५६; ९३.१७; विष्णु० ४.१०.३२)। सभानर, चक्षु (मत्स्यके अनुसार चाक्षुप और परमेपु) और परोक्ष (ब्रह्माण्डके अनुसार पराक्ष) इनके तीन पुत्र थे (भाग० ९.२३.१; ब्रह्मां० ३.७४.१२; मत्स्य० ४८.१०)। पिताके शापसे यह अग्निप्रस्कन्दन (संग्रहणी) रोगसे पीड़ित हो मरे थे (मत्स्य० ३३.२४; ययाति)। इनसे म्लेच्छ वंश उत्पन्न हुए (मत्स्य ३३.२१-२४; ३४.३०)। (३) कुरुवंश (कुरूवश) के पुत्र तथा पुरुहोत्रके पिताका नाम (भाग० ९.२४.५-६)। (४) कपोतरोमाके पुत्र तथा अंधकके पिता। तुम्बुरु इनके मित्र थे (भाग०.९.२४.२०)। (५) कुमारवंशके पुत्र तथा पुरुमित्रके पिताका नाम (विष्णु० ४.१२.४२)। (६) विलोमाके एक पुत्र तथा आनकदुंदुभिके पिता और तुम्बुरुके मित्र (विष्णु० ४.१४.१३-१४)। (७) यदुके पुत्रका नाम जिनके तीन पुत्र थे (विष्णु० ४.१८.१)।

अनुकृष्ण—पु० [सं०] एक चरकाध्वर्यु (यजुर्वेदी) ब्रह्मचारी (ब्रह्मां० २.३३.१३)।

अनुगंगप्रयाग—पु० [सं०] यह नागवंशके राजाओं (ब्रह्मां० ३.७४.१९४) तथा गुप्तवंशके राजाओंके अधीन (वायु० ९९.३८३) कहा जाता है।

अनुग्रहसर्ग—पु० [सं०] पाँचवें सर्ग या सृष्टिका नाम। यह भूतोंमें चार विभागोंसे विभक्त है—स्थावरोंमें विपर्यय रूपसे, तिर्यग्योनि पशु आदिमें शक्ति रूपसे, देवताओंमें तुष्टिरूपसे और मनुष्योंमें सिद्धि रूपसे। इससे विवृत्त और वर्तमानका उन्हें ज्ञान होता है (वायु० ६.५७, ६७-६९; ९.११७)।

अनुग्रहेश्वर—पु० [सं०] (सद्योजात आदिमेंसे) एक वरमूर्तिका नाम (ब्रह्मां० ४.४४.५०)।

अनुचर—पु० [सं०] हरितदेवगणके एक देवता (ब्रह्मां० ४.१.८४)।

अनुतप्ता—स्त्री० [सं०] (१) शाकद्वीपकी नदी सुकुमारीका एक दूसरा नाम (वायु० ४९.९१)। (२) प्लक्षद्वीपकी सात नदियोंमेंसे एक नदी (ब्रह्मां० २.१९.१९; वायु० ४९.१७;

विष्णु० २.४.११)।

अनुतापन–पु० [सं०] कश्यपपत्नी दनुके ६१ पुत्रोंमेंसे एक दानवका नाम (भाग० ६.६.३१)।

अनुत्तम–पु० [सं०] तपस्याका एक प्रकार विशेष जिसे सृष्टि चलानेके हेतु अत्रि ऋषिने किया था—दे० अत्रि; (मत्स्य० २३.२)।

अनुदृक्साम–पु० [सं०] सात मरुद्गणोंमेंसे ७वें गणके ५वें एक मरुत्का नाम (वायु० ६७.१२९)।

अनुपदेव–पु० [सं०] उग्रसेनीके गर्भसे उत्पन्न अक्रूरके दो पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (वायु० ९६.११२)।

अनुपर्वत–पु० [सं०] पद्मवनका एक नाम जो लौहित्य और सिन्धुके मध्य स्थित था जहाँ पद्महस्ती मिलते थे इसीसे यह इस नामसे विख्यात था (ब्रह्मां० ३.७.३५९; वायु० ६९.२४१)।

अनुपालिका–स्त्री० [सं०] वाकाकी एक पुत्रीका नाम। इसके त्रिशिरा, दूषण और विद्युज्जिह्व ये तीन भाई थे (ब्रह्मां० ३.८.५६)।

अनुभानु–पु० [सं०] दनुपुत्र, एक दानवका नाम (वायु० ६८.१४)।

अनुभूमि–स्त्री० [सं०] एक चरकाध्वर्य्यु (यजुर्वेदी) ब्रह्मचारी (ब्रह्मां० २.३३.१३)।

अनुमति–स्त्री० [सं०] (१) श्रद्धाके गर्भसे उत्पन्न अंगिरा ऋषिकी चार पुत्रियोंमेंसे एक पुत्रीका नाम जो धाताकी पत्नी तथा पूर्णमासकी माता थी (भाग० ४.१.३४; ६.१८.३)। (२) शाल्मलद्वीपकी एक नदीका नाम (भाग० ५.२०.१०)।. (३) षोडशपत्राब्जपरकी एक देवीका नाम (ब्रह्मां० ४.३२.१२)। (४) एक पूर्णिमा, जिसमें एक चन्द्रकला हीन रहती है। प्रतिपदाकी सन्धिका एक समय जो केवल दो लवों (कालका एक अत्यन्त अल्प मान) का होता है (मत्स्य० १३३.३६, १४१.३३, ४०,५१; वायु० ५६.३५,५५; विष्णु० २.८.८२)। (५) भार्गव गोत्रकारोंमेंसे एकका नाम (मत्स्य० १९५.२८)। (६) स्मृतिके गर्भसे उत्पन्न अंगिरा ऋषिकी चार पुत्रियोंमेंसे एक पुत्रीका नाम (वायु० २८.१५; विष्णु० १.१०.७)। यह एकचन्द्रकलाहीन पूर्णिमाका नाम है (वायु० ५०.२०१; ब्रह्मां० २.११.१८)।

अनुमंता–पु० [सं०] आद्यपरिवारके देवगणके एक देवताका नाम (ब्रह्मां० २.३६.६९; ३.३.१६) वायु० ६६.१५ के अनुसार चाक्षुप मन्वन्तरके बारह साध्योंमेंसे एक साध्य।

अनुम्लोचन्ती–स्त्री० [सं०] दस अप्सराओंमेंसे एक अप्सराका नाम (वायु० ६९.५०)।

अनुम्लोचा–स्त्री० [सं०] (१) एक अप्सरा, जिसका भाद्रपदमें सूर्यके रथपर निवास रहता है (विष्णु० २.१०.१०; भाग० १२.११.३८; ब्रह्मां० २.२३.१०; ३.७.१५)।

अनुराधा–पु० [सं०] जारद्गवी वीथी और मध्यम मार्गका एक नक्षत्र। इसमें श्राद्ध करनेका उत्तम फल कहा गया है (वायु० ६६.५०; ८२.९)।

अनुरूपमाय–पु० [सं०] सुदेवीके गर्भसे उत्पन्न धर्मके एक पुत्रका नाम। यह अष्ट वसुओंमेंसे एक वसु है (मत्स्य० १७१.४७)।

अनुवत्सर–पु० [सं०] सौर, बार्हस्पत्य, सावन, चान्द्र और नाक्षत्र भेदसे जो पाँच साल होते हैं, उनमेंसे चौथा साल (भाग० ३.११.१४), पाँच सालके युगका चौथा साल विष्णु० २.८.७२)। यह वायु है (यजुस्संहिता) (ब्रह्मां० २.१३.११५,११९,१३४; २१.१३४; २८.२२; मत्स्य० १४१.१८; वायु० ३१.३१)। अहोरात्रकर (वायु० ३१.२७; ५६.२०; ५०.१८३; ब्रह्मां० २.१३. १३४)।

अनुवंश–पु० [सं०] देवावृध और उनके पुत्र बभ्रु आदि इसी वंशके थे (मत्स्य० ४४.५७)।

अनुवह–पु० [सं०] सप्तर्षिमण्डल और ग्रहोंके बीचमें स्थित छठे वातस्कन्धका प्रधान (ब्रह्मां० ३.५.८७)।

अनुविंद–पु० [सं०] अवन्तिके एक राजकुमारका नाम जो विन्द और मित्रविन्दाका भाई था। यह श्रीकृष्णके साथ अपनी बहिन मित्रविन्दाके विवाहके पक्षमें नहीं था। विन्द भी इससे सहमत था और इन्हें दुर्योधन अधिक उपयुक्त वर जँचता था (भाग० १०.५८.३०; ब्रह्मां० ३.७१. १५८)। जरासन्धने इसे मथुराके दक्षिण प्रवेश द्वारपर नियुक्त किया था (भाग० १०.५०.११(३)। गोमन्तके घेरके समय भी इसे दक्षिणका ही भार मिला था। भागवतके अनुसार यह राजाधिदेवीका पुत्र था (भाग० १०. ५८.३१; वायु० ९६. १५७; विष्णु० ४.१४.४३)।

अनुवृत्ता–स्त्री० [सं०] ऋषाकी एक कन्याका नाम। ऐणेय, शम्बूक, मण्डूकादिका जन्म इनसे हुआ (ब्रह्मां० ३.७.११४.-४१८; वायु० ६९.२९१,२९५)।

अनुव्रत–पु० [सं०] (१) शूर और भोजाकी एक पुत्री श्रुतकीर्त्तिके पुत्रका नाम (मत्स्य० ४६.५)। (२) शाकद्वीपमें रहनेवाली एक पुरुष जाति (भाग० ५.२०.२७)।

अनुषंग–पु० [सं०] प्रक्रियापादके पश्चात् यह आता है। पुराणका द्वितीय पाद (ब्रह्मां० १.१.३९; २.३१.१२७; ३.१.१; ४.४.४३; वायु० ४.१३; ६५.१-२)। त्रेताका यह ३००० वर्षका है (वायु० ३२.६१; ५८.१२६; १०३.४४)।

अनुष्टुभ–पु० [सं०] (१) सूर्यके रथके एक घोड़ेका नाम (वायु० ५१.६४; ब्रह्मां० २.२२.७२; मत्स्य० १२५.४७; विष्णु० २.८.५)। (२) एक छन्द। ब्रह्माके चौथे मुखसे इसकी उत्पत्ति हुई (ब्रह्मां० २.८.५३; विष्णु० १.५.५६ (भाग० ११.२१.४१; वायु० ९.५२)।

अनुह्लाद, अनुहाद–पु० [सं०] कयाधु और हिरण्यकशिपुके एक पुत्रका नाम जिसका विवाह सूर्म्यासे हुआ था। वाष्कल और महिष इनके दो पुत्र हुए (भाग० ६.१८.१३, १६; ब्रह्मां० ३.५.३३)। सिनीवाली भी इन्हींके पुत्र कहे गये हैं, जिनसे हालाहलगण उत्पन्न हुए (मत्स्य० ६.९; वायु० ६७.७०.७५; विष्णु० १.१५.१४२)। इनका राज्य तीसरे पाताल (वितल) में था। इनकी पुत्री भद्रा मणिवरा रजतनाभ यक्षको व्याही थी (ब्रह्मां० २ २०.२६; ३.७.११९; वायु० ५०.२५)।

अनूप–पु० [स्त्री०] एक राज्यका नाम जो पृथुसे स्तुतिकर्ता सूतको मिला था। यहाँके निवासी विन्ध्य पर्वतपरकी एक इसी नामकी जातिके थे (ब्रह्मां० २.३६.१७२; वायु० ६२.१४७)।

अनूरु–पु० [सं०] (अरुण) विनताके गर्भसे उत्पन्न कश्यपके

एक पुत्रका नाम जो सूर्यका सारथि तथा गरुड़का अग्रज है (भाग० ६.६.२२; तथा अरुण)।

अनृत—पु० [सं०] (१) (सत्यका उलटा) कहीं-कहीं असत्य भी ग्राह्य है (भाग० ८.१९.३८.४३)। बलि इससे विमुख था (भाग० ८.२०.२-५)। पाँच अवसरोंपर इसका कोई पातक नहीं होता :—हास-उपहासमें, स्त्रियोंसे बोलनेमें, विवाहमें, जब जीवन संकटमें हो, जब सर्वस्व हरा जाय (मत्स्य० ३१.१६)। (२) हिंसा और अधर्मके पुत्रका नाम। यह भय और नरकका पिता है (ब्रह्मां० २.९.६३; वायु० १०.३९)।

अनेक—पु० [सं०] त्रयोदश मन्वन्तरके रौच्य मनुके एक पुत्रका नाम (वायु० १००.१०९)।

अनेकजन्मजनन—पु० [सं०] अष्ट वसुओंमेंसे छठें वसु अनलके एक पुत्रका नाम (मत्स्य० २०३.६)।

अनेना—पु० [सं०] (१) ककुत्स्थके (इनका नामान्तर पुरंजय था) पुत्र तथा पृथुके पिताका नाम (भाग० ९.६.२०; ब्रह्मां० ३.६३.२६; वायु० ८८.२५; विष्णु० ४.२.३३)। (२) आयुके एक पुत्रका नाम जो शुद्धके पिता थे (भाग० ९.१७.२; ११; ब्रह्मां० ३.६७.२; विष्णु० ४.८.३)।

अनेह—पु० [सं०] एक प्रवर (मत्स्य० १९६.३१)।

अनोवैन—संज्ञा० पु० [सं०] व्यासजीकी सामवेदशिष्य-परम्परामें हिरण्यनामके शिष्य लौगाक्षिके शिष्यका नाम (ब्रह्मां० २.३५.४१)।

अनौपम्या—स्त्री० [सं०] बाणासुरकी पत्नीका नाम। सास तथा ननदसे तिरस्कृत होनेपर नारदने इसे एक मंत्रकी दीक्षा दी, जिससे यह सबको प्रसन्न कर सकी थी (मत्स्य० १८७.-२५—५२)।

अन्नकूट—पु० [सं०] कार्त्तिक शुक्ल प्रतिपदाको अर्थात् दीपावलीके ठीक दूसरे दिन मनाया जानेवाला एक धार्मिक उत्सव। यह प्रतिपदासे पूर्णिमाके भीतर यथारुचि किसी दिन होता है। कहते हैं—पहले व्रजमें इसी तिथिको इन्द्रकी पूजा होती थी जिसे श्रीकृष्णके आदेशानुसार बन्द कर व्रजवासी गोवर्धन पर्वतकी पूजा करने लगे। इससे अप्रसन्न हो सारे व्रजको इन्द्रने जलमग्न कर दिया, पर कृष्णने गोवर्धनको सात दिनोंतक हाथपर उठाये रखा और व्रजवासी पर्वत-गर्तमें सुरक्षित बैठे रहे। इस प्रकार इन्द्रका दर्प चूर्ण कर केवल देववादकी शरण लेनेवाली तत्कालीन जनताको श्रीकृष्णने उद्योग तथा कर्मठताका पाठ पढ़ाया था।

इसी दिनसे यह पूजा होती चली आ रही है, जिसमें नाना प्रकारके पकवान तथा व्यंजनोंका भोग भगवान्को लगता है। काशीमें विश्वनाथ तथा अन्नपूर्णाके मन्दिरोंमें और विशेषतया गोपालमन्दिरमें यह उत्सव देखने ही योग्य होता है। मथुरा, वृन्दावन तथा द्वारका इसके केन्द्र हैं (श्रीमद्भागवत दशम स्कन्ध पूर्वार्धके २४—२७ अध्याय; सनत्कुमारसंहिता, व्रतोत्सव आदि)।

अन्नपूर्णा—स्त्री० [सं०] (१) अन्नकी अधिष्ठात्री देवी दुर्गाका एक रूप। इनका काशीमें बड़ा माहात्म्य है। कहते हैं—इनकी कृपासे वहाँ रात्रिमें कोई भूखा नहीं सोता। काशीमें व्यासजीके भूखे रहनेकी कथा प्रसिद्ध है। (२) चिन्तामणि-गृहकी एक देवी (ब्रह्मां० ४.३६.२३)।

अन्नप्राशन—पु० [सं०] मनुष्यके १६ संस्कारोंमेंसे एक, जिसमें बच्चेको सर्वप्रथम अन्न चटाया जाता है। लड़केका छठे या आठवें महीने तथा लड़कीका पाँचवें या सातवें महीनेमें यह संस्कार करे (मनुस्मृति २.३४)।

अन्नाद—पु० [सं०] (१) विष्णुके सहस्र नामोंमेंसे एक। “विष्णुसहस्रनाम” (ग्रन्थ विशेष) के पढ़ने तथा सुननेका बड़ा फल है (विष्णु०)। (२) मित्रविन्दाके गर्भसे उत्पन्न श्रीकृष्णका एक पुत्र (भाग० १०.६१.१६)। (३) अर्क नामक अग्निके एक पुत्रका नाम (ब्रह्मां० २.१२.४३)।

अन्य—पु० [सं०] (१) भृगुके १२ भृगुदेव पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (वायु० ६५.८७)। (२) एक राजर्षिका नाम, जो तपस्या द्वारा ऋषि हो गया था (वायु० ९१.११६)।

अन्यादृक—पु० [सं०] पाँचवें मरुत्गणके सातमेंसे एक मरुत्का नाम (ब्रह्मां० ३.५.९६; वायु० ६७.१२७)।

अन्यादृक्ष—पु० [सं०] छठे मरुत्गणमेंसे एकका नाम (वायु० ६७.१२८)।

अन्यायत—पु० [सं०] भृगुके याज्ञिक भृगुदेव पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (वायु० ६५.८७)।

अन्वता—स्त्री० [सं०] एक अप्सराका नाम (वायु० ६९.४८)।

अन्वष्टका—पु० [सं०] अगहन (मार्गशीर्ष), पौष, माघ तथा फाल्गुनकी पूर्णिमाके पश्चात् कृष्णपक्षकी ९मी तिथि। इसके नाम हैं—त्रित्री, प्राजापत्या और वैश्वदैविकी। इनमें पितरोंका श्राद्ध करनेका बड़ा माहात्म्य है (वायु० ८१. ४.५; मनुस्मृ० ४-१५०]।

अन्वाहार्य—पु० [सं०] पितरोंका मासिक श्राद्ध (मनुस्मृ० ३.१२३)।

अन्वाहार्यपचन—पु० [सं०] अग्नि विशेष जिससे वृत्र उत्पन्न हुआ (भाग० ६.९.१२)।

अन्वाधानक्रिया—स्त्री० [सं०] पर्वोंकी सन्धियोंपर अग्निकी सहायतासे किये जानेवाले कुछ धार्मिक कृत्य (ब्रह्मां० २.२८.३७)।

अप—पु० [सं०] हरित देववर्गके १० देवोंमेंसे एक (वायु० १००.८९)।

अपग—पु० [सं०] किरातोंकी एक जातिका नाम (वायु० ४५.१२०)।

अपचिति—स्त्री० [सं०] संभूतिके गर्भसे उत्पन्न मरीचिकी चार पुत्रियोंमेंसे एक पुत्री। इनके भाईका नाम पूर्णमास था (वायु० २८.९)।

अपत्तनगण—पु० [सं०] पर्वतोत्तम हेमकक्षपर स्थित विशाल गन्धर्वनगरीमें रहनेवाले सिद्ध गन्धर्वोंका नाम। राजराज कपिंजल इनके शासक हैं (वायु० ३९.५२)।

अपथगण—पु० [सं०] एक पहाड़ीप्रदेशकी जनता (मत्स्य० ११४-५५)।

अपप्रावरण—पु० [सं०] एक पहाड़ी जाति (ब्रह्मां० २.१६. ६७)।

अपर्णा—स्त्री० [सं० अ = नहीं + पर्ण = पत्ता] पार्वतीजीका एक नाम। पुराणानुसार पार्वतीने शिवके लिए वर्षों तप किया और अन्न-जलतक त्याग दिया था। इनकी माताने ऐसा करनेसे इन्हें मना किया—“उ मा” ऐसा मत करो। इसीसे इनका नाम “उमा” पड़ गया। “पुनि परिहरेउ सुखानेउ परना। उमा नाम तब भयउ अपरना”॥

(रामायण बालकाण्ड, दो० ७३।७ तथा ब्रह्मां० ३.१०. ८-१३; वायु० ७२.७, ११-१२)।

अपरजलकृच्छ्र–पु० [सं०] निराहार एक दिन प्रातःकालसे दूसरे दिन प्रातःकालतक गलेतक पहुँचे जलमें खड़ा रहे। यह एक प्रायश्चित्त विशेष है—"प्रायश्चितेन्दुशेखर"।

अपरांत–पु० [सं०] एक देशका नाम। विष्णुपुराणानुसार उत्तर दिशाके देशोंके नामोंके साथ इसका भी नाम आया है, पर वायुपुराणानुसार इसका नाम "अपरित" ठहरता है। हरिवंशके अनुसार इस देशको समुद्रसे परशुरामजीने क्षत्रियोंके संहारके पश्चात् जीता था। उत्तर दिशाके एक राज्यका नाम (ब्रह्मां० २.१६.४६; मत्स्य० ११४.५१)। पश्चिम दिशाके निवासी (विष्णु० २.३.१६)।

अपरा–स्त्री० [सं०] वसुदेवकी १३ पत्नियोंमेंसे एकका नाम (वायु० ९६.१६०)।

अपराएकादशी–स्त्री० [सं०] ज्येष्ठ कृ० एकादशी, जिससे अपार पाप दूर होते हैं। दशमीको जौ, गेहूँ, मूँग एक बार भोजन करे तथा एकादशीको व्रत करे और दूसरे दिन पारणा करे (ब्रह्मां० तथा नारदपुराण–पूर्व भाग–चतुर्थ पाद)। इसमें द्वादशीको प्रातःकाल नित्यकर्मसे निवृत्त हो भगवान् त्रिविक्रमकी पूजाका विधान है।

अपराजित–पु० [सं] (१) देवासुर-संग्राममें यह नमुचिसे लड़ा था (भाग० ८.१०.३०)। (२) माद्रीके गर्भसे उत्पन्न श्रीकृष्णके एक पुत्रका नाम (भाग० १०.६१.१५)। (३) कुरण्डसे युद्ध करनेके हेतु ललिता जिस घोड़ेपर चढ़कर गयी थी उसका नाम (ब्रह्मां० ४.२२.९४)। (४) एकादश रुद्रोंमेंसे एक रुद्रका नाम (मत्स्य० १७१.३८; विष्णु० १.१५.१२२)। (५) संसारका सन्तुलन ठीक रखनेके हेतु चार प्रधान दिशाओंमेंसे एकपर स्थित हाथीका नाम (भाग० ५.२०.३९)।

अपराजिता–स्त्री० [सं०] (१) शाकद्वीपकी सात नदियोंमेंसे एक नदीका नाम (भाग० ५.२०.२६)। (२) अन्धकासुर युद्धमें अन्धकोंके रुधिर पानार्थ महादेव द्वारा सृष्ट एक मानस-पुत्रीका नाम जो मातृगणमें अन्यतम है (मत्स्य० १७९.१३,६९)।

अपराह्ण–पु० [सं०] कालचक्रस्थ पंचकोणके अग्रभागमें स्थित कालकी पाँच शक्तियोंमेंसे एक शक्ति (ब्रह्मां० ४.३२.१०)।

अपर्णा–स्त्री० [सं०] पार्वतीजीका एक नाम, जिनकी दो बहिनें और थीं—एकपर्णा और एकपाटला। ये दो बहिनें केवल पत्ते खाकर तप करती थीं। किन्तु अपर्णा शिवको प्राप्त करनेके हेतु निराहार दुश्चर तप करती थीं। माँ मेना स्नेहवश 'उ मा' ऐसा मत करो यों निषेध करती थीं इससे आगे वह "उमा" कहलाने लगीं। यह हिमवान् तथा मेनाकी पुत्री थीं। अपर्णा अर्थात् (अ=बिना, पर्णा=पत्तोंके) (ब्रह्मां० ३.१०.८-१३; वायु० ७२.७,११-१२)। मेनाकी ये तीनों पुत्रियां क्रमशः शिव, सित और जैगीषव्यको व्याही गयीं (मत्स्य० १३.८-९)।

अपवर्ग–पु० [सं०] "सुसूक्ष्म परमपद अपवर्ग है—वह ज्ञानसे प्राप्त होता है।" वह दुःखसे अस्पृष्ट उच्च कोटिका परम सुख रूप है। इस 'सुसूक्ष्म'का बोध ज्ञानसे होता है—"ज्ञानेन चापवर्गः"। इससे "व्यापक", "पुरुष" ब्रह्मकी प्राप्ति होती है, जो परमानन्द पद है (वायु० १३.२२)।

अपसव्य–पु० [सं०] शंस्य नामक अग्निके दो पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (ब्रह्मां० २.१२.१३)।

अपस्मारगण–पु० [सं०] मृगी नामका एक रोग, किसी-किसीके मतानुसार दुष्ट प्रेतोंका समूह (भाग० १०.६.२८)।

अपस्यति–पु० [सं०] सुनृताके गर्भसे उत्पन्न उत्तानपादके तीन पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (मत्स्य० ४.३५)।

अपस्यंत–पु० [सं०] उत्तानपाद और सुनृताका एक पुत्र (मत्स्य० ४.३५)।

अपस्वांत–पु० [सं०] शक्रजित्के एक लोकप्रिय पुत्रका नाम (वायु० ९६.५३)।

अपहारिणी–स्त्री० [सं०] ब्रह्मधानाकी पांच पुत्रियोंमेंसे एक ब्रह्मराक्षसीका नाम इसके नौ भाई थे। पृथिवीमें ब्रह्मराक्षसोंकी उत्पत्ति इन्हीं पांच बहिनोंसे हुई (ब्रह्मां० ३.७.९९)।

अपांरस–पु० [सं०] भरताग्निका एक पुत्र (वायु० २९.८)।

अपांशु–पु० [सं०] हरितगणके दस देवताओंमेंसे एक देवता (ब्रह्मां० ४.१.८४)।

अपाग्नेय–पु० [सं०] एक त्र्यार्षेय (मत्स्य० १९६.३९)।

अपाण्डु–पु० [सं०] एक ऋषिका नाम (मत्स्य० १९६.४५)।

अपान–पु० [सं०] (१) बारह साध्योंमेंसे एक साध्यदेवका नाम (ब्रह्मां० ३.३.१६)। (२) एक तुषित देवताका नाम (ब्रह्मां० ३.३.१९; वायु० ६६.१८)। (३) एक अजित देवताका नाम (वायु० ६७.३४)।

अपान्तरतम–पु० [सं०] एक महात्मा (सिद्ध) का नाम जो मायासे आवृत होनेके कारण विष्णुकी मायाका रहस्य समझनेमें असमर्थ रहे (भाग० ६.१५.१२; ९.४.५७)।

अपांगर्भ–पु० [सं०] अग्निकी एक विशेषता—(ब्रह्मां० २.२३.५३)।

अपांपति–पु०[सं०] एक दिशा—पश्चिम दिशा—के अधिपति वरुणकी एक विशेषता (ब्रह्मां० ३.७.३३१; वायु० ६९.२१५)।

अपार्य–पु० [सं०] षोडशावरणचक्र (जिसके रुद्र अधिदेव हैं) के चौदहवें आवरणके रुद्रोंमेंसे एक रुद्रका नाम (ब्रह्मां० ४.३४.४२)।

अपास्य–पु० [सं०] यह कठिन तपस्यासे ऋषि हुए थे (ब्रह्मां० २.३२.९९)।

अप–पु० [सं०] जल जिसकी गर्मी या शीतता सूर्यके उदय अस्तपर आधारित है (ब्रह्मां० २.२१.५९-६२)।

अप्तोर्याम–पु० [सं०] सोमसंस्थावाले सात यागोंमेंसे एक यागका नाम (वायु० ९.५१), जिसकी उत्पत्ति ब्रह्माके चौथे मुखसे हुई थी (ब्रह्मां० २.८.५३)।

अप्रकाश–पु० [सं०] यमके अधीन एक पितृगणका नाम (ब्रह्मां० ३.१.५२)।

अप्रतीपी–पु० [सं०] सहदेवके वंशज श्रुतश्रवाके पुत्रका नाम जिसने ३६ वर्षोंतक राज्य किया (मत्स्य० २७१.२१)।

अप्रतिम–पु० [सं०] (१) औत्तम मनुके तेरह पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (ब्रह्मां० २.३६.३९; वायु० ६२.३४)। (२) दितिका एक पुत्र जिसे अरिष्टनेमि कहते हैं (वायु० ६५.११२)।

अप्रतिमौजा–पु० [सं०] दशम मन्वन्तरके सप्तर्षियोंमेंसे एक

ऋषिका नाम (विष्णु० ३.२.२७)।

अप्रतिरथ–पु० [सं०] रंतिभार (अंतिनार–विष्णु पु०) के तीन पुत्रोंमेंसे एक पुत्र तथा कण्व और ऐलीनके पिताका नाम (भाग० ९.२०.६; विष्णु० ४.१९.४, ५, ८)।

अप्रमाद–पु० [सं०] धर्म और बुद्धिके दो पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (ब्रह्मां० २.९.६०; वायु० १०.३६)।

अप्रतिष्ठ–पु० [सं०] पृथ्वीके नीचेके एक नरकका नाम जो चौथा है। इसमें बराबर गति (भ्रमण) रहती है, स्थिति नहीं है (ब्रह्मां० ४.२.१५०,१८२-४; वायु० १०१.१४९, १७९,१८१)।

अप्सरा–स्त्री० [सं०] देवराज इन्द्रकी सभाकी विख्यात नाचनेवाली देवांगनाएँ। शब्दार्थके अनुसार इन्हें जलमें ही विचरण करनेवाली होना चाहिये। उर्वशी आदि कुछ अप्सराओंके नाम तो वेदोंमें भी मिलते हैं, पर मनुने इन्हें सप्त मनुओंके द्वारा रचित कहा है। रामायण और पुराणोंके अनुसार ये अप्सराएं समुद्र-मंथनसे उद्भूत हुई थीं (भाग० ८.८.७)। कहते हैं—इनकी उत्पत्तिके पश्चात् न तो देवता ही और न असुर ही इन्हें स्त्रीरूपमें ग्रहण करनेपर तैयार हुए, अतः ये सबके लिए सम रहीं। वायुपुराणानुसार इन्हें १४ और हरिवंशके अनुसार सात भिन्न कक्षाओंमें बाँटा गया है। इनके दैविक और लौकिक ये दो रूप और कहे गये हैं। दैविक संख्यामें १० और लौकिक ३४ हैं जिनमें रम्भा, मेनका, उर्वशी आदि हैं। काशीखंडके अनुसार इनके १०६० कुल प्रधान हैं, वैसे तो इनकी संख्या ३५००००००० कही गयी है।

इन देवांगनाओंको मुनि और कश्यपसे उत्पन्न कहा गया है। पृथ्वीरूपी गौके दुहनेमें इन्होंने गन्धर्वोंका साथ दिया था। ये बर्हिषद् पितृगणोंकी उपासना करती हैं। हिमाचलके ऊपर ये गन्धर्वोंके साथ क्रीड़ामें रत रहती हैं (मत्स्य० ६.४५; १०.२४; १५.३; २२.५९; १२०.१)। ये प्रायः कैलाश पर्वतपर भी जाती हैं (भाग० २.१.३६; ४.६.९)। इनमेंसे ३४ इन्द्रकी सेवामें रहती हैं (वायु० ६९.४; १०१.२८) और (भाग० ६.७.४)। हरिकी क्रीड़ा (विहार) से इनकी उत्पत्ति कही गयी है (भाग० ८.५.४०)। श्रीकृष्णके अवतार लेनेपर इन्होंने आनन्दविभोर हो नृत्य किया था (भाग० १०.३.६; ४.११)। कहते हैं ये देवताओंके साथ द्वारका गयी थीं जहाँ इन लोगोंने कृष्णसे स्वर्ग लौट आनेकी प्रार्थना की थी (भाग० ११.६.३)। इन्द्रने इन्हें मार्कण्डेयकी तपस्या भंग करनेका आदेश दिया था (भाग० १२.८.१६)। ये मेरु पर्वतपर रहती हैं और कामदेव इनका अधिपति कहा गया है (ब्रह्मां० २.१५.४९; ३.८.१५; ७.२५.२६)। कृष्णावतारके समय ये ही १६००० गोपियोंके रूपमें अवतीर्ण हुई थीं (ब्रह्मां० ३.७१.२४३-४; ४.२.२६)। एक बार ये मानसरोवर झीलमें जब क्रीड़ा कर रही थीं नारद वहाँ पहुँचे। विष्णुको पति रूपमें पानेका मन्त्र तो पूछे जानेपर नारदने अप्सराओंको बतला दिया, पर अभिवादन न करनेके कारण उन्हें शाप दिया (मत्स्यपु० ७०.२१-५; २४६.५४) के अनुसार ये वामन अवतारमें भगवान् वामनके शरीरपर रेखा रूपमें थीं।

अप्सरोगण–स्त्री० [सं०] इन्हें ब्रह्माकी मानसपुत्रियाँ तथा मनु आदिकी पुत्रियाँ कहा गया है। हजारों अप्सरोगण हैं। इनमेंसे अधिकांश देवमाताएँ या ऋषिपत्नियाँ थीं। इनके १४ गण इस प्रकार हैं—(१) ब्रह्माकी मानसी कन्याएँ, (२) मनुकी पुत्रियाँ, (३) अरिष्टासे उत्पन्न, (४) ऊर्जासे उत्पन्न, (५) अग्निसे उत्पन्न, (६) सूर्यरश्मियोंसे उत्पन्न, (७) सोमसे उत्पन्न, (८) यज्ञसे उत्पन्न, (९) वेदोंसे उत्पन्न, (१०) वायुसे उत्पन्न, (११) भूमिसे उत्पन्न, (१२) विद्युत्कान्तिसे उत्पन्न, (१३) मृत्युकी कन्याएँ, (१४) कामगणरूपा (वायु० ९.५५; ३०.८७; ६९.५३-६२; ९६.२३५)।

अप्सरेश–पु० [सं०] नर्मदा-क्षेत्रके एक तीर्थका नाम। वहाँ स्नानका बड़ा माहात्म्य कहा गया है (मत्स्य० १९४.१६-१७)।

अबला–स्त्री० [सं०] एक ब्रह्मवादिनीका नाम जो अत्रिकी पुत्री तथा दत्तात्रेय और दुर्वासाकी बहिन थी (वायु० ७०.७६)।

अबाला–स्त्री० [सं०] अन्धकासुर युद्धमें अन्धकोंका रुधिर पान करनेके लिए शिव द्वारा सृष्ट एक देवमातृका जो मानस-पुत्री थीं (मत्स्य० १७९.२७)।

अबिन्ध्य–पु० [सं०] लंकापति रावणके एक वृद्ध मन्त्रीका नाम। यह बड़ा विद्वान् तथा शीलवान् था। इसने रावणको समझाया था कि जानकीको लौटा दो, व्यर्थमें संकट क्यों बुलाते हो, यह काम बुरा है (रामायण)।

अब्ज–वि० [सं०] चन्द्रमा, कमल, शङ्ख। अब्ज शब्दके जोड़नेसे बहुतसे देवताओंके नाम बन जाते हैं—अब्जज = ब्रह्मा। अब्जबान्धव = सूर्य। अब्जयोनि = ब्रह्मा। अब्जनाभ = विष्णु। अब्जालया या अब्जनिलया = लक्ष्मी। अब्जहस्त = सूर्य। अब्जासन = ब्रह्मा (ब्रह्मां० ४.५.३१)।

अब्जयोनि–पु० [सं०] ब्रह्मा, जिन्होंने दक्ष तथा अन्य ऋषियोंको सर्वप्रथम विष्णुपुराण सुनाया था (विष्णु० १.२.८; ४.१.६७; ६.५)।

अब्धिज–वि० पु० = अब्धिजा [स्त्री०] पुराणानुसार अश्विनीकुमार, चन्द्रमा, लक्ष्मी ये तीनों अब्धिज कहे जाते हैं।

अब्धिप–वि० [सं०] समुद्रको पी जानेके कारण अगस्त्यका एक विशेषण (ब्रह्मां० ४.३१.३६)।

अभय–पु० [सं०] (१) धर्म और दयाके पुत्र (भाग० ४.१.५०)। (२) विश्वामित्र-वंशके एक ऋषि (मत्स्य० १९८.३) (३) प्लक्षद्वीपके सात महादेशोंमेंसे एक (भाग० ५.२०.३)।

अभयद–पु० [सं०] पुरुवंशीय मनस्युके पुत्र और सुद्युके पिताका नाम (विष्णु० ४.१९.१)।

अभया–स्त्री० [सं०] (१) क्रौंचद्वीपकी एक नदीका नाम (भाग० ५.२०.२१)। (२) उष्णतीर्थकी एक देवी। सती देवीने दक्षसे कहा मैं सर्वत्र हूँ कोई स्थान ऐसा नहीं जहाँ मैं न होऊँ फिर भी विभिन्न स्थानोंमें विभिन्न रूपमें मेरा दर्शन और उपासना की जा सकती है। उष्णतीर्थका उनका रूप (मत्स्य० १३.४२)।

अभारिष्ट–पु० [सं०] एक दानवका नाम (ब्रह्मां० ३.६.१५)।

अभिज–पु० [सं०] एक नरकका नाम (ब्रह्मां पु० ४.२.१५०)।

अभिजातकोविद–पु० [सं०] ज्योतिष-शास्त्रविज्ञ परीक्षितके यश और कीर्त्तिकी भविष्यवाणी उनके जन्मके समयमें इन्होंने ही की थी (भाग० १.१६.१)।

अभिजित्–पु० [सं०] (१) मध्याह्नमें १ और २ बजेके बीचका समय जो शुभ माना जाता है (भाग० ३.१८.२७; ७.१०.६७; मत्स्य० २२.२)। (२) शिशुमारकी दाहिनी नाकपरका २८वाँ नक्षत्र (भाग० ५.२२.११; २३.६)। वामन इसी नक्षत्र और मुहूर्तमें जन्मे थे (भाग० ८.१८.५); श्रीकृष्णका आविर्भाव भी इसी नक्षत्र और मुहूर्तमें हुआ था (ब्रह्मां० ३.७१.२०५)। (३) अंगिरस गोत्रका एक गोत्रकार ऋषि (मत्स्य० १९६.६)। (४) अन्धक, जिनका दूसरा नाम चन्दनोदकदुन्दुभि (आनकदुन्दुभि वि० पु०) था, के पुत्र तथा पुनर्वसुके पिताका नाम। पुनर्वसुने अश्वमेध यज्ञ किया था, जिससे उनके आहुक और आहुकी (यमज) उत्पन्न हुए (वायु० ९६.११८, १२०)। (ब्रह्मां० ३.७१.११९-१; विष्णु० ४.१४.१४)।

अभिमन्यु–पु० [सं०] (१) सुभद्राके गर्भसे उत्पन्न अर्जुन (पाण्डव) का पुत्र जिसका विवाह राजा विराट्की पुत्री उत्तरासे हुआ था (भाग० ९.२२.३३; ब्रह्मां० ३.७१.१७८; मत्स्य० ५०.५६; विष्णु० ४.२०.५१)। महाभारतके युद्धमें चक्रव्यूह भेदन करके यह भीतर प्रवेश कर गया था, पर बाहर आनेकी विद्या इसे मालूम नहीं थी। अतः यह चक्रव्यूहके भीतर ही अन्यायपूर्वक सात महारथियों द्वारा मारा गया। इसके मरनेके पश्चात् इसकी स्त्री उत्तराके गर्भसे राजा परीक्षित्का जन्म हुआ (भाग० १.४.९; विष्णु० ४.२०.५२)। यह (परीक्षित्) अश्वत्थामाके ब्रह्मास्त्रके प्रभावसे भस्म हो गया था, पर श्रीकृष्णकी कृपासे जीवित हो उत्पन्न हुआ (भाग० १.८. ९-५; ३.३.१७; १०.१.४)। महाभारतमें इसकी कथा विस्तारसे दी हुई है। इसने मरुवंशीय विश्वभवके पुत्र बृहद्बलको भारतयुद्धमें मारा था (विष्णु० ४.४.११२)। यह पाण्डवोंको देखने कृष्णके साथ उपप्लव्य गया था (महाभा० विराट्प० ७२.२२; भाग० १०.७८ १६ (५) ४)। यह सैन्धव (सिन्धु देशके अधिपति जयद्रथ) द्वारा मारा गया था (भाग० १०.७८ (३०)) और बहुत बड़ा रथी था (वायु० ९६.१७६; ९९.२४९)। (२) छठे मन्वन्तरके चाक्षुष मनुके दस पुत्रोंमेंसे (जो नड्वलासे उत्पन्न हुए) एक पुत्रका नाम (ब्रह्मां० २.३६.८०,१०७; मत्स्य० ४.४२; वायु० ६२.६८,९१; विष्णु० १.१३.५)। (३) सावर्णि मन्वन्तरके सप्तर्षियोंमेंसे एक ऋषिका नाम (ब्रह्मां० ४.१.७१)।

अभिमान–पु० [सं०] रुद्र, जिसका विराट् पुरुषकी आत्मा (अहंकार) में प्रवेश हुआ (भाग० ३.६.२५)।

अभिमित्र–पु० [सं०] मरुतोंके सात गणोंमेंसे द्वितीय मरुत्गणके छठे मरुत्का नाम (वायु० ६७.१२५)।

अभियु–पु० [सं०] चतुर्थ मरुत्गणोंमेंका तीसरा मरुत्— (वायु० ६७.१२६)।

अभियुक्तगण–पु० [सं०] कुशद्वीपके निवासियोंका एक वर्ग (भाग० ५.२०.१६)।

अभियुक्ताक्षिक–पु० [सं०] चतुर्थ मरुद्गणके पहले मरुत्का नाम (ब्रह्मां० ३.५.९५)।

अभिषेक–पु० [सं०] राज्याभिषेक। महाराज ययातिने सबसे छोटे पुत्र पुरुका ही अभिषेक किया था, क्योंकि इसीने पिताकी आज्ञा मान अपनी जवानी देकर पिताका बुढ़ापा लिया था (वायु० ९३.७६-८७; ९९.४५१)।

अभिषेकमंगल–पु० [सं०] श्री रामचन्द्रका (विष्णु० ४.४.९८-९९)।

अभिषेचन–पु० [सं०] महाराज पृथुका (मत्स्य० ८.२; १०.१०; वायु० ३२.४८)।

अभीषाह–पु० [सं०] उत्तर दिशाका एक राज्य (ब्रह्मां० २.१६.४८)।

अभूमि–पु० [सं०] (१) वृष्णिपुत्र चित्रक (भाग० ९.२४.१५ चित्ररथ) के बारह पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (ब्रह्मां० ३.७१. ११५; वायु० ९६.११४)। (२) अश्विनी और अक्रूरके एक पुत्रका नाम (मत्स्य० ४५.३३)।

अभ्रम–पु० [सं०] हाथियोंके राजाका नाम (ब्रह्मां० ३.७.३५५)।

अभ्रमु–पु० [सं०] एक हथिनीका नाम। दिग्गजोंकी माता (ब्रह्मां० ३.७.३२९)।

अभ्रयंती–स्त्री० [सं०] वर्षाऋतुकी बारह शक्तियोंमेंसे एक शक्तिका नाम (ब्रह्मां० ४.३२.२९)।

अमर–पु० [सं०] (१) एक पहाड़ी राज्यका नाम (मत्स्य० ११४.५६)। (२) मरुत्वतीसे उत्पन्न मरुद्गणोंमेंसे एक मरुत्गणका नाम (मत्स्य० १७१.५२)। (३) शिवजीका एक अति पवित्र स्थान (मत्स्य० १८१.२६)।

अमरकंटक–पु० [सं०] विन्ध्याचल पर्वतपर स्थित एक तीर्थस्थान जहाँ शिवकी एक प्रसिद्ध मूर्त्ति है। यहाँसे सोन और नर्मदा नदियाँ निकलती हैं। विशल्यकरणी नदी यहीं है जहाँ अंगिरा ऋषिने बहुत दिनोंतक कठिन तप किया था। यह हिन्दुओंके प्रसिद्ध तीर्थोंमेंसे एक है, विशेषकर श्राद्धके लिए प्रसिद्ध है। इसे सिद्धक्षेत्र कहते हैं (ब्रह्मां० ३.१३.४-१६)। यहाँ प्रतिवर्ष बड़ी धूमधामसे मेला लगता है। कोई-कोई इसे आम्रकूट भी कहते हैं। कहते हैं एक दिन अग्निहोत्रके पश्चात् अंगिराको स्वर्गकी सीढ़ी यहाँ दिखायी दी थी। यह जलेश्वर नामक नर्मदाका प्रसिद्ध क्षेत्र है जिसके चारों ओर रुद्रकोटि पहाड़ी है। इसका माहात्म्य कुरुक्षेत्रसे भी अधिक है। इस पहाड़की चोटी प्रलयाग्निकी तरह चमकती है। कहते हैं यहाँ नर्मदाके तटपर सोनेके कुश निकलते थे। कलिंगकी ओर यहाँ एक तालाब है—ज्वालासर। यह पश्चिममें है, इसकी प्रशंसा शुक्रने भी की है (मत्स्य० २२.२८; १८६.१२-३४; १८८.७९,-८२; १९१.२५; १९३.५४; १९४.४४; वायु० ११२.३२)।

अमरगण्डिक–पु० [सं०] गन्धमादनके निकट पश्चिममें ३२ हजार वर्ग योजनका समतल एक भूभाग, जिसके निवासी केतुमाल नामसे प्रसिद्ध हैं (मत्स्य० ११३.४८)।

अमरप्रख्य–पु० [सं०] तारकामय-संग्रामके योद्धा एक बलशाली दानवका नाम (मत्स्य० १७७.८)।

अमरनाथ—पु० [सं०] कश्मीरकी राजधानी श्रीनगरसे सात दिनोंके मार्गपर हिन्दुओंका एक तीर्थस्थान जहाँ बर्फके शिवलिंगका दर्शन होता है। यह दर्शन श्रावण शु० १५ पर्वको होता है।

अमरपुर—पु० [सं०] यह देवताओंका नगर कहा जाता है=स्वर्ग जहाँका अधिपति इन्द्र है (ब्रह्मा० ४.६.११,३२)।

अमरावती—स्त्री० [सं०] इन्द्रकी नगरी जो नन्दन वनसे विभूषित और प्रख्यात है। श्रेष्ठतम और विविध प्रकारके आमोद-प्रमोदों और उल्लासका एकमात्र स्थान है। वहाँ अधार्मिकोंका प्रवेश नहीं होता। कहते हैं देवगणकी हार होनेपर कुछ दिनोंतक बलि यहाँ बड़े ठाट-बाटसे रहा था (भाग० ८.१५.११-२२.३३; वायु० ७७.२६)। यद्यपि यह इन्द्रकी नगरी है पर कुछ इसे श्रीकृष्णका नगर बतलाते हैं (भाग० १०.६७ (५) २६; विष्णु० १.९.२५; ब्रह्मा० २.२१.३७; ३.१३.२६.३०; मत्स्य० १२४.२७)।

अमरेश, अमरेश्वर—पु० [सं०] देवताओंके राजा इन्द्रका नाम।

अमर्क—पु० [सं०] शुक्राचार्यके एक पुत्रका नाम (भाग० ७.५.१,४८)।

अमर्त्त—पु० [सं०] एक पितृगण जिनके अधिपति यम हैं (ब्रह्मां० ३.१.५२)।

अमर्ष—पु० [सं०] सुसंधिके पुत्र तथा सहस्वान्के पिताका नाम (विष्णु० ४.४.१११)।

अमर्षण—पु० [सं०] सन्धिके पुत्र तथा महस्वान्के पिताका नाम (भाग० ९.१२.७)।

अमा—स्त्री० [सं०] (१) स्कन्दपुराणानुसार चन्द्रमाकी सोलहवीं कला, जिसका क्षय या उदय नहीं होता। (२) सूर्यकी एक किरण (विष्णु० (२.१२.८)।

अमावसु—पु० [सं०] (१) ऐल (पुरूरवा) के इन्द्रोपम छह पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम। उर्वशीके गर्भसे उत्पन्न यह पुरूरवाका पुत्र तथा भीमका पिता था (ब्रह्मा० ३.१०.५६, ६८;६६.२२; मत्स्य० १४.५,७; वायु०९१.५१.२; विष्णु० ४.७.१,२)। (२) एक वसुका नाम जो आयुका पुत्र था जिसपर अच्छोदा मोहित हो गयी थी (वायु०७३.५)।

अमावस्या—स्त्री० [सं०] हिन्दुओंके हर महीनेके कृष्ण पक्षकी अन्तिम तिथि जब कि सूर्य और चन्द्रमा एक ही साथ हो जाते हैं। यह वह समय है जब पितृगण चन्द्रमाकी पूजा करते हैं और सूर्य, चन्द्रमा तथा अन्य नक्षत्र एक ही मण्डलमें एक साथ मिलते हैं। पितृगण चन्द्रमाका अमृत पान करते हैं। जब १।१५ बचता है चन्द्रमा दिखायी नहीं देता (ब्रह्मा० २.१०.६२-६५; २१.१५३; २३.७०-७५; २८.६-७,२३; मत्स्य० १७.२; १२६.६६,७२; १४१.४२, ४९; वायु० ५२.६४; ५३.९२, ५६-१, ६, ४२, ४९)। चन्द्रमाकी जब केवल दो कलाएं बची रहती हैं तब चन्द्रमा सूर्यके मण्डलमें प्रवेश करता है और "अमा" नामक सूर्यरश्मिमें ठहरता है इसीसे इस समयको अमावस्या कहते हैं (विष्णु० १.२०.३८; २.८.८०; १२.८३; १४.७-१०)।

अमावस्यिका—स्त्री० [सं०] षोडशपत्राब्जपरकी १६ शक्तियोंमेंसे एक शक्ति देवी (ब्रह्मां० ४.३२.१२)।

अमित—पु० [सं०] (१) ऐलके छह पुत्रोंमेंसे सबसे कनिष्ठ पुत्र जयके पुत्रका नाम (भाग० ९.१५.२)। (२) सुधर्मगणके बारह देवोंमेंसे पाँचवें देवका नाम (ब्रह्मां० ४.१.६०)। (३) अंगिरस शाखाके एक मन्त्रकृत्का नाम (वायु० ५९.९८)।

अमितध्वज—पु० [सं०] धर्मध्वज जनकके पुत्र तथा खाण्डिक्यके पिताका नाम (विष्णु० ६.६.७-८)।

अमिताभ—पु० [सं०] (१) सावर्णि मनुके युगके तीन २०।२० की संख्यावाले देवगणोंमेंसे एक देवगण, जिसके अन्तर्गत प्रभु, विभु, विभास, जेता, हन्ता, हरिहा आदि २० देव हैं, का नाम (ब्रह्मा० ४.१.१२,१६-१८; विष्णु० ३.२.१५; वायु० १००.१३-१७)। (२) रैवतमनु .युगके चार देवसमूहोंमेंसे एक देवसमूह जो संख्यामें १४ हैं (ब्रह्मा० २.३६.५१,५४; विष्णु० ३.१.२१)।

अमिताश्व—पु० [सं०] ककुत्स्थवंशी निकुम्भके पुत्र तथा कृशाश्वके पिताका नाम (विष्णु० ४.२.४५-४६)।

अमित्र—पु० [सं०] मरुतोंके सात गणोंमेंसे द्वितीय गणके एक (छठे) मरुत् (ब्रह्मा० ३.५.९३)।

अमित्रघ्न—पु० [सं०] भण्डके ८ सभासदोंमेंसे एकका नाम (ब्रह्मां० ४.१२.१२)।

अमित्रजित्—पु० [सं०] (१) सुतपाके पुत्र तथा बृहद्राजके पिता (भाग० ९.१२.१२-१३)। (२) सुपर्णके पुत्र और बृहद्राज (भरद्वाज वायु०) के पिता (विष्णु० ४.२२.५.६; वायु० ९९.२८६)।

अमित्रहा—पु० [सं०] चौथे सावर्ण मनु (रुद्रसावर्ण मनु) के एक पुत्रका नाम (ब्रह्मा० ४.१.९४; वायु० १००.९९)।

अमीना—स्त्री० [सं०] ऋषाकी पाँच पुत्रियोंमेंसे एक पुत्रीका नाम जिसके गर्भसे चार प्रकारके घड़ियालोंका जन्म हुआ (ब्रह्मा० ३.७.४१४, ४१६)।

अमूर्तहा—पु०[सं०] (१) एक ऋषि जिन्हें भगवान्की मायाका ज्ञान था। बोर्नफने इसके दो खण्ड किये हैं—अमूर्त्ति और अय (भाग० २.७.४४)। (२) कुशके चार पुत्रोंमेंसे एक (ब्रह्मा० ३.६६.३२; वायु० ९१-६२)। (३) अन्तिनार और मनस्विनीके दो पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम। इनकी बहनका नाम गौरी था जो मान्धाताकी माता थी (मत्स्य० ४९-८)।

अमृत—पु० [सं०] (१) पुराणानुसार यह समुद्र-मंथनसे निकले हुए चौदह रत्नोंमेंसे एक है। अमृत-घटको दैत्य लोग ले भागे थे और अन्तमें विष्णुने मोहिनीरूप धारण कर उन्हें वशीभूत किया और उनसे अमृत-घट लेकर देवताओंको अमृत पिलाया था। राहुने देवताओंकी पंक्तिमें बैठकर अमृत पिया, पर गलेके नीचे उतरनेके पूर्व ही वह मारा गया। उसका सिर अमर हो गया और ब्रह्माने उसे एक ग्रह बना दिया (शुकोक्तिसुधासागर तथा मत्स्य० २४९.१४ से लेकर अध्याय २५०.२५१ पूरा; वायु० २३.९०; ५२.३७; ९२.९; विष्णु०१.९.८०-१११)। (२) एक अमिताभ देवता (ब्रह्मां० २.३६.५३; वायु० ६२.४६)। (३) प्लक्षद्वीपकी चन्द्र पहाड़ीपरकी वनौषधियोंका रस (ब्रह्मा० २.१९.८; २४.२७.३१)। (४) भरताग्निके एक पुत्रका नाम (वायु० २९.८)। (५) प्लक्षद्वीपके सात विभाजनोंमेंसे एकका नाम (भाग० ५.२०.३)।

अमृतदीधिति—पु० [सं०] चन्द्रमाका एक नाम—दे०

चन्द्रमा।

अमृतप्रभ–पु० [सं०] सावर्णि युगके तीन देवगणोंमेंसे एक देवगण (भाग० ८.१३.१२)।

अमृतबिंदु–पु० [सं०] अथर्ववेदीय एक उपनिषद्का नाम।

अमृतमंथन–पु० [सं०] (१) चौथा देवासुर-संग्राम जिसमें इन्द्रने प्रह्लादको हराया (ब्रह्मां० ३.७२.७३,७९; ४.६.७)। यह १२ देवासुर-संग्रामोंमें चौथा है (मत्स्य० ४७.४३-४८; २४९.५१; वायु० ९७.७८,७९)। (२) देवासुर-संग्राममें जब देवता असुरोंको हरा न सके तब विष्णुने देव और असुरोंको साथ ले क्षीर सागर मथा जिसमेंसे सोम, लक्ष्मी, कौस्तुभ, उच्चैःश्रवा घोड़ा, ऐरावत, अमृत आदि १४ रत्न निकले। धन्वन्तरि भी इससे प्रकट हुए थे। समुद्र-मन्थन अमृतके लिए हुआ था (मत्स्य० १.९; २४९.१४ से अन्त तक; वायु० २३.९०;५२.३७; ९२.९, विष्णु० १.९.८०-१११)।

अमृतवान्–पु० [सं०] स्वायंभुव मन्वन्तरके जिताजित् देवों (ब्रह्मां० के अनु० शुक्र नामक मानस पुत्रों) मेंसे एक (वायु० ३१.८)।

अमृता–स्त्री० [सं०] (१) एक शक्ति देवी जिनकी स्थापना विन्ध्यपर्वतके एक खोह (गुफा) में है (ब्रह्मां० ४.४४.८४; मत्स्य० १३.४२)। (२) वेणास्थित एक देवीका नाम (मत्स्य० १३.४९; १२२.३३)। (३) प्लक्षद्वीपकी (मत्स्य० १२१-३३ के अनुसार शाकद्वीपकी ७ नदियोंमेंसे छठी नदी) एक नदीका नाम (ब्रह्मा २.१९.१९; वायु० ४९.१७; विष्णु० २.४.११)।

अमृतागण–स्त्री०[सं०] (१) सहस्त्ररश्मि सूर्यकी वर्षा देनेवाली ४०० नाड़ियों (रश्मियों) का समूह (ब्रह्मां० २.२४.२७; वायु० ५३.२०)। (२) जलसे उत्पन्न अप्सराओंकी १४ जातियोंमेंसे एक (ब्रह्मां० ३.७.१९; वायु० ६९.५६)।

अमृताकर्षणी–स्त्री० [सं०] (नित्या) १६ चन्द्रकला रूप शक्तियोंमेंसे एक गुप्त शक्तिका नाम (ब्रह्मां० ४.१९.२०; ३६.७१; ४४.१२०)।

अमृतेश्वरी–स्त्री० [सं०] वारुणी देवीका एक नाम (ब्रह्मां० ४.३५.२९)।

अमृतोत्पादन–पु० [सं०] दे० अमृत। देवासुर-संग्रामकी कठिनाइयोंपर विजय पानेके हेतु विष्णुने क्षीरोद-मंथन की राय दी थी जो मन्दर पर्वत, वासुकि नाग तथा असुरोंकी सहायतासे पूरा हुआ। सर्वप्रथम हालाहल विष निकला जिसे शंकरने ग्रहण किया। फिर कामधेनु गौ निकली जिसे अग्निहोत्रके लिए ऋषियोंने लिया। उच्चैश्रवा घोड़ा बलिने लिया। ऐरावत तथा कौस्तुभ मणि विष्णुने लिये। पारिजात, अप्सरा और लक्ष्मी हरिको प्राप्त हुई। वारुणीदेवीको असुरोंने लिया। अन्तमें अमृतघट लिये धन्वन्तरिजी निकले। मोहिनी रूप धारण कर विष्णुने अमृत-वितरण किया (भाग० ८.६.२१-२५, ३१-३२; ७-९ अध्याय ३ पूरे; १०.१)।

अमृतौघा–स्त्री० [सं०] क्रौंचद्वीपकी सात नदियोंमेंसे एक नदीका नाम (भाग० ५.२०.२१)।

अमोघा–स्त्री० [सं०] शन्तनु ऋषिकी भार्या, जिसके गर्भसे लोहित नामक तीर्थाधिपतिकी उत्पत्ति हुई (पद्म० सृ० ५५)।

अमोघाक्षी–स्त्री० [सं०] विपाशामें स्थित एक देवीका नाम (मत्स्य० १३.३)।

अमोहक–पु० [सं०] नर्मदातटवर्ती ब्रह्मतीर्थका दूसरा नाम जहाँ हाथीके आकारका एक पत्थर जलके मध्य स्थापित है, यहाँ पिण्डदानका बड़ा महत्त्व समझा जाता है विशेषकर वैशाखी पूर्णिमाको (मत्स्य० १९१.१०५-७)।

अय–पु० [सं०] (१) वशिष्ठके सात पुत्रोंमेंसे एक पुत्र जो स्वारोचिष युगके प्रजापति थे (मत्स्य० ९.९)।

अयन–पु० [सं०] (१) छः महीनोंका एक अयन होता है जिसके दो विभाग हैं=दक्षिणायन और उत्तरायण जो सूर्यकी गतिपर आधारित है (भूमध्यरेखाके उत्तर और दक्षिण कर्क और मकर रेखा तक) (भाग० ३.११.११; ब्रह्मा० २.२१.१२६; २२.१०; २८.१७; वायु० ३.१४; २३.१०६) दक्षिणायन देवताओंकी रात और उत्तरायण दिन है (विष्णु० १.३.१०; २.८.३१,३६)। तप (माघ), तपस्य (फाल्गुन), मधु (चैत्र), माधव (वैशाख), शुक्र (ज्येष्ठ) और शुचि (आषाढ़) ये मास उत्तरायणके हैं और नभ (श्रावण), नभस्य (भाद्र), इष (आश्विन), ऊर्ज (कार्त्तिक), सह (मार्गशीर्ष) और सहस्य (पौष) ये मास दक्षिणायनके हैं (विष्णु० २.८.८१)। (२) दक्षपुत्री साध्याके गर्भसे उत्पन्न १२ साध्यगणमेंसे एकका नाम (मत्स्य० २०३.११)।

अयस्य–पु० [सं०] अंगिरसकी पन्द्रह शाखाओंमें एक शाखा (वायु० ६५.१०६)।

अयःपान–पु० [सं०] अट्ठाइस नरकोंमेंसे एकका नाम (भाग० ५.२६.७, २९)।

अयःशंकु–पु० [सं०] बलिका अनुयायी एक राक्षस (मत्स्य० २४५.३१)।

अयःशिर–पु० [सं०] बलिका अनुयायी एक राक्षस (मत्स्य० २४५.३१)।

अयास्य–पु०[सं०] (१) ३३ श्रेष्ठ मन्त्रकृत् अंगिरसोंमेंसे एक (ब्रह्मा० २.३२.११०)। (२) कर्दमपुत्री स्वराट् और अथर्वाका पुत्र (ब्रह्मां० ३.१.१०५)।

अयुग्मनेत्र–पु० [सं०] भगवान शंकरके तीन नेत्र हैं। तीसरा नेत्र कपालमें है इसीसे उनका यह नाम पड़ा—दे० शिव।

अयुग्मबाण–पु० [सं०] कामदेवके ५ बाण कहे गये हैं इसीसे यह नाम पड़ा—अंगज।

अयुग्मवाह–पु० [सं०] रथमें ७ वाह (घोड़े) होनेके कारण सूर्यदेवका एक नाम।

अयुत–पु० [सं०] राधिकका पुत्र तथा क्रोधनका पिता (भाग० ९.२२.१०-११)।

अयुतहोम–पु० [सं०] तीन प्रकारके ग्रहयज्ञोंमेंसे एक। इसे विवाह, उत्सव तथा यज्ञोंके निर्विघ्नपूर्ण होने हेतु तथा प्रतिष्ठा आदि कर्मके सफल होने हेतु करते हैं (मत्स्य० ९३.५-८४)।

अयुताजित्–पु० [सं०] (१) सात्वतपुत्र भजमानके ३ पुत्रों, जो संजयपुत्री बाह्यकाके गर्भसे उत्पन्न हुए, मेंसे एक पुत्र (भाग० ९.२४.८; विष्णु० ४.१३.२) (ब्रह्मा० ३.७१.५)।

अयुतायु–पु० [सं०] (१) सिन्धुद्वीपके पुत्रका नाम जो

ऋतुपर्णका पिता था (भाग० ९.९.१६-१७; ब्रह्मां० ३.६३.१७२; विष्णु० ४.४.३७)। (२) श्रुतश्रवाका पुत्र तथा निरमित्रका पिता (भाग० ९.२२.४६; ब्रह्मां० ३.७४.१११; विष्णु० ४.२३.४)। (३) आराधिके पुत्र तथा अक्रोधनके पिताका नाम इसने २६ वर्षोंतक राज्य किया था (वायु० ९९.२३२,२९८; विष्णु० ४.२०.४)। (४) पुरूरवाके छह पुत्रोंमेंसे एकका नाम (विष्णु० ४.७.१)।

अयोध्या–स्त्री० [सं०] संयुक्त प्रान्तमें सरयू तटपर बसी एक नगरी जो सूर्यवंशी राजाओंकी राजधानी थी। वाल्मीकि रामायणके अनुसार वैवस्वत मनुने इसे सरयू नदीके तटपर, जहाँ यह अबतक वर्तमान है, बसाया था। उस समय यह बड़ा प्रभावशाली नगर था। कहते हैं राजा सगरके पुत्र असमंजसने अयोध्याके बच्चोंको सरयू नदीमें फेंक दिया था और अपने योगबलसे सबको पुनः जीवित कर दिया था (भाग० ९.८.१७-१९)। श्री रामचन्द्रजीका जन्म यहीं महाराज दशरथके घर हुआ। इसे राम और सगरका नगर कहते हैं (ब्रह्मां० ३.३७.३३; ४७.७५; ४८.१; ४९.१०५,८; ५३.५)। पुराणानुसार यह हिन्दुओंकी सप्तपुरियोंमें है (ब्रह्मां० ४.४०.९१)। यहाँ लाखोंकी संख्यामें यात्री आते हैं। इसे साकेत भी कहते हैं (ब्रह्मां० ३.५४.५४)। यहाँका मुख्य पर्व रामनवमी है जिस दिन यहाँ बहुत बड़ा मेला लगता है। प्रतिव्योमके पुत्र तथा सहदेवके पिता महाराज दिवाकरकी मध्यप्रदेशमें यही राजधानी थी तथा रामतीर्थके नामसे बहुत प्रसिद्ध थी (मत्स्य० १९१.९३; २७१.५; विष्णु० ४.४.९७; वायु० ९९.२८२; रामायण बालकाण्ड)।

अयोनिसंभव–पु० [सं०] नर्मदाके तटपर बसा एक तीर्थस्थान जहाँ स्नानकर यात्री पुनर्जन्मसे मुक्त हो जाते हैं (मत्स्य० १९१.६१)।

अयोमुख–पु० [सं०] (१) कश्यपजीकी दूसरी पत्नी दनुके ६१ पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (भाग० ६.६.३०; ब्रह्मां० ३.६.५; मत्स्य० ६.१७; विष्णु० १.२१.४)। यह वृत्रासुरके साथ इन्द्रसे लड़ने गया था (भाग० ६.१०.१९)। इन्द्र और बलि देवासुर-संग्राममें भी यह लड़ा था (भाग० ८.१०.१९)। (२) एक पहाड़ जो आयुर्वेदीय औषधिओंके लिए प्रसिद्ध है (मत्स्य० १६३.७१)।

अयोमुखी–स्त्री० [सं०] (१) अन्धकासुर-युद्धमें अन्धकोंका रुधिर पीनेके लिए महादेवजीसे सृष्ट बहुतसी मातृकाओंमेंसे एक मातृकाका नाम (मत्स्य० १७९.२९)। (२) कलिके पुत्र विघ्नकी पत्नीका नाम (ब्रह्मां० ३.५९.१३; वायु० ८४.१३)। (३) एक राक्षसी। जब राम और लक्ष्मण सीताको ढूंढते हुए मतंग ऋषिके आश्रमकी ओर गये तब उसने लक्ष्मणके प्रति आकृष्ट होकर उनका वरण करनेकी अभिलाषा व्यक्त की। लक्ष्मणजीने शूर्पणखाके तुल्य उसको नासिका आदिके छेदन द्वारा विकृत कर दिया और वह वहाँसे भाग गयी (वा० रा० अ० का० ६९.१५-१८)।

अरंधन–पु० [सं०] सिंहसंक्रान्ति और कन्यासंक्रान्तिके दिन मनाया जानेवाला एक प्रकारका व्रत। इस दिन भोजन पकाना निषेध माना गया है—"आचारमार्तण्य"।

अरजा–स्त्री० [सं०] भार्गव ऋषिकी पुत्रीका नाम। यह शुक्र उशनाकी पुत्री थी। राजा दण्डने इसका कौमार्य नष्ट कर दिया था इसलिए इसके पिताने इसे दण्डकारण्यमें भार्गवाश्रमके निकट सरोवरतटपर ही रहनेकी आज्ञा दी। तदुपरान्त वह पापमुक्त हुई (वा० रा० उ० ८०)।

अरणि–स्त्री० [सं०] (१) यज्ञमें अग्नि उत्पन्न करनेके लिए अश्वत्थ और शमीके यज्ञीय काष्ठके दो टुकड़े जो अधरारणि और उत्तरारणि कहे जाते हैं। (भाग० ३.२७.२३; विष्णु० ४.६.८७-९०; वायु० ९१.४३)। (२) द्वैपायन (व्यास) की पत्नी तथा शुकदेवकी माताका नाम (ब्रह्मां० ३.८.९२; १०.७९-८०; वायु० ७०.८४)।

अरणीसुत, अरणिसुत–पु० [सं०] शुकदेवजीका एक नाम। ऐसा लिखा है कि व्यासजीका वीर्यपात अरणीपर हुआ था जिससे शुकदेवजीकी उत्पत्ति हुई। ब्रह्माण्ड और वायुपुराणके ऊपर उद्धृत स्थलोंके अनुसार अरणी या अरणि कृष्णद्वैपायन (व्यास) जीकी पत्नी थी उन्हींके गर्भसे शुकदेवजीकी उत्पत्ति हुई, इसीलिए वे अरणीपुत्र कहे जाते हैं।

अरण्य–पु० [सं०] रैवत मनु युगके उदक और वारुणीके पिताका नाम। इनका पुत्र उदक वरुण हुआ था इससे इनकी पुत्री वारुणी कही गयी भाईके सम्बन्धसे। (ब्रह्मां० २.३६.१०४)

अरण्यदेवता–पु० [सं०] हिमालयपर निवास करनेवाले देवता (ब्रह्मां० ३.२२.२७)।

अरण्यदेवी–स्त्री० [सं०] एक देवीकी मूर्त्ति जो शायद पार्वतीकी प्रतिमा है और आरा (शाहाबाद) के निकट है। कहते हैं रावण एक बार कैलाशसे लौटते समय आरामें, जो उस समय जंगल था, ठहर गया। वहाँ उसने शिव-पार्वतीकी पूजाकी थी। शिवलिंग तो लुप्त हो गया पर पार्वतीकी मूर्त्ति विद्यमान है जिसे अरण्यदेवी कहते हैं। कहते हैं इसी देवीके वरसे राजा मोरध्वजको, जो इस जंगलका राजा था, एक पुत्र हुआ। इस देवीकी आज्ञासे राजाने पत्नी सहित इकलौते पुत्रको देवीके सामने आरासे चीरा बलिके हेतु। देवी प्रसन्न हो गयी और लड़का जीवित हो गया। आरासे चीरनेके कारण ही इस स्थानका "आरा" नामकरण हुआ—दे० मोरध्वज (२)।

अरण्यषष्ठी–स्त्री० [सं०] स्त्रियोंका एक व्रत विशेष जो ज्येष्ठ महीनेके शुक्लपक्षमें पड़ता है। इस दिन स्त्रियाँ अन्न नहीं खातीं और देवीकी पूजा करती हैं। यह व्रत संतानवृद्धिके लिए किया जाता है। शास्त्रोंके अनुसार इस तिथिको उन्हें घरमें नहीं रहना चाहिये, वरन् हाथमें बेना लेकर जंगलोंमें घूमना चाहिये (हि० श० सा०)।

अररु–पु० [सं०] अनायुषाके पाँच महाबली पुत्रोंमेंसे एक पुत्र तथा धुंधुका पिता जो महापराक्रमी असुर था (ब्रह्मां० ३.६.३१)।

अरि–पु० [सं०] त्र्यार्षेय प्रवरप्रवर्तक अंगिरस कुलका एक गोत्रकार (मत्स्य० १९६.१०)।

अरिज–पु० [सं०] भौवन-पुत्र त्वष्टाके एक पुत्र जिनके पुत्रका नाम रज था (वायु० ३३.५८)।

अरिघ्न–पु० [सं०] छह विघ्ननायकोंमेंसे एक विघ्ननायक, ये सात करोड़ हेरम्बोंके अधीश्वर हैं (ब्रह्मां० ४.२७.८२)।

अरिजित्–पु० [सं०] श्रीकृष्ण और भद्राके १० पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (भाग० १०.६१.१७)।

अरिञ्जय–पु० [सं०] वृहद्रथ-वंशके एक राजाका नाम जिसने ५० वर्षोंतक राज्य किया। इस वंशमें २२, मतान्तरसे ३२ राजा हुए और सवने मिलकर १००० वर्षों तक शासन किया (ब्रह्मां० ३.७४.१२१; वायु० ९९.३०८)।

अरिदमन–पु० [सं०] लक्ष्मणजीके अनुज तथा सुमित्रानन्दन। यह शत्रुघ्न नामसे ही अधिक विख्यात थे (रामायण-वालकाण्ड १९४.१)।

अरिन्दम–पु० [सं०] शिवस्वातिके पुत्र तथा गोमती पुत्रके पिता (भाग० १२.१.२४)।

अरिमर्दन–पु० [सं०] (१) श्वफल्कके पुत्र उपमद्गुके १२ भाइयोंमें आठवें भाईका नाम। इनकी सुतारा नामकी एक वहन थी (विष्णु० ४.१४.९)। (२) कैकय नरेश भानुप्रतापका भाई तथा सत्यकेतुका पुत्र (रामा० वा० का० दो० १५२ चौ० ३)। यह शापवश लंकापति रावणका भाई कुम्भकर्ण हुआ (रा० वा० का० दो० १७५ (चौ० २)। (३) श्वफल्क और गांदिनीके पुत्र अक्रूरके वैमात्र भाईका नाम भी अरिमर्दन था (भाग० ९.२४.१६; ब्रह्मां० ३.७१.१११)। (४) ऋतुपुत्र १२ तुषित देवोंमेंसे एक (वायु० ६२.१२)। (५) कुरुके पुत्रका नाम (९९.२१८)।

आरमेजय–पु० [सं०] (१) गांदिनीके एक पुत्रका नाम (वायु० ९६.११०)।

अरिष्ट–पु० [सं०] (१) वृषभासुर नामक राक्षस जिसे श्रीकृष्णने मारा था। यह भयंकर साँड़के रूपमें कृष्णको मारने आया था, पर स्वयं मारा गया (भाग० १०.३६. १-१६; ४६.२६; २.७.३४; ब्रह्मां० ३.७३.१००; ४.२९. १२४; विष्णु० ५.१४ पूरा; १५.१. २९.४)। (२) वलिका पुत्र एक दैत्य जो तारकामय-युद्धमें लड़ा था (मत्स्य० १७३.२०; १७७.७)। (३) दनुके ६१ पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (भाग० ६.६.३०)। यह वलिकी ओरसे देवासुर-संग्राममें लड़ा था (भाग० ८.१०.२२)। यह एक दानव था, पर मानवधर्मका पालन करता था (वायु० ६८.१५)। (४) मित्र और रेवतीके एक पुत्रका नाम (भाग० ६.१८.६)। (५) वैवस्वत मनुके महावली दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (मत्स्य० ११.४१; विष्णु० ३.१.३३)। (६) मनुके नौ पुत्रोंमेंसे एक (वायु० ८५.४; ९८.१००)।

अरिष्टकर्मा–पु० [सं०] (भाग० अनिष्टकर्मा) अटमान (पट्टमान=विष्णु०) के पुत्रका नाम। यह हालेय (हालाहल=विष्णु०) का पिता था (भाग० १२.१.२३; विष्णु० ४.२४.४६)।

अरिष्टनेमि–पु० [सं०] (१) हरिवंशके अनुसार (क) विनतासे उत्पन्न कश्यप ऋषिका एक पुत्र। (ख) चित्रकका पुत्र व वृष्णिका प्रपौत्र। (२) चित्रकके एक पुत्र तथा सुमति (जो सगरको व्याही गयी) के पिता और राजा सगरके श्वसुर का नाम (ब्रह्मां० ३.७१.११५; वायु० ८८.१५६, १५९; ९६.११४)। (३) कश्यप आदि प्रजापतियोंमेंसे एक जिन्हें दक्षकी चार पुत्रियाँ व्याही थीं। इनसे उनके १६ वच्चे थे (ब्रह्मा० २-३७-४५; ३.१.५४; वायु० ६३.४२; मत्स्य ५.१३; १४६.१६; विष्णु० १.१५.१०३, १३६)। (४) वलि-सेनापति त्रिपुरका निवासी एक असुर जिसने इन्द्रके समुद्रमन्थन प्रस्तावका वलिके साथ अनुमोदन किया। वलि और इन्द्रके देवासुर-संग्राममें यह लड़ा था (भाग० ८.६.३१; १०-२२)। (५) पुरुजित् (कुरुजित्=विष्णु०) का पुत्र तथा श्रुतायुका पिता (भाग० ९.१३.२३; विष्णु० ४.५. ३१)। (६) पौष मासमें कालरूपधारी भगवान्‌का अनुगमन करनेवाले ७ मेंसे एक (गंधर्व) (भाग० १२.११.४२)। (७) एक (ऋषि) जिसने परीक्षितके प्रायोपवेशके समय उनसे भेंट की थी (भाग० १.१९.९)। (८) हेमन्त ऋतुमें सूर्यके साथ रहनेवाले ७ गणोंमेंसे एक (ब्रह्मां० २.२३.१८; ३७.४५; वायु० ५२.१८; ६५.११२)। (९) पौषमें सूर्यके रथपर रहनेवाला एक यक्ष (विष्णु० २.१०.१४)।

अरिष्टनेमिदुहिता–स्त्री० [सं०] सुपर्णकी वहिन सुमति जो सगरको व्याही थी (ब्रह्मा० ३.६३,१५५; वायु० ८८.१५६., १५९)।

अरिष्टव–पु० [सं०] पृथ्वी रूपी गौको दुहनेमें जो वछड़ा वना (ब्रह्मां० २.३७.१७-१८)।

अरिष्टसञ्ज्ञ–पु० [सं०] मृग नामक हाथीके आठ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (ब्रह्मा० ३.७.३३३)।

अरिष्टा–स्त्री० [सं०] (१) दक्ष प्रजापतिकी पुत्री जो कश्यपको व्याही थी। यह गंधर्व तथा किन्नरोंकी माता थी, अतः "गंधर्व-माता" के नाम से विख्यात हैं (भाग० ६.६.२५, २९; मत्स्य० ६.४५; १४६.१८; वायु० ६६.५५; विष्णु० १.२१.२५)। (२) अनवद्या, अनवशा आदि आठ देवसत्कृत श्रेष्ठ अप्सराओंकी माता (वायु० ६९.४८)।

अरिहा—पु० [सं०] (१) सुमित्राके गर्भसे उत्पन्न दशरथके पुत्र जो लक्ष्मणके सहोदर तथा शत्रुघ्न नामसे प्रख्यात थे (रामायण, वालकाण्ड, १९४.१)। (२) प्रभु आदि बीस अमिताभगणोंमेंसे एकका नाम (वायु० १००.१६)।

अरुन्धती–स्त्री० [सं०] (१) दक्ष प्रजापतिकी कन्या जिसका विवाह धर्मसे हुआ था। इनसे पृथ्वी और संसारकी सव वस्तुएँ उत्पन्न हुई थीं (ब्रह्मां० ३.३.२,३४; ७.२८; ८.८६; मत्स्य० ५.१५.१९.२०३.२; वायु० ६६.२.३५; विष्णु० १.१५.१०५, १०८)। (२) वशिष्ठ ऋषिकी पत्नीका नाम जो पूर्व जन्ममें संध्या थी (शिवपुराण, रुद्र-संहिता, द्वितीय खंड अध्याय ३-७)। कर्दमकी पुत्री तथा पर्वत और नारदकी वहिन जो वशिष्ठको व्याही थी। इनके शक्ति आदि १०० पुत्र हुए थे (भाग० ३.२४.२३; वायु० २.१०; १९.२; ३०.७३; ६९.६५; ७०.७९)। इन्हें ऊर्जा कहते थे तथा चित्रकेतु आदि इनके सात पुत्र थे जो सवके सव प्रसिद्ध ऋषि हुए (भाग० ४.१.४०)। यह शक्तिकी माता थी तथा सतियोंमें देवी समझी जाती थी। देवीके १०८ नामका जप इन्होंने किया जिससे उत्तम योग इन्हें प्राप्त हुआ (मत्स्य० १३.५३,६१; १८७.४५; २०१.३०)। (३) सप्तर्षि तारोंमें वशिष्ठ (पिछले तीन तारोंमें बीचवाला) के समीप ही उगनेवाला एक छोटा-सा तारा। विवाहमें इसे पत्नीको दिखलाया जाता है। सुश्रुत तथा वायु १९.२ के अनुसार जिसकी मृत्यु निकट होती है उसे यह तारा दिखलायी नहीं देता है।

अरुण–पु० [सं०] (१) तार्क्ष्यकी विनता, कद्रू, पतङ्गी और यामिनी नामकी चार पत्नियाँ थीं। अरुण सुपर्णा अर्थात् विनताके गर्भसे उत्पन्न हुए थे। यह सूर्यके सारथि

तथा गरुड़के भाई थे (भाग० ६.६.२२)। (२) उद्दालक ऋषिके पिताका नाम (आचार्य अरुण)। (३) एक प्रकारका तारा जिसकी चँवरके ऐसी पूँछ निकली होती है। यह अनिष्टकारक समझा जाता है और इनकी संख्या ७७ कही जाती है। रंग इनका कृष्ण तथा अरुण होता है। (४) हर्यश्वके पुत्र तथा त्रिबंधनके पिताका नाम (भाग० ९.७.४)। (५) मुरके सात पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (भाग० १०.५९.१२)। (६) श्रीकृष्णके एक पुत्रका नाम (भाग० १०.९०.३३)। (७) वायु पुराणानुसार कैलाशके दूसरी ओरकी एक पहाड़ी जहाँ गिरीशका निवास है और आयुर्वेदीय ओषधियाँ भरी पड़ी हैं। इसकी तलहटीमें शैलोद झील है जहाँसे शैलोदा नदीका उद्गम है। इसके तटपर सुरभि वन है (ब्रह्मां० २.१८.१८-२३; वायु० ४७.१७-२२)। (८) रैवत मनुके एक पुत्रका नाम (मत्स्य० ९.२१)। (९) एक साध्य (मत्स्य० १७१.४३)।

नोट नं० १ के साथ—कहते हैं जब परीक्षित प्रायोपवेश कर रहे थे अरुण उनसे मिलने आये थे (भाग० १.१९.११; वायु० ६९.६६)। इनका विवाह गृध्री (श्येनी=वायु०) से हुआ जिसके गर्भसे सम्पाति और जटायु उत्पन्न हुए (ब्रह्मा० ३.७.४४६; वायु० ६९.३२६)। इनका सूर्य प्रतिमा-निर्माणमें उसके साथ अङ्ग रूपसे संनिवेश कहा गया है (मत्स्य० २६१.७)।

अरुणा—स्त्री० [सं०] (१) प्लक्षद्वीपकी सात महानदियोंमेंसे एक महानदीका नाम (भाग० ५.२०.४)। (२) सोलह मौनेय देवगन्धर्वोंकी चौबीस बहिनोंमेंसे एक अप्सराका नाम (ब्रह्मां० ३.७.५)। (३) एक देवी (ब्रह्मां० ४.१९.४८; ४४.४१)।

अरुणाचलक्षेत्र—पु० [सं०] अरुणाचलके आसपासकी भूमि जहाँ गौतम मुनिका आश्रम था। यहीं पार्वतीने तप किया तथा दुर्गा देवीने शुम्भ, निशुम्भ तथा महिषासुरका वध भी इसी क्षेत्रमें किया था। कान्तिशाली तथा कलाधर विद्याधरका उद्धार यहीं हुआ था (स्कन्द पुराण, माहेश्वर अरुणाचल-माहात्म्य खंड उ० वे० प्र० १८-२९)।

अरुणि—पु० [सं०] (१) ब्रह्माके एक पुत्रका नाम जो ऋषि थे और आजन्म अविवाहित रहे (भाग० ४.८.१; ब्रह्मां० ३.३६.६)। (२) यह श्रीकृष्णके साथ मिथिला गये थे (भाग० १०.८६.१८)।

अरुणोद—पु० [सं०] मेरु पर्वतपर स्थित एक झीलका नाम। वायुपुराणानुसार यह मेरुके पूर्वमें है, पर विष्णुपुराणानुसार यह इलावृतमें है (मत्स्य० ११३.४६; वायु० ३६.१६; विष्णु० २.२.२५)।

अरुणोदा—स्त्री० [सं०] मन्दराचलकी उपत्यकासे आमोंके रसकी एक नदी जो मन्दर पर्वतसे निकलकर इलावृतके पूर्वी भागको सींचती है। पार्वतीजीकी अप्सरा सेविकाएँ और यक्ष-सेवक इसमें स्नान करते हैं (भाग० ५.१६.१७.१८)।

अरुद्ध—पु० [सं०] सेतुके पुत्र तथा गांधारके पिताका नाम (ब्रह्मां० ३.७४.७,९; वायु० ९९.७-९)।

अरुन्तिज—पु० [सं०] हरितगणके दस देवताओंमेंसे एक देवताका नाम (वायु० १००.८८)।

अरूप—पु० [सं०] मन्त्रकृत् २१ ऋषियोंमें एक (वायु० ५९.९७)।

अरूपगण—पु० [सं०] विन्ध्यपर्वतकी दूसरी ओरके निवासियोंका नाम। वायु० पुराणमें इन्हें अनूप कहा गया है (मत्स्य० ११४.५४; वायु० ४५.१३४)।

अरूपा—स्त्री० [सं०] आठ अप्सराओंकी माता अरिष्टाकी पुत्री एक अप्सराका नाम (ब्रह्मां० ३.७.१३; वायु० ६९.४८)।

अरूरु—पु० [सं०] दनायुषाके पुत्रका नाम। ये महापराक्रमी पाँच भाई थे। धुन्धु इसी (अरूरु) का पुत्र था जिसे कुवलाश्वने उत्तङ्कके कहनेसे मारा था (वायु० ६८.३०-३१)।

अरोगा—स्त्री० [सं०] एक देवी जिनका मन्दिर वैद्यनाथ धाम में है (मत्स्य० १३.४१)।

अर्क—पु० [सं०] (१) विविचि (ब्रह्माण्डके अनुसार विविधि) अग्निका पुत्र। शुचि अग्निकी सन्तति १४ अग्नियोंमेंसे एक अग्निका नाम। अनीकवान् आदि इसीके पुत्र थे (वायु० २९.४०; ब्रह्मां० २.१२.४२)। (२) वसुके आठ पुत्रोंमेंसे एक वसु। वासना इसकी स्त्री थी जिससे तर्ष आदि पुत्र उत्पन्न हुए (भाग० ६-६-११, १३)। (३) पुरुजका पुत्र तथा भर्म्याश्वका पिता (भाग० ९.२१.३१)।

अर्कज—पु० [सं०] सूर्यके पुत्रका नाम=यमराज, शनिदेव, सुग्रीव, अश्विनीकुमार और कर्ण ये ही ५ सूर्यपुत्र हैं (मत्स्य० ९३.१०)।

अर्कजा—स्त्री० [सं०] सूर्यकी कन्याएँ=यमुना, तापती।

अर्कनंदन—पु० [सं०] कुन्तीके गर्भसे उत्पन्न सूर्यपुत्र कर्णका नाम (महा०भा० आ० पर्व)।

अर्कपर्ण—पु० [सं०] सोलह मौनेय देवगंधर्वोंमेंसे एक (ब्रह्मां० ३.७.२)।

अर्कपुटसप्तमी—स्त्री [सं०] फाल्गुन शुक्ला ७मीको सूर्यकी पूजा करे। षष्ठीको एकभुक्त रहे, सप्तमीको निराहार तथा अष्टमीको आकके पत्तोंका प्राशन करे। यह व्रत सर्वव्याधिनाशक कहा गया है (भविष्य पुराण)।

अर्कमर्क—पु० [सं०] पिशाचोंके १६ गणोंमेंसे एक गण जो बंदरोंकी आकृतिवाले तथा वृक्षोंपर निवास करते हैं एवं भात जिन्हें बहुत प्रिय है (ब्रह्मां० ३.७·३८२,३९०; वायु० ६९.२७१)।

अर्कसंक्रम—पु० [सं०] साधारण श्राद्धके लिए युगादि (मत्स्य० १७.२-५)।

अर्चा—पु० [सं] हरिकी पूजा धन-धान्य देनेवाली समझी जाती है। विष्णुके पूजनका यह ढंग त्रेता युगमें भी था (भाग० ७.१४.२८.४०)। अर्चा (प्रतिमा) सुवर्ण, चाँदी आदिकी हो सकती थी (भाग० ४.८.५६)। इस प्रकारकी उपासनासे निराकार ईश्वरपर ध्यान जमता था। विष्णुकी मूर्तियोंकी स्थापना, विष्णुके आयुधोंकी पूजा आदि इसके अंग बने (भाग० ११.२७.९-४३)।

अर्चास्थापन—पु० [सं०] विष्णुसे सम्बन्धित मूर्तियों, मन्दिरों तथा नगरादि स्थानोंकी स्थापना भी हरि-भक्तिके अन्तर्गत है (भाग० ११.११.३८)।

अर्चिर्माल्य—पु० [सं] रामायणानुसार इस नामका एक बन्दर था जो महर्षि मरीचिका पुत्र था। कहीं-कहीं इसका नाम अर्चिष्मान् भी मिलता है। (वाल्मीकि रामायण)।

अर्चिष्ण—पु० [सं०] एक मन्त्रकार और आत्रेय महर्षि

(वायु० ५९.१०४)। वायु० (मोर संस्करणमें) 'अचिसन' पाठ मिलता है।

अर्चिष्मती–स्त्री० [सं०] वसुदेवकी ज्येष्ठ पत्नी रोहिणीके द्वितीय पुत्र सारणकी पाँच पुत्रियोंमेंसे एक पुत्रीका नाम (ब्रह्मा ३.७१.१६८; वायु० ९६.१६६)।

अर्चिष्मान्–पु० [सं०] वैवस्वत मन्वन्तरके बीस 'सुतप' नामक देवगणके एक देवताका नाम(ब्रह्मां० ४.१.१५; वायु० १००.१५)।

अर्चि–स्त्री० [सं०] (१) वेनके हाथका मन्थन करनेसे यह कन्या उत्पन्न हुई थी जिसे लक्ष्मीका अंश कहते हैं। यह पृथुकी पत्नी थी जो सदा उनकी सहचरी बनी रही। वृद्धावस्थामें उनके वनगमनपर उनके साथ वन गयी तथा उनके मरनेपर सती हुई (भाग० ४.१५.५-६; ४.२३.१९-२८)। (२) कृशाश्वकी पत्नी तथा धूम्रकेशकी माताका नाम (भाग० ६.६.२०)।

अर्जुन–पु० [सं०] कुन्तीके गर्भसे उत्पन्न इन्द्रके पुत्र तथा श्रुतकीर्त्तिके पिता। नागकन्या उलूपीसे इरावान् नामक इनका पुत्र था। मणिपुर नरेशकी पुत्री चित्रांगदाके गर्भसे इनका पुत्र बभ्रुवाहन उत्पन्न हुआ था और इनके प्रसिद्ध पुत्र अभिमन्युकी माता सुभद्रा थी (भाग० ९.२२.२९.३३; ब्रह्मां० ३.७१.१५४,१७८; विष्णु० ४.१४.३५; २०.४०; वायु० ९९.२४५-२४९; मत्स्य० ५०.५०-५६)। द्रौपदीके सोये पुत्रोंके मारनेके कारण रुष्ट हो यह अश्वत्थामाकी मणि छीनकर उसे छोड़ आये (भाग० १.७.१५–५७)। इनका प्रसिद्ध रथ "कपिध्वज" था। खाण्डव वन जलानेके समय श्रीकृष्ण इनके सारथि थे। श्रीकृष्ण इनके मित्र तथा संरक्षकके समान थे (भाग० १.७.१७-४१; विष्णु० ५.१२.१७-१८)। खाण्डव वन जलानेमें इन्द्र इनसे परास्त हुए। किरात-रूप धारी शिवको इन्होंने प्रसन्न किया (भाग० १०.८९.३४)। श्रीकृष्णकी मृत्युके पश्चात् आभीरोंने इन्हें परास्त किया था (भाग० १.१५.८-२०)।

यह पाँच-पाण्डवोंमेंसे मझले थे तथा अपनी वीरताके लिए प्रसिद्ध थे। इनकी धनुर्विद्याका पूर्ण विकसित रूप महाभारतमें दिखायी पड़ता है। इनका स्मरण होते ही गाण्डीव धनुषकी याद हो आती है। अपने सम्बन्धियोंसे युद्ध करनेमें इन्हें आगा-पीछा करते देख श्रीकृष्णने इन्हें जो उपदेश कुरुक्षेत्रमें दिये थे "गीता" में उनका संग्रह है (भाग० १०.७५.५; ९.२४.६७)। द्रौपदीको स्वयंवरसे यही जीतकर लाये थे। जयद्रथने इनके पुत्र अभिमन्युका वध किया जिसके फलस्वरूप उसे दूसरे ही दिन मृत्युका आलिंगन करना पड़ा (भाग० १०.७८(३१-३५)। पर्याय–कौन्तेय, फाल्गुन, जिष्णु, किरीटी, श्वेतवाहन, बृहन्नला, धनञ्जय, पार्थ, कपिध्वज, सव्यसाची, गाण्डीवधन्वा, गाण्डीवी, बीभत्सु, पाण्डुनन्दन, गुडाकेश, मध्यम पाण्डव, विजय, राधाभेदी, ऐन्द्रि आदि (वायु० ९४.४५; ९९.२८०; ब्रह्मां० ३.६९.४६)। (२) कृतवीर्यका पुत्र (कार्तवीर्य) यह सात द्वीपों तथा हैहय-गणका अधिपति था। यह चक्रवर्ती सम्राट् था। दस हजार वर्षतक उग्र तप कर इसने विष्णुके अंश दत्तात्रेयकी आराधना की। उनकी कृपासे इसे चार वर मिले जिनसे इसे १००० भुजाएँ थीं और अष्ट ऐश्वर्योंको यह भोगता था। दत्तात्रेयसे इसने योग सीखा, ८५००० वर्षोंतक बड़ी खूबीके साथ राज्य किया एवं सात द्वीपोंमें ७०० यज्ञ किये; कई युद्ध जीते (भाग० ९.१५.१७-१९; २३.२४-२७; ब्रह्मां० ३.३०.४-७५; ६९.९-४९, ५६; विष्णु० ४.११.११-२१; मत्स्य० ४३.१५; वायु० ९४.१०)। इसने अपनी राजधानी माहिष्मतीमें रावणको बन्दी कर लिया था और पुलस्त्यके कहनेपर छोड़ा था (भाग० ९.१५.२१-२२; ब्रह्मां० ३.३३.५०; मत्स्य ४३.३७-४०)। एक बार यह सेना और अमात्यके साथ जमदग्निके आश्रमपर आये और उनके अभूतपूर्व आतिथ्य-सत्कारसे विस्मित हो उनकी 'कामधेनु गौ' बलपूर्वक हर ले गये (भाग० ९.१५.२३.२६; ब्रह्मां० ३.२६.७ पूरा, २७, २८; ३०.४)। ऋषिपुत्र परशुराम अकेले घोर युद्ध कर कार्त्तवीर्यसे गौ वापस ले आये (भाग० ९.१५.२७-३६; ब्रह्मां० ३.३०.५-१५; ३२.६१; ३८.८-२७; ४०.१९; ४१.३७,३८; ४४.१४; ४७. ६३, ८८)। कार्त्तवीर्यके ५ लड़कोंने जमदग्निको मार दिया, क्योंकि अन्य परशुरामसे मारे गये थे। इसने हजारों यज्ञ किये। यह राजर्षि, पशुपाल तथा क्षेत्रपाल था (मत्स्य० ४३.१३-२५)। इसने करकोटकके पुत्रको माहिष्मतीमें हराया और नर्मदा तटपर राज्य स्थापित किया। पातालके असुर इससे डरते थे। आपवका निवास स्थान हेमतालवन इसने जला डाला था, अतः इसे उसने शाप दिया कि एक भार्गव ब्राह्मण इसकी १००० भुजाएँ काट डालेगा (मत्स्य० ४३.२५-४३; वायु० ९४.९-२४)। इसने सौभाग्यशयन व्रत किया तथा १६ महादान भी किये थे। प्रातःकाल इसका नाम लेनेवालेका धन नष्ट नहीं होता। यदि धन चला गया हो तो वापस आ जाता है। (मत्स्य० ६०.४९; दे० कार्त्तवीर्य)। चन्द्रगुप्त इसका मन्त्री तथा गर्ग इसके पुरोहित थे (ब्रह्मा० ३.२८. ३१-६३)। हैहयवंशोत्पन्न राजा सहस्रार्जुन यही थे। (३) रैवत मनुका एक पुत्र (भाग० ८.५.२)। (४) एक तीर्थ जहाँ श्राद्ध करनेका बड़ा माहात्म्य है (मत्स्य० २२.४३)।

अर्जुनपाल–पु० [सं०] शमीक तथा सौदामिनीका एक पुत्र (भाग० ९.२४.४४)।

अर्णव–पु० [सं०] (अर्बुद = बिल्सन) एक पवित्र स्थान (विष्णु० ६.८.२९)।

अर्णवक–पु० [सं०] ये चार हैं = पृथ्वी, अन्तरिक्ष, दिव्य और मह (वायु० १०१.१३)।

अर्थ–पु० [सं०] यह धर्म और बुद्धिसे उत्पन्न होता है (भाग० ४.१.५१)। मत्स्यपुराणमें इसके दोष दिये हैं। इसे न तो अनियमित ढंगसे अर्जन करना चाहिये और न अनुपयुक्त व्यक्तियोंको दान ही देना उचित है (मत्स्य० २२०.११; वायु० २३.८१; ६१.१३०)।

अर्थशास्त्र–पु० [सं०] १८ विद्याओंमेंसे एक (ब्रह्मां० २.३१. २३; ३५.८९; वायु० ५८.२३; ६१.७९)। दितिके गर्भ नष्ट करनेके पक्ष तथा समर्थनमें इन्द्रने इसका आश्रय लिया था (मत्स्य० ७.६३; १०.३२; विष्णु० ३.६.२९)। पृथुके राज्यमें इसकी अवहेलना हुई पर बुध (तारागर्भज चन्द्रपुत्र) इस शास्त्रके ज्ञाता थे (मत्स्य० २४.२)।

अर्थसिद्धि–स्त्री० [सं०] साध्यगणका पुत्र (भाग० ६.६.७)।

अर्थाकर्पणिका–स्त्री०[सं०]त्रिपुरेशीचक्रकी गुप्त योगिनियोंमें से एक गुप्तयोगिनी देवीका नाम। ये अमृत-प्रवाहसे सब दिशाओंके निवासियोंको तृप्त करती हैं (ब्रह्मां० ४.३६.७१)।

अर्द्धोदय–पु० [सं०] एक पर्वका नाम। माघकी अमावस्या रविवारको पड़े तो श्रवण नक्षत्र और व्यतीपात योग भी हो तब अर्द्धोदय योग होता है। इस दिन स्नान करनेसे सूर्य-ग्रहणमें स्नान करनेका फल होता है। स्कंदपुराणानुसार इस योगमें सभी स्थानोंका जल गंगाजल तुल्य हो जाता है और सभी ब्राह्मण ब्रह्मसे शुद्धात्मा हो जाते हैं (व्रतपरिचय २१८ तथा महाभारत)।

अर्धजल–पु० [सं०] श्मशानमें पहुँचानेके पश्चात् शवको स्नान कराके आधा जलमें और आधा जलके बाहर डाल दिया जाता है। इस क्रियाको ही "अर्धजल" कहते हैं—दे० अन्त्येष्टिकर्मपद्धति तथा अन्त्यकर्मदीपक।

अर्धनयन–पु० [सं०] स्वाभाविक दो नेत्रोंके अतिरिक्त देवताओंके ललाटमें एक तीसरी आँख होती है जिसे अर्धनयन कहते हैं। शंकरकी इसी तीसरी आँखसे प्रलयके समय सारी सृष्टि भस्म होगी। कामदेवको जलाकर भस्म करनेवाली शंकरकी यही तीसरी आँख थी—दे० अंगज।

अर्धनारीनरवपु–पु० [सं०] इसकी उत्पत्ति हिरण्यगर्भसे हुई जिसके दो खण्ड=पुरुष और नारी। अर्ध पुरुष (पुल्लिंग) ग्यारह भागोंमें बँटा जिसे रुद्र कहते हैं और प्रत्येक गणेश्वर हो गया। अर्धनारी (स्त्री)के शुक्ल (दाहिने) और कृष्ण (बाँयें) दो खण्ड हुए। इससे प्रज्ञा और श्री की उत्पत्ति हुई जो संसारमें सहस्रों रूपमें फैल गयीं (वायु० ९.७५–९८; ४१.३६)।

अर्धनारीश्वर–पु० [सं०] शक्तिकी उपासना करनेसे शिवका यह रूप हो गया (ब्रह्मा० २.२७.९८; ४.५.३०; ४४.४८)। मत्स्य० ६०.२५; १९२.२८; २६०.१–१० में इस मूर्त्तिके वस्त्र और आभूषणों आदिका पूर्ण विवरण दिया है।

अर्धपण्य–पु० [सं०] आत्रेय (अत्रि वंशमें उत्पन्न) एक गोत्रकार ऋषि (मत्स्य० १९७.३)।

अर्धबाहु–पु० [सं०] ऊर्जा और वशिष्ठके सात पुत्रोंमेंसे एकका नाम (वायु० २८.३६)।

अर्धमुण्ड–पु० [सं०] ३३वें विश्वरूप कल्पमें महादेवके पार्श्वसे उत्पन्न चार पुत्रोंमेंसे एकका नाम (वायु० २२.५९)।

अर्धशशि–पु० [सं०]=(अर्धचन्द्र) मूर्त्तियोंकी स्थापनाके लिए दस पीठोंमेंसे एक। यह पुत्रदाता कहा गया है (मत्स्य० २६२.७,११,१७)।

अर्बंदसरस्वती–स्त्री० [सं०] एक नदीका नाम जो प्रशस्त पितृतीर्थ है। इसमें श्राद्ध करनेका बड़ा माहात्म्य कहा गया है (मत्स्य० २२.३८)।

अर्बुद–पु० [सं०] (१) ये द्विज थे पर पुरञ्जयके पश्चात् व्रात्य हो गये। (२) एक पश्चिमी राज्य जो ललिताके पचास पीठोंमें एक पवित्र पीठ स्थान है (भाग० १२.१.३८; ब्रह्मा० २.१६.६२; ४.४४.९४)।

अर्भक–पु० [सं०] अजातशत्रुके पुत्र तथा उदयनके पिताका नाम (विष्णु० ४.२४.१५–१६)।

अर्यमन्–पु० [सं०] (१) कश्यपसे अदितिके बारह पुत्रोंमेंसे एक पुत्र आदित्य जिसकी पत्नीका नाम मातृका था। इसके पुत्रोंको चर्षणि कहते हैं (भाग० ६.६.३९–४२; ब्रह्मा० ३.३.६७; २.२४.३३,४०; मत्स्य० १२६.३; १२७.२३; १७१.५६; २२५.१२; वायु० ६२.१९०; ६६.६६; ११०.१०; विष्णु० १.१५.१३०)। १०० वर्षोंतक यमराज शापवश जब शूद्र हो गये थे तब अर्यमन् ही यमका कार्य करते थे (भाग० १.१३.१५)। यह विष्णुके समकक्ष माने गये हैं तथा इनकी उपासना भी सर्वत्र होती है। शिशुमार नक्षत्रके पिछले पैरकी जंघाओंको इनका और वरुणका निवासस्थान मानते हैं (विष्णु० २.१२.३२)। (२) माधव (वैशाख) मासमें सूर्यका नाम (भाग० १२.११.३४; वायु० ५२.२.९४; विष्णु० २.१०.५)। (३) एक प्रधान पितृ जो हिरण्यमय वर्षमें विष्णु (कूर्महरि) की उपासना करते हैं—दे० भाग० ५.१८.२९। (४) शिशुमार नक्षत्रकी जाँघ जिसके दक्षिणमें पितृयान है (ब्रह्मां० २.२३.१०३;३५.१११)।

अर्वन्, अर्वा–पु० [सं०] चन्द्रदेवका एक घोड़ा—दे० चन्द्रमा।

अर्वरीवान्–पु० [सं०] स्वारोचिष युगके सप्तर्षियोंमेंसे एकका नाम (ब्रह्मां० २.३६.१८)।

अर्वसन–पु० [सं०] एक आत्रेय (अत्रिवंशज) मन्त्रकार ऋषि (ब्रह्मा० २.३२.११३)।

अर्वाक–पु० [सं०] पचीसवें द्वापरके वेदव्यासका नाम (ब्रह्मां० २.३५.१२३)।

अर्वाकस्रोतस–पु०[सं०] ब्रह्मा द्वारा की गयी सृष्टियोंमेंसे एक तैजस सृष्टि। ब्रह्माकी प्रथम सृष्टिसे पञ्चपर्ववाली अविद्या प्रादुर्भूत हुई, तदनन्तर ब्रह्माने द्वितीय तिर्यक्स्रोतस् सृष्टि की, तदुपरान्त तीसरी ऊर्ध्वस्रोतस् सृष्टि की जिसके अन्तर्गत देवता आदि प्रादुर्भूत हुए। उसके पश्चात चौथी सृष्टि जो उन्होंने की वह अर्वाक्स्रोतस् रही उसके अन्तर्गत मनुष्य प्रादुर्भूत हुए (वायु० ६.५३-६)।

अर्वावसु–पु० [सं०] (१) रैभ्य ऋषिके दूसरे पुत्रका नाम। भरद्वाजके शापवश इनके बड़े भाई परावसुने पिता रैभ्यका जंगली मृग समझ वध कर दिया था, पर अर्वावसुने अपने तपोबलसे उन्हें पुनः जीवित कर लिया था—दे० रैभ्य, यवक्रीत। (२) सूर्यकी हजार किरणोंमेंसे प्रधान सात किरणोंमें एक यह किरण बृहस्पतिकी उत्पादक कही गयी है (ब्रह्मां० २.२४.६७; वायु० ५३.४५.४९)।

अर्ह–पु० [सं०] (१) देवराज इन्द्रका नाम। (२) शिवका एक नाम (वायु० ९७.१७२; ब्रह्मां० ३.७२.१७३)।

अर्हगण–पु० [सं०] पाण्डवोंके सम्बन्धी कुछ लोग जिन्होंने द्वारकाकी रक्षा की थी (भाग० १.११.११; १४.२५)।

अर्हण–पु० [सं०] विष्णुके एक सेवकका नाम (भाग० २.९.१४)।

अर्हत्–पु० [सं०] (१) कोंक, वेंक और कुटकके राजाका नाम जो ऋषभके उपदेशसे पथभ्रष्ट हो गये थे (भाग० ५.६.९)।

अलंकटंकटा–स्त्री [सं०] विद्युत्केश नामक राक्षसकी पत्नी तथा सुकेशकी माताका नाम। रामायणानुसार इस राक्षसवंशकी उत्पत्ति सृष्टिके आदिकालमें हुई थी—दे०

(वाल्मी० रामायण उ० काण्ड)।

अलंबाक्षी–स्त्री० [सं०] अन्धकासुर संग्राममें अन्धकोंके रुधिरपानके हेतु महादेव द्वारा सृष्ट एक मातृका देवी, जिन्हें मानस-पुत्री मानते हैं (मत्स्य० १७९.२२)।

अलंबुष–पु० [सं०] एक राक्षस जिसने महाभारतके युद्धमें कौरवोंकी सहायता की थी। यह भीमसेनके पुत्र घटोत्कच द्वारा मारा गया था (महाभारत द्रोणपर्व)। दे० ऋष्य-शृंग।

अलंबुषा(अलुंबुषा)–स्त्री० [सं०] (१) सोलह मौनेय देव-गन्धर्वोंकी चौबीस बहनोंमें एक अप्सराका नाम (ब्रह्मा० ३.७.६; ४.३३.१८; वायु० ६९.५)। (२) तृणबिन्दुकी रानी एक अप्सरा जो विशाख (विष्णु० विशाल)की माता थी। इनकी एक पुत्री भी हुई जिसका नाम चेलविला या चेडविडा (विष्णु० इलविल) था—दे० ब्रह्मां० ३.८.३७; भाग० ९.२.३१; विष्णु० ४.१.४८–९।

अलका–स्त्री० [सं०] कुबेरकी पुरीका नाम—दे० वसुधारा।

अलर्क–पु० [सं०] (१) प्राचीनकालके एक राजाका नाम जिसने एक ब्राह्मणके माँगनेपर अपनी आँखें निकालकर उसे दे दी थीं। पूर्व कालमें अलर्कके अतिरिक्त और किसीने भी ६६००० वर्षोंतक युवावस्थामें रहकर पृथ्वीका भोग नहीं किया (विष्णु० ४.८.१६-१८)। (२) दत्तात्रेयके एक शिष्य जो विष्णुकी मायाका रहस्य जानते थे (भाग० १.३.११; २.७.४४)। (३) द्युतमत्के एक पुत्र तथा सन्नतिके पिताका नाम जिसने ६६००० वर्षोंतक राज्य किया। ब्रह्माण्डपुराणानुसार यह वत्सका, विष्णु पुराणानुसार प्रतर्द्धनका पुत्र था। यह काशीका राजर्षि था जिसने लोपामुद्राकी कृपासे दीर्घजीवन पाया था। क्षेमक राक्षसको मार इसने काशीमें अपनी सुन्दर राजधानी बसायी थी (ब्रह्मां० ३.६७.६९–७२; विष्णु० ४.८.१६–१८; भाग० ९.१७.६–८)।

अलाबु–स्त्री० [सं०) कोंहड़ा (तरकारी) श्राद्धके लिए निषिद्ध है (विष्णु० ३.१६.८)।

अलाबुपात्र–पु० [सं०] तुम्बी जिसमें नागोंने तक्षकको बछड़ा बनाकर पृथ्वी रूपी गौका दूध (विष) दूहा। उसका दोहनकर्ता हुआ धृतराष्ट्र नामका नाग (ब्रह्मां० २.३६.२१३; मत्स्य० १०.१९)।

अलायुध–पु० [सं०] एक राक्षस जिसे महाभारत युद्धमें भीमसेनके पुत्र घटोत्कचने मारा था—दे० अलम्बुष, महाभारत द्रोणपर्व।

अलिपिण्डक–पु० [सं०] हजार काद्रवेय नागोंमें अत्यन्त प्रधान नागका नाम (ब्रह्मां० ३.७.३५)।

अलिमान्–पु० [सं०] गोमतिपुत्रका पुत्र तथा शान्तकर्णके पिताका नाम (विष्णु० ४.२४.४८)।

अलोक–पु० [सं०] लोकातीत अर्थात् भगवान्का नाम। वृत्रने इन्द्रके साथ संग्राममें अन्तिम समय सबके देखते-देखते इन्हें प्राप्त किया था (भाग० ६.१२.३५; ब्रह्मां० २.१९.१५३)।

अल्पमेध–पु० [सं०] सुमेध नामके देवगणमेंसे एक देवता (ब्रह्मां० २.३६.५९)।

अवंति, अवन्ती–स्त्री० [सं०] (१) मध्यप्रदेशमें मालवाका एक प्रसिद्ध नगर। यह पुरी पापसे 'अवन'=रक्षा करती है, अतः इसका अवंति नाम पड़ा। यह आज-कल उज्जैनके नामसे प्रसिद्ध है। इसी क्षेत्रमें 'वल्मीकेश्वर' महादेव हैं जिनकी आराधना कर वाल्मीकिने कवित्व शक्ति प्राप्त की थी (स्कन्द० आवन्त्यखण्ड–अवन्ती क्षेत्र-मा०)। अयोध्याकी तरह यह भी सप्तपुरियोंमेंसे एक है। काशीके सांदीपन यहीं रहते थे (भाग० १०.४५.३१; ५८.३०; विष्णु० ५.२१.१९)। इसे अवन्तिका भी कहते हैं (ब्रह्मां० ४.४०.९१)। यहाँके एक राजाने राजाधिदेवीसे विवाह किया था जिससे विन्द और अनुविन्द हुए (विष्णु० ४.१४.४३; भाग० १०.५८.३१; वायु० ९६.१५७)। यह कार्त्तवीर्यके पुत्रोंकी राजधानी थी (वायु० ९४.५०)। इसे वेद-पुरुषकी नाभि माना गया है (वायु० १०४.७६)। (२) एक राज्यका नाम। यहाँ एक अति कृपण ब्राह्मण रहता था। इसका सारा धन नष्ट हो गया और इसके सम्बन्धी भी इससे विमुख हो गये, अतः यह साधु हो गया। इससे सब घृणा करते थे, पर इसने विष्णुकी भक्तिसे मुक्ति पायी (भाग० ११.२३.६–६२)। पुरंजयके पश्चात् यहाँके द्विज व्रात्य हो गये (भाग० १२.१.३८)। यहाँके निवासी यदुके विरुद्ध लड़नेके लिए जरासन्धके यहाँ चले गये (भाग० १० [५० (५) ३]; ११.२३.६)। महाकालवन यही था जहाँ अन्धकको, जो पार्वतीको हरना चाहता था, रुद्रने पराजित किया था (मत्स्य० १७९.५)। यहाँ व्रात्यद्विजों, शूद्रों तथा आभीरोंका राज्य है (विष्णु० ४.२४.६८; भाग० १२.१.३६)। (३) भारतवर्षके पारियात्र पर्वतसे निकली एक नदी (ब्रह्मां० २.१६.-२९; वायु० ४५.९८; मत्स्य० ११४.२४)।

अवंतिका–स्त्री० [सं०] पितरोंके लिए प्रिय एक पवित्र तीर्थ। यहाँ श्राद्ध करनेका बड़ा फल कहा गया है (मत्स्य० २२.३३)।

अवंति–पु० [सं०] (१) कार्त्तवीर्य अर्जुनका एक पुत्र (मत्स्य० ४३.४६)। (२) विन्ध्याचल पर्वतकी दूसरी ओरका एक स्थान विशेष (वायु० ४५.१३४)।

अवंध्य–पु० [सं०] अंगिरस्का स्वराट् नामकी पत्नीमें उत्पन्न पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (वायु० ६५.१००)।

अवगाह–पु० [सं०] (१) वृकदेवी तथा वसुदेवका एक पुत्र (मत्स्य० ४६.१८)। (२) चित्रसेनका एक पुत्र (वायु० ९६.२४८)।

अवटनिरोधन–पु० [सं०] २८ नरकोंमेंसे एकका नाम। जो किसी जीवको अँधेरी कोठरी या अन्नकी कोठियोंमें बन्द कर देते हैं वे लोग इसी नरकके भागी होते हैं (भाग० ५.२६.७ ३४)।

अवटोदा–स्त्री० [सं०] भारतवर्षकी एक महानदीका नाम (भाग० ५.१९.१८)।

अवतार–पु० [सं०] पुराणानुसार किसी देवताका मनुष्यादि या अन्य संसारी प्राणियोंके शरीरको धारण करना। पुराणानुसार विष्णुके २४ अवतार हैं—ब्रह्मा, वराह, नारद, नर-नारायण, कपिल, दत्तात्रेय, यज्ञ, ऋषभ, पृथु, मत्स्य, कूर्म, धन्वन्तरि, मोहिनी, नृसिंह, वामन, परशु-

राम, वेदव्यास, राम, बलराम, कृष्ण, बुद्ध, कल्कि, हंस और हयग्रीव। इनमेंसे जो दस प्रधान हैं वे ये हैं—मत्स्य, कच्छप, वराह, नृसिंह, वामन, परशुराम, राम, कृष्ण, बुद्ध और कल्कि (भाग० १.३.६–२६; २८,३०, ३९)।

अवध–पु० [सं० अयोध्या] पहलेके संयुक्त प्रान्तमें अवध और रुहेलखण्ड दोनों देश सम्मिलित हैं। अवधकी प्रधान नगरी अयोध्या थी। श्रीरामका जन्म यहीं हुआ था (रामायण, बालकाण्ड १९०–१९१)।

अवधूत–पु० [सं०] पुरंजनका मित्र जो उसके साथ नलिनी और नालिनीसे होकर सौरभ राज्य गया था (भाग० ४.२५.४८)। इसने यदुको आध्यात्मिक ज्ञान दिया था (भाग० ११.७.२४-२९)।

अवध्य–पु० [सं०] उत्तम मन्वन्तरके पाँच देवगणोंमेंसे प्रतर्दनगणका एक देवता (ब्रह्मां० २.३६.३०)।

अवनेजन–पु० [सं०] श्राद्धका एक कृत्य विशेष (मत्स्य० १७.४७)।

अवभृथ–पु० [सं०] (१) वह अग्नि, जिसका वरणके साथ यजन-पूजन होता है, उसके पुत्रका नाम हृच्छय है। (वायु० २९.३१; ब्रह्मां० २.१२.३३)। [२] यज्ञान्त स्नान (भाग० १०.७५.८-९)।

अवभृति–स्त्री० [सं०] आभीरोंकी एक नगरी (भाग० १२.१.२९)। अवभृति नगरीके राजा आवभृत्य कहे जाते हैं।

अवरगात्र–पु० [सं०] एक बन्दर जो प्रधान वानरसेनानायकोंमें अन्यतम था (ब्रह्मां० ३.७.२३७)।

अवरति–पु० [सं०] उत्तम मन्वन्तरके पांच देवगणोंमेंसे प्रतर्दनगणका एक देवता (ब्रह्मां० २.३६.३०)।

अवरीयान्–पु० [सं०] सावर्णि मनुके ९ पुत्रोंमेंसे एक (वायु० १००.२१)।

अवरोधन–पु० [सं०] गय और गयन्तीके तीन पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (भाग० ५.१५.१४)।

अवशावध–पु० [सं०] वह्वृच, भार्गव, पैल आदि छियासी श्रुतर्पियोंमेंसे एक श्रुतर्पि (ब्रह्मां० २.३३.५)।

अवस्फूर्ज-(विवस्वत्)–पु० [सं०] अग्निका एक रूप विशेष जिसे आस्थ कहते हैं (ब्रह्मां० २.१२.३१)।

अविकारा–स्त्री० [सं०] अन्धकासुर-संग्राममें शिवजी द्वारा मनसे उत्पादित (मानसी) एक मातृका (मत्स्य० १७९.२६)।

अविक्षित्–पु० [सं०] राजा करंधमके पुत्र तथा चक्रवर्ती मरुत्तके पिताका नाम (भाग० ९.२.२६; विष्णु० ४.१.३०–३१)।

अविक्षित–पु० [सं०] मरुत्त, जो तुर्वसुके वंशमें उत्पन्न हुआ, का पिता। यह पूर्वोक्त चक्रवर्ती मरुत्त, जिसने अभूतपूर्व यज्ञ किये थे, से भिन्न है (वायु० ९९.२)।

अविघ्नकरव्रत–पु० [सं०] फाल्गुन शुक्ल चतुर्थीको गणेश पूजन करे। पूजा तथा पारणमें तिलका विशेष महत्त्व है। अश्वमेधके समय राजा सगरने, त्रिपुरासुर युद्धमें शिवने तथा समुद्रमंथनके समय विघ्न निवारणार्थ स्वयं भगवान्ने यह व्रत किया था—वाराह पुराण।

अविजाति–पु० [सं०] रोहिणी (सुरभिदेवी)की चार पुत्रियोंमेंसे एक पुत्री भद्रासे उत्पन्न बकरियाँ और भेंड़ (ब्रह्मां० ३.३.७५)।

अविज्ञातगति–पु० [सं०] एक वसव (वसुवंशज) का नाम जो अनिल (८ वसुओंमें छठा वसु) और उसकी पत्नी शिवाका पुत्र है। इसके ज्येष्ठ भ्राताका नाम मनोजव है (मत्स्य० ५.२५; वायु० ६६.२५; ब्रह्मां० २.१०.८०; विष्णु० १.१५.११४)।

अविज्ञात–पु० [सं०] शाल्मलद्वीपके सात खण्डोंमेंसे एक खण्डका नाम (भाग० ५.२०.९)।

अविद्ध–पु० [सं०] जनमेजयके पुत्र तथा वीर मनस्युके पिताका नाम (वायु० ९९.१२०)।

अविद्या–स्त्री० [सं०] (१) तामिस्र, अन्धतामिस्र, तम, मोह और महातम ये ही पाँच अविद्या हैं, इसका ब्रह्माने छाया से सर्जन किया (भाग० ३.२०. १८)। (२) सृष्टिके प्रारम्भमें पंच पर्वा अविद्या ही पहले उत्पन्न हुई। विधाताकी प्रथम सृष्टि (वायु० ६.३७)।

अविधेय–पु० [सं०] पृथ्वीके नीचेका सातवाँ नरक। इस नरकमें पञ्चभूतरचित शरीर रहता है, अतः पीड़ा, बन्धन और वधसे इसमें बचनेका उपाय नहीं है। (वायु० १०१.१७९; ब्रह्मां० ४.२.१८२, १८६)।

अविमुक्त–पु० [सं०] (१) वाराणसीका एक नाम जो शिव और पार्वतीके वहाँ निवास बना लेनेके बाद पड़ा। शिवजीने पार्वतीसे कहा इसे मैं मुक्त नहीं करूँगा नहीं छोड़ूँगा यह मेरा अविमुक्त धाम है। कहते हैं कलियुगमें उसका असली रूप लुप्त (अन्तर्हित) हो गया है (ब्रह्मां० ३.६७.६०, ६३)। (२) बनारसका नाम जहाँ शिव स्थायी रूपसे निवास करते हैं कभी उसे छोड़ते नहीं हैं। अन्य तीर्थोंमें स्नान और वाससे मोक्ष नहीं होता किन्तु यहाँ वास मुक्ति देता है। क्षेत्रमाहात्म्य तथा शंकरजीके प्रभावसे यहाँ वास करनेवालोंको उत्तम योगगति प्राप्त होती है (मत्स्य० १८०.५४,९४; १८१.१३–३२ १८२.४–५, १९–२०, २३–२७; १८३.१९–३९; १८४.१–११, २१–१४–३०, ४१–५९,७४; १८५.१–२, १७–१८, ४६–७, ५४, ७१; वायु० १०६.६९; विष्णु० ५.३४.३०)।

अवियोग-व्रत–पु०[सं०] कल्किपुराणानुसार एक व्रत जिसका मान अगहन सुदी तृतीयाको होता है। चन्द्र-दर्शनके पश्चात् स्त्रियाँ दूध पीती हैं। यह व्रत सौभाग्य रक्षक समझा जाता है—दे० कल्कि पुराण।

अवीक्षित–पु० [सं०] (१) किष्किन्धाके वानरराज वालिकी पुत्री सुभद्राके पतिका नाम—रामायण। (२) महाराज करन्धम तथा वीरा (वीर्यचन्द्रकी पुत्री) के पुत्रका नाम। 'इसे वृहस्पति और बुध देखते हैं और सूर्य, शनैश्चर एवं मंगलसे यह अवीक्षित है (अदृष्ट है) इसलिए इनका नाम अवीक्षित हुआ। वैदिशके राजा विशालकी पुत्री वैशालिनीके स्वयंवरमें यह गये थे जहाँ अन्य राजाओंसे युद्धमें हार गये और बन्दी बने। राजा करन्धम इन्हें बन्धनमुक्त करा लाये। परास्त होनेसे यह अति लज्जित थे। इनकी माताने किमिच्छक व्रत कर इनके हठको जीता था—मार्कण्डेय पु०।

अवीचि–पु० [सं०] पुराणानुसार सात प्रधान नरकोंमेंसे एक नरक (पाँचवाँ) जहाँ झूठे गवाह तथा अनुचित दान देनेवाले जाते हैं (वायु० १०१.१७९; भाग० ५.२६.७, २८; ब्रह्मां० ४.२.१८२, १८५) यह २८ नरकोंमें एक है।

अवीचिक–पु० [सं०] पृथ्वीके नीचे स्थित २८ नरकोंमेंसे एकका नाम यह वेदनिन्दक, यज्ञमें विघ्न करनेवाले तथा स्वधर्म त्यागियोंका स्थान है (विष्णु० १.६.४१)।

अवीचिमत्–पु० [सं०] एक नरकका नाम (भाग० ५.२६.२८)।

अव्यय–पु० [सं०] (१) भृगुके १२ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (११वें) का नाम (ब्रह्मां० ३.१.९०; मत्स्य० १९५.१३)। (२) रौच्य मन्वन्तर कालके सप्तर्षियोंमेंसे एक ऋषिका नाम (पौलस्त्य) (ब्रह्मां० ४.१.१०२)। (३) स्वायंभुव मन्वन्तरके अजितामें रुचिसे उत्पन्न बारह अजित देवोंमेंसे एक (छठे) का नाम (वायु० ६७.३४)। (४) तेरहवें रौच्य मन्वन्तरके सप्तर्षियोंमेंसे एक ऋषिका नाम (विष्णु० ३.२.४०)।

अशना–स्त्री० [सं०] राजा बलिकी रानीका नाम जो बाण आदि १०० पुत्रोंकी माता थी (भाग० ६.१८.१७)।

अशनी–स्त्री० [सं०] अन्धकासुर-संग्राममें अन्धकोंका रुधिर पान करनेके लिए सृष्ट बहुत-सी मानस मातृकाओंमेंसे एक मातृकादेवीका नाम (मत्स्य० १७९.२९)।

अशिरस्–पु० [सं०] दनुके महाबलशाली विख्यात पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (दानव) का नाम (ब्रह्मां० ३.६.५)।

अशीतिमंडलशत–पु० [सं०] आठ हजार मण्डल (८०००) जिनका सूर्य पूरे एक वर्षमें भ्रमण करता है (वायु० ५२.४६)।

अशून्यशयनव्रत–पु० [सं०] भगवान् विष्णुका एक व्रत जो श्रावण कृष्ण द्वितीयाको मनाया जाता है। इसमें शेष-शय्यापर लक्ष्मीसहित विष्णु सोते हैं इसीसे इसका यह नाम पड़ा—भविष्य पु०। यह श्रावण कृष्ण २ से मार्गशीर्ष कृष्ण २ पर्यन्त किया जाता है जिसमें शैया, भोजन, दीप आदि दान देनेका विधान है। इससे विष्णुलोक मिलता है तथा व्रतीको अखण्ड दाम्पत्य-सुख भी (मत्स्य० ७१.५-२०)।

अशोक–पु० [सं०] केतुमाल द्वीपके एक कुलपर्वतका नाम (वायु० ४४.४)।

अशोकवन–पु० [सं०] यह त्रिपुरमें है। इसका निर्माण और सज्जा मयने की थी (मत्स्य० १३०.१६; वायु० ३९.६८)।

अशोकवनिका–पु० [सं०] ययातिपुरकी यह वह वाटिका है, जहाँ महाराज ययातिने अपनी रानी देवयानीकी अनुचरी शर्मिष्ठाके लिए एक घर बनवा दिया था—दे० देवयानी, शर्मिष्ठा तथा मत्स्य० ३१.२,१०।

अशोकवनिकातीर्थ–पु० [सं०] यह नर्मदा तथा विशोका नदीके संगमपर स्थित है। यहाँ अशोकेश्वर लिंग है जहाँ शापभ्रष्ट ब्राह्मणोंको नारदने शापमुक्त किया था। काञ्चीनरेश चन्द्रवंशोत्पन्न महाराज रविश्चन्द्रका यज्ञ यहीं सम्पन्न हुआ था (स्कन्द आवन्त्यखण्ड, रेवाखण्ड)।

अशोकवाटिका–स्त्री० [सं०] लंकाधिपति रावणकी वह प्रसिद्ध वाटिका जिसमें उसने सीताजीको हर लानेके पश्चात् रखा था (रामा० सुं० कां० दो० ८–१८)।

अशोकव्रत–पु० [सं०] आश्विन शुक्ल १ को नवीन पल्लवोंवाले अशोक वृक्षका विधिवत् पूजन करनेसे व्रतवती स्त्रीके सब शोक नष्ट हो जाते हैं। सीताजीने अशोकवाटिकामें इसे किया था—भविष्योत्तर।

अशोक-षष्ठी–स्त्री० [सं०] चैत्र शुक्ल षष्ठी जिस दिन षष्ठी देवीकी पूजा होती है, जिसे सन्तानके लिए करते हैं—कामाख्यातन्त्रानुसार।

अशोकाष्टमी–स्त्री० [सं०] चैत्र शुक्लाष्टमीको अशोककलिकाप्राशन व्रत भी कहते हैं, यदि बुधवार या पुनर्वसु या दोनों हों तो अति उत्तम है। अशोक वृक्षके आठ पल्लव पानीमें डालकर उस जलको पीते हैं तथा अशोकके फूलोंसे विष्णुकी पूजा की जाती है। इस व्रतसे व्रती शोकरहित रहता है—दे० कृत्यरत्नावली, कूर्मपुराण तथा व्रतपरिचय।

अश्मक–पु० [सं०] सौदास, जो कल्मापपाद और मित्रसह नामसे ख्यात थे, के क्षेत्रज पुत्रका नाम, जो उनकी रानी मदयन्तीके गर्भसे वशिष्ठ द्वारा उत्पन्न हुआ था। यह सात वर्षोंतक माताके गर्भमें रहा और वशिष्ठने रानीके पेटपर पत्थरका प्रहार किया तब यह उत्पन्न हुआ। यह मूलकका पिता था (भाग० ९.९.३९,४०; ब्रह्मां० ३.६३.१७७; वायु० ८८.१७७; विष्णु० ४.४.७२,७३)।

अश्मकगण–पु० [सं०] एक दक्षिणी राज्यके निवासियोंका नाम (ब्रह्मां० २.१६.५८; मत्स्य० २७२.१६)।

अश्मकी–स्त्री० [सं०] वसुदेवके पिता शूरकी माताका नाम (ब्रह्मां० ३.७१.१४५, १८९)।

अश्मदंशना–स्त्री० [सं०] भवमालिनीकी अनुयायिनी एक मातृकादेवीका नाम। अन्धकासुर-संग्राममें अन्धकके रुधिरसे उत्पन्न हजारों अन्धकोंका रुधिर पान कर विनाश करनेके लिए शंकर द्वारा सृष्ट मानसमातृकाएँ जब शंकरकी अनुमतिके विरुद्ध त्रैलोक्यका भक्षण करनेको उद्यत हुई तब शंकरजीकी प्रार्थनापर नृसिंह भगवान्ने पूर्वोक्त मातृकाओंसे त्रैलोक्यकी रक्षा करनेके लिए अपने विभिन्न अंगोंसे वागीश्वरी (या वाणीश्वरी), माया, भवमालिनी (भगमालिनी) तथा काली—इन चार प्रधान देवियोंकी सृष्टि कर फिर प्रत्येककी आठ-आठ अनुचरी देवियोंकी सृष्टि की (मत्स्य० १७९.७१)।

अश्मरथ्य–पु० [सं०] एक त्र्यार्षेय जिसका विश्वामित्र तथा वंजुलिसे कोई वैवाहिक सम्बन्ध नहीं होता था (मत्स्य० १९८.१३)।

अश्मसारिन्–पु० (सं०) महाराज शान्तनुके मुख्य मन्त्रीका नाम। इन्होंने शान्तनुके बड़े भाई देवापिको नास्तिक विचारोंका उपदेश देनेके लिए कुछ ऋषियोंको आदेश दिया था जिससे कि नास्तिक विचार आनेसे देवापि पतित हो जाय और बड़े भाईके रहते छोटे भाई शान्तनुको राजगद्दीपर बैठनेका दोष न लगे (विष्णु० ४.२०.२१)।

अश्व–पु० [सं०] (१) विष्णुका एक अवतार (भाग० १०.२.४०)। (२) तीसरे उत्तम मन्वन्तरमें बारह-बारह संख्याके पाँच देवगण हुए—सुधामन्, वशवर्त्तिन्, प्रतर्दन, शिव और सत्य। इनमेंसे सत्यगणका एक देव (ब्रह्मां०

२.३६.३५)। (३) एक प्रजापतिका नाम जिनकी देहसे भूमिपर गिरे रोएँ काश बने (ब्रह्मां० ३.११.७६)। (४) खशाके गर्भसे उत्पन्न बहुतसे मुख्य-मुख्य राक्षसोंमेंसे एक (ब्रह्मां० ३.७.१३६)। (५) चन्द्रमाके रथके दस घोड़ोंमेंसे एक घोड़ेका नाम (वायु० ५२.५३)। (६) प्रश्निके (ब्रह्माण्डके अनुसार वृष्णिके पुत्र चित्रकके बारह पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (वायु० ९६.११४)।

अश्वकर्ण–पु० [सं०] अश्वकर्ण श्राद्ध करनेके लिए एक अति पवित्र तथा उपयुक्त स्थान (मत्स्य० १५.३२)।

अश्वक्रांता–पु० [सं०] वह संगीत (मूर्च्छना) जिसके अधिष्ठाता अश्विनीकुमार कहे जाते हैं (वायु० ८६.६४)। (२) पृथ्वीकी एक विशेषता।

अश्वग्रीव–पु० [सं०] (१) कश्यप ऋषिकी दनु नामकी पत्नीसे उत्पन्न पुत्र। दक्ष-पुत्री दनुके महाबली ६१ पुत्रोंमें हयग्रीव या अश्वग्रीव भी एक थे। इनका विवरण भाग० ६.६.२९-३१; ब्रह्मां० ३.६.१० में विस्तारसे है। (२) वृष्णिपुत्र चित्रकके बारह पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम। इनकी श्रविष्ठा और श्रवण दो बहनें थीं (ब्रह्मां० ३.७१.११४; वायु० ९६-११३)।

अश्वजित्–पु० [सं०] जयद्रथके पुत्र तथा सेनजित्के पिताका नाम (मत्स्य० ४९.४९)।

अश्वतर–पु० [सं०] (१) पातालनिवासी एक नाग जो कम्बलका भाई था। तालकेतु नामक दानवके कपटसे मदालसाकी मृत्यु होनेके पश्चात् इन्होंने तपसे मदालसा-सी कन्या उत्पन्न कर ऋतध्वजको दी थी—दे० (मदालसा, मार्कण्डेयपुराण)। (२) कद्रू नागमाताके हजार फनवाले हजार नागोंमेंसे पातालके एक प्रधान नागका नाम (भाग० ५.२४.३१)। यमुना तटपर प्रयागके प्रजापति-क्षेत्रका निवासी एक सर्प (मत्स्य० ६.३९; १०४.३; १०६.२७; ११०.८)। यह त्रिपुरारिके रथमें जुतता है या छाया करता है (मत्स्य० १३३.२०) और कार्तिक मासमें सूर्यके साथ रथपर संचरण करनेवाले सप्तकगणमें से एक नाग (भाग० १२.११.४४)। यह काद्रवेय (कद्रूका पुत्र) नाग है (ब्रह्मां० २.२०.२३; २३.२१; ३.७.३३; विष्णु० १.२१.२१; वायु० ६९.७०)। यह सुतल लोकका नाग है (वायु० ५०.२३) जो फाल्गुनमें सूर्यके रथपर रहता है (विष्णु० २.१०.१८)। (३) इसने वत्ससे विष्णुपुराण सुनकर कम्बलको सुनाया (विष्णु० ६.८.४६)। इसकी सृष्टि ब्रह्माके पैरोंसे हुई (विष्णु० १.५.४९)।

अश्वतीर्थ–पु० [सं०] नर्मदातटपरका एक तीर्थ स्थान। यह पितरोंको अति प्रिय है। यहाँ श्राद्ध करनेका अनन्त फल कहा गया है (मत्स्य० २२.७१)।

अश्वत्थ–पु० [सं०] (१) एक यज्ञिय पवित्र वृक्ष जिसके नीचे स्वर्ग जानेसे पहले श्रीकृष्ण ध्यानमग्न हो बैठ गये थे (भाग० ३.४.३-८; ब्रह्मां० ३.११.३५,१०९; १३.२९; ४.४३.१७; वायु० ३५.३३; ९१.४४)। पुरूरवाने इससे शमी वृक्षकी लकड़ी रगड़कर यज्ञके लिए अग्नि उत्पन्न की थी (विष्णु० ४.६.८५,८६)। (२) वंदनीय नामक देवीका एक पवित्र तीर्थस्थान (मत्स्य० १३.५१)। (३) मायाकी एक अनुयायिनी देवी; जिसका सर्जन नृसिंह भगवान्‌ने शङ्करसृष्ट मातृकाओंसे त्रैलोक्यरक्षणार्थ किया (मत्स्य० १७९.६९)।

अश्वत्थराज–पु० [सं०] बोधिवृक्षका एक नाम (वायु० १११.२७)।

अश्वत्थव्रत–पु० [सं०] बलवान वैधव्ययोगवाली कन्याको यह व्रत करना चाहिये—ज्ञानभास्कर।

अश्वत्थामन्–पु० [सं०] (१) महात्मा भरद्वाजके पौत्र तथा गौतमीके गर्भसे उत्पन्न द्रोणाचार्यके पुत्र। महाभारत युद्धके समय यह दुर्योधनकी ओरसे लड़े थे और युद्धके पश्चात् भी जीवित थे (भाग० १०.७८; ९५ (५) १६; ८०। यह सावर्णमन्वन्तरके सप्तर्षियोंमेंसे एक सप्तर्षि थे (वायु० १००.१२; मत्स्य० ९.३२)। महाभारत युद्धके समय इन्होंने द्रौपदीके सोये हुए पाँच पुत्रोंका सिर काट लिया था जिसके कारण बड़ा अपमान भोगना पड़ा और सिरकी मणि गँवाकर जीवन बचाया (भाग० १.७.१४-५२; विष्णु० ४.१९.६८)। इन्हींके ब्रह्मास्त्रके कारण उत्तरा (अभिमन्यु-पत्नी) के पुत्रकी मृत्यु गर्भमें ही हो गयी थी (विष्णु० ४.२०.५२) जिसे बादको श्रीकृष्णने जीवित किया और बच्चेका नाम परीक्षित् रखा गया (भाग० १.८.१२-१६; १२.१; १५.१६; १६.१५)। (२) अवन्तिनरेश इन्द्रवर्माके एक हाथीका नाम जो महाभारत युद्धमें मारा गया था। इसीके मरनेपर द्रोणने यह समझा था कि उनका पुत्र मारा गया और अस्त्र रख दिये और तभी धृष्टद्युम्नने तलवारसे द्रोणका सिर काट लिया (महाभारत, द्रोणपर्व)। (३) द्रोण-पुत्र आठवें मन्वंतरके सप्तर्षियोंमेंसे एक थे (भाग० ८, १३.१५)। (४) अश्विनीके गर्भसे उत्पन्न अक्रूरके ग्यारह पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (मत्स्य० ४५.३२)।

अश्वत्थोपनयनव्रत–पु० [सं०] किसी शुभ दिन पुरुष पीपल वृक्षको बोकर ८ वर्षोंतक जलादि दे उसका पोषण तथा पूजन करे। उसका जनेऊ कर फिर पूजन करे तो तो लक्ष्मीकी प्राप्ति हो—शौनक।

अश्वपति–पु० [सं०] मद्रासके एक निःसन्तान राजाका नाम जिन्हें सावित्रीकी कृपासे एक पुत्री उत्पन्न हुई थी सावित्रीप्रदत्त होने तथा तद्रूपगुण होनेसे जिसका नाम भी सावित्री ही रखा गया था (मत्स्य० २०८.५.११)।

अश्वप्र–पु० [सं०] एक दानवका नाम (ब्रह्मां० ३.६.१५)।

अश्वबाहु–पु० [सं०] वृष्णिपुत्र चित्रकके एक पुत्रका नाम (वायु० ९६.११३)।

अश्वमित्र–पु० [सं०] धर्मसे मरत्वतीमें उत्पन्न मरुद्गणोंमेंसे एक मरुत्का नाम (मत्स्य० १७१.५३)।

अश्वमुख–पु० [सं०] कामदेवकी मूर्तिके समीपमें घोड़ेकी मुखाकृतिकी प्रतिमा (मत्स्य० २६१.५३)। किन्नर लोग इसी आकृतिके होते हैं (ब्रह्मां० ३.२२.५६; मत्स्य० ४.५३; वायु० ४७.५७; ६९.३१)।

अश्वमेध–पु० [सं०] एक प्रकारका यज्ञ जो एक वर्षमें समाप्त होता है। इसमें घोड़ेके मस्तकपर "जयपत्र" बाँधकर संसारमें घूमनेके लिए छोड़ देते हैं, रक्षाके लिए पीछे घोड़ेके मालिककी सेना जाती थी। जिसे घोड़ेके मालिकका आधिपत्य स्वीकार नहीं होता था वह घोड़ेको बाँध लेता था और युद्ध करता था। सेना अश्व बाँधनेवालेको युद्धमें हराकर

घोड़ा ले आगे बढ़ती थी। इस प्रकार जब घोड़ा सारे भूमंडलमें जय प्राप्तकर लौटता था तब उसी घोड़ेकी चर्बीसे हवन किया जाता था। श्रीरामचन्द्रका अश्वमेध यज्ञ तथा युधिष्ठिरका यज्ञ प्रसिद्ध है। युधिष्ठिरने तीन (भाग० १.८.६), बलिने सौ (भाग० ८.१५.३४), परीक्षितने तीन (भाग० १.१६.३), पृथुने सौ (९९) अश्वमेध किये थे (भाग० ४-१९-१-५३)। कलिमें शूद्र राजा इस यज्ञको करेंगे (ब्रह्मां० २.३१.६७; मत्स्य० १४४.४३)। इस यज्ञके करनेसे गया जानेका फल, गंगा-यमुना स्नानका फल तथा कोटि होम तुल्य फल होता है (मत्स्य० २२.६; २८.६; ५३, १५.५८.५४; १०६.२९; १८३.७२)। काशीका एक घाट दशाश्वमेध भी कहा जाता है। वह इसीके लिए प्रसिद्ध है। डाक्टर जायसवालके मतानुसार यहाँ दस(१०) अश्वमेध यज्ञ हुए थे, अतः यह नाम पड़ा।

अश्वमेधज–पु० [सं०] सहस्रानीकके पुत्र तथा असीम कृष्णके पिताका नाम (भाग० ९.२२.३९)।

अश्वमेधदत्त–पु० [सं०] शतानीकके पुत्र तथा अधिसीम कृष्णके पिताका नाम (विष्णु० ४.२१.५-६; वायु० ९९. २५७)।

अश्वमेढ़–पु० [सं०] भण्डका एक सेनानायक (ब्रह्मां० ४. २१.८९)।

अश्वयुकशुक्लनवमी–पु० [सं०] आश्विन मासके शुक्ल पक्षकी नवमीं श्राद्धके लिए एक मन्वंतरादि। इनमें किये गये श्राद्धसे पितरोंकी अक्षय तृप्ति होती है (मत्स्य० १७.६)।

अश्वल–पु० [सं०] एक गोत्रकार ऋषिका नाम—हि० श० सा०।

अश्ववाह–पु० [सं०] वृष्णिपुत्र चित्रकके एक पुत्रका नाम (ब्रह्मां० ३.७१.११४)।

अश्वविद्या–स्त्री० [सं०] इसे राजा नलने ऋतुपर्णको सिखलाया था (भाग० ९.९.१७)।

अश्वव्रत–पु० [सं०] इस व्रतको करनेवाला राजाधिराज होता है (मत्स्य० १०१.७१)।

अश्वशिरस्–पु० [सं०] (१) दध्यङ् ऋषिने अश्विनीकुमार युगलको जो मंत्र सिखलाया था उसका नाम (भाग० ६.९. ५२)। (२) राजा बलिका एक अनुयायी दैत्य भी इस नामका था (मत्स्य० २४५.२९)।

अश्व–पु० [सं०] ताम्राके वंशज घोड़े जिनकी उत्पत्ति विष्णुके चरणोंसे हुई (विष्णु० १.५.४९; १.२१.१७)।

अश्वसुत–पु० [सं०] वज्रके पिता तथा सुतनुके पतिका नाम (वायु० ९६.२५१)।

अश्वसेन–पु० [सं०] सत्या (नाग्निजिति) के गर्भसे उत्पन्न श्रीकृष्णके दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (भाग० १०.६१. १३)।

अश्वायु–पु० [सं०] (१) उर्वशीके गर्भसे उत्पन्न पुरूरवाके एक पुत्रका नाम (मत्स्य० २४.३३)। (२) एक त्र्यार्षेय प्रवरकार ऋषि (मत्स्य० १९६.३७)।

अश्वारूढ़ा–स्त्री० [सं०] ललितादेवीकी अनुगामिनी शक्ति एक देवीका नाम जिसने उलूकजित्का वध किया था (ब्रह्मां० ४.२८.३८, ९९)।

अश्वास्य–पु० [सं०] वृष्णि-पुत्र चित्रक, जिनके बड़े भाईका नाम स्वफल्क था, के बारह पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (ब्रह्मां० ३.७१.११५)।

अश्विनी–स्त्री० [सं०] (१) यह अक्रूरके पुत्र अभूमिकी माता थी (मत्स्य० ४५.३३)। इसके गर्भसे ११ पुत्र और दो पुत्रियाँ उत्पन्न हुई थीं। (२) एक नक्षत्र जो अश्वक्रांता संगीत (मूर्च्छना) का अधिष्ठाता देव है (वायु० ८६.६४)।

अश्विनीकुमार–पु० [सं०] (१) सूर्यके दो पुत्रोंके नाम जो त्वष्टाकी कन्या संज्ञासे उत्पन्न हुए थे। सूर्यके तेजको सहन न कर सकनेके कारण संज्ञा अपनी तीन संतति मनु, यम और यमुना तथा अपनी छायाको छोड़ विना कुछ सूचना दिये भाग गयी। यह घोड़ीका रूप धारण कर उत्तर कुरुमें तप करने लगी। छायासे सूर्यको दो संतति हुई जिन्हें शनि और पतीत कहते हैं। छाया अपने बच्चोंको स्वभावतः अधिक चाहती थी। जब संज्ञाकी संततिका अनादर होने लगा तब संज्ञाके भाग जानेका भेद खुला। अब सूर्य घोड़ा बनकर अश्वरूपा संज्ञाके पास गये और इस संयोगसे दोनों अश्विनी कुमारोंका जन्म हुआ। ये देवताओंके वैद्य माने जाते हैं। (२) वैवस्वत युगके देवता युगल। ये बडवा (संज्ञा) के गर्भसे उत्पन्न गर्भके पुत्र थे। इनका जन्म नाकसे हुआ था इसीसे इन्हें नासत्य युगल कहते हैं (भाग० ८.१३.४, १०; ब्रह्मां० ३.५९.७४-७६; मत्स्य, ९.२९; ११.३५-७; २५.४३; विष्णु० १.९.६४; ३.२.७; वायु० ८४.२३-२४)। देवासुर-संग्राममें यह वृषपर्वासे लड़े थे (भाग० ८.१०. ३०)। दध्यङ् ऋषिने इन्हें "अश्वशिरम्" मंत्रकी दीक्षा दी थी (भाग० ६.९.५२; १०.१७)। शर्यातिके यज्ञमें इन दोनोंको सोमरस .पान करनेको मिला था (भाग० ९.३. २४-२६)। माद्रीके गर्भसे इनके नकुल और सहदेव दो पुत्र हुए थे (भाग० ९.२२.२८; मत्स्य० ४६.१०; ५०-५०; विष्णु० ४.२०.४०) दीर्घायु होनेके लिए इनकी पूजा होती है (भाग० २.३.५)। प्लक्षद्वीपके चन्द्र पहाड़पर इन्होंने ओषधियाँ इकट्ठी कीं (ब्रह्मां० २.१९.८; वायु० ४९.९)। ये ललिता देवीकी चंद्रशालामें चन्द्रमाके साथ ध्यान, जप, स्तोत्र और विविध प्रकारकी पूजा करते रहते हैं (ब्रह्मां० ४.३५.५७)। देवोंके पक्षसे ये कालनेमिके विरुद्ध लड़े थे। ये चित्र युद्धमें प्रवीण हैं (मत्स्य० १४८. ८६,९७)। ये ब्रह्मासे उत्पन्न कहे जाते हैं (वायु० ६५. ५७)। भुवर्लोकमें इनका निवास है (वायु० १०१.२९; ब्रह्मां० ४.२.२७)। अन्य देवताओंके साथ ये भी गयासुरपर बैठे (वायु० १०६.५९)। शिव और ललिताके विवाहोपलक्षमें इन्होंने उन्हें अपने अस्त्र दिये थे जिससे ललिताने भण्डपर विजय पायी (ब्रह्मां० ४.२०.५२)।

अश्विषेण–पु० (सं०) एक भार्गव गोत्रकार ऋषि (वायु० ६५.९६)।

अष्टक–पु० [सं०] (१) दृषद्वतीके गर्भसे उत्पन्न विश्वामित्रके एक पुत्रका नाम जो ऋषि थे (भाग० ९.१६.३६; ब्रह्मां० २.३२.११८; ३.६६.६८-७४; विष्णु० ४.७.३८; वायु० ९१.९६, १०३)। यह लौहिके पिता थे (ब्रह्मां० ३.६६. ७५)। (२) एक राजर्षिका नाम जो ययातिके स्वर्गसे गिरते समय उनसे मिले थे। यह ययातिके दौहित्र थे तथा ब्रह्मिष्ठ और त्र्यार्षेय भी थे—विश्वामित्र, लोहित और

अष्टक; मत्स्य० ३५.५; ३७.२ से ४१ सर्गांतक; ४२.१४, २८। (३) वसुदेवके एक भाईका नाम (विष्णु० ४.१४. ३०)।

अष्टका—पु० (सं०) (१) एक श्राद्ध विशेष जिसका प्रत्येक तिथि और प्रत्येक नक्षत्रमें करनेका पृथक्-पृथक् उत्तम फल शास्त्रोंमें वर्णित है, इसे इक्ष्वाकुने किया था। इक्ष्वाकुने अपने पुत्र विकुक्षिको श्राद्धार्हं मृग मार लानेके लिए वन भेजा। उसने उसमेंसे कुछ खा लिया जिससे क्रुद्ध होकर इक्ष्वाकुने पुत्र विकुक्षिको देशसे निकाल दिया था। पिताकी मृत्युके बाद वह पुनः स्वदेश लौटा और राजा हुआ और शशाद कहलाया (भाग० ९.६.६; ब्रह्मां० ३.१७.२-७; ६३. ११; वायु० ८८.११-१९) यह काव्य-पितरोंके लिए अति पवित्र है (वायु० ५६.१९)। (२) अच्छोदाका एक नाम, जो उसके पृथ्वीसे पितृलोकमें जानेपर पड़ा। एक नदीका नामकरण इन्हींपर हुआ (मत्स्य० १४.१९-२०; १४१.१७)।

अष्टकापति—पु० [सं०] 'काव्य' नामक पितरों जो पञ्चाब्द भी कहे जाते हैं, का नाम (ब्रह्मां० २.२८.२१; मत्स्य० १४१.१७)।

अष्टकुल—पु० [सं०] पुराणोंके अनुसार सर्पोंके आठ कुल हैं—शेष, वासुकि, कंबल, कर्कोटक, पद्म, महापद्म, शंख और कुलिक। अन्य मतानुसार—तक्षक, महापद्म, शंख, कुलिक, कंबल, अश्वतर, धृतराष्ट्र और बलाहक।

अष्टकृष्ण—पु० [सं०] वल्लभकुलके अनुसार आठ कृष्ण माने गये हैं—श्रीनाथ, नवनीतप्रिय, मथुरानाथ, विट्ठलनाथ, द्वारकानाथ, गोकुलनाथ, गोकुलचंद्रमा और मदनमोहन।

अष्टमूर्त्ति—पु० [सं०] शिवकी आठ मूर्तियाँ मानी गयी हैं—क्षिति, जल, तेज, वायु, आकाश, यजमान, अर्क और चंद्र अथवा शर्व, भव, रुद्र, उग्र, भीम, पशुपति, ईशान और महादेव (मत्स्य० २६४.३९-४२)।

अष्टवान्—पु० [सं०] स्कंदका एक अंश (वायु० १०१. २८०)।

अष्टसिद्धि—स्त्री० [सं०] दे० सिद्धि।

अष्टांगयोग—पु० [सं०] आसन, प्राणरोध, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि, यम और नियम इन आठ अङ्गोंसे युक्त योग (वायु० १०४.२४.२५)।

अष्टादश विद्या—स्त्री० [सं०] आयुर्वेद, धनुर्वेद, गाधर्व और अर्थशास्त्रके साथ १४ अन्य विद्याएँ जिनमें चार वेद, ६ वेदांग तथा मीमांसा, न्याय, धर्मशास्त्र और पुराण हैं (वायु० ६१.७८-७९)।

अष्टावक्र—पु० [सं०] उद्दालककी पुत्रीके गर्भसे उत्पन्न एक ब्राह्मण ऋषिका नाम। इनके पिता पठन-पाठनमें व्यस्त रहनेके कारण इनकी माताका कुछ विशेष ध्यान नहीं रखते थे। यह माताके गर्भमें थे और माताकी यह अवहेलना देख दुःखी हो गये और गर्भस्थित अष्टावक्र पिताका तिरस्कार कर बैठे। पिता तिरस्कार सहन न सके और इन्हें "अष्टावक्र" होनेका शाप उन्होंने दे दिया [अष्ट=आठ, वक्र=टेढ़ा)। फलस्वरूप इनके आठों अंग टेढ़े थे, अतः यह नाम पड़ा। मिथिलाके राजदरबारमें एक बार इनके पिता एक बौद्ध पण्डितसे परास्त हो गये और शर्तके अनुसार नदीके जलमें फेंक दिये गये और मर गये। बारह वर्षकी अवस्थामें पिताकी मृत्युका हाल सुन अष्टावक्रने मिथिला जा उसी बौद्ध पण्डितको शास्त्रार्थमें परास्त किया। पिताके आशीर्वादसे समँगा नदीमें स्नानके पश्चात् इनके आठो अंग सीधे और ठीक हो गये (विष्णु० ५.३८.७-८४)।

अष्टाहुतिहोम—पु० [सं०] "वैश्वदेव होम"—इसमें आठ आहुतियाँ होती हैं। हृदस्थ वैश्वानरको प्राणाय स्वाहा आदिसे पाँच आहुतियाँ, स्वाहाकारसे तीन आहुतियाँ दी जाती हैं, फिर मंत्र विशेषसे हृदय-स्पर्श करना और अन्तमें सर्वांग स्पर्श (वायु० १५.५-१६)।

असकृत्—पु० [सं०] एक भार्गव गोत्रकार ऋषि (मत्स्य० १९५.२८)।

असंग—पु०[सं०] युयुधानके पुत्रका नाम (मत्स्य० ४५.२३)।

असम—पु० [सं०] एक अजित देव (ब्रह्मां० २.१३.९३)।

असमंजस—पु० [सं०] एक सूर्यवंशी राजा जो रानी केशिनी (मत्स्य० के अनुसार भानुमती) से उत्पन्न राजा सगरका बड़ा पुत्र था। इनके पुत्रका नाम अंशुमान था। पूर्वजन्ममें यह वैश्य थे तभी इन्हें बहुत धन मिला जिसका संरक्षक एक दैत्य था। बिना उसकी क्षुधा तृप्त किये यह धन ले आये थे, अतः केशिनीके यहाँ जन्म लेकर उक्त दैत्यके आवेशवश यह बड़े दुःखी और असच्चरित्र हुए, अतः पिताने इन्हें देशसे निकाल दिया। इनका योग-बल सराहनीय था (भाग० ९.८.१५-१९; मत्स्य० १२.४२-४३; ब्रह्मां० ३.५१.३८-६९; ६३.१६०, १६५; वायु० ८८.१६०, १६५ ६६; विष्णु० ४.४.५-१०)।

असमौजस—पु० [सं०] कम्बलवर्हांके पुत्र तथा सुसमौजस् (असमंजस् मत्स्य०) के पिताका नाम (ब्रह्मां० ३.७१.१४२; वायु० ९६.१४१)। मत्स्यपुराणानुसार तमोजस् इनका पुत्र था (मत्स्य० ४४.८३)।

असंसृष्ट—पु० [सं०] एक अग्निका नाम (वायु० २९.२२; ब्रह्मा० १.१२.२३)।

असलिका—स्त्री० [सं०] माल्यवान्की पुत्री वाकाके गर्भसे उत्पन्न विश्रवाकी पुत्रीका नाम। यह त्रिशिरा, दूषण और विद्युज्जिह्वकी बहिन थी—दे० वायु० ७०.५०।

असि—पु० [संज्ञा] शिवकी तलवारका नाम (वायु० ३०. १२४; १०१.२७२)।

असिक्नी—स्त्री० [सं०] (१) पंचजन या विष्णुपुराणानुसार वीरण प्रजापतिकी पुत्री जो दक्ष प्रजापतिको ब्याही थी (भाग० ६.४.५१; विष्णु० १.१५.८९)। यह १०००० हर्यश्वों (विष्णु० के अनुसार ५०००) तथा १००० शबलाश्वोंकी माता थीं (भाग० ६.५.१; वायु० ६५.१२८; १३४, १४६-५२, १५४; विष्णु० १.१५.९०, ९७; ब्रह्मां० ३.२.५, २१-२४)। इनकी ६० पुत्रियाँ भी थीं (भाग० ६.६.१; विष्णु० १.१५.१०२)। (२) भारतवर्षकी एक महानदीका नाम (भाग० ५.१९.१८)।

असिज—पु० [सं०] (१) एक आंगिरस मंत्रकृत् ऋषि। आंगिरस मंत्रकृत् ३३ ऋषि कहे गये हैं। उनमेंसे ये एक हैं (ब्रह्मां० २.३२.१११)। (२) अशिज, एक ऋषि जो बृहस्पतिके बड़े भाई थे और ममतासे इनका विवाह हुआ था (वायु० ९९.३६)। (३) एक प्रकारका नरक (वायु०

. १०१.१४९)।

असित–पु० [सं०] (१) एक सिद्ध महात्माका (महर्षिका) नाम जो भीष्मकी मृत्युके समय उनसे मिलने गये थे (भाग० १.९.७)। युधिष्ठिरके यज्ञमें ये भी निमंत्रित थे। (भाग० १०.७४.७)। स्यमंतपंचकमें यह श्रीकृष्णसे मिले थे (भाग० १०.८४.३)। द्वारका छोड़ पिंडारक जानेवाले ऋषियोंमें यह भी एक थे (भाग० ११.१.१२)। श्रीकृष्णके कुरुक्षेत्रवाले यज्ञमें यह पुरोहित थे। सरस्वती तटपर एक स्थान इनको अति प्रिय तथा पवित्र है (भाग० ३.१.२२)। (२) कश्यपके पुत्र एक गोत्रकार ऋषि जिनका विवाह हिमवान्की पुत्री एकपर्णासे हुआ था। ये ब्रह्मवादी तथा मन्त्रद्रष्टा थे। यह देवलके पिता थे जो एकपर्णाके मानसपुत्र थे (ब्रह्मां० २.३२.११२; ३.८.२९; १०-१८; मत्स्य० १४५.१०७; वायु० ५९.१०३; ७०.२५; ७२.१७)। (३) एक पहाड़ जहाँ असित ऋषिका आश्रम था (वायु० ७७.३९)। यहाँ श्राद्ध करनेका अनन्त फल कहा गया है (ब्रह्मां० ३.१३.३९)। (४) एक ऋषिका नाम जिससे पृथ्वीने संसारके राजाओंकी अज्ञानताका रहस्य कहा था और ऋषिने यह संवाद राजा जनकसे कहा था (विष्णु० ४.२४.१२७)।

असिता–स्त्री० [सं०] एक अप्सराका नाम (ब्रह्मां०३.७.९)।

असिताङ्ग–पु० [सं०] गीतिरथेन्द्रके छठे पर्वपरके आठ भैरवोंमेंसे एक भैरव (ब्रह्मां० ४.१९.७७.८)।

असितोद–पु० [सं०] इलावृत्तके एक दिव्य झीलका नाम (विष्णु० २.२०.२६)।

असिप–पु० [सं०] दनुवंश-प्रधान एक दानवका नाम (ब्रह्मां० ३.६.५)।

असिपत्रवन–पु० [सं०] पुराणानुसार एक योजन भूमिका यह एक नरक है जिसमें वैदिक पथ छोड़ पाखंडी जीवन वितानेवाले तथा पशु-पक्षियोंकी हत्या करनेवाले जाते हैं (वायु० ५६.७९; ११०.४३)। इसकी भूमि जलती हुई है। इसके बीचमें एक जंगल है जिसके वृक्षोंके पत्ते तलवारके समान तेज हैं जो पापियोंके शरीरके टुकड़े-टुकड़े कर डालते हैं (भाग० ५.२६.७,१५; ब्रह्मां० २.२८.८४; ४.२.१४९, १७३; ३३.६१; मत्स्य० १४१.७१; वायु० १०१.१७०; विष्णु० १.६.४१; २.६.३)।

असिपर्णिनी–स्त्री० [सं०] एक मौनेय अप्सराका नाम (ब्रह्मां० ३.७.६)।

असिलोमन्–पु० [सं०] (१) दनुके पुत्र, एक दानवका नाम (ब्रह्मां० ३.६.९; मत्स्य० ६.२०; वायु० ६८.९)। (२) प्रह्लादके पौत्र, विरोचनके पुत्र शंभुके छह पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (वायु० ६७.८१)।

असी–स्त्री० [सं०] एक नदी जो काशीमें गंगासे मिली है। अब यह एक जलरहित नालेके रूपमें है—काशी-खंड।

असीमकृष्ण–पु० [सं०] अश्वमेधजका पुत्र तथा नेमिचक्रका पिता (भाग० ९.२२.३९)। वायुपुराण कहे जानेके समय यह राजा राज्य करता था (वायु० १.१२)।

असुत्वान्–पु० [सं०] दनुके पुत्रोंका नाम जिससे वे विख्यात थे (ब्रह्मां० ३.६.१४)।

असुर–पु० [सं०] बत्तीस आराध्यदेवोंमेंसे एक जिसका पूजन गृहनिर्माणके समय बाहरी भागमें करते हैं। इन्हें सुरा का भोग लगता है (मत्स्य० २५३.२६; २६८.१६)।

असुरगण–पु० [सं०] देवताओंके समकक्ष और शत्रु दोनों ही हैं (भाग० ६.७.१८; वायु० ३१.११; ब्रह्मां० २.८.५; ४.९.६७-८)। इनका जन्म प्रजापतिकी जाँघसे हुआ (वायु० ९.४-५)। ये यज्ञादिका विरोध करते हैं (भाग० ८.१.१७)। इनका निवास पृथ्वीके नीचे कहा जाता है (भाग० ११.२४.१२)। ये दस युगतक तीनों लोकोंपर शासन करते रहे, परन्तु १२ युद्धोंके पश्चात् शुक्रके शापवश यह (त्रिलोकी) देवताओंके अधीन चली गयी (ब्रह्मां० ३.७२.६९-९३; वायु० ९७.६८-९३)। असुरगण बर्हिषद पितृगणोंकी पूजा करते हैं (मत्स्य० १५.३)। हिरण्यकशिपु, बलि और प्रह्लाद इनके ये ही तीन इन्द्र हुए (मत्स्य० ४७.५६)। वामन अवतारके पश्चात् इनका पतन हो गया (मत्स्य० २४५.१)। देवोंके साथ युद्धमें जो असुर मारे गये वे पृथ्वीपर मनुष्यका जन्म पाते हैं और यहाँ उपद्रव मचाते हैं (ब्रह्मां० ३.७१.२६३)।

असुरथ–पु० [सं०] यह एक यादव था। कृष्णमाया-विमूढ़ यादवोंके विनाशकारी संघर्षमें इसका सुमित्र नामके यादवसे युद्ध हुआ था। श्रीकृष्णसे विमोहित ये आपसमें ही लड़कर पूर्णतया विनष्ट हुए (भाग० ११.३०.१६)।

असुरसेन–पु० [सं०] एक राक्षसका नाम। कहते हैं इसी राक्षसके शरीरपर गया नामक नगर बसा हुआ है—दे० गय और गया।

असुरांतक–पु० [सं०] दस करोड़ हाथियोंके तुल्य बलवान् वानरयूथपतियोंमें प्रधान वानरोंमेंसे एक बंदरका नाम (ब्रह्मां० ३.७.२३८)।

असूथा–स्त्री० [सं०] (पु०) मृत्युकी पाँच सन्तानों—व्याधि, जरा, शोक आदिमेंसे एकका नाम (वायु० १०.४१)।

असोम–पु० [सं०] एक यक्षका नाम, जो पुण्यजनी तथा मणिभद्रका पुत्र था। ये चौबीस भाई थे (ब्रह्मां० ३.७.१२४)।

अस्तगिरि–पु० [सं०] शाकद्वीपका एक पहाड़। देवासुर-संग्राममें बलि जब मूर्च्छित हो गिर गया था, तब संजीवनी विद्यासे शुक्राचार्य द्वारा उसकी चिकित्सा यहीं की गयी थी। यह रजतमय कहा गया है (भाग० ८.११.४६–४८; ब्रह्मां० २.१९.८९; वायु० ४९.८३; विष्णु० २.४.६२)।

अस्ति–स्त्री० [सं०] मगधराज जरासन्धकी एक पुत्री जो मथुरा-नरेश कंसको ब्याही थी। कंसकी मृत्युके पश्चात् यह पिताके घर चली आयी थीं। पतिकी मृत्युका पूरा विवरण इसीने जरासन्धको दिया था (भाग० १०.५०.१-२; विष्णु० ५.२२.१)।

अस्त्र–पु० [सं०] सावित्रास्त्र, आग्नेय, ऐन्द्र, ऐषीक, कालमुद्गर आदि ४२ प्रकारके अस्त्रोंका प्रयोग हिरण्यकशिपुने नरसिंहावतारमें उनके विरुद्ध किया था (मत्स्य० १५०.११३, १६४, २०५; १५१.२४.३१; १५३.८३-८७, ९०, ९७; १६२.२२-२७; १७९.६)। भण्डासुर संग्राममें भी उपर्युक्त अस्त्रोंका ही प्रयोग किया गया था (ब्रह्मां० ४.२९.६२-७४)।

अस्थिकुण्ड—पु० [सं०] एक नरकका नाम जिसमें पुराणानुसार हड्डियाँ भरी हुई हैं। जो गयामें पिण्ड-दान नहीं करते, इसी नरकमें पड़ते हैं। पिण्ड-दानके लिए गयाका विष्णुपद विख्यात है (ब्रह्मवैवर्त्त पुराण)।

अस्मकी—स्त्री० [सं०] (१) वसुदेव आदिके पिता, शूरकी पत्नीका नाम। इनसे शूरका देवमीढ्वा पुत्र हुआ (वायु० ९६.१४३)। (२) यशस्वी अनाधृष्टिकी माताका नाम (वायु० ९६.१८६)।

अस्वहार्य—पु० [सं०] ३३ श्रेष्ठ आंगिरसोंमेंसे एक आंगिरस मंत्रकृत् ऋषिका नाम (मत्स्य० १४५.१०३)।

अहंकारकर्षिणी—स्त्री० [सं०] चक्रराजरथेन्द्रके अष्टम पर्वमें स्थित गुप्तकला नामसे प्रसिद्ध १६ शक्तियोंमेंसे एक गुप्त-शक्ति (ब्रह्मां० ४.१९.१७; ४४.११७)।

अहंयाति—पु० [सं०] संयातिका पुत्र तथा रौद्राश्वके पिताका नाम (भाग० ९.२०.३; विष्णु० ४.१९.१)।

अहल्या—स्त्री० [सं०] (१) मुद्गलकी पुत्री, गौतम ऋषिकी पत्नी तथा शतानन्दकी माताका नाम। इनके भाईका नाम दिवोदास था (भाग० ९.२१.३४)। विष्णुपुराणानुसार मुद्गल पुत्र बृहदश्वकी पुत्रीका नाम। ब्रह्मपुराणानुसार ब्रह्माजीने अहल्याकी सृष्टि कर गौतमको युवती होनेतक पालन-पोषण करनेको दिया। अहल्याके युवती होनेपर इन्द्र, अग्नि और वरुण आदि देवता उसके इच्छुक हुए। सारी पृथ्वीकी परिक्रमा कर जो पहले आयेगा, ब्रह्माने उसे ही अहल्याको देनेका निश्चय किया। देवता लोग परिक्रमा करने गये, पर गौतमने कामधेनुकी और शिवकी ही परिक्रमा की। ब्रह्माने प्रसन्न हो गौतमको ही अहल्या दे दी। इन्द्रने कामपीड़ित हो गौतमका रूप धर छलसे अहल्यासे रमण किया, जब गौतम आश्रममें अनुपस्थित थे। इसी बीच गौतम बाहरसे आ गये और सारा हाल जान गये। अतः गौतमने अहल्याको सूखी नदी होनेका और इन्द्रको सहस्रयोनि-चिह्नोंसे युक्त होनेका शाप दिया था। बहुत विनयके पश्चात् अहल्याको गौतमी गंगा (गोदावरी) से मिलनेपर पुनः पूर्ववत् हो जानेका वर दिया और इन्द्रके शरीरके योनि-चिह्न नेत्रोंमें बदल दिये गये थे। यह गोदावरीमें स्नान करनेके पश्चात् हुआ था और अहल्याने जहाँ स्नान किया था, वह "अहल्यासंगम तीर्थ" हो गया।

अन्य मतसे पतिके शापसे अहल्या शिला हो गयी और श्री रामके पदरजसे कठिन तपस्याके पश्चात् उसका उद्धार हुआ और वहाँ एक तीर्थस्थान बन गया (मत्स्य० १९१.९०-१)। रामायणानुसार मिथिला-नरेश जनकके यहाँ धनुषयज्ञमें जाते समय रामचन्द्रजीने विश्वामित्रजीके बतलानेपर अहल्या-उद्धार किया था (तु० रामायण-बालकाण्ड दो० २१० तथा गीतावली १।५७)। छपरा-बनारस रेलवे लाइनपरका रिविलगंज स्टेशन (जिसका पुराना नाम गोदना था)। यही वह स्थान है जहाँ गौनम ऋषिका आश्रम था। अहल्या-उद्धार यहीं हुआ था—दे० गोदना। (२) विंध्याश्व, (वध्यश्व=वायु पु०), बृहदश्व (विष्णु पु०) और मेनकाकी पुत्री, दिवोदासकी बहिन, शरद्वत्की पत्नी और सदानन्दकी माता। रामने इन्हें मुक्त किया था (मत्स्य० ५०.७-८; वायु० ९९.२०१; विष्णु० ४.१९.६२ तथा ४.४.९१)।

अहल्यातीर्थ—पु० [सं०] यह नर्मदा तटपर स्थित है जहाँ अहल्याने तप करके पति-शापसे मुक्ति पायी थी (मत्स्य० १९१.८९-९३)।

अहिंसा—स्त्री० [सं०] सनातन धर्मका एक प्रधान अंग। त्रेतायुगमें इसका पालन अधिक होता था (ब्रह्मां० २.२९.६९; ३०.३५; ३.२३.५१.६८.७२)। मनसा, वचसा तथा कर्मणा किसी भी जीवको दुःख नहीं पहुँचाना ही अहिंसा है। हिंसा धर्म नहीं है (वायु० १८.१५-१६; मत्स्य० ६१.१५; १०६.४८; १४३.१२-१३ और ३०)।

अहिक्षेत्र—पु० [सं०] दक्षिण पांचाल जो कम्पिलसे चम्बल-तक था, जिसे अर्जुनने राजा द्रुपदसे जीत कर गुरु-दक्षिणामें द्रोणाचार्यको दिया था। इसे अहिच्छत्र भी कहते हैं (महाभा० आदि० १३७.७३—७६)।

अहित—पु० [सं०] देवजनी और मणिवरके तीस पुत्रोंमेंसे एक पुत्र, जो यक्ष था, का नाम। ये बादमें गुह्यक कहे गये। इनको हजारों पुत्र और पौत्र हुए (ब्रह्मां० ३.७. १२९)।

अहिर्बुध्न्य—पु० [सं०] भूत और सरूपाके करोड़ों रुद्र पुत्रोंमेंसे एक रुद्र (भाग० ६.६.१८); सुरभिने उग्र तपस्यासे भुवनोंके अधिपति एकादश रुद्रोंको उत्पन्न किया, उनमेंसे एक (ब्रह्मां० ३.३.७१; मत्स्य० ५.२९.३२, १७१.३९; वायु० ६६.६९)।

अहीन—पु० [सं०] राजा हर्यश्वके पुत्र सहदेवका पुत्र तथा जयत्सेनका पिता (ब्रह्मां० ३.६८.१०)।

अहीनगु—पु० [सं०] (विष्णु० के अनुसार अहीनक) एक सूर्यवंशी राजा, जो देवानीकका पुत्र और महायशस्वी पारियात्रका पिता था (ब्रह्मां० ३.६३.२०३-४; वायु० ८८.२०२) (विष्णु० ४.४.१०६)।

अहीश—पु० [सं०] साँपोंका राजा शेषनाग। पुराणानुसार पृथ्वी इन्हींपर स्थित है। लक्ष्मणजी तथा बलरामादि शेषनागके अवतार थे—दे० लक्ष्मण, बलराम।

अहुत—पु० [सं०] यज्ञ पाँच प्रकारके होते हैं जिनमें यह एक है—"मनुस्मृति"।

अहोरात्र—पु० [सं०] एक दिन और रात=२४ घण्टेकी अवधि+३० मुहूर्त्त। मनुष्यों का कृष्णपक्ष और शुक्लपक्ष=१ महीना पितृगणों का अहोरात्र है। देवताओंका १ दिन=१ वर्ष। १००० चतुर्युग=ब्रह्माका एक वर्ष है। यह कालस्वरूप प्रजापतिका अवयव है (ब्रह्मां० २.१३.११२; मत्स्य० १.१९; १४२.५-६, ९; वायु० ६५.५९; ६६.३७)।

आ

आंगिरस—पु० [सं०] (१) अंगिरा ऋषिके पुत्र—बृहस्पति, उतथ्य और संवर्त्त। (२) अथर्ववेदका एक सूक्त, जिसके द्रष्टा अंगिरा ऋषि थे (भाग० १२.७.४)। (३) एक यज्ञ जिसे वृंदावनके निकट ब्राह्मणोंने किया था (भाग० १०.२३.३)।

आंगिरसी–स्त्री० [सं०] वसुकी पत्नी तथा विश्वकर्माकी माता (भाग० ६.६.१५)।

आंगिरसी–स्त्री [सं०] प्लक्ष द्वीप की एक नदी का नाम (भाग० ५.२०.८)।

आंत्यायन–पु० [सं०] भृगुके भुवन, भावन आदि बारह पुत्रोंमेंसे एक पुत्र देव (ब्रह्मां० ३.१.८९)।

आंधक–पु० [सं०] विप्रचित्ति और सिंहिकाके अनेक महाबली और क्रूर पुत्रोंमेंसे एक पुत्र। कहीं-कहीं इसका नाम अन्धक और अञ्जक भी मिलता है (विष्णु० १.२१.१२)।

आंधकार–पु० [सं०] अन्धकारके नामपर एक राज्य (देश) का नाम (ब्रह्मां० २.१४.२५)। जो पीवर वर्ष और वामन पहाड़के निकट है (ब्रह्मां० २.१९.७२)।

आंध्रगण–पु० [सं०] (१) एक अछूत जाति, जो हरिभक्तोंकी उपासना कर शुद्ध हुई थी (भाग० २.४.१८)। ये जरासन्धकी ओरसे यदुवंशियोंसे लड़े थे (भाग० १०.५०(५)३)। (२) एक दक्षिणी प्रदेश जहाँ श्राद्धादि करना वर्जित है (ब्रह्मां० २.१६.५९; ३.१४.८०; ४.२९.१३१)।

आंब–पु० [सं०] श्रीकृष्णके एक पुत्रका नाम (भाग० १.१०.२९)।

आंबिकेय–स्त्री० [सं०] (१) एक पहाड़ जहाँ (विष्णु) वराहने हिरण्याक्षका वध किया था (मत्स्य० १२२.१६)। (२) शाकद्वीपका एक पहाड़ (वायु० ४९.८४; विष्णु० २.४.६२)।

आ–पु० [सं०] ब्रह्मा।

आकर्णनी–स्त्री० [सं०) रेवतीकी अनुयायिनी एक मातृका देवी (मत्स्य० १७९.७२)।

आकर्षिणी–स्त्री० [सं०] एक अंकुशाकार मुद्रा, जिसमें त्रैलोक्यके आकर्षणकी क्षमता है, का नाम (ब्रह्मां० ४.४२.६)।

आकार–पु० [सं०] १४ मुखवाले सर्ववर्ण प्रजापति अकाररूप देवके दूसरे मुखसे उत्पन्न मनु, जिनका नाम स्वारोचिष और रंग श्वेत है (वायु० २६.३३)।

आकाश–पु० [सं०] (१) एक देवता जिनकी पूजा गृहनिर्माणके समय गृहके बाहरी भागमें की जाती है (मत्स्य० २५३.२४; २६५.३९)। (२) दिक्‌के साथ; रुद्रका एक स्थान; पुत्रसर्ग (विष्णु० १.८.७-११)। (३) मित्रवर्मा तथा मनोरमाका पुत्र जो नारायणपुरका राजा था। आरणी नदी के किनारे जब यह यज्ञकी भूमि-शोधन करा रहे थे तब इन्हें पृथ्वीमेंसे एक अति रूपवती कन्या मिली जो पूर्व जन्ममें राजा कुशध्वजकी पुत्री वेदवती थी—दे० वेदवती। इस कन्याका नाम पद्मावती था जिसका विवाह वेंकटाचलके विष्णुसे हुआ था। शक वंशोत्पन्न धरणी नाम्नी कन्या इसकी धर्मपत्नी थी, जिससे इनका वसुदान नामक पुत्र उत्पन्न हुआ था (दे० स्कन्द० पु० वैष्णव खंड, भूमिवाराह खंड)। (४) यह रूप, रस, स्पर्श और गंधविहीन है और इसकी मुख्य विशेषता शब्द है (वायु० १०२.१५, १७; मत्स्य० ३.२३)।

आकाशगंगा–स्त्री० [सं०] छोटे-छोटे तारोंका वह समूह जो उत्तरसे दक्षिणकी ओर फैला हुआ दीखता है। ये तारे दुरबीनसे दिखायी देते हैं। खाली आँखोंसे उनका समूह सफेद चादरकी तरह बहुत दूरतक दिखायी पड़ता है, जिसकी चौड़ाई कहीं कम, कहीं अधिक रहती है। इसकी इधर-उधर शाखाएँ भी रहती हैं। इसे ही पुराणोंमें आकाशगंगा कहा गया है, जो परिखाके रूपमें अमरावतीको चारों ओर घेरे है (भाग० ८.१५.१४)।

आकाशगंगातीर्थ–पु० [सं०] गयामें स्थित एक तीर्थ, जहाँ स्नान कर पिण्डदान करनेका बड़ा माहात्म्य वर्णित है (वायु० ११२.२५)।

आकाशदीप–पु० [सं०] कार्त्तिकमें हिन्दू लोग जलते दीपकको कण्डीलमें रखकर एक ऊँचे बाँसके सिरेपर बाँध देते हैं। यह २१ हाथकी ऊँचाईपर हो तो उत्तम, १४ हाथपर मध्यम और ७ हाथपर निकृष्ट माना गया है—"कार्त्तिकमाहात्म्य"।

आकाशनदी–स्त्री० [सं०] दे० आकाशगंगा।

आकूति–पु० [सं०] (१) सर्वतेजाकी रानी और मनु चाक्षुषकी माता (भाग० ४.१३.१५)। (२) पुराणानुसार मनु ऋषिकी तीन कन्याएँ थीं जिनमेंसे एकका नाम आकूति था जो रुचि प्रजापतिको ब्याही गयी थी—दे० आकूती।

आकूती–स्त्री० [सं० आकूति] (१) पृथुषेणकी पत्नी और नक्तकी माताका नाम (भाग० ५.१५.६)। (२) स्वयंभुव मनुकी शतरूपा (पत्नी) से प्रियव्रत, उत्तानपाद इन दो पुत्रोंके अतिरिक्त आकूति, देवहूति और प्रसूति ये तीन पुत्रियाँ भी थीं। पुत्रिकाधर्मका आश्रय ले मनुने आकूतिका विवाह रुचि प्रजापतिसे कर दिया। मनुजीने पुत्रोंके रहते भी केवल शतरूपाके अनुरोधसे पुत्रिकाधर्मसे विवाह किया था। रुचि प्रजापतिसे आकूतिको दक्षिणा नामकी कन्या और यज्ञ स्वरूपधारी विष्णु पुत्र उत्पन्न हुए (भाग० १.३.१२; ३.१२.५५-५६; ४.१.१-४; ८.१.५; २.७.२; ब्रह्मां० ३.३.११३; वायु० १०.१७-९; ब्रह्मां० १.१.५८; २.९.४२-४३; विष्णु० १.७.१८-१९)। (३) ब्रह्मां द्वारा मुखसे सृष्ट जया देवोंमेंसे एक जया देव, जो मन्त्रशरीर कहे गये हैं (ब्रह्मां० ३.३.६; ४.२; वायु० ६६.६)। (४). चौबीसवें कल्पका नाम (वायु० २१.५५)। (५) आकूति कल्पमें यह यमज हो गये (वायु० २१.५५-५६)। (६) मंत्र शरीरवाला ब्राह्मण पुत्र (वायु० ६७.४-५)। (७) मनुके प्रथम युगके मानस पुत्र यज्ञकी माता (विष्णु० ८.१.३६)।

आकृति–पु० [सं०] बभ्रुके एक पुत्रका नाम (ब्रह्मां० ३.७०.३८)।

आखंडल–पु० [सं०] देवराज इन्द्रका एक नाम (भाग० ३.३३.२०;)।

आखुवाहन–पु० [सं०] गणेशजीका एक नाम(ब्रह्मां० ४.२७.१०१)।

आख्यान–पु० [सं०] पुराणोंके अंशभूत कथाविशेषोंका नाम (ब्रह्मां० २.३४.२१; ३.१.६; ५.८,११; १३.५४;५९.४; वायु० ५४.१; ६०.२१; ६७.५४, ५८)।

आख्यानकुशल–पु० [सं०] सूतका एक विशेषण (वायु० ८४.४)।

आगम–पु० [सं०] कूप, सरोवर तथा वाटिका आदि बनवानेके शास्त्रीय नियम। जिन यज्ञोंमें पशु-बलि नहीं हो

और बीजसे पशुका काम हो वहाँ इसका उपयोग होता है (ब्रह्मां० २.३०.१९, २७; ३.२१.४६; मत्स्य० ५८.५५; १४३.१३; वायु० ५३.१२२; ५७.१००)।

आगावह–पु० [सं०] एक महात्माका नाम जो वृकदेवीके गर्भसे उत्पन्न वसुदेवके पुत्र थे (ब्रह्मां० ३.७१.१८०)।

आगाही–स्त्री० [सं०] वसुदेवकी पत्नी वृकदेवीकी एक पुत्रीका नाम (वायु० ९६.१८०)।

आग्नायी–स्त्री० [सं०] एक देवी, अग्निदिक्पालकी पत्नी (मत्स्य० २८६.७)।

आग्निवर्त्त–पु० [सं० अग्निवर्त्त] पुराणानुसार मेघका एक भेद।

आग्निष्टोमिक–पु० [सं०] पहला गांधार-ग्राम (वायु० ८६.४१)।

आग्नीध्र–पु० [सं०] (१) हरिवंशके अनुसार स्वायंभुव मनुके बारह लड़कोंमेंसे एक (वायु० ३१.१७; ३३.९.११; ब्रह्मां० २.१३.१०४; मत्स्य० ९.४)। (२) वायु० १००.११६ के अनुसार भौत्य मनुके पुत्र (विष्णु० ३.२.४४; ब्रह्मां० ४.१.११२)। (३) विष्णुपुराणानुसार राजा प्रियव्रतके दस पुत्रोंमेंसे एकका नाम, जो बर्हिष्मतीके गर्भसे उत्पन्न हुए थे। पिता जब परमार्थ सिद्ध करने चले गये तब आग्नीध्र जम्बू द्वीपमें राज करने लगे (भाग० ११.२.१५)। घोर तप करनेके पश्चात् ब्रह्माजीकी देवसभाकी पूर्वचित्ति नामकी अप्सरासे इनका विवाह हुआ, जिससे नाभि, किम्पुरुष, हरिवर्ष, इलावृत्त, रम्यक, हिरण्यमय, कुरु, भद्राश्व और केतुमाल नामके इनके नौ पुत्र हुए। पिताकी मृत्युके उपरान्त मेरुकी नौ कन्याओंसे इनका विवाह हुआ (भाग० ५.२.१-२३; ब्रह्मां० २.१४.४४-५३; विष्णु० २.१.७.१२, १६-२४)। आग्नीध्रके जम्बू द्वीपके नौ खंड किये, जिनका नामकरण इनके नौ पुत्रोंके नामपर हुआ। पूर्वचित्ति इन नौ पुत्रोंके जन्मके उपरान्त ब्रह्माजीकी सेवामें चली गयी, अतः आग्नीध्र तपोबलसे पितृलोकमें जाकर इस अप्सरासे मिले। आग्नीध्रके सम्बन्धमें कहा जाता है कि यह स्त्रियोंको प्रसन्न करनेमें बड़े निपुण थे। (४) प्रजापति कर्दमकी पुत्री तथा प्रियव्रतके १० पुत्रोंमेंसे एक (ब्रह्मां० २.१४.९)। (५) यज्ञके १६ ऋत्विजोंमेंसे नारायणके हाथोंसे उत्पन्न एक ऋत्विक् (मत्स्य० १६७.१०)।

आग्नीध्रक–पु० [सं०) बारहवें मनुके कालके सप्तर्षियोंमेंसे एक ऋषि (भाग० ८.१३.२९)।

आग्नेय–पु० [सं०] (१) अठारहवाँ कल्प (मत्स्य० २९०.७)। (२) रात्रिका एक विभाग अर्थात् रात्रिके १५ मुहूर्तोंमेंसे एक (पाँचवाँ) मुहूर्त (वायु० ६६.४३)।

आग्नेयगण–पु० [सं०](१) कुबेरके अनुयायी गंधर्व (वायु० ४०.८)। मर्यादा पर्वतकी दक्षिणी सातों चोटियोंपर इनका निवास है (वायु० ४०.५)। (२) वारुण यज्ञकी अग्निसे प्रकट हुए अंगिरस जिन्हें अग्निने अपना लिया था, इसलिए 'आग्नेय' कहलाये (वायु० ६५.४२)।

आग्नेयपुराण–पु० [सं०] दे० अग्निपुराण।

आग्नेयास्त्र–पु० [सं०] और्व द्वारा सगरको दिये गये अस्त्रका नाम जिसके द्वारा उन्होंने हैहय, तालजंघ, शक आदिको परास्त किया (वायु० ८८.१२४.१३५; विष्णु० ४.३.३७)।

आग्नेयी–स्त्री० [सं०] (१) अग्निकी पत्नीका नाम (मत्स्य० ४.४३, ४५ की दिशाका)। (२) अग्निके (नगरका) नाम (भाग० १०.८९.४४)। (३) हविर्धानकी पत्नीका नाम जो ६ पुत्रोंकी माता थी। इन्हें धिषणा भी कहते हैं (ब्रह्मां० २.३७.२३; वायु० ६३.२३; विष्णु० १.१४.२; मत्स्य० ४.४५)। (४) ऊरुकी पत्नी, जो ६ पुत्रोंकी माता थी, का नाम (मत्स्य० ४.४३)। (५) कुरुकी पत्नी जो ६ पुत्रोंकी माता थी (विष्णु० १.१३.६)।

आघार–पु० [सं०] यज्ञ और होमादिके आरंभमें वायु कोणसे अग्नि कोणतक और फिर नैर्ऋत्यसे ईशानतक जो आहुतियाँ दी जाती हैं उन्हें आघार कहते हैं। ऋग्वेदी इसे मौन होकर करते हैं, परन्तु यजुर्वेदी मंत्रोंका उच्चारण जोरसे करते हैं।

आचमन–पु० [सं०] पूजा करनेके सोलह उपचारोंमेंसे एक। किसी धर्मसम्बन्धी कर्मके आरंभमें दाहिने हाथमें थोड़ा-सा जल लेकर पीया जाता है जिसके पहिले मंत्रोंका उच्चारण करना पड़ता है (वायु० ७९.४०.४७)।

आचार–पु० [सं०] एक गंधर्वका नाम। रिष्टा नामक अप्सराके दस पुत्रोंमेंसे एक (ब्रह्मां० ३.७.११)।

आजगर–पु० [सं०] (१) एक व्रत विशेष जिसे साधु होनेपर ऋषभने किया था (भाग० ५.५.३३)। (२) एक ऋषिका नाम जिन्हें पहाड़पर पड़ा देख प्रह्लादने इनसे पूछा था कि शरीरको कष्ट देकर आप कैसे जीवित हैं। ऋषि बोले—"मधुमक्खीसे त्याग तथा सर्पोंसे संतोष सीख मैंने सारी इच्छाओंपर विजय प्राप्त कर ली है, अब ध्यान केवल हरिपर है (भाग० ७.१३.११-१८, २०-४५)।

आजगव–पु० [सं०] पृथु तथा शिवके धनुषका नाम (ब्रह्मां० २.३६.१४८; ३.६५-३२; वायु० ६२.१३०; विष्णु० १.१३.४०, ६९)।

आजन–पु० [सं०] हिरण्यकशिपुके एक भांजेका नाम। हिरण्यकशिपुके तेरह भांजे थे, उनमें यह आठवाँ है (मत्स्य० ६.२७)।

आजपाल–पु० [सं०] राजा अजके पुत्र तथा दशरथके पिताका नाम—दे० मत्स्य० १२.४९।

आजानदेव–पु० [सं०] देवता दो प्रकारके माने गये हैं। एक "कर्मदेव" जो अपने कर्मसे देवता हो जाते हैं और दूसरे "आजानदेव" जो सृष्टिके आदिमें देवता ही उत्पन्न हुए।

आजिवक–पु० [सं०] एक नास्तिक संप्रदाय—दे० पाखंड।

आजीगर्त–पु० [सं०] अजीगर्तका पुत्र शुनःशेफ (भाग० ९.१६.३०)।

आज्य–पु० [सं०] सावर्णिके नौ पुत्रोंमेंसे एकका नाम (वायु० १००.२२)।

आज्ञा–स्त्री० [सं०] ललिताके बारह नामोंमेंसे, जो द्वादशपञ्जर नामसे ख्यात है, एक नाम (ब्रह्मां० ४.१७.१९)।

आटवी–पु० [सं०] (आटवि) शुक्ल यजुर्वेदकी १५ शाखाओंमेंसे एक शाखाका नाम (वायु० ६१.२५)।

आडि–पु० [सं०] अंधक असुरका एक पुत्र जो ब्रह्माके वरसे

दो वार रूप वदल सकता था, पर दूसरी वारके वाद मृत्यु निश्चित थी। शिवने अंधकको मारा था, अतः वदला लेने यह सर्प वन शिवके निवासमें घुसा और उमाका रूप धर उनके समक्ष आया। शिवने योगवलसे इसे पहचान लिया और वज्रसे इसका वध कर डाला (मत्स्य० १५६.१२-३७)।

आडीवक–पु० [सं०] वारह देवासुर-संग्रामोंमेंसे छठा देवासुर-संग्राम (ब्रह्मां० ३.७२.७४)। इसमें ककुत्स्थने इन्द्रकी सहायता की थी (वायु० ८८.२५)।

आण्डीर–पु० [सं०] (१) सरूप्यके पुत्र तथा पाण्ड्य, केरल, चोल और कुल्यके पिता (ब्रह्मां० ३.७४.५-६)। (२) वरूथका पुत्र (मत्स्य० ४८.४)।

आतप–पु० [सं०] एक वसुका नाम जो उषा और विभावसुका पुत्र तथा पंचयामका पिता था (भाग० ६.६.१६)।

आत्मभू–पु० [सं०] (१) ब्रह्माका एक नाम (भाग० ३.१२.२०)। (२) कामदेवका नाम—दे० कामदेव, अंगज आदि।

आत्मवत्–पु० [सं०] मंत्रकृत् ऋषियोंमेंसे एक इक्कीस भार्गव ऋषि (ब्रह्मां० २.३२. १०४; मत्स्य० १४५.९८; वायु० ५९.९६)।

आत्मवान—पु० [सं०] यह सुकन्या च्यवन भार्गवका पुत्र, तथा राजा नहुपकी पुत्री रुचिका पति था (वायु० ६५.९०-९१)।

आत्माकर्षणिका–स्त्री० [सं०] एक गुप्त शक्तिका नाम (ब्रह्मां० ४.१९.२०)।

आत्यंतिककल्प–पु० [सं०] ब्रह्मकल्पका एक विभाग (वायु० १००.१३४)।

आतापि–पु० [सं०] एक राक्षसका नाम। विप्रचित्ति दानवके पुत्र आतापि और वातापि दो भाई थे जो रामायणानुसार दण्डक वनमें रहते थे। ये दोनों भाई मिलकर ऋषियोंको वड़ा दुःख देते थे। वातापि भेंड़ वन जाता और आतापि उसे मार ब्राह्मणोंको भोजन कराया करता। भोजनके पश्चात् आतापि अपने भाईका नाम लेकर पुकारता था और वातापि ब्राह्मणोंका पेट फाड़ कर वाहर चला आता था। इस प्रकार वहुतोंकी हत्या इन दोनोंने कर डाली। अगस्त्य ऋपिको भी ऐसे ही भोजन कराया गया, पर उन्हें सव रहस्य विदित था। अतः जव आतापि अपने भाईको पुकारने लगा तव ऋषिजी डकार लेकर वोले—"वातापि तो पच गया, अव कहाँसे आयेगा। इसीसे अगस्त्यको इल्वलांतक कहते हैं (ब्रह्मां० ४.३७.२५; ३८.८)। कुछ आतापि और वातापिको ह्राद दानवका पुत्र कहते हैं।

आतिवाहिक–पु० [सं०] मृत्युके पश्चात् जीवको यमलोकादिमें भ्रमण करना पड़ता है। स्थूल शरीरको यहीं छोड़कर जीव वायुमय शरीर धारण करता है। इसका दूसरा नाम भोगशरीर भी है। इसे आतिवाहिक कहते हैं—हि० श० सा०।

आत्रेय–पु० [सं०] (१) दीनाजपुर जिलेका वह देश जो आत्रेयी नदीके तटपर वसा है। (२) दत्त, दुर्वासा और चन्द्रमा अत्रि ऋपिके ये तीन पुत्र। (३) पुराणाध्ययनकर्ता सूतशिष्योंमेंसे एक शिष्य। (४) स्वारोचिप मन्वन्तरके सप्तर्पियोंमेंसे एक सप्तर्पिका नाम। (५) रैवत मन्वन्तरके सप्तर्पियोंमेंसे एक। (६) तामस मन्वन्तरका एक सप्तर्पि (वायु० ६१.५६; ६२.१७, ४१,५४; १००.११,६७,८२, ९६, १०७;)।

आत्रेयी–स्त्री० [सं०] (१) एक तपस्विनी जो वेदांत शास्त्रकी वड़ी विशेपज्ञ थी। (२) दीनाजपुर जिलेकी एक नदी, जिसके तटपर आत्रेय देश वसा है।

आदर्श–पु० [सं०] तीसरे सावर्ण मनुके नौ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (ब्रह्मां० ४.१.८१; वायु० १००.८४)।

आदिगदाधर–पु० [सं०] गद असुरकी हड्डियोंसे वनी गदाको सर्वप्रथम धारण करनेके कारण विष्णुका एक नाम (वायु० १०९. १३-१७, २५, २७, ३१, ४१–२५; १११.१६)।

आदिकूर्म–पु० [सं०] भण्डके अर्णवास्त्रसे उत्पन्न जलको पी जानेके लिए ललिताने इसकी सृष्टि की थी (ब्रह्मां० ४.२९.९२)।

आदित्य–पु० [सं०] (१) विधातृके पिताका (द्योतक) नाम (भाग० ६.१८.३)। (२) सूर्यका नाम (ब्रह्मां० २.२१.३) जिनसे सत्राजित्को स्यमंतक मणि प्राप्त हुई थी (विष्णु० ४.१३.११)। (३) रातके १५ मुहूर्तोंमेंसे एक मुहूर्त (वायु० ६६.४४)।

आदित्यगण–पु० [सं०] देवमाता अदिति और कश्यपके पुत्रोंके नाम जो पहले चाक्षुप मन्वन्तरमें वैकुठ नामक साध्यगण हुए थे। वैवस्वत मन्वन्तर आनेपर अदिति द्वारा आराधित आदित्योंने एकमत होकर कहा—हम योगवलसे आधे तेजवाले होकर इसीके पुत्र हैं (ब्रह्मां० २.३८.३; ३.१.६१; ३.५७-६१, ६७-८; ४.३४; मत्स्य० १७१.५५; वायु० ३०.८३,९९, १,१८७, २६८, विष्णु० १.१५.१२८-१३१)। प्रथम त्रेता युगारंभके वैवस्वत कालके देवता जिन्हें जयदेव कहते हैं (भाग० ८.१३.४; ६.७.२; १०.१७; मत्स्य० ९.२९)। चाक्षुप युगमें इन वारहोंको "तुषितगण" कहते थे (वायु० ६७.४४; मत्स्य० ६.३; विष्णु० १.१५.१३४)। इन १२ आदित्योंके नाम इस प्रकार हैं इन्द्र, धातृ, भग, त्वष्टृ, मित्र, वरुण, अर्यमन्, विवस्वत् सवितृ, पूपन्, अंशुमत् और विष्णु (भाग० १२.११.३०-४५; ब्रह्मां० २.२४.३३-४, ७५; २६.४२; मत्स्य० १३२.३; २४७.१०; विष्णु० १·१५.१३०-३)। प्रथम मरुद्गणोंमेंसे एक, ये सव भुवर्लोकके निवासी हैं (वायु० १०१.३०)।

आदित्यपुराण–पु० [सं०] एक उपपुराणका नाम (मत्स्य० ५३.६३-४)।

आदित्यवर्त्म–पु० [सं०] इसी (मार्ग) से श्रीकृष्णके स्वर्गीय अस्त्रादि स्वर्ग वापस चले गये थे (विष्णु० ५. ३७.५२)।

आदित्यशयन–पु० [सं०] सूर्यके नामपर शंकरकी प्रतिष्ठामें एक प्रकारका व्रत जो हस्तनक्षत्रसे युक्त सप्तमी और रविवारको होता है। इसे वशिष्ठ, अर्जुन, कुवेर तथा इन्द्रने किया था। इस व्रतसे पुनर्जन्मसे छुटकारा मिलता हैं (मत्स्य० ५५.३-३३)।

आदित्येश–पु० [सं०] नर्मदा तटपरका एक तीर्थस्थान (मत्स्य० १९१.५)।

आदिलक्ष्मी–स्त्री० [सं०] कामाक्षी देवी (ब्रह्मां० ४.४०.४६)।

आद्ध–पु० [सं०] शुक्ल यजुर्वेदकी शाखाओंके प्रवर्त्तक

याज्ञवल्क्यके १५ शिष्योंमेंसे एक शिष्यका नाम (ब्रह्मां० २.३५.२८)।

आद्यगण—पु० [सं०] चाक्षुप युगके पाँच देवगणोंमेंसे अन्तरिक्ष, वसु आदि आठ देवताओंका एक गण (ब्रह्मां० २.३६.६६, ६९)।

आद्यप्रतिहारी—स्त्री० [सं०] शंकरकी प्रथम सेविका विजया जिसके चार हाथ हैं और श्वेत वस्त्र धारण करती है। मुक्तामय विशाल कवच विराजित उसके शरीरपर तलवार लटकी रहती है (वायु० १०१.२७४-७)।

आद्यश्राद्ध—पु० [सं०] हिन्दू शास्त्र विधानानुसार मृतकके लिए ग्यारहवें दिन सोलह श्राद्ध किये जाते हैं जिनमें यह पहला है।

आधन—पु० [सं०] वशिष्ठ ऋपिके सात पुत्रोंमेंसे एक।

आनंद—पु० [सं०] (१) प्लक्षद्वीपके दुन्दुभि पहाड़से लगा एक राज्य (ब्रह्मां० २.१४.३९; १९.१६; वायु० ४९.१४)। (२) उत्तम मन्वन्तरके तीसरे पर्यायके १२।१२ संख्यावाले पाँच देवगणोंमेंसे सत्यगणका एक देव (ब्रह्मां० ३६.३५)। (३) प्रथम कल्प (जो १००,००००० वर्षका है) का अधिष्ठाता (वायु० २१.२८)। (४) मेधातिथिके ७ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र, जिसके नामपर प्लक्षद्वीपमें एक वर्ष हैं (वायु० ३३.३२; विष्णु० २.४.४,५)।

आनंदजल—पु० [सं०] अनेक शिखरोंसे युक्त जातुधि देवपर्वतपर स्थित एक शुद्ध तथा निर्मल जलकी झीलका नाम जहाँ हजार फणवाला नागोंका अधिपति चण्ड रहता है (वायु० ४१.६८-७३)।

आनंदपीठ—पु० [सं०] पञ्चाशन्पीठ रूप बिन्दुपीठका एक नामान्तर (ब्रह्मां० ४.३७.४७)।

आनंदनवमी—स्त्री० [सं०] यह एक व्रत है। यह व्रत फाल्गुन शु० ५ से प्रारंभ होता है। उस दिन एक भुक्त, षष्ठीको नक्त, सप्तमीको अयाचित तथा अष्टमीको निराहार रहे तव नवमीको व्रत करे। इसमें सरस्वतीपूजन करनेका विधान है—भविष्यपुराण।

आनंदवन—पु० [सं०] हिन्दुओंके यहाँ सप्तपुरियोंका विशेष माहात्म्य है। इनमेंसे चौथी पुरी काशी या वाराणसीका नामान्तर।

आनंदव्रत—पु० [सं०] ब्रह्माके प्रीत्यर्थ किया जानेवाला एक व्रत।

आनकदुंदुभि—पु० [सं०] आनकदुंदभि बड़े नगाड़ेको कहते हैं। कहते हैं जब श्रीकृष्णके पिता तथा अनुके पुत्र वसुदेवजीका जन्म हुआ था तब देवताओंने नगाड़े बजाये थे इसीसे वसुदेवको आनकदुंदभि कहते हैं (विष्णु० ४.१४.१३-१४,२९; वायु० ९६.१४४-५)।

आनकाह्व—पु० [सं०] उग्रसेनके एक पुत्रका नाम (विष्णु० ४.१४.२०)।

आनर्त—पु० [सं०] (१) एक पश्चिमीय देश जो द्वारकासे इन्द्रप्रस्थ जानेके मार्गमें है (भाग० १०.७१.२१)। भाग० १.११.१ के अनुसार यहाँके अधिपति श्रीकृष्ण थे। शर्यातिके ऊपर इसका नामकरण हुआ था और कुशस्थली इसकी राजधानी थी (वायु० ८६.२४; विष्णु० ४.१.६४)। द्विविदने इसे नष्ट कर दिया था (भाग० १०.६७.४)। (२) शर्यातिके तीन पुत्रोंमेंसे एक पुत्र तथा रेवतके पिताका नाम (भाग० ९.३.२७; ब्रह्मां० ३.६१.१८; वायु० ८६.२३.२४; विष्णु० ४.१.६३-४)। इनका पुत्र रोचमान कुशस्थलीसे आनर्त राज्यपर शासन करता था (मत्स्य० १२.२१-२)। (३) वीतिहोत्रके एक पुत्रका नाम जो अत्यन्त बलवान् तथा दुर्जेय था (मत्स्य० ४३.४९)।

आनर्तपुरी—स्त्री० [सं०] आनर्तकी राजधानी—द्वारका। यहाँसे विदर्भ श्रीकृष्ण एक रातमें घोड़ों द्वारा चले गये थे (भाग० १.१४.२५; १०.५३.६)।

आनृहवान्—पु० [सं०] एक राजर्षि जो तपस्या सिद्धिसे ब्राह्मण हो गये थे (वायु० ९१.११६)।

आन्वीक्षिकी—स्त्री० [सं०] आध्यात्मिकी विद्या जिसे दत्तात्रेयने अलर्कादिको सिखलाया (भाग० १.३.११; मत्स्य० २१५.५४; विष्णु० ५.१०.२७)। भाग० ३.१२.४४; २५.४ के अनुसार इसका सम्बन्ध ब्रह्मसे सिद्ध होता है अर्थात् यह ब्रह्मप्रतिपादक शास्त्र है। इसे बलराम और कृष्णने भी सीखा था (भाग० १०.४५.३४)। इसे देवीका प्रतिनिधि मानते हैं (विष्णु० १.९.१२१)।

आप—पु० [सं०] (१) शरतकालके सूर्यके संग रहनेवाला एक राक्षस (ब्रह्मां० २.२३.१५; वायु० ५२.१५)। (२) वशिष्ठके सात पुत्रोंमें एक पुत्रका नाम, जो स्वारोचिषकालके प्रजापति थे (मत्स्य० ९.९)। (३) यह "भव" है, अतः इसे किसी प्रकारसे गंदा न करें (वायु० ६९.१९१)।

आपनाप—पु० [सं०] बाष्कलि (भारद्वाज) के वेदविद्यानिष्णात ३ शिष्योंमेंसे एक शिष्य, जो 'बह्वच' कहे जाते थे (ब्रह्मां० २.३५.६)।

आपव—पु० [सं०] (१) इसका अर्थ भी नारायण शब्दके अर्थके ऐसा ही है। ब्रह्मपुराण और हरिवंशके अनुसार "आपव" ब्रह्माका कार्य करते थे। इन्होंने सृष्टिका श्रीगणेश किया। इससे विष्णु हुए जिन्होंने "विराज"की सृष्टि की जिससे संसारका सर्वप्रथम पुरुष उत्पन्न हुआ। महाभारतके अनुसार "आपव" प्रजापति वशिष्ठका ही दूसरा नाम है। (२) दूसरे सावर्णि मनुके समयके सप्तर्षियोंमेंसे एक ऋषि (ब्रह्मां० ४.१.७०)। जब कार्त्तवीर्यने इनका आश्रम जला दिया तब इन्होंने परशुराम द्वारा मारे जानेका शाप उसे दिया था (ब्रह्मां० ३.६९.४४-५; मत्स्य० ४४.१,१२-१४;) यह हेमतालवनके निवासी थे (मत्स्य० ४.३.४१)। (३) वरुणके पुत्रका नाम। कार्त्तवीर्यार्जुनने चित्रभानु (सूर्य) को इनका तपोवन जला डालनेकी आज्ञा दी थी जिसके लिए यह इनके शापका भाजन बना। इस तपोवनमें जलके ऊपर यह बहुत दिनोंतक तप करते रहे (वायु० ९४.४३; ९५.११-१३)।

आपवत्स—पु० [सं०] गृहनिर्माणमें इनकी पूजा होती है और दहीका भोग लगता है (मत्स्य० २५३.३१; २६८.२०)।

आपस्तंब—पु० [सं०] कृष्ण यजुर्वेद अन्तर्गत श्रौतसूत्र और गृह्य सूत्रोंके रचयिता एक ऋषिका नाम जिनके सूत्रोंका अनुवाद बूलर साहबने अंगरेजीमें किया है। दितिके पुत्रेष्टि यज्ञके यह पुरोहित थे (मत्स्य० ७.३३-४; १९२.१०)।

(आपस्तम्बगृह्यसूत्र—श्री हरदत्त)।

आपस्बि–पु० [सं०] भृगुवंशके एक गोत्रकार ऋषि (मत्स्य० १९५.३३; १९६.१८)।

आपादबद्ध–पु० [सं०] शातकर्णिका पुत्र इसने दस वर्ष राज्य किया था (वायु० ९९.३५१)।

आपिशलि–पु० [सं०] आर्षेय प्रवर (भार्गव) (मत्स्य० १९५.४१)।

आपीतक–पु० [सं०] शातकर्णिके पुत्र लम्बोदर आंध्रका पुत्र, इसने बारह वर्ष राज्य किया था (मत्स्य०२७३.५)।

आपूरण–पु० [सं०] (१) भाद्रपदके महीनेमें सूर्यके रथपर रहनेवाला एक यक्ष (विष्णु० २.१०.१०)। (२) नागमाता कद्रूका पुत्र एक नाग (धृतराष्ट्र) (वायु० (६९.७२)।

आपोमयदेव–पु० [सं०] क्रौंचद्वीपमें इनकी जलपूर्ण अञ्जलिसे पूजा होती है (भाग० ५.२०.२२-२३)।

आप्तोर्या–पु० [सं०] एक यज्ञ (भाग०३.१२.४०)। ब्रह्माके पश्चिमवाले मुखसे (विष्णुपुराणानुसार उत्तरीय मुखसे) इसकी उत्पत्ति हुई (विष्णु० १.५.५६)।

आप्नवान–पु० [सं०] भृगुके पौलोमीसे उत्पन्न एक पुत्र तथा गोत्रकार ऋषि थे। भार्गव गोत्रके पाँच प्रवरोंमें एक प्रवर। यह और्वके पिता थे (मत्स्य० १९५.१५ और २९)।

आप्यायन–पु० [सं०] शाल्मलिद्वीपके अधिपति यज्ञबाहुने, जो प्रियव्रत-पुत्र थे, अपने पुत्रोंके नामसे दिये गये ७ विभागोंमें एक विभाग, जो वर्ष (आप्यायन वर्ष) कहा जाता था (भाग० ५.२०.९)।

आप्रवान–पु० [सं०] च्यवनके एक पुत्र जिनका विवाह नहुषकी पुत्री रुचीसे हुआ था। यह और्वके पिता थे जिसका जन्म माताकी जाँघसे हुआ था (ब्रह्मां० ३.१.९३-५)।

आभिचार–पु० [सं०] शत्रुओंको परास्त करनेके लिए पुरोहितों तथा मन्त्रियों द्वारा किया गया मन्त्रोच्चार (भण्डासुरके पक्षसे) (ब्रह्मां० ४.२१.९७)। राजीके पुत्रोंको हरानेके लिए इन्द्रके पक्षसे बृहस्पतिने भी यह किया था (विष्णु० ४.९.१९)।

आभिल–पु० [सं०] भण्डकी सेनाका एक रणोद्धत सेनापति जिसका रथ हजारों सिंहों द्वारा खींचा जाता था (ब्रह्मां० ४.२९.२१-२)।

आभीरकन्या–स्त्री० [सं०] इसने कल्याणिनीव्रत किया था जिसके फलस्वरूप यह उर्वशी अप्सरा हो गयी (मत्स्य० ६९.५९)।

आभूतरजस–पु० [सं०] रैवत युगके देवतागण (मत्स्य० ९.२०)।

आभूतसंप्लव–पु० [सं०] महाप्रलय (वायु० ७.२२; १०.३३; २८.३२; ५०.२०६, २२२; ५२.४७; विष्णु० २.८.९४, ९७-९९ ब्रह्मां० २.६.२२; ४.१.२००, २०८, २३०-३१, २४२; मत्स्य० २.१६-२०; ४.२०; ८०.११)।

आभूतसंप्लवस्थायी–पु० [सं०] (१) पर्जन्यका मारीचीमें उत्पन्न पुत्र—प्रभु, जो लोकपाल कहा गया है, की एक विशेषता (वायु० २८.१६)। (२) ज्वरोत्पत्ति-कथाका एकाग्र मनसे चिन्तन कीर्तन करनेवाला पुरुष मृत्युके उपरान्त नन्दीके साथ विराजमान होता है और रुद्रका अनुचर होता है उसकी एक विशेषता (वायु० ३०.३१८, १०१.३५४)।

आभूतसंप्लवावस्थ–पु० [सं०] जल, अग्नि, पृथिवी, वायु, अन्तरिक्ष, दिशाएं, स्वर्ग, द्युलोक, समुद्र, नद, शैल, वनस्पति, औषधियों तथा वृक्षलताओंकी आत्मा, लव, काष्ठा, कला, मुहूर्त, रात्रि, दिन, अर्धमास, मास, अयन, वर्ष युग आदि (वायु० ६.७४)।

आभ्युदयिक–पु० [सं०] एक श्राद्धका नाम जिसे नांदी मुख कहते हैं। इसमें दही, बैर, द्राक्षा, चावलको मिलाकर पिण्ड देते हैं। सर्वप्रथम माता, दादी और परदादीको तीन पिंड देकर तब बाप, दादा, परदादा, मातामह, प्रमातामह और वृद्धप्रमातामहको पिण्ड दिया जाता है। यह श्राद्ध शुभ अवसरोंपर ही विशेषतया होता है, क्योंकि इसे मंगल वा कल्याण सम्बन्धी समझते हैं। इसमें अपसव्य होनेकी आवश्यकता नहीं पड़ती। (श्राद्धचंद्रिका–भारद्वाज दिवाकरभट्ट)।

आम–पु० [सं०] (१) प्रियव्रतात्मज राजा घृतपृष्ठके सात पुत्रोंमेंसे (जनके नामसे क्रौञ्चद्वीपके ७ भाग किये गये थे) एक पुत्र (भाग० ५.२०.२१)। (२) नग्नजितकी पुत्री सत्याके गर्भसे उत्पन्न श्रीकृष्णका एक पुत्र (भाग० १०.६१.१३)।

आमगर्भ–पु० [सं०] अपने कुल गोत्रके वे पितृ जिनकी मृत्यु बाल्यकालमें हो गयी हो (वायु० ११०.५३)।

आमपात्र–पु० [सं०] यक्षोंके दूध दुहनेका पात्र, पृथ्वीरूपी गौका अन्तर्धान रूप दूध रजतनाभने वैश्रवणको बछड़ा बनाकर जिसमें दुहा (ब्रह्मां० २.३६.२१५; वायु० ६२.१८.६)।

आमलकी एकादशी–स्त्री० [सं०] फाल्गुन शु० ११ को आँवलेके समीप बैठकर भगवानका पूजन करे (ब्रह्मां० तथा नृसिंहपरिचर्या)।

आमश्राद्ध–पु० [सं०] एक श्राद्ध विशेष जिसमें पिण्डदान न करके कच्चा अन्न ही ब्राह्मणोंको दे देते हैं। इसे प्रायः शूद्र ही करते हैं (मत्स्य० १८.२७; वायु० १८.२०)।

आमोद–पु० [सं०] छह विघ्नविनायकोंमें एक प्रथम विघ्ननायक (ब्रह्मां० ४.२७.८१)। ५१ गणेशोंमेंसे एक (ब्रह्मां० ४.४४.६८)।

आम्रकूट–पु० [सं] दे० अमरकंटक।

आम्रवन–पु० [सं०] आमका एक वन विशेष जो विशाख और पतंग पर्वतके बीच तथा ताम्रवर्ण सरके तटपर स्थित है (वायु० ३८.१८-२२)।

आम्रातकेश्वर–पु० [सं०] नर्मदाके उत्तर तटपर एक तीर्थस्थान जो शिवका परमप्रिय और पितरोंके लिए किये गये श्राद्धके निमित्त अति पवित्र माना गया है (मत्स्य० २२.५१; १८१.२८; १९०.५)।

आय–पु० [सं०] द्वितीय स्वारोचिषमनुके मन्वन्तरके बारह तुषित देवोंमेंसे एक तुषित देवता (ब्रह्मां० २.३६.११)।

आयति–स्त्री० [सं०] (१) मेरु और धरणीकी पुत्री जो भृगु और ख्यातिके पुत्र धाताकी पत्नी थी—यह मार्कण्डेयके पिता मृकण्डकी माता थी (भाग० ४.१.४३-४४; वायु० २८.४; ३०.३४; विष्णु० १.१०.३)। परन्तु विष्णु०, वायु०

तथा ब्रह्मांके अनुसार प्राण (ब्रह्मां० २.११.५-६;१३.३७) की माता थी। (२) पुल्लिग=नहुपके इन्द्रापमतेजस्वी छह पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (भाग० ९.१८.१; ब्रह्मां० ३.६८.१२; वायु० ९३.१३; विष्णु० ४.१०.१७)।

आयसपात्र–पु० [सं०] लोहेका पात्र जो असुरोंको बड़ा प्रिय तथा पवित्र है (ब्रह्मां० २.३६.२१०; मत्स्य० १०.२०)।

आयु–पु० [सं०] (१) नहुष (अनेना) के पिता तथा यति या शुद्ध के दादाका नाम (भाग० ९.१७.१; ११, ३.६७.२; विष्णु० ४.८.३)। (२) प्राण और ऊर्जस्वतीका एक पुत्र जो वसु था (भाग० ६.६.१२)। यह वैतण्ड्यादिका पिता था (ब्रह्मां० ३.३.२१.२४)। (३) पुरूरवा और उर्वशीके ६ पुत्रोंमेंसे एकका नाम। राहुकी पुत्री प्रभासे इसका विवाह हुआ जिससे नहुप, शत्रवृद्ध (मत्स्य० वृद्धशर्मा), रजि, रम्भ (मत्स्य० दम्भ), और अनेना (मत्स्य विपाप्मा) ये पाँच पुत्र हुए जो सबके सब प्रसिद्ध योद्धा थे (भाग० ९.१५.१; १७.१; ब्रह्मा० ३.६६.२२,९०; ६७.१; मत्स्य० २४.३३-५; वायु० ९१.५१; विष्णु० ४.६.७३; ७.१; ८.१-३)। (४) श्रीकृष्ण और रोहिणीके दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (भाग० १०.६१.१७)। (५) पौप मासमें सूर्यके रथके साथ रहनेवाले गणके एक ऋपि (भाग० १२.११.४२)। (६) शुचि अग्नि, यह महिपका पिता है (ब्रह्मां० २.१२.३८-४०)। (७) एक चरका- ध्वर्युं (ब्रह्मां० २.३३.१३)। (८) पशुयागमें होमार्थ संस्कृत अग्नि (वायु० २९.३७)। (९) अमावसुका पिता जो अंगिरसका पुत्र था (वायु० ६५.१०५; ७३.५)।

आयुतायु–पु० [सं०] सिन्धु द्वीपका पुत्र तथा ऋतुपर्णका पिता (मत्स्य० १२.४६; वायु० ८८.१७३)।

आयुधन्यास–पु० [सं०] पूजन करनेके पहले वाह्य शुद्धि आवश्यक है। वैष्णवोंके यहाँ वाह्य शुद्धिका यह एक विधान है जिसमें चक्र, गदा आदि विष्णुके आयुधोंका नाम लेकर एक-एक अंग स्पर्श करते हैं (पुराणोक्त सर्वदेवापूजा, दुर्गाशङ्कर शास्त्री)।

आयुर्दा–स्त्री० [सं०] शाकद्वीपकी सात नदियोंमेंसे एक नदी (भाग० ५.२०.२६)।

आयुर्दान–पु० [सं०] स्वारोचिप मन्वन्तरके तुपित और पारावतदेव गणोंमेंसे पारावतगणका एक देवता (ब्रह्मां० २.३६.१४)।

आयुर्वेद–पु० [सं०] आयुसम्वन्धी शास्त्र=आयुर्वेद। जो अठारह विद्याओंमेंमें एक है (ब्रह्मां० २.३५.८८; विष्णु० ३.६.२८; यायु० ६१.७९)। इसके आदि आचार्य अश्विनीकुमार माने जाते हैं (द्रि० आश्विनीकुमार) जिन्होंने दक्ष प्रजापतिके धड़में वकरेका सिर जोड़ा था। इन्द्रने अश्विनीकुमारोंसे यह विद्या सीखकर धन्वन्तरिको सिखायी (भाग० २.७.२१; ८.८.३५; ९.१७.४; ब्रह्मां० ३.६७.१८; वायु० ९२.१६; विष्णु० ४.८.१०)। काशीके राजा दिवोदास धन्वन्तरिके अवतार माने जाते हैं। भाग० ३.१२.३८ के अनुसार आयुर्वेद ब्रह्माके पूर्वीय मुखसे उत्पन्न हुआ था। कुछ अन्यके मतानुसार अत्रि और भरद्वाज भी इस शास्त्रके जन्मदाता माने गये हैं। इसे अथर्वेदके अन्तर्गत माना गया है। यानी अथर्ववेदका उपवेद माना गया है। इस शास्त्रके आठ अंग निम्नांकित हैं=शल्य (चीरफाड़), शालक्य (सिलाई), काय चिकित्सा (बुखार आदि), भूतविद्या (झाड़फूंक), कौमारतन्त्र (बच्चोंका इलाज); अगदतन्त्र (सांप, बिच्छूके काटनेकी दवा), रसायन, बीजीकरण। उपर्युक्त आठ अंग भरद्वाजके आठ शिष्योंको मिले (वायु० ९२.२२; ब्रांह्म० ३.६७.२४)।

आयुष्मत्–पु० [सं०] (१) अंवुधाराके गर्भसे उत्पन्न ऋपभहरिके पिताका नाम (भाग० ८.१३.२०)। (२) उत्तानपादके चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (ब्रह्मां० २.३६.८९)। (३) हिरण्यकशिपुके चारपुत्रोंमेंसे संह्लादके एक पुत्रका नाम (विष्णु० १.२१.१)।

आयुष्मंत–पुन [सं०] देवताओंका एक गण (ब्रह्मां० ४.१.१२२)।

आरण्य–पु० [सं०] एक मध्यमाध्वर्यु। चाक्षुपकाल (युग) के एक प्रजापति जो पाँच देवगणोंके पिता थे (ब्रह्मां० २.३३.१५; ३६.६८)। यह अत्रि ऋपिके पुत्र थे (वायु० ६२.५८)।

आरण्यक–पु० [सं०] (१) वेदके ब्राह्मणोंके अन्तर्गत वह भाग जिनकी रचना जंगलोंमें हुई या जिनका अरण्यमें मनन करना चाहिये। इसमें वानप्रस्थसम्वन्धी उपदेश हैं। “अरण्येऽनूच्य मानत्वात् आरण्यकम्। आरण्येऽध्ययनादेव आरण्यकमुदाहृतम्।” (ब्रह्मां० ३.२१.५५)। (२) त्रेतायुगके रामावतारसे पहिले ही आरण्यक नामके मुनि तपसे भी परमात्मतत्त्व जव जाननेमें असफल रहे तव महर्पि लोमशके आदेशसे रेवा नदीके तटपर “राम” का भजन करने लगे। रामके अश्वमेध यज्ञके समय घोड़ेके साथ शत्रुघ्नजी (दशरथके कनिष्ठ पुत्र) यहाँ पधारे थे। आरण्यक मुनि उन्हींके साथ अयोध्या गये, जहाँ श्री रामसे पूजित हो उन्हींमें लीन हो गये।

आरब्ध–पु० [सं०] सेतुका पुत्र तथा गांधारके पिताका नाम (भाग० ९.२३-१४; विष्णु० ४.१७.३-४)।

आराधि–पु० [सं०] जयत् सेनका पुत्र तथा अयुतायुके पिता। विष्णु०के अनुसार आराधित (वायु० ९९.२३१; (विष्णु० ४.२०-४)।

आरुणि–पु० [सं०] (१) एक महान् सिद्धका नाम (भाग० ६.१५.१३)। (२) तृतीय सावर्ण मनुके युगके सप्तर्पियोंमेंसे एक ऋषि (ब्रह्मां० ४.१.७९)। (३) धर्मसे साध्यामें उत्पन्न एक साध्यदेवका नाम (मत्स्य० १७१.४३)। (४) मध्यदेशमें वेदशाखाप्रवर्तकोंमें पहला (वायु० ६१.९)। (५) पन्द्रहवें द्वापरके व्यास जव वेदशिरा हुए थे जिन्हें विष्णुका अवतार माना जाता है (वायु० २३.१६६)। (६) ग्यारवें धर्मसावर्णि मनुके युगके सप्तर्पियोंमेंसे एक ऋषि (विष्णु० ३.२.३१)।

आरोग्यव्रत–पु० [सं०] कार्त्तिक शु० ९ या किसी नवमीको मनाया जानेवाला एक व्रत। इसमें मन, श्रोत्र, त्वचा, चक्षु, जिह्वा, घ्राण, प्राण तथा बुद्धिकी पूजा, तिलोंसे कमल बना स्थापितकर, करे (गरुड़पुराण)।

आर्जव–पु० [सं०] बाष्कलि भरद्वाजके तीन शिष्योंमेंसे एक शिष्यका नाम (ब्रह्मां० २.३५.६)।

आर्तव(गण)–पु० [सं०] (१) ब्रह्माके ५ पुत्र (ब्रह्मां०

२.२१.१५२; २३.७५-७७; २८.१६)। (२) ऋतुके पाँच पुत्र जो पितरोंके प्रतिनिधि हैं (मत्स्य० १४१.१४.५७; वायु० ३०.१८.२२)।

आर्द्रक–पु० [सं०] धृतिके पिता (ब्रह्मा० ३.७१.१२४)।

आर्द्रानन्दकरी–पु० [सं०] तृतीयाव्रत—शंकरके साथ भवानीकी उपासना तथा व्रत। पक्षमें एक वार चार महीनों-तक होता है (मत्स्य० ६४ पूरा)।

आर्य–पु० [सं०] (१) म्लेच्छोंका उलटा (वायु० ४५.९३; ४७-४९; ९९.४०४)। (२) अंगिरसके पुत्रोंका सामूहिक नाम जो भारतवर्षके निवासी हैं, पर कल्युगमें म्लेच्छ भी साथ-साथ रहेंगे (भाग० ९.४.२; ब्रह्मा० २.१६.२४; मत्स्य० १२१.४६-५१; २७३-२५; २७४.३७)।

आर्यक–पु० [सं०] (१) धर्मसेतुके पिताका नाम (भाग० ८.१३.२६)। (२) एक काद्रवेय नाग (ब्रह्मां० ३.७.३३)।

आर्यका–स्त्री० [सं०] क्रौंचद्वीपकी सात नदियोंमेंसे एक नदीका नाम (भाग० ५.२०.२१]।

आर्यव–पु० [सं०] रथीतरके तीन शिष्योंमेंसे एक (वायु० ६१.३)।

आर्या–स्त्री० [सं०] गोकर्ण नामक शिवक्षेत्रकी समीपवर्तिनी (द्वैपायनी) एक नदीका नाम जहाँ होते हुए वलराम शूर्पारकको गये थे (भाग० १०.७९.२०)।

आर्यावर्त–पु० [सं०] 'आसमुद्रात्तु वै पूर्वादासमुद्राच्च पश्चिमात्। तयोरेवान्तरं गिर्योः आर्यवर्तं विदुर्बुधाः॥'—मनुस्मृति। मनुके अनुसार हिन्दुस्तानका वह उत्तरी हिस्सा जो पूर्वसागर, पश्चिमसागर हिमालय तथा विन्ध्याचलके मध्यवर्ती है। वह अति पवित्र माना गया है। इसे आर्योंका आवासस्थान माना गया है। इक्ष्वाकुके २५ पुत्रोंने परशुराम द्वारा उपद्रष्टाको दिये गये इस भूभागपर शासन किया (भाग० ९.६.५; १६.२२)।

आर्वंत–पु० [सं०] यह तपोवलसे ऋषित्वको प्राप्त हुए थे। इनके समकक्ष काव्य, बृहस्पति, कश्यप, च्यवन आदि थे। ये ईश्वरपुत्र कहे गये हैं (ब्रह्मां० २.३२.९९)।

आर्षणि–पु० [सं०] एक प्रवर (मत्स्य० १९६.३१)।

आर्ष्टिषेण–पु० [सं०] (१) किंपुरुषवर्षमें रामका कीर्त्तिगान करनेवाला एक गंधर्व जिसे विष्णुकी योगशक्ति मालूम थी। प्रायोपवेशन करते समय परीक्षितसे यह मिला था (भाग० ५.१९.२.१:१९.१०; २.७.४५)। (२) सुनहोत्र-सुत शलके पुत्रका नाम (ब्रह्मां० ३.६७.६; वायु० ९२.५)। (३) राजर्षि जो क्षत्रिय होनेपर भी तपस्यासे ऋषि हो गये थे (वायु० ९१.११६)। (४) पचीस मन्त्रवादी भार्गवोंमेंसे एक (मंत्रकृत् ऋषि तथा पाँच भार्गव प्रवरोंमें एक) (ब्रह्मां० २.३२.१०५; मत्स्य० १४५.९९; १९५.३४)।

आर्हण–पु० [सं०] विष्णुका एक प्रधान भक्त तथा सेवक (भाग० २.९.१४)।

आर्हत–पु० [सं०] (१) ६ दर्शनोंमेंसे एक (वायु० १०४.१६)। (२) वे असुर जो विष्णुके मायामोहसे भ्रममें पड़कर प्रायश्चित्त करना भूल अवैदिक कर्मोंमें रत हो गये (विष्णु० ३.१८.१२)।

आलम्वा–स्त्री० [सं] खशा (दक्षकी पुत्री कश्यपकी पत्नी) की सात पुत्रियोंमेंसे एक पुत्री जिससे आलम्वेयगण उत्पन्न हुए (ब्रह्मां० ३.७.१३८; वायु० ६९.१७०)।

आलम्वि–पु० [सं०] ८६ श्रुतर्पियोंमेंसे एक श्रुतर्पि, यह यजुर्वेदके प्रधान प्रवर्त्तकोंमेंसे हैं (ब्रह्मां० २.३३.६)।

आलम्वेयगण–पु० [सं०] राक्षसोंका एक वर्ग जो खशाकी पुत्री आलम्वासे उत्पन्न हुआ था—ये लोगोंके विनाशक तथा तैयार युद्धदुर्मद थे (ब्रह्मां० ३.७.१४०)।

आलुकि–पु० [सं०] एक भार्गव गोत्रकार ऋषि (मत्स्य० १९५.२५)।

आलोक–पु० [सं०] लोकालोक पर्वतका इधरका हिस्सा जो प्रकाशयुक्त होनेसे आलोक कहलाता है। (ब्रह्मां० २.१९.१५१-३, १८७; २१.१५५; मत्स्य० १२३.४७; १२४.९३)।

आवटी–पु० [सं०] (१) शुक्लयजुर्वेदकी शाखाओंके प्रवर्तक याज्ञवल्क्यके १५ शिष्योंमें एक शिष्य (ब्रह्मां २.३५.२९)।

आवंत्य–पु० [सं०] सामवेदशाखाप्रवर्तक सुकर्माका एक ब्राह्मण शिष्य जिसने अपने शिष्योंको साम संहिताकी शिक्षा दी थी (भाग० १२.६.७७-८०)। (२) राजाधिदेवीमें उत्पन्न हुए जयसेनके दो पुत्रोंका नाम (भाग० ९.२४.-३९)।

आवरण–पु० [सं०] भरत और पञ्चजनीके ५ पुत्रोंमेंसे एक जो चतुर्थ था (भाग० ५.७.३)।

आवरणशक्ति–स्त्री० [सं०] आत्माकी दिव्य-दृष्टिपर आवरण डाल देनेवाली शक्ति।

आवर्तन–पु० [सं०] जम्बू द्वीपके स्वर्णप्रस्थ आदि आठ उपद्वीपोंमेंसे एक उपद्वीपका नाम (भाग० ५.१९.३०)।

आवसथ्य–पु० [सं०] शंस्य, जिसे आहवनीय भी कहते हैं, अग्निका एक पुत्र (वायु० २९.१२)।

आवह–पु० [सं०] (१) आग्नेय वादलोंको वर्षा करनेमें सहायता देनेवाली वायु (ब्रह्मां० २.२२.३४; ३.५.८२)। यह आवह, प्रवह आदि सात मरुतोंमेंसे एक है (मत्स्य० १६३.३२)। विजली रहित मूक घनोंपर नियन्त्रण रखता है (वायु० ५१.३२,४९; ६७.११४)।

आवाह–पु० [सं०] काशिराजकी पुत्री गान्दिनी, जा स्व(श्व)फल्कको व्याही गयी थी, के एक पुत्रका नाम (वायु० ९६.१११)।

आवाहनी–स्त्री०[सं०] यह एक महामुद्रा है। यह 'त्रिखण्डा' भी कही जाती है। मुद्राओंसे श्री देवी प्रसन्न होती है (ब्रह्मां० ४.४२.२)।

आविर्होत्र–पु० [सं०] ऋषभके एक सौ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र, जो विष्णुभक्त तथा ऋषि था। जब निमिने कर्मयोगकी सत्यता पूछी तब इन्होंने निमिको कर्म, अकर्म और विकर्मका भेद विस्तारसे समझाया। ये (कर्म, अकर्म, विकर्म) तीनों वेदवाद हैं लौकिक नहीं, इसलिए इनके विषयमें भ्रान्ति होना स्वाभाविक है (भाग० ५.४.११; ११.२.२१; ३.४१-५५)।

आवीचि–पु० [सं०] एक नरकका नाम (विष्णु० २.६.४)।

आवेद–पु० [सं०] भार्गव गोत्रकार एक ऋषि (मत्स्य० १९५.१८)।

आवेशक–पु० [सं०] एक यक्ष-गण (वायु० ६९.४०)।

आशादशमी–स्त्री० [सं०] कात्तिक शु० १० या किसी भी

दशमीको इंद्र और दिक्पालोंका पूजन करे तो सब आशाएँ पूर्ण हों—'भविष्योत्तर'।

आशी–स्त्री० [सं०] लौकिकी अनेक (३४) अप्सराओं, जो गन्धर्वोंकी छोटी बहनें हैं, मेंसे एक अप्सरा (वायु० ६९.५)।

आशीः–स्त्री० [सं०] भग और सिद्धिकी पुत्री। इसके तीन भाई थे—महिमा, विभु और प्रभु (भाग० ६.१८.२)।

आशुतोष–पु० [सं०] पुराणों तथा अन्य धार्मिक ग्रंथोंमें ऐसे बहुतसे लेख मिलते हैं जिनसे यह सिद्ध होता है कि भगवान् शंकर सबसे शीघ्र संतुष्ट होनेवाले देवता हैं, अतः शंकरका यह नाम पड़ा।

आशौचम्–पु० [सं०] किसी सपिण्डके मरनेके पश्चात् होनेवाली अशुद्धिका विवरण—ब्राह्मणोंके लिए सपिण्ड (ज्ञाति) की मृत्युके बाद १० दिन, क्षत्रियोंके लिए १२ दिन, वैश्योंको १५ दिन तथा शूद्रोंको १ महीना (मत्स्य० १८.१-३)।

आश्रम–पु० [सं०] आश्रम चार हैं—ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास (भिक्षुक)। पहलेमें गुरु और अग्निकी सेवा तथा अध्ययन और भिक्षाटनसे भोजन-प्राप्ति तथा मेखला, अजिनवस्त्र, जटा और कमण्डलु धारण करे, ब्रह्मचर्यव्रती रहे। दूसरा तीनों आश्रमोंकी जान है। इसमें जो अविवाहित रहते हैं वे तपस्या और यज्ञादिमें समय बिताते हैं, जो विवाह करते हैं वे बच्चोंके पिता बन वेदाध्ययन, यज्ञयाग तथा श्राद्धादि करते हैं। वानप्रस्थमें स्नान, पूजा, फल, कंदमूलपर जीवन निर्वाह करते हैं तथा सबसे प्रेमपूर्वक व्यवहार करते हैं और भिक्षु दंडी बन काषाय वस्त्र धारण करते तथा पृथ्वीपर शयन करते हैं (भाग० ७.१२.१-३१; १३.१-१०; १४ से अन्ततक; मत्स्य० १४१.६१-२; २४८.१६; वायु० ८.१७७-८८; २३.८२; ३३.२७; ५६.६८; ६१.१६७; विष्णु० ३.८.२०; नवाँ अध्याय पूरा)।

आश्वलायन–पु० [सं०] छब्बीसवें द्वापर युगमें जब पराशर व्यास हुए तब भगवान्का सहिष्णु अवतार हुआ। उक्त सहिष्णु अवतारके चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (वायु० २३.२१३)।

आश्वलायनि–पु० [सं०] अंगिरसवर्गका एक गोत्रकार ऋषि (मत्स्य० १९६.१३)।

आषाढ़ी–स्त्री० [सं०] आषाढ़ मासकी पूर्णिमा जिस दिन गुरुपूजा तथा व्यासपूजा होती है—दे० शंकराचार्य विरचित 'व्यासपूजा' विधि। वृष्टि आदिके आगमनका निश्चय करनेके लिए वायु परीक्षा भी इसी दिन की जाती है इसीसे इसे 'वायुधारिणी पूर्णिमा' भी कहते हैं—'ज्योतिः शास्त्र'।

> आषाढ्यां भास्करास्ते सुरपतिनिलये याति वाते सुवृष्टिः
> सस्यार्थं सम्प्रकुर्याद् यदि दहनदिशो मन्दवृष्टिर्यमेन।
> नैर्ऋत्यामन्ननाशो वरुणदिशि जलं वायुकोणे प्रवायुः
> कौबेर्यां सस्यपूर्णा सकलवसुमती तद्वदीशानवायौ॥
> —ज्योतिःशास्त्र।

आषाढ़ीतीर्थ–पु० [सं०] यह तीर्थ नर्मदा तटपर है। वहाँपर स्नानका बड़ा माहात्म्य वर्णित है (मत्स्य० १९४.३०)।

आसंग–पु० [सं०] श्वफल्क तथा गांदिनीके बारह पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (भाग० ९.२४.१६)।

आसारण–पु० [सं०] भाद्रपद मासमें सूर्यके रथके साथ रहनेवाले गणमेंसे एक यक्ष (भाग० १२.११.३८)।

आसुर–पु० [सं०] विवाहका एक प्रकार (विष्णु० ३.१०.२४)। उसका विवरण मनु (३-३१) में इस प्रकार है—कन्याके जातियों और कन्याको यथाशक्ति धन देकर स्वेच्छासे कन्याग्रहण आसुर विवाह है। इसमें आर्ष आदि विवाहोंकी तरह शास्त्रीय विधि नहीं होती।

आसुरायण–पु० [सं०] सामवेद-शाखाप्रवर्तक पाराशर्य कौथुमके छह शिष्योंमेंसे एक शिष्यका नाम (ब्रह्मां० २.३५.४६)। ये मरीचिपुत्र कश्यपके कुलमें उत्पन्न एक गोत्रकार ऋषि थे (मत्स्य० १९९.३)।

आसुरि-आसुरी–पु० [सं०] (१) एक मुनिविशेषका नाम जो सांख्यके आचार्य कपिल मुनिके शिष्य थे। यह एक सिद्ध थे और युधिष्ठिरके राजसूय यज्ञमें आमंत्रित थे (भाग० १.३.१०;)। (२) देवताजित्की रानी जो देवद्युम्नकी माता थी (भाग० ५. १५.३)। (३) एक ब्रह्मर्षि (मत्स्य० १०२.१७) तथा मध्यदेशमें यजुर्वेदके प्रथम प्रवर्तक (ब्रह्मां० २.३५.१२)। (४) ब्रह्माके एक पुत्र (वायु० १०१.३३८)। (५) पुरंजन नगरके पश्चिम भागके प्रवेश द्वारका नाम (भाग० ४.२५.५२; २९.१४)।

आसुरीवेला–पु० [सं०] रात्रिका वह समय जब नंद यमुनामें स्नानार्थ प्रविष्ट हुए थे और उन्हें एक असुर वरुणके पास ले गया था (भाग० १०.२८.२)।

आस्तीक–पु० [सं०] एक ऋषिका नाम जिन्होंने जनमेजयके सर्पयज्ञमें पातालवासी तक्षकको भस्म होनेसे बचाया था। यह जरत्कारु ऋषि और वासुकि नागकी बहिन जरत्कारुकी सन्तान थे (महाभा० आदि० १६,१७)

आहवनीयपद–पु० [सं०] यह गयामें स्थित है। इस पदमें श्राद्ध करनेसे अश्वमेधका फल प्राप्त होता है (वायु० १११.५१)।

आहार्य–पु० [सं०] मंत्रकृत् एक अंगिरसश्रेष्ठ ऋषि (ब्रह्मां० २.३२.१०९; वायु० ५९.१००) यह उरुक्षवके पिता थे (मत्स्य० ४९.३८)।

आहुक–पु० [सं०] पुनर्वसुके एक पुत्र तथा देवक, उग्रसेन और धृतिके पिता। यह एक महाप्रतापी, सत्यवादी और उदार राजा था (भाग० ९.२४.२०-२१; वायु० ९६.१२०-१२३; विष्णु० ४.१४.१५-१६; ब्रह्मां० ३.७१.१२०-१२१)। कंस इनसे घृणा करता था (भाग० १०.३६.२४ (२८); १०(५०(५)८)। जरासंधपर आक्रमण करनेके समय श्रीकृष्णने इनसे सलाह की थी और जरासंधके तीसरे आक्रमणमें इनपर रक्षाका भार था (भाग० १०(५१(५)२६)। सूर्यग्रहणमें यह स्यमंतपंचक गये थे (भाग० १०.८२.५)। काशीराजकी पुत्रीसे इनका विवाह हुआ था। यह रथपर युद्ध करनेमें प्रवीण थे (वायु० ९६.१२१-२; ब्रह्मां० ३.७१.१२२-३)। आहुकी इनकी बहिन थी जिसका ब्याह अवन्तीके आहुकांधसे हुआ था (वायु० ९६.१२७; मत्स्य० ४४.६६-७०)। कहते हैं इनके पास ८००००००० घोड़े तथा २१००० हाथी थे। इनकी समता भोजसे की जाती है (ब्रह्मां० ३.७१.१२३-१२७; वायु० ९६.१२१-१२६; मत्स्य० ४४.६७-६८)।

आहुकांध–पु० [सं०] आहुकके बहनोई, जिनका विवाह

आहुकीसे हुआ था। इनके दो पुत्र तथा एक पुत्री थी (वायु० ९६.१२७; ब्रह्मां० ३.७१.१२७; दे० आहुकी तथा आहुक)।

आहुकी—स्त्री० [सं०] पुनर्वसुकी पुत्री, आहुककी बहिन तथा अवंतीनरेश आहुकांधकी पत्नीका नाम (भाग० ९.२४.२१; ब्रह्मां० ३.७१.१२१,१२७; मत्स्य० ४४.६६; वायु० ९६.१२०, १२७; विष्णु० ४.१४.१५)।

आह्वति—पु० [सं०] रोमपादके पुत्र बत्सुका एक पुत्र (वायु० ९५.३७)।

आह्वत्य—पु० [सं०] अप्सराओंके चौदह गणोंमेंसे प्रथम एक अप्सरागण (ब्रह्मां० ३.७.१८)।

आह्वय—पु० [सं०] मरुतोंके सात सातके सात गण कहे गये हैं। उनमें तीसरे गणके एक मरुतका नाम—मरुतोंकी कुल संख्या ४९ है (वायु० ६७.१२६)।

इ

इंदिरा—स्त्री० [सं०] (१) लक्ष्मीका एक नाम (भाग० १०.३१.१); (२) ललिता देवीकी अनुचरी एक शक्ति जो महापद्माटवीमें विविध कलाओंके साथ क्रीडा करनेवाली १६ शक्तियोंमेंसे अन्यतम है (ब्रह्मां० ४.३५.९८)। (३) एक महानदीका नाम—लोमश ऋषिने अपने तपके प्रभाव से अनेक नदियोंके साथ जिसका मुण्डपृष्ठके शिखरपर आह्वान किया था (वायु० १०८.७९)।

इंदिरा एकादशी—स्त्री० [सं०] आश्विन कृ० ११। इस व्रतसे सब प्रकारके पाप दूर होते हैं, यदि इस दिन कोई श्राद्ध हो तो अपना भोजन सूँघकर गौको खिला देना चाहिये (ब्रह्मवैवर्त्त पुराण)।

इंदु—पु० [सं०] (१) चंद्रमाका एक नाम—इसकी वृद्धि और क्षयसे समुद्रकी वृद्धि और क्षय होता है। दक्षने इंदुको अपनी २७ मानस कन्याएँ दी थीं (ब्रह्मां० २.१९.१३४; ३७.४४; ३.६५.२१; वायु० ६३.४१; ६५.१५८; विष्णु० १.१५.७७)। (२) इक्ष्वाकुवंशी राजा विश्वगका पुत्र तथा युवनाश्व का पिता (मत्स्य० १२.२९)।

इंदुमती—स्त्री० [सं०] सूर्यवंशी राजा अजकी पत्नी तथा विदर्भके राजा भोजकी बहिन। यह अयोध्यापति महाराज दशरथकी माता तथा श्रीरामकी दादी थीं (ब्रह्मां० ४.४०.१००, १३७)। कहते हैं एक बार इंदुमती राजमहलकी छतपर बैठी थी और उसी समय नारदजी आकाश मार्गसे कहीं जा रहे थे। संयोगसे नारदजीकी वीणापरके कुछ पुष्प इंदुमतीपर गिर पड़े जिनके आघातसे उसकी मृत्यु हो गयी थी (ब्रह्मां० पुराण)।

इंद्र—पु० [सं०] (१) वैदिक देवता जिनका स्थान अंतरिक्ष कहा जाता है। यह देवताओंके राजा तथा मेघके मालिक हैं जिनका एक नाम वासव भी है (ब्रह्मां० २.१३.९७; वायु० ६६.१४)। एक लोकपाल। इनका तथा तीन अन्य लोकपालोंका नगर पुष्कर द्वीपके मानसरोत्तर पहाड़पर है (भाग० ५.२०.३०; मत्स्य० २६५.१९; २६६.२२)। इंद्रियोंकी पुष्टिके हेतु इनकी उपासना होती है (भाग० २.३.२)। इनका वाहन ऐरावत हाथी तजा वज्र अस्त्र है; इंद्रधनुप इनका धनुप है और इनकी तलवारका नाम परंज है। देवराजकी रानीका नाम शची और पुत्रका नाम जयन्त है। इनकी सभाको "सुधर्मा" कहते हैं जिसमें देव, गंधर्व और अप्सराएं रहती हैं। इंद्रपुरीकी राजधानी अमरावती है और वहीं नन्दन वन है जिसमें पारिजातके वृक्ष अधिक हैं। इसी उद्यानमें कल्पवृक्ष भी है। इनके घोड़ेका नाम उच्चैःश्रवा तथा इनके सारथिका नाम मातलि है। यह ज्येष्ठा नक्षत्र और पूर्व दिशाके स्वामी हैं। वृत्र, त्वष्टा, नमुचि, शंवर बाण, बलि और विरोचन इनके प्रधान शत्रुओंमें हैं। पृथुसे इसका झगड़ा हो गया था (भाग० ४.१६.२४; १९.१०-१७, १९-२२, २६-३८; २०.१८; दे० विजिताश्व)। काकुत्स्थ, मानधाता पुरुपमेध यज्ञके पश्चात् इन्होंने हरिश्चंद्रको एक सोनेका रथ दिया था (भाग० ८.७.१७–२०,२३)। इंद्र-नमुचि युद्धके लिए दे० (भाग० ८.१०.२४.२८; ४१-५३; ११.१.४०; १५.२४.३३; मत्स्य० २२.६०,६१; २९.११; ३१.१२)। इंद्र-वृत्रासुर युद्ध प्रथम त्रेता युगमें नर्मदा तटपर हुआ था जिसमें इंद्रने दधीचिकी हड्डियोंका वज्र बना वृत्रका वध किया था (मत्स्य० १५४.१११-१३१)। श्रीकृष्णने इंद्रकी पूजा रुकवा गोवर्धन-पूजा चलायी थी जिससे रुष्ट हो यह झगड़ पड़े थे (ब्रह्मां० ३.६८.१७; ७१.२०१, २४४; विष्णु० ५.१०.१६-२६ तथा भाग० १०.२४ पूरा)। अपनी आज्ञाकी अवहेलनाके बदलेमें इन्होंने मारुत और अग्निको पृथ्वीपर जन्म लेनेका शाप दिया था (मत्स्य० ६१.३-१७)।

पुराणानुसार इंद्र, विश्वभुक्, विपश्चित, विभु, प्रभु, शिखी, मनोजव, तेजस्वी, बलि, अद्भुत, त्रिदिव, सुशांति, सुकीर्त्ति, ऋतधाता, दिवस्पति ये चौदह इंद्र क्रमशः एक मन्वन्तरमें भोग करते हैं। आजकल तेजस्वी इन्द्रका अधिकार है। (२) विदर्भमें इंद्रका मंदिर (भाग० १०.५३.४९[१])। (३) वशिष्ठके एक पुत्र जो स्वारोचिप युगके प्रजापति थे (मत्स्य० ९.९)। (४) सूर्य द्वारा बनाये गये दिनके विभागों (मुहूर्तों) मेंसे एक विभाग (वायु० ६६.४१)। (५) दनुके १०० पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (वायु० ६८.८)।

गणेशके साथ-साथ इंद्रकी उपासना भी अमेरिकामें होती थी।

इंद्रकील—पु० [सं०] (१) भारतवर्षका एक पहाड़ (भाग० ५.१९.१६)। (२) पितरोंका एक पवित्र तीर्थस्थान। श्राद्धके लिए यह अतिप्रशस्त स्थान है (मत्स्य० २२.५३)।

इंद्रकेतु—पु० [सं०] रुक्मिणीके साथ श्रीकृष्णके विवाहके समय द्वारकाकी सड़कोंमें फहरानेवाली पताकाओंका नाम (भाग० १०.५४.५६)।

इंद्रजित्—पु० [सं०] (१) लंकाधिपति रावणके पुत्र मेघनादका नाम। यह बड़ा बलवान् था और राम-रावण युद्धमें इसने श्री रामके सब सैनिकोंको नागपाशमें बाँध दिया था (लंकाकाण्ड लक्ष्मण-मेघनादयुद्ध—दो० ७२-७६; भाग० ९.१०.१८; ब्रह्मां० ३.६.६)। (२) दनुका एक पुत्र (मत्स्य० ६.१९; वायु० ६८.६)। (३) नर्मदाके

उत्तर तटपर गर्जन नामक एक तीर्थस्थानमें उठा हुआ गर्जनशील मेघ जिसका तीर्थके प्रभावसे इन्द्रजित् नाम पड़ा (मत्स्य० १९०.३)।

इंद्रतापन–पु० [सं०] हिरण्यकशिपुकी सभाके एक दानव (दनुपुत्र) का नाम (ब्रह्मां० ३.६.८; मत्स्य० १६१. ८१)।

इंद्रतीर्थ–पु० [सं०] वृत्रासुरको मारनेके कारण इंद्रको ब्रह्महत्याका पाप लगा था और वह कमलनालमें छिप गये थे, अतः सब देवता विना इंद्रके हो गये। इसपर देवताओंने ब्रह्माकी रायसे ब्रह्महत्याको दूसरा स्थान दिया और इंद्रका प्रथम अभिषेक नर्मदा तटपर हुआ जहाँ उनके मलका शोधन हुआ, अतः देशका नाम "मालवा" पड़ा। तदनन्तर गोदावरी तटपर सब देवताओंने इंद्रका अभिषेक किया। इस प्रकार वहाँ 'पुण्या' और 'सिक्ता' दो नदियाँ बह चलीं जो आगे चलकर गोदावरीमें आ मिलीं। तबसे उन दोनोंके संगमको "पुण्यासंगम" कहते हैं। सिक्तासंगमको इंद्रतीर्थ कहते हैं, वहाँ ७००० तीर्थ निवास करते हैं (ब्रह्मपुराण-इंद्रतीर्थमाहा०)।

इंद्रदत्त–पु० [सं०] मनुष्यके मुखवाले एक किन्नरका नाम (वायु० ६९.३५)।

इंद्रदमन–पु० [सं०] वाणासुरके एक पुत्रका नाम।

इंद्रद्युम्न–पु० [सं०] (१) सूर्यवंशोत्पन्न एक प्रसिद्ध राजा जो अयोध्याके राजा थे। यह सुमतिके गर्भसे उत्पन्न भरतके पौत्र थे। दुर्वासाके आदेशसे तथा मार्कण्डेयजीकी अनुमतिसे नर्मदाक्षेत्रके कोटितीर्थमें इन्होंने एक अश्वमेध यज्ञ किया था जिससे प्रसन्न होकर शिव तथा विष्णुने इन्हें आशीर्वाद दिया था (स्कंद० पु० आवन्त्यखंड रेवाखंड ३४।१९-२० आदि)। (२) तेजसका पुत्र जो एक द्राविड़ पाण्ड्य राजा था। यह बड़ा हरिभक्त था और इसकी तपस्याके समय अगस्त्य इसके आश्रमपर आये थे। उनका स्वागत नहीं करनेके कारण अगस्त्यके शापवश यह हाथियोंका अधिपति हो हाथी बन गया। इसकी पूरी कथा कूर्मपुराणमें दी है (भाग० ८.४.७-१२; ब्रह्मां० २. १४. ६४; वायु० ३३.५४; विष्णु० २.१.३६, मत्स्य० ५३. ४७-८)। (३) अवंतीके राजाका नाम जिन्होंने पुरीमें जगन्नाथका मंदिर बनवाया था। यह अपने पुण्योंके प्रतापसे सदेह ब्रह्मलोक चले गये थे जहाँसे आनेपर लोमसने इन्हें ज्ञान दिया था (स्कंद० मा० कु० १०।५३-५५)।

इंद्रद्युम्नसर–पु० [सं०] एक झील जहाँसे होती हुई पावनी (मत्स्यपुराणानुसार नलिनी) (सात भागोंमें विभक्त गंगाका एक स्रोत) पूर्व दिशाको बहती है (ब्रह्मां० २.१८५६; मत्स्य० १२१.५५; वायु० ४७.५४)।

इंद्रद्वीप–पु० [सं०] भारतवर्षके नौ खंडोंमेंसे एकका नाम (ब्रह्मां० २.१६.९; वायु० ४५.७९; विष्णु० २.३.६; मत्स्य० ११.४.८)। इसी द्वीपके समीपमें नलिनी नदी समुद्रमें गिरती है (मत्स्य० १२१.५७)।

इंद्रद्वीपसमुद्र–पु० [सं०] वह स्थान जहाँ पावनी नदी समुद्रमें गिरती है (ब्रह्मां० २.१८.५८; वायु० ४७. ५५)।

इंद्रधनुष–पु० [सं०] इसकी सृष्टि वामदेव करते हैं (मत्स्य० ४.२९; वायु० ९.५२; १९.८; ब्रह्मां० २. ८.५४)।

इंद्रधन्वा–पु० [सं०] लोहिनीमें उत्पन्न वाणके एक पुत्रका नाम (ब्रह्मां० ३.५.४५)।

इंद्रध्वज–पु० [सं०] एक उत्सव विशेष जो भाद्रपद शुक्ला द्वादशीको वर्षा और खेतीकी वृद्धिके लिए मनाया जाता है। इसमें इंद्रको ध्वजा चढ़ाते हैं—हि० श० सा०।

इंद्रनदी–स्त्री० [सं०] भद्राश्व देशकी एक नदीका नाम (वायु० ४३.२६)।

इंद्रपद–पु० [सं०] (१) भारतके पश्चिमका एक राज्य जहाँसे होकर सिन्धु नदी बहती है (ब्रह्मां० २.१८.४८)। (२) विष्णुपद, रुद्रपद आदिके साथ यह तीर्थ गयामें है (वायु० १०९.१९)।

इंद्रप्रतिम–पु० [सं०] एक वशिष्ठवंशोद्भव गोत्रकार ऋषि, जो ब्रह्मवादी थे (मत्स्य० १४५.११०)। वशिष्ठका घृताचीमें उत्पन्न कुशी नामसे विख्यात एक पुत्र (वायु० ७०.८८)।

इंद्रप्रमति, इंद्रप्रमिति–पु० [सं०] एक ऋषि, इन्होंने पैलसे ऋग्वेदसंहिता सीख कर माण्डूकेय (मार्कण्डेय—वायु०) को पढ़ायी थी (भाग० १२.६. ५४-५६; ब्रह्मां० २.३२.११५; ३३.३; ३४.२५; वायु० ६०.२५.२७; विष्णु० ३.४.१६.१९)। इन्हें कुणि भी कहते थे (ब्रह्मां० ३.८.९६-७)। यह ब्रह्मक्षेत्रके निवासी थे (वायु० ५९.१०५)।

इंद्रप्रमद–पु० [सं०] एक ऋषिका नाम जो मरणासन्न भीष्मसे मिलने गये थे (भाग० १.९.७; १९.९)।

इंद्रप्रस्थ–पु० [सं०] खांडव वनके जला देनेके पश्चात् पाण्डवोंने इस नगरको बसाया था। यह आधुनिक दिल्लीके निकट था। समुद्रमें डूबनेके भयसे द्वारकाके निवासियोंको अर्जुन यहाँ ले आये थे (भाग० १०.५८.१२; ११.३०. ४८; ३१.२५)। भण्डको पराजित करनेके लिए इंद्रने यहाँ पराशक्तिकी उपासना की थी, इसीसे इसका नाम इंद्रप्रस्थ हुआ (ब्रह्मां० ४.१२.४४)।

इंद्रबाधनकेशी–पु० [सं०] मनुष्योंसे अवध्य दनुके पुत्रोंके वंशजोंमेंसे एक दानव (ब्रह्मां० ३.६.१६; वायु० ६८.१५)।

इंद्रबाहु–पु० [सं०] एक आगस्त्य और ब्रह्मिष्ठऋषिका नाम (मत्स्य० १४५.११४)।

इंद्रमनस्–स्त्री० [सं०] वाणकी पत्नी तथा लौहित्यकी माताका नाम (वायु० ६७.८५)।

इंद्रयाग–पु० [सं०] नंद अन्य गोपोंके साथ इंद्रप्रीत्यर्थ इसे हर साल करते थे, पर श्रीकृष्णने इसे बंद करा गोवर्धन-पूजा चलायी थी। अधिक वर्षा हुई जिसका कारण इंद्रका कोप था। अतः श्रीकृष्ण जनताके रक्षार्थ गोवर्धन पर्वतको सात दिनोंतक उठाये रहे (भाग० १०.२४ पूरा; २५.१-२८)।

इंद्रवाह–पु० [सं०] दे० पुरंजय (भाग० ९.६.१२)।

इंद्रशत्रु–पु० [सं०] (१) भण्डके आठ मंत्रियोंमेंसे एक (ब्रह्मां० ४.१२.१२)। (२) वृत्रासुरका एक नाम। भागवतके अनुसार देवपुरोहित विश्वरूपके तीन सिर थे, एकसे सोमपान, दूसरेसे सुरापान और तीसरेसे अन्न भोजन करते थे। यज्ञके समय विश्वरूप देवताओंको हविका भाग दे देते थे, पर कभी-कभी छिपा कर असुरोंको भी दे दिया करते थे, जिससे रुष्ट हो इंद्रने उनके तीनों सिर काट लिये। विश्वरूपके निहत होनेपर उनके पिता त्वष्टाने इंद्रको मारनेकी कामनासे आभिचारिक यज्ञ रचा। थोड़ी देर बाद उस दक्षिणाग्निसे एक बहुत बड़ा असुर प्रकट हुआ। त्वष्टासे

उत्पन्न असुरमूर्त्तिधारी तपने तीनों लोकोंको आवृत्त कर लिया जिससे इनका नाम "वृत्र" पड़ा। देवताओंने आक्रमण किया, पर इसने सबके अस्त्रोंको निगल लिया। अंतमें ऋषिश्रेष्ठ दधीचिकी हड्डियोंसे वज्रका निर्माण हुआ तब कहीं जाकर इंद्र वृत्रासुरका वध कर सके थे (भाग० ६. ७.२७-४०; अ० ८ ९, १०, ११ तथा १२ पूरा)।

इंद्रसम–पु० [सं०] च्यव-पुत्र कृमिका महाबलवान् पुत्र (मत्स्य० ५०.२५)।

इंद्रशैल–पु० [सं०] महाभद्र झीलके उत्तरके अनेक पहाड़ोंमेंसे एक पहाड़का नाम (वायु० ३६.३१)।

इंद्रसावर्णि–पु० [सं०] चौदहवें मनु जो उरु आदिके पिता थे। इनके समयमें शुचि इंद्र थे, पवित्र और चाक्षुप देव थे और अग्नि, वाहु आदि ऋपि तथा "बृहद्भानु" नामक विष्णुका अवतार हुआ था (भाग० ८.१३. ३३-३५)।

इंद्रसेन–पु० [सं०] (१) राजा नलके पुत्रका नाम जिसकी वहिन इंद्रसेना तथा पुत्र चंद्रांगद था (स्कंद० ब्राह्म० ब्रह्मोत्तरखंड)। (२) राजा वलिका एक नाम, जिसने श्रीकृष्ण और वलरामका अपने लोक सुतलमें स्वागत किया था। कंसके द्वारा मारे गये इनके भाइयोंको इसने लौटा दिया था (भाग० ८.२०.२३; २२.३३ १०.८५.४५-४६, ५२)। (३) प्लक्षद्वीपके सात पहाड़ोंमेंसे एक पहाड़ जो सीमा निर्धारित करता है (भाग० ५.२०. ४)। (४) धर्मसे भानुमें उत्पन्न देव ऋषभका एक पुत्र (भाग० ६.६.५)। (५) मीढ्वान्के पुत्र कूर्चका पुत्र जो वीतिहोत्रका पिता था (भाग० ९.२.१९-२०)। (६) महाकीर्ति ब्रह्मिष्ठका पुत्र तथा विंध्याश्वका पिता (मत्स्य० ५०.६)।

इंद्रसेना–स्त्री० [सं०] (१) राजा नलकी पुत्रीका नाम—महाभारत। (२) मौद्गल्य ब्रह्मिष्ठकी पत्नी तथा विंध्याश्वकी माताका नाम (वायु० ९९.२००)।

इंद्रस्पृक–पु० [सं०] ऋषभदेव और जयंतीके १०० पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (भाग० ५.४.१०)।

इंद्राणी–स्त्री० [सं०] देवराज इंद्रकी पत्नी शचीका नाम जो जयंत (पुत्र) तथा जयंती (पुत्री) की माता थीं। इनका उल्लेख ऋग्वेदमें है। तैत्तिरीय ब्राह्मणके अनुसार इंद्रने इनके रूपपर मोहित हो इन्हें ग्रहण किया था। रामायण तथा पुराणानुसार ये पुलोमा दैत्यकी पुत्री थीं जिसे इंद्रने मारा था। राजा नहुपसे अगस्त्य ऋपिने इनकी रक्षा की थी—दे० नहुप, शची। नहुपको उसके दर्पके लिए इन्होंने दंडित किया था यानी वह इन्द्रपद पानेपर इन्द्राणीको अपनी पत्नी बनाना चाहता था। ब्राह्मणोंके द्वारा अजगरत्वको प्राप्त हुआ (भाग० ६.१३.१६; ९.१८.३)। यह जयंत, ऋपभ और मीढुष ३ पुत्रोंकी माता थीं (भाग० ६.१८.७)। इन्होंने श्रीकृष्ण और सत्यभामाका अमरावतीमें स्वागत किया था। सत्यभामा इनके अहं भावसे दुःखी हो गयी थी (भाग० १०.५९.३८; [६५ (५)५], २८; [६७(५) १९])। यह पोडश शक्तियोंमें एक शक्ति थीं (ब्रह्मां० ४. ४४.८४.१११)। विदर्भमें इनका एक मंदिर है जहाँ विवाहके एक दिन पूर्व रुक्मिणी पूजाके लिए गयी थी। विदर्भनिवासियोंके इंद्र तथा इंद्राणी कुल देवता थे (भाग० १०.५३.४९(१, २)५०)।

इंद्रानुज–पु० [सं०] इंद्रके छोटे भाई विष्णुका एक नाम जिन्होंने कश्यप ऋपिकी पत्नी अदितिके गर्भसे वामन अवतार लिया था (भाग० ८.२२.१९; २३.१९)।

इंद्रिय–स्त्री० [सं०] (१) इंद्रियाँ दस हैं—पाँच बुद्धि (ज्ञान) के अधीन हैं और पाँच कर्मेंद्रियाँ हैं जो कर्मके अधीन हैं और ११ वाँ मन ज्ञानकर्म-उभयरूप इन्द्रिय है (मत्स्य० ३.१८.२०; वायु० ३१.४३)। (२) तामस मन्वन्तरके देवगण (वायु० ६२.३९)।

इंद्रोत–पु० [सं०] शौनक ऋपिका एक नाम जिन्होंने जनमेजयका अश्वमेध यज्ञ कराया था (ब्रह्मां० ३.६८.२५; वायु० ९३.२५)।

इ–पु० [सं०] कामदेव।

इक्षलक–पु० [सं०] व्यासकी ऋक्‌शिष्यपरम्परामें शाकवैण रथीतरके चार शिष्योंमेंसे एक शिष्य (ब्रह्मां० २. ३५.४)।

इक्षु–पु० [सं०] (१) हरिवर्पका एक विचित्र वृक्ष। हरिवर्पवासी नर-नारी जिसके रसका पान करते हैं (ब्रह्मां० २.१७.७)। (२) शाकद्वीपकी ७ नदियोंमेंसे एक नदी जिसका उद्‌गम हिमालयसे है (ब्रह्मां० २.१९.९६; मत्स्य० १२२.३२; वायु० ४९.९३; विष्णु० २.४.६५)। (३) सात समुद्रोंमेंसे एक—इक्षुरसोद या इक्षुरसाब्धि (ब्रह्मां० ४.३१. १८; मत्स्य० २.३४)। (४) हिमालयसे वहनेवाली भारतवर्पकी एक नदी (मत्स्य० ११४.२२; वायु० ४५.९६)। (५) नर्मदाकी शाखा एक अति पवित्र नदी जिसमें स्नान करनेवाला व्यक्ति एक देवगणका अधिपति होता है (मत्स्य० १९१.४९-५०)।

इक्षुचाप–पु० [सं०] इक्षु धनुष, जिसे ब्रह्माने कामेश्वरी कामेश्वरके विवाहोपलक्ष्यमें उन्हें उपहार दिया था (ब्रह्मां० ४.१५.१९; १८.१; १९.२६)।

इक्षुदा–स्त्री० [सं०] दक्षिणापथकी महेन्द्र पर्वतसे निकलनेवाली बहुत-सी नदियोंमेंसे एक नदी (मत्स्य० ११४.३१)।

इक्षुमती–स्त्री० [सं०) (१) एक नदी जिसके तटपर कपिलजीका आश्रम था (भाग० ५.१०.१; विष्णु० २.१३.५३)। (२) पितरोंके श्राद्धयोग्य एक पवित्र तीर्थका नाम (मत्स्य० २२.१७)।

इक्षुमालिनी–स्त्री० [मं०] इंद्र पर्वतसे निकलनेवाली एक नदी (स्कंद० भाग०)।

इक्षुरसोद–पु० [सं०] पुराणोक्त सात समुद्रोंमेंसे एक जो ईखके रससे भरा कहा गया है। यह प्लक्षद्वीपको चारों ओरसे घेरे है (भाग० ५.१.३३; २०.७; विष्णु० २.४.२०)।

इक्षुला–स्त्री० [सं०] महेन्द्र पर्वतकी एक नदी (वायु० ४५. १०६)।

इक्ष्वाकु–पु० [सं०] सूर्यवंशका एक प्रधान राजा। पुराणानुसार वैवस्वत मनुके दस पुत्रोंमेंसे यह एक है जो उनकी पत्नी श्रद्धासे उत्पन्न हुआ था। वायु० ८८.८ के अनुसार मनुके छींकनेसे इनकी उत्पत्ति हुई (भाग० ८.१३२; ९.१.३, १२; वायु० ६४.२९; ८५.४; ८८.८; विष्णु० ४.१.७; ब्रह्मां० २.३८.३०; ३.६०.२.२०; मत्स्य० ९.३०; ११.४१)। इक्ष्वाकुके १०० पुत्र हुए थे (ब्रह्मां० ६३.८)। श्री राम इसी वंशके थे। इनके १०० पुत्रोंमें विकुक्षि बड़े थे और अयोध्याके राजवंशके मूल पुरुष थे। दूसरे पुत्र निमिसे

मिथिला वंश चला। इनकी पुत्री सुवर्णा सुहोत्रको व्याही थी। यह वड़े प्रभावशाली तथा प्रजावत्सल राजा थे जिनके वंशमें रामचन्द्रके समान राजा हुए (भाग० २.७.२३, ४४; १२.२.३७)। इस वंशके अंतिम राजा सुमित्र हुए (ब्रह्मां० ३.७४.२४४; मत्स्य० २७३.५२, वायु० ९९.२६६.४३१)। वशिष्ठसे इलाके स्त्री होनेकी सूचना सुन इन्होंने अश्वमेध यज्ञ कर "इला"को किंपुरुषमें वदल दिया (मत्स्य० १२-१-५)।

इडविड–पु० [सं०] शतरथका पुत्र जिसका विवाह विश्वसहस्रकी पुत्रीसे हुआ था (ब्रह्मां० ३.६३.१८०)।

इडविडा–स्त्री० [सं०] तृणविंदुकी पुत्री और विश्रवाकी रानी तथा कुवेरकी माताका नाम (भाग० ४.१.३७; १२.९) दे०—इलविला—१ और ३।

इडस्पति–पु० [सं०] (१) दक्षिणा और यज्ञुपति देव रूचिके १२ पुत्रोंमेंसे, जो स्वायंभुव मन्वन्तरमें तुषित देव कहलाये, एक पुत्र (भाग० ४.१.७-८)। (२) हरिका एक नाम = पुरुष (भाग० ९.२.३५)।

इडा–स्त्री० [सं०] इस नामकी कई स्त्रियाँ मिलती हैं। (१) दक्ष प्रजापतिकी पुत्री जो कश्यप ऋषिको व्याही थी। (२) वसुदेवकी एक पत्नी। (३) मनु या इक्ष्वाकुकी पुत्री जो बुधकी पत्नी तथा पुरूरवाकी माता थी। (४) ऋतध्वज रुद्रकी पत्नी। (५) मारुतनाथकी तीन शक्तियोंमेंसे एक शक्ति (ब्रह्मां० ४.३३.७०)।

इडावत्सर–पु० [सं०] पाँच वर्षवाले युगका तीसरा वर्ष (भाग० ३.११.१४; विष्णु० २.८.७२; वायु० ५०.१८३)।

इडिविला–स्त्री० [सं०] राजा तृणविन्दुकी पुत्री तथा पुलस्यकी पत्नी। यही विश्रवाकी माता है (वायु० ७०.३१)।

इडूवत्सर–[सं०] (१) पु० दे० इडावत्सर (विष्णु० २.८.७२)। (२) चन्द्रमाका एक नाम (वायु० ५०.१८३; ५६.२०)। (३) पाँच वर्षवाले युगका तीसरा वर्ष—पुराणानुसार सोम (वायु० ३१.२७)।

इद्धवालुक–पु० [सं०] एक प्रकारका नरक (मत्स्य० १४१-७०)।

इध्मवाह–पु० [सं०] (१) दृढ़च्युतका पुत्र और अगस्त्य ऋषिका पोता, एक ऋषि (भाग० ४.२८.३२; १.१९.९)। (२) अगस्त्यका पुत्र तथा क्रतुका दत्तक पुत्र (मत्स्य० २०२.८-९)।

इध्मजिह्व–पु० [सं०] प्रियव्रत तथा वर्हिष्मतीके दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्र। इनकी एक वहिन थी—ऊर्जस्वती। प्लक्षद्वीपके अधिपति होनेपर इन्होंने उसे सात खण्डोंमें विभक्त कर अपने सात पुत्रोंमें वाँट दिया और स्वयम् तपस्या करने चले गये (भाग० ५.१.२५)।

इरा–स्त्री० [सं०] (१) कश्यप ऋषिकी एक पत्नीका नाम जो वनस्पतियों तथा उद्भिजोंकी माता थी। (२) सरस्वतीका एक नाम (भाग० १०.१३.५७)। (३) दक्षकी पुत्री तथा कश्यपकी पत्नी जिनकी लता, अलता (वायु० वल्ली) और वीरुधा—(वे वृक्ष जो काटनेके वाद पुनः वढ़ जाते हैं) तीन कन्याएं थीं। ये वृक्षों, पौधे तथा घासकी माताएं हुईं। लतासे विना पुष्पके वनस्पति, अलता या वल्लीसे पुष्पोंसे फलग्रहण करनेवाले वृक्ष और विरुधासे झाड़ीदार पेड़, लताएँ और घास उत्पन्न हुए। (ब्रह्मा० ३.७.४५९-६३, ४६८; मत्स्य० ६.२,४६; १४६.१९; वायु० ६९-३३९-४२; विष्णु० १.१५.१२५; २१.२४)।

इरागर्भशिरस्–पु० [सं०] कश्यपजीका दनुमें उत्पन्न १०० पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (मत्स्य० ६.१८)।

इरावान्–पु० [सं०] नागकन्या उलूपीके गर्भसे उत्पन्न अर्जुन पाण्डवके एक पुत्रका नाम (महाभारत; भाग० ९.२२.३२; विष्णु० ४.२०.४९)।

इरावती–स्त्री० [सं०] (१) कश्यप ऋषिकी पुत्री जो इनकी पत्नी भद्रमदाके गर्भसे उत्पन्न हुई थी तथा ऐरावत नामक महागजकी माता थी। यही ऐरावत इन्द्रका वाहन वना और अंजन (हाथी) इसीका पुत्र था (ब्रह्मां० ३.७.२९२, ३२७,३३९)। (२) उत्तरकी पुत्री तथा परीक्षितकी पत्नीका नाम। उसके जनमेजय आदि चार पुत्र हुए (भाग० १.१६.२)। (३) एकादश रुद्रोंमेंसे नवम रुद्रकी पत्नीका नाम (भाग० ३.१२.१२)। (४) हिमालयकी तलहटीसे निकली एक नदी जो पितरोंके लिए अति पवित्र है (ब्रह्मां० २.१६.२५; वायु० ४५.९५)। इसे हव्यवाह (अग्नि) की पत्नी कहा है जो त्रिपुरारिके रथमें रहती है (मत्स्य० २२.१९; ५१.१३; १३३.२३; ब्रह्मां० २.१२.१५; वायु० २९.१३)। (५) क्रोधवशाकी पुत्री तथा पुलहकी पत्नी, जिनके गर्भसे ऐरावण, कुमुद, अंजन और वामन ये चार पुत्र हुए (ब्रह्मां० ३.७.१७२, २९०-२९२)। (६) क्रोधाकी पुत्री तथा ऐरावतकी माता (वायु० ६९.२०५, २११)।

इल–पु० [सं०] (१) कर्दम प्रजापतिके एक पुत्रका नाम जो वाल्हीक देशका राजा था। यह वड़ा प्रतापी राजा हो गया है। (२) वैवस्वत मनुका ज्येष्ठ पुत्र जो पुत्रेष्टिसे उत्पन्न हुआ था। दिग्विजयके समय यह शरवण वाटिका पहुँचे जहाँ शिव और उमा क्रीड़ा करते हैं। पार्वतीजीने पहलेसे ही ऐसा नियम वना रखा था कि जो इस उपवनमें प्रवेश करेगा वह स्त्री हो जायगा। राजाको यह नियम ज्ञात नहीं था। शापवश वाटिका प्रवेशके वाद 'इल', 'इला' (स्त्री) हो गये। राहमें सोमपुत्र वुधसे भेंट हुई और यह उनके साथ स्त्री रूपमें रहे। इक्ष्वाकु तथा उनके भाई इलके खो जानेसे दुःखी थे तव वशिष्ठसे सारा रहस्य मालूम हुआ और वशिष्ठकी ही सलाहसे इक्ष्वाकुके अश्वमेधके वाद 'इल' किंपुरुष हो गया। यह एक महीने पुरुष और दूसरे महीने "इला" रहने लगा। इलाके गर्भसे पुरूरवा हुए जो पहिले चन्द्रवंशी थे (मत्स्य० ११.४०-६६; १२.१-१४)।

इलबिला–स्त्री० [सं०] (१) विश्रवाकी पत्नी तथा कुवेरकी माता—दे० इडविडा। (२) पुलस्त्यकी पत्नीका नाम। (३) तृणविन्दुकी पुत्री (ब्रह्मां० ३.८.३७; विष्णु० ४.१.४७)।

इला–स्त्री० [सं०] (१) वैवस्वत मनुकी कन्या, वुधकी पत्नी तथा पुरूरवाकी माता—दे० इल २; मत्स्य० ११.४०६६; १२.१-१४। (२) राजा इक्ष्वाकुकी एक पुत्रीका नाम। (३) कर्दम प्रजापतिके एक पुत्रका नाम जो पार्वतीके शापसे स्त्री हो गया था। (४) शुकोक्ति सुधासागरके अनुसार दक्ष प्रजापतिकी साठ कन्याओंमेंसे एकका नाम। यह कश्यप ऋषिको व्याही थी और पृथ्वी फोड़ कर निकलने-

वाली सब वृक्ष जातियाँ, इलाकी सन्तान हैं (ब्रह्मां० ३.७.४५९-६३, ४६८; मत्स्य० ६.२,४६; १४६.१८; वायु० ६९.३३९-४२; विष्णु० १.१५.१२५; २१.२४)। (५) पृथ्वी माता, जिसकी पूजा शारीरिक शक्तिके लिए होती है (भाग० २.३.५)। मत्स्यावतारमें विष्णुने इसका उद्धार किया था (भाग० ११.४.१८)। (६) रुद्रकी पत्नियोंमेंसे एक (भाग० ३.१२.१३)। (७) वायुकी एक पुत्री तथा ध्रुवकी एक रानी जो उत्कलकी माता थी (भाग० ४.१०.२)। (८) वैवस्वत मनुकी एक पुत्री जो उनके अश्वमेध यज्ञसे होताके संकल्प-व्यतिक्रमवश पुत्रके बदले उत्पन्न हुई थी। इनके पिताको इनके जन्मसे दुःखी देख वशिष्ठने इन्हें पुरुप वना सुद्युम्न नाम रख दिया—दे० इड़ा। यह शिवके शरवणमें प्रवेश करनेसे वहाँ पार्वतीजी द्वारा दिये गये शापरूप नियमसे पुनः स्त्री बन गया और बुधके पुत्र पुरूरवाकी माता वना। इसके उपरान्त यह पुनः सुद्युम्न हो गया (भाग० ९.१.१६, २२; ब्रह्मां० ३.६०.६; विष्णु० ४.१.९-१२; ६.३४)। (९) बुधकी पत्नी तथा पुरूरवाकी माताका नाम (दे० इल २; भाग० ९.१४.१५; मत्स्य० २४.९-१०)। (१०) वसुदेवकी पत्नियोंमेंसे एक जो उरुवल्क आदि अनेक पुत्रोंकी माता थी (भाग० ९.२४.४५,४९)। (११) (इड़ा) इन्द्र तथा वरुणके प्रीत्यर्थ किये गये वैवस्वत मनुके यज्ञसे उत्पन्न इन्द्र और वरुणकी दत्तक पुत्री (वायु० ८५.७-१४)। (१२) विश्वसृजोंके यज्ञमें गृहपति (यजमान) तपस्की पत्नी (वायु० २.६)।

इलातीर्थ–पु० [सं०] गोदावरी तटपरका वह स्थान जहाँ शंकरके आदेशसे इलाने स्नान कर पुरुपका रूप धारण किया था। जहाँ राजा इलको पुरुपत्वकी प्राप्ति हुई थी वहाँ गौतमी (गोदावरी) के दोनों तटोंपर १६००० तीर्थ निवास करते हैं—दे० ब्रह्मपुराण—इलातीर्थ-माहा०।

इलापति–पु० [सं०] श्रीकृष्णके मुख्य-मुख्य (अष्टोत्तर) नामोंमेंसे एक नाम (ब्रह्मां० ३.३६.२९)।

इलापर्ण, एलापर्ण–पु० [सं०] नभस् (श्रावण) में सूर्यके रथके साथ रहनेवाला एक नाग (वायु० ५२.१०)।

इलार्त–पु० [सं०] (१) जम्बूद्वीपके एक खण्डका नाम (भाग० तथा स्कन्द०)। (२) जयन्ती और ऋपभदेवके १०० पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (भाग० ५.४.१०)।

इलावृत–पु० [सं०] (१) जम्बूद्वीपके नौ खण्डोंमेंसे एक जो जम्बूद्वीपका मध्य प्रदेश है जिसके उत्तरमें नील, श्वेत और श्रृंगवान् पर्वत, दक्षिणमें निपध, हेमकूट और हिमालय है। इसके पूर्वमें और पश्चिममें माल्यवत् तथा गन्धमादन (मन्दर—विष्णु पु०) हैं। यहाँ शिवका स्थान है जिसमें प्रवेश करनेवाला पार्वतीके शापसे स्त्री वन जाता है। यहाँ न सूर्य है, न चाँद और निवासी फल-कन्द खाकर रहते हैं। वलिने यहाँ यज्ञ किया। यहीं वह बाँधा गया (मत्स्य० ११३.१९.३०; ११४.६९; १३५.२)। यहाँ जम्बू खाते हैं। यह भद्राश्व और केतुमालके बीचमें है, यहाँके प्रसिद्ध वन—चैत्ररथ, गन्धमादन, वैभ्राज और नन्दन हैं तथा यहाँ चार झीलें भी हैं (विष्णु० २.२.१५२६)। (२) पूर्वचित्ति अप्सराके गर्भसे उत्पन्न अग्नीध्रके नौ पुत्रोंमेंसे एक (चौथा) पुत्र जो इलावृतका अधिपति था (भाग० ५.२.१९; ब्रह्मां० २.१४.४६; वायु० ३३.३९,४३; विष्णु० २.१.१६-२०)।

इलिना–स्त्री० [सं०] यमकी पुत्री तथा अन्तिनारकी रानीका नाम जो ऋष्यन्त, दुष्यन्त आदि चार पुत्रोंकी माता थी और इन्हें ब्रह्मवाद प्रिय था (मत्स्य० ४९.९)।

इलिविल–पु० [सं०] दशरथके पुत्र तथा विश्वसहके पिता। इन्होंने देवासुर संग्राममें असुरोंका वध किया। प्रसन्न हुए देवताओंने वर माँगनेको इनसे कहा। इन्होंने पूछा मेरी आयु कितनी शेप है। एक मुहूर्त शेप है, देवताओंने कहा (विष्णु० ४.४.७५)।

इल्वल–पु० [सं०] (१) एक दैत्यका नाम जो सैंहिकेय असुर ह्राद और धमनिका पुत्र था। वह वातापिका बड़ा भाई आतापि था (दे० आतापि)। यह वल्वलका पिता था (भाग० १०.७८.३८)। ब्रह्मां०के अनुसार यह सिंहिका और विप्रचित्तिका पुत्र कहा गया है। यह वृत्रासुरके पक्षमें इन्द्रसे लड़ा था (ब्रह्मां० ३.६.१९; भाग० ६.१८-१५)। यह देवासुरसंग्राम (वलि और इन्द्र युद्ध) में लड़ा था। इसका युद्ध ब्रह्माके पुत्रोंसे हुआ था (भाग० ८.१०.२०,३२)। (२) सिंहिका और विप्रचित्ति दानवका पुत्र (विष्णु० १.२१.११)। (३) हिरण्यकशिपुका एक भानजा (मत्स्य० ६.२७)।

इल्वलांतक–पु० [सं०] अगस्त्य ऋपिका नाम (ब्रह्मां० ४.३७.२५; ३८.८)।

इषंधर–पु० [सं०] शाल्मलीद्वीपके निवासी कुछ जन (भाग० ५.२०.११)।

इष–पु० [सं०] (१) उत्कल पुत्र वत्सर और स्वर्वीथिके छह पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (भाग० ४.१३.१२; वायु० ५०-२०१ (२) एक सुधामाव (ब्रह्मां २.३६.२८)। (३) औनानमनके दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (मत्स्य० ९.१२)।

इषम्भर–पु० [सं०] आश्विन मासमें सूर्यके साथ रहनेवाले त्वष्टा आदिके गण, जो आश्विन मासके अधिपति हैं (भाग० १२.११.४३)।

इषश्री–स्त्री० [सं०] शरद्वतुकी दो रानियोंमेंसे एक रानीका नाम (ब्रह्मां० ४. ३२.३४)।

इषुमान्–पु० [सं०] वसुदेवके भाई देवश्रवाका कंसावतीके गर्भसे उत्पन्न पुत्र (भाग० ९.२४.४१)।

इष्टक–पु० [सं०] प्रतीत-पुत्र देवापिका एक पुत्र (वायु० ९९.२३७)।

ई

ई–स्त्री० [सं०] लक्ष्मी।

ईकार–पु० [सं०] लाल रंगके मनु। क्षत्रके प्रवर्त्तक। इसीलिए क्षत्रिय रक्तवर्ण कहे गये हैं (वायु० २६.३५)।

ईजिक–पु० [सं०] उत्तर दिशाका एक देश (ब्रह्मां० २.१६.५०)।

ईड्य–पु० [सं०] सावर्णि मनुके दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका

नाम (मत्स्य० ९.३३)।

ईडक–पु० [सं०] (१) चौथे मरुत्गणमेंसे एक मरुत्का नाम (वायु०६ .७१२७)। (२) पाँचवें मरुत्गणमेंसे एक मरुत्का नाम (वायु० ६७.१२८)। (३) ४९ मरुतोंके सात गणोंमेंसे पाँचवें और छठे गणके एक एक मरुत् (ब्रह्मां० ३.५.९६-७)।

ईरा–स्त्री० [सं०] एक नदीका नाम जिसे अन्यान्य श्रेष्ठ महानदियोंके साथ मुण्डपृष्ठ पर्वतके शिखरपर लोमश ऋषिने बुलाया था (वायु० १०८.७९)।

ईश–पु० [सं०] (१) शुक्ल यजुर्वेदकी वाजसनेयि शाखाके अन्तर्गतका एक उपनिषद जिसका प्रथम मन्त्र 'ईश' शब्दसे आरम्भ होता है। (२) शिव, जो ललिताकी कृपासे रुद्र हो गये, का एक नाम (ब्रह्मां० ४.६.७०; ३८.४०)। आदित्यके रक्षार्थं शिवकी यह (रुद्र=शिव) चौथी मूर्त्ति है (मत्स्य० २६५.४१)। (३) कश्यप और साध्याके साध्य पुत्रोंमेंसे एक साध्य (एक प्रकारके गण देवता) (मत्स्य० १७१.४३)। (४) विष्णुका एक नाम (विष्णु ६.८.५९)।

ईशचाप–पु० [सं०] शिवका धनुप जिसे श्री रामने तोड़ा था (ब्रह्मां० ३.३७.३२)।

ईशान–पु० [सं०] (१) शंकरकी आठ मूर्त्तियोंमेंसे एकका नाम (ब्रह्मां० ३.२४.४; ७३.१; ४.२०.५१; ३४.९१. ४१.६; विष्णु० १.८.६)। ईशान कोणके अधिपति (वायु० १०८.३२)। (२) ग्यारह रुद्रोंमेंसे एक। (३) शाक् द्वीपकी सीमा निर्धारित करनेवाला एक पर्वत (भाग० ५.२०.२६)। (४) दसवें कल्पका नाम (मत्स्य० २९०.५)।

ईशानपुरी–स्त्री० [सं०] अलकापुरीके पूर्वमें शंकरकी ईशानपुरी है, जहाँ शंकरके भक्त निवास करते हैं। इसमें अजैकपात् और अहिर्बुध्न्य आदि ग्यारह रुद्र अधिपतिरूपसे हाथमें त्रिशूल लिये निवास करते हैं (स्कन्द० पु० काशीखण्ड पूर्वार्ध)।

ईशानव्रत–पु० [सं०] पौप शु० १४ को व्रत करे। पुष्य युक्त पूर्णिमाको चारों दिशाओंमें अक्षतोंकी चार ढेरी बना, पूर्वमें विष्णु, दक्षिणमें सूर्य, पश्चिममें ब्रह्मा तथा उत्तरमें रुद्रकी स्थापना कर अन्तमें मध्यमें अक्षतोंके ढेरपर ईशानको स्थापित करे। विधिवत् पूजन कर गोमिथुन दान करे। इस प्रकार ५ वर्षोंतक करनेसे यह व्रत पूर्ण होता है और सुख तथा धन मिलता है—"कालिका पुराण"।

ईशानी–स्त्री० [सं०] योगमाया तथा पोडश शक्तियोंमेंसे एक शक्ति (भाग० १०.२.१२; ब्रह्मां० ४.४४.८४)।

ईशिता–स्त्री० [सं०] आठ सिद्धियोंमेंसे एक सिद्धि जिसके बलपर मनुष्य सबपर शासन कर सकता है। यह दस सिद्धिदेवियोंमेंसे एक सिद्धिदेवी हैं (ब्रह्मां० ४.१९.४)।

ईशित्व–स्त्री० [सं०] (१) उत्तम सिद्धियोंमेंसे एक (ब्रह्मां० ४.३६.५१)। (२) योगकी आठ सिद्धियोंमेंसे एक (वायु० १३.३.१५)।

ईश्वर–पु० [सं०] महेश्वर और शंकर। कश्यपसे सुरभिमें उत्पन्न ११ रुद्रोंमेंसे एक रुद्र जिनका निवासस्थान ब्रह्मलोकके सामने शिवपुर है। यह त्रिमूर्त्तिके अधिपति हैं। सूर्यके अधिदेवता (ब्रह्मां० ३.३.७१; ४.३९.१२०; मत्स्य० ९३. १३; १७१.३९)। ईश्वरके १० प्रधान गुण—ज्ञान, वैराग्य, ऐश्वर्य, तप, सत्य, धैर्य, क्षमा, द्रष्टृत्व, अपना सबसे सम्बन्ध तथा सर्वाधारता। यह मायी हैं (वायु० १०१.२१५, २१९; ब्रह्मां० ४.२.२१७)। ईश्वर सारे संसारका अधिपति है (वायु० ४.३६ ४२)।

ईश्वरगौरी–पु० [सं०[एक व्रत विशेप जो चैत्र शु० ३ को होता है। यह प्रतिवर्ष करनेसे नगर, ग्राम सर्वत्र आनन्द रहता है—व्रतोत्सव।

ईश्वरप्रणिधान–पु० [सं०] योगशास्त्रानुसार पाँच नियम बतलाये गये हैं जिनमें यह अन्तिम है। इसमें ईश्वरमें अटल भक्ति रखनी पड़ती है और अपने कर्मोंका फल उसे ही अर्पित कर देना होता है।

ईश्वरसख–पु० [सं०] शंकरके सखा कुबेरका एक नाम।

ईहाशील–पु० [सं०] तामस और राजस इन दोनों विरोधी गुणोंवाले मिथुन (जोड़े) ब्रह्माजीकी जंघाओंसे उत्पन्न हुए। इसका परिणाम यह हुआ कि पुल्लिंग और स्त्रीलिंगका संयोग हो गया। इनका भोजन पृथ्वीका रस है (वायु० ८. ३९.४८)।

उ

उ–पु० [सं०] ब्रह्मा जिनके चौथे मुखसे ताँबेके रंगवाले मनु उत्पन्न हुए थे। उकार=स्वरित, ध्रुव (वायु० २६.३६)।

उक्त–पु० [सं०] नेमिचक्रका पुत्र तथा चित्ररथका पिता (भाग० ९.२२.४०)।

उक्थ–पु० [सं०] (१) ब्रह्माके पूर्वीय मुखसे उत्पन्न हुआ एक यज्ञ (सोमयाग विशेप) (भाग० ३.१२.४०)। (२) ब्रह्माके दक्षिणीय मुखसे उत्पन्न एक यज्ञ (वायु० ९.५०; ब्रह्मां० २.८.५१; विष्णु० १.५.५४)।

उखीमठ–पु० [सं०] "उपीमठ" केदारनाथके प्रधान महन्तका निवासस्थान जिसका नामकरण श्रीकृष्णकी पौत्रवधू ऊपाके नामपर हुआ। मन्दिरमें ओम्कारेश्वरकी मूर्त्तिके पीछे राजा मान्धाता और वशिष्ठकी मूर्त्तियाँ भी हैं। इन दोनोंने यहाँ तप किया था।

उग्र–पु० [सं०] (१) रुद्रका एक नाम—दे० रुद्र। भूत और सरूपाके पुत्र करोड़ों रुद्र, उनके पार्पद तथा भूतप्रेत विनायकोंमेंसे एकादश रुद्र भी हुए, उनमेंसे एक पुत्र (भाग० ६.६.१७; ब्रह्मां० ४.३४.४१; विष्णु० १.८.६)। (२) चौदह अमिताभ देवोंमें एक अमिताभ देव (ब्रह्मां० २. ३६.५३)। (३) मरुत्के सात गणोंमेंसे तीसरे गणका एक मरुत् (ब्रह्मां० ३.५.९४; वायु० ६७.१२६)। (४) यातुधानके दस राक्षस पुत्रोंमेंसे एक पुत्र। इसके पुत्रका नाम वज्रहा था, (ब्रह्मां० ३.७.८९ ९२)। (५) शिवकी अष्ट मूर्त्तियोंमेंसे एक मूर्त्ति, यजमानका अधिपति, इसका स्थान दीक्षित ब्राह्मण है (मत्स्य० २६५.४१; वायु० २७.१५)। दीक्षा इनकी पत्नी तथा संतान इनका पुत्र है (वायु० २७.५५; ब्रह्मां० २.१०.८३)। महादेवका यह

सातवाँ नाम है (ब्रह्मां० २.१०.१६)। (६) ग्यारहवें द्वापरमें विष्णुका अवतार जो गंगाद्वारमें हुआ था। इनके लम्बोदर, लम्ब, लम्बाक्ष और लम्बकेश नामक चार पुत्र थे (वायु० २३.१५२)। (७) एक असुरका नाम (अत्युग्र) (विष्णु० ५.१.२३)।

उग्रकर्मा—पु० [सं०] भण्डके आठ सचिवोंमेंसे एक सचिवका नाम (ब्रह्मां० ४.१२.१२)।

उग्रचंडा—स्त्री० [सं०] भगवतीकी मूर्त्ति विशेष जिनकी पूजा आश्विन कृष्ण नवमीको होती है। कालिकापुराणानुसार दक्ष प्रजापतिने आषाढ़की पूर्णिमाको एक बारह वर्षोंका यज्ञ प्रारम्भ किया था जिसमें उन्होंने न तो अपनी पुत्री सतीको और न अपने जामाता शिवको ही निमन्त्रण दिया। इसपर भी सती पुत्री होनेके नाते विना बुलाये गयीं। इनके समक्ष ही दक्षने शिवकी निन्दा की जिसे सहन न करनेके कारण सतीने वहीं प्राण छोड़ दियें। समाचार पाते ही शंकर अपने गणों सहित वहाँ गये। सतीने उग्रचण्डीका रूप धारण कर पतिके अनुचरोंकी सहायतासे दक्षके यज्ञका विनाश किया था—दे० कालिकापुराण तथा ब्रह्मपुराण—४०.२—१००।

उग्रतपस्—पु० [सं०] योगवेत्ता गौतम, जिन्हें चौदहवें द्वापरका अवतार माना गया है, के एक पुत्र (वायु० २३.१६३)।

उग्रदंष्ट्री—स्त्री० [सं०] मेरुकी एक पुत्री तथा आग्नीध्र-पुत्र हरिवर्षकी पत्नी (भाग० ५.२.२३)।

उग्रदृष्टि—पु० [सं०] बारह अजित देवोंमेंसे एक अजितदेव (वायु० ३१.७; ब्रह्मां० २.१३.९३)।

उग्रधन्वा—पु० [सं०] भण्डके एक सचिवका नाम (ब्रह्मां० ४.१२.१२)।

उग्ररेतस्—पु० [सं०] रुद्रका एक नाम (भाग० ३.१२.१२)।

उग्रश्रवस्—पु० [सं०] रोमहर्षणके पुत्र तथा व्यासके शिष्य सूतकी उपाधि। इन्होंने नैमिषारण्यके ऋषियोंको सृष्टिके रहस्यपर कथा सुनायी थी (स्कंद० भूमिवाराहखंड भाग० ३.२०.७)।

उग्रशेखरा—स्त्री० [सं०] गंगाजीका एक नाम। आकाशसे जब गंगाजी चलीं तब शंकरने अपनी जटामें उन्हें रोक लिया था। शंकर="उग्र" और गंगा शिवमस्तकपर स्थित हैं, अतः यह नाम पड़ा (ब्रह्म०; मार्कण्डेय० आदि)।

उग्रसेन—पु० [सं०] (१) यदुवंशीय (कुकुरवंशी) राजा आहुकके पुत्र तथा कंस आदि ९ पुत्रोंके पिता। उग्रसेनकी माताका शिराजकी पुत्री काश्या थी जिसके देवक और उग्रसेन दो पुत्र थे। उग्रसेनके नव पुत्र और पाँच कन्याएँ थीं (मत्स्य० ४४.७५)। कंस इनका क्षेत्रज पुत्र था और भाइयोंमें सबसे बड़ा था। इनकी पाँचों पुत्रियाँ वसुदेवके छोटे भाइयोंको ब्याही थीं (भाग० ९.२४.२१, २४-५; १०.१.३०; ब्रह्मां० ३.७१.१२९-१३४; २१२-३, २३०; मत्स्य० ४४.७१-७४; वायु० ९६.२०६; विष्णु० ४.१४.१६-२१)। कंस अपने श्वशुर जरासंधकी सहायतासे अपने पिता उग्रसेनको बंदी बना स्वयम् राजा बन बैठा था ("हरिवंश" तथा भाग० १०.१.६९; ३६.३४; ४४.३३; विष्णु० ५.१५.१८; १८.६)। कंसकी अंत्येष्टि क्रियाके पश्चात् श्रीकृष्णने उग्रसेनको पुनः सिंहासनारूढ़ किया (भाग० १०.४५.१२; विष्णु० ५.२१.९-१२)। जब जरासंधने मथुरापर आक्रमण किया था तब उग्रसेन उत्तरीय प्रवेश द्वारकी रक्षा करते थे। यह यादव सभाके सदस्य थे। वायुने इंद्रके यहाँसे ला इन्हें 'सुधर्मा सभा" दी थी (विष्णु० ५.२१.१३-१७,३२)। तीर्थाटन करके लौटे बलरामका इन्होंने स्वागत किया था (भाग० १०.७९.२९)। सूर्यग्रहणपर यह स्यमंतपंचक गये थे (भाग० १०.८०.२२)। हरिप्रयाणके बाद अग्निप्रवेश कर इनकी मृत्यु हुई थी (विष्णु० ५.३८.४)। (२) राजा परीक्षित्के एक पुत्रका नाम (भाग० ९.२२.३५)। (३) एक गंधर्व जो नभस्य (भाद्रपद) मासमें सूर्यरथके साथ रहता है (भाग० १२.११.३८; ब्रह्मां० २.२३.१०; विष्णु० २.१०.१०)।

उग्रसेना—स्त्री० [सं०] उग्रसेनकी पुत्री अक्रूरकी एक पत्नी जिसके गर्भसे देववान् और उपदेव दो पुत्र हुए थे (मत्स्य० ४५.३१)। वायु पु० के अनुसार उग्रसेनी (वायु० ९६.११२)।

उग्रा—स्त्री० [सं०] (१) अड़तालीस शक्ति देवियोंमेंसे एक शक्ति देवी (ब्रह्मां० ४.४४.७३)। (२) एक पिशाच-कन्याके दस पुत्रोंमेंसे पुत्रका नाम (उग्र पुं०) (वायु० ६९.१२७)।

उग्रायुध—पु० [सं०] (१) नीपका पुत्र जो क्षेम्यका पिता था (भाग० ९.२१.२९)। (२) कृतका पुत्र जो पौरव राजवंशका था। यह क्षेमका पिता था। पृथुकके पिता पांचालनीप इससे मारे गये थे। भल्लाटके पुत्र जनमेजयने इसकी सेवाकी थी। (मत्स्य० ४९.५९-७८; वायु० ९९.१८२-१९१; विष्णु० ४.१९.५३-५५)।

उच्चैःश्रवा—पु० [सं०] (१) सुरराज इंद्रके घोड़ेका नाम जो समुद्र मंथनसे निकले १४ रत्नोंमेंसे एक है। इसका रंग सफेद, कान खड़े तथा लम्बे और सात मुँह थे—दे० स्कंदादि पु०। (२) गांधर्वीके पुत्रोंमेंसे एक घोड़ा जो अन्य घोड़ोंका राजा कहा गया है (ब्रह्मां० ३.३.७६; ८.१०; मत्स्य० ८.८; वायु० ७०.१०)। वायुपुराण ६६.७३ के अनुसार भद्रासे उत्पन्न एक घोड़ेका नाम।

उज्जंत—पु० [सं०] एक पहाड़ जिसपर योगेश्वरका मन्दिर तथा वशिष्ठका आश्रम है (वायु० ७७.५२)।

उज्जयिनी—स्त्री० [सं०] (१) पवित्र ललिता पीठ यहाँ स्थित कहा गया है यह पचास पवित्र ललितापीठोंमेंसे एक है। (२) मालवादेशकी प्राचीन राजधानी जो सिप्रा नदीके तटपर स्थित है। विक्रमादित्य यहाँके प्रसिद्ध राजा हो गये हैं। यहाँ महाकालका एक अत्यंत प्राचीन मन्दिर है। यह प्रसिद्ध सप्तपुरियोंमेंसे एक है जिसका हिंदुओंके भूगोलमें वही स्थान है जो आधुनिक भूगोलमें ग्रीनविच है। इसका देशांतर ०° है (ब्रह्मां० ४.४४.९७)।

उज्जिहान—पु० [सं०] एक देश विशेषका नाम। इसका आधुनिक नाम उज्जैन है—वाल्मीकीय रामायण।

उडीरा—पु० [सं०] पवित्र ललितापीठ (ब्रह्मां० ४.४४.९८)।

उडुपति—पु० [सं०] (१) एक आंगिरस प्रवरके ऋषि (मत्स्य० १९६.१४)। (२) सोमचन्द्रकी एक उपाधि (विष्णु० ४.६.३३)।

उड्डुराट्–पु० [सं०] सोमकी एक उपाधि (ब्रह्मां० ३.५१.३५)।

उत्तंक–पु० [सं०] (१) एक ऋपिका नाम जो वेदमुनिके शिष्य थे। उपाध्यायकी आज्ञासे वेदने गृहस्थाश्रम ग्रहण किया जिसके लिए उनकी कठिन परीक्षा हुई थी। गुरु-दक्षिणामें गुरुपत्नीने पौष्य राजाको महिषीके कुंडल माँगे। जाते समय बैलपर सवार उन्हें एक मनुष्य मिला जिसने उतंकको बैलका गोबर खिलाया, आशा यह थी कि इससे उनका कल्याण होगा। बादको तक्षक द्वारा कुंडल हर लिये गये। इंद्रकी सहायतासे ये पातालसे पुनः प्राप्त किये गये। (महाभारत आदि पर्व)। (२) एक ऋपि जिन्हें धुंधुको मारकर कुवलयाश्वने प्रसन्न किया था (भाग० ९.६.२२; महाभारत वन पर्व)। (३) सौवीर नरेशके विष्णु-मन्दिरके पुजारी एक ऋपि जिनके उपदेशसे गुलिक ऐसा पातकी व्याध भी मोक्ष पा सका (नारद० पूर्वां० ३७.५,१४,१६,३८,४२,४७,५१)।

उतथ्य–पु० [सं०] (१) अंगिरस और सुरूपाके पुत्र जो स्वारोचिप युगके हैं। विचित्त और शरद्वान् इनके दो पुत्र थे। ये मान्धाताके समकालीन थे (भाग० ४.१.३५; ब्रह्मां० २.३२.९९; ३.१.१०५; ७३.९०; वायु० ६५.१००.१०१)। (२) मरीचि वर्गका एक देवता (ब्रह्मां० ४.१.५९)। (३) एक मंत्रकृत्, गोत्रकार ऋपि (मत्स्य० १४५.९३)। (४) एक बुद्धिमान् प्राचीन ऋपि जिनके छोटे भाई देवगुरु बृहस्पति तथा इनकी पत्नीका नाम समता या ममता है। किसी कारणवश बृहस्पतिके शापके फलस्वरूप उतथ्यकुमार "दीर्घतमा" जन्मांध हुए (विष्णु० ४.१९.१६)। (५) सत्रहवें द्वापरके गुहावासीका पुत्र जो आंगरिस शाखाके मंत्रकृत् थे (वायु० २३.१७७;५९.९०.१०१)।

उत्क–पु० [सं०] इक्ष्वाकुवंशीय एक राजा जो वचलका पुत्र तथा वज्रनाभका पिता था (विष्णु० ४.४.१०६)।

उत्कच–पु० [सं०] (१) भानुके गर्भसे उत्पन्न हिरण्याक्षके नौ पुत्रोंमेंसे एकका नाम (भाग० ७.२.१२)। (२) परावसु गंधर्वके अनेक पुत्रोंमेंसे एकका नाम।

उत्कचा–स्त्री० [सं०] खशा दक्ष-पुत्री, जो कश्यपसे व्याही गयी थी, की सात पुत्रियोंमेंसे एक पुत्रीका नाम जिससे युद्धदुर्मद क्रूर उत्कचेय नामक राक्षसगण पैदा हुआ (वायु० ६९.१७०)।

उत्कल–पु० [सं०] (१) एक देश विशेप जो मध्यदेशका एक राज्य है और एक सूक-पुत्र वामन हस्तीके वनके रूपमें विख्यात है। इसे आजकल उड़ीसा कहते हैं। यह राजा सुद्युम्नके पुत्र उत्कलका बसाया राज्य है (ब्रह्मां० २.१६.४२; ३.७.३५८; ६०.१८; मत्स्य० १२.१७)। यौ० उत्कलखंड=स्कंदपुराणका एक भाग। (२) वायुपुत्री इलाके गर्भसे उत्पन्न ध्रुवके पुत्र जिन्हें राजपाट पसंद नहीं था, अतः इन्होंने सारा जीवन तपस्यामें व्यतीत किया था, यह आत्माराम महायोगी थे। (भाग० ४.१०.२; १३.६-१०)। (३) वृत्रासुरका अनुयायी एक असुर जो इंद्रसे देवासुर संग्राममें लड़ा था। बलि-इंद्रयुद्धमें भी यह था और मातृकाओंसे लड़ा था (भाग० ६.१०.२०; ८.१०.२१,३३)। (४) सुद्युम्न, जो शरवणवाटिकामें प्रवेश करनेसे वहाँ प्रवेश करनेवाले पुरुषोंके लिए प्रयुक्त शिवशाप वश इला हो गया था, का पुत्र। इनके दो भाई थे गय और विनत। उत्कलराज्यका राजा तथा एक मंत्रकृत् अंगिरस ऋपि, (भाग० ९.१.४१; ब्रह्मां० ३.६०.१८; मत्स्य० १२.१७; वायु० ६९.२४०; ८५.१९; मत्स्य० १४५.१०३)।

उत्कला–स्त्री० [सं०] सम्राट्की रानी तथा मरीचिकी माताका नाम (भाग० ५.१५.१५)।

उत्कुर–पु० [सं०] हिरण्याक्षके पाँच पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (वायु० ६७.६७)।

उत्कृष्टा–स्त्री० [सं०] खशाकी सात पुत्रियोंमेंसे एक पुत्री (ब्रह्मां० ३.७.१३८)। औत्काष्टेय नामका राक्षसगण इन्हींकी सन्तति थी।

उत्क्रोश–पु० [सं०] श्रीतल (छठा पातालतल) का एक असुरेन्द्र। श्रीतलमें इसका विशालपुर है (वायु० ५०.३८)।

उत्तंक–पु० [सं०] (१) मेरु पर्वतपर निवास करनेवाले एक ब्रह्मर्पि। इक्ष्वाकु वंशोत्पन्न बृहदश्वसे इन्होंने मधुके (अरुके) पुत्र धुंधुको परास्त करनेकी प्रार्थना की थी, क्योंकि वह उन्हींके आश्रमके निकट रहता था और उनके यज्ञादि कामोंमें विघ्न डाला करता था। बृहदश्वके पुत्र कुवलाश्वने पिताकी आज्ञा पाते ही उसका वध कर डाला। धुंधुके मारनेके कारण कुवलाश्व धुंधुमार कहलाये (ब्रह्मां० ३.६.३२; ६३.३४-६०; वायु० ६८.३१; ८८.३३-६०)।

उत्तम–पु० [सं०] (१) स्वायम्भुव मनुके दो पुत्र थे—प्रियव्रत और उत्तानपाद। उत्तानपादकी सुनीति और सुरुचि नामकी दो स्त्रियाँ थीं। सुनीति ध्रुवकी माता थी और सुरुचिके गर्भसे "उत्तम" उत्पन्न हुए। ध्रुव विमातासे तिरस्कृत होनेके कारण वन चले गये और तपोबलसे अचल हो गये। उत्तमका विवाह नहीं हुआ। उनको जंगलमें एक यक्षने मार दिया और उनकी माता भी वहीं जाकर मर गयी (भाग० ४.८.९,१९; ९.२३,४८;१०.३; विष्णु० १.११.२)। (२) प्रियव्रतके एक पुत्र जो मन्वंतर अधिपति थे। यह तीसरे मनु थे तथा ब्रह्मां० के अनुसार उत्तम मनुके अज, परशु, दिव्य, दिव्यौपधि, नय, देवाम्बुज, अप्रतिम, महोत्साह, गज, विनीत सुकेतु सुमित्र ये १३ पुत्र थे। भागवतके अनुसार पवन, सृञ्जय, यज्ञहोत्र आदि पुत्र थे। इनके कालमें वशिष्ठके सात पुत्र (प्रमद आदि) सप्तर्षि थे। सत्य, वेदश्रुत तथा भद्र देवता थे एवं सत्यजित् इन्द्र थे (भाग० ५.१.२८; ८.१.२३-२४; विष्णु० ३.१.६,२४)। ब्रह्मां० के अनुसार सुशांति इन्द्र थे जो पृथ्वी रूपी गौका दूध दूहनेके लिए स्वयम् बछड़ा बने (ब्रह्मां० २.३६.३,२५, ३७;३७.१५-१६; विष्णु० ३.१.१३-१५)। (३) शाल्मलीद्वीपके सात पर्वतोंमें एक (ब्रह्मां० २.१९.३६)। (४) इक्कीसवें वेदव्यासका नाम (ब्रह्मां० २.३५.१२२)। (५) चाक्षुष युगके सप्तर्षियोंमेंसे एक ऋषि (ब्रह्मां० २.३६.७७)। (६) सत्य नामक देवगणोंके पिता (वायु० ६७.३६)। (७) चाक्षुप युगके सप्तर्षियोंमेंसे एक ऋषिका नाम (विष्णु० ३.१.२८)।

उत्तमक–पु० [सं०] मरीचिगणके १२ देवताओंमेंसे एक देवता (ब्रह्मां० ४.१.५९)।

उत्तमश्लोक–पु० [सं०] विष्णुकी एक उपाधि (भाग० १०.१.४;१२.३.१५)।

उत्तमौजा–पु० [सं०] (१) मनु सावर्णि द्वितीयके दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (ब्रह्मां० ४.१.७१)। (२) ब्रह्मसावर्णिके दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (विष्णु० ३.२.२८)। (३) पांचाल देशके राजाका पुत्र तथा युधामन्युका भाई। महाभारतके युद्धमें जिस दिन द्रोणाचार्यने जयद्रथकी रक्षा करनेकी और अर्जुनने उसे मारनेकी प्रतिज्ञा की थी उस दिन ये दोनों भाई अर्जुनके पृष्ठरक्षक बने थे और दुर्योधनसे इनका घोर युद्ध हुआ था—महाभारत। (४) मथुराके पश्चिम फाटककी रक्षाका भार जरासंधने इन्हें दिया था (भाग० १०.५०.११(५)। (५) मनुके दस पुत्रोंमेंसे एकका नाम (हि० श० सा०)।

उत्तर–पु० [सं०] (१) इरावतीके पिता तथा परीक्षित्के श्वशुर (भाग० १.१६.२)। (२) कश्यपवंशज ऋषियोंमेंसे एक प्रवर ऋषि (मत्स्य० १९९.१७)। (३) मत्स्य देशके राजा विराटका पुत्र। दुर्योधनने विराट्की गोशालापर आक्रमण करनेके लिए सुशर्माको भेजा था जिसने विराट्को बन्दी कर लिया था। युधिष्ठिर आदि अज्ञातवासमें विराटके यहाँ थे, अतः विराट्के उद्धारके लिए भीम भेजे गये जिन्होंने सुशर्माको परास्त कर दिया। दुर्योधनने पुनः आक्रमण किया तब विराट्ने अपने पुत्र उत्तरको भेजा। बृहन्नला नामक क्लीवरूपधारी अर्जुन उत्तरके सारथि बने। उत्तर विपक्षकी सेना देख भागना ही चाहता था, पर अर्जुनने जब अपना परिचय दिया तो अर्जुन रथी बने और उत्तर सारथि। दुर्योधनकी सेना परास्त हुई तथा गौओंका उद्धार हुआ। इससे प्रसन्न हो विराट्ने अपनी पुत्री उत्तरा अर्जुनके पुत्र अभिमन्युको व्याह दी थी—दे० महाभारत विराट्पर्व।

उत्तरकाशी–स्त्री० [सं०] हरिद्वारसे उत्तर बदरीनारायणके मार्गमें एक स्थान विशेष। यहाँ अर्धनारीश्वर तथा चन्द्रशेखरके मन्दिर हैं। यहाँसे तीन मीलपर कालीमठ है जहाँ कालीगंगा और मंदाकिनीके संगमपर दुर्गा, लक्ष्मी तथा सरस्वतीके मन्दिर हैं—स्कंद० पु०।

उत्तरकुरु–पु० [सं०] एक महादेश जो मेरु पर्वतसे लगा ही है। यह सुपार्श्व पहाड़ीमें शृंगवत्के उत्तर तथा समुद्रके दक्षिण है। भद्रा नदी जहाँसे बहती हुई उत्तर सागरमें गिरती है। मत्स्य० और विष्णु०के अनुसार यहाँ विष्णुका वराह अवतार हुआ और पृथ्वीमाताने उपनिषदका आश्रय ले इन्हें 'यज्ञ' तथा 'ऋतु' कह स्तुति की थी (भाग० ५.१७.८; १८.३४, ३९; ब्रह्मां० २.१५.५१,७१-८०; वायु० ३४.५७; ३५.४४-४७; ४१.८५; ४२.७७; ४९.१२०; विष्णु० २.२.१४,३८,५०)। परीक्षित्ने इसे जीता था (भाग० १.१६-१४)। यहाँके निवासी जोड़ेमें (मिथुन) उत्पन्न होते हैं तथा आपसमें उनका प्रेम चक्रवाक पक्षीकी तरह रहता है। यहाँ ऐल उर्वशीके साथ कुछ दिनोंतक रहे थे (ब्रह्मां० २.१९.१२४; ३.५९.४६; ६६.७; मत्स्य० ८३.३४, १०५.२०; ११३.४४; १२३.२५; वायु० ९१.७) यह पवित्र तीर्थ है। यहाँ औषधी रूपमें देवी स्थापित हैं (मत्स्य० १३.५०)।

उत्तरकोशल–पु० [सं०] अयोध्याके पासका एक देश=अवध।

उत्तरकोशला–स्त्री० [सं०] अयोध्यानगरी जहाँ लवका राज्य था (वायु० ८८.२००)।

उत्तरखंड–पु० [सं०] पुराणानुसार केदारखंडका एक आधुनिक नाम जो टेहरी गढ़वाल राज्यमें स्थित है, जहाँके बदरीनाथजी आदिके मन्दिर मई महीनेसे नवम्बर महीनेतक ही खुले रहते हैं। यहाँ पाँच केदारेश्वर हैं केदारनाथ, मध्यमहेश्वर, तुँगनाथ, रुद्रनाथ और कल्पेश्वर। पाँच बद्रीनाथ भी हैं—विशालबद्री, ध्यानबद्री, योगबद्री, वृद्धबद्री तथा भविष्यबद्री। इस क्षेत्रमें प्रयाग भी पाँच हैं—देवप्रयाग, रुद्रप्रयाग, कर्णप्रयाग, नन्दप्रयाग और विष्णुप्रयाग। इन तीर्थोंके अतिरिक्त यहाँ पाँच पवित्र शिला-खंड भी हैं—नारद शिला, नरसिंह शिला, वराह शिला, गणेश शिला और कुबेर शिला—दे० नारद० उत्तर भाग; स्कंद० वैष्णवखंड बदरीकाश्रम-माहा०।

उत्तरगांधारी–स्त्री० [सं०] एक मूर्च्छनाका नाम जिसका अधिदेव वसु है—संगीत शास्त्रानुसार सात स्वर, तीन ग्राम, इक्कीस मूर्च्छना और उनचास ताल कहे गये हैं। उन्हीं इक्कीस मूर्च्छनाओंमें यह एक मूर्च्छना है (वायु० ८६.६६)।

उत्तरपंचाल–पु० [सं०] एक राज्य जहाँ पुरंजन अपनी पुरीके दक्षिण द्वार देवहूके रास्ते गये थे (भाग० ४.२५.५१; २९.१३)।

उत्तरपथ–पु० [सं०] स्वर्ग जानेका मार्ग जिसमें नागवीथि, गजवीथि और ऐरावती वीथि सम्मिलत हैं (ब्रह्मां० २.७.१२४; ३५.११२; ३.३.४९)।

उत्तरमानस–पु० [सं०] एक पवित्र झीलका नाम जो पुण्डरीक और पयोद सरोंसे उत्पन्न है और इससे मृग्या और मृगकान्ता नदियां निकली हैं (मत्स्य० १२१.६९; वायु० १११.४)।

उत्तरमालिका–स्त्री० [सं] अन्धकासुर-संग्राममें अन्धकरक्तपानके लिए शिवजी द्वारा सृष्ट देवी रेवतीकी अनुगामिनी एक देवी (मत्स्य० १७९.७२)।

उत्तरा–स्त्री० [सं०] मत्स्यराज विराट्की पुत्री, अर्जुन (पांडव) की पुत्रवधू तथा अभिमन्युकी पत्नीका नाम जो राजकुमार उत्तरकी बहिन थी। बृहन्नला नामधारी अर्जुनने अज्ञातवासकालमें इसे संगीत तथा नाट्य शास्त्रादिकी शिक्षा दी थी। इसका विवाह अभिमन्यु (अर्जुन तथा सुभद्राका पुत्र) से हुआ था। महाभारतके युद्धमें अभिमन्युकी मृत्युके समय यह गर्भवती थी। अर्जुन द्वारा मणि काटे जानेके कारण क्रुद्ध होकर अश्वत्थामाने (द्रोणाचार्यका पुत्र) अर्जुनका वंशलोप करनेकी अभिलापासे उत्तराके गर्भपर ब्रह्मशिर अस्त्रका प्रयोग किया था जिससे गर्भस्थ बालक परीक्षित् मर गया था। तदंन्तर श्रीकृष्णने संजीवनी मन्त्र द्वारा उस बच्चेको जीवित किया (महाभारत; वायु० ९९.२४९; भाग० १.८.९-१०; ९.२२, ३३; ३.३.१७; १.१२.१)।

उत्तरापथ–पु० [सं०] विन्ध्याचल पर्वतसे उत्तरका देश जहाँ कारूपवंश राज्य करता था (भाग० ९.२.१६; ब्रह्मां० ३.६३.१०; वायु० ८८.१०)।

उत्तरार्क–पु० [सं०] गयाका सूर्य (वायु० १०९.२१)।

उत्तरारणी–स्त्री० [सं०] अग्निमंथनकी दो अरणीकी लंकड़ियोंमेंसे ऊपरकी लकड़ीका नाम।

उत्तरेश्वर–पु० [सं०] पवनपुरमें स्थित एक तीर्थ जब वायुपुत्र हनुमान अञ्जनीके गर्भसे उत्पन्न हुए तब वायुने इस तीर्थका निर्माण किया इसमें स्नान तथा देवदर्शन करनेसे ब्रह्महत्या छूट जाती है। यहाँ पूजा वाड़व करते थे (वायु० ६०.७१)।

उत्तानपाद–पु० [सं०] (१) विष्णु०के अनुसार यह स्वायंभुव मनुका पुत्र था जिसकी माता शतरूपा थी और प्रियव्रत इसका छोटा भाई। इनकी दो रानियाँ थीं—सुनीति और सुरुचि। राजा सुरुचिको अधिक चाहते थे। सुनीतिके गर्भसे विख्यात "ध्रुव" (भाग० ३.१२.५४; १४.५; २१.२; ४.१९; ब्रह्मां० १.१.५७; २.९.४१; २९. मत्स्य० ४.३४; १४३.३८; वायु० १.६६, १२३) तथा सुरुचिके गर्भसे "उत्तम" उत्पन्न हुए थे। एक दिन ध्रुव राजाकी गोदमें बैठ गये, पर सुरुचिने डाँटकर उतार दिया। ध्रुव दुःखी हो माता सहित वन चले गये। नारदसे यह समाचार सुन उत्तानपाद अपनी करनीपर पश्चात्ताप करने लगे, लेकिन नारदने विश्वास दिलाया कि ध्रुव बड़ी प्रतिष्ठा के साथ लौटेगा (भाग० ४.८.८-१३,६५-६९; मत्स्य० १२५.५; १२७.२२. वायु० ५१.६)। (२) चाक्षुप मनुके वंशमें धर्मकी पुत्री सुनृताके गर्भसे उत्पन्न अत्रिके एक पुत्र। इनके चार पुत्र और दो पुत्रियाँ थीं (ब्रह्मां० २.३६.८४-९०; वायु० ६२.७२)।

उत्तानबर्हि–पु० [सं०] शर्यातिके तीन पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (भाग० ९.३.२७)।

उत्तालतालभेत्ता–पु० [सं०] श्रीकृष्णका एक नाम (ब्रह्मां० ३.३६.२८)।

उत्पन्नाएकादशी–स्त्री० [सं०] मार्गशीर्षकी कृष्ण ११ का नाम। इस दिन तिथिनिर्णय तथा व्रत-नियमके अनुसार व्रत और पूजन करे। विष्णुके शरीरसे उत्पन्न एक स्त्रीने इसी तिथिको "मुर" दानवको मारा था। कैटभ देश निवासी सुदामाने इस व्रतको किया था—दे० भविष्योत्तर।

उत्पलाक्षी–स्त्री० [सं०] सहस्राक्षमें स्थापित एक देवीका नाम (मत्स्य० १३.३४)।

उत्पलावती–स्त्री० [सं०] मलय पर्वतसे निकलनेवाली दक्षिणापथकी एक नदीका नाम (ब्रह्मां० २.१६.३६; मत्स्य० ११४.३०; वायु० ४५.१०५)।

उत्पलावर्तक–पु० [सं०] एक पवित्र तीर्थ जहाँ 'लोला' देवी स्थापित है (मत्स्य० १३.४५)।

उत्सर्ग–पु० [सं०] मित्र और रेवतीका एक पुत्र (भाग० ६.१८.६)।

उत्साह–पु० [सं०] नारायण और श्रीका पुत्र (वायु० २८.२)।

उत्सुक–पु० [सं०] रेवती और बलरामका एक पुत्र (वायु० ९६.१६४)।

उदंक–पु० [सं०] वसुमित्रका पुत्र तथा पुलिंदकका पिता (विष्णु० ४.२४.३५)।

उद–पु० [सं०] चाक्षुप मन्वन्तरके प्रसूत, भाव्य, पृथुक और लेख इन पाँच देवगणोंमेंसे तीसरे देवगण भाव्यगणका एक देव (ब्रह्मां० २.३६.७१)।

उदक–पु० [सं०] (१) अरण्यके पुत्र तथा वारुणीके भाई। यह वरुण हो गया था, इसलिए इसकी बहन वारुणी कहलायी (ब्रह्मां० २.३६.१०४)। (२) एक प्रस्थका ७ वां भाग एक तौल। सात उदकोंका = प्रस्थ—वायु० १००.२१५)। (३) एक ऋषि जिनका धुंधु असुरने अपकार किया था और जिनकी प्रार्थनापर कुवलाश्वने धुंधुको मारकर धुंधुमार उपाधि प्राप्त की (विष्णु० ४.२.४०)।

उदककृच्छ्र–पु० [सं०] एक व्रतविशेष जिसमें एक महीनेतक केवल जौका सत्तू और जल पीनेका विधान है—विष्णुस्मृति।

उदक्या–स्त्री० [सं०] स्त्रियोंके रजोधर्मकी अवस्था जिसमें वे तीन दिनतक अशुद्ध रहती हैं (ब्रह्मां० ३.१४.८७-८; वायु० ७९.२४)।

उभक्षय–पु० [सं०] महावीर्य-सुत भीमका पुत्र तथा विशालाका पति जिसके तीन पुत्र थे (वायु० ९९.१६२)।

उदक्सेन–पु० [सं०] विष्वक्सेनका पुत्र तथा भल्लाट (विष्णु० के अनुसार भल्लाभ) का पिता (मत्स्य० ४९.५९; वायु० ९९.१८१; विष्णु० ४.१९.४६-७)।

उदक्स्वन–पु० [सं०] विष्वक्सेनका पुत्र तथा भल्लादका पिता (भाग० ९.२१.२६)।

उदय या उदयगिरि–पु० [सं०] शाकद्वीपके सात महापर्वतोंमेंसे एक पर्वत जिसका रंग सुनहला है। इसमें वृष्टिके लिए मेघ पैदा होते हैं और इधर-उधर जाते हैं। (मत्स्य० १२२.८; १६३.६९; वायु० ४९.७८; विष्णु० २.४.६२)।

उदयन–पु० [सं०] (१) अवंती देशके एक राजा, जो शतानीक पुत्र महाराज सहस्रानीकके पुत्र थे। यह पुरुके वंशके थे तथा वत्सके राजा होनेके कारण इनकी उपाधि वत्सराज थी। इनका विवाह उज्जयिनीकी राजकुमारी वासवदत्तासे हुआ था और कौशांबी इनकी राजधानी थी जिसे वत्सपत्तन भी कहते हैं (कथासरित्सागर० २.६-८९) (२) अगस्त्य ऋषिका एक नाम, (भाग०, ब्रह्मां० मत्स्य० आदि)। (३) शतानीकका पुत्र तथा वहीनर (विष्णु० के अनुसार अहीनर) का पिता (मत्स्य० ५०.८६; विष्णु० ४.२१.१५)। (४) अर्भकका पुत्र तथा नंदिवर्धनका पिता (विष्णु० ४.२४.१६–१७)।

उदयाचल–पु० [सं०] पूर्व दिशाका एक पर्वत जहाँसे सूर्यका उदय होना माना गया है, अतः इसे 'उदयाद्रि' भी कहते हैं। यह शाकद्वीपमें है और महाराज पृथुके राज्यकी सीमा निर्धारित करता था (भाग० ४.१६.२०; ब्रह्मां० २.१९.८४-५)। यह अगस्त्य ऋषिको अति प्रिय था (वायु० १०८.४६)।

उदयाद्रि–पु० [सं०] दे० उदयाचल।

उदासी–पु० [सं०] देवकीके गर्भसे उत्पन्न वसुदेवका एक पुत्र (मत्स्य० ४६.१३)। भागवतके अनुसार उद्गीथ (भाग० १०.८५.५१); ब्रह्मां०के अनुसार उदर्षि (ब्रह्मां० ३.७१.१७५); विष्णु०के अनुसार उदायु (विष्णु० ४.१५.२६–७)।

उदयी–पु० [सं०] दर्भकका पुत्र जिसने गंगाके दक्षिणी तटपर कुसुमपुर नामका श्रेष्ठ नगर बसाया था और ३३ वर्ष

राज्य किया (ब्रह्मां० ३.७४.१३२; वायु० ९९.३१८–९)।

उदरेणु–पु० [सं०] कुशिकवंशीय एक ऋपिका नाम (मत्स्य० १९८.१८)।

उदश्रवा–पु० [सं०] चारिष्णव-मन्वन्तरमें वशिष्ठ प्रजापतिके १८ पुत्र अमृताभ देवोंमेंसे एक (वायु० ६२.४६)।

उदान–पु० [सं०] (१) स्वायंभुव तथा स्वारोत्रिष मन्वन्तरके एक तुषित देवका नाम (वायु० ६६.१८)। (२) तेरहवें कल्पका नाम (मत्स्य० २९०.६)। (३) पञ्चम नामके इक्कीसवें कल्पमें ब्रह्माके पाँच मानस पुत्रोंमेंसे एक मानस पुत्र (वायु० २१.४७)।

उदारधी–पु० [सं०] प्राचीनगर्भ तथा सुवर्चाका पुत्र जो पूर्वजन्ममें तपोबलसे इन्द्र हो गया था। यह भद्राका पति तथा दिवंजयका पिता था (ब्रह्मां० २.३६.९९-१०१; वायु० ६२.८५)।

उदावसु–पु० [सं०] मिथिलाधिपति जनकका पुत्र तथा नंदिवर्धनका पिता (भाग० ९.१३.१४; ब्रह्मां० ३.६४.६; वायु० ८९.६,७; विष्णु० ४.५.२४,२५)।

उदावह–पु० [सं०] आवह, प्रवह आदि सात मरुतोंमेंसे एक। ये उत्पातसूचक ग्रह हैं तथा सर्वलोकक्षयके लिए प्रादुर्भूत होते हैं (मत्स्य० १६३.३२)।

उदावहि–पु० [सं०] कुशिकवंशीय एक ऋपिका नाम (मत्स्य० १९८.१८)।

उदित–पु० [सं०] दस सुपार देवोंमेंसे एकका नाम।

उदीची–स्त्री० [सं०] मुण्डपृष्ठ पर्वत (गया स्थित) के शिखरपर लोमश ऋषि द्वारा आहूत वहुत-सी नदियोंमें एक नदीका नाम (वायु० १०८.८०)।

उदीचीतीर्थ–पु० [सं०] गयाके दक्षिणमानस नामके सरोवरके वाद इसीका महत्त्व है इसका उत्तरमानस भी नामोन्तर है (वायु० १११.६)।

उदुम्बर–पु० [सं०] एक त्र्यार्षेय (मत्स्य० १९८.२०)।

उदुम्बरवन–पु० [सं०] शिशिर और पतंग पर्वतोंके मध्यमें स्थित एक वन जहाँ कर्दम प्रजापतिका आश्रम था (वायु० ३८.३)।

उद्गल–पु० [सं०] १३ धर्मिष्ठ कौशिकश्रेष्ठोंमेंसे एक कौशिक ऋपिका नाम (ब्रह्मां० २.३२.११७)।

उद्गाता–पु० [सं०] यज्ञमें औद्गात्र कर्म करनेवाले एक याज्ञिक (ऋपि) जिनकी सृष्टि पहले विष्णुने की थी। यह हंसनारायणके मुखसे उत्पन्न हुए थे (भाग० ९.१६.२१; ब्रह्मां० ३.७२.२९)। यह उद्गाता सामवेदके वड़े ज्ञाता (सामग) होते हैं (मत्स्य० १६७.७; २४६.१२)। पहले एक यजुर्वेद ही था। भगवान् विष्णुने वेदव्यासके रूपमें अवतीर्ण होकर उसको चार विभागोंमें विभक्त किया—ऋग्, यजु, साम और अथर्वके रूपमें। विभाग चार होता (याज्ञिक) जिसमें आवश्यक हैं उस यज्ञकी निष्पत्तिके लिए करना पड़ा। यजुर्वेदसे आध्वर्यव (अध्वर्युका कार्य), ऋग्वेदसे हौत्र (होताका कार्य), सामवेदसे औद्गात्र (उद्गाता कार्य) एवं अथर्ववेदसे ब्रह्मत्व (ब्रह्माका कार्य) होता है। यज्ञमें अध्वर्यु, होता, उद्गाता और ब्रह्मा—ये चार प्रकारके मुख्य ऋत्विग् होते हैं। ये अपने-अपने वेदके पारंगत विद्वान् होने चाहिये (वायु० ६०.१७)।

उद्गारी–पु० [सं०] वृहस्पतिकी गतिके अनुसार १२ युग माने गये हैं और वारहवें युगके दूसरे वर्षको 'उद्गारी' कहते हैं जिसमें राजक्षय तथा असमान वृष्टि होती है। इसे रक्तोद्गारी भी कहते हैं (हि० श० सा०)।

उद्गीथ–पु० [सं०] (१) सामवेदकी पञ्चविध, सप्तविध, उपासनाओंमें एक उद्गीथोपासना भी है ॐका भी उद्गीथ नाम है (छान्दोपनिपद् प्रथम, द्वितीय अध्याय)। (२) भूमन् और ऋपिकुल्याका पुत्र। देवकुल्याके गर्भसे प्रस्ताव नामक इनका पुत्र उत्पन्न हुआ था (भाग० ५.१५.६; ब्रह्मां० २.१४.६७; वायु० ३३.५६)। (३) देवकी तथा वसुदेवका पुत्र जिसे कंसने मार डाला था (भाग० १०.८५.५१–५६)।

उद्दालक–पु० [सं०] (१) एक ऋपि जिनका आश्रम हिमालयके पूर्वतटपर था जिसे कलापग्राम कहते हैं। जिनके पुत्र श्वेतकेतु वड़े प्रसिद्ध थे (वायु० ४१.४४)। (२) एक व्रत विशेष जिसे सोलह वर्षकी अवस्था होनेपर भी गायत्रीकी दीक्षा न मिली हो उसे यही व्रत करना पड़ता है। इसमें दो महीने जौ, एक महीने दूध-दहीका शर्वत, आठ रात घी और ६ रात विना माँगे पदार्थपर निर्भर करना पड़ता है, तदुपरान्त तीन रात केवल जल पीकर २४ घण्टेका उपवास करनेका विधान है (प्रायश्चित्त-प्रदीप, कृत्यप्रदीप, शुद्धिप्रदीप=आचार्य कृष्णमिश्र)।

उद्धव–पु० [सं०] (१) वृहस्पतिके एक शिष्य, वृष्णियोंके मन्त्री और श्रीकृष्णके एक सखा, एक यादव। श्रीकृष्णका सन्देश लेकर यह गोकुल आये थे और फिर मथुरा लौट गये। श्रीकृष्णतमान गोपियोंने भ्रमरके रूपमें इन्हें उपालंभ दिया था (भाग० १०.४६ और ४७ पूरा)। जरासन्धके युद्धमें तथा युधिष्ठिरके राजसूय यज्ञादिमें इनसे राय ली जाती थी। यह यादव सभाके सभासद थे। जरासन्धके आक्रमणके समय यह मथुराके पूर्वी द्वारकी रक्षा करते थे। महाभारत युद्ध आदि देवकार्यके पश्चात् जव ब्रह्मा आदि देवता श्रीकृष्णको वैकुण्ठ ले जानेके लिए अत्यन्त उत्कण्ठित थे तव उद्धवने भी साथ जानेकी इच्छा प्रकट की थी। श्रीकृष्णने इन्हें वदरिकाश्रम जा, वल्कल वस्त्र पहन तथा कन्द फल-फूल खाकर तपस्या करनेको कहा, तदनन्तर अलकनन्दाके दर्शन करनेकी सलाह दी। पौण्ड्रकको हरानेमें इन्होंने यदुका साथ दिया था। श्रीकृष्णके अनेक उपदेशोंको सुनकर इन्होंने वदरिकाश्रमको अपना निवासस्थान वनाया जहाँ इनके जीवनके शेप दिन वीते थे (भाग० ११.६.४०–४९; ११.७.१–२९; ३०.१) तथा (भाग० ३ अध्याय १–४ पूरा, १२.१२.८; विष्णु० ५.३७.३१–३७)। (२) वसुदेवानुज देवभागके पुत्रका नाम (मत्स्य० ४६.२३)।

उद्भव–पु० [सं०] राजा नहुपके सात धार्मिक पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (मत्स्य० २४.५०)।

उद्भिज्ज–पु० [सं०] (१) कुशद्वीपके अधिपति ज्योतिष्मानके सात पुत्रोंमेंसे एक पुत्र जिसके नामपर उद्भिज्ज वर्षका नामकरण हुआ था। कुशद्वीप सात पुत्रोंके नामपर सात भागोंमें विभक्त हुआ था। ये विभाग वर्षके नामसे प्रसिद्ध हुए (ब्रह्मां० २.१४.२७–२८)। (२) कुशद्वीपके एक

राज्यका नाम जिसे उद्भिद भी कहते हैं (ब्रह्मां० २.१४.२८; १९.५७; वायु० ३३.२५; विष्णु० २.४.३६)।

उद्भिद–पु० [सं०] कुशद्वीपके सात वर्षपर्वतोंमेंसे एक वर्ष-पर्वत (वायु० ४९.५२)।

उद्भ्रम–पु० [सं०] कुबेरके दो सेवकों (गणों) मेंसे एक सेवकगण (मत्स्य० १८०.९८)।

उद्यंतकगिरि–पु० [सं०] गयामें शिलाके बाँयें चरणके निकट लाकर अगस्त्यने इसे स्थापित किया। यहाँ ब्रह्मा और विष्णुने कठिन तप किया था। यहाँ पिण्डदान करनेसे पितृगण ब्रह्मपुर जाते हैं (वायु० १०८.३९, ४३,४४)।

उद्वह–पु० [सं०] तृतीय वातस्कन्ध, जो सूर्य और चन्द्रमाके मध्यमें है अर्थात सूर्यसे नीचे और चन्द्रसे ऊपर है (ब्रह्मां० ३.५.८४; वायु० ६७.११६)।

उद्वाह–पु० [सं०] विवाह चार प्रकारके बतलाये गये हैं—कालक्रीता, क्रयक्रीता, पितृदत्ता और स्वयंयुता। इसमें प्रथम वेश्या है, दूसरी दासिका, तीसरी पत्नी और चौथी गान्धर्व विवाहसे सम्बद्ध (ब्रह्मां० ४.१५.४)।

उद्वाहधन–पु० [सं०] दहेज (यौतक आदि नामोंसे अभिहित होनेवाला), जिसे दुर्योधनने साम्बके साथ अपनी पुत्रीके विवाहमें तथा देवकने देवकीके विवाहमें दिया था (भाग० १०.१.३१–३२; विष्णु० ५.३५.३८)।

उन्नत–पु० [सं०] (१) द्युतिमान्‌का एक पुत्र, इनके भाईका नाम स्वनवात था (ब्रह्मां० २.११.९)। (२) कुशद्वीपका एक सुनहला पर्वत (मत्स्य० १२२.५३)। (३) शाल्मलि द्वीपके सात महापर्वतोंमेंसे एक पर्वत (वायु० ४९.३३; विष्णु० २.४.२६)।

उन्नति–स्त्री० [सं०] दक्षकी पुत्री तथा धर्मकी १३ पत्नियों-मेंसे एक पत्नी जिसके गर्भसे दर्पका जन्म हुआ था (भाग० ४.१.४९ और ५१)।

उन्नेता–[सं०] (१) पु० इन्द्रद्युम्नका उनकी मृत्युके बाद परमेष्ठी नामका पुत्र हुआ जिसके नामसे उसका वंश प्रतीहार कहलाया। इसीलिए उसका पुत्र प्रतिहर्ता कहलाया। उक्त प्रतिहर्ता उसके पुत्रका नाम (ब्रह्मां० २.१४.६६; वायु० ३३.५६)। (२) यज्ञके १६ ऋत्विजोंमेंसे एक जिसका जन्म नारायणके चरणोंसे हुआ था (मत्स्य० १६७.१०)।

उन्मत्त–पु० [सं०] आठ भैरवोंमेंसे एक भैरवदेवका नाम (ब्रह्मां० ४.१९.७८)।

उन्मत्तभैरवी–स्त्री० [सं०] ललितादेवीकी आज्ञापालक एक शक्ति देवीका नाम (ब्रह्मां० ४.३४.६४; ३६.२५)।

उन्मत्तोदुम्बरी–स्त्री० [सं०] अन्धकासुर-संग्राममें श्रीशिव-जी द्वारा अन्धक-नाशार्थ सृष्ट मानस शक्तियोंमेंसे एक मानस पुत्री मातृका (मत्स्य० १७९.१८)।

उन्माद–पु० [सं०] नारायण और श्रीका एक पुत्र तथा संशयका पिता (ब्रह्मां० २.११.३)।

उन्मादगण–पु० [सं०] दैत्योंका एक वर्गविशेष (भाग० २.१०.३९)। दुष्ट भूत-प्रेतोंका एक वर्गविशेष (भाग० १०.६.२८)।

उन्मादन–पु० [सं०] कामदेवके पाँच बाणोंमेंसे एक—दे० अंगज।

उन्मादननाथ–पु० [सं०] समस्त भूत-प्रेतोंके अधिपति होनेके कारण भगवान् शिवका एक नाम (भाग० ४.२.१६)।

उन्मादिनी–स्त्री० [सं०] श्रीललितादेवीके चक्ररथेन्द्रके तृतीय पर्वपर बैठी कामदेवकी बाणभूत पाँच शक्तियोंमेंसे एक शक्तिका नाम (ब्रह्मां० ४.१९.६६)।

उपकोशा–स्त्री० [सं०] उपवर्षकी पुत्री तथा वररुचिकी पत्नीका नाम (कथासरित्सा० १.४.४)।

उपक्षत्र–पु० [सं०] श्वफल्कके अक्रूर आदि १४ पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (विष्णु० ४.१४.८)।

उपगुप्त–पु० [सं०] उपगुरुका पुत्र तथा वस्वनंतका पिता। कहते हैं यह अग्निका अंश था (भाग० ९.१३.२४–५)।

उपगुरु–पु० [सं०] सत्यरथका पुत्र तथा उपगुप्तका पिता (भाग० ९.१३.२४)।

उपचिति–स्त्री० [सं०] मरीचि प्रजापति तथा संभूतिकी चार पुत्रियोंमेंसे एक पुत्री। इसका पूर्णमास नामक एक भाई था (ब्रह्मां० २.११.१२)।

उपचित्र–पु० [सं०] मदिराके गर्भसे उत्पन्न वसुदेवके दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (ब्रह्मां० ३.७१.१७२)। वायु० ६९.१७० के अनु० चित्रा और उपचित्रा इनकी दो कथाएँ थी।

उपदात–पु० [सं०] त्रसु (तंसु ?) के चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (वायु० ९९.१३२)।

उपदानवी–स्त्री० [सं०] (१) वैश्वानरकी चार पुत्रियोंमेंसे एक पुत्री और हिरण्याक्षकी पत्नी (भाग० ६.६.३३–४)। (२) सद (वायु० के अनुसार यम) की एक पुत्री, ऐलीनकी पत्नी तथा दुष्यन्तकी माताका नाम (ब्रह्मां० ३.६.२३–२५; वायु० ६८.२३, २४)। (३) मयकी तीन पुत्रियोंमेंसे एक पुत्री तथा इलिनापुत्रकी पत्नी जो ऋष्यन्त आदि चार पुत्रोंकी माता थी (मत्स्य० ६.२१; ४९.१०)। (४) दैत्यराज वृषपर्वाकी पुत्री और हिरण्याक्षकी पत्नीका नाम (विष्णु० १.२१.५–६)।

उपदेव–पु० [सं०] (१) देवकके चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्र। इनकी सात बहनें थी, जो वसुदेवको ब्याही थीं (भाग० ९.२४.२२; ब्रह्मां० ३.७१.१३०; मत्स्य० ४४.७२; विष्णु० ४.१४.१७)। (२) अक्रूर और औग्रसेनीका पुत्र (भाग० ९.२४.१८; ब्रह्मां० ३.७१.११३; मत्स्य० ४५.३१; विष्णु० ४.१४.१०)। (३) बारहवें मनु रुद्रसावर्णि (ऋतु सावर्ण= वायु०), (रुद्रपुत्र सावर्णि = विष्णु०) के दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (भाग० ८.१३.२७; ब्रह्मां० ४.१.९४; वायु० १००.९८; विष्णु० ३.२.३६)।

उपदेवा–स्त्री० [सं०] देवककी सात पुत्रियोंमेंसे एकका नाम जो वसुदेवकी पत्नी तथा विजय, रोचन, वर्धमान आदि १० पुत्रोंकी माता थी (भाग० ९.२४.२३.५१; ब्रह्मां० ३.७१.१३१ और १६२; वायु० ९६.१३०.१७९; मत्स्य ४६.१७; विष्णु० ४.१४.१८)।

उपदेश–पु० [सं०] ब्राह्मणोंके दस लक्षणोंमेंसे एक (वायु० ५९.१३९)।

उपधा–पु० [सं०] एक प्रकारका योग (या छल) जिसकी सहायतासे बृहस्पतिने असुरोंको परास्त किया था (ब्रह्मां० ३.७३.४०; मत्स्य० २१५.७९; २२७.३; वायु० ७९.६५)!

उपनंद–पु० [सं०] (१) वसुदेव और मदिराके एक पुत्रका

नाम (भाग० ९.२४.४८; ब्रह्मां० ३.७१.१७१; वायु० ९६.१६९; विष्णु० ४.१५.२३)। यह अनिरुद्धको छुड़ानेके लिए बारह अक्षौहिणीके साथ वाणसे युद्ध करने वाणकी नगरी गये थे (भाग० १०.६३.३)। (२) एक वयोवृद्ध गोपका नाम जिसने अशुभ उत्पातोंके कारण बृहद्वन छोड़कर गोपोंको वृन्दावन जानेकी राय दी थी (भाग० १०.११.२०.२९)।

उपनयन–पु० [सं०] मनुष्यके सोलह संस्कारोंमेंसे एक। द्विजातियोंके अन्य संस्कारोंमें यह विशेष महत्त्वका है (विष्णु० ३.९.१)। इसमें यज्ञोपवीत धारण किया जाता है जिसके बाद ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य शूद्रोंसे भिन्न हो जाते हैं। जनेऊके पश्चात् ही इन तीन जातियोंका दूसरा जन्म समझा जाता है और ये 'द्विज' कहे जाते हैं। वेदाध्ययनके अधिकारी होते हैं। यह संस्कार ब्राह्मणका गर्भसे आठ वर्षकी अवस्थामें, क्षत्रियका ग्यारह वर्षकी और वैश्यका बारह वर्षकी अवस्थामें कर देना उत्तम समझा जाता है। सगर, कृष्ण तथा रामके यज्ञोपवीत संस्कार अधिक माहात्म्यके हैं (विष्णु० ४.३.३७; ५.२१.१९ तथा उपनयन-पद्धति; म० म० विद्याधरजी गौड़ विरचित)।

उपनिधि–पु० [सं०] भद्राके गर्भसे उत्पन्न वसुदेवका एक पुत्र (विष्णु० ४.१५.२४)।

उपनिषद्–पु० [सं०] वेदकी शाखाओंके ब्राह्मणोंके वे शीर्ष भाग जिनमें आत्मा, परमात्मा आदि अध्यात्मका निरूपण किया गया है। इनकी संख्या अबतक उपलब्धिके अनुसार जिनपर श्री शंकराचार्य आदि आचार्योंके भाष्य हैं १५२ के लगभग पहुँच चुकी है। प्रधान उपनिषदोंके नाम—ईश वा वाजसनेय, केन वा तवल्कार, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य, तैत्तिरीय, ऐतरेय, छान्दोग्य, बृहदारण्यक। अधिकसे अधिक इनका रचनाकाल ईसासे ६ शताब्दि पूर्व माना गया है। यह कठिन विषयकी एक विशद व्याख्या है। श्रुतिगीतामें इस ग्रंथका सार मिलता है (भाग० १०.८.४५; ३३; ८७.४३; १२.६.४१; ब्रह्मां० १.१.१७०; ४.४.७२; वायु० १.२००; ६.२२; २०.२५; ३०.२३१; ९७.१५८)।

उपपुराण–पु० [सं०] अठारह पुराणोंके अतिरिक्त तथा वेदव्याससे भिन्न ऋषियोंके रचित पुराण जिनकी संख्या भी अठारह कही जाती है। इनके नाम ये हैं—सनत्कुमार, नारसिंह, नारदीय, शिव, दुर्वासा, कपिल, मानव, औशनस, वरुण, कालिका, सांब, नंदिकेश्वर, सौर, पराशर, आदित्य, माहेश्वर, भार्गव और वाशिष्ठ।

उपबर्हण–पु० [सं०] (१) नारद मुनि पूर्व जन्ममें इसी नामके गन्धर्व थे। सुन्दर होनेके कारण यह सदा स्त्रियोंके समाजमें समय व्यतीत करते थे जिससे रुष्ट हो देवताओंने इन्हें शूद्र होनेका शाप दिया जिसके फलस्वरूप यह-दासी पुत्र हुए, पर ब्रह्मज्ञानी सन्त महात्माओंकी सेवा तथा शुद्ध आचरणके बलपर अन्तमें ब्रह्म-पुत्र हुए (भाग० ७.१५.६९–७३)। क्रौंचद्वीपके सात प्रधान पर्वतोंमेंसे एक पर्वतका नाम (भाग० ५.२०.२१)।

उपबिम्ब–पु० [सं०] भद्रा और वसुदेवके चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (ब्रह्मां० ३.७१.१७३; वायु० ९६.१७१)।

उपमद्गु–पु० [सं०] अक्रूरके एक भाईका नाम, जिनके कई भाई तथा सुतारा नामकी एक बहन थी (विष्णु० ४.१४.८–९; वायु० ९६-११०)।

उपमन्यु–पु० [सं०] (१) इन्द्रप्रमितिमका पृथुपुत्रीसे उत्पन्न पुत्र वसु इनके पिता थे। इनके वंशज सब 'औपमन्यव' कहे जाते थे (वायु० ७०.८९)। (२) छियासी श्रुतर्पियोंमेंसे एक श्रुतर्पि तथा मध्यमाध्वर्यु जो एक वसुके पुत्र तथा महर्पि आयोद धौम्यके शिष्य थे। यह अत्यन्त गुरुभक्त थे जिनके आशीर्वचनसे इन्हें समस्त वेद और धर्मशास्त्र कण्ठस्थ हो गये थे। इन्होंने श्रीकृष्णको शिवमन्त्रकी दीक्षा दी थी तथा इनके अनुयायी औपमन्यव कहलाये (ब्रह्मां० २.३३.३, १५; ३.८.९८)।

उपमा–स्त्री० [सं०] ब्रह्मक्षेत्रकी देवीका नाम (वायु० ५९.१३०)।

उपमाय–पु० [सं०] भण्डासुरका पुत्र जो उसका सेनानायक भी था (ब्रह्मां० ४.२१.८४; २६.४९)।

उपयाजि–पु० [सं०] यज्ञमें किये जानेवाले कुछ हवन विशेप जिसके देवता सुधर्मा हैं (यज्ञतत्त्व-प्रकाश = म० म० पं० चिन्नस्वामिशास्त्री प्रणीत तथा यज्ञमीमांसा = वेणीरामशर्मा प्रणीत)।

उपराग–पु० [सं०] ग्रहण, ग्रहणमें किये जानेवाले कृत्य, पूजा, दानादि विशेषकर अमरकंटकमें (मत्स्य० १७.११; १८.२२; ६७.१–२५; ८२.२५; ८३.८; १८८.८५,९५; १९३.५५, ५६; वायु० ७८.३–४)।

उपरागा–स्त्री० [सं०] कालचक्रके पोडशदल कमलमें स्थित महाकालकी पोडश शक्तियोंमेंसे एक शक्तिदेवीका नाम (ब्रह्मां० ४.३२.१३)।

उपरिचर–पु० [सं०] एक चन्द्रवंशी राजा जो च्यवनके पौत्र और कृती (विष्णु पुराणानुसार कृतक) के पुत्र थे। यह एक वसु थे। बृहद्रथ आदि इनके कई (सात विष्णु०के अनु०) पुत्र थे (भाग० ९.२२.५; विष्णु० ४.१९.८०–८१)। यह चेदि प्रदेशके राजा थे। इनके पाँच पुत्र थे। पहले यह मृगयाप्रेमी थे, पर बादको तप करने लगे। इंद्रने प्रसन्न होकर एक माला और लाठी इनको दी। मछलीरूपी अद्रिका अप्सराके गर्भसे उत्पन्न इनका मत्स्य नामक एक पुत्र तथा सत्यवती नामकी पुत्री थी। यही सत्यवती व्यास-माता बनी तथा शांतनुसे इसका ब्याह हुआ था (महाभा० आदि ६३.१-११)।

उपरिमंडल–पु० [सं०] एक भार्गव गोत्रकार ऋषिका नाम (मत्स्य० १९५.२५)।

उपलम्भ–पु० [सं०] शैब्यकी कन्या रत्ना और अक्रूरके एकादश पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (मत्स्य० ४०.२९)।

उपवर्ष–पु० [सं०] वेदान्तके अनेक आचार्योंमेंसे एक प्रधान आचार्यका नाम। इनकी उपकोशा नामकी पुत्रीका विवाह वररुचिसे हुआ था। (कथासरित्सा० १.४.१७) तथा उपकोशा।

उपवाह्यका–स्त्री० [सं०] भजमानकी पत्नी तथा संजयकी पुत्रीका नाम (ब्रह्मां० ३.७१.३)।

उपवीर–पु० [सं०] (उपचार वायु०के अनु०) पिशाचोंका एक वर्ग विशेष जो श्मशान तथा कबरिस्तानोंमें रहते हैं

तथा पेड़की छाल या चर्म इनका परिधान है। इनकी आकृति अत्यन्त विकृत होती है (ब्रह्मां० ३.७.३७८, ३८२-३९२; वायु० ६९.२६४ और २७३)।

उपवेद–पु० [सं०] उन सब विद्याओंको उपवेद कहते हैं जो वेदके ही अन्तर्गत हों। यह वेदके ही आश्रित तथा वेदोंसे ही निकले होते हैं जैसे—धनुर्वेद=विश्वामित्रजीने इसे यजुर्वेदसे निकाला था। गन्धर्ववेद=भरतमुनिने इसे सामवेदसे निकाला था। आयुर्वेद=धन्वंतरिने ऋग्वेदसे इसे निकाला था। स्थापत्य=विश्वकर्माने अथर्ववेदसे इसे निकाला था।

उपश्लोक–पु० [सं०] दशम मनु ब्रह्मसावर्णिके पिताका नाम (भाग० ८.१३.२१)।

उपसंग–पु० [सं०] वसुदेव तथा देवकीका एक पुत्र जिसे कंसने मार डाला था (वायु० ९६.१७८)।

उपस्कर–पु० [सं०] झाड़ू; स्त्रियोंको गर्भावस्थामें इसपर बैठना निषेध कहा गया है (मत्स्य० ७.३८)।

उपसुंद–पु० [सं०] सुन्द नामक दैत्यका छोटा भाई तथा निकुंभ दैत्यका एक पुत्र। महासुर हिरण्यकशिपुके वंशमें निकुंभका जन्म हुआ था। त्रिलोक जीतनेकी इच्छासे सुंद और उपसुंद विन्ध्याचल पर्वतपर तप करने लगे। ब्रह्माने वर दिया कि यदि ये आपसमें न लड़ें तो इन्हें कोई नहीं मार सकेगा। वर प्राप्त कर इन दोनोंने अत्याचार करना आरम्भ कर दिया। अंतमें ब्रह्माने तिलोत्तमा नामक एक अतिसुन्दरी रमणी भेज इन दोनोंको लड़ा दिया और ये आपसमें लड़कर मर गये। उपसुंदका मूक नामक एक पुत्र था। एक मतानुसार उपसुंद निसुंदका पुत्र था (वायु० ६७.७१)।

उपहारिणी–स्त्री० [सं०] ब्रह्मधाना नामकी ब्रह्मराक्षसीके दस पुत्र तथा चार कन्याओंमेंसे एक कन्या ब्रह्मराक्षसीका नाम (वायु० ६९.१३४)।

उपांगललिताव्रत–पु० [सं०] आश्विन शु० ५ को किया जानेवाला एक व्रत जिसमें उपांगललिताका पूजन करते हैं। चन्द्रोदय होनेपर अर्घ्य दे नक्त व्रत कर दूसरे दिन विसर्जन करे। महाराष्ट्रमें इसका अधिक मान है (कृत्यरत्नावली)।

उपासंग–पु० [सं०] (१) देवरक्षिताके गर्भसे उत्पन्न वसुदेवके एक पुत्रका नाम। ये दो भाई थे। दूसरे भाईका नाम वसु था। (२) वज्र तथा संक्षिप्त (ब्रह्मां०के अनु० वज्रार और क्षिप्र)के पिताका नाम (ब्रह्मां० ३.७१.१८१,२५८; मत्स्य० ४६.१६; ४७.२१)।

उपेंद्र–पु० [सं०] अदिति और कश्यपके पुत्र तथा विष्णु या विष्णुके अवतार वामन भगवान् (भाग० १०.३.४२; ६.६.३९; ८.१८-२२ वायु० ९८.८४; ब्रह्मां० ३.२१.५९; ७३.८४)। पूतनाके उद्धारके पश्चात् यशोदा आदि गोपियों और नन्द आदि गोपोंने बालक भगवान् श्रीकृष्णके बालग्रहोंसे रक्षार्थ जो भगवन्नामोंसे रक्षा की थी उनमें इनका भी नाम आया है (भाग० १०.६.२२,२३)। कीर्तिसे वृहच्छ्लोक नामक इनका एक पुत्र था (भाग० ६.१८.८)। इन्हें 'उरुक्रम' भी कहते थे (मत्स्य० १४६.२१; २४४.२७-३२)।

उपेंद्रदत्त–पु० [सं०] शुकदेवकी एक उपाधि (भाग० २.७.४५)।

उपोद्घात (पाद)–पु० [सं०] पुराणके चार पादोंमेंसे (प्रक्रिया, अनुषङ्ग, उपोदात और उपसंहारमेंसे)। तीसरा भाग (पाद) (ब्रह्मां० १.१.३९; ३.१.१; ४.४.४३; वायु० ४.१३; ६५.२; १०३.४४)। इससे द्वापर युगका बोध होता है और इसमें २००४ श्लोक हैं (वायु० ३२.६२)।

उभयजातक–पु० [सं०] भार्गवोंका एक प्रवर (मत्स्य० १९५.३१)।

उभयसप्तमी–स्त्री० [सं०] इस व्रतको पौष शुक्ल ७ को कर तीनों सन्धियोंमें (प्रातः, मध्याह्न तथा सायं) सूर्यका पूजन करे तो सकल कामना सिद्ध हो (आदित्य०)।

उमा–स्त्री० [सं०] (१) शिवजीकी अर्द्धांगिनी पार्वती, जिनका नाम सर्वप्रथम केनोपनिषद्में मिलता है (केन ३.२५)। इन्हें अम्बिका तथा रुद्राणी भी कहते हैं (भाग० ३.१२.१३; ८.१८.१७)। यह पर्वतराज हिमालय तथा मेनाकी पुत्री कही गयी हैं जो पूर्वजन्ममें दक्ष प्रजापतिकी कन्या थीं और सती कहलाती थीं। दक्षसे यज्ञके समय पतिकी निन्दा सुनकर इन्होंने शरीर त्याग दिया (वायु० ३०.७१; ५४.२०; ५५.४२; ब्रह्मां० २.१३.७७)। मेनाके गर्भसे हिमाचलके घर उत्पन्न हुई। कालिकापुराणानुसार जब पार्वती शिवके लिए तप कर रही थीं तब उनकी माता मेनाने उन्हें तप करनेसे रोका था इसीसे पार्वतीका नाम उमा पड़ा—उ=हे, मा=मत। 'उमेति मात्रा तपसो निषिद्धा पश्चादुमाख्यां सुमुखी जगाम।' कालिदास कुमारसम्भव (ब्रह्मां० ३.१०.८–१३; वायु० ७२.७१२)।

शिवके लिए इनकी कठिन तपस्यासे प्रसन्न हो इन्द्रने सप्तर्षियोंकी सहायतासे उमाका विवाह शिवसे सम्पन्न करा दिया। महागिरिनगरमें विवाहोत्सवके समय ब्रह्मा ही स्वयं पुरोहित बने थे। विवाहके पश्चात् शिवजी मन्दरगिरि चले गये (मत्स्य० १५४.२७६–४९६)। एक दिन वीरकपर प्रसन्न हो इन्होंने शिवसे वैसे ही पुत्रकी कामना की और शिवने वीरकको बुला पार्वतीको दे दिया जिसका लालन-पालन उमा पुत्रवत् करने लगीं (मत्स्य० १५४.५२२–५५५)। एक बार यह तप करने चली गयीं और वीरकपर घरकी रक्षाका भार था जिसमें कोई स्त्री उमाकी अनुपस्थितिमें भीतर न आये। इसी बीच अन्धकासुरका पुत्र 'आड़ी' उमाका रूप धर आया था पर मारा गया दे० आड़ी। वायुसे यह समाचार पा उमाने वीरकको पृथ्वीपर जन्म लेनेका शाप दे दिया। तपके पश्चात् उमा 'गौरी' हो गयीं और देवांगना बनीं (मत्स्य० १५४.५८८; १५५–५८)। (२) विनायकमें स्थापित एक देवी (मत्स्य० १३.४१)।

उमातुंग–पु० [सं०] श्राद्धके लिए एक विख्यात स्थान, यहाँ महालयमें किये हुए श्राद्धका फल अक्षय होता है (ब्रह्मां० ३.१३.८७.८८; वायु० ७७.८२–८३)।

उमाधव–पु० [सं०] उमाके पति भगवान् महादेवका नाम (भाग० १०.५२.४३)।

उमापति–पु० [सं०] पार्वतीके पति भगवान् शंकर जिन्होंने दक्षका यज्ञ विध्वंस किया था (वायु० २५.२;

मत्स्य० १८५.२४; २७४.१५; विष्णु० ५.३३.४०–४५) ।

उमाब्रह्माणी–स्त्री० [सं०] श्वेतवर्णा पार्वतीका नाम। ज्येष्ठ शुक्ल नवमीको उपवास करे तथा ब्रह्माणी नामकी श्वेतवर्णा पार्वतीका पूजन करे और दूध-भात ब्राह्मण कन्याको खिलाये और रातमें स्वयं खाये (भविष्योत्तर) ।

उमामहेश्वर–पु० [सं०] इनकी पूजा आदित्यशयनमें होती है। कहीं दो और कहीं चार भुजाएँ, कहीं दस और १६ भुजाएँ, तीन आँखें, हस्तिचर्म धारण किये तथा जय, विजय, कार्त्तिकेय और विनायक सहित इनकी मूर्तिका उल्लेख मिलता है (मत्स्य० ५५.५; ६०.४२; ६४.२२, २६०.११–२१) ।

उमामहेश्वरव्रत–पु० [सं०] मार्गशीर्ष शुक्ल तृतीयाको यह व्रत किया जाता है। इस व्रतका बड़ा माहात्म्य कहा गया है (हिमाद्रि व्रत-खण्ड) ।

उमावन–पु० [सं०] कैलाश पर्वतपर स्थित एक वन विशेष जहाँ शंकरने अर्धनारीश्वरका रूप धारण किया था (वायु० ४१.३६) । उमाकी प्रार्थनापर शंकरके वरदानके फलस्वरूप यहाँ आनेवाले प्राणी स्त्री हो जाते हैं, अतः शिवको भी यही रूप धारण करना पड़ा। एक वार सुद्युम्नका भी यहाँ आनेपर यही रूप हो गया था (वायु० ८५.२५–८) ।

उमाव्रत–पु० [सं०] ब्रह्माके यज्ञके एक ऋत्विक् (वायु० १०६.३९) ।

उरकाम–पु० [सं०] अश्मकके पुत्र तथा मूलकके पिताका नाम (वायु० ८८.१७८) ।

उरगगण–पु० [सं०] सर्पोंकी एक जातिका नाम, जिन्हें नर्मदाके भाई या मायाके सम्बन्धी कहते हैं (भाग० ९.७.२; १०.५५.२३; भाग० २.६.४३; १०.३८; ब्रह्मां० ४.१.१५५; ४.२; मत्स्य० ५.१; ६.२९; २३.३९; वायु० ३१.१२; ३४.५५; ३८.५; ४७.४७; १००.१५९; १०६.५९; ११२.४३) ।

उरगारिकेतन–पु० [सं०] सर्पोंका शत्रु गरुड़। श्रीकृष्णकी पताकापर गरुड़का चिह्न रहनेके कारण कृष्णका एक नाम (विष्णु० ४.१३.११३) ।

उरणक–पु० [सं०] भेड़ोंका नाम जिन्हें उर्वशीने पुरूरवाके साथ रहनेके समय पाल रखा था (विष्णु० ४.६.४४) ।

उरु–पु० [सं०] (१) भौत्य मनुके नौ पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (ब्रह्मां० ४.१.११४) । (२) इन्द्रसावर्णिका एक पुत्र (भाग० ८.१३.३३) ।

उरुक्रम–पु० [सं०] विष्णुका एक नाम (भाग० ८.२१.४)—दे० उपेन्द्र।

उरुक्षय–पु० [सं०] (१) एक अंगिरस गोत्रकार ऋषि। (२) राजा बृहद्बलका पुत्र और वत्सद्रोहका पिता (मत्स्य० १९६.२९; २७१.४) ।

उरुक्षव–पु० [सं०] आहार्यका पुत्र तथा विशालाका पति। विशालाके गर्भसे इसके तीन पुत्र उत्पन्न हुए थे—त्र्युपण, पुष्करि और कवि (मत्स्य० ४९.३८–९) ।

उरुगाय–पु० [सं०] विष्णुका एक नाम तथा उपाधि (भाग० १०.६.२३; ११.५.२६) ।

उरुवल्क–पु० [सं०] इला और वसुदेवका पुत्र (भाग० ९.२४.४९) ।

उरुश्रवा–पु० [सं०] सत्यश्रवाका पुत्र तथा देवदत्तका पिता (भाग० ९.२.२०) ।

उरुश्रृंग–पु० [सं०] . शाकद्वीपकी सीमा निर्धारित करनेवाला एक पर्वत (भाग० ५.२०.२६) ।

उर्मि–पु० [सं०] सोम (वसु) के पाँच पुत्रोंमेंसे एकका नाम (ब्रह्मां० ३.३.२३; वायु० ६६.२३) ।

उर्मिला–स्त्री० [सं०] (१) जनकनन्दिनी सीताजीकी छोटी वहनका नाम जिनका विवाह लक्ष्मणजी (दशरथ तथा सुमित्राके पुत्र) से हुआ था। अंगद और चन्द्रकेतु नामके इनके दो पुत्र हुए थे तथा सोमदा नामकी गन्धर्वी इनकी पुत्री कही जाती है (रामायण) ।

उर्व–पु० [सं०] रिपुंजयके पुत्र तथा तिग्मके पिताका नाम (मत्स्य ५०.८५) ।

उर्वरीवान्–पु० [सं०] (१) पुलह और क्षमाके तीन पुत्रोंमेंमें एक पुत्रका नाम (ब्रह्मां० २.११.३१; विष्णु० १.१०.१०) । (२) सावर्णि मनुका एक पुत्र (विष्णु० ३.२.१९) ।

उर्वस–पु० [सं०] एक राज्यका नाम, जहाँ सिन्धु नदी प्रवाहित होता है (मत्स्य० १२१.४७) ।

उर्वशी–स्त्री० [सं०] (१) स्वर्गकी एक विख्यात अप्सरा जिसका जन्म नारायणके उरुसे हुआ था। (प्रेम-वार्ताकी सफलताके लिए इसकी पूजा होती है) (ब्रह्मां० ३.७.१६) । हरिवंशके अनुसार ब्रह्माके शापसे उर्वशीने मनुष्ययोनिमें जन्म ग्रहण किया था। बदरिकाश्रममें पुष्प चुन रही उर्वशीके मनोहर रूपको देखकर मित्र और वरुणका धैर्य जाता रहा। उनके स्खलित वीर्यसे अगस्त्य और वशिष्ठ उत्पन्न हुए थे (भाग० ६.१८.६; ९.१३.६; मत्स्य० २०१.२५-२९; विष्णु० ४.५.११,१२) । सत्यधृतिके पुत्र शरद्वान्का वीर्य लावण्यमयी उर्वशीके दर्शनसे शरस्तम्बमें गिरा। उससे कृप और कृपीका जन्म हुआ (भाग० ९.२१.३५) । भरतके शापसे यह ५५ वर्षोंतक अदृश्य लताके रूपमें रही और पुरूरवा इस अवधिमें पिशाचयोनिमें थे (मत्स्य० २४.१२-३३) ।

यह तीन शर्तोंपर—(१) उसके भेंड़ सुरक्षित रहें, (२) पुरूरवाको वह संगमके सिवा कभी नग्न न देखे एवं (३) घृत ही उसका आहार हो—पुरूरवाकी पत्नी बनकर मर्त्यलोकमें रहने लगी। इसके गर्भसे पुरूरवाके ६, (मत्स्यके अनुसार ८) पुत्र हुए थे (भाग० ९.१४.१६-४२; १५.१; ११.२६.४-५,२५; ब्रह्मां० ३.६५.४६; ६६.४-५; मत्स्य० २४.३३; वायु० २.१६; ९०.४५; ९१.४; विष्णु० ४.६.३५-७८) । कुछ वर्षोंके उपरान्त गन्धर्वोंकी चालाकीसे एक दिन पश्चात् उर्वशीने पुरूरवाको नग्न देख लिया और वह शापमुक्त हो स्वर्ग चली गयी (भाग० ९.१४.३१; ११.४.१५; ब्रह्मां० ४.३३.१८) । एक वार कामपीड़ित उर्वशीने अर्जुन द्वारा उपेक्षित हो उसको शाप दिया था जिसके कारण उन्हें विराट्राजके यहाँ क्लीवरूपमें रहना पड़ा था (महाभा०-आदि० ७४.६८; ७५.२४; वन० ४३.२९; ४६.१६, २२-३५) । मत्स्य० १६१.७४ के अनुसार यह अन्याय अप्सराओंके साथ हिरण्यकशिपुकी सभामें भी रही।

यह मार्गशीर्ष मासमें सूर्यके रथमें गणके अन्यान्य संगियोंके साथ रहती है (भाग० १२·११.४१; ब्रह्मां० १.२.१६; २.२३.१८; वायु० ५२.१८; मत्स्य० १२६.१९ विष्णु० २.१०.१३)। ब्रह्मां० २.३३.१८ के अनुसार यह ब्रह्मवादिनी मानी गयी है। यह पूर्वजन्ममें एक आभीर-कन्या थी, जो भीमद्वादशीव्रत करनेके कारण उर्वशी हो गयी थी (मत्स्य० ६९.५९)।

उर्वशीतीर्थ–पु० [सं०] वदरिकाश्रमक्षेत्रमें धर्मतीर्थसे दक्षिणमें यह तीर्थ स्थित है। यह सव पापोंको हरता है (स्कन्द० पु० वै० वदरिकाश्रम-माहात्म्य०)।

उर्वशीपुलिन–पु० [सं०] पितरोंके श्राद्धके लिए अतिप्रशस्त करनेका एक पवित्र तीर्थस्थान (मत्स्य० २२.६६)।

उर्वशीरमण–पु० [सं०] (१) प्रयागका एक क्षेत्र। यहाँ प्राण-त्याग करनेका वड़ा माहात्म्य कहा गया है (मत्स्य० १०६.३४)। (२) राजा पुरूरवा।

उर्वीजा–स्त्री० [सं०] पृथ्वीसे उत्पन्न होनेके कारण सीता-जीका एक नाम—दे० सीता।

उर्वीश–पु० [सं०] शिवजीकी १६ वरमूर्तियोंमेंसे एक वरमूर्त्ति (ब्रह्मां० ४.४४.४९)।

उत्कचा–स्त्री० [सं०] कश्यपसे उत्पन्न खशाकी एक पुत्री-का नाम। इसीसे औत्कचेय नामका राक्षसोंका गण उत्पन्न हुआ। ये ७ वहिनें थीं (ब्रह्मां० ३.७.१३८)।

उलूक–पु० [सं०] (१) उलूक देशके राजा कितवका पुत्र। महाभारत युद्धके कुछ पहले कौरवोंके दूत वनकर यह युधिष्ठिरके समीप गये थे। महाभारत-युद्धके अठारहवें दिन सहदेवने इनका सिर भालेसे विद्ध किया था (महाभा० कर्ण० ६१.४३-४४)। (२) उत्तर पर्वतपरका एक प्राचीन देश जिसके राजा वृहन्तको अर्जुनने परास्त किया था (महाभा०)। (३) कणाद मुनिका एक नाम। (४) राजा वलके पुत्र तथा वज्रनाभके पिता जो वड़े धर्मात्मा थे (ब्रह्मां० ३.६३.२०५)। (५) हिरण्याक्षके चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (मत्स्य० ६.१४)। (६) छब्बीसवें द्वापरमें जव पराशर व्यास हुए भगवदवतार सहिष्णुके चार पुत्रों-मेंसे एक पुत्र (वायु० २३.२१३)। (७) सत्ताइसवें द्वापरमें जव जातूकर्ण्य व्यास हुए, भगवान् हरिके अवतार सोम-शर्माके चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्र है (वायु० २३.२१६)। (८) वेणुमंत पर्वतपर स्थित तीन विद्याधर पुरोंमेंसे एकका निवासी एक विद्याधरनायक (वायु० ३९.३८)।

उलूकगण–पु० [सं०] कश्यप और ताम्राकी पुत्री भासीके पुत्र, मतान्तरसे उल्लू (ब्रह्मां० ३.७.४५५; मत्स्य० ६.३१; २३७.१२; २४०.१८ विष्णु० १.२१.१६)।

उलूकजित्–पु० [सं०] भण्डकी वहन, धूमिनीके दस पुत्रों-मेंसे एक पुत्र जो भण्डका सेनानायक भी था। ललिताकी एक देवी (अश्वारूढा) से यह मारा गया था (ब्रह्मां० ४.२१.८४; २८.६, ३८, १००)।

उलूकिका–स्त्री० [सं०] एक राक्षसी जिसका वध श्रीकृष्णने वहुत वचपनमें किया था (भाग० २.७.२७)।

उलूकी–स्त्री० [सं०] अन्धकासुरके विनाशार्थ शङ्कर द्वारा सृष्ट वहुत मानस मातृकाओंमेंसे एक मानस मातृका (मत्स्य० १७९.१५)।

उलूखल–पु० [सं०] (१) वह ओखल जिसमें यशोदाने कृष्णको वाँधा था (विष्णु० ५.६.१४,१६)। ओखल जिसपर गर्भावस्थामें वैठना दितिको मना किया गया था (मत्स्य० ७.३८)। (२) वायु पुराणानुसार लकड़ीके उन ओखलपरका लेख जिसका सम्वन्ध आश्वालायनि श्राद्धसे है (वायु० ७५.२८)।

उलूखलक–पु० [सं०] साम-शाखा प्रवर्तक कृतके कई शिष्योंमेंसे एक शिष्यका नाम (ब्रह्मां० २.३५.५२; वायु० ६१.४६)।

उलूखलगण, उलूखली, उलूखलिकगण–पु० [सं०] ये एक वर्ग विशेषके पिशाच हैं जिनकी आँखें छिपी रहती हैं और लम्वी जिह्वा रहती है। ये ओखलको आभूषणके ऐसा धारण करते हैं। इनके १६ कुल कहे गये हैं (ब्रह्मां० ३.७.३७८, ३९३; वायु० ६९.२७४)।

उलूखलिक–पु० [सं०] दे० उलूखलगण।

उलूत–पु० [सं०] उत्तरका एक राज्य (देश) (ब्रह्मां० २.१६.४८)।

उलूपी–स्त्री० [सं०] ऐरावत वंशमें उत्पन्न कौरव्य नामक नागकी पुत्रीका नाम (विष्णु० ४.२०.४९)। अर्जुन युधिष्ठिरकी आज्ञासे वारह वर्षोंतक वनमें रहे। इसी समयमें अर्जुनने उलूपीसे विवाह किया था जिसके गर्भसे अर्जुन-पुत्र इरावत (इरावान्=भाग०) उत्पन्न हुआ था (भाग० ९.२२.३२; महाभा० आदि० २१३.१२,१३,३६)।

उल्कामुख–पु० [सं०] (१) एक राक्षस जिसका नगर तीसरे तलमें है (वितल=वायु०)। दे० अगिया वैताल (ब्रह्मां० २.२०.२९; वायु० ५०.२८)। (२) रामकी वानरी सेनाका एक वानर। यह अंगदके साथ सीतान्वेषणके लिए दक्षिण दिशामें गया था (वा० रा० कि० ४१.४)।

उल्कामुखी–स्त्री० [सं०] अन्धकासुरके विनाशके लिए शंकर सृष्ट एक मानस-पुत्री मातृकाका नाम (मत्स्य० १७९.२४)।

उल्मुक–पु० [सं०] (१) नड्वला और चाक्षुप मनुके पुरु, कुत्स, त्रित आदि ग्यारह पुत्रोंमेंसे एक पुत्र जिसकी रानी पुष्करिणीके गर्भसे अंग, सुमनस्, ख्याति आदि ६ पुत्र उत्पन्न हुए थे (भाग० ४.१३.१६-१७)। (२) एक महारथी राजा जिसका उल्लेख महाभारतमें है (महाभा० सभा० ३४.१६)। (३) जरासन्धका एक मित्र जो आक्रमणके समय मथुराके पूर्वी प्रवेश द्वारकी रक्षा कर रहा था (भाग० १०.५०.११(२)। (४) इस नामका एक यादव जो वलभद्र तथा रेवतीका पुत्र था। निशठ इसीका वड़ा भाई था। प्रभासमें यह (उल्मुक) अपने सम्वन्धियोंसे लड़ा था (भाग० ११.३०.१७; ब्रह्मां० ३.७१.१६६; विष्णु० ४.१५.२०)।

उल्वण–पु० [सं०] तीसरे मन्वन्तरके चित्रकेतु, सुरोचि आदि सप्तर्षियोंमेंसे एक। यह वशिष्ठ मुनि और ऊर्जाके पुत्र थे (भाग० ४.१.४१)।

उशद्रथ–पु० [सं०] महामनाके पुत्र तथा उशीनरके भाई तितिक्षु, जो पूर्वीय देशका एक राजा था, का एक पुत्र तथा हेमका पिता (ब्रह्मां० ३.७४.२५; वायु० ९९.२५)।

उशना–पु० [सं०] (१) धर्मका एक पुत्र तथा रुचकका

पिता। इसने १०० (सौ) अश्वमेध यज्ञ किये थे (भाग० ९.२३.३४)। (२) एकादश रुद्रोंमें सेश्य भव और धात्री (वायु०के अनु० ऊपाका पुत्र) (ब्रह्मां० २.१०.७७; वायु० २७.५०)। (३) सुयज्ञका एक पुत्र तथा मरुत्तका पिता जिसने एक सौ अश्वमेध यज्ञ किये थे (ब्रह्मां० ३.७०.२३-४; मत्स्य० ४४.२३)। (४) दैत्यों तथा असुरोंके गुरु। इनकी पत्नीका नाम गो था जिससे इनके ४ पुत्र हुए (वायु० ३.५; ६२.८२; ६५.७४)। शुक्राचार्य ऋषि जो देवयानीके पिता थे। अमरकण्टक क्षेत्रके यह प्रशंसक थे (वायु० ७७.१४)। दे० शुक्राचार्य। (५) सोलहवें द्वापरके अवतार गोकर्णके चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (वायु० २३.१७३)। (६) पृथुश्रवाका पुत्र तथा मरुत्तका पिता जिसने १०० अश्वमेध यज्ञ किये थे (वायु० ९५.२३)। (७) शुक्रतारा जो बुधसे दो लाख योजन ऊपर है। इससे भी दो लाख योजन ऊपर अंगारक है (विष्णु० २.७.७८)। (८) तीसरे द्वापरके वेदव्यास (विष्णु० ३.३.१२) तथा नीतिशास्त्रके प्रवर्त्तक आचार्य (विष्णु० १.१९.२६)। चन्द्रमा और बृहस्पतिके बीच ताराके कारण छिड़े हुए कलहमें बृहस्पतिके साथ ईर्ष्या होनेके कारण यह चन्द्रमाके सहायक रहे (विष्णु० ४.६.१२)। (९) पृथुतमका पुत्र तथा शितपुका पिता जिसने १०० अश्वमेध यज्ञ किये थे (विष्णु० ४.१२.८-९)। (१०) एक वैदिक देवताका नाम जो शितीक्षुके पिता थे। यह शुक्रताराका अधिष्ठाता देवता है। (११) एक धर्मशास्त्र (स्मृति) का लेखक। रुद्रकी एक पत्नी (भाग० ३.१२.१३)।

उशिक—पु० [सं०] (१) कृतिका पुत्र तथा चेदिका पिता (भाग० ९.२४.२)। (२) बारहवाँ कल्प (वायु० २१.३२)।

उशिज्—पु० [सं०] अंगिराकी द्वितीय पत्नी कर्दमसुता, जिसका नाम स्वराट् था, से उत्पन्न पुत्रका नाम। वामदेव, अवन्ध्य और उतथ्य इनके भाई थे (वायु० ६५.१०२; ९९.१४१)।

उशिज—पु० [सं०] (१) एक ऋषि (बृहस्पतिके बड़े भाई) का नाम जिनकी गर्भवती पत्नी (ममता) के साथ बृहस्पतिने बलपूर्वक संगम किया था। गर्भस्थ बालकने बृहस्पतिसे कहा कि तुम वीर्यत्याग मत करो, यहाँ दो बालकोंका स्थान संभव नहीं है। इसपर बृहस्पतिने गर्भस्थ बालकको शाप दे जन्मान्ध कर दिया।—दे० दीर्घतमा (ब्रह्मां० २.३२.९९; ३.७४.३६-४६; मत्स्य० ४९.१७)। (२) अंगिरसका एक पुत्र (वायु० ६५.१००,१०६)।

उशिति—पु० [सं०] अथर्वन् अंगिरसका पुत्र, जो कर्दमपुत्री स्वराट्से उत्पन्न ५ पुत्रोंमें एक था (ब्रह्मां० ३.१.१०५)।

उशीनर—पु० [सं०] एक चंद्रवंशी राजा जो जनमेजयपुत्र महामनाका आत्मज तथा शिविका पिता था। महाराज ययातिकी पुत्री माधवी (दृषद्वती, ब्रह्मां० मत्स्य०, वायु० आदिके अनु०) के गर्भसे शिविका जन्म हुआ था। इनकी (उशीनरकी) पाँच पत्नियाँ थीं, प्रत्येक एक पुत्रकी माता थी और सभी राजर्षि घराने की थीं (भाग० १.१२.२०; ९.२३.२-३; ब्रह्मां० ३.७४.१७; मत्स्य० ४२.१९; ४८.१५-१८; वायु० ९९.१८-१९; विष्णु० ४.१८.८-९)। यमुना नदीकी जला और उपजला नामकी शाखाओंके पास राजा उशीनरने एक यज्ञ किया था जिसके फलस्वरूप इनकी श्रेष्ठता देवराज इंद्रसे भी बढ़ गयी थी। इनकी परीक्षा लेनेके लिए बाज पक्षीका रूप धर इंद्र और कपोतका रूप धर अग्नि इनके यहाँ आये। कपोत बाजके भयसे उशीनरकी जंघापर गिरा और उनकी शरण माँगी और बाजने अपना भोजन माँगा। उशीनरने कपोतके बराबर अपना मांस देना स्वीकृत किया, पर कपोतको नहीं दिया। सारे शरीरका मांस चढ़ गया, पर पूरा न पड़ा और अंतमें राजा तुलापर स्वयम् चढ़ गया। यह देख अग्नि और इंद्र अपने असली रूपमें आ गये और उशीनरको आशीर्वाद दे चले गये (महाभारत आ० प० १८६.२० वन प० १३०.२१-२४; १३१ अध्याय पूरा तथा महाराज शिवि)।

उशीरबिन्दु—पु० [सं०] मंदर पर्वतके निकटका एक पहाड़। यहाँतकके निवासियोंपर भी हिरण्यकशिपुका प्रभाव विद्यमान था (मत्स्य० १६३.८७)।

उषा—स्त्री० [सं०] (१) विभावसुकी पत्नी तथा व्युष्ट आदि तीन पुत्रोंकी माताका नाम (भाग० ६.६.१६)। (२) ज्यामघ और शैब्याके पुत्र विदर्भकी पत्नी। (३) अन्धकासुर विनाशार्थ शंकरजी द्वारा सृष्ट एक मानसी पुत्री मातृकाका नाम (मत्स्य० १७८.२०)। (४) एकादस रुद्रोंमेंसे द्वितीया भवकी पत्नीगा नाम (५) उषा=रात्रि व्युष्टि=दिन इन दोनोंका जो अन्तराल है वह सन्ध्या है (विष्णु० १.८.९) वायु० ५०.१६१)।

उषा—स्त्री [सं०] राजा बलिकी पोती तथा बाणासुरकी पुत्री जिसका विवाह प्रद्युम्नके पुत्र तथा श्रीकृष्णके पौत्र अनिरुद्धजीसे हुआ था। वैशाख शुक्ल द्वादशीकी रात अनिरुद्धको स्वप्नमें देख उषा मोहित हो गयी थी और चित्रलेखाकी सहायतासे उषा-अनिरुद्ध मिलन हुआ था। इस विवाहके लिए बाणासुर और श्रीकृष्णमें घोर युद्ध हुआ था जिसमें बाणासुर मारा गया था (भाग० ६२.१-३५ विष्णु० ५.३२.७-३०)।

उषापति—पु० [सं०] बाणासुरकी पुत्री उषाके पति अनिरुद्धका नाम। यह प्रद्युम्नके पुत्र तथा श्रीकृष्णके पौत्र थे—दे० उषा और अनिरुद्ध।

उष्ट्रमुख—पु० [सं०] दक्ष द्वारा सर्वप्रथम मनसे सृष्ट म्लेछादि विविध प्रकारके जीवोंमेंसे एक प्रकारके जीव (मत्स्य० ४.५३)।

उष्ण—पु० [सं०] (१) क्रौन्च द्वीपके अधिपति द्युतिमान्के कुशल, मनोनुग आदि सात पुत्रोंमेंसे एक पुत्र जिसके क्रौन्चद्वीपस्थ राज्यका नाम भी उष्ण ही था (ब्रह्मां० २.१४.२२-२५; १९.७२; वायु० ३३.२१-२२; ४९.६६; विष्णु० २.४.४८; मत्स्य० १२२.८५)। (२) निर्वक्त्रका पुत्र तथा चित्ररथका पिता (वायु० ९९.२७२)। (३) निचक्नुका पुत्र तथा विचित्ररथका पिता (विष्णु० ४.२१.९-१०)।

उष्णतीर्थ—पु० [सं०] विन्ध्याचलका एक पवित्र तीर्थ जहाँ अभया देवी स्थापित हैं (मत्स्य० १३.४२)।

उष्णा—स्त्री० [सं०] अग्निकी दस कलाओंमेंसे एक कला जिससे अग्नि तेज होती है (ब्रह्मां० ४.३५.८३)।

उष्णिक—पु० [सं०] एक वैदिक छन्द अथवा सूर्यके रथका एक छन्दरूप घोड़ा (भाग० ११.२१.४१; ब्रह्मां० २.२२.७२; मत्स्य० १२५.४७; वायु० ५१.६५; विष्णु० २.८.५)।

उष्मप—पु० [सं०] पितरोंका एक वर्ग विशेष (मत्स्य० १०२.२०; १४१.१९; वायु० ३०.१००)। हर अमावास्या-

को तर्पण करना होता है। इनके लिए कृष्णपक्ष=१ दिन; शुक्लपक्ष=१ रात होती है (वायु० ५६.८७,५७-९)।

उहाका–पु० [सं०] वशिष्ठ वंशज ऋषियोंका एक वर्ग (मत्स्य० २००.९)।

ऊ

ऊ–पु० [सं०] महादेव, चंद्रमा। "तुलसीदास ग्वालिनि अति नागरि। नट नागर मनि नंदलला ऊ॥"—तुलसीदास।

ऊरु–पु० [सं०] (१) चाक्षुप मनुके दस पुत्रोंमेंसे एक जिनकी माताका नाम नड्वला था। अग्निष्टोम इनके भाई थे (ब्रह्मां० २.३६.७९, १०६-८; मत्स्य० ४.४१-३; वायु० ६२.६८, ९१.९३; विष्णु० ३.१.२९) के अनुसार वेनके पिता अंग आग्नेयीके गर्भसे उत्पन्न इनके पुत्र थे (ब्रह्मां० २.३६.१०८; १२६; वायु० ६२.९२-४; मत्स्य० ४.४१-३)। (२) भौम मनुका एक पुत्र (विष्णु० ३.२.४३)।

ऊरुपुत्र–पु० [सं०] वैवस्वत मन्वंतरके सप्तर्षियोंमेंसे एक ऋषि, जमदग्निका नाम (वायु० ६४.२५)।

ऊर्ज–पु० [सं०] (१) बृहद्रथवंशोत्पन्न एक चंद्रवंशी राजा जो सत्यहितके पुत्र तथा मगधके राजा थे। जरासंध इन्हींका पौत्र था "हरिवंश"। (२) वत्सर और स्ववींथिका पुत्र (भाग० ४.१३.१२)। (३) कात्तिक महीना जो विष्णुको प्रिय है (भाग० १२.११.४४; वायु० ३०.९; ब्रह्मां० २.१३.१०)। (४) हरितगणके दस देवताओंमेंसे एक देवताका नाम (ब्रह्मां० ४.१.८५)। (५) औत्तमि मनुके दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (मत्स्य० ९.१२)। (६) सुधन्वाका पुत्र तथा नभसका पिता जरासन्ध उत्पन्न हुआ (वायु० ९९.२२५)। (७) स्वारोचिष मनुके युगके सप्तर्षियोंमेंसे एक (विष्णु० ३.१.११)। (८) शुचिका पुत्र तथा शतध्वजके पिताका नाम (विष्णु० ४.५.३०-३१)। (९) एक ग्रामणी जो वसंतके सूर्यके साथ रहता है (वायु० ५२.४)।

ऊर्जवह–पु० [सं०] भानुमान्के पुत्र प्रद्युम्न, उनके पुत्र मुनिके पुत्र तथा सनद्वाजके पिता (ब्रह्मां० ३.६४.२०; वायु० ८९.१९)।

ऊर्जश्री–स्त्री० [सं०] शरद्वतुकी रानीका नाम (ब्रह्मां० ४.३२.३४)।

ऊर्जस्–पु० [सं०] (१) वशिष्ठका पुत्र और स्वारोचिष युगका एक ऋषि (ब्रह्मां० २.३६.१७)। (२) देवोंके पाँच वर्गोंमेंसे हरितवर्गकी दस शाखाओंमेंसे एकका नाम (वायु० १००.८९)।

ऊर्जस्तंभ–पु० [सं०] स्वारोचिष मनु युगके सप्तर्षियोंमेंसे एक ऋषि (भाग० ८.१.२०)।

ऊर्जस्वती–स्त्री० [सं०] (१) दक्ष प्रजापतिकी पुत्री तथा धर्मकी पत्नीसे उत्पन्न ८ वसुओंमेंसे प्राणकी पत्नी (भाग० ६.६.१२)। (२) वर्हिष्मतीके गर्भसे उत्पन्न राजा प्रियव्रतकी पुत्रीका नाम जो शुक्राचार्यकी पत्नी तथा देवयानीकी माता थी (भाग० ५.१.२४,३४)।

ऊर्जस्वी–पु० [सं०] भौत्य मनुके नौ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (ब्रह्मां० ४.१.११५)।

ऊर्ज्ज–पु० [सं०] पाँच देवगणोंमें सुधामागणके बारह देवोंमेंसे एक देवता (ब्रह्मां० २.३६.२८)।

ऊर्ज्जंत–पु० [सं०] एक पवित्र पर्वत जहाँ वशिष्ठाश्रम था (ब्रह्मां० ३.१३.५३)।

ऊर्जा–स्त्री० [सं०] (१) अप्सराओंके चौदह गणोंमेंसे अग्निसंभव अप्सराओंके एक गणका, उनकी माता तथा मनुकी पत्नीका नाम=दे० अग्निसंभव (वायु० ६९-५४; ब्रह्मां० ३.७.१९-२१)। (२) दक्षकी पुत्री तथा वशिष्ठकी पत्नी, जिसके चित्रकेतु आदि ६ पुत्र तथा पुण्डरीका नामकी एक पुत्री थी (भाग० ४.१.४०; ब्रह्मां० २.९.५२, ५६; ११.३९; वायु० १०.२८.३२; २८.३४; विष्णु० १.७.२५; १०.१२)। (३) भगवान् कृष्णकी दस शक्तियोंमेंसे एक शक्ति (भाग० १०.३९.५५)।

ऊर्ज्जा–स्त्री० [सं०] (१) दक्षकी पत्नीका नाम (विष्णु० १.७.७)। (२) अप्सराओंकी चौदह जातियोंमेंसे एक जाति जिन्हें विकेशी तथा अग्निकी संतति माना गया है (ब्रह्मां० २.२४.९१; ३.७.२१, २२९)।

ऊर्ज्जागण–पु० [सं०] अप्सराओंके १४ गणोंमेंसे एक, जिसका जन्म अग्निसे हुआ था (ब्रह्मां० ३.७.१९)।

ऊर्जित–पु० [सं०] कार्त्तवीर्य अर्जुनके पाँच प्रमुख पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (भाग० ९.२३.२७)।

ऊर्ण–पु० [सं०] (१) पूस मासमें सूर्यके रथके साथ चलनेवाला अधिपति एक यक्ष (भाग० १२.११.४२)। (२) एक पहाड़ी राज्यका नाम (मत्स्य० ११४.५६)।

ऊर्णनाभ–पु० [सं०] दक्ष पुत्री दनुके विप्रचित्ति प्रमुख अनेक पुत्रोंमेंसे एक (वायु० ६८.९)।

ऊर्णनाभि–पु० [सं०] अत्रिवंशज ऋषियोंमें एक त्र्यार्षेय प्रवर (मत्स्य० १९७.६)।

ऊर्णा–स्त्री० [सं०] (१) मरीचिकी पत्नी, जिनके प्रथम मन्वन्तरमें ६ पुत्र हुए थे (भाग० १०.८५.४७)। (२) चित्ररथ नामक राजाकी पत्नी। चित्ररथ गयन्तीके गर्भसे उत्पन्न राजर्षि गयके पुत्र थे सम्राट् नामक इनका एक पुत्र था (भाग० ५.१५.१४)।

ऊर्णायु–पु० [सं०] १६ मौनेय देवगन्धर्वोंमेंसे एक मौनेय गंधर्वका नाम जो हेमंत ऋतुमें सूर्यके साथ रहता है (ब्रह्मां० २.२३.१७; वायु० ५२.१७; ६९.१; विष्णु० २.१०.१४)।

ऊर्ध्वकेतु–पु० [सं०] (१) सनद्वाजका पुत्र तथा अजके पिताका नाम (भाग० ९.१३.२२)। (२) ग्यारह रुद्रोंमेंसे एक (वायु० ६६.६९)।

ऊर्ध्वकेश–पु० [सं०] भण्डासुरका एक पुत्र तथा सेनानायक (ब्रह्मां० ४.२१.८१; २६.४७)।

ऊर्ध्वकेशी–स्त्री० [सं०] १६ स्वरशक्तियोंमेंसे एक स्वरशक्ति तथा १६ शक्तिदेवियोंमेंसे एक (ब्रह्मां० ४.४४.५६,८५)।

ऊर्ध्वग–पु० [सं०] श्रीकृष्ण और माद्रीके दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (भाग० १०.६१.१५)।

ऊर्ध्वचरण–पु० [सं०] शरभ नामका एक पौराणिक सिंह, जिसके आठ पैरोंमेंसे चार पैर ऊपर होते हैं और चार

नीचे (हि० वि० को)।

ऊर्ध्वदृष्टि—पु० [सं०] दक्ष पुत्री क्रोधवशा और कश्यपकी मृगी, मृगमन्दा आदि १२ पुत्रियों, जो सबकी सब पुलहको ब्याही गयीं, मेंसे एक श्वेताके दस वानरपुंगव पुत्रोंमेंसे एक पुत्र तथा व्याघ्र आदि पाँच पुत्रों और पाँच कन्याओंका पिता (ब्रह्मां० ३.७.१८०, २०५)।

उर्ध्वनयन—पु० [सं०] दे० ऊर्ध्वदृष्टि।

ऊर्ध्वपाद—पु० [सं०] दे० ऊर्ध्वचरण।

ऊर्ध्वबाहु—पु० [सं०] (१) वशिष्ठ और ऊर्जाके सात पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम जो रैवत मन्वन्तर कालके सप्तर्षियोंमेंसे एक ऋषि थे (भाग० ८.५.३; ब्रह्मां० २.११.४१; ३६.६२; विष्णु० १.१०.१३; ३.१.२२)।

ऊर्ध्वरेखा—स्त्री० [सं०] श्रीराम, कृष्ण आदि विष्णुके अवतारोंके ४८ चरणचिह्नोंमेंसे एक।

ऊर्ध्वरोमा—पु० [सं०] कुशद्वीपके चक्र, चतुःशृंग आदि ७ पहाड़ोंमेंसे एक पहाड़ (भाग० ५.२०.१५)।

ऊर्ध्वायनगण—पु० [सं०] प्लक्षद्वीपके निवासी हंस, पतङ्ग आदि चार वर्गोंमेंसे एक (भाग० ५.२०.४)।

ऊर्मिला—स्त्री० [सं०] सीरध्वज जनककी औरसजात कन्या जिसका विवाह श्रीरामके भाई सुमित्रानंदन लक्ष्मणसे हुआ था। अंगद और चंद्रकेतु नामके इनके दो पुत्र थे और सोमदागंधर्वी नामकी एक पुत्री (रामायण-बाल० का० ३२४.२६)।

ऊर्व—पु० [सं०] (१) एक परम तपस्वी तेजस्वी ऋषि, जिन्होंने कुशसे अपनी जाँघ अग्निमें रख तथा मथ कर और्व नामक (अग्नि) पुत्र उत्पन्न किया जो उत्पन्न होते ही मधुरवाणीसे पितासे बोला, पिताजी, मुझे भूख पीड़ितकर रही है। जगतके भक्षणार्थ मुझे छोड़िये उसका उग्र उपद्रव देखकर ब्रह्माने समुद्रमें बडवामुखमें उसे स्थान और भोजनार्थ जल दिया (मत्स्य० १७५.२३-४८,६९-७१)। (२) मंत्रकृतोंमें श्रेष्ठ २१ भृगुओंमेंसे एक मंत्रकृत् ऋषि तथा आंगिरसवंशीय एक त्र्यार्षेय प्रवर (मत्स्य० १४५.९९; १९६.२६)।

ऊषा—स्त्री० [सं०] दे० उषा। तिलोत्तमा अप्सरा ही दुर्वासाके शापसे उषाके रूपमें बाणके घर उत्पन्न हुई थी (भाग० १०.६१.२३(९); ६२.१-३५; ६३.५०)।

ऊषापति—पु० [सं०] दे० उषापति।

ऊह—पु० [सं०] सामवेदका एक भाग (ब्रह्मां० २.३५.७२)।

ऋ

ऋ—स्त्री० [सं०] देवमाता अदिति।

ऋक्—पु० [सं०] पाँचवें मरुद्गणमेंसे एकका नाम (वायु० ६७.१२७)।

ऋक्ष—पु० [सं०] (१) भृगुके वंशज और चौबीसवें (विष्णु पुराणानुसार २५वें) द्वापरके व्यास। कोई-कोई इन्हें वाल्मीकि भी कहते हैं। उक्त द्वापरमें विष्णुके अवतार हुए शूली (वायु० २३.२०६; विष्णु० ३.३.१८)। (२) महाबली वानरराज शुकके पुत्र तथा प्रजापतिसे प्राप्त विरजाके पतिका नाम। जाम्बवान्की माता रक्षा इनकी बहन थी (ब्रह्मां० ३.७.२१०-१७, २९९)। यह लंकाकी चढ़ाईमें रामके साथ गये थे और जब श्रीरामजी वनवाससे अयोध्या लौट रहे थे, तब भरतने उनकी पादुका (खड़ाऊ) पकड़ी। विभीषण और सुग्रीवने चँवर, हनुमान्जीने श्वेत छत्र और इन्होंने उनकी ढाल पकड़ी थी (भाग० ९.१०.१९, ४४)। (३) अजमीढ़के एक पुत्र, जो धूमिनीके गर्भसे उत्पन्न हुए थे। यह संवरणके पिता थे (भाग० ९.२२.३; मत्स्य० ५०.१९; वायु० ९९.२१४; विष्णु० ४.१९.७४-५)। (४) देवातिथिके पुत्र तथा भीमसेनके पिता (वायु० ९९.२३३; विष्णु० ४.२०.६-७)। (५) पुरञ्जयके पुत्र तथा हर्यश्वके पिताका नाम (विष्णु० ४.१९.५७-८)।

ऋक्षगिरि—पु० [सं०] भारतवर्षका एक कुल पर्वत —दे० ऋक्ष।

ऋक्षपति—पु० [सं०] (१) नक्षत्रोंका राजा चंद्रमाका एक नाम—दे० चंद्रमा। (२) भालुओंके सरदार जाम्बवान्का एक नाम रामायण किष्किं० का०)।

ऋक्षरजा (या ऋक्षरजस्)—पु० [सं०] बालि और सुग्रीवके पिताका नाम (ब्रह्मां० ३-१.५८; वा० रा० उ० का० प्रक्षिप्त सर्ग)। वहाँकी कथा यों है—एक समय मेरु पर्वतपर ब्रह्मा समाधिस्थ थे। उनकी आँखोंसे आँसू गिरे। उन्हें उन्होंने अपने हाथोंसे मल दिया। उन आँसुओंसे यह (ऋक्षरजाः) वानर उत्पन्न हुआ। एक समय अपनी पिपासा शान्त करनेके लिए यह एक सरोवरके निकट गया। उसमें पड़े अपने प्रतिबिम्बको अपना शत्रु समझ कर उससे लड़नेके लिए इसने सरोवरमें छलांग मारी। सरोवरसे बाहर निकलनेपर यह वानरके बदले स्त्री हो गया। ऊपर अन्तरिक्षसे इंद्र और सूर्यकी दृष्टि उक्त स्त्रीपर पड़ी। दोनों उसपर मोहित हो गये। उत्कट कामविकारके कारण इंद्रका वीर्य उसके सिर (बालों) पर और सूर्यका वीर्य ग्रीवा (गर्दन) पर गिरा, जिससे बाली और सुग्रीवकी उत्पत्ति हुई। रात्रि बीतनेपर फिर वह ज्योंका त्यों वानर ही हो गया। वह अपने दोनों पुत्रोंको लेकर ब्रह्माजीके पास गया। उनसे सारा वृत्तान्त कहा। उन्होंने समझा-बुझाकर उसे किष्किन्धाका राजा बनवा दिया। वहाँ विविध प्रकारके वानर थे। उनमें चातुर्वण्य प्रथा प्रचलित थी। ऋक्षरजाके बाद बाली वहाँका राजा हुआ।

ऋक्षराज—पु० [सं०] जाम्बवान्का एक नाम (ब्रह्मां० ३.७१.३५)।

ऋक्षवंत—पु० [सं०] एक पहाड़ जो रुक्मकवचके पुत्र ज्यामघके अधिकारमें था। यह कुलपर्वत था (मत्स्य० ४४.२७-३२; ११४-१७)।

ऋक्ष—पु० [सं०] (१) एक पर्वतका नाम जहाँ अत्रि मुनिने पुत्रकी कामनासे तप किया था। यह भारतवर्षका कुलपर्वत है (भाग० ४.१.१७)। इसी पहाड़पर प्रसेनजित्की खोजमें श्रीकृष्ण गये थे। ऋक्षगिरि तथा ऋक्षपर्वत नामसे भी यही विख्यात है (भाग० ५.१९.१६; ब्रह्मां० २.१६.१८; ३.७०.३२; ७१.३९; वायु० ४५.८८; ९५.३१; विष्णु० २.

३.३)। (२) एक जातिके वानर जो मृगमंदा और पुलहसे उत्पन्न हुए थे (ब्रह्मां० ३.७.१७४, ३१९; २२.२२; २६. ३०, ३४)।

ऋग्वेद—पु० [सं०] व्याससे पैलको इसकी दीक्षा मिली, जिन्होंने इसे दो खंडोंमें बाँट इन्द्रप्रमति तथा वाष्कलको दिया। वाष्कलने अपने खंडको चार शाखाओंमें विभक्त कर बोध्य, अग्निमातर, (विष्णु० अग्निमाढक), पाराशर और याज्ञवल्क्यको दिया, लेकिन इन्द्रप्रमतिने अपना पूरा खंड अपने शिष्य मांडुकेयको दिया, जिसने अपने पुत्रको सिखलाया, उसने अपने पुत्रको और इसी प्रकार यह इसी वंशमें रह गया (भाग० १.४.२१; ब्रह्मां० २.३४.१४-३०; वायु० ३२.२; विष्णु० ३.४.८, १३, १६-२५; मत्स्य० १३३.३१) के अनुसार ये त्रिपुरारिके रथके घोड़े बने। ये विष्णुके ही रूप समझे जाते हैं (विष्णु० ५.१.३७)।

ऋच—पु० [सं०] (१) पुरुवंशीय सुनीतिके वंशज एक राजकुमारका नाम। (२) ये प्रत्यंगिरससे उत्पन्न श्रेष्ठ ऋच ब्रह्मर्षियों द्वारा सत्कृत हैं, ऋक्का पण्डित सारे वेदोंका विद्वान् हो जाता है (वायु० ६६.७८)। (३) ब्रह्माके प्रथम मुखसे इसकी उत्पत्ति हुई (विष्णु० १.५.५३)। (४) प्रत्यंगिरसके पुत्र (विष्णु० १.१५.१३६)।

ऋची—स्त्री० [सं०] (१) अप्रवानकी पत्नीका नाम। यह नहुषकी पुत्री तथा और्व ऋषिकी माता थी (ब्रह्मां० ३.१.९४)। (२) अणुहकी पत्नीका नाम। यह शुकदेवकी पुत्री थी (वायु० ९९. १७९)।

ऋचीक—पु० [सं०] (१) भृगुवंशीय एक ऋषि। यह और्व ऋषिके पुत्र थे। महाभारत और विष्णु पुराणानुसार विश्वामित्रके पिता गाधिने वृद्ध होनेके कारण इनसे १००० श्यामकर्ण घोड़े ले अपनी सत्यवती नामकी कन्याका विवाह इनसे कर दिया था। यह मंत्रकृत् थे (भाग० ९. १५.५-११; ब्रह्मां० २.१३.९५; ३२.१०४; ३.१.९५; २५. ८३)। इन्होंने दो चरु उपस्थित किये—एक ब्राह्मण पुत्रकी कामनासे पत्नीके लिए और दूसरा अपनी सासके लिए, जिससे क्षत्रिय पुत्र उत्पन्न हो। लेकिन भूलसे इनकी पत्नी (सत्यवती) अपनी माँवाला चरु खा गयी, जिससे जमदग्नि उत्पन्न हुए और स्वयम् कौशिकी नदीमें परिवर्तित हो गयी (ब्रह्मां० ३.२१.१९-२२; ६६.३७-४०; विष्णु० ४.७.१३, ३४; वायु० ६५.९३; ९१.६६-८६)। इनके १०० पुत्र थे, जिनके सब मिलाकर १००० पुत्र हुए—सब भार्गव थे। नोट—(सत्यवतीके गर्भसे इनके तीन पुत्र हुए—जमदग्नि, शुनःशेफ और शुनःपुच्छ (वायु० ९१.६६, ९२; ब्रह्मां० ३.६६.६४)। क्षत्रियोंका नाश करनेके लिए इन्होंने सारे धनुर्वेदका अध्ययन किया। जमदग्निके पुत्र परशुराम थे। रामायणके अनुसार इन्होंने अपने पुत्र शुनःशेफको यज्ञके लिए बेच दिया था। (२) शिखण्डीके पुत्र, जो १८वें द्वापरके एक अवतार माने गये हैं (वायु० २३.१८३)। (३) सुतारके एक पुत्र जो दूसरे द्वापरके अधिपति थे (वायु० २३.१२१)।

ऋचीकतनय—पु० [सं०] जमदग्नि ऋषि, जो आश्विन मासमें सूर्यके रथपर लोक कल्याणके लिए रहते हैं (भाग० १२.११.४३)।

ऋजीष—पु० [सं०] अठारहवें द्वापरके वेदव्यास (ब्रह्मां० २.३५.१२१)।

ऋजिश्वन्—पु० [सं०] एक राजाका नाम जो इंद्रके मित्र थे। इन्होंने दस्यु कृष्णको अंशुमती नदीके तीरपर जीता था। इनका उल्लेख ऋग्वेदमें है (ऋग्वेद १०.९९.५१)।

ऋजिश्वन् भारद्वाज—पु० [सं०] एक मन्त्रद्रष्टा ऋषि (ऋ० वे० ६.४९.५२)।

ऋजुदाय—पु० [सं०] वसुदेव और देवकीका एक पुत्र जिसे कंसने मारा था (ब्रह्मां० ३.७१.१७५)। भाग० ९.२४.५४के अनुसार ऋजु तथा विष्णु० ४.१५.२६-२७ के अनुसार ऋजुदास।

ऋज्राश्व—पु० [सं०] इस नामका एक पुरुष ऋग्वेदमें मिलता है। एक बार इसने १०१ भेड़ें मारकर मादा भेड़ियाको खानेको दी थीं, जिससे अप्रसन्न होकर इसके पिताने इसे अन्धा कर दिया था। इसपर उस मादा भेड़ियाने अश्विनीकुमारोंकी प्रार्थना कर इसे आँखें दिलवायी थीं—दे० ऋग्वेद।

ऋज्वी—स्त्री० [सं०] ४८ शक्तिदेवियोंमेंसे एक शक्तिदेवीका नाम (ब्रह्मां० ४.४४.७५)।

ऋणत्रय—पु० [सं०] द्विजोंके ३ प्रधान ऋण—देवऋण, पितृऋण और ऋषिऋण (वायु० ७७.१०७; १०८. ८९; ११०.६०; १११.२९,३१)।

ऋणतीर्थ—पु० [सं०] नर्मदाक्षेत्रमें स्थित एक प्रधान तीर्थ (मत्स्य० १९१.२६)।

ऋणप्रमोचन—पु० [सं०] एक तीर्थ जो यमुना नदीके उत्तर तथा प्रयागके दक्षिणमें स्थित है। यहाँ एक रात्रिवास और स्नान कर मनुष्य सब ऋणोंसे मुक्त हो जाता है (मत्स्य० १०७.२०)।

ऋणमोचनतीर्थ—पु० [सं०] अयोध्यामें ब्रह्मकुंडसे उत्तर-पूर्व दिशामें ७०० धनुषकी दूरीपर सरयूके जलमें यह तीर्थ स्थित है। यहाँ लोमश ऋषि स्नान कर ऋणमुक्त तथा पापमुक्त हुए थे। इहलोक तथा परलोकके तीनों ऋण यहाँ छूटते हैं (स्कन्द० वैष्ण० खं० अयोध्या-माहा०)।

ऋणवत्—पु० [सं०] एक ऋषि, जिनके वंशजोंका वैवाहिक सम्बन्ध विश्वामित्रके वंशजोंसे नहीं होता (मत्स्य० १९८. १९)।

ऋणज्य—पु० [सं०] अट्ठारहवें द्वापरके व्यासका नाम।

ऋतंभर—पु० [सं०] एक राजर्षिका नाम। इन्होंने मनसे गऊकी सेवा की, इसलिए इनका सत्यवान् नामका पुत्र हुआ (पद्म० पा० २८)।

ऋतंभरा—स्त्री० [सं०] प्लक्षद्वीपकी एक नदी (भाग० ५. २०.४)।

ऋत—पु० [सं०] (१) धर्मके पुत्रका नाम, जो दक्ष प्रजापतिकी एक पुत्रीके गर्भसे उत्पन्न हुए थे। (२) अग्निका एक नाम, जो संवत्सरके पुत्र थे। दक्षकी पुत्री स्वाहासे इनका विवाह हुआ था (ब्रह्मां० २.९-५६; १२.१; २.१३. २३; वायु० १.७६)। (३) चाक्षुष मनु तथा नड्वलाका एक पुत्र (भाग० ४.१३.१६)। (४) विजयका एक पुत्र तथा शुनक (सुनय=विष्णु०) का पिता (भाग० ९.१३. २५-२६; वायु० ८९.२२; विष्णु० ४.५.३१)। (५) बारह तुषित देवोंमेंसे एक तुषित देवता (ब्रह्मां० २.३६.१२)।

(६) बीस सुख देवोंमेंसे एक सुख देवता (ब्रह्मां० ४.१.१८)। (७) भूत और भविष्यके ६ मनुओंमेंसे एक मनु (मत्स्य० ९.३६)। (८) अंगिरस पुत्र देवोंमेंसे एक (मत्स्य० १९६.२)। (९) तीसरे मरुद्गणमेंसे एक (वायु० ६७.१२६)। (१०) तामस मनुके पुत्रोंमेंसे एक (वायु० ६२.४४)।

ऋतजित्–पु० [सं०] (१) एक गंधर्व, जो शिशिरके सूर्यके साथ रहता है (ब्रह्मां० २.२३.२३)। (२) दूसरे मरुद्गणमेंसे एक (ब्रह्मां० ३.५.९३; वायु० ६७.१२४)। (३) माघ मासमें सूर्यके साथ रहनेवाला एक ग्रामणी (यक्ष) (वायु० ५२.२२; विष्णु० २.१०.१६)।

ऋतञ्जय–पु० [सं०] १८वें द्वापरके व्यासका नाम। उन्हींके समयमें शिखण्डी नामक ईश्वरका अवतार हुआ (वायु० २३.१८१)।

ऋतपर्ण–पु० [सं०] अयोध्याके राजा तथा राजा नलके सखा। यह पासा खेलनेमें बड़े निपुण थे (ऋतुपर्ण)। यह सर्वकामके पिता थे, जो नलसे द्यूत विद्या सीख लेनेके कारण नल द्वितीयके नामसे विख्यात हुए (महाभारत)।

ऋतथ्यगण–पु० [सं०] शारद्वत वंशीय शतानन्द ऋषिके पुत्र सत्यधृति महान् बुद्धिमान्, तपस्वी तथा धनुर्वेदके भी पारगामी थे। इन्द्रने उनकी तपस्यामें विघ्न डालनेके लिए अप्सरा (जालवादी और कहीं उर्वशी लिखा है) भेजी। उसे देखकर उनका वीर्य स्खलित हो शरस्तम्बमें गिरा। उससे दो बच्चे हुए। शिकार खेलने वनमें गये शन्तनुकी उनपर दृष्टि पड़ी। कृपापूर्वक उन्होंने उन्हें घर लाकर पालापोसा, इसलिए वे कृप और कृपी कहाये। ये गौतमके वंशधर थे (वायु० ९९.२०५)।

ऋतधामन्–पु० [सं०] (१) रुद्रसावर्णि युगके इंद्रका नाम (भाग० ८.१३.२९; ब्रह्मां० ४.१.९१)। (२) वसुदेवके भ्राता कंक और कर्णिकाके दो पुत्रोंमेंसे एकका नाम (भाग० ९.२४.४४)। (३) भविष्यके तेरहवें मनु (मत्स्य० ९.३६)। (४) ऋतु सावर्ण मनु (१२वें मनु) के युगके इंद्र (वायु० १००.९५)।

ऋतध्वज–पु० [सं०] (१) दे० द्युमत् (भाग० ९.१७.६)। (२) कुमार, नारद आदि प्रधान सिद्धों, जो संसारके प्राणियोंको ज्ञान देते चलते हैं, मेंसे एक (भाग० ६.१५.१५)। (३) भागवतमें लिखी गणनाके अनुसार एकादश रुद्रोंमेंसे एक (भाग० ३.१२.१२)। (४) प्रतर्दनका एक नाम (विष्णु० ४.८.१४)। (५) शत्रुजित्के पुत्रका नाम, जो बड़े रूपवान्, सरल तथा शूरवीर थे। आकाशवाणीके अनुसार गालव ऋषिने इन्हें एक "कुवलय" नामक प्रसिद्ध घोड़ा दिया था, जिसपर सवार हो इन्होंने पातालकेतु राक्षसका वध किया था। पातालकेतुका अनुसरण करते हुए यह पाताल पहुँच गये, जहाँ वज्रकेतु दानवका पुत्र पातालकेतु विवाह करनेके हेतु देवलोकसे विश्वावसु नामक गंधर्वराजकी सुन्दरी कन्या मदालसाको हर लाया था। मदालसाकी कुण्डला नामक सखीने (जो विंध्यवान्की पुत्री तथा पुष्करमालीकी पत्नी थी) ऋतध्वजको मदालसाका परिचय दिया, जिससे इनका विवाह तुम्बरु (कुण्डलाके कुलगुरु) की सहायतासे तथा अध्यक्षतामें सम्पन्न हुआ था। भाई पातालकेतुकी मृत्युका बदला लेनेकी इच्छासे तालकेतुने छद्मवेप धर छलसे शत्रुजित् आदिको ऋतध्वजके मारे जानेका समाचार दिया, जिसे सुन ऋतध्वजकी पत्नी मदालसाने प्राण त्याग दिये। पत्नीके वियोगसे दुःखी ऋतध्वज उदास रहते थे, पर अश्वतर नामक नागके पुत्रोंसे सहायता मिली। अश्वतर तथा उनके भाई कम्बलकी सहायतासे ऋतध्वजको मदालसा पुनः प्राप्त हुई, जिससे ऋतध्वजके विक्रांत, सुबाहु, शत्रुमर्दन तथा अलर्क नामके चार प्रतापी पुत्र हुए (मार्कण्डेय० २०.३७-४०; २१.१०२; २२.२५; २२.२७-३४; २१.४१-४५; २३.२०; २७.४-११; २७.१२-१८; १९-२६, ३२; २९.३१, ३५, ६४; ३४.१८; ३५.१-२, ३९, ४७-४८, ५०)।

ऋतव्रत–पु० [सं०] शाकद्वीपके चार प्रकारके निवासियोंमेंसे एक प्रकारके निवासी (भाग० ५.२०.२७)।

ऋतसेन–पु० [सं०] मार्गशीर्ष मासमें सूर्यके साथ रहनेवाला एक गंधर्व (भाग० १२.११.४१)।

ऋतु–पु० [सं०] (१) बीस सुतप देवोंमेंसे एक सुतप देव (ब्रह्मां ४.१.१४; वायु० १००.१५)। (२) बीस अमिताभ देवोंमेंसे एक अमिताभ देव (ब्रह्मां० ४.१.१६)। (३) हेमंतमें सूर्यके साथ घूमनेवाला एक यक्ष (वायु० ५२.१६)। (४) साठ हजार बालखिल्य ऋषियोंके पूर्वजका नाम (वायु० २८.३१)। (५) एक नदी-पुत्र धीष्णि अग्नि (वायु० २९.१८,२६)।

ऋतुकल्प–पु० [सं] छठे कल्पका नाम (वायु० २१-३०)।

ऋतुकुल्या–स्त्री० [सं०] महेन्द्र पर्वतसे निकली नदियोंमेंसे एक नदी (वायु ४५.१०६)।

ऋतुधामन्–पु० [सं०] (१) सुज्योति अग्नि (ब्रह्मां० २.१२.२४; वायु० २९.२३)। (२) बारहवें मन्वन्तरके इन्द्रका नाम (विष्णु० ३.२.३३)।

ऋतुध्वज–पु० [सं०]११ रुद्रोंमेंसे एक रुद्र (भाग० ३.१२.१२)।

ऋतुपर्ण–पु० [सं०] भगीरथसे सुहोत्र, सुहोत्रसे श्रुति, श्रुतिसे नाभाग,नाभागसे अम्बरीष, अम्बरीषसे सिन्धुद्वीप, सिन्धुद्वीपसे अयुतायु और अयुतायुसे ऋतुपर्ण नामक पुत्र हुआ जो नलका सहायक तथा द्यूतक्रीड़ाका पारदर्शी था। इक्ष्वाकुवंशोद्भव एक प्रसिद्ध राजा जिसकी राजधानी अयोध्यामें थी। अयुतायुका नाम अयुताश्व भी लिखा मिला है। कलिके कोपसे राज्यभ्रष्ट होकर राजा नलने इन्हींके यहाँ अश्वाध्यक्षका काम करके अपने दुर्दिन काटे थे। नलको १०,०००) मासिक वेतन मिलता था और यह ऋतुपर्णको अश्वविद्याकी शिक्षा देते थे और स्वयम् उनसे द्यूतक्रीड़ा सीखते थे। इनके पुत्रका नाम सर्वकाम था (भाग० ९.९.१७; ब्रह्मां० ३.६३.१७३; मत्स्य० १२.४६; वायु० ८८.१७३-७४; विष्णु० ४.४.३७-८)।

ऋतुपुत्र–पु० [सं०] पाँच आर्तव (वायु० ३१.५०)।

ऋतुमात्–पु० [सं०] त्रिकूट पर्वतपर वरुणका उद्यान जिसमें सुराङ्गनाएँ क्रीड़ा करती हैं (भाग० ८.२.९)।

ऋतुसावर्ण–पु० [सं०] बारहवें युगके रुद्र पुत्र मनु (वायु० १००.८६)।

ऋतेयु–पु० [सं०] (ऋतेपु—विष्णु०) पुरुवंशीय राजा रौद्राश्व

के दस पुत्रोंमेंसे ज्येष्ठका नाम। ये रंतिभार (अन्तिनार—विष्णु०) के पिता थे (भाग० ९.२०.४-६; ४.१९.२-३)।

ऋथु–पु० [सं०] (१) एक राजर्षि जो तपस्यासे ब्राह्मण हो गये थे (वायु० ९१.११६)।

ऋद्धि–स्त्री० [सं०] (१) कुवेरकी स्त्रीका नाम। कुवेर धनका अधिपति है, अतः ऋद्धि=अतुल सम्पदापूर्ण है। यह नलकूवरकी माता थी (ब्रह्मां० ३.८.४८) (२) दस ब्रह्मकलाओंमेंसे एक ब्रह्मकलाका नाम (ब्रह्मां० ४.३५.९४; वायु० ७०.४१)। (३) पार्वतीका एक नाम। (४) विनायककी एक प्रकारकी अनुचरी जो देवी है (मत्स्य० २६०.५५)।

ऋद्विदुषी–स्त्री० [सं०] सोलह शक्तिदेवियोंमेंसे एक शक्ति देवीका नाम (ब्रह्मां० ४.४४.८५)।

ऋभु–पु० [सं०] (१) ऋभु ब्रह्माके मानस पुत्र हैं। इनकी और सनत्कुमारकी सृष्टि सबसे पहले हुई थी (भाग० ४.८.१)। यह अपनी शुद्धता तथा ज्ञानके लिए प्रसिद्ध हैं। यह तपोलोकके निवासी हैं। पुलस्त्यके पुत्र निदाघ इनके शिष्य कहे गये हैं (विष्णु० २.१५.२-३४; १६ पूरा)। नारायण ऋषि द्वारा विष्णुपुराण ब्रह्माने सर्वप्रथम ऋभुको ही बतलाया था (विष्णु० ६.८.४३)। इन्हें चार कुमारोंमेंसे एक माना गया है। (२) विशेषण=चतुर; इन्द्र, अग्नि तथा आदित्योंकी विशेषता। (३) एक परमार्थ तत्त्वके ज्ञाता ऋषि जो देविका नदीके तटपर महर्षि पुलस्त्यके बसाये एक अति रमणीय नगरमें रहते थे जिसका नाम "वीरनगर" था। इसी नगरमें ऋभुके शिष्य योगवेत्ता निदाघ निवास करते थे। ऋभुने निदाघको समय-समयपर परमार्थरूप अध्यातम ज्ञान दिया था (नारद० पूर्व भाग, द्वितीय पाद)।

ऋभुक्ष–पु० [सं०] इन्द्रका एक नाम—दे० इन्द्र।

ऋभुगण–पु० [सं०] (१) भुवर्लोकके निवासी एक प्रकारके देवता जिनकी सृष्टि प्रमथ तथा अन्य दूसरे गणोंको दवानेके लिए हुई थी जिसमें वे दक्षके यज्ञमें विघ्न न उपस्थित कर सकें। ये देवासुर-संग्राममें इन्द्रके अनुयायी थे और चाक्षुष युगमें थे (वायु० १०१.३०; भाग० ४.४.३३; ६.७.२; १०.१७; मत्स्य० ९.२४)। (२) वैवस्वत मनुके युगके देवता। अन्यान्य देवगण, पितृगण, साध्यगण आदिके साथ द्वारका आकर इन लोगोंने श्रीकृष्णसे वैकुंठ लौट जानेको कहा था (भाग० ८.१३.४; ११.६.२)। (३) सुधन्वाके तीन पुत्रोंका नाम जो अपनी कारीगरीके लिए प्रसिद्ध थे, यहाँतक कि देवताओंने भी इनका सम्मान किया। इन्होंने इन्द्रके रथ और घोड़े बनाये थे और अपने पिताको वृद्धसे युवा कर दिया था। ये मनुष्य होकर भी अपनी बुद्धिमत्तासे देवता हो गये थे।

ऋषभ–पु० [सं०] (१) महाराज नाभिके मेरुदेवीके गर्भसे उत्पन्न भगवत्प्रतिरूप पुत्र तथा अजनाभ राज्यके राजाका नाम (भाग० ५.४.३; ७.३; ११.२.२४)। भागवतके अनुसार राजा नाभिके पुत्र जिनकी माताका नाम सुदेवी भी था, पर विष्णु०, वायु० तथा ब्रह्मां० पुराणानुसार महारानी मेरु था। यह एक परमहंस थे जिनके जयन्तीके गर्भसे १०० पुत्र हुए थे जिनमें सबसे बड़ेका नाम भरत था (ब्रह्मां० २.१४.६०-६२; भाग० २.७.१०; ११.४.१७; विष्णु० २.१.२७; वायु० ३३.५०-५१)। इनके ९ पुत्र ९ द्वीपोंके राजा हुए, ८१ कर्मतंत्रमें रत महाश्रोत्रिय ब्राह्मण हुए और कवि आदि ९ ऋषि हुए। ये नवों बड़े भगवद्भक्त हुए। इन्हीं नौके अन्तर्गत अन्तरिक्ष भी थे (भाग० ११.२.१५-५०)। दे० अन्तरिक्ष (भाग० ५.४.११; ११.२.२१)। अपना राज्य भरतको दे ये तप करके सिद्धि प्राप्त करने लगे यहाँतक कि मुँहमें कंकड़ रखकर प्राण त्याग किया। विल्सन साहबका मत है कि इन्होंने मुँहमें कंकड़ी इसलिए रखी थी कि कुछ खा न सकें। भागवतके अनुसार इन्होंने पश्चिमी भारतमें जैन धर्मका प्रचार किया था। इन्द्रकी ईर्ष्यावश इनके राज्यमें अवृष्टि हुई फिर इनके योगबलसे वृष्टि हुई (भाग० ५.३.४ पूरा १-३)। राजाके नाते इन्द्रने जयन्तीका विवाह इनसे कर दिया था जिससे इनके १०० पुत्र हुए। वानप्रस्थ में यह पुलहके आश्रममें रहते थे और वहीं उनकी मृत्यु हुई थी (विष्णु० २.१.२८-३१)। (२) भगवान् कृष्णके पुत्रादि परिवारवर्गका एक व्यक्ति जिसका कुशल-क्षेम युधिष्ठिरने अर्जुनसे पूछा था (भाग० १.१४.३१)। (३) वृत्रासुरका एक अनुगामी जो इन्द्रसे युद्धके समय लड़ा था (भाग० ६.१०.१९)। (४) इन्द्र और पौलोमीके तीन पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (भाग० ६.१८.७)। (५) दक्षसावर्णि मनु युगमें हरिका एक अवतार जो आयुष्मान् और अम्बुधाराके पुत्र थे। इनके पराशर, गार्ग्य आदि वेदपारग तपस्वी पुत्र थे। यह ध्यानमार्गमें रत रहते (भाग० ८.१३.२०; वायु० २३.१४३ १४६)। (६) कुशाग्रका पुत्र तथा सत्यहितका पिता (भाग० ९.२२.६-७; वायु० ९९.२२३)। (७) श्रीकृष्णका बचपनका साथी एक गोप (भाग० १०.२२.३१)। (८) अंगिरसका एक पुत्र, स्वारोचिष युगके सप्तर्षियोंमेंसे एक ऋषि तथा मन्त्रकृत् (ब्रह्मां० २.३६.१७; वायु० ५९.१००)। (९) सुधन्वानका पुत्र (वायु० ६५.१०२)। (१०) मनुष्यधर्म-पालन करनेवाले अनेक दानवों (दनुके पुत्रों)मेंसे एक दानव (वायु० ६८.१५)। (११) ब्रह्माके यज्ञके एक ऋत्विक्का नाम (वायु० १०६.३७)। (१२) मेरुके उत्तर चरणोंपरके बीस पहाड़ोंमेंसे एक पहाड़ जो भारतवर्षमें है। यह विष्णुको प्रिय है तथा अपनी तीर्थयात्रामें बलराम यहाँ आये थे (भाग० ५.१६.२६; १९.१६; १०.७९.१५; मत्स्य० १६३.७८; विष्णु० २.२.३०)। (१३) एक दिग्गज जो पृथ्वीके चार प्रधान कोणोंमेंसे एकको दाबे है (भाग० ५.२०.३९) (१४) सप्त स्वरोंमेंसे दूसरा जो बड़ा शुभ है (मत्स्य० २४३.२१; वायु० २१.३४; ८६.३७)। (१५) पन्द्रहवाँ कल्प जहाँ ऋषभ स्वरकी उत्पत्ति हुई (वायु० २१.३३,३४)। (१६) सीता नामकी पुण्य नदी मणिपर्वतसे जिस अनेक कन्दरावाले पर्वतपर गिरती है उसका नाम, (वायु० ४२.१९) (१७) प्लक्षद्वीपके ७ कुल पर्वतोंमेंसे छठे सुमना पर्वतका एक नाम (वायु० ४२.१९; ४९.११)। (१८) क्रौञ्च द्वीपके चार प्रकारके निवासियोंमेंसे एक प्रकारके निवासी (भाग० ५.२०.२२)।

ऋषभदेव–पु० [सं०] (१) दे० ऋषभ (१)। (२) लंकापर आक्रमण करनेवाली रामचन्द्रजीकी सेनाके एक सेनापतिका नाम। इन्द्रजीतने इन्हें बड़ा तंग किया था। यहाँतक कि यह मृतक दशामें पड़े थे और हनुमानजीकी ऋषभ

पर्वतसे लायी हुई बूटीसे पुनः जीवित हुए थे—दे० रामायण।

ऋषभा–स्त्री० [सं०] (१) विन्ध्य पर्वतसे निकली एक नदी (मत्स्य० ११४.२७)। (२) केतुमाल देशमें बहनेवाली एक नदी (वायु० ४४.१९)।

ऋषा–स्त्री० [सं०] क्रोधवशाकी पुत्री तथा पुलहकी स्त्री जिसकी मीना, माता, (अमीना ब्रह्मां०) वृत्ता, परिवृत्ता और अनुवृत्ता नामकी पाँच पुत्रियाँ थीं। मीनासे उत्पन्न मकर, पाठीन, तिमि, रोहित आदि जलचर मीनाके नामपर मैनगण कहलाये (ब्रह्मां० ३.७.१७२, ४१३; वायु० ६९.२८९-२९१)।

ऋषि–पु० [सं०] श्रुति, सत्य और तपमें पूर्ण निरत मन्त्रद्रष्टा। इनके अनेक भेद हैं—परमर्षि, ऋषिता, महर्षि, ऋषिक, ऋषिपुत्रक, श्रुतर्षि और ऋषिजाति (वायु० ५९.७९-८७)। ऋषियोंने आदिराज पृथुको आशीर्वाद दिया (भाग० ४.१५.१९)। इनमें ईश्वरीय शक्ति रहती है (भाग० ३.२०.५२-३) कृष्णावतारमें ये गौके रूपमें अवतीर्ण हुए थे (भाग० १०.१.२३(१)। विश्वामित्र, जमदग्नि, भरद्वाज, शरद्वान्, अत्रि, वसुमान्, वत्सार कश्यप, ये ही वैवस्वत मन्वन्तरके सप्तर्षि थे (वायु० ६५.२१-५०) के अनुसार इनका सम्बन्ध देवताओं और पितरोंसे होता है।

ऋषिक–पु० [सं०] (१) ह्लादिनी नदीसे सींचा जानेवाला एक देश तथा राज्य (ब्रह्मां० २.१८.५४; मत्स्य० १२१.५३)। (२) मनुष्योंकी एक जाति जो भारतके पश्चिम एवं दक्षिण प्रान्तमें रहती है। अर्जुनने इसी जातिसे आठ घोड़े लिये थे (महाभा० सभापर्व २७.२४-२७)।

ऋषिकन्या–स्त्री० [सं०] नर्मदातटका एक तीर्थ, जहाँ ऋषिकन्याओंने भगवान् सर्वेश्वर हमारे पति हों इस उद्देश्यसे तृप किया (मत्स्य० १९४-१४)।

ऋषिका (ऋषिका)–स्त्री० [सं०] शुक्तिमान् कुलपर्वतसे निकलनेवाली एक नदी (वायु० ४५.१०७)।

ऋषिकुल्या–स्त्री० [सं०] भारतकी एक पुण्य महानदी जो ब्रह्मां०, मत्स्य० तथा विष्णु०के अनुसार महेन्द्र पर्वतसे निकल गंजमके पास समुद्रमें गिरी है (भाग० ५.१९.१८; ब्रह्मां० २.१६.३७-३८; मत्स्य० ११४.३१; विष्णु० २.३.१३-१४)।

ऋषिचांद्रायण–पु० [सं०] इसमें प्रतिदिन तीन ग्रास, तीस दिनोंतक खाये जाते हैं (मनुस्मृति)।

ऋषिज–पु० [सं०] मरीचिपुत्री सुरूपा और अङ्गिराके दस देवपुत्रोंके वंशज, एक गोत्रकार तथा मन्त्रकृत् ऋषि। ३३ श्रेष्ठ अंगिरसोंमें इनकी गणना है (मत्स्य० १४५.१०५; १९६.४)।

ऋषितर्पण–पु० [सं०] प्रायः श्रावण शु० १५ को किया जाता है। इसमें ऋग्, यजुः तथा सामवेदके अनुयायी ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य अपने-अपने वेद, शाखा और कर्मकाण्डके अनुकूल कालमें इस कार्यको सम्पन्न करते हैं—दे० (उपाकर्मपद्धति)।

ऋषितीर्थ–पु० [सं०) नर्मदातटपरका एक तीर्थ जहाँ तृणविन्दु ऋषिको शापसे छुटकारा मिला था तथा जहाँ स्नान करने मात्रसे सहस्र गोदानका फल प्राप्त होता है (मत्स्य० १९१.२२; १९३. १३-४)।

ऋषिपंचमी–स्त्री० [सं०] भादों सुदी पंचमी जिस दिन उत्तंक ऋषिने अपनी पुत्रीसे (जिसे स्त्रीधर्मके दिनोंमें कुछ अनाचारके कारण कृमिरोग हो गया था) व्रत कराया था। इस दिन सिंघाड़ा आदि जो जोती हुई भूमिमें नहीं होते भोजन करनेको दिया था। कश्यप, अत्रि, भरद्वाज, विश्वामित्र, गौतम, जमदग्नि और वशिष्ठ सप्त ऋषियोंकी सम्मतिसे उत्तंकने अपनी पुत्रीसे यह व्रत प्रायश्चित्त स्वरूप कराया था इसीसे इसका नाम "ऋषिपंचमी" रखा है (ब्रह्मपुराण)।

ऋषिप्रकृति–स्त्री० [सं०] तीन है :—ब्रह्मर्षि, देवर्षि और राजर्षि (वायु० ६१.८०; विष्णु० ३.६.२९)।

ऋषिवास–पु० [सं०] वसुदेव और देवकीका एक पुत्र जिसे कंसने मार डाला था (मत्स्य० ४६.१३)।

ऋष्टिक–पु० [सं०] एक देशका नाम जो दक्षिणमें है (वाल्मीकीय रामायण)।

ऋष्य–पु० [सं०] देवातिथिका पुत्र तथा दिलीपका पिता (भाग० ९.२२.११)।

ऋष्यंत–पु० [सं०] उपदानवीके चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (मत्स्य० ४९.१०)।

ऋष्यमूक–पु० [सं०] दक्षिण भारतवर्षके एक पर्वतका नाम (भाग० ५.१९.१६)। यहाँपर 'पम्पासर' था और यहींपर मतङ्ग मुनिका आश्रम भी था। सुग्रीव यहाँके राजा थे तथा यहाँ बहुतसे बन्दर रहा करते थे। वनवासके समय श्रीरामचन्द्रने चौमासा यहीं व्यतीत किया था (रामायण, किष्किन्धाकाण्ड)।

ऋष्यशृङ्ग–पु० [सं०] (१) एक काश्यप ऋषि जो विभांडक ऋषिके पुत्र थे। राजा लोमपादकी पुत्री इनको व्याही थी जिसका नाम शान्ता था। इन्होंने महाराज दशरथका पुत्रेष्टि यज्ञ कराया था जिसके प्रभावसे श्रीराम आदि दशरथके चार पुत्र हुए थे (भाग० ९.२३.८-१०)। एक बार स्वर्गीय अप्सरा उर्वशीको देखकर महर्षि विभाण्डकका जलमें रेतःपात हो गया। उन्हींके आश्रममें रहनेवाली मृगीने जलके साथ उसे भी पी लिया। फलस्वरूप गर्भ रहा और पुत्र उत्पन्न हुआ। वह मृगी शापभ्रष्ट देवकन्या थी। हरिणीके गर्भसे उत्पन्न होनेके कारण उस बालकको सींग भी थे और इसी कारण बालकका नाम ऋष्यशृङ्ग था (भाग० ११.८.१८)। एक समय अंग देशके राजा लोमपादके राज्यमें अवर्षण हुआ। वर्षाके हेतु वेश्याओंके द्वारा प्रसन्न कराकर ऋष्यशृङ्ग बुलाये गये। ऋषिके आते ही वर्षा होने लगी। इसका पता महर्षि विभाण्डकको नहीं था इससे बाहरसे आनेपर तथा तपोवलसे सब जानकर वह अङ्ग देश गये। विभाण्डक ऋषिके डरसे घबराकर लोमपादने अयोध्याके राजा दशरथकी पुत्री शान्तासे ऋष्यशृङ्गका विवाह कर दिया। दशरथसे शान्ताको राजा लोमपादने पोष्यपुत्रीके रूपमें ग्रहण किया था (महा० वन० ११०; १११; ११२, ११३)।

अलंबुष राक्षस इन्हींका पुत्र कहा जाता है जिसे सात्यकिने महाभारतके युद्धमें परास्त किया था। इरावान्के साथ युद्ध करते हुए उनके हाथ मारा गया था (महाभा० उद्योग० १६७-३३; द्रोण० १०६-१६; भीष्म ८२.४४; ९०.५६)। यह सावर्ण वैवस्वत मन्वन्तरके सप्तर्षियोंमेंसे एक हैं (वायु० १००.११)। (२) आठवें (सावर्णि) मन्वन्तरके सप्तऋषियोंमेंसे एकका नाम (भाग० ८.१३.१५; विष्णु० ३.२.१७)।

ऌ

ऌकारिका–स्त्री० [सं०] सोलह शक्तिदेवियोंमेंसे एक शक्तिदेवीका नाम (ब्रह्मां० ४.४४.८५)।

ए

ए–पु० [सं०]=विष्णु।

एक–पु० [सं०] उर्वशीगर्भोत्पन्न ऐलके छह पुत्रोंमेंसे अन्यतम रयका पुत्र (भाग० ९.१५.२)।

एककुंडल–पु०[सं०] (१) नंदके पुत्र बलरामका एक नाम। (२) कुबेर।

एककर्ण–पु० [सं०] एक देशका नाम जिससे होती हुई पवित्रा ह्लादिनी नदी पूर्वकी ओर बहती है (मत्स्य० १२१.५३)।

एकचक्र–पु० [सं०] (१) सूर्यके रथका एक नाम जिसमें एक ही पहिया है। (२) दनु (दक्षपुत्री) के एकसठ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (भाग० ६.६.३१; ब्रह्मां० ३.६.७; मत्स्य० ६.१९; वायु० ६८.७; विष्णु० १.२१.५)।

एकचक्रा–स्त्री० [सं०] एक प्राचीन नगरी जो आरा (बिहार) के निकट थी। यहाँ बकासुर रहा करता था। पांडव लोग लाक्षागृहसे बचकर यहीं एक ब्राह्मणके घर अपनी माँ कुन्तीके साथ रहे थे और भीमने बकासुरको यहींपर मारा था (महाभा० आदिपर्व "बकसंहार")।

एकछत्र–पु० [सं०] महानन्दिपुत्र महापद्म जो शूद्रासे उत्पन्न था, की उपाधि, जो सम्राट् होनेके कारण हुई (ब्रह्मां० ३.७४.१४०)।

एकत–पु० [सं०] ब्रह्माका एक पुत्र जो द्वित नामके अपने भाइयों तथा अन्यान्य ऋषियोंके साथ स्यमंतपंचकमें श्रीकृष्णजीसे मिलने गया था (भाग० १०.८४.५)।

एकदंत–पु० [सं०] विघ्नेश, गणेशजीका एक नाम। परशुरामने कुठारसे इनका एक दांत गिरा दिया था। (ब्रह्मां० ३.४२.८, ३९; ४.४४.६६)।

एकपद–पु० [सं०) (१) दे० एकपाद। (२) एक देश नाम जिसे आर्द्रा, पुनर्वसु और पुष्य नक्षत्रोंके अधिकारमें माना गया है—दे० बृहत्संहिता।

एकपणिका–स्त्री [सं०] दुर्गाका एक नाम (देवी भागवत)।

एकपर्णा–स्त्री० [सं०] हिमवान् और मेनकाकी तीन पुत्रियोंमेंसे एक। यह असित (सित=मत्स्य०) की पत्नी तथा देवलकी माता थी। एक वट वृक्षके नीचे केवल एक पत्ता खाकर इन्होंने तपस्या की थी (ब्रह्मां० ३.८.३२;९.३; १०.८-११; मत्स्य० १३.८-९; वायु० ७०.२७; ७१.४; ७२.७, ११-१७)।

एकपाटला–स्त्री० [सं०] हिमवान् और मेनकाकी तीन पुत्रियोंमेंसे एक जो जैगीषव्यको ब्याही थी। इनके शंख और लिखित दो मानस-पुत्र थे। एक "पाटल" का आहार कर इन्होंने २००० वर्षोंतक घोर तपस्या की थी (ब्रह्मां० ३.९.३; १०.८-२१; वायु० ७१.४; ७२.७-१०, १८-९)।

एकपात–पु० [सं०] विष्णु, शिव, सूर्य।

एकपाद–पु० [सं०] (१) हेतुक आदि दस भैरवश्रेष्ठोंमेंसे एक भैरवका नाम (ब्रह्मां० ४.२०.८२)। (२) गणेशजीके विघ्नेश आदि ५१ नामोंमेंसे एक नाम (ब्रह्मां० ४.४४.६८)।

एकपादात्मिका–स्त्री० [सं०] अमृता आदि सोलह शक्तिदेवियोंमेंसे एक शक्तिदेवीका नाम (ब्रह्मां० ४.४४.८५)।

एकपिंगल–पु० [सं०] कुबेर, यक्षराजका एक नाम (वायु० ४१.८)।

एकराज्य–पु० [सं०] यह राज्य शंखद्वीपमें है और विविध म्लेच्छोंका इसमें निवास है (वायु० ४८.३१)।

एकराट–पु० [सं०] "सप्तार्चिष"—श्राद्धमें पठनीय एक स्तोत्र—का श्राद्धमें जप (पाठ) करनेवाला सात द्वीपों सहित पृथिवीमें एकमात्र राजा (एकच्छत्र राजा) या सम्राट् (वायु० ७४.३०)। प्राचीनबर्हि ऐसा ही था (ब्रह्मां० २.३७.२५; ३.१६.५७; वायु० ६३.२४)। सुवर्माके पुत्र सार्वभौम और महानन्दिके पुत्र महापद्मने भी यह ख्याति प्राप्त की थी (वायु० ९९.१८६; ब्रह्मां० ३.७४.१४०)।

एकलव्य–पु० [सं०] (१) एक प्रसिद्ध निषादका नाम। महाभारतके अनुसार यह निषाद राजा हिरण्यधनुका पुत्र था। इसने गुरु द्रोणाचार्यकी मूर्तिको गुरु मानकर उसके सामने शस्त्राभ्यास किया और उसमें पारंगत हुआ। गुरुदक्षिणामें इसने दाहिने हाथका अँगूठा दे दिया था (महाभारत, आदिपर्व)। (२) निषादोंका एक राजा जिसे मथुराके दक्षिणी प्रवेशद्वारपर रक्षार्थ जरासंधने स्थित किया था। गोमंतके आक्रमणके समय भी यह दक्षिण द्वारपर ही था (भाग० १०.५०.११(४); ५२.११(८); ब्रह्मां० ३.७१.१९०) इसे व्याधोंने पाला था (वायु० ९६.१८७)।

एकलिंग–पु० [सं०] एक शिवलिंग विशेष। मेवाड़के महाराणाओं और गहलौत राजपूतोंका यह शिवलिंग प्रधान कुलदेव है—'राजस्थान' टॉड।

एकविंशदिनात्मक सांतपन–पु० [सं०] इसमें कुशोदक, गोबर, गोमूत्र, गोदुग्ध, गोदधि और गोघृतमेंसे एक-एकको ३-३ दिन पिये फिर तीन दिन उपवास करे तो यह पूरा होता है (प्रायश्चित्तेन्दु शेखर)।

एकविंशा–पु० [सं०] ऋचाओंके एक संग्रहका नाम जो ब्रह्माके उत्तरीय मुखसे उत्पन्न हुआ था।

एकविलोचन–पु० [सं०] पश्चिम और उत्तर दिशाके कोनेमें स्थित एक देश जिसे उत्तराषाढ़, श्रवण और धनिष्ठा नक्षत्रोंके अधिकारमें कहा गया है (बृहत्संहिता)।

एकवीरा–स्त्री० [सं०] (१) एक देवीका एक नाम जिनका मन्दिर सह्यपर्वतपर है एक (मत्स्य० १३.४०.×२ मातृका देवी जिनकी मानस सृष्टि शिवजीने अन्धकासुर संग्राममें अन्धकका रक्तपान करनेके लिए की थी (मत्स्य० १७९.१७)।

एकशृंग–पु० [सं०] मानसरोवर झीलके दक्षिणके पर्वतोंमेंसे एक पर्वत (वायु० ३६.२४)।

एकशृंगा–स्त्री० [सं०] काव्य नामक पितरोंकी मानसी

कन्या शुक्रकी पत्नी जो पहले योगोत्पत्ति नामसे विख्यात थी। इसे पितृकन्या भी कहते हैं (ब्रह्मां० ३.१०.८६-८७)।

एकाक्ष—पु० [सं०] मनुष्यधर्मका पालन करनेवाले (ब्रह्मां० के अनुसार मनुष्योंसे अवध्य) दानवोंमेंसे एक दानव (ब्रह्मां० ३.६.१५; वायु० ६८.१५)।

एकाक्षा—स्त्री० [सं०] केतुमाल देशकी एक नदी (वायु० ४४.२२)।

एकाक्षी—स्त्री० [सं०] शिवजीकी एक मानस-पुत्री देवी, मातृका (मत्स्य० १७९.२५)।

एकादशरथ—पु० [सं०] यह नवरथ-पुत्र दशरथका पुत्र तथा शकुनिका पिता था (ब्रह्मां० ३.७०.४४; वायु० ९५.४३)।

एकादशाह—पु० [सं०] मरनेके दिनसे ग्यारहवें दिनके कृत्य जिस दिन किये जाते हैं और परिवारके लोग शुद्ध होते हैं। इस दिन वृषोत्सर्ग करते हैं और दान आदि करते हैं। महापात्र इसी दिन विदा होता है। दे० "अन्त्येष्टिश्राद्धकर्मदीपिका"।

एकादशी—स्त्री० [सं०] प्रत्येक मासके शुक्ल तथा कृष्ण पक्षकी ग्यारहवीं तिथि। वैष्णव मतानुसार इस दिन अन्न खाना वर्जित है। व्रतके लिए दशमी-विद्धा एकादशीका निषेध है। वर्षमें चौबीस एकादशियाँ होती हैं जिनका नाम पृथक्-पृथक् दिया है—भीमसेनी, निर्जला, हरिप्रवोधिनी आदि। जगन्नाथपुरीके निवासी एकादशी नहीं करते। नंदगोप इस व्रतको करते थे (भाग० १०.२८.१)।

एकानंगा—स्त्री० [सं०] श्रीकृष्ण सत्यभामाके साथ इंद्रके यहाँसे लौटे थे, यह भेंट करने आयी थी। महाभारतके अनुसार यशोदा माताकी पुत्री भगवान् श्रीकृष्णकी वहन (महाभा० सभा० ३८।३९ के वाद) (भाग० १०.६७ (५)५०)।

एकाम्भक—पु० [सं०] श्राद्धयोग्य एक तीर्थ जो पितरोंको अति प्रिय है। इसी तीर्थमें देवीका कीर्तिमतीके नामसे निवास है (मत्स्य० १३.२९;२२.५१)।

एकाम्रनिलय—पु० [सं०] कांची नगर जहाँ एकाम्रनिलय शिवजीकी पूजा की जाती है। पार्वतीसे विछोहकी अवधिमें शिव एक आमके वृक्षके नीचे वैठे ललितादेवीके ध्यानमें मग्न रहते थे। ललिताकी कृपासे इनको पार्वतीकी प्राप्ति हुई। पार्वतीके साथ विधिवत् विवाह कर कैलासको गये। यह ५० शक्ति-पीठोंमेंसे एक पीठ है (ब्रह्मां० ४.५.७;४०.३७-४५; ४४.९४)।

एकार—पु० [सं०] पिशंग (भूरा) रंग तथा २४ मुँहवाले ब्रह्म नामक अकार देवताके ग्यारहवें मुखसे उत्पन्न ग्यारहवाँ मनु जिसका रंग पिंशग (भूरा) था (वायु० २६.४३)।

एकार्णव—पु० [सं०] महाप्रलयकी एक अवस्था जिसमें संसारको आवेष्टित कर लेनेवाला जल ही जल रहता है, स्थावर-जंगम (चराचर) संसार नष्ट हो जाता है। अमितशक्ति भगवान् उस जलमें शयन करते हैं (ब्रह्मां० ४.१.१७३,१८१,२३४; मत्स्य० १६६.१७; १६७,१,४८; वायु० १००.१७९)। यह १००० देववर्षोंका होता है (वायु० २३.११०;२४.८; २६.७)।

एकाष्टका—पु० [सं०] पितरोंकी मानसी कन्या विरजा, जो नहुषकी पत्नी और ययातिकी माता थी, का पीछे ब्रह्मलोकमें जाकर प्राप्त हुआ रूप (मत्स्य० १५.२४)।

एकोद्दिष्ट (श्राद्ध)—पु० [सं०] यह एक ही व्यक्तिके उद्देश्यसे उसकी मृत्यु दिनमें किया जाता है जो वर्षमें एक वार मरण दिनमें होता है जिसमें केवल एक पिण्डका विधान वतलाया गया है (मत्स्य० १८.१.२५; विष्णु० ३.१३.२३, ४०)।

एरक—पु० [सं०] समुद्रके किनारे उपजनेवाली घास। कहते हैं सांवसे जो मूसल उत्पन्न हुआ था उसे यादव राजाकी आज्ञासे पीसकर समुद्रमें फेंक दिया गया था। यह घास उसी मूसलके कणोंसे उत्पन्न हुई थी (भाग० ११.१.२२)।

एलापत्र—पु० [सं०] इस नामका एक वलिष्ठ सर्प जो कद्रूके हजार फणवाले हजार पुत्रोंमेंसे एक था। (ब्रह्मां० ३.७.३४)। (२) १००० फनवाला एक नाग जो नभ (श्रावण) मासमें सूर्यके रथके साथ रहता है (भाग० १२.११.३७; ब्रह्मां० २.२३.९; मत्स्य० ६.४०; १२६.१०; विष्णु० २.१०.९)।

एलापर्ण—पु० [सं०] एक सर्प जो शांवपाल नामक सर्पके साथ नभ और नभस्य (श्रावण और भाद्रपद) मासोंमें सूर्यके साथ रहता है (वायु० ५२.१०)।

एलापुत्र—पु० [सं०) इसने कम्वलसे विष्णु पुराण सुनकर वेदशिराको सुनाया जो पाताल चला गया (विष्णु० ६.८.४७-८)।

एलापुर—पु० [सं०] पितरोंके श्राद्धके योग्य एक अति पवित्र तीर्थ (मत्स्य० २२.५०)।

एलामुख—पु० [सं०] पाताल निवासी महावली सर्पोंमेंसे एक सर्प (मत्स्य० १६३.५६)।

ऐ

ऐंद्रि—पु० [सं०] (१) इंद्रका पुत्र जयंत। इसीने काकका रूप धर जानकीको घायल किया था जिसके कारण श्रीरामने ब्रह्मास्त्रसे इसकी केवल एक आँख फोड़कर प्राणदान दिया था (रामायण-अरण्यकाण्ड-जयंतकी कुटिलता और फल प्राप्ति)। (२) अर्जुनका एक नाम—दे० अर्जुन।

ऐंद्री (इष्टि)—पु० [सं०] (१) एक यज्ञ जिसे युवनाश्वने पुत्रोत्पत्तिके लिए किया था (भाग० ९.६.२६)। (२) इंद्रकी नगरी अमरावती (भाग० १०.८९.४४)।

ऐंद्रीपूजन—पु० [सं०] आषाढ़के किसी भी पक्षकी नवमीको ऐंद्रीदेवीका पूजन करे तथा नक्त व्रत करे (भविष्योत्तर पु०)।

ऐ—पु० [सं०] = शिव।

ऐक्यस्वरूपिणी—स्त्री० [सं०] सात धातुनाथा-शक्तियोंमेंसे एक शक्तिका नाम (ब्रह्मां ४.२०.१६)।

ऐक्ष्वाकी—स्त्री० [सं०] (१) भद्रसेनी और पुरुद्वान्के पुत्र जन्तुकी पत्नी तथा शूरकी माता (मत्य० ४४.४५; ४६.१)। (२) अनाधृष्टिकी पत्नी तथा शत्रुघ्नकी माताका नाम (मस्त्य० ४६.२४)। (३) पुरूद्वहकी पत्नी तथा सत्त्वकी माताका नाम (वायु० ९५.४७)।

ऐडविल–पु० [सं०] कुबेरका एक नाम । यह पौलस्त्य राक्षसों, यक्षों तथा उनके वंशजोंके राजा हैं जो वेदाध्ययनशील हैं तथा तप-व्रत आदिका सेवन करते हैं, (वायु० ७०.५४) ।

ऐडविड–पु० [सं०] (१) दशरथका पुत्र, विश्वसहका पिता तथा चक्रवर्ती खट्वांगका दादा (भाग० ९.९.४१) । (२) पौलस्त्य राक्षसोंका राजा अर्थात् कुबेर', (ब्रह्मां० ३.८.६०)।

ऐतरेय–पु० [सं०] हारीतमुनि वंशोत्पन्न माण्डूकि तथा इतराका पुत्र जो बचपनसे ही "ॐ नमो भगवते वासुदेवाय" द्वादशाक्षर मंत्रका जप करता था। इसने इसी मंत्रके बलपर द्वादशीव्रत पालनकर मृत्युके पश्चात् मोक्ष प्राप्त किया था (स्कंद० माहेश्वर-कुमारिकाखंड) ।

ऐनि–पु० [सं०] सूर्यके पुत्रका नाम ।

ऐरण्डीतीर्थ–पु० [सं०] ऐरण्डी तथा नर्मदाके संगनपर स्थित एक अति पवित्र तीर्थ (मत्स्य० १९१.४२-७; १९३.६५)।

ऐरावत–पु० [सं०] (१) देवराज इंद्रके हाथीका नाम । यह पूर्व दिशाका दिग्गज है जिसका रंग श्वेत तथा दाँत चार हैं (भाग० १०.५९.३७; विष्णु० १.९.७,२५; २२.५) । समुद्र-मंथनसे प्राप्त चौदह रत्नोंमें यह भी एक है (भाग० ८.८.४) । यह हाथियोंका राजा है और कार्त्तिक मासमें सूर्यके रथपर रहता है (विष्णु० २.१०.१२) । श्रीकृष्ण-इंद्र-युद्धमें गरुड़से हार गया था (विष्णु० ५.३०.६६) । (२) फाल्गुन मासमें सूर्य रथपर रहनेवाला एक नाग (भाग० १२.११,४०; ब्रह्मां० २.२३.३,१४; ३.७.३३.३२७; मत्स्य० ६.३९; १२६.१५) । शरत्में यह सूर्यके साथ रहता है (वायु० ५२.१४; ६९.७०) । (३) भौवनने सूर्यके 'अण्डकपाल' को ग्रहण कर सामगानका जब रथंतर खंड गाया उसी समय एक हाथी दिखायी दिया जो इरावतीको पुत्रके रूपमें दे दिया गया । इरावतीका पुत्र होनेसे इंद्रका हाथी ऐरावत कहलाया और हाथियोंका राजा हुआ (वायु० ६९.२०९-११; मत्स्य० ८.७) इसके ४ दाँत हैं यह इंद्रकी सवारी है और वृत्रासुरसे परास्त हुआ (भाग० ६.११.११; ८.८.४; १०.२५.७; मत्स्य० १३३.१०; १७८.४८) ।

ऐरावती–पु० [सं०] (१) चंद्रमाकी एक वीथी । इसमें अश्लेषा, पुष्य और पुनर्वसु नक्षत्र पड़ते हैं । (२) हिमालयसे निकली हुई नदियोंमेंसे एक अति सुन्दर नदी जिसकी सेवा इंद्र नित्य करते हैं (मत्स्य० ११४.२१; ११५.१८.१९; ११६.१.२५) । इसका विशद विवरण मत्स्य० ११८.२-७० में दिया है ।

ऐरावतीवीथि–स्त्री० [सं०] इसमें पुष्य, अश्लेषा और आदित्य (पुनर्वसु = वायु० पु०), सूर्यके उत्तर मार्गमें रहते हैं (ब्रह्मां० ३.३.४८; मत्स्य० १२४.५२-५५; वायु० ६६.४८) ।

ऐरावण–पु० [सं०] इरावतीका एक पुत्र जो इंद्रका वाहन था, इसे ऐरावत भी कहते हैं (ब्रह्मां० ३.७.२९२ ३२६) ।

ऐल–पु० [सं०] कश्यप ऋषिके पौत्र वैवस्वत मनु, जिनकी पत्नी श्रद्धा थी, की पुत्रोत्पत्तिके हेतु पुत्रेष्टि की गयी । होताकी गलतीसे पुत्रके बदले पुत्री इला हुई । वशिष्ठजीके यत्न से इला पुरुष सुद्युम्न हो गयी । दैववश सुद्युम्न पुनः स्त्री हो गया इसी इलाके गर्भसे उत्पन्न पुत्र पुरूरवा । यह बुधका पुत्र तथा सोमका पोता था । उर्वशीसे इसे ६ पुत्र थे । ऐलसे क्षेमकतक, जो इस वंश (चंद्रवंश) का अंतिम राजा था, १०० शाखाएं थीं (भाग० २.७.४४; ब्रह्मां० २.२८.१-२; ३.७४.२४५; वायु० १.१०६; ८५.१७; ९०.४५; ९१.१०; ९९.२६६; ४३२, ४५१; विष्णु० ३.१४.११) ।

ऐलपत्र–पु० [सं०] कद्रूके पुत्र हजार नागोंमें एक नागका नाम (वायु० ६९.७०) ।

ऐलबिल–पु० [सं०] कुबेरका एक नाम (ब्रह्मां० ३.७.३३१; वायु० ६९.२१६) ।

ऐलिक–पु० [सं०] एक भार्गव गोत्रकारका ऋषिका नाम (मत्स्य० १९५.२०) ।

ऐलीन–पु० [सं०] अप्रतिरथका एक पुत्र जिसके दुष्यंत आदि चार पुत्र थे (विष्णु० ४.१९.८-९) ।

ऐश्वर–पु० [सं०] पारगणके १२ देवताओंमेंसे एक देवता (ब्रह्मां ४.१.५७) ।

ऐश्वर्य–पु० [सं०] ये आठ हैं = अणिमा, महिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व, वशित्व और लघिमा, गरिमा (कामावस्यायिता) । इनसे तीन प्रकारके अन्य ऐश्वर्य उत्पन्न होते हैं = सावद्य, निरवद्य, और सूक्ष्म (ब्रह्मां० २.२७.१२७; मत्स्य० १४२.६८; वायु० १३.२-६; १०२.९७; ५४-५२) ।

ऐश्वर्यकारिणी–स्त्री० [सं०] अमृता आदि १६ शक्ति देवियोंमेंसे एक शक्ति देवी (ब्रह्मां० ४.४४.८५) ।

ऐश्वर्यसंग्रह–पु० [सं०] रोहित प्रजापति युगके १२ पारदेवोंमें एक (वायु० १००.६१) ।

ऐषीक–पु० [सं०] एक शस्त्रका नाम जिसे चलानेके पहिले त्वष्टा देवताका नाम पढ़ लेना आवश्यक है ।

ओ

ओं–अव्यय–यह शब्द बहुत ही पवित्र माना जाता है जो वेद-मंत्रके पहिले और पीछे बोला जाता है । पुराणोंमें ओम्‌के 'अ'; 'उ' और 'म्' क्रमसे विष्णु, शिव और ब्रह्माके वाचक माने गये हैं । मांडूक्य उपनिषदमें इसकी विस्तृत व्याख्या मिलेगी । नारद पुराणानुसार 'अकार' ब्रह्माजीका रूप है, 'उकार' विष्णुका स्वरूप है, 'मकार' रुद्ररूप है तथा अर्धमात्रा निर्गुण परब्रह्म परमात्मस्वरूप है । अकार, उकार और मकार प्रणवकी तीन मात्राएं कही गयी हैं । ब्रह्मा, विष्णु और शिव ये तीन क्रमशः उनके देवता हैं । इन सबका समुच्चय रूप जो ॐकार है वह परब्रह्म परमात्माका बोध करानेवाला है (नारद पुराण पूर्वभाग—प्रथम पाद) । ब्रह्माने ॐकारके अवयव अकार, उकार और मकारको तीन वेदोंसे दुहा । इसका जप करनेसे वेदाध्ययनका पुण्य प्राप्त होता है (मनु० २.७६,७८); यह परमात्माका प्रिय नाम तथा प्रतीक है । इसे उद्गीथ भी कहते हैं, (छान्द० उ० १।१।१) ।

ओंकार–पु० [सं०] यह ब्रह्मका वाचक है (ब्रह्मां० २.२५.६३; ४.३६.१५) दे० ओं० । यह त्रिपुरारिके रथका आधार समझा जाता है (मत्स्य० १३३.३४-५) ।

ओंकारनाथ–पु० [सं०] शिवके द्वादश ज्योतिर्लिंगोंमेंसे एकका नाम । मध्यप्रदेशके मान्धाता ग्राममें ओंकारनाथ-

जीका प्राचीन मंदिर है (हि० श० सा०)।

ओंकारपवन–पु० [सं०] नर्मदा तटपरका एक तीर्थ (मत्स्य० २२.२७; १८६.२; १९५.१)। यहाँ श्राद्ध करनेका बड़ा माहात्म्य है और श्राद्धके लिए यह अति पवित्र स्थान है (ब्रह्मां० ३.१३.७०; वायु० ७७.६८)।

ओंकारप्राप्ति–स्त्री० [सं०] यह स्वर और व्यञ्जनके साथ त्रिमात्र है। ओं मस्तिष्कमें रहनेपर सारे शरीरमें चींटियोंके रेंगनेका सा अनुभव होता है। प्रणवरूपी धनुष और आत्मारूपी बाणसे ब्रह्मको लक्ष्य रख अचूक निशाना लगाना है। ओ३म् = तीन वेद, तीन लोक, तीन अग्नि = विष्णुके तीन पग हैं। अकार अक्षर है, उकार है स्वरित और मकार प्लुत है। यह अश्वमेध यज्ञसे भी अधिक महत्त्वका है। यदि सौ वर्षोंतक प्रत्येक महीनेमें अश्वमेध किया जाय तो भी वह पुण्य नहीं मिलता जो इसका अभ्यास करनेसे मिलता है। जो इस ओंकार ज्ञानको प्राप्त करता है या ध्यान करता है वह मुक्त हो रुद्र लोकको जाता है (वायु० २०.१-९; ३२-३५)।

ओकार–पु० [सं०] चौदह मुखवाले ब्रह्मरूप अकार देवताके तेरहवें मुखसे उत्पन्न पाँच रंगवाला उत्तम अक्षर (वायु० २६.४५;)।

ओघवान्–पु० [सं०] (१) प्रतीकका पुत्र जिसका पुत्र भी इसी नामका था—और पुत्रीका नाम ओघवती था, (भाग० ९.२.१८)। (२) प्रथम ओघवान्का पुत्र (भाग० ९.२.१८)।

ओघवती–स्त्री० [सं०] (१) ओघवान् प्रथमकी पुत्री जो सुदर्शनकी पत्नी थी (भाग० ९.२.१८)। (२) पितरोंके लिए श्राद्धार्थ एक पवित्र नदीका नाम (मत्स्य० २२.७१)।

ओज–पु० [सं०] श्रीकृष्ण और माद्रीके दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (भाग० १०.६१.१५)।

ओजस्–पु० [सं०] (१) माधव (वैशाख) मासमें सूर्यके रथके साथ रहनेवाला एक यक्ष (भाग० १२.११.३४)।

ओजिष्ठ–पु० [सं०] रैवत मन्वन्तरके दस पृथुक देवताओंमेंसे एक पृथुक देवता (ब्रह्मां० २.३६.७३)।

ओणम–पु० [सं०] = "तिरुवोणम" = (तिरु = पवित्र, ओणम = सावनका श्रवण नक्षत्र)। केरल देशका एक फूलों, हरे खेतों तथा नौका-दौड़का त्योहार। इस पर्वका पौराणिक आधार महाराज बलिकी दानशीलता तथा वामनावतारकी कथा है। इस त्योहारका दूसरा आधार भगवान् विष्णु (वामन) का जन्म दिन है। इस दिन बच्चोंको खीर खिलाते हैं जिससे संतान-लाभकी आशा रहती है। हस्त नक्षत्रसे श्रवणतक दस दिन फूलोंकी रंगोली जिसे "ओनाथाप्पन" कहते हैं सजायी जाती है। कहते हैं इस अवसरपर राजा बलि पातालसे अपने राज्यके दर्शनार्थ आते हैं। इस त्योहारके देवता "तृक्काक्करप्पन" हैं, जिनकी पूजा केरलमें ओणम पर्वपर घर-घर होती है। दावत ओणम पर्वका प्रधान कृत्य है। यह केरलमें नववर्षका उत्सव है जिसकी तुलना होलीसे की जा सकती है। इसमें नावोंकी दौड़ (वल्लंकलि) की भी प्रधानता देखी गयी है। प्रधानतः यह हिन्दुओंका ही पर्व है, पर 'बैरावी' कहलानेवाले कुछ मुसलमान भी खंजड़ी लेकर गीत गाते तथा बड़े-बड़े हिन्दू कृपकोंसे इनाम पाते हैं। दे० "मलयांकोल्लम् तथा केरलम्" ग्रंथ।

ओनामासी–स्त्री० [सं०] छोटे बच्चोंसे पाठ आरम्भ कराने के पहले जो "ॐ नमः सिद्धम्" कहलाया जाता है। उसका विकृत रूप। यह कहलाना शुभ और विघ्नविनाशक समझा जाता है।

औ

औ–पु० [सं०] = शेष, अनंत। स्त्री० [सं०] = पृथ्वी।

औंक–पु० [सं०] इक्ष्वाकु वंशीय बलका पुत्र तथा वज्रनाभका पिता (वायु० ८८.२०५)।

औकारवर्ण–पु० [सं०] चौदह मुखवाले ब्रह्मरूप अकार देवताके १४ वें मुखसे उत्पन्न चितकबरे रंगके सावर्णिमनु (वायु० २६.४६)।

औक्षि–पु० [सं०] भृगुवंशीय एक आर्षेय प्रवर (भार्गव) (मत्स्य० १९५.४३)।

औग्रसेनी–स्त्री० [सं०] उग्रसेनकी पुत्री तथा अक्रूरकी पत्नी जिससे अक्रूरके देववान् तथा उपदेव नामके दो पुत्र हुए (ब्रह्मां० ३.७१.११३)।

औचेयु–पु० [सं०] भद्राश्वके घृता अप्सरासे उत्पन्न दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (मत्स्य० ४९.५)।

औडुलोमि–पु० [सं०] एक तत्त्वज्ञानी आचार्यका नाम जिनका मत वेदान्त सूत्रोंमें बड़े मतभेद प्रदर्शनार्थ सम्मानके साथ उद्धृत किया गया है (हि० श० सा०)।

औत्तमि–पु० [सं०] उत्तानपादके पुत्र उत्तम तथा बभ्रु कन्या बाभ्रव्याके पुत्र एक मनु जो चौदह मनुओंमेंसे तीसरे हैं।

औत्तानपाद–पु० [सं०] शिशुमारकी बायीं गालपर स्थित (ब्रह्मां २.२३.१०२)।

औत्कचेय–पु० [सं०] खशाकी सात पुत्रियोंमेंसे एक उत्कचासे उत्पन्न एक राक्षस वर्गका नाम (ब्रह्मां० ३.७.१४०)।

औत्कार्ष्टेय–पु० [सं०] खशाकी अन्य पुत्री उत्कृष्टासे उत्पन्न एक राक्षसवर्गका नाम (ब्रह्मां० ३.७.१४०)।

औत्थानिककौतुक–पु० [सं०] एक उत्सव जो बच्चोंके सर्वप्रथम करवट लेनेपर मनाया जाता है। यह श्रीकृष्णका मनाया गया था (भाग० १०.७.४, ६–८)।

औदंबर्य–पु० [सं०] ऋतधामाग्निका एक स्थान (ब्रह्मां० २.१२.२४; वायु० २९.२३)।

औदार्य–पु० [सं०] अंगिराके सुरूपासे उत्पन्न दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (वायु० ६५.१०५)।

औदुंबर–पु० [सं०] एक प्रकारके मुनि जिनके जीवनका यह नियम था कि सवेरे उठकर जिस दिशाकी ओर इनकी दृष्टि पहले जाती थी उसी ओर ये भोजनके लिए जाते थे। उस ओरसे जो कुछ इन्हें प्राप्त होता उसीपर उस दिन रह जाते और भूखे रहनेपर भी किसी अन्य व्यक्तिसे कुछ न लेते (भाग० ३.१२.४३)।

औद्भिद–पु० [सं०] कृतमाला नदीके तटपरका एक पर्वत

(ब्रह्मां० ३.३५.१७)।

औपगव–पु० [सं०] वशिष्ठ कुलके एक गोत्रकार ऋषि (मत्स्य० १९९.२)।

औपगवि–पु० [सं०] उद्धवका एक नाम (भाग० ३.४.२७)।

औपधर्म्य–पु० [सं०] विष्णुके वे नियमादि जो असुरों तथा पापियोंको पथभ्रष्ट करनेके हेतु चलाये गये थे, अर्थात पाखण्डधर्म (भाग० २.७.३७)।

औपमन्यु–पु० [सं०] ब्रह्माके यज्ञका एक ऋत्विक् (वायु० १०६.३९)।

और्व–पु० [सं०] (१) पौराणिक भूगोलका दक्षिण भाग जहाँ संपूर्ण नरक हैं और जहाँ दैत्योंका निवासस्थान कहा जाता है। (२) एक विख्यात प्राचीन आर्य ऋषि जो पहले भृगुवंशी क्षत्रियोंके पुरोहित थे, पर कुछ कारणवश पुरोहित यजमानोंमें मतभेद हो गया। क्षत्रियोंका अत्याचार यहाँतक बढ़ा कि ये भृगुवंशीय स्त्रियोंका गर्भ छेदन कर बच्चोंका नाश करने लगे। इसी समय एक भृगुवंशी स्त्री अपने गर्भकी रक्षा हेतु पहाड़ोंकी कंदरामें जा छिपी, पर इन लोगोंने उसका वहाँ भी पीछा किया। वह भयवश भागी और भागते समय ऊरुसे एक तेजस्वी पुत्र हुआ, अतः इसका नाम "और्व" पड़ा। इन्होंने मारे क्रोधके सम्पूर्ण पृथ्वीमण्डलको भस्म करना चाहा, पर पूर्वजोंने इन्हें रोका और तब इन्होंने अपने क्रोधको समुद्रमें डाल दिया। इसी कारण बड़वानलको और्वानल भी कहते हैं। (३) ऋचीके गर्भसे उत्पन्न अप्रवान (अप्रूवत = मत्स्य०) का पुत्र जो माताकी जंघासे उत्पन्न हुआ था। यह एक मंत्रकृत् तथा ऋषि थे जो ऋचीकके पिता और जमदग्निके दादा थे। राजा सगरको इनके आशीर्वादसे पुत्र हुए थे। सगरने इनसे मोक्ष प्राप्तिके अनेक उपदेश लिये थे तथा विष्णु-पूजाका ठीक ढंग सीखा। बाहुकी गर्भवती पत्नीको सती होनेसे और्वने ही रोका और सगर जो पिताकी मृत्युके पश्चात् उत्पन्न हुए थे, उन्हें अपने आश्रममें रख इन्होंने उनके सारे संस्कार किये (भाग० ९.८. ८,३१; ब्रह्मां० ३.३४.२; ५०.२९-५८; ५१.१-४१; ५२.३७; ५५.३; ६३.१२२, १३३-४; वायु० ८८.१२३, १३२-४; विष्णु० ४.३.२९,३७)। परशुराम इनसे कई बार मिलने आये थे। यह स्वारोचिष युगके ऋषि थे और भार्गव गोत्रके पाँच प्रवरोंमेंसे एक थे (मत्स्य० ९.८; १९५-२९)। (४) संवर्तक, बड़वामुख और्व, यह रूप धारण कर विष्णुने समुद्रके जलको सोख लिया (ब्रह्मां० २.१८.८०; ३.७२.१७; मत्स्य० २.५; वायु० ४७.७६)। ब्रह्माने इनको बड़वामुखमें स्थापित कर दिया। दे० और्व (२)॥

और्वमाया–स्त्री० [सं०] तारकासुर संग्राममें तामसास्त्रके अंधकारको दूर करनेके लिए मयने इसका प्रयोग किया था। हिरण्यकशिपुने और्वसे इसे प्राप्त किया था (मत्स्य० १७५.२०-७१)।

और्वशेय–पु० [सं०] (१) वशिष्ठ और अगस्त्य ऋषिका एक नाम। (२) पुरूरवाका एक पुत्र जो नहुषका पिता था। यह बड़ा ही धर्मात्मा राजा था, जिसका दरबार ऋषि, गंधर्व आदिसे भरा इंद्रकी राजसभाके समान था (वायु० २.२३-३६)।

औलूक्य–पु० [सं०] वैशेषिक दर्शनकार कणादका नामांतर, इस दर्शनकारके पिताका नाम उलूक था, अतः इन्हें औलूक्य तथा इनके रचित दर्शनको औलूक्यदर्शन कहते हैं।

औशनस–पु० [सं०] दैत्यगुरु शुक्राचार्यके द्वारा निर्मित शास्त्रका नाम। शुक्राचार्यका दूसरा नाम उशना था। भृगुवंशी उशनाने ऋषिमंडलीके सम्मुख जिन शास्त्रतत्त्वोंका वर्णन किया था, उन्हीं तत्त्वोंका संग्रह करके उशनःसंहिता बनायी थी जो आजतक प्रसिद्ध है।

औशनसी–पु० [सं०] शुक्राचार्यकी पुत्री देवयानी (महाभा० आदि० ८१-१८)।

औशीरपर्वत–पु० [सं०] श्राद्ध तथा यज्ञादि करनेके लिए एक प्रसिद्ध पर्वत। इसपरके सब वृक्ष यज्ञके लिए उपयोगी हैं एवं यहाँ शरीर त्याग करनेसे स्वर्गप्राप्ति होती है (ब्रह्मां० ३.१३.२९; वायु० ७७.२९-३१)।

औषधात्मिका–स्त्री० [सं०] सोलह शक्तियोंमेंसे एक शक्ति देवीका नाम (ब्रह्मां० ४.४४.८५)।

औष्टकर्ण–पु० [सं०] एक राज्य जहाँसे होकर ह्लादिनी नदी बहती है (ब्रह्मां० २.१८.५४)।

क

कंकण–पु० [सं०] विवाहके पहले वर और कन्याके हाथमें रक्षार्थ एक धागा बाँधते हैं। इसमें एक छोटी-सी पीले कपड़ेकी पोटली भी रहती है, जिसमें सरसों आदि रखते हैं। ऊपरसे लोहेका एक छल्ला भी रहता है। विवाहमें कहीं-कहीं ऐसी प्रथा है कि चोकर, सरसों, अजवायन आदि रखकर पीले कपड़ेमें नौ (९) पोटलियाँ बनाते हैं जिनमेंसे एक तो लोहेके छल्लेके साथ रक्षार्थ दूल्हा या दुलहिनके हाथमें बाँधते हैं और बची आठ मूसल, चक्की, ओखल, पीढ़ा, हरिस, लोढ़ा, कलश आदिमें बँधवा दी जाती हैं (विवाहपंचरत्नपद्धति, फलाहारी शर्मा कृत)।

कंकणास्त्र–पु० [सं०] एक अस्त्र विशेष (वाल्मी० रामायण)।

कंकमुद्ग–पु० [सं०] एक श्रुतर्षिका नाम (ब्रह्मां० २.३३.१०)।

कंकाली–स्त्री० [सं०-लिनी] दुर्गाका एक स्वरूप (देवी भा०)।

कंगन–पु० [सं० कङ्कण]—दे० कंकण।

कंतित–पु० [देश०] एक पुराना नगर जिसे मिथ्या वासुदेवकी राजधानी कहते हैं। इसके खंडहर मिरजापुरके पश्चिम भागमें गंगाके किनारे अभी भी विद्यमान हैं (हि० श० सा०)।

कंदुकतीर्थ–पु० [सं०] ब्रजमें श्रीकृष्णने जहाँ गेंद खेला था (विष्णु० तथा भाग०)।

कंधैया–पु० [हि०] दे० कन्हैया।

कंपिल–पु० [सं० कम्पिल्ल] फरुखाबाद जिलेका एक पुराना नगर जो दक्षिण पांचालकी राजधानी था। यहींपर द्रौपदीका स्वयंवर हुआ था। पाँचों पांडव इसी स्थानके एक

कुम्हारके घर छिप कर टिके थे (महाभारत आदि० पर्व०)।

कंस–पु० [सं०] (१) एक भोजवंशीय नृपति द्रमिल गंधर्वके अंशसे यह मथुराके राजा उग्रसेनके क्षेत्रज और ज्येष्ठ पुत्र थे (भाग० ९.२४.२४; ब्रह्मां० १.१.१२५; ३.७१.१३२; वायु० १.१४८; ९६.१३१, १७३,२१६-२२२; विष्णु० ४.१४.२०; मत्स्य० ४४.७४)। हरिवंशके अनुसार द्रुमिलने उग्रसेनका रूप धर उनकी पत्नीसे संसर्ग किया था जिससे कंस उत्पन्न हुआ था। मगधराज जरासंधका यह जामाता था, जिसकी अस्ति और प्राप्ति नामकी दो पुत्रियोंका विवाह इससे हुआ था (भाग० १०.५०.१)। अपने श्वसुरकी सहायता तथा प्रलंब और बक आदि असुरोंकी रायसे कंस अपने पिताको बंदी बना स्वयम् राजा बन बैठा था (भाग० १०.१.६८-६९)। कंसके चाचाकी पुत्री देवकीका विवाह वसुदेवके साथ हुआ था। इस नाते कंस श्रीकृष्णका मामा होता था। विवाहके पश्चात् कंस स्वयं वसुदेव और देवकीका मांगलिक रथ जब हाँक रहा था, उसी समय आकाशवाणी हुई थी कि देवकीके आठवें गर्भसे उत्पन्न बालक कंसका वध करेगा (भाग० १०.१३.४ ब्रह्मां० ३.७१.१७५-२३५; ७३.९९; वायु० ९८.१००; विष्णु० ४.१५.२६-७; ५.१.६-११, ६७-६९; ३.९,११,१३, २७ तथा अध्याय ४)। आकाशवाणीके अनुसार कंसने धनुर्यज्ञका स्वाँग रचकर श्रीकृष्ण और बलरामको अक्रूरसे अपने रथपर मथुरा बुलवाया था, परंतु कंसकी अभिलाषा पूर्ण न हो सकी और श्रीकृष्णने उसे और उसके अन्य ८ भाइयोंको बलरामने मार डाला (भाग० १०. अध्याय ३६–४४; मत्स्य० ४७.४; ६९.८; विष्णु० ५.१२.२१, १५.२-४; २०.२६,८२, ९०)। इसकी अंत्येष्टि क्रिया उग्रसेनने की थी (विष्णु० ५.२१.७-१०; २९.५)। (२) एक दानव राजा जो सूर्यके रथके साथ मधु (चैत्र) और माधव (वैशाख) दो महीनोंमें रहता है (ब्रह्मां० २.२३.३)। (३) भण्डासुर द्वारा आसुरमहास्त्रसे सृष्ट विरवेध ससैन्य सेनायकोंमेंसे एक (ब्रह्मां० ४.२९.१२३)।

कंसारि–पु० [सं०] कंसके शत्रु श्रीकृष्णका एक नाम (ब्रह्मां० ३.३६.३४)।

कंसासुर–पु० [सं०] दे० कंस—(१)।

क–(१) सब प्राणियोंका मालिक (प्रजापति), अधिपति = ईश्वर (भाग० २.१.३२; ३.६.१९; ८.५.३९; वायु० ४.४३)। (२) ब्रह्माका एक नाम (भाग० १०.१३.१८, १४.२; ८५.४७)। (३) अग्नि, वायु, यम और काल। तैत्तिरीय ब्राह्मण, कौषीतकी और तांड्य ब्राह्मणके अनुसार "क" को प्रजापति माना गया है। शतपथ ब्राह्मणमें भी 'क' का यही रूप दिया है। महाभारतके अनुसार 'क' को दक्ष प्रजापति मान लिया गया है। भागवत (६.६.२) में 'क' का प्रयोग कश्यपके लिए किया गया है। अन्य पुराणोंमें भी 'क' का अर्थ देवता ही मिलता है।

ककुच्चक–पु० [सं०] वसुदेवके एक भाईका नाम (विष्णु० ४.१४.३०)।

ककुत्स्थ–पु० [सं०] सूर्यवंशीय एक प्रसिद्ध राजा, जिसे वाल्मीकीय रामायणमें कहीं भगीरथका पुत्र लिखा है, कहीं इक्ष्वाकुका और कहीं सोमदत्तका। मनुके पुत्र इक्ष्वाकु, इक्ष्वाकुके शशाद, जिनके पुत्र पुरंजय थे। पुराणानुसार एक समय देवताओं और राक्षसोंमें घोर युद्ध हुआ, जिसमें परास्त होकर देवताओंने अयोध्याके राजा श्री पुरंजयसे सहायता माँगी। इसपर पुरंजयने कहा कि यदि देवराज इंद्र मेरे वाहन बनें तो मैं युद्ध कर सकता हूँ। पहले इंद्रने अस्वीकार किया, पर बादको विष्णुके कहनेसे मान गये। इंद्र एक बड़े भारी बैलका रूप धर आये और राजाने उस बैलकी पीठपर बैठ करके आड़ीबक-युद्धमें जा असुरोंको परास्त किया। वृषके ककुद्‌पर बैठनेके कारण पुरंजय ककुत्स्थ कहलाये (वायु० ८८.२४-२५; ब्रह्मां० ३.६३.२५; विष्णु० ४.२.३२-३; भाग० ९.६.१२; १२.३.१० मत्स्य० १२.२०)। इनके वंशज काकुत्स्थ कहे जाते हैं। अनेना नामक इनका पुत्र बड़ा प्रतापी था (भाग० ९.६.२०; ब्रह्मां० ३.६३.२६; वायु० ८८.५५; विष्णु० ४.२.३३)।

ककुद–पु० [सं०] काशीराजकी पुत्रीके गर्भसे उत्पन्न सत्यकके चार पुत्रोंसेमें एक पुत्र तथा वृष्टिका पिता (वायु० ९६.११५-१६)।

ककुदी–पु० [सं०] (१) बारह मरीचि देवोंमेंसे एक मरीचि देव (ब्रह्मां० ४.१.५८)।

ककुद्मान्–पु० [सं०] (१) शाल्मलिद्वीपके सात पर्वतोंमेंसे सातवाँ पर्वत, जो अमूल्य रत्नोंके लिए प्रसिद्ध है। यह कैलाससे वायु कोणमें स्थित है और ओषधियोंके लिए विख्यात है। यहाँ वासव (इंद्र) रत्नोंकी स्वयं रक्षा करते हैं (ब्रह्मां० २.१९.४१-२; मत्स्य० १२१.१४; वायु० ४९.३८; विष्णु० २.४.२७)। (२) कुश द्वीपकेसात पर्वतोंमेंसे सातवाँ पर्वत (मत्स्य० १२२.६०)।

ककुद्मी–पु० [सं०] रैवतका नाम, जो रेवत (रेव, रोचमान) के १०० पुत्रोंमें सबसे ज्येष्ठ थे। यह रेवतीके पिता थे और ब्रह्मलोकमें यह पूछने गये थे कि उनकी पुत्रीके योग्य वर कहाँ मिलेगा। ब्रह्माने इन्हें बलरामका नाम बतलाया, जिससे रेवतीका व्याह कर यह तप करने बदरीनाथ (मेरुशिखर) चले गये (भाग० ९.३.२९.३६; मत्स्य० १२.२३; वायु० ८६.२६-३०)। यह कुशस्थलीमें राज्य करते थे। ब्रह्मलोकसे यह २७×४ युगोंके बाद लौटे थे। इस बीच राक्षसों और यक्षोंने इनका राज्य ले लिया था (वायु० ८८.१)।

ककुभ–पु० [सं०] भारतवर्षका एक पहाड़ (भाग० ५.१९.१६)।

ककुभ्–पु० [सं०] दक्ष प्रजापतिकी एक पुत्री भी यह धर्मको व्याही गयी थी और संकटकी माता थी (भाग० ६.६.४, ६)।

कङ्कस–पु० [सं०] भण्डासुरका एक सेनानायक जिसने विषंगकी सहायता की थी और वह्निवासा देवी द्वारा मारा गया था (ब्रह्मां० ४.२५.२८, ९५)।

कङ्किवाहन–पु० [सं०] भण्डासुरका एक सेनानायक, जो एक-एक अक्षोहिणी सेनासे युक्त १५ अन्य सेनानायकोंके साथ विषंगकी सहायताके लिए तैनात किया गया था। यह विषंगका सेनापति था, जिसे केकिवाहन भी कहते थे। यह महावज्रेश्वरी द्वारा मारा गया था (ब्रह्मां० ४.

२५.२८, ९६)।

कक्षसेन–पु० [सं०] चंद्रवंशी राजा परीक्षितके आठ पुत्रोंमेंसे सबसे बड़े दूसरेका नाम (महाभा० आदि पर्व ९३.५४)।

कक्षीवान्–पु० [सं०] (१) एक महारथी राजर्षि जो तपस्याके बलसे ब्राह्मण (ऋषि) हो गये थे (वायु० ९१.११७; ब्रह्मां० ३.६६.८८)। (२) एक ऋषि जो शरशैयापर पड़े भीष्मसे मिलने गये थे (भाग० १.९.७)। यह ३३ श्रेष्ठ अंगिरसोंमेंसे एक मंत्रकृत् ऋषि थे (ब्रह्मां० २.३२.१११)। (३) राजा बलिकी अनुचरीके गर्भसे (शूद्रयोनिमें) उत्पन्न दीर्घतमाका पुत्र जो पिताके साथ तप करने गिरिव्रज चला गया था। इसने अपने भाई चक्षुपके साथ यहाँ ब्राह्मणत्व प्राप्त किया। कूष्मांड, गौतम आदि इनके १००० पुत्र थे (ब्रह्मां० ३.७४.७१, ९५, ९९; वायु० ९९.७०, ९३७)। (४) साम-शाखा प्रवर्तक पौष्पिंजिका एक शिष्य। इसने भी सामशाखाका प्रवर्तन किया (विष्णु० ३.६.६)।

कक्षेयु–पु० [सं०] (१) भद्राश्वके धृता अप्सरासे उत्पन्न दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (मत्स्य० ४९.५)। (२) संजातिपुत्र रौद्राश्वके घृताची अप्सरामें उत्पन्न दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (वायु० ९९.१२४।

कक्षेपु–पु० [सं०] पुरुवंशज रौद्राश्वके दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (विष्णु० ४.१९.२)।

कङ्क–पु० [सं०] (१) मथुराके राजा उग्रसेनके नौ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र तथा कंसके भाईका नाम जिसे कंस-मृत्युके पश्चात् बलरामने इसके अन्य ७ भाइयोंके साथ मारा था (भाग० ९.२४.२४; १०.४४.४०-४१)। इसकी पुत्री अंधकको ब्याही थी। उससे चार पुत्र उत्पन्न हुए थे। (मत्स्य० ४४.४८, ६१,७४)। (२) देवमीढ़ और मारिषाका एक पुत्र वसुदेवका भाई एक महारथी यादव। इसकी पत्नी कर्णिकासे ऋतधामा और जय नामके दो पुत्र हुए (भाग० ९.२४.२७-९,४४)। (३) विष्णुका एक अवतार जो पाँचवें द्वापरमें हुआ था। जब सविता व्यास थे। इनके चार पुत्र थे जो सब योगी थे (वायु० २३.१२९)। (४) ब्रह्माके यज्ञ, जो गयासुरशरीरमें किया गया, के एक ऋत्विक् (वायु० १०६.३५)। (५) शाल्मलिद्वीपका एक मुख्य पर्वत (वायु० ४२.५०; ४९.३६; विष्णु० २.४.२७)। (६) कुशद्वीपका एक पर्वत (मत्स्य० १२२.५७)। (७) अज्ञातवासके समय पाण्डवोंने अपने-अपने नाम बदलकर रखे थे। इस अज्ञातवासके समय युधिष्ठिरका नाम कङ्क था और महाराज विराट्के सभासद थे (महाभारत, विराट् पर्व, अज्ञातवास)। (८) एक प्रकारके केतु जो वरुणदेवके पुत्र कहे जाते हैं। ये संख्यामें ३२ हैं और इनका रूप बांसकी जड़के समान दिखाई पड़ता है। ये अशुभ माने जाते हैं।

कङ्कगण–पु० [सं०] (१) एक राजकुल जिसने सोलह पीढ़ीतक राज किया था। यह राजवंश जो अपने लोभके लिए विख्यात था (भाग० १२.१.२९)। (२) एक जाति विशेष जिसे भरतने हराया था। यह विष्णुकी उपासनासे पापमुक्त हो गये थे। श्रीकृष्णके मिथिला जाते समय ये उपहारादि ले उनसे भेंट करने गये थे (भाग० १०.८६.२०)।

कङ्का–स्त्री० [सं०] उग्रसेनकी पुत्री, कंसकी बहिन तथा वसुदेवके भाई आनककी पत्नी, जिसके गर्भसे सत्यजित् और पुरुजित् उत्पन्न हुए थे (भाग० ९.२४.२५, ४१; मत्स्य० ४४.७६)।

कांची–स्त्री० [सं०] केतुमाल देशकी एक नदीका नाम (वायु० ४४.१८)।

कांचीपीठ–पु० [सं०] इसे वेद भगवान्की कमरमें स्थित माना गया है (वायु० १०४.८०)।

कंचुकधारी–पु० [सं०] राजाओंके अन्तःपुरमें तथा बाहर भी स्त्रियोंकी रक्षाके लिए अधिकृत विश्वस्त पुरुष, जो प्रायः वृद्ध होते हैं। रुक्मिणीके साथ देवीके मंदिरतक जानेवाले रक्षक आदि (भाग० १०.५३.४१; ब्रह्मां० ४.३२.३; मत्स्य० २५४.२३)।

कच–पु० [सं०] देवगुरु बृहस्पतिका पुत्र। संसारपर आधिपत्य जमानेके लिए देवता और असुरोंमें संग्राम हुआ। देवता तो मरनेके पश्चात् पुनः जीवित नहीं हो पाते थे, पर असुर मरनेपर फिर जिला दिये जाते थे। दैत्यगुरु शुक्राचार्यको संजीवनी मंत्र मालूम था, जिसके प्रभावसे मरे दैत्य भी उठ खड़े होते थे। इसलिए देवताओंने बृहस्पति-पुत्र कचको यह विद्या प्राप्त करनेके लिए शुक्राचार्यके पास भेजा। कच शुक्राचार्यके शिष्य हुए तथा गुरुके आदेशानुसार बड़ी लगनसे ५०० वर्षोंतक नियमपूर्वक यह अध्ययन करते रहे। शीघ्र ही दैत्यगुरुकी पुत्री देवयानी इनपर आसक्त हो गयी। कचका उद्देश्य जानकर दैत्योंने कचको दो बार मार दिया, परंतु देवयानीकी प्रार्थनापर शुक्राचार्यने उसे जिला दिया (मत्स्य० २५.१४-३७)। अंतमें एक दिन दैत्योंने कचको जला कर भस्म कर दिया और भस्मको मदिरामें मिलाकर शुक्राचार्यको पिला दिया।

कचको नहीं देख शुक्राचार्य मंत्र द्वारा उसे ढूँढ़ने लगे, तब कच उन्हींके पेटमेंसे बोला। इसपर शुक्राचार्यने कुल व्यवस्था सुनी और कचको पेटमें ही संजीवनी विद्या सिखा उसे बाहर निकलनेकी आज्ञा दी। पेट फाड़ कर कच बाहर आया और संजीवनी विद्यासे उसने अपने गुरुको पुनः जीवित किया। तदुपरांत देवयानीने कचसे विवाह करनेको कहा, पर कचने गुरुकन्या होनेके कारण विवाह-प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया। इसपर देवयानीने शाप दिया—"तुम्हारी विद्या फलवती नहीं होगी।" कचने भी शाप दिया—"तुम्हें विजातीय वर मिलेगा।" तदनंतर स्वर्गमें जाकर कचने यह विद्या अन्य देवताओंको सिखायी (महाभा० आदि पर्व, मत्स्य० २५.८-६५; २६ पूरा; भाग० ९.१८.२२)।

कच्चायण–पु० [पा०] कात्यायनका पाली भाषाका नाम। यह पाली भाषाको ही मूल भाषा मानते हैं और संस्कृतको इसके बादकी भाषा।

कच्छ–पु० [सं०] एक पश्चिमका देश (ब्रह्मां० २.१६.६२)।

कच्छनीर–पु० [सं०] (विष्णु० कच्छपीर) वैशाख मासमें सूर्यके रथके साथ रहनेवाले गणका एक नाग (भाग० १२.११.३४)।

कच्छप–पु० [सं०] (१) विष्णु भगवान्के चौबीस अवतारोंमेंसे एक (ब्रह्मां० तथा मार्कण्डेय पुराण)। (२) कुबेरकी

नौ निधियोंमेंसे एक (वायु० ४१.१०)। (३) विश्वामित्रका एक पुत्र (ब्रह्मां० ३.६६.६९; वायु० ९१.९७; विष्णु० ४.७.३८)। (४) एक कद्रू पुत्र नागका नाम (वायु० ६९.७३)।

कच्छार–पु० [सं०] एक देशका नाम, जिसे शतभिष, पूर्वाभाद्रपद और उत्तराभाद्रपदके अधिकृत देशोंमें माना गया है (बृहत्संहिता)।

कच्छिप–पु० [सं०] एक पश्चिमीय (अपरान्त) देशका नाम (ब्रह्मां० २.१६.६२)।

कजङ्ग–पु० [सं०] एक जंगली जातिका नाम, जिसका उल्लेख पुराणोंमें है।

कटक–पु० [सं०] हाथका एक आभूषण—कड़ा—का नाम (विष्णु० ४.१५.१३)।

कटकर्म–पु० [सं०] अंत्येष्टिक्रियाका एक अंग (विष्णु० ३.१३.१०)।

कटिपरिवर्तनोत्सव–पु० [सं०] विष्णु भगवान् देवशयनी ११ को शयन करते हैं और भाद्रपद शु० ११ को कटिपरिवर्तन करावे। इसमें सब विधान हरिप्रबोधिनी एकादशीके समान करे। राजपूतानेमें इसे “जलझूलनी” कहते हैं। यह प्रायः सर्वत्र मनाया जाता है (भविष्योत्तर)।

कटुमुखी–स्त्री० [सं०] अन्धकासुर-संग्राममें अन्धकोंका रक्तपान कर उन्हें विनष्ट करनेके लिए शंकर द्वारा सृष्ट मातृकाओंमेंसे एक मातृकाका नाम (मत्स्य० (१७९.२९)।

कठ–पु० [सं०] (१) एक ऋषि, जिन्होंने भरद्वाज मुनिसे शिक्षा पायी थी। भरद्वाजकी बहिन रेवती, जो अति कुरूप थी, इन्हींको ब्याही थी, पर कठके प्रतापसे यह गोदावरी स्नान तथा शिवकी आराधना कर सुन्दरी हो गयी थी। इनके स्नान करनेके स्थानपर रेवती नदी हो गयी। जहाँ कठने रेवतीकी पुण्यरूपताकी सिद्धिके लिए कुशोंसे अभिषेक किया वहाँ विदर्भा नदी हुई (ब्रह्म० विदर्भा-संगम तथा रेवती-संगम तीर्थ-माहात्म्य)। (२) यजुर्वेदके अंतर्गत एक उपनिषद्, जिसमें यम और नचिकेताका संवाद है (कठोपनिषद्)। (३) यजुर्वेदकी एक शाखा।

कठेश्वर–पु० [सं०] नर्मदा-तटपर स्थित एक तीर्थ (मत्स्य० १९१.६३-४)।

कड–पु० [सं०] वसुदेवका एक भाई (वायु० ९६.१४८)।

कडुई रोटी वा खिचड़ी–स्त्री० [सं०] किसीके मर जानेपर संबंधियोंके यहाँसे संवेदनार्थ भेजा हुआ भोजन (हि० श० सा०)।

कणवक–पु० [सं०] यदुपुत्र क्रोष्टुके वंशज शूरके पुत्रका नाम (भाग०)।

कणाद–पु० [सं०] सोमशर्मा, जिन्हें सत्ताईसवें द्वापरमें विष्णुका एक अवतार माना जाता है, के पुत्र एक प्रसिद्ध प्राचीन आर्य ऋषि। ये चार भाई थे—अक्षपाद, कणाद, उलूक और वत्स। इन्होंने षड्दर्शनके अंतर्गत एक दर्शन बनाया है जिसे वैशेषिक दर्शन कहते हैं। इन्होंने चावलके कण खाकर देवताकी आराधना की थी और उसीके बलपर यह दर्शन बनाया था। तण्डुलकणोंका आहार करके इन्होंने तपस्या की और दर्शन बनाया था, इसीसे इनका नाम कणाद पड़ा था। इन्हें कणभक्ष, कण-भुज् भी कहते हैं। दर्शनमें परमाणुवादका प्रचार इन्होंने ही किया है (वायु० २३.२१६)।

कणिकमुनि–पु० [सं०] एक महर्षिका नाम, जो राजनीतिके बड़े ज्ञाता थे। यह अध्यात्मशास्त्रके भी पण्डित थे। पाण्डवोंका उत्कर्ष देखकर धृतराष्ट्रको बड़ी चिंता हुई थी तो उन्होंने कणिक मुनिको बुलाकर उपदेश ग्रहण किया था (महाभा० आदि परि० १.८१)।

कण्ठ–पु० [सं०] (१) अजमीढ़ और केशिनीका एक पुत्र तथा मेधातिथिके पिताका नाम (वायु० ९९.१६८-१७०)। (२) धुर्यका पुत्र (वायु० ९९.१३०)।

कण्ठकाल–पु० [सं०] ८६ श्रुतर्षियोंमेंसे एक श्रुतर्षिका नाम (ब्रह्मां० २.३३.५)।

कण्डरीक–पु० [सं०] पांचालराज ब्रह्मदत्त, जो सब प्राणियोंकी भाषा भी जानता था, का मंत्री जिसे यह स्मृति थी कि वह पूर्वजन्ममें कौशिकका पुत्र था (मत्स्य० २०.२४; २१.३१)।

कण्डिन–पु० [सं०] सात ब्रह्मवादी वाशिष्ठ ऋषियोंमेंसे एक वाशिष्ठ ऋषि (ब्रह्मां० २.३२.११६)।

कण्डु–पु० [सं०] (१) साम-शाखाप्रवर्तक लांगलिके छः सामशाखाप्रवर्तक शिष्योंमेंसे एक शिष्यका नाम (वायु० ६१.४३)। (२) ऋषि विशेषका नाम, जो कण्डु मुनिके पुत्र थे। इनके तपसे डर कर इंद्रने एक बार प्रम्लोचा नामक अप्सराको इनकी तपस्या भंग करनेके लिए भेजा। इसके रूपपर मुग्ध होकर कण्डुने इसके साथ बहुत दिन बिताये। प्रम्लोचासे इन्हें एक पुत्री थी, जिसे वृक्षोंके बीच छोड़ वह स्वर्ग चली गयी थी, अतः इस बच्चीको सोम तथा वृक्षोंने पाला था और मारिषा नामकरण हुआ। प्रम्लोचा कण्डुके साथ ९०७ वर्ष, ६ महीने, ३ दिनतक रही थी। अंतमें इन्हें एक दिन अपनी अधोगतिका ज्ञान हुआ और यह प्रम्लोचाको त्याग कर पुरुषोत्तम-क्षेत्र चले गये, जहाँ भगवान् विष्णुकी आराधनाकर इनकी मुक्ति हुई (भाग० ४.३०.१३-१४; विष्णु० १.१५.११-५४)।

कण्व–पु० [सं०] (१) अजमीढ़ और केशिनीके पुत्रका नाम, जो मेधातिथिके पिता थे (मत्स्य० ४९.४६; विष्णु० ४.१९.३०-३१)। (२) शुक्ल यजुर्वेदके एक शाखाकार ऋषि, जिनकी संहिता और ब्राह्मण भी हैं। सायणाचार्यने इनकी संहितापर भी टीका की है (शुक्लयजुर्वेद काण्वसंहिता भाष्य—सायणाचार्य विरचित)। (३) कश्यप गोत्रोत्पन्न एक तपःप्रभावसंपन्न प्राचीन ऋषि, जो अप्रतिरथके पुत्र तथा मेधातिथिके पिता कहे गये हैं। इन्हींसे काण्वायन ब्राह्मणोंकी उत्पत्ति हुई। यह मेनका अप्सराकी छोड़ी कन्या शकुंतलाके पालक पिता थे और उनका आश्रम मालिनी नदीके तीरपर था। महर्षि विश्वामित्रकी कठोर तपस्यासे डर कर इंद्रने मेनकाको इनका तप भंग करनेके लिए भेजा था, जो शकुंतलाको उत्पन्न कर तथा मालिनी नदीके तीर इसे रख स्वर्ग चली गयी। इसकी रक्षा शकुन्तों अर्थात् पक्षियोंने की थी, अतः शकुंतला नाम पड़ा और कण्व ऋषिने इसे पाला था। कण्वका आश्रम नंदप्रयागमें था। शकुंतलासुत भरतके सब

संस्कार इन्होंने किये थे (शकुंतला, भरत, नंदप्रयाग, महाभा० आदि० अ० ७१, ७२, ७३; भाग० ९.२०.६-१२, १;८ विष्णु० ४.१९.५-६)। (४) श्रीकृष्णके समकालीन एक ऋषि जिनके साथ वह मिथिला गये थे। यह युधिष्ठिरके राजसूय यज्ञमें गये थे। पिण्डारकमें, जहाँ यदुकुमारोंको शाप हुआ था, ये भी विद्यमान थे (भाग० १०.७४.७; १०.८६.१८; ११.१.१२; विष्णु० ५.३७.६)। (५) याज्ञवल्क्यके शिष्य, शुक्ल यजुर्वेदकी १०१ शाखाओंके प्रवर्तक १५ ऋषियोंमेंसे एक मंत्रकृत् ऋषि (वायु० ६१.२४.१; ब्रह्मां० २.३५.२८-३३)। (६) ३३ अंगिरसश्रेष्ठोंमेंसे एक अंगिरस। ये मंत्रकृत् थे (ब्रह्मां० २.३२.१०९; वायु० ५९.१००)। (७) ब्रह्माके यज्ञके एक ऋत्विक् (वायु० १०६.३५; १०८.४२)।

कत्त–पु० [सं०] १३ परम धार्मिक कौशिकोंमेंसे एक कौशिक ऋषि (ब्रह्मां० २.३२.११८)।

कति–पु० [सं०] शालावतीके गर्भसे उत्पन्न महर्षि विश्वामित्रके औरस पुत्रका नाम। इन्हींसे कात्यायन वंशका प्रारम्भ माना गया है (स्कंद० तथा नारद०)।

कथन–पु० [सं०] सुतलका निवासी एक राक्षस, जिसका सुतलमें महान् आलय है (ब्रह्मां० २.२०.२२)।

कथाजव–पु० [सं०] बाष्कलके तीन शिष्योंमेंसे एक शिष्यका नाम, जो ऋग्वेद-शाखाप्रवर्तक थे (विष्णु० ३.४.२५)।

कथासरित्सागर–पु० [सं०] काश्मीरके सोमदेव भट्ट द्वारा संगृहीत प्रचलित कहानियोंकी एक पुस्तकका नाम जिसका रचना-काल बारहवीं शताब्दीका पूर्वार्ध माना गया है। "बृहत्कथा" की चुनी हुई कथाओंका यह संग्रह है।

कदंबवनवासिनी–स्त्री० [सं०] श्री ललितादेवीके षोडश नामोंमेंसे एक नाम (ब्रह्मां० ४.१७.३४)।

कदरज–पु० [सं० कदर्य्य] एक प्रसिद्ध पापीका नाम, जिसे विष्णुने तारा था—"गणिका अरु कदरज ते जगमहँ अघन करत उधर्‌यौ। तिनको चरित पवित्र जानि हरि निज हर भवन धर्‌यौ।।"—तुलसीदास।

कदली–स्त्री० [सं०] पितरोंके लिए पिण्डदानार्थ प्रशस्त पवित्र एक नदीका नाम। एक बार श्रीरामने भी इसके तटपर निवास किया था (मत्स्य० २२.५२)।

कदलीव्रत–पु० [सं०] एक व्रत जो वैशाख, माघ या कार्त्तिक किसी भी मासमें हो सकता है। पूर्वाह्नव्यापिनी चतुर्दशी आवश्यक है। इसे विशेषकर गुजरातके लोग करते हैं। इस व्रतसे स्त्रियाँ सब पुत्र-पौत्रादि संयुक्त, सौभाग्यशालिनी, सदाचारिणी होकर सुखसे जीवन व्यतीत करती हैं (भविष्योत्तर०)।

कद्वशंकु–पु० [सं०] उग्रसेनके ९ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (वायु० ९३.१३२)।

कद्रू–स्त्री० [सं०] दक्ष प्रजापतिकी एक पुत्री (ब्रह्मां० ३.३.५७; ७.३१.४६७; मत्स्य० ६.२,३८; १४६.१९,२३; १७१.२९,६३; वायु० ६६.५५; विष्णु० १.१५.१२७), जो महर्षि कश्यप (तार्क्ष्य=भाग०) को ब्याही थी। यह नागमाता कही जाती है, जिसमें कालिय नाग भी है (भाग० ५.२४.८; ६.६.२१-२; १०.१७.४.७)। इसके गर्भसे एक हजार नाग उत्पन्न हुए थे, इसीसे यह सर्पोंकी माता कही गयी है। यह अपने क्रोधके लिए प्रसिद्ध है (वायु० ६९..९४)। वायु०के अनुसार कण्डू (वायु० ६९..६८)।

कद्रूपुत्र–पु० [सं०] सुतलका निवासी तक्षक सर्प (ब्रह्मां० २.२०.२४)।

कनक–पु० [सं०] (१) सिंहिकामें विप्रचित्तिसे उत्पन्न १४ सैंहिकेय असुरोंमेंसे एक (ब्रह्मां० ३.६.२०)। (२) हृदिकके १० पुत्रोंमेंसे एक, कृतवर्माका अनुज (ब्रह्मां० ३.७१.१४१)। (३) पुरुकी पत्नी तथा शैनेय बृहदुक्थकी पुत्री बृहतीके ३ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (ब्रह्मां० ३.७१.२५६)। (४) एक अधार्मिक तथा महाक्रोधी राजाका नाम, जो स्त्रीराष्ट्र, भोजक आदि राज्योंका शासक था (ब्रह्मां० ३.७४.१९९)। (५) दुर्मदके पुत्र, एक यदुवंशी राजाका नाम। यह हैहयवंशी (मत्स्य०) दुर्दमके पुत्र थे। कृतवीर्य, कृतौजा, कृतवर्मा और कृताग्नि इनके चार पुत्र थे (ब्रह्मां० ३.६९.८; मत्स्य० ४३.१२; वायु० ९४.७-९)।

कनककशिपु–पु० [सं०] दे० हिरण्यकशिपु।

कनकनन्दी–पु० [सं०] एक तीर्थ जो गयामें मुण्डप्रस्थ पर्वतके उत्तरमें है, जहाँ स्नान करनेवाला तीनों ऋणोंसे मुक्त हो स्वर्ग प्राप्त करता है। यहाँ श्राद्ध करनेका बड़ा माहात्म्य है (ब्रह्मां० ३.१३.११३-५; वायु० ७७.१०)।

कनकपर्वत–पु० [सं०] अण्डसे उत्पन्न एक पर्वतका नाम। जगत्की सृष्टि करनेकी इच्छासे परमात्माने पहले जलकी ही सृष्टि की। उसमें शक्तिरूप बीजका वपन किया। वह सूर्यके समान दीप्तिमान् सुवर्णका अण्ड हुआ। उसमें लोकपितामह स्वयं ब्रह्मा उत्पन्न हुए। उसका ऊपरका कपाल (खण्ड) द्युलोक बना तथा नीचेका कपाल पृथ्वी। उसके मध्यमें जरायुवेष्टन मांस आदि था। उसका यह पहाड़ बना (मनु० १.८-९; वायु० २४.७५-७६)। यह १० हजार योजन लम्बा है, जिसमें विशाल अटारियाँ, विविध रत्नोंकी खानें हैं (वायु० ३५.१०)।

कनकपीठ–पु० [सं०] क्षमा तथा पुलस्त्य प्रजापतिके तीन पुत्रोंमेंसे एक पुत्र, जिसकी पत्नी यशोधराके गर्भसे सहिष्णु नामक पुत्र हुआ था (ब्रह्मां० २.११.३१)।

कनकबिन्दु–पु० [सं०] अग्निके अंशसे नल नामक इनका एक क्षेत्रज पुत्र था (ब्रह्मां० ३.७.२२-२३०)।

कनकसेन–पु० [सं०] एक राजा, जिन्होंने २०० ई० में वल्लभी संवत् चलाया था। मेवाड़के राना वंशके ये प्रतिष्ठाता कहे जाते हैं।

कनका–स्त्री० [सं०] एक नदी जो श्राद्धादिके लिए अति पवित्र है। मुण्डप्रस्थ पर्वतपर तप करते समय लोमश ऋषिने बहुत-सी नदियोंके साथ इसका आह्वान किया था (वायु० १०८.८०)।

कनकेश्वर–पु० [सं०] गयामें प्रेतशिलाके निश्चल होनेसे अन्यान्य देवोंके साथ जिन पाँच मूर्त्तियोंमें ब्रह्मा इसपर बैठे थे, उनमेंसे ब्रह्माकी एक मूर्त्ति (वायु० १०६.५६; १११.७२)।

कनकोद्भव–पु० [सं०] हृदिकके दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (ब्रह्मां० ३.७१.१४१; वायु० ९६.१४०)।

कनखल–पु० [सं०] (१) हरिद्वारके निकटस्थ एक तीर्थस्थानका नाम, जहाँ स्नान करनेसे रुद्रलोक प्राप्त होता है।

इसका उल्लेख लिंगपुराणमें किया गया है। इसी स्थानपर दक्ष प्रजापतिने यज्ञ किया था। गरुड़ने यहाँ तप किया था। इसीके प्रभावसे वह योगिनीके साथ क्रीड़ा करता है और शिवजीके साथ नृत्य करता है। यहाँ श्राद्ध करनेका बड़ा माहात्म्य कहा गया है। यह तीनों लोकोंका प्रख्यात तीर्थ है। वहाँ योगिनी रहती है (मत्स्य० १८६.१०; १९२. ११; १९३.७२; वायु० ८३.२१)। (२) गयाका एक तीर्थस्थान जिसकी दाहिनी ओर दक्षिण मानसतीर्थ स्थित कहा गया है (वायु० १११.७)।

कनागत–पु० [सं० कन्यागत] पितृपक्ष या पितृव्रत = क्वारके महीनेका कृष्णपक्ष। इसमें सूर्य कन्या राशिके हो जाते हैं, इसीसे इस पक्षको "कन्यागत" कहते हैं। इसमें पितरोंके लिए श्राद्धादि करते हैं तथा ब्राह्मणोंको भोजन देते हैं। विश्वास है, इस प्रकार पितृव्रत यथोचित रूपमें पूर्ण होता है और पितृऋण उतरता है। "आये कनागत बाह्मन उलैं नौ-नौ हाथ" (व्रतपरिचय १४०; कर्मकाण्डमार्ग-प्रदीप)।

कनिष्क–पु० [सं०] शक जातिके एक प्रधान राजा, जिनके सिंहासनारोहणके समयसे शक नामक संवत्का प्रचार हुआ था, जो आजतक प्रचलित है। यह बौद्ध धर्मके मुख्य प्रचारक थे।

कनिष्ठ–पु० [सं०] देवताओंके पाँच गणोंमेंसे एक गण जो भौत्य मनुके चौदहवें मन्वन्तरमें वर्तमान थे। वे हैं बृहत्सामसे आरम्भ कर सात सामन् (ब्रह्मां० ४.१. १०६, १०८; वायु० १००.१११-२; विष्णु० ३.२.४१)।

कनीयक–पु० [सं०] हृदीकके १० पुत्रोंमेंसे एक (मत्स्य० ४४.८२)।

कन्दरसेन–पु० [सं०] वालीके सामन्त करोड़ों हाथियोंके तुल्य बलवान् एक प्रधान बंदरका नाम (ब्रह्मां० ३. ७.२३४)।

कन्दर्प–पु० [सं०] (१) आठवें कल्पका नाम (मत्स्य० २९०.४)। (२) कामदेवका नामान्तर, इसने उत्पन्न होते ही मदसे मैं किसे दर्पयुक्त करूँ कहा इसलिए ब्रह्माने इसका कन्दर्प नाम रखा। महादेवकी नेत्राग्निसे जलनेपर इनका नाम अनङ्ग हुआ। दूसरे जन्ममें श्रीकृष्णके औरस पुत्र हुए, जो रुक्मिणीके गर्भसे उत्पन्न हुए थे। श्रीकृष्णका परमशत्रु शम्बर नामक दैत्य इन्हें जन्मके सातवें दिन हर कर ले गया। शम्बरकी स्त्री मायावती निःसंतान थी, उसीके लिए शम्बर प्रद्युम्नको हर ले गया था। कन्दर्पकी स्त्रीका ही नाम जन्मान्तरमें मायावती पड़ा था। इससे उसने अपने पतिको पहचान कर उनके लालन-पालनका भार अपनी दासीको दे दिया। बड़े होनेपर कंदर्पने मायावतीकी सम्मतिसे शम्बरको मार दिया और मायावतीको लेकर अपनी माता रुक्मिणीके पास आये (कामदेव; ब्रह्मां० ४. १९.६७; ३०.५४.८५; मत्स्य० १५४.२५०)।

कन्दली–स्त्री० [सं०] महामुनि और्वकी पुत्रीका नाम जो जानुसे उत्पन्न हुई थी। प्रसिद्ध महर्षि दुर्वासासे इनका विवाह हुआ था। दुर्वासा ब्रह्माके पौत्र और अत्रि मुनिके पुत्र थे। कन्दली असामान्य रूपवती थी, पर इनमें कलह-प्रियत्व एक बड़ा भारी दोष था। और्वने कन्दलीके एक सौ अपराध दुर्वासासे क्षमा करनेको कहा था, जिसे उन्होंने स्वीकार कर लिया था। दुर्वासासे कलह-प्रिया पत्नीका झगड़ा आरम्भ हुआ और सौ अपराधोंके पश्चात् दुर्वासाने कन्दलीको शाप दिया—"तुम जल जाओ"। कन्दली जल गयी और जन्मान्तरमें वह दूसरेकी पत्नी नहीं हुई। ऐसा कहा जाता है कि कन्दली बादको कदली वृक्ष हुई। और्वने यह हाल सुन दुर्वासाको शाप दिया कि तुमको पराभव प्राप्त करना पड़ेगा। दुर्वासाका पराभव अंबरीपके यहाँ हुआ (ब्रह्मवैवर्त०)।

कन्यक–पु० [सं०] रजतनाभ और भद्राके पुत्र यक्ष मणिभद्रके २४ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (वायु० ६९.१५४)।

कन्यका–स्त्री० [सं०] योगमाया, जो भगवान्के आदेशसे नन्दपत्नी यशोदासे उत्पन्न हुई थी, के १४ नामोंमेंसे एक नाम (भाग० १०.२.१२)।

कन्यकागुण–पु० [सं०] एक भारतीय जनपदका नाम, जिसका उल्लेख महाभारतमें है (महाभा० भीष्म० ९.५२)।

कन्या–स्त्री० [सं०] (१) दस वर्षतककी कन्याको ही यह संज्ञा दी जाती है—"पराशर"। (२) पुराणानुसार अहल्या, द्रौपदी, कुंती, तारा, मन्दोदरी—ये पाँच स्त्रियाँ अति पवित्र मानी गयी हैं, जिन्हें "पंचकन्या" कहते हैं। "अहल्या द्रौपदी तारा कुंती मंदोदरी तथा। पंचकन्याः स्मरेन्नित्यं महापातकनाशनम्॥" (ब्रह्मां० ३.७.२१९)। (३) तंत्रानुसारमें नौ जातिकी स्त्रियाँ, जो चक्रपूजाके लिए बहुत पवित्र मानी गयी हैं—नटी, कापालिकी, वेश्या, धोबिन, नाइन, ब्राह्मणी, शूद्रा, ग्वालिन और मालिन, ये ही नौ 'कन्या' कहलाती हैं ("चक्रपूजा" तथा "तन्त्राभिधान" बीजनिघण्टु—मुद्रानिघण्टुः। (४) दुर्गाका एक नाम, जिनका कन्याकुमारीमें मंदिर है और वह एक प्रसिद्ध तीर्थ है जहाँ दक्षिण तीर्थोंकी यात्राके समय बलराम गये थे (भाग० १०.७९.१७)। (५) कर्दमकी पुत्री तथा प्रियव्रतकी पत्नी, जो १० पुत्र तथा दो पुत्रियोंकी माता थी (विष्णु० २.१.५)। (६) बारह राशियोंमेंसे छठी राशि, जिसमें सूर्य १२ महीनोंमेंसे एक मास रहते हैं। जिस मासमें सूर्य कन्या राशिमें रहते हैं, उसे क्वार कहते है और चन्द्रमा २७ दिनोंमें १२ राशियोंमें भ्रमण करता है। एक राशिमें २। दिन रहता है (वायु० १०५.४७)।

कन्यातीर्थ–पु० [सं०] नर्मदाके दक्षिण तटपरका एक तीर्थस्थान (मत्स्य० १९३.७९-८३)।

कन्हैया–पु० [सं० कृष्ण; प्रा० कण्ह] श्रीकृष्णचंद्र।

कपटसंग्राम–पु० [सं०] "कूटयुद्ध"—रात्रिमें होनेवाला असुरोंका युद्ध (ब्रह्मां० ४.२६.२,१,१७)।

कपर्दवान्–पु० [सं०] ५१ गणेशों—विघ्नेश्वरोंमेंसे एक (ब्रह्मां० ४.४४.६६)।

कपर्दी–पु० [सं०] (१) एकादश रुद्रोंमेंसे एक रुद्र (मत्स्य० १७१.३९)। (२) शिवका एक नाम (एकादश रुद्रोंके अतिरिक्त) (ब्रह्मां० २.२५.६८; ३.२५.१२; ४.३४.२७)। (३) विश्वकर्मा प्रजापतिके पुत्र महातपस्वी विश्वरूपके ११ पुत्रोंमेंसे एकका नाम (विष्णु० १.१५.१२४)।

कपर्दिनी–स्त्री० [सं०] (१) दुर्गा, शिवा, भवानी, उदाहरण :—"जै जयति जै आदि सकति जै काली कपर्दिनी। जै मधुकैटभछलनी देवी जै महिषविमर्दिनी॥"—भूषण।

(२) एक वर्णशक्तिका नाम (ब्रह्मां० ४.४४.६०)। (३) अन्धकासुर संग्राममें शिवजी द्वारा सृष्ट एक मानस-मातृका (मत्स्य० १७९.२०)।

कपर्दीश–पु० [सं०] प्रेतशिलाको निश्चल करने हेतु आदि गदाधरके साथ अन्यान्य देवों सहित भिन्न नाम और मूर्त्तिसे बैठे हुए शिवका एक नाम (वायु० १०९.२३)।

कपाल–पु० [सं०] ग्यारह रुद्रोंमेंसे एक (वायु० ६६.७०)। शिवके भिक्षा माँगनेका खप्पड़, जो हरिकी कृपासे काशीमें गिरकर १००० टुकड़ोंमें विभक्त हो गया। यह संदर्भ यों है—पहले ब्रह्माके पाँच सिर थे, पाँचवाँ सिर तपस्याके प्रभावसे स्वर्णतुल्य चमकता था। किसी बातपर क्रुद्ध होकर शिवजीने उसे अपने बायें अँगूठेसे काट डाला। ब्रह्माने शाप दिया कि तुम्हें ब्रह्महत्या लग गयी है, अतः कपाली होकर तीर्थोंमें विचरो। शिवजीने सब तीर्थोंमें विचरण किया, कपालने उनका पिण्ड नहीं छोड़ा। भगवान् श्री हरिके उपदेशसे वे काशी आये। तीर्थ-प्रभावसे ब्रह्महत्या हट जानेपर कपालके हजार टुकड़े हो गये (मत्स्य० १८३.९१-१००)।

कपालक्रिया–स्त्री० [सं०] मृतक संस्कारके अंतर्गतका एक कृत्य विशेष। इसमें जलते हुए शवकी खोपड़ी बाँस या किसी अन्य लकड़ीसे फोड़ दी जाती है "अन्त्येष्टिकर्म-पद्धति"—आश्चर्यनाथ पाण्डेय संगृहीत।

कपालतीर्थ–पु० [सं०] बदरिकाश्रममें स्थित एक तीर्थ विशेप, जिसमें पाँच तीर्थ सम्मिलित हैं, जहाँ किये हुए स्नान, तप और दान अक्षय होते हैं (स्कंद० वैष्णव-खंड, बदरिकाश्रम-माहात्म्य)।

कपालमाली–पु० [सं०] नरमुंडोंकी माला पहननेके कारण शंकरका एक नाम।

कपालमोचन–पु० [सं०] (१) ताम्रलिप्ताका दूसरा नाम जो एक पवित्र तीर्थ है। इसका यह नाम पड़नेका कारण पुराणानुसार यह है—'दक्षका नाश करनेसे महादेवको ब्रह्महत्याका पाप लगा। दक्षका कपाल शिवके हाथमें सट गया और किसी प्रकार छूटता ही नहीं था। अन्य कोई दूसरा उपाय न देख शिव देवोंकी शरण गये। बहुत तीर्थोंमें भ्रमण करनेपर भी जब कपाल नहीं छूटा तब शिव हिमालयपर घोर तप करने लगे। तपस्यासे संतुष्ट हो विष्णुने ताम्रलिप्ता जानेको कहा। वहाँ वर्गभीमा और जिष्णुनारायणके मध्यवर्ती जलाशयमें महादेवने स्नान किया जहाँ दक्षका कपाल शिवके हाथसे छूट गया।' अतः यह नाम पड़ा। (२) बनारसका एक तीर्थ ॐ कारेश्वर टीलेके ठीक पश्चिमका तालाब जिसे रानी भवानीने पक्का बनाया। (३) एक पीठ जहाँ सती देवीकी एक मूर्ति शुद्धि देवी स्थापित है (मत्स्य० १३.४८)।

कपालिका–स्त्री० [सं० कापालिकी] देवी विशेष जिसके सर्वांग शरीरमें भस्म लगा हुआ है, कण्ठमें रुद्राक्षोंकी माला और कटिमें बाघम्बर लिपटा हुआ है। बाल खुले हैं, बायें हाथमें खोपड़ीका खप्पड़ और दाहिने हाथमें घंटा है जिसे बजाकर यह चिल्लाती है—"हो शंकर, हो शम्भू।"—दे० आनंदगिरिकृत शंकरदिग्विजय। उ०—"कै शोणित कलित कपाल यह किल कपालिका कालको यह ललित लाल कैधौंलसत दिग्भामिनीके भाल को॥"

कपालिनी–स्त्री० [सं०] दुर्गाका एक नाम।

कपाली–पु० [सं०] शिवका एक नाम, कश्यपसे सुरभिमें उत्पन्न ११ रुद्रोंमेंसे एक रुद्र (ब्रह्मां० २.२५.६८; ३.३.७१, २५.८ विष्णु १.१५.१२३)। आठ भैरवोंमेंसे एक भैरव देव (ब्रह्मां० ४.१९.७९)। गजासुर इन्हींसे मारा गया था (मत्स्य० १५३.१९-६८; १७१.३९)। ब्रह्माका पाँचवाँ सिर नष्ट कर देनेके कारण शिव कपाली हो गये, पर विष्णुकी कृपासे उससे मुक्त हुए थे (मत्स्य० १८३.८७-१००)।

कपाली–स्त्री० [सं०] अन्धकासुरके विनाशके लिए शिवजी द्वारा सृष्ट एक मातृका देवी (मत्स्य० १७९.१६)।

कपालेश्वर–पु० [सं०] एक शिवलिंग विशेषका नाम जिसे विश्वकर्माने प्रस्तुत किया था तथा कार्तिकेयने तारकासुर वधके प्रायश्चित्तस्वरूप विष्णुकी अनुमतिसे महीसागर-संगम तीर्थमें स्थापित किया था। यह अग्निकोणमें है जहाँ दैत्यके कपालसे शक्ति निकली थी। यहींपर कपालिकेश्वरीका मंदिर भी है जिसे कार्तिकेयने स्थापित किया था। चैत्र कृष्ण १४ को यदि सोमवार, शिवयोग तथा तैतिलकरण भी हो तो यहाँ स्नान करनेवाला सशरीररुद्रलोक प्राप्त करता है (स्कंद० मा० कुमारिका-खंड)।

कपिंजल–पु० [सं०] (१) अपत्तन नामक सिद्ध गंधर्वोंके गण। हिमकक्ष पहाड़पर जिनकी विशाल नगरी है, जिनके शासकका नाम राजराज कपिंजल था (वायु० ३९.५२)। (२) एक मुनिका नाम। (३) एक गोत्रकार ऋषिका नाम (मत्स्य० २००.८)। (४) एक पहाड़का नाम। इस पर्वत और नागशैलके बीच बहुतसे सुन्दर फलके बगीचे हैं (वायु० ३८.६६-७०; ४२.६७)।

कपिंजली–स्त्री० [सं०] घृताची अप्सरा। वशिष्ठकी पत्नी जो इंद्रप्रमति (इंद्रप्रतिम—वायु०) जिसका नामान्तर कुणी या कुशी था, की माता थी (ब्रह्मां० ३.८.९७; वायु० ७०.८८)।

कपि–पु० (सं०] (१) उरुक्षय (विष्णु० के अनुसार), वायु० के अनुसार उभक्षय और विशालाका पुत्र, एक राजा जो पीछे ब्राह्मण हो गया था (वायु० ९९.१६३; विष्णु० ४.१९.२५-२६)। (२) एक असुर जो श्रीकृष्णसे परास्त हुआ था (भाग० २.७.३४)। (३) ३३ श्रेष्ठ आंगिरसोंमेंसे एक आंगिरस और मंत्रकृत् ऋषि। एक क्षत्रोपेत द्विज जो तपस्याके प्रभावसे ऋषि हुए (ब्रह्मां० २.३२.१०९; ३.६६.८६; वायु० ९१.११५)। एक भार्गव ऋषि (मत्स्य० १९५.३३)। (४) अज और शण्ड नामक दो पिशाचोंका पिता। ये दोनों पुत्र पूर्व जन्ममें कूष्माण्ड थे (ब्रह्मां० ३.७.७४-८८)। (५) सुकर्मवर्गके देवताओंमेंसे एक देवता (ब्रह्मां० ४.१.८८)। (६) तामस मन्वंतरके सप्तर्षियोंमेंसे एक ऋषि (मत्स्य० ९.१५)। (७) रैवत मनुका एक पुत्र (मत्स्य० ९.२१)।

कपिकेतु–पु० [सं०] ध्वजापर हनुमानजीकी मूर्त्ति अंकित रहनेके कारण अर्जुनका एक नाम (महाभारत आदि पर्व; दे० कपिध्वज)।

कपित्थक–पु० [सं०] एक प्रधान काद्रवेयनाग (ब्रह्मां० ३.७.३६)।

कपिध्वज–पु० [सं०] खाण्डव वनको जलाने हेतु श्री अग्निदेवने वरुणदेवके पाससे कपिध्वज नामक अजेय रथ अर्जुनको दिया था, जिसकी ध्वजापर महावीरजीकी मूर्त्ति बनी थी (महाभारत, आदि पर्व=खाण्डव-दाहकी कथा)।

कपिभू–पु० [सं०] एक त्र्यार्षेय, आंगिरस तथा गार्ग्य प्रवर (मत्स्य० १९६.४२-४९)।

कपिमुख–पु० [सं०] कृष्ण पराशर गणका एक ऋषि (मत्स्य० २०१.३५)।

कपिल–पु० [सं०] (१) एक सिद्धर्षि जो कर्दम प्रजापतिके औरस और देवहूत्तिके गर्भसे उत्पन्न हुए थे। इनकी नौ (९) बहिनें थीं तथा यह एक सिद्ध थे जिन्होंने अपनी माताको ब्रह्मज्ञान दिया था (भाग० १.३.१०; २.७.३; ३.२४.१६.१५.१३; ८.१.६; ब्रह्मां० ३.६३.१४५-१४८)। यह भगवान्के पाँचवें अवतार माने जाते हैं। यह सांख्यशास्त्रके आदि प्रवर्त्तक कहे जाते हैं। सांख्यदर्शनमें विशेषतः ज्ञानका वर्णन किया गया है और ईश्वरका कुछ विशेष उल्लेख नहीं पाया जाता, अतः इसे कुछ लोग निरीश्वर दर्शन कहते हैं। सांख्यके मतसे 'आध्यात्मिक', 'आधिदैविक' और 'आधिभौतिक' इन त्रिविध दुःखोंको निवृत्त करना ही इस दर्शनका विषय है। कर्दमके पश्चात गृह त्याग वह विंदुसर रहने लगे जहाँ इन्होंने माताको सांख्य-तत्त्व, अष्टांग-योग, भक्ति-योग, काम्य-कर्म और ज्ञान-योग बतलाया। तदुपरांत माताको छोड़ उत्तर चले गये। समुद्रसे पूजा तथा निवास पा यह योग साधने लगे (भाग० २.२४.३३; ब्रह्मां० ४.४०.६६; मत्स्य० ३.२९; १०२.१८; १७१.४.१९)। यह वासुदेवका महत्त्व जानते थे, पर उनकी माया नहीं समझ पाये थे (भाग० १.९.१९; ९.४.५७)। यह आदिराज पृथुके यज्ञमें गये थे (भाग० ४.१९.६)। प्राचीन बर्हिगण राजपाट छोड़नेपर तप करने इनके आश्रमपर आये थे (भाग० ४.२९.८१)। भागवत धर्मका ज्ञान रखनेवाले बारह व्यक्तियोंमेंसे यह एक थे (भाग० ६.३.२०; ८.१६)। (२) दनुका एक पुत्र जो वृत्रासुरके साथ इंद्रसे लड़ने गया था। यह बलि-इंद्र देवासुर-संग्राममें भी लड़ा था (भाग० ६.६.३०; १०(२०); ८.१०.२१; ब्रह्मां० ३.६.५; विष्णु० १.२१.४)। (३) कुशद्वीपका अधिपति ज्योतिष्मान्का एक पुत्र जिसके नामपर उक्त द्वीपके एक खण्डको कपिलवर्ष कहते हैं (ब्रह्मां० २.१४.२८-३०; वायु० ३३.२४)। (४) तृतीय तल (वितल—वायु०) का निवासी एक काद्रवेय नाग (ब्रह्मां० २.२०.३०; ३.७.३६; मत्स्य० ६.४१; वायु० ५०.२९; ६९.७३.२१९)। (५) महाबलवान् वानरोंका एक अध्यक्ष (ब्रह्मां० ३.७.२३३)। (६) एक यक्ष जिसका ब्याह केशिनी राक्षसीसे हुआ (ब्रह्मां० ३.७.१४६)। प्रचेतस्का पुत्र एक यक्ष (वायु० ६९.१२)। (७) वसुदेव और सुगंधीके दो पुत्रोंमेंसे एक पुत्र जो तपमें लीन रहता था (ब्रह्मां० ३.७१.१८६; मत्स्य० ४६.२१; वायु० ९६.१८२-१८३)। (८) भद्राश्वके पाँच पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (मत्स्य० ५०.३)। (९) मही (पृथ्वी) का पुत्र (मत्स्य० १६३.८९)। (१०) अग्निकामें महात्मा विक्रान्त द्वारा उत्पन्न आग्नेय गंधर्वोंमेंसे एक गंधर्व (वायु० ६९.२६)। (११) आठवें द्वापरमें उत्पन्न ब्रह्माका एक पुत्र (वायु० १०१.३३८; २३.१४१)। (१२) इक्षुमती नदीके तटपर स्थित आश्रमके ऋषि(विष्णु० १.२२.८; २.१४.५३)। राजा सौवीर इनके पास मुक्तिका रहस्य समझनेके लिए उद्यत थे। राहमें ब्राह्मण (जड़भरत जो तीसरे जन्ममें ब्राह्मण हुए थे), से पूछ कर प्रसन्न हुए थे (विष्णु० २.१४.७)। (१३) मेरुको चारों ओरसे घेरे कुश द्वीपका एक पर्वत (भाग० ५.१६.२६; २०.१५)। (१४) सीतोद (मेरु=विष्णु०) के पश्चिममें स्थित एक पर्वत (वायु० ३६.२७; ४२.५०; विष्णु० २.२.२९)। (१५) महाभद्र झीलके उत्तरका एक पर्वत (वायु० ३६.३१)। (१६) रथंतरसे उत्पन्न एक हाथी (ब्रह्मां० ३.७.३३५; वायु० ६९.२१९)। (१७) कुश द्वीपका एक राज्य (ब्रह्मां० २.१४.३०; १९.५९)। (१८) कुशद्वीपका एक वर्ष पर्वत (वायु० ४९.५३)।

महर्षि कपिलके बारेमें अनेक मत प्रचलित हैं। श्वेताश्वतर उपनिषद्में इन्हें ब्रह्माका मानस-पुत्र लिखा है। श्रीमद्भगवद्गीतासे एक कपिल नामक सिद्धर्षिका पता चलता है—'सिद्धानां कपिलो मुनिः'। पुराणानुसार इनके शापसे राजा सगरके ६०,००० पुत्र भस्म हो गये थे। इनके आश्रमके निकट सगरका अभिमंत्रित घोड़ा देख सगर-पुत्रोंने इनपर आक्रमण किया था। अंशुमानके मिलनेपर इन्होंने घोड़ा दे दिया, पर भस्मीभूत सगर-पुत्र गंगाके जलसे मुक्त होंगे, यह बतलाया (भाग० ९.८.१०-२९; ११.१६.१५; ब्रह्मां० ३.१५.१५-४३; ५३.१७-५२, अध्याय ५४)। सगरके चार पुत्र—बर्हिके सकेतु, धर्मरत और पंचवन मुनिशापसे बच गये थे—भस्म नहीं हुए (वायु० ८८.१४७-५३)। महाभारतमें कपिलका धर्मतत्त्व विवरण सम्बन्धी एक उपाख्यान ही वर्तमान है। शिवसंहितामें योगिश्रेष्ठ कपिलका वर्णन है। बौद्ध ग्रन्थोंमें लिखा है:—"इक्ष्वाकुवंशी राजा विराधकने अपनी पहली रानीके कहनेसे चार लड़कोंको निकाल दिया था। वे राजकुमार सगी पाँच बहिनोंको लेकर कपिल मुनिके आश्रममें गये। वही कपिल मुनि पीछे गौतम हुए थे और इन्हींके नामानुसार बुद्धदेवकी जन्म-भूमिका नाम कपिलवस्तु पड़ा। इनके अतिरिक्त वितथ-पुत्र कपिल और वसुदेव-पुत्र कपिल (ब्रह्मां० ३.७१.१८६; मत्स्य० ४६.२१; वायु० ९६.१८२-१८४) आदिका भी परिचय मिलता है।

कपिलकर्णिक–पु० [सं०] केतुमालका एक जनपद (वायु० ४४.२१)।

कपिलगण–पु० [सं०] शालमलिद्वीपके ब्राह्मण (विष्णु० २.४.३०)।

कपिलधारा–पु० [सं०] (१) काशीका एक तीर्थस्थान—काशी इतिहासः, भाऊ शास्त्रीकृत। (२) गयाका एक तीर्थस्थान।

कपिलवस्तु–पु० [सं०] गौतम बुद्धके जन्मस्थानका नाम जो नेपालकी तराईके बस्ती जिलेमें था। पहले यह शाक्यवंशीय राजाओंके अधिकारमें था। शाक्य श्रीरामके पुत्र कुशके वंशधर हैं—विशाल भारतका इतिहास, वेदव्यासकृत तथा 'कपिलवस्तु लुम्बिनी दिग्दर्शन' (श्रीविजय

श्रीवास्तवकृत)।

कपिला—स्त्री० [सं०] (१) दक्ष प्रजापतिकी एक पुत्रीका नाम। (२) पुंडरीक नामक दिग्गजकी पत्नी (ब्रह्मां० ३.७.३३५; वायु० ६९.२१९)। (३) एक राक्षस और खशाकी एक पुत्री। ये सात वहिनें थीं। कापिलेय गणोंका नामकरण इसीकी सन्तति होनेके कारण हुआ (ब्रह्मां० ३.७.१३८; वायु० ६९.१७०)। (४) एक देवी जिसका मंदिर महालिंगमें है (मत्स्य० १३.३३)। (५) एक नदी जो नर्मदाके दक्षिण तटपर थोड़ी दूरपर है (मत्स्य० १८६.४०)। (६) एक नदी जो गयामें वटके सामने तथा रुक्मिणीकुण्डके पश्चिममें है (वायु० १०८.५७)। (७) भूरी गाय जिसके दान करनेका महत्त्व विष्णु पुराणके दस अध्याय सुननेके बराबर है (विष्णु० ६.८.५४)। कहीं-कहीं इसके दानको सारी पृथ्वीके दानके बराबर कहा है (मत्स्य० १९१.७२)।

कपिलातीर्थ—पु० [सं०] नर्मदाके निकटस्थ एक तीर्थस्थान (मत्स्य० १९०.१०; १९१.७२; १९३.४)।

कपिलाश्व—पु० [सं०] (१) सूर्यवंशी कुवलयाश्वके तीन पुत्रोंमेंसे, जो धुन्धुकी मुखाग्निसे बच गये थे, एकका नाम। यह सबसे छोटे थे। इनके बहुतसे भाई धुंधुकी मुखाग्निसे जल गये थे (भाग० ९.६.२३-४; ब्रह्मां० ३.६३.६३; मत्स्य० १३.३२; वायु० ८८.६१; विष्णु० ४.२.४२)। (२) इंद्र जिनका घोड़ा सफेद है।

कपिलेश—पु० [सं०] कपिला नदीके तटपर स्थित एक शिवमंदिर। सोमवती अमावस्याको कपिलामें स्नान कर कपिलेश्वरका पूजन और पितृपिण्ड प्रदान करनेसे पितर मुक्त हो जाते हैं (वायु० १०८.५७)।

कपिलोमा—पु० [सं०] खशाका एक पुत्र राक्षस (ब्रह्मां० ३.७.१३४; वायु० ६९.१६६)।

कपिश—पु० [सं०] कश्यप और दनुके १०० दानव पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (मत्स्य०.६.१७)।

कपिशा—स्त्री० [सं०] (१) एक नदीका नाम जिसे आजकल 'कसाई' कहते हैं। यह मेदनीपुरसे दक्षिण है। रघुवंशमें लिखा है कि रघु इसी नदीको पार कर उत्कल गये थे—रघुवंश। (२) कश्यप ऋषिकी एक स्त्री जो पिशाचोंकी माता कही जाती है। क्रोधवशा (क्रोधा=वायु०) की एक पुत्री तथा पुलहकी एक पत्नी जिससे पिशाच (ब्रह्मां० ३.७.१७२, २७४) और कूष्माण्ड उत्पन्न हुए थे (वायु० ६९.२०५,२५७)।

कपीतर—पु० [सं०] आंगिरस ऋषियोंमेंसे एक ऋषिका नाम (मत्स्य० १९६.२५)।

कपीश—पु० [सं०] वंदरोंका राजा, जैसे—हनुमान्, सुग्रीव, वालि आदि—रामायण।

कपोत—पु० [सं०] एक कबूतर जिसे अतिथि व्याधको अपना मांस देनेसे कबूतरीके साथ विमान द्वारा स्वर्गप्राप्ति तथा इस लोकमें स्थायी प्रसिद्धि मिली थी (भाग० १०.७२.२१)। इस पक्षीका घरोंमें प्रवेश निषिद्ध तथा अशुभसूचक समझते हैं (मत्स्य० ६.३२)।

कपोततीर्थ—पु० [सं०] गोदावरी क्षेत्रका एक तीर्थ जहाँ कपोतके एक जोड़ेने एक बड़े भयंकर व्याधका अपनी जान देकर अतिथि-सत्कार किया और उपदेश दिया, जिससे वह मुक्त हुआ (ब्रह्म० ८०.४०-४१; ४७-५२; ५४-५५; ८०.६०; ७५-७६)।

कपोतरोमा—पु० [सं०] (१) विलोमाके पुत्र और अनु (तुम्बरुके सखा) के पिता तथा अंधकके दादा—दे० अनु० ४; भाग० ९.२४.२०। (२) वृष्णि (धृष्ट=विष्णु०) का एक पुत्र तथा विलोमाके पिता (ब्रह्मां० ३.७१.११७; विष्णु० ४.१४.१३)। (३) धृतिका पुत्र तथा तैत्तिरिका पिता (मत्स्य० ४४.६२)। (४) वृष्टिका पुत्र तथा रेवतीका पिता (वायु० ९६.११६)।

कबंध—पु०[सं०](१)एक दानव जो दनु और कश्यपका पुत्र था। इसका मुँह इसके पेटमें था। कहते हैं, इंद्रके वज्रकी मारसे इसके पैर और सिर पेटमें घुस गये। यह पूर्व जन्मका विश्वावसु गंधर्व था। श्री रामचंद्रसे दण्डकारण्यमें इसका युद्ध हुआ था जब रामने इसके हाथ काट कर इसे जीवित ही पृथ्वीमें गाड़ दिया था। विचारी नामक इसका एक पुत्र था। उ०—'आवत पंथ कबंध निपाता। तेहि सब कही सीयकी बाता॥'—तु० रामायण; (भाग० ९.१०.१२; ब्रह्मां० २.२०.१६; विष्णु० ४.४.९६)।

नोट विशेष—स्थूलशिरा नामक ऋषिने इसे शाप देकर कुत्सित राक्षस बना दिया था। यह कश्यप-पत्नी दनुके (दक्ष प्रजापतिकी पुत्री) गर्भसे उत्पन्न हुआ था और ब्रह्माने इसे दीर्घायु होनेका वर दिया था। इंद्रके वज्राघातके पश्चात् यह दण्डकारण्यमें रहता था जहाँ श्री रामचंद्रके हाथों मुक्त हुआ—रामायण, अ० काण्ड। (२) एक प्रकारके केतु जो संख्यामें ९६ माने गये हैं और जिनकी आकृति कबंधकी-सी कही जाती है। ये कालके पुत्र कहे गये हैं जिनके उदयका फल अशुभ कहा गया है—नक्षत्रविज्ञान। (३) एक गंधर्वका नाम। (४) एक मुनिका नाम। (५) अतल निवासीका एक प्रधान असुर (वायु० ५०.१६)। (६) अथर्ववेदके ख्यातिप्राप्त ऋषि सुमंतुके एक शिष्य जिन्होंने अथर्ववेदको दो खंडोंमें बाँट अपने दो शिष्यों—पथ्य और देवदर्शको दिया था (ब्रह्मां० २.३५.५६; वायु० ६१.५०; विष्णु० ३.६.९)।

कबीर—पु० [अर्बी, कबीर=बड़ा श्रेष्ठ] एक वैष्णव भक्त तथा कवि—भक्तचरितांक। इनके जन्मके संबंधमें मतभेद है। यह अपनेको स्वामी रामानन्दका शिष्य कहते थे तथा नीरू-नीमा एक जुलाहा-दम्पतीने इन्हें पाला था। कबीरने परमात्माको मित्र, माता, पिता और पति आदि रूपोंमें देखा। ११९ वर्षकी अवस्थामें मगहरमें इनकी मृत्यु हुई—भक्तचरितांक।

कर्बुर—पु० [सं०] ब्रह्मरूप अकार देवताके चौदहवें मुखसे उत्पन्न औकाररूप १४वें मनु सावर्णिका रंग (वायु० २६.४६)।

कमच्छा—स्त्री० [सं० कामाख्या] आसाम प्रांतमें कामरूपकी एक प्रसिद्ध देवी जिनकी प्रधानता तंत्रशास्त्रमें विशेष है—तंत्रसारसंग्रह, नारायणकृत।

कमठरूप—पु० [सं०] विष्णुका कच्छप अवतार जो ग्यारहवाँ था। देव और असुरों द्वारा समुद्र-मंथनके समय मंदर पर्वतका भार इन्होंने वहन किया था (भाग० १.३.१६;

८.७.८)।

कमण्डलु—पु० [सं०] बुधका कमण्डलु (जलपात्र) (मत्स्य० ११.५५); अगस्त्यका (मत्स्य० ६१.३६); वामनका जिसे वशिष्ठने दिया था (मत्स्य० २४५.८६); ब्रह्माका कमण्डलु जिससे गंगाजी निकलीं (वायु० ५५.१४; भाग० ८.२१.४)। शिवका कमण्डलु (वायु० १०१.२७३)।

कमलनयन—पु० [सं०] विष्णु, श्रीरामचंद्र, श्रीकृष्ण।

कमलनाभ—पु० [सं०] विष्णुका एक नाम जिनकी नाभिसे निकले कमलपर ब्रह्मा उत्पन्न हुए थे (भाग० तथा स्कंद०)।

कमलप्रभव—पु० [सं०] भारतवर्षके एक नदका नाम (मत्स्य० १६३.६२)।

कमलभव, कमलभू—पु० [सं०] ब्रह्माका एक नाम जो विष्णुकी नाभिसे निकले कमलपर उत्पन्न हुए थे—दे० ब्रह्मा।

कमलसप्तमी—स्त्री० [सं०] सूर्यके प्रीत्यर्थ किया जानेवाला एक व्रत जो वैशाख शुक्ल ७मीको किया जाता है तथा अष्टमीको पारणा होता है (पद्म० तथा मत्स्य० ७४.३; ७८ पूरा)।

कमला—स्त्री० [सं०] (१) लक्ष्मी (ब्रह्मां० ४.१५.३७; ३९.६७)। (२) लौकिकी अप्सराओंमेंसे एक अप्सराका नाम (वायु० ६९.७)।

कमलाक्ष, कमलाकांत—पु० [सं०] (१) कमलाक्ष नामका एक दानव था जो समुद्रमें प्रवेश कर गया था (मत्स्य० ६१.४)। (२) विष्णुका एक नाम। (३) एक पवित्र तीर्थ-स्थान जहाँ देवीकी महोत्पला नामसे स्थिति है (मत्स्य० १३.३४)।

कमलाग्रजा—स्त्री० [सं०] लक्ष्मीकी बड़ी वहिन दरिद्राका नाम।

कमलापति—पु० [सं०] (१) एक श्रुतर्षि (ब्रह्मां० २.३३.६)। (२) लक्ष्मीके पति विष्णु जिन्हें कमलाकांत, कमलेश आदि कहते हैं (ब्रह्मां० ४.१२.२०)।

कमलाभया—स्त्री० [सं०] एक लौकिकी अप्सरा (ब्रह्मां० ३.७.१०)।

कमलालय—पु० [सं०] (१) एक पवित्र तीर्थस्थान जहाँ देवी कमलाके नामसे स्थापित हैं (मत्स्य० १३.३२)।

कमलालया—स्त्री० [सं०] श्री (लक्ष्मी) का एक नाम (विष्णु० १.८.२२)।

कमलासन—पु० [सं०] ब्रह्माका एक नाम (मत्स्य० १.१३; ६०.४)।

कमली—स्त्री० [सं०] इक्ष्वाकु वंशोत्पन्न राजा रेणुककी एक पुत्री=रेणुका। यह जमदग्निकी पत्नी थी जिसके गर्भसे परशुराम हुए थे (ब्रह्मां० ३.६६.६१; रेणुका, परशुराम)।

कमलोत्पलहस्तिका—स्त्री० [सं०] मायाकी अनुगामिनी। आठ देवियोंमेंसे एक देवी (मत्स्य० १७९.७०)।

कमलोद्भव—पु० [सं०] ब्रह्माका एक नाम जिन्होंने ऋभुको सर्वप्रथम विष्णु पुराण सुनाया था (ब्रह्मां० ३.५६.३७; विष्णु० ६.८.४३)।

कमेरति, कमेरती—स्त्री० [सं०] चेदि-नरेश (शिशुपाल) की पुत्री, धृष्टकेतुकी वहिन जिसका विवाह नकुलसे हुआ। उसका नकुलसे निरमित्र नामक पुत्र उत्पन्न हुआ था (वायु० ९९.२४८)।

कम्पन—पु० [सं०] एक यक्षका नाम, जिसने केशिनीसे उद्रिक्त यक्ष-राक्षसोंको उत्पन्न किया (वायु० ६९.१७७)।

कम्पा—स्त्री० [सं०] एक नदीका नाम जो पुण्यतम काँची-पुरीके निकट है (ब्रह्मां० ४.४०, १७, १०२ ११५)।

कम्पिनी—स्त्री० [सं०] अन्धकासुर विनाशार्थ शिवजी द्वारा सृष्ट एक मानस-पुत्री मातृका (मत्स्य० १७९.२४)।

कम्बल—पु० [सं०] (१) पातालका एक प्रधान नाग जो आश्विन मासमें सूर्यके रथमें गणके अन्य साथियोंके साथ रहता है (भाग० ५.२४.३१; १२.११.४३; मत्स्य० ६.३९; वायु० ५०.२३; ६१.७०)। ब्रह्मां० और वायु० के अनुसार यह सुतलका निवासी था (ब्रह्मां० २.२०.२३; ३.७.३३)। यह प्रयाग स्थित प्रजापति क्षेत्रका है और त्रिपुरारिके रथमें काम आता है (मत्स्य० १०४.५; १०६.२७; ११०.८; ११३.२०)। एक काद्रवेय नाग जो माघ मासमें सूर्यके रथमें गणके अन्य संगियोंके साथ रहता है (विष्णु० १.२१.२१; २.१०.१६)। (२) अश्वतरसे विष्णु पुराण सुन कर इसने इलापुत्रको सुनाया था (विष्णु० ६.८.४७)। (३) सुयशा और प्रचेताके पुत्रों (पाँच), जो यक्षगण कहलाते हैं, मेंसे एक यक्षका नाम (वायु० ६९.१२)। (४) केतुमालका एक कुलपर्वत (वायु० ४४.४)।

कम्बलबर्हिष—पु० [सं०] (१) काशिराजकी पुत्री तथा सत्यकके चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (ब्रह्मां० ३.७१.११६; वायु० ९६.११५)। (२) श्रीमद्भागवतके अनुसार यह यदुवंशी अंधकके चार पुत्रोंमेंसे सबसे छोटे थे (भाग० ९.२४.१९; मत्स्य० ४४.६१; विष्णु० ४.१४.१२)। (३) देववाहु (दिवार्ह=वायु० मत्स्य०) का पुत्र तथा असमंजस (असमौजस्—ब्रह्मां० तथा वायु०)का पिता जो बड़ा विद्वान् था (ब्रह्मां० ७.७१.१४२; मत्स्य० ४८.८३; वायु० ९६.१४०)। (४) (कम्बलर्वाहिं=वायु०) मरुत्तके पुत्र तथा रुक्मकवचके पिता (मत्स्य० ४४.२५; वायु० ९५.२४)।

कम्बला—स्त्री० [सं०] केतुमाल महादेशकी बहुत-सी पुण्य महानदियोंमेंसे एक नदीका नाम (वायु० ४४.१७)।

कम्बलाश्वतर—पु० [सं०] एक नाग जो माघ और फाल्गुन महीनों (शिशिर ऋतु) में सूर्यके रथमें अपने अन्य संगियोंके साथ रहता है (वायु० ५२.२१)।

कम्बु—पु० [सं०] रैवत मनुके दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (ब्रह्मां० २.३६.६४)।

कम्बोज—पु० [सं०] एक देश जहाँके राजाको श्रीकृष्णने परास्त किया था (भाग० २.७.३५)।

कयाधु—स्त्री० [सं०] जम्भकी पुत्री तथा हिरण्यकशिपुकी पत्नीका नाम जो चार पुत्रोंकी माता थी (भाग० ६.१८.१२)।

कर—पु० [सं०] (१) शाकद्वीपमें कोई कर नहीं लगाया जाता था। ब्रह्मां० ३.४९.७; ५२.४१; मत्स्य० २१७-३; २२६.१०; २३८.१४ के अनुसार करकी वसूली किस्तमें होनी चाहिये। नये करोंसे प्रजा असंतुष्ट और क्षुब्ध होती है। (२) लम्बाईकी नाप (हाथ आधा गज) (मत्स्य० २७४.२५)।

करक—पु० [सं०] एक छोटा जलपात्र (कमण्डलु)। मनुने मछलीको पहले इसीमें रखा था (मत्स्य० १.१८)।

करङ्क—पु० [सं०] भण्डासुरका एक सेनापति तथा पुत्र। १०० अक्षौहिणी सेना लेकर इसने चार और सेनापतियोंके साथ शक्ति देवीकी सेनापर सर्पिणी मायासे आक्रमण किया था। इसपर शक्तिने नेवलोंको भेज सर्पोंको नष्ट कर दिया था (ब्रह्मां० ४.२१.७७; २३.४.९८)।

करकाचतुर्थी—स्त्री० [सं०] करवा चौथका एक नाम। कार्त्तिक कृष्णकी चंद्रोदय व्यापिनी चतुर्थी, जिस दिन स्त्रियाँ व्रत तथा गणेशकी पूजा करती हैं। इसमें शिव-शिवा, स्वामी कार्त्तिकेय और चन्द्रमाका पूजन होता है। यह त्योहार सोहागिन स्त्रियोंका है और पति निमित्त होता है। जव पाण्डव वन गये थे तव द्रौपदीने यह व्रत किया था—दे० करवा चौथ, वामन पुराण।

करकायु—पु० [सं०] धृतराष्ट्रके एक पुत्रका नाम—महाभारत।

करञ्ज—पु० [सं०] दक्ष-पुत्री दनु और कश्यपका एक पुत्र जो वलिके समान दानी था। नर्मदा क्षेत्रमें इसने जहाँ कठिन तपस्या करके शिव-दर्शन पाया था वही करञ्ज तीर्थ कहलाया (स्कंद० आवन्त्य-खंड, रेवा-खंड)।

करञ्जतीर्थ—पु० [सं०] नर्मदा क्षेत्रका एक पवित्रतीर्थ-स्थान। देवर्पिगण सेवित इस तीर्थमें स्नान करनेसे गोलोककी प्राप्ति होती है (मत्स्य० १९०.११; करञ्ज)।

करञ्जमाञ्जमा—पु० [सं०] केतुमालका एक जनपद तथा उसके निवासी (वायु० ४४.१३)।

करटक—पु० [सं०] वलाहकका भाई जो भण्डका सेनापति था और वेताल उसका वाहन था (ब्रह्मां० ४.२४.१०,५५)।

करण—पु० [सं०] एक जाति विशेप। मनुस्मृतिके अनुसार व्रात्यक्षत्रियोंसे उसकी सवर्णा स्त्रीसे उत्पन्न की 'करण' संज्ञा है। मनु० १०.२२; ब्रह्मवैवर्त्त पुराणके अनुसार वैश्यके औरस और शूद्राके गर्भसे उत्पन्न एक जाति है जो लिखनेका काम करती है। तिरहुतमें अव भी करण पाये जाते हैं।

करणव्रत—पु० [सं०] एक व्रत विशेप जो माघके शुक्ल पक्षमें होता है। इसमें विष्णुकी पूजा होती है और "ॐ नमो नारायणाय" (अष्टाक्षर मंत्र) का जप होता है।

करतोया—स्त्री० [सं०] एक नदी जो जलपाईगुड़ीके जंगलोंसे निकलकर वोगड़ा जिलेके दक्षिण हलहलिया नदीसे निकलती है। फूलझर नामकी एक शाखा अत्राई नदीमें मिलती है। कुछ लोग इसे ही करतोया वतलाते हैं। वरसातमें सव नदियोंका जल अपवित्र समझा जाता है, पर वर्षाकालमें भी यह पवित्र मानी गयी है। इसीसे इसे सदानीरा या सदानीर कहा जाता है। पार्वतीके पाणिग्रहणके समय शिवजीके हाथसे गिरे हुए जलसे इसकी उत्पत्ति कही गयी है, अतः करतोया नाम पड़ा (वायु० ४५.१००)।

करन्दम—पु० [सं०] त्रयीसानुका पुत्र तथा मरुत्तका पिता (विष्णु० ४.१६.३)।

करन्धम—पु० [सं०] (१) खनिनेत्रके पुत्र। यह वड़े धार्मिक थे। इनके वंशज चक्रवर्ती मरुत्त हुए (भाग० ९.२.२५-२६)। यह एक राजर्पि थे जिन्होंने श्राद्ध तथा युग-व्यवस्थाके संवंधमें अनेक शंकाएँ की थीं जिनका समाधान काशीके माण्टि ब्राह्मणके पुत्र कालभीति (महाकाल) ने किया था (स्कंद० माहेश्वर कुमा० खंड)। (२) त्रिभानु (त्रिसानु—ब्रह्मां०, मत्स्य०) का सुयोग्य पुत्र और मरुत (मरुत्त—ब्रह्मां०) का पिता (भाग० ९.२३.१७; ब्रह्मां० ३.७४.२; मत्स्य० ४८.२; वायु० ९९.२)। (३) अतिविभूतिका पुत्र और आविक्षितका पिता। यह त्रेतायुगके प्रारम्भमें वर्तमान था (वायु० ८६.७; विष्णु० ४.१.२९-३०)।

मार्कण्डेय पुराणमें इनके संवंधमें यह कथा मिलती है—ये राजा खनिनेत्रके पुत्र थे। इंद्रके आशीर्वादसे उत्पन्न हुए थे। राजाने इनका नाम वलाश्व रखा था और यह वड़े धर्मात्मा थे। एक वार शत्रुओंने इन्हें घेर लिया तव इन्होंने करका धमन करनेसे (हाथोंको फूँकनेसे) शत्रुओंको भस्म करनेवाली सेना उत्पन्न की थी, अतः करन्धम कहलाये। राजा वीर्यचंद्रकी पुत्री वीराने स्वयंवरमें इनका वरण किया था और आवीक्षित नामक पुत्रकी माता हुई थी (भाग० ९.२.२५-२६ तथा वायु० ८६.७; विष्णु० १.२९.३०)।

करभाजन—पु० [सं०] ऋपभदेवकी जयन्ती नामक पत्नीसे उत्पन्न आत्मसमान १०० पुत्रोंमेंसे एक पुत्र जो परम भागवत था। इसने विष्णुके भिन्न-भिन्न रूपोंका वर्णन किया था, जिसकी उपासना भिन्न-भिन्न अवसरों तथा समयपर की जाती है (भाग० ५.४.११; ११.२.२१; २०-४२)।

करमा—स्त्री० [सं० कर्मा] एक भक्तिनका नाम जिसका एक मंदिर जगन्नाथजीमें वना है। इसकी खिचड़ी जगन्नाथजीको भोग लगती है (स्कंद० पुरुपोत्तम क्षेत्र-माहा०)।

करमैती—स्त्री० [सं०] श्रीकृष्णकी एक उपासिका जो शेपावती नगरीके राजपुरोहित श्री परशुरामकी पुत्री थी (भाग०, विष्णु० पंचम अंश)।

करमोदा—स्त्री० [सं०] ऋक्षवान् पर्वतसे निकली भारतवर्पकी एक नदी (ब्रह्मां० २.१६.३०)।

करम्भक—पु० [सं०] (१) शकुनिका पुत्र तथा देवरातका पिता जो एक वड़ा धनुर्द्धर था (ब्रह्मां० ३.७०.४४; मत्स्य० ४४.४२ तथा वायु० ९५.४३)। (२) हृदीकके दस पुत्रोंमेंसे एकका नाम (मत्स्य० ४४.८२)।

करम्भव—पु०]सं०] केतुमालका एक जनपद और उसके निवासी (वायु० ४४.११)।

करम्भवालुक—पु० [सं०] कर्मच्युत लोगोंके लिए एक नरक, जिसमें अपने दुष्कर्मोंसे वलात् गिराये जाते हैं (ब्रह्मां० २.२८.८४; वायु० ५६.७९)।

करम्भि—पु० [सं०] शकुनिका एक पुत्र तथा देवरातका पिता (भाग० ९.२४.५; विष्णु० ४.१२.४१)।

कररोम—पु० [सं०] एक काद्रवेय नागका नाम (ब्रह्मां० ३.७.३७)।

करव—पु० [सं०] वंदरोंका एक महावली नायक तथा वालीका सामन्त (ब्रह्मां० ३.७.२३४)।

करवाचौथ—स्त्री० [सं० करका चतुर्थी] कार्त्तिक वदी चौथ जिस दिन स्त्रियाँ अपने सौभाग्यादिके लिए गौरीका व्रत

कर, सूर्यास्तके पश्चात् मिट्टीके करवेसे चंद्रमाको अर्घ्य देती हैं तथा पकवान सहित करवे दान करती हैं। इस दिन शाकप्रस्थपुरके वेदधर्मा ब्राह्मणकी विवाहिता पुत्री वीरवतीकी कथा सुनते हैं—व्रतपरिचय १६४।

करवाट–पु० [सं०] केतुमालका एक जनपद और उसके निवासी (वायु० ४४.१२)।

करवीर–पु० [सं०] (१) एक काद्रवेय नागका नाम (ब्रह्मां० ३.७.३५)। (२) चेदि देशका एक नगर। जरासंधके भगानेपर जब श्रीकृष्ण और बलराम करवीरकी ओर सेना सहित जा रहे थे, उस समय यहाँके राजा शृगालने उन्हें रोका था (करवीरपुर; भाग० १०(५२(५) २८-४२); (५३(५)२०-२१); ५२.११(१) ६६.९)। (३) मेरुके दक्षिणका एक पर्वत (भाग० ५.१६.२७)। (४) एक तीर्थस्थान जहाँ महालक्ष्मीके रूपमें देवीकी स्थिति है (मत्स्य० १३.४१)।

करवीरपुर–पु० [सं०] (१) एक तीर्थस्थान जो पितरोंको प्रिय श्राद्धके लिए प्रशस्त बतलाया गया है (मत्स्य० २२.७६)। (२) गोमंत पर्वतकी तलहटीमें स्थित एक राज्य जहाँ शृगाल वासुदेवका आधिपत्य था। शृगालके विरोधके कारण श्रीकृष्ण और बलदेवने इसे मार नगरपर अधिकार कर लिया था और यहाँ चार महीनोंतक रहे भी थे। जरासंधने जब श्रीकृष्णका पीछा किया था तब श्रीकृष्ण और बलदाऊ दोनों यहाँ आये थे (भाग० १०(५२(५)२८-४२); (५३(५)२०-२१); ५२.११(१); ६६९)।

करवीरव्रत–पु० [सं०] ज्येष्ठ शु० १ को कनेर वृक्षका पूजन करे फिर व्रत करे। यह व्रत सूर्यका है। सावित्री, सरस्वती, सत्यभामा और दमयंती आदिने इस व्रतसे अभीष्ट फल प्राप्त किया था—भविष्योत्तर।

करवीराक्ष–पु० [सं०] खर राक्षसका सेनापति जिसे श्री रामचंद्रने मारा था—रामायण।

करारी–पु० [सं०] कपालिकाके उपासकोंमेंसे एकका नाम—हिं० श० सा०।

कराल–पु० [सं०] शिवका एक नाम (ब्रह्मां० २.२५.६८)।

करालक–पु० [सं०] एक भैरव। ये किरिचक्रके देवता हैं। दण्डनाथा देवीके सहायक। इनकी संख्या १० है (ब्रह्मां० ४.२०.८२)।

करालाक्ष–पु० [सं०] भण्डका पुत्र तथा सेनापति (ब्रह्मां० ४.२१.७८)।

करालायु–पु० [सं०] बलाहकका एक भाई तथा भण्डका एक सेनापति। इसने श्मशान मंत्रसे प्रेत सिद्ध किया था, इसलिए उक्त प्रेत इसका वाहन था (ब्रह्मां० ४.२४.१०, ५२)।

करालिनी–स्त्री० [सं०] अन्धकासुरके विनाशके लिए शिवजी द्वारा सृष्ट एक मानस-पुत्री मातृकाका नाम (मत्स्य० २७९.१७)।

करिचक्ररथ–पु० [सं०] इसी रथ विशेषमें ललिता देवी सर्वप्रथम बैठ कर भण्डके विरुद्ध आक्रमण करने चली थीं (ब्रह्मां० ४.१७.८)।

करिष्क–पु० [सं०] पुराणानुसार प्राचीन समयकी एक जाति विशेषका नाम।

करीराशी–पु० [सं०] कुशिक वंशीय एक ऋषिका नाम (मत्स्य० १९८.२०)।

करीषस–पु० [सं०] कुशिवंशके एक त्र्यार्षेय गोत्रकार (मत्स्य० १९८.४)।

करुण–पु० [सं०] एक प्राचीन तीर्थका नाम (कालिका पुराण)।

करुणाभ्युदय–पु० [सं०] भृगु द्वारा की गयी शिवकी स्तुति जिसके पाठसे सर्वसिद्धियाँ प्राप्त होती हैं (मत्स्य० १९३.४५)।

करूप–पु० [सं०] (१) एक देश विशेष जहाँका राजा बृहच्छाप इसपर जरासंधके आक्रमणके समय गोमंत पर्वतके पश्चिम रक्षार्थ था (भाग० १०.५२.११(१२)। इसने अपना नाम वासुदेव रख लिया था और इसकी सूचना दूत द्वारा श्रीकृष्णको दी थी। इसने गदा ले श्रीकृष्णपर आक्रमण भी किया था (भाग० १०.६६.१७८, ४)। (२) रामायणके अनुसार एक प्राचीन देश जो गंगाके दक्षिण किनारेपर था। श्रीरामके समय यहाँ घोर वन था और ताड़का नामकी राक्षसी यहीं रहती थी। महाभारतके समयतक यहाँ यथेष्ट आबादी हो गयी थी और राजा दंतवक्र यहाँका शासक था (ब्रह्मां० २.१६.६३; ३.७१.१५६)। वायु पुराण और मत्स्य पुराण आदिके अनुसार करूपको विन्ध्याचल पर्वतपर होना चाहिये (ब्रह्मां० २.१६.६३; ३.७१.१५६; मत्स्य० ११४.५२; वायु० ४५.१३२; ६९.२३९)। इससे विदित होता है कि वर्तमान शाहाबादका जिला ही प्राचीन करूप देश है। बक्सरके समीप ही ताड़काका वध हुआ था (रामायण, बालकांड, दोहा २०८-२०९)। (३) वैवस्वत मनुके १० पुत्रोंमेंसे एकका नाम। इसके वंशज सब क्षत्रिय थे जो उत्तरापथपर शासन करते थे। ब्राह्मणों तथा धर्मकी प्रतिष्ठा थी (भाग० ८.१३.३; ९.१.१२; २.१६; ब्रह्मां० २.३८.३१; ३.६०.३; ३.६१.२; मत्स्य० ११.४१; १२.२४; वायु० ६४.३०; ८५.४; ८६.२; विष्णु० ३.१.३४; ४.१.७.१८)। (४) इसने सुचंद्र नामक कृष्णके पुत्रको दत्तक पुत्रके रूपमें लिया (मत्स्य० ४६.२५)। (५) ब्रह्मां० ३.२४.१८ के अनुसार श्राद्धके लिए उपयुक्त।

करूपगण–पु० [सं०] विन्ध्याचल पर्वतकी एक जाति विशेष जिसका राजा दंतवक्त्र था (ब्रह्मां० २.१६.६३; ३.७१.१५६; मत्स्य० ११४.५२; वायु० ४५.१३२)। यह राज्य सुप्रीतक नामक हाथीके राज्यके वनके निकट है जो हाथियोंके लिए प्रसिद्ध है (वायु० ६९.२३९)।

करेणुमती–स्त्री० [सं०] चेदिराजकी एक पुत्री, नकुलकी रानी तथा निरमित्रकी माताका नाम (भाग० ९.२२.३२; मत्स्य० ५०.५५)।

कर्क–पु० [सं०] ब्रह्माके यज्ञके बहुतसे ऋत्विजोंमेंसे एक ऋत्विक् (वायु० १०६.३७)।

कर्कटक–पु० [सं०] भण्डासुरका एक पुत्र तथा सेनापति (ब्रह्मां० ४.२१.७८)।

कर्कटीव्रत–पु० [सं०] यह वैधव्यहर व्रत है जो सूर्यके कर्क राशिका होनेपर किया जाता है—व्रतराज।

कर्कोटक—पु० [सं०] (१) महर्षि कश्यपके औरस और दक्ष प्रजापतिकी पुत्री कद्रूके गर्भसे उत्पन्न एक काद्रवेय। सर्पोंकी संख्या एक सहस्र कही जाती है जिनमेंसे कर्कोटक एक प्रधान सर्प था। एक समय इसने नारद मुनिको छला था जिससे उन्होंने शाप दिया था कि तुम स्थावर होकर इसी वनमें रहो और राजा नल तुम्हारी मुक्ति करेंगे। राजा नल कलिके कोपसे राजभ्रष्ट होकर वहाँ आये और इस वनको दावानलसे जलता देख कर्कोटकका उन्होंने उद्धार किया था। इसपर राजा नलको काट कर बोला—‘आप मुझे अकृतज्ञ न समझें। मैंने आपका उपकार किया है। अब रूप विकृत होनेसे शत्रु आपको पहिचान न सकेंगे और हमारे विषसे कलि परास्त होगा।’ पुनः अयोध्यापति ऋतुपर्णके यहाँ आश्रय लेनेके लिए आदेश किया और उनसे जुआ खेलनेकी विद्या सीखनेकी भी सम्मति दी (महाभारत, वन पर्व, नलका रूप परिवर्तन)। (२) एक नागका नाम जो पुष्य मासमें सूर्यके रथमें अपने अन्य संगियोंके साथ रहता है। यह पुष्य मासका अधिपति है (भाग० १२.११.४२; मत्स्य० १२६.१८; वायु० ५२.१७; ६९.७०)। यह काद्रवेय नाग था, जिसकी सभा माहिष्मतीमें थी। कार्त्तवीर्य अर्जुनने इसके पुत्रको परास्त किया था (ब्रह्मां० ३.६९.२६; मत्स्य० ४३.२९)। त्रिपुरारिके रथकी तैयारीमें यह भी काम आया था (मत्स्य० १३३.३३; १६३.५६)।

कर्कोटकेश्वर—पु० [सं०] नर्मदा तटपर स्थित एक पवित्र तीर्थस्थान जहाँ पर्वपर गंगाजी उतरती हैं (मत्स्य० १९१.३६)।

कर्ण—पु० [सं०] (१) सूरसेन यादवकी पुत्री तथा राजा पाण्डुकी पत्नी कुंतीका सबसे बड़ा पुत्र जो कन्याकालमें सूर्यके अंशसे उत्पन्न हुआ था, इसीसे इसे कानीन कहते हैं। यह महाभारत युद्धके विख्यात वीर तथा दुर्योधनके मित्र थे। इनका नाम वसुषेण था। जब इन्होंने अपना अंग काट कर ब्राह्मण वेशधारी इंद्रको कवच और कुण्डल दान दिये तबसे कर्ण नामसे विख्यात हुए।

कर्ण पाण्डव-माताके कानीन पुत्र थे। लोकलज्जाके भयसे कुंतीने इन्हें संदूकमें रख यमुना नदीमें फेंकवा दिया था। राधा नामकी एक निःसंतान सूत जातिके (सत्यकर्माके पुत्र) अधिरथकी स्त्रीने इन्हें जलसे निकाला तथा पाल-पोस कर बड़ा किया (विष्णु० ४.१८.२७-८)। इनका नाम वसुषेण रखा गया था। अधिरथ सूतने इन्हें पाला था, अतः इन्हें सूतपुत्र भी कहते हैं (वायु० ९९.११८)। कर्णने द्रोणाचार्यसे अस्त्र-विद्या सीखी थी। आरम्भसे ही अर्जुनसे इनकी प्रतिद्वंद्विता थी, इससे दुर्योधनसे इनकी मित्रता हो गयी। कर्णने परशुरामसे भी अस्त्र-विद्या सीखी थी। सीखनेके समय कर्णने एक ब्राह्मणकी गौको बाणसे मारा था। दुःखी ब्राह्मणने शाप दिया था—‘जिसे तुम मारना चाहते हो, तुम उसीसे मारे जाओगे।’ फलस्वरूप कर्ण अर्जुन द्वारा मारा गया था। पद्मावती नामकी कन्यासे कर्णका विवाह हुआ था जिसके गर्भसे कर्णके वृषसेन, वृषकेतु, चित्रसेन आदि पुत्र हुए (भाग० ९.२३.१३-१४; १०.४९.२; विष्णु० ४.१४.३६; १८.२८-९; ५.३५.५.७; ३८.१६)। कर्णने अर्जुनके मारनेके लिए आसुर व्रतका अनुष्ठान किया था। इस समय श्रीकृष्ण और अर्जुनके पिता इंद्रने उसकी कठिन परीक्षाएँ ली थीं। द्रोणाचार्यके मारे जानेपर युद्धके १६वें दिन कर्णको सेनापतिका पद मिला था। अर्जुनको छोड़ अन्य पाण्डवोंको इसने जीता था, परंतु कुंतीके अनुरोधसे उन्हें मारा नहीं। युद्धके सत्रहवें दिन कर्ण अर्जुनके हाथों मारा गया (महाभारत तथा भाग० १०.६८.५, ९; ७५.५; ७८(९५(५)१६) और ३७)। (२) सन्धानके चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्र। इन पुत्रोंके नामसे पाण्डु, चोल, केरल आदि जनपद हुए (मत्स्य० ४८.५)। (३) पुनर्जन्ममें यह बलिका पुत्र चक्रवर्मा हुआ (वायु० ६८.३२; ब्रह्मां० ३.६.३३)। (४) अंगका पुत्र (मत्स्य० ४८.१०२-४; वायु० ९९.११२)।

कर्णक—पु० [सं०] एक आत्रेय मंत्रकृत् ऋषि (मत्स्य० १४५-१०७, ६)।

कर्णजिह्व—पु० [सं०] एक आत्रेय गोत्रकार ऋषि (मत्स्य० १९७.३)।

कर्णदेवता—पु० [सं०] वायुका नाम।

कर्णपिशाची—स्त्री० [सं०] एक देवी विशेष जिसके सिद्ध हो जानेसे मनुष्य इच्छानुकूल जो चाहे कर सकता है—तंत्रसारसंग्रह, नारायणकृत।

कर्णप्रयाग—पु० [सं०] अलकनंदा और पिंडार नदीके संगमपर स्थित गढ़वालका एक गाँव। यहाँ स्नान करनेका बड़ा माहात्म्य है। कहते हैं कर्णने सूर्यकी उपासना यहीं की थी—महाभारत।

कर्णमोटी—स्त्री० [सं०] अन्धकासुरके विनाशके लिए शिवजी द्वारा सृष्ट एक मानस-पुत्री मातृका (मत्स्य० १७९.१५)।

कर्णाटक—पु० [सं०] दक्षिणका एक प्राचीन राज्य। गरुड़ पुराणानुसार भारतके दक्षिण और पश्चिममें यह राज्य स्थित था। महाभारतमें धृतराष्ट्रके प्रश्नोंके उत्तरमें संजयने दक्षिणीय जिन राज्योंका उल्लेख किया है उनमें कर्णाटक भी है। मार्कण्डेय पुराणमें अवंतीदासपुर, महाराष्ट्र आदि देशोंके साथ कर्णाटकका भी उल्लेख है। वृहत्संहितामें भी दक्षिणी राज्योंमें इसे गिनाया गया है। ‘शक्ति-संगम’ नामक तंत्रमें लिखा है कि रामनाथसे रंगपत्तनतक कर्णाटक देश विस्तृत है। पाण्डववंशी, चालुक्यवंशी, पल्हव, कलचुरि आदि पहले यहाँ राज करते थे। साय० माधव जिसका दूसरा नाम विद्यारण्य था, यहाँका एक प्रसिद्ध व्यक्ति था जिसने वेदका भाष्य किया (भाग० ५.६.७)।

कर्णिका—स्त्री० [सं०] (१) कंककी पत्नी तथा ऋतधामा और जयकी माताका नाम (भाग० ९.२४.४४)। (२) संसाररूपी कमलकी नाल। अत्रि, भृगु, भागुरि-गालव, गर्ग आदि ऋषियोंने इसकी आकृति भिन्न-भिन्न मानी है। सबको इसका अधूरा ही ज्ञान था, केवल ब्रह्माको ही पूर्ण ज्ञान था (वायु० ३४.५८-६९)। (३) एक अप्सराका नाम।

कर्णिकार—पु० [सं०] जटायुके दो पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (मत्स्य० ६.३६)।

कर्णीर—पु० [सं०] एक प्रधान काद्रवेय नागका नाम

(वायु० ६९.६९)।

कर्दम–पु० [सं०] (१) स्वायंभुव मन्वंतरके एक प्रजापति जो ईश्वरके पुत्र थे, तपस्यासे ऋषि हुए (ब्रह्मां० २.३२.९८; वायु० ५९.९०)। ये ब्रह्माजीकी छायासे उत्पन्न हुए थे (भाग० ३.१२.२६)। ये स्वायंभुव मनुकी पुत्री देवहूतिके पति थे। इन्हींके पुत्र कपिलदेव थे (भाग० २.७.३; ४.१.१०)। इनकी पुत्री शांतिका विवाह अथर्वासे हुआ था, जिससे यज्ञ समृद्ध होता है (भाग० ३.२४.२४)। ब्रह्माने कर्दमको उत्पन्न कर इनसे प्रजासृष्टि करनेको कहा। इन्होंने कृतयुगमें सरस्वतीके तटपर १०,००० वर्षोंतक तप किया था, तब विष्णुकी कृपासे स्वायंभुव मनुकी पुत्री देवहूतिसे विवाह हुआ था। देवहूतिसे इनकी नौ पुत्रियाँ—कला, अनुसूया, श्रद्धा, हविर्भू, गति, क्रिया, ख्याति, अरुन्धती तथा शान्ति हुईं। ब्रह्माजीकी आज्ञासे इन पुत्रियोंका इन्होंने क्रमसे मरीचि, अत्रि, अंगिरा, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु, भृगु, वसिष्ठ और भृगुके साथ विवाह किया। ये सबके सब श्रेष्ठ ब्रह्मर्षि थे। तदुपरान्त उनके एक पुत्र कपिलजी हुए जो साक्षात् विष्णुके अवतार थे, जिन्होंने अपनी माता देवहूतिको आध्यात्मिक विद्याका उपदेश दिया, जिससे उनके कर्मबन्धन टूट गये और मुक्ति प्राप्त हुई। ऋषि कर्दम भी वनमें जाकर भगवद् ध्यान परायण हो मुक्त हुए (भाग० स्कंद० ३, अ० २१ से २४ तक)। (२) पुलह और क्षमाके तीन पुत्रोंमेंसे एक पुत्र जिसका विवाह आत्रेयी श्रुतिसे हुआ था। उससे इनके एक पुत्र शंखपाद तथा एक पुत्री काम्या हुई। यह एक प्रजापति तथा देवर्षि थे (ब्रह्मां० १.१.६५; २.११.२३,३१; ३२.९९; ३५.९४; ३.८.१८; १०.९३; मत्स्य० १४५.९३; वायु० १.८०; ३.३; २८.२५-२९; ३३.७; ३८.७; ५९.९१; ६१.८४; ६५.५३; विष्णु० १.१०.१०)। यह एक प्रवर थे (मत्स्य० १९९.१६)। (३) एक प्रजापति जिनकी पत्नीका नाम शिनीवाली था। इनकी पुत्री काम्यासे प्रियव्रतके दस पुत्रोंके अतिरिक्त सम्राट् तथा कुक्षि नाम्नी पुत्रियाँ हुई थीं (ब्रह्मां० २.१४.७; ३.१.५३)। इनकी पत्नी इन्हें छोड़ सोमके पास चली गयी थी। इनके लोकमें आज्यप पितरोंका निवास है (मत्स्य० १५.२०; २३.२४)। (४) लोकालोक पर्वतके मध्यमें रहनेवाले चार महात्मा लोकपालोंमेंसे एक लोकपाल जिनकी 'शंखपा' यह उपाधि थी (ब्रह्मां० २.२१.१५७; मत्स्य० १२४.९५; वायु० ५०.२०६)।

कर्दमायनशाखेय–पु० [सं०] अत्रिके वंशज गोत्रकार ऋषि (मत्स्य० १९७.१)।

कर्दमाल–पु० [सं०] यह गया तीर्थकी नाभिमें मुण्डपृष्ठ पर्वतके समीप स्थित है जहाँ स्नान, तर्पण तथा श्राद्ध करनेवाला पितृ-ऋणसे मुक्त होता है (वायु० ११२.५७)।

कर्नाल–पु० [सं०] एक नदीका नाम जो साम्प्रतिक कुमायूँ प्रदेशमें विद्यमान है। कहते हैं, कर्ण इसी नदीके तीरपर रहता था, अतः यह नाम पड़ा—महाभारत।

कर्पट–पु० [सं०] (१) नाभिमंडलके पूर्व और भस्मकूटके दक्षिणमें स्थित एक पर्वतका नाम—कालिकापुराण। (२) पाषण्ड जो केवल बलपर निर्भर है (वायु० ७८.३०)।

कर्म–पु० [सं०] कर्म दो प्रकारके हैं—प्रवृत्ति और निवृत्ति (विष्णु० १.१.२७; ६.४.४१)। जिन कर्मोंमें यज्ञादि सम्मिलित हैं वे श्रेष्ठ हैं (विष्णु० २.१४.१४)। (२) वैदिक कर्म भी दो प्रकारके हैं—प्रवृत्त और निवृत्त (भाग० ७.१५.४७-४९)। कर्मोंका दूसरा विभाजन इस प्रकार है—वैदिक, तांत्रिक और मिश्र (भाग० ११.२७.७)। श्रीकृष्णने उद्धवको प्रवृत्त कर्म छोड़ निवृत्त कर्मका अनुसरण करनेको कहा था (भाग० ११.१०.४)। मायासे मोहित होनेके कारण ही शुभ और अशुभके आधार कर्ममार्गपर चारों वर्णके लोग चलते हैं। कर्मसे ही पुरुष सुख-दुःखका भागी होता है (भाग० १०.२३.५०; २४.१३-१४ और १८-२०)। इसके सात अंग हैं—तप, ब्रह्मचर्य, यज्ञ, प्रजा, श्राद्ध, विद्या और दान। ये परिणाममें सुखदायी हैं। बुरे कर्मोंके ५ अंग हैं—मार देना (वध), चौर्य (चोरी), दूसरोंको दुःख पहुँचाना, मदिरा-पान और लोभ। ये दुष्कृत कहलाते हैं (ब्रह्मां० २.२८.७५; ३.४.५; २४, २८.९; ४.५.२५; ६.३७; वायु० ५६.७०)। अग्निके साथके कर्म काम्य, नैमित्तिक और अजस्र हैं। काम्य कर्मोंका फल स्वर्ग और सृष्टि है तथा ईश्वरार्पित कर्मोंका फल ज्ञान द्वारा मोक्ष है। इसमें जीव सर्वथा निर्लिप्त, निःसंग और सुखी रहता है (वायु० २९.४४; १०४.८६-९६)। वायु० १४.२-३; ३१.४२; ६१.१०६ के अनुसार पुनर्जन्म, स्वर्ग और मोक्ष कर्मोंपर ही आधारित हैं। कर्मयोग तीन प्रकारका है—वैदिक कर्मयोग, तांत्रिक कर्मयोग और वैदिकतांत्रिकमिश्र कर्मयोग। कर्म तीन प्रकारके हैं—कर्म (विहित कर्म), अकर्म (निषिद्धकर्म) और विकर्म (विहित कर्मको न करना), जो एकमात्र वेदसे जाने जाते हैं, लौकिक नहीं हैं। वेद ईश्वर श्वासरूप होनेसे ईश्वररूप हैं अर्थात् अपौरुषेय हैं। पुरुषवाक्यमें वक्ताके अभिप्रायसे अर्थज्ञान होना संभव है, किन्तु अपौरुषेय वाक्योंमें केवल वाक्योंके पौर्वापर्यसे ही तात्पर्यका निश्चय हो सकता है, वह बड़ा कठिन है, इसलिए साधारण लोगोंकी तो बात ही क्या, विद्वान् लोगोंकी भी मति चकरा जाती है। वेद परोक्षवाद कहे जाते हैं, उनका तात्पर्य बड़ा दुर्गम है। अन्यथा स्थित अर्थको छिपानेके लिए अन्यथा करके कहना ही परोक्षवाद है। वेद कर्मोंसे छुटकारा करानेके लिए कर्मोंका विधान करता है। स्वर्ग आदिके लिए कर्मोंका विधान तो मूर्ख लोगोंकी कर्मोंकी ओर प्रवृत्तिके लिए है, जैसे कि बीमार बच्चेको औषधि पीनेके लिए लड्डूका प्रलोभन दिया जाता है।

कर्मक्षेत्र–पु० [सं०] भागवत (५.१९) के अनुसार भारतवर्ष कर्म करनेके लिए है। शेष आठ वर्ष कर्मोंके अवशिष्ट फल भोगके लिए हैं (कर्मभूमि; विष्णु० २.३.२२)।

कर्मजित्–पु० [सं०] जरासंधवंशी मगधका एक राजा जो बृहत्सेनके पुत्र तथा सृतंजयके पिता थे (भाग० ९.२२.४७)।

कर्मदेव–पु० [सं०] देवताओंका एक भेद जिसमें तैंतीस देवता सम्मिलित हैं—अष्टवसु, एकादशरुद्र, द्वादशसूर्य तथा इंद्र और प्रजापति। इनके राजा इंद्र और आचार्य बृहस्पति हैं। ये जन्मसे ही देवता नहीं थे, बल्कि अग्निहोत्र आदिक वैदिक कर्म करके देवता हुए थे—ऐतरेय और बृहदारण्यक उपनिषद्।

कर्मधर्मवती–स्त्री० [सं०] उग्रसेनकी, एक पुत्रीका नाम ये पाँच वहिनें थीं तथा इनके कंस आदि नौ भाई थे, (वायु० ९६.१३३)।

कर्मनाशा–स्त्री० [सं०] गंगाकी एक सहायक नदी जो शाहावाद जिलेके कैमूर पहाड़से निकल कर चौसाके निकट गंगामें गिरती है। लोगोंका विश्वास है कि केवल इसके जलके स्पर्शसे ही सारे अर्जित पुण्योंका क्षय हो जाता है। पुराणोंमें इसे राजा त्रिशंकुकी लारसे उत्पन्न वतलाया गया है। कुछ लोग इसे लंकापति रावणके मूत्रसे निकली वतलाते हैं। लोग इसे इसलिए अपवित्र वतलाते हैं कि प्राचीन कालके कर्मनिष्ठ आर्य ब्राह्मण इस नदीको पार करके मगध या वंगाल जाना निषिद्ध समझते थे—दे० विश्वामित्र, त्रिशंकु।

कर्मभूमि–स्त्री० [सं०] पृथ्वी जो स्वर्गसे पृथक् है (ब्रह्मां० ४.९.१०)। भारतवर्ष कर्मभूमि है तथा अन्य आठ वर्ष भोगभूमि हैं (विष्णु० २.३.२२)।

कर्मयोग–पु० [सं०] कर्मयोग तीन हैं जो शास्त्रीय तथा धार्मिक हैं, लौकिक नहीं और उन लोगोंके लिए हैं जो माया-ममतामें फँसे गृहस्थ हैं। कर्मके पहले 'आचार' आवश्यक है। कर्मकाण्ड (पूजा विधान) तो समुद्र है। उसका पारवार नहीं है। संक्षेपमें वैदिक, तांत्रिक और मिश्र त्रिविध यज्ञ (पूजा) मेंसे जो रुचिकर हो उससे विधिपूर्वक भगवान्‌की अर्चा करनी चाहिये। उपासना भी तीन प्रकारकी होती है—'वैदिक, तांत्रिक और मिश्रित'। प्रतिमाकी उपासना गुरुके आदेशानुसार तथा प्रसिद्ध नियमोंके अनुकूल होनी चाहिये (भाग० ११.३.४१-५५; २०.६.७; २१.१४.१५; २७.१.६-९)। इसे जनार्दनने मनुको वतलाया था। यह हजारों ज्ञानयोगोंसे भी अधिक महत्त्वका है, क्योंकि ज्ञान तो कर्मयोगका ही फल है। अकर्मोंका ज्ञान कदापि संभव नहीं। क्रियायोग, पाँचों महायज्ञ और ४० संस्कारोंसे युक्त भी पुरुष मुक्तिका अधिकारी नहीं होता, यदि वह आठ आत्मगुणोंसे रहित हो। क्रियायोग है देवार्चन तथा देवकीर्तन वह भुक्ति और मुक्ति देनेवाला है, इससे वढ़कर और कुछ नहीं है (मत्स्य० ५२.३-११; २५८.२)। अग्निहोत्र, मौन, अध्ययन तथा यज्ञ यदि अभिमानसे किये जायँ, ठीक नियमानुसार नहीं किये जायं तो भयोत्पादक हो जाते हैं (मत्स्य० ३९.२५-७)।

कर्मविपाक–पु० [सं०] पुराणानुसार प्राणी अपने कर्मानुसार भला या बुरा जन्म ग्रहण करता है। पृथ्वीपर नाना प्रकारके सुख तथा दुःख इत्यादिका कष्ट अपने कर्मानुसार ही भोगता है। किन-किन पापोंसे कौन-कौनसे दुःख भोगने पड़ते हैं, इसका पूरा विवरण गरुड़पुराण तथा अन्य धार्मिक ग्रंथोंमें है। कर्मविपाकका अर्थ भी पूर्व जन्मके किये हुए शुभाशुभ कर्मोंका भला या बुरा फल ही है (गरुड़पुराण; नारदपुराण पूर्व भाग प्रथम पाद; विष्णुपुराण द्वि० अंश आदि)।

कर्मश्रेष्ठ–पु० [सं०] पुलहके तीन पुत्रोंमेंसे एक पुत्र जो गतिके गर्भसे उत्पन्न हुआ था (भाग० ४.१.३८)।

कर्मसाक्षी–पु० [सं०] सूर्य, चंद्रमा, यम, काल, पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश ये नौ देवता संसारके भले-बुरे कर्मोंपर वरावर निगरानी रखते हैं और परलोकमें उनके साक्षी रहते हैं।

कर्मा–स्त्री० [सं०] एक प्रसिद्ध स्त्रीका नाम जो वात्सल्य भावकी उपासना करती थी। कहते हैं, यह नित्य प्रातःकाल उठ कर विना मुँह-हाथ धोये और विना स्नान किये एक छोटे पात्रमें खिचड़ी वनाकर अत्यंत भक्तिसे भगवान्‌को भोग लगाती थी। भगवान् पुरुषोत्तम पुरीसे आकर उसकी वनायी खिचड़ी खाते थे। एक वार एक साधुने नहा-धोकर खिचड़ी वनानेका आदेश कर्माको दिया। इससे भगवान्‌के भोजनमें देर होने लगी। उस साधुने कर्माको पहलेकी तरह ही भोग लगानेको कहा और कर्मा विना नहाये-धोये पहलेकी भाँति भोग लगाने लगी। भगवान्‌ने इस तरह अपने भक्तका मान वढ़ाया। पुरीमें आजतक जगन्नाथजीको सर्वप्रथम कर्मा वाईका भोग (खिचड़ी) लगाया जाता है।

कर्मारनाग–पु० [सं०] पाँचवाँ तल या महातल, जहाँ नाग, दानव और राक्षसोंके हजारों नगर हैं, का निवासी, एक नाग (वायु० ५०.३६)।

कलंदक–पु० [सं०] एक ऋषिका नाम।

कलन–पु० [सं०] महाकालके प्रदीप्त आसन (कालचक्र) के चार द्वारपालोंमेंसे एक द्वारपाल (ब्रह्मां० ४.३३.१८)।

कलवास–पु० [सं०] पुराणानुसार एक प्राचीन जातिका नाम।

कलविंक–पु० [सं०] (१) त्वष्टाके पुत्र विश्वरूपके तीन मस्तक वतलाये गये हैं। कहते हैं, जिस मस्तकस्थ मुँहसे वह सुरा पीता था उसे जव इन्द्रने काटा तो वह कलविंक (गौरैया चिड़िया) हो गया (भा० ६.९.५)। (२) एक तीर्थका नाम (हिं॰ श॰ सा॰)।

कलशक्षेत्र–पु० [सं०] कर्णाटक देशांतर्गत एक तीर्थका नाम (हिं॰ श॰ सा॰)।

कलशीकण्ठ–पु० [सं०] अङ्गिराके वंशज एक गोत्रकार ऋषिका नाम (मत्स्य० १९६.२७)।

कलस–पु० [सं०] एक राक्षस जिसका नगर अतलमें है (वायु० ५०.१८)।

कलसीसुत–पु० [सं०] घड़ेसे (कलशसे) उत्पन्न होनेके कारण अगस्त्य ऋषिका एक नाम—दे० अगस्त्य।

कलहंस–पु० [सं०] कश्यपपत्नी ताम्राकी छह पुत्रियोंमेंसे एक धृतराष्ट्री, जो गरुड़को ब्याही थी, के कई वर्गकी संततियोंमेंसे एक वर्गकी संतति (ब्रह्मां० ३.७.४५९)।

कलांकुर–पु० [सं०] (१) कंसासुर—दे० कंस। (२) कर्णीसुत—यह चौरशास्त्रके प्रवर्त्तक कहे जाते हैं–हिं॰श॰सा॰।

कला–स्त्री० [सं०] (१) सोम (चन्द्र) के सोलह अंश जो दक्षशापसे प्राप्त हुए क्षयसे नष्ट हो गये थे अपने श्वशुर दक्षको प्रसन्न तथा संतुष्ट करनेके वाद पुनः प्राप्त हुए (भाग० ६.६.२४) चंद्रमाका सोलहवाँ भाग। चंद्रमाकी सोलह कलाएँ मानी गयी हैं जिनके नाम ये हैं—अमृता, मानदा, पूषा, पुष्टि, तुष्टि, रति, धृति, शशिनी, चंद्रिका, कांति, ज्योत्स्ना, श्री, प्रीति, अंगदा, पूर्णा और पूर्णामृता। चंद्रमामें अमृत है जिसका देवता लोग पान करते हैं। शुक्लपक्षमें चंद्रमा कला-कला वढ़ता है और पूर्णिमाको वह सोलहों

कलाओंसे पूर्ण हो जाता है। कृष्णपक्षमें चंद्रमाके इन १५ दिनोंमें संचित अमृतको देवता इस प्रकार पी जाते हैं—पहली कलाको अग्नि, दूसरीको सूर्य, तीसरीको विश्वेदेवा, चौथीको वरुण, पाँचवींको वषट्कार, छठीको इंद्र, सातवींको देवर्षि, आठवींको अजैकपात् (रुद्र), नौवींको यम, दसवींको वायु, ग्यारहवींको उमा, बारहवींको पितृगण, तेरहवींको कुबेर, चौदहवींको पशुपति, पंद्रहवींको प्रजापति। अमावस्याको चंद्रमाकी सोलहवीं शेष कला जल और ओषधियोंमें प्रवेश कर जाती है। इन्हीं वनस्पतियोंके खाने तथा जल पीनेसे गऊ आदि पशुओंमें दूध उत्पन्न होता है। दूधसे दही और दहीसे घी बनता है। हवनकी आहुतियों द्वारा यह घी पुनः चंद्रमातक वायुकी सहायतासे पहुँच जाता है। (२) यह समयकी एक नाप है। वह यों है–१५ निमेष=१ काष्ठा (३$\frac{१}{५}$ सेकण्ड), ३० काष्ठा=१ कला (९६ सेकण्ड), ३० कला=१ मुहूर्त (४८ मिनट), ३० मुहूर्त=१ दिनरात (२४ घंटे) (वायु० ३०.१३; ७०.१५; मत्स्य० ३४.९; १४२.४; ब्रह्मां० २.७.१९)। ३० कला=१ मुहूर्त=१६० मात्रा (ह्रस्व अक्षर अ या इ अथवा उके उच्चारणमें जितना समय लगता है उसे मात्रा कहते हैं)—वायु० ५०.१७९। (३) केतुमाल वर्ष (देश) का एक जनपद (वायु० ४४.१५)। (४) एक वर्षमें १२ संक्रांतियाँ होती हैं तथा इनके अनुसार सूर्यके बारह नाम कहे गये हैं—विवस्वान्, अर्यमा, पूषा, त्वष्टा, सविता, भग, धाता, विधाता, वरुण, मित्र, शुक्र और उरुक्रम। इनके तेजको कला कहते है जो संख्यामें बारह हैं। इनके नाम ये हैं—तपिनी, तापिनी, धूम्रा, मरीचि, ज्वालिनी, रुचि, सुषुम्णा, भोगदा, विश्वा, बोधिनी, धारिणी और क्षमा। (५) अग्निमंडलके दस भागोंमेंसे एक। उसके दस भागोंके नाम ये हैं–धूम्रा, अर्चि, उष्मा, ज्वलिनी, ज्वालिनी, विस्फुलिंगिनी, श्री, सुरूपा, कपिला आदि। (६) विभीषणकी बड़ी बेटी, जो अशोकवाटिकामें जाकर सीताजीसे श्रीरामका कुशलवृत्त कहती और उनसे बड़ा स्नेह रखती थी, का नाम (रामा० सु० ३७.११)। (७) कर्दम प्रजापतिकी एक पुत्रीका नाम जो देवहूतिके गर्भसे उत्पन्न हुई थी और ब्रह्माके मानसपुत्र मरीचिको ब्याही थी। इन्हींके गर्भसे प्रजापति कश्यप ऋषि और पूर्णिमा उत्पन्न हुए थे (भाग० ३.२४.२२; ४.१.१३)। (८) सत्या, लीला, विद्या आदि सोलह स्वरशक्तियोंमेंसे एक स्वरशक्ति (ब्रह्मां० ४.४४.५७)।

कलाक्षेत्र–पु० [सं०] एक प्राचीन तीर्थस्थान, जो कामरूप देशके अन्तर्गत है (महात्रिपुरसुन्दरीपूजाकल्प तथा हिं·श·सा·)।

कलाधर–पु० [सं०] (१) चंद्रमाका एक नाम—दे० कला। (२) मस्तकपर चंद्रमाको धारण करनेके कारण शंकरका एक नाम—दे० शिव। (३) कलाधर नामक विद्याधरोंका एक राजा था जो "कांतिशाली" अपने दूसरे विद्याधरराजके साथ दुर्वासा ऋषिके शापसे कस्तूरी मृग हो गया था और अरुणाचल क्षेत्रमें रहता था। कांतिशाली कम्बोजराज वज्रांगदका घोड़ा हो गया था। इन दोनोंका उद्धार अरुणाचलपर हुआ था और इनके उपदेशसे राजा वज्रांगदको भी उसी क्षेत्रमें मोक्ष प्राप्त हुआ था (स्कंद पु० माहेश्वर-अरुणाचल मा० खंड)।

कलानक–पु० [सं०] शिवके एक गणका नाम (लिङ्गपुराण)।

कलानाथ–पु० [सं०] (१) चंद्रमाका एक नाम (दे० कलाधर(१); कला, चंद्रमा)। (२) संगीताचार्य सोमेश्वरसे संगीत विद्या सीखनेवाले एक गंधर्वका नाम (हिं·श·सा·)।

कलानिधि–पु० [सं०] चंद्रमाका एक नाम (चंद्रमा, कला।

कलाप–पु० [सं०] (१) एक नगरका नाम जो हिमालयके पूर्वी ढालपर बसा है (वायु० १.१८९; ४१.४३.६.४७.४७)। यह बड़े-बड़े ऋषियोंके निवास तथा शास्त्रचर्चाके लिए प्रसिद्ध है (भाग० १०.८७.७)। श्रीमद्भागवतमें लिखा है कि सूर्यवंशके अग्निवर्ष, शीघ्र, मरु आदि राजा तथा चन्द्रवंशके शान्तनुके बड़े भाई देवापि इसी नगरमें रहते थे। इनमें मरु और देवापि महान् योगबलसे सम्पन्न थे। ये दो योगसम्पन्न राजर्षि जो क्रमशः सूर्यवंशी और चंद्रवंशी हैं, नष्ट हुए सूर्यवंश और चन्द्रवंशको कलियुगके बाद सत्ययुगमें पुनः स्थापित करेंगे और विलुप्त वर्णाश्रमको पुनः चलायेंगे (भाग० ९.१२.६; २२.१७; १२.२.३७-३८; वायु० ८८.२१०; ९९.४३७; विष्णु० ४.२४.११८-२१)। (२) देश विशेष जिसे कल्कि भगवान्ने विशाखयूप राजाको दिया था। (३) सत्वन, सत्त्वात्मक आदि दस देवगन्धर्वोंमेंसे तीसरे एक देवगंधर्वका नाम (वायु० ६८.३८)। (४) एक वन जहाँ इक्ष्वाकुको पितरोंने उपदेश दिये थे (विष्णु० ३.१६.१७)।

कलापग्राम–पु० [सं०] यहाँ गंगा नदी बहती है (ब्रह्मां० २.१८.५०)। देवापि और मरु कृत युगमें यहींपर क्षत्रिय वंशारम्भ करते हैं। कृत, त्रेता तथा द्वापर तीनों युगोंमें शासनकर्त्ताओंका उत्तरदायित्व मनुके वंशजोंपर है। ये ही आगामी मनुवंशके बीजभूत हैं (वायु० ९९.४३७; विष्णु० ४.२४.११८-१२१)। पुरूरवाका उर्वशीके साथ विविध विहारस्थानोंमें एक यह भी था (वायु० ९१.७; दे० कलाप)।

कलापद्वीप–पु० [सं०] दे० कलाप नं० २।

कलापशिरा–पु० [सं०] एक मुनिका नाम (हिं·श·सा·)।

कलापी–पु० [सं०] वैशंपायनके एक शिष्यका नाम।

कलामृत–पु० [स०] दे० चन्द्रमा।

कलावती–स्त्री० [सं०] (१) मध्यप्रदेशीय राजा कर्णकी पत्नीका नाम। (२) एक अप्सराका नाम। (३) गंगाका एक नाम (काशीखण्ड)।

कलिंग–पु० [सं०] (१) एक पर्वत जो मानसरोवरके दक्षिण है (वायु० ३६.२२; ४२.२८)। (२) प्राचीन कालका एक राजा जो बलिकी रानी सुदेष्णाके गर्भसे दीर्घतमा ऋषिके नियोग द्वारा उत्पन्न हुए पाँच पुत्रोंमेंसे एक था (ब्रह्मां० ३.७४.२८,८७; मत्स्य० ४८.२५; वायु० ९९.२८; विष्णु० ४.१८.१३-१४)। इनके राज्यको भी कलिङ्ग कहते हैं। रामायणके किष्किंधाकाण्डमें लिखा है कि कलिङ्ग देश दक्षिणमें था। ब्रह्मवैवर्त पुराणसे पता चलता है कि समाधि नामक वैश्य (जिसका उल्लेख दुर्गासप्तशतीमें है) का पितामह विराध कलिङ्गका राजा था। महाभारतके वनपर्वमें युधिष्ठिरकी यात्राके वर्णनमें कलिङ्ग देशका नाम आया है। यहाँके निवासी इसी नामसे विख्यात हैं और सुदेष्णा तथा दीर्घतमाके वंशज हैं। ये दक्षिणापथके निवासी

हैं (भाग० ९.२३.५; मत्स्य० ११४.३६.४७; वायु० ४५.१२५; विष्णु० २.३.१६)। (३) मध्यदेशका एक दक्षिणी राज्य, जहाँ वर्णाश्रम धर्म विनष्ट हो चुका है, यलतः वर्जनीय है। वहाँ किया गया श्राद्ध पितरोंको प्राप्त नहीं होता है। यह दक्षिणापथका एक जनपद है। यहाँके राजाको जरासंधने मथुराके पूर्वी प्रवेश द्वारपर रखा था और गोमंत आक्रमणके समय भी यह इसी दिशामें थे (ब्रह्मां० २.१६.४२,५७; ३.१३.१३; १४.३३,८०; ७४.१९८,२१३; मत्स्य० १६३.७२; वायु० ७७.१३; ७८.२३; ९९.३२४, ३८६, ४०२)। यह राजा प्रद्युम्नके विवाहमें सम्मिलित हुआ था। रुक्मीसे जूए (द्यत) में हारनेपर बलरामका इसने उपहास किया था जिसके फलस्वरूप बलरामने इसके दाँत तोड़ दिये थे (भाग० ४.५.२१; १०.६१.२७.२९,३७; विष्णु० ५.२८.१०,१५,२४)। इसके दक्षिण, जहाँ अमरकंटक है, नर्मदा बहती है वहाँ पितरोंके निमित्त किये गये श्राद्धका महान् फल कहा गया है (मत्स्य० १८६.१२)। कृत युगमें संसारका प्रथम पुरुप यहीं हुआ था (वायु० ५८.११०)।

कलिंद्—पु० [सं०] एक पर्वतका नाम जहाँसे भारतकी प्रसिद्ध नदी यमुना निकली है। इसी कारण यमुनाको कलिंदजा या कलिन्दगिरिनन्दिनी कहते हैं।

कलि—पु० [सं०] (१) एक युगप्रवर्तक देवता जिनके नामके अनुसार युगका नाम कलियुग हुआ। ४३२००० वर्षोंतक इस देवताका अधिकार रहेगा। द्वापरके अन्तमें प्रजापति ब्रह्माने अपनी पीठसे अधर्मको उत्पन्न किया था। अधर्म और उसकी पत्नी मिथ्यासे दम्भ नामक पुत्र हुआ, दम्भका विवाह उसकी बहिन मायासे हुआ था। उनसे लोभनामक पुत्र और निकृति नामकी पुत्री हुई। लोभने भी अपनी भगिनीसे ब्याह किया और क्रोध नामक पुत्र तथा हिंसा नामकी पुत्री उत्पन्न की। क्रोधने भी अपनी बहिन हिंसासे ब्याह किया जिनसे कलि नामक पुत्र तथा दुरुक्ति नामक पुत्रीका जन्म हुआ। कलिने भी परम्परानुसार अपनी बहिनसे ब्याह कर भयनामक पुत्र और मृत्यु नामकी पुत्री उत्पन्न की (भाग० ४.८.३)। इन दोनोंसे यातना (कन्या) और निरय (नरक) उत्पन्न हुए। यातना और निरयके अनेक पुत्र हुए (कल्कि० १.१.१४-२१)। (२) कलियुग—चार युगोंमेंसे चौथा जो सबसे अन्तिम युग माना गया है। जिसका आरम्भ भगवान् कृष्णके स्वर्गारोहणके अनन्तर हुआ। इसमें देवताओंके १२०० वर्ष माने गये हैं। मनुष्योंके वर्षोंसे यह ४३२००० वर्षोंका है। ३१०२ वर्ष ईसासे पूर्वसे ही यह चालू हुआ है। इसमें धर्मका लोप तथा अधर्मकी प्रधानता बतलायी गयी है। इसमें सब अच्छी वस्तुओंका ह्रास और मनुष्योंकी अवनति होगी। इस युगमें सभी अपनेको ब्राह्मण कहने लगेंगे। गोसेवा केवल दूधके लिए होगी। मुक्ति, जो अन्य युगोंमें कठिन तपस्यासे प्राप्त होती थी, भगवद्भजन और कीर्तनसे प्राप्त होगी यही इसमें एक अच्छाई है और सब दोप ही दोप हैं (भाग० १.१.१०; १५.३६,३७; १५.५,३२-३८; वायु० ५८.३०-७३)। यद्यपि यह जन्मसे शूद्र है तथापि इसे राजा माना गया है। यह गाय तथा साँड़पर पदाघात करते हुए राजा परीक्षित्से परास्त हुआ और इसने उनके चरण छू क्षमायाचना की। कहते हैं परीक्षित्ने इसे ब्रह्मावर्त्तसे निकाल दिया और उनके आज्ञानुसार इसका वास मदिरा, जूआ खेलनेके पासों, सुवर्ण, स्त्री तथा सूना (हत्या) स्थानमें है। इसे अधर्मका पिता, बच्चोंके सामने वीर तथा वीरके सामने कायर कहा गया है (भाग० १.१६.४; १७.२८-४०; १८.६-८)। जब दमयंतीने नलके गलेमें जयमाला डाली थी तब कलि नलसे बदला लेनेकी आकांक्षासे चिढ़कर बहेड़ेके पेड़में चला गया। इसीसे बहेड़ेको कलि कहते हैं। पहले आर्य लोग इसीसे पासेका खेल खेलते थे (वामन०, एतरेय ब्रा०)। (३) कश्यपऋपि और दक्षकी पुत्री मुनिसे उत्पन्न सोलह मौनेय देवगंधर्व पुत्रोंमेंसे एक पन्द्रहवाँ पुत्र। २४ अप्सराएँ अरुणा आदि इनकी बहनें थीं (ब्रह्मां० ३.७.४; वायु० ६९.३)। (४) शिवका एक नाम—दे० शंकर। (५) वरुण और शुनादेवी (सामुद्री शुना वायु०) का एक पुत्र जो जय और विजयका पिता था। कलिकी एक पत्नी सुरा, मदकी माता थी। त्वाष्ट्री, हिंसा और निकृति कलिकी और तीन पत्नियाँ थीं। कलिके अन्य लड़के नाक, विघ्न, भद्रम और विधम थे। इनमें नाकका शरीर नहीं था, विघ्न बिना सिरका था, भद्रमका एक ही हाथ था और विधमका केवल एक ही पैर था। ये सबके सब नरमांसभक्षी थे (ब्रह्मां० ३.५९.६; वायु० ८४.६-१०)। (६) महाकालका एक द्वारपाल (ब्रह्मां० ४.३२.१८)। (७) कश्यपसे खशामें उत्पन्न राक्षसका पिशाचपुत्री जन्तुधना और ब्रह्मधनाके साथ विवाह हुआ। ब्रह्मधनासे ब्रह्मधन पुत्र तथा तत्वला कन्या उत्पन्न हुई। उक्त ब्रह्मधन नामक राक्षसके दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम।

कलिमलसरि—स्त्री० [सं०] कर्मनाशा नदीका एक नाम—दे० कर्मनाशा।

कलिवर्ज्य—वि० [सं०] वे सब कर्म जो कलियुगमें वर्जित बतलाये गये हैं, परन्तु अन्य तीन युगोंमें उनके लिए निश्चित शास्त्रोक्त विधान थे, जैसे अश्वमेध, गोमेध, नियोग, संन्यास और मांससे श्राद्ध (धर्मशास्त्र)।

कलिवल्लभ—पु० [सं०] एक चालुक्य राजाका नाम जिसे ध्रुव भी कहा जाता है।

कलियुगाद्या—पु० [सं०] माघकी पूर्णिमा जिससे कलियुगका प्रारम्भ हुआ था। परीक्षित्के शासनकालसे पहले तथा सप्तऋषि जब मघा नक्षत्रमें थे तबसे कलियुगका प्रारम्भ माना जाता है। कलियुगके अन्तमें कल्कि अवतार होगा। कल्किके द्वारा अधर्मका नाश और सद्धर्मकी स्थापना करनेपर पुनः सत्ययुगका आरम्भ होगा (विष्णु० ४.२४.७१,९६, ९७-१०९, ११४-१५)।

कलिल—पु० [सं०] आठ वसुओंमेंसे तीसरे वसु सोमके पाँच पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (ब्रह्मां० ३.३.२३, वायु० ६६.२३)।

कलुवाबीर—पु० [हिं० कला+वीर] जादू-टोना और साबरी मन्त्रोंका एक देवता। ओझा तथा तान्त्रिक लोग अपने मन्त्रोंमें इसकी दुहाई देते हैं।

कलेवर—पु० [सं०] जगन्नाथजीकी पुरानी मूर्त्तिके स्थानपर नयी स्थापित करनेकी क्रियाको कलेवर बदलना कहते हैं। पुरीका यह खास उत्सव है। आषाढ़के महीनेमें जब मलमास पड़ता है यह उत्सव तभी मनाया जाता है। पुरानी मूर्त्ति हटाकर नयी लकड़ीकी मूर्त्ति उसी स्थानपर स्थापित

कर देते हैं।

कल्कि–पु० [सं०] विष्णुके दसवें अवतारका (वायु० तथा ब्रह्मां० के अनुसार इनका नाम विष्णुयश) नाम जो विष्णुयशकी पत्नी सुमतिके गर्भसे जन्म लेंगे। कलियुगके अन्तमें यह अवतार होगा। कलियुगके म्लेच्छ, पापी, लोभी राजाओंका संहार करेंगे, सबको अपने-अपने धर्ममें स्थापित करेंगे और तब सत्ययुगका प्रारम्भ होगा। यह वायु० तथा ब्रह्मां० के अनु० पाराशर्य=पराशर पुत्र विष्णुके दसवें अवतार माने गये हैं। इनके पुरोहित होंगे याज्ञवल्क्य। लक्ष्मी पद्माके रूपमें अवतार लेंगी और कल्किसे उनका व्याह होगा। पद्मासे व्याह करके विश्वकर्माके बनाये शम्भलमें (मुरादाबादके निकट) निवास करेंगे। इनके घोड़ेका नाम देवदत्त होगा जिसपर सवार हो, सद्धर्मपरायण सदाचार सम्पन्न द्विजोंकी सेनाके साथ विविध देशोंमें संचार करते हुए अनाचारका नाश कर धर्मकी स्थापना करेंगे (भाग० १.३.२५; १२.२.१८-२३; मत्स्य० २७३.२७; २८५.७; विष्णु० ४.२४.९८-१०१; ब्रह्मां० ३.७३.१०४-२४; वायु० ९८.१०४-११७)। ये म्लेच्छ और बौद्धोंका दमन कर कुथोदरी नामकी राक्षसीका वध करेंगे। तदनन्तर भल्लाट नगरमें इनका शय्याकर्ण, प्रयाति और राजा शशिध्वजके साथ युद्ध होगा। शशिध्वजकी मुक्ति होगी, इसके बाद यज्ञका अनुष्ठान और सत्ययुगका प्रारम्भ होगा। इस प्रकार अपने सब काम करनेके पश्चात् कल्कि गंगा-यमुना संगमपर शरीर त्यागकर वैकुण्ठ जायँगे (कल्कि० ३. अध्याय १ से १९ तक; ब्रह्मां० ३.७४.२०६; ४.२९.१३३; मत्स्य० ४७.२४८.६२)।

कल्किवाहन–पु० [सं०] भण्डके एक पुत्र तथा सेनापतिका नाम (ब्रह्मां० ४.२१.७९)।

कल्प–पु० [सं०] (१) कालका एक विभाग जिसे ब्रह्माका एक दिन कहते हैं। इसमें १४ मन्वन्तर या ४३२0000000 वर्ष होते हैं। ब्रह्माके तीस दिनोंके नाम इस प्रकार है—श्वेतवाराह, नीललोहित, वामदेव, रथंतर, रौरव, प्राण, बृहत्कल्प, कंदर्प, सत्य वा सद्म, ईशान, व्यान, सारस्वत, उदान, गारुड़, कौर्म (यह ब्रह्माकी पूर्णिमा है), नारसिंह, समान, आग्नेय, सोम, मानव, पुमान्, वैकुण्ठ, लक्ष्मी, सावित्री, घोर, वाराह, वैराज, गौरी, माहेश्वर तथा पितृ (यह ब्रह्माकी अमावस्या है)। (२) वेदके प्रधान छः अंगोंमेंसे वह अंग जिसमें यज्ञादि करनेका विधान है। इसीके अन्तर्गत श्रौतसूत्र, गृह्यसूत्र आदि हैं। (३) ध्रुव और भ्रमिके दो पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (भाग० ४.१०.१)। (४) हिरण्यकशिपुके तेरह भानजोंमेंसे एकका नाम (मत्स्य० ६.२६)।

कल्पतरु–पु० [सं०] देवराज इन्द्रके नन्दनवनका एक प्रधान वृक्ष (पारिजात) जो समुद्र-मन्थनसे कामधेनु, उच्चैःश्रवा तथा अमृत इत्यादिके साथ निकला था। पद्मराग (कौस्तुभ) मणिके पश्चात् ही स्वर्गका भूषण कल्पवृक्ष उत्पन्न हुआ। जिस प्रकार विष्णु याचकोंकी मनोकामना पूर्ण करते हैं वैसे ही स्वर्गमें कल्पवृक्ष भी निरन्तर प्रार्थियोंकी प्रार्थना सफल करता है (भाग० ८.८.६)।

कल्पद्रुम–पु० [सं०] दे० कल्पतरु (मत्स्य० २७४.७)।

कल्पना–स्त्री० [सं०] अन्धकासुर विनाशके लिए भगवान् शंकर द्वारा सृष्ट एक मानस-पुत्री मातृकाका नाम (मत्स्य० १७९.२५)।

कल्पपादप–पु० [सं०] दे० कल्पतरु (मत्स्य० २७४.७)।

कल्पलता–पु० [सं०] दे० कल्पतरु (मत्स्य० २७४.७)।

कल्पलतात्मक–पु० [सं०] परम पुण्य आयु बढ़ानेवाले, सर्वपापहर सोलह महादानोंमेंसे एक कल्पवृक्षकी दस सुनहली लताओंका दान। उक्त दान देनेवाला स्वर्गका भागी होता है (मत्स्य० २७४.९; २८६.१-१७)।

कल्पवर्ष–पु० [सं०] वसुदेव और उपदेवाके दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (भाग० ९.२४.५१)।

कल्पवास–पु० [सं०] स्नानकी अवधि=पौष शुक्ल ११ से माघ शुक्ल ११ तक या पौष शुक्ल १५ से माघ शुक्ल १५ तक अथवा मकरार्कमें मकर राशिपर जब सूर्य आयें उस दिनसे सूर्यके कुम्भ राशिपर जानेतक—'एकादश्यां शुक्लपक्षे पौषमासे समारभेत्। द्वादश्यां पौर्णमास्यां वा शुक्लपक्षे समापनम्॥' (ब्रह्म०) 'पुण्यान्यहानि त्रिंशत्तु मकरस्थे दिवाकरे' (विष्णु०)।

माघ महीनेमें महीनाभर गंगातटपर संयमके साथ रहना। स्नानके लिए काशी और प्रयाग उत्तम माने गये हैं (काशीखण्ड)। इसका बड़ा भारी माहात्म्य है। माघ स्नानके लिए चारों आश्रमोंके चारों वर्णोंके तथा तीनों अवस्थाओंके स्त्री, पुरुष या नपुंसक जो भी हों सबको आज्ञा है। इसके नियमानुसार एक मासतक विश्वासके साथ स्नान करनेवालेको अश्वमेध यज्ञका फल प्राप्त होता है।

कल्पवृक्ष–पु० [सं०] यह देवलोकका एक वृक्ष है। समुद्रसे निकले चौदह रत्नोंमेंसे यह एक रत्न है। यह इन्द्रको मिला था और इसका नाश कल्पान्ततक नहीं होगा ऐसा लेख है (भाग० ८.८.६; ब्रह्मां० ४.१५.३७; २८.७२; मत्स्य० २७७.१-२२; वायु० ८.९३)। पर्य्याय—कल्पद्रुम, कल्पतरू, सुरतरू, कल्पलता, कल्पशाखी, कल्पपादप आदि। (मुसलमानोंके बेहिश्तमें भी, कहते हैं कि, इसी प्रकारका पेड़ है जिसे वे "तूबा" कहते हैं)।

कल्पव्रत–पु० [सं०] एक व्रत जिससे ब्रह्मलोक प्राप्त होता है (मत्स्य० १०१.५०)।

कल्पशाखी–पु० [सं०] दे० कल्पवृक्ष।

कल्पशुद्धि–पु० [सं०] पुराणके आख्यान, उपाख्यान, गाथा और कल्पशुद्धि इन चार भागोंमेंसे एक भाग (विष्णु० ३.६.१५)।

कल्पसूत्र–पु० [सं०] वेदाङ्गविशेष। श्रौतसूत्र, धर्मसूत्र और गृह्यसूत्र इन तीनोंको मिलाकर 'कल्पसूत्र' कहते हैं। ये ग्रन्थ वेदोंकी प्रत्येक शाखाके लिए, अलग-अलग ऋषियोंके बनाये हुए हैं। विषयभेदसे इनके दो भेद माने गये हैं—श्रौत और गृह्य। वे सूत्रग्रन्थ जिनमें दर्श पौर्णमाससे लेकर अश्वमेधादि यज्ञतककी विधिका विधान है 'श्रौत' कहलाते हैं जिनमें पंच यज्ञादि गृहस्थोंके कृत्यों और गर्भाधानादि संस्कारोंकी विधि लिखी है "गृह्यसूत्र" कहे जाते हैं। इन सूत्रोंकी पूर्ण व्यवस्था लोमहर्षण ऋषिने की थी (ब्रह्मां० २.३१.१४,२४;३४.१६; वायु० ५८.१४)। ये द्वापरके आरम्भमें हुए थे (मत्स्य० १४४.१३-१४)।

कल्पहिंसा–स्त्री० [सं०] जैनशास्त्रानुसार वह हिंसा जो भोजन आदि पकानेमें या पीसनेमें बिना इच्छाके हो जाती है। हिन्दू धर्मशास्त्रोंमें इसे पंच सूना कहते हैं। इन्हीं पाँच प्रकारकी हिंसाओं (सूना) के प्रायश्चितार्थ धर्मशास्त्रोंमें गृहस्थके लिए पञ्च महायज्ञोंके अनुष्ठानका विधान है।

कल्पा–स्त्री० [सं०] महाकालके चार द्वारपालोंमेंसे एक द्वारपालका नाम (ब्रह्मां० ४.३२.१८)।

कल्मापपाद–पु० [सं०] अयोध्यापति राजा ऋतुपर्णके प्रपौत्र और सुदासके पुत्रका नाम जिन्हें सौदास कहते थे। इन्हें वसिष्ठजीके ज्येष्ठ पुत्र शक्तिने शाप दिया था जिसके फलस्वरूप वशिष्ठ और विश्वामित्रमें शत्रुता हो गयी थी (वायु० २.११; ब्रह्मां० १.२.११)। एक समय आखेटमें इन्होंने भ्रमसे व्याघ्ररूपधारी दो राक्षसोंमेंसे वड़े भाईको मार दिया और छोटेको छोड़ दिया। छोटा भाई भ्रातृहत्याका बदला लेनेपर उद्यत हुआ। कुछ काल बाद राजा सौदासने यज्ञ किया। यज्ञ समाप्तिपर वशिष्ठजीके वाहर जानेपर वह राक्षस वसिष्ठजीका रूप धारण कर बोला यज्ञसमाप्तिपर मुझे नरमांसका भोजन कराओ। पाचकरूपधारी होकर उसने वसिष्ठ ऋपिको नर मांस खिलानेके लिए, तैयार कर, राजाको दिया वशिष्ठजीके आनेपर राजाने उन्हें वह दिया। इससे रुष्ट हो वशिष्ठने राजाको शाप दिया 'राक्षस हो जाओ'। राजा भी शाप देनेके लिए तैयार हुए पर महिषी मदयन्तीके कहनेसे रुक गये और शापके लिए लिया हुआ जल अपने पैरोंपर छोड़ लिया जिससे राजाके पैर काले पड़ गये। तभीसे सौदासका नाम कल्माषपाद पड़ा। पुनः विनती करनेपर वशिष्ठने उक्त शापको केवल १२ वर्षोंतक स्थायी कर दिया। उक्त शापके प्रभावसे १२ वर्षोंतक प्रति तीसरे दिनके अन्तरसे वह राक्षस स्वभाव धारण कर वनमें घूमते थे और नरमांस-भक्षण करते थे। इस प्रकार १२ वर्ष व्यतीत करनेपर राजा शापमुक्त हुए। शापावस्थाके मध्य एक घटना घटी। एक समय राक्षसरूपधारी सौदासने ऋतुकालमें स्त्रीसंगत एक मुनिको देखा। भीपण राक्षसको देखकर वे मुनि दम्पती भागे। राक्षस रूपी राजाने ब्राह्मणको पकड़ लिया। मुनि पत्नीने वहुत अनुनय विनय की। तुम राक्षस नहीं हो इक्ष्वाकुकुलश्रेष्ठ मित्रसह हो (इनका मित्रसह भी नाम था) पर उसने एक न सुनी, ब्राह्मणको खा डाला। क्रुद्ध होकर मुनिपत्नीने व्याघ्ररूपी राजाको शाप दिया तुमने अतृप्ता अवस्थामें मेरे पतिको खा डाला इसलिए तुम भी कामोपभोगमें प्रवृत्त होकर मृत्युको प्राप्त होओगे। और शापमुक्त होनेके वाद स्त्रीसंगाभिलापी राजा सौदासको मदयन्तीने मुनिपत्नीके शापका स्मरण कराया। अपुत्र राजाने वशिष्ठजीकी प्रार्थना की। उन्होंने उसका वंश चलानेके निमित्त मदयन्तीमें गर्भाधान किया। सात वर्षतक गर्भ पैदा नहीं हुआ। रानीने उस गर्भको पत्थरसे मारा तव जाकर वह पैदा हुआ, इसलिए उसका नाम अश्मक पड़ा (ब्रह्मां० ३.६३.१७६; मत्स्य० १२.४६; वायु० ८८.१७६; विष्णु० ४.४.५७; मदयन्ती, भारतीय चरिताम्बुधि)।

कल्याणसप्तमी–स्त्री० [सं०] यह व्रत सूर्यके प्रीत्यर्थ तेरह महीनोंतक किया जाता है (मत्स्य० ७४.२-१६)।

कल्याणी–स्त्री० [सं०] (१) आठ वसुओंमेंसे चतुर्थ वसु धरकी पत्नीका नाम (मत्स्य० ५.२४)। (२) प्रयाग तीर्थकी एक प्रसिद्ध देवी। (३) मलय पर्वतपरकी एक देवी जो सतीरूप थी। दक्षके स्तुति करनेपर सतीने कहा—तुम्हारे सव मनोरथ मेरी उपासनासे सिद्ध होंगे और तुम प्रजापति होओगे। कहाँ किस रूपमें आपकी उपासना करूँ यह पूछनेपर देवीने कहा मैं सर्वत्र हूँ। फिर भी विभिन्न स्थानोंमें विभिन्न रूपसे मैं निवास करती हूँ। उन्हींमें एक रूप (मत्स्य० १३.३६)। (४) अन्धकासुरके रक्तपानके लिए शंकरजी द्वारा सृष्ट मानस मातृकाओंके उत्पातशमनके लिए नरसिंहरूपधारी भगवान् द्वारा अपने हृदयसे सृष्ट माया देवीकी आठ अनुगामिनी देवियोंमेंसे एक अनुगामिनी देवीका नाम (मत्स्य० १७९.७०)।

कल्याणिनी–स्त्री०[सं०] (१) आठ वसुओंमें चौथे वसु धरकी पत्नीका नाम (मत्स्य० ५-२४)। (२) माघ शुक्ल पक्षकी द्वादशीका नाम। वादवाले कल्पमें जव भीमसेन पाण्डवने इसका व्रत पालन किया तबसे इसे "भीमद्वादशी" कहने लगे। पहले कल्पोंमें यह कल्याणिनी कही जाती थी। इसी द्वादशीका व्रतकर आभीर कन्या भी उर्वशी अप्सरा हुई, जो अप्सराओंकी अधीश्वरी है (मत्स्य० ६९.५६-७; भीमद्वादशी)।

कवक–पु० [सं०] वन्दरोंका एक नायक (ब्रह्मां० ३.७.२४२)।

कवट–पु० [सं०] वन्दरोंका एक सरदार (ब्रह्मां० ३.७.२३८)।

कवर्गवाङ्मयी–स्त्री० [सं०] एक शक्तिका नाम (ब्रह्मां० ४.३७.४)।

कवप–पु० [सं०] (१) एक ऋषिका नाम जो इलूपके पुत्र थे, एक दासीके गर्भसे उत्पन्न हुए थे। इनके वनाये मन्त्र ऋग्वेदके दसवें मण्डलमें मिलते हैं। ऐतरेयब्राह्मणके लेखोंके अनुसार सारस्वत प्रदेशमें एक यज्ञ हो रहा था। कवषने ऋषियोंकी पंक्तिमें बैठकर भोजन-पानी करना चाहा, पर ऋषियोंने दासी-पुत्र कहकर इनका वहिष्कार किया। तदुपरान्त इन्होंने वहुतसे मन्त्र रचकर देवताओंको प्रसन्न किया तव ऋपियोंने भी भेदभाव दूरकर उन्हें अपनी पंक्तिमें सम्मिलित कर लिया (ऐ० ब्रा० २.२९)। (२) एक ऋषि जो तुरके पिता थे। यह युधिष्ठिरके यज्ञमें आमन्त्रित थे और प्रायोपवेशके समय परीक्षित्से मिलने गये थे (भाग० ९.२२.३७; १०.७४.७; १.१९.१०)।

कवि–पु० [सं०] (१) श्रीकृष्ण और कालिन्दीके दस पुत्रोंमें एक पुत्र (भाग० १०.६१.१४; ९०.३४)। (२) चाक्षुप मनुके एक पुत्रका नाम। (३) प्रियव्रत और वर्हिष्मतीके दस पुत्रोंमेंमें एक पुत्रका नाम। इनकी एक छोटी वहिन थी जिसका नाम ऊर्जस्वती था। यह आजन्म अविवाहित रहे। आत्मविद्याका अभ्यास कर परब्रह्ममें लीन हुए (भाग० ५.१.२५-२६)। (४) दक्षिणा और यज्ञका एक पुत्र; यह स्वायंभुवमन्वन्तरके १२ तुषितदेवोंमेंसे एक तुषित देवता है (भाग० ४.१.७-८)। (५) विशाला और उरूक्षव नामक एक क्षत्रियके तीन पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम जो पीछे ब्राह्मण हो गये थे। यह प्रसिद्ध काव्योंमेंके

तीन सर्वश्रेष्ठ महर्षियोंमेंसे एक था (मत्स्य० ४९.३९)। (६) प्राणका पुत्र तथा शुक्राचार्यके पिता (भाग० ४.१.४५)। (७) ऋषभका एक पुत्र जो अपने अन्य आठ भाइयोंके साथ परम भागवत था। इसने निमिके प्रति भागवत धर्मकी व्याख्या की तथा दीक्षा दी थी (भाग० ५.४.११; ११.२.२१, ३३-४३)। (८) ब्रह्माकी एक उपाधि। ब्रह्मा प्रथम कवि कहे जाते हैं (भाग० ७.९.३३)। (९) श्राद्धदेव मनु और श्रद्धाके दस पुत्रोंमेंसे सबसे छोटा एक पुत्र (भाग० ९.१.१२)। यह राज-पाट तथा भाई-बन्धुओंका मोह त्याग वनमें चला गया था और वहाँ विष्णुमें चित्त लगाकर इसने अल्पायुमें ही परब्रह्मको प्राप्त कर लिया था (भाग० ९.२.१५)। (१०) महावीर्यके पुत्र दुरितक्षयके तीन पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (भाग० ९.२१.१९)। (११) उशीराग्नि अर्थात् वह अग्नि जिसने स्वधासे विवाह किया। इन्हींसे काव्य उत्पन्न हुए (ब्रह्मा० ३.१०.८५; वायु०२९.२९)। (१२) भौत्यके पिताका नाम (ब्रह्मां० ४.१.५१)। (१३) सुतारवर्गके दस देवोंमेंसे एक देव (ब्रह्मां० ४.१.८९)। (१४) तामस युगके सप्तर्षियोंमेंसे एक ऋषि (मत्स्य० ९.१५)। (१५) अंगिरा वंशज एक ऋषि, जो मंत्रकृत् थे (मत्स्य० १४५.१०३)। (१६) कुरुक्षेत्र-निवासी कौशिक नामक महान् धर्मात्मा ऋषिके सात पुत्रोंमेंसे एक (मत्स्य० २०.३)। (१७) श्वेत, जिसे २३ वें द्वापरका अवतार मानते हैं, का एक पुत्र (वायु० २३.२०५)।

कविरथ–पु० [सं०] चित्ररथका पुत्र तथा वृष्टिमान्का पिता (भाग० ९.२२.४०-४१)।

कविसुत–पु० [सं०] पुलोमाकी पुत्री पौलोमी और भृगुसे उत्पन्न शुक्राचार्यका एक नाम (वायु० ६५.७४)।

कव्यगण–पु० [सं०] पितरोंका एक वर्ग (वायु० ५२.६७)।

कव्यवा–पु० [सं०] अग्निका एक प्रकार (ब्रह्मां० ३.११.९३)।

कव्यवाहन–पु० [सं०] पवमान अग्निका एक पुत्र जो पितरोंकी अग्नि है (ब्रह्मां० २.१२.४, ५; वायु० २९.४.५; ७५.५६.७०; ११०.१०)।

कव्याग्नि–स्त्री० [सं०] एक प्रकारकी पवित्र अग्नि (वायु० ५६.४)।

कव्याद–पु० [सं०] पितरोंका वर्ग। कव्यका ग्रहण करनेवाले सब पितर (ब्रह्मां० ३.७२.२६)।

कह्वा–स्त्री० [सं०] उग्रसेनकी पाँच पुत्रियोंमेंसे एक पुत्री (वायु० ९६.१३३)।

कशूर–पु० [सं०] भण्डका महाबली एक पुत्र तथा सेनापति (ब्रह्मां० ४.२१.८५)।

कशेरुमान्–पु० [सं०] भारतवर्ष इन्द्रद्वीप आदि नौ खण्डोंमेंसे एक खण्ड (ब्रह्मां० २.१६.९)।

कश्मीर–पु० [सं०] प्राचीनकालमें हिमालयसे घिरा यह पहाड़ी प्रदेश संस्कृत-विद्यापीठ था। ऐसा कहा जाता है कि यहाँकी सारी भूमि जलमग्न थी। कश्यप ऋषिके द्वारा सारा जल झेलममें निकाले जानेपर यह अनूठा प्रदेश दिखाई पड़ा। यहाँके निवासी कश्मीरी कहे जाते हैं (वायु० ४५.१२०; ४७.४५.९९.४०२)।

कश्यप–पु० [सं०] (१) एक प्रजापतिका नाम जो रामायण और महाभारतके अनुसार ब्रह्माके पौत्र और मरीचिके मानस पुत्र थे (मारीचेः कश्यपः पुत्रः)। अन्य मतसे मरीचिकी स्त्री कलाके गर्भसे इनकी उत्पत्ति मानी जाती है तथा जो अदिति, दिति आदिके पति थे। दक्ष प्रजापतिने अपनी तेरह कन्याएं इन्हें व्याही थीं (भाग० ३.१४.७; ४.१.१३; ब्रह्मां० २.३७.४४; ३.२.३१, ३.५५; ४-१.२०; २.३३.४७; मत्स्य० १४६-१६, २५; १७१.३०; १९.१; १४.१९; वायु० ६३.४१)। इनकी सात स्त्रियाँ थीं—दितिसे दैत्य, अदितिसे से देवता जिनमें वामन भी थे, विनतासे पक्षी, कद्रूसे सर्प, सुरभिसे गौ, महिषादि, सरमासे कुक्कुर आदि और दनुसे दानव उत्पन्न हुए (ब्रह्मवैवर्त०)। मार्कण्डेय तथा हरिवंशमें लिखा है कि कश्यपकी तेरह पत्नियाँ थीं जो दक्षकी पुत्रियाँ थीं। इन्हें ब्रह्मवादिनी तथा लोकमाता कहा गया है जिनके नाम इस प्रकार थे—दिति, अदिति, दनु, विनता, खसा, कद्रू, मुनि, क्रोधा, अरिष्टा, इरा, ताम्रा, इला और प्रधा। भाग० वायु० मत्स्य० आदिके अनुसार अदिति, दिति, दनु, काष्ठा, अरिष्टा, सुरसा, इला, मुनि, क्रोधवशा, ताम्रा, सुरभि, सरमा, तिमि (भाग०); अदिति, दिति, दनु, विश्वा, अरिष्टा, सुरसा, सुरभि, विनता, ताम्रा, क्रोधवशा, इरा, कद्रू, मुनि (मत्स्य०); अदिति, दिति दनु, काष्ठा, अरिष्टा, सुरसा, सुरभि, विनता, ताम्रा, क्रोधवशा, इरा, कद्रु, मुनि (वायु०) तथा आदिति, दिति, दनु, काष्ठा, अरिष्टा, अन्नायु, खशा, सुरभि, विनता, ताम्रा, मुनि, क्रोधवशा, कद्रू (ब्रह्माण्ड०)। ब्रह्माके कहनेसे इन्होंने पुलोमा और कालिकासे भी विवाह किया था। कश्यपकी वंशावली आर्षरामायणके आदि काण्ड या शुकोक्तिसुधासागरमें विस्तारसे दी हुई है। यह वैवस्वत कालके ऋषि थे और विवस्वान्के पिता थे (भाग० ९.१.१०; मत्स्य० ११.२)। परशुरामने अपने यज्ञमें होताको पूर्व दिशा, ब्रह्माको दक्षिण दिशा, अध्वर्युको पश्चिम दिशा और उद्गाताको उत्तर दिशा दक्षिणारूपमें दी। इन्हें मध्यदेश दिया था (भाग० ९.१६.२२)। मृत्युशय्यापर पड़े भीष्म पितामहसे यह भेंट करने गये थे (भाग० १.९.८)। यह ब्रह्मवादी, मन्त्रकृत्, प्रजापति तथा देवर्षि थे जिनमें ब्रह्माका अंश था (मत्स्य० ४७.९; ब्रह्मां० ३.३.१०५; ७१.२३८; वायु० १.१३८;३.२; ६५.११४)। नारद, पर्वत, आदित्य, मरुद्गण और रुद्रगण इनके पुत्र थे (ब्रह्मां० २.२७.१०४; ३२.९८,११२; ३५.९२-९५; ३८.३; ३.१.५३; ४.३४; ८.१,२७; मत्स्य० १४५.९२; वायु० १.१३८; ३.२; ६५.५३; ८४.२६-३१)। जब दक्ष अपनी पुत्रियोंके कारण एक बार कुछ क्रुद्ध हो गये थे तब कश्यपने 'कश्य' (एक प्रकारकी सुरा) पी ली (वायु० ६५.११५-१७)। तभीसे इन्हें कश्यप कहने लगे। विश्वचक्रदानमें इनका स्थान है (मत्स्य० २८५.३)। ये वैदिक ऋषि थे इनके बनाये अनेक मंत्र ऋग्वेदमें हैं। इन्होंने अतिरात्र यज्ञ किया था (ब्रह्मां० ३.५.४)। (२) एक ऋषि जो श्रीकृष्णके समकालीन थे। यह युधिष्ठिरके यज्ञके आमंत्रित थे (भाग० १०.७४.९)। श्रीकृष्णसे मिलने यह स्यमंतपंचक आये थे (भाग० १०.८४.४)। परीक्षित्को डंसनेके लिए उनके निकट जाते समय तक्षककी भेंट इनसे हुई थी। ये सर्पविष हरनेमें दक्ष थे। तक्षकने इन्हें उपहारसे संतुष्ट कर लौटा दिया। (भाग० १२.६.११)। (३) एक पौराणिक ऋषिका नाम

जिसने व्यासके शिष्य रोमहर्षणसे मूलसंहिता सीखी थी (भाग० १२.७.५,७)। (४) एक ऋषि जो मार्गशीर्ष महीनेमें सूर्यके रथके साथ (वायु० ५२.१६; भाग० १२.११.४१) अधिपति रूपसे रहते हैं। (५) ऋष्यशृंगके—सावर्णि मनुके प्रथम युगके सप्तर्षियोंमेंसे एक ऋषिके पिता (ब्रह्मां० ४.१.११)। (६) स्वारोचिष कालके सप्तर्षियोंमेंसे एक ऋषि (मत्स्य० ९.८)। (७) एक ऋषि जो नर्मदातटवर्ती विपुल-पुण्यप्रद शुक्लतीर्थ गये थे (मत्स्य० १९२.१०)। (८) अथर्व-संहिताके एक आचार्य (भाग० १२.७.४)।

कश्यपपद—पु० [सं०] यह गयाजीमें स्थित है (वायु० १०९.१८) जहाँ भारद्वाज ऋषिने श्राद्ध किया था (वायु० १११.४९, ५८)।

कसेरू—पु० [सं०] भारतवर्षके ९ भागोंमेंसे एक (मत्स्य० ११४.८; वायु० ४५.७९,११९; विष्णु० २.३.६)।

कहोड़—पु० [सं०] महर्षि उद्दालकके एक शिष्य (जामाता) एक मध्यमाध्वर्युका नाम। यह प्रसिद्ध ऋषि अष्टावक्रके पिता थे (दे० अष्टावक्र, ब्रह्मां० २.३३.१६)।

कांचन—पु० [सं०] (१) भीमका पुत्र और होत्रक (सुहोत्र= विष्णु) का पिता (भाग० ९.१५.३; विष्णु० ४.७.३)। (२) सुयशा और प्रचेताके पुत्र यक्षोंमेंसे एक यक्षका नाम (वायु० ६९.१२)।

कांचनका—स्त्री० [सं०] किल-किल वंशी विन्ध्यशक्तिके पुत्र प्रवीरकी राजधानीकी नगरी (ब्रह्मां० ३.७४.१८४)।

कांचनपाद—पु० [सं०] मलय द्वीपका प्राकृतिक शोभासे पूर्ण, विविधपुष्प और फलोंसे लदा एक पर्वत (वायु० ४८.२४)।

कांचनप्रभ—पु० [सं०] राजा भीमके पुत्र तथा सुहोत्रके पिताका नाम (ब्रह्मां० ३.६६.२४; वायु० ९१.५३)।

कांची—स्त्री० [सं०] (१) हिंदुओंकी सात पुरियोंमेंसे एक जिसे अब 'कांजीवरम्' कहते हैं। यह दक्षिणमें मद्रासके पास स्थित है। अगस्त्यने यहाँ दयावश लोकहितार्थ घोर तप किया था जिससे प्रसन्न हो विष्णुने हयग्रीवके रूपमें उन्हें दर्शन दिया था (ब्रह्मां० ४.५.६-१०; ७.१०)। शिव-सान्निध्यकारकके साथ यह एक वैष्णव क्षेत्र है। ब्रह्माने विष्णु और लक्ष्मीसे यहीं निवास करनेकी प्रार्थना की थी। 'कामकोटिपुरीं काञ्ची कावेरीं च सरिद्वराम्'—भाग०। कहते हैं शिव, ब्रह्मा और विष्णुका विवाह यहीं सम्पन्न हुआ, पर ब्रह्मा बादको चले गये (ब्रह्मां० ४.३९ पूरा, ४०.१६-५९,८२-९१)। (२) केतुमाल महादेशकी एक नदीका नाम (वायु० ४४.१८)। (३) भद्राश्व द्वीपकी एक महानदी (वायु० ४३.२५)।

कांजीवरम्—पु० [सं० कांचीपुर]—दे० कांची।

कांठायन द्विज—पु० [सं०] कण्ठके एक पुत्र मेधातिथिके वंशज ब्राह्मण (वायु० ९९.१३१)।

कांडत्रय—पु० [सं०] कर्मकांड, उपासनाकांड और ज्ञान-कांड नामके वेदोंके तीनों कांड—कांडत्रय।

कांडपृष्ठ—पु० [सं०] (१) कुंतीसुत कर्णके धनुषका नाम—महाभारत। (२) वह ब्राह्मण जो धनुषादि बनाकर जीवकोपार्जन करता हो (हि० श० सा०)।

कांडशय—पु० [सं०] पराशर-परिवारका एक गोत्रकार ऋषि (मत्स्य० २०१.३३)।

कांत—पु० [सं०] रुद्रसावर्ण मन्वन्तरके दस सुकर्मा देवोंमेंसे एक देव (ब्रह्मां० ४.१.८८; वायु० १००.९३)।

कांतासक्ति—स्त्री० [सं०] भक्तिका एक भेद विशेष जिसमें भक्त ईश्वरको अपना पति मानकर उपासना करता है। सूफी मतवालोंकी भक्ति भी इसी प्रकार की है (मुसल-मान कबीरपन्थियोंकी मान्यता है कि कबीरने प्रसिद्ध सूफी मुसलमान फकीर शेखतकीसे दीक्षा ली थी)।

कांति—स्त्री० [सं०] (१) चंद्रमाकी सोलह कलाओंमेंसे एक (दसवीं) कला। (२) चंद्रमाकी एक स्त्रीका नाम—दे० चंद्रमा। (३) श्री, ह्री आदि ४८ शक्तिदेवियोंमेंसे एक शक्तिदेवीका नाम (ब्रह्मां० ४.४४.७२)। (४) षोडश ब्रह्मकलाओंमेंसे एक ब्रह्मकला (ब्रह्मां० ४.३५.४९)।

कांतिपुर—पु० [सं०] एक नगर जिसकी पूर्वोत्तर दिशामें पवित्र जलाशय है जिसकी रक्षा किरातगण करते हैं। इसमें स्नान करनेसे मनुष्यकी सब मनोकामनाएँ पूर्ण हो जाती हैं (ब्रह्मां० ३.१३.९५-७)।

कांतिव्रत—पु० [सं०] कान्ति और कीर्तिरूप फलप्रद इस व्रत-को करनेवाला विष्णुलोक प्राप्त कर एक कल्पतक वहाँ रहता है फिर यहाँ राजा होता है (मत्स्य० १०१.४५)।

कांतिशाली—पु० [सं०] विद्याधरोंका एक राजा जो कलाधर-के साथ दुर्वासा ऋषिके शापसे कम्बोज देशमें घोड़ा हुआ था तथा व्रजांगद राजाकी सवारीमें रहा,पर अरुणाचल क्षेत्रकी प्रदक्षिणा करनेसे इसकी मुक्ति हुई थी (स्कंद० १-३-२२, २३ माहेश्वर-अरु० मा० खंड)।

का—पु० [सं०] तैत्तिरीय, शतपथ, तांड्य और कौषीतकी ब्राह्मणके अनुसार दक्ष प्रजापतिका दूसरा नाम। मूत्र और मलस्थानका देवता—तैत्तिरीय, शतपथ आदि।

काक—पु० [सं०] (१) चन्द्र और द्रोणपर्वतका निकटवर्ती समुद्रतटपरका एक पर्वत (ब्रह्मां० २.१८.७६)। (२) एक क्रव्याद् पक्षी, दैत्येन्द्र सूचीमुखका भंडासुरके एक सेना-नायकका वाहन (ब्रह्मां० ३.७.४५५; ४.२४.४४)।

काकबलि—स्त्री० [सं०] ऐंद्र, वारुण, वायव्य और नैर्ऋत दिशाओंके वायस इस बलिको अर्थात् भूमिपर दिये गये पिण्डको ग्रहण करें यों काकोंको दी जानेवाली बलि (वायु० १११.४०)।

काकभुशुंडी—पु० [सं०] एक ब्राह्मण जो लोमश ऋषिके शापसे कौआ हो गये थे। यह रामचन्द्रजीके बड़े भक्त थे। कहते हैं इनका बनाया (विरचित) भुशुंडीरामायण भी है—रामचरितमानस, उत्तरकांड ५३-८४ ख।

काकवर्ण—पु० [सं०] शिशुनागवंशीय दूसरा राजा। शिशु-नाग (विष्णु पुराणके अनुसार शिशुनाभ) का एक पुत्र तथा क्षेमधर्मका पिता। इसने ३६ वर्ष राज्य किया (भाग० १२-१-५; ब्रह्मां० ३.७४.१२९; मत्स्य० २७२.७; विष्णु० ४.२४.१०-११)।

काकशिला—स्त्री० [सं०] गयाजीमें स्थित एक शिला। यहाँ कौओंको बलि देनेसे यह दर्शनार्थियोंको ऋणमुक्त करती है (वायु० १०८.७६)।

काकुत्स्थ—पु० [सं०] (१) अयोध्यापति दशरथ, उनके पूर्व पुरुष दिलीप आदि और पुत्र श्रीराम आदि सब काकुत्स्थ

कहे जाते हैं—दे० पुरञ्जय। (२) गौ, जिनका विवाह नहुपके ज्येष्ठ पुत्र यतिसे हुआ था, के पिताका नाम (ब्रह्मां० ३.६८.१३; वायु० ९३.१४)।

काक्षीव—पु० [सं०] जटामाली, जो विष्णुका अवतार था, का एक पुत्र (वायु० २३.१८७)।

काक्षीवान्—पु० [सं०] सुदेष्णाकी अनुचरीके गर्भसे उत्पन्न दीर्घतमाका एक पुत्र जिसने गिरिव्रजमें तपस्या करके ब्राह्मणत्व प्राप्त किया था। यह एक सहस्र कौष्माण्डों तथा गौतमोंका पिता था (मत्स्य० ४८.६३,८४-८)।

काचल—पु० [सं०] केतुमालके अनेक जनपदोंमेंसे या नागरिकोंमेंसे एक जनपद या एक वर्गके नागरिक (वायु० ४४.१५)।

काण्व—पु० [सं०] याज्ञवल्क्य द्वारा प्रवर्तित वाजसनेयी १५ शाखाओंमेंसे एक शाखा (विष्णु० ३.५.३०)।

काण्वायन—पु० [सं०] (१) केशिनी और अजमीढ़के पुत्र कण्वसे उत्पन्न ब्राह्मणोंकी एक जाति तथा आंगिरसका एक प्रवर (मत्स्य० ४९.४७; १९६.२१)। (२) शासकोंका एक परिवार जो वसुदेव कण्वसे आरम्भ होता है। इन्होंने ३४५ वर्षतक राज्य किया। इन्हें शुङ्गभृत्य कहते हैं, क्योंकि शुङ्गवंशी राजा देवभूमिको मारकर अमात्य कण्व वसुदेव स्वयं राजा वन बैठा इसलिए इन्हें शुङ्गभृत्य भी कहते हैं (भाग० १२.१.२१; मत्स्य० २७२.३३-७)।

काव्य—पु० [सं०] तामस युगके सप्तर्षियोंमेंसे एक ऋपि (विष्णु० ३.१.१८)।

कात्यायन—पु० [सं०] कत ऋपिके गोत्रमें उत्पन्न ऋपि जिनमें तीन प्रसिद्ध हैं—(१) विश्वामित्रके वंशज—इनके वनाये कात्यायन श्रौतसूत्र और कात्यायन गृह्यसूत्र विशेष प्रसिद्ध हैं (कात्यायनमतसंग्रह तथा कात्यायनश्रौतसूत्र कर्काचार्य विरचित भाष्य सहित, (२) गोभिल पुत्र कात्यायन जिनके "गृह्यसंग्रह" तथा "छन्दोगपरिशिष्ट वा कर्मप्रदीप हैं (गोभिलगृह्यसूत्र श्री मुकुन्दशर्माद्वारा तथा गोभिलपरिशिष्ट चंद्रकांततर्कालङ्कार । द्वारा संपादित)। (३) वररुचि कात्यायन जो पाणिनिसूत्रोंके वार्त्तिककार प्रसिद्ध हैं। कथासरित्-सागरके अनुसार यह वचपनसे ही बड़े बुद्धिमान् थे। इनसे स्पर्द्धा करके पाणिनिने शंकरको प्रसन्न किया और इनको परास्त किया। डाक्टर रमेशचंद्रदत्तके अनुसार पाणिनिका समय ईसासे ८०० वर्ष पूर्व है। डाक्टर साहवके मतानुसार कात्यायन ईसापूर्व नवीं सदीमें रहे होंगे। कात्यायनका जन्म कौशाम्बीमें हुआ था और इनके पिताका नाम सोमदत्त था (कथासरित् सागर तथा र० दत्त)।

(क) एक बौद्ध आचार्य भी इसी नामके हुए हैं जो बुद्धसे ४५ वर्ष वाद हुए थे। (ख) पाली व्याकरणके कर्त्ता एक बौद्ध आचार्य जिसे पालीमें कच्चायन कहते हैं। (ग) ब्रह्माके यज्ञके अनेक ऋत्विजोंमेंसे एक ऋत्विक्का नाम (वायु० १०६.३७)। (घ) एक प्रवरका नाम (मत्स्य० १९२.१०;१९६.३३)।

कात्यायानी—स्त्री० [सं०] (१) भगवतीकी एक मूर्त्ति विशेष जिसकी पूजा महर्पि कात्यायनने सर्वप्रथम की थी,अतः यह नाम पड़ा। सौ वर्षोंतक युद्ध करके महिपासुरने देवताओंको राज्यभ्रष्ट कर दिया। देवता लोग ब्रह्माको आगे कर शिव और विष्णुके समीप गये और सबका दुःख सुनाया। तीनों देवोंके मुखोंसे एक ऐसा तेज निर्गत हुआ जिसने एक स्त्रीकी मूर्त्ति धारण की। इस सिंहवाहिनी कात्यायनीका जन्म आश्विन कृष्णा चतुर्दशीको हुआ था। इसी महीनेकी शुक्ला सप्तमी, अष्टमी और नवमीको महर्पि कात्यायनकी पूजा लेकर देवीने दशमीको महिपासुरका वध किया था। इस देवीकी दस भुजाएँ हैं। महिपासुर अत्यन्त मायावी था। उसने एक समय कात्यायनके एक शिष्यको मनोहर स्त्रीमूर्त्ति धारण करके विगाड़ना चाहा था। कात्यायन इससे वड़े क्रुद्ध हुए और शाप दिया कि तुमने स्त्रीका रूप धरकर जो हमारे शिष्यकी तपस्यामें विघ्न डालनेकी चेष्टा की, अतः स्त्रीके ही द्वारा तुम्हारी मृत्यु होगी। इसी शापके फलस्वरूप महिपासुर भगवतीके हाथसे मारा गया था (मार्कण्डेयपुराण; मत्स्य० २६०.५५-६६)। (२) कात्यायन ऋपिकी पत्नी। :(३) याज्ञवल्क्य ऋपिकी पत्नीका नाम।

कात्यायनीव्रत—पु० [सं०] भागवतके अनुसार व्रजकी गोपियोंने यह व्रत हेमंत मासके आरम्भमें किया था। यमुना स्नानके पश्चात् वालूकी देवीकी मूर्त्ति वना 'श्रीकृष्ण पति हों' इस कामनासे यह एक मासतक किया गया था। इसमें भद्रकालीकी पूजा भी सम्मिलित है। चीरहरण लीला इसीमें हुई थी (भाग० १०.२२.१-२७)।

कादंबरी—स्त्री० [सं०] (१) वाणभट्टकी लिखी एक आख्यायिका जिसकी नायिकाका यही नाम है। कादंवरी, मदिरा और चित्ररथ नामक गंधर्वराजकी पुत्री थी (कादम्वरी—पं० कृष्णमोहन शास्त्री)।

काद्रवेय—पु० [सं०]नागोंकी एक जाति। ये तार्क्ष्य (कश्यप) और कद्रूसे उत्पन्न हुए जिनके अनेक फण हैं (वायु० ५२.२०; ६२.१८०; ६९.७४; ब्रह्मां० ३.७.३१)। ये सव गरुड़के अधीन थे। शेप, वासुकि आदि इसी कक्षामें हैं (विष्णु० १.२१.२०-२१)।

काद्रुपिंगाक्षि—पु० [सं०] एक काश्यप त्र्यार्षेय (मत्स्य० १९९.१३)।

काननस्थली—पु० [सं०] पुष्पकशैल और महामेघ पर्वतोंके वीच स्थित एक महाभयंकर वनका नाम (वायु० ३८.७१-८)।

कानिनि—पु० [सं०] सामवेदकी शाखाके प्रवर्तक एक ऋपि जो सामवेदके मुख्य आचार्य कृतकी शिष्य-प्रशिष्य परम्परामें थे (ब्रह्मां० २.३५.५३)।

कानीन—पु० [सं०] (१) विवाह होनेके पूर्व कुमारी अवस्थामें उत्पन्न हुआ पुत्र। 'कुंतीसुत कर्ण' और 'वेदव्यास'को कानीन कहते हैं। कर्ण कुंतीके गर्भसे उत्पन्न सूर्यका पुत्र था—महाभारत, आदि पर्व कर्ण-जन्म और मत्स्यगंधाके गर्भसे उत्पन्न पराशर ऋपिके पुत्र श्री वेदव्यास थे (महाभारत, आदि पर्व सत्यवतीकी आत्मकथा)। (२) अग्निवेश्यका एक नाम जो देवदत्तके पुत्र थे और जातुर्ण्य ऋपिके नामसे विख्यात हुए। यह अग्निके अंशसे उत्पन्न हुए थे। इन्हींसे अग्निवेश्यायन नामक ब्रह्मकुल चला (भाग० ९.२.२१-२२)।

कान्यकुब्ज—पु० [सं०] (१) प्राचीन समयका एक प्रांत।

रामायणानुसार राजर्षि कुशनाभको घृताची नामकी अप्सरासे १०० कन्याएँ उत्पन्न हुईं जिनके रूपपर वायु मोहित हो गया। कन्याओंके अस्वीकार कर देनेपर वायुने उन्हें कुबड़ी कर दिया। पिता कन्याओंपर बड़े प्रसन्न हुए और उन्हें कांपिल्य नगरके राजा तथा चुलिय ऋषिके पुत्र ब्रह्मदत्तको ब्याह दिया जिनके स्पर्शसे सब लड़कियोंका कुबड़ापन जाता रहा। ह्वेनसांगके मतानुसार ये १०० कन्याएँ कुसुमपुरके राजा ब्रह्मदत्तकी पुत्री थीं। महावृक्ष ऋषिने इन कन्याओंपर मोहित हो एकको ब्रह्मदत्तसे माँगा। राजा सबसे छोटी कन्याको लेकर ऋषिके आश्रमपर गये। ऋषिने कहा—सबसे छोटी क्यों? राजाने डरते-डरते कहा 'और कोई राजी नहीं हुई।' इसपर ऋषिने शाप द्वारा और सब कन्याओंको कुबड़ी कर दिया। इन्हीं कुबड़ी कन्याओंके आख्यानसे इस प्रदेशको 'कान्यकुब्ज' कहते हैं। (२) ब्राह्मणोंका एक भेद जो कान्यकुब्ज देशके निवासी कहे जाते हैं—रामायण तथा ह्वेनसांग। (३) अजामिलका एक नगर (भाग० ६.१.२१)। यहाँके निवासियोंको परशुरामने परास्त किया था (ब्रह्मां० ३.३९.११; ४१.३९; ४.४४.९४)। इस स्थानमें गौरी नामसे सती देवीकी एक मूर्ति स्थापित है, इसलिए उनके भक्तोंको यह स्थान प्रिय है तथा पवित्र पीठ समझा गया है (मत्स्य० १३.२९)।

कापालिक–पु० [सं०] (१) शैव सम्प्रदायकी एक शाखाका नाम। कई पुस्तकोंके पर्यालोचनसे पता चलता है कि कालामुख अथवा लाकुड़, कापालिक और पाशुपत ये शैव सम्प्रदाय हैं। इनका परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध है। श्री रामानुजाचार्यने अपने श्रीभाष्यमें शैव, पाशुपत, कापाल और कालामुख भेदसे चार प्रकारके शैव सम्प्रदायका उल्लेख किया है। 'कपालेन नृकपालेन चरति अभ्यवहारादिकं करोति कापालिकः।' मनुष्यकी खोपड़ी द्वारा खाना, पीना आदि करते हैं। शैवाचार भेद विशेष। भवभूति कविने मालती माधव नाटकमें तथा कृष्ण कविके प्रबोधचन्द्रोदय नाटकके तृतीय अङ्कमें कापालिक मतका परिचय मिलता है। ये उग्र शैव तान्त्रिक सम्प्रदाय हैं (ब्रह्मां० २.३१.६५; वायु० ५८.६४)। सात-आठ सौ वर्ष पूर्व ये काली, छिन्नमस्ता आदि देवियोंको नरबलि चढ़ाते थे। शङ्कर-दिग्विजयके अनुसार कापालिक उच्छिष्ट गणपति या हैरम्ब सम्प्रदायके अंतर्गत हैं। ये मनुष्यकी खोपड़ी लिये रहते हैं और मद्यमांसादि खाते हैं (ब्रह्मां० २.२७.११६)। (२) तंत्र शास्त्रानुसार बंगदेशकी एक वर्णसंकर जाति—तंत्रसार-संग्रह।

कापिलेय–पु० [सं०] दैत्यराज कुम्भके वंशज अति उद्धत दैत्य राक्षस (वायु० ६९.१७५)।

काम–पु० [सं०] (१) कामदेव, प्रेमके देवता जिन्हें ब्रह्माके हृदयसे उत्पन्न कहा गया है। शिवने इन्हें जला भस्म कर दिया था—दे० अंगज। श्रीकृष्णके पुत्र प्रद्युम्नके रूपमें इनका पुनर्जन्म हुआ, अतः यह वासुदेवके अंश थे (भाग० ३.१२.२६; ८.७.३२; १०.५५(२); विष्णु० ५.२७.२८)। इंद्रने इन्हें नरकी तपस्या नष्ट करनेको भेजा था (भाग० ११.४.७)। इंद्रके कहनेसे यह उमासे विवाह करनेके लिए शिवको राजी करने गये थे (मत्स्य० १५४.२०९-२३९)। विभूति द्वादशीव्रत करनेके कारण अनंगावती, रतिके साथ इनकी एक और पत्नी बन गयी और वह 'प्रीति' कहलायी (मत्स्य० ७.१३; १००.३२९)। सिद्धेश्वरके निकट कुसुमेश्वरमें शिवकी उपासना कर इन्होंने देवत्व पुनः प्राप्त किया (मत्स्य० १९१.११०)। इनके बाणोंसे पीड़ित हो ब्रह्मा अपनी पुत्रीसे ही प्रेम करने लगे थे, अतः उन्होंने शाप दिया कि यह शिव द्वारा भस्म होंगे, पर यह बतलानेपर कि इन्होंने केवल कर्त्तव्यपालन किया था, ब्रह्माने श्रीकृष्णके पुत्र होनेका वर दिया। इन्होंने नवदुर्गाओंको भी कामपीड़ित किया था (मत्स्य० ३.३३; ४.१२-२१; २३.२३)। (२) संकल्पका एक पुत्र (भाग० ६.६.१०)। (३) एक विश्वेदेव (ब्रह्मां० ३.३.३०; वायु० ६६.३१)। (४) श्रद्धा और धर्मका एक पुत्र तथा हर्ष (प्रसन्नता) के पिता जो रति (सिद्धि-ब्रह्मां०) के गर्भसे उत्पन्न हुए थे (ब्रह्मां० २.९.५८-६२; वायु० १०.३४.३८)। (५) शोभयंन्ती आदि चौदह अप्सराओंके गणोंके अधिनायक (ब्रह्मां० ३.७.२४; वायु० ६९.५८)। (६) जीवनमें कामका स्थान (भाग० १.२.९-१०)। इसका उपभोग और प्रसंगसे अंत नहीं होता बल्कि आहुति पड़नेपर अग्निके तुल्य प्रचण्ड हो जाता है। रामायणानुसार ठीक उसी प्रकार जैसे वृद्धावस्था प्राप्त होनेपर भी जीने और धन एकत्र करनेकी लालसा नहीं जाती (वायु० ९३.९५-१००)।

कामकंटकटा–स्त्री० [सं०] मुरु दैत्यकी पुत्री मौर्वी जो कामाख्या देवी तथा श्रीकृष्णके आशीर्वादसे भीमपुत्र घटोत्कचकी पत्नी हुई थी। भगदत्तके राज्य प्राग्ज्योतिषपुरमें रहनेवाली वह वीरांगना थी। इसने प्रण किया था कि जो बल तथा बुद्धि द्वारा मुझे परास्त करेगा उसीसे मैं ब्याह करूँगी तथा पिताके मारे जानेपर इसने श्रीकृष्णसे युद्ध किया था। बर्बरीक इसका पुत्र था (स्कंद० माहेश्वर कुमारिका खंड)।

कामक–पु० [सं०] विरक्षके दो पुत्रोंमेंसे एकका नाम। विरक्ष दनायुषाके पाँच पुत्रोंमेंसे एक था (वायु० ६८.३३)।

कामकला–पु० [सं०] एक तंत्रोक्त विद्या जिसमें शिव और शक्तिकी दो सफेद और लाल बिंदियाँ मानी गयी हैं। इनके संयोगको ही कामकला कहते हैं और इसी संयोगसे सृष्टिकी उत्पत्ति मानी गयी है (कामकला—आ० चतुरसेन)।

कामकूट–पु० [सं०] कामराज, श्रीविद्याका मंत्र जो तीन प्रकारका माना गया है—कामकृत, कामकेलि, कामक्रीड़ा (कामसूत्र—वात्स्यायन, कामविज्ञान—दी० व्यास)।

कामकोटिगा–स्त्री० [सं०] ललिता देवीके पचीस नामोंमेंसे एक नाम (ब्रह्मां० ४.१८.१६)।

कामकोष्टक–पु० [सं०] इसे कामगिरि भी कहते हैं जो कामाक्षी देवीके पचास सिद्धपीठोंमेंसे एक सिद्धपीठ है (ब्रह्मां० ४.४०.१; ४४.९४)।

कामकोष्णी–स्त्री० [सं०] काँचीमें स्थापित एक देवी जिनके दर्शन बलरामजीने दक्षिण (द्रविड़) देशमें किये थे (भाग० १०.७९.१४)।

कामगमगण–पु० [सं०] धर्मसावर्णि मनुके ग्यारहवें मन्वंतरके ३०।३० देवोंके त्रिविध देवतागणोंमेंसे एक देवता-

गणका नाम (भाग० ८.१३.२५; विष्णु० ३. २.३०)।

कामगिरि—पु० [सं०] भारतवर्षका एक पहाड़, जो एक प्रमुख पीठरूप कहा गया है, काँचीमें है (भाग० ५.१९.१६; ब्रह्मां० ४.३९.१०५)।

कामचारिणी—स्त्री० [सं०] मंदर पर्वतपर स्थित एक सती देवीकी प्रतिरूप देवी मूर्त्ति (मत्स्य० १३.२८)।

काञ्चनका—स्त्री० [सं०] एक नगरी, जो विन्ध्यशक्तिके पुत्र प्रवीरकी राजधानी थी (वायु० ९९.३७१)।

कामजित्—पु० [सं०] शंकरका एक नाम। देवताओंके कहनेसे कामदेव शंकरको अपने वशमें करने गया था, पर उन्होंने उसे भस्म कर दिया—दे० काम (१)।

कामठक—पु० [सं०] धृतराष्ट्रके वंशका एक नाग जो जनमेजय राजाके सर्प-यज्ञमें मारा गया था (महाभा० आदि० ५७.१६)।

कामतरु—पु० [सं०] कामतरु=कल्पतरु—दे० कल्पतरु।

कामतिथि—स्त्री० [सं०] त्रयोदशी तिथि जिस दिन कामदेवकी पूजा होती है। त्रयोदशीका अधिपति भी कामदेव है, इसलिए यह कामतिथि कहलाती है—बृहत्संहिता।

कामदहन—पु० [सं०] कामदेवको भस्म करनेके कारण शंकरका एक नाम—दे० काम (१)।

कामदा—स्त्री० [सं०] (१) स्कन्दकी अनुचरी मातृकाओं (मातृगणों) मेंसे एक मातृका। ये मातृकाएँ शत्रुनाशक हैं, इनसे तीनों लोक व्याप्त है—महाभा० शल्य० ४६.१-४३। (२) चैत्र शुक्ल एकादशी जिसे कामिका एकादशी भी कहते हैं। इसमें दशमीके मध्याह्नमें सादा भोजन एक बार करे, एकादशीको भगवान्के सम्मुख जागरण करे, फिर दूसरे दिन पारणा करे। इसमें भोगीपुर नगरके राजा पुण्डरीकके ललित और ललिता (गंधर्व-गंधर्विणी) की कथा सुननेका माहात्म्य है—'नानापुराणस्मृति'।

कामदासप्तमी—स्त्री० [सं०] फाल्गुन शुक्ल सप्तमीको 'सूर्याय नमः'से सूर्यकी पूजा करे तथा नैवेद्यमें कसार दे। सूर्यके घोड़ोंका पूजन करे तो अपुत्रको पुत्र, निर्धनको धन तथा रोगीको आरोग्य प्राप्त होता है—भविष्यपुराण।

कामादिमंत्रराज—पु० [सं०] कामराज नामका एक ललिता मन्त्र जो परम श्रेष्ठ कहा गया है (ब्रह्मां० ४.३८.१४)।

कामदुघा—स्त्री० [सं०] रोहिणीकी चार पुत्रियोंमेंसे एक पुत्री जिससे गौएँ उत्पन्न हुई थीं (ब्रह्मां० ३.३.७४-५; वायु० ६६.७२)।

कामदेव—पु० [सं०] (१) यह कृष्णके औरस और लक्ष्मीके गर्भसे उत्पन्न हुए थे। अन्य मतानुसार यह ब्रह्मासे स्त्रीके रूपमें उत्पन्न हुए थे—दे० मन्मथ, स्तंभन, अंगहीन। पर्य्याय—काम (१); मदन; मन्मथ; मार, प्रद्युम्न; मीनकेतन; कंदर्प; दर्पक; अनंग; पंचशर; स्मर; शंवरारि; मनसिज; कुसुमेषु; अनन्यज; पुष्पधन्वा; रतिपति; मकरध्वज; अंगज; अंगहीन आदि। (२) केतुमाल महादेशमें लक्ष्मीके समक्ष विष्णु इसी रूपमें आये थे (भाग० ५.१८.१५), इसलिए विष्णुका एक नाम कामदेव भी है (महाभा० अनु० १४९.८३)। देवासुर संग्राममें यह दुर्मर्षके साथ लड़े थे (भाग० ८.१०.३३)। यह सब अप्सराओंके अधिपति बनाये गये (ब्रह्मां० ३.८.१५, मत्स्य० २७७.६; वायु० ७०.१४)। (३) यशोधरा (यशोधारी० वायु०) और कनकपीठके एक पुत्रका नाम (ब्रह्मां० २.११.३५; वायु० २८.३०)।

कामदेवव्रत—पु० [सं०] कामदेवकी पूजा वैशाख शुक्ल त्रयोदशीको की जाती है जिससे रोगनिवृत्ति होती है—मदन रत्न, विष्णुधर्मोत्तर।

कामधेनु—स्त्री० [सं०] (१) एक गाय, जो समुद्रमंथनसे प्राप्त चौदह रत्नोंमेंसे एक है जिससे मनोवांछित फल मिलता है (ब्रह्मां० ४.१५.३७; २८.७२)। (२) वशिष्ठ ऋषिकी शबला या नन्दिनी नामकी गाय जिसके कारण विश्वामित्रसे उनका झगड़ा हुआ था। एक बार विश्वामित्रजी वशिष्ठाश्रमपर पधारे तब अपनी गौके प्रतापसे वशिष्ठने उनका समुचित सत्कार किया। विश्वामित्रने वशिष्ठसे गौ माँगी और न देनेपर दोनोंमें घोर युद्ध हुआ। (३) अन्धकासुर विनाशार्थ सृष्ट मानसी शक्तियों द्वारा जगत्क्षय होनेपर शङ्करकी प्रार्थनापर श्रीनृसिंह हरि द्वारा सृष्ट ३२ मातरोंमें एक देवी जो रेवती देवीकी अनुगामिनी है (मत्स्य० १७९.७३)। (४) जमदग्नि ऋषिकी गौ जिसके बलपर ऋषिने हैहयराजका ऐसा परम भव्य स्वागत किया था जिससे वह अत्यन्त विस्मयान्वित हुआ। दुर्मन्त्रीकी मन्त्रणासे उसने गौ माँगी, न देनेपर बलात् ले जानेका प्रयास किया। इसे ले जानेके लिए जब राजभृत्योंने इसे बाँधा तब यह बंधनमुक्त हो सारी सेनाको घायल करती हुई आकाशमें उड़ गयी थी (ब्रह्मां० ३.२६.५४)।

कामधेनुपद—पु० [सं०] यह गयाके धेनुकारण्यमें है। यहाँ स्नान कर श्राद्ध करनेवालेके पितर ब्रह्मलोकको जाते हैं (वायु० ११२.५६)।

कामध्वज—पु० [सं०] कामदेवकी पताकाका नाम—दे० कामदेव, काम, अंगज।

कामपाल—पु० [सं०] (१) श्रीकृष्ण, बलराम और शंकरका नाम—दे० कृष्ण, बलराम, शिव। (२) पौण्ड्रकको हरानेमें इन्होंने यदुवंशियोंका साथ दिया था (भाग० १०.६६(२))।

कामबाण—पु० [सं०] कामदेवके बाणोंका नाम जो संख्यामें पाँच कहे गये हैं—मोहन; उन्मादन; संतापन; शोषण; निश्चेष्टकरण (स्तम्भन)। बाणोंको यदि लेखोंके अनुसार फूलोंका बना मानें तो उनके नाम ये हैं—लाल कमल; अशोक; आम; चमेली और नील कमल—दे० अंगज।

कामभूरुह—पु० [सं०] कल्पवृक्ष—दे० कल्पवृक्ष, कल्पतरु।

काम्बोज—पु० [सं०] उत्तर दिशाका एक राज्य जो घोड़ोंके लिए प्रसिद्ध है (ब्रह्मां० २.१६.४९; ४.१६.१६; वायु० ८८.१२२; विष्णु० ५.२९.३२)। यहाँका सुदाक्षिण नामक राजा जरासंधका मित्र था और गोमंत-आक्रमणके समय यह गोमंत पर्वतके पूर्व था (भाग० १०.५२.११(७)। यह युधिष्ठिरके राजसूय यज्ञमें गया था। परशुराम और राजा सगरने इन्हें परास्त किया था और दण्डस्वरूप इन लोगोंका पूर्ण भद्र मुंडन करा दिया (मुड़ा) गया था (ब्रह्मां० ३.४१.३९; ४८.२२.४४; ६३.१२०, १३४-१३८; विष्णु० ४.३,४२)।

कामराजप्रिया—स्त्री० [सं०] ललिताके पचीस नामोंमेंसे एक नाम (ब्रह्मां० ४.१८.१६)।

कामरिपु–पु० [सं०] शिवका एक नाम—दे० अंगज, काम (१) आदि ।

कामरुचि–स्त्री० [सं०] एक अस्त्र विशेषका नाम । रामायणानुसार विश्वामित्रजीने यह अस्त्र श्री रामचन्द्रको दिया था । इससे विपक्षीके चलाये अन्य अस्त्र व्यर्थ हो जाते हैं (रामच० मानस, बालका० चौ० ७-८, दो० २०९; विष्णु० च० अंश) ।

कामरूप–पु० [सं०] (१) आसामके अंतर्गत एक स्थान विशेष जहाँ कामाख्या देवीका मंदिर है । कालिकापुराणानुसार कामाख्या देवी और कामरूप तीर्थका माहात्म्य बहुत अधिक मिलता है । यह देवीके ५२ पीठोंमेंसे एक है जो जादू-टोनाके लिए बड़ा प्रसिद्ध रहा है । प्राचीन कालमें यह म्लेच्छोंका देश समझा जाता था । प्राग्ज्योतिषपुर (आधुनिक गौहाटी) इसकी राजधानी थी । रामायणके समयमें नरकासुर यहाँ राज करता था । सीताकी खोजके लिए बन्दरोंको बाहर भेजते समय सुग्रीवने इसका भी उल्लेख किया है—रामायण किष्किंधा का० । महाभारतके समय यहाँका राजा भगदत्त था ।

जब अर्जुन दिग्विजयके लिए निकले थे तब इसने चीनियों तथा किरातोंकी सेना लेकर उनसे युद्ध किया था (महाभारत, अश्वमेधपर्व—प्राग्ज्योतिषपुरमें युद्ध) । महाभारतके युद्धमें भी भगदत्त अपनी म्लेच्छ-सेना ले कौरवोंकी ओरसे लड़ा था । महाभारतमें कहीं-कहीं भगदत्तका नाम 'म्लेछानामधिपः' भी मिलता है । बादको शाक्तों और तांत्रिकोंका प्रभाव बढ़नेपर इस स्थानको पवित्र मान लिया गया । (२) एक पूर्वी देश जो ललिता देवीके पचास पीठोंमेंसे एक मुख्य पीठ तथा अति पवित्र स्थान समझा जाता है (ब्रह्मां० ४.४४.९२; विष्णु० २.३.१५) ।

कामरूपा–स्त्री० [सं०] अन्धकासुर विनाशार्थ शिवजी द्वारा सृष्ट बहुत-सी मानस मातृकाओंमेंसे एक मानस मातृका (मत्स्य० १७९.२१) ।

कामरूपिणी–स्त्री० [सं०] श्री, ह्री आदि ४८ शक्तिदेवियोंमेंसे एक शक्तिदेवीका नाम (ब्रह्मां० ४.४४.७२) ।

कामलायनिज–पु० [सं०] कुशिकवंशज एक ऋषिका नाम जो त्र्यार्षेय प्रवर है (मत्स्य० १९८.१३) ।

कामला–स्त्री० [सं०] कमलालयमें स्थापित सती देवीकी एक मूर्ति (मत्स्य० १३.३२) ।

कामली–स्त्री० [सं०] परशुरामकी माताका नाम जिनका प्रसिद्ध नाम रेणुका था । यह इक्ष्वाकुवंशीय राजा रेणुकी (वायु० सुवेणुकी) पुत्री थीं और महर्षि जमदग्निके साथ इनका विवाह हुआ था । पिताकी आज्ञासे परशुरामने अपनी माताका सिर काट लिया था (वायु० ९१.९०; हरिवंश १.२७.२८, २९) ।

कामव्रत–पु० [सं०] प्रद्युम्नके प्रीत्यर्थ किया जानेवाला एक व्रत । इस व्रतके करनेसे व्रतकर्त्ता एक कल्पतक विष्णुलोकमें निवास करता है (मत्स्य० १०१.१०) ।

कामशंकर–पु० [सं०] महादेवी कामेश्वरीके कान्त कामेश्वरका एक नाम (ब्रह्मां० ४.१५.४५) ।

कामशास्त्र–पु० [सं०] सैरन्ध्रीके शयनकक्षमें कामशास्त्रके नियमानुसार बने चित्र (भाग० १०.४८(२); मत्स्य० २२०.२) । पांचाल बाभ्रव्य द्वारा लिखा शास्त्र विशेष (मत्स्य० २१.३०) ।

कामशिव–पु० [सं०] कामेश्वरीवल्लभ श्री कामेश्वरका एक नाम (ब्रह्मां० ४.१५.१६) ।

कामसुत–पु० [सं०] प्रद्युम्न, जिन्हें कामदेवका अवतार समझा जाता है, के पुत्र अनिरुद्धका एक नाम (दे० काम नं० १, अनिरुद्ध और प्रद्युम्न) ।

कामहानि–पु० [सं०] सामवेद शाखाप्रवर्तक आचार्य लांगलिके छह शिष्योंमेंसे एकका नाम (वायु० ६१.४२) ।

कामाक्षी–स्त्री० [सं०] (१) कामेश्वरी देवीका एक नाम (ब्रह्मां० ४.१५.३५) । (२) गन्धमादनमें स्थापित सती देवीकी एक मूर्ति (मत्स्य० १३.२७) । (३) तंत्रोक्त एक देवीकी मूर्ति । (४) दुर्गा देवीका एक विग्रह । (५) काँचीमें स्थित एक देवी जिन्हें आदिलक्ष्मी, महात्रिपुरसुन्दरी, ललितेश्वरी तथा कामेश्वरी भी कहते हैं (ब्रह्मां० ४.५.७; १३.२; ३८.८१; ३९.५-१४, २१; ४०.१, १६, ८५-१०५) ।

कामाख्या–पु० [सं०] (१) देवीका एक विग्रह । (२) सतीदेवीका योनिपीठ ।

कामार्त्ता–स्त्री० [सं०] श्री, ह्री आदि ४८ शक्तिदेवियोंमेंसे एक शक्तिदेवीका नाम (ब्रह्मा० ४.४४.७३) ।

कामारि–पु० [सं०] भगवान् शंकरका एक नाम—दे० अंगज, काम १ ।

कामावसायिता–स्त्री० [सं०] योगियोंकी अणिमा, लघिमा, महिमा आदि आठ सिद्धियोंमेंसे एक जिसे 'सत्यसंकल्पता' कहते हैं (वायु० १३.४) ।

कामिका–स्त्री० [सं०] श्रावण कृष्णा एकादशी—इस दिन नियमपूर्वक उपवास करके द्वादशीको नित्य कर्मके पश्चात् षोडशोपचारसे भगवान् श्रीधरका पूजन करे, तदनंतर ब्राह्मण-भोजन करा आप भोजन करे । इस व्रतको नियमपूर्वक करनेवाला इस लोकमें सम्पूर्ण कामनाओंको प्राप्त कर विष्णुधामको जाता है (नारद० पूर्व० १२०.२८-३१) ।

कामिकी– स्त्री० [सं०] वामा, विनोदिनी आदि शक्तियोंमेंसे एक शक्तिदेवीका नाम (ब्रह्मां० ४.४४.१४०) ।

कामिनी–स्त्री० [सं०] (१) स्त्रियोंके स्वैरिणी आदि तीन झुंडों, जो अतललोकनिवासी बलासुरके जँभाई लेनेपर उसके मुँहसे उत्पन्न हुए थे, मेंसे एक झुंड (भाग० ५.२४.१६) । (२) श्री, ह्री आदि ४८ शक्तियोंमेंसे एक शक्तिदेवी (ब्रह्मां० ४.४४.७२) ।

कामेशी–स्त्री० [सं०] (१) ललिता देवीके २५ नामोंमेंसे एक नाम (ब्रह्मां० ४.१३.२; १८.१५) । (२) चक्ररथेन्द्रके द्वितीय पर्वपर स्थित तीन देवियोंमेंसे एक देवीका नाम (ब्रह्मां० ४.१९.५२) । (३) चक्ररथेन्द्रके तृतीय पर्वपर स्थित दैत्यसंहारकारिणी ८ देवियोंमेंसे एक देवीका नाम (ब्रह्मां० ४.१९.४८) । (४) आनन्दपीठमें चक्ररथेन्द्रके मध्य पर्वमें स्थित भगमाला, नित्यक्लिन्ना, मेरुण्डा आदि १५ अक्षरदेवियोंमें सर्वप्रथम एक देवी (ब्रह्मां० ४.१९.५४-५९) ।

कामेश्वर–पु० [सं०] जगन्मोहन रूपधारी श्री शंकर, जिनका विवाह श्रृङ्गारमूर्ति ललिता देवीके साथ हुआ था, का एक नाम (ब्रह्मां० ४.१४.२१; १५.१२; २७.६७; ३४.४) ।

कामेश्वरी–स्त्री० [सं०] (१) कामरूप (कामाख्या) की पाँच

मूर्त्तियोंमेंसे एक। (२) कामेशी, कामाक्षी आदि ललिता देवीके विविध नामोंमेंसे एक नाम (ब्रह्मां० ४.१५.३५)। (३) १५ नित्या देवियोंमेंसे एक नित्या देवी (ब्रह्मां० ४. १८.९; २५.५६; २९.१४५; ३७.३३; ४४.१४१)।

कामेश्वरीपुरी–स्त्री० [सं०] ललिता देवीके निवास श्रीपुरका एक नाम (ब्रह्मां० ४.३३.२४)।

काम्पिल्य–पु० [सं०] (१) भर्म्याश्व (वायु०=भेद; विष्णु० हर्यश्व) के पाँच पुत्रों, जो पाञ्चाल कहाये, मेंसे एक पुत्र (भाग० ९.२१.३२; वायु० ९९.१९६; विष्णु० ४१९.५९)। (२) एक नगर विशेषका नाम। हर्यश्वके पुत्र काम्पिल्यके नामपर इस नगरीका नामकरण तथा स्थापना हुई थी। द्रुपदपुत्र धृष्टद्युम्नकी राजधानी इसी नगरीमें थी (महाभा० आदि० १३८-७३)। (३) राजा समरकी राजधानी। समरके पार, सुपार तथा सदश्व नामके ३ पुत्र थे (वायु० ९९.१७६; विष्णु० ४.१९.४०)।

काम्यक–पु० [सं०] एक विस्तृत वन जो सरस्वतीके तटपर है। दूसरे वनवासके समय पांडवोंने यहाँ वास किया था (महाभा० वन० ६-७१)।

काम्या–स्त्री० [सं०] कर्दम और श्रुतिकी पुत्री जिसका विवाह प्रियव्रतसे हुआ था। इसके प्रियव्रतसे स्वायंभुवसम १० पुत्र तथा दो पुत्रियाँ हुईं थीं। ये क्षत्रिय जातिके प्रवर्तक हुए (ब्रह्मां० २.११.३२-३४; १४.४४)।

कायनि–पु० [सं०] भार्गवोंका एक प्रवरप्रवर्तक ऋषि (मत्स्य० १९५.३१)।

कायव्य–पु० [सं०] एक निषाद माताका पुत्र जो अपने आचरण तथा भक्तिके बलसे ब्रह्मज्ञानी हो गया था (महाभा० शान्ति० १३५-२)।

कायावरोहण–पु० [सं०] एक तीर्थस्थान जहाँ सती देवीकी प्रतिमा माता देवीके नामसे स्थापित है, जो पितरोंके श्राद्ध, दान और होमके लिए अति प्रशस्त है तथा दोनों सन्ध्याओंमें शिवजीके सांनिध्यसे अति पवित्र है (मत्स्य० १३.४८; २२-३०; १८१-२६)।

कारकि–पु० [सं०] एक आंगिरस प्रवरप्रवर्तक ऋषि (मत्स्य० १९६.१४)।

कारण–पु० [सं०] (१) ईश्वर जो निर्गुण है। ब्रह्मा, प्रकृति और सगुणके संयोगके पश्चात् कारणात्मा हो जाता है (वायु० ४९.१५१)। (२) इससे जीव या प्राणका बोध होता है (वायु० १०२.१०१)। (३) अव्यक्तका एक नाम (विष्णु० १.२.१९)।

कारयन–पु० [सं०] हिमालय पर्वतके निकटका एक देश, जिसमें लक्ष्मण-पुत्र अंगदकी अंगदा नामक राजधानी थी (ब्रह्मां० ३.६३.१८९)।

कारवती–स्त्री० [सं०] श्राद्धादिके लिए अति प्रशस्त एक पवित्र तीर्थ (ब्रह्मां० ३.१३.९२)।

कारपथ–पु० [सं०] एक देश जहाँके शासक लक्ष्मणके पुत्र अंगद और चित्रकेतु थे। यहाँ अंगदकी राजधानी अँगदीया (ब्रह्मां० अंगदा) और चित्रकेतुकी चन्द्रवक्रा (ब्रह्मां० चन्द्रचक्रा) थी (वायु० ८८.१८८)।

कारु–पु० [सं०] भारतवर्षका एक पहाड़ (वायु० ४५.९२)।

कारुपथ–पु० [सं०] दे० कारपथ।

कारुष–पु० [सं०] वृद्धशर्माकी एक उपाधि जो करुष देशका राजा था और जिसका विवाह श्रुतदेवासे हुआ था। इसके श्रुतदेवासे दन्तवक्र नामक पुत्र हुआ जो ऋषिशप्त दैत्य था। महाभारत युद्धमें यह दुर्योधनके पक्षमें लड़ा (भाग० ९.२४.३६)।

कारुषगण–पु० [सं०] मालवाके निवासी जिन्हें वैवस्वत मनुके नौ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र, करुषके वंशज कहते हैं (भाग० ९.२.१६; ब्रह्मां० ३.६१.२; मत्स्य० १२.२४; ११४.४८; विष्णु० ४.१.१८)।

कार्तवीर्य–पु० [सं०] कृतवीर्यका पुत्र सहस्रार्जुन जिसकी राजधानी माहिष्मती थी। इसका दूसरा नाम हैहय था, जो तंत्रशास्त्रका आचार्य माना जाता है। कार्तवीर्यतंत्र इसीका बनाया है। एक समय लंकेश्वर रावण शिवकी पूजा करता था और वहाँसे आध योजन दूरीपर सहस्रबाहु कार्तवीर्य स्त्रियोंके साथ जलक्रीड़ा कर रहा था। सहस्रबाहुने नर्मदाकी धाराको रोक दिया। नदीकी धारा उलटी बहने लगी जिससे रावणकी पूजा-सामग्री बह गयी। सारा भेद विदित होनेपर रावणने सहस्रबाहुपर चढ़ाई की, पर त्रिलोक-विजयी रावण सहस्रबाहुसे परास्त हुआ और बंदी हो गया। रावणके पितामह महर्षि पुलस्त्यने सब हाल सुनकर कार्तवीर्यसे आकर प्रार्थना की, तब रावण छोड़ दिया गया (रामायण उत्तर० २२.१-७३; भाग० ९.१५.२१-२२; ब्रह्मां० ३.३२.५०; मत्स्य० ४३.३७-४०)।

ब्रह्मवैवर्त पुराणानुसार एक दिन सेना सहित राजा कार्तवीर्य भूख-प्याससे व्याकुल हो जमदग्नि ऋषिके आश्रमके निकट आ ठहरा और मुनिने सबका समुचित आदर-सत्कार किया। ऋषिके पास कपिला गौ थी, जिसके प्रभावसे अत्यन्त भव्य आतिथ्य किया गया था। कार्तवीर्यने गौ माँगी, पर ऋषिने देना स्वीकार नहीं किया। अतः कार्तवीर्य सेना सहित लड़नेपर उद्यत हुआ (भाग० ९.१५. २३-२६; ब्रह्मां० ३.२६.७ पूरा, २७.२८.३०.४), पर ऋषिकी दैवी शक्तिके आगे ठहर न सका और अपने राज्यको लौट गया। उसने पुनः आक्रमण किया जिसमें ऋषि मारे गये। यह कपिला गौ विष्णुने पहिले ब्रह्माको दी, ब्रह्माने भृगुमुनिको और भृगुने जमदग्निको दी थी। जमदग्निकी मृत्युके समय उनके पुत्र परशुराम आश्रमपर नहीं थे, आनेपर अपनी माता रेणुकासे सब हाल सुना। परशुरामने प्रतिज्ञा की कि सहस्रबाहुके साथ इस पृथ्वीको इक्कीस बार क्षत्रिय शून्य कर दूँगा। परशुरामका कार्तवीर्यसे युद्ध हुआ और कार्तवीर्य मारा गया (भाग० ९.१५.२७-३६; ब्रह्मां० ३.३०.५-१५; ३२.६१; ३८.८.२७; ४०-१९; ४१.३७.३८; ४४.१४; ४७.६३.८८)।

कार्तिक–पु० [सं०] एक महीनाका नाम जो आश्विन और मार्गशीर्षके बीचमें पड़ता है। इस महीनेकी पूर्णिमाको चंद्रमा कृत्तिका नक्षत्रमें रहता है, अंतः यह नाम पड़ा। कार्तिकमें सूर्योदयके पहले स्नान करने तथा आकाश दिया बालनेका बड़ा माहात्म्य लिखा है, यह बड़ा पवित्र महीना माना जाता है:—'कार्तिकं सकलं मासं नित्यस्नायी जितेन्द्रियः। जपन् हविष्यभुक्छान्तः सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥'—'मदनपारिजात'। इस व्रतको आश्विन १५

से प्रारम्भ कर कार्तिक शु० १५ को समाप्त करे। घरके वर्तनोंके जलकी अपेक्षा कुआँ, वावली, सरोवर या नदी स्नानके लिए उत्तम है। वहुत लोग कार्तिक माहात्म्य सुनते तथा दान-पुण्य करते हैं। सव दानोंसे वढ़कर कन्यादान है, उससे अधिक विद्यादान है, विद्यादानसे भी गोदानका महत्त्व अधिक है और गोदानसे भी अधिक महत्त्व अन्नदानका लिखा है, क्योंकि समस्त संसार अन्नसे ही जीवित है (वायु० ८०.५४.६१; स्कंद० वै० कार्तिक-माहात्म्य)। इस मासकी नवमी युगादि है। इसमें किया दान अक्षय होता है और द्वादशी मन्वंतर है, यह श्राद्धके लिए प्रशस्त मानी गयी है (दि० अक्षयनवमी; मत्स्य० १७.४)। 'न कार्तिकसमो मासो न कृतेन समं युगम्। न वेदसदृशं शास्त्रं न तीर्थं गंगया समम्॥' (स्कन्द०, वै० खंड, कार्तिक-माहात्म्य १.३६-३७)।

कार्तिकी—स्त्री० [सं०] कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा। इस तिथिको ब्रह्मा, विष्णु, शिव, अंगिरा और आदित्यने महापुनीत पर्व प्रमाणित किया है जिसमें किये स्नान, दान, होम, यज्ञादिका अनन्त फल लिखा है (वायु० ८१.११; मत्स्य० १७.५-८)। यदि इस दिन कृत्तिका हो तो यह 'महाकार्तिकी' होती है; भरणी हो तो विशेष फल देती है और यदि रोहिणी हो तो महत्त्व और वढ़ जाता है (स्मृतिसार)। इसी दिन सायंकालमें मत्स्यावतार हुआ था, अतः इसमें दिये दानादिका दस यज्ञोंके वरावर फल होता है (पद्म०)। यदि इस दिन कृत्तिकापर चंद्रमा और वृहस्पति हों तो यह 'महापूर्णिमा' होती है (ब्रह्म०)। यदि इस दिन कृत्तिकापर चंद्रमा और विशाखापर सूर्य हों तो 'पद्मक' योग होता है जो पुष्करमें भी दुर्लभ होता है (पद्मपुराण)। कार्तिकीको संध्या समय 'त्रिपुरोत्सव' करके दीपदान करनेसे पुर्नजन्मका कष्ट नहीं होता है (भविष्य०)। यदि कृत्तिका नक्षत्रमें विश्वनाथका दर्शन ब्राह्मण करे तो सात जन्मतक वेदपारग और धनवान् होता है (काशीखंड)। चंद्रोदयके समय शिवा, सम्भूति, प्रीति, संनति, अनसूया और क्षमा इन ६ तपस्विनी कृत्तिकाओंका पूजन करे तो शौर्य, वीर्य और धैर्यादि वढ़ते हैं (ब्रह्म०)। कार्तिकीको नक्तव्रत कर वृषदान करनेसे शिवपद प्राप्त होता है (मत्स्य०)। गौ, गज, रथ, अश्व और घृतादिका दान करनेसे संपत्ति वढ़ती है (निर्णयामृत)। इस दिन सोपवास हरिस्मरण करे तो अग्निष्टोमका फल मिलता है तथा सूर्यलोककी प्राप्ति होती है (ब्रह्म०)। सुवर्णके मेषका दान करनेसे ग्रहयोगके कष्ट मिटते हैं (भविष्य०)।

कार्त्तिकेय—पु० [सं०] (गुह) (१) महादेवके पुत्र जिनका लालन-पालन चंद्रमाकी स्त्री कृत्तिकाओंने किया था (वायु० ४१.३८; ७२.४३; विष्णु० १.१५.११६)। इसीसे इन्हें कार्त्तिकेय कहते हैं जिनका दूसरा नाम 'कुमार' भी है (ब्रह्मां० २.२५.१६; ३.१०.४४; ३२.२३; ४१.३२; ४२.६; ४३.३१)। यह देवसेनापति हैं जिनका जन्म तारकासुरका वध करनेके लिए हुआ था। तारकासुरके वधके पश्चात् इन्हें 'तारकारि' कहने लगे (मत्स्य० १६०.१०-२६)। इनकी स्त्रीका नाम देवसेना है जो ब्रह्माकी पुत्री हैं। पुराणमें इनके जन्मका विवरण इस प्रकार है—हिमालयने पार्वती नामकी अपनी पुत्रीका विवाह महादेवजीसे किया पार्वतीजी शिव-वीर्य धारण न सकीं, अतएव पृथ्वी, अग्नि और गङ्गाजीने क्रमशः उस वीर्यको धारण किया। जव गङ्गाजी भी उसे धारण नहीं कर सकीं तो उन्होंने उसे हिमालयके निकटवर्ती शरवनमें फेंक दिया। वहीं तारकारि शरजन्मा उत्पन्न हुए। उन्हें दूध पिलानेके लिए देवताओं द्वारा प्रेरित छह कृत्तिकाओंका समान रूपसे स्तन्यपान करनेके लिए उन्होंने छह मुख धारण किये। इसीलिए उन्हें कार्त्तिकेय और षण्मुख कहा गया (रामायण वाल० ३७.१-३२)। वाणासुर-कृष्ण युद्धमें इन्होंने भाग लिया था, परन्तु गरुड़ और प्रद्युम्नने इनको वेकार कर दिया (विष्णु० ५.३३.२१, २६)। कृत्तिकापुत्र, कुमारने नन्दिपुराणमें नन्दीका माहात्म्य कहा है (मत्स्य० ५.२७; ५३.६१)। यह चैत्र मासकी पूर्णिमाको उत्पन्न हुए थे और छठे दिन ही इंद्रने इन्हें देव-सेनापति वना दिया। सव देवताओंने इनकी स्तुति की तथा विविध उपहार दिये (मत्स्य० १५९.४.१८)। (२) पावकि—रोहित युगके सप्तर्षियोंमेंसे एक ऋषि (ब्रह्मां० ४.१.६२)। (३) सती देवीकी एक मूर्ति यशस्करी देवीके निवासके कारण अति पवित्र एक तीर्थका नाम (मत्स्य० १३.४५)।

कार्त्तिकेयपद—पु० [सं०] यह तीर्थ गयामें है। इस तीर्थमें श्राद्धकर्त्ता अपने पितरोंको शिवलोक पहुँचाता है (वायु० १०९.१९; १११.५४)।

कार्त्तिवय—पु० [सं०] कश्यप कुलका एक गोत्रकार ऋषि (मस्य० १९९.५)।

कार्त्तिवीर्य—पु० [सं०] यदुवंशी राजा कनकके चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (वायु० ९४.८)।

कार्दमायनि—पु० [सं०] भार्गवोंका एक आर्षेय प्रवर-प्रवर्तक ऋषि (मत्स्य० १९५.३४, ४३)।

कार्पटगण—पु० [सं०] एक नास्तिक सम्प्रदाय (ब्रह्मां० ३.१४.३९)। स्वायंभुव मन्वंतरमें भगवदंश प्रमतिने लगातार २० वर्षोंतक पृथिवीमें विचरण करते हुए इस पाखण्ड धर्मविप्लवका नाश किया था (ब्रह्मां० २.३१.५-३७, ६६-८०; ३.७४.२०७)।

कार्यकारणरूपिणी—स्त्री० [सं०] ललिता देवीका एक नाम (ब्रह्मां० ४.१५.८)।

कार्यपंचक—पु० [सं०] ईश्वरके पाँच विशेष काम अर्थात् अनुग्रह, तिरोभाव, आदान, स्थिति और उद्भव।

कार्ष्णायन—पु० [सं०] छह प्रकारके गौर पराशर, नील पराशर, कृष्ण पराशर, श्वेत पराशर, श्याम पराशर तथा धूम्र पराशरों, जिनमें प्रत्येक प्रकारमें पाँच-पाँच व्यक्ति हैं, मेंसे कृष्ण पराशरोंके वर्गका एक ऋषि (मत्स्य० २०१.३५)।

कार्ष्णि—पु० [सं०] (१) श्रीकृष्णके पुत्र प्रद्युम्नका एक नाम (भाग० १०.७६.२८)। (२) कामदेवका एक नाम या उपाधि। (३) व्यास-पुत्र शुकदेवका एक नाम। (४) एक गंधर्व विशेषका नाम (श्रीकृष्ण, व्यास या कामदेवसे संवंध रखनेवाला)।

कार्ष्णेय—पु० [सं०] खशाकी सात पुत्रियोंमेंसे तीसरी कृष्णासे उत्पन्न एक राक्षसगण (वायु० ६९.१७२)।

काल—पु० [सं०] (१) ग्यारह रुद्रोंमेंसे एकका नाम (भाग० ३.१२-११)। (२) सर्वशक्तिमान् ईश्वरका एक रूप—समय (भाग० १.६.४; ११.६; १३.४७; २.१०.४५; ८.१७.२७)। यह ईश्वर ही है, केवल रूपभेद है (भाग० ३.१२.१२; २९.४, ३७, ४६; १०.५१.१९)। यह सारी सृष्टि तथा महाप्रलयका अधिपति है (भाग० ४.१२.३; वायु० ३२.११.२२)। सब इसके अधिकारमें है। यह संसारके प्रत्येक पदार्थको बनाता और बिगाड़ता रहता है (विष्णु० ५.३८.५५-६४)। (३) मृत्युका अधिपति या मृत्युका एक नाम। राहु ग्रहका अधिदेवता (ब्रह्मां० २.३६.१२८; मत्स्य० ९३.१४; २१३.५, १८)। इसके चार मुख हैं, प्रत्येक एक युगका द्योतक है (वायु० ३२.८-७७)। (४) आठ वसुओंमें अन्यतम अर्थात् द्वितीय वसु ध्रुवका पुत्र (ब्रह्मां० ३.३.२२)। (५) धर्म और विश्वाके दस विश्वेदेव पुत्रोंमेंसे एक विश्वेदेव (ब्रह्मां० ३.३.३०; मत्स्य० ५.२३; २०३.४; वायु० ६६.२१.३१; विष्णु० १.१५.११२)। (६) एक भैरव देवता (ब्रह्मां० ३.२०.८२)। (७) ब्रह्मा या अव्यक्तसे उत्पन्न (विष्णु० १.२.१४, १५,२७)। (८) सितोद झीलके पश्चिममें स्थित एक पर्वत (वायु० ३६.२७)। (९) समयका विभाजन तथा परमाणुकी व्याख्या—

२ परमाणु=१ अणु।
३ अणु =१ त्रसरेणु
३ त्रसरेणु=त्रुटि।
१०० त्रुटि=१ वेध।
३ वेध=१ लव।
३ लव=१ निमेष।
३ निमेष=१ क्षण
५ क्षण=१ काष्ठा।
१५ काष्ठा=१ लघु।
१५ लघु=१ नाड़िका।
२ नाड़िका=१ मुहूर्त्त।
६ या ७ नाड़िका=१ प्रहर या याम।
४ याम=१ दिन या रात।
१५ दिन और रात=१ पक्ष।
२ पक्ष=१ मास या पितरोंका एक दिन और रात।
२ मास=१ ऋतु।
६ मास=१ अयन।
२ अयन=१ वर्ष।
वर्ष सौर, बार्हस्पत्य, सावन, चान्द्र, नाक्षत्र मासोंके भेदसे पाँच प्रकारका है—(१) संवत्सर, (२) परिवत्सर, (३) इडावत्सर, (४) अनुवत्सर और (५) वत्सर।
१ दिन ब्रह्माका=१४ मनुओंकी अवधि।
१ रात ब्रह्माकी=प्रलयकी अवधि।

(भाग० ३.११. पूरा; ब्रह्मां० २.२४.५८; १३.१०९-११५; वायु० ५०.१७९-८२; ९७.३०-३१)।

ये सब सूर्यपर आधारित हैं (वायु० ३१.२४; ५३.३९)।

कालअशुद्धि—स्त्री० [सं०] जन्म अथवा मरण अशौच या सूतक अर्थात् किसीके मरनेके पश्चात् शोक या स्यापा मनानेकी अवधि। 'दशाहे ब्राह्मणः शुद्धो द्वादशाहेन क्षत्रियः। वैश्यः पञ्चदशाहेन शूद्रो मासेन शुद्ध्यति ॥' (ब्रह्म० २२०.६३; अन्त्यकर्मदीपक, म० म० नित्यानन्दपन्त पर्वतीय विरचित)।

कालकंटक—पु० [सं०] भगवान् शंकरका एक नाम (हि० श० सा०)।

कालक—पु० [सं०] (१) एक देश जो महाभाष्यकार पतंजलिके समयमें आर्यावर्तकी पूर्वी सरहद माना जाता था (हिं० श० सा०; पतंजलिचरित)। (२) एक राक्षसका नाम जो वैश्वानरकी कालका नामक पुत्रीके गर्भसे उत्पन्न कश्यप ऋषिका एक पुत्र था—दे० कालक। (३) विजरके दो पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (ब्रह्मां० ३.६.३३)।

कालकन्या—स्त्री० [सं०] कालकी पुत्री। दे० दुर्भगा (भाग० ४.२७.२७)।

कालका—स्त्री० [सं०] वैश्वान्तर दानवकी चार पुत्रियोंमेंसे एक पुत्रीका नाम जो कश्यप ऋषिको ब्याही थी और कालकेय नामके असंख्य पुत्रोंकी माता थी (दे० कालक तथा रामायण और महाभा० आदि० ६५.३५) और पुलोमा इसकी बहिन थी। दोनों कश्यपको ब्याही थीं जिनके ६०,००० पुत्र थे (भाग० ६.६.३३-३४; मत्स्य० ६.२२)। इनके पुत्रोंको कालकेय और पौलोम दानव कहते हैं (विष्णु० १.२१.८-९)।

कालकाम—पु० [सं०] विश्वाके दस पुत्र विश्वेदेवों (१ क्रतु, २ दक्ष, ३ वसु, ४ सत्य, ५ कालकाम, ६ मुनि, ७ कुरज, ८ मनुज, ९ बीज, १० रोचमान) मेंसे एक (मत्स्य० २०३.१३)।

कालकुण्ठ—पु० [सं०] यमराज, धर्मराजका नाम (हि० वि० को०)।

कालकूट—पु० [सं०] (१) समुद्रमंथनसे निकला भयानक विष जिसे भगवान् शंकरने अपने कण्ठमें रख लिया था और तभीसे उनका नाम नीलकण्ठ पड़ गया (ब्रह्मां० २.२५.६०; ३.२५-९; ४.२३.३०; मत्स्य० २५०.२०-६०; वायु० ५४.५७-९, ६३, ९५)। 'ततः करतलीकृत्य व्यापि हालाहलं विषम्। अभक्षयन्महादेवः कृपया भूतभावनः ॥' (भाग० ८.७.४२)। (२) त्रिपुरासुरका आश्रित एक दैत्य (गणेश० १.४३)।

कालकेतु—पु० [सं०] एक राक्षसका नाम जिसका उल्लेख तुलसीदासने रामचरितमानसमें किया है—'कालकेतु निशिचर तहँ आवा। जेहि शूकर है नृपहिं भुलावा।' (रामचरितमानस बाल० दो० १६९. चौ० २)।

कालकेय—पु० [सं०] कश्यपके दानव पुत्र जो कालकाके गर्भसे उत्पन्न हुए थे (मत्स्य० १७१,५९)। इन्हें रावण और दुर्गाने परास्त किया था (ब्रह्मां० ३.७.२५५)। यह देवकूट पर्वतपर रहते हैं (वायु० ४०.१५)। कालकंज भी इनका

नामान्तर कहा गया है।

कालगंगा–स्त्री० [सं०] (१) यमुना नदीका काला जल होनेके (महाभा० सभा० ९।१२) कारण एक नाम। यह यमराजकी वहिन हैं (दे० यमुना, यमी, मार्कण्डेय०)। (२) लंकाकी एक नदीका नाम (हि० श० सा०)।

कालगौतम–पु० [सं०] एक ऋषिका नाम (हि० श० सा०)।

कालचक्षु–पु० [सं०] ययाति और शर्मिष्ठाकेसुत अनुके तीन महावली पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (ब्रह्मां० ३.७४.१३)।

कालचक्र–पु० [सं०] (१) राजा वालिके द्वीप-द्वीपान्तरोंमें स्थित महावलवान् सेनापति प्रधान वानरोंमेंसे एक प्रधान वानरका नाम (ब्रह्मां० ३.७.२३५)। (२) समयका चक्र। मत्स्य पुराणमें पूर्वाह्न, मध्याह्न, अपराह्नको कालचक्रकी नाभि; संवत्सर, परिवत्सर आदिको अर और छह ऋतुओंको नेमि लिखा है। सूर्य पृथ्वी और स्वर्गके वीचमें स्थित है और इसका सम्वन्ध कालचक्रसे है। अट्ठाइसों नक्षत्र अभिजित् सहित जो मेरु पर्वतके दाहिने हैं, इसी चक्रपर स्थित हैं (भाग० ५.२२.२-११; २३.३; मत्स्य० १६२.१.१९; विष्णु० २.८.४)। यह महाकालका स्थान है (ब्रह्मां० ४.३२.७, १८-२०)।

कालजंघिका–स्त्री० [सं०] अन्धकासुर-युद्धमें महादेवजी धारा सृष्ट एक मानस-पुत्री मातृका देवीका नाम (मत्स्य० १७९.२३)।

कालजिह्वा– स्त्री० [सं०] इक्यावन वर्णोंकी ५१ शक्तियोंमेंसे एक शक्तिका नाम (ब्रह्मां० ४.४४.७६)।

कालञ्जर–पु० [सं०] एक पहाड़ जो मेरुके उत्तर ओरकी तलहटीमें है। यह कालीका पवित्र स्थान है (मत्स्य० १३.३२) जहाँ जड़ भरत मृगके रूपमें उत्पन्न हुए थे (भाग० ५.१६.२६; ८-३०; ब्रह्मां० ३.१३.१००; विष्णु० २.२.३०)। कौशिकके १० पुत्रोंका पुनर्जन्म भी मृगोंके रूपमें यहीं हुआ था और पूर्व जन्मकी बातें स्मरण कर ये तप करने लगे थे (मत्स्य० २०.२५; २१.९-२८)। यह पर्वतोंमें सर्वश्रेष्ठ है जहाँ भगवान् विष्णुका श्वेत अवतार हुआ था– ‘तत्र कालं जरिष्यामि तदा गिरिवरोत्तमे। तेन कालंजरो नाम भविष्यति स पर्वतः ॥’ (वायु० २३.२०४)।

कालतोयक–पु० [सं०] उत्तरके एक राज्य तथा देशका नाम (ब्रह्मां० २.१६.४६; ३.७४.१९६; मत्स्य० ११४.४०)। मणिधान्यज राजाओं द्वारा उपभुक्त एक जनपद (वायु० ९९.३८४)।

कालदंष्ट्र–पु० [सं०] इन्द्र द्वारा पृथ्वीपर राक्षसोंका विनाश करनेके निमित्त वायुके साथ अग्निको आज्ञा देनेपर एक असुर जो जलनेके भयसे अन्यान्य असुरोंके साथ समुद्रमें घुस गया था (मत्स्य० ६१.४)।

कालनर–पु० [सं०] (कालानल=वायु०)—सभानरके पुत्र तथा सृञ्जयके पिताका नाम (भाग० ९.२३.१; वायु० ९९.१३)।

कालनाथ–पु० [सं०] (१) कालके रूपमें महादेव। (२) कालभैरव जिनका मंदिर काशीमें है और यह काशीके कोतवाल कहे जाते हैं (दे० कालभैरव तथा ब्रह्मां० ४.१६.१२)।

कालनाभ–पु० [सं०] (१) सिंहिका और विप्रचित्तिके दानवश्रेष्ठ अनेक पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (विष्णु० १.२१.१२)। (२) हिरण्याक्ष और भानुका एक पुत्र तथा हिरण्यकशिपुका भतीजा। यह हिरण्याक्षके नव (वायु० और ब्रह्मां० के अनुसार पाँच) पुत्रोंमेंसे एक था। वलि और इंद्रके देवासुर-संग्राममें यह लड़ा था। यमसे इसका संग्राम हुआ था। वृत्रासुर-संग्राममें यह इंद्रसे लड़ा था (भाग० ७.२.१८; वायु० ६७.६७; मत्स्य० ६.२७; ब्रह्मां० ३.५.३०; भाग० ८.१०.२०, २९; ६.१०.२०; विष्णु० १.२१.३)। यह सैंहिकेय (सिंहिका-पुत्र) असुर था (ब्रह्मां० ३.६.२०; वायु० ६८.१९)।

कालनेमि–पु० [सं०] (१) एक राक्षस जो रावणका मामा था। इसने हनुमानजीको उस समय छलना चाहा था जब वह लक्ष्मणके लिए संजीवन बूटी लाने जा रहे थे (रामायण लंकाकाण्ड)। (२) एक दानव जिसने देवताओंको हराकर स्वर्गको अपने अधिकारमें कर लिया था। यह विरोचनका पुत्र था और इसके १०० मुख और भुजाएँ थीं। इसने अपने शरीरको चार भागोंमें बाँटकर सव लोकपालोंकी समृद्धि और सामर्थ्य हरते हुए घोर युद्ध किया था। कालनेमि अपने शूलसे विष्णुको मारना चाहता था, पर यह तारकामय युद्धमें विष्णुके हाथों चक्रसे मारा गया (भाग० १०.१.६८; ८.१०.५६; १०.५१.४२; विष्णु० ५.१.२१.२२.६४)। मृत्युके वाद वैरशोधन करनेके लिए दूसरे जन्ममें यही दानव श्रीकृष्णका मामा हुआ था जो कंसके नामसे प्रसिद्ध था (ब्रह्मां० ३.७२.२१; मत्स्य० १४८.४२-५१; १५०.१४०-१८९; १५४.३; १६०.३-१८; १७६.५३; १७७-७८ अध्याय; वायु० ९७.२२)। (३) हिरण्यकशिपु-पुत्र संह्लादका एक पुत्र। इसके चार पुत्र थे—ब्रह्मजित्, क्रतुजित्, देवान्तक तथा नरान्तक (ब्रह्मां० ३.५.३१-३९)। (४) रावणके एक चाचाका नाम। रावणने हनुमानके मारनेका भार इसे सौंपा था, पर यह स्वयम् हनुमानसे मारा गया था (रामचरितमानस, लंकाकाण्ड, दो० ५५-५८)।

कालपथ–पु० [सं०] विश्वामित्र ऋषिका एक पुत्र (महाभा० अनु० ४-५०)।

कालपर्णी–स्त्री० [सं०] अन्धकासुर-रक्तपानके लिए महादेवजी द्वारा सृष्ट एक मानस-पुत्री मातृकाका नाम (मत्स्य० १७९.२२)।

कालपुरुष– पु० [सं०] यमराजका एक नाम जो ब्रह्माके पौत्र तथा सूर्यके पुत्र हैं। यह तपस्वीके वेशमें अयोध्यापति रामके पास आये और एकान्तमें जा अपना असली रूप धारण कर श्रीरामसे स्वर्ग चलनेको कहा। इसी समय दुर्वासा ऋषि राम-दर्शनके लिए आये। लक्ष्मणजी जहाँ कालपुरुष थे वहीं श्रीरामको ऋषिके आगमनकी सूचना देने गये। ठहरावके अनुसार रामजीने अपने भाई लक्ष्मणका परित्याग कर दिया। इनके ६ मुख, १२ हाथ, २४ आँखें और ६ पैर हैं। इनका रंग काला तथा उग्र रूप इनके शरीरको और भी भयङ्कर बना देता है। यह लाल वस्त्र धारण करते हैं (रामायण उत्तर० १०३.१-१७ आदि)।

कालपृष्ठ–पु० [सं०] (१) कुन्तीके गर्भसे उत्पन्न सूर्यके पुत्र दानवीर कर्णके धनुषका नाम (हि०. वि० को०)। (२) कश्यपका दितिसे उत्पन्न एक दैत्य पुत्र। इसने तपस्या कर

यह वरदान माँगा कि जिसके सिरपर मैं हाथ रखूँ वह भस्म हो जाय। बादमें यह इसका प्रयोग शंकरजीपर करनेको उतारू हो गया। भगवान् विष्णुने मोहिनी रूप धारण कर इसे अपने ही सिरपर हाथ रखकर वरकी सत्यताके परीक्षणके लिए उद्यत कर भस्म करा दिया (स्कन्द० ५.३.६७)। (३) एक सर्प (नाग), जो त्रिपुरासुर विनाशके समय शंकरजीके रथमें जुते हुए अश्वोंके केसर बाँधनेके लिए रज्जु (रस्सी) बनाया गया था (महाभा० कर्ण० ३४.२९-३०)।

कालभवन–पु० [सं०] यक्षोंके विविध गणोंमेंसे एक गण (वायु० ६९.४०)।

कालभीति–पु० [सं०] काशीपुरीके माण्टी नामक ब्राह्मणका पुत्र, जो मांटीकी चिर शिवभक्तिसे शिवके वरदानस्वरूप उत्पन्न हुआ था। कालमार्ग नामक असुरसे भयभीत होकर काँपने और रोनेके कारण शंकरकी विभूतियोंने इसका नाम 'कालभीति' रखा था। महीसागर-संगम तीर्थमें एक बिल्व-वृक्षके नीचे एक शिवलिंग आपसे-आप प्रकट हुआ। इस शिवलिंगको 'महाकाल' कहते हैं। इसकी उपासना इन्होंने की। शिवकी कृपासे इनको कालपर विजय मिली, अतः यह भी महाकाल कहलाये (स्कंद० मा० कुमा० खंड)।

कालभैरव–पु० [सं०] शिवके एक अनुचर जो उन्हींके अंशसे उत्पन्न कहे जाते हैं। ब्रह्मतत्त्व-ज्ञानहीन ब्रह्माका पाँचवाँ मस्तक काटनेके लिए इनकी उत्पत्ति हुई थी। काशीके पापियोंको उचित दण्ड यही देते हैं—दे० कालनाथ।

कालमूर्ति–पु० [सं०] वानरराज वालिके सामन्त नल, तार, पनस, गन्धमादन, गवय आदि महाबली वानर श्रेष्ठोंमेंसे एक वानर सरदारका नाम (ब्रह्मां० ३.७.२३३)।

कालमृत्यु–पु० [सं०] सर्वलोकभक्षक श्यामशरीर महाकालके एक भृत्यका नाम (ब्रह्मां० ४.३२.५)।

कालयवन–पु० [सं०] हरिवंशके अनुसार अति पराक्रमी यवनपति। गार्ग्य ऋषिका पुत्र जो गोपाली नामकी अप्सराके गर्भसे उत्पन्न हुआ था। क्रोधवश मथुरावालोंसे बदला लेनेकी इच्छासे ही ऋषिने इसे उत्पन्न किया था। जरासंधके साथ इसने भी मथुरापर चढ़ाई की थी। जब श्रीकृष्णको यह मालूम हुआ कि मथुराके निवासी इसे परास्त नहीं कर सकते, तब उन्होंने एक चाल चली। एक गुफामें मान्धाताके पुत्र राजा मुचुकुन्द सो रहे थे। 'मुचुकुन्दको जगानेवाला जलकर भस्म हो जायगा' यह वर उन्हें प्राप्त था। श्रीकृष्ण उसी गुफामें जा छिपे। कालयवन गुफामें घुसकर मुचुकुन्दको कृष्ण समझ पैरकी ठोकरोंसे जगाने लगा। मुचुकुन्द उठे और उन्हींकी कोपदृष्टिसे वरके फ़लस्वरूप कालयवन वहीं जलकर भस्म हो गया (भाग० १०.५०.४४-९; ५१.१-१२; विष्णु० ५.२३.५-८, १७-२३)।

कालयावी–पु० [सं०] प्राचीन कालके एक महर्षिका नाम। यह महर्षि वाष्कलिके शिष्य और ऋग्वेदके अध्यापक थे।

कालरात्रि–स्त्री० [सं०] (१) प्रलयकी रात। ब्रह्माकी रात्रि जिसमें सारा संसार तो लय हो जाता है, केवल नारायण ही बचे रहते हैं—दे० नारायण। (२) कार्त्तिक बदी अमावस्याकी रात अर्थात् दिवालीकी रात (दिवाली)। (३) यमराजकी बहिनका नाम। यह सब प्राणियोंका नाश करती है। (४) एक वर्ण शक्ति (ब्रह्मां० ४.४४.६०)। (५) दुर्गा देवीके नौ नामों या रूपोंमेंसे एक।

कालवंदि–पु० [सं०] एक राज्यका नाम जो घोड़ोंके लिए विख्यात था (ब्रह्मा० ४.१६.१७)।

कालवाशित–पु० [सं०] भण्डके एक सेनापतिका नाम (ब्रह्मां० ४.२१.७७)।

कालवीर्य–पु० [सं०] सिंहिका और विप्रचित्तिके १३ पुत्रोंमेंसे (इनके १०० पुत्र कहे गये हैं) एक, हिरण्यकशिपुका एक भानजा (मत्स्य० ६.२८)।

कालशंबर–पु० [सं०] एक मायावी दैत्य, जो प्रद्युम्नको जन्मके छठे दिन हर ले गया था। बादमें प्रद्युम्न द्वारा मारा गया था (विष्णु० ५.२७.३, २०)।

कालशिख–पु० [सं०] वशिष्ठवंशज ऋषियोंमेंसे एक ऋषिका नाम (मत्स्य० २००.८)।

कालसंकर्षणी–स्त्री० [सं०] नृसिंहकी पीठसे उत्पन्न होनेवाली आठ मातृका देवियोंमेंसे एक देवी जो वागीशीकी अनुगामिनी कही गयी है। अन्धकासुर रक्तपानके लिए महादेवजी द्वारा सृष्ट मानस मातृका देवियोंके उत्पात शमनार्थ इनकी सृष्टि हुई थी (मत्स्य० १७९.६८)।

कालसर्पि–पु० [सं०] कश्यप तीर्थका एक नाम जो कश्यप ऋषिको अति प्रिय था। यह श्राद्धके लिए अति उपयुक्त समझा जाता है और देवदारु वनके लिए विख्यात है (ब्रह्मां० ३.१३.९८-९; वायु० ७७.८७)। इसका विस्तार १० हजार योजन है। यह ऊपर और नीचे अग्नि और सूर्यसे तप्त रहता है।

कालसूत्र–पु० [सं०] अट्ठाइस मुख्य नरकोंमेंसे एकका नाम। जो पितरों तथा ब्राह्मणोंसे द्रोह और विश्वासघात करते हैं, वे इसके भागी होते हैं (भाग० ५.२६.७.१४; वायु० ११०.४२; विष्णु० १.६.४१; २.६.४)। यह पृथ्वीके नीचे है जिसे महाहि भी कहते हैं (ब्रह्मां० ४.२.१८१, १८४; ३३.६०)। पृथ्वीके नीचे यह तीसरा नरक है। इसका नाम 'महाहविविधि' भी है। यहाँ निकृन्तन नामका एक बड़ा भयंकर सर्प रहता है (वायु० १०१.१७८)।

कालसेन–पु० [सं०] एक डोमका नाम जिसका नाम प्रवीर भी मिलता है (मार्कण्डेय०)। पुराणानुसार इसने ही (विश्वामित्रकी दक्षिणा देनेके लिए) राजा हरिश्चन्द्रको मोल लिया था। यह काशीके हरिश्चन्द्र घाटपर रहता था। कहते हैं यह साक्षात् धर्मराज ही था (मार्कण्डेय०)।

काला–स्त्री [सं०] (१) चन्द्रभागामें स्थापित सतीदेवीकी एक मूर्ति (मत्स्य० १३.४९)। (२) दक्षकी पुत्री तथा कश्यपकी पत्नी (मत्स्य० १७१.२९; वायु० ६६.५४)। यह कालकेयगणकी माता है (मत्स्य० १७१.५९)।

कालात्मा–पु० [सं०] युगाभिमानी, रुद्र (वायु० ३१.५५; ६६.१२६)।

कालानल–पु० [सं०] (१) अनु-सुत सभानरका पुत्र जो पण्डित था। यह संजयका पिता था (ब्रह्मां० ३.७४.१३; विष्णु० ४.१८.२-३)। (२) संवर्ताग्नि (ब्रह्मां० २.२५.४५,५६)।

कालाम्र–पु० [सं०] भद्राश्व देशका एक वृक्ष जिसके फलोंके रसमें स्त्रियोंकी जवानी सुरक्षित रखनेकी शक्ति है (ब्रह्मां० २.१५.५८)। भद्राश्व देशके शालवनमेंका एक वृक्ष जिसका

रस पान करनेसे युवावस्था सुरक्षित रहती है (वायु० ४३.६)।

कालायनि—पु० [सं०] ऋग्वेद-शाखाप्रवर्तक वाष्कलके ३ शिष्योंमेंसे एक शिष्य (विष्णु० ३.४.२५)।

कालायसशाल—पु० [सं०] मेरुके चार शिखरोंमेंसे एक। वहाँ स्थापित श्रीपुरम्‌का प्रथम प्राकार (ब्रह्मां० ४.३१.-३४.५०)।

कालाष्टमी—स्त्री० [सं०] (१) मार्गशीर्ष कृष्णाष्टमीको उपवास कर रात्रि जागरण करे तो व्रती शैव वन जाता है (शिवरहस्य)। (२) यदि भाद्रपद कृष्णा अष्टमीको मृगशिरा हो तो शिवपूजन कर यह व्रत करे (हेमाद्रि)।

कालिंग—पु० [सं०] यहाँके राजा अनिरुद्धके विवाहमें उपस्थित थे। इन्होंने रुक्मीसे वलरामको जुआ खेलनेके लिए आमन्त्रित करनेकी राय दी थी। हारनेके पश्चात् वलरामका उपहास करनेपर वलरामने इनके दाँत उखाड़ डाले थे (भाग० १०.६१.२७-३७)।

कालिंगक—पु० [सं०] कलिंगनिवासी भीष्मपितामहका एक जातिस्मर ब्राह्मण मित्र जिसने उन्हें यम-यातनासे छुटकारा पानेके साधन वतलाये थे (विष्णु० ३.७.९-१२, ३८)।

कालिंजर—पु० [सं०] वाँदासे तीस मील पूर्वका एक पर्वत जो एक पुराणोक्त तीर्थ है। यह संसारके नौ ऊखलोंमेंसे एक माना जाता है। इसका माहात्म्य उत्तरकाण्ड रामायण, महाभारत, हरिवंश, गरुड, मत्स्य आदि पुराणोंमें यथेष्ट दिया हुआ है। यहाँपर नीलकण्ठ महादेवका एक वड़ा प्राचीन मंदिर है। महमूद गजनीने इस नगरकी वड़ी क्षति की थी (मत्स्य० १८१.२७)।

कालिंद—पु० [सं०] विक्रान्त द्वारा अश्वमुखीसे उत्पादित किन्नरोंमेंसे, जिनका मुख घोड़ेका-सा होता है, एक किन्नर (वायु० ६९.३२)।

कालिंदी—स्त्री० [सं०] (१) केतुमाल देशकी एक नदीका नाम (वायु० ४४.२१)। (२) कलिंद पर्वतसे निकली यमुना नदीका नाम (विष्णु० ५.७.२; १८.३४; ६.८.३६)। (३) अयोध्यापति राजा असितकी पत्नी तथा राजा सगरकी माताका नाम (हिं॰श॰सा॰); परन्तु नारद० पूर्व भाग—प्रथम पादके अनुसार सगर महाराज वाहुके पुत्र थे जो यादवीके गर्भसे पिताकी मृत्युके पश्चात् उत्पन्न हुए थे—दे० (वाहु, सगर)। (४) रवि और संज्ञाकी पुत्री (वायु० ८४.३६)। (५) श्रीकृष्णकी एक पत्नीका नाम। सूर्यकी एक पुत्री जो श्रीकृष्णकी खोजमें वनमें घूमती थी। इसने अर्जुनसे कह श्रीकृष्णसे विवाह किया था। द्रौपदीने इसका हस्तिनापुरमें स्वागत किया जिनसे इसने अपने विवाहका रहस्य कहा (भाग० १०.५८.१७-२३; २९.७१.४३; ८३.११; मत्स्य० ४७.१४)। यह देवी थी और श्रुत आदि दस पुत्रों—श्रुत, कवि, वृष, वीर सुवाहु, भद्र, एकल, शान्ति, दर्श, पूर्णमास और सोमक (भाग० १०.६१-१४) की माता थी (वायु० ९६.२३४; विष्णु० ५.२८.३; ३२.४)। (६) उड़ीसाका एक वैष्णव संप्रदाय जिसके अनुयायी छोटी जातिके मनुष्य ही अधिक हैं (स्कंद० उत्कलखंड)।

कालिंदीभेदन—पु० [सं०] श्रीकृष्णके वड़े भाई वलराम जो अपने हलसे यमुनाको वृंदावन खीच लाये थे (भाग० १०.६५.२३-२५)।

कालिक—पु० [सं०] (१) सामगश्रेष्ठ कृतके चौवीस शिष्योंमेंसे एक शिष्य (ब्रह्मां० २.३५.५१; वायु० ६१.४४)। (२) मयके रंभामें उत्पन्न छः महावली पुत्रोंमेंसे एक पुत्र। मन्दोदरी इन्हींकी वहिन थी (ब्रह्मां० ३.६.२९)।

कालिका—स्त्री [सं०] (१) एक शक्तिका नाम। शुंभ और निशुंभके अत्याचारोंसे पीड़ित इंद्रादिक देवताओंकी प्रार्थनापर एक मातंगी प्रकट हुई जिसके शरीरसे इस देवीका आविर्भाव हुआ। काला वर्ण होनेके कारण इन्हें 'कालिका' कहते हैं। यह भयसे रक्षा करती हैं, अतः इन्हें 'उग्रतारा' भी कहते हैं। इनके सिरपर एक जटा होनेके कारण इनका नाम 'एकजटा' भी है। इनके साथ आठ योगनियाँ भी हैं जिनके नाम ये हैं—महाकाली, रुद्राणी, उग्रा, भीमा, घोरा, भ्रामरी, महारात्रि और भैरवी (ब्रह्मां० ४.४४.८६)। (२) पितरोंके श्राद्धके लिए एक प्रशस्त और पवित्र नदी (मत्स्य० २२.३६)।

कालिकापुराण—पु० [सं०] देवी भागवतके अन्तर्गत एक उपपुराणका नाम। इसमें देवीमाहात्म्यका विस्तृत वर्णन है और इसके लेखक श्री व्यासदेव हैं। इसमें ९००० श्लोक और ९८ अध्याय हैं जिनमें शाक्त-मतकी प्रधानता है—दे० कामरूप।

कालिय—पु० [सं०] (१) एक दानव राजाका नाम (ब्रह्मां० ४.२९.१२४)। (२) 'क्रोधवश' वर्गका एक सर्पराज जो कद्रूका पुत्र था। गरुड़के भयसे यह समुद्र छोड़कर व्रजके समीप एक सरोवरमें छिपकर रहता था जिसका जल पीनेवाला विषके कारण मर जाता था। श्रीकृष्णने इसे वशमें किया था और इसे पुनः समुद्रमें भेज दिया था और गरुड़के भयसे मुक्त किया (भाग० ५.२४.२९; १०.१६ अध्याय पूरा; १७.१-१२; १०.४३.२६ तथा हरिवंश)। वायु० ५०.१८; ६९.७२ के अनुसार यह अतल लोक चला गया था, पर ब्रह्मांड और मत्स्य पुराणानुसार यह 'तलातल' गया था।

कालियनाग—पु० [सं०] 'कालीदह' (व्रजके समीपस्थ यमुनाजलका एक सरोवर) में रहनेवाला एक अति विषाक्त सर्प जिसे श्रीकृष्णने परास्त कर इसके तथा इसकी पत्नियोंके आग्रहपर जीवित छोड़ दिया था तथा सदाके लिए समुद्रमें जा रहनेको वाध्य किया था (विष्णु० ५.७.३ से अन्ततक; १३.४) तथा दे० कालिय।

काली—पु० [सं०] (१) एक मातृका देवी तथा वर्ण शक्ति जो कालंजरमें स्थापित हैं। दश महाविद्याओंके अन्तर्गत प्रथम (ब्रह्मां० ४.७.७२; ४४.५९,७६)। कालिका पुराणानुसार इनके चार हाथ हैं, दाहिनेमें खट्वांग और चन्द्रहास तथा वाँये दोनों हाथोंमें ढाल और पाश है। नरमुण्डोंकी माला इनका आभूषण है, व्याघ्रचर्म इनका वस्त्र, मस्तक शून्य तथा शव इनका वाहन है। इन्होंने तारकामयमें भाग लिया था और सवको अन्धकारमें लपेट लिया था (मत्स्य० १३.३२; १७२.१९; कालिका पुराण)। (२) कालिका, दुर्गा। (३) पार्वती, गिरिजाका एक नाम (हिं॰श॰सा॰)। (४) भीमसेनकी एक पत्नीका नाम जो सर्वगतकी माता थीं (भाग० ९.२२.३१)। (५) कालचक्रकी

एक द्वारपाल महाकालकी देवियोंमेंसे एक। ये चार हैं। चारकी चार महाकालकी स्त्रियाँ हैं (ब्रह्मां० ४.३२.१८)। (६) दासेयी (मत्स्यगंधा) जिसके गर्भसे शंतनुका पुत्र विचित्रवीर्य उत्पन्न हुआ था (मत्स्य० ५०.४५)। (७) अन्धकासुर-रक्तपानार्थ श्री शिवजी द्वारा सृष्ट वहुत-सी मानसपुत्री मातृकाओंमेंसे एक मानस-पुत्री मातृका (मत्स्य० १७९.१४, २६)। (८) अन्धकासुर विनाशके अनन्तर जगद्-भक्षणके लिए उद्यत शिवसृष्ट मानस मातृकाओंके उत्पात-शमनार्थ नृसिंहकी अस्थियोंसे उत्पन्न हुई चार देवियोंमेंसे एक देवी जिसको रेवती भी कहते हैं, इसकी आठ अनुगामिनी देवियाँ—आकर्णनी, संभटा, उत्तरमालिका, ज्वालामुखी, भीषणिका, कामधेनु, वालिका और पद्मकरा—हैं। (मत्स्य० १७९.६४)। (९) पराशर मुनिकी पत्नीका नाम जिसके गर्भसे कृष्णद्वैपायन उत्पन्न हुए थे। इसका मत्स्यगंधा नाम भी था (वायु० ७०.८४; ब्रह्मां० ३.८.९२)। (१०) श्राद्धके लिए उपयुक्त एक पवित्र नदीका नाम (मत्स्य० २२.२०)। (११) चैद्य उपरिचरकी गिरिकासे उत्पन्न सात सन्तानों (छः पुत्र १ पुत्री)मेंसे एक पुत्री (मत्स्य० ५०.२८)।

कालीदह—पु० [सं०] एक सरोवर या कुण्डका नाम जो वृंदावन स्थित यमुना नदीका एक कुण्ड है। गरुड़के भयसे कालिय इसीमें रहता था, क्योंकि सौभरि ऋषिके शापके कारण गरुड़ यहाँ नहीं आ सकता था (भाग० १०.१६.४, ६३; १७.१-११; विष्णु० ५.७.१९, ७८)। श्रीकृष्णने कालिय-दमन यहीं किया था (विष्णु० ५.७.३ से अन्ततक; १३.४)।

कालेय—पु० [सं०] (१) एक दानवगणका नाम। ये विप्रचित्तिकी कन्या कालासे उत्पन्न हुए थे, जो अमृतमंथनमें विलकुल थककर पस्त हो गये थे (भाग० ८.७.१४) (२) पाँच आत्रेयपुत्रिका-पुत्रोंमेंसे, जो त्र्यार्षेय प्रवर थे, एक आत्रेय-पुत्रिका-पुत्र (मत्स्य० १९७.९)।

कालेयगण—पु० [सं०] रसातलके निवासी दानव जो विप्रचित्तिसुता कालाकी सन्तति हैं। इंद्र-वलिके देवासुर-संग्राममें ये सब वसुओंसे लड़े थे (भाग० ५.२४.३०; ८.१०.२२,३४)।

कालेश्वर—पु० [सं०] नर्मदातटका एक तीर्थस्थान जो ललिता पीठके लिए विख्यात है (ब्रह्मां० ४.४४.९७; मत्स्य० १९१.८५)।

कालोदर—पु० [सं०] एक पूर्वी राज्य जहाँसे होकर ह्लादिनी नदी वहती है (ब्रह्मां० २.१८.५५)। यहाँके निवासी भी इसी नामसे पुकारे जाते हैं (वायु० ४७.५२)।

कावेरी—स्त्री० [सं०] (१) दक्षिण भारतकी एक नदी जिसे हव्य-वाहन (अग्नि) की १६ नदी पत्नियोंमेंसे एक कहा जाता है। इसके नर्मदा-संगमपर कुवेरने १०० वर्षतक तपस्या की थी। उसकी तपस्यासे प्रसन्न होकर शिवजीने उसे सव यक्षोंका अधिपति वना दिया। शिवकी स्तुति कर उसने महासिद्धि प्राप्त की थी। कावेरी-नर्मदासंगम सव पापोंका विनाशक उत्तम तीर्थ है (ब्रह्मां० २.१२.१४; मत्स्य० ५१.१३; १६३.६१; १८९.२-२०; वायु० २९.१३)। (२) युवनाश्वकी पोती, जह्नुकी पत्नी तथा सुहोत्र (सुनह = ब्रह्मां०) की माता जिसका अर्धभाग गंगाका है (ब्रह्मां० ३.६६.२८-३०; वायु० ९१.५८)। (३) भद्राश्व देशकी एक नदीका नाम (वायु० ४३.२६)। (४) भारतवर्षकी एक प्रधान नदी (वायु० १०८.७९) जो सह्य (ऋष्यवान्) पर्वतसे निकलती है। यह द्राविड़ देश (दक्षिण) में वामन हाथियोंके वनके रूपमें विख्यात है (भाग० ५.१९.१८; ७.१३.१२; ११.५.४०; (ब्रह्मां० २.१६.३५; ३.७.३५७; वायु० ४५.१०४; ७७.२८)। वलराम तीर्थयात्राके सिलसिलेमें यहाँ आये थे (भाग० १०.७९.१४; मत्स्य० ११४.२३)। यह तीर्थ श्राद्धादि पितृकार्यके लिए अति प्रशस्त तथा पवित्र समझा जाता है (ब्रह्मां० ३.१३.२८; मत्स्य० २२.२७)।

काव्य—पु० [सं०] (१) भृगु और हिरण्यकशिपुसुता दिव्याका पुत्र जो महान् विद्वान् ब्रह्मवेत्ताओंमें श्रेष्ठ हैं। इन्हें शुक्र, उशनादेव तथा कविसुत भी कहते हैं। ये असुरोंके गुरु कहे जाते हैं। यह एक ग्रह भी है। तामस मन्वन्तरमें ये सप्तर्षियोंमेंसे एक ऋषि थे। सोमप पितरोंकी मानसी कन्या गौ नामकी पत्नीसे इन्हें चार पुत्र हुए :—त्वष्टा, वरत्री (वायु० वरुत्री), शण्ड, मर्क (ब्रह्मां० ३.१.७६; ६८.८६; ७२.९५, ७३.१.३७; वायु० ५९.९०; ६२.४१; ६५.७४-७)। इंद्र द्वारा परास्त हुए असुरोंको इन्होंने सांत्वना दी और कहा वृष्टि, ओषधियाँ, सव प्रकारके रस तथा उत्तमोत्तम वस्तुएँ मेरे पास हैं। देवताओंके पास उनका एक चतुर्थांश ही गया है। वे सव वस्तुएँ मैं तुम्हें दूँगा। देवताओंने देखा कि सव असुर काव्य द्वारा सुरक्षित हैं। यह काव्य विजय प्राप्त सभी वस्तुएँ अपने वुद्धिवलसे हमसे छीन रहे हैं। जवतक वे असुरोंको अति सवल नहीं वनाते हैं उससे पहले उन्हें पातालमें खदेड़ दें। काव्यने खदेड़े जाते असुरोंकी रक्षा की। देवताओंको सन्नद्ध देखकर असुरोंसे कहा—वारह संग्रामोंमें तुम हार खा चुके हो। तुम लोगोंमें मुख्य-मुख्य मारे जा चुके हैं। थोड़ेसे वचे हुए हो। मैं तुम लोगोंके लिए नीति निर्धारित करूँगा। कुछ कालतक प्रतीक्षा करो। मैं विजयार्थ मन्त्रके लिए महादेवजीके पास जाता हूँ, हथियार रखकर तप करो। यों असुरोंको आदेश देकर महादेवजीके समीप गये। महादेवजीने काव्यसे १००० वर्षोंतक कुण्ड-धूमका सेवन करनेको कहा। इधर असुरोंको देवोंका भय हुआ और उन लोगोंने काव्यकी माता भृगुपत्नीसे प्रार्थना की जिन्होंने इनको शरण तो दी, पर देवों द्वारा इनका मरना देख इन्द्रको पदच्युत करनेकी ठानी। इंद्र घवड़ाये और विष्णुकी शरण गये। भृगुपत्नीने क्रोधमें सारे देवलोकमें आग लगा दी जिससे क्रुद्ध हो विष्णुने उनका वध कर डाला। भृगुने दुःखी हो विष्णुको सात वार मनुष्योंमें जन्म लेनेका शाप दिया और तपोवलसे अपनी पत्नीको पुनः जीवित कर लिया। तपसे प्रसन्न हुए महेश्वरसे इन्होंने (काव्यने) तीन वर प्राप्त किये—किसीसे पराजित नहीं होना, धनपर आधिपत्य तथा अमरत्व। शुक्रने असुर वंचनार्थ इन्द्र द्वारा प्रेषित इंद्र-पुत्री जयन्तीके साथ असुरोंके परोक्षमें १० वर्षोंतक रहना स्वीकार किया और इसी वीच वृहस्पति काव्यके रूपमें असुरोंके समक्ष रहे। दस वर्षोंकी समाप्तिपर जयन्तीसे शुक्रकी पुत्री देवयानीका जन्म हुआ और तव शुक्र भी असुरोंके वीच पधारे। दो काव्योंको देख असुर दुविधामें पड़ गये। शुक्रने वृहस्पतिके नकली रूपका रहस्योद्घाटन किया, पर असुरोंको शुक्रपर विश्वास नहीं हुआ। इससे रुष्ट हो शुक्र असुरोंको छोड़ चले गये। असुरों-

को अपनी भूल मालूम होनेपर दुःख हुआ। प्रह्लादकी सहायतासे वे शुक्रको फिर मना लाये। तदुपरांत शुक्रको ब्रह्मासे विदित हुआ कि १० युगोंके बाद स्वारोचिष युगमें असुरोंको पुनः राज्य प्राप्त हो जायगा। इतना कहकर शण्ड और मर्ककी ओर संकेत किया जो बृहस्पतिसे कम न थे। अन्तमें देव पराजित हुए जिनकी पराजय देख विष्णुने इन्हें परास्त करनेके हेतु कई अवतार लिये (वायु० ९७.९४ से अन्ततक और अध्याय ९८; ब्रह्मां० ३.७२.९६ से अन्ततक, ७३.१-६४)। (२) एक अंगिरस तथा मंत्रकृत्, तामस मनुयुगके सप्तर्षियोंमेंसे एकका नाम (ब्रह्मां० २.३२.९८, १०४; ३३.७; ३६.४७. वायु० ५९.९६)। (३) भरताग्निका एक पुत्र (वायु० २९.८)। (४) सेनजित्के चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (मत्स्य० ४९.५०; वायु० ९९.१७३)।

काव्यगण–पु० [सं०] पितरोंका एक वर्ग जो सोमपायी (सोमका स्वधा (सुधा) पान करने वाले) कहे जाते हैं। योगोत्पत्ति इनकी मानस पुत्री है। अन्यके नाम—संवत्सर, पंचाब्द तथा आज्यप आदि हैं। ये घी पीते हैं (ब्रह्मां० २.२३.३९, ७३-५; २८.४.२३,७०; ३.१०.८५; मत्स्य० १४१.४-१६; वायु० ५६.१३, १६)।

काश–पु० [सं०] (१) शुनहोत्र (सुतहोत्र = वायु०; सुहोत्र = विष्णु०) के परम धार्मिक तीन पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (ब्रह्मां० ३.६७.४; वायु० ९२.३; विष्णु० ४.८.५)। (२) श्राद्धादिके लिए सर्वोत्कृष्ट एक प्रकारकी घास जिसको संस्कृत में दर्भ या कुश कहते हैं (वायु० ७५.४१)।

काशि–पु० [सं०] सुहोत्रात्मज काश्यके तीन पुत्रोंमेंसे एक पुत्र तथा राष्ट्रका पिता (भाग० ९.१७.४)।

काशिका–स्त्री० [सं०] शुक्तिमंत पर्वतसे निकली भारतकी एक पुण्य नदी (मत्स्य० ११४.३२)।

काशिप–पु० [सं०] काश्यका एक पुत्र (ब्रह्मां० ३.६७.७)।

काशी–स्त्री० [सं०] (१) मध्यदेशका एक राज्य (ब्रह्मां० २.१६.४१; १८.५१; ३.७४.२१३,२६८)। उत्तरीय भारतकी एक नगरी जो वरुणा और अस्सीके बीच गंगाके किनारे बसी हुई है। एक जनपद (वायु० ४५.११०; ४७.४८) जिसे जरासंधने यदुओंके विरुद्ध भेजा था—भाग० १० [५०(५)३]। शुक्ल यजुर्वेदीय शतपथ ब्राह्मण और ऋग्वेदके कौषीतकी ब्राह्मणके उपनिषदमें काशी शब्द पाया जाता है। रामायणके समयमें भी काशी नगरी काफी अच्छी हालतमें थी। जब फाहियान आया था तब भी काशी (वाराणसी) प्रसिद्ध नगरी थी। रामायण देखनेसे यह प्रतीत होता है कि अयोध्यापति दशरथ तथा श्रीरामचन्द्र और काशिराजमें मित्रताका भाव था। पर महाभारतके आदिपर्वसे विदित होता है कि पाण्डव और काशीराजमें शत्रुता थी। भीष्म पितामह काशीराज इन्द्रद्युम्नकी अंबा, अंबिका और अंबालिका नामकी तीनों कन्याएँ हर लाये थे (दे० अंबा, अंबिका तथा अंबालिका महाभारत आदि०)।

मत्स्यपुराणानुसार यह राज्य पूर्व और पश्चिमकी ओर दो योजन और दक्षिण पश्चिमकी ओर आध योजन विस्तृत था। वामनपुराणादिके अनुसार काशी समृद्धिशाली नगरी थी। यह सप्तपुरियोंमेंसे एक है और सारा नगर मन्दिरोंसे भरा है। अंग्रेजोंने तो इसे मन्दिरोंका नगर लिखा है। मन्दिरोंमें विश्वेश्वरका मन्दिर प्रधान है। कहते हैं काशीमें मरनेसे मोक्ष मिलता है—'काशीमें जो मरे कबीरा, रामै कौन निहोरा हो'–कबीरदास (स्कंद० काशीखंड पूर्वार्ध)। (२) पौंड्रककी राजधानी जिसपर श्रीकृष्णने आक्रमण किया था। जरासंधके आक्रमणके समय यह गोमंत पर्वतके दक्षिण थी (भाग० १०.६६(१२), १०; ५२.११(९)। सुदक्षिणकी भेजी अभिचार अग्निने लौटकर उसीको मार दिया तथा विष्णुके चक्रने सारे नगरको भस्मीभूत कर दिया (भाग० १०.६६.३०-४२; ३७.१९)। इसके राजा सूर्यग्रहणपर स्यमंतपंचक गये, क्योंकि श्रीकृष्ण वहीं थे (भाग० १०.८२.२५)। यहाँ अनावृष्टि हुई तब राजाने अपनी पुत्री गांदिनीका विवाह श्वफल्कसे कर दिया तब खूब वृष्टि हुई (भाग० १०.५७-३२)। इसे सती देवीके एक रूप विशालाक्षी देवीका निवास स्थान कहा है (ब्रह्मां० ४.३७.१५; ४०.१५.८०.९१)। यह कुशध्वजकी राजधानी थी (वायु० ८१.१८, ९९.४०२)। इसे वेदकी भौंहोंमें स्थित मानते हैं (वायु० १०४.७५)। (३) सर्वंग (सर्ववृक = वायु०) की माता तथा भीमसेनकी पत्नी (मत्स्य० ५०.४४; वायु० ९९.२४७; विष्णु० ४.२०.४६)।

काशीकरवट–पु० [सं०+प्रा०] काशीका एक तीर्थस्थान जहाँ प्राचीन कालमें लोग आरेसे कटकर प्राण देना बहुत पुण्य समझते थे—'सूरदास प्रभु जो न मिलोगे, लैहौं करवट कासी।'—सूरदास।

काशीपति–पु० [सं०] (१) भण्डदानव द्वारा राजासुर नामक अस्त्रसे सृष्ट अनेक दानवोंमेंसे एक दानव राजाका नाम (ब्रह्मां० ४.२९.१२२)। (२) काशीके राजा जो श्रीकृष्णके विरुद्ध पौंड्रककी सहायता करने गये थे, पर मारे गये। इसके पुत्रने महादेवकी स्तुति कर उनके प्रतापसे अग्निसे उत्पन्न एक कृत्या की सहायतासे श्रीकृष्णको परास्त करना चाहा, पर विष्णुका चक्र सुदर्शन उसका पीछा करता काशी आया और सारी नगरी जला दी (विष्णु० ५.३४.१४-४३)।

काशीराज–पु० [सं०] जिनकी पुत्री गांदिनी श्वफल्कको ब्याही थी (वायु० ९६.१०३-५; विष्णु० ४.१३.११६) जब इनके राज्यमें तीन वर्षतक वृष्टि नही हुई तो इन्होंने श्वफल्कको अपने राज्यमें बसाया उसीके पश्चात् खूब वृष्टि हुई थी। जयन्ती नामकी इनकी एक दूसरी पुत्री अनमित्रके पुत्र वृषभको ब्याही थी (मत्स्य० ४५.२६)।

काश्मा–पु० [सं०] सुचारुका पुत्र तथा सुपार्श्वका पिता (वायु० ९६.२५२)।

काश्मीर–पु० [सं० कश्मीर] इस देशका नाम 'कश्यपमीर' था, क्योंकि कश्यपने इसकी स्थापना की थी। कश्यपमीरका ही अपभ्रंश कश्मीर या काश्मीर है। महाभारतके वनपर्वमें काश्मीरके प्रसिद्ध तीर्थ वितस्ता (झेलम) और चन्द्रभागा (चनाब) नदीका उल्लेख हुआ है। वही तीर्थ तक्षक नागका वासस्थान था जहाँ स्नान करनेसे वाजपेय यज्ञका फल मिलता है तथा पापोंकी शांति होती है। इसी देशमें जम्बू नामक तीर्थ भी था जहाँ पाँच दिन रहनेसे सिद्धि प्राप्त होती थी और साधककी दुर्गति कभी नहीं होती थी। जम्बूके मार्गसे जानेसे अश्वमेध यज्ञका फल होता है। ह्वेनसांगके

समयमें वहाँ बौद्ध भी रहते थे।

काश्मीर-मंडल—पु० [सं०] यह व्रात्यों तथा म्लेच्छोंके अधीन हो गया (भाग० १२.१.३९; विष्णु० ४.२४.६९)। यह पश्चिमका एक राज्य है जहाँ सिन्धु नदी बहती है (ब्रह्मां० २.१६.५१; १८.४७; ३.७४.२१३)। यह सती देवी की एक मूर्ति मेधा देवीका स्थान एवं एक पवित्र तीर्थ है (मत्स्य० १३.४७)।

काश्य—पु० [सं०] (१) सुहोत्रके तीन पुत्रोंमेंसे एक पुत्र तथा काशिका पिता (भाग० ९.१७.३-४)। (२) सेनजित्के चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (भाग० ९.२१.२३; विष्णु० ४.१९.३६)। (३) एक क्षत्रिय जो बादको तपस्या कर ऋषि हो गया था। यह राजर्षि बड़ी सिद्धिको प्राप्त हुआ (ब्रह्मां० ३.६६.८७)।

काश्यदुहिता—स्त्री० [सं०] काश्यकी एक पुत्री और आहुककी पत्नीका नाम। यह देवक और उग्रसेनकी माता थी (मत्स्य० ४४.७०,१)।

काश्यप—पु० [सं०] (१) एक साम संहिता-कर्ता, परशुरामके यज्ञमें यह अध्वर्यु थे, इन्हें सारी पृथ्वी दक्षिणामें दान मिली थी। इसीसे पृथ्वीको काश्यपी कहते हैं (ब्रह्मां० २.३५. ६३-६६; ३.८.८६; ४७.४७-६०; ४.९.३)। यह मंत्रकृत् तथा ब्रह्मवादी थे (मत्स्य० १४५.९८,१०६; वायु० ५९.- १०२)। (२) सावर्णि मन्वन्तरके सप्तर्षियोंमेंसे एक ऋषि तथा प्रवर-प्रवर्तक (मत्स्य० ९.३२; १९९.१६)। (३) तेरहवें द्वापरमें वालि, जिन्हें अवतार मानते हैं, के चार महायोगी ऊर्ध्वरेता पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (वायु० २३.१६०)। (४) सोलहवें द्वापरका अवतार गोकर्णका एक पुत्र (वायु० २३.१७३)। (५) काश्यप हविष्मान्, भौत्य मनुके पुत्र (वायु० १००.१०७, ११६; १०६.३४) यह सूतके शिष्य (वायु० ६१.५५) तथा वत्स गोत्रके थे (वायु० ६२.१६; ६४.२८)। वसुदेव और नन्द कश्यपके अवतार थे और देवकी तथा यशोदा अदितिके जिन्होंने भगवान् कृष्णको जन्म दिया और लालन-पालन किया (वायु० ९६.२३०)। सावर्णि, स्वारोचिष तथा वैवस्वत इन ३ मन्वन्तरोंके सप्तर्षियोंमें एक ऋषि तथा तपस्वी (वायु० १००.८२.१००.९६)। (६) कश्यप, दक्षकी १३ पुत्रियोंसे इनका विवाह हुआ (विष्णु० १.१५.७७.१०३)। मार्गशीर्षमें यह सूर्यके रथपर रहते हैं (विष्णु० २.१०.१३)। (७) वसुदेवका पुरोहित। पाण्डवोंके जातकर्मादि संस्कार इन्हींने किये थे। (८) पर्वंस और पर्वसाके दो पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (वायु० २८.१३)। (९) एक मंत्रवेत्ता ब्राह्मण जो तक्षक सर्पसे डँसे हुए राजा परीक्षितको अपने मन्त्रबलसे जीवित कर प्रचुर धनप्राप्तिकी आशामें परीक्षितके समीप जा रहा था। इसकी खबर पानेपर तक्षकने ब्राह्मणका रूप धारण कर मार्गमें कश्यपसे कहा—मैं इस वृक्षको काटता हूँ आप अपनी मन्त्रशक्तिसे इसे जीवित करो तब मैं समझूँगा कि तुम्हारा मन्त्रबल सच्चा है। तक्षकने उसे डँसा और वह भस्म हो गया। कश्यपने उसे मन्त्रबलसे फिर हराभरा कर दिया। इसपर तक्षकने काश्यपको राजासे जितना धन मिलनेकी आशा थी उससे अधिक धन देकर उसे परीक्षितके निकट जानेसे रोक दिया और वह घर लौट गया (स्कन्द० २.१.११)। (१०) कश्यप-पुत्र विभाण्डक, राजवर्मा, विश्वावसु, इन्द्र, आदित्य, वसु, अन्य देवता तथा कश्यप-कुलमें समस्त प्रजा (शत० ब्रा० ७.५- १.५)। (११) एक ऋषिकुमार जो एक वैश्यके रथके धक्केसे गिरकर आत्महत्या करनेको उद्यत हो गये थे। शृंगालरूपधारी इन्द्रके साथ उनका संवाद हुआ था (महा० शा० १८०.६)। (१२) कश्यप-पुत्र काश्यप नामक अग्नि। यह पाँच अग्नियोंमेंसे एक हैं, जिन्होंने तीव्र तपस्या कर पाञ्चजन्यको उत्पन्न किया था (महाभा० वन० २२०.१)।

काश्यपतीर्थ—पु० [सं०] कालसर्पि नामसे प्रसिद्ध एक तीर्थ जो पितृ-श्राद्धके लिए उपयुक्त स्थान कहा गया है (वायु० ७७.८७)।

काश्यपेय—पु० [सं०] कश्यपवंशीय एक गोत्रकार ऋषि (मत्स्य० १९९.९) पुराणके प्रथम पाद (प्रक्रिया पाद) सुननेवाले ऋषियोंमेंसे एक। इन्होंने प्रथम पाद सुननेके पश्चात् पुराणके उपोद्घात पादके प्रतिसंधिपर सूतसे कुछ प्रकाश डालनेको कहा था (वायु० ७.१)।

काश्या—स्त्री० [सं०] सुपार्श्वकी एक पुत्री और साम्बकी पत्नी जिसके पाँच वीर पुत्र थे (मत्स्य० ४७.२३)।

काष्ठा—स्त्री० [सं०] (१) दक्षकी एक पुत्रीका नाम जो कश्यप ऋषिको ब्याही थी। यह बिना खुरफटे घोड़े आदि चौपायों की माता थी (भाग० ६.६.२५.२९; ब्रह्मां० ३.३.५६)। (२) एक काल (समय) परिमाण (ब्रह्मां० ४.३२.१४; महाभा० श० ४५.१५)।

काष्ठाहारिण—पु० [सं०] एक कश्यपगोत्रकारगण।

कासार—पु० [सं०] बाष्कलिका एक शिष्य। बाष्कलिऋषिने प्रत्येक शाखासे उद्धृत कर बालखिल्य नामक संहिताका निर्माण किया और उसे तीन शिष्योंको पढ़ाया। उन तीन शिष्योंमेंसे एक (भाग० १२.६.५९)।

काहला—स्त्री० [सं०] (१) वरुणकी पत्नीका नाम (२) एक अप्सराका नाम (हि० वि० को०)।

किंकण—पु० [सं०] सात्वतपुत्र भजमान तथा संजयपुत्री बाह्यकाके तीन पुत्रोंमेंसे एक पुत्र। विष्णु० के अनुसार कृकण, मत्स्य०के अनुसार कृमिल और भाग० के अनुसार किंकिण भी इसका नाम मिलता है (ब्रह्मां० ३.७१.४)।

किंकर—स्त्री० [सं०] स्त्री किंकरी। (१) राक्षसोंकी एक जाति जिन्हें हनुमानजीने प्रमदावन उजाड़ते समय मारा था (रामायण—सुन्दर०)। (२) एक राक्षस जो विश्वामित्रकी आज्ञासे राजा कल्मापपादके शरीरमें प्रविष्ट हुआ था।

किंकिण—पु० [सं०] भजमानका एक पुत्र दे० किंकण (भाग० ९.२४.७)।

किंदुबिल्व—पु० [सं०] अजय नदीके तटपर बसा बंगालका एक गाँव जहाँ गीतगोविंदके लेखक जयदेवका जन्म हुआ था। यह परम वैष्णव थे (हिं.श.सा.)।

किंदेव—पु० [सं०] देवताओंका एक वर्ग (भाग० ११.१४.६)।

किंपुरुष—पु० [सं०] (१) आग्नीध्र और पूर्वचित्तिके नौ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र जो दूसरा तथा हेमकूटका अधिपति था। इसकी पत्नीका नाम प्रतिरूपा था (भाग० ५.२.२९; ब्रह्मां० २.१४. ४५-४८; वायु० ३३.३८.४१; विष्णु० २.१.१६-१९)। (२) हिन्दू शास्त्रानुसार जम्बूद्वीपके नौ खंडोंमेंसे एक जिसके एक तरफ हेमकूट है (भाग० ५.१६.९; मत्स्य० ११३.२९; ११४.५९; ६३-५; १२१.४९; वायु० ३४.२८;

विष्णु० २.२.१२)। यहाँ हनुमान श्रीरामका भजन करते हैं (भाग० ५.१९.१-८)। यहाँका राजा द्युम्न जरासंधका मित्र था और आक्रमणके समय गोमंतके पश्चिम दिशामें था। नन्दनकी तरह यहाँ महान् प्लक्ष खण्ड है। यहाँ प्लक्ष वृक्ष मधु वहानेके लिए प्रसिद्ध है। यहाँके निवासी उसका रस-पान करते हैं। वहाँकी स्त्रियाँ अप्सराओंकी तरह सुन्दरी हैं। सभी मानव तपाये सोनेके तुल्य प्रभायुक्त हैं। उनकी आयु भी वड़ी लम्बी होती है (ब्रह्मां० २.१७.१-५; १८.७.४; वायु० ४६.२-६; ४७.७१)। (३) आग्नीध्रके नव पुत्रोंमेंसे एकका नाम जो किंपुरुष खंडका राजा था। (४) एक प्राचीन जाति जिसके लोग जंगल तथा पहाड़ोंमें झोंपड़े वनाकर रहते थे और कंद-मूल तथा फलोंका आहार कर निर्वाह करते थे (रामायण)। (५) स्वारोचिष मनुके नौ पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (ब्रह्मां० २.३६.१९; विष्णु० ३.१.१२)। (६) कुवेरके क्रीड़ास्थलरूप सरोवरकी रक्षामें तत्पर रहनेवाले एक प्रकारके वौने जो कुवेरके अनुचर हैं। कुवेर लङ्का छोड़कर इन्हीं (किंपुरुषों)के साथ गन्धमादनपर जाकर रहने लगे (महाभा० वन० १५३.९; २७०.३३) ये दक्षकन्याओंकी सन्तति हैं। स्त्री रूपसे इल इसीमें परिवर्तित हुआ था—दे० इल (मत्स्य० १२.१०)।

किंपुरुषगण—पु० [सं०] देवताओंका एक वर्ग जो किन्नरोंकी तरह ब्रह्माकी छाया (प्रतिविम्व) से उत्पन्न हुए थे (भाग० ३.२०.४५)। कैलाशके निवासी (भाग० ४.६.३१)। सप्तर्षियोंसे उन्हें धर्म-शिक्षा मिली थी और ये क्रोधवशाके वंशज हैं (ब्रह्मां० ३.७.१७६; ८.७१; ४१.३०; ४.३०.९; ३३.२७)।

किंशुकवन—पु० [सं०] वसुधारा और रत्नधारा पर्वतोंके वीच स्थित तीस योजन चौड़ा और सौ योजन लम्बा एक वन जहाँ सूर्यका एक प्रसिद्ध मंदिर है। कहते हैं यहाँ सूर्य हर मासमें आते हैं (वायु० ३८.२७—३२)।

किन्नर—पु० [सं०] इक्ष्वाकुवंशी सुनक्षत्रका पुत्र तथा अन्तरिक्षका पिता (वायु० ९९.२८५; विष्णु० ४.२२.४—५)।

किन्नरगण—पु० [सं०] स्त्री० किन्नरी। एक प्रकारके देवता जिनका मुख घोड़ेके मुखके समान होता है। ये संगीतमें अति प्रवीण होते हैं (भाग० २.१०.३९)। ये लोग पुलह ऋषिके वंशज माने जाते हैं। कहते हैं ये ब्रह्माकी परछाईंसे उत्पन्न हुए थे और कुवेरके साथ कैलाश पर्वतपर रहते हैं (भाग० ३.२०.४५; ४.६.९; ब्रह्मां० २.२५.२८; ३.७.१७६; ८.७१)।

किरात—पु० [सं०] (१) रामायणानुसार पर्वतोंपर रहनेवाली एक जंगली जाति (रामचरित मा०, अयोध्या०—दो० ५९. चौ. १)। किरात-अर्जुन युद्धमें शंकर ही किरात-रूपमें आये थे (महाभा० वन०)। (२) एक पहाड़ी राज्य जो पूर्वमें है तथा यहाँकी पहाड़ी जाति (ब्रह्मां २.१६.६८; ३.४८-४९; ४.७.१९; मत्स्य० ११४.११.३५)। सगरने इन्हें परास्त कर दिया तो ये भाग कर पहाड़की गुफाओंमें छिपे (ब्रह्मां० ३.४८.२३-४९)।

किरिचक्ररथ—पु० [सं०] यह ललितादेवीका था (ब्रह्मां० ४.२० पूरा; २८.१५; २९.३९; ३६.१३)।

किरीटी—पु० [सं०] (१) इंद्र तथा अर्जुनका एक नाम—दे० अर्जुन। किरीट (विष्णुका—विष्णु० ४.१५.१३); (कंसका—विष्णु० ५.२०.८६)। (२) स्कन्दका एक सैनिक (महाभा० शल्य ४५.७१)।

किर्मीर—पु० [सं०] (१) एक नाग जिसका नगर पाँचवें तलमें है (ब्रह्मां० २.२०.३७)। (२) वक नामक राक्षसका भाई। वनवासके समय पाण्डव काम्यक वनमें आये जो नरघाती राक्षसोंसे परिपूर्ण था। किर्मीर नामक भयंकर राक्षसने उनका रास्ता रोका। भीमका इससे घोर मल्ल-युद्ध हुआ और अंतमें किर्मीर मारा गया (महाभा०-वन०)।

किलिकिला—पु० [सं०] भूतनन्द आदि राजाओंकी राजधानी। इन्होंने १०६ वर्ष राज्य किया। इन राजाओंके १३ पुत्र थे जो वाह्लिक कहे जाते थे (भाग० १२.१.३२-३४)।

किशोर—पु० [सं०] एक दानव जिसने तारकामय संग्राममें भाग लिया था। यह वड़ा वीर तथा अस्त्रवेत्ता था (मत्स्य० १७३.२१; १७७.७)।

किष्किण्डीपाण्डुभूमिक—पु० [सं०] केतुमालका एक जनपद (वायु० ४४.१३)।

किष्किंधक—पु० [सं०] (१) यहां सतीका एक रूप तारा-देवी स्थापित हैं (मत्स्य० १३.४६)। (२) मैसूरके आस-पासके देशका प्राचीन नाम तथा यहाँके निवासी (ब्रह्मां० २.१६.६४; मत्स्य० ११४.५२; वायु० ४५.१३२)। रामायणके समयमें यह जंगलोंसे भरा था। सुग्रीवके वड़े भाई तथा अंगदके पिता वानरराज वालि यहाँके राजा थे। वालिकी राजधानीका नाम किष्किंधा था (ब्रह्मां० ३.७.२४७)। वालिको मारकर श्रीरामचन्द्रने सुग्रीवको यहाँका राजा वनाया था (रामचरितमा० किष्किंधा०)।

किष्किंधगुहा—स्त्री० [सं०] कैलाशपर्वतपर स्थित एक गुहा (वायु० ५४.११७)।

कीकट—पु० [सं०] (१) मगध अथवा दक्षिण विहारका प्राचीन नाम जहाँ अनार्योंका निवासस्थान था। यह पवित्र तीर्थ गया तथा राजगृह वनके लिए विख्यात था। च्यवन ऋषिका आश्रम यहीं था। पुनपुन नदी भी यहीं है। यहाँके अन्य पवित्र स्थान—वैकुण्ठ, लोहदण्ड, गृद्धकूट, तथा शोणक हैं (भाग० १.३.२४; ७.१०.१९; वायु० १०८.७३-४)। (२) भगवान् ऋषभदेवके जयन्तीमें उत्पन्न १०० पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (भाग० ५.४.१०)। (३) संकटका एक पुत्र तथा दुर्गाभिमानी देवोंके पिता (भाग० ६.६.६)।

कीकसा—स्त्री० [सं०] वलाहक आदि सात वीर पुत्रोंकी माता। इसके सव पुत्र भण्डासुरके सेनापति थे (ब्रह्मां० ४.२४.६)।

कीचक—पु० [सं०] राजा विराट्का साला तथा सेनानायक। यह रानी सुदेष्णाका भाई था। इसके छोटे भाई १०५ थे। ये उपकीचक कहलाते थे। जव पाण्डवोंको कुछ कालके लिए विराट्के यहाँ अज्ञातवास करना पड़ा था उसी समय कीचकने द्रौपदीसे छेड़छाड़ की थी, अतः उसकी इस नीचतासे अप्रसन्न हो भीमसेनने कीचकका वध कर डाला था (महाभा०-विराट्० १४.४-१०; १५.७; १८.७; आदि)।

कीर्त्ति—स्त्री० [सं०] (१) धर्मकी १३ पत्नियोंमेंसे एक पत्नी तथा प्रजापति दक्षकी ६० पुत्रियोंमेंसे एक पुत्रीका नाम। यह यशकी माता थी। (ब्रह्मां० २.९.५०; ६२, १३.८०; विष्णु० १.७.२३,३१)। (२) शुककी एक पुत्री तथा अणुहकी पत्नी।

यह ब्रह्मदत्तकी माता थी (विष्णु० ४.१९.४३.५) । (३) मायामानव वामनहरि (विष्णु) की पत्नी । इनके पुत्रका नाम बृहच्छ्लोक था (भाग० ६.१८.८; वायु० ३०.७३; ५५.४३; ब्रह्मां० २.२६.४५) । (४) सोमकी अनुगामिनी एक देवी तथा जयंतकी पत्नीका नाम (ब्रह्मां० ३.६५. २६; वायु० ९०.२५) । (५) पुंल्लिग—हैहयपुत्र धर्मतन्त्रका पुत्र तथा संज्ञेयका पिता (वायु० ९४.५) ।

कीर्तिमती–स्त्री० [सं०] (१) शुककी एक पुत्री जो अणुह को व्याही थी तथा ब्रह्मदत्तकी माता थी (ब्रह्मां० ३.८. ९४; १०.८२; वायु० ७०.८६) । (२) एकाम्भकमें स्थापित सती देवीकी एक मूर्ति एक देवी (मत्स्य० १३.२९) ।

कीर्त्तिमान्–पु० [सं०] (१) वसुदेव और देवकीका प्रथम पुत्र जिसे पहले कंसने नहीं मारा था, परन्तु बादमें नारदके समझानेपर यह कंससे मारा गया था (भाग० १०.१. ५७-६०; ९.२४.५४; ब्रह्मां० ३.७१.१७४; मत्स्य० ४६. १३; वायु० ९६.१७२; विष्णु० ४.१५.२६, २७) । वायु० ९६-१६८ के अनुसार वसुदेव और रोहिणीके एक पौत्रका नाम भी कीर्त्तिमान् था। (२) उत्तानपाद और सूनृताके चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (ब्रह्मां० २.३६.८९; मत्स्य० ४.३५; वायु० ६२.७६)। (३) रोहिणी और वसुदेवके पुत्र शठका एक पुत्र (ब्रह्मां० ३.७१.१७०) । (४) स्मृति और अंगिरसके दो पुत्रोंमेंसे एक पुत्र। इसकी पत्नी धेनुका था। वह चरिष्णु (वायुके अनुसार वरिष्ठ) तथा धृतिमान्की माता थी (वायु० २८.१५.१७; ब्रह्मां० २.११.१८) । (५) इक्ष्वाकुवंशोत्पन्न महाराज नृगका पुत्र जो काशीका राजा था। वशिष्ठके उपदेशसे इसने अपने राज्यमें वैशाख मास-धर्मका पालन कराया था (स्कंद० वैष्णवखंड, वैशाखमास-माहात्म्य) ।

कीर्तिरथ–पु० [सं०] प्रतिम्नक (प्रतित्वक वायु०) के पुत्र तथा देवमीढ़के पिताका नाम (ब्रह्मां० ३.६४.११-१२: वायु० ८९.११) ।

कीर्तिरात–पु० [सं०] (वायु० कीर्तिराज) महाधृतिका वीर पुत्र तथा महारोमाका पिता (ब्रह्मां० ३.६४.१३; वायु० ८९.१३) ।

कीर्तिव्रत–पु० [सं०] अश्वत्थ, सूर्य तथा गंगाके प्रीत्यर्थ किया जानेवाला एक व्रत जो एक वर्ष तक किया जाता है। इस व्रतसे ऐश्वर्य और कीर्ति प्राप्त होती है (मत्स्य० १०१.२४)।

कुंचि–पु० [सं०] बलिके सौ पुत्रोंमेंसे एकका नाम इनकी दो बहनें थीं (ब्रह्मां० ३.५.४३) ।

कुंजतीर्थ–पु० [सं०] नर्मदातटपर स्थित एक तीर्थस्थान जिसमें स्नान करने मात्रसे सब पापोंका नाश होता है और मनोकामना पूरी होती है (मत्स्य० १९४.९-१०) ।

कुंजर–पु० [सं०] (१) कुञ्जोंमें विचरण करनेके कारण पड़ा नाग (हाथी) का एक नाम (ब्रह्मां० ३.७.३५०) । (२) रामायणानुसार मलयगिर पर्वतकी किसी श्रृंखलाका नाम जहाँ अगस्त्य ऋषिका आश्रम था (मत्स्य० १६३. ७९) । (३) अंजनाके पिता तथा हनुमानजीके नानाका नाम जो केशरीके श्वशुर थे। इन्हें विरज भी कहते हैं (ब्रह्मां० ३.७.२२३.२३३) (४) अतलका एक असुर जो तारकासुरके दस श्रेष्ठ दैत्येन्द्र सेनापतियोंमेंसे एक सेनापति था। यह कपाली (११ रुद्रोंमेंसे एक) द्वारा मारा गया था। यह रुद्रोंसे लड़ा था (मत्स्य० १४८.४२-५०; १५३.२९-३०, ५१-६८) । (५) एक वृद्ध तोता जिसने महर्षि च्यवनको उपदेश दिया था (पद्म०) । (६) कश्यप और कद्रूके पुत्रोंमेंसे एक काद्रवेय नाग ।

कुंजरपति–पु० [सं०] जरासंधने मथुरापर जब घेरा डाला था तब यह गोमंत पर्वतके पूर्व ओर रक्षार्थ नियुक्त था (भाग० १०.५२.११ (५)) ।

कुंजरी–स्त्री० [सं०] विविध स्वरशक्तियोंमेंसे एक स्वरशक्ति (ब्रह्मां० ४.४४.५६) ।

कुंड–पु० [सं०] एक प्रधान वानर जो किष्किन्धास्थित-बालिका सामन्त और सेनापति था (ब्रह्मां० ३.७.३४१) ।

कुंडक–पु० [सं०] (१) एक श्रुतर्षि (ब्रह्मां० २.३३.१०) । (२) इक्ष्वाकुवंशी क्षुद्रकका पुत्र तथा सुरथका पिता (विष्णु० ४.२२.९) ।

कुंडचतुर्थी–स्त्री० [सं०] एक व्रत जो माघशुक्ला चतुर्थीको किया जाता है तथा इसमें देवीके पूजनकी प्रधानता है। यह संतति तथा सौभाग्यदायक है (देवीभाग०) ।

कुंडपायी–पु० [सं०] निध्रुव तथा सुमेधाके पुत्रोंका नाम (ब्रह्मां० ३.८.३१; वायु० ७०.२७) ।

कुंडला–स्त्री० [सं०] विन्ध्यवान्की पुत्री तथा पुष्करमालीकी पत्नी। शुम्भराक्षसने इसके पतिको मार दिया था। यह विश्वावसु गंधर्वराजकी पुत्री मदालसाकी सखी थी तथा ऋतध्वजको मदालसाका परिचय इसीने दिया था—दे० ऋतध्वज तथा मार्कण्डेय० अलर्कोपाख्यान ।

कुंडिक–पु० [सं०] सोमवंशी कुरुके प्रपौत्र तथा धृतराष्ट्रके एक पुत्रका नाम (महाभा० आदि ९४.५८)।

कुंडिन–पु० [सं०] विदर्भ देशका एक प्राचीन नगर जो वहाँकी राजधानी था। यहाँके राजा भीष्मककी पुत्री रुक्मिणीको श्रीकृष्ण हर लाये थे, अतः रुक्मिणीके भाई रुक्मीने विना श्रीकृष्णको हराये राजधानीमें न जानेका व्रत लिया था (भाग० १०.५३.७,१५,२१; ५४.१९-२०, ५२; विष्णु० ५.२६.१) । विदर्भका आधुनिक नाम विदर है और यहाँसे कुछ दूरपर कुंडिनवती नामकी प्राचीन नगरी आज भी विद्यमान है। श्रीकृष्णसे छुटकारा पानेके लिए शाल्वने भगवान् शंकरकी आराधना यहाँ की थी (भाग० १०.७६.२ (८-९)) । इसे आजकल कुण्डपुर कहते हैं जो अमरावतीसे ४० मील पूर्वमें है (विष्णु०) ।

कुंडोदर–पु० [सं०] (१) महादेवजीके एक गणका नाम (शिव०) । (२) चंद्रवंशी जनमेजयके एक (छठे) पुत्रका नाम जो जनमेजय कुरुके पुत्रोंमेंसे थे (महाभा० आदि ९४.५५) । (३) एक प्रमुख नाग (कश्यप तथा कद्रूका पुत्र) (महा० आदि ३५.१६)। (४) धृतराष्ट्रका एक पुत्र (महाभा० आदि० ६६.९७) ।

कुंतल–पु० [सं०] (१) स्वातिकर्ण, आंध्र देशका एक राजा जिसने आठ वर्ष राज्य किया। यह मृगेन्द्र स्वातिकर्णका पुत्र था (मत्स्य० २७३.८) । (२) मध्यदेशका एक राज्य जो दक्षिणमें है (ब्रह्मां० २.१६.४१, ५९-६०; १८.४४) ।

कुंति–पु० [सं०] (१) धर्मनेत्रका (भाग० के अनुसार हैहयपुत्र धर्म और धर्मपुत्र नेत्र) पुत्र तथा संजय (सोहञ्जि=भाग० तथा सहजित=विष्णु०, सहत मत्स्य०) का पिता

(भाग० ९.२३.२२; ब्रह्मां० ३.६९.५; मत्स्य० ४३.९; विष्णु० ४.११.८)। (२) ऋथका पुत्र तथा धृष्टि (धृष्ट मत्स्य० पु०) का पिता (भाग० ९.२४.३; मत्स्य० ४४.३८.९; वायु० ९५.३८; विष्णु० ४.१२.४०-४१)। (३) श्रीकृष्ण और सत्याका एक पुत्र (भाग० १०.६१.१३)।

कुंतिभोज–पु० [सं०] भोज देशके एक यदुवंशी राजाका नाम। सूर्यग्रहणके समय यह स्यमंतपंचक गये थे (भाग० १०.८२.२५; विष्णु० ४.१४.३२.३)। इसके कोई संतान न थी इसलिए इसने कुंतीको जो शूरसेनकी औरसी पुत्री थी, जिसका नाम पृथा था, गोद लिया था। कुंती जिसका विवाह पाण्डुसे हुआ था (ब्रह्मां० ३.७१.१५१-२; मत्स्य० ४६.७; वायु० ९६.१५०)।

कुंतिपेण–पु० [सं०] भण्डका एक पुत्र तथा सेनापति जिसपर महामायाने आक्रमण किया था (ब्रह्मां० ४.२१.८४; २८.३९)।

कुंती–स्त्री० [सं०] (१) पारियात्र कुलपर्वतसे निकली भारतकी एक नदीका नाम (मत्स्य० ११४.२४)। (२) शूरसेन यादवकी पुत्री तथा वसुदेवकी बहिनका नाम जिनसे (वसुदेवसे) इन्होंने आपत्तिकालमें अपना तथा युधिष्ठिर आदिका स्मरण न करनेकी शिकायत की थी (भाग० १०.८२.१८-२२; ८४-५७.६९ (३))। इन्हें इनके चाचा कुंतिभोजने (भोज देशके राजा) गोद लिया था। यह दुर्वासा ऋपिकी बड़ी सेवा करती थीं, अतः सेवासे प्रसन्न हो ऋपिने इन्हें वह विद्या बतलायी थी जिसके प्रभावसे कुंती किसी देवताका आह्वान कर पुत्र उत्पन्न करा सकती थीं। उक्त विद्या (मन्त्र) की परीक्षाके लिए कुमारी अवस्थामें ही इन्होंने सूर्यसे कर्णको पाया (भाग० ९.२३.१३-१४; २४.३१-३६; ब्रह्मां० ३.७१.१५२-५; मत्स्य० ४६.७)। तदुपरान्त इनका विवाह पाण्डुसे हुआ और यह युधिष्ठिर, भीम तथा अर्जुनकी माता हुईं। इनका पहला नाम पृथा था पर कुंतिभोज द्वारा पाले जानेके कारण कुंती नाम पड़ा था। महाभारत युद्धके पश्चात् धृतराष्ट्र और गांधारीके साथ यह वन चली गयीं जहाँ इनकी मृत्यु हुई (भाग० ९.२२.२७; मत्स्य० ५०.४८-५०; १५.१-९; विष्णु० ५.१२.२४ तथा महाभा० आदि०, उद्योग०, आश्रमवासिक० आदि)।

कुंद–पु० [सं०] शाल्मलिद्वीपके सात पर्वतोंमेंसे एक पर्वत (भाग० ५.२०.१०)।

कुंभ–पु० [सं०] (१) एक पर्वका नाम जो हर बारहवें वर्ष पड़ता है। इसपर सूर्य कुंभका होता है अतः पर्वका नाम 'कुंभ' पड़ा। हरिद्वारमें कुंभपर्वपर बड़ा मेला होता है तथा यह श्राद्धादिके लिए पवित्र अवसर है (वायु० ७७.४७)। (२) एक दानव जो प्रह्लादका पुत्र था। (३) एक राक्षसका नाम जो कुंभकर्णका ज्येष्ठ पुत्र था (रामायण)। (४) दैत्योंका एक राजा जो दैत्य राक्षसोंका, जिन्हें कापिलेय कहते हैं, मूल पुरुष था। इसकी पत्नीका नाम कपिला था (ब्रह्मां० ३.७.१४४-४६; वायु० ६९.१७६-७) यह लंकाके युद्धमें मारा गया था (भाग० ९.१०.१८)। (५) मुंडीश्वरके, जो २५वें द्वापरके विष्णुके एक अवतार थे, एक पुत्र (वायु० २३.२११)। (६) इसने ताराकामय युद्धमें सोमकी सहायता की थी (विष्णु० ४.६.१४)। (७) वर्तनके आकारका एक महल जिसकी ९ भूमिकाएँ और १६ हाथोंका तोरण हो (मत्स्य० २६९.३७-४९)।

कुंभकर्ण–पु० [सं०] वाल्मीकि रामायणनुसार लंका निवासी एक राक्षस जो रावणका सहोदर छोटा भाई था (ब्रह्मां० ३.८.४७; ४.२९.११३.११६)। विश्रवा मुनिके औरस और सुमाली राक्षसकी पुत्री (कैकरी = भाग०) या केकसीके गर्भसे यह उत्पन्न हुआ था। इसका विवाह वज्रज्वालासे हुआ था तथा कुंभ-निकुंभ नामके इसके दो पुत्र थे। वृकदंतकी पुत्री सानंदिनी इसकी एक पत्नी और थी। इसने कठिन तपसे ब्रह्माको प्रसन्न किया था, पर सरस्वतीकी कृपासे इसने यह वर माँगा कि 'मैं बहुत दिनों तक सो सकूँ और छः महीनोंपर एक दिन भोजन करूँ' इस समय वह देवताओंकी कृपासे अचेत हो गया था इसीसे ऐसा वरदान माँग बैठा था (रामच० मानस, बालकाण्ड, दो० १७७ के पहले चौ० ३ और ४) वाल्मीकिरामायणके युद्धकाण्डके अनुसार कुंभकर्णके उपद्रवोंके कारण ही उसे ब्रह्मासे यह वर मिला था। यह राम-रावण युद्धमें श्रीराम द्वारा मारा गया था (रामच० मानस, लंका काण्ड, ६४-७१ दो० तक) तथा (भाग० ४.१.३७; ७.१.४३; १०.३६; ९.१०.१८; वायु० ७०.४१)। वाल्मीकिरामायणके अनुसार यह चार भाई-बहन थे रावण, कुंभकर्ण, शूर्पणखा तथा विभीपण। ब्रह्मचक्रमें रावण, कुंभकर्ण और विभीपण तीनोंको ब्रह्माकी सन्तान माना है। महाभारत (३,२५६,२८) के अनुसार अपनी तामसी वृत्तिकी अधिकताके कारण यह ६ महीने सोने तथा एक दिन जागनेका वर माँग बैठा था। आनंदरामायणानुसार सरस्वतीसे मोहित होकर कुंभकर्णने यह वर माँगा था। बंगालकी कृत्तिवासरामायणके अनुसार कुंभकर्णने निरन्तर सोते रहनेका वर माँगा था, पर रावणके आपत्ति करनेपर इसे ६ मास निद्रा तथा एक दिन जागरण का वर मिला था।

उत्पाती चाहे यह जैसा भी रहा हो, पर अनीतिका सदासे विरोधी था। यह निर्भीक था तथा रावणके दोपोंकी आलोचना करता था। यह दूरदर्शी, कर्तव्यपरायण तथा अनुपम वीर था जिसके युद्धकौशलके आगे श्रीरामकी सेनाके भी पैर उखड़ गये थे।

कुंभकर्णी–स्त्री० [सं०] अन्धकासुर-संग्राममें महादेवजी द्वारा अन्धक-रक्त पानके लिए सृष्ट बहुत सी मानसपुत्री मातृकाओंमेंसे एक मानस-पुत्री मातृकाका नाम (मत्स्य० १७९.२२)।

कुंभकर्पास्य–पु० [सं०] विष्णुके मुण्डीश्वर अवतारके एक पुत्रका नाम (वायु० २३.२११)।

कुंभकार–पु० [सं०] एक वर्णसंकर जातिका नाम जिसकी उत्पत्ति विश्वकर्मा पिता और शूद्रा मातासे मानी गयी है (ब्रह्मवैवर्त०) तथा—'वैश्यायां विप्रतश्चौर्यात् कुम्भकारः स उच्यते'—'उशना'।

कुंभकारी–स्त्री० [सं०] केतुमालद्वीपकी एक नदीका नाम (वायु० ४४.२२)।

कुंभगर्तोदय–पु० [सं०] बलिके सौ पुत्रोंमेंसे जो चार महाबली थे उनमेंसे एक पुत्र (ब्रह्मां० ३.५.४३)।

कुंभग्रीव–पु० [सं०] भण्डके अनेक पुत्रोंमेंसे एक पुत्र तथा

सेनापतिका नाम (ब्रह्मां० ४.२१.८८)।

कुंभज–पु० [सं०] अगस्त्य, वशिष्ठ, द्रोणाचार्य (ब्रह्मां० ३.३५.४२; ४.१७.३५; ३०.४)।

कुंभनदास–पु० [सं०] अष्टछापके एक कवि जो श्रीकृष्णकी उपासना सखा भावसे करते थे (मिश्रवन्धुविनोद)।

कुंभनाभ–पु० [सं०] (१) बलिका एक पुत्र (वायु० ६७.८३)। (२) दनुके विप्रचित्ति प्रमुख सौ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (वायु० ६८.१०)।

कुंभनास–पु० [सं०] भण्डका एक पुत्र तथा सेनापति (ब्रह्मां० ४.२१.८८)।

कुंभपात्र–पु० [सं०] पिशाचोंके एक वर्गके जो नाटे, वालोंसे भरे तथा भूरे रंगके होते हैं, १६ जोड़ोंमेंसे एक जोड़ेके पुरुषका नाम। इसकी स्त्रीका नाम कुम्भी है (ब्रह्मां० ३.७.३७८, ३८२, ३९५)। ये दिखाई नहीं पड़ते हैं तथा हाथी और ऊँटके बराबर मस्तकवाले तथा श्मशान और शून्य मकानमें निवास करनेवाले माने गये हैं (वायु० ६९.२६३, २७४-५)।

कुंभमान–पु० [सं०] दनुके सैकड़ों पुत्रोंमेंसे एक दानव (दनु-कश्यप पुत्र) का नाम (ब्रह्मा० ३.६.१०)।

कुंभयोनि–पु० [सं०] महर्पि अगस्त्यका एक नाम (भाग० १.१९.१०)।

कुंभविवाह–पु० [सं०] यह वैधव्यहर है जिसमें पिता कन्याको पहले कुंभसे विवाह देता है (विवाहपञ्चरत्न-पद्धतिः फलाहारीशर्मांकृत तथा मार्कण्डेयपुराण)।

कुंभसंभव–पु० [सं०] अगस्त्य मुनिका नाम (ब्रह्मां० ४.१७.३२; २९.५८)।

कुंभहनु–पु० [सं०] रावणके दलका एक राक्षस जिसे श्रीरामचन्द्रकी सेनाके तार नामक एक बन्दरने मारा था (रामायण)।

कुंभांड–पु० [सं०] (१) भण्डके अनेक पुत्रोंमेंसे एक पुत्र तथा एक सेनापतिका नाम (ब्रह्मां० ४.२१.८९)। (२) वाणासुरके एक मन्त्रीका नाम जिसकी पुत्री चित्रलेखा वाणकी पुत्री 'ऊषा'की सहेली थी। इसीकी सहायतासे ऊषाका विवाह अनिरुद्धसे हुआ था (भाग० १०.६२.१४; विष्णु० ५.३२.१७), शोपितपुर युद्धमें यह बलरामसे हारकर भागा था (भाग० १०.६३.८,१६)। यह जरासंधके सहायतार्थ मथुरा गया था। यह सात्यकिसे परास्त हो स्वदेश लौट आया था (भाग० १० [५१ (५) १८], २८-३०, ५९-६३, ६५)।

कुंभिल–पु० [सं०] (१) दनायुषाके गर्भसे उत्पन्न वलिके दो पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (वायु० ५०.२७.६८.३२)। (२) एक राक्षस जिसका नगर तीसरे तलमें था (ब्रह्मां० २.२०.२८)।

कुंभी–पु० [सं०] (१) एक राक्षस जो छोटे-छोटे बच्चोंको कष्ट देनेवाला कहा गया है (पारस्कर)। (२) एक नरक जहाँ पापी लोग कुम्हारके बर्तनोंकी तरह अवांमें पकाये जाते हैं। इसका पूरा नाम कुंभीपाक है (भाग० ५.२६.७,१३; १०.६४.३८; ब्रह्मां० २.२८.८३; ३.१९.६१; मत्स्य० १४१.७०)। (३) स्त्री० पिशाचोंके एक वर्गके सोलह जोड़ोंमेंसे एक जोड़ेकी स्त्री। इसके पतिका नाग कुम्भपात्र था (ब्रह्मां० ३.७.३७८)।

कुंभीक–पु० [सं०] एक नरक जो उन लोगोंके लिए है जो कर्मच्युत हो जाते हैं (वायु० ८३.८९)।

कुंभीनसि–पु० [सं०] शंवर या शम्बर नामका असुर।

कुंभीनसी–स्त्री० [सं०] (१) विश्रवा तथा पुष्पोत्कटाकी पुत्रीका नाम (ब्रह्मां० ३.८.५५; वायु० ७०.४९)। (२) मधुदैत्यके पुत्र लवणासुरकी माता तथा लंकाधिपति रावणकी मौसी और रावणकी माता कैकसीकी छोटी बहिन। यह सुमाली राक्षसकी चार लड़कियोंमेंसे एक थी। इसकी माताका नाम कौतुमती था। रावणकी अनुपस्थितिमें मधु नामक दैत्य इसे हर ले गया था। रामायणके अनुसार इसके पुत्र लवणासुरको शत्रुघ्नने मारा था (रामायण)। (३) गंधर्वराज अंगारपर्णकी पत्नी। अंगारपर्ण ही चित्ररथ था जिसने अर्जुनको मायायुद्ध सिखाया था (महाभा० आदि०, अर्जुन-चित्ररथ युद्ध)। (४) बलिकी एक पुत्री जो वाणासुरकी बहिन थी जिसने वाणासुरकी पत्नी, जिसका नाम अनौपम्था था, के साथ दुर्व्यवहार किया था (मत्स्य० १८७.४०-४२)।

कुंभीपाक–पु० [सं०] पुराणानुसार २८ नरकोंमेंसे एक (पाँचवाँ) नरकका नाम। यहाँ पशु-पक्षी मारनेवाले तथा ब्रह्मस्व हरनेवाले लोग आगपर खौलते हुए तेलमें डाल दिये जाते हैं (भाग० ५.२६.७, १३; १०.६४.३८; ब्रह्मां० २.२८.८३; ३.१९.६१; मत्स्य० १४१.७०)।

कुंभोत्कच–पु० [सं०] भंडका एक पुत्र तथा सेनापति (ब्रह्मां० ४.२१.८८)।

कुंभोदर–पु० [सं०] महादेवजीके एक गणका नाम जिसने सिंह बनकर नंदिनीपर आक्रमण किया था (रघुवंश सर्ग २)।

कु–स्त्री० [सं०] पृथिवीका एक नाम।

कुआर–पु० [सं० कुमार] भाद्रपद के बाद और कातिकके पहलेका महीना जहाँसे शरद् ऋतुका प्रारम्भ होता है। इस मासका पूर्वार्ध अथवा कृष्ण पक्ष 'पितृपक्ष' और उत्तरार्ध अथवा शुक्लपक्ष 'देवपक्ष' कहलाता है। पितृपक्षमें पिण्डदान आदि होते हैं और शुक्लपक्षमें पितृविसर्जनी। अमावस्याके पश्चात् दुर्गाका 'नवरात्र' प्रारम्भ होता है। शुक्ला दशमीको 'विजयादशमी' मनायी जाती है और एकादशीको 'भरतमिलाप' (कर्मकाण्डमार्गप्रदीप, देवी-भागवत आदि)।

कुकुपाद–पु० [सं०] सुतल (द्वितीय पाताल) का एक राक्षस। इस द्वितीय तलमें नाग, दानव और राक्षसोंके हजारों पुर हैं (ब्रह्मां० २.२०.२३ वायु० ५०.२२)।

कुकुर–पु० [सं०] (१) अन्धकके पुत्र तथा वह्निके पिताका नाम (भाग० ९.२४.१९)। (२) सत्यक (अंधक-मत्स्य) का एक पुत्र तथा वृष्णि (उग्रसेन=वायु०) के पिताका नाम (ब्रह्मां० ३.७१.११६; मत्स्य० ४४.६१-२, ७६; वायु० ९६.१३४)। (३) वलिका अनुगामी एक असुर (मत्स्य० २४५.३२)। (४) अंधकके चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्र तथा धृष्टके पिताका नाम (विष्णु० ४.१४.१२,१३)।

कुकुरांधक–पु० [सं०] (१) दे० अंधक (ब्रह्मां० ३.७१.९०; वायु० ९६.८९)।

कुक्कुट–पु० [सं०] ताम्रा और कश्यपकी पुत्री भासीका विष्णु द्वारा कार्तिकेयको उपहार रूपमें क्रीड़ार्थ दिये गये दो पक्षियोंमेंसे एक। सुकुमारता चाहनेवालेको श्राद्धपिण्ड

मुर्गोंको खिलाना चाहिये। मुर्गेके देखने तथा परोंके वायुसे श्राद्ध नष्ट हो जाता है (ब्रह्मा० ३.७.४५५; १०.४७; १२.३४; १४.४८; १९.४४)। स्कन्दकी स्थान विशेषमें बारह, चार या दो भुजाओंवाली मूर्तिका विधान है। सभीमें बांये हाथमें इसकी स्थिति कही गयी है (मत्स्य० २६०.५०)। मुर्गा मारनेवाला घोर पीव बहानेवाले नरकका भागी होता है (ब्रह्मां० ४.२.१६५; वायु० १०१.१६३)। प्रदोष कालमें मुर्गोंका बोलना अशुभ है (मत्स्य० २३७.५)। (२) भण्डका अनुगामी एक दैत्य जो शक्तिसेनासे लड़ने आया था (ब्रह्मां० ४.२४.५०)।

कुक्कुटव्रत—पु० [सं०] एक व्रत विशेष जो भादो वदी ७ (सप्तमी) को मनाया जाता है। इसे पुत्रव्रत भी कहते हैं। यहाँसे प्रारम्भ कर प्रत्येक कृष्णा सप्तमीको एक वर्ष तक कर दो गोदन करे। इस दिन स्त्रियाँ संतानके लिए शिव और दुर्गाकी पूजा करती हैं (वाराह०)।

कुक्कुटी——स्त्री० [सं०] अन्धकासुर संग्राममें महादेव द्वारा अन्धक-रक्त पानके लिए सृष्ट एक मानस-पुत्री मातृका (मत्स्य० १७९.१७)।

कुक्कुर—पु० [सं०] भण्डका एक पुत्र तथा सेनापति जो कुलसुंदरिकासे युद्धमें मारा गया था (ब्रह्मां० ४.२१.७९; २३.२८, ९७)।

कुक्षि—पु० [सं०] (१) एक दानवका नाम (महाभा०)। (२) इक्ष्वाकुका पुत्र तथा विकुक्षिका पिता (रामायण)। (३) बलि नामक दानव राजाका नाम। (४) प्रियव्रतका दूसरा नाम—दे० प्रियव्रत। (५) सामशाखा प्रवर्तक पौष्यञ्जिके शिष्योंमेंसे एक शिष्य जिसने १०० सामसंहिताएँ पढ़ी थीं (भाग० १२.६.७९)।

कुक्षिभीम—पु० [सं०] बलिके १०० पुत्रोंमेंसे एकका नाम (मत्स्य० ६.११)।

कुक्षिभेद—पु० [सं०] ग्रहण-मोक्षके सात भेदोंमेंसे एक। जब मोक्ष दाहिनी ओरसे हो तो दक्षिण कुक्षिभेद और बायीं ओरके मोक्षको वाम कुक्षिभेद कहते हैं (बृहत्संहिता)।

कुक्षिमित्र—पु०[सं०] वसुदेव और मदिराके १० पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (वायु० के अनुसार चित्रा० उपचित्रा दो कन्याएँ थीं) (ब्रह्मा० ३.७१.१७१; वायु० ९६.१६९)।

कुक्षी—स्त्री० [सं०] कर्दमकी पुत्री काम्यासे उत्पन्न प्रियव्रतकी एक पुत्री। इसके दस भाई और एक बहन थी (ब्रह्मां० २.१४.८; वायु० ३३.८; विष्णु० २.१.५)।

कुक्षेयु—पु० [सं०] रौद्राश्वके घृताची अप्सरासे उत्पन्न दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (भाग० ९.२०.४)।

कुखंडिका—स्त्री० [सं] पिशाचोंके सोलह जोड़ोंमेंसे एक जोड़ेकी स्त्री। इसके पतिका नाम कुखण्ड (कुपण्ड) है (ब्रह्मां० ३.७३; वायु० ६९.२६४)।

कुच—पु० [सं०] केतुमालका एक जनपद तथा उसके निवासी (वायु० ४४.११)।

कुचेल—पु० [सं०] कृतपुत्र वसुके सात पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (विष्णु० ४.१९.८१)।

कुचैल—पु० [सं०] श्रीकृष्णका सहपाठी एक दरिद्र ब्राह्मण। इसकी स्त्रीने कुछ तण्डुलकण (चावलकी खुद्दी) पड़ोससे लेकर पतितके हाथ श्रीकृष्णको उपहार स्वरूप भेजा। तण्डुल कण तो श्रीकृष्ण खा गये पर दिया कुछ नहीं। रास्ते भर कुचैल सोचता आया, पर अपनी कुटियाके स्थानपर राजमहल देख तथा पत्नीसे राजसी स्वागत पा सारा रहस्य समझ गया और सुखसे रहने लगा (भाग० १०.८०.६-४५; ८१ पूरा)।

कुजंभ—पु० [सं०] एक असुर जो प्रह्लादका पुत्र था। तारककी सेनाका एक सेनापति जो उसके राज्य-तिलकमें था। इसके रथके गदहोंका मुख पिशाचोंका सा था। यह कुबेरसे लड़ा था (मत्स्य० १४७.२८.१४८.४२.५०; १५०.७६-१२१; २४५.१२)।

कुज—पु० [सं०] (१) मंगलग्रहका नाम (सं० श० कौस्तुभ० २३७)। (२) नरकासुर, यह भूमिपुत्र कहा जाता है जिसे श्रीकृष्णने परास्त किया था (भाग० २.७.३४)।

कुजा—स्त्री० [सं०] (१) कु (पृथिवी)से उत्पन्न होनेके कारण सीताजी। (२) कात्यायनीका एक नाम।

कुजिलाश्व—पु० [सं०] भण्डके एक पुत्र तथा सेनापतिका नाम (ब्रह्मां० ४.२१.८५)।

कुटक—पु० [सं०] दक्षिणका एक राज्य जहाँसे होकर ऋषभदेव गये थे। यहाँ अर्हत् राज्य करता था (भाग० ५.६.७, ९)।

कुटकाचल—पु० [सं०] कुटक देशसे लगा पर्वत (भाग० ५.६.७)-।

कुटज—पु० [सं०] (१) कुट (कुम्भ)मे उत्पन्न होनेके कारण अगस्त्य मुनि। (२) द्रोणाचार्यका एक नाम।

कुटभी—स्त्री० [सं०] अन्धक-रक्तपानार्थ महादेव द्वारा सृष्ट एक मानस-पुत्री मातृका (मत्स्य० १७९.१६)।

कुटिला—स्त्री० [सं०] चैतन्य-संप्रदायके अनुसार राधिकाकी ननद और आयान घोषकी बहिन।

कुटिलाक्ष—पु० [सं०] भण्डका प्रधान सेनापति। दुर्मद, कुरण्डक, करंक आदिके मारे जानेपर चक्ररथपर इसने स्वयम् आक्रमण किया, पर भाग गया। अंतमें भण्डके साथ युद्धमें गया और मारा गया (ब्रह्मां० ४.२१.७७-१००; २२-२६; २७-१०; २९.८, १४०)।

कुटीचक—पु० [सं०] चार प्रकारके संन्यासियोंमें पहला जो शिखा सूत्र रखता है और तीनों समय संध्या करता है। अपने ही सम्बन्धियोंके यहाँसे भिक्षा लेता है और मरनेपर जलाया जाता है (भाग० ३.१२.४३)।

कुटुम्बिका—स्त्री० [सं०] अन्धक-रक्तपानार्थ महादेव द्वारा सृष्ट एक मानस मातृका (मत्स्य० १७९.३०)।

कुणिंद—पु० [सं०] जरासंधका एक शक्तिशाली मित्र जो मथुराके घेरेके समय उत्तर प्रवेश द्वारपर था [भाग० १०.५०.११ (७); ५२.११ (१४)] दे० कुलिंद।

कुणि—पु० [सं०] (१) जय (संजय=विष्णु०)का पुत्र तथा युगंधरका पिता (भाग० ९.२४.१४; विष्णु० ४.१४.३)। (२) इन्द्रप्रमति जो वसिष्ठ और घृताचीसे उत्पन्न हुआ था और जिसका पृथु पुत्रीसे वसु नामक पुत्र हुआ (ब्रह्मां० ३.८.९७)। (३) वेदशिराके चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्र। ये वेदशिरा १५वें द्वापरके अवतार माने जाते हैं (वायु० २३.१६९)।

कुणिबाहु—पु० [सं०] वेदशिराके, जो १५वें द्वापरके अवतार थे, एक पुत्र (वायु० २३.१६९)।

कुत्स—पु० [सं०] (१) चाक्षुष मनुके नड्वलामें उत्पन्न ११

पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (भाग० ४.१३.१६)। (२) एक भार्गव गोत्रकारत था त्रिप्रवर ऋषि (मत्स्य० १९५.२२; १९६.३२)। (३) एक ऋषि जिसकी बनायी ऋचाएं ऋग्वेदमें हैं। निरुक्तके रचयिता यास्कके पूर्व ही इनका रचनाकाल ठहरता है।

कुथन–पु० [सं०] खशाके पुत्र राक्षसोंमेंसे एक राक्षसका नाम (वायु० ६९.१६५)।

कुथुमि–पु० [सं०] (१) उन्नीसवें द्वापरके अवतार जटामाली-के चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (वायु० २३.१८७)। (२) सामग आचार्य पौष्यञ्जिके प्रधान चार शिष्योंमेंसे एक। इनके तीन पुत्र थे (वायु० ६१.३६-३८)।

कुनेत्रक–पु० [सं०] वेदशिराके, जो १५वें द्वापरके एक अवतार थे, चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (वायु० २३.१६९)।

कुपथ–पु० [सं०] दनु तथा कश्यप पुत्र दानवोंमेंसे एक दानवका नाम (ब्रह्मां० ३.६.१०; वायु० ६८.१०)।

कुबरी–स्त्री० [सं०] दे० कुब्जा।

कुबलाश्व–पु० [सं०] दे० कुवलयाश्व।

कुबेर–पु० [सं०] दे० कुवेर।

कुबेरतुंग–पु० [सं०] उत्तर-पूर्व दिशामें नंदाके निकट श्राद्धादिके लिए एक पवित्र स्थान जिसे सिद्धक्षेत्र मानते हैं। यहाँ महादेवका एक मन्दिर है। शंकरने यहाँ देवीके मंदिर में एक पैरपर खड़े हो एक युगतक तपस्या की थी (ब्रह्मां० ३.१३.८०; वायु० ७७.७८-८१)।

कुबेरभवन–पु० [सं०] यह पिशाचक पर्वतपर स्थित है (वायु० ३९.५७)।

कुब्जा–स्त्री० [सं०] (१) इसने सत्संगसे मुक्ति पायी थी (भाग० ११.१२.६)। (२) अयोध्यापति दशरथकी रानी कैकेयीकी दासी मंथरा (रामच० मा० अयोध्याकाण्ड, दो० १२)। (३) मथुरापति कंसकी एक दासी जिसकी पीठ कुबड़ी थी। यह कंसकी 'माल्यानुलेपनवाहिनी' दासी थी। धनुषयज्ञमें आते समय श्रीकृष्णने इसे कंसके यहाँ सुगन्ध अनुलेपनादि ले जाते देखा और माँगनेपर इसने उन्हें बड़ी प्रसन्नतासे अनुलेपनादि दे दिये जिससे प्रसन्न हो श्रीकृष्णने इसका कुबड़ापन दूर कर एक सुन्दरी युवती बना दिया था (भाग० १०.४२.१-९; ११.१२.६)।

कुब्जाम्र–पु० [सं०] पितरोंके श्राद्धके लिए एक अति प्रशस्त पवित्र तीर्थ (मत्स्य० २२.६६)।

कुमार–पु० [सं०] (१) देवसेनापति कार्त्तिकेयका दूसरा नाम। यह शरकानन या शरवनमें उत्पन्न हुए थे और ६ कृत्तिकाओंने इन्हें पाला था, इसीसे इन्हें कार्त्तिकेय कहते हैं। तारकासुर युद्धमें यह देवसेनापति बने और तारकका वध किया (विष्णु० १.१५.११५; मत्स्य० ५.२६-७; १६० अध्याय पूरा; २२५.१८; वायु० ६६.२४)। विष्णुसे इन्हें क्रीड़ार्थ मुर्गा और मयूर मिले, सरस्वतीसे महावीणा, ब्रह्मासे बकरा और शिवसे भेंड़ा (ब्रह्मां० ३.३.२४; १०.३५ ४८; मत्स्य० २०३.६; वायु० ७२.३५-४६)। 'देवसेना'से इनका विवाह हुआ। इन्हें स्कन्द, गुह तथा देवसेनापति भी कहते हैं (ब्रह्मां० ३.१०.४८-५१; ४. ३०.३९, ९९-१०५; वायु० ८२.४८-५०)। (२) सनक, सनंदन, सनत् और सुजात आदि कई ऋषि जो सदा बालक ही रहते हैं। विष्णु पुराणानुसार ये ब्रह्माके मानसपुत्र हैं। यही परब्रह्मका रहस्य समझ पाये थे और ये ज्ञान और धर्मका प्रचार करनेके लिए विचरण करते हैं (भाग० ६.३.२०; १५.१२; १७.१२, ३२; ८.२३.२०)। (३) हव्य अग्निके एक पुत्रका नाम जिन्होंने कई वैदिक मंत्रोंका प्रकाश किया था। इन्हींके नाम-पर शाकद्वीपके द्वितीय वर्ष कौमार वर्षका नामकरण हुआ (ब्रह्मां० २.१४.१७-१८; वायु० ३३.१६)। (४) एक प्रजा-पतिका नाम (ब्रह्मां० ३.१.५४; वायु० ६५.५३)। (५) भौम (मंगल) का एक नाम (ब्रह्मां० २.२३.८५; २८.९२)। (६) वास्तुशास्त्र (स्थापत्य-कला) का एक विशेषज्ञ (मत्स्य० २५२.३)। (७) २९वें कल्पमें ब्रह्माके मानसपुत्र जो उनकी ध्यानावस्थामें उत्पन्न हो गये थे। इनका रंग श्वेत-रक्त तथा मुखाकृति भयंकर थी। इन्हें देवोंका देव, पुराणपुरुष कह ब्रह्माने इनकी स्तुति की (वायु० २२.१०.२३)। (८) आठवें कल्पारम्भमें ब्रह्माको 'नील लोहित' नामक एक पुत्र हुआ जो रोता अधिक था। अपने नामकरणके लिए इसने ब्रह्मासे प्रार्थना की, जिसपर ब्रह्माने इसके क्रमशः रुद्र, भव, शिव, पशुपति, ईश, भीम, उग्र और महादेव नाम रखे (वायु० २७.४-१६)। (९) एक काद्रवेय नागका नाम (वायु० ६९.७१)। (१०) शाकद्वीपके अधिपति भव्यके सात पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (विष्णु० २.४.६०)। (११) एक राज्य तथा जाति विशेषका नाम जहाँ ह्रादिनी नदी बहती है (ब्रह्मां० २.१८.५५; वायु० ४७.५२)।

कुमारक–पु० [सं०] सृष्टि करनेकी इच्छावाले ब्रह्मा ध्यान-मग्न हो बैठे थे, तब ब्रह्मासे सर्वप्रथम इसकी उत्पत्ति हुई। यह कौन—इस विचारमें मग्न ब्रह्मासे वह अक्षर उत्पन्न हुआ जो शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गंध रहित था। उन्होंने एक ऐसे नाना प्रकारके रंगवाले रूपपर ध्यान लगाया जो न तो पुल्लिंग है और न स्त्रीलिंग। इसपर उनके कण्ठसे ओङ्कार 'अक्षर'की उत्पत्ति हुई, फिर दो 'मात्राक्षर' और फिर तीन अक्षर तदुपरांत चौदह मुँहवाले देव और चौदह (१४) मनु (वायु० २६.८.२८)।

कुमारकोशल–पु० [सं०] पालपंजर पर्वतपर स्थित एक तीर्थ जो श्राद्धादिके लिए अति प्रशस्त और पवित्र समझा जाता है (वायु० ७७.३७)।

कुमारनिलय–पु० [सं०] एक स्थान विशेष जहाँके ऋषिगण द्वारका गये थे [भाग० १०.९०.२८(४)]।

कुमारवंश–पु० [सं०] (भाग० = कुरुवंश) मधुके पुत्र अनुके पिता तथा पुरुमित्रके दादाका नाम—दे० अनु (६); (विष्णु० ४.१२.४२; भाग० ९.२४.५)।

कुमारवन–पु० [सं०] एक वनका नाम जहाँ पुरूरवा उर्वशीसे अलग हुए थे (मत्स्य० २४.१९)।

कुमारा–स्त्री० [सं०] (ब्रह्मां०-कुमारी) शुक्तिमान् पर्वतसे निकली एक नदी (विष्णु० २.३.१४)।

कुमारिका–स्त्री० [सं०] राजा भरतकी पौत्री और सिंहलेश्वर शतशृङ्गकी पुत्रीका नाम, जिसका मुख बकरीके मुखके समान था। कहते हैं कि एक समय एक बकरी सागरके समीप जल पीने गयी पर एक लतामें फँस जानेसे इसका शरीर सागरमें रह गया और सिर लतामें। इसका शरीर छूट गया। सागरके माहात्म्यसे बकरी सिंहलराजके

घर उत्पन्न हुई। कुछ दिनोंमें यह युवती हुई और दर्पणमें मुख देखनेसे इसे अपने पूर्व जन्मकी वातें याद आयीं। राजाकी आज्ञा लेकर कुमारिका उसी स्थानपर आयी जहाँ वकरी पड़ी थी और उसका सिर उसने सागरमें डाल दिया। इससे उसका मुख मनुष्योंका-सा हो गया। कुमारिकाने वहीं शिवकी आराधना की और एक वर्षतक तप करनेके पश्चात् उनके आनेपर उनसे वहीं रहनेकी प्रार्थना की जिसे शिवने स्वीकार किया। राजकुमारीने वहाँ मंदिर वनवाकर शिवलिंगकी स्थापना की जिसका नाम 'वर्करेश्वर' है। उसीने कार्त्तिकेयके स्थापित 'कुमारेश्वर' महादेवके मंदिरका जीर्णोद्धार कर नया कर दिया था, जिससे प्रसन्न हो शिवने अपना नाम 'कुमारीश्वर' भी रख दिया। स्वस्तिक नामके एक नागराज कुमारिकाको देखने वहाँ आये थे जिससे वहाँ एक कूप वन गया जो गंगाजलसे पूर्ण भी हो गया। शिवकी आज्ञासे कुमारिकाका विवाह महाकालसे हुआ था जिनके साथ वह रुद्रलोक चली गयी जहाँ पार्वतीने उसे अपनी सखी वनाया और चित्रलेखा नाम रख दिया। इसीने वाण-पुत्री ऊपाको चित्र द्वारा अनिरुद्धका परिचय दिया था (स्कन्द० माहेश्वर० कुमारिका-खंड)।

कुमारिलभट्ट—पु० [सं०] प्रसिद्ध मीमांसक और शावर भाष्य तथा अन्य श्रौतसूत्रोंके टीकाकार। गुरु-सिद्धांत खंडन करनेके प्रायश्चित्तके लिए कटाग्निमें जलमरे थे। मरनेके पहले इनसे शंकराचार्य मिलने आये थे। ये कार्त्तिकेयके अवतार समझे जाते हैं ('गुरुसम्मतपदार्थाः', नारायणप्रणीत)।

कुमारी—स्त्री० [सं०] (१) ललिता देवीकी एकमात्र पुत्री, जो सदा नौ वर्ष की थी, सब विद्याओंकी निधान थी और जिसे सैनिक शिक्षा दी गयी थी। इसने अकेले भण्डके सब पुत्रोंका वध कर डाला था (ब्रह्मां० ४.२६.७३-११७)। (२) सती देवीकी एक मूर्ति, जिसकी स्थापना मायापुरीमें है (मत्स्य० १३.३४)। (३) कन्याकुमारी—श्राद्धादिके लिए पवित्र स्थान (ब्रह्मां० २.१६.११; ३.१३.२८)। (४) (विष्णु०—कुमारा) शुक्तिमान् पर्वतसे निकली एक नदी (ब्रह्मां० २.१६.३८; मत्स्य० १६३.८६)। (५) शाकद्वीपकी एक नदी जिसका दूसरा नाम सिद्धा है (ब्रह्मां० २.१९.९६; वायु० ४९.९२; विष्णु० २.४.६५)।

कुमारीपूजा—स्त्री० [सं०] श्रावणके कृष्ण तथा शुक्ल दोनों पक्षोंकी नवमीको कुमारी नामकी देवीकी पूजा करे, ब्राह्मण-ब्राह्मणीको भोजन करावे, पर स्वयम् विल्वपत्र खाये तो परम-तत्त्व प्राप्त होता है (निर्णयामृत तथा भविष्योत्तर०)।

कुमारेशतीर्थ—पु० [सं०] दक्षिण समुद्रतटपर स्थित एक अति पवित्र तीर्थ जो 'सौभद्र मुनिका तीर्थ' कहा जाता है। ये संख्यामें पाँच हैं जिनमें 'कुमारेश' प्रथम है। इसमें एक मुनिके शापसे 'वर्चा' नामकी अप्सरा ग्राह होकर रहती थी और स्नान करनेवाले ऋषियोंको जलमें खींच ले जाती थी, अतः यह तीर्थ त्याग दिया गया था। अपनी १२ वर्षोंकी तीर्थयात्रामें अर्जुन यहाँ आये थे जिन्होंने अप्सराओंका उद्धार किया था (स्कंद० कुमारिका खंड १.१२-२२; १.४९-५०; पञ्चाप्सरस्तीर्थ, महाभारत आदिपर्व)।

कुमारेश्वर—पु० [सं०] एक शिवलिंग जिसे स्वयम् ब्रह्माने प्रस्तुत किया तथा कार्त्तिकेयने तारकासुर-वधके प्रायश्चित्त-स्वरूप विष्णुकी अनुमतिसे स्थापित किया था। यहाँ 'कार्त्तिकेयकी शिव स्तुति'का पाठ कर जो पूजा तथा जागरण करता है उसे शिवधाम मिलता है (स्कंद० माहेश्वर-कुमारिका खंड २७-४०-४७)।

कुमुख—पु० [सं०] रावणके दुर्मुख नामक एक योद्धाका नाम (रामायण)।

कुमुञ्ज—पु० [सं०] अरुणोदके पूर्वमें एक पर्वत जो पहाड़ियों तथा पर्वतोंका राजा है। इसके निकट श्रीसर नामका सुशील स्वच्छ जलका विशाल सरोवर है जो विविध खिले कमलोंसे सदा पूर्ण रहता है। कहते हैं उसमें साक्षात् श्री (लक्ष्मी) नित्य निवास करती हैं (वायु० ३६.१८; ३७.१)। दानवोंके आठ नगर इसी पर्वतके धातुविचित्र शिखरोंपर बसे हुए हैं (वायु० ३९.२८-९)।

कुमुथि—पु० [सं०] ब्रह्माके यज्ञके एक ऋत्विक्का नाम (वायु० १०६.३४)।

कुमुद—पु० [सं०] (१) बन्दरोंके एक सरदारका नाम जो राम-रावण युद्धमें लड़ा था (ब्रह्मां० ३.७.२४२)। इसने अकम्पन नामक राक्षसको मारा था (स्कंद० ब्राह्मखण्ड, सेतु-माहात्म्य)। (२) आठ दिग्गजोंमेंसे एक जिसका निवास दक्षिण-पश्चिम कोणमें माना गया है (ब्रह्मां० ३.७.२९२)। (३) विष्णुका एक पार्षद (भाग० ७.८.३९; ११.२७.२८)। इसने वलिके असुरोंपर आक्रमण किया (भाग० ८.२१.१६)। (४) एक नागराजका नाम जो श्रीरामके पुत्र कुशका साला था (कुमुद्वती, ब्रह्मां० ३.७.३४५)। (५) अथर्ववेदाचार्य पथ्यके तीन शिष्योंमेंसे एक शिष्य (भाग० १२.७.२)। (६) मणिवर और देवजनीके अनेक पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (वायु० ६९.१६०)। (७) क्रोधवशा और कश्यपकी मृगी आदि वारह पुत्रियों, जो पुलहको ब्याही गयीं, मेंसे वकभूति या भूताके विविध भूत, प्रेत, पिशाच, निशाचर रूप सैकड़ों पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (वायु० ९६.२४७)। (८) एक पहाड़ जो शीतोद नामक सरोवरसे पश्चिम मेरुके एक ओर है। यहीं प्रसिद्ध शतवल्श नामका वटवृक्ष है जहाँसे नदियाँ इलावृतको जाती हैं। इस वृक्षसे जो कुछ माँगा जाय मिलता है (भाग० ५.१६.११, २४; वायु० ३६.२८; ३८.४५; ४२.५१)। (९) शाल्मलद्वीपके सात पहाड़ोंमेंसे एक (ब्रह्मां० २.१९.३५; वायु० ४९.३२-३; विष्णु० २.४.२६)। यह किन्नरोंका निवासस्थान है (वायु० ३९.५९)। (१०) कुशद्वीपका एक पर्वत (मत्स्य० १२२.५२)। (११) गोमेदकद्वीपका एक पर्वत (मत्स्य० १२३.३)। (१२) मानसरोवरके सात चक्रवाक जो पूर्व जन्ममें कुरुक्षेत्रवासी कौशिकके सात पुत्र थे, उनमेंसे एक पुत्र (मत्स्य० २०.१८)। (१३) कुबेरकी आठ निधियोंमेंसे एकका नाम (वायु० ४१.१०)।

कुमुदद्युति—पु० [सं०] चांद्रमस सामसे उत्पन्न दो नागोंमेंसे एक नाग (गज)। इसे पिंगलामें दो पुत्र हुए—महापद्म और ऊर्मिमाली (ब्रह्मां० ३.७.३४५)।

कुमुदद्वीप—पु० [सं०] भारतवर्षका एक भाग कुशद्वीप इसका नामान्तर है (वायु० ४८.१४, ३४-५)।

कुमुदबांधव—पु० [सं०] कुमुद फूलोंके रातमें खिलनेके कारण चंद्रमाका एक नाम—दे० चंद्रमा।

कुमुदा— स्त्री० [सं०] (१) योगमायाके १४ नामोंमेंसे एक नाम (भाग० १०.२.१२)। (२) सती देवीकी एक मूर्ति जिनकी स्थापना मानसमें है (मत्स्य० १३.२७)। (३) कुमुद द्वीपमें स्थित महादेवकी महाभागा बहिन (वायु० ४८.३५)।

कुमुदाक्ष—पु० [सं०] (१) विष्णुके १४ अनुचरोंमेंसे एक अनुचर जिसने बलिके असुर अनुगामियोंपर आक्रमण किया था (भाग० ८.२१.१६; ११.२७.२८)। (२) देवजनी और मणिवरके अनेक पुत्र यक्षोंमेंसे एक यक्ष (ब्रह्मां० ३.७.२२९)।

कुमुदादि—पु० [सं०] अथर्ववेद शाखा प्रवर्तक पथ्यकी शिष्य-परम्पराका एक वैदिक (ब्रह्मां० २.३५.५९; वायु० ६१.५२; विष्णु० ३.६.११)।

कुमुदाभ—पु० [सं०] केतुमाल देशका एक जनपद (वायु० ४४.१२)।

कुमुदिनी—स्त्री० [सं०] भण्डकी चार रानियोंमेंसे एक (ब्रह्मां० ४.१२.१३)।

कुमुदेश—पु० [सं०] दे० चंद्रमा।

कुमुद्वती—स्त्री० [सं०] (१) यह नागराज कुमुदकी बहिन और कुशकी पत्नी थी। (२) क्रौंच द्वीपकी सात प्रधान नदियोंमेंसे एक नदी (ब्रह्मां० २.१९.७५; मत्स्य० १२२.८८; वायु० ४९.६९; विष्णु० २.४.५५)। (३) विन्ध्याचलसे निकली एक नदी (ब्रह्मां० २.१६.३३; मत्स्य० ११४.२७; वायु० ५५.१०२)।

कुमुद्वान्—पु० [सं०] कैलास पर्वतकी तलहटीका एक सरोवर, जिससे दिव्य मन्दाकिनी नदीका उद्गम हुआ है (वायु० ४७.२)।

कुमुन्द—पु० [सं०] एक पहाड़की शाखा जो मेरुके पूर्व है (विष्णु० २.२.२७)।

कुरंग—पु० [सं०] मेरुकी तलहटीमेंके २० पर्वतोंमेंसे एक पर्वत (भाग० ५.१६.२६)।

कुरंड—पु० [सं०] भण्डका एक पुत्र तथा सेनापति जो द्रुमदका बड़ा भाई था और अश्वारूढ़ा देवीके हाथों मारा गया था। यह मायामें दक्ष तथा चित्रयुद्ध या कूटयुद्धमें बड़ा निपुण था (ब्रह्मां० ४.२१.७७; २२.७१-१०८)।

कुरका—स्त्री० [सं०] ताम्रपर्णी नदीके तटपर कुर्गदेशस्थित एक नगर। वैष्णव आचार्य शठकोपका जन्म यहीं हुआ था।

कुरज—पु० [सं०] धर्म और विश्वाके दस विश्वेदेव पुत्रोंमेंसे एक विश्वेदेव (मत्स्य० २०३.१३)।

कुरर—पु० [सं०] (विष्णु०—कुररी) एक पर्वत जो मेरुकी तलहटीमें स्थित २० पर्वतोंमेंसे अन्यतम है (भाग० ५.१६.२६; विष्णु० २.२.२७)।

कुरव—पु० [सं०] (१) अप्सराओंके चौदह गणोंमेंसे सोमकी किरणोंसे उत्पन्न एक गण (ब्रह्मां० ३.७.१९; वायु० ६९.५५)। (२) यह कुरुओंकी भूमि है। हरिताश्वके राज्यका यह एक भाग है जिसे कुरुवंशियोंकी भूमि भी कहते हैं (मत्स्य० १२.१८; ३५.८; ६९.११; १२१.४९)। (३) यह समुद्रोंके बीच बसा एक वर्ष है जिसकी देखभाल सिद्ध लोग करते हैं। यहाँ मधुफल वृक्ष हैं जिनसे आभूषण और वस्त्र प्राप्त होते हैं तथा ६ रसवाले क्षीरी वृक्ष भी हैं। छह रसवाला दूध उनसे चूता है। वह दुग्ध अमृत तुल्य है। सारी भूमि अमूल्य रत्नोंसे विभूषित है। यहाँ मिथुन बच्चे उत्पन्न होते हैं और शीघ्र ही बढ़ जाते हैं जिनमें चकवा-चकई-सा अटूट प्रेम रहता है। यहाँ दो कुल पर्वत हैं तथा भद्रसीमा आदि नदियाँ हैं जिनमें दूध, घी और मधु बहता रहता है। यहाँकी वाटिकाओंमें चन्दन, अगर आदिके वृक्ष हैं। क्रीड़ास्थलों, कुंजों तथा लतिका-गृहोंका बाहुल्य है। संगीत तथा वाद्य-यंत्रोंकी भी कमी नहीं है। यहाँके निवासियोंको न तो बुढ़ापा ही आता है और न कोई रोगग्रस्त ही दीखता है। सबके-सब प्राणी सुखी तथा समृद्ध हैं (वायु० ४५.११-५०)।

कुरु—पु० [सं०] (१) एक सोमवंशी राजा जिसके वंशमें पाण्डु और धृतराष्ट्र उत्पन्न हुए थे (मत्स्य० ५०.२०-२)। (२) एक प्राचीन देश जिसके दो खण्ड माने गये हैं। हिमालयके उत्तरमें उत्तरकुरु जो शाद्वल वनके लिए विख्यात था (वायु० ८४.२३.४८) और दक्षिण कुरु जो हिमालयके दक्षिण भागमें स्थित है जिसके अन्तर्गत पांचालादि देश थे। रुक्मिणी-कृष्ण विवाह (भाग० १०.५४.५८); तथा युधिष्ठिरका राजसूय यज्ञ (भाग० १०.७५.१२; ८२.१३; ८४.५५) यहीं सम्पन्न हुए थे। (३) आग्नीध्र और पूर्वचित्तिका एक पुत्र (भाग० ५.२.१९; वायु० ३३.४०; विष्णु० २.१.१७,२१)। यह शृंगवद्वर्षका अधिपति था (ब्रह्मां० २.१४ ४७)। यह शृंगवद्वर्ष उत्तरमें स्थित था (वायु० ३३.४४; ब्रह्मां० २.१४.५१)। (४) संवरण और तपतीका एक पुत्र जिसने प्रयागपर अधिकार कर कुरुक्षेत्र स्थापित किया था। परीक्षित् आदि इसके चार पुत्र थे (भाग० ९.२२.४; वायु० ९९.२१४-७; विष्णु० ४.१९.-७६-८)। इसके वंशज कौरव कहलाये (मत्स्य० ५०.२०-२)। (५) नड्वलाके गर्भसे उत्पन्न मनुके एक पुत्र जिनकी पत्नी आग्नेयीसे इनके अंग आदि ६ पुत्र थे (विष्णु० १.१३.५.६)।

कुरुक्षेत्र—पु० [सं०] सरस्वती नदीके बाँयें किनारेपर (भाग० ९.१४.३३) अम्बाला और दिल्लीके बीचमें स्थित एक बहुत प्राचीन तीर्थका नाम जिसे संवरणपुत्र महाराज कुरुने स्थापित किया और जो धर्मस्थान होनेसे विष्णुको अति प्रिय था (भाग० ३.३.१२; ७.१४.३०; विष्णु० ६.८.२९)। शतपथ ब्राह्मण तथा उपनिषदोंमें भी इसका उल्लेख मिलता है। महाभारत तथा अन्य पुराणोंमें भी लिखा है कि कुरुने कुरुक्षेत्रका 'कर्षण' किया। अब भी यहाँ एक बहुत प्राचीन तथा पवित्र सरोवरके चिह्न वर्तमान हैं। ऋग्वेदके अनुसार इसका नाम 'सर्यानावत' है। यहाँके ब्रह्मसर नामक सरोवरमें परशुरामने स्नान करके क्षत्रिय-हत्याके पापसे मुक्ति पायी थी। परशुरामजीका 'स्यमंतपंचक' सरोवर यहीं है (भाग० १.१.१७)। यज्ञके समय सूतने ब्रह्मांडपुराण यहीं सुनाया था (भाग० ३;१३.६५; ६०.१६६.१८)। महाराज पुरूरवाने इसीके किनारे बिछुड़ी हुई उर्वशीको फिरसे पाया था। यहाँ सनत्कुमार और धर्मराजका निवास है तथा श्राद्धादिके लिए इसे अति पवित्र माना गया है (भाग० ३.१३.६५.६८; ६६.१८; मत्स्य० २२.१८; वायु० ७७.६४; ९१.३१; ९९.२१५.२५९)।

यहीं किसी सरोवरके तटपर तप करते-करते सोमवंशी महाराज कुरुके गुप्त होनेके कारण इस स्थानको "कुरुक्षेत्र"

कहते हैं। यह बड़ा प्रसिद्ध रणक्षेत्र रहा है। महाभारतका युद्ध यहीं हुआ था [भाग० १०.७८(९५(५)९),१८]। अश्वमेधदत्तके पुत्र अधिसीम कृष्णने यहाँ यज्ञ किया था जो तीन वर्षोंतक चला (वायु० ९९.२५८,२७०; विष्णु० ४.२१.६.७)। महाराज शतानीकके पुत्रका दूसरा यज्ञ यहीं हुआ था जो दो वर्षोंतक चला (मत्स्य० ५०.६६,७८)। 'स्थाणु' नामक महादेवकी मूर्त्तिकी यहीं स्थापना हुई और उन्हींके नामपर स्थाण्वीश्वर (थानेश्वर) नामक नगर बसा। यहीं वर्धन नामक राजवंशकी स्थापना राजा पुष्यभूतिने की थी। इसी वंशमें हर्षवर्धन हुए थे।

इसमें ३६५ तीर्थ विद्यमान हैं और इस तीर्थका परिमाण बारह योजन है। सूर्यग्रहण पर्व आदि अवसरोंपर अब भी यहाँ बहुत बड़े-बड़े मेले होते हैं। तरन्तुक, अरन्तुक, रामह्रद, सकल और मचक्रुकके समीपका स्थान कुरुक्षेत्रके नामसे विख्यात है।

कुरुजांगल–पु० [सं०] एक प्राचीन देश जो पांचाल देशके पश्चिममें था जहाँ परीक्षित्का राज्य था। महाभारतके अनुसार कुरुजांगल और कुरुक्षेत्र एक ही हैं—'महातपा कुरुकी तपस्यासे कुरुजांगल पवित्र हुआ और उन्हींके नामके अनुसार कुरुक्षेत्र नामसे प्रसिद्ध हुआ।' यह श्राद्धके लिए प्रशस्त स्थल माना गया है। यहाँ शुक और विदुर आये थे (भाग० १.४.६; १०.३४; १६.१२; ३.१.२४; ब्रह्मां० ३.१३.१००; वायु० ७७.९३)। एक पांचाल राज्य का नाम (मत्स्य० २१.९.२८)।

कुरुजित्–पु० [सं०] अंजनके पुत्र तथा कृतिके पौत्र एवं अरिष्टनेमिके पिताका नाम (विष्णु० ४.५.३१)।

कुरुपांचाल–पु० [सं०] मध्यदेशका एक राज्य (ब्रह्मां० २.१६.४०; विष्णु० २.३.१५)। एक जाति तथा जनपद (मत्स्य० ११४.३४; वायु० ४५.१०९)।

कुरुवश–पु० [सं०] (विष्णु०–कुमारवंश) मधुके पुत्र तथा अनुके पिताका नाम (भाग० ९.२४.५; विष्णु० ४.१२.४२)।

कुरुवान्–पु० [सं०] दस विश्वेदेवोंमेंसे एक विश्वेदेव (वायु० ६६.३२)।

कुरुवीर (गण)–पु० [सं०] धरातलके राजा दुर्योधन आदि तथा उनका पक्ष लेकर लड़नेवाले वीर जिन्हें श्रीकृष्णने भूभार हल्का करनेके निमित्त परास्त किया था (ब्रह्मां० ३.७३.१०३)।

कुलक–पु० [सं०] (१) कुशद्वीपके निवासियोंका एक वर्ग (भाग० ५.२०.१६)। (२) क्षुद्रकका पुत्र तथा सुरथका पिता (मत्स्य० २७१.१३)।

कुलकर्म–पु० [सं०] पुराणसंहिताका एक खण्ड (वायु० ६०.२१)।

कुलदेव–पु० [सं०] वह देवता विशेष जिसकी पूजा किसी खास कुलमें हो। विवाह आदि अवसरोंपर इनकी पूजा खास विधिसे की जाती है (हिं.श.सा.)।

कुलदेवी–स्त्री० [सं०] (१) देवी विशेष जिसकी पूजा किसी खास कुलमें हो। पूजाका ढंग भी विशिष्ट ही होता है। (२) पार्वती जिनकी पूजा विवाहके एक दिन पूर्व कन्या करती है और जो सौभाग्यदायिनी है [भाग० १०.५२.४२(१)]।

कुलदेवी यात्रा–स्त्री० [सं०] एक प्रथा जिसके अनुसार कन्या अपने विवाहके एक दिन पूर्व पार्वतीके मंदिरमें जा पूजन करती है। श्रीकृष्ण रुक्मिणीको इसी अवसरपर हर लाये थे [भाग० १०.५२.४२(१)]।

कुलधर्म–पु० [सं०] कुल-परम्परासे चला आता हुआ कर्तव्य जिसका उल्लंघन करनेवाला श्राद्धादि करनेका अधिकारी नहीं रहता (ब्रह्मां० ३.१४.४१)।

कुलनायिका–स्त्री० [सं०] वे स्त्रियाँ जिनकी पूजा वाममार्गी लोग चक्रपूजनमें करते हैं। ये नव प्रकारकी होती हैं—नटी, कापालिनी, वेश्या, धोबिन, नाइन, ब्राह्मणी, शूद्रा, अहीरिन तथा मालिन (चक्रपूजा विधि तथा स्तोत्र)।

कुलपति–पु० [सं०] शास्त्रानुसार वह ऋषि जो १०,००० मुनियोंको भोजन और शिक्षा दोनों देता हो (हिं.श.सा.)।

कुलपर्वत–पु० [सं०] महेन्द्र, मलय, सह्य, शुक्तिमान्, ऋक्षवान्, विन्ध्याचल और पारियात्र—इन सात पहाड़ोंको मिलाकर कुल पर्वत कहते हैं (मत्स्य० ११४.१७)। इन कुलपर्वतोंमेंसे महेन्द्र उड़ीसामें है; मलय पश्चिमी घाटका दक्षिणी पर्वत है जिसे मालाबारके पहाड़ कहते हैं; सह्य पश्चिमी घाटका उत्तरी भाग है; शुक्तिमान् संदेहात्मक है; ऋक्ष—गोंडवाना नामक पहाड़ है; विन्ध्याचलसे केवल उसके पूर्वी पहाड़ोंका बोध होता है और पारियात्र, जिसे परिपात्र भी कहते हैं, विन्ध्याचलका उत्तरी और पश्चिमी भाग है।

टोलेमी, जो दूसरी शताब्दीका प्रसिद्ध ज्योतिषी था, भी सात कुलपर्वतोंका उल्लेख किया है, पर उसके दिये नाम इनसे भिन्न हैं।

कुलसंकुल–पु० [सं०] इक्कीस नरकोंमेंसे एकका नाम (भाग० तथा मनुस्मृति)।

कुलसुन्दरी–स्त्री० [सं०] जगदुपकारकारिणी पञ्चदश नित्या देवियोंमेंसे एक नित्या देवी। इन्होंने चण्डबाहु और कुक्कुर नामक दैत्योंका विनाश किया (ब्रह्मां० ४.१९.५८; २५.९७; ३७.३४)।

कुलह–पु० [सं०] कश्यपवंशीय एक प्रवर ऋषि (मत्स्य० १९९.१७)।

कुलाचल–पु० [सं०] (१) दे० कुलपर्वत। (२) उस विशाल पर्वतका नाम जिसपर पाण्ड्यवंशके मलयध्वज, जिनके वैदर्भीसे एक लड़की और सात पुत्र हुए थे, अपना राजपाट पुत्रोंमें बाँटकर तप करने गये थे। यहाँ चंद्रमसा, ताम्रपर्णी तथा वटोदका नदियाँ बहती हैं। यहाँ बहुतसे ऋषियोंके आश्रम हैं (भाग० ३.१३.४१; २३.३९; ४.२८.३३.३५; ८.४.८)।

कुलालचक्र–पु० [सं०] कुम्हारका चाक जिसके समान संसार घूमता रहता है (वायु० १४.१९.३८; ५०.१४१)। सूर्य और चन्द्रमाकी गतिकी तुलना भी इसीसे की गयी है (मत्स्य० १२४.६९; १२५.५२; विष्णु० २.८.२९)।

कुलिक–पु० [सं०] नागलोकपति महाक्रोधी वासुकि आदि महानागोंमेंसे एकका नाम। इसके कई फणोंपर अर्धचन्द्र रूप महामणियाँ लगी हैं तथा निवास पातालमें है (भाग० ५.२४.३१)।

कुलिश–पु० [सं०] (१) वज्र—देवराज इंद्रका एक अस्त्र (मत्स्य० २५३.२४)। (२) श्रीराम-कृष्णादि विष्णुके अव-

तारोंके चरणोंका एक रेखाचिह्न (भाग० १०.१६.१८)।

कुलिशधर–पु० [सं०] सुरराज इंद्र जिसका अस्त्र वज्र है (मत्स्य० २५३.२४)।

कुलिशायुध–पु० [सं०] सुरपति इंद्र जिसका आयुध वज्र है, गृहनिर्माणमें इसकी पूजा होती है (मत्स्य० २५३.२४)।

कुलिशी–स्त्री० [सं०] एक नदी जिसका उल्लेख वेदोंमें मिलता है तथा इसे आकाशके मध्यमें स्थित माना गया है (हि.श.सा)।

कुलोत्तीर्णा–स्त्री० [सं०] शक्ति (ललिता) देवीके चक्रराजरथेन्द्रके पाँचवें पर्वपर स्थित देवियोंका एक वर्गविशेष जिसमें स्फटिक मणिके तुल्य शुभ्र सर्वसिद्धिप्रदा, सर्वसंपत्प्रदा, सर्वप्रियंकरी आदि नामकी दस देवियाँ हैं। ये परशु, पाश आदि अस्त्र-शस्त्रोंसे युक्त रहती हैं। शत्रुओंपर इनकी भौंहें सदा चढ़ी रहती हैं और भक्तजनोंपर ये अति अनुकम्पा करती हैं (ब्रह्मां० ४.१९.३५)।

कुल्लूक–पु० [सं०] दिवाकर भट्टके पुत्र जिन्होंने मनुसंहिता की टीका की थी। ये काशीवासी वंगदेशीय थे (मन्वर्थमुक्तावलीमंगलाचरण)

कुल्य–पु० [सं०] (१) पौष्यंजिके पाँच शिष्योंमेंसे एक शिष्य जिसने १०० सामसंहिताएँ सीख ली थीं (भाग० १२.६.७९)। (२) (वायु० जनापीड़) आण्डीरके चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्र जिसके नामपर कुल्य देशका नामकरण हुआ था (ब्रह्मां० ३.७४.६; वायु० ९९.६)।

कुवलय–पु० [सं०] प्रतर्दनके घोड़ेका नाम (विष्णु० ४.८.१५; दे० प्रतर्दन)।

कुवलयापीड़–पु० [सं०] एक हाथीका नाम जिसे कंसने श्रीकृष्णका वध करनेके लिए धनुष-यज्ञके मंडपके द्वारपर खड़ा कर रखा था। यह कृष्ण द्वारा मारा गया था और इसके महावत अम्बष्ठका वध बलरामने किया था, अतः कंस की अभिलाषा अपूर्ण ही रह गयी [भाग० १०.३६.२४(१), २५; ३७.१५; ४३.१-१८; ब्रह्मां० ३.७३.१००; वायु० ९८.१०१; विष्णु० ५.१२.२१; १५.११.१७; २०.२३, ३२-४२; २९.५)।

कुवलयाश्व–पु० [सं०] (१) एक घोड़ा जिसे पुराणानुसार सूर्यने पातालकेतुके मारनेके हेतु भेजा था, क्योंकि यह ऋषियोंके यज्ञमें बाधा पहुँचाता था। गालव ऋषिने इसे शत्रुजित्के पुत्र ऋतुध्वजको दिया था जिसपर सवार हो इन्होंने पातालकेतुका वध किया था और कुवलयाश्व कहलाये (दे० ऋतध्वज; मार्कण्डेय० अलर्कोपाख्यान)। (२) ऋतध्वज राजाका एक नाम (दे० ऋतध्वज, मार्कण्डेयपु० अलर्कोपाख्यान)। (३) प्रतर्दनका कुवलय घोड़ेके कारण एक नाम (विष्णु० ४.८.१५)। (४) बृहदश्व (श्रावस्ति=मत्स्य०) के पुत्र एक सूर्यवंशी राजाका नाम। भाग० और विष्णु०के अनुसार इनके २१००० पुत्र थे, पर हरिवंशमें केवल १०० पुत्रोंका उल्लेख मिलता है। महर्षि उत्तंक द्वारा धुंधु असुरके उपद्रवोंका विवरण सुन अपने पिताकी आज्ञासे ये अपने १०० पुत्रों सहित धुंधुको मारने गये थे। कुवलयाश्वके ९७ पुत्र इस युद्धमें मारे गये, केवल दृढ़ाश्व, भद्राश्व और कपिलाश्व बचे; पर कुवलयाश्वने धुंधुका वध कर डाला था और धुंधुमार कहलाये (दे० धुंधु, द्युमान्, कुवलयाश्व; भाग० ९.६.२१-२३; मत्स्य० १२.३१; वायु० ८८.३१; ८८.२८, ४८-६१; विष्णु० ४.२.३९-४२)।

कुबेर–पु० [सं०] धनाध्यक्ष एक देवता जिन्हें इंद्रके नौ निधियोंका भंडारी तथा महादेवजीका मित्र कहा जाता है (भाग० ९.२.३२-३३; ४.१.३७; ११.३३; वायु० ४०.८; ४७.१; ७०.३८; ९७.२) के अनुसार यह शिवके भाई थे। यह इड़विड़ाके गर्भसे उत्पन्न विश्रवा ऋषिके पुत्र और लंकापति रावणके सौतेले भाई थे। इन्होंने ही विश्वकर्मासे लंका बनवायी थी। रावणने ईर्ष्यावश इन्हें लंकासे निकाल दिया था। तब क्षुब्धहृदय कुबेरने तपोबलसे देवतापद प्राप्त किया। संसारके सारे धनके यह अध्यक्ष कहे जाते हैं तथा आदिराज पृथुके राज्याभिषेकके समय इन्होंने उन्हें भेंटमें एक सुवर्ण-सिंहासन दिया था (भाग० ४.१५.१४)।

इनके एक आँख, तीन पैर तथा आठ दाँत हैं। देवतापद प्राप्त करनेपर भी इनका कहीं पूजन नहीं किया जाता। यह उत्तर दिशाके मालिक हैं तथा पुरुष (आदमी) इनका वाहन है (नरवाहन) खड्ग, शूल और गदा धारण करते हैं। (मत्स्य० ६७.१५; १७४.१७-१८; विष्णु० ५.३६.१२)। ब्रह्मा० के अनुसार ये ब्रह्माके मानस-पुत्र पुलस्त्य ऋषिके पौत्र एवं विश्रवाके पुत्र हैं। इनकी माताका नाम देववर्णिनी था। ये देवाचार्य बृहस्पतिकी पुत्री थीं। कुबेरका शरीर श्वेत पर विकृत कहा गया है जो रत्नालंकारोंसे लदा रहता है। इनकी स्त्रीका नाम ऋद्धि है। मणिग्रीव और नलकूबर इनके पुत्र हैं (ब्रह्मां० ३.७.२५४.३३१; ८.३८ ४५; ७२.२) तथा इनकी पुत्रीका नाम मीनाक्षी है (हि० वि० को०)। वेदोंमें इन्हें दैत्य दानवोंका नायक कहा गया है। प्लूटोसे इनकी समता की जाती है। इनके निवासस्थानको अलकापुरी, वसुधारा या वसुस्थली कहते हैं जिसे हिमालयपर स्थित कहा गया है। मेरु पर्वतकी चोटी मंदारपर चैत्ररथ नामक इनका उपवन है और किन्नर इनके सेवक हैं तथा वित्तगोप्ता इनके भंडारी हैं (ब्रह्मां० २.१८.१-२; ३६.२१८; मत्स्य० १२१.२-३; १३७.३२; वायु० ६९.१९६)। नर्मदा और कावेरीके संगमपर तपकर इन्होंने शिवसे यक्ष आदिका अधिपति होनेका वर पाया था (मत्स्य० १८९.४-११; १९१.८५)। यह त्रिपुरारिके रथके रक्षक रहे एवं त्रिपुरमें हुए देव-दानव युद्धमें भी सम्मिलित थे (मत्स्य० १३३.६३; १३८.२५, १४०.४१)।

कुश–पु० [सं०] (१) अयोध्यापति श्रीरामचन्द्रके ज्येष्ठ पुत्र जो जानकीके गर्भसे महर्षि वाल्मीकिके आश्रममें उत्पन्न हुए थे। इन्होंने अपने छोटे भाई लवके साथ श्रीरामकी सभामें वाल्मीकिकृत रामायणका पाठ किया था। पितासे इन्हें कोशला राज्यका अधिकार मिला था जिसकी राजधानी कुशस्थली थी। रामचन्द्रके स्वर्ग चले जानेपर आयोध्याकी अधिष्ठात्रीदेवीके कहनेपर यह पुनः अयोध्या चले आये और कुशावती त्याग दी—'रघुवंश'। परन्तु ब्रह्मां० ३.६३.१९८; वायु० ८८.१९८-९ के अनुसार यह अयोध्याका शासन कुशस्थलीसे ही करते थे। यह अतिथिके पिता थे (भाग० ९.११.११; १२.१; मत्स्य० १२.५१, ५२; विष्णु० ४.५-१०४-५)। (२) उपरिचर वसुका पुत्र एक राजा। (३) यज्ञ आदिमें प्रयुक्त होनेवाला एक पवित्र

तृण। (४) पुराणानुसार सात द्वीपोंमेंसे एक—कुशद्वीप जो सुरोदसे दुगने घृतोदसे घिरा है जिसमें चमकते कुश हैं। यहाँके राजा प्रियव्रतके पुत्र हिरण्यरेताने इसे सात खंडोंमें बाँट अपने सात पुत्रोंको दिया। यहाँ अग्निकी पूजा होती है (भाग० ५.१.३२; २०.१३-१७; मत्स्य० १२२.४९; वायु० ३३.१२; ४९.४७-५८)। यहाँ कुशस्तम्भ है (वायु० ४९-१३४-३५)। (५) अजकके पुत्र तथा बलाकके पौत्रका नाम जिनके कुशाम्बु आदि चार पुत्र थे (भाग० ९.१५.३-४)। (६) सुहोत्रका एक पुत्र तथा प्रतिका पिता (भाग० ९.१७.३-१६)। (७) ज्यामघ और शैव्याके पुत्र विदर्भके दो पुत्रोंमेंसे एक (भाग० ९.२४.१)। (८) बलाकाश्वका पुत्र तथा कौशांब आदि चार पुत्रोंका पिता (ब्रह्मां० ३.६६.३१-२; विष्णु० ४.७.८)। (९) चैद्योपरिचर (विद्योपरिचर-वायु० पु०) के सात पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (मत्स्य० ५०.२७; वायु० ९९.२२०)। (१०) गयका एक भाई तथा वेदश चार पुत्रोंका पिता (वायु० ९१.६१-२)।

कुशकेतु—पु० [सं०] वंगदेशका एक राजा जो हेमकांतका पिता था (दे० हेमकांत—स्कंद० पु० वै० वै० माहात्म्य)।

कुशद्वीप—पु० [सं०] पुराणानुसार सात द्वीपोंमेंसे एक जो चारों ओर घीके समुद्रसे घिरा है। यहाँ अग्निकी पूजाका माहात्म्य है। पियव्रतका पुत्र हिरण्यरेता यहाँका राजा था जिसने इसके सात खण्ड कर अपने सात पुत्रोंको दिये थे (भाग० ५.१.३२; २०.१३-१७; (मत्स्य० १२२.४९; वायु० ३३.१२; ४९.५०-५८)।

कुशध्वज—पु० [सं०] (१) सीरध्वजके पुत्र तथा धर्मध्वजके पिता (भाग० ९.१३.१९)। मैथिल भानुमानके भाई तथा काशीके राजा (वायु० ८९.१८; ब्रह्मां० ३.६४.१९)। (२) ह्रस्वरोमा राजाके पुत्र और सीरध्वज जनकके छोटे भाई जो सांकाश्यके अधिपति थे। इनकी कन्याएँ मांडवी और श्रुतकीर्त्ति श्री रामचन्द्रके छोटे भाई भरत और शत्रुघ्नको व्याहीं थीं (रामचरि० मा० बाल० छ० २; ३)। (३) बृहस्पतिके पुत्र और वेदवतीके पिता एक ऋपि—रामायण।

कुशनाभ—पु० [सं०] (१) अजकसुत कुशके चार पुत्रोंमेंसे एक (भाग० ९.१५.४; ब्रह्मां० ३.६६.३२; वायु० ९१.६२; विष्णु० ४.७.८)। (२) वैवस्वत मनुके दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्र। यह प्रसिद्ध इलका भाई था (मत्स्य० ११.४१)।

कुशप्लवन—पु० [सं०] महाभारतोक्त एक तीर्थ जहाँ दितिने इन्द्रहन्ता पुत्रकी प्राप्तिके लिए तपस्याकी थी (ब्रह्मां० ३.५.५५-६; वायु० ६७.९४)।

कुशरीर—पु० [सं०] वेदशिरा, जो पन्द्रहवें द्वापरके विष्णुके अवतार थे, का एक पुत्र। ये चार भाई थे (वायु० २३.१६९)।

कुशल—पु० [सं०] (१) क्रौञ्चद्वीपाधिपति द्युतिमान्‌के सात पुत्रोंमेंसे ज्येष्ठ पुत्र जिसके नामपर कौशल देशका नामकरण हुआ था (ब्रह्मां० २.१४.२२-२४; वायु० ३३.२१; विष्णु० २.४.४८)। (२) कुशद्वीपके चार प्रकारके निवासियोंमेंसे एक प्रकारके निवासी (भाग० ५.२०.१६)।

कुशलीसुख—पु० [सं०] विरोचनात्मज बाष्कलके चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (वायु० ६७.७९)।

कुशवती—स्त्री० [सं०] अप्सराओंकी जाति, जो वहिं कही जाती हैं, की जननी (ब्रह्मां० ३.७.२२)।

कुशस्तंब—पु० [सं०] (१) कुशद्वीपका एक कुशस्तम्ब जिसके कारण कुशद्वीपका नामकरण हुआ (ब्रह्मां० २.१९.१३९; (मत्स्य० १२३.३७)। (२) कुशनाभ जिसने इन्द्रतुल्य पुत्रकी कामनासे १००० वर्षोंतक तप किया तब इन्द्रने दर्शन देकर उसके पुत्र रूपसे स्वयम् उत्पन्न होना स्वीकार किया (वायु० ९१.६३-५)।

कुशस्थली—स्त्री० [सं०] (१) विन्ध्याचलपर स्थित कुशावती नगरी जहाँ श्रीरामचन्द्रके ज्येष्ठ पुत्र कुश राज्य करते थे। (२) कोशल वायु० आनर्त राजकी राजधानी जिसे रैवतके पिता रेवने स्थापित किया था। यह द्वारकाके समीप था जिसे यक्षोंने ध्वंस्त कर दिया था (भाग० १.१०-२७; ब्रह्मां० ३.६१.२०; वायु० ८८.१९९) दे० ककुद्मी।

कुशांब—पु० [सं०] (१) वसुके एक पुत्रका नाम (विष्णु० ४.१९.८१)। (२) राजा कुशके पुत्र जिन्होंने कुशके आदेशानुसार कौशाम्बी नगरी बसायी थी। (३) उपरिचरका एक पुत्र जो चेदि राज था (भाग० ९.२२.६)।

कुशांबु—पु० [सं०] कुशिकका एक पुत्र जो गाधिका पिता था। हरिवंशके अनुसार कुशिकने इंद्रके समान प्रतापी पुत्रके लिए घोर तप किया था तब यह उत्पन्न हुए थे (भाग० ९.१५.४; ब्रह्मां० ३.६६.३२; विष्णु० ४.७.८, ९-११; वायु० ९१.६२)।

कुशाग्र—पु० [सं०] बृहद्रथका पुत्र तथा ऋषभके पिताका नाम; पर मत्स्य० और विष्णु०के अनुसार यह वृषभका पिता था (भाग० ९.२२.६; मत्स्य० ५०.२८; वायु० ९९.२२३; विष्णु० ४.१९.८२)।

कुशारणि—पु० [सं०] दुर्वासा ऋषिका एक नाम।

कुशावर्त—पु० [सं०] (१) हरिद्वारके एक तीर्थका नाम। यहाँ गौतमने गंगाका कुशोंसे आवर्तन किया था। गंगाको दो भागोंमें विभक्त कहा गया है। विन्ध्यगिरिके दक्षिणकी गोतमीगंगा गोदावरी कही गयी और उत्तरकी भागीरथी कहलाती है—ब्रह्मपुराण। (२) ऋषभदेवके भरतप्रधान सौ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (भाग० ५.४.१०)। (३) पितरोंके श्राद्धके लिए एक प्रशस्त अनन्त फलदायक तीर्थ (मत्स्य० २२.६९)।

कुशावती—स्त्री० [सं०] (१) दक्षिण कोशलकी राजधानी जो विंध्याचलपर्वतपर स्थित थी। यहाँ श्रीरामके ज्येष्ठ पुत्र कुश राज्य करते थे दे० कुश, कुशस्थली। (२) केतुमालकी एक नदी (वायु० ४४.१८)।

कुशाश्व—पु० [सं०] (१) सहदेवके पुत्र तथा सोमदत्तके पिता इक्ष्वाकुवंशोत्पन्न एक राजाका नाम। (२) कुशके चार पुत्रोंमेंसे एक (वायु० ९१.६२)।

कुशि—पु० [सं०] विरोचनपुत्र बलिके १०० पुत्र थे। उनमेंसे प्रधान ४ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (वायु० ६७.८३)।

कुशिक—पु० [सं०] (१) विश्वामित्रके दादा और गाधिके पिता एक राजाका नाम। कुशिकने पुत्रकी कामनासे तप किया। पूरे १ हजार वर्ष बीतनेपर इन्द्रकी दृष्टि उनपर पड़ी। उनकी उग्र तपस्या देखकर इन्द्रने स्वयं उनका पुत्र बनना स्वीकार किया। कुशिकके गाधिरूपमें इन्द्र पैदा

हुए। गाधिकी पौरकुत्सी भार्या थी। उससे पहले एक कन्या सत्यवती उत्पन्न हुई। उसे गाधिने पुत्रकी कामनावाले भृगुनन्दन ऋचीकको व्याह दिया। सत्यवतीपर प्रसन्न होकर ऋचीकने उसके लिए तथा अपने श्वसुर गाधिके लिए पुत्रार्थ चरु बनाया। अपने पुत्रकी प्राप्तिके लिए वनाये हुए चरुमें सम्पूर्ण ब्राह्म तेज तथा गाधिके-पुत्रकी प्राप्तिके लिए साधित चरुमें सम्पूर्ण क्षत्रिय तेज निहित किया। पर गलतीसे पुत्रीका चरु माँने ग्रहण किया और मांका पुत्रीने। ऋचीकको इसका पता चलनेपर उन्होंने अपनी पत्नी सत्यवतीसे कहा इस गलतीके कारण तुम्हारा पुत्र क्रूर क्षत्रिय स्वभावका होगा और भाई ब्राह्मण स्वभावका होगा। सत्यवतीके वहुत अनुनय-विनयपर पुत्रके बदले पौत्रको उग्र क्षत्रिय स्वभावमें परिवर्तित कर दिया। सत्यवतीके जमदग्नि और गाधिके विश्वामित्र हुए (दे० गाधि और विश्वामित्र तथा ब्रह्मां० ३.६६.३३-५)। (२) एक विप्रर्षि (वायु० १.१५७)। (३) नकुली नामक विष्णुके अवतारके चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (वायु० २३.२२३)। (४) १३वें कल्पका नाम (वायु० २१.३२)।

कुशिकंधर–पु० [सं०] २०वें द्वापरके विष्णुके अवतार अट्टहासके पाँच पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (वायु० २३.१९३)।

कुशिकवरगण–पु० [सं०] कुशिक (गाधि)के उत्तराधिकारी विश्वामित्र आदि तेरह धर्मिष्ठ (ऋषि) (ब्रह्मां० २.३३.११८-१९)।

कुशीतक–पु० [सं०] वसुदेव और रोहिणीके आठ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (ब्रह्मां० ३.७१.१६५; वायु० ९६.१६३)।

कुशीती–पु० [सं०] सामग आचार्य पौष्यञ्जिके उदीच्य शिष्योंमेंसे एक (वायु० ६१.३६)।

कुशीद–पु० [सं०] पौष्यञ्जिके पाँच प्राच्यशिष्योंमेंसे एक शिष्य जो १०० साम शाखाओंका पण्डित था (भाग० १२.६.७९; ब्रह्मां० २.३५.४०)।

कुशीदकि–पु० [सं०] अंगिरस वंशके एक ऋषिका नाम (मत्स्य० १९६.२६)।

कुशीदि–पु० [सं०] कुशीद ही ब्रह्मांडपुराणानुसार कुशीदि है (ब्रह्मां० २.३५.४०)।

कुशीलव–पु० [सं०] वाल्मीकि ऋषिका एक नाम।

कुशूर–पु० [सं०] एक असुर जिसपर ललितादेवीकी सेनानी लघुश्यामा नामकी शक्तिने आक्रमण किया था (ब्रह्मां० ४.२८.४०)।

कुशेशय–पु० [सं०] कुशद्वीपके सात पहाड़ोंमेंसे पाँचवाँ पहाड़ (ब्रह्मा० २.१९.५५; वायु० ४९.५०; विष्णु० २.४.४१)। इस पहाड़का नामान्तर कंक है (मत्स्य० १२२.५८)।

कुशेशर–पु० [सं०] पितरोंके श्राद्धके लिए एक पवित्र तीर्थ। यहाँ किये गये श्राद्धका अक्षय फल है (मत्स्य० २२.७६)।

कुशोत्पाटनी अमावस्था–स्त्री० [सं०] भाद्रपद कृष्ण ३० पूर्वाह्णमें माने। इस तिथिको मंत्र पढ़कर दाहिने हाथसे कुश उखाड़कर लाते हैं जो पूरे वर्ष भर सारे पूजा-जप-श्राद्ध तथा यज्ञादिमें व्यवहार किये जाते हैं। ये बासी नहीं होते हैं—मदनरत्न।

कुशोदका–स्त्री०[सं०] कुशद्वीपमें स्थापित सतीदेवीकी एक मूर्ति (मत्स्य० १३·५०)।

कुषंड–पु० [सं०] कान, वाल तथा वस्त्ररहित पिशाचोंका एक वर्ग, जिसे मांस बड़ा प्रिय है, के सोलह जोड़ोंमेंसे एक जोड़ेका पुरुप पिशाच (ब्रह्मां० ३.७.३७९-३८७)।

कुपंडिका–पु० [सं०] उपर्युक्त पिशाचोंके एक वर्गके १६ जोड़ोंमेंसे एक जोड़ेकी स्त्री (ब्रह्मां० ३.७.३७९ और ३८२)।

कुष्टहर आशादित्य रविवार व्रत–पु० [सं०] आश्विन शुक्लके रविवारको १२ दलका कमल वना सूर्यमूर्त्तिकी स्थापना कर पोडशोपचार पूजन करे। अङ्गपूजाके पश्चात् ब्राह्मण-भोजन कराकर स्वयं भोजन करे। सालभर इसी प्रकार करता रहे। इससे कुष्ट ऐसे रोग भी निर्मूल हो जाते हैं (स्कंद०पु०)।

कुष्टि–स्त्री० [सं०] संभूति और प्रजापति मारीचिकी चार पुत्रियोंमेंसे एक पुत्री। इनके भाईका नाम पूर्णमास था (वायु० २८.९)।

कुसु–पु० [सं०] एक यक्ष जो देवजनी तथा मणिवरके ३० पुत्रोंमेंसे एक था (ब्रह्मां० ३.७.१२८)।

कुसुम– पु० [सं०] महाबली एक प्रधान बन्दर सरदार, जो वानरराज बालीका सामन्त था, का नाम (ब्रह्मां० ३.७.२३१)।

कुसुमकार्मुक–पु० [सं०] कुसुमायुध—दे० कामदेव (ब्रह्मां० ४.३५.६२; मत्स्य० ३.१०; ४.११-२, २१; १४.५-६)।

कुसुमपुर–पु० [सं०] (ब्रह्मां० दर्भक) गंगाके बाँये तटपरका एक नगर जिसे उदायी (ब्रह्माण्ड उदयी) ने स्थापित किया था। ये बिंबिसारके पौत्र तथा दर्शकरके पुत्र थे। इन्होंने ३३ वर्ष तक राज्य किया था (वायु० ९९.३१९)।

कुसुमबाण–पु० [सं०] कुसुमायुध—दे० कामदेव (ब्रह्मां० ४.३५.६२; मत्स्य० ३.१०; ४.११.३,२१; १४.५-६)।

कुसुमशर–पु०[सं०] कुसुमायुध—दे० कामदेव (ब्रह्मा० ४.३५.६२; मत्स्य० ३.१०; ४.११-२, २१; १४.५-६)।

कुसुमांजलि–स्त्री० [सं०] पूजनके पोडशोपचारका अन्तिम उपचार जिसमें अञ्जलिमें फूल भरकर देवतापर चढ़ाये जाते हैं (पुराणोक्तसर्वदेवपूजा दुर्गाशंकर) कृत।

कुसुमा–स्त्री० [सं०] (१) ललितादेवीकी सेविका आठ शक्तिदेवियोंमेंसे एक शक्तिदेवी (ब्रह्मां० ४.३६.७६)। (२) गंगाके बाएँ तटपरकी एक नगरी जिसे शिशुनागवंशके राजा उदयी (वायु० उदायी) ने स्थापित किया था (ब्रह्मां० ३.७४.१३२)।

कुसुमामोदिनी–स्त्री० [सं०] हिमाचलपर्वतकी अधिकारिणी एक देवी जिन्होंने उमाके तपसे लौटनेतक उनके निवासस्थानकी रक्षा की थी (मत्स्य० १५६.१-७)।

कुसुमायुध–पु० [सं०] कुसुमके आयुध होनेके कारण मन्मथका एक नाम—दे० कुसुमकार्मुक, कुसुमशर आदि (ब्रह्मां० ४.३५.६२; मत्स्य० ३.१०; ४.११-२, २१; १४.५-६)।

कुसुमि–पु० [सं०] एक श्रुतर्पि जो पौष्यञ्जिके चार प्रधान शिष्योंमें एक शिष्य थे (ब्रह्मां० २.३३.८; ३५.४०)।

कुसुमेपु–पु० [सं०] कामदेवका एक नाम—दे० कामदेव।

कुसुमोत्कर–पु० [सं०] शाकद्वीपके सोमक पर्वतके चारों ओरका देश (मत्स्य० १२२.२४)।

कुसुमोत्तर—पु० [सं०] (१) प्रियव्रतके पुत्र शाकद्वीपेश्वर हव्यके सात पुत्रोंमेंसे एक पुत्र जिसके नामपर कुसुमोत्तर वर्षका नामकरण हुआ (ब्रह्मां० २.१४.१७-२०)। (२) शाकद्वीपके अस्तपर्वतके आसपासके प्रदेशका नाम (ब्रह्मां० २.१४.२०; १९.९२; वायु० ४९.८७)।

कुसुमोद—पु० [सं०] शाकद्वीपके अधिपति भव्य (ब्रह्माण्ड हव्य) का एक पुत्र (विष्णु० २.४.६०)।

कुसुम्भ—पु० [सं०] इक्ष आदि (इक्षु, पारा, निष्पाव, जीरा, गोदुग्ध तथा उसका विकार दही आदि, कुसुम्भ, कुंकुम और नमक) आठ सौभाग्य द्रव्योंमेंसे एक (मत्स्य० ६०-९.२७)।

कुस्तुंबुरु—पु० [सं०] देवजनी तथा मणिवरके पूर्णभद्र आदि अनेक पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (वायु० ६९.१५९)।

कुहक—पु० [सं०] क्रोधवशवर्गके नागोंमेंसे एक प्रधान नाग (भाग० ५.२४.२९)।

कुहरिणी—पु० [सं०] मेरु पर्वतपरका एक स्थान जहाँ व्यास ने संशयापनोदनार्थ तपस्या की थी (वायु० १०४.६१)।

कुहू—स्त्री [सं०] (१) श्रद्धा (स्मृति = विष्णु०) नामकी पत्नीसे उत्पन्न अंगिरा ऋषिकी चार पुत्रियोंमेंसे एक पुत्री जो अमावस्याकी अधिष्ठात्रीदेवी कही जाती है। यह धाताकी पत्नी तथा सायंकी माता थी (भाग० ४.१.३४; ६.१८.३; ब्रह्मां० २.११.१८; वायु० २८.१५; ५०.२०१; ५५.४२; ५६.९; ४५.५३; विष्णु० १.१०.७)। (२) सोमकी नौ अनुचरी देवियोंमेंसे एक (ब्रह्मां० ३.६५.२६; वायु० ९०. २५)। (३) षोडशपत्रवाले अब्ज (कमल) की सोलह शक्तिदेवियोंमेंसे एक शक्तिदेवी (ब्रह्मां० ४.३२.१३)। (४) मयकी तीन पुत्रियोंमेंसे एक पुत्री तथा हविष्यान्‌की पत्नी, जो उन्हें छोड़कर यह सोमके पास चली गयी थी (मत्स्य० ६.२१;२३.२५)। (५) कृष्णपक्षकी अंतिम तिथि जब चन्द्रमाकी अंतिम कला विलीन हो जाती है। जैसा बलरामने रुक्मिणीसे कहा था। ऐल पुरूरवा मासिक श्राद्ध करनेकी इच्छासे इसकी उपासना करता था (भाग० १०.५४.४७; ब्रह्मां० २.२६.४४; २८.११.५९; मत्स्य० १३३.३६; १४१.४९-५१; विष्णु० २.८.८२; मत्स्य० १४१.९; ४३,४९,५१; वायु० ५६.५३)। (६) भारतवर्षकी एक नदी जो हिमालयसे निकली है (ब्रह्मां० २.१६.२५; मत्स्य० ११४.२१; वायु० ४५.९५)। (७) शाल्मलि द्वीपकी सात नदियोंमेंसे एक नदी (भाग० ५.२०.१०)। (८) इस नामका एक राज्य था जिसपरसे सिन्धु नदी बहती थी (मत्स्य० १२१.४६)।

कूट—पु० [सं०] एक पहलवान (मल्ल) जो कंसका मित्र था और जिसे बलरामने मारा था (भाग० १०.४२.३७; ४४.२६)।

कूटक—पु० [सं०] भारतवर्षके बहुतसे पर्वतोंमेंसे एक पर्वत (भाग० ५.१९.१६)।

कूटकम्बलमौषीय—पु० [सं०] केतुमालका एक जनपद (वायु० ४४.१०)।

कूटयुद्ध—पु० [सं०] कूटनीतिसे होनेवाला युद्ध जिसमें कुरण्ड (भण्डासुरका एक सेनापति) बड़ा निपुण था (ब्रह्मां० ४.२२.७४; २५.४६-५५)।

कूटशाल्मलि—पु० [सं०] (१) यमराजकी गदाका नाम (रघु० १२.९५)। (२) लोहेका एक कटीला वृक्ष जो नरकमें कहा जाता है तथा पापियोंको दण्ड देनेमें इसका उपयोग होता है (विष्णु० द्वितीय अंश)।

कूटशैल—पु० [सं०] भारतवर्षके विविध पर्वतोंमेंसे एक पर्वत (ब्रह्मां० २.१६.२३; वायु० ४५.९२)।

कूतनाकूतना—स्त्री० [सं०] सहस्ररश्मि सूर्यकी चार सौ रश्मियोंका, जिनसे वर्षा होती है, एक समूह (ब्रह्मां० २.२४.२७)।

कूति—पु० [सं०] (१) बीस सुतप देवगणोंमेंसे एकका नाम (वायु० १००.१५)। (२) दर्श, पौर्णमास आदि १२ जयादेवों, जिनकी ब्रह्माके मुखसे सृष्टि हुई थी तथा जो शापवश स्वायंभुव मन्वन्तरमें जित, स्वारोचिष मन्वन्तरमें तुषित, औतममन्वन्तरमें सत्य, तामस मन्वन्तरमें हरि, रैवत मन्वन्तरमें वैकुण्ठ तथा चाक्षुष मन्वन्तरमें साध्य नामसे उत्पन्न हुए, मेंसे एक जयादेव (ब्रह्मां० ३.३.६; ४.२; वायु० ६६.६)।

कूपक—पु० [सं०] भण्डके एक पुत्र तथा सेनापतिका नाम (ब्रह्मां० ४.२१.८२)।

कूपकर्ण—पु० [सं०] बाणासुरका एक मन्त्री जो जरासंधके साथ मथुरापर आक्रमण करने गया था। इसके मायास्त्रका श्रीकृष्णने विज्ञानास्त्रसे नाश कर दिया था। कृतवर्माने इसे परास्त किया था। यह कुम्भाण्डको अचेतावस्थामें छोड़ नगरको भाग गया था। शोणितपुरके युद्धमें इसे बलरामने परास्त किया था [भाग० १०.(५) १ (५)१८]; २८-३०, ६४-६५; ६३.८, १६)।

कूपलोचन—पु० [सं०] भण्डके एक पुत्र तथा सेनापतिका नाम (ब्रह्मां० ४.२१.८२)।

कूपा—स्त्री० [सं०] भारतके शुक्तिमान् पर्वतसे निकली एक नदी (वायु० ४५.१०७)।

कूर्च—पु० [सं०] मीढ़्वान्‌के पुत्र तथा इन्द्रसेनके पिताका नाम (भाग० ९.२.१९)।

कूर्चव्रत—पु० [सं०] फाल्गुन शुक्ल १४ को उपवास कर पूर्णिमाको पंचगव्य पीये और प्रतिपदाको हविष्यान्नका भोजन करे तो उस महीनेके सब पाप दूर हों। यह व्रत इंद्रके प्रीत्यर्थ किया जाता है (विष्णुधर्मोत्तर)।

कूर्दिनी—स्त्री० [सं०] ३६ वर्णशक्ति देवियोंमेंसे एक वर्णशक्ति देवी (ब्रह्मां० ४.४४.६०)।

कूर्म—पु० [सं०] (१) कूर्म = कच्छप, कछुआ। विष्णु भगवानका द्वितीय अवतार (भाग० २.७.१३; (मत्स्य० २४९.१६,२८; विष्णु० १.४.८)। समुद्रमंथनके समय भगवानने कूर्म-रूप धारण किया था जिसके योगसे समुद्र मथा जा सका था। इनकी पूजा हिरण्यमय द्वीपमें होती है। इनको कूर्मकच्छप भी कहते हैं (भाग० ५.१८.२९; ११.४.१८; १०.२.४०)। (२) ऋग्वेदके कई सूक्तोंका विकास करनेवाला एक ऋषि जो गोत्रप्रवर्तक भी थे। (३) दस प्राणोंमेंसे एक जिससे आँखकी पलकें खुलती और बन्द होती हैं।

कूर्मकल्प—पु० [सं०] वामनपुराणका रचनाकाल (मत्स्य० ५३.४६)।

कूर्मक्षेत्र—पु० [सं०] हिन्दुओंका तीर्थस्थान जहाँ कूर्मावतारका दर्शन होता है (हि॰श॰सा॰)। यह स्थान चिकाकोलसे

आठ मील पूर्व समुद्रके किनारेपर गंजाम जिलेमें है। चैतन्य महाप्रभुने इस स्थानकी यात्रा की थी। इस समय यह श्री कूर्मके नामसे प्रसिद्ध है (ज्योग्राफिकल डिक्शनरी —डे० कृत)।

कूर्मज–पु० [सं०] कूर्मका (मांस), यह श्राद्धके लिए प्रशस्त माना जाता है। कछुएके मांससे पितरोंकी ११ महीनेतक तृप्ति होती है (मत्स्य० १७.३३; ५८.१९)।

कूर्मद्वादशी–स्त्री० [सं०] पौष शुक्ल १२ को ज्येष्ठा नक्षत्र हो तो भगवानका पूजन कर घीका दान करे, गोमूत्र पी उपवास करे और आगे भी नियत दान और भोजन करे तो कुलमें प्रधानता तथा घरमें संपत्ति होती है। इसी तिथिको कूर्मावतार हुआ था—दे० 'वीरमित्रोदय'।

कूर्मपुराण–पु० [सं०] पहले इसका वर्णन कूर्मावतारमें विष्णुने किया था। फिर नारदजीने इसे सूतजीसे कहा था और उन्होंने दूसरे ऋषियोंसे कहा। पहिले यह चार संहिताओंमें विभक्त था। इसमें कूर्मरूपधारी विष्णुने इन्द्रद्युम्नके प्रसंगसे महर्षियोंको धर्म, अर्थ, काम और मोक्षका पृथक्-पृथक् माहात्म्य सुनाया था। इसकी ब्रह्मसंहिता ही आजकल प्राप्त है जिसे हमलोग कूर्मपुराण कहते हैं। शिव और दुर्गाका माहात्म्य वर्णन करना ही इस पुराणका उद्देश्य है। इसके मतसे वायुपुराण और शिवपुराण दोनोंमें महापुराण हैं। इसमें देवीका सहस्रनामस्तव है। अयनोंमें इस पुराणका सुवर्णके कछुएके साथ दान करनेसे १००० गोदानके फलके बराबर पुण्य होता है (मत्स्य० ५३.४७.४९; वायु० १०४.९)। यह अठारह मुख्य पुराणोंमेंसे एक है जिसमें १८००० श्लोक (१७००० = भाग० वायु० के अनुसार) हैं (भाग० १२.७.२४; १३.८; विष्णु० ३-६.२३ तथा नारद० पूर्व भाग, चतुर्थ पाद।

कूर्मशिला–स्त्री० [सं०] वह पत्थर जिसपर किसी मूर्त्तिकी स्थापना की जाती है (मत्स्य० २६६.५)।

कूश्म–पु० [सं०] एक हवनीय देवता विशेषका नाम (हि॰श॰सा॰)।

कूष्मांड–पु० [सं०] (१) वाराणसीके रक्षक नन्दी, महाकाल, चण्डघण्ट,दण्डचंडेश्वर आदि अनेक शिवगणोंमें एक शिवगण। ये नाना प्रकारकी आकृतिवाले महोदर, महाकाय तथा वज्र-शक्ति धारण करनेवाले कहे गये हैं। एक विनायक (मत्स्य० १८३.६३)। (२) वैदिक कालके एक ऋषिका नाम। (३) यजुर्वेदका एक सूक्त जिसका पाठ सरोवरकी प्रतिष्ठाविधिमें होता है (मत्स्य० ५८.३५; २३९.१०)। (४) शिवके गण, एक प्रकारके पिशाच (शिवपु०)। (५) एक प्रकारके दुष्ट भूत-प्रेतादि। ये बच्चोंको कष्ट देते हैं (भाग० ६.८.२४; १०.६.२७; ब्रह्मां० ३.७.३८४; ४१.२९)। इन्द्रकी सलाहसे इन सबने विविध रूप धारण कर ध्रुवकी समाधिमें विघ्न डाला था (विष्णु० १.१२.१३)।

कूष्मांडगौतम–पु० [सं०] बलिके क्षेत्रमें दीर्घतमासे उत्पन्न कक्षीवान्के १००० पुत्रोंका सामूहिक नाम (ब्रह्मां० ३.७४.९९)।

कूष्मांडनवमी–पु० [सं०] कार्त्तिक शुक्ल ९ (अक्षयनवमी) को अच्छा पका हुआ कुम्हड़ा ले उसमें रत्नादि रखकर मंत्रसे संकल्प कर ब्राह्मणको दे (हिमाद्रि, देवीपुराण)।

कूष्माण्डिक–पु० [सं०] पिशाचोंके १६ जोड़ोंका सामूहिक नाम। इनके केश और रोम नहीं होते। ये पेड़ोंके वल्कल तथा पशुओंकी खाल पहनते हैं। तिल और मांस इनका भक्ष्य है (वायु० ६९.२६८)।

कूष्मांडी–स्त्री० [सं०] (१) पुलह और कपिशाकी पुत्री जिससे सोलह पिशाचोंके जोड़े उत्पन्न हुए जिनके न सिर है न बाल, रंग भूरा तथा भोजन मांस और तिल है(वायु० ६९.२५७, २६८)। (२) यजुर्वेदकी एक ऋचा जिसके द्रष्टा कूष्मांड ऋषि थे।

कृकण–पु० [सं०] भजमानके छह पुत्रोंमेंसे एकका नाम (विष्णु० ४.१३.२)।

कृकवाकु–पु० [सं०] मुर्गेका एक नाम। विवस्वान्ने इसे अपने पुत्र यमको दिया था। विमाता (छाया) के शापसे यम शीर्णपाद हो गये। उनके पैरके कृमि चरनेके लिए मुर्गा उन्हें दिया गया (मत्स्य० ११.११-१७)। सविष भोजनको देख यह चिल्ला उठता है (मत्स्य० २१९.१९)।

कृच्छ्र–पु० [सं०] पापोंके प्रायश्चित्तका एक ढंग, प्राजापत्य जिसका एक रूप है (मत्स्य० २२७.४१-३; ५३-५७; वायु० १८.२१)।

कृच्छ्रचतुर्थी–स्त्री [सं०] यह व्रत मार्गशीर्ष शुक्ल ४ से आरम्भ कर प्रत्येक चतुर्थीको वर्षभर करे फिर दूसरे, तीसरे तथा चौथे वर्षमें करनेसे यह पूर्ण होता है। इसमें गणेशजीका पूजन होता है जिससे सम्पूर्ण विघ्नोंका नाश होकर सम्पत्तिका लाभ लिखा है (स्कंद०)।

कृच्छ्रातिकृच्छ्र–पु० [सं०] अनजानमें पशु और मृगकी हिंसा हो जानेपर यतियोंके लिए एक प्रायश्चित्त या नियम जिसके विकल्पमें चान्द्रायणका विधान है (वायु० १८.१६)। इसमें प्रातःकाल, सायंकाल तथा मध्याह्नमें एक-एक बार जल पीकर २१ दिन व्रत करनेका विधान है—दे० गोतम। "अब्भक्षस्तु त्रिभिः कालैः कृच्छ्रातिकृच्छ्रकः स्मृतः" यमके अनुसार यदि न हो सके तो अतिकृच्छ्र करे (व्रतपरिचय)।

कृत–पु० [सं०] (१) सामग हिरण्यनाभके शिष्य तथा अजवस्त आदि २४ शिष्योंके गुरुका नाम (ब्रह्मां० २.३५.५२)। (२) जयका पुत्र तथा हर्यवनका पिता (भाग० ९·१७.१७)। (३) वसुदेव और रोहिणीके कई पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (भाग० ९.२४.४६)। (४) सन्नतिमान्का पुत्र जो हिरण्यनाभका एक शिष्य था। इन्होंने सामवेदको २४ खंडोंमें विभाजित करनेके कारण सामवेदियोंमें उच्च स्थान प्राप्त किया था (मत्स्य० ४९.७५-६)। इन्होंने २४ संहिताएँ अपने शिष्योंको पढ़ायी थीं (भाग० १२.६.८०; ब्रह्मां २.३५ ४९, ५५; वायु० ९९.१८९-९०; विष्णु० ३.१६.७)। (५) देवजनी और मणिभद्रके अनेक पुत्रोंमें एक पुत्र यक्ष (ब्रह्मां० ३.७.१३०)। (६) सुग्रहके पिता तथा श्रुतदेवीके पतिका नाम। श्रुतदेवी वसुदेवजीकी बहन थीं। ये पाँच बहनें थीं। ये वीरमाताएँ कही गयी हैं (मत्स्य० ४६.५)। (७) विश्वामित्रके शुनःशेप आदि अनेक पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (वायु० ९१.९६)। (८) कनकके चार पुत्रोंमें सबसे छोटा पुत्र (वायु० ९४.८)। (९) हृदिकके महापराक्रमी दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (वायु० ९६.१३९)। (१०) च्यवनका पुत्र तथा विश्रुतका पिता। यह महा तपस्वी था। इसने बहुतसे यज्ञ किये थे

(वायु० ९९.२१९)। (११) महाराज रजिके वंशज विजय (भाग०–जय) के पुत्र तथा हर्यंधन (भाग० हर्यंवन)के पिताका नाम (विष्णु० ४.९.२६-७)। (१२) चार युगोंमेंसे पहला युग। सूर्य, चन्द्रमा, तिष्य तथा वृहस्पति जब एक ही राशिमें आ जाते हैं तब इस (कृत) युगका आरंभ होता है (विष्णु० ४.२४.१०२)।

कृतक–पु० [सं०] (१) मदिराके गर्भसे उत्पन्न वसुदेवके दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (भाग० ९.२४.४८; ब्रह्मां० ३.७१.१७२; विष्णु० ४.१५.२३)। (२) च्यवनके पुत्र तथा उपरिचर वसुके पिताका नाम (विष्णु० ४.१९.७९-८०)।

कृतकृत्य–पु० [सं०] बंदरोंका एक नायक (ब्रह्मां० ३.७.२४१)।

कृतञ्जय–पु० [सं०] (१) बहिंका पुत्र तथा रणंजयका पिता (भाग० ९.१२.१३)। (२) सोलहवें द्वापरके वेदव्यास जिन्होंने धनंजयसे ब्रह्मपुराण सुनकर तृणञ्जयको सुनाया था (ब्रह्मां० २.३५.१२१; ४.४.६३) और धनञ्जयसे वायुपुराण भी इन्होंने सुना था एवं तृणञ्जयको सुनाया था (वायु० १०३.६२)। (३) धर्मांका पुत्र तथा व्रातका पिता (वायु० ९९.२८७) तथा रणञ्जयके पिताका नाम (विष्णु० ४.२२.६.७)।

कृतद्युति–स्त्री० [सं०] चित्रकेतुकी सबसे बड़ी रानी जिसे अंगिरा ऋषिके आशीर्वादसे एक पुत्र हुआ जिसकी मृत्यु विषसे हुई (भाग० ६.१४.२८-४८)।

कृतधर्मा–पु० [सं०](१) संकृतिका एक पुत्र जो बड़ा धर्मात्मा था (ब्रह्मां० ३.६८.११; (वायु० ९३.११)। (२) धनकके चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (विष्णु० ४.११.१०)।

कृतध्वज–पु० [सं०] धर्मध्वज (जनक=विष्णुपु०) के दो पुत्रोंमेंसे एक पुत्र तथा केशिध्वजके पिताका नाम। इसके अनुजका नाम मितध्वज था (भाग० ९.१३.१९-२०; विष्णु० ६.७-८)।

कृतप्राप्ति–पु० [सं०] सुतारवर्गके १० देवोंमेंसे एक देव (ब्रह्मां० ४.१.९०)।

कृतवन्धु–पु० [स०] तामस मनुके ११ पुत्रोंमेंसे सबसे कनिष्ठ पुत्र (ब्रह्मां० २.३६.५०)।

कृतमाला–स्त्री० [सं०] भारतवर्षके मलय पर्वतसे निकली द्रविड़ देशकी एक नदी जिसका माहात्म्य भागवतमें लिखा है। राजर्षि द्रविडेश्वर सत्यव्रतके यहीं जलतर्पण करते समय मछली अञ्जलिमें आयी थी और बलराम भी तीर्थयात्रा प्रसंगमें यहाँ आये थे (भाग० ५.१९.१८; ८.२४.१२; ११.५.३९; १०.७९.१६; ब्रह्मां० २.१६.३६; ३.३५.१७; मत्स्य० ११४.३०; वायु० ४५.१०५; विष्णु० २.३.१३)।

कृतयुग–पु० [सं०] सूर्य, चंद्रमा और वृहस्पति जब तीनों नक्षत्र एक ही राशिके हों तभीसे इसका प्रारम्भ होता है। इसमें विष्णुकी उपासना तप, शम और दम तथा ध्यानमात्र से होती है (भाग० ९.१०.५२; ११.५.२१-२३; १२.३.५२)। धर्मके प्रचारार्थ विष्णुने इस युगमें वृषका रूप धारण किया था। इसमें मनुष्य हंस जातिके होते हैं (भाग० ११.१७.१०-११) यह कलियुगके अन्तमें पुनः आरम्भ होता है और इसमें पितरोंकी पूजा होती है (ब्रह्मां० २.१६.६९; २९.२४-३१; ३१.१०३.११; ३.१४.१६-७; ७४.२२५; मत्स्य० १.३४, १४२.१९.२४; १४४.९०; १४५.६-७; १६५.१) इसमें मनुष्योंके १,२८०००.वर्ष होते हैं (मनु० १.६९ और इसपर कुल्लूकभट्टकी टीका)। इस युगकी अवधि देवताओंके ४००० वर्ष है, संध्या और संध्यांश=१०८ वर्ष; इसमें ध्यानकी प्रधानता है। संध्यांश ४००=प्रक्रियापाद (वायु० ८.३२-६७) कलिके पश्चात् सप्तर्षियोंके साथ; सर्वप्रथम मनुष्य कलिंगमें उत्पन्न होंगे (वायु० ५८.१०३, ११०)। इस युगमें वेदकी प्रतिष्ठा होगी (वायु० ७८.३६-७)।

कृतरथ–पु० [सं०] प्रतिकका पुत्र तथा देवमीढ़का पिता (विष्णु० ४.५.२७)।

कृतरात–पु० [सं०] महाधृतिका पुत्र तथा महारोमाका पिता (विष्णु० ४.५.२७)।

कृतलक्षण–पु० [सं०] माद्री और वृष्णिके पाँच पुत्रोंमेंसे एक (कनिष्ठ) पुत्र (मत्स्य० ४५.२)।

कृतवर्मा–पु० [सं०] (१) हृदीकके तीन पुत्रोंमेंसे (वायु० ब्रह्मां० और मत्स्य० के अनुसार दस पुत्रोंमेंसे) ज्येष्ठ पुत्र (भाग० १.१४.२८; ९.२४.२७; ब्रह्मां०३.७१.१४०; मत्स्य० ४४.८१; वायु० ९६.१३९; विष्णु० ४.१४.२४)। (२) धनकके चार पुत्रोंमेंसे एक (तृतीय) (भाग० ९.२३.२३)। (३) मथुरापर आक्रमणके समय श्रीकृष्णने इन्हें पूर्वी द्वारकी रक्षाका भार सौंपा था। इन्होंने बाणके मंत्री कूपकर्णको हराया था। श्रीकृष्णने इन्हें हस्तिनापुर भी भेजा था जहाँ ये पाण्डवों, द्रोण तथा विदुर आदिसे मिले थे और मथुरा जा श्रीकृष्णसे सारा हाल कह आये थे। इन्होंने शतधन्वाकी सहायता करना अस्वीकार किया था(भाग० १०.५०.२०[२]; [५१(५)२५]; ३०-३१, ६४; [५६(५)२-२५]; ५७.३-१८; विष्णु० ४.१३.६७-८३)। यह श्रीकृष्णके अश्वमेध यज्ञके घोड़ेके साथ गये थे (भाग० १०.८-९.२२[२]) पाण्डवोंसे मिलने यह उपलाव्य गये तथा सूर्यग्रहणपर स्यमंतपंचक गये थे (भाग० १०.७८[९५(५)३]; ८२.७) इनके पुत्रका विवाह रुक्मिणीकी एक पुत्री चारुमतीसे हुआ था (भाग० १०.६१.२४) कुरुक्षेत्रके प्रसिद्ध युद्धके पश्चात् भी यह जीवित रहे (भाग० १०.८२[२]) श्रीकृष्णके हाथों शतधन्वाकी मृत्युका समाचार सुन भयभीत हो यह द्वारका छोड़ भाग गये थे (भाग० १०.५७.२९)। यादवोंके गृहयुद्धमें इनकी मृत्यु हुई थी (विष्णु० ५.३७.४६)। (४) कनकके चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (ब्रह्मां० ३.६९.८; मत्स्य० ४३.१३; वायु० ९४.८)।

कृतवाच–पु० [सं०] तैंतीस मन्त्रकृत श्रेष्ठ आंगिरसोंमेंसे एक मन्त्रकृत् (मत्स्य० १४५.१०१)।

कृतवीर्य–पु० [सं०] (१) धनकका पुत्र तथा प्रसिद्ध सहस्रबाहु कार्त्तवीर्यका पिता; पर ब्रह्मां०, वायु० और मत्स्यपुराणानुसार कनकका पुत्र तथा कार्तवीर्यके पिताका नाम। (ब्रह्मां० ३.६९.८; मत्स्य० ४३.१३; वायु० ९४.८) परन्तु भाग० ९.२३.२३-४; विष्णु० ४.११.१०-११ के अनुसार यह धनकका ही पुत्र था। यह हैहयवंशका राजा था जो वैवस्वत मन्वंतरके कृतयुग तथा वाराह कल्पमें उत्पन्न हुआ था। च्यवन ऋषिके शापसे इसके १०० पुत्र मर गये थे। सूर्यके बताये एक व्रतके प्रभावसे इसे एक दीर्घायु पुत्र हुआ था (मत्स्य० ६८.६-१२)। (२) प्रवाहीसे उत्पन्न दस देवगन्धर्वोंमेंसे एक देवगंधर्व (वायु० ६८.३८)।

कृतशर्मा—पु० [सं०] शतरथका पौत्र तथा ऐड़िविड़का पुत्र (वायु० ८८.१८१)।

कृतशौच—पु० [सं०] वह पवित्र तीर्थस्थान जहाँ नृसिंहने देवीको आशीर्वाद दिया था। 'सात मातृकाओं'के बीच रुद्रने यहाँ अपना रौद्र शरीर स्थापित किया था। नृसिंहकी स्तुति करती हुई अर्धनारीश्वरकी मूर्त्ति यहाँ है (मत्स्य० १७९.८७-९०) यहाँ सती देवीकी एक मूर्त्ति सिंहिका देवी स्थापित है। यह एक पवित्र पीठस्थान है (मत्स्य० १३.४५)।

कृतस्थला, कृतस्थली—स्त्री०[सं०] मेनकादि दस अप्सराओंमेंसे एक अप्सरा (ब्रह्मां० ३.७.१५; ४.३३.१९) यह चैत्रमासमें व्यूहके अन्य साथियोंके साथ सूर्य रथमें अधिष्ठित रहती है (भाग० १२.११.३३)।

कृतांत—पु० [सं०] (१) स्वारोचिष मनुके नौ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (ब्रह्मां० २.३६.१९; वायु० ६२.१८)। (२) यमका एक नाम (मत्स्य० १४८.३०)।

कृताग्नि—पु० [सं०] धनक (कनक-ब्रह्मां० और मत्स्य०) का एक पुत्र (भाग० ९.२३.२२; ब्रह्मां० ३.६९.८; मत्स्य० ४३.१३; विष्णु० ४.११.१०-११)।

कृतालक—पु० [सं०] शिवका एक अनुचर विशेष।

कृताहार—पु० [सं०] बंदरोंका एक सरदार जो श्वेता और पुलहके दस वानरपुंगव पुत्रोंमेंसे एक पुत्र था (ब्रह्मां० ३.७.१८०)।

कृति—पु० [सं०] (१) शतध्वजके पिता तथा कुरुजित्के दादाका नाम (विष्णु० ४.५.३१)। (२) बहुलाश्वका एक पुत्र तथा प्रसिद्ध महावशीका पिता। महावशी जनकके वंशका मिथिलाका अंतिम शासक था (केवल भागवतके अनुसार कृति-पुत्र महावशी जनकवंशका अन्तिम राजा था। ब्रह्माण्ड०, विष्णु० तथा वायु०के अनुसार कृति ही जनकवंशी अन्तिम राजा था।)(भाग० ९.१३.२६; ब्रह्मां० ३.६४.२३; वायु० ८९.२३; विष्णु० ४.५.३१-२)। (३) नहुषके छह पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (भाग० ९.१८.१; ब्रह्मां० ३.६८.१२; विष्णु० ४.१०.१)। (४) बभ्रुका पुत्र जो उशिकका पिता था (भाग० ९.२४.२)। (५)नड्वलामें उत्पन्न चाक्षुष मनुके १० पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (ब्रह्मां० २.३६.७९, १०६; वायु० ६२.६७)। (६) (कृती) बंदरोंका एक सरदार (ब्रह्मां० ३.७.२४१)। (७) बीस सुतपा देवोंमेंसे एक सुतपा देव (ब्रह्मां० ४.१.१४)। (८) (कृती) भौत्य मनुके नौ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (ब्रह्मां० ४.१.११४)। (९) दो सर्वोत्कृष्ट सामगोंमेंसे एक (वायु० ६१.४८)।

(१०) देवजनी और मणिवरके अनेक पुत्रोंमेंसे एक पुत्र(वायु० ६९.१६१)। (११) वशिष्ठका एक पुत्र जो ऋतु सावर्ण मन्वन्तरके सप्तर्षियोंमेंसे एक था (वायु० १००.९६)।

कृतिकर—पु० [सं०] बीस हाथ होनेके कारण रावणका एक नाम (रामा०)।

कृतिमान्—पु० [सं०] यवीनरका पुत्र तथा सत्यधृतिका पिता (भाग० ९.२१.२७)।

कृतिरथ—पु० [सं०] (कृतरथ=ब्रह्मां०) प्रतीपकके पुत्र तथा देवमीढके पिताका नाम (भाग० ९.१३.१६)।

कृतिरात—पु० [सं०] महाधृतिका पुत्र जो महारोमाका पिता था (भाग० ९.१३.१७)।

कृती—पु० [सं०] (१) सन्नतिमान्का एक पुत्र जिसने हिरण्यनामसे योग सीखा था तथा ६ प्राच्य साम संहिताओं का अध्ययन किया था। यह नीपका पिता था (भाग० ९.२१.२८-२९)। (२) च्यवनका एक पुत्र तथा उपरिचर वसुका पिता (भाग० ९.२२.५)। (३) (आकृति=ब्रह्मां०) विश्वकर्माकी पत्नी तथा चाक्षुष मनुकी माता (भाग० ६.६.१५)। (४) हिरण्यकशिपु-पुत्र संह्लादकी रानी तथा पंचजनकी माता (भाग० ६.१८.१४)।

कृतेयु—पु० [सं०] रौद्राश्वके दस पुत्रोंमेंसे एक (वायु० ९९.१२४)।

कृतौजा—पु० [सं०] हैहयवंशी दुर्मद-सुत धनक (कनक= ब्रह्मां० तथा मत्स्य०) के कृतवीर्य आदि चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (भाग० ९.२३.२२; ब्रह्मां० ३.६९.८; मत्स्य० ४३.१३; विष्णु० ४.११.१०)।

कृत्तिका—स्त्री० [सं०] २७ नक्षत्रोंमें तीसरी। ये छह हैं। इन छहोंने कुमार (कार्त्तिकेय) का लालन-पालन किया था। इन्हें चंद्रमाकी पत्नी माना गया है जो चन्द्रमाको दक्षका शाप होनेके कारण निःसंतान थीं (भाग० ४.७.६४; ६.६.१४, २३; ब्रह्मां० ४.३०.१००; मत्स्य० ५.२७; ५८.११; ५५.१२; १५८.३१-३५; वायु० ७२.४३; विष्णु० १.१५.११६; २.८.७) जब सूर्य इस नक्षत्रके प्रथम अंशमें हो तब चन्द्रमाको विशाखाके चतुर्थ अंशमें जानना। इसी प्रकार जब सूर्य विशाखाके तृतीय चरणमें हो तब चन्द्रमाको कृत्तिकाके सिरमें स्थित जानना चाहिये। इसे महर्षियोंने विषुव कहा है। यह श्राद्धके निमित्त उत्तम माना गया है (ब्रह्मां० २.२१.७७, १४५; २४.१३०; ३.१०.४४; १८.२)। कृत्तिका सत्ताइस नक्षत्रोंमें तीसरा नक्षत्र है जिसमें छः तारे हैं (वायु० ६६.४८; ८२.२)।

कृत्तिकाचारिणी—स्त्री० [सं०] दे० धिष्णी (ब्रह्मां० २.१२.१७)।

कृत्तिवास, कृत्तिवासा—पु० [सं०] शिवजीने गजासुरको मारनेके पश्चात् उसकी खाल ओढ़ ली थी, अतः यह नाम पड़ा। ब्रह्माने सती उत्पन्न कर शिवको दी जिनसे रुद्र नाम के बेढंगे कई पुत्र हुए। शतरुद्रके हविमें इनका ही अंश था। ब्रह्माकी प्रार्थनापर इन्होंने और पुत्र उत्पन्न न किये और स्वयं स्थाणु तथा महादेव हो गये (ब्रह्मां० २.९.६९; ३.२५.१४; ७२.१८४; मत्स्य० १८१.१४; वायु.२१.५१)।

कृत्या—स्त्री० [सं०] तंत्रोक्त एक राक्षसी जिसे शत्रुओंका नाश करनेके हेतु तांत्रिक लोग मंत्रबलसे उत्पन्न करते हैं। इसका वर्णन वेदोंमें भी मिलता है और पुराणोंमें भी। यह बहुत ही भयंकर मानी गयी हैं (भाग० ९.४.४६; १०.६६.३८)।

कृत्यादूषण—पु० [सं०] एक ऋषि विशेष जो कृत्याके दोषोंका निवारण करते थे। यह अंगिरस वंशके थे।

कृत्वी—स्त्री० [सं०] शुक तथा पीवरीकी एक पुत्री जो ब्रह्मदत्तकी माता थी। पांचाल नरेश अणुह इनके पति थे। इन्हें गौ भी कहते थे (भाग० ९.२१.२५; मत्स्य० १५.८-९; ४९.५७)।

कृप—पु० [सं०] (१) कृप शारद्वत। यह सत्यधृति (शरद्वान्=

ब्रह्मां०) के पुत्र थे। इन्हें कृपीके साथ शांतनुने वनमें पाया था (भाग० ९.२१.३६; १०.८२.२३; वायु० ९९.२०४; १००.११; १०६.३४; विष्णु० ४.१९.६८)। कृतवर्मा, बलराम तथा कृष्णसे इनकी भेंट हुई थी (भाग० १०.५२ [५६.(७)४, १२]; ५७.२)। कुरुक्षेत्रके युद्धमें यह दुर्योधनके पक्षमें थे और युद्ध उपरांत भी जीवित थे (भाग० १०.७८ [९५(५)१६]; ८०.२)। कहते हैं शतानीकको इन्होंने अस्त्र शस्त्र दिये थे (विष्णु० ४.२१.४)। (२) शिष्ट (मनुकन्या धन्या और ध्रुवका पुत्र) और सुच्छाया (अग्निकन्या) का एक पुत्र (मत्स्य० ४.२९)। (३) सावर्णि मनुके आठवें मन्वंतरके एक ऋषि (विष्णु० ३.२.१७)।

कृपा—स्त्री [सं०] शुक्तिमान् (शुक्तिमंत = मत्स्य०) पर्वतसे निकली एक नदी (ब्रह्मां० २.१६.३८; मत्स्य० ११४.३२)।

कृपाचार्य—पु० [सं०] शरद्वान्के पुत्र तथा गौतमके पौत्रका नाम। द्रोणाचार्यका विवाह इन्हींकी बहिन कृपीसे हुआ था। ये अस्त्रविद्याके आचार्य थे तथा कौरवों और पांडवोंको अस्त्र-विद्या सिखलायी भी थी। महाभारतके युद्धमें यह कौरवोंकी ओरसे लड़े थे (भाग० १०.७८[९५(५)१६]; ८०(२)। अन्तमें यह युधिष्ठिरके यहाँ रहने लगे थे—दे० कृप तथा महाभारत, आदि पर्व।

कृपी—स्त्री [सं०] (१) १० सुकर्मदेवोंमेंसे एक सुकर्मदेव (वायु० १००.९२)। (२) कृपाचार्यकी बहिन जो द्रोणाचार्य को ब्याही थी और अश्वत्थामाकी माता थी। इन्हें गौतमी भी कहते थे (भाग० १.७.४५; १३.४; ९.२१.३६; वायु० ९९.२०४; विष्णु० ४.१९.६८; महाभा० आदि०)।

कृमि—पु० [सं०] (१) कृमी और उशीनरका पुत्र जिसकी राजधानी कृमिला (क्रिमिला = वायु०) थी। राजा उशीनरकी पाँच पत्नियाँ थीं—नृगी, कृमी, नवा, दर्वा और पाँचवीं दृपद्वती। इनसे उनके क्रमशः पाँच पुत्र हुए—नृग, कृमि, नव, सुव्रत और शिवि (ब्रह्मां० ३.७४.२०-२१; वायु० ९९.२०-२२; विष्णु० ४.१८.९)। (२) च्यवनका एक पुत्र तथा इन्द्रसमका पिता (मत्स्य० ५०.२५)।

कृमिचंडेश्वर—पु०[सं०] शिवका एक पवित्र स्थान वाराणसीका एक क्षेत्र, जिसमें शिवजी तीनों सन्ध्याओंमें अवश्य रहते हैं (मत्स्य० १८१.२९)।

कृमिभक्ष—पु० [सं०] एक नरकका नाम जहाँ रत्नोंका दुरुपयोग करनेवाले भेजे जाते हैं (ब्रह्मां० ४.२.१४७ और १६०; वायु० १०१.१४७, १५८)।

कृमिभोजन—पु० [सं०] २८ नरकोंमेंसे एक जहाँ बिना दूसरोंको खिलाये, भोजन करनेवाले जाते हैं। यह कीड़ोंसे भरा एक गड्ढा है (भाग० ५.२६.७, १८)।

कृमिल—पु० [सं०] सृञ्जयपुत्री बाह्यका और भजमानके तीन पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (मत्स्य० ४४.५०)।

कृमिला—स्त्री० [सं०] कृमिकी राजधानीका नाम (ब्रह्मां० ३.७४.२२; वायु० ९९.२२)।

कृमिलाश्व—पु० [सं०] एक राजा जो अजमीढ़ वंशोत्पन्न था (हरिवंश)।

कृमी—स्त्री० [सं०] (१) उशीनरकी पाँच रानियोंमेंसे एक जो कृमिकी माता थी (ब्रह्मां० ३.७४.१८-२१; वायु० ९९.१९)। (२) एक नरकका नाम जहाँ पापी, दुष्कर्म करनेवाले, नास्तिक तथा बड़े बूढ़ोंका अनादर करनेवाले जाते हैं (वायु० १०१.१४७-१५८)।

कृश—पु० [सं०] (१) पञ्चम स्वारोचिष मन्वन्तरके विकुण्ठ गणके १४ देवताओंमेंसे एक देवता (ब्रह्मां० २.३६.७)। (२) कृशा (ब्रह्मा० तथा वायु० = कृमी) तथा उशीनरका एक पुत्र जिसकी राजधानी वृपला (ब्रह्मां० = कृमिला) थी (मत्स्य० ४८.१८-२१)।

कृशशर्मा—पु० [सं०] इडविडका पुत्र तथा दिलीप खट्वांगका पिता (ब्रह्मां० ३.६३.१८१)।

कृशांगी—स्त्री० [सं०] गन्धर्व अप्सरा सुयशाकी चार अप्सरा पुत्रियोंमेंसे एक पुत्री (वायु० ६९.१४)।

कृशा—स्त्री० [सं०] उशीनरकी पाँच रानियोंमेंसे एकका नाम जो कृशकी माता थी (मत्स्य० ४८.१६-१८)।

कृशानु—पु० [सं०] एक चिरस्थायी अग्नि जो उत्तरकी दूसरी वेदीमें स्थित कही गयी है (ब्रह्मां० २.१२.२१; वायु० २९.१९)।

कृशाश्व—पु० [सं०] (१) भागवतके अनुसार एक राजर्षि जो संयमके पौत्र तथा सहदेवके पुत्र (वायु तथा विष्णुपुराणके अनुसार संजयके पौत्र तथा सहदेवके पुत्र) थे। इनके पुत्रका नाम सोमदत्त था। यह कई अश्वमेध यज्ञोंसे भगवान्का यजन कर उत्तम गतिको प्राप्त हुए। दक्षकी अर्चि तथा धिषणा नामकी दो पुत्रियाँ इन्हें ब्याही थीं। इनके अर्चिसे धूम्रकेश तथा धिषणासे वेदशिरा, देवल, वयुन और मनु पुत्र हुए (भाग० ६.६.२०; ९.२.३४-३५; मत्स्य० ५.१४; १४६.१७; वायु० ६३.४२; ८६.२०; विष्णु० १.१५.१०४; ४.१.५५-६; वायु० ६६.७९)। (२) दक्षप्रजापतिके दामाद जिनका विवाह अर्चि (भाग० ६.६.२०) और धिषणासे हुआ था (दे० कृशाश्व—१)। अर्चिसे धूमकेश और धिषणासे वेदशिरा, देवल आदि चार पुत्र उत्पन्न हुए। रामायणानुसार कृशाश्वका विवाह दक्षकी जया और सुप्रभा नामकी कन्याओंसे हुआ था। इनसे पचास-पचास शस्त्रस्वरूप पुत्र हुए थे। (३) बर्हणाश्वका एक पुत्र जो सेनाजित्का पिता था (भाग० ९.६.२५)। (४) एक चरकाध्वर्यु, जिन्हें दक्षकी एक कन्या ब्याही थी (ब्रह्मां० २.३३:१३; ३७.४६)। (५) हरिवंशके अनुसार धुन्धुमारवंशी एक राजा जो नाट्यशास्त्रके आचार्य थे। (६) सहदेवके एक धर्मात्मा पुत्रका नाम (ब्रह्मां० ३.६१.१५)। (७) चतुर्थ तामसमनुका एक पुत्र (ब्रह्मां० २.३६.५०)। (८) संहताश्वका पुत्र (ब्रह्मां० ३.६३.६५; वायु० २८.६३)। (९) अमिताश्वका पुत्र तथा प्रसेनजित्का पिता (विष्णु० ४.२.४६-७)।

कृष्ण—पु० [सं०] (१) भोजवंशी देवककी पुत्री देवकीके गर्भसे उत्पन्न वसुदेवके एक पुत्र। यह विष्णुके २३वें या अन्यमतसे बीसवें अवतार थे। उस समय देवकीका चचेरा भाई कंस जो राजा उग्रसेनका पुत्र था अपने श्वशुर मगधनरेश जरासंधकी सहायतासे अपने पिताको बन्दी बना करके स्वयम् राजा बन बैठा था। देवकीके विवाहके समय आकाशवाणी हुई थी कि देवकीके आठवें गर्भसे उत्पन्न पुत्र कंसको मारेगा। इसीसे वसुदेव और देवकी कंसके आदेशानुसार कारागारमें बन्द कर दिये गये। देवकीके आठवें गर्भसे भादों कृष्ण अष्टमीको रोहिणी नक्षत्र तथा विजय

मुहूर्त्त जयंती रात्रिकी आधीरातमें श्रीकृष्णका जन्म हुआ (ब्रह्मां० ३.७१.२०१-२०९)। इनके चरणमें पद्म, वज्र, अंकुश तथा ध्वजाके चिह्न थे (भाग० १०.१६.१७,३४ ।

इनके पिता वसुदेवजी गोकुलमें जाकर इन्हें नन्दके घर रख आये थे। पूतनाका स्तनपान, शकटकी मृत्यु, यमलार्जुन वृक्षोंका उखाड़ना, कालियमर्दन यशोदाका इनके मुखमें १४ भुवन देखना, नन्दको वरुणपाशसे मुक्त करना; गोवर्धन-धारण (भाग० २.४.२०; ७.१५.७६-७९)। आदि आदि इनके वचपनके खेल थे। कंसके इनको पकड़ने तथा मारनेके सब उपाय व्यर्थ गये और अन्तमें कृष्णने कंसको मार डाला। विदर्भराज भीष्मककी पुत्री रुक्मिणी तथा सत्यभामा, जाम्बवती, सत्या, कालिन्दी, माद्री, मित्रविन्दा तथा भद्रासे इनका विवाह हुआ था। कुछ दिनों पश्चात् इन्होंने द्वारकामें जाकर यादवोंका राज्य स्थापित किया। रुक्मिणी आदि इनकी ८ पटरानियाँ थीं और प्रत्येक से १०-१० पुत्र हुए थे। महाभारतके युद्धमें इन्होंने पांडवोंके सहायतार्थ दुर्योधनके पास राजदूत-रूपमें जाकर युद्ध न करनेका प्रस्ताव रखा था, अर्जुनके सारथिका काम किया तथा और अनेक काम किये। श्रीकृष्ण एक पीपल वृक्षके नीचे वैठे थे तभी पैरमें जरा नामक एक वहेलियेका तीर लग जानेसे इनका स्वर्गवास हुआ। अर्जुनके साथ द्वारका निवासियोंको हस्तिनापुर जानेका संदेश अपने सारथि दारुकसे भेज यह अपने धाम वैकुण्ठ चले गये (भाग० ११ अध्या० ३०-३१; विष्णु० ५.३७.१-४; ४७-७५)। और ठीक इसी दिनसे इनका स्वर्गवास होते ही कलियुग आरंभ हो गया (मत्स्य० २७३.४९; विष्णु० ४.२४.१११-३)। ये विष्णुके अवतारोंमेंसे आठवें अवतार माने जाते हैं। इनके सिद्धान्त मूल रूपमें गीतामें दिये हैं। यह एक योग्य सारथि, उचित परामर्शदाता, मित्र, राजदूत, योद्धा तथा भक्तवत्सल थे। यह संसारके सबसे बड़े दार्शनिक समझे जाते हैं। इनके चरित्रोंसे भागवतादि पुराण और महाभारतादि इतिहास पूर्ण हैं। इनके जन्मके साथ ही १६००० देवियों तथा गणोंका जन्म भी इनके सहायतार्थ हुआ था। यह वृष्णिके वंशज थे और इसीसे इन्हें वार्ष्णेय कहते थे। वृष्णि मधुके पुत्र थे जो यदुके ज्येष्ठ पुत्रके वंशज थे।

कारागारमें जन्म, यशोदाके गर्भसे योगमायाका जन्म, बच्चोंका अदल-बदल(भाग० १०.३ पूरा अ०; ब्रह्मां० ३.७१.१९६-२६३; ७२-१३; विष्णु० ५.१.७८; ३.१.२९)। योगमायासे कृष्णजन्मकी सूचना (भाग० १०, अ० ४; वायु० ९६.१९९-२१५)। पूतना वध (भाग० १०.६; विष्णु० ५.५.१२-३१)। तृणावर्तवध तथा कृष्णमुखमें सब लोकोंका दर्शन (भाग० १०.७; विष्णु० ५.६.१-७)। दामोदररूप, अर्जुन वृक्षोंके उखाड़नेसे नलकूवर और मणिग्रीवकी शापसे मुक्ति (भाग० १०. अ० ८.९,१०; विष्णु० ५.६.८-९)। वकासुर-वध, अघासुर-वध (भाग० १० अ० १२); कालिय-मर्दन (भाग० १०. अ० १५, १६; विष्णु० ५.७ पूरा)। चीरहण लीला, याज्ञिकोंकी पत्नियोंसे भोजनप्राप्ति (भाग० १०. अ० २१-२३)। गोवर्धनधारण, रासक्रीड़ा आदि (भाग० १० अ० २४-२६; १०.अ० २७-३३; विष्णु० ४.१२.१२; ५.१०.२५-४१; ११.१६-२५; १३.३,६२, सर्प-रूपी विद्याधर सुदर्शनसे नन्दको मुक्त करना, शंखचूड़-वध, वृष-रूपी अरिष्टासुरका वध (भाग० १०. अ० ३४-३६; विष्णु० ५. अ० १४)। अक्रूरके साथ मथुरा-यात्रा, कुब्जाका उद्धार तथा धनुपयज्ञध्वंस (भाग० १०. अ० ३७.४२; विष्णु० ५.१६.७-१६, २३; १८.१९)। कुवलयापीड़-वध, चाणूर, शल तथा तोशलकका वध, कंस-वध, उग्रसेनकी कारागारसे मुक्ति तथा पुनः सिंहासनारोहण, शांति-स्थापन (भाग० १०. अ० ४३.४४, ४६; विष्णु० ५.९.८-३३. अ० २०)। कृष्णका उपनयन तथा सांदीपनिसे विद्याध्ययन कुल ६४ दिनोंमें, गुरुपुत्रको यमसे लाकर गुरुदक्षिणार्पण, उद्धव तथा अक्रूर भेंट, जरासंधसे मथुराकी रक्षा आदि [भाग० १०.४५.२०-४९; अ० ४६-४८; विष्णु० ५.२५.१९-३१ तथा भाग० १०. अ० ५०-५२(५)]। गोमंत यात्रा, परशुराम भेंट तथा शृगालवासुदेव-वध, मथुरापर १८वाँ जरासंध आक्रमण, द्वारकाका वसाना; कालयवन आक्रमण, मुचकुंद द्वारा कालयवन-वध (भाग० १०. अ० ५३(५), ५०-५१; विष्णु० ५. अ० २२-३)। रुक्मिणीसे राक्षस विवाह, कुण्डिनका युद्ध, रुक्मीकी पराजय तथा रुक्मिणी-पुत्र प्रद्युम्नका विवाह (भाग० १०. अ० ५३-५५; विष्णु० ५.२६.२-११; अ० २७; २८.२-८। सत्राजित्से स्यमंतकमणिके लिए मनमुटाव, जाम्बवान्से युद्ध, जाम्बवतीसे विवाह, सत्राजित्को मणि देना तथा उसकी पुत्री सत्यभामासे विवाह, शतधन्वाका वध आदि (भाग० १०. अ० ५६-५७; ब्रह्मां० ३.७.३०१; ३६.१५; २१; ६८.२८; ७१.४६-९६; मत्स्य० ४५.३४; विष्णु० ४.१३.६४-९८, १४२-१५७)। सूर्यपुत्री कालिंदी तथा आवंतिकी मित्रविंदासे विवाह, भद्रा तथा लक्ष्मणा आदिका ग्रहण करना (भाग० १०. अ० ५८)। नरकासुर युद्ध तथा वध, १६००० राजकुमारियोंकी मुक्ति (भाग० १०. अ० ५९; विष्णु० ५.२९.१३-३५; ३१.१४-२०)। इंद्रसे पारिजातके लिए युद्ध (भाग० १०. अ० ५९; विष्णु० ५.२९.१३-३५; तथा भाग० १०.५९.२२-४५; अ० ६५(५) से ६७(५); विष्णु० ५. अ० ३०; ३१.१-१०)। शोणितपुर आक्रमण तथा वाणसे युद्ध, अनिरुद्ध-ऊषा विवाह (भाग० १०. अ० ६०-६३; विष्णु० ४.१५.३०-४; वायु० ३३.१२-५३)। देवकीकी प्रार्थनापर कंस द्वारा मारे गये उनके पुत्रोंको बलिकी अनुमतिसे यह सुतलसे उनके समक्ष ले आये थे (भाग० १०. अ० ८२-८५)। उद्धवको योगके 'ज्ञान, कर्म और भक्ति' तीन रूपोंकी व्याख्या समझाना तथा सत्त्वगुण, रजोगुण और तमोगुणके प्रभावकी विशद व्याख्या देना (भाग० ११.११. अ० १-२८)। प्रभास क्षेत्रमें यादवोंका गृह-युद्ध तथा विनाश (भाग० ११. अ० ३०-३१; विष्णु० ५.३७.१-४; ४७.७५)। (२) एक वेदोक्त असुर जिसे इंद्रने मारा था। (३) एक ऋषि जिन्होंने ऋग्वेदके कई एक मंत्रोंका प्रकाश किया था। (४) अथर्ववेदके अंतर्गत एक उपनिषद्। (५) पुराण और महाभारतके रचयिता कृष्णद्वैपायन, व्यास जो सत्यवती तथा पराशरके पुत्र, अरणिके पति तथा शुकदेवके पिता थे (ब्रह्मां० ३.८.९२; ४.४.५०) धृतराष्ट्र, विदुर और पाण्डुके पिता। इन्हें अवतार मानते थे। (६) हविर्धान और हविर्धानी (ब्रह्मा०, विष्णु० वायु०—आग्नेयी धिषणा) का एक पुत्र (भाग० ४.२४.८; ब्रह्मां० २.३७.२४;

वायु० ६३.२३; विष्णु० १.१४.२) । (७) ब्रह्माका एक नाम (ब्रह्मां० २.३४.७) । (८) सरमासुत दुह्लोलके आठ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (ब्रह्मां० ३.७.४४३) । (९) शुक और पीवरीके छः पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (ब्रह्मां० ३.८.९३; १०.८१; मत्स्य० १५.१०, वायु० ७०.८५; ७३.३०,६२) । (१०) सुतलका एक असुर (वायु० ५०.२१) । (११) असमौजाका दत्तक पुत्र (वायु० ९६.१४) । (१२) अथर्ववेदके विद्वान् सुमंतुका एक शिष्य (ब्रह्मां० २.३५.५६) । (१३) केतुमालके सात कुल पर्वतोंमेंसे एक कुल पर्वत जो गंधर्वोंका निवास स्थान कहा गया है (वायु० ३८.४९; ३९.५९; ४२.५२; ४४.४) । (१४) शीतोद झीलके पश्चिमका एक पर्वत(वायु० ३६.२८)। (१५) एक नरकका नाम जहाँ अनियमित सहवास, दूसरोंकी भूमिपर अधिकार करनेवाले तथा जादूसे जीविकोपार्जन करनेवाले जाते हैं (विष्णु० २.६.३; २३.२४) । (१६) अर्जुनका एक नाम (भाग० १२.११.२५ ।)

कृष्णकल्प—पु० [सं०] इसका रंग काला है तथा शिवकालरूप तथा अघोर हैं (वायु० २३.७४-७६) ।

कृष्णगर्भा—स्त्री० [सं०] कृष्ण नामक असुरकी स्त्री (वायु० ५०.२१) ।

कृष्णगिरि—पु० [सं०] भारतवर्षका एक पहाड़ (ब्रह्मां० २·१६.२२; वायु० ४५.९१) ।

कृष्णतीर्थ—पु० [सं०] यह पितरोंके श्राद्धके लिए प्रशस्त तथा पवित्र स्थान है (मत्स्य० २२.३८) ।

कृष्णतोया—स्त्री० [सं०] भद्राश्व देशकी एक नदी (वायु० ४३.२८) ।

कृष्णद्वैपायन—पु० [सं०] मत्स्यगंधाके गर्भसे उत्पन्न पराशर ऋषिके पुत्र—वेदव्यास (भाग० १.४.३, ३२; ९.२२.२२; १२.४.४०; ६.३५; वायु० १.१०; २३.२२७; ७०.८४; ९९.२४१; विष्णु० ३.३.१९; ३.४.५; ४.२०.३८; ६.२.३२; ब्रह्मां० ३.८.९२; ४.४.५०; मत्स्य० ५०.४६; १८५.३८) ।

कृष्णपक्ष—पु० [सं०] (१) पितरोंका दिन तथा मनुष्योंका आधा मास (वायु० ५२.३७; ५७.९; ८३.८०) । (२) महाकालके आसनभूत षोडशदल कमलकी सोलह शक्तियोंमेंसे एक शक्तिका नाम (ब्रह्मां० ४.३२.१५) ।

कृष्णप्रेमामृत—पु० [सं०] श्रीकृष्णका एक स्तोत्र जिसे ऋषियोंने शेषनागसे पाया था। इसमें १०८ नाम हैं जिनमें 'कृष्णामृतम्' भी एक है। परशुरामको इसी स्तोत्रसे सफलता मिली थी (ब्रह्मां० ३.३४.५०,५३; ३६.१०, ४३, ५४.५९;३७.१०) ।

कृष्णमंत्र—पु० (सं०) 'वैष्णवतेज और शिवशक्ति'के साथ यह सब विपत्तियोंसे रक्षा करनेवाला है (ब्रह्मां० ३.३१.३७-८) ।

कृष्णवेणा—स्त्री [सं०] पितरोंके श्राद्धके लिए प्रशस्त दक्षिणमें बहनेवाली एक पवित्र नदी जो सह्य पर्वतसे निकली है (ब्रह्मां० २.१६.३४; मत्स्य० २२.४६; ११४.२९; वायु० १०८.८१; विष्णु० २.१३.१२) । इसे हव्यवाहन अग्निकी पत्नी कहा गया है (मत्स्य० ५१.१३; १६३.६१; वायु० २९.१३) ।

कृष्णव्रत—पु० [सं०] यह विष्णुका व्रत है जिससे स्वर्गकी प्राप्ति होती है। इसमें एक सुवर्ण-चक्र दान करना होता है (मत्स्य० १०१.५८) ।

कृष्णसूत्र—पु० [सं०] एक नरकका नाम, कदाचित् यह कालसूत्र है (ब्रह्मां० ४.२.१५०; वायु० १०१.१४९) ।

कृष्णांगना—स्त्री [सं०] मेरु पर्वतके भीतरी चौथी ढालपरकी विरूपाक्षकी सभाका नाम। यह नैर्ऋत कोणका अधिपति है (वायु० ३४.८७) ।

कृष्णांगमणिपुञ्जक—पु० [सं०] केतुमालका एक जनपद (वायु० ४४.१०) ।

कृष्णा—स्त्री [सं०] (१) योगमायाका एक नाम (भाग० १०.२.१२) । (२) यमुना नदीका एक नाम (भाग० १०.१६.१६) । (३) द्रौपदीका एक नाम (महाभा०; भाग० १.७.१४) । (४) अग्निकी सात जिह्वाओंमेंसे एक। (५) खशाकी सात पुत्रियोंमेंसे एक पुत्री (वायु० ६९.१७०) । (६) दक्षिणापथकी एक नदी जो सह्य पर्वतसे निकली है (वायु० ४५.१०४) ।

कृष्णाचल—पु० [सं०] रैवतक पर्वत जिसपर प्राचीन द्वारका स्थित थी (भागवत) ।

कृष्णाजिन—पु० [सं०] कृष्णमृगका चर्म, तपस्वियों तथा ब्रह्मचारियोंका वस्त्र। इसे किसी शुभ कार्य या श्राद्ध आदिपर दान देना शुभ है (मत्स्य० ४७.८६; ८२.३; २०४.११; २०६.१-४१; २४५.८५; २७९.५; वायु० २५.३४,८१; ३०.२२१; ७४.४; ९९.४१०; विष्णु० १.११.३१) । धर्मशास्त्रके विद्यार्थी भी इसका व्यवहार करते हैं, जैसा केशिध्वजने महामति खांडिक्यके निकट सन्देहनिवृत्तिके लिए जानेपर किया था (विष्णु० ६.६.२०-२२) ।

कृष्णाष्टमी—स्त्री [सं०] (१) भादों बदी अष्टमी। इस तिथिपर बुधवारको रोहिणी नक्षत्रमें जब चन्द्रमा वृषका था श्रीकृष्णका जन्म अर्धरात्रिमें हुआ था। इस उपलक्ष्यमें इस तिथिपर सवेरेसे १२ बजे राततक उपवास करते हैं (इसमें अष्टमीको उपवास कर नवमीको पारणा करनेसे व्रतकी पूर्त्ति होती है)। अर्धरात्रिके पश्चात् श्रीकृष्णके जन्मोत्सव मना लेनेपर फलाहार किया जाता है। इस उत्सवको वैष्णव लोग बड़े उत्साहसे मनाते हैं और मथुरा तथा वृंदावन आदि स्थानोंमें यह देखने ही योग्य होता है (विष्णु० ५.१.७७ तथा 'व्रत परिचय' १२४) । (२) एक व्रत विशेष जिसमें कृष्ण पक्षकी प्रत्येक अष्टमीको शंकरकी पूजा भिन्न-भिन्न नामोंसे तथा स्तुतिसे होती है (मत्स्य० ५६.१.११) ।

कृष्णैकादशी—स्त्री० [सं०] यह सभी महीनोंके शुक्ल तथा कृष्ण दोनों पक्षोंकी एकादशियोंमें एक है, इसमें व्रत किया जाता है जिसे स्मार्त तथा वैष्णव दोनों करते हैं—"यथा विष्णुः शिवश्चैव तथैवैकादशी स्मृता।' दे० 'वराहपुराण'।

केकय—पु० [सं०] (१) शिविके चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्र, जिसके नामपर देशका नामकरण (केकय) हुआ था (ब्रह्मां० ३.७४.२३; मत्स्य० ४८.१९-२०; वायु० ९९.२३-४; विष्णु० ४.१८.१०) । (२) एक प्राचीन देशका नाम। रामायणानुसार यह देश व्यास और शाल्मली नदीकी दूसरी ओर था। महाराज दशरथकी रानी जिनके गर्भसे भरतका जन्म हुआ था, इसी देशकी थीं [राम० मानस,

वालकां०१९४(१)]। यहाँके राजा केकय अयोध्यापति दशरथके श्वसुर, केकयीके पिता तथा भरतजीके नाना थे (रामच० मानस, अयोध्याकाण्ड १५६-१५९)। (३) वसुदेवकी वहिन श्रुतकीर्त्ति केकय-नरेशको व्याही थी (विष्णु० ४.१४.४१)। यह सूर्यग्रहणपर स्यमंतपंचक गये थे (भाग० १०.८२.१३)।

केकय देशके निवासियोंने यदुओंके विपक्षमें जरासंधकी सहायता की थी। गोमंतके घेरेके समय यहाँके राजकुमारोंपर उत्तर दिशाकी रक्षाका भार था [भाग० १०. (५० (५)३); ५२.११[१४]; ब्रह्मां० २.१६.४८], लेकिन ये सब श्रीकृष्णके पक्षमें आ गये और रुक्मिणीके विवाहोत्सवमें इन लोगोंने भाग लिया था (भाग० १०.५४.५८)। मिथिला जाते समय इन लोगोंने कृष्णका स्वागत कर उपहार दिये थे (भाग० १०.८६.२०; ७१.२९)। भीमसेनके साथ ये लोग दिग्विजयमें गये थे (भाग० १०.७२.१३)। इन लोगोंने शिशुपालपर आक्रमण किया था (भाग० १०.७४.४१)। युधिष्ठिरके राजसूय यज्ञमें भी यहाँके निवासी गये थे (भाग० १०.७५.१२)। महाभारतके युद्धमें यहाँके पाँच राजकुमार पाण्डवोंके पक्षसे कौरवोंसे लड़े थे (भाग० १०. ७८[९५ (५)१२]; ८४.५५)।

केकयी–स्त्री [सं०] केकय-नरेशकी पुत्री, अयोध्यापति दशरथकी रानी तथा भरतकी माताका नाम—दे० केकय, कैकेयी, सुमना; रामच० मा० वालकां० १८८। १९४(१)।

केतन–पु० [सं०] विशुक्रका एक सारथि जो श्यामलाके हाथोंसे मारा गया था (ब्रह्मां० ४.२८.१०४)।

केतरी–स्त्री [सं०] अन्धकासुरका रक्तपान करनेके लिए शिवजी द्वारा सृष्ट मानस मातृकाओंमेंसे एक मातृकाका नाम (मत्स्य० १७९.१८)।

केतव–पु० [सं०] ऋग्वेद शाखा प्रवर्तक रथीतरके चार शिष्योंमेंसे एक शिष्य (वायु० ६०.६६)।

केतु–पु० [सं०] (१) सिंहिकाके गर्भसे उत्पन्न कश्यप-पुत्र विप्रचित्तिका पुत्र—दे० सिंहिका, विप्रचित्ति; (भाग० ५.२३.७; ६.६.३७)। (२) पुराणानुसार एक राक्षसका सिररहित धड़। समुद्रमंथनसे उत्पन्न अमृत बाँटनेके समय यह देवताओंकी पंक्तिमें बैठकर अमृत पान कर गया था। इससे अप्रसन्न होकर विष्णुने इसका सिर काट डाला, पर अमृतके प्रभावसे सिर कटनेपर भी वह मरा नहीं। सिर राहु और कवंध (धड़) केतु हो गया। इसके रथके घोड़े धूमर (परालके धुएँकी-सी आभावाले) रंगके हैं (ब्रह्मां० २.२३.९०; २४.१३६-३९; मत्स्य० ९३.१०;१२७.११; वायु० ५२.८२; १११.५; विष्णु० २.१२.२३)। इसे सूर्य और चन्द्रमाने ही पहचान कर सूचित किया था, इसीसे ग्रहणपर यह उन्हें अवतक ग्रसता है। नवग्रहमें राहु और केतुकी पूजा होती है। यह बृहस्पतिसे आकारमें १।४ कम है (मत्स्य० १२८.६५)। धूमकेतु केतुओंमें सर्वप्रथम है (वायु० ५३.१११)। (३) ऋषभदेवके १०० पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (भाग० ५.४.१०)। (४) तामस मनुके दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (भाग० ८.१.२७)। (५) कश्यप और दनुके १०० दानव पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (मत्स्य० ६.१८)। (६) द्रुह्युके दो पुत्रोंमेंसे द्वितीय पुत्र (मत्स्य० ४८.६)।

केतुमती–स्त्री० [सं०] सुमाली=माल्यवान् राक्षसकी पत्नीका नाम, जो लंकापति रावणकी नानी थी [रामच० मानस० लंका का० दो० ४७(३)]।

केतुमान्–पु० [सं०] (१) राजा अम्बरीषके तीन पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (भाग० ९.६.१)। (२) धन्वंतरिका पुत्र तथा भीमरथका पिता। इन्हीके वंशमें काशीके राजा दिवोदास उत्पन्न हुए थे (भाग० ९.२७.५; ब्रह्मां० ३.६७.२५; वायु० ९२.२३; विष्णु० ४.८.११; हरिवंश)। (३) लोकालोकका एक लोकपाल (ब्रह्मां० २.११.४३; २१.१५७; ३६.३१; ३.९.१९; वायु० ५०.२०६; विष्णु० २.८.८३)। जो मार्कण्डेयी तथा राजस (ब्रह्मां०) का पुत्र ठहरता है। यह पश्चिम दिशाका अधिपति है (मत्स्य० ८.१०; १२८.९५; वायु० २८.३७)। (४) पुण्यजनी और मणिभद्रका एक पुत्र जो एक यक्ष है (ब्रह्मां० २.७.१२५; वायु० ६२.२८; ६९.१५६)। (५) क्षेमका एक पुत्र तथा सुकेतुका पिता (ब्रह्मां० ३.६७.७४)। (६) सुतार, जो द्वितीय द्वापरके अवतार कहे गये हैं, के चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (वायु० २३.१२१)। (७) रजस्का एक पुत्र जिसे उन्होंने पश्चिम देशका राजा बनाया (वायु० ७०.१७; विष्णु० १.२२.१३)।

केतुमाल–पु० [सं०] (१) आग्नीध्र और पूर्वचित्तिके ९ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र जो गंधमादन वर्षका अधिपति था। इसकी पत्नीका नाम देववीति था (ब्रह्मां० २१४.४७, ५२; वायु० ३३.४०;४५; विष्णु० २.१.१७,२३; भाग० ५.२.१९)।

केतुमाली–पु० [सं०] दारुक, जो विष्णुका अवतार था, के चार योगी पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (वायु० २३.१९६)।

केतुराट्–पु० [सं०] मंदर पर्वतपरका एक महावृक्ष जिसके घड़ोंके बराबर मधुभरे बड़े-बड़े फल, पत्ते तथा महासुगंधयुक्त पुष्प हैं (वायु० ३५.२०-२, ४४)।

केतुरूप–पु० [सं०] तामस मनुके महाबली चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (विष्णु० ३.१.१९)।

केतुवीर्य–पु० [सं०] कश्यप और दनुके दानव सैकड़ों पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (ब्रह्मां० ३.६.६; मत्स्य० ६.१८)।

केतुवृक्ष–पु० [सं०] पुराणानुसार मेरुके चारों ओरके पर्वतोंपरके वृक्षोंका सामूहिक नाम। मेरुके पूर्व मंदराचलपर कदम्बका पेड़ है; दक्षिण गंधमादनपर जम्बूवृक्ष; पश्चिम विपुलगिरिपर पीपल और उत्तर सुपार्श्वपर वटवृक्ष है। ये वृक्ष ११०० योजन ऊँचे हैं। इन चारों वृक्षोंको ही 'केतुवृक्ष' कहते हैं (विष्णु० २.२.१७; वायु० ३५.४४)।

केतुशृङ्ग–पु० [सं०] भृगु, जो दसवें द्वापरके एक भगवदवतार कहे जाते हैं, का एक पुत्र (वायु० २३.१४९)।

केदार–पु० [सं०] (१) एक क्षेत्र विशेष जहाँ वृकने शिव प्रीत्यर्थ तप किया था। यह तीर्थ पितरोंके श्राद्धके लिए अति प्रशस्त तथा मार्गदायिनी देवीका प्रिय स्थान है (भाग० १०.८८.१७; मत्स्य० १३.३०; २२.११; १८१.२९)। (२) गया तीर्थके पत्थरमें ब्रह्माका एक रूप (वायु० १०६. ५६; १११.७२)।

केदारगंगा–स्त्री० [सं०] गंगा नदीकी उपशाखा जो गढ़वाल प्रांतकी प्रसिद्ध नदी है (स्कंद० मा० के० खण्ड)।

केदारदर्शन–पु० [सं०] चैत्र कृष्ण १४ को केदारनाथका ध्यान तथा मानसोपचारसे पूजन कर व्रत करे तो मोक्ष

मिले—दे० 'पृथ्वीचंद्रोदय'।

केदारनाथ–पु० [सं०] बद्रिकाश्रमसे १०१ मील दक्षिणका एक तीर्थस्थान। हिमालयके अंतर्गत एक २२७५० फुट ऊँचे पर्वतका नाम जिसपर केदारनाथ नामक शिवलिंग स्थापित है। यह मंदिर समुद्रतलसे ११७५० फुट ऊँचाईपर है। इसके ऊपरी भागमें, जो सदा हिमाच्छादित रहता है, ब्रह्मगुफा है, जहाँ ब्रह्माने यज्ञ किया था। इसके बाँयीं ओरका भाग 'महापथ' कहलाता है, जिस पथसे ही पाण्डव स्वर्ग गये थे। यह एक बहुत प्राचीन तथा पवित्र तीर्थ माना गया है। वैशाखसे कार्त्तिकतक यात्री यहाँ दर्शनार्थ जाते हैं (स्कंद० के० खण्ड)।

केनोपनिषद्–पु० [सं०] दस प्रधान उपनिषदोंमेंसे, जिनपर शंकराचार्य आदि आचार्योंने भाष्य रचे हैं, एक उपनिषद्का नाम।

केरक–पु० [सं०] एक देशका नाम (महाभारत)।

केरल–पु० [सं०] (१) मालाबार प्रांतका नाम जिसका नामकरण जनापीड़के चार पुत्रोंमेंसे एकके नामपर हुआ (वायु० ९९.६)। (२) आंडीरका एक पुत्र जिसके नामपर केरल देश हुआ (ब्रह्मां० ३.७४.६; मत्स्य० ४८.५)।

केलि–पु० [सं०] ब्रह्मधानके नौ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (ब्रह्मां० ३.७.९८)।

केलिकिल–पु० [सं०] (१) शिवके कूष्मांडक नामक एक अनुचरका नाम। (२) कामदेवकी स्त्रीका एक नाम।

केवल–पु० [सं०] (१) नर (चंद्र=विष्णु०) का पुत्र तथा बंधुमान्का पिता (भाग० ९.२·३०; ब्रह्मां० ३.८.३६; ६१.९; वायु० ८६.२४; विष्णु० ४.१.४२-३)। (२) अजितवर्गके बारह देवोंमेंसे एक देव (ब्रह्मा० २.१३.९४; वायु० ३१.७)। (३) याज्ञवल्क्यके एक शिष्य का नाम (ब्रह्मां० २.३५.२९)। (४) सुवृद्धिके पुत्र तथा सुधृतिके पिताका नाम (विष्णु० ४.१.३८-९)।

केशट–पु० [सं०] कामदेवके पाँच बाणोंमेंसे एक—दे० अंगज, कामदेव आदि।

केशरी–पु० [सं०] (१) अंजनाके पति तथा हनुमान्के पिता—दे० अंजना। (२) शाकद्वीपका एक पहाड़ (वायु० ४९.८४)।

केशव–पु० [सं०] (१) बनारसका एक तीर्थस्थान (मत्स्य० १८५.६६)। (२) विष्णुका एक नाम जो ब्रह्मा, रुद्रादिकोंपर दया करते हैं। केशी दैत्यका वध करनेके कारण यह नाम पड़ा। (३) श्रीकृष्णचंद्रका नाम (ब्रह्मां० ३.४२.१९; ७१.२२१; ४.३४.७६; मत्स्य० १६.१; १७.३०; २२.९; ६९.८; १५०.२२१; १७८.१४.३६; १८७.२६; २४५.३६)।

केशांत–पु० [सं०] सोलह संस्कारोंमेंसे एक जो ब्राह्मणका सोलहवें, क्षत्रियोंका बाइसवें और वैश्योंका चौबीसवें वर्षमें होना शुभ समझा जाता है ('संस्कारपद्धतिः, भास्करशास्त्री विरचित तथा मनु० २.६५)।

केशिध्वज–पु० [सं०] कृतध्वजका पुत्र, जिसे योगसिद्धि प्राप्त थी। इसका चचेरा भाई खाण्डिक्य अपने धार्मिक कृत्योंके लिए प्रसिद्ध था। इन दोनों भाइयोंमें द्वेष रहता था, पर बादको मेल हो गया था। एकने दूसरेको अपनी विद्या सिखला दी थी और सुखसे रहने लगे थे। यह भानुमान्का पिता था। एक बार किसी व्याघ्रने इसकी गौ मार दी थी और यह प्रायश्चित्त पूछने कशेरुके पास गया। कशेरुने शुनकके पास भेज दिया और शुनकने केशिध्वजको खाण्डिक्यके पास भेजा जिसने इसे उपदेश दे उद्धार किया (भाग० ९.१३.२०-२१; विष्णु० ६.६.५-५०; ७.१०१-०६; नारद० पूर्वार्ध० ४७.४; २७-२८; ६६-६७.७५)।

केशिनी–स्त्री० [सं०] (१) एक अप्सराका नाम जो कश्यपकी पत्नी प्रधाकी पुत्री थी। (२) विदर्भराजकी पुत्री तथा असमंजसकी माता और सूर्यवंशी अयोध्यापति राजा सगरकी ज्येष्ठ रानीका नाम (भाग० ९.८.१५; ब्रह्मां० ३.४९.२, ५९; ५१.३७; ६३.१५४; वायु० ८८.१५५-१६०; विष्णु० ४.४.१-५)। (३) भागवतके अनुसार विश्रवाकी पत्नी और रावणकी माता कैकसीका एक नाम (भाग० ७-१.४९)। (४) खशाकी सात पुत्रियोंमेंसे सबसे छोटी पुत्री जो राक्षसी थी (ब्रह्मां० ३.७.१३९; ७३.१००; वायु० ६९.१७०)। (५) दमयंतीकी उस दूतीका नाम जो नलके भेस बदलकर आनेपर उसके पास दमयंतीका संदेश लेकर गयी थी (महाभारत, वनपर्व ७४, नलकी परीक्षा० आदि)। (६) सुहोत्रकी पत्नी तथा जह्नुकी माता (ब्रह्मां० ३.६६.२५)। (७) राजा अजमीढ़की एक रानी (मत्स्य० ४९.४४; वायु० ९९.१६७)। (८) अन्धकासुरके साथ युद्धके समय आसुरी मायासे उत्पन्न बहुतसे अन्धकासुरोंका रक्तपान करनेके लिए महादेवजी द्वारा सृष्ट एक मानसी मातृका देवी (मत्स्य० १७९.२३)।

केशी–पु० [सं०] (१) कश्यपपत्नी दनुके पुत्र एक दानवका नाम जिसे इन्द्रने मारा था (महाभा० आदि० ६५; वन० १३४, २२३)। (२) एक यादवका नाम जो वसुदेव और कौशल्याका पुत्र था (भाग० ९.२४.४८)। (३) एक राक्षस जिसे श्रीकृष्णको मारनेके लिए कंसने भेजा था, पर यह कृष्ण द्वारा मारा गया। इसका मुख घोड़ेके मुखके समान था, अतः इसे तुरगदानव भी कहते थे (भाग० १०.२.१; ३६.२०; ३७.१-८, २५; ४३.२५; २.७.३४; वायु० ९८.१००; विष्णु० ५.१.२४; ४.१-२; १२.२१)। (४) एक दानव राजा (ब्रह्मां० ५.२९.१२४)। यह चित्रलेखा और उर्वशीका बलपूर्वक अपहरण कर ले जाते समय पुरूरवा द्वारा मारा गया था। उर्वशी इन्द्रको मिल गयी (मत्स्य० २४.१२, २३-५)। (५) एक असुरका नाम (विष्णु० ५.२९.४)।

केषणादी–स्त्री० [सं०] पिशाचोंके १६ जोड़ोंमेंसे १५वें जोड़ेकी एक पिशाची (ब्रह्मां० ३.७.३८०)।

केसरद्रोणि–पु० [सं०] कुमुद और अंजन पर्वतोंके बीचका भूभाग जहाँ विष्णु तथा बृहस्पतिका बहुत बड़ा सुन्दर मंदिर है, जहाँ सदा सुन्दर फूल खिले रहते हैं (वायु० ३८.४५-८)।

केसरि–पु० [सं०] रसातल (छठें तल) का निवासी एक असुर (ब्रह्मां० २.२०.३९; वायु० ५०.३८)।

केसरी–पु० [सं०] (१) कुञ्जर बन्दरकी पुत्री अंजनाके पतिका नाम—दे० अंजना (ब्रह्मां० ३.७.२२३)। (२) शाकद्वीपका एक पहाड़ जो वनौषधियोंके लिए प्रसिद्ध है (ब्रह्मां० २.१९.९०; विष्णु० २.४.६२)।

कैकय–पु० [सं०] शूरकी पाँच पुत्रियोंमेंसे तीसरी श्रुतकीर्त्तिके पति संतर्दन आदिके पिताका नाम (ब्रह्मां० ३.७१.१५७)। धृष्टकेतुसे श्रुतकीर्त्तिके पाँच पुत्र हुए (भाग० ९.२४.३८; २.७.३५)।

कैकसी–स्त्री० [सं०] केतुमती और सुमाली (वायु० माली) राक्षसकी पुत्री जो रावणकी माता थी। यह विश्रवाकी चार पत्नियोंमेंसे एक थी जिसके रावण, कुंभकर्ण, विभीषण ये तीन पुत्र तथा शूर्पनखा एक पुत्री या चार बच्चे थे (वायु० ७०.३४.४१; रामा०, लंका० ४७; ब्रह्मां० ३.८.४०-४७)।

कैकेय–पु० [सं०] शिविके चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्र जिनकी दस पुत्रियाँ सत्राजित्की रानियाँ थीं (भाग० ९.२३.३; मत्स्य० ४५.१९)।

कैकेयी–स्त्री० [सं०] (१) श्रीकृष्णकी पत्नी भद्राकी उपाधि। यह कैकेय राजकी पुत्री थी (भाग० १०.५७.५६)। (२) अयोध्यापति महाराज दशरथकी रानी जो भरतकी माता थी। मंथरा नामकी दासीके बहकानेसे श्री रामचन्द्रको बनवास दिलवानेका श्रेय इन्हींको था (रामा०, बाल०, दो० १८८-१९०; अ० क० १२-३३)।

कैटभ–पु० [सं०] एक दैत्य विशेष जो मधु नामक दैत्यका छोटा भाई था। ये दोनों भाई तामस और राजसगुणोंके प्रतीक थे (मत्स्य० १७०.१; १७८.६–१८)। यह अपने उपद्रवोंके कारण विष्णु द्वारा मारा गया था (भाग० ३.२४.१८; ६.१२.१; १०.४०.१७; वायु० २५.३०.५४; ब्रह्मां० २.३७.२; ४.२९.७५)। नारायणने मधु और कैटभके मेदासे पृथ्वीकी रचना की, इसीसे पृथ्वीको मेदिनी कहते हैं (हरिवंश०)

कैरात–पु० [सं०] (१) एक काश्यप प्रवर प्रवर्तक ऋषि (मत्स्य० १९९.१६)। (२) एक राज्य जो घोड़ोंके लिए प्रसिद्ध था। अर्जुनने मूक (हिरण्यकशिपुके पौत्र) को यहीं हराया था (ब्रह्मां० ३.५.३६; ४.१६.१८)।

कैराति–पु० [सं०] एक गोत्रकार आर्षेय प्रवर प्रवर्तक अंगिरस ऋषि (मत्स्य० १९६.७)।

कैलाश–पु० [सं०] हिमालय पर्वतकी एक चोटी, जो मेरु पर्वतके दक्षिण है (भाग० ५.१६.२७; विष्णु० २.२.४१)। पुराणानुसार यह भगवान् शंकरका निवासस्थान कहा जाता है। यहीं अलकापुरी तथा सौगंधिक वन स्थित है (भाग० ४.५.२६; ९.४.५५; १०.१०.२; ५५(१); मत्स्य० ५४.३; ६२.२; वायु० ३०.८५; ३५.९; ३६.२४; ३८.३३; ४१.१; ४२.३२; ४७.१; ५०.४८; ५४.३०-६; १०१.३०३)। इसे रजताद्रि कहते हैं। यहीं कुबेर यक्षों सहित रहते हैं (ब्रह्मां० २.१८.१-६; २०.५०; २५.२४-४०; ३.१३.३६; २२.५६; २५.९; ४१.१८; ४.९.३०;१०.२७)। यह अत्रिके आश्रमसे उत्तर है (मत्स्य० १२१.२-५; १६३.८५; १८३.१)।

कैशिक–पु० [सं०] (१) ज्यामघका शैब्यासे उत्पन्न पुत्र विदर्भके तीन पुत्रोंमेंसे एक तथा चिदि (जिसकी संतति चैद्य कहलायी) के पिताका नाम (ब्रह्मां० ३.७०.३७; मत्स्य० ४४.३६-३८; विष्णु० ४.१२.३७)। (२) ज्यामघ प्रपौत्र धृतिके एक पुत्रका नाम (विष्णु० ४.१२.३९)।

कोंकण–पु० [सं०] एक राज्यका नाम। कोंकण-नरेश अर्हत्के समयमें ऋषभ यहाँसे होते हुए गये थे (भाग० ५.६.७-९)। यह दक्षिणका देश है (ब्रह्मां० २.१६.५९)। इसे श्राद्धादिके लिए अनुपयुक्त देश समझा जाता है (मत्स्य० १६.१६)।

कोंकणा–स्त्री० [सं०] परशुरामकी माता रेणुकाका एक नाम जिन्हें कोंकणावती भी कहते हैं (हि॰ वि॰ को॰)।

कोक–पु० [सं०] वृकासुरका ज्येष्ठ पुत्र, विकोक इसका छोटा भाई था।

कोकामुख–पु० [सं०] एक प्राचीन तीर्थस्थानका नाम, कहते हैं इस तीर्थमें स्नान करनेसे पूर्व जन्मकी स्मृति जागृत होती है (महाभारत)।

कोकिलाव्रत–पु० [सं०] यह व्रत आषाढ़ी पूर्णिमासे प्रारम्भ करके श्रावण १२ तक किया जाता है। इससे स्त्रियोंको सात जन्मतक सुत, सौभाग्य तथा धन प्राप्त होता है (हिमाद्रि व्रतखण्ड)।

कोजागर–पु० [सं०] आश्विन शुक्ल निशीथव्यापिनी पूर्णिमाको इन्द्र और महालक्ष्मीका व्रत तथा पूजन करे=शरदपूर्णिमा। कहते हैं कि इस दिन लक्ष्मी रातको घूमती हैं, जो जागा मिलता है, प्रसन्न हो उसे यथेष्ट धन देती हैं। रात्रिमें एक लाख, ५०,०००, १०,००० या केवल १०० दीपक जलावे। कोजागर=कौन जागता है ('कृत्यनिर्णय')। इस दिन सफेद वस्तु बनाकर, श्री भगवान्को चाँदनीमें स्थापित कर भोग लगाते हैं और जागरण करते हैं। लक्ष्मी देवी यह देखने आती हैं कि रातमें कौन-कौन जागा है। भगवान् श्रीकृष्णका रासोत्सव इसी रात्रिको मनाया जाता है। ऐसा विश्वास है कि इस रातको चंद्रमाकी किरणोंसे अमृत गिरता है (भागवत)।

कोटरा–स्त्री० [सं०] (१) बाणासुरकी माताका नाम। श्रीकृष्णने जब बाणासुरको रथच्युत कर दिया था तब सिरके बाल खोले तथा बिलकुल नंगे बदन यह कृष्णके समक्ष आ गयी थी (भाग० १०.६.२८; ६.३.२०)। (२) ३६ वर्ण-शक्तियोंमेंसे एक वर्णशक्तिका नाम (ब्रह्मां० ४.४४.५९)।

कोटवी–स्त्री० [सं०] कोटितीर्थमें स्थापित सती देवीकी एक मूर्तिका नाम (मत्स्य० १३.३७)।

कोटितीर्थ–पु० [सं०] (१) प्रयागका एक क्षेत्र जहाँ कोटवी देवी स्थापित हैं। यहाँ शरीर छोड़नेका बड़ा माहात्म्य बतलाया गया है (मत्स्य० १३.३७; १०६.४४; वायु० ११२.३२)। (२) एक तीर्थ विशेष। इस नामके तीर्थ अनेक हैं, पर उज्जैन और चित्रकूटके इस नामके तीर्थ अधिक प्रसिद्ध हैं। यहाँ कोटीश्वरका मंदिर है। कहते हैं कि शंकरने यहाँ असुरोंका वध किया था। यहाँ स्नान करनेसे पुरुष राजा तथा स्त्रियाँ गौरी सम हो जाती हैं (मत्स्य० १९१.७-१३)। (३) गंधमादन पर्वतपर श्रीराम द्वारा स्थापित रामेश्वर नामक शिवलिंगके अभिषेकके लिए श्रीरामने अपने धनुषकी कोटिसे पृथ्वीको भेद कर इस तीर्थको प्रकट किया था। स्कंदपुराणानुसार श्रीकृष्ण कंसके वधके पश्चात् प्रायश्चित्तके लिए नारद मुनिके आदेशसे यहाँ आये थे (स्कंद० ब्राह्मखं० सेतु-मा०)।

कोटिफली–पु० [सं०] एक तीर्थका नाम जहाँ गोदावरी

नदी समुद्रमें गिरती है। यह तीर्थ इसी संमगके निकट है। जब सिंह राशिके बृहस्पति रहते हैं, तब यहाँ स्नानका विशेष माहात्म्य है। इंद्रका अहल्यागमन पाप यहीं छूटा था (हिं॰ श॰ सा॰)।

कोट्टवी—स्त्री॰ [सं॰] बाणासुरकी माताका नाम जो कृष्ण-बाणासुरयुद्धमें युद्धक्षेत्रमें नंगी चली गयी थी—दे॰ कोटरा (हिं॰ श॰ सा॰)।

कोणा—स्त्री॰ [सं॰] अन्धकासुर युद्धमें अन्धकोंका रक्तपान करनेके लिए महादेवजी द्वारा सृष्ट एक मातृकाका नाम (मत्स्य॰ १७९-२८)।

कोणार्क—पु॰ [सं॰] पुरीसे २१ मील दूर समुद्रके उपकूलमें अवस्थित जगन्नाथपुरीका एक तीर्थ। १२७६ ई॰ में ४० करोड़ रुपया व्यय कर गंगवंशके नरसिंह राजाने १६ वर्षोंमें यहाँका मंदिर बनवाया था जिसे १६वीं सदीमें काला पहाड़ने तोड़ डाला था। मराठोंके राजत्वकालमें इसका बहुकोणवाला अरुण स्तम्भ पुरीके सिंहद्वारमें उठा लाया गया जो अभीतक मंदिरके सामने गड़ा है। अबुलफजलने 'आइन ए अकबरी'में और श्री फर्गुसन साहबने भी इसका उल्लेख किया है। कोणार्कका सूर्य मंदिर बड़ा विख्यात है (ब्रह्मा॰ २८.३७-३८; २९.१७-२१, ४६, ४८)।

कोदण्डराम—पु॰ [सं॰] 'श्रीराम'। भण्डसे युद्धके समय श्री ललितादेवीने इनकी सृष्टि की थी (ब्रह्मां॰ ४.२९.११४)।

कोधनु—पु॰ [सं॰] वस्तावनिका दत्तक पुत्र (वायु॰ ९६.१९०)।

कोरञ्ज—पु॰ [सं॰] भद्राश्व देशके पाँच कुल पर्वतोंमेंसे एक कुल पर्वत (वायु॰ ४३.१४)।

कोल—पु॰ [सं॰] (१) स्कंदपुराणानुसार एक म्लेच्छ जाति जो हिमालयके जंगलोंमें घूमा करती थी। ब्रह्मवैवर्त्त पुराणानुसार यह एक वर्णसंकर जाति है, पर पद्मपुराणानुसार यह एक संस्कारभ्रष्ट जाति थी [रामायण॰, अयो॰ का॰ ५९(१)]। (२) बारह धर्मात्मा कौशिक ऋषियोंमेंसे एक कौशिक ऋषि (ब्रह्मां॰ २.३२.१८)।

कोलाट—पु॰ [सं॰] एक असुर जिसका वध चंडकालीने किया था (ब्रह्मां॰ ४.२८.४२)।

कोलावन—पु॰ [सं॰] यह पश्चिमका एक देश है (वायु॰ ४५.१२८)।

कोलापुर—पु॰ [सं॰] (कोल्हापुर) यह ललिताका प्रिय पीठ स्थान २१ पीठोंमेंसे एक है (ब्रह्मां॰ ४.४४.९७)।

कोलाहल—पु॰ [सं॰] (१) भारतवर्षका एक पर्वत (ब्रह्मां॰ २.१६.२१; वायु॰ ४५.९०; विष्णु॰ ३.१८.७३)। गयासुरने यहींपर हजार वर्षतक घोर तपस्या की थी (वायु॰ १०६.५)। (२) बारहवाँ देवासुरसंग्राम जिसमें रजिने असुरोंको परास्त किया था। विष्णुका यह दैत्योंके साथ बारहवाँ तथा अंतिम संग्राम था (ब्रह्मां॰ ३.७२, ७६, ८६; मत्स्य॰ ४७.४५.५३)। (३) सभानरका एक पुत्र तथा सञ्जयका पिता (मत्स्य॰ ४८.११)।

कोलीकिल—स्त्री॰ [सं॰] एक म्लेच्छ जाति जिसके वंशमें विन्ध्यशक्ति राजा उत्पन्न हुआ था (वायु॰ ९९.३६५)।

कोल्लक—पु॰ [सं॰] भारतवर्षका एक पर्वत (भाग॰ ५.१९.१६)।

कोल्लाट—पु॰ [सं॰] भण्डके अनेक पुत्र तथा सेनापतियोंमेंसे एकका नाम (ब्रह्मां॰ ४.२१.८५)।

कोविद—पु॰ [सं॰] कुशद्वीपके निवासियोंका एक वर्ग (भाग॰ ५.२०.१६)।

कोविदारी—स्त्री॰ [सं॰] अन्धकासुर रक्तपानके लिए महादेवजी द्वारा सृष्ट एक मानस मातृका देवीका नाम (मत्स्य॰ १७९.३०)।

कोशकरण—पु॰ [सं॰] एक नगरका नाम जिसे हिरण्यकशिपुने कँपा दिया था। इसके निवासी ऋषि तथा वीर पुरुष थे (मत्स्य॰ १६३.६६)।

कोशल—पु॰ [सं॰] सरयू या घाघरा नदीके तटपर बसा एक देश जहाँ राम और उनके पुत्रका राज्य था। कोशलनिवासी युधिष्ठिरके राजसूय यज्ञमें गये थे (भाग॰ १०.७५.१२)। किसी पुराणमें इस देशके चार और किसीमें सात खण्ड बतलाये गये हैं। प्राचीनकालमें इसकी राजधानी अयोध्या थी (रामा॰ उत्तर॰ दो॰ २१-२६)। यहाँके निवासी कृष्णके मिथिला जाते समय उनसे मिले थे (भाग॰ १०.८६.२०)। कुशने अपनी राजधानी कुशस्थलीसे ही इसपर शासन किया था (ब्रह्मां॰ २.१६.४१, ६४; ३.५३.१९९; ७४.१९७)।

कोशलनगर—पु॰ [सं॰] अयोध्याका नगर (विष्णु॰ ४.४.१०३)।

कोशला—स्त्री॰ [सं॰] पापोंका विनाश करनेवाली एक वापी (बावड़ी), जिसे मतंगने बनाया था, उसमें स्नान करने मात्रसे कामचारी पक्षीतक स्वर्गको जाते हैं (वायु॰ ७७.३६)।

कोशलेन्द्र—पु॰ [सं॰] श्रीरामका एक नाम (विष्णु॰ ४.४.९९)।

कोसी—स्त्री [सं॰ कौशिकी] गंगाकी एक सहायक नदी जो नेपालके निकट हिमालयसे निकल चम्पारनके पास गंगासे मिलती है। विश्वामित्रकी बहिन कौशिकी (सत्यवती) के स्वर्गवासके बाद इस नदीकी उत्पत्तिं हुई थी। इसके किनारे एक मास रहनेसे एक अश्वमेध यज्ञका फल होता है (वा॰ रामायण)।

कोहल—पु॰ [सं॰] सामवेद शाखा प्रवर्तक लागलके छह शिष्योंमेंसे एक शिष्य (ब्रह्मां॰ २.३५-४८)।

कौंडिन्य—पु॰ [सं॰] (१) एक प्रसिद्ध ऋषि जिन्हें विष्णुने शंकरके कोपसे बचाया था और तबसे उन्हें विष्णुगुप्त कहने लगे थे (श॰ ब्रा॰ १४.४.५.१० के आधारपर हि॰ वि॰ को॰)। (२) महाराज युधिष्ठिरकी राजसभाके सभासद अनेक ऋषियोंमेंसे एक ऋषि (महाभा॰ सभा॰ ४.१६)। (३) एक महर्षि जो कुण्डिन-कुलमें उत्पन्न थे (महाभा॰ सभा॰ ४.१४)। यह युधिष्ठिरके अश्वमेधके एक सदस्य थे (जै॰ अश्वमे॰ ६३)। (४) एक ऋषि, जिनका आश्रम हस्तिमती एवं साभ्रमती नदियोंके संगमपर था। एक समय अतिवृष्टि होनेके कारण आश्रममें पानी आया। इन्होंने नदीको सूख जानेका शाप दिया तथा स्वयं भी विष्णुलोकको चले गये (पद्म॰ उ॰ १४५)।

कौकुरुण्डि—पु॰ [सं॰] औत्तम मन्वंतरके सप्तर्षियोंमेंसे एक ऋषि (मत्स्य॰ ९.१४)।

कौटिल्य—पु० [सं०] नीतिशास्त्रका महान् विद्वान् एक ब्राह्मण जिसने नन्दवंशका नाश कर चन्द्रगुप्तको सिंहासनारूढ़ किया था (ब्रह्मां० ३.७४-१४३, मत्स्य० २७२.२; वायु० ९९.३३०; विष्णु० ४.२४.२६-७)। ये विष्णुगुप्त, चाणक्य आदि भी कहे जाते हैं।

कौटिलीय अर्थशास्त्रके अन्तमें लिखा है—

'येन शास्त्रं च शस्त्रं च नन्दराजगता च भूः।
अमर्षेणोद्धृतान्याशु तेन शास्त्रमिदं कृतम ॥'

कामन्दकीयनीतिशास्त्रमें लिखा है—

नीतिशास्त्रमिदं धीमान् अर्थशास्त्र महोदधेः।
समुद्दध्रे नमस्तस्मै विष्णुगुप्ताय वेधसे॥

कामन्दकीय नीतिसार, कौटिलीय अर्थशास्त्र तथा चाणक्यनीतिके यही रचयिता थे।

कौणप—पु० [सं०] वासुकिके वंशका एक सर्प, जो माताके शापसे पीड़ित हो विवशतावश सर्पसत्रकी अग्निमें हुना गया था (महा०, आ० ३५.१४)।

कौतुजाति—पु० [सं०] पराशरवंशीय पांच नील पराशरोंमेंसे एक (मत्स्य० २०१.३४)।

कौतोमत—पु० [सं०] एक ऋषिका नाम (गोपथब्राह्मण)।

कौत्स—पु० [सं०] (१) एक त्रिप्रवर ऋषि (मत्स्य० १९६.३३-३४)। (२) एक ऋषि जो कुत्सके पुत्र थे। यह वरतंतुके शिष्य और जैमिनिके आचार्य थे तथा अपनी विद्वत्ताके लिए प्रसिद्ध थे। (३) एक भार्गव गोत्रकार (मत्स्य० १९५.२५)।

कौथुम—पु० [सं०] (१) पराशरका पुत्र जो एक सामसंहिताका आचार्य था (ब्रह्मां० २.३५.४५-६)। (२) मिथिला नगरीका एक प्रसिद्ध ब्राह्मण जो बड़ा विद्वान् था, पर उसके आचरण जड़की भाँति होते थे। इनके पुत्रने केवल मातृका पढ़ी थी, पर इसीके आधारपर सब प्रश्नोंका उत्तर देता था (स्कंद० मा० कु० खण्ड)।

कौबेरक—पु० [सं०] हरिशृंगमें रहनेवाले एक ऋषि जिनका संग आगस्त्योंसे था (वायु० ४७.६०-६१)।

कौमार—पु० [सं०] (१) एक महादेश जहाँ नारद पर्वत है। पुराणानुसार एक वर्ष जिसका नामकरण हव्यके पुत्र कुमारपर हुआ था (ब्रह्मां० २.१४.१८; वायु० ३३.१७; मत्स्य० १२२.२२)। (२) प्रजापतिके नौ सर्गोंमेंसे एक (नवाँ) सर्ग (प्राकृत वैकृत सर्ग)। इन नौ सर्गों (सृष्टियों) में पाँच वैकृत सर्ग, तीन प्राकृत और एक प्राकृतवैकृत सर्ग कहा गया है (विष्णु० १.५.२५)। (३) हरिके एक अवतारका नाम (भाग० १.३.६)। (४) शाकद्वीपके एक राज्यका नाम जो रैवत पर्वतके सन्निकट है (ब्रह्मां० २.१४.१८; १९.९२; वायु० ४९.८६)। (५) पुराणानुसार एक तालाब जो 'कुमारतीर्थ'के नामसे प्रसिद्ध है। यहाँ श्राद्ध करनेका महाफल कहा गया है, जिसकी रक्षा नाग करते हैं (ब्रह्मां० ३.१३.८६)।

कौमारी—स्त्री० [सं०] (१) एक मातृका शक्ति देवी (ब्रह्मां० ४.१९.७; ३६.५८; ४४.१११)। (२) अन्धकासुर रक्तपानके लिए शिवजी द्वारा सृष्ट एक मानस-पुत्री मातृका जिनके वस्त्र तथा अस्त्र-शस्त्र कुमारके ही समान हैं तथा वाहन भी मयूर है। लाल वस्त्र, हाथमें शूल और शक्ति धारण किये हैं (मत्स्य० १७९.९, २२; २६१.२७)।

कौमोदकी—स्त्री० [सं०] खांडव वन जलानेके समय इंद्रसे युद्ध करनेके लिए अग्नि द्वारा दी गयी भगवान् विष्णुकी गदाका नाम। मथुरापर जरासंधके आक्रमणके समय यह श्रीकृष्णके पास थी (भाग० ८.४.१९; २०.३१; १०.५०.११(१३); विष्णु० ५.२२.६)।

कौरर—पु० [सं०] एक पर्वत विशेष जिसपर गरुड़गण निवास करते हैं (ब्रह्मां० ३.७.४५४)।

कौरव—पु० [सं०] चंद्रवंशी राजा कुरुके वंशज। धृतराष्ट्रके सौ पुत्र 'कौरव' नामसे प्रसिद्ध हैं (महाभारत, आदि पर्व)।

कौरव्य—पु० [सं०] वशिष्ठ वंशज एक गोत्रकार ऋषि (मत्स्य० २००.७)।

कौर्म—पु० [सं०] तीस कल्पों, जो ब्रह्माका एक मास कहा गया है, मेंसे एक (१५वाँ) कल्प। यह पूर्णिमासे आरम्भ हुआ (मत्स्य० २९०.६)।

कौलिनी—स्त्री० [सं०] रहस्ययोगिनी आठ देवियोंमेंसे एक देवी, जो ललिता देवीके चक्ररथेन्द्रके तीसरे पर्वपर स्थित है (ब्रह्मां० ४.१९.४८; ४४.१४१)।

कौश(वेद)—पु० [सं०] कुशमुष्टि वामनने इसे अंगिरससे प्राप्त किया था (मत्स्य० २४५.८६)।

कौशल—पु० [सं०] एक राज्य जिसका नामकरण क्रौंचद्वीपाधिपति द्युतिमान्के पुत्र कुशलके नामपर हुआ। क्रौंचद्वीपके क्रौंच पर्वतसे यह बिलकुल सटा हुआ है (ब्रह्मां० २.१४.२४; १९.७१)।

कौशल्य—पु० [सं०] (१) दे० हिरण्यनाभ (ब्रह्मां० २.३३.८)। (२) अंगिरस वंशका एक त्र्यार्षेय प्रवर (मत्स्य० १९६.९)।

कौशल्या—स्त्री० [सं०] (१) वसुदेवकी पत्नी जो केशीकी माता थी—दे० भद्रा (भाग० ९.२४.४८)। (२) अयोध्याधिपति महाराज दशरथकी प्रधान रानी, श्री रामचन्द्रकी माता तथा दक्षिण कोशलराजकी पुत्रीका नाम। श्री रामचन्द्रके अश्वमेध यज्ञ समाप्त होनेपर इनकी मृत्यु हुई (रामच० मा० वाल० १९०-१९३; ब्रह्मां० ३.३७.३१; ४.४०.११२)। (३) सात्वतकी रानी जो भजमान आदि कई पुत्रोंकी माता थी। इनके वंशजोंकी चार शाखाएँ महत्त्वपूर्ण हैं (मत्स्य० ४४.४७; वायु० ९६.१-२)। (४) जनमेजयकी माता और पुरुराजकी पत्नी। (५) धृतराष्ट्रकी माताका नाम (महाभारत)। (६) श्रीकृष्णकी रुक्मिणी आदि सोलह हजार पत्नियोंमेंसे एक पत्नीका नाम (मत्स्य० ४७.१४)।

कौशांबी—स्त्री० [सं०] (१) कुशके पुत्र कौशांबका बसाया एक प्राचीन नगर जो गंगा-यमुना संगमपर बसा था जिसे वत्सपट्टन भी कहते हैं। बुद्धदेव यहाँ बहुत दिनोंतक रहे थे। यहाँ एक मंदिरमें उनकी चंदनकी एक बहुत बड़ी मूर्त्ति है, अतः यह बौद्धोंका तीर्थस्थान हो गया है। यह स्थान प्रयागसे १५ कोस पश्चिमकी ओर है। श्री कनिंघमके अनुसार अब भी यहाँ कोसम नामका गाँव और बहुतसे पुराने खंडहर हैं (बुद्धकालीन भारतका भौगोलिक परिचय')। (२) नेमिचक्र (निचक्नु=वायु०) की राजधानी, जब उसकी प्राचीन राजधानी हस्तिनापुर बाढ़से निर्मूल हो गयी थी (भाग० ९.२२.४०; वायु० ९९.२७१; विष्णु० ४.२१.८;

मत्स्य० ५०.७९)।

कौशिक—पु० [सं०] (१) अतलका एक नाग (ब्रह्मां० २.२०.१९)। (२) कुशिक राजाके पुत्र गाधि जो इंद्रके अंशसे उत्पन्न हुए थे और उनके वंशज विश्वामित्र आदि (ब्रह्मां० ३.८.६२; ३७.३१; ६६.७४; वायु० ६१.४६; ६४.२५; १०६.३५; विष्णु० ४.७.११)। (३) जरासंधके एक सेनापतिका नाम। (४) एक उपपुराणका नाम। (५) इंद्रका एक नाम (भाग० ६.१८.६४)। (६) एक ऋषि जो शरशय्यापर लेटे भीष्मसे मिलने गये थे (भाग० १.९.७)। (७) इन्होंने 'नारायणात्मक वर्म'को धारण कर योग धारणसे शरीर छोड़ा था। एक वार चित्ररथ गंधर्व इनकी पड़ी अस्थियोंके ऊपरसे होकर निकलते ही पृथ्वीपर आ गिरा। वालखिल्य ऋषियोंके कहनेपर चित्ररथने अस्थियोंको बटोर कर सरस्वती नदीमें प्रवाहित कर दिया था (भाग०६.८.३८ ४०)। (८) सामग श्रेष्ठ कृतके कई शिष्योंमेंसे एक शिष्य (ब्रह्मां० २.३५.५३)। (९) वसुदेव तथा सैब्या (वैशाली=विष्णु०) का एक पुत्र जिसे उसके भाई वृकने दत्तक पुत्र लिया था (ब्रह्मां० ३.७१.१७४-५, १९३; वायु० ९६.१८२; विष्णु० ४.१५.२५)। मत्स्यपुराणानुसार (४६.२०) यह वैश्या (शैब्या ?) मातासे हुआ था। (१०) सावर्णि मन्वंतरके सप्तर्षियोंमेंसे एक तपः सिद्ध ऋषि जो कुरुक्षेत्रके ऋषि थे, जिनके सात पुत्र थे। एक वार दुर्भिक्ष पड़नेपर इन ऋषि-पुत्रोंने अपने गुरुकी गौको मार कर श्राद्ध कर स्वयम भी भोजन किया। इस पापसे ये पाँच वार जन्म लेनेके पश्चात् मुक्त हुए थे (मत्स्य० ९.३२; १४५.९३)। (११) विदर्भका पुत्र तथा चेदिका पिता (वायु० ९५.३६.३८)। (१२) वैशाखीका एक पुत्र (वायु० ९६.१७२)। (१३) अपुत्र वस्तावनिको दत्तक रूपमें प्राप्त एक पुत्र (वायु० ९६.१८९)। (१४) प्रतिष्ठानपुरका निवासी एक ब्राह्मण जो पूर्व जन्मके पापोंसे कोढ़ी हो गया था तथा अपनी पतिव्रता स्त्रीके प्रतापसे और अनसूयाके आशीर्वादसे रोगमुक्त हो गया था (दे० दत्तात्रय; दुर्वासा आदि; मार्कण्डेयपुराण)।

कौशिका—स्त्री० [सं०] सुहोत्रकी पत्नी तथा जह्नुकी माता (वायु० ९१.५४)।

कौशिकी—स्त्री० [सं०) (१) कोसी नामकी नदी। (२) हिमालयसे निकली भारतवर्षकी एक नदी जहाँ वलराम गये थे (भाग० १.१८.३६; ५.१९.१८; १०.७९.९; मत्स्य० ११४.२२; १६३.६०; ब्रह्मां० २.१२.१५; वायु० ४५.९७; १०८.८१)। कहते हैं जमदग्निकी माता सत्यवती ही इस नदीमें परिवर्तित हो गयी थी (भाग० ९.१५.१२; ब्रह्मां० २.१६.२६; ३.७.३५५; ६६.५९; वायु० ९१.८८; मत्स्य० २२.६३; ५१.१४) तथा (वायु० २९.१४) के अनुसार यह हव्यवाहन अग्निकी पत्नी सोलह नदियोंमेंसे एक थी। (३) राजा कुशिककी पोती और ऋचीक मुनिकी पत्नी जो पतिके साथ सदेह स्वर्ग गयी थी।

कौशिकीतीर्थ—पु० [सं०] नर्मदा तटपर स्थित एक परम पवित्र तीर्थ (मत्स्य० १९४.४०-२)।

कौशिकीह्रद—पु० [सं०] श्राद्धके लिए एक पवित्र स्थान (ब्रह्मां० ३.१३.१०९)।

कौशिल्य—पु० [सं०] (१) जटमाली, जो विष्णुके अवतार थे, के चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्र जो उन्नीसवें द्वापरमें था (वायु० २३-१८७)। (२) गोत्रप्रवर्त्तक एक ऋषि जो श्रुतर्षि भी थे (ब्रह्मां० २.३३.८)।

कौशिल्या—स्त्री० [सं०] दे० कौशल्या।

कौशीति—पु० [सं०] एक श्रुतर्षि (ब्रह्मां० २.३३.१०)।

कौषारव—पु० [सं०] मैत्रेय जो कुषारु मुनिके पुत्र थे (हिं० श० सा; भाग० ३.४.२६)।

कौषिकी—स्त्री० [सं०] श्री कालीके शरीरसे उत्पन्न एक देवी जो दसभुजा हैं तथा इनका वाहन सिंह है। इनकी आठ सखियाँ हैं जो इनके साथ रहती हैं।

कौषीतकि—पु० [सं०] एक वैदिक ऋषिका नाम। इन्हींका नाम कौषीतकिब्राह्मण, कौषीतकि-आरण्य आदिसे सम्बधित है। कौषीतकि-उपनिषद् तथा श्रौतसूत्र और गृह्यसूत्र भी इनके नामसे प्रख्यात है। कहते हैं साङ्खायन भी इनका दूसरा नाम था (श० ब्रा० २.४.३.१)।

कौषीतकी—स्त्री० [सं०] अगस्त्य मुनिकी पत्नीका नाम, कुषीतककी पुत्री होनेके कारण उनका यह नाम पड़ा (हि० वि० को०)।

कौष्टिकि—पु० [सं०] अंगिरसका एक त्र्यार्षेय प्रवर (मत्स्य० १९६.६)।

कौष्मांड—पु० [सं०] कक्षीवान्के पुत्रोंका, जो संख्यामें एक हजार थे, सामूहिक नाम (मत्स्य० ४८.८८)।

कौष्मांडी—स्त्री० [सं०] वेदकी एक ऋचाका नाम।

कौसि—पु० [सं०] एक भार्गव गोत्रकार ऋषि (मत्स्य० १९५.२६)।

कौसुरुविंद—पु० [सं०] दस रात्रियोंमें समाप्त होनेवाला एक प्रकारका यज्ञ (कात्यायन श्रौ० सू० २३.५.१८)।

कौस्तुभ—पु० [सं०] पुराणानुसार समुद्र-मंथनके समय निकला एक मणिविशेष (ब्रह्मा० ४.९.७३; मत्स्य० २५०.५; २५१.३)। इसे विष्णु धारण किये रहते हैं (भाग० २.२.१०; ८.४.१९; १०.३,९; ११.१४.४०; २७.२७; १२.११.१०)।

क्रकच—पु० [सं०] (१) एक नरकका नाम। (२) ज्योतिष शास्त्रानुसार एक योग—शनिवारको षष्ठी, शुक्रवारको सप्तमी, बृहस्पतिवारको अष्टमी, बुधको नवमी, मंगलको दशमी, सोमवारको एकादशी और रविवारको द्वादशी होनेसे यह योग आता है (हि० वि० को०)।

क्रतक—पु० [सं०] वसुदेवके एक पुत्रका नाम (भाग० ९.२४.४८)।

क्रतुस्थली—स्त्री० [सं०] एक अप्सरा जो वसंत ऋतु (चैत्र मास) में सूर्यके रथके साथ रहती है (वायु० ५२.४)।

क्रतुंजय—पु० [सं०] सत्रहवें द्वापरके वेदव्यास (विष्णु० ३.३.१५)।

क्रतु—पु० [सं०] (१) सप्तर्षियोंमेंसे एक जो ब्रह्माके हाथसे उत्पन्न हुए थे। कर्दम प्रजापतिकी पुत्री 'क्रिया'से इनका विवाह हुआ था जिसके संयोगसे ६०,००० वालखिल्य ऋषि उत्पन्न हुए थे। इनका जन्म वारुणि क्रतुमें हुआ था, अतः यह नाम पड़ा (ब्रह्मां० २.३२.९६; ३५.९२; ३६.८; ३.१.२१, ४४; वायु० ६५.४४)। यह एक प्रजापति थे (वायु० १०१.३५.४९)। इनकी पत्नी सुमति थी। (२)

श्रीकृष्णके एक पुत्रका नाम जो जाम्बवतीके गर्भसे उत्पन्न हुआ था (भाग० १०.६१.१२)। (३) विश्वामें धर्मसे उत्पन्न दस विश्वेदेवोंमेंसे एक (ब्रह्मां० ३.३.३०; मत्स्य० २०३.१३; वायु० ६६.३१)। (४) उल्मुक और पुष्करिणीके छह पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (भाग० ४.१३.१७)। (५) एक ब्राह्मण जो युधिष्ठिरके राजसूय यज्ञमें आमंत्रित था (भाग० १०.७४.८)। (६) तपस्य (फाल्गुन) मासमें सूर्य रथपर रहनेवाला एक यक्ष जिसे ब्रह्मांडपुराणमें ऋतु लिखा है (भाग० १२.११.४०)। (७) ब्रह्माके अपान वायुसे उत्पन्न तथा सनत्कुमारके इतना प्राचीन एक योगी (ब्रह्मां० २.५.७०-७९; ९.१८-२४)। दक्षकी पुत्री संनतिसे इनका विवाह हुआ था। ६०,००० वालखिल्य इनके पुत्र कहे गये हैं और दो पुत्रियाँ पुण्या तथा सत्यवती थीं (ब्रह्मां० २.९.५६; ११.३६)। (८) एक यामदेव (ब्रह्मां० २.१३.९२; वायु० ३१.६)। (९) वैवस्वत मन्वंतरमें दारुवनके एक ऋषि जिनकी न तो कोई स्त्री थी, न पुत्र। इन्होंने इध्मवाहको दत्तक लिया (ब्रह्मां० ३.८.७२; २३.४; वायु० ६१.८४; ७०.६६; मत्स्य० २०२.८)। त्रिपुरको नष्ट करनेके लिए अन्यान्य ऋषियोंके साथ इन्होंने त्रिपुरारिके रथका अनुगमन करते हुए शिवस्तुति की थी (मत्स्य० १३३.६७; १४५.९०; १७१.२७)। (१०) वारह प्रतर्दन देवोंके गणका एक प्रतर्दन देव (ब्रह्मां० २.३६.३१)। (११) भृगुके वारह पुत्र देवोंमेंसे एक जो भुवर्लोकमें रहते हैं (ब्रह्मां० ३.१.८९; ३६.५; ४.२.४८; मत्स्य० १९५.१३; वायु० ६५.८७)। (१२) विजयका पुत्र तथा सुनयका पिता (ब्रह्मां० ३.६४.२२)। (१३) बीस सुतप देवोंमेंसे एक सुतप देवका नाम (ब्रह्मां० ४.१.१४)। (१४) आग्नेयी तथा उरु (कुरु = विष्णु०) के छह पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (मत्स्य० ४.४३; विष्णु० १.१३.७)। (१५) स्वायंभुव युगके सप्तर्षियोंमेंसे एक ऋषि (वायु० ३१.१६)। (१६) अजितामें रुचिसे उत्पन्न वारह अजित देवोंमेंसे एक अजित देव (वायु० ६७.३४)। (१७) प्लक्षद्वीपकी सात महानदियोंमेंसे एक नदी (वायु० ४९.१७)। (१८) ब्रह्माके भृगु आदि नौ मानस पुत्रोंमेंसे एक मानस-पुत्र जिसका विवाह क्षमासे हुआ था (विष्णु० १.७-५, ७)। पौष मासमें यह सूर्यके रथके साथ रहता है (विष्णु० २.१०.१४)। (१९) शाकद्वीपकी एक महानदीका नाम (वायु० ४९.९३)। (२०) ऋक्षवान् पर्वतसे निकली एक नदी (ब्रह्मां० २.१६.३१)। (२१) सातवें कल्पका नाम (वायु० २१.३०)।

क्रतुजित्–पु० [सं०] कालनेमिके चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (ब्रह्मां० ३.५.३९)।

क्रतुध्वंसी–पु० [सं०] शिवका एक नाम जो दक्ष प्रजापतिके यज्ञका ध्वंस करनेके कारण पड़ा—दे० शिव तथा दक्ष।

क्रतुपुत्रगण–पु० [सं०] स्वारोचिष मनु युगमें तुषितासे उत्पन्न क्रतु-पुत्र—ध्रुव, यश, वाम, गोप, देवायत, अज, दुरोण, आप, महौजा, चिकित्वान्, तथा अंश। ये सब सोमपायी थे (वायु० ६२.९-१२)।

क्रतुमान्–पु० [सं०] विश्वामित्रके एक पुत्रका नाम (भाग० ९.१६.३६)।

क्रतुस्थला–स्त्री० [सं०] यजुर्वेदोक्त एक अप्सराका नाम। पुराणानुसार चैत्र मासमें यह सूर्यके साथ उन्हींके रथपर रहती है (विष्णु० २.१०.३)। कहीं-कहीं इसका नाम क्रतुस्थली लिखा है—दे० क्रतुस्थली।

क्रतुस्थली–स्त्री० [सं०] पंचचूड़ा नामसे विख्यात एक अप्सरा। यक्ष इससे प्रेम करता था तथा इसकी खोजमें सारे नंदन आदि उपवनोंमें ढूँढ़ता फिरता था। अन्य अप्सराओंके साथ इसे देख यह वसुरुचि गंधर्वका रूप धर इसके पास आया। क्रतुस्थलीकी सहमति मिली और वह संसिद्धकरण (रजतनाभ = ब्रह्मां०) की माता बनी। अब मारे हर्षके यक्षने अपना असली रूप दिखलाया जिसे देखते ही क्रतुस्थली भाग गयी। इसके बादसे क्रतुस्थली यक्ष माता कहलायी। तदुपरान्त यक्ष पुत्र सहित अपने घर गया (ब्रह्मां० ३.७.१०१-१७; वायु० ६९.१३६.५०)।

क्रथ–पु० [सं०] (१) विदर्भ नामक यादव राजाका एक पुत्र जो कैशिकका भाई तथा कुन्ति नामक राजाका पिता एवं धृष्टिका पितामह था (भाग० ९.२४.१, ३; ब्रह्मां० ३.७०.३७; मत्स्य० ४४.३६-८; विष्णु० ४.१२.३७-४०)। (२) एक असुर विशेषका नाम (हिं॰ श॰ सा॰)।

क्रथकैशिक–पु० [सं०] (१) धृतराष्ट्रके एक पुत्रका नाम (महाभा०)। (२) क्रथ और कैशिकका वंश। (३) एक देशका नाम (हि॰ वि॰ को॰)।

क्रथन–पु० [सं०] (१) एक राक्षसका नाम जिसका नगर सुतलमें है (वायु० ५०.२२)। (२) धृतराष्ट्रके एक पुत्रका नाम (महाभा०)। (३) खशा और कश्यपका पुत्र जो हिरण्यकशिपुकी सभामें रहता था (ब्रह्मां० ३.७.१३३; मत्स्य० १६१.८०)।

क्रम–पु० [सं०] दस सुकर्मा देवोंमेंसे एकका नाम (ब्रह्मां० ४.१.८८; वायु० १००.९३)।

क्रमु–स्त्री० [सं०] प्लक्षद्वीपकी सात श्रेष्ठ नदियोंमेंसे एक नदी (ब्रह्मां० २.१९.१९)।

क्रमपाठ–पु० [सं०] संहिता और पाद दोनों मिला कर वेदोंका एक पाठ।

क्रयक्रीत–पु० [सं०] विवाहके चार प्रकारोंमेंसे एक = 'दासी' (ब्रह्मां० ४.१५.४)।

क्रव्याद–पु० [सं०] चिताकी अग्नि जिससे शव जलाते हैं।

क्रव्यादग्नि–पु० [सं०] क्षामका एक पुत्र जो मृत मनुष्योंको भस्म करता है (ब्रह्मां० २.१२.३७; वायु० २९.३५)।

क्रव्याद्गण–पु० [सं०] रुरुओंका एक वर्ग जो महारौरव नरकके हैं (भाग० ५.२६.१२)।

क्राथ–पु० [सं०] (१) एक नागका नाम (हि॰ श॰ सा)। (२) एक बंदरका नाम जिसने राम-रावण युद्धमें सेनानायकका काम किया था (महाभा०, वन० २८३)। (३) राहु ग्रहके अवतारका एक राजा (हि॰ श॰ सा॰)। (४) धृतराष्ट्रके एक पुत्रका नाम (महाभा०)।

क्रिमिकोंड–पु० [सं०] चोल देशके एक राजाका नाम जो कट्टर शैव थे। इनके डरके मारे यहाँके पंडितोंने यह लिख दिया था कि शिव ही सबसे उत्तम देवता हैं। इसने रामानुज स्वामीको बंदी बनाना चाहा था, पर असफल रहा (हि॰ वि॰ को॰)।

क्रिमिभक्ष–पु० [सं०] 'क्रिमिभोजन'। एक नरकका नाम। पिता, ब्राह्मणों, देवताओं या रत्नोंका अनादर करनेवाले इसके भागी होते हैं (गिष्णु० २.६.३, १५)।

क्रिमीश–पु० [सं०] एक नरकका नाम जहाँ जादूसे जीविकोपार्जन करनेवाले भेजे जाते हैं (विष्णु० २.६.३, १५)।

क्रिया–स्त्री० [सं०] (१) कर्दमकी पुत्री जो क्रतुको ब्याही थी और ६०,००० बालखिल्य ऋषियोंकी माता थी (भाग० ३.२४.२३; ४.१.३९)। (२) दक्षकी एक पुत्री जो धर्मकी एक पत्नी थी। यह योग और मनुकी माता थी (भाग० ४.१.४९-५१; ब्रह्मां० ४.१.२४)। नय, दण्ड (दम=ब्रह्मां०), समय (शम=ब्रह्मां०), (विनय=विष्णु०) भी इन्हींके पुत्र कहे गये हैं (ब्रह्मां० २.९.४९, ६०; वायु० १०.२५, ३५; ५५.४३; विष्णु० १.७.२३ और २९)। (३) विधाता (आठवें आदित्य) की पत्नी तथा पाँच अग्नियोंकी माता (भाग० ६.१८.४)। (४) ऋक्षवान् पर्वतसे निकली एक नदी (ब्रह्मां० २.१६.२९)।

क्रियायोग–पु० [सं०] पुराणानुसार विष्णु भगवान्‌की पूजा करना (भाग० १२.११.३; मत्स्य० १.३; ५२.५-११, २७ २८) तथा मंदिर आदि देवालय बनवाना। इसे प्रत्येक गृहस्थका धर्म कहा गया है जिससे ब्राह्मण नारायण हो जाता है। कर्मयोग (क्रियायोग) के विना ज्ञानयोग नहीं होता है। इसके आठ (८) आत्मगुण हैं—यही धर्म है (मत्स्य० १३४.१७-१८; १४५.२७-२८; २५८.१-३)।

क्रियालक्षणयोग–पु० [सं०] जप–ध्यानादि द्वारा आत्मा और परमात्माका सम्बन्ध स्थापित करना—'योगदर्शन'।

क्रियाशक्ति–स्त्री० [सं०] ईश्वरकी वह शक्ति जिससे सृष्टि रची गयी। वेदांतमें इसे 'माया' कहते हैं और सांख्यमें 'प्रकृति'।

क्रीड़–पु० [सं०] खशाके पुत्र अनेक राक्षसोंमेंसे एक राक्षसका नाम (वायु० ६९.१६६)।

क्रीड़ाविहार–पु० [सं०] गंधर्वों और अप्सराओंकी प्रेमक्रीड़ा (मत्स्य० १२०.१-३०)।

क्रीतक–पु० [सं०] माता-पिताको धन देकर मोल लिया हुआ पुत्र जो बारह प्रकारके पुत्रोंमेंसे एक है (मनु० ९.१६०)।

क्रूर–पु० [सं०] पौरुपेय नामक राक्षसके पाँच पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (ब्रह्मां० ३.७.९३)।

क्रूरदंती–स्त्री० [सं०] दुर्गाका एक नाम (देवी भाग०)।

क्रोध–पु० [सं०] (१) यह ब्रह्माकी भृकुटियोंसे उत्पन्न हुआ है (भाग० ३.१२.२५; मत्स्य० ३.१०)। मत्स्य० २८.१-१३ के अनुसार देवयानीको, शर्मिष्ठासे रुष्ट हो जानेपर, शुक्रने जो नीति-न्याययुक्त धार्मिक उपदेश दिये थे तथा देवयानीके प्रत्युत्तर। क्रोधसे होनेवाले अनर्थोंपर वशिष्ठ द्वारा प्रकाश (विष्णु० १.१.१७-१९)। (२) इसे लोभ और निकृतिसे उत्पन्न कहा गया है (भाग० ४.८.३)। (३) आठ भैरवोंमेंसे एक भैरव देवता (ब्रह्मां० ४.१९.७८)। (४) मृत्युकी चार सन्तानोंमेंसे एक पुत्र (वायु० १०.४१)।

क्रोधन–पु० [सं०] (१) कुरुक्षेत्रनिवासी कौशिक ऋषिके सात पुत्रोंमेंसे एक जो गर्ग मुनिके शिष्य थे (मत्स्य० २०.३)। (२) अयुतके पुत्र और देवातिथिके पिताका नाम (भाग० ९.२२.११)।

क्रोधनायन–पु० [सं०] पाँच श्याम पराशरोंमेंसे एक (मत्स्य० २०१.३७)।

क्रोधनी–स्त्री० [सं०] अन्धकासुर रक्तपानके लिए महादेवजी द्वारा सृष्ट एक मानस मातृकाका नाम (मत्स्य० १७९.२९)।

क्रोधवश–पु० [सं०] काद्रवेय नागोंका (जो महातलके निवासी हैं) एक गण। ये केवल गरुड़से डरते हैं। देवासुर-संग्राममें ये रुद्रोंसे लड़े थे (भाग० ५.२४.२९; ८.१०.३४)।

क्रोधवशा–स्त्री० [सं०] (१) दक्ष प्रजापतिकी एक पुत्री जो कश्यप ऋषिको ब्याही थी। यह दंदशूक आदि नागोंकी माता थी (भाग० ६.६.२६, २८; वायु० ६६.५४)। इसकी मृगी, मृगमन्दा आदि बारह पुत्रियोंका विवाह पुलहसे हुआ था। भूत, पिशाच, किन्नर, वानर आदि इन्हींके वंशज हैं (ब्रह्मां० ३.३.५६; ७.१७१, ४४४, ४६७; ८.७२; विष्णु० १.१५.१२५)। यह नोकीले दाँतवाले राक्षसोंकी माता थी जो स्थल तथा जलमें निवास करते थे। इसके कुछ पुत्र भीमसेन द्वारा मारे गये थे (मत्स्य० ६.४३; १४६.१८)।

क्रोधा–स्त्री० [सं०] दक्षकी एक पुत्री जो राक्षसों तथा पिशाचोंकी माता थी (मत्स्य० १७१.२९, ६१; विष्णु० १.२१.२३); दे० क्रोधवशा।

क्रोधी–पु० [सं०] वशिष्ठ वंशज एक ऋषिका नाम (मत्स्य० २००.७)।

क्रोष्टा–पु० [सं०] (१) त्र्यार्षेय प्रवर (आंगिरस) (मत्स्य० १९६.८)। (२) यदुके पाँच मतान्तरसे चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्र तथा वृजिनवान्‌के पिताका नाम (भाग० ९.२३.२०, ३०),

क्रोष्टाक्षी–पु० [सं०] एक आंगिरस त्र्यार्षेय प्रवर (मत्स्य० १९६.२२)।

क्रोष्टु–पु० [सं०] (१) यदुका पुत्र तथा ध्वजिनीवान्‌का पिता (ब्रह्मां० ३.६९.२; मत्स्य० ४३.७; विष्णु० ४.११.५; १२.१)। (२) कार्तवीर्य अर्जुनका पुत्र तथा राजर्षि। यह वृजिनीवान्‌के पिता थे। वृष्णिका जन्म इसी कुलमें हुआ था (ब्रह्मां० ३.७०.१४.१५; मत्स्य० ४३.४६; ४४.१४-५)।

क्रौंच–पु० [सं०] (१) हिमालयके अंतर्गत क्रौंचद्वीपका एक पर्वत, जो पुराणानुसार मैनाकका पुत्र (भाई=वायु०) (ब्रह्मां० ३.१०.७, ४८) तथा हिमालयका नाती है। स्वामी कार्तिकेय (भाग० ५.२०.१८-१९; ब्रह्मां० २.१९.६६, १३९; २५.१८; विष्णु० २.४.५०) और परशुरामने इसे बेधा था। क्रौंचद्वीपका नाम इसी पर्वतके कारण पड़ा है (ब्रह्मां० २.१३.३५; मत्स्य० १२२.८१; १२३.३७; १६३.८८; वायु० ३०.३२)। यहाँ शंकरका निवास है (वायु० ३९.४२; ४९.६१)। (२) पुराणोक्त सात द्वीपोंमेंसे एक। यहाँके क्रौंच पर्वतपर ही इसका नामकरण हुआ था। विष्णुपुराणानुसार यह द्वीप दधिमंडोद समुद्रसे घिरा हुआ है और प्रियव्रतका सातवाँ पुत्र द्युतिमान् यहाँका राजा था। पुरुष, ऋषभ, द्रविण और देवक नामकी यहाँकी यही चार जातियाँ हैं,

पर भागवतके अनुसार यह क्षीरसागरसे घिरा हुआ है और कुशद्वीपका दुगना है (भाग० ५.२०. १७-२३; ब्रह्मां० २.१४.१३-२६; १९.६४-७७; वायु० ४९.५९-७३; विष्णु० २.१.१४; २.५; ४.४५-५७)। प्रियव्रतका पुत्र घृतपृष्ठ (घृतराष्ट्र) यहाँका राजा था। इस द्वीपके सात खंड हैं जिसे इस राजाने अपने सात पुत्रोंको दिया था। प्रत्येकमें एक नदी और एक पहाड़ है तथा यहाँ विष्णुकी पूजा जलके रूपमें होती है (भाग० ५.१.३२; २०.१८.२३; मत्स्य० १३.७; १२२.७८)। (३) हिमवान्‌का एक पुत्र क्रौंच पर्वत तथा द्वीपका नामकरण इसीके कारण हुआ था (मत्स्य० १३.७)। (४) एक राक्षसका नाम जो मयदानवका पुत्र था और क्रौंचद्वीपमें स्कंद भगवान्‌ने इसका वध किया था। (५) केतुमाल देशका एक जनपद (वायु० ४४.१०)। यह घीके समुद्रसे घिरा है (वायु० ३०.३२; ५४.२१; १११.५३)। पर्वतके चारों ओर वन है (वायु० ४१.३७; ४९.५९)। (६) शाकपूर्ण, जो ऋग्वेदकी तीन शाखाओंके प्रवर्तक तथा निरुक्तके निर्माता थे, के चार शिष्योंमेंसे एक शिष्य (विष्णु० ३.४.२४)।

क्रौंचपद–पु० [सं०] या क्रौंचपाद। यह एक तीर्थस्थानका नाम है जो गयामें है, जहाँ मुण्डपृष्ठ पर्वतपर ऋपिने क्रौंचके रूपमें तप किया था। वहाँ जलाशयमें स्नान करनेसे स्नानकर्ताके पितर स्वर्गमें जाते हैं। यहाँ तीन दिन निवासपूर्वक स्नान, तर्पण और पिण्डदानका बड़ा माहात्म्य कहा गया है (वायु० १०८.७५, ८३; १०९.१६; १११.४४)।

क्रौंचरंध्र–पु० [सं०] हिमालय पर्वतकी एक घाटीका नाम। पुराणानुसार परशुरामने क्रौंच पर्वतको एक तीरसे वेधकर यह घाटी बनायी थी। कहते हैं हंस इसी मार्गसे मानसरोवर आते-जाते हैं—क्रौंच (१)।

क्रौंचसंवत्सर–पु० [सं०] यह मनुष्योंके नौ हजार नब्बे वर्षोंके बराबर होता है (वायु० ५७.१८)।

क्रौंची–स्त्री० [सं०] ताम्रा नामक पत्नीसे उत्पन्न कश्यपकी छह पुत्रियोंमेंसे एक। यह अपनी दूसरी चार बहिनोंके साथ गरुड़को ब्याही गयी थी। कहते हैं यह उलूक आदि पक्षियोंकी माता थी (ब्रह्मां० ३.७.४४६-८, ४५६)।

क्रुमा–स्त्री० [सं०] प्लक्षद्वीपकी सात मुख्य नदियोंमेंसे एक नदी (विष्णु० २.४.११) (अक्रुमा ?)।

क्लीबा–स्त्री० [सं०] जयविघ्न महायन्त्रके आठ कोनोंकी आठ देवियोंमेंसे एक देवी (ब्रह्मां० ४.२७.३८)।

क्षत्र–पु० [सं०] (१) अनमित्र और पृथ्वीके तीन पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (मत्स्य० ४५.२५)। (२) एक धर्म जिसकी उत्पत्ति काम्या तथा प्रियव्रतके पुत्रोंसे हुई (ब्रह्मां० २.११.३४; वायु० २६.३५; २८.२९; ३२.४६)। शक्तिशाली लोग संसारके रक्षार्थ नियुक्त हुए जो क्षत्रिय कहलाये जिनका काम सेनामें काम करना, राज्य करना तथा युद्धमें भाग लेना था (ब्रह्मां० २.७.१५४; १६१.६६)। (३) ब्रह्माके शरीरसे इसकी उत्पत्ति ब्राह्मणोंके साथ हुई, अतः इन दोनों- (क्षत्रिय और ब्राह्मण) में अंतर्जातीय वैवाहिक सम्बन्धमें कोई अड़चन नहीं है। यह ययातिके प्रति देवयानीकी उक्ति है (मत्स्य० ३०.१९.२०)।

क्षत्रधर्म–पु० [सं०] (१) अनेनाका पुत्र तथा प्रतिपक्षका पिता। कृतधर्माके साथ इसका वंश समाप्त हो गया (वायु० ९३.७; ब्रह्मां० ३.६८.७, ११)। (२) संकृतिका एक पुत्र जो क्षत्रवृद्धवंशका अंतिम व्यक्ति था (विष्णु० ४.९.२७)।

क्षत्रजित्–पु० [सं०] कालनेमिके चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (वायु० ६७-८०)।

क्षत्रविद्ध–पु० [सं०] रौच्य मनुके दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (ब्रह्मां० ४.१.१०४)।

क्षत्रवृद्ध–पु० [सं०] आयुके प्रभामें उत्पन्न पाँच पुत्रोंमेंसे एक पुत्र तथा सुहोत्र और प्रतिक्षत्रके पिताका नाम (भाग० ९.१७.१-२; ब्रह्मां० ३.६७.२; विष्णु० ४.८.३; ९.२५)।

क्षत्ता–पु० [सं०] विदुरका नाम (भाग० १२.१२.८)।

क्षत्रिय–पु० [सं] (१) चौथे मनुका नाम (वायु० २६.३५)। (२) वेदोंके अनुसार क्षत्रियोंकी उत्पत्ति प्रजापतिके बाहुसे हुई थी। वेदोंमें दिये क्षत्रियवंश पुराणोंमें दिये वंशोंसे भिन्न हैं। पुराणानुसार ये ब्रह्माके वक्षस्थलसे उत्पन्न हुए (ब्रह्मां० २.५.१०८; वायु० ३०.८३, २३२; ४५.११७; ५४.११२; ५७.५२; १००.२४६; १०१.५; ३५२.१०४, १३; विष्णु० १.६.६)। पुराणोंमें क्षत्रियोंके चन्द्र और सूर्य केवल दो ही वंशोंका उल्लेख है। भाग० ७.११.१४-१५; १७.२२; १०.२४.२० तथा विष्णु० ३.८.२६-२९ में इनकी विशेषताओं तथा कर्तव्योंका विशद विवरण दिया है। हिन्दुओंके चार वर्णोंमें यह दूसरा वर्ण है (भाग० १०.२०.४०) के अनुसार कल्किने इनका मूलोच्छेदन किया। दान, यज्ञ तथा तपसे ये ब्राह्मण हो जाते हैं (ब्रह्मां० २.२९.१-५५; ३.१०.८९; २८.५६; ६३.१४१; ६६.७७; ७१.२३१)। हविष्मंत इनके पितृगण है तथा ये देवीके उपासक होते हैं (मत्स्य० १३.६३; १५.१७; १८.२)। आपत्तिमें वैश्योंका काम यह कर सकते हैं, पर शूद्रोंका काम कदापि नहीं कर सकते (विष्णु० ३.८.३९)।

क्षत्रोपक्षत्र–पु० [सं०] अक्रूरके १३ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (विष्णु० ४.१४.९)।

क्षात्रोपेतद्विज–पु० [सं०] रथीतर, विश्वामित्र, मान्धाता, संकृति, कपि, काश्य, पुरुकुत्स, शल, गृत्समद, आर्ष्टिषेण, अजमीढ़, कक्षीवान्, विष्णुवृद्ध आदि (ब्रह्मां० ३.६३.७; ६६.८६; वायु० ८८.७; विष्णु० ४.२१०)। शिवि, भरद्वाज, संकृत्य, काव्य, मौद्गल्य और भार्गव (मत्स्य० ४९.३८, ४१; ५०.५.१४)। अंगिरस, शौनक, आर्ष्टिषेण (वायु० ८८.७३, ७९; ९२.६)। गार्ग्य, शैन्य, मौद्गल्य (विष्णु० ४.१९.२३, ६०)। विश्वामित्र, मांधाता, संकृति, कपि, पुरुकुत्स, सत्य, आनृहवान्, ऋथु, आर्ष्टिषेण, अजमीढ़, भाभान्य, अन्य, कक्षीव, शिजय, रथीतर, रुन्द, विष्णुवृद्ध, गार्ग्य आदि; ये सब राजर्षि ब्राह्मण हो गये थे (वायु० ९१.११५-७; ९९.१६१, १९८)।

क्षतौजा–पु० [सं०] शिशुनागवंशीय राजा क्षेमधर्माका पुत्र तथा विधिसारका पिता। इसने ४० वर्ष राज्य किया था (ब्रह्मां० ३.७४.१३०; विष्णु० ४.२४.१२-१३)।

क्षम–पु० [सं०] स्वारोचिष मनु युगके बारह सुधामा देवोंमेंसे एक सुधामा देव (ब्रह्मां० २.३६.२७)।

क्षमा—स्त्री० [सं०] (१) ब्रह्मधानात्मजा एक ब्रह्मराक्षसी (ब्रह्मां० ३.७.९९)। (२) नारदा आदि छह शक्ति देवियोंमेंसे एक शक्ति देवी (ब्रह्मां० ४.४४.९१)। (३) दक्षकी ग्यारह पुत्रियोंमेंसे एक पुत्री तथा पुलह प्रजापतिकी पत्नी एवं कर्दम, अम्बरीष तथा सहिष्णुकी माता (वायु० १०.२८,३१; २८.२५; विष्णु० १.७.२५)। कर्दम, उर्वरीवान्, सहिष्णु, कनकपीठ तथा पीवरी (पुत्री) की माता (ब्रह्मां० २.९.५२; ११.३०)। (४) ब्रह्माके मानस-पुत्र भृगु आदि नौ, जिनके लिए नौ पत्नियोंकी सृष्टि ब्रह्माने की, उनमें एक (चतुर्थ)। क्रतुकी पत्नी (विष्णु० १.७.७)। (५) ऋष्यवान् पर्वतकी एक नदी (मत्स्य० ११४.२५)।

क्षय—पु० [सं०] वृहत्क्षयका पुत्र तथा वत्सव्यूहका पिता—एक ऐक्ष्वाकराजा।

क्षयी—पु० [सं०] चन्द्रमाका एक नाम जो पुराणानुसार दक्षके शापसे क्षयग्रस्त हो गये थे, अतः यह नाम पड़ा—दे० चन्द्रमा।

क्षांत—पु० [सं०] (१) एक ऋषिका नाम। (२) एक व्याध विशेषका नाम। अपने गुरु गर्ग मुनिकी गौएँ मार डालनेके कारण इसे शाप मिला था।

क्षांति—स्त्री० [सं०] क्रौंचद्वीपकी एक मुख्य नदीका नाम (विष्णु० २.४.५५)।

क्षाम—पु० [सं०] (१) समुद्रवासी वड़वाग्नि-सुत सहरक्षका पुत्र, जो घरोंको जला दिया करता है (वायु० २९.३४)। क्रव्यादग्नि इसका पुत्र था (ब्रह्मां० २.१२.३७)। (२) स्वारोचिष मनुयुगके १२ सुधामा देवोंमेंसे एक (ब्रह्मां० २.३६)।

क्षारकर्दम—पु० [सं०] २८ नरकोंमेंसे एक नरकका नाम। अपने बड़े तथा पूज्य लोगोंका अनादर करनेवाला इसका भागी होता है (भाग० ५.२६.७, ३०)।

क्षारपाल—पु० [सं०] एक ऋषिका नाम (हिं० श० सा०)।

क्षिप्र—पु० [सं०] वसुदेव और देवरक्षिताके आत्मज, उपासंगके दो पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (वायु० = उपांगका पुत्र) (ब्रह्मां० ३.७१.२५८; वायु० ९६.२४)।

क्षिप्रहस्त—पु० [सं०] (१) अग्निका नाम। (२) एक राक्षसका नाम (हिं० श० सा०)।

क्षिप्रा—स्त्री० [सं०] (१) विन्ध्याचलसे निकली पितरोंके श्राद्धके लिए अति प्रशस्त एक पवित्र नदी (ब्रह्मां० २.१६.३२; मत्स्य० २२.२४; ११४.२७)। (२) पारियात्र पर्वतसे निकली एक नदी (ब्रह्मां० २.१६.२९)।

क्षीर—पु० [सं०] त्र्यार्षेय प्रवर (आंगिरस) (मत्स्य० १९६.६)।

क्षीरकुंड—पु० [सं०] एक बड़ा पवित्र कुंड जो देवीपुरसे थोड़ी दूरपर कुल्लग्राममें स्थित है। इसी स्थानसे श्री रामचन्द्रने सेतुबन्धका प्रारम्भ किया था। मुद्गल ऋषिने विष्णु-प्रीत्यर्थ यहाँ एक यज्ञ किया था जिससे प्रसन्न हो विष्णुने विश्वकर्मासे इस कुंडकी सृष्टि करायी थी तथा सुरभिने इसे दूधसे भरा था (स्कंद० ब्राह्मखंड, सेतु—मा०)।

क्षीरधेनु—स्त्री० [सं०] पुराणानुसार एक प्रकारकी कल्पित गौ। किसी वस्तुको, जैसे घड़ा आदि स्थापित करके इसकी कल्पना करते हैं। इसका दान करते हैं।

क्षीरसमुद्र—पु० [सं०] दे० क्षीरसागर।

क्षीरसागर—पु० [सं०] (१) देवीपुरके समीप कुल्लग्राममें स्थित एक कुंड—दे० क्षीरकुंड (स्कंद० ब्राह्मखंड, सेतु-मा०)। (२) पुराणानुसार सात समुद्रोंमेंसे एकका नाम जो दूधसे भरा माना जाता है। कहते हैं विष्णु भगवान् इसी समुद्रमें शेषशय्यापर सोते हैं (भाग० १०.१.१९)। इसके क्षीरोद, क्षीरपयोनिधि तथा क्षीराब्धि पर्याय हैं (ब्रह्मां० ३.२८.८; ४. ९.५६, ६० और ६४; ३१.१९)।

क्षीराब्धि—पु० [सं०] लक्ष्मीका जन्मस्थान (विष्णु० १.८.१६)। इसे अमृतके लिए मथा गया था (विष्णु० १.९.७७, १९८)। इसीके तटपर जा देवगण विष्णुकी स्तुति करते थे (विष्णु० ५.१.३२)।

क्षीराब्धिशायी—पु० [सं०] विष्णुका एक नाम (वायु० १०६.४८; १०७.३४)।

क्षीरोद—पु० [सं०] दूधका समुद्र जो शाकद्वीप (क्रौंचद्वीप = भागवत, कुशद्वीप = मत्स्यपुराण) के चारों ओर है। अमृतके लिए यही मथा गया था (भाग० ५.१.३३; २०.१९; १०.६५(५)२४; ब्रह्मां० २.१९.१०२; २१.७१; २५.४५; मत्स्य० १२२.४९; वायु० ३५.३७; ५४.४९; विष्णु० २.४.७२)। ब्राह्मणोंके शापसे इसका जल खारा है तथा विष्णु यहाँ विश्राम करते हैं।

क्षीरोदनंदन—पु० [सं०] समुद्रमंथनमें समुद्रसे निकलनेके कारण चन्द्रमाका एक नाम—दे० चन्द्रमा।

क्षुद्रक—पु० [सं०] इक्ष्वाकुवंशीय प्रसेनजित्का पुत्र तथा रणक (कुण्डक = विष्णु०; क्षुतिक = वायु०) का पिता (भाग० ९.१२.१४-१५; मत्स्य० २७१.१३; वायु० ९९.२८९; विष्णु० ४.२२.९)।

क्षुद्रभृत्—पु० [सं०] देवकीका एक पुत्र जिसे कंसने मार डाला था। श्रीकृष्ण इसे सुतलसे ले आये थे। माता-पिताके दर्शनके पश्चात् यह स्वर्ग लौट गया (भाग० १०.८५.५१-५६)।

क्षुधातीर्थ—पु० [सं०] गौतमीगंगाके तटपरका वह पवित्र स्थान जहाँ कण्व ऋषिने बैठकर गौतमीगंगा (गोदावरी) और क्षुधा देवीकी स्तुति की थी। इस स्तोत्रका पाठ करनेवाला दरिद्रता और दुःखसे छुटकारा पा जाता है (ब्रह्मां० ८५.२०-२१)।

क्षुधि—पु० [सं०] श्रीकृष्ण और मित्रविंदाके दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (भाग० १०.६१.१६)।

क्षुप—पु० [सं०] (१) रामायणानुसार पृथ्वीके आदि राजा यही थे। (२) एक प्रजापति, जो ब्रह्माजी द्वारा मस्तकपर धारण किये गये उनके गर्भसे उत्पन्न हुए थे। ये ब्रह्माजीके छींकनेपर उनके मस्तकसे गिरे थे (महाभा० शा० १२२.१६-१७)। यही ब्रह्माजीके यज्ञके ऋत्विक् हुए थे (महाभा० शा० १२२-१७)। भगवान् रुद्रने इनको सम्पूर्ण प्रजाओं तथा धर्मधारियोंका अधिपति बनाया था (महाभा० शा० १२२-३५)। (३) महाशक्ति वैवस्वत मनुके पुत्र महाबाहु प्रसन्धिके तनय तथा इक्ष्वाकुके पिता (अश्वमेध ४.३)। ये महाबलवान् राजर्षि यमराजकी सभामें विराजमान होते थे (महाभा० सभा० ८-१३)। इन्हें मनुसे खड्ग प्राप्त हुआ था। इन्होंने अपने जीवनमें कभी मेध्य मांस भी ग्रहण नहीं किया था (महा० अनु० ११५.६७)। महाभारतके

अश्वमेध पर्वके चौथे अध्यायके अनुसार क्षुप इक्ष्वाकुके पूर्व पुरुष माने जा सकते हैं। विष्णुपुराणमें नेदिष्टके वंशकी ग्यारहवीं पीढ़ीमें क्षुपका पता मिलता है। परन्तु यह मनुके पुत्र नहीं हैं। (३) श्रीकृष्णके एक पुत्रका नाम जो सत्यभामाके गर्भसे उत्पन्न हुए थे। (४) खनित्रके पुत्र तथा विंशके पिताका नाम (वायु० ८६.६)। (५) प्राचीन राजा क्षुप ब्रह्माजीके पुत्र थे जो वड़े धर्मात्मा थे। खनित्रके पुत्रका भी नाम क्षुप था जो प्रमथाके पति थे। वीर नामक इनका पुत्र था (दे० खनित्र तथा मार्कण्डेय०)।

क्षुरधार–पु० [सं०] (१) एक नरकका नाम (हि· वि· को·)। (२) एक प्रकारका वाण।

क्षुलिक–पु० [सं०] क्षुद्रकका पुत्र तथा सुव्रतका पिता (वायु० ९९.२९०)।

क्षेत्र–पु० [सं०] अव्यक्त और क्षेत्रज्ञ=ब्रह्म है। साधर्म्य और वैधर्म्यसे जनित इन दोनोंका संयोग अनादिमान् है। (क्षेत्र अविपय और ब्रह्मा विपय) (ब्रह्मां० १३.३७; वायु० १०२.३४, ६; १११-१४)।

क्षेत्र-क्षेत्रज्ञ–पु० [सं०] क्षेत्र और ब्रह्मा या अविपय और विपय (वायु० १०२.३६)।

क्षेत्रज्ञ–पु० [सं०] (१) क्षेमधर्मांका पुत्र तथा विधिसारका पिता (भाग० १२.१.५)। (२) यह क्षेत्रज्ञानसे युक्त परम पुरुष है, परम तत्त्व है (ब्रह्मां० २.३२.८५; ४.३.८६-९०, १०२.१०८; ४.१९)। 'ज्ञान, वैराग्य, ऐश्वर्य तथा धर्म', इन चारोंकी शक्ति। प्रकृतिका अधिपति (वायु० १०१.२२३, २२८; १०२.३३, १०८-९; १०३.२७)। (३) जब क्षेत्र और क्षेत्रज्ञमें वरावर 'गुण' हो और कोई वैपम्य न हो। गुण, महान्से विशेपतक २४ हैं (वायु० १०३.१५-१९)।

क्षेत्रपाल–पु० [सं०] ये शिवके अनुचर हैं (ब्रह्मां० ३.४१. ३३; ४.१४.७)। कार्तवीर्यको क्षेत्रपाल कहते हैं (मत्स्य० ४३.२७; वायु० ९४.२४)।

क्षेत्रोपेक्ष–पु० [सं०] श्वफल्क और गांदिनीके अक्रूरप्रमुख १२ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (भाग० ९.२४.१६)।

क्षेम–पु० [सं०] (१) प्लक्षद्वीपके सात खंडोंमेंसे एक (भाग० ५.२०.३)। (२) धर्मका तितिक्षासे उत्पन्न पुत्र (भाग० ४. १.५२)। (३) शुचिका पुत्र तथा सुव्रतका पिता। इसने २८ वर्ष राज्य किया था (भाग० ९.२२.४७; मत्स्य० २७१. २५)। (४) धर्मका शांतिसे उत्पन्न पुत्र (ब्रह्मां० २.९.६१; वायु० १०.३७)। (५) वारह सत्यदेवोंमेंसे एक सत्यदेव (ब्रह्मां० २.३६.३५)। (६) ब्रह्मधानके दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (ब्रह्मां० ३.७.९८; वायु० ६९.१३२)। औत्तम मनुके युगके वारह अजित देवोंमेंसे एक अजितदेव (वायु० ६७. ३४; ६२.३२)। (७) सुनीथका पुत्र तथा केतुमान्का पिता (ब्रह्मां० ३.६७.७३)। (८) मगधाधिपति वृहद्रथका वंशज। इसके पिताका नाम शुचि तथा पुत्रका नाम सुव्रत था (ब्रह्मां० ३.७४.११६; वायु० ९९.३०२)। (९) उग्रायुधका एक पुत्र तथा सुनीथका पिता (मत्स्य० ४९.७८; वायु० ९९.३०२)।

क्षेमक–पु० [सं०] (१) निरामित्र (निरमित्र=विष्णु०), ऐलवंशका अंतिम पुत्र जिसके साथ ही ब्रह्मक्षत्रवंशका अंत हुआ (ब्रह्मां० ३.७४.२४५; मत्स्य० ५०.८७-८; वायु० ९९.२७८-७९; विष्णु० ४.२१.१६-१८)। (२) शिवके एक गण विशेपका नाम। (३) प्लक्षद्वीपाधिपति मेधातिथिके सात पुत्रोंमेंसे एक पुत्र जो प्लक्षद्वीपके क्षेमक राज्यका संस्थापक था (ब्रह्मां० २.१४.३७-३९; वायु० ३३.३३, विष्णु० २.४.४-५)। (४) एक राक्षसका नाम जिसने वनारसको उजाड़ दिया था (ब्रह्मां० ३.६७.२७)। (५) मणिवरके देवजनीमें उत्पन्न अनेक पुत्रोंमेंसे एक पुत्र जो यक्ष थे (वायु० ६९. १६०)। (६) एक नागका नाम। (७) विष्णु पुराणानुसार चन्द्रवंशी राजा तिमिका वंशज। यह इस वंशका अन्तिम राजा था (भाग० ९.२२.४४-५)। (८) एक देश जो प्लक्षद्वीपके वृपभ या सुमना पर्वतसे लगा हुआ है (ब्रह्मां० २.१४.३९; १९.१६; वायु० ४९.१४; विष्णु० २.४.४-५)। मैनाक वर्प (मत्स्य० १२२.२५)।

क्षेमकर्ण–पु० [सं०] अर्जुनके पौत्रका नाम जो जनमेजयके सखा थे। इन्होंने अवधका खेरी नामक नगर वसाया था।

क्षेमजित्–पु० [सं०] क्षेमधर्मांका पुत्र जिसने २४ वर्षोंतक राज किया (मत्स्य० २७२.७)।

क्षेमधन्वा–पु० [सं०] पुंडरीकका पुत्र जो देवानीकका पिता था (भाग० ९.१२.१-२; ब्रह्मां० ३.६३.२०२-३, मत्स्य० १२.५३; वायु० ८८.२०२; विष्णु० ४.४.१०६)।

क्षेमधर्मा–पु० [सं०] (१) शिशुनाग वंशज काकवर्णका एक पुत्रत था क्षेत्रज्ञ (क्षत्रौजा, क्षतौजा=ब्रह्मां० और विष्णु०) का पिता (भाग० १२.१.५; ब्रह्मां० ३.७४.१२९; मत्स्य० २७२.६; विष्णु० ४.२४.११-१२)। (२) क्षेमधर्मा=तीसरे सावर्ण मनुके नौ पुत्रोंमेंसे एक (ब्रह्मां० ४.१.८१; वायु० १००.४८४)।

क्षेमधि–पु० [सं०] चित्ररथका एक पुत्र तथा समररथका पिता, जो मिथिलाका राजा था (भाग० ९.१३.२३-२४)।

क्षेमधूर्ति–पु० [सं०] (१) एक राजाका नाम जो महाभारत-युद्धमें दुर्योधनके पक्षसे लड़ा था। यह क्रोधवशसंज्ञक दैत्यके अंशसे उत्पन्न हुआ था (महा०, आदि० ६०.३४)। इसे पाण्डवोंकी ओरसे रणनिमन्त्र भेजनेके सम्बन्धमें विचार-विमर्श हुआ था (महाभा० उद्योग० ४.८)। यही कुलूत देशका अधिपति था। कौरवोंकी ओरसे लड़ा था। भीमसेनके हाथ मारा गया (महाभा० कर्ण०१२.४४)। (२) एक कौरवपक्षीय राजा, यह वृहन्तका सगा भाई था। महाभारत-युद्धमें सात्यकिके साथ इसका युद्ध हुआ और उनके हाथ मारा गया (महाभा० द्रोण० २५.४७-४८)। (३) कौरवपक्षका एक योद्धा पाण्डवपक्षके वृहत्क्षत्रके साथ इसका युद्ध हुआ था और उन्हींके हाथ मारा गया (महा० द्रोण० १०६.८; १०७.६)।

क्षेमभूमि–पु० [सं०] विक्रमित्रात्मज भागवतका पुत्र जिसने १० वर्ष राज्य किया। यह दस तुंग राजाओंमें एक था (वायु० ९९.३४२-४३)।

क्षेममूर्त्ति–पु० [सं०] (१) पुलह और श्वेताके पुत्र दस वानरश्रेष्ठोंमेंसे बन्दरोंका एक नायक (ब्रह्मां० ३.७.१८१)। (२) धृतराष्ट्रका एक पुत्र (महाभा० आदि० ६७-१००)।

क्षेमवृद्धि–पु० [सं०] राजा शाल्वका एक मन्त्री तथा सेनापति जिसकी सेनाने द्वारकापर आक्रमण किया था, पर श्रीकृष्णके पुत्र शाम्बसे हार गया था (महा० वन० १६.११)।

क्षेमा–स्त्री० [सं०] एक मौनेय अप्सराका नाम। यह अन्य अप्सराओंके साथ अर्जुनके जन्म-महोत्सवमें नृत्य करने आयी थी (ब्रह्मां० ३.७.७; महाभा० आदि० १२२.६६)।

क्षेम्य–पु० [सं०] (१) उग्रायुधका पुत्र तथा सुवीर (सुधीर=विष्णु०) का पिता (भाग० ९.२१.२९; विष्णु० ४.१९.५५)। (२) शुचिका पुत्र तथा सुव्रतके पिताका नाम (विष्णु० ४.२३.६)।

क्षोणि–पु० [सं०] हरिने इसे महावराहके माहात्म्यके ऊपर रचा गया वाराहपुराण सुनाया था (मत्स्य० ५३.३९)।

क्षोभक–पु० [सं०] कामाख्यातीर्थका एक पहाड़—दे० कामाख्या।

क्षोभण–पु० [सं०] कामदेवके पाँच बाणोंमेंसे एक—दे० कामदेव।

क्षौद्र–पु० [सं०] मागधी मातासे उत्पन्न एक वर्णसंकर जाति (हि॰ श॰ सा॰)।

क्षौद्रक–पु० [सं०] पुराणानुसार क्षुद्रक नामक देश जो आधुनिक पंजाबके अंतर्गत था (पद्म० स्वर्ग० ३)

क्ष्वेला–स्त्री० [सं०] अन्धकासुररक्तपानार्थ महादेवजी द्वारा सृष्ट एक मानसपुत्री मातृकाका नाम (मत्स्य० १७९.२५)।

ख

खंड–पु० [सं०] प्रह्लादपुत्र जंभके चार पुत्रोंमेंसे एक (वायु० ६७.७८)।

खंडपरशु–पु० [सं०] (१) महादेवका एक नाम। (२) विष्णुकी एक उपाधि। (३) परशुरामका एक नाम। (४) राहुका एक नाम।

खंडप्रलय–पु० [सं०] वह प्रलय जो ब्रह्माके एक दिन बीत जानेपर होता है। इसमें स्वर्गके नीचेके समस्त लोक नष्ट हो जाते हैं केवल ब्रह्मा रह जाते हैं। पुराणोंके अनुसार सूर्यका तेज खूब बढ़ जाता है और रुद्र सारी सृष्टिका अंत कर डालते हैं।

ख–पु० [सं०] आकाश तथा ब्रह्म।

खगण–पु० [सं०] वज्रनाभका पुत्र तथा विधृतिका पिता (भाग० ९.१२.३)।

खगपति–पु० [सं०] गरुड़का एक नाम और उपाधि (भाग०)।

खटवांग–पु० [सं०] (१) प्रायश्चित्त करते समय भिक्षा माँगनेका एक पात्र। (२) राजा विश्वसहका पुत्र एक सूर्यवंशी चक्रवर्ती राजा जिसका उल्लेख भागवतमें आया है। देवासुर संग्राममें यह देवपक्षसे लड़ा था और इसने दैत्योंका संहार किया। जब इसका जीवन कुल एक घण्टा बचा तब यह रणक्षेत्रसे चला आया और भक्तिसे एक मुहूर्त्तमें इसे ब्रह्मलोक मिला। यह एक राजर्षि था जिसे विष्णुने अंतमें मोक्ष दिया। दीर्घबाहु इन्हींका पुत्र था (भाग० २.१.१३; ९.९.४१-४९; ९.१०.१; ११.२३.३०; (विष्णु० ४.४.७६-८३)। (३) पितृगणों, जो फलार्थी क्षत्रियोंके उपास्य हैं, की मानसी कन्या यशोदाका पुत्र (ब्रह्मां० ३.१०.९०); एक राजर्षि (भाग० १२. ३.९; वायु० ७३.४१)। (४) शिवके एक अस्त्र विशेषका नाम। यह एक डंडा है जिसके अंतमें मनुष्यकी खोपड़ी लगी है। इसका रूप राजदण्ड सरीखा है।

खटवांगद–पु० [सं०] दिलीपका पुत्र तथा सुबाहुका पिता जो स्वर्गसे उतर यहाँ केवल एक मुहूर्त्त ठहरा था (वायु० ८८.१८२)।

खड्गसिद्धि–स्त्री०[सं०] आठ प्रकारकी योगसिद्धियोंमेंसे एक योगसिद्धि (ब्रह्मां० ४.३६.५२)।

खड्गी–पु० [सं०] ५१ गणेशोंमेंसे एक गणेशजीका नाम (ब्रह्मां० ४.४४.७०)।

खदिर–पु० [सं०] (१) चन्द्रमा। (२) इंद्र। (३) एक ऋषिका नाम।

खद्योत–पु० [सं०] वह स्थिति जिसमें ब्रह्माकी रात्रिमें ईश्वर एक कीटाणुकी तरह घूमता था (ब्रह्मां० २.२४.९; ३२.७८)।

खद्योता–पु० [सं०] पुरञ्जनके नगरका पूर्वीय प्रवेश द्वार (भाग० ४.२५.४७;२९.१०)।

खनित्र–पु० [सं०] (१) मार्कण्डेयपुराणानुसार राजा प्रजातिके पुत्र जो बड़े धर्मात्मा थे। शौरि, उदावसु, सुनय, तथा महारथ इनके चार भाई थे। शौरिने अपने पुरोहितकी सहायतासे पुरश्चरण द्वारा बड़ी भयंकर कृत्याएँ उत्पन्न की। पर खनित्र साधु स्वभावके थे, अतः कृत्याओंने चारों भाइयोंके पुरोहितों तथा शौरिके दुष्ट मंत्री विश्ववेदीको जलाकर भस्म कर डाला जिससे दुःखी होकर यह क्षुप नामक पुत्रको राज्यभार सौंप तप करने चले गये थे जहाँ इनको मोक्ष मिला (मारकण्डेयपुराण खनित्र-कथा)। (२) विष्णुपुराणोक्त एक सूर्यवंशी राजा जो (प्रमति=भाग०) (प्रजापति=वायु०) के पुत्र थे। यह चाक्षुष (क्षुप=वायु०) (चक्षुष=विष्णु०) का पिता था (भाग० ९.२.२४; वायु० ८६.५; विष्णु० ४.१.२४)।

खनिनेत्र–पु० [सं०] रंभका पुत्र, परवायु तथा विष्णु० के अनुसार विविंशका पुत्र। यह करंधम (अतिविभूति=विष्णु०) का पिता एक धर्मात्मा राजा था (भाग० ९.२.२५; वायु० ८६.७; विष्णु० ४.१.२८)। खनिनेत्रके पुत्रका नाम बलाश्व था लेकिन जब उन्होंने करका धमन करनेसे (हाथोंको फूंकनेसे) शत्रुओंका दाह करनेवाली सेना उत्पन्न की थी तबसे बलाश्वकरन्धम कहलाये (मार्कण्डेय०)।

खपुर– पु० [सं०] (१) पुराणानुसार आकाशमें बसा एक नगर विशेष। कहा जाता है कि पुलोमा और कालका नामकी दैत्य-कन्याओंकी प्रार्थनापर यह बना था। (२) आकाश स्थित राजा हरिश्चन्द्रकी पुरी।

खप्पर–पु० [सं०] कालीदेवीके रुधिरपान करनेका एक पात्र विशेष।

खर–पु० [सं०] (१) अनजानमें दारुवनके ऋषियोंने शिव को खर होनेका शाप दिया था। (२) ताम्र और कश्यपकी ६ कन्याओंमेंसे एक सुग्रीवीसे उत्पन्न खर (ब्रह्मां० २.२७.५-२०; मत्स्य० ६.३३)। (३) विश्रवा और पुष्पोत्कटाके

चार पुत्रोंमेंसे एक (ब्रह्मां० ३.८.५५; वायु० ७०.४९; ९९.४०६)। यह वितलनिवासी एक राक्षस था (भाग० ९.१०.९; वायु० ५०.२७)। यह तारकामय संग्राममें भी था (मत्स्य० १७३.१७; १७७.७)। श्रीरामने इसका बध किया था (ब्रह्मां० २.२०.२८; विष्णु० ४.४.९६)। दे० खर (५)। (३) एक राक्षस जिसे श्रीकृष्णने मारा था (भाग० २.७.३४)। (४) विजरके दो पुत्रोंमेंसे एक (ब्रह्मां० ३.६.३३)। (५) सूपर्णखाका भाई। सुमालि राक्षसकी पुत्री राखा (वाका या राका) का विवाह विश्रवा मुनिसे हुआ था और राखा (वायु० के अनुसार पुष्पोत्कटा) खरकी माता थी। खर १४००० राक्षसी सेना लेकर रावणकी नगरीकी रक्षा करता था। सूर्पणखाके कान-नाक कट जानेसे क्रुद्ध होकर श्रीरामसे लड़ा पर पराजित हुआ और पंचवटीमें रामके हाथ मारा गया (रामच० मा० अरण्य० दो० १७-२०)।

खरदूषण—पु० [सं०] खर और दूषण नामके राक्षस जो दोनों रावणके विमातृज भाई थे (रामच० मा० अरण्य० १७-२०)। खर पुष्पोत्कटासे और दूषण वाकासे उत्पन्न विश्रवाके पुत्र थे (वायु० ७०. ४९-५०)।

खरपथ—पु० [सं०] पावनी नामकी नदीका सिञ्चन क्षेत्र एक राज्य (ब्रह्मां० २.१८.५७; मत्स्य० १२१.५६; वायु० ४७.५४)।

खरमुख—पु०[सं०] एक राक्षसका नाम जिसे भरतजीने केकय देशमें मारा था (राम०)।

खररोमा—पु० [सं०] एक काद्रवेय नागका नाम (वायु० ६९.७४)।

खरवाँस—पु० [हि०] पूस और चैत्रका महीना जिनमें शुभ काम नहीं होते।

खरांडक—पु० (सं०) शिवके एक अनुचरका नाम (शिव० पु०)।

खरारि, खरारी—पु० [सं०] (१) श्रीरामचन्द्र। (२) विष्णु। (३) श्रीकृष्ण। (४) धेनुक असुरको मारनेके कारण बलराम का एक नाम (भाग० तथा विष्णु०)।

खर्पर—पु० [सं०] दे० खप्पर।

खर्व—पु० [सं०] कुबेरकी नौ निधियोंमेंसे एक—दे० कुबेर।

खर्वट—पु० [सं०] एक ऐसा स्थान जहाँ चतुर्भुज कुमार कार्तिकेयकी मूर्तिकी स्थापना हो सकती है (मत्स्य० २६०.४७; २८३.३)। पर्वतके नीचेका एक गाँव (वायु० ९१.३०)।

खला—स्त्री० [सं०] भद्राश्व (रौद्राश्व वायु० ९९.१२६) और घृताचीकी दस पुत्रियोंमेंसे एक पुत्री (वायु० ७०.६९)।

खलीयान्—पु० [सं०] (खलीय=वायु० पु०) वेदवित्तम शाकल्यके पाँच शिष्योंमेंसे एक शिष्य (ब्रह्मां० २.३५.२; वायु० ६०.६४)।

खश—पु० [सं०] एक जातिके लोग, भरतने इन्हें हराया था (भाग० ९.२०.३०)। एक पूर्वका राज्य जहाँसे चक्षु और गंगा नदियाँ बहकर निकलती हैं (ब्रह्मां० २.१८.४६,५०; ३१.८३; मत्स्य० ३२१-४३; १४४.५७)।

खशा—स्त्री० [सं०] दक्षकी पुत्री तथा कश्यपकी पत्नी जो यक्ष और राक्षसोंकी माता थी यह क्रूर-स्वभावकी लालागवि, क्रथन, भीम, सुमाली, मधु, अश्व आदि इनके कई पुत्र थे और सात कन्याएँ थीं (ब्रह्मां० ३.७.१३६)। कश्यपसे खशाके दो पुत्र हुए। एकके चार हाथ और चार पैर थे तथा दूसरेके तीन हाथ और तीन पैर। पहला संध्याको उत्पन्न हुआ था और दूसरा ऊषाकालमें। पहला माताको ही खानेपर उतारू हो गया और दूसरेने रोका। यह पता लगनेपर पिता (कश्यप) ने लड़केका नाम यक्ष और दूसरेका नाम राक्षस रखा। इनका विवाह पिशाच्र अज और शंड की पुत्री ब्रह्मधना तथा जन्तुधनासे हुआ और इनसे बहुतसे राक्षस उत्पन्न हुए (ब्रह्मां० ३.३.५५; ७.३७, १३२-४२. ४६७; वायु० ६९.७४, १२६, १६४, १७०; विष्णु० १.१५.१२६)।

खसृम—पु० [सं०] सिंहिकासे उत्पन्न विप्रचित्तिके कई पुत्रोंमेंसे एक (विष्णु० १.२१.१)।

खांडवप्रस्थ—पु० [सं०] वह स्थान जहाँ श्रीकृष्ण, अर्जुन तथा भीम जरासंधके पतनके पश्चात् युधिष्ठिरसे मिले थे (भाग० १०.७३.३२)।

खांडव—पु० [सं०] (१) महाभा० और तैत्तिरीय आरण्यकके अनुसार एक प्राचीन वन जिसे अर्जुनने जलाया था (महाभा०, आदि० अ० २२३ से २२५ तक)। यहाँ इन्द्र अर्जुनसे से हार गया था (भाग० १.१५.८; १०.५८.२५-७; ७१.४५,४६; ८९.३४ (४)। (२) भार्गवोंका एक आर्षेय प्रवर (मत्स्य० १९५.४०)।

खांडववन—पु० [सं०] यमुनाके तटपरका एक प्राचीन वन। पुराणानुसार राजा खेतकीके यज्ञमें घृतकी अक्षयधारा पीनेसे अग्निको अजीर्ण हो गया था। उसे पचानेके लिए अग्निने अर्जुनकी सहायतासे खांडव वनको जलाया था। मयको बचाया था। बदलेमें मयने ऐसी सभाकी रचना की थी जिसमें दुर्योधनको जलमें स्थलका और स्थलमें जलका भ्रम हुआ। जलानेके समय इन्द्रने तक्षकको बचानेके उद्देश्यसे विरोध भी किया था, क्योंकि उसी वनमें तक्षकका पुत्र रहता था। इन्द्रप्रस्थ नगर इसी वनमें बसाया गया था (महाभारत तथा तैत्तिरीय आरण्यक)।

खांडिक्य—पु० [सं०] (१) मितध्वजका पुत्र तथा धर्मध्वज-जनकका पौत्र—दे० केशिध्वज, धर्मध्वज तथा नारदपुराण पूर्वभाग द्वितीय पाद। (२) मितध्वजका पुत्र जो धर्मशास्त्र का महान् ज्ञाता था तथा कर्मोंके महत्त्वको खूब समझता था। यह अपने चचेरे भाई केशिध्वजसे भयभीत रहता था (भाग० ९.१३.२०-२१)। भगवान् वासुदेवका महत्त्व केशिध्वजने खाण्डिक्यको पूर्वकालमें बतलाया था (विष्णु० ६.५.८१-७)। यह मितध्वजका पुत्र एक राजा था जिसे केशिध्वजने योग तथा आध्यात्मिक ज्ञान दिया था। तदुपरांत राज-पाट पुत्रको दे यह तप करने वनको चला गया। इसके पूर्व खाण्डिक्यसे केशिध्वजने धर्मशास्त्र व्यवस्था पूछी थी उसीके बदलेमें योग और आत्मतत्त्वज्ञान खाण्डिक्यको बतलाया था। पहले दोनोंमें वैर होनेपर भी फिर सौहार्द हो गया (विष्णु० ६.६.५-५०; ७.१०२-०३)।

खिखिंद—पु० [सं० किष्किंध] दक्षिण भारतका एक पहाड़ जहाँ वनवासके समय श्रीराम कुछ दिनोंतक रहे थे। यह मैसूर राज्यके उत्तरी भागमें है (रामच० मा० किष्किंधा०)।

खेचरी—स्त्री० [सं०] सर्वरोगहर नामक चक्रकी रक्षाकारिणी-देवी, एक वर्णशक्ति, एक मुद्रादेवी (ब्रह्मां० ४.३७.१०;

४२.१४; ४४.५९,८६,११४)।

खेटा—स्त्री० [सं०] अन्धकासुररक्तपानार्थं शिवजी द्वारा सृष्ट एक मानसपुत्री मातृकाका नाम (मत्स्य० १७९.१७)।

ख्याति—स्त्री० [सं०] (१) उल्मुक तथा पुष्करिणीके छह पुत्रोंमेंसे एक (भाग० ४.१३.१७)। (२) महर्षि भृगुकी पत्नी जो दक्ष प्रजापति (वायु तथा विष्णु०), (कर्दम=भाग० तथा ब्रह्मां० की पुत्री थी। यह धाता, विधाता दो पुत्रों तथा लक्ष्मी पुत्रीकी माता थी (भाग० ३.२४.२३; ४.१.४३; विष्णु० १.७.७.२५; ब्रह्मां० १. ९. ५२५४; ११.१; ३.२५. ७७; वायु० १०.२७.३०)। विष्णुपुराणानुसार वामन अवतारके समय लक्ष्मीका नाम पद्मा या कमला पड़ा। परशुरामावतारके समय ये 'धरणी' हुईं। जब हरि राघव हुए तब यह सीता हुई और कृष्णावतारमें यही रुक्मिणी थीं। ऋग्वेद तथा अथर्ववेदमें इनका उल्लेख है। तैत्तिरीय संहितामें इन्हें आदित्यकी पत्नी लिखा है और शतपथ ब्राह्मणमें इन्हें प्रजापतिसे उत्पन्न कहा है—दे० लक्ष्मी। (३) क्रौंच द्वीपकी एक नदी (ब्रह्मां० २.१९.७५; मत्स्य० १२२.८८; वायु० ४९.६९)। (४) तामस मनुके दस पुत्रोंमेंसे एक (भाग० ८.१.२७; ब्रह्मां० २.२६.४९; वायु० ६२.४४; विष्णु० ३.१.१९)। (५) भृगुकी पुत्री=लक्ष्मी, नारायणकी पत्नी। बल और उत्साह इनके पुत्र कहे गये हैं। कुछ अन्य मानसपुत्र भी थे—दे० लक्ष्मी (वायु० २८.१-३)। (६) उरु (कुरु=विष्णु०) और आग्नेयीके छह पुत्रोंमेंसे एक (ब्रह्मां० २.३६.१०८; मत्स्य० ४.४३; विष्णु० १.१३.७)।

ग

गंगा—स्त्री० [सं०] भारतवर्षकी एक पुण्यतोया प्रसिद्ध नदी जो विष्णुको अतिप्रिय है। यह भगवद्रूप कही गयी है (भाग० ७.१४.२९; ८.४.२३; ब्रह्मां० २.१६.११,२४)—'न माधवसमो मासो न कृतेन युगं समम्। न च वेदसमं शास्त्रं न तीर्थं गङ्गया समम्॥' (स्कंद० पु० वैशाखमहात्म्य० २।१)। हिमालयसे निकलनेके पश्चात् १५६० मील पूर्वकी ओर बहकर यह बंगालकी खाड़ीमें गिरती है। पुराणानुसार गंगा हिमालयकी पुत्री है। सुमेरुकी कन्या मेनका इसीकी माता बतलायी गयी है। ऐसी प्रसिद्धि है कि गंगा पहले स्वर्गमें थी (वायु० ४२.३९-४९; ७१.५)। कपिल मुनिने जब राजा सगरके ६०,००० पुत्रोंको गंगा सागरमें भस्म कर दिया तब उनके उद्धारार्थ राजा भगीरथ तपोबलसे गंगाजी को पृथिवीपर लाये। इसीसे गंगाको 'भागीरथी' कहते हैं (भाग० ९.९.१४)। गंगा जब स्वर्गसे गिरी थी तब सारी पृथिवी बह न जाय, इसलिए शंकरने इन्हें अपनी जटामें रोक रखा था। गंगाको इसीसे शंकरकी पत्नी कहा गया है (वायु० ४२.३९-४०; ७१-५)। स्वर्गसे यह मेरु पर्वतपर गिरी और इसकी चार शाखाएँ हो गयीं सीता, अलकनन्दा, चक्षु, और भद्रा (विष्णु० १.९.१०३; २.२.३३,३४; ८.१०८-१२३; ३.१४.१८; ४.४.२६-३५; तथा १८-२८)। राजा भगीरथ जब गंगाको गंगासागर लिये जा रहे थे तब मार्गमें जह्नु ऋषिने इन्हें पी लिया और बड़ी प्रार्थनापर अपनी जाँघसे निकाला, अतः इन्हें (गंगाको) 'जह्नुसुता' कहते हैं (भाग० ९.१५.३; ब्रह्मां० ३.६६.२५-६; ७३.११७; मत्स्य० १२. ४४; १२१.२६) अतः 'जाह्नवी' भी कही जाती है। कहते हैं ब्रह्माने विष्णुके बाँएँ पैरका अँगूठा धोकर इनकी सृष्टि की थी। इसीसे गंगाको 'विष्णुपदी' कहते हैं। गंगा सर्वत्र दुर्लभ हैं पर गंगाद्वार, प्रयाग और गंगासागर-संगम, इन तीन स्थानोंपर गंगा अत्यन्त दुर्लभ हैं (मत्स्य० १०६.५३)। गंगाजल बहुत पवित्र माना जाता है जिसे श्राद्धादिके लिए अत्युत्तम माना है (वायु० ७७.६८)। इसके जलमें कीड़े नहीं पड़ते और अत्यन्त निर्मल होता है। लिखा है—'गंगा गंगेति यो ब्रूयाद् योजनानां शतैरपि। मुच्यते सर्वपापेभ्यो विष्णुलोके स गच्छति।' (स्कन्द० ब्रा० ध० मा० ३१.७)। गंगाजल बासी होनेपर भी वर्जित नहीं है—'वर्ज्यं पर्युषितं पुष्पं वर्ज्यं पर्युषितं जलम्। न वर्ज्यं तुलसीपत्रं न वर्ज्यं जाह्नवीजलम्॥'(स्कन्द० वै० मार्गशीर्षमाहात्म्य ८.९, ८.२७; नारद० पूर्व०; ६.१२-१३, २१; ६.२४-२७; ६.५८; ६.६०)।

पुराणनुसार गंगाकी तीन धाराएँ है—एक आंकाशमें=आकाशगंगा; दूसरी पृथ्वीपर; तीसरी पातालमें इसीसे गंगाको त्रिपथगा भी कहते हैं (वायु० २.१७; ५१.२१-४६; ५८.८९)। भरतने इसीके तटपर अश्वमेध यज्ञ किया था (ब्रह्मां० २.१६.११-२४; भाग० ७.१४.२९; ८.४.२३; ९.९. १-१३; वायु० २.१७-१८; ४२.३९-४०; ७१.५; ७२.२८. ३२)। पर्याय—विष्णुपदी, जाह्नवी, भागीरथी, त्रिपथगा, सुरनिम्नगा, त्रिस्रोता, स्वरापगा, सुरापगा, अलकनंदा (गंगोत्तरी पहाड़से निकल अलकनंदा और मंदाकिनीसे मिलकर हरिद्वारके पास गिरती हैं), मंदाकिनी, सुरनदी और भीष्मसू। इसमें ३॥ करोड़ तीर्थ सम्मिलित हैं।

गंगादशहरा—पु० [सं०] ज्येष्ठ शु० १० बुधवार और हस्त नक्षत्रका योग होनेपर यह पर्व होता है—'ज्येष्ठे मासे सिते पक्षे दशम्यां बुधहस्तयोः। दशहरा जायते व्यास गङ्गाजन्म परं शुचि॥ (स्कन्द० आव० अव०-माहात्म्य० ७८.७)।

गंगाद्वार—पु० [सं०] हरिद्वार जो पितरोंके श्राद्धके लिए अतिप्रशस्त और अतिपवित्र है (भाग० ६.२.४०; मत्स्य० २२.१०; २४६.९२)।

गंगाधर—पु० [सं०] स्वर्गसे गिरनेपर गंगाको महादेवजीने अपनी जटामें रोक रखा था इसीसे शंकरको गंगाधर कहते हैं। इसीसे शिवको गंगाका पति कहा गया है। इन्द्र आदि देवता इसकी सेवा करते हैं (वायु० ४२.३९-४०; ७१.५)।

गंगापुत्र—पु० [सं०] एक वर्णशंकर जातिका नाम जो एक प्रकारके ब्राह्मण हैं और घाटोंपर दान लेते हैं। ये अधिकतर गंगा या और नदियोंके तटपर बसे नगरोंमें ही रहते हैं। 'लेट्टात्तीवरकन्यायां गंगातीरे च शौनक। बभूव सद्यो यो बालो गंगापुत्रः प्रकीर्तितः॥' (ब्रह्मवैवर्त०)।

गंगापूजा—स्त्री० [सं०] विवाहके पश्चातकी एक धार्मिक रीति जिसमें वरपक्षकी स्त्रियाँ वर-वधूको लेकर गंगापूजन

करती हैं और विवाहमें बंधे कंकण इसी दिन खुलते हैं। जहाँ गंगा नहीं हैं वहाँ लोग गाँवके बाहर किसी जलाशय या अन्य नदीके तटपर जाते हैं। विवाहसंबंधी यह अंतिम रीति है (विवाहचंद्रिका)।

गंगायात्रा–स्त्री० [सं०] मरते हुए मनुष्यको अंतिम समय प्राण निकलनेके लिए गंगातटपर ले जाना, क्योंकि गंगा अतिपवित्र है (वायु० ७६.६८)।

गंगालाभ–पु० [सं०] मृत्यु (हिं.श.सा.)।

गंगासागर–पु० [हिं०] कलकत्तेसे दक्षिण-पूर्व सुंदरवनमें स्थित एक प्रसिद्ध तीर्थ जो गंगा-सागर संगमपर स्थित कहा गया है। यहींपर कपिल मुनिका आश्रम था जहाँ राजा सगरके ६०,००० पुत्रोंको इन्होंने भस्म कर दिया था। यहाँ मकरकी संक्रांतिको एक बड़ा मेला लगता है (भाग० ६.२.३९; १०.७९.११; ९.८.१०-२९; ११.१६-१५; ब्रह्मां० ३.१५.१५-४३; ५३.१७-५२; अ० ५४; वायु० ८८.१४७-५३; मत्स्य० २२.१०; २४६.९२)।

गंगासुत–पु० [सं०] राजा शान्तनुके पुत्र भीष्म (महाभा० आदि०)।

गंगेश–पु० [सं०] गंगाको जटामें रोक रखनेके कारण महादेवका एक नाम–दे० गंगाधर(वायु० ४२.३९-४०;७१.५)।

गंगेश्वर–पु० [सं०] नर्मदा तटपर स्थित एक उत्तम तीर्थ जहाँ स्नान तथा पितृतर्पणका बड़ा माहात्म्य है (मत्स्य० १९३.१४-२०)।

गंगोत्तरी–स्त्री० [सं० गंगावतार] टेहरी गढ़वाल राज्यमें हिमालय पर्वतपर स्थित एक स्थान जहाँ गंगाका उद्गम स्थान है। यह हिन्दुओंका एक प्रधान तीर्थ है जहाँ गंगा देवीका एक मंदिर भी है (भारतका धा० भूगोल)।

गंठबंधन–पु० [हिं०] विवाहकी एक प्रधान रीति (विवाहचन्द्रिका)।

गंडकी–स्त्री० [सं०] गंगाकी एक सहायक नदीका नाम जो नेपालमें हिमालयसे निकलकर पटनाके पास गंगासे मिलती है। यहाँ तीर्थयात्रा प्रसंगमें बलराम गये थे (भाग० १०.७९.११; ब्रह्मां० १.१६.२६; मत्स्य० ११४.२२)। इसके जलमें शालिग्राम निकलते हैं जिन्हें विष्णुका रूप मानकर लोग पूजते हैं। यह गंगा आदि अन्य पवित्र नदियोंके साथ त्रिपुरारिके रथमें वेणुनामसे रही (मत्स्य० १३३.२३; वायु० ४५.९६)। इसे एक महानदी माना गया है (वायु० ४५.९६; १०८.७९)।

गंडगल्ल–पु० [सं०] भण्डके एक पुत्र तथा सेनापतिका नाम (ब्रह्मां० ४.२१.८२)।

गंडिका–पु० [सं०] माल्यवान् पर्वतके पूर्वमें स्थित एक नगर जो गंधमादन तथा माल्यवान्की ढालपर बसा है। यहाँ एक 'पनस (कटहर) महावृक्ष' है (मत्स्य० ११३.५१; वायु० ४३.१-४)।

गंडूष–पु०[सं०]शूरके दस पुत्रोंमेंसे एक तथा वसुदेवका भाई जो निःसंतान था; अतः इसने श्रीकृष्णके पुत्र चारुदेष्ण और साम्बको दत्तक पुत्र लिया था (ब्रह्मां० ३.७१.१५०, १९१; वायु० ९६.१४८, १८८; विष्णु० ४.१४.३०)।

गंतुप्रस्थ पु० [सं०] भारतवर्षका एक पर्वत(वायु० ४५.९१)।

गंधकाली–स्त्री० [सं०] पितरोंकी पुत्री तथा व्यासकी माताका नाम। इसका पुनर्जन्म मत्स्य योनिमें हुआ। अच्छोद झीलका नामकरण इसीके नामपर हुआ था (ब्रह्मां० ३.१३.७६-९; वायु० ७७.७४-५)।

गंधकुटी–स्त्री० [सं०] मंदिरसे लगी कोठरी या दालान जहाँ बहुत-सी मूर्त्तियाँ रखी हुई हों।

गंध–पु० [सं०] एक प्रकारका सत्त जिसे पृथ्वीरूपी गौसे गंधर्वोंने दुहा था (मत्स्य० ७.१४; १०.२४; १६.२६)।

गंधमाद–पु० [सं०] (१) यह श्रीरामचन्द्रके साथ लंकाकी चढ़ाईके समय गया था (भाग० ९.१०.१९; ब्रह्मां० ३.७१.११२)। (२) श्वफलकके १२ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (भाग० ९.२४.१७; ब्रह्मां० ३.७१.११२)।

गंधमादन–पु० [सं०] (१) एक प्रधान बंदरका नाम (ब्रह्मां० ३.७.३१)। (२) पुराणानुसार इलावृत और भद्राश्व खंडके मध्य स्थित एक पर्वत; सीता (आकाशगंगा) इसीपर गिरती है (भाग० ५.१६.१०; १७. ६; विष्णु० २.२.१६, २४, २८, ४१)। यहाँ नर और नारायणका निवास है (भाग० ४.१.५८; ५.१.८; विष्णु० ५.२४.५)। निद्रा खुलनेके पश्चात् मुचकुंद यहीं तप करने गया था (भाग० १०.५२.३)। धर्मसूत्र रूपमें विष्णुने यहीं तप किया तथा उर्वशीको उत्पन्न किया था (ब्रह्मां० २.१५.४०; १७.१६; ३.७.१९४; २५.६६-७; ४.३१.१६; मत्स्य० ६१.२१; २४.१९)। केतुमालवर्ष तथा वैभ्राज वन यहीं है। यह जम्बूद्वीपका मुकुट है जहाँ देवता भरे पड़े हैं (मत्स्य० ८३.२१,३१-३; ११३.४५; १५४.४३४; १८३.१)। यहाँ दुर्गा देवी कामाक्षीके रूपमें विराजमान हैं (मत्स्य० १३.२६)। इसके दक्षिणमें नील तथा उत्तरमें निषध और पूर्वमें माल्यवान् हैं (वायु० ३४.३५; ३५.१६; ४२.२५; ४३.१; ४६.१७; ९१.७)। इसी स्थानपर बद्रिकाश्रम स्थापित था जहाँ श्रीकृष्णके कहने पर उद्धवजी तप करने आये थे (विष्णु० ५.३७.३४, ३७)।

गंधमादनवर्ष–पु० [सं०] राजा प्रियव्रतके नवम पुत्र केतुमालका उसके पिता द्वारा दिया गया वर्ष। यहाँ केतुमालका राज्य था (ब्रह्मां० २.१४.५२; वायु० २३.१५९;३३.४५; विष्णु० २.१.२३)।

गंधमोज–पु० [सं०] श्वफल्कके १२ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र तथा उपमद्गुका एक भाई (विष्णु० ४.१४.९)।

गंधर्व–पु० [सं०] (१) पुराणानुसार देवताओंका एक भेद जो स्वर्गमें रहते हैं तथा उनसे तीन पाद कम ऐश्वर्यवाले हैं। ये यक्ष, राक्षस तथा पिशाचोंकी तरह अर्ध देवता हैं। चित्ररथ इनका स्वामी कहा गया है (ब्रह्मां० ३.७.१६७-७०, २५५; ८.१०.; २४.५९; ४.३६.१६; मत्स्य० ६.४५; ८.६)। ये स्वर्गमें गाने बजानेका काम करते हैं (ब्रह्मां० २.८.४०)। इनके ग्यारह गण कहे गये हैं—अभ्राज, अंधारि, रंभारि, सूर्यवर्चा, कृधु, हस्त, सुहस्त, मूर्द्धवान्, महामना, विश्वावसु और कृशानु। अग्नि० तथा वायु० ६६.७३ के अनुसार ये भद्राके पुत्र हैं। वेदोंके अनुसार गंधर्व दो हैं एक द्युस्थानके दूसरे अंतरिक्षस्थानके। पहली कक्षाके दिव्यगंधर्व कहे जाते हैं जो सोम रक्षक तथा सूर्यके सारथि हैं (ब्रह्मां० २.२३.२७,५०; ३२.१,२; ३५.१९१) अंतरिक्षस्थानके गंधर्व नक्षत्रके प्रवर्त्तक कहे गये हैं। इन लोगोंसे सोम छीन कर इंद्र मनुष्योंको देता है। वरुण

इनका स्वामी है। ब्राह्मणग्रंथों और उपनिषदोंके अनुसार गंधर्व दो प्रकारके होते हैं—देवगंधर्व तथा मनुष्यगंधर्व। (२) एक काद्रवेय नाग (ब्रह्मां० ३.७.३६; वायु० ६१.७९; ६२.१००; ६९.७३; १००.१५९; १०१.३, २८; १०६.५९) यह पेड़ोंपर रहते हैं (ब्रह्मां० १.७.८४; ८.४०)। (३) घोड़ोंके लिए प्रसिद्ध एक राज्य (ब्रह्मां० ४.१६.१७; मत्स्य० ११४.८;१२१.४८) भारतवर्षका एक खंड (वायु० ४५.७९; विष्णु० २.३.७)। (४) गृहनिर्माणके समय पूजा जानेवाला एक देवता (मत्स्य० २५३.२५)। (५) चौदहवाँ कल्प जहाँ गांधार स्वर और नादकी सर्वप्रथम सृष्टि हुई (वायु० २१.३२)।

गंधर्वगण–पु० [सं०] (१) अरिष्टा और कश्यपके पुत्र (मत्स्य० ५.१; ६.२९, ४५; विष्णु० १.५.४६;२१.२५)। शारीरिक सौंदर्यकी वृद्धिके लिए इनकी उपासना होती है। मार्कण्डेयकी तपस्या भंग करनेके लिए इंद्रने इन्हें भेजा था। भरतने करोड़ोंकी संख्यामें इनका वध किया था (भाग० ९.११.१३)। यह सूर्यके साथ रथपर पारीसे चलते हैं (ब्रह्मां० २.२३.२७,५०; ३२.१,२; ३५.१९२)। कार्त्तवीर्य अर्जुनके यज्ञमें ये अप्सराओंके साथ गये थे (मत्स्य० १०.२४; १३.१७; १५.३; ३७.२-४; ४३.२२)। ये वृक्षोंपर रहते हैं (ब्रह्मां० १.७.८४; वायु० ९.५५; २१.३३; ३०.८६.३३.६४; ३४.५५)। (२) (मौनेय) जो संख्यामें ६० करोड़ हैं। इन लोगोंने रसातलके नागोंको परास्त करके उनके जवाहरात आदि लूट लिये थे, पर अंतमें मान्धाताके पुत्र पुरुकुत्सने इन्हें परास्त किया था (विष्णु० ४-३, ४-९)।

गंधर्वनगर–पु० [सं०] महा० आदि० १२५.३५ के अनुसार (१) नगर, ग्राम आदिका वह भाग जो गगन या भूमिमें दृष्टिदोषसे दीख पड़ता है। ग्रीष्मकालमें जब मरुस्थल या समुद्रमें वायुकी तहका घनत्व उष्णताके कारण असमान होता है तब प्रकाशकी गतिके विच्छेदसे अन्य नगर, ग्राम, वृक्ष आदिका प्रतिबिम्ब आकाशमें पड़ता है और कभी-कभी उस आकाशीय प्रतिबिम्बका प्रतिबिम्ब उलटकर पृथिवीपर पड़ता है जिससे कभी दूरके ग्राम या नगर या तो आकाशमें उलटे टंगे या समीपस्थ दिखायी देते हैं (भाग० ४.१२.१५; ५.१३.३, ७) में क्रमशः भक्तवर ध्रुव तथा अवधूत मुनिने इसका वर्णन करते हुए इसकी स्वप्ननगर तथा मायारचित पुरसे तुलना की है। (२) मानसरोवरके निकटका स्थान जिसकी रक्षा गंधर्व करते हैं। अर्जुनने इस नगरको जीता था तथा तित्तिर, कुल्माष और मंडूक नामक घोड़े अर्जुनको यहाँसे प्राप्त हुए थे (महाभा० सभा० २८.६)।

गंधर्ववदन–पु० [सं०] हयग्रीवका एक नाम (ब्रह्मां० ४.३२.४०)।

गंधर्वविषय–पु० [सं०] गन्धर्वदेश। भरतने इसको जीतनेके लिए ३ करोड़ अधिरथ मार डाले थे (विष्णु० ४.४.१००)।

गंधर्वविवाह–पु० [सं०] गांधर्व विवाह। ब्राह्म, दैव, आर्ष, प्राजापत्य आदि आठ प्रकारके विवाहोंमेंसे एक। जिसमें वर-वधूके पारस्परिक प्रेमके आधारपर ब्याह होता है। किसी सगे सम्बन्धीकी रायकी आवश्यकता नहीं होती है और रीति-रस्मका भी पालन नहीं होता। श्रीकृष्णका रुक्मिणीसे, दुष्यन्तका शकुंतलासे इसी नियमानुसार विवाह हुआ था (भाग० ३.३.३; ९.२०.१५-१६; ब्रह्मां० ४.१५.५; विष्णु० ३.१०.२४)।

गंधर्ववेद–पु० [सं०] चार उपवेदोंमेंसे एक जो सामवेदका उपवेद है और इसमें गानविद्याका वर्णन है (भाग० ३.१२.३८)।

गंधर्वा–स्त्री० [सं०] दुर्गाका एक नाम (हि० श० सा०)।

गंधर्वी–स्त्री० [सं०] (१) पुराणानुसार सुरभीकी पुत्री जो घोड़ोंकी आदिमाता थी–दे० सुरभी। (२) गांधारसे उत्पन्न ओ३म्का नाम (वायु० २०.३)।

गंधवती–स्त्री० [सं०] (१) वरुणपुरीसे उत्तरमें स्थित यह वायुदेवकी नगरीका नाम है जहाँ वायुदेव निवास करते हैं (स्कंदपु० काशीखं० पूर्वार्ध)। (२) मेरुके छठे ढालपर स्थित वायुकी सभाका नाम (वायु० ३४.८९)।

गंधाकर्षणिका–स्त्री० [सं०] शीतांशुकलारूप सोलह शक्तियोंमेंसे एक शक्तिदेवी (ब्रह्मां० ४ १९.१८; ३६.६९; ४४.११८)।

गंधात्मकगुण–पु० [सं०] पृथ्वीका गुण विशेष जिसे प्रत्याहारमें जल नष्ट कर देता है (वायु० १०२.७)।

ग–पु० [सं०] गणेश (हि० श० सा०)।

गगनपति–पु० [सं०] इंद्र।

गज–पु० [सं०] (१) रथीतरके चार शिष्योंमेंसे एक (ब्रह्मां० २.३५.४)। (२) औत्तम मनुके तेरह पुत्रोंमेंसे एक (ब्रह्मां० २.३६.३९)। (३) एक हाथी जिसको भगवान्ने ग्राहके चंगुलसे मुक्त कर सद्गति प्रदान की (भाग० ११.१२.६)। (४) एक बंदरका नाम जो राम-रावण युद्धमें श्रीरामचन्द्रकी ओरसे लड़ा था (ब्रह्मां० ३.७.२४१)। (५) मृगश्याम नामक नाग (हस्ती) के आठ पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (ब्रह्मां० ३.७.३३२)।

गजकर्ण–पु० [सं०] (१) तलातलनिवासी एक राक्षस (ब्रह्मां० २.२०.३२)। चौथा तल—तलातल या गभस्तल निवासी एक दैत्य (वायु० ५०.३१)। (२) गयाका एक तीर्थस्थान जो पितरोंके तर्पणके लिए अति प्रशस्त है। यहाँ श्राद्ध, तर्पण आदि पितृकृत्य करनेका बड़ा माहात्म्य है (मत्स्य० २२.३८; वायु० १११.५५)।

गजचर्मनिवासी–पु० [सं०] शिवका एक नाम (ब्रह्मां० २.२७.९९)।

गजछाया–पु० [सं०] श्राद्धके लिए अति प्रशस्त एक युगादि (मत्स्य० १७.३)।

गजतुण्ड–पु० [सं०] एक विनायकका नाम (मत्स्य० १८३.६३)। गणेशजीका नाम।

गजमुख–पु० [मं०] गंधर्वोंका एक नाम (ब्रह्मां० ३.२२.५६)।

गजमोचन–पु० [सं०] विष्णु भगवानका वह रूप जिसे उन्होंने गजग्राहकी लड़ाईमें गजकी रक्षाके लिए धारण किया था (भाग० ३.१९.३५; ८.१.३०; २.२०-३३; ३ पूरा ४.६-२५)।

गजवक्त्र–पु० [सं०] दे० गणेश (ब्रह्मां० ४.४४.६६)।

गजशैल–पु० [सं०] मेरु पर्वतसे दक्षिणका एक पहाड़ (वायु० ३६.२५)। यहाँ रुद्रोंका निवास स्थान कहा गया है

(वायु० ३९.४७)।

गजसाह्वय—पु० [सं०] बृहत्क्षत्रके पुत्र राजा हस्तीका स्थापित किया हस्तिनापुर (भाग० १.४.६; (मत्स्य० ४९.४२)।

गजानन—पु० [सं०] गणेशजीका एक नाम, गणेश (ब्रह्मां० ३.४१.५४; ४२.३५, ४४.५१, ४.२७.७२; मत्स्य० १५४. ५०५)।

गजासुर—पु० [सं०] इसे गणेश (शिव=मत्स्य०) ने मारा था (ब्रह्मां० ४.२७.९८, १०१; मत्स्य० ५५.१६)।

गजास्य—पु० [सं०] गणेशजीका एक नाम—दे० गणेश।

गजेन्द्र—पु० [सं०] (१) गजेन्द्रमोक्षकी कथा। गजोंका अधिपति यह हाथी त्रिकूट पर्वतोंमें स्थित एक झीलमें जल पीनेके लिए घुसा। वहाँ एक मगरने इसके पैर पकड़ लिये। अपनेको असमर्थ जान तथा पूर्व जन्मके शापके कारण गजेन्द्रने हरिका स्मरण किया। हरिने तुरत आ उसे मगरसे मुक्त किया। यह हाथी पूर्व जन्ममें इन्द्रद्युम्न नामका पांड्य वंशका राजा था जो अगस्त्यके शापवश हाथी हो गया था (भाग० ३.१९.३५; ८.१.३०; २.२०-३३; (पूरा); अ० ३ ४.६-२५)। हरिकी कृपा तथा सत्संगसे गजेन्द्रने मोक्ष प्राप्त किया (भाग० १०.७१.९; ११.१२.६)। यह घटना गजेन्द्र मोक्षके नामसे प्रसिद्ध है (भाग० २.७. १५-१६)। (२) ऐरावत जो क्षीरसागरसे अमृतमंथनमें निकला था और जिसे इंद्रने लिया था (मत्स्य० २५१.३)।

गजेन्द्रास्य—पु० [सं०] गणेशका एक नाम (ब्रह्मां० ४. ४४.६७)।

गढ़वाल—पु० [सं०] उत्तर प्रदेशका एक जिला जो हरिद्वारसे उत्तर है। बदरीनाथ और केदारनाथ हिन्दुओंके दो प्रसिद्ध तीर्थ यहीं हैं।

गण—पु० [सं०] (१) (समूह, वर्ग) भूतोंका, शिवके गण, देवताओं तथा प्रमथोंके गण। इन लोगोंने शोणितपुरमें श्रीकृष्णपर आक्रमण किया था (भाग० २.६.१३; १०[६५ (५)४६]); [६६(५)४९]; ६३.६, १०; १२.१०.१४)। इन गणोंमें ११ स्वर्गीय हैं (मत्स्य० ६.४५-५; ५२.२१)। सात-सात के १२ जत्थे सूर्यके साथ भिन्न-भिन्न महीनोंमें रहते हैं (वायु० ५२.२४-३५)। ऋषियोंके तीन गण जिनमें प्रत्येककी २० शाखाएँ हैं। सावर्णिके प्रथम मन्वंतरमें सबके-सब मारीच कश्यपके पुत्र थे, जिनका इंद्र विरोचनपुत्र बलि था (वायु० १००.१३)। (२) यवनों, पारदों, काम्बोजों, पह्लवों और शकोंके ये पाँच वर्ग जिन्हें सगरने पराजित किया था, पर वशिष्ठके कहनेसे अंतमें छोड़ दिया (ब्रह्मां० ३.६३.१२७)।

गणककेतु—पु० [सं०] ब्रह्माका एक पुत्र जो एक प्रकारका धूमकेतु है (बृहत्संहिता)।

गणतीर्थ—पु० [सं०] पितरोंके श्राद्धार्थ एक प्रशस्त तीर्थ (मत्स्य० २२.७३)।

गणदेवता—पु० [सं०] एक प्रकारके देवता जो समूह बना कर रहते हैं। ये संख्यामें ९ हैं—आदित्य, विश्वेदेवा, वसु, तुषित, आभास्वर, अनिल, महाराजिक, साध्य, रुद्र (हिं. श. सा.)।

गणनायक, गणनाथ—पु० [सं०] गणेशजीका एक नाम (ब्रह्मां० ४.२७.७२; वायु० १०९.२२)।

गणप—पु० [सं०] गणेशजीका एक नाम (ब्रह्मां० ४. १९.८१)।

गणपति—पु० [सं०] दे० गणेश (ब्रह्मां० ३.४१.४१)।

गणपर्वत—पु० [सं०] कैलाश पर्वतका एक नाम जहाँ शिवके गण प्रमथ आदि रहते हैं (हि. वि. को.)।

गणवती—स्त्री० [सं०] धन्वंतरि दिवोदासकी माताका नाम (हि. वि. को.)।

गणाधिप—पु० [सं०] गणोंके अधिपति गणेशका नाम (ब्रह्मां० ३.४१.४१)।

गणेश—पु० [सं०] हिन्दुओंके एक प्रधान देवता जिनका सारा शरीर मनुष्यका है, पर सिर हाथीका-सा है। इनके चार हाथ, एक दाँत, बड़ी-सी तोंद, तीन आँखें और ललाटपर अर्धचन्द्र है। ये शंकरके पुत्र माने जाते हैं और चूहा इनका वाहन कहा गया है। ब्रह्मवैवर्त०में लिखा है कि पहले इनका सिर मनुष्योंके मस्तकके ऐसा था, पर शनिदेवकी कृपासे कट गया। पार्वतीके दुःखके कारण विष्णुने पुष्पभद्रा नदीके तटपर सोते हुए हाथीका सिर धड़पर जोड़ दिया था। मत्स्य० १५४.५०२-५ के अनुसार ये पार्वतीके शरीरके मैल तथा उबटनसे उत्पन्न हुए थे। उबटनके इस पुतलेको गंगामें डाल दिया गया जो जलका सम्पर्क पा फूल गया तथा इन्हें गांगेय कहने लगे। इनके दाँत टूटने और सिर कटनेके विषयमें बड़ा मतभेद है। किसी मतसे परशुरामने दाँत तोड़ा था, किसी पुराणानुसार रावणने दाँत उखाड़ा और किसी मतसे कार्त्तिकेयने इनका एक दाँत तोड़ा था। सिर कटनेके विषयमें भी इसी प्रकारके अनेक मत हैं (ब्रह्मवैवर्त्त०)।

ये अपने पिता महादेवके गणोंके अधिपति हैं तथा सिद्धक्षेत्र इनकी क्रीड़ाभूमि है। यह विनायक हैं जो कामेश्वरसे उत्पन्न कहे गये हैं। भण्डके सैनिकोंका इन्होंने नाश किया तथा शक्तिके अनुयायियोंको शक्ति प्रदान की। पुराणोंके अनुसार ललिताकी कृपासे इनकी पूजा हर शुभ कार्यमें पहिले करनी चाहिये, अन्यथा काममें विघ्न पड़ जाते हैं (ब्रह्मां० ३.४१.३७-४१; ४२.२-३३; ४३.१८.३१; ४४. २४; ४.२७.७२-१०४; ४४.६७-७०)। अतः इन्हें विघ्नेश कहते हैं। ये बहुत बड़े लेखक हैं। कहते हैं व्यासजीका महाभारत इन्होंने लिखा था। इनके हाथोंमें पाश, अंकुश, पद्म और परशु हैं और हिन्दुओंके पाँच प्रधान देवताओंमें यह एक हैं। शास्त्रोंमें गणेशजीको ओंकारात्मक माना गया है। इसीसे इनकी पूजा सब देवताओंसे पहिले होती है।

गणपति-पूजन भारतवर्षके बाहर नेपाल, जावा, बर्मा, श्याम, चीन, जापान, तिब्बत आदि स्थानोंमें भी भिन्न-भिन्न नामोंसे होती है। मध्य अमेरिका तथा मेक्सिकोकी खुदाईसे निकली ३००० से भी अधिक हिन्दू देवी-देवताओंकी मूर्त्तियोंमें गणेशकी मूर्त्ति भी मिली है। कोपन नामक स्थानमें हेविट साहबके मतानुसार यह मूर्त्ति मिली है। मेकेंजी साहबने भी मेक्सिकोमें गणेश-पूजनका उल्लेख किया है। इनका नाम 'विराकोचा' था और इनकी आकृति गणेशके ही समान मिलती है। पर्याय—विनायक, विघ्नराज, द्वैमातुर, गणाधिप, एकदंत, हेरंब, लम्बोदर, गजानन,

विघ्नेश, परशुपाणि, गजास्य, आखुग और शूर्पकर्ण।

गणेशचतुर्थी–स्त्री० [सं०] माघ शुक्ला चतुर्थी तथा भादों शुक्ला चतुर्थीको गणेशजीका व्रत और पूजन करते हैं। भाद्रपद कृष्णा चतुर्थीके मध्याह्नमें गणेशजीका जन्म हुआ था, अतः यह मध्याह्न व्यापिनी ली जाती है। इस दिन रविवार या भौमवार हो तो यह 'महाचतुर्थी' हो जाती है। माघ शुक्ला पूर्वविद्धा चतुर्थीको गणेश-पूजन तथा व्रत करे। यदि इस दिन मंगलवार हो तो इसे 'सुखचतुर्थी' कहते हैं (भविष्यपुराण)। माघ शुक्ला चतुर्थीको ढुण्डिराज गणेशकी पूजा भी होती है और भविष्यपुराणानुसार इसे 'शान्ति-चतुर्थी' भी कहते हैं। इसमें गणेश तथा गुरुदेवका पूजन होता है। इस दिन रातमें चन्द्र-दर्शनसे मिथ्या कलंक लगता है जिसके प्रायश्चित्तस्वरूप स्यमंतककी कथा श्रवण करे। महाराष्ट्रमें इस पर्वका बड़ा माहात्म्य है। भादों वदी चतुर्थीको 'सिद्धिविनायकव्रत' करते हैं (कृत्य-रत्नावली)।

गणेशपद–पु० [सं०] गयाका एक तीर्थस्थान जहाँ श्राद्ध करनेसे पितरोंको रुद्रलोककी प्राप्ति होती है (वायु० १११.५५)।

गणेशपुराण–पु० [सं०] एक उपपुराणका नाम जिसमें गणेशजीकी उपासना, प्रार्थना तथा महत्त्व आदिका विवरण दिया है।

गणेश्वर–पु० [सं०] गणेश (ब्रह्मां० ३.३२.२३, ५९; ४.२७.९९.४४.७०)।

गतभय–पु० [सं०] शाकद्वीपका एक वर्ष (राज्य) जो जलधारवर्ष भी कहलाता है (मत्स्य० १२२.२०-१)।

गतायु–पु० [सं०] पुरूरवाके छह पुत्रोंमेंसे एकका नाम (वायु० ९१.५२)।

गति–स्त्री० [सं०] कर्दमकी एक पुत्री तथा पुलहकी एक पत्नी जिसके कर्मश्रेष्ठ, वरीयान् और सहिष्णु तीन पुत्र थे (भाग० ३.२४.२३; ४.१.३८)।

गद–पु० [सं०] (१) श्रीकृष्णके भाईका नाम। गद रोहिणीसे उत्पन्न वसुदेवका एक पुत्र था (भाग० ९.२४.४६)। (२) श्रीकृष्णके एक पुत्रका नाम (भाग० १.१४.२८; २.३.१९; ३.१.३५; ४.२३.१२; १०.४१.३२; ४७.४०; ५२.४०; ५९.१०; ११.३०.१६) जिसे रक्षार्थ मथुराके पश्चिम प्रवेश-द्वारपर रखा गया था (भाग० १०.५०.२०[४])। जरासंधके मथुरापर तीसरे आक्रमणके समय गद बड़ी बहादुरीसे लड़ा था (भाग० [५०(५)११]; [५१(५)२५]। रुक्मिणी-हरणके समय इसने चेदिराजकी सेनापर आक्रमण किया था (भाग० १०.५४.६)। राम, कृष्ण आदि वृष्णियोंके साथ यह बाणासुरके शोणितपुर अनिरुद्धको छुड़ाने गये थे (भाग० १०.६३.३)। द्वारकाके रक्षार्थ यह शाल्व-सेनासे भी लड़ा और विजयी हुआ (भाग० १०.७६.१४,७७-४)। (३) वसुदेव और देवरक्षिताका एक पुत्र (भाग० ९.२४.५२)। (४) गदा। बलरामसे दुर्योधनने गदायुद्ध सीखा था (भाग० १०.५७.२६; ब्रह्मां० ३.७१.८४; मत्स्य० १४०.१४)। (५) एक असुर जो वज्रायुधसे भी बलवान् था। ब्रह्माकी प्रार्थनापर इसने अपनी हड्डियाँ दान दी थी जिससे विश्वकर्माने एक गदा बनायी थी (वायु० १०९.३-४)। (६) भद्रा और वसुदेवका एक पुत्र (विष्णु० ४.१५.२४)। (७) श्रीकृष्णके एक अनन्य भक्तका नाम (भाग० ३.१.३५)।

गदवर्मा–पु० [सं०] विदूरथसुत शूरके बारह पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (ब्रह्मां० ३.७१.१३८; वायु० ९६.१३७)।

गदा–स्त्री० [सं०] विष्णुकी गदा जिसका नाम कौमोदकी है (वायु० ५५.१२, १०९.४-११; विष्णु० ४.१५.१३; ५.३४.२३)।

गदाधर–पु० [सं०] गदासुर राक्षसकी हड्डियोंसे बनी गदा धारण करनेके कारण विष्णुका एक नाम। तारकामय युद्धमें मत्स्यपुराण इन्होंने पहले-पहल कहा था (मत्स्य० १.१०; १७६.३०; १७८.२३,४६; वायु० १०६.५५)। धर्मपुत्री धर्मव्रताके पतिशापसे पत्थर बन जानेपर वरदान देनेवाले देवताओंमेंसे अन्यतम। जिन्होंने उसे गदाधर भगवान्से अधिष्ठित गदाधरशिलाके मस्तकपर रहनेका वरदान दिया जहाँ समस्त पुण्य-नदियों, तीर्थों और देवताओंका आवास है (वायु० १०६.७०; १०७.४७; १०८.५२; १०९.१२,२०)।

गदालोल–पु० [सं०] एक महातीर्थका नाम जहाँ हेति नामक असुरका सिर फोड़नेके पश्चात् विष्णुने अपनी गदा धोयी थी (वायु० १११.७५-८)।

गदावसानक्षेत्र–पु० [सं०] मथुराके अंतर्गत एक तीर्थ। श्रीकृष्णका वध करनेके लिए जरासंधने ९९ बार गदा फेंकी थी जो अंतमें इसी स्थानपर गिरी थी, अतः यह नाम पड़ा (भाग०)।

गदाशिक्षा–स्त्री० [सं०] दुर्योधनने यह बलरामसे पायी थी (वायु० ९६.८३; विष्णु० ४.१३.१०६)।

गदिनी–स्त्री० [सं०] यमकी पत्नीका नाम (मत्स्य० २८६.८)।

गभस्तल–पु० [सं०] चौथा पाताल जो बहुत विस्तृत तथा बहुत पक्षियोंसे व्याप्त है। इसकी मिट्टीका रंग पीला है और कालनेमि, गजकर्ण तथा अन्य असुरों और गरुड़की नगरी यहीं है (वायु० ५०.१२-१४, ३१-३३)।

गभस्ति या गभस्ती–स्त्री० [सं०] शाकद्वीपकी सात महानदियोंमेंसे एक (सातवीं) नदी (ब्रह्मां० २.१९.९६; मत्स्य० १२२.३३; विष्णु० २.४.६५)।

गनगौर–पु० [सं०] चैत्र शुक्ला तृतीया, जिस दिन गणेश और गौरीकी पूजा की जाती है जो अधिकतर मारवाड़ प्रांतमें प्रचलित है। इसका दूसरा नाम 'सौभाग्यसुन्दरी-व्रत' भी है। चैत्र कृष्ण १ से प्रतिदिन पूजा होती है और चैत्र शुक्ला २ को गनगौरको पानी पिला, चैत्र शुक्ला ३ को सायंकालमें विसर्जन करे। यह व्रत पतिका अनुराग उत्पन्न करानेवाला तथा कुमारिकाओंको उत्तम पति देनेवाला है (व्रतोत्सव)। कन्याएँ सोलह दिनोंतक पूजा करती हैं। गौरी दोलोत्सव भी इसी दिन होता है जिसमें श्री रामचन्द्रका राजोपचार पूजन करनेका विधान है (व्रतरत्न)।

गभस्तिमान्–पु० [सं०] (१) सूर्य। (२) एक द्वीपका नाम। (३) एक (चौथे) पातालका नाम जिसकी मिट्टी भूरी है (विष्णु० २.५.२-३)। (४) भारतवर्षके ९ खंडोंमेंसे एक (ब्रह्मां० २.१६.९; मत्स्य० ११४.८; वायु० ४५.७९; विष्णु० २.३.६)।

गभीर–पु० [सं०] विन्ध्यशक्तिसुत प्रवीरके चार पुत्रोंमेंसे एक (ब्रह्मां० ३.७४.१८६)।

गम्भीर—पु० [सं०] (१) (गभीर=ब्रह्मां०) रभसका एक पुत्र तथा अक्रियका पिता (भाग० ९.१७.२०)। (२) भौत्य मनुके ९ पुत्रोंमेंसे एक (ब्रह्मां० ४.१.११४)।

गम्भीरबुद्धि—पु० [सं०] (१) इंद्रसावर्णिका एक पुत्र (भाग० ८.१३.३३)। (२) भौम (चौदहवें) मनुका एक पुत्र (विष्णु० ३.२.४५)।

गय—पु० [सं०] (१) अमूर्तरयका एक धर्मपरायण पुत्र। महाभारतके अनुसार इन्होंने सौ वर्षतक यज्ञसे बचा अन्न खाया था। यह प्रतिदिन प्रातःकाल एक लाख साठ हजार गौ, दस हजार घोड़े तथा एक लाख रुपया दान करते थे। इन्होंने एक बहुत बड़ा यज्ञ किया था जिससे यह विख्यात हो गये (महाभा० वन० ९५.१८-२९)। (२) भगवद्भक्त राजर्षि जिसे विष्णुकी योगशक्तिका ज्ञान था (भाग० २.७.४४)। (३) नक्त और द्रुतिका एक पुत्र जो एक राजर्षि थे जिन्हें भगवान्का अंश कहते थे। यह महापुरुष तथा न्यायप्रिय राजा थे। गयन्ती इनकी पत्नी थी जो चित्ररथ आदि तीन पुत्रोंकी माता थीं। अंतमें यह तपस्या करने चले गये थे (भाग० ५.१५.६-१४; १०.६०.४१; ब्रह्मां० २.१४.६८; वायु० ३३.५७; विष्णु० २.१.३८)। (४) (इला) सुद्युम्नके तीन पुत्रोंमेंसे एक पुत्र जो दक्षिणापथका अधिपति था (भाग० ९.१.४१; मत्स्य० १२.१७)। यह पूर्वी राज्यका राजा था जिसकी राजधानी गया थी (ब्रह्मां० ३.६०.१८)। यह राजर्षि था जिसने एक यज्ञ किया तथा बहुत दान दिया था जिससे प्रसन्न हो देवताओंने गयपुरी स्थापित कर इसे अमर कर दिया। इसने विष्णु-लोक प्राप्त किया था (वायु० ११२.१-६)। (५) यद्यपि यह सात द्वीपोंका अधिपति था तथापि सन्तुष्ट न था (भाग० ८.१९.२३; १२.३.१०)। (६) उल्मुक तथा पुष्करिणीके छह पुत्रोंमेंसे एक (भाग० ४.१३.१७)। (७) एक विख्यात असुर जिसके नामानुसार हिन्दुओंके प्रसिद्ध तीर्थका नाम 'गया' पड़ा है। इसने श्वेत वाराह कल्पमें एक बड़ा यज्ञ किया था। वायु पुराणानुसार यह बड़ा विष्णुभक्त था तथा कोलाहल पर्वतपर १००० वर्षोंतक कठिन तप करके इसने विष्णुको प्रसन्न किया था। विष्णुके वरके प्रतापसे इसका दर्शन करनेसे ही स्वर्ग मिल जाता था। घूम-घूमकर यह सबको स्वर्ग न भेज दे, ब्रह्माने इसके शरीरपर यज्ञ करनेका निश्चय किया और यमकी रायसे इसे अचल करनेके लिए पत्थरसे देवताओंने दबा दिया और सब देवता उसपर चढ़ गये, जिसमें हिले नहीं। इसपर भी यह अचल नहीं हुआ, तब विष्णु उस शिलापर स्वयम् बैठ गये। तब इसने देवताओंसे यह वर माँगा कि आप लोग इसी पत्थरपर बैठे रहें तथा इस स्थानपर धार्मिक कृत्य—पिण्डदान—श्राद्धादि करनेवाले ब्रह्मलोक प्राप्त करें—दे० गयातीर्थ (वायु० १०५.४-४६; अध्या० १०६ पूरा; १०८.८; १०९.१३)। (८) रामायणानुसार श्रीरामकी सेनाका एक सेनापति जो बन्दर था। (९) अजकसुत बलाकाश्वके तीन पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (वायु० ९१.६१)। (१०) चाक्षुष मनुके पुत्र ऊरु और आग्नेयीके छह पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (मत्स्य० ४.४२)।

गयन्ती—स्त्री० [सं०] (गायंती=ब्रह्मां०) गयकी पत्नी तथा चित्ररथ आदि तीन पुत्रोंकी माता (भाग० ५.१५.१४)।

गया—पु० [सं०] (१) पटनासे ५७ मील दक्षिण तथा हवड़ासे २९२ मील पश्चिम ई. आई. रेलवेका एक प्रधान स्टेशन। यह बिहारका एक विशेष पुण्य स्थान है जिसका उल्लेख महाभारत, वाल्मीकि रामायण और पुराणोंमें है। यहाँ तीन पक्षोंतक रहनेसे सात पीढ़ी; १५, ७ या ३ दिनोंतक रहकर विधिवत् तिल आदिसे श्राद्ध करनेसे चार महापातकोंसे मुक्ति होती है। पुराणानुसार यह राजर्षि गयकी राजधानी थी। यहाँपर इन्होंने एक यज्ञ किया था और 'ब्रह्मसर' नामका तालाब भी बनवाया था। धर्मपृष्ठ, ब्रह्मसर तथा गृध्रवट, ये यहाँके तीन प्रधान स्थान हैं। यह तीर्थ श्राद्ध और पिंडदान आदि करनेके लिए प्रसिद्ध है। परशुरामने यहाँ श्राद्ध किया था। (मत्स्य० १२.१७; ब्रह्मां० ३.१३.१०४; १९-११; ४७.१७;६०.१९; वायु० ८५.१९)। माघ, चैत्र तथा महालय यहाँ यात्राके लिए महत्त्वका समय है। हिन्दुओंका विश्वास है कि बिना यहाँ पिंडदान तथा श्राद्ध किये पितरोंको मोक्ष नहीं मिलता (वायु० ७७.९८, ८०.४५; ८३.१२-४४; ११२.१-२०)। (२) यहाँ जाकर बलरामजीने पितरोंके नाम पिण्डदान किया था (भाग० १०.७९.११)। (३) गयागय, गयादित्य, गायत्री, गदाधर, गया और गयासुर—ये छह मोक्षदायक हैं (वायु० ११२.६०)।

गयाकूट—पु० [सं०] गयाकूट गयामें है। यहाँ पितृ-पिण्डदानसे अश्वमेध यज्ञका फल कहा गया है (वायु० ११२.५२)।

गयातीर्थ—पु० [सं०] जहाँ गयासुर पत्थरके नीचे, अचल करनेके लिए, दबा हुआ है—दे० गय (७)। यह २॥ कोसमें बसा है, गयाक्षेत्र—५ कोसका और गयाशिर—१ कोसका है (वायु० १०५.४-४६)।

गयादित्य—पु० [सं०] उत्तरायण सूर्य (वायु० १०९.२१)।

गयापुरी—स्त्री [सं०] नगर विशेष=गया जिसका गय राजाके नामपर नामकरण हुआ (वायु० ११२.५)।

गयायात्रा—स्त्री० [सं०] श्राद्ध करना, ग्रामोंकी परिक्रमा, पुनः गया और श्राद्धादि अपने वेद-शाखानुसार करना, दूसरे दिन प्रेतपर्वत जाना, ब्रह्मकुंडमें स्नान और सब निश्चित स्थानोंपर पिण्डदान करना (वायु० ११०.१-९)।

गयावाल—पु० [सं०] गया तीर्थका रहनेवाला तथा वहाँका निवासी और पंडा (गया-माहात्म्य)।

गयाशिर—पु० [सं०] 'गयाशिर'। एक पहाड़ विशेष जो गयाके पास है और पुराणानुसार गय असुरके सिरपर स्थित है। यह एक कोसमें है (वायु० १०५.२९)। यहाँ श्राद्ध करनेसे १०० पीढ़ीका उद्धार होता है (वायु० १०५.३१)।

गयाश्राद्ध—पु० [सं०] मुक्तिके चार साधनोंमेंसे एक (वायु० १०५.१६)। श्राद्धके नियम, पिण्डादिके उपयुक्त अवसरके लिए द्रष्टव्य (वायु० १०८.३५; ११०.१७; २३.५९; १०५.४७-८)।

गयासुर—पु० [सं०] विष्णुकी नाभिसे ब्रह्मा उत्पन्न हुए जिन्होंने असुरोंकी सृष्टि की। इनमें हो गय भी था जो १२५ योजन लम्बा और ६० योजन चौड़ा था। यह वैष्णव था और इसने कोलाहल पर्वतपर १००० वर्षोंतक तपस्या

कर विष्णुको प्रसन्न किया था—दे० गय (७); (वायु० १०५.५-१३; १०६ अ० पूरा; १०८.८; १०९.१३)।

गरधरन, गरप्रिय—पु० [सं०] विपको धारण करनेवाला शंकर—दे० गरलधर।

गरलधर—पु० [सं०] पुराणानुसार अमृतमंथनके समय समुद्रसे हलाहल विप निकला जिससे संसार त्रस्त हो उठा। शंकरने उसे पान करके सृष्टिको भस्म होनेसे बचाया था, अतः यह नाम पड़ा (भाग० ८.७.४२)—'ततः करतलीकृत्य व्यापि हालाहलं विपम्। अभक्षयन्महादेवः कृपया भूतभावनः॥'

गरिमा—स्त्री० [सं०] अष्ट सिद्धियोंमेंसे एक सिद्धि (ब्रह्मां० ४.१९.४; ३६.५१)।

गरिष्ठ—पु० [सं०] (१) एक पौराणिक राजाका नाम, जो देवराज इन्द्रकी सभाके सदस्य थे (महाभा० सभा० ७.१३)। (२) कश्यप-पत्नी दनुके पुत्रोंमेंसे एकका वंशज, एक दानवका नाम जो मनुष्योंसे अवध्य कहा गया है (ब्रह्मां० ३.६.१६)। (३) एक तीर्थस्थानका नाम (हि० वि० को०)।

गरुड़—पु० [सं०] (१) देवमाता विश्वेशाके अनेक पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (मत्स्य० १७१.५०)। (२) यह विष्णुका वाहन तथा पक्षियोंका राजा कहा जाता है। यह शाल्मलिद्वीपका निवासी है (भाग० ५.२०.८) तथा क्षीरोदका रक्षक। दक्ष प्रजापतिकी पुत्री सुपर्णाविनताके गर्भसे उत्पन्न यह तार्क्ष्य (कश्यप) ऋपिका पुत्र है (भाग० ६.६.२२; ३.१९.११; ब्रह्मां० ३.७.२९; ८.११; मत्स्य० ६.३४; १४६.२२; वायु० ४९.१०; ६९.६६; ७०.११; ७२.४५; विष्णु० १.२१.१८)। अरुण जो इनके बड़े भाई हैं (मत्स्य० १५०.५३)। विकलाङ्ग होनेके कारण सूर्यके सारथि हुए। सौभरि ऋपिके शापके कारण यह कालिंदी नहीं जा सकते थे इसीसे कालिय नाग यहाँ आ छिपा था (भाग० १०.१६.६३; १७.१-११; विष्णु० ५.७.७८)। यह अपनी माताको सौतेली माताके दासत्वसे छुड़ानेके लिए अमृत लाने स्वर्ग गये थे, पर इंद्रने इनकी चोरी पकड़ ली और घोर युद्धके पश्चात् अमृत इनसे ले लिया गया। इनका शरीर मनुष्योंका-सा है, पर सिर, डैने, पंजे तथा चोंच गिद्धकेसे हैं। इनके मुखका रंग श्वेत, डैने लाल तथा शरीर सुनहला है। इनकी पत्नी उन्नतिके गर्भसे रामायणानुसार सम्पाति नामक इनका एक प्रसिद्ध पुत्र हुआ था। महाभारतके अनुसार एक बार यह एक ब्राह्मणको निगल गये थे और साथ-साथ स्त्रीको भी निगल गये, पर इनका कंठ इतना जलने लगा कि इन्हें दोनोंको उगल देना पड़ा था। यह श्रीकृष्णको इंद्रपुरी ले गये थे और पारिजात लाते समय आक्रमण होनेपर ऐरावतको परास्त कर श्रीकृष्ण तथा सत्यभामाको द्वारका ले आये थे (भाग० १०.६५[५]१; ६६[५]२२-२५, ४८; १०.६७[५]११-१४, ३८-३९; मत्स्य० १५०.२१९; विष्णु० ५.३०.६४-७०; ११.३०.४४)। ताम्राकी ५ पुत्रियाँ—भासी, शुकी, क्रौंची, श्येनी तथा धृतराष्ट्रिका इनको ब्याही थीं जिनसे इनके छह प्रसिद्ध पुत्र—सुख, सुनेत्र आदि हुए। उन्हींसे संसारके सब पक्षी उत्पन्न हुए (ब्रह्मां० २.१९.११-१२; ३.७.४४८-५१; मत्स्य० १२२.१५)। (२) श्रीकृष्णके एक पुत्रका नाम।

बहुतोंके मतसे गरुड़ उकाब पक्षी ही है जो अपने बलके कारण पक्षिराज कहा जाता है। प्राचीन पश्चिमी जातियाँ उकाबको 'जोव' (प्रधान देव इंद्र) का पक्षी मानते हैं। रूस, आस्ट्रिया, जर्मनी आदि देशोंकी ध्वजापर यह चिह्न अभी भी मिलता है। पर्याय—गुरुत्मान्, तार्क्ष्य, वैनतेय, सुपर्ण, नागान्तक, पन्नगाशन, पन्नगारि, पक्षिराज, खगेश्वर, विष्णुरथ, तरस्वी, अमृताहरण, शाल्मलिस्थ।

भीम द्वादशीको तथा गृहबलिके लक्ष होममें इनकी पूजा होती है। तारकामय तथा कालनेमि युद्धमें इन्होंने बहादुरीसे युद्ध किया था। कनखलमें तप किया था। ये भगवत्सेवामें सदा निरत रहते हैं (मत्स्य० १५२.६-७, ३६; १५३.१८९; १७१.५०; १७८.३२,५०; १९३.७२; २४९.३५)।

गरुड़गंगा—स्त्री० [सं०] बद्रीनाथके रास्तेमें स्थित एक तीर्थस्थान। स्कन्दपुराणानुसार यहाँ गरुड़ने विष्णु-वाहन होनेके लिए कठिन तप किया था। यहाँ निर्मल जलसे पूर्ण एक कुण्ड है, जहाँ स्नानके पश्चात् यात्री पत्थरके टुकड़े ले जाते हैं। कहते हैं इससे सर्पभय नहीं रहता (स्कंद० बदरिका० माहा०)।

गरुड़गामी—पु० [सं०] विष्णुका एक नाम (स्कंद०)। गरुड़ध्वज।

गरुड़घंटा—पु० [सं०] पूजामें बजाया जानेवाला घंटा जिसपर गरुड़-मूर्त्ति हो।

गरुड़ध्वज—पु० [सं०] विष्णुका एक नाम (मत्स्य० १५०.२११; १५१.२१; १६३.१०६-७; वायु० २४.९०; ९६.२३९)।

गरुड़पुराण—पु० [सं०] १८ पुराणोंमेंसे एक जिसमें भागवतानुसार १९००० श्लोक हैं तथा अन्य मतसे १८००० श्लोक होते हैं। इसके दो खण्ड हैं—पूर्व खण्ड तथा उत्तर खण्ड। सृष्टि प्रकरणसे लेकर प्रजापतिकी उत्पत्ति, पूजापद्धति, दीक्षाविधि, प्रायश्चित्तविधि, तर्पणविधि, सन्ध्याविधि, श्राद्धविधि, स्नानविधि और नाना प्रकारके व्रतमाहात्म्य, रत्नपरीक्षा, गृहधर्म, यति धर्म, गयाकृत्य, रामायण, हरिवंश इत्यादि हैं। आयुर्वेदप्रकरणमें रोगनिदान, छंदशास्त्र, स्त्री-वशीकरण इत्यादि हैं। नरकवर्णन, प्रेतवर्णन, सपिण्डीकरणकी विधि आदिका भी विवरण इसमें है। इस पुराणमें २१ अवतार लिखे गये हैं। इसमें विशेषकर यमपुर, अनेक नरकों तथा तन्त्र-मन्त्रोंका उल्लेख मिलता है (भाग० १२.७.२३; १३.८; विष्णु० ३.६.२३)।

गरुड़भक्त—पु० [सं०] गरुड़की उपासना करनेवाला एक भक्त-सम्प्रदाय, जो ईसाके जन्मसे पूर्व प्रचलित था (हिं० श० सा०)।

गरुत्मद्धृदया—स्त्री० [सं०] नृसिंहविग्रहधारी भगवान् विष्णु द्वारा मानस मातृकाओंके उपद्रवोंकी शान्तिके लिए सृष्ट आठ देवियोंमेंसे अन्यतम भवमालिनीकी अनुगामिनी एक देवी (मत्स्य० १७९.७१)।

गर्ग—पु० [सं०] (१) भुवमन्यु (विष्णु=मन्थु)के एक पुत्र तथा शिवि (शिनि) के पिताका नाम (मत्स्य० ४९.३६: विष्णु० ४.१९.२१-२३)। (२) एक वैदिक ऋपि जो आंगि-

रस भरद्वाजके वंशज ३३ मन्त्रकारोंमें श्रेष्ठ थे। ऋग्वेदके छठें मंडलका ४७ वाँ सूक्त इन्हींका रचा है (ब्रह्मां० २.३२.१०७; मत्स्य० १४५.१०१)। (३) एक प्राचीन ज्योतिर्वेत्ता जिनके पुत्रका नाम गार्ग्य और पुत्रीका नाम गार्गी था। यह स्वयम् उतथ्यके पुत्र थे। यह यादवोंके पुरोहित थे और वसुदेवकी प्रार्थनापर नन्दके व्रज गये थे। इन्होंने शेषनागसे ज्योतिषशास्त्र सीखा था। भागवतानुसार श्रीकृष्ण और बलरामका नामकरण इन्हींने किया था (भाग० १०.८.१-२०; विष्णु० २.५.२६; वायु० ६.८-९)। यह इन दोनोंके उपनयनमें भी संमिलित थे। इन्हींने उन्हें गायत्रीमन्त्रका उपदेश दिया था (भाग० ४५.२६-२९) और युधिष्ठिरके राजसूय यज्ञमें भी ये आमन्त्रित थे (भाग० १०.७४.८)। (४) ब्रह्माके एक मानसपुत्रका नाम। गयामें यज्ञके निमित्त ब्रह्माने इन्हें ऋत्विक्के रूपमें रचा था और यह यज्ञमें ऋत्विक् थे (वायु० १०६.३५)। (५) धर्मशास्त्र (स्मृति) के प्रवर्त्तक एक ऋषि। (६) हैहयके पुरोहित जिसने जमदग्निकी गौके अपहरणसे हैहयको रोका था (ब्रह्मां० ३.२८.३९)। (७) दिवोदाससुत प्रतर्दनके दो पुत्रोंमेंसे एक (ब्रह्मां० ३.६७.६९; वायु० ९२.६५)। (८) कुरुक्षेत्र निवासी परम धार्मिक कौशिक ऋषिके सात पुत्रोंके गुरु। एक अकालमें इन शिष्योंने (जो गुरुकी गौ चराते थे), गौ मार कर खा ली थी जिसके लिए इन्हें पाँच बार जन्म लेनेका शाप मिला था (मत्स्य० २०.३)। (९) एक आंगिरस गोत्रकार (पञ्चार्षेय) ऋषि (मत्स्य० १९६.२४)। (१०) स्थापत्यकलाके १८ मुख्य उपदेशकोंमेंसे एक (मत्स्य० २५२.३)।

गर्गत्रिरात्र—पु० [सं०] तीन दिनोंमें समाप्त होनेवाला एक याग (कात्यायन श्रौ० सूत्र)।

गर्गेश्वर—पु० [सं०] नर्मदा तटपर स्थित एक पुण्य तीर्थ जहाँ स्नान मात्रसे अक्षय स्वर्ग प्राप्त होता है (मत्स्य० १९१.८२-३)।

गर्जन—पु० [सं०] नर्मदा तटपर मंत्रेश्वरके निकटवर्ती एक पुण्य तीर्थका नाम (मत्स्य० १९०.३)।

गर्त्त—पु० [सं०] (१) एक नरकका नाम (गरुड़पुराण)। (२) वशिष्ठ और ऊर्जाके सात पुत्रों, जिनका सामूहिक नाम वाशिष्ठ था, मेंसे एकका नाम (ब्रह्मां० २.११.४१)।

गर्दभाक्ष—पु० [सं०] बलिके प्रधान चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (वायु० ६७.८३)।

गर्दभि—पु० [सं०] विश्वामित्रके बासठ पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (महाभा० अनु० ४.५९)। एक राजवंश जिसके दस राजाओंने राज्य किया था (भाग० १२.१.२९; विष्णु० ४.२४.५१)।

गर्दभी—स्त्री० [सं०] अन्धकासुर रक्तपानार्थ महादेवजी द्वारा सृष्ट अनेक मानसपुत्री मातृका देवियोंमेंसे एक मानसपुत्री मातृका (मत्स्य० १७९.१८)।

गर्दभीमुख—पु० [सं०] कश्यप-वंशज एक गोत्रकार ऋषि (मत्स्य० १९९.१६)।

गर्भ—पु० [सं०] तुर्वसुके एक पुत्रका नाम (मत्स्य० ४८.१)।

गर्भगृह—पु० [सं०] मंदिरके बीचका वह प्रधान स्थान जहाँ मुख्य मूर्त्तिकी स्थापना की जाती है (मत्स्य० २६९.१-८)।

गर्भभूमि—पु० [सं०] गार्ग्यके एक पुत्रका नाम (वायु० ९२.७३)।

गर्भाधान—पु० [सं०] १६ संस्कारोंमेंसे एक संस्कार (ब्रह्मां० ३.४२.४३; मत्स्य० २७५.१६)।

गर्भोपनिषद्—पु० [सं०] अथर्ववेदके अंतर्गत एक उपनिषद् जिसमें गर्भसम्बन्धी बातें लिखी हैं (अथर्ववेदीयसर्वानुक्रमणिका)।

गर्वि—पु० [सं०] बारह सुधर्मा देवोंमेंसे एक सुधर्मा देव (ब्रह्मां० ४.१.६०)।

गलमंदरी—स्त्री० [सं० गल+मुद्रा] भगवान् शंकरको प्रसन्न करनेके निमित्त गाल बजानेकी मुद्रा (शिवपूजनप्रयोगः तथा शिवार्चनपद्धतिः)।

गलमुद्रा—स्त्री० [सं०] दे० गलमंदरी।

गव—पु० [सं० गवय] श्रीरामकी सेनाका एक बन्दर (हि. वि. को.)।

गवय—पु० [सं०] दे० गव। एक महाबलवान् वानरसरदार (ब्रह्मां० ३.७.२३२)।

गवल्गण—पु० [सं०] संजयके पिता सूतका नाम (भाग० १.१३.३०)।

गवाक्ष—पु० [सं०] (१) श्री रामचन्द्रजीकी सेनाका एक सेनापति बन्दर (ब्रह्मां० ३.७.२४३)। (२) दैत्यराज विरोचनपुत्र शंभुके छह पुत्रोंमेंसे एक (वायु० ६७.८१)। (३) एक दानव विशेष जो (ब्रह्मां० के अनुसार मनुष्यों द्वारा अवध्य दनुपुत्रवंशज) मनुष्यधर्मका पालन करता था (ब्रह्मां० ३.६.१६; वायु० ६८.१६)।

गवांव्रत—पु० [सं०] सामवेदका एक सूक्त जो सरोवर खुदवानेके समय पढ़ा जाता है (मत्स्य० ५८.३७)।

गविष्ठ—पु० [सं०] (१) हिरण्यकशिपुकी सभाका एक दानव (ब्रह्मां० ३.६.४; मत्स्य० १६१.७७)। (२) सुरूपा और अंगिराके दस पुत्रोंमेंसे, जो आंगिरस कहलाते हैं, एक पुत्र (मत्स्य० १९६.२)।

गविष्ठिर—पु० [सं०] एक आत्रेय ऋषि जो मन्त्रकृत् तथा गोत्रकार थे (ब्रह्मां० २.३२.११३; मत्स्य० १४५.१०७; १९७.७-८)।

गविष्णु—पु० [सं०] चन्द्रमाके रथके १० घोड़ोंमेंसे एकका नाम (ब्रह्मां० २.३२.५७)।

गवेधु—पु० [सं०] कसेई नामका एक पौधा। गवेधु या गवेधुकके चरुकी आहुति रुद्र देवताको दी जानी चाहिये (ब्राह्मणग्रन्थ)। यह अधिकार शूद्रोंको प्राप्त है (मीमांसा)।

गवेषण—पु० [सं०] (१) चित्रकके बारह पुत्रोंमेंसे एक पुत्र जिसे दो पुत्र थे (ब्रह्मां० ३.७१.११४, २५९; वायु० ९६.११३)। (२) वसुदेव और श्रद्धा देवीका एक पुत्र जो चित्रयुद्धमें प्रवीण था। भूरि और भूरीन्द्रसेन इसके दो पुत्र थे (ब्रह्मां० ३.७१.१८४; मत्स्य० ४६.१९; ४७.२२; वायु० ९६.२५०)। पूर्व जन्ममें यह यम था और इसने वनोंकी सृष्टि की थी (वायु० ९६.१८१-२)। (३) अश्विनी तथा अक्रूरके कई पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (मत्स्य० ४५.३२)।

गवेष्टि—पु० [सं०] (१) विरोचनके पाँच पुत्रोंमेंसे एक पुत्र तथा ३ पुत्रों—शुंभ, निशुंभ और विषक्सेनका पिता

(वायु० ६७.७६-७७)। (२) दनुके विप्रचित्ति प्रभृति सौ पुत्रोंमेंसे एक (वायु० ६८.४)। (३) मनुष्यधर्म-पालन करनेवाला (ब्रह्मां०—मनुष्यों द्वारा अवध्य) एक दानव (वायु० ६८.१६)।

गहन—पु० [सं०] एक प्रधान बन्दर-सरदार (ब्रह्मां० ३.७.२३५)।

गांग—पु० [सं०] एक गंधर्वका नाम (वायु० ६९.२६)।

गाणपत्य—पु० [सं०] गणपतिका निवासस्थान (लोक) (ब्रह्मां० २.२७.१२३; ४.७.५९)। मदिरा नहीं पीनेवाला शूद्र इसे प्राप्त करता है (वायु० १०१.३५४)।

गांडीव—पु० [सं०] अर्जुनके धनुषका नाम (भाग० १.७.१६; ९.१५; १०.५८.१३)। अग्निकी सहायतासे यह धनुष वरुणसे प्राप्त हुआ था और अर्जुनकी प्रतिज्ञा थी कि जो इस धनुषकी निन्दा करेगा उसका मैं वध करूँगा। महाभारतके अनुसार इसे ब्रह्माने बनाकर सोमको दिया और सोमने वरुणको दिया था। श्रीकृष्णके स्वर्गारोहणके पश्चात् इस धनुषकी शक्ति जाती रही थी (विष्णु० ५.३८.२१, २३, ४५)।

गांडीवधन्वा, गांडीवी—पु० [सं०] अर्जुनका एक नाम—दे० अर्जुन।

गांदिनी—स्त्री० [सं०] श्वफल्ककी पत्नी तथा अक्रूरकी माताका नाम जो काशीराजकी पुत्री थी। यह बारह वर्षोंतक माताके गर्भमें रहनेके पश्चात् उत्पन्न हुई थी। जबतक यह गर्भमें थी, इसके माता-पिता नित्य एक गौ दान करते थे। यह स्वयम् नित्य एक गौ दान करती थी (भाग० ९.२४.१५; १०.४१.६; ४९.३; ५७.३२; ब्रह्मां० ३.७१.८२-११०; वायु० ९६.९७, १०५, १०९; विष्णु० ४.१३.१२४-६; १४.७)।

गांधर्व—पु० [सं०] (१) सामवेदका एक उपवेद, जो संगीत-शास्त्र कहलाता है। (२) भारतवर्षका एक उपद्वीप जो हिमालयपर माना जाता है। यहाँके लोग गान-विद्या-विशारद होते थे (ब्रह्मां० २.१६.९)।

गांधर्वलोक—पु० [सं०] इसे पुरूरवाने प्राप्त किया था (विष्णु० ४.६.९३)।

गांधर्ववेद—पु० [सं०] दे० गंधर्ववेद (भाग० ३.१२.३८)।

गांधर्वी—स्त्री० [सं०] (१) सुरभि और कश्यपकी चार पुत्रियोंमेंसे एक पुत्री तथा एकादश रुद्रोंकी बहिन। यह उच्चैश्रवाकी तरहके घोड़ोंकी माता थी (ब्रह्मां० ३.३.७३७)। (२) गन्धर्वोंकी पाँच पुत्रियोंमेंसे एक पुत्री (वायु० ६९.१०)। (३) विष्णुपद झीलसे निकली एक नदीका नाम (ब्रह्मां० २.१८.६८; वायु० ४७.६५)।

गांधार—पु० [सं०] (१) सिन्धुके दक्षिण तटपर बसा एक प्राचीन देश, जो आधुनिक 'अटक'के निकटस्थ था। मुसलमान इसे कंधार कहते हैं। धृतराष्ट्रकी पत्नी गांधारी यहींके राजा सुबलकी पुत्री थीं। यह देश घोड़ोंके लिए प्रसिद्ध रहा है (मत्स्य० ४८.७)। (२) अरुद्ध (आरब्ध=भाग० तथा विष्णु०) का पुत्र तथा धर्मका पिता। गांधार देशका नामकरण इसीके नामपर हुआ था। यह देश घोड़ोंके लिए प्रसिद्ध था (भाग० ९.२३.१५; ब्रह्मां० ३.७४.९-१०; वायु० ९९.९; विष्णु० ४.१७.४)। (३) एक स्वर विशेष जो शुभ है (मत्स्य० २४३.२१)। यह सप्त स्वरोंमें तीसरा है। यह गान्धर्व नामके चौदहवें कल्पमें उत्पन्न हुआ था (वायु० २१.३२; ८६.३७)। (४) उत्तर दिशाका एक राज्य जहाँका राजा शकुनि श्रीकृष्णका समकालीन तथा जरासंधका मित्र था। गोमंतके घेरेके समय यह पूर्व दिशाकी रक्षा करता था। यहाँ भरतके पुत्र तक्ष तथा पुष्कर राजा थे (भाग० १०.५२.११[६]; ५०[५]३; मत्स्य० ११४.४१; १२१.४६; १४४.५७; ब्रह्मां० २.१६.४७; १८.४७; ३१.८३; ३.६३.१९०; ७३.१०८; ७४.९-१०; वायु० ८८.१८९)। यह घोड़ोंके लिए विख्यात है (वायु० ९९.१०)। (५) शरद्वान्का पुत्र तथा द्रुह्युका पौत्र। इस देशका नामकरण इसीपर हुआ। इसके पास आरट्ट देशके चुने हुए घोड़े थे (मत्स्य० ४८.६-७)।

गांधारी—स्त्री० [सं०] (१) सुमित्रके पिता धृष्टि (मत्स्य०—वृष्णि) की एक पत्नी सुमित्रकी माताका नाम (ब्रह्मां० ३.७१.१८-१९; मत्स्य० ४५.१; वायु० ९६.१७)। (२) श्रीकृष्णकी एक पत्नीका नाम (मत्स्य० ४७.१३)। (३) धृतराष्ट्रकी पत्नी तथा दुर्योधन, दुःशासन आदि सौ पुत्रोंकी माताका नाम (भाग० ९.२२.२६; मत्स्य० ५०.४७-८; वायु० ९९.२४२; विष्णु० ४.२०.३९)। यह गांधार देशाधिपति सुबलकी पुत्री थी (भाग० १०.८४.१)। शिवने इन्हें १०० पुत्र होनेका वर दिया था। विवाह होनेपर पतिको अंधा देख इन्होंने भी आँखोंपर पट्टी बाँध ली थी। इन्होंने युधिष्ठिरके राजतिलककी स्वीकृति दी तथा पतिके साथ गंगातटपर रहने लगी थीं। पतिकी मृत्युके उपरान्त यह उन्हींके साथ सती हो गयीं (भाग० १.८.३; १३.२९, ५७)। (४) सुरभि तथा कश्यपकी एक पुत्री (वायु० ६६.७१)। (५) पार्वतीकी एक सहेलीका नाम (स्कन्द०; महाभा० वन० २३१.४८)।

गात्रवान्—पु० [सं०] श्रीकृष्णके एक पुत्रका नाम जो माद्री (लक्ष्मणा=विष्णु०) के गर्भसे उत्पन्न हुआ था (भाग० १०.६१.१५; विष्णु० ५.३२.४)।

गाग्र—पु० [सं०] वितथपुत्र भुवमन्युके चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (वायु० ९९.१५९)।

गात्रविंद—पु० [सं०] लक्ष्मणाके गर्भसे उत्पन्न श्रीकृष्णचन्द्रके एक पुत्रका नाम (दे० गात्रगुप्त; विष्णु० ५.३२.४)।

गाथि, गाथी—पु० [सं०] आंगिरस वंशका एक आर्षेय प्रवर (मत्स्य० १९६.२२)।

गाधा—स्त्री० [सं०] गायत्रीस्वरूपा महादेवी।

गाधि—पु० [सं०] (कौशिक)। विश्वामित्रके पिता और कुशिक राजा (कुशनाभ=वायु०) के पुत्रका नाम। यह कुशिकके पुत्र तथा पौरुकुत्सीके पति थे (ब्रह्मां० ३.६६.३५, ५८)। हरिवंशके अनुसार कुशिकने इन्द्रके समान प्रतापी पुत्रके लिए तप किया था, तब इन्द्रके अंशसे गाधिका जन्म हुआ। सत्यवती इन्हींकी पुत्री थी जिससे ब्राह्मण ऋचीक विवाह करना चाहता था। वरको अयोग्य समझ १००० श्यामकर्ण घोड़ोंकी माँग की गयी जो वरुणकी सहायतासे ऋचीक दे सके और विवाह हो गया। गाधिकी पत्नी भूलसे अपनी पुत्रीके हिस्सेका चरु खा गयी, अतः विश्वामित्रकी माता हुई (भाग० ९.१५.४-१०; १६.२८.३२; विष्णु० ४.

७.११-६)।

गाधिपुत्र–पु० [सं०] अक्रूरका एक नाम (वायु० ९६.८०)।

गाधेय–पु० [सं०] विश्वामित्र (मत्स्य० १४५.१११)।

गाधेयी–स्त्री० [सं०] सत्यवती जो गाधिकी पुत्री तथा भार्गवके पुत्र ऋचीककी पत्नी थी।

गायंतिका–स्त्री० [सं०] हिमालयपरका एक स्थान (महाभा० उद्योग०)।

गायत्र–पु० [सं०] सामवेदका एक सूक्त जो सरोवर आदि बनवानेके समय पश्चिम द्वारपर स्थित सामगों द्वारा पढ़ा जाता है (मत्स्य० ५८.३६; वायु० ९.८)। ब्रह्माजीके प्रथम मुखसे यह सर्वप्रथम निकला था (विष्णु० १.५.५३)।

गायत्री–स्त्री० [सं०] (१) एक अति पवित्र मन्त्रका नाम जो बड़े महत्त्वका है। यह शक्ति देवी हैं; ब्रह्माकी मानसपुत्री हैं तथा उनसे अलग नहीं है (ब्रह्मां० ४.४४.८६)। द्विजोंमें यज्ञोपवीतके समय इस मन्त्रका उपदेश दिया जाता है। इस मंत्रका देवता सविता और ऋषि विश्वामित्र हैं। ब्राह्मणों, उपनिषदों, पुराणों तथा अन्य धार्मिक ग्रंथोंमें इसका महत्त्व दिया है। इस वैदिक मंत्रकी उपासना बिना ब्राह्मणमें ब्राह्मणत्व ही नहीं आता। यह सारे धर्मोंका आधार है (भाग०; मत्स्य० ३.३२; ४.७;९.२४; ५३.२०; १७१.२३)। 'गायत्र्येव परो विष्णुर्गायत्र्येव परः शिवः। गायत्र्येव परो ब्रह्मा गायत्र्येव त्रयी ततः॥' (स्कंद०, काशीख०पूर्वार्ध)। (२) एक कविता छन्द, जिसकी उत्पत्ति ब्रह्माकी त्वचासे कही गयी है (भाग० ३.१२.४५; ११.२१.४१; मत्स्य० १२५.४७; ब्रह्मां० २.८.५०; १३.१४५; वायु० २३.६५, ६९; ३१.४७; ५०.१६५; ५१.६४; ५५.४२; ६९.६७; १०६.५८; १०९.२१)। प्रजापति दधीचि इसके पति कहे गये हैं (वायु० २१.४२)। (३) सूर्यके रथके सात घोड़ोंमेंसे एक। पापोंके क्षयके लिए संध्या करते समय इनकी पूजा होती है (ब्रह्मां० २.२१.११३;२२.७२; २६.४४; ४.७.६९; विष्णु० २.८.५; ४.६.८९)। (४) एक रौद्री। २१वें कल्पमें ब्रह्माने इसकी कल्पना तथा चिंतन किया था (वायु० २३.१३,६९)।

गायत्रीतीर्थ–पु० [सं०] गयाजीमें स्थित एक तीर्थ जहाँ 'त्रिसंध्य'—तीनों कालोंकी संध्या करनेका बड़ा महत्त्व है (वायु० ११२.२१)।

गारुड़कल्प–पु० [सं०] चौदहवाँ कल्प, जिसका विवरण गरुड़पुराणमें दिया है (मत्स्य० ५३.५३; २९०.६)।

गारुड़–पु० [सं०] १९००० श्लोकोंका पुराण इसे श्रीकृष्णने गरुड़ कल्पमें गरुड़की उत्पत्तिके विषयमें सुनाया था, इसलिए इसका नाम गारुड़ पड़ा। गरुड़पुराण दान करनेवाला शिवलोक प्राप्त करता है (मत्स्य० ५३. ५३-४)।

गारुडि–पु० [सं०] सुग्रीव जो वैकंक पर्वत शिखरपर रहनेवाले विशाल पक्षी तथा सर्पोंका शत्रु है (वायु० ३९.४०)।

गार्हपत्यपद–पु० [सं०] यह गयामें है। यहाँ श्राद्ध करनेका बड़ा माहात्म्य कहा गया है (वायु० १११.५०)।

गार्गी–स्त्री० [सं०] (१) बृहदारण्यक उपनिषदोक्त गर्गगोत्रोत्पन्न एक ब्रह्मवादिनी स्त्री जो याज्ञवल्क्य ऋषिकी पत्नी थी। (२) श्रवण, धनिष्ठा तथा शतभिषाकी एक वीथी (वायु० ६६.५१)।

गार्गीय–पु० [सं०] यह भार्गवोंके आर्षेय प्रवर प्रवर्तक एक ऋषि थे (मत्स्य० १९५.३८)।

गार्ग्य–पु० [सं०] (१) वासुदेव कृष्णका एक समकालीन (ब्रह्मां० ४.७३.९४)। (२) शिनिका एक पुत्र, एक क्षत्रियवंशसे ब्राह्मणोंका नया वंशारम्भ (भाग० ९.२१.१९)। (३) वेणुहोत्रके पुत्र तथा गर्गभूमिके पिता जिन्होंने जनमेजयको शाप दिया (ब्रह्मां० ३.६७.७७ ८; ६८.२१; वायु० ९२.७३-४)। फलस्वरूप ययातिको रुद्रका दिया हुआ रथ नष्ट हो गया। इनके लोकगंध नामक पुत्रको जनमेजयने कष्ट दिया (वायु० ९३.२१)। (३) तैंतीस श्रेष्ठ आंगिरसोंमेंसे एक मंत्रकृत् (मत्स्य० १९६.२३, ४८, वायु० ५९.९८; ६५.१०६)। (४) नवें द्वापरके अवतार, ऋषभके चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (वायु० २३.१४४)। (५) २८वें द्वापरके अवतार, नकुलीके चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (वायु० २३.२२३)। (६) ऋग्वेदके शाखाप्रवर्तक आचार्य वाष्कलके तीन शिष्योंमेंसे एक शिष्य। निःसंतान होनेके कारण श्यालने इसका उपहास किया था, बादको शंकरकी उपासनासे इसे यवन रानीसे एक पुत्र उत्पन्न हुआ जो कालयवन नामसे विख्यात हुआ (विष्णु० ३.४.२५; ५.२३.१-५)।

गार्ग्यायन–पु० [सं०] एक भार्गव गोत्रकार ऋषि (मत्स्य० १९५.२३)।

गार्दभि–पु० [सं०] भार्गव पंचार्षेयोंमेंसे एक ऋषि (मत्स्य० १९५.३४)।

गार्हपत्याग्नि–स्त्री० [सं०] छह प्रकारके अग्नियोंमेंसे पहला। शास्त्रानुसार हर गृहस्थको इस अग्निकी रक्षा करना परमावश्यक है, क्योंकि साधारण भोजनसे लेकर संस्कारतक सब कार्योंके लिए यह अग्नि आवश्यक है। धर्मव्रतने इसी अग्निमें खड़े हो तप किया था (वायु० ९७.२५)। इसे वेदका मुख कहा है (वायु० १०४.८५; १०६.४१)। शंस्य और शुक्र इसके दो पुत्र हैं (ब्रह्मां० १.१२.११; वायु० २९.११)।

गार्हमेध–पु० [सं०] गृहस्थके नित्य अनुष्ठेय पञ्चयज्ञ—ब्रह्मयज्ञ, पितृयज्ञ, देवयज्ञ भूतयज्ञ और नृयज्ञ।

गालव—पु० [सं०] (१) पुराणोंमें इस नामके अनेक व्यक्ति मिलते हैं, परन्तु महाभारतके अनुसार विश्वामित्रके शिष्य हठी गालव प्रसिद्ध हैं। परीक्षा लेनेके लिए धर्मराजने वशिष्ठका रूप धारण कर विश्वामित्रको १०० वर्षोंतक एक ही स्थानपर हाथमें भोजनका थाल ले खड़ा रहनेकी आज्ञा दी थी। उस समय गालवने इनकी यथेष्ट सेवा की थी। सेवासे प्रसन्न हो विश्वामित्रने इन्हें पूर्ण विद्वान् होनेका आशीर्वाद दिया। इनके हठ करनेपर विश्वामित्रने ८०० श्यामकर्ण घोड़े गुरुदक्षिणामें माँगे। इन्होंने राजा ययातिकी कन्या माधवीकी सहायतासे यह गुरुदक्षिणा (८०० श्यामकर्ण घोड़े) दी थी। गालवने माधवीको पहले अयोध्यापति हर्यश्वको दिया जिन्होंने माधवीसे एक पुत्र उत्पन्न कर २०० घोड़े दिये। काशीराज दिवोदास और भोजराज उशीनरने भी इसी प्रकार माधवीसे पुत्र उत्पन्न कर प्रत्येकने गालवको दो-दो सौ घोड़े दिये। अंतमें ६०० श्यामकर्ण घोड़ों सहित

गालवने माधवीको विश्वामित्रको अर्पित किया। माधवीके गर्भसे विश्वामित्रको अष्टक नामक पुत्र हुआ जिसे अपना सर्वस्व दे विश्वामित्र तपस्या करने चले गये। माधवी राजा ययातिको लौटा दी गयी और गालव भी तप करने वनको चले गये थे। (२) हरिवंशमें इन्हें विश्वामित्रजीका पुत्र लिखा है। इन्हें गलेमें बाँध १०० गौपर बेचने माता ले गयी, सत्यव्रतने माता और पुत्र दोनोंके भोजनका भार उठाया था (वायु० १००.१०; ब्रह्मां० ३.६३.८९; वायु० ८८.९०)। (३) संस्कृत व्याकरणके एक आचार्य। (४) आठवें सावर्णि मन्वंतरके एक ऋषि। यह भार्गव गोत्रकार तथा प्रवर प्रवर्तक ऋषि थे (भाग० ८.१३.१५; ब्रह्मां० ३.६६.७२; ४.१.१०; मत्स्य० ९.३२; १९५.२२; १९६.३१; विष्णु० ३.२.१७)। (५) एक ऋषि जो श्रीकृष्णसे मिलने स्यमंतपंचक गये थे (भाग० १०.८४.४)। (६) एक वाजसनेयी यानी शुक्ल यजुर्वेदी—याज्ञवल्क्यके शिष्योंमेंसे एक (वायु० ६१.२५)।

गालवि–पु० [सं०] (१) गालवके पुत्र श्रृंगवान् जिन्होंने कुणिगर्गकी एक वृद्धा पुत्रीसे विवाह किया था (महाभा० शल्य० ५२.१४)। (२) एक आंगिरस त्र्यार्षेय प्रवर (मत्स्य० १९६.३०)।

गाव–पु० [सं०] सूर्यकी नाड़ियोंका एक समूह जिससे उष्णता मिलती हैं (ब्रह्मां० २.२४.२९; वायु० ५३.२२)।

गावल्गणि–पु० [सं०] धृतराष्ट्रके मन्त्री तथा सारथि सञ्जय (संजय) का एक नाम (महाभा०, भाग० १.१३.३१)।

गिद्धराज–पु० [सं०] जटायु। दे० (रामायण)।

गिर–पु० [सं०] सारणके कई पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (वायु० ९६.१६५)।

गिरनार–पु० [सं०] रैवतक पर्वतका नाम (महाभा० आदि० २१७-८)।

गिरापति–पु० [हि०] बृहस्पति।

गिरापितु–पु० [हि०] सरस्वतीके पिता ब्रह्माकी उपाधि।

गिरि–पु० [सं०] (१) श्वफल्कके बारह पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (भाग० ९.२४.१६)। (२) बलरामके भाई सारणके कई पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (ब्रह्मां० ३.७१.१६७)।

गिरिक–पु० [सं०] (१) महादेवका एक नाम। (२) बलरामके भाई सारणके कई पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (ब्रह्मां० ३.७१. १६७; वायु० ९६.१६५)।

गिरिकर्णिका–स्त्री० [सं०] पितरोंके श्राद्धके लिए प्रशस्त एक पवित्र नदी (मत्स्य० २२.३९)।

गिरिका–स्त्री० [सं०] (१) महाभारतोक्त पुरुवंशी राजा उपरिचरकी पत्नीका नाम। (२) चैद्योपरिचर (विद्योपरिचर=वायु०) वसुकी पत्नी जिसके बृहद्रथ आदि सात पुत्र थे (मत्स्य० ५०.२६; वायु० ९९.२२१)।

गिरिक्षिप–पु० [सं०] अक्रूरके एक भाईका नाम (भागवत)।

गिरिजा–स्त्री० [सं०] हिमाचलकी पुत्री पार्वतीका नाम (भाग० १.१५.१२; ब्रह्मां० ४.३८.७)।

गिरितनयाव्रत–पु० [सं०] यह व्रत उमाके प्रीत्यर्थ १२ महीनोंतक किया जाता है। प्रत्येक महीनेमें अलग-अलग फूलसे पूजा होती है। इसे 'गौरीतृतीयाव्रत' भी कहते हैं (मत्स्य० ६२.३९)।

गिरित्र–पु० [सं०] (१) समुद्रका नाम। कहते हैं इन्द्रने पर्वतोंके पर काट डाले थे, अतः मैनाक पर्वत इनके भयसे समुद्रमें जा छिपा था। इससे उसके पर बच गये। मैनाक पर्वतको छिपा रखनेके कारण समुद्रका यह नाम पड़ा। (२) भगवान् शंकरका नाम (भाग० २१.३५)।

गिरिधर, गिरधर–पु० [सं०] ब्रजवासी इन्द्रकी पूजा प्रत्येक वर्ष करते थे। श्रीकृष्णने इन्द्रकी पूजा बन्द करायी थी जिससे अप्रसन्न हो इन्द्रने ब्रजको जलमग्न कर देनेकी इच्छासे घोर वर्षा की। ब्रज निवासियोंके रक्षार्थ कृष्णने गोवर्धन पर्वत उठाया था जिसके नीचे सब लोग सुरक्षित रह सके थे। इसीसे श्रीकृष्णका यह नाम पड़ा (विष्णु० ५.११. १५-२५)।

गिरिधारन–पु० [हि०] श्रीकृष्णका एक नाम (विष्णु० ५. ११.१५-२५)।

गिरिधारी–पु० [सं०] श्रीकृष्णका एक नाम (भाग० १०. २५ अ० पूरा; विष्णु० ५.११.१५)।

गिरिध्वज–पु० [सं०] सुरराज इन्द्रका वज्र।

गिरिनंदिनी–स्त्री० [सं०] पार्वती तथा गंगाका नाम—दे० पार्वती तथा गंगा।

गिरिनगर–पु० [सं०] गिरनार पर्वतपर बसा एक नगर जो जैनियोंका तीर्थस्थान है—दे० परिशिष्ट (ग)।

गिरिनाथ–पु० [सं०] कैलाशपति शंकरका एक नाम (शिवपुराण)।

गिरिपूजा–स्त्री० [सं०] गोवर्धन-पूजा जिसे श्रीकृष्णने इन्द्रपूजाके स्थानपर आरम्भ कराया था (भाग० १०.२४.२५-३२; ब्रह्मां० २.७.११; १९.१३७; मत्स्य० १०.२५-६)।

गिरिप्रजा–पु० [सं०] एक स्थान जहाँ कक्षीवान्ने ब्राह्मणत्व प्राप्त किया था (वायु० ९९.९३)।

गिरिरक्ष–पु० [सं०] श्वफल्क तथा गांदिनीके बारह पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (वायु० ९६.११०)।

गिरिराज–पु० [सं०] हिमालय, गोवर्धन या मेरु पर्वतका नाम।

गिरिराजपुत्री–स्त्री० [सं०] उमा, पार्वतीकी एक उपाधि—दे० पार्वती तथा ब्रह्मां० २.२५.४०; वायु० ५४.४४,९५, ११६।

गिरिव्रज–पु० [सं०] राजगृहका नाम जहाँ मथुरापति कंसके श्वसुर जरासंधकी राजधानी थी। यहाँ श्रीकृष्ण, अर्जुन तथा भीम ब्राह्मण रूपमें आये थे (भाग० १०.७०. २४; ७२.१६)। गौतम यहाँ तप करने आये थे और कक्षीवान्को यहीं ब्राह्मणत्व प्राप्त हुआ था। यह सोमाधि (सहदेव-पुत्र) तथा नंदिवर्धनके पश्चात् शिशुनागकी राजधानी रहा और मगध-नरेशकी भी राजधानी यहाँ थी (मत्स्य० २७१.१९; २७२.६; वायु० ९९.२९६-३१५)।

गिरिश्रृङ्ग–पु० [सं०] दे० गणेश।

गिरिसुत–पु० [सं०] मैनाक पर्वतका नाम—दे० मैनाक।

गिरिसुता–स्त्री० [सं०] हिमाचलकी पुत्री, पार्वतीका नाम–दे० पार्वती।

गिरिश–पु० [सं०] शिवजीका एक नाम। सब भूत-पिशाचोंका अधिपति इन्हें ही बनाया गया (भाग० २.३. ७; वायु० ६९.२८९; ७०.८)।

गिरीश–पु० [सं०] भूत-पिशाचोंके अधिपति शिवका एक

नाम, हिमाचल, सुमेरु या कैलाश (ब्रह्मां० २.२७.६३; मत्स्य० ४७.१९०; वायु० ६९.२८९; ७०.८)।

गिरेश—पु० [हिं०] ब्रह्मा या विष्णु।

गीत—पु० [सं०] व्रत आदि अवसरोंपर भगवत्प्रीत्यर्थ किया जानेवाला संगीत। यह अप्सराओं तथा गन्धर्वोंमें अधिक प्रचलित है (मत्स्य० ७.१४; ६१.२३; ८२.२९; १०५.६; १२०.३१)। किन्नर वर्ग इसके लिए प्रसिद्ध हैं (वायु० ५४.६; ६९.३७)।

गीतनादित—पु० [सं०] गयामें शिलाके दक्षिणपादमें स्थित एक पहाड़ जहाँ गन्धर्व आदि दिव्य गीत गाते हैं तथा रुद्र-पार्वती क्रीड़ा करते हैं (वायु० १०८.५१)।

गीतप्रिया—स्त्री० [सं०] कार्त्तिकेयकी अनुचरी एक मातृका देवीका नाम (महाभा० शल्य० ४६.७)।

गीतयोगिनी—स्त्री० [सं०] ललितादेवीका एक नाम (ब्रह्मां० ४.१७.४८)।

गीता—स्त्री० [सं०] भगवद्गीता। कुरुक्षेत्रमें युद्धके समय श्रीकृष्णने मोहग्रस्त अर्जुनको जो उपदेश दिये थे, सब इसमें संगृहीत हैं। 'कार्तिके मासि विपेन्द्र यस्तु गीतां पठेन्नरः। तस्य पुण्यफलं वक्तुं मम शक्तिर्न विद्यते॥ गीतायास्तु समं शास्त्रं न भूतं न भविष्यति। सर्वपापहरा नित्यं गीतैका मोक्षदायिनी॥' (स्कंद० वै० कार्ति० मा० २.४९-५०)। एकमात्र गीता ही सदा सब पापोंको हरनेवाली और मोक्ष देनेवाली है।

गीतिरथेन्द्र—पु० [सं०] गीतिचक्ररथ, गीतिचक्ररथेन्द्र (ब्रह्मां० ४.१९.७७; ३४.५६, ३६.१२)।

गीरथ—पु० [सं०] बृहस्पतिका एक नाम।

गीर्देवी—स्त्री० [सं०] सरस्वती। दे० सरस्वती।

गीर्वाण—पु० [सं०] देवता।

गीष्पति—पु० [सं०] दे० बृहस्पति।

गुड़धेनु—स्त्री० [सं०] विशोक द्वादशी व्रतमें गुड़के ढेरमें शास्त्रोक्त विधिसे गौकी कल्पना कर दान करे (मत्स्य० ८१.२७; ८२.२-३१; ८३.५; ८५.१)।

गुड़लवणदानव्रत—पु० [सं०] माघ शुक्ल ३ को गुड़ और लवणका दान करे तो गुड़से देवी और लवणसे प्रभु प्रसन्न होते हैं (भविष्योत्तर)।

गुडाकेश—पु० [सं०] निद्राको जीत लेनेके कारण अर्जुनका नाम (महाभा० आदि० १३८.८; भाग० १.१७.३१)।

गुणगौरीव्रत—पु० [सं०] स्त्रियोंका एक व्रत विशेष जो चैत्र मासकी चौथको होता है जिसे सौभाग्यवती स्त्रियाँ ही करती हैं। इसे गौरीव्रत कहते हैं जो चैत्र कृष्ण० १ से चैत्र शु० २ तक किया जाता है और चैत्र शु० ३ को विसर्जन करना चाहिये। यह विशेषकर अहिवातकी रक्षा तथा पतिप्रेमकी वृद्धिके निमित्त ही किया जाता है—दे० 'व्रत-विज्ञान'।

गुणशरीर—पु० [सं०] पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ और पाँच प्राण तथा मुक्त प्राणीका मस्तिष्क उसे छोड़ देता है। जो ज्ञानी हैं वे दूसरा शरीर धारण करते ही नहीं (वायु० १०२.१०५-६)।

गुणाकर—पु० [सं०] श्वेताके दस वीर पुत्रोंमेंसे एक पुत्र तथा मुख्य बन्दर (ब्रह्मां० ३.७.१८१, २४.१)।

गुप्तकाशी—स्त्री० [सं०] हरिद्वार और बदरिकाश्रमके बीचमें स्थित एक तीर्थ (स्कंद० वैष्णव० बदरिकाश्रममाहात्म्य)।

गुरु—पु० [सं०] (१) संकृतिका एक पुत्र (भाग० ९.२२.२)। (२) भौत्य मनुके ९ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (ब्रह्मां० ४.१.११४; वायु० ११०.५१)। (३) गुरुभक्ति, बृहस्पतिसुत कचकी व्याख्या, देवयानीका विवाह आदि—दे० देवयानी (मत्स्य० २५.६६; २६.७-११; १६-१७)। गुरुभक्ति तथा गुरुसेवासे हरि प्रसन्न होते हैं। श्रीकृष्ण-सांदीपनि कथा। गुरुके आशीर्वादसे विकास और वृद्धि होती है (भाग० १०.८०.२८-४३)। गुरुकी प्रतिष्ठा राजा या देवतासे कम नहीं होती है (ब्रह्मां० ४.३.३७-५९)। (४) बृहस्पतिका नाम (मत्स्य० ९३.१४, ३५)।

गुरुत्मान्—पु० [सं०] दे० गरुड़।

गुरुदक्षिणा—स्त्री० [सं०] श्रीकृष्ण तथा बलरामने भी गुरुदक्षिणा दी थी, बिना इसके दिये विद्या फलवती नहीं होती है (विष्णु० ५.२१.२४)।

गुरुधी—पु० [सं०] संकृतिसुत महायशाके दो पुत्रोंमेंसे एक (मत्स्य० ४९.३७)।

गुरुप्रीति—पु० [सं०] संकृतिका एक पुत्र (विष्णु० ४.१९.२२)।

गुरुवीर्य—पु० [सं०] संकृतिके दो पुत्रोंमेंसे एक (वायु० ९९.१६०)।

गुरुव्रत—पु० [सं०] किसी महीनेके शुक्ल पक्षमें जिस गुरुवारको अनुराधा नक्षत्र हो तब बृहस्पतिका पूजन करे। इससे गुरुग्रहसे उत्पन्न सब अनिष्ट टल जाते हैं एवं सुख प्राप्त होता है। इस व्रतको सात दिन करे (भविष्य०)।

गुरुसुत—पु० [सं०] उज्जयिनीमें सांदीपनि मुनिसे श्रीकृष्णने शिक्षा ग्रहण की थी और गुरुदक्षिणामें सांदीपनिने अपने मृत पुत्रको माँगा था। श्रीकृष्णने प्रतिज्ञाबद्ध होकर गुरु पुत्रको ला दिया था—दे० सांदीपनि।

गुरुसेवी—पु० [सं०] एक बन्दरनायकका नाम (ब्रह्मां० ३.७.२३६)।

गुरुसिंह—पु० [सं०] एक पर्व विशेष जो बृहस्पतिके सिंह राशिपर आनेपर मनाया जाता है। इस पर्वमें यात्री नासिक क्षेत्र जाते हैं और गोदावरी नदीमें स्नान करते हैं।

गुर्वक्ष—पु० [सं०] बलिके बाणज्येष्ठ सौ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (मत्स्य० ६.११)।

गुलिक—पु० [सं०] (१) एक नागेश्वरका नाम (ब्रह्मां० ४.२०.५४)। (२) सत्ययुगमें इस नामका एक प्रसिद्ध व्याध था जो बड़ा पापी था। एक समय यह सौवीर-नरेशके नगरमें गया जहाँ उसने विष्णु-मन्दिर लूटनेका विचार किया और मन्दिरके पुजारी उत्तङ्क मुनिको मारनेपर तैयार हुआ। उत्तङ्क मुनिकी कृपासे इसे ज्ञान हो गया और इसे मोक्ष मिला (नारद० पूर्वभाग प्रथम पाद ३७.१४-१६, ३८, ४२, ४७, ५१)।

गुल्म—पु० [सं०] बलरामके भाई सारणके कई पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (वायु० ९६.१६५)।

गुह—पु० [सं०] (१) रामायणानुसार शृंगवेरपुरका निषादराज जो श्री रामचन्द्रका मित्र था (रामच० मानस० अयोध्या० दो० १०३-१०४)। (२) कार्त्तिकेयका नाम।

सुब्रह्मण्यदेव, सेनापति। अंबिका (पार्वती) के पुत्र। सांब श्रीकृष्णके पुत्र जाम्बवतीसे उत्पन्न हुए। सरस्वती क्षेत्रमें इनका एक पवित्र तीर्थ है जहाँ विदुर तीर्थयात्रामें गये थे (भाग० ३.१.२२, ३०; ब्रह्मां० ३.२४.४; ४.३०.१०४; वायु० ३०.३१५; ३९.५५; ४१.४०; विष्णु० ५.३३.२६-२७)। गुहने क्रौंच पर्वतपर बाण चलाये थे (भाग० ५.२०.१९)। देवासुर-संग्राममें यह तारकसे लड़े थे तथा शोणितपुरमें प्रद्युम्नसे लड़े (भाग० ८.१०.२८; १०.६३.७)। मयूर वाहनके साथ त्रिपुरारिके रथकी रक्षा की। तारकका वध किया—दे० कार्त्तिकेय। (३) कलिंग, महिष, महेन्द्रनिलय आदिका एक राजा (ब्रह्मां० ३.७४.१९८; वायु० ९९.३८६)।

गुहषष्ठी—स्त्री० [सं०] अगहन सुदी छठ जो कार्त्तिकेयकी जन्मतिथि मानी जाती है। इसे स्कंदषष्ठी भी कहते हैं (व्रतपरिचय १९८-९९)। 'मार्गशीर्ष शुक्ला षष्ठीको कार्त्तिकेय तारका को मार कर अभिषिक्त हुए थे, अतः यह पुण्यप्रद, पापहर और यशस्करी तिथि है' (भविष्योत्तर)।

गुह्यक—पु० [सं०] कुबेरके खजानेकी रक्षा करनेवाले यक्ष, देवजनी और मणिवर तथा उनके वंशजोंकी संतान (वायु० ६९.१६२; १०१.२८; भाग० १.९.३; १०.३४.२८; २.१०.३७; ४.४.३४)। ये हिमालयके निवासी हैं (भाग० ४.५.२६; १०.५)।

गुह्यकेश्वर, गुह्यकपति—पु० [सं०] दे० कुबेर।

गुहा—स्त्री० [सं०] मेरु पर्वतकी कुहरिणी गुफा जहाँ भूख, मस्तिष्क तथा आसनपर विजय प्राप्त कर व्यासजीने चारों वेदोंका स्मरण किया (ध्यान किया)। एक शताब्दीतक तपस्या करनेके उपरांत वेदोंका वास्तविक रूप इनके समक्ष आया (वायु० १०४.६७-९)।

गुहाक्ष—पु० [सं०] भण्डका एक सेनापति (ब्रह्मां० ४.२१.८२)।

गुहाप्रवेशनगर—पु० [सं०] निषध पर्वतके दक्षिणमें स्थित एक नगर जिसमें अनेक दैत्य-दानव निवास करते हैं। यह पर्वतके अन्दर है। इसमें प्रवेश पाना अति कठिन है (वायु० ४१.५५)।

गुहावास—पु० [सं०] ब्रह्माके यज्ञका एक ऋत्विक् (वायु० १०६.३९)।

गुहावासी—पु० [सं०] १७वें द्वापरमें भगवान्का अवतार। यह हिमालयके सिद्धक्षेत्रमें हुआ था। इसके चार पुत्र ब्रह्मज्ञानी थे। इनके अनेक शिष्य थे जो सबके-सब महेश्वर-योगमें लगे थे (वायु० २३.१७५-७)।

गृत्स—पु० [सं०] एक भार्गव मंत्रकृत् ऋषि (ब्रह्मां० २.३२.१०६; मत्स्य० १४५.१००)।

गृत्समद—पु० [सं०] (१) एक ऋषि जो शरशय्यापर पड़े भीष्मसे मिलने गये थे। यह भार्गवोंके आर्षेय प्रवर थे। सुतेजा नामका इनका एक पुत्र था (भाग० १.९.७; मत्स्य० १९५.४४-५)। (२) सुहोत्र (सुन्होत्र) के तीन पुत्रोंमेंसे एक पुत्र तथा शुनक (शौनक) का पिता (भाग० ९.१७.३; वायु० ९२.३-७; विष्णु० ४.८.५)। ये क्षत्रोपेत द्विज थे, तपस्यासे ऋषित्वको प्राप्त हुए थे (ब्रह्मां० ३.६६.८७; ६७.४)।

गृध्र—पु० [सं०] श्रीकृष्ण और मित्रविंदाके दस पुत्रोंमेंसे एक (भाग० १०.६१.१६)।

गृध्रकूट—पु० [सं०] यह गयामें है (वायु० १०९.१५; १११.२२.४२)। शिलाकी बायीं ओर जहाँ ऋषियोंने चीलकी भाँति तपस्या की थी। यहाँ दर्शनार्थ जानेसे शिवलोक मिलता है (वायु० १०८.६१-२)। यह श्राद्धके लिए अत्यन्त उपयुक्त स्थान (वायु० ७०.३८.९७)।

गृध्रिका—स्त्री० [सं०] (१) ताम्राकी छह पुत्रियोंमेंसे एक पुत्री तथा अरुणकी पत्नी जो संपाति और जटायुकी माता थी (ब्रह्मां० ३.७.४४६-८; मत्स्य० ६.३०.३२)। (२) कश्यप और ताम्राकी एक पुत्री जो गीधोंकी माता कही जाती है। यह गृद्ध्रीके नामसे पुकारी जाती है (विष्णु० १.२१.१५-१६)।

गृध्रेश्वर—पु० [सं०] गृध्रकूट पर्वतपर स्थापित उसके अधिपति देवता श्री शिवजी हैं (वायु० १०८.६२)।

गृहपति—पु० [सं०] (१) वह अग्नि जहाँ अहिर्बुध्न्य स्थित हैं (मत्स्य० १२.२६; वायु० २९.२४)। (२) यज्ञका यजमान (वायु० १.२३)। (३) गृहपतिको ५ यज्ञ तथा ३० संस्कार करना उचित है (भाग० ७.१४ (पूरा); मत्स्य० १८.१६, ४०.१, ३)। अच्छा आचरण, नित्यके धार्मिक कृत्य, उपवास, भोज, अग्निहोत्र, श्राद्ध आदि इनके लिए अनिवार्य हैं जिन्हें करते रहनेसे प्रजापति लोककी प्राप्ति होती है।

गृहेषु—पु० [सं०] सावर्णि मनुके आठ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (वायु० १००.८४)।

गृह्यसूत्र—पु० [सं०] एक वैदिक पुस्तक जिसके अनुसार गृहस्थके मुंडन, जनेऊ आदि संस्कार होते हैं।

गो—स्त्री० [सं०] (१) सरस्वती, पृथ्वी। (२) ब्रह्मदत्तकी पत्नी तथा विष्वक्सेनकी माता (भाग० ९.२१.२५)। इनकी सृष्टि हरिके उदर तथा बगलोंसे हुई और यह उनका एक अंग समझी जाती है। इनसे हरिको दूध मिलता था, अतः कंसने इन्हें मार डालना चाहा। श्रीकृष्णके जातकर्ममें नन्दने इन्हें ब्राह्मणोंको दान दे दिया (भाग० १०.४.३९-४१; ५.३; मत्स्य० १३.५८; विष्णु० १.५.४८)। यह पूजा करने योग्य हैं तथा इनके गोबरसे शुद्ध किया स्थान श्राद्धादिके लिए पवित्र होता है (ब्रह्मां० ३.१३.१२८-१३०; २८.११,५७, ६०; ४.६.३८, ४६; ४०.११६)। गोरक्षाका प्रवर्त्तक पृथु था (ब्रह्मां० २.३६.१९८)। (३) काकुस्थकी एक पुत्री तथा यतिकी पत्नीका नाम (ब्रह्मां० ३.६८.६३; वायु० ९३.१४)।

—पु० [सं०] शिवका नन्दी, स्वर्ग, किरण, वज्र, सूर्य तथा चन्द्रमाको भी गो कहते हैं (विष्णु० ५.१.१४)।

गोकरीष—पु० [सं०] सूखा गोबर रोगी बच्चोंके सिरपर रखनेसे वे रोगमुक्त होते हैं, यह एक प्राचीन यादव-प्रथा है (विष्णु० ५.५.१३)।

गोकर्ण—पु० [सं०] (१) हिन्दुओंका आधे योजनका एक तीर्थ क्षेत्र जो मालाबारमें स्थित है। यहाँ 'धूतपापस्थल' नामक एक तपोवन है जो रुद्रको अति प्रिय है (ब्रह्मां० ३.१३-१९; ४.४४.४६)। यह समुद्रमें चला गया था, पर ऋषियोंके आग्रहपर बलरामके कहनेपर वरुणने इसे पुनः दे

दिया (ब्रह्मां० ३.५६, ७-५६. ५७.१२ से अंततक; अध्याय ५८ वाँ पूरा)। यम यहाँ तप कर लोकपाल हो गये (मत्स्य० ११.१८-२०; २२.३८)। रावण, कुंभकर्ण आदिने यहीं तप किया था (रामायण)। इस स्थानमें एक शिव मूर्त्ति है जिसका भी यही नाम है। इसीके निकट ताम्रपर्णी नदी है, जो शिवको अति प्रिय है (वायु० ४८.३०; ७७.१९-२१)। (२) शिवके एक गणका नाम (काशीखंड)। (३) धुंधुकारीके भाईका नाम जिसने भागवतकी सप्ताह-कथा सुना कर अपने भाई धुंधकारीको तार दिया था (भाग० माहात्म्य)। (४) सोलहवें द्वापरका अवतार जो गोकर्ण वनमें हुआ था जिसके चार पुत्र हुए (वायु० २३.१७२)। (५) ब्रह्माजीके यज्ञके एक ऋत्विक् (वायु० १०६.३९)।

गोकर्णिका—स्त्री [सं०] अन्धकासुर-रक्तपानार्थ शिव द्वारा सृष्ट एक मानस-पुत्री मातृकाका नाम (मत्स्य० १७९.२४)।

गोकामुख—पु० [सं०] भारतवर्षका एक पर्वत (भाग० ५.१९.१६)।

गोकुल—पु० [सं०]—दे० व्रज। एक प्राचीन गाँव जहाँ श्रीकृष्णने अपना बचपन विताया था। यह मथुरासे पूर्व-दक्षिण यमुनाके उस पार था। इसे आजकल महावनके नामसे पुकारते हैं। वर्तमान गोकुल इससे भिन्न है (भाग० २.७.३१; विष्णु० ५.१.७४; ५.७; ११.१३)।

गोकुलाकीर्णा—स्त्री० [सं०] भारतवर्षकी एक नदी। कहते हैं हिरण्यकशिपुके राज्यमें यह थर-थर काँपती थी (मत्स्य० १६३.६३)।

गोखल—पु० [सं०] (भाग० के अनुसार गोखल्य) शाकल्यका एक शिष्य (भाग० १२.६.५७; ब्रह्मां० २.३५.२)।

गोगापीर—पु० [?] पंजाबमें नीच जातिके हिन्दुओं द्वारा पूजा जानेवाला एक देवता जिसकी पूजा मुसलमान भी करते हैं (हिं० श० सा०)।

गोचपला—स्त्री० [सं०] (१) अत्रिकी दस पत्नियोंमेंसे एकका नाम (ब्रह्मां० ३.८.७५)। (२) घृताची और भद्राश्वकी एक पुत्री (वायु० ७०.६९)।

गोची—स्त्री० [सं०] हिमालयकी स्त्रीका नाम (हि० श० सा०)।

गोतम—पु० [सं०] गौतम ऋषि अर्थात् शतानन्दके पिता एक ऋषिका नाम जिनकी पत्नीका नाम अहल्या था और विजया पुत्री थी—दे० गौतम।

गोतमी—स्त्री० [सं०] शतानन्दकी माता अहल्याका नाम जो गोतम ऋषिको व्याही थी—दे० अहल्या।

गोतीर्थ—पु० [सं०] (१) यह तीर्थ करोड़ों अन्य तीर्थोंके साथ प्रयागमें स्थित रहता है (मत्स्य० ११०.१)। (२) नर्मदा क्षेत्रमें स्थित एक तीर्थ जिसमें जानेसे सब पाप नष्ट हो जाते हैं (मत्स्य० १९३.३)।

गोत्र—पु० [सं०] ऊर्जा और वशिष्ठके सात पुत्रोंमेंसे एक (विष्णु० १.१०.१३)।

गोत्रभिद्—पु० [सं०] सुरराज इन्द्रका एक नाम—दे० इन्द्र।

गोत्रसुता—स्त्री० [सं०] पर्वत (हिमालय) की कन्या—पार्वतीका एक नाम।

गोत्रिरात्र—पु० [सं०] यह व्रत कार्त्तिक कृ० १३ से अमावस्या (दीपावली) तक होता है। इसमें श्रीकृष्णकी सपरिवार पूजा होती है तथा बाँसकी डलियोंमें सप्तधान्य और २७ मिठाइयाँ रख सौभाग्यवती स्त्रीको दान देनेसे सुत तथा धनका सुख प्राप्त होता है (स्कंद०)।

गोद्—पु० [सं०] विद्यावतीमें विशालसे उत्पन्न गन्धर्व गणोंमेंसे एक गन्धर्वका नाम (वायु० ६९.२६)।

गोदना—पु० [सं०] छपरा-बनारस मार्गका रिविलगंज स्टेशन जिसका पुराना नाम गोदना है जहाँ रामने गौतम पत्नी अहल्याका उद्धार किया था। गौतमका आश्रम यही था—दे० अहल्या।

गोदान—पु० [सं०] शास्त्रोक्त विधिसे संकल्प पढ़ कर गौदान करके ब्राह्मणको देना यह विवाह आदि या किसी प्रायश्चित्तमें होता है (गोदानपद्धति)।

गोदावरी—स्त्री० [सं०] सह्य पर्वतसे निकली अनेक पुण्य नदियोंमेंसे एक नदी। रामने गोवर्धन नामक नगर यहीं बसाया था। श्री भरद्वाजने रामचन्द्रजीकी प्रसन्नताके लिए अच्छे-अच्छे पेड़-पौधे लगाये जिससे वह प्रदेश बहुत रमणीक हो गया (भाग० ५.१९.१८; ब्रह्मां० १.१२.१५; २.१६.३४-५५; वायु० ४५.१०४-११२; विष्णु० २.३.१२)। इसे जमदग्नितीर्थ भी कहते हैं।

गोदाश्रम—पु० [सं०] यहाँ त्रिसंध्या नामकी देवीका स्थान है (मत्स्य० १३.३७)।

गोधन—पु० [सं०] भारतवर्षका एक पर्वत (ब्रह्मां० २.१६.२२; वायु० ४५.९१)।

गोधर्म—पु० [सं०] इसे दीर्घतमाने सौरभेय (वृषभ) से सीख कर अपने छोटे भाईपर इसका प्रयोग किया था (मत्स्य० ४७.४३-५५, ८०-८४; ब्रह्मां० ३.७४.४७-५५, ९१; वायु० ४८.९; ९९.४७-५०)।

गोधूली—स्त्री० [सं०] संध्याका समय जो बड़ा शुभ माना जाता है। इस समय तिथिलग्न, नक्षत्रादिका कुप्रभाव नहीं होता (लग्नचन्द्रिका तथा लग्नरत्नाकर)।

गोनंद—पु० [सं०] (१) कार्त्तिकेयके एक गणका नाम (स्कंद०; महाभा० शल्य० ४३.६५)। (२) पुराणानुसार एक देश विशेष।

गोनर्द—पु० [सं०] महर्षि पातंजलिके जन्मस्थानका नाम।

गोनाम्नी—पु० [सं०] सोमपा पितृगणकी मानसी पुत्री जो शुक्रकी पत्नी थी। इनके त्वष्ट्र, वरुत्री, शण्ड और मर्क ये चार पुत्र थे (वायु० ६५.७५)।

गोसुत—पु० [सं०] दीर्घतमा ऋषिने जिस वृषभसे गोधर्म सीखा था, उसकी एक उपाधि (ब्रह्मां० ३.७४.५६)।

गोप—पु० [सं०] स्वारोचिष मन्वंतरके बारह तुषित देवोंमेंसे एक तुषित देव (वायु० ६२.९)।

गोपजला—पु० [सं०] रौद्राश्वकी दस पुत्रियोंमेंसे आठवीं पुत्रीका नाम (वायु० ९९.१२६)।

गोपति—पु० [सं०] (१) शिव; गयामें विष्णुका नाम (वायु० १०८.५२)। श्रीकृष्ण (भाग० १०.२७.२८); सूर्य (ब्रह्मां० ३.५९.६८) का बोध होता है। (२) कालकेतुका साथी एक राक्षस जिसे महेन्द्रशिखरपर इरावती नदीके तटतर श्रीकृष्णने मारा (महा० सभा० ३८.२९)।

गोपथ—पु० [सं०] अथर्ववेदका एक ब्राह्मण ग्रन्थ—दे०

गोपथब्राह्मण ।

गोपद–पु० [सं०] स्वारोचिष मन्वंतरका एक तुषित देव (ब्रह्मां० २.३६.१०) ।

गोपद्मव्रत–पु० [सं०] आषाढ़ शु० ११ को गोशाला लीप कर ३३ पद्म (कमल) रख पूजन करे । यह व्रत कार्त्तिक शु० ११ तक चलता रहे तो इसका कर्ता आजीवन सुखी रहे (भविष्यपुराण) ।

गोपाल–पु० [सं०] श्रीकृष्णका एक नाम (ब्रह्मां० ३.३३.८; विष्णु० ५.२०.४९) ।

गोपालकक्ष–पु० [सं०] भारतका एक देश जो पूर्वमें है और जिसे दिग्विजयमें भीमसेनने जीता था—दे० (महाभा० सभा० ३०.३) ।

गोपालतापनी–स्त्री० [सं०] एक उपनिषद्का नाम ।

गोपाली–स्त्री० [सं०] (१) स्वामी कार्त्तिकेयकी अनुचरी एक मातृका (महाभा० शल्य० ४६.४) । (२) एक अप्सरा जिसने अर्जुनके सम्मानार्थ इन्द्रसभामें नृत्य किया था (महा० वन० ४३.३०) । (३) पाँच श्वेतपराशरोंमेंसे एकका नाम (गोपालि) (मत्स्य० २०१.३३) ।

गोपाष्टमी–[स्त्री०] [सं०] कार्त्तिक शुक्ला अष्टमी जिस दिन श्रीकृष्णने गोचारण आरम्भ किया था । इसे 'गोपाष्टमी' भी कहते हैं (व्रतपरिचय १७९) । इस दिन हिन्दू लोग गोपूजन, गोग्रास, गोप्रदक्षिणा आदि करते हैं । इससे सब अभीष्टोंकी सिद्धि होती है तथा यह सौभाग्यकी वृद्धि करता है ('निर्णयामृत', 'कूर्मपुराण' तथा 'कात्यायनीव्रत')।

गोपी–स्त्री० [सं०] व्रजकी गोपजातिकी स्त्रियाँ जिन्होंने श्रीकृष्णके साथ भिन्न-भिन्न लीलाएँ की थीं । एक बार शंखचूड़ राक्षस कुछको बरबस चुरा ले गया था, अतः श्रीकृष्णने शंखासुरको मार गोपियोंको मुक्त किया (भाग० १०.३४. २४-३५) । सूर्यग्रहणमें ये कुरुक्षेत्र गयीं (भाग० १०.८२. ४०-४९) तथा मथुराको गयी (१०.८४.६४) और सत्संगसे इन्हें मोक्ष हुआ था (भाग० ११.१२.६; ७.१.३०,३५) ।

गोपीचंद–पु० [हिं०] रंगपुर (बंगाल) के एक प्राचीन राजा जो भर्तृहरिकी बहिन मैनावतीके पुत्र थे । मातासे उपदेश ले इन्होंने वैराग्य लिया था । यह जलंधरनाथके शिष्य थे । इनके बनाये गीत 'जोगी' लोग सारंगीपर गाते देखे जाते हैं ।

गोपीचंदन–पु० [सं०] द्वारकाके एक सरोवरसे निकली हुई एक प्रकारकी मिट्टी जिसका वैष्णव लोग तिलक लगाते हैं । ऐसी प्रसिद्धि है कि श्रीकृष्णके विरहमें इसी सरोवरके किनारे बहुत-सी गोपियोंने प्राण त्यागे थे । अतः यहाँकी मिट्टी जिसे गोपीचंदन कहते हैं, पवित्र समझी जाती है (भाग०) ।

गोपीक्ष–पु० [सं०] एक प्राचीन तीर्थका नाम (हि० श० सा०) ।

गोपीनाथ–पु० [सं०] गोपीजनवल्लभ, गोपीगणेश, गोपिकाधीश, गोपीश, गोपीश्वर । श्रीकृष्णका नाम (ब्रह्मां० ३.३३.३ और १०, १३; ३४.४२, ३६.२९; ४२.१९) ।

गोपुत्र–पु० [सं०] सूर्यके पुत्र होनेके कारण कुंतीसुत कर्णका एक नाम । यह दुर्वासा ऋषिके बताये मंत्रके प्रभावसे कुन्तीके बाल्यकालमें ही उनसे उत्पन्न हुए थे (महाभा० आदि०) ।

गोपुर–पु० [सं०] एक प्राचीन ऋषिका नाम जो वैद्यक शास्त्रके प्रणेता कहे जाते हैं—दे० सुश्रुत तथा आयुर्वेदविज्ञान ।

गोप्ता–पु० [सं०] भगवान् विष्णुकी एक उपाधि; [स्त्री०] गंगाका एक नाम ।

गोपेश्वर–पु०[सं०] केदारेश्वर क्षेत्रका अंतिम स्थान । यहाँके मंदिरमें श्री गोपीनाथ, शिवकी मूर्त्ति है और परशुरामजीकी कुल्हाड़ी (परशु) भी यहाँ अबतक सुरक्षित है । यह परशु इतने सुंदर धातुका बना है कि अबतक समय इसे बिगाड़ न सका है और बारह व्यक्तियोंसे कम शायद इसे उठा भी न सकेंगे ।

गोप्रतारतीर्थ–पु० [सं०] सरयू तथा घाघराके संगमपर स्थित एक तीर्थ जो गुप्तहरिके निकट ही है जहाँ श्री रामचन्द्रादिने परमधामको प्रस्थान किया (स्कंद० वै० अयो० मा०) ।

गोभानु–पु० [सं०] (१) हरिवंशके अनुसार तुर्वसु वंशोत्पन्न एक राजाका नाम । तुर्वसु ययातिके पुत्र थे । तुर्वसुके पुत्र वह्नि (मत्स्य० के अनुसार गर्भ) और वह्निके पुत्र गोभानु, राजा गोभानुके पुत्र त्रिसानु थे (ब्रह्मां० ३.७४. १; वायु० ९९.१; मत्स्य० ४८.१) ।

गोभिल–पु० [सं०] (१) एक प्रसिद्ध ऋषि जो ब्रह्माके यज्ञमें ऋत्विक् थे । यह सामवेदके गृह्यसूत्रके रचयिता थे (वायु० १०६.३७) । (२) काश्यपवंशज एक प्रवरप्रवर्तक ऋषिका नाम (मत्स्य० १९९.१६) ।

गोमंत–पु० [सं०] एक पहाड़ी जहाँ गोमती देवीका स्थान तथा एक दुर्ग है । यह सिद्धपीठ माना जाता है । इसे सह्याद्रिके अंतर्गत बतलाया गया है । इसीके नीचे करवीरपुर है और प्रवर्षण इसकी चोटी है । हरिवंशके अनुसार श्री बलराम तथा श्रीकृष्णने जरासंधको एक बार यहाँ परास्त किया था (भाग० १०.५२(५)१६, २८-३२; ५३(५)१-५; ५२.११(१, ४), १२-१३; मत्स्य० १३.२८) ।

गोमा–पु० [सं०] (१) प्रह्लादपुत्र शंभुके दो पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (ब्रह्मां० ३.५.४०; वायु० ६७.८१) । (२) एक मौनेय गंधर्वका नाम (ब्रह्मां० ३.७.२) ।

गोमती–स्त्री० [सं०] (१) गंगाकी एक सहायक नदी । हिमालयकी तराई तथा शाहजहाँपुरके पासके एक झीलसे निकलकर यह गंगामें मिली है । ऋग्वेदमें भी इसका नाम आया है । क्षेमक नामक राक्षससे पीड़ित होकर काशीराज दिवोदासने काशी छोड़ दी थी और इसी गोमती नदीके तटपर आ बसे थे (ब्रह्मां० ३.६७.२९; वायु० ९२.२६) । कुछ पुराणोंमें भी प्रसंगानुसार गोमतीका नाम आया है । यह नैमिषेय (नैमिष) क्षेत्रमें है और बलराम तीर्थयात्रा प्रसंगमें यहाँ आये थे (भाग० ५.१९.१८; १०.७९.११; ब्रह्मां० १.२.९; २.१६.२६; मत्स्य० ११४.२२; १६३.६३; वायु० २.९; ४५.९५; विष्णु० ३.१४.१८) । (२) गोमंत पर्वतपर स्थापित सती देवीकी मूर्ति (मत्स्य० १३.२८) । (३) पितरोंके श्राद्धके लिए एक प्रशस्त तीर्थ जहाँ यज्ञवराह उत्पन्न हुए थे (मत्स्य० २२.१३,३१) ।

गोमतीपुत्र–पु० [सं०] (१) यह अलिमान्का पिता और शांतकर्णिका दादा था (विष्णु० ४.२४.४७-८) । (१) (गोमतिन्=ब्रह्मां०) अरिंदमका पुत्र तथा पूरीमान्का

पिता, एक राजा (भाग० १२.१.२६)।

गोमतीशिला–स्त्री० [सं०] हिमालयकी एक चट्टान। महाभारतके अनुसार यहाँ पहुँच कर अर्जुनका शरीर गल गया था (महाभा० हिमालयप्रयाण)।

गोमायु–पु० [सं०] एक गंधर्वका नाम।

गोमुख–पु० [सं०] (१) एक राक्षस, जिसका निवास सुतलके एक नगरमें था (ब्रह्मां० २.२०.२२; वायु० ५०.२१)। (२) एक यक्षका नाम। (३) देवराज इन्द्रके पुत्र जयंतके अश्ववाहकका नाम। (४) प्रह्लादसुत शंभुका एक पुत्र (वायु० ६७.८७)। (५) वेदमित्रका एक शिष्य, शाकल्य (विष्णु० ३.४.२२)।

गोमुखी–स्त्री०[सं०](१) गौके मुखके सदृश एक प्रकारकी थैली जिसमें जप करनेके समय माला रखी जाती है। शास्त्रमें ऐसा विधान है कि मालापर किसीकी दृष्टि नहीं पड़नी चाहिये। (२) गंगोत्री जहाँसे गंगाजीका उद्गम होता है। इसका मुख गोमुखके आकारका है। (३) एक स्वर शक्ति देवी (ब्रह्मां० ४.४४.५६)।

गोमेद–पु० [सं०] प्लक्षद्वीपके शांतभय नामक देशका नाम (ब्रह्मां० २.१९.१५)। यह मदिराके समुद्रको चारों ओरसे घेरे है तथा यह ईखके रसके समुद्रसे स्वयम् घिरा है (मत्स्य० १२३.१-४; १२४.५०)। कुमुद पर्वत इसके बीचमें है (मत्स्य० १२३.७)।

गोमेदक–पु० [सं०] (१) एक रत्न विशेष जिसे राहु ग्रहके उपद्रवको शांत करनेके हेतु पहिनते हैं। इसका रंग कुछ खैरके समान होता है। (२) प्लक्षद्वीपके सात पर्वतोंमेंसे एक जिसपर गोमेद वर्षका नामकरण हुआ (ब्रह्मां० २.१९.७, १३८; मत्स्य० १२३.१२८; वायु० ४९.६; विष्णु० २.४.७)।

गोमेदगंधिक–पु० [सं०] अंगिरस-वंशज एक प्रवरप्रवर्तक ऋषि (मत्स्य० १९६.१६)।

गोमेदवर्ष–पु० [सं०] दे० गोमेदक (ब्रह्मां० २.१९.७)।

गोमेध–पु० [सं०] एक यज्ञ विशेष जिसमें मनुके अनुसार ब्रह्महत्याके प्रायश्चित्तके लिए गौसे हवन होता था जो कलियुगमें वर्जित है।

गोरखनाथ–पु० [सं० गोरक्षनाथ] पन्द्रहवीं शताब्दीके एक प्रसिद्ध अवधूत जो वड़े सिद्ध थे और इनका चलाया सम्प्रदाय 'गोरखपंथ' अवतक चालू है। यह गोरखपुरके निवासी थे जहाँ इन्होंने सिद्धि प्राप्त की थी (गोरखवानी)।

गोलक–पु० [सं०] (१) शाकल्यके पाँच शिष्योंमेंसे एक शिष्य (वायु० ६०.६४)। (२) ब्रह्माण्डगोलक (ब्रह्मां० ४.१.१०६; वायु० १००.१५९)।

गोलांगूल–पु० [सं०] गोलांगूल नामका एक प्रधान बंदर-सरदार (ब्रह्मां० ३.७.२४४)।

गोलोक–पु० [सं०] पुराणानुसार सव लोकोंसे ऊपर जहाँ भगवान् विष्णुका निवासस्थान माना जाता है और सुरभि रहती है (भाग० १०.२७.१; ब्रह्मां० ३.३२.४०; ४१.५५; ४२.१९; ४३.२९; वायु० १०४.५३-५५)। तंत्रोंके अनुसार यह वैकुण्ठके दक्षिण है। सोमतीर्थमें स्नान करके द्रव्य सहित सवत्सा गोदान करनेवाला व्यक्ति यहाँ जाता है (मत्स्य० १९१.९८; २०५.८)।

गोवत्सतीर्थ–पु० [सं०] द्वारकाके समीप मार्कण्डेयजीसे उपलक्षित गोवत्सतीर्थ है। यहाँ गायके बछड़ेके रूपमें अवतीर्ण हो शिव लिंग रूपमें विराज रहे हैं (स्कंद० ब्रा० खंड० धर्मा० माहा०)।

गोवत्सद्वादशी–स्त्री० [सं०] कार्त्तिक कृ० १२ को होनेवाला एक व्रत। गोधूलीके पश्चात् एक रंगकी गौ और बछड़ेकी पूजा करे। इस व्रतमें गोरस भोजनका निषेध है (मदनरत्नोद्धृत भविष्योत्तरपुराण-वचन)।

गोवर्धन–पु० [सं०] (१) श्री वृंदावनका एक पर्वत (भाग० ५.१९.१६; १०.११.३; १३.२९)। ऐसी प्रसिद्धि है कि एक वार वहुत अधिक वर्षा होनेपर अपने भक्तोंके रक्षार्थ श्रीकृष्णने इसे अपनी कनिष्ठिका उँगलीपर उठाया था (भाग० १०.२५.१९; २७.१; विष्णु० ५.११.१६-२५; १२.१; १३.१-४, २८; १०.१)। श्रीमद्भागवतके दशम स्कन्ध, पूर्वार्धके २४-२७ अध्याय और सनत्कुमार संहिताके आधारपर इस दिन इन्द्रयज्ञ-भंग कर तत्कालीन जनताको उद्योगका पाठ श्रीकृष्णने दीवालीके दूसरे दिन पढ़ाया था। गोवर्धन-पूजा भाईदूजके पहले और दीवालीके एक दिन बाद होती है। इसमें 'गोवर्धन धराधार गोकुलत्राणकारक। विष्णुबाहुकृतोच्छ्राय गवां कोटिप्रदो भव ॥' मंत्रसे प्रार्थना करे। अंतमें 'लक्ष्मीर्या लोकपालानां धेनुरूपेण संस्थिता। घृतं वहति यज्ञार्थे मम पापं व्यपोहतु ॥' मंत्रसे प्रार्थना करे—(हिमाद्रि)। (२) राम द्वारा स्थापित गोदावरी तटपरका एक नगर जिसमें भरद्वाजजीने रामकी प्रसन्नताके लिए विविध वृक्ष और पौधे लगाकर राज्य वनाया था (ब्रह्मां० २.१६.४४; वायु० ४५.११३)।

गोविंद–पु० [सं०] (१) श्रीकृष्णका एक नाम जिन्हें विष्णुका अवतार मानते हैं (भाग० १०.२७.२३, २८; ब्रह्मां० ३.३३.८; वायु० ९६.३२, ४५)। (२) बृहस्पति। (३) क्रौंचद्वीपका एक पर्वत, जो देवनगिरिके निकट है (मत्स्य० १२२.८०)। (४) श्री शंकराचार्यके गुरुका नाम। (५) विष्णुका पर्यायवाची (विष्णु० १.४.४३; १४.२५; १९.३७; ५.५.१८; १२.१२; १३.२३.१६.३, १८.१; २०.११; २३.१३; २९.२०; ३०.५५; ३१.१७; ३३.२४; ३७.६६; ३८.४६; ६.८.३६)।

गोविंदद्वादशी–स्त्री० [सं०] फाल्गुन कृष्णा द्वादशी जिस दिन वैष्णव लोग व्रत करते हैं। इसे 'सुगति द्वादशी' (पृथ्वी चंद्रोदय) और पुराणसमुच्चयके अनुसार 'सुकृत द्वादशी' कहते हैं। पहलेमें 'श्रीकृष्ण' मंत्रका १०८ जप और उपवास होता है। सुकृत द्वादशीमें दशमीको मध्याह्न भोजन, एकादशीको उपवास, द्वादशीको एकभुक्त तथा त्रयोदशीको अयाचित भोजनका विधान है (व्रतपरिचय २४३)।

गोव्याधि–पु० [सं०] एक गोत्र प्रवर्त्तक ऋषिका नाम (हिं० श० सा०)।

गोव्रत–पु० [सं०] गोहत्याके प्रायश्चित्तके रूपमें किया गया व्रत जिसमें गोदुग्ध पीकर किसी गायके पीछे-पीछे घूमना पड़ता है (प्रायश्चित्तप्रदीप कृष्णमित्रकृत)।

गोवृषांक–पु० [सं०] शिवजीका नाम (वृषभध्वज) (वायु० ५४.४५; १०१.२३७-२४६)।

गोशृङ्ग—पु० [सं०] (१) दक्षिणके एक पर्वतका नाम (रामायण तथा महाभा० सभा० ३१.५)। (२) एक ऋपिका नाम (हि० श० सा०)।

गोष्ठ—पु० [सं०] एक श्राद्ध विशेप जिसे कई मनुष्य मिलकर करते हैं (मनुस्मृति तथा श्राद्धचन्द्रिका—भारद्वाज दिवाकर भट्टकृत)।

गोष्पद—पु० [सं०] प्रभासक्षेत्रके अंतर्गत एक तीर्थ (स्कंद० वैष्णव० वदरिका० माहा०)।—दे० सोमतीर्थ तथा प्रभास।

गोसव— पु० [सं०] गोमेध (गोपूजा) यज्ञ जिसे श्रीकृष्णके कहनेपर नंदने किया था (भाग० ३.२.३२; १२.४०)।

गोसूक्त—पु० [सं०] अथर्ववेदके अंतर्गत एक सूक्त जिसका पाठ गोदानके समय किया जाता है।

गौ—पु० [स्त्री०](१) शुक्रकी पत्नी जो पितरोंकी मानस-पुत्री तथा चार पुत्रोंकी माता है (ब्रह्मां० ३.१.७७; मत्स्य० १५.१५; वायु० ७३.३६)। (२) पृथ्वीका एक नाम जिसे सर्वप्रथम पृथुने दुहा था (मत्स्य० १०.२-२८)। (३) कृत्वीका एक नाम जो शुकको पुत्री हैं (मत्स्य० १५.१०)।

गौड़—पु० [सं०] (१) वर्तमान गोंडाके आसपासका प्रदेश (कूर्म्म तथा लिंगपुराण)। (२) ब्राह्मणोंकी एक कोटि जिसमें सारस्वत, कान्यकुब्ज, उत्कल, मैथिल और गौड़ सम्मिलित हैं (स्कंद० का सह्याद्रिखंड)। जिन-जिन स्थानोंके ये ब्राह्मण पुराणानुसार पंचगौड़ लिखे गये हैं वे स्थान (१) से भिन्न हैं। (३) एक देश जिसमें प्रसिद्ध नगरी श्रावस्ती है (मत्स्य० १२.३०)।

गौड़पाद—पु० [सं०] श्री शंकराचार्यके गुरु गोविन्दजीके गुरुका नाम। इन्होंने माण्डूक्योपनिपद्‌पर दर्शन सम्बन्धी पद्यात्मक रचना (गौड़पादकारिका) लिखी (गौड़पादाचार्य आगमशास्त्र)।

गौडेश्वर—पु० [सं०] कृष्णचैतन्य स्वामी जिन्हें गौरांग महाप्रभु भी कहते हैं।

गौतम—पु० [सं०] (१) गोतम ऋपिके पुत्र शतानन्द ऋपिका नाम। रामायण, महाभारत और पुराणानुसार एक प्रसिद्ध ऋपिका नाम। इनके पिताने अपनी पत्नी अहल्याको इन्द्रके साथ अनुचित सम्बन्ध करनेके कारण शाप देकर पत्थर वना दिया था। इसका उद्धार श्री रामचन्द्रने जनकपुर जाते समय विश्वामित्रजीके आदेशानुसार किया था (भाग० ९.२१.३४; ब्रह्मां० २.२७.२३)। (२) एक ऋपि जो न्यायशास्त्रके आचार्य और प्रणेता थे (न्यायदर्शन=गोतम महामुनि प्रणीत)। (३) कृपाचार्यका नाम जो द्रोणाचार्यके साले थे (भाग० १०.४९.२; ७४.७; ८४.३; दे०—कृपाचार्य और कृप)। (४) नासिकके पासका एक पर्वत जहाँसे गोदावरीका उद्गम हुआ है (भाग० ५.१९.१८; ब्रह्मां० १.१२.१५; २.१६.३४,४५; वायु० ४५.१०४, ११२; विष्णु० २.३.१२)। (५) स्मृतिके रचयिता एक ऋपि (गौतमधर्मसूत्र—हरदत्तप्रणीत वृत्तिसहित)। (६) एक ऋषि, जो शरशय्यापर पड़े भीष्मसे मिलने आये थे तथा प्रायोपवेश करते परीक्षित्‌से भी भेंट की थी (भाग० १.९.७; १०.९; १८.१०)। (७) वैवस्वत युगके एक ऋषि जो अंवरीपके अश्वमेध यज्ञमें थे (भाग० ८.१३.५; ९.४.२२; मत्स्य० ९.२७)। (८) तपस (माघमास) (वायु०और ब्रह्मां०के अनुसार शरद्‌ऋतुमें) में अन्य गणोंके साथ सूर्यरथपर अधिकृत एक ऋपि (भाग० १२.११.३९; ब्रह्मां० २.२३.१२; वायु० ५२.१२; ६१.४५)। (९) उतथ्यके पुत्र जिन्हें शरद्वान् भी कहते हैं, ये कृतके शिष्य थे (ब्रह्मां० २.३५.५२; ३८.२८)। (१०) वीसवें द्वापरके वेदव्यास (ब्रह्मां० २.३५.१२१; विष्णु० १.९.२१; ३.१.३२; ३.१६)। (११) परशुरामके यज्ञमें ये उद्गाताके रूपमें वृत हो उपस्थित थे (ब्रह्मां० ३.३६.५; ४७.४८)। निमि द्वारा वसाये हुए जयंत नगरके निकट इनका आश्रम था (ब्रह्मां० ३.६४.२; वायु० ५९.२)। (१२) चौदहवें द्वापरके विष्णुके अवतार, जो अंगिरस परिवारके थे तथा जिनके चार पुत्र थे, का नाम (वायु० २३.१५२)। (१३) उशिजका पुत्र जो दीर्घतमाका भाई था (मत्स्य० ४८.५३; १२६.१३; १३३.६७)। (१४) ब्रह्माके एक मानसपुत्र (मत्स्य० १७१.२७; १९२.११)। (१५) अङ्गिरा और सुरूपा (वायु० स्वरति) के दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्र जो आंगिरस देव और गोत्रकार थे (मत्स्य० १९६.४५; वायु० ६४.२६; ६५.९७, १००)। (१६) ये अन्य गणोंके साथ आश्विन मासमें सूर्यके रथपर रहते हैं (विष्णु० २.१०.११)। (१७) निमिके यज्ञके एक होता (विष्णु० ४.५.६)। (१८) कक्षीवान्‌के पुत्रोंका सामूहिक नाम (मत्स्य० ४८.८८)।

गौतमी—स्त्री० [सं०] (१) गोतम ऋपिकी पत्नी अहल्या जो पतिके शापसे पत्थर वन गयी थी—दे० अहल्या। (२) सत्यधृतिकी पुत्री, जो कुशपर पड़ी मिली थी (वायु० ९९.२०४)—कृपी। कृपाचार्यकी वहिन, द्रोणाचार्यकी पत्नी तथा अश्वत्थामाकी माता। (३) गौतम पर्वतसे निकली गोदावरी नदी (भाग० ५.१९.१८; ब्रह्मां० १.१२.१५; २.१६, ३४-४५; वायु० ४५.१०४–११२; विष्णु० २.३.१२)। (४) गौतम ऋपिकी रची स्मृति।

गौतमेश्वर—पु० [सं०] नर्मदाक्षेत्र स्थित पितरोंका एक प्रिय तीर्थस्थान जहाँ स्नान करनेवाला सुवर्ण विमानसे ब्रह्मलोक जाता है (मत्स्य० २२.६८; १९३.६२)।

गौर—पु० [सं०] (१) विकुण्ठ गणके १४ देवताओंमेंसे एक (ब्रह्मां० २.३६.५७)। (२) शुक और पीवरीके पाँच पुत्रोंमेंसे एक (ब्रह्मां० ३.८.९३; १०.८१; मत्स्य० १५.१०; वायु० ७०.८५)। (३) कैलाशके उत्तरमें स्थित एक सुवर्ण पर्वत जहाँ हरताल वृक्ष हैं। इसीके चरणोंमें स्थित विंदुसर झील है जहाँ भगीरथने तप किया था। इस स्थानपर इंद्रने भी कई यज्ञ किये थे (ब्रह्मां० २.१८.२४-८; मत्स्य० १२१.२४; वायु० ४७.२३-५)।

गौरवीति—पु० [सं०] एक ऋषिका नाम (मत्स्य० १९६.३२)।

गौरांग—पु० [सं०] दे० गौडेश्वर।

गौरा—स्त्री० [हि०] पार्वतीका एक नाम।

गौरि—पु० [सं०] आंगिरस ऋषिका नाम।

गौरिक—पु० [सं०] युवनाश्वकी पत्नी, गौरीका एक पुत्र; चक्रवर्ती राजा मान्धाता (वायु० ८८.६६)।

गौरी—पु० [स्त्री०] (१) पार्वतीका एक नाम (भाग० १०.५३.२५; (ब्रह्मां० २.२५.१८; वायु० ४३.३८; १०६.५८; विष्णु० ५.३२.१२)। (२) भारतके पश्चिम उत्तर सीमापर-

की एक बहुत प्राचीन नदी जिसका उल्लेख वेदोंमें तथा महाभारतमें मिलता है। (३) एक शक्तिदेवीका नाम (ब्रह्मां० ४.४४.५८)। (४) अंतिनारकी पुत्री जो युवनाश्वकी पत्नी थी। पतिके शापसे यह बाहुदा नदी हो गयी थी। यह गौरिक चक्रवर्ती मान्धाताकी माता तथा अमूर्तरया और त्रिवनकी बहिन थी (ब्रह्मां० ३.६३.६७; मत्स्य० ४९.८; वायु० ८८.६५-६)। (५) वैराजकी पत्नी (वायु० २८.१२) तथा सुधामकी माता (ब्रह्मां० २.११.१४)। (६) रंतिनार और सरस्वतीकी पुत्री तथा मान्धाताकी माता (वायु० ९९.१३०)। (७) क्रौंचद्वीपकी सात प्रधान नदियोंमें मुख्य एक नदी (ब्रह्मां० २.१९.७५; मत्स्य० १२२.८८; वायु० ४९.६९; विष्णु० २.४.५५)।

गौरीकल्प–पु० [सं०] २८वें कल्पका नाम (मत्स्य० २९०.१०)।

गौरीकुंड–पु० [सं०] बदरीनाथ जाते समय यह कुंड नारायण कोटिके पश्चात् मिलता है जो केदारनाथसे सात मीलपर है। यह नदीके तटपर स्थित है जिसमें गर्म जलकी धाराएँ गिरती हैं। कहते हैं इसमें शिवपत्नी गौरीने स्नान किया था।

गौरीतीर्थ–पु० [सं०] यह पितरोंके श्राद्धके लिए प्रशस्त पुण्यतीर्थ है (मत्स्य० २२.३१)।

गौरीतृतीयाव्रत–स्त्री० [सं०] यह चैत्र शुक्ला ३ को होता है जिसे सौभाग्यवती स्त्रियाँ करती हैं। इसमें केवल एक बार दूध पीया जाता है जिससे पति, पुत्रादिका अखंड सुख मिलता है (व्रतोत्सवसंग्रह)।

गौरीलोक–पु० [सं०] पार्वतीको प्रियलोक जो शिवलोककी बायीं ओर है (ब्रह्मां० ३.३२.३; मत्स्य० ६२.२८; १०१.१६)।

गौरीव्रत–पु० [सं०] (१) माघ शु० ४को उमाका पूजन कर गुड़, अदरख, लवण, पालक और खीरका नैवेद्य दे, ब्राह्मण-भोजन कराये (ब्रह्मपुराण)। (२) यह चैत्र कृष्ण प्रतिपदासे चैत्र शु० २ तक किया जाता है जिसको कुमारी और विवाहिता दोनों करती हैं। इसके लिए होलीका भस और काली मिट्टीके मिश्रणसे गौरीकी मूर्त्ति बनाकर स्त्रियाँ पूजती हैं। यह अहिवातकी रक्षा और पतिप्रेमदायक कहा गया है (व्रतविज्ञान)।

गौरीशंकर–पु० [सं०] महादेवजीका एक नाम जिसमें गौरी और शंकर दोनों हैं।

गौरीश–पु० [सं०] पचास पीठ स्थानोंमेंसे एक पीठस्थान जो ललिता देवीको प्रिय है (ब्रह्मां० ४.४.९८)।

गौरीशिखर–पु० [सं०] पितरोंके श्राद्धके लिए अति प्रशस्त एक पुण्य तीर्थका नाम (मत्स्य० २२.७६)।

ग्रसन–पु० [सं०] तारककी सेनाका एक सेनापति जो यमसे लड़ा था। विष्णुके चक्रसे इसका मस्तक कटा था (मत्स्य० १४८.३९; १५०.१-४३; १५१.२६-३६)।

ग्रह–पु० [सं०] (१) सूर्य, चन्द्र, भौम (मंगल), बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु और केतु ये ही नौ ग्रह माने गये हैं जिनकी विधिवत् पूजा शुभ अवसरोंपर की जाती है। प्रत्येक ग्रहके तीन स्थान होते हैं—दक्षिण, उत्तर और मध्यम (वायु० ३.१२; ७.१५; ३०.१४६; ३१.३५; ५१.८; ५३.२९, १०९)। (२) दक्षपुत्र रोहित प्रजापतिके बारह पारदेव नामके पुत्रोंमेंसे एक पारदेव (ब्रह्मां० ४.१.५०)।

ग्रहण–पु० [सं०] पुराणानुसार राहु और केतु चन्द्र तथा सूर्यको ग्रसते हैं, यही ग्रहणका मुख्य कारण है—दे० राहु और केतु। इसीलिए भारतवर्षमें ग्रहणके समय सूर्य अथवा चन्द्रमाका यह क्लेश निवारणार्थ दान-पुण्य करते हैं। ग्रहण लगनेपर सूतक मानते हैं, अतः स्नान करना आवश्यक होता है। सूर्यग्रहण अमावस्याके दिन और चन्द्रग्रहण पूर्णिमाकी रातको लगता है। एक वर्षमें कमसे कम दो बार और अधिकसे अधिक सात बार ग्रहण लगते हैं। जिसमें सूर्य या चन्द्रका पूरा मंडल आवृत हो जाता है उसे 'सर्वग्रास' या 'खग्रास' कहते हैं। ग्रहणके कुछ पहर पूर्वसे मोक्षतक भोजन करनेका निषेध है।

ग्रहणका भौगोलिक कारण तो कुछ और ही है और भूगोल-वेत्ताओंके अनुसार ऊपर लिखे अनुसार सूतक आदि मनानेकी कोई आवश्यकता नहीं होती, पर हिन्दू धर्मशास्त्रियोंके विचार कुछ और ही हैं (ग्रहणफलदर्पण सीताराम झा कृत)।

ग्रहबलि–स्त्री० [सं०] ग्रहशांति। इसके तीन प्रकार हैं—अयुतहोम, लक्षहोम और कोटिहोम। इन धार्मिक कृत्योंसे धन, आयु तथा समृद्धिकी वृद्धि होती है तथा पापोंका क्षय होता है। इसे ग्रह-यज्ञ भी कहते हैं (मत्स्य० १७.५६; २४.४६; ९३.२ से अन्ततक; ९४.१-२; २३९.१,४-५)।

ग्रहराज–पु० [सं०] सूर्यका एक नाम (वायु० ५३.२९)।

ग्रहहोम–पु० [सं०] नवग्रहके प्रीत्यर्थ हवन करना :—

(१) सूर्य	स्थान केन्द्रमें	अधिपति शिव,	रंग लाल	नैवेद्य गुड़-चावल
(२) चन्द्रमा	,, अग्निकोण	,, पार्वती	,, श्वेत	,, घी, खीर
(३) मंगल	,, दक्षिण	,, स्कंद	,, लाल	,, संयाव।
(४) बुध	,, ईशान	,, हरि	,, पीला	,, चावल, दूध।
(५) बृहस्पति	,, उत्तर	,, ब्रह्मा	,, पीला	,, चावल, दही।
(६) शुक्र	,, पूर्व	,, इन्द्र	,, श्वेत	,, चावल, दही।
(७) शनि	,, पश्चिम	,, यम	,, काला	,, चावल, दूध, चीनी।
(८) राहु	,, नैऋत्य	,, काल	,, काला	,, तिल-मिश्रित चावल, बकरेका मांस।
(९) केतु	,, वायुकोण	,, चित्रगुप्त	,, धूम्रवर्ण	,, रंगे चावल।

ग्रहेषु–पु० [सं०] तीसरे सावर्ण मनुके नौ पुत्रोंमेंसे एक

ग्रामक–पु० [सं०] एक राज्य जहाँ पुरञ्जन अपने साथी दुर्मदके साथ अपने नगरके आसुरी फाटकसे गया था (भाग० ४.२५.५२)।

ग्रामणी–पु० [सं०] (१) विघ्नेश्वरके ५१ नामोंमेंसे एक नाम (ब्रह्मां० ४.१.८१)। या ५१ गणेशोंमेंसे एक (ब्रह्मां०

४.४४.६९)। (२) ब्रह्मा तारकामयमें (मत्स्य० १७१.६; १७४.३; २७४.४१)। (३) छहों ऋतुओंमें सूर्यकी सेवामें रहनेवाले स्वर्गीय देव (वायु० ५२.१)। (४) चैत्र और मधु मासमें सूर्यके रथपर रहनेवाला (विष्णु० २.१०.३)।

ग्रामणीसव–पु० [सं०] एक दिनमें होनेवाला एक याग।

ग्रामदेवता–पु० [सं०] गाँवका रक्षक देवता जिसकी पूजा शुभ अवसरोंपर होती है।

ग्रामयाजक–पु० [सं०] विना भेदभावके सब जातिका पुरोहित होनेवाला ब्राह्मण। ऐसे ब्राह्मणको दान देना निषेध है, क्योंकि फल नहीं होता (महाभारत)।

ग्रावस्तुत–पु० [सं०] नारायणके चरणोंसे उत्पन्न यज्ञके १६ ऋत्विकोंमेंसे एक (मत्स्य० १६७.१०)।

ग्रैष्मिक–पु० [सं०] मित्र और वरुण, अत्रि और वशिष्ठ, तक्षक और शुक्र, रंभा, और मेनका, हहा और हुहू, रथस्वन और सहजन्य पौरुषेय और चित्रस्वप्न ये सब सूर्यके साथ ग्रीष्म ऋतुमें रहते हैं (भाग० १२.११.३५-३६; वायु० ५२.६)।

घ

घटज–पु० [सं०] दे० अगस्त्य।

घटयोनि–पु० [सं०] दे० अगस्त्य।

घटवार–पु० [हि०] (१) घाटिया—जो घाटपर दान लेता है। (२) घाटका देवता जिसकी पूजा होती है।

घटसंभव–पु० [सं०] अगस्त्य ऋषिका एक नाम—दे० अगस्त्य।

घटास्थ–पु० [सं०] हिरण्यकशिपुकी सभाका एक असुर (मत्स्य० १६१.८१)।

घटूका–पु० [सं०] भीमसेनके एक पुत्रका नाम जिसे घटोत्कच कहते थे और जो हिडिम्बा राक्षसीके गर्भसे उत्पन्न हुआ था (महाभा० द्रोण०)।

घटोत्कच–पु० [सं०] हिडिम्बा राक्षसीके गर्भसे उत्पन्न भीमसेनका एक पुत्र। हिडिम्बा हिडिम्ब राक्षसकी बहिन थी। मुर दैत्यकी पुत्री कामकंटकटासे इसका विवाह हुआ था जिससे इसे वर्बरीक नामक पुत्र हुआ था (स्कंद० मा० कुमा० खंड)। यह महाभारत युद्धमें कर्ण द्वारा मारा गया था—दे० घटूका तथा हिडिम्बा (महाभा०-द्रोण०)। इन्द्रकी दी हुई 'शक्ति'से यह मारा गया था (भाग० ९.२२.३०-३१; मत्स्य० ५०.५४; वायु० ९९.२४७; विष्णु० ४.२०.४५)।

घटोत्कचांतक–पु० [सं०] हिडिम्बा राक्षसीके गर्भसे उत्पन्न भीमपुत्र घटोत्कचको इन्द्रकी दी हुई अमोघ शक्तिके प्रयोगसे मार देनेके कारण कर्णका एक नाम (महाभा० द्रोण०)।

घटोदर–पु० [सं०] (१) शिव-गणोंमेंसे एक (ब्रह्मां० ३.४१.२७)। (२) भण्डका एक सेनापति (ब्रह्मां० ४.२१.८८)। (३) हिरण्यकशिपुकी सभाका एक असुर (मत्स्य० १६१.८०)।

घटोदरी–स्त्री० [सं०] अन्धकासुर-युद्धमें अन्धक-रक्तपानके लिए शिवजी द्वारा सृष्ट अनेक मानसपुत्री मातृकाओंमेंसे एक मानसपुत्री मातृका (मत्स्य० १७९.१५)।

घटोद्भव–पु० [सं०] अगस्त्य ऋषिका एक नाम—दे० अगस्त्य।

घण्टाकर्ण–पु० [सं०] (१) शंकरके एक अनुचरका नाम जो मेधाके गर्भसे उत्पन्न मंगलका पुत्र था। शापसे यह उज्जयिनी नगरीमें उत्पन्न हुआ था और शिवके नाम बिना ही बड़े छन्दोंमें शिव स्तुति बनायी थी। प्रसन्न होकर शंकरने इसे शाप-मुक्त कर दिया था (शिवपुराण)। (२) हरिवंशमें भी इस नामके व्यक्तिका उल्लेख मिलता है। यह विष्णुद्वेषी था। यह श्रीकृष्णके साथ बदरिकाश्रम गया था और शिवके आदेशानुसार विष्णु-भक्त हो गया। इसका विष्णुसे साक्षात्कार भी हुआ था। श्रीकृष्णकी स्तुति कर इसने मोक्ष प्राप्त किया था। (३) एक गणेश्वर (मत्स्य० १८३.६५)।

घण्टाधारिणी–स्त्री० [सं०] एक शक्ति देवीका नाम (ब्रह्मां० ४.४४.८६)।

घण्टारव–स्त्री० [सं०] अन्धकासुरके रक्तपानार्थ शिवजी द्वारा सृष्ट अनेक मानसपुत्री मातृकाओंमेंसे एक मानसपुत्री मातृका (मत्स्य० १७९.२३)।

घण्टेश्वर–पु० [सं०] पितरोंके लिए पिण्डदानार्थ अति उपयुक्त एक पुण्य तीर्थ (मत्स्य० २२.७०)।

घननाद–पु० [सं०] मयकन्या तथा रावणकी पटरानी मंदोदरीके गर्भसे उत्पन्न लंकेश्वर रावणके पुत्रका नाम। इसे ही मेघनाद कहते थे। यह बड़ा वीर तथा पराक्रमी था। सुरराज इन्द्र भी इससे युद्धमें हार गये थे और इस विजयके कारण इनका नाम इंद्रजित् भी पड़ा था। लंकाके राम-रावण युद्धमें इसने श्रीरामको दो बार हराया था। अंतमें यह लक्ष्मणजीके हाथों मारा गया था। वासुकि नागकी पुत्री सुलोचनासे इसका विवाह हुआ था। सुलोचना पति-सेवाके लिए विख्यात है (रामायण)। दे०—मेघनाद।

घनपति–पु० [सं०] मेघके मालिक इन्द्रका एक नाम—दे० इन्द्र।

घनश्याम–पु० [सं०] भगवान् विष्णुका रंग उन्हें 'मेघवर्ण' और 'गगनसदृश' लिखा है, अतः विष्णु या कृष्णका एक नाम।

घरमात्मा–पु० [सं०] धृष्टका एक पुत्र (वायु० ९५.३९)।

घुमत्सेन–पु० [सं०] एक राजा जो देवग्राम स्थित सूर्य तालाबका जल पी कुष्ठ रोगसे मुक्त हुए थे—दे० देव।

घूर्णिका–स्त्री० [सं०] देवयानीकी एक अनुचरीका नाम (मत्स्य० २७.२४-७)।

घूर्णितानना–स्त्री० [सं०] एक शक्तिदेवीका नाम (ब्रह्मां० ४.४४.७३)।

घृणिन–पु० [सं०] पूर्व जन्ममें मरीचि और ऊर्णाका एक पुत्र। तदुपरांत देवकीका एक पुत्र जिसे कंसने मार डाला था। श्रीकृष्ण इसे सुतलसे ले आये थे और माता-पिताके देख लेनेके पश्चात् यह स्वर्ग चला गया (भाग० १०.८५.४७-५६)।

घृत–पु० [सं०] धर्मका एक पुत्र तथा दुर्दमका पिता (मत्स्य० ४८.८; विष्णु० ४.१७.४)।

घृतधेनु–पु० [सं०] विशोक द्वादशी व्रतमें दान देनेके निमित्त घीके ढेरमें गौकी कल्पना करके दान करे (मत्स्य० ८२.१८)।

घृतदान–पु० [सं०] पौष शु० १३ को भगवान्‌का पूजन कर ब्राह्मणको घी दान देनेसे सब कामनाएँ सिद्ध होती हैं (कृत्यतत्त्वार्णव)।

घृतप्रस्थ–पु० [सं०] प्रियव्रतका एक पुत्र तथा क्रौंचद्वीपका अधिपति था (भाग० ५.१.२५, ३३; २०.२०)।

घृतव्रतम्–पु० [सं०] इससे ब्रह्मलोक प्राप्त होता है (मत्स्य० १०१.६८)।

घृतस्थला–स्त्री० [सं०] एक अप्सराका नाम (वायु० ६९.४९)।

घृतस्मद्–पु० [सं०] सुहोत्रके पुत्र शौनकके दादाका नाम जो अग्निवंशियोंके आदि पुरुष कहे जाते हैं (हिं० श० सा०)।

घृताची–स्त्री० [सं०] (१) कुशनाभकी एक रानी (हिं० श० सा०)। (२) स्वर्गकी एक अप्सराका नाम जो तपस (माघ) मासमें अन्य गणोंके साथ सूर्य रथपर अधिष्ठित रहती है (भाग० ९.२०.५; १२.११.३९; विष्णु० १.९.१०३; ब्रह्मां० २.२३.१३; ३.७.१५; मत्स्य० ४९.४; वायु० ६९.४९; ७०.६८)। इसे देखनेसे महर्षि वेदव्यास कामासक्त हो गये थे जिससे शुकदेव उत्पन्न हुए थे। महर्षि च्यवनके पुत्र प्रमितिने घृताचीके गर्भसे रूरू नामक पुत्र उत्पन्न किया था। महोदय (कन्नौज) नरेश कुशनाभने इसके गर्भसे १०० कन्याएँ उत्पन्न की थीं। गंगाद्वारके पास भरद्वाज ऋषिका आश्रम था। आश्रमके निकट इसे स्नान करते देख भरद्वाज कामपीड़ित हो गये जिससे उनका वीर्यपात हो गया। मुनिने स्खलित वीर्यको द्रोणिमें (एक प्रकारका पात्र) रख दिया जिससे वीर द्रोणका जन्म हुआ। रुद्राश्वसे इसे दस पुत्र और दस पुत्रियाँ हुई थीं (हरिवंश)। विश्वकर्मासे भी इसके पुत्र हुए थे (ब्रह्मवैवर्त्त०)। आश्वयुज मासमें यह सूर्यके रथपर अधिष्ठित रहती है (विष्णु० २.१०.११)। शरतमें यह सूर्यके रथपर अन्य गणोंके साथ अधिष्ठित रहती है (ब्रह्मां० ४.३३.१९; वायु० ५२.१३)।

घृताच्युत–पु० [सं०] कुशद्वीपकी एक नदी (भाग० ५.२०.१५)।

घृतार्चि–पु० [सं०] सूर्यके साथ घूमनेवाला एक ऋषि (ब्रह्मां० २.२१.११५)।

घृतायु–पु० [सं०] पुरूरवा और उर्वशीका एक पुत्र (ब्रह्मां० ३.६६.२३)।

घृतेयु–पु० [सं०] रुद्राश्वके १० पुत्रोंमेंसे एकका नाम (वायु० ९९.१२४)।

घृतोद–पु० [सं०] कुशद्वीपके चारों ओरका समुद्र (भाग० ५.१.३३; २०.१३; ब्रह्मां० २.१९.६३-५; विष्णु० २.४.४५)।

घोर–पु० [सं०] पच्चीसवें कल्पका नाम (मत्स्य० २९०.९)।

घोरकोलाहल–पु० [सं०] वराह कल्पका १२वाँ अवतार जो अन्तिम था (वायु० ९७.७६)।

घोष–पु० [सं०] (१) पुलिंदका एक पुत्र तथा वज्रमित्रका पिता। (२) लम्बा (लंघा—विष्णु०) और धर्मका एक पुत्र।

घोषा–स्त्री० [सं०] कक्षीवान्‌की पुत्री जिसे कुष्ठ रोग हो गया था, अतः विवाह न हो सका और यह बुड्ढी हो गयी। वेदोंके अनुसार अश्विनीकुमारोंकी कृपासे यह वृद्धावस्थामें रोगमुक्त हुई तथा सुन्दर युवती बन गयी एवं इसका विवाह भी हो गया था।

ङ

ङ–पु० [सं०] भैरव।

च

चंचला–स्त्री० [सं०] ऋष्यवान् पर्वतकी एक नदीका नाम (मत्स्य० ११४.२६)।

चंचु–पु० [सं०] 'हारीत', हरितका एक पुत्र तथा विजय और सुदेव (वसुदेव—विष्णु०) का पिता (ब्रह्मां० ३.६३.११७; वायु० ८८.११९, १२०; विष्णु० ४.३.२५)।

चंचुल–पु० [सं०] विश्वामित्रके एक पुत्रका नाम—दे० हरिवंश।

चंड–पु० [सं० चण्ड] (१) पुराणानुसार कुबेरके आठ पुत्रोंमेंसे एक। यह शिवकी पूजाके लिए सूँघ-सूँघ कर फूल लाया था जिससे अप्रसन्न हो कुबेरने शाप दिया जिसके फलस्वरूप यह जन्मांतरमें मथुरापति कंसका भाई हुआ था और श्रीकृष्णके हाथों मारा गया था—भागवत। (२) एक दैत्य जिसका वध दुर्गाने किया था—दे० दुर्गासप्तशती, मार्कण्डेय०। (३) श्री रामचन्द्रजीकी सेनाका एक बन्दर—दे० रामायण। (४) खशाके पुत्र यक्षसे मिलनेवाले दो पिशाचोंमेंसे एकका नाम (वायु० ६९.११३)। (५) विष्णुका एक सभासद—विष्णु०। (६) शिवका एक मुख्य गण (ब्रह्मां० ३.४१.२८)। (७) कार्त्तिकेय। (८) गेयचक्रके छठे पर्वपरका एक भैरव जो ललिताकी सेनाके साथ गया था (ब्रह्मां० ४.१९.७८; १७.४)। (९) एक यमदूतका नाम। (१०) एक रुद्र (मत्स्य० १५३.१९)। (११) बाष्कलका एक पुत्र (ब्रह्मां० ३.५.३८; ४.२९.७५)। (१२) एक नागपति (वायु० ४१.७३)। (१३) सात प्रलय बादलोंमेंसे एक (मत्स्य० २.८)।

चंडकर–पु० [सं०] अति तीक्ष्ण किरणोंके कारण सूर्यका एक नाम।

चंडकाली–स्त्री० [सं०] कोलाटका वध करनेवाली कालीका नाम (ब्रह्मां० ४.२८.४२)।

चंडकौशिक–पु० [सं०] (१) एक मुनिका नाम (हिं० श० सा०)। (२) एक नाटक विशेष जिसमें हरिश्चन्द्र और विश्वामित्रकी कथा है (चण्डकौशिकम्—आर्य क्षेमेश्वर-विरचित)।

चंडघंट–पु० [सं०] एक गणेश्वरका नाम (मत्स्य० १८३.६४)।

चंडतुंडक–पु० [सं०] गरुड़के एक पुत्रका नाम (ब्रह्मां० २.१९.११-१२; ३.७.४४८-५१; मत्स्य० १२२.१५)।

चंडधर्म–पु० [सं०] भण्डका एक सेनापति (ब्रह्मां० ४.२१.८२)।

चंडनायिका–स्त्री० [सं०] भगवती दुर्गाका एक नाम जो चंडका वध कर डालनेके कारण पड़ा—दे० चंड (२)।

चंडबाहु–पु० [सं०] भण्डका एक सेनापति जो विपङ्गका सहायक था। यह कुलसुंदरिकासे मारा गया था(ब्रह्मां० ४.२१.७९; २५.२८,७९)।

चंडभार्गव–पु० [सं०] महाराज जनमेजयके सर्पयज्ञके यज्ञकर्त्ता एक ऋषि जो च्यवन वंशोत्पन्न थे (महाभा० आदि० ५३.४-५)।

चंडमना–पु० [सं०] चंद्रमाके रथके दस घोड़ोंमेंसे एक (ब्रह्मां० २.२३.५६)।

चंडमुंड–पु० [सं०] 'चण्ड' और 'मुण्ड'—दो राक्षसोंके नाम जो बड़े वीर थे, पर देवीके हाथों मारे गये थे (मार्कण्डेय०, दुर्गासप्तशती, २.३)।

चंडमुंडा–स्त्री० [सं०] चामुंडा देवी।

चंडमुंडी–स्त्री० [सं०] तांत्रिकोंकी एक देवी।

चंडरुद्रिका–स्त्री० [सं०] तंत्रानुसार अष्ट नायिकाओंके पूजनसे प्राप्त होनेवाली एक सिद्धि।

चंडवती–स्त्री० [सं०] (१) दुर्गाका एक नाम। (२) तंत्रानुसार अष्ट नायिकाओंमेंसे एकका नाम।

चंडवेग–पु० [सं०] गंधर्वोंका अधिपति जिसके ३६० अनुगामी थे जो पुरञ्जनके नगरमें घुस कर निवासियोंको दुःखी करते थे [३६०=पूरा वर्ष; गंधर्व=दिन, गंधर्वपत्नी=रात्रि] (भाग० ४.२७.१३-१६)।

चंडवेगा–स्त्री० [सं०] एक नदी जो पितरोंको अति प्रिय है, अतः इसे श्राद्धके समय नहीं भूलना चाहिये (मत्स्य० २२.२८)।

चंडश्री–पु० [सं०] शांतिकर्ण। विजयका पुत्र एक आंध्र-देशाधिपति जिसने दस वर्षोंतक राज्य किया था (मत्स्य० २७३.१५)।

चंडांशु–पु० [सं०] तेज किरणोंके कारण सूर्यका एक नाम।

चंडा–स्त्री० [सं०] शिवजी द्वारा सृष्ट एक मानसपुत्री मातृकाका नाम (मत्स्य० १७९.१६)।

चंडिकघंट–पु० [सं०] भगवान् शंकरका एक नाम।

चंडिकनवमी–स्त्री० [सं०] चैत्र कृष्ण तथा शुक्ल दोनों नवमियोंको किया जानेवाला एक व्रत। 'इस व्रतका सविधि अनुष्ठान करनेवाला मनुष्य हंस, कुंद और चंद्रमाके समान गौरवर्ण एवं ध्रुवके समान तेजस्वी, दिव्यस्वरूप धारण कर उत्तम विमानपर आरूढ़ हो देवलोकमें आदर पाता है (निर्णयामृते भविष्योत्तरे)।

चंडिका–स्त्री० [सं०] (१) योगमायाका एक नाम (भाग० १०.२.१२) जिनका सिद्धस्थान चंडिकागृह है (भाग० ५.९.१४)। (२) एक मातृका (ब्रह्मां० ४.७.७२; १४.७०)। (३) गायत्री देवी, दुर्गाका एक नाम। इनका एक स्थान मकरंदकमें है। यह उमाका पर्यायवाची है (मत्स्य० १३.४३; १५८.१६)। (४) पार्वतीकी एक अनुचरीका नाम (ब्रह्मां० ४.४०.२५)।

चंडी–स्त्री० [सं०] शुंभ-निशुंभके वधके लिए देवताओंने अपनी शक्तिसे एक कन्याकी सृष्टि की जो दुर्गाके रूपमें अवतीर्ण हुई। दुर्गाका वह रूप जो महिषासुरके मारनेके लिए देवीने धारण किया था। मार्कण्डेयपुराणमें यह कथा विस्तारसे दी हुई है जिसके पाठका विशेषतया नवरात्रमें बड़ा माहात्म्य है। इनके गण भूत, वेताल, पिशाचादि हैं। मार्कण्डेयपुराणांतर्गत चंडीपाठमें जिसे देवीमाहात्म्य भी कहते हैं, इन्हींके साथ महिषासुरयुद्धका वर्णन है जिसमें ७०० श्लोक हैं। पोली और बर्नोफने इसका अनुवाद किया है।

चंडीश–पु० [सं०] (१) रुद्रका एक सेवक गण। दक्षके यज्ञ-ध्वंसके समय इसने पूषणपर आक्रमण किया था (भाग० ४.५.१७)। (२) एक भौतिक, एक वरमूर्ति (ब्रह्मां० ४.४४.५०)।

चंडेश्वर–पु० [सं०] रक्त-रूपधारी शिवका एक विशेष रूप।

चंडोदरी–पु० [सं०] एक राक्षसीका नाम जिसे रावणने जानकीको समझानेके लिए नियुक्त किया था।

चंदनगण–पु० [सं०] तैंतीस देवताओंका समूह जो कृष्णपक्षमें चंद्रमाकी कलाओंका पान करते हैं (ब्रह्मां० २.२८.२६)।

चंदनयात्रा–स्त्री [सं०] वैशाखके शुक्लपक्षकी तृतीया। यह जगन्नाथजीकी रथयात्रासे संबद्ध पुरीमें मनाया जानेवाला एक उत्सव है (स्कंद० वै० खं० उत्क० खं०)।

चंदना–स्त्री० [सं०] भारतवर्षकी एक नदी, एक महानदी (वायु० ४५.९७; १०८.७९)।

चंदनी–स्त्री० [सं०] एक नदीका नाम।

चंदनोदकदुंदुभि–पु० [सं०] (१) अभिजित्के पिता तथा आहुक और आहुकिके दादाका नाम (वायु० ९६.११८-१२०; ब्रह्मां० ३.७१.११९-१२२)। (२) रेवतका पुत्र तथा तुम्बुरुका मित्र (वायु० ९६.११७)।

चंदा–पु० [हिं०] दे० चंद्रमा।

चंद्र–पु० [सं०] (१) चंद्रदेव जिन्होंने समुद्रमंथनके समय राहुकी चोरी (छिपकर अमृतपान करना) पकड़ कर विष्णुसे कहा (भाग० ८.९.२४-२६; १०.३१)। (२) विश्वसंधिका पुत्र तथा युवनाश्वका पिता (भाग० ९.६.२०)। (३) सत्यासे उत्पन्न श्रीकृष्णका एक पुत्र (भाग० १०.६१.१३)। (४) वलिका एक पुत्र (मत्स्य० ६.११)। (५) दनुका एक पुत्र (वायु० ६८.८)। (६) नरका पुत्र तथा केवलका पिता (विष्णु० ४.१.४१-२)। (७) हेमचंद्रका पुत्र तथा धूम्राक्षका पिता (विष्णु० ४.१.५१-२)। (८) चंद्रमा जो दो पक्षोंमें उस चक्करको पूरा कर लेता है जिसे सूर्य एक वर्षमें पूरा करता है। यह सब जीवधारियोंका प्राण है और दिनके ३० मुहूर्त्तको नक्षत्रावधिके प्रत्येक नक्षत्रमें रहता है (भाग० २.१०.३०; ५.२२.८-१०)। वनस्पति, यज्ञ, व्रत

तथा तपका अधिपति है। इसमेंका धब्बा शरके ऐसा दीखता है (वायु० ४७.७७)। वैवस्वत मनुमें इसे वसु कहते थे (वायु० ५३.५५-६२, ८०)। इसकी पन्द्रह कलाएँ हैं न कि १६ (वायु० ५६.३०-३१)। (९) प्लक्षद्वीपके सात पहाड़ोंमेंसे एक जो समुद्रतक चला गया है। यहाँ अश्विनीकुमार जड़ी-बूटी लाने आते हैं (ब्रह्मां० २.१८.७६; १९.८; वायु० ४९.७; विष्णु० २.४.७)।

चंद्रकला–स्त्री०[सं०] दे० कला।

चंद्रकांत–पु० [सं०] (१) प्राचीन ग्रन्थोंके अनुसार एक मणि जिसके विषयमें यह प्रसिद्धि है कि चंद्रमाके सामने रखनेसे पसीजता है। (२) रामायणानुसार लक्ष्मणजीके पुत्र चन्द्रकेतुकी राजधानीका नाम (ब्रह्मां० ३.६३.१८८; वायु० ८८.१८७-८; विष्णु० ४.४.१०४)। (३) एक कुलपर्वत जो उत्तर कुरुमें है (वायु० ४५.२५)। यह इन्द्रके डरसे समुद्रमें जा छिपा था (मत्स्य० १२१.७३)।

चंद्रकांता–स्त्री० [सं०] (१) चंद्रमाकी स्त्री। (२) एक शक्ति देवी (ब्रह्मां० ४.४४.७५)। (३) लक्ष्मणके पुत्र चंद्रकेतुकी राजधानी—दे० चंद्रकांत (२)। (४) भद्र देशका एक जनपद (वायु० ४३.१९)।

चंद्रकुमार–पु० [सं०] चंद्रमाका पुत्र बुध जो देवगुरु बृहस्पतिकी पत्नीके गर्भसे उत्पन्न हुआ था—दे० बुध।

चंद्रकूट–पु० [सं०] कामरूप देशका एक पर्वत (कालिका-पुराण)।

चंद्रकूप–पु० [सं०] काशीमें स्थित एक कुआँ जो एक तीर्थस्थान माना जाता है (काशीखण्ड)।

चंद्रकेतु–पु० [सं०] (१) एक गंधर्वका नाम (वायु० ६९. २६)। (२) सुमित्राके गर्भसे उत्पन्नलक्ष्मण (दशरथ-पुत्र)के पुत्रका नाम। भरतके कहनेसे श्रीरामने इन्हें उत्तरका चंद्रकांत प्रदेश दिया जिसकी राजधानी चंद्रकांता या चंदचक्र (चंद्रवक्त्र=वायु०) थी (ब्रह्मां० ३.६३.१८८; वायु० ८८. १८७-८; विष्णु० ४.४.१०४)।

चंद्रगिरि–पु० [सं०] तारापीड़के एक पुत्रका नाम (मत्स्य० १२.५५)।

चंद्रगुप्त–पु० [सं०] (१) हैहयका एक अति अनीतिज्ञ तथा अधार्मिक मंत्री जिसने जमदग्निकी गौ ले लेनेकी राय दी थी। राजाने इसे ऋषिके पास भेजा और जब यह बलपूर्वक गौ छीन कर लाने लगा तब जमदग्निने अपनेको भी गौसे बाँध दिया। ऋषिको मार पड़ी जिससे वह मर गये। गौने बंधन तोड़ दिया और उड़कर स्वर्गको चली गयी (ब्रह्मां० ३.२८.३१-७; २९.८)। (२) एक सेनापति जो विषंगके सहायतार्थ नियुक्त था। इसे चित्राने मारा था (ब्रह्मां० ४.२४.२९)।

चंद्रचक्रा–स्त्री० [सं०] लक्ष्मणके पुत्र चंद्रकेतुकी राजधानी (ब्रह्मां० ३.६३.१८९)।

चंद्रचित्र–पु० [सं०] एक देश विशेषका नाम (वाल्मीकि रामायण)।

चंद्रचूड़–पु० [सं०] समुद्रमंथनसे निकले चंद्रमाको मस्तकपर धारण करनेके कारण भगवान् शंकरका एक नाम—दे० शिव।

चंद्रज–पु० [सं०] चंद्रमाके पुत्र बुधका एक नाम—दे० चंद्रकुमार।

चंद्रतीर्थ–पु० [सं०] कन्याकुमारीके निकटका एक तीर्थ जहाँके ऋषि लोग द्वारका गये थे। यह श्राद्धके लिए अति उपयुक्त है (भाग० १०.९०.२८(४); ब्रह्मां० ३.१३.२८, वायु० ७७.२८)। पूर्णिमाको यहाँ स्नान करनेसे चंद्रलोक प्राप्त होता है (मत्स्य० १९३.७५-६)।

चंद्रदारा–स्त्री० [सं०] पुराणानुसार २७ नक्षत्र जिन्हें दक्ष प्रजापतिकी पुत्री कहा गया है। ये सब चंद्रमाको ब्याही हैं।

चंद्रद्रुम–पु० [सं०] मनुष्याकृतिका एक किन्नर (वायु० ६९.३५)।

चंद्रद्वीप–पु० [सं०] उत्तर कुरुके दक्षिणका देश जहाँ देवता रहते हैं। इसका क्षेत्रफल १००० योजन है; बीचमें एक पर्वत है जिसमें अमूल्य पदार्थ पाये जाते हैं। यह चंद्रमाका देश है, इसकी जनता धर्मात्मा है (वायु० ४५. ५२.६०)।

चंद्रधनु–पु० [सं०] चंद्रमाके प्रकाशके कारण रातको दिखलायी पड़नेवाला इन्द्रधनुष (हिं० श० सा०)।

चंद्रधर–पु० [सं०] समुद्रमंथनसे निकले चौदह रत्नोंमेंसे एक—चंद्रमाको मस्तकपर धारण करनेके कारण शिवका एक नाम—दे० चंद्रचूड़।

चंद्रपाद–पु० [सं०] गयाका एक पवित्र स्थान (ब्रह्मां० ३. ४७.१८)।

चंद्रपुष्कर–पु० [सं०] यह ललिताको प्रिय है (ब्रह्मां० ४.४४.९५)।

चंद्रप्रभ–पु० [सं०] (१) मणिभद्रका एक पुत्र (वायु० ६९. १५५)। (२) मेरु पर्वतकी ढालपरका एक झील (ब्रह्मां० २.१८.६८; वायु० ४७.६५)। (३) तक्षशिलाके एक बड़े दानी राजाका नाम जिन्होंने अपना सिरतक ब्राह्मणको दानमें दे दिया था। (४) कैलाशके उत्तर-पश्चिमका एक पहाड़। यहाँ स्वच्छोद झील, स्वच्छोद नदी, चैत्ररथम् वन हैं जहाँ यक्षोंका प्रधान सेनापति मणिभद्र रहता है (ब्रह्मां० २.१८.५-८; मत्स्य० १२१.६; वायु० ४७.५)। (५) इलाके घोड़ेका नाम जो शरवनमें घोड़ी हो गया था (मत्स्य० १२.३)।

चंद्रबंधु–पु० [सं०] समुद्रमें निवास करनेवाला चंद्रमाका भाई शंख, जो चंद्रमाके साथ ही समुद्रसे निकला था।

चंद्रबाला–स्त्री० [सं०] चंद्रदेवकी एक स्त्रीका नाम।

चंद्रबाहु–पु० [सं०] एक असुरका नाम।

चंद्रबिंबशाला–स्त्री० [सं०] यह सूर्य बिंबशालासे लगा है। अत्रिकी आँखोंसे उत्पन्न चंद्रमाको यहीं चमक तथा प्रकाश मिला। यहाँका अधिपति सोमनाथ है जिसे २७ तारिका घेरे हैं जो सबकी सब 'शक्ति' हैं (ब्रह्मां० ४.३५.५१-५८)।

चंद्रभ–पु० [सं०] पुण्यजनिका पुत्र एक यक्ष (ब्रह्मां० ३. ७.१२४)।

चंद्रभा–स्त्री [सं०] दे० ह्लादिनी (मत्स्य० ११२.७२)।

चंद्रभाग–पु० [सं०] हिमाचलके अंतर्गत एक पर्वत जिसपर ब्रह्माने देवताओं तथा पितरोंके निमित्त चंद्रमाके भाग किये थे। यहींसे चंद्रभागा नदीका उद्गम कहा जाता है।

चंद्रभागा–स्त्री [सं०] (१) यहाँकी भूमि आर्यों और म्लेच्छों-

को मिल गयी (भाग० १२.१.३९; विष्णु० ४.२४.६९)। कालिकापुराणानुसार चंद्रभाग पर्वतसे शीला नामकी नदी उत्पन्न हुई जो चंद्रमाको स्पर्श करती हुई एक सरोवरमें गिरी। अमृत-केन्द्र चंद्रमाको स्पर्श करनेके कारण इस नदीका जल भी अमृत तुल्य हो गया। इसी जलसे चंद्रभागा नामकी कन्याका जन्म हुआ जिसका विवाह समुद्रसे हुआ था। यह हिमालयसे निकल पश्चिम समुद्रमें गिरती है (भाग० ५.१९.१८; ब्रह्मां० ५.१२.१५; २.१६.२५; ३.१३.२१; वायु० ४५.९५: ७७.११३; १०८.७८)। चंद्रमाने अपनी गदासे पहाड़में दरार कर दी जो चंद्रभागा नदीका उद्गम स्थान है। यह कालको प्रिय है। हव्यवाहन अग्निकी १६ पत्नियोंमेंसे एक (मत्स्य० १३.३९; ५१.१३; ११४.२१; १३३.२३; १९१.६४; वायु० २९.१३; विष्णु० २.३.१०)।

चंद्रभानु–पु० [सं०] सत्यभामा—सत्राजितकी पुत्री तथा श्रीकृष्णकी आठ पटरानियोंमेंसे एकके गर्भसे उत्पन्न श्रीकृष्णके दस पुत्रोंमेंसे एक (भाग० १०.६१.६०)।

चंद्रभाल–पु० [सं०] दे० चंद्रचूड़।

चंद्रभूषण–पु० [सं०] दे० चंद्रचूड़; पर्य्या०—चंद्रधर, चन्द्रमौलि चन्द्रललाट, चन्द्रललाम आदि।

चंद्रमा–पु० [सं०] (१) पुराणानुसार चंद्रमा समुद्रमंथनके समय निकले हुए अमृत, पारिजात, लक्ष्मी, ऐरावत आदि चौदह रत्नोंमेंसे एक है। यह देवताओंमें गिना जाता है। अमृतपानके समय देवताओंकी पंक्तिमें बैठे राहुने भी अमृत पिया था। चंद्रमाने यह विष्णुसे कह दिया जिससे क्रुद्ध होकर उन्होंने चक्रसे राहुका सिर काट लिया। चंद्रग्रहणपर अब भी राहु चंद्रमाको इसीके लिए ग्रसता है। चंद्रमाके धब्बेके विपयमें भी अनेक कथाएँ प्रसिद्ध हैं। एक मतसे दक्ष प्रजापतिके शापसे इन्हें राजयक्ष्मा हो गया जिसकी शांतिके लिए यह हिरन गोदमें लिए रहते हैं—दे० क्षयी। अन्य मतसे गुरुपत्नीके साथ रमण करनेसे इन्हें शापवश वह धब्बा लगा। दूसरे मतसे जब इन्द्रने अहल्याका सतीत्व भंग किया तब चंद्रमाने इन्द्रकी सहायता की थी। अहल्या पति गोतम ऋपिने क्रोधवश कमण्डलु और मृगछाला फेंक कर इन्हें मारा था और ये गोचर धब्बे इसीके हैं। पुराणानुसार इनके रथमें तीन पहिये हैं और दस सफेद घोड़े इसमें जोते जाते हैं।

काशी खंडके अनुसार ब्रह्माके मानसपुत्र अत्रिसे चंद्रमाकी उत्पत्ति हुई थी। महादेवकी कृपासे इन्हें चन्द्रलोक नामक राज्य मिला था। २७ नक्षत्र जो दक्षकी कन्याएँ थीं उनसे इनका व्याह हुआ। इनकी दूसरी पत्नी रोहिणी हैं जिसपर विशेप प्रेम रखनेके कारण ही दक्षने इन्हें शाप दिया था, पर बहुत विनय करनेके पश्चात् १५ दिनोंतक ह्रास तथा १५ दिनोंतक वृद्धि हो, ऐसा आशीर्वाद दक्षने दिया जिससे चंद्रमाकी कलाएँ घटती तथा धीरे-धीरे बढ़कर पूर्णिमाको पूर्ण होती रहती हैं—कालिकापुराण। देवगुरु बृहस्पतिकी स्त्री तारासे इन्हें एक पुत्र हुआ जिसका नाम बुध रखा गया जो नवग्रहोंमेंसे एक है। बुधसे ही चन्द्रवंश आरम्भ होता है। पर्य्या०—हिमांशु, इन्दु, कुमुदबान्धव, विधु, सुधांशु, निशापति, सोम, मृगांक, द्विजराज, शशधर, नक्षत्रराज, निशानाथ, श्वेतवाहन, तिथिप्रणी, पक्षधर, रोहिणीश, अत्रिनेत्रज, सिन्धुजन्मा, मृगलांच्छन, दाक्षायणीपति, लक्ष्मीसहज, सुधाकर, सुधाधर, शीतभानु, तुषारकिरण, अमृतदीधिति, हरिणांक, सिंधुनंदन, कुमुदेश, क्षीरोदनंदन, कलावान्, यामिनीपति, यक्षजन्मा, शीतमरीचि, खचमस, विकस, दक्षजापति, कलामृत, शराभृत, छरयामृत, क्षपाकर, अमृत, शशी, शशलांछन, निशाकर, त्रिनेत्रचूड़ामणि, परिज्ञा, निशारत्न, चित्राचीर, हरिणांक, जैवातृक आदि (दे० कला, सोम (२); ब्रह्मां० २.१०.९३)।

चंद्रमोलललाट–पु० [सं०] मस्तकपर चन्द्रमाके कारण शिवका एक नाम—दे० चन्द्रचूड़।

चंद्रमोलललाम–पु० [सं०] शिवका एक नाम—दे० चंद्रधर, चन्द्रशेखर (१) आदि।

चंद्रमौलि,–पु० [सं०] शंकरका एक नाम (ब्रह्मां० ३.४८.९)।

चंद्रवंश–पु० [सं०] मनुष्यकी आकृतिका एक किन्नर (वायु० ६९.३६)।

चंद्रवंशी-चंद्रवंशिन्–वि० [सं०] चन्द्रवंशमें उत्पन्न क्षत्रिय। काशीके राजा इन्द्रजितके पुरोहितकी पुत्री हेमवती बड़ी सुन्दरी थी। एक कुंडमें उसे स्नान करते देख चन्द्रमा उसपर आसक्त हो गये। हेमवतीसे एक पुत्र हुआ जिसे चन्द्रदेवके आदेशानुसार हेमवती खजुराहोके राजाको दे आयी जहाँ राजाने उसका नाम चन्द्रवर्मा रखा। पुत्र बड़ा प्रतापी हुआ और इसके वंशज चन्द्रवंशी कहलाये।

चंद्रलोक–पु० [सं०] रोहिणी चन्द्रशयन व्रत करनेवाले इस लोकको प्राप्त करते हैं (स्कंद० काशी खंड पूर्वार्ध तथा मत्स्य० ५७.२६; १९३.७६)।

चंद्रवक्त्रा–पु० [सं०] लक्ष्मणपुत्र चन्द्रकेतुकी राजधानी (वायु० ८८.१८८)।

चंद्रवती–स्त्री० [सं०] सोमकन्या मारीपामें प्रचेतासे उत्पन्न एक कन्या, जो प्राचेतम दक्षकी बहिन थी (मत्स्य० ४.५०)।

चंद्रवार–पु० [सं०] सोमवार, रविवारके बाद तथा मंगलवारके पहलेका दिन। यह दिन चंद्रमाका माना गया है। चन्द्रमा इसका अधिपति है।

चंद्रवसा–पु० [सं०] नामान्तर चन्द्रवशा, भारतवर्पकी एक नदी जो कुलाचल पर्वतसे निकलती है (भाग० ४.२८.३५; ५.१९.१८)।

चंद्रविज्ञ–पु० [सं०] विजयका पुत्र तथा सलोमधिका पिता (भाग० १२.१.२७)।

चंद्रव्रतम्–पु० [सं०] इस व्रतको करनेवाला चन्द्रलोक प्राप्त करता है (मत्स्य० १०१.७५)।

चंद्रशुक्र–पु० [सं०] जम्बुद्वीपका एक उपद्वीप (भाग० ५.१९.३०)।

चंद्रशेखर–पु० [सं०] (१) चन्द्रमारूपी शिरोभूषण पहिननेके कारण शिवका एक नाम (ब्रह्मां० ३.२४.६०, २५.२,४४: ३२.१८; ४.३०.७१; ३४.९१)। (२) अराकान देशका एक पर्वत। (३) पौराणिक ख्यातिका एक नगर।

चंद्रश्री–पु० [सं०] द्वियशका पुत्र तथा पुलोमाका पिता (विष्णु० ४.२४.४८-९)।

चंद्रषष्ठी–स्त्री० [सं०] यह भाद्र कृ० ६ को होता है जिसे विवाहिता या अविवाहिता ही करती हैं और चन्द्रोदयपर अर्घ्य देती हैं (भविष्यपुराण)।

चंद्रसरोवर–पु० [सं०] गोवर्धन पर्वतके निकटस्थ ब्रजका एक तीर्थस्थान।

चंद्रसेना–स्त्री० [सं०] शिवजी द्वारा अन्धकासुरस्कपानार्थ सृष्ट एक मानस-पुत्री मातृका (मत्स्य० १७९.२६)।

चंद्रहास–पु० [सं०] (१) सुमाली राक्षसकी पुत्री कैकसीके गर्भसे उत्पन्न विश्रवाके पुत्र तथा पुलस्त्यके पौत्र लंकाधिपति रावणकी तलवारका नाम। (२) दक्षिणके एक राजकुमारका नामं।

चंद्रा–स्त्री [सं०] (१) शाल्मलिद्वीपकी एक नदी (ब्रह्मां० २.१९.४६; वायु० ४९.४२; विष्णु० २.४.२८)। (२) वृषपर्वाकी एक पुत्री (मत्स्य० ६.२२)।

चंद्राङ्गद–पु० [सं०] निपधराज इन्द्रसेनके पुत्र, राजा नलके पौत्र तथा चित्रवर्माके जामाताका नाम। इनका विवाह चित्रवर्माकी पुत्री सीमन्तिनीसे हुआ था। यह यमुना नदीमें डूब गये थे, पर नाग कन्याओंकी कृपा तथा पाताल निवासी नागराज तक्षककी सहायतासे अपनी पत्नी तथा राज्य पा गये थे। इनकी पत्नी शिवभक्त थी जिसे याज्ञवल्क्य पत्नी मैत्रेयीने शिवकी आराधनाका उपदेश दिया था (स्कंद०, ब्राह्मखंड, ब्रह्मोत्तरखंड)।

चंद्रांशु–पु० [सं०] सदाचन्द्रके पश्चात्का राजा (ब्रह्मां० ३.७४.१८१)।

चंद्रांशुतापन–पु० [सं०] वलिका एक पुत्र (मत्स्य० ६.११)।

चंद्रापीड़–पु० [सं०] एक कश्मीरी राजाका नाम जो प्रतापादित्यका ज्येष्ठ पुत्र था और अपनी उदारता तथा धर्मनिष्ठाके लिए प्रसिद्ध था (राजतरंगिणी—कल्हण कृत)।

चंद्रार्क–पु० [सं०] एक राक्षसका नाम (वायु० ६९.१६६)।

चंद्रार्कभूकर–पु० [मं०] खशा तथा एक राक्षसका पुत्र (ब्रह्मां० ३.७.१३४)।

चंद्रावती–स्त्री० [सं०] केतुमालकी एक नदीका नाम (वायु० ४४.१९)।

चंद्रावर्ता–स्त्री० [सं०] चंद्रदेवके स्थान चंद्रद्वीपकी एक नदी (वायु० ४५.५६)।

चंद्रावली–स्त्री [सं०] चंद्रभानुकी पुत्री एक गोपी जिसका श्रीकृष्णपर अगाध प्रेम था (भागवत)।

चंद्रावलोक–पु० [सं०] सहस्राश्वके एक पुत्रका नाम (मत्स्य० १२.५४)।

चंद्राश्व–पु० [सं०] धुंधुमारके एक पुत्रका नाम (विष्णु० ४.२.४२)।

चंद्रिका–स्त्री० [सं०] (१) चंद्रमाकी एक कला (ब्रह्मां० ४.३५.३२)। (२) हरिश्चंद्रमें स्थापित एक मातृका (मत्स्य० १३.४०; १७९.२८)। (३) पितरोंको प्रिय एक नदीका नाम (मत्स्य० २२.६३)।

चंद्रिकोत्सव–पु० [सं०] शरद्कालकी पूर्णिमा। ऐसा कहा जाता है कि इस रात्रिको अमृतकी वर्षा होती है। ठाकुरजीको इस दिन शीतमें ही रखते तथा श्वेत वस्त्र और श्वेत ही नैवेद्य भोग लगाते हैं। श्रीकृष्णकी रासलीला भी इसी रात्रिमें हुई थी (दे० शरत्पूर्णिमा; विष्णु० पंचम अंश)।

चंप–पु० [सं०] (१) हरितका एक पुत्र जिसने चम्पापुर वसाया (भाग० ९.८.१)। (२) पृथुलाक्ष (पृथुलाश्व—वायु०) का पुत्र जिनके समयमें मालिनी नामक प्राचीन नगरीका ही नाम चम्पा पड़ा। इनका पूर्णभद्रकी कृपासे हर्यंग नामक पुत्र हुआ (मत्स्य० ४८.९७; वायु० ९९.१०५-७; विष्णु० ४.१८.२०-२१)।

चंपकवन–पु० [सं०] यह विकंक तथा मणिशैल पर्वतोंके वीच स्थित है। इस वनमें फल-फूलके यथेष्ट वृक्ष हैं और कश्यप प्रजापतिका आश्रम भी यहीं था (वायु० ३७.१६-२२)।

चंपा–पु० [सं०] एक देश जो चम्पाके वृक्षोंसे घिरा होनेके कारण चम्पामालिनी कहलाता था। यह अंग देशकी राजधानी था। विष्णुपुराणानुसार रोमपादका पुत्र चतुरंग, चतुरंगका पृथुलाक्ष तथा पृथुलाक्षका पुत्र चम्प हुआ जिसने चम्पापुरी वसायी थी। कुंतीके गर्भसे उत्पन्न सूर्य-पुत्र दानवीर कर्ण यहींका राजा था। भागलपुरके निकट इसके खंडावशेष अब भी वर्तमान हैं (विष्णु० चतुर्थ अंश)।

चंपापुरी–स्त्री० [सं०] (१) चंप द्वारा स्थापित एक सुंदर नगरी (भाग० ९.८.१; ब्रह्मां० ३.७४.१९७; विष्णु० ४.१८.२०)। प्राचीन मालिनीका नया नाम (मत्स्य० ४८.९७)। (२) एक नदी जो पितरोंको प्रिय है (मत्स्य० २२.४१)। (३) चम्पावतीका नाम (वायु० ९९.१०६)। एक जनपद (वायु० ९९.३८५)।

चंपावती–स्त्री० [मं०] (१) नागोंकी राजधानी (ब्रह्मां० ३.७४.१९४)। यह चम्पकी भी राजधानी थी (वायु० ९९.१०६, ३८२)। (२) केतुमाल देशकी एक नदी (वायु० ४४.२०)।

चंपाषष्ठी–स्त्री० [सं०] यदि भाद्रपद शु० ६ को भौमवार, विशाखा नक्षत्र और वैधृति योग हो तो चंपाषष्ठी होती है जिसमें सूर्यके १२ नामोंसे उनकी पूजा करे (हेमाद्रि, स्कंद०)।

च–पु० [सं०] चंद्रमा।

चकाराक्ष–पु० [सं०] (चकोराक्ष) भण्डका एक पुत्र तथा सेनापति (ब्रह्मां० ४.२१.८०; २६.४७)।

चकोर–पु० [सं०] इसे स्वातिकर्ण भी कहते थे। यह आंध्रका राजा था जो केवल छह महीनोंतक गद्दीपर रहा। यह सुनंदनका पुत्र तथा भवका पिता था (मत्स्य० २७३.११; भाग० १२.१.२६)।

चक्र–पु० [सं०] (१) सत्यभामाके गर्भसे उत्पन्न श्रीकृष्णका एक पुत्र (मत्स्य० ४७.१७)। (२) हरिका चक्रसुदर्शन—त्रैलोक्यमोहन (भाग० १.९.४; ६.८.२३; ७.१.४५; ९.५.१; ब्रह्मां० ३.७२.११; ४.४४.११६; वायु० ५१.३८; ५५.१२; ८४.८३)। यह सूर्यके एक भागसे विश्वकर्मा द्वारा प्रस्तुत किया गया था। राहुका सिर इसीसे काटा गया था (मत्स्य० ११.२९; ४५.१५-१६; १२९.३५; १४९.८; १५०.७३; १५१.८; १५२.२; १५३.१९८; १७७.९; १७८.१३; २१७.३२; २१५.१४; विष्णु० ३.२.११; ४.१५.१३; वायु० १७.२९)। (३) कुशद्वीपका एक पर्वत (भाग० ५.२०.१५)। (४) एक तीर्थ जहाँ वलराम गये थे (भाग० १०.

७८.१९)। (५) चक्रवत् पर्वत जो इन्द्रके डरसे समुद्रमें छिप गया था (ब्रह्मां० २.१८.७८; मत्स्य० १२१.७२)। (६) नक्षत्र तथा ग्रहोंका चक्र (वायु० ५०.९३; ५८.२३; विष्णु० ४.१३.८५, ९८)।

चक्रगिरि–पु० [सं०] अंगद्वीपके एक पर्वतका नाम (वायु० ४८.१७)।

चक्रतीर्थ–पु० [सं०] दक्षिणमें तुंगभद्राके किनारेपर स्थित एक तीर्थ। महाभारत तथा पुराणोंमें अनेक चक्रतीर्थोंका वर्णन है। काशी, कामरूप, नर्मदा, श्रीक्षेत्र, सेतुबंध रामेश्वर आदि प्रसिद्ध तीर्थोंमें एक-एक चक्रतीर्थका वर्णन है। रामेश्वरमें गालव नामके एक प्रसिद्ध महात्मा रहते थे जिन्हें बड़ी कठिन तपस्याके पश्चात् विष्णुका दर्शन हुआ था। पहले इसका नाम धर्मपुष्करिणी था—दे० धर्मपुष्करिणी। यहाँ विष्णुके चक्रने गालवकी एक राक्षससे रक्षा की थी, अतः यह नाम पड़ा (स्कन्द० ब्राह्म० सेतुमाहात्म्य)।

स्कंदपुराणानुसार प्रभास क्षेत्रके अंतर्गत चक्रतीर्थका बड़ा माहात्म्य है। एक बार बहुतसे असुरोंका वध करनेके कारण विष्णुका चक्र खूनसे लाल हो गया जिसे धोनेके लिए विष्णुने तीर्थोंका आह्वान किया। इसपर कई कोटि तीर्थ इस स्थानपर उपस्थित हुए और विष्णुकी आज्ञासे वहीं स्थित हो गये (स्कंद०, वैष्णव०, भूमिवाराहखंड)।

चक्रदक्–पु० [सं०] इन्द्र और बलिके देवासुर-संग्राममें यह लड़ा था (भाग० ८.१०.२१)।

चक्रधर–पु० [सं०] चक्र धारण करनेके कारण विष्णुका एक नाम जिससे श्रीकृष्णका भी बोध होता हैं (भाग० तथा विष्णु०)।

चक्रनदी–स्त्री० [सं०] गंडकी नदीका एक नाम जहाँ पुलह ऋषिका आश्रम था (भाग० ५.७.१०)।

चक्रनाथा–स्त्री० [सं०] ललिता देवीका एक नाम (ब्रह्मां० ४.१८.१५)।

चक्रपाणि–पु० [सं०] एकोद्दिष्टके नियमके प्रवर्त्तक तथा समुद्रमंथनके लिए नींदतक त्यागनेवाले और हाथमें चक्र धारण किये विष्णु भगवान्‌का एक नाम (मत्स्य० १८.१; २०.३८; २४९.१४)।

चक्रपूजा–स्त्री० [सं०] तांत्रिकोंकी एक पूजाविधि—शाक्तोंकी निशापूजाका विधान (चक्रपूजापद्धति)।

चक्रमीमांसा–स्त्री० [सं०] वैष्णवोंकी चक्रमुद्राधारणविधि।

चक्रमुद्रः–पु० [सं०] विष्णुके चार आयुधोंको अपने अंगपर छपवानेवाला वैष्णव। इसके दो प्रकार हैं—'तप्तमुद्रा'—यह द्वारकामें ही नहीं सर्वत्र वैष्णवोंमें प्रचलित है और 'शीतलमुद्रा' जिसमें चंदनादिसे शरीरपर छाप लेते हैं।

चक्ररथ–पु० [सं०] दे० चक्रराजरथेन्द्र (ब्रह्मां० ४.१९.२८)।

चक्रराजरथेन्द्र–पु० [सं०] इसके नौ पर्व कहे गये हैं। नवें पर्वमें दस सिद्धि देवियाँ हैं। इस पर्वके एक खंडमें आठवीं शक्ति स्थित है जिसके ऊपर १० मुद्रा देवी या प्रकट शक्तियाँ हैं। इसी प्रकार सबका विवरण है। ललिता चक्रराज हैं (ब्रह्मां० ४.१९ (पूरा), २५.५४-१०४; २६.४.३७; २८.१७; २९.३५.१४५; ३१.३; ३६.७)।

चक्रवर्तिनी–स्त्री० [सं०] ललिताका एक नाम (ब्रह्मां० ४.१८.१६)।

चक्रवर्ती–पु० [सं०] एक अंगिरस मन्त्रकृत् ऋपि (ब्रह्मां० २.३२.११०)।

चक्रवर्मा–पु० [सं०] बल (बलि—वायु०) का एक पुत्र जो पूर्व जन्ममें कर्ण था (वायु० ६८.३२)।

चक्रवाक–पु० [सं०] एक पक्षी जो दाम्पत्य प्रेमके लिए प्रसिद्ध है (ब्रह्मां० २.१५.७९; ३.७.४५८; ५०.४१; वायु० ५५.१९; ५४.३१)। कौशिकके सात पुत्र इसी रूपमें मानस तथा इरावतीमें रहते थे (मत्स्य० २०.१७; २१.९.२८; ११३.७६; ११६.११)।

चक्रवाक–पु० [सं०] पितरोंका एक प्रिय तीर्थस्थान (मत्स्य० २२.४२)।

चक्रवात–पु० [सं०] श्रीकृष्णके वध हेतु कंसका भेजा एक वात्यारूपधारी असुर तृणावर्त जिसका वध श्रीकृष्णके हाथों हुआ था (भाग० १०. ७.२३-२८; ४३.२५)।

चक्रवान्–पु० [सं०] एक पौराणिक पर्वतका नाम जिसे चौथे समुद्रके बीच स्थित बतलाया गया है। यहाँ विष्णुने हयग्रीव और पंचजन राक्षसका वध किया था। विष्णुको चक्र और शंख यहीं प्राप्त हुए थे।

चक्रवाल–पु० [सं०] पुराणानुसार एक पर्वत जो संसारको चारों ओरसे घेरे हुए है। इसे दिन-रातका विभाग करनेवाला माना गया है। इसका नामान्तर लोकालोक है। "लोकालोक—श्चक्रवाल :"—अमरकोश।

चक्रव्यूह–पु० [सं०] कुरुक्षेत्रके युद्धमें द्रोणाचार्यने इस व्यूहकी रचना की थी जिसमें अर्जुनसुत अभिमन्यु मारा गया था (महा० द्रोण०)।

चक्रहृदया–स्त्री० [सं०] शिवसृष्ट मानसमातृकाओंके उपद्रव शमनार्थ उत्पन्न कई देवियोंमेंसे एक देवी जो नृसिंहकी पीठसे उत्पन्न हुई थी और वागीशीकी अनुगामिनी थी (मत्स्य० १७९.६८)।

चक्रा–स्त्री० [सं०] भद्रा देशकी एक नदीका नाम (वायु० ४३.२५)।

चक्राक्ष–पु० [सं०] एक राक्षसका नाम (वायु० ६९.१६६)।

चक्राथ–पु० [सं०] एक कौरव योद्धाका नाम (महाभारत)।

चक्रिणी–स्त्री० [सं०] ललिता देवीका एक नाम (ब्रह्मां० ८.१८.१५; २६.४७; ३६.९०)।

चक्री–पु० [मं०] (१) अंगिरस-वंशका एक आर्षेय प्रवर (मत्स्य० १९६.२३)। (२) चक्रधारण करनेके कारण श्रीकृष्णका एक नाम (विष्णु० ४.१३.८५)।

चक्रेश्वरी–स्त्री० [सं०] ललिता देवीका एक नाम (ब्रह्मां० ४.१७.१९; १८.१५)।

चक्रोड–पु० [सं०] एक ऋपिका नाम (मत्स्य० २००.१७)।

चक्षु–पु० [सं०] (१) पुरुजानुका पुत्र तथा हर्यश्वके पिताका नाम। यह अजमीढ़ वंशोत्पन्न एक राजा था (विष्णु०)। (२) आधुनिक आक्सस नदी। वेदोक्त चक्षुनद यही है। विष्णुपुराणानुसार स्वर्गसे गिरनेपर गंगाजीकी चार-चार शाखाएँ हो गयी थीं और चक्षु इन्हींमेंसे एक है। यह मलयवतीसे नीचे आ केतुमाल पर्वतके बीचसे बहकर आयी है। यह चीनमरु, ताल, मसमूलिक, भद्र, तुपार, लाम्याक, बाह्लव, पारद और खश देशोंसे होकर बहती है (भाग० ५.१७.५-७; ब्रह्मां० २.१८.

४१, ४६; मत्स्य० १२१.४०; वायु० ४७.३९, ४४; विष्णु० २.२.३४, ३७; ८.११३)। (३) व्युष्ट और पुष्करिणीका एक पुत्र। आकूती (वीरिणी—मत्स्य०) इसकी पत्नी थी जिससे मनु उत्पन्न हुए (भाग० ४.१३.१५; ८.५.७; मत्स्य० ४.४०)। (४) अनुका एक पुत्र (भाग० ९.२३.१; विष्णु० ४.१८.१)। (५) एक तुपित (ब्रह्मां० ३.३.१९; वायु० ६६.१८)। (६) शिष्टका एक पुत्र (मत्स्य० ४.३९)। (७) एक मरुद्गण (मत्स्य० १७१.५२)। (८) हिमालयकी एक नदीका नाम (ब्रह्मां० २.१६.२७; १८.२२)।

चक्षुर्वर्द्धनिका–स्त्री० [सं०] शाकद्वीपकी एक नदी (महाभा०)।

चक्षुर्हा–पु० [सं०] एक सर्प जिसे देखते ही जीव-जन्तु चक्षुहीन हो जाते हैं (महाभा०)।

चक्षुष–पु० [सं०] (१) रिपु और बृहतीका एक पुत्र। इसकी पत्नी वारुणीसे प्रसिद्ध मनु उत्पन्न हुए थे (ब्रह्मां० २.३६.१०२)। (२) वलिकी अनुचरीके गर्भसे उत्पन्न दीर्घतमाका पुत्र (ब्रह्मां० ३.७४.७१; वायु० ९९.७०)। इसने अपने भाई कक्षीवान्‌के साथ ब्रह्मत्व प्राप्त किया था (वायु० ९९.९४)। (३) खनित्रका पुत्र तथा विंशके पिताका नाम (ब्रह्मां० ५.४.१,२५)।

चक्षुष्मती–स्त्री० [सं०] मार्तण्ड भैरवकी सहगामिनी (ब्रह्मां० ४.३५.४७; ३६.१५)।

चक्षुस–पु० [सं०] मध्य एशियाकी जेहूँ नदी जिसे आक्सस कहते हैं—दे० चक्षु (२)।

चटकामुख–पु० [सं०] एक अस्त्र विशेषका नाम (महाभा०)।

चतुरंग–पु० [सं०] रोमपाद (लोमपाद) दशरथ (चित्ररथ—विष्णु०) का पुत्र तथा पृथुलाक्ष (पृथुलाश्व—वायु०) का पिता। यह ऋष्यशृंगके आशीर्वाद तथा कृपासे उत्पन्न हुआ था (भाग० ९.२२.१०: मत्स्य० ४८.९५; वायु० ९९.१०४ ५; विष्णु० ४.१८.१८-१९)।

चतुरंगिणी–स्त्री० [सं०] युधिष्ठिरकी सेना (चतुरंगिणी) जो श्रीकृष्णको द्वारकातक पहुँचानेको भेजी गयी थी (भाग० १.१०.३२)। 'हस्त्यश्वरथपादातं सेनाङ्गं स्याच्चतुष्टयम्'—अमरकोश।

चतुरनीक–पु० [सं०] चतुरानन, ब्रह्माका एक नाम (हिं. श. सा.)।

चतुरश्र–पु० [सं०] ब्रह्मसंतान नामका केतु (हि० श० सा०)।

चतुरात्मा–पु० [सं०] विष्णु भगवान्‌का एक नाम (विष्णुपुराण)।

चतुरानन–पु० [सं०] चार मुख होनेके कारण ब्रह्माका एक नाम।

चतुर्गुस–पु० [सं०] भण्डका एक सेनापति (ब्रह्मां० ४.२१.८०)।

चतुर्दशमन्वंतर–पु० [सं०] वैमानिक देवतागण (वायु० ७.१७-१९)।

चतुर्दशमहारत्नेश–पु० [सं०] चक्रवर्ती होनेके कारण शशिबिंदुकी एक उपाधि (विष्णु० ४.१२.३)।

चतुर्दशविद्या–स्त्री० [सं०] चार वेद, ६ वेदाङ्ग, मीमांसा, न्याय, धर्मशास्त्र तथा पुराण, ये ही चतुर्दश विद्याएँ हैं (वायु० ६१.७८)।

चतुर्दशीतिथिमयी–स्त्री० [सं०] ज्वालामालिनीका एक नाम (ब्रह्मां० ४.२६.३३)।

चतुर्दंष्ट्र–पु० [सं०] (१) कार्त्तिकेयकी सेनाका नाम (स्कंद०)। (२) एक पौराणिक राक्षसका नाम।

चतुर्धाम–पु० [सं०] हिन्दुओंके चार मुख्य तीर्थस्थान जिनके नाम ये हैं—बदरिकाश्रम, द्वारकापुरी, रामेश्वरम् और जगदीश (जगन्नाथपुरी)।

चतुर्बाहु–पु० [सं०] भण्डका एक पुत्र तथा सेनापति (ब्रह्मां० ४.२१.८०; २६.४७.७२)।

चतुर्भद्र–पु० [सं०] अर्थ, धर्म, काम और मोक्षका समूह।

चतुर्भुजा–स्त्री० [सं०] एक देवी, गायत्री-स्वरूप महाशक्ति।

चतुर्मुख–पु० [सं०] ब्रह्मा वेदराशिके रूपमें गायत्री तथा सावित्रीके साथ सोमके राजसूय यज्ञमें उद्गाता थे और उमाके विवाहमें यह पुरोहित थे (मत्स्य० ४.७-१२; ६.२५; २३.२०; ५३,७; १५४.४८३)। इनकी तीन अवस्थाएँ ये हैं—ब्रह्मा, काल, पुरुषके तीन काम—सृष्टि, नाश तथा अलिप्त; अतः तीन गुण, तीन अग्नि, तीन वेद तथा तीन लोक (वायु० ५.१५-१७)।

चतुर्मूर्त्ति–पु० [सं०] (१) ईश्वर जो विराट्, सूत्रात्मा, अव्याकृत गौर तुरीय इन चारों अवस्थाओंमें रहता है। (२) विघ्नेश्वरका एक नाम (ब्रह्मां० ४.४४.६७)।

चतुर्युगम्–पु० [सं०] कृत, त्रेता, द्वापर और कलि। युगधर्म, युगसंधि, अंशक और युगसंधानसे इन चारों युगोंके भेद तथा विशेषताका बोध होता है। इन युगोंके अनुसार मनुष्य, पक्षी, पशु तथा वृक्षादिकी ऊँचाई बढ़ती-घटती है (ब्रह्मां० ३२.८)।

कृतयुग = ४००० वर्ष—संध्य = ४००—संध्यंश = ४००।
त्रेता युग = ३००० „— „ = ३००— „ = ३००।
द्वापर युग = २००० „— „ = २००— „ = २००।
कलि
(तिष्यम्) = १००० „ — „ = १००— „ = १००।

अस्तु सब युग मिलाकर = १२००० देव वर्ष (वायु० २३·१०५; २४-१; ३२.६५, ६७; ४५.१३७; ५७.५ २१-८)। पूर्ण विवरण (विष्णु० ६.१.५७; ३.११-४०)।

चतुर्युगी–स्त्री० [सं०] पुराणानुसार ४३२०००० वर्षका समय जिसमें चारों युग बीत जायंगे।

चतुवक्त्र–पु० [सं०] चार मुखवाले ब्रह्माका एक नाम (ब्रह्मां० ४.९.२३)।

चतुर्वर्ग–पु० [सं०] धर्म, काम, अर्थ और मोक्ष।

चतुर्वासन–पु० [सं०] संसारके सब प्राणियोंकी चार अवस्थाओंका नाम—(१) स्वेदजम्, (२) अंडजम्, (३) उद्भिज्जम्, (४) जरायुजम् (ब्रह्मां० ४.८.२३)।

चतुर्विद्या–स्त्री० [सं०] चारों वेदोंकी विद्या।

चतुर्वीर–पु० [सं०] चार दिनोंमें समाप्त होनेवाला एक सोमयज्ञ।

चतुर्व्यूह–पु० [सं०] विष्णुके चार रूप—शरीर—पुरुष, छंदःपुरुष, वेदपुरुष और महापुरुष (विष्णु सहस्रनामके भाष्यकारका मत)। पुराणानुसार ब्रह्माके चार रूप—वासुदेव,

संकर्षण, प्रद्युम्न और अनिरुद्ध कहे गये हैं। अतः इन्हें चतुर्व्यूह कहा गया है।

चतुश्शृङ्ग—पु० [सं०] पुराणानुसार कुश द्वीपके एक वर्ष-पर्वतका नाम (भाग० ५.२०.१५)।

चतुःशिरा—पु० [सं०] भण्डका एक पुत्र तथा सेनापति (ब्रह्मां० ४.२१.८०; २६.४७)।

चतुष्कर्णी—स्त्री० [सं०] कार्त्तिकेयकी एक अनुचरीका नाम (स्कंद०)।

चतुष्पथरता—स्त्री० [सं०] कार्त्तिकेयकी अनुचरी एक मातृका का नाम (महाभा० शल्य० ४६.२७)

चतुःसन—पु० [सं०] (१) विष्णुका एक अवतार जिसने आत्माका विस्मृत ज्ञान ब्रह्माको दिया था (भाग २.७.५)। (२) सनक, सनत्कुमार, सनंदन और सनातन ये चार ऋषि चतुस्सन कहे जाते हैं।

चतुस्साल—पु० [सं०] सर्वतोभद्र (मत्स्य० २५३.५१: २५४.१-४)।

चतुस्सूत्री—स्त्री० [सं०] वेदांतके पहले चार सूत्र जो बहुत कठिन हैं।

चतुःसंप्रदाय—पु० [सं०] वैष्णवोंके चार मुख्य सम्प्रदाय—श्री, माध्व, रुद्र और सनक।

चतूरात्र—पु० [सं०] चार रात्रियोंमें समाप्त होनेवाला एक यज्ञ।

चत्वरवासिनी—स्त्री० [सं०] कार्त्तिकेयकी एक मातृकाका नाम।

चपल—पु० [सं०] मृग नामक हाथीका एक पुत्र (ब्रह्मां० ३.७.३३३)।

चपला—स्त्री [सं०] एक शक्ति देवी (ब्रह्मां० ४.४४.७५)।

चपेटी—स्त्री० [सं०] भाद्रपद शुक्ला षष्ठी। संतान हितार्थ पूजनके लिए उपयुक्त बारह षष्ठियोंमेंसे एक (स्कंद०)।

चंपेश—पु० [सं०] दानवीर कर्णका एक नाम (महा० भा०। शान्ति० ५.७)

चमस—पु० [सं०] (१) पलाशकी लकड़ीके बने चम्मचके आकारका एक यज्ञपात्र जिससे सोम पान किया जाता था। (२) ऋषभके पुत्र तथा एक भगवद्भक्त ऋषिका नाम जिसने निमिको नास्तिकोंकी प्रकृतिकी व्याख्या बतलायी थी (भाग० ५.४.११; ११.२.२१; ५.२.१८)। (३) ग्यारह योगीश्वरोंमेंसे एक।

चमसाध्वर्यु—पु० [सं०] सोमके राजसूयमें १० विश्वदेव ही यह कार्य कर रहे थे (मत्स्य० २३.२२)।

चमसोद्भेद—पु० [सं०] प्रभासक्षेत्रके निकटस्थ एक तीर्थ जहाँसे सरस्वती नदी या लोप हो गया है। इस स्थानपर स्नान करनेका बड़ा माहात्म्य लिखा है (महाभा०)

चर—पु० [सं०] देवजनीका एक पुत्र, एक यक्ष (ब्रह्मां० ३.७.१२८)।

चरंत—पु० [सं०] आष्टिप्रेणका पुए (वायु० ९२.५)।

चरक—पु० [सं०] (१) तामस मनुके समयके सप्तर्षियोंमेंसे एक जो पौलह थे (ब्रह्मां० २.३६.४८)। (२) दे० चरकाध्वर्यु (ब्रह्मां० २.३५. १३; वायु० ६१.१०)। (३) वाजिनके शिष्यगण (वायु० ६१.२३)। (४) याज्ञवल्क्यके शिष्यगण (वायु० ६१.२४)।

चरकत्वम्—पु० [सं०] वैशम्पायनके शिष्यों द्वारा मनन किया गया ब्रह्मवाद जिसकी विशद व्याख्या सूतने की थी (वायु० ६१.१०, १२-२२)।

चरकाध्वर्यु—पु० [सं०] वैशम्पायनके शिष्य जिन्हें 'चरकगण' भी कहते थे। ये लोक ब्रह्महत्या निवारणार्थ गुरुके पक्षमें एक शपथ लेते थे (भाग० १२.६.६१; ब्रह्मां० २.३३.७ और १२; ३५.१४, २६-७; वायु० ६१.१०)।

चरखपूजा—स्त्री० [भा० चर्ख+पूजा] यह पूजा चैत्रकी संक्रांतिको होती है जिसे शिवके प्रीत्यर्थ करते हैं। इसमें भक्तिके आवेशमें भक्त लोग नाचते, कूदते तथा कुछ अपनी पीठको बर्छेसे नाथ कर घूमते हैं। जिस खम्भेपर इस बर्छेको लगाकर घूमते हैं उसे 'चरख' कहते हैं। ऐसी कथा है कि इस तिथिको बाण नामक एक शैव राजाने भक्तिमें उन्मत्त हो अपने शरीरका रक्त चढ़ाकर शिवको प्रसन्न किया था। इस पूजाके फल और विधानके लिए—दे० 'बृहद्धर्म्म-पुराण'।

चरणदास—पु० [सं०] एक महात्माका नाम जो जातिके दूसर बनिया थे और दिल्लीमें रहते थे। इन्होंने कई ग्रंथ लिखे जिनमें 'स्वरोदय' बहुत प्रसिद्ध है। इनका एक सम्प्रदाय है जिसके अनुयायी चरणदासी कहलाते हैं।

चरणामृत—पु० [सं०] दूध, दही, घी, शक्कर और मधु मिलाकर उसमें देवताओंको स्नान कराते हैं। इसे पंचामृत भी कहते हैं। हिन्दू समाजमें यह अति पवित्र माना जाता है।

चरिष्ण—पु० [सं०] पाँचवें मनु (वायु० ६२.४४)।

चरिष्णव—पु० [सं०] मनु जिनसे ऊकारका बोध होता है (वायु० २६.३७)। इनके पाँच मुख थे (वायु० ६२.५५)।

चरिष्णु—पु० [सं०] (१) कीर्त्तिमान् तथा धेनुकाका पुत्र (ब्रह्मां० २.११.२१; वायु० २८.१७)। (२) सावर्णि मनुके नव पुत्रोंमेंसे एक (मत्स्य० ९.३३; वायु० १००.२२)। (३) 'हरय' देवगणके पिता (वायु० ६७.४०)।

चरु—पु० [सं०] यज्ञके लिए पकाया हुआ अन्न जिसे प्रसाद-स्वरूप खाते हैं (मत्स्य० १६.२३.३२)। राकाके रौद्र-वैष्णव पूजनोपचार तथा प्रसादके सम्मिश्रणसे जमदग्नि वैष्णवाग्नि-से उत्पन्न हुए थे (ब्रह्मां० ३.१.९६-७)।

चरुभद्र—पु० [सं०] श्रीकृष्ण और रुक्मिणीका एक पुत्र (वायु० ९६.२३७)।

चर्चस—पु० [सं०] कुबेरकी नौ निधियोंमेंसे एक—'महापद्मश्चा पद्मश्च शङ्खो मकरकच्छपौ। मुकुन्दकुन्दनीलाश्च खर्वश्च निधयो नव॥'

चर्मकोट—पु० [सं०] पितरोंके लिए एक पवित्र तीर्थस्थान (मत्स्य० २२.४२)।

चर्मग्रीव—पु० [सं०] भगवान् शंकरके एक अनुचरका नाम (शिव०)।

चर्मण्वती—स्त्री० [सं०] पारियात्र पर्वतसे निकली भारतवर्षकी एक नदी जो पितरोंको प्रिय है (भाग० ५.१९.१८; ब्रह्मां० २.१६.२८; मत्स्य० २२.३०; १६३.६२; वायु० ४५.९८; १०८.८१)।

चर्ममंडल—पु० [सं०] एक प्राचीन देश (महाभा०)।

चर्ममुंडा—स्त्री० [सं०] दे० चामुंडा।

चर्मरंग–पु० [सं०] पुराणानुसार कर्मखंडका एक देश जो पश्चिम-उत्तरमें स्थित माना गया है।

चर्मवर्मभृत्–पु० [सं०] चित्रकका एक पुत्र (वायु० ९६.११४)।

चर्य–पु० [सं०] एक योगनाथ (ब्रह्मां० ४.३७)।

चर्विका–स्त्री० [सं०] दे० चामुण्डा।

चर्षणी–स्त्री० [सं०] वरुणकी पत्नीका नाम (भाग० ६.१८.४)।

चर्षणीगण–पु० [सं०] अर्यमा और मातृकाके लड़के जो मनुष्य जातिके प्रवर्त्तक थे (भाग० ६.२.४२ ।

चल–पु० [सं०] मादिराका एक पुत्र (वायु० ९६.१६९)।

चलकुंडल–पु० [सं०] भार्गव गोत्रकारोंमेंसे एक (मत्स्य० १९५.२७)।

चलच्छिखा–स्त्री० [सं०] अन्धकासुररक्तपानार्थ शिवजी द्वारा सृष्ट एक मानस-पुत्री मातृका (मत्स्य० १७९.११)।

चलज्ज्वाला–स्त्री० [सं०] एक मातृका देवीका नाम (मत्स्य० १७९.३२)।

चला–स्त्री० [सं०] विष्णु पत्नी लक्ष्मीका एक नाम (विष्णु० १.७.२८)।

चलि–पु० [सं०] भार्गवोंके एक आर्षेय प्रवर (मत्स्य० १९५·३७)।

चषाल–पु० [सं०] यज्ञीय स्तम्भके ऊपर लगानेको काठका छल्ला। इसीमें यज्ञके निमित्त लाया हुआ पशु बाँधा जाता है।

चाँद–पु० [हि०] दे० चंद्रमा।

चांद्र–पु० [सं०] (१) चांद्रायण व्रत—दे० व्रतपरिचय तथा व्रतकल्पद्रुम। (२) प्लक्षद्वीपका एक पर्वत (लिंगपुराण)। (३) चंद्रकांतमणि तथा चांद्रायण—दे० चंद्रकांत।

चांद्रपुर–पु० [सं०] एक नगर जहाँ एक प्रसिद्ध शिवमूर्त्ति है (बृहत्संहिता)।

चांद्रमस-लोक–पु० [सं०] चंद्रलोक, चंद्रमाका स्थान विशेष जहाँ सोमयज्ञके करनेवाले जाते हैं (भाग० ३.३२.३)।

चांद्रमससाम–पु० [सं०] इनका जन्म कुमुद और कुमुद-द्युति नामक हाथियोंमें हुआ था (ब्रह्मां० ३.७.३४५)।

चांद्रमसि–पु० [सं०] एक भार्गव गोत्रकार ऋषि (मत्स्य० १९५.२६)।

चांद्रयुवनाश्व–पु० [सं०] विष्टाश्वका पुत्र तथा शावस्तका पिता (विष्णु० ४.२.३६-७)।

चांद्रायण–पु० [सं०] महीनेभरका एक कठिन व्रत जिसे अपनी शक्तिके अनुसार एक, दो, तीन या चार वार करते हैं (वायु० १६.१६-७; १८.१३)। इसमें चन्द्रमाके घटने-बढ़नेके अनुसार व्रत करनेवालेको अपना आहार घटाना और बढ़ाना पड़ता है। शास्त्रोंमें इसका बड़ा माहात्म्य लिखा है। मिताक्षराके अनुसार शुक्ल प्रतिपदाको त्रिकाल स्नान करके मोरके अंडेके बराबरका एक ग्रास खाकर रहे। प्रतिदिन एक-एक ग्रास बढ़ाये, अतः पूर्णिमाके दिन पंद्रह ग्रास खाये।

'तिथिवृद्धया चरेत् पिण्डान् शुक्ले शिख्यण्डसम्मिआन्। एकैकं ह्रासयेत् कृष्णे पिंडं चान्द्रायणं चरेत्॥' (याज्ञवल्क्य) तथा वशिष्ठ वाक्य—'एकैकं वर्द्धयेत् पिण्डं शुक्ले कृष्णे च ह्रासयेत्। इन्दुक्षये न भुञ्जीत एप चान्द्रायणे विधिः॥' पूर्णिमाके पश्चात् फिर कृष्ण प्रतिपदाको चौदह ग्रास खाये और क्रमशः एक-एक ग्रास प्रतिदिन घटाता जाय अर्थात् अमावस्याको निराहार रहे। कल्पतरुके अनुसार एक पतिचांद्रायण होता है जिसमें नित्य तीन ग्रास खाकर एक महीने रहना पड़ता है। मनु, पराशर, बौद्धायन आदि सब स्मृतियोंमें इस व्रतका उल्लेख है। मदिरा पीनेवाले ब्राह्मणको यह पापमुक्त करता है। उसका यही प्रायश्चित्त है (ब्रह्मां० ४.७.६९, ७९; मत्स्य० ७.४; १०१.७५; १८८.८)। गौतमके मतानुसार इस व्रतको करनेवाला चंद्रलोक प्राप्त करता है। सोमतीर्थमें इसका अधिक फल होता है। यह व्रत अनेक पापोंसे मुक्त करता है (मत्स्य० १८९.१८; १९१.९६; २२७.४२-५६)।

चाक्रायण–पु० [सं०] चक्र ऋषिके वंशधर छांदोग्य उप० १.१०.१)।

चाक्षुष–पु० [सं०] (१) छठें मनुका नाम जो चक्षुके पुत्र थे और इन्हींके पश्चात् वैवस्वत मनु हुए थे (ब्रह्मां० २.३६.३, ६६, १०७, २०२; ३७.१९, ४६; ३.२.१; ६०.१)। भागवतके अनुसार यह विश्वकर्माके पुत्र थे। आकृति इनकी माता और नड्वला इनकी पत्नीका नाम था। पुरु, कृत्स्न, अमृत, द्युमान्, सत्यवान्, धृत, अग्निष्टोम, अतिरात्र, प्रद्युम्न, शिवि और उल्क नामके इनके ग्यारह पुत्र थे। मत्स्यपुराणानुसार इनके पुत्रोंके नाममें कुछ अंतर मिलता है। इनके समयमें मंत्रद्रुम (मनोजव—विष्णु०) इन्द्र थे। अजित अवतार इसी समय हुआ था (भाग० ८.५.७-९; ब्रह्मां० १.१.१५०; वायु० ३०.३७; ६२.३; १०१.३३)। मार्कण्डेयपुराणमें इनके सम्बन्धकी अनेक कथाएँ हैं। इस मन्वन्तरमें जल-प्रलय हुआ था (भाग० १.३.१५; ४.१३.१६; ३०.४९; ६.६.१५; विष्णु० ३.१.६; २६.९ विष्णु० १.१३.५ तथा दे० नड्वला, अग्निष्टोम, उरु आदि)। (२) स्वायंभुव मनुके पुत्रका नाम। (३) खनित्रका पुत्र तथा विविंशतिका पिता (भाग० ९.२.२४)। (४) अनुका एक पुत्र (मत्स्य० ४८.१०)। (५) विशवेपका एक पुत्र (मत्स्य० १७१.४८)। (६) चाक्षुप मन्वंतरका एक राजा जो प्रचेतसका पुत्र तथा प्राचीनवर्हिका पौत्र था। शाखिनकी पुत्री मारिषासे इनका पुत्र दक्ष हुआ (वायु० ३०.६०-६१; ७४-५)। (७) बृहती और रिपुका पुत्र। वारुणी (पुष्करिणी) स्त्रीसे यह चाक्षुप मनुके पिता हैं (वायु० ६२.८८-९; १००.२६; विष्णु० १.१३.२-३)।

चाक्षुषमन्वंतर–पु० [सं०] (छठा मन्वंतर) इसमें प्रथम, भूत, भविष्य, पृथुकगण और लेख—ये पाँच देवगण। प्रत्येक देवगण आठ भागोंमें विभक्त थे (वायु० ६२.५८)। शिवके शापसे दक्ष प्रचेताके पुत्र हुए (ब्रह्मां० २.१३.६८)।

चाटुहास–पु० [सं०] यह ब्रह्माके यज्ञमें ऋत्विक् थे (वायु० १०६.३८)।

चाणक्य–पु० [सं०] (१) मगधाधिपति चन्द्रगुप्तके मन्त्री तथा अनेक नीतिग्रंथोंके रचयिता एक ऋषि जिन्हें कौटिल्य तथा विष्णुगुप्त भी कहते हैं। विष्णुपुराण, भागवत तथा अन्य पुराणोंमें इनका वर्णन मिलता है। कथासरित्सागर तथा

अन्य बौद्ध ग्रंथोंमें भी इनका उल्लेख मिलता है। यह तक्षशिलाके निवासी थे। चाणक्यका 'अर्थशास्त्र' जगत्-प्रसिद्ध है। ज्योतिष तथा आयुर्वेदपर भी 'विष्णुगुप्त-सिद्धांत' और 'वैद्यजीवन' नामके इन्हींके रचे ग्रंथ हैं। निकोलो माकियवेलीसे इनकी तुलना की जाती है। (२) एक राजर्षि जिसने नर्मदाके शुक्लतीर्थमें सिद्धि प्राप्त की थी (मत्स्य० १९२.१४)।

चाणूर–पु० [सं०] एक असुर पहलवानका नाम जो मथुरापति कंसके यहाँ रहता था। धनुपयज्ञके समय यह श्रीकृष्णके हाथों मारा गया था (भाग० १०.२.१; ३६.२१-२४; ३७.१५; ४२.३७; अध्याय ४३ और ४४; विष्णु० ५.१५.७.१६; २०.१८,५८-७६)।

चाणूरमल्ल–पु० [सं०] एक दानव राजाका नाम (ब्रह्मां० ४.२९.१२३)।

चातकि–पु० [सं०] एक भार्गव गोत्रकार ऋषि (मत्स्य० १९५.२३)।

चातुर्जीवा–स्त्री० [सं०] एक ब्रह्मवादिनीका नाम (ब्रह्मां० २.३३.१८)।

चातुर्मास्य–पु० [सं०] (१) एक यज्ञ जिसे भरतने किया था (भाग० ५.७.५)। (२) चार महीनोंका एक पौराणिक व्रत जो वर्षाकालमें किया जाता है। वराह०के मतसे आषाढ़ शु० द्वादशी या पूर्णिमासे आरम्भ करके कार्त्तिक शुक्ल द्वादशी या पूर्णिमाको इसे समाप्त करना चाहिये। मत्स्यपुराणानुसार इसके अनेक फल और विधान हैं। यह विष्णुका व्रत है, अतः 'नमो नारायणाय' मन्त्रका जप भी इसमें होना चाहिये। काठकगृह्यसूत्रके अनुसार व्रत करनेवालेको एक ही स्थानपर रहना चाहिये। इस व्रतका पालन बौद्ध लोग भी करते हैं। (३) यह पृश्नि और सवितासे उत्पन्न हुआ है (भाग० ६.१८.१)।

चातुर्वर्ण्य–पु० [सं०] ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र। विष्णु इसके प्रवर्तक तथा रक्षक हैं (ब्रह्मां० २.३७.५; ३.७२.३५; विष्णु० १.६.५-६, ८)। दक्षकी पुत्री सुव्रताने इसे सर्वप्रथम आरम्भ किया था (वायु० ३०.६७; ९७.३६; १००.४४; ब्रह्मां० २.१३.६५)। कृतयुगमें प्रत्येक व्यक्ति स्वधर्म-पालन करता है, त्रेतामें वर्णपरिवर्तन संभव था, द्वापरमें धर्मप्रवृत्ति निर्बल पड़ जाती है और कलिमें सब विशेषताएँ विलीन हो जाती हैं (मत्स्य० १६८.८-१२)।

चातुर्विद्या–स्त्री० [सं०] चारों वेद (ब्रह्मां० २.३२.६२; वायु० ९७.३७)।

चातुर्होत्र–पु० [सं०] यजुर्वेदसे (वायु० ६०.१७); यज्ञमें पुरोहितोंके चार वर्ग (विष्णु० ३.४.११)।

चापिनी–स्त्री० [सं०] ललितादेवीका एक नाम (ब्रह्मां० ४.१८.१४)।

चामुंडा–स्त्री० [सं०] (१) एक देवीका नाम जिन्होंने चण्ड-मुण्ड नामक शुंभ-निशुंभके दो सेनापति दैत्योंका वध किया था (मार्कण्डेय०)। पर्य्याय—चर्चिका, चर्ममुण्डा, मार्जारकर्णिका, कर्णमोटी, महागंधा, भैरवी, कापालिनी आदि। (२) चक्रराज रथके नवें पर्वपर स्थित एक शक्तिदेवी (ब्रह्मां० ४.१९.७; ३६.५८; ४४.८७, १११)। (३) एक मानसपुत्री मातृका जो हस्तिचर्म धारण करती है (मत्स्य० १७९.१०; २६१.३७)

चार–पु० [सं०] गुप्तचर जो अपने तथा शत्रुके देशका समाचार लाये। राजा=चारचक्षु है (ब्रह्मां० ४.२१.५१, ६४।२५.१२; मत्स्य० २१५.९०.६; २२६.१२)।

चारणगण–पु० [सं०] स्वर्गीय गायक (भाग० २.१.३६; ६.१४; ४.२०.३५; ५.१.८; ब्रह्मां० २.१५.१०, २३; ३.५.१६; १०.३७; वायु० २३.१९१; ३४.२१; ३५.१९,५८; ४७.४६; ७२.३५)।

चारित्र–पु० [सं०] एक मरुद्गण (मत्स्य० १७१.५४)।

चारु–पु० [सं०] (१) बृहस्पति। (२) रुक्मिणीके गर्भसे उत्पन्न श्रीकृष्णके एक पुत्रका नाम जिन्होंने एक बड़े गिरगिट (नृग) को देखा था (भाग० १०.६१.९; ६४.१-४; ब्रह्मां० ३.७१.२४६; वायु० ९६.२३७; विष्णु० ५.२८.२)।

चारुक–पु० [सं०] प्रभासक्षेत्रके यादव-उपद्रवमें यह मारे गये (विष्णु० ५.३७.४७)।

चारुकेशी–स्त्री० [सं०] हिरण्यकशिपुकी सभाकी एक अप्सरा (मत्स्य० १६१.७५)।

चारुगर्भ–पु० [सं०] श्रीकृष्णके एक पुत्रका नाम दे० (भाग० तथा चारु)।

चारुगुप्त–पु० [सं०] श्रीकृष्णके एक पुत्रका नाम जो रुक्मिणीके गर्भसे उत्पन्न हुआ था (भाग० १०.६१.८; मत्स्य० ४७.१६; विष्णु० ५.२८.१)।

चारुचंद्र–पु० [सं०] श्रीकृष्ण तथा रुक्मिणीका एक पुत्र (भाग० १०.६१.८)।

चारुचित्र–पु० [सं०] धृतराष्ट्रके एक पुत्रका नाम (महाभारत)।

चारुणावती–पु० [सं०] भद्रदेशकी एक नदीका नाम (वायु० ४३.२९)।

चारुदेष्ण–पु० [सं०] (१) जाम्बवती और श्रीकृष्णका एक पुत्र (मत्स्य० ४६.२६; विष्णु० ४.१५.३७)। यह एक अच्छा धनुर्धर था (वायु० ९६.१८८)। (२) हरिवंश पुराणानुसार रुक्मिणीके गर्भसे उत्पन्न श्रीकृष्णके एक पुत्रका नाम (भाग० १.११.१७; १४.३१; ३.१.३५; १०.६१.८; ब्रह्मां० ३.७१.१९१, २४५; मत्स्य० ४७.१५; वायु० ९६.२३७)। इन्होंने द्वारकाके रक्षार्थ निकुंभ (विष्णु० ५.२८.१) आदि दैत्योंसे तथा साल्वसे युद्ध किया था (भाग० १०.७६.१४)। यह श्रीकृष्णके अश्वमेध यज्ञके घोड़ेके साथ गये थे [भाग० ८९.२२(२)]।

चारुदेह–पु० [सं०] श्रीकृष्ण और रुक्मिणीका पुत्र (भाग० १०.६१.८; विष्णु० ५.२८.१)।

चारुधारा–स्त्री० [सं०] इन्द्रकी स्त्री शचीका एक नाम (भाग०)।

चारुधिष्ण–पु० [सं०] ग्यारहवें मन्वंतरके सप्तर्षियोंमेंसे एक (हिं० श० सा०)।

चारुपद–पु० [सं०] भागवतानुसार राजा नमस्यु (मनुष्यु) के एक पुत्र तथा सुद्युके पिताका नाम जो पुरुवंशी राजा थे (भाग० ९.२०.२-३)।

चारुबाहु–पु० [सं०] श्रीकृष्णके एक पुत्रका नाम (भाग०)।

चारुभद्र–पु० [सं०] श्रीकृष्ण तथा रुक्मिणीके एक पुत्रका नाम (ब्रह्मां० ३.७१.२४६; मत्स्य० ४७.१६)।

चारुमती–स्त्री० [सं०] हरिवंशके अनुसार रुक्मिणीके गर्भसे उत्पन्न श्रीकृष्णकी एक पुत्रीका नाम जो कृतवर्माके पुत्र बलीनको ब्याही थी (भाग० १०.६१.२४; ब्रह्मां० ३.७१. २४६ मत्स्य० ४७.१६; वायु० ९६.२३८; विष्णु० ५. २८.२)।

चारुमुखी–स्त्री [सं०] गंधर्वोंकी एक पुत्रीका नाम (वायु० ६९.१०)।

चारुयशा–पु० [सं०] श्रीकृष्णके एक पुत्र (महाभा० अनु० १४.३३,३३)।

चारुरावा–स्त्री० [सं०] इन्द्र पत्नी शचीका एक नाम (भाग० तथा ब्रह्मां०)।

चारुरूप–पु० [सं०] एक प्रधान बंदरका नाम (ब्रह्मां० ३. ७.२३७)।

चारुवर्मा–पु० [सं०] एक प्रसिद्ध यादव जो श्रीकृष्णके स्वर्गारोहणके पश्चात् प्रभासके विद्रोहमें मारा गया था (विष्णु ५.३७.४७)।

चारुविंद–पु० [सं०] श्रीकृष्ण और रुक्मिणीका एक पुत्र (वायु० ९६.२३८; विष्णु० ५.२८.२)।

चारुविद्य–पु० [सं०] श्रीकृष्ण और रुक्मिणीका एक पुत्र (ब्रह्मां० ३.७१.२४६)।

चारुवेश–पु० [सं०] श्रीकृष्ण और रुक्मिणीका एक पुत्र (हरिवंश०)।

चारुश्रवा–पु० [सं०] श्रीकृष्ण और रुक्मिणीका एक पुत्र (महाभा० अनु० १४.३३,३४)।

चारुहास–पु० [सं] श्रीकृष्ण और रुक्मिणीका एक पुत्र (मत्स्य० ४७.१६)।

चारुहासवान्–पु० [सं०] एक प्रधान बंदरका नाम (ब्रह्मां० ३.७.२३८)।

चारुहासिनी–स्त्री० [सं०] श्रीकृष्णकी एक पत्नीका नाम (विष्णु० ५.१५.३५)।

चार्वंरिवान्–पु० [सं] सावर्ण मनुका एक पुत्र (ब्रह्मां० ४. १.२२)।

चार्वाक–पु० [सं०] (१) ईश्वरमें विश्वास नहीं करनेवाला एक नास्तिक, तर्कशास्त्रका ज्ञाता जो बृहस्पतिका शिष्य माना जाता है। पद्मपुराणानुसार असुरोंको बहकानेके लिए बृहस्पतिने वेदके विरुद्ध मतका प्रचार किया था। विष्णुपुराणानुसार जब असुरोंका धर्मबल बढ़ा तब विष्णुने देवताओंके कहनेपर, अपने शरीरसे माया-मोह नामक एक पुरुष उत्पन्न किया जिसने इन दैत्योंको धर्म-मार्गसे भ्रष्ट किया। माया-मोहके उपदेश चार्वाकके मतसे मिलते हैं। लिंगपुराणमें भी इस प्रकारकी बात लिखी है।

चार्वाक प्रत्यक्षपर विश्वास करते थे अनुमानपर नहीं (आजकलके विज्ञानशास्त्रके पण्डित सर सी० वी० रमनके सिद्धांत भी ऐसे ही हैं)। वे शरीरके नाशके पश्चात् पुनरागमन नहीं मानते थे। ईश्वर, परलोक सब अनुमानपर आश्रित हैं, इसलिए सब मिथ्या हैं। चार्वाकके अनुसार वे मनुष्य जो संसारमें दुःख भी हैं, यह समझकर सुख नहीं भोगना चाहते, मूर्ख हैं। इनके विचार 'सर्वदर्शनसंग्रह'में दिये हैं। दे० (पद्म०, विष्णु० तथा लिंगपुराण)। (२) एक राक्षसका नाम। कुरुक्षेत्रके युद्धमें कौरवोंके मारे जानेपर यह ब्राह्मणवेशमें युधिष्ठिरकी राजसभामें गया था। लोभवश भाई-बन्धुओंको मार डालनेके लिए इसने उन्हें धिक्कारा था, पर सभास्थित ब्राह्मणों द्वारा अंतमें यह मारा गया था (महाभा० शान्ति० ३८.२२-२७)।

चिंतक–पु० [सं०] तेइसवें कल्पका नाम (वायु० २१.५३)।

चिंतामणि–पु० [सं०] एक गणेशका नाम। इन्होंने कपिलके यहाँ जन्म लेकर महाबाहु नामक दैत्यको मारा था। महाबाहु कपिलसे चिंतामणि छीन ले गया था। गणेशजी दैत्यको मार मणि ले आये थे—दे० (स्कन्द०, गणपतिकल्प)।

चिंतामणिगृह–पु० [सं०] यह गृह ललितादेवीका है। इसीके बगलमें कारीगरोंने एक दूसरा गृह मन्त्रिणीदेवीके लिए बनाया था। यहाँ मातंगकन्याएँ क्रीड़ा करती हैं (ब्रह्मां० ४. ३१.८६)। शृंगारशालासे सात योजनकी दूरीपर चक्रराजका निवासस्थान है (ब्रह्मां० ४.३५.७०-१०४)। चिद्वह्नि, चक्रराजरथ, गेयचक्र, किरिचक्र, हरि, गणपति, शिव, सरस्वती, महादेवी, मन्त्रिनाथ तथा दण्डनाथके निवासस्थान इसकी भिन्न-भिन्न दिशाओंमें हैं। बिंदुचक्र इसके बीचमें है जिसके साथ अनेक शक्तियाँ रहती हैं। सर्वज्ञयंत्र भी यहीं था। यह चिंतामणिगृह श्री पट्टणके मध्यमें स्थित है जिसकी भित्तियाँ तथा खम्भे चिंतामणिके बने हैं (ब्रह्मां० ४.३६. १.३३)।

चिकिरवान्–पु० [सं०] एक तुषितदेव (ब्रह्मां० २.३६.११)।

चिक्षुभ–पु० [सं०] एक राक्षस जिसे ललितादेवीने मारा था (ब्रह्मां० ४.२९.७६)।

चिच्छल–पु० [सं०] एक देशका नाम (महाभा०)।

चिटी–स्त्री० [सं०] एक योगिनी जो चांडालवेषधारिणी कही गयी है। इसकी उपासना वशीकरणके लिए होती है (तंत्रसारः—म० म० श्रीकृष्णानंद वागीश भट्टाचार्यकृत)।

चिति–पु० [सं०] (१) एक जयदेव (ब्रह्मां० ३.४.२)। (२) तेइसवाँ कल्प चिन्तक और उसकी पत्नी (चिति) प्रजापतिकी मिथुन संततिमें एक (वायु० २१.५३)।

चित्तकर्षिका–स्त्री० [सं०] एक गुप्तशक्ति जिसे चित्ताकर्षण रूपा भी कहते हैं (ब्रह्मां० ४.१९.१९; ३६.७०; ४४.११९)।

चित्तजला–स्त्री० [सं०] एक मातृका देवी (मत्स्य० १७९.२८)।

चित्परा–स्त्री० [सं०] कामाक्षी जिसे अंता भी कहते हैं—यह प्रथम कारण है। तब 'शुद्धपरा' जिसके दो हाथ थे दाहिने हाथमें योगमुद्रा है और बायेंमें पुस्तक है, तब 'परापर' जिसके दाहिने हाथमें कमल तथा बायाँ हाथ जंघापर, यह ललिता या कामाक्षी काँचीमें स्थापित है (ब्रह्मां० ४.३९.९-१४)।

चित्ता–स्त्री० [सं०] अन्धकासुर रक्तपानार्थ शिवजी द्वारा सृष्ट एक मातृका देवी (मत्स्य० १७९.२८)।

चित्ति–स्त्री० [सं०] (१) शांतिका एक नाम (भाग० ४.१. ४२)। (२) अथर्व ऋषिकी पत्नीका नाम। (३) एक जया देवी (वायु० ६६.६)। (४) एक साध्य (वायु० ६६.१६)।

चित्र–पु० [सं०] (१) वसुदेव और मदिराका पुत्र (ब्रह्मां० ३.७१.१७२)। (२) अगावहके चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्र। इनकी एक बहिन थी चित्रवती (ब्रह्मां० ३.७१.२५७)।

(३) भण्डका सेनापति जो चित्रासे मारा गया था (ब्रह्मां० २.५५.९९; (वायु० ९९.२४८)।

चित्रक–पु० [सं०] अभूमिके पिताका नाम (ब्रह्मां० ३.७.११५; वायु० ९६.११४)। यह वृष्णि (पृष्णि—वायु०) का एक पुत्र तथा अनेक पुत्र-पुत्रियोंका पिता और श्वफल्कका भाई था (ब्रह्मां० ३.७१.१०२, ११४;वायु० ९६.१०१,११३-१४; विष्णु० ४.१४.५-६, ११)।

चित्रकर्म–पु० [सं०] गणेश। शिव द्वारा भस्म किये गये कामदेवकी बची राखसे एक मूर्त्तिकला विशारदने एक मूर्त्ति बनायी। इस प्रकार पुनः जीवित होनेपर उसे शतरुद्रियका पाठ करनेकी आज्ञा मिली। यही भण्ड था जिसे शिवके आशीर्वादसे ६००० वर्षोंकी लम्बी आयु मिली थी (ब्रह्मां० ४.११.३०)।

चित्रकूट–पु० [सं०] (१) कुशद्वीपका एक पर्वत (भाग० ५.२०.१५)। (२) भारतवर्षके ऋक्ष (ऋष्यवान्—मत्स्य०) पर्वतकी एक नदीका नाम(ब्रह्मां० २.१६.३०, मत्स्य० ११४.२५; वायु० ४५.९९)। (३) एक प्रसिद्ध रमणीय पर्वत जहाँ श्री रामचन्द्र अपने भाई लक्ष्मण और पत्नीके साथ वनवासकी अवधिमें बहुत दिनों तक रहे थे। यह स्थान एक प्रसिद्ध तीर्थ हो गया है (भाग० ५.१९.१६; ब्रह्मां० २.१६.२३, ३.१३.३८; मत्स्य० १३.३९; ५२.६५)। यह प्रयागसे २७ कोस दक्षिण है। इस पहाड़के नीचे पयोष्णी नदी बहती है जिसमें मंदाकिनी नदी आकर मिलती है। रामनवमी और दीवालीके दिन यहाँ बड़े यात्री आते हैं। यह भारद्वाज आश्रमसे ३॥ योजन दक्षिण है (वाल्मीकि रामायण)। यहाँ वाल्मीकि ऋषिका आश्रम था।

चित्रकेतु–पु० [सं०] (१) देवभागा और कंसाका एक पुत्र (भाग० ९.२५.४०)। (२) जाम्बवतीका एक पुत्र (भाग० १०.६१.२२)। (३) लक्ष्मणजीके पुत्र (भाग० ९.११.१२)। (४) गरुड़के पुत्रका नाम। (५) वशिष्ठजीके सात पुत्रोंमेंसे एकका नाम (भाग० ४.१.४०-४१)। (६) एक वालेय गंधर्व (वायु० ६९.२०)। (७) भागवतके अनुसार शूरसेन देशका राजा जिसकी रानीका नाम कृतद्युति था और यह निःसंतान था। अंगिरसके पुत्रेष्टि यज्ञके पश्चात् इसे कृतद्युतिसे एक पुत्र हुआ था जिसे अन्य रानियोंने विष दे मार दिया था। इस पुत्र-शोकाकुल राजाको अंगिरसने जीवनकी क्षणभंगुरताका उपदेश तथा मंत्रोपनिषदका ज्ञान दिया था जिसके उपरांत यह विद्याधरोंका अधिपति हो गया। एक दिन इसने पार्वतीको सबके सामने शिवकी जंघापर बैठे देखा और हँसा। क्रुद्ध हो पार्वतीने असुर होनेका शाप दिया, पर शिवके समझानेसे इसकी क्षमायाचनापर क्षमा कर दिया था। यही पुनर्जन्ममें वृत्रासुर हुआ था (भाग० ६. १४.२०-६१)।

चित्रगु–पु० [सं०] श्रीकृष्ण और सत्याका एक पुत्र (भाग० १०.६१.१३)।

चित्रगुप्त–पु० [सं०] चौदह यमराजोंमेंसे एक जो प्राणियोंके पाप और पुण्यका हिसाब लिखते हैं। यह केतु नक्षत्रका अधिपति और अधिदेवता है। इनके सम्बन्धमें पद्म, गरुड़, भविष्य आदि पुराणोंमें अनेक कथाएँ हैं। स्कंदपुराणानुसार चित्र नामके एक राजा थे जो हिसाब-किताबमें बड़े निपुण थे। यमराजने इन्हें नहाते समय पकड़ मँगवाया था। भविष्यपुराणानुसार यह ब्रह्माके शरीरसे उत्पन्न हुए थे। शरीरसे उत्पन्न होनेके कारण यह कायस्थ हुए। इनके हाथमें कलम-दावात थी, इसलिए ब्रह्माने इन्हें प्राणियोंके पाप-पुण्यका लेखा रखनेको कहा। गरुड़पुराणानुसार (चित्रकल्प) यमपुरके पास ही चित्रगुप्तपुर है जहाँ कायस्थ लोग बराबर इनके अधीन रहकर काम किया करते हैं। यम द्वितीयाके दिन कायस्थ लोग चित्रगुप्त तथा कलम-दावातकी पूजा करते हैं। सब कायस्थ लोग अपनेको इन्हींका वंशज बतलाते हैं (मत्स्य० ९३.१५; १०२.२३; २६१.१४)।

चित्रघंटा–स्त्री० [सं०] नव-दुर्गाओंमेंसे एक दुर्गा देवी (मार्कण्डेयपुराण)।

मार्कण्डेयपुराणान्तर्गत देवीमाहात्म्य (सप्तशती) में ९ दुर्गाओंके नाम (देवीकवच) में इस प्रकार है :—

प्रथमं शैलपुत्री च द्वितीयं ब्रह्मचारिणी।
तृतीयं चन्द्रघण्टेति कूष्माण्डेति चतुर्थकम्॥
पञ्चमं स्कन्दमातेति षष्ठं कात्यायनीति च।
सप्तमं कालरात्रीति महागौरीति चाष्टमम्॥
नवमं सिद्धिदात्री च नव दुर्गाः प्रकीर्तिताः।

चित्रचाप–पु० [सं०] धृतराष्ट्रके एक पुत्रका नाम (महाभा०)।

चित्रज्योति–पु० [सं०] मरुतोंके सात गणोंमेंसे प्रथम गणका एक मरुत् (ब्रह्मां० ३.५.९२)।

चित्रदेव–पु० [सं०] कात्तिकेयका एक अनुचर (स्कंद० तथा हिं० श० सा०)।

चित्रदेवी–स्त्री० [सं०] शक्तिका एक भेद विशेष (देवी भागवत)।

चित्रधर्मा–पु० [सं०] एक दैत्यका नाम (महाभा०) आदि० ६१.२२,२३।

चित्रनाथ–पु० [सं०] धृतराष्ट्रका एक पुत्र (मत्स्य० १२.२१)।

चित्रपथा–स्त्री० [सं०] प्रभासतीर्थके अंतर्गत ब्रह्मकुण्डके निकटस्थ एक नदी। आजकल यह सूखी पड़ी है, केवल बरसातमें कुछ जल रहता है (हिं० श० सा०)।

चित्रबर्ह–पु० [सं०] विष्णु-वाहन गरुड़का एक पुत्र (विष्णु० तथा महाभा० उद्योग० १०१.१२।

चित्रबाहु–पु० [सं०] (१) धृतराष्ट्रके एक पुत्रका नाम (महाभा० आदि० ६७.५७)। (२) श्रीकृष्णके एक पुत्रका नाम (भाग० १०.९०.३१)।

चित्रभानु–पु० [सं०] (१) अग्नि। (२) सूर्य। (३) अश्विनीकुमार। (४) साठ संवत्सरोंके बारह युग होते हैं जिनमें चौथे युगके प्रथम वर्षका नाम। (५) अर्जुनकी पत्नी चित्रांगदाके पिताका नाम जो मणिपुरके राजा थे (महाभा०)। (६) श्रीकृष्णका एक पुत्र जो योद्धा था (भाग० १०.९०.३३)।

चित्रयुद्ध–पु० [सं०] इस विद्यामें कुरण्ड बड़ा दक्ष था (ब्रह्मां० ४.२२.७४; ३.७१.१८४)। अश्विन और जनार्दन भी इसमें निपुण थे (मत्स्य० १५०.२०१; १५२.३.२७)।

चित्ररथ–पु० [सं०] (१) रशादुका पुत्र जिसने अनेक यज्ञ किये थे। यह शशबिंदुके नामसे प्रसिद्ध था (वायु० ९५.

१७-१८; २०-२१)। (२) दक्ष-पुत्री मुनिके गर्भसे उत्पन्न कश्यपके पुत्र एक गंधर्वका नाम। यह कुबेरके सखा कहे गये हैं। इन्हें गंधर्वराज, दग्धरथ, कुबेरसख और अंगारपर्ण भी कहते हैं। इनकी पत्नीका नाम ऊर्णा था (भाग० ६.८.३८-४०; ९.१६.२-३)। (३) एक यदुवंशी राजा जो विष्णुपुराणानुसार रुपद्र और भागवतके अनुसार विशद्गुरुके पुत्र थे। (४) श्रीकृष्णके पौत्र तथा गदके पुत्रका नाम (भाग०)। (५) उष्णके एक पुत्रका नाम (वायु० ९९.२७२; १०८.४९)। (६) ऋषद्गुरु नामक राजाके एक पुत्र (महाभा०)। (७) अंगदेशके एक राजाका नाम भी चित्ररथ था (महाभा० अनु० ४२.८)। (८) सुपार्श्वकका पुत्र तथा क्षेमधिका पिता, एक मिथिला-नरेश (भाग० ९.१३.२३)। (९) उक्तका पुत्र तथा कविरथका पिता (भाग० ९.२२.४०)। (१०) रुशेकु (रुशंकु—मत्स्य० तथा विष्णु०) का पुत्र तथा शशविंदुका पिता (भाग० ९.२३.३१; ब्रह्मां० ३.७०.१८; मत्स्य० ४४.१७; विष्णु० ४.१२.२-३)। (११) धर्मरथका पुत्र जिसे रोमपाद कहते थे। यह निःसंतान था, अतः इसने अपने मित्र दशरथकी पुत्री शांताको गोद लिया जो ऋष्यश्रृंगको व्याही गयी थी। इसके पश्चात् इसे चतुरंग नामक पुत्र हुआ (भाग० ९.२३.७-१०; मत्स्य० ४८.९४; वायु० ९३.१०३; विष्णु० ४.१८.१६-१८)। (१२) वृष्णिका एक पुत्र तथा अनमित्रका पौत्र। पृथु आदि इसके पुत्र थे (भाग० ९.२४.१५, १८)। (१३) एक मौनेय गंधर्व जो गंधर्वों, किन्नरों तथा विद्याधरोंका अधिपति था (ब्रह्मां० ३.७.३, ८, १०; ४.२०.५०; मत्स्य० ८.६; वायु० ६९.२; ७०.९)। (१४) अगावहका पुत्र (ब्रह्मां० ३.७१.२५७)। (१५) भूरिका एक पुत्र (मत्स्य० ५०.८०)।

चित्ररथा–स्त्री० [सं०] एक नदीका नाम (महाभा० भीष्म० ९.३४)।

चित्ररश्मि—पु० [सं०] ४९ मरुतोंमेंसे एक मरुत् (मत्स्य० १७१.५३)।

चित्ररेखा–स्त्री० [सं०] (१) वाणासुरकी पुत्री ऊपाकी एक सहेलीका नाम—दे० चित्रलेखा। (२) सिंहलराज शतश्रृंगकी पुत्री कुमारिका ही चित्ररेखा थी जी तपोवलसे पार्वतीकी सखी चित्रलेखा हो गयी थी (स्कन्द० माहेश्वर० कुमारिका खण्ड; भाग० १०.६१.२३(९); ६२.१४-२३; विष्णु० ५.३२.१७-३०; ३३.५)।

चित्ररेफ–पु० [सं०] भागवतके अनुसार शाकद्वीपके राजा प्रियव्रतके पौत्र तथा मेधातिथिके सात पुत्रोंमेंसे एक (भाग० ५.२०.२५)।

चित्रलेखा–स्त्री० [सं०] (१) वाणासुरकी पुत्री उपा, जो श्रीकृष्णके पौत्र अनिरुद्धको व्याही थी, की एक सहेलीका नाम। यह वाणके मन्त्री कूम्भाण्ड या कूष्माण्डकी पुत्री थी और चित्रकलामें बड़ी निपुण थी। उपाके कहनेपर यह द्वारकासे अनिरुद्धको शोणितपुर ले आयी थी (भाग० १०.६१.२३(९); ६२.१४-२३; विष्णु० ५.३२.१७-३०; ३३.५) (२) एक अप्सराका नाम जो हिरण्यकशिपुकी सभामें रहती थी। पुरूरवाने इसे तथा उर्वशीको केशीन् असुरसे छुड़ाया था (मत्स्य० १६१.७५; २४.२३)।

चित्रवती–स्त्री० [सं०] (१) अगावहकी एक पुत्री (ब्रह्मां० ३.७१.२५७)। (२) चित्रसेनकी पुत्री (वायु० ९६.२४८)।

चित्रवन–पु० [सं०] पुराणानुसार गंडकीके किनारेका एक प्राचीन और प्रसिद्ध वन।

चित्रवर–पु० [सं०] चित्रसेनका एक पुत्र (वायु० ९६.२४८)।

चित्रवर्मा–पु० [सं०] (१) धृतराष्ट्रके एक पुत्रका नाम (महाभा० आदि० ६७.९७)। (२) कुलूत देशके एक राजाका नाम (मुद्राराक्षस)। (३) एक बालेय गंधर्व (वायु० ६९.२०)। (४) आर्यावर्तके राजा जो निपधके राजा नलके पौत्र चंद्राङ्गदके श्वशुर थे। यह बड़े शिव-भक्त थे और इनकी पुत्री सीमन्तिनी चंद्राङ्गदको व्याही थी (स्कंद० ब्रह्मा० ब्रह्मोत्तर खंड)।

चित्रवहा–स्त्री० [सं०] एक नदी का नाम (महाभा० भीष्म० ९.१७)।

चित्रबाण–पु० [सं०] धृतराष्ट्रके एक पुत्रका नाम (महाभा० आदि० ११६.४)।

चित्रवाहन–पु० [सं०] मणिपुरका एक राजा (महाभा० आदि० २१४.१५)।

चित्रवेगिक–पु० [सं०] एक नागका नाम (महाभा० आदि० ५७.१८)।

चित्रशाल–पु० [सं०] त्रिपुरके चित्र (मत्स्य० १३०.१६)।

चित्रशिखंडी–पु० [सं०] मरीचि, अंगिरा, अत्रि, पुलह, पुलस्त्य, क्रतु और वशिष्ठ—ये सात ऋपि (ब्रह्मां०; मार्कण्डेय०)।

चित्रसानु–पु० [सं०] पुष्करद्वीपके पूर्वीय भागके एक पर्वतका नाम (ब्रह्मां० २.१९.११०; मत्स्य० १२३.१३; वायु० ४९.१०७)।

चित्रसेन–पु० [सं०] (१) नरिष्यंतका पुत्र तथा दक्षका पिता (भाग० ९.२.१९)। (२) रुचि तेरहवें मनुका पुत्र (ब्रह्मां० ४.१.१०४; वायु० १००.१०८; विष्णु० ३.२.४१)। (३) धृतराष्ट्रके एक पुत्रका नाम (महाभा० आदि० ६३.११९)। (४) एक गंधर्वका नाम जो हेमंतमें सूर्यके साथ रहता है (ब्रह्मां० २.२३.१७; वायु० ५२.१७;९६.२४८)। (५) अगावहका एक पुत्र (ब्रह्मां० ३.७१.२५७)। (६) राजा परीक्षितके एक पुत्रका नाम (महाभा०)। (७) चौथे सावर्णि मनुका नाम (ब्रह्मां० ४.१.९४)। (८) शंवरासुरके एक पुत्रका नाम (हरिवंश)। (९) मनुदेव सावर्णिका एक पुत्र (भाग० ८.१३.३०)।

चित्रांगद–पु० [सं०] (१) राजा शांतनुके एक पुत्र जो सत्यवतीके गर्भसे उत्पन्न हुए थे और विचित्रवीर्यके छोटे भाई थे। बाल्यावस्थामें ही इन्हें एक गंधर्वने मार डाला था (भाग० ९.२२.२०-२१; ब्रह्मां० ३.१०.७०; मत्स्य० १४.१७; वायु० ७३.१९; विष्णु० ४.२०.३४-५) (२) देवीभागवतके अनुसार एक गंधर्वका नाम जिसने शांतनुके पुत्र चित्रांगदको मार डाला था (भाग० ९.२२.२०; विष्णु० ४.२०.३५; वायु० ६९.१९)। (३) दशार्ण देशके एक राजाका नाम (महाभा० आश्वमे० ८३.५७)।

चित्रांगदा–स्त्री० [सं०] (१) मणिपुरके राजा चित्रवाहनकी पुत्रीका नाम जो अर्जुनको व्याही थी (महाभा० आदि० २१४.१५,१६)। (२) लंकापति रावणकी एक पत्नी जिसके

गर्भसे वीरबाहु उत्पन्न हुआ था (रामायण)।

चित्रांगी—स्त्री० [सं०] भण्डासुरकी चार रानियोंमेंसे एकका नाम (ब्रह्मां० ४.१२.१३)।

चित्रा—पु० [सं०] (१) हिमालय पर्वतके ऊपर पुष्पभद्रा नदीके निकटके एक पहाड़की चट्टान जो ललिताको अति प्रिय है (भाग० १२.८.१७; ब्रह्मां० ४.४४.९७)। स्त्री०—मदिराकी एक पुत्री (वायु० ९६.१७०)। (२) वसुदेव और रोहिणीका एक पुत्र, जो श्रीकृष्ण और सत्यभामाके इन्द्रके यहाँसे लौटनेपर उनसे मिलने गया था (ब्रह्मां० ३.७१.१६५; वायु० ९६.१६३; भाग० १०.६०(५)५०)। (३) एक नक्षत्र जिस दिन श्राद्ध करना शुभ समझते हैं (वायु० ६६.४९; ८२.८; ब्रह्मां० ३.१८.७)। (४) ललितादेवीकी अनुगामिनी एक देवी (ब्रह्मां० ४.२५.९९)।

चित्राक्ष—पु० [सं०] धृतराष्ट्रके एक पुत्रका नाम (महाभा० आदि० ६७.९५)।

चित्राटीर—पु० [सं०] (१) शिवका घंटाकर्ण नामका एक अनुचर (शिव०)। (२) चन्द्रमा।

चित्रादित्य—पु० [सं०] प्रभासक्षेत्रमें सूर्यकी मूर्त्ति जिसे चित्रगुप्तने स्थापित किया था (स्कंद० प्रभा०)।

चित्रायुध—पु० [सं०] धृतराष्ट्रके एक पुत्रका नाम (महाभा० आदि० ६७.९७)।

चित्राश्व—पु० [सं०] साल्वदेशाधिपति सत्यवान्का एक नाम (महाभा० वन० २९४.१३)।

चित्रोत्पला—स्त्री० [सं०] मत्स्य, मार्कण्डेय और वामन पुराणोंके अनुसार ऋक्षपाद पर्वतसे निकली एक नदीका नाम (ब्रह्मां० २.१६.३१; मत्स्य० ११४.२५)।

चित्रोपला—स्त्री० [सं०] एक नदीका नाम (महाभा० भीष्म० ९.३४)।

चिदाभास—पु० [सं०] चैतन्यस्वरूप आनंदमय परब्रह्मका आभास जो मनुष्यके अन्तःकरणपर पड़ता है। अद्वैतवादियोंके मतानुसार इसी प्रतिबिम्ब पड़नेके कारण ज्ञान उत्पन्न होता है जो मायाके संयोगसे अनेक रूप धारण करता है।

चिदि—पु० [सं०] कौशिकका एक पुत्र जिसके नामपर चैद्यवंश चला (ब्रह्मां० ३.७०.३९; वायु० ९५.३८)।

चिद्वह्नि—स्त्री० [सं०] चिन्तामणि-गृहसे निकली अग्नि जो बिना इंधनके प्रज्वलित होती है। इसके होता और होत्री कामेश्वर और महादेवी हैं (ब्रह्मां० ४.३६.२४)।

चिद्विलास—पु० [सं०] चैतन्य स्वरूप आनन्दमय परब्रह्मकी माया।

चिबिलक—पु० [सं०] लम्बोदरका पुत्र तथा मेघस्वातिका पिता (भाग० १२.१.२४)।

चिबुनिका—स्त्री० [सं०] वर्षाऋतुकी एक रानी (ब्रह्मां० ४.३२.२९)।

चिरव—पु० [सं०] बन्दरोंका एक नायक (ब्रह्मां० ३.७.२३४)।

चिरजीवी—पु० [सं०] अश्वत्थामा, बलि, व्यास, हनुमान, विभीषण, कृपाचार्य और परशुराम ये 'चिरजीवी', सब दिन जीवित रहनेवाले हैं।

चिराद्—पु० [सं०] गरुड़का एक नाम (विष्णुपु०)।

चीन—पु० [सं०] एक उत्तरी राज्य जहाँ श्राद्धादि करना निषिद्ध है (ब्रह्मां० २.१६.७; १८.४६; ३१-८३)।

चीरनिवसन—पु० [सं०] पुराणानुसार कूर्मविभागके ईशान कोणका एक देश।

चीरिणी—स्त्री० [सं०] एक नदी जो बद्रीनारायणके निकट हिमालय पर्वतसे निकली है। इसीके तटपर वैवस्वत मनुने तपस्या की थी जिससे इस नदीका माहात्म्य बढ़ गया (महाभा० वन० १८७.६)।

चुंचुक—पु० [सं०] एक देशका नाम (बृहत्संहिता)।

चुंचुल—पु० [सं०] विश्वामित्रके एक पुत्रका नाम जो संगीत शास्त्रके अच्छे ज्ञाता थे।

चुलिय—पु० [सं०] एक ऋषि जिनके पुत्र ब्रह्मदत्त कांपिल्ल के राजा थे।

चुलुक—पु० [सं०] एक गोत्रप्रवर्त्तक ऋषि।

चुलुका—स्त्री० [सं०] एक प्राचीन नदीका नाम (महाभा० भीष्म० ९.२०)।

चूडाकर्म, चूडाकरण—पु० [सं०] हिन्दुओंके सोलह संस्कारों मेंसे एक जिसमें बच्चेका पहले-पहल सिर मुड़वाकर चुंदी रखी जाती है (विष्णु० ३.१३.५)।

नोट विशेष—मुसलमानोंके यहाँ भी इसीसे मिलती जुलती एक रस्म है जिसे यक़ीक़ा कहते हैं।

चूर्णनाभ—पु० [सं०] एक दानवका नाम (ब्रह्मां० ३.६.९)।

चूलिकोपनिषद्—पु० [सं०] अथर्ववेदके अन्तर्गत एक उपनिषद्।

चूळीमहर्षि—पु० [सं०] एक ब्रह्मचारी तपस्वीका नाम। ऊर्मिलाकी पुत्री सोमदा नामक एक गंधर्वी, बहुत दिनोंतक इनकी उपासना करती रहीं जिससे प्रसन्न होकर इन्होंने उसे एक पुत्र दिया (वाल्मीकि रामायण)।

चेकितान—पु० [सं०] (१) एक राजा जिसे जरासन्धने मथुराके पूर्वी प्रवेशद्वारपर रक्षार्थ रखा था (भाग० १०.५०.११(२)। (२) राजा धृष्टकेतुके पुत्रका नाम जो केकय देशका राजा था। कुरुक्षेत्र युद्धमें इसने पाण्डवोंकी सहायता की थी (महाभा०भीष्म० ४५-६०-६२ (३) श्रुतकीर्तिका एक पुत्र (ब्रह्मां० ३.७१.१५७; वायु० ९६.१५६)।

चेडविडा—स्त्री० [सं०] तृणबिंदुकी एक पुत्री जो विश्रवाको ब्याही थी और कुबेरकी माता थी (भाग० ९.२.३१-३२)।

चेतन—पु० [सं०] च्यवनका एक नाम (वायु० ६५.८८)।

चेतस—पु० [सं०] पाँचवें मरुतगणके एक मरुत्का नाम (वायु० ६७.१२८)।

चेदि—पु० [सं०] (१) उशिक (कैशिक=विष्णु०) का पुत्र तथा चैद्य आदिका पिता (भाग० ९.२४.२; विष्णु० ४.१२.३९)। (२) शुक्तिमती नदीके पास स्थित एक प्राचीन देशका नाम। महाभारतका शिशुपाल (दमघोषका पुत्र) यहींका राजा था (भाग० ७.१.१३; ९.२२.६; २४.३९; विष्णु० ४.१४.४४)। (३) कौशिक मुनिके पुत्रका नाम—दे० कौशिक (४) वसुके राज्यका नाम (वायु० ९३.२६; ९९.११४)।

चेदिप—पु० [सं०] उपरिचरका एक पुत्र तथा चेदिराज (भाग० ९.२२.६)।

चेदिराज—पु० [सं०] (१) शिशुपाल नामक राजा जिसका वध श्रीकृष्णने किया था (महाभारत)। (२) एक वसुका

नाम जिन्हें प्रसन्न होकर इन्द्रने एक विमान दिया था। यह ऊपर ही ऊपर आकाशमें चलता था—दे० 'उपरिचर'।

चेलगंगा–स्त्री० [सं०] एक प्राचीन नदी जो किसी समय गोकर्णक्षेत्र वर्तमान मालाबारमें बहती थी (महाभा०)।

चेष्टा–स्त्री० [सं०] एक ब्रह्मराक्षसीका नाम (ब्रह्मां० ३.७.९९)।

चैतन्य–पु० [सं०] एक प्रसिद्ध बंगाली वैष्णव-धर्मके प्रवर्त्तक तथा प्रचारक जिनका पूरा नाम श्रीकृष्णचैतन्यचंद्र था। इनका जन्म नवद्वीपमें १४०७ शकाब्दके फाल्गुनकी पूर्णिमाकी रातमें चन्द्रग्रहणके समय हुआ था। इनके सम्प्रदायके लोग इन्हें श्रीकृष्णका पूर्णावतार मानते हैं। अड़तालीस वर्षकी आयुमें इनका स्वर्गवास हुआ था।

चैत्य–पु० [सं०] (१) अयोध्यामें स्थित एक समाधिका टीला जहाँके वृक्षोंपर पिशाच निवास करते हैं (भाग० ९.११.२७; ब्रह्मां० ३.७.४१५; विष्णु० ३.१२.१३)। गृहस्थोंको वहाँ जानेका निषेध है (विष्णु० ३.११.१२२)। (२) मरुतों सात गणोंमेंसे प्रथम गणका एक मरुत् (ब्रह्मां० ३.५.९२)।

चैत्र–पु० [सं०] (१) स्वारोचिष मनुके ९ पुत्रोंमेंसे एक (ब्रह्मां० २.३६.१९; विष्णु० ३.१.१२)। (२) एक पौलस्त्य जो तामस मन्वन्तरके सप्तर्षियोंमेंसे एक ऋषि थे (ब्रह्मां० २.३६.४८; विष्णु० ३.१.१८)।

चैत्रक–पु० [सं०] एक तीर्थका नाम (मत्स्य० ११०.२)।

चैत्रमास–पु० [सं०] वर्षका प्रथम महीना जो श्राद्धके लिए 'मन्वंतरादि' है। मदन द्वादशी आदि व्रतोंके लिए यह उत्तम है (मत्स्य० ७.१०; १७.६; ५४.८; ५६.३; ६०.३३; २४०.५)।

चैत्ररथ–पु० [सं०] (१) एक तीर्थ जो मदोत्कटको प्रिय था (मत्स्य० १३.२८)। (२) जब गंधर्व और अप्सराओंने पृथ्वी रूपी गौका दूध दूहा था तब यही बछड़ा बना था (मत्स्य० १०.२४)। (३) कुबेरके उपवनका नाम जो चित्ररथका बनाया हुआ था। यहाँ कर्दम और देवहूति गये थे (भाग० ३.२३.४०; ५.१६.१४; ९.१४.२४; मत्स्य० २७.४; विष्णु० ४.६.४८)। इलावर्त्तखंडके पूर्व दिशामें (वायु० ३६.११; ४२.१५; ४७.६; ६९.१३७; ९१.६; विष्णु० २.२.२५) स्थित मंदारपर माना जाता है (मत्स्य० ८३.३१; १२१.८; १३१.४८)। मंदार मेरु पर्वतकी एक चोटी है। यहाँ चन्द्रप्रभ पर्वतपर उर्वशी-ऐल मिलन हुआ था (ब्रह्मां० २.१८.७; ३.७.१०२; ६६.६)।

चैत्ररथी–स्त्री० [सं०] शशबिन्दुकी पुत्री तथा मान्धाताकी पत्नीका नाम जिसे बिन्दुमती भी कहते थे। इसके १०,००० छोटे भ्राता थे और यह स्वयम् बड़ी धर्मात्मा, सुन्दर तथा पतिव्रता थी जिसके पुरुकुत्स, अम्बरीष तथा मुचकुंद तीन पुत्र हुए थे (ब्रह्मां० ३.३६.७०; वायु० ८८.७०-२)।

चैत्रवती–स्त्री० [सं०] एक नदीका नाम (हरिवंश)।

चैत्रसख–पु० [सं०] कामदेव का एक नाम—दे० अंगज, कामदेव।

चैत्रा–स्त्री० [सं०] जमदग्निकी पत्नीका नाम जिसके गर्भसे विदर्भका जन्म हुआ था (मत्स्य० ४४.३२-३६)।

चैद्य–पु० [सं०] (१) यह दमघोषका पुत्र तथा दंतवक्त्रका भाई था। एक बार सनंद आदि ब्रह्माके पुत्र विष्णुलोक गये तब पर ये दोनों भाई जय-विजयके रूपमें विष्णुके द्वारपाल थे। इन्होंने जब ब्रह्माके पुत्रोंको वैकुण्ठमें प्रवेश करनेसे रोका तभी उन लोगोंने (ब्रह्माके पुत्रोंने) इन दो भाइयोंको असुर होनेका शाप दिया। ये हिरण्यकशिपु और हिरण्याक्ष हुए, तदुपरान्त पुनर्जन्ममें ये रावण और कुंभकर्ण हुए और अन्तमें चैद्य और दंतवक्त्र हुए थे (भाग० ७.१०.३५-४६)। यह श्रीकृष्णद्रोही तथा जरासंधका मित्र था जिसने इसे मथुराके पूर्वी द्वारपर रखा था, पर यह कृष्णसे मारा गया (भाग० १.१०.२९, १०.५०.११(२), २०-२४[१-१५])। रुक्मिणीके बड़े भाई इसका विवाह रुक्मिणीसे करना चाहते थे पर यह असफल रहा और श्रीकृष्ण रुक्मिणीको हर लाये थे (भाग० ५२ अध्या० पूरा; ५३.१४-१६; ५४.१०-१७)। यह कृष्णसे घृणा करता था फिर भी मरकर इसे विष्णुलोक प्राप्त हुआ (भाग० ३.२.१९; ७.१.१३-१५, ३०)। श्रुतश्रवासे इसका विवाह हुआ था जिससे सुनित नामक पुत्र हुआ (मत्स्य० ४६.६)। (२) शिशुपाल (वायु० ९७.१५७)।

चैद्यवर–पु० [सं०] मैत्रेयका एक पुत्र (मत्स्य० ५०.१४)।

चैद्योपरिचर–पु० [सं०] कृमिका एक पुत्र जिसे वसु भी कहते हैं। इनकी पत्नी गिरिका से इनके ७ पुत्र हुए (मत्स्य० ५०.२६)।

चैल–पु० [सं०] शृंगीपुत्रका एक शिष्य (वायु० ६१.४०)।

चोरगणेश–पु० [सं०] तांत्रिकोंके एक गणेश। कहते हैं कि यदि जप करनेमें हाथकी अँगुलियोंमें संधि रह जाय तो यह फल हर लेते हैं (तंत्राभिधान)।

चोल–पु० [सं०] (१) तँजोरके निकटस्थ एक प्रसिद्ध देश तथा राज्यका नाम। (२) आंडिरका एक पुत्र जिसके नाम पर चोल देशका नामकरण हुआ था (ब्रह्मां० ३.७४.६; मत्स्य० ४८.५)। (३) जनापीड़के चार पुत्रोंमेंसे एक जो चोलका राजा था (वायु० ९९.६)।

चौथ–स्त्री० [सं० चतुर्थी] चौथका चाँद=भाद्रपद शु० चतुर्थीका चन्द्रमा। जिसे देखनेसे कहते हैं कलंक लगता है। पुराणानुसार श्रीकृष्णने एक बार चौथका चाँद देखा था जिससे उन्हें चोरी लगी थी। हिन्दूसमाज इस दिन बड़ा सचेत रहता है। चाँद देखनेवाले दूसरोंके घरपर ढेला फेंकते हैं जिसमें गालियाँ सुननेको मिलें। कहते हैं इससे चाँद देखनेका दोष मिटता है, अतः कुछ लोग इसे ढेलहिया या ढेलवा चौथ भी कहते हैं—दे० सत्राजित्; जाम्बवन्त आदि।

च्यवन–पु० [सं०] (१) एक प्रसिद्ध ऋषिका नाम जो शुक्र (भृगु ऋषि) और पुलोमाके पुत्र थे (ब्रह्मां० ३.१.९२; वायु० ८६.२-२३)। महाभारतके अनुसार ऐसी प्रसिद्धि है कि जब यह गर्भमें थे तब एक राक्षस इनकी माताको हर ले जाना चाहता था। यह देख च्यवन गर्भसे निकल आये और इनके तेजसे वह राक्षस वहीं जलकर भस्म हो गया। यह अपने आप गर्भसे गिर पड़े थे और गतिशील थे, इस कारण इनका नाम 'च्यवन' पड़ा था। एक बार यह तप करने बैठे और बहुत दिनोंतक ध्यान मग्न ही बैठे रह गये। इनका शरीर दीमकोंने मिट्टीसे ढक दिया। केवल आँखें ही चमकती थीं। जिन्हें कुछ अद्भुत पदार्थ समझ राजा शर्यातिकी पुत्री सुकन्याने काँटे चुभो दिये। इससे क्रुद्ध हो

इन्होंने शर्यातिके परिवार तथा अनुचरोंका मल-मूत्र रोक दिया। तदनन्तर सुकन्याका विवाह इनसे हो गया। अश्विनी कुमारोंने सुकन्यासे विवाहका प्रस्ताव किया था जिसे उसने अस्वीकार कर दिया था। इससे प्रसन्न हो अश्विनीकुमारोंने च्यवनको वृद्धसे युवा बना दिया। इसके बदले च्यवनने यज्ञ किया और अश्विनीकुमारोंको (जिन्हें वैद्य होनेके कारण सोम नहीं दिया जाता था) सोमरस प्रदान किया। इसमें इन्द्रने आपत्ति की थी, पर अन्तमें उसे इनकी शरण आना पड़ा (भाग० ९.३.२-२६; ब्रह्मां० २.३२.९८; ३.८.३१; २१.३६; ६१.२)। यह कथा महाभारत और पुराणोंमें बड़े विस्तारसे दी गयी है। ऋग्वेद तथा शतपथ ब्राह्मणमें भी अश्विनी कुमारोंकी सहायतासे च्यवनका बुढ़ापा दूर होना पाया जाता है। महाभारतके अनुसार और्व ऋषि च्यवनके पुत्र थे जो सुकन्याके गर्भसे उत्पन्न हुए थे। आप्रवान तथा दधिचि भी इनके पुत्र कहे गये हैं (ब्रह्मां० ३.१.९३)। (२) मित्रेयुका पुत्र तथा सुदासका पिता (भाग० ९.२२.१; वायु० ९९.२०७; विष्णु० ४.१९.७०-७१)। (३) एक ऋषि (भाग० ६.१५.१४) जो युधिष्ठिरके राजसूयमें आमंत्रित थे (भाग० १०.७४.७)। यह स्यमंतपंचकमें श्रीकृष्णसे मिलने आये थे (भाग० ८४.३)। यह कृष्णके साथ मिथिला भी गये थे (भाग० ८६.१८)। (४) सुहोत्रका पुत्र तथा कृतकका पिता (भाग० ९.२२.५; वायु० ९९.२१७; विष्णु० ४.१९.७९); (५) तृतीय तलका (वितलका=वायु०) निवासी एक राक्षसका नाम (ब्रह्मां० २.२०.२८; वायु० ५०.२७)। (६) एक ऋषि तथा मंत्रकृत् जिन्होंने कार्त्तवीर्यके १०० पुत्रोंको मृत्युका शाप दिया था (मत्स्य० ६८.९; १४५.९२, ९९)। (७) भृगुके एक पुत्रका नाम (मत्स्य० १९५.१५,२८,२९)। (८) सुधन्वाका एक पुत्र (मत्स्य० ५०.२४)। (९) गोकर्णका एक पुत्र, सोलहवें द्वापरका एक अवतार (वायु० २३.१७३)। (१०) सुमेधाका पिता (वायु० ७०.२६)। (११) देवापिका एक पुत्र (वायु० ९९.२३७)।

च्यवन आश्रम—पु० [सं०] यह गयामें है जहाँ वैकुण्ठ, लोकदण्ड, गृद्धकूट और शोणक हैं (वायु० १०८.७३)।

छ

छंदक—पु० [सं०] श्रीकृष्णचन्द्रका एक नाम।

छंदज—पु० [सं०] (१) वेदोक्त देवता। ये ३३ देवता हैं जिनमें ३ गण, याम, अजितगण और शक्तगण जिनका प्रधान इन्द्र है, सम्मिलित हैं (ब्रह्मां० २.१३.९१)। ये चतुर्दशीतक चन्द्रमाका अमृत पान करते हैं और 'पंचदशी'-को बचा अमृत पितर लोग पी जाते हैं (वायु० ५६.२५)। (२) चाक्षुप मन्वंतरके देवतागण जिन्हें साध्य कहते हैं (ब्रह्मां० ३.३.९)।

छंदःस्तुभ—पु० [सं०] (१) एक वेदोक्त देवता जिनकी स्तुति वेदोंमें की गयी है। (२) सूर्यका सारथी अरुणका एक नाम (हि॰श॰सा॰)।

छंदांसि—पु० [सं०] चारों वेद=ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद (वायु० ३.१६)। गायत्री आदि विनताके पुत्र हैं (ब्रह्मां० ३.७.३०)। इनकी सृष्टि वामदेवने की है (मत्स्य० २४७.७)।

छंदोग—पु० [सं०] एक सामग; मंदिरोंके शिलान्यासके समय धार्मिक कृत्योंके साथ इनका पाठ होता है (भाग० १२.६.५३; मत्स्य० ९३.१३३; २६५.२८; वायु० ८३.५४)।

छंदोगगण—पु० [सं०] एक देवगण जिनमें ३३ हैं (वायु० ३१.५)।

छंदोदेव—पु० [सं०] मंतग नामक एक चाण्डाल जिसने ब्राह्मणत्व प्राप्त करनेके लिए कड़ी तपस्या की थी। इन्द्रके प्रसन्न होकर वर देनेसे यह कामरूप विहंग हुआ जिसका नाम छंदोदेव पड़ा। ब्राह्मण, क्षत्रिय सब वर्णकी स्त्रियाँ इनकी उपासना करती हैं (महाभा० अनु० २९.२४)।

छगल—पु० [सं०] (१) पिशाचोंके १६ वर्गोंमेंसे एकका नाम (ब्रह्मां० ३.७.३७६)। (२) मुण्डीश्वर अवतारका एक पुत्र (वायु० २३.२११)।

छत्र—पु० [सं०] (१) सात लोक जो श्वेत रंगके हैं। ये छातेकी तरह एकके ऊपर एक स्थित हैं (ब्रह्मां० २.२१.१९; ३.४९.२३; ५५.१५; ४.३७.३५)। (२) विष्णु द्वारा कामेश्वरको दिया गया श्वेत छाता जो राजाओंका प्रतीक है। यह आकाशके इतना ऊँचा है (ब्रह्मां० ४.१५.२३; १७.१; विष्णु० २.१३.९६)। कौरवोंने उग्रसेनसे इसे छीन लेनेकी धमकी दी थी (विष्णु० ५.३५.१४)।

छत्रवती—स्त्री० [सं०] पांचालके उत्तरका एक राज्य जिसे 'अहिच्छत्र' कहते हैं उसकी राजधानी (महाभा० आदि १६५.२१; हरिवंश तथा विष्णु० आदि)।

छत्रिका—स्त्री० [सं०] एक शक्ति देवीका नाम (ब्रह्मां० ४.४४.८७)।

छांदोग्य—पु० [सं०] सामवेदान्तर्गत एक ब्राह्मण जिसके प्रथम दो भागोंमें मनुष्यके संस्कारादिका वर्णन है शेष उपनिषद् है।

छाग—पु० [सं०] अग्निका वाहन, जिसे बकरा कहते हैं। इसका मांस पितरोंको प्रिय है (मत्स्य० १४८.८३; १७.३२)।

छागमय—पु० [सं०] स्वामी कार्त्तिकेयका षष्ठ मुख (स्कंदपु०)।

छागमुख—पु० [सं०] (१) कार्त्तिकेयका छठा मुख जो छाग (बकरे) के मुखके समान है (स्कंदपु०)। (२) कार्त्तिकेयका एक अनुचर।

छागल—पु० [सं०] हिमालयकी एक चोटी जहाँ श्वेत चार शिष्योंके साथ वाराहकल्पमें प्रकट हुए थे (वायु० २३.११६)।

छागलाण्ड—पु० [सं०] एक तीर्थका नाम जो प्रचण्डा और पितरोंके लिए पवित्र और प्रिय कहा गया है (मत्स्य० १३.४३; २२.७२)।

छाया—स्त्री० [सं०] (१) विश्वकर्माकी पुत्री तथा संज्ञाकी अनुचरी (भाग० ८.१३.८-१०; मत्स्य० ११.५-९; २४८.७३; वायु० ८४.३९-७७)। सूर्यकी पत्नी संज्ञा, जिसके गर्भसे सूर्यके यम नामक पुत्र और यमुना नामकी पुत्री हुई थी, सूर्य-तेज न सह सकनेके कारण अपनी अनुचरी छायासे एक

स्त्री बना अपने बच्चोंको इसीको दे स्वयं अपने पिताके घर चली गयी। छायाने संज्ञाके बच्चोंसे दुर्व्यवहार किया, यमने भेद खोल दिया, अतः इसने शाप दे उन्हें विकलांग कर दिया था। संज्ञाके पिता विश्वकर्माने संज्ञाको फटकारा और स्वामीके पास लौटनेको कहा, पर वह यह न कर उत्तर कुरुवर्षमें घोड़ीका रूप धारण कर विचरने लगी। सूर्य घोड़ेका रूप धर इससे मिले। इस समागमसे अश्विनीकुमार द्वयका जन्म हुआ। संज्ञा फिर लौट आयी (ब्रह्मां० ३.५९.३२-७७; ४.३५.४७; भाग० ६.६.४१)। (२) सृष्टिकी मानस-पुत्री पत्नी जो ५ पुत्रोंकी माता थी (भाग० २.३६.९७-९८)। (३) पुष्टिकी पत्नी जिसके पाँच पुत्र थे–प्राचीनगर्भ, वृषक, वृक, वृकल और धृति (वायु० ६२.८३)।

छायाक्षेत्र–पु० [सं०] ललितापीठका एक सिद्ध स्थान (ब्रह्मां० ४.४४.१००)।

छायाग्राहिणी–स्त्री० [सं०] एक राक्षसी। समुद्र फाँदते समय इसने हनुमानकी छाया पकड़कर उन्हें खींच लिया था (रामायण)।

छायातनय–पु० [सं०] शनिदेवका नाम। सूर्यका तेज न सह सकनेके कारण जब इनकी पत्नी संज्ञा अपनी छायारूपी स्त्रीको छोड़ चली गयी तब सूर्यने इसी छायाको संज्ञा समझ सावर्णि और शनैश्चर नामके दो पुत्र उत्पन्न किये। सूर्यने संज्ञाको अश्विनी रूपमें ढूँढ़ निकाला था—दे० छाया।

छायादान–पु० [सं०] एक प्रकारका दान जो शरीरके अरिष्टकी शांतिके लिए होता है। दान करनेवाला घी या तेलसे भरे काँसेके कटोरेमें अपनी छाया देखता है। इसमें कुछ दक्षिणा डालकर दान देता है जिसे कुलीन ब्राह्मण नहीं ग्रहण करते।

छायापथ–पु० [सं०] दे० आकाशगंगा।

छालिया–पु० [सं० स्थाली] काँसेकी बनी कटोरी जिसमें घी या तेल भर छायादान करते हैं—दे० छायादान।

छिद्रदर्शी–पु० [सं०] (१) हरिवंशके अनुसार एक योगभ्रष्ट ब्राह्मणका नाम जो बाभ्रवका पुत्र था। (२) पूर्वजन्ममें कौशिकका एक पुत्र जो चक्रवाक नामसे मानसक्षेत्रमें उत्पन्न हुआ था (मत्स्य० २०.१८)।

छिन्नकर्ण–पु० [सं०] भण्डके एक सेनापतिका नाम (ब्रह्मां० ४.२१.८७)।

छिन्नमस्ता–स्त्री० [सं०] एक देवी जो दस महाविद्याओंमें छठी देवी है। यह अपना ही कटा हुआ सिर अपने बाँयें हाथमें लिये हुए हैं, मुँह खुला और जीभ निकली हुई है। अपने ही गलेसे निकली रक्तधाराको यह चाटती हैं, हाथमें खड्ग, गलेमें मुण्डोंकी माला तथा नग्न रहती हैं। इनका नाम प्रचण्डिका भी है। तन्त्रशास्त्रमें इनका पूरा विवरण दिया हुआ है। इस देवीका रूप भयंकर अवश्य है, पर शक्तिका पूरा रूप इससे झलकता है। तांत्रिक लोग ही इनकी उपासना अधिक करते हैं।

छेदोपस्थानिक चारित्र–पु० [सं०] गणाधिपके दिये हुए प्राणातिपातादि पाँच महाव्रतोंका पालन। जैनोंके अनुसार (हि. श. सा.)।

ज

जंगम–पु० [सं०] दाक्षिणात्य लिंगायत शैवके गुरु जो विरक्त और गृहस्थ दो प्रकारके होते हैं।

जंघारथ–पु० [सं०] एक ऋषिका नाम (हिं.श.सा.)।

जंघारि–पु० [सं०] विश्वामित्रजीके एक पुत्रका नाम—दे० विश्वामित्र।

जंघाबंधु–पु० [सं०] एक ऋषिका नाम (हिं.श.सा.)।

जंतु–पु० [सं०] (१) पुरुद्वान् तथा भद्रसेनाका पुत्र। ऐक्ष्वाकी नामकी पत्नीसे इसका पुत्र सात्वत उत्पन्न हुआ था (मत्स्य० ४४.४५-६)। (२) सोमकका पुत्र जो किसी उत्तराधिकारीके बिना ही मारा गया, अतः अजमीढ़ और धूमनीने फिरसे वंश चलाया (भाग० १०.५०.१६-१९; वायु० ९९.२०९)।

जंतुधना–स्त्री० [सं०] यातुधानकी एक पुत्री (ब्रह्मां० ३.७.८५) जो खशाके एक पुत्र अजको ब्याही थी। यातुधानवंश इसीसे चला। कहते हैं इसके सारे शरीरमें बाल भरे थे (वायु० ६९.१२४)।

जंब–पु० [सं०] एक सुधर्मा देवका नाम (ब्रह्मां० ४.१.६०)।

जंबु–पु० [सं०] (१) एकवृक्ष जो हिमालयके इलावृतमें स्थितहै (ब्रह्मां० २.१७.१२; १९.२९; ३.२२.३७; २७.१७; ४.४३.१७)। (२) एक नदी जो मेरुमंदरसे इलावृतमें बहती है; चन्द्रप्रभसे निकली एक नदी (ब्रह्मां० २.१८.६९) जिसका रंग तितलीके ऐसा है (वायु० ४६.३०)।

जंबुक–पु० [सं०] 'आप'का एक पुत्र (वायु० ६९.३०)।

जंबुकाक्ष–पु० [सं०] भण्डासुरका एक सेनापति जिसे विषंगकी सहायता करनी थी, पर यह नीलपताकासे मारा गया था (ब्रह्मां० ४.२१.८०; २५.२९.९८)।

जंबुद्वीप–पु० [सं०] पुराणोक्त सात द्वीपोंमेंसे एक जो पृथिवीके मध्यमें माना गया है। यह गोल है और चारो ओर खारा जलसे घिरा हुआ है (भाग० १.१२.५; ५.१.३२; १६.५-७; १९.२९-३०; २०.२; मत्स्य० ८३.३२; ११३.७; १२२.२; २८४.२; वायु० ११.८४; ३३.११.४५; अध्याय ३४; विष्णु० २.३.२८)। इसका विस्तार एक लाख योजन है और इसके नौ-नौ हजार योजनके ९ खण्ड हैं। इन्हें वर्ष भी कहते हैं जिनके नाम ये हैं—(१) भारत जो हिमालयके दक्षिण है। (२) किंपुरुष; (३) हरिवर्ष; (४) इलावृत, द्वीपके बीचवाला भाग, जिसके पूर्वमें (५) भद्राश्व और पश्चिममें (६) केतुमाल स्थित है (७) उत्तर कुरु; (८) रम्यक, (९) हिरण्यमय। पुराणानुसार इस द्वीपमें एक बहुत बड़ा जम्बुका पेड़ है जिसमें हाथीके इतने बड़े फल लगते हैं, अतः यह नाम पड़ा (वायु० ४६.२५)।

जंबुनदी–स्त्री० [सं०] (१) पुराणोंके अनुसार जंबुद्वीपकी नदी जो वहाँके जंबुफलके रससे बनी है। इस नदीका उद्गम स्थान ब्रह्मलोकमें माना जाता है (महाभा० भीष्म ६.४८)। यह सात प्रधान नदियोंमें है। (२) सुवर्णमिश्रित मधुकी एक नदी (वायु० ३५.२९; ४७.६६)।

जंबुमान्–पु० [सं०] जांबवान नामका एक बंदर (रामचरित मानस)।

जंबुमती–स्त्री० [सं०] एक अप्सराका नाम (हिं.श.सा.)।

जंबुमार्ग–पु० [सं०] चित्रकूटके निकट जंगलमें स्थित एक तीर्थका नाम (ब्रह्मां० ३.१३.३८)। यह पितरोंको प्रिय है (मत्स्य० २२.२१)। भरत यहीं उत्पन्न हुए थे (विष्णु० २.१३.३३)।

जंबुमाली–पु० [सं०] एक राक्षस विशेषका नाम जो रावणका सेनापति था और हनुमानने इसे मारा था (रामायण)।

जंबुप्रस्थ–पु० [सं०] एक प्राचीन नगरका नाम। भरत जब केकैय देशसे (अपने नानिहालसे) लौटे थे तब यह देश मार्गमें पड़ा था। आधुनिक जम्बु (कश्मीर) अनुमानतः शायद वही नगर है (महाभा० तथा वाल्मी० रामायण)।

जंबुरसवती–स्त्री० [सं०] इलावृतकी एक नदीका नाम (ब्रह्मां० २-१७.२२)।

जंभ–पु० [सं०](१) महिपासुरका पिता एक दैत्य जिसे इंद्रने मारा था—दे० इंद्र जिमि जंभपर...आदि 'भूपण' तथा जंभ(४))। (२) प्रह्लादके तीन पुत्रोंमेंसे एकका नाम—दे० प्रह्लाद। (३) हिरण्यकशिपुका एक पुत्र—दे० हिरण्यकशिपु। (४) कयाधुका पिता जो असुरोंका सरदार था। बलि-इंद्रके देवासुर-संग्राम (छठे)में यह वृपाकपिसे लड़ा था। बलिकी मृत्यु सुन यह इंद्रसे भिड़ गया और इसने उनके हाथीको पंगु कर दिया। इंद्रने चक्रसे इसका सिर काट डाला था (भाग० ६.१८.१२; ८.१०.२१-३२; ११.१३, १८; ब्रह्मां० ३.६.१०; ७२.८१,१०५; वायु० ९७.१०३)। यह तारकका सेनाध्यक्ष था और यम, कुबेर, जनार्दन आदि से लड़ा, पर अन्तमें मारा गया (मत्स्य० ४७.७२; १४८.४२-५४; अध्याय १५०-५३; २४५.१५; विष्णु० ४.६.१४; वायु० १४.१४)। (५) बाष्कलका एक पुत्र (ब्रह्मां० ३.५.-३८)। (६) विरोचनका पुत्र तथा चार पुत्रोंका पिता (वायु० ६७.७६)। (७) एक नागका नाम (वायु० ६९.६९)।

जंभन–पु० [सं०] जृम्भण नामक भण्डका सेनापति जो विजयाके हाथों मारा गया था (ब्रह्मां० ४.२५.२९)।

जंभभेदी–पु० [सं०] जंभका वध करनेके कारण इन्द्रका एक नाम—दे० जंभ (४)।

जंभेश्वर–पु० [सं०] पितरोंका एक पवित्र तीर्थस्थान (मत्स्य० २२.४२)।

ज–पु० [सं०] मृत्युञ्जय।

जगत्–पु० [सं०] संसार जिसकी उत्पत्ति ब्रह्माके मस्तिष्क तथा शरीरसे हुई (भाग० ५.१२.२७)। यह 'अग्नीषोमात्मक' है (ब्रह्मां० ३.७२.५०; वायु० ९७.५१) इसकी उत्पत्ति विष्णुसे हुई तथा उन्हींके साथ रहती है (विष्णु० १.१.४,३१; वायु० ४९.१५६,८६)।

जगत्सृष्टि–स्त्री० [सं०] तत्त्वोंका विकास। जब शक्तिने सृष्टिमें सहयोग नहीं दिया तब ईश्वर शक्तिकालके साथ अपनेको अध्यात्म, अधिदैव तथा अधिभूत इन तीन खंडोंमें विभक्त कर २३ तत्त्वोंमें प्रवेश कर गये। इस समय प्राण दशगुणा हो गया, अग्निरूपी मुख, वरुण=जिह्वा तथा अश्विनीयुगल नथुने बने। इसपर चार वर्णोंकी उत्पत्ति हुई। सर्वप्रथम अंधतामिस्र, तामिस्र, महामोह और तम ये चार अज्ञानोंकी सृष्टि हुई। इन निकृष्ट पदार्थोंकी सृष्टिसे लज्जित हो ब्रह्माने सनक, सनंद आदि ऋषियोंको उत्पन्न किया, पर ये भी सृष्टिका काम इच्छानुकूल न चला सके, अतः ब्रह्मा क्रुद्ध हो उठे और उनकी भृकुटियोंसे 'रुद्र' उत्पन्न हुए। इनकी सृष्टिको भी अग्राह्य समझ ब्रह्माने मरीचि, अत्रि आदि दस मानसपुत्रों तथा सरस्वती पुत्रोंको उत्पन्न किया। तदुपरांत वेद आदिका आविर्भाव हुआ। अन्तमें ब्रह्माके शरीरसे स्वायम्भुव तथा शतरूपा उत्पन्न हुए जिनके दो पुत्र तथा तीन पुत्रियाँ हुईं। उनके वंशजोंसे सारा संसार भर गया (भाग० ३.५.२७-३६; अ० ६ पूरा, १२ पूरा; २०.१२)।

जगती–पु० [सं०] सूर्यके रथका एक घोड़ा (ब्रह्मां० २.२२.७२; विष्णु० २.८.५)। गायत्री त्रिष्टुबुके साथ (वायु० ५१.६४) ब्रह्माके मुखसे उत्पन्न (ब्रह्मां० २.८.५२; १३.१४५)।

जगद्गौरी–स्त्री० [सं०] मनसा देवीका एक नाम। यह नागोंकी बहिन और जरत्कारु ऋपिकी पत्नी थीं। आस्तीक ऋपि इन्हींके पुत्र थे (दे० जरत्कारु तथा आस्तीक)।

जगद्दीप–पु० [सं०] महादेव।

जगद्धाता–पु० [सं०] ब्रह्मा।

जगद्धात्री–स्त्री० [सं०] दुर्गा, ललिता, (ब्रह्मां० ४.१३.१७.६३)।

जगद्बल–पु० [सं०] वायु।

जगद्योनि–पु० [सं०] ब्रह्मा, पृथ्वी।

जगन्नाथ–पु० [सं०] (१) विष्णुकी एक प्रसिद्ध मूर्ति जो पुरी नामक स्थानमें स्थापित है। मूर्त्ति सुभद्रा और बलरामकी मूर्त्तियोंके साथ रहती है। तीनों मूर्त्तियाँ चन्दनकी होती हैं जो समय-समयपर बदली जाती हैं जिसे 'कलेवर बदलना' कहते हैं। वैशाख शुक्ल ८ पुष्यनक्षत्र योगमें बृहस्पतिके दिन जगन्नाथकी प्रतिष्ठा हुई थी (स्कंद० वैष्णव० उत्क० खंड)। जब आपाढ़में मलमास हो और दो पूर्णिमाएँ भी हों तभी कलेवर बदला जाता है। कूर्म्म, भविष्य, ब्रह्मवैवर्त, नृसिंह, अग्नि, ब्रह्म और पद्म आदि पुराणोंमें जगन्नाथजीकी मूर्त्ति और तीर्थके सम्बन्धमें बहुत-सी कथाएँ और माहात्म्य दिये हैं। इतिहासोंके अनुसार सन् ३१८ में जगन्नाथजीकी मूर्त्ति जंगलमें पड़ी मिली थी जिसे राजा ययाति केशरीने पुरीमें स्थापित किया। जगन्नाथजीका वर्तमान मंदिर गंगवंशके राजा अनंगभीमदेवने सन् ११८४ से सन् ११९८ तकमें बनवाया था।

जगन्नाथ तथा बलरामकी मूर्त्तियोंमें पैर बिलकुल नहीं होते और हाथ भी बिना पंजेके होते हैं। सुभद्राकी मूर्त्तिमें हाथ और पैर दोनों नहीं होते। इन मूर्त्तियोंको अधिकतर भात और खिचड़ी ही भोग लगता है जिसे महाप्रसाद कहते हैं। इसे सबलोग बिना छुआछूतके विचारके ग्रहण करते हैं जिसे अटका भी कहते हैं। जगन्नाथको जगदीश भी कहते हैं—दे० कर्मा।

उड़ीसा सरकारके लोकसम्पर्क विभाग द्वारा प्रकाशित उत्कल परिचयके अनुसार अवन्तीनरेश महाराज इन्द्रद्युम्नने एक मंदिर बनवाया था। खीष्टीय ७वीं सदीमें महाभवगुप्त ययातिने इन्द्रद्युम्नके स्थापित नीलमाधवको जगन्नाथ, बलभद्र और सुभद्राके नामकी तीन मूर्त्तियोंमें परिणत किया और ३८ हाथ ऊँचा एक मंदिर बनवाया था जो कुछ दिनों

बाद टूट गया। खीष्टीय बारहवीं सदीमें चोड़ गंगदेवने आधुनिक मंदिरका श्रीगणेश किया था और १२४० ई० में साढ़े सात करोड़ रुपये खर्चकर महाराज अनंगभीमदेवने इसकी पूर्ति की। कहा जाता है कि पहले जमानेमें प्राची नदीके किनारेपर पूजा करनेवाले जैनोंसे शवरोंने इस मूर्त्तिका उद्धार किया था। कलेवरके पश्चात् पुरानी मूर्त्तियाँ उसी मंदिरके अहातेमें 'कैवल्य वैकुण्ठ' नामक स्थानमें गाड़ देते हैं।

विग्रह निर्माणके लिए दारु अर्थात् नीमका पेड़ खास गुणोंसे युक्त होना चाहिये। जगन्नाथजीका मुख्य मंदिर १९२ फुट ऊँचा, अस्सी फुट लम्बा तथा ८० फुट चौड़ा है। इसके शिखरपर 'नीलचक्र' तथा पताका लगी है। इनके भोगोंको 'छेक' कहा जाता है। सालके बारह महीनोंमें जगन्नाथजीके तेरह उत्सव मनाये जाते हैं—दे० जनकपुर (२)। (२) बंगालके दक्षिण उड़ीसाके अन्तर्गत समुद्रके किनारेपर बसा एक प्रसिद्ध तीर्थ स्थान जो हिंदुओंके चार धामोंमें एक है। इसे पुरी, जगदीशपुरी तथा जगन्नाथपुरी कहते हैं। अधिकांश पुराणोंके अनुसार इस तीर्थको पुरुषोत्तमक्षेत्र कहा गया है। जगन्नाथजीका प्रसिद्ध मंदिर इसी क्षेत्रमें है। यहाँके उत्सवोंमें 'रथयात्रा' और 'नव कलेवर' अधिक विख्यात हैं। यहाँ कुछ अन्य बड़े-छोटे तीर्थोंका पुंज-सा है जो इसीके निकटस्थ हैं (स्कंद० वैष्णव० उत्कलखंड)।

जगन्निवास–पु० [सं०] विष्णु।

जगन्नु–पु० [सं०] अग्नि।

जगन्मयी–स्त्री० [सं०] सारे संसारको चलानेवाली महाशक्ति।

जटातीर्थ–न०पु० [सं०] लंकापति रावणके मारे जानेपर जिस जलमें श्रीरामने अपनी जटा धोयी थी वहीं जटातीर्थ हो गया। गंधमादन पर्वतपर स्वयं शंकरने अज्ञानके नाश हेतु इस तीर्थको प्रकट किया था। व्यासके कहनेसे शुकदेव यहाँ गये तथा भृगु भी यहाँ जा अपनी बुद्धिको शुद्ध कर आये थे (स्कंद० ब्राह्म० सेतु-माहात्म्य)।

जटामाली–पु० [सं०] १९वें द्वापरका एक विष्णु अवतार जो हिमालयके जटायु पर्वतपर हुआ था। इनके चार पुत्र थे जो सब महेश्वरयोगमें लगे थे (वायु० २३.१८६-८)।

जटायु–पु० [सं०] (१) हिमालय पर्वत श्रृंखलाका एक पर्वत जो १९वें द्वापरके अवतार जटामालीका जन्मस्थान था (वायु० २३.१८६)। (२) एक प्रसिद्ध गिद्ध जिसका वर्णन रामायणमें है। गृध्री यह सूर्यके सारथि अरुणका नाम्नी स्त्रीसे उत्पन्न पुत्र था (ब्रह्मां० ३.७.४४७-४८)। पद्मपुराणानुसार यह दशरथका मित्र था जिसने उन्हें शनिके कोपभाजन बननेसे बचाया था और सीताहरणके समय रावणसे लड़ा था। इसने रामचन्द्रजीके आनेपर सीता-हरणकी सूचना उनको दी थी। यह युद्धमें घायल हो गया था इससे श्रीरामको समाचार देते-देते इसका प्राणान्त हो गया था। श्रीरामने स्वयम् इसकी अन्त्येष्टि क्रिया बड़ी धूमधामसे की थी (भाग० ९.१०.१२; ११.१२.६; वायु० ६९.३२६-७)। इसने कैवल्य मोक्ष प्राप्त किया था (स्कंद० ब्राह्म० सेतु माहा०)। इसके भाईका नाम संपाति था और कक, गृध्र तथा अश्वकर्णी इसके पुत्र गिद्धोंके राजा थे (ब्रह्मां० ३.७.४४७-४८) (रामचरितमानस, अरण्यकाण्ड, दो, १३; २८.४–२९(क) तक; तथा २९(ख)९ से दो० ३२)।

जटासुर–पु० [सं०] एक प्रसिद्ध राक्षस जो द्रौपदीके रूपपर मोहित हो ब्राह्मणका वेश धर पांडवोंमें सम्मिलित हो गया था। एक बार भीमकी अनुपस्थितमें द्रौपदी, युधिष्ठिर, नकुल और सहदेवको हर ले जाना चाहता था, पर मार्गमें ही भीम द्वारा मारा गया (महाभा० वन० १५६.७-११, ४८-७०)।

जटिल–पु० [सं०] शिवका नाम विशेष। पार्वतीजी शंकरको प्राप्त करनेके लिए हिमालयपर तपस्या कर रही थीं। इसी समय महादेव अत्यन्त जटिल वेषमें उनके समक्ष गये थे, अतः यह नाम पड़ा (हि० श० सा०)।

जटिला–स्त्री० [सं०] गौतम ऋषिके वंशकी एक धर्मपरायणा ऋषि-कन्याका नाम जिसका विवाह सात ऋषिपुत्रोंसे हुआ था (महाभा० आदि० १९५.१४)।

जटी–पु० [सं०] (१) नास्तिकोंका एक वर्ग (ब्रह्मां० ३.१४.-४०)। (२) विघ्नेश्वरका एक नाम (ब्रह्मां० ४.४४.७०)।

जठर–पु० [सं०] (१) एक देश जो कुक्कुर देशके पास है (महाभा० भीष्म० ९-४२)। (२) एक पर्वतका नाम जो मेरु पर्वतसे पूर्व है (भाग० ५.१६.२७; वायु० ३५.८; ४२.२०)। यह नील पर्वतसे निषिधगिरितक चला गया है (विष्णु० २.२.४१ तथा भाग०)।

जडभरत–पु० [सं०] राजा ऋषभके पुत्र तथा पहिले मन्वंतरके एक विष्णुभक्त राजा। यह अंगिरस गोत्री एक ब्राह्मण थे जो जड़वत् रहते थे। भागवतानुसार वानप्रस्थ आश्रममें राजा भरतने एक हिरन पाला था जिसकी चिन्ता उन्हें अन्ततक रही। अतः मरनेपर वह हिरनकी योनिमें उत्पन्न हुए। यह शरीर त्याग फिर ब्राह्मण हुए। वे संसारकी वासनासे बचनेके लिए जड़वत् रहते थे, इसी कारणसे उनका यह नाम पड़ा था।

एक बार सौवीर-राज शिविकापर चढ़ इक्षुमती नदीके तटपर स्थित महर्षि कपिलके आश्रमपर जाना चाहते थे अतः बेगारमें यह (जड़भरत) पकड़े गये। यह अन्य बेगारोंकी गतिसे नहीं चलते थे जिससे शिविकाकी गतिमें विषमता देख राजा बिगड़ उठे, पर जड़भरतके विद्वतापूर्ण उत्तरसे बड़े प्रभावित हुए और शिष्य हो गये (नारद० पूर्वभाग–द्वितीय पाद)।

जतु–पु० [सं०] सुधन्वा (जतु) का एक पुत्र (विष्णु० ४.१९.८२)।

जतुगृह–पु० [सं०] दुर्योधनका बनवाया लाक्षागृह जिसमें पाण्डवोंको जलाकर भस्म कर देनेका निश्चय किया गया था (विष्णु० ४.१३.७०; महाभा०)।

जतुधना–स्त्री० [सं०] यातुधानकी एक पुत्री (ब्रह्मां० ३.७.८५) जो खशाके एक पुत्र अजको ब्याही थी। यातुधानवंश इसीसे चला। कहते हैं इसके सारे शरीरमें बाल भरे थे (वायु० ६९.१२४)।

जतुनाभ–पु० [सं०] एक यक्षका पुत्र तथा मणिवरका पिता (वायु० ६२.१८३)।

जन–पु० [सं०] पाँचवाँ लोक जहाँसे मनुष्य उत्पन्न होते

हैं (जन धातुसे) (ब्रह्मां० २.१९.१५६; २१.२२; ३५.१५३, २०६; ३.१.१५-१६; मत्स्य० ६१.१; १९४-२३; वायु० १००.१२७; १०१.१७)। महर्लोकसे यह दो करोड़ योजन दूर है (वायु० १०१.१४०, २०८)।

जनक–पु० [सं०] (१) मिथिलाके राजवंशियोंकी एक उपाधि। सीताजी इसी कुलमें उत्पन्न राजा सीरध्वजकी पुत्री थीं। इस कुलके पुरुषोंके सम्बन्धमें ब्राह्मणों, उपनिषदों, महाभारत तथा पुराणोंमें कथाएँ भरी पड़ी हैं। कपिला नामकी ब्राह्मणीके पुत्र महामुनि पंचशिखने इन्हें मोक्ष धर्मकी दीक्षा दी थी जिससे शोकरहित हो जनक सुखसे रहने लगे थे। एक बार मिथिला नगरीको आगसे जलती देख यह स्वयम् बोले थे—'इस नगरके जलनेसे मेरा कुछ भी नहीं जलता'। यह मोक्षतत्त्व जान गये थे—नारद० पूर्व० भाग-द्वितीयपाद, श्लोक ७७ तक तथा महाभा० शांति० अध्याय २१८, २१९ के श्लोक ४३ तक।

(२) ब्रह्मज्ञान प्राप्त किये हुए १२ ऋषियोंमेंसे एक जो निमिके पुत्रको मथनेसे उत्पन्न हुए थे, अतः 'मिथिल' नाम पड़ा। विदेहसे उत्पन्न होनेके कारण इन्हें 'विदेह' कहते हैं। मिथिलानगरके यह संस्थापक थे। यह उदावसु (पुत्र) तथा सीता (पुत्री) के पिता थे (भाग० ६.३.२०; ९.१३.१३-१४; १०.७१.९; वायु० ८९.२; विष्णु० ४.५.२२-४; १३.१०३)। यह श्री रामचन्द्रके श्वसुर थे (ब्रह्मां० २.३४.३३-६८; ३.३७.२२: ६४.२)। इनके यज्ञमें याज्ञवल्क्यने शाकल्यको परास्त किया था (वायु० ६०.३२.६२; ८९.५; विष्णु० ३.१८.८५-९०)। (३) विदेहोंके राजा तथा बलरामके मित्र (भाग० १०.५७.२४-२६)। (४) विशाखयूपका एक पुत्र तथा नंदिवर्धनका पिता (विष्णु० ४.२४.५-६)।

जनकनंदिनी–स्त्री० [सं०] श्रीरामकी पत्नी जानकीका नाम (रामायण)।

जनकपुर–पु०[सं०] (१) मिथिलाकी पुरानी राजधानी जो नेपालकी तराईमें स्थित है और हिन्दुओंका प्रधान तीर्थ है जहाँ हजारों यात्री प्रतिवर्ष दर्शनार्थ जाते हैं। यह सीतामढ़ीसे १४ कोस उत्तर है (रामायण)। (२) पुरीमें श्री महाप्रभुके मंदिरसे लगभग दो मील दूर स्थित एक तीर्थस्थानका नाम। पुराणानुसार इसे गुड़िच कहते हैं जहाँ पहले-पहल काष्ठकी मूर्त्तियाँ रची गयी थीं, अतः इसे जन्मपुर या जनकपुर कहते हैं। इसके निकट ही 'इंद्रद्युम्न तालाब' है—दे० जगन्नाथ।

जनदेव–पु० [सं०] मिथिला प्रदेशके एक प्राचीन राजा जिन्हें पंचशिख ऋषिके उपदेशसे मोक्ष मिला था (महाभा०)।

जननाशौच–पु० [सं०] घरमें नवजात शिशुके कारण लगा अशौच।

जनपद–पु० [सं०] क्रौंचद्वीपके सात जनपद—उष्ण, पीवर, अंधकार, मुनि, दुंदुभि, कुशल और मनुज।

जनमेजय–पु० [सं०] (१) शतानीकके पिता (विष्णु० ४.२०.१; २१.२-३)। एक चंद्रवंशी प्रसिद्ध राजाका नाम जो महाराज परीक्षितके चार पुत्रोंमें प्रथम थे। यह इरावतीके गर्भसे उत्पन्न हुए थे (भाग० १.१६.२; ब्रह्मां० ३.६८.२०)। इन्होंने तक्षक नागसे बदला लेनेके लिए सर्प-यज्ञ किया था। वैशंपायनने इन्हें महाभारत सुनाया था तथा इन्होंने अश्वमेध यज्ञ भी किया था (भाग० ९.२२.३५-३८; १२.६.१६-२८; (मत्स्य० ६.४२)। अंतमें पुत्रको राज्यभार दे यह तप करने वन चले गये थे (मत्स्य० ५०.६१-५)। (२) महाराज अंगके पिता तथा कर्णके दादाका नाम (मत्स्य० ४८.१०२; वायु० ९९.११२)।

जनलोक–पु० [सं०] एक ईश्वरीय लोक (भाग० ८.२०.३४)। यह वरुणका लोक है (वायु० ७.२८; २३.८४; २४.३; ४९.१४९; ६१.१२९; ६५.१७)। यह विराट्का मुख है (भाग० २.१.२८) तथा पुरुषका एक अंग (भाग० ५.३९)। महर्लोकसे यह दो करोड़ योजन दूर है (ब्रह्मां० ४.१.१२३; २.१३.१५; १३९; विष्णु० २.७.१३-१४)। प्रलय होनेपर महर्लोकसे देवतागण यहीं चले आते हैं (ब्रह्मां० १.६.२८; विष्णु० ६.३.२९)। यहाँ ब्रह्माके मानसपुत्र सनक, सनन्दन, अखंड ब्रह्मचर्य पालन करनेवाले योगी निवास करते हैं (स्कंद०, काशी० पूर्वार्ध)।

जनस्तंभ–पु० [सं०] (१) शांतिदेवा और वसुदेवका एक पुत्र (ब्रह्मां० ३.७१.१८०)। (२) तुम्बका एक पुत्र (वायु० ९६.२४९)।

जनस्थान–पु० [सं०] (१) दण्डकारण्यका एक स्थान जहाँ वनवास कालमें श्री रामचन्द्रने कुछ कालतक निवास किया था तथा अनेक राक्षसोंका वध किया था (ब्रह्मां० ३.६३.१९५; वायु० ८८.१९४)। (२) गोदावरी तटका वह स्थान जहाँ वरुणदेवके कहनेसे याज्ञवल्क्य ऋषिकी अध्यक्षतामें जनकोंने यज्ञ किया था, अतः यह 'जनस्थान' कहलाया। यहाँ भोग और मोक्ष दोनों मिलते हैं (ब्रह्म० ८८.१३-१५)।

जना–स्त्री० [सं०] माहिष्मतीके राजा नीलध्वजकी स्त्रीका नाम। पांडवोंके अश्वमेध यज्ञके घोड़ेको पकड़नेवाला प्रवीर इसीके गर्भसे उत्पन्न हुआ था (जैमिनीय भारत)। प्रवीरकी मृत्युके पश्चात् यह स्वयम् पांडवोंसे युद्ध करने लगी और श्रीकृष्णको इससे पांडवोंकी रक्षा करनेमें बहुत कठिनाई हुई थी। यह वीर पुत्रकी वीर माता थी (महाभा०)।

जनापीड़–पु० [सं०] शरूथका पुत्र। इसके पाण्ड्य, केरल, चोल और कुल्य नामके चार पुत्र थे (वायु० ९९.५-६)।

जनार्दन–पु० [सं०] वसुदेवका एक नाम (वायु० ९६.५१; १०६.५४)। विष्णुका हयग्रीव अवतार। देवीके भाईके नाते भंड-ललिता-युद्धमें भण्डासुर द्वारा मायासे सृष्ट हिरण्यकशिपोंका दमन (ब्रह्मां० ४.२९.१०३, १३३)। गयामें पितरोंके रूपमें (वायु० १०८.८५, ८९; १०९.२४, ३४)। विषके कारण काला रंग हो गया (वायु० ५४.५९)। सत्त्व, रज तथा तम गुणोंके कारण यही ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव होते हैं (विष्णु० १.२.६१-७)।

जनार्दनपूजा–स्त्री० [सं०] विष्णुको पञ्चगव्यसे स्नान कराके मार्गशीर्ष शु० १२ को पूजा करे, स्वयम् वही पञ्चगव्य पान करे तथा चावल ब्राह्मणको दे (कृत्यरत्नावली)।

जनु–पु० [सं०] दो पिशाचोंमेंसे एक जो खशाके गर्भसे उत्पन्न कश्यपके पुत्र थे उनमें एक यक्ष था और दूसरा राक्षस था (वायु० ६९.११३)।

जन्मकील–पु० [सं०] विष्णु। पुराणानुसार विष्णुकी उपासना करनेवाला मोक्षपद प्राप्त करता है, अतः विष्णुको

जन्मकील कहते हैं।

जन्माष्टमी–स्त्री० [सं०] भादोंकी कृष्णाष्टमी, बुधवार, रोहिणी नक्षत्र, वृषके चन्द्रमा आधीरातको श्रीकृष्णका जन्म हुआ था। इस दिन हिन्दू व्रत तथा उत्सव करते हैं। विष्णुपुराणमें श्रीकृष्णका जन्म श्रावण कृष्णाष्टमीको लिखा है जिसका कारण मुख्य चन्द्रमास और गौणचन्द्रमासका भेद मालूम होता है। इसमें अष्टमीके उपवाससे पूजन और नवमीके पारणसे व्रतकी पूर्त्ति होती है (शिव०, विष्णु०, ब्रह्म०, अग्नि० तथा भविष्य० आदि०)।

जमदग्नि–पु० [सं०] (१) वैवस्वत मन्वन्तरके सप्तर्षियोंमेंसे एक ऋषि। यह सत्यवती तथा ऋचीकके पुत्र एक प्राचीन गोत्रकार (भार्गव) (मत्स्य० १९५.१५, २९) ऋषि थे। यह (जमदग्नि) वैष्णवाग्नि खानेसे उत्पन्न हुए थे (भाग० ८.१३.५; ब्रह्मां० २.३२.१०५; ३८.२७; मत्स्य० ९.२८; १२६.२१; वायु० ३२.४६; ६५.९३; ९१.६७; ८५.८६; विष्णु० ४.७.३२-६)। इनकी गिनती सप्तर्षियोंमें होती है (भाग० ९. अध्याय १५ और १६)। महाभारत, हरिवंश और विष्णु पुराणमें इनका उल्लेख मिलता है। ऋचीकने अपनी पत्नी सत्यवती (राजा गाधिकी पुत्री) तथा उनकी माताके लिए भिन्न-भिन्न गुणवाले दो चरु तैयार किये थे। तदनंतर चरु बदल गये और सत्यवतीका चरु उसकी माता खा गयी और मातावाला चरु सत्यवतीको मिला। अतः समय पाकर सत्यवतीके गर्भसे जमदग्नि और उसकी माताके गर्भसे विश्वामित्र हुए। (२) एक मंत्रकृत् तथा ऋषि (वायु० ५९.९६)। माघ, फाल्गुण सूर्यके साथ (वायु० ५२.२०; विष्णु० २.१०.१६; ३.१.३२)। (३) भृगु गोत्रका (उरुका पुत्र) वायु० ६४.२५; जमदग्नि भार्गव जो सप्तर्षियोंमेंसे एक थे (वायु० १००.१०)।

जमदग्निका विवाह राजा प्रसेनजित्की कन्या रेणुकासे हुआ जिसके गर्भसे रुमण्वान्, सुषेण, वसु, विश्ववासु और परशुराम उत्पन्न हुए थे (भाग० ९.१५.११-१३; वायु० ९१.८६); पर वायु पुराणानुसार रेणुकाका दूसरा नाम कामली था जो सुवेणु (इक्ष्वाकु) की पुत्री थी। विष्णु पुराणानुसार हैहयके राजा कार्त्तवीर्य एक बार इनकी गौ चुरा ले गये थे और इससे परशुरामने कार्त्तवीर्यके हजार हाथ काट डाले थे। जब यह कार्त्तवीर्यके पुत्रोंको मालूम हुआ तब उन लोगोंने आश्रमपर आकर रेणुकाके सामने ही जमदग्निको मार डाला—दे० परशुराम, रेणुका। हरिश्चंद्रके यज्ञमें यह ब्रह्माके स्थानपर थे (भाग० ९.७.२३)। यह एक मंत्रकृत् थे (ब्रह्मां० ३.२१.१; मत्स्य० १४५.९९)।

जयंत–पु० [सं०] (१) इंद्र और शचीका एक पुत्र उपेन्द्रका नाम (भाग० ६.१८.७; ८.२१.१७; ११.५.२६; ब्रह्मां० ३.६.२४; वायु० ६८.२४)। (२) मरुत्वती और धर्मके एक पुत्रका नाम, यह वसुदेवका अंश था जिसे उपेन्द्र भी कहते थे (भाग० ६.६.८)। (३) अक्रूरके पिताका नाम। (४) जाम्बवान्का एक पुत्र (ब्रह्मां० ३.७.३०२)। (५) गौतमके आश्रमके निकट निमि द्वारा स्थापित एक नगर (ब्रह्मां० ३.६४.१-२; वायु० ८९.२)। (६) भीमसेनका उस समयका नाम जब वह महाराज विराट्के यहाँ अज्ञातवास करते थे (महाभा० विराट०)। (७) दशरथके एक मन्त्रीका नाम (रामायण)। (८) ग्यारह रुद्रोंमेंसे एक (मत्स्य० ५.३०)। (९) कीर्त्तिकी पत्नी जो पतिको छोड़ सोमके पास चली गयी थी (मत्स्य० २३.२५)। (१०) जयंती और वृषभका एक पुत्र तथा अक्रूरका पिता (मत्स्य० ४५.२६; भाग० १.१४.२८)। (११) एक विनायकका नाम (मत्स्य० १८३.६३; २५३.२३, ४०; २२५.८; २६६.४३)। (१२) केतुमालके एक कुलपर्वतका नाम (वायु० ४४.४)। (१३) एक तीर्थ जो पितरोंको प्रिय तथा पवित्र है (मत्स्य० २२.७३)।

जयंतपुर–पु० [सं०] निमिराज द्वारा स्थापित एक प्राचीन नगर जो गौतम ऋषिके आश्रमके निकट था (ब्रह्मां० ३.६४.१-२; वायु० ८९.२)।

जयंती–स्त्री० [सं०] (१) देवराज इंद्रकी पुत्रीका नाम जिसे देवसेना या जयनी भी कहते थे। यह अंतरिक्षकी माता कही गयी है (भाग० ५.४.११; १२.२.२१)। (२) जिस रात्रिको श्रीकृष्णका जन्म हुआ था, उसका नाम (ब्रह्मां० ३.७१.२०५; वायु० ९६.२०१)। (३) इंद्रकी पुत्री जिसे शुक्रके यहाँ सेवा करनेके लिए भेजा गया था, जब १००० वर्षोंतक धूम्र व्रत कर रहे थे। शुक्र उसकी सेवासे बहुत प्रसन्न हुए और उसके पति रूपमें उसके साथ दस वर्षोंतक रहे (ब्रह्मां० ३.७२.१५०, १५६; ७३.३; वायु० ९७.१४९; ९९.३)। इसीके गर्भसे देवयानीका जन्म हुआ (मत्स्य० ४७.११४-८८; ब्रह्मां० ३.१.८६)। (४,५) हस्तिनापुरमें स्थापित सती देवीकी एक मूर्ति तथा अन्धकासुर रक्तपानार्थ शिवसृष्ट एक मानस मातृका देवी (मत्स्य० १३.२८; १७९.१३; वायु० १.१५३)। (६) वृषभराजकी पत्नी तथा काशीकी पुत्री (मत्स्य० ४५.२६)।

जयंती अष्टमी–स्त्री० [सं०] पौष शुक्लाष्टमी बुधके दिन यदि भरणी भी हो तो जयंती होती है। इस दिन स्नान, दानादिका बड़ा फल है (निर्णयामृत)।

जय–स्त्री० [सं०] (१) विष्णुके एक पार्षदका नाम। पुराणानुसार सनकादिकने इसे और इसके भाई विजयको शाप दिया जिसके फलस्वरूप जयको संसारमें तीन बार हिरण्याक्ष, रावण और शिशुपालका अवतार और विजयको हिरण्यकशिपु, कुम्भकर्ण और कंसका जन्म ग्रहण करना पड़ा था (रामायण, बालकांड, दो० १२१; भाग० ३.१६.२, २६-३७; ८.२१.१६)। (२) युधिष्ठिरके अज्ञातवास कालका नाम (महाभा०-विराट०)। (३) वत्सर तथा स्वर्वीथीका एक पुत्र (भाग० ४.१३.१२)। (४) जाम्बवान्का एक पुत्र (ब्रह्मां० ३.७.३०२)। (५) धृतराष्ट्रके एक पुत्रका नाम (महाभा०)। (६) विश्वामित्रके एक पुत्रका नाम (भाग० ९.१६.३६)। (७) संजयके एक पुत्रका नाम जो कृतका पिता था (भाग० ९.१७.१६-१७; वायु० ९३.८; विष्णु० ४.९.२६)। (८) श्रुत (सुश्रुत—ब्रह्मांड तथा वायु०) का एक पुत्र तथा विजयका पिता (भाग० ९.१३.२५; ब्रह्मां० ३.६४.२२; वायु० ८९.२१; विष्णु० ४.५.३१)। (९) उर्वशीके गर्भसे उत्पन्न पुरुवसुके एक पुत्रका नाम जो अमितका पिता था (भाग० ९.१५.१-२)। (१०) संकृतिका एक पुत्र जो योद्धा था (भाग० ९.१७.१८)। (११) भागवतानुसार दसवें मन्वन्तरके एक ऋषिका नाम (भाग० ८.१३.२२; २१.१६)। (१२) मन्युके एक पुत्रका नाम (भाग०

९.२१.१)। (१३) एक नागका नाम जिसका वर्णन महाभारतमें है और जो महातलका निवासी था (ब्रह्मां० २.२०.३७; वायु० ५०.३६)। (१४) भद्राका एक पुत्र (भाग० १०.६१.१७)। (१५) युयुधानका एक पुत्र तथा कुणिके पिताका नाम (भाग० ९.२४.१४)। (१६) इन्द्रका पुत्र जयंत—दे० जयंत। (१७) कंक और कार्णिकाका एक पुत्र (भाग० ९.२४.४४)। (१८) कलिका एक पुत्र तथा वरुणका पौत्र (ब्रह्मां० ३.५९.७; वायु० ८४.७)। (१९) विजयका एक पुत्र तथा हर्यश्वके पिताका नाम (ब्रह्मां० ३.६८.९; वायु० ९३.९)। (२०) शृंजयका पुत्र तथा विजयका पिता (ब्रह्मां० ३.६८.८)। (२१) भद्राश्वका पुत्र (मत्स्य० ५०.३)। (२३) अट्ठारहवें द्वापरके वेदव्यास (विष्णु० ३.३.१५)।

जयत्सेन–पु० [सं०] (१) अदीनके पुत्र तथा सहदेवके पौत्र (वायु० ९.१३.१०; विष्णु० ४.९.२७)। (२) आहिनका पुत्र तथा संकृतिका पिता (ब्रह्मां० ३.६८.१०)। (३) सार्वभौमका एक पुत्र (मत्स्य० ५०.३६; वायु० ९९.२३७)। आराधितका पिता (विष्णु० ४.२०.४)।

जयदेव–पु० [सं०] ये कुल बारह हैं जिनकी सृष्टि ब्रह्माने की थी। वे मंत्र जो यज्ञोंमें पढ़े जायँ—दर्श, पौर्णमास, बृहद्, रथंतर, वित्ति, विवित्ति, आकूति, कूति, विज्ञाता, विज्ञात, मनस और यज्ञ। स्वायंभुव मन्वंतरमें इनका जित रूपमें पुनः जन्म हुआ। ब्रह्माने इन्हें गार्हस्थ्य तथा यज्ञ करनेको कहा, पर ये ज्ञानमार्गमें ही करते रहे, अतः क्रुद्ध हो ब्रह्माने सात बार जन्म लेनेका शाप दिया। इन सात जन्मोंमें ये क्रमशः अजितदेव, तुषितदेव, सत्यदेव, हरिदेव, वैकुण्ठदेव, साध्यदेव और आदित्यदेव हुए (ब्रह्मां० ३.३.५-७; ४ पूरा)।

जयद्रथ–पु० [सं०] (१) धृतराष्ट्रका जामाता, कौरवपति दुर्योधनका बहनोई जो दुःशलाका पति था। महाभारतके अनुसार यह सिन्धु सौवीरका राजा तथा अश्वजित्का पिता था (मत्स्य० ४९.४९; महाभा० आदि० ६७.१०९-१०)। एक बार पाण्डवोंके वनवासकालमें उनकी अनुपस्थितिमें यह वहाँ गया था और द्रौपदीके सौंदर्यपर इतना मुग्ध हो गया कि उसे बलपूर्वक अपहरण कर ले चला। पाण्डवोंने लौटनेपर इसका पीछा किया और इसे साथियों सहित बुरे तरीकेसे परास्त किया। युधिष्ठिरकी आज्ञासे भीमने इसे प्राणदान दिया, पर सिरके बाल काट लिये तथा दासत्व भी स्वीकार करा लिया। इसे कियेका पूरा परिणाम भुगतना पड़ा था। कौरवोंकी ओरसे यह महाभारतके युद्धमें लड़ा था। सुभद्राके गर्भसे उत्पन्न अर्जुन-पुत्र अभिमन्युका वध करनेके कारण यह अर्जुनके हाथों मारा गया था। यह घटना युद्धके चौदहवें दिन हुई थी (महाभारत द्रोण० अध्या० ४५ तथा भाग० १०.५२.११(६); ५०.११(७); ७८.९५(५)१६; विष्णु० ५.३८.१६)। (२) बृहत्कायका पुत्र तथा विशदका पिता (भाग० ९.२१.२२-२३)। (३) बृहन्मनाका पुत्र तथा विजयका पिता तथा संभूतिका पति (भाग० ९.२३.११-१२; वायु० ९९.१११; विष्णु० ४.१८.२२-२३)। (४) द्वितीय सावर्ण मनुका एक पुत्र (ब्रह्मां० ४.१.७२)। (५) बृहद्भानुका एक पुत्र (मत्स्य० ४८.१०१)। (६) बृहद्दिपुका एक पुत्र (मत्स्य० ४९.४९)। (७) बृहत्कर्माका एक पुत्र तथा विश्वजित्का पिता (विष्णु० ४.१९.३४)।

जयध्वज–पु० [सं०] तालजंघके पिताका नाम जिसे वैकर्त्त भी कहते थे (मत्स्य० ४३.४६)। यह अवंतीनरेश कार्त्तवीर्यार्जुनके पुत्र थे (भाग० ९.२३.२७-२८; वायु० ९४.५०; विष्णु० ४.११.२१-२२)। एक महारथ तथा अवंतीका राजा (ब्रह्मां० ३.४१.१३; ४७.६६; ६९.५०)।

जयनी–स्त्री० [सं०] दे० जयंती।

जयप्रिय–पु० [सं०] राजा विराट्के भाईका नाम (महाभा० र० द्रोण० अध्याय १५८)।

जयरात–पु० [सं०] कलिंग देशके एक राजकुमारका नाम जो कौरवोंकी ओरसे लड़ा था और भीमके हाथों मारा गया था (महाभा० द्रोण० १५५.२८)।

जयवाह–पु० [सं०] एक यक्ष जो देवयानीका पुत्र था (ब्रह्मां० ३.७.१२८)।

जयविघ्न महायंत्र–पु० [सं०] ललिताके सैनिकोंको किंकर्त्तव्यविमूढ़ बना देनेकी इच्छासे भण्डके एक सेनानायक विशुक्रने बनाया था। गणनाथ गजाननने इसे नष्ट कर डाला था (ब्रह्मां० ४.२७.२४, ५४)।

जयसेन–पु० [सं०] (१) हीनका एक पुत्र तथा संकृतिका पिता (भाग० ९.१७.१७, १८)। (२) सार्वभौमका पुत्र तथा राधिकका पिता (भाग० ९.२२.१०)। (३) राजाधिदेवीका पति तथा आवंत्य दो पुत्रोंका पिता (भाग० ९.२४.३९)।

जया–स्त्री० [सं०] (१) अन्धकरक्तपानार्थ शङ्करसृष्ट एक मानस-पुत्री मातृका (मत्स्य० १७९.१३)। (२) पु०-जयनामके बारह समुद्र तुल्य ह्रद (वायु० ४७.७०)। (३) दुर्गाका एक नाम (ब्रह्मां० ४.४४.६०)। (४) पार्वतीकी एक सखीका नाम (ब्रह्मां० ४.४०.३०)। (५) दुर्गाकी एक सहेलीका नाम (मत्स्य० १३.३२; १७९.१३.७)। (६) माघ शु० ११=जया एकादशीका नाम जिसके व्रतसे पिशाचत्व मिट जाता है। माल्यवान् तथा पुष्पवतीको इंद्रने पिशाच बना दिया था जो इसी व्रतसे छूटा था (पद्म०)।

जयातीर्थ–पु० [सं०] कुरु देशकी एक झील जो पितरोंके लिए पवित्र है (मत्स्य० २२.४९; १२१.७०)।

जयादित्य–पु० [सं०] काशिकावृत्तिके कर्त्ता जो कश्मीरके एक प्राचीन राजा थे।

जयानीक–पु० [सं०] (१) पांचाल देशके राजा द्रुपद पुत्रका एक पुत्र (महाभा० द्रोण० १५६.१८१)। (२) राजा विराटके एक भाईका नाम (महाभा० द्रोण० १५८.४२)।

जयापंचमी–स्त्री० [सं०] कार्त्तिक शुक्ल पंचमीको होनेवाला एक पर्व तथा व्रत जिससे ब्रह्महत्या जैसे पापोंकी निवृत्ति होती है। इसमें विष्णु (हरि) तथा जया देवीकी पूजा होती है (भविष्योत्तर)।

जयापीड़–पु० [सं०] कश्मीरके एक प्राचीन राजाका नाम जिन्होंने प्रयागमें ९९९९९ घोड़े दान किये थे (राजतरंगिणी)।

जयावती–स्त्री० [सं०] कार्त्तिकेयकी अनुचरी एक मातृकाका

नाम (स्कंद०)।

जयाश्व–पु० [सं०] मत्स्य देशाधिपति विराटका भाई (महाभा० द्रोण० १५८.४२)।

जयेंद्र–पु० [सं०] कश्मीरके राजा विजयके पुत्रका नाम जो कहा जाता है आजानुवाहु थे (राजतरंगिणी)।

जरंधम–पु० [सं०] सत्यभामाके एक पुत्रका नाम (वायु० ९६.२३९)।

जरंधमा–स्त्री० सं०] सत्यभामाकी एक पुत्रीका नाम (वायु० ९६.२४०)।

जरंधरा–स्त्री० [सं०] सत्यभामाकी एक पुत्रीका नाम (ब्रह्मां० ३.७१.२४८)।

जर–पु० [सं०] (१) एक देव (ब्रह्मां० २.१३.९५)। (२) वसुदेवके एक पुत्रका नाम (ब्रह्मां० ३.७१.१८७; मत्स्य० ४६.२२)। (३) मृत्युका एक पुत्र (वायु० १०.४१)। (४) कैलाश पर्वतपरका एक गंधर्व (वायु० ४१.२१)। (५) एक व्याध (वहेलिया) जिसने भूलसे श्रीकृष्णके ऊपर वाण चला दिया था जिससे उनकी मृत्यु हो गयी थी। इस वहेलियेको स्वर्ग प्राप्त हुआ था (भाग० ११.३०.३३;३८; विष्णु० ५.३७.६८-७३)।

जरण–पु० [सं०] ग्रहणका एक भेद जिसमें पश्चिमसे मोक्ष आरम्भ होता है (ग्रहणफलदर्पण)।

जरत्करण–पु० [सं०] एक वैदिक ऋषिका नाम।

जरत्कारु–पु० [सं०] एक ऋषि जिनका विवाह वासुकि नागकी वहिनसे हुआ था जिसका नाम मनसा था। इसीके पुत्र आस्तीक मुनि थे जो मनसाके गर्भसे उत्पन्न हुए थे (महाभारत)।

जरस्–पु० [सं०] दे० जरा (३)।

जरांधक–पु० [सं०] श्रीकृष्ण और सत्यभामाका एक पुत्र (वायु० ९६.२३९)।

जरा–स्त्री० [सं०] (१) पुराणानुसार कालकी पुत्री विस्रसाका एक नाम। (२) एक राक्षसी जो मगध देशकी गृहदेवी थी। इसीको यष्टि भी कहते हैं। इसीने मगधराज जरासंधके दो खंडोंको जोड़ उसे पुनः ठीक कर जीवित कर दिया था (भाग० ९.२२.८; १०.५०.२१; ७१-३; ७२.४२)। (३) एक व्याधका नाम जिसका वाण पैरमें लगनेसे श्रीकृष्ण परलोक सिधारे (भाग० ११.३०.३३-३८; विष्णु० ५.३७.६८-७३)।

जरापुष्ट–पु० [सं०] जरा राक्षसी द्वारा जीवित होनेके कारण जरासंधका एक नाम—दे० जरा (२)।

जराबोध–पु० [सं०] स्तुति द्वारा प्रज्वलित की गयी अग्नि।

जराभीस–पु० [सं०] कामदेवका एक नाम।

जरायणि–पु० [सं०] जरासंधका एक नाम—दे० जरा (२)।

जरायु–पु० [सं०] कार्त्तिकेयके एक अनुचरका नाम।

जरासंध–पु० [सं०] जरा (राक्षसी) द्वारा जोड़ा हुआ। महाभारतके अनुसार बृहद्रथका पुत्र, मगध देशका एक राजा। यह दो खण्डोंमें उत्पन्न हुआ था, अतः इसे फेंकवा दिया गया। जरा नामकी राक्षसीने इसे जोड़कर पुनः जीवित कर दिया था। जरा राक्षसी द्वारा जोड़े जानेके कारण यही 'जरासंध' हुआ। यह सहदेवका पिता था (भाग० १.१५.९; ९.२२.७-८; मत्स्य० ५०.३१-३२; २७१.१८; विष्णु० ४.१९.८३-५; २३.२-३)। इसकी राजधानी गिरिव्रजमें थी जहाँ हजारों राजा बंदी पड़े थे (भाग० १०.६०.१८; ७०.२३-२४, २९)। मथुराधिपति कंसको इसकी पुत्रियाँ 'अस्ति' और 'प्राप्ति' व्याही थीं। श्रीकृष्ण द्वारा कंसके मारे जानेपर क्रोधमें आकर इसने मथुरापर अट्ठारह वार चढ़ाई की थी (भाग० १०[५३(५)२२-२४]; ५०.४२-४४; विष्णु० ५. अध्याय २२)। इसके आक्रमणोंसे तंग आकर मथुराके निवासी द्वारका जा वसे थे। युधिष्ठिरके राजसूय यज्ञमें श्रीकृष्ण, अर्जुन और भीमको साथ लेकर इसके यहाँ गये थे जब भीमसे इसका २७ दिनोंतक युद्ध होता रहा। तब श्रीकृष्णकी दुरभिसंधिसे भीमने इसके जुड़े स्थानसे इसे चीर इसका वध कर डाला था (भाग० १०.७१.२(१), ३-४; ७२.१५-४७; ७३.३१; ७६.२; वायु० ९३.२७)। (२) नभाका एक पुत्र एक वीर योद्धा (वायु० ९९.२२६-७)। (३) सहदेवका वंशज—बृहद्रथगण, मागधेयगण (वायु० ९९.२९४)।

जरिता–स्त्री० [सं०] सारंगिकाकी जातिका एक मादा पक्षी जिसका उल्लेख महाभारतमें मिलता है। मण्डपाल ऋषि निःसंतान होनेके कारण बड़े दुःखी थे, अतः उन्होंने इसी जातिके नरपक्षीका रूप धारण कर इससे जरितारि, सारिसरिक्त, स्तंबमित्र और द्रोण नामके चार पुत्र उत्पन्न किये। इनमेंसे दूसरे और तीसरेके नामकी कुछ ऋचाएँ भी ऋग्वेदमें मिलती हैं। खाण्डव वनके जलनेके समय जरिताने मण्डपाल ऋषिकी सहायतासे अपने उपर्युक्त चार पुत्रोंकी बड़ी वीरतासे रक्षा की थी। कहते हैं मण्डपाल ऋषिने चार पुत्रोंके उत्पन्न होनेके पश्चात् जरिताको त्याग दिया था (महाभा०)।

जरोमथक–पु० [सं०] श्रीकृष्ण और सत्यभामाका एक पुत्र (ब्रह्मां० ३.७१.२४७)।

जर्जरानना–स्त्री० [सं०] स्वामी कार्त्तिकेयकी एक अनुचरीका नाम (स्कंद०)।

जर्वर–पु० [सं०] नागोंके पुरोहितका नाम जिन्होंने यज्ञके द्वारा नागोंकी रक्षा की थी (महाभा०)।

जलंमूध–पु० [सं०] श्रीकृष्ण और सत्यभामाका एक पुत्र–दे० (जरंधम)।

जलंधम–पु० [सं०] पुराणानुसार एक राक्षसका नाम जो शिवजीकी कोपाग्निसे समुद्रमें उत्पन्न हुआ था। पैदा होते ही इसका जोरसे रोना सुन देवता लोग व्यग्र हो गये। उत्सुकतावश ब्रह्मा समुद्रके पास गये और इसे गोदमें ले लिया। इसने उनकी दाढ़ी इतनी जोरसे खींची की उनके नेत्रोंसे आँसू निकल पड़े। इसीसे उन्होंने इसका नाम जलंधर रख दिया। बड़ा होकर इसने इंद्रपुरीको अपने अधिकारमें कर लिया जिसके कारण शिवको इंद्रकी ओरसे इससे लड़ना पड़ा। विष्णुकी सहायतासे शिव इसे मार सके थे। कालनेमिकी कन्या वृंदा इसकी पत्नी थी (भाग०, ब्रह्मां० तथा विष्णु०)।

जलकृच्छ्र–पु० [सं०] शुद्ध जलको उबाल कर एक महीनेतक पीये—'तोयकृच्छ्रो जलेन तु'—याज्ञवल्क्य।

जलद–पु० [सं०] (१) हव्यका एक पुत्र जिसके नामपर

जलदवर्प नाम पड़ा (ब्रह्मां० २.१४.१७-१८; वायु० ३३.१७)। (२) एक आत्रेय गोत्रकार ऋषि (मत्स्य० १९७.४)। (३) शाकद्वीपके भव्यका एक पुत्र विष्णु० २.४.६०)।

जलदवर्ष–पु० [सं०] जलदके ऊपर इसका नामकरण हुआ था (ब्रह्मां० २.१४.१७-१८; वायु० ३३.१७)। यह शाकद्वीपमें उदय पर्वतके चारों ओर है (ब्रह्मां० २.१९.९१; वायु० ४९.८५)।

जलधार–पु० [सं०] (१) शाकद्वीपका एक पर्वत जिससे वासव नित्य उत्तम पानी पाता है (ब्रह्मां० २.१९.८५-८६; मत्स्य० १२२.९; वायु० ४९.७९)। (२) उदय पर्वतका उदय वर्प नामका एक महादेश (मत्स्य० १२२.२०)।

जलधेनु–स्त्री० [सं०] यह व्रत तथा दान ज्येष्ठ शुक्ला एकादशीको होता है। एक प्रकारकी कल्पित धेनु। दान देनेके लिए इस गौकी कल्पना जलके घड़ेमें की जाती है। इसमें जलाधिपति वासुदेव भगवान्‌का पूजन करना होता है। इस दानका देनेवाला और लेनेवाला दोनों सब प्रकारके पातकोंसे मुक्त हो जाते हैं (मदनरत्न तथा स्कंद०)।

जलप्लावन–पु० [सं०] प्रलयका एक भेद जिसमें पुराणानुसार सारी पृथ्वी जलमग्न हो जाती है (हि० श० सा०)।

जलप्रिया–स्त्री० [सं०] सती देवीकी एक मूर्ति जो शिवलिंग नामक स्थानमें स्थापित कही गयी हैं (मत्स्य० १३.३३)।

जल–पु० [सं०] एक देवता, ‘भव’ इसका अधिदेवता है जिसे मंदिर स्थापित करते समय पूजते हैं (मत्स्य० २६५.३९-४१)।

जलमातृका–स्त्री० [सं०] एक प्रकारकी देवियाँ जो संख्यामें सात हैं। इनका निवास जलमें माना गया है। इन सातोंके नाम ये हैं—मत्सी, कूर्मी, वाराही, दर्दुरी, मकरी, जलूका और जंतुका (हि० श० सा०)।

जलयात्रा–स्त्री० [सं०] (१) हरिप्रवोधिनी एकादशीके (कार्त्तिक शु० ११के) पश्चात् उसी मासकी चतुर्दशीको मनाया जानेवाला एक उत्सव जो विशेषकर राजपूतानेमें होता है। इस दिन उदयपुर नरेश किसी जलाशयके पास जाकर जलकी पूजा करते हैं। (२) ज्येष्ठ पूर्णिमाको मनाया जानेवाला वैष्णवोंका एक उत्सव जिसमें ये लोग विष्णुकी मूर्त्तिको खूब ठण्डे जलसे नहवाते हैं।

जलवीर्य–पु० [सं०] भरतजीके एक पुत्रका नाम (रामायण)।

जलशायी–पु० [सं०] क्षीरसागरमें शयन करनेके कारण विष्णुका नाम (मत्स्य० २८५.५)।

जलसंधि–पु० [सं०] (१) धृतराष्ट्रके एक पुत्रका नाम जिसका सात्यकिके साथ घोर युद्ध हुआ था। इसने सात्यकिका दायाँ हाथ तोड़ दिया था, लेकिन उसीके हाथों मारा भी गया था (महाभा० आदि० ६७.९४)। (२) एक ऋषिका नाम।

जलसमुद्र–पु० [सं०] पुराणानुसार सात प्रसिद्ध समुद्रोंमेंसे अंतिम।

जलांतक–पु० [सं०] (१) सात समुद्रोंमेंसे एकका नाम। (२) सत्यभामाके गर्भसे उत्पन्न श्रीकृष्णका एक पुत्र (हरिवंश)।

जलाधार–पु० [सं०] शाकद्वीपके सात श्रेष्ठ पर्वतोंमेंसे एक पर्वत (विष्णु० २.४.६२)।

जलाधिप–पु० [सं०] दे० जल। इसकी पूजा गृहनिर्माणके समय होती है (मत्स्य० २५३.२६)।

जलापा–स्त्री० [सं०] कई ब्रह्मवादिनी सुन्दरी देवियोंमें एकका नाम (ब्रह्मां० २.३३.१७)।

जलाशी–पु० [सं०] अग्निके अभिमानी देव, जो ब्रह्माका ज्येष्ठ था, से उत्पन्न स्वाहाके तीन पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (विष्णु० १.१०.१५)।

जलेयु–पु० [सं०] रुद्राश्वके १० पुत्रोंमेंसे एकका नाम (भाग० ९.२०.४; वायु० ९९.१२४)।

जलेला–स्त्री० [सं०] कार्त्तिकेयकी सहचरी एक मातृकाका नाम (स्कंद०)।

जलेश–पु० [सं०] जलके अधिपति वरुणका नाम (विष्णु० २.८.९)।

जलेशय–पु० [सं०] विष्णु। प्रलय होनेपर विष्णु जलमें सोते हैं, अतः यह नाम पड़ा (हि० श० सा०)।

जलेश्वर–पु० [सं०] कलिंगके अमरकंटक पर्वतपरका एक तीर्थ जो पिण्डदान तथा तर्पणके लिए उपयुक्त है। शिव जब त्रिपुरनाश कर रहे थे तब बाण सिरपर एक शिवलिंग रख उपस्थित हुआ। शिव इससे प्रसन्न हुए, अतः इसका माहात्म्य है (मत्स्य० १८६.१५-३८, १८७.३-५२; अध्याय १८८ पूरा)।

जलेश्वर–पु० [सं०] बनारसमें शिवके आठ पवित्र स्थानोंमेंसे एक (मत्स्य० १८१.२८)।

जलेपु–पु० [सं०] रौद्राश्वके दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (विष्णु० ४.१९.२)।

जलोत्सर्ग–पु० [सं०] पुराणानुसार ताल, कुआँ आदिका विवाह।

जलोन्माद–पु० [सं०] शिवका एक अनुचर विशेष (शिव पुराण)।

जल्प–पु० [सं०] तामस मन्वंतरके सप्तर्षियोंमेंसे एक ऋषि (मत्स्य० ९.१६)।

जवारा–पु० [हिं०] जौके हरे अंकुर जो विजयादशमीके पूर्व बोये जाते हैं। बहिनें भाईके कानपर और ब्राह्मण यजमानके कानपर धरते हैं। धरते समय ‘जयन्ती मंगला काली भद्रकाली कपालिनी। दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोस्तु ते ॥’ मंत्र पढ़ते हैं (मार्कण्डेय०, दुर्गासप्त०)।

जवी–पु० [सं०] एक भार्गव गोत्रकार ऋषि (मत्स्य० १९५.२०)।

जविष्ट–पु० [सं०] १२ शुक्रवर्गके देवोंमेंसे एक देवका नाम (ब्रह्मां० २.१३.९५)।

जहु–पु० [सं०] पुष्पवान्‌के एक पुत्रका नाम (भाग० ९.२२.७)।

जन्तु–पु० [सं०] सोमकके सौ पुत्रोंमेंसे ज्येष्ठ पुत्रका नाम (भाग० ९.२२.१; विष्णु० ४.१९.७२)।

जह्नु–पु० [सं०] (१) कुरुका पुत्र तथा सुरथका पिता (भाग० ९.२२.४, ९; वायु० ९९.२१७, २३०; विष्णु० ४.१९.७८; २०.२)। (२) वायुपुराणानुसार (केशिनी) कौशिका तथा (होत्रक) सुहोत्र राजाके पुत्र एक राजर्षिका नाम जो केशिनीके गर्भसे उत्पन्न हुए थे। पुराणानुसार जब राजा भगीरथ गंगाजीको लेकर गंगासागर जा रहे थे,

जहाँ कपिलजीने राजा सगरके पुत्रोंको भस्म कर दिया था, तब जह्नु ऋषि यज्ञ कर रहे थे और गंगा इनके यज्ञवाटसे होकर बहने लगी। इस कारण यज्ञमें विघ्न होगा, यह समझ ये गंगाको पी गये। बहुत प्रार्थना करनेपर इन्होंने गंगाको कानसे निकाल दिया। युवनाश्वकी पोती कावेरीसे इनका विवाह हुआ जिससे सुनह (सुहोत्र=वायु०) नामक पुत्र उत्पन्न हुआ था (भाग० ९.१५.३; ब्रह्मां० ३.६६.३५-३०; वायु० १.१४२; ९१.५४-६०; विष्णु० ४.७.३-७)।

जह्नुतनया—स्त्री० [सं०] गंगाका एक नाम।

जह्नुसप्तमी—स्त्री० [सं०] वैशाख शुक्ला सप्तमी। कहते हैं इसी तिथिको जह्नु ऋषिने गंगाको पी लिया था तथा कानसे पुनः निकाला था। इस दिन गंगाका जन्म मानते हैं और इसे गंगासप्तमी भी कहते हैं (स्कंद० काशीखंड)।

जांगल—पु० [सं०] एक ऋषि, जो शाकल्यके पुत्र थे जिन्हें भ्रमसे राजा शंकर (पांड्यनरेश) ने मार डाला था (स्कंद० ब्राह्म०, सेतु-माहात्म्य)।

जांबवंत—पु० [हि०] दे० जांबवान्।

जांबवती—स्त्री० [सं०] जांबवान्की पुत्री जिसका विवाह श्रीकृष्णके साथ हुआ था। जब श्रीकृष्ण स्यमंतक मणिकी खोजमें जंगलमें घूम रहे थे तब उन्होंने जांबवान्को हरा करके वह मणि पायी और कन्यासे विवाह किया (भाग० १०.५६.३२)।

जांबवान्—पु० [सं०] एक रीछका नाम जो सुग्रीवका मन्त्री था और रक्षा तथा प्रजापति ब्रह्माका पुत्र माना जाता है। यह रीछोंका राजा कहा गया है। त्रेतायुगमें राम-रावण युद्धमें इसने श्री रामचन्द्रकी सहायता की थी (भाग० ९.१०.१९-४४)। भागवतानुसार द्वापरमें श्रीकृष्णने इसकी पुत्री जांबवतीसे विवाह किया था (भाग० १०.५६.१४-३२; ब्रह्मां० ३.७१.३५; मत्स्य० ४५.७-८, १२-६; वायु० ९६.३४)। कहते हैं सत्ययुगमें इसने वामन भगवान्की परिक्रमा की थी (भाग० ८.२१.८; ब्रह्मां० ३.७.३००-४; विष्णु० ४.१३.३२.५८)।

जांबुमाली—पु० [सं०] प्रहस्त नामक राक्षसके पुत्रका नाम। अशोकवाटिका उजाड़ते समय हनुमान द्वारा यह मारा गया था (रामायण)।

जांबुवत्, जांबुवान्—पु० [सं०] दे० जांबवान्।

जाजल—पु० [सं०] अथर्ववेदकी एक शाखा।

जाजलि—पु० [सं०] (१) एक ऋषि जो गोत्रप्रवर्त्तक माने गये हैं। काशीनिवासी तुलाधार नामक वैश्यसे इन्हें ज्ञान प्राप्त हुआ था। यह ८६ श्रुतर्पियोंमेंसे थे (ब्रह्मां० २.३३.२; ३५.५९; ३.३६.५)। पथ्यके शिष्य, जिन्हें पश्चिम सागरके निकट सिद्धि मिली थी। यहीं प्रचेतागणको भी सिद्धि प्राप्त हुई थी (भाग० १२.७.२; ४.३१.२; वायु० ६१.५२)। (२) एक मुख्य वंदरका नाम (ब्रह्मां० ३.७.२३९)।

जाब्जलि—पु० [सं०] ब्रह्माके यज्ञके एक ऋत्विक् (वायु० १०६.३४)।

जाटालिका—स्त्री० [सं०] कार्त्तिकेयकी एक मातृकाका नाम (स्कंद०)।

जाटिकायन—पु० [सं०] अथर्ववेदके एक ऋषिका नाम।

जाठर—पु० [सं०] जलकी अग्नि जो मनुष्योंके पेट (उदर) में होती है जो जलसे नहीं बुझती। इसके लिए इंधन अनावश्यक है। इसमें न तो ज्वाला है, न चमक (ब्रह्मां० २.२४.१२; वायु० ५३.८-१०)। यह विद्वान् अग्निका पिता है (ब्रह्मां० २.१२.३४)।

जातंबि—पु० [सं०] एक काश्यप त्र्यार्षेय (मत्स्य० १९९.१३)।

जातकर्म—पु० [सं०] हिन्दुओंके १६ संस्कारोंमें चौथा जो बालकके जन्मके समय होता है। इसमें नवजात शिशुका पिता जन्मका समाचार सुनते ही तुरत सब कपड़े सहित स्नान करके कुछ पूजा श्राद्धादि करता है। फिर ब्रह्मचारी, कुमारी, गर्भवती या विद्वान् ब्राह्मण द्वारा लोहेसे साफ सिलपर पीसे चावल और जौके आँटेको अपने अँगूठे और अनामिकासे बच्चेकी जीभपर लगाता है और इसके बाद सोनेसे घी बच्चेकी जीभपर धरता है। इतने कामोंके बाद शिशुका नाल कटता है और दूध पिलाया जाता है। आजकल तो यह संस्कार प्रायः लुप्त-सा हो गया है। श्रीकृष्णका जातकर्म (भाग० १०.५.१-१६; ब्रह्मां० ३.४२.४३; ५०.२४.६३.१३३; विष्णु० ३.१०.४-१५; १३.२)। बुद्ध और वामनका (मत्स्य० २४.५-७; २४५.६६; २७५.१८)। राजा सगरका जातकर्म (विष्णु० ४.३.३६)।

जातवेदा—पु० [सं०] अरणिसे उत्पन्न अग्नि जैसे पुरूरवाको पुत्र हुआ था (भाग० ५.२०.१६-१७; ९.१४.४६)।

जातवेदःशिला—स्त्री० [सं०] यह देविका नामक स्थानमें वृषकूपके निकट है, जहाँसे एक पवित्र अग्नि उसमें प्रवेश करनेवाले लोगोंको स्वर्ग ले जाती है (वायु० ७७.४३)।

जातवेदस—पु० [सं०] यजुर्वेदका एक सूक्त जिसे सरोवर आदिकी प्रतिष्ठामें पढ़ते हैं (मत्स्य० ५८.३५)।

जातिभ्रंशकर—पु० [सं०] एक प्रकारका पाप जो पाप करनेवालेको जाति और आश्रमसे भ्रष्ट कर देता है। यह पाप यदि अनजानमें हो तो इसकी निवृत्तिके लिए प्राजापत्य प्रायश्चित्त और यदि जान-बूझकर करे तो सांतपन प्रायश्चित्तका विधान है (मनु०)।

जातिस्मर—पु० [सं०] एक ऋषि जिन्होंने यम-अनुचर संवाद कालिंगक ब्राह्मणको सुनाया था (विष्णु० ३.७.९, १३)।

जातुधाना—स्त्री० [सं० यातुधान] अज नामक कूष्माण्ड पिशाचकी लड़कीका नाम (ब्रह्मां० ३.७.७४-८५)—दे० अज सं० ८।

जातुधि—पु० [सं०] उत्तर देशका एक पर्वत जहाँ साधुओं और सिद्धोंका निवास कहा गया है (वायु० ४१.६६; ४२.७१)।

जातूकर्ण—पु० [सं०] (१) द्वापरमें उत्पन्न होनेवाले एक ऋषि जिन्होंने उपस्मृति बनायी थी। वह २७वें द्वापरके वेदव्यास थे (विष्णु० ३.३.१९)। इन्होंने विष्णुपुराण प्रमति (पराशर—वायु०) से सुना था (वायु० १०३.६६; विष्णु० ६.८.४९)। (२) अग्निवेश्यका एक नाम (भाग० ९.२.२१ २२)। (३) वशिष्ठके पौत्रका पुत्र=प्रपौत्र (वायु० १.१०)। वेदव्यासके जन्मके समय यह पुरोहित थे (वायु० ९८.९३)।

जातूकर्णी—पु० [सं०] (१) मालती-माधव नाटकके रच-

यिता महाकवि भवभूतिकी मांका नाम। (२) एक सिद्धिका नाम।

जातूकर्ण्य–पु० [सं०] (१) २७वें द्वापरके व्यासका नाम, इस युगके अवतार सोमशर्मा थे (वायु० २३.२१४)। (२) इसने ब्रह्मांडपुराण पराशरसे सुना था और द्वैपायनको सिखाया था (ब्रह्मां० २.१.१०-११; ३५.१२४)। एक वेद-व्यास (ब्रह्मां० ३.७३.९३; वायु० २३.२१४)। (३) दे० कानीन, जो शाकल्यके शिष्य के। इन्होंने निरुक्त सहित संहिताकी दीक्षा बलाक, पैज आदिको दी थी (भाग० ९. २.२१; १२.६.५८)।

जादौराय–पु० [हि०] यदुवंशमें उत्पन्न श्रीकृष्णचंद्रका नाम

गई मारन पूतना कुच काल कूट लगाय।
मातु की गति दई ताहि जा दौराय॥—तुलसी।

जानंति–पु० [सं०] एक ऋपि जो नरनारायण आश्रमके निकट बदरीवनमें रहते थे। इनके उपदेशसे वेदमालिको मोक्ष मिला था (नारद० पूर्वार्धं ३५।३६-७१)।

जानकी–स्त्री० [सं०] जनककी पुत्री सीता (विष्णु० ४.४.१००; १५.९)। **–जानि** पु० [सं०] श्री रामचंद्रका नाम, जिनकी पत्नी जानकी थी (विष्णु० ४.४.९९)। **–नवमी** स्त्री० [सं०] वैष्णव मतानुसार वैशाख शु० ९ को जानकी उत्पन्न हुई थी, अतः इस दिन व्रत और जानकीका पूजन करते हैं (वै० मता० भा० ८१)। **–व्रत** पु० [सं०] यह व्रत फाल्गुन कृ० ८ को करते हैं। इसे वशिष्ठजीकी आज्ञासे श्रीरामने समुद्रतटपर किया था। निर्णयसिन्धुके अनुसार पूर्वविद्ध अष्टमी ले और सर्वधान्यका हवन करे और अपूप आदिका नैवेद्य लगाये। अन्य वैष्णव ग्रंथोंके अनुसार जानकीका जन्म वैशाख शु० ९ को हुआ था जिसे जानकीनवमी कहते हैं—दे० निर्णय-सिन्धु।

जानपदी–स्त्री० [सं०] एक अप्सराका नाम जिसे इंद्रने शरद्वान् ऋपिका तप भंग करनेको भेजा था। शरद्वान्के शुक्रपातसे कृप और कृपीयका जन्म हुआ था (महाभा० आदि० १२९.४-२२)।

जानुजंघ–पु० [सं०] तामस मनुके ११ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (ब्रह्मां० २.३६.४९; विष्णु० ३.१.१९)।

जान्य–पु० [सं०] एक ऋपिका नाम (हरिवंश०)।

जाबाल–पु० [सं०] जबालाके पुत्र एक ऋपि विशेप। इनके पिताका नाम इनकी माता जबाला भी नहीं कह सकी थीं। इन्हें सत्यकाम भी कहते हैं। ये १५ शुक्ल यजुर्वेद याज्ञल्क्य शिष्योंमेंसे एक थे (ब्रह्मां० २.३५.२९; मत्स्य० १९८.४)।

जाबालि–पु० [सं०] (१) अनेक अन्य ऋपियोंके साथ यह परशुरामसे मिले थे जब वह तप कर रहे थे (ब्रह्मां० ३.२३. ४)। कश्यप वंशोत्पन्न एक ऋपि। ये राजा दशरथके गुरु और मंत्री थे। इन्होंने चावार्कके सिद्धान्तोंका प्रयोग करके श्रीरामको वनगमनसे विमुख करनेकी चेष्टा की थी (रामायण)। (३) एक आर्पेय प्रवर (भार्गव) (मत्स्य० १९५.३८)।

जामदग्न्य–पु० [सं०] (१) १९वें त्रेतायुगका विष्णुका छठा अवतार जब विश्वामित्र पुरोहित थे (ब्रह्मां० ३.७३.९१; मत्स्य० ४७.२४४; वायु० ८८.१३५)। गोदावरी तीर्थपर यह बहुत दिनोंतक रहे थे (मत्स्य० २२.५८)। (२) एक भार्गव जिसने सैंहिकेय गणको मार डाला था (वायु० ६८.२२)। नर्मदा तटपरका एक तीर्थका नाम जहाँ बहुत यज्ञों द्वारा भगवान्का यजन कर इंद्र देवताओंका राजा बना था (मत्स्य० १९४.३५-६)।

जामधि–पु० [सं०] मेरुके चरणोंके निकट तथा महाभद्र झीलके उत्तरमें स्थित एक पर्वत (वायु० ३६.३२)।

जामलजा–स्त्री० [सं०] रुद्राश्वकी दस पुत्रियोंमेंसे एकका नाम (वायु० ९९.१२५)।

जामा–स्त्री० [सं०] दक्षकी ६० पुत्रियोंमेंसे एक पुत्री जो नौ बहिनोंके साथ धर्मको ब्याही थी। नव वीथी इसके पुत्र थे (ब्रह्मां० ३.३.२, ३३)।

जामी–स्त्री० [सं०] दक्षकी एक पुत्री तथा धर्मकी पत्नीका नाम। यह स्वर्ग (नागवीथि=वायु०) की माता थी (भाग० ६.६.४६; वायु० ६६.३४; विष्णु० २.१५.१०५-७)।

जामवंत–पु० सं०] दे० जांबवान्।

जामवती–स्त्री० [सं०] जाम्बवती जांबवान्की पुत्री, श्रीकृष्णकी पत्नीका नाम जो शांब (पुत्र) तथा भद्रावती, संबोधिनी (पुत्री) (वायु० ९६.२४१) की माता थी (भाग० ३.१.३०; १०.६१.१२; ६३.१; मत्स्य० ४६.२६; ४७.१४, १८; विष्णु० ५.३२.२)।

जारुधि–पु० [सं०] एक पर्वतका नाम (भाग० ५.१६.२६; विष्णु २.२.२९,४३)।

जारूथी–स्त्री० [सं०] एक प्राचीन नगरीका नाम—दे० (महाभा० वन० १२.३०)।

जालंधर–पु० [सं०] (१) एक ऋपिका नाम। (२) एक दैत्यका नाम। (३) एक तीर्थ जो ललिताको प्रिय है (ब्रह्मां० ४.४४.९५)। सती देवीकी एक मूर्ति विश्वमुखीका स्थान तथा पितरोंके श्राद्ध आदिके लिए पवित्र है (मत्स्य० १३.४६; २२.६४)।

जालपाद–पु० [सं०] जाबालि ऋपिके शिष्यका नाम—दे० जाबालि।

जालव–पु० [सं०] पुराणानुसार बल्वल राक्षसका पुत्र जिसका वध बलरामने किया था (भाग० १०-७९.२-६)।

जालवासिनी–स्त्री० [सं०] श्रीकृष्णकी पत्नी एक देवी (वायु० ९६.२३४)।

जाह्नवी–स्त्री० [सं०] जह्नु ऋपिने गंगा पी ली थी और राजा भगीरथकी प्रार्थनापर कानसे निकाल दी थी, अतः यह नाम पड़ा (ब्रह्मां० ३.५६.४८; ६६.२८; मत्स्य० १०४.१३; ११०.७; १८३.७३; वायु० ९१.५८)।

जाह्नवीसुत–स्त्री० [सं०] कार्तिकेय दे० गंगा और (ब्रह्मां० ३.१०.३५;)।

जिउतिया–स्त्री० [सं० जीमूत] एक व्रत जो आश्विन कृष्णाष्टमीको किया जाता है। इसे पुत्रवती स्त्रियाँ करती हैं जो कहीं-कहीं आश्विन शुक्लाष्टमीको भी होता है। इसे जिताष्टमी भी कहते हैं जिसमें शालिवाहनके पुत्रकी पूजा होती है—दे० (जीमूतवाहन)।

जित–पु० [सं०] (१) यदुका एक पुत्र (वायु० ९४.२)। (२) मनुके बारहवें युगके सप्तर्पियोंमेंसे एक ऋपिका नाम (विष्णु० ३.२.४४)।

जितव्रत–पु० [सं०] हविर्धानीके गर्भसे उत्पन्न हविर्धानके एक पुत्रका नाम (भाग० ४.२४.८)।

जितात्मा—पु० [सं०] एक देवता जिसे श्राद्धमें भाग मिलता है (श्राद्धप्रयोगदीपिका, गोपालशास्त्री कृत)।

जिताष्टमी—स्त्री० [सं०] दे० जिउतिया।

जिष्णु—पु० [सं०] (१) अर्जुनका एक नाम—दे० अर्जुन। (२) इंद्रका एक नाम—दे० इंद्र तथा (भाग० १.१४.१; वायु० २५.३९; ३०.९९; ६२.४९; ९७.३)।

जीमूत—पु० [सं०] (१) एक ऋषिका नाम (महाभा० उद्योग० १११.२३)। (२) व्योमका एक पुत्र तथा विकृतिका पिता (भाग० ९.२४.४; ब्रह्मां० ३.७०.४१; मत्स्य० ४४.४०-४१; वायु० ९५.४०; विष्णु० ४.१२.४१)। (३) एक पर्वत जो इंद्रके डरसे समुद्रमें छिप गया था (मत्स्य० १२१.७५)। (४) विराटकी सभाका एक पहलवान जिसे भीमने मारा था (महाभा० विराट० १३.२४-३६)। (५) वंदरोंका एक सरदार (ब्रह्मां० ३.७.२४०)। (६) दशार्हके पौत्रका नाम—दे० हरिवंश। (७) पुराणानुसार शाल्मलि-दीपके नरेश वपुष्मान्‌के सात पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (ब्रह्मां० २.१४.३२, ३३; वायु० ३३.२८-२९; विष्णु० २.४.२३, २९)।

जीमूतवाहन—पु० [सं०] (१) इंद्र—जिसके वाहन वादल हैं, अतः यह नाम पड़ा। (२) राजा शालिवाहनके पुत्रका नाम। एक नागमाताके एकलौते पुत्रके प्राण वचानेके लिए इन्होंने अपने प्राण त्याग दिये थे, अतः आश्विन कृष्णाष्टमीको पुत्रवती स्त्रियाँ इनका पूजन करती हैं—दे० जिउतिया।

जीवमातृका—स्त्री० [सं०] कुमारी, धनदा, नंदा, विमला, मंगला, वला और पद्मा नामकी सात देवियाँ जो माताके समान जीवोंकी रक्षा तथा कल्याण करती हैं (विधान-पारिजात)।

जीवातुमान्—पु० [सं०] एक देवता विशेष जो आयुष्काम यज्ञका देवता कहा गया है जिससे आयुकी प्रार्थना की जाती है (आश्व० श्रौतसूत्र)।

जीवानुज—पु० [सं०] गर्गाचार्य मुनिका नाम जो वृहस्पतिके वंशमें उत्पन्न कहे गये हैं। कुछ लोग इन्हें वृहस्पतिका छोटा भाई मानते हैं (हिं० श० सा०)।

जीविनी—स्त्री० [सं०] ललिता देवीके चक्ररथेन्द्रके तीसरे पर्वमें स्थित आठ रहस्ययोगिनियोंमेंसे एक रहस्ययोगिनी शक्ति (ब्रह्मां० ४.१९.४८)।

जुहू—पु० [सं०] यज्ञ करनेका एक पात्र विशेष जो पलाशकी लकड़ीका वनाया जाता है और अर्धचंद्राकार होता है।

जृंभक—पु० [सं०] एक अस्त्र विशेष जिसके प्रभावसे विपक्षी निद्राका अनुभव करने लगते हैं तथा शिथिल पड़ जाते हैं। विश्वामित्रजीको यह अस्त्र कठिन तपके पश्चात् अग्निदेवसे प्राप्त हुआ था। इसे मंत्र सहित उन्होंने श्री रामचन्द्रको दे दिया था (रामायण, वालकाण्ड)।

जेता—पु० [सं०] २० अमिताभ देवगणमेंका एक देव (ब्रह्मां० ४.१.१६; वायु० १००.१६)।

जैंतगढ़—पु० [हि०] सिंहभूम जिलांतर्गत कोल्हानमें वैतरणी नदीके तटपरका एक गाँव जहाँ लंका जाते समय श्रीरामने कुछ देर विश्राम किया था (रामायण)।

जैगीषव्य—पु० [सं०] (१) शतशलाकके पुत्र, हिमवानकी पुत्री एकपाटला इनकी पत्नी थी तथा शंख और लिखित इनके मानसपुत्र थे (ब्रह्मां० ३.१०.२०-२१; वायु० ७२.१८-१९)। (२) ब्रह्माके यज्ञके एक ऋत्विक् (वायु० १०६.३६)। (३) सातवें द्वापरका एक अवतार (वायु० २३.१३८)। (४) महाभारतके अनुसार एक मुनि जो योग-शास्त्रके वेत्ता कहे जाते हैं। असित देवल नामके ऋषि जो आदित्य तीर्थमें निवास करते थे, इनके शिष्य हो गये थे। जैगीषव्यने देवल ऋषिके यहाँ योग द्वारा सिद्धि प्राप्त की थी। यह सारस्वत ब्रह्मलोकतक जा सकते थे जहाँ कोई नहीं जा सकता (महाभा० सभा० ११.२४; शल्य० अध्याय ५०; शान्ति० २२९.७-२७) मेनाकी पुत्री एकपाटलाका विवाह इनसे हुआ था (भाग० ९.२१.२६; मत्स्य० १३.९; १८०.५७)।

जैत्र—पु० [सं०] (१) श्रीकृष्णका एक अनुचर (भाग० १०.७१.१२)। (२) श्रीकृष्णके रथका नाम जो उनके स्वर्गारोहणके पूर्व ही समुद्रमें प्रवेश कर गया था (विष्णु० ५.३७.५१)।

जैमिनि—पु० [सं०] (१) एक ऋषि जो व्यासजीके मुख्य शिष्य थे। यह सामवेद (छंदोगसंहिता) के अधिकारी विद्वान् तथा पूर्वमीमांसाके प्रवर्त्तक थे। हिरण्यनाभ इनका शिष्य था (भाग० १.४.२१; ९.१२.३; १०.७४.८; १२.६.५३.७५; वायु० ६०.१३.१८; ६१.२६; विष्णु० ३.४.९)। (२) लांगलिके छह शिष्योंमेंसे एक जो लांगल कहलाते थे (वायु० ६१.४२)।

जोगिन—स्त्री० [सं० योगिनी] एक प्रकारकी रणदेवी जो युद्धमें कटे-मरे मनुष्योंके रुण्डोंको देख वड़ी प्रसन्न होती हैं। कहते हैं यह मुण्डोंको गेंद वनाकर खेलती हैं (हि.श.सा.)।

ज्ञान—पु० [सं०] यह संन्याससे उत्तम है (वायु०९१.११४-११५)। इसके दो रूप हैं—(१) इच्छा तथा द्वेषसे मुक्ति, यह त्याग उत्पन्न करता है तथा योगमें प्रवृत्त करता है (ब्रह्मां० ४.३.४०, ५५; ५.२७)। इसकी १४ शाखाएँ हैं—ग्यारह गुण शरीर और बुद्धि, चित्त और अहंकार (वायु० ५८.२१; ५९.५४) में इसे प्राप्त करनेकी कठिनाइयोंका उल्लेख है तथा (वायु० १०४.१५) में इसके नियम आदिका विवरण है।

ज्ञानामृता—स्त्री [सं०] १६ शक्ति देवियोंमेंसे एक शक्ति देवीका नाम (ब्रह्मां० ४.३५.९७)।

ज्ञानयोग—पु० [सं०] यह साधुओं तथा त्यागियोंका है जो निर्लिप्त है। सच्चा ज्ञानी अपनेको ही भूल जाता है (भाग० ११.२०.६-७; २८.९.३१)। यह कर्मयोगके सहयोगका परिणाम है (मत्स्य० ५२.५-११)।

ज्ञानी—पु० [सं०] १० रोहित देवोंके गणका एक देवता (ब्रह्मां० ४.१.८५)।

ज्यामघ—पु० [सं०] रुचकके पाँच पुत्रोंमेंसे एक पुत्र जिन्हें इनके भाइयोंने निकाल दिया था। शैब्या इनकी पत्नी थी, पर यह निःसंतान थे। शैब्याके भयसे इन्होंने दूसरा व्याह नहीं किया। एक संग्राम-विजयमें इन्हें एक कन्या प्राप्त हुई। उसे रथपर वैठाकर ला रहे थे, शैब्याने पूछा यह कौन है। उन्होंने मारे डरके कहा स्नुषा (पतोहू)। शैब्या वोली, मैं वाँझ हूँ मेरी कोई सौत नहीं, फिर मेरी पतोहू कैसे? ज्यामघके कथनका विश्वेदेव और पितरोंने अनुमोदन

किया। कुछ कालके वाद शैंब्यासे उनका पुत्र विदर्भ हुआ। इन दोनोंका विवाह हुआ और क्रथ तथा कैशिक नामके दो पुत्र हुए जिनसे वंश चला (भाग० ९.२३.३५-३९; ब्रह्मां० १.१.१२२; ३.७०.२९-४९, मत्स्य० ४४.२८-३६)।

ज्येष्ठ–पु० [सं०] (१) २० अमिताभ देवोंके गणमेंसे एक (वायु० १००.१७)। (२) वे प्रजापति जो ब्रह्माके कानसे उत्पन्न हुए थे (वायु० ६५.५८)।

ज्येष्ठसाम–पु० [सं०] सामवेदका एक सूक्त जिसका काम श्राद्धोंमें और मूर्त्तिस्थापनामें पड़ता है (मत्स्य० १७.३८; ५८.३६; ९५.३०; २६५.२७)।

ज्येष्ठसामग–पु० [सं०] श्राद्धमें भोजन करानेके लिए उपयुक्त (वायु० ८३.५५; विष्णु० ३.१५.२)।

ज्योति–पु० [सं०] (१) औत्तम मन्वंतरके १२।१२ की संख्यावाले सुधामा आदि पांच देवगणोंमेंसे वंशवर्ती गणका एक देव (ब्रह्मां० २.३६.३०)। (२) वशिष्ठके सात पुत्रोंमेंसे, जो स्वारोचिप मन्वंतरके प्रजापति थे, एक (मत्स्य० ९.९)। (३) धर्म और मरुत्वतीसे उत्पन्न अग्नि आदि कई मरुद्गणोंमेंसे एक मरुद्गण (मत्स्य० १७१.५२)। (४) वीस सुतपादेवगणमेंका एक देव (वायु० १००.१४)। (५) तामस मन्वंतरके एक ऋपि (विष्णु० ३.१.१८)। (६) (स्त्री०) शाल्मलिद्वीपकी एक नदी (ब्रह्मां० २.१९.४६)।

ज्योतिर्धामा–पु० [सं०] तामस मन्वंतरके सप्तर्पियोंमेंसे एक (भाग० ८.१.२८; ब्रह्मां० २.३६.४७)।

ज्योतिर्मठ–पु० [सं०] यह वदरिकाश्रमके रास्तेमें ६००० फुटकी ऊँचाईपर स्थित एक तीर्थस्थान है जहाँ वद्रीनाथके रावल रहते हैं। यहाँ नरसिंह शालग्रामकी मूर्त्ति है। ठण्डके दिनोंमें वद्रीनाथकी पूजाके स्थानपर इन्हींकी पूजा करते हैं। यहाँ एक २००० वर्प पुराना वटवृक्ष है। इसे जोषीमठ कहते हैं जिसके उत्तर-पूर्व कोणपर भविष्य वद्रिकाश्रम तथा कैलाश पहाड़ है।

ज्योतिर्लिंग–पु० [सं०] (१) महादेव। विष्णुकी नाभिसे ब्रह्माकी उत्पत्ति हुई। विष्णुने उनकी व्यग्रता देख कहा कि तुम सृष्टिके लिए ही उत्पन्न किये गये हो। इसपर वे विष्णुसे लड़नेपर तैयार हो गये। इन दोनोंके झगड़ेका निर्णय करनेके लिए एक ज्योतिर्लिंग उत्पन्न हुआ जिसके चारो ओर भयंकर ज्वाला फैल रही थी। इसका न आदि था न मध्य और न अन्तका ही पता था। ब्रह्माने झूठमूठ कहा कि उनको इस ज्योतिर्लिंगका अन्त मालूम हो गया और साक्षीमें केतकी फूलने गवाही दी, पर विष्णु ने आदिका भेद न पाया और सच-सच कह दिया। अतः निर्णय हुआ कि विष्णु ही ब्रह्मासे वड़े हैं (शिवपुराण)। (२) भारतमें प्रतिष्ठित शिवके बारह प्रधान लिंग। यथा—सोमनाथ सौराष्ट्रमें, मल्लिकार्जुन श्रीशैलमें, महाकाल उज्जयिनीमें; ओंकार नर्मदा तटपर अमरेश्वरमें, केदार हिमालयमें, भीमशंकर डाकिनीमें, विश्वेश्वर काशीमें, त्र्यंबक गोमती तटपर; वैद्यनाथ चिताभूमिमें, नागेश्वर द्वारकामें, रामेश्वर सेतुबन्धमें, घृष्णेश्वर शिवालयमें।

ज्योतिर्लोक–पु० [सं०] ध्रुवलोक जहाँ राजा उत्तानपादके पुत्र ध्रुव स्थित हैं। ग्रह आदि सदा इनकी परिक्रमा किया करते हैं (भाग० ५.२३.३)।

ज्योतिष्क–पु० [सं०] मेरु पर्वतकी एक चोटी जो बहुमूल्य रत्नोंसे भरी है। आदित्यगण, वसुगण, दो आश्विनी कुमार द्यौ, गुह्यक, यक्ष आदि सब यहाँ गंगा तथा नंदीके अतिरिक्त पशुपतिकी उपासना करते हैं (वायु० ८१-९२)।

ज्योतिष्टम–पु० [सं०] एक गंधर्वका नाम(ब्रह्मां० ३.७.११)।

ज्योतिष्मान्–पु० [सं०](१) कपिलके पिताका नाम (विष्णु० २.४.३६)। (२) प्लक्षद्वीपका एक सीमा पर्वत (भाग० ५.२०.४)। (३) प्रजापति कर्दमके दस पुत्रोंमेंसे एक जो कुशद्वीपका राजा था। उद्भिज, वेणुमान, वैरथ, लवण, धृति, प्रभाकर और कपिल ये सात इसके पुत्र थे जिनमें पूरा द्वीप इसने बाँट दिया था (ब्रह्मां० २.१४.९, २७-२८)। (४) सात मरुद्गणोंमेंसे प्रथम मरुद्गणमेंका एक मरुत् (ब्रह्मां० ३.५.९२; वायु० ६७.१२३)। (५) रोहित कल्पके एक ऋपि (भार्गव) (ब्रह्मां० ४.१.६३; विष्णु० ३.२.२३)। (६) स्वायंभुव मनुके १० पुत्रोंमेंसे एक (मत्स्य० ९.५; ब्रह्मां० २.१३.१०४)। (७) स्वायंभुव मनुका एक पौत्र जो कुशद्वीपके लिए अभिपिक्त था (वायु० ३१.१८; ३३.९, १२)। (८) प्रियव्रतका एक पुत्र तथा कुशद्वीपका राजा (विष्णु० २.१.८, १३)।

ज्योतिष्मती–पु० [सं०] वर्चोवान झीलसे निकली एक नदी जो सरस्वतीकी शाखा है (ब्रह्मां० २.१८.६६; मत्स्य० १२१.६५; वायु० ४७.६३)।

ज्योतिष्मंत–पु० [सं०] पितरोंके तीन गणोंमेंसे एक गण जिसका अधिपति यम है (ब्रह्मां० ३.१.५२; मत्स्य० ५.२०)।

ज्योतीरस–पु० [सं०] एक प्रकारका रत्न जिसका उल्लेख वाल्मीकि रामायण तथा बृहत्संहितामें है (हिं० श० सा०)।

ज्योत्स्ना–स्त्री [सं०] (१) सरयू या मानससे निकली एक नदी (ब्रह्मां० २.१८.७१)। (२) चन्द्रमाकी एक कला (ब्रह्मां० ४.३५.९२)। (३) प्रजापतिकी सत्त्वपूर्ण तनु जिससे उत्पन्न सब व्यक्ति प्रसन्न चित्त होते हैं (ब्रह्मां० २.८.२१; वायु० ९.२०)। (४) श्वेत पर्वतके एक झीलसे निकली एक नदी (वायु० ४७.६८)।

ज्योत्स्नाकाली–स्त्री [सं०] वरुण-पुत्र पुष्करकी पत्नीका नाम जो सोमकी पुत्री थी (महाभा० उद्योग० ९८.१३)।

ज्योत्स्नामुखी–स्त्री० [सं०] अन्धकासुररक्तपनार्थ शिवजी द्वारा सृष्टि एक मानस-पुत्री देवी (मत्स्य०१ ७९.२६)।

ज्योत्स्नी–स्त्री० [सं०] पोडश पत्राब्जपरकी एक शक्तिदेवी (ब्रह्मां० ४.३२.११)।

ज्वर–पु० [सं०] (१) ग्यारह रुद्रोंमेंसे एक (वायु० ६६.६९)। (२) श्रीकृष्णके पौत्र अनिरुद्ध वाणासुरके यहाँ वन्दी हो गये थे, अतः कृष्ण और वाणमें घोर युद्ध हुआ था। इसी समय वाणासुरकी सहायताके लिए शिवजीने 'ज्वर'को उत्पन्न किया जिसने वलराम आदिको ग्रसा और श्रीकृष्णके शरीरमें भी प्रवेश किया। इसपर श्रीकृष्णने वैष्णव ज्वर उत्पन्न किया जिसने शिवज्वरको निकाल फेंका। माहेश्वर ज्वरकी प्रार्थनापर श्रीकृष्णने वैष्णव ज्वरको तो हटा लिया और शिवज्वरको पृथ्वीपर रहने दिया। दूसरी कथाके अनुसार दक्ष प्रजापतिके अपमानसे महादेवने अपने श्वाससे ज्वरको

उत्पन्न किया था (हरिवंश तथा विष्णु० ५.३३.१४ १८)।

ज्वलना–स्त्री० [सं०] (१) राजा भद्राश्वके धृतानामकी अक्षरामें उत्पन्न दस पुत्रोंमेंसे ज्येष्ठ पुत्र औचेयुकी पत्नी तथा अंतिनारकी माताका नाम (मत्स्य० ४९.७-८)। (२) अनेयु (रिवेयु=वायु०) की पत्नी जो नागराज तक्षककी एक पुत्री और अंतिनारकी माता थी (मत्स्य० ४.६-७; वायु० ९९.१२८)।

ज्वाला–स्त्री० [सं०] (१) अंगारक=पिशाचोंके १६ जोड़ोंमेंसे एक जोड़ेकी स्त्री (ब्रह्मां० ३.७.३७७)। (२) तक्षककी पुत्रीका नाम जिनका विवाह ऋक्षसे हुआ था (महाभा० आदि० ९५.२५)।

ज्वालादेवी–स्त्री० [सं०] शारदापीठकी एक देवी जिनका स्थान काँगड़ा जिलाके देरा तहसीलमें है। कहते हैं जब सतीके शवको लिये शंकर चले जा रहे थे तव सतीकी जीभ यहींपर गिर गयी थी। यहाँके पर्वतमेंसे एक प्रकारकी भाप निकलती है जो दीपक दिखलाते ही जल उठती है। पहाड़की इस दरारको देवीका मुख कहते हैं।

ज्वालामालिनिका–स्त्री० [सं०] (१) १५ अक्षर देवियोंमेंसे एक अक्षर देवी (ब्रह्मां० ४.१९.५९) भंडके सेनापति त्रिकर्णकको इन्होंने मारा था (ब्रह्मां० ४.२५.९८) (२) चित्स्वरूपिणी ललितादेवीकी सेविका १५ नित्यादेवियोंमेंसे एक (ब्रह्मां० ४.३७.३५)।

ज्वालामालिनी–स्त्री० [सं०] तंत्रोक्त एक देवीका नाम।

ज्वालामुखी–पु० [सं०] अन्धकरक्तपानार्थ शिवसृष्ट एक मातृका देवी (मत्स्य० १७९.३२, ३३)।

ज्वालिनी–स्त्री० [सं०] एक शक्ति देवी (ब्रह्मां० ४.४४.७२)।

झ

झ–पु० [सं०] देवगुरु बृहस्पति।

झरजर–पु० [सं०] हिरण्याक्षका एक पुत्र (विष्णु० १.२१.३)।

झर्झरा–स्त्री० [सं०] तारादेवीका एक नाम जिन्हें दस महाविद्याओंके अन्तर्गत माना गया है।

झर्झरिका–स्त्री० [सं०] दे० झर्झरा।

झषकेतु–पु० [सं०] कामदेवका एक नाम—दे० कामदेव।

झषांक–पु० [सं०] दे० कामदेव।

झारखंड–पु० [हिं०] एक पहाड़ जो वैद्यनाथ धाम तथा जगन्नाथपुरीमें है। इसके ऊपर कई तीर्थ हैं जो विशेष माहात्म्यके नहीं हैं, पर इसपर भी जगन्नाथजी या वैद्यनाथ धामके यात्री दर्शनार्थ जाते हैं।

झींझो–पु० [सं०] आश्विन शुक्ला १४ को मनाया जानेवाला एक त्योहार। मिट्टीकी एक कच्ची हाँडीमें छेद करके उसमें दीपक रखे जाते हैं। क्वारी वालिकाएँ इसे हाथमें लेकर अपने सम्बन्धियोंके यहाँ जाकर उनके सिरमें दियेका तेल लगाती हैं और वे लोग कुछ दक्षिणा स्वरूप देते हैं। उसी द्रव्यसे सामग्री मँगवाकर पूर्णिमाको लड़कियाँ पूजन करती हैं। यह त्योहार प्रायः लुप्त-सा हो गया है (हिं.श.सा.)।

झूलन–पु० [सं०] एक उत्सव जो श्रावण शुक्ला एकादशीसे पूर्णिमातक होता है जिसमें श्रीरामचन्द्र या श्रीकृष्ण आदिकी मूर्त्तिको झूलेपर विठाकर झुलाते हैं। देवताके आगे नृत्य-गीत आदिका आयोजन भी किया जाता है। यह विशेषकरके वैष्णव संप्रदायवालोंके यहाँ अधिक होता है। श्रावण मासमें व्रज तथा अयोध्या आदि तीर्थस्थानोंमें वड़ा समारोह इकट्ठा होता है (हिं.श.सा.)।

ञ

ट

टंकवान्–पु० [सं०] एक पहाड़का नाम (वाल्मीकि रामायण)।

टंकहस्ता–स्त्री० [सं०] एक शक्तिका नाम (ब्रह्मां० ४.४४.८७)।

टंका–स्त्री० [सं०] तारादेवीका एक नाम।

टंकारिणी–स्त्री० [सं०] एक शक्ति देवी (ब्रह्मां० ४.४४.८८)।

टवर्गमंडिताकारा–स्त्री० [सं०] सर्वरोगहरचक्रपरकी विमला नामक सरस्वतीदेवी (ब्रह्मां० ४.३७.५)।

टौंस–स्त्री० [सं० तमसा] (१) एक छोटी नदी जो अयोध्याके पश्चिमसे निकलकर वलियाके पास गंगामें गिरती है। वनको जाते समय श्रीरामचन्द्र यहाँ कुछ दिनों रहे थे। रामायणकी तमसा नदी यही है जिसके तटपर वाल्मीकिके आश्रमका होना लिखा है (रामा० वाल० २.३-५)। (२) एक नदी जो मैहरके पास कैमोर पहाड़से निकल मिर्जापुर और इलाहावादके वीच गंगासे मिलती है। इसके तटपर वाल्मीकिका एक आश्रम था। प्रयागसे चित्रकूट जाते समय श्रीरामको जो वाल्मीकि आश्रम मिला था शायद यह यही आश्रम है (रामा० अयोध्याका० ४५.३२)।

ठ

ठाकुर–पु० [सं० ठक्कुर] देवता, विशेषकर विष्णु या उनके अवतारोंकी प्रतिमाएँ।

ठाढ़ेश्वरी–पु० [हि०] एक प्रकारके साधु जो सदा खड़े ही खड़े पूजा, जप तथा भोजन आदि करते हैं। दीवाल आदि-

के सहारे सो भी रहते हैं (हिं.श.सा)।

ठाकुरद्वारा–पु० [हिं०] (१) जगन्नाथजीका मंदिर जो पुरीमें है—दे० जगन्नाथ। (२) मुरादाबादमें हिन्दुओंका एक तीर्थस्थान (हिं.श.सा.)।

ड

डंकारी–स्त्री० [सं०] एक शक्तिदेवीका नाम (ब्रह्मां० ४.४४.८८)।

डडंपाणि–पु० [सं० दण्डपाणि] शिवके एक गणका नाम (स्कंद० काशीखंड)।

डम–पु० [सं०] लेट और चांडाली मातासे उत्पन्न एक वर्णसंकर जाति (ब्रह्मवै०)।

डाकिनी–स्त्री [सं०] (१) शिवकी एक अनुचरीका नाम (ब्रह्मां० ३.४१.३०)। (२) एक पिशाची या देवी जो कालीके गणोंमें मानी गयी है। यह बालकोंको पीड़ा पहुँचाती है। (३) किरिचक्रके चौथे पर्वपरकी एक शक्ति देवी (ब्रह्मां० ४.२०.१६)।

डिविक या डिभक–पु० [सं०] इसे श्रीकृष्णने मारा था (भाग० १०.५२-[५६(५)८]; ५७.१४(१)।

डिम्भक–पु० [सं०] शल्वनरेश ब्रह्मदत्तके पुत्र जिनके भाईका नाम हंस था। ये दोनों महादेवके वरसे अवध्य हो गये थे। विरुपाक्ष तथा कुंडोदर नामक शिवके दो अनुचर सर्वदा इनके पास रहते हैं। इन्होंने भाईके मरनेपर आत्महत्या कर ली थी (ब्रह्मां० ४.२९.१२२)।

ढ

ढुंढा–स्त्री० [सं०] पुराणानुसार एक राक्षसी जो हिरण्यकशिपुकी बहिन तथा प्रह्लादकी बुआ थी। इसे अग्निमें नहीं जलनेका वर शंकरसे प्राप्त था। अनेक उपाय करनेपर भी जब हिरण्यकशिपु प्रह्लादको मारनेमें असफल रहा तब उसने ढुंढाकी सहायता लेनेकी सोची। हिरण्यकशिपुके कहनेपर प्रह्लादको गोदमें ले यह अग्निमें बैठी थी। आशा थी प्रह्लाद जल जायेगा और ढुंढा वरके प्रतापसे सकुशल निकल आयेगी। विष्णु-प्रतापसे प्रह्लादका बाल भी बाँका न हुआ, पर ढुंढा जलकर भस्म हो गयी। यह घटना फाल्गुन पूर्णिमाको हुई थी जिसकी याद होलिकादहन है।

ढुंढि–पु० [सं०] गणेशजीका एक नाम जो ५६ विनायकोंमें एक हैं। संसारके सब विषय इन्हींके अन्वेषणसे प्राप्त हुए हैं (काशीखंड तथा ढुंढिराज)।

ढुंढिपूजा–स्त्री० [सं०] माघ शुक्ल चौथको नक्त व्रत कर ढुंढिराज गणेशका पूजन करे। सफेद तिलका मोदक अर्पण करे तो सब पाप नष्ट हों (त्रिस्थलीसेतु)।

ढुंढिराज–पु० [सं०] ढुंढराज गणेश जिनका मंदिर काशी विश्वेश्वरके पास है। ऐसा विश्वास है कि यह संसारभरके यात्रियों तथा पुण्यात्मा व्यक्तियोंको ढूँढ़कर लाते हैं जिसमें उन्हें काशी विश्वेश्वरका दर्शन मिल जाय जिससे मुक्ति प्राप्त होती है (काशीखण्ड)।

ण

त

तंडि–पु० [सं०] एक बहुत प्राचीन ऋषिका नाम जिनके पुत्रके मंत्र यजुर्वेदमें मिलते हैं (महाभा० शान्ति० २५०.१७)। एक आंगिरस प्रवर-प्रवर्तक ऋषि (मत्स्य० १९६.३०)।

तंडिक–पु० [सं०] राजा हर्यंगके अश्वमेध यज्ञमें ये आचार्य थे। इन्होंने अपने मन्त्रबलसे इन्द्रके वाहन ऐरावतको पृथ्वीमें ला दिया था (वायु० ९९.१०८)।

तंडु–पु० [सं०] महादेवजीके नंदिकेश्वरका नाम।

तंति–पु० [सं०] (१) नंदनका एक पुत्र (मत्स्य० ४६.२७)। (२) पाँचधूम्र पराशरोंमेंसे एक धूम्र पराशर (मत्स्य० २०१.३८)।

तंतिज–पु० [सं०] श्रीकृष्णका एक पुत्र जो कनकको दिया गया था (वायु० ९६.१८९)।

तंतिपाल–पु० [सं०] (१) नन्दनके एक पुत्रका नाम (मत्स्य० ४६.२७)। (२) युधिष्ठिरके भाई सहदेवका एक नाम जिससे अज्ञातवासके समय राजा विराटके यहाँ यह प्रसिद्ध थे (महाभा० विराट० ३.९)।

तंतिमाल–पु० [सं०] श्रीकृष्णके एक पुत्रका नाम जो कनकको दिया गया था। यह तंतिजका भाई था (वायु० ९६.१८९)।

तंतुपर्व–पु० [सं० तंतुपर्वन्] 'रक्षाबंधन'का एक नाम जो श्रावणकी पूर्णिमाको मनाया जाता है—दे० रक्षाबंधन।

तंत्र–पु० [सं०] हिन्दू-उपासना सम्बन्धी एक शास्त्र जिसे शिव प्रणीत कहते हैं। आगम, यामल और मुख्यतंत्र इसके तीन मुख्य भाग माने गये हैं। इसे आगमशास्त्र कहते हैं जिसके ज्ञाता योगी होते थे (भाग० १.३.८; ४.२४.६२; वायु० १०४.८६)। इस शास्त्रके अनुसार कलियुगमें वैदिक जप, पूजा और यज्ञ आदि निरर्थक हैं। इसमें विष्णु-उपासन का विधान है (भाग० ११.३.४७)। इसे सीखनेके लिए पहिले किसी गुरुसे दीक्षा लेनी चाहिये। प्रधानतः यह शाक्तोंका ही शास्त्र है। आधुनिक तंत्रका प्रचार महाराज कनिष्कके समयसे माना जाता है। बौद्धोंके यहाँ भी तंत्र-

का प्रचार है (भाग० ११.५.२८, ३१; २७.२६; १२.११.४,२०)।

तांत्रिक लोग विशेषतया केवल शक्तिकी ही उपासना करते हैं। ये लोग शिवकी नहीं बल्कि शिवकी 'शक्ति'की पूजाको ही प्रधानता देते हैं। तंत्रशास्त्रके पाँच 'मकार' ये हैं—(१) मद्य; (२) मांस; (३) मत्स्य; (४) मुद्रा; (५) मैथुन। शक्तिके दो रूप माने गये हैं—पहला शांत अथवा श्वेत जिसमें उमा और गौरी प्रधान हैं। दूसरा उग्र जैसे दुर्गा और काली, इसका रंग काला है।

शक्तिके उपासक शाक्त कहलाते हैं जो दो प्रकारके हैं—पहिले दक्षिणमार्गी और दूसरे वाममार्गी कहे जाते हैं। वाममार्गियोंसे दक्षिणमार्गियोंकी पूजाका ढंग अधिक रोचक होता है। वाममार्गी शक्तिके उग्ररूपकी उपासना करते हैं जिसमें तंत्रके 'पंच मकार'का वेधड़क खुला प्रयोग किया जाता है। बंगाल, आसाम तथा मिथिलामें तंत्रोक्त उपासना की ही प्रधानता है (तंत्रराजतंत्र, उडरफ संपादित; तंत्रसारसंग्रह)।

तंत्रधारक–पु० [सं०] स्मृतियोंके अनुसार जो पुरुष कर्मकांडकी पुस्तक ले याज्ञिकके साथ बैठे उसे तंत्रधारक कहते हैं।

तंत्रिणी–स्त्री० [सं०] शुक और वीणा लिये संगीतयोगिनीकी एक अनुचरी (ब्रह्मां० ४.१७.४६)।

तंत्रिपालक–पु० [सं०] सिंधु सौवीरके राजा और दुर्योधनके बहनोई जयद्रथका एक नाम (महाभा०)।

तंद्रा–स्त्री० [सं०] रुद्रकी एक कला (ब्रह्मां० ४.३५.९६)।

तक्ष–पु० [सं०](१) श्रीरामके भाई भरतके ज्येष्ठ पुत्रका नाम जिन्होंने गांधारमें तक्षशिला नगरी स्थापित की थी (भाग० ९.११.१२; ब्रह्मां० ३.६३.१९०; वायु० ८८.१८९; विष्णु० ४.४.१०)। (२) वृकके पुत्रका नाम जो दुर्वाक्षीके गर्भसे उत्पन्न हुए थे (भाग० ९.२४.४३)।

तक्षक–पु० [सं०] (१) पाताल (महातल) वासी आठ नागोंमेंसे एक जो कद्रूके गर्भसे उत्पन्न कश्यप ऋषिका पुत्र था। यह क्रोधवशवर्गका था (भाग० ५.२४.२९; ब्रह्मां० २.१७.३४; २०.२४; ३.७.३२; मत्स्य० ६.३९; ८.७; वायु० ३९.५४; ५०.२३; ५४.९१; ६९.६९)। यह काद्रवेय नाग है (विष्णु० १.२१.२१)। श्रृंगी ऋषिके शापके कारण इसने राजा परीक्षित्को डँसा था जिससे उनकी मृत्यु हो गयी थी। इससे क्रुद्ध हो बदला लेनेकी नीयतसे परीक्षित्-पुत्र जनमेजयने सर्पयज्ञ किया था जिससे डरकर तक्षक इन्द्रकी शरणमें गया। इसपर जनमेजयकी आज्ञासे ऋत्विजोंके मंत्र पढ़नेपर इन्द्र भी खिंचने लगे, तब इन्द्रने डरकर तक्षकको छोड़ दिया (भाग० १२.६.१६-२३)। जब तक्षक अग्निकुण्डके समीप पहुँचा तब आस्तीक ऋषिकी प्रार्थनापर यज्ञ बन्द हुआ और तक्षकके प्राण बचे। यह नाग ज्येष्ठ मासमें अन्य गणोंके साथ सूर्य रथपर अधिष्ठित रहता है (भाग० १२.११.३५)। यह शिवकी ग्रीवाके चारो ओर लिपटा रहता है (ब्रह्मां० २.२५.८८; मत्स्य० १५४.४४४)।

पाश्चात्य विद्वानोंके अनुसार भारतवर्षमें तक्षक जाति थी जिसका जातीय चिह्न सर्प था। इसका युद्ध राजा परीक्षित्से हुआ था, पर परीक्षित् मारे गये। जनमेजयने तक्षशिलाके समीप इन तक्षकोंसे युद्ध किया था और इन्हें परास्त किया था। (२) भागवतके अनुसार राजा प्रसेनजित्के पुत्रका नाम जो बृहद्बलका पिता था (भाग० ९.१२.८)। (३) दस वायुओंमेंसे एकका नाम जिसे 'नागवायु' भी कहते हैं। (४) भद्राश्वके दस पुत्रोंमेंसे ज्येष्ठ औचेयुकी पत्नी ज्वलनाका पिता (मत्स्य० ४९.६; वायु० ९९.१२८)।

तक्षशिला–स्त्री० [सं०] एक बहुत प्राचीन नगरीका नाम जहाँ भरतके पुत्र तक्षकी राजधानी थी। कहते हैं यह नगर गांधारमें था, पर हालमें खुदाई होनेपर यह रावलपिंडीके समीप निकला है। जनमेजयने सर्पयज्ञ यहीं किया था। तक्षशिलाका विद्यापीठ प्रसिद्ध था। कूटनीतिज्ञ चाणक्य यहींका था (ब्रह्मां० ३.६३.१९१; वायु० ८८.१९०)।

तड़ागविधि–पु० [सं०] तड़ाग, कूप, मंदिर आदिके निर्माणका शुभ मुहूर्त्त, शास्त्रीय विधान आदि जिसका फल अग्निष्टोम, वाजपेय तथा अन्य यज्ञोंके समान होता है (मत्स्य० अध्याय ५८)।

तड़ित्प्रभा–स्त्री० [सं०] कार्त्तिकेयकी अनुचरी एक मातृका का नाम (महाभा० शल्य० ४६.१७)।

तत्–पु० [सं०] ईश्वर या ब्रह्माका एक नाम।

ततज–पु० [सं०] अट्ठाईस वेदव्यासोंमेंसे एक वेदव्यास (ब्रह्मां० २.३५.१२३)।

तत्त्व–पु० [सं०] पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश ये पाँच भूत। सांख्यमें पचीस तत्त्व माने गये हैं जो प्रलय होनेपर सब प्रकृतिमें मिल जाते हैं। योगमें ईश्वरको लेकर २६ तत्त्व होते हैं। वेदांतियोंके अनुसार ब्रह्म ही एकमात्र तत्त्व है। शून्यवादी बौद्ध केवल 'शून्य' को परमतत्त्व मानते हैं और कुछ जैनी जीव, आकाश, धर्म, अधर्म, पुद्गल और अस्तिकायको तत्त्व मानते हैं। चार्वाकने पृथ्वी, जल, अग्नि और वायु ये चार मुख्य तत्त्व माने हैं जिनसे सृष्टि हुई है। भागवतके अनुसार ईश्वर कालशक्तिके संयोगसे २३ तत्त्वोंको ले सृष्टि करता है (भाग० ३.५.२५-३६; मत्स्य० ३.२९; ब्रह्मां० २४ और २५ तत्त्वोंका उल्लेख है) (ब्रह्मां० ३.१९.६४; ४.८.३३)।

तत्त्वदर्श–पु० [सं०] तेरहवें मनु देवसावर्णि मन्वंतरके सप्तर्षियोंमेंसे एक ऋषिका नाम (भाग० ८.१३.३१; विष्णु० ३.२.४०)।

तत्त्वदर्शी–पु० [सं०](१) रौच्य युगके सप्तर्षियोंमेंसे एक ऋषि (पौलह) (ब्रह्मां० ४.१.१०२)। (२) रैवत मनुके एक पुत्रका नाम (मत्स्य० ९.२१)। (३) पांचाल देशके एक सुदरिद्र नामक वृद्ध ब्राह्मणका एक पुत्र (मत्स्य० २१.३)।

तत्त्वन्यास–पु० [सं०] तंत्रोक्त विष्णुपूजाकी सिद्धि प्राप्त करनेके लिए एक अंगन्यास।

तत्त्वरश्मि–पु० [सं०] तंत्रानुसार स्त्री देवताका बीज।

तत्त्वल–न० [सं०] प्रथम लोक (ब्रह्मां० २.२०.११) जिसकी भूमि काली है (ब्रह्मां० २.२०.१३) और जहाँ असुर, राक्षस तथा नाग आदि रहते हैं (ब्रह्मां० २.२०.१५-२०)।

तत्त्वला–स्त्री [सं०] ब्रह्मधनाकी एक पुत्री (वायु० ६९.१२५)।

तत्त्वसंहिता–स्त्री० [सं०] इसके लेखक कर्दम (कपिल) हैं

जिसमें २४ तत्त्वों तथा २५वें तत्त्व कालकी व्याख्या है (भाग० ३.२१.३२; २६.११-१६)।

तथ्य–न० [सं०] यह ऋषि मान्धाताकी सहायताके लिए उत्पन्न हुआ था (वायु० ९८.९०)।

तत्पुरुष–पु० [सं०] (१) एक कल्प (कालविभाग) का नाम (मत्स्य०)। (२) एक रुद्रका नाम (शिव०)।

तनय–पु० [सं०] भद्र देशका एक जनपद (वायु० ४३.२१)।

तनबाल–पु० [सं०] एक प्राचीन देशका नाम (महाभा०)।

तनुवात–पु० [सं०] एक नरकका नाम (विष्णु० तथा नारदपु०)।

तप–पु० [सं० तपस्] (१) वे कठिन व्रत जो चित्तको शुद्ध और विषयोंसे निवृत्त करनेको किये जायँ। पुराणोंमें इनकी अनेक कथाएँ हैं। गीताके अनुसार तप तीन प्रकारके हैं—शारीरिक, वाचिक और मानसिक। (२) तीसरे कल्पका नाम (वायु० २१.२९)। (३) विभुका एक अंश (ब्रह्मां० ३.४.२४)। (४) सुतपगणोंमेंसे एक (ब्रह्मां० ४.१.१४; वायु० १००.१४)। (५) एक सुखदेव (ब्रह्मां० ४.१.१९)। (६) रोहितगणका देवता (ब्रह्मां० ४.१.८५)। (७) शतरूपाका एक पुत्र (मत्स्य० ४.२५)। (८) ऊपरके मुख्य सात लोकोंमेंसे एक (वायु० १००.१८)। (९) रौच्य मनुके दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (वायु० १००.१०८)। (१०) एक स्वर्गीय लोक (भाग० २.१.२८; ८.२०.३४; ११.२४.१४; मत्स्य० ६१.१; १८४.२३)। यह विराट् पुरुषका भाल माना जाता है। 'तपोलोक' जहाँ ऋभु, सनत्कुमारादि रहते हैं। जनलोकसे चार करोड़ योजन यह ऊपर है जिसके ऊपर सत्यलोक या ब्रह्मलोक है (वायु० १०१.१७, ३७, २११; १०१.२०८; विष्णु० २.७.१४-१५)। (११) एक माह (माघ) जिससे पूषा (सूर्य), धनञ्जय (नाग), वात (राक्षस), सुषेण (गन्धर्व) आदि सौरगण सूर्य रथपर अधिष्ठित रहता है (भाग० १२.११.३९; वायु० ३०.९; ५०.२०२)।

तपती–स्त्री० [सं०] (१) पितरोंके श्राद्धके लिए एक प्रशस्त नदी (मत्स्य० २२.३२)। (२) महाभारतके अनुसार छायाके गर्भसे उत्पन्न सूर्यकी पुत्रीका नाम। सम्वरणकी सेवासे प्रसन्न होकर सूर्यने तपतीका विवाह उन्हींसे कर दिया था (भाग० ६.६.४१; ९.२२.४; ८.१३.१०;मत्स्य० ११.९.३९; विष्णु० ३.२.४)।

तपन–पु० [सं०] (१) पुराणानुसार एक नरकका नाम जिसमें प्रवेश करते ही शरीर जलने लगता है (विष्णु तथा मार्कण्डेयपु०)। (२) सूर्यका एक नाम जो यमुना आदिके पिता हैं (मत्स्य० १०८.२३; ११०.५)।

तपनतनया–स्त्री० [सं०] सूर्यकी पुत्रीका नाम। शमीवृक्ष, यमुना नदी आदि सूर्यकी पुत्रियाँ हैं। यम, कर्ण, शनि, सुग्रीव आदि सूर्यके पुत्रोंको 'तपनतनय' कहते हैं। दे० अलग-अलग शब्द जो यथास्थान मिलेंगे।

तपसा–स्त्री० [सं०] तापती नदीका नाम जो वैतूल नदीसे निकल कर खंभातकी खाड़ीमें गिरती है—दे० तापती।

तपसोमूर्त्ति–पु० [सं०] वारहवें मन्वंतरके चौथे सावर्णिके सप्तर्षियोंमेंसे एकका नाम (हरिवंश)।

तपस्तक्ष–पु० [सं०] देवराज इन्द्रका नाम—दे० इन्द्र।

तपस्पति–पु० [सं०] विष्णुका एक नाम।

तपस्य–पु० [सं०] (१) फाल्गुनका महीना जिसमें ऋतु आदि सौरगण सूर्यरथ पर अधिष्ठित रहता है (भाग० १२.११.४०; ब्रह्मां० २.१३.११; वायु० ३०.९)। (२) अर्जुनका एक नाम फाल्गुन भी था। तपस्य=फाल्गुन अतः अर्जुनका यह एक नाम पड़ गया था (महाभा० विराट० ४४.९,१६)। (३) हरिवंशके अनुसार तामस मनुके दस पुत्रोंमेंसे एकका नाम (मत्स्य० ९.१७)।

तपस्विनी–स्त्री० [सं०] भंगकारकी तृतीय पुत्री जो श्रीकृष्णको व्याही गयी थी (वायु० ९६.५५)।

तपस्वी–पु० [सं०] (१) वारहवें मनुके मन्वंतरके एक ऋषिका नाम (भाग० ८.१३.२८)। (२) चाक्षुष मनुका एक पुत्र (ब्रह्मां० २.६६.७९, १०६; मत्स्य० ४.४१)। (३) चौथे सावर्ण मनुके मन्वंतरके ऋषि=कश्यप (ब्रह्मां० ४.१.९२)। (४) मनु और नड्वलाका एक पुत्र (विष्णु० १.१३.५)। (५) मनुके वारहवें युगका ऋषि (विष्णु० ३.२.३५)।

तपा–पु० [सं०] वस्तावनका एक दत्तक पुत्र (वायु० ९६.१९०)।

तपु–पु० [सं०] इससे अग्नि तथा सूर्यका बोध होता है।

तपोजानि–पु० [सं०] रोहितवर्गके दस देवोंमेंसे एक देवका नाम (वायु० १००.९०)।

तपोत्सुक–पु० [सं०] सुदरिद्रका एक पुत्र (मत्स्य० २१.३)।

तपोदान–पु० [सं०] एक प्राचीन पुण्यतीर्थका नाम (महाभारत)।

तपोद्युति–पु० [सं०] तामस मनुके दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (मत्स्य० ९.१७)।

तपोधन–पु० [सं०] (१) पौलस्त्य, चौथे सावर्ण मनुके मन्वंतरके एक ऋषि (ब्रह्मां० ४.१.९२)। (२) तामस मनुका एक पुत्र (मत्स्य० ९.१७)। (३) मनुके वारहवें मन्वंतरके एक ऋषि (विष्णु० ३.२.३५)। (४) भृगु, जो अवतार माने गये हैं, का एक पुत्र (वायु० २३.१४९)।

तपोधृति–पु० [सं०] (१) मनुके १२वें समयके एक ऋषि (विष्णु० ३.२.३५)। (२) पुराणानुसार वारहवें मन्वंतरके चौथे सावर्णिके सप्तर्षियोंमेंसे एक ऋषिका नाम (भार्गव) (ब्रह्मां० ४.१.९३)।

तपोभोगी–पु० [सं०] तामस मनुका एक पुत्र (मत्स्य० ९.१८)।

तपोमूर्त्ति–पु० [सं०] (१) वारहवें मनुके मन्वंतरके एक ऋषि (भाग० ८.१३.२८; विष्णु० ३.२.३५)। (२) पुराणानुसार वारहवें मन्वंतरके चौथे सावर्णिके सप्तर्षियोंमेंसे एक ऋषि (ब्रह्मां० ४.१.९२)। (३) मनुके दसवें मन्वंतरके एक ऋषि (विष्णु० ३.२.२७)।

तपोमूल–पु० [सं०] तामस मनुके एक पुत्रका नाम (मत्स्य० ९.१७)।

तपोयोगी–पु० [सं०] तामस मनुका एक पुत्र (मत्स्य० ९.१८)।

तपोरति–पु० [सं०] (१) पौलह, चौथे सावर्ण मनुके युगके एक ऋषि (ब्रह्मां० ४.१.९२)। (२) तामस मनुके एक पुत्रका नाम (मत्स्य० ९.१७)। (३) मनुके वारहवें मन्वंतरके एक ऋषि (विष्णु० ३.२.३५)।

तपोरवि–पु० [सं०] पुराणानुसार वारहवें मन्वंतरके चौथे

सावर्णिके सप्तर्षियोंमेंसे एक।

तपोलोक–पु० [सं०] पुराणानुसार चौदह लोक हैं और ऊपरके सात लोकोंमेंसे यह छठा है। यह जनलोक तथा सत्यलोकके बीचमें है। पद्मपुराणानुसार यह लोक बड़ा सुन्दर है। वैराज नामवाले देवता तथा जो लोग कठिन तपसे श्रीकृष्णको प्रसन्न करते हैं वे इस लोकमें निवास करनेको भेजे जाते हैं (भाग० २.५.३९; वायु० ७.३०; २४.३; ४९.१४९; ६१.१३२, १७७)।

तपोहशन–पु० [सं०] (१) तपसोमूर्त्तिका एक नाम। (२) तामस मनुके पुत्र तपस्यका एक नाम (हरिवंश) तथा तपस्य (मत्स्य० ९.१७)।

तप्तकुंभ–पु० [सं०] (तप्तकुण्ड = विष्णुपु०) पुराणानुसार एक बहुत भयानक नरक जहाँ बड़े-बड़े कड़ाहे खौलते तेलसे भरे रहते हैं जिनमें यमके गण, अकृतज्ञ सरकारी नौकर, वर्जित स्त्री-प्रसंग करनेवाले आदि-आदि पापियोंको फेंक देते हैं (ब्रह्मां० ४.२.१४७, १५६; वायु० १०१.१४६, १५४; विष्णु० २.६.२, ९-१०)।

तप्तकृच्छ्र–पु० [सं०] एक व्रत जो प्रायश्चित्त स्वरूप किया जाता है और बारह दिनोंमें समाप्त होता है। इसमें पहले तीन दिनोंतक प्रतिदिन तीन पल = (६ छटाँक) गरम जल, तीन दिनोंतक प्रतिदिन तीन पल गर्म दूध, फिर तीन दिन गर्म घी एक पल, तदुपरांत अन्तके तीन दिन केवल गर्म वायु अथवा गर्म दूध या जलके भापके सेवनका विधान है या तीन पल गर्म जल, २ पल गर्म दूध और १ पल गर्म घी ३-३ दिन पीने और तीन दिन उपवास करनेसे अथवा तीनोंको एक साथ गर्म करके १ दिन पीनेसे और एक दिन उपवास करनेसे यह व्रत होता है। इस व्रतसे द्विजोंके सब प्रकारके पाप नष्ट हो जाते हैं—

तप्तकृच्छ्रं चरन् विप्रो जलक्षीरघृतानिलान्।
प्रतित्र्यहं पिबेदुष्णान् सकृत्स्नायी समाहितः॥
—मनु तथा व्रतपरिचय।

तप्तपापाण–पु० [सं०] एक नरकका नाम।

तप्तबालुक–पु० [सं०] पुराणानुसार एक नरकका नाम।

तप्तमुद्रा–स्त्री० [सं०] भगवान्‌के आयुधोंके आकारकी बनी धातुकी मुद्रा जिसे तपाकर वैष्णव लोग अपने शरीरपर छापा लगाते हैं जिसे मुक्तिदायक समझा जाता है—दे० अंकधारी।

तप्तलोक–पु० [सं०] दे० तप्तकुंभ (वायु० १०१.१५४; विष्णु० २.६.११)।

तप्तसुराकुंड–पु० [सं०] पुराणानुसार एक नरकका नाम।

तप्तसूर्मि–स्त्री० [सं०] पुराणानुसार एक नरक जहाँ अगम्या स्त्रीके साथ संभोग करनेवाले पुरुष और अगम्य पुरुषके साथ भोग करनेवाली स्त्रियाँ भेजी जाती हैं। यहाँ तप्त लोहेके खंभेका आलिंगन कराया जाता है।

तम–पु० [सं०] (१) (लोहपृष्ठ) एक नरक जहाँ वर्णच्युत तथा आश्रमधर्मसे गिरे हुए व्यक्ति भेजे जाते हैं (ब्रह्मां० ४.२.१५०; १७७-८; वायु० १०१.१४९, १७९; विष्णु० २.६.४)। (२) यह अज्ञान तथा अविज्ञताके समकक्ष है जिसके तीन बंधन हैं—अशाश्वतको शाश्वत समझना, दुःखको सुख समझ स्वयं जो पराया है उसे अपना समझना तथा अपवित्रको पवित्र समझना इसके ये चार रूप हैं (ब्रह्मां० ४.३.३३-३८)। (३) ग्यारहवाँ कल्प (मत्स्य० २९०.५)।

तमप्रभ–पु० [सं०] पुराणानुसार एक नरकका नाम।

तमसा–स्त्री० [सं०] ऋक्ष पर्वतसे निकल गंगा नदीमें मिलनेवाली एक नदी। टौंस नामकी नदी (ब्रह्मां० २.१६.३०; मत्स्य० ११४.२५; १६३.६४; वायु० ४५.१००.१३६)।

तमिस्र–पु० [सं०] पुराणानुसार एक नरकका नाम।

तमिस्रा–स्त्री० [सं०] षोडशपत्राब्जपरकी एक शक्ति (ब्रह्मां० ४.३२.११)।

तमोलिप्त–पु० [सं०] एक बहुमुखी विमान जो तिरस्करणिका देवीका वाहन था (ब्रह्मां० ४.२४.७५)।

तमोजा–पु० [सं०] असमंजसका एक पुत्र (मत्स्य० ४४.८३)।

तमोंत्य–वि० [सं०] सूर्य तथा चन्द्रग्रहणोंके १० प्रकारके ग्रासोंमेंसे एक जिसमें चन्द्र या सूर्यमंडलकी पिछली सीमामें राहुकी छाया अधिक और बीचमें बहुत थोड़ी-सी रहती है। यह चोरीका डर तथा फसल खराब होनेका द्योतक है।

तमोहंत–पु० [सं०] ग्रहणोंके दस प्रकारोंमेंसे एक—दे० तमोंत्य।

तम्त्रु–पु० [सं०] शार्ङ्गदेवा और वसुदेवका एक पुत्र (वायु० ९६.१७७, २४९)।

तम्त्रुर–पु० [सं०] विन्ध्य पर्वतपरकी एक जंगली जाति (ब्रह्मां० २.३६.१४५)।

तरंगिणी–स्त्री० [सं०] एक नदी जो उत्तर कुरुसे होकर उत्तर सागरमें गिरती है (वायु० ४२.७६-७)।

तरंगभीरु–पु० [सं०] चौदहवें मनुका पुत्र।

तरंतुक–पु० [सं०] एक स्थान विशेष जो कुरुक्षेत्रके अंतर्गत है। यहाँ एक रात निवास करनेसे सहस्र गोदानका पुण्य प्राप्त होता है (महाभा० वन० ८३.१५.१६)।

तरणि–पु० [सं०] सूर्यका एक नाम।

तरणिजा, तरणितनुजा–स्त्री० [सं०] संज्ञाके गर्भसे उत्पन्न सूर्यकी पुत्री = यमुना नदी।

तरणिसुत–पु० [सं०] सूर्य-पुत्र, यथा यम, कर्ण, शनि जो क्रमशः संज्ञा, छाया तथा कुंतीके गर्भसे उत्पन्न हुए थे—दे० यम, कर्ण तथा शनि।

तरण्य–पु० [सं०] दस देव गंधर्वोंमेंसे एकका नाम (वायु० ६८.३९)।

तरस्वी–पु० [सं०] (१) दे० गरुड़। (२) सांबका पुत्र एक यादव (वायु० ९६.२५२)।

तरीपी–पु० [सं०] इन्द्रकी पुत्रीका नाम।

तर्क–पु० [सं०] यह विष्णुके त्रिविक्रम रूपका दर्शन करने आया था (भाग० ८.२१.२)।

तर्ज–पु० [सं०] औत्तम मनुका एक पुत्र (मत्स्य० ९.१२)।

तर्पण–पु० [सं०] कर्मकाण्डकी एक क्रिया विशेष। देव, ऋषि और पितरोंको संतुष्ट करनेके लिए तर्पण करनेवाला हाथ या अर्घासे जल देता है जो आह्निक पाँच कर्त्तव्यानुष्ठानोंमेंसे एक है। माध्याह्न स्नानके बाद तर्पणका विधान है—दे० नित्यनैमित्तिककर्मसमुच्चय।

तर्ष–पु० [सं०] एक वसु जो वासना और अर्कका एक पुत्र था (भाग० ६.६.१३)।

तल–पु० [सं०] (१) सात पातालोंमेंसे पहला–दे० पाताल। (२) एक नरकका नाम।

तलक–पु० [सं०] (१) आंध्र हालेयका एक पुत्र तथा पुरीषभीरुके पिताका नाम (भाग० १२.१.२५)। (२) कृतके एक शिष्यका नाम (ब्रह्मां० २.३५.५१)।

तलवकार–पु० [सं०] सामवेदकी एक शाखा विशेष। (२) एक उपनिषत्।

तलशब्द–पु० [सं०] अरिष्ट असुरको साँड़के रूपमें देख श्रीकृष्णके प्रत्युत्तरमें ताल ठोंकनेका शब्द (विष्णु० ५.१४.८)।

तला–स्त्री० [सं०] रुद्राश्वकी १० पुत्रियोंमेंसे एकका नाम (वायु० ९९.१२६)।

तलातल–पु० [सं०] (१) सात पातालोंमेंसे एक पातालका नाम। (२) मय असुरका निवास स्थान। यह शंकरकी कृपासे सुदर्शनचक्रका भय त्याग निर्द्वन्द्व घूमा करता था (भाग० २.१.२६; ४.२४.७, २८)। प्रह्लादका निवास स्थान भी यहीं है (ब्रह्मां० २.२०.१२-१४, २५.३१)।

तल्ली–स्त्री० [सं०] वरुणकी पत्नीका नाम (हिं.श.सा.)।

तवर्ग–पु० [सं०] वेदकी नाभिके दोनों पार्श्व (वायु० १०४.७२)।

तांडव–पु० [सं०] उद्धत नृत्य जो शिवको अति प्रिय कहा गया है। अतः कोई-कोई नंदीको इस नृत्यका प्रवर्त्तक मानते हैं। अन्य मतानुसार तांडव नामक ऋषिने पहले-पहल इसकी शिक्षा दी थी इसीसे इसे तांडव कहते हैं। इसे शिवनृत्य भी कहते हैं।

तांडी–पु० [सं०] यजुर्वेदका एक कल्प सूत्रकार।

तांड्य–पु० [सं०] सामवेदके एक ब्राह्मणका नाम।

तांत्रिक–पु० [सं०] पूजा तथा उपासनाकी एक विधि विशेष है। तांत्रिकोंके मतानुसार ईश्वर (विष्णु) की रूपरेखाका विशद विवरण (भाग० १२.११ (पूरा); ब्रह्मां० ४.२.१०८)।

तांत्रिकी दीक्षा–स्त्री० [सं०] हरिकी उपासना तथा पूजाकी अपनी नयी तथा वैदिक नियमसे भिन्न विधि (भाग० १२.११.३७; २७.७) यह ठीक नहीं।

तांबूल–न० [सं०] पान; यह देवताओंको अर्पण किया जाता है (भाग० ८.१६.४१)। मथुराके व्यापारियोंने श्रीकृष्ण और वलरामको दिया था (भाग० १०.४२.१३)। श्रीकृष्णसे मिलनेके पूर्व त्रिवक्राने इसका व्यवहार किया था (भाग० १०.४८.५)। रुक्मिणीके विवाहके पूर्व सौभाग्यवती ब्राह्मणियोंको मंदिरमें तांबूल दिया गया था (भाग० १०.५३.४८; ६१.६)। श्रीकृष्णने कुचेलको दिया था (भाग० १०.८०.२२); इन्द्रने विष्णुको दिया था (भाग० १०.८५.३७; ११.२७.४३)। पूजनके अवसरपर त्रिपुरासुंदरी तथा अन्य देवताओंको तांबूल अर्पण करते हैं (ब्रह्मां० ४.४३.१३)।

ताटका–स्त्री० [सं०] सुकेतु नामक यक्षकी पुत्री जो बड़ी कठिन आराधनाके पश्चात् सुकेतुको (जो निःसंतान थे) ब्रह्माके वरके फलस्वरूप प्राप्त हुई थी। इसे हजार हाथियोंका वल था। जंभके पुत्र सुन्द (मारीच=वायु०) के साथ इसका ब्याह हुआ था। कुछ कारणवश सुन्द अगस्त्य ऋषिके शापसे मारा गया। स्वामीके मारे जानेसे ताडका (ताटका) अपने पुत्र मारीचको (ब्रह्मां० ३.५.३६; वायु० ६७.७२) लेकर अगस्त्य मुनिके आश्रमपर उन्हें खाने गयी। माता और पुत्र दोनों राक्षसत्वको प्राप्त हो गये थे। यह ऋषिके शापका प्रभाव था। अगस्त्यके आश्रमवासी इन दोनों माता-पुत्रके डरसे भाग-भागकर अपनी रक्षा करने लगे। आश्रम सारा शून्य हो गया और 'ताड़काका वन'के नामसे प्रसिद्ध हुआ। गंगाके दक्षिण जो अव शाहावाद जिला है ताड़काका वन था। इनके उपद्रवसे मुनिगण त्रस्त हो गये तव विश्वामित्रने अयोध्या जाकर अयोध्यापति दशरथसे श्रीराम और श्री लक्ष्मणको इन राक्षसोंके बधके लिए माँगा। श्रीरामने ताड़काको तो मार दिया पर मारीच घायल होकर दूर भाग गया। सुबाहु नामक एक और राक्षस भी इसी समय श्रीराम द्वारा मारा गया था (रामचरितमानस, वालकांड, दो० २०६, चौ० ५; दो० २०८, चौ० ३; विष्णु० ४.४.८८)।

ताडका–स्त्री० [सं०] दे० ताटका तथा रामच० मानस दो० २०६-२०९; विष्णु० ४.४.८८।

ताड़कायन–पु० [सं०] विश्वामित्रके एक पुत्रका नाम।

ताड़कारि–पु० [सं०] ताड़का वध करनेके कारण श्रीरामका एक नाम।

ताड़केय–पु० [सं०] ताड़का-पुत्र मारीच दानवका एक नाम—दे० मारीच।

तान्व—पु० [सं०] एक ऋषिका नाम जो तनुके पुत्र थे।

तापका–पु० [सं०] एक पश्चिमीय देशका नाम (ब्रह्मां० २.१६.६०)।

तापती–स्त्री० [सं०] एक नदी जो सतपुरा पहाड़से निकलकर खंभातकी खाड़ीमें गिरती है। अगस्त्य ऋषिके शापसे वरुण संवरण नामक एक सोमवंशी राजा हुए थे जिन्होंने घोर तप करके सूर्यको प्रसन्न किया। सूर्यने अपनी पुत्री तापीसे इनका विवाह कर दिया और वही तापतीके नामसे प्रवाहित हुई। इसमें स्नान करनेवाले सव पातकोंसे मुक्त हो जाते हैं। तापी-खंडमें तापतीके तटपर राजतीर्थ, अक्षमालातीर्थ आदि अनेक तीर्थोंका होना लिखा है जिनके अतिरिक्त १०८ महालिंग भी इसके किनारे भिन्न-भिन्न स्थानोंमें स्थित वतलाये गये हैं। आषाढ़ मासमें इस पुनीत नदीके जलमें स्नान करनेका विशेष माहात्म्य है (स्कंदपु० तापी-खंड)।

तापत्रय–पु० [सं०] आध्यात्मिक, आधिदैविक तथा आधिभौतिक तापत्रय हैं जिनके अनेक भेद हैं (विष्णु० ६.५.१-९)।

तापदुःख–पु० [सं०] पातंजल दर्शनमें माने गये ताप=दुःख, संस्कार दुःख और परिणाम दुःख तीन हैं (पातंजल दर्शन)।

तापश्चित्–पु० [सं०] एक यज्ञ विशेषका नाम।

तापन–पु० [सं०] कामदेवके पाँच वाणोंमेंसे एकका नाम। 'उन्मादन', 'शोषण', 'तापन', 'सम्मोहन' और 'स्तंभन' कामदेवके पाँच वाण हैं—दे० अंगज।

तापनीय–पु० [सं०] याज्ञवल्क्यके १५ शिष्योंमेंसे एक शिष्यका नाम (ब्रह्मां० २.३५.२९)।

तापस–पु० [सं०] दक्षिणका (वायु०—पश्चिमका एक जनपद (मत्स्य० ११४.४९; वायु० ४५.१२९)।

तापसेश्वर—पु० [सं०] नर्मदा तटवर्ती एक अति पवित्र स्थान जहाँ एक मृगी व्याधके भयसे भाग जलमें गिर पड़ी और उसे स्वर्ग प्राप्त हुआ (मत्स्य० १९१.१०२-४) ।

तापिन—पु० [सं०] दनुके महापराक्रमी १०० पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (वायु० ६८.८) ।

तापी—पु० [सं०] (१) ऋक्ष पर्वतसे निकली एक नदी (विष्णु० २.३.११) । (२) सूर्यकी पुत्री जो संवरणको व्याही थी—दे० तापती तथा (भाग० ५.१९.१८; ब्रह्मां० २.१६.३२; मत्स्य० ११४.२७) ।

तामरसा—पु० [सं०] अत्रिकी दस पत्नियोंमेंसे एक पत्नी (ब्रह्मां० ३.८.७६) ।

तामस—पु० [सं०] (१) चौथे मनुका नाम—दे० मनु । (२) (विशेषण) तमोगुणयुक्त=कुछ शास्त्र तामस कहे गये हैं—यथा कणादका वैशेषिक, गौतमका न्याय, कपिलका सांख्य, जैमिनिकी मीमांसा (पद्मपुराण) । पुराणोंमें 'मत्स्य' कूर्म, लिंग, शिव, अग्नि तथा स्कंद ये ६ तामस पुराण कहे गये हैं । सामुद्र, शंख, यम, आदि कुछ स्मृतियों तथा जैमिनि, कणाद, जमदग्नि, बृहस्पति, शुक्राचार्य आदि मुनियोंको भी तामस बतलाया गया है । विष्णु सत्त्वगुणमय; ब्रह्मा रजोगुणमय तथा शिव तमोगुणमय माने गये हैं । (३) प्रियव्रतका एक पुत्र तथा एक मन्वंतरका अधिपति (भाग० ५.१.२८; विष्णु० ३.१.२४) । चौथे मनु तथा उत्तमके भाई । पृथु आदि इनके ९ पुत्र थे । इस मन्वंतरमें देवताओंके सत्यक तथा हरि आदि नाम थे; त्रिशिख इंद्र थे और ज्योतिर्धाम आदि सप्तर्षि (भाग० ८.१.२७-२८) । रैवत इनके भाई थे (भाग० ८.५.२) । यह उकारका प्रतिनिधि था (वायु० २६.३६; ६२.३) । इस मन्वंतरमें देवताओंके २७ गण (सुपार, हरि आदि) थे । शिबिको इंद्र तथा नर और ख्याति आदिको इनका पुत्र लिखा है (विष्णु० ३.१.६, १६-१९) । भूतादिका गुण जिसे महत (जिसका गुण बुद्धि है) निगल गया था (वायु० १०२) ।

तामसकीलक—पु० [सं०] एक प्रकारके केतु जो राहुके पुत्र माने जाते हैं । ये संख्यामें ३३ हैं और सूर्य-मंडलमें इनके वर्ण, आकार और स्थानसे फल कहा जाता है ।

तामसमन्वंतर—पु० [सं०] इसमें चार देवगण हैं २५ देवोंका प्रत्येक गण हैं भार्गव, हर्ष आदि सात सप्तर्षि है । शिबि इन्द्र है । पूर्ण विवरणके लिए (वायु० ६२.३७-४३) ।

तामससर्ग—पु० [सं०] इसमें हिंसा तथा अधर्मके पुत्रोंकी सृष्टि हुई (वायु० १०.३८-४५) ।

तामसी—स्त्री० [सं०] (१) एक प्रकारकी माया विद्या । निकुंभिला यज्ञसे प्रसन्न होकर शिवने रावण-पुत्र मेघनादको इसे दिया था (रामायण) । (२) डंकारी आदि दस शक्तियोंमेंसे एक शक्ति (ब्रह्मां० ४.४४.८८) । (३) ओ३म्की तीन मात्राओंमेंसे एक (दूसरी) मात्रा (वायु० २०.२) । (४) केतुमाल देशकी एक नदीका नाम (वायु० ४४.१७) । (५) तमोगुणके उद्रेकवश ब्रह्माकी काला, नामकी प्रजाक्षयकरी तनुका नाम (वायु० ६६.८५, ८९ और १००) । इसे भवके अधिकारमें लिखा है (वायु० ६६.१०१५) । (६) इसे पूतना भी कहते हैं जो सद्रमकी पत्नी थी सद्रम कलिकी ज्येष्ठ पत्नी निकृतिसे उत्पन्न कलिपुत्र है । यह एक एक हस्त है । (वायु० ८४.१२) ।

तामसीवृत्ति—स्त्री० [सं०] तीन वृत्तियोंमेंसे अंतिम वृत्ति जिसके चार रूप हैं—(१) वेदमें अविश्वास; (२) शिष्टाचारमें अविश्वास; (३) वर्णाश्रमके नियमोंकी अवज्ञा और (४) धर्मशास्त्रोंकी अवज्ञा (वायु० १०२.५४, ७०-७३) ।

तामिस्र—पु० [सं०] (१) २८ नरकोंमेंसे एक जहाँ घोर अंधकार रहता है । यहाँ दूसरोंका धन, जन हड़पनेवाले जाते हैं (भाग० ३.३०.२८; ४.६.५४; ५.२६.७-८; विष्णु० १.६.४१; ३.११.१०४) । (२) एक अविद्याका नाम जो भोगकी इच्छापूर्तिमें बाधा पड़नेसे क्रोधरूपमें उत्पन्न होती है (भाग०) ।

ताम्र—पु० [सं०] (१) मुरका एक पुत्र (भाग० १०.५४.१२) । (२) बंदरोंका एक नायक (ब्रह्मां० ३.७.२३४) । (३) श्रीकृष्ण और सत्यभामाका एक पुत्र (मत्स्य० ४७.१७; ब्रह्मां० ३.७१.२४७) ।

ताम्रकर्णी—स्त्री० [सं०] पश्चिमके दिग्गज उज्जनकी पत्नी अंजनाका एक नाम—दे० अंजना ।

ताम्रतप्त—पु० [सं०] श्रीकृष्ण और रोहिणीका एक पुत्र (भाग० १०.६१.१८) ।

ताम्रपक्ष—पु० [सं०] श्रीकृष्ण और रोहिणीका एक पुत्र (विष्णु० ५.३२.२) ।

ताम्रपर्ण—न० [सं०] (१) सामवर्गका एक हाथी (ब्रह्मां० ३.७.३३७) । (२) भारतवर्षके नव खंडोंमेंसे एकका नाम (मत्स्य० ११४.८; विष्णु० २.३.६) ।

ताम्रपर्णी—स्त्री [सं०] (१) भारतवर्ष (भाग० ४.२८.३५; ५.१९.१८) तथा द्राविड़ देशमें कुलाचल पर्वतसे निकली एक नदी । मद्रासके तिनवल्ली जिलेसे होकर चन्दनके वनोंसे होती हुई बहनेवाली एक नदी जो मोतियों तथा शंखके लिए प्रसिद्ध है तथा श्राद्धके लिए पवित्र है (ब्रह्मां० २.१६.३६; ३.१३.२४-७; ४.३३.५२; विष्णु० २.३.१३) । रामायण, महाभारत तथा पुराणोंमें इसका उल्लेख है । अशोकके एक शिलालेखमें इसका हवाला है और टालमी आदि विद्वानोंने भी इसका उल्लेख किया है । यह दक्षिण सागरमें गिरती है जहाँ संगमपर मोती, शंख मिलते हैं (वायु० ७७.२४-५) । (२) सत्यभामाकी एक पुत्री (ब्रह्मां० ३.७१.२४८; वायु० ९६.२४०) ।

ताम्रपात्र—न० [सं०] (ताम्र) तांबेके बर्तन धार्मिक कृत्यों तथा दानके लिए पवित्र हैं (मत्स्य० ७.१२; ५८.१३; ५९.८; ६१.४५; २०६.१५, २७९.७; २८८.११; वायु० ७४.१) ।

ताम्ररसा—स्त्री० [सं०] रौद्राश्वकी दस पुत्रियोंमेंसे एक पुत्रीका नाम (वायु० ९९. १२६) ।

ताम्रलिप्त—पु० [सं०] (१) राजा देवरक्षितके अधीन एक प्रांत विशेष (विष्णु० ४.२४.६४) । (२) बंगालके मेदनीपुर जिलेका तामलुक नामक स्थानका पुराना नाम जिसका उल्लेख रामायणमें तो नहीं पर महाभारतमें कई स्थानोंपर मिलता है । यहाँके निवासी कुरुक्षेत्रके युद्धमें दुर्योधनकी ओरसे लड़े थे । यह पूर्वका एक जनपद है जिसे ताम्रलिप्तक भी कहते हैं (ब्रह्मां० २.१८.५१; ३.७४.१९७; मत्स्य० ११४.४५; १२१.५०; १६३.७२; वायु० ४५.१२३;

९९.३८५)।

ताम्रवक्षा–पु० [सं०] सत्यभामाके एक पुत्रका नाम (वायु० ९६.२३९)।

ताम्रवर्ण–पु० [सं०] (१) पुराणानुसार सिंहलद्वीपका एक नाम जिसे आजकल सिलोन कहते हैं (ब्रह्मां० २.१६.९; वायु० ४५.७९)। (२) दक्षिणका एक पर्वत जो पतंग पर्वतके निकट है (वायु० ३८.८)। (३) पुष्पदंत दिग्गजका पुत्र एक हाथी (वायु० ६९.२२१)।

ताम्रवर्ण–स्त्री० [सं०] भारतवर्षका एक खंड (ब्रह्मां० २.१६.९; वायु० ४५.१०५)।

ताम्रवर्णा–स्त्री० [सं०] मलय पर्वतसे निकली एक नदी (वायु० ४५.१०५)।

ताम्रशाला–स्त्री० [सं०] ललिताके श्रीपुरका तांबेसे निर्मित एक बड़ा कक्ष जो सात योजनका एक चौकोर कमरा है। इसके तथा कांस्यशालाके बीचमें ही कल्पवाटिका थी जिसमें सुन्दर तथा सुगंधवाले पुष्पवृक्ष थे (ब्रह्मां० ४.३१.६६)।

ताम्रा–स्त्री० [सं०] (१) वसुदेवकी पत्नी तथा सहदेवकी माता (मत्स्य० ४६.१६)। (२) दक्ष प्रजापतिकी पुत्री तथा कश्यपकी पत्नीका नाम। रामायणानुसार इनसे क्रौंची, भासी, नी, धृतराष्ट्री और श्येशुकी (शुचि) नामकी पाँच पुत्रियाँ उत्पन्न हुई थीं (वायु० ६६.५४)। (३) पुलहकी पुत्री (ब्रह्मां० ३.३.५६; ७.४४५ ४४८; ६९.३२५) तथा अप्सराओंकी माता (मत्स्य० १४६-१८; १७१.२९,६०)। यह कश्यपकी एक पत्नी थीं। कहते हैं बाज, गिद्ध, चील तथा सुग्गे आदि इन्हींके वंशज थे (भाग० ६.६.२६-२७; मत्स्य० ६.२.३०; वायु० ६९.३२५-२६; विष्णु० १.१५.१२५; २१.१४-१७)।

ताम्राभ–पु० [सं०] मेरू पर्वतसेमें दक्षिणमें सितोद झीलके पश्चिममें स्थित एक पर्वत जहाँ काद्रवेय तक्षकका निवास स्थान है (वायु० ३६.२३; ३९.५४)।

तार–पु० [सं०] (१) बृहस्पतिके अंशसे उत्पन्न एक बंदर जो श्रीरामचन्द्रकी सेनामें था। यह तारा (वालिकी स्त्री)का पिता था (रामा० उत्तर० ३४.४)। (२) शिवजीका एक नाम। (३) विष्णुका एक नाम। (४) हरितगणके दस देवोंमेंसे एक देवका नाम (ब्रह्मां० ४.१.८५)।

तारक–पु० [सं०] (१) दनुका एक पुत्र (ब्रह्मां० ३.६.७; मत्स्य० ६.१९; वायु० ५०.२६; ६८.७; विष्णु० १.२१.५)। यह भंडका मित्र था (ब्रह्मां० ४.३०.३९)। (२) इन्द्रका शत्रु एक असुर। गरुड़पुराणानुसार इसने इन्द्रको बहुत सताया था। यह इन्द्र-बलि देवासुरसंग्राममें लड़ा था (भाग० ८.१०.२१)। यह समुद्रमें छिपा रहता था और प्रायः निकलकर इन्द्रको सताता था (मत्स्य० ६१.४; १२९.५; १३१.२२; १३६.३४, ६७)। मत्स्य० १३८.४३-४ के अनुसार अंतमें भगवान विष्णुने नपुंसकका रूप धरकर इसे मारा था। तीसरे तलमें इसके नामपर एक नगर भी बसा है (ब्रह्मां० २.२०.२६)। (३) एक कौशिक गोत्रके ऋषि (वायु० ९१.९८)। (४) एक असुर जिसे कार्त्तिकेयने मारा था। यह वज्रांग और वरांगीका पुत्र था। पारियात्र गुफामें तप कर इसने ब्रह्माको प्रसन्न कर सात दिनके बच्चेसे मारे जानेका वर पाया था। यह असुरोंका राजा था तथा ग्रसन इसका सेनापति था। विष्णुके विरुद्ध इसने धावा किया था जिसकी सूचना इन्द्रने बृहस्पतिको दी (मत्स्य० १४८, १४९; १६०.२५-६; ब्रह्मां० ४.११.७)। इसे कुमारने मारा था (ब्रह्मां० ३.१०.४९; ४.३०.१०३; वायु० ७२.४७)। (५) श्रीरामका षडक्षर मंत्र 'ॐ रामाय नमः' जिसकी दीक्षा गुरु शिष्यको देता है। (६) भवसागरसे पार करनेवाला (मत्स्य० १२८.३४, ५६)।

तारकजित्–पु० [सं०] कार्त्तिकेयका एक नाम—दे० तारकासुर।

तारकतीर्थ–न०पु० [सं०] गया तीर्थ जहाँ पिंड देनेसे पुरखे तर जाते हैं—दे० गया।

तारकब्रह्म–न० पु० [सं०] 'ॐ रामाय नमः' श्रीरामका षडक्षर मंत्र।

तारकविधि–पु० [सं०] मुक्ति और वामनकी उपासना, भवसागर पार करनेके लिए ये दो नौकाएँ हैं (वायु० १०८.३७)।

तारका–स्त्री० [सं०] सुनीति जो ध्रुवकी माता थी (विष्णु० १.१२.९४)।

तारकाक्ष–पु० [सं०] तारकासुरका बड़ा लड़का। यह तीन भाई थे। ब्रह्माके वरसे ये तीनों भाई तीन पुर (त्रिपुर) बसाकर रहते थे—दे० त्रिपुर।

तारकामय–पु० [सं०] (१) कृतयुगका एक देवासुर-संग्राम। सोम द्वारा तारा (बृहस्पतिकी पत्नी) का अपहरण ही इस युद्धका कारण था। शुक्रने सोमका और शिव तथा इन्द्रने बृहस्पतिका पक्ष लिया (भाग० ९.१४.४-७; ब्रह्मां० ५.३२; मत्स्य० १२९.१६; १७२.१०; वायु० ६७.६९; ७०.८१; ९०.३३)। विष्णुने कालनेमि तथा इन्द्रने विरोचनको मार डाला। इसके बाद भारी अकाल पड़ा जब वशिष्ठने फल-फूल कंदसे जनताकी रक्षा की। अंतमें इस युद्धकी भयंकरता देख ब्रह्मा मध्यस्थ बने और तारा बृहस्पतिको लौटा दी गयी (विष्णु० ४.६.१६-१९)। (२) बारह कोलाहलोंमेंसे पाँचवाँ। प्रह्लादका पुत्र विरोचन इन्द्र द्वारा मारा गया था (मत्स्य० ४७.४३-९)।

तारकासुर–पु० [सं०] एक प्रसिद्ध असुर जो तारका पुत्र तथा ताराका भाई था। इसने ब्रह्मासे वर पानेके लिए घोर तप किया था और उन्हें प्रसन्न करके इसने दो वर प्राप्त किये—(१) 'मेरे समान कोई बलवान न हो' तथा (२) यदि मैं मारा जाऊँ तो उसीके हाथसे जो शिवसे उत्पन्न हो।' ब्रह्मासे ये दोनों वर प्राप्त करके तारकासुर घोर अन्याय करने लगा। तब देवता लोग ब्रह्माके पास गये। ब्रह्माने कहा 'शिवके पुत्रके अतिरिक्त तारकको और कोई नहीं मार सकता। पार्वती शिवके लिए तप कर रही थी और देवताओंकी प्रेरणासे कामदेव द्वारा शंकरका विवाह पार्वतीसे हो गया। बहुत दिनोंतक कोई संतान नहीं होनेपर देवताओंने अग्निको शिवके पास भेजा। कपोतके वेषमें अग्निको देख शिव बोले 'तुम्हीं हमारे वीर्यको धारण करो'। यह कहकर अग्निपर वीर्य छिड़क दिया। उसी वीर्यसे कार्त्तिकेयका जन्म हुआ और यह देवताओंके सेनानायक बने। घोर युद्धके उपरांत कार्त्तिकेयके बाणसे तारकासुर मारा गया (शिवपुराण)।

तारकारि–पु० [सं०] कार्त्तिकेयका एक नाम—दे० तारकासुर, कार्त्तिकेय।

तारकेश्वर–पु० [सं०] बंगालमें कलकत्तेके समीप स्थित एक प्रसिद्ध शिवलिंग (शिवपुराण)।

तारणी–स्त्री० [सं०] कश्यप ऋषिकी एक पत्नी जो याज और उपयाजकी माता थी।

तारसार–पु० [सं०] एक उपनिषद्का नाम।

तारा–स्त्री० [सं०] (१) बृहस्पतिकी पत्नीका नाम जिसे चन्द्रमाने उसकी इच्छासे ही रख लिया था और माँगनेपर चन्द्रमाने देना अस्वीकार कर दिया। अतः दोनोंमें घोर युद्ध हुआ, पर ब्रह्माने बृहस्पतिको तारा वापस दिला दी। उस समय तारा गर्भवती थी। देवताओंके पूछनेपर गर्भस्थित बालक चन्द्रमाका बतलाया और उसे चन्द्रमाने ग्रहण किया। इसी पुत्रका नाम बुध रखा गया (भाग० ९.१४.४-८, १३-१४; ब्रह्मां० ३.६५.२९; मत्स्य० २३.३०-४७; २४.३; वायु० ९०.२८-३५, ४३; विष्णु० ४.६.१०-३३)। (२) तोरणेश्वरी और ताराम्बिकाका एक नाम जिसका निवास विशाल वापिकाओंके जलके बीच है (ब्रह्मां० ४.३५.१२-२४,५८;३६.१६; ४४.८०)। (३) दस महाविद्याओंमेंसे एक। काली, तारा, षोडशी, भुवनेश्वरी, भैरवी, छिन्नमस्ता, धूमावती, बगलामुखी, मातंगी और कमलात्मिका ये ही १० महाविद्या हैं। (४) सुषेणकी कन्या और बालीकी पत्नीका नाम। अंगद इसीका पुत्र था। श्रीरामने बालिका वध किया था और पतिकी मृत्युके पश्चात् इसने बालीके अनुज सुग्रीवसे विवाह कर लिया था। तारा पंचकन्याओंमें है—'अहल्या द्रौपदी तारा कुंती मंदोदरी तथा। पंचकन्याः स्मरेन्नित्यं महापातकनाशनम् ॥' (ब्रह्मां० ३.७.२१९)। (५) एक ब्रह्मवादिनीका नाम (ब्रह्मां० २.३३.१८)। (६) किष्किंध पर्वतपर स्थापित सती देवीकी एक मूर्ति (मत्स्य० १३.४६)। (७) दस संख्यावाले हरितवर्गके देवताओंमेंसे एक (वायु० १००.८९)।

तारापीड़–पु० [सं०] (१) अयोध्याके एक राजाका नाम (मत्स्यपु०)। (२) सूर्यवंशके चन्द्रावलोकका एक पुत्र (मत्स्य० १२.५४)।

ताराभ–पु० [सं०] नारद (हि॰ श॰ सा॰)।

तार्क्ष–पु० [सं०] दे० गरुड़। (१) कद्रूके गर्भसे उत्पन्न अनूरुके यह पिता थे (भाग० ६.६.२२)। (२) (तार्क्ष्य = वायु तथा विष्णु पु०) हेमंतमें सूर्यके साथका सेनानी (ब्रह्मां० २.२३.१८; वायु० ५२.१८)।

तार्क्ष्य–पु० [सं०] (१) कश्यपका नामान्तर (भाग० ३.२.२४ दक्षकी चार पुत्रियोंका विवाह इससे हुआ था—विनता,) कद्रू, पतंगी और यामिनी जो पक्षियों, सर्प आदिकी माता हुईं (भाग० ६.६.२, २१-२२)। तार्क्ष्यसुत सर्पोंका शत्रु है, अतः सर्पोंसे रक्षाके लिए इसका आवाहन करते हैं (भाग० १०.६.२३; १७.७; मत्स्य० १२६.१९; १६७.५३)। (२) मार्गशीर्ष मासमें सौर गणके साथ सूर्य रथपर अधिकृत एक यक्ष, जिसे ब्रह्मांडपुराणमें तार्क्षि लिखा है (भाग० १२.११.४१; विष्णु० २.१०.१३)।

ताल–पु० [सं०] (१) देवताओंकी मूर्त्ति या चित्रादिकी एक नाप जो अधिकतर मध्यमा अंगुलीसे की जाती है। देवताओं और देवियोंके लिए ९ ताल, दानवों तथा किन्नरोंकी भी यही नाप है (ब्रह्मां० १.७.९७; मत्स्य० २५८.१६, ७५; २४९.१–२; वायु० ८.१०३)। (२) एक राज्य जहाँसे होकर चक्षु नदी बहती है (ब्रह्मां० २.१८.४६)। (३) एक नरकका नाम जहाँ किसीका वध करनेवाला जाता है (ब्रह्मां० ४.२.१४६; वायु० १०१.१४६, १५३; विष्णु० २.६.२)। (४) दुर्गा देवीके सिंहासनका नाम (हि॰ श॰ सा॰)।

तालक–पु० [सं०] एक सामगका नाम (वायु० ६१.४४)।

तालकायन–पु० [सं०] एक कौशिक गोत्रके ऋषि (ब्रह्मां० ३.६६.७०)।

तालकृत्–पु० [सं०] आंगिरस वंशका एक आर्षेय प्रवर (मत्स्य० १९६.२२)।

तालकेतु–पु० [सं०] (१) ध्वजापर तालका चिह्न रहनेके कारण भीष्मका एक नाम (महाभा० उद्योग० १५०.५)। (२) ध्वजापर ताल-वृक्षका चिह्न अंकित रहनेके कारण बलदेवका एक नाम (विष्णु० ४.१.९५)। (३) मनुष्य-धर्म पालन करनेवाले (ब्रह्मां० मनुष्यों द्वारा अवध्य) दानवोंमेंसे एक दानव (ब्रह्मां० ३.६.१६; वायु० ६८.१६)। (४) भंडासुरका यह शून्यक नगरके उत्तरी प्रवेश द्वारपर १० दस अक्षौहिणी सेनाके साथ रक्षार्थ स्थित था (ब्रह्मां० ४.२२.२५)। (५) पातालकेतु दैत्यका छोटा भाई। पातालकेतु ऋतध्वजसे मारा गया था, अतः छद्मवेशमें इसने ऋतध्वजसे बदला लिया, पर अश्वतर नागने इनकी रक्षा की थी—दे० मार्कण्डेय० ऋतध्वज, शत्रुजित्, मदालसा)।

तालग्रीव–पु० [सं०] भण्डासुरका सेनानायक एक असुर जो शून्यक नगरके पश्चिमके प्रवेशद्वारकी रक्षा दस अक्षौहिणी सेना ले करता था (ब्रह्मां० ४.२२.२४)।

तालजंघ–पु० [सं०] (१) अवंतीके नरेश जयध्वजके पुत्रका नाम जो हैहयवंशके थे। इनके १०० पुत्र थे जिनमें वीतिहोत्र ज्येष्ठ थे। और्वकी शक्तिके कारण तालजंघ-वंशका अंत हुआ था (भाग० ९.२३.२८; मत्स्य० ४३.४७; वायु० ८८.१२२; ९४.५०)। परशुरामजीके भयसे यह हिमालय भाग गया था और पूर्ण शान्तिके पश्चात् लौट आया था। इसने अयोध्यापर भी आक्रमण किया था जहाँका राजा फल्गुतंत्र सपरिवार भाग गया था (ब्रह्मां० ३.६९.५१; ४७.६७.७८)। इसने बाहुको हराया था पर उन्हींके पुत्र सगरसे पराजित हुआ था (विष्णु० ४.३.२६, ४०-१)। (२) एक यदुवंशी राजा जिसके पुत्रोंने राजा सगरके पिता बाहुक या बाहुको राज्यच्युत किया था। सगरसे पराजित हुए थे (भाग० ९.८.५; २३.२८)। तालजंघके १०० पुत्रोंका सामूहिक नाम जो हैहयवंशके थे। इनके पाँच गरत विख्यात थे—वीतिहोत्र, भोज, आवन्ति, तुण्डिकेर और तालजंघ (ब्रह्मां० ३.४८.२३-५; ६३.१२० और १३४; ६९.५१-३; मत्स्य० ४३.४८; वायु० ९४.५१-२)।

तालजंघक–पु० [सं०] भण्डासुरका सेनानायक एक असुर जो १० अक्षौहिणी सेना ले शून्यक नगरके पूर्वी प्रवेशद्वारकी रक्षा करता था (ब्रह्मां० ४.२२.२२)।

तालनवमी–स्त्री० [सं०] भाद्र शुक्ला नवमी जिस दिन स्त्रियाँ व्रत करती तथा तालपत्रादिसे गौरीकी पूजा करती हैं।

तालभुज–पु० [सं०] भण्डासुरका सेनानायक एक असुर जो

शून्यक नगरके दक्षिणी प्रवेश द्वारपर १० अक्षौहिणी सेनाके साथ डटा रहता था (ब्रह्मां० ४.२२.२३)।

तालवन–न० पु० [सं०] व्रजमंडलके अंतर्गत एक वन जो यमुना नदीके किनारेपर गोवर्धनके उत्तरमें है। बलरामने धेनुक-वध यहीं किया था (भाग० १०.१५.२२-३२ विष्णु० ५.८.१-३; ९.१)।

तालशाल–पु० [सं०] भारतवर्षके उत्तरका एक राज्य (ब्रह्मां० २.१६.५०)।

तालस्कंध–पु० [सं०] एक अस्त्र विशेष (वाल्मी० रामायण)।

तिंदुकतीर्थ–पु० [सं०] व्रजमंडलके अंतर्गत एक तीर्थ (हि० श० सा०)।

तिक–पु० [सं०] एक ऋषिका नाम।

तिग्म–पु० [सं०] मृदुका पुत्र तथा बृहद्रथका पिता (विष्णु० ४.२१.१३)।

तिग्मकेतु–पु० [सं०] ध्रुववंशीय एक राजा जो वत्सर और स्वींथीका पुत्र था (भाग० ४.१३.१२)।

तिग्मदीधिति–पु० [सं०] सूर्य (हि०श०सा०)।

तिग्ममन्यु–पु० [सं०] भगवान् शंकरका एक नाम।

तिग्मरश्मि–पु० [सं०] सूर्य।

तिग्मांशु–पु० [सं०] सूर्य।

तिग्मात्मा–पु० [सं०] उर्वका एक पुत्र बृहद्रथका पिता (मत्स्य० ५०.८५)।

तितिक्ष–पु० [सं०] एक ऋषि विशेषका नाम (हि०श०सा०)।

तितिक्षा–स्त्री० [सं०] (१) दक्षकी एक पुत्री जो धर्मको ब्याही थी तथा क्षेम इसका पुत्र था (भाग० ४.१.५०,५२)। (२) सहन शक्ति।

तितिक्षु–पु० [सं०] महामनाका एक पुत्र तथा रुशद्रथ (उशद्रथ=ब्रह्मां०; बृहद्रथ=मत्स्य०) का पिता। इसके भाईका नाम उशीनर था (भाग० ९.२३.२, ४; वायु० ९९.१८; विष्णु० ४.१८.८.११; ब्रह्मां० ३.७४.१७.२४)। यह पूर्व दिशाका राजा था (मत्स्य० ४८. १५, २२)।

तित्तिरि– पु० [सं०] इन्होंने तैत्तिरीय शाखा चलायी थी और यास्क मुनिके शिष्य थे, पर पुराणानुसार यह वैशंपायनके शिष्य ठहरते हैं। कहते हैं इन लोगोंने तीतर बनकर याज्ञवल्क्यके उगले यजुर्वेदको चुंग लिया था—दे० तैत्तिरीय। एक त्र्यार्षेय प्रवर प्रवर्तक ऋषि (मत्स्य० १९६. ४८-९)।

तिथ–पु० [सं०] कामदेवका एक नाम—दे० कामदेव।

तिथि–स्त्री० [सं०] नागपत्रन्भोरुहपरकी आठ शक्तियोंमेंसे एक शक्ति (ब्रह्मां० ४. ३२.१७)।

तिथि–स्त्री० [सं०] (१) नाग पत्राम्भोरुहपरकी आठ शक्तियोंमेंसे एक शक्ति (ब्रह्मां० ४.३२.१७)। (२) भार्गवोंके एक आर्षेय प्रवर प्रवर्तक (मत्स्य० १९५.३८)।

तिथिप्रणी–पु० [सं०] दे० चंद्रमा (हि० स० शा०)।

तिथीशपूजन–पु० [सं०] यह व्रत प्रत्येक तिथिके स्वामीका पूजन करनेसे सम्पन्न होता है। इस पूजनसे हर्ष, उत्साहकी वृद्धि होती है। तिथीश इस प्रकार हैं—१—अग्नि; २—ब्रह्मा; ३—गौरी; ४—गणेश; ५—सर्प; ६—कार्त्तिकेय; ७—सूर्य; ८ (अष्टमी)—शिव; ९मी—दुर्गा; १० (दशमी)—यमराज; ११ (एकादशी)—विश्वदेवा; १२ (द्वादशी)—विष्णु; १३ (त्रयोदशी)—कामदेव; १४ (चतुर्दशी)—शिव; १५ (पूर्णिमा)—चंद्रमा और ३० (अमावस्या)के स्वामी पितर हैं (धर्मानुसंधान)।

तिमि–स्त्री० [सं०] (१) दक्ष प्रजापतिकी एक पुत्री जो कश्यप ऋषिको ब्याही गयी थी। इसे तिमिंगिलों या जलजन्तुओंकी माता कहा गया है (भाग० ६.६.२६)। (२) जनमेजयवंशज राजा दुर्वका पुत्र तथा बृहद्रथका पिता (भाग० ९.२२.४३)।

तिमिध्वज–पु० [सं०] शंबर नामक एक दैत्य जिसका वध करनेके पश्चात् श्रीरामने ब्रह्मासे दिव्यास्त्र प्राप्त किया था (रामा० अयोध्या० ९.१२-१३)।

तिमिर–पु० [सं०] रात्रिका देवता (रामा० युद्ध० १०८. ३२)।

तिरस्करणिका–स्त्री० [सं०] (तिरस्करणिकांवा) एक दण्डनाथा जिसने वलाहक और उसके भाइयोंपर आक्रमण किया था। एक तमोलिप्त विमान इसका वाहन है और यह नरमुण्डोंकी माला गलेमें धारण करती है (ब्रह्मां० ४.२४, ७४. ९८)।

तिर्यक्–पु० [सं०] इसमें भिन्न प्राणियोंकी उत्पत्तिकी व्याख्या है (वायु० ६९.२९२-३०३)।

तिर्यग्ज्योति–पु० [सं०] प्रथम मरुद्गणोंमेंसे एकका नाम (वायु० ६८.१२३)।

तिर्या–स्त्री० [सं०] क्रोधाकी १२ पुत्रियोंमेंसे एक पुत्री तथा पुलहकी पत्नी (ब्रह्मां० ३.७.१७२)।

तिलंगा–पु० [सं०] भारतके एक मध्यदेशीय जनपदका नाम (वायु० ४५. १११)।

तिल–पु० [सं०] यह पिशाचोंको अति प्रिय है (ब्रह्मां० ३. ७.३८९, ४०९)। यह पितरोंको भी प्रिय है (ब्रह्मां० ३. ११.५)। श्राद्धके हविस्में तिल देते हैं (ब्रह्मां० ३.१४.११; १६.१७; १९.३)। व्रतोंमें इसे दान देने योग्य माना गया है (मत्स्य० ७.१५; १५.३४; ८२.१८; ८३.५; ८७.१; १८७.२७-३४; २१७.३८; २३९.२२)। इसका व्यापार (क्रय-विक्रय) करनेवाले नरकके भोगी होते हैं (ब्रह्मां० ४.२. १६४)।

तिलक–पु० [सं०] एक साम्प्रदायिक संकेत तथा उपासनाका चिह्न। यह चन्दन केशर आदिसे मस्तक, बाहु आदि अंगोंपर लगाते हैं। वैष्णव खड़ा तिलक या ऊर्ध्व पुंड्र लगाते हैं। शैव आड़ा तिलक या त्रिपुंड्र लगाते हैं और शाक्तोंका तिलक रक्तचन्दनका तथा आड़ा होता है। वैष्णवोंमें तिलकका माहात्म्य बहुत है (ब्रह्मपुराण)।

तिलकव्रत–पु० [सं०] यह व्रत चैत्र शु० १ को किया जाता है। प्रत्येक शुक्ल प्रतिपदाको विधिवत् वर्षभर पूजन करनेसे भूत-प्रेत-पिशाचादिकी बाधाएँ शांत होती हैं (भविष्योत्तर)।

तिलद्वादशी–स्त्री० [सं०] यह षट्तिलाके समान है। तिलके जलसे स्नान करे तथा तिलोंसे विष्णुकी पूजा करे, तिलके तेलका दीपक हो और तिलका ही नैवेद्य हो। इससे सम्पूर्ण व्याधि दूर होती है तथा सुख प्राप्त होता है (ब्रह्मपुराण)।

तिलधेनु–स्त्री० [सं०] एक प्रकारका शास्त्रोक्त दान जिसमें तिलके ढेरमें गौकी कल्पना करके दान देते हैं।

तिलभार–पु० [सं०] पूर्वोत्तर स्थित एक भारतीय देश विशेपका नाम (महाभा० भीष्म० ९.५३)।

तिलभृष्ट–पु० [सं०] तिलके साथ भुनी हुई कोई वस्तु नहीं खाना चाहिये (महाभा०)। स्मृतियोंके अनुसार भी विना देवताको चढ़ाये तिल मिश्रित कोई भी पदार्थ खाना निषिद्ध है—दे० स्मृतिसमुच्चय (स्मृतीन० समुच्चयः)।

तिलांजलि–पु० [सं०] मृतक-संस्कारकी एक क्रिया जिसमें हिंदू शवके जल जानेपर स्नान करते समय अंजुलीमें जल और तिल लेकर मृतकके नामसे छोड़ते हैं (संस्कारपद्धति तथा संस्कारगणपति)।

तिलाचल–पु० [सं०] मेरुके पासके विपकुम्भ पर्वतोंमेंसे एक। यह उत्तरकुरु तथा सावित्रवनका प्रदेश है (मत्स्य० ९३.२३, ३४)।

तिलोत्तमा–स्त्री० [सं०] पुराणानुसार एक अति रूपवती अप्सरा। कहा तो यह जाता है कि इसकी सृष्टि करनेके लिए ब्रह्माको संसारभरकी सुन्दर वस्तुओंमेंसे तिल-तिलभर लेना पड़ा था। यह आश्विन मास (वायु पुराणानुसार माघ, में) अन्य सात सौरगणके साथ सूर्य रथकी मालकिन है। ब्रह्माके हवनकुण्डसे इसका जन्म हुआ था (वायु० ६९.५९)। हिरण्यकशिपुके वंशमें निकुंभ नामक एक असुर उत्पन्न हुआ था जिसके सुन्द, उपसुन्द नामके दो पुत्र थे। विश्वविजय करनेकी इच्छासे ये दोनों विन्ध्याचल (पर्वत) पर तप करने लगे। ब्रह्मा प्रसन्न हो वर देने जब आये तो इन लोगोंने यह वर लिया कि ये दूसरेसे न मारे जायँ। इस वरप्राप्तिसे निःशंक हो इनका अनर्थ चरमसीमातक पहुँच गया। इन दो भाइयोंमें अधिक प्रेम होनेके कारण, वर प्राप्त करते समय ये यह भी वर मांग बैठे कि ‘यदि मरें भी तो आपसमें ही लड़कर मरें।’ विश्वास था कि ये आपसमें कभी लड़ेंगे ही नहीं। इनके अत्याचारोंसे संसार त्रस्त हो उठा, अतः इनमें विरोध उत्पन्न करानेके लिए ब्रह्माने ‘तिलोत्तमा अप्सरा’ की सृष्टि की थी। सुन्द, उपसुन्दके निवासस्थान विन्ध्य पर्वतपर तिलोत्तमा भेज दी गयी जिसे देख दोनों भाई आपसमें लड़ मरे (महा० आदि० २११.१९)। दुर्वासा ऋपिके शापसे यही (तिलोत्तमा) वाणकी पुत्री हुई थी। माघ मासमें यह सौर गणके साथ सूर्यके रथपर रहती है। अष्टावक्रने इसे शाप दिया था (विष्णु० २.१०.१६; ५.३८.७३, ७७)।

तिलोदक–न० पु० [सं०] तिलांजलि—दे० तिलांजलि।

तिलोदकी–स्त्री० [सं०] एक नदीका नाम। इसके और सरयूके संगमपर ही सम्भेद तीर्थ स्थित है। यहाँ स्नान करनेसे १० अश्वमेध यज्ञका फल होता है। तिलोदकीका जल तिलके समान काला है, अतः यह नाम पड़ा (स्कंद० वै० अयोध्या-माहात्म्य)।

तिष्ठ–० पु० [सं०] ग्यारहवें व्यास जो विष्णुके अवतार समझे जाते हैं (वायु० २३.१५१)।

तिष्य–पु० [सं०] (१) क्रौंचद्वीपके शूद्र जातिके निवासी। (२) एक नक्षत्र जो श्राद्धादिके लिए उपयुक्त है (भाग० १२.२.२४; वायु० ८२.५)। (३) भारतवर्षका एक युग (ब्रह्मां० २.१६.६९; ३१.३०; मत्स्य० २७३.६१; वायु० २४.१; ३२.४०; ५८.२०-७३)।

तीक्ष्णकांता–स्त्री० [सं०] तारा देवीका एक नाम जो कृष्ण-वर्णा, लम्बोदरी और एकजटाधारिणी कही गयी हैं। इनकी पूजासे इच्छा पूर्ति होती है (कालिका०)।

तीक्ष्णताप–पु० [सं०] महादेवजीका एक नाम।

तीक्ष्णशृंग–पु० [सं०] भण्डका एक सेनापति जिसका वध सर्वमंगलिका नित्याने किया था (ब्रह्मां० ४.२२.८०; २५.२९, ९८)।

तीक्ष्णा–स्त्री० [सं०] तारा देवीका नाम—दे० तीक्ष्णकांता।

तीज–स्त्री० [सं० तृतीया] स्त्रियोंका एक त्योहार विशेष जिसे भाद्रपद शु० ३ को मनाया जाता है—दे० हरतालिका तीज।

तीरस्थ–पु० [सं०] धार्मिक दृष्टिसे मरणासन्न व्यक्तिको नदीके तीर ले जाते हैं। इस प्रथामें कुछ क्रूरता झलकती है। बंगालमें अधिक प्रचलित है।

तीर्थ–पु० [सं०] (१) वह पवित्र स्थान जहाँ लोग धर्मभावसे जायँ। हिन्दू शास्त्रानुसार तीर्थ तीन प्रकारके माने गये हैं :—

(क) जंगम=ब्राह्मण और साधु आदि। (ख) मानस=सत्य, क्षमा, दया, दानादि। (ग) स्थावर=काशी, प्रयाग, गया आदि। हाथके खास-खास स्थानोंको भी तीर्थके समान पवित्र माना गया है और उनसे आचमन, पिंडदान, पितृकार्य और देवकार्य किये जाते हैं। हाथके ये विशिष्ट स्थान इस प्रकार हैं :—दाहिने अँगूठेका अग्रभाग=ब्रह्मतीर्थ; अँगूठे और तर्जनीका मध्यभाग=पितृतीर्थ; कनिष्ठाका निचला भाग=प्राजापत्य तीर्थ और उँगलियोंका अग्रभाग=देवतीर्थ सम पवित्र माना गया है। लिखा भी गया है :—

‘अङ्गुष्ठमूलस्य तले ब्राह्मंतीर्थं प्रचक्षते।
क्षायमङ्गलिमूले दैवं पित्र्य तयोरधः॥ (मनु० २.५९)

(२) दान लेने योग्य धर्मात्मा व्यक्ति (वायु० ९१.१११)।

तीर्थदेव–पु० [सं०] महादेवको तीर्थदेव कहते हैं।

तीर्थपति–पु० [सं०] प्रयागका एक नाम जिसे तीर्थराज कहते हैं (मत्स्य० १०९.१५)।

तीर्थपाद–पु० [सं०] विष्णु भगवान्का नाम।

तीर्थराज–पु० [सं०] प्रयागका नाम (मत्स्य० १०९.१५)।

तीर्थराजि–स्त्री० [सं०] काशीका नाम जहाँ सब तीर्थ अंशरूपमें स्थित हैं (काशी-खंड)।

तीर्थवती–स्त्री० [सं०] क्रौञ्चद्वीपकी एक नदी (भाग० ५.२०.२१)।

तीर्थश्राद्ध–पु० [सं०] तीर्थोंमें श्राद्धके पूर्ण विवरणके लिए (वायु० ११०.२८, ६६)। यह विना किसी आवाहनके होता है और व्रतीको ब्रह्मचर्य, भूमिशयन, एकाहार आदि नियमोंका पालन करना होता है (वायु० ९.१०५; ३७.४१)।

तीर्थसेनी–स्त्री० [सं०] कार्त्तिकेयकी अनुचरी एक मातृकाका नाम (स्कंद०)।

तीर्थादि–पु० [सं०] वे पवित्र तीर्थस्थान जहाँ पिशाचोंका निवास हो तथा श्राद्धादिके लिए उपयुक्त हों (ब्रह्मां० ३.१३ (पूरा); मत्स्य० १५.१७)। सर्वप्रथम गुरुतीर्थ, तब ध्यानतीर्थ, अंतमें ब्रह्मतीर्थ (ब्रह्मां० ३.२२.६; २४.३९)।

तीव्रसव–पु० [सं०] एक प्रकारका यज्ञ जो एक ही दिनमें पूरा हो जाता है।

तीव्रा–स्त्री० [सं०] एक शक्ति देवीका नाम (ब्रह्मां० ४.४४. ७२)।

तुंगक–पु० [सं०] एक तीर्थका नाम जहाँ पहले सारस्वत मुनि ऋपियोंको वेद पढ़ाया करते थे। एक बार वेदोंके नष्ट हो जानेपर अंगिरा ऋषिके मानस नामक पुत्रने 'ॐ' शब्दका उच्चारण किया जिससे भूला हुआ सारा वेद स्मरण हो आया। इस घटनाके उपलक्ष्यमें देवताओं तथा ऋपियोंने मिलकर हर्पके मारे यहाँ एक बड़ा यज्ञ किया था (महाभा० वन० ८५.४६)।

तुंगनाथ–पु० [सं०] हिमालय पर्वतपर स्थित एक प्रधान तीर्थ जहाँपर इसी नामका एक शिवलिंग भी स्थापित है। केदारेश्वरके रावल साहबके उपोमठसे चोपटा और चोपटासे तीन मीलकी दूरीपर तुंगनाथका मंदिर है। यह स्थान केदारनाथके पीछे है जो समुद्रतलसे १३००० फुटकी ऊँचाईपर है। इसके उत्तर केदारनाथ और बद्रीनाथके मंदिर हैं। पूर्वमें त्रिशूल, द्रोणाचलादि हैं, पश्चिममें गुप्तकाशी और दक्षिणमें गंगा-सिन्धुका मैदान है। तुंगनाथके मंदिरसे थोड़ा ही ऊपर चंद्रशिला पहाड़ है जिसपर लंकापति रावणने कठिन तपस्या की थी। तुंगनाथ पाँच केदारोंमेंसे एक हैं। यहाँ हरि-हरकी मूर्त्ति स्थापित है (आधे शिव, आधे विष्णु) जहाँ कोई पुजारी नहीं रहता।

तुंगवेणा–स्त्री० [सं०] भारतकी एक नदीका नाम (महाभा० भीष्म० ९.२७)।

तुंगभद्रा–स्त्री० [सं०] सह्य पर्वतसे निकली एक नदी जो पितरोंको प्रिय है (भाग० ५.१९.१८; ब्रह्मां० २.१६.३५; वायु० ४५.१०४; मत्स्य० २२.४५; ११४.२९)।

तुंगारण्य–पु० [सं०] ओड़छाके पास स्थित एक जंगल जहाँ एक मंदिर है और तीर्थस्थान होनेके कारण यहाँ एक मेला भी लगता है।

तुंगीपति–पु० [सं०] चन्द्रमाका एक नाम।

तुंगीश–पु० [सं०] शिव, कृष्ण, सूर्य, चन्द्रमा।

तुंड–पु० [सं०] (१) महादेवका एक नाम। (२) एक राक्षस विशेपका नाम जिसे नहुपने मारा था। वितुंड इसका पुत्र था जो दुर्गा द्वारा मारा गया।

तुंडकोश, तुंडकोष–पु० [सं०] (तुंडकेश=वायु०) एक राक्षस जो खशाका पुत्र था (ब्रह्मां० ३.७.१३५; वायु० ६९. १६७)।

तुंडिकेर–पु० [सं०] हैहयवंशकी पाँच शाखाओंमेंसे एकका नाम जो विन्ध्य पर्वतपरकी एक पर्वतीय जाति है (ब्रह्मां० २.१६.६५; ३.६९.५३; वायु० ९४.५२)।

तुंदि–पु० [सं०] एक गंधर्वका नाम।

तुंब–पु० [सं०] तुम्बका एक पुत्र जिसका तुंबवर्चा भाई था (ब्रह्मां० ३.७१.२५८)।

तुंबर–पु० [सं०] विन्ध्य पर्वतपरका एक जनपद (मत्स्य० ११४.५३)।

तुंबवर्चा–पु० [सं०] (तुंबवाण—वायु०) तुम्बका एक पुत्र (ब्रह्मां० ३.७१.२५८; वायु० ९६.२४९)।

तुंबुर–पु० [सं०] एक निपाद जाति जो विन्ध्य पर्वतके परे रहती है तथा विन्ध्यपृष्ठ स्थित एक जनपद (वायु० ६२. १२४; ४५.१३३)।

तुंबुरु–पु० [सं०] (१) एक गंधर्व जो स्वर्गीय संगीतमें बड़ा निपुण कहा गया है। यह नारदका शिष्य है और चैत्र मासमें सूर्यके रथपर सौरगणके अन्य छहके साथ रहता है। मनोवती और सुकेशा इसकी दो पुत्रियाँ हैं (वायु० ६९. ४७-४९) जिन्हें पंचचूड़की प्रतिष्ठा प्राप्त थी और ये सूर्यके रथमें चैत्र और मधु मासोंमें रहती हैं (वायु० ५२.३;३६. ४७; विष्णु० २.१०.३)। यह विष्णुका प्रिय मित्र तथा संगीतविद्याविशारद है। चन्दनोदकदुंदुभि (वायु० ९६. ११७) तथा नारदके साथ इसने अनंतका यशगान किया (भाग० ५.२५.८) तथा श्रीकृष्णके गोवर्धनधारण करनेके समय उनकी प्रशंसा की (भाग० १०.२५.३२; २७.२४)। मधु और माधव महीनोंका यह अधिपति कहा गया है (भाग० १२.११.३३; ब्रह्मां० २.२३.४)। (२) कपोतरोमाके पुत्र अनुका एक मित्र (भाग० ९.२४.२०)। (३) वृष्णिवंशी अंधकका एक मित्र (ब्रह्मां० ३.७१.११८)।

तुखार–पु० [सं०] (१) एक प्राचीन देश जो अथर्ववेद, रामायण तथा महाभारतादिके अनुसार हिमाचलके उत्तर-पश्चिम कोणपर स्थित है। (२) यहाँके निवासियोंका नाम जिनकी उत्पत्ति ऋषियों द्वारा वेनमंथनके समय कही गयी है (हरिवंश)।

तुग्र–पु० [सं०] वैदिक कालके एक राजर्पिका नाम जो अश्विनीकुमारोंके उपासक थे। द्वीपांतरोंके शत्रुओंको पराजित करनेके लिए इन्हींका भुज्यु समुद्रपथसे गया था। मार्गमें जब एक झंझावातके कारण नौकाके उलटनेका भय दिखायी दिया तब भुज्युने अश्विनीकुमारोंकी स्तुति की, जिससे प्रसन्न होकर अश्विनीकुमारोंने अपनी नौकापर भुज्युको सेना सहित चढ़ा तुग्रके पास पहुँचा दिया था।

तुबुर–स्त्री० [सं०] विन्ध्य पर्वतपरकी एक जंगली जाति (ब्रह्मां० २.३६.१४५)। इनका कल्किसे परास्त होना लिखा है (ब्रह्मां० ३.७३.१०८)।

तुमुर–पु० [सं०] भारतका पश्चिमी जनपद तथा क्षत्रियोंकी एक जाति (मत्स्य० ११४.५३)।

तुर–पु० [सं०] कावषका पुत्र तथा जनमेजयका पुरोहित (भाग० ९.२२.३७)।

तुरग–पु० [सं०] समुद्रमंथनके समय एक श्वेत घोड़ा समुद्रसे निकला जिसे सूर्यने ले लिया था (मत्स्य० २५०.३; २५१.३)।

तुरगदानव–पु० [सं०] केशी नामक दैत्यका एक नाम। मथुरापति कंसकी आज्ञासे घोड़ेका रूप धारण करके यह श्रीकृष्णको मारने गया था, पर आप ही उनके हाथों मारा गया। इसीको मारनेके कारण कृष्णको केशिहा कहते हैं— दे० केशी, केशव।

तुरण्य–पु० [सं०] चन्द्रमाके रथके दस घोड़ोंमेंसे एक घोड़ा (वायु० ५२.५३)।

तुरसितगण–पु० [सं०] नर्मदा क्षेत्रके कुछ निवासी (वायु० ४५.१२९)।

तुरायण–पु० [सं०] चैत्र शुक्ला ५ तथा वैशाख शुक्ला पंचमीको होनेवाला यज्ञ।

तुराषाट्–पु० [सं०] देवराज इंद्रका एक नाम।

तुरासंगम–पु० [सं०] नर्मदा तटपरका एक तीर्थस्थान (मत्स्य० १९१.२९)।

तुरीय–पु० [सं०] (१) ब्रह्मका एक नाम (भाग० ११.१५.१६)। (२) १२ अजित देवोंमेंसे एक अजितदेव (ब्रह्मां० २.१३.९४; वायु० ३१.८)।

तुरुष्क–पु० [सं०] (१) एक श्वेत रंगका सुगंधित द्रव्य जो पितरोंको धूप देनेमें काम आता है (ब्रह्मां० ३.११.६९)। (२) तुर्क जाति। भागवत, विष्णुपुराण, आदिमें तुरुष्क जातिका नाम मिलता है। उक्त पुराणोंमें, कथासरितसागर और राजतरंगिणीमें भी इस जातिके राजाओंका उल्लेख है—दे० तुरुष्कगण = ब्रह्मां०; तुरुष्कार = विष्णु० इसमें १४ राजा हुए थे—दे० मौन (भाग० १२.१.३०; विष्णु० ४.२४.५३)।

तुर्वसु–पु० [सं०] (१) देवयानी और यदुका एक पुत्र (ब्रह्मां० १.१.१३२; वायु० १.१४१)। (२) देवयानीके गर्भसे उत्पन्न राजा ययातिके एक पुत्रका नाम। विषयभोगसे अतृप्त होनेके कारण ययातिने इससे इसका यौवन माँगा था, पर इसने देना अस्वीकार किया, अतः पिताके शापसे यह अधर्मियोंका राजा हुआ और कष्टमें रहा। विष्णुपुराणानुसार तुर्वसुका पुत्र हुआ वाहु जिसकी चौथी पीढ़ीमें मरुत उत्पन्न हुआ था (ब्रह्मां० ३.६८.१६; ४०.५०; ७३.१२६; ७४.१.४; मत्स्य० ३३.९-१११; वायु० ९९.१-४)। परन्तु (भाग० १९.१८.३३, ४१; १९९.२२; २३.१६; मत्स्य० २४.५३; वायु० ९३.१६) के अनुसार तुर्वसुका पुत्र वह्नि था। मरुत निःसंतान था, अतः उसने पुरुवंशीय दुष्यंतको पुत्र-रूपमें ग्रहण किया था। पिताके वन ज़ानेके पश्चात् इसे राज्यका दक्षिण-पूर्वी भाग मिला था (वायु० ९३.३९-४४, ८९)।

तुलसी–स्त्री० [सं०] एक प्रकारका तीक्ष्ण गंध देनेवाला छोटी-छोटी पत्तियोंवाला एक छोटा-सा पौधा। वैष्णव लोग तुलसीको अधिक पवित्र मानते हैं और उनकी पूजा विना तुलसी-दलके नहीं होती। ब्रह्मवैवर्त्त पुराणानुसार तुलसी नामकी एक गोपिका गोलोकमें राधाकी सखी थी और राधाके शापके फलस्वरूप धर्मध्वजकी पुत्री हुई। इसका सौंदर्य अनुपम था, अतः 'तुलसी' नाम पड़ा। तुलसीने घोर तप कर ब्रह्मासे वर माँगा—'मैं कृष्णको पतिरूपमें पाना चाहती हूँ।' ब्रह्माके आज्ञानुसार तुलसीने शंखचूड़ राक्षससे विवाह किया और शंखचूड़को वर मिला था कि विना उसकी स्त्रीका सतीत्व भंग हुए वह मर नहीं सकता। शंखचूड़के उपद्रवसे सब त्रस्त थे, अतः विष्णुने शंखचूड़का रूप धर तुलसीका सतीत्व नष्ट किया। इससे तुलसीने विष्णुको शाप दिया 'तुम पत्थर हो जाओ'। नारायणने उसे वर दिया 'तुम लक्ष्मीके समान मेरी प्रिया होगी। तुम्हारे शरीरसे गंडकी नदी और केशसे तुलसी वृक्ष होगा।' तभीसे बराबर शालग्रामकी पूजा होने लगी और तुलसी-दल उनके मस्तकपर चढ़ने लगा। वैष्णव तुलसीकी लकड़ीकी माला धारण करते हैं। कार्त्तिक मासमें तुलसी-पूजन हर हिन्दूके घर होता है। कार्त्तिककी अमावस्या तुलसीकी जन्मतिथि है। कोई-कोई तुलसी-शालग्राम विवाह रचाते हैं (भाग० १.१९.६; ५.३.६; १०.३०.७; ११.३०.४१; ब्रह्मां० ४.९.८०-२)।

तुलसीदल–पु० [सं०] तुलसी वृक्षके पत्र—दे० (तुलसी)।

तुलसीदामभूषण–पु० [सं०] श्रीकृष्णका एक नाम (ब्रह्मां० ३.३६.३२)।

तुलसीदास–पु० [सं०] उत्तर भारतके सर्वप्रधान भक्त कवि जिनका 'रामचरितमानस' जगत् प्रसिद्ध है। प्रियदासके अनुसार इन्हें श्री रामचन्द्र, लक्ष्मण, हनुमान आदिका प्रत्यक्ष दर्शन हुआ था।

तुलसीवास–पु० [सं०] कार्त्तिक शु० ९ को तुलसी स्थापित कर पूजन करे। नवमी, दशमी तथा एकादशीको व्रत कर १२ को भोजन करे (स्कंद० का० मा०)।

तुलसीविवाह–पु० [सं०] पद्मपुराणमें कार्त्तिक शु० ९ को तुलसी-विवाहका उल्लेख है। तुलसीका व्याह करे तथा ब्राह्मण भोजनके पश्चात् आहार करे (तुलसीविवाह-विधि तथा विष्णुयामल)।

तुलादान–पु० [सं०] 'तुलापुरुष'। एक प्रकारका दान जिसमें अपने शरीरके वजनके बराबर सुवर्णादि द्रव्य या कोई अन्य पदार्थ तौल कर दान कर देना ही तुलादान है जो सोलह महादानोंमेंसे एक है। इससे विष्णु या इंद्रलोककी प्राप्ति होती है (मत्स्य० २७४ (पूरा); २७५.२)।

तुलाधार–पु० [सं०] (१) काशीका रहनेवाला एक वनिया जिसने महर्षि जाजलिको उपदेश दिया था (महाभा०)। (२) काशीका निवासी एक व्याध जो माता-पिताका बड़ा भक्त था। कृतवोध नामक व्यक्ति जब इसके सामने आया तब इसने उसका पूरा पूर्व-वृतांत कह सुनाया। फलतः उसने भी माता-पिताकी सेवाका व्रत लिया—दे० वृहद्धर्मपुराण।

तुलापुरुषकृच्छ्र–पु० [सं०] पंद्रह दिनोंमें पूरा होनेवाला एक कठिन व्रत। इसके पूरे विधानके लिए—दे० याज्ञवल्क्य, हारीत स्मृति आदि स्मृतियाँ।

तुलाभवानी–स्त्री० [सं०] एक नदी तथा नगरी विशेष—दे० शंकरदिग्विजय।

तुलुव–पु० [सं०] एक दक्षिणी प्रदेशका नाम जो सह्याद्रि और समुद्रके वीच स्थित कहा गया है।

तुल्यार्चि–पु० [सं०] वाइसवें द्वापरके अवतार लाँगलीका एक पुत्र (वायु० २३.२००)।

तुल्वल–पु० [सं०] एक ऋषिका नाम (हिं० श० सा०)।

तुवर–पु० [सं०] विन्ध्य पर्वतकी एक जंगली जाति (वायु० ६२.१२४)।

तुषानल–पु० [सं०] भूसी तथा घास-फूसकी आग, जिसमें भस्म होनेकी क्रिया प्रायश्चित्तके रूपमें की जाती है। कुमारिल भट्टने तुषाग्निमें ही जलकर प्राण त्यागे थे (प्रायश्चित्तेन्दुशेखर, कुण्डार्क केशवविरचित तथा नागोजी भट्टकृत)।

तुषार–पु० [सं०] (१) एक उत्तरी राज्य जिसमें १४ राजा हुए (ब्रह्मां० ३.७४.१७२-६; मत्स्य० २७३.१९, २१; वायु० ४५.११८; ४७.४४; ५८.८३; ९८.१०८; ९९.३६०, ३६२)। (२) एक राज्य जिसने यवनोंके पश्चात् १०५ वर्ष राज्य किया (मत्स्य० १२१.४५; १४४.५७)।

तुषारकिरण—पु० [सं०] दे० चन्द्रमा।

तुषारमूर्त्ति—पु० [सं०] दे० चन्द्रमा।

तुषाररश्मि—पु० [सं०] दे० चन्द्रमा।

तुषारांशु—पु० [सं०] दे० चन्द्रमा।

तुषित—पु० [सं०] ऋतु और तुषिताके पुत्र एक प्रकारके गण देवता जो संख्यामें १२ हैं और जिनके नाम मन्वंतरोंके अनुसार बदलते रहते हैं। स्वायंभुव मन्वंतरके लिए (भाग० ४.१.८); स्वारोचिषके लिए (भाग० ८.१.२०); स्वायंभुव मन्वन्तरके लिए जयदेव (ब्रह्मां० ३.३.८, १९; ४.२८; ६५.३५); चाक्षुष-मन्वंतरके आदित्य (मत्स्य० ६.३-१२); वैवस्वत मन्वंतरके (१२) आदित्य (विष्णु० १.१५.१२७, १३१-३२)।

तुषिता—स्त्री० [सं०] (१) वेदशिराकी पत्नी तथा विभुकी माताका नाम (भाग० ८.१.२१)। (२) ऋतुकी पत्नी तथा स्वारोचिष मन्वंतरके तुषित देवोंकी माता (ब्रह्मां० २.३६.८; वायु० ६२.८; ६७.३५)। उसी मन्वंतरमें अजित नामसे विष्णु इन्हींके गर्भसे उत्पन्न हुए थे (ब्रह्मां० ३.३.११-१५)। (३) स्वारोचिष मन्वंतरमें अजितकी माता (विष्णु० ३.१.३७)।

तुष्ट—पु० [सं०] उग्रसेनके नौ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र, मथुराधिपति कंस इनमें जेठा था (वायु० ९६.१३२)।

तुष्टा—स्त्री० [सं०] शाल्मलिद्वीपकी सात प्रधान नदियोंमेंसे एक नदी (ब्रह्मां० २.१९.४६)।

तुष्टि—स्त्री० [सं०] (१) दक्षकी एक पुत्री तथा धर्मकी एक पत्नी और मुदकी माता (संतोषकी माता=वायु० तथा विष्णु०) (भाग० ४.१.४९,५१; ब्रह्मां० १.९.४९, ५९; वायु० १०.२५, ३४; ५५.४३; विष्णु० १.७.२३, २८)। (२) गेयचक्रके चतुर्थ पर्वतपरकी एक शक्ति देवी (ब्रह्मां० ४.१९.७१; ४४.७१)। (३) चन्द्रमाकी एक कला (ब्रह्मां० ४.३५.९२; मत्स्य० २३.२४)। [पु०] (४) वसुदेव और मदिराका एक पुत्र (ब्रह्मां० ३.७१.१७२)।

तुष्टिमान्—पु० [सं०] उग्रसेनका एक पुत्र (भाग० ९.२४.२४; ब्रह्मां० ३.७१.१३३)।

तूणि—पु० [सं०] वीर सात्यकिके पुत्रका नाम (महाभा०)। युगंधर नामक इसका एक पुत्र था (हरिवंश)।

तूर्य—पु० [सं०] एक प्रकारकी रणभेरी जिसे मंदिरों तथा शुभ अवसरोंपर भी बजाते हैं (भाग० १.११.१८; मत्स्य० १४९.२; १६३.१०५; १९२.२८)। चाणूर जब हारने लगा था तब कंसने इस बाजेको बंद करवा दिया था और देवता लोगोंका स्वर्गीय संगीत आरम्भ हुआ था (विष्णु० ५.२०.७१-३)।

तृक्ष—पु० [सं०] कश्यप ऋषिका एक नाम।

तृक्षाक—पु० [सं०] एक ऋषि विशेषका नाम।

तृणंजय—पु० [सं०] इसने ब्रह्मांड तथा वायुपुराण कृतंजयसे सुनकर भरद्वाजको केवल ब्रह्मांड सुनाया था (ब्रह्मां० ४.४.६३; वायु० १०३.६३)।

तृणकर्ण—पु० [सं०] एक ऋषिका नाम।

तृणकर्णि (त्रिणकर्णी)—पु० [सं०] अंगिरसकुलके एक प्रवर प्रवर्तक ऋषि (मत्स्य० १९६.१३)।

तृणप—पु० [सं०] एक देव गन्धर्वका नाम (महाभा० आदि० १२२.५६)।

तृणबिंदु—पु० [सं०] (१) काम्यकवननिवासी एक ऋषि जिनसे वनवासकी अवस्थामें पांडवोंकी भेंट हुई थी (महाभा० वन० २६४.५)। (२) एक राजा जो अलंबुसा अप्सराका पति था जो विशालकी माता बनी थी (ब्रह्मां० ३.८.३७; भाग० ९.२.३१; विष्णु० ४.१.४८-९१)। उक्त राजा बन्धु (बुध=विष्णु०) का पुत्र था। इडविडा (इलविला=विष्णु०) नामकी इसकी एक पुत्री थी (भाग० ९.२.३०-३१; ब्रह्मां० ३.८.३६-७; ६१.१०; विष्णु० ४.१.४६-७)। तृतीय त्रेता युगके आरम्भमें यह वर्तमान था। इड़विड़ा नामकी इसकी एक पुत्री थी। इसका पुत्र विशाल वैशाल वंशका आदिपुरुष था तथा सुमति इस वंशका अंतिम राजा था (विष्णु० ४.१.४८-९, ५९)। (३) २७वें वेदव्यास जिन्होंने सोमशुष्मसे ब्रह्मांड और वायुपुराण सीख दक्षको सुनाया था (ब्रह्मां० २.३५.१२३; ४.४.६४-६५; वायु० १०३.६४)। (४) एक ऋषि जो नर्मदाके ऋषितीर्थके प्रभावसे शापसे मुक्त हुए थे (मत्स्य० १९३.१३)। (५) तेइसवें (२४वें=विष्णु०) द्वापरके वेदव्यास जब श्वेत अवतार हुआ (वायु० २३.२०३; विष्णु० ३.३.१७)। (६) दमका पुत्र जो ११वें मन्वंतरके तृतीय त्रेतायुगके आरम्भमें राजा था। इडिविला नामकी इनकी एक पुत्री थी जो पौलस्त्यको ब्याही थी (वायु० ७०.३०-१)।

तृणावर्त्त—पु० [सं०] कंसके मित्र एक दैत्यका नाम जिसे श्रीकृष्णको मारनेके लिए कंसने गोकुल भेजा था। यह चक्रवातका रूप धारण करके गया और बालक कृष्णको कुछ ऊपर उड़ा कर भी ले गया था। श्रीकृष्णने ऊपर जाकर इसका गला दबा दिया और यह मरकर नीचे गिर पड़ा था (भाग० १०.२.१; ७.२०-३२; २६.६; ४६.२६; ब्रह्मां० ४.२९.१२४)।

तेज—पु० [सं०] (१) बलका एक पुत्र तथा नारायणका पौत्र (ब्रह्मां० २.११.४)। (२) २० सुतपा देव गणमेंसे एक (वायु० १००.१५)। (३) पाँच महाभूतोंमेंसे एक—'क्षिति जल पावक गगन समीरा' आदि (रामायण, किष्किंधाकांड, दो० १०(२); मत्स्य० ३.२४)। (४) प्रलयके समय संसारके जलनेका तेज (वायु० १००.१६१)। (५) यह जलको निगल जाता है। विशेषता=प्रकाशक (वायु० १०२.१०-१२)।

तेजःसंक्रांतिव्रत—संक्रांतिके समय जलपूर्ण कलशकी पूजा कर उसे चावलसे भर, दीपक रख ब्राह्मणको दान दे (मत्स्य०)।

तेजस—पु० [सं०] (१) शंकरका एक नाम। (२) सुमतिका पुत्र तथा इंद्रद्युम्नका पिता (ब्रह्मां० २.१४.६४; विष्णु० २.१.३६)।

तेजस्वी—पु० [सं०] (१) सुरराज इंद्रके एक पुत्रका नाम। (२) कुथुमिके तीन पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (वायु० ६१.३८)।

तेजेयु—पु० [सं०] रौद्राश्व राजाके एक पुत्रका नाम (महाभा० आदि० ९४.११)।

तेजोरश्मि—पु० [सं०] एक सुतपा देवता (ब्रह्मां० ४.१.१४)।

तेजोवती—स्त्री० [सं०] (१) ४८ शक्ति देवियोंमेंसे एक

शक्ति (ब्रह्मां० ४.४४.७३)। (२) मेरु पर्वतके दूसरे भीतरी ढालपरकी अग्निसभा जिसका प्रकाश चारों ओर फैलता है। यहाँ अनेको ऋषि-मुनि अग्निकी स्तुति गाते रहते हैं (वायु० ३४.७८-८५)।

तेजोविंदु–पु० [मं०] एक उपनिषद्का नाम।

तेजोव्रत–पु० [सं०] राजाओंको लोकपालकी तरह व्यवहार करनेकी शपथ खानी पड़ती थी (मत्स्य० २२६.९)।

तेरही–स्त्री० [हि०] मृत्युके पश्चात् तेरहवाँ दिन जिस दिन ब्राह्मण भोजनके बाद ही दाहकर्म करनेवाला और उसके कुटुम्बी शुद्ध होते हैं (अंत्यकर्मदीपक)।

तेल–पु० [सं० तैल] विवाहके तीन-चार दिनों पहलेकी रस्म जिसमें हल्दी मिला तेल वर और वधूको लगाते हैं। इसके पश्चात् ही विवाह पक्का समझा जाता है (विवाह-पद्धति चतुर्थीलालकृत)।

तैकायन–पु० [सं०] तिक ऋषिके वंशज या शिष्य।

तैजस–पु० [सं०] (१) सुमतिके पुत्र तथा इन्द्रद्युम्नके पिताका नाम (वायु० ३३.५४)। (२) भगवान्। (३) कुरुक्षेत्रके अन्तर्गत वरुण सम्बन्धी एक तीर्थकानाम (महाभा० वन० ८३.१६४)। (४) ब्रह्माका अर्वाक् तेजस् (वायु० ६५.३३)।

तैजससर्ग–पु० [सं०] अर्वाक् स्रोतकी चौथी सृष्टि (वायु० ६.५६)।

तैलक–पु० [सं०] अंगिरसवंशका एक प्रवर प्रवर्तक ऋषि (मत्स्य० १९६.३०)।

तैलप–पु० [सं०] एक आत्रेय गोत्रकार ऋषि (मत्स्य० १९७.४)।

तैलेय–पु० [सं०] पांच धूम्रपराशरोंमेंसे एक धूम्रपराशर (मत्स्य० २०१.३८)।

तैत्तिरि–पु० [सं०] (१) एक ऋषि विशेषका नाम जो कृष्ण यजुर्वेदके प्रवर्त्तक कहे गये हैं। (२) कपोतरोमाका एक पुत्र तथा नलका पिता जिसे चंदनोदरदुंदुभि कहते थे (मत्स्य० ४४.६२)।

तैत्तिरिक–पु० [सं०] दक्षिणकी एक जाति या जनपद (मत्स्य० ११४.४९)।

तैत्तिरीय–स्त्री० [सं०] (१) कृष्णयजुर्वेदकी ८६ शाखाओंमेंसे एक। पुराणानुसार एक बार किसी कारणवश श्री वैशंपायनको ब्रह्महत्याका पाप लगा था उसकी निवृत्तिके लिए प्रायश्चित्तस्वरूप व्रत उनके शिष्योंने किया था। याज्ञवल्क्य भी उनके शिष्य थे। उन्होंने गुरुसे कहा ये अल्पशक्तिवाले क्या करेंगे मैं अकेले ही पाप निवर्तक प्रायश्चितरूप व्रत करनेमें समर्थ हूँ। यह अन्य शिष्योंका अपमानकारक औद्धत्य वैशंपायनको अच्छा नहीं लगा। इसपर उन्होंने याज्ञवल्क्यको शिष्यता छोड़नेकी आज्ञा दी। याज्ञवल्क्यने उनसे जो कुछ पढ़ा था उगल दिया और उसे उनके अन्य सहपाठियोंने तीतर बनकर चुग लिया (भाग० १२.६.६४-५; ब्रह्मां० २.३५.७५; विष्णु० ३.५.१३; वायु० ६१.६६) तथा दे० तित्तिरि। (२) इस नामका उपनिषद् जिसके शिक्षावल्ली, आनंदवल्ली और भृगुवल्ली तीन भाग हैं (तैत्तिरीयोपनिषत्–शांकरभाष्य-आनंदगिरिव्या०)।

तैत्तिरीयारण्यक–पु० [मं०] तैत्तिरीय शाखाका वानप्रस्थोंके उपदेशवाला आरण्यक।

तैर्यंगवनिक–पु० [सं०] एक प्रकारका यज्ञ।

तैलंग–पु० [सं० त्रिकलिंग] दक्षिण भारतका एक देश जहाँ कालेश्वर, श्रीशैल और भीमेश्वर नामके तीन पर्वत हैं। प्रत्येकपर एक-एक शिवलिंग स्थापित है। कहा जाता है इन्हीं तीन शिवलिंगोंके कारण इस देशका नाम त्रिलिंग पड़ा। महाभारतके समयमें यह एक देश था, पर बादको तीन हिस्सोंमें बँट गया (महाभा०)।

तोंडमान–पु० [सं०] सुवीर तथा नंदिनीका पुत्र एक चन्द्रवंशोत्पन्न नारायणपुरका राजा। पाण्ड्य नरेशकी पुत्री पद्मा इनकी एक रानी थी। एक बार आखेटमें घूमते-घूमते यह श्यामाक वनमें पहुँचा जहाँ वनके रक्षक वसु नामक निषादसे भेंट हुई जिसकी सहायतासे तोंडमानको विष्णुके दर्शन हुए थे (स्कंद० वैष्णव० भूमिवाराह-खंड)।

तोक–पु० [सं०] श्रीकृष्णके एक सखाका नाम (भाग०)।

तोटकम्–न० पु० [सं०] एक छंदका नाम जिसमें बाणासुरने शिवकी स्तुति की थी जिससे प्रसन्न हो उसे अमरत्वका वरदान मिला (मत्स्य० १८८.६६ तथा ७२)।

तोत्रवेत्र–पु० [सं०] विष्णुके हाथके दंडका नाम (विष्णु०)।

तोमर–पु० [सं०] पुराणोंके अनुसार एक देशका नाम (ब्रह्मां०)।

तोयकृच्छ–पु० [सं०] एक महीनेमें होनेवाला व्रत जिसमें जलके अतिरिक्त और कुछ नहीं खाया जाता है (व्रत कल्पद्रुम)।

तोया–पु० [सं०] (१) विन्ध्याचलसे निकली एक नदी (ब्रह्मां० २.१६.३३; मत्स्य० ११४.२८; वायु० ४५. १०३)। (२) शाल्मलिद्वीपकी एक नदी (वायु० ४९.४२)।

तोरणस्फटिका–स्त्री० [सं०] पांडवोंकी मय-दानववाली सभा देखकर दुर्योधनने इस नामकी एक सभा ईर्ष्यावश बनवायी थी (महाभा० सभा० ५६.१८)।

तोरणेश्वरी–स्त्री० [सं०] दे० तारा (ब्रह्मां० ४.३५.१५)।

तोरश्रवा–पु० [सं०] अंगिरा ऋषिका एक नाम।

तोशल–पु० [सं०] मथुरापति कंसका एक पहलवान मित्र जो श्रीकृष्णके मल्लयुद्धके समय उपस्थित था और कृष्णके हाथों मारा गया था (भाग० १०.३६.२१; ४२.३७; ४४.२७; विष्णु० ५.२०.७९-८०)।

तोष–पु० [सं०] (१) स्वायंभुव मन्वंतरके १२ तुषितदेवोंमेंसे एक देवता ये दक्षिणाके पुत्र थे (भाग०)। (२) श्रीकृष्णचन्द्रके एक सखाका नाम (भाग० ४.१.७-८)।

तोषल–पु० [सं०] दे० तोशल।

तोसल–पु० [सं०] विन्ध्य पर्वतके उस पारके निवासी (वायु० ४५.१३३)।

तौर–पु० [सं०] एक प्रकारका यज्ञ विशेष।

तौलेय–पु० [सं०] अंगिरसकुलका एक त्र्यार्षेय प्रवर (मत्स्य० १९६.६)।

त्याग–पु० [सं०] सांसारिक विषयभोगसे विरक्ति। उपयोगी और अनुपयोगी दोनोंपर सम दृष्टि रखना त्याग है। हिन्दू-धर्ममें ऐसे त्याग स्तुत्य कहे गये हैं। त्यागके समक्ष न कुछ अच्छा है, न कुछ बुरा (वायु० ५९.५३)। गीताके अनुसार काम्यकर्मका परित्याग तो संन्यास है और कर्मोंके फलकी आशा न रखना त्याग है। मनुके अनुसार

माता, पिता, स्त्री और पुत्रको छोड़ संसारकी अन्य वस्तुएँ त्याज्य हो सकती हैं। त्याग ज्ञानसे उत्पन्न होता है जिसे प्राप्त करना सरल नहीं है (ब्रह्मां० ४.३.४५)।

त्याज्य–पु० [सं०] भृगुके पुत्र १२ भृगुदेवोंमेंसे एक का नाम (मत्स्य० १९५.१३)।

त्रंग–पु० [सं०] पहले यहाँ राजा हरिश्चन्द्रकी राजधानी थी।

त्र्यम्बक–पु० [सं०] (१) शिव (ब्रह्मां० २.२७.६९; विष्णु० १.१५.१२२) जिसका वाहन वृषभ है और नैर्ऋत वर्गके राक्षस अनुगामी हैं (ब्रह्मां० ३.७.१४१)। यह ग्यारह रुद्रोंमें-से एक हैं; अंधकके युद्धमें असुरोंका वध करनेवाला १२ मेंसे आठवाँ अवतार (मत्स्य० ५.२९; ४७.५०; १९१.१२०)। पट्टिश, धनुष, त्रिशूल तथा खड्ग इनके अस्त्र-शस्त्र हैं। चाक्षुष मनुके मन्वंतरमें इन्हें प्रचेताके रूपमें उत्पन्न होनेका शाप दक्षने दिया था (ब्रह्मां० २.१३.४१, १४४)। (२) कुबेर जिसके अनुगामी नैर्ऋत वर्गके कुछ राक्षस कहे गये हैं। राक्षसोंकी इस शाखाके अधिक गण शंकरके थे (वायु० ६९.१७३)। जो त्रिपुरमें सब मारे गये थे (वायु० ९७.८२; ९९.५१)।

त्र्यम्बकव्रत–पु० [सं०] इस व्रतसे शिवलोक प्राप्त होता है (मत्स्य० १०१.६७)।

त्र्यंश–पु० [सं०] विप्रचित्तिका एक पुत्र (विष्णु० १.२१.११)।

त्रयी–स्त्री० [सं०] लोक संस्थितिहेतु आन्वीक्षिका आदि चार विद्याओंमेंसे एक विद्या यानी तीन वेद (वायु० ४९.११८; ५९.३६; ६१.१६७; ६७.२७; विष्णु० ५.१०.२७), जो देवीका प्रतीक है (विष्णु० १.९.१२१)। स्त्रियों, शूद्रों तथा पतित ब्राह्मणोंको इसे सीखनेका निषेध है (भाग० १.४.२५)। त्रेतायुगके आरम्भमें एक वेद पुरूरवाके लिए तीन हो गये थे (भाग० ९.१४.४८-४९)। पुष्करद्वीपवाले इससे अनभिज्ञ थे (ब्रह्मां० २.१९.१२२;३२.४०; ३५.१९५;३.४.२४; विष्णु० २.४.८३)।

त्रयीसानु–पु० [सं०] तुर्वसुके वंशज भानुका पुत्र तथा करंदमका पिता त्र्यूषण (विष्णु० ४.१६.३)।

त्र्यष्णु–पु० [सं०] उरुक्षव तथा विशालाके ३ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र जो ब्राह्मण हो गया था (मत्स्य० ४९.३९)।

त्रयोदशी–स्त्री० [सं०] (१) किसी पक्षकी तेरहवीं तिथि जो पुराणानुसार धार्मिक कृत्योंके लिए अति उपयुक्त मानी गयी है (शिवपुराण=प्रदोष व्रतादि)। (२) षोडशपत्राब्जकी निवासिनी एक शक्ति देवी (ब्रह्मां० ४.३२.१५)।

त्रय्यारुणि–पु० [सं०] (१) दुरितक्षयका एक पुत्र तथा एक पौराणिक (भाग० ९.२१.१९;१२.७.५; विष्णु० ४.१९.२५)। (२) पन्द्रहवें द्वापरके वेदव्यास (ब्रह्मां० २.३५.१२०; विष्णु० ३.३.१५)। इन्होंने अंतरिक्षसे पुराण सुन धनंजयको सुनाया था (ब्रह्मां० ४.४.६२)। (३) लोमहर्षण ऋषिके शिष्य एक प्राचीन ऋषि—दे० त्रय्यारुणि (१)। (४) त्रिधन्वाका पुत्र तथा सत्यव्रतका पिता (ब्रह्मां० ३.६३.७६; मत्स्य० १२.३७, विष्णु० ४.३.२०-१)। (५) उभक्षय और विशालाके एक पुत्र (वायु० ९९.१६३)।

त्रसदश्व–पु० [सं०] अनरण्यका पुत्र और तर्यश्वका पिता (वायु० ८८.७६)।

त्रसद्दस्यु–पु० [सं०] (१) पुरुकुत्सका पुत्र एक राजर्षि जो बड़ा दानी प्रसिद्ध था (सायणाचार्य)। (२) पुरुकुत्सका और नर्मदाके पुत्र तथा अनरण्यके पिताका नाम (भाग० ९.७.४; वायु० ८८.७४ विष्णु० ४.३.१७-१८)। (३) दे०—मान्धाता (भाग० ९.६.३३)। (४) पुरुकुत्स और नर्मदाका पुत्र तथा अनरण्यका पिता (भाग० ९.७.४; ब्रह्मां० ३.१०-९८; वायु० ७३.४९;८८.७४; विष्णु० ४.३.१६-१७)। (५) अंगिरसवंशका एक मन्त्रकृत् (ब्रह्मां० २.३२.१०८; वायु० ५९.९९)।

त्रसरेणु–स्त्री० [सं०] (१) सूर्यके प्रकाशमें उड़ते हुए धूलकण (भाग० ३.११.५)। पद्मरज (वायु० १०१.११९)। परमाणुका आठ गुणा (ब्रह्मां० ३.१०.५९; ४.२.११९)। (२) पुराणानुसार सूर्यकी एक स्त्रीका नाम।

त्रसु–पु० [सं०] अनघके पिताका नाम (वायु० ९९.१३३)। यह रंति और सरस्वतीका पुत्र तथा प्रसिद्ध रथी था (वायु० ९९.१२८)।

त्राक्षायणि–पु० [सं०] एक त्र्यार्षेय प्रवर (मत्स्य० १९८.२०)।

त्रासक–पु० [सं०] राक्षसगण जो बच्चोंको सताते हैं (वायु० ६९.१९१)।

त्रिककुत्–पु० [सं०] (१) शुचिका पुत्र जिसे धर्मसारथि भी कहते हैं। यह शांतरयका पिता था (भाग० ९.१७.११-१२)। (२) विष्णुके वाराह रूप धारण करनेके कारण यह उनका एक नाम पड़ गया (विष्णु०)। (३) दस दिनोंमें होनेवाला एक यज्ञ। (४) ककुद्मनके निकटका एक पहाड़ जहाँ पितरोंका श्राद्ध तथा तर्पण करते हैं। यहाँ एक 'जातवेदः शिला' है, अतः यह तीर्थ भी हो गया है जहाँ सप्तर्षियोंने स्नान किया था। यहाँ एक मंदिर तथा नंदी है जो पापियोंको दिखायी नहीं देता (ब्रह्मां० ३.११.६७; १३.५८; मत्स्य० १२१.१५; वायु० ४७.१३; ७७.५७-६४)।

त्रिककुभ्–पु० [सं०] नव दिनोंमें होनेवाला एक यज्ञ।

त्रिकण्टक–पु० [सं०] विषंगके सहायतार्थ नियुक्त भंडका एक सेनापति (ब्रह्मां० ४.२५.२९), जो ज्वालामालिनिकासे मारा गया था (ब्रह्मां० ४.२५.९८)।

त्रिकर्मनिरत–पु० [सं०] शिवका एक नाम (वायु० ३०.२१७)।

त्रिकुमारीक–पु० [सं०] कहते हैं हिमवान्की तीन पुत्रियाँ–अपर्णा, एकपर्णा और एकपाटलासे सारा संसार व्याप्त है। ये तीनों ब्रह्मवादिनी हैं तथा कभी बूढ़ी नहीं होतीं (ब्रह्मां० ३.१०.१४; वायु० ७२.१३-५)।

त्रिकूट–पु० [सं०] (१) देवीभागवतके अनुसार एक पर्वत जिसपर लंकाकी स्थिति मानी गयी है। यह सिद्धस्थान है और यहाँ रूपसुन्दरीके रूपमें भगवती निवास करती हैं (वायु० ४८.२६)। (२) एक कल्पित पर्वत जो सुमेरु पर्वतका पुत्र माना जाता है। वामन पुराणानुसार यह क्षीरोद समुद्रमें है जहाँ देवर्षि रहते हैं और गंधर्वादि क्रीड़ा करते आते हैं। इसकी तीन चोटियाँ हैं—एक सोने की है जहाँ सूर्य आश्रय लेता है, दूसरी चाँदी की है जहाँ चन्द्रमा आश्रय लेता है और तीसरी हिमाच्छिद रहती है जो मणियोंकी

प्रभासे चमकती रहती है। यही तीसरी इसकी सबसे ऊँची चोटी है जो आस्तिकों तथा धर्मात्माओंकी ही दिखायी देती है (भाग० ५.१६.२६; १९.१६; ८.२.१-१९)।

त्रिकोण–पु० [सं०] दस पीठोंमेंसे एक सिद्धपीठ जो त्रिशूलके आकारका है और जिसे कामरूपकामाक्षाके अंतर्गत माना है (मत्स्य० २६२.७,१२,१८)।

त्रिखंडिका–पु० [सं०] दस मुद्रा शक्तियोंमेंसे एक प्रकट शक्ति (ब्रह्मां० ४.१९.१५; ४२.२; ४४.११५)।

त्रिगंग–पु० [सं०] एक तीर्थ जहाँ देव तर्पण तथा पितृ-तर्पण करनेसे मनुष्य प्रव्यलोकोंमें जाता है (महाभा० वन० ८४.२९)।

त्रिगर्त–पु० [सं०] एक पहाड़ी राज्य (वायु० ४५.१३६; मत्स्य० ११४.५६)। जहाँका राजा सुशर्मा श्रीकृष्णके कारण परास्त नहीं हो सका था। यह जरासंधका मित्र था और मथुराके उत्तरी प्रवेशद्वारपर जरासंधकी सहायतामें था। गोमंत आक्रमणके समय भी यह उपस्थित था (भाग० १.१५.१६; १०.५०.११(७); ५२.११(१४); ५०(५) ३)।

त्रिघंटा–पु०[सं०] हिमालयपर स्थित एक कल्पित नगर जहाँ विद्याधर आदिका निवास कहा गया है—दे० विद्याधर।

त्रिचक्र–पु० [सं०] अश्विनीकुमारोंके रथका नाम—दे० अश्विनीकुमार।

त्रिचक्षु–पु० [सं०] सुतीर्थका तथा रुचका पुत्र सुखीवलका पिता (वायु० ९९.२७४)।

त्रिजट–पु० [सं०] एक ब्राह्मणका नाम जिसे वन-यात्राके समय श्री रामचन्द्रने बहुत-सी गायें दान दी थीं (रामायण)।

त्रिजटा–स्त्री० [सं०] विभीषणकी बहिनका नाम जो अशोकवाटिकामें जानकीजीके साथ रहती थी—रामचरितमा०, सुंदरकाण्ड, दो० १०(१)।

त्रिजटी–स्त्री० [सं०] अन्धकासुरक्त पानके लिए शिवसृष्ट एक मानस-पुत्री मातृका (मत्स्य० १७९.१७)।

त्रित–पु० [सं०] (१) एक ऋषिका नाम जो ब्रह्माके मानसपुत्र कहे गये हैं। यह शरशय्यापर पड़े भीष्मसे मिलने गये थे तथा युधिष्ठिरके राजसूय यज्ञमें आमंत्रित थे। स्यमंतपंचकमें यह श्रीकृष्णसे मिले थे (महाभा० अनु० २६.६ तथा भाग० १.९.७; १०.७४.७; ८४.५)। (२) गौतम मुनिके तीन पुत्रोंमेंसे एक जो भागवतानुसार चाक्षुप मनुके पुत्र थे। अपने दोनों भाइयोंसे यह अधिक विद्वान् तथा मंत्रकृत् थे। एक बार पशुसंग्रह करनेके लिए यह जंगलमें गये थे जहाँ एक भेड़ियेको देख भागते-भागते यह एक कुएँमें गिर पड़े। वहीं इन्होंने सोमयाग आरम्भ किया जिससे देवता लोगोंने आकर इन्हें कुएँसे बाहर निकाला। महाभा०के अनुसार सरस्वती नदी यहींसे (इसी कुएँसे) निकली थी (भाग० ४.१३.१६; ३.१.२२; मत्स्य० १४५.१०१)।

त्रितकूप–पु० [सं०] एक तीर्थ जहाँ बलराम गये थे (भाग० १०.७८.१९)।

त्रितय–पु० [सं०] धर्म, अर्थ और काम तीनोंका समूह = त्रितय।

त्रितयसप्तमी–स्त्री० [सं०] मार्गशीर्ष शु० ७ को हस्तमें सूर्यकी पूजा कर उपवास करे। प्रत्येक सप्तमीको ऐसा ही क्रम रखे तो अच्छे कुलमें जन्म, स्थायी आरोग्य और यथेच्छ धन तीनों प्राप्त हों (हेमाद्रि)।

त्रिदंड–न० पु० [सं०] एक बाँसके सिरेपर दो छोटी-छोटी लकड़ियाँ बँधी रहती हैं जो तीनों ३ प्रतिबन्धकी द्योतक हैं। वाक्, कर्म तथा मनपर नियंत्रण रखना होता है। यह संन्यास आश्रमका द्योतक है (वायु० १७.६)।

त्रिदंडी–पु० [सं०] एक प्रकारके संन्यासी साधु जो त्रिदंड लिये रहते हैं। सुभद्रासे विवाहके हेतु अर्जुन इस रूपमें चार महीनोंतक मथुरामें रहे थे (भाग० १०.८६.३; ब्रह्मां० ३.११.५-१२; १५.६४)।

त्रिदशगुरु–पु० [सं०] देवगुरु बृहस्पतिका एक नाम।

त्रिदशज्योति–न० पु० [सं०] नर्मदा तटपरका एक तीर्थ (मत्स्य० १९४.११)।

त्रिदशपति–पु० [सं०] सुरपति इन्द्रका एक नाम—दे० इन्द्र।

त्रिदशाचार्य–पु० [सं०] देवगुरु बृहस्पतिका एक नाम—दे० बृहस्पति।

त्रिदशायन–पु० [सं०] विष्णुका एक नाम—दे० विष्णु।

त्रिदशालय–पु० [सं०] (१) सुमेरु पर्वतका एक नाम। (२) स्वर्गका एक नाम (अमरको०)

त्रिदशेश्वरी–स्त्री० [सं०] भगवती दुर्गाका एक नाम—दे० दुर्गा।

त्रिदिवा–स्त्री० [सं०] (१) हिमालयकी तलहटीसे निकली एक नदी (ब्रह्मां० २.१६.२६)। (२) ऋक्षवान् पर्वतसे निकली एक नदी (ब्रह्मां० २.१६.३१)। (३) प्लक्षद्वीपकी एक नदी (ब्रह्मां० २.१९.१९; विष्णु० २.४.११)। (४) भारतवर्षकी एक नदी (शिवेतिका) जिसका उद्गम स्थान महेन्द्र पर्वत है (वायु० ४९.१०१, १०६)। (५) शाकद्वीपकी एक नदी (वायु० ४९.९३)।

त्रिदिवाचला–स्त्री० [सं०] महेन्द्र पर्वतसे निकली एक नदी (मत्स्य० ११४.३१)।

त्रिदिवावला–स्त्री० [सं०] महेन्द्र पर्वतसे निकली एक नदीका नाम (ब्रह्मां० २.१६.३७)।

त्रिदृक्–पु० [सं०] शंकरका एक नाम।

त्रिदेव–पु० [सं०] (१) ब्रह्मा, विष्णु और महेश = त्रिदेव—(वायु० ५.१४-१६ और ३०-३१तक)। (२) सांकृतिके दो पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (वायु० ९९.१६०)।

त्रिदेव–पु० [सं०] रज, तम तथा सत्त्व इन तीन गुणोंके संघर्षसे तीन सदेह देवता उत्पन्न हुए—रजने ब्रह्मा; तमने अग्नि और सत्त्वने विष्णुका रूप धारण किया। प्रथम (ब्रह्मा) का काम सृष्टि करना था, दूसरेने कालका रूप ग्रहण किया और तीसरा (विष्णु) उदासीन रहा। ये ही त्रिलोक, त्रिवेद और तीन अग्नि हुए। इनमें तीनों एक-दूसरेपर आश्रित हैं। इन तीनोंके सामूहिक प्रयत्न और सहयोगसे संसारकी वृद्धि होती है। अद्वैत—प्रजापतिके तीन रूप और कार्य—सृष्टिकर्त्ता, संहारकर्त्ता तथा रक्षक (वायु० ५.१४-१६, ३०-३१)।

त्रिधन्वा–पु० [सं०] (१) सम्भूतिका एक पुत्र (मत्स्य० १२.३६)। (२) धर्मात्मा राजा वसुमतका एक पुत्र (वायु० ८८.७७)। (३) हरिवंश पुराणके अनुसार सुधन्वा राजाके एक पुत्रका नाम (हरिवंश)। (४) सुमनाका पुत्र तथा त्र्या-

रुणिके पिताका नाम (विष्णु० ४.३.२०)। (५) सुमतिके एक पुत्रका नाम (ब्रह्मां० ३.६३.७६)।

त्रिधामा–पु० [सं०] दसवें द्वापरके व्यासका नाम। इसी द्वापरमें भगवान्‌का भृगु अवतार माना जाता है (ब्रह्मां० २.३५.११९; वायु० २३.१४७; विष्णु० ३.३.१३)। इन्होंने सारस्वतसे ब्रह्मांड और वायुपुराण सुन शद्वरान्‌को केवल ब्रह्मांडपुराण सुनाया था (ब्रह्मां० ४.४.६१; वायु० १०३.६१)।

त्रिधामूर्त्ति–पु० [सं०] ईश्वरके अंतर्गत त्रिदेव—दे० त्रिदेव तथा (वायु० ५.१४-१६; ३०-३१)।

त्रिधारा–स्त्री० [सं०] गंगाजीका एक नाम जो स्वर्ग, मर्त्य और पाताल तीनों लोकोंमें वहती हैं—दे० गंगा।

त्रिनयन–पु० [सं०] भगवान् शंकरका एक नाम—जिनकी तीसरी आँख जो मस्तकमें स्थित मानी गयी है, सृष्टिका नाश करनेकी शक्ति रखती है—दे० त्रिनेत्र।

त्रिनाभ–पु० [सं०] खशाके गर्भसे उत्पन्न कई राक्षसोंमेंसे एक राक्षसका नाम (ब्रह्मां० ३.७.१३५)।

त्रिनेत्र–पु० [सं०] (१) दे० शिव (ब्रह्मां० २.२७.६९; ३.२३.३१; २४.७९; २५.२; ३२.१८)। (२) निर्वृत्तिका एक पुत्र जो २८ वर्षोंतक राजा रहा।

त्रिपथ–पु० [सं०] चन्द्रमाके रथके १० घोड़ोंमेंसे एक घोड़ा (मत्स्य० १२६.५२)।

त्रिपथगा–स्त्री० [सं०] तीन भिन्न-भिन्न लोकोंमें धाराओंवाली गंगाका एक नाम। सर्वप्रथम गंगा गौर पर्वतपर स्वर्गसे उतरी (ब्रह्मां० २.१८.२७.२९.३०)। फिर शिवने लोक कल्याणार्थ अपने मस्तकपर रोका (ब्रह्मां० ३.१३.११८; २५.११)। सोमके चरणोंसे निकल करके (मत्स्य० १०२.८; १०६.५१; १२१.२८-९; १८३.७) यह सात धाराओंमें बँट गयी। यह 'अंतरिक्ष', 'द्युलोक', और 'भूमि' तीनों स्थानोंसे होकर वहती है (वायु० ४७.२६-४१; ७७.१११)।

त्रिपन्न–पु० [सं०] चन्द्रमाके रथके दस घोड़ोंमेंसे एकका नाम।

त्रिपुंड्र–पु० [सं०] शैवोंका एक प्रकारका तिलक (ब्रह्मां० ४.३८.२२)।

त्रिपुटा–स्त्री० [सं०] तांत्रिकोंकी एक अभीष्टदात्री देवीका नाम—दे० तंत्राभिधान।

त्रिपुर–पु० [मं०] (१) एक असुर जो तीसरे तलमें अपने नगरमें रहता था (ब्रह्मां० २.२०.६७; ३.३८.४)। (२) महाभारतके अनुसार तारकासुरके तारकाक्ष, कमलाक्ष तथा विद्युन्माली नामके तीन पुत्रोंके तीन नगर। इन लोगोंने मयदानवसे ये नगर अपने लिए वनवाये थे। इन नगरोंमेंसे एक सोनेका था जो स्वर्गमें स्थित कहा गया है। दूसरा नगर जो चाँदीका था अंतरिक्षमें स्थित माना गया है। तीसरा नगर मर्त्यलोकमें स्थित लोहेका कहा गया है। जव इन तीनों भाइयोंका अत्याचार अधिक वढ़ गया तव शिवजीने तीनों नगरोंको अत्रि ऋषिके कहनेपर 'अघोर' नामक एक ही वाणसे नष्ट कर दिया था तथा तीनों राक्षस-वन्धुओंको भी मार डाला था—दे० तारक (२), तारकाक्ष, तारकासुर तथा (मत्स्य० १२९-१३०; १३३-६७; १४०; १८७.८,१४६; १८८.९-१०)। अघोरास्त्रसे छूटा हुआ वाण जाल ही 'जालेश्वर' नामक शिवलिंग कहलाया (स्कन्द०, आवन्त्यखंड, रेवाखंड)।

त्रिपुरभैरवी–स्त्री० [सं०] एक देवी विशेषका नाम जो ललिताकी दूसरी रथवाहिनी थी (ब्रह्मां० ४.२०.९१)।

त्रिपुरसुंदरी–स्त्री० [सं०] ललितादेवीके २५ नामोंमेंसे एक नाम (ब्रह्मां० ४.१८.१४; ३९.७६,९७; ४०.१,४३)।

त्रिपुरांतक–पु० [सं०] त्रिपुरध्वंसी—दे० त्रिपुरारि (ब्रह्मां० ३.२३.३२; २५.१३)।

त्रिपुरांबिका–स्त्री० [सं०] एक मातृका देवी—दे० ललिता तथा (ब्रह्मां० ४.७.७२;११.१)।

त्रिपुरा–स्त्री० [सं०] (१) ललिता देवीका एक नाम (ब्रह्मां० ४.५.३१)। (२) कामाख्या देवीकी एक मूर्त्ति विशेषका नाम। (३) पु० पितरोंके लिए एक पवित्र तीर्थस्थान (मत्स्य० २२.४३)।

त्रिपुरारि–पु० [सं०] 'त्रिपुर'का नाश करनेके कारण महादेवका एक नाम—दे० त्रिपुर, (मत्स्य० १७९.३८; २५९.११)।

त्रिपुरेशी–स्त्री० [सं०] गुप्त योगिनियोंकी अधिष्ठात्री ललिता देवी षोडशेन्दुकलात्मिक्त (ब्रह्मां० ४.३६.७२)।

त्रिप्लक्ष–पु० [सं०] श्राद्धके लिए अति उपयुक्त वैदिक ग्रंथोक्त एक वहुत प्राचीन नगरका नाम जो दृषद्वतीके निकट था (ब्रह्मां० ३.१३.६९)। श्यामक और इक्षुरससे पितरोंकी अक्षय तृप्ति होती है उन्हींकी तरह प्रियंगु, मूग आदिको भी देवताओंने पित्र्यर्थ वनाया था (ब्रह्मां० १४.८, १७.६)।

त्रिवाहु–पु० [सं०] रुद्रका एक अनुचर।

त्रिभागा–स्त्री० [सं०] महेन्द्र पर्वतसे निकली एक नदी (मत्स्य० ११४.३१)।

त्रिभानु–पु० [सं०] भानुमान्‌का पुत्र तथा करंधमका पिता।

त्रिभुवन–पु० [सं०] स्वर्ग, पृथ्वी तथा पाताल तीनों लोक।

त्रिमधु–पु० [सं०] (१) ऋग्वेदका अंश विशेष। (२) ऋग्वेदका एक यज्ञ। (३) सामवेदी ब्राह्मण जिन्हें श्राद्धोंमें भोजन करानेसे वहुत पुण्य होता है (विष्णु० ३.१५.२)।

त्रिमना–पु० [सं०] चन्द्रमाके रथका एक घोड़ा (वायु० ५२.५३)।

त्रिमात्र–पु० [सं०] ओ३म्। प्रणव = वैद्युती, तामसी तथा निर्गुणी मात्राओंका सामूहिक नाम ही ओ३म्, ईश्वर है (वायु० २०.१)।

त्रिमुंड–पु० [सं०] त्रिशिरा राक्षसका नाम—दे० त्रिशिरा।

त्रिमुख–पु० [सं०] (१) शाक्य मुनि। (२) गायत्री जपनेकी एक मुद्रा विशेष—दे० गायत्री उपासना कैसे करें।

त्रिमुनि–पु० [सं०] पाणिनि, कात्यायन तथा पतंजलि इन तीनोंके समूहको त्रिमुनि कहते हैं।

त्रिमूर्त्ति–पु० [सं०] दे० त्रिदेव। [स्त्री०] ब्रह्माकी एक शक्ति।

त्रियामिका–स्त्री० [सं०] रात्रिका एक नाम (ब्रह्मां० २.८.६, २३)।

त्रियुगीनारायण–पु० [सं०] वद्रीनारायणके रास्तेमें गौरीकुण्डके समीप तीन मीलपर एक स्थान विशेष जहाँ पार्वतीसे शिवका विवाह हुआ था। कहते हैं विष्णु और ब्रह्माने इस यज्ञमें यहाँ भाग लिया था। गौरीकुण्ड नदीके तटपर

है जिसका जल गर्म है जो आगे चलकर मंदाकिनीमें गिरता है। कहते हैं इस कुण्डमें गौरीने स्नान किया था (स्कन्द०, बद्रीना० माहात्म्य)।

त्रिरात्रि–पु० [सं०] तीन दिनोंका एक व्रत विशेष (व्रत-कल्पद्रुम)।

त्रिरूप–पु० [सं०] अश्वमेध यज्ञके उपयुक्त एक विशेष प्रकारका घोड़ा।

त्रिलोक–न० पु० [सं०] दे० त्रिभुवन (वायु० ५०.६०; ५३.३४-४१)।

त्रिलोचन–पु० [सं०] (१) त्र्यंबक क्षेत्रमें शंकरका एक नाम (मत्स्य० २२.४७;१३१.३५;२६६.३६; विष्णु० ५.३३.१)। (२) विघ्नेश्वरका एक नाम (ब्रह्मां० ४.४४.६७)।

त्रिवक्रा–पु० [सं०] मथुरापति कंसकी एक कुबड़ी दासी 'कुब्जा' जो उन्हें चन्दनादि दिया करती थी। श्रीकृष्णने इसका कूबड़पन दूर करके इसे सुंदर युवती बना दिया था। श्रीकृष्ण और उद्धव इसके घर गये थे। विशोक नामक इसका एक पुत्र था—भाग०१०.९०.३४(१)। श्रीकृष्ण और सत्यभामाके इन्द्रपुरीसे लौटनेके पश्चात् यह उनसे मिलने आयी थी (भाग० १०-६७(५)५०)।

त्रिवर्ग–पु० [सं०] मनुष्यकी चेष्टाओंका तीन लक्ष्य—धर्म, काम और अर्थ जिसे प्रह्लादके गुरुने उन्हें सिखलाया था। प्रह्लादको यह नहीं भाया। उनके मतानुसार यह भगवान्‌की प्राप्तिका साधन होना चाहिये (भाग० ७.५.५२-५३; ६.२६)। त्रिवर्गका पालन विशेषकर गृहस्थ ही करते हैं (भाग० ७.१४.१०; ८.१६.११; विष्णु० ३.११.६)। भिक्षुकोंको इसका बहिष्कार करना उचित है (भाग० ७.१५.३६; ब्रह्मां० ३.५०.५२; ५१.१५)।

त्रिवर्गेष्टदासप्तमी–स्त्री० [सं०] फाल्गुन शु० ७ को 'ॐ वेली देवाय नमः' मन्त्रसे पूजा करनेसे त्रिवर्ग (अर्थ, काम, धर्म) की सिद्धि होती है (भविष्य०)।

त्रिवर्षा–पु० [सं०] ग्यारहवें वेदव्यास (ब्रह्मां० २.३५.११९)।

त्रिराव–पु० [सं०] विष्णुवाहन गरुड़के कई पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (महाभा० उद्योग० १०१.११)।

त्रिवाह–पु० [सं०] मेरुमूलके चारों ओर स्थित एक पहाड़ (वायु० ३५.६)।

त्रिविष्ट–पु० [सं०] शरद्वान्‌से इन्होंने ब्रह्मांड और वायु-पुराण सुनकर अंतरिक्षको सुनाये थे (ब्रह्मां० ४.४.६१; वायु० १०३.६१)।

त्रिवृत्–पु० [सं०] एक साम (वायु० ९.४८), जिसकी उत्पत्ति ब्रह्माके प्रथम मुखसे हुई थी (ब्रह्मां० २.८.५०)।

त्रिवृत्सोम (स्तोम)–पु० [सं०] यह ब्रह्माके प्रथम मुखसे उत्पन्न हुआ था (विष्णु० १.५.५३)।

त्रिवृष–पु० [सं०] पुराणानुसार ग्यारहवें द्वापरके व्यासका नाम (वायु० २३.१५१के अनुसार ११वें व्यासका नाम तिष्ठद् व्यास है)।

त्रिवृष्ण–पु० [सं०] शाट्यायन ब्राह्मणके अनुसार इक्ष्वाकु-वंशोत्पन्न एक राजा जो त्र्यारुणके पिता थे—दे० त्र्यारुण।

त्रिविक्रम–पु० [सं०] ऋग्वेदमें विष्णुका त्रिविक्रम नाम मिलता है। इसमें विष्णुके तीन विशिष्ट पदोंका उल्लेख किया गया है। कुछके अनुसार ये तीन पद सूर्यकी तीन अवस्थाओंके द्योतक हैं—उदय, मध्याह्न और अस्त। अन्य मतानुसार विष्णुने तीन पगोंमें सारा ब्रह्माण्ड नाप डाला—पहला पग पृथ्वीपर, दूसरा अंतरिक्षमें (वायुमण्डलमें) और तीसरा आकाशमें। तीन पगोंके समय विष्णुका क्रमशः अग्नि, वायु और सूर्यका रूप था। सायणाचार्यने विष्णुके इन तीन पगोंको वामन अवतारके तीन पग बतलाया है (ब्रह्मां० ३.३.११८; ४.३४.७९; मत्स्य० १७६.५९; विष्णु० ५.५.१७)।

त्रिवेणी–स्त्री० [सं०] गंगा, यमुना और सरस्वतीका संगम जो प्रयागमें है। यह बड़े माहात्म्यका तीर्थ माना गया है जहाँ मकरसंक्रांति या वारुणी आदि पर्वोंपर बहुत लोग स्नानार्थ आते हैं।

त्रिशंकु–पु०[सं०] (१) एक प्रसिद्ध सूर्यवंशी राजाका नाम। सशरीर स्वर्ग जानेकी कामनासे त्रिशंकुने यज्ञ किया था, पर इन्द्र तथा अन्य देवताओंके विरोधके कारण न जा सके थे। इस यज्ञको करनेके लिए इन्होंने अपने गुरु वशिष्ठसे तथा उनके पुत्रोंसे प्रार्थना की थी, पर सबने अस्वीकार किया और शाप दिया 'तुम चांडाल हो जाओ।' तदनंतर राजाने चांडाल होकर अपनी कामना विश्वामित्रसे कही जिन्होंने अन्य ऋषियोंके संग यज्ञ आरम्भ कर दिया जिसमें वे स्वयम् अध्वर्यु बने। जब हविर्भाग लेनेके लिए कोई देवता नहीं आया तब अपने ही तपोबलपर विश्वामित्र त्रिशंकुको स्वर्ग भेजने लगे। यह देख इन्द्रने त्रिशंकुको मर्त्यलोककी ओर लौटाया। विश्वामित्रने क्रुद्ध होकर त्रिशंकुको आकाशमें ही रोक दिया और दूसरे सप्तर्षियों और नक्षत्रोंकी रचना आरम्भ की। तबसे त्रिशंकु वहीं आकाशमें लटके हैं और नक्षत्र उनकी परिक्रमा करते हैं (रामायण)। लेकिन हरिवंशके अनुसार 'महाराज त्र्य्यारुणका सत्यव्रत नामक एक बड़ा पराक्रमी पुत्र था जिसने एक पराई स्त्री घरमें डाल ली थी। इससे पिताके शापसे सत्यव्रत चांडालोंके साथ रहने लगे। पास ही वनमें विश्वामित्रजी भी तपस्या करते थे। एक बार उस प्रांतमें बारह वर्षोंतक वृष्टि नहीं हुई, अतः ऋषिकी पत्नी अपने बिचले लड़केको गलेमें बाँध कर सौ गौओंसे बेचने निकली। सत्यव्रतने उस ऋषि-पुत्रको लेकर पालना आरम्भ किया तभीसे उस लड़केका नाम 'गालव' पड़ा। एक बार सत्यव्रतने वशिष्ठकी गौको मार कर विश्वामित्रके पुत्रको खिलाया और स्वयम् भी खाया। सत्यव्रतने तीन महापातक किये थे—(१) पिताको असंतुष्ट किया। (२) गुरुकी गाय मार कर स्वयम् खायी। (३) उस गोमांसको ऋषि-पुत्रोंको खिलाया। इससे सत्यव्रतका नाम त्रिशंकु पड़ गया। सत्यव्रतने सशरीर स्वर्ग जानेकी इच्छा विश्वामित्रसे प्रकट की। विश्वामित्रने पहले यह बात मान ली, फिर उन्हें उनके पैतृक राज्यपर अभिषिक्त किया और स्वयम् राजगुरु बन बैठे। केकैय वंशकी सत्यरता नामकी कन्याके गर्भसे सत्यव्रतके पुत्र प्रसिद्ध सत्यव्रती राजा हरिश्चन्द्रने जन्म लिया था (हरिवंश)। तैत्तिरीय उपनिषद्‌के अनुसार त्रिशंकु अनेक वैदिक मंत्रोंके ऋषि थे (भाग० ९.७.५-७; ब्रह्मां० ३.६३.१०८; वायु० ८८.१०८-१३; विष्णु० ४.३.२१)। (२)

महानदीके उत्तर तथा वैकट (कैकट=वायु०) के दक्षिणका प्रदेश जहाँ श्राद्धादि करना वर्जित है (ब्रह्मां० ३.१४.३१-२; मत्स्य० १६.१६; वायु० ७८.२१.२)।

त्रिशंकुग्रह–पु० [सं०] चन्द्रमंडलमें त्रिशंकु नक्षत्र (वायु० ८८.११५-६)।

त्रिशक्ति–स्त्री० [सं०] तांत्रिकोंकी काली, तारा और त्रिपुरा ये तीन देवियाँ।

त्रिशाल–पु० [सं०] एक प्रकारका गृह जिसे धान्यकभी कहते थे (मत्स्य० २५३.५१; २५४.४-७)।

त्रिशिख–पु० [सं०] (१) ग्यारहवें द्वापरके वेदव्यास—दे० त्रिवृप (विष्णु० ३.३.१४)। (२) रावणके एक पुत्रका नाम। (३) तामस मन्वंतरके इन्द्रका नाम (भाग० ८.१.२८)।

त्रिशिखर–पु० [सं०] शिवका निवास एक सुरम्य पवित्र पर्वत (मत्स्य० १८३.२)।

त्रिशिर–पु० [सं० त्रिशिराः] (१) खशा और कश्यपके कई पुत्रोंमेंसे एक राक्षस पुत्र (ब्रह्मां० ३.७.१३५)। (२) रावणका एक भाई जो खरदूपणके साथ दंडक वनमें रहता था। यह विश्रवा और वाकाका पुत्र था (ब्रह्मां० ३.८.५६. वायु० ७०.५०)। यह लक्ष्मणजीके हाथों मारा गया था (स्कंद०, ब्राह्म० सेतुमाहात्म्य)। (३) प्रहादी (विरोचनकी वहिन विरोचना) और त्वष्टाका एक पुत्र जिसका नाम विश्वरूप भी था। ये वृहस्पतिके रूठनेपर देवाचार्य वनाये गये थे। इन्द्रके वज्रप्रहारसे इनकी मृत्यु हुई थी (महाभा० उद्योग० ९.३,२४; ब्रह्मां० ३.५९.१९-२०)। (४) 'ज्वर पुरुप', जिसकी सृष्टि शंकरने दानवपति वाणकी सहायताके लिए की थी। इसके तीन सिर, तीन पैर, ६ हाथ और ९ आँखें थीं। (५) यशोधरा और त्वष्टा प्रजापतिके पुत्रका नाम (ब्रह्मां०.३.१.८६; वायु० ६५.८५)। इसकी माता विरोचन राक्षसकी वहिन थी (वायु० ८४.१९)। (६) एक राक्षस जिसे रामचन्द्रजीने मारा था (भाग० ९.१०-९; वायु० ६९.१६७)। इसका निवासस्थान तीसरे तलमें था (ब्रह्मां० २.२०.२६; वायु० ५०.२६)।

त्रिशूल–पु० [सं०] महादेवका एक अस्त्र जिसके सिरपर तीन फल होते हैं (ब्रह्मां० ३.३२.१४; ४.१९.६,८५; वायु० १०१.२७१)। यह सूर्यके वैष्णव तेजसे त्वष्टा द्वारा प्रस्तुत किया गया था (मत्स्य० ५.३१; ११.२९; २१७.३१; विष्णु० ३.२.११)।

त्रिशूलखात–पु० [सं०] एक तीर्थविशेषका नाम जहाँ स्नान और तर्पण करनेसे गाणपत्य देह प्राप्त होती है (महाभा० वन० ८४.११ १२)।

त्रिश्टंग–पु० [सं०] (१) चित्रकूट पर्वतका एक नाम (रामायण)। (२) एक पर्वत जो मेरुके उत्तर (भाग० ५.१६.२७; मत्स्य० १६३.८६; विष्णु० २.२.४४) और शीतोदके पश्चिम है (वायु० ३६.२९; ४२.७२)।

त्रिश्टंगायन–पु० [सं०) एक ऋपिका नाम (मत्स्य० २००.१५) (वर्तमान संस्करणोंमें 'त्रैश्टङ्गायन' पाठ मिलता है)।

त्रिशोक–पु० [सं०] (१) हर जीवको आधिदैविक, आधिभौतिक और आध्यात्मिक शोक भुगतने पड़ते हैं। (२) कण्व ऋपिके पुत्रका नाम (हि० वि० को०)।

त्रिपवण–दे० त्रिसवन।

त्रिष्टुप्–पु० [सं०] सूर्यके रथके साथ छन्दरूप अश्वोंमेंसे एक अश्व (ब्रह्मां० २.२२.७२; वायु० ५१.६४; विष्णु० २.८.५)। यह गायत्री छन्द और जगती छन्दके साथ मिलकर त्रिसाधन त्रिकपाल पुरोडाश वन जाता है (ब्रह्मां० २.१३.१४५; वायु० ३१.४७)।

त्रिष्टोम–पु० [सं०] क्षत्रधृति यज्ञके पूर्व और पश्चात् होनेवाला एक यज्ञ (हि० वि० को०)।

त्रिसंध्या–स्त्री० [सं०] (१) गोदाश्रममें (कुब्जाम्रकमें) स्थापित सती देवीकी एक मूर्ति (मत्स्य० १३.३७)।

त्रिसंध्यव्यापिनी–वि० स्त्री० [सं०] सूर्योदयसे सूर्यास्ततक वरावर रहनेवाली तिथि जो सर्वमंगल कार्योंके लिए शुद्ध मानी गयी है (हि० वि० को०) (मत्स्य० २२.४६)।

त्रिसंध्यातीर्थ–पु० [सं०] यहाँ किये गये श्राद्धका अनन्त फल होता है।

त्रिसानु–पु० [सं०] गोभानुके पुत्र और करंधमके पिताका नाम (ब्रह्मां० ३.७४.१; वायु० ९९.१)।

त्रिसामा–स्त्री० [सं०] (१) परमेश्वरका एक नाम। (२) महेन्द्र पर्वतसे निकली एक नदी (भाग० ५.१९.१८; ब्रह्मां० २.१६.३७; वायु० ४५.१०६; विष्णु० २.३.१३)।

त्रिसारि–पु० [सं०] गोभानुका एक पुत्र (मत्स्य० ४८.१)।

त्रिसुपर्ण–पु० [सं०] (१) वेदके छह अङ्गोंके विज्ञ ब्राह्मण–त्रिसुपर्णः पडवित् (वायु० ८३.५३)। शिक्षा, कल्पसूत्र, व्याकरण, निरुक्त, छन्द और ज्योतिप ये वेदके छह अङ्ग हैं। उपर्युक्त अङ्गोंके ज्ञाता विद्वानोंको ही पार्वण श्राद्धके लिए निमंत्रण देना चाहिये (मत्स्य० १६ ७; विष्णु० ३.१५.२)।

त्रिस्तनी–स्त्री० [सं०] एक राक्षसीका नाम जिसके तीन स्तन थे (महाभा०)।

त्रिसवन, (त्रिपवण)–पु० [सं०] त्रिकाल स्नान, तीन दिनोंमें होनेवाला एक यज्ञ विशेप।

त्रिस्तावा–पु० [सं०] अश्वमेध यज्ञकी वेदी जो और वेदियोंसे तिगुनी वड़ी होती थी।

त्रिस्थली–स्त्री० [सं०] काशी, गया और प्रयाग, ये तीन विशेप पुण्य स्थान। तीन वर्पवाली गाय।

त्रिस्थान–पु० [सं०] विष्णुके तीन स्थान—दिव्य, अंतरिक्ष और भौम (वायु० २३.१०४, १०७)। (२) परमेश्वरका नाम—ईश्वर, जो स्वर्ग, मर्त्य और पाताल तीनों स्थानोंमें रहता है।

त्रिस्पृशा–स्त्री० [सं०] एक प्रकारकी एकादशी जो उस समय होती है जब कि एक ही दिनमें उदय कालके समय थोड़ी-सी एकादशी और रातके अंतमें त्रयोदशी हो। ऐसी एकादशी पुण्य कार्योंके लिए वहुत उत्तम और उपयुक्त है। (हि० वि० को०)।

त्रिस्नान–न० पु० [सं०] प्रातःकाल, मध्याह्न और संध्या तीनों समयका स्नान। वानप्रस्थ आश्रममें यह आवश्यक है। इसका विधान प्रायश्चित्तोंमें भी है। यही त्रिपवण या त्रिसवन है (दे० प्रायश्चित्तेंदुशेखर)।

त्रिहायनी–स्त्री० [सं०] (१) राजा द्रुपदकी पुत्री कृष्णाका,

जो पाँचों पाण्डवोंको ब्याही गयी थी, एक नाम (महाभारत)। (२) तीन वर्ष की गाय (त्रिहायनी त्रिवर्षागीः—अमरकोश)।

त्रुटि–स्त्री० [सं०] षोडश पत्राब्जपरकी एक शक्तिदेवी (ब्रह्मां०)

त्रेता–पु० [सं०] चार युगोंमेंसे दूसरा जो १२९६००० वर्षोंका होता है। पुराणानुसार इस युगका प्रारम्भ कार्त्तिक शुक्ल नौमीको होता है। इस युगमें पुण्य अधिक और पाप पुण्यका तिहाई होता है। इसके आरम्भमें ब्रह्माने सारी व्यवस्था ठीक कर दी थी, पर कुछ समय बाद मोह उत्पन्न हुआ जिससे मनुष्य अधार्मिक और द्वेषपूर्ण हो गया। मनुने शतरूपासे प्रियव्रत तथा उत्तानपाद दो पुत्र उत्पन्न किये जो पृथ्वीके सर्वप्रथम राजा हुए। इस युगमें सब लोग धर्म-परायण होते थे। पुराणानुसार इस युगमें मनुष्योंकी आयु दस हजार वर्ष तथा मनुके अनुसार तीन सौ वर्ष होती थी। श्री परशुराम तथा श्री रामचन्द्रका जन्म इसी युगमें हुआ था–दे० अक्षयनवमी (वायु० ३२.५७-८; ५७.२५, ५४-६०; ७८.३६ तथा वायु० ५७.८१-१२५)।

त्रेतायुग–पु० [सं०] इस युगमें विष्णुके अनेक रूपोंकी उपासना होने लगी (भाग० ५.१७.१२; ९-१०.५२; १४. ४३; ११.५.२४-६)। यज्ञके रूपमें हरि वेदोंको प्रकाशमें लाये (भाग० ११.१७.१२)। इस युगकी विशेषताएँ (ब्रह्मां० २.७.२१, ५९; भाग० १२.२.३९; ३.२०-२१, २८ ५२; वायु० ८.६५-९६; ९९.४३९-४४४) में दी हुई हैं। इस युगकी अवधिमें श्रौत तथा स्मार्त धर्म पालन होने लगे। राजाओंके कर्तव्यके लिए–दे० मत्स्य० १४२.१७.२३-५, ४०-७७; १६५.६। इसी युगमें भारतीय संस्कृतिकी उत्पत्ति हुई (वायु० ८.१४६-१७८)।

त्रेतायुगाद्य–पु० [सं०] या त्रेतामुख=कार्त्तिक शुक्ला नवमी, जिस दिनसे त्रेता युगका प्रारम्भ हुआ था। इसके पहले एक वेद, एक ईश्वर, एक जाति तथा एक अग्नि थी जो बादको सब संख्यामें बढ़ गये (भाग० ९.१४, ४८ ४९)। यह बहुत पवित्र तिथि मानी जाती है।

त्रैदशिक–पु० [सं०] उँगलियोंके अग्रभाग जो तीर्थसम पवित्र समझे जाते हैं।

त्रैपुर–पु० [सं०] विष्णुके १२ अवतारोंमें सातवाँ (मत्स्य० ४७.४४ तथा वायु० ९७.७५)।

त्रैवलि–पु० [सं०] एक ऋषिका नाम, जो युधिष्ठिरकी सभामें विराजते थे (महाभा०)।

त्रैमातुर–पु० [सं०] लक्ष्मण—ये सुमित्राके गर्भसे उत्पन्न हुए थे, परन्तु सुमित्राने चरुका जो अंश खाया था, वह सर्वप्रथम कौशल्या और कैकेईको दिया गया था जिनसे सुमित्राको मिला, अतः लक्ष्मणकी तीन माताएँ थीं (रामायण)।

त्रैलोक्य–पु० [सं०] जन, तप तथा सत्यलोक जो स्थायी हैं (विष्णु० २.७.१९)।

त्रैलोक्यमोहिनी–स्त्री० [सं०] एक देवी जिसकी सृष्टि शिवसृष्ट मानस मातृकाओंके उपद्रवशमनार्थ नृसिंहने की थी। यह वागीशाकी अनुगामिनी थी (मत्स्य० १७९. ६७)।

त्रैलोक्यविजय–पु० [सं०] एक 'कवच' जिसे शिवने परशुरामको दिया था। कृष्णके इस मंत्रके जपसे परशुरामको राजसूय तथा वाजपेय यज्ञोंका फल प्राप्त हुआ तथा वह सम्पूर्ण पृथ्वीके चक्रवर्ती राजा हुए (ब्रह्मां० ३.३२.५६; ३३ (पूरा); ४४.२१)।

त्रैलोक्यविद्या–स्त्री० [सं०] एक वर्ण शक्ति (ब्रह्मां० ४. ४४.५८)।

त्रैविष्टप–पु० [सं०] स्वर्गमें रहनेवाले देवता।

त्रैसानु–पु० [सं०] तुनुर्वसु-वंशोत्पन्न राजा गोभानुके पुत्रका नाम (हरिवंश)।

त्रैयंबक–पु० [सं०] (१) पितरोंका एक पवित्र तीर्थ (मत्स्य० २२.४७)। (२) महादेव। (३) ग्यारह रुद्रोंमेंसे एक। (४) बारह प्रधान शिवलिंगोंमेंसे एकका नाम।

त्र्यंबकसख–पु० [सं०] भगवान् शंकरके सखा कुबेरका एक नाम।

त्र्यंबका–स्त्री० [सं०] दुर्गाका एक नाम जिसके सोम, सूर्य और अनल ये तीन नेत्र कहे गये हैं (दुर्गा सप्त०)।

त्र्यक्ष–पु० [सं०] हिरण्यकशिपुके सेनापति एक दैत्यका नाम (भाग० ७.२.४)।

त्र्यक्षी–स्त्री० [सं०] एक राक्षसीका नाम।

त्रैष्टुभ–पु० [सं०] एक छंद जो ब्रह्माके दूसरे मुख (दक्षिण-मुख=विष्णु०) से उत्पन्न हुआ था (वायु० ९.४९; ब्रह्मां० २.८.५१; विष्णु० १.५.५४)।

त्रैशंकव–पु० [सं०] हरिश्चन्द्र जो त्रिशंकुके पुत्र थे (वायु० ८८.११८)।

त्रय्यारुण–पु० [सं०] इक्ष्वाकु-वंशोत्पन्न त्रिविष्टके पुत्र एक राजाका नाम। शाट्यायन ब्राह्मणके अनुसार सायणाचार्यने एक कथा लिखी है। एक बार यह राजा रथपर जा रहे थे जिसे इनके पुरोहित वृषजी हाँक रहे थे। संयोगसे रथके पहियोंसे दब कर एक ब्राह्मण-पुत्रका प्राणांत हो गया। इक्ष्वाकु वंशके पार्षदोंने रथके वाहकको ही दोषी ठहराया। वृषने अपने तपोबलसे मृत ब्राह्मण-सुतको पुनः जीवित तो कर दिया, पर न्याय पक्षपातरहित न होनेके कारण न्यायाधीशोंके घर अग्निदेवने अपना कार्य बन्द कर दिया। अतः भोजन आदि नहीं पकनेके कारण सब आकर पुरोहितजीके समक्ष गिड़गिड़ाने लगे। बड़ी प्रार्थनाके पश्चात् ऋषिने उन लोगोंके यहाँका यह प्रतिबन्ध हटा सबके प्राण बचाये। वायु पुराणानुसार यह त्रिधन्वाके पुत्र तथा सत्यव्रतके पिता थे (वायु० ८८.७८)। इन्होंने वर्षींसे वायुपुराण सुना था (वायु० १०३.६२)।

त्वरिता–स्त्री० [सं०] आनन्दमहापीठमें रथके मध्यपर्वमें चारों ओर निवास करनेवाली १५ अक्षरा देवियोंमेंसे एक अक्षरा देवी। तंत्रानुसार युद्धमें विजयके निमित्त इनकी पूजा की जाती है। इन्होंने भण्डके सेनापति पुण्ड्रकेतुका वध किया था (ब्रह्मां० ४.१९.५८; २५.९७; ३७.३४)।

त्वरितायु–पु० [सं०] कुरुवंशी राजा भौमका पुत्र तथा अक्रोधनका पिता (मत्स्य० ५०.३६)।

त्वष्टा–पु० [सं०] (१) कश्यप और अदितिका पुत्र, बारह आदित्योंमेंसे एक आदित्य (भाग० ६.६.३९; ३.६.१५; मत्स्य० ६.४; १७१.५६; वायु० ६६.६६; विष्णु० १.१५. १३०)। इसने महाराज पृथुको एक अच्छा रथ उपहार-

स्वरूप दिया था (भाग० ४.१५.१७)। रचना इसकी पत्नी थी जिससे सन्निवेश और विश्वरूप दो पुत्र हुए (भाग० ६.६.४४)। विश्वरूपके मरनेपर त्वष्टाने इंद्रके नष्ट करनेके हेतु एक यज्ञ किया जिससे वृत्र नामक एक भयंकर जीव उत्पन्न हुआ। देवताओंको दुःखी देख विष्णुने सबको दधीचि (दध्यञ्च) के पास भेजा जिनकी सहायतासे वृत्रासुर परास्त हुआ। इप (आश्विन) मासमें तपनेवाले सूर्यका नाम (भाग० १२.११.४३; वायु० ५२.२०; विष्णु० २.१.४०, १०.१६)। वायु तथा विष्णु पुराणानुसार माघ और फाल्गुनमें तपनेवाले सूर्यका नाम। देवासुर-संग्राममें यह शम्बरसे लड़ा था (विष्णु० २१.१२.५; ८.१०.२९)। इनके 'तेज'से विष्णुका चक्र, इंद्रका वज्र और शिवका त्रिशूल बना, अतः पैरोंको छोड़ विवस्वान्के सारे शरीरकी शल्यक्रिया हो गयी। पदोंको अमंगल समझा गया इसीसे उसकी पूजा भी नहीं होती है। इसने कुमारकार्त्तिकेयको एक मुर्गा दिया था जो इच्छानुसार रूप धारण कर सकता था (मत्स्य० ११.३. २२·३२; १५९.१०)। (२) (विष्णु पुराणानुसार विश्वकर्मा जो सूर्यके सात सारथियोंमेंसे एक तथा देवताओंके शिल्पी हैं (भाग० १०.६९.७ तथा विश्वकर्मा)। (३) एक प्रजापतिका नाम। (४) वृत्रासुरके पिताका नाम। इसीकारण वृत्रासुरका त्वाष्ट्र नाम पड़ा (भाग० ३.१९.२५; मत्स्य० १७३. १८)। (५) ग्यारहवें आदित्य जो आँखके अधिष्ठाता देवता माने गये हैं। (६) एक वैदिक देवता जो पशुओं तथा मनुष्योंके गर्भमें वीर्यका विभाग करते हैं। (७) चित्रा नक्षत्रके अधिष्ठाता देवताका नाम। (८) शुक्रके चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (ब्रह्मां० ३.१.७८, ८६; वायु० ६५.७७-८५; विष्णु० १.१५.१२१)। इसका विवाह विरोचनकी पुत्री विरोचिनी=यशोधरासे हुआ जिससे त्रिशिर विश्वरूप उत्पन्न हुए (ब्रह्मां० ३.१४.६; ५९.१७)। प्रह्लादी इनकी दूसरी पत्नी थी। इनकी पुत्री संज्ञाका विवाह सूर्यसे हुआ था (ब्रह्मां० २.२४.३४.३९)। इन्होंने सूर्यका तेज छीलकर घटा दिया जिससे विष्णुका चक्र बना (ब्रह्मां० ३.५९.५४ और ६५ तथा ३.५९.७१.८२)। शचीपतिके सोम पी लेनेके कारण इन्होंने उन्हें पृथ्वीपर गाड़ दिया जिससे श्राद्धयोग्य हविष्यानोंकी उत्पत्ति हुई (वायु० ७८.६; ९४.५६)। (९) मनस्युका एक पुत्र (विष्णु० २.१. ४०)। (१०) भौवन और दूषणाका पुत्र, विरोचनाका पति तथा विजराका पिता (भाग० ५.१५.१५; ब्रह्मां० २.१४. ७०; वायु० ३३.५९)। (११) ऋग्वेदके अनुसार इसे आदर्श कलाकार, देव-शिल्पी तथा अनेक प्रकारकी कलाओंमें प्रवीण माना गया है। इसे यूनानियोंका 'वलकन या हिफैसटौस' कह सकते हैं। यही सबको संतानोत्पादनकी शक्ति प्रदान करता है तथा गर्भावस्थामें सबके बच्चोंकी आकृति निश्चित करता है। शतपथ ब्राह्मणके अनुसार यही संसारके सब पदार्थोंकी आकृति निश्चित कर देता है। विश्वरूप नामका एक पुत्र इसे था जिसके तीन सिर, ६ आँखें थीं जिसे इंद्रने मारा था (भाग० ६.६.४४)। सुरेणु नामकी इसकी कन्या थी जिसका आगे चलकर संज्ञा नाम हुआ। यह विवस्वान्को ब्याही थी जिसके गर्भसे वैवस्वत मनु ज्येष्ठ, यम और यमुना जुड़वे हुए। यह पतिके प्रखर तेजसे त्रस्त होकर पितृ-गृह गयी तो पिताने भी पतिगृह जानेका ही आग्रह किया। तब अश्वा होकर उत्तर कुरु देशमें चली गयी सूर्य भी अश्वरूप हो वहाँ पहुँच गये। इसी अवस्थामें अश्विनीकुमारोंका जन्म हुआ था।

त्वाष्ट्री–स्त्री० [सं०] (१) विश्वकर्माकी पुत्री संज्ञाका नाम जिसका विवाह सूर्यसे हुआ था (ब्रह्मां० २.२४.३४, ३९)। यह अश्विनीकुमारोंकी माता थी। (२) कलिकी एक पत्नी (वायु० ८४.९)।

त्विपा–स्त्री० [सं०] मरीचि तथा संभूतिकी चार पुत्रियोंमेंसे एक पुत्री (ब्रह्मां० २.११.१२; वायु० २८.९)।

त्विपी–पु० [सं०] धर्मपुत्र सोम (वसु)का नामान्तर जो बुध ग्रहका पिता है (ब्रह्मां २.२४.८८-९०)।

त्विपिमान्–पु० [सं०] धर्मके पुत्र सोम (वसु)का नाम (वायु० ५३.८०)। चाक्षुप मन्वंतरमें यह कृत्तिकासे उत्पन्न हुआ (वायु० ५३.१०५)। इसकी पाँच किरणें हैं (वायु० ५३.८५)।

थ

थापना–स्त्री० [सं० स्थापना] (१) किसी मूर्त्तिकी पूजा करनेके पहिले उसकी शास्त्रोक्त विधिसे स्थापना तथा प्राणप्रतिष्ठा इत्यादि कर लेना आवश्यक है अन्यथा प्राणी प्रायश्चित्तका भागी होता है। (२) नवरात्रमें दुर्गाकी पूजा आरम्भ करनेके पूर्व जो घटस्थापन करते हैं।

थापा–पु० [हि०] हाथके पंजेका चिह्न जो हल्दी, मेंहदी, रंग आदिसे पुती हुई हथेलीको जोरसे दाबनेसे बन जाता है। पूजा तथा मंगलके अवसरपर इस प्रकारके चिह्न दीवार आदिपर बनाये जाते हैं जो शुभ समझा जाता है और जिन चिह्नोंकी पूजा भी होती है। विवाह आदिमें इसका बड़ा मान होता है। कहीं-कहीं कुल देवताके स्थानपर केवल यही चिह्न दे दिये जाते हैं।

थुक्कस–पु० [सं०] विपंगकी सहायताके लिए नियुक्त भण्डका एक सेनापति जिसे शिवदूतीने मारा था (ब्रह्मां० ४.२५. २८,९६)।

द

दंड–पु० [सं०] (१) संन्यासियोंके तीन दंड—वाग्दंड=बोलीको वशमें रखना। मनोदंड=मनको वशमें रखना। कायदंड=शरीरको वशमें रखना। संन्यासियोंका त्रिदंड इन्हींका द्योतक है। (२) इक्ष्वाकु राजाके सौ पुत्रोंमेंसे एकका नाम। ये तीन ज्येष्ठोंमें तीसरे थे। दंडकारण्यका नामकरण इन्हींके नामपर हुआ (भाग० ९.६.४; ब्रह्मां०

३.६३.९; वायु० ८८.९; विष्णु० ४.२.१२)। (३) कुबेरके एक पुत्रका नाम। (४) हिन्दू-शास्त्रानुसार राज्य चलानेका एक उपाय जो चार हैं—साम, दाम, भेद और दंड (ब्रह्मां० २.१९.१०६; वायु० ४९.१०३; मत्स्य० १२२.४४; १४८.६६.७६; २२२.२; २२५.१-१८; २२७.२१७)। (५) ललितादेवीकी सेनाका एक भैरव (ब्रह्मां० ४.१७.४)। (६) आठ वसुओंमें पहले वसु 'आप'के चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (मत्स्य० ५.२२)। (७) कुवलाश्वके तीन पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (मत्स्य० १२.३२)। (८) दक्षपुत्री क्रिया जो अपनी बड़ी और छोटी बारह बहिनोंके साथ धर्मको ब्याही गई थी, के ३ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (वायु० १०.३५)। (९) संन्यासियोंका दंड जिसे विष्णुपदपर रखकर पिण्डदान किये विना संन्यासी पितरोंके साथ तर जाता है (वायु० १०५.२६)।

दंडक–पु० [सं०] इक्ष्वाकु राजाके सौ पुत्रोंमेंसे एकका नाम। यह शुक्राचार्यका शिष्य था और इसने गुरु कन्याके साथ उसके विवाहके पूर्व एक बार रमण किया था। गुरुशापसे यह अपनी नगरी सहित भस्म हो गये थे। इनका देश जंगल हो गया जिसे 'दंडकारण्य' कहने लगे (भाग० ९.६.४; ब्रह्मां० ३.६३.९; वायु० ८८.९; विष्णु० ४.२.१२)।

दंडकारण्य–पु० [सं०] (१) विंध्याचल पर्वतसे गोदावरी तटतक फैला एक प्राचीन वनका नाम। वनवासके समय श्रीराम यहाँ बहुत दिनोंतक रहे थे। इसी वनमें शूर्पणखाके नाक-कान कटे थे और सीताहरण भी यहीं हुआ था (भाग० ९.११.१९; ब्रह्मां० ३.५.३६)। यहाँ बलराम भी आये थे (भाग० १०.७९.२०; रामा० अरण्य० दो० १३–३१ तक)। (२) दक्षिणापथका एक वन जो दक्षिण भारतमें है (ब्रह्मां० २.१६.५८; वायु० ४५.१२६)। यह स्वयं भी अति पवित्र तीर्थ है एवं अति पवित्र विशल्य तीर्थके कारण विख्यात है (ब्रह्मां० ३.१३.१०७)।

दंडगौरी–स्त्री० [सं०] एक अप्सराका नाम जो स्वर्गकी प्रसिद्ध अप्सराओंमेंसे एक थी। इसने इन्द्रसभामें अर्जुनके स्वागतार्थ नृत्य किया था (महाभा० वन० ४३·२९)।

दंडचण्डेश्वर–पु० [सं०] अविमुक्त क्षेत्रके रक्षक कई गणेश्वरोंमेंसे एक गणेश्वरका नाम (मत्स्य० १८३.६५)।

दंडधर–पु० [सं०] मनुका एक नाम (वायु० ५७.५८; ८५.८)।

दंडधार–पु० [सं०] (१) मगधनिवासी एक क्षत्रिय राजाका नाम जो कुरुक्षेत्रके युद्धमें दुर्योधनके पक्षसे लड़ा था और अर्जुनके हाथों मारा गया (महाभा० कर्ण० ८.१-१३)। यह 'क्रोधवर्धन' दैत्यके अंशसे उत्पन्न हुआ था (महाभा० आदि० ६७.४६)। (२) पांचालवंशोत्पन्न एक योद्धा जो महाभारतके युद्धमें पांडवोंकी ओरसे लड़ा था और कर्णके हाथों मारा गया (महाभा० कर्ण० ४९.२७)।

दंडनाथा–स्त्री [सं०] ललिता देवीकी एक सेनानायिका (ब्रह्मां० ४.१७.१८; २०.१२; ३६.३०)।

दंडनायक–पु० [सं०] (१) सूर्यके एक अनुचरका नाम। (२) शिवका एक प्रधानगण जो काशीमें पापियोंको नहीं रहने देता है (मत्स्य० १८५.४७, ५०, ६६)।

दंडनायिका–स्त्री० [सं०] दे० दंडनाथा।

दंडनीति–स्त्री० [सं०] राजनीतिकशास्त्र जिसका प्रवर्तक ब्रह्मा है (भाग० ३.१२.४४; ब्रह्मां० २.२९.८९; ३२.४०; ३५.१९५; विष्णु० ५.१०.२९) इसे देवी लक्ष्मीका प्रतीक माना है (विष्णु० १.९.१२१)।

दंडपाणि–पु० [सं०] (१) मेधावीका एक पुत्र एवं निरामित्रका पिता (वायु० ९९.२७६)। (२) काशी स्थित भैरवकी एक मूर्त्ति। काशीखंडके अनुसार पूर्णभद्र नामक एक यक्षको हरिकेश नामक एक पुत्र था जो बड़ा शंकर-भक्त था। शिवके वरदानसे यह काशीके दंडधर हुए। दुष्टोंका शासन और साधुओंकी रक्षाका भार इनको मिला। संभ्रम और उद्भ्रम नामक शिवके दो गण सहायतार्थ इनको मिले। कहते हैं विना इनकी पूजा किये काशीमें कोई मुक्ति नहीं पा सकता। (३) वहीनरका पुत्र तथा निमिका पिता (भाग० १.१७.३५; ९.२२.४३-४४; मत्स्य० ५०.७७; विष्णु० ४.२१.१५)।

दंडयाम–पु० [सं०] अगस्त्य मुनिका एक नाम—दे० अगस्त्य।

दंदशूक–पु० [सं०] (१) २८ नरकोंमेंसे एक जिसमें क्रूर तथा निर्दयी लोग साँप आदिसे डँसे जाते हैं (भाग० ५.२६.७, ३३)। (२) क्रोधवशासे उत्पन्न एक सर्पका नाम (भाग० ६.६.२८)। (३) वृत्रका एक अनुगामी जो इंद्र-वृत्रासुर संग्राममें लड़ा था [भाग० ६.१०(२०)]।

दंडा–स्त्री० [सं०] केतुमाल देशकी एक नदीका नाम (वायु० ४४.२२)।

दंडाक्ष–पु० [सं०] चम्पा नदीके तटपर स्थित एक तीर्थका नाम (महाभा०)।

दंडी–पु० [सं०] (१) दंड-कमंडलु धारण करनेवाला संन्यासी। ब्राह्मणके अतिरिक्त दूसरी जातिवालोंको दंडी होनेका अधिकार नहीं है। गुरुमंत्र देनेके पूर्व शिष्यके सब संस्कार फिरसे होते हैं। सिर फिरसे मूँड़ देते हैं और जनेऊ भस्म कर दिया जाता है। ये अपना भोजन पका नहीं सकते, पका भोजन भीख माँगकर ही सिर्फ एक बार खा सकते हैं। बारह सालके उपरांत दंडी परमहंस हो जाता है। मरनेपर दंडी जलाया नहीं जाता। उनके शवको या तो गाड़ दिये जाते हैं या जलमें प्रवाहित कर दिये जाते हैं। बुध इलाके पास इसी वेशमें गया था (मत्स्य० ११.५५)। (२) सूर्यके एक पार्श्वचरका नाम (मत्स्य० २६१.५)। (३) जिन देव। (४) धृतराष्ट्रके एक पुत्रका नाम (महाभा०)। (५) एक भार्गव गोत्रकार ऋपि (मत्स्य० १९५.१७)।

दंडिनी–स्त्री० [सं०] दे० दंडनाथा (ब्रह्मां० ४.२०.६८-६९)।

दंतकाण्वोशना–पु० [सं०] उमा और महादेवका एक पुत्र (वायु० ७२.१६)।

दंतदर्शन–पु० [सं०] युद्धमें पहिले दंतदर्शन कराके तब आवाज देकर वार करते थे (महाभा०)।

दंतपवन–पु० [सं०] कृष्णाष्टमी व्रतमें अश्वत्थ, बड़ आदि ६ वृक्षोंके दतवन करनेका विधान है (मत्स्य० ५६.८)।

दंतपुष्पवान्–पु० [सं०] एक हाथीका नाम (वायु० ६९.२२१)।

दंतवक्त्र–पु० [सं०] (१) वृद्धशर्माका पुत्र तथा करूप देशका एक राजा जो शिशुपालका भाई था और श्रीकृष्णके

हाथों मारा गया था (महाभा० सभा० १४.१२)। (२) दितिका एक पुत्र पर एक ऋषिके शापके कारण श्रुतदेवासे उत्पन्न हुआ (भाग० ९.२४.३७; ब्रह्मां० ४.२९.१२२; वायु० ९६.१५५) तथा करुपराज वृद्धशर्मांका पुत्र हुआ (ब्रह्मां० ३.७१.१५६; विष्णु० ४.१४.४०) (३) चैद्यका भाई (भाग० ७.१.२२,३७; १०.३८)। मथुरा तथा गोमंत आक्रमणके समय जरासंधके सहायतार्थ यह भाईके साथ मथुराके पूर्वी प्रवेशद्वार तथा गोमंतके पश्चिमी प्रवेश द्वारपर था। यह कलिंगका राजा था और यमुनासे मथुरा आनेके समय श्रीकृष्णपर आक्रमण करनेके कारण कृष्ण द्वारा मारा गया। दे० दंतवक्त्र (२)।

दंतिवदन–पु० [सं०] दे० गणनाथ (ब्रह्मां० ४.२७.७७)।

दंभ–पु० [सं०] (१) मृषा और अधर्मका पुत्र तथा मायाका भाई (भाग० ४.८.२)। (२) आयुके पांच महारथी पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (मत्स्य० २४.३५)।

दंभा–स्त्री० [सं०] कुश द्वीपकी सात प्रधान नदियोंमेंसे एक नदी (ब्रह्मां० २.१९.६२)।

दंश–पु० [सं०] सत्ययुगका एक बड़ा प्रतापी असुर जो एक बार भृगु मुनिकी पत्नी हरकर ले गया। मुनिके शापसे दंश नरकका कीड़ा हो गया। कर्ण जब परशुरामके यहाँ शस्त्र-विद्या सीख रहे थे तब एक दिन परशुराम कर्णकी जंघापर सिर रख सो गये। इतनेमें कीटरूपी दंशने कर्णकी जंघामें काटा और रक्त निकाल दिया। रक्तके लगनेसे परशुराम जाग गये तब उस कीड़ेने परशुरामके देखते ही प्राण त्याग दिया और अपने असली रूपमें आ गया। शापसे दंश अलर्क कीटकी योनिमें उत्पन्न हुआ था—दे० अलर्क। (महाभा० शान्ति० ३.१४-१५, १९-२३)।

दंष्ट्रा–स्त्री [सं०] क्रोधवशाकी बारह पुत्रियोंमेंसे एक पुत्री, जो अपनी ११ बड़ी छोटी बहिनोंके साथ पुलहको व्याही थी, का नाम (ब्रह्मां० ३.७.१७२; वायु० ६९.२०५)। इससे सिंह, व्याघ्र, गेंडे आदि उत्पन्न हुए थे (ब्रह्मां० ३.७.४१२)।

दंष्ट्राल–पु० [सं०] एक राक्षस जिसके दाँत बहुत बड़े-बड़े थे।

दंष्ट्राला–स्त्री० [सं०] अन्धकासुर रक्तपानार्थ शिवजी द्वारा सृष्ट एक मानसपुत्री मातृका (मत्स्य० १७९.२३)।

दंष्ट्री–पु० [सं०) एक प्रधान वंदर नायकका नाम (ब्रह्मां० ३.७.२३३)।

दक्ष–पु० [सं०] (१) एक प्रजापतिका नाम जिनसे देवता उत्पन्न हुए थे। यह अदितिके पिता थे, अतः इन्हें देवताओंका आदिपुरुष कहते हैं। शतपथ ब्राह्मणके अनुसार दक्ष सृष्टिका पालक और पोषक है। दक्षको विष्णुस्वरूप कहा गया है। महाभारत और पुराणोंमें दक्षका वर्णन है। मत्स्यपुराणानुसार दक्षने जब देखा कि मानस सृष्टिसे यथेष्ट वृद्धि नहीं होती तब उन्होंने मैथुन द्वारा सृष्टिका विधान चलाया।

गरुड़पुराणानुसार ब्रह्माने सृष्टिकी कामनासे धर्म, रुद्र, मनु, भृगु तथा सनकादिको मानस पुत्र, फिर दाहिने अँगूठेसे दक्ष-पत्नीको उत्पन्न किया। इस पत्नीसे दक्षको दस कन्याएँ उत्पन्न हुईं जिन्हें दक्षने ब्रह्माके मानसपुत्रोंको दे दिया। रुद्रको दक्षकी सती नामकी कन्या मिली (मत्स्य० ६०.६-७, १०-११; १४५.९०), जो विना बुलाये ही दक्षका अश्वमेध यज्ञ देखने पहुँच गयी। बिना बुलाये आनेके कारण अपमानित हुई और शरीर त्याग दिया (मत्स्य० ४.५४)। इसपर शिवने दक्षको शाप दिया जिसके प्रभावसे ध्रुवके वंशज प्रचेतागणकी पत्नी कंडुकन्या मारिषाके गर्भसे दक्ष उत्पन्न हुए। चाक्षुष मन्वंतरके आरम्भमें यह संसारके प्राणियोंकी वृद्धिके लिए उत्पन्न हुए थे (भाग० ४.३०.४९ ५१; ब्रह्मां० ४.१.२४, ३९-४४)। दक्षने वीरण प्रजापतिकी पुत्री असिक्नीसे विवाह किया और उससे सहस्र पुत्र = (हर्यश्वगण) और ६० कन्याएँ उत्पन्न कीं। कश्यप आदिने इन्हीं कन्याओंसे सृष्टि चलायी (भाग० ६.४ पूरा; विष्णु० १.१५.१०, ८०-१; ब्रह्म० ४०.२-१००)। (२) चित्रसेनका पुत्र तथा मीढ्वानका पिता (भाग० ९.२.१९)। (३) उशीनरके चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (भाग० ९.२३.३)। (४) इनकी सृष्टि प्राणसे हुई, आधा तेज प्रचेताका और आधा सोमका था। वैवस्वत मन्वंतरमें इन्होंने २ टाँग और चार टाँगवाले प्राणी बनाये (ब्रह्मां० १.५.७०; वायु० ६३.३५-४८; १२१ १५८)। यह प्रजापतियोंके अधिपति थे (वायु० ७०-५; १०१.३५.४९)। चाक्षुष मन्वंतरमें त्र्यंबकके शापसे इन्हें 'प्रचेतसत्त्व' प्राप्त हुआ था। यह सप्तर्षियोंके श्वशुर थे (ब्रह्मां० २.१३.४०-६९)। (५) एक असुर जो बाष्कलका एक पुत्र था (ब्रह्मां० ३.५.३८)। (६) तृणविन्दुसे पुराण सुनकर इन्होंने शक्तिको सुनाया था (ब्रह्मां० ४.४.६५)। (७) देवातिथिका पुत्र तथा भीमसेनका पिता (मत्स्य० ५०.३७)। (८) भृगुके १२ देवयाज्ञिके पुत्रोंमेंसे एक पुत्र तथा धर्म और विश्वासे उत्पन्न १२ विश्वदेवोंमेंसे एक (मत्स्य० १९५.१३; २०३.१३; वायु० ६६.३१)। (९) सुरूपा और अंगिराके १० पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (मत्स्य० १९६.२; वायु० ६५.१०५)। (१०) एक प्रवर ऋषि (मत्स्य० १९६.३०)। (११) माघ और फाल्गुनमें सूर्यके साथ (वायु० ५२.२३)। (१२) जंभका एक पुत्र (वायु० ६७.७८)।

दक्षक्रतुध्वंसी–पु० [सं०–सिन्] दक्ष प्रजापतिके अश्वमेध यज्ञको विध्वंस करनेके कारण शिवका नाम। दक्षने इस यज्ञमें शिवको छोड़ अपने सब दामादोंको बुलाया था। सती विना बुलाये शिवजीके मना करने पर भी गई वहाँ अपमान न सह सकनेके कारण योगाग्निमें भस्म हो गईं। इससे क्रुद्ध हो शंकरने वीरभद्रको उत्पन्न कर उसीसे यज्ञका ही ध्वंस करा दिया तथा मनुष्य होनेका शाप भी दिया (मत्स्य० ४.५; वायु० ३० पूरा; ब्रह्मां० ४३-४४)।

दक्षसावर्णि–पु० [सं०] नवें मनुका नाम जो वरुणसे उत्पन्न हुए थे (भाग० ८.१३.१८)। इनके युगमें पार, मरीचिगर्भ और सुधर्मा प्रत्येक वर्गमें १२ देवता थे। 'अद्भुत' इन्द्र थे। सवन, द्युतिमान् आदि सप्तर्षि थे। धृतिकेतु आदि इनके पुत्र थे (विष्णु० ३.२.२०-२४)।

दक्षा–स्त्री० [सं०] केतुमाल देशकी एक नदी (वायु० ४४.१९)।

दक्षिणकर्णाटक–पु० [सं०] इस देशमें ऋषभ गये थे (भाग० ५.६.७)।

दक्षिणनर्मदा–स्त्री० [सं०] दक्षिणकी एक नदी (वायु० ७७.८)।

दक्षिणपंथा–पु० [सं०] यमके निवास स्थानमें पहुँचनेका

दक्षिण मार्ग। यह शवोंकी समाधिका स्थान है (ब्रह्मां० २.२७.१२५; ३५.१४७; वायु० ६१.१२३)।

दक्षिणप्रवण—पु० [सं०] मनुके अनुसार ऐसा स्थान जो उत्तरसे दक्षिणकी ओर ढालू हो। ऐसा स्थान श्राद्धादिके लिए श्रेष्ठ है।

दक्षिणमानस—पु० [सं०] एक तीर्थस्थान। नियमानुसार उत्तरमानससे दक्षिणमानस मूक होकर जाना चाहिये तदुपरांत उदीचीतीर्थ जहाँ तीन तीर्थ स्थित हैं जाना चाहिये (वायु० १११.६-८)।

दक्षिणमार्ग—पु० [सं०] इसके तीन मार्ग हैं मूल, पूर्वाषाढा तथा उत्तराषाढा=अजवीथि, श्रवण, धनिष्ठा तथा शतभिषक् मार्गीवीथि तथा पूर्वाभाद्रपदा, उत्तराभाद्रपदा और रेवती वैश्वानरीवीथि हैं (ब्रह्मां० ३.३.५३)।

दक्षिणा—स्त्री०[सं०](१) वह धन जो यज्ञादिके पश्चात् ब्राह्मणोंको दिया जाता है। (२) पुराणोंमें दक्षिणाको यज्ञकी वहिन तथा पत्नी और १२ याम देवोंकी माता वतलाया है (विष्णु० १.७.२१)। ब्रह्मवैवर्त्तपुराणानुसार कार्त्तिकी पूर्णिमाकी रातको जो रास हुआ था उसीमें श्रीकृष्णके दक्षिणांशसे 'दक्षिणा' की उत्पत्ति कही गयी है। (३) रुचि तथा आकूतिकी एक पुत्री, सुयज्ञकी पत्नी। इसके १२ तुषित देव (याम) पुत्र थे। यह स्वायंभुव मनुके समयके थे (भाग० २.७.२; ४.१.५.८; ब्रह्मां० २.९.४४)।

दक्षिणाग्नि—स्त्री० [सं०] यह वेदोंके मुखका (ऊपरके ओठका) प्रतीक है (वायु० १०४-८५)।

दक्षिणाग्निपद—पु० [सं०] यह तीर्थ गयामें है (वायु० १११.५०)।

दक्षिणाचल—पु० [सं०] मलय पर्वतका नाम जहाँपर अगस्त्याश्रम था (मत्स्य० ६१.४०)।

दक्षिणापथ—पु० [सं०] एक राज्य जहाँ सुद्युम्नके तीन पुत्र राज्य करते थे (भाग० ९.१.४१)। नर्मदाक्षेत्र इसीमें सम्मिलित है (ब्रह्मां० ३.१०.९८; ६३.९-१०; मत्स्य० १५.२८; ११४.२९; वायु० ४५.१२४)। गार्ग्यने यहाँ तपस्या की थी (विष्णु० ५.२३.२)।

दक्षिणामूर्त्ति—स्त्री० [सं०] शंकरकी एक मूर्त्ति विशेष—दे० 'तंत्रसार'।

दक्षिणायन—पु० [सं०] पुराणानुसार सूर्यके दक्षिणायनमें रहने पर भैरव, वराह, नृसिंह आदिकी प्राण प्रतिष्ठा तो हो सकती है पर कुआँ तालाव, मंदिरादि वनवाना निषिद्ध है। तव अन्य देवताओंकी प्राणप्रतिष्ठा भी नही करनी चाहिये (वायु० ५०.९२.१३६; ५१.७३; ब्रह्मां० २.२१.३५-६,६७)।

दक्षिणार्क—पु० [सं०] दक्षिणमें गया सूर्य भगवान् अर्थात् दक्षिणायनके सूर्यने अन्य देवता और तीर्थोंके साथ गदाधर भगवान्की गथामें गयाशिरके निकट स्तुति की थी और गदाधरके साथ उसपर रहना स्वीकार किया था (वायु० १०९.२१)।

दग्धरथ—पु० [सं०] इन्द्रके सारथि चित्ररथ गंधर्वका नाम।

दत्तक—पु० [सं०] उमाका एक पुत्र (ब्रह्मां० ३.१०.१८)।

दत्तात्रेय—पु० [सं०] (१) एक प्रसिद्ध प्राचीन ऋपि जो पुराणानुसार विष्णुके चौवीस अवतारोंमेंसे एक माने जाते हैं। यह परम योगी (भाग० २.७.४५) तथा सिद्ध थे(भाग० ६.८.१६; १५.१८)। यह ब्रह्मवादिनी अवलाके भाई थे (वायु० ७०.७६)। मार्कण्डेयपुराणानुसार प्रतिष्ठानपुरमें कौशिक नामक एक कोढ़ी ब्राह्मण था जो पूर्व जन्मके पापोंके कारण कुष्ठ रोगसे पीड़ित था। वह एक वेश्यापर आसक्त हो गया। उसके आज्ञानुसार उसकी पतिव्रता स्त्री उसे कन्धेपर बैठाकर अंधेरी रातमें जव उस वेश्याके घर जा रही थी तो मार्गमें मांडव्य ऋपिके शरीरसे ब्राह्मणका पैर लग गया। ऋपिने शाप दे दिया कि सूर्योदयतक मर जाओ। सती स्त्रीके प्रतापसे जव सूर्य नहीं निकला तव सर्वत्र हाहाकार मच गया। देवता लोग ब्रह्माके कहनेसे अत्रि ऋपिकी पत्नी अनसूयाके पास गये (मार्कण्डेयपु० १६.४८-४९; ५१.५२; ५४.५५; ६१-६३, ६८ आदि)। अनसूयाने ब्राह्मण-पत्नीको आश्वासन दिया कि उसके पति फिरसे सजीव और साथ-साथ नीरोग भी हो जायँगे। तव कहीं जाके सूर्योदय हुआ और अनसूयाने ब्राह्मणको पुनः जिला भी दिया। इस सहायताके उपलक्ष्यमें देवताओंसे अनसूयाको उसके इच्छानुसार वर मिला कि ब्रह्मा, विष्णु और महेश तीनों उसके गर्भसे जन्म ग्रहण करेंगे। तदनुसार ब्रह्माने सोम वनकर, विष्णुने दत्तात्रेय वन और शिवने दुर्वासाके रूपमें अनसूयाके घर जन्म लिया—'सोमो ब्रह्माभवद्विष्णुर्दत्तात्रेयोऽभ्यजायत। दुर्वासाः शङ्करो जज्ञे वरदानाद्दिवौकसाम् ॥'—मार्कण्डेय पु० १७.११। कहते हैं कि हैहयराज द्वारा अत्रि मुनिको वहुत कष्ट मिलनेपर दत्तात्रेय क्रुद्ध होकर सातवें ही दिन गर्भसे निकल आये थे। यह वड़े योगी थे, सदा योग साधन ही किया करते थे। भागवतानुसार इन्होंने २४ पदार्थोंसे शिक्षा ग्रहण की थी जिन्हें यह अपना गुरु मानते थे। वे २४ पदार्थ ये हैं—पृथ्वी, वायु, आकाश, जल, अग्नि, चन्द्रमा, सूर्य, कबूतर, अजगर, सागर, पतंग, मधुकर (भौंरा तथा मधुमक्खी), हाथी, मधुहारी, हरिन, मछली, पिंगला वेश्या, गिद्ध, वालक, कुमारी कन्या, वाण वनानेवाला, साँप, मकड़ी और तितली (विष्णु० १.१०.८; भाग० २.७.४; ४.१.१५-३३; ११.४.१७; ब्रह्मां० ३.८.८२; ४.२८.८९; वायु० ७०.७६-८)। (२) स्वारोचिप मन्वंतरके सप्तर्पियोंमेंसे एक ऋषि (मत्स्य० ९.८)।

दत्तालि—पु० [सं०] (विष्णु०—दत्तोलि) प्रीता और पुलस्त्यका एक पुत्र। पूर्व जन्ममें यह अगस्त्य था (वायु० २८.२२; विष्णु० १.१०.९)।

दत्तेय—पु० [सं०] इन्द्र।

दत्तोत्रि—पु० [सं०] (१) एक पौलस्त्य जो स्वारोचिष मन्वंतरके सप्तर्पियोंमेंसे एक थे (ब्रह्मां०, २.३६.१८)। (२) मनुने अत्रिको इसे पुत्रवत् दिया था—दे० उत्तानपाद; (ब्रह्मां० २.३६.८५; ३.४७.६५)।

दत्तोपनिषद्—पु० [सं०] एक उपनिषद्का नाम।

दत्तोलि—पु० [सं०] पुलस्त्य मुनिके एक पुत्रका नाम। (विष्णु० १.१०.९)।

दधिकाँदो—पु० [सं० दधि+हिं० काँदो] जन्माष्टमीके समय होनेवाला एक उत्सव जिसमें हल्दी मिला हुआ दही लोग एक दूसरेके ऊपर फेंकते हैं। ऐसी प्रसिद्धि है कि जिस समय श्रीकृष्णका जन्म हुआ था उस समय गोपों और गोपिकाओंने आनन्द मग्न होकर इतना दधि फेंका था कि गलीमें कीचड़-

सा हो गया था।

दधिका–पु० [सं०] एक वैदिक देवताका नाम जिनका आकार घोड़ेके समान माना जाता है।

दधिक्राव–पु० [सं०] रोहित मन्वन्तरके १२ मरीचि देवोंमेंसे एक मरीचि देवका नाम (ब्रह्मां० ४.१.५८)।

दधिधेनु–स्त्री० [सं०] दान देनेके लिए एक गौ जिसकी कल्पना दधिके मटकेमें की जाती है।

दधिपंचमुख–पु० [सं०] ब्रह्माके द्वारा गयामें गयासुरके शरीरपर किये गये यज्ञके कई ऋत्विजोंमेंसे एक ऋत्विक् (वायु० १०६.३७)।

दधिमंडोद–पु० [सं०] पुराणानुसार दधिका समुद्र जो शाकद्वीप (भाग० ५.१.३३; २०.२४) ब्रह्मांडपुराणानुसार क्रौंचद्वीपके चारों ओर है। इसे दधिसिंधु भी कहते हैं। यह ९ सिन्धुओंमेंसे एक है (ब्रह्मां० २.१९.७७; ४.३१.१९; मत्स्य० १२२.९२; विष्णु० २.४.५७)।

दधिमुख–पु० [सं०] (१) श्रीरामकी सेनाका एक बन्दर जो सुग्रीवका मामा था तथा मधुवनकी रक्षा करता था (रामायण)। (२) एक प्रधान काद्रवेय नाग (ब्रह्मां० ३.७.३५; वायु० ६९.७२)।

दधिव्रत–पु० [सं०] श्रावण शु० १२ को श्रीधर भगवानको विराजित कर अहोरात्र उत्सव करनेसे पंचयज्ञका फल प्राप्त होता है (महाभा० दानधर्म)।

दधिवाहन–पु०[सं०] दैत्यराज बलिका पुत्र और अंग देशका राजा। रानी सुदेष्णाकी भूलसे इसे अपान नहीं था, अतः इसे 'अनपान' कहते थे। यह दिविरथका पिता था (ब्रह्मां० ३.७४.१०२-३; मत्स्य० ४८-९१; वायु० ९९.१००)।

दधिसागर–पु० [सं०] पुराणानुसार दहीका सागर। दे० दधिमंडोद (ब्रह्मां० २.१९.७७; ४.३१.१९; मत्स्य० १२२.९२; विष्णु० २.४.५७)।

दधिसुत–पु० [सं०] (१) चन्द्रमा। (२) जालंधर दैत्यका नाम।

दधीचि–पु० [सं०] (१) दध्यञ्च, दध्ङ्। एक वैदिक ऋषि जो यास्कके मतानुसार चित्ति और अथर्वाके पुत्र थे और इसीलिए दधीचि कहलाते थे (भाग० ४.१.४२)। किसी पुराणके अनुसार यह कर्दम ऋषिकी कन्या शांतिके गर्भसे उत्पन्न अथर्वाके पुत्र थे। अन्य पुराणानुसार यह शुक्राचार्यके पुत्र थे। इंद्रसे इन्होंने मधुविद्या सीखी थी, पर इंद्रके आदेशानुसार किसीको बता नहीं सकते थे। इसपर अश्विनीकुमारोंने इनका सिर काटकर घोड़ेका सिर लगा दिया और तब इनसे मधुविद्या सीखी थी। इंद्रने क्रोधवश इनका घोड़ेवाला सिर काट दिया लेकिन अश्विनीकुमारोंने पुनः पहला सिर लगा दिया था। इन्होंने अश्विनीकुमारोंको अश्वशिरस मंत्र और नारायणवर्म त्वष्टाको सिखलाया था और इन लोगोंने विश्वरूपको।

वृत्रासुर, जिसके उपद्रवसे संसार घबड़ा उठा था, दधीचिकी ही हड्डियोंसे बने अस्त्रसे इंद्र द्वारा मारा गया था। संसारके कल्याणके लिए इन्होंने इतना बड़ा त्याग किया था, अतः अपनी दानशीलताके लिए विख्यात हो गये (भाग० ६.९.५१-५५; १०.२-१३; ११.२०; ८.२०.७)। महाभारतके अनुसार इन्होंने दक्षको अन्य जामाताओंके साथ शंकरको भी निमंत्रण देनेकी सलाह दी थी और जब दक्ष सहमत नहीं हुए यह यज्ञ छोड़ चले गये थे (महाभा० शान्ति० २८४.१२-२१) एक बार यह कठिन तपस्या कर रहे थे, इंद्रने तप-भ्रष्ट करनेके हेतु अलंबुषा नामक अप्सरा भेजी। उसे देख इनके स्खलित वीर्यसे एक पुत्र उत्पन्न हुआ जो सारस्वतके नामसे प्रसिद्ध हुआ। सुदर्शन नामका भी इनका एक पुत्र था। सुवर्चासे उत्पन्न पिप्पलाद नामक इनका एक पुत्र और था (स्कंद० माहेश्वर० केदारखंड)। (२) च्यवन भार्गवके पुत्र तथा सरस्वतीके पति जिससे सारस्वत नामक एक पुत्र हुआ (ब्रह्मां० ३.१.९३-४; वायु० ६५.९०)। यह गर्भसे ही ऋषि थे (वायु० ५४.९४) तथा मंत्रकृत् भी थे (वायु० ५९.९६)। (३) वैराज मनुके पुत्र (वायु० २१.४१; ३०.१०२)।

दध्यंच, दध्यंग–पु० [सं०] अथर्वा अग्निका पुत्र है (ब्रह्मां० २.१२.१०; वायु० २९.८)।

दध्न–पु० [सं०] एक यमका नाम, जो १४ यमोंमेंसे एक है।

दनायु–पु० [सं०] दक्षकी ६० पुत्रियोंमेंसे एक और कश्यपकी पत्नी। इसके चार पुत्र हुए विक्षर, बल, वीर और महान् असुर वृत्र (महाभा० आदि० ६५.२१-३६)।

दनापुप–पु० [सं०] अरूरुके पिता तथा धुंधुके दादाका नाम।

दनायुपा–स्त्री० [सं०] अरूरु, बलि, जम्भ, विरक्ष (विक्षर?) और विप इन पाँच वीर पुत्रोंकी माता (वायु० ६८.३०)।

दनु–स्त्री० [सं०] (१) दक्ष प्रजापतिकी पुत्री और कश्यप ऋषिकी पत्नीका नाम जो दानव-माता कही जाती है। इसके चालीस दानव पुत्रोंके नाम ये हैं :—

विप्रचित्ति, शंबर, नमुचि, पुलोमा, असिलोमा, केशी, दुर्जय, अयःशिरा, अश्वशिरा, अश्वशंकु, गगनमूर्द्धा, स्वर्भानु, अश्व, अश्वपति, वृषपर्वा, अजक, अश्वग्रीव, सूक्ष्म, तुहुंड, एकपद, एकचक्र, विरूपाक्ष, महोदर, निचन्द्र, निकुंभ, कुजट, कपट, शरम, शलभ, सूर्य, चन्द्र, एकाक्ष, अमृतप, प्रलंब, नरक, वातापि, शठ, गविष्ठ, वनायु और दीर्घजिह्व (मत्स्य० ६.१,१६; १४६.१८; १७१.२९.५८;)। इनमें जो सूर्य और चन्द्र हैं वे देवता सूर्य और चन्द्रसे पृथक हैं।

वायु०के अनु० दनुके कश्यपसे १०० पुत्र हुए उनमें प्रधान–द्विमूर्धा, शङ्कुकर्ण, शङ्कुनिरामय, शङ्कर्ण, महाविश्व, गवेष्ठि, दुन्दुभि, अजामुख, शिल, अमनस्, मरीचि, अक्षक, महागार्ग्य, अङ्गिरावृत, विक्षोभ्य, सुकेतु, सुवीर्य, सुहृद, इन्द्रजित्, विश्वजित्, सुरविमर्दन, एकचक्र, सुबाहु, तारक, वैश्वानर, पुलोमा, प्रवीण, महाशिरा, स्वर्भानु, वृषपर्वा, मुण्डक, धृतराष्ट्र, सूर्य, चन्द्र, इन्द्र, तापिन, सूक्ष्म, निचन्द्र, ऊर्णनाम, महागिरि, असिलोमा, सुकेश, गगनमूर्धा, कुम्भनाम, महोदर, प्रमोदाह, कुपथ, हयग्रीव, विरुपक्ष, सुपथ, अज, हिरण्मय, शतमाय, शम्पर, शरम इत्यादि। इनमें सूर्य और चन्द्रमा असुरोंके देवता हैं। ये वर्तमान सूर्य चन्द्रसे भिन्न हैं (वायु० ६८.४-१२)।

मत्स्य०के अनुसार दनुके कश्यपसे १०० पुत्र हुए उनमेंसे प्रधान—विप्रचित्ति, द्विमूर्धा, शकुनि, शङ्कशिरोधर, अयोमुख, शम्बर, कपिश, मारीच, मेघवान्, इणगर्भशिरा,

विद्रावण, केतु, केतुवीर्य, शतह्रद, इन्द्रजित्, सप्तजित्, वज्रनाम, एकचक्र, महावाहु, वज्राक्ष, तारक, असिलोमा, पुलोमा, विन्दु, वाण, स्वर्भानु, वृषपर्वा आदि (मत्स्य० ६.१६-२०)।

भाग०के अनुसार दनुके ६१ पुत्र हुए—उनमेंसे प्रधान—द्विमूर्धा, शम्बर, अरिष्ट, हयग्रीव, विभावसु, अयोमुख, शङ्कुशिरा, स्वर्भानु, कपिल, अरुण, पुलोमा, वृषपर्वा, एकचक्र, अनुतापन, धूमकेश, विरूपाक्ष, अजेय विप्रचित्ति इत्यादि।

विष्णु० के अनुसार दनुके ६१ पुत्र हुए। उनमेंसे प्रधान—द्विमूर्धा, शम्बर, अयोमुख, शङ्कुशिरा, कपिल, शङ्कर, एकचक्र, महावाहु, तारक, स्वर्भानु, वृषपर्वा, पुलोमा विप्रचित्ति आदि (विष्णु० १.२१.४-६)। (२) अन्धकासुर रक्तपानार्थ शिवजी द्वारा सृष्ट कई मानस मातृकाओंमेंसे एकका नाम (मत्स्य० १७९.१९)। (३) पु० [सं०] श्री दानवके पुत्र एक दानवका नाम। (४) कश्यप और दितिका पुत्र जो पुरोहित था (ब्रह्मां० ४.९.३)। (५) अंगिरसका एक पुत्र (वायु० ६५.१०५)। (६) मायाके लिए विख्यात (वायु० ६९.९३)।

दनुपुत्र—पु० [सं०] दनुके कश्यपसे वड़े वीर तथा पराक्रमी १०० असुर पुत्र हुए थे जिनमें विप्रचित्ति प्रधान था (वायु० ६८.१-१६)।

दनुजराय—पु० [सं०] दानवराज हिरण्यकशिपुका नाम।

चन्दनोदकदुंदुभि—पु० [सं०] यह कपोतरोमाका पौत्र तथा विलोमाका पुत्र तथा तुम्बुरुका सखा था इसका दूसरा नाम अन्धक था दे० अंधक (ब्रह्मां० ३.७१.११८)।

दम—पु० [सं०] (१) पुराणानुसार वभ्रुकी पुत्री इंद्रसेनाके गर्भसे उत्पन्न नरिष्यंतका पुत्र तथा मरुत्त राजाका पौत्र। यह नव वर्षोंतक गर्भमें रहे थे और इनकी माताको नव वर्षोंतक इंद्रिय दमन करना पड़ा था, इसीसे इनका नाम 'दम' रख दिया गया था। इन्होंने महर्षि शक्तिसे वेद-वेदांगोंकी शिक्षा तथा राजर्षि आर्ष्टिषेणसे योगविद्या सीखी थी। यह वेद-वेदांगोंके पण्डित तथा धनुर्विद्याके आचार्य थे। दैत्यराज वृषपर्वासे इन्होंने संपूर्ण धनुर्वेदकी शिक्षा पायी थी तथा तपोवननिवासी दैत्यराज दुंदुभिसे अस्त्र प्राप्त किये थे। दशार्ण देशके राजा चारुवर्माकी पुत्री सुमना इनकी पत्नी थी। दमके पिता नरिष्यंतको, जो वनमें स्त्री सहित तपस्वीकी दशामें रहते थे, संक्रंदनने पुत्र, दक्षिण देशके (विदर्भ तथा कुण्डिनपुर) राजकुमार वपुष्मान्‌ने मार डाला था और इंद्रसेना, (नरिष्यंतकी पत्नी) पतिके शवके साथ सती हुई। यह समाचार सुन दमने वपुष्मान्‌को युद्धमें परास्त कर मार डाला (मार्कण्डेय०, दमचरित्र)। (२) विदर्भ राजा भीमके एक पुत्रका नाम जो दमयंतीके भाई थे (महाभा० वन० ५३.९)। (३) मरुत्तका एक पुत्र तथा राज्यवर्धनके पिताका नाम (भाग० ९.२.२९)। (४) दक्षपुत्री धर्मकी १३ पत्नियोंमेंसे एक क्रियाका एक पुत्र इसके भाईका नाम शम है (ब्रह्मां० २.९.६०)। (५) सुधामा वर्गके १२ देवोंमेंसे एक देवता (ब्रह्मां० २.३६.३७)। (६) आभूतरय वर्गके १२ देवोंमेंसे एक देवता (ब्रह्मां० २.३६.५५)। (७) तामस मन्वन्तरके वैकुण्ठ वर्गके १४ देवोंमेंसे एक वैकुंठ देवता (ब्रह्मां० २.३६.५७)। (८) नरिष्यंतका एक पुत्र तथा विक्रांतका (राष्ट्रवर्धन=ब्रह्मां०; राजवर्धन=विष्णु०) पिता (ब्रह्मां० ३.६१.८; वायु० ८६.१२; विष्णु० ४.१.३६)। (९) भार्गवोंका एक आर्षेय प्रवर (मत्स्य० १९५.३६)। (१०) मणिवर और देवजनीके कई यक्ष और गुह्यक पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (वायु० ६९.१६०)। (११) सावर्णिकमन्वंतरके २० अमिताम वर्गके देवोंमेंसे एक देव (वायु० १००.१८)। (१२) ऋष्यंतका एक पुत्र (वायु० ७०.३०)।

दमघोष—पु० [सं०] चेदि-नरेश शिशुपालके पिताका नाम (भाग० ७०.७४.३०; वायु० ९६.१५८)। इनकी रानीका नाम श्रुतश्रुवा है (भाग० ९.२४.३९; ब्रह्मां० ३.७१.१५९; विष्णु० ४.१४.४४)। पुत्रका विवाह रुक्मिणीसे ठीक करने यह भीष्मकके पास कुण्डिनपुर गये थे (भाग० १०.५३.१४-१६)। गोमंतके घेरेके समय यह जरासंधके पक्षसे दक्षिण ओर थे [भाग० १०.५२.११(८)]।

दमन—पु० [सं०] (१) वसुदेव और रोहिणीका एक पुत्र (ब्रह्मां० ३.७१.१६५; मत्स्य० ४६.१२; वायु० ९६.१६३)। (२) इन्द्रियोंकी चंचलताको वशमें रखनेके कारण शंकरका एक नाम। (३) अंगिरसका एक पुत्र (मत्स्य० १९६.२)। (४) एक ऋषि विशेष जिनके आशीर्वादसे दमयंतीका जन्म हुआ था (महाभा० वन० ५३.६-८)। (५) ब्रह्माके यज्ञका एक ऋत्विक् (वायु० १०६.३६)। (६) एक राक्षसका नाम। (७) तीसरे द्वापरमें ईश्वरका एक अवतार जिसके विशोक आदि ४ पुत्र थे (वायु० २३.१२३)।

दमयंती—स्त्री० [सं०] निषध देशके राजा वीरसेनके पुत्र राजा नलकी पत्नीका नाम। यह विदर्भ-नरेश भीमसेनकी पुत्री थी और दमन नामक ऋषिके वरदानसे उत्पन्न हुई थी—दे० नल, दमन, भीमसेन तथा महाभा०।

दमिन—पु० [सं०] कुशद्वीपकी ब्राह्मण जाति अर्थात् वहाँके चार वर्णोंमेंसे पहला वर्ण (ब्राह्मणजाति) (विष्णु० २.४.३८)।

दम्पत्यष्टमी—स्त्री० [सं०] कार्त्तिक कृष्णाष्टमीको डाभकी पार्वती तथा शिवकी मूर्त्ति वना कर पूजन करे—(हिमाद्रि)।

दया—स्त्री० [सं०] दक्ष प्रजापतिकी १३ पुत्रियों, जो धर्मको व्याही थी, मेंसे एक यह अभय (भाग० ४.१.४९-५०) की माता। (२) ललितादेवीके पूजोवयोगी न्यासकी एक शक्तिका नाम (ब्रह्मां० ४.४४.८९)।

दरद—पु० [सं०] (१) एक महारथ जिसे जरासंधने मथुराके दक्षिणी प्रवेश द्वारपर तथा गोमंत घेरेके समय पश्चिमी द्वारपर आक्रमणके समय रखा था [भाग० १०.५०.११(३); ५२.११(१२)]। एक उत्तरी राज्य जो विशेष लक्षणोंसे युक्त अच्छी नसलके घोड़ोंके लिए प्रसिद्ध था (ब्रह्मां० २.१६.४९; १८.४७; ३१.८३; ४.१६.१७; मत्स्य० १२१.४६; १४४.५७)।

दरिद्योत—पु० [सं०] (अरिद्योत=ब्रह्मां०) दुंदुभिका एक पुत्र तथा पुनर्वसुका पिता (भाग० ९.२४.२०)।

दरिद्रांतक—पु० [सं०] (१) सारणके ११ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (वायु० ९६.१६५); (ब्रह्मां० ३.७१.१६७)।

दरीमुख—पु० [सं०] यह पुलहसे उत्पन्न हुआ था (ब्रह्मां०

३.७.१७८) ।

दर्दुर–पु० [सं०] (१) यह बकासुरका नामान्तर है। इसे श्रीकृष्णने परास्त किया था (भाग० २.७.३४)। (२) भारतवर्षके सात कुल पर्वतोंके निकटवर्ती पर्वतोंमेंसे एक पर्वत (वायु० ४५.९०)।

दर्प–पु० [सं०] (१) उन्नति और धर्मका एक पुत्र (भाग० ४.१.५१)।

दर्पक–पु० [सं०] कामदेवका एक नाम—दे० कामदेव, अंगज।

दर्भ–पु० [सं०] अंगिराके सुरूपामें उत्पन्न दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (वायु० ६५.१०४)।

दर्भक–पु० [सं०] अजयके पिता तथा नंदिवर्धनके दादाका नाम जो अजातशत्रुके पुत्र थे (भाग० १२.१.६,७)।

दर्भकेतु–पु० [सं०] राजा जनकके भाई कुशध्वज।

दर्भावती–पु० [सं०] केतुमाल देशकी एक नदी (वायु० ४४.१७)।

दर्भी–पु० [सं०] एक प्रसिद्ध ऋषिका नाम जिन्होंने कुरुक्षेत्रकी सीमाके भीतर ब्राह्मणोंके उपहारके लिए अर्धकील नामक एक तीर्थकी स्थापना की थी (महाभा० वन० ८३.१५४-५७)।

दर्व–पु० [सं०] (१) एक पहाड़ी प्रदेश (ब्रह्मां० २.१६.६७)। (२) एक पहाड़ी राज्य (देश) (मत्स्य० ११४.५६; वायु० ४५.१३६)।

दर्वा–स्त्री० [सं०] राजा उशीनरकी मृगा आदि ५ पत्नियोंमेंसे एक पत्नी तथा सुव्रतकी माताका नाम (ब्रह्मां० ३.७४.१८२०; वायु० ९९.१९)।

दर्श–पु० [सं०] (१) १२ आदित्योंमेंसे एक धाता और उनकी चार पत्नियोंमेंसे एक सिनीवालीका पुत्र (भाग० ६.१८.३)। (२) श्रीकृष्ण और कालिंदी ११ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (भाग० १०.६१.१४)। (३) ब्रह्मा द्वारा मुखसे सृष्ट मन्त्र-शरीर १२ जयदेवोंमेंसे एक जयदेव (ब्रह्मां० ३.३.६; ४.२; वायु० ६६.६; ६७.५)।

दर्शन–पु० [सं०] एक शास्त्र जिसमें प्रकृति, आत्मा, परमात्मा और जीवनके अंतिम लक्ष्यका विवेचन हो। इसे अंग्रेजीमें फिलॉसफी कहते हैं। यह संख्यामें ६ कहे गये हैं जिनमें मोक्ष प्राप्त करना तथा ईश्वरमें लीन हो जाना ही जीवनका अंतिम लक्ष्य बतलाया गया है। इन ६ दर्शनोंके नाम ये हैं :—

(१) न्याय=इसके आदि आचार्य गौतम हैं।

(२) वैशेषिक=इसके रचयिता कणाद हैं। इसमें परमाणुवाद है।

(३) सांख्य=कपिल इसके आदि प्रवर्त्तक हैं। इसे निरीश्वर दर्शन कहते हैं, परन्तु योगदर्शनमें ईश्वरको माना है।

(४) योग=पतंजलि इसके प्रवर्त्तक हैं। योगदर्शन और सांख्यदर्शनमें समता अधिक होनेके कारण इन दोनोंको प्रायः एक ही कक्षामें रखते हैं।

(५) पूर्वमीमांसा=जैमिनि इसके प्रवर्त्तक हैं। यह व्यासजीके शिष्य थे।

(६) उत्तरमीमांसा = वेदव्यास इसके प्रवर्त्तक हैं। पूर्वमीमांसा और उत्तरमीमांसा दोनोंको मिलाकर वेदांत नाम दिया गया है। शङ्कराचार्य इसके सबसे बड़े आचार्य हुए हैं। इनके प्रचारका मुख्य सिद्धांत अद्वैतवाद था—दे० शङ्कराचार्य।

कुछ लोगोंका मत है कि ग्रीसवालोंका प्रभाव हिन्दू-दर्शनपर यथेष्ट रूपमें पड़ा था, लेकिन इस विषयके सबसे बड़े विद्वान् क्रोलब्रुक इससे सहमत नहीं हैं।

उपर्युक्त ६ आस्तिक दर्शनोंके अतिरिक्त गीताका पौराणिक मत भी उल्लेखनीय है।

दर्शनीय–पु० [सं०] एक यक्ष, पुण्यजनी और मणिभद्रके २४ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (ब्रह्मां० ३.७.१२५)।

दर्शपूर्णमास–पु० [सं०] एक यज्ञ जिसे भरतने किया था (भाग० ५.७.५)। यह याग प्रत्येक पूर्णिमा और अमावस्याको किया जाता है। दे० श्रौतयज्ञ-परिचय।

दर्श–पु० [सं०] २७वें कल्पका नाम, इसमें सोम पूर्णमासी हुए (वायु० २१.६७, ६९)।

दर्शा–स्त्री० [सं०] पिता उशीनरकी पाँच रानियोंमेंसे एक जो सुव्रतकी माता थी (मत्स्य० ४८.१६.१८)।

दल–पु० [सं०] (१) नर-नारायण, बालखिल्य, कर्दम आदि देवर्षियोंसे एक देवर्षि, जो प्रत्यूषके पुत्र थे (ब्रह्मां० २.३५.९४)। (२) अहीनगुका पौत्र, पारियात्र (पारिपात्र= वायु०)का पुत्र तथा बलका पिता (ब्रह्मां० ३.६३.२०४; वायु० ८८.२०४)।

दश–पु० [सं०] दनुके पुत्रोंमेंसे एक।

दशकंठ–पु० [सं०) लंकापति रावणका एक नाम (रामायण)।

दशकंठारि–पु० [सं०] रावणके शत्रु श्रीरामका एक नाम (रामायण)।

दशकंधर–पु० [सं०] लंकापति रावण (भाग० २.७.२३-२५)।

दशकर्म–पु० [सं०] गर्भाधानसे विवाहतकके संस्कार—गर्भाधान, पुंसवन, सीमंतोन्नयन, जातकरण, निष्क्रमण, नामकरण, अन्नप्राशन, चूड़ाकरण, उपनयन तथा अंतिम दसवाँ विवाह (दशकर्म-पद्धति)।

दशकुलवृक्ष–पु० [सं०] तंत्रानुसार लिसोढ़ा, करंज, बेल, पीपल, कदंब, नीम, बरगद, गूलर, आँवला और इमलीके वृक्ष विशेष माहात्म्यके समझे जाते हैं।

दशकृत्व–पु० [सं०] यामगण, वैराजमें ये दस खण्डोंमें रहते हैं (वायु० १०१.६४)।

दशगात्र–पु० [सं०] मृतक सम्बन्धी एक कर्म। मरनेके बाद दस दिनों तक यह होता है और हर दिनका अलग-अलग पिण्डदान शास्त्रानुसार होता है। पुराणानुसार प्रेतके दस अंग इन्हीं दस दिनोंके पिण्डोंसे बनते हैं (दशकर्म-पद्धति)।

दशग्रीव–पु० [सं०] (१) दे० रावण (दे० वि० भाग० ७.१०.३६; ब्रह्मां० ३.७.२६२; ७१.१५९)। पूर्व जन्ममें यह हिरण्यक शिशु था। आगे तीसरे जन्ममें शिशुपाल हुआ (वायु० ९६.१५६-७)। (२) हिरण्यकशिपुकी सभाका एक असुर (मत्स्य० १६१.८१)।

दशताल–पु० [सं०] राम और बलिकी मूर्त्तियोंके आकारका प्रमाण (मत्स्य० २५९.१)।

दशनाम—पु० [सं०] तीर्थ, आश्रम, वन, अरण्य, गिरि, पर्वत, सागर, सरस्वती, भारती और पुरी, संन्यासियोंके ये दस प्रकार (मत्स्य० ११४.४२)।

दशनामी—पु० [सं०] शंकराचार्यके शिष्योंका चलाया संन्यासियोंका एक वर्ग विशेष (वायु० ४५.११७)।

दशपेय—पु० [सं०] एक यज्ञ विशेष।

दशमुख—पु० [सं०] दे० रावण।

दशरथ—पु० [सं०] (१) मूलकके पुत्र तथा एडविड (इलिविल =विष्णु०) के पिता (भाग० ९.९.४१; विष्णु ४.४-७५)। (२) इन्दुमतीके गर्भसे उत्पन्न महाराज अजके पुत्र तथा इक्ष्वाकुवंशोत्पन्न अयोध्याके एक प्राचीन राजा। पूर्व जन्ममें यह स्वायंभुव मनु थे (बालकांड दो० १४१-१५२ तक, दो० १८६, चौ० २, ३)। श्रीरामचन्द्रजी इन्हींके पुत्र थे (भाग० ९.१०.१-२; ब्रह्मां० ३.६३.१८४; ४.४०.१००; मत्स्य० १२.४९-५०; वायु० ८८.१८३-४; १११.६४; विष्णु०, ४.४.८६-७)। देवताओंकी ओरसे इन्होंने असुरोंको कई बार परास्त किया। एक बार शिकार खेलते समय अपनी युवावस्थामें इनसे एक बड़ी भूल हो गयी। गजके पानी पीनेका-सा शब्द सुन इन्होंने शब्दभेदी बाण चला दिया जिससे माता-पिताके लिए जल लाने हेतु गया हुआ श्रवणकुमार घायल हो स्वर्गवासी हुआ। श्रवणके आदेशानुसार दशरथ श्रवणके प्यासे माता-पिताको जल पिलाने गये, पर उन लोगोंने जल नहीं पिया और दशरथको श्रवणका पूरा हाल बतानेके लिए विवश किया। पुत्रकी मृत्युका शोक समाचार सुनते ही श्रवणके माता-पिता प्यासे ही स्वर्ग सिधार गये। 'जा तू भी हमारी तरह पुत्र-वियोगमें तड़पकर प्राणत्याग करेगा।' यही शाप मरते समय श्रवणके माता-पिता दशरथको दे गये। फलतः रामचन्द्रके वन चले जानेपर जब सुमन्त्रने शोक-विह्वल दशरथको सारा हाल सुनाया तब पुत्र-वियोगमें तड़पते हुए दशरथ 'हा राम, हा राम' कहते स्वर्ग सिधारे। दे० (परिशिष्ट झ)। इनकी पुत्री शांताको रोमपादने गोद लिया था (भाग० ९.२३.७-८; विष्णु० ४.१८.१७–८)। निःसंतान होनेके कारण त्रिपुरा सुन्दरीकी उपासना की तथा सात दिनोंतक काँचीमें कामाक्षीकी उपासना करनेके पश्चात् इनकी कृपासे दशरथको चार पुत्र हुए (ब्रह्मां० २.३७.३१; ६३.१८४; ४.४०.८८)। (३) नवरथका एक पुत्र तथा शकुनि (एकादशरथ=ब्रह्मां० तथा वायु) के पिता (भाग० ९.२४.४-५; ब्रह्मा० ३.७०.४३-४; वायु० ९५.४२; विष्णु० ४.१२.४१)। (४) सत्यरथ (चित्ररथ=वायु०) का एक पुत्र जिसे लोमपाद भी कहते थे (मत्स्य० ४८.९४; वायु० ९९.१०३)। (५) मौर्यवंशका एक राजा जो सुयशाका पुत्र और संयुतका पिता था (मत्स्य० २७२.२५; विष्णु० ४.२४.३०)।

दशरथपूजा—स्त्री० [सं०] कार्त्तिक कृष्ण ४ को दशरथजीका पूजन करे तो सब सुख उपलब्ध हों (संवत्सरप्रदीप)।

दशरात्र—पु० [सं०] दस रातोंमें समाप्त होनेवाला एक यज्ञ (हि० श० सा०)।

दशवर्णधनु—पु० [सं०] शंकरके धनुषका नाम जिसके १० रंग हैं (वायु० १०१.२७०)।

दशवाजी—पु० [सं०] चन्द्रमाका एक नाम (हि० श० सा०)।

दशबाहु—पु० [सं०] भगवान् शंकरका एक नाम।

दशवीर—पु० [सं०] एक यज्ञ विशेषका नाम।

दशशीर्ष—पु० [सं०] लंकापति रावणका एक नाम—दे० रावण।

दशहरा—पु० [सं०] (१) ज्येष्ठ शुक्ल दशमी पुण्यतिथि जिसे गंगा दशहरा भी कहते हैं। इस तिथिको गंगा स्वर्गसे मर्त्यलोकमें आयी थी। इस दिन गंगा स्नानका बड़ा माहात्म्य है। यदि दशहराको हस्तनक्षत्र हो या यह मंगलवारको पड़े तब इसका माहात्म्य और भी बढ़ जाता है। इससे दस प्रकारके पाप (कायिक ३+वाचिक ४+मानसिक ३) दूर होते हैं। इस तिथिको काशी स्थित दशाश्वमेध घाटपर दस प्रकार स्नान करके शिवलिंगका दस संख्याके गंध, पुष्प, दीप, नैवेद्य, फल आदिसे पूजन करे तथा रात्रि जागरण करे तो अनंत फल होता है (ब्रह्मपुराण)।

'ज्येष्ठे मासि सिते पक्षे दशमी हस्तसंयुता।
हरते दश पापानि तस्मात् दशहरा स्मृता॥'—(ब्रह्मपुराण)। (२) आश्विनकी विजयादशमी—दे० विजयादशमी।

दशादित्यव्रत—पु० [सं०] यह किसी भी शु० १० रविवारको होता है तथापि मार्गशीर्ष, माघ और वैशाखके व्रतका विशेष फल होता है। इससे दुर्दशा दूर होती है। आपद्ग्रस्त नल तथा पाण्डवोंने यह व्रत किया था (स्कंद०)। दुर्दशाका कारण—'तुष, भस्म और मूसलका उल्लंघन करनेसे; कुमारी, रजकी तथा वृद्धाके साथ संयोगसे, अयोनिया ब्राह्मणीसे ब्रह्मचर्य नष्ट होनेसे, प्रातः संध्या या पर्वमें रजस्वलाके समीप जानेसे, संकटमें माँ-बाप तथा मालिकको छोड़नेसे और परम्परागत धर्मकर्म छोड़नेसे।'—(कश्यपने नारदसे कहा)।

दशार्ण—पु० [सं०] विन्ध्याचलकी एक जंगली जाति जिसने जरासंधकी सहायता की थी (भाग० १०.५०(५)३; ब्रह्मां० २.१६.६४; वायु० ४५.१३२)।

दशार्णा—स्त्री० [सं०] ऋक्ष पर्वतसे निकली भारतवर्षकी एक नदी (ब्रह्मां० २.१६.३०; ३.१३.१००; मत्स्य० २२.३४; वायु० ४५.९९; मत्स्य० १४४.२५)।

दशार्ह—पु० [सं०] (१) निर्वृत (निर्वृति), (निधृति=वायु०, विदूरथ=मत्स्य०) का पुत्र तथा व्योमका पिता (भाग० ९.२४.३; १०.३६.३३; मत्स्य० ४४.४०)। (२) क्रोष्टवंशोत्पन्न धृतराष्ट्रका लड़का। (३) राजा वृष्णिका पोता। इनके वंशज दाशार्ह कहे जाते थे (महाभा० सभा० ३८)। (४) धृष्टसुत धर्मात्मा निर्वृत्तिका पुत्र (वायु० ९५.४०)।

दशार्हकगण—पु० [सं०] एक जाति विशेष जिनका सम्बन्ध पाण्डवोंसे था। आक्रमणके समय इन लोगोंने द्वारकाकी रक्षा की थी (भाग० १.११.११; १४.२५; ३.१.२९)।

दशाश्व—पु० [सं०] दस घोड़ोंसे युक्त रथवाले चन्द्रमाका नाम।

दशाश्वमेध—पु० [सं०] (१) काशीका एक तीर्थस्थान विशेष। राजर्षि दिवोदासकी सहायतासे ब्रह्माने इस स्थानपर दस अश्वमेध यज्ञ किये थे। इस स्थानका पहला नाम रुद्रसरोवर था। ब्रह्माने यहाँपर दशाश्वमेधेश्वर नामक एक

शिवलिंग भी स्थापित किया था जिसके दर्शनका बड़ा फल लिखा है (काशी खंड, मत्स्य० १८५.६८; वायु० ७७. ४५)। (२) प्रयागके अंतर्गत त्रिवेणीके पासका एक घाट विशेष जहाँसे यात्री जल भरते हैं। ऐसा विश्वास है कि यहाँका जल बिगड़ता नहीं।

दशाश्वमेधजनन—पु० [सं०] नर्मदा तटपरका एक तीर्थ जो गंगेश्वरसे पश्चिम है (मत्स्य० १९३.२०-२)।

दशाश्वमेधिक—पु० [सं०] गोदावरीके तटपर स्थित एक तीर्थ जहाँ राजा भौवन (विश्वकर्मके विश्वरूप तथा विश्वरूपके प्रथम नामक पुत्र हुए और भौवन 'प्रथम'के ही पुत्र थे जो सार्वभौम राजा हुए) ने अपने पुरोहित कश्यपके साथ ब्रह्माजीकी आज्ञासे आकर अश्वमेध यज्ञकी दीक्षा ली जो यज्ञ पूरा हुआ। यहाँ आकाशवाणीसे इन्हें अन्नदान करनेका आदेश हुआ था। जहाँ यह यज्ञ हुआ था वहीं दशाश्वमेधिक तीर्थ हुआ। एक ही यज्ञसे १० अश्वमेधका फल मिला था (ब्रह्म० ८३.२१-२२)।

दस्यु—पु० [सं०] आभीर तथा म्लेच्छ जो श्राद्धके लिए वर्जित हैं (ब्रह्मां० ३.१४.४३; विष्णु० ५.३८.१३; २५.२७. ४९७)। असुर, अनार्य; चोर। इनका वर्णन वेदोंमें बहुत है। इंद्रने बहुतसे दस्युपतियोंका नाश किया था। ऐतरेय ब्राह्मणमें ये विश्वामित्र द्वारा उत्पन्न और शाप द्वारा भ्रष्ट कहे गये हैं। अर्जुन द्वारा इनका नाश लिखा है (महाभारत)। इन लोगोंने १६००० स्त्रियोंको बंदी बनाया था। श्रीकृष्णसे ये परास्त हुए थे, डंडा इनका मुख्य अस्त्र था (विष्णु० ५.३८.५१, ७०, ८२, ८४)।

दस्युमान्—पु० [सं०] ३३ श्रेष्ठ आंगिरसोंमेंसे एक आंगिरस तथा मंत्रकृत् ऋषि (ब्रह्मां० २.३२.१०८)।

दस्युहंतम—पु० [सं०] 'बुध'का एक नाम। यह तारासे उत्पन्न सोमके पुत्र थे। सोमने बृहस्पति-पत्नी ताराको बलपूर्वक अपने यहाँ रख लिया था (ब्रह्मां० ३.६५.४१; वायु० ९०.३७)। पूछे जानेपर ताराने गर्भस्थ बालकको सोमका बतलाया, तब सोमने उसका नाम बुध रखा (वायु० ९०. ४३)।

दस्र—पु० [सं०] मार्तण्ड (सूर्य) का एक पुत्र (वायु० ८४. २४; ब्रह्मां० ३.५९.२५)। अश्विनीकुमार युगलमेंसे एक (वायु० ८४.७७)।

दहन—पु० [सं०] ग्यारह रुद्रोंमेंसे एक (मत्स्य० १७१.३९)।

दहाग्नि—स्त्री० [सं०] पुलस्त्यके 'हविर्भू' नामक पत्नीमें उत्पन्न पुत्र अगस्त्य अन्य जन्ममें इनके रूपमें (दहाग्नि—जाठराग्निके रूपमें) तथा विश्रवा ऋषिके रूपमें उत्पन्न हुए (भाग० ४.१.३६)।

दांत—पु० [सं०] (१) विदर्भ-नरेश भीमसेनके दूसरे पुत्र तथा दमयंतीके भाईका नाम (महाभा० वन० ५३.९)। (२) १२ सुधामा देवोंमेंसे एक सुधामा देव (ब्रह्मां० २.३६. २७)।

दांता—स्त्री० [सं०] अलकापुरीकी एक अप्सराका नाम जिसने अन्य अप्सराओंके साथ अष्टावक्रके स्वागतमें नृत्य किया था (महाभा० अनु० १९.४५)।

दाक्षपायन—पु० [सं०] एक काश्यप गोत्रकार ऋषि (मत्स्य० १९९.५)।

दाक्षायणि—पु० [सं०] दारुक जो विष्णुके एक अवतार थे का एक पुत्र (वायु० २३.१९६)।

दाक्षायणी—स्त्री० [सं०] दक्षकी पुत्री (ब्रह्मां० १.१.५९)। दक्षपुत्री सतीका एक नाम जो शिवजीको ब्याही थीं। यही हिमवान्‌की पुत्री उमा हुई, उमाके पूर्व जन्मका नाम (ब्रह्मां० ३.७.४७२; ४.११.२-५)।

दाक्षि—पु० [सं०] (१) आंगिरस कुलका एक ऋषि, एक त्र्यार्षेय प्रवर (मत्स्य० १९६.२५)। (२) अत्रिवंशज एक ऋषि, एक त्र्यार्षेय प्रवर (मत्स्य० १९७.६)।

दक्षिण—पु० [सं०] एक होम विशेष—शतपथ ब्राह्मण।

दाक्षी—स्त्री० [सं०] (१) दक्ष प्रजापतिकी पुत्रीका नाम। (२) पाणिनिकी माताका नाम।

दाड्व—पु० [सं०] काशीसे दो योजन पश्चिम एक ग्राम। कहा जाता है कल्कि भगवान् विधर्मी पुरुषोंका नाश करके यहीं शांतिपूर्वक निवास करेंगे (भविष्य० ब्रह्मखंड)।

दाता—पु० [सं०] सावर्ण मन्वंतरके २०।२० संख्यावाले तीन (सुतपा, अभिताभ और सुख) देवगणोंमेंसे सुखदेव गणमें-एक सुखदेव (वायु० १००·१८; ब्रह्मां० ४.१.१९)।

दान—पु० [सं०] वायु० २३.१०१ के अनुसार एक धर्म और ब्रह्मां० २.३२.४१ के अनुसार एक शिष्टाचार। ज्येष्ठ, कनिष्ठ तथा मध्यम ये दानके तीन प्रकार हैं। ज्येष्ठ दानसे मोक्ष और कनिष्ठसे स्वार्थ-साधन होता है। दानके उपयुक्त पात्रोंमें दयावश संवितरण (संविभाग) ही मध्यम दान है (ब्रह्मां० २.३२.५४-५६; वायु० ५९.४९-५०)। निषिद्ध मार्गोंसे अर्जन किया धन दान देनेसे कोई लाभ नहीं होता। गाढ़े पसीनेकी सच्ची कमाईके दानसे स्वर्ग प्राप्त होता है (वायु० ६७.२७; ९१.१०६-१२; १०४.१४)। मत्स्यने मनुके पूछनेपर दानकी विधि (मत्स्य० २.२३) तथा वायुने (वायु० ९१.१०७-१३) में दानके नियमादि बतलाये हैं। (२) सावर्ण्य मन्वन्तरके २० संख्यावाले सुखदेवगणमेंका एक सुखदेव (ब्रह्मां० ४.१.१९; वायु० १००.१८)।

दाकायन—पु० [सं०] वसिष्ठवंशज एक त्र्यार्षेय प्रवर प्रवर्तक (मत्स्य० २००.१७)।

दानपति—पु० [सं०] (१) अक्रूरका एक नाम। यह स्यमंतक मणिके प्रभावसे प्रतिदिन दान किया करते थे (भाग० १०. ५७.३३)। (२) एक दैत्यका नाम (हिं० श० सा०)।

दानलीला—स्त्री० [सं०] श्रीकृष्णकी एक लीला जिसमें उन्होंने ग्वालिनोंसे गोरस बेचनेके लिए कर लिया था (भाग०)।

दानव—[पु० [सं०] 'दनु' नामकी पत्नीसे उत्पन्न कश्यप ऋषिके पुत्र जिनका निवासस्थान रसातल तथा श्वेत पर्वत है (भाग० २.७.१३; ५.२४.३०; वायु० ३९.२९; ४६.३५; ६६.१)। मायावी दानवोंका उल्लेख ऋग्वेदमें है। महाभारतके अनुसार दनुके चालीस पुत्र थे जिनमें विप्रचित्त राजा हुआ (ब्रह्मां० ३.७.२५५; ८.७; २०.३; ४.४२)। भागवतके अनुसार दनुके ६१ पुत्र थे। मनुस्मृतिके अनुसार दानव पितरोंसे उत्पन्न माने गये हैं। मरीचि आदि ऋषियोंसे पितर और पितरोंसे देव और दानव उत्पन्न हुए (मनु० ३.२०१,१९६)।

दानवगुरु—पु० [सं०] शुक्राचार्यका एक नाम। यह दानवों-

के गुरु माने गये हैं (महाभा० आदि० ७६.८)।

दानवज्र-पु० [सं०] एक प्रकारके घोड़े जो केवल देवताओं और गंधर्वोंकी सवारीमें रहते हैं। कहते हैं ये घोड़े बूढ़े नहीं होते और इनकी गति मनकी गतिके समान तीव्र होती है (महाभा०)।

दानवृत-पु० [सं०] शाकद्वीपके निवासियोंका एक वर्ग (भाग० ५.२०.२७)।

दानवेंद्र-पु० [सं०] राजा बलिका नाम—दे० बलि।

दानाग्नि-पु० स्त्री० [सं०] प्रीति और पुलस्त्यका एक पुत्र जो पूर्व जन्ममें (स्वायंभुव मन्वंतरमें) अगस्त्य थे। सुजंघी नामकी पत्नीसे इनके अनेक पुत्र थे (ब्रह्मां० २.११.२६, २९)।

दाम-पु० [सं०] २० संख्यावाले सुखदेव गणमेंका एक सुखदेव (ब्रह्मां० ४.१.१८)।

दामकंठ-पु० [सं०] एक ऋषि जो गोत्र प्रवर्त्तक थे।

दामग्रंथि-पु० [सं०] राजा विराट्के सेनापति—महाभा०।

दामचंद्र-पु० [सं०] पांचाल-नरेश द्रुपदके एक पुत्र तथा राजा पृपतके पौत्रका नाम—महाभा० (द्रोण० १५८.४०)।

दामनपर्व-पु० [सं०] चैत्र शु० चतुर्दशीको मनाया जानेवाला एक पर्व विशेप (हमारे त्योहार डा० वृजमोहनकृत)।

दामोद-पु० [सं०] अथर्ववेदकी एक शाखाका नाम।

दामोदर-पु० [सं०] श्रीकृष्ण या विष्णु भगवान्का नाम (ब्रह्मां० ३.३६.३९)। हरिवंशके अनुसार यमलार्जुनके गिरनेके समय यशोदाने श्रीकृष्णको पेटमें रस्सी लगाकर एक ओखलमें बाँध दिया था (विष्णु० ५.६.२०; १३.३४)। इससे गोपियोंने कृष्णका नाम दामोदर रख दिया। अन्य मतसे 'दाम'=लोक या विश्व। सारा विश्व भगवान्के उदरमें है, अतः दामोदर। कुछ लोग 'दामाद्दामोदरविदुः'के अनुसार श्रीकृष्णको दामोदर कहते हैं, क्योंकि उनका इंद्रिय निग्रह प्रसिद्ध है। इस रूपमें कृष्णका अस्त्र पाश है (ब्रह्मां० ४.३४.८३)।

दारवत्या-स्त्री० [सं०] १६ मौनेय देव-गन्धर्वोंकी ३४ अप्सराएँ छोटी बहिनें थी, उनमेंसे एक अप्सराका नाम (वायु० ६९.४)।

दारिद्र्यहरषष्ठी-स्त्री० [सं०] माघ शु० ६ से आरम्भ करके प्रत्येक षष्ठीको एकभुक्त, नक्त अयाचित उपवास करे, ब्राह्मण-भोजन कराये तथा वर्षपर्यन्त दानादि करे तो कुलसे दरिद्रताका समूल नाश हो (स्कंद०)।

दारुक-पु० [सं०] (१) श्रीकृष्णके सारथि जो बड़े स्वामिभक्त थे (भाग० १०.५०.१६; २०(५); ८; ६४(६); ७१.१२; विष्णु० ५.३७.५१)। जिस समय अर्जुन सुभद्राको हरण कर लिये जा रहे थे, उस समय इन्होंने अर्जुनसे कहा था—'मैं यादवोंके विरुद्ध रथ नहीं हाँक सकता, अतएव आप मुझे बाँध दें और जहाँ चाहें रथ ले जायँ।' लक्ष्मणाको स्वयंवरसे लानेके समय यही रथ हाँक रहे थे (भाग० १०.७७.९-११; ८३.३३)। इनका पुत्र प्रद्युम्नका सारथि था (भाग० १०.७६.२७)। वसुदेव तथा अर्जुनको श्रीकृष्णके स्वर्गवासका समाचार इन्हींके द्वारा मिला था (भाग० ११.३०.४१-५०; ३१.१५-१७; विष्णुके ५.३७.५७-६४)। (२) शिवके अवतार एक योगाचार्य। (३) इक्कीसवें द्वापरके विष्णुके अवतार तथा इनके पुत्रादि—पवित्र देवदारुवनमें (वायु० २३.१९५)।

दारुकावन-पु० [सं०] (देवदारुवन) हिमालयकी चोटीपर स्थित एक वन जहाँ ऋषि लोग तपस्यामें रत रहते हैं। यह पवित्र तीर्थस्थान माना गया है जहाँ शिवने ऋषियोंके समक्ष नग्न नृत्य किया था जिससे रुष्ट हो उन लोगोंने शाप दिया। अंतमें हर प्रकारसे दुःखी हो ब्रह्माकी सम्मतिसे सबने शिवको प्रसन्न किया। भस्म स्नान विधिसे शंकरने ऋषियोंको संतुष्ट किया (ब्रह्मां० २.२७.१०५; १२८)।

दारुण-पु० [सं०] (१) विष्णु भगवान्का एक नाम (हिं० श० सा०)। (२) शंकरका एक नाम। (३) एक नरकका नाम। (४) रिष्टासे उत्पन्न दस गन्धर्वोंमेंसे एक गंधर्वका नाम (ब्रह्मां० ३.७.११)।

-स्त्री० [सं०] (१) एक देवी विशेपका नाम जो नर्मदा प्रदेशकी अधिष्ठात्री देवी हैं। (२) अक्षय तृतीयाका दूसरा नाम—दे० अक्षय तृतीया।

दार्षद्वत-पु० [सं०] एक यज्ञका नाम जो दृषद्वती नदीके तटपर होता था—दे० (कात्यायन श्रौतसूत्र)।

दालकि-पु० [सं०] रथीतरके चार शिष्योंमेंसे एक शिष्यका नाम (वायु० ६०.६६)।

दाल्भ्य-पु० [सं०] (१) औत्तम मन्वंतरके सप्तर्षियोंमेंसे एक ऋषिका नाम (मत्स्य० ९.१४)। (२) वृक नामके मुनि जो इंद्रके बंधु कहे जाते हैं। परशुरामजीके क्रोधसे राजा चन्द्रसेनकी गर्भिणी स्त्रीकी रक्षा इन्होंने की थी। (३) एक ऋषि जिसने श्रीकृष्णकी दस्युहृत धर्मच्युत पत्नियोंको अनंगदान व्रतमें अभिषिक्त कर बचाया था (मत्स्य० ७०.१०-१३)।

दाविक-पु० [सं०] (दारविक=विलसन) एक प्रदेश इस देशका एक प्रदेश भोग व्रात्य, म्लेच्छ और शूद्र राजा करेंगे (विष्णु० ४.२४.६९)।

दाशपुर-पु० [सं०] कौशिकके सात पुत्र व्याधके रूपमें यहीं उत्पन्न हुए थे। इन्हें अपने पूर्व जन्मकी बातें स्मरण थीं, अतः व्याध कर्मोंसे ये बचते रहे थे (मत्स्य० २०.१२-४; २१.९, २८)।

दाशरथि-पु० [सं०] श्रीरामका एक नाम जिन्होंने रावण और उसके वंशजोंका नाश किया था (वायु० ७०.४८)।

दाशार्ण-पु० [सं०] इनका राजा शतध्वज था। श्रीकृष्णके मिथिला प्रयाणके समय ये लोग उपहार ले उनसे मिलने गये थे (भाग० १०.५२.११(१२); ८६.२५)।

दाशार्ह-पु० [सं०] दे० दशार्ह (भाग० ११.३०.१८)।

दाशेयी-स्त्री० [सं०] मछुएकी कन्या सत्यवती जो शांतनुको ब्याही थी तथा चित्रांगद और विचित्रवीर्यकी माता थी (मत्स्य० ५०.४५; वायु० ७३.२१७; ९९.२४०)।

दास-पु० [सं०] (१) वे भृत्य जिन्हें श्राद्धोंमें भोजन दिया जाय (मत्स्य० १७.५७-६२; वायु० ६०.३७)। इससे शूद्रोंका बोध होता है (विष्णु० ३.१०.९)। (२) मनुस्मृति (८.४१५) में सात प्रकारके और याज्ञवल्क्य, नारद आदिने १५ प्रकारके दास कहे हैं।

दासक-पु० [सं०] एक ऋषिका नाम जो गोत्र प्रवर्त्तक थे।

दाशनंदिनी-स्त्री० [सं०] सत्यवतीका नाम। यह धीवरकी

कन्या और वेदव्यासकी माता थी (मत्स्य० ५०.४५; वायु० ७३.२१; ९९.२४० तथा दे० मत्स्यगंधा, सत्यवती)।

दासी–स्त्री० [सं०] ये चार प्रकारकी होती हैं—देवदासी, ब्रह्मदासी, स्वतंत्रा और शूद्रदासिका। प्रथम दो क्षत्राणियोंकी कक्षामें आती हैं, तीसरी वेश्या (वैशी) की कक्षाकी होती है और चौथी हीन जातिकी होती है (ब्रह्मां० ४.८.११-१२)। दासी—परिचारिका (मत्स्य० २९.१७·२३)।

दासेर–पु० [सं०] भण्डके अनेक सेनापतियोंमेंसे एक सेनापतिका नाम (४.२१.८५)।

दाहकर्म–पु० [सं०] शवके जलानेका कर्म जो मनुष्यके १६ संस्कारोंमेंसे अंतिम है—दे० 'शुद्धितत्त्व'; 'अन्त्यकर्मदीपक';—नित्यानंद पंत म० म०।

दाहकाल–पु० [सं०] एक कल्पका अंत होनेके पश्चात्का समय (वायु० ७.१५)।

दिंभक–पु० [सं०] हंस पहलवानका भाई एक पहलवान जो जरासंधका मित्र था और भाईकी मृत्यु सुन यमुनामें डूब गया था (भाग०)।

दिक्–पु० [सं०] शतरूपाके एक पुत्रका नाम (?) (मत्स्य० ४.२५)।

दिक्कन्या–स्त्री० [सं०] दिशारूपी कन्या। पुराणानुसार दिशाएँ ब्रह्माकी कन्याएँ मानी गयी हैं। सृष्टि करते समय ब्रह्माके कानसे दस दिशाएँ निकलीं। ब्रह्माके आज्ञानुसार दसों कन्याएँ एक-एक दिशामें चली गयीं। इसके पश्चात् आठ लोकपालोंकी सृष्टि हुई और एक-एक कन्या एक-एक-लोकपालको दी गयी (वाराह०)।

दिक्पति–पु० [सं०] १२ संख्याके सत्यदेव गणमेंके एक सत्यदेवका नाम (ब्रह्मां० २.३६.३४; वायु० ६२.३१)।

दिक्पाल–पु० [सं०] पुराणानुसार दसों दिशाओंका पालन करनेवाले देवता। ज्योतिपके अनुसार दक्षिणके स्वामी मंगल, पश्चिमके शनि, उत्तरके बुध, पूर्वके सूर्य, अग्निकोणके शुक्र, नैऋंत कोणके राहु, वायुकोणके चन्द्रमा और ईशानकोणके बृहस्पति हैं। ये ग्रह दिक्पति कहे जाते हैं—दे० लोकपाल। पुराणानुसार पूर्वके इंद्र, अग्निकोणके वह्नि, दक्षिणके यम, नैऋंतके निऋंति, पश्चिमके वरुण, वायुकोणके मारुत, उत्तरके कुबेर, ईशानकोणके ईश, ऊर्द्ध दिशाके ब्रह्मा और अधोदिशाके अनंत—दे० दिक्कन्या। चार दिशाओंके चार दिक्पाल ये हैं—सुधर्मा, शंखपद, केतुमान् और हिरण्यरोमा। ये शत्रुओंका नाश करके पृथ्वीकी रक्षा करते हैं। ग्रहबलिमें इनका आवाहन करते हैं (मत्स्य० ८.९-११; ९३.५२)। इनकी उपासना विधिके लिए (मत्स्य० ६७.९-१६; ६९.३८)।

दिक्कर–पु० [सं०] भगवान् शंकरका एक नाम।

दिक्करवासिनी–स्त्री० [सं०] पुराणानुसार शिवमें निवास करनेवाली एक देवी (शिव०)।

दिक्करिका–स्त्री० [सं०] पुराणानुसार दिग्गजोंके क्षेत्रसे अर्थात् मानसरोवर क्षेत्रके अंतर्गत होकर बहनेवाली एक नदी (ब्रह्मां०, वायु०)।

दिक्करी–पु० [सं०] आठों दिशाओंके दिग्गजोंको दिक्करी कहते हैं। इसमें ऐरावत आदि आठ हाथी हैं—दे० दिग्गज।

दिगङ्गना–स्त्री० [सं०] ये हैं ब्राह्मी, अनन्तशक्ति इन्द्राणी, आग्नेयी, गदिनी, नैऋंती, वारुणी, पताकिनी, शंखिनी और माहेश्वरी (मत्स्य० २८६.५-११, १७)।

दिगीश्वर–पु० [सं०] दे० दिक्पाल। ये सब वरुणके यज्ञमें साक्षात् उपस्थित थे (ब्रह्मां० ३.१.२८)।

दिग्गज–पु० [सं०] पुराणानुसार आठों दिशाओंमें आठ हाथी पृथ्वीको दबाये हैं। उन दिशाओंकी रक्षाके लिए ब्रह्माने इन्हें स्थापित किया है। पूर्वमें ऐरावत, पूर्व-दक्षिण कोणमें पुंडरीक, दक्षिणमें वामन, दक्षिण-पश्चिम कोणमें कुमुद, पश्चिममें अंजन, पश्चिम-उत्तर कोणमें पुष्पदंत, उत्तरमें सार्वभौम, उत्तर-पूर्व कोणमें सुप्रतीक। ये ही आठों दिशाओंके हाथी दिग्दज कहे जाते हैं। शिव-तांडवके समय ये सब स्थान-च्युत हो जाते हैं।

दिग्गयंद–पु० [हिं०] दे० दिग्गज।

दिग्दंती–पु० [सं०] दे० दिग्गज (ब्रह्मां० ४.९.७९)।

दिग्देवता–पु० [सं०] दे० दिक्पाल (मत्स्य० ८.९-११)।

दिग्राज–पु० [सं०] दे० दिक्पाल (मत्स्य० ९३.११)।

दिग्वारण–पु० [सं०] दे० दिग्गज (ब्रह्मां० ४.९.७९)।

दिग्वासा–पु० [सं०] शिवकी एक उपाधि (ब्रह्मां० २.२७.९८)।

दिकसिंधुर–पु० [सं०] दे० दिग्गज।

दिङ्मातंग–पु० [सं०] दे० दिग्गज (ब्रह्मां० ४.९.७९)।

दिति–स्त्री० [सं०] दक्ष प्रजापतिकी एक पुत्री जो कश्यप ऋपिको व्याही गयी थी (भाग० ३.१४.७; वायु० ६६.५४; विष्णु० १.१५.१२४, १४०)। यह हिरण्याक्ष तथा हिरण्यकशिपु आदि दैत्योंकी माता थी (भाग० ६.६.२५; १८.११; ७.१.३९; ब्रह्मां० ३.३.५६; मत्स्य० ६.१.८; वायु० ६७.४९)। जब अप्रतिमन या अरिष्टनेमि इसका पुत्र था (वायु० ६५.११२)। जब इसके सब दैत्य पुत्र इंद्र द्वारा मारे गये तब इन्होंने कश्यपसे ऐसे पुत्रकी इच्छा की जो इन्द्रका दमन कर सके। दितिके गर्भिणी होनेपर कश्यपने १०० वर्ष बड़ी पवित्रतासे बितानेका आदेश दिया। पतिके आज्ञानुसार दितिने ९९ साल बड़ी पवित्रतासे बिताये, पर अंतिम वर्षमें एक दिन बिना हाथ-पैर धोये सो गयी। इंद्र तो अवसरकी ताकमें थे ही, चट गर्भमें घुस गये और जरायुके सात टुकड़े कर डाले। बालक इतनी जोरसे चिल्लाया कि इंद्रने घबड़ा कर उन खंडोंमेंसे प्रत्येकको फिर सात टुकड़े कर दिये। ये ही ४९ खंड मरुत कहलाते हैं। दे० मरुत; (भाग० ६.१८.२३-७७; ब्रह्मां० १.१.११२; अध्या० ५ पूरा; ७.४६५; ४.९.३; मत्स्य० ६.४७; अध्याय ७ पूरा; वायु० ६७.८६, १३५; विष्णु० १.२१.३०-४१)।

दिदेहक–पु० [सं०] १२ संख्यावाले शुक्रदेव गणमेंसे एक शुक्रदेवका नाम (वायु० ३१.९)।

दिनकर–पु० [सं०] रातसे दिन करनेवाला, सूर्यका नाम।

दिनकरकन्या–स्त्री० [सं०] यमुना नदी—दे० छाया, संज्ञा।

दिनकरसुत–पु० [सं०] यम, शनि, सुग्रीव, अश्विनीकुमार और कर्ण सूर्यके लड़के कहे गये हैं—दे० पृथक २ व्याख्या।

दिनत्रयव्रत–पु० [सं०] माघ स्नान एक महीनेमें पूरा होता है, पर यदि इतना अवकाश न हो तो माघ शु० १३, १४

तथा १५ को अरुणोदयमें स्नानादि करे तो पूर्णमास-स्नानका फल प्राप्त हो जाता है (पद्म०) ।

दिननाथ–पु० [सं०] सूर्यका एक नाम (ब्रह्मां० ४.२४. ६१) ।

दिनमिश्रा–पु० [सं०] पोडशपत्राब्जकी १६ शक्तियोंमेंसे एक शक्तिका नाम (ब्रह्मां० ४.३२.११) ।

दिलीप–पु० [सं०] (१) यशोदाके गर्भसे उत्पन्न अंशुमान्के पुत्र । वाल्मीकिके अनुसार ये राजा सगरके परपोते तथा महाराजा रघुके परदादा थे । इन्होंने गंगाजीको पृथ्वीपर लानेकी चेष्टा की थी, पर सफल न हुए और मर गये (भाग० ९.९. २; मत्स्य० १२.४४; १५.१९; वायु० ७३.४२; ८८.१६७; विष्णु० ४.४.३४-५) । राजा भगीरथ,जो तपोवलसे गंगाजीको स्वर्गसे लाये थे, इन्हींके पुत्र थे, रघुवंशके अनुसार इन्हींकी सुदक्षिणा नामकी पत्नीसे राजा रघु उत्पन्न हुए थे । दिलीपने तीनों लोकों तथा तीनों अग्नियोंको जीत लिया था (लिंगपुराण) । हरिवंशके अनुसार भी यह राजा सगरके परपोते थे । बहुत दिनों राज्य करनेके पश्चात् यह वन चले गये थे (ब्रह्मां० ३.१०.९२; ५६.२९-३२; ६३.१६६) । एक वार इन्होंने नंदिनी गौके रक्षार्थ अपने प्राणतक अर्पण किये थे तव कहीं सुरभि गौका शाप टला था । (२) मत्स्य० के अनु० रघुके पुत्र दिलीप दिलीपके पुत्र अजक अजकके पुत्रका नाम दीर्घवाहु (मत्स्य० १२.४८) । (३) एक ऋपि जो विष्णुकी योग-शक्तिसे परिचित थे (भाग० २.७.४४) । (४) सोमवंशी ऋष्यके पुत्र तथा प्रतीपके पिता (भाग० ९.२२.११) । (५) (खट्वाँग) कृशशर्माके पुत्र तथा दीर्घवाहुके पिता जिन्होंने स्वर्गसे यहाँ आकर मेरी आयुका केवल एक मुहूर्त शेष है, यह जानकर अपनी पैनी वुद्धि तथा सचाईके वलपर त्रिलोक जीत लिये (ब्रह्मां० ३.६३.१८२; वायु० ८८.१८२) । (६) भीमसेनका एक पुत्र जो प्रतीपका पिता था (मत्स्य० ५०.३८; वायु० ९९.२३३; विष्णु० ४.२०.७-८) ।

दिव–पु० [सं०] 'स्वर्लोक', स्वर्ग जहाँका अधिपति होनेके कारण सूर्यको दिवस्पति कहते हैं । यहाँ गंधर्व, राक्षस, अप्सराएँ, यक्ष, नाग तथा मनुष्य रहते हैं । पातालसे यहाँ आनेके पाँच मार्ग हैं । यहाँका क्षेत्रफल पृथ्वीके वरावर है (मत्स्य० २.३२; १२४.२०; वायु० ४७.९; १०१.१९) ।

दिवंजय–पु० [सं०] उदारधी और भद्राका एक पुत्र जो वारांगीका पति तथा रिपुका पिता था (ब्रह्मां० २.३६.१०१; वायु० ६२.८७) ।

दिववष्टा–पु० [सं०] एक कश्यप-कुलके ऋपि तथा त्र्यापेंय प्रवर प्रवर्तक (मत्स्य० १९९.१३) ।

दिवस्पति–पु० [सं०] (१) तेरहवें मन्वंतरके इंद्रका नाम जो योगेश्वरके मित्र थे (भाग० ८.१३.३१-३२; ब्रह्मां० ४. १.१०१; वायु० १००.१०५; विष्णु० ३.२.३९) । (२) सूर्य भव्यका अधिपति है, इसलिए दिवस्पति कहलाता है (ब्रह्मां० २.२३.५०; वायु० १०१.२२) ।
(३) ध्रुवका एक नाम (वायु० ६२.८१) ।

दिवस्पृश–पु० [सं०] (१) विष्णुका एक नाम । वामन अवतार धारण करनेमें इन्होंने स्वर्गको पैरसे छुआ था, अतः यह नाम पड़ा—दे० वामन । (२) स्वारोचिप मन्वन्तरके १२ संख्यावाले तुपित देवगणोंमेंके एक तुपितदेवका नाम (ब्रह्मां० २.३६.१०) ।

दिवाक–पु० [सं०] (दिवार्क=ब्रह्मां०) भानुका पुत्र तथा सहदेवका पिता जो एक सेनापति था (भाग० ९.१२. १०.११) ।

दिवाकर–पु० [सं०] (१) सूर्यदेव, ग्रहोंका राजा (मत्स्य० १५०.१५१; २६५.३८, ४१; २६६.३८; २८१.१२; वायु० २८.३२) । यह अग्नि रूप है (वायु० ५३.२९.३०) । एक वार ब्राह्मणके रूपमें कार्त्तवीर्यने इनका स्वागत किया था (ब्रह्मां० ३.७०.४) । यह पृथ्वीसे १०००×१०० योजन दूर है (वायु० १०१.१२९) । (२) प्रतिव्योमके पुत्र (प्रतिव्यूहके पुत्र=वायु०) जिनकी राजधानी अयोध्या थी । (मत्स्य० २७१.५; वायु० ९९.२८२) ये सहदेवके पिता थे । (विष्णु० ४.२२.३) । (३) पृथ्वीके १० विभाग करके इन्होंने इक्ष्वाकु तथा अन्य राजाओंको दिये । सुद्युम्न स्त्रीवेशमें रहनेके कारण कुछ न पा सका । वशिष्ठके कारण इसे प्रतिष्ठा मिली जिसे इसने पुरूरवाको दे दिया (वायु० ८५.२०-२३) ।

दिवानाथ–पु० [सं०] दिनका स्वामी सूर्यका नाम—दे० दिनकर ।

दिवाकीर्त्यगण–पु० [सं०] पितरोंका एक वर्ग जिसकी पूजा हर अमावस्याको होती है । इनके लिए कृष्ण पक्ष दिन तथा शुक्ल पक्ष रात होती है (ब्रह्मां० २.२८.२३, ९३; वायु० ५६.२१; ७३.६२) ।

दिवाकृत्य–पु० [सं०] देवताओंका एक वर्ग जो श्राद्ध करते हैं, पितरोंका पूजन करते हैं (ब्रह्मां० ३.१०.११०) ।

दिवावृत्–पु० [सं०] क्रौंचद्वीपके सात श्रेष्ठ पर्वतोंमेंसे एक पर्वत (ब्रह्मां० २.१९.६७; वायु० ४९.६२; विष्णु० २.४. ५१) ।

दिविंद–पु० [सं०] (ब्रह्मां=द्विविद) क्रौंचद्वीपके श्रेष्ठ पर्वतोंमेंसे एक पर्वत (वायु० ४९.६२; ब्रह्मां० २१९.६८) ।

दिवि–पु० [सं०] औत्तम मन्वन्तरके १२।१२की संख्यावाले ५ देवगणोंमेंसे सत्य देवगणमेंका एक सत्यदेव (ब्रह्मां० २. ३६.३५) ।

दिविरथ–पु० [सं०] (१) खनपान (अनपान=ब्रह्मां०; विष्णु०) का पुत्र तथा धर्मरथका पिता (भाग० ९.२३.६-७; ब्रह्मां० ३.७४.१०३; विष्णु० ४.१८.१५; वायु० ९९.१०१) । (२) पुरुवंशोत्पन्न राजा भूमन्युके पुत्रका नाम (महाभा० आदि० ९४.२४) । (३) हरिवंशके अनुसार अंगदेशाधिपति दधिवाहनके पुत्रका नाम जो विद्वान् धर्मरथका पिता था (मत्स्य० ४८.९२) ।

दिवोदास–पु०[सं०](१)भीमरथके पुत्र तथा द्युमान्के पिताका नाम (भाग० ९.१७.६) । (२) चन्द्रवंशी राजा केतुमान्के पुत्र भीमरथ जो काशीके राजा थे । ये ही दिवोदासके नामसे विख्यात हुए । यह धन्वंतरिके पौत्र कहे जाते हैं (वायु० ९२.६, १८-१९) । महाभारतके अनुसार यह राजा सुदेवके पुत्र थे । इन्द्रने शंवर राक्षसकी १०० पुरियोंमेंसे ९९ नष्ट करके शेप एक इन्हें दी थी । सुदाश नामक इनका एक पुत्र था जिससे महादेवने काशी ली थी । काशीखंडके अनुसार पहले इनका नाम रिपुंजय था । नागराजसे अनंगमोहिनी

नामकी उनकी पुत्री तथा आकाशसे देवताओं द्वारा पुष्प और रत्न आदि मिलनेके कारण इनका नाम दिवोदास हुआ (काशीखंड, महाभा०)। (३) ब्रह्मर्षि इंद्रसेनके पौत्र और वध्र्याश्व (वर्ध्यश्व) के पुत्रका नाम। यह मेनकाके गर्भसे अपनी बहिन अहल्याके साथ ही उत्पन्न हुए थे। इनके पुत्र मित्रेयु भी महर्षि थे (वायु० ९९.२०१,६)। (४) मुद्गलके पुत्र तथा मित्रेयुके पिता (भाग० ९.२१.३४; २२.१)। (५) भीमरथके पुत्र तथा प्रत्तर्दनके पिताका नाम। यह एक राजा थे। वीतहव्य राजाके पुत्रोंने इनके सब पुत्रोंको मार दिया। भरद्वाज ऋषिके यज्ञके पश्चात् इन्हें प्रद्दर्न नामक पुत्र हुआ जो काशीका राजा था (महाभा० अनु० ३०.२०-३०)। (६) भीमरथके पुत्र प्रजेश्वर इस नामसे प्रसिद्ध थे (ब्रह्मां० २.६७.२६)। (७) विंध्याश्वका एक पुत्र (मत्स्य०५०.७); (८) १९ मंत्रकृत् भार्गवोंमेंसे एक मन्त्रकृत् भार्गवका नाम (ब्रह्मां० २.३२.१०६; वायु० ५९.९७) तथा एक राजर्षि थे (मत्स्य० १४५.१००)। (९) काशीराज भीमरथका एक नाम। जब क्षेमक राक्षसने इनका सर्वनाश कर दिया तब राज्यके बाहर गोमती नदीके तटपर इन्होंने अपनी राजधानी बनायी। इस राजर्षिकी पत्नी सुयशाकी प्रार्थनापर भी जब नगरमें स्थापित निकुंभ गणपतिने इसे पुत्र नहीं दिया तब दिवोदासने उनका मंदिर गिरवा दिया, अतः शापित हुआ। भद्रश्रेणीके पुत्रोंको इसने परास्त कर केवल सबसे छोटे दुर्दमको छोड़ सबका वध कर डाला था। दृषद्वती रानीसे इसे प्रत्तर्दन नामक पुत्र हुआ था (वायु० ९२.२३-६४; विष्णु० ४.८.११)। (१०) हर्यश्वका पुत्र तथा मित्रायुका पिता (विष्णु० ४.१९.६२, ६९)।

दिव्य–पु० [सं०] (१) कौशल्या और सात्वतके सात पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (भाग० ९.२४.६; ब्रह्मां० ३.७१.१; विष्णु० ४.१३.१; वायु० ९६.१७)। (२) उत्तम मनुके तेरह पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (ब्रह्मां० २.३६.३९)। (३) १० संख्यावाले सुतार वर्गके देवोंमेंसे एक देव (ब्रह्मां० ४.१.८९)।

दिव्यकट–पु० [सं०] एक देश, जो पश्चिममें स्थित माना गया है। इसे दिग्विजयके समय नकुलने अपने अधिकारमें कर लिया था (महाभा० सभा० ३२.११)।

दिव्यदेवी–स्त्री० [सं०] पुराणानुसार एक देवीका नाम।

दिव्यनदी–स्त्री० [सं०] एक नदीका नाम (शिवपुराण)।

दिव्याहरोत्र–पु० [सं०] सायन गणितके अनुसार मनुष्यके ३६० दिनोंके बराबर। 'अह' अथवा दिन 'उदगायन' है और रात्रि, 'दक्षिणायन' है। मास=मनुष्यके ३० वर्ष। तीन महीना दस दिन=मनुष्योंका १०० वर्ष। संवत्=मनुष्यके ३६००० वर्ष। १००० वर्ष=३६०००० वर्ष (वायु० ५७.१२, १९; १००.२२४)।

दिव्यमान–पु० [सं०] स्वारोचिष मन्वंतरके १२ संख्यावाले पारावत देवगणमेंके एक देवका नाम (ब्रह्मां० २.३६.१४)।

दिव्यमानुष–पु० [सं०] वैवस्वत मनुके १० पुत्रों, जो स्वर्गीय थे, का सामूहिक नाम (मत्स्य० ११.४१)।

दिव्ययमुना–स्त्री० [सं०] पुराणानुसार कामरूप देशकी एक बहुत ही पवित्र नदीका नाम।

दिव्यवाह–स्त्री० [सं०] वृषभानु गोपकी पुत्रियोंमेंसे एक। यह राधिकाकी बहिन थी (भाग०)।

दिव्यविद्या–स्त्री० [सं०] एक योगनाथा (ब्रह्मां० ४.३७.३०)।

दिव्या–स्त्री० [सं०] (१) हिरण्यकशिपुकी एक पुत्री तथा प्रथम प्रजापति भृगुकी पत्नी। इनका एक पुत्र (शुक्र) तथा पुत्री थी (ब्रह्मां० ३.१.७४-६.८८; वायु० ६५.७२)। (२) एक अप्सराका नाम (ब्रह्मां० ३.७.७)।

दिव्याश्रय–पु० [सं०] एक प्राचीन पुण्य क्षेत्र जहाँ विष्णु भगवान्‌ने तपस्या की थी। कुरुक्षेत्रका दर्शन करके बलदेवजी यहींसे होते हुए हिमालय गये थे (महाभा०)।

दिव्यौषधि–पु० [सं०] उत्तम मनुके १३ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (ब्रह्मां० २.३६.३९)।

दिश–पु० [सं०] (१) दिशाएँ उसकी पत्नी हैं। अष्टमूर्त्ति भगवान् भवकी भीमा नामकी छठी मूर्त्ति आकाश है। स्वर्ग उसका पुत्र है (ब्रह्मां० २.१०.८२; वायु० २७.५४)। (२) एक देवता जो कानके अधिष्ठाता देवता कहे गये हैं। (३) ७ मरुतगणोंमेंसे ७वें गणका एक मरुत् (वायु० ६७.१२९)।

दिशाचक्षु–पु० [सं०] विष्णुवाहन गरुड़के पुत्र (विष्णु०)।

दिष्ट–पु० [सं०] नाभागके पिता तथा वैवस्वत मनुके १० पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (भाग० ८.१३.२; ९.१.१२; २.२३; ब्रह्मां० २. ३८.३१; ३.६०.३; विष्णु० ४.१.७)।

दिसिदुरद–पु० [सं० दिशा द्विरद] दे० दिग्गज।

दिसिनायक–पु० [सं० दिशानायक] दे० दिक्पाल।

दिसिप–पु० [हि०] दे० दिक्पाल।

दिसिराज–पु० [हि०] दे० दिक्पाल।

दीक्षा–स्त्री० [सं०] (१) अष्टमूर्ति भगवान् शिवकी सातवी उग्रमूर्ति दीक्षित (दीक्षाको प्राप्त) ब्राह्मण हैं। उसकी पत्नी दीक्षा है और पुत्र संतान है (ब्रह्मां० २.१०.८०; वायु० २७.५५; विष्णु० १.८.८)। (२) ललिताकी उपासना सम्बन्धी शांभवी दीक्षा वह है जो गुरुकी दृष्टि, वचन या स्पर्शसे ही शीघ्र प्राप्त हो जाती है। शिष्यके आचरणसे संतुष्ट हो गुप्त रूपसे गुरु जब मंत्राभिषिक्त करता है तब इसे मानसी दीक्षा कहते हैं। सर्वप्रथम 'क्रिया दीक्षा' है जिसमें स्नान कर शुद्ध हो, सोलहों उपचार सहित देवीसूक्त और पुरुषसूक्तका पाठ सहस्राक्षर विद्या सहित पुष्पाञ्जलि; समाधि; दरिद्र तथा अशक्त केवल भावनाद्रव्यसे उपासना करते हैं अर्थात् मानसी पूजा करते हैं। भयत्रीका चिंतन, फिर श, ष, स ४२ अक्षरोंका वर्ग, पंचाक्षर, चतुरक्षर आदि। तदुपरांत वरमूर्त्तियों, स्वशक्तियों तथा वर्णशक्तियोंका चिंतन। फिर मुद्रापर ध्यान रखते हुए चक्रेश्वरी और अनंग कुसुम देवीकी स्थापना हृदयमें करे। मनुजपमका मनन देवीको प्रसन्न करता है (ब्रह्मां० ४.४३ (पूरा); ४४, १ से १५१ तक)।

दीधय–पु० [सं०] १२ संख्यावाले याम देवगणमें का एक याम देवता (वायु० ३१.६)।

दीपदान–न० पु० [सं०] कार्त्तिक कृ० १४ को प्रदोषकालमें प्रज्वलित तथा सुपूजित चौदह दीपक लेकर सूने स्थानोंमें यथा विभाग दीप स्थापन करे। इससे यमराज संतुष्ट होते हैं—दे० कृत्यचंद्रिका।

दीपप्रतिष्ठाख्यव्रत—पु० [सं०] इसे धरणीने किया था जिससे उसे कष्टोंसे मुक्ति मिल सकी थी (ब्रह्मां० ३.४७.६१)।

दीपवती—स्त्री० [सं०] कामाख्य प्रदेशकी एक नदी, प्रसिद्ध श्रृंगार नामक पर्वत इसके पूर्व है—कालिकापुराण।

दीपान्विता—स्त्री० [सं०] कार्त्तिक वदी अमावस्या जिस दिन श्रीलक्ष्मीका पूजन और दीपदान किया जाता है—दे० दीवाली।

दीपावली—पु० [सं०] कार्त्तिक वदी अमावस्या जिस दिन दीवाली मनायी जाती है।

दीवाली—स्त्री० [सं० दीपावली] कार्त्तिककी अमावस्याको होनेवाला एक पर्व जिस दिन संध्या समय अमावस्याका होना आवश्यक है। लक्ष्मी-पूजन भी इसी दिन होता है। अमावस्या यदि दो दिन पड़े तो दूसरे दिन दीवाली होगी। यदि प्रदोषमें (संध्याको सूर्यास्तके पश्चात्=रजनीमुखमें) अमावस्या पड़े ही नहीं तो पहले दिन लक्ष्मीपूजा और दूसरे दिन दीपदान होता है।

पहिले इसे 'दियेवाली' अमावस्या कहते थे। दियेवालीका ही संक्षिप्त रूप दीवाली है। अव दीपदान और तर्पण तो शायद ही कोई करता हो, हाँ रात-दिन जुआ अवश्य खेलते हैं जिसे आगामी सालकी हारजीतका शकुन मानते हैं। वैज्ञानिक आधार—युग-युगसे हम दीपोत्सव मनाते आये हैं। यह शरदृतुके उत्तरार्द्ध और हेमन्तके आरम्भमें कार्त्तिक अमावस्याको मनायी जाती है। वर्षा ऋतुके समाप्त होनेपर दीवाली आती है। वरसातके कारण सड़े-गले पदार्थोंसे सारा वायुमण्डल विषाक्त हो उठता है। नाना प्रकारके कीड़े-मकोड़े वरसातमें उत्पन्न हो जाते हैं जो भिन्न-भिन्न रोगोंको फैलानेवाले होते हैं। दीपावलीमें घरोंको लीप-पोतकर साफ कर दिया जाता है। हवन और दियोंके कारण वे पतिंगे मर जाते हैं और रोगकी आशंका भी मिट जाती है। वर्षाके पश्चात् किसानोंका घर अन्नसे भरा रहता है और व्यवसायियोंके व्यवसाय-मार्ग खुल जाते हैं इसलिए ये लोग विशेषकर हर्षोल्लास प्रकट करते हैं।

पौराणिक आधार—किसी राजाकी एक मोतीकी माला कौआ लेकर भाग गया जिसे एक गरीव ब्राह्मणने पाया। पुरस्कारके लोभसे राजाको माला दे उसने राजासे यह कहा कि कार्त्तिक अमावस्याको उसका घर छोड़ कहीं दिया न जलाया जाय। लक्ष्मीने प्रसन्न हो ब्राह्मणको धन-धान्यसे परिपूर्ण कर दिया। तभीसे यह तिथि लक्ष्मीके आगमनकी सूचक मानी जाती है। दूसरी कथा राजा वलिके वारेमें है। देवराज इन्द्रका सिंहासन प्राप्त करनेकी वलिकी अनधिकार चेष्टासे रुष्ट हो भगवान् विष्णुने वामन अवतार ले राजा वलिका सारा राज्य ले लिया और उसे नरकमें भेज दिया। कुछ दिनों उपरांत उसके पूर्वजन्मके कर्मोंसे प्रसन्न हो विष्णुने कार्त्तिककी अमावस्याको ही राजा वलिका राज्य उसे वापस कर दिया था। इसीकी स्मृतिमें यह पर्व मनाया जाता है।

भगवान् रामचन्द्रका राज्याभिषेकोत्सव, विजितेन्द्रिय हनुमानका जन्म, स्वामी दयानन्दकी मृत्यु, परमहंस रामतीर्थकी ब्रह्मलीनता, इसी अवसरपर हुई थी। जैन-ग्रंथोंके अनुसार महावीर स्वामीका निर्वाण भी इसी तिथिको हुआ था।

धनत्रयोदशीसे आरम्भ कर 'भैयादूज'तक यह पर्व मनाया जाता है। धनत्रयोदशीके दिन अन्नके ढेरपर द्वारदेशमें दिया वाला जाता है—दे० व्रतोत्सव। धनतेरसके दिन पितृलोकके देवता यमकी पूजा होती है और घरके दरवाजे-पर 'मृत्युना दण्डपाशाभ्यां कालेन श्यामया सह। त्रयोदश्यां दीपदानात् सूर्यजः प्रीयतां मम ॥' मंत्र पढ़कर यमका दिया जलाया जाता है (स्कंद०)। पुराणानुसार इस दिन हमारे पुरखे यमलोकसे हमसे भेंट करनेके लिए पृथ्वीपर आते हैं। इसीसे उल्कादानका महत्त्व है। दूसरे दिनको नरक चतुर्दशी कहते हैं जिस दिन श्रीकृष्णने अपनी रानी सत्यभामाकी सहायतासे अत्याचारी नरकासुरका वध किया था जिसने १६००० राजकन्याएँ कारागारमें डाल रखी थीं (भाग० १०.५९ अध्याय)।

सनत्कुमार संहिताके अनुसार तीसरा दिन महालक्ष्मीकी उपासनाका है। दीपमालिकाके दूसरे दिन अन्नकूट होता है—दे० अन्नकूट। इस दिन पार्वतीजीने शंकरको द्यूत-क्रीड़ा सिखलायी थी। इसलिए इस दिन जुआ खेलते हैं। इसी दिन अन्नकूट (जो वास्तवमें गोवर्धनपूजाका ही समारोह है=भाग० तथा व्रतोत्सव) और गोवर्धन पूजा होती है (हिमाद्रि)। दीपावली (कार्त्तिक अमावस्या) के दूसरे दिनको "द्यूतप्रतिपदा" कहते हैं जिस दिन रातभर जागे रहनेका विधान है। ब्रह्मपुराणानुसार इस तिथिको प्रभातकालमें जुआ खेलना अनिवार्य माना गया है। यों तो ऋग्वेद, अथर्ववेद, ब्राह्मण ग्रंथ, रामायण, महाभारत तथा अनेक अन्य पुराने ग्रंथोंमें द्यूतके अस्तित्व तथा उसकी चर्चा हुई है। एलोराकी गुफामें शंकर-पार्वतीकी द्यूतक्रीड़ाके संवंधी ४ मूर्त्तियाँ भी मिली हैं। पर हर ग्रंथमें इसकी निंदा ही की गयी है।

भ्रातृद्वितीया इस उत्सवका अन्तिम दिन है जव वहिन भाईके आरोग्य तथा प्रसन्न रहनेके लिए आराधना करती है और भाईके टीका लगाती है (स्कंद० तथा ब्रह्मां०)। इस दिन यमराज अपनी वहिन यमुनाके घर आकर भोजन करते हैं। वहिनके घर भाईके खानेका विधान है। महाराज हर्षवर्धनके 'नागानंद' नाटक, अबुफजलके 'आइने अकवरी' तथा अलवेरूनी यात्रीके लेखोंमें भी इस पर्वका उल्लेख मिलता है।

दीपिका—स्त्री० [सं०] निवृति, प्रतिष्ठा आदि १६ शंकर कलारूप शक्ति देवियोंमेंसे एक शक्तिदेवी—दे० (ब्रह्मां० ४.३५.९८)।

दीपेश्वर—पु० [सं०] नर्मदा तटपरका एक तीर्थ (व्यासतीर्थ)—मत्स्य० १९१.३८।

दीप्त—पु० [सं०] उत्तम मनुका एक पुत्र (विष्णु० ३.१.१५)।

दीप्तकेतु—पु० [सं०] (१) भाग० के अनु० दक्षसावर्णि मनुके एक पुत्रका नाम (भाग० ८.१३.१८; विष्णु० ३.२.२४)। (२) महाभारतके अनुसार एक प्राचीन राजाका नाम (महाभा० आदि १.२३७)। (३) प्रथम सावर्ण मनुके ९ पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (ब्रह्मां० ४.१.६४)।

दीप्ताग्नि—पु० [सं०] अगस्त्य ऋषिका एक नाम जो समुद्र पी जाने तथा वातापी नामक राक्षसको पचा लेनेके कारण

पड़ा था— दे० अगस्त्य तथा वातापी।

दीप्ति–पु० [सं०] (१) एक विश्वदेवका नाम (महाभा० अनु० ९१.३४)। (२) एक अमिताभदेव जो २० संख्यावाले अमिताभगणमेंसे एक है (ब्रह्मां० ४.१.१७; वायु० १००.१६)। (३) प्राणायामके चार फलोंमेंसे एकका नाम=सूर्य, चंद्रकी उपासना जो त्रिकालज्ञ वनाती है (वायु० ११.४.९)।

दीप्तिकेतु–पु० [सं०] प्रथम सावर्ण मनुके नौ पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (ब्रह्मां० ४.१.६४)।

दीप्तिमान्–पु० [सं०] (१) आठवें (सावर्णि) मन्वंतरके सप्तर्पियोंमेंसे एक ऋषि (भाग० ८.१३.१५; विष्णु० ३.२.१७)। (२) सत्यभामाके गर्भसे उत्पन्न श्रीकृष्णके एक पुत्रका नाम, भागवतानुसार रोहिणीका पुत्र, (भाग० १०.६१.१८; ९०.३३; मत्स्य० ४७.१७; विष्णु० ५.३२.२)। (३) सावर्ण मनुके प्रथम मन्वंतरके सप्तर्पियोंमेंसे एक ऋपि—आत्रेय (ब्रह्मां० ४.१.११)।

दीप्तिमेधा–पु० [सं०] सुमेधावर्गके १४ देवोंमेंसे एक देवका नाम (ब्रह्मां० २.३६.५९)।

दीप्तिव्रत–पु० [सं०] संध्या दीपदान करनेवालेको एक वर्ष तेल छोड़ देना चाहिये। वर्पान्तमें दीपक तथा सोनेके चक्र और त्रिशूलका दान करना चाहिये। इस व्रतको करनेसे इस लोकमें तेजस्विता और अन्तमें रुद्रलोक प्राप्त होता है (मत्स्य० १०१.४१)।

दीप्तोदक–पु० [सं०] एक तीर्थका नाम जहाँ वधूसर नामकी नदीमें स्नान करके परशुरामने अपना खोया हुआ तेज पुनः प्राप्त किया था। भृगु मुनिने भी यहाँ तपस्याकी थी (महाभा० वन० ९९.६९)।

दीर्घकेशी–स्त्री० [सं०] अन्धकासुर रक्तपानार्थ शिवजी द्वारा सृष्ट कई मानस मातृका देवियोंमेंसे एक मानस मातृकादेवी—दे० (मत्स्य० २७९.२९)।

दीर्घजिह्वक–पु० [सं०] विपंगके सहायतार्थ नियुक्त भण्डका एक सेनापति जिसे भगमालाने मारा था (ब्रह्मां० ४.२१.७८; २५.२७,९४)।

दीर्घजिह्वा–स्त्री० [सं०] (१) विरोचनकी पुत्री एक राक्षसी जिसे इंद्रने मारा था। (२) कार्त्तिकेयकी एक अनुचरीका नाम (महाभा० शल्य० ४६.२३)।

दीर्घजिह्विका–स्त्री० [सं०] १६ स्वर शक्तियोंमेंसे एक स्वर-शक्ति (ब्रह्मां० ४.४४.५६)।

दीर्घतपा–पु० [सं०] (सौनहोत्र सुनहोत्रके वंशज, प्रकाशिराज) काश्य (राष्ट्र=विष्णु०) के पुत्र और काशीके राजा—काशिप (ब्रह्मां० ३.६७.२०; विष्णु० ४.८.७-८)। यह अंगिरस शाखाके एक मंत्रकृत् थे (वायु० ५९.१०२)। इन्होंने पुत्रके लिए घोर तप किया था जिसके फलस्वरूप अब्जदेव धन्वंतरि तपस्यासे प्रसन्न हो स्वयं इनके पुत्ररूपमें उत्पन्न हुए। कहीं पुराणोंमें ऐसा भी उल्लेख है कि यह धन्वके पिता थे और धन्व धन्वंतरिके पिता थे (वायु० ९२.६; ब्रह्मां० ३.६७.७)।

दीर्घतमा–पु० [सं०] (१) एक ऋपि जो उतथ्यके पुत्र थे और 'ममता'के गर्भसे उत्पन्न हुए थे। देवगुरु बृहस्पति (उतथ्यके छोटे भाई) के शापसे अंधे हो गये थे। प्रद्वेषी नागकी ब्राह्मण कन्यासे इनका विवाह हुआ था जिससे उन्हें गौतम आदि कई पुत्र हुए। ऋग्वेदके प्रथम मंडलमें दीर्घतमाके रचे अनेक मंत्र हैं (विष्णु० ४.१८.१३; १९.१६)। (२) उशिज ऋपिका एक पुत्र (जो वृहस्पतिके बड़े भाई उतथ्यसे उत्पन्न हुआ था, वृहस्पतिने उशिजपत्नीके साथ वलपूर्वक मैथुन किया था)। वृहस्पतिने क्रुद्ध हो शाप दे इसे जन्मान्ध कर दिया था। सौरभेय वृपभसे इसने गो धर्मकी शिक्षा ली थी। गोधर्मानुसार जैसी इच्छा हो किया जा सकता था। एक वार इन्होंने भाईकी स्त्रीका प्रेमालिंगन मैथुनार्थ किया था फलतः इन्हें गंगामें वहा दिया गया (मत्स्य० ४८.४१-५७; वायु० ९९.३४-७६)। विरोचनवलिने इन्हें वचाया और पाला पोसा एवं अपनी रानी सुदेष्णासे क्षेत्रज पुत्रोंके उत्पादनके लिए कहा, अतः वलिकी रानीसे पाँच और रानीकी अनुचरीसे एक पुत्र इन्होंने उत्पन्न किया। यह काक्षिवान् कहलाया (भाग० ९.२३.५; मत्स्य० ४८.५८-७८; वायु० ९९.९२)।

सुरभिने इनके गोधर्मसे प्रसन्न होकर इनका अन्धापन दूर कर दिया और यह गोतम कहलाये (मत्स्य० ४८.७९-८४)। काक्षीवान्के साथ यह गिरिव्रज गये जहाँ तपकर इन्हें मोक्ष मिला (मत्स्य० ४८.८५-८६)। यह एक मंत्रकृत् ऋपि थे (ब्रह्मां० २.३२.१०१, १११; मत्स्य० १४५.९५-१०५)। यह भरद्वाजके सौतेले भाई थे। (३) राष्ट्रके पुत्र तथा धन्वंतरिके पिता (भाग० ९.१७.४)।

दीर्घप्रज्ञ–पु० [सं०] इस राजाके रूपमें वृपपर्वा, जो कश्यप द्वारा दनुके गर्भसे उत्पन्न दानवराज था, का पृथिवीमें जन्म हुआ। यह द्वापर युगमें विद्यमान था (महाभा० आदि० ६५.२४; ६७.१५-१६)।

दीर्घबाहु–पु० [सं०] (१) खट्वांग (दिलीप) का पुत्र तथा रघुका पिता (भाग० ९.१०.१; ब्रह्मां० ३.६३.१८३; वायु० ८८.१८३; विष्णु० ४.४.८३-४)। रघुसे अज और अजसे दशरथ हुए थे (विष्णु० ४.४.८५-८७)। (२) शिवके एक अनुचरका नाम—हरिवंश। (३) धृतराष्ट्रके एक पुत्रका नाम। प्रतिज्ञानुसार भीमसेनने इसका वध किया था। (महाभा० भीष्म० ६७.१०२; ९६.२६)। (४) अजका पुत्र (मत्स्य० १२.४९)।

दीर्घमुख–पु० [सं०] ५१ गणेशों (विघ्नेश्वरोंमेंसे एक (१४ वें) का नाम—दे० (ब्रह्मां० ४.४४.६६)।

दीर्घयज्ञ–पु० [सं०] द्वापर युगके अयोध्याके एक राजाका नाम (महाभा० सभा० ३०.२)।

दीर्घलोचन–पु० [सं०] (१) शिवके एक अनुचरका नाम (शिव०)। (२) धृतराष्ट्रके १०० पुत्रोंमेंसे एकका नाम (महाभा० आदि० ६७.१०४)।

दीर्घश्रवा–पु० [सं०] दीर्घतमा ऋपिके एक पुत्रका नाम। अकाल पड़नेपर ऋग्वेदके अनुसार इन्होंने व्यापार कर लिया था।

दीर्घसत्र–पु० [सं०] एक तीर्थका नाम जहाँकी यात्रा करनेसे राजसूय और अश्वमेध यज्ञका फल प्राप्त होता है (महाभा० वन० ८२.१०८)।

दीर्घा–स्त्री० [सं०] विष्णुकी स्थिति, पालिनी आदि १० कलाओंमेंसे एक कलाका नाम (ब्रह्मां० ४.३५.९५)।

दुंदुभि–पु० [सं०] (१) मय दानव और हेमा (रंभा=ब्रह्मां०) अप्सराका पुत्र जो मायावीका भाई था। ये छह भाई थे और इसे १००० हाथियोंका बल था (ब्रह्मां० ३.६.२८-९; वायु० ६८.२८)। (२) एक राक्षसका नाम जिसे वालिने मारा तथा उठाकर वेगसे उसके शवको एक योजन दूर ऋष्यमूक पर्वतपर फेंक दिया था। उसके रक्तविन्दु मतंग मुनिके आश्रममें गिरे जिससे आश्रम भ्रष्ट हो गया। अतः मुनिने शाप दिया 'शवको फेंकनेवाला यदि मेरे आश्रमके एक योजनके भीतर आयेगा तो उसके शिरके सैकड़ों टुकड़े हो जायंगे।' वालिने क्षमा याचना की, पर असफल रहा। मतंग ऋषिके शापके भयसे वालि उस पर्वतके निकट नहीं जा सकता था (वाल्मी० ४.५१; ४.११ तथा ४.९)। (३) अंधकका एक पुत्र तथा दरिद्योत (अरिद्योत=ब्रह्मां०) का पिता (भाग० ९.२४.२०)। (४) क्रौंचद्वीपके अधिपति द्युतिमान्‌के ७ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र जिसके नामपर क्रौंचद्वीपका एक जनपद दुंदुभि देश कहलाया (ब्रह्मां० २.१४.२३, २६; वायु० ३३.२१.२३; विष्णु० २.४.४८)। (५) क्रौंचद्वीपका एक पर्वत, (दुन्दुभिस्वन=ब्रह्मां० तथा वायु) भूखण्ड तथा एक वर्ष (ब्रह्मां० २.१४.२६; १९.६९, ७३; वायु० ४९.६३, ६८; विष्णु० २.४.५१)। (६) प्लक्षद्वीपके सात पर्वतोंमेंसे एकका नाम जहाँ दुंदुभि तथा छंदमृत्यु असुर दोनों देवोंसे परास्त हुए थे (ब्रह्मां० २.१८.७५; १९.१०; विष्णु० २.४.७; वायु० ४७.७२; ४९.९; ९६.१४५)। (७) दनुके १०० महाबली पुत्रोंमेंसे एक दानव (ब्रह्मां० ३.६.४; वायु० ६८.४)। (८) एक प्रकारका वाद्ययंत्र जिसके स्वरसे दैत्योंका कोलाहल शब्द दब गया। तारकामय युद्धमें इसका प्रयोग किया गया था (मत्स्य० १७७.२६)। (९) शानद्वीपका एक पर्वत जहाँ देवताओंने स्वेच्छामृत्यु दुदुंभि राक्षसको मारा था, अतः इस स्थानका यह नाम पड़ा (मत्स्य० १२२.१३-१४)। (१०) दूसरे द्वापरके भगवद्‌वतार सुतारके चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (वायु० २३.१२१)।

दुःशला–स्त्री० [सं०] गांधारीके गर्भसे उत्पन्न धृतराष्ट्रकी पुत्रीका नाम जो सिंधु-नरेश जयद्रथकी पत्नी थी। पतिके मरनेके पश्चात् इसने अपनी संरक्षकतामें अपने छोटे बालक सुरथको सिंहासनपर बैठाया। पाण्डवोंके अश्वमेधके समय अर्जुन घोड़ा लेकर जब सिन्धु देश पहुँचे तब सुरथ मारे भयके मर गया। अर्जुनने उसके पुत्रको राजा बनाया था (महाभा० ७८.२२-४१ अश्वमेध; भाग० ९.२२.२६)।

दुःशासन–पु० [सं०] धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक। दुर्योधन इससे अत्यन्त प्रेम करता था। यह उसका मंत्री भी था तथा अत्यंत क्रूर स्वभावका था। द्यूतक्रीड़ामें जब युधिष्ठिर द्रौपदीको हार गये तब उसे सभाभवनमें यही खींच लाया था और उसे नग्न करना चाहता था। महाभारतके युद्धमें भीमने अपने प्रतिज्ञानुसार इसका रक्तपान किया था (महाभा० सभा० ६७.३१; ६८-४०,५६; ७७-३; कर्ण० ८३.८-२९; भाग० ३.३.१३; विष्णु० ४.२०.३९)।

दुःशील–पु० [सं०] भण्डका एक सेनापति जो चित्रादेवी द्वारा मारा गया (ब्रह्मां० ४.२५.९९)।

दुदुह–पु० [सं०] अनुवंशोत्पन्न एक राजाका नाम—हरिवंश।

दुरतिक्रम–पु० [सं०] चतुर्थ द्वापरके भगवद्‌वतार सुहोत्रीके चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (वायु० २३.१२७)।

दुराधन–पु० [सं०] धृतराष्ट्रके १०० पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (महाभा० आदि० ६७.१०१)।

दुराधर–पु० [सं०] धृतराष्ट्रके १०० पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (महाभा० आदि० ११६.१०)।

दुरितक्षय–पु० [सं०] महावीर्यका पुत्र तथा त्र्यारुणि आदिका पिता जिसे ब्राह्मणगति प्राप्त हुई थी (दे० दुरुक्षय; भाग० ९.२१.१९-२०)।

दुरिष्ट–पु० [सं०] एक यज्ञ जिसे मारण, उच्चाटनादिके निमित्त किया जाता है। स्मृति तथा पुराणानुसार ऐसा यज्ञ करनेवाला पापी है और नरकका भागी होता है।

दुरुक्ति–स्त्री० [सं०] क्रोध और हिंसाकी पुत्री जो कलिकी बहिन और पत्नी भी थी (भाग० ४.८.३-४)।

दुरुक्षय–पु० [सं०] दे० दुरितक्षय। मत्स्य० के अनु० उरुक्षय (विष्णु० ४.१९.२४)।

दुर्ग–पु० [सं०] (१) गढ़, किला जो आदिराज पृथुके समय नहीं होते थे। दुर्ग ६ प्रकारके होते हैं धनुपदुर्ग, महीदुर्ग, नरदुर्ग, वृक्षदुर्ग, जलदुर्ग और गिरिदुर्ग। गिरिदुर्ग सर्वश्रेष्ठ है (वायु० ८.९८, १०८; ब्रह्मां० २.७.९२, १०१; मत्स्य० १०.३२; २१७.६-८७; भाग० ५.१.१८)। (२) एक राक्षस जिसे मारनेके कारण देवीका नाम दुर्गा पड़ा। यह रुरु दैत्यका पुत्र था तथा तपस्या कर पुरुपमात्रसे अवध्य हो गया था। इसने स्वर्गका राज्य छीन देवताओंको निकाल दिया था (स्कंद० काशी० उत्तरार्ध ७२.७१)।

दुर्गतरणी–स्त्री० [सं०] एक देवीका नाम (महाभा०)।

दुर्गति–स्त्री० [सं०] भंडके कई वीर पुत्रोंमेंसे एक पुत्र तथा एक सेनापति (ब्रह्मां० ४.२१.८६)।

दुर्गमा–स्त्री० [सं०] विंध्याचलसे निकली कई नदियोंमेंसे एक नदी (मत्स्य० ११४.२८)।

दुर्गा–स्त्री० [सं०] (१) विंध्यपर्वतसे निकली एक नदी (ब्रह्मां० २.१६.३३; वायु० ४५.१०३)। (२) आदिशक्ति, देवी (ब्रह्मां० ३.३२.२४, ४८,५९; ४.१९.८१; ३९.५७; ४४.७६)। शुक्लयजुर्वेद, वाजसनेयिसंहितामें अंबिकाको रुद्रकी भगिनी लिखा है। देवीभागवतके अनुसार सब देवता रसातल निवासी (ब्रह्मां० २.२०.३९) महिषासुरसे परास्त होकर ब्रह्माके पास गये और ब्रह्मा सबको साथ लेकर विष्णुके पास गये। महिषासुरको वर था कि वह किसी पुरुषसे नहीं मरेगा। इसलिए सब देवताओंने विष्णुके आदेशानुसार अपना-अपना तेज निकाला जिससे एक तेजःपुञ्ज स्वरूपा देवी प्रकट हुई जिसने महिषासुरका वध किया था (ब्रह्मां० ४.२९.७५ ८८)।

कालिकापुराणानुसार परब्रह्मके अंशस्वरूप ब्रह्मा, विष्णु और शिव हुए। ब्रह्मा और विष्णुने तो सृष्टि और स्थितिके लिए अपनी-अपनी शक्तिको ग्रहण किया पर शिव शक्तिसे अलग रहे और वे योगमें लीन हो गये। ब्रह्मा और दक्षकी स्तुतिसे प्रसन्न हो विष्णुकी माया दक्ष प्रजापतिकी पुत्री सती हुई और उसने तपसे शिवको प्रसन्न किया। दक्षके यज्ञमें जब सतीने देह त्याग दिया तब शवको शिवने अपने कंधेपर रख लिया। तदुपरांत ब्रह्मा, विष्णु और शनिने सतीके

मृत शरीरमें प्रवेश करके उसे काट-काटके गिराना आरम्भ किया। जहाँ-जहाँ शरीरखंड गिरा वहाँ-वहाँ देवीका पीठ बना। महामायाने हिमालयकी भार्या मेनकाके गर्भसे उत्पन्न होकर शिवसे विवाह किया।

मार्कण्डेयपुराणके अन्तर्गत दुर्गा-पाठ बड़ा प्रसिद्ध है। काशीखंडके अनुसार रुरुके पुत्र दुर्ग नामक महादैत्यने जब देवताओंको बहुत तंग किया तब शिवने असुरको मारनेके लिए देवीको भेजा जिसने ‘दुर्ग’का वध किया जिससे उसे ‘दुर्गा’ कहते हैं (स्कंद० काशी० उत्तरार्ध ७२. ७१)। योगमायाका एक नाम। जांबवान्‌की खोहसे श्रीकृष्णके सकुशल लौटनेके हेतु देवकीने इनकी स्तुति की थी (भाग० १०.२.११; ५६.३५)।

पर्याय—आद्याशक्ति, उमा, गौरी, काली, शिवा, भवानी, रुद्राणी, कल्याणी, अपर्णा, पार्वती, चण्डिका, अम्बिका, शारदा, चण्डी, गिरिजा, मंगला, नारायणी, महामाया, माधवी, जयंती, भार्गवी, सती, भ्रामरी, महिषमर्दिनी, हेरम्बजननी, सावित्री, कृष्णपिंगला, शूलधरा, भगवती, महाकाली, चामुंडा, आनंदा, महामात्रा, भीमादेवी, कृष्णा, चार्वगीं, कालिका, कामेश्वरी, भैरवी, तारा, भुवनेश्वरी, महालक्ष्मी, वागीश्वरी, त्रिपुरा, सुभगा, ज्वालामुखी, मातृका, बगलामुखी, अन्नपूर्णा, अन्नदा, विशालाक्षी, वेदमाता, आदि शांता आदि। इनकी पूजाकी विधिके लिए भाग० ११.२७.२९; स्कंद०, काशी० उत्तरार्ध देखिये।

दुर्गाख्य—पु० [सं०] भंडका एक पुत्र तथा सेनापति (ब्रह्मां० ४.२१.८३; २६.४९)।

दुर्गानवमी—स्त्री० [सं०] कार्त्तिक शुक्ल नवमी, जिस दिन जगद्धात्री पूजनका विधान है।

दुर्गाबोधन—पु० [सं०] भाद्रपद कृष्ण नवमीको यदि आर्द्रा हो तो देवीका पूजन करे (देवीपुराण)।

दुर्गाष्टमी—स्त्री० [सं०] (१) श्रावण शुक्ल अष्टमीको स्नान करे तथा भींगे वस्त्रसे देवीको स्नान कराके खीरका नैवेद्य भोग लगाये और स्वयं भी एक बार खाये (देवीपुराण)। (२) चैत्र और आश्विनके नवरात्रकी अष्टमी जिस दिन पूजनोपरांत कुँवारी कन्याको खिलाया जाता है। नवरात्रकी यह प्रधान तिथि है (देवीपुराण तथा ब्रह्मां०)।

दुर्जय—पु० [सं०] (१) अनंत राजा (आनर्त=मत्स्य०) का पुत्र तथा अमित्रकर्शनका पिता यह कार्त्तवीर्य वंशके थे (ब्रह्मां० ३.६९.५४; मत्स्य० ४३.४९; वायु० ९४.५३)। (२) विष्णुका एक नाम (महाभा० अनु० १४९.९६)। (३) कश्यप और दनुका पुत्र एक दानव (भाग० ६.६. ३१)।

दुर्दम—पु० [सं०] (१) (दुर्मद, दुर्दम) इन्हें दुर्मद भी कहते थे (वायु० ९६.१६८)। ये रोहिणीके गर्भसे उत्पन्न वसुदेवके एक पुत्र तथा अभिभूतके पिता थे (ब्रह्मां० ३.७१. १६५, १७१; मत्स्य० ४६.१२; वायु० ९६.१६३; विष्णु० ४.१५.२२)। (२) गान्धारराज धृतका पुत्र तथा प्रचेताका पिता (ब्रह्मां० ३.७४.११; वायु० ९९.११ विष्णु० ४. १७.४)। (३) वाराणसीके राजा रुद्रश्रेण्यका पुत्र एक राजा जिसका पुत्र कनक था (मत्स्य० ४३.११)। (४) चौथे द्वापरके भगवदवतार सुहोत्रीके चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (वायु० २३.१२७)। (५) भद्रश्रेण्यके सौ पुत्रोंमेंसे बचा एक पुत्र। इसके ९९ भाइयोंको दिवोदासने मार डाला था (वायु० ९२.६३; विष्णु० ४.११.१०)।

दुर्दमन—पु० [सं०] शतानीक राजाके पुत्र तथा बहीनरके पिता। यह जनमेजयके वंशके थे (भाग० ९.२२.४३)।

दुर्दर्शन—पु० [सं०] कौरवोंके एक सेनापतिका नाम जो बड़ा वीर था (महाभा०)।

दुर्दिह—पु० [सं०] १२ संख्यावाले शुक्रदेवगणमेंका एक देव (ब्रह्मां० २.१३.९५)।

दुर्दुर—पु० [सं०] भारतवर्षके सात कुल पर्वतोंके समीपस्थ सैकड़ों पर्वतोंमेंसे एक पर्वत (ब्रह्मां० २.१६.२०)।

दुर्द्धर—पु० [सं०] (१) महिषासुरका एक सेनापति (ब्रह्मां० ४.२९.७५; चण्डीपाठ ३.२०)। (२) धृतराष्ट्रका एक पुत्र। इसे दुराधर तथा दुराधन भी कहते थे (महाभा० आदि० ११६.१०)। (३) रावणका एक सैनिक। अशोकवाटिका उजाड़नेपर हनुमानको पकड़नेके लिए यह भेजा गया था, पर स्वयम् ही उनके हाथों मारा गया था (रामायण, सुंदरकांड)। (४) पुराणानुसार दुर्द्धर नामका एक नरक भी है।

दुर्द्धर्ष—पु० [सं०] (१) धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक (महाभा०, आदि० ६७.९४)। (२) एक राक्षस जो रावणका सेनापति और एक वीर सैनिक था (रामायण)।

दुर्भगा—स्त्री० [सं०] (१) काल (समय) की पुत्री (जरा) का एक नाम। इसने ययाति-पुत्र पुरु द्वारा वृत होनेपर उन्हें राज्यप्राप्तिरूप वरदान दिया, पर बृहद्व्रत (नारदजी) ने जब इसके साथ गांधर्व विवाह करना अस्वीकार किया तो इसने उन्हें सदा घूमते रहनेका शाप दिया। पुरञ्जन नगरपर विजय प्राप्त करनेमें इसने यवनपति भयकी सहायता की थी (भाग० ४.२७.१९-३०; २८.१.३.१०)। ‘बुढ़ापा’ (भाग० २९.२२); ५१ वर्णशक्तियोंमेंसे एक वर्ण शक्ति (ब्रह्मां० ४.४४.७५)। (२) अन्धकासुरके रक्तपानके लिए शिवजी द्वारा सृष्ट एक मानस-पुत्री मातृका (मत्स्य० १७९.१४)।

दुर्मद—पु० [सं०] (१) वसुदेव रोहिणीके आठ पुत्रोंमें एक पुत्र तथा अभिभूतके पिताका नाम (वायु० ९६.१६८)। (२) पुरञ्जनका साथी=उपस्थ (भाग० ४.२५.५२; २९. १४)। (३) भद्रसेनका एक पुत्र तथा धनक (कनक= ब्रह्मां०) का पिता (भाग० ९.२३.२३; ब्रह्मां० ३.६७.६६; ६९.७)। (४) वसुदेव और रोहिणीका एक पुत्र (भाग० ९.२४.४६-४७)। (५) वसुदेव और पौरवीका एक पुत्र (भाग० ९.२४.४७)। (६) एक असुर सेनापति जो १० अक्षौहिणी सेना ले ललितासे लड़ने गया था और सम्पत्करी सरस्वतीके हाथों मारा गया था (ब्रह्मां० ४.२२.१९, २८, ४७-६४)। (७) ५१ विघ्नेश्वरों (गणेशों) मेंसे एकका नाम (ब्रह्मां० ४.४४.६८)। (८) भद्रश्रेण्यका एक पुत्र (दे० दुर्दम तथा वायु० ९४.७)। (९) रोहिणी और आनकदुंदभि (वसुदेव) का एक पुत्र (वायु० ९६.१६९; वि० १५.१९)।

दुर्मना—पु० [सं०] धृतका एक पुत्र तथा प्रचेतागणका पिता (भाग० ९.२३.१५)।

दुर्मरणश्राद्ध–पु० [सं०] जो तिर्यग्योनि (कुत्ता आदि) के काटनेसे या विष-शस्त्रादिके घातसे मरे हों या ब्रह्मघाती हों उनका श्राद्ध आश्विन कृ० १४ को करनेसे उनकी तृप्ति होती है (मरीचि)।

दुर्मर्ष–पु० [सं०] देवासुर संग्राममें एक असुर का नाम, यह कामदेवसे लड़ा था (भाग० ८.१०.३३)।

दुर्मर्षण–पु० [सं०] शूर और मारिपासे उत्पन्न दस पुत्रोंमेंसे एक अर्थात् वसुदेवानुज सृञ्जय तथा उग्रसेनकी पुत्री राष्ट्रपालीका एक पुत्र (भाग० ९.२४.४२)।

दुर्मित्र–पु० [सं०] पुष्पमित्रका पुत्र (भाग० १२.१.३४)।

द्रुमिल–पु० [सं०] भगवान् ऋषभदेवके जयन्तीदेवीमें आत्मतुल्य १०० पुत्र हुए। उनमें भरत ज्येष्ठ और श्रेष्ठ थे। उनसे छोटे नौ तत तत् देशोंके राजा हुए। नौ (कवि, हरि आदि) परम भगवद्भक्त महात्मा हुए। उनमेंसे सातवेंका नाम (भाग० ५.४.११)।

दुर्मुख–पु० [सं०] (१) उत्तररामचरितके अनुसार श्री रामचन्द्रका एक गुप्तचर जिसके मुखसे उन्होंने सीताके विषयमें लोकापवाद सुना था। सीताको इसीके समाचारपर दूसरी बार वनवास दिया गया था (उत्तररामचरित)। (२) महिषासुरका एक सेनापति (दुर्गापाठ ३.२० ब्रह्मां० ४.२९.७५)। (३) खशा और कश्यपके कई राक्षस पुत्रोंमेंसे एक राक्षस पुत्र (ब्रह्मां० ३.७.१३६; वायु० ६९.१६७)। (४) धृतराष्ट्रके एक पुत्रका नाम (महाभा० आदि० ६७.९४)। (५) श्री रामचन्द्रकी सेनाका एक बंदर (रामायण)। (६) एक यक्षका नाम। (७) एक काद्रवेय नागका नाम (ब्रह्मां० ३.७.३५; मत्स्य० ६.४१; वायु० ६९.७१)। (८) छह विघ्ननायकोंमेंसे एक का नाम (ब्रह्मां० ४.२७.८१)। (९) रावणका एक बलवान् सहायक राक्षस (रामायण, बाल०, दो० १८०)। (१०) सुहोत्री, जो विष्णुका अवतार था का एक पुत्र (वायु० २३.१२७)।

दुर्मुखी–स्त्री० [सं०] एक राक्षसीका नाम जिसे रावणने सीताको समझानेके लिए नियुक्त किया था (रामायण)।

दुर्योधन–पु० [सं०] कुरुवंशीय राजा धृतराष्ट्र और गांधारीके १०० लड़कोंमेंसे सबसे बड़ा लड़का (भाग० ९.२२.२६; १०.६४(४); मत्स्य० ५०.४८; वायु० ९९.२४३; विष्णु० ४.२०.३९)। यह अपने चचेरे भाई पांडवोंसे बहुत बुरा मानता था। गदा संचालन इसने बलरामसे सीखा था (भाग० १०.५७.२६; ब्रह्मां० ३.७१.८४; वायु० ९६.८३)। पर यह भीमसे उन्नीस पड़ता था, अतः उससे अधिक चिढ़ा रहता था। युवराज बननेके समय इसने छलसे युधिष्ठिरको वन भेज दिया। वनवाससे आकर युधिष्ठिरने राजसूय यज्ञ किया जिससे यह और जल गया और उनके विनाशका उपाय ढूँढ़ने लगा (भाग० १०.७४.५३; ७५.२.४)। इसने विदुरकी बड़ी भर्त्सना कर राज्यसे निकाल दिया था (भाग० १.७.१४; ३.१.१४-१५)। युधिष्ठिर आदि पांडवोंको जला कर भस्म कर देनेके लिए इसने एक लाक्षागृह बनवाया था, पर रहस्य खुल जानेके कारण पांडव जीते ही निकल भागे थे (महाभा० आदि० १४३.२-१७; विष्णु० ४.१३.७०)। इसने अपने मामा शकुनिकी सहायतासे पासेके खेलमें पांडवोंका सर्वस्व जीत लिया, यहाँतक कि युधिष्ठिर द्रौपदीको भी हार गये। दुर्योधन द्रौपदीको अपनी जंघापर बैठाना चाहता था, जिसपर भीमने गदासे उसकी जाँघ तोड़नेकी प्रतिज्ञा की थी। अंतमें द्यूतक्रीड़ाके नियमानुसार धृतराष्ट्रने पांडवोंको १२ वर्ष वनवास और एक वर्ष अज्ञातवासकी आज्ञा दी [महाभा० वन विराट् भाग० १०.६४(४)]। अज्ञातवास पूरा होनेपर श्रीकृष्ण पांडवोंके दूत बन कौरवोंके पास संधिके निमित्त गये, पर दुर्योधनने 'सूचिकाग्रम न दास्यामि विना युद्धेन केशव' कहा। अंतमें कुरुक्षेत्रका प्रसिद्ध युद्ध हुआ जिसमें सब कौरव मारे गये। भीमने दुःशासनका रक्तपान कर तथा दुर्योधनकी जाँघ तोड़ अपनी प्रतिज्ञाएँ पूरी कीं (भाग० १०.७८(१६(५)१५, १८-१९), ३९; ७९.२३; ८०(१); ३.३.१३; मत्स्य० १०३.३-५)। दुर्योधनको युधिष्ठिर सुयोधन कहते थे, यह सारी कथा महाभारतमें विस्तारसे दी हुई है।

दुर्वाक्षी–स्त्री० [सं०] (दुर्वाक्षी = ब्रह्मां०) वसुदेवानुज वृककी पत्नी जिससे उनके तक्ष पुष्कर, शाल आदि पुत्र हुए। (भाग० ९.२४.४३)।

दुर्वारि (वारण ?)–पु० [सं०] कम्बोज देशका एक राजा जो कुरुक्षेत्रके युद्धमें लड़ा था (महाभा० द्रोण० ११२.४२-४३)।

दुर्वासा–पु० [सं०] (१) एक मुनि जो अनसूयाके गर्भसे उत्पन्न अत्रि ऋषिके पुत्र थे—दे० दत्तात्रेय। यह दत्तात्रेयके छोटे भाई (भाग० ४.१.१५; ब्रह्मां० ३.८.८२; वायु० ७०.७६) तथा शिवके अंशसे उत्पन्न हुए थे (भाग० ४.१.३३)। जिसका धर्ममें दृढ़ निश्चय हो उसे 'दुर्वासा' कहते हैं। और्व मुनिकी पुत्री कंदलीसे इनका विवाह हुआ था और उस समयके प्रतिज्ञानुसार इन्होंने पत्नीके १०० अपराध क्षमा किये थे। यह अपने अत्यंत क्रोधी स्वभावके लिए विख्यात थे और सौ अपराधोंको क्षमा करनेके पश्चात् इन्होंने पत्नीको जलाकर भस्म कर दिया था। अम्बरीषके मामलेमें और्वके शापके कारण इनका दर्प चूर्ण हुआ और इन्हें अपमानित होना पड़ा था (भाग० ९.४.३५-७१ और ९.५.१-२२)। महाभारत तथा पुराणोंमें इनकी अनेक कथाएँ दी हुई हैं। इनका नाम किसी वैदिक ग्रंथमें नहीं मिलता है। ब्रह्मवादिनी अबलाके ये भाई थे (वायु० ७०.७६)।

विशेष–स्वयं शंकरने ही अंश रूपसे अनसूयाके गर्भसे दुर्वासा रूपमें जन्म ग्रहण किया था (भाग० ४.१.३३)। विष्णुपुराणानुसार इनके कोपसे इंद्र लक्ष्मीभ्रष्ट हुए थे (भाग० ८.५.१६; ब्रह्मां० ४.५.१६.२०; ९.३१; ४०.१२०)। एक समय ये खीर खा रहे थे, उच्छिष्ट श्रीकृष्णको शरीरमें मलनेकी आज्ञा अकस्मात् दे बैठे। श्रीकृष्णने सारे शरीरमें लगाया, पर ब्राह्मणका प्रसाद होनेके कारण पैरोंमें नहीं मला। इसपर दुर्वासा बोले—'तुमने मेरा उच्छिष्ट सर्वांगमें लगाया है, अतः तुम्हारा सर्वांग अभेद्य होगा, परन्तु पैरमें नहीं लगाया है, अतएव वह अंग अभेद्य नहीं होगा।' स्मरण रहे श्रीकृष्णकी मृत्यु पैरमें तीर लगनेके कारण हुई थी (भाग० ११.३०.३१; विष्णु० ५.३७.१-४: ४७-७५)। कुंतीकी सेवासे प्रसन्न होकर इन्होंने एक मन्त्र बतलाया था जिसके प्रभावसे कर्णआदिका जन्म हुआ था (दे० (कुंती, महाभा० आदि० ६७.१३३-१३४ तथा भागव०;

भाग० ९.२४.३२; १.१.१२)। एक बार पांडवोंको इनका कोपभाजन बननेसे श्रीकृष्णने बचाया था (भाग० १.१५.११)। (२) एक सिद्ध (भाग० ६.१५.१३)। (३) पिंडारक जानेवाले ऋषियोंमेंसे एक (भाग० ११.१.१२)।

दुर्विनीत–पु० [सं०] भण्डका एक सेनापति (ब्रह्मां० ४.२१.८७)।

दुर्विष–पु० [सं०] शिवका एक नाम। समुद्रमंथनसे निकला विष यह पान कर गये थे, पर उसका कुछ भी प्रभाव नहीं हुआ था, अतः यह नाम पड़ा (भा० ८.७.४२)।

दुर्विषह–पु० [सं०] धृतराष्ट्रके पुत्रका नाम इसका दुर्विगाह नामाक्षर था (महाभा० आदि० ११६.५)।

दुला–स्त्री० [सं०] वर्षाऋतुमें जलधारा बरसानेवाली १२ शक्तियोंमेंसे एक शक्तिका नाम (ब्रह्मां० ४.३२.२९)।

दुल्लोल–पु० [सं०] क्रोधा या क्रोधवशाकी पुत्री सरमा जो अपनी बड़ी-छोटी बहिनोंके साथ पुलहको ब्याही थी, के दो पुत्रोंमेंसे एक पुत्र जो चार पुत्रोंका पिता था (ब्रह्मां० ३.७.४४१)।

दुश्च्यवन–पु० [सं०] इन्द्रका एक नाम—दे० इन्द्र।

दुश्शठ–पु० [सं०] भंडके एक सेनापतिका नाम (ब्रह्मां० ४.२१.८७)।

दुष्कंत–पु० [सं०] मरुत्तका दत्तक पुत्र तथा सरूप्यका पिता जो पौरव वंशोत्पन्न था (ब्रह्मां० ३.७४-३-५)।

दुष्कर्ण–पु० [सं०] धृतराष्ट्रके १०० पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (महाभा० आदि० ११६.३)।

दुष्टशेखर–पु० [सं०] एक असुर जिसकी सृष्टि भंडने अपने वामांससे की थी (ब्रह्मां० ४.१०.८१)।

दुष्पराजय–पु० [सं०] धृतराष्ट्रके १०० पुत्रोंमेंसे एक पुत्र जिसका नामान्तर दुर्जय था (महाभा० वन० ११६.९)।

दुष्पर–पु० [सं०] पिशाचोंके प्रारंभिक १६ जोड़ोंमेंसे एक जोड़ेका पुरुष पिशाच। इसकी स्त्रीका नाम पूरणा था (ब्रह्मां० ३.७.३७७)।

दुष्प्रधर्ष–पु० [सं०] धृतराष्ट्रका एक पुत्र (महाभा० आदि० ६७.९६)।

दुष्यंत–पु० [सं०] (१) विष्णु पुराणानुसार रैभ्य और उपदानवीके पुत्रका नाम। महाभारतके अनुसार एक दिन शिकार खेलते-खेलते ये कण्व ऋषिके आश्रमपर जा पहुँचे जहाँ मेनका अप्सराके गर्भसे उत्पन्न विश्वामित्रकी पुत्री शकुंतलासे इनकी भेंट हुई और उससे वहीं गांधर्व विवाह भी हो गया—दे० कण्व। इससे उत्पन्न भरत दुष्यंतका औरस पुत्र था जो बड़ा प्रतापी राजा हुआ। पहिले तो दुष्यंतने शकुंतला और भरतका लोक-लाजके भयसे पत्नी और पुत्रके रूपमें ग्रहण करना अस्वीकार किया, परन्तु आकाशवाणी होनेपर उन्हें ग्रहण किया। इन्हींके पुत्र भरतके नामपर इनके वंशज भारत कहलाये। इस देशका नाम भारतवर्ष ऋषभदेव-पुत्र भरतके नामसे (तेषां खलु महायोगी भरतो ज्येष्ठः श्रेष्ठगुण आसीत येनेद वर्ष भारतेमिति व्ययदिशान्ति) रखा गया (भाग० १.१२.२०; ९.२०.७-२२[१-२]; मत्स्य० ४९.१०-११; ब्रह्मां० ३.६.२५; वायु० ६८.२४; ९९.१३३-६)। इसी कथाके आधारपर कवि कालिदासने 'अभिज्ञान-शाकुंतल' लिखा था—दे० शकुंतला। (२) (ब्रह्मां० = दुष्कंत) पुरुवंशोत्पन्न एक राजा जो मरुत्तका दत्तक पुत्र था। यह ययातिका ज्येष्ठ पुत्र था (भाग० ९.२३.१७-१८; वायु० ९९.३; विष्णु० ४.१६.५-६)। महाराज ययातिके शापके फलस्वरूप तुर्वसु और पौरव वंश मिलकर एक हो गया (विष्णु० ४.१९.९-१०)।

दुस्सह–पु० [सं०] एक विधवा ब्राह्मणी तथा एक कामी चांडालका दुष्टात्मा पुत्र जो शिवकी कृपासे चित्रांगदका पुत्र विचित्रवीर्य नामसे पुनर्जन्ममें उत्पन्न हुआ था। यह शांतनु-पुत्रसे भिन्न था। शिवसायुज्य हो यह जन्मांतरमें शिवगण वीरभद्र हुआ (स्कंद०, माहे०–भा० ५.४.९ खंड)।

दूती–स्त्री [सं०] (१) ललितादेवीकी सेविका १५ अक्षर देवियोंमेंसे एक अक्षर देवीका नाम (ब्रह्मां० ४.१९.५८; ३७.३४)। (२) अन्धकासुर-रक्तपानार्थ शिवसृष्ट कई मानस-मातृकाओंमेंसे एक मानस-पुत्री मातृका (मत्स्य० १७९.१०)।

दूरे-अमित्र–पु० [सं०] एक मरुत्का नाम जो कुल ४९ हैं—दे० मरुत्।

दूर्व–पु० [सं०] नृपञ्जयका एक पुत्र तथा तिमिका पिता (भाग० ९.२२.४२)।

दूर्वा–स्त्री० [सं०] दूब घास जो पूजाके काममें आती है (भाग० ५.३.६)। प्रातःकालमें इष्ट देवता, गुरुको प्रणाम करना; दिव्यमाला, गन्ध धारण करना; दूर्वा, अंजन दर्पण आदि मांगलिक वस्तुओंका दर्शन शुभ कहा गया है (ब्रह्मां० ३.२८.१०)।

दूर्वाक्षी–स्त्री [सं०] वसुदेवके भाई वृककी स्त्रीका नाम (भाग० ९.२४.४३)।

दूर्वागणपति–पु० [सं०] श्रावण शु० ३ को होनेवाला एक व्रत जिसमें मध्याह्न व्यापिनी चौथ लेना होता है। तीन या पाँच वर्ष करनेसे सम्पूर्ण अभीष्ट सिद्ध होते हैं (सौर-पुराण)।

दूर्वाष्टमी–स्त्री० [सं०] भादों शुक्लाष्टमी जिस दिन स्त्रियाँ व्रत तथा शिवकी पूजा करती हैं। सात प्रकारके फल, पुष्प, दूर्वा और नैवेद्यका अर्पण करे तो धन-धान्यसे परिपूर्ण रहे (भविष्यपुराण)।

दूषण–पु० [सं०] (१) विश्रवा और वाकाका एक पुत्र (ब्रह्मां० ३.८.५६; वायु० ७०.५०)। (२) लंकाधिपति रावणके भाई एक राक्षसका नाम। 'खर' नामका इसका दूसरा भाई था। राज्यके प्रांतकी रक्षा करनेके लिए खर और दूषण १४००० सेना लेकर दण्डकारण्यमें रहा करते थे। रावणकी बहिन भी इसी वनमें रहती थी। श्री रामचंद्र जब इस वनमें रहते थे (वनवास कालमें) तब शूर्पणखा उनके पास गयी थी, पर लक्ष्मणने इसकी नाक काट ली थी। इससे क्रुद्ध हो दूषण और खरने श्रीरामपर आक्रमण किया था, पर वे सब मारे गये (रामायण अरण्य कां० १७-२०; भाग० ९.१०.९)।

दूषणा–स्त्री० [सं०] भौवनकी रानी 'दूषणा'से त्वष्टाकी उत्पत्ति हुई है (भाग० ५.१५.१५)।

दृढ़–पु० [सं०] (१) धृतराष्ट्रके एक पुत्रका नाम जिसका दृढक्षत्र नामान्तर था (महाभा० आदि० ६७.९९)। (२) तेरहवें मनु रुचिके एक पुत्रका नाम।

दृढ़च्युत–पु० [सं०] राजा परपुरञ्जयकी पुत्रीके गर्भसे उत्पन्न अगस्त्य ऋषिके एक पुत्रका नाम (भाग०)।

दृढ़दस्यु–पु० [सं०] दृढ़च्युतके पुत्र तथा अगस्त्य ऋषिके पौत्र एक ऋषिका नाम—दे० भाग० तथा दृढ़च्युत।

दृढ़धन्वा–पु० [सं०] पुरुवंशोत्पन्न एक राजाका नाम।

दृढ़द्युम्न–पु० [सं०] तीन ब्रह्मिष्ठ आगस्त्योंमेंसे एक ब्रह्मिष्ठ-आगस्त्य का नाम (मत्स्य० १४५.११४)।

दृढ़नाम–पु० [सं०] अस्त्रोंकी एक काट जिससे विपक्षीके चलाये अस्त्र बेकार हो जाते हैं। श्रीरामने विश्वामित्रजीसे इसे सीखा था (वाल्मी० रामायण)।

दृढ़नेत्र–पु० [सं०] वाल्मीकिके अनुसार विश्वामित्रजीके एक पुत्रका नाम।

दृढ़नेमि–पु० [सं०] सत्यधृतिका पुत्र, अजमीढ़वंशी एक राजा। सुपार्श्वका (सुधर्मा=मत्स्य०) पिता (भाग० ९.२१.२७; मत्स्य० ४९.७०; विष्णु० ४.१९.४९)।

दृढ़भक्ति–पु० [सं०] एक बंदर नायक (ब्रह्मां० ३.७.२३९)।

दृढ़रथ–पु० [सं०] (१) सेनजितका एक पुत्र (मत्स्य० ४९.५०)। (२) नवरथका एक पुत्र तथा शकुनिका पिता (मत्स्य० ४४.४३)। (३) जयद्रथका एक पुत्र (वायु० ९९.१११)।

दृढ़रुचि–पु० [सं०] कुशद्वीपके अधिपति हिरण्यरेताका एक पुत्र (भाग० ५.२०.१४)।

दृढ़वर्मा–पु० [सं०] धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (महाभा० आदि० ६७.९९)।

दृढ़व्रत–पु० [सं०] (१) अठारहवें द्वापरका एक विष्णु अवतार शिखण्डीके चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्र; (वायु० २३.१८३)। (२) एक व्रत जिसमें चैत महीनेमें गन्धानुलेपनका त्याग किया जाता है तदनन्तर गन्ध (चन्दन) से भरे सीप तथा दो सफेद वस्त्र ब्राह्मणको दिये जाते हैं। इस व्रतसे वरुण लोक मिलता है (मत्स्य० १०१.४४)।

दृढ़संध–पु० [सं०] धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (महाभा० आदि० ६७.१००)।

दृढ़सेन–पु० [सं०] सुश्रवाका पुत्र तथा सुबलका पिता यह मगधदेशका बृहद्रथ वंशीय राजा था। इस वंशने मगधमें १००० वर्ष तक राज्य किया (विष्णु० ४.२३.७-८)।

दृढ़स्यु–पु० [सं०] अगस्त्य ऋषिके एक पुत्रका नाम जो विदर्भराजकी पुत्री लोपामुद्राके गर्भसे उत्पन्न हुए थे, ये अपनी माताके गर्भमें सात वर्ष तक पले और बढ़े थे। सात वर्षके उपरान्त अपने ओज और प्रभावसे दीप्त हो उदरसे बाहर आये। ये महान् विद्वान् तपस्वी तेजस्वी थे जन्मकालसे ही सोपनिषद् वेदोंका स्वाधाय करतेसे प्रतीत होते थे। बाल्यकालसे ही इध्म सूक्ष्मधाका भारवहन करनेसे इनका नाम इध्मवाह हो गया था (महाभा० वन० ९९.२५-२७)।

दृढ़हनु–पु० [सं०] सेनजित्के चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (भाग० ९.२१.२३; विष्णु० ४.१९.३६)।

दृढ़हस्त–पु० [सं०] धृतराष्ट्रके एक पुत्रका नाम (महाभा० आदि० ६७.१०२)।

दृढ़च्युत–पु० [सं०] भाग० के अनु० एक ऋषि जो अगस्त्यके एक पुत्र तथा इध्मवाहके पिता थे (भाग० ४.२८.३२)।

दृढ़ायु–पु० [सं०] (१) तीसरे मनु सावर्णिके एक पुत्रका नाम। (२) उर्वशीके गर्भसे उत्पन्न (ऐल) पुरुरवा राजाके उर्वशीसे उत्पन्न आठ पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (मत्स्य० २४.३३)। (२) तीन आगस्त्य ब्रह्मिष्ठोंमेंसे एक ब्रह्मिष्ठका नाम (ब्रह्मां० २.३२.११९)।

दृढ़ायुध–पु० [सं०] धृतराष्ट्रके १०० पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (महाभा० आदि० ६७.९९)।

दृढ़ाश्व–पु० [सं०] (१) कुवलाश्वका एक पुत्र (ब्रह्मां० ३.६३.६२)। धुंधुको मारनेके कारण कुवलाश्वका नाम धुंधुमार पड़ा, इसलिए इन्हें धुंधुमारका पुत्र भी कहा जाता हैं, जो हर्यश्वका पिता था। धुंधुमार (कुवलाश्व)के २१ हजार पुत्रोंमेंसे केवल ३ ही पुत्र बच गये। शेष धुंधुके मुखाग्निसे जल गये (भाग० ९.६.२३-२४; मत्स्य० १२.३२; वायु० ८८.६१-२; विष्णु० ४.२.४२-४३)।

दृढ़ास्य–पु० [सं०] अगस्त्य ऋषिका एक पुत्र जो पुलहका दत्तक पुत्र था, अतः पुलहवंशी आगस्त्य हुए (मत्स्य० २०२.११)।

दृढ़ेषुधि–पु० [सं०] तामस मनुके ११ पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (ब्रह्मां० २.३६.४९)।

दृतिवातवातोरयन–पु० [सं०] एक यज्ञ विशेषका नाम (हि. श. सा.)।

दृश्यामेघा–पु० [सं०] नाड़ियोंका एक समूह जो अग्नि (सूर्य) से अवश्याय=ओस कण गिराती है (ब्रह्मां० २.२४.२८)।

दृषदश्व–पु० [सं०] पृथुका पुत्र तथा अन्ध्रका पिता (ब्रह्मां० ३.६३.२७)।

दृषद्वती–स्त्री० [सं०] (१) एक नदीका नाम जिसका उल्लेख ऋग्वेदमें है। महाभारतके अनुसार यह कुरुक्षेत्रके अंतर्गत थानेश्वरसे १३ मील दक्खिन है जिसे आजकल घग्घर और राखी कहते हैं। द्वारकासे हस्तिनापुर जाते समय कृष्णजीने इसे पार किया था (भाग० ५.१९.१८; १०.७१.२२; ब्रह्मां० २.१६.२६; ३.१३.६९; वायु० ५९.१२८; ९९.२५९)। मनुस्मृतिके अनुसार इसे ब्रह्मावर्त्तकी सीमापर होना चाहिये। शतानीकके पुत्र अधिसोमकृष्णका तीसरा यज्ञ यहीं हुआ था जो दो वर्षोंतक चलता रहा (वायु० ९९.२५८, २७०; विष्णु० ४.२१.६.७; मत्स्य० २२.२०; ५०.६७; १११.२२)। (२) विश्वामित्रकी एक पत्नीका नाम जो अष्टककी माता थी (ब्रह्मां० ३.६६.७५; वायु० ९१.१०३)। (३) संहताश्वकी एक रानीका नाम (ब्रह्मां० ३.६३.६५; वायु० ८८.६४)। (४) अनरण्यके पुत्र हर्यश्वकी पत्नी तथा वसुमतकी माताका नाम (ब्रह्मां० ३.६३.७५; वायु० ८८.७६)। (५) दिवोदासकी रानी तथा प्रतर्दनकी माता (ब्रह्मां० ३.६७.६७; वायु० ९२.६४)। (६) उशीनरकी पाँच रानियोंमेंसे एक जो शिविकी माता थी (ब्रह्मां० ३.७४.१८, २०; मत्स्य० ४८.१६.१८; वायु० ९९.१९.२१)।

दृष्टकेतु–पु० [सं०] भण्डका एक सेनापति (ब्रह्मां० ४.२१.८६)।

दृष्टधर्म–पु० [सं०] श्वफल्कके १३ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र तथा

उपमद्गुका एक भाई (विष्णु० ४.१४.९)।

दृष्टहास—पु० [सं०] भण्डका एक सेनापति (ब्रह्मां० ४.२१.८६)।

दृष्टिदेवी—स्त्री० [सं०] अंगदेव्यंतरकी छह शक्तिदेवियां जो ललितादेवीकी अत्यन्त समीपवर्तिनी हैं, मेंसे एक शक्ति देवी (ब्रह्मां० ४.३७.४२)।

दृष्टिधृक—पु० [सं०] इक्ष्वाकु राजाके एक पुत्रका नाम।

देयक्—पु० [सं०] (१) २० संख्यावाले सुखदेव गणके एक सुखदेवताका नाम (ब्रह्मां० ४.१.१९ वायु० १००.१८)।

देव—पु० [सं०] (१) छठे कल्पका नाम (मत्स्य० २९०.४)। (२) चतुरानन (ब्रह्मा) से उत्पन्न एक १४ मुखवाला देवता जिसका रंग-रूप तथा स्वर भिन्न-भिन्न था, इन्हींसे १४ मनु हुए (वायु० २६.२७.३०; विष्णु० १.५.३३-४)। (३) विश्वामित्रके पुत्रोंमेंसे एक (वायु० ९१.९६)। (४) अक्रूर और उग्रसेनीका एक पुत्र (वायु० ९६.११२)। (५) देवकका पुत्र (वायु० ९६.१२९)। (६) गया जिलाके औरंगाबाद सब-डिवीजनमें ग्रैंड-ट्रंक रोडसे २ मील दूर एक ग्राम जहाँ कात्तिक तथा चैत्रमें सूर्य षष्ठीके दिन सूर्यमंदिरके सामने एक बड़ा मेला लगता है। यह मंदिर तथा तालाब राजा द्युमत्सेनने बनवाया था जो इस तालाबके जलसे कुष्टरोगमुक्त हुए थे—दे० द्युमत्सेन।

देवगण—पु० [सं०] देवता आठ प्रकारके माने गये हैं (वायु० ५८.१२३)।

देवऋषभ—पु० [सं०] भानु और धर्मका एक पुत्र जो इन्द्रसेनका पिता था (भाग० ६.६.५)।

देवऋषि—पु० [सं०]=देवर्षि। (१) देवताओंके लोकमें रहनेवाले ऋषि विशेष धर्मपुत्र, नर नारायण, क्रतुके पुत्र वालखिल्य, पुलह-पुत्र कर्दम, पुलस्य-पुत्र कुबेर, प्रत्यूष-पुत्र दल, कश्यप-पुत्र नारद और पर्वत ये सब देवर्षि हैं। जो मन्त्रद्रष्टा हैं, वे देवर्षि कहे जाते हैं—"ऋषन्ति वेदान् यस्मात्ते तस्माद्देवर्षयः स्मृताः (ब्रह्मां० २.३५.८९-९८; वायु० ६१.८०.८८)। (२) विष्णुका तीसरा अवतार नारद, जिन्होंने सात्वत तंत्र पंचरात्रागमकी व्याख्या की थी (भाग० १.३.८; ११.१६.१४)।

देवक—पु० [सं०] (१) आहुक (आहुकांध=वायु०) के पुत्र, एक यदुवंशी राजा जो उग्रसेनके भाई, कंसके चाचा तथा देवकीके पिता अथवा श्रीकृष्णके नाना थे (भाग०१.१४.२७; ३.१.३३; १०.३६, २४(३१), ३४; ब्रह्मां० ३.७१.१२९-३०; मत्स्य० ४४.७१-२; विष्णु० ४.१४.१६-१७)। इनके चार पुत्र तथा ७ कन्याएँ थीं जो सब वसुदेवको व्याही थीं। उपदेव, देववान् आदि इनके चार पुत्र थे (भाग० ९.२४.२१-२३; वायु० ९६.१२८-९; विष्णु० ४.१४.१८-१९; ५.१.')। (२) युधिष्ठिरके एक पुत्रका नाम जो पौरवी (यौधेयी=विष्णु०) के गर्भसे उत्पन्न हुए थे (भाग० ९.२२.३०; विष्णु० ४.२०.४४)।

देवकी—स्त्री० [सं०] (१) 'देवक भोज पुत्री सुनामा'। वसुदेवकी पत्नी तथा श्रीकृष्णकी माताका नाम। यह देवककी पुत्री तथा मथुरापति कंसकी चचेरी बहिन थी। इनके विवाहके समय आकाशवाणी हुई थी कि अरे मूर्ख, जिसका प्रसन्नतासे तू रथ हाँक रहा है उसका आठवाँ गर्भ तेरा नाश करेगा तथा उसके पश्चात् नारदजीने कंससे कहा था कि देवकीके आठवें गर्भसे उत्पन्न पुत्र उसका वध करेगा। अतः नारदजीके कथनानुसार इनके सात बच्चे कंसने मरवा डाले और जब आठवाँ गर्भ स्थित हुआ तब इनपर कड़ा पहरा बैठा दिया गया। भादों कृष्णाष्टमीकी आधीरातको श्रीकृष्णका जन्म हुआ और उसी रातको यशोदाको एक पुत्री हुई। योगमायाकी कृपासे सब प्रहरी सो गये और वसुदेव रातोंरात कृष्णको यशोदाके यहाँ रख आये और यशोदाकी पुत्री देवकीके पास लाकर सुला दी। कंसने ज्यों ही उस कन्याको पत्थरपर पटका, त्यों ही वह हाथसे छूट कर आकाशमें उड़ गयी (यह कन्या योगमाया थी)। जाते समय कह गयी कि 'तुझे मारनेवाला उत्पन्न हो गया है।' देवकीके छह पुत्र—सुषेण, कीर्तिमान्, ऋय, भद्रसेन, ऋजुदाय, भद्रविदेक-कंस द्वारा मारे गये (वायु० ९६.१७३)। (२) स्वायंभुव मन्वंतरमें देवकी पृश्नि थी और वसुदेव सुतपा थे। दूसरे मन्वंतरमें देवकी अदिति हुईं और वसुदेव कश्यप (भाग० १०.३-३२-४४.५०-५१; ४५.१-१२; भाग० १.८.२३, ३३; ११.२८; १०.३६.२०; ४३.२४; विष्णु० ५.२.२; ४.१४; १८.७-८)। जब श्रीकृष्ण जाम्बवान्की खोहमें गये थे तब इन्हें बड़ी चिंता हुई थी और इन्होंने दुर्गाकी स्तुति की थी (भाग० १०.५६.३४-५)। इन्होंने (देवकीने) एक बार अपने मृत पुत्रोंको देखनेकी इच्छा प्रकट की थी, फलतः श्रीकृष्णने सुतलसे सबको ला दिखला दिया था और फिर वे स्वर्ग लौट गये थे (भाग० १०.८५.२७-३३, ५२, ५६-७०)। बलराम और कृष्णकी मृत्युसे इन्हें स्वभावतः अति दुःख हुआ। अंतमें यह सती हो गयी थीं (भाग० ११.३१.१८; विष्णु० ५.३८.४)। (३) सती देवीकी एक मूर्ति, जो मथुरामें स्थापित है (मत्स्य० १३.३९)। (४) यौधेय, जो युधिष्ठिरका एक पुत्र था, की माता (मत्स्य० ५०.५६)।

देवकीपुत्र—पु० [सं०] श्रीकृष्ण, 'देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते।' छांदोग्य उपनिषद्में आंगिरस ऋषिके शिष्य कृष्णका विवरण है।

देवकुरु—पु० [सं०] जम्बूद्वीपके ६ खण्डोंमेंसे एक जो सुमेरु और निषधके मध्यमें स्थित माना गया है—दे० जैन हरिवंश।

देवकुल—पु० [सं०] एक बहुत ही छोटे दरवाजेवाला देवमंदिर जहाँ नर्तकियोंको नौकरी भी मिलती थी (मत्स्य० ७०.२८)।

देवकुल्या—स्त्री० [सं०] (१) पूर्णिमाके गर्भसे उत्पन्न मरीचिकी एक पुत्री। यह प्रस्तावकी माता थी और विष्णुके पदप्रक्षालनके पश्चात् यही एक स्वर्गीय नदी बन गयी थी। (२) गंगा नदी (भाग० ४.१.१४; ५.१५.६)।

देवकूट—पु० [सं०] (देवशैल=वायु०)। (१) कुबेरके आठ पुत्रोंमेंसे एक। शिव-पूजनके लिए पुष्प सूँघ कर लानेके कारण यह कुबेरके शापसे कंसका भाई हुआ था और श्रीकृष्ण द्वारा मारा गया था (वायु०)। (२) वशिष्ठ मुनिके आश्रमके निकटका एक पवित्र तीर्थ जहाँ स्नान करनेसे मनुष्यको अश्वमेधका फल प्राप्त होता है (महाभा० वन० ८४.१४१)। (३) मेरुमूलके पूर्वका एक पर्वत जहाँ गरुड़ पक्षी बहुत मिलते हैं (भाग० ५.१६.२७; ब्रह्मां० ३.७.४५२;

वायु० ३५.८; ३७.२८; ४०.१; ४२.२१; ४३.१२) ।

देवकृतक्षय-पु० [सं०] सत्रहवें द्वापरके व्यास जब हिमालयके ऊँचे शिखरपर गुहावासी नामसे विष्णुका अवतार हुआ था (वायु० २३.१७४) ।

देवक्षेत्र-पु० [सं०] देवरातका पुत्र तथा मधु (देवन=ब्रह्मां०) का पिता (भाग० ९.२४.५; ब्रह्मां० ३.७०.४५; मत्स्य० ४४.४३-४; वायु० ९५.४४; विष्णु० ४.१२.४२) ।

देवगण-पु० [सं०] आठ वसु, ग्यारह रुद्र, वारह आदित्य, इन्द्र और प्रजापति सब मिला कर ३३ देवता होते हैं (शतपथब्राह्मण; वायु० ६६.८०) ।

देवगर्भ-पु० [सं०] हृदिकका एक पुत्र तथा शूरका पिता (विष्णु० ४.१४.२४-५) ।

देवगर्भा-स्त्री० [सं०] कुशद्वीपकी एक नदी (भाग० ५.२०.१५) ।

देवगिरि-पु० [सं०] (१) दक्षिणका एक प्राचीन नगर जो यादव राजाओंकी राजधानी था, आजकल इसे दौलताबाद कहते हैं । (२) भारतवर्षका एक पर्वत (भाग० ५.१९.१६) ।

देवगुरु-पु० [सं०] बृहस्पतिका एक नाम (मत्स्य० २३.३०.४७) ।

देवगुह्य-पु० [सं०] (देवगुही=ब्रह्मां०) सरस्वतीके पति तथा सार्वभौम हरिके पिता (भाग० ८.१३.१७) ।

देवगृह-पु० [सं०]=देवालय । ग्रह-नक्षत्रोंको देवताओंका घर कहा गया है जो प्रलयतक स्थिर रहते हैं (ब्रह्मां० २.२४.२; वायु० ५३.२) ।

देवजनी-स्त्री० [सं] (देवजननी=वायु०) मणिवर यक्षकी पत्नी जो अनेक पुत्रोंकी माता थी, जिनके अपने भी अनेक पुत्र, पौत्रादि हुए (ब्रह्मां० ३.७.१२१; १२७; वायु० ६९.१५३, १५८-१७३) ।

देवजिह्व-पु० [सं०] आंगिरसत्कुलका एक त्र्यार्षेय प्रवरप्रतक ऋषि (मत्स्य० १९६.४३) ।

देवठान-पु० [सं० देवोत्थानी] कार्त्तिक शुक्ला एकादशी । कहते हैं इस दिन विष्णु भगवान् सोकर उठते हैं और मंगल कार्योंका प्रारम्भ होता है ।

देवतरु-पु० [सं०] मंदार, पारिजात, संतान, कल्पवृक्ष और हरिचन्दन, ये स्वर्गके वृक्ष कहलाते हैं ।

देवता-पु० स्त्री० [सं०] वेदोंके अनुसार इस शब्दके कई भाव हैं । साधारणतः वेद-मंत्रोंके विषय देवता कहलाते हैं । याज्ञिक लोग मंत्रको ही देवता मानते हैं । इनके अनुसार 'सोमप और असोमप' देवताओंकी दो श्रेणियाँ मानी गयी हैं । नैरुक्तक लोग पृथ्वीका अग्नि, अंतरिक्षका वायु और आकाशका सूर्य, ये ही तीन देवता मानते हैं । ऋग्वेदमें तेंतीस देवता कहे गये हैं—दे० देवगण । पौराणिकोंने वेदके ३३ देवताओंको ३३ कोटि बनाया (वायु० ३०.१६०); ३० करोड़ (वायु० ६१.१३८) । आजकलके पंचदेव ये हैं—विष्णु, शिव, सूर्य, गणेश और दुर्गा । पुराणानुसार अदितिके गर्भसे कश्यपके पुत्र देवता उत्पन्न हुए । बौद्ध और जैन लोग भी देवता मानते हैं, पर उनके देवता बोधिसत्त्व तथा तीर्थंकरोंसे निम्न कोटिके होते हैं । देवताओंके ऋपियों तथा पितरोंसे सम्बन्धकी व्याख्या (वायु० ६२.२१) ।

देवताजित्-पु० [सं०] भरत-सुत सुमति और वृद्धसेनाके पुत्र तथा देवद्युम्नके पिताका नाम (भाग० ५.१५.२) ।

देवतीर्थ-न० पु० [सं०] ब्रह्मा द्वारा स्थापित नर्मदा तटपरके एक तीर्थका नाम (मत्स्य० १९१.२४; १९३.८१) ।

देवत्रयी-पु० [सं०] ब्रह्मा (सृष्टिकर्त्ता), विष्णु (सृष्टिका रक्षक); महेश (संहारकर्त्ता) । ये ही तीनों मुख्य देवता माने गये हैं । ईसाइयोंके यहाँ भी त्रिदेव हैं ।

देवदत्त-पु० [सं०] (१) कल्किके घोड़ेका नाम (भाग० १२.२.१९) । (२) अर्जुनके शंखका नाम । यह शंख मयासुरने बिन्दु सरोवरसे लाकर अर्जुनको दिया था (महाभा० सभा० ३.८) । (३) पातालके आठ नागोंमेंसे एकका नाम (भाग० ५.१४.२४; २४.३१; ६.९.३५) । (४) गौतम बुद्धके चचेरे भाईका नाम (भारतका इतिहास) । (५) अग्निवेश्यके पिताका नाम जो उरुश्रवाके पुत्र थे (भाग० ९.२.२०-२२)।

देवदर्श-पु० [सं०] अथर्ववेदी कबन्धका एक शिष्य जिसने संहिताके चार भाग कर अपने चार शिष्योंको दिये थे (ब्रह्मां० २.३५.५७; विष्णु० ३.६.९-१०) ।

देवदारुवन-पु० [सं०] कालसर्पिके निकटका एक पवित्र स्थान जहाँ किये गये श्राद्धका अक्षय फल होता है (ब्रह्मां० ३.१३.९९) । मुंडपृष्ठकी ढालपर स्थित एक पुण्य वन जहाँ भगवदवतार दारुक हुए (वायु० २३.१९५; १०८.६६) । सतीदेवीकी एक मूर्त्ति पुष्टिका निवास स्थान होनेसे एक पवित्र तीर्थस्थान (मत्स्य० १३.४७) ।

देवदासी-स्त्री० [सं०] बहुत प्राचीन प्रथाके अनुसार मंदिरोंमें दानस्वरूप दी हुई कुमारी लड़कियाँ, जो नाच, गान तथा वेश्यावृत्ति भी करने लगती हैं । दक्षिणके मंदिरोंमें ये अधिक हैं । महाराष्ट्रमें इन्हें 'मुरली' तथा तैलंग देशमें इन्हें 'बसवा' कहा जाता है । मिस्र, बाबिलन, यूनानके प्राचीन मंदिरोंमें भी यह प्रथा पायी जाती थीं ।

देवदुंदुभि-पु० [सं०] स्वर्गके वाद्य-नगाड़े । देवीको युद्धके लिए प्रस्थान करते देख ये खूब बजे थे (ब्रह्मां० ३.६३.५३; ४.२०.१००) ।

देवदेव-पु० [सं०] दे० महेश्वर, महादेव (ब्रह्मां० ४.२.२५७) ।

देवदेवेश-पु० [सं०] शिवका एक नाम (ब्रह्मां० ३.२२.७८) ।

देवद्युम्न-पु० [सं०] देवताजित् और आसुरीका पुत्र जो धेनुमतीका पति और परमेष्ठीका पिता था (भाग० ५.१५.३) ।

देवद्रोणी-स्त्री० [सं०] शिवलिंग स्थापित करनेका अरघा ।

देवधानी-स्त्री० [सं०] मानसोत्तरपर इन्द्रकी नगरी जो मेरुके पूर्व है (भाग० ५.२१.७) ।

देवधेनु-स्त्री० [सं०] कामधेनु गौ जिसे देवताओंकी गौ कहा गया है और जिससे सब मनोरथ सिद्ध होते हैं—दे० कामधेनु ।

देवनंदी-पु० [सं०] देवराज इन्द्रका द्वारपाल ।

देवन-पु० [सं०] (१) देवक्षत्रका एक पुत्र तथा मधुका पिता जो क्षत्रिय था (ब्रह्मां० ३.७०.४५; वायु० ९५.४४) । (२) क्रौंचद्वीपका एक पर्वत (मत्स्य० १२२.८०) ।

देवपति–पु० [सं०] एक भार्गव गोत्रकार ऋषि (मत्स्य० १९५.२२)।

देवपत्तन–पु० [सं०] काठियावाड़में स्थित सोमनाथका मंदिर, पुराणोंमें इसे प्रभासक्षेत्र कहा गया है, पर शिलालेखोंके अनुसार इसका नाम देवपत्तन होना चाहिये।

देवपर्वत–पु० [सं०] नागपति, चण्ड, शतशीर्ष, विष्णुचक्राङ्क-चिह्नित आदि ये संख्यामें आठ हैं (वायु० ४१.७३.८०)।

देवपाल–पु० [सं०] शाकद्वीपके सात पर्वतोंमेंसे एक सीमा पर्वत (भाग० ५.२०.२६)।

देवपुरी–स्त्री० [सं०] स्वर्गमें स्थित अमरावती जो देवराज इन्द्रकी राजधानी है—दे० इन्द्र तथा अमरावती।

देवपुरोहित–पु० [सं०] बृहस्पति (विष्णु० २.७.८)।

देवप्रतिष्ठा–पु० [सं०] प्रतिमा स्थापित करनेके लिए मंत्राभिषिक्त करनेके नियमादि–दे० प्रतिमा (मत्स्य० २६६.६९)।

देवप्रयाग–पु० [सं] टेहरी गढ़वाल जिलेके अंतर्गत एक तीर्थ जो गंगा और अलकनंदाके संगमपर स्थित है। कहते हैं रावणको मारनेके पश्चात् श्रीरामने यहाँ आत्मशुद्धिके लिए तप किया था। यहाँ रामचन्द्रजीका एक मंदिर भी है। इस तीर्थके माहात्म्यके लिए द्रष्टव्य (स्कंद० हिमवत्-खंड)।

देवप्रस्थ–पु० [सं०] (१) श्रीकृष्णके बचपनका साथी एक गोप बालक (भाग० १०.२२.३१)। (२) कुरुक्षेत्रसे उत्तर-पूर्व स्थित एक प्राचीन पुरी जहाँका राजा सेनाबिंदु था (महाभा० सभा० २७.१२)।

देवप्रहरण (गण)–पु० [सं०] देवताओंका एक वर्ग; ये कृशाश्व (मत्स्य=भृशाश्व) ऋषिके पुत्र हैं। प्रत्येक कल्प और मन्वंतरमें यह प्रकट होकर पुनः गुप्त हो जाते हैं (मत्स्य० ६.६,७; वायु० ६६.७९; विष्णु० १.१५.१३७)।

देवबाहु–पु० [सं०] (१) हृदीकके तीन पुत्रोंमेंसे एक पुत्र तथा कम्बलबर्हिषका पिता (भाग० ९.२४.२७; ब्रह्मां० ३.७१.१४१)। (२) प्रीति और पुलस्त्यके तीन पुत्रोंमेंसे द्वितीय पुत्र (ब्रह्मां० २.११.२७; वायु० २८.२२)। (३) एक पौलस्त्य जो रैवत मन्वंतरके सप्तर्षियोंमेंसे एक ऋषि था (ब्रह्मां० २.३६.६१)।

देवभाग–पु० [सं०] (१) देवमीढ़-सुत शूर और मारिषाके वसुदेव आदि दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्र जो कंसाका पति तथा चित्रकेतु और बृहद्बलका पिता था (भाग० ९.२४.२८, ४०; ब्रह्मां० ३.७१.१४९, १८८; वायु० ९६.१४७; विष्णु० ४.१४.३०)।

देवभुज–पु० [सं०] एक श्रेष्ठतम दोग्धा जिसने उत्तम मनुके मन्वंतरमें पृथ्वीरूपी गौका दूध दूहा था (वायु० ६३.१५)।

देवभूति–पु० [सं०] ब्रह्मां=देवभूमि; वायु०=क्षेमभूमि शुंगवंशोत्पन्न अंतिम (दसवाँ) राजा भागवतका पुत्र जो कामी होनेके कारण कण्व वंशी वसुदेव नामक अपने ही अमात्यसे मारा गया था (भाग० १२.१.१८-२०; विष्णु० ४.२४.३६-७, ३९; ब्रह्मां० ३.७४.१५५; वायु० ९९.३४४; मत्स्य० २७२.३१)।

देवभ्राज–पु० [सं०] सुपक्ष पर्वतके निकटवर्ती हिमालयका एक वन, जहाँसे होकर गङ्गाजी सितोद सरोवरकी ओर बही हैं (वायु० ४२.४६)।

देवमति–पु० [सं०] आङ्गिरस वंशका त्र्यार्षे प्रवर-प्रवर्तक एक ऋषि (मत्स्य० १९६.२८)।

देवमातर–स्त्री० [सं०] दक्षकी ६० पुत्रियोंका सामूहिक नाम (मत्स्य० ५.१५; वायु० ६५.२९)।

देवमाता–स्त्री० [सं०] (१) दक्षकी कन्या तथा कश्यपकी पत्नी आदितिका नाम जिनके गर्भसे देवता उत्पन्न हुए थे (मत्स्य० १७९.१५)। (२) सरस्वतीमें स्थापित सती देवीकी प्रतिमूर्ति एक देवीका नाम (मत्स्य० १३.४४)।

देवमानुषी–स्त्री० [सं०] (देवमीढुष) शूरकी एक पुत्री (वायु० ९६.१४३)।

देवमार्ग–पु० [सं०] (देवभाग ?) शूर और भोजाका एक पुत्र (मत्स्य० ४६.२)।

देवमास–पु० [सं०] (१) गर्भका आठवाँ महीना जिसे स्मृति और ओजकी उत्पत्तिके कारण देवमास कहते हैं। (२) देवताओंका एक महीना जो हम लोगोंके तीस वर्षके बराबर होता है।

देवमित्र–पु० [सं०] (१) शाकल्य ऋषिका एक नाम जो ज्ञान गर्वित होनेके कारण राजा जनकके यज्ञमें अपनी शर्तके अनुसार मृत्युको प्राप्त हुए (वायु० ६०.३२, ६३)। (२) माण्डूकेयका एक शिष्य जिसने सौभरि आदि शिष्योंको संहिताकी शिक्षा दी थी (भाग० १२.६.५६)।

देवमित्रा–स्त्री० [सं०] कुमारकी अनुचरी एक मातृका (महाभा० शल्य ४६.१४)।

देवमीढ़–पु० [सं०] (१) हृदीकका पुत्र तथा शूरका पिता इनका पुत्र तथा मारिषाका पति शूर जिसके वसुदेव आदि १० पुत्र हुए तथा पृथा आदि ५ पुत्रियाँ भी थीं। पृथा भोजनरेश कुंतिभोजकी दत्तक पुत्री थी (भाग० ९.२४.२७-३१)। (२) कृतिरथ (कीर्तिरथ=ब्रह्मां) का पुत्र तथा विश्रुत (विबुध=ब्रह्मां०) का पिता (भाग० ९.१३.१६; ब्रह्मां० ३.६४.१२; वायु० ८९.१२)। (३) मिथिलाके एक राजा जो कीर्तिरथके पुत्र तथा सीरध्वज जनकके पूर्वज थे (वाल्मी० रामायण)। (४) कृतरथका पुत्र तथा विबुधका पिता (विष्णु० ४.५.२७)।

देवमीढुष–पु० [सं०] (१) श्रीकृष्णके पिता वसुदेवके दादाका नाम (भागवत)। (२) (शूर), माद्री और वृष्णिका एक पुत्र (ब्रह्मां० ३.७१.१४५; मत्स्य० ४५.२)। एक राजर्षि (वायु० १.१४७)। (३) शूर और माषीका पुत्र (वायु० ९६.१४३)।

देवमुनि–पु० [सं०] (१) नारद ऋषिका नाम (नारदपुराण)। (२) सुर नामके ऋषि।

देवमूक–पु० [सं०] एक पर्वतका नाम (गर्गसंहिता)।

देवयात्रा–पु० [मं०] अर्जुन द्वारा सुभद्रा-हरणके पूर्व द्वारकामें हुई एक देवपूजनोत्सवकी यात्रा (भाग० १०.८६.९)।

देवयात्रि–पु० [सं०] एक दानवका नाम (हरिवंश)।

देवयान–पु० [सं०] (पितृयानका उलटा) सूर्यका उत्तर जाना—यह नागवीथिसे उत्तर और सप्तर्षियोंसे दक्षिण है।

मृत्युके उपरांत आत्माके ब्रह्मलोक जानेका रास्ता। यहाँ सिद्धगण रहते हैं जिनका पुनर्जन्म नहीं होता (वायु० ५०. २१६; विष्णु० २.८.९०-७)। उत्तरायण सूर्यमें मरनेवाला मोक्ष प्राप्त करता है (उपनिषद्)। यहाँ पिंगला (जो शरीर-के दाहिने भागमें है) के सहारे पहुँचते हैं (भाग० २.२. २४(२); ब्रह्मां० २.२२.१६९)। इसीके अनुसार भीष्म-पितामह कुछ दिनोंतक शरशय्यापर पड़े रहे और उत्तरायण सूर्य होनेपर उन्होंने प्राण छोड़ा था। यहाँ जानेके चार मार्ग हैं। सूर्यके द्वारसे होकर ही वहाँ पहुँचते हैं (ब्रह्मां० १. ७.१८३)।

देवयानी–स्त्री० [सं०] (१) जयंतीसे उत्पन्न दैत्यराज शुक्राचार्यकी पुत्री तथा इंद्रकी दौहित्री (मत्स्य० ४७.१८६)। (२) दैत्यगुरु शुक्राचार्य और ऊर्जस्वती (यजनी, जयंतीकी पुत्री और नहुष-पुत्र राजा ययातिकी पत्नी)। देवगुरु बृहस्पतिका पुत्र कच दैत्यगुरु शुक्राचार्यसे अमृतसंजीवनी विद्या सीखने आये। इससे रुष्ट हो दैत्योंने कचका वध कर उसका मांस शुक्राचार्यको किसी प्रकार खिला दिया। पता लगनेपर शुक्राचार्यने कचको अमृतसंजीवनी विद्या सिखा दी। कच गुरुका पेट फाड़ बाहर आया और उसी विद्याके प्रभावसे गुरुको पुनः जीवित कर दिया। देवयानीके विवाह-प्रस्तावको अस्वीकार करनेके कारण देवयानीने कचको शाप दिया—'तुम्हारी विद्या फलवती न हो।' और कचने देवयानीको शाप दिया—'तुम्हारा विवाह ब्राह्मणसे नहीं हो'—दे० कच।

एक बार देवयानी और दैत्योंके राजा वृषपर्वाकी पुत्री शर्मिष्ठामें साधारण-सी बातपर झगड़ा हो गया और शर्मिष्ठाने देवयानीको कुएँमें ढकेल दिया और उसे मृत समझ घर चली गयी। राजा ययाति शिकार खेलते उधरसे आये और देवयानीको कुएँसे निकाल कर अपने राज्यको चले गये। शुक्राचार्यको देवयानीने दासीसे कहला भेजा, पर घर जाना स्वीकार नहीं किया। देवयानीको प्रसन्न करनेके हेतु वृषपर्वाने अपनी पुत्री शर्मिष्ठाको देवयानीकी दासी बनाकर गुरुके घर भेज दिया। राजा ययातिसे देवयानीका विवाह हो गया। कुछ दिनोंमें देवयानीके गर्भसे यदु और तुर्वसु नामक पुत्र हुए और ययातिसे शर्मिष्ठाको दुह्यु, अणु और पुरु ये तीन पुत्र हुए। शर्मिष्ठासे सम्बंध कर लेनेसे शुक्राचार्यने क्रुद्ध होकर ययातिको शीघ्र ही बूढ़े होनेका शाप दिया। ययातिकी प्रार्थनापर शुक्राचार्य बोले—'यदि तुम्हारा बुढ़ापा कोई ले लेगा तब तुम फिर युवा हो जाओगे। शर्मिष्ठाके लिए ययातिने त्रिपुरके अशोक वनमें एक घर बनवा दिया था (मत्स्य० ३१.२.१०; १६०.१३; वायु० ३८.६८)। देवयानी-पुत्रोंके बुढापा लेना अस्वीकार कर देनेपर शर्मिष्ठाके पुत्र पुरुने पिताका बुढापा ले अपनी जवानी पिताको दी थी (भाग० ५.१.३४; मत्स्य० २४.५२-३; वायु० १.१५५; ६५.८४; ९८.२०; विष्णु० ४.१०.४, २०; (भाग० ९.१८.७-५१; मत्स्य० २५.७; २६.३२)।

देवयुग–पु० [सं०] (१) सत्ययुग। (२) ये संख्यामें दस हैं (वायु० ६१.१३१)।

देवयोनि–स्त्री० [सं०] यह संख्यामें चार हैं। देवताओंके अंतर्गत वे जीव जो स्वर्गमें रहते हों। विद्याधर, अप्सरा, यक्ष, राक्षस, गंधर्व, किन्नर, पिशाच, गुह्यक और सिद्ध सब इन्हीं चार योनियोंमें माने गये हैं (वायु० ६९.२०३)।

देवरक्षित–पु० [सं०] राजा देवकके एक पुत्रका नाम जो देवकीका भाई था (ब्रह्मां० ३.७१.१३०; मत्स्य० ४४.७२; विष्णु० ४.१४.१७)।

देवरक्षिता–स्त्री० [सं०] (१) राजा देवककी सात पुत्रियों एक पुत्री तथा देवकीकी बहिनका नाम। यह सातों बहिनें वसुदेवको ब्याही थी। जिनसे इसे ९ पुत्र तथा १ पुत्री थी (भाग० ९.२४. २३, ५२; ब्रह्मां० ३.७१, १३१, १६२, १८१; वायु० ९६.१३०; विष्णु० ४.१४.१८)। उपासंगधर इनका पुत्र था (मत्स्य० ४६.१६)।

देवरञ्जित–पु० [सं०] देवकका एक पुत्र (वायु० ९६. १२९)।

देवराक्षस–पु० [सं०] नैऋतगण (ब्रह्मां० ३.७.१४२; वायु० ६९.१७४)।

देवराज–पु० [सं०] इन्द्रका एक नाम।

देवराज्य–पु० [सं०] देवताओंके रहनेका स्थान, स्वर्गका नाम।

देवरात–पु० [सं०] (१) करंभिका पुत्र (करंभक=ब्रह्मां०, वायु०) तथा देवक्षत्र (दिवक्षेत्र=ब्रह्मा)का पिता था (भाग० ९.२४. ५; ब्रह्मां० ३.७०.४४; मत्स्य० ४४.४२-३; वायु० ९५.४३; विष्णु० ४.१२.४१-२)। (२) राजा परीक्षित्का नाम—दे० परीक्षित्। (३) सुकेतुका एक पुत्र जो निमिवंशोत्पन्न एक राजा तथा बृहद्रथ (बृहद्उक्थ=ब्रह्मां०) का पिता था (विष्णु० ४.५.२५; भाग० ९.१३.१४-१५; ब्रह्मां० ३.६४.८)। (४) विश्वामित्रके यहाँ जानेके कारण शुनःशेफका एक नाम जो याज्ञवल्क्यका पिता एक कौशिक ऋषि था (भाग० ९.१६.३०, ३२-३६; १२.६.६४; ब्रह्मां० २.३२. ११७; ३.६६.६७; वायु० ९१.९५; विष्णु० ४.७.३७)। यह ब्रह्मिष्ठ था (मत्स्य० १४५.११३; १९८.३)। (५) (भाग० ९.१६.३०, ३२, ३६; १२.६.६४; ब्रह्मां० २.३२.११७; ३. ६६.६७; वायु० ९१.९५; विष्णु० ४.७.३७) के अनुसार याज्ञवल्क्य ऋषिके पिता। (६) देवश्रवाका पिता (वायु० ९६.१८५)।

देवरातपुर–पु० [सं०] जिसे देवव्रातपुर भी कहते थे। एक लकड़हारेने अपने पुरोहितके प्रतिष्ठार्थ इस नगरको उन्हींके नामपर स्थापित किया था (ब्रह्मां० ४.७. ३४.३७)।

देवरारि–पु० [सं०] एक आंगिरस कुलका प्रवर-प्रवर्तक ऋषि (मत्स्य० १९६.१५)।

देवर्षि–पु० [सं०] नर, नारायण, नारद, वालखिल्य, पर्वत कर्दम आदि।

देवल–पु० [सं०] (१) एकपर्णा तथा असित मुनिके एक पुत्र जो वेदव्यासके शिष्य धर्मशास्त्रके ज्ञाता एक मुनि थे (ब्रह्मां० ३.८.३२; १०.१९; वायु० ७०.२७; ७२.१७)। एक ब्रह्मवादी तथा शाण्डिल्योंमें सर्वश्रेष्ठ (ब्रह्मां० २.३२. ११३; ३.८.३२; वायु० ५९.१०३; ७०.२८)। (२) एक सिद्ध जो धिषणा और कृशाश्वके चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्र जो हरिका ही रूप समझा जाता था (भाग० ६.६.२०; १५. १२; ११.१६.२८)। प्रायोपवेशके समय परीक्षित्से यह

मिलने गये थे (भाग० १.१९.१०)। इन्होंने शुकदेवजीको चित्रकेतुकी कहानी सुनायी थी (भाग० ६.१४.९) तथा हूहूको मगर योनिमें जन्म लेनेका शाप दिया (भाग० ८.४.३)। यह कश्यप-कुलके छह ब्रह्मवादियोंमें एक थे (मत्स्य० १४५.१०७)। (३) प्रत्यूषका एक पुत्र जो दो पुत्रोंका पिता था (ब्रह्मां० ३.३.२७; वायु० ६६.२६; विष्णु० १.१५.११७)। यह आठ 'वसुओंमें एक थे (मत्स्य० ५.२७; २०३.७)। (४) वसुदेव और उपदेवी (शिशिरावती = ब्रह्मां०) के चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (ब्रह्मां० ३.७१.१८२; मत्स्य० ४६.१७)। (५) पांचाल नरेश ब्रह्मदत्तकी रानी सन्नतिके पिताका नाम (मत्स्य० २०.२६)। (६) भगवद्-अवतार श्वेतके चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (वायु० २३.२०५)। (७) पारियात्रकका पुत्र तथा वच्चलका पिता (विष्णु० ४.४.१०६)।

देवलोक–पु० [सं०] 'भू, भुव, स्व, मह, जन, तप और सत्य' ये सात लोक हैं जो देवलोक है (मत्स्य०)। यहाँ सतीदेवीकी एक मूर्ति इंद्राणीके रूपमें स्थित तथा देवर्षियोंका यह निवासस्थान है (मत्स्य० १३.५२; ६१.१-२; वायु० ६१.८८)।

देववती–स्त्री० [सं०] ग्रामणी गंधर्वकी पुत्री जिसके गर्भसे माल्यवान्, सुमाली और माली नामक सुकेश राक्षसके तीन पुत्र हुए थे (रामायण)।

देववर–पु० [सं०] एक चरकाध्वर्यु (ब्रह्मां० २.३३.१२)।

देववरुणार्क–पु० [सं०] आरा शहरसे २७ मील दक्षिण-पश्चिम यहाँ एक स्तम्भपर नवग्रहकी टूटी-फूटी मूर्त्तियाँ हैं।

देववर्णिनी–स्त्री० [सं०] (देववर्णी, देववर्णा) बृहस्पतिकी पुत्री; बृहस्पतिकी पौत्री (वायु०)। भरद्वाज मुनिकी पुत्री तथा विश्रवा मुनिकी पत्नीका नाम जो वैश्रवणकी माता थी जिसे कुवेर कहते हैं। कुवेर देवताओंके धनाध्यक्ष हैं (ब्रह्मां० ३.८.३९-४०; वायु० ७०.३३)।

देववर्द्धन–पु० [सं०] राजा देवकके चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम जो देवकीके भाई तथा श्रीकृष्णके मामा थे (भाग० ९.२४.२२)।

देववर्ष–पु० [सं०] एक द्वीप जो शाल्मलिद्वीपका एक राजनीतिक विभाग है (भाग० ५.२०.९)।

देववात–पु० [सं०] एक वैदिक ऋषिका नाम।

देववान्–पु० [सं०] (१) रुद्रपुत्र सावर्णि (ऋतु सावर्ण= वायु०) मनुके बारह पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (भाग० ८.१३.२७; ब्रह्मां० ४.१.९४; वायु० १००.९८; विष्णु० ३.२.३६)। (२) अक्रूर और उग्रसेनी (ब्रह्मां० औग्रसेनी) का एक पुत्र (भाग० ९.२४.१८; ब्रह्मां० ३.७१.११३; मत्स्य० ४५.३१; विष्णु० ४.१४.१०)। (३) देवकके चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्र इनकी सात बहनें थीं जो वसुदेवको ब्याही गयी थीं (भाग० ९.२४.२२; ब्रह्मां० ३.७१.१३०; मत्स्य० ४४.७२; विष्णु० ४.१४.१७)।

देववायु–पु० [सं०] बारहवें मनुके एक पुत्रका नाम।

देववाहन–पु० [सं०] अग्निका एक नाम। देवताओंका हव्यकव्य अग्निमें हवन होता है जो इस अर्पित हव्यको देवताओंतक पहुँचाते हैं।

देववीति–स्त्री० [सं०] मेरुकी ९ पुत्रियोंमेंसे एक पुत्री तथा आग्नीधके पुत्रोंमेंसे एक पुत्र केतुमालकी पत्नी (भाग० ५.२.२३)।

देवव्रत–पु० [सं०] गंगाके गर्भसे उत्पन्न महाराज शांतनुके पुत्र भीष्मपितामह (महाभा० आदि० १००.२१; मत्स्य० ५०.४५)।

देवव्रात–पु० [सं०] ब्राह्मणोंमें प्रधान ब्राह्मण, जिन्होंने लकड़हारेकी दानशीलतासे प्रसन्न होकर उसका नाम द्विजवर्मा तथा उसकी पत्नीका नाम शीलवती रखा था। इसके उपलक्ष्यमें लकड़हारेने गुरुजनोंके प्रतिष्ठार्थ उन्हींके नामपर एक नगर स्थापित किया था (ब्रह्मां० ४.७.३१, ३७)।

देवशयनीएकादशी–स्त्री० [सं०] आषाढ़ शु० ११ से चार महीनोंतक अपनी रुचि तथा अभीष्टानुसार नित्य व्यवहारकी वस्तु त्याग दे (भविष्योत्तर पुराण)--दे० देवोत्थानी एकादशी।

देवशर्मा–पु० [सं०] (१) शोणाश्वके रणवांकुरे पांच पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (मत्स्य० ४४.७९)। (२) रथीतरके चार शिष्योंमेंसे एक शिष्य (वायु० ६०.६६)।

देवशिल्पी–पु० [सं०] देवताओंके शिल्पी विश्वकर्माका नाम—दे० विश्वकर्मा।

देवशुनी–स्त्री० [सं०] देवलोककी कुतिया सरमा। एक बार राजा जनमेजय कोई बड़ा यज्ञ कर रहे थे। इसी बीच वहाँ एक कुत्ता आया जिसे जनमेजयके भाइयोंने मार कर भगा दिया। उसने जाकर अपनी माता देवशुनीसे शिकायत की। देवशुनीने जनमेजयको शाप दिया—'बिना किसी अपराधके मेरे पुत्रको मारा, अतः तुम्हारे ऊपर अकस्मात् कोई दुःख पड़ेगा'—दे० सरमा (महाभा० आदि० ३.१, ७, ९)।

देवश्रवा–पु० [सं०] (१) देवमीढ़-सुत शूर और मारिषाके दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्र जो कंसवतीका पति था। इसके दो पुत्र थे (भाग० ९.२४.२८.४१; विष्णु० ४.१४.३०)। (२) विश्वामित्रके एक पुत्रका नाम—दे० विश्वामित्र (ब्रह्मां० २.३२.११८)। (३) शूर और भोजा (मारिषा ब्रह्मां= मारिषी)के दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (ब्रह्मां० ३.७१.१४९; मत्स्य० ४६.२)। (४) वसुदेवके भाईका नाम (भाग० ९-२४.२८)। (५) देवरातका एक पुत्र (वायु० ९६.१८५; ब्रह्मां० ३.७१.१८८)।

देवश्रुत–पु० [सं०] (१) दैत्यगुरु शुक्राचार्यका एक पुत्र—दे० शुक्राचार्य। (२) नारद मुनिका एक नाम। (३) अवसर्पिणीके एक जिनका नाम।

देवश्रेष्ठ–पु० [सं०] बारहवें मनु रुद्रसावर्णि (ऋतुसावर्णि= वायु०) मनुके बारह पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (भाग० ८.१३.२७; ब्रह्मां० ४.१.९४; वायु० १००.९८; विष्णु० ३. २.३६)।

देवसखा–पु० [सं०] उत्तर दिशाका एक पर्वत (वाल्मीकि रामायण)।

देवसत्र–पु० [सं०] एक यज्ञ विशेषका नाम (महाभा० वन० ८४.६८)।

देवसभा–स्त्री० [सं०] युधिष्ठिरकी सभाका नाम जो मयदानव द्वारा निर्मित थी और 'सुधर्मा' नाम था (महाभा० सभा० ४.१-८)।

देवसर्ग—पु० [सं०] वैकारिकया वैकृत सर्ग। इस सर्गके अन्तर्गत देवता, पितृगण, असुर, गंधर्व, अप्सरा, सिद्ध, यक्ष, राक्षस, चारण, भूत, प्रेत, पिशाच, विद्याधर, किन्नर आदि हैं (भाग० ३.१०.१६.२६-८; छठा अ०, वायु० ६.६३)।

देवसावर्णि—पु० [सं०] भागवतके अनुसार तेरहवें मनुका नाम जो चित्रसेन आदिका पिता था। इस मन्वंतरके देवस्पति इन्द्र थे, सुकर्मा, सुत्रामादि देवगण, निर्मोकादि ऋषि तथा योगेश्वर हरिके अवतार (भाग० ८.१३.३०-३२)।

देवसूनु—पु० [सं०] पितरोंका एक वर्ग जिसके चार उपभेद हैं—भूत, भविष्य, बड़े, छोटे (वायु० ७१.१५-१६)।

देवसेना—स्त्री० [सं०] सावित्रीके गर्भसे उत्पन्न दक्षप्रजापतिकी एक पुत्री जिसका दूसरा नाम षष्ठी भी है। महाभारतके अनुसार यह शिशुओंका पालन करनेवाली तथा मातृकाओंमें श्रेष्ठ मानी गयी है। इन्हें एक बार केशी दानव हर ले गया था, पर इन्द्रने इनकी रक्षा की और स्कंदसे इनका विवाह करा दिया। विवाहमें बृहस्पतिने होम, जप आदि किया था। जिस पंचमी तिथिको स्कंद श्रीयुक्त हुए थे वह श्री पंचमी कहलायी। जिस षष्ठीको स्कंद कृतकार्य हुए थे वह षष्ठी महातिथि कहलायी। इनकी एक बहिन थी जिसका नाम दैत्यसेना था (ब्रह्मां० ४.३०.१०५; मत्स्य० १५९.८; महाभा० वन० २२३.७-१५)।

पर्याय—षष्ठी, लक्ष्मी, आशा, सुखप्रदा, सिनीवाली, कुहू तथा अपराजिता।

देवसेनापति—पु० [सं०] देवताओं तथा देवगणोंसे सैनापत्यमें मन्त्राभिषिक्त (वायु० ३९.३३; ७२.४९)। अग्नि तथा गंगासे उत्पन्न कार्त्तिकेयका एक नाम। यह शिवके पुत्र थे जिन्हें स्कंद भी कहते हैं (दे० कार्त्तिकेय, ब्रह्मां० ३.१०.५०; ७३.११०)।

देवस्थान—पु० [सं०] (१) एक मुनि जिन्होंने युद्धके बाद पांडवोंको तथा राज्य प्राप्त होनेपर युधिष्ठिरको खास तौरसे कई बार उपदेश दिया था जिसमें राज्य न त्याग दें (महाभा० शान्ति० १.४)। (२) स्वर्गादि, वर्णाश्रमियोंके लिए, ब्रह्मासे लेकर पिशाचतक आठ स्थान; जहाँ अणिमादि आठ ऐश्वर्य हैं; तीन गुण—सत्त्व, रज, तम यहाँ व्याप्त मिलेंगे। इसे आँखोंसे नहीं देख सकते, केवल अनुभवमात्रसे समझना होगा (वायु० १०२.९६-८)। (३) पैशाच, राक्षस, गांधर्व, कौबेर, ऐन्द्र, सौम्य, प्राजापत्य और ब्राह्म। योगीको ब्रह्म प्राप्त करनेके लिए इन सब स्थानोंको छोड़ देना होगा (वायु० १२.३९-४२; ६१.१७०; १०२.९६-८)।

देवस्थानि—पु० [सं०] आंगिरसकुलका एक प्रवर-प्रवर्तक ऋषि (मत्स्य० १९६.१५)।

देवस्नपन—पु० [सं०] देव प्रतिष्ठाके समय किसी देवताकी प्रतिमाको पञ्चगव्य, दही, कुशजल, फलजल, गन्धजल, घट सहस्रजल, अष्ट महौषधिजल त्यादि जलोंसे स्नान कराना (मत्स्य० २६७.१-३५)।

देवहू—पु० [सं०] पुरंजन नगरका उत्तरी प्रवेश द्वार (भाग० ४.२५.५१; २९.१९ अर्थात् वामकर्ण)।

देवहूति—स्त्री० [सं०] हरिवंशके अनुसार स्वायंभुव मनुकी तीन पुत्रियोंमेंसे एक जो प्रियव्रत तथा उत्तानपादकी बहिन थी और कर्दम ऋषिको ब्याही थी। महर्षिकी कृपासे इन्हें दिव्य ज्ञान प्राप्त था। प्रसिद्ध सांख्य दर्शन रचयिता महर्षि कपिल इन्हींके गर्भसे उत्पन्न हुए थे (भाग० २.७.३; ३.१२.२७, ५५-६; २१.३; २२.९; ८.१.५)। इनके गर्भसे ९ कन्याएँ भी उत्पन्न हुई थीं। कपिलने ही इन्हें सांख्य दर्शनकी दीक्षा दी थी जिससे देवहूतिने निर्वाण प्राप्त किया था। जहाँ देवहूतिको सिद्धि मिली वह सिद्धपद कहलाया (भाग० ३.२२-२४ पूरा; ३३.१-३१; ४.१.१,१०)।

देवहोत्र—पु० [सं०] योगेश्वरके पिता, जिनकी पत्नीका नाम बृहती था (भाग० ८.१३.३२)।

देवह्रद—पु० [सं०] (१) कालञ्जर पर्वतपरका एक सरोवर (तीर्थ) जिसमें स्नान करनेसे यज्ञका हजार गोदानका फल होता है (महाभा० वन० ८५.५६)। (२) शालग्राममें; यहाँ (नागराट्) नागराज योग्योंका (पुण्यात्माओंका) पिंड स्वीकार करते तथा अयोग्योंका (पापियोंका) श्राद्ध-पिण्ड अस्वीकार करते हैं (ब्रह्मां० ३.१३.९०)।

देवांतक—पु० [सं०] (१) एक राक्षसका नाम जो रावणका पुत्र था और लंकाके युद्धमें सुग्रीव द्वारा मारा गया था (स्कंद० ब्राह्म० सेतुमाहात्म्य)। (२) कालनेमिके चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (ब्रह्मां० ३.५.३९; वायु० ६७.८०)।

देवाक्रीडनक—पु० [सं०] देवताओंका क्रीड़ा-उपवन; जो चार दिशाओंमें चार हैं—पूर्वमें चैत्ररथ, दक्षिणमें नंदन, पश्चिममें वैभ्राज और उत्तरमें सवितृवन (सूर्यका उपवन)—(वायु० ३६.१०)।

देवागार—पु० [सं०] देवताओंका निवासस्थान जिसे गंदा अपवित्र, या छिन्न-भिन्न करनेवालेको राजा द्वारा मृत्यु दण्ड दिया जाना चाहिये (मत्स्य० २२७.१७८)।

देवाट—पु० [सं०] हरिहर क्षेत्र तीर्थ जहाँ गंडक नदी बहती है और सोनपुर स्टेशनसे जाना होता है (वाराहपुराण)।

देवातिथि—पु० [सं०] (१) क्रोधनका एक पुत्र तथा ऋष्यका (विष्णु=ऋक्ष) पिता (भाग० ९.२२.११; विष्णु० ४.२०.५)। (२) अक्रोधनका एक पुत्र तथा दक्षका पिता (मत्स्य० ५०.३७; वायु० ९९.२३२)।

देवाधिप—पु० [सं०] देवराज इन्द्रका एक नाम—दे० इन्द्र।

देवानीक—पु०[सं०](१) क्षेमधन्वाकेपुत्र अनीहके (ब्रह्मां०=अहीनगुके) पिता और पारियात्रके दादाका नाम (भाग० ९.१२.२; ब्रह्मां० ३.६३.२०३; मत्स्य० १२.५३; वायु० ८८.२०३; विष्णु० ४.४.१०६)। (२) धर्म सावर्णिक मनुके आठ पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (वायु० १००.८४; विष्णु०; ३.२.३२)। (३) राजा सगरके वंशका एक राजा। (४) कुशद्वीपका एक पर्वत (भाग० ५.२०.१५)।

देवानुचर—पु० [सं०] विद्याधर आदि उपदेवोंको देवताओंके साथ चलनेके कारण देवानुचर कहते हैं।

देवानुज—पु० [सं०] औत्तम मनुके तेरह पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (वायु० ६२.३४)।

देवापि—पु० [सं०] (१) महाभारतके अनुसार राजा प्रतीपके पुत्र एक राजा। देवापि, शंतनु और वाह्लीक प्रतीपके तीन पुत्र थे जिनमें केवल देवापिने तपोबलसे ब्राह्मणत्व प्राप्त किया था। ऐसा विश्वास है कि सुमेरु पर्वतपर कलाप

ग्राममें यह योगीके रूपमें अबतक हैं। कलियुग समाप्त होनेपर सत्ययुगमें यह चन्द्रवंश स्थापित करेंगे (भाग० ९.२२.१२-१८; १२.२.३७; वायु० ९९.२३४; मत्स्य० ५०.३९-४१; २७३.५६)। वैदिक कथाके अनुसार इनके पिताका नाम ऋष्टिषेण होना चाहिये। (२) एक पौरव राजा। कहते हैं कृतयुगमें यह क्षत्रियोंकी स्थापना करेंगे (वायु० ९९.४३७-८)। यह प्रतीपके पुत्र थे और बाल्यकालमें ही योगसाधन करने वन चले गये और अपने धार्मिक विचारोंके कारण सिंहासनारूढ़ न हो सके (विष्णु० ४.२०.९-३०)।

देवांबुज–पु० [सं०] उत्तम मनुके १३ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (ब्रह्मां० २.३६.३९)।

देवाभ्र–पु० [सं०] एक पहाड़ जिसपर जनपद भी है। वहाँकी जनता हिरण्यकशिपुकी शक्तिसे घबड़ाती तथा डरती थी (वा० १६३.८८)।

देवारण्य–पु० [सं०] (१) 'देवारण्यं विशोकम्'। कैलाश पर्वतके दक्षिण पूर्व लोहित नामका महान् पर्वत है उसकी तलहटीमें लोहित नामका झील है उससे लौहित्य नद निकलता है उसके तटपर स्थित एक बड़ा वन (वायु० ४७.११)। (२) एक तीर्थ, जहाँ शिराजकी पुत्री अन्वाने कठोर व्रत लेकर तप किया था (महाभा० उद्योग० १८६.२७)।

देवालय–पु० [सं०] नवग्रहके निवासस्थान जो नदी जलमें जलसे नौका की तरह आकाशमें वात रश्मियोंसे परिचालित होते हैं (ब्रह्मां० २.२३.९५; वायु० ५२.८५)।

देवार्ह–पु० [सं०] हृदीकके दस पुत्रोंमेंसे एक तथा कंवलबर्हिषका पिता (मत्स्य० ४४.८२-३; वायु० ९६.१३९; विष्णु० ४.१४.२४)।

देवावृत्–पु० [सं०] क्रौंचद्वीपका एक पर्वत (मत्स्य० १२२.८२)।

देवावृध–पु० [सं०] (१) एक राजाका नाम (हरिवंश)। (२) सात्वतका एक पुत्र तथा बभ्रुका पिता जो ईश्वरका रूप माना जाता था (भाग० ९.२४.६-१०; विष्णु० ४.१३.१-३)। यह निःसंतान था, अतः इसने पर्णाशाके तटपर तप किया जिससे प्रसन्न हो नदी एक सुंदर स्त्री बन गयी। देवावृधने इससे विवाह कर लिया जिससे बभ्रु उत्पन्न हुआ (ब्रह्मां० ३.७१.१६-१५; मत्स्य० ४४.४७-५९; वायु० ९६.६-१६)। वायुपुराणानुसार तपस्या करते समय देवावृधके स्पर्शसे पर्णाशाके जलसे निकलकर पर्णाशाने एक सुन्दर स्त्रीका रूप धारणकर राजाका तेज ग्रहण किया और समयानुसार बभ्रु उत्पन्न हुआ। इसके सदुपदेशसे ६०७४ शिष्योंने मोक्ष प्राप्त किया था (विष्णु० ४.१३.६)। (३) कौशल्यके कई एक पुत्रोंसेसे एक पुत्र (वायु० १.१४५; ९६.१)।

देवावृध्–पु० [सं०] एक पर्वतका नाम—दे० हरिवंश।

देवाश्व–पु० [सं०] इन्द्रका घोड़ा, 'उच्चैःश्रवा'का नाम—दे० इन्द्र।

देवासुरयुद्ध–पु० [सं०] अमृतके लिए जो समुद्रमंथन हुआ उसमें असुरोंने यथेष्ट परिश्रम किया था, पर जब उन्हें अमृत न मिला तो युद्ध छिड़ गया। देवराज इन्द्रके आवाहनपर विष्णु प्रकट हुए और कालनेमि, माल्यवान्, माली और सुमाली आदि असुरोंका वध हुआ। नारदने अंतमें युद्ध रोका (भाग० ८.१० पूरा; ११.१-४४; वायु० ९२.७६)। कुल १२ युद्ध हुए और देवताओंका आधिपत्य सारी पृथ्वी तथा यज्ञादिपर हो गया (ब्रह्मां० ३.७२.७०-१०६)। अपने पुत्रोंके वधका-समाचार सुन इन्द्रको परास्त करनेवाले पुत्रकी कामनासे दितिने 'मदनद्वादशी व्रत' किया (मत्स्य० ७.२-७)। इन्द्र और प्रह्लादमें १०० दिव्यवर्षोंतक युद्ध हुआ और इन्द्रने आयुके पुत्र रजिकी सहायतासे प्रह्लादको परास्त किया तब विष्णुने 'मायामोह' रूपमें असुरोंको परास्त किया (विष्णु० ३.१७.९-४४; १८.१-३६)।

देविका–स्त्री० [सं०] (१) हिमालयकी तलहटीसे निकली भारतकी एक नदी (ब्रह्मां० २.१६.२५; मत्स्य० २२.२०; ११४.२१; वायु० ४५.९३; १०९.१७; ११२.३०)। कालिका पुराणानुसार इसमें सरयू नदी मिली है। पद्मपुराणानुसार इसकी चौड़ाई आधा योजन है और लम्बाई पाँच योजन। मत्स्य पुराणानुसार यह हिमालयकी तराईसे निकली है। यह त्रिपुरारिके रथमें रहती है (मत्स्य० १३३.२४)। (२) एक पवित्र तीर्थ जहाँ वृष नामक एक कूप है यह नदी तथा इसके तटका वृषकूप श्राद्धके लिए अति प्रशस्त कहे जाते हैं (ब्रह्मां० ३.१३.४१; वायु० ७७.४१)। वीरनगर इसीके तटपर था (विष्णु० २.१५.६]।

देविकातट–पु० [सं०] यहाँ सती देवीकी एक मूर्ति नंदिनी स्थापित है, अतः यह अति पवित्र तीर्थ हैं (मत्स्य० १३.३८)।

देविकोट–पु० [सं०] यह ललितादेवीके ५१ पीठमेंसे एक पीठ पवित्र स्थान है (ब्रह्मां० ४.४४.९६)।

देवी–स्त्री० [सं०] (१) एक शक्ति जो सर्वप्रथम ब्रह्मासे प्रादुर्भूत हुई तथा चक्रराज रथकी प्रथम सारथि थी (ब्रह्मां० ४.६.१७; २०.९१)। (२) १६ मौनेय देव-गन्धर्वोंकी छोटी बहनें २४ या चौंतीस मौनेय देवाप्सराओंमेंसे एक अप्सराका नाम (वायु० ६९.६)। (३) दे० दुर्गा।

देवीपुराण–पु० [सं०] अट्ठारह पुराणोंके अतिरिक्त १८ उपपुराण भी हैं जिनमें देवीपुराण एक है। इसमें देवीका माहात्म्य दिया है।

देवीव्रत–पु० [सं०] इस व्रतका करनेवाला लक्ष्मीलोक प्राप्त करता है (मत्स्य० १०१.५९)।

देवीभागवत–पु० [सं०] अट्ठारह पुराणोंमेंसे एकका नाम। कुछ इसे उपपुराण मानते हैं। श्रीमद्भागवतके समान इसमें भी १२ स्कंध और १८००० श्लोक हैं। इसमें तांत्रिक भावोंकी प्रधानता है और देवीके अनेक रूपोंकी उपासना तथा पार्वतीके पीठस्थानोंका वर्णन दिया है। भैरव और वेताल आदिकी उत्पत्ति और उनकी पूजाकी विधि बतलायी गयी है। अपने वर्तमान रूपके अनुसार यह ईसाकी नवीं और ११वीं शताब्दीके बीच बना ठहरता है।

देवीसूक्त–पु० [सं०] ऋग्वेदका एक सूक्त जो शाकलसंहिताका है और 'देवी' इसका देवता है। दीक्षामें इसका उच्चारण होता है (ब्रह्मां० ४.४३.११)।

देवेंद्र–पु० [सं०] दे० इन्द्र (ब्रह्मां० ३.७.२६९; ४.१२.३५; मत्स्य० १४६.२० विष्णु० ९.८.२६; ९.१६,१३९)।

देवेंद्रगण–पु० [सं०] वे देवता जिन्हें प्रथम या द्वितीय श्रेणिकी विशिष्टता प्राप्त है और यज्ञमें अपना भाग ग्रहण करते

हैं। वे हैं गुरु, नाथ(मालिक), स्वामी, राजा तथा पूर्वज। कहते हैं ये सब प्रकारकी रक्षा करते हैं (वायु० ६४.२१-२३)।

देवेश—पु० [सं०] इन्द्र, महादेव या विष्णुका एक नाम।

देवेशी—स्त्री० [सं०] पार्वती।

देवोत्थानीएकादशी—स्त्री० [सं०] कार्त्तिक शुक्ला एकादशी जिस दिन विष्णुका अपनी शेष शय्यापरसे उठना बतलाया जाता है, पर वास्तवमें अभिप्राय यह है कि देव अर्थात् दिव्य या श्रेष्ठ गुणवाले पुरुष जो वर्षाकालमें चुपचाप बैठे रहते थे, अब चैतन्य हो काममें लग जाते हैं। भला ईश्वरको सोनेका अवकाश कहाँ और वह भी चार महीनोंतक।

देवोद्यान—पु० [सं०] वैभ्राज, सुरभि, चैत्ररथ, विशोक, सुमन तथा नंदनवन (ब्रह्मां० ३.७.१०१-२) अथवा नंदन, चैत्ररथ, वैभ्राज और सर्वतोभद्र ये चार बगीचे देवताओंके कहे गये हैं।

देव्यालय—पु० [सं०] सिद्धक्षेत्रमें जहाँ ईश्वरने एक पैरपर खड़े होकर कठिन तपस्या की थी। यहाँ पिण्डदानका बड़ा महात्म्य कहा गया है (वायु० ७७.८१)।

दैवौक—न० पु० [सं०] सुमेरु पर्वत जो देवनिवास स्थान माना गया है।

देह—पु० [सं०] बीस संख्यावाले अमिताभ देवगणमेंका एक देव (वायु० १००.१७)।

देहसिद्धि—स्त्री० [सं०] रससिद्धि, मोक्षसिद्धि, बलसिद्धि, खड्गसिद्धि, पादुकासिद्धि, अञ्जनसिद्धि, वाक्सिद्धि आदि सिद्धियोंमेंसे एक योगसिद्धि (ब्रह्मां० ४.३६.५३)।

देही—पु० [सं०] बीस संख्यावाले अमिताभ देवगणमेंका एक अमिताभ देव (ब्रह्मां० ४.१.१७)।

दैत्य—पु० [सं०] (१) सातवें मरुतगणका एक मरुत (वायु० ४६.३५; ६७.१२९)। (२) दितिके गर्भसे उत्पन्न कश्यप ऋषिके पुत्र (दे० दिति, वायु० ६६.१; ६७.६१)।

दैत्यगुरु—पु० [सं०] शुक्राचार्य—दे० शुक्राचार्य।

दैत्यदेव—पु० [सं०] दैत्योंके देवता—दे० वरुण, वायु।

दैत्यद्वीप—पु० [सं०] विष्णुवाहन गरुड़का एक पुत्र (महाभा० उद्योग० १०१-११)।

दैत्यपुरोधा—पु० [सं०] दैत्यगुरु शुक्राचार्यका एक नाम। यह दैत्योंके पुरोहित थे—दे० शुक्राचार्य।

दैत्यमाता—स्त्री० [सं०] दक्ष प्रजापतिकी पुत्री तथा कश्यपपत्नी दिति जिसके गर्भसे केवल दैत्य ही उत्पन्न हुए थे—दे० दिति (वायु० ६७.४९)।

दैत्ययुग—पु० [सं०] दैत्योंका युग, जो देवताओंके १२००० वर्षों तथा मनुष्योंके चार युगोंके बराबर लिखा है (हि० श० सा०)।

दैत्यराक्षसगण—पु० [सं०] दैत्यराज कुम्भसे उत्पादि कापिलेयगण (वायु० ६९.१७७)।

दैत्यसेना—स्त्री [सं०] प्रजापतिकी पुत्री और देवसेनाकी बहिन। यह केशी दानवको बहुत चाहती थी, जिसने इसे बलपूर्वक हरकर विवाह किया था—दे० देवसेना।

दैत्याहोरात्र—पु० [सं०] दैत्योंका एक रात-दिन जो मनुष्योंके एक वर्षके बराबर होता है।

दैत्येज्य—पु० [सं०] दैत्योंके गुरु—दे० शुक्राचार्य।

दैव—पु० [सं०] पूर्व जन्मका वह शुभाशुभ कर्म जो वर्तमान जन्ममें फल देनेवाला हो—प्रारब्ध। 'पूर्व जन्मके भले-बुरे कर्म ही वर्तमान जन्ममें दैव या भाग्य होते हैं। दैवके प्रतिकूल होनेपर पौरुषसे उसका नाश किया जा सकता है। बिना पौरुषके पूर्व जन्मके अच्छे कर्म भी कुछ फल नहीं देते। अतः पौरुष ही श्रेष्ठ है' (मत्स्य०)।

दैवयुग—पु० [सं०] देवताओंका एक युग मनुष्योंके चारों युगोंके बराबर होता है। हम लोगोंका एक वर्ष देवताओंके एक रात-दिनके बराबर है।

दैववर्ष—पु० [सं०] देवताओंका एक वर्ष मनुष्योंके १३१-५२१ दिनोंका होता है।

दैवसर्ग—पु० [सं०] देवताओंकी सृष्टि आठ प्रकारकी बतलायी गयी है—ब्राह्म, प्राजापत्य, ऐन्द्र, पैत्र, गांधर्व, यक्ष, राक्षस और पैशाच (सांख्यकारिका)।

दैवाकरि—पु० [सं०] सूर्य (दिवाकर) के पुत्र—शनि, यम—दे० शनि, सूर्य, यम।

दैवाकरी—स्त्री० [सं०] सूर्यकी पुत्री—यमुना नदी—दे० शनि, छाया, संज्ञा।

दोलोत्सव—पु० [सं०] (१) चैत्र शुक्ल ३ को श्री रामचन्द्रका राजोपचार पूजन करके पालनेमें झुलावे और इसी प्रकार इन्द्र तथा विष्णुको दोलारूढ़ कर झुलावे तो सब पाप दूर होते हैं। (२) वैष्णवोंका एक त्योहार जो फाल्गुनकी पूर्णिमाको होता है जिसमें ठाकुरजीको फूलके हिंडोलेपर झुलाया जाता है (व्रतरत्नाकर)।

दोष—पु० [सं०] एक वसु जो शर्वरीका पति तथा शिशुमार, विष्णुकी एक कला है, का पिता (भाग० ६.६.११-१४)।

दोषा—स्त्री० [सं०] पुष्पार्णकी एक ७६-४७८ रानी जो प्रदोषकी माता थी। निशीथ तथा व्युष्ट भी इसीके पुत्र थे भाग० ४.१३.१३-१४)।

दौनागिरि—पु० [सं० द्रोणागिरि] द्रोणागिरि नामक पर्वत जो क्षीरोद समुद्रमें स्थित कहा गया है। वहाँ विशल्यकरणी नामकी संजीवनी ओषधि होती है। लक्ष्मणको शक्तिबाण लगनेपर हनुमानजीको यह बूटी लानेके लिए इसी पहाड़पर भेजा गया था (रामचरितमानस लंका० ५५)।

दौष्यंति—पु० [सं०] भरत जो यज्ञ तथा प्रजावात्सल्यके लिए प्रसिद्ध था दुष्यंत-पुत्र (दे० शकुंतला; भाग० १.१२.२०)।

द्यु—स्त्री० पु० [सं०] आकाश, आदिराज पृथुके सिंहासनारोहणके समय इसने फूल उपहारस्वरूप दिये थे (भाग० ४.१५.१८)।

द्युतय—पु० [सं०] १२ संख्यावाले सुधर्म देवगणमेंके एक सुधर्मा देवका नाम (ब्रह्मां० ४-१.६१)।

द्युति—पु० [सं०] (१) १२ संख्याके यामदेवगणमेंके एक यामदेवका नाम (ब्रह्मां० २.१३.९७; वायु० ३१.६; ७२.६१)। (२) बीस सुतपा गणमेंका एक सुतपादेव (वायु० ००.१४)। (३) हरिवंशके अनुसार चौथे मनुके समयके सप्तर्षियोंमेंसे एक ऋषिका नाम, जो वशिष्ठ-पुत्र थे (दे० वशिष्ठ, ब्रह्मां० ४.१.९१)। १२वें मन्वंतरके सप्तर्षियोंसेसे एक ऋषि (विष्णु० ३.२.३५)। (४) स्त्री० विभावसुकी पत्नी जो पतिको छोड़ निशिष्ट वैगववान् सोमके यहाँ आठ अन्य देवियोंके साथ चली गयी थी (मत्स्य० २३.२४)।

द्युतिमन्त—पु० [सं०] द्युतिमान्‌का एक पुत्र (वायु० २८.७)।

द्युतिमत्—पु० [सं०] (१) नवें मन्वंतरके सप्तर्षियोंमेंसे एक ऋषि (भाग० ८.१३.१९; विष्णु० ३.२.२३)। (२) पुण्यजनी और मणिभद्रके २४ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र यक्षका नाम (ब्रह्मां० ३.७.१२५; वायु० ६९.१५६)। (३) कुशद्वीपका एक पर्वत जैसे कुमुद, उन्नत, वलाहक आदि (मत्स्य० १२२.५५; विष्णु० २.४.४१; ब्रह्मां० २.१९.५५; वायु० ४९.५०)। (४) धाता और आयतिसे उत्पन्न प्राण (वायु० पाण्डु) का पुत्र तथा राजवान्‌के पिताका नाम इसकी माताका नाम पुण्डरीका (विष्णु० १.१०.५; ब्रह्मां० २.११.४०; वायु० २८.७.३५)। (५) प्रियव्रतके १० पुत्रोंमेंसे एक पुत्र जो क्रौंचद्वीपका राजा था (विष्णु० २.१.७, १४)। (६) स्वायंभुव मनुके दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (मत्स्य० ९.५; वायु० ३१.१८; ब्रह्मां० २.१३.१०४)। (७) चौदह संख्याके आभूतरयादेव वर्गमेंका एक देवका (ब्रह्मां० २.३६.५६)। (८) शाल्व देशके एक राजाका नाम आभूतरया जिसने ऋचीकाको राज्य प्रदानकर उत्तम लोक प्राप्त किया था (महाभा० शान्ति० २३४.३३; अनु० १३७.२३)। (९) मद्रदेशका एक राजा, जिसकी पुत्री विजयाको सहदेवने स्वयंवरमें प्राप्त किया था (महाभा० आदि० ९५.८०)। (१०) रोहित काल (मन्वंतर) के सप्तर्षियोंमेंसे एक ऋषि (ब्रह्मां० ४.१.६३)। (११) कर्दम और प्रियव्रतके १० पुत्रोंमेंसे एक जो क्रौंच द्वीपका राजा था जिसके कुशल, मनोमय, उष्ण, पावन, अंधकार, मुनि और दुंदुभि ये सात पुत्र थे जिनमें पूरा द्वीप द्युतिमान्‌ने बाँट दिया था (ब्रह्मां० २.१४.९; १३.२२-२३; वायु० ३३.९; विष्णु० २.१.७.१४)। (१२) सुतार (सुपार—वायु०) वर्गके १० देवोंमेंसे एक सुतार देव (ब्रह्मां० ४.१.८९; वायु० १००.९४)। (१३) जम्बूद्वीपके अंगद्वीप आदि छह प्रदेशोंमेंसे एक यमद्वीपका एक पर्वत (वायु० ४८.१९)।

द्युमान्—पु० [सं०] (१) वशिष्ठके सात ब्रह्मर्षि पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (भाग० ४.१.४१)। (२) स्वारोचिष मनुका एक पुत्र (भाग० ८.१.१९)। (३) दिवोदासका एक पुत्र तथा अलर्क आदिका पिता जिसे प्रतर्दन, शत्रुजित्, वत्स, ऋतध्वज और कुवलयाश्व भी कहते थे (भाग० ९.१७.६)। (४) शाल्वका मंत्री जिसने प्रद्युम्नपर गदा चलायी थी, पर उससे स्वयम् ही मारा गया था (भाग० १०.७६.२६, २७; ७७.१-३)।

द्युमत्सेन—पु० [सं०] (१) (दृढ़सेन=ब्रह्मां०) मागधराज शमका पुत्र तथा सुमतिका पिता (भाग० ९.२२.४८)। (२) शाल्व देशके एक राजा जो सत्यवान्‌के पिता थे। दुर्भाग्यवश अंधे हो जानेपर गृहस्थी लेकर यह वनको चले गये थे। मद्रदेशके राजा अश्वपतिने अपनी पुत्री सावित्रीका विवाह इन्हीके पुत्र सत्यवान्‌से किया था (दे० सत्यवान; मत्स्य० २०८.१४-१६; २१४.१०)। (३) मागधराज त्रिनेत्र, जिसने २८ वर्ष तक राज्य किया था, का एक पुत्र जिसने ५२ वर्ष तक राज्यभोग किया था (मत्स्य० २७१.२७)।

द्युम्न—पु० [सं०] (१) चाक्षुष मनु और नड्वलाके ११ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (भाग० ४.१३.१६)। (२) सुकर्म वर्गके दस देवोंमेंसे एक सुकर्मा देवका नाम (ब्रह्मां० ४.१.८८; वायु० १००.९२)।

द्युम्नि—पु० [सं०] असंगका पुत्र तथा युगंधरका पिता (मत्स्य० ४५.२३)।

द्युमयी—स्त्री० [सं०] विश्वकर्माकी पुत्री तथा सूर्यकी पत्नी—दे० छाया।

द्युसरित्—स्त्री० [सं०] मंदाकिनी नदी जिसे स्वर्गकी नदी कहते हैं।

द्यो—पु० [सं०] शतपथब्राह्मण और देवीभागवतके अनुसार आठ वसुओंमेंसे एक। अग्निपुराण और भागवतमें दिये आठ वसुओंमें यह नहीं है। देवी भागवतके अनुसार एक बार सब वसु अपनी स्त्रियोंको लेकर क्रीड़ा कर रहे थे। घूमते-फिरते सब वशिष्ठके आश्रमपर जा धमके। द्यो अपनी स्त्रीके इच्छानुकूल वशिष्ठकी नंदिनी गौको बलपूर्वक ले गया। इससे क्रुद्ध होकर वशिष्ठने उसे शाप दिया, फलतः द्योको पृथ्वीतलपर भीष्मके रूपमें जन्म ग्रहण करना पड़ा था (महाभा० आदि० ९९.१५-२८)।

द्योतन—पु० [सं०] तीस सुतपदेवोंमेंसे एक सुतपदेवका नाम (ब्रह्मां० ४.१.१५; वायु० १००.१५)।

द्रुघण—पु० [सं०] भण्डके १०५ शूरवीर सेनापतियोंमेंसे एक सेनापतिका नाम (ब्रह्मां० ४.२१.८५)।

द्रवकेतु—पु० [सं०] मेरु सावर्णि मन्वन्तरके १२ सुधर्मा देवोंमेंसे एक सुधर्मा देवका नाम (ब्रह्मां० ४.१.६०)।

द्रविड़—पु० [सं०] (१) मलयध्वज पांड्यका राज्य जहाँ श्रीशैल और वेंकटाद्रि हैं (भाग० ४.२८.३०; ८.४.७; १०.७९.१३)। इसपर कल्किने विजय पायी थी (ब्रह्मां० ३.३५.१०; ७३.१०७)। (२) श्रीकृष्ण और जाम्बवतीके दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (भाग० १०.६१.१२)।

द्रविड़ा—स्त्री० [सं०] तृणबिन्दुकी एक पुत्री जिसके भाईका नाम विशाल था और जो विश्रवाकी माता थी (वायु० ८६.१६)।

द्रविड़ेश्वर—पु० [सं०] दे० सत्यव्रत (भाग० ८.२४.१३; ९.१.२)।

द्रविण—पु० [सं०] (१) धर्मका एक पुत्र (विष्णु० १.१५.११३)। (२) अर्चि और राजा पृथुके ५ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र जिसे राज्यका उत्तरी भाग मिला था (भाग० ४.२२.५४; २४.२)। (३) कुशद्वीपका एक पर्वत जो सीमा निर्धारित करता है (भाग० ५.२०.१५)। (४) महाभारतके अनुसार धर नामक वसुके एक पुत्रका नाम (ब्रह्मां० ३.२.२२; मत्स्य० ५.२३; २०३.४; वायु० ६६.२१)। (५) तुषितामें उत्पन्न क्रतुके पुत्र १२ तुषित देवोंमेंसे एक तुषित देव (ब्रह्मां० २.३६.१०)।

द्रविणक—पु० [सं०] वसोर्धारा और अग्निका एक पुत्र, एक वसु (भाग० ६.६.१३)।

द्रविणोदा—पु० [सं०] एक वैदिक देवता जो धन देता है।

द्राविण—पु० [सं०] पश्चिमका एक पर्वत जो इन्द्रके डरसे समुद्रमें छिपा था (मत्स्य० १२१.७५)।

द्राविणी—स्त्री० [सं०] (१) ३३ वर्ण शक्तियोंमेंसे एक वर्णशक्ति (ब्रह्मां० ४.४४५८)। (२) गेयचक्र रथके तृतीय पर्वपर

स्थित कामदेव वाणभूत ५ देवियोंमें एक देवी (ब्रह्मां० १९.६५)।

द्राविणिका—स्त्री० [सं०] एक मुद्रा; यहाँ (द्रावणिकाके चक्र में) अष्ट शक्तियाँ कुसुम, मेखला आदि)। ललिताकी स्तुति करती हैं (ब्रह्मां० ४.३६.७३)।

द्राह्यायण—पु० [सं०] एक ऋषि विशेषका नाम। यह सामवेदके कल्प, श्रौत और गृह्यसूत्रका रचयिता था।

द्रुति—स्त्री० [सं०] नक्तकी पत्नी तथा राजर्षिप्रवर उदार-चरित्र गयकी माता (भाग० ५.१५.६)।

द्रुपद—पु० [सं०] महाभारतके अनुसार चन्द्रवंशी राजा पृषतका पुत्र और उत्तर पांचालका एक राजा द्रौपदी (पुत्री) तथा धृष्टद्युम्न आदिका पिता (भाग० ९.२२.२; १०.५२.११(८); वायु० ९९.२१०; विष्णु० ४.१९.७३)। जरासंधने इसे मथुराके उत्तरी प्रवेशद्वार तथा गोमंतके घेरे-के समय दक्षिणी फाटकपर रखा था (भाग० १०.५०.११(७); १०.५२.११(८)। यह द्रोणाचार्यका साथी था पर राजा होनेपर इसने द्रोणाचार्यका एक दिन तिरस्कार किया था। कौरवों और पांडवोंको वाणकी शिक्षा देनेके लिए द्रोण नियुक्त हुआ था, अतः शिक्षाके उपरान्त गुरुदक्षिणामें द्रोण-ने यही माँगा कि 'द्रुपदको बाँधकर मेरे सम्मुख ले आओ।' कौरव यह न कर सके पर पांडव द्रुपदको जीत गुरु आज्ञानुसार उसे बाँधकर ले आये(भाग० १०[५६(५)२]। द्रोणाचार्य ने इससे (द्रुपदसे) गंगाके दक्षिण भागमें राज करनेको कहा, स्वयम् उत्तर किनारेका राज्य करने लगे। द्रुपदने यज्ञकी सहायतासे धृष्टद्युम्न नामक पुत्र और कृष्णा नामकी पुत्री उत्पन्न की। द्रुपदका शिखंडी नामक एक पुत्र और था। कृष्णा (द्रौपदी) युधिष्ठिरादि पांडवोंको व्याही थी (भाग० १.१५.७)। महाभारत-युद्धमें यह पांडवोंकी ओरसे लड़ा था पर मारा गया (भाग० १०.७८[(९५.५)१०]। सूर्य-ग्रहणपर यह स्यमंतपंचक गया था (भाग० १०.८२.२५)।

द्रुपदादित्य—पु० [सं०] द्रौपदी द्वारा स्थापित सूर्यकी एक मूर्त्ति (काशीखंड)।

द्रुम—पु० [सं०] (१) एक राजाका नाम जो पूर्व जन्ममें हिरण्यकशिपुका पुत्र शिवि नामक दैत्य था (महाभा० आदि० ६५.१८)। (२) रुक्मिणीके गर्भसे उत्पन्न श्रीकृष्णका एक पुत्र (हरिवंश)। (३) किंपुरुषों और किन्नरोंका एक राजा जिसे गौमंतके घेरेके समय पश्चिममें (भाग० १०.५२.११(११); वायु० ४१.३०) तथा मथुराके पश्चिमीय प्रवेश द्वारपर जरासंधने रखा था (भाग० १०.५०.११(५)। कुण्डिनमें शाल्व द्वारा बुलाई सभामें यह गया था (भाग० १०.७६.२[९-१०])।

द्रुमसेन—पु० [सं०] (१) एक योद्धा जो कौरवोंकी ओरसे लड़ा था और धृष्टद्युम्न द्वारा मारा गया था (महाभा० द्रोण० १७०.२२)। (२) एक क्षत्रिय राजा जो पूर्व जन्ममें गविष्ठ नामक असुर था (महाभा० आदि० ६६.३५)। यह शल्यका चक्ररक्षक था तथा युधिष्ठिर द्वारा मारा गया था (महाभा० शल्य० १२.५३)।

द्रुमिल—पु० [सं०] (१) सौभ देशाधिपति एक दानवका नाम। (२) ऋषभदेवके १०० पुत्रोंमेंसे सात पुत्र जो परम भागवत परमतपस्वी ज्ञानी तथा ऋषि थे उनमेंसे एक उग्रसेनके रूपमें यह कंसका पिता हुआ (भाग० ५.४.११; ११.२.२१; १०.३६.२४(१०-२६)। इसने राजा निमिको अवतारोंकी भिन्न-भिन्न व्याख्या बतलायी थी (भाग० ११.४ पूरा)।

द्रुह्यु—पु० [सं०] दैत्यराज वृषपर्वाकी पुत्री शर्मिष्ठाके गर्भसे उत्पन्न राजा ययातिका ज्येष्ठ पुत्र तथा बभ्रुका पिता और सेतुका दादा (भाग० ९.१८, ३३, ४१; २३.१४; ब्रह्मां० १.१.१३३)। इसने पिताका बुढ़ापा लेना अस्वीकार किया था (दे० देवयानी)। अतः पिताके शापके फलस्वरूप यह नीरस जीवनवाला तथा राज्यहीन हो मारा-मारा फिरता था (मत्स्य० २४.५४; ३२.१०; ३३.१६-२०; वायु० ४५.५०; विष्णु० ४.१०.६-१३)। विष्णु० तथा हरिवंशपुराणानुसार इसके बभ्रु और सेतु नामके दो पुत्र हुए थे, पर महाभारतके अनुसार इसके वंशमें कोई राजा नहीं हुआ था। सेतुके पौत्रका नाम गांधार था जिसके नामसे गांधार देशका नाम पड़ा। यह राज्यके दक्षिण-पूर्व (पश्चिम—ब्रह्मां०, वायु० तथा विष्णु०) भागका राजा हुआ था (मत्स्य० ३४.३०; वायु० ४५.९०; विष्णु० १०.३१) भोज-वंश इसीसे आरम्भ होता है (मत्स्य० ४८.६)।

द्रोण—पु० [सं०] (१) द्रोणाचल पर्वत जिसपर संजीवनी बूटी थी—दे० द्रौनागिरि (ब्रह्मां० २.१९.३८-३९; वायु० ४९.३५; विष्णु० २.४.२६; मत्स्य० १२२.५६)। (२) एक प्रसिद्ध ब्राह्मण योद्धा जिसने कौरवों तथा पांडवोंको अस्त्र-शिक्षा दी थी, महर्षि भरद्वाजके पुत्र जो बृहस्पतिके अंशसे उत्पन्न हुए ये गंगाद्वार निवासी दे० द्रोणाचार्य, (मत्स्य० १०३.५; महाभा० आदि० ६७-६९)। (३) मंदपाल पक्षीके पुत्रका नाम जिसका विवाह कन्धरकी पुत्रीसे हुआ था। अरिष्टनेमिके पुत्र पक्षिराज गरुड़ हुए, गरुड़से सम्पाति हुए जिसका पुत्र सुपार्श्व, सुपार्श्वसे कुम्भि और कुम्भिसे प्रलोलुप हुए जिसके कङ्क और कन्धर नामके दो पुत्र हुए थे। इसी कन्धरकी तार्क्षी नामकी कन्यासे मन्दपाल-पुत्र द्रोणका व्याह हुआ था। तार्क्षी ही पूर्वजन्ममें वपु नामकी अप्सरा थी जो दुर्वासाके शापसे पक्षिणी हुई थी—दे० वपु तथा मार्कण्डेयपुराण। (४) भारतवर्षका एक पर्वत जो समुद्र तटपर है (भाग० ५.१९.१६; ब्रह्मां० २.१८.७६)। कहते हैं यह इन्द्रके डरसे समुद्रमें जा छिपा था (मत्स्य० १२१-७३)। (५) के आठ पुत्र अष्ट वसुओंमेंसे एक वसु जिसकी पत्नी अभिमति हर्ष, शोक, भय आदिकी माता थी। ब्रह्माके आदेशसे यही द्रोण (एक वसु) नन्द हुआ और इसकी पत्नी धरा यशोदा हुई, जिन्होंने भगवान् कृष्णकी बाललीलाओं-का आनन्द लिया (भाग० ६.६.११; १०.८.४८-५०)। (६) प्रलय करनेवाले सात बादलोंमेंसे एकका नाम (मत्स्य० २.८)।

द्रोणगिरि—पु० [सं०] शाल्मलिद्वीप (कुशद्वीप—मत्स्य०) का एक पर्वत जो वनौषधियोंके लिए विख्यात था। एक वर्ष पर्वत जो क्षीरोद सागरमें है जहाँ विशल्यकरणी तथा मृतसंजीवनी बूटियाँ मिलती थीं। श्रीलक्ष्मणको शक्तिबाण लगनेपर संजीवनी बूटी लाने हनुमान यहीं गये थे (रामायण; ब्रह्मां० २.१९.३८-३९; वायु० ४९.३५; विष्णु० २.४.२६; मत्स्य० १२२.५६)।

द्रोणशर्मपद–पु० [सं०] एक तीर्थ, जहाँ स्नान करनेका विशेष फल है, का नाम (महाभा० अनु० २५.२८)।

द्रोणस–पु० [सं०] एक दानवका नाम।

द्रोणाचल–पु० [सं०] एक दर्प पर्वत—दे० द्रोणगिरि।

द्रोणाचार्य–पु० [सं०] महाभारतके प्रसिद्ध ब्राह्मण वीर योद्धा जिन्होंने कौरवों तथा पांडवोंको अस्त्रविद्याकी शिक्षा दी थी (मत्स्य० १०३.५)।

हरिद्वारके पास भरद्वाज ऋषि रहा करते थे। एक दिन धृताची नामकी अप्सराको देख कामार्त्त हुए और उनका वीर्यपात हुआ। ऋषिने वीर्यको द्रोणनामक यज्ञपात्रमें रख छोड़ा जिससे इनका जन्म हुआ, अतः यह द्रोण कहलाये (महाभा० आदि० ६७.६९)। भरद्वाजसे अग्निवेशको जितने अस्त्र मिले थे उसने सब द्रोणको दे दिये। भरद्वाजके मरनेके पश्चात् द्रोणने शरद्वान्की पुत्री कृपीसे विवाह किया जिसके गर्भसे अश्वत्थामा नामक पुत्र उत्पन्न हुआ (भाग० १.७.२७; ९.२१.३६; विष्णु० ४.१९.६८; ५.३५.५, २७)। द्रोणने महेन्द्र पर्वतपर जाकर परशुरामसे अस्त्र-शस्त्रकी शिक्षा पायी थी (महाभा० आदि० १२९.६६)। महर्षि अग्निवेशके आश्रममें राजा द्रुपद इनका बाल सखा और सहाध्यायी था, पर राज्य मिलनेपर राजमदमें उसने इनका तिरस्कार किया था (महाभा० आदि० १३०.४०-५०)। जिसके पश्चात् यह अपने साले कृपाचार्यके घर हस्तिनापुर चले आये। भीष्मने इन्हें कौरव और पांडवोंको धनुर्विद्या सिखानेका भार सौंपा और इसी समयसे द्रोण द्रोणाचार्य कहलाये (मत्स्य० १०३.५)।

कुरुक्षेत्रके युद्धमें नौ दिनोंतक इन्होंने घोरयुद्ध किया था। यह कौरवोंकी ओरसे लड़े थे, यद्यपि अर्जुन इनके सब शिष्योंमें श्रेष्ठ और प्रिय थे। अन्तमें युधिष्ठिरके मुखसे अपने पुत्र अश्वत्थामाके मरनेका समाचार पाकर सिर नीचा कर ध्यानमग्न हो गये। पुत्रशोकमें मरनेका इन्हें शाप था और इसी समय राजा द्रुपदके पुत्र धृष्टद्युम्नने इनका सिर काट लिया (महाभा० द्रोण० १९२.४३-६३; भाग० १.१५.१५ १६; १०.७८ [९५(५)१६], २९-३६)। युधिष्ठिरके राजसूय यज्ञमें यह आमंत्रित थे (भाग० १०.६८.१७,२८; ७४.१०)।

द्रोणाचार्य पत्नी–स्त्री० [सं०] कृपाचार्यकी बहिन और अश्वत्थामाकी माता तथा शरद्वान्की पुत्री कृपी जो द्रोणाचार्यकी पत्नी थी (भाग० १.७.४५; १३.४; ९.२१.३६; वायु० ९९.२०४; विष्णु० ४.१९.६८)।

द्रोणि–पु० [सं०] (१) भविष्य द्वापर युगके वेदव्यास (ब्रह्मां० २.३५.१२५; विष्णु० ३.३.२१; वायु० ६१.१०४)। (२) द्रोणाचार्यका पुत्र—अश्वत्थामा। (३) अष्टम सावर्णि मन्वंतरके सप्तर्षियोंमेंसे एक ऋषिका नाम (विष्णु० ३.२.१७)।

द्रौपदी–स्त्री० [सं०] यज्ञसेन राजा द्रुपदकी पुत्री कृष्णा। पुत्रेष्टि यज्ञके पश्चात् द्रुपदको धृष्टद्युम्न नामक पुत्र और कृष्णा नामकी पुत्री उत्पन्न हुई थी। द्रौपदी वास्तवमें इन्द्र-पत्नी शची देवी ही थी जो कृष्णाके रूपमें अग्निसे प्रकट हुई थी (महाभा० आदि० ६७.१५७; १६६.३९-४४)।

'स्वयंवरमें मत्स्यभेदन करनेवाला ही द्रौपदीका पति होगा'—यही द्रुपदकी प्रतिज्ञा थी। अर्जुनने मत्स्यछेदन किया और इन्हें द्रौपदी पत्नी रूपमें मिली थी (भाग० १.१५.७)। ये पाँचो भाई (युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव) घर जाकर द्वारपरसे ही बोले 'माता, आज हम लोग एक रमणीय भिक्षा माँगकर लाये हैं।' कुन्तीने भीतरसे ही कहा अच्छी बात है, पाँचो भाई मिलकर भोग करो' (महाभा० आदि० १९०.१-२)। माताके आज्ञानुसार पाँचो भाइयोंने द्रौपदीको ग्रहण किया और नारद मुनिके सम्मुख यह प्रतिज्ञा की कि जब एक भाई द्रौपदीके पास होगा दूसरा उस समय वहाँ न जाय, जानेवाला १२ वर्षोंतक वनवासका भागी होगा।

देवताओंसे असुरोंका घोर संग्राम होता था अतः देवतागण अपने-अपने तेजके अंशसे पृथ्वीपर अवतार लेने गये। इन्द्रके शरीरसे जो तेज प्राप्त हुआ उसे धर्मराजने कुन्तीके गर्भमें स्थापित किया जिससे युधिष्ठर हुए। वायुने इन्द्रके ही बलको कुन्तीमें स्थापित किया जिससे भीम हुए और इन्द्रके आधे अंशसे अर्जुन हुए। इसी प्रकार इन्द्रका तेज अश्विनीकुमारोंने माद्रीके गर्भमें स्थापित किया जिससे नकुल और सहदेव हुए। इस प्रकार इन्द्र ही पाँच रूपोंमें अवतीर्ण हुए थे (मार्कण्डेय पु० धर्मपक्षी द्वारा जैमिनीके प्रश्नोंका उत्तर)।

पाँचों पांडवोंसे द्रौपदीके पाँच पुत्र हुए थे—युधिष्ठिरका प्रतिविंध्य, भीमसेनका श्रुतसेन, (महाभा०–सुतसोम), श्रुतकीर्त्ति अर्जुनका, श्रुतानीक नकुलका तथा सहदेवसे श्रुतकर्मा (भाग० ९.२२.२.२८; मत्स्य० ५०.५१; वायु० ९९.२४६; विष्णु० ४.२०.४१-२)। द्रौपदीके पाँचो पुत्र पाँच विश्वेदेव थे और विश्वामित्र मुनिके शापसे इसके पुत्र हुए थे। शापके प्रभाव से ही ये पाँचो अश्वत्थामाके हाथों मारे गये थे (महाभा० आदि० ९५.७५; भाग० १.७.१४-५८; ८.१.३१.१७; १०.९)।

दुर्योधनके साथ पासा खेलते-खेलते युधिष्ठिर द्रौपदीतकको हार गये। तदनन्तर दुःशासन द्रौपदीको भरी सभामें खींच लाया और उसका वस्त्र खींचकर उसे नग्न करनेका प्रयास करने लगा, पर असफल रहा। ज्यों-ज्यों उसने साड़ी खींची त्यों-त्यों वह बढ़ती ही गयी (महाभा० सभा० ६७.३१-४१-५२; ६८.४५-४८)। जब इसे पांडवोंके साथ वन जाना पड़ा था, श्रीकृष्ण तथा सत्यभामाने इसे उपदेश दिया था (भाग० १०.६४.७०)। मयनिर्मित सभामें दुर्योधनको गिरता देख यह हँसी थी [भाग० १०.७१.४१-३; ७५(पूरा)]। दुर्योधनने द्रौपदीको अपनी जाँघपर बैठनेके लिए कहा था जिससे क्रुद्ध हो भीमने उसकी जाँघ तोड़नेकी प्रतिज्ञा की थी। दुःशासनकी दुष्टताके कारण उसके रक्तपान की प्रतिज्ञा भी भीमने ही की थी और कुरुक्षेत्रके युद्धमें भीमकी ये दोनों प्रतिज्ञाएँ पूरी हुई थीं (महाभा० सभा० ६७.२; ७०.३-६; .कर्ण पर्व; भाग० ३.३.१३; विष्णु० ४.२०.३९; ५.३५.२७)। पुराणोंमें द्रौपदीकी गणना पंचकन्याओंमें की गयी है। वासुदेवमें इसकी अटूट भक्ति थी। अतः मोक्ष मिला (भाग० १.१५.५०)। पर्य्या०—कृष्णा, पांचाली, सैरिन्ध्री, नित्ययौवना, याज्ञसेनी, वेदिजा।

द्वादशकर (भुज)–पु० [सं०] (१) कार्त्तिकेयका एक नाम। (२) कार्त्तिकेयके एक अनुचरका नाम (महाभा०

शल्य० ४५.५७) ।

द्वादशमूर्त्ति–स्त्री० [सं०] इससे सूर्यदेवका वोध होता है (ब्रह्मां० ३.५९.७६; ४.३४.७५) ।

द्वादशरात्र–पु० [सं०] वारह दिनोंमें होनेवाला एक यज्ञ ।

द्वादशवार्षिक–पु० [सं०] एक व्रत जो ब्रह्महत्या लगनेपर किया जाता है और १२ वर्षोंमें पूरा होता है ।

द्वादशसप्तमी–स्त्री० [सं०] यह व्रत माघ शुक्ला सप्तमीसे आरंभ होता है। इसमें सूर्यकी पूजा १२ महीने अलग-अलग नामसे करे तो सूर्यलोक प्राप्त होता है (हेमाद्रि) ।

द्वादशाक्षर– पु० [सं०] वारह अक्षरोंका विष्णुका एक मन्त्र 'ओं नमो भगवते वासुदेवाय' (विष्णु० १.६.४०; १२.९७)।

द्वादशादित्यतीर्थ–पु० [सं०] वदरिकाश्रम क्षेत्रमें स्थित एक तीर्थ जहाँ कश्यप-पुत्रने तप द्वारा सिद्धि प्राप्त कर सूर्यकी पदवी प्राप्त की थी । यहाँ (रविवार, सप्तमी या संक्रांतिको) स्नान करने से सात जन्मके पाप नष्ट होते हैं (स्कंद० वैष्णव० वदरी-माहात्म्य) ।

द्वादशादित्यव्रत–पु० [सं०] मार्गशीर्ष शु० १२ से प्रत्येक शु० १३ को सूर्यकी पूजा अलग-अलग १२ नामोंसे करे । यह व्रत आपत्तिनाशक कहा गया है (विष्णुधर्मोत्तर) ।

द्वादशाह–पु० [सं०] वारह दिनोंमें समाप्त होनेवाला एक यज्ञ ।

द्वादशीव्रत–पु० [सं०] अंवरीपने इसे एक वर्षतक किया था और कार्त्तिकमें शेष किया (भाग० ९.४.२९-३०) ।

द्वापर–पु० [सं०] वारह युगोंमें यह तीसरा है और पुराणानुसार यह ८६४००० वर्षका माना गया है। युगोंमें इसे 'वैश्य' युग कहते हैं जिसमें युद्धोंकी पूजा होती हैं अर्थात् अनेक युद्ध होते हैं (वायु० ७८.३६-७) । भादों कृष्ण त्रयोदशी वृहस्पतिवारसे यह युग आरम्भ हुआ । मत्स्यपुराणानुसार द्वापर लगते ही धर्मका क्षय आरम्भ हुआ । श्रुतिके और स्मृति अनुसार ही धार्मिक निर्णय हुआ करते थे । इस युगमें मनुष्योंकी आयु २००० वर्षकी थी । युद्धोंके अतिरिक्त यज्ञोंकी प्रधानता रही रज और तमका सम्मिश्रण इस युगकी विशेषता रही (ब्रह्मां० २.७.२१; वायु० ८.६६) । पराशरने इस युगमें अपने पुत्रको भागवतकी शिक्षा दी थी (भाग० १.४.१४; २.१.८) ।

द्वामुष्यायण–पु० [सं०] (१) उद्दालक मुनिका नाम—दे० उद्दालक । (२) गौतम मुनिका एक नाम–दे० गौतम ।

द्वारका–स्त्री० [सं०] द्वारवती, कुशस्थली । काठियावाड़ गुजरातकी एक प्रधान नगरी जो पुराणानुसार सात पुरियोंमें एक है और जहाँ द्वारकानाथजीका मन्दिर है । यह चार धामोंमें एक है । जरासंधके उपद्रवके मारे श्रीकृष्णचन्द्र यहाँ आ गये थे । पुराणानुसार श्रीकृष्णके देहत्यागके पश्चात् द्वारका समुद्रमग्न हो गयी (भाग० ११.७.३; ३१.२३; १२.१२.६०; विष्णु० ५.३७.३६; ३८.९-१०) । पोरवन्दरसे १५ कोस दक्षिण समुद्रमें इस पुरीका स्थान वतलाया जाता है । इसे रेवतने श्रीकृष्णके लिए वनाया था जिसका क्षेत्रफल १॥ मील था और यह कालयवनसे सुरक्षित था (भाग० १. ११.२५; १२.३६; १४.१.६; १०.५०.४९-५७; ९.३.२८; ब्रह्मां० ३.७१.६२,८५; मत्स्य० ४.१८; २४६.८९; विष्णु० ४.१.९१; १३.१९-२०; ५.२३.१३-१५) द्वारकानगरका विवरण (भाग० १०.८०[८-१२]) ।

द्वारकानाथ–पु० [सं०] श्रीकृष्णचन्द्र (ब्रह्मां० ३.३६.३१) ।

द्वारपूजा–स्त्री० [सं०] विवाहकी एक रीति जव वारातके पहिले पहल कन्या पक्षके द्वार पर आनेपर कन्याका पिता या अभिभावक कलश आदि स्थापित कर पूजन करता है ।

द्वारवती–स्त्री० [सं०] (१) वासुदेवकी प्रसिद्ध नगरी द्वारका जहाँ भोज, वृष्णि आदि रहते थे (ब्रह्मां० ३.६१.२३; वायु० ८६.२७; ९६.४६) यहाँ श्रीकृष्णकी राजधानी थी (ब्रह्मां० ३.७१.४८; मत्स्य० १३.३८; ६९.९; विष्णु० ५.३३.१०) । (२) भंगकारकी पत्नीका नाम (वायु० ९६.५४) ।

द्विकल–पु० [सं०] अमावस्याकी अवधि जव पितृगण सुधामृत पान करते हैं (वायु० ५२.३८; ५६.२७=द्विकलम् कालम्)।

द्विज–पु० [सं०] (१) दो वार जन्म लेनेवाला जीव । मनुके धर्मशास्त्रके अनुसार यज्ञोपवीत धारण करनेपर मनुष्यका दूसरा जन्म माना गया है । शास्त्रानुसार हिन्दुओंमें ब्राह्मण, क्षत्रिय-और वैश्योंको ही यज्ञोपवीत धारण करनेका अधिकार है (वायु० ५९.२१; मत्स्य० २२७.७२; विष्णु० ४.२४.६८) । (२) चन्द्रमा जिनका दो वार जन्म हुआ था । पुराणानुसार पहली वार यह अत्रि ऋषिके पुत्र हुए और दूसरी वार समुद्रमंथनमें समुद्रसे निकले (चन्द्रमा) । (३) कर्ण-सुत सुरसेनका पुत्र (वायु० ९९.११२) ।

द्विजग्राम–पु० [सं०] पूर्वजन्ममें पुरूरवाका जन्मस्थान जव वह ब्राह्मण था । द्वादशीव्रत तथा जनार्दनकी भक्तिके कारण इन्हें पुनर्जन्ममें राज्य मिला था (मत्स्य० ११५.१०-१२) ।

द्विजदंपती–पु० [सं०] चाँदीके पत्तरपर लक्ष्मीनारायणका युगल चित्र खुदा रहता है जो स्त्रियोंके दशमाके पश्चात् ब्राह्मणको दान दे (हि.श.सा) ।

द्विजमीढ़–पु० [सं०] हस्तीन्के तीन पुत्रोंमेंसे एक जो यवीनरका पिता था (वायु० ९९.१६६; विष्णु० ४.१९.२९, ४८) ।

द्विजवर्मा–पु० [सं०] विख्यात दानी वीरदत्त लकड़ीहारेका नाम जो देवव्रात आदि ब्राह्मणोंने रखा था (ब्रह्मां० ४.७.३५) ।

द्वित–पु० [सं०] (१) एक देवताका नाम । (२) एक ऋषिका नाम जो तीन भाई थे—एकत, द्वित तथा त्रित । यह श्रीकृष्णसे स्यमंतपंचकमें भेंट करने गये थे (भाग० १०.८४.५) ।

द्विदंत–पु० [सं०] ५१ विघ्नेश्वरों (गणेशों)मेंसे एकका नाम (ब्रह्मां० ४.४४.६६-६९) ।

द्विदेह–पु० [सं०] गणेशजी जिनका एक वार पहिले सिर कट गया पुनः हाथीका मस्तक जोड़ा गया था, अतः यह नाम पड़ा—दे० गणेश ।

द्विपरार्ध–पु० [सं०] ब्रह्माके जीवनका एक भाग (भाग० १२.४.५) ।

द्विपाद–पु० [सं०] विघ्नेश्वर गणेशजीका एक नाम (ब्रह्मां० ४.४४.६८) ।

द्विपास्य–पु० [सं०] गणेशजी । द्विप=हाथी । गणेशजीका मुख हाथीके मुखके समान होनेके कारण यह नाम—दे० गणेश ।

द्विमातृ–पु० [सं०] जरासंध जो दो माताओंके गर्भसे उत्पन्न हुआ था—दे० जरासंध ।

द्विमीढ़–पु० [सं०] अजमीढ़का भाई जो हरिवंशके अनुसार हस्तिनापुरके बसानेवाले महाराज हस्तीके तीन पुत्रोंमेंसे एक पुत्र था । भागवतके अनुसार यवीनर नामक इसका एक पुत्र था (भाग० ९.२१.२१,२७; मत्स्य० ४९.४३; वायु० ९९.१६६) ।

द्विमुखी–स्त्री० [सं०] सोलह स्वर-शक्तियोंमेंसे एक स्वर-शक्ति (ब्रह्मां० ४.४४.५६) ।

द्विमूर्धा–पु० [सं०] दनुका पुत्र एक असुर जो वृत्रासुरका अनुगामी था । यह इन्द्र-वृत्र तथा इन्द्र-बलि देवासुर संग्रामोंमें लड़ा था (भाग० ६.६.३०; १०.१९; ७.२.४; ८.१०.२०; वायु० ६८.४; ब्रह्मां० ३.६.४; विष्णु० १.२१.४) । यह समुद्रमंथनमें भी था तथा देवताओंकी सहायता इसने की थी (मत्स्य० ६.१७; १०.२१; २४९.६७) ।

द्वियज्ञ–पु० [सं०] यज्ञश्रीका एक पुत्र तथा चन्द्रश्रीका पिता (विष्णु० ४.२४.४८) ।

द्वियजुव–स्त्री० [सं०] एक प्रकारकी ईंट जिससे यज्ञकुंड, यज्ञमंडप आदि बनते हैं ।

द्विरद–पु० [सं०] धृतराष्ट्रके एक पुत्रका नाम (महाभा०) ।

द्विरस्या–स्त्री० [सं०] ४९ वर्णशक्तियोंमेंसे एक शक्तिदेवीका नाम (ब्रह्मां० ४.४४.७४) ।

द्विरात्र–पु० [सं०] एक यज्ञ जो दो रातोंमें समाप्त होता है।

द्विलव–न० पु० [सं०] अमावस्या (वह अमावास्या जिसमें चन्द्रकी एक कलाशेष रहती है अर्थात् सिनीवादी) संध्यामें अनुमतिके साथ २ लव और राकाके साथ अपराह्णमें-चन्द्रमाका स्पर्श सूर्यके साथ पूरे दिनमें २ लव होता है और यही समय धार्मिक कृत्योंके लिए शुभ है (ब्रह्मां० २.२८.१०; ३८.६०; वायु० ५६.९, ३५; ५२.५५-६६) ।

द्विविद–पु० [सं०] (१) कंसका मित्र एक असुर जिसे श्रीकृष्णने मारा था (भाग० ३.३.११; १०.२.१; ३६.३५; ब्रह्मां० ३.७३.९९; वायु० ९८.१००) । (२) एक बन्दर जो श्रीरामचन्द्रकी सेनाका एक सेनापति था (रामायण) । (३) कौंचद्वीपका एक पहाड़ (ब्रह्मां० २.१९.६८) । (४) एक वानर जो नरकासुरका मित्र, सुग्रीवका मन्त्री और मैंदका भाई था । अतएव नरकासुरकी मृत्युके पश्चात् इसने उपद्रव आरम्भ किया । नगर, ग्राम आदि नष्ट कर यह उच्छृङ्खलोंके समान घूमने लगा । एक दिन बलभद्र रैवत उद्यानमें स्त्रियोंके साथ क्रीड़ा करते थे, द्विविद वहाँ पहुँचा और उपद्रव करने लगा जिससे क्रुद्ध हो बलदेवजीने इसे मार दिया था(भाग० १०.६७.२-२६; ब्रह्मां० ३.७.२४२; विष्णु० ५.३६ पूरा) ।

द्विस्स्विन्नान्न–पु० [सं०] उबाले धानका चावल जिसे 'उसना, भुजिया, दोशादा' आदि कहते हैं । ऐसा चावल देवपूजन आदि धार्मिक कृत्योंमें वर्जित हैं और यति, विधवा तथा ब्रह्मचारियोंको भी खाना निषेध है (ब्रह्मवैवर्तपुराण)।

द्वीप–पु० [सं०] पुराणानुसार पृथ्वी सात द्वीपोंमें बँटी है जिनके नाम ये हैं—जम्बूद्वीप, प्लक्षद्वीप, शाल्मलिद्वीप, कुशद्वीप, क्रौंचद्वीप, शाकद्वीप और पुष्करद्वीप (ब्रह्मां० ३.७२.७१; मत्स्य० ११३.४-५; १२३.३५) ।

पहलेसे दूसरा दुगना है, दूसरेसे तीसरा दुगना, तीसरेसे चौथा दुगना है, चौथेका दुगना पाँचवाँ और पाँचवेंका दुगना छठा है तथा सातवाँ द्वीप छठेका दुगना कहा गया है । भास्कराचार्यके मतानुसार पृथ्वीके आधे भागमें समुद्रोंसे घिरा जम्बू द्वीप है और शेष आधेमें अन्य ६ द्वीप हैं । ये सातो द्वीप क्रमशः क्षार, लवण, क्षीर, दधि, रस आदिके समुद्रोंसे घिरे हैं (भाग० ४.२१.१२; ८.१९.२३; ५.२० पूरा; ब्रह्मां० २.१९.१३६) ।

द्वीपी–पु० [सं०] क्रोधा या क्रोधवशाकी १२ पुत्रियोंमेंसे एक हरि (हरिभद्रा) और पुलहसे उत्पन्न एक वानर जाति (ब्रह्मां० ३.७.१७६; ३१९) ।

द्वैतवन–पु० [सं०] एक तपोवन जहाँ वनवासकालमें युधिष्ठिर आदि पाण्डव कुछ कालतक रहे थे । यह सरस्वतीके तटपर स्थित था (महाभा० वन० २४.१३,२०) । तीर्थयात्राके सिलसिलेमें बलरामजी भी यहा पधारे थे (महाभा० शल्य० ३७.२७) ।

द्वैपायन–पु० [सं०] (१) कृष्णका एक नाम (वायु० १०३.५१, ६५) । (२) वेदव्यासका एक नाम जो २८वें द्वापरके व्यास थे जिनमें श्रीकृष्णका ६ अंश था । अद्रिका नामकी अप्सराके गर्भसे उत्पन्न हुई राजा उपरिचरकी पुत्री मत्स्यगंधाके गर्भसे यह उत्पन्न हुए थे । मत्स्यगंधाका दूसरा नाम सत्यवती था जो भीष्म पितामहके पिता महाराज शांतनुको ब्याही थी । इसी सत्यवतीके गर्भसे कुमारी अवस्थामें ही पराशर ऋषिके योगसे कृष्ण द्वैपायनका जन्म हुआ था (मत्स्य० १६४.१७; १७१.६४; २०१.३१; वायु० ६०.११) । यमुना नदीके द्वीपमें जन्म होनेके कारण इन्हें द्वैपायन कहते हैं । शुकदेव इनके पुत्र थे जिन्होंने बाल्यकालमें ही संसार त्याग दिया था, अतः शुक कहलाये (भाग० १.२.२; १९.१०; २.१.८; ६.८.१९; १४.९) । इन्होंने जातुकर्ण्यसे ब्रह्मांडपुराण सुन सूतसे कहा था (ब्रह्मां० १.१.११-१४; २.३५.१२४; ३४.११; ४.४.६६) यह विष्णुके नवें अवतार थे (मत्स्य० ४७.२४७; ६९.८) ।—दे० वेदव्यास, मत्स्यगंधा और पराशर ।

द्वैमातुर–पु० [सं०] गणेशजीका एक नाम । गणेशजी पुष्पका देवीके गर्भसे उत्पन्न वरेण्य राजाके पुत्र थे । इनका जन्म त्रलोक्यकी विघ्नशांतिके लिए ही हुआ था, पर इनकी आकृति देख राजा डर गये, अतः उन्होंने गणेशको पशर्व मुनिके आश्रमके निकटस्थ एक जलाशयमें फेंकवा दिया था । वहाँ मुनिकी पत्नी दीपवत्सलाने इन्हें उठाकर पाला । इस प्रकार यह दो माताओंके द्वारा पले थे, अतः द्वैमातुर कहलाये (स्कंद० गणेशखंड) ।

ध

धनंजय–पु० [सं०] (१) अर्जुनका एक नाम जो उत्तरकुरु जीतनेके कारण पड़ा था (भाग० १.७.५०; ब्रह्मां ३.७१.१५४; मत्स्य० ४६.९; वायु० ९६.१५३; ९९.२४५; विष्णु० ५.३८.२७) । (२) अग्निका एक नाम—इनकी पूजासे धन

मिलता है। (३) एक कौशिक ऋषि, १६वें वेदव्यास (ब्रह्मां० २.३२.११८; मत्स्य० १४५.११३; विष्णु० ३.३.१५)। त्र्य्यारुणिसे ब्रह्माण्डपुराण सुन इन्होंने कृतञ्जयको सुनाया था (ब्रह्मां० २.३५.१२०; ४.४.५२) इन्हें वायुपुराण भी त्र्य्यारुणिने सुनाया था (वायु० १०३.६३)। (४) एक काद्रवेय नाग जिसे जलाशयोंका अधिपति माना गया है। यह माघ मासमें अधिष्ठित रहता है (भाग० ५.२४.३१; १२.११.३९; वायु० ६९.७०; विष्णु० १.२१.२२)। आश्विन-में यह गणके अन्य छहके साथ सूर्यके रथपर रहता है (वायु० ५२.१४; विष्णु० २.१०.११)। (५) कुशिक कुलका एक त्र्यार्षेय प्रवर (मत्स्य० १९८.१०)। (६) विश्वामित्र देवरात सहित सात पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (विष्णु० ४.७.३८)।

धनक–पु० [सं०] (१) दुर्मदका पुत्र तथा कृतवीर्य आदि चार पुत्रोंका पिता (भाग० ९.२३.२३)। (२) तामस मन्वंतरके सप्तर्षियोंमेंसे एक ऋषि (विष्णु० ३.१.१८)। (३) दुर्दमका एक पुत्र जो ४ पुत्रोंका पिता था (विष्णु० ४.११.१०)।

धनतेरस–स्त्री० [हि०] कार्त्तिक कृष्णा त्रयोदशी जो दीपावलीके दो दिन पहले होती है जिस दिन सूर्यास्तके पश्चात् लक्ष्मीपूजन करते हैं। इस तिथिको पितृलोकके देवता यमकी पूजा होती है और घरके दरवाजेपर यमका दिया जलाया जाता है। पुराणानुसार पितृपक्षमें जो पितृगण हमें देखने इस लोकमें आते हैं वे पुनः पितृलोक लौट जाते हैं इसीलिए इस दिन उल्कादानका इतना महत्त्व है (व्रतोत्सव)।

धनद–पु० [सं०] (१) कुबेर, विश्रवा और इडविडाका पुत्र (भाग० ९.२.३५; विष्णु० ३.२.११)। (२) बारह आदित्यों-मेंसे एक आदित्यका नाम (मत्स्य० १७१.५६)। (३) तृतीयगणके सात मरुतोंमेंसे एक मरुत् (ब्रह्मां० ३.५.९४)।

धनदतीर्थ–पु० [सं०] व्रजके अन्तर्गत कुबेरतीर्थका नाम (भागवत)।

धनदा–स्त्री० [सं०] आश्विन कृष्णा एकादशी।

धनपति–पु० [सं०] पुराणानुसार वायुका एक नाम। सृष्टि करते समय ब्रह्माके मुखसे वायुदेव निकले और ब्रह्माके आज्ञानुसार इन्होंने मूर्त्तिमान् होकर शांतरूप धारण किया। ब्रह्माके वरके अनुसार देवताओंका जितना धन है सबके रक्षक यही हैं। जो एकादशीको पका अन्न नहीं खाता है वायुदेव प्रसन्न हो उसे धन-धान्य देते हैं।

धनसंक्रान्तिव्रत–पु० [सं०] धन (पौषमास) की संक्रान्ति-में कलशमें जल, फल इत्यादि रखकर सूर्यका पूजन करे तो धन मिले (स्कंद०)।

धनाधिप–पु० [सं०] कुबेरका एक नाम (ब्रह्मां० ३.२४.४)।

धनाध्यक्ष–पु० [सं०] (१) यक्षोंका राजा कुबेर (वायु० ४१.४)। (२) यह अष्टनिधियोंका अधिपति (वायु० ४१..१०-११)।

धनायु–पु० [सं०] पुरूरवा और उर्वशीके आठ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (मत्स्य० २४.३३)।

धनिष्ठा–पु० [सं०] आश्विनी आदि २७ नक्षत्रोंमेंसे एक नक्षत्र जिसमें श्राद्धादि करना शुभ है (ब्रह्मां० २.२४.१३४; ३.१८.११; विष्णु० ३.१४.१६)। इसमें गृहनिर्माणके लिए काष्ठग्रहण अशुभ है (मत्स्य० २५७.१)।

धनु–पु० [सं०] (१) संजयके दो पुत्रोंमेंसे एक पुत्र तथा वसुदेवका भतीजा (ब्रह्मां० ३.७१.१९३)। (२) शमीकके चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (मत्स्य० ४६.२७)।

धनुक–पु० [सं०] प्रह्लाद-सुत शंभुके छह पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (वायु० ६७.८१)।

धनुर्दुर्ग–पु० [सं०] छः प्रकारके दुर्गोंमेंसे एक (महीदुर्ग, नरदुर्ग, वार्क्षदुर्ग, अंबुदुर्ग और गिरिदुर्ग ये शेप ५ दुर्ग हैं) (मत्स्य० २१७.६)।

धनुर्ग्रह–पु० [सं०] धृतराष्ट्रके एक पुत्रका नाम (महाभा० आदि० ६७.१०३)।

धनुर्द्धर–पु० [सं०] धृतराष्ट्रके एक पुत्रका नाम (महाभा० आदि० ११६.११)।

धनुर्धरी–स्त्री० [सं०] ४९ वर्ण शक्तियोंमेंसे एक शक्ति देवी (ब्रह्मां० ४.४४.७४)।

धनुर्मह–पु० [सं०] दे० धनुपयज्ञ (विष्णु० ५.१५.८-१५)।

धनुर्यज्ञ–पु० [सं०] धनुर्याग, धनुर्मख। एक यज्ञ विशेप जिसमें धनुपका पूजन तथा उसके चलाने आदिकी परीक्षा भी ली जाती है। मिथिलाके राजा जनकने अपनी पुत्री सीताके विवाहमें यह यज्ञ किया था (रामायण, बालकां० २३९-२६१)। कंसने भी श्रीकृष्णको छलपूर्वक बुलानेके लिए इस प्रकारका यज्ञ किया था (भाग० १०.३६.२६-३७, ४२; १५-२०)।

धनुर्वक्त्र–पु० [सं०] कार्त्तिकेयके एक अनुचरका नाम (महाभा० शल्य० ४५.६२)।

धनुर्वेद–पु० [सं०] मधुसूदन सरस्वतीने धनुर्वेदको यजुर्वेदका उपवेद माना है। अग्निपुराणमें ब्रह्मा और महेश्वर इस वेदके आदिकर्त्ता कहे गये हैं। रामायण और महाभारतमें कई प्रकारकी बाण-विद्याका उल्लेख है। द्रोणाचार्यने पांडवोंको धनुर्वेदकी शिक्षा दी थी (वायु० ६१.७९; ९१.९१; विष्णु० ३.६.२८; ४.१९.६०; भाग० १.७.४४; ३.१२.३८; मत्स्य० ४.४७; ५०.९)। सदानन्द-पुत्र तथा शरद्वान्के पिता सत्यधृति इस विद्यामें निपुण थे (भाग० ९.२१.३५; मत्स्य० २१५.८)। इस विद्याकी विशेपता तथा प्रकारके लिए (विष्णु० ५.२१.२१)।

धनुप–पु० [सं०] (१) सत्यधृतिका एक पुत्र। (२) एक प्राचीन ऋषि जो उपरिचर वसुके यज्ञमें सदस्य बनाये गये थे (महाभा० शान्ति ३३६.७)।

धनुष्कोटितीर्थ–पु० [सं०] (१) धनुपकोटि=धनुपका अन्तिम भाग (वायु० ६२.१६९)। (२) रामेश्वरसे दक्षिण-पूर्व एक स्थान जहाँ समुद्रमें नहानेका बड़ा माहात्म्य लिखा है। व्यासजीकी रायसे सोते पांडव-पुत्रोंको मारनेके पापसे अश्वत्थामा यहीं मुक्त हुए थे (स्कंद० ब्रह्मां सेतु० माहात्म्य)। स्कंदपुराणानुसार विभीषणके कहनेसे रावणवधके पश्चात् श्रीरामने अपने धनुपके कोटिसे सेतुको भंग कर दिया था, अतः यह नाम पड़ा। पृथ्वीपरके कुल एक खर्व तीर्थ इसमें निवास करते हैं (स्कन्द० ब्रह्मां० सेतु-माहात्म्य)। (३) कहते हैं वैन्यपृथुने पृथ्वीपरके पहाड़ आदि धनुपके कोनेसे हटा पृथिवीको समतल बनाया था जिसमें मनुष्य रह सकें (ब्रह्मां० २.३६.१९५; मत्स्य० १०.३१)।

धनेश–पु० [सं०] (१) एक वानर-नायक (ब्रह्मां० ३.७.२४४)। (२) कुबेरका पर्यायवाचक (विष्णु० ५.३०.६१)।

धनेश्वरी–स्त्री० [सं०] धनकी अधिष्ठात्री देवी (भाग० ६.१९.२६)।

धन्यव्रत–पु० [सं०] मार्गशीर्ष कृष्ण तथा शुक्ल प्रतिपदाको प्रारम्भ कर प्रत्येक शु० या कृ० प्रतिपदाको वर्षभर यह व्रत करे। इसमें नक्तव्रत तथा विष्णुपूजनका विधान है। इससे निर्धन भी धनवान होता है (वाराहपुराण)।

धन्या–स्त्री० [सं०] (१) क्रौंचद्वीपकी वैश्य जातिका नाम (विष्णु० २.४.५३)। (२) मनुकी एक पुत्रीका नाम जिसका विवाह ध्रुवके साथ हुआ था तथा शिष्ट नामका इनका एक पुत्र था (मत्स्य० ४.३८)।

धन्व–पु० [सं०] (१) दीर्घतपाका पुत्र (ब्रह्मां० ३.६७.७)। (२) जहाँ सदा जल रहे ऐसा मरु-स्थान जहाँ दुर्ग बनाया जा सके (वायु० ८.९८)। (३) एक देश जहाँके निवासी श्रीकृष्णसे, जब वह मिथिला जा रहे थे, मिलने गये थे (भाग० १०.८६.२०)।

धन्वकारा–पु० [सं०] षोडशावरण चक्रके दशमावरण एक रुद्र (ब्रह्मां० ४.३४.२६)।

धन्वन्तरि–पु० [सं०] धन्वंतरि विष्णुके तेरहवें अवतार, दीर्घतमा या दीर्घतपाके पुत्र, आयुर्वेदके प्रवर्त्तक तथा केतुमान्के पिता (भाग० १.३.१७;२.७.२१;९.१७.४-५;मत्स्य० ४७.३०)। देवताओंके वैद्य जो पुराणानुसार समुद्रमंथनके समय चौदह रत्नोंके साथ समुद्रसे निकले थे। हरिवंशानुसार जब यह समुद्रसे निकले तब विष्णुको देख ठिठक गये और विष्णुने इन्हें 'अब्ज' (अज=वायु०) और 'अर्वाकसुत' कहकर पुकारा था(वायु० ६.५३-६) और वर दिया कि 'तुम जन्मांतरमें विशेष सिद्धि प्राप्त करोगे। अणिमादि सिद्धियाँ तुम्हें गर्भमें ही मालूम हो जायँगी।' द्वापरमें काशीराज (दीर्घतपा) 'धन्व'के घर स्वयम् 'अब्जदेव'का अवतार हुआ। भरद्वाज ऋषिसे आयुर्वेदका अध्ययन करके इन्होंने प्रजाको रोगमुक्त किया। भावप्रकाशके अनुसार इन्द्रने आयुर्वेद सिखाकर धन्वंतरिको लोक-कल्याणार्थ पृथ्वी पर भेजा! धन्वंतरि ब्रह्माके वरसे काशीके राजा हुए(भाग० ८.८.३५; मत्स्य० २५१.१, ४; ब्रह्मां० ३.६७.७-१०; ७२.३; ४.९.७४-५; १०.३-५; २०.५२; वायु० ९२.७-२२; ९७.३; विष्णु० १.९.९८-१०८; ४.८.८-११)।

धन्वन्तीरूपा–स्त्री० [सं०] पारियात्रके दस पुत्रोंमेंसे पर्वतसे निकली एक नदी (मत्स्य० ११४.२४)।

धन्वी–पु० [सं०] तामस मनुके दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (मत्स्य० ९.१७)।

धम (धर्म?)–पु० [सं०] शिवदत्त नामक वेदपारग ब्राह्मणके चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (३.३५.१२)।

धमधम–पु० [सं०] कार्त्तिकेयके गण जो पार्वतीके क्रोधसे उत्पन्न हुए थे—'हरिवंश'।

धमधमा–स्त्री [सं०] स्कन्दकी अनुचरी मातृका (महाभा० शल्य० ४६.२०)।

धमनी–स्त्री० [सं०] ह्रादकी रानी तथा वातापि और इल्वलकी माता (भाग० ६.१८.१५)।

धमित–पु० [सं०] आंगिरस कुलका एक प्रवर-प्रवर्तक ऋषि (मत्स्य० १९६.१४)।

धर–पु० [सं०] आठ वसुओंमेंसे एक वसुका नाम एकवसव जिसके द्रविण, हुतहव्य तथा रज (द्राविण, हुतहव्यवह= वायु०) तीन पुत्र थे (ब्रह्मां० ३.३.२१-२२; वायु० ६६.२०.२१)। मत्स्य०के अनुसार इसके कल्याणीसे दो तथा मनोहरासे तीन पुत्र थे (मत्स्य०५.२१, २४; २०३.४)।

धरणिः–स्त्री० [सं०] पृथ्वी, ध्रुवकी पत्नी तथा स्वर्गीय विविध पुरोंकी माता (भाग० ६.६.१२)। कहते हैं असुरोंके द्वारा दिये गये कष्टोंका उलाहना यह मेरु पर्वतपर जा देवताओंसे कहती हैं (विष्णु० ५.१.१२-२८, २९, ३०)।

धरणीकीलक–पु० [सं०] पुराणानुसार पृथ्वीको चारो पहाड़ दबाये हैं।

धरणीतीर्थ–पु० [सं०] यह पितरोंके श्राद्धके योग्य तीर्थ है (मत्स्य० २२.७०)।

धरणीसुत–पु० [सं०] मंगल और नरकासुर (भाग० १०.५९.१४; मत्स्य० ७१.२३)।

धरणीसुता–स्त्री० [सं०] जनकनंदनी सीताका नाम—दे० सीता।

धरा–स्त्री० [सं०] (१) वसु द्रोणकी पत्नी जिसका जन्म यशोदा रूपमें हुआ था (भाग० १०.८.४८-५०)। (२) पृथ्वी जो पंच तत्त्वोंमेंसे एक है जहाँ जनपद तथा नगर बसे हैं (ब्रह्मां० २.२०.२)। (३) वेदकी ग्रीवा पृथ्वी कही गयी है (वायु० १०४.७३)।

धराव्रत–पु० [सं०] इसमें २० पलोंसे अधिक तौलकी पृथ्वीकी सुवर्णप्रतिमा दान करनेका विधान है जिससे रुद्रलोककी प्राप्ति होती है (मत्स्य० १०१.५२)।

धराशक्ति–स्त्री० [सं०] एक शक्तिदेवी (ब्रह्मां० ४.८.१०)।

धरास्त्र–पु० [सं०] एक प्रकारका अस्त्र। कहते हैं विश्वामित्र और वशिष्ठका जो युद्ध हुआ था उसमें विश्वामित्रजीने इसका प्रयोग किया था।

धर्ता–पु० [सं०] ७।७ के सात मरुद्गणोंमेंसे तीसरे गणका चतुर्थ मरुत् (वायु० ६७.१२६)।

धर्म–पु० [सं०] (१) देवता विशेष जिनकी उत्पत्ति वाराहपुराणानुसार ब्रह्माके दक्षिण अंगसे हुई है। ब्रह्माके आज्ञानुसार इन्हें चार पैरवाले वृषभके आकारका होनेके कारण सबसे प्रधान होकर प्रजापालनका भार मिला। धर्म सत्ययुगमें चार पैरोंसे, त्रेतायुगमें तीन पैरोंसे, द्वापरमें दो पैरोंसे और कलियुगमें सत्यरूपी एक पैरसे प्रजाकी रक्षा करता है। तपस्या, शुद्धता तथा दया इसके अन्य तीन पैर हैं पर ये कलियुगमें लुप्त हो जाते हैं (भाग० १.३. ९; १६.१९ २७; १७.२४-५)।

अन्य मतानुसार गुण, द्रव्य, क्रिया और जाति धर्मके ये ही चार पैर हैं। वेदोंमें धर्मको त्रिश्रृंग लिखा है जिसके दो सिर और सात मस्तक हैं। एकादशी तिथिमें धर्मका वास है, अतएव धर्मको उद्देश्य करके जो एकादशीव्रत करते हैं उनके सब पाप नष्ट हो जाते हैं। यह दयाके गर्भसे उत्पन्न अभय नामक पुत्रके पिता हैं इनकी अन्य १२ पत्नियों और उनके पुत्र यों है—श्रद्धका पुत्र शुभ, मैत्रीका प्रसाद, शान्तिका सुख, तुष्टिका भद, पुष्टिका स्मय, क्रियाका योग, उन्नतिका दर्प, बुद्धिका अर्थ, मेधाका स्मृति,

तितिक्षाका क्षेम, ह्रीका प्रश्रय, और मूर्तिके नर और नारायण पुत्र हुए (भाग० ४.१.५०-५२; मत्स्य० १९८.३)। वामनपुराणमें धर्मकी पत्नीका नाम 'अहिंसा' लिखा है, जिसके गर्भसे सनत्कुमार, सनातन, सनक और सनंद, ये चार पुत्र हुए। अन्य पुराणोंमें इन्हें ब्रह्माका पुत्र बतलाया गया है। चंद्रमाने जिस समय बृहस्पतिकी पत्नीका हरण किया उस समय ये दुःखी हो अरण्यमें चले गये थे और तभीसे वह अरण्य धर्मारण्यके नामसे प्रसिद्ध हुआ। (२) शासनमें धर्मके स्थानके लिए (ब्रह्मां० ३.५०.५३-७)। कहते हैं कलिमें सनातनधर्मका लोप हो गया (मत्स्य० ९.२८-३१; २०१.६-८)। मनुके भिन्न-भिन्न मन्वंतरोंमें ऋषियोंने इसकी अलग-अलग व्यवस्था की थी (भाग० ७.११.८ १२)। धर्मकी ३० विशेषताओंका उल्लेख मिलता है। (३) नर और नारायण (ऋषि) का पिता जिसका विवाह मूर्तिसे हुआ था (भाग० २.७.६; ११.४.६)। (४) ब्रह्माके एक पुत्र जो उनके दाहिने वक्षस्थलसे उत्पन्न हुए थे। मनुष्योंकी वृद्धिके निमित्त ब्रह्माकी सर्वप्रथम ५ वस्तुओंकी सृष्टिमेंसे एक। धर्म ही सर्वप्रथम देवता थे जिनका विवाह दक्षकी १३ पुत्रियोंसे हुआ था = दाक्षायणियाँ (दस = वायु०) ब्रह्मा० के अनु० श्रद्धा, लक्ष्मी, धृति, तुष्टि, पुष्टि, मेधा, क्रिया, बुद्धि, लज्जा, वसु, शांति, सिद्धि और कीर्त्ति ये १३ दक्षपुत्रियाँ हैं (भाग० ३.१२.२५; ४.१.४८-५०; ब्रह्मां० २.९.१, ४९-५०; ४.१.४०; मत्स्य० ३.१०; ४.३४, ५५; ५.१३; १४६.१६, वायु० १.६९; १०.२६; विष्णु० १.७.२४; २८-३१; १५.७७, १०३ ६३.४१; ६६.२; ७६-३; १००.४३)। वैवस्वत मन्वंतरमें दाक्षायणियां तथा अरुंधती इनकी पत्नियाँ थीं (मत्स्य० २०३.१-२)। यह काम और लक्ष्मीके पिता थे (मत्स्य० १७१.४२)। इन्होंने पृथुको 'ख्याति' की कीर्तिमयी माला दी थी (भाग० ४.१५.१५; ६.६.२)। (५) तारोंका एक समूह जो ध्रुवको दाहिने रख उसके चारो ओर घूमता है (भाग० ४.९.२१; ५.२३.५; ब्रह्मां० २.२१.१७६)। (६) इनका विवाह सुनृतासे हुआ जिससे सत्यसेन आदि पुत्र हुए (भाग० ८.१.२५)। (७) नियमित तथा धार्मिक जीवनका देवता जो युधिष्ठिरका पिता कहा जाता है (भाग० ९.२२.२७; मत्स्य० ४६.९; ५०-४९; १७१, २६; वायु० ९६.१५३; विष्णु० ४.१४.३५; २०.४०)। धर्मव्रताके पिता इनकी पत्नी (धर्मव्रताकी माता) का नाम विश्वरूपा था। पुत्रीके लिए अनुरूप वर बहुत खोजने पर भी जब नहीं मिला तब पिताने पुत्रीको वरार्थ तपस्या करनेकी आज्ञा दी। तपस्यामें निरत धर्मव्रताका ब्रह्मपुत्र मरीचिसे विवाह तथा उससे मरीचिके सौ पुत्रोंका जन्म। वही बिना किसी कारणवश पतिशापसे गयाकी शिला हुई (वायु० १०७.२.१११.२३)। (८) गांधारका पिता तथा धृत (घृत = विष्णु० पु०) का पिता (भाग० ९.२३.१५; ब्रह्मां० ३.७४, १०; मत्स्य० ४८.८; वायु० १९.१०; विष्णु० ४.१७.४)। (९) हैहयका एक पुत्र तथा नेत्रका पिता (भाग० ९.२३.२२)। (१०) पृथुश्रवाका पुत्र तथा उशनाका पिता (भाग० ९.२३.३४)। (११) बनारसमें इसकी चतुर्मूर्त्तिके रूपमें स्थित है (मत्स्य० १८३.४१)। (१२) एक देवऋषि जो १४ वें वेदव्यास थे। लक्ष्मी इनकी पत्नी तथा सुनृता पुत्री थी। दक्षकी १० पुत्रियाँ इन्हें ब्याही थी। १२ साध्यों, ८ वसुओं, १० विश्वदेवों, मरुतों, भानुओं, मुहूर्त्तों आदिके पिता कहे गये हैं। मांडव्य ऋषिने इन्हें शाप दिया था (वायु० १०.२६; ६३.४१; ६६.२; ७६.३; ब्रह्मां० २.९.१.४९-५०)। (१३) इसके प्रकार अनेक और सूक्ष्म हैं जिनका वास्तविक रहस्य समझना कठिन है, अतः वैदिक सूक्तोंका ठीक विश्लेपण दुरूह है। इसीसे ऋषियोंने दान और यज्ञका उतना अधिक महत्त्व नहीं समझा जितना सनातनधर्मका जिससे स्वर्गकी प्राप्ति होती है। श्रौत स्मार्त धर्मका ज्ञान और वर्णाश्रमका पालन करना ही धर्म है। 'इष्टप्रापक' धर्मका प्रचलन आचार्योंसे आरम्भ हुआ (वायु० ५७.११२-८; ५९.२१-२८)। इसके दस अंग ये हैं = भिक्षासे भोजन प्राप्ति, अचौर्य, शुद्धता, निर्लिप्तता, स्फूर्ति या क्रियाशीलता, दया, अहिंसा, क्रोधका दमन, गुरु-सेवा, सचाई (ब्रह्मां० २.७.१७८; वायु० ८.१८६) इसके चार पाद हैं (वायु० २३.८१-२)। (१४) दीर्घतपाका एक पुत्र (वायु० ९२.७)। (१५) १० सुतपदेवगणमेंका एक सुतपदेव (वायु १००.१५)। (१६) सुव्रतका एक पुत्र तथा सुश्रवाका पिता (विष्णु० ४.२३.६)। (१७) एक सुतप देव (ब्रह्मां० ४.१.१४)। (१८) रौच्य मनुके दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (ब्रह्मां० ४.१.१०४)। (१९) एक वसु जो मनोहराका पति तथा अनेक पुत्रोंका पिता था (विष्णु० १.१५.११०, ११३)। (२०) हैहयका एक पुत्र तथा धर्मनेत्रका पिता (विष्णु० ४.११.८)।

धर्मकेतु—पु० [सं०] राजा (सुकेतन—भाग०) सुकेतुके (ब्रह्मां० वायु० तथा विष्णु०) पुत्रका नाम जो कश्यप-वंश तथा सत्यकेतुके पिता थे (भाग० ९.१७.८; ब्रह्मां० ३.६७.७४; वायु० ९२.७०; विष्णु० ४.८.१९-२०)।

धर्मक्षेत्र—पु० [सं०] (१) कुरुक्षेत्रका नाम—दे० कुरुक्षेत्र। (२) वदरिकाश्रम क्षेत्रमें गंगासंगम तीर्थसे दक्षिण धर्मक्षेत्र है जहाँ धर्मपत्नी मूर्त्तिके गर्भसे नर और नारायणकी उत्पत्ति हुई थी। यहाँ धर्म चारों चरणोंसे स्थित है। यहाँ स्नान दानका फल अक्षय होता है (स्कंद० वैष्णव० वदरिकाश्रम-माहात्म्य)।

धर्मघट—पु० [सं०] वैशाखमें दान देनेके लिए सुगंधित जलसे भरा घट जिसका बड़ा फल लिखा है—दे० काशीखंड।

धर्मचक्र—पु० [सं०] धर्मानुष्ठानकी आकांक्षा करनेवाले मुनियोंने ब्रह्मासे धर्मानुष्ठान योग्य पुण्य प्रदेश पूछा। ब्रह्माने कहा—सुनाभ नामक यह उत्तम चक्र जाता है आप लोग इसके पीछे-पीछे जावें। जहाँ इसकी नेमि (चक्रका अन्तिम भाग अर्थात् टायर) टूट जाय उसे आप लोग पुण्य प्रदेश जानें। नैमिष क्षेत्रमें जहाँ नेमि टूटी वह पुण्य देश माना गया (ब्रह्मां० १.२.८; वायु० १.१८३; २.८)।

धर्मचेता—पु० [सं०] एक वन्दर नायक (ब्रह्मां० ३.७.२३७)।

धर्मज्ञा—स्त्री० [सं०] दक्षकी एक पुत्री जो कश्यपको ब्याही थी (वायु० ६६.५५)।

धर्मतंत्र—पु० [सं०] हैहयका पुत्र तथा कीर्त्तिका पिता (वायु० ९४.४)।

धर्मत्रयव्रत—पु० [सं०] मार्गशीर्ष शु० १०, मार्गशीर्ष कृष्ण १० तथा शुक्ल और कृष्ण दोनों दशमीको धर्मका पूजन

करनेसे अथवा इस व्रत-त्रयसे पापोंका नाश तथा आयु, आरोग्य और ऐश्वर्यकी वृद्धि होती है (विष्णुधर्मोत्तर)।

धर्मदृक्–पु० [सं०] श्वफल्ककी गांदिनी नामकी पत्नीसे अतिरिक्त द्वितीय पत्नीसे उपमद्गु आदि १२ पुत्र तथा सुतारा नामक कन्या हुई १२ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (विष्णु० ४.१४.९)।

धर्मधृत–पु० [सं०] रौच्यमनु ९ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (वायु० १००.१०८)।

धर्मध्वज–पु० [सं०] कुशध्वजका एक पुत्र तथा कृतध्वज और मितध्वज (अमिजध्वज = विष्णु०) के पिताका नाम। महाभारतके शांतिपर्वके अनुसार मिथिलाके एक जनकवंशी राजा जो संन्यास-धर्म और मोक्ष-धर्मके ज्ञाता परम ब्रह्मज्ञानी राजा थे (भाग० ९.१३.१९; विष्णु० ६.६.७-८)। इनके बड़े पुत्रका नाम अमितध्वज तथा इनके छोटे भाई कृतध्वज थे। कृतध्वजके पुत्र केशिध्वज तथा अमितध्वजके पुत्रका नाम खाण्डिक्यजनक था। केशिध्वज सद्ज्ञान तथा खाण्डिक्य कर्मकाण्डमें निपुण थे। केशिध्वजने खाण्डिक्यको परास्त कर दिया था और वह वन चले गये थे (नारद० पूर्वभाग, द्वितीय पाद)।

धर्मनारायण–पु० [सं०] तेरहवें द्वापरके व्यास, जब भगवान् विष्णुका बालि नामका अवतार हुआ (वायु० २३.१५८)।

धर्मनेत्र–पु० [सं०] (१) यदुवंशी हैहयका पुत्र तथा कुंतिका पिता (ब्रह्मां० ३.६९.४; मत्स्य० ४३.९)। (२) मागधराज बृहद्रथ वंशी सुव्रतने चौसठ वर्ष राज्य किया उसके बाद तत्पुत्र धर्मनेत्र राजा हुआ। उसने पाँच वर्ष राज किया। (ब्रह्मां० ३.७४.११७; वायु० ९९.३०३)। (३) धर्मका पुत्र तथा कुंतिका पिता (विष्णु० ४.११.८)।

धर्मपत्नी–स्त्री० [सं०] धार्मिक नियमोंके अनुसार विवाहिता पत्नी (वायु० १०७.१४)।

धर्मपाल–पु० [सं०] राजा दशरथके एक मंत्रीका नाम (रामायण)।

धर्मपुत्र–पु० [सं०] (१) दसवें 'पर्याय' के मनु द्वितीय सावर्णि (ब्रह्मां० ४.१.६६-७२)। (२) कुंती-पुत्र युधिष्ठिरका एक नाम जिन्होंने मार्कण्डेयसे नर्मदा-माहात्म्य सुना था (मत्स्य० ११२.३; १८६.४-५)। (३) दो देवर्षि नर-नारायणकी उपाधि (वायु० ६१.८३)। (४) साध्यों, वसुओं तथा विश्वदेवोंके तीन गणोंका सामूहिक नाम (वायु० ६४.३)।

धर्मपुरी–स्त्री० [सं०] यमपुरी जहाँ मृत्युके पश्चात् प्राणियोंके किये हुए धर्म-अधर्मका विचार होता है—दे० (यम)।

धर्मपुष्करिणी–स्त्री० [सं०] दक्षिणमें सेतुके मूलमें दर्भशयनतीर्थके निकट है। यहाँपर धर्मराजने महादेवजीके प्रीत्यर्थ तपस्या की थी, अतः यह नाम पड़ा। इसी स्थानपर गालव नामक वैष्णव महात्माने विष्णुके प्रीत्यर्थ तपस्या की थी और यहीं विष्णुने चक्रसे गालवकी एक राक्षससे रक्षा की थी अतः यह बादको 'चक्रतीर्थ' के नामसे विख्यात हुआ (स्कंद० ब्राह्म० सेतु-माहत्म्य)।

धर्मपौत्र–पु० [सं०] विश्वकर्माके पुत्रका नाम (वायु० ८४ १७)।

धर्मभृत–पु० [सं०] (१) अक्रूर (श्वफल्क ?) के रत्ना नामकी भार्यासे उत्पन्न ११ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (मत्स्य० ४५.३०)। (२) श्वफल्कके गांदिनी पत्नीसे अतिरिक्त दूसरी पत्नीसे उत्पन्न ११ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (वायु० ९६.१११)।

धर्ममूर्त्ति–पु० [सं०] प्राचीन कालमें, बृहत्कल्पमें, उत्पन्न एक राजा जो इंद्रका मित्र तथा भानुमतीका पति था। इसके पुरोहित वशिष्ठके कथनानुसार पूर्वजन्ममें यह स्वर्णकार था और लीलावतीने जब 'लवणाचल'का दान किया था तब इसने बिना कुछ पारिश्रमिक लिये ही लीलावतीका सोनेका 'लवणाचल' बना दिया था। फलस्वरूप यह इस जन्ममें इतना शक्तिशाली हो गया था कि असुर भी इससे घबड़ाते थे। इसने १० मेरुपर्वतोंका दान वशिष्ठको दिया था (मत्स्य० ९२.१७-३३)।

धर्ममूर्त्तिधर–पु० [सं०] भूत, सर्प तथा पिशाच गणोंका सामूहिक नाम। पीवरी इनकी मानस पुत्री थी (वायु० ७३.२६)।

धर्मयाग–पु० [सं०] धर्मारण्यमें धर्म द्वारा किया गया यज्ञ। गयामें ब्रह्माने यज्ञ किया दक्षिणके रूपमें ब्राह्मणोंको अतुल सम्पत्ति दी, कामधेनु दी, कल्पवृक्ष दिये, दूधकी नदियाँ बना दी, घी की नहरे बना दीं, सोनेके पहाड़ रत्नपूर्ण बना दिये सबके घर धन-दौलतसे भर दिये और कहा अब किसी दूसरेसे याच्ञा न करना। धर्मारण्यमें दिये गये धर्मके यज्ञमें उन्होंने याचना की तो ब्रह्माने खिन्न होकर उन्हें शाप दिया कि तुम लोग ऋणी रहो, दूधकी नदियाँ जल की हो जायँ, सुवर्ण पर्वत पत्थरके हो जायँ, कामधेनु और कल्पवृक्ष स्वर्गको चले जायँ एवं तुम लोगोंके घर मिट्टीके हो जायँ। इसी शापवश वे ऋणी हो गये नदियाँ जलकी और पहाड़ पत्थरके हो गये एवं इसी शापवश इन्हें तीर्थस्थानोंमें जीविकोपार्जन करना पड़ा (वायु० १०६.७८८३)।

धर्मयुद्ध–पु० [सं०] इस प्रकारके युद्धमें पाप नहीं होता (भाग० १.८.५०)। महाभारतमें पांडवोंने धर्मयुद्ध और कौरवोंने अधर्म युद्ध किया था।

धर्मरथ–पु० [सं०] (१) दिविरथका पुत्र तथा चित्ररथाका पिता (भाग० ९.२३.७; विष्णु० ४.१८.१६-७)। यह विद्वान् राजा था (ब्रह्मां० ३.७४.१०३)। विष्णुपद पर्वत पर इन्द्रके साथ सोमपान किया था (वायु० ९९.१०१-२; (मत्स्य० ४८.९२-३)। (२) सगरका एक पुत्र (ब्रह्मां० ३.६३.१४७; वायु० ८८.१४९)।

धर्मराज–पु० [सं०] (१) युधिष्ठिरका एक नाम (भाग० १.१२.४; विष्णु० ५.३८.९०)। (२) सूर्यके पुत्र यम (वायु० ८४.८०; १०६.४४; १०८.५; १११.३८; विष्णु० ३.७, १९, ३५; (ब्रह्मां० २.२९.६५; ३.१३.६७; ५९.७९)।

धर्मराजतीर्थ–पु० [सं०] यह प्रयागमें यमुनाके पश्चिम ओर है (मत्स्य० १०८.२७)।

धर्मराजनिवेशन–पु० [सं०] कुरुक्षेत्रका एक पवित्रस्थान जहाँ श्राद्धादि करना शुभ होता है (वायु० ७७.६५)।

धर्मवर्मा–पु० [सं०] (१) श्वफल्कका एक पुत्र (मत्स्य० ४५.३०)। (२) रामचंद्रका एक पुत्र तथा वंगका पिता (विष्णु० ४.२४.५६)।

धर्मवाहन–पु० [सं०] धर्मराजका वाहन भैंसा।

धर्मविजयी–पु० [सं०] महाराज सगर जिसने सारी पृथ्वी जीत ली थी (ब्रह्मां० ३.६३.१४२)।

धर्मवृद्ध–पु० [सं०] (१) श्वफल्कके अक्रूर प्रमुख बारह पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (ब्रह्मां० ३.७१.११२; (भाग० ९.२४.१६)। (२) प्रभासे उत्पन्न स्वर्भानुके नहुष आदि पाँच पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (वायु० ९२.२)।

धर्मव्याध–पु० [सं०] मिथिलापुर निवासी एक व्याध जिसने कौशिक नामक एक तपस्वी वेदाध्यायी ब्राह्मणको धर्मतत्त्व समझाया था। महाभारतके वनपर्वानुसार एक बार कौशिक एक वृक्षके नीचे वेदपाठ कर रहे थे। इसी बीचमें उनके मुँहके ऊपर धूप आयी देख एक पक्षीने ऊपरसे विष्ठा कर दिया। कौशिकके ऊपर देखनेसे पक्षी मरकर नीचे गिर गया। उसे मरा देख उन्हें बहुत दुःख हुआ तदुपरांत वह भिक्षा माँगने एक घर गये जहाँ स्त्रीने इन्हें बैठा दिया और अपने थके पतिकी सेवामें लग गयी। कुछ देर बाद जब स्त्री अन्न लेकर आयी तो कौशिक बिगड़ गये। स्त्रीने उन्हें समझाया और धर्मतत्त्व समझनेके लिए धर्मव्याधके पास जानेको कहा। मिथिला पहुँचनेपर वहाँ ब्राह्मणने इस व्याधको नाना प्रकारका माँस बेचते देखा। धर्मव्याध इन्हें देखते ही उठ खड़ा हुआ और उसने बतला दिया कि उन्हें एक ब्राह्मणीने भेजा है। कौशिकने आश्चर्यचकित हो पूछा 'तुम इतने ज्ञानसंपन्न होकर ऐसा निकृष्ट कर्म क्यों करते हो।' धर्मव्याध बोला—'महाराज ! यह व्यवसाय पितृ-परंपरासे चला आता है। यह मेरा कुलधर्म है जिसे त्याग करना उचित नहीं पर साथ ही सदाचारके आचारणमें मुझे कोई बाधा नहीं।' व्याधने कहा कि मैं पहले वेदाध्यायी ब्राह्मण था पर एक निर्दोष मृगरूपी ऋषिको मारनेके कारण शापसे व्याध हो गया हूँ (महाभा० वन० अ० २०६ से २१६ तक वन पर्व)।

धर्मव्रता–स्त्री० [सं०] विश्वरूपाके गर्भसे उत्पन्न धर्म नामक एक राजाकी पुत्रीका नाम। वायुपुराणानुसार इसने पातिकी प्राप्तिके लिए घोर तप किया था। इसका विवाह मरीचि ऋषिसे हुआ था। एक बार यह पति सेवामें लगी थी, पति सो गये थे। उसी समय इसके श्वशुर ब्रह्माजी आ गये जिनका स्वागत इसने पतिकी सेवा छोड़कर किया था, अतः पतिशापसे यह पत्थर हो गयी थी (वायु० १०७.३-३१)।

धर्मशर्मा–पु० [सं०] रथीतरके चार शिष्योंमें से एक शिष्य (वायु० ६०.६६)।

धर्मशास्त्र–पु० [सं०] वह ग्रंथ जिसमें समाजके शासनके निमित्त नीति और सदाचार संबंधी नियम दिये हों। इस विद्याका ज्ञान राजाओंके लिए आवश्यक है। सूत इसमें बड़ा निपुण था (भाग० १.१.६)। श्रीकृष्ण और बलरामने भी इसकी शिक्षा ली थी (भाग० १०.४५.३४)। हिन्दुओंके धर्मशास्त्र 'स्मृति'के नामसे प्रसिद्ध हैं जिनमें सबसे विख्यात 'मनुस्मृति' है। प्राजापत्या, रौद्री और वैष्णवी इन तीन तनुओंका इसमें उल्लेख है (ब्रह्मां० २.३३.३१; ३५.८८; ३.३.८८; २९.२३)।

धर्मसर्ग–पु० [सं०] धर्मके दक्षकी १३ पुत्रियोंके गर्भसे उत्पन्न पुत्रोंका नाम (वायु० १०.३८)।

धर्मसावर्णि–पु० [सं०] पुराणानुसार ग्यारहवें मनुका नाम (भाग० ८.१३.२४-६; विष्णु० ३.२.२९-३२)।

धर्मसुत–पु० [सं०] (१) गंधमादनमें तपस्या करते हुए विष्णुका एक नाम (मत्स्य० ६१.२१)। (२) युधिष्ठिरका एक नाम (महाभा०)

धर्मसूत्र–पु० [सं०] (१) सुव्रतका पुत्र तथा शमका पिता (भाग० ९.२२.४८)। (२) आपस्तम्ब, गौतम, बौधायन, हिरण्यकेशी आदि ऋषियों द्वारा विरचित सूत्ररूप धर्मग्रन्थोंका नाम।

धर्मसेतु–पु० [सं०] आर्यक और वैधृताका एक पुत्र जो ग्यारहवें मनुके समयके विष्णुके अंशावतार समझे जाते थे (भाग० ८.१३.२६)।

धर्मसेन–पु० [सं०] मांधाताके चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (मत्स्य० १२.३५)।

धर्मांगद–पु० [सं०] एक राजकुमार जिसने पिताके लिए मस्तकतक दे दिया था। यह पुनर्जन्ममें सोमशर्मा और सुमनाका पुत्र हुआ—दे० सुव्रत (५)।

धर्माधिकरण–पु० [सं०] धर्मशास्त्रके विज्ञाता ब्राह्मण जो न्यायाधीश होते थे (मत्स्य० २१५.२४, ३०; २१७.११)।

धर्माध्यक्ष–पु० [सं०] शिवका एक नाम (वायु० ३०.१७९)।

धर्मारण्य–पु० [सं०] (१) जब चंद्रमा देवगुरु बृहस्पतिकी पत्नी ताराको हर लाये थे तब 'धर्म' दुःखी होकर जिस वनमें चले गये थे उसका नाम ब्रह्माने 'धर्मारण्य' रखा (वाराह-पुराण)। (२) एक वनविशेष जहाँ यशके लिए धर्मराज तप कर रहे थे। इंद्रने वर्द्धिनी नामक अप्सराको उनका तप भंग करनेको भेजा था, पर वह सफल न हो सकी। शंकरने प्रसन्न होकर इस वनका नाम 'धर्मारण्य' रखा। धर्मराजने यहाँ 'धर्मेश्वर नामक शिवलिंग स्थापित किया तथा 'धर्मवापी' का निर्माण किया (स्कंद० ब्राह्म० धर्मा० मा०)। (३) कूर्मविभागके मध्यभागका एक देश (बृहत्संहिता)। (४) गयाके अंतर्गत एक तीर्थस्थान, श्राद्ध करनेका बड़ा माहात्म्य (वायु० ८३.२३)। यहाँ धर्मने यज्ञ किया था (वायु० १११.२३)।

धर्मार्थकाम–पु० [सं०] पुरूरवाने अपने जीवन भर इन तीनों (धर्म, अर्थ और काम) का बराबर यथेष्ट ध्यान रखा (मत्स्य० २४.१५-२१) कूर्म और लिंग पुराणमें धर्म, अर्थ, कामकी व्याख्या मोक्षके साथ-साथ हुई है (मत्स्य० ५३.३७, ४७; ११४.१३; १२१.६४-८१; (वायु० ८.२६)।

धर्मी–पु० [सं०] (१) इक्ष्वाकुवंशी अमित्रजि स्तुत भरद्वाजका (बृहद्राज=विष्णु०) पुत्र तथा कृतंजयका पिता (वायु० ९९.२८६; विष्णु० ४.२२.६)।

धर्मेयु–पु० [सं०] (१) भद्राश्वके घृता अप्सरासे उत्पन्न दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (मत्स्य० ४९.६)। (२) महाभारतके अनुसार पुरुवंशोत्पन्न रौद्राश्व राजा तथा घृताचीका एक पुत्र जो उसका आठवाँ पुत्र था (भाग० ९.२०.४; वायु० ९९.१२५)।

धर्मेश्वर–पु० [सं०] गयामें ब्रह्मतीर्थमें कुएँके निकट (वायु० १११.२६)।

धर्मेपु–पु० [सं०] रौद्राश्वका एक पुत्र (विष्णु० ४.१९.२)।

धर्म्यविवाह–पु० [सं०] ब्राह्म, दैव, आर्ष, प्राजापत्य और

गांधर्व ये ही पाँच धर्म्यविवाह माने गये हैं (मनु० ३.२१ २२)।

धातकि–पु० [सं०] (१) पुष्करद्वीपके अधिपति वीतिहोत्रका एक पुत्र (भाग० ५.२०.३१)। (२) (धातुकि = विष्णु०) सवनके दो पुत्रोंमेंसे एक पुत्र, धातकि खंडका नामकरग इसीपर हुआ था (ब्रह्मां० २.१४, १५-६; वायु० ३३.१४-१५; विष्णु० २.४.७३)। (३) पुष्कर द्वीपका एक खंड = धातकिखंड जिसके दक्षिणमें सुमनपर्वत है (ब्रह्मां० २.१४.१६; १९.११७-२५; मत्स्य० १२३.५-१०, २६; वायु० ४९.११३, १२१)। सवन-पुत्र धातकिके ऊपर इसका नामकरण हुआ है (वायु० ३३.१५)।

धाता–पु० [सं०] (१) ब्रह्मा, विष्णु और महेश (भाग० १०.१.५०; ब्रह्मां० ४.४३.८६)। (२) भृगुमुनिका ख्यातिके गर्भसे उत्पन्न एक पुत्र, अनुमतिका पति पूर्णिमाका पिता (भाग० ४.१.४३; ६.१८.३)। (३) ४९ मरुतोंमेंसे एक का नाम। (४) १२ सूर्योंमेंसे एकका नाम। (५) वसंत ऋतुमें तपनेवाले सूर्यका नाम (वायु० ५२.२)। (६) ब्रह्माके एक पुत्रका नाम। (७) साठ संवत्सरोंमेंसे एकका नाम। (८) एक आदित्य, चैत्र मधु मासमें तपनेवाले सूर्यका नाम जिसके साथ रथपर ऋतुस्थली अप्सरा, पुलस्त्य ऋपि रहते हैं (विष्णु० २.१०.४; ५.१८.५६)। (९) इनकी पत्नी तुष्टि इन्हें छोड़कर सोमके पास चली गयी थी। इन्होंने संसारमें शांति स्थापित की थी (मत्स्य० २३.२४; ३८.९)। (१०) नक्षत्रोंका समूह (भाग० ५.२३.५)। (११) भृगु और ख्यातिके दो पुत्रोंमेंसे एक पुत्र तथा मेरु-पुत्री आयतिका पति (भाग० ४.१.४३-४; ब्रह्मां० २.१३.३७; वायु० ३०.३४)। (१२) अदितिका एक पुत्र जिसकी चार पत्नियाँ कुहू, सिनीवाली राका और अनुपति थीं जिनमें प्रत्येकसे एक-एक पुत्र हुआ (भाग० ६.६.३९; १८.३)। यह वैवस्वत मन्वंतर १० आदित्यदेवगणमेंका एक आदित्यदेव था (ब्रह्मां० ३.३.६७-६९)। (१३) ब्रह्माका एक नाम (भाग० १०.१.५०; ब्रह्मां० ४.४३.८६)। (१४) चैत्रमासमें तपनेवालेसूर्यका नाम (भाग० १२.११.३३)।

धातु–पु० [सं०] मरुतोंके सात गणोंमेंसे तृतीयगणका एक मरुत् (ब्रह्मां० ३.५.९४)।

धातृपुत्र–पु० [सं०] सनत्कुमार जो ब्रह्माके पुत्र कहे गये हैं—दे० सनत्कुमार।

धात्र–पु० [सं०] देवता और असुरोंके दायनिमित्त जो १२ संग्राम हुए, उनमेंसे दसवें संग्रामोंका नाम। उन बारहों संग्रामोंके नाम यों हैं—१. नरसिंह संग्राम, २. वामन संग्राम, ३. वाराह संग्राम, ४. अमृतमन्थन संग्राम, ५. तारकामय संग्राम, ६. आडीवक संग्राम, ७. त्रैपुर संग्राम, ८. अन्धकासुर संग्राम, ९. वृत्रासुर संग्राम, १०. धात्र संग्राम, (मत्स्य० ४७.४१-४५)।

धात्री–स्त्री० [सं०] (१) पृथ्वी (ब्रह्मां० २.३६.२२६; वायु० ६२.१९३)। (२) गायत्री स्वरूपिणी भगवती (हिं० श० सा०)। (३) भवकी पत्नी तथा उशनसकी माता (ब्रह्मां० २.१०.७७)। (४) डंकारी आदि दस शक्तियोंमेंसे एक शक्तिका नाम (ब्रह्मां ४.४४.८९)।

धात्रीनवमी–स्त्री० [सं०] कार्त्तिक शुक्लानवमीको धात्री (आँवला) वृक्षकी पूजा करे, दूधसे सींचे तथा सूत्र लपेटे आदि-आदि –दे० हेमाद्रि, देवीपुराण तथा अक्षयनवमी।

धानपान–पु० [हि०] विवाहके पहलेकी एक रस्म जिसमें वरपक्षवाले कन्यापक्षवालोंके यहाँ धान और हल्दी भेजते हैं जिसके पश्चात् विवाह पक्का समझा जाता है (हिं० श० सा०)।

धान्य–पु० [सं०] (१) शत्रु द्वारा चलाये अस्त्रोंको निष्फल करनेवाला एक अस्त्र। विश्वामित्रजीने श्रीरामचंद्रको इसका चलाना सिखलाया था (वाल्मीकि रामायण)। (२) अट्ठारह प्रकारके अन्न जो दान करनेके काम आते हैं (मत्स्य० २७६.७; २७७.११)।

धान्यधेनु–स्त्री० [सं०] पुराणानुसार दान देनेके लिए एक कल्पित गौ। जिसकी कल्पना धानकी ढेरीमें की जाती है। विपुव संक्रांति या कार्त्तिक मासमें यह दान दिया जाता है (दानक्रियाकौमुदी-कंकणाचार्यकृत)।

धान्यमालिनी–स्त्री० [सं०] रावणके यहाँकी एक राक्षसी जिसे रावणने सीताको समझानेके लिए भेजा था। अन्य मतसे रावणकी पटरानी मंदोदरीका ही एक नाम (रामायण)।

धान्यशैल– पु० [सं०] पुराणानुसार दान करनेके लिए एक कल्पित पर्वत जिसकी कल्पना धान्यधेनुकी तरह धानकी ढेरीमें की जाती है। दान करनेवाला स्वर्ग पाता है। यदि वह किसी प्रकार इस लोकमें आ जाता है तो राजा होता है (मत्स्य० ८३.४,१२-१३; ९२.३२ तथा दानक्रियाकौमुदी)।

धान्यायनि–पु० [सं०] आंगिरसकुलके एक ऋपिका नाम जो त्र्यापेंय प्रवर थे (मत्स्य० १९६.२७)।

धान्वंतररूप–पु० [सं०] विष्णुका बारहवाँ अवतार धन्वंतरिरूप (भाग० १.३.१७)।

धामव्रत–पु० [सं०] आदित्यका एक व्रत। इसको करनेवाला त्रिरात्र उपवासकर फाल्गुनकी पूर्णिमाको भवन (गृह) दे तो आदित्य-लोकमें जाता है (मत्स्य० १०१.७९)।

अमिताभदेव (ब्रह्मां० २.३६.५३)। (२) तामस युगके सात सप्तर्पियोंमेंसे एक ऋपिका नाम (विष्णु० ३.१.१८; वायु० ६२.४१)।

धामा–पु० [सं०] (१) १४ अमिताभ देवगणमेंका एक

धाय्या–स्त्री० [सं०] एक वेदमंत्र जिससे अग्नि प्रज्वलित करते हैं।

धार–पु० [सं०] चंद्रमाके तीन पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (वायु० ६६.२३)।

धारतीर्थ–पु० [सं०] नर्मदाके उत्तरी तटपरका एक तीर्थ (मत्स्य० १९०.६)।

धारण–पु० [सं०] (१) कश्यपऋपिके एक पुत्रका नाम। (२) भगवान शंकरका एक नाम।

धारणा–स्त्री० [सं०] एक प्रकारका योग जिसमें मस्तिष्कको नियन्त्रित करना होता है और अपने ही भीतर सब सिद्धियोंका केन्द्र ढूँढ़ना पड़ता है। अग्निके समीप, वनमें, नदीतटपर, श्मशान या कब्रगाह या मंदिरादिमें यह होता है और साधक जौका सत्त दही खा सकता है। आग्नेयी 'धारण' एक समाधि विशेष जिसे दक्षपुत्री सतीने किया

था (वायु० ३०.५४; ब्रह्मां० १.२-४२-३; ३.४.२६; २२.७५; वायु० ११.२२.६४; विष्णु० ६-७.७५-८) ।

धारांग–पु० [सं०] एक प्राचीन तीर्थका नाम (ब्राह्म; ब्रह्मां०) ।

धारा–स्त्री० [सं०] (१) एक वहुत प्राचीन तीर्थका नाम यहाँकी यात्रासे सव पाप छूट जाते हैं (महाभा० वन० ८४.२५) । (२) राजा भोजकी प्रसिद्ध राजधानीका नाम ।

धारिणी–स्त्री० [सं०] (१) चौदह देवताओंकी पत्नियाँ जिनके नाम ये हैं—इन्द्रकी शची । वनस्पति । गार्गी । धूम्रोर्णा । रुचिराकृति । सिनीवाला । कुहू । राका । अनुमति । आयति । प्रज्ञा । सेला । वेला । (२) एक पितृकन्या, स्वधाकी एक पुत्री (भाग० ४.१.६४) । वर्हिषद्की मांनसी पुत्री, मेरुकी पत्नी जिसका मंदर पुत्र और वेला, नियति तथा आयति तीन पुत्रियाँ थीं (ब्रह्मां० २.१३.३०; वायु० ३०.२८; ३३.४; ६२.१९२) । ये ब्रह्मवादिनी थीं (विष्णु० १.१०.१९) ।

धार्ष्टक–पु० [सं०] धृष्टका क्षत्र जिसमें गणोंके साथ तीन हजार (३०००) क्षत्रिय थे (वायु० ८८.४-५) ।

धार्ष्टगण–पु० [सं०] धृष्टके योद्धा वंशज जिन्होंने ब्राह्मणत्त्व प्राप्त कर लिया था (भाग० ९.२.१७) ।

धातकिखंड–पु० [सं०] यह पुष्कर द्वीपमें है (वायु० ४९.११३) ।

धियांत–पु० [सं०] हृदीकके १० वीर पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (वायु० ९६.१४०) ।

धियावसु–पु० [सं०] एक देवता जो वुद्धिके मालिक कहे गये हैं । यह वैदिक देवता हैं तथा सरस्वतीके वर्गके हैं ।

धिषण–पु० [सं०] स्वर्गीय संगीतमें दक्ष ८ गन्धर्वोंमेंसे एकका नाम (वायु० ६९.४६) ।

धिषणा–स्त्री० [सं०] (१) कृशाश्वकी पत्नी तथा वेदशिरा आदिकी माताका नाम (भाग० ६.६.२०) । (२) हविर्धान अग्निकी पत्नी तथा प्राचीनवर्हीं आदि ५ पुत्रोंकी माता (ब्रह्मां० २.३७.२३-२४; मत्स्य० ४.४५; विष्णु० १.१४.२) ।

धिष्णी–स्त्री० [सं०] धिष्णियोंकी माता (ब्रह्मां० २.१२.१७-८) ।

धिष्णीगण–पु० [सं०] अग्निके अभिमानी देव आहवनीयने कावेरी, कृष्णा, वेणी आदि सोलह नदियोंसे विवाह किया जो धिर्णी कहलाईं । उनसे उत्पन्न -सके पुत्र धिष्ण्य कहे जाते हैं । इसीसे नदी पुत्रोंकी उत्पत्ति मानी गयी है (वायु० २९.१५-७) । इनकी माता धिष्णी हैं (ब्रह्मां० २.१२.१७-८) ।

धिष्णु–पु० [सं०] अंगिरा और मानवी पथ्याका एक पुत्र तथा सुधन्वाके पिताका नाम (वायु० ६५.१०१,१०२) ।

धिष्ण्य–पु० [सं०] १२ की संख्यावाले प्रतर्दन देवगणमेंका एक प्रतर्दन देव (ब्रह्मां० २.३६.३०) ।

धीमान्–पु० [सं०] (१) विराट् सुत महावीर्यका एक पुत्र तथा महान्का पिता (ब्रह्मां० २.१४.६९; वायु० ३३.५८; विष्णु० २.१.३९) । (२) पुरूरवा और उर्वशीके ६ पुत्रोंमेंसे एक (ब्रह्मां० ३.६६.२२; वायु० ९१.५१) । (३) तामस मन्वंतरके सप्तर्षियोंमेंसे एक ऋषि (मत्स्य० ९.१६) ।

धीवर–पु० [सं०] एक राज्य जहाँसे होकर ह्लादिनी नदी वहती है (ब्रह्मां० २.१८.५४; मत्स्य० १२१.५३; वायु० ४७.५१; ६२.१२३) ।

धुंधु–पु० [सं०] (१) पुरुवंशी राजा युधका पुत्र मनस्यु और मनस्युका पुत्र राजा धुन्धु यह राजा वहुविधका पिता तथा सम्पातिका दादा था (मत्स्य० ४९.२.३) । (२) अनायुपा और कश्यपके पाँच महावली असुर पुत्रोंमेंसे सर्वज्येष्ठ अररूका पुत्र धुन्धु असुर था । उत्तक ऋषिके कहनेसे कुवलयाश्वने अपने २१००० पुत्रोंकी सहायतासे इसका वध किया था (भाग० ९.६.२२; ब्रह्मां० ३.६.३१; मत्स्य० १२.३१; वायु० ६८.३१) । हरिवंशके अनुसार एक वार यह मरुभूमिके वालूमें छिपकर संसारको नष्ट करनेके हेतु घोर तप कर रहा था । यह एक वर्षमें एक वार श्वास लेता था जिससे धूल उड़कर सारे आकाशमें छा जाती जिससे सूर्य भी छिप जाता था और सात दिनोंतक पृथ्वी हिलती रहती थी । महर्षि उतंक द्वारा (जिनके आश्रमके निकट धुंधु तप कर रहा था) धुंधुकी शिकायत सुनकर वृहदश्वने जो वानप्रस्थ आश्रम ग्रहण कर चुके थे अपने पुत्र कुवलयाश्वको धुंधुके वधकी आज्ञा दी । तदनुसार कुवलयाश्व श्रीविष्णुकी सहायतासे अपने सौ पुत्रोंको लेकर उतंक ऋपिके साथ धुंधुको मारने गया । कुवलयाश्वके ९७ पुत्र तो इस युद्धमें मर गये पर अंतमें कुवलयाश्वने उसे मार ही डाला । तभीसे कुवलयाश्वका नाम धुंधुमार पड़ गया (वायु० ८८.२८-५९)। (३) मधु राक्षसका एक पुत्र जो शांतिप्रिय नागरिकोंको कष्ट देता था । उत्तंककी प्रार्थनापर वृहदश्वके पुत्रने इसका वध किया था (ब्रह्मां० ३.६३.२९-६२) । (४) मनस्यु-सुत जयदका पुत्र तथा वहुगवीका (वायु० ९९.१२२) ।

धुंधुमार–पु० [सं०] (१) राजा त्रिशंकुके पुत्रका नाम । (२) मधुराक्षसके पुत्र धुंधुराक्षसको मारनेके कारण महाराज कुवलयाश्वका नाम । वृहदश्व कुवलयाश्वके पिता थे । (वायु० ६८.३१) ।

धुंधुहा–पु० [सं०] एक दैत्य जिसे राज्य वढ़ानेकी लालसा वनी थी (भाग० १२.३.९) ।

धुनि–पु० [सं०] (१) धर्म और विश्वाके १० विश्वेदेव पुत्रोंमेंसे एक विश्वदेव (वायु० ६६.३१) । (२) तीसरे मरुद्गणका एक मरुत् (वायु० ६७.१२६) । (३) ब्रह्मधनके दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (वायु० ६९.१३२) ।

धूम्रित–पु० [सं०] वशाके अन्य मुख्य २ पुंत्रोंमेंसे एक राक्षस (वायु० ६९.१६५) ।

धुरंधर–पु० [सं०] रामायणके अनुसार एक राक्षसका नाम । यह रावणके प्रहस्त नामक एक सेनापतिका मन्त्री था (रामायण) ।

धुर्य–पु० [सं०] अतिरथका पुत्र तथा कंठका पिता (वायु० ९९.१३०) ।

ध्रुवाग्र–पु० [सं०] ब्रह्मलोकके ऊपर ‘पर’ तदुपरांत जो ‘अपर’ है उसका नाम (वायु० १०१.१४४) ।

धुलेंडी–स्त्री० [हिं०] होलीके दूसरे दिन मनाया जानेवाला एक पर्व, जिसे संस्कृतमें मदनोत्सव कहते हैं । चैत वदी १ को सवेरे ही होलीकी राख मस्तकपर लगाते हैं और तदुपरांत अवीर अवरखसे होली खेलने हैं—दे० होली ।

धू—पु० [हि०] राजा उत्तानपादके पुत्र ध्रुव जो बड़े विष्णु-भक्त थे। रामकथा वरनी न वनाय, सुनी कथा प्रह्लाद न ध्रुवकी—तुलसी दे० ध्रुव।

धूतपापस्थल—पु० [सं०] गोकर्ण तपोवनके निकटवर्ती एक पुण्य तीर्थका नाम, जहाँ भगवान् शङ्करने तप किया था (ब्रह्मां० ३.१३.२०; मत्स्य० २.२,३९)।

धूतपापा—स्त्री० [सं०] (१) हिमालयसे निकलनेवाली एक नदी (ब्रह्मां० २.१६.२६)। (२) काशीकी एक प्राचीन छोटी नदी। कहते हैं यह काशीके पंचगंगाके पास गंगामें मिलती हैं जिसका अव कोई पता नहीं है। काशीखंडके अनुसार शुचि नामक एक अप्सराके गर्भसे वेदशिरा ऋषिकी धूतपापा नामकी एक पुत्री हुई थी। पिताकी आज्ञासे वह भी घोर तप करने लगी और अन्तमें ब्रह्माने तपस्यासे प्रसन्न होकर वर दिया 'तू संसारमें सबसे पवित्र होगी तथा तेरे रोम-रोममें सब तीर्थ निवास करेंगे।' एक दिन धर्म नामक एक मुनि, विना वेदशिराकी आज्ञाके, उसी समय धूतपापासे गांधर्व विवाह करनेके लिए वार-वार हठ करने लगे। इसपर धूतपापाके शापसे धर्म मुनि जड़नद हो गये और धूतपापा धर्ममुनिके शापसे पत्थर हो गयी। पिताने जब यह वृतांत सुना तब पुत्रीसे कहा 'अच्छा तू काशीमें चन्द्रकान्त नामकी शिला होगी। चन्द्रोदय होनेपर तुम्हारा शरीर द्रवीभूत होकर नदीके रूपमें वहेगा और तुम अत्यन्त पवित्र होगी। उसी स्थानपर धर्म भी धर्मनद होकर वहेगा और तुम्हारा पति होगा।' महाभारतमें भी धूतपापा नदीका उल्लेख है पर कुछ विवरण नहीं है। (३) कुशद्वीपकी सात मुख्य नदियोंमेंसे एक नदीका नाम (ब्रह्मां० २.१९.६१; मत्स्य० १२२.७१; विष्णु० २.४.४३)।

धूतवाहिनी—स्त्री० [सं०] ऋष्यवान् पर्वतसे निकली कई नदियोंमेंसे एक नदीका नाम (मत्स्य० ११४.२६)।

धूप—पु० [सं०] चन्दन-अगर, गुग्गुल, तमाल-खस-पद्माक तथा तुरुष्क इन दो पदार्थोंकी धूप पितरोंको अति प्रिय है। गयामें पित्रोंको धूप देनेसे राज्यकी प्राप्ति होती है (वायु० ७५.३२; १०९.४०)।

धूमकेतु—पु० [सं०] (१) अग्नि जिसकी पताका धुआँ है—दे० अग्नि। (२) लंकापति रावणकी सेनाका एक राक्षस (रामचरित मानस वा० कां० दो० १८०)।

धूमकेश—पु० [सं०] (धूम्रकेश=ब्रह्मां०) दनुका एक पुत्र जो वृत्रासुरका अनुगामी था और इन्द्र-वृत्रासुर युद्धमें उसके साथ था [भाग० ६.६.३१; १०(२०)]।

धूमज—पु० [सं०] केतुमाल देशका एक जनपद (वायु० ४४.१४)।

धूमप—पु० [सं०] पितरोंका एक वर्ग (वायु० ३०.१००)।

धूमप्रभ—पु० [सं०] वह नरक जहाँ सदा धुआँ भरा रहता है।

धूमवर्ण—पु० [सं०] नागोंका एक राजा जो यादवोंके आदि पुरुष यदुको शिकार खेलते समय नागलोक उठा ले गया था और अपनी पाँच पुत्रियोंका विवाह इनसे कर दिया था जिनसे सात भिन्न-भिन्न वंशोंकी स्थापना हुई (हरिवंश)।

धूमवान्—पु० [सं०] (१) सब केतुओंका आदि (ब्रह्मां० २.२४.१३९; वायु० ५३.१११)।

धूमव्रत—पु० [सं०] शुक्राचार्यने इसे १००० वर्षोंतक करके शंकरसे आशीर्वाद प्राप्त किया था (ब्रह्मां० ३.७२.११९, १५६)।

धूमशिखा—स्त्री० [सं०] अन्धकासुर रक्तपानार्थ शङ्कर द्वारा सृष्ट कई मानस मातृकाओंमेंसे एक मानस पुत्री मातृका (मत्स्य० १७९.२४)।

धूमावती—स्त्री० [सं०] दस महाविद्याओंमेंसे एक। तन्त्रोंके अनुसार एक दिन क्षुधासे व्याकुल हो पार्वतीने महादेवसे भोजन माँगा और उस समय भोजन न मिलनेके कारण वह महादेवको ही खा गयी। इससे पार्वतीके शरीरसे धुआँ निकलने लगा और तभीसे उनका नाम धूमावती पड़ गया। पुनः महादेव मायाका शरीर धारण कर बोले 'देवी! जब तुमने हमको खा लिया, तब तुम विधवा हो गयीं और अब तुमको विधवाके वेशमें रहना चाहिये। उसी वेषमें लोग तुम्हारी पूजा करेंगे और तुम्हारा नाम धूमावती होगा।' कृष्णपक्षकी चतुर्दशीको पुरश्चरणकी सिद्धिके लिए धूमावतीके मंत्रका जप करते हैं (पुरश्चरणदीपिका)

धूमिनी—स्त्री० [सं०] (१) विशुक्र तथा दुष्टशेखर नामके दो असुर भाइयों, जिनकी महाबली भंडासुरने अपने दक्षिण और वाम दोनों कंधोंसे सृष्टि की थी, की यह बहिन थी (ब्रह्मां० ४.१०.८१)। (२) भंडकी एक बहिन तथा उलूकजित् आदिकी माता (ब्रह्मां० ४.२८.६)। (३) राजा हस्ती, जिसने हस्तिनापुर बसाया था, के तीन पुत्रोंमेंसे ज्येष्ठ पुत्र अजमीढ़की तीन रानियोंमेंसे एक रानी (मत्स्य० ४९.४४; वायु० ९९.१६७) जिसने पुत्रकी कामनासे अग्निकी खूब पूजा और हवनादि किया तथा और भी कड़ी तपस्याएँ कीं। इसका रंग धूमिल और मटमैला था, अतः ऋक्ष नामक इसका पुत्र भी इसी रंगका उत्पन्न हुआ था (मत्स्य० ९९.२११-१४)।

धूमोर्णा—स्त्री० [सं०] (१) यमराजकी पत्नीका नाम। (२) मार्कण्डेय ऋषिकी पत्नीका नाम।

धूम्र—पु० [सं०] (१) पूर्वकी ओर ढालू तथा खारे समुद्रमें (लवण सागरमें) घुसे भारतके तीन पर्वतोंमेंसे एक पर्वतका नाम (ब्रह्मां० २.१८.७५)। (२) कश्यप और सरमाके दो पुत्रोंमेंसे एक—दुल्लोलके आठ पुत्रोंमेंसे एकका नाम (३.७.४४३)। (३) अति बलवान् कई प्रधान वन्दर नायकोंमेंसे एक वन्दरनायक (ब्रह्मां० ३.७.२३५)। (४) कुमार कार्तिकेयका एक अनुचर विशेष (महाभा० शल्य० १५.६४)। (५) श्रीराम चन्द्रकी सेनाके एक भालूका नाम। (६) भण्डासुर द्वारा महासुरास्त्रके प्रयोगसे सृष्ट कई घोर महासुरोंमेंसे एक असुर जिसे ललिता देवीके अट्टहाससे आविर्भूत दुर्गादेवीने मारा था (ब्रह्मां० ४.२९.७७)। (७) भगवान शंकरका एक नाम (हि.श.सा)। (८) १४ मुखवाले ब्रह्म नामक अकार नवें मुखसे उत्पन्न नवें लृकार रूपसे मनु जिनका रंग धूएँका-सा है (वायु० २६.४१)।

धूम्रकेतु—पु० [सं०] (१) अलंबुसा (षा) अप्सराके गर्भसे उत्पन्न राजा तृणविन्दुके तीन पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (भाग० ९.२.३३)। (२) भागवतानुसार राजा भरतके पाँच पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम जो पाञ्चजनीके गर्भसे उत्पन्न हुए थे (भाग० ५.७.३)।

धूम्रकेश–पु० [सं०] (१) आदिराज पृथुके महारानी अर्चिके गर्भसे उत्पन्न पाँच पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम जो दक्षिणी राज्यका अधिपति था (भाग० ४.२२.५४; २४.२)।

धूम्रपत्नी–स्त्री० [सं०] मार्कण्डेय ऋषिकी पत्नी तथा वेदशिराकी माता (ब्रह्मां० २.११.७)।

धूम्रलोचन–पु० [सं०] शुंभ दानवका सेनापति। शुंभ-निशुंभके वधके लिए देवीने कहा था कि जो मुझे युद्धमें जीत लेगा उसीसे मैं विवाह करूँगी। देवीको पकड़ लानेके लिए शुंभने धूम्रलोचनको भेजा था, पर यह अपनी ६०,००० सेनाके साथ देवीके हाथों मारा गया था (ब्रह्मां० ४.२९.७५)।

धूम्रलोहित–पु० [सं०] (मोर संस्करण=धूम्रलोचन) अरुण पर्वतपर रहनेवाला एक देवता (मत्स्य० १२१.२२)।

धूम्रवर्ण–पु० [सं०] एक पर्वतका नाम, जिसे नृसिंह भगवान्के साथ युद्ध करते समय हिरण्यकशिपुने अन्यान्य पर्वत, देश और राष्ट्रोंके साथ कँपा दिया था (मत्स्य० १६३.१८८)।

धूम्रवर्णा–स्त्री० [सं०] अग्निदेवकी सात जिह्वाओंमेंसे एक—दे० अग्निजिह्वा।

धूम्रा–स्त्री० [सं०] (१) सूर्यके आधारभूत पात्र जो महाज्योतिसे जगमगाता हुआ है और डेढ़ योजन ऊँचा तथा एक योजन चौड़ा है, पर चारों ओर पुतलियोंकी भाँति लगी हुई बारह कलाओंमेंसे एक कला (ब्रह्मां० ४.३५.८७)। (२) अन्धकासुर-रक्तपानके लिए शिवजी द्वारा सृष्ट कई मानस पुत्री मातृकाओंमेंसे एक मानस पुत्री मातृका (मत्स्य० १७९.१७)।

धूम्राक्ष–पु० [सं०] (१) वैशालिक राजवंशके चन्द्रका पुत्र तथा मृंजयका पिता (विष्णु० ४.१.५२-३)। (२) रावणका एक सेनापति जिसे राम-रावणयुद्धमें श्रीरामने मारा था (स्कंद० ब्राह्म०, सेतु-माहात्म्य; भाग० ९.१०.१८)। (३) भागवतानुसार तृण बिंदुवंशके राजा हेम चन्द्रका पुत्र। यह संयमका पिता था (भाग० ९.२.३४)।

धूम्रानीक–पु० [सं०] शाकद्वीपके अधिपति प्रैयव्रत (प्रियव्रतसुत) मेधातिथिके सात पुत्रोंसे एक पुत्र (भाग० ५.२०.२५)।

धूम्रार्चि–पु० [सं०] अग्निके आधारभूत पात्र, जिसकी ऊँचाई एक कोस का है, चौड़ाई आधे कोसकी है और आकार गोल है, पर चारों ओर पुतलियोंकी भाँति सटी हुई दस अग्निकी कलाओंमेंसे एक कलाका नाम (ब्रह्मां० ४.३५.८३)।

धूम्राश्व–पु० [सं०] (विष्णु० धूम्राक्ष) वैशालिक राजवंशके राजा सुचन्द्र (विष्णु=चन्द्र) का पुत्र तथा संजयका पिता (ब्रह्मां० ३.६१.१४)।

धूम्रित–पु० [सं०] खशा और कश्यपके कई राक्षस पुत्रोंमें-एक राक्षस पुत्र इनकी आलम्बाआदि सात बहनें थीं (ब्रह्मां० ३.७.१३४)।

धूर्जटि–पु० [सं०] जटाधारी भगवान् शंकरका एक नाम
'अघ ओघकी बेरी कटी विकटी निकटी प्रकटी गुरु ज्ञान गटी।
चहुँओरनि नाचति मुक्तिनटी गुन धूरजटी बन पंचवटी ॥'
('सीता और रामका पंचवटीमें निवास'–केशवदास कृत)। इसी रूपमें शंकर योगिराज तथा दिगम्बर कहे जाते हैं (ब्रह्मां० ४.३०.८४)।

धूर्त्तक–पु० [सं०] कौरव्य कुलका एक नाग, जो अनमेजयके नागयज्ञमें जल मरा था (महाभा० आदि० ५७.१३)।

धूर्त्तरजस–पु० [सं०] राजा पुरूरवाके वंशधर कुशके चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (विष्णु० ४.७.८)।

धृत–पु० [सं०] (१) तेरहवें मनु, रौच्यके दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (ब्रह्मां० ४.१.१०४)। (२) भागवतानुसार द्रुह्युवंशीय धर्मके पुत्र जो दुर्मना (दुर्दम=ब्रह्मां० तथा वायु०) का पिता था (भाग० ९.२३.१५; ब्रह्मां० ३.७४.१०; वायु० ९९.१०)।

धृतक–पु० [सं०] सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्रके वंशज रुरुकका एक पुत्र तथा बाहुका पिता (वायु० ८८.१२१)।

धृतकेतु–पु० [सं०] (१) धृष्टके एक पुत्रके तीन पुत्रोंमेंसे चित्रनाथ और रणधृष्ट इसके दो भाई थे (मत्स्य० १२.२१)। (२) वसुदेवके बहनोईका एक नाम (गर्गसंहिता)। (३) नवें मनु दक्ष सावर्णिके दस पुत्रोंनेंसे एक पुत्र (विष्णु० ३.२.२४)।

धृतदेवा–स्त्री० [सं०] यदुवंशी राजा देवककी एक पुत्री जो सात बहिनें थीं और सब वसुदेवको ब्याही थीं। यह विपृष्ठकी माता थी (भाग० ९.२४.२२-२३, ५०; ब्रह्मां० ३.७१.१३१,१६२)।

धृतधर्मा–पु० [सं०] बारहकी संख्यावाले प्रतर्दनदेव गणमेंका एक प्रतर्दन देव (ब्रह्मां २.३६.३१)।

धृतपाद–पु० [सं०] कश्यप-कद्रूपुत्र हजार नागोंमेंसे एक नागका नाम (वायु० ६९.७३)।

धृतमाली–पु० [सं०] विपक्षियोंके चलाये अस्त्रोंको निष्फल करनेवाला एक अस्त्र जिसे श्रीरामचन्द्रने विश्वामित्रसे पाया था (रामायण)।

धृतराष्ट्र–पु० [सं०] (१) पाताल निवासी पाँच, सात तथा दस हजार और एक लाख मस्तकवाले फणाओंपर स्थित महामणियोंसे पातालको प्रकाशमय कर रहे महाक्रोधि वासुकि आदि नागपतियोंमेंसे एक प्रसिद्ध नाग जिसने नार्मदासे विष्णुपुराण सुन वासुकिको सुनाया था (भाग० ५.२४.३१; ब्रह्मां० ३.७.३४; वायु० ६९.७१, विष्णु० ६.८.४५-६)। (२) एक कौरव राजा जो विचित्रवीर्यका पुत्र तथा दुर्योधन आदिका पिता था। महाभारतके अनुसार पुरुवंशमें प्रसिद्ध राजा शांतनु हुए जिनकी दूसरी पत्नी सत्यवतीके गर्भसे विचित्रवीर्य तथा चित्रांगद दो पुत्र हुए। चित्रांगद एक गंधर्व द्वारा मारे गये थे और विचित्रवीर्यका विवाह काशिराजकी अम्बिका और अम्बालिका नामकी पुत्रियोंसे हुआ। विचित्रवीर्य निःसंतान गत हुए, अतः सत्यवतीके आज्ञानुसार वेदव्यासके नियोगसे अम्बिकाके गर्भसे धृतराष्ट्र माताके दोषसे अन्धे हुए और अम्बालिकाके गर्भसे पांडु हुए। धृतराष्ट्र अन्धे थे अतः पांडु राजा हुए, पर पांडुकी मृत्युके पश्चात् धृतराष्ट्र सिंहासनारूढ़ हुए जिनका विवाह गांधारीसे हुआ था। इन्हीं गांधारीके गर्भसे दुर्योधन आदि १०० पुत्र हुए जो कौरव कहलाये और कुरुक्षेत्रके युद्धमें

पांडवोंके हाथों मारे गये (महाभा० आदि० १.९५;१०८.२५; ११४.१२-२५ शल्य० १.३९-४०; वायु० ९९.२४२-३)। (२) मौनेय गंधर्वोंके एक राजाका नाम जो आश्विन माहमें सौरगणके छह ऋषि, अप्सरा, नाग, यक्ष आदिके साथ सूर्य रथपर अधिष्ठित रहता है (भाग० १२.११.४३; ब्रह्मां० २.२३.२१; ३.७.२; वायु० ६९.२) माघ महीनेमें सौरगणके अन्य छहके साथ यह सूर्यके रथपर रहता है (वायु० ५२.२१; विष्णु० २.१०.१६)। (३) भरतवंशी महाराज कुरुके पौत्र तथा जनमेजयके बारह पुत्रोंमेंसे सबसे जेठे एक पुत्र (महाभा० आदि० ९४.५८-६०)। (४) बलिके १०० पुत्रों, जिनमें बाण सबसे ज्येष्ठ था, मेंसे एक पुत्र मत्स्य० ६.११)। (५) कश्यप और दनुके विप्रलित्तिप्रमुख १०० दानव पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (ब्रह्मां० ३.६.८; वायु० ६८.८)।

धृतराष्ट्री–स्त्री० [सं०] (१) ताम्राके गर्भसे उत्पन्न कश्यप ऋषिकी पाँच पुत्रियोंमेंसे एक जो गरुत्मान् (गरुड़)को ब्याही थी और हंसों कलहंसों तथा चक्रवाक आदिकी माता कही जाती है (ब्रह्मां० ३.७.४४६-७; वायु० ६९.३२८; ३३७ ३८)। (२) धृतराष्ट्रकी पत्नी गांधारी (महाभा० आदि० १०९.९-१५)।

धृतवर्मा–पु० [सं०] त्रिगर्तका राजकुमार, जो त्रिगर्तराज सूर्यवर्मा तथा केतुवर्माका भाई था। इसने सूर्यवर्माके पराजित होने और केतुवर्माके मारे जाने पर अकेले ही अश्वमेधके अश्वकी रक्षाके लिए सन्नद्ध अर्जुनसे लोहा लिया और बड़ी बहादुरीसे लिया। जब अश्वमेध यज्ञका घोड़ा लेकर अर्जुन दिग्विजयके लिए चले थे तब इसके साथ उनका युद्ध हुआ था (महाभा० आश्व० ७४.१६-३३)।

धृतव्रत–पु० [सं०] (१) धृतिका पुत्र तथा सत्कर्मा (सत्यकर्मा विष्णु०, वायु०) का पिता (भाग० ९.२३.१२; वायु० ९९.११६; विष्णु० ४.१८.२५-६)। (२) शिवका एक नाम (भाग० ३.१२.१२)। (३) धृतव्रत, राजा जयद्रथका पुत्र विजयका पौत्र था यह पुरुवंशीय था (महाभा०)। (४) पंचम मन्वंतरमें रैवत मनुके दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (ब्रह्मां० २.३६.६४)।

धृति–स्त्री० [सं०] (१) दक्ष प्रजापतिकी १३ पुत्रियों, जो धर्मको ब्याही थीं, मेंसे एक तथा नियम नामक पुत्रकी माता (ब्रह्मां० २९.४९, ५९; वायु० १०.२५,३४; विष्णु० १.७.२३, २८; वायु० ५५.४३)। (२) सोम चन्द्रोंके अतिशय प्रभाव और वैभवसे युक्त होनेके कारण जो नौ देवियाँ अपने पतियोंका त्यागकर चन्द्राश्रित हुईं, उनमेंसे एक (वायु० ९०.२५; ब्रह्मां० ३.६५.२६; मत्स्य० २३.२६)। (३) कुश द्वीपको प्रधान सात नदियों, जिनमें प्रत्येकके दो-दो नाम हैं, मेंसे सातवीं नदी जिसका नाम महती है (१२२.७४)। (४) अश्वमेध यज्ञकी एक आहुतिका नाम। (५) चन्द्रमाकी सोलह कलाओंमेंसे एकका नाम–दे० कला। (६) सती देवीकी एक मूर्ति, जो पिण्डारकमें स्थापित है (मत्स्य० १३.४८)। अन्धकासुर-रक्तपानके लिए श्रीशंकर द्वारा सृष्ट अनेक मानस मातृकाओंमेंसे मानस मातृका नाम मत्स्य० १७९.२०)। सर्वदेवमय स्वरूप वामनरूप धारी भगवान् विष्णुके कटि (कमर) स्थानीय सात देवियोंमेंसे एकका नाम (२४६.६२)।

–पु० [सं०] (१) जयद्रथका पौत्र विजय और संभूतिका पुत्र (भाग० ९.२३.११)। (२) १० विश्वेदेवोंमेंसे एक विश्वेदेवका नाम (महाभा० अनु० ९१.३०)। (३) यदुवंशीय बभ्रुका पुत्र तथा कौशिकका पिता (विष्णु० ४.१२.३९)। (४) वीतहव्यका पुत्र तथा बहुलाश्वका पिता (भाग० ९.१३.२६; ब्रह्मां० ३.६४.२३; वायु० ८९.२२; विष्णु० ४.५.३१)। (५) विजयका पुत्र तथा धृतव्रतका पिता (भाग० ९.२३.१२; वायु० ९९.११६; विष्णु० ४.१८.२४)। (६) कुशद्वीपाधिपति ज्योतिष्मान्के सात पुत्रोंमेंसे एक पुत्र जिसके नामपर धृतिमद् वर्षका नामकरण हुआ (ब्रह्मां० २.१४.२७-९; वायु० ३३.२४; विष्णु० २.४.३६)। (७) १२ संख्याके सुधाम देवगणमेंका एक सुधामा देव (ब्रह्मां० २.३६.२७)। (८) सृष्टि (पुष्टि=वायु) और छायाके पाँच पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (ब्रह्मां० २.३६.९८; वायु० ६२.८३-४)। (९) ब्रह्मधानके नौ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (ब्रह्मां० ३.७.९८)। (१०) आर्द्रक या आहुकका एक पुत्र जिसके पास पूर्व दिशामें भोजकी तरह ८ करोड़ घोड़े और २१ हजार हाथी थे एवं उतने ही उत्तर दिशामें भी थे (ब्रह्मां० ३.७१ १२४; वायु० ९६.१२३-५)। (११) बीस संख्यावाले सुतप देवगणमेंका एक सुतप देव (ब्रह्मां० ४.१.१५; वायु० १००.१५)। (१२) सावर्णि मनुके दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (मत्स्य० ९.३३)। (१३) वृष्णिका एक पुत्र तथा कपोत रोमाका पिता (मत्स्य० ४४.६२)। (१४) मैथिले राजा विबुधका एक पुत्र तथा कीर्त्तिराजका पिता (वायु० ८९.१२)।

धृतिकेतु–पु० [सं०] प्रथम सावर्णि मनुके नौ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (ब्रह्मां० ४.१.६४)।

धृतिमद्वर्ष–पु० [सं०] कुशद्वीपका छठा राज्य (ब्रह्मां० २.१४.२९; १९.५८) यह नाम ज्योतिष्मान् (कुशद्वीपाधिपति)के पुत्र धृतिके नामपर पड़ा है (वायु० ३३.२६; ४९.५३)।

धृतिमान्–पु० [सं०] (१) धेनुका और कीर्तिमान्के दो पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (ब्रह्मां० २.११.२१; वायु० २८.१७)। (२) बृहदुक्थ-सुत महावीर्यका पुत्र तथा सुधृतिका पिता (ब्रह्मां० ३.६४.९; वायु० ८९.९)। (३) तेरहवें रौच्य मन्वंतरके सप्तर्षियोंमेंसे एक ऋषि जो आंगिरस कुलके थे। (ब्रह्मां० ४.१.१०५; विष्णु० ३.२.४०)। (४) पांचाल देशके सुदरिद्रके चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (मत्स्य० २१.३)। (५) पुरूरवा और उर्वशीके आठ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (मत्स्य० २४.३३)। (६) यवीनरका पुत्र तथा सत्यधृतिका पिता (मत्स्य० ४९.७०; वायु० ९९.१८४; विष्णु० ४.१९.४९)।

धृतिव्रत–पु० [सं०] इस व्रतका करनेवाला दूसरे कल्पमें राजा होता है। इस व्रतमें एक वर्ष तक पञ्चामृतसे स्नान कर वर्षान्तमें पञ्चामृतके साथ ब्राह्मणको गोदान देनेका विधान है (मत्स्य० १०१.३३-४)।

धृतेयु–पु० [सं०] भद्राश्वके घृताची या घृतामें उत्पन्न दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (मत्स्य० ४९.५)।

धृतेषु–पु० [सं०] (मत्स्य०=धृतेय) रौद्राश्व (मत्स्य०=भद्राश्व) के दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (विष्णु० ४.१९.२)।

धृष्ट–पु० [सं०] (१) (धृष्टि=ब्रह्मां०) हिरण्याक्षके नौ पुत्रों-

मेंसे पुत्रका नाम इनकी माताका नाम रुपाभानु था (भाग० ७.२.१८)। (२) वैवस्वत मनुके दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्र जो धार्ष्ट नामक योद्धा जातिका मूल पुरुष था (भाग० ८.१३.२; ९.१.१२; २.१७; ब्रह्मां० २.३८.३०; ३.६०.२; ६३.४; वायु० ६४.२९; ८८.४; विष्णु० ३.१.३३; ४.१.७)। धृष्टकेतु, चित्ररथ, रणधृष्ट नामक इसके तीन पुत्र थे (मत्स्य० ११.४१; १२.२०-१)। (३) कुंतिका पुत्र तथा निर्वृतिका पिता (ब्रह्मां० ३.७०.४०; मत्स्य० ४४.३९; वायु० ९५.३९)। (४) कुक्कुरका एक पुत्र तथा कपोतरोमाका पिता (विष्णु० ४.१४.१३)।

धृष्टकेतु–पु० [सं०] (१) चेदि देशके राजा शिशुपालका पुत्र जो पाण्डवोंकी ओरसे लड़ा था और द्रोणाचार्यके हाथों मारा गया था (महाभा० द्रोण० १२५.२३-४१)। (२) जनकवंशीय राजा सुधृतिका पुत्र तथा हर्यश्वका पिता (भाग० ९.१३.१५; ब्रह्मां० ३.६४.१०; वायु० ८९.१०; विष्णु० ४.५.२७)। (३) हरिवंशके अनुसार सन्नतिराजवंशीय सुकुमारका पुत्र तथा वेणुहोत्रका पिता एक धर्मात्मा राजा (ब्रह्मां० ३.६७.७६; वायु० ९२.७२)। (४) नवें मनु रोहितका पुत्र। (६) सत्यकेतुका पुत्र तथा सुकुमारका पिता (भाग० ९.१७.९)। (७) भर्म्याश्ववंशी धृष्टद्युम्नका एक पुत्र जो अंतिम पांचाल राजा था (भाग० ९·२२.३; वायु० ९९.२११; विष्णु० ४.१९.७३)। (८) कैकयवंशका एक राजा जो युधिष्ठिरका सहयोगी था। श्रुतकीर्त्ति नामक पत्नीसे इसके संतर्दन आदि पाँच पुत्र थे (भाग० ९.२४.३८) महाभारत-युद्धमें यह पाण्डवोंके पक्षसे लड़ा था (भाग० १०.७८ [९५.५]१३; महाभा० उद्योग० १५७.१३; ५०.४४; भीष्म० ४५.३८.४१)। सूर्यग्रहणपर यह स्यमंतपंचक भी गया था (भाग० १०.८२.२५)।

धृष्टद्युम्न–पु० [सं०] राजा द्रुपदका एक पुत्र और धृष्टकेतुका पिता अंतिम पांचाल तथा द्रौपदीका भाई–दे० द्रुपद (भाग० ९.२२.२-३; वायु० ९९.२११; विष्णु० ४.१९.७३)। यह पांडवोंका एक सेनानायक था (महाभा० उद्योग १५७.१३; भीष्म० ४५.३१-३४; ५०-४१-५७)। द्रुपदने द्रोणाचार्यका अपमान किया था, अतः आधा राज्य दे देना पड़ा था। इसका बदला लेनेको पुत्रेष्टि यज्ञ करनेसे द्रुपदके घर धृष्टद्युम्न और कृष्णाका जन्म हुआ। युधिष्ठिरसे अश्वत्थामाकी मृत्यु सुन जब द्रोणाचार्य ध्यानमग्न हो गये थे तभी इसने उनका सिर काट लिया था। द्रोणाचार्यके मरनेके पश्चात् उनके पुत्र अश्वत्थामाने धृष्टद्यम्नका सोते समय सिर काट लिया (भाग० १०.८८[९५(५)१०-३६])।

धृष्टमान–पु० [सं०] अक्रूर और रत्नाके ग्यारह महाबली पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (मत्स्य० ४५.३०)।

धृष्टि–पु० [सं०] (१) कुंतिका पुत्र तथा निर्वृति (निधृति=विष्णु०) का पिता (भाग० ९-२४.३; विष्णु० ४.१२.४१)। (२) हिरण्याक्षके नौ पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (धृष्ट) (भाग० ७.२.१९)। (३) महाराज दशरथका एक मन्त्री (रामायण)। (४) भजमानके छह पुत्रों (दो पत्नियोंसे उत्पन्न)मेंसे एक पुत्र (भाग० ९.२४.७)। इसकी भी दो पत्नियाँ थीं। गांधारी और माद्री (ब्रह्मां० ३.७१.४,१८)। (५) एक यज्ञ-पात्र विशेष।

धृष्णि–पु० [सं०] अथर्वांगिरसकी तीन पत्नियाँ थीं सुरूपा, स्वराट् और पथ्या। यह उनका पथ्यासे उत्पन्न एक पुत्र है (ब्रह्मां० ३.१.१०५)।

धृष्णु–पु० [सं०] (१) वैवस्वत मनुके १० पुत्रोंमेंसे एक पुत्र। (२) एक रुद्रका नाम। (३) सावर्णि मनुके पुत्रका नाम।

धृष्ण्वोजा–पु० [सं०] कार्त्तवीर्यके १०० पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम।

धेनु–स्त्री० [सं०] सूर्यके प्रीत्यर्थ भूरी गाय दान करनेवाला गोलोक प्राप्त करता है (मत्स्य० ९३.६०-८०; १०५.१६; २०५.१-७)।

धेनुक–पु० [सं०] (१) हरिवंशानुसार एक राक्षसका नाम जिसे श्रीकृष्णके भाई बलदेवने मारा था। यह गदहेके रूपमें आया था। इसके पिछले दोनों पैर पकड़कर घुमा-घुमाकर इसे मार दिया था और इसका शव तालवृक्षपर लटका दिया था [भाग० १०.२.१; १५.२२-३८; ४३·२५; ४६.२६; विष्णु० ५.१.२४; ५.८.२)]। (२) एक भारतीय जनपदका नाम (महाभा० भीष्म० ५०.५१)। (३) भंडासुर द्वारा आसुर महास्त्रके प्रयोगसे उत्पादित शिशुपाल आदि कई असुरोंमेंसे एक असुर (ब्रह्मां० ४.२९.१२४) दनु और कश्यपके विप्रचित्ति प्रधान १०० दानव पुत्रोंमेंसे एक दानव पुत्र (वायु० ६८.१५; विष्णु० ५.८.२)।

धेनुका–स्त्री० [सं०] (१) कीर्त्तिमान्की पत्नी (वायु० २८.१७) चरिष्णु (वायु०=वरिष्ठ) तथा धृतिमान्की माता (ब्रह्मां० २.११.२०)। (२) शाक द्वीपकी सात प्रधान नदियोंमेंसे एक नदी जिसका दूसरा नाम मृता था (वायु० ४९.९४; विष्णु० २.४.६५)।

धेनुकारण्यम्–पु० [सं०] यह गयामें है जहाँ पितरोंको पिंड देनेका बड़ा महात्म्य कहा है (वायु० ११२.५६)।

धेनुतीर्थ–पु० [सं०] एक विख्यात तीर्थ; जहां तिलधेनुका दान करनेसे सब पापोंसे छुटकारा हो जाता है तथा सोम लोककी प्राप्ति होती है (महाभा० वन० ८४.८७)।

धेनुमती–स्त्री० [सं०] भरतके वंशमें उत्पन्न देवद्युम्नकी पत्नीका नाम जो परमेष्ठीकी माता थी (भाग० ५.१५.३)।

धेनुव्रत–पु० [सं०] इस व्रतका व्रती मोक्ष प्राप्त करता है (मत्स्य० १०१.४९)।

धौतपापा–स्त्री [सं०] हिमालयसे निकली एक नदी (मत्स्य० ११४.२२)।

धौम्य–पु० [सं०] (१) उत्कोच नामक तीर्थमें रहनेवाले एक ऋषि जो देवलके भाई तथा पांडवोंके पुरोहित थे। चित्ररथके आदेशसे युधिष्ठिरने धौम्यको पुरोहित बनाया था और यह युधिष्ठिरके राजसूयमें थे (भाग० १०.७४.९)। इन्हींके साथ शरशय्यापर पड़े भीष्मसे युधिष्ठिर मिलने गये थे (भाग० १.९.२)। श्रीकृष्णके हस्तिनापुरसे चले जानेपर यह बड़े दुःखी हुए थे (भाग० १.१०.१०; १२.१४)। (२) महाभारतके अनुसार व्याघ्रपद नामक ऋषिके पुत्र एक ऋषि जो बड़े शिवभक्त थे और सत्ययुगमें वर्तमान थे। बाल्यकालमें ही माताके रुष्ट होनेके कारण शिवकी कृपासे तथा तपोबलके आधारपर दिव्यज्ञानी हो गये थे (महाभा० अनु० १४.४५)। (३) एक ऋषि जो ताराके रूपमें पश्चिम दिशामें स्थित हैं। महाभारतमें उपंगु, कवि

और परिव्याध के साथ इनका भी नाम आया है (महाभा० शान्ति० २०८.३०)। (४) एक ऋषि जिन्हें आयोद भी कहते हैं। आरुणि, उपमन्यु और वेद नामके इनके तीन पुत्र (शिष्य) थे। (महाभा० उद्यो० दाक्षिणात्य पाठ ८३.६४ के अनन्तर)। (५) मध्यमाध्वर्यु कश्यप (ब्रह्मां० २.३३.१५)।

धौरादित्य–पु० [सं०] एक तीर्थका नाम (शिवपुराण)।

धौलागिरि–पु० [सं०] एक पवित्र पर्वत (धवलगिरि)।

ध्यान–पु० [सं०] योगधर्मका एक रूप जिससे अधार्मिकता नष्ट होती है (वायु० १०.७६, ९३; १०४.२५)। श्रीकृष्णने उद्धवको इसकी व्याख्या करते हुए इसका रहस्य बतलाया था (भाग० ११.१४.३२-४६)।

ध्यानकाष्ठ–पु० [सं०] भृगुवंशोत्पन्न एक मुनि जिन्होंने स्वेच्छासे रीछका रूप धारण किया था और इसी रूपमें वनमें रहते भी थे। एक बार जंगलमें वृक्षके ऊपरसे नंदपुत्र राजा धर्मगुप्तने सोते समय इन्हें एक सिंहके कहनेसे नीचे ढकेल दिया था (सिंह भी महायक्ष था जो शापवश इस रूपमें था)। रीछरूपधारी ध्यानकाष्ठकी कृपासे सिंहरूपधारी महायक्ष शापमुक्त हो गया तथा राजा धर्मगुप्त पागल हो गये थे पर जैमिनि मुनिकी कृपासे शापमुक्त हुए (स्कंद० वैष्णव०–भूमिवाराह-खंड)।

ध्युपिताश्व–पु० [सं०] शंखनका एक पुत्र तथा विश्वसहका पिता (वायु० ८८.२०६)।

ध्रुव–पु०[सं०] (१) प्लक्षद्वीपके वैभ्राज पर्वतसे लगा हुआ एक राज्य जिसका अधिपति प्लक्षद्वीपाधिपति मेधातिथिका पुत्र ध्रुव था उसके नाम पर ही इसका नाम ध्रुव पड़ा (ब्रह्मां० २.१४.३९; १९.१६; वायु० ४९.१४)। (२) २० की संख्यावाले सुखदेवगणमेंका एक सुखदेव (ब्रह्मां० ४.१.१९; वायु०१००-१९; मत्स्य० १२२.२५)। (३) विष्णु। (४) पुराणानुसार स्वायंभुव मनुके पुत्र राजा उत्तानपादके पुत्र जिनकी माताका नाम सुनीति था (भाग० तथा विष्णु०) पर मत्स्य०, ब्रह्मां० तथा वायु० में इनकी माताका नाम सूनृता लिखा है। राजा उत्तानपादकी दूसरी पत्नी सुरुचिसे उत्तम नामक पुत्र उत्पन्न हुआ था। एक दिन राजा उत्तमको गोदमें लिये बैठे थे तभी ध्रुवने भी आकर पिताकी गोदमें बैठना चाहा, किन्तु राजाने बैठाया नहीं। विमाताने भी ताना मारते हुए कहा—तुम तपस्या कर मेरी कोखसे जन्म लो, तब राजाकी गोदमें बैठ सकते हो। इससे अपमानित हो ध्रुव नारदसे आशीर्वाद प्राप्त कर तथा दीक्षित हो पाँच वर्षकी अवस्थामें ही यमुना तटपर मधुवनमें तप करने लगे (भाग० ४. अध्या० ८ पूरा; ब्रह्मां० २.३६.८८-९५; मत्स्य० ४.३५,३६; १४३.३८; वायु० ६२.७५-७८)। राजा भी सुरुचिको अधिक चाहते थे, अतः उस समय मौन रह गये। विष्णुने इनकी तपस्यासे प्रसन्न होकर इन्हें सब लोकों और ग्रहों, नक्षत्रोंके ऊपर उनके आधार स्वरूप होकर अचल भावसे स्थित रहनेका वर दिया। इनका स्थान ध्रुवलोक कहलाता है। इसके उपरांत ध्रुवने घर आकर पितासे राज्य प्राप्त किया जो वृद्ध होनेके कारण राज्य दे वन चले गये (भाग० ४. अध्या. ४ पूरा)। शिशुमारकी कन्या भ्रमीसे इनका विवाह हुआ। इलानामकी इनकी एक और पत्नी थी जिससे उत्कल नामक पुत्र तथा भ्रमीसे कल्प और वत्सर उत्पन्न हुए थे। ब्रह्मां० के अनु० 'भूमी' इनकी एक रानी थी जिससे सृष्टि और भव्य हुए, पर मत्स्य० के अनु० मनस्‌की पुत्री धन्या इनकी एक पत्नी थी जिससे शिष्ट नामक पुत्र हुआ था। एक बार अपने सौतेले भाई उत्तमके यक्षों द्वारा मारे जानेपर ध्रुवको यक्षोंसे युद्ध करना पड़ा था जिसे पितामह मनुने शांत- किया। अंतमें ३६००० वर्ष राज्य करके ध्रुव बदरिकाश्रम चले गये और कुछ दिनों तपकर विष्णुके दिये लोक (ध्रुवलोक) चले गये (भाग० ५.१७.२; २०.३७; २१.१४; २३.१; ब्रह्मां० १.१-८५; २.२१.९४, १०५; २२.६-१०, ५८-९; २३.९२; २४.१२२; २९.१८; ३.६१.४९; ४.२.१३५; मत्स्य० १२४.७५-८३; १२५.५-७; वायु० १.१०१; ५१.६-१०; १०१.४१, १३५; विष्णु० १.११.१२; २.७.१०-१२; ८.३९; १२.२४.३४)। (५) अष्ट वसुओंमेंसे एक वसु (मत्स्य० ५.२१-३; २०३.३-४)। इसकी पत्नी धरणीसे अनेक नगर उत्पन्न हुए (भाग० ६.६.११-१२; ब्रह्मां० ३.३.२०-२) यह भव काल तथा लोकप्रकालनके पिता थे (वायु० ६६.१९; विष्णु० १.१५.११०-१११)। (६) ऋतेयु-सुतके तीन पुत्रोंमेंसे रंतिभारके सात पुत्रोंमेंसे एक पुत्रके तीन पुत्रोंमेंसे इनकी बहिनका नाम गौरी था जो मान्धाताकी माँ थी (भाग० ९.२०.६; वायु० ९९.१२९)। (७) वसुदेव और रोहिणीके कई पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (भाग० ९.२४-४६)। (८) मेधातिथिका एक पुत्र जिसने प्लक्ष द्वीपमें 'ध्रुवम्' नामक राज्य स्थापित किया था तथा अन्तमें तप द्वारा स्वर्ग प्राप्त किया था (ब्रह्मां० २.१४.३७-९; ३०.३९; वायु० ३३-३३. विष्णु० २.४.४-५)। (९) एक वैकुण्ठ देवता (ब्रह्मां० २.३६.५७)। (१०) लेखवर्गके देवता (ब्रह्मां० २.३६.७५)। (११) अंगदका एक पुत्र (ब्रह्मां० ३.७.२२०)। (१२) ग्यारह रुद्रोंमेंसे एक (मत्स्य० १५३.१९)। (१३) धर्म और सुदेवीके आठ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (मत्स्य० १७१.४६)। (१४) उत्तान पाद आदि अनेक राजर्षियोंमें परिगणित एक राजर्षि (उत्तानपाद पुत्र पूर्वोक्त भक्तप्रवर ध्रुव) (वायु० ५७.१२२)। (१५) उत्तर मंद्रिका अधिपति संगीतमें ३ ध्वनियाँ होती है कल, मन्द्र और तार। मधुर तथा अस्फुट ध्वनिका नाम कल है। गंभीर ध्वनिका नाम मन्द्र है। अति ऊँची ध्वनिको तार कहते हैं। मन्द्र ध्वनिका अधिष्ठता देव ध्रुव [वायु० ८६.५६ (संगीत)]। (१६) विश्वामित्रके नौ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (ब्रह्मां० ३.६६.६८; वायु० ९१.९६)। (१७) अंतिनर-(भाग० वायु०=रंतिनार) का एक पुत्र (विष्णु० ४.१९.४)।

ध्रुवक्षिति–पु० [सं०] लेखवर्गके एक देवता (ब्रह्मां० २.३६.७५)।

ध्रुवगति–पु० [सं०] वह अचल स्थान जिसे ध्रुवने तपसे प्राप्त किया था और जो सप्तर्षियोंके भी ऊपर है (भाग० २.७.८)।

ध्रुवदर्शन–पु० [सं०] विवाहके संबंधका एक कृत्य विशेष जिसमें वर-वधूको मंत्र पढ़कर ध्रुवतारा दिखानेका विधान है (विवाहपंचरत्नपद्धति)।

ध्रुवनंद–पु० [सं०] नंदके एक भाईका नाम (भाग० हि० वि० को०)।

ध्रुवरत्ना–स्त्री० [सं०] कार्त्तिकेयकी अनुचरी एकमातृकाका नाम (महाभा० ब्रह्मांड० पु०) ।

ध्रुवलोक–पु० [सं०] पुराणानुसार एक लोक जिसमें ध्रुव स्थित कहे जाते हैं जिसे ध्रुवने घोर तपस्या कर विष्णुके प्रसादसे प्राप्त किया था । यह लोक सत्यलोकके अंतर्गत है (स्कंद० काशी० पूर्वार्ध) ।

ध्रुवसंधि–पु० [सं०] एक राजाका नाम जो सूर्यवंशीय राजा (पुष्य) सुसंधिका पुत्र था । सुदर्शन नामका इनका एक बड़ा प्रतापी पुत्र था (भाग० ९.१२.५; ब्रह्मां ३.६३.२०९; वायु० ८८.२०९; विष्णु० ४.४.१०८) ।

ध्वज–पु० [सं०] बारह देवासुर संग्रामोंमें नवाँ संग्राम जिसमें महेन्द्र विष्णुने मायासे अदृश्य ध्वजका वध किया था (ब्रह्मां० २.७२.७५; वायु० ९७.७५, ८५) ।

ध्वजग्रीव–पु० [सं०] एक राक्षस विशेषका नाम (वा० रामाय० ६.२५) ।

ध्वजिनीवान्–पु० [सं०] क्रोष्टुका पुत्र तथा स्वातिका पिता (विष्णु० ४.१२.१-२) ।

ध्वनि–पु० [सं०] एक सुधाम देवता (ब्रह्मां० २.३६.२७) ।

ध्वनी–स्त्री० [सं०] (मोर-संरक० धरा) शंखोद्धारमें स्थापित सती देवीकी एक मूर्त्ति (मत्स्य० १३.४८) ।

ध्वन्य–पु० [सं०] एक प्राचीन राजाका नाम जिन्हें लक्ष्मणका पुत्रका कहा गया है । इनके नामका उल्लेख ऋग्वेदमें भी मिलता है । प्रजापतिके पुत्र संवरण ऋपिने प्रचारदान देनेकेकारण इनकी श्लाघा की है (ऋ० ५.३३.१०) ।

ध्वांत–पु० [सं०] (१) एक नरकका नाम जिसे तामिस्र भी कहते हैं । (२) ४९ मरुतोंमेंसे एक मरुत्का नाम, यह तीसरा मरुद्गणका है (वायु० ६७.१२६) ।

न

नंद–पु० [सं०] (१) धृतराष्ट्रके १०० पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (महाभा० आदि० ६७.९६) । (२) कार्त्तिकेयके एक अनुचरका नाम (महाभा० शल्य० ४५.६४) । (३) क्रौंचद्वीपके सात पर्वतोंमेंसे एक पर्वतका नाम (भाग० ५.२०.२१) । (४) वसुदेव और मदिराके दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (भाग० ९.२४.४८; ब्रह्मां० ३.७१.१७१; वायु० ९६.१६९; विष्णु० ४.१५.२३) । (५) भागवतानुसार यज्ञेश्वरके (परमात्माके) एक पार्षदका नाम । पृथुके यज्ञमें विष्णुके साथ यह भी गया था (भाग० ४.१९.५; ६.४.३९; २.९.१४; १०.३९.५३; ८९.५७; ८.२२.१५) । बलिके असुर अनुगामियोंपर इसने भी आक्रमण किया था (भाग० ८.२१.१६) । (६) गोकुलके गोपोंके मुखिया जिनके घर वसुदेव श्रीकृष्णको रख आये थे । श्रीकृष्णकी बाल्यावस्था इन्हींके घर व्यतीत हुई थी जहाँ नंद-पत्नी यशोदाने इनका लालन-पालन किया था (भाग० १.८.२१; १०.१.६२; २.९; विष्णु० ४.१५.३१) । पूर्व जन्ममें यह द्रोण नामके वसु थे और इनकी पत्नी यशोदा द्रोणपत्नी धरा थी (भाग० १०.८.४८-५०; ब्रह्मां० ३.७१.२३९) । भागवतानुसार रातके समय यमुनाजीमें स्नान करनेके कारण वरुणके गण इन्हें पकड़कर ले गये थे पर श्रीकृष्ण वहाँसे छुड़ाकर इन्हें ले आये थे (भाग० १०. अध्या० २४, २५, २६, २७ तथा २८ पूरा) । अंबिकावनमें इन्हें अजगरने पकड़ लिया था जहाँसे भी श्रीकृष्ण ही इन्हें छुड़ा लाये थे [भाग० १०.३४.४-१८; ३६.२४. (३१)] । इनकी तपस्यासे प्रसन्न हो सतीने इनके यहाँ महामायाके रूपमें जन्म लिया था । वसुदेव श्रीकृष्णको इनके (नंदके) यहाँ रखकर इसी कन्याको ले गये थे और कंसके पटकनेपर यह हाथसे छूट आकाशमें चली गयी थी । यही कन्या विन्ध्याचलदेवीके नामसे आज भी प्रसिद्ध है । वृष्णिके साथ यह बाणकी नगरी भी गये थे (भाग० १०.६३.३) । (७) नंदवंशका एक राजा (भाग० १२.१.९) जिसके समय सप्तर्षि मघासे पूर्वाषाढ़ा नक्षत्रमें चले गये थे (भाग० १२.२.२६-७, ३२) । (८) प्लक्षद्वीपके अधिपति राजा मेधातिथिके सात पुत्रोंमेंसे चौथा पुत्र जो प्लक्षद्वीपवर्ती नंदराज्यका संस्थापक था (ब्रह्मां० २.१४.३६-९) । (९) वानरराज वालीके सामन्त करोड़ हाथियोंका बल रखनेवाले हजारों प्रधान बन्दरोंमेंसे एक प्रधान वानरका नाम (ब्रह्मां० ३.७.२३४) । (१०) शूर और भोजाके दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (मत्स्य० ४६.३) । (११) स्वायंभुव मन्वन्तरमें अजिताके गर्भसे उत्पन्न रुचिके १२ अजितदेव पुत्रोंमेंसे एक अजितदेव नामका (वायु० ६७.३४) । (१२) एक उरगपतिका नाम जिसका निवासभूत नगर वितलमें है (वायु० ५०.२८) ।

नंदक–पु० [सं०] (१) एक कश्यपवंशी प्रधान नाग जिसका निवास तृतीयतल (वितल)में था (ब्रह्मां० २.२०.३०) । (२) श्रीकृष्णके खड्गका नाम जिसे विष्णुने इन्हें जरासंधके मथुरा आक्रमणके समय दिया था (भाग० १०.५०.११ (१४)) । (३) धृतराष्ट्रके १०० पुत्रोंमेंसेसे एक पुत्र, जो द्रौपदीके स्वयंबरमें गया था (महाभा० आदि० १८५.३) । (४) श्वेत लोहित नामके २९वें कल्पमें ध्यानरत ब्रह्माके पार्श्व (बगल) से उत्पन्न श्वेतमाला तथा श्वेतचन्दनधारी ब्रह्माके चार शिष्योंमेंसे एक शिष्यका नाम (वायु० २२.१६) । (५) स्कंदका एक अनुचर (हिं० श० सा०) । (६) वृकदेवी और वसुदेवके एक पुत्रका नाम (मत्स्य० ४६.१८) ।

नंदगाँव–पु० [सं० नंदग्राम] मथुरासे चौदह कोसपर स्थित बृंदावनका एक गाँव जहाँ नंद रहते थे (भागवत) ।

नंदगोकुल–पु० [सं०] नंद तथा अन्य गोपोंका निवास यहीं था (भाग० १०.२.७; ३.४५(१)) ।

नंदगोप–पु० [सं०] नंद (भाग० १०.५.१७; ब्रह्मां० ३.७१.२१२; वायु० ९६.२०६) ।

नंदत्रयोदशी–स्त्री० [सं०] फाल्गुन शु० १३ श्रीकृष्णका व्रत तथा पूजन करे (विष्णुधर्मोत्तर) ।

नंदनंदिनी–स्त्री० [सं०] नंदकी पुत्री योगमाया जिन्हें वसुदेव श्रीकृष्णको नंदके यहाँ रखकर बदलेमें ले गये थे । पटके जानेपर हाथसे छूट यह आकाश चली गयी थी—दे० नंद ।

नंदन–पु० [सं०] (१) देवराज इन्द्रके उपवनका नाम जो

पुराणानुसार स्वर्गमें है और सब स्थानोंसे सुन्दर माना जाता है। भोगदंड पूरा हो जानेपर मनुष्योंको यहाँ भेज दिया जाता है। यह पारिजात वृक्षके लिए प्रसिद्ध है (भाग० ३.२३.४०; मत्स्य० ३८.१८; वायु० ३६.११; ४६. ४; ४७.३; ६९.१३६; ९१.६ ९३.६९)। (२) कामाख्या देशका एक पर्वत जहाँ पुराणानुसार कामाख्यादेवीकी सेवाके लिए इंद्र सदा रहते हैं। यहाँ लोग इंद्रकी पूजा करते हैं—दे० कामाख्या। (३) अश्विनी कुमारों द्वारा कार्त्तिकेयको दिये गये दो पार्षदोंमेंसे एक पार्षद (अनुचर)का नाम। दूसरेका नाम वर्धन था (महाभा० शल्य० ४५.३८)। (४) साठ संवत्सरोंमेंसे एकका नाम जो छब्बीसवाँ है। इसमें अन्न और दूध खूब होता है और मनुष्य नीरोग रहते हैं। (५) एक यक्ष जो पुण्यजनी और मणिभद्रके २४ पुत्रोंमेंसे अन्यतम पुत्र है (ब्रह्मां० ३.७.१२२; वायु० ६९.१५४)। (६) ज्यायधवंशी राजा मधुका एक पुत्र (ब्रह्मां० ३.७०. ४६; वायु० ९५.४६)। (७) शूर और भोजाके एक पुत्र तथा रंत और रंतिपाल (तंतिपाल=वायु० कृपाणधारी (रावण)का पिता (ब्रह्मां० ३.७१.१४९, १९२; मत्स्य० ४६. २७)। (८) चंद्रहास वसुदेव आदि दस पुत्रोंमेंसे छोटा भाई, जिसे ललितादेवीसे हार रहे भंडासुरने अपने हुंकारसे राक्षसोंकी सहस्र अक्षोहिणी सेनाके साथ उत्पन्न किया था (ब्रह्मां० ४.२९.११३)। (९) एक मंदिर जिसके कई गुंबज तथा ३० हाथका तोरण रहता है। (१०) ध्यानमग्न ब्रह्माके बगलसे उत्पन्न श्वेतमाल्यानुलेपनधारी ४ शिष्योंमेंसे एक शिष्य (वायु० २२.१६)। (११) कुबेरकी आठ निधियोंमेंसे एक (वायु० ४१.१०)। (१२) वसुदेवके नौ भाइयोंमेंसे एक भाई शूर और भोजाके १० पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (वायु० ९६.१०८)। (१३) कैविल कुलका अक्षत्रिय राजा वंगका पुत्र तथा सुनंदीका पिता (विष्णु० ४.२४. ५६)।

नंदना—स्त्री० [सं०] पारियात्र (ऋष्यवान्) पर्वतसे निकली एक नदीका नाम (मत्स्य० ११४.२५; ब्रह्मां० २.१६.२८)।

नंदन—पु० [सं०] सत्यभामाके लिए पारिजात कृष्णजी यहींसे लाये थे (भाग० १०. [६५(५) १२-१३]; [६७(५) ३४]; —दे०नंदन (१)।

नंदनमाला—स्त्री० [सं०] पुराणानुसार एक प्रकारकी माला जो भगवान् श्रीकृष्णको अधिक प्रिय थी (भाग०)।

नंदनवन—पु० [सं०] इंद्रका बगीचा—दे० नंदन (१)।

नंदनोदरदुंदुभि—पु० [सं०] तैत्तिरि-सुत नलका एक नाम (मत्स्य० ४४.६३)।

नंदप्रयाग—पु० [सं०] बदरिकाश्रमके निकटका एक तीर्थ विशेष जो सात प्रयागोंमेंसे एक है (स्कंद० वैष्णव० बदरिकामाहात्म्य)। नंदप्रयागमें ही कण्व ऋषिका आश्रम है जहाँ महाराज दुष्यंतकी भेंट शकुंतलासे हुई थी। कण्वाश्रमसे लेकर सरस्वती नदीतकका सारा क्षेत्र स्थूलबद्री, सूक्ष्मबद्री, तथ्यसूक्ष्मबद्री और शुद्धबद्रीका क्षेत्र कहा जाता है (स्कंद० वैष्णव० बदरिकामाहात्म्य)।

नंदभद्र—पु० [सं०] महीसागरसंगम तीर्थका निवासी एक वणिक् जो बड़ा धर्मज्ञ था। यह कपिलेश्वरनाथकी पूजा नित्य करता था। इसीका पड़ोसी सत्यव्रत शूद्र था जिसकी नास्तिकता इसने दूर की थी (स्कंद० मा० कुमा० खंड)।

नंदलाल—पु० [हि०] श्रीकृष्णका एक नाम—दे० कृष्ण।

नंदवंश—पु० [सं०] इस वंशके राजा मगधाधिपति थे। विष्णु० भाग० ब्रह्मां० तथा कथा सरितसागरमें इस वंशका यथेष्ट उल्लेख मिलता है। उपर्युक्त ग्रंथोंके अनुसार कौटिल्यके हाथसे इस वंशका नाश होना लिखा है। बौद्ध और जैन ग्रंथोंमें भी इसका उल्लेख है। मौर्यवंशकी स्थापना इसीके पश्चात् हुई थी जिसके कौटिल्य मन्त्री थे।

नंदव्रज—पु०[सं०] नंदगोकुलका नाम (ब्रह्मां० ३.३६.१३)।

नंदा—स्त्री [सं०] (१) ब्रह्म वेदीके पूर्व-उत्तर दिशामें अनिवर्तन तीर्थ है। सिद्धसेवित इस तीर्थको प्राप्तकर मनुष्य फिर संसार-सागरमें नहीं लौटता है। यह प्राणियोंपर अनुकम्पा करनेवाले महादेवके चरण पड़नेसे अति पवित्र है (ब्रह्मां० ३.१३.८२-३)। (२) एक मातृका जिसके कारण बालक अपने जीवनके पहिले दिन, पहिले महीने और पहिले वर्षमें ज्वरसे पीडित हो बहुत रोता है। (३) विभीषणकी पुत्रीका नाम (रामायण)। (४) पुराणानुसार शाल्मलिद्वीपकी एक नदीका नाम जो कुबेरकी पुरीके निकटसे बहती है। यह विष्णुके चरण कमलरजसे परमपूत (भाग० ४.६.२४-२७; ५.२०.१०; ७.१४.३२; ८.४.२३) तथा पितरोंके श्राद्धादिके लिए अति प्रशस्त है (मत्स्य० २२.१०)। (५) पुराणानुसार शाकद्वीपकी एक नदीका नाम जिसका दूसरा नाम पावनी है (मत्स्य० १२२.३१; वायु० ४९.९२)। (६) कैलाश पर्वतपरकी एक नदी (वायु० ४१. १८)। (७) एक अप्सराका नाम। (८) ४९ शक्ति देवियोंमेंसे एक शक्तिदेवीका नाम (ब्रह्मां० ४.४४.७२)। (९) सती देवीकी एक मूर्ति, जो हिमालयके पृष्ठपर स्थापित है (मत्स्य० १३.३०)।

नंदातीर्थ—पु० [सं०] महाभारतके अनुसार हेमकूट पर्वतपर स्थित एक नदी जिसे तीर्थ माना गया है; जहाँ सदा अंधड़ चलता और वर्षा होती रहती है। सदा वेद ध्वनि सुनायी पड़ती हैं पर वेद पढ़नेवाला कोई दिखायी नहीं पड़ता। प्रातःकाल और संध्या यहाँ अग्निदेवके दर्शन होते हैं। मक्खियोंके डरसे यहाँ कोई तपस्या नहीं कर पाता। युधिष्ठिर एक बार अपने भाइयों सहित यहाँ गये थे (महाभा० वन० ११०.१-२१)।

नंदानवमी—स्त्री [सं०] भाद्रपद शुक्ला नवमीको दुर्गाका यथाविधि पूजन करे तो विष्णुलोक प्राप्त होता है। स्नान और प्राशनमें कुशोदक उपयोगमें ले (मदनरत्न तथा भविष्योत्तर)।

नंदापुराण—पु० [सं०] एक उपपुराण जिसमें नंदा-माहात्म्य है। इसके वक्ता कार्त्तिकेय हैं और मत्स्य० तथा शिवपुराणानुसार यह तीसरा उपपुराण है।

नंदायनीय—पु० [सं०] रथीतरके तीन शिष्योंमेंसे एक शिष्यका नाम (वायु० ६१.३)।

नंदाश्रम—पु० [सं०] एक तीर्थ विशेषका नाम, जहाँ काशिराजकी पुत्री अम्बाने कठोर व्रत ग्रहणकर तपस्या की थी। (महाभा० उद्यो० १८६.२६)।

नंदासप्तमी—स्त्री [सं०] मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमीको सूर्यका पूजन करे तथा व्रत कर दध्योदन भोग लगावे (भविष्य०)।

नंदि—पु० [सं०] (१) धृतिका पति जो इसे छोड़कर वैभवा-

तिशय युक्त सोमके पास चली गयी थी (मत्स्य० २३.२६)। (२) महादेवका एक अनुचर गण (मत्स्य० १९२.६)। (३) शंकरके वाहन वैलका नाम (वायु० ५४.७६, १०८; १०१.२६५); कहते हैं इसने वाणके रथमें घोड़ोंको जोता था (विष्णु० ५.३३.२८) नंदिकेश्वर। (४) स्वर्गका एक पुत्र (भाग० ६.६. ६)। (५) नंदिवर्धनका पुत्र जो प्रद्योतवंशका अंतिम राजा था (विष्णु० ४.२४.७-८)।

नंदिकुंडम्–पु० [सं०] एक प्राचीन तीर्थका नाम, जहाँ स्नान करनेसे भ्रूणहत्या सदृश पाप भी छूट जाते हैं (महाभा० अनु० २५.६०)।

नंदिकेश–पु० [सं०] नर्मदा तटवर्ती शिवलिंग, जिनका चिपटकर आलिंगन करनेसे जन्म सफल हो जाता है (मत्स्य० १९१.६३७)।

नंदिकेश्वर–पु० [सं०] एक उपपुराण जिसके वक्ता नंदी हैं। यह चौथा उपपुराण है जिसे नंदिकेश्वर, नंद्रीश्वर तथा नंदीपुराण भी कहते हैं।

नंदिग्राम–पु० [सं०] अयोध्यासे चार कोसपर एक गाँव जहाँ भरतने श्रीरामके वियोगमें चौदह वर्षोंतक तपस्या की थी (भाग० ९.१०.३६)।

नंदिघोष–पु० [सं०] अर्जुनके रथका नाम जिसे अग्निदेवने प्रसन्न होकर अर्जुनको उपहार स्वरूप दिया था (महाभा०)।

नंदितीर्थ– पु० [सं०] नर्मदा तटपरका एक तीर्थ, जहाँ स्नान करनेसे नन्दीश्वर प्रसन्न होते हैं और स्नान कर्ताको सोमलोक प्राप्त होता है (मत्स्य० १९१.३७)।

नंदिनी–स्त्री० [सं०] (१) षोडश शक्तिदेवियोंमेंसे एक शक्तिदेवीका नाम (ब्रह्मां० ४.४४.८४)। (२) सतीदेवीकी एक मूर्ति जो देविकातटमें स्थापित है (मत्स्य० १३.३८)। (३) अन्धकासुर रक्त पानार्थ शिवजी द्वारा सृष्ट कई मानस मातृकाओंमेंसे एक मानस मातृकाका नाम (१७९.१४,२५)। (२) वशिष्ठ ऋषिकी कामधेनुका नाम जिसकी माता सुरभि थी। राजा दिलीपने इसीकी सिंहसे रक्षा की थी तथा इसीकी आराधनासे उन्हें रघुनामक पुत्र हुआ था। द्योनामक वसुको इसे चुरानेके लिए वशिष्ठके शापसे भीष्मका जन्म ग्रहण करना पड़ा था (महाभा० आदि० ९९.२८, ३२)। एक बार विश्वामित्र भी नंदिनीको वलपूर्वक हरण कर लिये जा रहे थे, पर इसके शरीरसे अनेक सैनिक निकले जिन्होंने विश्वामित्र को परास्त कर दिया और नंदिनी वशिष्ठके पास रह गयी (महाभा० आदि० १७४.१६-१७, २२, ३२-४३)। (३) व्याड़ि मुनिकी माताका नाम। (४) कार्त्तिकेयकी मातृकाका नाम। (५) केतुमाल देशकी एक नदी (वायु० ४४.२०)। (६) मार्गशीर्ष शुक्ला ९ नदिनी है। इस दिनसे त्रिरात्रितक देवीका विधिवत् पूजन तथा उपवास करनेसे अश्वमेध यज्ञका फल प्राप्त होता है (मदनरत्न)।

नंदिपुराण–पु० [सं०] एक उपपुराण जिसमेंनंदीके माहात्म्यकी व्याख्या कार्त्तिकेयने की है (मत्स्य० ५३.६१)।

नंदिमुख–पु० [सं०] शंकरका एक नाम (हि० वि० को०)।

नंदियशा– पु० [सं०] (१) नागवंशी राजा भूतनंदी (मधुनंदी=वायु०) का छोटा भाई एक राजा (ब्रह्मां० ३.७४.१८२)। (२) कैकिलवंशी नंदनका एक पुत्र तथा सुनंदनका भाई (विष्णु० ४.२४.५६)।

नंदिरुद्र–पु० [सं०] शिवजीका एक नाम (हि० वि० को०)।

नंदिवर्धन–पु० [सं०] (१) निमिकुलके राजा उदावसुका पुत्र तथा सुकेतुका पिता (भाग० ९.१३.१४; ब्रह्मां० ३.६४.७; वायु० ८९.७; विष्णु० ४.५.२५)। (२) राजक (विशाखयूप-पुत्र) का पुत्र जो ५ प्रद्योत राजाओंमें अंतिम राजा था (भाग० १२.१.४)। (३) अजय (अजक=ब्रह्मां०) का पुत्र तथा महानंदीका पिता (भाग० १२.१.७; ब्रह्मां० ३.७४.१२६, १३३)। (४) मणिवरके देवजनीसे उत्पन्न कई पुत्रोंमेंसे एक पुत्र जो एक यक्ष तथा गुह्यक था (वायु० ६९. १५८)। (५) जनकका एक पुत्र तथा प्रद्योतवंशके नंदीका पिता (विष्णु० ४.२४.६-७)। (६) उदयनका एक पुत्र तथा महानंदीका पिता (विष्णु० ४.२४.१७-८)।

नंदिषेण–पु० [सं०] कुमारके चार अनुचरोंमेंसे एक अनुचर। ये ब्रह्माजीके द्वारा कार्तिकेयको दिये गये थे; इनमें शेष तीनके नाम हैं–लोहिताक्ष, घण्टाकर्ण तथा कुमुद माली (महाभा० शल्य० ४५.२४)।

नंदी–पु० [सं० नंदिन्] (१) शिवके गणोंका एक प्रकार जो तीन प्रकारके हैं—कनकनंदी, गिरिनंदी और शिवनंदी—द्रे० शिवपु० तथा नंदिपु०। (२) शिवका द्वारपाल=वैल जो पूर्व-जन्ममें शांतकायन मुनिका पुत्र था (वायु० ७७.६३; भाग० १०.६३.६)।

नंदीश–पु० [सं०] स्थापत्यकला तथा गृहनिर्माण शास्त्रके १८ विशेषज्ञोंमेंसे एक (मत्स्य० २५२.३)।

नंदीश्वर–पु० [सं०] (१) शिवका एक गण तथा दिव्य पार्षद (वायु० ७७.६३; महाभा० सभा० १०.३४) तथा रुद्रका वाहन (भाग० १०.६३.६)। पुराणानुसार यह तोटकका अवतार माना जाता है। इन्होंने शिवका अपमान करनेके कारण दक्षको शाप दिया था (भाग० ४.२.२०-२६)। शिवके दर्शनके पूर्व इनसे आज्ञा ले लेना आवश्यक है। स्वर्गमार्गप्रदतीर्थमें इनका मंदिर है (ब्रह्मां० ३.३२.२३; १३.६३-४; ४.३०.७५; ३४.८९)। इनका कद वौना, रंग काला और सिर मुँड़ा हुआ, मुँह वन्दरका सा माना गया है। यह माहेश्वरधर्ममें प्रवीण हैं। सनत्कुमारको शिवके 'स्थाणुत्व' के संवंधमें वनारसमें इन्होंने कहा था (मत्स्य० १८१. २; १८३.६४; २४५.८०; २६६.४२; २७८.९)। शिवकी पताकापर इनका स्थान है (मत्स्य० ६०.४९; ९५.३; ११२.२१; १३२.१८; १३३.६०-५)। (२) वृंदावनका एक तीर्थ विशेष (भाग०)।

नकवान्–पु० [सं०] हृदीकके दस महापराक्रमी पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (वायु० ९६.१४०)।

नकुल–पु० [सं०] महागज पांडुके चौथे पुत्रका नाम जो दुर्वासाके वताये मंत्रके प्रभावसे अश्विनीकुमारके योगसे माद्रीके गर्भसे उत्पन्न हुए थे। युधिष्ठिरके राजसूय यज्ञके निमित्त दिग्विजयके लिए यह पश्चिम दिशाके राज्योंमें गये थे (भाग० १०.७१.२७; ७२.१३; ७५.४)। इनके द्वारा पश्चिम देशोंको जीतकर लाये गये खजानेका वोझ दस हजार ऊँट वड़ी कठिनाईसे ढो सके थे (महाभा० सभा० अध्या० ३२)। भीष्मने इन्हें यमराजके फन्देमें न पड़नेका उपाय समझाया था (विष्णु० ३.७.८-१३)। महाभारतके

अनुसार अश्विनीकुमारोंकी कृपासे माद्रीके दो पुत्र हुए थे। नकुल बड़े थे और छोटेका नाम सहदेव था। नकुल बहुत ही सुन्दर थे और नीति, धर्मशास्त्र, पशु-चिकित्सा तथा युद्ध विद्यामें बड़े निपुण थे। अज्ञातवासकालमें इनका नाम 'ग्रन्थिक' था और यह विराट्के यहाँ गौ चरानेका काम करते थे (महाभा०, विराट्०)। चेदिराजकी पुत्री करेणुमतीसे इनका विवाह हुआ था जिससे निरमित्र नामक इनका एक पुत्र उत्पन्न हुआ था (भाग० ९.२२.२८-९; ३२; ब्रह्मां० ३.७१.१५५; मत्स्य० ४६.१०; ५०.५०; वायु० ९६.१५४; ९९.२४५; विष्णु० ४.१४.३८; २०.४०)। द्रौपदीके गर्भसे इनका शतानीक नामका पुत्र उत्पन्न हुआ था (महाभा० आदि० ९५.७५; २२०.७९)।

नकुलारण्य–पु० [सं०] कावेरी नदीके तटपर स्थित एक प्राचीन तीर्थका नाम जिसे मुक्तिक्षेत्र भी कहते हैं—दे० मुक्तिक्षेत्र।

नकुली–स्त्री० [सं०] नकुलेश्वरी। ललिताकी एक मानसी पुत्रीका नाम। भंडासुरके करंक आदि पाँच सेनापतियों द्वारा उत्पादित सर्पणी नामक मायाको परास्त करनेके लिए जब यह गरुड़पर चढ़कर जा रही थी, भंडके ५ सेनापतियोंने इसपर आक्रमण किया था। नकुलीने करंकका सिर काट लिया और सेना डरसे शून्यक नगरमं भाग गयी (ब्रह्मां० ४.२३.५२-९३; २८.३९)। (२) पु०–२८ वें द्वापरमें हुए ये विष्णुके अवतार माने गये हैं (वायु० २३.२२१)।

नकुलीश-पाशुपत दर्शन–पु० [सं०] एक दर्शन विशेष जिसका कोई ग्रंथ उपलब्ध नहीं है। इसके अनुसार शंकर ही परमेश्वर हैं और सब जीव उनके पशु कहे गये हैं। इसीके आधारपर शिवको 'पशुपति' कहते हैं। 'आत्यंतिक दुःख-निवृत्ति' और 'परमैश्वर्य-प्राप्ति', मुक्तिके ये दो भेद इस दर्शनने माने हैं (भारतीय दर्शनका इतिहास, देवराज तथा रामानंदकृत)।

नकुलेशतीर्थ–पु० [सं०] पितरोंके श्राद्ध, तर्पण आदिके लिए अतिप्रशस्त एक तीर्थका नाम (मत्स्य० २२.७७)।

नक्त–पु० [सं०] (१) एक प्रकारका व्रत जो अगहन शुक्ल और कृष्ण दोनों पक्षोंकी प्रतिपदासे प्रारम्भ होकर प्रत्येक शुक्ल या कृष्ण प्रतिपदाको वर्ष भर करनेसे पूर्ण होता है। धन्यव्रतमें नक्त व्रत किया जाता है (वाराह पु०) इसमें रात्रिमें तारा देखकर भोजन किया जाता है। यह व्रत प्रायः यति और विधवाएँ करती हैं जिसमें रातको विष्णुकी पूजाका भी विधान है। वर्षके अंतमें व्रतके पूर्ण होनेपर अग्निकी सुवर्ण-मूर्त्ति ले, लाल वस्त्रसे भूषित कर, लाल गंध-पुष्पादिसे पूजन करे और विष्णुमें भक्ति रखे तो निर्धन भी धनवान् हो (व्रतपरिचय १९१)। (२) राजा पृथुके पुत्रका नाम—दे० पृथु। (३) शिवका एक नाम। (४) पृथुषेण (पृथु=ब्रह्मां० विष्णु० और वायु०) का एक पुत्र तथा गयका पिता (भाग० ५.१५.६; ब्रह्मां० २.१४.६८; वायु० ३३.५७; विष्णु० २.१.३८)।

नक्षत्र–पु० [सं०] (१) अश्विनी आदि नक्षत्रगण जो दाक्षायणी (दक्ष प्रजापतिकी पुत्रियाँ) हैं ये प्रलय कालमें नहीं चमकते हैं (ब्रह्मां० २.२४.९१; मत्स्य० २.७; वायु० १.१०१; ७.१६; २४.७७; ३०.१४६; १०७.४५)। (२) ज्योतिषके २७ नक्षत्र जो दक्ष प्रजापतिकी कन्याएँ कहीं गयी हैं और सोमको ब्याही हैं (मत्स्य० ४.५५; ८.३; १७१.३१; वायु० ६६.३७, ५३; ९०.२१)।

नक्षत्रकल्प–पु० [सं०] (१) अथर्व संहिताका प्रवर्त्तक एक विद्वान् (भाग० १२.७.४; वायु० ६१.५४)। (२) अथर्ववेदका एक अंश (ब्रह्मां० २.३५.६१; विष्णु० ३.६.१३)।

नक्षत्रदान–पु० [सं०] पुराणानुसार भिन्न-भिन्न नक्षत्रोंमें भिन्न-भिन्न पदार्थोंका दान जैसे रोहिणीमें घी, दूध और रत्न; मृगशिरामें बछड़े सहित गौ; आर्द्रामें खिचड़ी; हस्तमें हाथी और रथ; अनुराधामें उत्तरीय सहित वस्त्र; पूर्वाषाढ़ामें बर्तन सहित दही; रेवतीमें काँसा; उत्तरा भाद्रपदामें माँस, आदि। कहते हैं इससे स्वर्ग प्राप्त होता है।

नक्षत्रनाथ–पु०[सं०] चंद्रमाका एक नाम जो दक्ष प्रजापतिकी अश्विनी, भरणी आदि २७ नक्षत्र कन्याओंके ब्याहनेके कारण पड़ा—दे० नक्षत्र।

नक्षत्रपुरुष–पु० [सं०] नारायणके प्रीत्यर्थ किया जानेवाला एक व्रत (मत्स्य० ५४.७-३०)।

नक्षत्रयाजक–पु० [सं०] नक्षत्र तथा ग्रहादिकी शांतिके लिए दान लेनेवाला ब्राह्मण जो निकृष्ट तथा चांडालसम होते हैं (महाभा०)।

नक्षत्रराज–पु० (सं०) दे० चंद्रमा, नक्षत्रनाथ।

नक्षत्रलोक–पु० [सं०] वह लोक जिसमें नक्षत्र स्थित है और जो चंद्रलोकसे ऊपर है। दक्ष-कन्याओं (नक्षत्रों) की कठिन तपस्यासे प्रसन्न हो शंकरने चंद्रलोकके ऊपर एक स्वतन्त्र लोकमें रहनेका उन्हें वर दिया था (काशीखण्ड)।

नक्षत्रव्रत–पु० [सं०] पुराणानुसार किसी विशिष्ट नक्षत्रके उद्देश्यसे किया जानेवाला एक व्रत जिस दिन उस नक्षत्रके स्वामी देवताका पूजन भी करते हैं। अश्विनीमें अश्विनीकुमारोंका, भरणीमें यमका, कृत्तिकामें अग्निका, रोहिणीमें ब्रह्माका, मृगशिरामें चंद्रमाका, आर्द्रामें शिवका, पुनर्वसुमें अदितिका, पुष्यमें बृहस्पतिका, श्लेषामें सर्पका, मघामें पितरोंका, पूर्वाफाल्गुनीमें भगका, उत्तराफाल्गुनीमें अर्यमाका, हस्तमें सूर्यका, चित्रामें त्वष्टा (इंद्र)का, स्वातिमें वायुका, विशाखामें इंद्र तथा अग्निका, अनुराधामें मित्रका, ज्येष्ठामें इंद्रका, मूलमें राक्षसोंका, पूर्वाषाढ़ामें जलका, उत्तराषाढ़ामें विश्वेदेवोंका, अभिजित्में ब्रह्माका, श्रवणमें विष्णुका, धनिष्ठामें वसुका, शतभिषामें वरुणका, पूर्वाभाद्रपदामें अजैकपात्का, उत्तराभाद्रपदामें अहिर्बुध्न्यका, रेवतीमें पूषाका पूजन करे। एक भुक्त या नक्त-व्रत करे। इससे धन, दारा, सुत, सम्मान, आरोग्यता तथा आयुकी वृद्धि होती है (भविष्यपुराण)।

नक्षत्रसत्र–पु० [सं०] पुराणानुसार एक यज्ञ विशेष जो नक्षत्रोंके निमित्त किया जाता है तथा यह यज्ञ नक्षत्रमासके अनुसार होता है।

नखरेखा–स्त्री० [सं०] कश्यप ऋषिकी पत्नी जो बादलोंकी माता कही गयी हैं।

नखवान्–पु० [सं०] चन्द्रांशुके बादका राजा, वैदिशका (नागकुलका) द्वितीय राजा (ब्रह्मां० ३.७४.१८१; वायु० ९९.३६७)।

नखारि–पु० [सं०] शिवका एक अनुचर (शिवपुराण)।

नग–पु० [सं०] (१) तृतीय सावर्णिमनुके समयके सप्तर्षियोंमेंसे एक ऋषिका नाम जो वशिष्ठकुलके थे (ब्रह्मां० ४.१.७९)। (२) एक पर्वत जो गयास्थित शिलाके पीछेके भागके चारों ओर है, जहाँ लोग पितरोंकी मुक्तिके लिए यमराज तथा धर्मराजको बलि देते हैं (वायु० १०८.२८)।

नगदंती–स्त्री० [सं०] विभीषणकी पत्नीका नाम (रामायण)।

नगधर–पु० [सं०] गोवर्धन नग (पर्वत) उठानेके कारण श्रीकृष्णका एक नाम (कृष्ण)।

नगनंदिनी–स्त्री० [सं०] हिमाचलकी पुत्री पार्वती—दे० पार्वती।

नगभिद्–पु० [सं०] पुराणानुसार पहाड़ पहले उड़ते थे जिनके पर काट डालनेके कारण इंद्रका एक नाम—दे० इंद्र।

नगरंध्रकर–पु० [सं०] कार्त्तिकेयका एक नाम। उन्होंने क्रौंच पर्वतको वाणोंसे छेद डाला था इसीलिए उनका एक नाम क्रौंचदारण भी है।

नगरतीर्थ–पु० [सं०] गुजरात प्रांतका एक प्राचीन तीर्थ जहाँ पहिले शिवका निवासस्थान माना जाता था।

नगारि–पु० [सं०] नगों—पर्वतोंका पक्ष काटनेके कारण और अर्थात् इंद्र—दे० नगभिद्।

नगृहू–पु० [सं०] गर्भसे उत्पन्न ऋषिपुत्र ऋषिक कहलाते हैं। वे हैं—वत्सर, दीर्घतमा, भरद्वाज, वाजश्रवा आदि उनमेंसे एक ऋषिक जो सबके सब सत्यसे ऋषि हो गये थे (ब्रह्मां० २.३२.१०१; मत्स्य० १४५.९५; वायु० ५९.९२)।

नग्न–पु० [सं०] एक नास्तिक जो इंद्रियजित् (ब्रह्मां० २.२७.१०५, ११८; ३.१४.३५-४०) तथा वेदोंसे अनभिज्ञ होता है (विष्णु० ३.१६.१२; १७.५)। भीष्म और वशिष्ठमें नग्नसंबंधित वादविवाद (विष्णु० ३.१७.७) में दिया है। मायामोहके फेरमें विष्णुकी अकृपासे असुरगण भी नग्न हो गये (विष्णु० ३.१८.३६)। सवर्ण जातिवाले जो स्वधर्म छोड़ देते हैं वे भी नग्न कहे जाते हैं (विष्णु० ३.१८.४८, ५२)।

नग्नजित्–पु० [सं०] (१) स्थापत्यकलाके १८ प्रवर्तकोंमेंसे एक (मत्स्य० २५२.२)। (२) गाँधारके एक बहुत पुराने राजाका नाम (शतपथब्राह्मण)। (३) एक राजाकी पुत्री कोसलराजकुमारी सत्या श्रीकृष्णकी पत्नी थी (वायु० ९६.२३३; भाग० १०.७१.४३)। पुराणानुसार कोशलके राजा जिनकी सत्या या नाग्नजिती नामकी पुत्रीका विवाह श्रीकृष्णसे हुआ था (भाग० १०.५८.५२; ३.३.४; (ब्रह्मां० ३.७१.२४२)।

नग्नादि–पु० [सं०] जिनके पास शरीरके ढँकनेके लिए ऊपरी तीन आवरण भी नहीं हों वैसोंको श्राद्धके लिए अयोग्य समझा गया है। सभी जीवोंका संवरण (आवरण वस्त्र आदि) वेद है उसका जो त्याग करते हैं वे नग्नादि हैं कभी-कभी पाखण्डी तथा ढोंगी साधु भी इसी रूपमें मिलते हैं जिनका परित्याग ही उचित है (वायु० ७८.२४, २७ ३७)।

नचिकेता–पु० [सं०] वाजश्रवा ऋषिका पुत्र। वाजश्रवाने एक बार अपना सर्वस्व दक्षिणामें दे डाला था जिसपर इसने पितासे पूछा था कि मुझे किसको प्रदान करते हैं? वाजश्रवाने क्रुद्ध होकर कह दिया—'मृत्युको'। इसपर यह मृत्युके पास चला गया था और वहाँ तीन दिनोंतक निराहार रहकर उससे ब्रह्मज्ञान प्राप्त किया था।

नट–पु० [सं०] (१) पुराणानुसार एक संकर जाति। व्रात्य (जिसका २२ वर्षकी अवस्था तक उपनयन न हुआ हो) क्षात्रियसे सवर्णामें उत्पन्न (मनु० १०.२२)। (२) एक नागका नाम। मथुराके निकट उरुमुंड पर्वतपर गौतम बुद्धने इसे तथा भट नामक एक अन्य नागको बौद्धधर्मकी शिक्षा दी थी (हि० श० सा०)।

नड–पु० [सं०] एक गोत्रप्रवर्त्तक ऋषिका नाम (ब्रह्मां०)।

नडवल–पु० [सं०] एक वैदिक देवताका नाम (हि० श० सा०)।

नडबला–स्त्री० [सं०] चाक्षुष मनुकी पत्नी, वैराजकी पुत्री (भाग० ४.१३.१५; ब्रह्मां० २.३६.८०, १०७) तथा पुरु-आदि (ब्रह्मां०—उरु; विष्णु० कुरु) की माताका नाम जिसके १० पुत्र थे (भाग० ४.१३.१६; वायु० ६२.९१; विष्णु० १.१३.५)।

नडायन–पु० [सं०] एक भार्गव गोत्रकार ऋषिका नाम (मत्स्य० १९५.१७)।

नत्वली–स्त्री० [सं०] निषध पर्वत पर स्थित विष्णुपद झीलसे निकली एक नदीका नाम (वायु० ४७.६५)।

नदनदी–स्त्री० [सं०] केतुमाल देशकी सात प्रधान नदियोंमेंसे एक नदी (वायु० ४४.२२)।

नदीज–पु० [सं०] गंगाके गर्भसे उत्पन्न एक राजाका नाम। पाण्डवोंकी ओर इन्हें रण निमन्त्रण भेजनेका निश्चय हुआ था (महाभा० उद्योग० ४.१५)।

नभःप्रभेद–पु० [सं०] विरूपवंशोत्पन्न एक वैदिक ऋषि जिनके मंत्र भी मिलते हैं (ऋग्वेद)।

नभ–पु० [सं०] (१) कुशके पौत्र निषधके पुत्र तथा पुण्डरीकके पिताका नाम (भाग० ९.१२.१)। (२) एक पवित्र महीनेका नाम जिसमें इन्द्र नामके सूर्य तपते हैं और उनके रथपर विश्वावसु (गन्धर्व), श्रोता (यक्ष), एलापत्र (नाग), अङ्गिरा (ऋषि), प्रम्नोचा (अप्सरा) और वर्य (राक्षस) अधिष्ठित रहते हैं (भाग० १२.११.३७)। (३) राजा नलके एक पुत्रका नाम जो रामके पुत्र कुशके वंश (नभपुत्र=ब्रह्मां० तथा विष्णु०) के पुण्डरीकके पिता थे (ब्रह्मां० ३.३६.२०२; मत्स्य० १२.५२; वायु० ८८.२०२; विष्णु० ४.४.१०६)। (४) हरिवंशके अनुसार रामचंद्रके वंशके एक राजाका नाम (हरिवंश)। (५) स्वारोचिष मनुका एक पुत्र (मत्स्य० ९.७)। (६) चाक्षुष मुनिके एक पुत्रका नाम (हरिवंश)। (७) औत्तम मनुका एक पुत्र (मत्स्य० ९.१२)। (८) एक प्रवर प्रवर्तक कश्यपकुलके ऋषि का नाम (मत्स्य० १९९.१५)। (९) चाक्षुष मन्वंतरके सात ऋषियोंमेंसे एक ऋषिका नाम। (१०) एक मंत्रकृत् ऋषि (वायु० ५९.७९)। (११) विप्रचित्तिके सिंहिकासे उत्पन्न बारह पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (विष्णु० १.२१.११)।

नभग–पु० [सं०] वैवस्वत मनुके दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्र तथा नाभागके पिताका नाम (भाग० ८.१३.२; ९.१.१२; ४.१; ब्रह्मां० ३.६३.५; वायु० ८८.५)। पुराणोंमें कहीं-कही नाभागको भी विवस्वत मनुका पुत्र कहा गया है।

नभगनाथ–पु० [सं०] गरुड़ पक्षीका एक नाम।

नभश्री–स्त्री [सं०] वर्षाऋतुकी रानी (ब्रह्मां० ४.३२.२८)।

नभस्य–पु० [सं०] (१) एक मासका (भाद्रपदका) नाम जिसमें विवस्वान् नामके सूर्य तपते हैं और उनके रथपर उग्रसेन, व्याघ्र, आसारण, शङ्खपाल, अनुम्लोचा, भृगु आदि अधिष्ठित रहते हैं (भाग० १२.११.३८; ब्रह्मां० २.१३.९; वायु० ३०.८७)। (२) हरिवंशके अनुसार स्वारोचिप मनुके चार पुत्रोंमेंसे एकका नाम (मत्स्य० ९.७)। (३) औत्तम मनुके दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (मत्स्य० ९.१२)। (४) इस मासकी त्रयोदशी तिथिका नाम युगादि है। इस मासमें त्र्यंबक नामक शिवकी पूजा होती है (मत्स्य० १७.४; ५६.४)। सौभाग्यशयन व्रत, जो प्रत्येक तृतीया तिथिमें एक वर्ष किया जाता है, में इस मासके व्रतके दिन केवल कुशोदक पीने और दान देनेके समय मंत्र कहें 'शिवा प्रीयताम्' (मत्स्य० ६०.३४)।

नभस्यश्री–स्त्री० [सं०] दे० 'नभश्री'।

नभस्वती–स्त्री० [सं०] अंतर्धानकी एक रानी जो हविर्धान की माता थी (भाग० ४.२४.५)।

नभस्वान्–पु० [सं०] मुर, जिसने नरकासुरके आदेशानुसार श्रीकृष्णपर आक्रमण किया था, के सात पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (भाग० १०.५९.१२-१४)।

नभोद–पु० [सं०] एक विश्वेदेवका नाम (हरिवंश)।

नमस्यु–पु० [सं०] पुरुवंशीय प्रवीरका एक पुत्र तथा चारुपदका पिता (भाग० ९.२०.२)।

नमुचि–पु० [सं०] (१) एक दानव जो महासुर शुम्भका तीसरा भाई था उसके दूसरे भाईका नाम निशुम्भ था (वामनपु० अ० ५२)। (२) कामदेवका एक नाम (हिं० शा० सा०)। (३) एक ऋषि विशेषका नाम (हिं.श.सा.)। (४) अतलनिवासी एक दानवका नाम (वायु० ५०.१५; ९८.८१)। विप्रचित्ति नामक दानवके सिंहिकासे उत्पन्न कई पुत्रोंमेंसे एक पुत्र तथा हिरण्यकशिपुका भतीजा था। स्वर्भानुकी पुत्री सुप्रभा इसकी पत्नी थी। यह इन्द्रका सखा तथा इन्द्र-शत्रु असुरोंका अधिपति था (विष्णु० १.२१.१२)। यह देवासुर संग्राममें वृत्रासुर तथा बलिके पक्षसे लड़ा था (भाग० ६.१०.१९-३१; ब्रह्मां० २.२०.१६)। इसने इन्द्रका बल हरण कर लिया था जिन्होंने समुद्रकी झागके समान वज्रास्त्रसे इसका वध किया था, क्योंकि यह किसी गीली या सूखी वस्तुसे मारा नहीं जा सकता था (भाग० ७.२४; ८.१०.२० से अंततक; ११.१९, २३, २९-४०; मत्स्य० २२.६१)। वामन भगवान् इसे पाताल ले गये थे (ब्रह्मां० ३.७३.८१; मत्स्य० २४९.६७)।

नमुचिसूदन–पु० [सं०] इन्द्र—दे० नमुचि(४)।

नय–पु० [सं०] (१) प्रह्लादके अनुसार राजनीतिकी सहायतासे विष्णुका ज्ञान होना चाहिये। इसका ज्ञाता 'भेद उपाय'का विशेष पक्षपाती होता है (भाग० ७.६.२६; मत्स्य० २२३.४, १६)। (२) औत्तम मनुके तेरह पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (ब्रह्मां० २.३६.३९)। (३) रौच्य मनुके दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (ब्रह्मां० ४.१.१०४)। (४) धर्म और दक्षपुत्री क्रियाका एक पुत्र (वायु० १०.३५)। (५) बारह साध्य देवोंमेंसे एक साध्यदेव (वायु० ६६.१६)। (६) विश्वामित्रके शुनःशेफ आदि नौ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (वायु० ९१.९६)। (७) बीस अमिताभ देवोंमेंसे एक अमिताभदेवका नाम (वायु० १००.१७)।

नर–पु० [सं०] (१) दक्ष प्रजापतिकी पुत्री मूर्तिसे उत्पन्न धर्मके पुत्र एक पौराणिक ऋषि जिन्हें ईश्वरका अंशावतार मानते हैं। यह अपनी तपस्याके लिए प्रसिद्ध थे (भाग० ४.१.५२; २.७.६-७; १२.८.३२, ३५; ब्रह्मां० २.३५.९३; मत्स्य० १.२)। नर और नारायण दो भाई थे जिनका दर्शन मार्कण्डेयने किया था (भाग० १२.८ ३२, ३५, ४० ४९; ९.१)। (२) तामस मनुके दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (भाग० ८.१.२७; ब्रह्मां० २.३६.४९; वायु० ६२.४४; विष्णु० ३.१.१९)। (३) केवल (चन्द्र–विष्णु०) का पिता तथा सुधृतिका एक पुत्र (भाग० ९.२.२९, ३०; ब्रह्मां० ३.८ ३५; ६१.९; विष्णु० ४.१.४०-१; वायु० ८६.१३-१४)। (४) मन्युसुत जयका पुत्र तथा संकृतिका पिता (भाग० ९.२१.१)। (५) प्रतिहारवंशी गयका पुत्र तथा विराट्का पिता (ब्रह्मां० २.१४.६८; विष्णु० २.१.३८; वायु० ३३.५८)। (६) चन्द्रमाके रथके १० घोड़ोंमेंसे एकका नाम (ब्रह्मां० २.२३.५६; मत्स्य० १२६.५२)। (७) स्वारोचिष मन्वंतरमें सत्य देवगण होनेवाले १२ साध्य देवोंमेंसे एक साध्य (ब्रह्मां० ३.३.१६-७; मत्स्य० २०३.११; २५१.२४-५; वायु० ६६.१५; ब्रह्मां० २.३६.५०)। (८) भुवमन्युके चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (मत्स्य० ४९.३६; वायु० ९९.१५९)। (९) रत्क्षसेन्दु लोकपाल नैऋतका वाहन तथा कुबेरका रथ खींचनेवाला (मत्स्य० २६१.१५-२२)। (१०) नारद, पर्वत, कश्यप, कर्दयादि कई देवर्षियोंमेंसे एक देवर्षि, जो धर्म और मूर्त्तिके पुत्र थे (वायु० ६१.८३)।

नरक–पु० [सं०] पुराणों और धर्मशास्त्रादिके अनुसार वह स्थान जहाँ पापियोंकी आत्मा दंड भोगनेके लिए भेजी जाती है और कर्मानुसार फिर जन्म होता है (ब्रह्मां० ४.२.१४६-१५०)। नरक कुल मिलाकर २७ हैं जिनके अधिपति 'यम' हैं। भाग० तथा मनुस्मृतिके अनुसार नरक २१ हैं—तामिस्र, अंधतामिस्र, रौरव, महारौरव, कुंभीपाक, कालसूत्र, असिपत्रवन, सूकरमुख, अंधकूप, कृमिभोजन, संदंश, तप्तसूर्मि, वज्रकंटक, शाल्मली, वैतरणी, पूयोद, प्राणरोध, विशसन, लालाभक्ष, सारमेयादन, अवीचि और अयःपान। भाग० में इनके अतिरिक्त क्षारकर्दम, रक्षोगणभोजन, शूलप्रोत, दन्दशूक, वटनिरोधन, पर्यावर्तन, सूचीमुख ये सात और कहकर कुल २८ नरक कहे गये।

इनके अतिरिक्त कुछ पुराणोंमें कुछ अन्य नरककुंड भी लिखे हैं—यथा—वसाकुंड, तप्तकुंड, सर्पकुड, चक्रकुंड इत्यादि। इनमेंसे सात पृथ्वीके नीचे हैं तथा शेष लोकके परे हैं, वे हैं=रौरव, शीतस्तप, कालसूत्र, अप्रतिष्ठ, अवीचि, लोहपृष्ठ और अविधेय (वायु० १०१.१४४-९२; विष्णु० २.६.१पूरा)।

नरकचतुर्दशी–स्त्री० [सं०] कार्त्तिक कृष्णा-चतुर्दशी, जिस दिन घरका कूड़ा-कर्कट निकालकर फेंका जाता है। इसके उपरांत ही कार्त्तिक बदी अमावस्याको दीवाली होती है। नरकचतुर्दशीके दिन श्रीकृष्णने अपनी रानी सत्यभामाकी सहायतासे अत्याचारी नरकासुरका वध किया था जिसने १६००० राजकन्याएँ कारागारमें डाल रखी थीं। इसका

सारा धन तथा राजकन्याएँ कृष्ण द्वारका ले गये थे (भाग० ८.१०.३३)। शास्त्रानुसार इन दिनों तेलसे अभ्यंग कर स्नान करना चाहिये अन्यथा नरक प्राप्त होता है—'नरकस्य चतुर्दश्यां तैलाभ्यङ्गं च कारयेत्।' कहते हैं इस दिन तेलमें लक्ष्मी और उष्णोदकमें गंगाका वास होता है। स्नानके पश्चात् उड़दके पत्तोंका शाक और वड़े खानेका विधान है। इससे दरिद्रता नष्ट होती है। इस तिथिको यमतर्पण भी करते हैं जो पिताके रहते भी पुत्र कर सकता है—दे० 'कृत्यतत्त्वार्णव'।

'उत्सवसिंधु'के अनुसार इसी दिन महावीर हनुमानका जन्म भी हुआ था। शास्त्रोंमें आजके दिन हाथमें उल्का लेकर पितरोंको दिखानेका विधान है। पितृलोकसे महालय-में हमारे घर आये हुए पितर इस उज्ज्वल ज्योतिसे प्रकाश पाकर पुनः पितृलोक चले जाते हैं। 'अग्निदग्धाश्च ये जीवा येऽप्यदग्धाः कुले मम। उज्ज्वलज्योतिपा दग्धास्ते यान्तु परमां गतिम्'॥ यही मन्त्र पढ़कर उल्कादान करना चाहिये।

नरकांतक–पु० [सं०] नरकासुरका अन्त (नाश) करनेके कारण श्रीकृष्णका एक (ब्रह्मां० ३.३६.३४)।

नरकासुर–पु० [सं०] पुराणानुसार एक प्रसिद्ध असुर जिसे पृथ्वीके गर्भसे उत्पन्न विष्णुपुत्र कहते हैं जो वराह अवतार-के समय हुआ था जब विष्णुने पृथ्वीका उद्धार किया था [भाग० १०.५९.१४-३०; ६५(५)१] अतः यह पृथ्वीका पुत्र था [भाग० १०.५९.५९ (१, २)]।

जब रावण मारा गया था उस समय पृथ्वीके गर्भसे उसी स्थानपर इस असुरका जन्म हुआ जहाँ जानकीका जन्म हुआ था। सोलह वर्षकी आयुतक राजा जनकने इसे पाला था फिर पृथ्वी ले गयी और विष्णुने इसे प्रागज्योतिष-पुरका राजा बना दिया। यह कंसका एक असुर मित्र था (भाग० १०.२.२; ३६.३६)। विदर्भ राजकुमारी मायासे इसका विवाह हुआ और विवाहके समय विष्णुने इसे एक दुर्भेद्य रथ दिया था। कुछ दिनों तक यह ठीकसे राज्य करता रहा, पर वाणासुरकी संगतिमें पड़कर दुष्ट हो गया। इसे वशिष्ठने विष्णुके हाथों मारे जानेका शाप दिया था, पर तपोबलसे इसने ब्रह्माको प्रसन्न कर यह वर पाया कि 'इसे देवता, असुर, राक्षस आदि कोई नहीं मार सकेगा और इसका राज्य सदा बना रहेगा। यह द्विविद .वानरका मित्र था [भाग० १०.६७.२; ६९(३)१]। इसने हयग्रीव, सुंद आदिकी सहायतासे इन्द्रको जीतर, वरुणका छाता और अदितिके कुंडल ले भागा था और घोर अत्याचार करने लगा [भाग० १०.५९(१), २]। देवासुर संग्राममें यह शनैश्चरसे लड़ा था। अंतमें श्रीकृष्णने जन्म लिया और विष्णुके चक्रसे नरकासुर नरकचतुर्दशीको मारा गया। इसके भंडारमें कुवेरकी सम्पत्तिसे भी अधिक माल था और अनेक राजकुमारियाँ वंदीगृहमें वंद थीं जिन्हें श्रीकृष्ण द्वारका ले आये थे (भाग० ८.१०.३३)। अहंकारके कारण यह अपनी शक्ति, अधिकार तथा सारा राज्य खो बैठा था (भाग० १०.५९.१४-२२; ३७.१६; १.१०.२९)।

नरकेसरी–पु० [सं०] दे० नृसिंह।

नरदेव–पु० [सं०] (१) विष्णुके चौबीस अवतारोंमें अट्ठारहवाँ अवतार भगवान् राम (भाग० १.३.२२)। (२) महा-बली सैकड़ों वानर नायकोंमेंसे एक वानर सरदारका नाम (ब्रह्मां० ३.७.२४३)।

नरदेवकुमार–पु० [सं०] (१) एक ऋषि विशेष (भाग०)। (२) विष्णुका अट्ठारहवाँ अवतार (रामावतार) (भाग० १.३.२२)।

नरनारायण–पु० [सं०] नर और नारायण नामके दो ऋषि जो विष्णुके चौथे अवतार कहे जाते हैं। ऐसी प्रसिद्धि है कि मूर्त्तिके गर्भसे उत्पन्न ये दोनों भाई धर्मपुत्र थे जिनमें नारायण वड़े थे और इन लोगोंका निवासस्थान गंधमादन था (भाग० १.२.४, २६; ३.९; ४.१.५२-५७; विष्णु० ५.२४.५; ३७.३४.३७)। एक बार इनसे और शंकरसे घोर युद्ध हुआ था, पर ब्रह्माने आकर समझाया कि 'यह स्वयम् विष्णु हैं, इनसे मत लड़ो'। तब शंकरने प्रार्थना करके इन्हें प्रसन्न किया था (महाभा० शान्ति० ३४२.११०-११७)। महाभारतमें यह भी लिखा है कि परब्रह्मके अवतार नर-नारायणने नारायणीय आर्थात् भागवत धर्मका प्रचार किया।

देवीभागवतके अनुसार ब्रह्माके पुत्र धर्मने दक्षकी दस पुत्रियोंसे विवाह किया था जिनके गर्भसे हरि, कृष्ण, नर और नारायण उत्पन्न हुए थे। नर और नारायणकी कठिन तपस्यासे डर कर इन्द्रने क्रोध, काम, लोभकी सृष्टि की, पर ये तीनों नर-नारायणका तप भंग न कर सके। तब इन्द्रने कामदेवकी शरण ली और कामदेव अपने दलके साथ नर-नारायणके पास गये। इन्द्रको लज्जित करनेके विचारसे नर-नारायणने अपनी जंघासे उर्वशी नामकी एक अति रूपवती अप्सरा उत्पन्न की जिसकी स्तुति इन्द्रकी सारी अप्सराएँ करने लगीं (भाग० ११.४.६-१६; ७.१८) उन्होंने यह वर माँगा कि आप हम लोगोंके पति हों। इसपर नारायणने उन लोगोंको द्वापरतक ठहरनेके लिए कहा। तदनुसार नर अर्जुन हुए और नारायणने श्रीकृष्णका अव-तार लिया (भाग० ४.१.५९)। अन्य मतसे—'नरसिंह'के 'नर'से नर और 'सिंह'से नारायणकी उत्पत्ति लिखी है—दे० (कालिकापुराण)।

नरनारायणाश्रम–पु० [सं०] वदरिकाश्रम क्षेत्रमें स्थित एक तीर्थ जहाँका जल स्वच्छ होनेपर भी दो प्रकारका दीखता है। धर्मपत्नी मूर्तिसे नर और नारायण उत्पन्न हुए थे जो माता-पितासे आज्ञा ले 'नर-नारायण' पर्वतके बीच स्थित हो गये थे जहाँ स्नान-पूजासे नर नारायण हो जाता है (स्कंद० वैष्णव० वदरिका-माहात्म्य)।

नरमेध–पु० [सं०] (१) वहुत प्राचीन कालका एक यज्ञ जिसमें नर-वलि दी जाती थी और जो चैत्र सुदी १० से आरम्भ होकर चालीस दिनोंमें समाप्त होता था। आधुनिक कालमें यह वंद हो गया है। (२) वेदार्थके निश्चयके लिए वेदव्यासजीने मेरु पर्वतकी काञ्चनी गुफामें परम तप किया तब चारों वेद उनके सम्मुख प्रादुर्भूत हुए। उनके विभिन्न अङ्गोंमें वर्णों, वाणियों, पञ्चभूतों, विविध यज्ञों, तीर्थोंके दर्शन हुए। नरमेधका उन्हें वेदके उदरमें दर्शन हुआ अतः यह वेदका उदर कहा गया है (वायु० १०४.८४)।

नरवाहन–पु० [सं०] कुवेरका एक नाम (मत्स्य० १७४.

१८)।

नरसिंह—पु० [सं०] हिरण्यकशिपुका वध करनेके लिए विष्णुका जो अवतार हुआ था (ब्रह्मां० ३.५.२६, २७; ५७.५७; ७३.७४; वायु० ६७.६६; ९७.७३; ९८.७३; १११.७२; विष्णु० १.२०.३२)। हिरण्यकशिपुका वध दाँत तथा नखोंकी सहायतासे हुआ था उसकी तपस्यासे प्रसन्न हुए ब्रह्मासे उसने देव, असुर, मनुष्य आदिसे अवध्यत्व. गीले और सूखे अस्त्रसे अवध्यत्व एवं दिन तथा रात्रिमें अवध्यत्वका वर मिला था, नख आदि न गीले हैं और न सूखे (मत्स्य० ५३.५०; अध्याय १६१ से १६३ तक; २८५.६)।

नरांतक—पु० [सं०] (१) कालनेमिके. चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (ब्रह्मां० ३.५.३९; वायु० ६७.८०) जो लंकाके युद्धमें मारा गया था (भाग० ९.१०.१८)। (२) लंकापति रावणका एक पुत्र जिसे अंगदने मारा था, पर स्कन्द पुराणानुसार इसे सुग्रीवने मारा था (स्कंद० ब्राह्म० सेतु-माहात्म्य)।

नरा—स्त्री० [सं०] सुयज्ञ (श्वफल्क=वायु०) की पुत्री, भंगकारकी पत्नी तथा शत्रुघ्न और वन्धुमान् (जिन्हें अक्रूरने मारा था) की माता (ब्रह्मां० ३.७१.८७; वायु० ९६.८६)।

नरिष्यंत—पु० [सं०] (१) वैवस्वत मनुके दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्र तथा चित्रसेनका (मत्स्य०=शुचका) पिता। जातुकर्ण इस वंशका अंतिम राजा था (भाग० ८.१३.२; ९.१.१२; २.१९.२२; ब्रह्मां० ३.६०.३; मत्स्य० ११.४१; १२.२०; वायु० ६४.२९, ८५.४; विष्णु० ३.१.३३; ४.१.७)। (२) स्वायंभुव मनुके नौ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (ब्रह्मां० २.३८.३१; वायु० ८५.४)। (३) मरुत्त, जिसने इतने यज्ञ किये कि अंतमें वरण करनेके लिए ब्राह्मण ही नहीं मिले थे, के १८ पुत्रोंमें ज्येष्ठ पुत्र तथा दमका पिता (ब्रह्मां० ३.८.३५; ६१.७; वायु० ८६.१२; विष्णु० ४.१.३४-५)।

नर्मदा—स्त्री० [सं०] (१) एक गंधर्व-स्त्रीका नाम जिसकी सुंदरी, केतुमती और वसुदा नामकी तीन पुत्रियाँ थीं। (२) दक्षिणकी एक पवित्र नदी जो पुरुकुत्सकी पत्नी तथा त्रसद्दस्युकी माता थी (विष्णु०)। स्कंद० के अनु० चंद्रवंशी राजा हिरण्यतेजाके तपसे नर्मदाका अवतरण पृथ्वीपर हुआ। पुराणानुसार यह विन्ध्यपर्वतके पुत्र 'पर्यङ्कगिरिसे निकली है। सरस्वतीका जल तीन दिनोंमें पवित्र करता है, यमुनाका जल सात दिनोंमें और गंगाजल तत्काल पवित्र करता है, पर नर्मदा दर्शनमात्रसे पवित्र करती है (स्कंद० आवन्त्य० रेवाखंड)। सुकाल नामक पितरोंकी मानस कन्या जिसके भाई उरगने इसका विवाह पुरुकुत्ससे कर दिया था और यह त्रसघस्युकी माता हुई जिसे ले यह रसातल चली गयी जहाँ नागोंके प्रसन्नतार्थ इसने कई दुष्ट गंधर्वोंका वध किया (भाग० ९.७.२-३; ब्रह्मां० ३.१०.९७; वायु० ७३.४८; ८८.७४)। वहाँ पुरुकुत्ससे विष्णुपुराण सुन इसने (नर्मदाने) महानाग धृतराष्ट तथा आपूरणको सुनाया (विष्णु० ६.८.४५)। (३) ऋक्षवान् पर्वत या ऋष्य पर्वतसे निकली भारतवर्षकी एक नदी जिसके दक्षिणी तटपर भृगुकच्छ था। यह पितरोंके श्राद्धादिके लिए पवित्र समझी जाती है और हैहय-राज्यके पड़ोससे होकर वहती है (भाग० ५.१९.१८; ८.१८.२१; ब्रह्मां० २.१२.१४; १६.२९; ३.१०.९७; मत्स्य० २.१३-१५; २२.२५; ११४.२३; वायु० ४९.९९; ७७.३२; ९४.२८; १०८.८२)।

वृत्रासुर और इंद्रका युद्ध इसीके तटपर हुआ। श्रीकृष्ण रुक्मिणीको ले जव इस नदीको पार कर रहे थे, रुक्मिणीने उन्हें यहीं रोका था। कार्त्तवीर्यने इसीकी धाराको रोका था (भाग० ६.१०.१६; १०.५४.२३(१); ब्रह्मां० ३.१३.८, ३२; २६.१०.३८;३८.३.७;४१.१५;४५.२;६९.२८; मत्स्य० ४३.३१; ४४.३१; १६३.६३; विष्णु० ४.११.१९)। इसके तटपर जलेश्वर, रुद्रकोटि, अमरकंटक, कपिल और विशालकर्णी आदि कई तीर्थ हैं। इनमेंसे कहीं भी स्नान करनेवाला अश्वमेध यज्ञका फल प्राप्त करता है (मत्स्य० अध्याय १८६)। महेश्वरका मंदिर इसीके तटपर है, जहाँसे भगवान् शंकरने वाणासुरको नारदकी रायसे परास्त किया था। त्रिपुरके तीन नगरोंमेंसे दो तो जलकर भस्म हो गये। पहिला नगर श्रीशैल पर्वतमें वदल गया और दूसरा अमरकंटक पर्वत बना। दोनोंपर सिद्ध, गंधर्व आदि रहने लगे। अमरकंटकमें ज्वालेश्वरकी स्थापना हुई, तीसरा नगर विना जलाये छोड़ दिया गया (मत्स्य० अ० १८८)

कहते हैं नर्मदा और कावेरीके संगमपर कुवेर शिवप्रीत्यर्थ तपकर यक्षोंके अधिपति हो गये। यहाँ स्नान करनेका फल गंगा-यमुनाके संगमपर स्नानके वरावर है (मत्स्य० अ० १८९)। इस नदीके उत्तर तटपर मंत्रेश्वर, गर्जन, आम्रातकेश्वर, ब्रह्मावर्त, करजतीर्थ, कुंडलेश्वर, पिप्पलेश, विमलेश्वर, सुन्दरदेवशिला, पुष्करणीतीर्थ आदि अनेक तीर्थ स्थित हैं जिनमें स्नान, शिवदर्शन और शिव पूजनका वड़ा माहात्म्य है। इसके उपरांत भीमेश्वर, नारदेश्वर, आदित्येश्वर, रावणेश्वर, कुवेरस्थान, अहल्यातीर्थ तथा जनार्दनमंदिर आदि अनेक अन्य तीर्थ भी स्थित हैं। यहाँ अग्नि, धर्मराज तथा वायुने तप किया था। राजर्षि चाणक्यका पवित्र शुक्लतीर्थ मनुष्यके सारे जीवनका पाप धो फेंकने की सामर्थ्य रखता है (मत्स्य० अ० १९०-१९२)। इसके ही समीपवर्ती अन्य तीर्थ यथा भृगुतीर्थ, कनखल जहाँ गरुड़ने तप किया, कन्यातीर्थ, पितामहतीर्थ और स्वर्गद्वारतीर्थ हैं। "नर्मदा-माहात्म्य" सुननेवाला मोक्ष पाता है चाहे वह किसी वर्णका हो (मत्स्य० अ० १९३ १९४)। पुरुकुत्सने इसीके तटपर ऋषियोंसे विष्णुपुराण सुना था (विष्णु० ४.३.७-१६)। यहाँ तप कर रहे अनेक असुर मायामोहके मोहक वचनोंमें पड़ कर स्वधर्मभ्रष्ट हो अर्हत् हो गये (विष्णु० ३.१८.१,१३)। (४) अंवरीष-पुत्र युवनाश्वकी पत्नीका नाम जो संभूतकी माता थी (ब्रह्मां० ३.६३.७३)। (५) सोमप-पितरोंकी मानस पुत्री जो हव्यवाहन अग्निकी १६ पत्नियोंमेंसे एक थी जो दक्षिणापथकी नदी हो गयी थी। वहाँ किये गये श्राद्ध और दान अक्षय होते हैं (मत्स्य० १५.२५,२८;५१.१३; वायु० ७७.३२)।

नर्मदानिकेत—पु० [सं०] नर्मदाक्षेत्रके निवासी ऋषि जो द्वारका गये थे (भाग० १०.९०.२८ (५)।

नर्मदेश्वर—पु० [सं०] (१) नर्मदातटवर्ती एक उत्तम तीर्थका नाम जहाँ स्नान करनेसे स्वर्गमें देववत्पूजा होती है (मत्स्य० १९४.२)। (२) नर्मदा नदीमें पाये जानेवाले एक

प्रकारके शिवलिंग विशेष जो सफेद, लाल अथवा काले रंगके होते हैं और जिनका आकार अंडेकी तरह होता है। पुराणोंमें इनके पूजनका वड़ा माहात्म्य लिखा है (हि० श० सा०)

नल—पु० [सं०] (१) निषध देशके राजा वीरसेनके पुत्र जो वड़े ही सुंदर और गुणवान् थे। यह घोड़ोंके अच्छे पारखी तथा उनके संचालनमें वड़े दक्ष थे। इनका विवाह विदर्भ-राज भीमकी पुत्री दमयंतीसे हुआ था जिसके स्वयंवरमें इन्द्रादि देवता लोग भी आये थे। इनका विवाह हो गया दमयन्तीसे इनके दो वच्चे हुए इन्द्रसेन (पुत्र) और इन्द्र सेना पुत्री। पर कलि इनपर वड़े रुष्ट हुए। कलि वारह वर्षोंसे इनकी ताकमें था, अतः इनके शरीरमें प्रवेश कर उसने नलको पुष्कर द्वारा जूएमें हरा कर विलकुल कंगाल वना दिया। अंतमें यह पत्नी सहित जंगलमें चले गये जहाँ इनका वस्त्र भी पक्षी ले गये, तव नल पत्नीका आधा वस्त्र ले तथा उसे वनमें अकेली सोती छोड़ चल दिये। दमयंती घोर विलाप करती हुई अपने पिताके घर विदर्भ पहुँची और नल भी नाना संकटोंको झेल अयोध्या आये जहाँ उन्होंने राजा ऋतुपर्णके यहाँ अपना नाम वाहुक वतलाया और सारथिका काम करने लगे। वहुत खोजके पश्चात् नलका पता लगा तव ऋतुपर्णके यहाँ दमयंतीके दूसरे स्वयंवरकी झूठी सूचना देकर इन्हें वुलवाया गया। एकने दूसरेको पहिचान लिया और तीन वर्षोंके पश्चात् पति-पत्नी पुनः मिले। अव कलिने भी इनका पिंड छोड़ दिया था। एक मास विदर्भमें रह नल पुष्करसे पुनः मिले और जुएमें उसे हराकर अपना राज्य वापस ले लिया और पत्नी सहित सुखसे रहने लगे। दमयंतीका पातिव्रत आदर्श माना जाता है और घोर कष्ट सहन करनेके लिए नल-दमयंती प्रसिद्ध हैं (महाभा० वन० ५७.१-३८,४२-४६; ५९ पूरा; ६१.६-१४ आदि "नलोपाख्यान")। (२) तैत्तिरिके पुत्र नंदनोदरदुंदुभिका नाम। इसने पुत्रार्थ अश्वमेध किया था तथा अतिरात्रके मध्यमें ही पुनर्वसु प्रकट हुये और इसके पुत्र हो गये (मत्स्य० ४४.६३-५)। (३) श्रीरामचंद्रकी सेनाका एक वंदर जिसे विश्वकर्माका पुत्र माना जाता है। राम-रावण युद्धमें श्रीरामकी सेनाके लिए पत्थरोंको तैराकर इसीने समुद्रपर पुल वांधा था (वाल्मी० ६.२२.४०-४१)। पुराणानुसार ऋतुध्वज ऋषिके शापसे यह धृताची नामकी अप्सराके गर्भसे वंदरके रूपमें उत्पन्न हुआ था (ब्रह्मां० ३.७.२३४; रामायण सुंदर० ५९.१-२; लंका० १ तथा सेतु। (४) सिंहिकाके गर्भसे उत्पन्न विप्रचित्तिके तेरह पुत्रोमेंसे एक (चौथा) पुत्र तथा हिरण्यकशिपुका भानजा, एक दानव। इन सवका सामूहिक नाम सैंहिकेय था (मत्स्य० ६.२६)। (५) यदुके चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (भाग० ९.२३.२०; विष्णु० ४.११.५)। (६) सूर्यवंशी वीरसेनका पुत्र (मत्स्य० १२.५६)। (७) एक हदका नाम, जो गुजरात प्रान्तके अन्तर्गत अहमदावादसे १८ मील दक्षिण-पश्चिमकी ओर है। (८) एक महावली वानर जो कनकविन्दुकी पत्नीसे उत्पन्न अग्निका पुत्र था (ब्रह्मां० ३.७.२२९)।

नलकूबर—पु० [सं०] धनाध्यक्ष कुवेर और ऋद्धिके दो पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम। इन्होंने अपनी प्रिया रंभापर वलात्कार करनेके कारण रावणको यह शाप दिया था कि न चाहनेवाली स्त्रीको तुम स्पर्श नहीं कर सकोगे (महाभा० वन० २८०. ५९-६०)। एक वार मद्यपान कर अपने भाई मणिग्रीवके साथ यह गंगाके किनारे स्त्रियोंके साथ क्रीड़ा कर रहा था। इन्हें ऐसी दशामें देख नारदजीने शाप दिया जिससे ये दोनों वृंदावनमें यमलार्जुन हुए, और श्रीकृष्णके स्पर्शसे शापमुक्त हुए थे (भाग० १०.९.२२,२३; १० (पूरा); (ब्रह्मां० ३.८.४६; वायु० ७०.४१)। ऊपर महाभारतके अनुसार रावणको नलकूवरके शापकी जो वात कही गयी है वह अन्यत्र यों कही गयी है—एक वार जव रावण दिग्विजय करके लौट रहा था तव उसने नलकूवरके घर जाती हुई रंभा अप्सराको पकड़ लिया और अपने घर ले गया। उसी समय रंभाने रावणको शाप दिया था कि यदि तुम किसी स्त्रीके साथ वलात्कार करोगे तो तुरंत मर जाओगे। कहते हैं इसी भयसे रावणने सीताके साथ वलात्कार नहीं किया था—(रामायण)।

नलसेतु—पु० [सं०] विश्वकर्माके सुत नल द्वारा वनाया गया रामेश्वरके निकट समुद्रपर वंधा पुल—दे० नल (३)।

नलिका—स्त्री० [सं०] प्राचीन कालका एक अस्त्र जो आजकलकी वंदूककी तरह होता था और इससे लोहेके छर्रे या छोटे-छोटे तीर छोड़े जाते थे। इसका उल्लेख वेदोंमें भी पाया जाता है जिसे नाल तथा नालक भी कहते थे (रामायण; महाभारत तथा शुक्रनीति)।

नलिनी—स्त्री० [सं०] (१) शाकद्वीपकी सात मुख्य नदियोंमेंसे एक नदी (ब्रह्मां० २.१९.९६; विष्णु० २.४.६५)। (२) पुराणानुसार गंगाजीके १५ पुण्य नामोंमेंसे एक नाम (मत्स्य० १०२.६)। शंकरजी द्वारा अपने जटाजूटसे छोड़ी गयी गंगाजीकी सात धाराएँ हुई। उनमें तीन पूर्वकी ओर, तीन पश्चिमकी ओर और एक भगीरथके रथके पीछे दक्षिणकी ओर चली। उनमेंसे पूर्वकी ओर वहनेवाली तीन धाराओंमेंसे एक धारा जो तोमर, हंसमार्ग, हैहय, कर्णप्रावरण, अश्वमुख, सिकता पर्वत, विद्याधर, नाग" मंडलसे होकर समुद्रमें गिरती है (ब्रह्मां० २.१८.४०, ५८ ६१; वायु० ४७.३८—५६; मत्स्य० १२१.४०)। (३) पुरंजनका पुरीमें जानेका पूर्वी प्रवेश द्वार (नाकके नथुने) जिससे गंधका अनुभव करते हैं (भाग० ४.२५.४८; २९.११)। (४) अजमीढ़की एक पत्नी तथा नीलकी माता (भाग० ९.२१.३०; विष्णु० ४.१९.५६)।

नलिनीनंदन—पु० [सं०] धनकुवेरके एक उपवनका नाम—दे० कुवेर।

नल्व—पु० [सं०] एक माप। ४०० हाथका एक नल्व होता है 'नल्वः किष्कुचतुःशतम्' ऐसा कोश है। मयका रथ ३ नल्व (१२०० हाथ) चौड़ा था (मत्स्य० १७३.२; ब्रह्मां० ४.२.१२५; ३६.४९)। हिरण्यकशिपुकी सभामें उसका आसन १० नल्व = ११८ मील (मत्स्य० १६१.७१), ३०० धनुष विस्तृत था (वायु० ८३.४९; १०१.१२५)।

नव—पु० [सं०] (१) स्वारोचिष मनुका एक पुत्र (ब्रह्मां० २.३६.१९)। (२) राजा उशीनर तथा नवाके पुत्रका नाम जो नवराष्ट्रका मुखिया, सरदार था (ब्रह्मां० ३.७४.१९, २१; मत्स्य० ४८.१८, २१; वायु० ९९.२०, २२, विष्णु०

४.१८.९) ।

नवकुमारी—स्त्री० [सं०] नवरात्रमें पूजने योग्य नौ कुमारियाँ जिनमें कुमारिका, त्रिमूर्त्ति, कल्याणी, रोहिणी, काली, चंडिका, शांभवी, दुर्गा और सुभद्रा देवियोंकी कल्पना की जाती है—दे० दुर्गापूजा-श्यामापूजापद्धति ।

नवग्रहमख—पु० [सं०] दे० अयुत होम : नवग्रह ये हैं—सूर्य, चंद्रमा, अंगारक, बुध, शनैश्चर, शुक्र, गुरु, राहु और केतु । ईश्वर, उमा, स्कंद, हरि, ब्रह्मा, इन्द्र, यम, काल और चित्रगुप्त इनके अधिदेवता हैं; अग्नि, जल, पृथ्वी, विष्णु, इन्द्र, ऐंद्रि, प्रजापति, नागगण और ब्रह्मा प्रत्यधिदेवता हैं (मत्स्य० ९३.६, १०-१६) ।

नवचंद्र—पु० [सं०] बालीके सामन्त हजारों महाबली प्रधान वन्दरोंमेंसे एक प्रधान वंदरका नाम (ब्रह्मां० ३.७.२४४) ।

नवतंतु—पु० [सं०] विश्वामित्रके ब्रह्मवादी पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (महाभा० अनु० ४.५८) ।

नवताल—पु० [सं०] विष्णु और अन्य देवी-देवता आदिकी मूर्त्तियोंकी नाप (मत्स्य० २५८.१६, ७५) । सब युगोंमें अपनी अँगुलिके परिमाणसे मनुष्य अष्टताल कहा गया है। जो मनुष्य पैरसे लेकर मस्तकतक नवताल परिमाण हो और आजानु बाहु हो, ऐसी मनुष्यमूर्त्तिकी देवता भी पूजा करते हैं (वायु० ५९.९) ।

नवदुर्गा—स्त्री० [सं०] शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चंद्रघंटा, कूष्मांडा, स्कंदमाता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी और सिद्धिदात्री—ये ही नवदुर्गा हैं । पुराणानुसार नवदुर्गामें (नवरात्रमें) इनकी पूजा क्रमशः होती है (ब्रह्मां० तथा नवरात्रप्रदीपः) ।

नवदेवी—स्त्री० [सं०] दे० नवकुमारी ।

नवदेशिक—पु० [सं०] नूतन उपदेशक राजर्षि ययातिको शुक्राचार्यके शापसे जब बुढ़ापेने घेरा तो उन्होंने अपने ज्येष्ठ पुत्र यदुसे अपना बुढ़ापा लेने और उसका यौवन देनेको कहा, किन्तु यदुने बुढ़ापेके बहुतसे दोष दिखाते हुए ययातिका कथन नहीं माना और उसका बुढ़ापा लेकर अपना यौवन देना अस्वीकार कर दिया । इसपर क्रोधमें आकर ययातिने यदुको नवदेशिक कहा (वायु० ९३.३७) ।

नवधाभक्ति—स्त्री० [सं०] श्रवण, कीर्त्तन, स्मरण, पादसेवन, अर्चन, वंदन, दास्य, सख्य और आत्मनिवेदन—यही नौ प्रकारकी भक्ति कही गयी है—'श्रवणं कीर्तनं विष्णोः स्मरणं पादसेवनम् । अर्चनं वन्दनं दास्यं सख्यमात्मनिवेदनम् ॥ इति पुंसार्पिता विष्णौ भक्तिश्चेन्नवलक्षणा (भाग० ७.५.२३) ।

नवनिधि—स्त्री० [सं०] महापद्म, पद्म, शंख, मकर, कच्छप, मुकुन्द, कुन्द, नील तथा खर्व ये नौ निधियाँ हैं—'महापद्मस्तथा पद्मः शङ्खो मकरकच्छपौ। मुकुन्दकुन्द नीलाश्च खर्वश्च निधयो नव ॥" (स्कंद० वै० अ० मा० ७.५१) ।

नवनीतगणप—पु० [सं०] पुराणानुसार एक प्रकारके गणेश (हिं० श० सा०) ।

नवनीतधेनु—स्त्री० [सं०] दानके लिए एक प्रकारकी गौ जिसकी कल्पना मक्खनके ढेरमें की जाती है । इससे शिव सायुज्य प्राप्त होता है और विष्णुलोकमें वास होता है (वाराहपु०) । विशोक-द्वादशीव्रतमें इस दानका बड़ा महत्त्व है (मत्स्य० ८२.२१) ।

नवपत्रिका—पु० [सं०] केला, अनार, हल्दी, मानकच्चू, कच्चू, धान, अशोक, बेल और जयंतीके पत्ते पवित्र समझे जाते हैं और नवरात्र-पूजनमें काम आते हैं (नवरात्रप्रदीप-नंदपंडितकृत) ।

नवब्रह्मा—पु० [सं०] पुराणानुसार भृगु, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु, अंगिरा, मरीचि, दक्ष, अत्रि और वशिष्ठ ये नवब्रह्मा (ब्रह्मरूप) हैं (वायु० ९-६८-६९) ।

नवरत्न—पु० [सं०] पुराणानुसार ये नवरत्न अलग-अलग एक-एक ग्रहकी शांतिके लिए उपकारी हैं यथा-'सूर्यके लिए लहसुनिया, चन्द्रमाके लिए नीलम, मंगलके लिए माणिक, बुधके लिए पुखराज, बृहस्पतिके लिए मोती, शुक्रके लिए हीरा, शनिके लिए नीलम, राहुके लिए गोमेद और केतुके लिए पन्ना । अन्य मतसे रत्नोंके नाम भिन्न हैं (नवग्रहविधानपद्धति) । सूर्यके लिए माणिक, सोमके लिए मोती, मंगलके लिए मूँगा, बुधके लिए पन्ना, बृहस्पतिके लिए पोखराज, शुक्रके लिए हीरा, शनिके लिए नीलम, राहुके लिए गोमेद और केतुके लिए लहसुनिया भी कहा गया है (रत्नप्रदीपिका, लक्ष्मीनारायणत्रिपाठी कृत) ।

नवरथ—पु० [सं०] भीमरथ (भीमरथ-सुत रथवर=ब्रह्मां०, वायु० तथा विष्णु०) का पुत्र तथा दशरथ (दृढ़रथ=मत्स्य०) का पिता (भाग० ९.२४.४; ब्रह्मां० ३.७०.४३; मत्स्य० ४४.४१-४२; वायु० ९५.४२; विष्णु० ४.१२.४१) ।

नवरात्र—पु० [सं०] चैत्र शुक्लपक्ष तथा आश्विन शुक्लके पहले नौ-नौ दिन जिनमें हिन्दू लोग नवदुर्गाका व्रत, घटस्थापन तथा नवदुर्गा पूजनादि करते हैं (देवी भाग० तथा रुद्रयामल) । नवरात्रके पहले दिन घटस्थापन कर देवीका आवाहन करे फिर पूजन बराबर नौ दिनोंतक होता रहता है और नवें दिन भगवतीका विसर्जन होता है । अष्टमी या नवमीको 'कुमारीपूजन' तथा उन्हें भोजन कराते हैं जो २ से १० वर्षके भीतरकी अवस्थावाली होती हैं—'अत ऊर्ध्वन्तु याः कन्याः सर्वकार्येषु वर्जिताः'—(स्कंद०) । इनके कल्पित नाम भी हैं—दे० (नवकुमारी) । यदि किसी कारणवश यह व्रत तथा पूजन स्वयम् न कर सकें तो प्रतिनिधि—पति-पत्नी, ज्येष्ठ पुत्र, सहोदर या ब्राह्मण द्वारा सम्पन्न करें—दे० 'स्वयं वाप्यन्यतो वापि पूजयेत् पूजयीत वा'—(पूजापङ्कजभास्कर) ।

नवराष्ट्र—पु० [सं०] (१) राजर्षि उशीनर और नवाके पुत्र 'नव'के राज्य तथा राजधानी दोनोंका नाम 'नवराष्ट्र' था (ब्रह्मां० ३.७४.२१; मत्स्य० ४८.२१; वायु० ९९.२२) । (२) एक प्राचीन देशका नाम जिसे सहदेवने जीता था (हिं० श० सा०) । (३) एक देश जिसे अर्जुनने अज्ञातवासके लिए चुना था (महाभा० विराट १.१३) ।

नववर्ष—पु० [सं०] जम्बूद्वीपका नाम जिसमें ९ वर्ष (देश)—(१) भारतवर्ष, (२) किंपुरुषवर्ष, (३) हरिवर्ष, (४) इलावृतवर्ष, (५) रम्यकवर्ष, (६) हिरण्मयवर्ष, (७) कुरुवर्ष, (८) भद्राश्ववर्ष और (९) केतुमालवर्ष हैं (वायु० ३४.९) ।

नववास्तु–पु० [सं०] एक वेदोक्त राजर्षि तथा असुरका नाम (ऋग्वेद १.४६.१८; ६.२०.११; १०.४९.६ का सायण भा०)।

नववीथि(थी)गण–पु० [सं०] दक्षपुत्री जामा (यामा) और धर्मके नौ वीथीरूप पुत्र जो तीन पंथ—दक्षिण, उत्तर और मध्यमपर अवलम्बित हैं, जो क्रमशः वैश्वानर, ऐरावत और जारद्गव कहलाते हैं। नौ वीथियाँ यों हैं—अश्विनी, भरणी, कृत्तिका—(१) नागवीथी है; रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा—(२) गजवीथी है—पुनर्वसु, पुष्य, अश्लेषा—(३) ऐरावतवीथी है। यह वीथीत्रय उत्तर मार्ग कहा जाता है। मघा, पूर्वाफल्गुनी, उत्तराफल्गुनी—(४) ऋषभ (वृषभ) वीथी है; हस्त, चित्रा, स्वाती—(५) गोवीथी है; विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा—(६) जारद्गवी वीथी है। यह वीथीत्रय मध्यम मार्ग कहा जाता है। मूल, पूर्वाषाढा, उत्तराषाढा—(७) अजवीथी है; श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषक्—(८) मार्गीवीथी है; पूर्वाभाद्रपदा, उत्तराभाद्रपदा और रेवती—(९) वैश्वानरवीथी है। यह वीथीत्रय उत्तर मार्ग कहा जाता है। यही नववीथीगण है (ब्रह्मां० ३.३.३३-५१)।

नवशक्ति–स्त्री [सं०] पुराणानुसार 'प्रभा, माया, जया, सूक्ष्मा, विशुद्धा, नन्दिनी, सुप्रभा, विजया और सर्वसिद्धिदा'—ये ही नव शक्तियाँ हैं (हि० श० सा०)।

नवा–स्त्री० [सं०] उशीनरकी पाँच रानियोंमेंसे एक तथा नवकी माता (ब्रह्मां० ३.७४.१८-१९; मत्स्य० ४८.१६,१८; वायु० ९९.१९-२०)।

नवाक्ष–पु० [सं०] दस करोड़ हाथियोंका बल रखनेवाले प्रधान वानर-नायकोंमेंसे एक प्रधान वानर-नायकका नाम (ब्रह्मां० ३.७.२४०)।

नष्टचंद्र–पु० [सं०] भादोंके कृष्ण तथा शुक्ल दोनों पक्षोंकी चतुर्थीको दिखायी पड़नेवाला चन्द्रमा जिसका दर्शन पुराणानुसार निषिद्ध है। कुछ केवल भाद्रपद शुक्ला चतुर्थीको ही निषिद्ध मानते हैं –दे० 'चौथचन्दा'।

नष्टचन्द्रकला–स्त्री० [सं०] वह अमावास्या जिसमें चन्द्रमाकी कला नष्ट हो जाती है—कुहू। अमावास्याके दो नाम हैं—सिनीवाली और कुहू। जिसमें चन्द्रमाकी कला दिखायी देती है वह सिनीवाली है, जिसमें वह नष्ट हो जाती है उसे कुहू कहते हैं—'सा दृष्टेन्दुः सिनीवाली सा नष्टेन्दुकला कुहूः'—अमर।

नहुष–पु० [सं०] (१) अयोध्याके इक्ष्वाकुवंशी एक प्रसिद्ध राजा जो अम्बरीष (ब्रह्मपु० के अनुसार स्वर्भानुकुमारी प्रभाके गर्भसे उत्पन्न आयु) के पुत्र और आज्यप पितरोंकी मानसी कन्या विरजाके गर्भसे उत्पन्न यति, ययाति, संयाति, आयाति तथा पार्श्वके पिता थे। महाभा० आदि० ७५.२५ के अनुसार इन्हें चन्द्रवंशी राजा आयुके ५ पुत्रोंमें पहला पुत्र माना जाता है जो प्रभाके गर्भसे उत्पन्न हुए थे। पुराणानुसार यह एक प्रतापी राजा थे। आज्यप पितरोंकी मानस-पुत्री विरजा इन्हें ब्याही थी जिससे यति, ययाति, संयाति, आयाति, वियाति और कृति ये इनके ६ पुत्र हुए थे (भाग०)। मत्स्य० के अनुसार यति, ययाति, संयाति, उद्भव, पाचि, सर्याति और मेघजाति इनके ये सात पुत्र हुए थे। महाभा० आदि० ७५.३०-३१ के अनुसार इनके यति, ययाति, संयाति, आयाति, अयति और ध्रुव ये पाँच पुत्र थे। ब्रह्माण्डके अनुसार यति, ययाति, संयाति, आयाति, वियति और कृति ये छह इनके पुत्र थे।

वृत्रासुरको मारनेसे इन्द्रको ब्रह्महत्याका पाप लगा था, अतः इन्द्रको एक हजार वर्षोंतक कमलनालमें छिपकर रहना पड़ा था। उस समय इन्द्रकी अनुपस्थितिमें बृहस्पतिने नहुषको ही कुछ दिनोंके लिए इन्द्रपद दिया था। राजमदमें चूर हो यह इन्द्राणीको अपनी पत्नी बनाना चाहता था। इससे पिंड छुड़ानेके हेतु इन्द्राणीने इसे सप्तर्षियोंके कंधेपर पालकीमें बैठ कर बुलाया। इसने ऐसा ही किया, पर घबराहटमें ऋषियोंसे बोला—'सर्प, सर्प' अर्थात् जल्दी चलो। इससे रुष्ट हो अगस्त्य ऋषिके शापसे यह 'सर्प' ही हो गया तथा इन्द्रपदसे भी गिर गया (भाग० ९.१७.१; १८.१-२; ६.१३.१६; १०.७३.२०; ब्रह्मां० २.२७.२४; ३.६.२४; १०.९५; ६७.२; ६८.११; मत्स्य० १५.२३; २४.३४, ४९; वायु० ६८.२४; ७३.४६; ९२.२; ९३.१२-३; विष्णु० ४.८.३; ९.२८; १०.१)। सर्पभेषधारी नहुषने भीमको पकड़ा था और अंतमें युधिष्ठिरके दर्शनसे शाप-मुक्त होकर स्वर्ग चला गया था (महाभा० वन० १७८.२८; १८०.६ से १८१.४४ तक)। (२) और्वशेय उर्वशी-पुत्र अर्थात् आयुका एक पुत्र (ब्रह्मां० १.२.२४; वायु० २.२४)। (३) पुराणानुसार एक कुशिकवंशी ब्राह्मण राजा। (४) दक्ष-पुत्री तथा कश्यपसे उत्पन्न हजार महाबली काद्रवेय नागोंमेंसे एक प्रमुख काद्रवेय नाग (ब्रह्मां० ३.७.३७; वायु० ६९.७४; महाभा० आदि० ३५.९)। (५) सात गणोंमें विभक्त ४९ मरुतोंमेंसे एक मरुतका नाम (हरिवंश)। (६) वैवस्वत मनुके ९ पुत्रोंमेंसे एक (वायु० ८५.४)। (७) एक ऋषि जो मनुके पुत्र माने जाते हैं। (८) एक राजर्षिका नाम (ऋग्वेद८.४६.२७)। (९) चन्द्रवंशी यदुके एक पुत्रका नाम (विष्णु० ४.६.४; ११.५)।

नांदीमुख–पु० [सं०] शुभ अवसरोंपर होनेवाला एक आभ्युदयिक श्राद्ध जो पुत्र-जन्म, विवाहादि तथा गृहप्रवेशादिके अवसरपर किया जाता है (निर्णयसिंधु) और यह मध्याह्नमें न होकर पूर्वाह्नमें होता है (विष्णु० ३.१३.६)।

नांदीशब्द–पु० [सं०] सारे शुभकार्य इस कृत्यके पश्चात् ही होते हैं (मत्स्य० १७.६९)।

नाक–पु० [सं०] कलिके चार पुत्रोंमेंसे एक शरीरविहीन पुत्र जिसका विवाह मनुष्यभक्षी (वायु० ८४.११) शकुनिसे हुआ था (ब्रह्मां० ३.५९.१०; वायु० ८४.१०, १३)।

नाकनाथ–पु० [सं०] स्वर्गके अधिपति इन्द्रका एक नाम—दे० इन्द्र।

नाकपृष्ठ–पु० [सं०] स्वर्गका एक नाम (वायु० ३४.९४)।

नाकुलि–पु० [सं०] भार्गव कुलका एक गोत्रकार ऋषि (मत्स्य० १९५.२५)।

नाकुली–स्त्री० [सं०] निषध पर्वतपर स्थित विष्णुपद सरोवरसे निकली दो नदियोंमेंसे एक नदी (ब्रह्मां० २.१८.६८)।

नाग–पु० [सं०] (१) महाभद्र झीलसे उत्तरके कई पहाड़ों-

मेंसे एक पहाड़ (भाग० ५.१६.२६; वायु० ३६.३१)। यह मेरु पर्वतके उत्तर है (विष्णु० २.२.३०)। (२) शिवका यज्ञोपवीत। शिवजी नागयज्ञोपवीत कहे जाते हैं (ब्रह्मां० ३.३२.१९; वायु० २४.१४२)। संगीतमें सात स्वर, तीन ग्राम, इक्कीस मूर्च्छना और उन्चास तान होते हैं। उक्त २१ मूर्च्छनाओंमेंसे एक मूर्च्छनाका आधार।

नागकूट–पु० [सं०] यह गयामें फल्गुतीर्थ तथा गयाशिरके अन्तर्गत है। यहाँ किया गया श्राद्ध अक्षय होता है (वायु० १११.२२, ४२)।

नागखंड–पु० [सं०] इसे नागद्वीप भी कहते हैं। पुराणानुसार भारतवर्षके नौ खंडोंमेंसे एक (पाँचवें) का नाम (विष्णु० २.३.७)।

नागगण–पु० [सं०] (१) दक्षकी पुत्री कद्रूसे उत्पन्न कश्यप ऋषिकी संतान जिनकी कमरसे ऊपरका भाग मनुष्यका-सा है और नीचेका सर्पाकार। इनका निवास-स्थान पाताल लिखा है और राजधानी भोगवती। इनमें सर्वप्रधान नाग 'अनंत' थे (भाग० १.११.११; २.६.१३; ३.२०.४८; ११.१६.१०; २४.१३; मत्स्य० २६१.४७-५०)। वाराह पुराणानुसार सृष्टिके आरम्भमें कश्यप उत्पन्न हुए जिनका विवाह दक्ष प्रजापतिकी १३ पुत्रियोंसे हुआ। उनमेंसे अन्यतम कद्रूसे अनंत, वासुकि, कंबल, कर्कोटक, पद्म, महापद्म, शंख, कुलिक और अपराजित नामके इनके पुत्र हुए जो सब नाग कहलाये। इनके लिए ब्रह्माने पाताल, वितल और सुतल ये तीन लोक बताये। पुराणानुसार नाग अनेक हैं, पर प्रसिद्ध केवल आठ ही हैं और इनका कुल अष्टकुल कहलाता है। माहिष्मतीमें कर्कोटककी सभा प्रसिद्ध है। पृथ्वीरूपी गौको दुहनेके समय तक्षक बछड़ा बना था। इन लोगोंने शिव-उमाका विवाहोत्सव मनाया था (मत्स्य० १५४.४६२)। प्रासाद-निर्माणमें इनका पूजन होता है (मत्स्य० २६६.४६; २६८.१७; २७३.७१; वायु० ३०.३११; ६९.६८; ९४.२६)। (२) एक राजवंशका नाम। इस वंशके नौ राजाओंने चंपावती (पद्मावती = विष्णु०) से शासन किया था। सातने मथुरासे 'दोआब'पर ३८३ वर्षोंतक राज्य किया। साकेत और मगध इन्हींके अधीन थे (ब्रह्मां० २.७४.१९४-५, २६७; वायु० ९९.४५३; विष्णु० ४.२४.६३)। (३) हाथी जिनकी सृष्टि देवासुर-संग्रामके लिए हुई थी; द्विरद, हस्ती, करी, वारण, दंती, गज, कुंजर, मातंग, द्विप, सामज आदि इनके अन्य नाम हैं। अग्निके शापसे इनकी जिह्वा उलटी हो गयी (ब्रह्मां० ३.७.३; ३२४-५९)। (४) वे हाथी जो सामसे उत्पन्न हुए (ब्रह्मां० ३.७.३२४-५)।

नागगिरि–पु० [सं०] भारतवर्षके हजारों पर्वतोंमेंसे एक पर्वत (ब्रह्मां० २.१६.२१)।

नागतीर्थ–पु० [सं०] गोदावरी तटपर स्थित एक तीर्थ जहाँ प्रतिष्ठानपुरके राजा शूरसेनके नागाकृति पुत्रने मनुष्य-देह प्राप्त किया था। पूर्व जन्ममें यह शेषनागके पुत्र थे जो शंकरके शापसे मनुष्य योनिमें सर्प रूपसे उत्पन्न हुए थे। यह बड़े ज्ञानी थे और मनुष्योंकी तरह बोलते थे। इनका विवाह पूर्व देशके राजा विजयकी पुत्री भोगवतीसे हुआ था, जो पूर्व जन्ममें भी नागराजकी पत्नी थी। इन दोनोंने गोदावरी तटपर शिवकी स्तुति की और भोगवतीके प्रसादसे शापमुक्त हुए थे (ब्रह्म०, नागतीर्थ-महिमा)। (२) पितरोंके श्राद्धके लिए अति प्रशस्त एक तीर्थ (मत्स्य० २२.३३)। (३) कुरुक्षेत्रकी सीमाके अन्तर्गत एक तीर्थ जिसमें स्नानादि करनेसे मनुष्यको अग्निष्टोमका फल प्राप्त होता है और नागलोकमें गति होती है (महाभा० वन० ८३.१४)। (४) कनखलके निकट नागराज कपिलके नामसे विख्यात एक तीर्थ, जहाँ स्नान करनेसे एक हजार कपिला गउओंके दानका फल मिलता है (महाभा० वन० ८३.३४)।

नागद्वीप–पु० [सं०] पुराणानुसार जंबूद्वीपके नौ खंडोंमेंसे एक (पाँचवाँ) खंड (ब्रह्मां० २.१६.९; मत्स्य० ११४.८; वायु० ४५.७९; विष्णु० २.३.७)।

नागपंचमी–स्त्री० [सं०] श्रावण शुक्ला पंचमी। यह लोकाचार या देशभेदवश कहीं कृष्ण पक्षमें भी मानी जाती है। यह पंचमी परविद्धा लेनी चाहिये। इस तिथिको नागोंकी पूजा होती है। वराहपुराणानुसार इसी तिथिको ब्रह्माने इन्हें शाप और वर दिया था। इस व्रतसे सर्प-भय नहीं रहता और 'ॐ कुरुकुल्ये हुं फट् स्वाहा' मंत्रके परिमित जपसे सर्प विष दूर होता है (व्रतपरिचय)।

मेकेंजी साहबके मतानुसार अमेरिकामें भी नागके वंशज थे, जैसे कि भारतवर्षमें पाये जाते हैं। श्रीमती नुट्टलके अनुसार भी नागोंकी पूजा अमेरिकामें होती थी। मेक्सिकोके सबसे बड़े मंदिरकी दीवालोंपर सर्पोंकी चित्रकारी मिली है। उनका कहना है—वहाँ नाग देवताका मंदिर भी मिला है।

नागपदी–स्त्री० [सं०] भद्राश्व देशकी कई श्रेष्ठ नदियोंमेंसे एक नदीका नाम (वायु० ४३.२८)।

नागपाश–पु० [सं०] 'वरुणके एक अस्त्रका नाम जो शत्रुओंको बाँध लेनेका एक प्रकारका फंदा है। वाल्मीकि रामायणके अनुसार मेघनादने इंद्रसे इस अस्त्रको पाया था। पुराणोंनें भी इस अस्त्रका उल्लेख मिलता है। तंत्रानुसार ढाई फेरेके बंधनको नागपाश कहते हैं। कामेश्वरके विवाहमें उपहारस्वरूप वरुणने उन्हें यह अस्त्र दिया था (ब्रह्मां० ४.१५.२०)।

नागपुर–पु० [सं०] (१) एक स्थान विशेष। जब शंकरकी जटासे निकल कर तथा पहाड़ादि लाँघ कर गंगाजी आयीं तब स्वलीन नामक एक दानव पर्वतके रूपमें मार्ग रोक कर खड़ा हो गया। इसपर राजा भगीरथने कौशिकको प्रसन्न करके एक नागवाहन प्राप्त किया जिसने उस दैत्यको जिस स्थानपर विदीर्ण किया उस स्थानका ही नाम नागपुर पड़ा (अग्निपु०)। (२) पाताल स्थित भोगवती नामकी नगरीका नाम। (३) नैमिषारण्यमें गोमती तटपर स्थित एक नगर जो पद्मनाभ नागका निवासस्थान था (महाभा० शान्ति० ३५५.३)।

नागबल–पु० [सं०] दस हजार हाथियोंका बल होनेके कारण भीमसेन (पांडव) का एक नाम। दुर्योधनने भीमको विष देकर जलमें फेंकवा दिया था और वह बहते-बहते नागलोकमें पहुँचे जहाँ नागोंके डसनेसे स्थावर विषका प्रभाव उतर गया और वह उठ बैठे। वहाँ कुंतीके पिताके मामाने भीमको पहचाना और वासुकिकी कृपासे एक रस

पान करनेको मिला जिसके पीनेसे भीमको हजारों हाथियोंका वल प्राप्त हो गया था (महाभा० आदि० १२७.४५-७१) ।

नागभगिनी—स्त्री० [सं०] वासुकि नागकी वहिन जिसका नाम जरत्कारु (मनसा) था । यह जरत्कारु ऋपिकी पत्नी तथा आस्तीककी माता थी (दे० मनसा, जरत्कारु तथा आस्तीक; महाभा० आदि० १५.६) ।

नागमाता—स्त्री० [सं०] (१) नागोंकी माता—दक्ष प्रजापतिकी पुत्री तथा कश्यप ऋपिकी पत्नी 'कद्रू' नागोंकी माता कही गयी है । (२) रामायणानुसार जव श्री हनुमानजी समुद्र पार कर रहे थे उस समय देवताओंने उनके वलकी जाँच करनेकी इच्छासे नागमाता 'सुरसा'को भेजा था । (वाल्मी० सुन्दर० १.१४५-१७१) । (३) मनसा देवीका नाम जो वासुकि नागकी वहिन तथा जरत्कारु ऋषिकी पत्नी थी (ब्रह्मवैवर्त्तपु०) ।

नागराट्तीर्थ—पु० [सं०] श्राद्धके लिए अति उपयुक्त एक तीर्थ जहाँ पवित्र ह्रदमें स्थित नागराज धर्मात्माओंके पिण्डको ग्रहण करता है, अधर्मियोंके पिण्डको ग्रहण नहीं करता। उक्त तीर्थको पुण्यात्मा ही देख पाते हैं, अपुण्यात्मा नहीं देख सकते । वहाँ किया गया श्राद्ध अक्षय होता है (वायु० ७७.८९) ।

नागरी—स्त्री० [सं०] १६ स्वरशक्तियोंमेंसे एक स्वरशक्तिका नाम (ब्रह्मां० ४.४४.५८) ।

नागलोक—पु० [सं०] पाताल जहाँ नागोंका निवासस्थान (विष्णु० ४.३.७) है । नर्मदा तटपर स्थित नागेश्वर तपोवन तीर्थमें स्नान करनेवाले नागलोक प्राप्त करते हैं (मत्स्य० १९१.८४) ।

नागवन—पु० [सं०] पूर्वमें विन्ध्याचल तथा गंगाके वीचमें स्थित अञ्जन नामक नागका (हाथीका) वन (वायु० ६९.२३८) ।

नागव्रत—न० पु० [सं०] यह कार्त्तिक शु० ४ के मध्याह्नमें होता है । शेप सहित शंखपालादि नागोंका पूजन करे तो विषजन्य वीमारियोंका तथा सर्पदंशका भी भय नहीं होता (कूर्मपु०) ।

नागवीथी—स्त्री० [सं०] (१) कश्यप ऋपिकी एक पुत्रीका नाम (ब्रह्मवैवर्त्तपु०)। (२) यामि और धर्मकी पुत्री (मत्स्य० ५.१८; विष्णु० १.१५.१०७) ।

नागशत—पु० [सं०] एक पर्वतका नाम जहाँ तपस्याके लिए जाते समय राजा पाण्डु अपनी दोनों पत्नियोंके साथ पधारे थे (महाभा० आदि० ११८.४७) ।

नागशैल—पु० [सं०] एक पर्वत, जिसके और कपिञ्जलशैलके मध्य दो सौ योजन लम्वा और सौ योजन चौड़ा विविध फल-फूलोंके वृक्षोंसे सुशोभित मैदान है एवं विविध शैलों एवं जिसपर वहती हुई गंगाकी एक धारा पश्चिमसागरमें गिरती है (वायु० ३८.६६-७०; ४२.६७) ।

नागसंभव—पु० [सं०] एक प्रकारका मोती विशेष जो वासुकि, तक्षक आदि नागोंके मस्तकमें होता है ।

नागसाक्षक—पु० [सं०] एक नाग, जो शुचि (आपाढ़) मासमें सूर्यके रथपर अन्य सौरगणके साथ अधिष्ठित रहता है । मूल पुस्तकमें 'नागस्तक्षकसंज्ञितः' ऐसा पाठ शुद्ध प्रतीत होता है न कि 'नागसाक्षतसंज्ञितः' (ब्रह्मां० २.२३.७) ।

नागसाह्वय—पु० [सं०] हस्तिनापुरका नागसाह्वय या गजसाह्वय नाम था । हस्तिनापुरको जव गंगा नदी वहा ले गयी तव अधिसोमकृष्णके पुत्र निवक्षु (निर्वक्त्र=वायु०) के समयमें कौशाम्बी राजधानी वनी (मत्स्य० ४९.४२; ५०.७८; वायु० ९९.२७१; विष्णु० ७.३५.८-१९) ।

नागाधिप—पु० [सं०] सुपक्ष नामक श्रेष्ठ पर्वतपर वैवस्वत, सोम और वायुके साथ इनका (नागाधिप वासुकिका) मंदिर है (वायु० ३९.६३) ।

नागेन्द्रमोक्ष—पु० [सं०] भाग० ८. अ० २, ३ में दिये गजेन्द्रमोक्षकी कथाका श्रवण करनेसे बुरे स्वप्नोंका अनिष्टकारक प्रभाव नष्ट होता है (मत्स्य० २४२.१७) ।

नागेश्वर—पु० [सं०] नर्मदा तटपर गर्गेश्वरके निकटका एक तपोवन तथा तीर्थ जहाँ स्नान करनेसे नागलोक प्राप्त होता है (मत्स्य० १९१.८३-८४) ।

नाग्नजिती—स्त्री० [सं०] कौशल देशके राजा नग्नजित्की एक पुत्री (सत्या) जिसके स्वयंवरमें सात विना नथुने छिदे साँड़ोंको परास्त कर श्रीकृष्णने इससे विवाह किया था। इसके दो (भाग० के अनुसार दस) पुत्र हुए जिनमें (भाग० = वीर, चन्द्र, अश्वसेन, चित्रगु, वेगवान्, वृष, आम, शंकु, वसु और कुंति । मत्स्य० = मित्रवाहु, सुनीथ । विष्णु० = भद्रविन्द आदि) भद्रविंद एक था (भाग० ३.३.४; १०.५८.३२; ६१.१३; मत्स्य० ४७.१३.१९; विष्णु० ५.३२.३) ।

नाट्यवेद—पु० [सं०] नाट्य-शास्त्र जिसमें वररुचि गंधर्व वड़ा विज्ञ था (मत्स्य० १०.२५) ।

नाडायन—पु० [सं०] आंगिरस कुलका एक प्रवरप्रवर्तक ऋपि (मत्स्य० १९६.३१) ।

नाडायनीय—पु० [सं०] लौगाक्षिका एक शिष्य (ब्रह्मां० २.३५.४१) ।

नाड़ीजंघ—पु० [सं०] (१) एक मुनिका नाम (हि० श० सा०) । (२) एक वगुला जो कश्यप ऋषिका पुत्र था। इसका दूसरा नाम राजधर्मा था । देवकन्याके गर्भसे जन्म लेनेके कारण इसकी देहकांति देवताओंके शरीरकी कांति-सी दिखायी देती थी। यह वड़ा विद्वान् और तेजस्वी था। कहते हैं इसपर ब्रह्माजीकी वड़ी कृपा थी (महाभा० शांति० १६९.१९, २०) । (३) इन्द्रद्युम्न सरोवरमें रहनेवाला वगुला, जो चिरंजीवी था (महाभा० वन० १९९.७) ।

नाड़ीदेह—पु० [सं०] शिवके एक द्वारपालका नाम (शिवपु०) ।

नाथ—पु० [सं०] चौदह वैकुण्ठ देवोंमेंसे एक वैकुण्ठ देवता, जो सवकी रक्षा करता है, का नाम (ब्रह्मां० २.३६.५७; वायु० ६४.१९) ।

नाथद्वारा—पु० [सं०] वल्लभसम्प्रदायके वैष्णवोंका एक प्रसिद्ध तीर्थस्थान जो उदयपुर राजमें है और जहाँ श्रीनाथदेवजीकी मूर्त्ति स्थापित है। औरंगजेव द्वारा मथुराकी देवमूर्त्तियोंके तोड़े जानेका निश्चय जान सन् १६७१ में उदयपुरके महाराणा राजसिंह श्रीनाथजीकी मूर्त्ति लेकर उदयपुरकी ओर चले । जव रथ इस स्थानपर पहुँचा तव उसका पहिया कीचड़में फँस गया। लोगोंने कहा कि

श्रीनाथजीकी इच्छा यहींपर रहने की है, इससे महाराणाने एक भारी मंदिर बनवा कर मूर्त्ति स्थापित कर दी।

नाद–पु०[सं०] (१) चाक्षुप मन्वंतरके सप्तर्षियोंमेंसे एक ऋषिका नाम (मत्स्य० ९.२२)। (२) स्वारोचिप मन्वंतरके १४ अमिताभ देवगणका एक अमिताभ देव (ब्रह्मां० २.३६.५३)।

नादात्मिका–स्त्री० [सं०] कालिका आदि बारह शक्ति-देवियोंमेंसे एक शक्ति देवी (ब्रह्मां० ४.४४.८७)।

नादिनी–स्त्री० [सं०] डंकारी, टंकारिणी आदि दस शक्ति-देवियोंमेंसे एक शक्तिदेवी (ब्रह्मां० ४.४४.८९)।

नान्यदृक्–पु० [सं०] ४९ मरुतोंके सात गणोंमेंसे छठे गण-का एक मरुत् (ब्रह्मां० ३.५-९७)।

नावल–पु० [सं०] प्रह्लाद-सुत शंभुके छह पुत्रोंमेंसे एक पुत्र-का नाम (वायु० ६७.८१)।

नाभ–संज्ञा० पु० [सं०] [१] राजर्षि भगीरथ-सुत श्रुतका पुत्र तथा सिंधुद्वीपका पिता एक सूर्यवंशी राजा (भाग० ९.९. १६) [२] हृदीकके दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (मत्स्य० ४४.८२)। [३] शिवका एक नाम।

नाभाग–संज्ञा० पु० [सं०] [१] वाल्मी० बाल० ७०.४२, ४३ के अनुसार ययातिके पुत्र एक इक्ष्वाकुवंशीय राजा। नाभागके पुत्र अज और अजके पुत्र राजा दशरथ हुए। रामायणमें दी वंशावलीके अनुसार राजा अंबरीष इनके प्रपितामह थे, पर भागवत आदि पुराणोंके अनुसार अंबरीष नाभागके पुत्र थे और नाभाग वैवस्वत मनुके पुत्र थे (भाग० ८.१३.२; ब्रह्मां० ३. ६०.३; मत्स्य० ११.४१;१२. २०; वायु० ६४.२९;८८.५-६; विष्णु० ३.१.३३;४-१.७)। [२] मार्कण्डेयपुराणानुसार कारुष वंशके एक राजाका नाम। दिष्ट इनके पिता तथा भलंदन (वलंधन-विष्णु०) पुत्र थे। संभवतः यह नाभाग मनुपुत्र नाभागसे भिन्न हैं। यह एक वैश्यकन्यासे पिताकी बिना आज्ञा लिये ही विवाह कर बैठे, अतः परिव्राट् मुनिके अनुसार वैश्यत्वको प्राप्त हुए और प्रभाति मुनिकी व्यवस्थाके अनुसार फिर क्षत्रिय हो गये (मार्कण्डेयपुराण तथा भाग० ९.२.२३; ब्रह्मां० ३.६१. ३; विष्णु० ४.१.१९)। [३] नभगका कनिष्ट पुत्र जो अवि-वाहित था। पिताके आदेशानुसार इन्होंने अंगिराके उत्तरा-धिकारियोंके यज्ञमें जाकर छठे दिनके विश्वेदेवसंबंधी दो सूक्त कहे। यज्ञपतियोंके स्वर्गारोहणके उपरांत यज्ञसे बचा धन इन्हें मिला। इसी समय रुद्रने प्रकट होकर सारी संपत्ति अपनी बतलायी। नाभाग द्वारा अपने पिता नभगसे पूछे जानेपर उन्होंने इसे स्वीकार किया अतः नाभागने रुद्रसे क्षमा याचना की और सारी संपत्ति उन्हींके हवाले कर दी। उनके पिताके धर्मपूर्ण कथन और नाभागके सत्य कथनसे प्रसन्न होकर रुद्रने इन्हें ब्रह्मज्ञानकी दीक्षा दी और सारा धन इन्हींको लौटा अंतर्ध्यान हो गये (भागवत ९.४.१ १३; ब्रह्मां० ३.६३.५)। [४] भगीरथका पौत्र श्रुतका पुत्र (मत्स्य० भगीरथ पुत्र) तथा अंबरीषका पिता (ब्रह्मां० ३. ६३.१७०; मत्स्य० १२.४५; वायु० ८८.१७०; विष्णु० ४.२.५-६;४.३६)। [५] द्वितीय (सार्वण) मन्वंतरके सप्त-र्षियोंमेंसे एक ऋषि, जो कश्यप कुलके थे (ब्रह्मां० ४.१.-७०)। [६] दसवें मनुके (ब्रह्मसावर्णिमनुके) युगके सप्त-र्षियोंमेंसे एक ऋषि (विष्णु० ३.२.२७)।

नाभागारिष्ट—पु० [सं०] वैवस्वत मनुके एक पुत्रका नाम (महाभा० आदि० ७५.१७)

नाभि–पु० [सं०] [१] प्रियव्रतके पौत्र तथा आग्नीध्रके ९ पुत्रोंमेंसे एकका नाम (ब्रह्मां०)। यह जंबूद्वीपके एक खंडका (हिमवर्षका) राजा था मेरुदेवीके गर्भसे उत्पन्न ऋषभदेव इन्हींके पुत्र थे। नाभिने पत्नीसहित पुत्रेष्टि यज्ञ किया था जिसमें विष्णु भगवान स्वयम् प्रकट हुए। नाभिने वर माँगा कि “मेरे तुम्हारे ही ऐसा पुत्र हो।” कुछ कालके पीछे ऋषभ देवजी उत्पन्न हुए जो विष्णुके २४ अवतारोंमेंसे आठवें माने जाते हैं (भाग० १.३.१३; २.७.१०; ५.२.१९; ३. १-२, १७-२०; ४.१-३; ११.२.१५; ब्रह्मां० २.१४.४५, ५९-६०; वायु० ३३.३८,४१,५०; विष्णु० २.१.१६, १८, २७)। ऋषभको राज्य दे यह सपत्नीक तप करके मुक्त हुए (भाग० ५.४.३-५)। [२] सामगाचार्य कुशुमिके तीन शिष्योंमेंसे एक शिष्य (ब्रह्मां० २.३५.४३)।

नाभिगुप्त–पु० [सं०] [१] राजा प्रियव्रतके पुत्र हिरण्य-रेताके सात पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम। कुशद्वीपमें इन्हींके नामपर एक वर्ष हुआ। [२] कुश द्वीपके अधिपति हिरण्य-रेताने उक्त वर्ष इन्हें दिया था (भाग० ५.२०.१४)।

नाभिज–पु० [सं०] विष्णु भगवानकी नाभिसे उत्पन्न होनेके कारण ब्रह्माका एक नाम।

नाभिवर्ष–पु० [सं०] भारतवर्ष। राजा आग्नीध्रने जंबू-द्वीपके नौ खंड कर अपने नौ पुत्रोंको दे दिये। जो खंड नाभिको मिला उसका नाम नाभिवर्ष पड़ा। राजा भरत जिनके नामपर ‘भारतवर्ष’ नाम पड़ा इन्हींके पौत्र थे।

नामकरण–पु० [सं०] हिंदुओंके सोलह संस्कारोंमेंसे पाँचवाँ जिसमें बच्चोंका नाम रखा जाता है। यह ग्यारहवें या बारहवें दिन मनाया जाता है (विष्णु० ३.१०.८-११)। गोभिलगृह्यसूत्र, स्मृतियों और नामकरणपद्धतिमें इसका पूर्ण विवरण दिया है। वसुदेवके पुत्रोंका नामकरण गर्ग-ऋषिने किया था (भाग० १०.८.११-१४)।

नामदेव–पु० [सं०] देवीपुराणानुसार अगहन शुक्ला तीज-को मनाया जाने वाला एक व्रत। इस दिन गौरी, काली, उमा, भद्रा, दुर्गा, कांति, सरस्वती, मंगला, वैष्णवी, लक्ष्मी, शिवा, और नारायणी इन बारह देवियोंकी पूजाका विधान है (देवीपु०)।

नामसप्तमी–स्त्री० [सं०] एक व्रत जो चैत्र शुक्ला सप्तमीसे वर्षपर्यन्त होता है और सूर्यके १२ नामोंसे यथाक्रम पूजन करते हैं। इसमें एकभुक्त व्रतका विधान है जिससे आयु, आरोग्यता और ऐश्वर्य्यकी वृद्धि होती है, (भविष्य पु०)।

नामाकर्षणिका–स्त्री० [सं०] चन्द्र (शीतांशु) कलारूप सोलह गुप्तनामकी शक्तियोंमेंसे एक गुप्तशक्तिका नाम। ये सोलह गुप्त नामकी शक्तियाँ गुप्त योगिनियाँ भी कही गयी हैं (ब्रह्मां० ४.१९.१९; ३६.७०)।

नायकि–पु० [सं०] आंगिरसवंशका एक प्रवरप्रवर्तक ऋषि (मत्स्य० १९६.१७)।

नारद–पु० [सं०] [१] एक देवर्षिका नाम जो ब्रह्मांके मानस पुत्र कहे जाते हैं। इतिहास और पुराणोंमें इन्हें परम भगवद्भक्त भगवद्गुणगायक देवर्षि कहा गया है और यह

इस लोकका समाचार उस लोकमें दिया करते हैं एवं अत्याचारी दैत्य, दानव तथा राक्षसोंके अत्याचार और जनताके उत्पीड़नका वृत्तान्त भगवान्‌के कानतक पहुँचाया करते है। भागवतमें इन्हें अगाधबोध, सकल रहस्योंके वेत्ता, पर और अपर ब्रह्ममें निष्णात, सूर्यकी भाँति त्रिलोकी-पर्यटक, वायुवत् सबके अन्दर विचरण करने वाले और आत्मसाक्षी कहा गया है। इन्हें ब्रह्माका मानस-पुत्र लिखा है (भाग० १.५.६; वायु० ५२.३; ६१.८५; १०५.२.) विष्णुपराणानुसार ब्रह्माने अपने सब पुत्र, पौत्रों आदिको सृष्टि करनेमें लगाया। दक्ष प्रजापतिने वीरण प्रजापतिकी पुत्री असिक्नीसे दस हजार पुत्र उत्पन्न किये और उन्हें प्रजासृष्टिमें लगाया पर नारदने उन्हे निवृत्तिपरक उपदेश देकर सृष्टिमार्गसे विरत कर दिया। यह सुनकर उन्होंने फिर अपनी सहधर्मिणी असिक्नीके गर्भसे कई सहस्र पुत्र उत्पन्न किये। उन्हें भी नारदने पूर्वोक्त पथके पथिक बना दिये। इससे रुष्ट हो दक्षने इन्हें शाप दिया (विष्णु० १.१५.८७-१०२) 'तुम सदा सब लोकोंमें घूमा करोगे एक स्थानपर स्थिर होकर न रहोगे।'

पूर्व कल्पमें नारदजी उपबर्हण नामक गंधर्व थे और ब्रह्माके यहाँ भी यह अपने सुंदर रूपके कारण स्त्रियोंसे ही घिरे रहते, अतः ब्रह्माने इन्हें शूद्र योनिमें उत्पन्न होनेका शाप दिया। फलस्वरूप यह शूद्रा दासीके पुत्र हुए। इस अवस्थामें इनकी माताकी सेवा तथा इनके भोलेपनसे प्रभावित हो ऋषियोंने इन्हें भगवान्‌के नामका उपदेश दिया जिसके जपसे यह शूद्रयोनिसे मुक्त हो ब्रह्मामें प्रविष्ट हो गये और सृष्टिके प्रारम्भमें ब्रह्माजीके 'मन'से प्रकट हुए (भाग० १.५.२३-३१; ६.२-३७)। दक्ष प्रजापतिके पुत्रोंको अपने उपदेशसे इन्होंने संन्यासी बना दिया। इससे रुष्ट होकर दक्ष प्रजापतिने इन्हें एक स्थान पर गोदोहनसे अधिक देर ठहरनेपर मस्तक भिन्न हो जानेका शाप दिया (भाग० अ० ६.५ (पूरा); विष्णु० ५.१.६७; १५.३)। एक बार कामदेवपर विजय प्राप्त करनेपर इन्हें गर्व हो गया, जिसे दूर करनेके लिये भगवान्‌ने इनका मुँह बन्दरका सा बना दिया। पीछे असली रूप पुनः प्राप्त हो गया (तु० रामायण, बाल० १३१-१३५।१)।

महाभारतके अनुसार इन्होंने ब्रह्मासे संगीतकी शिक्षा ग्रहण की थी। देवर्षि नारद वेदांत, योग, ज्यौतिष, वैद्यक, संगीत शास्त्रादिके आचार्य हैं तथा भक्तिके मुख्याचार्य हैं। इनका 'पाञ्चरात्र' भागवत-मार्गका मुख्य ग्रंथ है। नारद ही एक ऐसे हैं जिनका सुर असुर समान रूपसे आदर करते हैं। इनकी प्रशंसामें श्रीकृष्ण द्वारा कहे गये शब्द (स्कन्द० माहेश्वर० कुमारिका-खंड५४-१७-४६ में अंकित हैं)। भागवत, ब्रह्मवैवर्त आदिमें इनकी बड़ी लम्बी-चौड़ी कहानियाँ लिखी हैं। पुराणोंमें नारद बड़े भारी हरिभक्तके रूपमें प्रसिद्ध हैं। यह सदा भगवानका यश वीणा बजा कर गाया करते हैं। इनका स्वभाव 'कलह-प्रिय' भी कहा गया है। पाश्चात्य देशके ऑरफियससे इनकी समता की जाती है। [२] विश्वामित्रके ब्रह्मवादी कई पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम, (महाभा० अनु० ४.५३)। [३] प्रजापतिके दो पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम। दूसरे पुत्रका नाम पर्वत था। प्रजापतिकी तीसरी सन्तान अरुन्धती थी (वायु० ६९.६४)। [४] कश्यप और दक्षपुत्री मुनिसे उत्पन्न सोलह मौनेय देवगन्धर्वोंमेंसे एक देवगंधर्व विशेषका नाम (वायु० ८६.४८; ९४.१९; १०८.१,४१; ११०.१,६१; १११.२३,३९,५७; ११२.२७)। इन्होंने अपनी बहिन अरुंधती वशिष्ठको ब्याह दी थी तथा दक्षसे अभिशापित हुए थे (वायु० ७०.७९)। [५] मत्स्य पुराणानुसार शाकद्वीपका एक पर्वत विशेष जो इंद्रके भयसे समुद्रमें जा छिपा था (मत्स्य० १२१.७४; १२२.११; वायु० ४७.७४)। [६] प्लक्षद्वीपका एक पर्वत जहाँ नारद और पर्वत उत्पन्न हुए थे (ब्रह्मां० २.१९.९; वायु० ४९.८; विष्णु० २.४.७) [७] एकमौनेय गंधर्व जो वैशाख मासमें सौर गणके अन्य छह—अर्यमा (सूर्य), पुलह (ऋषि), अथौजा (यक्ष) प्रहेति (राक्षस), पुंजिकस्थली (अप्सरा) तथा कच्छनीर (नाग)के साथ सूर्य रथपर अधिष्ठित रहते हैं। (भाग० १२.११.३४; ब्रह्मां० ३.७.४; वायु० ३०.८६; ६९.३; विष्णु० २.१०.५)। [८] कमलके कोषमें केसरोंकी भाँति मेरुके मूलमें चारों ओर स्थित २० पर्वतोंमेंसे एक पर्वतका नाम (५.१६.२६; ब्रह्मां० २.१८.७७)। [९] स्थापत्यकलामें (वास्तुकलामें) विशारद-१८ आचार्योंमेंसे एकका नाम (मत्स्य० २५२.२)।

नारदध्यानी–पु० [सं०] वादित्रक पर्वतपर गीत गानेवाले कई गन्धर्वोंमेंसे एक गंधर्व (वायु० १०८.४८)।

नारदपुराण–पु० [सं०] अठारह पुराणोंमेंसे एक जिसमें सनकादिकने नारदको संबोधित करके कथा कही है। इसीसे इसे नारदपुराण कहते हैं। इसमें २५००० श्लोक हैं तथा तीर्थों और व्रतोंके माहात्म्य बहुत दिये हैं, पर इसके ३००० श्लोक अप्राप्य हैं अतः इसे अपूर्ण समझें (भाग० १२.७.२३; १३.५)। 'नारदोक्तं पुराणं तु नारदीयं प्रचक्षते'—शिवपु० तथा मत्स्य० ५३.२३ के अनुसार श्री नारदजीने बृहत्कल्प-प्रसंगमें जिन अनेक धर्म आख्यायिकाओंको कहा है वही २५००० श्लोकयुक्त संकलन नारद महापुराण है।

नारदशिला–स्त्री० [सं०] बदरी-क्षेत्रकी ५ प्रसिद्ध शिलाओंमेंसे एक। एक बार विष्णुके दर्शनार्थ नारदजी बदरीक्षेत्रमें एक ही शिलापर केवल वायु पीकर बहुत दिनोंतक बैठे रहे। अंतमें उन्हें विष्णु-दर्शन हुआ, अतः यह नाम पड़ा (स्कंद० वैष्णव० बदरीकाश्रम-माहात्म्य)।

नारदा–स्त्री० [सं०] न्यासोपयोगी चार शक्तिदेवियोंमेंसे एक शक्तिदेवी (ब्रह्मां० ४.४४.९१)।

नारदी–पु० [सं०] विश्वामित्रजीके ब्रह्मवादी पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (महाभा० अनु० ४.५९)

नारदीय–पु० [सं०] एक पुराण जिसमें २५००० (२३००० वायु०) श्लोक हैं। इसमें नारदने बृहत्कल्पकी व्याख्या की है। पूर्णिमाको जो व्यक्ति गऊके साथ इसका दान करता है उसका पुनर्जन्म नहीं होता (मत्स्य० ५३.२३-४; वायु० १०४.८; विष्णु० ३.६.२१)।

नारदेश्वर–पु० [सं०] नर्मदा तटपर स्थित एक तीर्थ, जो भीमेश्वरके बाद पड़ता है, का नाम (मत्स्य० १९१.५)।

नारसिंह–पु० [सं०] (१) नरसिंह या नृसिंह, विष्णुके अवतारोंमें चौदहवाँ अवतार। भगवान् विष्णुका नरसिंह रूप। तैत्तिरीय आरण्यकमें नरसिंहकी गायत्री मिलती है। ओंकारकी सहायतासे इन्होंने असुरराज हिरण्यकशिपुका वध

किया था (भाग० १.३.१८; ब्रह्मां० ३.७२.७६; मत्स्य० २२.१७; १६१.३७; विष्णु० ४.१४.४७; १५.४)। (२) देवासुरोंके १२ संग्रामोंमें पहले संग्रामका नाम (ब्रह्मां० १.१.१२८; ३.७२.७३; मत्स्य० ४७.४२, ४६; वायु० १.१५१)। (३) ३० कल्पों, जो ब्रह्माका एक मास कहलाता है, मेंसे एक (सोलहवें) कल्पका नाम (मत्स्य० २९०.७)। (४) एक उपपुराण जिसमें नरसिंह भगवान्‌की कथा दी हुई है और १८००० श्लोक हैं (मत्स्य०५३.६०)। (५) एक तंत्रका नाम (हि० श० सा०)। (५) पितरोंके श्राद्ध आदिके लिए अति उपयुक्त एक पवित्र तीर्थस्थान (मत्स्य० २२.४३)।

नारसिंही—स्त्री० [सं०] अन्धकासुरके रक्तपानके लिए शिवजी द्वारा सृष्ट सैकड़ों मानस-पुत्री मातृकाओंमेंसे एक मानस-पुत्री मातृका (मत्स्य० १७९.११)।

नारांतक—पु० [सं०] एक राक्षस। कहा जाता है यह लंकापति रावणके पुत्रोंमेंसे एक था (रामायण, लंका० ५९.२२)।

नारायण—पु० [सं०] (१) ईश्वर। मनुस्मृतिमें लिखा है कि 'नर' परमात्माका नाम है। परमात्मासे सबसे पहले जल उत्पन्न हुआ इसलिए आपको (जलको) 'नारा' कहते हैं। जल जिसका प्रथम अयन या अधिष्ठान है उस परमात्माका नाम हुआ 'नारायण' (मनु० १.१०)। 'आपो नारा इति प्रोक्ता मुनिभिस्तत्त्वदर्शिभिः। अयनं तस्य ताः पूर्वं तेन नारायणः स्मृतः॥' (मार्कण्डेय० ४.४३)।

महाभारतके अनुसार परमात्मा या आत्माका नाम 'नर' है। परमात्मासे सबसे पहले उत्पन्न होनेके कारण आकाशादिको 'नार' कहते हैं। यह सर्वत्र व्याप्त हैं तथा सबकी उत्पत्तिका कारण भी है, अतः परमात्माका नाम नारायण हुआ। 'नराणामयनं यस्मात्तेन नारायणः स्मृतः। नरोंका (जीवोंका) त्रिमूर्त्तियोंके द्वारा सर्जन, संहार और पालन करनेके कारण भी अयन होनेसे यह नारायण कहे जाते हैं (वायु० १.२०४; ५.३८; २४.८-३५)। कहीं-कहीं ऐसा भी लिखा मिलता है कि किसी मन्वंतरमें विष्णु 'नर' नामक ऋषिके पुत्र हुए थे इससे उनका नाम नारायण पड़ा (हि० श० सा०)। ब्रह्मवैवर्त्तपुराण तथा अन्य पुराणोंमें कुछ और ही कथा मिलती हैं। यह सारे संसारमें व्याप्त है तथा तीनों लोकोंमें वर्तमान है—सर्वज्ञ, सर्वव्यापी तथा सर्वशक्तिमान् है (वायु० १.२०४; ५.३८; २४.८-३५)। यजुर्वेदके पुरुषसूक्त और उत्तरनारायणसूक्त तथा शतपथ-ब्राह्मण (१३.६.२.१) और शांखायनश्रौतसूत्र (२६.१३.१) में 'नारायण' शब्द विष्णु या प्रथम पुरुष, सर्वशक्तिमान्, महापुरुष तथा प्राणोंके रक्षकके अर्थमें आया है (भाग० १.२.४; ३.९; २.५.१५-१६; ७.६; १०.११; ४.१.५२; ५.२६.३८; १०.६.२४; ६९.४४; ब्रह्मां० २.३५.९३; ३.३.६२; ३३.१६; ३५.३.३६-४०; वायु० १०४.५८; १०९.२३)। यह अज, इन्द्रके भाई तथा ऋषियोंके आराध्य-देव हैं (ब्रह्मां० २.३५.२०८; ३.३.१०२; मत्स्य० १.२-३; १५४.३५२; १६४.२७; १७२.३-५; विष्णु० १.३.३, ८.१५; ९.४१; २२.८६)। जैन लोग नारायणको नौ वासुदेवोंमेंसे आठवाँ कहते हैं (हि० श० सा०)। (२) अजामिलके सबसे छोटे पुत्रका नाम (भाग० ६.१.२४)। (३) भूमिमित्र कण्वका पुत्र तथा सुशर्माका पिता। इस वंशके प्रथम राजाका नाम देवमूर्त्ति था। इन चार काण्वायन राजाओंने ४५ वर्ष राज्य किया (विष्णु० ४.२४.४०-१)। (४) एक ऋषि जिसने नारदको भागवत पढ़ाया और तब नारदने व्यासको बतलाया (भाग० १२.४.४१; १३.१०.१८)। (५) १२ साध्यदेवोंके गणोंमेंका एक साध्यदेव तथा साध्योंके अधिपति, धर्मके साध्यसे उत्पन्न १२ साध्य पुत्रोंमेंसे एक (ब्रह्मां० ३.३.१७; ८.६; (मत्स्य० २०३.११)। (६) धर्मके दो देवर्षि पुत्रोंमेंसे एक देवर्षि। दूसरे पुत्रका नाम नर था (वायु० ६१.८३)।

नारायणकला—पु० [सं०] मोक्ष प्राप्त करनेके इच्छुक पुरुष घोर रूप रजोगुणी भूतपतियोंकी ओर आकृष्ट न होकर शान्त नारायणकलाओंका भजन करते हैं (भाग० १.२.२६)।

नारायणक्षेत्र—पु० [सं०] गंगाके प्रवाहसे चार हाथतककी भूमिको 'नारायणक्षेत्र' कहते हैं (बृहद्धर्मपु०)।

नारायणपुर—पु० [सं०] दे० विष्णुलोक, (मत्स्य० २७७.२१; २८४.२०; २९१.३२)।

नारायणसर—पु० [सं०] सिंधुसागरसंगमके पास स्थित एक झील जो बड़ा पवित्र समझा जाता है। दक्षपुत्रों हर्यश्वों और सबलाश्वोंने यहीं तप किया था (भाग० ६.५.३, २५)।

नारायणाश्रम—पु० [सं०] एक पवित्र स्थान जहाँ विष्णुका निवास है। यहींसे वह संसारकी रक्षा करते हैं (भाग० ७.१४.३२; १०.८७.५-६)। कुबेरके पुत्रोंको शाप देनेके पश्चात् नारद भगवान्‌से मिलने यहीं आये थे (भाग० १०.१०.२३; ८७.५.६)। कलापग्रामके ऋषि लोग भी यहीं रहते थे (भाग० १०.८७.७)।

नारायणास्त्र—पु० [सं०] एक अस्त्र विशेष। पिताकी मृत्युसे दुःखी होकर अश्वत्थामाने पांडवोंपर इसे चलाया था जिससे घनघोर वृष्टि होने लगी थी। साष्टांग प्रणाम ही इसका प्रतीकार है (महाभा० द्रोण० नारायणास्त्रमोक्ष०)।

नारायणी—स्त्री० [सं०] (१) श्रीकृष्णकी सेनाका नाम। कुरुक्षेत्रके युद्धमें यह सेना दुर्योधनकी सहायताके लिए पांडवोंके विपक्षमें लड़ी थी (महाभा० उद्योग० रण-निमंत्रण०)। (२) सुपार्श्वमें स्थापित सती देवीकी एक मूर्त्ति (मत्स्य० १३.३६)। (३) मुद्गल मुनिकी पत्नीका नाम (हि० श० सा०)। (४) भागवतोक्त योगमायाके कई नामोंमेंसे एक नाम (भाग० १०.२.१२)। (५) ललितादेवीके कई नामोंमेंसे एक नाम (ब्रह्मां० ४.१३.३)।

—पु० [सं०] विश्वामित्रके एक पुत्रका नाम (हि० श० सा०)।

नारायणीय—पु० [सं०] महाभारतके शांति पर्वका एक उपाख्यान जिसमें नारद और नारायण ऋषिकी कथा है (महाभा०)।

नाराशंस—पु० [सं०] (१) विशिष्ट मनुष्योंकी प्रशंसामें कहे हुए वेदके मंत्र (हि० स० श०)। (२) वह चमचा जिसमें पितरोंको सोमपान अर्पण किया जाता है (हि० श० सा०)। (३) पितरोंके निमित्त चमचेमें रखा हुआ सोमरस (हि० श० सा०)।

नारियलपूर्णिमा—स्त्री० [दे०] बम्बई प्रांतका एक त्योहार। इसमें लोग समुद्रमें नारियल फेंकते हैं (हि० श० सा०)।

नारी—स्त्री० [सं०] राजा आग्नीध्रके नौ पुत्रों—नाभि, किंपुरुष, हरिवर्ष, इलावृत, रम्यक, हिरण्मय, कुरु, भद्राश्व और केतुमालने मेरुकी पुत्रियों—मेरुदेवी, प्रतिरूपा, उग्रदंष्ट्रा, लता, रम्या, श्यामा, नारी, भद्रा और देववीतिसे विवाह किया। उनमेंसे मेरुकी एक पुत्री तथा राजा कुरुकी रानीका नाम (भाग० ५.३.२३)।

नारीकवच—पु० [सं०] सूर्यवंशी राजा मूलक जो अश्मकका पुत्र तथा सौदासका पौत्र था। इसके पुत्रका नाम दशरथ कहा गया है। जब परशुरामजी क्षत्रियोंका नाश करनेपर तुले थे तब नग्न स्त्रियोंने इन्हें चारों ओरसे घेर कर परशुरामके कोपसे बचा लिया था। स्त्रियोंने इनकी कवचसम रक्षा की इसीसे इनका यह नाम पड़ा। इन्हींसे क्षत्रियोंका पुनः वंश-विस्तार हुआ, अतः इन्हें 'मूलक' कहते हैं (भाग० ९.९.४०; विष्णु० ४.४.७४)।

नारीतीर्थ—पु० [सं०] इस तीर्थमें ब्रह्माके शापसे पाँच अप्सराएँ जलजंतु हो गयी थीं और अर्जुनने इन्हें शापमुक्त किया था। प्राचीन कालके पाँच तीर्थ—(१) अगस्त्य तीर्थ, (२) सौभद्र तीर्थ, (३) पौलोम तीर्थ, (४) कारन्धम तीर्थ तथा (५) भारद्वाज तीर्थ। इन तीर्थोंके निकट अर्जुनका आगमन और सौभद्र तीर्थमें गोता लगाना एवं ग्राह रूपमें वहाँ रहनेवाली वर्गा नामकी अप्सराका उद्धार। वर्गाका शाप द्वारा ग्राह बनी अन्य ४ अप्सराओंकी कथा सुनाना और उनका शापोद्धार। इन तीर्थोंकी नारीतीर्थ नामसे प्रसिद्धि है (महाभा० आदि० अ० २१५; २१६.१-२२)।

नार्मर—पु० [सं०] नृमर असुरका पुत्र एक असुर जिसका वध इन्द्रने किया था (ऋग्वेद २.१३.८)।

नालिकेरफल—पु० [सं०] नारियलके फलके समान ब्रह्मांड यानी संसार जल, अग्नि आदि सात प्राक्तन आवरणोंसे आवृत है। यह फल इस संबंधका द्योतक माना गया है (विष्णु० १.२.६०)।

नालिनी—पु० [सं०] पुरञ्जन नगरीमें प्रवेश करनेके पूर्वी प्रवेश द्वारोंमेंसे एक अर्थात् एक नथुना (भाग० ४.२५.४८; २९.११)।

नासत्य—पु० [सं०] मार्तण्ड अथवा सूर्यका पुत्र, अश्विनीकुमार युगलमेंसे एक (वायु० ८४.२४, ७७)।

नासत्यौ—पु० [सं०] आश्विनेययुगल अर्थात् नासत्य और दस्रका सम्मिलित नाम जो सूर्य-पत्नी संज्ञाके नथुनोंसे उत्पन्न हुए थे, जब वह अश्विनीका रूप धर विचरण करती थी (दे० छाया, संज्ञा, अश्विनी)। ये नकुल और सहदेवके पिता थे (भाग० ६.६.४०; ७.३; ९.२२.२८; मस्त्य० ११.३७)। ये च्यवन ऋषिके आश्रमपर गये थे। वृद्ध और कुरूप च्यवन ऋषिको इन्होंने सुन्दर युवकके रूपमें परिवर्तित कर दिया और बदलेमे ऋषिने इन्हें यज्ञ-भाग पानेका अधिकारी बनाया (भाग० ९.३.११; ब्रह्मां० ३.५९.२५)।

नासिक—पु० [सं० नासिक्य] महाराष्ट्र देशका एक तीर्थ जो गोदावरीके उद्गम स्थानके निकट है। पंचवटी वन इसीके समीप है जहाँ वनवासके समय अगस्त्य ऋषिके आदेशानुसार श्री रामचन्द्र कुछ दिनों तक रहे थे। यहीं लक्ष्मणजीने सूपर्णखाके नाक-कान काटे थे (तु० रामायण अरण्य० १२.८-१७)।

नाहुषी—पु० [सं०] नहुषकी पुत्री रुचिका नामान्तर जो आत्मवानको ब्याही गयी थी। ऋचीक, जो जंघासे उत्पन्न होनेसे और्व कहलाया, की माता (वायु० ६५.९१-२)।

निंद्रा—स्त्री० [सं०] ब्राह्मणोंके दस लक्षणोंमेंसे एक (वायु० ५९.१३४)।

निबंधन—पु० [सं०] अरुणका पुत्र तथा सत्यव्रतके पिताका नाम (भाग० ९.७.४-५)।

निंबसप्तमी—स्त्री० [सं०] वैशाख शुक्ला सप्तमीको होनेवाला एक पर्व। इसमें नीमकी पत्तियाँ खाये तथा अष्टमीको सूर्यकी पूजा करे (व्रतपरिचय)।

निंबादित्य—पु० [सं०] निंबादित्य, जिनका दूसरा नाम अरुणि भी था, निंबार्क-संप्रदायके आदि आचार्य थे। यह श्री राधिकाजीके 'कंकण'के अवतार माने जाते हैं। बाल्यावस्थामें इनका नाम भास्कराचार्य था और कुछ लोग इन्हें सूर्यके अंशसे उत्पन्न कहते हैं। वृन्दावनके पास ध्रुव पहाड़ीपर इनका निवासस्थान था और यहींपर इनकी गद्दी भी स्थापित हुई। भक्तमालमें इनके चमत्कारकी कहानियाँ मिलती हैं।

निकर—पु० [सं०] आलम्बा, उत्कचा, कृष्णा आदि आठ राक्षस माताएँ हैं। इनकी सन्तति भद्रक आदि आठ विभागोंमें विभक्त है। इनमेंसे एक राक्षसजातिका नाम (वायु० ६९.१८९)।

निकलंकी—पु० [सं० निष्कलंक] कलियुगके अंतमें होनेवाला विष्णुका दसवाँ अवतार कल्कि (विष्णु० ४.२४.९८)।

निकसा, निकषा—स्त्री० [सं०] एक राक्षसी जो सुमालीकी पुत्री तथा विश्रवाकी पत्नी थी। इसीके गर्भसे लंकापति रावण, कुंभकर्ण, शूर्पणखा और विभीषण उत्पन्न हुए थे (तु० रामायण, बाल० १७२)।

निकुंत—पु० [सं०] शोणाश्वके रणविशारद शूरवीर पाँच पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (मत्स्य० ४४.७९)।

निकुंभ—पु० [सं०] (१) कुंभकर्णका एक पुत्र तथा रावणका मंत्री जो हनुमान् द्वारा मारा गया था (भाग० ९.१०.१८; ब्रह्मां० ३.६३.६४; रामायण)। (२) प्रह्लादके एक (तृतीय) पुत्रका नाम (महाभा० आदि० ६५.१९)। (३) अनायुषा और कश्यपके पाँच महाबली महाअसुर पुत्र उत्पन्न हुए—अररु, बल, वृत्र, विज्वर और वृष। उक्त पाँच असुरोंमेंसे द्वितीय पुत्र बलके दो पुत्रोंमेंसे एक पुत्र। दूसरे पुत्रका नाम चक्रवर्मा था। यही दूसरे जन्ममें कर्ण हुआ (ब्रह्मां० ३.६.३१-३३)। (४) शतपुरका एक असुर राजा। ब्रह्माके वरके अनुसार विष्णुके अतिरिक्त इसे कोई दूसरा नहीं मार सकता था। श्रीकृष्णके मित्र ब्रह्मदत्तकी कन्याओंका हरण करनेके कारण श्रीकृष्णने इसका वध किया था और शतपुर ब्रह्मदत्तको दे दिया गया (हिं० श० सा०)। (५) राजा कुवलयाश्वके २१००० पुत्र थे। उन्होंने अपने पुत्रोंके साथ उतंक ऋषिकी प्रसन्नताके लिए धुन्धु नामक असुरको मारा और धुन्धुमार नामसे विख्यात हुए। धुन्धु असुरकी मुखाग्निसे उनके तीन ही पुत्र—दृढ़ाश्व, कपिलाश्व और भद्राश्व

ही वच सके, शेष असुरकी मुखाग्निसे जल गये। दृढाश्व-पुत्र हर्यश्व राजाका पुत्र तथा वर्हणाश्व (संहताश्व=वायु०, अमिताश्व=विष्णु०) का पिता (भाग० ९.६.२४-२५; मत्स्य० १२.३३; विष्णु० ४.२.४५)। यह सदा क्षत्रिय धर्ममें निरत रहता था (वायु० ८८.६२-६३)। (६) एक गणेश्वर जो काशीराज दिवोदासके समयमें मंकन नामक एक ब्राह्मणको स्वप्नमें दिखायी दिये थे तथा नगरके प्रवेश द्वारपर अपनी पूजाका आदेश दे गये थे। पुत्रकी कामनासे दिवोदासकी रानी सुयशाने गणेश्वरकी यथेष्ट उपासना की, पर असफल रही, अतः क्रुद्ध हो दिवोदासने इनका मंदिर ढहवा दिया। इसके पश्चात् निकुंभके शापसे काशी शून्य हो गयी तथा शंकरजीने सपत्नीक निवास किया। यहाँसे मैं अन्यत्र नहीं जाऊँगा ऐसा निश्चय उन्होंने किया जिससे यह नगरी अविमुक्त कहलाने लगी (ब्रह्मां० ३.६७.२८-६५; वायु० ९२.२५-२९)। (७) एक राजा जो कौरवोंका सेनापति था (हि० श० सा०)। (८) कुमारकार्त्तिकेयका एक गण (महाभा० शल्य० ४५.५६)। (९) सुतलनिवासी स्फूर्जका पुत्र एक ब्रह्मराक्षस (ब्रह्मां० २.२०.२१; ३.७.९५; वायु० ५०.२१; ६९.१३०)।

निकुंभनाभ—पु० [सं०] वलिके वाणज्येष्ठ सौ पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (मत्स्य० ६.११)।

निकुंभा—स्त्री० [सं०] अन्धकासुरोंके रक्तपानके लिए शिवजी द्वारा सृष्ट बहुत-सी मानस-पुत्री मातृकाओंमेंसे एक मानस-पुत्री मातृका (मत्स्य० १७९.२६)।

निकुंभिला—स्त्री० [सं०] लंकाके पश्चिमकी एक गुफामें स्थापित एक देवीका नाम। इनके सामने यज्ञ और पूजा करके मेघनाद युद्धके लिए प्रस्थान करता था (रामायण लंका० ८२.२५-२६; ८५.११.१५)।

निकुंभी—स्त्री० [सं०] कुंभकर्णकी पुत्रीका नाम (हि० श० सा०)।

निकूल—पु० [सं०] एक देवता विशेष जिसके उद्देश्यसे नरमेध और अश्वमेध यज्ञोंमें पशु-वलि दी जाती थी (हि० श० सा०)।

निकृतज—पु० [सं०] कश्यपकुलका एक गोत्रकार ऋषि (मत्स्य० १९९.६)।

निकृति—स्त्री० [सं०] (१) दंभ और मायासे उत्पन्न (भाग० ४.८.३) कलिकी प्रथम पत्नी (वायु० ८४.९)। (२) हिंसा और अधर्मकी पुत्री जो भय और नरककी माता थी (ब्रह्मां० २.९.६३; वायु० १०.३९)।

निक्षरा—स्त्री० [सं०] एक पुष्करिणी। यहाँ स्नान करके क्रौंजपदमें जो श्राद्ध करता है तथा तीन दिनोंतक यहीं नियमवान् हो निवास भी करता है उसके पितर एवं पाँच पीढ़ीके पापी पितर भी मुक्त होकर स्वर्ग चले जाते हैं (वायु० १०८.८०, ८३-४)।

निक्षुभा—स्त्री० [सं०] सूर्यकी एक पत्नी (भविष्यपु०)।

निक्षुभार्कचतुष्टय—पु० [सं०] (१) मार्गशीर्ष शुक्ल ६ और ७ को व्रत कर सूर्य पूजन करे। (२) कृष्ण ७ को व्रत तथा सूर्यका पूजन करे। (३) व्रत कर आटेका हाथी बना दान करे। (४) मार्गशीर्ष या माघ कृष्ण ७ को व्रत कर पुनः सूर्यका पूजन करे। ऐसा करनेसे भ्रूणहत्याका पाप दूर होता है (भविष्योत्तर०)।

निगमबोध—पु० [सं०] एक पवित्र स्थानका नाम जो दिल्लीके समीप यमुना नदीके तटपर स्थित है। दानवराज धुन्धुने शापमुक्त होने हेतु काशी जाते समय एक ऋषिके कहनेपर निगमबोध नामकी गुफामें नारायणकी तपस्या की थी (पृथ्वीराजरासो)।

निघ्न—पु० [सं०] (१) सूर्यवंशी राजा अनरण्यका पुत्र तथा अनमित्र और रघुराजका पिता (मत्स्य० १२.४७)। (२) हरिवंशके अनुसार राजा अनमित्र (अनिमित्र=वायु०) का पुत्र तथा प्रसेनजित् और सत्राजित् (प्रसेन और शक्रजित्=वायु०) का पिता (ब्रह्मां० ३.७१.२०; मत्स्य० ४५.३; वायु० ९६.१९-२०; विष्णु० ४.१३.९-१०)।

निचंद्र—पु० [सं०] कश्यप और दनुके विप्रचित्ति प्रमुख कई (सौ) पुत्रोंमेंसे एक दानव पुत्रका नाम (ब्रह्मां० ३.६.९; वायु० ६८.९)।

निचक्नु—अधिसीमकृष्णके पुत्र तथा उष्णके पिताका नाम। गंगाकी बाढ़से हस्तिनापुर नष्ट होनेपर इसने कौशांबी नगरी वसायी थी (विष्णु० ४.२१.७-९)।

निचिता—स्त्री० [सं०] भारतकी एक नदीका नाम (महाभा० भीष्म० ९.१८)।

निजघास—पु० [सं०] पार्वतीजीका एक गण जो उनके क्रोधसे उत्पन्न हुआ था।

निजधृति—स्त्री० [सं०] शाकद्वीपकी सात प्रधान नदियोंमेंसे एक नदी (भाग० ५ २०.२६)।

नितंद्रा—स्त्री० [सं०] विशुक्रने एक विशाल शिलापट्टपर एक मन्त्र लिखा जिससे ललिता देवीकी विविध शक्तियोंमें अनुत्साह उत्पन्न कर जयविघ्न उपस्थित किया गया, उसपर अंकित आठ देवियोंमेंसे एक देवीका नाम (ब्रह्मां० ४.२७.३८)।

नितल—पु० [सं०] सात पातालों—अतल, वितल आदिमेंसे एक (तीसरा) पाताल जिसकी भूमि लाल है (विष्णु० २५.२-३)।

नितुंद—पु० [सं०] (नितुंदि; नितुंदक=विष्णु०) पिशाचोंके १६ जोड़ोंमेंसे एक जोड़ेका पुरुष पिशाच। इसकी स्त्रीका नाम नितुन्दी है, जिनका पेट निकला, लंबी नाक, नाटा कद रहता है। इन्हें तिल तथा रक्तका भोजन प्रिय है (ब्रह्मां० ३.७.३८०, ३८९; वायु० ६९.२७०)।

नित्य—पु० [सं०] कश्यपकुलके एक ब्रह्मवादी तथा मंत्रकृत्ऋषिका नाम (मत्स्य० १४५.१०६)।

नित्यक्लिन्ना—स्त्री० [सं०] १५ अक्षर देवियों, जो ललिता देवीकी सेवामें सदा तत्पर रहती हैं, मेंसे एक देवी और इनकी नगरीका नाम नित्यक्लिन्नापुरी है। ये नित्या भी कही जाती हैं (ब्रह्मां० ४.१९.५७; ३१.२४; ३७.३३)।

नित्यश्राद्ध—पु० [सं०] वह श्राद्ध जो नित्य (प्रतिदिन) किया जाता है और जिसमें अर्घ और आवाहन नहीं होता (मत्स्य० १६.५)।

निस्या—स्त्री० [सं०] १५ अक्षर देवियोंका सामूहिक नाम (ब्रह्मां० ४.१९.५९)।

निदाघ—पु० [सं०] (१) पन्द्रहवें कल्प (ऋषभ) में ब्रह्माके छह मानस-पुत्रोंमेंसे एक मानस-पुत्रका नाम (वायु० २१.

३५)। (२) विष्णुपुराणानुसार पुलस्त्य ऋषिका एक पुत्र जो देविका नदी (गोगरा) के तटपर वीरनगरमें रहता था। यह ऋभु ऋषिका शिष्य था (नारद० पूर्वभाग द्वितीय पाद)। (३) कश्यपवंशज एक प्रवरप्रवर्तक ऋषि (मत्स्य० १९९. १७)।

निदात–पु० [सं०] (ब्रह्मां०=निदान्त) शूरके दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (वायु० ९६.१३७; ब्रह्मां० ३.७१.१३८)।

निधि–स्त्री० [सं०] (१) रत्न, किरीट, ताटंक (ब्रह्मां० २. २९.७५; ४.३३.७६); कण्ठसूत्र, केयूर और नूपुर (ब्रह्मां० ४.१५.२१; ३.२७.६)। (२) कुबेरके नौ रत्न जिनके नाम ये हैं––पद्म, महापद्म, शंख, मकर, कच्छप, मुकुंद, कुंद, नील और खर्व (नंदन, कुमुद=८ वायु०)। ये सब निधियाँ लक्ष्मीके आश्रित हैं (वायु० ४१.१०-११)। (३) २० संख्यावाले सुखदेवगणके एक सुखदेवका नाम (ब्रह्मां० ४. १.१८; वायु० १००.१८)। (४) वैश्रवणालयमें स्थापित सती देवीका एक श्रीविग्रह (मत्स्य० १३.५१)। (५) राजाओंके सात अतिशय रत्नों (चक्र, रथ, मणि, भार्या, निधि, अश्व और गजो)मेंसे एक (वायु० ५७.६८)।

निधिनाथ–पु० [सं०] निधियोंका अधिपति=कुबेर।

निधिप–पु० [सं०] कुबरका एक नाम।

निधिपति–पु० [सं०] कुबेरका एक नाम––दे० कुबेर।

निधिपाल–पु० [सं०] धनकुबेरका एक नाम––दे० निधि।

निधीश्वर–पु० [सं०] नवों निधियोंका मालिक=कुबेर।

निधृति–पु० [सं०] ज्यामघवंशी राजा धृष्टिका पुत्र तथा दशार्हका पिता (विष्णु० ४.१२.४१)।

निध्रुव–पु० [सं०] (१) कश्यप-पुत्र ब्रह्मवादी वत्सारका पुत्र तथा सुमेधा, जो च्यवन तथा सुकन्याकी पुत्री और कुण्डपायियोंकी माता थी, का पति (ब्रह्मां० ३.८.३०; वायु० ७०.२५-७) (२) तीन काश्यपों (निध्रुववर्ग, शाण्डिल्यवर्ग तथा रैभ्यवर्ग) मेंसे एक वर्ग (ब्रह्मां० ३.८.३३।

निपुण–पु० [सं०] पिशाचोंके १६ गणों (वर्गों) मेंसे एक वर्ग जिनके कान, नाक तथा भृकुटियाँ लटकी रहती हैं, रंग गाढ़ा भूरा तथा गति दृश्य और अदृश्य दोनों होती है (ब्रह्मां० ३.७.३८०; ३८३, ३९५-६; वायु० ६९.२६४, २७४-५)।

निभृत–पु० [सं०] क्रतुके पुत्र १२ सुकर्मदेवोंमेंसे एक सुकर्मदेव। वायु० १००.९३ में इनकी संख्या १० कही गयी है। (वायु० ६२.१०; १००.९३)।

निमि–पु० [सं०] (१) अत्रिकुलमें उत्पन्न एक ऋषि जो दत्तात्रेयके पुत्र थे (महाभा० अनु० ९१.५)। (२) राजा इक्ष्वाकुके १०० पुत्र हुए जिनमेंसे तीन जेष्ठोंमेंसे एक पुत्रका नाम जिनसे मिथिलाका विदेहवंश चला। विष्णुपुराणानुसार एक बार इन्होंने सहस्रवार्षिक यज्ञके लिये वशिष्ठ ऋषिको बुलाया, पर इंद्र पंचशत वार्षिक यज्ञके लिए उनका वरण पहले कर चुके थे। अतः उन्होंने अपनी असमर्थता दिखायी। इंद्रके यज्ञके पश्चात् यज्ञ करनेका वचन दे वशिष्ठ चले गये। राजा निमिने संसारकी क्षणभङ्गुरता जान, गौतम आदि अन्य ऋषियोंको बुला उनके द्वारा यज्ञ आरंभ करा दिया। इन्द्रका यज्ञ पूर्ण कर लौटे हुए वशिष्ठने रुष्ट हो इन्हें शाप दिया 'तुम्हारा यह शरीर न रहेगा।' निमिने भी वशिष्ठको यही शाप दिया और दोनोंका शरीर छूट गया। वशिष्ठ तो पुनः मित्रावरुणके वीर्यसे उर्वशीसे उत्पन्न हुए। राजा निमिका शरीर यज्ञ समाप्ति तक सुरक्षित रखा गया। यज्ञकी समाप्तिपर मुनियोंने भाग ग्रहणार्थ समागत देवताओंसे राजाके शरीरको सजीव करनेकी प्रार्थना की। किन्तु ज्ञानी निमिने शरीरबन्धन पसन्द नहीं किया। देवताओंने उन्हें मनुष्योंकी आँखोंकी पलकपर स्थान दिया। वह शरीर धारण कर पुनः जन्म और मरणके जालमें फंसना नहीं चाहते थे। उसी समयसे निमि विदेह कहलाये और उनके वंशज भी विदेह कहलाये। अराजकता न फैले इसलिए ऋषियोंने निमिके शरीरको मथा जिससे जनक उत्पन्न हुए (भाग० ९.६.४; १३.१-१३; १०.८६.३६; ब्रह्मां० ३.६३.९; ६४.१. विष्णु० ४.२.१२; ५.१-२३)। किन्तु मत्स्य० ६१.३२-३५ में यह परस्पर शापकी कथा यों दी हुई है—राजा निमि स्त्रियोंके साथ द्यूतक्रीड़ा कर रहे थे इसी बीचमें ब्रह्मपुत्र वशिष्ठ ऋषि आ पहुँचे। राजाको अपनी यथा योग्य पूजा न करते देख उन्होंने राजा निमिको शाप दिया कि तुम देहहीन हो जाओ। राजाने भी बदलेमें उन्हे वही शाप दे डाला। परस्परके शापसे उनकी चेतना चली सी गयी। वे दोनों शापको ले ब्रह्माके पास गये। ब्रह्माकी आज्ञासे निमि नेत्रोंमें रहने लगे, लोगोंके निमेष उनके विश्रामके लिए हुए। इन्होंने एक सत्र किया जिसमें ऋषभके पुत्र ऋषि उपस्थित थे जिन्होंने राजाको भागवत धर्मकी दीक्षा दी (भाग० ११.२.१४,२५-२६; अ० ३ से ५; ब्रह्मां ३. ७४,२४४,२४८; वायु० १.१४२; मत्स्य० ६१.३२-५; २०१. १-२०)। (३) दंडपाणिका पुत्र तथा क्षेमकका पिता (भाग० ९.२२.४४)। (४) भजमानके सृञ्जयपुत्री वाह्यकासे उत्पन्न तीन पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (मत्स्य ४४.५०; विष्णु ४. १३.२)। (५) तारकासुरकी सेनाके १० सेनापतियोंमेंसे एक सेनापति जिसके रथमें हाथी जुतते थे (मत्स्य० १४८. ४२,५१)। सूर्य अपने अस्त्रबलसे असुरोंको देवोंका रूप तथा देवोंको असुरोंका रूप दे देते थे और वे असुरोंसे ही मारे जाते थे एवं असुर रूपमें परिवर्तित देवगण असुरोंके प्रहारसे बच जाते थे। निमिने इस रहस्यका पता लगा कालनेमिसे कहा। इसने जनार्दनपर भी बाणोंकी वर्षा की (मत्स्य० १५०.१६१; २२४)। यह दिक्पालों, कृष्ण तथा इन्द्रसे लड़ा था इंद्रको तो इसने मुद्गरसे आहत किया था (मत्स्य० १५३.५५,६२) तथा विष्णुपर चक्र चलाया (मत्स्य० १५१.१२,३१)। (६) विकुक्षिका छोटा भाई जिसने गौतमके आश्रमके निकट जयंतनगरकी स्थापना की थी (वायु० ८९.१-२) (७) भजमान और वाह्यकाके तीन पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (वायु० ९६.४) (८) ६ ऋतुओंके पिताका नाम (ब्रह्मां० २.१३.१८)।

निरमित्र–पु० [सं०] (१) दंडपाणिका पुत्र तथा क्षेमकका पिता (विष्णु० ४.२१.१५-६)। (२) नकुलका पुत्र इसकी माताका नाम करेणुमती था (महाभा० आदि० ९५.७९)। (३) एक त्रिगर्तराजकुमार जो सहदेव द्वारा मारा गया था (महाभा० द्रोण० १०७.२६)।

निमित्त–न. पु० [सं०] ज्योतिपशास्त्र (मत्स्य० २१५.९)। शकुन तथा अपशकुन विचार। यथा पुरुषके दक्षिण अंगका

फड़कना शुभ तथा बाँयेका अशुभ, किसी कार्यके लिए जाते समय शकुन तथा अपशकुनोंकी विशेष सूची है। अपशकुन होनेपर केशवकी स्तुति लाभदायक होती है (मत्स्य० २४३.२-३)। अन्यमतसे प्रथम अपशकुन होनेपर एक प्राणायाम, दो अपशकुन होनेपर चार प्राणायाम, तीन अपशकुनोंपर आठवार प्राणायाम और चार वार अपशकुन होनेपर कार्यारंभ छोड़ दे। 'निमित्तशकुनादिभ्यः प्रधानो हि मनोजयः।' पूर्ण मनोत्साहके सामने अपशकुन भी फीके पड़ जाते हैं।

निमिष–पु० [सं०] नैमिषारण्य (भाग० १.१.४)

निमेष–पु० [सं०] (१) एक यक्षका नाम (हि० श० सा०) (२) गरुड़का एक प्रमुख पुत्र (महाभा० उद्योग० १०१.१०)।

निम्न–पु० [सं०] अनमित्रके पुत्रका नाम जिसके सत्राजित् और प्रसेन नामके दो पुत्र थे (भाग० ९.२४.१२-१४; ब्रह्मां० ३.७१.२०)।

निम्लोचनी–स्त्री० [सं०] वरुणकी नगरीका नाम जो मानसोत्तर पर्वत (मेरु) के पश्चिम है (भाग० ५.२१.७)।

निम्लोचा–स्त्री० [सं०] (भाग० अनुम्लोचा) भाद्रपद मासमें सूर्यके रथपर अधिष्ठित रहनेवाली एक अप्सराका नाम (वायु० ५२.११)।

निम्लोचि–पु० [सं०] (१) भजमानकी एक पत्नी (वाह्यका) से उत्पन्न तीन पुत्रोंमेंसे एक पुत्र। भजमानकी दूसरी पत्नीका नाम उपवाह्यका था जो वाह्यकाकी बहिन थी। उससे भी उनके तीन पुत्र थे (भाग० ९.२४.७; ब्रह्मां० ३.७१.४)।

नियति–स्त्री० [सं०] मेरु और धारणीकी तीन पुत्रियोंमेंसे एक पुत्री जो विधाताकी पत्नी और मृकंडुकी माता थी (भाग० ४.१.४३-४४; ब्रह्मां० २.११.६; १३.३७; वायु० २८.४; ३०.३४; विष्णु० १.१०.३)।

नियम–पु० [सं०] (१) धर्म और दक्षपुत्री धृतिका पुत्र (ब्रह्मां० २.९.५८)। (२) आभूतरयवर्गके १४ देवताओंमेंसे एक देवता (ब्रह्मां० २.३६.५०)। (३) सुखदेववर्गके २० देवोंमेंसे एक सुखदेवका नाम (वायु० १००.१९; ब्रह्मां० ४.१.१९)।

नियुत्–स्त्री० [सं०] ११ रुद्रोंमेंसे एक शिवनामक रुद्रकी पत्नी, तथा ११ रुद्राणियोंमेंसे एक रुद्राणीका नाम (भाग० ३.१२.१३)।

नियुत्सा–स्त्री [सं०] उद्गीथसे देवकुल्यामें उत्पन्न प्रस्तावकी पत्नीका नाम जो विभुकी माता थी (भाग० ५.१५.६)।

निरंजन–पु० [सं०] (१) यमुना नदीके उत्तरमें स्थित सूर्यका एक उत्तम तीर्थ जहाँ इन्द्र प्रभृति देवगण त्रिकाल सन्ध्योपासना करते हैं (मत्स्य० १०८.२९)। (२) ५१ गणेशोंमेंसे एक गणेशका नाम (ब्रह्मां० ४.४४.६६)। (३) एक प्रकार का मोक्ष। मोक्ष तीन प्रकारके कहे गये हैं—प्रथम ज्ञानसे अज्ञानका नाश होनेपर, द्वितीय मोक्ष रागका क्षय होनेपर। लिंगके नाशसे कैवल्य नामक मोक्ष। कैवल्यसे निरंजन मोक्ष होता है। निरंजन होनेसे जीव शुद्ध हो जाता है, तदनन्तर उसका कोई मार्गदर्शक नहीं रहता (वायु० १०२.७९, ११८)।

निरताल–पु० [सं०] शुक, लौकि आदि मध्यमाध्वर्युओंमेंसे एक मध्यमाध्वर्यु (ब्रह्मां० २.३३.१७)।

निरमित्र–पु० [सं०] (१) मगधराज अयुतायुका पुत्र तथा सुनक्षत्र (सुनेत्र = विष्णु०) का पिता (भाग० ९.२२.४६-७; विष्णु० ४.२३.४)। (२) एक त्रिगर्त्त राजकुमारका नाम जो कुरुक्षेत्रके युद्धमें सहदेव द्वारा मारा गया था (महाभा० द्रोण० १०७.२६)। (३) दंडपाणिका एक पुत्र तथा क्षेमकका पिता (मत्स्य० ५०.८७)। यह वायु० ९९.२७७ में 'निरामित्र' कहा गया है। (४) करेणुमती (विष्णु० = रेणुमती) तथा नकुल (पांडव) के पुत्रका नाम (भाग० ९.२२.३२; विष्णु० ४.२०.४८)।

निरय–पु० [सं०] (१) भय और मृत्युका पुत्र, इसकी बहिनका नाम यातना था (भाग० ४.८.४)। (२) स्वारोचिष मन्वंतरके सप्तर्षियोंमेंसे एक ऋषिका नाम (विष्णु० ३.१.११)।

निरलि–स्त्री० [सं०] वर्षाऋतुकी बारह शक्तियोंमेंसे एक शक्ति (ब्रह्मां० ४.३२.२९)।

निरवद्य–पु० [सं०] तीन प्रकारके योगैश्वर्योंमेंसे एक प्रकारका योगैश्वर्य (तीन प्रकारके योगैश्वर्य—निरवद्य, सावद्य और सूक्ष्म)। सावद्यकी तरह पंच तत्त्वोंमें दवा योगैश्वर्य जिससे इन्द्रियों तथा अहंकारका संबंध है (वायु० १३.६)।

निरर्बुद–पु० [सं०] २१ नरकोंमेंसे एक—दे० नरक।

निराकृति–पु० [सं०] रोहित मनुके पुत्रका नाम (हरिवंश)।

निरानंद–पु० [सं०] यातुधानके दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्र व्याघ्र राक्षसका पुत्र जो यज्ञोंमें विघ्न डालता है या नष्ट ही कर डालता है (ब्रह्मां० ३.७.९६; वायु० ६९.१३१)।

निरामय–पु० [सं०] (१) प्रथम सावर्णि मनुके ९ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (ब्रह्मां० ४.१.६४)। (२) दक्ष सावर्णिका एक पुत्र (विष्णु ३.२.२४)।

निरामित्र–पु० [सं०] (१) रैवतक मनुके दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (ब्रह्मां० २.३६.६४; वायु० ६२.५५)। (२) मगध देशके राजा बृहद्रथके वंशमें उत्पन्न (जरासंधवंशज) एक राजा जिसने १०० वर्षतक राज्य किया था (ब्रह्मां० ३.७४.१२२; वायु० ९९.२९८)। (३) द्वितीय सावर्णि मनुके दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (ब्रह्मां० ४.१.७२)। (४) भृगु, जो विष्णुके अवतार थे, के चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (वायु० २३.१४९)।

निरालोक–पु० [सं०] लोकालोक पर्वत जो हजारों योजन ऊँचा और उतना ही चौड़ा है। उसके एक ओर प्रकाश है और दूसरी ओर अन्धकार है। एक ओर वह लौकिक है और दूसरी ओर अलौकिक है। देवताओं द्वारा अविदित वह सर्वविध लोकव्यवहारवर्जित है जिसे एक अंधकारपूर्ण प्रदेश कहा गया है जिसके अंतमें भगवान्का लोक है। सृष्टिके सात लोकोंके ऊपर यह दिव्यलोक है (ब्रह्मां० २.१९.१५१, १६७-९; २१.१०६; ३.७.२९४; ४.२.१८८; वायु० ४९.१४५-१५९; ५०.१६०)। आलोकके ऊपरका स्थान (मत्स्य० १२३.४७; १२४.८३-८४)।

निराहार–पु० [सं०] एक पर्वतीय जनपद या राज्य (मत्स्य० ११४.५५)।

निरुक्त–पु० [सं०] वैदिक पदार्थोंकी व्याख्या रूप जिसकी

रचना शाकल्य ऋषिके शिष्य जातुकर्ण्यने की थी (ब्रह्मां०) जिसे रथीतरने लिखा (भाग० १२.६.५८; ब्रह्मां० २.३५.३)। शाकपूर्णके एक शिष्यने इन्हींके निदर्शनमें इसे फिरसे क्रमबद्ध किया (विष्णु० ३.४.२३)। इसे चौथी संहिता मानते हैं। रथीतर ही इसके प्रवर्तक थे (वायु० ६१.२; ६५.२८)।

निरुत्सुक–पु० [सं०] (१) भार्गव रौच्य युगके सप्तर्षियोंमेंसे एक ऋषि—तेरहवें मन्वंतर = विष्णु०—(ब्रह्मां० ४.१.१०२; विष्णु० ३.२.४०)। (२) रैवत मनुके दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (मत्स्य० ९.२१)।

निर्ऋता–स्त्री० [सं०] खशा और कश्यपके लालावि, क्रथन, भीम, सुमाली आदि कई पुत्र हुए और आलम्बा आदि सात कन्याएँ हुईं। उक्त सात कन्याओंमेंसे एक कन्याका नाम (ब्रह्मां० ३.७.१३८; वायु० ६९.१७०)।

निर्ऋति–पु० [सं०] (१) एकादश रुद्रोंमेंसे एक रुद्रका नाम (मत्स्य० १७१.३८; वायु० ६६.६९; ब्रह्मां० ३.३.७०; महाभा० आदि० ६६.२)। (२) दिनमुहूर्तोंमेंसे एक मुहूर्तका नाम। ये मुहूर्त सूर्यकी गति विशेषसे होते हैं। दिन मुहूर्त सूर्यकृत हैं (ब्रह्मां० ३.३.४०, ७०; वायु० ६६.४१; १११.४०)। (३) स्त्री०—अधर्मकी स्त्री। इससे नैर्ऋत नामके महाभयंकर ३ राक्षस उत्पन्न हुए—भय, महाभय और मृत्यु (महाभा० आदि० ६६.५४, ५५)। एक देवी जो मृत्युकी अधिष्ठत्री देवी है। (४) इसने निःसंतान होनेके कारण अधर्मके यमजको दत्तक लिया था (भाग० ४.८.२; विष्णु० ३.१४)। पारिजात लाते समय यह मनुष्यों द्वारा खींचे रथपर सवार हो श्रीकृष्णसे लड़ने गया, पर अपनेको असमर्थ पा लौट गया (भाग० १०[६५(५)४२]; [६६(५)३६])। द्वारकाके ब्राह्मणके मृत-पुत्रको खोजने अर्जुन इसके नगर गये थे (भाग० १०.८९.४४)। (५) पुरंजन नगरके पश्चिमीय द्वारोंमेंसे एक (भाग० ४.२५.५३; २९.१४)। यह एक दिक्का स्वामी (दिक्पाल) एक राक्षस है जो औरोंके साथ ललिताकी उपासनाको आया था (ब्रह्मां० ४.२६.५३; ३०.९; मत्स्य० २६६.२२)। (६) जब इसने कुबेरको कुजंभसे पराजित होते देखा तब उनका खड्ग ले युद्धके लिए प्रस्तुत हुआ। जब यह भी परास्त ही होनेवाला था, वरुणने अपने पाशसे कुजंभके दोनों हाथ बाँध दिये। महिषने निर्ऋति और वरुण दोनोंको ही हरा दिया। कुजंभको पाशमुक्त किया और इसकी सूचना इन्द्रको दी (मत्स्य० १५०.८६, १२६८, १३०-३)। इसे तारकने परास्त किया था (मत्स्य० १५३.१८०)। (७) एक वसु, जो धर्म और सुदेवीका एक पुत्र था (मत्स्य० १७१.४७)। (८) नैर्ऋत्य दिशाका देवता (वायु० १०८.३१)।

निर्ऋतिगण–पु० [सं०] शत्रुको पराजित करने, उनके मारण, मोहन उच्चाटनके हेतु इनकी उपासना करते हैं। इनकी उत्पत्ति ब्रह्माके मलद्वारसे कही गयी है (भाग० २.३.९; ३.१२.२६)।

निर्ग्रन्थ–पु० [सं०] पाखंडियोंका एक नास्तिक संप्रदाय—दे० पाखंड।

निर्गुणा–स्त्री० [सं०] ओ३म्की तीन मात्राओंमेंसे एक (तीसरी) मात्राका नाम (वायु० २०.२)।

निर्जलएकादशी–स्त्री० [सं०] ज्येष्ठ शुक्ला एकादशी जिस दिन निर्जल व्रतका विधान है। इस व्रतसे स्वर्गादिके अतिरिक्त आयु तथा आरोग्यवृद्धि विशेष होती है। यदि सब एकादशीव्रत न हो सकें तो केवल निर्जला करनेसे पूरा फल मिलता है—संवत्सरस्य या मध्ये एकादश्यो भवन्त्युत। तासां फलमवाप्नोति अत्र मे नास्ति संशयः॥' (हिमाद्रिमें-महाभारतका व्यासवचन)। व्यासके कहनेसे भीमसेन (पांडव) ने यह व्रत किया था जिससे सालभरकी सब एकादशीव्रतोंका फल प्राप्त कर वह स्वर्ग गये थे (महाभा०)। इस दिन 'जलधेनुदानव्रत' भी होता है।

निर्भय–पु० [सं०] तेरहवें मन्वतरमें रौच्य मनुके दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (ब्रह्मां० ४.१.१०४; वायु० १००.१०९)।

निर्भया–स्त्री० [सं०] अन्धकासुर रक्तपानार्थ शिवजी द्वारा सृष्ट अनेक मानस-पुत्री मातृकाओंमेंसे एक मानस-पुत्री मातृका (मत्स्य० १७९.२५)।

निर्मोक–पु० [सं०] सावर्णि मनुके नौ पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (भाग० ८.१३.११, ३१; विष्णु० ३.२.१९; ब्रह्मां० ४.१.२२)।

निर्मोह–पु० [मं०] (१) रैवत मनुके दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (मत्स्य० ९.२१)। (२) बारहवें मन्वंतरके सप्तर्षियोंमेंसे एक ऋषि (विष्णु० ३.२.४०)। (३) सावर्णि मनुके एक पुत्र (वायु० १००.२१)। (४) रौच्य मनुके युगके सप्तर्षियोंमेंसे एक ऋषि काश्यपका नाम (ब्रह्मां० ४.१.१०३)।

निर्यंतर–पु० [सं०] इन्होंने गौतमसे ब्रह्मां० पुराण सुन कर वाजश्रवासे कहा (ब्रह्मां० ४.४.६३-४)। गौतमसे वायु पुराण भी सुना (वायु० १०३.६३)।

निर्वक्त्र–पु० [सं०] अधिसीमकृष्णका पुत्र तथा उष्णका पिता (वायु० ९९.२७१)।

निर्वाक्–पु० [सं०] पुरञ्जन नगरका एक अंधा निवासी जो काम करनेमें उसकी सहायता करता है = हाथ (भाग० ४.२५.५४; २९.१५)।

निर्वाण–पु० [सं०] मोक्ष (भाग० ३.२५.२८-२९; ६.४.२८; ९.७.२७; ब्रह्मां० ३.५६.१०; विष्णु० १.२०.२८, ३४; २.८.११९; ३.१८.१७, ८६)। विभूतिद्वादशीव्रत गंगा तटपर करनेसे मोक्ष प्राप्त होता है (मत्स्य० १००.३३)।

निर्वाणप्रिया–स्त्री० [सं०] एक गंधर्वीका नाम।

निर्वाणरति–पु० [सं०] तीसरे सावर्णि मनुके मन्वंतरके तीन देव गणोंमेंसे एक देवगण। प्रत्येक देवगणमें ३० देव कहे गये हैं (ब्रह्मां० ४.१.७३.७५)।

निर्वाणरुचि–पु० [सं०] ग्यारहवें मन्वंतरके तीन देवगणोंमेंसे एक देवगणका नाम। प्रत्येक गणमें १० देव हैं (भाग० ८.१३.२५; ६.३.२, ३०)।

निर्वृति–पु० [सं०] (१) धृष्टि (धृष्ट = ब्रह्मां०) का एक पुत्र तथा दशार्हका पिता एवं व्योमका दादा (भाग० ९.२४.३; ब्रह्मां० ३.७०.४०)। (२) बृहद्रथवंशी मगधराज सुनेत्रका पुत्र जिसने १०० वर्षोंतक राज्य किया था (मत्स्य० २७१.२६)। (३) ज्यामधवंशी राजा धृष्टका पुत्र तथा विदूरथका पिता (मत्स्य० ४४.३९-४०)।

निल–पु० [सं०] वसुदाके गर्भसे उत्पन्न माली राक्षसका

लड़का एक राक्षस जो विभीषणका मंत्री था (रामायण)।

निलायनक्रीड़ा–स्त्री० [सं०] गोपोंका एक खेल जिसमें गोप चोर, चौकीदार और वकरीका रूप धारण करते हैं। मयपुत्र मायावी व्योम असुरका रूप वदल कर आता है और सव गोपोंको खोहमें ले जाकर वंद करता है। श्रीकृष्ण असुरको खोज कर मार डालते हैं (भाग० १०.३७.२६-३२)।

निवपन–पु० [सं०] पितरोंके उद्देश्यसे दिया हुआ दान—'पितृदानं निवापः स्यात्'—अमरकोश।

निवात–पु० [सं०] शूरके दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (ब्रह्मां० ३.७१.१३८; वायु० ९६.१३६)।

निवातकवच–पु० [सं०] (१) एक प्रकारके दैत्य जो संख्यामें ३०,०००,००० थे। ये प्रह्लादके वंशज थे जो तप करके शुद्ध हो गये थे और समुद्रमें रहते थे। इनका कवच अभेद्य था, पर ये युद्धमें अर्जुन द्वारा मारे गये थे (महाभा० वन० १६९-१७२)। (२) संह्लादके पुत्र जिनको देवता, गंधर्व, नाग और राक्षस नहीं मार सके, पर भर्गका आश्रय लेकर अर्जुनने रणस्थलमें इन्हें मार डाला (मत्स्य० ६.२८-९)। ये प्रह्लादके कुलमें उत्पन्न हुए थे (विष्णु० १.२१.१४) तथा रसातलके दानव-वर्गमें थे जिनका हिरण्यपुरमें निवास था (भाग० ५.२४.३०; १०.८९.३४[५])। इन्हें अर्जुनने परास्त किया था (भाग० १०.८९.३४[५]; ब्रह्मां० ३.५.३७)।

निवेशक–पु० [सं०] यक्षोंके कई गणोंमेंसे एक यक्षगण (वायु० ६९.३९-४०)।

निवृत्ति–स्त्री० [सं०] (१) शाल्मलिद्वीपकी सात मुख्य नदियोंमेंसे एक नदीका नाम (ब्रह्मां० २.१९.४७; वायु० ४९.४२; विष्णु० २.४.२८)। (२) एक प्राचीन तीर्थका नाम। (३) रुद्रकी सोलह कलाओंमेंसे एक कला। ये भी एक प्रकारकी शक्ति है (ब्रह्मां० ४.३५.९८)।

निर्व्याधि–पु० [सं०] एक रुद्रका नाम (ब्रह्मां० ४.३४.१४)।

निशठ–पु० [सं०] (१) (ब्रह्माण्ड = शठ) वसुदेव और रोहिणीका एक पुत्र। ये वलराम प्रभृति आठ भाई थे। इनकी चित्रा नामकी एक वहिन थी (वायु० ९६.१६२)। (२) वलदेवके एक पुत्रका नाम (ब्रह्मां० ३.७१.१६६; विष्णु० ५.२५.१९)।

निशा–स्त्री० [सं०] (१) कुशद्वीपकी सात मुख्य नदियोंमेंसे एक नदी। वहाँकी इन सव नदियोंके दो-दो नाम थे। इसका दूसरा नाम पवित्रा था (मत्स्य० १२२.७१)। (२) क्रोधा या क्रोधवशाकी सात पुत्रियोंमेंसे एक पुत्री (वायु० ६९.२०५)।

निशाकर–पु० [सं०] (१) एक महर्षिका नाम (हिं० वि० को०)। (२) चन्द्रमाका एक नाम (ब्रह्मां० २.२८.४३)। तिथि, पर्वसंधि, ऋग् तथा यजुर्वेदके छंदोंका प्रवर्त्तक सोम (वायु० ३१.४०)। यह सूर्यसे १००० योजनपर है (वायु० १०१.१२९)। पर्याय—निशापति, निशानाथ, निशारत्न, निशाकर आदि।

निशित–पु० [सं०] वलरामके १३ पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम। इनकी पाँच वहिनें थीं (वायु० ९६.१६४)।

निशिथ–पु० [सं०] दोषा और पुष्पार्णके तीन पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम। पुष्पार्णकी दूसरी पत्नीका नाम प्रभा था। उससे भी पुष्पार्णके प्रातः, मध्यंदिन और सायं ये तीन पुत्र हुए (भाग० ४.१३.१४)। यह मथुराके पूर्वी प्रवेश-द्वारकी रक्षा करता था (भाग० १०.५०.२०[२])। प्रभास क्षेत्रमें यह अपने ही संवंधियोंसे लड़ा था (भाग० ११.३०.१७)।

निशीथ–पु० [सं०] रात्रिके एक कल्पित पुत्रका नाम (भाग०)।

निशीथा–स्त्री० [सं०] षोडशपत्राब्जमें स्थित षोडश शक्तियोंमेंसे एक शक्तिका नाम (ब्रह्मां० ४.३२.१२)।

निशुंभ–पु० [सं०] (१) एक असुरका नाम जो दनुके गर्भसे उत्पन्न कश्यप ऋषिका पुत्र था। इसके दो भाई (शुंभ वड़ा तथा नमुचि छोटा) और थे। नमुचि तो इन्द्रके हाथों मारा गया था, पर शुंभ और निशुंभने देवताओंको जीत कर स्वर्गपर अधिकार कर लिया। रक्तबीजसे महिषासुरतकका देवी दुर्गा द्वारा मारा जाना सुन निशुंभने दुर्गाका वध करनेकी प्रतिज्ञा की। इसी समय चंड और मुंड नामके दो और राक्षस इनसे आ मिले। पहिले शुंभ और निशुंभने सुधीर नामक दूतसे दुर्गाको कहलाया कि 'हममेंसे किसीको पति ग्रहण करो।' दुर्गाने उत्तरमें कहा—'जो मुझे युद्धमें जीतेगा मैं उसीसे विवाह करूँगी।' पहले धूम्रलोचन, चण्ड, मुंड, रक्तबीज आदि असुरोंको उनके साथियों सहित युद्धमें परास्त कर दुर्गाने मार डाला। तदुपरांत शुंभ और निशुंभने युद्ध किया, परन्तु पहले निशुंभ, फिर शुंभ दुर्गाके हाथों मारे गये। इस प्रकार असुरोंका उपद्रव शांत हुआ और इन्द्रको स्वर्गका राज्य पुनः मिला (वामनपुराण)। (२) गवेष्ठीके तीन पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (वायु० ६७.७७)। इन्द्र और वलिके देवासुर-संग्राममें यह लड़ा था (भाग० ८.१०.२१, ३१)। यह भद्रकालीसे लड़ा, पर मारा गया (ब्रह्मां० ४.२९.७६)। महामाया योगनिद्राने इसका वध किया था (विष्णु० ५.१.८२)।

विशेष—मार्कण्डेय पुराणांतर्गत देवीमाहात्म्यमें शुंभ और निशुंभकी उत्पत्तिकी वात नहीं लिखी है।

निश्चर–पु० [सं०] एकादश मन्वतरके सप्तर्षियोंमेंसे एक (पौलस्त्य) ऋषि। तृतीय सावर्ण मनुके समयके सप्तर्षियोंमेंसे एक ऋषिका नाम (ब्रह्मां० ४.१.७९)।

निश्चल–पु० [स०] अत्रिका एक पुत्र जो स्वारोचिष मन्वंतरके सप्तर्षियोंमेंसे एक ऋषि था (ब्रह्मां० २.३६.१८)।

निश्चला–स्त्री० [सं०] हिमालयकी तलहटीसे विनिःसृत भारतवर्षकी कई नदियोंमेंसे एक नदीका नाम (मत्स्य० ११२.२२)।

निश्चीरा–स्त्री० [सं०] भारतवर्षकी एक विख्यात नदीका नाम। इसकी यात्रा करनेसे अश्वमेध यज्ञका फल प्राप्त होता है। यात्रीको अन्तमें विष्णुलोक मिलता है। निश्चीराके संगममें स्नान और दानका फल इन्द्रलोकप्राप्ति है (महाभा० वन० ८४.१३८-९; वायु० ४९.९६; मत्स्य०)।

निश्च्यवन–पु० [सं०] (१) स्वारोचिष मन्वंतरके सप्तर्षियोंमेंसे एक ऋषिका नाम (मत्स्य० ९.८)। (२) ये बृहस्पतिके द्वितीय पुत्र, जो कीर्ति, ब्रह्मवर्चस् और कान्तिसे कभी च्युत नहीं होते एवं केवल पृथ्वी माताकी ही स्तुति करते हैं। निष्पाप, निर्मल, तेजःपुञ्जरूपसे प्रकाशित विशुद्ध सत्त्व-

रूप है। इनके पुत्रका नाम सत्य है (महाभा० वन० २१९. १२-३)।

निश्शेषकल्प—पु० [सं०] यह ब्रह्माका है। १००० युगों× २०००+सब अंतर=निःशेषकल्प।

निषध—पु० [सं०] (१) भारतवर्षके सात कुलपर्वतोंमेंसे एक पर्वतका नाम (ब्रह्मां० १.१.६९; मत्स्य० ११३.१२, २२; १२१.६६; १८३.१; वायु० १.८५; विष्णु० २.२.२८,३९)। यह इलावृतके दक्षिण हरिवर्षकी सीमापर स्थित है (भाग० ५.१६.९, २६; वायु० ३४.१४,२५)। जहाँ बंदरों और नागोंका निवास है (भाग० २.१७.३४; ३.७.१९४; ४.३१. १६)। यहाँ एक विष्णु-मंदिर भी है (वायु० ३५.८; ३६. १९; ३७.२८; ४१.४८)। (२) श्री रामचन्द्रके प्रपौत्र और कुशके पौत्रका नाम। इनके पिताका नाम अतिथि था (हरिवंश, रामायण)। (३) भरतवंशी महाराज कुरुके पौत्र और महाराज जनमेजयके पुत्रका नाम जो धर्म और अर्थके संग्रह और त्यागमें कुशल समझे जाते थे और सब जीवोंके हितमें निरत रहते थे (महाभा० आदि० ९४.५६)। (४) पुराणानुसार एक देशका प्राचीन नाम जो विन्ध्याचल पर्वतपर स्थित था। ब्रह्मांडपुराणानुसार निषध नलके पिता थे और नल यहींके राजा थे (ब्रह्मां० ३.६३.२०१-२)। (५) कुरुके एक पुत्रका नाम। (६) अतिथिका एक पुत्र तथा नभका पिता (अनलका पिता=विष्णु०) (भाग० ९.१२.१; मत्स्य० १२.५२; वायु० ८८.२०१; विष्णु० ४. ४-१०५)। मणिधान्यज राजाओं द्वारा भोग्य कई जनपदोंमेंसे एक जनपदका नाम (वायु० ९९.३८४) जो विन्ध्याचल पर्वतकी दूसरी ओर है (वायु० ४५. १३३)।

निषधन—पु० [सं०] धर्म और मरुत्वतीसे उत्पन्न कई अग्नि आदि मरुतोंमेंसे एक मरुत्का नाम (मत्स्य० १७१.५३)।

निषधा—स्त्री० [सं०] विन्ध्याचलसे निकली एक नदीका नाम (ब्रह्मां० २.१६.३२; वायु० ४५.१०२)।

निषधाधिपति—पु० [सं०] कार्त्तवीर्यके एक मित्रका नाम जिसका वध परशुरामने किया था (ब्रह्मां० ३.३९.२, ८)।

निषधावती—स्त्री० [सं०] एक नदीका नाम—दे० निषधा। मार्कण्डेयपुराणानुसार यह विन्ध्याचलसे निकली है (ब्रह्मां० २.१६.३२; वायु० ४५.१०२)।

निषधाश्व—पु० [सं०] सूर्यकन्या तपतीमें उत्पन्न कुरुक्षेत्राधिपति कुरुके चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (भाग० ९. २२.४)।

निषाद—पु० [सं०] (१) २०वाँ कल्प। प्रजापति निषादने १००० देव वर्षोंतक कठिन तप किया था। इन्हें तपसे त्रस्त देख इनके पिता ब्रह्माने कहा—'निषीद' बैठ जाओ यानी मत करो, अतः निषाद नाम पड़ा। इन्हींसे निषादवान् स्वरकी उत्पत्ति हुई (वायु० २१.४३)। (२) वसुदेवका एक पुत्र जो सबसे पहला धनुर्धर (वायु० ९६.१८४, १८७) तथा शिकारी था (वायु० ४७.५१)। (३) एक अनार्य जाति। जब राजा वेनकी जाँघ मथी गयी तब उसमेंसे एक नाटा तथा काला व्यक्ति प्रकट हुआ जो बहुत घबड़ाया हुआ हाथ जोड़ कर खड़ा हो गया। इसे व्याकुल देख अत्रि ऋषिने कहा—'निषीद' बैठ जाओ। अतः यह निषाद जातिका आदि पुरुष हुआ (भाग० ४.१४.४५-४६; विष्णु० १.१३. ३५-६)। (४) महाभा० भीष्म० ९.५१ तथा पुराणानुसार एक प्राचीन देशका नाम।

निषादकर्ष—पु० [सं०] एक देशका प्राचीन नाम—दे० निषाद (४)।

निषादवंशकर्त्ता—पु० [सं०] ऋषियों द्वारा वेनके बाँये हाथको मथनेपर काले रंगका जो बौना उत्पन्न हुआ था वह विन्ध्याचलके आसपासके प्रांतका अधिपति हुआ (ब्रह्मां० २.३६.१४४-६)। धीवर, महीगीर आदि इसीके वंशज कहे गये हैं (वायु० ६२.१२३)।

निष्कंभ—पु० [सं०] गरुड़के एक पुत्रका नाम (विष्णु०)।

निष्कंभु—पु० [सं०] पुराणानुसार देवताओंका एक सेनापति (हिं० श० सा०)।

निष्क—पु० [सं०] सुवर्णका एक सिक्का (मत्स्य० ७७.११; वायु० ८०.१६; विष्णु० ५.२८.१३-१४, १९)।

निष्कलंकतीर्थ—पु० [सं०] एक तीर्थस्थान जहाँ स्नान करनेसे पुराणानुसार सारे पाप नष्ट हो जाते हैं (हिं० वि० को०)।

निष्कुट—पु० [सं०] (१) खंडहरोंके निकटवर्ती वे उपवन जहाँ पिशाचोंका निवास रहे (ब्रह्मां० ३.७.४०४)। (२) एक प्राचीन प्रदेश, जहाँके नरेशोंको अर्जुनने जीता था (महाभा० सभा० २७.२९)।

निष्कुटिका—स्त्री० [सं०] कुमार कार्तिकेयकी एक अनुचरी मातृकाका नाम (महाभा० शल्य० ४६.१२)।

निष्कुलाद—पु० [सं०] एक असुर जिसकी नगरी अतलमें है (ब्रह्मां० २.२०.१७)।

निष्कुलादपुर—पु० [सं०] प्रथम तल (अतल) जहाँकी मिट्टी काली है, का एक नगर जिसका अधिपति निष्कुलाद नामका एक प्रधान असुर है (वायु० ५०.१६)।

निष्क्रिय—पु० [सं०] वैखानस, वालखिल्य, औदुम्बर, फेनप, कुटीचक, हंस आदि संन्यासियोंके वर्गोंमेंसे एक वर्ग विशेषका नाम (भाग० ३.१२.४३)।

निष्टि—स्त्री [सं०] दक्ष प्रजापतिकी पुत्री दितिका एक नाम जो कश्यप ऋषिको व्याही थी और दैत्योंकी माता थी—दे० दिति।

निष्टिग्री—स्त्री० [सं०] देवमाता अदितिका एक नाम। यह देवराज इंद्रकी भी माता थीं (ऋग्वेद १०.१०१.१२)।

निष्ठा—स्त्री० [सं०] पाणिग्रहण मंत्रके सातवें पदमें आस्था जो सत्यव्रतको विदित थी (वायु० ८८.९७)।

निष्ठीवी—स्त्री० [सं०] हिमालयसे निकलनेवाली गंगा, यमुना आदि २२ नदियोंमेंसे एक नदी (ब्रह्मां० २. १६.२६)।

निष्ठुर (विष्ठुर ?)— पु० [सं०] एक मंत्रकार तथा आत्रेय ऋषि (वायु० ५९.१०४)।

निष्ठुरिक—पु० [सं०] एक काद्रवेय नागका नाम (महाभा० उद्योग० १०३.१२)।

निष्पापा—स्त्री० [सं०] प्लक्षद्वीपकी सात प्रधान नदियोंमेंसे एक नदी (वायु० ४९.१७)।

निष्पाव—पु० [सं०] सौभाग्यदायक आठ वस्तुओं—ईख, रसराज, निष्पाव, जीरा, धनियाँ; गोघृत (या दही),

कुसुम्भ और कुंकुम––को सौभाग्याष्टक कहते हैं। सौभाग्यदायकोंमेंसे एक (मत्स्य० ६०.८.२७)।

निष्प्रकंप–पु० [सं०] तेरहवें मन्वंतरके सप्तर्षियोंमेंसे एकका नाम (ब्रह्मां० ४.१.१०३; विष्णु० ३.२.४०)।

निष्फलि–पु० [सं०] एक अस्त्र विशेष जिससे शत्रुके चलाये अस्त्र निष्फल कर दिये जाते हैं। विश्वामित्रजीने और अस्त्रोंके साथ इसे भी श्री रामचन्द्रको बतलाया था (वाल्मीकि रामायण)।

निसुंद–पु० [सं०] (१) ह्लादका एक पुत्र जिसके सुंद और उपसुंद नामके दो पुत्र थे (ब्रह्मां० ३.५.३४; वायु० ६७.७१)। (२) एक दैत्य जिसे कृष्णने मारा था (महाभा० वन० १२.२९)।

निसुंधु–पु० [सं०] अह्लादका पुत्र तथा प्रह्लादका भतीजा—दे० अह्लाद।

निस्तारबीज–पु० [सं०] पुराणानुसार वह कार्य जिससे मुक्ति हो जाय। पुराणोंका मत है कि कलियुगमें मनुष्य तपोहीन हो जायंगे तब भगवद्-भजन, कीर्त्तन, वंदन, विष्णुके मन्त्रका जप आदिसे ही मुक्ति हो सकेगी।

निस्स्वर–पु० [सं०] ग्यारहवें मन्वंतरके सप्तर्षियोंमेंसे एक ऋषि (विष्णु० ३.२.३०)।

नीति–स्त्री० [सं०] शुक्राचार्यने इसे महेश्वरसे सीख असुरोंको बताया था (मत्स्य० ४७.७४, ७५; वायु० ९७.१०५)। बृहस्पतिके अनुसार यह सामसे आरंभ होता है, इसके दूसरे अंग 'भेद, दान और दण्ड' हैं जिनका समय और पात्र देखकर ही प्रयोग करना चाहिये। असुरोंके संबंधमें केवल 'दण्ड'का ही प्रयोग कहा गया है (मत्स्य० १४८.६५-७१)।

नीतिन–पु० [सं०] (बीतिन पाठ मोर सं० में) एक भार्गव गोत्रकार ऋषि (मत्स्य० १९५.२००)।

नीतिशास्त्र–पु० [सं०] शुक्रका नीतिशास्त्र (ब्रह्मां० ३.७.१९१; ७२.१०७); जिसकी शिक्षा प्रह्लादको मिली थी (विष्णु० १.१९.२६-२८, ३४-४९)।

निदाघ–पु० [सं०] पुलस्त्यका पुत्र जिसे ऋभुने ज्ञान दिया था। वीरनगरमें देविका नदीके तटपर एक कुंजमें इसने १००० वर्षोंतक तप किया था। इस अवधिके पश्चात् भोजनके समय इसके गुरु ऋभु आये और भोजन कर चले गये। निदाघने पुनः १००० वर्षोंतक तपस्या की। इसके पश्चात् एक दिन जब निदाघ दूर खड़े हाथीपर सवार एक राजाको जाते देख रहे थे ऋभुने आकर पूछा—'राजा कौन है और हाथी कौन है?' निदाघ बोले—'ऊपर राजा है और राजाके नीचे हाथी (जिसपर राजा बैठा है) है। ऋभुने पूछा—'ऊपर-नीचेका क्या अर्थ हुआ?' बिना यह जाने कि प्रश्नकर्त्ता गुरु ऋभु ही है निदाघ उनपर कूद कर सवार हो गये और बोले, 'मैं ऊपर हूँ और तुम नीचे।' निदाघको अभीतक अद्वैत ज्ञान नहीं हुआ यह देख ऋभु उसे पुनः दीक्षा दे चले गये। उस दिनसे निदाघ सभी वस्तुओंको एक ही दृष्टिसे बिना भेदभावके देखने लगे थे (विष्णु० २, अध्या० १५ और १६)।

नीप–पु० [सं०] (१) पार (पौर=मत्स्य०) का पुत्र तथा शुक-पुत्री कृत्वीका पति जिससे १०० पुत्र हुए थे जिनमें अणुह सबसे ज्येष्ठ था। सौके सौ पुत्रोंका सामूहिक नाम भी नीप था। नीपोंका वंशकर श्रीमान् कीर्तिवर्धन हुआ। ब्रह्मदत्त भी इनका ही एक पुत्र था (भाग० ९.२१.२४-२५; मत्स्य० ४९.५२, ५९; वायु० ९९.१७४-५)। (२) कृतिका पुत्र तथा उग्रायुधका पिता (भाग० ९.२१.२९)।

नीपप्रिया–स्त्री० [सं०] ललिता देवीके १६ नामोंमेंसे एक नाम (ब्रह्मां० ४.१७.३४)।

नीराजन–पुं० [सं०] आरती करना। कामेश्वर और ललिता देवीके विवाहोत्सवमें अप्सराओंने यह कृत्य किया था (ब्रह्मां० ४.१५.३३; मत्स्य० २६७.१९)।

नीराजनद्वादशी–स्त्री० [सं०] कार्त्तिक कृष्णा द्वादशीको स्वच्छ तथा उज्ज्वल पात्रमें अक्षत आदि रख देवता, ब्राह्मण, बड़े-बूढ़ोंका नीराजन करनेसे अक्षय फल प्राप्त होता है (भविष्योत्तर०)।

नील–पु० [सं०] (१) क्रोधा या क्रोधवशाकी कश्यपजीसे १२ पुत्रियाँ हुईं। वे सबकी सब पुलहको ब्याही गयीं। उनमेंसे एक हरि या हरिभा और पुलहके वानर, किन्नर, गोलांगूल आदि अनेक पुत्रोंमेंसे एक वर्गका एक पुत्र जो वानर जातिका था (ब्रह्मां० ३.७.१७६, ३१९)। (२) पराशरोंकी आठ श्वेत कृष्ण आदि शाखाओंमेंसे एक शाखा (ब्रह्मां० ३.८.५५, ९५; वायु० ७०.८७)। (३) श्री रामचन्द्रकी सेनाका एक बंदर जो लंका-युद्धमें सम्मिलित था (भाग० ९.१०.१६, १९)। (४) भागवतानुसार इलावृत खंडका एक पर्वत जो रम्यक वर्षकी सीमापर कहा गया है। जम्बूद्वीपके ७ वर्ष पर्वतोंमेंसे एक जहाँ सिद्ध ब्रह्मर्षि रहते हैं (भाग० ५.१६.८; १९.१६; मत्स्य० ११३.२२; वायु० ३४.२०, २५; ३५.८)। कहते हैं यह नीलमकी नाईं चमकता है (ब्रह्मां० १.१.६९; २.१५.२२, २८; १७.३५; वायु० १.८५; ४२.६७; ४६.३४)। (५) नवनिधियोंमेंसे एकका नाम। कुबेरकी आठ निधियोंमेंसे एक (वायु० ४१.१०)। (६) नीलनीके गर्भसे उत्पन्न राजा अजमीढ़के एक पुत्रका नाम (मत्स्य० ५०.१)। इनकी बड़ी तपस्याके पश्चात् इनके पुत्र सुशांति (शांति=भाग०) का जन्म हुआ था (भाग० ९.२१.३०; वायु० ९९.१९४; विष्णु० ४.१९.५६-७)। यह पांचल-नरेश था जिसे उग्रायुधने मारा था (मत्स्य० ४१.७८; वायु० ९९.१९२)। (७) सुतलका एक राक्षस (ब्रह्मां० २.२०.२२; वायु० ५०.२२)। (८) यदुके पाँच पुत्रोंमेंसे एक (ब्रह्मां० ३.६९.२; मत्स्य० ४३.७; वायु० ९४.२)। (९) एक भार्गव गोत्रकार ऋषि (मत्स्य० १९५.१९)। (१०) माहिष्मती नगरीके एक राजा जो क्रोधवश संज्ञक दैत्यके अंशसे उत्पन्न हुए थे (महाभा० आदि० ६७.६१)। ये द्रौपदीके स्वयंवरमें उपस्थित हुए थे (आदि० १८५.१०)। सहदेवसे इनका भीषण युद्ध हुआ था। अग्निदेवने इनकी सहायता की थी। इन्होंने अपनी पुत्रीका विवाह अग्निदेवसे किया था (महाभा० सभा० ३१.२१-२३, ३३, ३५)। (११) भद्राश्व देशके पाँच कुलपर्वतोंमेंसे एक कुलपर्वत (वायु० ४३.१४; ४८.८; विष्णु० १.४.२६; २२.३९)। यह जम्बूद्वीपकी सीमापर था (विष्णु० २.१.२०; २.११)। (१२) अजमीढ़वंशी पृथुसेन-सुत राजा पारका एक पुत्र जो काम्पिल्याधिपति समर आदि १०० पुत्रोंका पिता था

(विष्णु० ४.१९.३८-३९)। (१३) १६ यमोंमेंसे एक यमका नाम—दे० तर्पणपद्धति। (१४) पाण्डव पक्षका एक सैनिक, जो सम्पूर्ण शस्त्रास्त्रोंको चलानेमें दक्ष तथा महान् योद्धा था, जिसका वध अश्वत्थामाने किया था (महाभा० उद्योग० १७१.१५)। (१५) राजा प्रियव्रतने अपने ज्येष्ठ पुत्रको जम्बूद्वीपका अधिपति बनाया। आग्नीध्रके प्रजापतितुल्य नौ पुत्र हुए। उन्होंने जम्बूद्वीपको नौ पुत्रोंमें बाँट दिया। यह उनके पाँचवें पुत्र रम्यका राज्य है। यह इलावृतवाद रम्यक नामसे ख्यात है (ब्रह्मां० २.१४.५०; १५.३३; वायु० ३३.४४)। (१६) मूर्त्ति स्थापनाके समय अथर्ववेदी उत्तर द्वारपर अथर्ववेद-आंगिरस कल्प, रौद्रसूक्त, अपराजित देवी सप्तसूक्त तथा शान्तिकाध्यायके साथ इसका उच्चारण होता है (मत्स्य० २६५.२८)।

नीलकंठ–पु० [सं०] (१) कालंजरमें स्थापित शिवमूर्त्ति जिसके सम्मुख सुमना, कुसुद, शुद्ध, छिद्रदर्शी, सुनेत्रक, सुनेत्र और अंशुमान् ये सात योगपारग मृग रूपमें भक्ति भावसे उपस्थित हुए। ये सात भाई थे। इन्होंने किसी पूर्व जन्ममें गुरुकी गाय श्राद्धमें उपयुक्त कर खा डाली थी। पितरोंमें भक्तिके कारण ऐसा दुष्कर्म करनेपर भी प्रत्येक जन्ममें इन्हें पूर्व जन्मकी स्मृति बनी रही। दशार्ण देशमें ये सात व्याध हुए, कालञ्जर पर्वतपर मृग हुए, मानसमें चक्रवाक हुए। इसी क्रमसे बादमें मुक्ति पा गये (मत्स्य० २०.१५; १५७.२३)। समुद्रमंथनसे अमृतादिके साथ 'कालकूट' विप भी निकला था जिसकी गंधसे तीनों लोक व्याकुल हो गये, चारों ओर त्राहि-त्राहि मच गयी। ब्रह्माकी प्रार्थनापर भगवान् शिवने इस हलाहलका पान करके कंठमें धारण कर लिया जिससे कंठ नीला पड़ गया, अतः 'नीलकंठ' नाम पड़ा (ब्रह्मां० २.२५.९०; वायु० ५४.३-९४; भाग० ८.७.४२)। (२) एक पक्षी विजयादशमीको जिसका दर्शन शुभप्रद होता है।

नीलक–पु० [सं०] वज्रक पर्वतपरके घोर राक्षसोंका सामूहिक नाम (वायु० ३९.३१)।

नीलकुंड–पु० [सं०] एक तीर्थ, जो पितरोंके श्राद्ध आदिके लिए अति प्रशस्त माना गया है (मत्स्य० २२.२२)।

नीलग्रीव–पु० [सं०] शिवकी एक उपाधि तथा नाम (ब्रह्मां० ४.३४.२७)।

नीलचक्र–पु० [सं०] इस चक्रकी स्थिति जगन्नाथजीके मंदिरके ऊपर मानी गयी है—दे० जगन्नाथ।

नीलपताका–स्त्री० [सं०] आनन्द महापीठमें रथके मध्य पर्वमें रहनेवाली ललिता देवीके तुल्य आकार आयुधवाली १५ अक्षरा देवियोंमेंसे एक अक्षरा देवी जिन्होंने जंबुकाक्षको (भंडके एक सेनापतिको) मारा था (ब्रह्मां० ४.१९.५९; २५.९८; ३७.३४)।

नीलपर्वत–पु० [सं०] पितरोंके श्राद्ध आदिके लिए अति प्रशस्त और पवित्र तीर्थ (मत्स्य० २२.७०; १२१.६८)।

नीलमुख–पु० [सं०] पूर्वका एक जनपद या राज्य जहाँसे होकर ह्लादिनी नदी बहती है (ब्रह्मां० २.१८-५४; मत्स्य० १२१.५३)।

नीललोहित–पु० [सं०] (१) शिव, महादेव (ब्रह्मां० ३.७२.१०९; ७३.१; वायु० २१.४; ३१.३२, ५९)। शुक्रने इनकी स्तुति की थी जिसमें इनके ३०० नाम हैं (मत्स्य० ४७.१२७-१६९)। (२) ३० कल्पों, जो ब्रह्माका एक मास है, मेंसे दूसरे कल्पका नाम (मत्स्य० २९०.३)।

नीलमौलेय–पु० [सं०] भद्र देशका एक जनपद (वायु० ४३.१९)।

नीलवान्–पु० [सं०] वामन और अंगनाके दो पुत्रोंमेंसे एक पुत्र, एक हाथी (ब्रह्मां० ३७.३३९)।

नीला–स्त्री० [सं०] कपिल, यक्ष और केशिनीकी एक पुत्री जो निम्नकोटिकी राक्षसी थी और यह क्षुद्र राक्षसोंकी माता थी, जो 'नैल' कहलाते थे (ब्रह्मां० ३.७.७.१४७; वायु० ६९.१७८, १८१)।

नीलिनी–स्त्री० [सं०] (१) अजमीढ़की रानीका नाम (मत्स्य० ४९.४४; वायु० ९९.१६७)। यह नीलकी माता थी (वायु० ९९.१९४)।

नीलोत्पला–स्त्री० [सं०] भारतवर्षकी एक नदी (वायु० ४५.१००)।

नीवार–पु० [सं०] एक प्रकारका अन्न जो श्राद्धमें काम आता है, तिन्नीका चावल (मत्स्य० १५.३५)। जंगली जातिवाले इसे खाते हैं। शकुंतलाने दुष्यंतको खानेके लिए यही अन्न दिया था (भाग० ९.२०.१४)।

नीहार–पु० [सं०] वह स्थान जहाँ चारों दिशाओंके दिग्गज भिन्न प्रकारसे पानी फेंकते हैं (ब्रह्मां० २.२२.५२)।

नूतना–पु० [सं०] वृष्टि करनेवाली सूर्यकी ४०० नाड़ियों (ब्रह्मां० रश्मियों) मेंसे कतिपय रश्मियोंके नाम (वायु० ५३.२०)।

नूपा–स्त्री० [सं०] पारियात्र पर्वतसे निकली कई पुण्य नदियोंमेंसे एक नदी (ब्रह्मां० २.१६.२८)।

नृग–पु० [सं०] (१) श्राद्धदेव तथा श्रद्धाके दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्र तथा सुमतिका पिता (भाग० ९.१.१२; २.१७)। (२) इक्ष्वाकुके पुत्र एक प्राचीन राजा जो बड़े दानी थे। एक बार भूलसे नृगने पहले दान की हुई गौ फिरसे दूसरे ब्राह्मणको दान दे दी। यद्यपि इसका ज्ञान राजाको दान देते समय न था, पर इसके फलस्वरूप राजा नृगको गिरगिट होकर एक सहस्र वर्ष कुएँमें रहना पड़ा था। अंतमें कृष्णावतारके समयमें राजा नृगका श्रीकृष्ण द्वारा उद्धार हुआ (भाग० १०.६४.१०-३०, ४३, ४४(१); १०.३७.१७)। (३) वैवस्वत मनुके १० पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (ब्रह्मां० २.३८.३०; ३.६०.२; विष्णु० ३.१.३३; ४.१.७)। (४) महामना चक्रवर्तीके दो पुत्रोंमेंसे एक उशीनर तथा नृगा (भृशा = मत्स्य०) का पुत्र। ये वैमात्रेय पाँच भाई थे। इन्हें पितासे यौधेयपुर मिला था (ब्रह्मां० ३.७४.१९, २१; मत्स्य० ४८.१८, २०; विष्णु० ४.१८.९)।

नृगा–स्त्री० [सं०] राजा उशीनरकी पाँच स्त्रियोंमेंसे एक स्त्री तथा नृगकी माता (ब्रह्मां० ३.७४.१८-९; विष्णु० ४.२१.१२)।

नृचक्षु–पु० [सं०] (विष्णु० = नृपचक्षु) सुनीथके पुत्र तथा सुखीनल (मत्स्य० = सुखीबल, विष्णु० = सुखावल) के पिताका नाम (भाग० ९.२२.४१; मत्स्य० ५०.८२)।

नृत्य–पु० [सं०] (नाचनेकी कला)। विशोकद्वादशी व्रतका नृत्य भी एक अंग है (मत्स्य० ८२.२९)।

नृत्यप्रिय—पु० [सं०] तांडव नृत्य करनेके कारण शंकरका एक नाम।

नृत्यप्रिया—स्त्री० [सं०] कार्तिकेयकी एक अनुचरी मातृकाका नाम (महाभा० शल्य० ४६.१०)।

नृदेव—पु० [सं०] प्रमतिका पिता जो एक अवतार था (मत्स्य० १४४.५९)।

नृपञ्जय—पु० [सं०] (१) मेधावीका पुत्र तथा दूर्वका पिता (भाग० ९.२२.४२)। (२). सुनीथ (सुवीर=वायु०) का तथा विरथ (वायु०=वीरध) का पिता (मत्स्य० ४९.७९; (वायु० ९९.१९३)।

नृमणि—पु० [सं०] एक पिशाच जो बच्चोंको लगकर तंग करता है (हि० श० सा०)।

नृमहिषा—स्त्री० [सं०] कश्यप और सुरभिकी पुत्री रोहिणीकी चार पुत्रियोंमेंसे एक, कामदुघाके दो वर्गकी संततियोंमेंसे एक वर्गकी संततिका नाम (वायु० ६६.७३)।

नृम्णा—स्त्री० [सं०] प्लक्षद्वीपकी सात मुख्य महानदियोंमेंसे एक महानदी (भाग० ५.२०.४)।

नृयज्ञ—पु० [सं०] पंच-यज्ञोंमेंसे एक, जिसमें अतिथि-सत्कार किया जाता है और जो गृहस्थके लिए आवश्यक समझा गया है (मनुस्मृ० ३.७०)।

नृसिंह—पु० [सं०] (नृहरि, नरहरि, नरसिंह) आधा मनुष्य और आधा सिंहरूपी भगवान् विष्णु, जो विष्णुके चौथे अवतार माने जाते हैं। हरिवर्पमें इनकी इसी रूपमें पूजा होती है (भाग० २.७.१४; ५.१८.७-१४; ७.८.१५-१६; १०.२.४०; विष्णु० ५.५.१६)। हरिवंशके अनुसार सत्ययुगमें दैत्योंके आदि पुरुप हिरण्यकशिपुने तप करके ब्रह्मासे यह वर प्राप्त किया कि किसीसे, किसी समय, किसी स्थानपर मेरी मृत्यु न हो। इस वरसे प्रवल हो हिरण्यकशिपु घोर अत्याचार करने लगा तथा देवताओंसे स्वर्ग छीन कर उन्हें परेशान करने लगा। तब देवताओंके अनुरोधसे विष्णुने नृसिंह रूप धर एक खंभेसे जिसे हिरण्यकशिपुने घूसा मारा था, प्रकट हो हिरण्यकशिपुका पेट नखसे फाड़ डाला था (भाग० ७.८.१५.३१; ११.४.१९)। भागवत और विष्णुपुराणमें सव यही कथा है, पर प्रह्लादकी भक्तिका प्रसंग अधिक है (भाग० ७.८.३४, ४०-५६)।

हिरण्यकशिपुके चार पुत्र थे जिन्हें पढ़ाने शुक्राचार्यके पुत्र आते थे। प्रसिद्ध विष्णु-भक्त प्रह्लाद इन्हींमेंसे एक था। ज्यों-ज्यों हिरण्यकशिपु इसे ईश्वरसे विमुख रखना चाहता त्यों-त्यों यह अपना भक्तिमें अटल होता गया। पिताके यह पूछनेपर कि ईश्वर कहाँ है? प्रह्लाद बोला—'सर्वत्र'। क्या इस खंभमें भी है? प्रह्लाद बोला—'अवश्य'। यह सुनते ही हिरण्यकशिपु तलवार ले उधर ही दौड़ा। इतनेमें प्रलयके समान शब्द हुआ और नृसिंहने उसी खंभेसे प्रकट हो दैत्यराजका वध किया (भाग० ५.१८.७-१४; ६.८.१४; ७.९ (पूरा); ११.११-१४; ब्रह्मां० ३.३३.२६; मत्स्य० १७९.४४-५२, ७६)।

नृसिंहचतुर्दशी—स्त्री० [सं०] वैशाख शुक्ला चतुर्दशी जिसमें प्रदोष व्यापिनी चतुर्दशी लेनेका विधान है। इस तिथिको नृसिंह भगवान्का जन्म हुआ था, अतः इसमें व्रत, पूजन तथा उत्सव आदि करते हैं। इससे नृसिंह रक्षा करते हैं तथा यथेच्छ धन-धान्य प्राप्त होता है (वराह० तथा नृसिंहपु०)।

नृसिंहपुराण—पु० [सं०] एक उपपुराण जिसमें नृसिंहावतारकी कथा विस्तारसे दी है।

नृसिंहपुरी—स्त्री० [सं०] एक नगरी तथा तीर्थस्थान जो मुल्तानमें स्थित है।

नृसिंहभैरवी—स्त्री० [सं०] अन्धकासुर रक्तपानार्थ भगवान् शंकर द्वारा सृष्ट मानस-पुत्री मातृकाओंके जगत् उत्पीड़क उत्पातोंके शमनके लिए भगवान् शंकरजीके आवेदनपर नृसिंह द्वारा अपने विभिन्न अंगोंसे सृष्ट ३२ मातृकाओंमेंसे एक। भवमालिनीकी अनुगामिनी देवी (मत्स्य० १७९.७१)।

नृसिंहवन—पु० [सं०] कूर्म विभागमें पश्चिम-उत्तर स्थित एक देश (बृहत्संहिता)।

नृसिंहशिला—स्त्री० [सं०] नृसिंह भगवान्ने हिरण्यकशिपुका वध करके वदरिकाश्रममें शिलाके रूपमें आकर विश्राम किया था। जो तीन उपवास करके नृसिंहका जप यहाँ करता है उसे मोक्ष मिलता है (स्कंद०, वदरिका०-माहात्म्य)।

नेतिष्य—पु० [सं०] एक भार्गव गोत्रकार ऋपि (मत्स्य० १९५.२७)।

नेत्र—पु० [सं०] हैहय-सुत धर्मका पुत्र तथा कुंतिका पिता (भाग० ९.२३.२२)।

नेत्रयोनि—पु० [सं०] (१) इंद्र—गौतमका रूप धर इन्होंने छलसे गौतम-पत्नी अहल्याका सतीत्व नष्ट किया था, अतः गौतमके शापसे इनके शरीरमें सहस्र योनि-चिह्न हो गये थे जो पीछे नेत्राकार हो गये थे—दे० अहल्या। (२) चन्द्रमा—जो अत्रि मुनिकी आँखसे उत्पन्न हुए थे—दे० अत्रि, चन्द्रमा।

नेत्रवान्—पु० [सं०] वानरराज वालीके सामन्त तथा सेनानायक सैकड़ों महावली वानर नायकोंमेंसे एक प्रधान वानरका नाम (ब्रह्मां० ३.७.२४४)।

नेपाल—पु० [सं०] ललिता देवीके ५१ पवित्र पीठ स्थानोंमेंसे एक पीठ स्थान, अतः यह चक्रमें सम्मिलित समझा जाता है (ब्रह्मां० ४.४४.९३)।

नेपालपीठ—पु० [सं०] इसे वेद भगवान्की एक आँख माना है (वायु० १०४.७९)।

नेमि—पु० [सं०] (१) एक राक्षस जिसे वलिने वामन भगवान्से युद्ध करनेसे रोका था (भाग० ८.२१.१९)। (२) २० सुतप देवोंके गणमेंका एक सुतप देव (ब्रह्मां० ४.१.१४)। (३) इक्ष्वाकुके शताधिक पुत्रोंमेंसे एक पुत्र जो वड़ा धर्मात्मा राजा था। इसीके शापसे वशिष्ठका शरीर छूट गया था (वायु० ८८.९; ८९.३-४)।

नेमिकृष्ण—पु० [सं०] आपादवद्धका पुत्र जो २५ वर्षोंतक राज करता रहा था (वायु० ९९.३५२)।

नेमिचक्र—पु० [सं०] आसीम कृष्णका पुत्र तथा 'उक्त'का पिता। हस्तिनापुरके गंगा द्वारा वहाये जानेपर इसने कौशांबी राजधानी वनायी (भाग० ९.२२.३९-४०)।

नेष्टा—पु० [सं०] नारायणके विभिन्न अंगोंसे उत्पन्न यज्ञके १६ ऋत्विजोंमेंसे एक, जो नारायणकी जंघासे उत्पन्न हुआ

था (मत्स्य० १६७.९)।

नैकजिह्व–पु० [सं०] एक भार्गव गोत्रकार ऋपि (मत्स्य० १९५.२७)।

नैकवक्त्रा–स्त्री० [सं०] मथुरापति कंसकी एक कुबड़ी दासी कुब्जाका नाम जिससे प्रसन्न हो श्रीकृष्णने उसे परम सुंदरी बना दिया था (विष्णु० ५.२०.४-१३)।

नैकश्रृंग–पु० [सं०] श्री विष्णुका एक नाम जिनके तीन पैर और चार सींग माने गये हैं—दे० 'विष्णुसहस्र नाम'।

नैगमेय–पु० [सं०] (१) कार्तिकेयके एक अनुचरका नाम (स्कंद०)। (२) अग्निका एक पुत्र तथा कुमारका एक (तीसरा) भाई, स्कंदका एक अंश (ब्रह्मां० ३.३.२५; मत्स्य० ५.२६; वायु० ६६.२४; १०१.२८०; विष्णु० १.१५. ११५)। (३) कुमार कार्तिकेयकी चार मूर्तियोंमेंसे एक मूर्ति (महाभा० शल्य० ४४.३०)।

नैनुन्द–पु० [सं०] पिशाचोंका एक गण (ब्रह्मां० ३.७. ३८३, ३८९)।

नैतुन्दक–पु० [सं०] पिशाचोंके १६ वर्गोंमेंसे एक वर्ग (वायु० ६९.२६४)।

नैध्रुव–पु० [सं०] छह ब्रह्मवादी काश्यपोंमेंसे एक ब्रह्मवादी (ब्रह्मां० २.३२.११२; मत्स्य० १४५.१०६)।

नैमित्तिक–पु० [सं०] प्रलयका एक रूप जो एक कल्पके उपरांत होता है (भाग० १२.४.४, ३८; विष्णु० ६.३.१, ४, ७)। प्राणियोंके संचारके तीन प्रकारोंमेंसे एक (वायु० १.१६१; १००.१३२)।

नैमित्तिकलय–पु० [सं०] गरुड़ पुराणानुसार एक प्रलय जिसमें १०० वर्षोंतक अनावृष्टि होती है। बारहों सूर्य उदय होकर तीनों लोकोंका शोपण करते हैं, फिर बड़े भीपण मेघ १०० वर्षोंतक लगातार बरस कर सृष्टिका नाश करते हैं (भाग० १२.४.४, ३८; विष्णु० ६.३.१, ४.७; वायु० १.१६१; १००.१३२)।

नैमित्तिककल्प–पु० [सं०] ब्रह्मकल्पका एक विभाग (वायु० १००.१३३, १९६)।

नैमित्तिक–पु० [सं०] श्राद्ध आदिके तीन प्रकारों—नित्य, नैमित्तिक और काम्यमेंसे एक (मत्स्य० १६.५)।

नैमिशा–स्त्री० [सं०] श्राद्ध आदि करनेके लिए एक श्रेष्ठ नदी (विष्णु० ३.१४.१८)।

नैमिष–पु० [सं०] दाक्षिणार्कके निकटवर्ती (वायु० १०९.२१) श्राद्ध करनेके उपयुक्त गया स्थित एक तीर्थ विशेष (वायु० १०.६, ६७)।

नैमिषा–पु० [सं०] (नैमिषालय) विष्णुका एक पवित्र स्थान। शौनक तथा अन्य ऋषियोंने यहाँ एक हजार वर्षोंतक चलनेवाला एक सत्र किया था (भाग० १.१.४, २१; ३. २०.७; ७.१४.३१; (ब्रह्मां० ४.४.४५)। जब यहाँ बलराम आये थे तब सूत रोमहर्षणको छोड़ सबने उनका स्वागत किया था। इससे क्रुद्ध होकर बलरामने सूतको मार दिया और ऋषियोंके आदेशानुसार बल्वलको मार कर प्रायश्चित्त किया था (भाग० १०.७८.२०-३२; ७९.५)।

नैमिपारण्य–पु० [सं०] एक प्राचीन वन तथा तीर्थस्थान जहाँ सती देवीका श्रीविग्रह लिंगधारिणी देवीकी मूर्त्तिके रूपमें स्थापित है (मत्स्य० १.४; १३.२६)। यह स्थान अवधके सीतापुर जिलेमें है। हरिचक्र (धर्मचक्र) की नेमि यहीं विशीर्ण हुई थी तथा विष्णुकी वाराह मूर्त्ति यहीं है (मत्स्य० २२.१२, १४; वायु० १.१५)। वाराहपुराणानुसार इस स्थानपर गौरमुख नामक मुनिने निमिषमात्रमें असुरोंकी बड़ी भारी सेना भस्म कर दी थी, अतः यह नाम पड़ा। कहते हैं सौति मुनिने यहाँ ऋषियोंको एकत्र करके महाभारतकी कथा कही थी तथा युधिष्ठिरने पिप्पलाद ऋपिसे जो यहीं रहते थे 'अंगारक व्रत'के संबंधमें शिक्षा ली थी। विष्णुपुराणानुसार इस क्षेत्रमें गोमती नदीमें स्नान करनेसे सब पापोंका क्षय होता है। यहाँ अनेक ऋषियोंने समय-समयपर यज्ञ किये हैं (मत्स्य० ७२.२)।

नैमिपालय–पु० [सं०] शौनक आदिकी प्रार्थनापर इसी स्थानपर सूतने ऋपि-मुनियोंको भागवतकी व्याख्या सुनायी थी (भाग० १२.४.४३)।

नैरंजना–स्त्री० [सं०] गयाके निकट बहनेवाली फल्गु नदीका पुराना नाम जिसकी पश्चिमी शाखाको अभी भी 'नीलांजन', 'लीलांजन' नामसे पुकारते हैं। जो गया जिलेकी मोहानी नदीमे मिल गयी है (हि० वि० को०)।

नैर्ऋत–पु० [सं०] राक्षसोंका एक गण जिसे भगवान् शंकरके अनुगामी एक गणराजने उत्पन्न किया। ये बड़े बलवान् शूरवीर कहे गये हैं। कुबेरके अनुगामी होनेसे देवराक्षस हैं (वायु० ६९.१७३)।

नैर्ऋतगण–पु० [मं०] राक्षसोंके चार वर्गों—आलम्बेयवर्ग, औत्कचेयवर्ग, औत्काष्टेयवर्ग और शैवेयवर्ग—मेंसे नैर्ऋत वंशानुगामी राक्षसोंके एक वर्गका नाम जो त्र्यंबकके अनुगामी निशाचर हैं। विरूपाक्ष इन देवराक्षसोंका नेता तथा नायक है और अलकाधिप इनका राजा है (भाग० १२. ११.४८; ब्रह्मां० ३.७.१४१-४, १६३; ८.६२)। रेवती और पूतना इनकी माताएँ थीं तथा स्कंद इन लोगोंका अधिपति था। ये बच्चोंको अधिक कष्ट देते हैं (भाग० ३.७.४, ३९; वायु० ८४.१४)।

नैर्ऋती–स्त्री० [सं०] (१) संयमनीपुरीसे आगे नैर्ऋतीपुरी है, जहाँके निवासी जातिसे तो राक्षस हैं, पर आचार-व्यवहारसे पुण्यजन तथा दिक्पाल हैं (भाग० १०.८९.४४)। श्राद्धमें नैर्ऋत्य दिशाके कौओंको बलि दी जाती है (वायु० १११.४०)। (२) एक लोकपाल नगरी तथा पत्नीको भी नैर्ऋती कहते हैं (मत्स्य० २६१.१५-६; २६६.२२; २८६.८)। (३) अन्धकासुर-रक्तपानार्थ भगवान् शिव द्वारा सृष्ट बहुत-सी मानस-पुत्री मातृकाओंमेंसे एक मानसपुत्री मातृका (मत्स्य० १७९.१०)।

नैर्णिक–पु० [सं०] एक दाक्षिणात्य देशका नाम (वायु० ४५.१२७)।

नैल–पु० [सं०] (१) ८६ श्रुतर्षियोंमेंसे एक श्रुतर्षिका नाम (ब्रह्मां० २.३३.४)। (२) खशा और कश्यपके अनेक राक्षस पुत्र तथा सात कन्याएँ हुईं। इन्हींकी संतति केशिनी नामकी एक राक्षसी थी। उसकी पुत्री नीला क्षुद्र राक्षसी हुई जिसके वंशज नैलगण एक निम्न कोटिके राक्षस थे (ब्रह्मां० ३.७.१४८)।

नैश्रेयस–पु० [सं०] वैकुण्ठके एक उपवनका नाम (भाग०

३.१५.१६) ।

नैषध–पु० [सं०] जम्बूद्वीपके अधिपति आग्नीध्रने जम्बूद्वीपके नौ खण्ड कर अपने नौ लड़कोंमें बाँटे। उनके तृतीय पुत्र हरिवर्षका एक राज्य (ब्रह्मां० २.१४.४९; १५.३२; १८.५३; वायु० ३३.४२)। यह जम्बूद्वीपका एक खंड है (विष्णु० २.१.१९)। (२) नल-वंशोत्पन्न राजा (ब्रह्मां० ३.७४.१८९, १९६; मत्स्य० ११४.५३; वायु० ९९.३७६-७)। (३) एक देश जिसका मणिध्यानक कुलके राजा नैमिषिक, कालकोशक आदि देशोंके साथ भोग करेंगे (विष्णु० ४.२४.६०, ६६)।

नैषादगण–पु० [सं०] (१) निषादके वंशज एक विन्ध्याचलकी जंगली जाति (ब्रह्मां० २.१६.६२)। जिसने पहाड़ तथा वनोंको अपना निवासस्थान बनाया (भाग० ४.१४.४६)।

नैष्ठीय–पु० [सं०] एक वीर्यवान् उशीराग्निका नाम (वायु० २९.२९)।

नौ–पु० [सं०] एक स्वर्गीय नौका जो वैवस्वत मनुको भगवान् विष्णुने दी थी तथा उन्होंने वैवस्वत मनुसे कहा था, जल्दी सारी पृथिवी शैल और वनोंके साथ जलमें डूब जायगी। यह नौका सब देवताओंने मिलकर सकल जीव समुदायके रक्षणार्थ बनायी है। जितने भी स्वदेज, अण्डज, उद्भिज्ज, जरायुज जीव हैं उन्हें इसपर रख बचाओ। यह प्रलय कालकी वायुसे डगमगायेगी, इसलिए इसे मेरे सींगमें बाँध देना (मत्स्य० १.३०-३२; भाग० १.३.१५)। महाप्रलय होनेपर इसने चन्द्रमा, सूर्य, ब्रह्मा, नर्मदा, मार्कण्डेय ऋषि, शिव, वेदों, पुराणों तथा अन्य विद्याओंकी नष्ट होनेसे रक्षा की थी (मत्स्य० २.१०-१५)।

नौकर्णी–स्त्री० [सं०] कार्त्तिकेयकी अनुचरी एक मातृका (महाभा० शल्य० ४६.२९)।

न्यग्रोध–पु० [सं०] (१) शिवका एक नाम (शिवपु०)। (२) उग्रसेनके ९ पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (भाग० ९.२४.२४; ब्रह्मां० ३.७१.१३३; मत्स्य० ४४.७४; वायु० ९६.१३२; विष्णु० ४.१४.२०)। यह कंसका भाई था जिसे अन्य ७ भाइयों सहित बलरामने मारा था (भाग० १०.४४.४०-४१)। (३) श्रीकृष्णका एक पुत्र (भाग० १०.९०.३४)। (४) रणमकका कमलाकृति वटवृक्ष जिसके नामपर पुष्करद्वीपका नामकरण हुआ (ब्रह्मां० २ १५.६३-४; १९.१४०; ३.११.३६, १०९; ४.४३.१७; मत्स्य० १२३.३९; विष्णु०, १.१२.६५; २.४.८५; ४.३.२३)। महाप्रलयके समय नारायण इसीके एक पत्तेपर शिशु रूपमें सोये थे—'संभक्ष्य सर्वभूतानि कृत्वा चैकार्णवं जगत्। बालः स्वपिति यश्चैकः तस्मै मायात्मने नमः॥ करारविन्देन पदारविन्दं मुखारविन्दे विनिवेशयन्तम्। वटस्य पत्रस्य पुटे शयानं बालं मुकुन्दं शिरसा नमामि॥' (मत्स्य० १६७.३१)।

न्यग्रोधपरिमंडल–पु० [सं०] जिसकी लंबाई-चौड़ाई एक पुरसा हो, इस प्रकारके पुरुष त्रेतायुगमें राज्य करते थे (मत्स्य०)।

न्याय–पु० [सं०] एक शास्त्र जो वेदोंका (भृत्य) नौकर कहा गया है (मत्स्य० ३.४; ५३.५; वायु० २.३३.६१.७८; १०४.८५; विष्णु० ३.६.२७; ५.१.३८)। जिसे कृष्ण, बलराम (भाग० १०.४५.३४) तथा असुरोंने (ब्रह्मां० २.३५.८७; ४.१२.१७) सीखा था।

न्यास(मंत्र)–पु० [सं०] किसी मूर्त्ति-स्थापनामें यथा रत्नन्यास-आठों दिशाओंके लिए—हीरा, मोती, वैदूर्य, शंख, स्फटिक, पुष्पराग, इंद्रनील और नीलं; आठ अन्न—गेहूँ, जौ, तिल, मूँग, नीवार, श्यामाक, सर्षप तथा धान; अष्टगंध—चन्दन, रक्तचन्दन, अगर, अंजन, उशीर, वैष्णवी, सहदेवी और लक्ष्मणा; अष्टधातु—सुवर्ण, विद्रुम, ताम्र, काँसा, पीतल, चाँदी, पुष्प और लोहा, तदुपरांत न्यासमंत्रोंसे लोकपालोंकी पूजा करनेका विधान है (मत्स्य० २६६.९-२९)।

प

पंकजवन–पु० [सं०] गया स्थित एक पवित्र वनका नाम। यहाँ पांडुशिला है जहाँ श्राद्ध करनेका बड़ा माहात्म्य है। युधिष्ठिरने यहाँ श्राद्ध किया था फलतः पांडुके आशीर्वादसे उन्हें यहाँ राज्य और अन्तमें स्वर्ग प्राप्त हुआ (वायु० ११२.४३-४९)।

पंकजित्–पु० [सं०] विष्णुवाहन गरुड़के एक पुत्रका नाम (महाभा० उद्योग० १०१.१०)।

पंकदिग्धशरीर–पु० [सं०] एक दानवका नाम—दे० (हि० श० सा०)।

पंकदिग्धांग–पु० [सं०] कार्त्तिकेयके एक अनुचरका नाम (महाभा० शल्य० ४५.६८)।

पंकप्रभ–पु० [सं०] एक नरकका नाम जो पंकसे भरा है (ब्रह्मां०)।

पंक्तिग्रीव–पु० [सं०] पंक्ति=दस ग्रीवावाला; रावणका एक नाम—दे० रावण।

पंक्तिपावन–पु० [सं०] वे व्यक्ति जिनके साथ पंक्तिमें बैठ कर भोजन किया जा सके यथा वेदके छहों अंगोंके विद्वान्, ध्यानयोगमें रत, तंत्रों और यायावरके विज्ञ तथा सौपर्णगण, पचाग्नेयों, सामगों, त्रिणाचिकेतों, त्रयी और बार्हस्पत्य शास्त्रके पंडितोंको पंक्तिपावन कहा गया है (ब्रह्मां० ३.१५.२८-३०)। जो साथ भोजन करनेके अयोग्य अर्थात् पंक्तिदूषक हैं, वे हैं—अनाश्रमी, अयति, मोक्षवादी, चित्रवादी, अनार्य, अनीश्वरवादी, वेदनिन्दक, वृथामुंड, जटिल, कापालिक, कारुक, गायक, वेद आदि का विक्रय करनेवाला और वे लोग जो वर्ण तथा आश्रमके नियमोंके प्रतिकूल चलते तथा उनका अनादर करते हैं। इनके साथ एक पंक्तिमें भोजन करना निषिद्ध है (ब्रह्मां० ३.१५.३९-५५, ९४; वायु० ७९.५३-५९; ८३.५१-५७)।

पंक्तिरथ–पु० [सं०] अयोध्यापति दशरथका नाम—दे० रामायण।

पंचकन्या–स्त्री० [सं०] पुराणानुसार पाँच स्त्रियाँ विशेष, जो विवाह होनेपर भी सदा कन्या ही मानी गयी हैं। 'अहल्या द्रौपदी तारा कुंती मंदोदरी तथा। पंच कन्याः स्मरेन्नित्यं महापातकनाशनम्॥' (ब्रह्मां० ३.७.२१९)।

पंचकर्पट—पु० [सं०] एक देश जो पश्चिममें था और राजसूय यज्ञके समय नकुलने इसे जीता था (महाभा० सभा० ३२.७)।

पंचकाम—पु० [सं०] त्रैलोक्यको मोहित करनेवाले कामराज, कंदर्प, मन्मथ, मकरध्वज और मनोभव ये पाँच कामदेव हैं। सबके मस्तकपर कस्तूरी तिलक तथा गलेमें मोतीमाला है। कवचोंसे इनका सर्वांग आच्छन्न है और पलाशपुष्पकी सी छवि है (ब्रह्मां० ४.१९.६९)।

पंचकूट—पु० [सं०] कैलाशके अंतर्गत एक पहाड़ (वायु० ३८.३३)। जहाँ दानवोंका निवासस्थान है। पर्वतश्रेष्ठ पिशाचकसे होकर यहाँ गंगा वहती है और यहाँसे कैलाश पर्वतको जाती है (वायु० ३९.५३; ४२.३२)।

पंचकृत्य—पु० [सं०] सृष्टि, स्थिति, संहार, विधान और अनुग्रह ईश्वरके ये पंचकर्म हैं (सर्वदर्शन)।

पंचकोसी—स्त्री० [हिं०] काशीकी परिक्रमा, पाँच कोस लम्बी तथा पाँच कोस चौड़ी भूमि जिसे अति पवित्र माना गया है (काशीखंड)।

पंचगंगा—स्त्री० [सं०] काशीका एक प्रसिद्ध स्थान, जहाँ गंगा, यमुना, सरस्वती, किरणा और धूतपापा नदियोंका समूह माना गया है। काशीमें पंचगंगा घाटपर किरणा और धूतपापा नदियाँ मिली थीं, पर अब ये दोनों पटकर लुप्त हो गयी हैं—दे० धूतपापा।

पंचगति—स्त्री० [सं०] यज्ञोंसे देवताओंकी प्राप्ति होती है, तपस्यासे वैराग्य प्राप्त होता है, कर्मसंन्याससे ब्राह्मण्य प्राप्त होता है, वैराग्यसे लय तथा ज्ञानसे कैवल्य प्राप्त होता है। ये पाँच गतियाँ हैं (वायु० ५७.११७-१८)।

पंचगव्य—पु० [सं०] गौसे प्राप्त पाँच द्रव्य दूध आदि जिन्हें प्रायश्चित्तादिमें खिलाया जाता है (मत्स्य० ५६.६; ५७.५; ६०.१७; ६२.८)। इनसे शरीरकी शुद्धि होती है। इसमें घी, दूध, गोमूत्र प्रत्येक एक-एक पल, दही एक पसर और गोबर तीन तोला होना चाहिये (मत्स्य० २६६.६; २६७.५-६; वायु० ११०.१५)। इससे मूर्त्तियोंको स्नान भी कराते हैं (मत्स्य० २६५.८)। खाद्य पदार्थों, फल, फूल तथा वाहन आदि चुरानेवालोंके लिए यह अधिक महत्त्वका है (मत्स्य० २२७.४४)।

पंचगीत—पु० [सं०] वेणुगीत, गोपीगीत, युगलगीत, भ्रमरगीत और महिषीगीत ये ही पंचगीत हैं।

पंचगुण—पु० [सं०] शब्द, स्पर्श, रूप, रस तथा गंध पंच गुण हैं (वायु० ४.६८)।

पंचचूड़ा—स्त्री० [सं०] एक अप्सराका नाम (ब्रह्मां० ३.७.१४)। यह पाँच जूड़े बाँधती थी इसलिए इसका यह नाम पड़ा (महाभा० वन० १३४.१२)। यह शुकदेवजीको परम पदप्राप्तिके निमित्त ऊपरकी ओर जाते देख परमाश्चर्यान्वित हो उठी थी (शान्ति० ३३२.१९-२०)। इसने नारदजीके सामने नारी स्वभावका वर्णन किया था (अनु० ३८.११.३०)।

पंचजन—पु० [सं०] (१) संह्लाद तथा कृतिका पुत्र। एक असुरका नाम जो प्रभासके निकट लवण समुद्रमें रहता था। यह श्रीकृष्णके गुरु संदीपनाचार्यके पुत्रको चुरा ले गया था। गुरुदक्षिणामें श्रीकृष्ण इसे मार गुरुपुत्रको छुड़ा लाये थे। इसी असुरकी हड्डियोंसे 'पाँचजन्य' शंख बना था। अन्य मतसे यह एक शंखमें रहा करता था जिससे निकाल कर श्रीकृष्णने इसे मारा था और शंख स्वयम् बजाया करते थे (भाग० ३.३.२; ६ ४.५१; १८.१४; १०.४५.४०-४२; विष्णु० ५.२१.२७-८)। (२) पंचजन्य नामसे प्रसिद्ध असुर जो प्राग्ज्योतिपपुरनिवासी नरकासुरका अनुगामी था, जिसे भगवान् श्रीकृष्णने प्राग्ज्योतिपपुरमें मारा था (विष्णु० ५.२९.१९)। (३) राजा सगरके एक हजार पुत्रोंमेंसे भगवान् कपिलकी नेत्राग्निसे बचे हुए चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (ब्रह्मां० ३.६३.१४७)। (४) एक प्रजापतिका नाम, जिनकी असिक्नी नामकी पुत्री दक्षको ब्याही गयी थी जिनसे हर्यश्व आदि विरक्तपुत्र तथा अदिति आदि लोकमाताएँ उत्पन्न हुईं जिनसे यह सारी सृष्टि हुई (भाग० ६.४.५२-५५; अध्याय ५ और ६ पूरे)। (५) गंधर्व, पितर, देव, असुर और राक्षस, इन पाँचोंके समूहको 'पंचजन' कहते हैं (भाग०)। (६) अंशुमान्‌का पिता तथा अंशुमान्‌की पत्नी यशोदाका श्वसुर (मत्स्य० १५.१८)।

पंचजनी—स्त्री० [सं०] विश्वरूपकी पुत्री तथा भरतकी सम्राज्ञी (भाग० ५.७.१)।

पंचजन्य—पु० [सं०] (१) एक प्रसिद्ध शंख जिसे श्रीकृष्ण बजाया करते थे। यह पंचजन राक्षसकी हड्डियोंसे बना था (भाग० ३.३.२; ६.४.५१; १८.१४; १०.४५.४०-४२; विष्णु० ५.२१.२७-८) तथा पंचजन [१]। (२) जंबूद्वीपका एक उपद्वीप (भाग० ५.१९.३०)।

पंचतत्त्व—पु० [सं०] पृथ्वी, जल, तेज (अग्नि), वायु और आकाश—ये पंचभूत ही पंचतत्त्व हैं—'छिति जल पावक गगन समीरा। पंचरचित अति अधम सरीरा।' (रामचरितमा०, किष्किन्धा० १०।२)। वाममार्गके अनुसार—मद्य, मांस, मत्स्य, मुद्रा और मैथुन ये पंचमकार ही पंचतत्त्व हैं (तंत्रसारसंग्रह)। तंत्रानुसार गुरुतत्त्व, मंत्रतत्त्व, मनस्तत्त्व, देवतत्त्व और ध्यानतत्त्व = पंचतत्त्व हैं।

पंचतीर्थ—पु० [सं०] (१) गयामें स्थित पाँच तीर्थस्थान उत्तरमानस, दक्षिणमानस, कनखल, फल्गुतीर्थ और गदाधर देवमदिर (वायु० १११.१, २१)। (२) काँचीका एक तीर्थ जहाँपर ब्रह्माके पंचम सिरको काटनेसे लगी ब्रह्महत्यावश नखलग्न कपालसे मुक्ति पानेके लिए शिवजीने तपस्या की थी (ब्रह्मां० ४.४०.६०; ७१.११५)। (३) बदरिकाश्रममें स्थित वसुधारा तीर्थके नैर्ऋत्य कोणमें प्रभास, पुष्कर, गया, नैमिष और कुरुक्षेत्र नामके पाँच तीर्थ जहाँ पाँच धाराएँ प्रपात रूपमें गिरती हैं (स्कंद० वैष्णव० बद०-माहात्म्य०)।

पंचदश(स्तोम)—पु० [सं०] सामगानका एक स्वरभेद जिसे ब्रह्माने दक्षिण मुखसे उत्पन्न किया था (ब्रह्मां० २.८.५१, ५२; वायु० ९.४९)।

पंचदशाक्षरी—पु० [सं०] मंत्रशास्त्रका एक मंत्र जो वैदिक नहीं है। पापोंसे छुटकारा पानेके लिए जलके अन्दर स्थित होकर भक्ति और श्रद्धासे इसका १००८ बार जप किया जाता है (ब्रह्मां० ४.८.३६, ५८)।

पंचदशी—स्त्री० [सं०] (१) माघ महीनेकी पूर्णिमाका दिन साधारण श्राद्धके लिए, जो भुक्ति और मुक्ति देनेवाला कहा

गया है, प्रशस्त युगादि कहा गया है (मत्स्य० १७.२. ४) और आषाढ़की पूर्णिमाका दिन विष्णुपुराणका घृतधेनुके साथ दानके लिए शुभ माना गया है (मत्स्य० ५३. २४)। (२) इस दिन पितर चन्द्रमाकी किरणें पान करते हैं (वायु० ५२.६९; ५६.५९)।

पंचदेव–पु० [सं०] आदित्य, रुद्र, विष्णु, गणेश और देवी, ये ही पाँच प्रधान देवता हैं जिनकी उपासना आजकल प्रचलित है। कुछके मतसे—'सदा भवानी दाहिनी, संमुख रहें गणेश। पंच देव मिलि रक्षा करें ब्रह्मा विष्णु महेश॥ प्रथम पंचदेवोंमें यद्यपि तीन वैदिक हैं, पर इन सबकी पूजा पौराणिक और तांत्रिक पद्धतिसे ही हिन्दू-समाजमें होती है। कुछ तो पाँचों देवताओंकी उपासना समान भावसे करते हैं और कुछ-कुछ लोग कुछ विशेष देवताकी पूजा करते हैं। विष्णुके उपासक वैष्णव, शिवके उपासक शैव, सूर्यके उपासक सौर, गणपतिके उपासक गाणपत्य तथा देवी (शक्ति) के उपासक शाक्त कहलाते हैं—दे० पूजापंकजभास्कर तथा पूजासमुच्चय।

पंचनद–पु० [सं०] सिंधु जहाँ सागरसे मिलता है वहाँ श्राद्धादि करना शुभ है (ब्रह्मां० ३.१३.५७; वायु० ७७. ५६)। द्वारकासे इन्द्रप्रस्थ जाते समय अर्जुन यहाँ ठहरे थे (विष्णु० ५.३८.१२)।

पंचनदेश्वर–पु० [सं०] जरासंधने इसे मथुराके दक्षिण-प्रवेश द्वारपर रखा था (भाग० १०.५०.११[४])।

पंचनाथ–पु० [सं०] बदरीनाथ, द्वारकानाथ, जगन्नाथ, रंगनाथ और श्रीनाथ।

पंचनिधन–पु० [सं०] सामसंहिताका एक सूक्त विशेष जिसे सरोवर खुदवानेके समय पढ़नेका विधान है (मत्स्य० ५८.३६)।

पंचपंचात्म–पु० [सं०] इससे २५ तत्त्वोंका बोध होता है। मूल प्रकृति देवी और पुरातन पुरुषके संयोगके समय इसकी उत्पत्ति हुई थी (ब्रह्मां० ४.८.२९)।

पंचपदी–स्त्री० [सं०] शाकद्वीपकी सात मुख्य नदियोंमेंसे एक नदी (भाग० ५.२०.२६)।

पंचपल्लव–न० पु० [सं०] आम, जामुन, कैथ, विजौरा और बेल, इन पाँच वृक्षोंके पल्लव जिनकी आवश्यकता पूजामें घटस्थापनके समय पड़ती है (पूजापंकज भास्कर, पूजासमुच्चय)।

पंचपापी–पु० [सं०] पाँच बड़े पापियोंके नाम। पंच महापातकियोंके नाम—ब्रह्महत्या, सुरापान, सुवर्णस्तेन, गुरु पत्नी गमन करनेवाले तथा इनका संग करनेवाले पाँच महापापी (वायु० १०८.८४; १११.५४)।

पंचपिता, पंचपितृ–पु० [सं०] पिता, आचार्य, श्वसुर, अन्नदाता, भयसे रक्षक (हि॰ श॰ सा॰)।

पंचपुष्प–न० पु० [सं०] चम्पा, आम, शमी, कमल और कनेर, ये पाँच फूल जो देवताओंको प्रिय हैं—दे० देवीपुराण।

पंचबटी–स्त्री० [सं०] दे० पंचवटी।

पंचवाण–पु० [सं०] (१) कामदेवके निम्नांकित पाँच वाण जो उसके पुष्पवाणसे भिन्न हैं—उन्मादन, शोषण, तापन, सम्मोहन और स्तम्भन। कामदेवके पाँच पुष्पबाण ये हैं—कमल, अशोक, आम्र, नवमल्लिका और नीलोत्पल। (२) कामदेव—दे० अंगज, कामदेव।

पंचब्रह्मस्वरूपिणी–स्त्री० [सं०] ललिताका एक नाम (ब्रह्मां० ४.१५.९)।

पंचम–पु० [सं०] (१) श्रेष्ठ सामगाचार्य हिरण्यनाभ-शिष्य कृतके २४ शिष्योंमेंसे एक शिष्य (ब्रह्मां० २.३५.५१; वायु० ६१.४४)। (२) चारों आश्रमोंकी सीमाके बाहर, एक वर्णसंकर जाति (ब्रह्मां० ३.१५.३७)। (३) इक्कीसवाँ कल्प जिसमें प्राण, अपान, उदान और व्यान ब्रह्माके मानस-पुत्र सम्मिलित हैं (वायु० २१.४७)। (४) संगीतका पाँचवाँ स्वर (वायु० २१.४९; ८६.३७)।

पंचमी–स्त्री० [सं०] ललिताके संकट दुःख निवारक १२ नामोंमेंसे एक नाम (ब्रह्मां० ४.१७ १८) महोदया चार देवियो, जिनका मन्दिर चिंतामणि गृहेन्द्रके वायव्य ओर स्थित महापद्माटवीमें है, मेंसे एक देवीका नाम (ब्रह्मां० ४.३६.२५)।

पंचमुख–पु० [सं०] ब्रह्माका एक नाम। शिवके प्रकाश-स्थम्भस्वरूपका अंत नहीं पानेपर भी ब्रह्माने झूठ कह दिया था कि अंतका पता उन्हें लग गया, अतः शिव (रुद्र) ने उनका एक सिर काट दिया और तभीसे ब्रह्मा पंचाननसे चतुरानन (चतुर्मुख) हो गये (ब्रह्मां० ४.४०.४८, ५६)।

पंचयाम–पु० [सं०] आतपका एक पुत्र तथा विभावसु नामक वसुका पौत्र, इन्हींकी कृपाके कारण सब प्राणी अपने-अपने कार्य कर पाते हैं (भाग० ६.६.१६)।

पंचरथ–पु० [सं०] (१) एक प्रधान वन्दर (ब्रह्मां० ३.७. २३९, २३५)। (२) शूरसेन आदि सुयोग्य योद्धाओंकी उपाधि (ब्रह्मां० ३.४६.१७)।

पंचलक्षण–पु० [सं०] (१) श्री अमरसिंहके अनुसार पुराणके पंचलक्षण निम्नांकित हैं—सृष्टिकी उत्पत्ति, प्रलय, देवताओंकी उत्पत्ति और वंशपरंपरा, मन्वंतर, मनुके वंशका विस्तार। अमरसिंह संस्कृत कोषके प्रसिद्ध लेखक हो गये हैं। इनका रचा कोष अमरकोषके नामसे संस्कृत वाङ्मयनें अति प्रसिद्ध और प्रचलित है। (२) पुराणके पंचलक्षण—सर्ग, प्रतिसर्ग, 'मन्वंतर, वंश तथा वंशानुचरित (मत्स्य० ५३.६५.७०; वायु० ४.११)। (३) शब्द, रूप, रस, गंध तथा स्पर्श (वायु० ८.४५)। 'सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च। वंशानुचरितं चेति पुराणं पञ्चलक्षणम्॥' (स्कंद० आव० ३.३५.१५)।

पंचलांगलक–पु० [सं०] लोहे और लकड़ीके पाँच हल, पाँच सोनेके हल (प्रत्येक ५ भरीसे हजार भरी वजनके) तथा दस वैलोंके साथ सस्यश्यामल कस्बा, मण्डी, गाँव तथा १०० निवर्तन (सात हाथके डंडेसे तीस डंडा एक निवर्तन कहा गया है), पचास निवर्तन अथवा उसकी आधी भूमि अथवा जिसपर एक गृहका निर्माण हो सके या गोचर्मके बराबर भूमि दान देनेवालेके सब पाप कट जाते हैं एवं स्वर्ग प्राप्त होता है (मत्स्य० २७४.९; अध्या० २८३ पूरा)।

पंचवन–न० पु० [सं०] (१) मुण्डपृष्ठ, गृध्रकूट, भरताश्रमका पुण्य अरण्य, हिमालयका वह प्रदेश जहाँ पाँच योजन अर्थात् २० कोसतक चारों ओर वर्फ गिरती है तथा मतङ्ग

ऋषिका आश्रम—ये पाँच वन हैं। यहाँ किया गया पितरोंका श्राद्ध अक्षय माना गया है। कौशिकीसर; पांडुशिला तीर्थ यहीं हैं (वायु० ७७.९९, १०१)। (२) सगरके १००० पुत्रोंमेंसे एक पुत्र जो कपिलके तेजसे भस्म होनेसे तीन अन्य पुत्रोंके साथ वच गया था। इन चार पुत्रोंके नाम ये हैं—वर्हकेतु, सकेतु, धर्मरत तथा पञ्चवन (वायु० ८८.१४९)।

पंचवर्णा–स्त्री० [सं०] भद्राश्व देशकी अनेक श्रेष्ठ नदियोंमेंसे एक नदी (वायु० ४३.२७)।

पंचवटी–स्त्री० [सं०] रामायणानुसार दंडकारण्यके अंतर्गत एक प्रसिद्ध स्थान जो गोदावरीके किनारे नासिकके निकट है। वनवासके समय श्रीराम कुछ दिनोंतक यहाँ रहे थे। सीताहरण इसी स्थानसे हुआ था। श्रीराम अगस्त्य ऋषिके आदेशानुसार यहाँ आये थे। चित्रकूटमें भरत तथा अन्य लोग रामजीसे मिलने आये थे, अतः उन्होंने यहाँ और ठहरना मुनासिव नहीं समझा। चित्रकूटसे अत्रि ऋषिके पास गये थे, तदुपरांत अगस्त्य ऋषिके आश्रमपर पहुँचे और उन्हींके आदेशसे पंचवटीमें कुटिया वनाकर रहने लगे (रामच० मा० अरण्य० १२-१३।१-२)।

पंचविंध्य–पु० [सं०] सप्तविंध्यका नाम, केवल हुंकार और प्रणवको छोड़कर।

पंचविंशकपुरुष–पु० [सं०] ईश्वर जो २४ तत्त्वोंके अधिपति एक स्वतन्त्र पचीसवाँ तत्त्व है (मत्स्य० २७४.६२)।

पंचवीर–पु० [सं०] जाम्ववती-सुत साम्व तथा सुपार्श्व-तनया काश्याके पाँच सत्यप्रकृति वीर पुत्र पंचवीर कहे गये हैं (मत्स्य० ४७.२४)।

पंचशर–पु० [स०] कामदेव जिसके अरविन्द, अशोक, आमपल्लव, नवमल्लिका और नीलकमल ये पाँच शर हैं, पताकापर मछली है. रति स्त्री तथा वसंत मित्र है—दे० अंगज (मत्स्य० १५४.२०७-९; २१२)।

पंचशिख–पु० [सं०] (१) आठवें द्वापरके एक ब्रह्मर्षि (मत्स्य० १०२.१८; वायु० २३.१४)। (२) एक मुनि जो कपिला नामकी ब्राह्मणीके पुत्र थे। सांख्यके विद्वान् इन्हें महर्षि कपिलका स्वरूप समझते थे। सांख्य शास्त्रके यह प्रधान आचार्य थे। यह आसुरि मुनिके प्रथम शिष्य तथा कपिला नामकी ब्राह्मणीका दूध पीनेके कारण 'कापिलेय' कहलाये। इन्हें नैष्ठिक वुद्धि प्राप्त थीं (नारद०, पूर्व भाग द्वितीय पाद ७७; महाभा० शांति० अ० २१८-२१९, श्लोक ४३ तक)। (३) यह ब्रह्माके कुमार, सनक, सनन्दन, सनातन तथा वोढु, कपिल, आसुरि आदि ऋषियोंके साथ प्रलय कालमें परमाणु रूप महेश्वरमें लीन होकर जन्म-मृत्यु जलवाली महावर्त नदीको तरते हैं (वायु० १०१.३३८)।

पंचशिखर–पु० [सं०] पुलह और ताम्राकी सन्ततिके मध्य-पाती, गरुड़ और उनके पुत्र-पौत्रोंके अनेक निवासस्थानों—शाल्मलिद्वीप सारा, देवकूट. मणिमान् आदि पर्वतोंमेंसे एक पर्वतका नाम (ब्रह्मां० ३.७.४५४)।

पंचशिर–पु० [सं०] कुमार, नारद, ऋभु, अंगिरा आदि अनेक सिद्धेश्वरों, जो अवधूत वेपमें अज्ञोंको ज्ञान प्रदानार्थ विचरते हैं, मेंसे एक सिद्धका नाम (भाग० ६.१५.१४)।

पंचशैल–पु० [सं०] मेरु पर्वतके दक्षिण भागमें त्रिशिखर, शिशिर, कलिङ्ग. पतङ्ग, रुचक, विपधार, रत्नधार आदि श्रेष्ठ पर्वतोंमेंसे एक पर्वत (वायु० ३६.२४)।

पंचसूना–पु० [सं०] चूल्हा जलानेमें, आटा आदि पीसनेमें, झाड़ू देनेमें, धान आदि कूटनेमें तथा पानीका घड़ा रखनेमें, गृहस्थीके इन पाँच कामोंमें गृहस्थ द्वारा जीव हिंसा होती है इसलिए ये पाँच चूल्हा आदि सूना (जीव-हिंसा स्थान) कहे गये हैं। जिनसे उत्पन्न पापकी निवृत्तिके लिए पाँच महायज्ञोंका विधान है (पञ्चमहायज्ञविधि, प्रायश्चित्तेन्दुशेखर; मनु० ३.६८, ६९)।

पंचहस्त–पु० [सं०] नवम मनु दक्ष सावर्णिके धृतकेतु, दीप्तिकेतु आदि पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (विष्णु० ३.२.२४)।

पंचाक्षरीमंत्र–पु० [सं०] एक शिवमंत्र—'नमः शिवाय' (ब्रह्मां० ४.३६.१८)।

पंचाग्नि–पु० [सं०] दक्षिणाग्नि, गार्हपत्य, आहवनीय, सभ्य और आवसथ्य—इन पाँच अग्नियोंको स्थापित रखनेवाला ब्राह्मण पार्वण श्राद्धमें भोजनके लिए उपयोगी है (वायु० ८३.५३; मत्स्य० १६.७)। महाराज ययातिने पंचअग्नियोंके वीच एक वर्षतक तपस्या की थी (मत्स्य० ३५.१६)। इन पाँच अग्नियोंकी उत्पत्ति ब्रह्माके द्वारा गयासुरसे याचित उसके पवित्र शरीरपर यज्ञ करनेके लिए मनसे सृष्ट मानस ऋत्विक् अग्निशर्माके मुखसे हुई थी। दक्षिणाग्नि, गार्हपत्य, आहवनीय, सभ्य तथा आवसथ्य=५ अग्नियाँ हैं (वायु० १०६.४१.२)।

पंचाग्निपद–पु० [सं०] विष्णुपद, रुद्रपद, ब्रह्मपद, कश्यपपद, इन्द्रपद आदिके साथ दक्षिणाग्नि आदि पाँच अग्नियोंके पाँच पद गयाजीमें स्थित हैं (वायु० १०९.१९)।

पंचाग्निमध्यस्थ–पु० [सं०] एक प्रकारका कठिन तप जो पंचाग्नियोंके मध्य वैठ कर सम्पन्न होता है जिसे परशुरामने किया था। यह विशेपतः ग्रीष्मऋतुमें किया जाता है। इसके चारों ओर चार अग्नियाँ रहती हैं और ऊपर सूर्य ललाटको तपाते हैं। इसका वर्णन कालिदासने यों किया है—'हविर्भुजामेधवतां चतुर्णां मध्ये ललाटंतपसप्तसप्तिः। असौ तपस्यत्यपरस्तपस्वी ॥' (ब्रह्मां० ३.२२.७२)।

पंचाप्सर–पु० [सं०] रामायण, महाभारत तथा पुराणानुसार दक्षिणमें स्थित 'पंपा' नामक तालाव जहाँ शातकर्णि मुनि तप करते थे। इनकी तपस्यासे डरकर इन्द्रने इनकी तपस्या भंग करनेके लिए वर्चा, सौरभेयी, सामेयी, वुद्वुदा और लता नामकी पाँच अप्सराएँ भेजीं जो ऋपिका तप भंग करनेमें सफल हुईं तथा इसी पंपासरमें रहने लगीं। इसीसे इसे 'पंचाप्सर' कहते हैं। रामायणमें शातकर्णिको मांडकर्णि लिखा है। कुछ दिनों वाद ज्ञान होनेपर मुनिके शापके फलस्वरूप ये अप्सराएँ ग्राहरूपमें रहती थीं और अर्जुनने इन्हें शापमुक्त किया था (स्कंद० कुमारिका-खंड)। स्कंद पुराणानुसार यहाँ 'कुमारेश, स्तम्भेश, वर्करेश्वर, महाकालेश्वर तथा सिद्धेश' नामके पाँच तीर्थ हैं और यहाँ पांडुनंदन अर्जुन आये थे। पंचाप्सरको विष्णुका पवित्र सर मानते हैं, वलराम तीर्थयात्रा प्रसंगसे यहाँ आये थे (भाग० १०.७९.१८)।

पंचाब्द–पु० [सं०] जिन्हें काव्यगण भी कहते हैं। पितृगण मुख्यतः चार प्रकारके कहे गये हैं—सौम्य, बर्हिपद, अग्निष्वात्त और कव्य। ये कव्य पितृगण ही पञ्चाब्द कहे जाते हैं (वायु० ५२.६८)। ये पितृगण ब्रह्माके पुत्र हैं (ब्रह्मां० २.२८.१७, २१; मत्स्य० १४१.१५, १९)। इन्हें पंचवर्षीय युगका अंग माना गया है (मत्स्य० १४१.५७)।

पंचामृत–न० पु० [सं०] एक प्रकारका स्वादिष्ट पेय जो दूध, दही, घी, चीनी और मधु मिलाकर बनाया जाता है। पुराण तथा तंत्रादिकके अनुसार यह देवताओंको स्नान करानेके काम आता है (पूजासमुच्चय)।

पंचायतन–पु० [सं०] नर्मदातटपरका एक पवित्र तीर्थ जिसके दर्शनसे सब तीर्थोंके दर्शनका फल प्राप्त हो जाता है (मत्स्य० १९१.६)।

पंचाल–पु० [सं०] (१) एक देशका प्राचीन नाम जिसका उल्लेख ब्राह्मण, उपनिषद् तथा पुराणोंमें मिलता है। यह द्वारकासे हस्तिनापुरके मार्गमें है। इसके बीचमें आनर्त, सौवीर आदि प्रदेश, पर्वत, मरुस्थल तथा दृषद्वती और सरस्वती आदि नदियाँ पार करनी पड़ती हैं (भाग० ४.२५.५०; २७.८; १०.७१.२२)। यह हिमालय और चम्बल नदीके बीच गंगाके दोनों किनारोंपर बसा माना जाता है। पुराणानुसार महाराज हर्यश्व अपने भाईसे लड़कर अपनी ससुराल चले आये। अपने श्वसुर मधुकी सहायतासे अयोध्याके पश्चिमके देशोंके राजा बन बैठे। मुद्गल, संजय, बृहदिपु, प्रवीर और कांपिल्य इनके पाँच पुत्र थे। अयोध्याके राजाके आक्रमणका समाचार सुन अपने पाँच पुत्रोंकी ओर संकेत कर यह बोले कि 'हमारे राज्यकी रक्षाके लिए ये पंच अलम् हैं।' तभीसे उनके अधिकृत राज्यका नाम 'पंचाल' पड़ा।

पांडवोंके समयमें यहाँका राजा द्रुपद था जिससे अर्जुनकी सहायतासे द्रोणाचार्यने उत्तर पंचाल छीन लिया था। उत्तर पंचालकी राजधानी अहिच्छत्रपुर तथा दक्षिण पंचालकी राजधानी कंपिल थी। द्रौपदी यहाँके राजाकी पुत्री थी, अतः उसे पांचाली या द्रौपदी कहते हैं (दे० महाभा०, पांचाल, द्रुपद, द्रौपदी तथा द्रोण)।

(२) बभ्रव्यगोत्रके एक ऋषि। (३) एक सर्पका नाम। (४) एक यक्ष जिसे रात्रिदेवीकी सेवाके लिए ब्रह्माने उनके साथ विन्ध्य पर्वतपर भेजा था।

पंचाशत्पीठ–पु० [सं०] इसे बिन्दुपीठ, श्रीपीठ, महापीठ, विद्यापीठ तथा आनन्दपीठ भी कहते हैं। यह पीठ पचास पीठोंका रूप धारण करता है (ब्रह्मां० ४.३७.४७)।

पंचाश्वमेधिक–पु० [सं०] श्राद्धके लिए उपयुक्त एक तीर्थस्थान (वायु० ७७.४५)।

पंचाह–पु० [सं०] (१) पाँच दिनोंमें होनेवाला एक यज्ञ—दे० यज्ञतत्त्वप्रकाश। (२) एक कृत्य जो सुत्याके पाँच दिनोंमें होता है (अन्त्यकर्मदीपक)।

पंचेषु–पु० [सं०] कामदेव जिनके पाँच शर हैं (पंचबाण, कामदेव)।

पंचौदन–पु० [सं०] एक यज्ञ विशेष (यज्ञमीमांसा, वेणीरामशर्मा गौड़ कृत)।

पंडितक–पु० [सं०] धृतराष्ट्रके १०० पुत्रोंमेंसे एक पुत्र तथा दुर्योधनका एक भाई (महाभा० आदि० ६७.१०१)। भीमसेन द्वारा यह मारा गया था (भीष्म० ८८.२४, २५)।

पंडुकेश्वर–पु० [सं०] बदरिकाश्रमके मार्गमें विष्णुगंगासे आगे स्थित एक तीर्थस्थान जिसे 'योगबद्री' कहते हैं। यहाँ एक प्राचीन मंदिर है जिसमें योगबद्रीनारायण और वसुदेवकी मूर्त्तियाँ हैं। कहते हैं पांडवोंने इसका निर्माण कराया था (स्कंद० बदरिकाश्रम-माहात्म्य)।

पंपा–स्त्री० [सं०] (१) एक नदी जो विष्णुको अतिप्रिय थी, यहाँ बलराम भी आये थे (भाग० ७.१४.३१)। (२) रामायण और महाभारतके अनुसार दक्षिण देशकी एक नदी तथा उसीके निकटका एक ताल और नगर। रामायणानुसार पंपा नदीसे लगा हुआ ऋष्यमूक पर्वत है और ऋष्यमूकके पास ही मलयगिरि है। ऋष्यमूकसे मलयगिरिपर जाकर ही रामसे मिलनेका वृत्तांत हनुमान्‌ने सुग्रीवसे कहा था (रामच० मा० किष्कि० १-४)।

आजकल त्रावंकोर राज्यमें एक नदीका नाम पंबे मिलता है जो पश्चिम घाटसे निकलती है। वहाँवाले इसे 'अनमलय' कहते हैं। अस्तु, यही नदी पंपा जान पड़ती है और ऋष्यमूक भी वहीं है जहाँसे इसका उद्गम हुआ ऐसा कहा गया है।

पंपातीर्थ–पु० [सं०] पंपा नदीके निकट पंपासरपर स्थित एक तीर्थस्थान जो पितरोंके श्राद्ध आदिके लिए अति प्रशस्त तथा पवित्र कहा गया है (मत्स्य० २२.५०)।

पंपावती–स्त्री० [सं०] भद्राश्व देशकी कई श्रेष्ठ नदियोंमेंसे एक नदीका नाम (वायु० ४३.२७)।

पंपासर–पु० [सं०] दे० पंपा।

पक्ष–पु० [सं०] (१) जिसका देव और पितृ कार्योंके अर्थ पृथक्-पृथक् परिग्रहण किया जाय उस काल विशेषको पक्ष कहते हैं या चन्द्रमासके १५-१५ दिनोंके दो विभाग—शुक्ल और कृष्ण। ये दोनों पक्ष देव-निमित्तक कार्य तथा पितृ-निमित्तक कार्योंमें उपयुक्त किये जाते हैं (धर्मशास्त्रानुसार)। ज्योतिषशास्त्रानुसार ये पक्ष शुभ तथा अशुभ दोनों कार्योंमें उपयुक्त होते हैं (धर्मसार)। (ब्रह्मां० २.२१.१२५; २४.५६; २८.३३; ३.१.५९; वायु० ३०.१५; ४९.१३०; ५०.१७८)। (२) देवजनी और मणिवर यक्षके ३० पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (ब्रह्मां० ३.७.१२९)। (३) अनुके तीन पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (वायु० ९९.१३)।

पक्षगंता–पु० [सं०] छियासी श्रुतर्षियोंमेंसे एक श्रुतर्षिका नाम (ब्रह्मां० २.३३.४)।

पक्षजन्मा–पु० [सं०] दे० चन्द्रमा।

पक्षधर–पु० [सं०] प्रत्येक महीनेके दो पक्ष होते हैं—कृष्ण तथा शुक्ल। कृष्ण पक्षमें चन्द्रमा धीरे-धीरे घटता है और शुक्ल पक्षमें धीरे-धीरे बढ़ता है, अतः चन्द्रमाका यह नाम पड़ा—दे० चन्द्रमा।

पक्षितीर्थ–पु० [सं०] एक तीर्थ विशेष जो मद्राससे १६-१७ कोस दक्षिण पहाड़पर स्थित है। इसका आधुनिक नाम तिरुक्कडुकुदरन् है जो प्राचीन कालमें बड़ा प्रसिद्ध था। प्रत्येक दिन ग्यारह बजे दिनमें इस मंदिरके पुजारी पासकी एक चट्टानपर एक थालीमें कुछ भोजन रख देते हैं जिसके रखते ही दो चीलें आ भोजन करने लगती हैं। ऐसा

विश्वास है कि ये पक्षी बनारससे नित्य लंका जाने समय यहाँ उतरते हैं, अतः इसका यह नाम पड़ा।

पक्षिणी–स्त्री० [सं०] पोडश-पत्राब्जपरकी पोडश शक्तियों-मेंसे एक शक्ति देवीका नाम (ब्रह्मां० ४.३२.११)।

पटच्चर–पु० [सं०] एक प्राचीन देशका नाम जिसका उल्लेख महाभारत तथा पुराणोंमें मिलता है। महाभारतके सभापर्वके आधारपर यहाँके निवासी चेदिराज जरासंधके भयसे दक्षिणको भाग गये थे (सभा० १४.२६)। सहदेवने दक्षिण दिग्विजयके समय इनपर विजय प्राप्त की थी (सभा० ३१.४)। इसे मत्स्य देशके दक्षिणमें चेदि देशके निकट मानना पड़ेगा, पर संभवतः यहाँके निवासियोंके दक्षिणकी ओर भाग जानेके कारण ही महाभारतके टीकाकार नीलकंठने इसे प्राचीन चोल देश माना है (ब्रह्मां० २.१६.४१; मत्स्य० ११४.३५)।

पटह–पु० [सं०] युद्धका एक वाद्ययन्त्र (मत्स्य० १३७.२९; १३८.३)।

पट्टुमान्–पु० [सं०] शांतकर्णि वंशका एक राजा। यह शांतकर्णि, जिसने ५६ वर्षोंतक राज्य किया था, का पौत्र तथा आपोलवका पुत्र था। इसने २४ वर्षतक राज्य किया था। इसके पुत्रका नाम अनिष्टकर्मा था (ब्रह्मां० ३.७४.१६४)। विष्णुपुराणके अनुसार यह मेघस्वातिका पुत्र तथा अरिष्टकर्माका पिता था (विष्णु० ४.२४.४५-६)। यह आंध्रवंशका एक राजा था जिसका नाम पट्टुमाथि भी लिखा मिला है (विष्णु० ४.२४.५८)।

पट्टुश्रव–पु० [सं०] दमघोष तथा श्रुतश्रवाके दो पुत्रोंमेंसे एक पुत्र। इनका दूसरा पुत्र वैद्य शिशुपाल था। शिशुपाल ज्येष्ठ था और यह कनिष्ठ (वायु० ९६.१५९)।

पट्ट–पु० [सं०] ग्रहण कालमें गौ, शिलाफलक, काष्ठफलक (तख्ती आदि), वस्त्रादि विधिपूर्वक संकल्प-मंत्र पढ़कर दान किये जायँ। उनसे ब्राह्मणोंका सत्कार करनेके बाद ब्राह्मण-गण वस्त्रपट्ट (वस्त्रखण्ड) पर लिखे शान्तिपोपक मन्त्रोंको पञ्चरत्नयुक्त कर यजमानके सिरपर रखें (मत्स्य० ६७.२१)।

पट्टवर्धन–पु० [सं०] भालपर धारण किये जानेवाले तिलकों-मेंसे एक प्रकारका तिलक यथा ऊर्ध्वपुण्ड्र, त्रिपुण्ड्र और अगस्त्यपत्राकार (ब्रह्मां० ४.३८.२२)।

पट्टसेन–पु० [सं०] भंडके कई पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (ब्रह्मां० ४.२६.४९)। जो उसके सेनापति भी थे (ब्रह्मां० ४.२१.८३)।

पट्टिश–पु० [सं०] शिवके आयुधोंमेंसे एक (वायु० ५५.४५; १०१.२७०)।

पण–पु० [सं०] प्राचीन कालका एक ताँबेका सिक्का (मस्त्य० २२७.१४)।

पणव–पु० [सं०] (१) बाह्यकके बाह्यकासे उत्पन्न चार पुत्रों-मेंसे एक पुत्रका नाम (वायु० ९६.४)। (२) एक वाद्ययंत्र जो नगाड़ेके आकारका होता है (वायु० ४५:४०; भाग० ५.९.१५)।

पणि–पु० [सं०] (१) कालीके मंदिरका पुजारी, वृपल सरदारके पणिकी ओर संकेत है (भाग० ५.९.१५-१६)। (२) रसातलके दानवोंका एक वर्ग (भाग० ५.२४.३०)।

पण्डारकवन–पु० [सं०] पाण्डुकूलमें समुद्रके निकटका एक पवित्र (वन) स्थान जहाँ श्राद्ध करना शुभ है (वायु० ७७.३७)।

पतंग–पु० [सं०] (१) मेरुके दक्षिण ओर मूलमें स्थित एक पर्वत (भाग० ५.१६.२६; विष्णु० २.२.२८)। जो मानसरोवरके दक्षिण है (वायु० ३६.२२; ३८.२)। (२) प्लक्षद्वीपके निवासियोंका एक वर्ग विशेप (भाग० ५.२०.४)। (३) देवकीके छह पुत्रों, जिन्हें कंसने मारा था, मेंसे एक पुत्रका नाम। श्रीकृष्ण सुतलसे इसे अन्य पाँच भाइयोंके साथ द्वारका ले आये थे और माता-पिताके देख लेनेके पश्चात् यह उनके साथ पुनः स्वर्ग चला गया था (भाग० १०.८५; ५१-६)। (४) वालखिल्योंके सहायक तथा मित्र (वायु० २८.३२)। (५) सूर्यदेव (ब्रह्मां० २.२१.६७; वायु० ५२.४८; ५४.८)।

पतंजलि–पु० [सं०] (१) योगशास्त्रके रचयिता एक प्रसिद्ध ऋषि तथा सिद्ध (ब्रह्मां० २.३५.४६; वायु० ६१.४१)। (२) गोणिकाके गर्भसे उत्पन्न एक प्रसिद्ध मुनि जिन्होंने पाणिनीय सूत्रों तथा कात्यायनके वार्त्तिकपर महाभाष्य लिखा है। काशीमें नागकुआँपर यह रहते थे और शेपनागके अवतार माने जाते हैं। दर्शनकार पतंजलि इनसे बहुत पहले हुए थे। भाष्यकार पतंजलि शुंगवंशके संस्थापक पुष्यमित्रके समयमें हुए थे। (३) पाराशर्य कौथुमके एक शिष्य (दे० पतंजलि २; ब्रह्मां० २.३५.४६; वायु० ६१.४१)।

पताका–स्त्री० [सं०] भद्राश्व महादेशकी कई श्रेष्ठ नदियोंमेंसे एक नदीका नाम (वायु० ४३.३०)।

पताकिनी–स्त्री० [सं०] वायुदिक्की शक्ति जिसका वाहन मृग है (मत्स्य० २८६.९)।

पतित–पु० [सं०] आचार, नीति या धर्मसे गिरा हुआ। अतिपातकी तथा अपावन। ऐसे व्यक्तिको चाहे गुरु ही क्यों न हो छोड़ देना चाहिये, पर यदि माता पतिता हो तब भी वह अत्याज्य है (मत्स्य० २२७.५९, १५०)।

पतिव्रता–स्त्री० [सं०] पतिमें अनन्य अनुराग रखनेवाली और यथाविधि सेवा करनेवाली स्त्री यथा सावित्री, सीता आदि (मत्स्य० २१०.१६)।

पत्रवान्–पु० [सं०] मुनि (कश्यप-पत्नी) और कश्यपके पुत्र १६ मौनेयदेव गन्धर्वोंमेंसे एक मौनेय देवगन्धर्वका नाम (ब्रह्मां० ३.७.२)।

पत्रिका–पु० [सं०] एक वनस्पति तथा महौपधिका नाम (मत्स्य० २१८.३१)।

पथ्य–पु० [सं०] सुमंतुके एक शिष्य (कबन्ध) से इन्होंने अथर्ववेद सीख कुमुद आदि अनेक शिष्योंको पढ़ाया था (भाग० १२.७.१,२)। कबंधके दूसरे शिष्यका नाम वेददर्श था। पथ्यके कुमुदके अतिरिक्त दो शिष्य और थे, शुनक (ब्रह्मां० = शौनक) और जाजलि (जावालि = विष्णु०)। यों इनके तीन शिष्य थे (ब्रह्मां० २.३५.५६, ५९; वायु० ६१.५०; विष्णु० ३.६.९-११)। (२) भार्गव गोत्रोत्पन्न एक ऋषिका नाम (वायु० ६५ ९६)।

पथ्या–स्त्री० [सं०] मनुकी एक पुत्री तथा अथर्वा आंगिरस-

की पत्नी जिनके अयास्य, वामदेव, उतथ्य, उशिति और धृष्णि आदि पुत्र थे (ब्रह्मां० ३.१.१०३-५; वायु० ६५.९८)।

पद्गमा—स्त्री० [सं०] विन्ध्यप्रांत निवासियोंकी कई जातियोंमेंसे एक जातिका नाम (मत्स्य० ११४.५३)।

पदाति—पु० [सं०] राजा जनमेजयके एक पुत्रका नाम (—दे० भाग०, जनमेजय)।

पदार्थदशमी—स्त्री० [सं०] मार्गशीर्ष शुक्ला १० से प्रत्येक शुक्ला दशमीको दसों दिगीशोंकी पूजा करे। इससे धन, विद्याकी प्राप्ति तथा शत्रुनाश होता है (विष्णुधर्मोत्तर)।

पद्म—पु० [सं०] (१) छह दाँतवाले सुनहले भद्र नामक हाथी, जो राजा वलिकी सवारीके काममें आता था, के आठ पुत्रोंमेंसे एकका नाम। इनकी माताका नाम अभ्रमु है। इसके आठ पुत्रोंके नाम यों हैं—अंजन, सुप्रतीक, वामन, पद्म, भद्र, मृग, मंद और संकीर्ण। इसका वन पद्मवन कहलाता है। लौहित्य तथा सिंधुके वीचमें है। यह कुवेरकी सवारीके काम आता है (ब्रह्मां० ३.७.३५८; ७.३२९-३३१; वायु० ६९.२१३-२१७)। (२) विष्णुके एक आयुधका नाम (विष्णु०)। (३) कुवेरकी नौ निधियोंमेंसे एक (वायु० ४१.१०.११)। (४) तीस कल्प, जो ब्रह्माके एक मास कहे गये हैं, मेंसे एक (सातवें) कल्पका नाम (वायु० २१.१२)। (५) वलदेवका एक नाम (भाग०)। (६) एक यक्षका नाम, जो पुण्यजनी तथा मणिभद्रके २४ पुत्रोंमेंसे एक था (ब्रह्मां० ३.७.१२४; वायु० ६९.१५५)। (७) पुराणानुसार एक नरकका नाम (ब्रह्मां०)। (८) कद्रू और कश्यपके पुत्र हजारों नागोंमेंसे एक प्रधान नाग (ब्रह्मां० ४.२०.५३)। (९) पुराणानुसार जम्बूद्वीपके दक्षिण-पश्चिममें स्थित एक देशका नाम। (१०) कार्त्तिकेयके एक अनुचरका नाम (महाभा० शल्य० ४५.५६)। (११) एक पुराण जिसमें ५५००० श्लोक हैं—दे० पुराण।

पद्मकरा—स्त्री० [सं०] अन्धकासुर रक्तपानार्थ शिवजी द्वारा सृष्ट अनेक मानस-पुत्री मातृकाओंके जगत्-नाशक उत्पातके शमनके लिए शंकरजीके कहनेपर नृसिंह भगवान्‌ने अपने विभिन्न अङ्गोंसे जिन ३२ मातरोंकी सृष्टि की, उनमेंसे रेवतीकी अनुगामिनी एक देवी (मत्स्य० १७९.७३)।

पद्मकृच्छ्र—पु० [सं०] पद्मके पत्तोंको उबाल कर प्रतिदिन एक मास पीये, 'पद्मपत्रैः पद्मकृच्छ्रः' (मार्कण्डेय०)।

पद्मकेतन—पु० [सं०] पुराणानुसार गरुड़के कई पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (महाभा० उद्योग० १०१.११)।

पद्मक्षेत्र—पु० [सं०] उड़ीसा प्रांतमें स्थित एक तीर्थका नाम (स्कंद० उत्कल-मा०)।

पद्मगुल्म—पु० [सं०] मृग नामक हाथीके आठ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (ब्रह्मां० ३.७.३३२)।

पद्मचित्र—पु० [सं०] कद्रू और कश्यपसे उत्पन्न हजारों नागोंमेंसे एक प्रधान नागका नाम (वायु० ६९.७३)।

पद्मदल—पु० [सं०] कमलकी पंखुड़ी (पुष्पदल) से निर्मित पात्र जिसमें गंधर्वोंने चित्ररथको वछड़ा वनाकर पृथ्वीरूपी गौको दूहा था ((मत्स्य० १०.२४)।

पद्मद्वय—पु० [सं०] पद्म और महापद्म नामके दो सर्प (ब्रह्मां० ४.२०.५३, ५४) जो त्रिपुरारिके रथमें तक्षक, कर्कोटक और धनंजय नागोंके साथ घोड़ोंके 'वालवंधन'के काम आये थे (मत्स्य० १३३.३३)।

पद्मनाभ—पु० [सं०] (१) धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (महाभा० आदि० ६७.९६)। (२) नाभिसे कमल उत्पन्न होनेके कारण विष्णुका एक नाम (ब्रह्मां० २.१९.१७७-८०; ३.३३.१७)। (३) देवजनी और मणिवरके तीस पुण्यलक्षण, सुरूप, प्रियदर्शन पुत्रोंमेंसे एक पुत्र यक्ष (ब्रह्मां० ३.७.१३०; वायु० ६९.१६१)। (४) नैमिषारण्यमें गोमती तटपर नागपुरमें निवास करनेवाले एक नागका नाम तथा इसके गुणोंका वर्णन (महाभा० शान्ति० ३५५.४-११)।

पद्मनाभव्रत—पु० [सं०] आश्विन शुक्ला १२ को पद्मनाभका पूजन कर जागरण तथा व्रत रखे (वाराह पुराण)।

पद्मनिधि—स्त्री० [सं०] (पद्मरूप निधि) कुवेरकी नवनिधियोंमेंसे एक—दे० कुवेर।

पद्मपात्र—पु० [सं०] गंधर्वों और अप्सराओंने मिलकर जिस पात्रमें पृथ्वीरूपी गौको दूहा था, चित्ररथ वछड़ा और विश्वावसु दुहनेवाला वना था तथा शुचि गन्धरूपी दुग्ध दुहा गया था (वायु० ६२.१८७)।

पद्मभू—पु० [सं०] ब्रह्मा। सृष्टिके आरम्भमें विष्णुकी नाभिसे १००० दलवाला सुदीप्त तथा वहुत योजन विस्तारवाला कमल उत्पन्न हुआ जिसकी आकृति संसारकी ही तरह थी जिसमें सव देश, पहाड़ आदि वर्तमान थे (मत्स्य० ४.१; १६८.१५; १६९.३-१८)।

पद्मपुराण—पु० [सं०] १८ पुराणोंमेंसे एक जिसमें शंकरजीने पार्वतीसे विष्णु-महिमाकी व्याख्या की है। इसमें ५५००० श्लोक हैं जिन्हें ५ खण्डोंमें विभक्त किया है—(१) सृष्टि खण्ड, (२) भूमि खण्ड, (३) स्वर्ग खण्ड, (४) पाताल खण्ड और (५) उत्तर खण्ड। 'क्रियायोगसार' नामक एक छठा खण्ड भी है जिसमें भक्तिकी महत्ता दी गयी है। शीर्षकके अनुसार विषय नहीं है और अनेक वातोंका मिश्रण किया गया है। यह वैष्णवमतप्रधान ग्रन्थ है (भाग० १२.७.२३; १३.४; वायु० १०४.९; विष्णु० ३.६.२१ तथा पाद्म पु०)।

पद्ममाली—पु० [सं०] एक राक्षसका नाम (हि० श० सा०)।

पद्मयोनि—पु० [सं०] कमलसे उत्पन्न होनेके कारण ब्रह्माका एक नाम (ब्रह्मां० २.२५.६२; विष्णु० ६.४.९)।

पद्मलांछना—स्त्री० [सं०] (१) सरस्वती देवीका एक नाम। (२) तारा देवीका एक नाम।

पद्मवर्ण—पु० [सं०] (१) पुराणानुसार यदुके एक पुत्रका नाम (हि० वि० को०)। (२) देवजनी तथा मणिवरके तीस पुत्रोंमेंसे एक पुत्र यक्ष (ब्रह्मां० ३.७.१२९; वायु० ६९.१६०)।

पद्मविधि—पु० [सं०] ईश्वरके संसार-रूपी कमलके अनुरूप होनेवाले कृत्य (मत्स्य० १६९.१६.१८)।

पद्मस्नुषा—स्त्री० [सं०] (१) गंगाजीका एक नाम। (२) दुर्गाका एक नाम (ब्रह्मां०)।

पद्मा—स्त्री० [सं०] (१) मूर्त्तिस्थापनाके लिए १० पीठिकाओंमेंसे एक पीठिकाका नाम जिसके १६ कोण होते हैं तथा निचला भाग सकरा होता है (मत्स्य० २६२.७; १६.

१८)। (२) भाद्रपद शुक्ला एकादशीका नाम। यदि इस दिन श्रवण नक्षत्र हो तो यही विजया एकादशी होती है। इसमें वामन भगवान्‌का पूजन आवश्यक है। मांधाताने अंगिरा ऋषिके आदेशानुसार यह व्रत कर राज्यकी अनावृष्टि मिटायी थी (नारद पु०)। (३) मनसा देवीका एक नाम। (४) बृहद्रथकी पुत्रीका नाम जो कल्किदेवको ब्याही थी। (५) लक्ष्मीका एक नाम जो समुद्रसे उत्पन्न हुईं और और विष्णुकी पत्नी हैं (भाग० १०.४७.१३; विष्णु० १.८.२४)।

पद्माचल—पु० [सं०] पुराणानुसार एक पर्वतका नाम (ब्रह्मां० तथा विष्णु०)।

पद्मावती—स्त्री० [सं०] (१) मागधराज विश्वस्फूर्जि नामक पुरंजयकी नगरी तथा नाग राजाओंकी राजधानीका नाम (भाग० १२.१.३७; विष्णु० ४.२४.६३)। (२) जरत्कारु ऋषिकी पत्नीका नाम। (३) मनसा देवीका नाम (देवी-पु०)। (४) पुराणानुसार एक अप्सराका नाम (ब्रह्मां०)। (५) पुराणानुसार राजा शृगालकी पत्नीका नाम। (६) युधिष्ठिरकी एक रानीका नाम (महाभा०)। (७) उज्जयिनी तीर्थका एक प्राचीन नाम (ब्रह्मां०)। (८) भगकार और व्रतवतीकी तीन पुत्रियोंमेंसे एक पुत्रीका नाम। इनकी शेष दो पुत्रियोंका नाम सत्यभामा तथा व्रतिनी था। ये तीनों बहिनें श्रीकृष्णको ब्याही गयी थीं (मत्स्य० ४५.२१)। (९) कार्त्तिकेयकी अनुचरी एक मातृकाका नाम (महाभा० शल्य० ४६.९)।

पद्मासन—पु० [सं०] (१) योगका एक आसन। परशुराम तथा कपिलादिका पद्मासन प्रसिद्ध है (ब्रह्मां० ३.२४.१६; ५३.१७)। (२) ब्रह्माका एक नाम यथा कमलासन।

पद्मोत्तम—पु० [सं०] मृग नामक हाथीके आठ पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (ब्रह्मां० ३.७.३३२)।

पद्मोद्भवा—स्त्री० [सं०] मनसा देवीका एक नाम (देवी-पु०)।

पन—पु० [सं०] दस देवगन्धर्वोंमेंसे एक देवगन्धर्व (वायु० ६८.३९)।

पनस—पु० [सं०] (१) श्रीरामके दलका एक बंदर जिसकी पुत्रीका नाम रुमा था और जो वानरराज सुग्रीवकी पत्नी तथा तीन पुत्रोंकी माता थी (ब्रह्मां० ३.७.२२१, २३१)। यह श्रीरामके साथ लंका गया था और राक्षसोंसे लड़ा था (भाग० ९.१०.१९)। (२) विभीषणके मन्त्रियोंमेंसे एकका नाम (रामायण)।

पन्नग—पु० [सं०] छियासी श्रुतर्षियोंमेंसे एक श्रुतर्षिका नाम (ब्रह्मां० २.३३.४)।

पन्नगारि—पु० [सं०] (मत्स्य० = पर्णागारि) वशिष्ठ-कुलका त्र्यार्षेय प्रवरप्रवर्तक एक ऋषि। एक ऋषि जो रथीतरके तीन शिष्योंमेंसे अन्यतम थे (मत्स्य० २००.१२; वायु० ६१.३)।

पय—पु० [सं०] (गव्य) श्राद्धादि धार्मिक कृत्योंके लिए गोदुग्ध छोड़ अन्य दूध वर्जित है (मत्स्य० १७.३४)।

पयस्विनी—स्त्री० [सं०] भारतवर्षके द्रविड़ देशसे होकर बहनेवाली एक नदी (भाग० ५.१९.१८; ११.५.३९)।

पयःकीर्त्ति—पु० [सं०] वालीके सामन्त तथा सेनापति महाबलवान् अनेक प्रधान बन्दरोंमेंसे एक प्रधान बंदर (ब्रह्मां० ३.७.२४०)।

पयोद—पु० [सं०] (१) एक यदुवंशी राजाका नाम। (२) नील पहाड़ीपर स्थित एक झीलका नाम (ब्रह्मां० २.१८.६९)।

पयोदजनपादप—पु० [सं०] त्र्यार्षेय प्रवरप्रवर्तक एक ऋषि (मत्स्य० १९८.५)।

पयोदा—स्त्री० [सं०] (१) पयोद झीलसे निकली दो नदियोंमेंसे एक नदीका नाम (ब्रह्मां० २.१८.७०; वायु० ४७.६६)। (२) कुमारकी एक अनुचरी मातृकाका नाम (महाभा० शल्य० ४६.२८)।

पयोराशि—पु० [सं०] क्षीरोद या क्षीरसागर जिसके मंथनसे १४ रत्न निकले थे (ब्रह्मां० २.२५.५४)।

पयोव्रत—पु० [सं०] (१) इसे सर्वज्ञ तथा सर्वव्रत भी कहते हैं। एक व्रत जिसमें एक दिन-रात या तीन रात केवल जल पीकर रहना पड़ता है (मत्स्य०)। (२) श्रीकृष्णका एक व्रत जो फाल्गुन शु० १ से द्वादशीतक होता है। इसमें १२ दिन केवल दूध पीकर रहना, श्रीकृष्णका स्मरण और पूजन करना होता है (भाग०)। इसे सर्वप्रथम ब्रह्माने बतलाया था, तदुपरांत अदितिने कश्यपके कहनेसे इस व्रतको किया था। इस व्रतसे प्रसन्न होकर विष्णुने प्रकट हो अदितिके गर्भसे उत्पन्न होनेका वचन दिया। अदितिके गर्भसे वामन अवतार इसी व्रतके प्रभावसे हुआ था। लोग इसे पुत्रकी इच्छासे करते हैं (भाग० ८.१६.२५-६०; १७.१, १८)।

पयोष्णी—स्त्री० [सं०] ऋक्षपर्वतसे निकली भारतवर्षकी एक नदी (भाग० ५.१९.१८; ब्रह्मां० २.१६.३२; वायु० ४५.१०२; विष्णु० २.३.११)। यहाँ पिंगलेश्वरी नामसे सती देवीकी मूर्त्ति स्थापित है (मत्स्य० १३.४४)। यह नदी पितरोंके श्राद्ध आदिके लिए अति प्रशस्त तथा पवित्र समझी जाती है। यहाँ किया हुआ श्राद्ध अक्षय्य कहा गया है। कहते हैं तीर्थयात्राके सिलसिलेमें बलराम यहाँ स्नान करने आये थे (भाग० १०.७९.२०)।

परंजन—पु० [सं०] पश्चिम दिशाके स्वामी वरुण (हि० श० सा०)।

परंतप—पु० [सं०] तामस मनुके दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (मत्स्य० ९.१७)।

पर—पु० [सं०] (१) दो परार्धोंका एक पर होता है। गणनाकी अन्तिम सीमाको परार्द्ध कहते हैं (वायु० ७.१३)। अर्थात् सर्वोत्कृष्ट (वायु० ५.३७)। (२) काम्पिल्यके राजा 'समर'के तीन पुत्रोंमेंसे एक (वायु० ९९-१७७)।

परक्षर—पु० [सं०] भारतके पश्चिमी जनपदोंमेंसे एक जनपद (वायु० ४५.१२९)।

परक्षुद्र—पु० [सं०] तैत्तिरीयोंके खिल और उपखिलोंका नाम (वायु० ६१.६६)।

परक्षुद्रा—स्त्री० [सं०] यजुर्वेदकी तैत्तिरीय शाखासे सम्बद्ध खिलोंका नाम (ब्रह्मां० २.३५.७५)।

परण्य—पु० [सं०] त्र्यार्षेय प्रवरप्रवर्तक एक ऋषि (मत्स्य० १९६.४३)।

परदेवता—स्त्री० [सं०] यह ललिता देवी हैं (ब्रह्मां० ४.१०.८९)।

परपक्ष–पु० [सं०] अनुके तीन परम धार्मिक पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (वायु० ९९.१३)।

परपुरुष–पु० [सं०] पुरुषोंमें सर्वश्रेष्ठ जिसकी उपासना वह करता है जो कामनारहित है अथवा जो मोक्ष तथा अन्य सव पदार्थोंकी कामना रखता है, अर्थात् परपुरुषकी उपासना निष्काम तथा सकाम दोनों ही करते हैं (भाग० २.३.९, १०, १२)।

परब्रह्मस्वरूपिणी–स्त्री० [सं०] ललिता देवी (ब्रह्मां० ४.१०.९०)।

पर–पु० [सं०] (१) इकाई, दहाई, सैकड़ा, हजार, दस हजार, लाख, दस लाख करोड़, दस करोड़, अरव, दस अरव, खरव, दस खरव, नील, दस नील, पद्म, दस पद्म, शङ्ख, दस शङ्खके वाद परार्द्ध है। परार्द्धका द्विगुण (ब्रह्मां० ४.२.९०; वायु० १०१.९२, ९९)। इसमें ब्रह्मा, ज्ञान, धन तथा ऐच्छिक सारे पदार्थ सम्मिलित हैं (ब्रह्मां० ४.२.९९-१०२)। एक मतसे 'पर' ही परार्थ है जिसका अर्थ है परार्थसे ऊपर कोई भी वस्तु, अतः यह असीमित है तथा अगणित है (ब्रह्मां० ४.२.१०५-७, १४३)। (२) ब्रह्मा (वायु० १०१.१०५-७)।

परम–पु० [सं०] ऋपि, मुनि आदि (मत्स्य० २००.१७)।

परमन्यु–पु० [सं०] यदुवंशी कक्षेयुके एक पुत्रका नाम (भाग०)।

परमर्षि–पु० [सं०] परम ऋषि (मत्स्य० १४५.८२)।

परमाणुक–पु० [सं०] परमाणु। भूतादिसे १।१० अधिक यह सूक्ष्म है तथा भावसे इसका ज्ञान संभव नहीं है ओर इसका एकीकरण नहीं हो सकता। प्रमाणका पहला परमाणु वंद खिड़कियोंसे भीतरकी ओर आती हुई सूर्यकी किरणोंमें दिखायी पड़नेवाले धूलकण हैं (भाग० ३.११.१; १२.४.१; वायु० १०१.११६-१८; ब्रह्मां० ४.२.११७, २२७-९)।

परमार्थ–पु० [सं०] ऋभुके शिष्य निदाघका जीवन इसका उत्कृष्ट उदाहरण है (विष्णु० २.१४.१६, ३१, अध्याय १५ और १६)।

परमाश्रम–पु० [सं०] चौथा आश्रम अर्थात् संन्यास जिसमें गुरुके साथ एक वर्ष रहकर तदुपरांत देश भ्रमण करना होता है। जनसमुदायसे विरक्ति, क्रोधदमन, अल्पाहार, इन्द्रिय-निग्रह तथा निर्जन, वन, गुफाओं और नदी तटपर निवासका विधान है (वायु० १७.१-८)।

परमेश्वर–पु० [सं०] इससे शिव (ब्रह्मां० ३.४१.५०; ४४.३०; ४.१०.२८; मत्स्य० १२.९) तथा विष्णु (विष्णु० ५.१.६०; १८.५२) का वोध होता है।

परमेश्वरी–स्त्री० [सं०] (१) प्रधान शक्ति, ललिता देवी (ब्रह्मां० ४.६.६५; १६.१; १८.१५; १९.६०; २२.५)। (२) पातालमें स्थापित सती देवीकी एक मूर्ति (मत्स्य० १३.३९)।

परमेषु–पु० [सं०] अनुके तीन पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (मत्स्य० ४८.१०; विष्णु० ४.१८.१)।

परमेष्ठी–पु० [सं०] (१) प्रतीहके पिता तथा सुवर्चलाके पतिका नाम। यह देवद्युम्न और धेनुमतीके पुत्र थे (भाग० ५.१५.३)। (२) सर्वशक्तिमान् ब्रह्माकी एक उपाधि जिनकी उपासना प्रमुख आधिपत्यके लिए की जाती है (भाग० २.१.३०; २.२२; ३.६; ब्रह्मां० ४.९.२७)। (३) तेजस-सुत इन्द्रद्युम्नके एक पुत्रका नाम, जो पिताकी मृत्युके वाद उत्पन्न हुआ था (ब्रह्मां० २.१४.६५; विष्णु० २.१.३६; वायु० ३३.५५)। (४) दक्षके जामाता तथा नारदके पिता (ब्रह्मां० ३.२.१३-१८)।

परशु–पु० [सं०] (१) उत्तम मनुके १३ पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (ब्रह्मां० २.३६.३९; विष्णु० ३.१.१५)। (२) परश्वध-कुल्हाड़ी, असुरोंके संहारके लिए शिवने यह शस्त्र परशुरामको दिया था (ब्रह्मां० ३.२४.७४, ८१; ३२.५८; ३९.२१, ३१; ४०.१३; ४.१९.८४)। (३) श्रीकृष्ण तथा रुक्मिणीके ११ पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (मत्स्य० ४७.१६)।

परशुनाभ–पु० [सं०] एक राक्षसका नाम (वायु० ६९)।

परशुराम–पु० [सं०] (१) कुरुक्षेत्रमें श्रीकृष्ण द्वारा किये गये यज्ञोंमें उनके एक पुरोहितका नाम (भाग० १०.९०.४६[२])। (२) राजा प्रसेनजित्की पुत्री रेणुकाके गर्भसे उत्पन्न जमदग्नि ऋपिके एक पुत्रका नाम जिसका जन्म वैशाख शुक्ला ३ को रात्रिके प्रथम प्रहरमें हुआ था (व्रत-परिचय)। इन्होंने २१ वार पृथ्वीपरके क्षत्रियोंका संहार किया था तथा स्यमन्तपंचकमें रक्तसे तीन कुंड भर दिये थे (भाग० १.३.२०; २.७.२२; ६.१५.१३; १०.४०.२०)। यह ईश्वरके सोलहवें अवतार माने जाते हैं। कुशिककी तपस्यासे प्रसन्न होकर इन्द्र उनके यहाँ गाधि नामसे उत्पन्न हुए। गाधिको सत्यवती नामकी पुत्री हुई जिसका विवाह भृगुके पुत्र ऋचीकसे हुआ और समयानुसार सत्यवतीके गर्भसे जमदग्नि उत्पन्न हुए जिनका विवाह रेणुकासे हुआ। रेणुका ही परशुरामकी माता हुईं (महाभा० शांति० ४९.३१, ३२)।

परशुरामने पिताकी आज्ञासे अपनी माताका सिर काट लिया था। पिताके आशीर्वादसे रेणुका पुनः जीवित हो गयी और परशुराम युद्धमें अजेय रहे। एक दिन राजा कार्त्तवीर्य सहस्रार्जुन आये और आश्रमके पेड़-पौधे उजाड़ होम-धेनु ले गये (महाभा० वन० तथा भाग० ९.१५.२३-२६; ब्रह्मां० ३.२६.७ पूरा, २७.२८.३०.४)। परशुरामको जव यह विदित हुआ, उन्होंने जाकर कार्त्तवीर्यके सहस्र-वाहु भालेसे काट दिये (भाग ९.१५.२७, ३६; ब्रह्मां० ३.३०.५-१५, ३२.६१; ३८.८.२७)। कार्त्तवीर्यके पुत्रोंने आश्रमपर आकर जमदग्निको मार दिया (मत्स्य० ४३.४६.५१; भाग० ९.१६.९-१२)। परशुरामने आकर यह हाल देखकर सम्पूर्ण क्षत्रियोंके नाशकी प्रतिज्ञा की और शस्त्र लेकर सव क्षत्रियोंका नाश करनेके वाद महेन्द्र पर्वतपर स्थित वनमें तप करने चले गये। इसके पश्चात् इन्होंने अश्वमेध यज्ञ किया और सारी पृथ्वी कश्यप ऋषिको दान कर दी (ब्रह्मां० २.३५.६३.६६; ३.८.८६; ८७.४७.६०; ४.९.३)। कश्यप ऋषिने इन्हें दक्षिण समुद्रकी ओर भेज दिया था। कहते हैं वरुणने मालावारका देश इन्हें उपहार स्वरूप भेंट किया था जिसे इन्होंने क्षत्रियोंके संहार करनेके पश्चात पापसे निवृत्तिके हेतु ब्राह्मणोंको दान दे दिया।

श्रीरामने जनकपुरमें इनके धनुपकी प्रत्यंचा चढ़ा दी थी जिससे यह बहुत लज्जित हुए थे क्योंकि यह इनकी आज्ञा-

के विपरीत हुआ था। इन्होंने श्रीरामको आशीर्वाद दिया और जनकपुरके स्वयंवरसे चले गये। वहाँ लक्ष्मणसे इनका कुछ वाक् युद्ध भी हो गया था—वाल्मी० रामायण १.७६. ३.६-७। परशुराम दुर्वासाकी तरह अपने क्रोधी स्वभावके लिए प्रसिद्ध हैं —दे०जमदग्नि तथा रेणुका। अत्रि ऋषि इनसे भेंट करने आये थे (ब्रह्मां० ३.२३.४)।

परशुरामजयंती—स्त्री० [सं०] वैशाख शुक्ला तीजको होती है—व्रतपरिचय।

परशुवन—पु० [सं०] एक नरकका नाम जहाँके वृक्षोंकी पत्तियाँ परशुके समान धारवाली होती हैं (महाभा० शान्ति० ३२१.३२)।

परहारी—पु० [सं० प्रहरी] जगन्नाथजीके मंदिरके वे पुजारी जो मंदिरमें ही रहते हैं—पुरीमाहात्म्य।

परा—स्त्री० [सं०] (१) निवृत्ति, प्रतिष्ठा आदि सोलह शक्तियोंमेंसे एक शक्तिका नाम (ब्रह्मां० ४.३५.९९)। (२) कामाक्षीका चौथा रूप। इनकी चार भुजाएँ हैं जिनमें पाश, अंकुश, इक्षुकोदंड तथा पंचबाण हैं। काँचीमें ललिता इसी रूपमें स्थापित हैं (ब्रह्मां० ४.३९.१३;४४.१४१)। (३) पारियात्रपर्वतसे निकली भारतवर्षकी एक नदीका नाम (वायु० ४५.९८)।

पराकव्रत—पु० [सं०] निरन्तर १२ दिन-रात उपवास और गोदान करनेसे यह व्रत पूर्ण होता है—व्रतकल्पद्रुम।

पराक्ष—पु० [सं०] अनुके तीन परमधार्मिक वीर पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (ब्रह्मां० ३.७४.१३)।

पराचक—पु० [सं०] भद्रदेशके एक जनपदका नाम (वायु० ४३.२०)।

परात्परा—स्त्री० [सं०] ललितादेवी (ब्रह्मां० ४.१३.१, ५)।

परापरा—स्त्री० [सं०] कामाक्षीका तीसरा रूप, शुद्धपरा उनका दूसरा रूप है (ब्रह्मां० ४.३९.११)।

परांकुशा—स्त्री० [सं०] ललिताका एक नाम (ब्रह्मां० ४.१८.१४)।

पराम्बिका—स्त्री० [सं०] तीन शक्ति देवियोंमेंसे एक शक्ति देवी, जिनका मन्दिर चिन्तामणि गृहेन्द्रके उत्तर ओर है (ब्रह्मां० ४.६.१५; ३६.२२)।

परार्धकल्प—पु० [सं०] अपरार्ध कल्पका विपरीत तथा पहिले व्यतीत होनेवाला। अपरार्धकल्पका प्रथम कल्प वर्तमान वराहकल्प है (वायु० ७.११)।

परार्ध—पु० [सं०] सौ अन्त्योंकी एक वैदिक नाप। १×१० = दस×१० = शत×१० = सहस्र×१० = अयुत×१० = नियुत×१० = प्रयुत×१० = कोटि×१० = अर्बुद×१० = अब्ज×१० = खर्व×१० = निखर्व×१० = शङ्कु×१० = पद्म×१० = समुद्र×१० = अन्त्य×१० = मध्य×१० = परार्द्ध×२ = पर अर्थात् एक, दस, शत, सहस्र, दस सहस्र (अयुत), एक लाख (नियुत), दस लाख (प्रयुत), एक करोड़ (कोटि), दस करोड़ (अर्बुद), सौ करोड़ अर्थात् दस अर्बुद (अब्ज), दस अब्ज (निखर्व), दस निखर्व (शङ्कु), दस शङ्कु (१ पद्म), दस पद्म (१ समुद्र), दस समुद्रोंका (१ अन्त्य), दस अन्त्योंका (१ मध्य), दस मध्योंका (१ परार्द्ध) दो परार्धोंको 'पर' कहते हैं। ब्रह्माके वर्षोंके मानसे ब्रह्माका जीवन काल पर है। प्रथम प्रजापति ब्रह्माका जीवन = दो परार्धोंका काल (वायु० १००.२४०, विष्णु० १.३.५)। वर्तमान वराहकल्प ब्रह्माका (ब्रह्मां० १.४.३१)। द्वितीय परार्ध है (विष्णु० १.३.२७-८; ६.३.४) = एक करोड़ बार १००० करोड़ (वायु० १०१.९२,९९)।

परावसु—पु० [सं०] (१) शतपथ ब्राह्मणके अनुसार असुरोंके पुरोहितका नाम। (२) रैभ्य मुनिके एक पुत्र एक ऋषिका नाम जिसने वनमृगके धोखेसे पिताका वध कर डाला और धनुष्कोटि तीर्थमें पापमुक्त हुआ था। अर्वावसु इनका अनुज था (महाभा० वन० १२८.२-७) तथा —दे० रैभ्य, यवक्रीत। कहते हैं, इन्होंने अपने द्वारा की गयी ब्रह्महत्याकी निवृत्तिके लिए व्रत करनेकी आज्ञा अपने अनुजको दी और उन्होंने उसका पालन किया (महाभा० वन० १३८.८-१०)। (३) एक गंधर्वका नाम। नमुचिको हरानेके लिए इसने इंद्रका यशोगान किया था। शरत्कालमें आश्विन मासमें यह सूर्यके रथपर अधिष्ठित रहता है (भाग० ८.११.४; ब्रह्मां० २.२३.१३; वायु० ७९.१३)। (४) विश्वामित्रके एक पौत्रका नाम—दे० विश्वामित्र। (५) एक असुरका नाम जो इन्द्र द्वारा असुरोंके विनाशके लिए प्रयुक्त अग्निके मुँहसे बचकर तारक, कमलाक्ष आदि असुरोंके साथ समुद्रमें प्रवेश कर गया था (मत्स्य० ६१.४)।

परावह—पु० [सं०] सब लोकोंके क्षयार्थ प्रादुर्भूत होनेवाले आवह, प्रवह आदि सात मरुतोंमेंसे एक मरुत्। ये उत्पात और भयके सूचक कहे गये हैं (मत्स्य० १६३.३२)।

परावृत्—पु० [सं०] रुक्मकवचका पुत्र तथा रुक्मेषु पृथु, ज्यामघ, वलित और हरित नामके ५ पुत्रोंका पिता (विष्णु० ४.१२.१०-११)।

पराशक्ति—स्त्री० [सं०] माया (वायु० १०४.३३)। रौरव नरक तथा ज्ञानतः अथवा अज्ञानतः हुए अन्य पापोंसे मुक्ति पानेके लिए इनकी उपासना की जाती है (ब्रह्मां० ४.७.७५; ८.५७-८; १०.९०; १२.४१-६६; १४.२२; १५.४६)।

पराशर—पु० [सं०] (१) एक गोत्रकार ऋषि जो वशिष्ठके पौत्र और शक्ति तथा अदृश्यन्ती के पुत्र थे। इनके पिताका देहान्त इनके जन्मके पूर्व ही हो चुका था, अतः इनका पालन-पोषण इनके पितामह वशिष्ठने किया। यह सात ब्रह्मवादी वाशिष्ठोंमें एक थे (ब्रह्मां० २.३२. ११५)। यह याज्ञवल्क्यके शिष्य थे (ब्रह्मां० २.३५.२९; वायु० ७७.७४; विष्णु० ३.४.१८)। यह ८६ श्रुतर्षियोंमेंसे एक श्रुतर्षि (ब्रह्मां० २.३३.३; मत्स्य० १४५.९६,२०९)तथा २६वें द्वापरके वेदव्यास थे (ब्रह्मां० २.३५.१२४; वायु० २३. २१२)। कहते हैं गर्भमें ही इन्होंने पितासे ब्रह्मांड पुराण सुना और तदनन्तर जातुकर्ण्यको सुनाया (ब्रह्मां० ४.४.६५-६; वायु० ६१.४७; १०३.६५; १०६.३५)। राक्षसों द्वारा पिताकी मृत्युका संवाद अपने दादा वशिष्ठसे सुन, इन्होंने राक्षसोंके विनाशार्थ एक यज्ञ किया (विष्णु० १.१. ११-१४) पर वशिष्ठके समझानेपर शांत हुए थे (विष्णु० १.१.१५-२१)। ब्रह्माके पुत्र पुलस्त्यने इन्हें शास्त्रोंका पूर्ण ज्ञान, विष्णुपुराणके लेखनका तथा ईश्वर और कर्मोंके महत्त्वके ज्ञानका वर दिया था जिसकी पुष्टि वशिष्ठने की थी (भाग० १.३.२१; ४.१४; ६.१५.१४; ९.२२.२१; १२.६.४९, ५५; ब्रह्मां० १.१.९; २.१२; ३.८.९१; मत्स्य०

१४.१५.४७.२४६; २०१.३१; वायु० ७०.८३)। (२) एक प्रसिद्ध स्मृतिकार जिनकी स्मृति 'पराशरस्मृति'के नामसे विख्यात है और कलियुगके लिए इसका बड़ा महत्त्व है—दे० पाराशरस्मृति। (३) सामग आचार्य कुशुमिके पुत्र तथा तीन शिष्योंमेंसे एक थे (ब्रह्मां० २.३५.४२)। (४) भगवानके अवतार ऋषभ, जो नवें द्वापरके भगवदवतार थे, के वेदपारगामी विद्वान् चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (वायु० २३.१४४)। (५) मंत्र-ब्राह्मण-कारक तथा ब्रह्मक्षेत्रके निवासी सप्त ऋषियोंमेंसे एक ऋषि (वायु० ५९.१०५)।

पराश्रुति–पु० [सं०] अकाट्य वेदवाक्य (वायु० १८.३)।

पराहत–पु० [सं०] नक्षत्रों (के क्षेत्र) से ऊपर सप्तर्षियोंके क्षेत्रतकका वायुसंचारका स्थान अर्थात् छठा वातस्कन्ध (वायु० ६७.११९)। इन्द्र द्वारा छिन्न दितिके गर्भके टुकड़ोंसे पैदा हुए ४९ वायुओंके विचरण स्थानोंको वातस्कन्ध कहते हैं। उनमेंसे पहला स्कन्ध पृथिवीमें है और वह **आवह** कहलाता है। उसकी विचरण सीमा मेघमण्डलतक है। दूसरा स्कन्ध मेघमण्डलसे लेकर सूर्यमण्डलतक विस्तृत हैं। वह **प्रवह** कहलाता है। तीसरा स्कन्ध सूर्यमण्डलसे लेकर चन्द्रलोकतक विचरण करता है उसे **उद्वह** कहते हैं। चन्द्रलोकसे ऊपर नक्षत्र मण्डलतक चौथा वातस्कन्ध है वह **सुवह** नामसे प्रख्यात है। नक्षत्रोंसे ऊपर ग्रहोंतक पाँचवाँ वात स्कन्ध है उसे **विवह** कहते हैं। ग्रहोंके क्षेत्रसे ऊपर सप्तर्पिमण्डलक्षेत्रतकका स्थान छठा वातस्कन्ध है वह **पराहत** कहलाता है। सप्तर्पिक्षेत्रसे ऊपर ध्रुवलोकतकका क्षेत्र सातवें वातस्कन्धके विचरणका स्थान है उसे **परिवह** कहते हैं (वायु० ६७.११०-११९)।

परिकंपिनी–स्त्री० [सं०] अन्धकासुरयुद्धमें अन्धकासुर द्वारा सृष्ट सहस्रों अन्धकासुरोंके रक्तपानके लिए शिवजी द्वारा सृष्ट अनेक मानस पुत्री मातृकाओंमेंसे एक मानस-पुत्री मातृका (मत्स्य० १७९.२४)।

परिकूट–पु० [सं०] कुशिक कुलका एक त्र्यार्षेय प्रवर प्रवर्तक ऋषि (मत्स्य० १९८.१०)।

परिकृष्ट–पु० [सं०] सामग श्रेष्ठ आचार्य कृतके २४ शिष्योंमेंसे एक शिष्य (ब्रह्मां० २.३५.५२)।

परिक्षेपापकञ्चुक–पु० [सं०] भंडके अनेक शूरवीर सेनापतियोंमेंसे एक सेनापति (ब्रह्मां० ४.२१.८६)।

परिघ–पु० [सं०] (१) अश द्वारा स्वामी कार्त्तिकेयको दिये गये पाँच अनुचरोंमेंसे एक अनुचरका नाम। शेप चार अनुचरोंके नाम ये हैं—भीम, वट, दहति और दहन (महाभा० शल्य० ४५.३४, ३५)। (२) विडालोपाख्यानमें वर्णित एक चांडाल (व्याध) का नाम (महाभा० शान्ति० १३८.११७)। (३) रुक्मकवचके धनुर्धारी पाँच पुत्रोंमेंसे एक पुत्र जिसे अपने भाई हरिके साथ विदेह-राज्यमें पिता द्वारा नियुक्त किया गया था (मत्स्य० ४४.२८-२९; वायु० ९५.२८; ब्रह्मां० ३.७०.२९)।

परिचारयज्ञ–पु० [सं०] आरम्भ अर्थात् देशरक्षणार्थ युद्धादि कार्य क्षत्रियोंका यज्ञ है, राजाओंका हविर्दान यज्ञ है, ब्राह्मणोंका जपयज्ञ है एवं तीनों वर्णोंका सेवाकार्य ही शूद्रोंका यज्ञ है (वायु० ५७.५०)।

परिच्छेद–पु० [सं०] 'पृथ्वी, अप् और तेज' परिच्छिन्न हैं। मूर्त होनेके कारण ही इनका परिच्छेद किया जा सकता है लेकिन शेप दो वायु तथा आकाश अमूर्त या सूक्ष्म होनेके कारण अपरिच्छिन्न हैं इनका परिच्छेद नहीं किया जा सकता (वायु० ४९.१७५)।

परिदृढ–पु० [सं०] १०० (एक सौ संख्या) का संस्कृत नाम (वायु० १०१.१००)।

परिद्वीप–पु० [सं०] गरुड़के एक पुत्रका नाम–दे० गरुड़।

परिपद्मक–पु० [सं०] १००० (एक हजार संख्या) का संस्कृत नाम (वायु० १०१.१००)।

परिप्लव–पु० [सं०] (वायु० = परिप्लुत) राजा सुखीनल (वायु० = सुखीवल) के पुत्र तथा मेधावी सुनयके पिताका नाम (भाग० ९.२२.४२; वायु० ९९.२७५)।

परिवर्ह–पु० [सं०] गरुड़की प्रमुख संतानोंमेंसे एक संतानका नाम (महाभा० उद्योग० १०१.१३)।

परिमति–पु० [सं०] चाक्षुष मन्वन्तरके पाँच देवगणोंमेंसे (प्रत्येक देवगणमें ८ देव थे) भाव्य नामक देवगणके आठ देवोंमेंसे एक देव (ब्रह्मां० २.३६.७२)।

परिवत्सर–पु० [सं०] (१) ताराभिमानी सूर्य देवता (ब्रह्मां० २.२१.१३१; ४.३२.१५; वायु० ३१.३८; ५६.२०) जो सब वर्षोंका अधिपति है (मत्स्य० १४१.१८; १६७.५२)। (२) पंचवर्षीय युगका द्वितीय वर्ष (वायु० ३१.२७; ५०.१८३; ब्रह्मां० २.१३.११४, ११७, १२६-७; विष्णु० २.८.७२)। पंचवर्षीय युगके प्रत्येक वर्षके नाम—प्रथम वर्ष संवत्सर, जिसका अधिपति अग्नि है; द्वितीय वर्ष परिवत्सर जिसका अधिपति सूर्य है; तृतीय वर्ष इड्वत्सर जिसका अधिपति सोम है; चौथा वर्ष अनुवत्सर, जिसका अधिपति वायु है और पाँचवाँ वर्ष वत्सर, जिसका अधिपति रुद्र है (भाग० ३.११.१४; ५.२२.७; मत्स्य० १४१.१८-१९)।

परिवर्त–पु० [सं०] पुराणानुसार मृत्युके पुत्र दुस्सहके पुत्रोंमेंसे एकका नाम। मृत्युके दुस्सह नामक पुत्रका विवाह कलिकी पुत्री निर्माष्टिके साथ हुआ था जिसके गर्भसे उसके आठ पुत्र तथा आठ पुत्रियाँ उत्पन्न हुई थीं। परिवर्त आठ पुत्रोंमें तीसरा था जो एक स्त्रीके गर्भको दूसरेमें बदल दिया करता था। किसी वक्ताके वाक्यका भी अभिप्रायसे भिन्न अर्थ कर दिया करता था, अतः इसे परिवर्त कहने लगे। सफेद सरसों और रक्षोघ्न मंत्रोंसे इसकी शांति की जाती है। दुस्सहके आठ पुत्रोंके नाम यों दिये हुए हैं—१ दन्ताकृष्टि, २ तथोक्ति, ३ परिवर्त, ४ अन्नभुक्, ५ शकुनि, ६ गण्डान्त रति, ७ गर्भहा तथा ८ शस्यहा। आठ पुत्रियोंके नाम—१ नियोजिका, २ विरोधिनी, ३ स्वयंहारिका, ४ भ्रामणी, ५ ऋतुहारिका, ६ स्मृतिहरा, ७ बीजहरा तथा ८ विद्वेषिणी। इसके पुत्र विरूप और विकृत भी गर्भपात कराते हैं। इनका निवास स्थान डालियोंके सिरे, चहारदीवारी, खाई और समुद्र हैं। इसी कारण गर्भावस्थामें स्त्रीको वृक्ष, पर्वत, प्राचीर, खाई और समुद्र आदिके निकट घूमने फिरनेका निषेध है—दे० मार्कंडेयपु०।

परिज्ञा–पु० [सं०] चंद्रमाका एक नाम–दे० चंद्रमा।

परिवह–पु० [सं०] (१) सात पवनोंमेंसे छठा पवन जो पर्जन्य तथा दिग्गजोंको शीत (ओस) बरसानेमें सहायता करता है तथा शस्यवृद्धि करता है (ब्रह्मां० २.२२.५०)।

उत्पात और भयके सूचक ७ वायुओं, जो लोकक्षयके लिए प्रलयकालमें आविर्भूत होते हैं, मेंसे एक वायुका नाम (मत्स्य० १६३.३३)। सात वातस्कन्धोंमेंसे एक (सातवाँ) वातस्कन्ध (वायु० ६७.१२०)। यह आकाशगंगाको वहाता है (वायु० ५१.४३-६) तथा शुक्र तारेको घुमाता है। कहते हैं प्रातःकाल यह पवनके ऊपर-ऊपर ही वहता है। सातवें वातस्कंध, जो सप्तर्षियोंके लोक तथा ध्रुवलोकके वीच है, में स्थित रहता है (ब्रह्मां० ३.५.८९; वायु० ६७.१२०)। (२) अग्निकी सात जिह्वाओंमेंसे एक दे०–अग्नि। (३) एक प्रकारका वायु जो सब शस्योंकी वृद्धि करनेके लिए वरसने वाले पर्जन्य वादलोंपर नियंत्रण रखता है (वायु० ५१.४५)।

परिवाय–पु० [सं०] भद्रदेशका विविध नदी और पर्वतोंसे परिपूर्ण एक जनपद (वायु० ४३.२०)।

परिवित्ति–पु० [सं०] ऐसा पुरुष जो स्वयम् अविवाहित हो पर उसके छोटे भाईका विवाह हो गया हो, श्राद्ध करनेके अयोग्य होता है (मत्स्य० १६.१५)। मनुने स्पष्ट शब्दोंमें कहा है—परिवित्ति (अविवाहित वड़ा भाई), परिवेत्ता (वड़े भाईके अविवाहित रहते कृतविवाह छोटा भाई), जिससे छोटे भाईने विवाह किया हो वह स्त्री, कन्यादान करनेवाला कन्याका पिता आदि और उनका विवाह करानेवाला पुरोहित सव नरकगामी होते हैं (मनु० ३.१७२)।

परिवृत्ता–स्त्री० [सं०] ऋपाकी पाँच पुत्रियोंमेंसे एक पुत्री जिससे केकड़े, शंख, ऐणेय, शंवूक तथा भिन्न प्रकारके विष यथा कालकूट उत्पन्न हुए थे (ब्रह्मां० ३.७.४१४, ४१९-२०; (वायु० ६९.२९१, २९६)।

परिवेष–पु० [सं०] सूर्य तथा चन्द्रमाके चारों ओर कभी-कभी दिखाई पड़नेवाला मंडल (वृत्त परिधि) राज्यके लिए अनिष्टसूचक होता है (मत्स्य० २३३.८)।

परिषत्पवमान–पु० [सं०] शंस्य (आहवनीय) अग्नि, जिसने १६ नदियोंसे विवाह किया था, के उक्त कावेरी आदि १६ नदियोंसे उत्पन्न १६ अग्नियोंमेंसे एक अग्निका नाम (ब्रह्मां० २.१२.२२)।

परिष्णव–पु० [सं०] (परिप्लव ?) सुखीवलका एक पुत्र तथा सुतपा (सुनय ?) का पिता (मत्स्य० ५०.८३)।

परिष्वंग–पु० [सं०] देवकीके छह पुत्रों, जिन्हें कंसने मार डाला था, मेंसे एक पुत्र। माता-पिताको दिखानेके लिए श्रीकृष्ण इसे सुतलसे द्वारका लाये थे और यह फिर स्वर्ग चला गया था (भाग० १०.८५.५१-६)।

परीक्षित्–पु० [सं०] अर्जुनके पौत्र तथा उत्तराके गर्भसे उत्पन्न अभिमन्युके पुत्रका नाम जो पांडुकुलके एक प्रसिद्ध राजा थे। यह एक वड़े विजेता थे (मत्स्य० ५०.५७)। हस्तिनापुर इनकी राजधानी थी और यह एक सार्वभौम सम्राट् तथा भागवतोंमें अग्रगण्य थे (भाग० १ अध्याय १६-१७ पूरा)। महाभारतके अनुसार द्रोणाचार्यके पुत्र अश्वत्थामाने गर्भमें ही ऐपीक नामक महास्त्रसे इनकी हत्या कर दी थी पर श्रीकृष्णके योगवलसे यह मृत भ्रूण पुनः जी उठा अतः इसका नाम विष्णुरात रखा गया था (भाग० १.४.९-१०; ७.१२; १२.७-३०; ब्रह्मां० ३.६८.२१; वायु० ९९.१४९)। परिक्षीण या विनष्ट होनेसे वचाये जानेके कारण इस वालकका नाम 'परीक्षित्'' पड़ा और समयानुसार उत्तरकी पुत्री इरावतीसे इनका विवाह हुआ जिससे जनमेजय आदि चार पुत्र हुए थे (वायु० ९९.२२९, ४२३; विष्णु० ४.१९.७८; २०.१)। परीक्षित्ने कुरुदलके प्रसिद्ध महारथी कृपाचार्यसे अस्त्रविद्या सीखी थी। राज्यप्राप्तिके पश्चात इन्होंने तीन अश्वमेध यज्ञ किये जिनमें अन्तिम वार देवताओंने प्रत्यक्ष आकर वलि ग्रहण की थी। इन्हींके राज्यकालमें द्वापरका अन्त और कलियुगका आरम्भ हुआ था। महाभारतके अनुसार यह कलिको मार डालनेपर उद्यत हुए थे पर उसके गिड़गिड़ानेसे इन्हें दया आगयी और इन्होंने उसके रहनेके लिए ये स्थान वतला दिये—जुआ, स्त्री, मद्य, हिंसा और सोना (भाग० अ० ८ पूरा)। परीक्षित्ने इनके साथ-साथ मिथ्या, मद, काम, हिंसा और वैर ये पाँच वस्तुएँ भी कलिको दे दीं।

राजा एक दिन आखेटमें गये तव कलि राजाके मुकुटमें, जो सोनेका था, घुस गया। कलियुग परीक्षित्के सिरपर सवार था ही इन्होंने क्रोधवश अज्ञानसे भूखे तथा प्यासे होनेके कारण एक मौनी ऋषिके गलेमें मरे सर्पकी माला पहिना दी क्योंकि ऋषि ध्यानमग्न थे अतः इनका (राजाका) स्वागत न हुआ। मुनिके शृंगी नामक पुत्रने यह सुन परीक्षित्को तक्षक द्वारा डसे जानेका शाप दिया। ऋषिको पुत्रके अविवेकपर दुःख हुआ और उन्होंने एक शिष्य द्वारा परीक्षित्को शापका समाचार कहला भेजा (भाग० १९.१ १६; ३२.३८; २.८.१-२६; ८.१.३३)। देवीभागवतमें लिखा है कि तक्षकके भयसे परीक्षित् एक सात खंड ऊँचा मकान वनवाकर रहने लगे और उसके आसपास सर्प-मंत्रके वड़े-वड़े ज्ञाता रखे गये। राजाको इस अनर्थका घोर पश्चात्ताप था और वह जानता था कि ब्राह्मणका शाप निरर्थक नहीं होगा अतः प्रायोपवेशकी दशामें था। उससे अनेक ऋपि मुनि मिलने आये और शुकने भागवतपुराण सुनाया तथा निर्वाणका रहस्य वतलाया (भाग० २.४.२; १२.६.९ १५; १२.५.६)। तक्षक घवराया अवश्य पर फलमें वैठकर परीक्षित्तक पहुँच गया और उसके डसते ही राजाका शरीर भस्मसात् हो गया। प्रायोपवेशके समय अत्रि मुनि इनसे मिलने आये थे (भाग० १.१९.९)। इसका वदला लेनेके लिए परीक्षित्-पुत्र जनमेजयने सर्पयज्ञ किया जिसमें सारे संसारके सर्प मंत्र द्वारा खिंच आये और भस्म कर दिये गये। (२) कुरुके तीन पुत्रोंमेंसे एक निःसंतान पुत्रका नाम (भाग० ९.२२.४, ९; मत्स्य० ५०.२३; वायु० ९९.२१८)। (३) अनश्वका एक पुत्र। (४) कंस (मथुरापति) का एक पुत्र—दे० भागवत। (५) तामस मनुके दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (ब्रह्मां० २.३६.४९)।

परीवान्–पु० [सं०] स्वारोचिष मन्वंतरके सप्तर्षियोंमेंसे एक ऋपिका नाम (विष्णु० ३.१.११)।

परूषकस्थली–स्त्री० [सं०] शङ्ककूट तथा वृषभ पहाड़ियोंके वीचमें स्थित रमणीय फलफूलके वृक्षोंसे भरी समथल भूमि, जो कई कोस लम्वी और चौड़ी है जहाँ किन्नर तथा चारणवर्ग निवास करते हैं (वायु० ३८.६३-५)।

परोक्ष–पु० [सं०] अनुके तीन पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (भाग० ९.२३.१)।

परोष्णी–स्त्री० [सं०] (पयोष्णी=भाग० ५.१९.१८) पुराणानुसार एक नदीका नाम।

पर्जन्य–पु० [सं०] (१) दक्षपुत्री मुनि और कश्यप ऋषिके पुत्र १५ मौनेय देवगन्धर्वोंमेंसे एक मौनेय देवगंधर्वका नाम (ब्रह्मां० ३.७.३; वायु० ६९.३)। (२) एक वैदिक देवता जिन्हें वर्षा, मेघ तथा वायुका अधिष्ठाता देवता कहा गया है। ऋग्वेदकी तीन ऋचाओंमें इनका उल्लेख मिलता है और आगे चलकर तो इनका नाम ही 'पर्जन्यवान्' पड़ गया। इंद्र और इनमें कोई विशेष भेद नहीं दीखता। (३) एक आदित्यका नाम जो फाल्गुन मासमें तपते हैं (भाग० १२.११.४०; ब्रह्मां० २.२१.१५७; २३.१२)। (४) वृष्टि करनेवाले मेघोंका नाम इनके देवता इंद्र हैं। इनकी सृष्टि भगवान् वामदेवने की थी (भाग० १.१०.४; २.६.७; ४.१४.२६; ६.१४.३५; १०.२०.५; १२.४.७; मत्स्य० ४.२९)। इनकी पूजा गृहनिर्माणके समय होती है (मत्स्य० २५३.२४)।(६) एक राजर्षिका नाम, जिनकी गणना प्रियव्रत, उत्तानपाद, ध्रुव, मेधातिथि, सुधामा, विरजा, शङ्ख, पाण्ड्यज, प्राचीनवर्हिः, हविर्धान आदि तपःसिद्ध राजर्षियोंमें की गयी है। जिन महासत्त्व महापुरुषोंकी कीर्ति चिरस्थिर रहेगी (ब्रह्मां० ३०.४०)। (६) एक प्रजापतिका नाम जिनके पुत्र हिरण्यरोमा थे (ब्रह्मां० ३.८.२०; वायु० ५०.२०६; ६६.६६; विष्णु० २.१०.१२)। (७) एक प्रकारके वादल विशेष जिनसे शीतकी वर्षा होती है (ब्रह्मां० २.२२.४९)। ये आदित्यके अतिरिक्त समुद्रों, नदियों, वादलों तथा वर्षाके अधिपति हैं (ब्रह्मां० ३.८.२४; वायु० ७०.१३)। ये 'परिवह' वायुके नियंत्रणमें रहते हैं, स्वर्गीय गंगामें भी गति उत्पन्न करते हैं (वायु० ५१.४३-६)। (८) रैवत मन्वंतरके सप्तर्षियोंमेंसे एक ऋषिका नाम (ब्रह्मां० २.३६.६२; मत्स्य० ९.१९; विष्णु० ३.१.२२)। (९) अग्नि और संहूतीका एक पुत्र जो प्रलयपर्यन्त स्थायी लोकपाल है तथा जिसकी पत्नीका नाम मारीची तथा पुत्रका हिरण्यरोमा था (वायु० २८.१६; ब्रह्मां० २.११.१९)। (१०) एक देवता जो शरत्में सूर्यके साथ रहता है (वायु० ५२.१२)।

पर्णक–पु० [सं०] पर्णकि गोत्रके प्रवर्त्तक एक ऋषिका नाम।

पर्णकूर्च–पु० [सं०] एक व्रत विशेष जिसमें तीन दिनोंतक ढाक, गूलर, कमल और वेलके पत्तों तथा कुशका क्वाथ पीनेका विधान है—

'पालाशादीनि पत्राणि त्रिरात्रोपोषितः शुचिः।
क्वाथयित्वा पिवेदद्भिः पर्णकूर्चोऽभिधीयते॥
—(यमस्मृ०)॥

पर्णकृच्छ्र–पु० [सं०] पाँच दिनोंका एक व्रत विशेष जिसमें पंचगव्यसे स्नान कर पहिले ३ दिन उपवास करे फिर प्रथम दिन ढाकके पत्तोंका, दूसरे दिन गूलरके पत्तोंका, तीसरे दिन कमलके पत्तोंका और चौथे दिन वेलके पत्तोंका क्वाथ पीवे अन्तमें पाँचवें दिन कुशका जल पिया जाता है (व्रत परि०)।

पर्णचीर–पु० [सं०] पर्वतीय लोगोंका पत्तोंसे वना वस्त्र या पत्ते ही जिन्हें वे वस्त्रके स्थानपर धारण करते हैं (विष्णु० ४.२४.९६.)।

पर्णमाल–पु० [सं०]—शाल्मलिद्वीपके अनेक पर्वतोंमेंसे एक पर्वत जो गरुड़के पुत्र, पौत्र आदि पक्षियोंके निवास हैं (ब्रह्मां० ३.७.४५३)।

पर्णय–पु० [सं०]—एक महाप्रतापी असुर जिसने देवताओंको वड़ा कष्ट दिया, अतः इंद्रसे मारा गया (हि॰वि॰को॰)

पर्णवि–पु० [सं०] अत्रिवंशज एक त्र्यार्षेय प्रवरप्रवर्तक ऋषि (मत्स्य० १९७.६)।

पर्णशवर–पु० [सं०]—पुराणानुसार एक देशविशेष।

पर्णाशा–स्त्री० [सं०]—पारियात्र पर्वतसे निकली एक नदीका नाम (मत्स्य० ११४.२३)। सात्वतके कौशल्यासे ७ पुत्र हुए। उनमेंसे देवावृध नामक पुत्रने पुत्रार्थ वड़ी कठिन तपस्या की कि मेरा सर्वगुणसम्पन्न पुत्र हो। कल्याणगुणसम्पन्न राजाके पर्णाशाके जलका आचमन और मार्जन करनेसे जो एक रूपवती स्त्रीमें परिणत हो गयी तथा देवावृधकी पत्नी वनी थी (ब्रह्मां० ३,७१.७, १२)।

पर्णशालाग्र–(वर्णमालाग्र ?) पु० [सं०] भद्राश्ववर्षके पाँच कुलाचलोंमेंसे एक (वायु० ४३.१४)।

पर्णिनी–स्त्री० [सं०]—मेनका आदि दस अप्सराओंमेंसे एक अप्सराका नाम जो पुञ्जिकस्थला अप्सराकी सहेली थी। वायु०के अनुसार यह मौनेय देवगन्धर्वोंकी वहिन ३४ अप्सराओंमें अन्यतम कही गयी है (ब्रह्मां० ३.७.१४; (वायु० ६९.४, ४९)।

पर्पटी–स्त्री० [सं०]—सौराष्ट्र देशकी मिट्टी जिसे गोपीचंदन कहते हैं और तिलक लगानेके काम आती है (हि॰वि॰को॰)

पर्यंक–पु० [सं०]—[१] नर्मदा नदीके उत्तरमें स्थित एक पर्वत जो विंध्याचल पर्वतका पुत्र समझा जाता है (हि॰वि॰को॰)। [२] १००० फणोंवाला एक सर्प जिसपर विष्णु भगवान् शयन करते हैं और जिससे सुवर्णकी-सी ज्योति निकलती है (वायु० २४.११.१७)।

पर्यावर्तन–पु० [सं०]—२८ नरकोंमेंसे एक जिसमें अतिथियोंका यथोचित स्वागत न करनेवाले गृहस्थ जाते हैं, (भाग० ५.२६.७, ३५)।

पर्यास–पु० [सं०]—एक परिमाण जिससे पृथ्वी द्यौके तुल्य कही गयी है (वायु० ५०.७४-७५)।

पर्वकारी–पु० [सं०]—जो पर्वों तथा त्योहारोंके उपयुक्त उत्सव साधारण दिनोंमें केवल लाभार्थ करे, ऐसा ब्राह्मण श्राद्धमें भोजनार्ह नहीं है (वायु० ८३.६४)।

पर्वत–पु० [सं०]–(१) वराहके पृथ्वी-उद्धार कर देनेके पश्चात् प्रलयाग्निके खंडावशेषोंसे पर्वतोंका निर्माण हुआ जो यत्र-तत्र जमकर स्थिर हो गये अतः "अचल" कहलाये। पर्वोंसे युक्त होनेसे पर्वत कहलाये। (ढालों) को निगल लिया अतः "गिरि" हुए। इनका निर्माण प्रस्तर-खंडोंसे हुआ अतः "शिलोच्चय या शैल" कहलाये (वायु० ६.३०-३२)। पुराणानुसार पहले पर्वतोंके पंख होते थे। ये जहाँ तहाँ उड़कर जनताको त्रास देते थे। एक वार सव पर्वत उड़कर समुद्रमें पहुँच गये और लगे उपद्रव करने अतः देवासुरयुद्ध हुआ जिसमें देवताओंके विजयी होनेपर पहाड़ोंके पर काट यथास्थान वैठा दिया गया (अग्निपु०) कालिकापुराणानुसार विष्णुने पर्वतोंको कामरूपी वनाया था। समय और परिस्थितिके अनुसार वे जव जैसा रूप चाहते धारण कर लेते थे। पौराणिक भूगोलमें अनेक पर्वतोंके

नाम आये हैं। श्रेष्ठ पर्वतोंपर देवगण और अन्य पर्वतोंपर दानवादि निवास करते हैं। पर्वत कहीं २ पृथ्वीको धारण करनेवाले तथा कहीं २ उसके पति भी माने गये हैं, (वाराहपु०)। (२) हरितगणके दस देवोंमेंसे एक देवका नाम (ब्रह्मां० ४.१.८४)। (३) पुराणानुसार एक देवर्षिका नाम जो कश्यपके पुत्र तथा नारदऋषिके बड़े घनिष्ठ मित्र [भाई] थे (ब्रह्मां० २.१९.९; वायु० ६१.८५;७०.७९)। (४) प्लक्षद्वीपके नारदपर्वतपर उत्पन्न एक ऋषि (ब्रह्मां० २.३५.९५; ३.७.२७; ८.८६; वायु० ३०.८६; ४९.)। (५) एक प्रकारके संन्यासी जो प्राचीनकालमें पर्वतोंके नीचे रहा करते थे। इन्हें दसनामी सम्प्रदायके अन्तर्गत माना गया हैं। (६) एक ऋषि, जो शर-शय्यापर पड़े भीष्मसे मिलने गये थे (भाग० १.९.६)। (७) एक गन्धर्वका नाम, जो कुवेरको सभामें विराजते हैं (महाभा० सभा० १०.२६)। (८) नारदपर्वतपर प्रजापतिके शुक्रपातसे उत्पन्न एक पुत्र (वायु० ६९.६४)। (९) संभूतिके गर्भसे उत्पन्न एक ऋषि पूर्णमास, जो मरीचिके पुत्र थे। इनकी कथा पुराणोंमें विस्तारसे लिखी मिलती है। इनके दो पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (विष्णु० १.१०.६)।

पर्वतानुचर–पु० [सं०]—हरितवर्गके दस देवताओंमेंसे एकका नाम (वायु० १००.९९)।

पर्वतारि–पु० [सं०]—पुराणानुसार पर्वतोंके पर काटकर उनकी विचरण-स्वतन्त्रता छीन लेनेके कारण इंद्रका एक नाम (अग्निपु०)।

पर्वतास्त्र–पु० [सं०]—प्राचीनकालका एक अस्त्र विशेप जिसके फेंकते ही शत्रुकी सेनापर पत्थरकी वर्षा होने लगती थी अथवा अपनी सेनाके चारों ओर पहाड़ खड़े हो जाते थे और शत्रुका प्रभञ्जनास्त्र रुक जाता था। परशुरामके विरुद्ध मत्स्यनरेशने इसका प्रयोग किया था (ब्रह्मां० ३. ३८.४४)।

पर्वश–पु० [सं०]—पूर्णमास तथा सरस्वतीके दो पुत्रोंमेंसे एक पुत्र जो सव गणोंके अधिपति थे। पर्वशा इनकी पत्नी थी जिससे यजुर्धाम और स्तंभकाश्यप दो पुत्र हुए (ब्रह्मां० २. ११.१३) जिनकी पत्नियोंका नाम था पुण्या तथा सुमति। ये दो इनकी पुत्रवधुएँ थी (वायु० २८.१०-१२, ३३)।

पर्वशा–स्त्री० [सं०]—पर्वशकी पत्नीका नाम जो यजुर्धाम तथा काश्यपकी माता थीं (ब्रह्मां० २.११.१५; वायु० २८.१३)।

पर्वसंधि–पु० [सं०]—(१) पुराणानुसार चतुर्दशी, अष्टमी, अमावस्या, पूर्णिमा और संक्रांति ये सब पर्व हैं। पूर्णिमा अथवा अमावस्या और प्रतिपदाके वीचका समय जव पूर्णिमा अथवा अमावस्याका अंत होता हो और प्रतिपदाका प्रारंभ। (मत्स्य० १४१.२८, ३२)। यह अग्निआधान आदि धार्मिक कृत्योंके लिए वड़ा शुभ अवसर माना जाता है (वायु० ५६.३४)। (२) वह समय, जव सूर्य अथवा चंद्रमा राहु द्वारा ग्रस्त होता है, ग्रहण लगनेका समय (ग्रहणफलदर्शन, सीतारामझाकृत)।

पर्वेश–पु० [सं०]—ग्रहण समयके अधिपति देवता। ब्रह्मा, चंद्र, इंद्र, कुवेर, वरुण, अग्नि और यम ये सात देवता क्रमशः छः छः महीने ग्रहणके देवता हुआ करते हैं जिन्हें पर्वेश कहते हैं।

पलचर–पु० [सं० पल+चर]—एक उपदेवता जो युद्धमें मरे कटे लोगोंका रक्त पीकर आनंद मनाता है। इसका वर्णन राजस्थानकी गाथाओंमें मिलता है (हि॰श॰सा॰)।

पललक–पु० [सं०]—हालाहलका पुत्र तथा पुलिन्दसेनका पिता, एक आन्ध्रवशी राजा (विष्णु० ४.२४.४७)।

पलाण्डु–पु० [सं०]—वैशम्पायन आदि आठ चरकाध्वर्यु द्विजर्पियोंमेंसे एक चरकाध्वर्यु द्विजर्पि जिनके शिष्य प्रशिष्य ८६ श्रुतर्पि कहे गये हैं (ब्रह्मां० २.३३.६)

पलाला–स्त्री० [सं०]—लड़कोंको रोगग्रस्त करनेवाली सात राक्षसियोंमेंसे एकका नाम (हि॰श॰सा॰)।

पलाश–पु० [सं०]—एक प्रसिद्ध वृक्ष जो भारतके सभी स्थानोंमें पाया जाता है और ४००० फुटकी ऊँचाईतक भी मिलता है। हिन्दूशास्त्रमें पवित्र माने हुए वृक्षोंमेंसे यह एक है जिसका उल्लेख वेदतकमें मिलता हैं। श्रौतसूत्रोंमें कई यज्ञपात्रोंके इसीकी लकड़ीसे वनानेकी विधि है। गृह्यसूत्रके अनुसार उपनयनके समय ब्राह्मणकुमारको इसकी अथवा विल्वकी लकड़ीका दंड ग्रहण करनेकी विधि है (उपनयनपद्धति)।

पलाशा–स्त्री० [सं०]—केतुमाल देशकी कई पुण्यनदियोंमें एक नदीका नाम (वायु० ४४.१८)।

पलाशिनी–स्त्री० [सं०]—शुक्तिमान् पर्वतसे निकली छह पुण्यनदियों, जो जगत्पापहारिणी, समुद्रगामिनी तथा गंगासम है, मेंसे एक नदी (ब्रह्मां० २.१६.३८; वायु० ४५.१०७)।

पल्लवगण–पु० [सं०]—दक्षिण भारतकी एक जाति (मत्स्य० ११४.४०; ब्रह्मां० २.१६.४७)।

पवन–पु० [सं०]—(१) मेरुके पश्चिममें स्थित एक पर्वत (भाग० ५.१६.२७)। (२) पवनदेव, वायुका एक नाम जिन्हें इन्द्र आदि देवगणोंके साथ रजोगुण और तमोगुणके स्पर्शसे रहित एवं सत्त्वगुणप्रधान कहा गया है एवं भगवान् श्रीकृष्णका जिनके द्वारा इन्द्रको यह सन्देश भेजा गया था कि सुधर्मा सभा राजा उग्रसेनको दे दो। पवनदेवसे यह समाचार सुन इन्द्रने कृष्ण भगवान्की आज्ञाका पूर्णतया पालन किया (भाग० ६.३.१४; विष्णु० ५.२१.१६)। यह (जिनका अस्त्र अंकुश है) इंद्रके आश्रित हैं (मत्स्य० १४८.८३)। (३) उत्तम मनुके एक पुत्रका नाम (भाग० ८.१.२३)। (४) वशिष्ठ और ऊर्जाके सात पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (ब्रह्मां० २.११.४१)। (५) शुचि, वैधृत आदि तीन अग्नियोंमेंसे एक पार्थिव अग्निका नाम (ब्रह्मां० २.१४.१०)।

पवनकुमार–पु० [सं०] (पर्याय—पवनतनय, पवननंदन, पवनपुत्र, पवनसुत, पवनात्मज–वायुपुत्र हनुमान् तथा भीमसेनके नाम (वायु० ६०.६९, ७२; महाभा० आदि १२२.१४-१५)।

पवनपुर–पु० [सं०]—एक तीर्थस्थान जहाँ द्वादशार्क, वालुकेश्वर, ग्यारह रुद्र, हनुमान् तथा सूर्यकुंड, ब्रह्मकुंड आदि चार कुंड हैं। यहाँ ब्रह्महत्यादोपसे मुक्त होनेके लिए लोग चार कुण्डोंमें स्नान करते हैं (वायु० ५९.११०-३०; ६०.६८)।

पवनव्रत–पु० [सं०]—इस व्रतमें माघके महीनेमें रात्रिमें

गीले वस्त्र पहनने और सप्तमीको गोदान करनेकी विधि है। इस व्रतको करनेवाला एक कल्पतरु स्वर्गसुख भोगकर यहाँ राजा होता है (मत्स्य० १०१.७८)।

पवनव्याधि–पु० [सं०]—उद्धवका एक नाम जो श्रीकृष्णके मित्र थे (भाग० १०.६९.२७; ७१.१, ११)।

पवनास्त्र–पु० [सं०]—वायुदेवताका एक अस्त्र (वायव्यास्त्र), जिसके चलानेसे वायु बड़े वेगसे चलने लगती है। परशुरामजी द्वारा प्रयुक्त इस अस्त्रको मत्स्यनरेशने पर्वतास्त्रसे स्तम्भित किया था (ब्रह्मां० ३.३८.४४, ४५)।

पवमान–पु० [सं०] ऋग्वेदका एक सूक्त (जिसमें कई ऋचाएँ अर्थात् मन्त्र हैं) जिसे जलाशय खुदवानेके समय पढ़ा जाता है, नूतन तालाव निर्माणमें इसका महत्त्वपूर्ण स्थान है (मत्स्य० ५८.३४)।

पवमान–पु० [सं०] (१) स्वाहाका एक पुत्र (ब्रह्मां० २.१२.२)। (२) पृथु-पुत्र विजिताश्वके शिखण्डिनीमें उत्पन्न तीन पुत्रोंमेंसे एक पुत्र जो पूर्व जन्ममें अग्नि था और वशिष्ठके शापसे यहाँ उत्पन्न हुआ था (भाग० ४.२४.४)। (३) अग्निदेवके तीन पुत्रों, जो स्वाहादेवीके गर्भसे उत्पन्न हुए थे, मेंसे एक पुत्रका नाम। एक लौकिकाग्नि, जिसे कवियोंने निर्मथ्य अग्नि माना है। यह गार्हपत्य अग्नि है (भाग० ४.१.६०; ब्रह्मां० २.२४.१५; वायु० २९.२.१०; विष्णु० १.१०.१५)। (४) चंद्रमाका एक नाम। (५) ज्योतिष्टोम यज्ञमें पढ़ा जानेवाला एक स्तोत्र विशेष (यज्ञमीमांसा)। (५) शाकद्वीपके अधिपति मेधातिथिके सात पुत्रोंमेंसे एक (तीसरा) पुत्र (भाग० ५.२०.२५)।

पवित्र–पु० [सं०] (१) कार्त्तिकेयका एक नाम। (२) कुशोंसे वनी अंगूठी, जिसे पवित्री भी कहते हैं और श्राद्धादिमें इसका उपयोग होता है (श्राद्धक्रियाकौमुदी)।

पवित्रगण–पु० [सं०] (१) १४वें इन्द्र सावर्णिमनुके युगके पाँच देवगणोंमेंसे एक देवगणका नाम (भाग० ८.१३.३४; विष्णु० ३.२.४३)। (२) १४वें भौत्य मनुके ५ देवगणोंमेंसे एक। भू आदि सात लोक ये (पवित्र देवगण) ही हैं (ब्रह्मां० ४.१.१०६, १९८; वायु० १००.१११-२)।

पवित्रवती–स्त्री० [सं०] क्रौंचद्वीपकी सात मुख्य नदियोंमेंसे एक नदीका नाम (भाग० ५.२०.२१)।

पवित्रा–स्त्री० [सं०] (१) कुशद्वीपकी सात प्रधान नदियोंमेंसे एक नदी (ब्रह्मां० २.१९.६२; मत्स्य० १२२.७२; विष्णु० २.४.४३)। (२) श्रावण शुक्ला एकादशीका नाम जो पवित्रा, पुत्रदा तथा पापनाशिनी है। द्वापरके आदिमें माहिष्मतीके राजा महीजित्‌ने लोमश ऋषिकी आज्ञासे यह व्रत किया था (भविष्यपु०)।

पवर्ग–पु० [सं०] (१) त्रयी (वेद)का दहिना पैर (वायु० १०४.७२)। (२) पवर्गसे गठितशरीर जयिनी–सर्वरोगहरचक्रपरकी मुक्ताभरणभूषित तथा जपरत कई देवियोंमेंसे एक (छठी) देवीका नाम (ब्रह्मां० ४.३७.६)।

पवित्रारोपण–पु० [सं०] श्रावण शुक्ला १२ को होनेवाला वैष्णवोंका एक उत्सव। उस दिन वे भगवान् श्रीकृष्णको सोने, चाँदी, तांबे या सूतका यज्ञोपवीत पहनाते हैं (भाग०)।

पविधर–पु० [सं०] पविको=वज्रको धारण करनेके कारण इन्द्रका एक नाम—दे० इन्द्र।

पर्वानव–पु० [सं०] एक प्रकारके असुर जो स्त्रियोंका गर्भ गिरा दिया करते हैं (अथर्ववेद)।

पशु–पु० [सं०] सविताके पृश्निसे उत्पन्न हुए ये पशु या तो ग्राम्य होंगे या आरण्य। यज्ञोंको छोड़ पशुओंका वध हिंसा है तथा भूत, प्रेतादिके लिए इन पशुओंके वधसे पाप होता है, क्योंकि वे अधार्मिक कृत्य हैं (भाग० ६.१८.१; ७.१५.७-१०; ११.१०.२८; २१.२९-३०; विष्णु० १.५.५१-२) यज्ञोंमें पशुवलिसे हिंसा नहीं होती (वायु० ५७.९२-११४) जिसके चौदह प्रकार कहे गये हैं (ब्रह्मां० ४-६.५४; २.३२.११-१२, १६)।

पशुपति–पु० [सं०] (१) जीवोंका ईश्वर या मालिक। शैवदर्शन और पाशुपतदर्शनमें जीवमात्र "पशु" कहे गये हैं और सव जीवोंका अधिपति शिव ही हैं। पशुपतिकी पाँचवीं तनु (मूर्ति) अग्नि है। सव प्राणियोंके जठरोंमें खाये पीये अन्न-पानको पचानेवाली पाचकाग्नि है। इस मूर्तिकी स्वाहा पत्नी है और स्कंद पुत्र है (ब्रह्मां० २.१०.८०; वायु० २७.११.५३; ३०.२९) अग्नि पशुपतिकी मूर्ति है इसलिए उसमें अपवित्र (अमेध्य) वस्तु नहीं जलानी चाहिए और अपने पैर भी नहीं तपाने चाहिये (ब्रह्मां० २.१०.१३.४५)। पशुपतिनाथका प्रसिद्ध मंदिर नैपाल राज्यमें है जहाँ शिवरात्रिके दिन वड़ा मेला लगता हैं और भारतवर्षभरके यात्री दर्शनार्थ जाते हैं। (२) अष्टमूर्ति रुद्र जिनका पाँचवाँ नाम पशुपति है वे अग्निके अधिदेव तथा अधिपति हैं (मत्स्य० १५४.४८५; १६२.९; २६५.४०; विष्णु० १.८.६; ५.१८.५६)।

पशुपाल–पु० [सं०] महावली कार्त्तवीर्यके गुणार्जित कई नामोंमेंसे एक नाम (मत्स्य० ४३.२७; वायु० ९४.२४)।

पशुवंध–पु० [सं०] वैदिक यज्ञ-वलि (मत्स्य० २४६.६४) जिसका निवास वेददेवके वक्षःस्थलमें कहा गया है (वायु० १०४.८३)।

पशुभर्त्ता–पु० [सं०] पशुपतिका नाम (वायु० ३०.१०४, १०८)।

पशुयज्ञ–पु० [सं०] यह गृहस्थोंके लिए अनिवार्य कहा गया है (ब्रह्मां० ४.६.७३)।

पशुरूपी–पु० [सं०] अग्निका एक नाम (भाग० १०.२३.८)

पशुसंस्था–स्त्री० [सं०] एक यागका नाम (भाग० १०.२३.८)।

पशुसोम–पु० [सं०] एक यज्ञविशेष जिसे भरतने किया था (भाग० ५.७.५)।

पशुहा–पु० [सं०] वृष (विष=वायु०) का एक पुत्र (ब्रह्मां० ३.६.३१; ६८.३३)।

पशुहिंसा–स्त्री० [सं०] यज्ञोंमें पशुवलिका ऋषियोंने घोर विरोध किया था और यह सिद्ध कर दिया था कि पशुवलिके स्थानपर अन्न तथा बीजोंसे काम चल सकता है पर इंद्र इससे सहमत नहीं हुए और इन्होंने इसे धर्मसंगत कहा (ब्रह्मां० २.३०.१७-१८)। राजा वसु न्यायाधीश चुने गये, फैसला ऋषियोंके पक्षमें हुआ अतः इंद्रसे वसु दंडित हुए। अंततोगत्वा इंद्रके प्रभावसे यही निश्चय हुआ कि यज्ञोंमें पशुवलिसे हत्या नहीं होती (ब्रह्मां० ४.६.५४; २.३१.११-२०, १६)

पश्चास्य–पु० [सं०] भृगु, काव्य, प्रचेता आदि २१ मन्त्रकृत्

ऋषियोंमेंसे एक मन्त्रकृत् (वायु० ५९.९७)।

पश्वोषधि–पु० [सं०] आठ देवयोनियों तथा चार प्रकारके सर्पों और भूतप्रेतादिकी सृष्टि करनेके उपरांत प्रजापति ब्रह्माका पशु-पक्षियोंकी सृष्टिकी ओर ध्यान गया। उनके मुखसे वकरियाँ, वक्षस्थलसे भेड़ें उदर तथा वगलसे गौएँ, चरणसे घोड़े, हाथी, शरभ, मृग, ऊँट आदि; रोओंसे ओषधियाँ, कंद-मूल, फल आदिकी सृष्टि हुई ((वायु० ९.४१-५)।

पह्लव–पु०[सं०] एक जातिविशेष जिन्हें परशुरामने पराजित किया था (ब्रह्मां० २-३१.८३; ३.४१.३९)। वाहुपर इन्होंने आक्रमण किया था तथा वाहुपुत्र सगरने इन्हें परास्त किया था गुरु वसिष्ठके आदेशानुसार प्राणदान देकर छोड़ दिया पर इनके धर्मको नष्ट कर दिया तथा इनके वेशको भी विकृत कर दिया। वेदाध्ययन तथा यज्ञाधिकारसे भी इन्हें वंचित रखा तथा दाढ़ीमूछधारी वना दिया (ब्रह्मां० ३-६३·१२०; १३४-३९)।

पह्लवगण–पु० [सं०] एक जाति विशेष जिसे सगरने हरा कर वेदाध्ययन तथा हवन करनेके दो क्षत्रियोचित अधिकारोंसे वंचित कर दिया था। ये म्लेच्छ हो गये जिन्हें लम्वी-लम्वी दाढ़ी रखनेकी आज्ञा थी (विष्णु० ४.३.४२; ४७.८)। पह्लवगण, (वायु० ८८.१२२.१३६; ४५.११८; ५८.८२)। सगरने इन लोगोंको परास्त किया था और ये अपनी मूँछें जिनका महत्त्व अत्यधिक था सुरक्षित ले निकल भागे थे (ब्रह्मां० ३.४८.१९, २६, ६४)।

पांचजनी–स्त्री० [सं०] भागवतानुसार "पंचजन" नामक प्रजापतिकी पुत्री तथा दक्षकी पत्नीका नाम जिससे १००० पुत्र हुए=हर्यश्वगण। पांचजनीका दूसरा नाम असिक्नी भी था (मत्स्य० ५.४)।

पांचजन्य–पु० [सं०] (१) श्रीकृष्णके शंखका नाम—दे. पंचजन्य (विष्णु० ५.२१.३०; भाग० ८.४.१९; १०.५०.२४(१-२); ५१(५)२७; ५९.६; ११.२७.२६) (२) पुराणानुसार हारीत ऋषिके वंशके दीर्घबुद्धि नामक ऋषि। (३) जंबूद्वीप का एक भाग रैवतक पर्वतका निकटवर्ती एक वन, जिसकी रमणीयता अद्भुत कही जाती है, का नाम (महाभा० सभा० ३८.२९के वाद दक्षिणात्य पाठ)।

पांचाल–पु० [सं०] (१) उत्तर भारतका राज्य जहाँ होती हुई पुण्यनदी गङ्गा वहती है (भाग० १.१०.३४; ब्रह्मां० २.१६.४६; मत्स्य० १२१.५०)। (२) भर्म्याश्व (हर्यश्व=विष्णु०)के मुद्गल, संजय, बृहदिपु, यवीनर और काम्पिल्य नामक पाँच पुत्र साधारणतः इसी नामसे विख्यात थे। भर्म्याश्वने कहा था मेरे इन पाँच पुत्रोंमें पाँच राज्योंपर शासन करनेकी पूर्ण सामर्थ्य है। पञ्च+अलम्से देश पाञ्चाल कहा जाने लगा—दे० पंचाल (भाग० ९.२१.३२-३३; विष्णु० ४.१९.५९)।

पांचालगण–पु० [सं०] द्रुपद इनका राजा था (भाग० १०.५२.११(८))। गोमंतके घेरेके समय जरासंधने इसे दक्षिण में रखा था (भाग० १०[५०(५)२]; ५२.११.(८)। द्रौपदीके स्वयंवरके समय पांडव यहाँ वेष वदलकर आये थे (भाग० १०.५८.९(१,२)।

पांचालाधिपति–पु० [सं०] शुककी पुत्री कृत्वीसे इनका विवाह हुआ था (मत्स्य० १५.९)। पाञ्चालाधिपति नील सामगाचार्य प्रसिद्ध कृतके पुत्र उग्रायुधसे परास्त हुआ था (मत्स्य० ४९.७८.७९)।

पांचालान्वय–पु० [सं०] पांचालवंशके राजा जो कुल २७ थे (मत्स्य० २०.२०; २७२.१५; २७३.७३)।

पांचाली–स्त्री० [सं०] पांडवोंकी पत्नी द्रौपदीका एक नाम जो पांचाल देशकी राजकुमारी होनेके कारण पड़ा था—दे. "पञ्चाल"।

पांड–पु० [सं०] यह भार्गव गोत्रके ऋषि थे (वायु० ६५.९६)।

पांडर–पु० [सं०] (१) ऐरावत नागके कुलमें उत्पन्न एक नाग (सर्प)का नाम, जो जनमेजयके सर्पयज्ञमें जल मरा था (महाभा० आदि० ५८.११)। (२) पुराणानुसार मेरु पर्वत तथा शीतोद झीलके पश्चिममें स्थित १८ पर्वतोंमेंसे एक पर्वतका नाम (वायु० ३६.२८; ३८.४९)।

पांडव–पु० [सं०] कुंती और माद्रीके गर्भसे उत्पन्न महाराज पांडुके पाँचो पुत्र (युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव)। इनके जन्मवृत्तान्तके लिए—दे० (पांडु) और इनके विशेष चरितके लिए पृथक् २ इन सवके नाम। दुर्योधनने इन लोगोंके मारनेका वहुत प्रयत्न किया यथा विषदान, लाक्षागृह-दाह आदि पर सव निष्फल गया (भाग. १०.५७.१; १०(२-४); ब्रह्मां० ३.७१.६५)। पांचालराजकुमारी द्रौपदीसे इनका विवाह हुआ था (वायु० ९९.२४०, २४६)। इनकी पूरी कथाके लिए—दे० महाभा० आदि० १२३.१९—३१;१२४—१७ आदि।

पांडु–पु० [सं०] (१) आँगिरस कुलका एक त्र्यार्षेय प्रवर-प्रवर्तक ऋषि (मत्स्य० १९६.९)। (२) भृगु और ख्यातिके आत्मज विधातासे आयतिमें उत्पन्न पुत्र जिसका विवाह पुंडरिकासे हुआ था। द्युतिमान् इसका पुत्र था (वायु० २८.५, ३५)। (३) प्राचीन कालके एक राजाका नाम जो पांडव-वंशके आदि पुरुष थे। विचित्रवीर्य क्षयरोगके कारण युवावस्थामें ही मर गये। उनकी माता सत्यवतीकी आज्ञा तथा भीष्मकी अनुमतिसे व्यासजीने विचित्रवीर्यकी विधवाएँ अंविका तथा अंवालिकासे पांडुवंशकी वृद्धिके लिए नियोग किया। व्यासजीका जटिल रूप देख आँखें वन्द कर लेनेके कारण अंविकाके गर्भसे अन्धे धृतराष्ट्र हुए। अंवालिका व्यासके उग्र रूपको देख डर गयी थी अतः उसके गर्भसे पीले रंगका पुत्र उत्पन्न हुआ जिसका नाम पांडु पड़ा। यह एक राजर्षि थे।

पांडुका विवाह राजा कुंतिभोजकी पुत्री कुंतीसे हुआ, पीछे मद्र देशकी राजकन्या माद्रीसे इनका एक विवाह और हो गया था। पांडु वड़े पराक्रमी थे तथा इन्होंने दिग्विजय किया। एक वार पांडुने आखेटमें हरिणरूपी किंदम ऋषि-पुत्रको जव वह अपनी स्त्रीसे मैथुन कर रहे थे मार दिया। फलस्वरूप उन्होंने शाप दिया कि पांडु भी ऐसे ही मरेंगे। निःसंतान स्वर्ग नहीं पा सकता इस चिंतासे पांडु वड़े दुःखी हुए। दुर्वासाके वतलाये मंत्रकी सहायता तथा पतिकी आज्ञानुसार धर्म, वायु और इद्रका आह्वान कर कुंतीने युधिष्ठिर, भीम और अर्जुन नामक पुत्र उत्पन्न किये। उसी मन्त्रके प्रभावसे माद्रीने अश्विनीकुमारोंके अनुग्रहसे नकुल और सहदेव पुत्र पाये थे। ये ही पाँचों पुत्र पांडव

कहलाये जिनका पूर्ण विवरण विस्तारके साथ महाभारतमें दिया हुआ है।

एक दिन वसन्त ऋतुमें पांडुको बहुत कामपीड़ा हुई और माद्रीके संग विहार करने लगे और उसी समय ऋषिके शापानुसार उनके प्राण निकल गये। माद्रीने भी अपने पुत्र कुंतीको सौंप कर इनका अनुगमन किया। पीछे लोग पांडु और माद्रीको हस्तिनापुर ले गये जहाँ धृतराष्ट्रकी आज्ञानुसार विदुरने इनका प्रेतसंस्कार किया (भाग० १.४.७; ९.२२.२५-२७; २४.३६; १.९.१३; मत्स्य ४६.८-११; ५०.४७-९; वायु० ९६.१५०; ९९.२४१-५; ११२.४५; विष्णु० ४.१४.३४; २०.३८-४२)।

पांडुकूप—पु० [सं०] यह पिंडारकतटमें है जो श्राद्धके लिए अति उपयुक्त तीर्थस्थान कहा गया है (ब्रह्मां० ३.१३.३७)।

पांडुतीर्थ—पु० [सं०] पुराणानुसार एक तीर्थका नाम।

पांडुनन्दन—पु० [सं०] अर्जुनका एक नाम —दे० अर्जुन।

पांडुभूमि—स्त्री० [सं०] पातालके द्वितीय तलकी भूमि (ब्रह्मां० २.२०.१४-२४)।

पांडुरंग—पु० [सं०] पुराणानुसार विष्णुका एक अवतार।

पांडुर—पु० [सं०] (१) कार्त्तिकेयके एक सैनिक अनुचरका नाम (महाभा० शल्य० २५.७३)। (२) भारतवर्षके सात कुलपर्वतोंके समीपवर्ती हजारों पर्वतोंमेंसे एक पर्वतका नाम (ब्रह्मां० २.१६.२१; वायु० ४५.९१), जहाँ विद्याधरोंका निवास माना गया है (वायु० ३९.६०)।

पांडुरक—पु० [सं०] पातालके तृतीय तलका निवासी एक नागका नाम (ब्रह्मां० २.२०.२९; वायु० ५०.२७)।

पांडुरोचि—पु० [सं०] भार्गवकुलका एक गोत्रकार ऋषि (मत्स्य० १९५.२२)।

पांडुविशाल—पु० [सं०] पुण्यात्मा पुरुषों द्वारा सेवित पंचवनमें स्थित एक तीर्थका नाम (वायु० ७७.९९)।

पांडुशिला—स्त्री० [सं०] यह हिमालयके ऊपरकी एक ढाल (पर्व)पर स्थित है जो स्कंदका क्रीड़ास्थल है तथा गया स्थित पङ्कजवनमें भी पांडुशिला है जहाँ तपकर मरीचि-ऋषि शिवशापसे मुक्त हुए थे। यहाँ किया गया श्राद्ध अक्षय होता है (वायु० ७७.९९)।

पांड्य—पु० [सं०] (१) पौरववंशी दुष्कन्त (मत्स्य०=दुष्यन्त) सुत आंडीरके चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्र जो पांड्यदेशका प्रधान था (ब्रह्मां० ३.७४.६; मत्स्य० ४८.५)। (२) पौरववंशी दुष्कन्तसुत शरूथ (मत्स्य=वरूथ)के पुत्र जनापीड़के चार पुत्रोंमेंसे एक, जिसका राज्य पांड्यदेश था (वायु० ९९.६)।

पांड्यज—पु० [सं०] प्राचीन कालके अनेक राजर्षियों, जिन्हें तपोबलसे स्वर्ग मिला, मेंसे एक राजर्षिका नाम (ब्रह्मां० २.३०.४०)।

पांशुराष्ट्र—पु० [सं०] एक प्राचीन देशका नाम जहाँके राजा वसुदानने २६ हाथी, २००० घोड़े तथा अन्य उपहार पांडवोंको अर्पित किये (महाभा० सभा० ५२.२७-२८)।

पाकशासन—पु० [सं०] मेघोंके अधिपति इंद्रका एक नाम (ब्रह्मां० ३.६३.९९; ६६.३५; मत्स्य० ७.५१; वायु० ८८.८५)। इसने असुरोंसे युद्ध कर यज्ञोंका पूर्ण भाग देवोंके लिए प्राप्त किया तथा असुरोंको इससे वंचित किया था (वायु० ९७.९३)।

पाटली—स्त्री० [सं०] (१) पटनाकी अधिष्ठात्री देवी (२) गाधि (विश्वामित्रके पिता)की पुत्रीका नाम जिसके अनुरोधसे कौंडिल्य ऋषिके पुत्रने मंत्रबलसे पाटलीपुत्र नामक नगर बसाया था (भविष्यपु०)।

पाठीन—पु० [सं०] एक प्रकारकी मछली जो श्राद्धोंमें काम आती है (मत्स्य० १५.३४)।

पाणिक—पु० [सं०] कार्त्तिकेयस्वामीका एक गण (स्कन्दपु०)।

पाणिनि—पु० [सं०]प्रसिद्ध वैयाकरण जिन्हें शिवने स्वयम् इसका ज्ञान दिया था। यह शालातुर नामक स्थानमें रहते थे (पाणिनीयप्रबोध)।

पाणिहर्ता—स्त्री० [सं०] एक छोटा सरोवर जिसे देवताओंने बुद्धके लिए प्रस्तुत किया था। कहते हैं देवताओंने एक बार हाथसे पृथ्वीको ठोक दिया था जिससे वहाँ जलाशय बन गया जिसे "पाणिहर्ता" कहते हैं (ललितविस्तर)।

पातक—पु० [सं०] स्वार्थकी सिद्धि तथा वृद्धिके लिए किसीकी हत्या करनेमें पातक है, परन्तु जिससे बहुतोंको अनिष्ट होता हो उसकी हत्यासे पातक नहीं होता (वायु० ६२.१६१-२)।

पाताल—पु० [सं०] (सुतल) पुराणानुसार पृथ्वीके नीचेके सात लोकोंमेंसे पाताल सातवाँ है (विष्णु० २.५.१-१२; ४.४.१०; ५.१.७२)। पाताल सात माने गये हैं जिनके नाम ये हैं—अतल, वितल, सुतल, तलातल, महातल, रसातल और पाताल। पुराणानुसार प्रत्येककी लंबाई चौड़ाई १०-१० हजार योजन है। तथा सभी धन-धान्यसे परिपूर्ण हैं, जहाँ स्वर्गसे भी बढ़कर सुख है। सूर्य और चन्द्रमा केवल प्रकाशमात्र देते हैं।

अतलकी भूमि काली है जहाँ मयदानवका पुत्र बल रहता है जिसने ९६ प्रकारकी मायाकी सृष्टि कर रखी है।

वितलकी भूमि धवल है जहाँ शंकर और पार्वतीका निवास है। हाटक नामका सोना यहांकी हाटकी नदीसे निकलता है।

सुतलकी भूमि लाल हैं और यहाँ प्रह्लादके पौत्र बलि राजाका राज्य है। मुचकुंद आदि असुर और दैत्य यहीं रहते हैं। बलिके द्वारपर स्वयम् भगवान् विष्णु चक्र लेकर पहरा देते हैं तथा यह (सुतल) परमेश्वरीको प्रिय है (मत्स्य० १३.३९)। यह अन्य पातालोंसे अधिक श्रेष्ठ है और इसके अंतमें शेषका निवास है (भाग० २.१.२६; ५.२४.७—३१; २५.१; मत्स्य० १५४.१९७; १६३.९१; २४९.१६; वायु० ४९.१६४; ९७.१८; ९८.८०.८६; १००.१५७; विष्णु० २.५.१३; ६.८.४८)।

तलातलइसकी भूमि पीले रंगकी है और दानवेन्द्र मय यहाँका स्वामी है। मय मायाविदोंका आचार्य है।

महातलकी मट्टी खाँड़ मिली हुई है। कद्रूके पुत्र सर्प—यहाँ निवास करते हैं जिनमें कुहक, तक्षक, सुषेण और कालिय प्रधान हैं।

रसातलकी भूमि पथरीली हैं तथा दैत्य, दानव और पाणि नामके असुर इंद्रके भयसे यहां निवास करते हैं।

पातालकी भूमि स्वर्णमयी है और वासुकि नामक सर्प शंख, शंखचूड़, कुलिक, धनंजय आदि कितने ही

विशालकाय सर्पोंके साथ यहाँ रहता है। यहाँसे तीस सहस्र योजन नीचे शेष भगवान् या अनंतका निवास स्थान है (भाग० २.१.२६; ५.२४.७-३१; २५.१; मत्स्य० १५४.१९७; १६३.९१. २४९.१६; वायु० ४९. १६४; ९७.१८; ९८.८०,८६; १००.१५७ (विष्णु० २.५. १३; ६.८.४८)।

पातालकेतु–पु० [सं०] पातालमें रहनेवाला एक दैत्य जो वज्रकेतुका पुत्र था। यह गालव ऋषिको बहुत दुःख देता था, अतः शत्रुजितके पुत्र ऋतध्वजने कुवलय नामक घोड़ेपर सवार होकर इसका वध किया था जिससे उनका नाम कुवलयाश्व पड़ा। इसके भाई तालकेतुने छद्मवेषमें ऋतध्वजको कष्ट पहुँचाया पर अश्वतर नागने उनकी रक्षा की थी। देवलोकके विश्वावसु गधर्वराजकी पुत्री मदालसाको, जिसका विवाह ऋतध्वजसे हुआ था, यह हर लाया था—दे० (ऋतध्वज तथा मार्कण्डेयपु०)।

पातालस्थ–पु० [सं०] वे असुर जिन्हें कार्त्तवीर्यने समुद्र पारकर परास्त किया था, जिन्हें देखते ही नागगण आँधीमें केलेके वृक्षोंके भाँति किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो गये (वायु० ९४. ३०-४)।

पातालांत–पु० [सं०] शेषनागका निवास स्थान (वायु० ५०.४५)।

पातंधम–पु० [सं०] भारतवर्षके सात कुलपर्वतोंके निकटवर्ती हजारों पर्वतोंमेंसे एक पर्वतका नाम (वायु० ४५.९१)।

पात्रदान–नपुं० [सं०] अर्धोदय योगवती अमावस्याको ६०, ४० या २५ माशा सोना या चाँदीका बना पात्र स्थापितकर पूजा करे। इसमें जो भी देय द्रव्य हो तीन तीन दे। इसी अवसरपर सत्ययुगमें वशिष्ठने, त्रेतामें श्रीरामने, द्वापरमें धर्मराजने और कलियुगमें पूर्णोदरने अनेक दान-धर्म किये थे (स्कंद०)।

पादकृच्छ्र–पु० [सं०] एक व्रत जो पापके प्रायश्चित्तके लिए किया जाता है तथा चार दिनोंमें समाप्त होता है। इसमें एक दिन प्रातःकाल, एक दिन सायंकाल, एक दिन अयाचित भोजन और एक दिन उपवासका विधान बताया गया है (धर्मशास्त्र)।

पादपोद्यापन–पु० [सं०] वृक्षोत्सवः, वृक्षादि वनस्पतियोंका समर्पण जो तड़ाग विधिके अनुसार ही होता हैं। लोकपालों तथा वनस्पतियोंको आहुतियाँ दी जाती हैं, वृक्षोंको सोनेके फलोंसे सजाते हैं तथा अंतमें ब्राह्मणोंको दान देते हैं। यह चार दिनोंतक होता है और इसे करनेवाला स्वर्ग प्राप्त करता है (मत्स्य० ५९.१-१८)। यदि वृक्ष रोयें या हँसे या ऋतुके विपरीत फूले-फलें तब इस विधिसे उनको तृप्त किया जाता है (मत्स्य० २३२ पूरा)।

पादिका–पु० [सं०] चंद्रमाकी गतिके आधारपर उदित होनेवाली रात्रिकी एक कालावस्थाका नाम (वायु० ६६.४५)।

पादुका–स्त्री० [सं०] खड़ाऊँ जो वृक्षोत्सवोंमें दान दी जाती है। इसके साथ दीपक, छाता, आसनादि दान देते हैं (मत्स्य० ५९.१४; ७०.४७; २७५.२५)।

पादोनकृच्छ्रव्रत–पु० [सं०] दो दिन प्रातःकाल, दो दिन सायंकाल दो दिन अयाचित भोजन और दो दिन उपवास करे। यदि यह संभव न हो तो कुछ सुवर्ण दान दे देना चाहिए (मन्वादिधर्मशास्त्र)।

पाद्म–पु० [सं०] एक महाकल्पका नाम (मत्स्य० १६४.४)।

पाद्मकल्प–पु० [सं०] ब्राह्मकल्पके पश्चात् यह आता है तब विष्णुकी नाभिसे कमल निकलता है (भाग० २.१०.४७; ३.११,३५; विष्णु० १.३.२७-८)।

पाद्मपुराण–पुं० [सं०] ज्येष्ठ आदि मासमें इसकी प्रतिलिपि जो सुवर्ण कमलके साथ दान करता है उसे अश्वमेधयज्ञका फल मिलता है (मत्स्य० ५३.१३-१५)। इसमें १८००० श्लोकोंमें केवल नरसिंहकी ही व्याख्या दी है (मत्स्य० ५३. ३०)। इसे प्रत्येक पर्वमें पढ़नेका विधान है (मत्स्य० २९०.१७)।

पान–पु० [सं०] (१) सुरापान अधर्मका क्षेत्र है जिसका अधिपति कलि है (भाग० १.१७.३८-९)। राजाके लिए मद्यपानका निषेध है (मत्स्य० २२०.८)। (२) साधारण निवास स्थान (झोपड़ियाँ) जिनका स्थान ऊँचाई पर होता है (ब्रह्मां० २.७.१०)।

पानी–स्त्री० [सं०] शाल्मलिद्वीपकी सात प्रधान नदियोंमेंसे एक नदीका नाम (वायु० ४९.४२)।

पन्नगारि–पु० [सं०] वाष्कलिके तीन शिष्योंमेंसे एक शिष्यका नाम (ब्रह्मां० २.३५.६)।

पाप–पुं० [सं०] (१) ब्रह्मधनके दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (वायु० ६९.१३२)। (२) ऐसा काम जो पुण्यका उल्टा हो और जिसका फल इस लोक तथा परलोकमें अशुभ हो। धर्मशास्त्रानुसार जिस प्रकार अकर्त्तव्य कर्म करना पाप हैं उसी प्रकार अवश्य कर्त्तव्यका न करना भी पाप हैं। "यथाग्निः सुसमृद्धार्चिः करोत्येधांसि भस्मसात्। तथा मद्विषया भक्तिरुद्धवैनांसि कृत्स्नशः॥ (भाग० ११.१४.१९)। अर्थात् जिस प्रकार लकड़ियोंके ढेरको अग्नि जला देती है उसी प्रकार भगवद्भक्तिसे पापराशि भस्म हो जाती है। पाप और पुण्यका स्वरूप तो अत्यंत सूक्ष्म है ही पर अज्ञानवश पाप और ज्ञानवश पुण्य आपसे आप सूचित हो जाते हैं जो समयांतरमें बढ़ जानेके कारण प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर होते हैं। वेदव्यासके मतानुसार "परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम्" है। पापके तीन प्रकार कहे गये हैं—(१) धर्मशास्त्रोंने जिस जातिके लिए जो कर्म बतलाये हैं, उनको न करना। (२) शास्त्रोंमें जिस कर्मको बुरा बतलाया है उसको करना और (३) इंद्रियोंको वशमें न रखकर मनमाने कर्म करना।" किसी भी पापका प्रायश्चित्त करना आवश्यक है। अङ्गिराके अनुसार प्रायस् (तप) और चित्त (निश्चय) को प्रायश्चित्त कहते हैं पर हारीतके अनुसार "शुद्धिद्वारा संचित पापोंके नाशका नाम "प्रायश्चित्त" है—दे० "प्रायश्चित्तेन्दुशेखर"।

मुख्य पाप ये हैं—निर्यास पेड़ोंके लाल दूध या रसका पान, मद्यपान, कलंज=अफीमभक्षण; कलिंग, गृंजन (गाजर), लहसुन, छत्राक (कुकुरमुत्ता), महाकोशातकी, दिव्यमल्लिका तथा कतक (निर्मली)के फलका भक्षण, अम्बर (फलके वृक्षोंको काटना), कवक, वार्ताक (बैगन) भक्षण, पुरग्रामांग (जन-कोषका गबन), किसी अन्य प्रकारका गबन, कुग्रामनिवास, चिकित्साकार्य, स्त्रियोंका विक्रय, असिजीवी, तैल आदि खाद्य पदार्थोंका विक्रय, गोपोंका दिया

भोजन करना (ब्रह्मां० ४.८.४१-४९), अतिथियोंको भोजन कराये बिना भोजन करना (ब्रह्मां० ४.२.१६१; विष्णु० २.६.६-२९), ब्रह्महत्या तथा द्रव्य लेकर वेदाध्ययन कराना (ब्रह्मां० ३.१४.४३; १५.४८)। वास्तवमें पाप तीन प्रकारसे हो सकते हैं—वचनसे, मनसे तथा किसी शारीरिक कर्मसे (वायु० १८.१)।

पापनाशिनी सप्तमी—स्त्री० [सं०] श्रावण शुक्ला ७, हस्त-नक्षत्र, उदयव्यापिनीमें किया जानेवाला एक व्रत, जिस दिन जगत्गुरु चित्रभानुका पूजन करनेसे सब पाप दूर होते हैं (हेमाद्रि)।

पापनाशिनी द्वादशी—स्त्री० [सं०] फाल्गुन शुक्ला ११को संकल्प करे और १२को आँवलेके वृक्षके नीचे बैठ परशुरामकी पूजा करे ((ब्रह्मां०)।

पापमोचनी—स्त्री० [सं०] चैत्र कृष्णपक्षकी एकादशी जो पापोंसे मुक्त करती है। च्यवन ऋषिके पुत्र मेधावीने मञ्जु अप्सराके संसर्गसे सब तपतेज खो दिया था पर इसी व्रतके करनेसे वह यथापूर्व अपने धर्म-कर्म तथा तपमें लग गये थे (नारदपु०)।

पापसूदनतीर्थ—पु० [सं०] एक प्राचीन तीर्थस्थानका नाम।

पापांकुशा—स्त्री० [सं०] आश्विन शुक्ला एकादशी जो मोक्ष देनेवाली, शरीरको नीरोग रखनेवाली तथा सुस्थिर धन देनेवाली कही गयी है (पद्मपु०)।

पापांत—पु० [सं०] पुराणानुसार एक तीर्थका नाम।

पामराचार—पु० [सं०] असभ्य जंगलियोंके आचार। असुर विशुक्रने देवताओंके लिए 'पामराचार' पदका उल्लेख किया है (ब्रह्मां० ४.२१.३२)।

पायु—पु० [सं०] भरद्वाज ऋषिके एक पुत्रका नाम (हि० श.सा.)।

पार—पु० [सं०] (१) १२ संख्यावाले एक देवगणका नाम (ब्रह्मां० ४.१.५५)। (२) सावर्णि मनुके युगके ३ देवगणोंमेंसे एक देवगण, जिसमें १२ देव थे परन्तु केवल ६ के नाम मिले हैं (भाग० ८.१३.१९; ब्रह्मां० ४.१.५५-५७; विष्णु० ३.२.२१)। (३) रुचिराश्वके पुत्र तथा नीप और पृथुसेनके पिताका नाम (भाग० ९.२१.२४)। (४) समरके तीन पुत्रोंमेंसे एकका नाम (मत्स्य० ४९.५४; वायु० ९९.१७७; विष्णु० ४.१९.४१)। (५) पृथुषेणका एक पुत्र तथा नीलका पिता (वायु० ९९.१७४; विष्णु० ४.१९.३७-८)।

पारण—पु० [सं०] वह भोजन जो किसी व्रतके दूसरे दिन किया जाता है और तत्सम्बन्धी कृत्य। पुराणानुसार व्रतके दूसरे दिन ठीक रीतिसे पारण न करनेपर व्रतका फल नष्ट हो जाता है। जन्माष्टमीको छोड़ और सब व्रतोंका पारण दिनको ही होता है। पारण काँसेके पात्रमें करना निषिद्ध है। देवताकी पूजा कर और ब्राह्मणको खिलाकर तब पारण करना अति श्रेष्ठ समझा जाता है। उसमें मांस, मद्य, मधु, मिथ्याभाषण, व्यायाम, स्त्री-प्रसंग आदि वर्जित हैं।

पारणगण—पु० [सं०] आर्षेयगण जिनका पौर्णमास तथा अगस्त्योंसे विवाह सम्बन्ध नहीं होता (मत्स्य० २०२.४)।

पारद—पु० [सं०] (पारदगण)। (१) उत्तरमें स्थित एक जनजाति (ब्रह्मां० २.१६.४८; मत्स्य० ११४.४१; वायु० ४७.४७; ५८.८२; ८८.१२२; ९८.१०७)। (२) पूर्वमें स्थित एक राज्य जहाँसे होकर गंगा बहती है (ब्रह्मां० २.१८.५०; मत्स्य० १२१.४५; १४४.५७)। यह अच्छी नसलके घोड़ोंके लिए विख्यात है (ब्रह्मां० २.३१.८३; ३.४८.२६.२९)। सगरने इन लोगोंको परास्त किया था (ब्रह्मां० ३.७३.१०८; ४.१६.१६; विष्णु० ४.३.४२)। दण्डस्वरूप इनके सिरके बाल मूंड़ दिये गये (ब्रह्मां० ३.६३, १३४, १३९)। दाढ़ी छोड़ दी गयी, वेदाध्ययन तथा यज्ञ करनेके अधिकार छीन लिये गये। अतः ये म्लेच्छ हो गये थे (विष्णु० ४.३.४७-८)।

पाराशर्य—पु० [सं०] कौथुम-कुथुमि-पुत्र। कुथुमिके तीन पुत्र थे पराशर, भागवित्ति और तेजस्वी। इसने अपने छह शिष्योंको—आसुरायण, वैशाख्य, वेदवृद्ध, परायण, प्राचीनयोगपुत्र तथा पतञ्जलिको ६ संहिताएँ पढ़ायीं (वायु० ६१.४१)।

पारशव—पु० [सं०] एक जाति विशेष (वायु० ९९.२६८)। ब्राह्मण द्वारा शूद्रामें उत्पन्न बालकको पारशव कहते हैं जैसे विदुरजी थे (महाभा० आदि० १०८.२५) ऐसा राजा जो क्षत्रियसे नीचा और शूद्रसे ऊँचा हो (मत्स्य० ५०.७५)।

पारसीक—पु० [सं०] भारतके पश्चिमके जनपद या राज्यका नाम (विष्णु० २.३.१८)। ललिताकी सेनाके अश्व इसी कक्षाके थे (ब्रह्मां० ४.१६.१६)।

पारा—पु० [सं० पारद] (१) चाँदीकी तरह श्वेत और चमकीली एक धातु जिसकी उत्पत्ति पुराणानुसार शिवके वीर्यसे बतलायी गयी है। इसका बड़ा माहात्म्य लिखा है, यहाँतक कि सारी सृष्टि इसीसे उत्पन्न कही गयी है—दे० रसेश्वरदर्शन। पर्य्याय—रसराज, रसनाथ, महातेजा, चपल, जैत्र, शिवबीज, लोकेश, रुद्रज, हरतेज, स्कन्द, पारत, यशोद आदि। (२) स्त्री०—ऋष्यवान् पर्वतसे निकली १५ पुण्य नदियोंमेंसे एक नदीका नाम (मत्स्य० ११४.२४)। (३) सती देवाकी एक मूर्तिका नाम जो पारातटमें स्थापित है (मत्स्य १३,४४)।

पारातट—पु० [सं०] यहाँ सतीदेवीका एक विग्रह 'पारा' नामसे स्थापित है (मत्स्य० १३.४४)।

पारावत—पु० [सं०] (१) ऐरावत नागके कुलमें उत्पन्न एक नागका नाम जो जनमेजयके सर्पयज्ञमें जल मरा था (महाभा० आदि० ५०.११)। (२) दत्तात्रेयके कपोत आदि २४ गुरुओंमेंसे एक गुरुका नाम (भाग० ११.७.५२-७२)। (३) दक्षपुत्री ताम्रासे उत्पन्न कश्यप ऋषिकी शुकी आदि छह पुत्रियोंमेंसे गृध्रीसे उत्पन्न कपोत (मत्स्य० ६.३२) जिन्हें पारावतगण भी कहते हैं। (४) स्वारोचिष मन्वन्तरके दो देवगणोंमेंसे एक देवगण जो संख्यामें १२ हैं=प्रचेता, विश्वदेव, समंज, अजिह्म. अरिमर्दन, आयुर्दान, महामान, दिव्यमान, अजेय, यवीयान् होता और यज्वा। ये सब वशिष्ठ हैं तथा सोमरस पान करनेवाले ह (ब्रह्मां० २.३६.८, १४)।

पाराशर—पु० [सं०] वाष्कल (वायु०=वाष्कलि) के चार शिष्योंमेंसे एक शिष्यका नाम (वायु० ६०.२६)।

पाराशरी—पु० [सं०] ऋग्वेदकी तृतीय शाखाका नाम जो वाष्कलने अपने एक शिष्यको पढ़ायी थी (ब्रह्मां० २.३४.२७; वायु० ६०.२६)।

पाराशर्य–पु० [सं०] सामगाचार्य कृतके २४ शिष्योंमेंसे एक शिष्य (ब्रह्मां० २.३५.५४)।

पारिकारारि–पु० [सं०] आंगिरसवंशज एक त्र्यार्षेय प्रवरप्रवर्तक ऋषिका नाम (मत्स्य० १९६.१०)।

पारिजात–पु० [सं०] (१) इन्द्रके नन्दनवनका एक देववृक्ष जो स्वर्गलोकका भूषण है। इसके फूल मनचाही गन्ध देते हैं तथा इसकी शाखाओंमें भिन्न-भिन्न प्रकारके रत्न लगते हैं। यह समस्त कामनाओंको देनेवाला एक दिव्य वृक्ष है। सत्यभामाकी प्रसन्नताके लिए श्रीकृष्ण इन्द्रसे बलपूर्वक इसे ले आये थे और फिर लौटा दिया था। यह समुद्रमन्थनसे निकले १४ रत्नोंमेंसे एक रत्न है जो देवताओंकी सम्मतिसे इन्द्रको दिया गया था (भाग० ३.१५.१९; ४.६.१४; ३०. ३२; ८.२.१०; १०.३७.१६; ५९.३९-४०; ६८.३५; (६५ (५) २१ ३६), (३७-५१); ६६ (५); (६७ (५) १-१६; २६), ३४, ४५; विष्णु० ५.३०.३२; ८०.३८.७। (२) समुद्रमन्थनसे निकला शिवलोकका एक वृक्ष (ब्रह्मां० ३. ३२.६; ४.९.७०; वायु० १०६.७४; विष्णु०१.९.९५)। (३) ऐरावतके कुलमें उत्पन्न एक नाग (सर्प) का नाम, जो राजा जनमेजयके सर्पयज्ञमें जल मरा था (महाभा० आदि० ५७.११)। (४) क्रोधवशा या क्रोधाकी १२ पुत्रियों, जो सब ऋषि पुलहको व्याही गयी थीं, मेंसे एक श्वेताके दस वीर वानर श्रेष्ठ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र एक प्रधान बन्दर (ब्रह्मां० ३.७. १८१, २३६)। (५) एक मुनिका नाम जो पारिजातक भी कहलाते थे (महाभा० सभा० ४.१४)। (६) पारियात्र पर्वत तथा शीतोद झीलके पश्चिममें स्थित सुवक्षा आदि १८ पर्वतोंमेंसे एक पर्वतका नाम। पुण्य नदी गङ्गा इस पर्वतसे होती हुई बहती है (वायु० ३६.२९; ४२.५४)।

पारिजातक–पु० [सं०] एक जितात्मा मुनि, जो महाराज युधिष्ठिरकी सभामें विराजते थे (महाभा० सभा० ४.१४)।

पारिजातवन–पु० [सं०] अनेक सुस्वादु जलके झरनों, फल-फूलोंसे लदे वृक्षों तथा रत्नमय शृंगोंसे सुशोभित, यक्ष, गन्धर्व, किन्नर आदिसे पूर्ण सुन्दर गुफाओंसे रम्य शीतान्त पर्वतपर स्थित महेन्द्रका उपवन (वायु० ३९.१०-२६)।

पारिजातापहारक–पु० [सं०] श्रीकृष्णका एक नाम (ब्रह्मां० ३.३६.३०)।

पारिप्लव–पु० [सं०] (१) यज्ञोंमें कहा जानेवाला एक आख्यान (शतपथब्राह्मण)। (२) एक तीर्थका नाम, जो कुरुक्षेत्रकी सीमाके अन्तर्गत है तथा जिसके सेवनसे अग्निष्टोम और अतिरात्र यज्ञोंका फल प्राप्त होता है (महाभा० वन० ८३.१२)। (३) सुखावलका पुत्र तथा सुनयका पिता (विष्णु० ४.२१.१२)।

पारिभद्र–पु० [सं०] शाल्मलिद्वीपके अधिपति प्रियव्रत-पुत्र यज्ञवाहुने अपने सात पुत्रोंको उनके नामोंवाले सात भाग कर बाँटे थे उनमेंसे एक प्रादेशिक विभागका नाम (भाग० ५.२०.९)।

पारियात्र–पु० [सं०] (१) विन्ध्याचल पर्वतश्रेणीके अन्तर्गत एक पर्वत जो सप्त कुलपर्वतोंमेंसे एक है जहाँ श्रीकृष्ण और इन्द्रसे युद्ध हुआ था। इससे ये नदियाँ निकली हैं—वेदस्मृति, वेदवती, वृत्रघ्नी, सिन्धु, सानन्दिनी, सदानीरा, मट्टी, पारा, चर्मण्वती, नृपी, विदिशा, वेत्रवती, शिप्रा इत्यादि (हरिवंश)। मार्कण्डेय तथा विष्णु पुराणानुसार मरुक और मालव जाति इस पर्वतपर निवास करती थी। इस पर्वतका अधिष्ठाता चेतन पुरुष कुबेरकी सभामें रहकर उनकी उपासना करता है (महाभा० सभा० १०.३१) महामुनि मार्कण्डेयजीने भगवान् बालमुकुन्दके उदरमें इस पर्वतका दर्शन किया था (वन० १८८.११५)। इसपर महर्षि गौतमका महान् आश्रम था (शान्ति० १२९.४) तारकासुरने यहाँ तपस्या की थी (मत्स्य० १६२.६; १६३.८०) (२) देवानीक-सुत अहीनगुके पुत्र तथा दलके पिताका नाम (वायु० ८८.२०४)। (३) अनीहके पुत्र, देवानीकके पौत्र तथा दलस्थल (बल=भाग०) के पिता तथा स्थलके दादाका नाम (भाग० ९.१२.२)। (४) सातों द्वीपोंमें स्थित सकल वानरी सेनाके अधिपति किष्किन्धाके राजा बालीके सहस्रों सामन्त तथा सेनानायक प्रधान बन्दरोंमेंसे एक प्रधान बन्दरका नाम (ब्रह्मां० ३.७.२३३)।

पारियात्रक–पु० [सं०] श्रीरामजीके वंशज रुरुके पुत्र तथा देवलके पिताका नाम (विष्णु० ४.४.१०६)।

पार्थ–पु० [सं०] पृथाके पुत्र युधिष्ठिर, अर्जुन, भीम। कुन्तीका नाम पृथा भी था अतः इनमेंसे प्रत्येकको पार्थ कहते हैं पर अधिकतर अर्जुनके लिए ही पार्थका प्रयोग दिखायी देता है (ब्रह्मां० ३.७१.१७८; मत्स्य० ५०.५६; २४६.९३; विष्णु० ५.१२.१९)।

पार्थसारथि–पु० [सं०] पार्थ=अर्जुनके सारथि होनेके कारण श्रीकृष्णका एक नाम (ब्रह्मां० ३.३६.३८)।

पार्थिव–पु० [सं०] (१) त्र्यार्षेय प्रवरप्रवर्तक ऋषि (मत्स्य० १९६-९)। (२) तीन अग्नियोंमेंसे एकका नाम। ब्रह्माकी रात्रि अर्थात् प्रलयरूप रात्रिका जब सवेरा हुआ अर्थात् अव्यक्तजन्मा ब्रह्मासे सृष्टिका आरम्भ हुआ तब यह नाम पड़ा (वायु० ५३.५-७)। (३) एक प्रकारकी अग्नि जिसे पवन भी कहते हैं (ब्रह्मां० २.२४.६)।

पार्थिवव्रत–पु० [सं०] राजाओंका प्रजापालन करनेका व्रत (मत्स्य० २२६.८)।

पार्वण–पु० [सं०] पर्वोंमें किया जानेवाला श्राद्ध जिसमें किसी देवताका आवाहन नहीं होता। जिन ब्राह्मणोंको भोजन कराया जाय उनका कुल, वंश, गोत्रादि विदित रहना चाहिये यथा मित्र, सम्बन्धी, वैयाकरण आदि। अधर्मी, रोगी, वर्णसंकर, प्रमादी, पुजारी आदि वर्जित हैं। सपिण्डीकरणके पश्चात् घरका कोई मृत व्यक्ति भी पार्वणका अधिकारी हो सकता है (मत्स्य० १८.१६)।

पार्वतिका–स्त्री [सं०] एक नदी जो पितरोंके श्राद्धके लिए अति उपयुक्त है। यहाँ किये गये श्राद्धका फल करोड़ गुना अधिक होता है (मत्स्य० २२.५६)।

पार्वती–स्त्री० [स०] (१) हिमालय पर्वतकी पुत्री तथा शिवकी अर्धांगिनी देवी जिन्हें गौरी, दुर्गा, उमा, गिरिजा आदि भी कहते हैं। देवीके १०८ नामोंका जप करके इन्होंने शिवका आधा शरीर अर्धनारीश्वरत्व प्राप्त किया था (मत्स्य० १३.५१.६०; ८५.६; १८७.४४; वायु० ५४.२०; १०८. ५१; ११२.३५; विष्णु० ५.३२.११-१५)। अम्बाके नामसे यह विदर्भोंकी कुलदेवी है। एक बार जब यह शरवणवाटिकामें शिवके साथ क्रीड़ा कर रहीं थीं तभी कुछ ऋषि-

गण आ पहुँचे जिससे यह अति लज्जित हुईं। इनकी प्रसन्नताके लिए शिवजीने कहा आजसे यहाँ आनेवाले पुरुष स्त्री हो जायँगे तभीसे पुरुष उस स्थानको वर्जते हैं (भाग० ९.१.२९-३२)। महाराज पृथुको इन्होंने "शतचन्द्र" नामक खड्ग दिया था (भाग० ४.१५.१७; ६.१७.११-१२) श्रीकृष्णसे विवाहके हेतु रुक्मिणीने इनकी उपासना की थी (भाग० १०.५३.२५, ३९-४०, ४४-४९)। वृकासुर शिवको मारकर इन्हें एक बार हर ले जाना चाहता था किन्तु विष्णु भगवान्‌के चातुर्यसे सफलमनोरथ नहीं हुआ (भाग० १०.८८.२३)। क्रुद्ध शिवको इन्होंने ही भृगुकी हत्या करनेसे रोका था (भाग० १९.८९.७)। अर्जुनको पाशुपतास्त्र देनेके समय शिवके साथ यह भी थीं (भाग० १.१५.१२; १०.५२.४२)। (२) शाकद्वीपकी सात मुख्य नदियोंमेंसे एक मुख्य नदी नन्दाका दूसरा नाम (वायु० ४९.९२)। (३) विजया, सहदेवकी पत्नी तथा सुहोत्रकी माता का नामान्तर। यह मद्रदेशके राजा द्युतिमान्‌की पुत्री थी। (भाग० ९.२२.३१)।

पार्वतीजानि–पु० [सं०] शिवका एक नाम (ब्रह्मां० ४.१०.२९)।

पार्वतीप्रिय–पु० [सं०] देवाधिदेव शिवका नाम (ब्रह्मां० ४.२.२५८; वायु० १०१.३२१)।

पार्वतीमाया–पु० [सं०] तारकामय संग्राममें इसके प्रभाव से मायावी मयासुरने चन्द्रमा तथा वरुण द्वारा दानवोंपर की गयी वर्फ तथा जलकी वृष्टिसे त्रस्त दानवोंका त्राण किया था। मयासुर द्वारा प्रयुक्त इसका निवारण गदाधरने अग्नि और वायुको प्रेरित कर उनके द्वारा किया था जिससे देवतागण सन्तुष्ट हुए थे (मत्स्य० १७६.२५, ३४)।

पार्वतीयगण–पु० [सं०] एक जाति जिसने यदुओंपर आक्रमणके समय जरासन्धका साथ दिया था (भाग० १० (५० (५) ४); वायु० ५८.८१)।

पार्वतेय–पु० [सं०] एक राजर्षि, जो कपट नामक दैत्यके अंशसे उत्पन्न हुए थे (महाभा० आदि० ६७.३०)।

पार्श्वनन्दि–पु० [सं०] सारणके दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम। अर्चिष्मती आदि इनकी पाँच वहनें थीं (वायु० ९६.१६४)।

पार्श्वमर्दी–पु० [सं०] वलरामका एक पुत्र (ब्रह्मां० ३.७१.१६६)।

पार्श्वमौलि–पु० [सं०] कुवेरके मन्त्रीका नाम–दे० कुवेर।

पार्श्वी–पु० [सं०] (१) ब्रह्मां० के अनुसार वलरामका एक पुत्र (ब्रह्मां० ३.७१-१६६)। (२) वायु०के अनुसार सारणका एक पुत्र (वायु० ९६.१६४)।

पार्श्वैकादशी–स्त्री० [सं०] भाद्रपद शुक्ला एकादशी जिस दिन भगवान् विष्णु करवट लेते हैं (भाग०)।

पार्षत–पु० [सं०] राजा विराटके पुत्र धृष्टद्युम्नका एक नाम (महाभा० आदि० २२१.९)।

पार्षद–पु० [सं०] विकृतरूपधारी शिवगण जो तारक और मयसे त्रिपुरके युद्धमें लड़े थे (मत्स्य० १३५.५१,७३)।

पार्ष्णिक्षेमा–पु० [सं०] दस विश्वेदेवोमेंसे एक विश्वेदेवका नाम (महाभा० अनु० ९१.३०)।

पार्ष्णिग्राह–पु० [सं०] शत्रु-दलके पीछे यदि अपने पक्षके कुछ लोग हों तो आक्रमण करनेमें सुविधा होती है और यदि अपनी सेनाके पीछे देशद्रोही तथा सन्दिग्ध आचरणवाले हों तब किसीपर आक्रमण करना उचित नहीं है (मत्स्य० २४०.२,४)। तारकामय युद्धमें शिव बृहस्पतिके पार्ष्णिग्राह थे (ब्रह्मां० ३.६५.३२)। भण्डारसुरके युद्धमें भण्डासुरका पार्ष्णिग्राह विशंग था (ब्रह्मां० ४.२५.१४); तारकामय युद्धमें सोमके उशना (शुक्राचार्य) थे (विष्णु० ४.६.१२)।

पालक–पु० [सं०] (१) प्रद्योतनवंशके प्रथम राजा प्रद्योतका पुत्र तथा विशाखयूपका पिता (भाग० १२.१.३)। (२) बालक (ब्रह्मां० प्रद्योति) का एक पुत्र तथा विशाखयूपका पिता जिसने २८ (२४=वायु०) वर्षोंतक राज्य किया था (ब्रह्मां० ३.७४.१२५; मत्स्य० २७२.३; वायु० ९९.३१२)।

पालङ्कायन–पु० [सं०] वशिष्ठवंशज त्र्यार्षेय प्रवरप्रवर्तक एक ऋषिका नाम (मत्स्य० २००.१२)।

पालन–पु० [सं०] राजा पृथुके दो पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (वायु० ६३.२२)।

पालमञ्जर–पु० [सं०] एक पर्वत जिसपर शौर्पारक तीर्थ स्थित है (ब्रह्मां० ३.१३.३७)।

पालाशपात्र–पु० [सं०] पलाशकी लकड़ीसे निर्मित एक पात्र जिसमें वृक्षोंने शालवृक्षको दुहनेवाला तथा पाकड़को वछड़ा वनाकर पृथ्वी रूपी गौ-को दुहा था (मत्स्य० १०.२७)।

पालिशयगण–पु० [सं०] वशिष्ठवंशज एकार्षेयगण (मत्स्य० २००.४)।

पावक–पु० [सं०] (१) विजिताश्वके शिखण्डिनीसे उत्पन्न तीन पुत्रोंमेंसे एक पुत्र जो पूर्व जन्ममें अग्नि था पर वशिष्ठके शापसे यहाँ उत्पन्न हुआ था (भाग० ४.२४.४)। (२) स्वाहा और अग्निके तीन पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (भाग० ४.१.६०; वायु० ५३.९७.३०; विष्णु० १.९.६३, १०.१५)। गंगाका पति (ब्रह्मां० १.२.१७; वायु० २.१७)। वसुओंका अधिपति (ब्रह्मां० ३. ८. ५; वायु० ७०.५; विष्णु० १.२२.३) जिसे वैद्युत भी कहते हैं (ब्रह्मां० २.१२.२,३३)। (३) अग्नि। निम्नांकित २७ पावक ऋषि ब्रह्माके अंगसे उत्पन्न हुए थे=अंगिरा, दक्षिण, गार्हपत्य, आहवनीय, निर्मथ्य, वैद्युत, सौर, संवर्त, लौकिक, जाठर, विषग, क्रव्य, क्षेमवान्, वैष्णव, वलद, शान्त, पुष्ट, विभावसु, ज्योतिष्मान्, भरत, भद्र, स्विष्टकृत्, वसुमान्, क्रतु, सोम तथा पितृमान् (महाभा० वन० २१९.८)।

पावकात्मज–पु० [सं०] इक्ष्वाकुवंशीय दुर्योधनकी पुत्री सुदर्शनाका पुत्र –दे० पावकि (२)।

पावकि–पु० [सं०] (१) पावकका पुत्र=कार्त्तिकेय। (२) इक्ष्वाकुवंशीय दुर्योधनकी पुत्री सुदर्शनाका एक पुत्र सुदर्शन। मनुके पुत्र सुदुर्जयके दुर्योधन नामका एक पुत्र हुआ जिसकी सुदर्शना नामकी एक पुत्री थी। दुर्योधनके पास आकर अग्निदेवने उसके लिए प्रार्थना की पर दुर्योधनके अस्वीकार कर देनेपर वे निराश हो चले गये। वादको दुर्योधनने सुदर्शनाका विवाह अग्निदेवसे कर दिया और वह अपनी नववधूके साथ माहिष्मतीपुरीमें रहने लगे। पावक तथा सुदर्शनाके पुत्रका नाम सुदर्शन पड़ा जो वड़ा धर्मात्मा

तथा ज्ञानी था (हि. श. सा.)।

पावन–पु० [सं०] (१) श्रीकृष्ण तथा मित्रविन्दाके १२ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (भाग० १०.६१.१६)। (२) क्रौंचद्वीपाधिपति द्युतिमान्‌के सात पुत्रोंमेंसे एक पुत्र जो पावन देशका राजा था (ब्रह्मां० २.१४.२२, २५)।

पावनक–पु० [सं०] क्रौञ्चद्वीपके सात मुख्य पर्वतोंमेंसे एक पर्वत (मत्स्य० १२२.८१.८५)।

पावनि–पु० [सं०] पवनदेवके पुत्र जैसे हनमान् आदि।

पावनी–स्त्री० [सं०] (१) शाकद्वीपकी सात नदियोंमेंसे एक (तृतीया) नदीका नाम जिसका दूसरा नाम नन्दा है(मत्स्य० १२२.३१)। (२) गंगाकी तीन शाखाओंमेंसे एक जो पूर्वको जाती है (ब्रह्मां० २.१२.१६; १८.४०, ५६-७ (मत्स्य० १२१.४०; (वायु० ४७.३८, ५३)। यह हव्यवाहनकी पत्नी हैं (वायु० २९.१४)।

पाविनी–स्त्री० [सं०] ललितादेवीका एक नाम (ब्रह्मां० ४.१३.१७)।

पाश–पु० [सं०] (१) फंदा, फाँस। प्राचीनकालमें पाशका प्रयोग युद्धमें होता था मेघनादका नागपाश–"रामायण"। "पाश १० हाथका होना चाहिये जिसकी डोरी सूत, गून, मूँज, ताँत, चमड़े आदिकी हो। तीस रस्सियाँ होनी चाहिये। प्राणदण्डमें भी इसका प्रयोग किया जाता था। पाश द्वारा वध करनेवाले पाशी कहलाते थे जिनकी सन्तान आजकलके पासी हैं—"अग्निपुराण"। (२) वरुणका पाश विशेष (मत्स्य० १३५.७७; १५०.१२८; १५२.२; १५३.२१२; १६२.३१; १७३.१२; १७४.१३)।

पाशधर–पु० [सं०] वरुण देवता जिनका अस्त्र पाश है, —दे० पाश (२) तथा मत्स्यपुराण।

पाशा–स्त्री० [सं०] पारियात्र पर्वतसे निकली एक नदी (ब्रह्मां० २.१६.२८)।

पाशिनी–स्त्री० [सं०] शुक्तिमान् पर्वतसे निकली एक नदी (मत्स्य० ११४.३२)।

पाशी–पु० [सं०] धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र। भीमसेन द्वारा मारा गया था (महाभा० कर्ण० ६२.२–३)

पाशुपतयोग–पु० [सं०] योगका प्राचीनतम रूप जिसकी साधना देवराज इन्द्र आदिने भी की और अणिमा, महिमा, लघिमा, प्राप्ति, गरिमा, प्राकाम्य, ईशित्व, वशित्व और अमरत्व प्राप्त किया (ब्रह्मां० २.२७.११६,१२८; वायु० १.१९५)। काशीमें इसकी साधना करनेवाला जन्म-मरणके चक्करसे मुक्त हो जाता है (मत्स्य० १८२.१२)।

पाशुपतव्रत–पु० [सं०] पशुपाशविमोचन, जो सब आश्रमोंके लिए समान रूपसे विहित है एवं सर्वपापविमोक्षण कहा गया है (वायु० ३०.२९५)।

पाशुपत (गण)–पु० [सं०] पाशुपत योगके साधकगण (ब्रह्मां० ३.३२.५)।

पाशुपतास्त्र–पु० [सं०] पाशुपत। (१) शिवका प्रचण्ड शूलास्त्र जिसे अर्जुनने बड़े तपके पश्चात् प्राप्त किया था (ब्रह्मां० ३.३१.३९; ३२.५७; ३४.३४; ४०.२९.१४०)। (२) पार्वतिका नदीपरका एक तीर्थ जो पितरोंके श्राद्धके लिए अति प्रशस्त तथा पवित्र कहा गया है (मत्स्य० २२.५६)।

पाशुपाल्य–नपु० [सं०] पुष्करद्वीपमें पशुपालन नहीं होता, (ब्रह्मां० २.१९.१२१; वायु० ४९.११७) यह वैश्योंका कृत्य है (ब्रह्मां० २.७.१६२; विष्णु० ३.८.३०)।

पांशु–पु० [सं०] पांशु=पिशाचोंके सोलह जोड़ोंमेंसे एक जोड़ेका पुरुष पिशाच। इसकी स्त्रीका नाम पांशुमती है। इनके बाल और हाथ ऊपरको होते हैं और शरीरसे धूल निकलती रहती है (ब्रह्मां० ३.७.३७९,३८३,९३; वायु० ६९.२७२)।

पांशुमती–पु० [सं०] पिशाचोंके १६ जोड़ोंमेंसे एक जोड़ेकी स्त्री पिशाचका नाम। इसके पति पुरुष पिशाचका नाम पांशु है (ब्रह्मां० ३.७.३७९)।

पाषंड–पु० [सं०] कलियुगका एक अनीश्वरवादी मत (ब्रह्मां० ४.३३.६०; मत्स्य० ९९.१४; १४४.४०; विष्णु० ३.१८.२२)। इसकी उत्पत्ति देवासुरसंग्रामसे कही जाती है, निर्ग्रन्थ, कार्पट तथा नग्न (वायु० ७८.३०) ये किसी भी धार्मिक कृत्यके लिए अयोग्य हैं (मत्स्य० ५७.६; ६९.३४; विष्णु० ३.१८.७०-१३०; ६.१.३७)। प्रमतिने इनका दमन किया था (मत्स्य० १४४.५४)।

पाषाणचतुर्दशी–स्त्री० [सं०] कार्त्तिक (अन्य मतसे मार्गशीर्ष) शुक्ला १४, जिस दिन स्त्रियाँ गौरीका पूजन करके रातको "पाषाण" (पत्थर) के ढोकोंके आकारकी बड़ियाँ बनाकर भोजन करती हैं (देवीपुराण)।

पिंग–पु० [सं०] एक मध्यमाध्वर्युका नाम (ब्रह्मां० २.३३.१६)।

पिंगल–पु० [सं०] (१) छन्दः सूत्रके रचयिता एक प्रसिद्ध आचार्य ऋषि जो छन्दशास्त्रके आदि आचार्य माने गये हैं। इस ग्रंथको वेदांगोंमें गिना जाता है। (२) ५१वें संवत्सरका नाम (हि. श. सा.)। (३) ग्यारह रुद्रोंमेंसे एक (मत्स्य० १५३.१९; १७१.३९)। (४) सूर्यका एक गण जो उनका द्वारपाल है (मत्स्य० २६१.५)। (५) भारतवर्षके उत्तर-पश्चिमका एक देश (मार्कण्डेयपु०)। (७) शीतोद झीलके पश्चिमका एक पर्वत (वायु० ३६.२७)।

पिंगला–स्त्री० [सं०] (१) विदेहकी एक वृद्ध वेश्याका नाम जिसकी कथा भागवतमें है। यदुको अवधूत द्वारा सुनायी गयी इसकी संक्षिप्त कथा इस प्रकार है :—यह नित्य वेश्याकर्मसे जीविका कमाती थी। एक दिन बहुत प्रतीक्षाके पश्चात् भी कोई ग्राहक नहीं आया। अपने जीवनसे इसे बड़ी ग्लानि हुई और भगवद्भजन करने लगी जिससे शांति मिली (भाग० ११.८.२२-४४)। युधिष्ठिरको मोक्ष धर्म समझाते समय भीष्मने भी पिंगला वेश्याका उल्लेख किया है (महाभा०)। सांख्य सूत्रमें भी "निराशः सुखी पिंगलावत्" लिखा मिलता है। जीवनसम्बन्धी पिंगलाका दृष्टिकोण गोपियोंने उद्धवसे कहा था (भाग० १०.४७.४७)। (२) कुमुद नामक हाथीकी पत्नी तथा महापद्म तथा ऊर्मिमालीकी माता एक हथिनीका नाम। इसके परिवारमें विशालकाय युद्धप्रिय हाथी पैदा हुए थे (ब्रह्मां० ३.७.३४६; वायु० ६९.२२९,२३१)। (३) श्री मारुतेश्वर (मारुतनाथ) की तीन शक्तियोंमेंसे एक शक्तिका नाम (ब्रह्मां० ४.३३.७०)। (४) अन्धकासुरके रक्तपानार्थ शिवजी द्वारा सृष्ट अनेक मानस पुत्री मातृकाओंमेंसे एक मानस-पुत्री

मातृका (मत्स्य० १७९.२३) ।

पिंगलाक्ष–पु० [सं०] शिवका एक अनुचर तथा अनुगामी (ब्रह्मां० ३.४१.२७) ।

पिंगलायनि–पु० [सं०] एक भार्गव गोत्रकार ऋपि (मत्स्य० १९५.२५) ।

पिंगलि–पु० [सं०] आंगिरसवंशज त्र्यार्पेय प्रवरप्रवर्तक एक ऋपि (मत्स्य० १९६.१८) ।

पिंगलेश्वर–पु० [सं०] नर्मदा-तटपर स्थित एक तीर्थ जहाँ गोदानका वड़ा महत्त्व है तथा यहाँ मरनेवालेको स्वर्ग प्राप्त होता है (मत्स्य० २९१.३२-२६) ।

पिंगलेश्वरी–स्त्री० [सं०] पयोष्णीमें स्थापित सती देवीकी एक मूर्ति (मत्स्य० १३.४४) ।

पिंगाक्ष–पु० [सं०] (१) एक यक्ष जो पुण्यजनी तथा मणिभद्रके कई पुत्रोंमेंसे एक पुत्र था (ब्रह्मां० ३.७.१२३) । (२) महामुनि लांगलीके चार परम धार्मिक पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (लांगलीको २२वें द्वापरका विष्णुका अवतार कहा गया है) (वायु० २३.२००) । (३) विन्ध्याचलके जंगलोंमें रहनेवाला भीलोंका एक प्रसिद्ध सरदार जो वड़ा शूरवीर तथा क्रूर कर्मोंसे विमुख रहनेवाला था । पुनर्जन्ममें यह नैर्ऋत्यलोकमें राक्षसोंका राजा एवं दिक्पाल हुआ (स्कन्दपु० काशीखण्ड पूर्वार्ध) ।

पिंगाक्षी–स्त्री० [सं०] कुमार कार्तिकेयकी अनुचरी एक शक्तिका नाम (महाभा० शल्य० ४६.१८,२१) ।

पिंगेश–पु० [सं०] अग्निदेवका एक नाम—दे० अग्निदेव ।

पिंजर–पु० [सं०] एक काद्रवेय नागका नाम (ब्रह्मां० ३.७.३३) ।

पिंड–पु० [सं०] पके हुए चावलोंका गोल लौंदा जो श्राद्धमें पितरोंको अर्पित किया जाता है; पिता, पितामह, प्रपितामह इन तीनको दिये जाते हैं जो मन्त्र वलसे पितरोंतक पहुँच जाते हैं यदि गोत्रादि कहकर दिये गये हों (ब्रह्मां० ३.२०.१०-१६) । वीचवाला (पितामहका) पिंड यदि पत्नी खा ले तो सन्तानवृद्धि होती है (मत्स्य० १६.२१; ३५.५३-५४; वायु० ७१.१०; ७५.२५, ३६) । कहते हैं मृत व्यक्तिको द्वादशाह-पिंड उसके स्वर्गतककी यात्राका "पाथेय" होता है (मत्स्य० १७.४६,५५) । नर्मदा-तटपर पिंडदानसे (मत्स्य० १८६.१५,३९;२३९.३४) और गयामें तिलोदकसे पितरोंको शाश्वतिक तृप्ति प्राप्त होती है (वायु० १०५.१२, ३३; १०८.१५.२१; ११०.२३-५९) ।

पिठर–पु० [सं०] (१) हिरण्यकशिपुकी सभाका एक असुर (मत्स्य० १६१.८०) । (२) एक दैत्य, जो वरुणकी सभामें रहकर उनकी उपासना करता है (महाभा० सभा० ९.२७) ।

पिंडजिह्वा–स्त्री० [सं०] अन्धकासुरके रक्तपानके लिए शिवजी द्वारा सृष्ट वहुत-सी मानसपुत्री मातृकाओंमेंसे एक मानस पुत्री मातृकादेवी (मत्स्य० १७९.३२) ।

पिंडनिर्वपन–पु० [सं०] पिंडदान, श्राद्धका एक कृत्य विशेप । पितरोंको, पिता, पितामह और प्रपितामहको अलग-अलग मन्त्रोंके साथ पिंड दे (ब्रह्मां० ३.११.१९, ५८,९७; वायु० ७४.१७; ७५.४१; ७६.३१-५; (विष्णु० ३.१५.३४) । अग्नि, गौ, काक, पक्षी आदिको भी पिंड दिया जा सकता है पर सवका फल अलग-अलग होता है (वायु० १२०.३१-४१) ।

पिंडारक–पु० [सं०] (१) कश्यपवंशी एक प्रमुख नागका नाम । यह धृतराष्ट्र (नाग)के कुलमें उत्पन्न हुआ था । जनमेजयके सर्पसत्रमें जल मरा था (महाभा० आदि० २५.११; ५७.१७) । (२) वसुदेव और रोहिणीके वलराम आदि आठ पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (ब्रह्मां० ३.७१.१६५; मत्स्य० ४६.१२; वायु० ९६.१६३) । (३) एक प्राचीन नदका नाम जो पवित्र कहा गया है (हि.श.सा.) । (४) एक प्राचीन तीर्थका नाम जो गुजरात (सौराष्ट्र)में समुद्र-तटसे एक कोसकी दूरीपर द्वारकाके निकट है जिसमें स्नान करनेसे अधिकाधिक सुवर्णकी प्राप्ति होती (महाभा० वन० ८२.६५) । यह तीर्थ तपस्वियों द्वारा सेवित और मङ्गलरूप कहा गया है । जो मनुष्य पिण्डारक तीर्थमें स्नान कर वहाँ कई रात्रि निवास करता है वह प्रातःकालमें पवित्र हो अग्निष्टोमका फल प्राप्त कर लेता है (अनु० २५.५७) यहाँ पांडुकूप तीर्थ भी है । जहाँ श्राद्धका महाफल कहा गया है (ब्रह्मां० ३.१३.३७; भाग० १०.९०.२८ (३) और ११.१.११ । (५) एक तीर्थ जहाँ सती देवीकी एक मूर्ति धृति स्थापित है (मत्स्य० १३.४८) साम्बको स्त्रियोंके वस्त्र पहिना कुछ यादव युवकोंने परिहासमें ऋपियोंसे पूछा कि इसे कैसी सन्तान होगी ? क्रुद्ध हो ऋपियोंने यह मुसलको पैदा करेगी यह कह यदुओंको निर्मूल होनेका शाप दिया था—दे० साम्ब तथा (विष्णु० ५.३७.६-१०) (६) यहाँके निवासी ऋपि लोग द्वारका गये थे (भाग० १०.९०.२८ (३); जिन्हें श्रीकृष्णका स्वर्गारोहण विदित था वे यहीं चले आये थे (भाग० ११.१.१-१६) ।

पिंडिका–स्त्री० [सं०] मूर्त्तियाँ तथा पिंडिका शुद्धार्थ पञ्चगव्यसे धोयी जाती हैं (मत्स्य० २६६.६) ।

पिच्छल–पु० [सं०] वासुकिके वंशका एक सर्प (हि० वि० को०) ।

पिच्छला–स्त्री० [सं०] अन्धकासुरके रक्तपानके लिए शिवजी द्वारा सृष्ट वहुत-सी मानस पुत्री मातृकाओंमेंसे एक मानस-पुत्री मातृका (मत्स्य० १७९.११) ।

पिण्याक–पु० [सं०] भगवान् रामने वनवासावस्थामें इङ्गुदीफल और वैरके पिण्याकका पिंड पिता दशरथको दिया था । क्योंकि मनुष्य जैसा अन्न खाता है वैसा ही अन्न उसके पितर या देवता खाते हैं (रामा० अयो० १०२.२९; १०५.३५; वायु० १६.१४) ।

पिता–पु० [सं०] ब्रह्मधानके दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (वायु० ६९.१३२) ।

पितामह–पु० [सं०] (१) धर्मशास्त्रके रचयिता एक ऋपि । (२) जगत्-पिता ब्रह्माका एक नाम (ब्रह्मां० ४.६.६६; ७.४५; ९.४६; मत्स्य० १.१४; वायु० २१.४५,४६; २२.१३-२६; २३.६१-९७; १०९.२४; १११.४३) ।

पितामहसर–पु० [सं०] एक सरोवर जो हिमालयके समीप में है, इसमें स्नान करनेसे अग्निष्टोम यज्ञका फल प्राप्त होता है (महाभा० वन० ८४.१४८) ।

पितुरंश–पु० [सं०] शरीरका वह हिस्सा जिसे मनुष्य पितासे प्राप्त करता है । वेनके शरीरके इसी अंशसे पुण्यात्मा राजा पृथु धनुप-वाण, गदा, ढाल तथा कवच

धारण किये उत्पन्न हुए थे (मत्स्य० १०.८-९)।

पितृकल्प—पु० [सं०] ३०वाँ और अन्तिम कल्प, जो ब्रह्माकी कुहू है (मत्स्य० २९०.११)।

पितृकार्य—पु० [सं०] द्विजोंके लिए पितृकार्यका महत्त्व देवकार्यसे भी अधिक माना गया है (वायु० ७३.५५-७३)

पितृकुल्या—पु० [सं०] एक प्रसिद्ध तीर्थस्थानका नाम (महाभा०)।

पितृकृत्—पु० [सं०] अर्कान्निके आठ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (वायु० २९.४०)।

पितृगण—पु० [सं०] (१) एक प्रकारके देवता जो अग्निके वर्गके हैं (भाग० १२.२७; ४.१.६३; वायु० ६५.४९-५२)। वंशकी वृद्धिके लिए इनकी पूजा होती है (भाग० २.३.८; वायु० ७५.७-३५; ८१.८-२०)। दक्षकी पुत्री स्वधासे इनका विवाह हुआ (भाग० ४.१.४९)। यह चन्द्रमाकी सुधाका पान करते हैं तथा अमावस्याको इनकी पूजा की जाती है। पितृगणके वर्ग :—सौम्य, काव्य, अग्निष्वात्त और वर्हिपद हैं (ब्रह्मां० २.२३.३९, ५८,७१; १३.६-३१; ८.१४-१५)। संसारमें पितरोंके स्थान तथा महत्त्वके लिए (वायु० ७१.१५-३४, ४५-६७)। (२) अंगिरस और स्वधाके पुत्रोंके नाम (भाग० ६.६.१९; १०.१७)। (३) पूर्व देवता; इनकी तीन कक्षाएँ कही गयी हैं=पितृ, पितामह और प्रपितामह जिनका रूप वसु, रुद्र तथा आदित्यका होता है (मत्स्य० १७.३६; १९.३)। इनके लोकका अधिपति यम है (मत्स्य० ११.२०)। पृथ्वी-रूपी गौको इन्होंने चाँदीके वर्तनमें दूहा था, अंतकने दूहनेका कार्य किया, यम वछड़ा वने तथा स्वधा रूपी सत्त निकला (मत्स्य० १०·१८-१९)। (४) कहते हैं सत्त्वसे इनकी सृष्टि हुई और सन्ध्या समय इनके कार्यक्रममें जागृति आ जाती है। स्वधासे इनका विवाह हुआ तथा यह चन्द्रमाकी अन्तिम कलाका पान करते हैं। इनके तीन वर्ग होते हैं=सौम्यगण, वर्हिषद्गण तथा अग्निष्वात्तगण (वायु० ५६.८; विष्णु० १.५.३५-६; ७.२७; २.१२.१३)। नोट विशेष—एक प्रकारके देवता जो सव जीवोंके “आदिपूर्वज” माने गये हैं (भाग० १.२.२७; १.४.६३; वायु० ६५.४९-५२)। मनुस्मृतिके अनुसार ऋषियोंसे पितर, पितरोंसे देवता और देवताओंसे सम्पूर्ण स्थावर-जंगम जगत्की उत्पत्ति मानी गयी है (वायु० ६२.२१)। द्विजोंके लिए पितृकार्यका महत्त्व देवकार्यसे भी अधिक रखा गया है। पितरोंके प्रति केवल जलदान (तर्पण) मात्र करनेसे भी अक्षय सुख मिलता है तथा वंशकी वृद्धि होती है (भाग० २.३.८; वायु० ७५.७-३५; ८१.८-२०)। (५) स्वर्गमें ये सात माने गये हैं :—तीनका कोई रूप नहीं है पर चारका रूप है। अनिश्चित रूपवाले वैराज कहलाते हैं जिनकी मानसी पुत्रीका विवाह हिमवान्से हुआ जिसके क्रौंच तथा मैनाक दो पुत्र हुए (मत्स्य० १३.१-७; १५.४२; ७२.१-५)। देवों तथा लौकिकोंके दो वर्ग हैं। इन लोगोंका एक दिन हम लोगोंके एक महीनेके वरावर है। अर्थात् हम लोगोंका कृष्णपक्ष इन लोगोंका दिन तथा शुक्लपक्ष इनकी रात है। हमारी एक शताब्दी=इनके तीन वर्ष (मत्स्य० १३२.३; १४१.५७, ६०; १४२.६-८)। श्राद्धके लिए शास्त्रोक्त स्थान—अग्नि, ब्राह्मणका हाथ, जल, पशुशाला, वकरे तथा घोड़ेके कान; परन्तु दक्षिणाभिमुख ही श्रेष्ठ माना गया है (मत्स्य० १५.३२-३३)। गृहनिर्माणमें भी इनकी पूजा होती है (मत्स्य० २५३.२५)।

पितृगाथा—स्त्री० [सं०] पितरों द्वारा पढ़ी गयी कुछ विशेष गाथा जो भिन्न भिन्न पुराणोंके अनुसार भिन्न-भिन्न हैं, जिसमें पितरोंने अपने कुलमें ऐसे पुरुषकी उत्पत्तिकी कामना की है जो नित्य पुण्यजला गंगा आदि नदियोंमें जलाञ्जलि दे, नित्य श्राद्ध करे, जो त्रयोदशीको शहद और घृतयुक्त खीर का भोग हमें दे, जो ब्या रही गौका दान दे, पृथिवीका दान दे, सुवर्णका दान दे, लोकोपकारके लिए कुएँ, तालाव, वावड़ी खुदावे, वाग-वगीचे लगावे आदि (मत्स्य० २०४.३-१८)।

पितृगीता—स्त्री० [सं०] वाराहपुराणान्तर्गत एक गीता विशेष जिसमें पितरोंका महत्त्व तथा माहात्म्य दिया हुआ है (वाराहपुराण)।

पितृतर्पण—पु० [सं०] पितृगण जिनका अधिपति यम है, तत्सम्वन्धी एक धार्मिक कृत्य विशेष रूपसे जलांजलि, जिसमें तिलोंका मिश्रण हो, प्रदान एवं ऐसे प्रिय पदार्थोंका प्रदान जिनसे पितरोंको तृप्ति हो (मत्स्य० १.१७; ८.५; १५·३४-५)।

पितृतिथि—स्त्री० [सं०] अमावस्या तिथि जो पितरोंको अति प्रिय तथा श्राद्धादिके लिए उपयुक्त तिथि है (मत्स्य० १६.२१)।

पितृतीर्थ—पु० [सं०] (१) गया तीर्थ। (२) हाथके अँगूठे और तर्जनीके वीचका भाग जिसका प्रयोग पितृकार्यमें किया जाता है (मनु० २.५९; याज्ञवल्क्य० १.१९)। (३) गया, वाराणसी, प्रयाग तथा विमलेश्वर आदि २२२ तीर्थ हैं (मत्स्य० २२.४-७९)।

पितृदत्ता—स्त्री० [सं०] विवाहोंके चार प्रकारोंमेंसे एक जिससे धर्मपत्नी प्राप्त होती है उनमेंसे तीन ये हैं—कालक्रीता, क्रयक्रीता तथा स्वयंयुता (ब्रह्मां० ४.१५.४)।

पितृनाथ—पु० [सं०] (१) पितरेंका अधिपति=यमराज। (२) अर्यमा नामक पितर जो और सव पितरोंमें श्रेष्ठ माने गये हैं (पितृकर्मनिर्णय)।

पितृपक्ष—पु० [सं०] आश्विनका कृष्णपक्ष पर शुक्लपक्ष देवपक्ष है। कुआरकी प्रतिपदासे अमावस्यातकका समय जो पितरोंको अतिप्रिय है। शास्त्रोंमें मनुष्योंके लिए देवऋण, ऋषिऋण तथा पितृऋण तीन ऋण कहे गये हैं। पितृकर्म करनेसे पितृगण प्रसन्न होते हैं और हमारा सौभाग्य वढ़ता है। इस पूरे पक्षमें अशौचके नियमोंका ही पालन करना पड़ता है तथा पितरोंका तर्पण और विशेष तिथिको श्राद्ध करनेसे पितृव्रत पूर्ण होता है (कर्मकाण्डमार्गप्रदीप)।

पितृपूजन—पु० [सं०] अगहन शुक्ल २ को पितरोंका पूजन कर व्रत करे जिससे पितृगण प्रसन्न होते हैं (लिंगपु०)।

पितृमास—पु० [सं०] मनुष्योंके ३० महीनोंके वरावर एक पितृमास होता है। पितृसंवत्सर=मनुष्योंके ३६० महीने; पितरोंके तीन वर्ष=हम लोगोंके (मनुष्योंके) १०० वर्ष (वायु० ५७.९)।

पितृयज्ञ—पु० [सं०] पितृपिंडप्रदान जो विशेषतया अमा-

वस्याको (इन्दुक्षये) होता है (मत्स्य० १६.२१; १७.४)।

पितृयान–पु० [सं०] अगस्त्यसे उत्तर, अजवीथिसे दक्षिण तथा वैश्वानर पथसे वाहर (ब्रह्मां० २.२१.१५९; ३५.१११; मत्स्य० १२४.९७; वायु० ५०.२०८; ६१. १००; विष्णु० २.८.८५-७)। यहाँ पुत्रवान् मुनिगण, लोकवृद्धि करनेवाले अग्निहोत्रियों तथा वैदिककर्मकांडियोंका निवासस्थान कहा जाता है जो शरीरके कल्पित दक्षिण (अंग) की ओरकी "इड़ा" नाड़ीसे प्राप्त होता है (भाग० २.२.२४)। ब्रह्माने आदि मन्वन्तरमें चार देवयान मार्गोंका निर्माण किया—देवोंके लिए सप्तर्षिलोक, गृहस्थोंके लिए प्राजापत्य लोक, संन्यासियोंके लिए ब्रह्मलोक और योगियोंके लिए अमृत स्थान। इनका द्वार रवि कहा गया है उसी प्रकार पितृयानोंका द्वार चन्द्र कहा गया है (वायु० ८.१९)।

पितृराज–पु० [सं०] दक्षिण दिशाका अधिपति अर्थात् यम (मत्स्य० १७४.१९)।

पित्र्य–पु० [सं०] सूर्यनिर्मित सोलह दिन-मुहूर्तोंमेंसे एक मुहूर्तका नाम (ब्रह्मां० ३.३.३९)।

पितृरूप–पु० [सं०] शिव, जो सम्पूर्ण प्राणियोंके पिता माने गये हैं।

पितृलोक–पु० [सं०] जहाँ अर्यमाके दक्षिण भागसे पहुँचा जाता है। आग्नीध्र इसे प्राप्त करना चाहता था (भाग० ३.३२.२०; ५.२.१-२, २२)। इसे नर्मदा-तटके 'मनोहर' तीर्थमें स्नान करनेवाला प्राप्त करता है (मत्स्य० १९४.७)।

पितृवर्ती–पु० [सं०] पुराणानुसार एक राजाका नाम। कुरुक्षेत्रनिवासी धर्मात्मा कौशिकके सात पुत्रों, जो गर्गके शिष्य थे तथा गुरुके आदेशसे गुरुकी कपिला गाय चराते थे, महान् दुर्भिक्षके कारण भूखसे व्याकुल जिन्होंने गुरुकी गऊ मारकर खानेकी ठानी, मेंसे सबसे छोटा एक जिसने गायको खाना ही है तो श्राद्धमें उपयोग कर खानेकी राय दी तब इसके और भाई भी सहमत हो गये, अतः भाइयोंमेंसे दो तो दैव विप्र बने, तीन पित्र्यकर्मके विप्र बने और एक श्राद्धमें अतिथि बना और वह स्वयं श्राद्ध करनेवाला बना था। विधिपूर्वक समन्त्रक श्राद्ध किया गया और गुरुसे कह दिया कि गौको बाघ खा गया। वे मरनेपर पहले जन्ममें उक्त पापसे व्याध बने किन्तु श्राद्धके प्रभावसे उन्हें पूर्व जन्मकी स्मृति बनी रही, दूसरे जन्ममें वे मृग बने, वहाँ भी उन्हें पूर्व जन्मकी स्मृति बनी रही। तीसरे जन्ममें मानसरोवरमें चक्रवाक हुए। एक वाटिकामें पाँचाल नरेशको देख मानसमेंके चक्रवाककी इच्छा राजा बननेकी हुई अतः वह विभ्राजका ब्रह्मदत्त नामक पुत्र हुआ और उसकी पत्नी सन्तति जो श्राद्धमें दी गयी गर्गकी गौ थी, देवलकी पुत्री रूपमें उत्पन्न हुई थी (मत्स्य० २०.३-३६)।

पितृव्रत–पु० [सं०] पितरोंके प्रीत्यर्थ किया जानेवाला एक व्रत जिसमें दूध देनेवाली गौ दान की जाती है। व्रत करनेवाला (व्रती) राजराजेश्वर होता है (मत्स्य० १०१. २९-३९)।

पितृसर्ग–पु० [सं०] सर्वप्रथम सारा संसार अन्धकारके गर्भमें था। न पृथ्वी थी, न वायु, न नक्षत्र थे, न दिशाएँ थीं, सूर्य, चन्द्र, रात, दिन कुछ भी नहीं था। ब्रह्माने केवल तपोयोगके बलपर वेदों और देवोंके सर्गोंकी सृष्टि की। वे आदिदेव कहलाये जो महासत्त्व, महान् ओजस्वी सकल मनोकामनाएँ देनेवाले देवदानव पूज्य थे वे सात वर्गोंमें विभक्त थे। इनमेंसे तीनका कोई रूप नहीं था। वे भावमूर्ति थे पर चारका निश्चित आकार था वे सूक्ष्म मूर्ति थे। भावमूर्ति तीन ऊपर रहते हैं। सूक्ष्ममूर्ति चार उनसे नीचे। उनके नीचे देवता। उनसे नीचे भूमि, ऐसी लोकपरम्परा है। इनसे मेघ बनते हैं उनसे वृष्टि, वृष्टिसे अन्न होता है। इन्हें सबके पितर खाते हैं। ये मनके समान वेगवान्, स्वधाका भक्षण करनेवाले, सबकी कामनाओंको पूरी करनेवाले, लोभ, मोह, भय और शोकसे रहित हैं (वायु० ७१.३७,५७,६५)।

पितृस्थान–पु० [सं०] आकाश तथा दक्षिण दिशा (वायु० ७६.३४)।

पितृहू–पु० [सं०] पुरञ्जनकी नगरीका दक्षिण प्रवेश द्वार। पुरञ्जन श्रुतधरके साथ इसी द्वारसे दक्षिण पांचाल पहुँचे थे। लाक्षणिक अर्थ=दाहिना कान (भाग० ४.२५.५०; २९.१२)।

पित्तल–पु० [सं०] केतुमाल देशका एक जनपद (वायु० ४४.१५)।

पित्तवर्ग–पु० [सं०] पित्त अग्नि है और शोणित भी इसी कक्षाका है जिसका स्थान नाभिक्षेत्रकी आँतोंमें हैं (ब्रह्मां० ३.७२.४७; वायु० ९७.४८)।

पिनाक–पु० [सं०] शिवजीका धनुष जिसके कारण उन्हें पिनाकी कहते हैं। इसी धनुषको श्रीरामचंद्रने सीतास्वयंवरके समय जनकपुरमें तोड़ा था (वायु० २५.२; ५४.१०८; १०१.३१७; रामचरितमा० दो० २४९—२६१)।

पिनाकधृक्–पु० [सं०] शिवजीका एक नाम (ब्रह्मां० ३. २३.५६; २४-४९; वायु० ५४.१०८; मत्स्य० १८०.२३; २८१.१४)। पिनाकधारी वीरभद्रने पूषाके दाँत तोड़े थे (विष्णु० १.९.६९; ५.१६.७)।

पिनाकी–पु० [सं०]—पिनाकपाणि, ११ रुद्रोंमेंसे एक। महेश्वरकी एक उपाधि (मत्स्य०५.३०; ६.१३; १२.८; २३.३६, ४१; ९५.३८; १५४.११८, १९४, ३९५, ४१०)। सतीसे इनका विवाह हुआ था तथा नंदी नामक साँड़ इनका वाहन कहा गया है। यह ईशान कोणके अधिपति हैं (मत्स्य० ६०.११; ६७.१६)।

पिपीतक–पु० [सं०] एक ब्राह्मण जिसने सर्वप्रथम 'पिपीतद्वादशी'का व्रत किया था—दे० पिपीतकी तथा भविष्यपु०।

पिपीतकी–स्त्री० [सं०] वैशाख शुक्ला द्वादशीको व्रत करे। इसे सर्वप्रथम पिपीतकने किया था जिसे यमदूत पकड़ ले गये थे। यमलोकमें प्याससे व्याकुल हो पिपीतक चिल्लाने लगा। बड़ी स्तुतिके पश्चात् यमराजने उसे पुनः मर्त्यलोकमें भेज दिया और वैशाख शुक्ला द्वादशीका व्रत बतलाया जिसमें ठंढे जलसे भरा घड़ा ब्राह्मणको देनेका बड़ा माहात्म्य है (भविष्यपु०)।

पिपीलिका–स्त्री० [सं०] मत्स्यपुराणानुसार दो चींटियों (पति, पत्नी)का प्रेमद्वंद्व। पति (नर) द्वारा मोदककण अन्य चींटी (मादा)को दिये जानेपर पत्नीने रोष प्रकट किया जिसपर पतिने खेद प्रकट करते हुए भविष्यमें सतर्क रहनेकी

प्रतिज्ञा की थी (मत्स्य० २०.३९)। उत्तर दिशाकी ओर इनका जाना अनिष्ट सूचक है (मत्स्य०२३८.७)।

पिप्पल–पु० [सं०] मित्र और रेवतीके तीन पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (भाग० ६.१८.६)।

पिप्पलविवाह–पु० [सं०] यह वैधव्यहर व्रत है जिसमें कन्याका विवाह पहिले पीपल (अश्वत्थ)से कर दिया जाता हैं (मार्कण्डेयपु०)।

पिप्पला–पु० [सं०] ऋक्ष पर्वतसे निकली भारतवर्षकी एक नदीका नाम (ब्रह्मां० २.१६.३०;वायु० ४५.१००)।

पिप्पलाद–पु० [सं०] (१) पुराणानुसार एक ऋषि जो वेदस्पर्श (ब्रह्मां० तथा विष्णु=वेददर्शी) ऋषिके शिष्य तथा अथर्ववेदकी एक शाखाके प्रवर्तक थे जो पैप्पलाद शाखाके नामसे प्रसिद्ध है (वायु० ६१.५१; ब्रह्मां० २.३५.५७; विष्णु० ६.३०.१०)। इस ऋषिने अंगारव्रतका माहात्म्य युधिष्ठिरको वतलाया था जिसका आधार शुक्र और विरोचनका संवाद था (मत्स्य० ७२.१, ५-६, ४५)। प्रायोपवेशके समय यह परीक्षित्से मिलने गये थे, इन्हें विष्णुकी योगशक्ति विदित थी (भाग० १.१९.१०; २.७.४५)। (२) दधीचि और प्रातिथेयीके पुत्र, अन्य मतसे दधीचि तथा सुवर्चाके पुत्रका नाम (स्कंदपु० माहे०-केदारखंड)।

पिप्पलायन–पु० [सं०] ऋषभके भरतज्येष्ठ १०० पुत्रोंमेंसे एक पुत्र जो परम भागवत ऋषि था। इसने निमिका ध्यान ब्रह्मरूपी नारायणकी ओर आकृष्ट किया था (भाग० ५.४.११; ११.२.२१; ३.३५-४०)।

पिप्पलायनि–पु० [सं०] वेददर्शके चार शिष्योंमेंसे एक शिष्यका नाम (भाग० १२.७.२)।

पिप्पली–स्त्री० [सं०] ऋष्यवान् पर्वतसे निकली वेदस्मृति आदि कई नदियोंमेंसे एक नदीका नाम (मत्स्य० ११४.२५)।

पिप्पलेश–पु० [सं०] नर्मदा-तटपर स्थित एक तीर्थस्थान (मत्स्य० १९०.१३-४)।

पिप्पलेश्वर–पु० [सं०] पिप्लाद मुनि द्वारा स्थापित नर्मदा-तटपर स्थित एक शिवलिंग (स्कंद० आव० रेवाखंड)।

पिप्पल्य–पु० [सं०] एक प्रवरप्रवर्तक ऋषि (मत्स्य० १९०.१५)।

पिलक–पु० [सं०] आन्ध्रवंशी राजा लम्बोदरका एक पुत्र तथा मेघस्वातिका पिता (विष्णु० ४.२४.४५)।

पिलपिच्छिका–स्त्री० [सं०] अन्धकासुरके रक्तपानके लिए शिवजी द्वारा सृष्ट वहुत-सी मानस-पुत्री मातृकाओंमेंसे एक मानस-पुत्री मातृका (मत्स्य० १७९.१३)।

पिलि–पु० [सं०] भार्गववंशका एक त्र्यार्षेय प्रवरप्रवर्तक ऋषि।

पिशंग–पु० [सं०] (१) देवजनी और मणिवरके अनेक पुत्रोंमेंसे एक यक्ष पुत्रका नाम (ब्रह्मां० ३.७.१२८)। (२) कैलाशसे दक्षिण-पूर्व दिशामें स्थित एक पर्वतका नाम (वायु० ४७.९)।

पिशंगमनु–पु० [सं०] ब्रह्मनामक अकार जो चौदह मुँहवाला है उसके ग्यारहवें मुखसे एकार नामका मनु उत्पन्न हुआ जिसका रंग खाकी है (वायु० २६.४३)।

पिशंगवर्ण–पु० [सं०] ग्यारहवें मनु एकारके रंगका नाम=खाकी रंग (वायु० २६.४३)।

पिशंगाभ–पु० [सं०] (ब्रह्मां=पिशंग)मणिवरके देवजनीसे उत्पन्न कई पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (वायु० ६९.१५९; ब्रह्मां० ३.७.१२८)।

पिशाच–पु० [सं०] (१) जाम्बवान्के जयन्त आदि सोलह पुत्रों, जो व्याघ्री नामकी पत्नीसे उत्पन्न हुए थे, मेंसे एक पुत्र (ब्रह्मां० ३.७.३०३)। (२) यक्षों और राक्षसोंसे पिशाच हीन कोटिके होते हैं (ब्रह्मां० ३.३.९७; ७.१६८)। ये वड़े गंदे और अशुचि रहते हैं तथा शिवके नियंत्रणमें चलते हैं (ब्रह्मां० २.३२.१-२; ३५.१९१; मत्स्य० ७.५; वायु० ९.५५; ३०.९०; ३१.३२)। इनका निवास-स्थान मरुस्थल वतलाया गया है। पुराणानुसार इन्हें क्रोधवशाके गर्भसे उत्पन्न कश्यपके पुत्र कहते हैं। महाभारत और ब्राह्मण ग्रंथोंके अनुसार इनकी सृष्टि ब्रह्माने की, पर मनु इन्हें प्रजापतिकी संतान कहते हैं। अन्य मतसे ये कपिशासे उत्पन्न क्रोधवशाके वंशज कहे जाते हैं। पिशाच १६ प्रकारके होते हैं जिनमें दो विशेष प्रभुत्वके समझे जाते हैं। इनके रूप तथा कार्य कुछ विचित्र होते हैं तथा ये वच्चोंको लगकर अधिक कष्ट देते हैं। इन लोगोंका विकृत रूप देखनेमें भयानक होता है। ब्रह्माके वरसे ये मनचाहे रूप धारण कर लेते हैं, इच्छानुसार छिप जाते तथा प्रकट होते हैं। दोनों सन्ध्या समय विचरण करते तथा उजाड़ घरों, त्यक्त जलाशयों, आचार और संस्कारभ्रष्ट मनुष्यों, राजपथ और उनके मोड़ों, द्वार तथा प्रवेशद्वारों, सड़कके किनारे लगे वृक्ष आदि इनके प्रिय निवासस्थान हैं। दूषित कर्मोंसे जीविकोपार्जन करनेवालोंके ये आराध्य देव हैं और पर्वसंधियोंपर मदिरा, मांस, तिल, लोहदान काले कपड़ों सहित इन्हें वलि देनेसे ये प्रसन्न होते हैं (ब्रह्मां० ३.७.३७६-४११; ८.७१; भाग० १.१५.४३; २.६.४३; १०.३८; ५.८.२५; १०.६.२७; ४५.२३; ६३.११; ८५.४१)। ये श्राद्धोंको नष्ट कर देते हैं (ब्रह्मां० ३.११.८१)। रावणने इन्हें परास्त किया था (ब्रह्मां० ३.७.२५६)। कलियुगमें मनुष्य इन्हींके ऐसे हो जाते हैं (भाग० १२.३.४०)। धार्मिक वाद-विवादोंमें भी ये विघ्न उपस्थित करते हैं (वायु० ६६.११८)।

पिशाचक–पु०[सं०] मानसरोवरके दक्षिणमें स्थित त्रिशिखर आदि पर्वतोंमेंसे एक पर्वतका नाम (वायु० ३६.२४) जो कुवेरका निवासस्थान है एवं पुण्यसलिला गङ्गा यहाँसे होकर वहती हैं (वायु० ३९.५७; ४२.३१)।

पिशाचगण–पु० [सं०] ये संख्यामें १६ जोड़े हैं जिन्हें ब्रह्माने दयाकर यह वरदान दिया—मनुष्योंके लिए अदृश्य होना तथा मनचाहे रूप धारण कर लेना.। रात्रिमें स्वच्छंदतासे घूमना तथा निर्जन खण्डहरों, अपवित्र स्थानों, राजपथों, द्वार, अर्गला, तीर्थों, नदियों, चैत्यवृक्ष, अट्टालिकाएँ, धूर्त्त, कृतघ्न, अनियमित रूपसे अर्जित धन आदि इनके निवास स्थान कहे गये हैं। पर्वोंपर मधु, मांस, दही, तिल, मदिरा, काला कपड़ा तथा धूपसे वलि देनेसे इनसे पिंड छुड़ाया जा सकता है (वायु० ६९.२६२-६४; २७६-८८; १००.१६९; १०१.२८)।

पिशाचमोचनयात्रा–स्त्री० [सं०] यह सांवत्सरिकयात्रा मार्गशीर्ष शु० १४को होती है। इसमें शिवके समीप यात्रा

करनेका विधान है। इस यात्रासे मृत व्यक्ति पिशाच नहीं होने पाता (काशीखंड)।

पिशाचिका–स्त्री० [सं०] ऋक्ष पर्वतसे निकली भारतवर्षकी एक नदी (ब्रह्मां० २.१६.३०; वायु० ४५.१००)।

पिशाची–स्त्री० [सं०] अन्धकासुरके रक्तपानके लिए शिवजी द्वारा सृष्ट कई मानस-पुत्री मातृकाओंमेंसे एक मानस-पुत्री मातृकाका नाम (मत्स्य० १७९.१६)।

पिशिताद–पु० [सं०] पिशाचोंका एक वर्ग। ये वायुतुल्य वेगवाले कहे गये हैं। इनके पैर तथा हाथ पीठकी ओर होते हैं और रणक्षेत्रोंमें हुआ रक्तपात ही इनका आहार है (वायु० ६९.२७८)।

पिशुन–पु० [सं०] कुरुक्षेत्र निवासी धर्मात्मा कौशिकके सात पुत्रों, जिन्होंने गुरु गर्गकी गऊ श्राद्धमें उपयोगकर खा डाली थी, मेंसे एकका नाम (मत्स्य० २०.३)।

पीठ–पु० [सं०] (१) पुराणानुसार वह स्थान जहाँ दक्ष-कन्या सतीका कोई अंग कटकर गिरा हो। ऐसे स्थानोंकी संख्याके बारेमें पुराणोंमें मतभेद है, कोई इन्हें ५१, ५३, ७७ मानते हैं। और किसी-किसीमें तो इनकी संख्या १०८ तक मानी गयी है। शिवचरितानुसार ये स्थान कुल ७७ हैं जिनमें ५१ महापीठ तथा २६ उपपीठ हैं। इनमें अवस्थान करनेवाली शक्तियाँ और भैरवोंके नाम तथा विवरणके लिए—दे० तंत्रचूड़ामणि, देवीभागवत तथा कालिकापुराण आदि। (२) एक असुर सम्भवतः मथुराके राजा कंसके एक मंत्रीका नाम जो कृष्ण द्वारा मारा गया था (महाभा० द्रोण० ११.५ भाग०)। (३) मुर राक्षसका एक सेनापति जो श्रीकृष्ण द्वारा मारा गया (भाग० १०.५९.१२-१४)।

पीठिका–पु० [सं०] मूर्त्तिका आधार जिसपर उसे स्थापित करते हैं, यहींपर पानी बहनेके लिए एक प्रणालक आवश्यक है। स्थण्डिला, वापी, यक्षी, वेदी, मण्डला, पूर्णचंद्रा, वज्रा, पद्मा अर्धशशी और त्रिकोणा, ये ही पीठिकाके दस प्रकार हैं। इनके आकार आदि भी विशद रूपसे वर्णित हैं (मत्स्य० २६२.१-१२) जो लिंगानुसार पत्थर, मिट्टी या काष्ठके हो सकते हैं (मत्स्य० २६२.१९-२०; २६९.८)।

पीड़ापर–पु० [सं०] खशा और कश्यपके लालावि आदि अनेक पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (ब्रह्मां० ३.७.१३५)।

पीत–पु० [सं०] शाल्मलिद्वीपके वैश्योंका नाम (विष्णु० २.४.३०)।

पीतभौम–पु० [सं०] पातालके चतुर्थतल=अतलकी भूमि (ब्रह्मां० २.२०.१४)।

पीतवासा–पु० [सं०] ३१वें कल्पका नाम। जिस कल्पमें ब्रह्माका पीतवर्ण था और इसी वर्णका उनका एक मानस-पुत्र उत्पन्न हुआ। माहेश्वरीके ध्यानसे ब्रह्माने महेश्वरके मुखसे विरूप गऊको उत्पन्न होते देखा जिसके चार पैर, चार मुख, चार हाथ, चार स्तन, चार आँखें आदि थीं। यह रुद्राणी थी जिसे चारों ओर उसके पुत्र घेरे थे, जो ब्राह्मणोंके कल्याणार्थ स्थित है और जो गायत्रीरूपा है (वायु० २३.१-२१)।

पीताब्धि–पु० [सं०] समुद्रका जल चल्लू भरमें पी जानेके कारण अगस्त्य ऋषिका एक नाम—दे० अगस्त्य (१)।

पीताम्बर–पु० [सं०] पीताम्बर धारण करनेके कारण विष्णुका एक नाम (वायु० १०४.४७)। ताराके उदरसे उत्पन्न चन्द्रपुत्रका वस्त्र (मत्स्य० २४.१)।

पीतायुध–पु० [सं०] पुरुवंशी राजा मनस्युका पुत्र तथा धुन्धुका पिता (मत्स्य० ४९.२)।

पीवर–पु० [सं०] (१) तामस मनुके सप्त ऋषियोंमेंसे एक ऋषि जो वशिष्ठके वंशज थे (ब्रह्मां० २.३६.४८; विष्णु० ३.१.१८)। (२) क्रौञ्चद्वीपके अधिपति द्युतिमान्‌के सात पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम। क्रौंचद्वीपके 'पीवर' जनपदका नामकरण इन्हींके नामपर हुआ था (वायु० ३३.२१, २२; विष्णु० २.४.४८)।

पीवरक–पु० [सं०] क्रौंचद्वीपका एक भूभाग जिसे 'पावन' भी कहते हैं (ब्रह्मां०२.१९.७२)।

पीवरी–स्त्री० [सं०] (१) प्रजापति पुलस्त्य और क्षमाकी एक पुत्रीका नाम जिसके परम तेजस्वी कर्दम आदि चार भाई थे (ब्रह्मां० २.११.३१; वायु० २८.२६)। (२) अग्निष्वात्त पितृगणकी मानस-पुत्री जो २८वें द्वापरमें शुककी पत्नी हुई (ब्रह्मां० ३.१०.७७-७८)। (३) बर्हिषद पितृगणकी मानस पुत्री जिसने कठिन तप करके योगमाताकी उपाधि प्राप्त की थी (मत्स्य० १५.५-११)। विष्णुके आशीर्वादसे यह व्यासपुत्र शुककी पत्नी हुई तथा चार पुत्र और एक पुत्रीको जन्म देनेके पश्चात् मोक्षकी भागिनी हुई (ब्रह्मां० ३.८.९३)। (४) मार्कण्डेयके मूर्धन्यामें उत्पन्न पुत्र ऋषि वेदशिराकी पत्नी (वायु० २८.६) जिसके मार्कण्डेयगण पुत्र थे (ब्रह्मां० २.११.८)। (५) केतुमाल देशकी कई पुण्य नदियोंमेंसे एक नदीका नाम (वायु० ४४.२२)। (६) धर्ममूर्त्तिधर अग्निष्वात्त पितृगणकी मानसपुत्री जो शुककी पत्नी तथा कीर्त्तिमतीकी माता थीं (वायु० ७३.२६)।

पुंजिकस्थली–स्त्री० [सं०] पुञ्जकस्थला, एक प्रसिद्ध अप्सराका नाम जो मार्कण्डेय ऋषिके आश्रममें उनका तप भंग करनेके अभिप्रायसे इन्द्र द्वारा प्रेषित होकर गेंद खेलते-खेलते थक गयी केश बिखर गये थे इसी बीच वायुने उसका वस्त्र उड़ा दिया। ऐसी अवस्थामें कामदेवने बाण छोड़े किन्तु मुनिकी तपस्यामें विघ्न डालनेमें असफल रही तथा माधव (वैशाख) महीनेमें सूर्यके रथपर सौर गणके अन्य (आर्यमा, पुलह आदि) के साथ प्रतिष्ठित रहती है (भाग० १२.८.२६, ११.३४; ब्रह्मां० २.२३.४; ३.७.१४; ४.३३.१९; वायु० ५२.४; ६९.४९; विष्णु० २.१०.५)। दुर्वासा ऋषिके शापसे यह विरज वन्दरकी पत्नीके गर्भसे उत्पन्न हुई थी और अंजना नाम पड़ा—दे० अंजना।

पुंडरीक–पु० [सं०] (१) कुशके वंशज नभका पुत्र तथा क्षेमधन्वाका पिता (भाग० ९.१२.१; ब्रह्मां० ३.६३.२०२; वायु० ८८.२०२; विष्णु० ४.४.१०६; मत्स्य० १२.५३)। (२) क्रौंचद्वीपके एक पर्वतका नाम, जो वहाँके द्विविद पर्वतके बाद तथा दुन्दुभिस्वन पर्वतसे पहले है (ब्रह्मां० २.१९.६८; मत्स्य० १२२.८१; वायु० ४९.६३)। (३) कद्रू और कश्यपके पुत्र अनेक सिर तथा अनेक फणवाले हजारों नागोंमेंसे एक नागका नाम (वायु० ६९.७२)। (४) एक यज्ञका नाम (मत्स्य० ५३.२७; वायु० ७१.७७)। (५) अग्निकोणके दिग्गजका नाम, जो रथंतरका पुत्र है (ब्रह्मां० ३.७.३३५;

वायु० ६९.२१९)। (६) कुरुक्षेत्र सीमाके अन्तर्गत एक तीर्थका नाम जहाँ स्नान करनेसे पुण्डरीक यज्ञका फल प्राप्त होता है (ब्रह्मां० ३.१३.५६; वायु० ७७.५५; (महाभा० वन० ८३.८३)।

पुंडरीकपुर–पु० [सं०] पितरोंके श्राद्धके लिए एक अति प्रशस्त पवित्र तीर्थका नाम जहाँ किये गये श्राद्धका अनन्त फल कहा गया है (मत्स्य० २२.७७)।

पुंडरीकवान्–पु० [सं०] क्रौंचद्वीपके सात मुख्य पर्वतोंमेंसे एक पर्वतका नाम (विष्णु० २.४.५१)।

पुंडरीका–स्त्री० [सं०] (१) वशिष्ठ और ऊर्जाकी सबसे बड़ी पुत्री जो प्राण (वायुपुराणानुसार पांडु जो विधाता तथा आयतीका पुत्र था) की पत्नी तथा द्युतिमान्की माता थी (ब्रह्मां० २.११.९,४०; वायु० २८.७.३४-५)। (२) नील पर्वतपर स्थित पयोद नामक झीलसे निकली एक नदीका नाम (ब्रह्मां० २.१८.७०)। (३) क्रौंचद्वीपकी ७ प्रधान नदियोंमेंसे एक नदीका नाम (ब्रह्मां० २.२९.७५; मत्स्य० १२२.८८; वायु० ४९. ६९; विष्णु० २.४.५५)। (४) एक अप्सराका नाम; जिसने अर्जुनके जन्मोत्सवमें उपस्थित हो नृत्य किया था (ब्रह्मां० ३.७.८; वायु० ६९.७; (महाभा० आदि० १२२.६३)। (५) मेरु पर्वतके दक्षिण भागसे निकलनेवाली एक नदीका नाम (वायु० ४७.६७)।

पुंडरीकाक्ष–पु० [सं०] (१) कमलनयन होनेके कारण विष्णुका एक नाम (वायु० १०६.५५; १०८.८९; १०९.२४, ३४)। (२) श्रीदेवीके भाई अच्युत (ब्रह्मां० ४.३९.४८); सब यज्ञोंके अधिष्ठाता भगवान् (मत्स्य० २३९.३८)।

पुंड्र–पु० [सं०] (१) देवरक्षितके अधीनस्थ एक देश, अन्य कई देशोंके साथ इसका शासक देवरक्षित था (विष्णु० ४.२४.६४)। (२) हेमकूट और हिमालयके बीचका एक नगर जो सदा हिमाच्छादित रहता है (ब्रह्मां० २.२२.५३; वायु० ५१.४८)। (३) वसुदेवके एक पुत्रका नाम जो धनुर्धारी जरा नामक व्याध हुआ था (मत्स्य० ४६.२१-२२), पर वायु पुराणानुसार वह (पुंड्र) एक राजा हुआ (वायु० ९६.१८२)। (४) एक दैत्यका नाम जो बलिका क्षेत्रज पुत्र था और इसके नामपर एक देशका नाम पड़ा। बलिकी पत्नीके गर्भसे उत्पन्न दीर्घतमाका पुत्र, एक वालेय क्षत्र (भाग० ९.२३.५; मत्स्य० ४८.२५; वायु० ९९.२८, ८५)। (५) एक प्राचीन जातिका नाम जिसका उल्लेख ऐतरेय ब्राह्मणमें है। ब्रह्माण्ड तथा मत्स्य पुराणानुसार ये लोग पूर्वी भारतके, परन्तु विष्णु० तथा मार्कण्डेयपुराणानुसार ये दक्षिणके निवासी थे। (६) याज्ञवल्क्यके पन्द्रह शिष्योंमेंसे एक शिष्यका नाम (ब्रह्मां० २.३५.२९)। (७) किष्किन्धाधिपति-वालीके सामन्त तथा सेनानायक प्रधान वन्दरोंमेंसे एक प्रधान वन्दरका नाम (ब्रह्मां० ३.७.२३७)। (८) सुगंधी और वसुदेवके दो पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (ब्रह्मां० ३.७१.१८६; वायु० ९६.१८२)।

पुंड्रकेतु–पु० [सं०] विषंगके सहायतार्थ नियुक्त भंडका एक पुत्र तथा सेनापति जो त्वरितासे मारा गया था (ब्रह्मां० ४.२१.७९; २५.२८.९७)।

पुंड्रगण–पु० [सं०] (१) एक जाति तथा पूर्वका एक जनपद (मत्स्य० ११४.४५)। (२) पूर्वका एक देश जिसका नामकरण बलिके पुत्र पुंड्रके नामपर हुआ था (ब्रह्मां० २.१६.५४; ३.७३.१०९; ७४.३३, ८७, १९७; ४.२९.१३१; विष्णु० २.३.१६)।

पुंड्रवर्द्धन–पु० [सं०] पुंड्र देशकी प्राचीन राजधानी जो किसी समयमें हिन्दुओं तथा बौद्धोंका तीर्थस्थान था। स्कंद-पुराणानुसार यहाँ 'मंदार' नामक शिवमूर्ति थी। देवी-भागवतके अनुसार सतीके देहांश गिरनेसे जो पीठ बने उनमें यह भी एक पीठ है। यहाँ पाटला नामकी सती देवीकी मूर्ति स्थापित है (मत्स्य० १३.३५)।

पुंड्रा–स्त्री० [सं०] कुशद्वीपकी सात प्रधान नदियोंमेंसे एक (छठी) नदी (मत्स्य० १२२.७३)।

पुंसवन–न० पु० [सं०] (१) एक वर्षमें समाप्त होनेवाला एक व्रत विशेष। कश्यपके आदेशसे दितिने इन्द्रका वध करनेकी क्षमता रखनेवाले एक पुत्रकी कामनासे यह व्रत किया था। मार्गशीर्षके शुक्ल पक्षमें आरम्भ होनेवाला यह व्रत विशेषतया पतिकी आज्ञासे स्त्रियाँ ही करती हैं। इसमें हविश्शेषसे लक्ष्मीनारायणकी पूजा होती है और १२ आहुतियाँ अग्निको देते हैं। यह क्रम १२ महीनेतक चलता है और कार्त्तिकके अन्तिम दिन स्त्री उपवास करती है। दूसरे दिन पाकयज्ञके नियमानुसार पति बलि या नैवेद्य देता है। ब्राह्मण-भोजनोपरान्त अवशेष चरु पत्नीको दिया जाता है जिससे मनोवांछित फल प्राप्त होता है। इसे अविवाहित तथा विवाहित स्त्रियाँ और माताएँ शुभकामनार्थ करती हैं (भाग० ६.१८.४७-५४; १९.५.२८)। (२) वायु-अंजना मिलन स्थान जहाँ हनुमान्का जन्म हुआ था (ब्रह्मां० ३.७.२२४)। (३) एक संस्कार विशेष जो द्विजातियोंके १६ संस्कारोंमेंसे दूसरा है। गर्भिणीके पुत्रप्रसव करानेके अभिप्रायसे गर्भाधानके तीसरे महीने होता है (मत्स्य० २७५.१६)।

पुंश्चली–स्त्री [सं०] स्त्रियोंका एक वर्ग विशेष जो मय-पुत्र बल नामक असुरके जँभाई लेनेपर उसके मुखसे निकला था (भाग० ५.२४.१६)।

पुण्यजन–पु० [सं०] यक्षगण। पुण्यजनी, जिसका विवाह मणिभद्रसे हुआ था, के पुत्र और पौत्र (वायु० ६९.१५७; ८८.१), जिनकी उपासना रक्षाकी कामनासे की जाती है (भाग० २.३.८; ब्रह्मां० ३.७.१६२)। ककुद्मी जब ब्रह्मलोक गये हुए थे, उनकी अनुपस्थितिमें इन्होंने (पुण्यजनोंने) कुशस्थलीपर अधिकार कर लिया था (ब्रह्मां० ३.६८.१; विष्णु० ४.२.१)।

पुण्यजनी–स्त्री० [सं०] मणिभद्रकी पत्नी जिसके २४ पुत्र तथा अनेक पौत्र तथा प्रपौत्र हुए (ब्रह्मां० ३.७.१२१, १२६; वायु० ६९.१५३)।

पुण्यनिधि–पु० [सं०] मथुराके एक राजा जो विन्ध्यावलीके पति थे। महालक्ष्मीने इनके यहाँ पुत्री रूपमें निवास किया था, जिनकी प्रसन्नता तथा दर्शनसे राजाको मोक्ष मिला (स्कंद० ब्राह्म० सेतु-मा०)।

पुण्यप्रदा–स्त्री० [सं०] आश्विन शुक्ल द्वितीयाको किसी प्रकारका दान दे तथा व्रत करे तो बड़ा फल होता है (स्कंदपु०)।

पुण्यवान्–पु० [सं०] वृषभके पुत्र तथा पुण्यके पिताका

नाम (मत्स्य० ५०.२९)।

पुण्यश्लोक–पु० [सं०] राजा नल, युधिष्ठिर आदिकी एक उपाधि अर्थात् पुण्यकीर्त्ति 'पुण्यश्लोको नलो राजा पुण्यश्लोको युधिष्ठिरः। पुण्यश्लोका च वैदेही पुण्यश्लोको जनार्दनः॥' (भाग० १.८.३२)।

पुण्या–स्त्री० [सं०] क्रतु और संनतिकी दो पुत्रियोंमेंसे एक पुत्री जो पूर्णमास-पुत्र पर्वशके पुत्रको व्याही थी। उक्त दम्पतीके उक्त दो पुत्रियोंसे अतिरिक्त साठ हजार ऊर्ध्वरेता-पुत्र हुए जो अरुणके आगे सूर्यके रथको घेर कर चलते हैं—वालखिल्य। ये आभूतसंप्लवस्थायी हैं (ब्रह्मां० २.११.३८; वायु० २८.३३)।

पुण्याहवाचन–पु० [सं०] धार्मिक शास्त्रोक्त क्रिया-पद्धतिका प्रथम कृत्य —दे० ब्राह्मणवाचन (मत्स्य० २७५.३)।

पुण्येयु–पु० [सं०] भद्राश्वके धृता अप्सरासे उत्पन्न दस पुत्रोंमेंसे सवसे कनिष्ठ एक पुत्रका नाम (मत्स्य० ४९.६)।

पुण्योदा–स्त्री० [सं०] (१) एक स्वर्गीय नदी जिसका उद्गम चन्द्रमासे हुआ है। यह मेरु पर्वतके चारों ओर होती हुई चार दिशाओंमें वहती है। इसमेंसे एक मन्दर और चैत्ररथ पर्वतोंका चक्कर लगाकर अरुणोद झीलमें गिरती है (वायु० ४२.३, ८, १५)। (२) केतुमालकी कई पुण्यसलिला नदियोंमेंसे एक नदीका नाम (वायु० ४४.१९)।

पुत्–पु० [सं०] एक नरकका नाम जिससे पुत्र उत्पन्न होनेके पश्चात् ही उद्धार होता है (ब्रह्मां० २.३६.१५१; विष्णु० १.१३.४२)।

पुत्र–पु० [सं०] (१) वशिष्ठके सात सप्तर्षि पुत्रोंमेंसे एकका नाम (वायु० २८.३६)। (२) स्वायम्भुव मनुके दस महातेजस्वी पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (वायु० ३१.१८)। (३) प्रियव्रतके दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्र जो राजपाट छोड़ योगमें रत रहता था (विष्णु० २.१.७-९)।

पुत्रक–पु० [सं०] कुरु राजाके पाँच पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (वायु० ९९.२१८)।

पुत्रदा (एकादशी)–स्त्री० [सं०] पौष शुक्ला ११, जिस दिन व्रत करनेसे पुत्र प्राप्त होता है। इसे भद्रावतीके राजा वसुकेतुने किया था और उन्हें पुत्र प्राप्त हुआ (ब्रह्मवैवर्त्तपु०)।

पुत्रधर्मा–पु० [सं०] स्वर्भानुके नहुष आदि पाँच पुत्रोंमेंसे एक (द्वितीय) पुत्रका नाम (वायु० ९२.२)।

पुत्रव–पु० [सं०] आंगिरसवंशज एक त्र्यार्षेय प्रवरप्रवर्तक ऋषिका नाम (मत्स्य० १९६.३९)।

पुत्रव्रत–पु० [सं०] भाद्रपद कृष्णा सप्तमीको उपवास करे तथा विष्णुका पूजन करे। यदि यह व्रत वर्षभर प्रत्येक कृष्णा ७ को कर, विष्णुका विधिवत् पूजन करे तो पुत्रवान् होता है (वाराहपु०)।

पुत्रसप्तमी–स्त्री० [सं०] माघ शुक्ला षष्ठीको व्रत करे, सप्तमीको सूर्यकी पूजा कर हवन करे तथा ब्राह्मण-भोजन कराये। मासके दोनों पक्षोंमें इसी प्रकार वर्षभर करनेसे यह व्रत पूरा होता है और व्रतीको उत्तम पुत्र प्राप्त होता है (आदित्यपु०)।

पुत्रिकषेण–पु० [सं०] आंध्रवंशका एक राजा जिसे पुरीकषेण भी कहते हैं। इसने २१ वर्षोंतक राज्य किया (वायु० ९९.३५२)।

पुत्रिका–स्त्री० [सं०] मौनेय देवगन्धर्वोंकी छोटी वहिनें ३४ अप्सराओंमेंसे एक अप्सराका नाम (वायु० ६९.५)।

पुत्रिकाधर्म–पु० [सं०] अपुत्र-पिता अपनी पुत्रीका विवाह कर जामातासे यह वचन ले लेता है कि वह उनके पुत्र अर्थात् दौहित्रको ही अपना उत्तराधिकारी वनायेगा। यद्यपि स्वायंभुव मनुको पुत्र था, इसपर भी उन्होंने आकूतीके पुत्रको अपना दत्तक पुत्र अंगीकार किया था (भाग० ४.१.२, ५)।

पुत्रिकापति–पु० [सं०] जामाता (वायु० ७९.७८) यह सपिंडज नहीं होता, अतः श्वसुरका श्राद्ध नहीं कर सकता है (ब्रह्मां० ३.१५.५२)।

पुत्रेष्टि–पु० [सं०] पुत्रप्राप्तिके लिए किया गया यज्ञ जिसे दितिने किया था जिसमें आपस्तम्त्र पुरोहित थे (मत्स्य० ७.३३-३४)। वैवस्वत मनुको इस यज्ञसे इल पुत्र प्राप्त हुआ था (मत्स्य० ११.४०)। अवध-नरेश दशरथको इसी यज्ञके पश्चात् जिसमें शृङ्गी ऋषि पुरोहित थे चार पुत्र हुए थे (राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न) (रामायण, वाल० १९४-५)।

पुनपुना–स्त्री० [सं० पुनःपुना] मगधकी एक छोटी नदी जो गयाके पाससे वहती है और पवित्र मानी गयी है। पितृपक्षमें यहाँ पिण्डदानका बड़ा महत्त्व लिखा है (पितृकर्मनिर्णय त्रिलोकनाथमिश्र कृत)।

पुनर्वसु–पु० [सं०] (१) एक नक्षत्र जिसमें श्राद्धादि शुभ कार्य होते हैं (भाग० ५.२३.६; वायु० ६६.४८; ८२.४; ब्रह्मां० ३.१८.४)। (२) दरिद्योतका एक पुत्र तथा आहुक और आहुकीका पिता (भाग० ९.२४.२०-१)। (३) अभिजित् (भाग० = दरिद्योत) का पुत्र जिसने पुत्र-प्राप्तिके लिए अश्वमेध यज्ञ किया था जिसके अतिरात्रके समय इन्हें आहुक और आहुकी यमज प्राप्त हुए थे (ब्रह्मां० ३.७१.११९; वायु० ९६.११८; विष्णु० ४.१४.१४-५)।

पुमान्–पु० [सं०] इक्कीसवें कल्पका नाम (मत्स्य० २९०.८)।

पुरंजन–पु० [सं०] (१) एक वड़े विद्वान् राजाका अज्ञात नाम तथा आचरणका एक मित्र था। राजा भिन्न-भिन्न प्रकारके आनन्दोंकी खोजमें निकला। हिमालयके दक्षिणमें भोगवतीके तुल्य ९ प्रवेश द्वारोंवाली एक नगरी मिली जहाँ यह संभव था। वहाँ अकस्मात् उसकी भेंट एक सुंदर स्त्रीसे हुई जिसके रक्षार्थ एक सर्प तथा अनेक स्त्री-पुरुष थे। विवाह-प्रस्ताव स्वीकृत होनेपर दोनोंने आनन्दपूर्वक १०० वर्ष व्यतीत किये। नगरके भिन्न-भिन्न द्वारोंसे पुरंजन, विभ्राजित, सौरभ, दक्षिण और उत्तर पाँचाल, ग्रामक, वैशस आदि राज्योंको देखने जाता था। एक वार आखेटसे लौटनेपर वह अपनी रानीसे मिलने गया, पर उसे पृथ्वीपर दुःखी पड़ी पाया। प्रेममें वशीभूत उसने रानीको आश्वासन दिया और पुनः उसके प्रेमपाशमें आबद्ध हो गया। इसके ११०० पुत्र तथा ११० पुत्रियाँ थीं जिनका योग्य वधुओं तथा वरोंसे इसने व्याह कर दिया। इसके पश्चात् वह पशु यज्ञोंमें व्यस्त हो गया और इसी वीच चंडवेग गंधर्वके अनु-

गामियोंने पुरंजनकी नगरीपर आक्रमण कर दिया, पर प्रवेश द्वारके संरक्षकोंने अकेले एक शताब्दीतक नगरीकी रक्षा की जिससे वहाँके निवासी तथा सम्बन्धी घोर कष्टमें पड़े।

एक बार कालकी एक पुत्री पुरुके साथ विवाह करनेकी इच्छासे यवनोंके अधिपति 'भय'के पास गयी जिसने उसे पत्नी न बना अपनी बहिन बनाया। कालपुत्री तथा उसके भाई प्रज्वारके साथ 'भय' देशाटनको निकला। उसके भ्रमणके समय यवनोंने पुरंजनकी नगरीपर आक्रमण किया, प्रज्वारने उसे जला भस्म कर दिया, पुरंजनको बन्दी बनाकर यवन ले गये और यज्ञमें बलि दिये गये पशुओंने पुरंजनके टुकड़े-टुकड़े कर डाले। पुनर्जन्ममें यह विदर्भके राजसिंहकी पुत्री हुआ जिसका विवाह मलयध्वज पाण्ड्यसे हुआ और इसके एक पुत्री तथा सात पुत्र हुए जो सब द्रविड़ देशके राजा हुए। जब पाण्ड्य तपस्या करने गये यह भी साथ गयी। पाण्ड्यकी मृत्युपर यह अति दुःखी हुई और यह स्वयं प्राण त्यागनेपर उद्यत हो गयी। ठीक इसी समय एक ब्राह्मणसे उसकी भेंट हो गयी है। ब्राह्मणके कथनानुसार कुछ दिनों पूर्व ये दोनों (पाण्ड्य- पत्नी और ब्राह्मण) मानसरोवर झीलके राजहंस थे और इनमें घनी मित्रता थी। यह गृहस्थीमें चली आयी और अनेक कष्टोंको झेलती रही। अपना पूर्व परिचय सुन पुरंजनको बीती बातें स्मरण हो आयी जिससे बड़ी सांत्वना मिली (भाग० ४. अ० २५-२८ पूरा)।

लाक्षणिक अर्थ—इसमें जीव और परमात्माका रूपक है। पाँचाल=पाँच ज्ञानेंद्रियाँ है और नगरके ९ प्रवेश द्वार=शरीरकी नव (९) इन्द्रियाँ हैं। जीव कभी स्त्री कभी पुरुष होता है और कभी ईश्वर रूप हो जाता है और कभी मनुष्य, कभी पशु भी अपने कर्मानुसार होता रहता है, (भाग० ४.२९.२-९, २९) (२) एक असुर जिसका नगर तीसरे तलमें है (ब्रह्मां० २.२०.२७)।

पुरंजनी—पु० [सं०] पुरंजनकी पत्नी जो एक अनिंद्य सुंदरी थी जिसकी रक्षा पाँच फणोंवाला एक सर्प तथा अनेक भृत्य करते थे। पुरंजनकी प्रार्थनापर इसने उनसे विवाह किया तथा वर्षोंतक विवाहित जीवन व्यतीत किया (भाग० ४.२५.२०-२४, ४३-४४)। पतिके आखेटार्थ जानेपर यह अति खिन्न हुई थी पर पतिके लौट आने तथा आत्म-समर्पण करनेपर शांत हुई (भाग० ४.२६, ४, १३-२६)। यह ११०० पुत्र तथा ११० पुत्रियोंकी माता थी (भाग० ४.२७, ६-७)। लक्षणार्थः—पुरंजनी=बुद्धि (भाग० ४.२९.५), दे० पुरंजन।

पुरंजय—पु० [सं०] (१) एक सूर्यवंशी राजा जो विकुक्षिका पुत्र तथा अनेनाका पिता था जिसे इन्द्रवाह भी कहते थे। विष्णुपुराणानुसार एक बार जब देवता लोग दैत्योंसे हारकर विष्णुके पास गये तब उन्होंने सबको राजा पुरंजयके पास भेज दिया जो इस युद्धमें पार्ष्णिग्राह बने। इन्द्र बैल बने और इन्द्ररूपी बैलके ककुदपर बैठकर पुरंजयने युद्धमें दैत्योंको परास्त किया अतः ककुत्स्थ कहलाये। यह राजर्षि थे (भाग० ९.६.१२-२०; विष्णु० ४.२.२०-३२)। (२) पुलिंद, यदु और मद्रक आदि जातिके मागधोंका एक राजा जो ब्राह्मणद्वेषी जातियोंकी स्थापना कर क्षत्रियोंका मूलोंच्छेदन करेगा तथा पद्मावतीसे गंगातट-पर स्थित प्रयाग तकके देशपर शासन करेगा (भाग० १२.१.३६-३७)। (३) बृहद्रथ वंशका अन्तिम पुरुष जिसे उसीके मन्त्री शुनकने मार अपने पुत्रको राजा बनाया था (भाग० १२.१.२-३)। (४) शृंजय (संजय=मत्स्य०) का पुत्र जो इन्द्रसम पराक्रमी था जिसका यशोगान स्वर्गमें भी होता था (ब्रह्मां० ३.७४.१४-१५; मत्स्य० ४८.१२; वायु० ९९.१४)। जनमेजय इसीका पुत्र था (विष्णु० ४.१८.४-५)। (५) मेधावीका एक पुत्र तथा उर्वका पिता (मत्स्य० ५०.८४)। (६) सुशांतिका पुत्र तथा ऋक्षका पिता (विष्णु० ४.१९.५७)। (७) विंध्यशक्तिका पुत्र तथा रामचंद्रका पिता (विष्णु० ४.२४.५६)।

पुरंदर—पु० [सं०] (१) वैवस्वत मन्वंतरके इन्द्र जिन्होंने शत्रुका नगर तोड़ा था अतः यह नाम पड़ा (भाग० ८.१३.४; ९.८.८; १०.७७.३६-७; १२.८.१५; ब्रह्मां० २.३६.२०५; वायु० ३४.७५; ६२.११८; ६४.७; ६७.१०२; विष्णु० ३.१.३१,४३; ५.२१.१६)। (२) इन्द्रने आदित्य-शयन व्रत किया था (मत्स्य० ५५.३२; १७८.६५; २४६.६९; २४८.१४)। (३) स्थापत्य कलाका प्रवर्त्तक एक आचार्य (मत्स्य० २५२.२)।

पुरन्दरधाम—पु० [सं०] पुरंदरका निवासस्थान (मत्स्य० २७४.७८)।

पुर—पु० [सं०] (१) इसे शिवने मारा था, त्रिपुर (मत्स्य० ५५.१६)। (२) नगर जिसकी स्थापना सर्वप्रथम पृथुके समयमें हुई थी (ब्रह्मां० २.३६.१९७; ३.५०.९; ५६.२४; ६३.१६५; ६९.४०; ४.३८.४४; विष्णु० १.६.१८-१९; ५.३६.६; वायु० ३४.१०;४८.७)। अराजकताके समय जनता भाग जाती है (मत्स्य० ६.१३, १०, ३२; ४७.२५७)।

पुरजित्—पु० [सं०] (१) जांबवतीके गर्भसे उत्पन्न श्रीकृष्णके दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (भाग० १०.६१.११,१२)। (२) भण्डके कई सेनापतियोंमेंसे एक सेनापति (ब्रह्मां० ४.२१.८३)।

पुरवस—पु० [सं०] मधुका एक पुत्र तथा पुरुद्वान्का पिता (मत्स्य० ४४.४४)।

पुरशत—पु० [सं०] शतशृंग पर्वतपर यक्षोंके १०० नगर, (वायु० ३९.५४)।

पुरहूत—पु० [सं] इन्द्रका एक नाम—दे० इन्द्र।

पुराकल्प—पु० [सं०] ब्राह्मणके १० लक्षणों, हेतु, निन्दा, प्रशंसा, संशय, विधि, परकृति, पुराकल्प, पुराकल्पकल्पना, व्यवधारणकल्पना उपदेश मेंसे एक लक्षण (वायु० ५९.१३७)।

पुराजित्—पु० [सं०] भण्डके ३० पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (ब्रह्मां० ४.२६.४९)।

पुराण—पु० [सं०] ग्रंथ विशेष जिसमें सृष्टि, मनुष्य, देवों, दानवों, राजाओं, महात्माओं, ऋषियों तथा मुनियों आदिके प्राचीन वृत्तांत लिपिबद्ध हैं। पुराण १८ हैं जिनके नाम पुराणानुसार ये हैं—विष्णु (वैष्णव), पद्म, ब्रह्म (ब्राह्म), शिव (शैव), भागवत, नारदीय, मार्कण्डेय, अग्नि

(आग्नेय), ब्रह्मवैवर्त्त, लिंग, वाराह, स्कंद (स्कांद), वामन, कूर्म, मत्स्य (मात्स्य), गरुड़ (गारुड़), ब्रह्मांड और भविष्य। इन १८ पुराणोंकी पहचानके लिए निम्नलिखित श्लोक जिसमें सूत्ररूपमें पुराणोंकी नामावली है, अति उपयोगी है—'मद्वयं भद्वयं चैव ब्रत्रयं वचतुष्टयम्। अ, ना, प, लिं, ग, कू, स्कानि पुराणानि पृथक्-पृथक्॥ (देवीभागवत १.३.२)। मकरादि दो = मत्स्य, मार्कण्डेय। भकारादि दो = भविष्य और भागवत। ब्रकारादि तीन = ब्रह्म, ब्रह्मवैवर्त्त, ब्रह्मांड। वकारादि चार = वायु (शिव), विष्णु, वामन, वराह। आद्य अक्षरोंके अनुसार अ = अग्नि, ना = नारद, प = पद्म, लिं = लिंग, ग = गरुड़, कू = कूर्म, स्क = स्कंद। सब मिलाकर १८ हुए। कुल पुराणोंमें ४००,००० श्लोक हैं (मत्स्य० ५३.६४-७२; वायु० ९५.२२; १०४.२, ११, ८५, १०८; विष्णु० ३.६.२०-२५; भाग० १२.७.२२-४; १३.९)।

भागवतके नामसे आजकल दो ग्रंथ मिलते हैं, एक श्रीमद्भागवत, दूसरा देवीभागवत। पुराणोंके ५ लक्षण कहे गये हैं—सर्ग, प्रतिसर्ग अर्थात् सृष्टि और फिर सृष्टि। वंश, मन्वंतर और वंशानुचरित। अठारहों पुराणोंके नाम ब्रह्माने मरीचिको बतलाये थे (मत्स्य० ५३.३, १२, १३)। पुराणोंमें विष्णु, वायु, मत्स्य और भागवतमें ऐतिहासिक वृत्त, राजाओंकी वंशावली आदिके रूपमें बहुत कुछ मिलता है। विष्णुपुराण ही (भविष्यपु० = मत्स्य० ५८.४,५०; ६९.१८) अठारहोंमें सबसे प्राचीन मालूम पड़ता है। इसमें सृष्टिकी उत्पत्तिसे लेकर कलियुगके मौर्यवंश तथा गुप्तवंश तकका वर्णन मिलता है। अन्य मतसे वायुपुराण ही शिवपुराण है। मत्स्यपुराणमें मन्वंतरों तथा राजवंशावलीके अतिरिक्त वर्णाश्रम धर्मका बड़े विस्तारके साथ वर्णन है (विष्णु० ३.६.२३; भाग० १२.७.२४; १३.८)। श्रीमद्भागवतमें भक्तिके महात्म्य और श्रीकृष्णकी लीलाओंका विस्तृत वर्णन है (भाग० २.१०.१७; १२.१२.१-४५; १३.५, ९; मत्स्य० ५३.२०-२२)। अग्निपुराण बड़ा विलक्षण है जिसमें राजवंशावलियों तथा संक्षिप्त कथाओंके अतिरिक्त धर्मशास्त्र, राजनीति, राजधर्म, आयुर्वेद, व्याकरण, रस, अलंकार, शस्त्रविद्या आदि अनेक विषय हैं (भाग० १२.७.२३; १३.५; मत्स्य० ५३.२८,३०; विष्णु० ३.६.२२)। ब्रह्मपुराणमें तीर्थों और उनके माहात्म्यका वर्णन अधिक है। गुणानुसार पुराणोंको तीन कक्षाओंमें बाँटा गया है—(१) विष्णु, नारदीय, भागवत, गरुड़, पद्म और वराह जिनमें सत्त्वगुणकी प्रधानता है। (२) तमोगुण प्रधान पुराण ये हैं—मत्स्य, कूर्म, लिंग, शिव, स्कंद और अग्नि। (३) रजोगुणप्रधान पुराण भी ६ ही हैं—ब्रह्म, ब्रह्माण्ड, ब्रह्मवैवर्त्त, मार्कण्डेय, भविष्य और वामन। पहिले ६ में विष्णु ही प्रधान देव हैं और ये मुख्यतः वैष्णवमतके हैं। दूसरे ६ में शाक्तोंकी प्रधानता है और प्रधान देव शिव है। राजसपुराणोंमें ब्रह्मा ही प्रधान देवता है (मत्स्य० ५३.६५-६९)।

अधिकांश पुराणोंका रूप १००० वर्षोंके भीतरका ही है। उपनिषदमें लिखा भी है इसिहास पुराण वेदोंमें पाँचवाँ वेद है। महाभारत तथा मनुस्मृतिमें भी पुराणोंका उल्लेख मिलता है जिससे इनके प्राचीन होनेमें संदेह नहीं रहता। भागवतानुसार सब पुराणोंमें कुल मिलाकर ४००,००० श्लोक हैं (स्कंदमें ८१०००, यह सबसे बड़ा है। ब्रह्म और वामन सबसे छोटे हैं और प्रत्येकमें केवल १०००० श्लोक हैं। शिवपुराणान्तर्गत रेवा-माहात्म्यमें लिखा है कि अठारहों पुराणोंके वक्ता सत्यवतीसुत व्यासदेव है—'अष्टादश पुराणानां वक्ता सत्यवती सुतः।' (शिवपु० रेवाखंड)। और यही प्रचलित भी है। पर मत्स्यपुराणमें स्पष्ट लिखा है कि पहिले पुराण एक ही था और उसीसे १८ हुए (·३.४)। ब्रह्मांडपुराणानुसार वेदव्यासने एक पुराणसंहिता बनायी थी (ब्रह्मां० १.१.३९-४०, १७३; २.२१.९, ३७; २८.९६; ३५.६३, ८८; ३.१९.२३, ४२.३१; मत्स्य० ३.३; ५३.३-४, ९; वायु० १.११.६०; ९.६९)। तत्पश्चात् उनके शिष्योंने अलग-अलग संहिताएँ बनायीं। शैलीकी भिन्नता तथा अनेक बातोंसे यह कहा जाता है कि सब पुराण वेदव्यासके रचे नही हैं। जिस युगमें पुराण लिखे गये हैं उस समयकी छाप प्रायः स्पष्टतया उनके भाव, शैली और वाक्य विन्यासपर दीखती है (मत्स्य० २९०.१५)। श्रुतिगीतमें सब पुराणोंका सारांश मिलता है (भाग० १०.८७.४३)।

पुराणोंका उद्देश्य पुरानी कथाओं द्वारा उपदेश देना, देवमहिमा तथा तीर्थमहिमाका बखानकर जनसाधारणके हृदयमें धर्मपर अडिग भावना बनाये रखना ही था। हिन्दुओंकी देखा-देखी जैनियोंने भी पुराण बनाये हैं। तिब्बत और नेपालके बौद्ध ९ पुराण मानते हैं जिन्हें वे नौ धर्म कहते हैं। (२) समयकी गणनापर (ब्रह्मां० २.२१.१३७)।

पुराणज्ञ—पु० [सं०] जो पुराणोंके विज्ञ हैं कर्मयोगके ८ लक्षणोंके बारेमें विशद व्याख्या कर गये हैं (ब्रह्मां० १.२.४५; वायु० १.३०; २.४५; ७०.७७; ८८.६९; ९६.१३; ९९.४१७; १०१.७०; मत्स्य० ४४.५७; ५२.११)। आदित्यशयन व्रतकी भी व्याख्या है (मत्स्य० ५५.३)।

पुराणपुरुष—पु० [सं०] विश्वात्मा या परमेश्वर जिससे पुराण मिले (मत्स्य० ५३.२, ६१)। यही नारायण हैं (वायु० २१.८१; २२.१३) और यही कुमार है (वायु० २२.१३)।

पुराणलक्षण—पु० [सं०] पुराणके दस (१०) लक्षण कहे गये है, पर अन्य मतसे केवल ५ हैं = सर्ग, प्रतिसर्ग, वंश, मन्वंतर और वंशानुचरित (भाग० १२.७.८-२१; ब्रह्मां० १.१.३८)।

'सर्गश्च प्रनिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च।
वंशानुचरितं चेति पुराणं पञ्चलक्षणम्॥'
—(स्कंद० आव० रे० ३५.१५)।

पुराणवेत्ता—पु० [सं०] इन्हें पुराणज्ञ तथा पुराणविद भी कहते हैं जो पार्वण श्राद्धके लिए योग्य समझे जाते हैं, (मत्स्य० १६.९; ४४.२२; ५७.२; ६०.१; २८९.९)।

पुराणसंहिता—स्त्री० [सं] इससे मत्स्यपुराणका बोध होता है जिसे अन्य शास्त्रोंसे अच्छा समझते हैं और जिससे धर्म, अर्थ और कामकी प्राप्ति होती है (मत्स्य० २९०.२०, २५; २९१.१, ३६)। पुराणोंके पठन-पाठन तथा पूजा आदिके नियम अंतमें एक परिशिष्टमें हैं। इसमें आख्यान,

उपाख्यान, गाथा और कल्पज है (ब्रह्मां०); (कुलकर्मोंका उल्लेख है=वायु०), ब्रह्मां० २.३४.२१; वायु० ६०.२१; विष्णु० ३.६.१६-१७। यह वैदिक परिपाटीका ही अधिक अनुसरण करता है (विष्णु० ६.८.१२)।

पुरारित्व–पु० [सं०] शिवका एक अवतार (मत्स्य० १.८; २३.३७)।

पुरावती–स्त्री० [सं०] भारतवर्षकी एक नदीका नाम (महाभा० भीष्म० ९.२४)।

पुरीन्द्रसेन–पु० [सं०] मंदुलक (आंध्रवंशी) का पुत्र तथा सौम्यका पिता (मत्स्य० २७३.१०)।

पुरीमान–पु० [सं०] गोमतीपुत्रका पुत्र एक राजा जो मेदशिराका पिता था (भाग० १२.१.२६.७)।

पुरीषभीरु–पु० [सं०] एक राजा जो तलकका पुत्र तथा सुनन्दनका पिता था (भाग० १२.१.२५; ब्रह्मां ३.७४.१६६)।

पुरीष–पु० [सं०] मलमूत्रादि। वायुपुराणानुसार मलमूत्र घरसे दूर तथा नैऋत्य कोणमें त्यागना चाहिये और शिरका हाथसे स्पर्श न करे। शौचसे मोक्षकी प्राप्ति होती है इसके अन्य नियमोंके लिए (वायु० ७८-५९-६७, ७४-५) देखें।

पुरीषी–पु० [सं०] यह चयनका नाम है एक प्रकारका यज्ञ। यह ब्रह्माके दक्षिण मुखसे ऊत्पन्न हुआ (भाग ३.१२.४०)।

पुरीष्यगण–पु० [सं०] क्रिया और समनन्तरसे उत्पन्न अग्नि (भाग० ६.१८.४)।

पुरु–पु० [सं०] (१) चाक्षुष मनुका एक पुत्र जिनके वंशज पौरव कहलाये। मनु और नड्वलाके १२ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (भाग० ४.१३.१६; ३.१.२; ३.१७; विष्णु० १.१३.५)। (२) एक प्राचीन राजा जो नहुषका पौत्र तथा ययातिका पुत्र था। ययातिकी दो रानियाँ थीं, एक शुक्राचार्यकी पुत्री देवयानी (जिसके गर्भसे यदु और तुर्वसु उत्पन्न हुए) और दूसरी शर्मिष्ठा जिसके गर्भसे द्रुह्यु, अनु और राजा पुरु हुए थे। इन नामोंका उल्लेख ऋग्वेदमें भी है। महाभारत तथा पुराणोंमें इनकी कथा इस प्रकार है—शुक्राचार्यके शापसे जव राजा ययाति बूढ़े हो गये तव उन्होंने अपने पुत्रोंको वुलाकर अपना वुढ़ापा देना चाहा पर पुरुको छोड़कर और कोई पिताका वुढ़ापा लेनेको तैयार नहीं हुआ। पुरुका यौवन ले ययातिने वहुत दिनोंतक राज्य किया और कुछ दिनों पश्चात् पुरुको राज्य दे तप करने चले गये। .इसी राजाके वंशमें दुष्यंत पुत्र भरत हुए थे। कई पीढ़ियों वाद राजा कुरु हुए जो कौरवोंके आदि पुरुष थे (ब्रह्मां० ३.६.२५; वायु० ६८.२४; ९३.१७; ५५.८८)। (३) वसुदेव और सहदेवाके आठ पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (भाग० ९.२४.५२-५३)। (४) वृहतीके पतिका नाम। वृहती राजा वृहदुक्थकी पुत्री थी (ब्रह्मां० ३.७१.२५५)।

पुरुकुत्स–पु० [सं०] एक राजर्षि जो विंदुमती तथा मान्धाताका पुत्र और मुचुकुंदका भाई था। नर्मदाके किनारे या आसपासके स्थानपर यह राज्य करता था (भाग० ९.६.३८; ७.२-३; ब्रह्मां० २.३२.१०८; ३.१०.९८; मत्स्य० १२.३५; १४५.१०२; विष्णु० ४.२.६७; ३.६.१६; वायु० ९३.४९; ९१.११६)। नागोंकी भगिनी नर्मदासे इसका विवाह हुआ जिसके गर्भसे इसका पुत्र त्रसद्दस्यु उत्पन्न हुआ। नागोंके कहनेसे रसातलमें जाकर मौनेय गंधर्वोंका इसने नाश किया (हरिवंश)। यह एक क्षत्रोपेत द्विज था (ब्रह्मां० ३.६३.७२; ६६.८७)। ऋग्वेदानुसार दस्युनगरका ध्वंस करनेमें इन्द्रने पुरुकुत्सकी सहायता की थी। नर्मदा तटपर इसने भृगु तथा अन्य ऋषियोंसे विष्णुपुराण सुनकर सारस्वतको सुनाया था (विष्णु० १२.२.९; ६.८.४५)।

पुरुज–पु० [सं०] सुशान्तिका पुत्र अर्कका पिता तथा भर्म्यांश्वका दादा (भाग० ९.२१.३१)।

पुरुजानु–पु० [सं०] (भाग० पुरुज) सुशांतिका पुत्र पृथु (रिक्ष=वायु०) का पिता तथा भद्राश्वका दादा (मत्स्य० ५०.३; वायु० ९९.१९५)।

पुरुजित्–पु० [सं०] (पुरजित्=ब्रह्मां) (१) अजका पुत्र तथा अरिष्टनेमिका पिता (भाग० ९.१३.२२-२३)। (२) रुचकका पुत्र यह अपने रुक्म आदि चार भाइयोंमें सवसे वड़ा था (भाग० ९.२३.३५)। (३) आनक (वसुदेवके अनुज) और कंका (कंसकी अनुजा) का एक पुत्र (भाग० ९.२४.४१)। (४) कुंतिभोजका पुत्र तथा अर्जुनका मामा (कुन्तीका भाई) जो कुरुक्षेत्रके युद्धमें लड़ा था (महाभा० सा० १४-१६-१७)। (५) श्रीकृष्ण और जाम्ववतीके साम्ब आदि दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (भाग० १०.६१.११)। (६) युधिष्ठिरका एक पार्षद जो सूर्यग्रहणपर स्यमंतपंचक गया था (भाग० १०.८२.२५)।

पुरुण्ड–पु० [सं०] कई प्रधान दनुपुत्र दानवोंमेंसे एक दानवका नाम (ब्रह्मां० ३.६.८)।

पुरुद्वान्–पु० [सं०] पुरुवसु (पुरुवश=वायु) का पुत्र जो अपने समयका सर्वश्रेष्ठ पुरुष कहा गया है। इसका विवाह भद्रावतीसे हुआ था जिसके गर्भसे इसका पुत्र पुरूद्वह उत्पन्न हुआ था (ब्रह्मां० ३.७०.४७; वायु० ९५.४६)। विदर्भकी राजकुमारी भद्रसेनीसे इसका पुत्र जन्तु उत्पन्न हुआ था (मत्स्य० ४४.४४-५)।

पुरुमित्र–पु० [सं०] (१) एक राजाका नाम जो अंशुका पिता तथा अनुका पुत्र था (विष्णु० ४.१२.४२)। (२) धृतराष्ट्रके ग्यारह महारथी पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (महाभा० आदि० ६३.११९)।

पुरुमीढ–पु० [सं०] हस्तीके तीन पुत्रोंमेंसे एक पुत्र जो निःसन्तान था (भाग० ९,२१,३०; मत्स्य० ४९.४३; विष्णु० ४.१९.२९)।

पुरुवश–पु० [सं०] मधुका एक पुत्र (वायु० ९५.४६)।

पुरुवसु–पु० [सं०] मधुका एक पुत्र तथा पुरुद्वान्का पिता (ब्रह्मां० ३.७०.४६)।

पुरुविश्रत–पु० [सं०] वसुदेव और सहदेवाके आठ पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (भाग० ९.२४.५३)।

पुरुष–पु० [सं०] (१) विराट, जिसकी धारणा ध्यान लगानेसे होती है (भाग० १.३.१; २.१.२५-३९; वायु० ५९.७६)। यह अदृश्य, अकर्त्ता, असंग चेतन पदार्थ है (भाग० ११.१६.३७; २२.१४; २४.४-५)। यह हृदयाकाश-

में निवास करता है (भाग० २.२.८-१३; वायु० ४.४४)। इसीसे अण्ड उत्पन्न हुआ (भाग० २.५.३५-४२)। इसीसे यज्ञ आदिकी उत्पत्ति हुई है (भाग० २.६.१-२७)। पुरुषसे ही आगेकी सृष्टि चली (भाग० २.६.२८-३१; विष्णु० १.२.१४-१५; ६०-६५; ६.४.४६); यह ईश्वर और प्रकृतिका प्रथम अवतार है (भाग० २.६.४१; वायु० ५.२०, २९, ३२) ब्रह्मा, शिव, यज्ञ, प्रजापति, लोकपाल, गन्धर्व, विद्याधर, यक्ष, किन्नर, राक्षस, नाग, श्रेष्ठ, ऋषि, दैत्य, दानव, सिद्ध आदि सब पुरुषके अवतार हैं (भाग० २.६.४१-५)। वराहके समान (भाग० २.७.१; १०.१०; ३.२६.२१-२२; ४.१३.१८)। पुरुषकी शक्ति (भाग० १२.४.२२)। सुवर्णके तद्रूप (भाग० १२.११.१९)। श्रीकृष्ण और बलरामका पुरुष अवतार (भाग० १०.३८.१५, ३२)। सांख्यके अनुसार शिव (ब्रह्मां० २.९.३६, ३९), सर्वप्रधान तथा प्रथम पुरुष जिससे सृष्टि बढ़ी: एक मतसे २५ वाँ और अन्य मतसे २६ वाँ तत्त्व ईश्वरके साथ। तत्त्व (मत्स्य० ३.२७-८); २५ तत्त्वोंका इसीसे निर्माण होता है (मत्स्य० ६०.३; २६६.५२; २७४.६२; वायु० ७.६२-७)। (२) पाँचवें मरुद्गणमेंके एक मरुत्का नाम (ब्रह्मां० ३.५.९७; वायु० ५९.७६; वायु० ५९.७६; ६७.१२८; १०२.११७)। (३) एक दानव जिसे सम्पदीशा देवीने मारा था (ब्रह्मां० ३.६.१६; ४.२८.३८, १०१)। (४) अंजनावतीके दो पुत्रोंमेंसे एक पुत्र, हाथीका नाम (ब्रह्मां० ३.७.३४३)। (५) क्रौंचद्वीपके निवासियोंका एक वर्ग (भाग० ५.२०.२२)।

पुरुषपशु–पु० [सं०] बच्चोंकी प्राप्तिकी कामनासे भद्रकालीको बलि दिया गया पशु (भाग० ५.९.११)।

पुरुषपुर–पु० [सं०] गाँधारकी राजधानी और एक प्राचीन नगर जो आजकल पेशावर कहा जाता है।

पुरुषमेध–पु० [सं०] एक याग जिसके कर्ताको रक्षोगणभोजन नरक मिलता है। शुनश्शेप (शुनःशेफ) को पशु मानकर हरिश्चन्द्रका पुरुषमेध (भाग० ५.२६.३१; ९.७.२१)।

पुरुषसूक्त–पु० [सं०] ऋग्वेदका एक बहुत प्रसिद्ध सूक्त जिसका पाठ अनेक अवसरोंपर होता है। विष्णुकी स्तुति ब्रह्माने इसी सूक्तसे की थी। नयी प्रतिमाकी स्थापनामें भी इसका पाठ होता है (भाग० १०.१.२०; ब्रह्मां० ४.४३.१२; मत्स्य० २६५.२६)।

पुरुषार्थ–पु० [सं०] पुराणानुसार धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष ये चार पुरुषार्थ हैं (विष्णु० १.१८.२१)। चर्वाकके अनुसार कामिनीसंग जनित सुख ही पुरुषार्थ है। पुरुषार्थका ज्ञान विष्णुपुराणके अध्ययनसे होता है (विष्णु ६.८.३)।

पुरुषेण–पु० [सं०] भण्डके कई सेनापतियोंमेंसे एक सेनापति (ब्रह्मां० ४.२१.८४)।

पुरुषोत्तम–पु० [सं०] (१) भगवान्का एक नाम (विष्णु० ५.१७.६, ३३; ३८.४५, ७८-८२)। (२) श्रीकृष्णका एक नाम (भाग० १०.५८.१; विष्णु० ६.४.४२.४५)।

पुरुषोत्तमक्षेत्र–पु० [सं०] (१) पुरीमें श्री जगन्नाथजीके मन्दिरके आसपासकी पवित्र भूमि। (२) जहाँ सतीदेवीकी एक विमला मूर्ति स्थापित है (मत्स्य० १३.३५)। एक पवित्र तीर्थका नाम जहाँ पितरोंकी तृप्तिके लिए किये गये श्राद्धका अनन्त फल कहा गया है (मत्स्य० २२.३८)। प्रम्लोचा अप्सराके चिर सहवाससे तपका भङ्ग होनेसे खिन्न हुए कण्डु ऋषि यहीं ब्रह्मपार स्तोत्रका जपकर मुक्त हुए थे (विष्णु० १.१५.५२)।

पुरुषोत्तमव्रत–पु० [सं०] श्रीकृष्ण ही इस व्रतके फलदाता, भोक्ता तथा अधिष्ठाता हैं। इस महीनेमें (पुरुषोत्तम मासमें) ईश्वरके उद्देश्यसे दान, जप तथा पूजा करे तो अक्षय फल होता है (भविष्योत्तरपु०)।

पुरुहूत–पु० [सं०] इन्द्रका एक नाम जिनकी नगरी अमरावती है (ब्रह्मां० ३.७२.२३; मत्स्य० ५४.३३.६९; १७४.३; वायु० ९७.२४)।

पुरुहूता–स्त्री० [सं०] पुष्करमें स्थापित सती देवीकी एक मूर्तिका नाम (मत्स्य० १३.३०)।

पुरुहोत्र–पु० [सं०] अनुका पुत्र तथा आयुका पिता। इसके पौत्रका नाम सात्वत था (भाग० ९.२४.६)।

पुरू–पु० [सं०] चाक्षुष मनुके विरज प्रजापतिकी पुत्री नड्वलासे उत्पन्न दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (ब्रह्मां० २.३६.७९.१०६)।

पुरूद्वह–पु० [सं०] पुरुद्वान् और भद्रवतीका एक पुत्र जिसका विवाह इक्ष्वाकुकी एक पुत्री ऐक्ष्वाकीसे हुआ था। सत्त्व नामक एक पुत्र इस संबंधसे हुआ था (ब्रह्मां० ३.७०.४७; वायु० ९५.४७)।

पुरूरवा–पु० [सं०] (१) ऋग्वेदके अनुसार एक प्राचीन राजाका नाम जो 'इला' का पुत्र था जिसकी राजधानी प्रतिष्ठानपुरमें गंगातटपर प्रयागमें थी (ऐल) बुध तथा (सुद्युम्न स्त्रीरूपमें) इलाका पुत्र (मत्स्य० १२.१५; भाग० ९.१.३५, ४२; ब्रह्मां ३.६५.४५-६; ६६.१.२, १९-२२; वायु० १.१०६; विष्णु० ४.१.१२.१६)।

हरवंश तथा अन्य पुराणोंके अनुसार देवगुरु बृहस्पतिकी पत्नी तारा और चन्द्रमाके संयोगसे बुध उत्पन्न हुए जो चन्द्रवंशके आदि पुरुष थे। बुधका इलाके साथ विवाह हुआ जिसके गर्भसे पुरूरवा उत्पन्न हुए जो बड़े बुद्धिमान्, रूपवान् और पराक्रमी थे। उर्वशी (अप्सरा) शापवश भूलोकमें आयी थी जिसपर मोहित हो पुरूरवाने विवाहका प्रस्ताव किया और नारदसे पुरूरवाके रूप रंगको सुनकर उर्वशी भी विवाहके लिए तैयार हो गयी। विवाह हो गया। चिरकालके अनन्तर उर्वशीकी तीन शर्तोंमेंसे एकका उल्लंघन होनेके कारण एक दिन वह स्वर्ग चली गयी जिससे राजा बहुत दुःखी रहने लगे। एक दिन कुरुक्षेत्रके अन्तर्गत प्लक्षतीर्थमें उर्वशी राजाको मिली और शीघ्र ही पुनः मिलनेकी आशा दे चली गयी। उर्वशीके गर्भसे आयु, श्रुतायु, सत्यायु, रय, विजय और जय (वायु० = आयु, अमावसु, विश्वासु, धीमान्, शतायु, गतायु) आदि पुरूरवाके छह पुत्र हुए (भाग० ९.१५.१; १७.१; वायु० ९१.४८; ब्रह्मां० १.१.८९; २.१४)। गंधर्वोंने राजाको एक अग्निपूर्ण स्थाली दी जिससे पुरूरवाने अनेक यज्ञ किये। प्रत्येक अमावस्याको पितरोंसे इनकी भेंट होती थी। यह चन्द्रके अमृतसे उनकी तृप्ति करते थे। यह एक क्षत्रिय मन्त्रकृत् थे, क्षत्रियोंमें इनके अतिरिक्त वैवस्वत मनु भी मन्त्रकृत् थे। ये सामगाचार्य तथा इक्ष्वाकुवंशमें तीन अग्नियोंके प्रवर्त्तक थे। पहले एक ही अग्नि थी। राजा

ऐल पुरूरवाने उन्हें तीन बनाया (ब्रह्मां० २.२८.१-९, ९७; ३२.१२०; ३३.९;मत्स्य० १४५.११५; वायु० ५६.१. २२; ९१.४८)। हिमालयके आश्रममें यह अत्रि ऋपिसे मिलने गये थे (मत्स्य० १०२.१९; ११८.६२, ७७; १२०. ४५; १२६.७)। देवीके १०८ नामोंका जप कर पुरूरवा अपने शत्रुओंपर विजयी हुए थे (मत्स्य० १३.६२)। हिमालयपर जर्नादनके प्रीत्यर्थ तपकर यह सातों द्वीपोंके अधिपति हुए थे (केशी आदि अनेक असुरोंका इन्होंने वध किया था तथा इन्द्रसे अर्द्धासन प्राप्त किया था। धर्मकी रक्षाका विशेप ध्यान रखनेके कारण अर्थ और काम इनसे असंतुष्ट थे। द्विजग्राममें इन्हें 'भरतनाट्यशास्त्र' की शिक्षा मिली थी (मत्स्य० २४.१०-३३)। चाक्षुप मन्वन्तरमें यह मद्र देशके राजा हुए (मत्स्य० ११५.४, ७-८, १०-१८)। इनकी इच्छाएँ अत्रिके आशीर्वाद (मत्स्य० १४१.१, ८-२०) तथा हिमालयमें किये गये तपसे (११६-१७, ११९; १२०. ४८) पूर्ण हुई थीं। (२) धर्मके विश्वासे उत्पन्न दस विश्वेदेव पुत्रोंमेंसे एक विश्वेदेवका नाम (ब्रह्मां० ३.३.३१)]

पुरूषक–पु० [सं०] भंडके कई शूरवीर सेनापतियोंमेंसे एक सेनापतिका नाम (ब्रह्मां० ४.२१.८४)।

पुरोचन–पु० [सं०] दुर्योधनके एक मित्र तथा मन्त्रीका नाम, जिसे पाण्डवोंको लाक्षागृहमें जलाकर भस्म कर डालनेका कार्य सौंपा गया था। भीमसेन माता सहित वन चले गये और इसके घरमें आग लगा दी गयी जिससे जलकर यह स्वयं भस्म हो गया (महाभा० आदि० १४३. २-१७, १९; १४९.२)।

पुरोजव–पु० [सं०] (१) आठ वसुओंमेंसे एक प्राण नामक वसुका ऊर्जस्वतीसे उत्पन्न एक पुत्र (भाग० ६.६.१२; मत्स्य० २०३.७=अनिलका)। (२) पुष्कर द्वीपके सात खंडोंमेंसे एक खंडका नाम। (३) शाकद्वीपके अधिपति मेधातिथिके सात पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (भाग० ५. २०.२५)।

पुरोडाश–पु० [सं०] यज्ञोंमें चावल पीसकर बनाया गया एक प्रकारका देवोपहार जो विशेष प्रकारके पात्रोंमें रखा जाता है और देवताओंके उद्देश्यसे अग्निमें होमा जाता है (ब्रह्मां० ३.६७.९७; वायु० ३१.४८; ९२.९२; विष्णु० ४.९.१८)। यह भुने आँटेका होता है (मत्स्य० २३९.३२) यह त्र्यंबक रुद्रका प्रतीक है (ब्रह्मां० २.९.६; १३.१४६)।

पुरोधा–पु० [सं०] दे० पुरोहित (ब्रह्मां० ३.१०.१०१; ४.९.११; वायु० ९९.३७; १११.८१)। केशिध्वज द्वारा राज्यसे प्रच्यावित खाण्डिक्य निर्वासितावस्थामें अपने पुरोधा (पुरोहित) तथा मन्त्रियोंके साथ वन चले गये थे (विष्णु० ६.६.११)।

पुरोद्यान–पु० [सं०] ललितादेवीके ५१ पीठोंमें एक (अन्तिम) पीठका नाम (ब्रह्मां० ४.४४.१००)।

पुरोनुवाक्या–स्त्री० [सं०] यज्ञोंमें दी जानेवाली एक प्रकारकी आहुति।

पुरोवह–पु० [सं०] तीसरे सावर्ण मनुके नौ पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (ब्रह्मां० ४.१.८०)।

पुरोहित–पु० [सं०] कर्मकाण्ड आदि धार्मिक कृत्योंके संचालनमें प्रमुख स्थान रखनेवाला जैसे असुरोंके पुरोहित, कुलपुरोहित आदि (भाग० ७.५.१)। अथर्ववैदिक कृत्योंमें निपुण जिन्होंने रुक्मिणीके विवाहमें होम किया था (भाग० १०.५३.१२)। राजपुरोहित, प्रजा तथा राजाके रक्षार्थ धार्मिक कृत्य करता है. (मत्स्य० २२९.१२; २३०. ९-११; २३१.९)।

पुलक–पु० [सं०] इसने बृहद्रथ राजाको मार अपने पुत्र बालकको सिंहासनरूढ़ किया था (मत्स्य० २७१.३०; २७२.१)।

पुलस्त्य–पु० [सं०] (१) एक ऋपि जो ब्रह्माके दस मानस पुत्रोंमेंसे एक थे, जिनका जन्म वारुणी तनु धारण कर रहे देवाधिदेवके यज्ञमें हवन कर रहे ब्रह्माके (ब्रह्मां २-९.२२) उदान अर्थात् कण्ठ देश स्थित प्राणवायु से हुआ था। इनकी गिनती सप्तऋपियों तथा प्रजापतियोंमें की जाती है। ये विश्रवाके पिता और कुबेर तथा रावणके पितामह थे। विष्णुपुराणानुसार ब्रह्माके कहे हुए आदिपुराणका मनुष्योंके बीच इन्होंने प्रचार किया था। यह मधु (चैत्र) मासमें सौरगणमेंके धाता आदि अन्य छहके साथ सूर्यरथपर अधिष्ठित रहते हैं (भाग० १२.११.३३; मत्स्य० १४५. ९०; वायु० ५२.२; विष्णु० २.१०.३) तथा इन्होंने भी रावणको रामसे युद्ध न करनेकी राय भेजी थी (रामच० मा० सुंदर कां० दो० ३८-३९)। कर्दमकी पुत्री हविर्भूसे इनका विवाह हुआ और यह अगस्त्य (दूसरे जन्ममें दह्राग्नि हुए) तथा विश्रवाके पिता थे (भाग० ३.१२.२२, २४; २४.२२; ४.१.३६; ब्रह्मां० २.३२.९६; ३.१.२१,४५; मत्स्य० ३.६. वायु० २५.८२; ६१.८२; ६५.४२; ९४.३६; १०१.३५, ४९) यह देवदारुवनके महर्षि थे, ये देवर्षिजनक कहे जाते हैं (ब्रह्मां० २.३५.९२; २७.६, १०४; ३.१.२१, ४५)। क्रोधा या क्रोधवशा (कश्यपपत्नी) की १२ पुत्रियों (मृगी, मृगमन्दा, हरिभद्रा, इरावती, भूता, कपिशा, दंष्ट्रा, ऋषा, तिर्या, श्वेता और सरमा) से इनके अग्रज पुलहका विवाह हुआ जिनके पुत्र हरिण, भालू, वानर, गेंड़े नाग आदि हुए (ब्रह्मां० ३.७.१७१; ८.७०; २.३५.९२)। इनके पुत्रोंमें राक्षस तथा यक्षगण हैं जो बर्हिषद पितृगणकी उपासना करते हैं (मत्स्य० १५.१-४)। (२) उदानसे उत्पन्न (ब्रह्मां० १.१.११७; ५.७०; वायु० १.१३८; ३.३) ब्रह्माके एक पुत्र तथा पुलहके ज्येष्ठ भ्राता (वायु० २५.८२; ३६.४८; विष्णु० १.१.२२-३; ३१. १६)। यह स्वायंभुव मन्वंतरके सप्तर्षियोंमेंसे एक थे (वायु० ९.१०२; २८.२२)। दक्षकी पुत्री प्रीतिसे विवाह हुआ, दत्तालि ब्रह्मां=- दानाग्नि आदि तीन पुत्रोंके पिता थे (ब्रह्मां० २.९.१८, २४,५५; २.११.२६, १३.५३)। इन्हींके आशीर्वादसे पराशरको विष्णुपुराण याद था (विष्णु० ६.८.५०)।

पुलह–पु० [सं०] (१) ब्रह्माके मरीचि आदि १० मानस पुत्रोंमें एक जो उनकी नाभिसे उत्पन्न हुए थे और सप्तर्षियोंमेंसे एक जिनकी गिनती प्रजापतियोंमें होती है। यह ऋपि माधव (वैशाख) माममें अर्यमा आदि अन्य छह सौगणके साथ सूर्यरथपर अधिष्ठित रहते हैं (भाग० ३.१२.२२, २४; २४.२३; ४.१.३८; १२.११.३४; मत्स्य० ३.१७१.२७; १९५.१०; २०२.७, ९)। पुलहकी स्त्रीका नाम गति था जो कर्दमकी पुत्री तथा कर्मश्रेष्ठ, वरीयान् और सहिष्णु नामक तीन पुत्रोंकी

माता थी। अन्य मतसे पुलहकी पत्नीका नाम क्षमा था जिसके गर्भसे कर्दम, उर्वरीयान् (ब्रह्मां० = अर्वरीवान्) और सहिष्णु ये तीन पुत्र उत्पन्न हुए (ब्रह्मां० २.३६.१८; (विष्णु० १.१०.१०)। इनका आश्रम अतिपवित्र था जहाँ वलराम आये थे तथा भरतके अन्तिम दिन व्यतीत हुए थे (भाग० ७.१४.३०; १०.७९.१०; ५.७.८; ८.३०; मत्स्य० १४५.९०; वायु० ५२.२; विष्णु० २.१०.३)। इनके वंशज आज्यपपितृगण हो गये (मत्स्य० १५.२१)। इन्होंने वामनको अक्षसूत्र दिया था (मत्स्य० २४५.८७)। इनकी एक पत्नी संभूति थी (विष्णु० १.१.२३; ७.५.७)। राजा ऋषभने अपने अन्तिम दिन इहांके आश्रममें व्यतीत किये थे (विष्णु० २.१.२९)। (२) इनकी उत्पत्ति ब्रह्माके व्यानसे (सारे शरीरमें गमनशील वायुसे) हुई थी जो वारुणी मूर्तिधारी देवाधिदेवके यज्ञमें प्रकट हुए थे तथा इनके शरीरसे वाल लटक रहे थे (ब्रह्मां० १.५.७०; २.९.१८,२४; वायु० ३.३; ९.१०२; ६१.८२-८४)। यह ब्रह्माके पुत्र (ब्रह्मां० २.९.५५; १३.५३; वायु० २५.८२); स्वायंभुव युगके प्रजापति (वायु० २८.५५; १०१.३५, ४९), दक्षके जामाता (वायु० ३०.४८) तथा 'क्षमा' के पति (वायु० ३१.१६) थे जिसके गर्भसे ४ पुत्र तथा पीवरी नामकी एक पुत्री हुई (ब्रह्मां० २. ११.३०)।

पुलिंद–पु० [सं०] (१) हिन्दुस्तानकी एक प्राचीन असभ्य जाति जिसका उल्लेख रामायण, महाभारत तथा पुराणोंमें मिलता है। पुरंजयने इन्हें एक जातिसे मिला दिया था जो विष्णुकी पूजाकर शुद्ध हो गये थे (भाग० १२.१.३६; २.४.१८; वायु० ४५.१२६; ४७.४८; ९८.१०८; ९९.२६८, ३७८)। मागधराज विश्वस्फाणिने इनका राज्य स्थापित किया (ब्रह्मां० २.१६५८; ३.७३.१०८; ७४.१९१; मत्स्य० ११४.४८; ४९) तथा विश्वस्फटिकने (ब्रह्मां० = विश्वस्फाणि) इनका राज्यवंश ही स्थापित किया (विष्णु० ४.२४.६२)। (२) भद्रकका पुत्र तथा शुंगवंशके घोषका पिता (भाग० १२.१.१७)।

पुलिंदक–पु० [सं०] (१) अंतकका एक पुत्र जिसने ३ वर्षों तक राज्य किया था (ब्रह्मां० ३.७४.१५३; मत्स्य० २७२. २९)। (२) उदंकका पुत्र तथा घोषवसुका पिता (विष्णु० ४.२४.३५)।

पुलिंदसेन–पु० [सं०] पललकका पुत्र तथा सुन्दरका पिता (विष्णु० ४.२४.४७)।

पुलिंदी–स्त्री० [सं०] पुलिंदोंकी स्त्रियाँ (भाग० १०.२१. १७; ८३.४३)।

पुलेय–पु० [सं०] पश्चिम देशकी एक जाति तथा जनपद (वायु० ४५.१२९)।

पुलोमकन्या–स्त्री० [सं०] वैश्य जातिकी एक कन्या जो कल्याणीव्रतके प्रतापसे पुरुहूत (इन्द्र) की रानी (पत्नी) हुई (मत्स्य० ६९.६०)।

पुलोमा–पु० [सं०] (१) दक्षपुत्री दनु और कश्यप के प्रधान ६१ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र तथा इंद्रका श्वशुर एक असुर जिसकी पुत्रीका नाम शची था (मत्स्य० ६.२०-१)। यह रसातलका निवासी वृत्रासुरके साथ इन्द्रसे लड़ा था (भाग० ६.६. ३१; ७.२.५; वायु० ६८.७; विष्णु० १.२१.५)। देवासुरसंग्राममें यह अग्निसे लड़ा था (भाग० ६.१०.२०, ३१; ८.१०.३१)। यह इन्द्र द्वारा मारा गया और शची इन्द्रको व्याही गयी (ब्रह्मां० २.२०.४९; ३.६.७, २४, वायु० ५०. ३७)। (२) प्रहेति (वायु = प्रहेतृ) राक्षसका एक पुत्र (ब्रह्मां० ३.७.९१; वायु० ६९.१२९)। (३) गौतमीपुत्र जो २८ वर्षों तक राजा रहा (मत्स्य० २७३.१३)। (४) एक आंध्रवंशीय राजा, महापद्मसे पुलोमातक इनका ८३६ वर्ष शासन रहा मत्स्य०) २७३.१५, ३७)। (५) विद्याधरोंके अधिपतिका नाम (वायु० ३८.१६)। (६) चित्रसेन आदि १६ मौनेय देवगन्धर्वोंमेंसे एक मौनेय देवगन्धर्वका नाम (वायु० ६९.२)। (७) पौलोमी के पिता तथा भृगु ऋषिके श्वशुरका नाम (ब्रह्मां० ३.१.१५)।

पुलोमा–स्त्री० [सं०] वैश्वानर नामक दैत्यकी चार पुत्रियोंमेंसे एक पुत्री तथा भृगु ऋषिकी पत्नी जिसके पुत्र महर्षि च्यवन थे। अन्य मतसे यह कश्यप (मारीच) की पत्नी थी (भाग० ६-६.३३-४; ब्रह्मां० ३.६.२५; मत्स्य० ६.२२; वायु० ६८.२३; विष्णु० १.२१.८-९)।

पुलोमारि–पु० [सं०] (१) पुलोमा दैत्यका वध करनेके कारण इंद्रका एक नाम –दे० इंद्र, पुलोमा (१) (भाग० ६.१०.२०-३१; ८.१०.३१)। (२) आंध्रवंशका एक राजा जिसने ७ वर्षोंतक राज्य किया (ब्रह्मां० ३.७४.१६९)।

पुल्कस–पु० [सं०] भण्डके कई सेनापतियोंमेंसे एक सेनापति (ब्रह्मा० ४.२१.७९)।

पुल्कसगण–पु० [सं०] विष्णुकी उपासना तथा भजन कर ये सब पापमुक्त हो गये थे (भाग० २.४.१८; ६.१६.४४)। रन्तिदेवको वहुत दिनोंके उपवासके वाद भोजन सामग्री मिली थी उसे तो वह अतिथि रूपमें आये हुए द्विज आदिको वाँट चुके थे। जो पेय जल शेष रह गया था वह भी उन्होंने किसी पुल्कस विशेषको दिया था (भाग० ९. २१ १०, १४; ११.२९.१४)।

पुष्कर–पु० [सं०] (१) वरुणके एक पुत्रका नाम जो पुष्करद्वीपमें रहता था। (२) सुनक्षत्रका पुत्र तथा अन्तरिक्षका पिता (भाग० ९.१२.१२)। (३) दुर्वाक्षी तथा वृकके कई पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (भाग० ९.२४.४३)। (४) श्रीकृष्णके कई पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (भाग० १०.९०.३४)। (५) राजा नलका भाई जिसने कलिकी सहायतासे राजा नलको जुएमें हराकर निषध देशका राज्य ले लिया था। पीछे नलने जीतकर अपना राज्य पुनः ले लिया था (महाभा० वन० ५९.४,९; ६१.१; ७८.४-२०)। (६) भरतके दो पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम जिसने गांधारमें पुष्करावती नामकी राजधानी स्थापित की थी (ब्रह्मां० ३.६३.१९; वायु० २९.८; ८८.१८९)। (७) पुराणोक्त सात द्वीपोंमेंसे एक जो दधिसमुद्रके आगे था। शाकद्वीपसे इसका विस्तार दुगुना था (–दे० पुष्करद्वीप)। (८) ५ कृष्णपराशरोंमेंसे एक (मत्स्य० २०१.३६)। (९) मेघोंका एक अधिपति। जिस वर्ष यह अधिपति होता है उस वर्ष पानी नहीं वरसता है और न खेती ही होती है। इसे पक्षज जातिका वताते हैं (ब्रह्मां० २.२२.४०)। (१०) अजमेरके निकटस्थ एक तीर्थ जहाँपर ब्रह्माका एक मन्दिर है और ऐसी प्रसिद्धि है कि ब्रह्माने यहाँपर यज्ञ किया था। पद्मपुराणानुसार

यहाँपर ब्रह्माके हाथसे कमल पुष्प गिर गया था अतः यह नाम (पुष्कर) पड़ा। इस फूलसे रसातलका व्रजनाभ असुर मर गया। ब्रह्माके मन्दिरके साथ यहाँ सावित्री, बदरीनारायण और वराहजीका मन्दिर प्रसिद्ध हैं (ब्रह्मां०, पद्म० तथा नारदपु०)। (११) एक राज्य जहाँसे होकर सीता नदी बहती है (ब्रह्मां० २.१८.४५; वायु० ३३.१४; ४२.६९; ५०.११९) तथा जहाँ श्राद्ध करना शुभ है (ब्रह्मां० ३.१३.४०)। (१२) विष्णु भगवान्‌का एक रूप। विष्णु तथा उनके नाभिसे निकले कमलकी कथा (हरिवंश)।

पुष्करचूड़–पु० [सं०] चार प्रधान दिग्गजोंमेंसे एक जो संसारका एक कोना सन्तुलनके हेतु दाबे हुए है (भाग० ५.२०.३९)।

पुष्करद्वीप–पु० [सं०] पुराणोक्त सात द्वीपोंमेंसे एक जो दधिमण्डोदसे द्विगुण तथा चारों ओर शुद्ध पेयजलवाले समुद्रसे घिरा है। सुवर्णकी पंखुड़ियोंवाले एक बड़े कमलपर ही इस द्वीपका नामकरण हुआ। यही कमल ब्रह्माका राज सिंहासन होगा। रथन्तर कल्पके राजा पुष्पवाहनके नामपर इसे पुष्कर कहते हैं। यहीं चित्रसानु पहाड़ी है। इस द्वीपके मध्यमें मानसोत्तर नामक केवल एक पर्वत है जो इसे पूर्वी और पश्चिमी दो खण्डोंमें बाँटता है। इसकी चारों दिशाओंमें इन्द्रादि देवताओंके नगर हैं। इसकी चोटीपर सूर्यके रथका पहिया घूमता रहता है जिससे मनुष्योंके वर्ष तथा देवताओंके दिन बनते हैं। प्रियव्रतके पुत्र वीतिहोत्रने (जो यहाँका शासक था) पुष्करद्वीपको अपने दो पुत्रोंमें बाँट दिया। यहाँ ब्रह्माकी उपासना होती है (भाग० ५.१.३२; २०.२९-३३; मत्स्य० १००.४; १२३.१३; २४८.१३; वायु० ४९.१०१-१४१)। यहाँ मनुष्योंकी आयु १०,००० वर्ष है। न यहाँ जाति है, न वेद, लोग वट वृक्षकी पूजा करते हैं। यहाँ कश्यपने अपना अश्वमेध किया तथा यहीं रावण बालीसे परास्त हुआ था (ब्रह्मां० २.१४.१४; १९.१०८-२६, १४०-१; ३.५,७; ७.२६७)। परशुराम यहाँ आये थे (ब्रह्मा० ३.३२.६०; ४४.२२; (विष्णु० २.४.७२-८६,९२)। इस द्वीपका पहिला राजा सवन हुआ जिसने अपने पुत्र महावीर और धातुकिमें इसे दो भागोंमें बाँट दिया था (विष्णु० २.१.१५; २.५)। (२) विष्णुका एक पवित्र स्थान जहाँसे ऋषिगण द्वारका गये थे (भाग० ७.१४.३०; १०.९०.२८ (३); १२.१२.६०)। त्रेतायुगमें इन्द्र तथा पितरोंके लिए यह पवित्र स्थान समझा जाता था तथा एक तीर्थ था (मत्स्य० १३.३०; २२.६२; १०६.५७; १०९.३; ११०.१; १८०.५५; १८४.१६; १९२.११)। अधिसामकृष्णका यज्ञ यहाँ तीन वर्षोंतक चला था; (मत्स्य० ५०.६७)। कश्यपने यहाँ अश्वमेध यज्ञ किया था (वायु० ६७.५३; विष्णु० ६.८.२९)। यह श्राद्धोपयुक्त स्थान है (वायु० ७७.४०; १०६.६९)। (३) क्रौंचद्वीपके निवासी ब्राह्मण (विष्णु० २४.५३)।

पुष्करपर्वत–पु० [सं०] भारतवर्षका एक पर्वत जो हिरण्यकशिपुके अधीन था (मत्स्य० १६३.८८)।

पुष्करमन्दिर–पु० [सं०] पुष्करका निवासस्थान। एक आश्चर्यजनक कमल जो इच्छानुसार चलता था और पूर्व जन्मके त्यागके फलस्वरूप पुष्पवाहनको प्राप्त हुआ था (मत्स्य० १००.३०)।

पुष्करमाली–पु० [सं०] मदालसाकी सखी कुण्डलाका पति जिसे शुम्भने मार डाला था (मार्कण्डेय अलर्कोपाख्यान १३-१४)।

पुष्करस्वन–पु० [सं०] विश्वशाका एक पुत्र (मत्स्य०।

पुष्कराक्ष–पु० [सं०] सुचन्द्रका पुत्र जो एक योग्य योद्धा एवं सब शस्त्रास्त्रोंके प्रयोगमें अति प्रवीण था। इसने परशुरामपर वायव्यास्त्रसे आक्रमण किया, प्रत्युत्तरमें उन्होंने ब्रह्मास्त्र चलाया और परशुसे इसके दो टुकड़े कर डाले (ब्रह्मां० ३.४०.१)।

पुष्करारुणि–पु० [सं०] दुरितक्षयके तीन पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (भाग० ९.२३.२०)।

पुष्करावती–स्त्री० [सं०] (१) भरतके पुत्र पुष्करकी राजधानी (ब्रह्मां० ३.६३.१९१; वायु० ८८.१९०)। (२) प्रभासक्षेत्रमें स्थापित सती देवीकी एक मूर्ति (मत्स्य० १३.४३)।

पुष्करावर्तक–पु० [सं०] जल बरसानेवाले एक प्रकारके बादल जो इन्द्र द्वारा काटे गये पर्वतोंके परोंसे उत्पन्न हुए कहे जाते हैं। प्रलयारम्भमें इन्हींसे वृष्टि होती है (मत्स्य० १२५.११.१५; वायु० ५१.३७-४०)।

पुष्करि–पु० [सं०] उरुक्षव और विशालाके तीन पुत्रोंमेंसे एक पुत्र जो ब्रह्मन् हो गया तथा काव्योंके तीन प्रधान महर्षियोंमेंसे एक (मत्स्य० ४९.३९)।

पुष्करिण्य–पु० [सं०] दुरुक्षयके तीन पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (विष्णु० ४.१९.२५)।

पुष्करिणी–स्त्री० [सं०] (१) व्युष्टकी रानी तथा चक्षु नामक मनुकी माता (भाग० ४.१३.१४)। (२) उल्मुककी रानी तथा अंग आदि छह उत्तम पुत्रोंकी माताका नाम (भाग० ४.१३.१७)। (३) वारुणी—प्रजापति वीरणकी पुत्री तथा चाक्षुष मनुकी माता (ब्रह्मां० २.३६.१०२; विष्णु० १.१३.३)। (४) नर्मदातटपर स्थित एक तीर्थ (मत्स्य० १९०.१६)।

पुष्करी–पु० [सं०] उभक्षय और विशालाके तीन पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (वायु० ९९.१६३)।

पुष्कल–पु० [स०] (१) श्री रामचन्द्रके भाई भरतके दो पुत्रोंमेंसे एकका नाम (भाग० ९.११.१२; विष्णु० ४.४.१०४)। (२) एक असुरका नाम। (३) वरुणके एक पुत्रका नाम। (४) क्रौंच द्वीपकी क्षत्रिय जातिके लोग (विष्णु० २.४.५३)। (५) बादलोंका एक वर्ग (ब्रह्मां० ४.२८.६३)।

पुष्कला–स्त्री० [सं०] केतुमाल महादेशकी एक नदीका नाम (वायु० ४४.२०)।

पुष्कलावती–स्त्री० [सं०] गांधार देशकी प्राचीन राजधानी जिसे भरत पुत्र पुष्कलने बसाया था (विष्णु० पुरा०)। पेशावरसे ९ कोस उत्तर स्वात और काबुल नदीके संगमपर यह बसी थी (ब्रह्मां० ३.६३.१९१; वायु० ८८.१०९)।

पुष्टि–स्त्री० [सं०] (१) सोमकी अनुचरी ९ देवियों, जो सोमका अतिशययुक्त प्रभाव देखकर अपने-अपने पतियोंका त्याग कर सोमके समीप चली गयीं, मेंसे एक देवी (ब्रह्मां० २.२६.४५; ३.६५.२६; वायु० ९०.२५)। (२) पुं०=ध्रुव और भूमिके दो पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (वायु० ६२.८२)। (३) श्रेष्ठ सामगाचार्य कृतके २४ शिष्योंमेंसे एक

शिष्यका नाम (ब्रह्मां० २.३५.५२)। (४) सोलह मातृकाओंमेंसे एक=स्त्री०। (५) पुं०—वसुदेव तथा मादिराके १० पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (ब्रह्मां० ३.७१.१७२; वायु० ९६.१७०)। (६) स्त्री०—दक्षकी ६० पुत्रियोंमेंमें एक पुत्री तथा धर्मकी १० पत्नियोंमेंसे एक पत्नी और स्मय (लाभ=वायुं०) की माताका नाम (भाग० ४.१.४९, ५१; वायु० ९.४९.५९; १०.२५, ३५; (विष्णु० १.७.२३,२८)। (७) एक योगिनीका नाम। (८) ब्रह्माकी १० कलाओंमेंसे एक कलाका नाम (ब्रह्मां० ४.३५.९४)। (९) ५१ वर्णशक्तियोंमेंसे एक शक्तिका नाम (ब्रह्मां० ४.४४.७१)। (१०) देवदारु वनमें स्थापित सतीदेवीकी एक मूर्ति (मत्स्य० १३.४७)। (११) पु०—रोहितगणके १० देवोंमेंसे एक देवका नाम (ब्रह्मां० ४.१.८६)। (१२) तीसरे सावर्णि मनुके समयके सप्तऋषियोंमेंसे एक आंगिरस ऋषिका नाम (ब्रह्मां० ४.१.७९)।

पुष्प—पु० [सं०] हिरण्यनाभका पुत्र तथा ध्रुवसन्धिका पिता (ब्रह्मां० ३.६३.२०९)।

पुष्पक—पु० [सं०] (१) महाभद्र झीलके उत्तरमें स्थित शङ्खकूट आदि कई महापर्वतोंमेंसे एक पर्वतका नाम (वायु० ३६.३२;३८.७१) जहाँ ऋषियोंका निवास है (वायु० ३५.६२)। (२) शिवनिर्मित (मत्स्य० १३०.१२) कुबेरके विमानका नाम जो आकाशमार्गसे चलता था (मत्स्य० १४७.१-७; १९१.८८; १९३.१०; वायु० ४१.६-७)। लंकापति रावणने कुबेरको हराकर इसे अपने अधिकारमें कर लिया था। राम-रावण युद्धके पश्चात् श्री रामचन्द्र इसीसे अयोध्या लौटे थे (भाग० ९.१.४५)। तदनन्तर उन्होंने इसे पुनः कुबेरको दे दिया था। (३) १४ खम्भोंवाला मण्डप (मत्स्य० २७०.३.७)।

पुष्पकृच्छ्र—पु० [सं०] एक व्रत विशेष जिसमें एक महीने तक केवल पुष्पोंका क्वाथ पीकर रहनेका विधान है (व्रत रत्नाकर तथा व्रतार्क)।

पुष्पगिरि—पु० [सं०] भारतवर्षके सैकड़ों पहाड़ों, जो कुल पर्वतोंके निकटवर्ती हैं, मेंसे एक पहाड़ (ब्रह्मां० २.१६.२२; वायु० ४५.९२)।

पुष्पजा—स्त्री० [सं०] मलयगिरिसे निकली कई नदियोंमेंसे एक नदीका नाम (मत्स्य० ११४.३०)।

पुष्पजाति—स्त्री० [सं०] मलयगिरिसे निकली कृतमाला, ताम्रपर्णी आदि कई नदियोंमेंसे एक नदीका नाम (ब्रह्मां० २.१६.३६; वायु० ४५.१०५)।

पुष्पदन्त—पु० [सं०] (१) वायुकोणका दिग्गज जिसके ६ दाँत थे। यह बृहत्सामपरिवारका था, ताम्रपर्ण आदि इसके पुत्र थे (ब्रह्मां० ३.७.३३७; वायु० ६९-२२१)। (२) शिवका अनुचर एक गन्धर्व जिसने महिम्नस्तोत्र लिखा था। एक बार शिवका निर्माल्य लाँघ जानेके कारण शिवने शाप द्वारा इसका आकाशगमन रोक दिया था और निम्न स्तोत्रके पाठसे यह शाप मुक्त हुआ था (महिम्नस्तोत्रम्)। (३) एक काद्रवेय नागका नाम (वायु० ६९.७१)। (४) पार्वती द्वारा कुमार कार्त्तिकेयको दिये गये ३ अनुचरोंमेंसे एक अनुचरका नाम। (५) इसने नन्द, सुनन्द आदि भगवान्के अनुचरोंके साथ बलिके असुर अनुचरोंपर आक्रमण किया था (भाग० ८.२१.१७)। (६) देवजनी और मणिवरके ३० पुत्रोंमेंसे एक पुत्र यक्ष (ब्रह्मां० ३.७.१२८)। (७) प्रासाद या गृहके निर्माणमें पहले इनकी पूजा होती है (मत्स्य० २५३.२६; २५५.९; २६८.१५)।

पुष्पदन्तक—पु० [सं०] एक गन्धर्व। गयाशिलाकी बायीं ओर स्थित वादित्रक नामका पर्वत जिसपर यह अन्य गन्धर्वोंके साथ गान-वाद्य करता था (वायु० १०८.४८)।

पुष्पदंष्ट्र—पु० [सं०] (१) एक काद्रवेय नागका नाम (ब्रह्मां० ३.७.३५)। (२) हजार फनोंवाला एक सर्प (मत्स्य० ६.४०)।

पुष्पध्वंस—पु० [सं०] एक प्रधान बन्दरका नाम (ब्रह्मां० ३.७.२४३)।

पुष्पधन्वा—पु० [मं०] कामदेवका एक नाम—दे० कामदेव।

पुष्पध्वज—पु० [सं०] —दे० कामदेव।

पुष्पबाण—पु० [सं०] —दे० अंगज, कामदेव।

पुष्पभद्र—पु० [सं०] —६२ खम्भोंका मण्डप (२७०.३,७)।

पुष्पभद्रक—पु० [सं०] एक उपवन जहाँ अनेक रम्य स्थानोंके साथ विहारार्थ कर्दम और देवहूति—दम्पति गये थे (भाग० ३.२३.४०)।

पुष्पभद्रा—स्त्री [सं०] एक नदी जिसके तटपर हिमालय पर्वतके ऊपर मार्कण्डेयने तपस्या की थी। इसे पुष्पवहा भी कहते हैं (भाग० १२.८.१७; ९.१०.३०)।

पुष्पमित्र—पु० [सं०] (१) मौर्यराज बृहद्रथका सेनापति जो राजाको मार स्वयं सिंहासनारूढ़ हुआ था (ब्रह्मां० ३.७४.१५०; वायु० ९९.३३७-८)। (२) महिषीगणका एक राजा जिसने ६ वर्ष राज्य किया (ब्रह्मां० ३.७४.१८७; वायु० ९९.३७४)। (३) बाह्लिकोंका अनुगामी एक क्षत्रिय राजा (भाग० १२.१.३४)।

पुष्पवर्ष—पु० [सं०] शाल्मलिद्वीपके सात मुख्य पर्वतोंमेंसे एक पर्वतका नाम (भाग० ५.२०.१०)।

पुष्पवहा—स्त्री० [सं०] पुष्पभद्रा नदीका दूसरा नाम (भाग० १२.९.३०)।

पुष्पवान्—पु० [सं०] (१) सत्यहितका पुत्र तथा जहुका पिता (भाग० ९.२२.७)। (२) कुशद्वीपके सात पर्वतोंमेंसे एक (चतुर्थ) पर्वतका नाम (ब्रह्मां० २.१९.५५; वायु० ४९.५०; विष्णु० २-४.४१)। इस पर्वतका दूसरा नाम द्रोण है (मत्स्य० १२२.५७)। (३) ऋषभ (वृषभ=विष्णु०) का धर्मात्मा पुत्र तथा सत्यहितका पिता (वायु० ९९.२२४; विष्णु० ४.१९.८२)। (४) देवजनी और मणिवरके ३० पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (वायु० ६९.१५९)।

पुष्पवाहन—पु० [सं०] रथन्तरकल्पका एक राजा जिसकी तपस्यासे प्रसन्न हो ब्रह्माने एक सुवर्ण कमल दिया था और पुष्करद्वीपका नामकरण इन्हींके नामपर हुआ था। इनका पुष्पवाहन इच्छानुकूल हर स्थानपर जा सकता था। इनकी पत्नीका नाम लावण्यवती था। एक बार यह प्रचेतागणसे मिले और उनकी समृद्धिका कारण जानना चाहा था। उनके कथनानुसार एक बार दुर्भिक्षमें भोजनके अभाव में कुछ कमल पुष्प ले यह वैदिशनगर बेचने गये जहाँ कोई ग्राहक नहीं मिला। कुछ वाद्ययन्त्रोंकी ध्वनि सुन यह उसी ओर बढ़े तो एक पार्षदको विभूतिद्वादशीव्रत

करता पाया और सारे फूल विना मूल्य लिये वहीं अर्पण कर दिये। इस सेवाके फलस्वरूप वह राजा हुए और पार्षद कामदेवकी पत्नी प्रीति हुए (मत्स्य० १००.१-३२)।

पुष्पवाहिनी–स्त्री० [सं०] भारतवर्षकी एक नदी जिसे हिरण्यकशिपुकी शक्तिका अनुभव था (मत्स्य० १५३.६४)।

पुष्पान्वेषी–पु० [सं०] एक प्रवर प्रवर्तक आंगिरस ऋषि (मत्स्य० १९६.१४)।

पुष्पायुध–पु० [सं०] कामेश्वरको विष्णु द्वारा दिया गया विवाहोपहार (ब्रह्मां० ४.१५.२९)।

पुष्पार्ण–पु० [सं०] भ्रमिसुत वत्सर और स्वर्वीथिके छह पुत्रोंमेंसे एक पुत्र जिसकी प्रभा और दोषा नामकी दो रानियाँ थीं और प्रत्येकसे तीन-तीन पुत्र थे (भाग० ४.१३.१२-१३)।

पुष्पोत्कटा–स्त्री० [सं०] (१) केतुमतीके गर्भसे उत्पन्न सुमाली राक्षसकी चार कन्याओंमेंसे एक जो रावण और कुम्भकर्णकी माता थी (रामायण)। (२) माल्यवान्‌की एक पुत्री जो विश्रवाकी चार पत्नियोंमेंसे एक थी। महोदर, महापार्श्व (महापांशु=वायु०), प्रहस्त और खर नामक पुत्र तथा कुम्भीनसी पुत्रीकी यह माता थी (ब्रह्मां० ३.८,३९.५५; वायु० ७०.३४, ४९)।

पुष्य–पु० [सं०] (१) कलियुगका एक पर्यायवाची जिससे कलिकी बुराइयोंका बोध होता है (मत्स्य० १४४.३०-४८)। (२) ऐरावती वीथिका एक नक्षत्र (भाग० ५.२३.६; वायु० ६६.४८)। (३) हिरण्यनाभका पुत्र तथा ध्रवसन्धिका पिता (भाग० ९.१२.५; वायु० ८८.२०९; विष्णु० ४.४.१०८)। (४) एक मास (पौषमास) जिसमें भग नामक सूर्य तपते हैं और जिनके रथपर स्फूर्ज (राक्षस), अरिष्टनेमि (गन्धर्व), ऊर्ण (यक्ष), आयु (ऋषि), कर्कोटक (नाग) और पूर्वचित्ति (अप्सरा) अधिष्ठित रहते हैं (भाग० १२.११.४२)।

पुष्यस्नान–पु० [सं०] विघ्नशांतिके लिए किया जानेवाला एक स्नान जो पूसके महीनेमें पुष्य नक्षत्रका चन्द्रमा होनेपर होता है (कालिकापु०; बृहत्संहिता)। कहते हैं यह स्नान मुख्यतया राजाओंके लिए है।

पूजा–स्त्री० [सं०] पूजा प्रायः सभी जातियोंमें किसी न किसी प्रकारसे होती है। हिन्दुओंके यहाँ पूजाके पञ्चोपचार, दशोपचार और षोडशोपचार ये तीन भेद हैं। निष्काम पूजाको सात्त्विक, सकाम तथा समारोहयुक्त पूजाको राजसिक और विना विधि तथा दिखलौआ पूजाको तामसिक कहते हैं। गणेश आदिकी रोज होनेवाली पूजाको "नित्य", विशिष्ट अवसरपर होनेवाली पूजा "नैमित्तिक" तथा जो पूजा किसी अभीष्टकी सिद्धिके लिए हो उसे "काम्य" कहते हैं (पूजापङ्कजभास्करः तथा पूजासमुच्चय)।

पूतक्रता–स्त्री० [सं०] एक वैदिक ऋषिकी पत्नीका नाम।

पूतक्रतायी–स्त्री० [सं०] इन्द्रपत्नी शचीका नाम–दे० शची।

पूतक्रतु–पु० [सं०] इन्द्रका नाम—दे० इन्द्र।

पूतना–स्त्री० [सं०] (१) बलिकी पुत्री जिसका नाम रत्नमाला था। विष्णुके समान बच्चेको दूध पिलानेकी इच्छा रहनेके कारण यह पूतना नामकी दानवी हुई थी। बालक श्रीकृष्णको मारनेके लिए मथुरापति कंसने इसे गोकुल भेजा था जहाँ यह स्तनोंपर विष लगाकर गयी थी। श्री कृष्णपर इसका कोई प्रभाव न पड़ा और उन्होंने इसका कुल रक्त चूसकर इसका वध कर डाला था (भाग० १०.२.१; ६.२-१७,२८,३४-३८; १४.३५; २६.८; ४३.२५; ब्रह्मां० ४.२९.१२४; ३.७३.१००; वायु० ९.९७; ९८.१००; विष्णु० ५.४.१; ५.७-११, २३; ६.२३; १५.२,२९.५)। (२) बलिकी दो पुत्रियोंमेंसे एक पुत्री (ब्रह्मां० ३.५.४३; वायु० ६७.८४) जो भूतों तथा एक ग्रहकी माता थी (ब्रह्मां० ३.७.१५८, १६१)। (३) एक वर्णशक्तिका नाम (ब्रह्मां० ४.४४.५९)। (४) एक राक्षसी जो भद्रमकी पत्नी तथा नैर्ऋतगणकी माता थी (ब्रह्मां० ३.५९.१२-४)।

पूतनाजीवितहर–पु० [सं०] पूतनाके प्राण हरनेके कारण श्रीकृष्णका एक नाम (ब्रह्मां० ३.३६.२४)।

पूतनानुग–पु० [सं०] एक मरुद्गण (मत्स्य० १७१.५४)।

पूतिकेश्वरतीर्थ–पु० [सं०] एक तीर्थस्थान (शिवपु०)।

पूतिचक्षु–पु० [सं०] भण्डके कई सेनापतियोंमेंसे एक सेनापति (ब्रह्मां० ४.२१.८९)।

पूतिदन्त–पु० [सं०] भण्डका एक सेनापति (ब्रह्मां० ४.२१.८९)।

पूतिनासिक–पु० [सं०] भण्डका एक सेनापति (ब्रह्मां० ४.२१.८९)।

पूतिभाष–पु० [सं०] एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि (हि० शा० सा०)।

पूतिमृत्तिक–पु० [सं०] पुराणानुसार एक नरकका नाम (ब्रह्मां०)।

पूतिमेहन–पु० [सं०] भण्डका एक सेनापति (ब्रह्मां० ४.२१.८९)।

पूत्यास्य–पु० [सं०] भण्डका एक सेनापति (ब्रह्मां० ४.२१.८९)।

पूपाष्टका–स्त्री० [सं०] पौष कृष्णाष्टमी जिस दिन मालपूवेसे श्राद्ध करनेका विधान है (तिथितत्त्व)।

पूयका–स्त्री० [सं०] पुराणानुसार वैश्योंकी एक प्रेतयोनि जिसमें प्रेतोंका आहार पीव लिखा है।

पूयकुण्ड–पु० [सं०] पुराणानुसार एक नरकका नाम।

पूयवह–पु० [सं०] एक नरकका नाम जहाँ दूध, मदिरा, मांस, लाक्षा, नमक, तेल, तिल आदि वेचनेवाले जाते हैं। पशु-पक्षीके पालनेवाले भी यहीं जाते हैं (ब्रह्मां० ४.२.१४८, १६४, १६५; वायु० १०१.१४७, १६२, १६३; विष्णु० २.६.४, १८-९)।

पूयोद–पु० [सं०] पुराणानुसार २८ नरकोंमेंसे एक जहाँ व्यभिचारी स्त्री-पुरुष जाते हैं (भाग० ५.२६.७,२३)।

पूरक–पु० [सं०] मरनेकी तिथिसे १० दिनतक नित्य दिये जानेवाले पिंड। ऐसा विश्वास है कि शरीर जल जानेके पश्चात् इन्हीं पिंडोंसे मृत व्यक्तिके शरीरकी पूर्त्ति होती है इसीसे इन्हें पूरक कहते हैं।

पूरण–पु० [सं०] (१) विश्वामित्रके देवरातादि कई पुत्रोंमेंसे एक पुत्र कौशिक ऋषि (ब्रह्मां० २.३२.११८; ३.६६.६९; मत्स्य० १९८.११५; (वायु० ९१.९७)। (२) पिशाचोंके सोलह कुलोंमेंसे एक कुल जिनकी नीचेको झुकी आँखें, मोटा और नाटा शरीर होता है तथा ये निर्जन खंडहरोंमें

रहते हैं (ब्रह्मां० ३.७.३८१, ३९७) ।

पूरिका—स्त्री० [सं०] नन्दियशाके कुलके तीन राजाओंमेंसे एक राजा शिशिककी राजधानी (ब्रह्मां० ३.७४.१८३) ।

पूरी या पूरण—एक पिशाचगण जिनका मुख बड़ा, भौंहे लटकी तथा विलक्षण होती हैं । ये विशेषतया निर्जन स्थानों में रहते हैं एवं बालकोंके लिए भय उत्पन्न करते हैं । (वायु० ६९.२६३, २७६) ।

पूरु—पु० [सं०] (१) वैराज मनुके एक पुत्रका नाम । (२) जह्नुके एक पुत्र तथा बलाकके पिताका नाम (भाग० ९.१५.३) । (३) चाक्षुप मनुके पुरुष, सुद्युम्न आदि पुत्रोंमेंसे एक पुत्र जिसे कालकी पुत्रीका प्रेम और आशीर्वाद दोनों प्राप्त थे (भाग० ८.५.७; ४.२७.२०; विष्णु० ३.१.२९; मत्स्य० ४.४१; वायु० ६२.६७,९१) । (४) एक राक्षसका नाम । (५) राजा ययाति और शर्मिष्ठाके तीन पुत्रोंमेंसे एक पुत्र तथा जनमेजयका पिता । यदुके रहते पुरुको राज्याभिषेक 'पौरजानपदों'से स्वीकृत हो गया था (भाग० ९.१८.३३-४५; १९.२१, ३३; २०.१-२; वायु० १.१५६; मत्स्य० २४.५४, ६५-७१; ३२,१०;३३.२५-३१; ३४.९-१३, १५-२८, ३१; (विष्णु० ४.१०.६, ३०; १८.३०) । बहुरथ इस वंशका अन्तिम राजा था—दे० पुरु ।

पूरुप—पु० [सं०] चाक्षुप मनुका एक पुत्र (भाग० ८.५.७) ।

पूर्ण—पु० [सं०] क्रोधाके गर्भसे उत्पन्न सिद्ध आदि दस देव गन्धर्वोंमेंसे एक देवगन्धर्व पुत्र (ब्रह्मां० ३.६.३८) ।

पूर्णगिरि—पु० [सं०] पुरुष रूपी वेदके ललाटमें स्थित एक पीठ (वायु० १०४.७९) ।

पूर्णचन्द्रा—पु० [सं०] मूर्त्तियोंके १० पीठोंमेंसे एक जिसके मध्यमें दो मेखलाएँ होती हैं । इससे उपासकको मनोवांछित फल प्राप्त होता है (मत्स्य० २६२.७, १०, १७) ।

पूर्णदर्व—पु० [सं०] भारतके उत्तरका एक देश (वायु० ४५.१२१) ।

पूर्णभद्र—पु० [सं०] (१) एक ऋषि जिसकी कृपासे पृथुलाश्वपुत्र राजा चम्पको हर्यंग नामक पुत्र हुआ था (मत्स्य० ४८.९८; वायु० ९९.१०७) । (२) कश्यपकुलका एक प्रधान नाग (महाभा० आदि० ३५.१२) । (३) एक यक्ष, हरिकेशका पिता जो बचपनसे शिवभक्त था तथा यक्षोंके क्रूर आचरणसे घृणा करता था, अतः पुत्रको निर्वासित कर दिया जो तप करने काशी चला गया (मत्स्य० १८०.५-१४) । (४) देवजनी और मणिवरके कई पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (वायु० ६९.१५८) ।

पूर्णमास—पु० [सं०] (१) श्रीकृष्ण और कालिन्दीके दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (भाग० १०.६१.१४) । (२) देवजनी और मणिवरके कई पुत्रोंमेंसे एक यक्ष पुत्र (ब्रह्मां० ३.७.१३०) । (३) अनुमतिके गर्भसे उत्पन्न धाताके एक पुत्रका नाम (भाग० ६.१८.३) । (४) मरीचि तथा संभूतिका एक पुत्र, जिसकी पत्नीका नाम सरस्वती था (ब्रह्मां० २.११.११; वायु० २८.९) ।

पूर्णमुख—पु० [सं०] धृतराष्ट्रकुलका एक नाग जो जनमेजयके यज्ञमें जल गया था (महाभा० आदि० ५७.१६) ।

पूर्णशैल—पु० [सं०] ललितादेवीका एक पवित्र पर्वत (ब्रह्मां० ४.४.४९) ।

पूर्णांश—पु० [सं०] क्रोधाके सिद्ध आदि दस देवगन्धर्व पुत्रोंमेंसे एक देवगन्धर्व पुत्र (ब्रह्मां० ३.६.३८) ।

पूर्णा—पु० [सं०] चन्द्रमाकी एक कला (ब्रह्मां० ४.३५.९२) ।

पूर्णांगद—पु० [सं०] धृतराष्ट्र-कुलके एक नागका नाम (महाभा० आदि० ५७.१६) ।

पूर्णामृत—पु० [सं०] चन्द्रमाकी एक कलाका नाम —दे० (पूर्णा) ।

पूर्णायु—पु० [सं०] कश्यप और क्रोधाके दस देवगन्धर्व पुत्रोंमेंसे एक देवगन्धर्वका नाम (महाभा० आदि० ६५.४६) ।

पूर्णावतार—पु० [सं०] षोडशकलायुक्त अवतार । विष्णुके नृसिंह, राम और श्रीकृष्ण षोडश कलायुक्त अवतार थे (ब्रह्मवैवर्त्तपु०) ।

पूर्णाशा—स्त्री० [सं०] एक नदीका नाम (महाभा०) ।

पूर्णिमा—पु० [सं०] (१) मरीचि और कलाका एक पुत्र जो विरज और विश्वग (दो पुत्र) तथा देवकुल्या (पुत्री)का पिता था (भाग० ४.१.१३-१४) । (२) षोडशपत्राब्जपर स्थित दिनमिश्रा, तमिस्रा आदि षोडश शक्तियोंमेंसे एक शक्ति (ब्रह्मां० ४.३२.१२) । (३) शुक्ल पक्षका अंतिम दिन जो देवगण और पितृगण दोनोंको प्रिय है (वायु० ५६.३९, ४२; मत्स्य० १४१.३९) ।

पूर्णिमागत्तिक—पु० [सं०] भार्गवकुलके गोत्रकारोंमेंसे एक गोत्रकार ऋषि (मत्स्य० १९५. २८) ।

पूर्णोत्कट—पु० [सं०] पूर्वमें स्थित एक पर्वत (मार्कण्डेयपु०) ।

पूर्णोत्संग—पु० [सं०] श्रीमल्लकर्णि (शांतकर्णि० विष्णु०)का पुत्र तथा शांतकर्णिका पिता । इसने केवल १८ वर्षतक राज्य किया था (मत्स्य० २७३.३; विष्णु० ४.२४.४५) ।

पूर्णोदरी—स्त्री० [सं०] सोलह स्वरशक्तियोंमेंसे एक स्वरशक्ति (ब्रह्मां० ४.४४.५५) ।

पूर्थ—पु० [सं०] कश्यपकुलका एक प्रवरप्रवर्तक ऋषि (मत्स्य० १९९.१६) ।

पूर्वचित्ति—स्त्री० [सं०] इंद्रासनकी एक श्रेष्ठ अप्सराका नाम जिसे ब्रह्माने आग्नीध्रकी पत्नी स्वरूप भेजा था । नाभि किंपुरुष आदि नव पुत्रोंको जन्म दे यह पुनः ब्रह्माके पास चली गयी थी । यह अप्सरा पूषमासमें सौरगणके अन्य छहके साथ सूर्यरथपर अधिष्ठित रहती है (वायु० ६९.४९; भाग० ५.२.३-५, १९-२०; ११.१६.३३; १२.११.४२; ब्रह्मां० २.२३.१८; ३.७.१५; ४. ३३.१९; विष्णु० २.१.१४) ।

पूर्वज—पु० [सं०] ऋभु और सनत्कुमार जिनकी सृष्टि सर्वप्रथम हुई थी । वैराज यागमें ये दोनों योग धर्ममें प्रवृत्त थे । इनके साथ रुचि, दक्ष, मरीचि, भृगु, अंगिरा, पुलस्त्य, पुलह वशिष्ठ, क्रतु, नीललोहित—ये ब्रह्माके बारह मानसपुत्र हुए । इनके बारह परिवार (वंश) थे जो सब देवतुल्य थे (वायु० ९.१०६.१०) ।

पूर्वतिथि—पु० [सं०] एक आत्रेय मंत्रकार ऋषि (वायु० ५९.१०४) ।

पूर्वदेव—पु० [सं०] असुर पहिले देवता थे पर कर्मानुसार भ्रष्ट होकर ये असुर कहलाने लगे (हिंदूधर्मशास्त्र तथा

पुराणादि)।

पूर्वधर्म–पु० [सं०] जिसमें सत्य, जप, तप तथा दान सम्मिलित हैं (मत्स्य० १४२.५८)।

पूर्वगर्वत–पु० [सं०] उदयाचल। पुराणानुसार यह कल्पित पर्वत है जिसके पीछेसे सूर्योदय होता है (मत्स्य० ६३-६९)।

पूर्वमारक–पु० [सं०] भण्डके ३० दुर्दान्त एवं रणपण्डित पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (ब्रह्मां० ४.२६.४९) तथा सेनापति (४.२१.८३)।

पूर्वसंहिता–स्त्री० [सं०] कश्यप, सावर्णि और शांशपायन रचित तीन संहिताएँ तथा चौथी सामिकी संहिता ये ही पूर्वसंहिताएँ हैं (वायु० ६१.५८)।

पूर्वसरस्वती–स्त्री० [सं०] भारतवर्षकी एक नदी जो अन्यान्य अनेक नदियों तथा पर्वतादि भूभागके साथ हिरण्यकशिपुके अधीन थी (मत्स्य० १६३.६३)।

पूर्वसाहस–पुं० [सं०] निश्चित समयपर ऋण न लौटा देनेवालेकी एक सजा (मत्स्य० २२७.४)।

पूर्वातिथि–पु० [सं०] अत्रिकुलका एक गोत्रकार तथा मन्त्र-कृत् ऋषि (मत्य० १४५.१०८)।

पूर्वाषाढ़ा–पु० [सं०] २७ नक्षत्रोंमेंसे एक नक्षत्रका नाम (भाग० ५.२३.६; १२.२.३२)।

पूषदंतहर–पु० [सं०] शिवके अंशसे उत्पन्न वीरभद्रका नाम जिन्होंने दक्ष-यज्ञमें पूषाके दाँत तोड़े थे––दे० वीरभद्र।

पूषघ्न–पु० [सं०] पुराणानुसार वैवस्वत मनुका एक पुत्र।

पूषभाषा–पु० [सं०] इंद्रकी नगरीका एक नाम।

पूषमित्र–पु० [सं०] गोभिलका एक नाम।

पूषा–पु० [सं०] (१) एक वसु जो रात्रिके एक भागका देवता है। रात्रिके अज, अहिर्बुध्न आदि १५ मुहूर्तों (विभागों), जो चन्द्रमाकी गति द्वारा किये जाते हैं, मेंसे एक विभागका नाम (वायु० ६६.४३; १०६.५९; ब्रह्मां० ३.३.४२)। (२) अदिति-का एक पुत्र जो निःसंतान था। दक्षपर शिवको क्रुद्ध देख यह हँसा था, अतः इसके दाँत वीरभद्रने तोड़ डाले थे (भाग० ६.६.३९, ४३)। (३) तपा (माघ) मासमें तपने-वाले सूर्यका एक नाम (भाग० १२.११.३९; ब्रह्मां० ३.३,६८)। (४) विष्णुके वामनावतारकी भृकुटियोंपरके देवता जब उन्होंने बलिको अपना साक्षात् दर्शन दिया था (मत्स्य० २४६.५८)। सब देवताओंका वास उनमें था (विष्णु० १.९.६३)। दण्डीगण इनकी उपासना करते हैं (यत्स्य० २५५.१२)। (५) धाता, अर्यमा आदि बारह आदित्यों, जो कश्यप और अदितिके पुत्र थे, मेंसे एक आदित्य (वायु० ६६.६६; मत्स्य० ६.४;१४६.२०; १७१.५६)। कहते हैं दक्षके यज्ञमें शिवने क्रुद्ध हो इन्हें एक चपत मार दिया जिससे इनके दाँत सब गिर पड़े (मत्स्य० २५३.२५; १५६.७; विष्णु० १.१५.३०; ५.१६.७)। गृह-निर्माणमें इनकी पूजा होती है (मत्स्य० २६८.१३)। (६) एक देवता (सूर्य) जो शरत् ऋतुमें सूर्य-रथपर अधिष्ठित सौरगणके छह ऋषि, यक्ष, गन्धर्व, राक्षस, नाग तथा अप्सराके साथ तपते हैं (वायु० ५२.१२; वि० २.१०.११)। (७) एक वैदिक देवता जो कहीं सूर्यके रूपमें, कहीं पशुरक्षकके रूपमें, कहीं धनरक्षकके रूपमें और कहीं क्षेमके रूपमें मिलते हैं। (८) एक देवता जिसने यज्ञमें दक्षकी सहायता की थी। चण्डीशने इसपर आक्रमण किया तथा दक्षपर क्रुद्ध हुए शिवको देख यह हँसा था जिसपर वीरभद्रने इसके सब दाँत तोड़ डाले थे (भाग० ४.५.१७, २१; ६.५१; ७.४)।

पूष्णा–स्त्री० [सं०] (१) कुमार कार्त्तिकेयकी अनुचरी एक मातृकाका नाम (महाभा० शल्य० ४६.२०)। (२) चंद्रमाकी अमृता, मानदा, पूष्णा, तुष्टि, पुष्टि, रति, धृति, शशिनी, चन्द्रिका, कान्ति, ज्योत्स्ना, श्री, प्रीति, अंगदा, पूर्णा, पूर्णामृता—ये सोलह कलाएँ हैं इनमेंसे एक कलाका नाम (ब्रह्मां० ४.३५.९२)।

पृतनासाङ्–पु० [सं०] इंद्रका एक नाम –दे० इंद्र।

पृथ–पु० [सं०] त्रयोदश मन्वन्तरमें रौच्यमनुके दस पुत्रों-मेंसे एक पुत्रका नाम (वायु० १००.१०९)।

पृथक-पृथक तीर्थक्षेत्रीय व्रत–पु० [सं०] अपने स्थानसे तीर्थस्थानोंमें किये गये व्रतादिका फल अधिक होता है—"फाल्गुनकी पूर्णिमा को नैमिषारण्यमें; चैत्रीको गंडकीमें; वैशाखीको हरिद्वारमें; ज्येष्ठीको पुरुषोत्तमक्षेत्रमें; आषाढ़ीको कनखलमें; श्रावणीको केदारमें; भाद्रीको बदरीनारायणमें; आश्विनीको कुसुदगिरि (कुञ्जाद्रि)में; कार्तिकीको पुष्करमें; मार्गीको कान्यकुब्जमें; पौषीको अयोध्यामें और माघीको प्रयागमें अभीष्ट व्रत, दान, यज्ञादि करनेसे कई गुना अधिक फल प्राप्त होता है (गर्गसंहिता)।

पृथा–स्त्री० [सं०] यदुवंशी राजा शूरकी पुत्री तथा पाण्डव-माता कुंतीका एक नाम। शूरने इसका नाम पृथा रखा था पर निःसंतान कुंतिभोजको यह दत्तकरूपमें दे दी गयी थी, इससे इसका कुन्ती नाम पड़ा यह वीरमाता थी तथा दुर्वासाके मंत्रबलसे युधिष्ठिर (धर्मसे), भीम (पवनसे), तथा अर्जुन (इंद्रसे) उत्पन्न इसीके पुत्र थे (भाग० १,८.३, १७, ४४; १३.३; १५.३३; ३.१.३९-४०; ९.२४.३०-३६; १०.४९.१; ५८.७; ७१.३९; ब्रह्मां० ३.७१;१५०-५१; विष्णु० ४.१४.३१.४; मत्स्य० ४६.४.७-९; वायु० ९६.१४९-१५३; ९९.२४३, विष्णु० ४.१४.३५-६)।

पृथिवी–स्त्री० [सं०] (१) सर्वप्रथम राजा पृथुने अपनी पुत्रीसम इसे दत्तक लिया था; इसलिए इसे पृथिवी कहते हैं। यह विभिन्न जनपदों, नगरों, जातियों, पहाड़ों, नदियों आदिकी माता हैं (मत्स्य० १०.१-३५; वायु० ४२.७८-८१; ५०.२-४; ६३.३-४; ७४.३०)। ५० (१०० १/२ करोड़-मत्स्य०) करोड़ योजन इसका क्षेत्रफल है। इसका बाह्य विस्तार योजनाग्रसे आरंभ होता है जो मेरुसे हर दिशामें १ करोड़ है; ३ करोड़ योजन चारों दिशाओंमें; पृथ्वीकी भीतरी परिधि; पर्यासमे नक्षत्र-मण्डलके बराबरकी है (मत्स्य० १२४.१२; वायु० ५०.६८.७५)। इसमें सात द्वीप हैं जो स्वायंभुव मनुके आश्रित थे (मत्स्य० १६६.६; २५८.११; वायु० ३३.४-५)। (२) पृथुका अनुकरण करके भिन्न भिन्न रस भिन्न भिन्न जीवोंने पृथ्वीसे खींचे थे (भाग० ४.१८.१३.२७)। इसे धरा भी कहते हैं, क्योंकि यह सबको धारण करती है। सर्वप्रथम इसे ब्रह्माने दूहा, तथा वैवस्वत मन्वंतरमें पृथुने पृथ्वीको दूहा था (ब्रह्मां० २.२०.१-४; २१.१२. ३७.३, १२-२०; ३.३.३४;९.७९; ३.२.११-१८)।

पृथिवीपद्म–पु० [सं०] जिसे लोकपद्म भी कहते हैं और मेरु ही जिसका तंतुनाल है। इसी पद्मसे चतुर्मुख ब्रह्मा उत्पन्न हुए! पृथ्वीको कमलके अनुरूप कहा गया है (वायु० ३४.३७, ४४; ४१.८६)।

पृथु–पु० [सं०] (१) चौथे मन्वंतरके एक सप्तर्षिका नाम। (२) पुराणानुसार एक दानव का नाम। (३) इक्ष्वाकुवंशके पाँचवें राजाका नाम जो राजा त्रिशंकुके पिता थे। (४) राजा वेनके पुत्रका नाम=वैन्य। पुराणानुसार राजा वेन निःसंतान मरे। ब्राह्मणों द्वारा राजा वेनके हाथ पकड़कर मथनेपर एक स्त्री अर्चि और एक पुरुष हाथोंमेंसे उत्पन्न हुए। ब्राह्मणोंने पुरुषका नाम पृथु रखा और स्त्री अर्चि पृथुकी पत्नी बनी जिससे पृथुके पाँच पुत्र हुए सब उन्हींके समान यशस्वी थे (भाग० ४.१५.५-६; ४.२३.१९-२८)। इन्होंने पृथ्वीको प्रोथित समतल बनाया था अतः इन्हें पृथु कहते हैं। इन्होंने कृषिका आविष्कार किया था। सर्वविध राजशासनकी नीव डाली थी, इसीलिए इन्हें आदिराज कहते हैं। इनकी शासनव्यवस्था अत्युत्तम थी (भाग० २.८.९; ३.१.२२; ४.१३.२०; १.३.१४; मत्स्य० ४.४४; ८.२-१२; वायु० ६२.१२६-१८२; तथा ६३; (विष्णु० १.१३-३९)। इन्होंने ९९ यज्ञ किये थे और जब सौवाँ यज्ञ करने लगे तब इंद्र इनका घोड़ा लेकर भागे। पृथुपुत्र इंद्रसे घोड़ा छीनकर वापिस ले आये इसलिए परमर्षियोंने उनके अद्‌भुत कर्मसे प्रसन्न होकर उनका नाम "विजिताश्व" रखा (भाग० ४.१९.१२-१५, २१)। यज्ञ समाप्त कर पृथुने सनत्कुमारसे ज्ञान प्राप्त किया (भाग० ४.२०.३८; २१ पूरा; २२.१.४८) और अपने पुत्रोंको राज्य दे पत्नी सहित तप करने चले गये। वहीं योग द्वारा उनका शरीरांत हुआ था और अर्चि सती हुई। (भाग० ४.२३.१९-२८)।

पृथुके राज्याभिषेकके समय इंद्र, ब्रह्मा, यम, रुद्रादि देवताओंने उपहार भेजे थे और इनके शासन-प्रबन्धकी प्रशंसामें सबने यशगान गाये। इनका राज्य विस्तार उदयाचलतक था (भाग० ४.१५-१६ पूरा)। पृथ्वीसे इन्होंने नाना प्रकारके रस सब वनस्पतियोंसे निकाले तथा इनका अनुकरण ऋषियों, देवों, गन्धर्वों, पर्वतों, वृक्षों तथा असुरोंने किया। पहाड़ी प्रदेश प्रोथित कर समतल बनवाये गये; गाँव, नगर तथा छोटे २ अर्धविकसित कसबोंकी सर्वप्रथम स्थापना इसी समय हुई थी (भाग०४ अ० १७-१८ पूरा; विष्णु० १.१३-९, ४०-४३)। यह सबसे पहले क्षत्रिय थे जो राजा हुए। पृथुके ही नामपर पृथ्वीका नामकरण हुआ (ब्रह्मां० २.३६.८३)। इनके राज्याभिषेकका समय प्रतिसर्गका अवसर था, जब भिन्न २ जीवोंके शासक नियुक्त किये गये, पृथ्वीसे अन्न तथा अन्य खाद्यान्न प्राप्त हुए तथा सारी सृष्टि धन-धान्यसे लहलहा उठी। अर्थशास्त्रके नियमों तथा सूत्रोंकी आवश्यकता नहीं रही। पृथुने कन्याकुमारीसे लेकर हिमालयतककी भूमि समतल बनवायी, जंगल कटवाये गये (मत्स्य० १०.१०-३५) जन-जीवन सुदृढ़ तथा सुरक्षित बन गया और सब लोग सुखी थे (मत्स्य० २७४.१२)। (५) शिवका एक नाम (हि०श०सा०)। (६) दस विश्वेदेवोंमेंसे एक विश्वेदेवका नाम। (७) तामस मन्वंतरके ज्योतिर्धाम आदि सप्तर्षियोंमेंसे एक ऋषि। (८) तामस मनुके दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (भाग० ८.१.२७; वायु० ६२.४१-७१; विष्णु० ३.१.१८)। एक काश्यपवंशी मंत्रकृत् ऋषिका नाम (ब्रह्मां० २.३६.४७; मत्स्य० ९.१५; १४५.१००; वायु० ५९.९७)। अनेनाका पुत्र तथा विश्वरंधि (विष्टराश्व=विष्णु)का पिता (भाग० ९.६.२०; ब्रह्मां० ३.६३.२६; वष्णु० ४.२.३५)। (१०) रुचकके पाँच पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (भाग० ९.२३.३५)। (११) वृष्णिवंशके चित्ररथके विदूरथ आदि कई पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (भाग० ९.२४.२८; १०.५०.२०(३); ५०(५)१२) जिसे कृष्णने मथुराके उत्तरी प्रवेशद्वारकी रक्षाके लिए नियुक्त किया था। प्रभासके यादव गृहयुद्धमें यह मारा गया (विष्णु० ५.३७.४६)। (१२) अनेनाका पुत्र तथा पृषदश्वका पिता (वायु० ८८.२५)। (१३) प्रस्तावके पुत्र विभुका पुत्र तथा नक्तका पिता (ब्रह्मां० २.१४.६७; वायु० ३३.५७; विष्णु० २.१.३८)। (१४) सुप्रतीक हाथीके तीन पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (ब्रह्मां० ३.७.३४१)। (१५) द्रविड देशके सम्पन्न ब्राह्मणकुलमें उत्पन्न शिवदत्तके चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (ब्रह्मां०३.३५.१२)। (१६) वृष्णिसुत चित्रकके बारह पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम। श्रविष्ठा और श्रवणा इनकी दो बहिनें थीं (ब्रह्मां० ३.७१.११४; वायु० ९६.११३; विष्णु० ४.१४.११)। (१७) ककुत्स्थसुत सुयोधनका एक पुत्र तथा विश्वगका पिता (मत्स्य० १२.२९)। (१८) अश्विनी और अक्रूरके १३ पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (मत्स्य० ४५.३२)। (१९) नीपवंशी पारका पुत्र तथा सुकृतका पिता (मत्स्य० ४९.५५)। (२०) अजमीढवंशी पुरुजानुका पुत्र तथा भद्राश्वका पिता (मत्स्य० ५०.२)। (२१) इनके यज्ञसे एक सूत उत्पन्न हुआ था (वायु० १,३३-४); यह राजा एक मंत्रकृत् था (वायु० ५९.९७)। इनके दो पुत्र थे—अंतर्धि (अंतर्धान) और वादी (वायु० ७०.२१; (विष्णु० १.१३.९३; १४.१; २२.१)। (२२) रुक्मकवचसुत परावृत्के पाँच पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (विष्णु० ४.१२.११)। (२३) समरसुत सुपारका पुत्र तथा सुकृतिका पिता (विष्णु० ४.१९.४२)।

पृथुक–पु० [सं०] (१) वह भुना हुआ अन्न (चिउड़े) जिन्हें कुचेल उपहार स्वरूप श्रीकृष्णके पास ले गया था (भाग० १०.८०.१४; ८१.५-९,३५)। (२) पुराणानुसार चाक्षुष मन्वंतरका एक देवता। (३) कुचेलका पिता, पांचालाधिपति नील जो उग्रायुधसे मारा गया था (मत्स्य० ४९.७७)। (४) चाक्षुष मन्वंतर (जो छठा था)के देवताओंका एक वर्ग जो संख्यामें आठ थे। ब्रह्मां०के अनु०= ओजिष्ठ, शकुन, वानहृष्ट, सत्कृत, सत्यदृष्टि, जिगीष, विजम और अजित। वायु०के अनु०=अजिष्ट, शाक्यन, वानपृष्ठ, शांकर, सत्यधिष्णु, विष्णु, विजय और अजित (ब्रह्मां० २.३६.६६.७४; वायु० ६२.५७.६२; विष्णु० ३.१.२७)।

पृथुकर्मा–पु० [सं०] चक्रवर्ती शशबिन्दुके प्रधान छह पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (ब्रह्मां० ३.७.२२; विष्णु० ४.१२.६)।

पृथुकीर्ति–स्त्री० [सं०] (१) पुराणानुसार पृथाकी छोटी बहनका नाम। (२) पु०–शशबिन्दुके प्रधान छह पुत्रोंमेंसे

एक पुत्रका नाम (ब्रह्मां० ३.७०.२२; मत्स्य० ४४.२१; वायु० ९५.२२; विष्णु० ४.१२.६)।

पृथुजय–पु० [सं०] शशविन्दुके प्रधान छह पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (वायु०, ब्रह्मां० तथा मत्स्य=पृथुंजय) (विष्णु० ४.१२.६)।

पृथुतम–पु० [सं०] राजा पृथुश्रवाका पुत्र तथा उशनाका पिता (विष्णु० ४.१२.७-८)।

पृथुञ्जय–पु० [सं०] शशविन्दुका एक पुत्र (विष्णु०=पृथुजय) (ब्रह्मां० ३.७.२२; मत्स्य० ४४.२१; वायु० ९५.२१)।

पृथुदर्भ–पु० [सं०] शिविके लोकविख्यात चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (मत्स्य० ४८.१९)।

पृथुदाता–पु० [सं०] शशविन्दुके प्रधान छह पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (वायु० ९५.२२)।

पृथुदान–पु० [सं०] शशविन्दुके प्रधान छह पुत्रोमेंसे एक पुत्र (विष्णु० ४.१२.६)।

पृथुधर्म–पु० [सं०] (१) शशविन्दुके छह प्रधान पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (वायु० ९५.२१)। (२) शशविन्दुका एक पौत्र (मत्स्य० ४४.२१)।

पृथुमना–पु० [सं०] शशविन्दुके छह प्रधान पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (मत्स्य ४४.२१)।

पृथुयशा–पु० [सं०] शशविन्दुके छह प्रधान पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (ब्रह्मां० ३.७०.२२; मत्स्य० ४४.२१; वायु० ९५.२१; विष्णु० ४.१२.६)।

पृथुरश्मि–पु० [सं०] शुक्राचार्यके गौ नामकी भार्यासे चार पुत्र हुए। इनमेंसे दूसरे पुत्र वरत्री (वरुत्री वायु०)के चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (ब्रह्मां० ३.१.७९; वायु० ६५.७९)।

पृथुरुक्म–पु० [सं०] रुक्मकवचके महापराक्रमी पाँच पुत्रोंमेंसे एक पुत्र जो अपने भाई तथा राजा रुक्मेपुका अनुगामी था (ब्रह्मां० ३.७०२९)। ज्यामघको निर्वासित करनेवाले राजाका यह आश्रित था (वायु० ९५.२८)। भाईके शासनमें सहायता देनेके लिए यह नियुक्त था (मत्स्य० ४४.२८-९)।

पृथुदांत–पु० [सं०] शशविन्दुके छह प्रधान पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (ब्रह्मां० ३.७०.२२)।

पृथुलाक्ष–पु० [सं०] चतुरंगका पुत्र तथा बृहद्रथ आदि तीन पुत्रोंका पिता (भाग० ९.२३.१०-११); चम्पका पिता (मत्स्य० ४८.९.६; विष्णु० ४.१८.१९-२०)।

पृथुलाश्व–पु० [सं०] चतुरंगका एक पुत्र (भाग०, विष्णु० तथा मत्स्य०=पृथु लाक्ष) (वायु० ९९.१०५)।

पृथुश्रवा–पु० [सं०] (१) शशविन्दुके छह प्रधान पुत्रोंमेंसे एक पुत्र तथा धर्म (प्रथुतम=विष्णु) का पिता (भाग० ९.२३.३३; ब्रह्मां० ३.७०.२२; वायु० ९५.२१; विष्णु० ४.१२.६-७; मत्स्य० ४४.२२)। (२) कुमार कार्त्तिकेयके एक अनुचरका नाम (महाभा० शल्य० ४५.६२)। (३) नवें मनुके एक पुत्रका नाम (मार्कण्डेयपु०)। (४) प्रथम सावर्णमनु (दक्ष सावर्णि=विष्णु०) का एक पुत्र (ब्रह्मां० ४.१.६५; विष्णु० ३२.२४)।

पृथुषेण–पु० [सं०] (१) विभु और रतिका पुत्र जिसका विवाह आकूतिसे हुआ था जिसके गर्भसे नक्त नामक पुत्र हुआ (भाग० ५.१५.६)। (२) रुचिराश्वका पुत्र पार (मत्स्य०=पौर) का पिता तथा नीपका दादा (भाग० ९.२१.२४; मत्स्य० ४९.५१; विष्णु० ४. १९.३७)।

पृथुस्वाहा–पु० [सं०] शशविन्दुके ६ प्रसिद्ध पुत्रोंका विशेपण अर्थात् प्रचुर यज्ञ करनेवाले पृथुश्रवा, पृथुयशा, पृथुधर्म, पृथुञ्जय, पृथुकीर्त्ति, पृथुंदाता (वायु० ९५.२१-२)।

पृथुसेन–पु० [सं०] कर्णसुत वृपसेनका पुत्र (मत्स्य० ४८.१०२)।

पृथूदक–पु० [सं०] सरस्वती नदीके तटपरका एक प्रसिद्ध प्राचीन तीर्थ जहाँ पुराणानुसार पृथुने राजा वेनकी अन्त्येष्टि क्रिया की थी और १२ दिनोंतक अभ्यागतोंको जल पिलाया था। इसीसे यह नाम पड़ा, आजकल इसे पोहोआ कहते हैं (भाग० १०.७८.१९)।

पृथ्वी–स्त्री० [सं०] (१) सर्वप्रथम ब्रह्माने इसका दोहन किया और वायु वछड़ा वना था। स्वायंभुव मन्वंतरमें स्वायंभुव मनु वछड़ा वने और अग्नीध्रने दोहन किया। स्वारोचिप मन्वन्तरमें यह कार्य चैत्रने किया जव स्वारोचिष मनु वछड़ा वने। उत्तम मन्वन्तरमें उत्तम मनु वछड़ा वने और देवभुजने दोहन किया। तामस मन्वंतरमें वलवन्धुने दोहन किया तथा तामसमनु वछड़ा वने थे। चारिष्णवकालमें पुराणने दोहन तथा चारिष्णव मनुने वछड़ेका कार्य किया। चाक्षुप मनुके कालमें दोहन पुराणने तथा वछड़ेका काम चाक्षुप मनुने स्वयं किया था। और वैवस्वतकालमें वैन्य (आदिराज पृथु) ने दोहन किया था जव चाक्षुपमनु स्वयं वछड़ा वने थे (वायु० ६३.१२.१९)। (२) पृथिवीमें मेघोंके मार्गतक प्रथम वातस्कंद (जिसमें सात वायु हैं) जिसे आहव भी कहते हैं, संचार करता है (वायु० ६७.११४)।

पृथ्वीतलसंभूत–पु० [सं०] अरुंधती और धर्मका पुत्र (मत्स्य० ५.१९)।

पृथ्वीधर–पु० [सं०] गृह-निर्माणके समय इसकी पूजा की जाती है (मत्स्य० २५५.३०.३९; २६८.२३)।

पृश्नि–स्त्री० [सं०] (१) प्रजापति सुतपाकी रानीका नाम जिन्होंने स्वायुंभव मनुके कालमें अतिदुष्कर तपस्या द्वारा भगवान् विष्णुको प्रसन्नकर उनके सदृश पुत्र होनेका वर माँगा था जिसके फलस्वरूप प्रश्नि गर्भसे हुए (भाग० १०.३.३२-३८)। (२) युधाजित्‌का पुत्र तथा माद्रीका पौत्र जिसके श्वफल्क और चित्रक दो पुत्र थे (वायु० ९६.१०१)। (३) सूर्यकी एक पत्नी जिनके गर्भमे सावित्री, व्याहृति और त्रयी तीन कन्याएँ अग्निहोत्र, पशुयाग, सोमयाग, चातुर्मास्य पंच महायज्ञ ये पुत्र उत्पन्न हुए (भाग० ६.१८.१)।

पृश्निगर्भ–पु० [सं०] स्वायंभुवयुगमें पृश्नि तथा सुतपासे उत्पन्न हरिका एक अवतार (भाग० १०.३.४१)।

पृश्निज–पु० [सं०] देवताओंका एक वर्ग जो श्राद्ध करता है (ब्रह्मां० ३.१०, १०; वायु० ७३.६१)।

पृश्निमेधा–पु० [सं०] सुमेधावर्गके देवगण, जो संख्यामें १४ है, मेंका एक सुमेधा देव (ब्रह्मां० ३.३६.५९)।

पृष–पु० [सं०] ग्यारहवें मनु धर्मसावर्णिके युगके इन्द्रका नाम (विष्णु० ३.२.३०)।

पृषत–पु० [सं०] सोमक अजमीढ़का सबसे कनिष्ठ पुत्र

तथा राजा द्रुपदके पिताका नाम (भाग० ९.२२.२; वायु० ९९.१९२; विष्णु० ४.१९.७३)।

पृपतदल–पु० [सं०] पवन देवके घोड़ेका नाम (संस्कृत० श० को०)।

पृपदर्भ–पु० [सं०] शिविके चार पुत्रोंमेंसे एक (ज्येष्ठ) पुत्र (विष्णु० ४.१८.१०)।

पृपदश्व–पु० [सं०] (१) मान्धातके वंशज अनरण्यका पुत्र तथा हर्यश्वका पिता (विष्णु० ४.३.१८)। (२) एक प्राचीन राजर्षिका नाम जिन्हें राजा अष्टकसे खड्गकी प्राप्ति हुई थी (महाभा० शान्ति १६६.८०)। (३) विरूपका पुत्र तथा रथीतरका पिता (भाग० ९.६९.१; ब्रह्मां० ३.६३.६; वायु० ८८.६; विष्णु० ४.२.८-९)। तैंतीस आंगिरस-श्रेष्ठ मन्त्रकृतोंमेंसे एक मंत्रकृत् ऋषि (मत्स्य० १४५.१०३; वायु० ६९.१००)। (४) पृथुका पुत्र तथा आंध्रका पिता (वायु० ८८.२६)।

पृपदाज्य–पु० [सं०] सदध्याज्य अर्थात् दहीसे मिश्रित घृत जो तेरहवें रौच्य मन्वन्तरके सुत्रामदेव वर्गके देवोंके भोगके लिए नैवेद्य दिया जाता है (ब्रह्मां० ४.१.९८; वायु० १००.१०३)।

पृपध्र–पु० [सं०] वैवस्वत मनुके श्रद्धा देवीसे उत्पन्न दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्र जो च्यवन गुरुकी आज्ञासे उनकी गौशालाकी सावधानीसे रक्षा करते थे। एक रात बाघने आ गुरुकी एक गौको पकड़ लिया। इन्होंने व्याघ्रके धोखेसे अंधेरेमें गौका शिर और व्याघ्रके कान काट डाले। गोवधके कारण गुरुशापसे यह शूद्र हो गये। तदनन्तर पश्चात्तापपूर्वक भगवद्भजन और तीर्थाटन करते हुए दावाग्निमें भस्म होकर इन्होंने परब्रह्मकी प्राप्ति की (भाग० ८.१३.३; ९.१.१२; २.३-१४; ब्रह्मां० ३.६०.३; ३.३१.१; मत्स्य० ११.४१; १२.२५; वायु०६४.३०; ८५.४; ८६.१; विष्णु० ३.१.३४; ४.१.७.१७)।

पृपभ–पु० [सं०] स्वारोचिप मन्वंतरके सप्तर्पियोंमेंसे एक ऋपि (विष्णु० ३.१.११)।

पृपभाषा–स्त्री० [सं०] पृषा अमृतवर्पिणी भाषावाली अमरावती अर्थात् इंद्रपुरीका एक नाम (हि० वि० को०)।

पृष्टशृंगी–पु० [सं०] भीमसेनका एक नाम (महाभा०)।

पृष्ठा–पु० [सं०] सुकर्म वर्गके दस देवोंमेंसे एक देवका नाम (ब्रह्मां० ४.१.८८; वायु० १००.९२)।

पृष्टि–स्त्री० [सं०] मरीचि और संभूतिकी चार पुत्रियोंमेंसे एक पुत्रीका नाम (वायु० २८.९)।

पृष्ठेमुख– पु० [सं०] कार्त्तिकेयके एक अनुचरका नाम (हि० वि० को०)।

पेशस्कृत्–पु० [सं०] पुरञ्जनकी नगरीके दो अंधे और गूंगे नागरिक जो पुरुपकी सहायतार्थ हैं। लाक्षणिक अर्थ दोनो पैर (भाग० ४.२५.५४; २९.१५)।

पेशी–स्त्री० [सं०] (१) एक प्राचीन नदीका नाम (हि० वि० को०)। (२) एक राक्षसीका नाम (हि० श० सा०)।

पैज–पु० [सं०] जातूकर्ण्यके चार शिष्योंमेंसे एक शिष्यका नाम (भाग० १२.६.५८)।

पैतामहतीर्थ–पु० [सं०] नर्मदाक्षेत्रका एक तीर्थस्थान जहाँ स्नानपूर्वक श्राद्ध तथा तर्पण करनेका अक्षय फल कहा गया है (मत्स्य० १६२.२०)।

पैतामहचक्र–पु० [सं०] कालचक्र, विष्णुचक्र आदिके तुल्य एक अत्युग्र त्रैलोक्यदाहक महान् युद्धास्त्रका नाम (मत्स्य० १६२.२०)।

पैत्रीतनु–पु० [सं०] प्रजापतिकी तनु जिससे ऋपि तथा रजोगुणीप्रकृतिवाले मनुष्य उत्पन्न हुए (वायु० ९.१६)।

पैप्पलादि–पु० [सं०] प्रवर्तक प्रवर कश्यपवंशज तथा वशिष्ठवंशज ऋपि (मत्स्य० १९९.१८; २००.१५)।

पैल–पु० [सं०] (१) व्यासके एक शिष्यका नाम जो ऋग्वेदके आचार्य थे (भाग० १.४.२१; ९.२२.२२; वायु० ६०.१३; १०८.४२; (विष्णु० ३.४.८)। इन्हें ऋग्वेद (बह्वृच) की शिक्षा दी गयी थी। इन्होंने इंद्रप्रमिति तथा बाष्कलको इसकी शिक्षा दी (भाग० १२.६.३६, ५२, ५४; ब्रह्मां० ३४.१३; विष्णु० ३.४.१६)। इन्हें युधिष्ठिरके राजसूय यज्ञमें निमन्त्रित किया गया था (भाग० १०.७४.८)। यह ८६ श्रुतर्पियोंमेंसे एक श्रुतर्पि थे (ब्रह्मां० २.३३.२)। इन्होंने अपने पाठ्य विषयके दो भाग कर अपने दो उपर्युक्त शिष्योंको दिये (वायु० ६०.१९,२४-३५)। (२) शाकवैण रथीतरके चार शिष्योंमेंसे एक शिष्य (ब्रह्मां० २.३५.४)। (३) एक भार्गव गोत्रकार ऋपि (मत्स्य० १९५.१८; १९६.१८)।

पैशाचविवाह–पु० [सं०] आठ प्रकारके विवाहोंमेंसे एक विवाह। यह आठवाँ निकृष्ट विवाह है। मनुने इसे पापिष्ठ कहा है। निद्रामें वेसुध सुप्त, मदिरा आदि नशेमें चूर एवं अपने शील संरक्षणमें असमर्थ विवश स्त्रीके शीलभंगमें जिसके द्वारा पुरुष प्रवृत्त होता है वह निकृष्ट पापिष्ठ विवाह है। वह ऊँची जातिवालोंके लिए वर्जित (विष्णु० ३.१०.२४; मनु० ३.२१, २५, ३४)।

पैशाचतीर्थ–पु० [सं०] गोदावरीके दक्षिण तटपर स्थित एक तीर्थ जहाँ पिशाचोंके राजा अद्रिकी माता अद्रिका (जो एक शापभ्रष्ट अप्सरा तथा केसरी नामक वानरकी दूसरी पत्नी थी और प्रथम पत्नी अंजनाके साथ ब्रह्मगिरिके पार्श्वभागमें अंजन पर्वतपर रहती थी) स्नानकर इन्द्रके शापसे मुक्त हुई थी और इसका बिल्ली-सा मुख छूटा था। अंजना भी शापभ्रष्ट अप्सरा थी जिसका मुख वानरीका सा था पर शरीर अंजना और अद्रिका दोनोंका सुन्दर था। महर्पि अगस्त्यके वरसे अंजनाके गर्भसे वायुके अंशसे हनुमान् और अद्रिकाके गर्भसे निर्ऋतिके अंशसे अद्रि उत्पन्न हुए। जहाँ अंजना शापमुक्त हुई थी वह अंजन तीर्थ हुआ (ब्रह्मां० पैशाचतीर्थ-माहा०)।

पोता–पु० [सं०] यज्ञके लिए आवश्यक १६ ऋत्विकोंमेंसे एक जिनकी सृष्टि नारायणके पेटसे हुई थी (मत्स्य० १६७.९)।

पोत्रिणी–स्त्री० [सं०] (१) श्री ललितादेवीके १२ नामों, जिन्हें वज्रपञ्जर भी कहते हैं, मेंसे एक नाम (ब्रह्मां० ४.१७.१४, १९)। (२) (दण्डनायिका) किरिचक्ररथेन्द्रके प्रथम पर्वपर स्थित (ब्रह्मां० ४.२०.५)। तथा इसके ठीक सामने चण्डोच्चण्ड नामका सिंह लेटा रहता है। जिसके दाढोंकी कटकटाहटसे दिशाएँ बहरी हो जाती हैं, जिसको चार भुजाएँ, तीन नेत्र हैं तथा हाथमें शूल, खड्ग और पाश

धारण किये रहते हैं (ब्रह्मां० ४.२०.३१-३३)।

पोत्रीमुखीदेवी–स्त्री० [सं०] ललिताका एक नाम जिसे पोत्रिणी भी कहते हैं (ब्रह्मां० ४.१७.६, १४)।

पोत्रेय–पु० [सं०] शंस्य अग्निके आठ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र जिसे हव्यवाहन भी कहते हैं (वायु० २९.२७)।

पोषण–पु० [सं०] पके चावलका पिण्ड जो पितरोंको तीन बार और देवताओंको एक बार दिया जाता है (वायु० ७५.२०)।

पोष्टा–पु० [सं०] अमिताभ देवोंके गण, जिसमें २० देव हैं, मेंका एक अमिताभ देव (ब्रह्मां० ४.१.१७)।

पौंड्र–पु० [सं०] (१) एक राज्यका नाम जिसका नामकरण वहाँके निवासियोंके नामपर हुआ (मत्स्य० १६३.७३)। (२) भीमसेन (पांडव) के शंखका नाम जिसे उन्होंने युद्धके आरम्भमें बजाया था (महाभा० भीष्म० २५.१५)। (३) पुंड्रदेश (बिहारके एक भाग) के वसुदेवका पुत्र जो मिथ्या वासुदेव कहलाया (भाग० १०.६६.७, ११, १९)। (४) बलिका एक पुत्र, जिसके नामपर उसके राज्यका नामकरण हुआ (विष्णु० ४.१८.१३-१४)।

पौंड्रक–पु० [सं०] (१) तृतीय सावर्ण प्राजापत्य मनुके ९ पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (ब्रह्मां० ४.१.८१; वायु० १००.८४)। (२) काशीराजकी पुत्री सुतनु तथा वसुदेवका पुत्र और पुंड्र देशका राजा जो जरासंधका संबंधी था। मथुरा तथा गोमंतपर आक्रमणके समय जरासंधने इसे दक्षिण प्रवेश द्वारपर नियुक्त किया था। राजसूय यज्ञके समय भीमने इसे हराया था। श्रीकृष्णके समान यह भी अपना रूप बनाये रहता था और वसुदेवका लड़का होनेके कारण अपनेको वासुदेव कहता था। रुक्मिणीको प्राप्त करनेकी इच्छासे यह कुंडिन भी गया था (भाग० १०.५०.११(४), ९; ५३.१७)। इसने द्वारकापर चढ़ाई की पर श्रीकृष्णके द्वारा मारा गया, 'हरिवंश' (भाग० १०.६६ [१.१२], १-२३.२७; विष्णु० ५.२६.७; ३४.४-२८) यह सुदक्षिणाका पिता था (भाग० १०.७८.५)। हरिसे घृणा करनेसे इसे मोक्ष मिला था (भाग० २.७.३४; १०.३७.१९; ११.५.४८; ब्रह्मां० ४.२९.१२२)।

पौंड्रवर्द्धन–पु० [सं०] (१) एक नगरका नाम। (२) ललिताका एक पवित्र क्षेत्र (ब्रह्मां० ४.४४.९३; वायु० १०४.७९)।

पौंडरीक–पु० [सं०] एक यज्ञ विशेष जिसका फल अमरकंटकके चारों ओर परिक्रमा करनेसे प्राप्त होता है (मत्स्य० १८८.९३)।

पौंड्रिक–पु० [सं०] एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि।

पौडव–पु० [सं०] वशिष्ठवंशज एक एकार्षेय महर्षि (मत्स्य० २००.६)।

पौदन्य–पु० [सं०] सौदासके पुत्र राजा अश्मककी राजधानीका नाम जिसे उन्होंने स्वयं बसाया था (महाभा० आदि० १७६.४७)।

पौनिक–पु० [सं०] एक दक्षिणात्य देशका नाम (वायु० ४५.१३७)।

पौर–पु० [सं०] (१) (भाग०, वायु०, विष्णु० =पार) पृथुसेनका पुत्र तथा नीपका पिता (मत्स्य० ४९.५२)। (२) एक भार्गव गोत्रकार ऋषिका नाम (मत्स्य० १९५.२०)। (३) शिविपुत्र पृथुदर्भका राज्य (मत्स्य० ४८.२०)।

पौर–पु० [सं०] (१) पौरगण, पृथुने इन लोगोंसे सादर व्यवहार किया (भाग० १०.३६.२४)। इन्हें पौरजनगण भी कहते हैं (ब्रह्मां० ३.५१.३४.३६)। (२) पराशरोंके आठ पक्षोंमेंसे एक पक्षके पराशरोंका नाम (ब्रह्मां० ३.८.९५)।

पौरकुत्स–पु० [सं०] (१) एक तीर्थका नाम (महाभा०)। (२) एक आंगिरस मंत्रकृत् ऋषिका नाम (ब्रह्मां० २.३२.१०८)।

पौरव–पु० [सं०] (१) उत्तर-पूर्वके एक प्रांत विशेषका तथा उस प्रांतके शासक तथा अधिवासियोंका नाम (सं० शब्द० कौस्तुभ)। (२) चंद्रवंशी राजा पुरुके वंशजोंका नाम। (३) एक राजर्षि (वायु० ३२.३९)।

पौरववंश–पु० [सं०] एक राजवंश जिसका आदि पुरुष ययातिपुत्र पुरु था (मत्स्य० २४.७०; ३४.३१; ४९ पूरा)।

पौरवी–स्त्री० [सं०] (१) युधिष्ठिरकी एक पत्नीका नाम जो देवककी माता थी (भाग० ९.२२.३०)। (२) वसुदेवकी एक पत्नीका नाम जिससे सुभद्र, भद्रबाहु आदि १२ पुत्र उत्पन्न हुए थे (भाग० ९.२४.४५, ४७)। यह बाह्लीककी बहिन थी (ब्रह्मां० ३.७१-१६१, १६३; मत्स्य० ४६.११; वायु० ९६.१६०-६१; विष्णु० ४.१५.१८)।

पौराणिक–पु० [सं०] (पुराणज्ञ) सूतका एक नाम जो पुराणकथावाचक थे (ब्रह्मां० ३.८.८३; मत्स्य० ११४.३; वायु० ४५.७१; ७०.७६; ८८.६७, ११४, १६८; १०१.७२)। मान्धाता तथा हरिश्चन्द्रके कथासंबंधी अंशोंके वक्ता (ब्रह्मां० ३.६३.६९, ११३) तथा उनके उपनाम, वंश, वित्त आदिके वाचक (ब्रह्मां० ३.६३.१६८)।

पौरिक–पु० [सं०] दक्षिणका एक देश (ब्रह्मां० २.१६.५८)।

पौरुकुत्स–पु० [सं०] आंगिरसश्रेष्ठ एक मंत्रकृत् ऋषि (वायु० ५९.९९)।

पौरुकुत्सी–स्त्री० [सं०] गाधिकी पत्नीका नाम जिसने भूलसे अपनी पुत्री सत्यवतीके अंशका चरु खा लिया था जिसके फलस्वरूप यह विश्वामित्रकी माता तथा परशुरामजी की दादी बनी (ब्रह्मां० ३.६६.३६)।

पौरुषज्ञान–पु० [सं०] पुरुषार्थ चार हैं धर्म, अर्थ, काम और यह चौथा (वायु० ६७.१८)।

पौरुषसूक्त–पु० [सं०] ऋग्वेदका पुरुषसूक्त जिसका पाठ सरोवर-निर्माणके समय होता है (मत्स्य० ५८.३४-३६)।

पौरुषी–स्त्री० [सं०] पुरुषकी तनु जो प्रजा-सृष्टि करती है वह राजसी पौरुषी है, जो प्रजाक्षय करती है वह तामसी पौरुषी है और जो अनुग्रहकारिणी है वह सात्त्विकी तनु है (वायु० ६६.१०४)।

पौरुषेय–पु० [सं०] (१) शुक्र (ज्येष्ठ) महीनेमें सौरगणके साथ सूर्य रथपर अधिष्ठित रहनेवाला एक राक्षस (भाग० १२.११.३५;:ब्रह्मां० २.२३.६)। ग्रीष्म ऋतुमें यह सूर्यके रथपर अधिष्ठित रहता है (वायु० ५२.८; विष्णु० २.१०.७)। (२) यातुधानके १० पुत्रोंमेंसे एकका नाम। इसके क्रूर, विकृत आदि ५ पुत्र थे जो सबके सब मनुष्यभक्षी थे (ब्रह्मां० ३.७.८९, ९३-४; वायु० ६९.१२७)।

पौरोधस–पु० [सं०] पुरोहितका काम। पौरोहित्य "एक व्यवसाय जिसके लिए लालायित नहीं होना चाहिये।" इससे ब्रह्मवर्चस्का व्यय होता है। देवताओंने विश्वरूपसे जब आचार्य होनेका आग्रह किया तब उन्होंने उपर्युक्त वाक्य कहा था (भाग० ६.७.३५-३६)।

पौरोहित्य–पु० [सं०] पुरोहितका काम, देवपुरोहित=बृहस्पति। असुरपुरोहित=शुक्राचार्य (मत्स्य० २५.९; २७.९-११)।

पौर्णमास–पु० [सं०] (१) श्रीशांतकर्णके पुत्र तथा लम्बोदरके पिताका नाम (भाग० १२.१.२३-२४)। (२) एक जयदेव, एक मंत्रशरीर तथा ब्रह्माका एक पुत्र (ब्रह्मां० २.२३.६६, वायु० ६६.६; ६७.५)। इनके अमृतका ३३ करोड़ देवताओंने पान किया था (ब्रह्मां० ३.३.६)। (३) मरीचि और संभूतिका पुत्र तथा विरज और पर्वतका पिता (विष्णु० १.१०.६)।

पौर्णमासी–स्त्री० [सं०] (१) २७ वें कल्पकी देवी जो यमज थी (वायु० २१.६२, ६८)। (२) शुक्लपक्षकी अंतिम तिथि (ब्रह्मां० २.२३.६३; विष्णु० १.२०.३८)। या चांद्र मासकी अंतिम तिथि जिसमें सूर्यके सहयोगसे चन्द्र मंडल पूरा रहता है (वायु० ५०.२००; ५२.५९; विष्णु० २.८.८०)। कृष्ण तथा शुक्लपक्षोंके अंतमें क्रमशः अमावास्या और पौर्णमासी तिथि होती हैं (वायु० ५६.३०,३६)।

पौलस्त्य–पु० [सं०] (१) रावणका नाम (ब्रह्मां० ३.६३.१९६; वायु० ८८.१९५)। (२) एक देवर्षि (कुबेर) का नाम (वायु० ६१.८४)। (३) तामस मन्वन्तरके सप्तर्षियोंमेंसे एक ऋषिका नाम (वायु० ६२.४२)। (४) चारिष्णव मन्वन्तरके सप्तर्षियोंमेंसे एक ऋषि देवबाहु (वायु० ६२.५३)। (५) स्वारोचिष मन्वन्तरके सप्तर्षियोंमें एक ऋषि (दत्तात्रि) (वायु० ६२.१७)। (६) एक देवगण; निशाचर तथा राक्षस जातियोंमेंसे एक (ब्रह्मां० ३.१.५०; ७.१६२; ८.५७.६२) जो अगस्त्य परिवारका है (मत्स्य० २०.२.२)। (७) राक्षसोंकी एक जाति (वायु० ६९.१९५)। सुजंघीने प्रीतिके पुत्र महर्षि पौलस्त्यके बहुतसे पुत्रोंको स्वायंभुव मन्वन्तरमें उत्पन्न किया जो 'पौलस्त्य' नामसे विख्यात हुए (ब्रह्मां० २.१.१२९)। क्षमाने प्रजापति पुलस्त्यके त्रेताग्निके सामन तेजस्वी पुत्रोंको उत्पन्न किया जिनकी कीर्त्ति संसारमें व्याप्त है ये पौलस्त्य कहे जाते हैं (ब्रह्मां० २.१२.३०)।

पौलस्त्यतीर्थ–पु० [सं०] गोदावरीतटपर स्थित एक तीर्थ जहाँ रावणसे परास्त होकर पुलस्त्यके साथ कुबेरने शिवकी आराधना कर उनसे वर पाया था (ब्रह्मपु०)।

पौलह–पु० [सं०] एक प्रजापति (वायु० ६२.१७,४२)। यह महान् तेजस्वी अग्निष्वात्त पितरों, जिनकी आराधना फलाभिलाषी दानव, यक्ष, राक्षस, किन्नर, गन्धर्व, भूत, नाग और पिशाच करते हैं, के पिता थे। हाथी, वानर, मृग, व्याल आदिके भी पिता थे (वायु० ७०-६४; ७३.२५)।

पौलह-अग्नितेजा–पु० [सं०] ग्यारहवें मन्वन्तरके सप्तर्षियोंमेंसे एक ऋषिका नाम (वायु० १००.८३)। चौथे ऋतु सावर्णि मन्वन्तरके सप्तर्षियोंमेंसे एक तपोशयान (वायु० १००.९७)। रौच्य मन्वन्तरके सप्तर्षियोंमेंसे एक ऋषि तत्त्वदर्शीका नाम (वायु० १००.१०७)।

पौल–पु० [सं०] ये संख्यामें १०० हैं अर्थात् पौलवंशके १०० राजा अभिषिक्त हुए थे (ब्रह्मां० ३.७४.२६८; वायु० ९९.४·५)।

पौलि–पु० [सं०] एक एकार्षेय महर्षिका नाम। यह वशिष्ठवंशज थे (मत्स्य० २००.६)।

पौलिकायनि–पु० [सं०] एक आर्षेय प्रवरप्रवर्तक आंगिरस ऋषि (मत्स्य० १९६.२२)।

पौलिमौलि–पु० [सं०] एक काश्यप गोत्रकार ऋषि (मत्स्य० १९९.६)।

पौलूषि–पु० [सं०] पौलूषि, एक ऋषि जिनका नाम सत्ययज्ञ था और यह पुलु ऋषिके वंशके थे—दे० शतपथब्राह्मण जिसमें इनका नाम आया है।

पौलेय–पु० [सं०] पश्चिमका एक देश (ब्रह्मां० २.१६.६०)।

पौलोम–पु० [सं०] (१) दैत्योंकी एक जातिका नाम जो बलि और इन्द्रके देवासुरसंग्राममें विश्वेदेवोंसे लड़े थे (भाग० ८.१०.२२,३४)। ये मारीच दानव तथा पुलोमाके पुत्र थे (मत्स्य० ६.२३; विष्णु० १.२१.९)। (२) एक असुर जो समुद्रमंथनके समय थककर चूर हो गया था (भाग० ८.७.१४)।

पौलोमी–स्त्री० [सं०] (१) पुलोमकी एक पुत्री तथा भृगु ऋषिकी पत्नी (ब्रह्मां० ३.१.७५; वायु० ६५.७३)। जिसके १२ पुत्र हुए जो सब देवता थे। इनके अनुज विप्र कहलाये (मत्स्य० १९५.१४)। प्रचेताच्यवन या च्यवन आठवें महीनेमें ही उत्पन्न हो गये थे क्योंकि इनकी मातापर एक दानवने आक्रमण किया था (ब्रह्मां० ३.१.९१)। (२) इन्द्राणीका एक नाम (भाग० ६.१८.६; विष्णु० ५.३०.४९)। (३) महर्षि भृगुकी पत्नी तथा पुलोमाकी पुत्रीका नाम जिन्हें पौलोमा भी कहते हैं और यही च्यवन ऋषिकी माता थी (ब्रह्मां० ३.१.७५; वायु० ३.१.९१)।

पौष–पु० [सं०] एक महीनेका नाम, इसकी एकादशीको मन्वंतरादि श्राद्ध करते हैं। जिस मासकी पूर्णमासीमें पुष्य नक्षत्र हो उस मासका नाम 'पौषमास' 'पुष्ययुक्ता पौर्णमाणी पौषी मासे तु यत्र सा। माम्ना स पौषः'-अमरः।

पौषजिति–पु० [सं०] आंगिरसकुलका एक आर्षेय प्रवरप्रवर्तक ऋषि (मत्स्य० १९६.७)।

पौषीपूर्णिमा–स्त्री० [सं०] पौषमासकी पूर्णिमा जिसे दक्षिण भारतमें 'शाकंभरी पूर्णिमा' कहते हैं। गुजरात, काठियावाड़में इस दिन कन्याएँ दिनभर उपवास कर सायंकाल चन्द्रदर्शन कर अर्घ्य दे पूजन करती हैं।

पौष्कर–पु० [सं०] विष्णुका रंग विशेष (गगनसदृशम्), (प्रादुर्भाव) (मत्स्य० १७१.६४, ७०)।

पौष्ण्यायन–पु० [सं०] भार्गवकुलका एक आर्षेय प्रवरप्रवर्तक ऋषिका नाम (मत्स्य० १९५.३८)।

पौष्टिक–पु० [सं०] अथर्ववेदके मंत्र जिनका पाठ सरोवरके खुदवाने तथा उद्घाटनादिके समय होता है (मत्स्य० २४.४६; ५८.३७)।

पौष्टी–स्त्री० [सं०] राजा पुरुकी पत्नीका नाम जिससे पुरुके प्रवीर, ईश्वर एवं रौद्राश्व नामक तीन पुत्र हुए

(महाभा० आदि० ८९.४)।

पौष्यञ्जि—पु० [सं०] (१) दो सर्वोत्कृष्ट सामग आचार्योंमेंसे एक (वायु० ६१.४८)। (२) पौष्यञ्जि (पुष्पिंजि = विष्णु०) सुकर्माको इन्द्र द्वारा उत्तर दिशाके दिये गये शिष्यों-मेंसे एक, जिसने ५०० संहिताओंकी शिक्षा दी और लौगाक्षि (वायु० = लोकाक्षि) तथा मांगलि (वायु० = लांगलि) इसके शिष्योंमें थे (भाग० १२.६.७७, ७९; वायु० ६१.३३)। यह श्रुतर्षि तथा सामगोंमें प्रधान थे (ब्रह्मां २.३३.७; ३.६३.२०७)।

प्रकंपन—पु० [सं०] (१) एक नरक विशेषका नाम (ब्रह्मां० तथा नारदपु०)। (२) एक राक्षसका नाम (हि० श० सा०)।

प्रकटशक्तियाँ—स्त्री० [सं०] प्रकटशक्ति, मुद्रादेवी सर्व-संक्षोभिणी, सर्वविद्राविणी आदि १० मुद्रा रूप प्रकट शक्तियोंका एक पुंज (ब्रह्मां० ४.१९.१५)।

प्रकाशक—पु० [सं०] रैवत मनुके धार्मिक तथा महाबल दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (मत्स्य० ९.२१)।

प्रकुंदक—पु० [सं०] पिशाचोंके सोलह गणोंमेंसे एक पिशाच-गण (वायु० ६९.२६३)।

प्रकृति—स्त्री० [सं०] (१) पुरुषका विपरीतार्थक = पदार्थ, जिसपर योगबलसे अधिकार किया जा सकता है (भाग० १.८.१८; ३.५.४६; ब्रह्मां० २.१९.१७३, १९५-७; ३.४२.४७; ४३.३)। इसमें सत्त्व, रज और तम तीन गुण हैं (भाग० ७.१.७)। आचार्योंने २५ तत्त्वोंमेंसे ८ को प्रकृति माना है (भाग० ७.७.२२; ११.२२.१८-२४)। ब्रह्माकी आयु समाप्त होनेपर सात प्रकृतियों—महत्तत्त्व, अहंकार तथा पञ्चतन्मात्राओंका प्रलय हो जाता है (भाग० १२.४.५; ब्रह्मां० ४.२.२३१; ६.६; १५.७; ४३.७६)। इसे प्रधान और अव्यक्त भी कहते हैं, जिससे संसार बनता बिगड़ता है। इसकी सृष्टि अब्ज ईश्वरने की (मत्स्य० ३.१४; १५४.३५६; विष्णु० १.२.१९) यह योगनिद्रा है (विष्णु० ५.२.७; ६.४.३४-५)। (२) राजाकी प्रजा (पौरवर्ग), महाराज पृथु इनका आदर करते थे (भाग० ४.१७.२; ब्रह्मां ३.४९.१७; मत्स्य० ३४.२६; २२६.६; २४०.११)। राजा पुरु तथा द्युमत्सेनको चुननेमें इन लोगोंने अपनी सम्मति दी थी (मत्स्य० ३६.५; २१४; १६)। (३) ये सात प्रकारकी होती हैं स्वामी (राजा), अमात्य, मित्र राजा, कोश, राष्ट्र, दुर्ग और सेना। एवं पौरवर्गको भी प्रकृति कहते हैं जो राजाका समर्थन करती हैं (भाग० ६.१४.१७-१८)। (३) इनकी संख्या प्रायः आठ होती है—देवताओंके आठ स्थान, ब्रह्मासे लेकर पिशाचतक; अणिमा आदि आठ ऐश्वर्य; आठ रूपादि (ब्रह्मां० ४.३.२७-७३)। इन्हें ही सत्य तथा इनके विपरीत सब असत्य माने जाते हैं (ब्रह्मां० ४.३.८५)। (४) सात अव्यक्त, जल, तेज, वायु, आकाश आदि महत धीरे-धीरे अति और प्रत्याहार उत्पन्न करते हैं (वायु० १०२.२६; ४९.१८५)। ये आठ प्रकारके होते हैं (वायु० १०२.५९)।

प्रकृतिप्रसूति—स्त्री० [सं०] ब्रह्म = ईश्वरकी प्रथम प्रवृत्ति (प्रथम सृष्टि) (वायु० ३.६१; ३.९)।

प्रक्रियार्थपाद— पु० [सं०] पुराणका प्रथम भाग जिसे प्रक्रियापाद भी कहते हैं (ब्रह्मां० १.१.३८; ४.४.४३; वायु० ७.१) इसमें पुराणकी सूची दी रहती है (वायु० ४.१३; १०३.४४) इसमें ४००० श्लोक हैं जिससे कृतयुगके वर्षोंके परिमाणका बोध होता है (वायु० ३२.५९)।

प्रघस—पु० [सं०] (१) एक दैत्य जो रावणकी सेनाका मुख्य सेनानायक था, जिसे प्रमदावन उजाड़ते समय हनुमानजीने मारा था (रामचरितमानस, सुन्दरकाण्ड)। (२) बलिका अनुगामी एक असुर (मत्स्य० २४५.३२)।

प्रघसा—पु० [सं०] कुमार कार्त्तिकेयकी अनुचरी एक मातृका का नाम (महाभा० शल्य० ४६.१६)।

प्रघास—पु० [सं०] लेखवर्गके देवोंके गण, जिसमें आठ देव है, मेंका एक देवता (ब्रह्मां० २.३६.७५)।

प्रघोष—पु० [सं०] श्रीकृष्ण और माद्री (लक्ष्मणा) के दस पुत्रोंमेंसे एक (ज्येष्ठ) पुत्र (भाग० १०.६१.१५)।

प्रचंडा—स्त्री० [सं०] छागलांड (दक्षिण देशमें समुद्रके निकटका एक स्थान)में स्थापित सती देवीकी एक मूर्तिका नाम (मत्स्य० १३.४३)।

प्रचिन्वान्—पु० [सं०] जनमेजयका पुत्र तथा प्रवीरका पिता (विष्णु० ४.१९.१)।

प्रचेता—पु० [सं०] (१) शंस्य अग्निके विहरणीय वर्गके आठ पुत्रोंमेंसे एक प्रशांति (वायु० = शान्त) अग्निका नाम (ब्रह्मां० २.१२.२९; वायु० २९.२७)। (२) भृगुकुलके २१ मन्त्रकृत् ऋषियोंमेंसे एक मंत्रकृत् च्यवन (ब्रह्मां० २.३२.१०४; ३.१.९२; वायु० ६५.५४, ८८)। (३) वरुणका एक नाम (४) पारावतवर्गके देवगण, जिसमें १२ देव हैं, मेंका एक पारावतदेव (ब्रह्मां० २.३६.१३; वायु० ६२.१२)। (५) बारहवें प्रजापतिका नाम (ब्रह्मां० ३.१.५४)। (६) प्रसूतवर्गके देवगण, जिसमें आठ देव हैं, मेंका एक देवता (ब्रह्मां० २.३६.७०)। (७) लेखवर्गके देवगण, जिसमें आठ देव हैं, मेंका एक देवता (ब्रह्मां० २.३६.७५)। (८) ब्रह्माने अपनी देहसे १६ पुत्रोंकी सृष्टि की जिनके नाम ये हैं—अत्रि, पुलह, पुलस्त्य, मरीचि, भृगु, अंगिरा, क्रतु, वशिष्ठ, वोढु, कपिल आसुरि, कवि, शंकु, शंख, पंचशिख और 'प्रचेता' (ब्रह्मवैवर्त्तपु०)। (९) पृथुके परपोते और प्राचीनवर्हि प्रजापति तथा सामुद्रीके दस पुत्रोंका सामूहिक नाम जिन्होंने १०,००० वर्षोंतक समुद्रके भीतर कठिन तपस्या करके शिवसे रुद्रगीतकी दीक्षा ले विष्णुसे प्रजा-सृष्टिका वर पाया था। विष्णुकी आज्ञासे इनका विवाह कण्डु ऋषि तथा प्रम्लोचा अप्सराके पुत्रीसे हुआ था। विष्णुके दर्शनके पश्चात् ये समुद्रसे बाहर आये और पृथ्वीको वनस्पतियोंसे भरा देख, जंगलको श्वाससे भस्म करने लगे। यह देख ब्रह्माने या सोमने इन्हें वृक्षोंका विनाश करनेसे रोककर वृक्ष-कन्या (वृक्षोंसे पालित होनेके कारण वृक्ष-कन्या) मारिषा या वार्क्षी से प्रचेतसोंका विवाह करा दिया था। उसी मारिषाके गर्भसे दक्ष प्रजापति चाक्षुष मन्वन्तरके आरम्भमें उत्पन्न हुए थे (भाग० ४.२४ (पूरा); ६.४.४-१७; (ब्रह्मां० २.१३.४०; ३७.२७; मत्स्य० ४.४७-९; वायु० ६३.२७-९)। बहुत दिनोंतक सांसारिक सुखोंका उपभोग कर ये पत्नीको पुत्र दक्षके पास छोड़ पश्चिम समुद्र चले गये थे जहाँ जाजलिको सिद्धि मिली थी। नारदने इन्हें विष्णुभक्तिका उपदेश दिया जिससे इन सबने विष्णुलोक

प्राप्त किया (भाग० ४.३१.१.२५)। इन लोगोंकी उपासना धन प्राप्तिके लिए की जाती थी। (१०) यक्षोंके पिता इनकी पत्नी गन्धर्वपुत्री सुयशा थी। इससे इनके कम्बल, हरिकेश, कपिल, काञ्चन, मेघमाली ये यक्षगण उत्पन्न हुए। सुयशासे इनकी चार पुत्रियाँ अप्सराएँ भी उत्पन्न हुईं (वायु० ६९.११)। (११) दुर्दम (भाग० तथा विष्णु० = दुर्मना। मत्स्य० = विदुष) का पुत्र जिसके १०० पुत्र हुए जो सबके सब राजा थे और म्लेच्छोंके राज्याधिपति हो उत्तर दिशामें चले गये थे (भाग० ९.२३.१५-१६; ब्रह्मां० ३.७४.११-१२; वायु० ९९.११; मत्स्य० ४८.८-९)। विष्णु० के अनुसार यह शतधर्मका पिता था (विष्णु० ४.१७.४-५)। (१२) ब्रह्माके १० मानसपुत्रों = मरीचि, अत्रि, अंगिरा, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु, प्रचेता, वशिष्ठ, भृगु तथा नारदमेंसे एक जो मंत्रकृत् थे (मत्स्य० ३.७; १०२.१९; १४५.९८; वायु० ५८.९६)।

प्रचेतस–पु० [सं०] कश्यप, कर्दम आदि अनेक प्रजापतियोंमें एक प्रजापति (ब्रह्मां० ३.१.५४)।

प्रजंघ–पु० [सं०] लंकापति रावणकी सेनाका एक प्रमुख राक्षस योद्धा जो अंगद द्वारा मारा गया था (रामायण लंका० ७६.१४-२७)।

प्रज–पु० [सं०] आग्नेयी धिषणा और हविर्धानके प्राचीनबर्हि आदि छह पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (ब्रह्मां० २.३७.२४)।

प्रजन–पु० [सं०] (१) कौरवोंके मूल पुरुष राजा कुरुके सुधन्वा आदि चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (मत्स्य० ५०.२३)। (२) हिरण्यकशिपुकी सभाके बलि, विरोचन, नरक, प्रह्लाद, विप्रचित्ति आदि महापराक्रमी, मृत्युविजयी तथा वरप्राप्त महासुरोंमेंसे एक असुर (मत्स्य० १६१.८१)।

प्रजागरा–स्त्री० [सं०] एक अप्सराका नाम (हि० श० सा०)।

प्रजाति–पु० [सं०] यामवर्गके देवगण, जो संख्यामें बारह हैं, मेंका एक यामदेव (वायु० ३१.६)।

प्रजादर्प–पु० [सं०] एक मध्यमाध्वर्यु (ब्रह्मां० २.३३.१६)।

प्रजाद्वार–पु० [सं०] सूर्यका एक नाम (हिं० वि० को)।

प्रजानि–पु० [सं०] प्रांशुके पुत्र तथा खनित्रके पिताका नाम (वायु० ८६.४)।

प्रजापति–पु० [सं०] (१) सृष्टिको उत्पन्न करनेवाला। वैदिककालमें प्रजापति एक वैदिक देवता थे जो ब्रह्माके मानस-पुत्र माने जाते थे (मत्स्य० १.३३)। सृष्टि करना इनका काम था (मत्स्य० ४.८)। पुराणोंमें ब्रह्माके पुत्र अनेक प्रजापतियोंका उल्लेख है। कहीं मरीचि, अत्रि, अंगिरा, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु, प्रचेता, वशिष्ठ, भृगु और नारद इन दस प्रजापतियोंका उल्लेख है। दक्ष भी एक प्रजापति हैं (भाग० २.६.७; ४.५.१७; ७.१२.२६; ५.२३.५; १०.५४.४९); और कहीं इनकी संख्या २१ लिखी है। ब्रह्मा, सूर्य, मनु, दक्ष, भृगु, धर्मराज, यमराज, मरीचि, अंगिरा, अत्रि, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु, वशिष्ठ, परमेष्ठी, विवस्वान्, सोम, कर्दम, क्रोध, अर्वाक् और क्रीत। इनकी उपासना वंशवृद्धिके लिए होती है (भाग० १.३.२७; २.३.२; ७.८.३८)। (२) वैराजक कल्पका अधिपति जिसका विवाह गायत्रीसे हुआ और स्निग्धस्वर जिसका पुत्र था (वायु० २१.४१-२)। (३) द्वितीय द्वापरके वेदव्यास (विष्णु० ३.३.११)। (४) (वायु० प्रजानि) प्रांशुका पुत्र तथा खनित्रका पिता (विष्णु० ४.१.२३)। (५) (प्रजापतिगण) अर्थात् प्रजेश्वरगण जिनके नाम ये हैं—कर्दम, कश्यप, शेष, विक्रांत, सुश्रवा, बहुपुत्र, कुमार, विवस्वान्, शुचिश्रवा, प्रचेता, अरिष्टनेमि और बहुल (वायु० ६५.५३-५४)।

प्रजापतिक्षेत्र–पु० [मं०] एक तीर्थस्थान जो प्रयाग प्रतिष्ठान तथा वासुकि-ह्रदके बीच स्थित है (मत्स्य० १०४.५)।

प्रजापतिगिरि–पु० [सं०] एक पर्वत जिसे हिरण्यकशिपुके शस्त्रास्त्रोंके वारोंका सामना करना पड़ा था (मत्स्य० १६३.८८)।

प्रजावती–स्त्री० [सं०] राजा प्रियव्रतकी पत्नीका नाम—दे० प्रियव्रत।

प्रजासंभवन–पु० [सं०] स्वायंभुव इन्हींसे उत्पन्न हुए थे (वायु० २१.६०)।

प्रजाहेतु–पु० [सं०] दाराग्निहोत्री सप्तर्षिगण (वायु० ६१.१००)।

प्रजेश्वर–पु० [सं०] भीमरथका पुत्र, दिवोदास वाराणसीका अधिपति। क्षेमकने नगरीको नष्ट कर दिया तथा विकुंभने शाप द्वारा इसे निर्जन कर दिया था अतः राजा गोमती तटपर जा बसा। इसने भद्रसेनके १०० पुत्रोंको मार डाला पर भद्रसेनके कनिष्ठ पुत्र द्रुमदको जीवित छोड़ दिया क्योंकि वह बिलकुल बच्चा था और अपने राज्यपर पुनः अधिकार कर लिया (ब्रह्मां० ३.६७.४७-६७)।

प्रज्योति–पु० [सं०] स्वारोचिष मन्वंतरके अमिताभ देवगण, जिसमें १४ देव हैं, मेंका एक अमिताभदेव (ब्रह्मां० २.३६.५३)।

प्रज्वार–पु० [सं०] यवनोंके अधिपति भयके भाईने पुरञ्जनकी नगरीको जलाकर भस्म कर दिया, लाक्षणिक अर्थ = ज्वरके दो प्रकार (भाग० ४.२७.३०; २८.११; २९.२३)।

प्रज्ञ–पु० [मं०] (१) एक अमिताभ देव (ब्रह्मां० २.३६.५३)।

प्रणव–पु० [सं०] सर्वोत्कृष्ट मन्त्र जिसमें ईश्वरका कीर्त्तिगान है। यज्ञ प्रणवका प्रशंसात्मक है, जो ब्राह्मण प्रणवका ज्ञान प्राप्त कर लेते हैं वे संसारके आवागमन बन्धनसे मुक्त हो जाते हैं वे ओंकार नामक अचल अक्षर निर्गुण परम पदको प्राप्त होते हैं (मत्स्य० ८५.६; वायु० २०.३०) प्रणवात्मक ब्रह्म है (मत्स्य० २४.५१); रुद्र है (ब्रह्मां० २.१३.१३७)।

प्रणवावस्थित–पु० [सं०] भू, भुवः और स्वः (वायु० ६१.१०८)।

प्रणालक–पु० [सं०] प्रणालक किसी मूर्त्तिके पीठमें जल बहने की नाली जो उत्तर-मुख होनी चाहिये (मत्स्य० २६२,५. १६)।

प्रणीत–पु० [सं०] मरीचिवर्गके देवगण, जो संख्यामें १२ थे, मेंका एक मरीचिदेव (ब्रह्मां० ४.१.५८)।

प्रतर्दन–पु० [सं०] (१) काशीका एक राजा जो प्रसिद्ध राजा दिवोदास और हषद्वती (महाभा० = ययाति-पुत्री माधवी)का वीर पुत्र तथा वत्स और गर्गका पिता था (ब्रह्मां० ३.६७.६७-९; वायु० ९२.६४-६५)। इसका विवाह मदालसाके

साथ हुआ था। भद्रश्रेण्यका वंशनाश करनेके फलस्वरूप यह शत्रुजित् कहलाया, सत्यभाषी होनेके कारण इसे ऋत-ध्वज कहते थे तथा पिता प्यारसे इसे वत्स पुकारते थे। यह रामचंद्रका समकालीन था। इसके घोड़ोंका नाम 'कुवलय' था (विष्णु० ४.८.१५), अतः इसे कुवलयाश्व कहते थे। अलर्क वत्सका पुत्र था (विष्णु० ४.८.११-१६)। (२) एक प्राचीन ऋषिका नाम। (३) ययातिका एक दौहित्र जिसने अष्टक, शिवि और प्रतर्दनके साथ एक यज्ञ किया था (मत्स्य० ३५.५)। इसने भिन्न २ लोकोंके संबंधमें ययातिसे तर्कवितर्क कर समझा था (मत्स्य० ३८.२२;४१.१३-१४; ४२.१४, २६, २८)।

प्रतर्दनगण–पु० [स०] उत्तम मनुके मन्वंतरके १२ देवताओंका एक वर्गविशेष (ब्रह्मां० २.२६.२७,३१; वायु० ६२.२४; विष्णु० ३.१.१४)।

प्रतल–पु० [सं०] पातालके सातवें भागका नाम—दे० पाताल।

प्रतान–पु० [सं०] एक प्राचीन ऋषिका नाम।

प्रताप–पु० [सं०] (१) विचित्ति प्रभृति बलिके अनुयायी दैत्योंमेंसे एक दैत्यका नाम (मत्स्य० २४५.३२)। (२) श्रीरामचंद्रके एक बचपनके मित्रका नाम (रामायण बाल०)। (३) सौवीर देशका एक राजकुमार जो जयद्रथके रथके पीछे हाथमें पताका लेकर चलता था (महाभा०वन० २६५.१०)।

प्रतापन–पु० [सं०] कालसूत्र आदि कई (भाग० = २८) नरकोंमेंसे एक नरकका नाम (ब्रह्मां० ४.३३.४१)।

प्रताल्कान्य–पु० [सं०] उपस्थेय आठ अग्नियोंमेंसे एक नभ नामक अग्नि (ब्रह्मां० २.१२.२३)।

प्रतिंबक–पु० [सं०] (वायु० = प्रतित्वक) मरुका पुत्र तथा कीर्त्तिरथका पिता (ब्रह्मां० ३.६४.११; वायु० ८९.११)।

प्रति–पु० [सं०] कुशका पुत्र तथा संजयका पिता (भाग० ९.१७.१६)।

प्रतिक–पु० [सं०] हर्यश्व-सुत मनुका पुत्र तथा कृतरथका पिता (विष्णु० ४.५.२७)।

प्रतिकृत्–पु० [सं०] चौथे मरुद्गणके सात मरुतोंमेंसे एक मरुत् (वायु० ६७.१२७)।

प्रतिक्षत्र–पु० [सं०] (१) (वायु० = प्रतिक्षिप्त) शूर-सुत शमीका पुत्र तथा स्वयंभोजका पिता (ब्रह्मां० ३.७१.१३९; मत्स्य० ४४.८०; विष्णु० ४.१४.२३; वायु० ९६.१३७)। (२) क्षत्रवृद्धका पुत्र तथा संजयका पिता (विष्णु० ४.९.२५-२६)।

प्रतिक्षेत्र–पु० [सं०] प्रतिक्षत्रका पुत्र तथा भोजका पिता (मत्स्य० ४४.८०)।

प्रतिदक्ष–पु० [सं०] सात मरुद्गणोंमेंसे छठे मरुद्गणके सात मरुतोंमेंका एक मरुत् (वायु० ६७.१२८)।

प्रतिज्ञेश्वर–पु० [सं०] एक शिवलिंगका नाम जिसे विश्वकर्माने प्रस्तुत किया तथा तारकासुरवधके प्रायश्चित्तस्वरूप कार्त्तिकेयने विष्णुकी अनुमतिसे महीसागर-संगममें स्थापित किया था। स्कंदपुराणानुसार कार्त्तिक तथा चैत्र ८ को यहाँ स्नान, उपवास, पूजा तथा जागरण करनेवाला मृत्युको भी जीत लेता है—दे० (स्कंद० माहे० कुमारिका-खंड २६.४१-४२)।

प्रतिपक्ष–पु० [सं०] प्रतापी राजा क्षत्रधर्मका पुत्र तथा सृंजय (संजय = वायु०)का पिता (ब्रह्मां० ३.६८.७; वायु० ९३.७)।

प्रतिपत्–स्त्री० पु० [सं०] तिथियोंमें प्रथम तिथिका नाम (ब्रह्मा० २.२४.१४२)। अन्वाधान क्रियाके लिए उपयुक्त मासमें दो पर्वोंके पश्चात् आनेवाला प्रथम दिन (ब्रह्मां० २.२८.३७)।

प्रतिप्रभ–पु० [सं०] अत्रि ऋषिके वंशमें उत्पन्न एक ऋषि।

प्रतिप्रस्तर–पु० [सं०] यज्ञके १६ ऋत्विजोंमेंसे एकका नाम जिसकी उत्पत्ति नारायणकी पीठसे हुई थी (मत्स्य० १६७.८)।

प्रतिबाहु–पु० [सं०] (१) वज्रका पुत्र तथा सुबाहु (सुचारु = विष्णु० तथा वायु०)का पिता (भाग० १०.९०.३८; वायु० ९६.२५१; विष्णु० ४.१५.४१-२)। (२) श्वफल्कके अक्रूर प्रमुख बारह पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (भाग० ९.२४.१७)।

प्रतिभा–स्त्री० [सं०] प्रभाव, विद्या, काव्य, शिल्पादिमें विशेष निपुणता (वायु० ३२.६-८)।

प्रतिभानु–पु० [सं०] सत्यभामा और श्रीकृष्णके दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (भाग० १०.६७.११)।

प्रतिम–पु० [सं०] द्वितीय सावर्णिमनुके युगके सप्तर्षियोंमेंसे एक ऋषि (पौलस्त्य)का नाम (ब्रह्मां० ४.१.७०)।

प्रतिमत्स्य–पु० [सं०] एक प्राचीन भारतीय देशका नाम (महाभा० भीष्म० ९.५२)।

प्रतिमालक्षण–पु० [सं०] भिन्न २ प्रतिमाओंके निर्माणके नियम तथा "नवताल आदि मूर्त्तियों"के परिमाणके नियम (मत्स्य० २५.९)। अर्द्धनारीश्वर, उमामहेश्वर (मत्स्य० २६८.१-२०); शिवनारायण (मत्स्य० २६०.२१-२७); ब्रह्मा तथा कार्त्तिकेयकी मूर्तियोंके परिमाण आदिके लिए (मत्स्य० २६०.४०-५५); कात्यायनीके (मत्स्य० २६०.५६-६५); इंद्रके परिमाण आदि (मत्स्य० २६०.६६-६९); अन्य मातृका देवियोंकी मूर्तिनिर्माणके लिए (मत्स्य० २६१.२४-४९)। भिन्न २ प्रतिमाओंकी भिन्न २ आधार शिलाएँ होती हैं (pedestals) जिसके १६ भाग होते हैं। आधार शिलाएँ १० प्रकारकी होती हैं अर्थात् जिस पदार्थकी मूर्ति हो आधार शिला भी तदनुसार होती है (मत्स्य० अ० २६३)। मूर्तिनिर्माणके पहले पदार्थके निर्णयके लिए (मत्स्य० अ० २६३)।

प्रतिमेधा–पु० [सं०] सुमेधा वर्गके देवगण, जो संख्यामें १४ हैं, मेंका एक देव (ब्रह्मां० २.३६.६०)।

प्रतिरथ–पु० [सं०] यदुवंशी व्रजाश्वके पुत्रका नाम।

प्रतिरूप–पु० [सं०] (१) एक दैत्यका नाम, जो कभी सम्पूर्ण पृथ्वीका शासक था (महाभा० शान्ति० २२७.५३-५६)। (२) स्त्री०—मरुकी एक पुत्री तथा किंपुरुषकी पत्नी (भाग० ५.२.२३)।

प्रतिवाह–पु० [सं०] (१) श्वफल्कका गांदिनीसे तो एक पुत्र अक्रूर हुआ दूसरी पत्नीसे उत्पन्न उपमद्गु आदि १२ पुत्रोंमेंसे एकका नाम। इनकी एक बहिन थी जिसका नाम सुतारा (भाग० सुचीरा) था (वायु० ९६.१११; ब्रह्मां० ३.७१.

११२)। (२) पुराणानुसार अक्रूरजीके एक वैमातृज भाई-का नाम (भाग० ९.२४.१७)। (३) उपमद्गुका एक सहोदर भाई (विष्णु० ४.१४.९)।

प्रतिवाहु—पु० [सं०] श्वफल्कके अक्रूर आदि वारह पुत्रोंमेंसे एक पुत्र एक यादवका नाम (भाग० ९.२४.१८)।

प्रतिविन्ध्य—पु० [सं०] द्रौपदीके गर्भसे उत्पन्न युधिष्ठिरके पुत्रका नाम (महाभा० आदि० ६३.१२२-१२३ तथा भाग० ९.२२.२९; मत्स्य० ५०.५१; वायु० ९९.२४६; विष्णु० ४.२०.४२)।

प्रतिवेश्य—पु० [सं०] पुराणानुसार एक प्राचीन देशका नाम (हि०श०सा०)।

प्रतिव्यूह—पु० [सं०] वत्सव्यूहका पुत्र तथा दिवाकरका पिता (वायु० ९९.२८२)।

प्रतिव्योम—पु० [सं०] (१) वत्सवृद्धका पुत्र तथा भानुका पिता (भाग० ९.१२.१०)। (२) वत्सद्रोहका एक पुत्र तथा दिवाकरका पिता (मत्स्य० २७१.५)। (३) वत्स-व्यूहका पुत्र तथा दिवाकरका पिता (विष्णु० ४.२२.३)।

प्रतिश्रव—पु० [सं०] पोडशचक्रके वारहवें पर्वपर स्थित २६ महाबली तथा महाकाय रुद्रोंमेंसे एक रुद्रका नाम (ब्रह्मां० ४.३४.३३)।

प्रतिश्रुत—पु० [सं०] शांतिदेवा तथा वसुदेवके श्रम आदि कई पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (भाग० ९.२४.५०)।

प्रतिश्रुति—पु० [सं०] वसुदेवके एक पुत्रका नाम (भाग०)।

प्रतिश्रुत्का—एक वैदिक देवता (हिं०श०सा०)।

प्रतिष्ठा—स्त्री० [सं०] (१) सोलह शक्तिदेवियोंमेंमे एक शक्ति देवी (ब्रह्मां० ४.४५.९८)। (२) मंदिर आदिमें किसी देवता-की शास्त्रोक्त विधिसे स्थापना तथा प्राणप्रतिष्ठा (मत्स्य० अ० २६३)। इसके लिए माघ, फाल्गुन, चैत्र, वैशाख और ज्येष्ठ शुभ मास हैं। शुभ नक्षत्र, लग्न, मुहूर्त्त आदिके लिए द्रष्टव्य (मत्स्य० २६४.३-१२)। मंडप मंदिरके पूर्व या उत्तरमें रहता है और इसकी नाप भिन्न २ है। स्थापककी विशेपताएँ, पूजा तथा उपासना-विधि, त्रिसंध्याका नैवेद्य आदिके लिए द्रष्टव्य (मत्स्य० अ० २६५)। शिवकी मूर्त्ति-को उत्तरमुख ही होना चाहिये (मत्स्य० २६६.४) तदुप-रांत लोकपालादिको मंत्राभिपिक्त कर शान्ति करनी चाहिये (मत्स्य० २६६.१९-६५)। अर्घ्यकी विधिके लिए द्रष्टव्य (मत्स्य० २६७.२-२१, २४-२८)।

प्रतिष्ठान—पु० [सं०] (१) ऐल पुरुरवाकी राजधानी (वायु० ९१.१८) सर्वप्रथम मनुने इसे सुद्युम्नको दिया था (विष्णु० ४.१.१६)। (२) प्रतिष्ठान सुद्युम्न तथा पुरूरवाकी राजधानी का नाम जो यमुनाके उत्तरी तटपर प्रयागके निकट स्थित था (भाग० ९.१.४२; ब्रह्मां० ३.६०.२१; ६६.२१; मत्स्य० १२.१८; १०४.५; १६०.३०)। सर्वप्रथम यह स्थान सुद्युम्नको प्राप्त हुआ था और उसीसे पुरूरवाको मिला (वायु० ८५.२२)।

प्रतिष्ठानपुर—पु० [सं०] (१) प्राचीन कालका एक नगर जो गंगा-यमुनाके संगमपर वसा था। पहले चंद्रवंशी राजा पुरूरवाकी राजधानी यही थी (भाग० ९.१.४२; ब्रह्मां० ३.६०.२१; ६६.२१; मत्स्य० १२.१८; १०४.५; १०६.३०)। (२) गोदावरी तटपर महाराष्ट्र देशका एक प्राचीन नगर जहाँ शालिवाहनकी राजधानी थी।

प्रतिसंचर—पु० [सं] पुराणानुसार प्रलयका एक भेद जिसके तीन भेद कहे गये हैं—नैमित्तिक, प्राकृतिक और आत्यंतिक (वायु० १००.१३२; विष्णु० १.२.२५; ३.२२.५)। विष्णुपुराणानुसार "नित्य" या दैनन्दिन एक चौथा भेद है (विष्णु० १.७.४१-४; ६.३.१-३; ४.७; ८.१)।

प्रतिसंधि—स्त्री० [सं०] दो निश्चित समयके मध्यकी सृष्टि (ब्रह्मां० २.३१.११३; मत्स्य० १४४.१०१; वायु० ४.२-३; ५.८.११२; ६१.१४५.१४८)। एक कल्प और दूसरेके वीचमें कोई प्रतिसंधि नहीं होती परन्तु मन्वंतरोंके वीचमें प्रतिसंधि होती हैं (ब्रह्मां० २.६.२-३, १०)।

प्रतिसर्ग—पु० [सं०] (१) पुराणानुसार द्वितीय सृष्टि जो तीन प्रकारकी है (ब्रह्मां० ४.३.३१, ११०, ११३; वायु० १०२.४६.५३; विष्णु० ६.८.२, १५)। स्वायंभुव मनुके मन्वंतरमें ब्रह्माके दस मानस पुत्रों तथा सप्तर्षियों और यामदेवों द्वारा उत्पन्न की गयी सब सृष्टियाँ (मत्स्य० ८.१)। रुद्र, विराट्, पुरुप, मनु, यक्ष और मरीचि आदि ब्रह्माके मानस पुत्र कहे गये हैं। पुराणकी पाँच विशेष-ताओंमेंसे एक (मत्स्य० ५२.२; ५३.६५; ब्रह्मां० १.१.३७; ३.२६)। (२) पुराणका एक विषय विशेप। ब्रह्माके दिनकी संध्याके समय प्रलय आरंभ होता है जबकि सारा संसार आगकी जलती भट्ठी-सा दीखता है तव भिन्न २ प्रकारके मेघ वर्षा करते हैं (वायु० ४.१०; १००.१३३-७९)। विष्णुका क्षीरसागरमें होता है शयन (वायु० १००.१०५-९)।

प्रतिसर्प—पु० [सं०] एक रुद्रका नाम।

प्रतिस्कंध—पु० [सं०] पुराणानुसार कुमार कार्त्तिकेयके एक अनुचरका नाम (स्कंदपु०)।

प्रतिहर्ता—पु० [सं०] (१) मरुतोंके सात गणोंमेंसे छठे गणके एक मरुत्का नाम (ब्रह्मां० ३.५.९७)। (२) प्रतिहारका पुत्र तथा उन्नेता (विष्णु०=भव)का पिता (वायु० ३३.४५; विष्णु० २.१.३७)। (३) प्रतीहके तीन पुत्रोंमेंसे एक पुत्र। स्तुतिके गर्भसे अज और भूमा इसके दो पुत्र हुए थे। यह यज्ञकार्यमें वड़ा दक्ष था (भाग० ५.१५.५; ब्रह्मा० २.१४.६६)। (४) नारायणके पेटसे उत्पन्न यज्ञके १६ ऋत्विजों-मेंसे एक (मत्स्य० १६७.९)।

प्रतिहारतर—पु० [सं०] पुराणानुसार एक प्रकारका अस्त्र जिससे शत्रुके चलाये अस्त्र निष्फल कर दिये जाते हैं (रामा० तथा हिं०श०सा०)।

प्रतीक—पु० [सं०] (१) वसुके पुत्रका नाम जो ओघवान् तथा ओघवतीका पिता था (भाग० ९.२.१८)। इनके भयसे गोदावरी कई शाखाओंमें विभक्त हो गयी थी (मत्स्य० २२.५८)। (२) मरुके पुत्रका नाम—दे० मरु।

प्रतीकाश्व—पु० [सं०] भानुमान्का पुत्र तथा सुप्रतीकका पिता (भाग० ९.१२.११)।

प्रतीची—स्त्री० [सं०] द्रविड़ देशकी एक महा नदीका नाम (भाग० ११.५.४०)।

प्रतीच्यगण—पु० [सं०] पश्चिम प्रदेशकी एक जाति (वायु० ५८.८१)।

प्रतीताश्व—पु० [सं०) भानुरथका पुत्र (वायु० ९९.२८४)

तथा सुप्रतीक (वायु० = सुप्रती)के पिताका नाम (विष्णु० (विष्णु० ४.२२.४) ।

प्रतीप—पु० [सं०] कौरववंशके एक बड़े प्रतापी राजा जिन्हें यौवन कालमें ही संसारसे वैराग्य हो गया था। यह दिलीपके पुत्र तथा देवापि, शांतनु और वाह्लीकके पिता थे जिन्होंने शांतनुको राज्य भार सौंप वानप्रस्थाश्रम ग्रहण किया था (वायु० ९९.२३४) । महाभा० आदि०के अनुसार कुरुसे छठी पीढ़ीमें इनकी उत्पत्ति प्रतीत होती है—कुरुसे अश्ववान् जिनका नामान्तर अविक्षित् कहा गया है। अश्ववान्के परीक्षित् आदि आठ पुत्र, परीक्षित्के जनमेजय, जनमेजयके धृतराष्ट्र हुए, धृतराष्ट्रके पुत्र प्रतीप हुए। परन्तु आदि० ९५-३९-४४के वर्णनके अनुसार कुरुसे विदुर. उनसे अनश्वा, अनश्वासे परीक्षित्,, परीक्षित्से भीमसेन, भीमसेनसे प्रतिश्रवा तथा प्रतिश्रवासे प्रतीपका जन्म कहा गया है। इनकी पत्नीका नाम शैव्या सुनन्दा था। इससे इनके तीन पुत्र हुए देवापि, शान्तनु और वाह्लीक (महाभा० आदि० ९४.६१; ९५.४४; (भाग० ९.२२.११. १२; मत्स्य० ५०.३८; वायु० ९९.४१८; विष्णु० ४.२०, ८.९) । इनके पास सुन्दर रूप तथा उत्तमगुणगणोंसे सम्पन्न युवतीका रूप धारण कर गङ्गा आयी और इनके दाहिनी जाँघपर जा बैठीं। इनके पूछनेपर उन्होंने इनकी पत्नी बननेकी इच्छा प्रकट की। तब इन्होंने उनका पुत्रवधूके रूपमें वरण किया (आदि० ९७१-१६) ।

प्रतीपक—पु० [सं०] मरुका एक पुत्र तथा कृतिरथका पिता (भाग० ९.१३.१६) ।

प्रतीपाश्व—पु० [सं०] ध्रुवाश्वका पुत्र तथा सुप्रतीपका पिता (मत्स्य० २७१.७) ।

प्रतीह—पु० [सं०] सुवर्चला (वर्चला = ब्रह्मां०)के गर्भसे उत्पन्न परमेष्ठीके तीन पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम जो आत्मविद्यामें प्रवीण थे (भाग० ५.१५ ३-५) ।

प्रतीहार—पु० [सं०] (१) द्वारपाल, कालनेमिके आगमनकी सूचना तारकको द्वारपालसे ही मिली थी (मत्स्य० १५४. १, ४) । शिवका द्वारपाल वीरक था (मत्स्य० १५४.३८३, ३८६) । द्वारपालकी विशेषताओंके लिए द्रष्टव्य (मत्स्य० २१४.११) । (२) परमेष्ठीके परिवारसे सम्बद्ध (ब्रह्मा० २.१४.६५ विष्णु० २.१-३६) ।

प्रतुंड—पु० [सं०] पिशाचोंका एक वर्गविशेष (ब्रह्मां० ३.७. ३७८) ।

प्रतुंडकगण—पु० [सं०] पिशाचोंका एक गण (ब्रह्मां० ३.७. ३८२) ।

प्रतूद—पु० [सं०] एक वैदिक ऋषिका नाम (हिं० श० सा०) ।

प्रतोष—पु० [सं०] (१) स्वायंभुव मनुके एक पुत्रका नाम। (२) दक्षिणाका एक पुत्र जो बारह संख्यावाले तुषितदेवगणमेंका एक तुषितदेव था (भाग० ४.१.७-८) ।

प्रत्यंगिरा—पु० [सं०] एक ऋषि जो पुराणानुसार चाक्षुष मन्वंतरके अंगिराके पुत्र थे।

प्रत्यंगिरा—स्त्री० [सं०] तांत्रिकोंकी एक देवीका नाम। ब्रह्मवेद (अथर्ववेद) आभिचारिक विधियों तथा प्रत्यंगिरसयोगों- (ब्रह्मां० ३.१.२६) ।

प्रत्यक्षलवण—पु० [सं०] यतियोंको अपने सामने भोजनमें नमक मिलाना निषिद्ध है (वायु० १८.२०) ।

प्रत्यग्र—पु० [सं०] (प्रत्यग्रह = वायु०) । पुराणानुसार एक चेदिप, उपरिचर वसुके बृहद्रथ आदि पाँच पुत्रोंमें एक पुत्रका नाम (भाग० ९.२२.६; वायु० ९९.२२२; विष्णु० ४.१९.८१) ।

प्रत्यश्रवा—पु० [सं०] चैद्योपरिचरकी गिरिकासे सात संततियाँ हुई जिनमें छह पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (मत्स्य० ५०.२७) ।

प्रत्यह—पु० [सं०] भार्गवकुलका आर्षेय प्रवर प्रवर्तक एक ऋषि (मत्स्य० १९५.४३) ।

प्रत्याहार—पु० [सं०] (१) कलियुगके अंतमें प्रलयारम्भके समय सारी सृष्टिके विलीन होनेकी अवस्था। अव्यक्त व्यक्तको निगल जाता है, जल सारी पृथ्वीको जलमग्न कर उसके गंधको निगल जाता हैं; तदुपरांत जलका 'रस'रूपी गुण चारों ओर फैली हुई अग्निमें समा जाता है; अग्निके 'रूप' रूपी गुणको वायु चट कर जाता है और यह दसों दिशाओंमें फैला रहता है। वायुका "स्पर्श" गुण आकाशमें प्रवेश कर जाता है जिसका "शब्द"रूपी गुण भूत तथा अन्य तत्त्वोंसे परास्त हो जाता है। "महत्"में यह सब प्रवेश कर विलीन हो जाता है; सात प्रकृतियाँ जो एक दूसरेको ढके रहती हैं, परस्परमें लीन हो जाती हैं। (ब्रह्मां० २.६.१४; ४.३.१-२१; वायु० १०२.१-२, ५)। (२) योगके आठ अंगोंमेंसे एक, जिससे इंद्रियोंको उनके विषयोंसे हटाकर चित्तको वशमें करते हैं तथा सारे विषयों का नाश हो जाता है (मत्स्य० १८३.५४; वायु० १०.७६, ९३; विष्णु० ६.७.४५) । योगी ईश्वरको अपनेमें ही देखता है (वायु० ११.१८-९, ३०; १०१.२११; १०४. २४) ।

प्रत्यूष—पु० [सं०] (१) एक ऋषि, जो देवर्षि दलके पिता थे (ब्रह्मां० २.३५.९२) । (२) आठ वसुओंमेंसे एक वसु जो देवल ऋषिके पिता थे (ब्रह्मां० ३.३.२१, २७; मत्स्य० ५.२१, २७; २०३.४; वायु० ६१.८४; ६६.२०; विष्णु० १.१५.११०, ११७) । (३) कालचक्रके पञ्चकोणमें स्थित कालकी पांच शक्तियोंमेंसे एक शक्ति (ब्रह्मां० ४.३२. १०) ।

प्रथम—पु० [सं०] सुतलमें निवास करनेवाला एक असुर (ब्रह्मां० २.२०.२१; वायु० ५०.२०)।

प्रथमसाहस—पु० [सं०] 'पूर्वसाहस'। अशिक्षित तथा नकली चिकित्सक यह दण्ड पानेका अधिकारी है (मत्स्य० २२७.६५, १७७) ।

प्रथित—पु० [सं०] (१) पुराणानुसार स्वारोचिष मनुके पुत्रका नाम। (२) पुलह और श्वेताके रणचन्द्र, शतचन्द्र आदि १० पुत्रोंमेंसे एक वानर पुत्र (ब्रह्मां० ३.६.१७९) ।

प्रदेश—पु० [सं०] एक नाप जिसकी लम्बाई १० अंगुल है (वायु० ८.१०२) ।

प्रदेशिनी—स्त्री० [सं०] तर्जनी अंगुली जिससे अंगुलोंकी नाप की जाती है (वायु० ८.१०३) ।

प्रदोष—पु० [सं०] (१) दोषा और पुष्पार्णका एक पुत्र (भाग० ४.१३.१४) । (२) प्रत्येक पक्षकी त्रयोदशीको

होनेवाला एक व्रत। इसमें दिनभर उपवास करके संध्या समय शिवके पूजन करनेके पश्चात् भोजन करनेका विधान है। इसे पुत्रकी कामनासे करते हैं और इसके पूजाविवरण तथा मंत्रादिके लिए द्रष्टव्य (स्कंद० माहेश्वर० केदार-खंड १७.१२१-१३६)।

"यदा त्रयोदशी शुक्ला मन्दवारेण संयुता।
आरब्धव्यं व्रतं तत्र संतानफलसिद्धये॥
ऋणप्रमोचनार्थं तु भौमवारेण संयुता।
सौभाग्यश्रीसमृद्ध्यर्थं शुक्रवारेण संयुता॥
आयुरारोग्यसिद्ध्यर्थं भानुवारेण संयुता।"
(मदनरत्न-निर्णयामृतान्तर्गत स्कंदपुराण-वचन)।

"शिवपूजानक्तभोजनात्मकं प्रदोपम्"—(हिमाद्रि) तथा
"ये वै प्रदोपसमये परमेश्वरस्य
कुर्वन्त्यनन्यमनसोऽङ्घ्रिसरोजसेवाम्।
नित्यं प्रवृद्धधनधान्यकलत्रपुत्र-
सौभाग्यसम्पदधिकास्त इहैव लोकाः॥–स्कंद०।

(३) पोडशपत्राब्जपरकी पोडश शक्तिदेवियोंमेंसे एक शक्तिदेवीका नाम (ब्रह्मां० ४.३२.१२)।

प्रद्युम्न–पु० [सं०] (१) मैथिल राजा भानुमान्का पुत्र तथा मुनिका पिता (ब्रह्मां० ३.६४.२९; वायु० ८९.१९)। (२) नड्वलाके गर्भसे उत्पन्न चाक्षुप मनुके १२ पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (भाग० ४.१३.१६)। (३) संकर्पण, वासुदेव आदि पाँच वंशवीरोंमेंसे एक वंशवीर (वायु० ९७.१)। (४) वैष्णवोंके अनुसार चतुर्व्यूहात्मक विष्णुके अंशका नाम (शेप तीन अंशोंके नाम हैं—वासुदेव, संकर्पण और अनिरुद्ध)। विष्णुकी एक उपाधि (मत्य० २७६.९; विष्णु० ५.१८.५८; वायु० १११.२१; इनकी पूजनविधिके लिए द्रष्टव्य (भाग० १.५.३७; ४.२४.३५; ६.१६.१८)। (५) श्रीकृष्णके बड़े पुत्रका नाम जो रुक्मिणीके गर्भसे उत्पन्न हुए थे। कामदेव शिवके कोपाग्निसे भस्म होकर प्रद्युम्नके रूपमें उत्पन्न हुए थे (विष्णु० ४.१५.३७; ५.२६.१२; अध्या० २७ पूरा; २८.६-७; ३२.१.६; भाग० १.१७.२९; ११.१७; १४.३०; १०.४०.२१; ६१.७.९; ९०.३५; ब्रह्मां० ३.७१.२४५; ७२.१; ४.२९.१२८; वायु० ९६.२३०)। जन्मके सातवें दिन शम्बरासुर इन्हें हरकर ले गया था तथा समुद्रमें फेंक आया, इन्हें एक मछली निगल गयी जिसे फँसा एक मछुआ शम्बरको दे आया। जब मछली काटी गयी यह निकले और तब शम्बरने अपनी स्त्री मायावतीको इन्हें पालनेके लिए कहा। रति (कामदेवकी पत्नी) ही मायावती थी जिसने नारदके कहनेपर पतिको पहचान लिया और निःसन्तान होते हुए भी प्रद्युम्नका लालन-पालन एक धायके सुपुर्द कर दिया। जब यह बड़े हुए तब मयावतीने कुल भेद इनको बतलाया जिसने उन्हें महामाया विद्याकी शिक्षा भी दी और तत्पश्चात् प्रद्यम्नने वैष्णवास्त्रसे शम्बरका बध किया और मायावतीको लेकर द्वारका आये। महाभारतके अनुसार ब्रह्माके पुत्र सनत्कुमार ही प्रद्युम्न थे। द्वारका पहुँचनेपर रुक्मिणीको अपना खोया पुत्र याद हो आया क्योंकि इसकी समता श्रीकृष्णसे बहुत थी। प्रद्युम्नकी सारी कथा नारदसे सुन सब गद्गद् हो गये और आनंदोत्सव मनाये गये (भाग० १० अध्या० ५५ पूरा; मत्स्य० ४७. १५, २३; ९०.५१; १०१.१०; २४८.४८)। स्वयंवरमें समागत राजाओंको जीतकर रुक्मीकी पुत्री रुक्मावती (वैदर्भी)ने इन्होंने विवाह किया। उससे अनिरुद्ध इनके पुत्र हुए (भाग० १०.६१.१८, २२, २३ (८); ९०.३६; विष्णु० ४.१५·३९)। बाणासुर तथा गुहसे इनका युद्ध हुआ था (भाग० १०.६३.३; १०६३.७)। साल्वसे युद्धमें उसके मन्त्री द्युमान्ने इनके सीनेपर गदासे यथेष्ट चोट पहुँचायी थी पर वह इन्हींसे परास्त हुआ (भाग० १०.०६.१३-३३; ००.१-३)। प्रभासक्षेत्रमें साम्बसे इनका युद्ध हुआ था (भाग० ११.३०.१६)। इनकी मृत्युके पश्चात् इनकी पत्नियाँ सती हो गयी थीं।

प्रद्योत–पु० [सं] (१) पुरंजयके मन्त्री शुनकका पुत्र। पुरंजयको मारकर शुनकने इसे राजा बनाया था। यह पालकका पिता तथा प्रद्योत वंशका आदिपुरुष था (भाग० १२.१.३-४)। (२) एक यक्ष जो पुण्यजनी तथा मणिभद्रके २४ पुत्रों से एक पुत्र था (ब्रह्मां० ३,७.१२४; वायु० ६९.१५६)। (३) मुनिक (विष्णु० = सुनिक)का पुत्र जिसने अपने मालिक रिपुंजयको मारकर अपने पुत्र प्रद्योतको राजगद्दीपर बैठा दिया था। सब सामंतोंको अपने वशमें कर इसने २३ वर्षतक राज्य किया था। इसके पुत्रका नाम बलाक (वायु० = पालक) था। शिशुनाकने इसका बध कर दिया (वायु० ९९.३१०-४; विष्णु० ४.२४.२-३)।

प्रद्योति–पु० [सं०] (वायु० तथा विष्णु० = प्रद्योत) एक राजा जिसने सामन्तोंको अधिकारमें रखकर २३ वर्षोंतक शासन किया था (ब्रह्मां० ३.७४. १२३)।

प्रद्वेपी–पु० [सं०] दीर्घतमा ऋषिकी पत्नीका नाम (महाभा० आदि० १०४.२३, २४)।

प्रधा–स्त्री० [सं०] दक्ष प्रजापतिकी एक पुत्री जो काश्यपको ब्याही थी (हि०वि०को०)।

प्रधान–पु० [सं०] (१) इससे तथा अव्ययात्मा अनन्तसे महान् आवृत है, महान्से भूतादि आवृत हैं, भूतादिसे सब कुछ आवृत है (ब्रह्मां० २.२१.२८; ३.४३.४; ४.४.१२, २०)। (२) (माया = वायु०) प्रकृतिका बोधक जो विकारके साथ महत्-तत्त्व हो जाता है (ब्रह्मां० १.१ ८८, ९३; ३.९; ५.१०३; वायु० १०३.१२,२१, ३६; मत्स्य० ३.१५.१७; ६०.३; वायु० ४.१९; २३.५६.; २४.६६; विष्णु० १.२.१५.१६)।

प्रधान-पुरुष–पु० [सं०] प्रकृति-पुरुप तम तथा सत्त्व, सृष्टिके आरंभमें 'सदसदात्मक'से प्रधान उत्पन्न होता है (ब्रह्मां० १.४.१; वायु० ५.७-८, २२)।

प्रधानेशी–स्त्री० [सं०] जिन सोलह नामोंसे देवताओंने ललिता देवीकी स्तुति की थी उन सोलह नामों·से ललिता देवीका एक नाम (ब्रह्मां० ४.१७ ३३)।

प्रपाली–पु० [सं०] (प्रपालि), बलदेवका एक नाम (भाग०)।

प्रपितामह–पु० [सं०] कालात्मा और ऋग्, साम तथा यजुर्वेद संहिताओंका उद्गम स्थान (वायु० ३१.३३; १११.८४)।

प्रपोहय–पु० [सं०] पाँच प्रकारके नील पराशरोंमेंसे एक

नील पराशर (मत्स्य० २०१.३४)।

प्रबल–पु० [सं०] (१) विष्णुका एक अनुचर जिसने बलिके असुर अनुगामियोंपर आक्रमण किया था (भाग० २.९.१४; ८.२१ १६)। (२) श्रीकृष्ण और माद्रीके १० पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (भाग० १०.६१.१५)।

प्रबाही–स्त्री० [सं०] इसने सत्वन, सत्त्वात्मक आदि दस देवगन्धर्वोंको जन्म दिया जो सबके सब उच्चकोटिके गायक थे (वायु० ६८.३७)।

प्रबुद्ध–पु० [सं०] (१) नव योगेश्वरों कवि, हरि, अन्तरिक्ष, प्रबुद्ध, पिप्पलायन, आविर्होत्र, द्रुमिल, चमस तथा करभाजन) से एक योगेश्वरका नाम (भाग० ५.४.११; ११.२.२१)। (२) ऋषभदेवके १०० पुत्रोंमें नौ पुत्र परम भगवद्-भक्त योगीश्वर हुए। उन नौ पुत्रोंमेसे एक परम भक्त पुत्र जिसने निमिको मायासे छुटकारा पानेका उपाय (गुरुका आश्रय ले हरिभक्ति करना) बतलाया था (भाग० ५.४.११; ११.२.२१; ३.१८.३३)।

प्रबोधिनी–स्त्री० [सं०] कार्त्तिक शुक्ला एकादशी। कहते हैं विष्णु भगवान इस दिन सोकर उठते हैं। इस दिनके व्रत तथा विधिवत् पूजनका बड़ा फल लिखा है। वर्षाकालके पश्चात् सारी दुनिया अपने काम लग जाती है, सबमें चैतन्यता आ जाती है, शायद विष्णुके सोकर उठनेका यही अर्थ हो। आषाढ़ शुक्ला एकादशीको "हरिशयनी" एकादशी कहनेका भी कुछ ऐसा ही भाव प्रतीत होता है। वर्षाकालका आरंभ होता है और खेतोंको छोड़ संसारके अन्य काम रुक जाते हैं, अर्थात् संसारके श्रेष्ठ लोगोंके आलस्यका समय यही है अन्यथा जगदीश सो जाय तो फिर सृष्टिकी क्या गति होगी? जरा सोचनेकी बात है (वराहपु०)।

प्रबोधैकादशीकृत्य–पु० [सं०] इसमें विष्णुपूजा या पञ्चदेवपूजाका विधान है अथवा रामार्चनचंद्रिकाके अनुसार भगवानका विधिवत् पूजन करे तथा रेवतीका अन्तिम तृतीयांशका त्यागकर पारण करे–दे० "मदनरत्न"।

प्रभंजन–पु० [सं०] (१) वायुदेवका एक नाम (भाग० २.२५.७) जो वायुपुराणके प्रवक्ता थे (वायु० २.२)। (२) वालीके सामन्त प्रधान वन्दरोंमेंसे एक प्रधान वन्दर (ब्रह्मां० ३.७.२३३)।

प्रभंजना–स्त्री० [सं०] केतुमाल देशकी कई प्रधान नदियोंमेंसे एक नदी (वायु० ४४.१८)।

प्रभव–पु० [सं०] (१) भृगु तथा दिव्या (पुलोमाकी पुत्री)-के १२ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (ब्रह्मां० ३.१.९०; मत्स्य० १९५.१३)। (२) धर्म और साध्याके बारह पुत्रों, जो साध्य कहलाते हैं, मेंसे एक साध्यका नाम (मत्स्य० १७१.४३; वायु० ३६.१६)।

प्रभवन–पु० [सं०] धर्म और विश्वाके १० पुत्रों, जो विश्वेदेव कहलाते हैं मेंसे एक विश्वेदेवका नाम (वायु० ६६.३२)।

प्रभविष्णु–पु० [सं०] शिव भगवान् (वायु० १०१.२९४)।

प्रभा–स्त्री० [सं०] (१) मेरु पर्वतपर स्थित अलकापुरीका नाम—दे० वसुधारा। (२) सूर्यकी तीन पत्नियोंमेंसे एक पत्नीका नाम, यह प्रभातकी माता थी। सूर्यकी तीन पत्नियोंके नाम यों हैं—संज्ञा, राज्ञी और प्रभा। राज्ञीसे रैवत हुआ, प्रभासे प्रभात एवं संज्ञासे मनु, यम और यमुना ये दो जुड़वे हुए (मत्स्य० ११.२-४)। आठ अन्य देवियोंके साथ यह (प्रभा) पतिको छोड़ सोमके पास चली गयी थी (मत्स्य० २३.२६)। (३) सती देवीकी एक मूर्ति जो सूर्यबिम्बमें प्रभा नामसे प्रतिष्ठित है (मत्स्य० १३.५२)। (४) पुष्पार्णकी दो रानियोंमेंसे एक रानी तथा प्रात, मध्यंदिन और सायम्‌की माता। इनकी दूसरी रानीका नाम दोषा था उससे भी इनको प्रदोष, निशीथ और व्युष्ट नामके तीन पुत्र हुए (भाग० ४.१३.१३, १४)। (५) स्वर्भानुकी एक पुत्री, आयुकी पत्नी तथा नहुष आदि पाँच पुत्रोंकी माताका नाम (ब्रह्मां० ३.६.२३-४; ६७.१; मत्स्य० ६.२१;वायु० ६८.६२.२४; विष्णु० १.२१.७.)। अपने पतियोंका त्यागकर सोमकी अनुगामिनी हुई नव (९) देवियोंमेंसे एक (वायु० ९०.२५); स्वर्भानुकी पुत्री (वायु० ९२.१)। (६) सगरकी दो पत्नियोंमेंसे एक पत्नी यादवी जो ६०,००० पुत्रोंकी माता थी (मत्स्य० १२.३९.४२)।

प्रभाकर–पु० [सं०] (१) ज्योतिष्मान्‌के एक (छठे) पुत्रका नाम, जिसके नामपर एक वर्षका नामकरण हुआ (ब्रह्मां० २.१४.२८.२९; वायु० ३३.२४; विष्णु० २४.३६)। (२) मद्राके पति तथा सोमके पिताका नाम (ब्रह्मां० ३.८.७६)। (३) कुशद्वीपके एक वर्ष (राज्य)का नाम जिसका नामकरण ज्योतिष्मान्‌के छठें पुत्रके नामपर हुआ (ब्रह्मां० २.१४.२९; १९ ५८; वायु० ३३.२६;–४९.५४)। (४) आठवें सावर्णि मन्वन्तरके सुततपगणके २० देवोंमेंसे एक सुतप देवका नाम (ब्रह्मां० ४.१.१४; वायु० १००.१४)। (५) सूर्य, प्रभाका पति—दे० (प्रभा—२), जिसके रथमें एक पहिया तथा सात घोड़े हैं, दण्डी और पिंगल जिसके द्वारपाल हैं जो हाथमें तलवार लेकर इनके अगल-बगल रहते हैं, हाथमें लेखनी धारण किये धाता जिसके बगलमें रहते हैं, अरुण जिसका सारथि है (मत्स्य० २३.२५; २६१.१-८)। (६) एक आत्रेय। स्वर्भानुसे प्रताड़ित हो जब सूर्य पृथ्वीपर गिर रहा था और सारे संसारमें अन्धकार होने ही वाला था तब इस महर्षि आत्रेयने अपनी वाक्‌शक्तिसे इसे गिरनेसे रोककर संसारको अन्धकारके गर्तमें जानेसे बचा लिया (वायु० ७०.७०-४; ९९.१२७)।

प्रभात–पु० [सं०] (१) (मत्स्य० तथा वायु० = प्रभास) धर, ध्रुव आदि आठ वसुओंमेंसे आठवाँ वसु, बृहस्पतिकी बहिन् योगसिद्धा वरस्त्रीका पति तथा विश्वकर्माका पिता (ब्रह्मां० ३.३.२१; ५९.१६१ मत्य० ५.२१.२७; २०३.४; वायु० ६१.८२; ६६.२०, २७–८; ८३.२०; ८४.१६)। (२) एक देवता जो सूर्य और प्रभासे उत्पन्न माना गया है—दे० (प्रभात—१)।

प्रभाती–स्त्री० [सं०] (प्रभाता ?) प्रत्यूष और प्रभात नामके वसुओंकी माता (महाभा० आदि० ६६.१७-२०)।

प्रभाव–पु० [सं०] (१) कलावतीके गर्भसे उत्पन्न स्वारोचिष मनुका एक पुत्र (मार्कण्डेयपु०)। (२) प्रभाके गर्भसे उत्पन्न सूर्यका पुत्र –दे० (प्रभा)। (३) सग्रीवके एक मन्त्रीका नाम (रामायण)।

प्रभावती–स्त्री० [सं०] (१) सूर्यकी पत्नीका नाम (महाभा० उद्योग० ११०.८)। (२) राजा वज्रनाभकी पुत्री तथा प्रद्यु्म्नकी पत्नीका नाम (भाग०)। (३) शिवके एक गणकी वीणाका नाम (शिवपु०)। (४) अंगदेशके राजा चित्ररथकी रानीका नाम जो देवशर्माकी पत्नी रुचिकी बड़ी बहिन थी (महाभा० अनु० ४२.८)। (५) मयदानवके निवासस्थानपर तपस्या करनेवाली स्त्री जो सीताजीकी खोज करनेके लिए गये हुए वानरोंको मिली थी (वन० २८२ ४१)।

प्रभाष–पु० [सं०] एक वसुका नाम—दे० वसु (१) तथा (प्रभात–१, प्रभास–२)।

प्रभास–पु० [सं०] (१) एक प्राचीन तीर्थस्थान जो महाभारतके अनुसार द्वारकाके अन्तर्गत था तथा पश्चिम-वाहिनी सरस्वतीके कारण प्रसिद्ध था (भाग० ७.३.३१; ११.३०-६; ब्रह्मां० ३.३०.४०; वायु० २३.२१५; ७७.४०)। पुराणानुसार श्रीकृष्णकी मृत्युके पश्चात् द्वारका और प्रभास दानों समुद्रमें लीन हो गये थे। श्रीकृष्णके कहनेपर यादव यहींपर आये और बादमें गृहयुद्धमें लड़ सब मर गये थे (भाग० ११.३०.१०-१९; विष्णु० ५.३७.३०, ३८-९) आजकल दोनों वर्तमान हैं पर ये किसके स्थापित हैं पता नहीं। कहते हैं पुरुप-रूपी वेदके गाल तथा गलेके बीचका स्थान ही यह क्षेत्र है (वायु० १०४.७८)। गुजरातमें सोमनाथजीका मन्दिर इसीके अन्तर्गत था। यहाँ अर्जुन (भाग० १०.८६.२) और बलराम (भाग० १०.७८.१८; ७९.२१) गये थे। दक्ष शापसे यक्ष्मा ग्रसित चन्द्रमा यहीं रोगमुक्त हुए थे (भाग० ११.६.३५-८)। सान्दीपनिका पुत्र यहीं डूब गया था जिसे बलराम और श्रीकृष्ण पञ्चजन नामक दैत्यको मारकर लाये थे और गुरुदक्षिणाके रूपमें गुरुके सुपुर्द किया था (भाग० १०.४५.३७-८; ३.१.२०; १.१५.४९; विष्णु० ५.२१.२५)। (२) एक वसुका नाम जो बृहस्पतिकी बहिन वरस्त्रीका पति तथा विश्वकर्माका पिता था (विष्णु० १.१५.११०, ११८-१९)। (३) कुमार कार्त्तिकेयके एक सैनिक अनुचरका नाम (महाभा० शल्य० ४५.६९)। (४) २० सुतप देवोंमेंसे एक सुतप देवका नाम (ब्रह्मां० ४.१.१४; वायु० १००.१५)। (५) आठवें मन्वंतरके एक देवता। (६) गयासुरकी शिलाके चरणोंको ढकनेवाला पर्वत जो चमकता रहता है। प्रभास पर्वतसे भेदकर शिलाका अंगूठा भी बाहर निकला। अँगूठेपर उद्भूत ईश भी प्रभासेश कहलाये। शिलांगुष्ठका जो एक भाग है उसीको प्रेतशिला कहते हैं। यह गया तीर्थमें स्थित है (वायु० १०८.१३-४; १०९.१४)।

प्रभासेश–पु० [सं०] शिव जो गयाकी शिलाके अँगूठेके रूपमें प्रभास पर्वतको काटकर उद्भूत हुए थे (वायु० १०६.१४, २३)।

प्रभा-सौरी–स्त्री० [सं०] सूर्यास्त होनेपर सूर्यकी किरणें अग्निमें प्रवेश कर जाती हैं, अतः यह रातमें दूरसे दिखायी देती है। जब प्रातःकालमें सूर्योदय होता है अग्नि सूर्यकी किरणोंमें प्रवेश कर जाती है अतः अग्निका प्रकाश दिनमें दिखायी नहीं देता। जब सूर्य पृथ्वीके मध्यमें रहता है, रात्रि जलमें प्रविष्ट हो जाती है अतः उसका रंग ताम्रवर्ण हो जाता है। रात्रिमें दिनके जलमें प्रविष्ट हो जानेके कारण जलका श्वेतवर्ण हो जाता है। इसी प्रकार "अहोरात्र" जलमें प्रवेश करते हैं (वायु० ५०.११२-१७)।

प्रभाव्रत–पु० [सं०] इस व्रतको करनेवाला राजारिध्वज होता है (मत्स्य० १०१.५४)।

प्रभु–पु० [सं०] (१) भग तथा सिद्धिके तीन पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (भाग० ६.१८.२)। (२) शुक और पीवरीके छह पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (ब्रह्मां० ३.८.९३; मत्स्य० १५.१०; वायु० ७०.८५)। (३) धर्म और साध्याके पुत्र १२ साध्यदेवोंमेंसे एक साध्य (ब्रह्मां० ३.३.१७; मत्स्य० २०३.१२; वायु० ७०.८५)। (४) मरु (ब्रह्मां० ३.६३.२११)। (४) अमिताभदेवगणमेंका एक देव (ब्रह्मां० ४.१.१६; वायु० १००.६६)।

प्रभूति–पु० [सं०] मरीचिदेवगणमेंके १२ देवोंमेंसे एक मरीचिदेव (ब्रह्मां० ४.१.५८)।

प्रमति–पु० [सं०] (१) प्रांशुका पुत्र तथा खनित्रका पिता (भाग० ९.२.२४)। (२) नृदेवका पुत्र जो चन्द्रमाके गोत्रका था जिसने म्लेच्छों तथा अधर्मी राजाओंको परास्त किया था। कहते हैं इसने अश्वका रूप धारण कर लिया (ब्रह्मां० २.३१.७६, ८९; मत्स्य० १४४.५१, ६३)। (३) जनमेजयका एक पुत्र (ब्रह्मां० ३.६१.१०) जिसने वेदशिरासे विष्णुपुराण सुनकर जातुकर्णको सुनाया था (विष्णु० ६.८.४८-९)। (४) विष्णुके एक अवतारका नाम (ब्रह्मां० ३.०३.१११; मत्स्य १४४.६०)। (५) एक अमिताभ देव (ब्रह्मां० ४.१.१७; वायु० १००.१६)। (६) हिरण्यकशिपुकी सभाका एक असुर (मत्स्य० १६१.७९)।

प्रमथ–पु० [सं०] शिवके एक प्रकारके गण अथवा पारिषद (भाग० ४.२.१५; ५.५.२१; वायु० ३९.४३; ७२.५०) जिनकी संख्या छत्तीस करोड़ बतायी गयी है। ये दुष्ट दृष्टिवाले (ब्रह्मां० ३.१०.५१; ४२.३३; भांग० ६.८.२५) रुद्र तथा दक्षिण अग्निके अनुयायी कहे गये हैं (भाम० १०.६३.६; ६६.३०)। इनकी मुखाकृति क्रूर पशुओंकी तरह है (मत्स्य० १३५.३३)। कालिकापुराणानुसार इनमेंसे कुछ तो भोगविमुख हैं और कुछ भोगपरायण। ये नंदीके नेतृत्वमें असुरोंसे लड़े थे (मत्स्य० १३६.१९, ३४, ६७; १३७.१, १३८.१०.५५)। बाणासुरकी राजधानीमें ये श्रीकृष्णसे परास्त हुए थे (भाग० १०.३७.१३; ८५.४१; विष्णु० ५.३३.१३, २४, २७, ३४, ४०)। (३) धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (महाभा० आदि० ११६.१३)।

प्रमथनाथमख–पु० [सं०] प्रमथनाथ (महाभैरव)के प्रीत्यर्थ किया जानेवाला एक यज्ञ जिसे जरासंधने अपने यहाँके राजाओंके साथ सम्पन्न किया था (भाग० १.१५.९)।

प्रमंथु–पु० [सं०] वीरव्रत तथा भोजाके दो पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (भाग० ५.१५.१५)।

प्रमद–पु० [सं०] (१) वशिष्ठका एक पुत्र जो उत्तम मनुके युगके सप्तर्षियोंमेंसे एक ऋषि था (भाग० ८.१.२४)। (२) दनु और कश्यपके विप्रचित्तिप्रमुख १०० पुत्रोंमेंसे एक पुत्र दानव (ब्रह्मां० ३.६.१०)।

प्रमर्दन–पु० [सं०] (१) किष्किन्धाके राजा वालीके सामन्त तथा सेनानायक महाबली प्रधान बन्दरोंमेंसे एक प्रधान बन्दरका नाम (ब्रह्मां० ३.७.२३९)। (२) रथन्तर सामसे उत्पन्न पुण्डरीकके पुत्र एक हाथीका नाम (ब्रह्मां० ३.७.३३५; वायु० ६९.२१९)।

प्रमद्वरा–स्त्री०[सं०] रुरु ऋपिकी पत्नीका नाम जो गंधर्वराज विश्वावसुकी औरस और मेनका नामकी अप्सराके गर्भसे उत्पन्न हुई थीं। यह प्रमिति-पुत्र रुरुको ब्याही गयी थी और महर्पि शुनककी माता थी। साँपके काटनेसे यह मर गयी थी, अतः रुरुने सर्पवंशका नाश आरंभ कर दिया था (महाभा० आदि० ५.१०; ८.५-१३, १८; ९.१५)

प्रमाथ–पु० [सं०] (१) धृतराष्ट्रके एक पुत्रका नाम (महाभारत)। (२) शिवका एक गण। (३) यमराज द्वारा स्कन्दको दिये गये दो पार्पद अनुचरोंमेंसे एक पार्पद अनुचरका नाम। दूसरे पार्पदका नाम उन्माथ था (महाभा० शल्य० ४५.३०)।

प्रमाथिनी–स्त्री० [सं०] गेयचक्ररथेन्द्रके पञ्चम पर्वमें स्थित वामादि षोडश शक्तियोंमेंसे एक शक्ति देवी (ब्रह्मां० ४.१०.७४)।

प्रमाथी–पु० [सं०] (१) खरका एक राक्षस साथी जो दूषण नामक राक्षसका छोटा भाई था और राम-रावण युद्धमे अंगदके हाथों मारा गया था (रामायण, स्कंदपु० ब्राह्म०, सेतुमाहात्म्य)। (२) श्रीरामकी सेनाका एक बंदर जो एक सेनापति भी था (रामायण)। (३) धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (महाभा० आदि० ११६.१३)। (४) अञ्जन सामसे उत्पन्न अंजन और अञ्जनावतीके दो पुत्रोंमेंसे एक पुत्र, एक हाथी (ब्रह्मां० ३.७.३४३)।

प्रमालिका–स्त्री० [सं०] विशुक्र द्वारा लिखित जयविघ्नकर महायंत्रकी आठ दिशाओंमें स्थित अलसा आदि आठ आसुरी देवियोंमेंसे एक (ब्रह्मां० ४.२७.३८)।

प्रमिति–पु० [सं०] (१) (प्रमति० ब्रह्मा०) आत्रेय चान्द्रमस गोत्रके एक मर्यादास्थापक पुरुष, जिन्होंने म्लेच्छों और पाषंडोंका वध किया। इन्हें भगवान कृष्णका कलियुगी अवतार मानते हैं जिसमे महादेवका अंश है। बहुतसे अनाचारी तथा दुराचारियोंका वध करनेके पश्चात् ये गंगा-यमुनाके मध्य समाधिस्थ होंगे (ब्रह्मां० १.१.९९; वायु० ५८.७६-८८)। (२) कल्किका पूर्वजन्म (वायु० ९८.११०)।

प्रमुचि–पु० [सं०] एक ऋपिका नाम।

प्रमोद–पु० [सं०] (१) सात करोड़ हेरम्बोंके अधिनायक ऋद्धि आदि शक्तियों द्वारा सेवित छह विनायकों से एक विनायकका नाम (ब्रह्मां० ४.२७.८१)। (२) विघ्नेश आदि ५१ गणेशोंमेंसे एक गणेशका नाम (ब्रह्मां० ४.४४.६८)। (३) ब्रह्माके विविध अंगोंसे उत्पन्न ऋषि, महर्पि देवता आदिमेंसे ग्रीवासे उत्पन्न एक देवका नाम (यत्स्य० ३.११)। (४) एक सिद्धिका नाम (·) कुमार कार्त्तिकेयके एक सैनिक अनुचरका नाम (महाभा० शल्य० ४५.६५)। (६) ऐरावत नागकुलमें उत्पन्न हुए एक नागका नाम जो जनमेजयके सर्पसत्रमें जल मरा था (महाभा० आदि ५७, ११)। (६) दृढाश्वका एक पुत्र तथा हर्यश्वका पिता (मत्स्य० १२.३३)।

प्रमोदक–पु० [सं०] इक्कावन विनायकोंमेंसे एक विनायक-(गणेश)का नाम (ब्रह्मां० ४.४४.६८)।

प्रमोदा–स्त्री० [सं०] (१) अन्धकासुररक्तपानार्थ शिवजी द्वारा सृष्ट कई मानस पुत्री मातृकाओंमेंसे एक मानसपुत्री मातृका देवी (मत्स्य० १७९.२७)। (२) सांख्यके अनुसार आठ सिद्धियोंमेंसे एकका नाम।

प्रमोदाह्–पु० [सं०] दनु और कश्यपके पुत्र विप्रचित्ति आदि सैकड़ों दानवोंमेंसे एक प्रधान दानवका नाम (वायु० ६८.१०)।

प्रम्लोचा–स्त्री० [सं०] एक प्रसिद्ध अप्सरा जिसे देवराज इंद्रने कंडु ऋपिकी तपस्या भंग करनेको भेजा था। कंडुसे इसे मारिषा नामकी पुत्री उत्पन्न हुई थी—दे० मारिषा। श्रावणमासमें जब इन्द्र नामक सूर्य तपते हैं तब यह सौरगणके विभावसु, श्रोता, एलापत्र, अंगिरा वर्गके साथ सूर्यरथपर अधिष्ठित रहती है (भाग० ४.३०.१३; १२.११.३७; ब्रह्मां० २.२३.१०; ३.७.१५; मत्स्य० १२६.११; ६९.५०; विष्णु० २.१०.९)। हिरण्यकशिपुकी सभाकी विश्वाची, सहजन्या आदि सैकड़ों अप्सराओंमेंसे एक अप्सरा (मत्स्य० १६१.७४)।

प्रयाग–पु० [सं०] (१) विष्णुको अतिप्रिय एक तीर्थस्थान जहाँ बलराम आये थे (भाग० ७.१४.३०; १०.९०.२८ (३); १२.१.३७; १०.७९.१०; मत्स्य० २२.८)। यहाँ जमुनाके उत्तरी किनारेपर ऐल पुरूरवाकी राजधानी थी (ब्रह्मां० ३.१३.१००; ६६.२१; ४.४४.९८; वायु० ९१.५०)। यहाँ श्री ललितादेवीका मन्दिर है (मत्स्य० १३.२६)। यह श्राद्धके लिए उपयुक्त स्थान है (वायु० ७७.९२)। कहते हैं पुरुपरूपी वेदकी यह नाक है (वायु० १०४.७६; १०६.६९)। (२) एक प्रसिद्ध तथा प्राचीन तीर्थ जो गंगा-यमुनाके संगमपर स्थित है। इसका क्षेत्रफल ५ योजन है जहाँ जानेसे अश्वमेध यज्ञका फल मिलता है। रामायणके अनुसार यहाँके जलसे प्राचीनकालमें राजाओंका अभिपेक होता था। यहाँ प्रजापति-क्षेत्र है, वहाँ स्नान करनेवाला स्वर्ग प्राप्त करता है तथा यहाँ मरनेवाला व्यक्ति भवजालसे मुक्त हो जाता हैं। इंद्र इसकी रक्षा करते हैं। भरद्वाज ऋपिका आश्रम यहाँपर था जिसके कुछ चिह्न अभीतक वर्तमान हैं। यहाँ सूर्यपुत्री यमुना सदा रहती हैं। यहाँ सिद्ध, देवता तथा ऋपियोंका आवास है (मत्स्य० १०४ पूरा)। वन जाते समय श्रीरामचन्द्र यहाँसे होते हुए गये थे। बौद्धकालमें यहाँ बहुतसे विहार और मठ बने थे। यहांका "अक्षयवट" बहुत प्राचीनकालसे प्रसिद्ध है। इस तीर्थके उत्तरमें प्रतिष्ठानके रूपमें रक्षक ब्रह्मा, वेणिमाधवके रूपमें विष्णु तथा अक्षयवटके रूपमें शिव रक्षक एवं पापनिवारक हैं। मत्स्यपुराणके १०२ अध्यायसे १०७ तक इसी तीर्थका माहात्म्य भरा पड़ा है जिसके अनुसार यह प्रजापतिका क्षेत्र है। यहाँके 'वट'की रक्षा स्वयम् शूलपाणि करते हैं और यहाँ मरनेवाला शिवलोकका भागी होता है। कहते हैं, माघ महीनेमें यहाँ सब तीर्थोंका वास रहता है, अतः इस महीनेमें यहाँ वास करनेका बहुत फल लिखा है पर यहाँ बैलगाड़ीपर सवार होकर नहीं जाना चाहिये। 'प्रयाग'को तीर्थराज कहा गया है जहाँ त्रिवेणीमें स्नान

करनेका विशेप माहात्म्य है जिसमें गंगा, यमुना तथा सरस्वतीका संगम होता है (मत्स्य० अ० १०९-११०)। यहाँ ६० करोड़ १०,००० पवित्र स्थान हैं जिनमें उर्वशी-रमण, संध्यावट, कोटितीर्थ आदि प्रधान हैं (मत्स्य० अ० १०६)। इससे दक्षिणमें ऋणमोचन तीर्थ है जो ऋणसे मुक्ति देता है (मत्स्य० १११.११२; १८०.५६; १९२.११; १९३.१९)।

प्रयाणपुरी–स्त्री० [सं०] कावेरी नदीके तटपर वसा एक अति प्रसिद्ध प्राचीन तीर्थ (स्कंदपु०)।

प्रयाति– पु० [सं०] यामदेवगण, जिसमें वारह देव हैं, मेंका एक यामदेव (ब्रह्मां० २.१३.९२)।

प्रयुत–पु० [सं०] मुनि और कश्यपके पुत्र सोलह मौनेय देवगन्धर्वोंमेंसे एक मौनेय देवगन्धर्वका नाम (ब्रह्मां० ३.७.२)।

प्रयुतेश्वर–पु० [सं०] एक तीर्थस्थानका नाम (स्कंदपु०)।

प्रयोग–पु० [सं०]० तन्त्रोक्त वारह उपचारों या कृत्योंके नाम जो इस प्रकार हैं—मारण, मोहन, उच्चाटन, कीलन, विद्वेपण और कामनाशन ये ६ बुरे प्रयोग कहे गये हैं और स्तंभन, वशीकरण, आकर्षण, वन्दीमोचन, कामपूरण और वाक्प्रसारण ये ६ अच्छे हैं।

प्रलंव–पु० [सं०] एक असुर जिसे वलरामने मारा था और जो कंसका एक असुर मित्र था (भाग० २.७.३४; १०.१; ब्रह्मां० ३.६.१५; ४.२९.१२३; विष्णु० ५.१.१४; ४.१-२, १५, १)। भागवतानुसार एक वार श्रीकृष्ण अन्य गोपों तथा वलरामके संग खेल रहे थे, यह भी गोप वन सवके साथ "हरिण-क्रीडन" नामक खेल खेलने लगा। कुश्ती-में हारनेवाला जीतनेवालेको कंधेपर विठाकर चलता था। प्रलंव हार गया और वलरामको कंधेपर विठाकर भाग निकला। वलरामका शरीर इतना भारी हो गया कि वह चल न सका तव उसने अपना असली रूप प्रकट किया। कुछ देर युद्ध हुआ और अन्तमें प्रलंव वलराम द्वारा मारा गया (भाग० १०.१८.१७-३०; २०.१; ४३.३०; ४६.२६; ५१.४२; विष्णु० ५.९.१३ से अन्ततक; वायु० ६८.१५)।

प्रलंवायनगण–पु० [सं०] प्रलंवायन = ऋषिगण (मत्स्य० २००.११)।

प्रलय–पु० [सं०] मन्वंतरोंके अन्तमें सृष्टिका लय हो जाना (मत्स्य० २.२२; १४२.३६)। पुराणोंमें संसारके नाशका वर्णन भिन्न २ प्रकारसे मिलता है। कूर्मपुराणानुसार प्रलय चार प्रकारका होता है—नित्य, नैमित्तिक, प्राकृत और आत्यंतिक। संसारकी वस्तुओंका नित्य क्षय होना "नित्य" प्रलय है। कल्पके अन्तमें तीनों लोकोंका क्षय होना "नैमित्तिक" है। प्रकृतिके महदादि विशेषतकके विलीन हो जानेको "प्राकृतिक" प्रलय कहते हैं। ज्ञानकी पूर्णावस्था प्राप्त कर ब्रह्ममें लीन हो जानेको ही "आत्यंतिक" प्रलय कहते हैं।

विष्णुपुराणमें "नित्य" प्रलयका उल्लेख नहीं मिलता है। ब्राह्म और प्राकृत प्रलयके वर्णन पुराणोंमें एक ही प्रकारके हैं। नैयायिक दो प्रकारके प्रलय मानते हैं—"खंड प्रलय" और "महाप्रलय"। सांख्यके अनुसार सृष्टि और प्रलय दोनों प्रकृतिके परिणाम हैं। विष्णुपुराणानुसार यह दो प्रकारका है—पहला कल्पांतमें अथवा ब्रह्माका दिन समाप्त होनेपर और दूसरा ब्रह्माका जीवनकाल समाप्त होनेपर (विष्णु० ६.१.३)।

प्रवरगिरि–पु० [सं०] विहार प्रांतका एक प्राचीन पहाड़ जो आजकल "वरावर" पहाड़के नामसे प्रसिद्ध है।

प्रवर्षण–पु० [सं०] (१) किष्किन्धाके समीपका एक पर्वत जिसपर श्रीराम और लक्ष्मणने कुछ कालतक निवास किया था (रामच० मानस किष्किं०)। (२) गोमंत पर्वतकी चोटी जिसे जरासंधने घेर लिया और आक्रमण किया था। जरासंधसे पीछा किये जानेपर श्रीकृष्ण और वलराम यहीं भाग आये थे (भाग० १०[५३(५)५]; ५२.१०-९१ (३), (१६)।

प्रवह–(१) अग्निकी सात जिह्वाओंमेंसे एक (दि० अग्नि)। (२) आवह आदि सात मरुतों, जो उत्पातके सूचक हैं, मेंसे एक मरुत्का नाम (ब्रह्मां० २.२२.३९; मत्स्य० १६३.३२)। जिस वायुसे ब्रह्मज जलद वर्षा करते हैं। द्वितीय वातस्कंधका मुख्य मरुत् (ब्रह्मां० २.२३.९७; ३.५.८३; वायु० ६७.११५)। यह जीमूत जलदपर नियंत्रण करता है (वायु० ५१.३६)।

प्रवहण–पु० [सं०] औत्तमकालके सप्तर्पियोंमेंसे एक ऋपिका नाम (मत्स्य० ९.१४)।

प्रवाह–पु० [सं०] एक अग्नि (धिष्णि)का नाम (ब्रह्मां० २.१२.२०)।

प्रवाहुक–पु० [सं०] मुंडीश्वर, जो पचीसवें द्वापरके विष्णुके अवतार थे, के महायोगी चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (वायु० २३.२११)।

प्रविजय–पु० [सं०] एक जाति (मत्स्य० ११४.४५); एक पूर्वी जनपद (वायु० ४५.१२३)।

प्रवीण–पु [सं०] दनु और कश्यपके विप्रचित्ति प्रभृति कई (सौ) प्रधान दानव पुत्रोंमेंसे एकका नाम (वायु० ६८.७)।

प्रवीर–पु० [सं०] (१) भौत्य मनुका एक पुत्र। (२) ज्वालाके गर्भसे उत्पन्न माहिष्मतीके राजा नीलध्वजके पुत्रका नाम। अश्वमेध यज्ञके समय युधिष्ठिर परिवारके अर्जुनसे प्रवीरका घोर युद्ध हुआ था। नीलध्वजके जामाता सूर्यके समझानेपर इसपर ज्वालाके कारण यह युद्ध न रुक सका और प्रवीर युद्धमे काम आये। इससे दुःखी हो नीलध्वजने घोड़ा वापस दे दिया। अतः क्रुद्ध हो ज्वालाने अपने भाईसे लड़नेको कहा पर वह भी अर्जुनसे लड़नेको राजी नहीं हुआ। और यह अपने भाईके यहाँसे भी भागी। एक दिन जब ज्वाला नावपर चढ़कर गंगा पार कर रही थी तब उसने गंगाको भी धिक्कारा था। अतः गंगादेवीने क्रुद्ध होकर शाप दिया कि ६ महीनेमें अर्जुनका सिर कटकर गिर पड़ेगा। इतना सुनते ही ज्वाला अग्निमें कूद पड़ी और अर्जुनके बधकी इच्छासे तीक्ष्ण वाण होकर वभ्रुवाहनके तूणीरमें जा विराजी (जैमिनि-भारत)। (३) प्रचिन्वान्का एक पुत्र तथा नमस्यु (मनस्यु = विष्णु०)का पिता (भाग० ९.२०.२; विष्णु० ४.१९.१)। (४) विन्ध्यशक्तिका पुत्र तथा एक प्रसिद्ध योद्धा। इसने ६० वर्षतक राज्य किया था। कांचनकमें इसकी राजधानी थी। इसने वाजपेय आदि कई यज्ञ किये थे। इसके चार पुत्र थे (ब्रह्मां० ३.

१८४-६; वायु०९९. ३७१-२)। (५) उपदानवीके इलिना-पुत्र ऋभुसे उत्पन्न चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (मत्स्य० ४९.१०; वायु० ९९.१३३)। (६) विन्ध्यशक्तिके वंशका एक राजा (विष्णु० ४.२४.५६)।

प्रवीरक–पु० [सं०] किलिकिलाका एक शासक (भाग० १२. १.३३)।

प्रवृत्तिकाल–पु० [सं०] सृष्टिके समय पुरुष रजोगुणपूर्ण थे, देवताओंकी कृपासे उन्हें भूतों तथा इन्द्रियोंकी प्राप्ति हुई। ईश्वरकी भक्तिसे अन्य तीनों गुणोंमें निखार आ गया। साधारणतः एक ही धर्मके अनुयायियोंमें सृष्टिके विकार उत्पन्न हुए, प्रसन्नता तथा दुःख; धर्म तथा अधर्म; सत्य तथा असत्य आदि प्रत्येक व्यक्तिके मानसिक झुकावके अनुसार प्राप्त हुए तथा गुणोंका विलगीकरण भी हो गया (वायु० १०३.२५.३३)।

प्रवृद्ध–पु० [सं०] अयोध्यानरेश रघुका पुत्र, एक राजा जो गुरुके शापसे बारह वर्षोंतक राक्षस हो गया था (भाग० तथा स्कंदपु०)।

प्रवेण–पु० [सं०] एक प्रकारका बकरा (रामायण)।

प्रवेणी–पु० [सं०] एक नदीका नाम। इस नदीके तटपर कण्व मुनिका आश्रम हैं, जहाँ माठरका विजयस्तम्भ है (महाभा० वन० ८८.११))।

प्रशम–पु० [सं०] रंतिदेवके पुत्रका नाम—दे० (भाग०)।

प्रशमन–पु० [सं०] सत्राजितके भाईका नाम (भाग०; स्कंदपु०)।

प्रशांत–पु० [सं०] प्रचेता नामक एक अग्नि (ब्रह्मां० २. १२.२९)।

प्रशुश्रुक–पु० [सं०] (प्रसुश्रुत=भाग० तथा विष्णु०) मरु देशके एक राजाका नाम (वाल्मीकि रामा०)। यह मरुका पुत्र तथा सुसंधि (भाग०=संधि)का पिता था (विष्णु० ४. ४.१११; भाग० ९.१२.७)।

प्रश्नि–पु० [सं०] एक ऋषिका नाम (महाभा०)।

प्रश्रय–पु० [सं०] धर्मके एक पुत्रका नाम जो ह्रीके गर्भसे उत्पन्न हुआ था (भाग० ४.१.५२)।

प्रश्रवण–पु० [सं०] एक पर्वतका नाम (रामायण)।

प्रसव–पु० [सं०] भृगुके भुवन, भावन आदि १२ पुत्रों, जो भृगुदेव कहलाते थे, मेंसे एक पुत्रका नाम (वायु० ६५. ८७.)।

प्रसाद–पु० [सं०] (१) मूर्त्ति (मैत्री=भाग०)के गर्भसे उत्पन्न धर्मके एक पुत्रका नाम (भाग० ४.१.५०)। (२) प्राणायामके चार प्रयोजनोंमेंसे एक प्रयोजन (फल)। यह (प्रसाद) इन्द्रियों, रूप, रस आदि इन्द्रियार्थों, मन तथा प्राण आदि पाँचो वायुओंको प्रसन्न करता है इसलिए प्रसाद कहलाता है। प्राणायामके शेष तीन प्रयोजन हैं—शान्ति, प्रशान्ति और दीप्ति (वायु० ११.४.१०)।

प्रसुश्रुत–पु० [सं०] मनु (मरु ?)का पुत्र तथा सुसंधिका पिता (वायु० ८८.२११)।

प्रसूतगण–पु० [सं०] चाक्षुप मन्वंतरके आठ देवताओंका एक वर्ग जिसमें श्येनभद्र, पश्य, पश्यनेत्र, सुमन्त, सुवेत, रेवत, द्युति तथा सुप्रचेता ये आठ देवता सम्मिलित हैं। ब्रह्मां० में प्रसूतगणके आठ देव यों कहे गये हैं—श्येनभद्र, श्वेतचक्षु, सुमना, प्रचेता, वनेना, सुप्रचेता, मुनि और महासत्त्व (ब्रह्मां० २.३६.६६, ७१; विष्णु० ३.१.२७; वायु० ६२.६०)।

प्रसूति–पु० [सं०] (१) स्वायंभुव मनु तथा शतरूपाकी तीन पुत्रियोंमेंसे एक पुत्री तथा दक्ष प्रजापतिकी पत्नीका नाम जिनके गर्भसे सती आदि १६ (२४=ब्रह्मां०) पुत्रियाँ उत्पन्न हुई थीं। यह वीरभद्र तथा उनके सहयोगियोंको पतिके यज्ञमें देखकर डर गयी थीं (भाग० ३.१२.५५-५२; ४.१.१, ११, ४७-४८; ५.९; ब्रह्मां० १.१.५९; २.९.४२-७; वायु० १.६६.६८; विष्णु० १.७.१८-१९, २२-२७)। (२) दिङ्नागकी एक पुत्री जो हथिनी थी (ब्रह्मां० ३.७.३५४)। (३) विरजकी एक पुत्री जो दक्षको व्याही थी। दक्षको "प्राण" तथा मरुको "संकल्प" समझना चाहिये। इनसे २४ पुत्रियाँ हुई जो सबकी सब विश्वमातृकाएँ थीं (विश्वमातरः), (वायु० १०.१७, २२-३०; ६७.२७-८)। (४) वशिष्ठ ऋषिकी एक पत्नीका नाम (विष्णु० १.७.८)।

प्रसेन–पु० [सं०] निघ्नका (निम्न=भाग०) एक पुत्र तथा सत्राजित् (शक्रजित्=वायु०)का भाई। यह स्यमन्तक मणि पहने आखेटके निमित्त वन गया जहाँ एक सिंहने इसे मार मणि लेली जिसकी झूठी चोरी श्रीकृष्णको लगायी गयी। श्रीकृष्णने इसे मथुराके पश्चिमी प्रवेश द्वारपर रक्षार्थ रखा था (भाग० ९.२४.१३; १०.५०.२०(४); ५६. १३-१४; (ब्रह्मां० ३.७१.२१-५२; (मत्स्य० ४५.३.१८; वायु० ९६.२०, ३०, ३१, ३३, ३५; विष्णु० ४.१३.१०, २९-३९, ७७)।

प्रसेनजित्–पु० [सं०] (१) भागवतके अनुसार निघ्नके पुत्र तथा सत्राजित्के एक भाईका नाम जिसके पास स्यमन्तक नामकी एक प्रसिद्ध मणि थी। शिकार खेलते समय एक सिंहने इसे मार दिया और इसकी मणि लेकर चला, मार्गमें जाम्बवान्ने सिंहको मार मणि छीन ली। प्रसेनजित्के न आनेपर सत्राजित् चिन्तित हुआ। इसने श्रीकृष्णपर मणि ले लेनेका कलंक लगाया, जिसे धोनेके लिए श्रीकृष्ण जंगलको गये। सूत्रका पता लगाते यह एक गुफामें घुसे जहाँ जाम्बवान्से भेंट हुई जिसने अपनी पुत्रीको मणिके साथ श्रीकृष्णको अर्पित किया। इस तरहसे मणि सत्राजित्को लौटाकर श्रीकृष्णने अपना कलंक धोया (भाग० ९. २४.१३; १०.५०.२०(४); ५६.१३-१४; ब्रह्मां० ३.७१.२१-५२; मत्स्य० ४५.३-१८; वायु० ९६.२०, ३०, ३१, ३३, ३५; विष्णु०४.१३.१०, २९-३९, ७७)। (२) विश्वसाह्वका पुत्र तथा तक्षकका पिता (भाग० ९.१२.७-८)। (३) लांगलका पुत्र तथा क्षुद्रकका पिता (भाग० ९.१२. १४)। (४) सिद्धार्थका पुत्र तथा क्षुद्रकका पिता (मत्स्य० २७१.१३)। (५) संहताश्वके दो पुत्रोंमेंसे एक पुत्र कृशाश्वका सती हेमवतीसे उत्पन्न पुत्र तथा युवनाश्वका पिता (वायु० ८८.६४; विष्णु० ४.२,४७-८; ब्रह्मां० ३.६३.६६)। (६) शुद्धोदनसुत राहुलका पुत्र तथा क्षुद्रकका पिता (वायु० ९९.२८९; विष्णु० ४.२२. ८-९)।

प्रसृति–पु० [सं०] स्वारोचिष मनुके चार पुत्रोंमेंसे एक (द्वितीय) पुत्र (मत्स्य० ९.७)।

प्रस्कंद–पु० [सं०] पिशाचोंके सोलह वर्गोंमेंसे एक वर्गका (ब्रह्मां० ३.७.३००) ।

प्रस्कण्व–पु० [सं०] मेधातिथिके कई ब्राह्मण-पुत्रोंमेंसे एक ब्राह्मणपुत्र (भाग० ९·२०.७) ।

प्रस्ताव–पु० [सं०] उद्गीथ और देवकुल्याके पुत्र, नियुत्साके पति तथा विभुके पिताका नाम (भाग० ५.१५.६) ।

प्रस्तावि–पु० [सं०] उद्गीथका पुत्र तथा विभुका पिता (ब्रह्मां० २.१४.६७) । (विष्णु० =प्रस्ताव) उद्गीथका पुत्र तथा विभुका पिता (वायु० ३३.५६) ।

प्रस्तोक–पु० [सं०] संजयके पुत्रका नाम (महाभा०) ।

प्रस्तोता–पु० [सं०] यज्ञके १६ ऋत्विजोंमेंसे एक ऋत्विक् जो नारायणसे उत्पन्न हुए थे (मत्स्य० १६७.८) ।

प्रस्थ–पु० [सं०] समयकी एक माप (भाग० ३.११.९; ब्रह्मां० ४.१.२१२; वायु० १००.२१५) ।

प्रस्थल–पु० [सं०] (१) एक देशका नाम जो महाभारतके अनुसार सुशर्माके अधिकारमें था (ब्रह्मां० २.१६.५०; वायु० ४५.११९; मत्स्य० १४४.४३) । (२) तामस मनुका एक पुत्र (ब्रह्मां० २.३६.४९) ।

प्रहर–पु० [सं०] दिन-रातके आठ सम भागोंमेंसे एक भाग (भाग० ३.११.८) ।

प्रहरण–पु० [सं०] श्रीकृष्ण और भद्राके संग्रामजित् आदि दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (भाग० १०.६१.१७) ।

प्रहस्त–पु० [सं०] (१) रामायणके अनुसार रावणकी सेनाका एक राक्षस सेनापति जो लंकाके युद्धमें मारा गया था (भाग०९.१०.१८) । (२) पुष्पोत्कटा तथा विश्रवाके चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (ब्रह्मां० ३.८.५५; वायु०७०.४९) ।

प्रहारी–पु० [सं०] वैरूप्यसामसे उत्पन्न सुप्रतीक हस्तीके तीन पुत्रोंमेंसे एक पुत्र हस्ती (ब्रह्मां० ३.७.३४१) ।

प्रहास–पु० [सं०] (१) कुमार कार्त्तिकेयका एक सैनिक अनुचर (महाभा० शल्य० ४५.६८) । (२) सोम तीर्थका एक नाम (शिवपु०) । (३) धृतराष्ट्रनाग के वंशका एक नाग जो जनमेजयके सर्पसत्रमें जलकर मर गया (महाभा० आदि० ५७.१६) ।

प्रहासक–पु० [सं०] खशा तथा कश्यपके लालावि, क्रथन-भीम, सुमाली, आदि कई कामरूपी राक्षस पुत्रोंमेंसे एक राक्षस पुत्रका नाम (ब्रह्मां० ३.७.१३४; वायु० ६९.१६६) ।

प्रहेति–पु० [सं०] (१) एक राक्षस जो हेतिका भाई था (रामायण) । (२) वृत्रासुरका एक सहयोगी जो बलि-इंद्रदेवासुरसंग्राममें मित्रसे लड़ा था (भाग० ६.१०.२०; ८.१०.२०,२८) । वैशाखमासमें जब अर्यमा नामके सूर्य तपते हैं तब सौरगणके अन्य साथियों—पुलह आदि—के साथ यह सूर्यरथपर अधिष्ठित रहता है (भाग० १२.११.३४) । यातुधानका पुत्र तथा माल्यवान् आदिका पिता । वैद्युत पर्वतपर निवास करनेवाला यह राक्षस (ब्रह्मां०२.१८.१६; २३.४; ३.७.८९,९१) वैशाखमासमें सूर्यके साथ सूर्यरथपर रहता है। यह पुलोमाका भी पिता कहा गया है (वायु० ५२.५; ६९.१२७; विष्णु० २.१०.५) । (३) एक गन्धर्व जो हेतिके साथ इंद्रसभाकी अप्सरापर मोहित हो उसे प्रसन्न करनेके हेतु मयूरकी बोली बोला अतः इन्द्रशापसे मोर हो गया था पर नर्मदाक्षेत्रमें शापमुक्त हुआ (दे० हेति तथा स्कंदपु० आव० रेवा० खंड) ।

प्रह्लादी–स्त्री० [सं०] विश्वकर्मा (त्वष्टा)की एक पत्नी विरोचनाका नाम । यह विरोचनकी बहिन तथा त्रिशिराकी माता थी (वायु० ८४.१९; ब्रह्मां० ३.५९.१९) ।

प्रह्लाद–पु० [सं०] (इसे प्रह्राद भी कहते थे) । (१) हिरण्यकशिपु और कयाधु दानवीका पुत्र (भाग० ६.१८.१२, १३; ७.१.४१; ब्रह्मां० ३.५.३३; ८.६; मत्स्य० ६.९; वायु० ६७.७०; विष्णु० १.१५.१४२) । दैत्यराजका पुत्र होते हुए भी यह बचपनसे ही बड़ा भगवद्भक्त था (भाग० १.३.११; १२.२५; ४.२१.२९; ५.१८.७; ६.१८.१०, १६; ७.१.४१-४३; १०.३९.५४; ६३.४७-९; विष्णु० १.१५.१४३-५२) और दत्तात्रेय, शंड तथा मर्क इसके शिक्षक थे । हिरण्यकशिपुने इसे ईश्वरभक्तिसे विचलित करनेके लिए अनेक उपाय किये तथा इसको नानाप्रकारकी यातनाएँ भुगतनी पड़ीं पर यह अपने पथपर दृढ़ रहा । अन्तमें इसकी रक्षा करने हेतु भगवान्ने नृसिंह अवतार लिया और प्रह्लादकी रक्षा की (भाग० ७.५.५-५०; अध्या० ६–९ पूरा; १०.१-२४, ३२-४; ४.२१.२९, ४७; मत्स्य० १६२.२, १४) । आयुष्मान, शिबि, बाष्कल और विरोचन इसके पुत्र (भाग० ६·१८.१५.१६; मत्स्य० ६.९) तथा बलि पौत्र था । यह ईश्वरभक्तिके कारण दैत्यों और दानवोंका अधिपति (इंद्र) हो गया था (विष्णु० १.२१.१४; २२.४; ४.९.५) । (२) कद्रू और कश्यपके पुत्र अनेक सिरवाले कई प्रधान काद्रवेयोंमेंसे एक प्रधान काद्रवेय नाग (ब्रह्मां० ३.७.३६; वायु० ६९.७३) ।

प्राङ्मुखा–स्त्री० [सं०] पितरोंके श्राद्ध, तर्पण आदिके लिए अति प्रशस्त एक नदी (मत्स्य० २२.६५) ।

प्रांत–पु० [सं०] एक ऋषिका नाम ।

प्रांशु–पु० [सं०] (१) वत्सप्रीतिका एक पुत्र तथा प्रमति (प्रजापति = विष्णु०)का पिता (भाग०९.२.२४; विष्णु० ४.१.२१-२) । (२) वैवस्वतमनुके पुत्रोंमेंसे एकका नाम (ब्रह्मां० २.३८.२१; ३.६०.३; वायु० ८५·४; विष्णु० ४.१.७) । (३) भलंदनका एक पुत्र जिसके पुत्र प्रजातिको संवर्त स्वर्ग ले गया था (ब्रह्मां० ३.६१.४; वायु० ८६.३-४) ।

प्राकाम्य–पु० [सं०] अणिमा, महिमा, गरिमा आदि आठ सिद्धियोंमेंसे एक उत्तम सिद्धिका नाम (ब्रह्मां० ४.१९.५; ३६.५१; ४४.१०८) । एक योगैश्वर्य (वायु० १३.३.१४) ।

प्राकृतप्रलय–पु० [सं०] पुराणानुसार एक प्रकारका प्रलय जिसमें प्रकृति भी परमात्मामें लीन हो जाती है –दे० प्रलय ।

प्राकृतसर्ग–महत्, भूत और ऐंद्रियककी सृष्टि । सृष्टिके आरंभमें वे आठ प्रकृतियाँ जिनसे यह अंड आच्छादित था (वायु० ४.९०; विष्णु० ६.३.१; ४.११.३०) ।

प्राकृतिक–वि० [सं०] प्रलयका एक नाम तथा प्रकार (भाग० १२.४.५-६; वायु० १०४.११०) ।

प्राक्सती–स्त्री० [सं०] भवानीका एक नाम जो पूर्वजन्ममें दक्षसुता सती थीं (ब्रह्मां० ३.९.१) ।

प्रागायण–पु० [सं०] एक कश्यपकुलका गोत्रकार ऋषि (मत्स्य० १९९.६) ।

प्राग्ज्योतिष–पु० [सं०] (१) कामरूप देशका नाम जो आसाममें स्थित है जहाँ देवी योगनिद्राका प्रधान स्थान है (महाभा०)। पुराणानुसार यह सर्वतोभद्रा नामक लक्ष्मी-का स्थान है जहाँ पहले नरकासुरकी राजधानी थी। प्राग्ज्योतिपुर यहाँकी राजधानी थी जिसे कुशके पुत्र अमूर्तराजने बसाया था (रामायण)। (२) एक पूर्वी जनपद (मत्स्य० ११४.४५; ब्रह्मां० २.१६.५४)।

प्राग्ज्योतिषपुर–पु० [सं०] प्राग्ज्योतिष एक पूर्वी राज्य, जो नरकासुरके अधीन था, की राजधानी जिसके चारो ओर शत्रुओंके लिए पाश लगे थे, यहाँ श्रीकृष्ण और सत्यभामा आये थे। वरुणका मणिपर्वत तथा छाता यहाँ था (मत्स्य० १६३.८१; भाग. १०.५९.२-५; विष्णु० ५.२९.८.१४, १६-७)। नरकासुरकी राजधानीके बाद यह राजा भगदत्तकी राजधानी बना। नरकासुरके बाद प्राग्ज्योतिपके प्रधान राजा भगदत्त हुए थे। भगदत्तके बाद वज्रदत्त यहाँके राजा हुए (महाभा० सभा० २६.७-८; आश्व० ७५;१)।

प्राग्देश–पु० [सं०] एक देश जो उत्तम घोड़ोंके लिए विख्यात था (ब्रह्मां० ४.१६.१८)।

प्राग्वाट–पु० [सं०] प्राचीन कालका एक नगर जो गंगा और यमुनाके बीचमें स्थित था। केकयसे अयोध्या आते समय भरतजी इस नगरीसे होते हुए आये थे (रामायण)।

प्राचीतत–पु० [सं०] जनमेजयका पुत्र जिसने प्राची (पूर्व) दिशा बनायी (मत्स्य० ४९.१)।

प्राचीनकुल–पु० [सं०] एक प्राचीन ऋषिका नाम जिसे कोई कोई आपातरतम और प्राचीनगर्भ भी कहते हैं।

प्राचीनगर्भ–पु० [सं०] सृष्टि (ध्रुवपुत्र पुष्टि=वायु०) तथा छायाके पुण्यात्मा पाँच पुत्रोंमेंसे एक पुत्र, सुवर्चाका पति तथा उदारधी, जो पूर्वजन्ममें इन्द्र था, का पिता (ब्रह्मां० २.३६.९८-१००; वायु० ६२, ८३-८७)।

प्रचीनबर्हि–पु० [सं०] (१) इंद्रका एक नाम—दे० (इंद्र)। (२) एक प्राचीन राजाका नाम जो एक प्रजापति थे। अग्निपुराणानुसार यह अग्निहोत्री राजा हविर्धान तथा आग्नेयी धिषणाके पुत्र थे। समुद्रकी पुत्री सामुद्री जो सवर्णा थी इन्हें ब्याही थी और उससे १० पुत्र=प्रचेतागण उत्पन्न हुए। उनके ये पिता थे जो सब धनुर्वेदके पण्डित थे। यह प्रजापति कहलाते थे। इन लोगोंने १०,००० वर्षोंतक तप किया। जब तपस्यासे उठे तो इन्होंने पृथ्वीको वृक्ष, लता, गुल्म आदिसे आच्छादित देखा। इनके मुखसे निकली क्रोधाग्नि और वायुसे वृक्षादि जलने लगे थे तब वनस्पतियों और ओषधियोंके राजा सोमने प्रचेतागणसे प्रार्थना की तथा मारिषा वृक्षपुत्री (वार्क्षी)से इनका विवाह कर दिया जिससे इनके दक्ष पुत्र उत्पन्न हुए (भाग० ६.४.४; ब्रह्मां० २.१३.३९, ६९; ३०-४०; ३७.२४.४१; मत्स्य० ४.४६-७; वायु० ६३.२३-२५; विष्णु० १.१४.४-७)। इन्होंने इतने यज्ञ किये कि यज्ञोंमें पूर्वाभिमुख बिछाये गये कुशोंसे सारी पृथ्वी पट गयी थी। इसीसे इनको प्राचीनबर्हि कहते थे, इनका असली नाम बर्हिषद था (भाग० २.७.४३; ४.२४.१३; विष्णु० १.१४.२-४)।

प्राचीनबर्हिगण–पु० [सं०] सामुद्रीके १० पुत्र जिन्हें प्रचेतागण कहते हैं और जो सबके सब धनुर्वेदमें पारंगत थे (वायु० ३०.३६)।

प्राचीनयोग–पु० [सं०] (१) एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि (हि० वि० को०)। (२) शृंगि-पुत्रके तीन शिष्योंमेंसे एक शिष्य तथा एक संहिताका प्रवर्तक जिनका पुत्र कौथुमका शिष्य था (वायु० ६१.४०; ब्रह्मां० २.३५.४५-६)।

प्राचीनयोगपुत्र–पु० [सं०] कौथुमशाखाके प्रवर्तक कौथुमके छह शिष्योंमेंसे एक शिष्यका नाम (वायु० ६१.४२)।

प्राचीसरस्वती–स्त्री० [सं०] पूर्वाभिमुख सरस्वती जहाँ नारायणकवच (स्तोत्र) धारण करनेवाले कौशिक द्विज, जिसने मरुभूमिमें समाधिसे शरीर छोड़ा था, की अस्थियाँ नदीमें डालकर तथा स्नानकर चित्ररथ गन्धर्व स्वस्थ हुआ था (भाग० ६.८.४०)।

प्राचीसरस्वतीतीर्थ–पु० [सं०] गयामें स्थित एक तीर्थ जहाँ स्नानकर संध्या तर्पण करनेवाला व्यक्ति विष्णुलोक पाता है (वायु० ११२.२३)।

प्राचेतस–पु० [सं०] (१) प्राचीनबर्हिके दस पुत्रों तथा मारिषा वार्क्षीसे उत्पन्न १०० पुत्रोंका सामूहिक नाम जिनमें दक्ष प्रजापति प्रमुख था (महाभा० आदि० ७०.४)। (२) वरुणके पुत्रका नाम। (३) महर्षि वाल्मीकिका एक नाम (भाग० ९.१०.११) वाल्मीकि रामायणमें इन्होंने (वाल्मीकिने) अपनेको स्वयम् प्राचेतस कहा है (वाल्मीकि० उत्तर० ९६.१८)। (४) पुष्पवाहनको पूर्वजन्मकी कथा बतलानेवाले एक ऋषिका नाम (मत्स्य० १००.७; वायु० ६२.७२)।

प्राचेतस–पु० [सं०]—दे० प्रचेता, प्राचीनबर्हि तथा शतद्रुतीके १० पुत्रोंका सामूहिक नाम। रुद्रके आदेशसे इन लोगोंने १०,००० वर्षोंतक तप किया था और जनसंख्याकी वृद्धिके लिए पृथ्वीपरके जंगली वृक्षोंको जला डाला था (विष्णु० १.१४.१०-४८)।

प्राचेय–पु० [सं०] एक कश्यपकुलका गोत्रकार ऋषि (मत्स्य० १९९.८)।

प्राच्य–पु०[सं०](१)हिरण्यनाभि कौथुमके शिष्य सामगाचार्य कृतके २४ शिष्योंका सामूहिक नाम इन्होंने श्रीसामशाखाका विस्तार किया ये सभी सामगाचार्य हुए (वायु० ९९.१९१)। (२) एक पूर्वी जनपद का नाम (वायु० ५८.८१)।

प्राच्यसाम–पु० [सं०] इसमें ६ संहिताएँ हैं जो कृतकी बतलायी जती हैं (भाग० ९.२१.२८-९; ब्रह्मां० ३.६३.२०७; मत्स्य० ४९.७६)।

प्राच्यसामग–पु० [सं०] हिरण्यनाभके शिष्यगण (विष्णु० ३.६.५-२४; ४.१९.५२)।

प्राजक–पु० [सं०] गाड़ियोंका सारथि। यदि वह अनाड़ी तथा अकुशल है तब इससे व्यक्तियोंको चोट लगे तो इसका स्वामी दंडित होगा और यदि कुशल है तब स्वयम् दंड पावेगा (मत्स्य० २२७.९५-६)।

प्राजापत्य–पु० [सं०] (१) एक यज्ञ विशेष जिसे शरीर त्यागनेके पूर्व युधिष्ठिरने किया था (भाग० १.१५.३९; ३.१२.४२; वायु० ८१.३)। (२) रात तथा दिनका एक मुहूर्त विशेष (ब्रह्मां० ३.३.४०, ४२; वायु० ६१.७५; ६६.

४१)। पुष्य महीनेके कृष्णपक्षका आठवाँ दिन (अष्टमी), (वायु० ६६.४३), दसवाँ "गांधार ग्रामिक (वायु० ८६.४३)। (३) विवाहोंका एक प्रकार (ब्राह्म, दैव, आर्ष, प्राजापत्य, आसुर, गांधर्व, राक्षस तथा पैशाच, ये ही आठ प्रकारके विवाह होते हैं) जिसमें कन्याका पिता वर और कन्यासे एक साथ रहकर गार्हस्थधर्म पालन करनेकी प्रतिज्ञा कराता है (विष्णु० ३.१०,२४)।

प्राजापत्यव्रत–पु० [सं०] इस व्रतका करनेवाला शिवलोक प्राप्त करता है (मत्स्य० १०१.६६)। मनुके मतानुसार इसमें तीन दिनोंतक मुर्गीके अंडेके बराबर २६ या १५ ग्रास प्रातःकाल; और तीन ही दिनोंतक उपर्युक्त मात्रामें २५ या १२ ग्रास सायंकाल और तीन दिन अयाचित २४ ग्रास भोजन तथा तीन दिन उपवास करनेसे एक प्राजापत्य होता है। ऐसा न होनेपर यथाक्रम एकभुक्त, नक्त, अयाचित और उपवास ३-३ दिन करे। उपवास निराहार न हो सके तो जल या दूध ले। इससे अनादिष्ट पापोंकी निवृत्ति होती है (मनु० ११.२११)।

प्राज्ञ–पु० [सं०] पुराणानुसार कल्कि देवके बड़े भाईका नाम।

प्राज्ञी–पु० [सं०] सूर्यदेवकी पत्नीका नाम (–दे० सूर्य, आदित्यपु०)।

प्राड्विवाक–पु० [सं०] मत्स्यपुराणानुसार एक न्यायाधीश जिसे अन्याय करनेके कारण निर्वासित कर दिया जाता हैं (मत्स्य० २२७.१६०-१)।

प्राण–पु० [सं०] (१) विधाता तथा नियति (आयति=ब्रह्मां०)का एक पुत्र, पुण्डरीकाका पति तथा द्युतिमान्का पिता (भाग० ४.१.४४-४५; ब्रह्मां० २.११.६-९, ४)। (२) धर्मका पुत्र एक वसु, ऊर्जस्वतीका पति तथा सह आदि तीन पुत्रोंका पिता (भाग० ६.६.११-१२; विष्णु० १.१५.११३)। (३) स्वारोचिष मन्वंतरका एक भार्गव ऋषि (ब्रह्मां० २.३६.१०; मत्स्य० ९.८)। (४) धरका एक पुत्र (मत्स्य० ५.२४) एक साध्य (मत्स्य० २०३.११; ब्रह्मां० ३.३.१६)। (५) अंगिरसका एक पुत्र (मत्स्य० १९६.२. वायु० ६५.१०५)। एक साध्य (वायु० ६६.१५) एक तुषितदेव (ब्रह्मां० ३.३.१९; वायु० ६६.१८)। एक अजितदेव (वायु० ६७.३४)। (६) अंतरात्मा। यह अन्न=भोजन है और अन्न=ब्रह्मा, इसीसे जीव उत्पन्न होते हैं (उपनिषद् तथा यजुर्वेदके सिद्धान्तोंसे तुलना करें) (वायु० १५.१४)। यह एक वायु है जो मनुष्योंके कर्मोंके फलाफलका निर्णय करता है (वायु० २१.४७; ३१.४१)। यही जीव है (वायु० १०२.१०१)। (७) धाताका एक पुत्र तथा द्युतिमान्का पिता (विष्णु० १.१०.४-५)। (८) स्वारोचिष मन्वंतरके सप्तर्षियोंमेंसे एक ऋषि (विष्णु० ३.१.११)।

प्राणनाथ–पु० [सं०] एक सम्प्रदायके प्रवर्तक आचार्य जो जातिके क्षत्रिय थे और औरंगजेवके समकालीन थे। यह हिन्दू-मुस्लिम एकतापर ही बोलते थे।

प्राणप्रतिष्ठा–स्त्री० [सं०] हिन्दू धर्मशास्त्रानुसार किसी मूर्त्तिको मंदिर आदिमें स्थापित करनेके पूर्व मंत्रों द्वारा उसमें प्राणप्रतिष्ठा करनी पड़ती है अन्यथा वह पूजाके योग्य नहीं होती (पुराणोक्तसर्वदेवपूजा)।

प्राणरोध–पु० [सं०] (१) २८ नरकोंमेंसे एक जहाँ पशुओंकी हत्या करनेवाले दंडित होते हैं (भाग० ५.२६.७, २४)। (२) श्वासके रोकनेकी क्रिया=प्राणायाम जो भक्तिका एक साधन है (वायु० १०४.२४)।

प्राणाचार्य–पु० [सं०] पुरोहित जिनके परामर्शकी आवश्यकता राजाओंको होती है (मत्स्य० २१५.३५)।

प्राणायाम–पु० [सं०] (१) योगका एक साधन (विष्णु० १.२२.०५; ५.१०.१५; ६.७.४०)। (२) इसके तीन प्रकार हैं, यह तपस्याका एक ढंग है (भाग० ४.८.४४; २३.७; ब्रह्मां० ३.२२.७३; मत्स्य० २२७.३७)। जिसे महेश्वर योगका एक अंग माना गया है। मंद, मध्य और उत्तम श्वास नियंत्रणके ये तीन ढंग कहे गये हैं। प्राणायामका प्रमाण=१२ मात्रा है, मंद प्राणायाम १२ मात्राका होता है। उसमें उद्घात भी १२ ही होते हैं। मध्यम=उद्घात × २=२४ मात्रा; उत्तम=उद्घात × ३=३६ मात्रा। उत्तमसे खेद, कंप और विषाद उत्पन्न होते हैं। प्राण एक क्रूर जंगली पशुके समान है जिसे नियंत्रण द्वारा नम्र बनाया जा सकता है। योग द्वारा नियंत्रित हो यह शीघ्र ही अनुशासित हो जाता है। प्राणवायुपर नियंत्रण कर लेनेपर मनुष्य इच्छानुकूल जीवित रह सकता है। प्राणायाम सब तपस्याओं तथा यज्ञ फलोंके बराबर है, इससे शरीरके सारे दोष तथा पाप जलकर भस्म हो जाते हैं (वायु० १०.७८-९२)। शांति, प्रशांति, दीप्ति और प्रसाद इसके फल हैं (वायु० ११.४; १८.१७-१९)। अभ्यास विधि=ओ३म्का ध्यान रख श्वास खींचना तथा सूर्य और चंद्रमाको नमस्कार करना, स्वस्तिक या पद्मासन लगाकर बैठना चाहिये, मुँह बन्द रहे, आँखें अधखुली रहें; सिर, गर्दन तथा शरीर झुका न रहे, वक्षस्थल आगेकी ओर तना रहे और ध्यान नाकके अग्रभागपर रहे। तमोगुणको रजोगुणसे ढककर रजोगुणको सत्त्वगुणसे ढक दे। तत्पश्चात् सत्त्वगुणमें स्थित होकर एकाग्र चित्तसे योगकी साधना नियमित रूपसे करे। तदनन्तर पाँचों इन्द्रियों, इन्द्रियोंके अर्थ—रूप, शब्द, गन्ध, रस और स्पर्श—, मन और पाँचों वायुओं—प्राण, अपान, समान, उदान और व्यान—को अपने वशमें कर सामूहिक रूपसे सबका प्रत्याहार करना प्रारम्भ करे। निमेषोन्मेष एक कलाका जानना चाहिये। १५ निमेषकी एक काष्ठा होती है, ३० काष्ठाओंकी एक कला होती है। १२ मात्रावाला प्राणायामका विधान किया जाता है। द्वादश आयामकी धारणा कही गयी है, दो धारणाओंवाला योग कहा गया है। इस प्रकारके योगसे युक्त योगी ऐश्वर्यको प्राप्त करता है एवं अपने तेजसे प्रदीप्त परमात्माका दर्शन पाता है। प्राणायामयुत नियतात्मा ब्राह्मणके सब पाप नष्ट हो जाते हैं और वह स्वस्थ होता है इत्यादि। प्राण और अपानका सम्यक् निरोध प्राणायाम है। मनकी धारणा धारणा कही जाती है। विषयोंकी निवृत्तिको प्रत्याहार कहते हैं इन सबका संघात होनेपर योगरूप सिद्धि प्राप्त होती है। जो योगी सब कामनाओंका जैसे कछुआ अपने अंगोंको समेट लेता है वैसे ही प्रत्याहार करता है वह आत्माराम और एकाग्र चित्त हो अपनेमें आत्माका साक्षात्कार करता है (वायु० ११.१२-२९; २२.१९; ११०.१३)।

प्राणी–पु० [सं०] राजाओंके प्राणयुक्त सात रत्न—पत्नी,

पुरोहित, सेनानी, रथकार अर्थात् शिल्पी मंत्री, घोड़े तथा हाथी (ब्रह्मां० २.२९.७६; वायु० ५७.७०)। राजाओंके चौदह रत्न कहे गये हैं जिनमें सात प्राणयुक्त और सात प्राणविहीन। प्राणयुक्त ऊपर बतालाये गये हैं। प्राणविहीन ये हैं—राष्ट्र, रथ, मणि, खड्ग, चर्म (ढाल), पताका और निधि (ब्रह्मां० २.२९.७४)।

प्रांतदेश–पु० [सं०] यह उत्तम नसलके घोड़ोंके लिए विख्यात है (ब्रह्मां० ४.१६.१८)।

प्रातः–पु० [सं०] (१) पुष्पार्ण तथा प्रभाके तीन पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (भाग० ४.१३.१३)। (२) प्रातःकाल जिसका जन्म धाता और राकासे हुआ है (भाग० ६.१८.३)। (३) एक राक्षस जो श्रावण महीनेमें, जब इन्द्र नामके सूर्य तपते हैं, सौरगणके अन्य विश्वावसु आदि संगियोंके साथ सूर्यरथपर अधिष्ठित रहता है (वायु० ५२.१०)। (४) कौरव्य कुलमें उत्पन्न एक नागका नाम जो जनमेजयके सर्पयज्ञमें जल मरा था (महाभा० आदि० ५७.१३)।

प्रातस्तन–पु० [सं०] 'लेखा'से आरम्भ कर सूर्य जब ३ मुहूर्त्त चल लेता है तब यह समय आता है। यह दिनका $\frac{१}{६}$ हिस्सा है (वायु० ५०.१७०)।

प्रातिकामी–पु० [सं०] दुर्योधन के एक सारथि तथा दूतका नाम। यह द्रौपदीको कौरवसभामें बुलानेके लिए गया था (महाभा० सभा० ६७.२-४)।

प्रातिपीय–पु० [सं०] (१) एक राजाका नाम (महाभारत)। (२) एक गोत्र प्रवर्त्तक ऋषिका नाम।

प्रातिपेय–पु० [सं०] एक राजाका नाम (महाभा०)।

प्रातिभ–पु० [सं०] एक प्रकारका विघ्न जो पुराणानुसार योगियोंके योगमें होनेवाले पाँच विघ्नोंमेंसे एक है (योगमार्ग-प्रकाशिका)।

प्रातिमेधी–स्त्री० [सं०] अदिति प्रभृति कई मुख्य ब्रह्मवादिनियोंमेंसे एक ब्रह्मवादिनी (ब्रह्मां० २.३३.१९)।

प्रातृद–पु० [सं०] एक ऋषिका नाम।

प्रादेश–पु० [सं०] (एक मान), तर्जनीसे अंगुष्ठतकका विस्तार १० अंगुल; ताल, मध्यमा अंगुलीसे अंगुष्ठतकका विस्तार ताल कहा जाता है। अनामिकासे अंगुष्ठतकका विस्तार वितस्ति कहा जाता है, कनिष्ठ अंगुलीसे अंगुष्ठतकका विस्तार गोकर्ण कहा जाता है (वायु० ८.१०३; ब्रह्मां० २.७.९६)।

प्राधा–स्त्री० [सं०] दक्ष प्रजापतिकी पुत्री तथा कश्यप ऋषिकी एक पत्नी जो अनवद्या आदि कन्याओं तथा दस देवगंधर्वोंकी माता थी।

प्राधानिकी–स्त्री० [सं०] प्रधान और मायासे हुई सृष्टि= (सांख्य) (वायु० १०२.१३३)।

प्रापण–पु० [सं०] दनु और कश्यपके सैकड़ों दानव पुत्रोंमेंसे एक प्रधान दानवका नाम (ब्रह्मां० ३.६.७)।

प्राप्ति–स्त्री० [सं०] (१) सुपारवर्गके देवों, जो संख्यामें दस हैं, मेंसे एक सुपारदेवका नाम (वायु० १००.९४)। (२) जरासंधकी एक पुत्रीका नाम जिसका विवाह मथुरापति कंससे हुआ था। पतिकी मृत्युके पश्चात् इसने पिताके घर जा पतिके वधका सारा हाल कहा था (भाग० १०.५०.१.२; विष्णु० ५.२२.१)। (३) कामकी पत्नीका नाम (भाग०)। (४) चक्रराजरथेन्द्रके नवम पर्वमें स्थित दस सिद्धि देवियोंमेंसे एक सिद्धि देवीका नाम (ब्रह्मां० ४.१९.४; ४४.'०८)। (५) अणिमा आदि आठ ऐश्वर्योंमेंसे एक जिससे सब इच्छाएँ पूर्ण होती हैं—दे० अणिमा। (६) आठ योगैश्वर्योंमेंसे एक (वायु० १३.३,१३)।

प्रायश्चित्त–पु० [सं०] शास्त्रीय कृत्य विशेष जिससे पाप छूट जाते हैं परन्तु जो विष्णुभक्त नहीं हैं उनके लिए यह सब निरर्थक है (भाग० ६.१.११, १८)—दे० प्रायश्चित्तेन्दु-शेखर।

प्रायोपवेश–पु० [सं०] आमरण उपवासका व्रत। राजा परीक्षित्‌ने विष्णुका ध्यान लगाकर यह किया था (भाग० १.१९.७)। इन्द्र द्वारा शिष्योंके मारे जानेपर सुकर्माने भी यही व्रत किया था (वायु० ६१.२९; ब्रह्मां० २.३५.३४)।

प्रालेयशैल–पु० [सं०] प्रालेयाद्रि, हिमालयका एक नाम (मत्स्य० ८६.२५, ५७, ५९)।

प्रावरक–पु० [सं०] क्रौंचद्वीपके कुशल, मनोनुग, उष्ण आदि सात वर्षोंमेंसे एक वर्षका नाम (वायु० ४९.६७)।

प्रावहि–पु० [सं०] अंगिरस-कुलके प्रवरप्रवर्तक एक ऋषिका नाम (मत्स्य० १९६.१३)।

प्रावेपि–पु० [सं०] अंगिरसवंशके एक प्रवर प्रवर्तक ऋषिका नाम (मत्स्य० १९६.१६)।

प्रावृषेय–पु० [सं०] एक पूर्वी देशका नाम (ब्रह्मां० २.१६.५४)।

प्राश्निक–पु० [सं०] मधु और कैटभ तथा विष्णु और जिष्णुके युद्धोंमें जिस रूपमें ब्रह्मा नियुक्त थे, वह (वायु० २५.४१)। (प्राश्निक=पंच, हारजीतका निर्णायक)।

प्रासेव्य–पु० [सं०] कश्यप-कुलका एक गोत्रकार ऋषि (मत्स्य० १९९.८)।

प्राह्लाद–पु० [सं०] प्रह्लाद; इन्द्रने इसे युद्धमें पराजित किया था (वायु० ९७.७९)। इसे असुरोंका इन्द्र कहते थे (वायु० ९७.९०)। यह हिरण्यकशिपुके पश्चात् राजा हुए थे (वायु० ९८.४१, ८१)।

प्राह्लादि–पु० [सं०] प्रह्लादका पुत्र विरोचन, जो सदा इन्द्रके वधकी ताकमें रहता था, तारकामय युद्धमें इन्द्र द्वारा मारा गया (वायु० ९७.८०)।

प्रियंकर–पु० [सं०] एक दानवका नाम।

प्रियंवद–पु० [सं०] गंधर्वोंके राजाका एक पुत्र, एक गंधर्व।

प्रियकप्रिया–स्त्री० [सं०] ललितादेवीके १६ नामोंमेंसे एक नाम, मंत्रिणी (ब्रह्मां० ४.१७.३४, ४३; ३१.१०५)।

प्रियदर्शन–पु० [सं०] एक गंधर्वका नाम (संस्कृ० श० कौस्तुभ)।

प्रियनिश्चय–पु० [सं०] भव्य देवगण, जिसमें आठ देव हैं, मेंका एक देव (ब्रह्मां० २.३६.७२)।

प्रियभृत्य–पु० [सं०] तामस मनुके जानुजंघ आदि दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (ब्रह्मां० २.३६.४९; वायु० ६२.४३)।

प्रियमधु–पु० [सं०] बलरामका एक नाम (भाग०)।

प्रियमुखी–स्त्री० [सं०] मौनेय देवगन्धर्वोंकी बहिन ३४ अप्सराओंमेंसे एक अप्सराका नाम (वायु० ६९.४)।

प्रियमेध–पु० [सं०] (१) एक ऋषिका नाम। (२) भागवतानुसार अजमीढ़के एक ब्राह्मण पुत्रका नाम (भाग० ९.२१.२१)।

प्रियव्रत—पु० [सं०] (१) स्वायंभुव मनुके दो पुत्रोंमेंसे एक जो उत्तानपादके भाई थे। इनमें वासुदेवका अंश प्रचुर मात्रामें था (भाग० ३.१२.५५; २१.२; ४.१.९; ११.२.१५; ४.८.७; मत्स्य० ४.३४; वायु० ३३.६; ५७.७७; विष्णु० १.७.२८)। इनकी दो पत्नियाँ थीं = बर्हिष्मती (विश्वकर्मा-की पुत्री) तथा विष्णुपुराणानुसार कर्दम ऋषिकी पुत्री काम्या जिसके गर्भसे इनके दस (१०) पुत्र तथा दो पुत्रियाँ हुईं। अग्नीध्र तथा उत्तम मनु इन्हीं पुत्रोंमें थे। दूसरी पत्नीसे तीन पुत्र हुए जो सबके सब मन्वंतरके अधिपति थे। दस पुत्रोंमेंसे महावीर, कवि और सवन तीन-ने तो सन्यास ले लिया। बचे सातमेंसे प्रत्येकको एक-एक महादेश दे प्रियव्रतने उन्हें वहाँका राजा बना दिया। यद्यपि प्रियव्रत परम भागवत तथा नारदके भक्त थे पर पिताकी आज्ञानुसार इन्होंने ११ अर्बुद वर्षोंतक राज्य किया था। बर्हिष्मतीके गर्भसे उत्पन्न ऊर्जस्वती नामकी इनकी पुत्री शुक्रकी पत्नी तथा देवयानीकी माता थी (भाग० ५.१.२४, ३४)। यह एक प्रसिद्ध वंशके आदि पुरुष थे (भाग० ५.६.१४; १५ पूरा), तपस्या कर इन्होंने स्वर्ग प्राप्त किया था (मत्स्य० १४३.३८; विष्णु० १.११.१)। कर्दम ऋषिकी पुत्री काम्यासे सम्राट् तथा कुक्षि दो पुत्रियाँ हुईं। स्वारोचिष मनु, औत्तम मनु, तामस मनु और रैवत मनु इसी वंशके थे (विष्णु० २.१.३-६)।

सूर्यकी किरणोंसे केवल आधे संसारको ही प्रकाश पाते देख प्रियव्रतने अपने तीव्रगामी रथपर बैठ सात बार सूर्य-का पीछा किया पर ब्रह्माने इन्हें समझाकर रोक दिया। भागवतानुसार इनके रथके पहियोंसे बने गड्ढोंसे ही सात समुद्रोंकी सृष्टि हुई और ऊँचे स्थानोंपर सात महादेश बस गये। (२) शतरूपाके दो पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (ब्रह्मां० १.१.-५७; वायु० ६२.५९)। (३) विराजमनुका एक पुत्र (ब्रह्मां० २.९.४१; वायु० १.६६; १०.१६)। कर्दम ऋषिकी पुत्री काम्याका पति (वायु० २८.२८) इसके १० पुत्र तथा २ पुत्रियाँ थीं (ब्रह्मां० २.११.३३)। (४) आद्या नामक देव-गण, जिसमें ८ देवता हैं, मेंका एक देवता (ब्रह्मां० २.३६.६९)। (५) ऋभुसे विष्णुपुराण सुनकर इसने भागुरिको सुनाया था (विष्णु० ६.८.४३)।

प्रियव्रतान्वयज—पु० [सं०] प्रियव्रतके वंशज, स्वारोचिष, औत्तम, तामस और रैवत मनु (वायु० ६२.५६)।

प्रियसंगमन—एक स्थान विशेष जहाँ अदिति और कश्यप-का मिलन हुआ था—दे० (अदिति, कश्यप)।

प्रिया—स्त्री० [सं०] दक्षकी एक पुत्री (वायु० १.१२२)।

प्रियकारिणी (सर्वाद्या)—स्त्री० [सं०] सर्वसेक्षोभिणी आदि आठ मुद्रा देवियोंमेंसे एक मुद्रा देवीका नाम (ब्रह्मां० ४.-४४.११४)।

प्रीत—पु० [सं०] दस चरकाध्वर्युओंमेंसे एक चरकाध्वर्युका नाम (ब्रह्मां० २.३३.१३)।

प्रीति—स्त्री० [सं०] (१) चंद्रमाकी षोडश कलाओंमेंसे एक कलाका नाम (ब्रह्मां० ४.३५.९२)। (२) वरदा, ह्लादिनी आदि विष्णुकी चार कलाओंमेंसे एक कलाका नाम (ब्रह्मां० ३.३५.९५)। (३) कामदेवकी पत्नीका नाम। कहते हैं पूर्वजन्ममें वह अनंगवती नामकी वेश्या थी। माघमें विभूतिद्वादशीका विधिवत् व्रत करनेके कारण मरनेपर कामदेवकी पत्नी हुई। यह "रति"की सौत हुई (मत्स्य० १००.३२)। (४) दक्षकी एक पुत्री जो पुलस्त्यकी पत्नी थी (वायु० १०.२७, ३१; २८.२२; विष्णु० १.७.२५)। दावाग्नि, देवबाहु और अत्रि इसके तीन पुत्र हुए (ब्रह्मां० २.९.५२.५५; ११.२६)। विष्णु०के अनुसार दत्तोलि भी इसका पुत्र था (विष्णु० १.१०.९)। (५) अंगिराकी एक पत्नी (विष्णु० १.७.७)।

प्रीतिजुषा—स्त्री० [सं०] उषाका दूसरा नाम, यह अनिरुद्ध-की पत्नी थी।

प्रीतिव्रत—पु० [सं०] विष्णु प्रीत्यर्थ किया जानेवाला एक व्रतविशेष (मत्स्य० १०१.६)।

प्रेत—पु० [सं०] पुराणानुसार मृत्युके पश्चात् मनुष्योंको प्राप्त होनेवाला शरीर। जिन लोगोंके श्राद्धादि नहीं होते वे प्रेत योनिमें ही रहते हैं जिनका निवास स्थान मल-मूत्रादि गंदे स्थान बताये गये हैं। ये निर्लज्ज तथा अपवित्र भोजन करनेवाले कहे गये हैं (दे० प्रेतमञ्जरी)। ये बालकों-को कष्ट देते हैं।

प्रेतकर्म—पु० [सं०] अंत्येष्टि क्रियासम्बन्धी कृत्य (विष्णु० ३.१३.७-१६)।

प्रेतकूट—पु० [सं०] यह गयामें स्थित है (वायु० १०९.१५)।

प्रेततर्पण—पु० [सं०] मरनेके दिनसे सपिंडीके दिनतक होनेवाला तर्पण।

प्रेतदेह—पु० [सं०] मरनेके दिनसे सपिंडीतकका मृतकका कल्पित शरीर।

प्रेतधूम—पु० [सं०] चितासे निकला हुआ धुआँ।

प्रेतनदी—स्त्री० [सं०] वैतरणी नदीका नाम।

प्रेतपक्ष—पु० [सं०] महालय, आश्विनका कृष्णपक्ष—दे० पितृपक्ष (वायु० ८३.४१)।

प्रेतपर्वत—पु० [सं०] यह गयामें है (वायु० ८३.२०; ११०.८, ९)।

प्रेतयाना—स्त्री० [सं०] अन्धकरुधिर पानके लिए शिवजी द्वारा सृष्ट एक मानस-पुत्री मातृका (मत्स्य० १७९.१९)।

प्रेतराक्षसी—स्त्री० [सं०] तुलसीका वृक्ष, जहाँ ये होते हैं वहाँ भूत-प्रेत नहीं आते।

प्रेतराज—पु० [सं०] यमराजका नाम, जिसके मतानुसार अपने धनका ५/६ गयामें अपने श्राद्धमें व्यय करे और १/६ अपने कर्मके लिए रख ले तो संसारसे मुक्ति होती है (वायु० ११२.१५-२०; विष्णु० ५.२३.४४)।

प्रेतलोक—पु० [सं०] मृत व्यक्तियोंका लोक (वायु० ११०.४४)।

प्रेतशिला—स्त्री० [सं०] गयास्थित शिलाका एक भाग जहाँ पिंडदान होता है। यहीं प्रेतकुंड है जहाँ प्रेत अपना भाग ग्रहण करते हैं। यह गयाके सिरपर स्थित है (वायु० १०८.१५, ६७; ११०.६६)।

प्रेताशौच—पु० [सं०] हिन्दू शास्त्रानुसार वह अशुद्धि जो घरके किसी व्यक्तिके मरनेके बाद होती है। यह ब्राह्मणोंको १० दिन, क्षत्रियोंको १२ दिन, वैश्योंको १५ दिन तथा शूद्रोंको एक महीना (ब्रह्मां० ३२०।६३)। "दशाहे ब्राह्मणः शुद्धोः द्वादशाहेन क्षत्रिय। वैश्यः पञ्चदशाहेन शूद्रो मासेन

शुद्धयति" (विष्णु० ३.१३.१८-१९)।

प्रेमजा–स्त्री० [सं०] मरीचि ऋषिकी पत्नीका एक नाम।

प्रौष्ठपद्यष्टका–स्त्री० [सं०] अच्छोदामत्स्यगंधीने पृथ्वीपर जो रूप धारण किया था, उसे सत्यवती कहते हैं तथा पितृलोकमें यह अष्टका नामसे विख्यात है (मत्स्य० १४.१८-९)। प्रौष्ठपद महीना (मत्स्य० ५३.५२)।

प्लक्ष–पु० [सं०] (१) वनवृक्षोंका अधिपति। गौ रूपी पृथ्वीको दूहनेके समय यह वृक्षोंके लिए वछड़ा वना था (मत्स्य० ८-८; १०.२८)। श्रीकृष्णाष्टमीव्रत तथा तड़ाग-निर्माण सम्बन्धी उत्सवोंमें इसकी पतली-पतली डालियोंकी आवश्यकता पड़ती है (मत्स्य० ५६.७; ५८.१०)। (२) दारुकका एक पुत्र तथा विष्णुका एक अवतार (वायु० २३.१९६)। (३) एक महादेश जो किंपुरुषका एक भाग है तथा नंदनके वरावर है। यहाँ एक प्लक्ष (पाकड़) वृक्ष है (वायु० ३३.११; ४६.४)।

प्लक्षतीर्थ–पु० [सं०] कुरुक्षेत्रका एक पवित्र सरोवर जहाँ अप्सराएँ क्रीड़ा करती थीं। पुरूरवाको उर्वशी यहीं मिली थी। हरिवंशके अनुसार एक पवित्र तीर्थका नाम (वायु० ९१.३२-३)।

प्लक्षद्वीप–पु० [सं०] पुराणानुसार सात द्वीपोंमेंसे एक जो जंवू द्वीपके चारो ओर माना गया है और दो लाख योजनतक विस्तृत है। यहाँ अग्निदेव सदा प्रकाश देते हैं। इध्मजिह्व इसका प्रथम शासक था जिसने इसके ७ खण्ड कर अपने ७ पुत्रोंको दिये थे। दूसरे मतसे प्लक्षद्वीप ९ महादेशोंमेंसे एक है जहाँका पहला राजा मेधातिथि था जिसके शांतभय, शिशिर, सुखोदय, आनन्द, शिव, क्षेमक, और ध्रुव सात पुत्र थे जिनमेंसे प्रत्येकको उसने इस द्वीपका एक खंड दिया था। विष्णुपुराणानुसार इसमें ७ नदियाँ हैं—अनुतप्ता, शिखी, विपाशा, त्रिदिवा, क्रमु, अमृता और सुकृता (ब्रह्मां० २.१९.१९; वायु० ४९.१७; विष्णु० २.४.११)। यहाँ सदा त्रेतायुग वना रहता है तथा यहाँके निवासियोंकी आयु ५००० वर्ष कही गयी है। यहाँ चातुर्वर्ण्यका नियम है, निवासी सूर्यकी उपासना करते हैं। अर्यक, कुरर, विदिश्य और भावी यहाँके ये ही चार वर्ण हैं। इस द्वीपमें प्लक्षका एक वहुत वड़ा वृक्ष है तथा इसके चारो ओर ईखके रसका (खारी=वायु०) समुद्र है (भाग० ५.१.३२; २०.१-७; ब्रह्मां० २.१४.११-१५)। इसी वृक्षके कारण इसे प्लक्षद्वीप कहते हैं। इसमें सात ही वर्ष हैं और सात ही पहाड़ जिनके नाम पुराणोंमें अलग-अलग दिये हैं। विष्णु यहाँ सोमरूपमें रहते हैं (विष्णु० २.१.१२; २.५; ४.२-२०)।

प्लक्षप्रश्रवण–पु०[सं०] सरस्वती-तटपरका श्राद्ध आदि के लिए एक अति उपयुक्त पवित्र तीर्थस्थान (ब्रह्मां० ३.१३.६९)।

प्लवंगमातंग–पु० [सं०] एक जाति विशेष (मत्स्य० ११४.४४)।

प्लवंगव–पु० [सं०] एक पूर्वी देश (ब्रह्मां० २.१६.५३)।

प्लव–पु० [सं०] ताम्रा और मारीच (कश्यप)की छह पुत्रियोंमेंसे एक पुत्री शुचिसे उत्पन्न वत्तखें (मत्स्य० ६.३२)।

फ

फट्कारिणी–स्त्री० [सं०] एक शक्तिदेवी (ब्रह्मां० ४.४४.८८)।

फणिकन्यका–स्त्री० [सं०] नागकन्या (ब्रह्मां० ४.३८.३५)।

फणिनायक–पु० [सं०] शेषनाग (ब्रह्मां० ३.३६.७)।

फलकक्ष–पु० [सं०] एक यक्ष, जो कुवेरकी सभामें रहकर उनकी सेवा करता है, का नाम (महाभा० सभा० १६.१६)।

फलकावन–पु० [सं०] एक वन जो सरस्वतीको अति प्रिय है।

फलकीवन–पु० [सं०] एक वनका नाम जिसे पूर्वकालमें एक तीर्थ माना जाता था और जहाँ देवता सदा निवास करते थे (महाभा० वन ८३.६६-८७)।

फलकृच्छ्र–पु० [सं०] प्रायश्चित्तका एक व्रत जिसमें फलोंको उवाल कर एक मासतक उसका जल पीनेका विधान है—'फलैर्मासेन कथितैः फलकृच्छ्रो मनीषिभिः' (मार्कण्डेय)।

फलमुख–पु० [सं०] भडंका एक सेनापति (ब्रह्मां० २.२१.७८)।

फलव्रत–पु० [सं०] इसका व्रती विष्णुलोक पाता है (मत्स्य० १०१.६२)।

फलसप्तमी–पु० [सं०] मार्गशीर्षकी सप्तमीको सूर्यके प्रीत्यर्थ किया जानेवाला एक व्रत जिसमें व्रती सूर्यलोक प्राप्त करता है (मत्स्य० ७६.१)। भाद्रपद शु० ७ से आरम्भ करके प्रत्येक शुक्ला ७ को फलोंसे सूर्यका पूजन कर स्वयं फल खाये (भविष्य पु०)।

फलाहार–पु० [सं०] आंगिरस कुलका एक प्रवरप्रवर्तक ऋषि (मत्स्य० १९६.१६)।

फलोदक–पु० [सं०] एक यक्षका नाम (ब्रह्मां०)।

फल्गु–स्त्री० [सं०] विहारकी एक पवित्र नदी जिसके तटपर गया तीर्थ वना है। पितृपक्षमें यहाँ मेला लगता है (—दे० गया)।

फल्गुतंत्र–पु० [सं०] अयोध्याके राजा जो तालजँघसे परास्त होनेके पश्चात् और्व ऋषिके आश्रमके निकट जंगलमें अपनी गर्भवती पत्नीके साथ जा वसा था। इसकी मृत्युके पश्चात् इसी आश्रममें इसका पुत्र प्रसिद्ध सगर उत्पन्न हुआ था (ब्रह्मां० ३.४७.७६)।

फल्गुतीर्थ–पु० [सं०] गयाका एक तीर्थस्थान जहाँ गदाधर निवास करते हैं (वायु० १०५.६, ३६; १०९.१६, ४३; १११.१३-२०)।

फल्गुनी–पु० [सं०] २७ नक्षत्रोंमें एक नक्षत्रविशेष (वायु० ८२.६)।

फालमुख–पु० [सं०] वलाहकका एक भाई जो भंडका एक सेनापति था (ब्रह्मां० ४.२४.९,४८)।

फाल्गुन–पु० [सं०] (१) फाल्गुनकी अमावस्या, श्राद्धके लिए एक मन्वंतरादि (मत्स्य० १७.७)। (२) अर्जुनका एक नाम (विष्णु० ५.३७.२; ३८.३५)। (३) फल्गुन,

विष्णुका पवित्रस्थान जहाँ बलराम गये थे (भाग० ७.१४.३१; १०.७९.१८)।

फाल्गुनी—स्त्री० [सं०] (१) फाल्गुन शुक्ला पूर्णिमा जिस दिन होलिका-दहन होता है जिस दिन हिरण्यकशिपुने अपनी भगिनी (होलिका) के साथ प्रह्लादको जलानेकी व्यर्थ चेष्टा की थी। (२) गुरु नक्षत्रके लिए पवित्र जिस दिन श्राद्ध करनेसे शरीर-सौन्दर्य प्राप्त होता है (ब्रह्मां० २.२४.१३२; ३.१८.६; वायु० २३.१०७; ५३.१०७)। (३) फाल्गुन मास जिसमें लिंगपुराण दान करना शुभ है (मत्स्य० ५३.३८)। इस मासमें शिवकी पूजा करना कृष्णाष्टमी व्रतवालोंके लिए अच्छा है (मत्स्य० ५६.२)। सौभाग्यशयनव्रत करनेवालोंको इस मासमें पंचगव्य खाना चाहिये (मत्स्य० ६०.३६)।

फाल्गुनी अमावस्या—स्त्री० [सं०] इस दिन रुद्र, अग्नि और ब्राह्मणोंकी पूजा करे। यदि अमावस्याको सोम, मंगल, या गुरु या शनिवार हो तो यह सूर्यग्रहणसे भी अधिक फल देनेवाली होती है। इस तिथिको युगका प्रारम्भ होनेसे पितृश्राद्ध (अपिंड) करे।

फाल्गुनी पूर्णिमा—स्त्री० [सं०] पूर्वविद्धा पूर्णिमा ले, संध्याको भगवान्की पूजा करे। इसी दिन चन्द्रमा प्रकट हुए थे अतः चन्द्रोदय होनेपर अर्घ्य देकर पूजन करे (बृहद्यम)।

फूलडोल—पु० [हिं०] चैत्रशुक्ला एकादशीको होनेवाला एक उत्सव जिस दिन फूलके हिंडोलेपर श्रीकृष्णको झुलाते हैं। यह वैष्णवोंका एक प्रधान त्योहार है जो मथुरा, वृंदावन आदिमें धूमसे मनाया जाता है।

फूलमती—स्त्री० [हिं०] शीतला रोगके एक भेदकी अधिष्ठात्री एक देवी जिन्हें राजा वेनकी पुत्री कहते हैं।

फेनप—पु० [सं०] (१) चार प्रकारके वानप्रस्थ मुनियोंमेंसे एक वर्गके वानप्रस्थ मुनि, जो स्वयं गिरे हुए फलादिसे जीवननिर्वाह करते हैं (भाग० ३.१२.४३)। (२) भार्गववंशके एक गोत्रकार ऋषिका नाम (मत्स्य० १९५.२१)।

फेनाशनि—पु० [सं०] देवराज इन्द्रका एक नाम (इन्द्र)।

ब

बंजुला—स्त्री [सं०] (१) ऋक्षपर्वतसे निकली २१ नदियोंमेंसे एक नदीका नाम (ब्रह्मां० २.१६.३१)। (२) महेन्द्रपर्वतसे निकलीं ७ नदियोंमेंसे एक नदीका नाम (ब्रह्मां० २.१६.३७)।

बंध—पु० [सं०] अज्ञानसे आक्रान्त होनेके कारण जीव वास्तविकता नहीं जान पाता। अयथार्थताके दर्शनसे वह त्रिधा बन्धनमें पड़ता है। प्राकृतबन्धनसे, वैकारिकबन्धनसे और दक्षिणबन्धनसे बधता है। ये तीन बन्धन हैं जिनका उद्गम स्थान अज्ञान कहा गया है। इनसे अनित्यमें नित्यबुद्धि, दुःखमें सुखबुद्धि, अनात्मामें आत्मप्रत्यय और अशुचि शुचिज्ञान ये मनोदोष होते हैं (वायु० १०२.५८-६१)।

बंधन—पु० [सं०] जेलसे भागने तथा भगानेवाला दोनों दंडके भागी होते हैं (मत्स्य० २२७.२०८-१०)। बंधस्थान (मत्स्य० २५६.३५)।

बंधनरक्षिता—पु० [सं०] बंदीगृहका संरक्षक इसे नरकगामी कहा गया है (वायु० १०१.१५४)।

बंधु—पु० [सं०] (१) वेगवान्का पुत्र तथा तृणबिंदुका पिता (भाग० ९.२.३०)। (२) रोहित नामक देवगण, जिसमें दस देव थे, मेंका एक रोहित देव (ब्रह्मां० ४.१.८५; वायु० १००.९०)।

बंधुपालित—पु० [सं०]. कुशाल (कुनाल=वायु०) का पुत्र तथा इन्द्रपालितका पिता (मौर्य) (वायु० ९०.३३४.२)।

बंधुमान्—पु० [सं०] (१) केवलका पुत्र तथा वेगवान्का पिता (भाग० ९.२.३०; ब्रह्मां० ३.८.३६; ६१.९; वायु० ८६.१४; विष्णु० ४.१.४३-४)। (२) भंगकार और सुयज्ञसुता नराके दो पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (ब्रह्मां० ३.७१.८६-८८) जिसे अक्रूरने मारा था (वायु० ९६.८५)।

बक—पु० [सं०] (१) अंधकका एक पुत्र तथा आडिका भाई एक असुर विशेष (मत्स्य० १५६.१२)। श्रीकृष्ण एक बार गोपोंके साथ गौ चराते समय उन्हें पानी पिलाने एक सरोवरपर गये जहाँ बकासुर नामक एक राक्षस कृष्णको निगल गया। श्रीकृष्णका तेज न सह सकनेके कारण बकासुरने उन्हें उगल दिया और अन्तमें उन्हींसे मारा गया (भाग० १०.२.१; ११.४८-५२; १२.१४; २६.८; ४३.३०; ४६.२६) (२) एकचक्रा नगरीके निकट यमुना तटवर्ती घने वनमें रहनेवाला नरभक्षी बलवान् एक राक्षस, जिसका एकचक्रा नगरी तथा उसके आस-पासके जनपदपर शासन चलता था। वहाँके निवासियोंको जिसको भोजन देना पड़ता था एवं जिसे भीमने मारा था (महाभा० आदि० १५९.३.७; १६२.५)। (३) एक प्राचीन ऋषिका नाम जो युधिष्ठरकी सभामें विराजमान होते थे। ये दकदाल्भ्य कहलाते थे (महाभा० सभा० ४.११)। (४) मणिवर और देवजनीके ३० पुत्रोंमेंसे एकका नाम (वायु० ६९.१६०)।

बकनख—पु० [सं०] विश्वामित्रके ब्रह्मवादी पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (महाभा० अनु० ४.५८)।

बकमुख—पु० [सं०] पिशाचोंके १६ कुलोंमेंसे एक कुलके पिशाचगण (वायु० ६९.२६३)।

बकरिपु—पु० [सं०] बक राक्षसको मारनेके कारण भीमसेनका एक नाम—दे० बक (२)।

बकव्रती—पु० [सं०] जो अपने विनयके ख्यापनके लिए सदा नीची नजर रखता है। निष्ठुर व्यवहार करता हो, स्वार्थ साधनमें सदा तत्पर रहता हो कुटिल एवं मिथ्या (बनावटी) विनीत हो वह बकव्रती कहलाता है। ऐसे लोग तामिस्र नरकगामी होते हैं (मनु० ४.१९६-७; मत्स्य० ९५.३०)।

बकासुर—पु० [सं०] एक दैत्य जिसे श्रीकृष्णने मारा था—दे० बक (१)।

बकी—स्त्री० [सं०] बकासुरकी बहिन पूतना जिसने स्तनोंमें विष लगाकर श्रीकृष्णको मारनेकी चेष्टा की थी पर स्वयं मारी गयी (भाग० १०.१२.१४)।

बगलामुखी—स्त्री० [देश०] तंत्रानुसार एक देवी पीताम्बरा,

जिनकी आराधनासे, कहते हैं, विरोधियोंकी वाक्शक्ति बन्द कर दी जा सकती है—दे० (बगलातन्त्र)।

बज्जुला–स्त्री० [सं०] (वज्जुला) ? सह्य पर्वतकी तलहटीसे निकली एक पुण्यसलिला नदीका नाम (ब्रह्मां० २.१६.३४)।

बड़वा–स्त्री० [सं०] (१) अश्वा (घोड़ी) रूप धारिणी सूर्यकी पत्नी संज्ञाका नाम जो अश्विनीकुमारोंकी माता थी (भाग० ८.१३.९, १०)। (२) वसुदेवकी एक परिचारिका (भाग०)।

बड़वाग्नि–पु० [सं०] कामदेवको भस्म करनेके लिए शिवने क्रोधरूपी अग्नि उत्पन्न की थी जिसे लोक-कल्याणार्थ ब्रह्माने समुद्रके हवाले कर दिया था (कालिकापु०)। पर वाल्मीकि रामायणके अनुसार बड़वाग्नि और्व ऋषिका क्रोध-रूपी तेज है जो कल्पांतमें फैलकर संसारको भस्म कर देगा (हरिवंश)।

बड़वानल–पु० [सं०] दे० बड़वाग्नि।

बड़वासुत–पु० [सं०] अश्विनीकुमारोंका एक नाम—दे० अश्विनीकु०।

बदरिका–पु० [सं०] यहाँके ऋषि द्वारका गये थे [भाग० १०.९०.२८ (५)]।

बदरिकाश्रम–पु० [सं०] हिमालयपर्वतपर स्थित एक तीर्थ-विशेष जो गढ़वालके पास अलकनंदा नदीके पश्चिमी तट-पर है। यहाँ नरनारायण तथा व्यासका आश्रम है। कहते हैं भृगुतुंग नामक श्रृंगके ऊपर एक बदरी वृक्षके कारण ही यह नाम पड़ा। स्वर्गप्रयाणके पूर्व दिये श्रीकृष्णके आदेशानुसार उद्धवजी यहीं आये थे (भाग० ३.४.४, २२, ३२; ७.११.६; १०.६६ (१३); ब्रह्मां० ३.२५.६७; विष्णु० ५.३७.३४)। महाभारतके अनुसार गंगाकी गरम और ठण्डी यहाँ दो धाराएँ थीं। देवताओंने तप द्वारा विष्णुको यहाँ प्राप्त किया था तथा मुचुकुन्दने विष्णुप्रीत्यर्थ यहीं तप किया था (भाग० १०.५२.४)। पाण्डव महाप्रस्थानके लिए यहीं गये थे (महाभा० वन० १४५ अध्या०)। ककुद्मीने अपना बुढ़ापा यहीं बिताया था, इसे उर्वशीतीर्थ भी कहते हैं (मत्स्य० १३.४९) और मित्र तथा वरुणने यहाँ तप किया था (मत्स्य० २०१.२४)। पद्मपुराणानुसार वैष्णवोंके सब तीर्थोंमें इसे श्रेष्ठ माना गया है।

बदरीनाथ–पु० [सं०] दे० बदरिकाश्रम।

बदरीनारायण–पु० [सं०] नारायणकी मूर्त्ति जो बदरिकाश्रमके प्रधान देवता हैं—दे० (बदरिकाश्रम)।

बदरीप्राय–स्त्री० [सं०] एक द्वीप (टापू) जहाँ बदरीवृक्ष अधिक मात्रामें थे और जहाँ बादरायण उत्पन्न हुए थे (मत्स्य० १४.१६)।

बदर्याश्रम–पु० [सं०] पुरुषरूपी वेदके ब्रह्मरंध्रमें स्थित एक तीर्थ, जहाँ नरनारायणाश्रम है (वायु० १०६.७८; भाग० १०.५२.४)।

बभ्रु–पु० [सं०] (१) द्रुह्युके दो पुत्रोंमेंसे एक जो सेतु (रिपु=ब्रह्मां० तथा वायु०)का पिता था (भाग० ९.२३.१४; ब्रह्मां० ३.७४.७; वायु० ९९.७; विष्णु० ४.१७.१-२) ब्रह्मां० तथा वायु० के अनुसार द्रुह्युके दो पुत्र कहे गये हैं—बभ्रु और सेतु। भाग० तथा विष्णु० के अनुसार द्रुह्युका केवल एक पुत्र था—बभ्रु तथा बभ्रु-पुत्र सेतु था न कि भाई। (२) रोमपाद (लोमपाद=ब्रह्मां०)का पुत्र तथा कृति (कुन्ति=ब्रह्मां०; धृति=विष्णु०) का पिता (भाग० ९.२४.२; ब्रह्मां० ३.७०.३८; विष्णु० ४.१२.३९)। (३) शुनक (शौनक=ब्रह्मां० तथा विष्णु०)के दो शिष्योंमेंसे एक शिष्य जिसने उसे एक संहिताकी शिक्षा दी थी (भाग० १२.७.३; ब्रह्मां० २.३५.६०; विष्णु० ३.६.१२)। (४) अरुणसुत संपातिके दो पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (मत्स्य० ६.३५)। (५) अक्रूरका एक नाम (वायु० ९६.५३)। (६) देवावृध और गान्धारीका एक पुत्र जो बड़ा ही धर्मात्मा, सत्यवादी तथा न्यायप्रिय था। सात्वतोंमें एक महारथ (भाग० ९.२४.९-११; वायु० ९६.१५; विष्णु० ४.१३.३-६, १०७; मत्स्य० ४४.५६.६०)। इनके तथा इनके पिताके उपदेशों का अनुसरण कर हजारों व्यक्तियोंने अमरत्व प्राप्त किया था पर उसने बहु यज्ञ किये तथा बहुत दान दिया। इसे स्यमंतक मणि मिली थी जिसे इसने श्रीकृष्णको दे दिया था जिन्होंने पुनः लौटा दी थी (ब्रह्मां० ३.७१.१३.८१-२, ९६, ९८)।

बभ्रुगण–पु० [सं०] ये कश्यपवंशज गोत्रकार ऋषि थे (मत्स्य० १९९.७)।

बभ्रुवाहन–पु० [सं०] (१) मणिपुरके राजा चित्रवाहनकी राजकुमारी चित्रांगदाके गर्भसे उत्पन्न अर्जुनका एक पुत्र (महाभा० आदि० २१६.२४ अर्जुनकी तीर्थयात्रा)। राजा चित्रवाहनने अपनी कन्या अर्जुनको देनेके पहले यह शर्त स्वीकार करा ली थी कि इसके गर्भसे जो एक पुत्र हो वह यहाँ (मणिपुरमें) रहकर इस कुलपरम्पराका प्रवर्तक होगा (महाभा० आदि० २१४.२४-२६)। अश्वमेधके अश्वके साथ अर्जुनके मणिपुर पहुँचनेपर पुत्र बभ्रुवाहन प्रचुर उपायन लेकर पितासे मिलने आया। क्षत्रियधर्मानुसार युद्ध न करनेपर अर्जुनने बभ्रुवाहनको फटकारा। तदुपरान्त इनका अर्जुनसे युद्ध हुआ था जिसमें अर्जुन मारे गये पर इनकी सौतेली माता उलूपीने (कौरव्य नामक नागकी कन्याने) संजीवनी मणिसे उन्हें पुनः जीवित कर दिया था (महाभा० अश्व० ७९.१.३७)। विवाहके शर्तके अनुसार अपने नाना चित्रवाहनकी मृत्युके पश्चात् ये ही (पुत्रिका-पुत्रका) मणिपुरके राजा हुए थे। महाभारतयुद्धमें यह प्रख्यात पात्र थे (भाग० ९.२२.३२; विष्णु० ४.२०.५०)। (२) भण्डके कुटिलाक्ष आदि कई सेनापतियोंमेंसे एक सेनापतिका नाम (ब्रह्मां० ४.२१.८५)।

बरद–पु० [सं०] एक जातिविशेष जिसे कल्कि परास्त करेंगे (ब्रह्मां० ३.७३.१०८)।

बर्बर–पु० [सं०] बर्बस, उत्तरी राज्यका एक प्राचीन जनपद तथा वहाँके निवासी जो जंगली थे। महाभारतके अनुसार इनकी गणना म्लेच्छजातियोंमें है। इनकी उत्पत्ति नन्दिनी (वशिष्ठ गऊ) के पार्श्वमार्गसे हुई थी (महाभा० आदि० १७४.३७)। ये महाराज सगरसे परास्त हुए थे (भाग० ९.८.५; ब्रह्मां० २.१६.४९.६५; १८.४४; ३१.८३; मत्स्य० १२१.४७; १४४.५७; वायु० ४५.११८; ४७.४२; ५८.८३; ९८.१०८) ये श्राद्धोंके लिए निषिद्ध समझे जाते हैं (मत्स्य० १६.१६; १२१.४३.४५)।

बर्बरि—पु० [सं०] अट्टहास, जो बीसवें द्वापरका विष्णुका एक अवतार कहा गया है, के चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (वायु० २३.१९३)।

बर्बरीक—पु० [सं०] भीमपुत्र घटोत्कच तथा कामकंटकटा (मुरदैत्यकी पुत्री=मौर्वी)का पुत्र जिसके बाल बर्बराकार (घुंघराले) होनेके कारण ही घटोत्कचने यह नाम रखा था। श्रीकृष्णके आदेशसे यह गुप्तक्षेत्र (महीसागरसंगमक्षेत्र) में सिद्धि प्राप्त करनेके लिए रहता था। देवियोंकी कृपासे इसे दुर्लभ बल मिला था तथा मगध देशके ब्राह्मण, विजय की संगतिसे इसे बड़ा यश मिला। गुप्तक्षेत्रमें यह अनजान से अपने पितामह भीमको मल्लयुद्धमें हरा चुका था पर महाभारतयुद्धमें यह श्रीकृष्ण द्वारा मारा गया था। पूर्वजन्ममें यह सूर्यवर्चा नामक यक्षराज था (स्कंद० माहे० कुमारिका-खंड, ६०.२०-२३, २६, ५५-५६, ६१)।

बर्वश—पु० [सं०] एक राज्य (जनपद)का नाम जहाँके अधार्मिकप्राय जनोंके विष्णुके अवतार प्रमति विध्वंसक कहे गये हैं (मत्स्य० १४४.५७)।

बर्हणाश्व—पु० [सं०] (वर्हणाश्व=ब्रह्मां०), निकुंभके पुत्र तथा कृशाश्वके पिताका नाम (भाग० ९.६.२५)।

बर्हि—पु० [सं०] बृहद्राजका पुत्र, कृतंजयका पिता तथा रणञ्जयका दादा (भाग० ९.१२.१३)।

बर्हिकेतु—पु० [सं०] सगरके सुमतिके गर्भसे उत्पन्न साठ पुत्रोंमेंसे चार, जो भगवान् कपिलकी नेत्रज्योतिसे जले न थे, मेंसे एक पुत्र (ब्रह्मां० ३.६३.१४७; वायु० ८८.१४९)।

बर्हिणद्वीप—पु० [सं०] भारतवर्षके दक्षिण समुद्रमें का द्वीपपुंज (वायु० ४८.१२)।

बर्हिपिच्छधर—पु० [सं०] मयूरके पंखोंका गुच्छा जो नागा साधुओंका धार्मिक प्रतीक समझा जाता है। 'विष्णु-माया-मोह' असुरोंके समक्ष इसी रूपमें प्रकट हुए थे (विष्णु० ३.१८.२)।

बर्हियोगगदायन—पु० [सं०] काश्यपवंशका गोत्रकार एक ऋषिगण (मत्स्य० १९९.४)।

बर्हिषद्—पु० [सं०] (प्राचीनबर्हि) हविर्धान और हविर्धानीके छह पुत्रोंमेंसे एक पुत्र जिसने बह्माके आदेशानुसार समुद्रकी एक सुयोग्यकन्या शतद्रुतिसे विवाह किया था। शुक्रीकी तरह शतद्रुतिसे विवाह करनेके लिए भी अग्नि बेचैन थे। शतद्रुतिसे बर्हिषद्के १० पुत्र हुए जिनका सामूहिक नाम प्रचेतागण था। इनका वैदिक ज्ञान अच्छा था और यह सदा वैदिक यज्ञादि क्रिया करते थे (भाग० ४.२४.८, १३)। इसके उपरांत नारदने आकर इन्हें जीव तथा परमात्माका सम्बन्ध और पुरंजनकी कथासे पशुबलिकी निरर्थकता सिद्ध कर दी। अतः यह राजर्षि राज्य पुत्रोंको दे तप करने कपिल मुनिके आश्रम चले गये जहाँ उन्होंने मोक्ष प्राप्त किया (भाग० ४.२५.३-६२; अ० २६-२९)।

बर्हिषद—पु० [सं०] पितृगण, जो साग्निक और निरग्निक दोनों हैं, मेंसे साग्निकवर्गके एक पितृगण। सोमपद लोकके पितरोंका एक वर्ग। जो गृहस्थ यज्ञादि करते रहते हैं वे मृत्युके पश्चात् इसी वर्गके पितृ होते हैं (ब्रह्मां० २.१३.६, २८, ३२; ३.१०.५३.६६; २.२३.७५; २८.१५, ७२; वायु० ३०.६.७; ५६.१३.६७; ११०.१०; विष्णु० १.१०.१८; २.१२.१३)। ये 'मास' कहे जाते हैं, यज्ञ करते तथा अग्निहोत्री होते हैं और ऋतुओं तथा महीनोंके प्रतीक होते हैं। वैभ्राजमें स्वधासे इनकी अग्निष्वात्ता और बर्हिषद पितरोंकी दो मानस-पुत्रियाँ मैना तथा धारणी हुईं। बर्हिषदोंने अपनी मानसी पुत्री धारणी मेरूको ब्याह दी। अग्निष्वात्ता पितृगणने अपनी मानसी पुत्री हिमवान्को ब्याही (मत्स्य० १५.१, १२६.६९)।

बर्हिसादी—पु० [सं०] आंगिरसवंशज एक प्रवरप्रवर्तक ऋषिका नाम (मत्स्य० १९६.१३)।

बर्हिष्मती—स्त्री० [सं०] (१) ब्रह्मावर्त्त स्थित स्वायंभुव मनुकी राजधानी (भाग० ३.२२.२९)। (२) विश्वकर्माकी एक पुत्री जो प्रियव्रतकी रानी थी (भाग० ५.१.२४)।

बर्हिष—पु० [सं०] स्वर्गमें विभ्राज नामक प्रकाशमय लोक है जहाँ बर्हिषद पितरोंका निवास है। श्रद्धासे श्राद्ध करनेवाले तथा यज्ञ करनेवाले सद्गृहस्थ इसी लोकमें सानन्द निवास करते हैं (मत्स्य० १५.२; १०२.२१; १४१.४,१३,१६)।

बलंधरा—स्त्री० [सं०] यह काशिराजकी कन्या थी। इनके विवाहका शुल्क बल ही रखा गया था अर्थात् जो अधिक बलवान् हो उसीको यह ब्याही जायगी। पाण्डुसुत भीमसेन महाबली थे उनसे इनका विवाह हुआ। पवनसुत भीमसेन की एक पत्नी, जो सर्वगकी माता थी (महाभा० अश्व० १५.७७)।

बल—पु० [सं०] (१) स्थलके पिताका नाम (भाग० ९.१२.२ ब्रह्मां० ३.६३.२०४)। (२) अतलका निवासी मयका एक पुत्र जिसने ९६ जादूके तिलस्माती खेलोंकी सृष्टि की थी जिनमें कुछ तो अभीतक किये जाते हैं। जँभाई (जृंभा) लेनेपर स्वरिणी, कामिनी तथा पुंश्चली नामक तीन वर्गकी स्त्रियाँ इसके मुखसे उत्पन्न हुई थीं जो उस प्रदेशमें आनेवालोंको 'हाटकरस' प्रदान करतीं जिससे वे सिद्धोंकी नाईं रह सकते थे। देवासुरसंग्राममें इन्द्रसे यह लड़ा था और मारा गया (भाग० ५.२४.१६; ८.११.१-२१, २८)। (३) रोहिणी तथा वसुदेवके कृत आदि आठ पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (भाग० ९.२४.४६; ब्रह्मां० ३.१७१; विष्णु० ५.८.१; ३३.१२)। बलिके असुर अनुगामियोंपर इसने आक्रमण किया था (भाग० ८.२१.१६)। (४) श्रीकृष्ण तथा माद्रीके दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (भाग० १०.६१.१५)। (५) अनायुषाके पाँच पुत्रोंमेंसे एक पुत्र तथा निकुंभ और चक्रवर्माका पिता (ब्रह्मां० ३.६.३१)। (६) शुकी तथा गरुड़के छह पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (ब्रह्मां० ३.७.४५०)। (७) दलका पुत्र तथा उलूकका पिता (ब्रह्मां० ३.६३.२०४; वायु० ८८.२०४)। (८) हविर्धानके आग्नेयीसे उत्पन्न छह पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (मत्स्य० ४.४५)। (९) विश्वामित्र आदि १३ कौशिक ब्रह्मिष्ठोंमेंसे एक (मत्स्य० १४५.१११)। (१०) नारायण और श्रीका एक पुत्र (वायु० २८.२) तथा तेजका पिता (ब्रह्मां० २.११.३)।

बलक—पु० [सं०] (१) एक यक्ष जो मणिवर तथा देवजनीके ३० पुत्रोंमें एक पुत्र था (ब्रह्मां० ३.७.१२९)। (२) दनुका एक पुत्र (वायु० ६८.९)। (३) प्रद्योतका पुत्र तथा

विशाखयूपका पिता (विष्णु० ४.२४.३-४)।

बलदेव–पु० [सं०] रोहिणीके गर्भसे उत्पन्न वसुदेवके पुत्र तथा ककुद्मीकी पुत्री सुव्रताके पति। ये कृष्णके बड़े भाई थे (भाग० ९.३.३३-६; वायु० ८६.२९)।

बलध्रव–पु० [सं०] धर्म और साध्याके बारह साध्यदेव पुत्रोंमेंसे एक साध्य देवका नाम (मत्स्य० १७१.४३)।

बलबंधु–पु० [सं०] (१) रैवतक मनुके दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (ब्रह्मां० २.३६.६४; विष्णु० ३.१.२३)। (२) किष्किंधाके अधिपति वालीके सामंत तथा सेनापति हजारों प्रधान बन्दरोंमेंसे एक प्रधान बन्दरका नाम (ब्रह्मां० ३.७.२३९)। (३) भृगु, जो दशम द्वापरके अवतार माने गये हैं, के चार पुत्रोंमेंसे एक (वायु० २३.१४९; ६२.५५; ६३.१६)।

बलबीर–पु०[हिं०] बल=बलराम+वीर=भाई=श्रीकृष्ण।

बलभद्र–पु० [सं०] (१) बलदेवजीका एक नाम (ब्रह्मां० ३.३६.२४; वायु० ९६.८३; तथा विष्णु० ४.१३.९९); बलदेव। (२) शाकद्वीपके सीमा निर्धारित करनेवाले सात पर्वतोंमेंसे एक पर्वत (भाग० ५.२०.२६)।

बलभित्–पु० [सं०] इन्द्रका एक नाम (भाग० ६.१२.३२)।

बलमोहिनी–स्त्री० [सं०] अन्धकासुरके रक्तपानार्थ शिवजी द्वारा सृष्ट कई मानसपुत्री मातृकाओंमेंसे एक मानसपुत्री मातृकादेवी (मत्स्य० १७९.३०)।

बलन्धन–पु० [सं०] नाभागका पुत्र तथा वत्सप्रीतिका पिता (विष्णु० ४.१.२०)।

बलराम–पु० [सं०] (बलदेव, बलभद्र, सीरायुध, इन्हींके कुछ नाम हैं)। वसुदेवके एक पुत्र तथा श्रीकृष्णके बड़े भाई जो रोहिणीके गर्भसे उत्पन्न हुए थे बलदेव (दे० बलभद्र (१) तथा जिनमें विष्णुका अंश था (विष्णु० ४.१५. १९; ५.८. ११; ९.३४; १७.२३; १८.११.३६)। श्रीकृष्णके साथ यह मथुरा और गोकुलमें रहे पर स्वभावके बड़े उद्दण्ड थे (भाग० १०.३८.२३, २८, ३२, ३४, ३७-४०, १२.१०.४१; १९. २४.२९; ११.१२.१०)। योगमायाने हरिके धामको देवकी के गर्भसे रोहिणीके गर्भमें बदल दिया था अतः इन्हें 'संकर्षण' कहते हैं, इनके सुन्दर स्वरूपके कारण इन्हें 'राम' और अपार शक्तिके कारण 'बल' कहते थे। इन्होंने धनेकु असुरको मारा तथा प्रलम्बको मुष्टिप्रहारसे मार डाला (भाग० १०.११.४९, ५३; १५. २८-३८; १६.२२; १७. १५; १८.३.२४-३२; २६.११)। शंखचूड़के वंदीगृहसे छुड़ायी गयी स्त्रियाँ श्रीकृष्णने इन्हींके संरक्षणमें दी तथा शंखचूड़ामणि इन्हें उपहारमें मिली (भाग० १०.२५.३०; ३४.२०, ३०-३२)। मल्लयुद्धमें इन्होंने कंसके मुष्टिक, कूट आदिको मार कंसके आठ भाइयोंका अपने परिघसे वध कर डाला था (भाग० १०.४३.१६, ३०, ४०; ४४.१. १२, १९, २४-५, २६, ४०-४१; ४५.२०.२६-३६; ३७. ४९; ६६.११; ४७ अ०; विष्णु० ५.२४.८.२१)। सांबको कौरवोंके यहाँसे लक्ष्मण सहित ले आये थे (भाग० १०. ६८.१४-५३)। नैमिपारण्यमें इन्होंने अपमान करनेके कारण रोमहर्षणका वध कर डाला। तदुपरांत ब्रह्महत्याका प्रायश्चित किया। इनकी तीर्थ यात्राके लिए द्रष्टव्य (भाग० १०.६९.३१; ७१.१३; ७८ [९५ (५) २६-७] १७-४०; ७९.५-३२)। जिस प्रकार वीरभद्रने पूषाके दाँत तोड़ डाले थे वैसे ही इन्होंने कलिंगराजके दाँत तोड़े (भाग० ४.५. २१)। अपने ही आदमियोंसे यह मारे गये तथा इनकी पत्नियाँ सती हुईं थीं। इनका प्रधान अस्त्र हल और मूसल था। इन्होंने सूत पौराणिककी धृष्टतासे अप्रसन्न हो उन्हें मार डाला था। यह रेवतीके पति तथा निशठ और उल्मुकके पिता थे (विष्णु० ४.१.९१-६; ५.२५ वाँ अध्या०) यह सांदीपनिके शिष्य थे और श्रीकृष्णके प्रायः सब कामोंमें यह उनके सहायक रहे।

बलवर–पु० [सं०] विप्रचित्ति दानवश्रेष्ठकी पत्नी सिंहिकाके गर्भसे उत्पन्न १४ पुत्रों, जिनका सामूहिक नाम सैंहिकेय था, मेंसे एक सैंहिकेय (वायु० ६८.१८)।

बलसागर– पु० [सं०] वालीके सामन्त तथा सेनानायक सैकड़ों महाबली प्रधान बन्दरोंमेंसे एक प्रधान बन्दर (ब्रह्मां० ३.७.२३६)।

बलसिद्धि–स्त्री० [सं०] रससिद्धि, मोक्षसिद्धि, खड्गसिद्धि, पादुकासिद्धि आदि कई योगसिद्धियोंमेंसे एक योगसिद्धि (ब्रह्मां० ४.३६.५२)।

बला–स्त्री० [सं०] (१) अत्रिकी १० पत्नियोंमेंसे एकका नाम (ब्रह्मां० ३.८.७५)। (२) अन्धकासुर रक्तपानार्थ शिवजी द्वारा सृष्ट कई मानस पुत्री मातृकाओंमेंसे एक मानस-पुत्री मातृका (मत्स्य० १७९.१२)। (३) एक महौषधिका नाम (मत्स्य० २१८.२३) जो देवताओंके प्रथम स्नानके समय उपयोगमें आती है (मत्स्य० २६७. १४)।

बलाक–पु० [सं०] (१) एक राजाका नाम जो पुरुके पुत्र और जह्नुके पौत्र तथा अजकके पिता थे (भाग० ९.१५.३)। (२) एक राक्षसका नाम। (३) शाकपूर्ण ऋषिके चार शिष्योंमेंसे एक शिष्यका नाम (विष्णु० ३.४.२४)। (४) जातुकर्ण्यके चार शिष्योंमेंसे एक शिष्यका नाम (भाग० (भाग० १२.६.५८)।

बलाकगण–पु० [सं०] मेघोंकी तीन श्रेणियाँ कही गयी हैं—(१) आग्नेय, ब्रह्मज तथा पक्षज या पक्षसंभव। इनमेंसे आग्नेय वर्गके जलद। ये बलाका गर्भधारी कहे गये हैं (ब्रह्मां० २.२२.३६)।

बलाकाश्व–पु० [सं०] (१) हरिवंशके अनुसार एक राजा जो अजकके पुत्र तथा कुशके पिता थे (ब्रह्मां० ३.६६.३०; ७४.१२६; वायु० ९१.६०-६१; विष्णु० ४.७.८)। (२) जह्नुवंशोत्पन्न एक राजा (भाग० ९.१५.३)।

बलाकी–पु० [सं०] धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (महाभा० आदि० ११६.७)।

बलाकेश्वर–पु० [सं०] नर्मदा तटपरका एक तीर्थ। इस तीर्थमें स्नान करनेका फल राजसिंहासन-प्राप्ति कहा गया है (मत्स्य० १९१.१९)।

बलाग्र–पु० [सं०] आठ त्रसरेणुओंका १ रथरेणु आठ रथरेणुओंको १ बलाग्र (वायु० १०१.१२०)।

बलारक–पु० [सं०] दत्तात्रेयगण (वायु० ७०.७८)।

बलाराति–पु० [सं०] इन्द्रका एक नाम—दे० (इन्द्र)।

बलाहक–पु० [सं०] (१) श्रीकृष्णके रथके चार घोड़ोंमेंसे एकका नाम (भाग० १०.५३.५; ८९.४९)। (२) एक

दैत्यका नाम। (३) कश्यप और कद्रूके पुत्र हजार काद्रवेय नागोंमेंसे एक काद्रवेय नाग (ब्रह्मां० ३.७.३४; मत्स्य० ६.४०; वायु० ६९.७१)। (४) शाल्मलि-द्वीपके सात प्रधान पर्वतोंमेंसे एक (तृतीय) पर्वतका नाम (ब्रह्मां० २.१९. ३७; वायु० ४९.३४; विष्णु० २.४.२६)। यह इन्द्रके भयसे समुद्रमें जा छिपा था (ब्रह्मां० २.१८.७८; मत्स्य० १२१. ७२; १२२.५५; वायु० ४७.७५)। (५) वालीके सामन्त तथा सेनापति महाबलवान् अनेक प्रधान बन्दरोंमेंसे एक प्रधान वानर (ब्रह्मां० ३.७.२४०)। (६) भण्डके कई सेनापतियोंमेंसे एक सेनापतिका नाम (ब्रह्मां० ४.२१.७७)। (७) कुशद्वीपके कुमुद आदि सात पर्वतोंमेंसे एक (तृतीय) पर्वत (मत्स्य० १२२.५४)। (८) जयद्रथ (सिन्धुराज) का एक भाई, जो द्रौपदीहरणके समय जयद्रयके साथ आया था (महाभा० वन० २६५.१२ । (९) कीकसके प्रथम सात पुत्र जो सब ३०० अक्षौहिणी सेनाके सेनापति थे। ये ललितादेवीकी सेनाके विरुद्ध विभिन्न वाहनोंपर सवार होकर भण्डासुरकी ओरसे लड़ने चले थे। ये सूर्यके उपासक थे तथा इन्हें वर प्राप्त था कि इनसे कोई आँख मिलाकर नहीं देख सकता था। देखनेवाला इनकी ओर खिंच जाता था, अतः ललिताकी सेनामें गड़बड़ी मच गयी। ललिताने इसपर ‘दंडनाथतिरस्करणिका’से चारों ओर अंधकार ही अंधकार कर दिया जिससे असुरोंको कुछ दिखायी नहीं पड़ता था। यह थोड़ी देरतक रहा, जिसकी-जिसकी दृष्टि मंद पड़ती गयी उसका मुण्ड काट लिया जाता था (ब्रह्मां० ४.२४.४-९२)। (१०) संवर्त आदि सात प्रलय-मेघोंमेंसे एक प्रलयकालीन मेघका नाम (मत्स्य० २.८)।

बलि—पु० [सं०] (१) दैत्य जातिका एक राजा जो विरोचन तथा सुरुचिका पुत्र तथा प्रह्लादका पौत्र एक महाप्रतापी असुर था। पूर्वजन्ममें देवताओं तथा ब्राह्मणोंकी निन्दा करनेवाला यह एक महापापी जुआरी था, पर किसी कर्मविपाकसे यह विरोचन पुत्र हुआ (भाग० ५.२४. १८; ६.१८.१६, १७; १०.५१(५) १; ८.६.२७; २०.१६; १०.६२.२-३; ब्रह्मां० ३.५.३१.४; ७२.९; मत्स्य० ६.१०; वायु० ६७.८२-८५; विष्णु० १.२१.१-२)। अशना, विंध्यावली तथा सुदेष्णा इसकी पत्नियाँ थी। अशनाके गर्भसे उत्पन्न वाण आदि इसके सौ पुत्र थे (भाग० ६.१८. १७) कुंभनाभ, गर्दभाक्ष और कुशि इसके अन्य प्रसिद्ध पुत्र तथा शकुनी और पूतना दो पुत्रियाँ थी। एक बार नर्मदाके उत्तरी तटपर जब बलि भृगुकच्छमें अश्वमेध यज्ञ कर रहा था विष्णु वामनरूपमें वहाँ गये तथा बलिने उनसे कुछ दान लेनेकी प्रार्थना की पर उन्होंने केवल ३ पग भूमि माँगी। शुक्रने मना किया पर बलिके न माननेपर शुक्रने श्रीभ्रष्ट होनेका शाप दिया था और विष्णुने (वामन) इसे पाताल भेज दिया था। बलिसे ३ पग भूमि मिल जानेपर वामनने अपना विश्वरूप प्रकट किया और दो पगमें पृथ्वी और आकाश नाप लेनेके पश्चात् तीसरा पग रखनेके लिए स्थान माँगा। बलि हतबुद्धि था, अपना मस्तक सामने रख दिया इसीपर हरिने उसे पाताल भेज दिया। विंध्यावली, ब्रह्मा, आदिकी प्रार्थनापर प्रसन्न हो भगवान्से सावर्णिमन्वंतरका इंद्र इसके पूर्व सुतलका राज्य प्रदान किया। भगवत्कृपासे यह अक्षयकीर्त्तिका भागी हुआ (भाग० ८.१८.२१-३२; १९.२-२७; ३०-४३; २०.२-१५, १६-४४; २१.१४-२४, २८-३४; २२.२-१७, २०-३, ३१-६; १.३.१९; ५.२४.१८; १०.६२.२-३; ७२.२१, २४-५; ११.४.२०; ब्रह्मां० ३.३४.३९; ७२.६८, ७७, ९०; मत्स्य० १३५.२; १६१.७८; वायु० ७८.१३; ९७.६९, ८९-९०)। प्रह्लाद तथा इसकी प्रार्थनासे प्रसन्न हो विष्णु एक बार इसके द्वारपालतक रहे। यह सुतल चला गया तथा अक्षुण्ण ख्याति प्राप्त करनेके पश्चात् सत्संगसे इसे मोक्ष मिला (भाग० ८.२३.२-१२; ५.२४.२३-७; १०.३८.१६; ४१.१४; ११.१२.५)। (२) आठवें मन्वन्तरमें होनेवाले इन्द्रका नाम। (३) सुतप (हिम=वायु०) का एक पुत्र तथा अँग. वंग, सुह्म, पुंड्र और कलिंग नामक दीर्घतमासे उत्पन्न ५ क्षेत्रज पुत्रोंका पिता। अंगके नामपर अंग देश बना (विष्णु० ४.१८.१३.१४)। पाँच पुत्रोंके नामपर उसके पाँच राज्यके भी नाम थे (भाग० ९.२३.४-५; ब्रह्मां० ३.७४.२५-१००; ४.३३.३७; मत्स्य० ४८.२३-२८; ५८.६८-७८; वायु० ९९. २७-३४)। (४) राज्यकी ओरसे प्राप्त होनेवाली सुरक्षाके लिए प्रजा द्वारा जो राज्यकर दिया जाता है, उसका नाम (भाग० १.१३.४०-४१; ब्रह्मां० २.३१.४८)। (५) रैवत मनुका एक पुत्र (भाग० ८.५.२)। (६) बलि कर्म, देवताओं तथा श्राद्धोंमें (ब्रह्मां० ३.७.४१०; ११.३४) गृह, देवालय आदिके निर्माणके समय भी बलि दी जाती है (मत्स्य० ५२.१४; ५८.४७; ५९.९; १७९.८०; २५७.२३; १६४.२९), भूतोंकी बलिसे पूजा की जाती है (विष्णु० ३. ९.१०)। (७) अत्रिकुलके एक त्र्यार्षेय प्रवरप्रवर्तक ऋषिका नाम (मत्स्य० १९७.६)। (८) सातवें तल=पातालका एक असुर (वायु० ५०.४१)। (९) अंगिरस शाखाके ३३ श्रेष्ठ मन्त्रकृतोंमेंसे एक मंत्रकृत्का नाम (वायु० ५९.१००)। (१०) दनायुषाके पाँच महाबली महासुर पुत्रोंमेंसे एक पुत्र तथा कुंभिल और चक्रवर्माका पिता। चक्रवर्मा ही पूर्व जन्ममें कर्ण था (वायु० ६८.३०-३२)। (११) सावर्णिमन्वंतरके इंद्रका नाम। यह विरोचन-सुत था (विष्णु० ३. ३.१८)। दुर्वासा ऋषिके शापसे निःश्रीक देवराज इन्द्रकी विजयश्री दैत्यराज विरोचनसुतको प्राप्त हुई और नित्यश्री भगवान् नित्य-पुरुष हरिको प्राप्त हुई (ब्रह्मां० ४.६.३०)।

बलिक—पु० [सं०] एक नागका नाम।

बलिनन्दन—पु० [सं०] बलिपुत्र वाणासुरका एक नाम। —दे० वाणासुर।

बलिपात्र—पु० [सं०] पलाश-पात्रमें बलि देनेसे ब्रह्मवर्चस बढ़ता है। अश्वत्थके पात्रमें बलि देनेसे राज्य प्राप्ति होती है, प्लक्ष-पात्रमें बलि देनेसे सर्वभूताधिपत्य-प्राप्त होता है न्यग्रोधके पात्रमें बलि देनेसे पुष्टि होती है, मधूक पात्रमें बलि देनेसे उत्तम सौभाग्य प्राप्त होता है, फल्गु-पात्रमें बलि देनेसे सर्वकामनाओंको प्राप्त करता है, बिल्व-पात्रमें बलि देनेसे लक्ष्मी, मेधा और आयुष्यकी वृद्धि होती है। वेणु-पात्रमें बलि देनेसे वृष्टि उत्तम होती है। जो व्यक्ति इन पात्रोंमें बलि देता है उसे सब यज्ञोंका फल प्राप्त होता है (वायु० ७४.३२; ७५.१-६; ब्रह्मां० ३.११.३४-४०)।

बलिपुच्छक—पु० [सं०] (वली=भाग०) कण्व राजा सुशर्माका एक अंध्रजातिका भृत्य जो अपने स्वामीको मार स्वयं राजा वन वैठा था। इसके पश्चात् इसका भाई कृष्ण राजा हुआ (विष्णु० ४.२४.४३-४; भाग० १२.१.२२)।

बलिबाहु—पु० [सं०] जाम्बवतीके भाई तथा जाम्बवान्के जयन्त, सर्वज्ञ आदि १६ पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (ब्रह्मां० ३.७.३०३)।

बलिभाग—पु० [सं०] वे राज्यकर जिन्हें कलियुगके राजा वसूल तो कर लेते हैं पर वदलेमें सुरक्षाकी व्यवस्था नहीं करते (वायु० ५८.४)।

बलिवैश्वदेव—पु० [सं०] भूतयज्ञ नामक एक महायज्ञ जो पाँच महायज्ञोंमें चौथा है (मनु० ३.७०)।

बली—पु०[सं०] कृतवर्माका एक पुत्र जिसका विवाह श्रीकृष्णकी पुत्री चारुमतीसे हुआ था (भाग० १०.६१.२४)।

बलीन—पु० [सं०] एक दैत्यका नाम (हि० वि० को)।

बलेक्षव—पु० [सं०] वशिष्ठवंशज एक त्र्यार्षेय प्रवरप्रवर्तक ऋषिगण (मत्स्य० २००.१२)।

बल्गूतक—पु० [सं०] अत्रिवंशका एक मन्त्रकार ऋषि (वायु० ५९.१०४)।

बल्लव—पु० [सं०] अज्ञातवासके समय राजा विराटके यहाँ भीमसेनका यही नाम था (महाभा० विराट० २.१)।

बल्वल—पु० [सं०] (कल्कल और वल्कल=ब्रह्मां०) एक दैत्य-पुत्रका नाम जो वृत्रासुरका साथी था। यह इन्द्रसे लड़ा पर श्रीकृष्णसे मारा गया (भाग० २.७.३४; ३.३.११)। यह इल्वल दैत्यका पुत्र था (भाग० ६.१०.२०) और नैमिषारण्यके यज्ञोंमें मद तथा रक्त गिरानेके कारण ऋषियोंकी प्रार्थनापर श्रीकृष्णके भाई वलदेवने इसे मारा था (भाग० १०.७८.३८-९; ७९.१-६)।

बहिर्गिरि—पु० [सं०] एक जाति विशेष तथा एक पूर्वी जनपद (मत्स्य० ११४.४४)।

बहुकेतु—पु० [सं०] एक पर्वतका नाम (रामायण)।

बहुगण—पु० [सं०] वालीका सामन्त एक प्रधान वन्दर (ब्रह्मां० ३.७.२४४)।

बहुगत—पु० [स०] पुरुवंशी सुद्युका पुत्र तथा संयातिका पिता (विष्णु० ४.१९.१)।

बहुगव—पु० [सं०] (१) पुरुवंशके एक राजाका नाम (भाग०)। (२) सुद्युका एक पुत्र तथा संयातिका पिता (भाग० ९.२०.३)।

बहुगवी—पु० [सं०] राजा धुंधुका पुत्र तथा संजाति(संयाति ?) का पिता (वायु० ९९.१२२)।

बहुनेत्र—पु० [सं०] नर्मदातटपर स्थित एक तीर्थ जहाँ त्रयोदशीको जाना चाहिये। यहाँ स्नानमात्रसे सब यज्ञोंका फल प्राप्त हो जाता है (मत्स्य० १९१.१४)।

बहुपुत्र—पु० [सं०] पाँचवें प्रजापतिका नाम जिनका विवाह दक्षकी दो पुत्रियोंसे हुआ था जिनसे चार विद्युत् रूप पुत्रियाँ हुई थीं (ब्रह्मां० ३.१.५४; २.३७.४५; वायु० ६५.५३; ६६.७७; विष्णु० १.१५.१०४, १३५)।

बहुपुत्रिका—स्त्री० [सं०] स्कंदकी अनुचरी एक मातृका (महाभा० शल्य० ४६.३)।

बहुपुत्री—स्त्री० [सं०] अन्धकासुररक्तपानार्थ शिवजी द्वारा सृष्ट वहुत-सी मानसपुत्री मातृकाओंमेंसे एक मानसपुत्री मातृका (मत्स्य० १७९.१९)।

बहुभूमि—पु० [सं०] वृष्णि-पुत्र चित्रकके पृथु, विपृथु आदि १२ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (ब्रह्मां० ३.७१.११५; वायु० ९६.११४)।

बहुसूलक—पु० [सं०] प्रयागस्थित प्रजापति-क्षेत्रका एक सर्प (मत्स्य० १०४.५)।

बहुरथ—पु० [सं०] रिपुंजयका एक पुत्र तथा सुवीरका पौत्र (भाग० ९.२१.३०) यह पौरववंशका अन्तिम व्यक्ति था (विष्णु० ४.१९.५५)।

बहुरूप—पु० [सं०] (१) शाकद्वीपके अधिपति मेधातिथिके सात पुत्रोंमेंसे एक पुत्र तथा प्रियव्रतके पौत्रका नाम (भाग० ५.२०.२५; विष्णु० १.१५.१२२)। (२) ग्यारह रुद्रों, जो भूत तथा सरूपाके पुत्र थे, मेंसे एक रुद्रका नाम (भाग० ६.६.१८; मत्स्य० ५.२९)।

बहुरूपा—स्त्री० [सं०] अग्निकी सात जिह्वाओंमेंसे एक—दे० अग्नि।

बहुल—पु० [सं०] (१) कश्यप आदि वहुतसे प्रजापतियोंमेंसे एक (वारहवाँ) प्रजापतिका नाम (ब्रह्मां० ३.१.५४; वायु० ६५.५४)। (२) कश्यप और कद्रूके हजार पुत्रोंमें प्रधान २६ सर्पोंमेंसे एक प्रधान एक हजार फणोंवाला सर्प (मत्स्य० ६.४१)।

बहुला—स्त्री० [सं०] (१) एक गाय जिसके सत्यव्रतकी कथा पुराणोंमें दी हुई है। इसके नामपर भाद्रपद कृष्णा ४ तथा माघकृष्णा ४ को वहुतसे लोग व्रत करते हैं। (२) एक देवीका नाम (कालिका०)। (३) मार्कण्डेयपुराणानुसार एक नदीका नाम।

बहुलाचतुर्थी—स्त्री० [सं०] मध्यप्रदेशमें भादो कृष्णा ४ तथा माघ कृष्णा चौथको होनेवाला एक व्रत—दे० वहुला।

बहुलावन—पु० [मं०] वृंदावनके ८४ वनोंमेंसे एक जहाँ वहुला गायने व्याघ्रके साथ अपना सत्य व्रत निवाहा था (भाग०)।

बहुलाश्व—पु० [सं०] (१) विदेहका एक राजा जो मिथिलासे राज्य करता था। यह द्युतिका पुत्र तथा कृतिका पिता था और वड़ा कृष्णभक्त था। इसकी भक्तिसे प्रसन्न हुए कृष्ण भगवान् इसपर अनुग्रह करने मिथिला गये थे (भाग० ९.१३.२६; १०.८६.१६, २४-३७; ब्रह्मां० ३.६४.२३; वायु० ८.२३; विष्णु० ४.५.३१)।

बहुविध—पु० [सं०] पीतायुध-सुत राजा धुंधुका पुत्र तथा संपाति (संयाति ?)का पिता (मत्स्य० ४९.३)।

बहुवीती—पु० [सं०] आंगिरस कुलका पञ्चार्षेय प्रवरप्रवर्तक एक ऋषि (मत्स्य० १९६.२२)।

बहूदक—पुं० [सं०] कामरूपका एक अति पवित्र कुण्ड जो महीसागर संगम तीर्थमें नारदके प्रयाससे प्रकट हुआ था (स्कंद० माहे० कुमारिका-खंड)।

बहूदन—पु० [सं०] एक राज्य जिसमें पुरंजन मुखरूपी प्रवेश द्वारसे गया था, लाक्षणिक अर्थ=भोजन (भाग० ४.२५.४९; २९.१२)।

बह्लीक—पु० [सं०] पितृदेव जिनके लिए हम लोगोंका कृष्णपक्ष ही दिन है तथा शुक्लपक्ष रात (वायु० ५६.८७)।

वहवृच–पु० [सं०] श्रेष्ठ श्रुनर्षियों, जो संख्यामें ८६ हैं, मेंसे एक श्रुतर्षिका नाम (ब्रह्मां० २.३३.२)।

वह्वोद–पु० [सं०] तपस्वियोंके–संन्यासियोंके–चार वर्गोंमेंसे एक वर्ग (भाग० ३.१२.४३)।

बाड़वगण–पु० [सं०] ब्रह्मक्षेत्रके ब्राह्मण (वायु० ५९.१२४)।

बाण–पु० [सं०] (१) दनु तथा कश्यपके सैकड़ों दानवपुत्रोंमेंसे एक पुत्र (मत्स्य० ६.२०; २४५.१२)। (२) विकुक्षिके पुत्रका नाम जो इक्ष्वाकुवंशका था। (३) अशनाके गर्भसे उत्पन्न राजा वलिके १०० पुत्रोंमेंसे सवसे वड़े महापराक्रमी पुत्रका नाम (भाग० ६.१८.१७)। यह लोहिनीका पति तथा इन्द्रधन्वाका पिता था। शिववरदानके फलस्वरूप देवता लोग अनुचरके समान इसके साथ रहा करते थे और शंकर स्वयं युद्धमें इसकी सहायता करते थे। इसकी राजधानी पातालकी शोणितपुरी थी (भाग० ६.१८.१७-१८; १०.६२.२; ८८.१६; ब्रह्मां० ३.५.४२-४; ७३.१०१; ४.२९.१२३; मत्स्य० ६.१०-१३; वायु० ६७.८३; विष्णु० १.२१.२; ५.१२४)। यह ऊषाका पिता तथा अनिरुद्धका श्वशुर था। पूर्वजन्ममें ऊषा तिलोत्तमा अप्सरा थी और दुर्वासाके शापसे वाणकी पुत्री हुई। इंद्र-वलिके देवासुर-संग्राममें इसने भाग लिया था तथा सूर्यसे लड़ा था। यह कंस तथा जरासंधका मित्र था और जरासंधके सहायतार्थ इसने सेना भेजी थी (भाग० ८.१०.१९, ३०; १०.२.२; ३६.३६; [५१(५)१-९८]। इसने ऊषाके यहाँ अनिरुद्धको देख उन्हें वंदी कर लिया था। वृष्णियोंने सात्यकिके साथ इसपर आक्रमण किया। वाणका श्रीकृष्णसे युद्ध हुआ, वाण की माता सिरके वाल खोले विलकुल नग्न युद्ध करने श्रीकृष्णके सामने आ गयी। वाणकी हजार भुजाओंमें केवल चार भुजाएँ वच गयीं शेष श्रीकृष्णके हाथों काटी गयी (वायु० ९८.१०२) तथा इसने भगवान् शङ्करके अनुग्रहसे अमरत्व प्राप्त किया (मत्स्य० अ० १८७-१८८)।

बाणगंगा–स्त्री० [सं०] हिमालयके सोमेश्वर गिरिसे निकली एक पवित्र नदी जो रावणके वाण चलानेसे निकली थी, इसीसे इसे वाणगंगा कहते हैं (रामायण)।

बाणवती–स्त्री० [सं०] वाणासुरकी पत्नीका नाम (हि० श० सा०)।

बाणासुर–पु० [सं०] राजा वलिके १०० पुत्रोंमेंसे एक जो सवसे वड़ा, वीर तथा पराक्रमी था—दे० वाण (३)। अनौपम्या नामकी इसकी पत्नीको नारदने एक मन्त्र सिखाया था जिससे यह सवको प्रसन्न कर सकी थी (मत्स्य० १८७.२५-४५)।

बादरायण–पु० [सं०] अच्युतके अवतार, वेदव्यासका एक नाम जिन्होंने वेदका भिन्न-भिन्न खण्डोंमें विभाजन किया (भाग० १.१.७; मत्स्य० १४.१६)।

बादरायणि–पु० [सं०] वादरायण (व्यास) के पुत्र शुकदेवका एक नाम (भाग० १.७.११)।

बादरि–पु० [सं०] पाँच श्याम पराशरोंमेंसे एक श्याम पराशरका नाम (मत्स्य० २०१.३७)।

बाडेय–पु० [सं०] एक दैत्य-गण जिसमें हिरण्याक्षके पौत्र तथा प्रपौत्र सम्मिलित हैं, तारकामयसंग्राममें ये लोग हजारोंकी संख्यामें मारे गये थे (वायु० ६७.६९)।

बाध्यश्व–पु० [सं०] १९ मन्त्रकृत् भृगुओंमेंसे एक मंत्रकृत् भृगु (ब्रह्मां० २.३२.१०६)।

बाभ्रव्य–पु० [सं०] (१) कामशास्त्रका एक लेखक, जिसका नामान्तर सुवालक था तथा लोगोंमें पाञ्चाल नामसे भी प्रसिद्ध था (मत्स्य० २१.३०)। (२) कुशिककुलका त्र्यार्षेय प्रवरप्रवर्तक एक ऋषि (मत्स्य० १९८.४)।

बार्हस्पत्य–पु० [सं०] रात्रिके १५ मुहूर्त्तों (विभाजनों) मेंसे एक विभाजन (वायु० ६६.४४)।

बार्हस्पत्यशास्त्र–पु० [सं०] वृहस्पति द्वारा रचित धर्मशास्त्र तथा राजनीति शास्त्र (वायु० ७९.५९)। जिसके पण्डित श्राद्धके लिए उत्तम (पंक्तिपावन) समझे जाते हैं (ब्रह्मां० ३.१५.३२)।

बाल–पु० [सं०] (१) गार्ग्य ऋषिका एक पुत्र जिसे राजा जनमेजयने मार डाला था (ब्रह्मां० ३.६८.२२)। (२) विश्वेशाके १० विश्वेदेव पुत्रोंमेंसे एक विश्वेदेव पुत्र (मत्स्य० १७१.५०)। वशिष्ठवंशज प्रवरप्रवर्तक एक ऋषि (मत्स्य० २००.१४)। (३) मणिवरके देवजनीसे उत्पन्न ३० पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (वायु० ६९.१६०)।

बालक–पु० [स०] पुलकका पुत्र अक्षत्रिय राजाका नाम। वह धार्मिक नहीं था फिर भी सव सामंत उसकी आज्ञा शिरोधार्य करते थे तथा इसने २३ वर्षोंतक राज्य किया (मत्स्य० २७२.२-३)।

बालकांड–पु० [सं०] रामायणका एक भाग विशेष जिसमें श्रीरामके वाल्यकालका विवरण तथा वाल-लीलाका वर्णन है (रामायण)।

बालखिल्य–पु० [सं०] पुराणानुसार ब्रह्माके रोयेंसें उत्पन्न ऋषियोंका एक समूह जिसमें कुल ६०,००० ऋषि माने गये हैं जिनमेंसे प्रत्येक अँगूठेके वरावर हैं—दे० क्रतु।

बालडि–पु० [सं०] आंगिरस-कुलका त्र्यार्षेय प्रवरप्रवर्तक एक ऋषि (मत्स्य० १९६.१५)।

बालपाठ्य–पु० [सं०] वालकोंके पढ़ने योग्य पुस्तकें अर्थात् गुरुके यहाँ प्रह्लादकी शिक्षासे सम्बन्ध रखनेवाली पाठ्य-पुस्तकें (विष्णु० १.१७, १०)।

बालपि–पु० [सं०] भार्गवोंके आर्षेय प्रवरप्रवर्तक एक ऋषि (मत्स्य० १९५.३८)।

बालवयस–पु० [सं०] वशिष्ठवंशज गोत्र-प्रवरप्रवर्तक ऋषि-गण (मत्स्य० २००.१०)।

बाला–स्त्री० [सं०] प्रजापतिकी एक पुत्री जो एक बार आकाश-मार्गसे जाती हुई पृथ्वीपर गिर पड़ी थी (वायु० ७५.४०)।

बालाकि–पु० [सं०] एक भार्गव-कुलका गोत्रकार ऋषि (मत्स्य० १९५.२०)।

बालाद–पु० [सं०] पिशाचोंका एक वर्ग विशेष, जो नाटे कदके होते हैं। इनकी आँखें पृथ्वीकी ओर झुकी रहती हैं तथा स्त्रियोंके निवासस्थानोंमें रहना इन्हें भाता है (ब्रह्मां० ३.७.३८०, ३९८; वायु० ६९.२७७)।

बालायनि–पु० [सं०] आचार्य बाष्कलि, जिन्होंने वाल-खिल्य संहिताका संग्रह किया था, का एक शिष्य (भाग० १२.६-५९)।

बालिक—पु० [सं०] मयके वीर पराक्रमी छह पुत्रोंमें एक पुत्र (वायु० ६८.२९)।

बालिका—स्त्री० [सं०] अन्धकासुररक्तपानके लिए शिवजी द्वारा सृष्ट बहुत-सी मानसपुत्री मातृकाओं द्वारा अन्धकासुर रक्त पीनेके उपरान्त जगत्में मचाया जा रहा उत्पात देखकर इनके उत्पातकी शान्तिके लिए शिवजी द्वारा प्रार्थित नृसिंह रूप भगवान् विष्णुके विभिन्न अंगोंसे उत्पन्न ३२ मातृकाओंकी चार अधिष्ठात्री देवियोंमेंसे एक रेवतीकी अनुगामिनी एक मातृकादेवी (मत्स्य० १७९.७३)।

बालिकुमार—पु० [सं०] बालीका पुत्र, अंगद—दे० अंगद।

बालिशय—पु० [सं०] वशिष्ठवंशज एकार्पेय प्रवर प्रवर्तक एक ऋषि (मत्स्य० २००.४)।

बालिशायनि—पु० [मं०] अंगिरस कुलका एक त्र्यार्षेय प्रवर ऋषि (मत्स्य० १९६.१२)।

बाली—पु० [सं०] एक वंदरका नाम जो सुग्रीवका ज्येष्ठ भ्राता, अंगदका पिता तथा पंपा किष्किंधाका राजा था। एक बार मेरु पर्वतपर तपस्या करते समय ब्रह्माकी आँखोंसे गिरे आँसुओंसे एक बन्दर उत्पन्न हुआ जिसका नाम ऋक्षराज था। अपनी ही छाया देख यह एक बार जलमें कूद पड़ा और इसका रूप एक सुन्दर स्त्री का हो गया। इन्द्रसे बाली और सूर्यसे सुग्रीव इसीके गर्भसे उत्पन्न हुए। ब्रह्माकी आज्ञासे बाली और सुग्रीव किष्किंधामें राज्य करने लगे। एक बार बालीकी अनुपस्थितिमें सुग्रीवने सारा राज्य हथिया लिया था पर बालीने आनेपर सुग्रीवको मार भगाया और इसकी पत्नी रुमाको भी छीन लिया। सुग्रीवने भागकर मतंग ऋषिके आश्रममें आश्रय लिया (रामायण किष्किंधा० बाली-सुग्रीवजन्म-चरित्र क्षेपक दो० ११)। किष्किंधापर आक्रमण करनेपर रावणको इसने अपनी बगलमें दबा लिया था और बड़ी प्रार्थना करनेपर छोड़ा था। सुग्रीवके कहनेपर श्री रामचन्द्रने बालीको मारा था, बालीकी पत्नी ताराने पतिके मरनेपर सुग्रीवसे विवाह कर लिया और श्रीरामने सुग्रीवको राज्य दिला अंगदको युवराज बनाया था। सुभद्रा नामकी इसकी एक पुत्री थी जो अवीक्षितको ब्याही थी (रामा० किष्किं० दो० १२ तथा सुग्रीव कथित क्षेपक)।

बालेंदुव्रत—पु० [सं०] चैत्र शुक्ला द्वितीयाको होनेवाला एक व्रत। प्रत्येक शु० २ को एक वर्पतक यह व्रत करनेसे सुख और भाग्यवृद्धि होती है, पर इसमें तैलपक्व पदार्थ खाना वर्जित है (विष्णुधर्म)।

बालेय—पु० [सं०] (१) अत्रिके पुत्रिका-पुत्रगणके कालेय, वालेय, वासरथ्य, धात्रेय और मैत्रेय नामक पाँच वर्गोंमेंसे एक वर्गका नाम (मत्स्य० १९७-९)। (२) बलिके वंशज तथा उत्तराधिकारी (ब्रह्मां० ३.५.४४)। (३) पाँच श्वेत-पराशरोंमेंसे एक श्वेतपराशर (मत्स्य० २०१.३६)।

बालेयब्राह्मण—पु० [सं०] दीर्घतमा ऋषिसे उत्पन्न बलिके क्षेत्रज पुत्रोंका नाम (मत्स्य० ४८.२५)।

बालेश्वरनाथ—पु० [सं०] दरभंगा जिलामें वाजिदपुर रेल-स्टेशनके निकटस्थ एक शिव-मन्दिर। कहते हैं कवि विद्यापति यहीं मरे थे और उन्हींकी समाधिपर यह मन्दिर बना है।

बाष्कल—पु० [सं०] (१) विरोचनका पुत्र तथा विरोध आदि चार पुत्रोंका पिता। ये गवेष्ठी, कालनेमि आदि पाँच भाई थे (वायु० ६७.७६-७९)। (२) एक उपनिषद्का नाम। बाष्कल-मन्त्रोपनिषद्, यह अभी हालमें "अप्रकाशिता उपनिषदः" नामकी पुस्तकमें छपा है संभवतः इसीको बाष्कल उपनिषद् लिखा हो। (३) प्रह्लादका एक पुत्र (मत्स्य० ६.९; विष्णु० १.२१.१)। (४) अनुह्लाद और सूर्म्याका एक पुत्र जो दैत्य था (भाग० ६.१८.१६)। (५) एक ऋग्वेदका आचार्य जो पैलके दो शिष्योंमेंसे एक शिष्य था। इसे ऋग्वेदकी शिक्षा मिली थी जिसे इसने बोध्य आदि अपने चार शिष्योंको सिखाया। संहिताओंको इसने बोध्य, अग्निमाढक, याज्ञवल्क्य और पराशर अपने चार शिष्योंकी सहायतासे पुनः सक्रम किया। तीन अन्य संहिताओंको भी इसने फिरसे ठीक कर कालायनि, गार्ग्य और कथाजव तीन शिष्योंको दिया (भाग० १२.६.५४-५; विष्णु० ३.४.१६-१८, २५)।

बाष्कलि—पु० [सं०] (१) बाष्कलका एक पुत्र जो बालखिल्य-संहिताका संपादक था जिसकी शिक्षा उसने बालायनि, भज्य और कासारको दी थी (भाग० १२.६.५९)। (२) (भाग० तथा विष्णु०=बाष्कल) ३३ श्रेष्ठ आंगिरसोंमेंसे एक आंगिरस तथा मंत्रकृत्, ८६ श्रुतर्पियोंमेंसे एक श्रुतर्षि। पैलका शिष्य जो ऋग्वेदका अधिकारी विद्वान् था जिसे इसने चार संहिताओंमें क्रमबद्ध कर दिया था। बोध्य, अग्निमाठर, पराशर तथा याज्ञवल्क्य इनके प्रधान शिष्य थे (ब्रह्मां० २.३२.१०७; ३३.४.१३; ३४.२५; मत्स्य० १९६.१२; वायु० ५९.९८; ६०.२५-२६; ६१.२)। (३) भरद्वाज। यह सत्यश्रीका शिष्य तथा तीन संहिताओंका संपादक था जिसे इसने आपनाप आदि शाखाप्रवर्तक तीन शिष्योंको दे दिया (ब्रह्मां० २.३४.३२; ३५.५; वायु० ६०.२९)।

बाहु—पु० [सं०] (१) वृकके पुत्र ईक्ष्वाकुवंशी राजा जो राज्यसे विजयी शत्रुओं द्वारा निर्वासित होनेके पश्चात् सपत्नीक वन चले गये जहाँ सगरका जन्म हुआ था (भाग० ९.८.२-४; ब्रह्मां० ३.६३.११९; मत्स्य० १२.३८)। (२) धृतक (वृक=विष्णु०, भाग० तथा ब्रह्मा०) का एक पुत्र जिसका राज्य ले हैहयवंशवालों तथा तालजंघोंने शक, यवन, कंबोज, पारद और पह्लवों इन जातियोंकी सहायतासे इसे निर्वासित कर दिया। यह सपत्नीक जंगलमें तप करने चला गया। राजा बाहु वृद्ध होनेके कारण और्व ऋषिके आश्रमके निकट मर गया इसकी रानी यादवी जिसे कालिंदी भी कहते थे गर्भवती थी, इसपर भी सती होने जा रही थी पर और्व ऋषि, जो भूत, भविष्य वर्तमानके ज्ञाता थे, ने अपने आश्रमसे जाकर कहा साध्वी! पतिके साथ अनुमरण (सती होनेका) आग्रह मत करो। तुम्हारे गर्भमें अतिपराक्रमी अनेक यज्ञोंका करनेवाला चक्रवर्ती स्थित है। तुम यह दुःसाहस मत करो। उसे चितासे हटाकर अपने आश्रममें ले आये जहाँ यादवीके गर्भसे सगरका जन्म हुआ [सगर=सहगर]। (वायु० ८८.१२१-३३; विष्णु० ४.३.२५-३५)। यह सूर्यवंशोत्पन्न धर्मपरायण राजा था। एक बार इनमें असूया (गुणोंमें दोष-दृष्टि) दोषके कारण अहंकार उत्पन्न हुआ जिसके फलस्वरूप इन्हें वन जाना पड़ा था जहाँ इनकी मृत्यु हुई।

इनकी वड़ी रानीने इर्ष्यावश छोटी रानीको विप दे दिया पर पुण्यके प्रभावसे विपका प्रभाव नहीं हुआ और पुत्र गर (विप)के साथ उत्पन्न हुआ अतः और्वने बच्चेका नाम 'सगर' रखा—दे० सगर तथा नारदपु० ६.६७; ७.१५, ४१-४२, ५२-५४, ७४-७५।

वाहुक—पु० [सं०] (१) राजा नलका अज्ञातवासमें रखा नाम जव यह ऋतुपर्ण अयोध्यानरेशके यहाँ सारथिका काम करते थे (महाभा० वन० अध्या० ६७)। (२) कौरव्य-कुलमें उत्पन्न एक नागका नाम जो जनमेजयके सर्पसत्र-में जल मरा था (महाभा० आदि० ५७.१३)।

वाहुकपुत्र—(वहुपुत्र?) पु० [सं०] (वायु० = वाहुपुत्र) दक्षकी ६० पुत्रियोंमेंसे दो पुत्रियाँ इसे व्याही थीं (वायु० ६३.४२; मत्स्य० १४५.१७)।

वाहुदा—स्त्री० [सं०] (१) हिमालयसे निकलनेवाली, पितरोंके श्राद्ध आदि लिए अति पवित्र एक नदी जो पूर्वजन्ममें युवनाश्वकी अत्यन्त धार्मिक प्रतिव्रता पत्नी गौरी थी (ब्रह्मां० ३.६३.६७; मत्स्य० २२.५५; ११४२२; वायु० ४५.९६; ८८.६६)। महाभारतके अनुसार इस तीर्थमें ब्रह्मचर्यपूर्वक एक रात उपवास करनेसे मनुष्य स्वर्गलोकमें प्रतिष्ठित होता है और देवसत्रका फल पाता है। इस नदीमें स्नान कर पितरोंके लिए तर्पण करनेकी चेष्टा करते समय महर्षि लिखितके कटे हाथ पुनः उग गये (महाभा० वन० ८४.६७. ६८; ८७.२७; ९५.४; शांति० २३.३९.४०)। (२) (वाहुदा-सुयशा) कुरुवंशी राजा परीक्षित्की पत्नी तथा भीमसेनकी माताका नाम (महाभा० आदि० ९५.४०)।

वाहुवश—पु० [सं०] रोहित प्रजापतिके युगके पार नामक देवगणके १२ देवोंमेंसे एक देव (वायु० १००.६१)।

वाहुशालिनी—पु० [सं०] अन्धकासुररक्तपानार्थ शिवजी द्वारा सृष्ट वहुतसी मानस-पुत्री मातृकाओंमेंसे एक मानस-पुत्री मातृका (मत्स्य० १७९.२५)।

वाहुशाली—पु० [सं०] (१) भीमका एक नाम (महाभा०)। (२) एक दानवका नाम। (३) धृतराष्ट्रके एक पुत्रका नाग (महाभा०)।

वाह्य—पु० [सं०] भजमानके शृञ्जयीसे उत्पन्न दो पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (वायु० ९६.३)।

वाह्यक—पु० [सं०] भजमानका एक पुत्र जिसे सृञ्जयकी दो पुत्रियाँ व्याही थीं। जिससे इसके अनेक पुत्र हुए थे (वायु० ९६.३-४)।

बाह्यकर्ण—पु० [सं०] कश्यप द्वारा कद्रूके गर्भसे उत्पन्न कई काद्रवेय नागोंमेंसे एक नागका नाम (महाभा० आदि० ३५.९)।

वाह्यका—स्त्री० [सं०] भजमानकी दो पत्नियोंमेंसे एक पत्नी तथा सृञ्जयकी दो पुत्रियोंमेंसे एक पुत्री। इनसे भजमानके छह पुत्र हुए। वाह्यकाके तीन निम्लोचि, किंकण और धृष्टि तथा वाह्यकाकी वहिन उपवाह्यकासे भी तीन अयुताजित, सहस्राजित् तथा शताजित् (ब्रह्मां० ३.७१.३)।

वाह्यतोदर—पु० [सं०] भारतके उत्तर देशकी एक जाति विशेष (वायु० ४५.११८)।

वाह्या—पु० [सं०] (१) सूर्यकी हिम (वर्फ) वरसानेवाली किरणें (वायु० ५३.२१)। (२) सह्य पर्वतसे निकली दक्षिणको वहनेवाली ८ नदियोंमेंसे एक नदी (ब्रह्मां० २.१६.३५)।

वाह्लिक—पु० [सं०] (१) किलिकिलाके राजाओंके १३ पुत्रोंका सामूहिक नाम (भाग० १२.१.३४) इन लोगोंने युधिष्ठिरके राजसूयमें भाग लिया था (भाग० १०.७५.६)। १३ पुत्रोंमेंसे ३ नंदनवंशके थे, जो छोटे-छोटे राज्योंके अधिपति थे (विष्णु० ४.२४.५७.५८)। (२) पितरोंका एक वर्ग (ब्रह्मां० २.२८.९३)।

वाह्लीक पु० [सं०] (१) प्रतीप (वायु० = प्रतिप) के तीन पुत्रोंमेंसे एक पुत्र तथा सोमदत्त आदि सात (७) पुत्रोंका पिता (भाग० ९.२२.१२, १८; १०.४९.२; वायु० ९९. २३४; विष्णु० ४.२०.९; ५.३५.१२.२७) जो वह्लीकका राजा था। कुरुओंमें यह अग्रगण्य था [भाग० १०.५२. ११(९)]। जरासंधने इसे मथुराके दक्षिण प्रवेश द्वारपर तथा गोमंतके दक्षिणमें नियुक्त किया था। इसके पुत्रोंने युधिष्ठिरके राजसूयमें तथा दुर्योधनकी सेनामें सक्रिय भाग लिया था। इनकी वहिनें रोहिणी तथा पौरवी वसुदेवको व्याही थीं (ब्रह्मां० ३.७१.१६३)। (२) उत्तरका एक राज्य (ब्रह्मां० २.१६.४६; १८.४६) इसका नामकरण वाह्लीकके नामपर हुआ (मत्स्य० ५०.३९; ११४.४०; १६३.७२)।

बिंदु—पु० [सं०] (१) दनु और कश्यपके १०० दानव पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (मत्स्य० ६.२०)। (२) आंगिरसवंशका त्र्यार्षेय प्रवरप्रवर्तक एक ऋपि (मत्स्य० १९६.२६)। (३) महात्मा विक्रान्तसे उत्पादित अनेक मनुष्यमुख किन्नरोंमेंसे एक किन्नरका नाम (वायु० ६९.३६)।

विंदुकार—पु० [सं०] किष्किंधापति वालीके सैकड़ों सामन्त और सेनानायक महावली प्रधान वानरोंमेंसे एक प्रधान वन्दर (ब्रह्मां० ३.७.२३८)।

विंदुकेतु—पु० [सं०] एक प्रधान वानर (ब्रह्मां० ३.७.२३८)।

बिंदुचक्र—पु० [सं०] चिंतामणिगृहके विशाल मध्य भागमें अत्यन्त ऊँचा विशालतम एक चक्र (ब्रह्मां० ४.३६.४४; ३७.३९-४६)।

विंदुपाद—पु० [सं०] कश्यप द्वारा कद्रूके गर्भसे उत्पन्न अनेक सिरवाले हजार नागोंमेंसे एक काद्रवेय नागका नाम (वायु० ६९.७२)।

विंदुपीठ—पु० [सं०] ललितादेवीकी अत्यन्त संनिकृष्ट लावण्यमयी हृद्देवी, शिरोदेवी आदि छह देवियों, जो हाथोंमें विविध आयुध लेकर इसके चारों ओर सावधान हो भ्रमण करती हैं, मेंसे एक देवी (ब्रह्मां० ४.३७.४४-८४)।

बिंदुमती—स्त्री० [सं०] (१) मरीचिकी रानी तथा बिंदुमान्की माताका नाम (भाग० ५.१५.१५)। (२) शशबिंदु (शतबिंदु = विष्णु०) की एक पुत्री जिसे चैत्ररथी भी कहते थे तथा मांधाताकी रानी। मुचुकुंद, अम्बरीष तथा पुरुकुत्स इसके तीन प्रसिद्ध पुत्र थे (भाग० ९.६.३८; विष्णु० ४.२. ६६; वायु० ८८.७०-६८)।

बिंदुमाधव—पु० [सं०] बनारसका एक प्रसिद्ध तीर्थस्थान जहाँ विष्णु भगवान्की मूर्ति बिन्दुमाधवके नामसे स्थापित है और जो आनन्दकाननके पाँच मुख्य तीर्थों—दशाश्वमेध, लोलार्क, आदिकेशव, बिन्दुमाधव और मणिकर्णिका—मेंसे एक है (मत्स्य० १८५.६८)।

बिंदुमान्—पु० [सं०] मरीचिका बिन्दुमतीसे उत्पन्न एक पुत्र

जिसका सरधा रानीके गर्भसे मधु नामका पुत्र उत्पन्न हुआ (भाग० ५.१५.१५)।

बिंदुसर–पु० [सं०] गौरपर्वतके चरणोंके निकट एक झील जिसके चारों ओर सरस्वती नदी बहती है। कहते हैं विष्णुके प्रेमाश्रुओंकी बूंदोंसे इसकी सृष्टि हुई थी इसीसे यह नाम पड़ा। कर्दमने मनु तथा उनकी पुत्रीकी प्रतीक्षा यहीं की थी (भाग० ३.२१.३३-४४)। कपिलका यहाँ आश्रम था (भाग० ३.२५.५)। भगीरथने यहाँ तपस्याकी थी (ब्रह्मां० २.१८.२५-३१)। गंगाकी सात धाराएँ यहींसे उत्पन्न हुई है। कहते हैं शंकरकी जटासे छुटकारा पा गंगा जब यहाँ गिरीं तब उन्हींके जलबिन्दुओंसे यह झील बन गयी। यहाँ इन्द्रने बहुतसे यज्ञ किये थे (मत्स्य० १२१.२६-४२; वायु० ४७.२४, ३०, ४१)।

बिंदुसार–पु० [सं०] (१) महात्मा विक्रान्त द्वारा उत्पादित कई मनुष्यकी सी मुखाकृतिवाले किन्नरोंमेंसे एक किन्नर (वायु० ६९.३६)। (२) चंद्रगुप्त मौर्यका पुत्र तथा यशस्वी अशोकका पिता (विष्णु० ४.२४.२९-३०)।

बिट्ठल–पु० [सं०] बम्बई प्रान्तमें पंढरपुर नगरकी एक प्रधान देवमूर्त्ति जो देखनेमें बुद्धकी मूर्त्ति जान पड़ती है। जैन लोग इसे अपने तीर्थंकर तथा हिंदू विष्णुकी मूर्त्ति कहते हैं (भाग०)।

बिडालाक्षी–स्त्री० [सं०] एक राक्षसीका नाम (मार्कण्डेय-पु०)।

बिडाली–स्त्री० [सं०] अन्धकासुरके रुधिरपानके लिए शिवजी द्वारा सृष्ट कई मानसपुत्री मातृकाओंमेंसे एक मानस-पुत्री मातृका (मत्स्य० १७९.१२)।

बिडौजा–पु० [सं०] इन्द्रका एक नाम—दे० इंद्र।

बिभीषण–पु० [सं०] (१) दैत्यराज बलिके बाण आदि गुणवान् १०० पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (मत्स्य० ६.११)। (२) राक्षसाधिपति रावणके अनुजका नाम (वाल्मी० सुन्दर० ५२.१२)।

बिम्ब–पु० [सं०] वसुदेव और भद्राके चार विख्यात महाबलवान् पुत्रोंमें एक पुत्र (ब्रह्मां० ३.७१.१७३; वायु० ९६.१७१)।

बिल्वक–पु० [सं०] पितरोंके श्राद्ध आदिके लिए एक पवित्र तीर्थ, जहाँ किये गये श्राद्ध और दानका असीम फल कहा गया है (मत्स्य० २२.७०)।

बिल्वत्रिरात्रिव्रत–पु० [सं०] ज्येष्ठ शु० १५, ज्येष्ठा नक्षत्र मंगलको बिल्व वृक्षका पूजन कर व्रत करे (हिमादि; स्कंद-पु०)।

बिल्वपत्रिका–स्त्री० [सं०] बिल्वक नामक तीर्थस्थानमें स्थापित सती देवीकी एक मूर्तिका नाम (मत्स्य० १३.३१)।

बिल्वसप्तमी–स्त्री० [सं०] आश्विन शुक्ला सप्तमीको पूर्व निमन्त्रित बिल्ववृक्षकी दो फललगी शाखाएँ ले देवीके पास रख पूजा करे। इसमें सूर्योदयसंयुक्त परा तिथि लेनी चाहिये (हेमाद्रि)।

बिल्वस्थली–स्त्री० [सं०] समूल और वसुधार पर्वतोंके बीचमें स्थित तीस योजन चौड़ा और पचास योजन लम्बा एक समतल स्थान जहाँ बिल्वफलभक्षी यक्ष, गंधर्व, किन्नर, सिद्धगण, नाग तथा ब्राह्मणगण निवास करते हैं (वायु० ३८.२३-६)।

बिल्वा–स्त्री० [सं०] अन्धकासुररुधिर पानके लिए शिवजी द्वारा सृष्ट मानस-पुत्री मातृकाओंका जगत्में उत्पीड़क उत्पात देख उसके शमनार्थ शिवजी द्वारा प्रार्थित नृसिंह रूप भगवान् श्रीहरि द्वारा अपने विभिन्न अंगोंसे सृष्ट ३२ मातृका देवियोंमेंसे भवमालिनीकी अनुगामिनी एक देवी (मत्स्य० १७१.७९)।

बिल्वि–पु० [सं०] भार्गववंशका पंचार्षेय प्रवरप्रवर्तक एक ऋषि (मत्स्य० १९५.३३)।

बीज–पु० [सं०] ईश्वरसे बीजका उद्गम होता है, क्षेत्रज्ञ बीज कहलाता है, प्रकृतिको योनि कहते हैं और वह नारायणात्मिका है (वायु० १०१.२२८)।

बीजकर्षणिका–स्त्री० [सं०] भण्डासुरका संहार करनेके लिए रक्त रथपर स्थित कामाकर्षणिका आदि षोडश गुप्तशक्तियोंमेंसे एक गुप्तशक्ति (ब्रह्मां० ४.१९.२०; ३६.७१)।

बीजभावा–स्त्री० [सं०] अन्धकासुररुधिर पानके लिए शिवजी द्वारा सृष्ट मानस-पुत्री मातृकाओंका जगत्में उत्पीड़क उत्पात देख उसके शमनार्थ शिवजी द्वारा प्रार्थित नृसिंह रूप भगवान् श्रीहरि द्वारा अपने विभिन्न अंगोंसे सृष्ट ३२ मातृका देवियोंमेंसे मायाकी एक अनुगामिनी देवी (मत्स्य० १७९.६९)।

बीजवापी–पु० [सं०] एक आत्रेय गोत्रकार त्र्यार्षेय प्रवर-प्रवर्तक ऋषि (मत्स्य० १९७-७)।

बीभत्सु–पु० [सं०] अर्जुनका एक नाम (भाग० १० [६७(५)३६]।

बुदबुदा–स्त्री० [सं०] (१) हिमालयसे निकली २२ पुण्य-सलिला गंगा आदि नदियोंमेंसे एक नदी (ब्रह्मां २.१६.२६)। (२) एक अप्सरा, जो वर्गा अप्सराकी सखी थी, का नाम (महाभा० आदि० २१५.२०) इसे ग्राह होकर जलमें रहनेका ब्राह्मणका शाप था। अर्जुन द्वारा इसका ग्राहयोनिसे उद्धार (आदि० २१६.२१.२२) हुआ। यह शापवश ग्राह रूपमें महाकालेश्वर (तीर्थमें रहती थी पंचाप्सर) और अर्जुन द्वारा शापमुक्त हुई थी (स्कंद० कुमारिका-खण्ड)।

बुद्ध–पु० [सं०] (१) कलियुग आरम्भ होनेपर विष्णुका २० वाँ अवतार कीकटोंकी भूमिमें मायादेवी (जिनसुत्त=भाग०) के गर्भसे उत्पन्न हुआ था (भाग० १.३.२४; ६.८.१९)। कई स्थानोंमें विष्णुको इसी शब्द ‘बुद्ध’से संबोधित किया गया है (भाग० १०.४०.२२)। मत्स्यपुराणानुसार यह विष्णुका नवाँ अवतार था (मत्स्य० ४७.२४७; ५४.१९; २८५.७)। (२) भौत्य मनुका एक पुत्र (ब्रह्मां० ४.१.११४)। (३) शिवका एक नाम (वायु० ३०.२१६; ५४.७१; ९७.१७६; ब्रह्मां० ३.७२.१७७)।

बुद्धावस्था–स्त्री० [सं०] ध्यानकी अवस्था (वायु० १०१.८५)।

बुद्धि–स्त्री० [सं०] (१) दक्षकी १२ पुत्रियों, जो धर्मको ब्याही गयी थीं, मेंसे एक पुत्री तथा धर्मकी एक पत्नी जिससे अर्थ उत्पन्न हुआ (भाग० ४.१.५०-५१; ब्रह्मां० २.९.५०, ६०; वायु० १०.२५)। यह बुध (बोध=विष्णु०) तथा अप्रमादकी माता थी (वायु० १०.३६; विष्णु० १.७.२३,

३०)। (२) १२ तुषितदेवोंमेंसे एक तुषितदेव (ब्रह्मां० ३.३.१९; वायु० ६६.१८)। (३) शतरूपाका एक पुत्र (मत्स्य० ४.२५)। (४) एक देवता जो विनायकका अनुचर है (मत्स्य० २६०.५५)। ज्ञान, वैराग्य, ऐश्वर्य और धर्म, ये चार इसके अंग हैं (वायु० ४.३४; ५९.७४)। (५) महत्का बोधक शब्द (वायु० १०२.२१)।

बुद्धिक–पु० [सं०] एक नागका नाम (हि० श० सा०)।

बुद्धिकामा–स्त्री० [सं०] कुमार कार्त्तिकेयकी अनुचरी एक मातृकाका नाम (महाभा० शल्य० ४६.१२)।

बुद्धीन्द्रियाँ–स्त्री० [सं०] कान, त्वचा, नेत्र, जिह्वा तथा नासिका ये ही ५ ज्ञानेन्द्रियाँ हैं (वायु० ४.६०.६२)।

बुध–पु० [सं०] (१) नवग्रहोंमेंसे एक। पुराणानुसार चन्द्रमाके (त्विपि = वायु०) के पुत्र जो देवगुरु बृहस्पतिकी पत्नी ताराके गर्भसे उत्पन्न हुए थे। इसे राजपुत्र भी कहते हैं, इनका रथ चमकदार श्वेतरंगका है जिसे भिन्न-भिन्न रंगोंके १० घोड़े खींचते हैं। यह नपुंसक, शूद्र तथा अथर्ववेदका ज्ञाता, हस्तिशास्त्रका प्रवर्तक और अर्थशास्त्रका विद्वान् कहा गया है (मत्स्य० २४.३-१०; ९३.१०,१७; ११५.१; १२७.१-३; वायु० ५२.७२; विष्णु० १.८-११; ४.६.३२-३४)। यह धनुके आकारका और दूर्वाश्यामवर्णका माना जाता है। बुधके रवि और शुक्र मित्र हैं और चन्द्रमा शत्रु। बुधका विवाह वैवस्वत मनुकी पुत्री इलासे हुआ था। मनु-पुत्र सुद्युम्न शिवके शापसे शरवनमें स्त्री हो गया था और इला हुई (विष्णु० ४.१.११-१२; वायु० ८५.१७)। इलाके गर्भसे पुरूरवाका जन्म हुआ था, राजपुत्रक ऐल (भाग० ९.१.३४-५; १४.१४-१५; ब्रह्मां० २.२४.४९-१३४; ३.३.२३; ६५.४४; ६६.१; मत्स्य० ११.५४; १२.१४)। बुध मगध देशका मालिक है, इसकी ८ किरणें हैं तथा नक्षत्रोंसे ऊपर है (वायु० ५३.३१, ६७.८७,९७)। यह तारा ग्रहोंमें सबसे नीचे है (वायु० १०१.१३२)। (२) एक सूर्यवंशी राजा (अग्निपुराण)। (३) एक प्रधान बन्दर जो स्वेताके दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्र था (ब्रह्मां० ३.७.१८०)। (४) वेगवान् राजाका पुत्र जो तृणबिंदुका पिता था (ब्रह्मां० ३.८.३६; ६१.१०; विष्णु० ४.१.४५-६; वायु० ८६.१५)। (५) २० सुतप देवोंमेंसे एक (ब्रह्मां० ४.१.१५; वायु० १००.१५)। (६) महादेवकी आठवीं मूर्ति चन्द्र तथा उस आठवीं मूर्तिकी पत्नी रोहिणीका एक पुत्र (वायु० २७.५६; ६६.२२)।

बुधाष्टमी–स्त्री० [सं०] जब-जब शुक्लाष्टमी बुधको हो तो बुधकी पूजा करनेसे बुद्धि बढ़ती है पर विशाखायुक्त बुधको व्रत शुरू करे (भविष्योत्तर, निर्णयामृत)।

बुध्न–पु० [सं०] खशा और कश्यपके लालाविआरि कई राक्षस पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (ब्रह्मां० ३.७.१३४; वायु० ६९.१६६)।

बुद्ध्याकर्षिणिका–स्त्री० [सं०] भण्डासुरका संहार करनेके लिए कामाकर्षणिका आदि चन्द्रकलारूप १६ गुप्त शक्तियोंमेंसे एक गुप्तशक्ति (ब्रह्मां० ४.१९.१७; ३६.६९)।

बृंदावन–पु० [सं०] ब्रजका एक अति प्रवित्र वन जहाँ गोप लोग बृहद्वन छोड़कर पशुओंकी सुविधाके कारण आ बसे थे। गोवर्द्धन और यमुना दोनों निकट होनेके कारण इसका महत्त्व अधिक माना गया (भाग० १०.११.२८, ३६)। श्रीकृष्णके चरणोंका स्पर्श पा इसकी सारी भूमि पवित्र हो उठी है (भाग० १०.१५.१)। कहते हैं यहाँ ग्रीष्ममें भी वसन्तका आनंद आता है जहाँका कोना-कोना कृष्णलीलाओंसे सम्बद्ध है (भाग० १०.२१.५, १० तथा १०.३०.२३; ४७.४३)।

बृहच्चाप–पु० [सं०] करूपका राजा जिसे गोमंतके घेरेके समय जरासंधने पश्चिम दिशाका कार्यभार दिया था [भाग० १०.५२.११(१)]।

बृहत्–पु० [सं०] (१) वे साम जिनके छंद बृहतीके अनुरूप हों। श्राद्धोंमें (मत्स्य० १७.३८), तथा किसी नयी मूर्तिकी स्थापनाके अवसरपर इनका पाठ किया जाता है (मत्स्य० २६५.२७)। (२) मंत्रशरीर ब्रह्माके मानसपुत्र जयाख्य देवोंमेंसे एक (वायु० ६७.५)। शक्तदेवगण, जिसमें १२ देव थे, मेंका एक शक्तदेव (ब्रह्मां० २.१३.९६)।

बृहती–स्त्री० [सं०] (१) योगेश्वरकी माताका नाम (भाग० ८.२३.३२)। (२) एक छंदका नाम जिसमें तीन जागत पाद (द्वादशाक्षर पाद) हों एक गायत्र पाद (अष्टाक्षर पाद) हो उसे बृहती छन्द कहते हैं (भाग० ११.२१.४१; मत्स्य० १२५.४७; वायु० ५१.६५)। (३) सूर्यके रथके ७ छन्दःस्वरूप घोड़ोंमेंसे एक घोड़ेका नाम (ब्रह्मां० २.२२.७२; विष्णु० २.८.५)। (४) दिवंजय और वरांगीके पुत्र रिपुकी पत्नी तथा चक्षुकी माताका नाम। इन्हीं चक्षुके पुष्करिणी (वारुणी) से महाप्रतापी ब्रह्मक्षत्रप्रवर्तक चाक्षुप मनु उत्पन्न हुए (ब्रह्मां० २.३६.१०२; विष्णु० १.१३.९)। (५) बृहदुक्थ शैनेयकी एक पुत्री तथा (पुरु) पूरुकी पत्नी जिसके श्वेता नामकी एक पुत्री तथा अंगद, कनक और श्वेत नामके तीन पुत्र थे (ब्रह्मां० ३.७१.२५५; वायु० ९६.२५६)।

बृहत्कर्मा–पु० [सं०] (१) यह बृहद्रथवंशका था (ब्रह्मां० ३.४७.११३)। (२) भद्ररथका पुत्र बृहद्भानुका पिता (मत्स्य० ४८.१००)।

बृहत्कल्प–पु० [सं०] सातवें कल्पका नाम (मत्स्य० २९०.४)।

बृहत्कांति–पु० [सं०] धर्मकी पत्नी साध्यदेवीका एक विशेषण (मत्स्य० १७१.४५)।

बृहत्क्षत्र–पु० [सं०] (१) भुवमन्युके चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्र तथा हस्तीका पिता (मत्स्य० ४९.३६, ४२)। जिसे जरासंधने मथुराके पश्चिमी प्रवेश-द्वारपर नियुक्त किया था (भाग० १०.५०.११(५)। (२) श्रुतकीर्ति, जो केकयदेशके राजा धृष्टकेतुको व्याही गयी थी, राजा शूरकी पुत्री, वसुदेवकी बहन थी, के पाँच पुत्रोंमेंसे एक पुत्र(भाग० ९.२४.३०; वायु० ९६.१५६)।

बृहत्पुत्र–पु० [सं०] विजयका पुत्र तथा बृहद्रथका पिता (मत्स्य० ४८.१०७)।

बृहद्भानु–पु० [सं०] बृहत्कर्माका पुत्र तथा जयद्रथका पिता (मत्स्य० ४८.१००)।

बृहद्रथ–पु० [सं०] जयद्रथका पुत्र तथा विश्वजित् जनमेजयका पिता (मत्स्य० ४८.१०२)।

बृहद्रूप–पु० [सं०] धर्म और मरुत्वतीसे उत्पन्न अग्नि आदि कई पुत्रों (मरुद्गण) मेंसे एक पुत्र (मरुद्) का नाम

(मत्स्य० १७१.५४)।

बृहद्द्रक्षा—पु० [सं०] वत्सर आदि १३ ऋषीकोंमेंसे एक ऋषीकका नाम (मत्स्य० १४५-९५)। ऋषियोंके पुत्र जो गर्भोत्पन्न हों 'ऋषीक' कहे जाते हैं।

बृहत्शुक्र—पु० [सं०] आंगिरसवंशके ३३ श्रेष्ठ आंगिरसों, जो मन्त्रकृत् थे, मेंसे एक मंत्रकृत् (मत्स्य० १४५.१०५)।

बृहत्श्लोक—पु० [सं०] मायामानव भगवान् वामन (विष्णु) तथा कीर्तिका पुत्र (भाग० ६.१८.८)।

बृहत्साम—पु० [सं०] (१) ब्रह्मा द्वारा मुखसे सृष्ट १२ मन्त्रशरीर जयदेवोंमेंसे एक मंत्रशरीर जयदेवका नाम (ब्रह्मां० ३.४.२)। पुष्पदंत नाग इसी वंशका था (ब्रह्मां० ३.७.३३७)। (२) साम-संहिताका एक सूक्त (वायु० ९.५०; २१.७५, ७८) जिसका पाठ तड़ाग-निर्माण आदि में होता है (मत्स्य० ५८.३७) ब्रह्माके दक्षिण मुखसे इसकी उत्पत्ति हुई थी (ब्रह्मां० २.८.५१; विष्णु० १.५.५४)।

बृहत्सेन—पु० [सं०] (१) सुनक्षत्रका पुत्र तथा कर्मजित्का पिता (भाग० ९.२२.४७)। (२) श्रीकृष्ण और भद्राके १० पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (भाग० १०.६१.१७)। (३) लक्ष्मणाका पिता तथा श्रीकृष्णका श्वशुर, भगवान् श्रीकृष्णका लक्ष्मणासे विवाह स्वयंवर द्वारा हुआ था (भाग० १०.८३.१८-२६, ३७-९)।

बृहत्स्थान—पु० [सं०] स्वर्भानुका स्थान जो तमोमय है (वायु० ५३.६४)।

बृहद्—पु० [सं०] (१) बृहस्पतिका बृहद् 'मण्डल'में स्थान है (वायु० ५३.५९)। (२) १२ जयदेवोंमेंसे एक जयदेवका नाम (वायु० ६६.६)।

बृहदनु—पु० [सं०] अजमीढ़ तथा धूमिनीका पुत्र तथा बृहन्तका पिता (मत्स्य० ४९.४७)।

बृहद्भानु—पु० [सं०] सत्यभामाके गर्भसे उत्पन्न श्रीकृष्णके १० पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (भाग० १०.६१.१०)।

बृहद्रथ—पु० [सं०] (१) देवरातका पुत्र तथा महावीर्यका पिता (भाग० ९.१३.१५)। (२) तिमिका पुत्र तथा सुदासका पिता (भाग० ९.२२.४३)। (३) शतधन्वाका पुत्र जो अपने मन्त्री तथा सेनापति पुष्पमित्रसे मारा गया था (भाग० १२.१.१५; मत्स्य० २७२.२४; वायु० ९९.३३७)। (४) पृथुलाक्षके तीन पुत्रोंमेंसे एक पुत्र तथा बृहन्मनाका पिता (भाग० ९.२३.११)। (५) देवराजका पुत्र। (६) उपरिचर वसुके पुत्रोंमेंसे एक पुत्र तथा मगधनरेश जरासंधके पिताका नाम (भाग० ९.२२.५-८; मत्स्य० ५०.२७, ३१-२; वायु० ९९.२२१; विष्णु० ४.१९.८१-२)। (७) जयद्रथका पुत्र विश्वजित् जनमेजयका पिता (मत्स्य० ४८.१०१)। (८) जरासंधके वंशका एक मागध राजा जो सहदेवके परिवारका था। इस वंशवालोंने २२ पीढ़ी तथा १००० वर्षोंतक शासन किया था (ब्रह्मां० ३.७४.१०७-२१)। (९) बृहत्पुत्रका पुत्र तथा सत्यकर्माका पिता (मत्स्य० ४८.१०७)। (१०) संभवका पुत्र जिसका जरासंध नामका पुत्र दो पत्नियोंसे निर्जीव दो भागोंमें उत्पन्न हुआ था, अतः फेंक दिया गया। जरा नामकी राक्षसी द्वारा दो निर्जीव देहभागोंको जोड़ देनेसे उनमें जीव आ गया अतः उसका नाम जरासंध पड़ा। यह मगध देशका महाप्रतापी राजा हुआ (मत्स्य० ५०.३१-३२)। (११) तिग्मका एक पुत्र तथा वसुदाम (विष्णु० = वसुदान) का पिता (मत्स्य० ५०.८५; विष्णु० ४.२१.१३)। (१२) भगवान् रुद्रने प्रसन्न होकर परमभास्वर दिव्य एक काञ्चन रथ राजा ययातिको दिया जिसमें मनके समान वेगवान् घोड़े जुते थे। उस रथके प्रभावसे उन्होंने पृथ्वीपर विजय प्राप्त की और स्वयं दुर्द्धर्ष रहे। वह रथ ययाति-कुलमें कौरव राजा जनमेजय (परीक्षित्पुत्र) तक रहा। जनमेजय द्वारा एक मुनि (गार्ग्य) के पुत्रकी हत्या करनेसे मुनिके शापवश वहाँसे नष्ट हो गया। फिर वह रथ यज्ञसे प्रसन्न हुए इन्द्रसे बृहद्रथको मिला। बृहद्रथके अनन्तर जरासंधको प्राप्त हुआ जरासंधका वध करनेके बाद भीमसेनने उसे भगवान् कृष्णको दिया (वायु० ९३.२७; ९९.२९४)। (१३) बृहत्कर्मा तथा यशोदेवीका पुत्र तथा बृहन्मनाका पिता (वायु० ९९.११०, १७१)। (१४) भद्ररथका पुत्र तथा बृहत्कर्माका पिता (विष्णु० ४.१८.२२)।

बृहदश्व—पु० [सं०] (१) शाव (शावस्त = विष्णु०; श्रावस्त = ब्रह्मां०; मत्स्य तथा वायु०) का पुत्र तथा कुवलयाश्व (कुवलाश्व = ब्रह्मां०; कुवलाश्व धुंधुमार = वायु०) का पिता जो पुत्रको राज्य दे तप करने जंगलमें चला गया। उत्तंक ऋषिने समुद्रमें छिपे धुंधु राक्षसको मारनेके लिए इनसे कहा, क्योंकि वह उनकी तपस्यामें विघ्न डालता था। यह वानप्रस्थमें आ गये थे अतः इन्होंने इस कार्यका भार अपने पुत्रोंको सौंपा। कहते हैं इनके २१००० पुत्र थे (भाग० ९.६.२१; ब्रह्मां० ३.६३.२८; मत्स्य० १२.३१; वायु० ८८.२७-३०; विष्णु० ४.२.३८-९) यह एक राजर्षि थे (वायु० ८८.३३-४७)। (२) सहदेवका पुत्र तथा भानुमान् (भानुरथ = विष्णु०) का पिता (भाग० ९.१२.११) जो बाणशय्यापर लेटे भीष्मसे मिलने गये थे (भाग० १.९.६; वायु० ९९.२८३; विष्णु० ४.२२.४)। (३) शतधरका पुत्र एक राजा जिसने ७ वर्षोंतक राज्य किया, ये चन्द्रगुप्तसे लेकर शतधरतक कुल ९ राजा थे (वायु० ९९.३३५)।

बृहदिषु—पु० [सं०] (१) अजमीढ़का पुत्र तथा बृहद्धनुका पिता (भाग० ९.२१.२२; विष्णु० ४.१९.३३)। (२) भर्म्याश्व (मत्स्य० = भद्राश्व)के पाँच पुत्रों, जो पाञ्चाल देशके रक्षक तथा राजा थे, मेंसे एक पुत्र (भाग० ९.२१.३२)। (३) बृहद्धनुका पुत्र तथा जयद्रथका पिता (मत्स्य० ४९.४९)। (४) भद्राश्वके पाँच पुत्रोंमेंसे एक पुत्र तथा एक राजा (मत्स्य० ५०.३)। (५) भेदके पाँच पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (वायु० ९९.१९६)। (६) हर्यश्वके पाँच पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (विष्णु० ४.१९.५९)।

बृहदुक्थ—पु० [सं०] (१) एक त्र्यार्षेय प्रवरप्रवर्तक ऋषि जिनका वैवाहिक सम्बन्ध आंगिरस या वामदेवोंसे नहीं होता (मत्स्य० १९६.३५)। (२) वत्सर, नग्नहू आदि १६ गर्भोत्पन्न ऋषि-ऋषीकोंमें एक ऋषीक (वायु० ५९.९३)।

बृहदुक्थशैनेय—पु० [सं०] बृहती, जो पुरुकी पत्नी तथा अंगद, कनक तथा श्वेत नामक तीन विख्यात सुपुत्रों तथा एक पुत्रीकी माता थी, का पिता (ब्रह्मां० ३.७१.२५५)।

बृहदुक्थ्य—पु० [सं०] तेईसवें द्वापरमें, जब कि तृणबिन्दु के वेदव्यास हुए, श्वेत, जो भगवदवतार माने जाते हैं,

चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (वायु० २३.२०५)।

बृहदुत्थ–पु० [सं०] वामदेवका एक पुत्र (वायु० ६५.१०२) जो गर्भसे ही ऋषि थे (वायु० ५९.९३)।

बृहत्कर्मा–पु० [सं०] (१) पृथुलाक्षके तीन पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (भाग० ९.२३.११)। (२) भद्ररथका पुत्र तथा बृहद्रथ (विष्णु० =बृहद्भानु) का पिता (वायु० ९९.१०९; विष्णु० ४.१८.२२)। (३) बृहद्विष्णुका पुत्र तथा बृहद्रथका पिता (वायु० ९९.१७१)। (४) बृहद्रथवंशके सुकृत्त (सुरक्ष = मत्स्य०) का पुत्र (मत्स्य० २७१.२२; वायु० ९९.२२९)। (५) बृहद्धनुका पुत्र तथा जयद्रथका पिता (विष्णु० ४.१९.३४)। (६) सुनेत्रका पुत्र तथा सेनजित्का पिता (विष्णु० ४.२३.४-५)।

बृहत्काय–पु० [सं०] बृहद्धनुका पुत्र तथा जयद्रथका पिता (भाग० ९.२१.२२)।

बृहत्कीर्ति–पु० [सं०] बृहस्पति, जो देवताओंके आचार्य हैं, का एक पुत्र। देववर्णिनी नामकी इनकी एक पुत्री विश्रवाकी चार पत्नियोंमेंसे एक पत्नी थी (वायु० ७०.३३)।

बृहत्क्षण–पु० [सं०] बृहद्बलका पुत्र तथा उरुक्षयका पिता (विष्णु० ४.२२.२-३)।

बृहत्क्षत्र–पु० [सं०] (१) मन्युके चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्र तथा हस्तीका पिता पर विष्णुपुराणानुसार यह सुहोत्रका पिता था (भाग० ९.२१.२०; विष्णु० ४.१९.२१, २७)। (२) कैकयसे श्रुतिकीर्तिमें उत्पन्न तीन पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (ब्रह्मां० ३.७१.१५७)। (३) भुवमन्युके चार पुत्रोंमेंसे एकका नाम (वायु० ९९.१५९)।

बृहत्क्षय–पु० [सं०] बृहद्रथका पुत्र तथा ततःक्षयका पिता (वायु० ९९.२८१)।

बृहदंगिरा–पु० [सं०] वरुत्रीके रंजन आदि तीन पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (वायु० ६५.७८)।

बृहद्जिह्वा–पु० [सं०] खशा तथा कश्यपके लालावि आदि कई राक्षस पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (ब्रह्मां० ३.७.१३४)।

बृहद्धनु–पु० [सं०] (१) बृहदिषुका पुत्र तथा बृहद्काय (विष्णु =बृहत्कर्मा) का पिता (भाग० ९.२१.२२; विष्णु० ४.१९.३४)। (२) बृहन्मनाका पुत्र तथा बृहदिषुका पिता (मत्स्य० ४९.४८)।

बृहद्बल–पु० [सं०] (१) इक्ष्वाकुवंशका अंतिम राजा जो तक्षकका पुत्र तथा बृहद्रणका पिता था जिसे परीक्षित्के पिताने रणमें मारा था (भाग० ९.१२.८-९; ब्रह्मां० ३.७४.१०४)। (२) देवभाग और कंसाके दो पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (भाग० ९.२४.४०)। (३) कार्तवीर्यका मित्र, जो सोमदत्त, विदर्भ, मिथिलेश्वर आदिके साथ कार्तवीर्यकी ओरसे परशुरामसे लड़ने आया था तथा परशुराम द्वारा मारा गया था (ब्रह्मां० ३.३९.२ ७)। (४) विश्रुतवान् (इक्ष्वाकुवंशी) का पुत्र तथा बृहत्क्षणका पिता (ब्रह्मां० ३.६३.२१३; वायु० ८८.२१२; ९९.२९०; विष्णु० ४.२२.२)। (५) सूर्यवंशी उरुक्षयका पिता (मत्स्य० २७१.४)। (६) विश्वभवका पुत्र जो महाभारत युद्धमें अभिमन्यु (मत्स्य० २७१.४) द्वारा मारा गया था (विष्णु० ४.४.११२)

बृहद्भानु–पु० [सं०] (१) राजा बृहन्मनाका पिता। बृहन्मनाकी दो पत्नियाँ थी यशोदेवी और सत्या। यशोदेवीसे जयद्रथ हुआ और सत्यासे विजय (वायु० ९९.११४-६)। (२) सत्रायण तथा वितानाका पुत्र। चौदहवें मनुके कालमें हुआ विष्णुका एक अवतार (भाग० ८.१३.३५)। (३) पृथुलाक्षके तीन पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (भाग० ९.२३.११)। (४) श्रीकृष्ण तथा सत्यभामाके दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (भाग० १०.६१.१०; ९०.३)। (५) बृहत्कर्माका पुत्र तथा बृहन्मनाका पिता (विष्णु० ४.१८.२२)।

बृहद्यशा–पु० [सं०] प्रथम सावर्णि मनुके ९ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (ब्रह्मां० ४.१.६५)।

बृहद्रण–पु० [सं०] बृहद्बलका पुत्र तथा उरुक्रियका पिता (भाग० ९.१२.९-१०)।

बृहद्राज–पु० [सं०] (१) अमित्रजित्का पुत्र तथा बर्हिका (विष्णु० =धर्मीका) पिता (भाग० ९.१२.१३; विष्णु० ४.२२.६)। (२) सुमित्रका पुत्र तथा धर्मात्मा कृतंजयका पिता (मत्स्य० २७१.१०)।

बृहद्वन–पु० [सं०] एक वन जहाँ नंद गोप अपने मवेशियोंको रखते थे (भाग० १०.५.२६; ७.३३)। कई बड़े-बड़े उत्पातों तथा कुछ अपशकुनोंके कारण इन लोगोंने इसे त्याग अपना निवास वृंदावनमें बना लिया था (भाग० १०.११.२१-३२)।

बृहद्वपु–पु० [सं०] सत्यदेवगणमेंके १२ सत्यदेवोंमेंसे एक सत्यदेवका नाम (ब्रह्मां० २.३६.३५)।

बृहद्वसु–पु० [सं०] (१) वंशवर्तीदेवगणमेंके १२ वंशवर्तीदेवोंमेंसे एक वंशवर्ती देवका नाम (ब्रह्मां० २.३६.२९; वायु० ६२.२६)। (२) अजमीढ़ तथा धूमिनीका पुत्र तथा बृहद्विष्णुका पिता (वायु० ९९.१७०)।

बृहद्विष्णु–पु० [सं०] बृहद्वसुका एक पुत्र तथा महाबलका पिता (वायु० ९९.१७१)।

बृहत्साम–पु० [सं०] जिससे छह दाँतवाले पद्मयुक्त पूँछवाले पुष्पदन्त नामक हाथीकी उत्पत्ति हुई (ब्रह्मां० ३.७.३३७; वायु० ६९.२२१)।

बृहंगिर–पु० [सं०] (१) वरत्रीके चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (ब्रह्मां० ३.१.७९)।

बृहन्त–पु० [सं०] बृहदनुका एक पुत्र तथा बृहन्मनाका पिता (मत्स्य० ४९.४८)। (२) मरुत्वती और धर्मसे उत्पन्न मरुद्गणमेंका एक मरुद् (मत्स्य० १७१.५४)।

बृहन्नला–स्त्री० [सं] अज्ञातवासके समय राजा विराट्के यहाँ रखा अर्जुनका नाम जहाँ यह स्त्रीवेशमें रह विराट्की पुत्री उत्तराको नाचने-गानेकी शिक्षा देते थे (महाभा० विराट० २.२७)।

बृहन्मना–(१) बृहद्रथ (बृहद्भानु = विष्णु०)का पुत्र तथा जयद्रथके पिताका नाम (भाग० ९.२३.११; वायु० ९९.११०; विष्णु० ४.१८.२२)। (२) बृहद्भानुका पुत्र जिसकी यशोदेवी तथा सत्या नामकी दो पत्नियाँ थीं जो दोनों चेदिराज शैब्यकी पुत्रियाँ थीं। यशोदेवीके गर्भसे जयद्रथ हुए और सत्यासे विजय उत्पन्न हुए थे। विजयके बृहत्पुत्र, और बृहत्पुत्रके बृहद्रथ जिसके पुत्र सत्यकर्मा थे जो अधिरथके पिता थे। अधिरथको 'सूत' कहते थे इन्होंने कर्णका पुत्र रूपमें पोषण किया इसीसे कर्णको सूतपुत्र कहते थे (मत्स्य० ४८.१०४-८; वायु० ९९.११४)। बृहदनु-सुत

बृहन्तका पुत्र तथा बृहद्धनुका पिता (मत्स्य० ४९.४८)।

बृहन्माय—पु० [सं०] भंडका एक पुत्र तथा सेनानायक (ब्रह्मां० ४.२१.८४; २६.४९)।

बृहस्पति—पु० [सं०] (१) वेधा। वायुपुराणानुसार एक प्रजापति तथा एक प्रसिद्ध देवता जो सुनीपा (श्रद्धा)के गर्भसे उत्पन्न अंगिराके पुत्र और देवगुरु माने जाते हैं (भाग० ४.१.३५; वायु० २.१९; ३.५; ३८.४४)। स्वारोचिष मन्वन्तरके एक प्रसिद्ध ब्रह्मिष्ठ तथा स्वारोचिप मन्वंतरके सप्तर्पियोंमेंसे एक ऋषि (भाग० ४.१.३५; मत्स्य० १९२.१०; १९६.५, १९, २४; वायु० ५२.७७; ५३.३३; ५९.९०, १३१; ६५.१००; ९८.२४, २७)। चाक्षुष मन्वन्तरमें फल्गुनीसे उत्पन्न एक मन्त्र-ब्राह्मण-कारक ऋपि जो भगवान्‌के तुल्य समझे जाते हैं (भाग० ११.१६.२२; मत्स्य० २४५.८६; २४९.११)। विश्रवा तथा अंगिराके अधिपति; इनकी बहिन योगसिद्धा प्रभासकी पत्नी थीं। ऋग्वेदके अनुसार इनके सात मुँह, सुन्दर जीभ, पैने सींग और १०० पंख हैं। इनके हाथमें धनुपबाण और सुवर्ण परशु रहता है। यह बुद्धि तथा वक्तृत्वके देवता हैं। पुराणानुसार इनमें और चंद्रमामें झगड़ा हुआ था, कारण इनकी पत्नी तारा थी जिसे सोमने बलात् हर लिया था पर शिव और ब्रह्माने बीचमें पड़ पत्नीको लौटाकर मेल करा दिया था। यह कच और भरद्वाजके पिता थे (भाग० ९.१४.४; मत्स्य० २३.३०, ४७; २६.३; वायु० ६५.१०३; ७०.४; ७६.१, २५; विष्णु० ४.६.१०)। बृहस्पतिके अग्रज उतथ्यकी पत्नी ममतासे गर्भावस्थामें ही इनका समागम हुआ और गर्भस्थ बालक इनके शापसे जन्मान्ध हुआ—दे० दीर्घतमा। भरद्वाजको, उत्पन्न होनेपर, मरुतोंने पाला (भाग० ९.२०.३६-९; मत्स्य० ४८.३३-४१; ९४.१५; विष्णु० ४.१९.१६; वायु० ९९.३७; १०३.५९; १०६.५०)। दैत्यगुरु शुक्राचार्यने १००० वर्षोंतक शिवजीके निर्देशानुसार सिद्धिके लिए तपस्या की तदनन्तर १० वर्षोंतक इन्द्रपुत्री जयन्तीके साथ गुप्त रूपसे रहे थे। बृहस्पति ही इस अवधिमें उनका रूप धर उनके स्थानापन्न दैत्यगुरु रहे थे। उनके आनेपर भेद खुल जानेके कारण यह अपने स्थानपर चले गये थे (मत्स्य० ४७-१८१-२०५)। तारकामयमें इन्द्रने इनकी सम्मति ली थी (भाग० ६.७.७९, १६-१९; मत्स्य० १४८.६२-७६)। (२) एक ग्रह जो शुक्र (भार्गव=वायु०) का ३।४ है तथा इसकी १२ किरणें हैं (ब्रह्मां० २.२३.८५; मत्स्य० १२८.४८, ६४; वायु० ५३.८७)। इसका रथ सुवर्णका है जिसे वायुवेग ८ श्वेत (लाल=वायु०) घोड़े खींचते हैं (मत्स्य० १२७.५; वायु० ५२.७७-९; विष्णु० २.१२.१९)। इसका स्थान बुधसे ऊपर (वायु० ५३.९७); २००० योजन अंगारकसे ऊपर तथा शनिसे नीचे है (वायु० १०१.१३३; विष्णु० २.७.९)। (३) एक ऋषि (मत्स्य० १५४.९२) जिसने सांख्यायनसे भागवत सुना (भाग० ३.८.८) तथा जो उद्धवके गुरु थे (भाग० ३.१.२५; ४.७.६०)। इन्होंने जनमेजयको सर्पसत्र छोड़ देनेकी राय दी थी (भाग० १२.६.२३-२८)। (४) मूर्तिकला छोड़कर शेप शिल्पशास्त्रका एक आचार्य (मत्स्य० २५२.३; १६१.५७)। (५) गोकर्ण, जो सोलहवें द्वापरके एक भगवदवतार थे, के चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (वायु० २३.१६२)। (६) चौथे द्वापरके वेदव्यासका नाम (विष्णु० ३.३.१२)।

बृहस्पतिसव—पु० [सं०] एक यज्ञ जिसे दक्षने किया था और वीरभद्रने जिसमें विघ्न डाला था (भाग० ४.३.३; ७.५५)।

बैकुंठचतुर्दशी—स्त्री० [सं०] हेमलंब संवत्सरकी कार्तिक शुक्ला अरुणोदय व्यापिनी १४ को 'मणिकर्णिक' ब्राह्ममुहूर्त्त में विश्वेश्वर और विश्वेश्वरीका पूजन करके व्रत करे तो वैकुण्ठ मिलता है (सनत्कुमारसंहिता)।

बैजनाथ—पु० [सं०] दे० वैद्यनाथ।

बैजभृत्—पु० [सं०] भार्गवकुलका एक प्रवरप्रवर्तक ऋपि (मत्स्य० १९५.३०)।

बोध—पु० [सं०] (१) धर्मका बुद्धिसे उत्पन्न पुत्र (ब्रह्मां० २.९.६०; वायु० १०.३६)। (२) मध्यदेशका एक राज्य जहाँके निवासी भी इसी नामके हैं (ब्रह्मां० २.१६.४१)।

बोधप—पु० [सं०] वशिष्ठवंशके एकार्पेय प्रवरप्रवर्तक ऋपि (मत्स्य० २००.३)।

बोधात्मक—पु० [सं०] क्षेत्रज्ञ निद्रामें भी सचेत रहता है (वायु० ५९.७७)।

बोधिद्रुम—पु० [सं०] बोधिवृक्ष जो वृक्षोंका राजा है (वायु० १११.३४)।

बोध्य—पु० [सं०] एक सिद्ध तथा बाष्कलका एक शिष्य जो प्रथम ऋक्-शाखाका अधिकारी था (भाग० ६.१५.१४; १२.६.५५; ब्रह्मां० ६०.२६; विष्णु० ३.४.१८)।

बौधेय—पु० [सं०] याज्ञवल्क्यका एक शिष्य और याज्ञवल्क्यके शिष्य कण्व आदि १५ वाजियों (वाजसनेयियों) मेंसे एक वाजी (ब्रह्मां० २.३५.२८)।

ब्रह्म—पु० [सं०] परमात्मा, परब्रह्म (वायु० ६१.१०७-१२), ऋक्, यजु, साम और अथर्व रूप (विष्णु० ३.३.२३-३०)। यह सरूप तथा अरूप और पर तथा अपर भी कहा गया है। पुष्कर द्वीपके लोग सकर्मक-कर्मसे इसकी उपासना करते हैं (भाग० ५.२०.३२-३)।

ब्रह्मकला—स्त्री० [सं०] सती देवी चित्तमें इस नामसे स्थित मानी गयी हैं (मत्स्य० १३.५३)।

ब्रह्मकल्प—पु० [सं०] ब्रह्माके उत्पन्न होनेका समय (भाग० २.८.२८; १०.४६; ३.११.३४)।

ब्रह्मकुण्ड—पु० [सं०] यह ब्रह्मक्षेत्र तथा गयाक्षेत्रमें स्थित है (वायु० ५९.१२२; ८३.२०; ११०.८)।

ब्रह्मकूर्चव्रत—पु० [सं०] प्रायश्चित्तका एक व्रतविशेष जिसमें पहिले ३ दिन उपवास फिर पलाश, गूलर, पद्म तथा बेलके पत्ते और कुशका क्वाथ लेनेका विधान है (प्रायश्चित्तेन्दुशेखर तथा प्रायश्चित्तप्रदीप-कृत्यप्रदीप-शुद्धिप्रदीप)। कार्त्तिक शु० १४ को देवोंको तोय, अक्षत आदिसे तथा पितरोंको तिल, तोय आदिसे तृप्तकर कपिला गौका गोमूत्र, कृष्ण गौका गोमय, श्वेत गौका दूध, पीली गौका दही और कबरी गौका घी ले कुशोदक मिला यही पंचगव्य रातमें पीये तो तत्काल ही सब पाप-ताप दूर हो अद्भुत बल और पौरुषका उदय होता है—दे० 'हेमाद्रि'।

ब्रह्मक्षेत्र—पु० [सं०] ब्रह्मा द्वारा कुरुक्षेत्रमें स्थापित एक महातीर्थ जो वायुपुराणका उद्गम स्थान माना जाता है।

यहाँ सप्तर्षियोंका निवास कहा गया है (वायु० ५९.१०६-७; ९७.५) ।

ब्रह्मगार्ग्य–पु० [सं०] वासुदेवके पुरोहित (वायु० ९८, ९४) ।

ब्रह्मघोष–पु० [सं०] देवालयादिकी स्थापनाके समय होनेवाला वैदिक मन्त्रोंका विधिवत् पाठ (मत्स्य० २५६.८; २६४.३४) ।

ब्रह्मचारिणी–स्त्री० [सं०] नवदुर्गाओंमें की एक (दूसरी) नवदुर्गादेवी (ब्रह्मां०; दुर्गासप्तशती) ।

ब्रह्मचारी–पु० [सं०] (१) क्रोधा और कश्यपके दस एक पुत्रोंमेंसे देवगंधर्व एक पुत्र (ब्रह्मां० ३.६.३९; वायु० ६८.३८) । (२) इनके लिए दण्डादिधारण, पृथ्वीशयन, गुरुसेवा, शिक्षा तथा भिक्षादिपर जीवन-निर्वाह ये नियम पालनीय कहे गये हैं (भाग० ७.१२ पूरा, ११.१८.४२-३; ब्रह्मां० २.७.१७५; ३२.३४; ३.९.७०; मत्स्य० ४०.२; वायु० ५९.२३; विष्णु० ३.९.१-७) । ये इसी प्रकार आजीवन वैखानस या परिव्राजकाश्रममें रह सकते हैं (विष्णु० ३.१०.१४-१५) ।

ब्रह्मज–पु० [सं०] तीन प्रकार (आग्नेय, ब्रह्मज तथा पक्षज)के वादलोंमेंसे ब्रह्माकी श्वाससे उत्पन्न (ब्रह्मज) वादल जिनसे चमकके साथ विजलीका गर्जन होता है जिनमें जीमूत जलद प्रधान है जो डेढ़ योजनकी दूरीसे वर्षा करते हैं (वायु० ५१.२८, ३४-७) ।

ब्रह्मजित्–पु० [सं०] कालनेमिके चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (वायु० ६७.८०) ।

ब्रह्मज्योति–पु० [सं०] शंस्यपुत्र उपस्थेय ८ अग्नियोंमेंसे एक अग्नि (ब्रह्मां० २.१२.२५; वायु० २९.२१) ।

ब्रह्मज्ञान–पु० [सं०] मुक्तिप्राप्तिके चार उपायों (ब्रह्मज्ञान, गयाश्राद्ध, गोशालामें मृत्यु तथा कुरुक्षेत्रमें वास) मेंसे एक उपाय (वायु० १०५.१६) ।

ब्रह्मण–पु० [सं०] कश्यप और कद्रूके काद्रवेय नाग पुत्रोंमेंसे एक काद्रवेय नागका नाम (वायु; ब्रह्मां० ३.७.३६) ।

ब्रह्मणस्पति–पु० [सं०] ब्रह्मवर्चस्की वृद्धिके लिए इनकी उपासना की जाती है (भाग० २.३.२) ।

ब्रह्मपुत्र–पु० [सं०] वे ऋषि जो ब्रह्माके हृदय, कान, नेत्र या श्वास आदिसे उत्पन्न हुए थे (वायु० १००-३) ।

ब्रह्मण्य–पु० [सं०] पार्वण श्राद्धमें भोजनके लिए उपयुक्त श्रोत्रिय, शिवभक्त, सूर्यभक्त आदि विविध ब्राह्मणोंमेंसे एक जिसका अर्थ होता है ब्राह्मणभक्त (मत्स्य० १६.१०) ।

ब्रह्मतन्वि–पु० [सं०] आंगिरसवंशका त्र्यार्षेय प्रवरप्रवर्तक एक ऋषि (मत्स्य० १९६.१५) ।

ब्रह्मतीर्थ–पु० [सं०] (१) विष्णुके नाभिकमलपर स्थित ब्रह्मासे मधु और कैटभ नामक दैत्य वेद छीन कर ले गये थे, अतः वदरिकाश्रममें जा ब्रह्माने विष्णुकी स्तुति की । वहाँ जिस कुण्डसे हयग्रीव अवतार धारण कर विष्णु प्रकट हुए थे, उसे ब्रह्मकुंड तथा ब्रह्मतीर्थ कहते हैं (स्कंदपु० वैष्णव० वदरिकाश्रम-माहात्म्य) । (२) जिसे अमोहक भी कहते हैं (मत्स्य० १९१.१०४-५) जहाँ वलराम गये थे (भाग० १०.७८.१९; ब्रह्मां० ३.१३.५६) । (३) नर्मदातटपरका एक प्राचीन तीर्थ जो श्राद्धादिके लिए पवित्र माना गया है (वायु० ७७.५५; १११.२६.३०) । (४) कुरुक्षेत्रकी सीमाके अन्तर्गत एक तीर्थ जहाँ स्नान करनेसे अब्राह्मणको भी ब्राह्मणत्वकी प्राप्ति हो जाती है और ब्राह्मण शुद्धहृदय हो परम गति प्राप्त करता है (महाभा० वन० ८३. ११३) ।

ब्रह्मतुंडह्रद–पु० [सं०] (ब्रह्मतुंगह्रद=वायु०) यमुनाके निकट स्थित एक तीर्थस्थान जहाँ वशिष्ठने स्तम्भवत् (खम्भेकी तरह) खड़े रहकर तपस्या की थी (ब्रह्मां० ३.१३.७३) । श्राद्धके लिए पवित्र; यहाँ स्नान करनेवाला ब्रह्माके तुल्य हो जाता है । यहाँ एक तुला है जिससे किसीके पाप-पुण्यकी तौल होती है (वायु० ७७.७१.३) ।

ब्रह्मदंड–पु० [सं०] सृष्टिकर्ताका दण्ड देनेका दण्ड (मत्स्य० २४५-२; २४०.६५) । सगरपुत्रगणको इसीसे दण्ड मिला था वे निरयगामी हुए थे । अपने पितरोंको ब्रह्मदण्ड हत सुनकर धर्मात्मा राजा दिलीपको अत्यन्त दुःख हुआ । उनके उद्धारका उपाय पूछ कर उन्होंने गंगाके आनयनके लिए तपस्या आरम्भ कर दी । (ब्रह्मां० ३.५३.४५; ५४.८, २५; ५६.३५) ।

ब्रह्मदत्त–पु० [सं०] (१) चुलिय ऋषिके पुत्र तथा कांपिल्लके राजा जिन्हें कुशनाभकी १०० कुबड़ी पुत्रियाँ ब्याही थीं –दे० कान्यकुंज । ह्वेनसांगने इन्हें कुसुमपुरका राजा लिखा है । (२) नीप तथा शुक-पुत्र कृत्वीका पुत्र एक योगी जिसकी पत्नी गो तथा पुत्री विष्वक्सेन था (भाग० ९.२१.२५; मत्स्य० १५.१०) । यह शाल्वका राजा था [भाग० १०.५२.११(८)] जिसका वध श्रीकृष्णने किया था (भाग० १०.५२ [५६(५)८] । (३) अणुह तथा कीर्तिमतीका पुत्र (ब्रह्मां० ३.८.९४; १०.८२; ७४.२६८; मत्स्य० ७०.८६; ७३.३१; ९९.१८०; विष्णु० ४.१९.४५-६) । (४) पांचाल नरेश विभ्राजका पुत्र जो पूर्वजन्ममें कौशिकका एक पुत्र पितृवर्त्ती थी । देवलकी पुत्री सन्नति इसकी पत्नी थी जो पूर्व जन्मोंमें एक बार गर्गकी गौ थी जिसे कौशिक-पुत्रोंने एक दुर्भिक्षमें मार डाला था । यह पाँचालका अभिषिक्त राजा हुआ और इसके पूर्व जन्मके दो भाई इसके मन्त्री हुए । एक बार राजा रानीके साथ अपनी आनन्द-वाटिकामें गया जहाँ दो चींटियोंको जो पति-पत्नी थे झगड़ते देख इन्हें विस्मय हुआ । मादा चीटी पतिको एक दूसरी पड़ोसी मादा चींटीको मोदक कण चुपचाप देनेका लाँछन लगा रही थी । नर (चींटा) कहता था कि उसने पत्नीके धोखेमें उसे दे दिया था और भविष्यमें वह अधिक सतर्क रहेगा । ब्रह्मदत्त जो ईश्वरीय कृपासे कीटाणुओंकी भाषा समझता था चींटियोंका यह प्रेम-द्वन्द्व समझ हँस पड़ा पर रानी सन्नतिने समझा कि राजा उसे देखकर हँसा था, अतः वह रुष्ट हो गयी । राजाने सात दिनों का एक व्रत किया और सुदरिद्र ब्राह्मणको देखते ही उसे अपने पूर्वजन्मकी कथाका स्मरण हो आया और अपने पुत्र विष्वक्सेनका राज्याभिषेक कर वह स्वयं एक सिद्ध हो गया (मत्स्य० २०.२३-३८; २१.१६, २४-३५) ।

ब्रह्मदा–पु० [सं०] भारतवर्षकी एक महानदी जिसे लोमहर्षण लोमश ऋषिने अन्य पुण्य नदियोंके साथ गयास्थित मुण्डपर्वतके शिखरपर आहूत किया था (वायु० १०८.८१) ।

ब्रह्मदान–पु० [सं०] नवाँ गंधर्व ग्रामिक (वायु० ८६.४३) ।

ब्रह्मदिन–पु० [सं०] सृष्टिकर्ता ब्रह्माका दिन जिसके अन्तमें वैराज नामक देवगण योगविभ्रष्ट होकर सनातन लोकोंको प्राप्त कर फिर ब्रह्मवेत्ताओंके बीच ब्रह्मवादीके रूपमें उत्पन्न होते हैं एवं पूर्व स्मृतिको प्राप्त कर योगसे पुनरावृत्ति रोहित सिद्धिको प्राप्त होते हैं (मत्स्य० १३.५)।

ब्रह्मदुर्ग–पु० [सं०] यहाँके ऋषि लोग द्वारका गये थे [भाग० १०.९०.२८(६)]।

ब्रह्मदेयसुत–पु० [सं०] वंशपरम्परागत वैदिक गुरुओंके वंशका पुत्र (वायु० ८३.५४)।

ब्रह्मदेयासुत–पु० [सं०] ब्रह्मदेयाः अर्थात् ब्राह्म विवाहसे व्याही हुई स्त्रीसे उत्पन्न पुत्र (मनु० ३.१८५)।

ब्रह्मधन–पु० [सं०] ब्रह्मधनाका पुत्र। इसकी वहिनका नाम त्वतला था (वायु० ६९.१२५)।

ब्रह्मधना–स्त्री० [सं०] (१) ब्रह्मधानकी एक पुत्री जो शंड को व्याही थी (ब्रह्मां० ३.७.८४-७)। (२) एक यक्ष, जो खशाके दो पुत्रोंमेंसे एक था की पत्नी और जिसे बाल नहीं थे (वायु० ६९.१२३)।

ब्रह्मधाता–पु० [सं०] वैद्युत पर्वत, जिससे सरयू नदी निकली है, का निवासी एक महापराक्रमी राक्षस जो प्रहेतिका पुत्र तथा कुवेरका अनुचर था (मत्स्य० १२१.१८)।

ब्रह्मधान–पु० [सं०] राक्षसोंकी तीन जातियोंमेंसे एक जातिके राक्षस जो निशाचरोंके विपरीत दिनमें ही घूमते-फिरते हैं (ब्रह्मां० ३.८.६१)।

ब्रह्मपद–पु० [सं०] (१) ब्रह्ममें लीन हो तत्त्वरूप हो जाना (वायु० १०१.९१)। (२) एक तीर्थका नाम यह गयामें है (वायु० १०९.१८; १११.४८, ५६)।

ब्रह्मपात–पु० [सं०] (मत्स्य० = ब्रह्मधाता) प्रहेतृ-पुत्र एक, महावलवान् राक्षस जो कुवेरका अनुगामी था और सरयूके किनारे वैभ्राजवनमें निवास करता था। 'यह वैभ्राजवन सरयूके उद्गम स्थान वैद्युत पर्वतपर है (वायु० ४७.१६)।

ब्रह्मपार्श्व–पु० [सं०] निषध पर्वतके उत्तरी भागमें ब्रह्माका स्थान जहाँ अग्निका एक प्रसिद्ध मन्दिर है (वायु० ४१.५९, ६१)।

ब्रह्मपुर–पु० [सं०] ब्रह्मलोक (वायु० १०८.३९,४५; १०९.३९)।

ब्रह्मपुराण–पु० [सं०] १८ पुराणोंमेंसे एक जिसके श्लोकोंकी संख्या अन्य पुराणानुसार १०,००० लिखी है पर उपलब्ध केवल ७००० हैं। इसमें पुरुपोत्तमक्षेत्र (जगन्नाथजी) और कोणादित्यके मंदिर आदिका विस्तृत वर्णन है तथा श्रीकृष्णकी कथा भी दी है। अधिकतर वर्णन तीर्थों और उनके माहात्म्यका ही मिलता है (वायु० १०४.६)।

ब्रह्मबल–पु० [सं०] (१) ९० होत्रवान् ब्रह्मचारियोंमेंसे एक तथा एक श्रुतर्षि (ब्रह्मां० २.३३.१०)। (२) देवदर्शके चार शिष्योंमेंसे एक शिष्य (ब्रह्मां० २.३५.५७)। (३) वशिष्ठवंशका एकार्षेय प्रवरप्रवर्तक एक ऋषि (मत्स्य० २००.६)। (४) वेदस्पर्श (ब्रह्मां० = देवदर्श)के मोद आदि चार शिष्योंमेंसे एक शिष्यका नाम (वायु० ६१.५१)।

ब्रह्मबलि–पु० [सं०] (ब्रह्मां० तथा वायु० = ब्रह्मबल) वेददर्शका एक शिष्य (भाग० १२.७.२; विष्णु० ३.६.१०)।

ब्रह्मभागा–स्त्री० [सं०] भद्र महादेशकी महागङ्गा आदि प्रधान पुण्यतोया नदियोंमेंसे एक नदी (वायु० ४३.२८)।

ब्रह्मयज्ञ–पु० [सं०] (१) एक यज्ञ जिससे मोक्ष मिलता है (वायु० १४.५)। (२) गृहस्थोंके चक्की, चूल्हा, ऊखल-मूसल, जलपात्र, झाड़ू आदिके उद्योगसे होनेवाले जीव-हिंसाजन्य पापोंके प्रायश्चित्तके लिए ऋषियों द्वारा निर्दिष्ट ५ महायज्ञोंमेंसे एक महायज्ञ जिसका नामान्तर स्वाध्याय है (मनु ३.६८-७४)।

ब्रह्मराक्षसगण–पु० [सं०] भूतोंका एक वर्ग विशेष जिसके अन्तर्गत अगस्त्य तथा विश्वामित्रके वंशज माने गये हैं। (भाग० १०.६३.११; ब्रह्मां० १.२.३३; ३.७.१००; ८.५९; वायु० २.३३)। इनका निवास सुरभि वनमें कहा गया है (मत्स्य० १२१.६२)। इनका जन्म ब्रह्मराक्षसियोंके परिवारमें कहा गया है और ये अधिकतर श्लेष्मातक (लिसौड़े)के वृक्षोंपर निवास करते हैं (वायु० ६९.१३४-५)।

ब्रह्मरात–पु० [सं०] व्यासपुत्र शुक (भाग० १.९.८)।

ब्रह्मरात्र–पु० [सं०] ब्राह्ममुहूर्त सूर्योदयसे पहिलेका समय। कहते हैं रासक्रीड़ाके पश्चात् गोपियाँ इसी समय अपने अपने घर गयी थीं (भाग० १०.३३.३९)।

ब्रह्मलोक–पु० [सं०] ब्रह्माका निवासस्थान अर्थात् वैरञ्च्य-भवन तथा स्थायी लोक (मत्स्य० ८९.६; १७८.७६; भाग० ४.३१.२३; ११.२३.३०; वायु० १०१.२७)। यह भूलोकसे १३ करोड़ १५ नियुत योजन और सत्यलोकसे एक करोड़ ५० नियुत ऊपर है। इसमें ब्रह्मर्षिगण निवास पाते हैं (वायु० ६१.८७; १०१.११२; २२०; ६५.१४१; १०६.२०; १०८.१२; १११.३३.४९)। अगस्त्येश्वर तथा देवतीर्थमें स्नान करनेवालोंको यह लोक मिलता है (मत्स्य० १९१.१६, २४)। विरजा (आज्यप पितरोंकी मानसी कन्या विरजा) यहीं जाकर एकाष्टका हुई थी (मत्स्य० १५.२५)। ब्रह्मदत्तकी कथा सुननेवाले भी इसे प्राप्त करते हैं (मत्स्य० २१.४१) ययाति देवलोकसे ब्रह्मलोक गये थे (मत्स्य० ३६.२)। हिरण्यगर्भ दान करनेवाले (मत्स्य० १९४.२८; २०५.८; २७५.२६)। माघपूर्णिमाको ब्रह्मवैवर्तपुराण-दान देनेवाले (मत्स्य० ५३.३४-६) इसी लोकको जाते हैं (ब्रह्मां० २.३५.९७) तथा यहाँके निवासियोंका पुनर्जन्म नहीं होता। अद्वैत मोक्ष हो जाता है (वायु० ७.३२; २१.७०; २२.२०), वैमानिक देवगण अन्तमें यहीं पहुँचे थे और प्रलयके समय ईश्वरमें लीन हो ईश्वरमय हो गये थे (ब्रह्मां० १.५.११०; २.६.३१)।

ब्रह्मलौकिक–पु० [सं०] ब्रह्मलोकके निवासीगण (वायु० १०२.४३; ब्रह्मां० ४.२.८२)।

ब्रह्मवन–पु० [सं०] एक वन जहाँ एक ब्रह्मवृक्ष है (वायु० ९.११९)।

ब्रह्मवली–पु० [सं०] वशिष्ठवंशज त्र्यार्षेय प्रवरप्रवर्तक एक ऋषि (मत्स्य० २००.१२)।

ब्रह्मवराह–पु० [सं०] इसके वृत्तान्तका विवरण ब्रह्मवैवर्त्तमें है (मत्स्य० ५३.३५)।

ब्रह्मवान्–पु० [सं०] २१ मन्त्रकृत् भृगुओंमेंसे एक मंत्रकृत्

ऋषि (मत्स्य० १४५.१००)।

ब्रह्मवादिगण–पु० [सं०] कश्यप, वशिष्ठ, भृगु, अंगिरस तथा अत्रि, इन्हीं पाँच गोत्रोंमें ये उत्पन्न होते हैं (वायु० ६१.८१)।

ब्रह्मवादी–पु० [सं०] त्रिमूर्तिमें भी एक ही ईश्वरको जो देखे (वायु० ६६.११४; १०१.११२)।

ब्रह्मवाह–पु० [सं०] याज्ञवल्क्यके पिताका नाम (वायु० ६०.४१)।

ब्रह्मविष्णुशिवात्मिका–स्त्री० [सं०] श्री ललितादेवीका एक नाम (ब्रह्मां० ४.१२.७१)।

ब्रह्मवृक्ष–पु० [सं०] ब्रह्मलोकका एक वृक्ष, शरीर = वृक्ष है और जीव ही ईश्वर (वायु० ९.११६, ११८-१९)।

ब्रह्मवेद–पु० [सं०] (अथर्ववेद) वारुणी यज्ञमें इसे मनुष्यका रूप दिया गया है (ब्रह्मां० ३.१.२६-३०)। यह निर्दयी कृत्यविधियों अर्थात् मारण, मोहन आदि आभिचारिक विधानों तथा प्रत्यंगरसयोगोंसे युक्त है और इसका एक मस्तक पर शरीर दो हैं (वायु० ६५.२७)।

ब्रह्मवैवर्त्त–पु० [सं०] १८ महापुराणोंमेंसे एक जिसमें श्रीकृष्णसम्बन्धी कथाएँ हैं तथा श्लोकोंकी संख्या १८००० है। मत्स्यपुराणानुसार सावर्णिने नारदसे ‘रथंतर’ कल्पके श्रीकृष्णका माहात्म्य और ब्रह्मवाराहकी गाथा कही है। ब्रह्म, प्रकृति, गणेश और कृष्णजन्म नामके इसके चार खंड हैं, पर आजकल जो ग्रंथ मिलता है उसपर मत्स्य, नारद या शिवपुराणमें दिये हुए लक्षण नहीं घटते। माघकी पूर्णिमाको इस पुराणका दान करनेवाला ब्रह्मलोक प्राप्त करता है (भाग० १२.७.२४; १३.६; मत्स्य० ५३.३४-६; वायु० १०४.४; विष्णु० ३.६.२२)।

ब्रह्मव्रत–पु० [सं०] इस व्रतके करनेसे निर्वाण प्राप्त होता है (मत्स्य० १०१.४८)।

ब्रह्मशिर–पु० [सं०] एक अस्त्र जिसका उल्लेख रामायण और महाभारत दोनोंमें ही मिलता है। इसका चलाना अगस्त्यसे द्रोणाचार्यने सीख अर्जुन और अपने पुत्र अश्वत्थामाको सिखाया था। अश्वत्थामाने अर्जुनपर इसका प्रयोग किया था (भाग० १.७.१९, २७; ८.१५; १२.१)। तारकामयमें भी इसका प्रयोग हुआ था (ब्रह्मां० ३.६५.३३)।

ब्रह्मशिला–स्त्री० [सं०] कूर्मशिला और किसी मूर्तिकी पिंडिकाके बीचका पत्थर (मत्स्य० २६६.५)।

ब्रह्मशीर्ष–पु० [सं०] एक प्राणघातक अस्त्र जिसे रुद्रने सोम (चन्द्रमा)के विरुद्ध चलाया था (मत्स्य० २३.४३)।

ब्रह्मसत्र–पु० [सं०] (१) ब्रह्माके प्रीत्यर्थ किया जानेवाला एक यज्ञ (वायु० ३०.११९) जो जनलोकमें होता है (भाग० १०.८७.९)। (२) यह नित्य अमृत, अक्षय शाश्वत तथा सर्वव्यापी है (वायु० १०१.८६)। इसकी उपासना देवर्षि करते हैं (ब्रह्मां० ४.२.८४)।

ब्रह्मसदन–पु० [सं०] एक स्थान जहाँ गंगा सीता, अलकनन्दा, चक्षु और भद्रा नामकी चार धाराओंमें बट जाती है, यहाँ ब्रह्माका निवास कहा गया है (भाग० ५.१७-४-५; ब्रह्मां० ४.९.२०)।

ब्रह्मसर–पु० [सं०]—एक प्राचीन तीर्थस्थानका नाम जो पितरोंके श्राद्धके लिए उपयुक्त है (मत्स्य० २२.१२; वायु० ७७.५१; महाभा० वन० ८४.८५)।

ब्रह्मसावर्णि–पु० [सं०] दसवें मनुका नाम जो उपश्लोकके पुत्र थे। इनके भूरिषेण आदि १० पुत्र थे। इनके युगमें हविष्मान् आदि सप्त ऋषि थे, विष्वक्सेन नामक विष्णुका अवतार हुआ तथा शंभु (शांति = विष्णु०) इन्द्र थे (भाग० ८.१३.२१-३; विष्णु० ३.२.२५.२८)।

ब्रह्मसुत–पु० [सं०] सूतका एक नाम (मत्स्य० १८०.३)।

ब्रह्मसू–पु० [सं०] कामदेवका एक नाम—दे० कामदेव।

ब्रह्मसूत्र–पु० [सं०] (१) बादरायणरचित ब्रह्ममीमांसासूत्रका नाम जिसे वेदांतसूत्र भी कहते हैं। (२) मन्दिरका एक स्थान जिसके दक्षिण भागमें मूर्ति स्थापित की जाती है (मत्स्य० २६३.३, ६)।

ब्रह्मस्थान–पु० [सं०] वेदीका एक स्थान जहाँ ब्रह्मज्योति नामक अग्निकी स्थापना की जाती है। यहीं विश्वव्यचा अग्नि भी स्थापित की जाती है (ब्रह्मां० २.१२.२४, २५)।

ब्रह्मस्व–पु० [सं०] किसी ब्राह्मणकी सम्पत्तिका राजा द्वारा हरण नहीं होना चाहिये। जमदग्निकी गौ लेनेके कारण हैहयको इसका दण्ड तथा प्रायश्चित्त करना पड़ा था (ब्रह्मां० ३.२८.३८-५०, ६८; २९.१; ३०.२)।

ब्रह्मर्षि–पु० [सं०] सात प्रधान ऋषि जिनमें भृगु प्रधान थे (भाग० ४.२१.१३; ८.४.२३, ११, १४.४)। वालखिल्यगण ब्रह्मर्षि हैं (भाग० १२.११.४९) इन लोगोंने ब्रह्मासे वेद सुना (भाग० १२.६.४५; ब्रह्मां० २.३५-८९-; ९१, ९७)। ये ब्रह्मलोकमें स्थित रहते हैं (वायु० ६१.८८ वायु० ६१.८०-१)।

ब्रह्महत्या–स्त्री० [सं०] इसमें इन्द्रको भी जला भस्मकर देनेकी शक्ति है (मत्स्य० २५.४८; वायु० ५०.२२१; ६१-२२; १०१.१५२; १०५.१३; १०८.५५)। रोमहर्षणका वध करनेसे बलरामको यह पाप लगा जो ऋषि प्रार्थनापर दल्वलके वधसे तथा भारतवर्षके सब पुण्य तीर्थोंकी यात्रासे छूटा (भाग० १०.७८.२३-४०)। वैशंपायन तथा शिवको भी यह पाप लगा था (ब्रह्मां० २.३५.१६; ३.२३.६२)। मद्यपान भी ब्राह्मणके लिए ब्रह्महत्या सम पाप कहा गया है (मत्स्य० २५.६२)। नक्षत्र पुरुषकी विधिवत् उपासना (मत्स्य० ५४.३०) तथा शुभसप्तमीव्रतसे (मत्स्य० ८०.१२) छूटता है। रत्नाचलदान तथा ग्रहोंके कोटिहोमसे भी ब्रह्महत्यासे मुक्ति होती है (मत्स्य० ९०.११; ९३.१३९)। ब्रह्माका पाँचवा शिर काटनेसे शिवको लगा पाप काशीमें छूटा था (मत्स्य० १८२.१५; १८३.१०१)। ब्रह्महत्याजनित पाप नर्मदा स्नानसे भी छूटता है (मत्स्य० १८६.६६; १९२.१६; २२७.२१५)।

ब्रह्महा–पु० [सं०] (१) अनायुषाके अररु आदि पाँच पुत्रोंमेंसे एक वृष (वायु० = विष)के क्रूरकर्मा, श्राद्धाद आदि चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (ब्रह्मां० ३.६.३४; ६८.३३)। (२) ब्रह्महत्या या भ्रूणहत्या करनेवाला (वायु० १०१.१५२; ११२.१०)। (३) एक पाप। यदि कोई पुरुष किसी स्त्रीके गुप्त प्रेमकी अवहेलना करे या ठुकरा दे जिससे उसका अपमान होता हो तो वह इसी पापका भागी होता है। ययातिने इसी पापके भयसे शर्मिष्ठासे विवाह किया था (मत्स्य०

३२.३३)।

ब्रह्महृद–पु० [सं०] यह व्याससरके निकट है जहाँ अक्रूर गये थे श्रीकृष्ण, नारद और गोपोंको यहाँ ले गये थे (भाग० १०.२८.१६-१७; (ब्रह्मां० ३.१३.५२)।

ब्रह्मांड–पु० [सं०] अट्ठारहपुराणोंमेंसे एकका नाम (ब्रह्मांड-पुराण) इसमें १२००० श्लोक (१२२००=मत्स्य; १२१०० वायु०) हैं पर सम्पूर्ण ब्रह्मांड का मिलना इस समय कठिन है। अध्यात्मरामायण इसीके अन्तर्गत है। महाभाग सूतने दृषद्वती नदीके तीरपर यक्षक्षेत्रमें इस पुराणका वर्णन किया है जिससे प्रकट होता है कि सबसे पहिले इस पुराणका वर्णन वायुने किया था और सूतजीने वेदव्याससे सुना था। दूसरे मतसे इसे ब्रह्माने कहा था और इसमें ब्रह्मांडका विवरण है। इसमें सृष्टि-प्रकरण, कल्पनिरूपण, युगभेद, भरतवंश, पृथुवंश, देववंश, ऋषिवंश, अग्निवंशादिका विस्तृत वर्णन है। दो पीत ऊनी वस्त्र तथा एक सुवर्ण गौके साथ इस पुराणका व्यतीपातमें दान करनेवाला १००० राजसूय यज्ञोंका फल पाता है (भाग० १२.७.२४; १३.८; मत्स्य० ५३.५६; वायु० १०४.५; विष्णु० ३.६. २३)।

ब्रह्मा–पु० [सं०] (१) सृष्टि करनेवाले देवता। 'मनुस्मृतिके अनुसार स्वयंभू भगवान्ने जलकी सृष्टि करके उसमें जो बीज फेंका उसीसे ज्योतिर्मय अण्ड उत्पन्न हुआ जिसके भीतरसे ब्रह्माका प्रादुर्भाव हुआ।' भागवत आदि पुराणोंके अनुसार भगवान्ने योगनिन्द्रामें पड़कर जब शयन किया तब उनकी नाभिसे एक कमल निकला जिसपर ब्रह्माकी उत्पत्ति हुई। मत्स्यपुराणानुसार इनके चार मुख हैं, आप्तोर्याम याग इनके चौथे मुखसे उत्पन्न हुआ था (ब्रह्मां० २.८.५३)। इनके पाँच मुखोंकी गाथाका संबंध इनकी पुत्री तथा पत्नी शतरूपासे है (भाग० १.३.२; ३.८.१३-१६; ९.१.८-१०; ११.४.५; १२.५.१; मत्स्य० १.१४; २.३६; ३.१, ३७, ४०)। ब्रह्माके दस (१०) मानस-पुत्र हुए जिन्हें प्रजापति कहते हैं। पुराणानुसार यही वेदोंके प्रकट करनेवाले कहे गये हैं। मनुष्यके कर्मानुसार शुभाशुभ फलको ब्रह्मा ही गर्भावस्थामें स्थिर कर देते हैं। सरस्वती इनकी पुत्री कही गयी है। एक परमेष्ठी (भाग० ४.२१.२९; २९.४२) जिनका सुवर्णनगर मेरुपर स्थित माना गया है (भाग० ४.८.२०)। चारों युगोंका १००० चक्कर=ब्रह्माका एक दिन; प्रलय=इनकी रात है। इनको जीवनकाल द्विपरार्ध है। विष्णुने इन्हें प्रकृतिसे ९ प्रकारकी सृष्टियोंका रहस्य कहा था। इन्होंने वेदों तथा मानवसमाजकी सृष्टि की। शंभुके एक मानस-पुत्रकी सृष्टि की जिसने ब्रह्मलोक प्राप्त किया। भुव नामक इनका एक पुत्र पृथ्वीको भेजा गया; तीसरा पुत्र भूर्भुव गोप्ति हो गया। इनके शरीरसे गायत्री उत्पन्न हुई जो इनकी पत्नी बनी। तदुपरांत प्रजापति, समुद्रादिकी सृष्टि हुई थी (भाग० १.१८.१४; ३.८.२२-३२; ९.१.२४, २९-४४; १०.३.६, ८, १३-२६)।

यह हिन्दू त्रिमूर्तिके प्रथम देवता हैं जिनका रंग पीत मिश्रित लाल कहा गया है। कहते हैं इनके ५ सिर थे पर शंकरने इनका एक सिर नष्ट कर दिया और यह चतुर्मुख हो गये। यह 'अष्टकर्ण' हैं पर भुजाएँ केवल चार ही हैं। ब्राह्मी इनकी पत्नी तथा हंस इनका वाहन कहा गया है। पद्मपुराणानुसार भृगु ऋषिके शापके कारण इनकी पूजा नहीं होती है। केवल अजमेरके निकट पुष्कर क्षेत्रमें ही इनका पूजन होता है। प्रो० वीलियम्सके अनुसार ईदार नामक स्थानपर भी इनका पूजन होता है। शतपथ ब्राह्मणके अनुसार इनके विचरण करनेका स्थान जल (नार) होनेके कारण इन्हें 'नारायण' कहते थे पर आगे चलकर नारायणसे केवल विष्णुका बोध होने लगा। कहते हैं एक बार ब्रह्माजीने यज्ञ करनेका विचार किया और स्वर्गसे ही उन्होंने एक कमलका फूल गिराया। यह फूल जहाँ गिरा वही स्थान यज्ञके लिए उपयुक्त समझा गया। इस स्थानका नाम पुष्कर=कमल रखा गया जो अजमेरसे ५ मील दूर है। ब्रह्माजीकी स्त्री सरस्वती नहीं थी और उनके आनेमें देर देख ब्रह्माने इन्द्रकी सहायतासे एक कन्यासे विवाह कर किसी प्रकार यज्ञ समाप्त किया। पुराणानुसार इसी कारणसे पुष्कर ब्रह्माकी पूजाके लिए विशेष उपयुक्त समझा जाता है। यहाँ ब्रह्माका एक अच्छा मन्दिर है जिसकी दीवालोंपर लिखे लेखके अनुसार इस मन्दिरके निर्माणके लिए मोगल सम्राट् औरंगजेबने विशेष रूपसे सनद दे दी थी। ब्रह्माका उपर्युक्त यज्ञ ५ दिनोंमें समाप्त हुआ था अतः यहाँ ५ दिनोंतक यात्रियोंकी भीड़ रहती है। बृहस्पति और सोमके झगड़ेमें यह मध्यस्थ थे, हिरण्यकशिपुको इन्होंने वर दिया था, रेवतीका बलरामसे विवाह इन्हींके कहनेपर हुआ था (भाग० १०. ७४.१३)। संसारकी सृष्टिका पूरा विवरण इन्हींसे नारदने सुना था (भाग० १.७.१८)। (२) रात्रिके १५ विभागोंमेंसे एक विभागका नाम (वायु० ६६.४४)। (३) ब्रह्मधनाके १० पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (वायु० ६९.१२२)। (४) यज्ञके १६ ऋत्विजोंमेंसे एक जो नारायणके मुखसे उत्पन्न हुए थे (मत्स्य० १६७.७)। (५) स्थापत्य तथा शिल्पकलाका एक आचार्य (मत्स्य० २५२.३)। (६) ब्रह्माकी मूर्ति जो चतुर्मुख, पद्मासनासीन तथा अगल-बगलमें सरस्वती और सावित्रीसे युक्त होती है (मत्स्य० २६०.४०; २६६. ४२; २८४.६)।

ब्रह्माख्या–स्त्री० [सं०] स्वयं भूब्रह्माकी प्रजासृष्टिकालीन राजसी तनुका नाम। स्वयम्भूकी तीन तनुएँ हैं—पुरुषाख्या, ब्रह्माख्या और कालाख्या। जब ब्रह्मा रजोगुणसे उद्रिक्त होते हैं तब उनकी सात्त्विकी पुरुषाख्या तनु निवृत्त हो जाती है और राजसी ब्रह्माख्या तनु प्राप्त होती है एवं जब उनमें तमोगुणका उद्रेक होता है तब उनकी राजसी तनु निवृत्त हो जाती है तामसी कालाख्या तनु प्राप्त होती है। एक ही स्वयंभू भगवान् प्रजापालनमें सात्त्विकी पुरुषाख्या तनुका आश्रयण करते हैं, प्रजासृष्टिमें राजसी ब्रह्माख्या तनुका आश्रयण करते हैं और प्रजासंहारमें तामसी कालाख्या तनुको ग्रहण करते हैं (वायु०६६.९३)। बाणभट्टने कादम्बरीके मंगलाचरणश्लोकमें यही आशय व्यक्त किया है—"रजोजुषे जन्मनि सत्त्ववृत्तये स्थितौ प्रजानां प्रलये तमस्पृशे। अजाय सर्गस्थितिनाश हतवे त्रयीमयाय त्रिगुणात्मने नमः॥

ब्रह्माणी–स्त्री० [सं०] ब्रह्माकी शक्ति, जो चतुर्मुख, चार भुजाओंवाली तथा हंसवाहन है (मत्स्य० २६१.२४)।

ब्रह्माण्ड–पु० [सं०] (१) सारा संसार जिसके ऊपर सोमपा पितरोंका लोक है (मत्स्य० १५.२५; २४९.२९; २६६.२८; २८९.१३)। इसमें ईश्वरका प्रवेश हुआ (वायु० १०३.२०-१; १०४.३२, ४१; १०७.४३, ५५; १०८.७)। जिसे मंडदानवने विभक्त कर दिया था (ब्रह्मां० ४.१०.८२)। (२) एक दान जिसमें संसारकी सुवर्णप्रतिमा जो २० पल से १००० पलतककी अपनी शक्तिके अनुसार की जाती है, ८ दिग्गज हाथी, वेद तथा वेदांग और ब्रह्मा आदि देवताओंके साथ। अनंतशयन, प्रद्युम्न, संकर्पण, अनिरुद्ध, वासुदेव आदि विष्णुके अनेक रूपोंकी उपासना आदि इसीमें सम्मिलित है। इस दानका करनेवाला स्वर्गका भागी होता है (मत्स्य० २७४.७)।

ब्रह्मापेत–पु० [सं०] आश्विन महीनेमें सौरगणके अन्य छहके साथ सूर्यरथपर अधिष्ठित रहनेवाले एक राक्षसका नाम जो ब्रह्मधनाका पुत्र था (भाग० १२.११.४३; ब्रह्मां० २.२३.२२; ३.७.९८)।

ब्रह्मावर्त्त–पु० [सं०] (१) एक राज्य (भाग० १.१०.३४) जो परीक्षित्की भूमि थी जहाँ धर्म, सत्य तथा यज्ञोंका साम्राज्य था (भाग० १.१७.३३)। मनुसंहिता (२.१७)के अनुसार सरस्वती और दृपद्वती नदियोंके बीचका प्रदेश जहाँ सरस्वती पूर्वकी ओर बहती है। आदिराज पृथुने सौ अश्वमेध यज्ञ यहीं किये थे (भाग० ४.१९.१)। यहाँ ऋषभदेव गये थे (भाग० ५.४.१९; ५.२८)। मनुने (२.१८) इस देशके परम्परागत आचारको सबसे श्रेष्ठ माना है। स्वायंभुव मनुका यहाँ निवासस्थान था जहाँ पुत्री देवहूतिका कर्दम ऋषिके साथ विवाह करनेके पश्चात् वह लौट आये थे (भाग० ३.२१.२५; २२.२६)। (२) ऋषभ और जयंतीके भरत प्रमुख १०० पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (भाग० ५.४.१०)। (३) पितरोंके श्राद्ध आदिके लिए उपयुक्त एक पवित्र तीर्थ जो नर्मदातटवर्ती धारातीर्थके निकट है और जहाँ ब्रह्मा सदा निवास करते हैं, जहाँ स्नान करने मात्रसे ब्रह्मलोकप्राप्ति होती है। आश्विन कृष्णपक्ष, जिसे पितृपक्ष भी कहते हैं, में यहाँ किये गये श्राद्धका अक्षयफल कहा गया है (मत्स्य० २२.६९; १९०.७-८; १९१.७०)।

ब्रह्मासन–पु० [सं०] एक आसन विशेष जिसके अनुसार बैठकर ब्रह्मका ध्यान (समाधि) किया जाता है। परशुराम तपस्या करते समय इसी आसनसे बैठे थे (ब्रह्मां० ३.५७.६)।

ब्रह्मास्त्र–पु० [सं०] एक प्रकारका अस्त्र जो मन्त्र द्वारा चलाया जाता है। यह अमोघ अस्त्र सबसे श्रेष्ठ समझा जाता है और परशुरामजीको यह शिवसे मिला था (ब्रह्मां० ३.३२.५७)। अश्वत्थामाने इसी अस्त्रसे परीक्षित्का गर्भमें ही वध किया था (विष्णु० ४,२०.५२; महाभा० अश्व० ६६.८, ९, १५)।

ब्रह्मिष्ठ–पु० [सं०] (१) राजा भद्राश्वके पाँच पुत्रों, जिन पाँचोंके पञ्चाल जनपद थे, मेंसे एक जिसके क्षत्रोपेत द्विज मौद्गल्य हुए। इसी मुद्गलका पुत्र तथा इन्द्रसेनका पिता (मत्स्य० ५०.६)। (२) असितका एकपर्णानें उत्पन्न पुत्रका नाम (वायु० ७०.२७)।

ब्रह्मेषु–पु० [सं०] (रुक्मेषु)। एक राजा महाप्रतापी राजा रुक्मकवचके पाँच पुत्रोंमेंसे एक सर्वज्येष्ठ पुत्र जिसका नामान्तर ब्रह्मेषु था। इनका अनुज पृथुरुक्म इन्हींका आश्रित था। इन्हें राजाने अपना उत्तराधिकारी बनाया था। इनके दो कनिष्ठ भाइयोंको विदेहमें इनके पिताने ही स्थापित कर दिया था (वायु० ९५.२५-३०)।

ब्रह्मोत्तर–पु० [सं०] पूर्वका एक राज्य जहाँसे होकर गंगाजी दक्षिणसागरकी ओर जाती हैं (मत्स्य० १२१.५०; वायु० ४५.१२३; ४७.४९)।

ब्रह्मोपदेश–पु० [सं०] उपनयनमें गायत्री मंत्रका उपदेश करनेका जो विधान है वह (ब्रह्मां० ४.८.४)।

ब्रह्मोपेत–पु० [सं०] माघ मासमें सौरगणके अन्य छहके साथ सूर्यके रथपर रहनेवाले एक राक्षसका नाम (विष्णु० २.१०.१६)।

ब्रह्मौदनाग्नि–पु० [सं०] लौकिक अग्निका एक पुत्र जिसे भरत भी कहते हैं। यह वैश्वानरका पिता था (ब्रह्मां० २.१२.८; वायु० २९.७)।

ब्राह्म–पु० [सं०] (१) रात्रिके पिछले प्रहरके अन्तिम दो दंड अर्थात् सूर्योदयसे पूर्व दो घड़ीतकका समय (वायु० ६६.४०; ब्रह्मां० ३.३.३९; विष्णु० ३.११.५)। (२) कृतयुग (सत्ययुग)का नाम—"ब्राह्मं कृतयुगं प्रोक्तम्॥" (वायु० ७८.३६)। (३) षड्दर्शनोंमेंसे एक दर्शन—"ब्राह्मं शैवं वैष्णवं च सौरं शाक्तं तथाऽऽर्हतम्" (वायु० १०४.१६)। (४) आठ प्रकार विवाहोंमेंसे एक प्रकारके विवाहका नाम (विष्णु० ३.१०.२४)।

ब्राह्मकल्प–पु० [सं०] ब्रह्माकी आयु द्विपरार्द्ध है। पूर्वपरार्द्धके आदिमें यह महान् कल्प (ब्राह्मकल्प) हुआ जब कि ब्रह्मा, जो शब्दब्रह्मके नामसे जाने जाते हैं, उत्पन्न हुए (भाग० ३.११.३४)।

ब्राह्मण–पु० [सं०] (१) चारो वर्णोंमें सर्वश्रेष्ठ वर्ण जिनकी उत्पत्ति ब्रह्माके मुखसे कही गयी है (ऋग्वेद)। पुरुषके मुखसे उत्पन्न ये ब्रह्मवादीगण विष्णुके शरीरके एक अंग हैं (भाग० २.१.३७; ८.५.४१; १०.४.३९; विष्णु० १.६.६, ३४)। कर्म, तप, वेदाध्ययन, ज्ञान तथा योगमें रत रहना इनका धर्म है जिनकी प्रतिष्ठा आवश्यक है (भाग० ७.११.२१; १५.१; १०.८.६; २४.२०; ११.१७.१६)। ब्राह्मणके मुखमें गयी हुई सामग्री देवताओंको मिलती है। ब्राह्मणोंको अपने उच्चपदकी मर्यादा रक्षित रखनेके लिए आचार-विचारभ्रष्ट नहीं होना चाहिये। वृत्तियोंके अनुसार ब्राह्मण चार प्रकारके कहे गये हैं:—(१) कुशूलधान्यक, (२) कुंभीधान्यक, (३) त्र्यहैहिक तथा (४) अश्वस्तनिक। चारोमें अश्वस्तनिक ही श्रेष्ठ माने गये हैं। वेदाध्ययन करना, वेदाध्यापन करना, यज्ञ करना, यज्ञ कराना, दान लेना तथा देना इनके ये छह प्रधान कार्य कहे गये हैं। कलियुगमें ये शूद्र तथा म्लेच्छोंके आश्रित रहेंगे तथा शिवशूल (वेदविक्रय करनेवाले) हो जायेंगे (ब्रह्मां० २.३१.४०-५०)। इनके आचारण शूद्रवत् होंगे (वायु० ५८.४१)। 'असिजीवी मसीजीवी देवलो ग्रामयाजकः। धावकः पाचकश्चैव षड़ेते शूद्रवद् द्विजाः॥' (२) वेदका वह भाग जो

संहिता नहीं कहलाता, जिसमें वेदके मंत्रोंका यज्ञ कार्योंमें विनियोग बतलाया गया है। वेदके मंत्रसंहिता भागसे यह भिन्न है तथा प्रत्येक वेदका ब्राह्मण पृथक् है। इसके १० विधियाँ कहे गये हैं (ब्रह्मां० २.३१.१४; ३३.१.१२; ३५.७३; वायु० ५९.१३२-९; ६८.१२-१४)। द्वापरमें इसका आरम्भ हुआ (मत्स्य० १४४.१३)।

ब्राह्मणवाचन–पु० [सं०] पुण्याहवाचन। शुद्धिके लिए एक धार्मिक कृत्य विशेष जो किसी शुभकर्ममें किया जाता है (मत्स्य० ५४.८; ५; ६६.५; ६७.१३)। ग्रहयज्ञका पूर्वार्द्ध (मत्स्य० ९३.४)। सोलहों प्रकारके तुलापुरुषदान, हिरण्यगर्भदान, ब्रह्माण्डदान, कल्पपादपदान आदि महादानोंमें इसका उच्चारण आवश्यक है (मत्स्य० २७४.२५)।

ब्राह्मणाच्छंसि–पु० [सं०] (१) वैश्वदेव अग्नि (ब्रह्मां० २.१२.२९) (२) यज्ञके सोलह ऋत्विजोंमेंसे एक ऋत्विक्, जिनकी उत्पत्ति भगवान्‌की पीठसे हुई (मत्स्य० १६७.८)।

ब्राह्मपुराण–पु० [सं०] ब्राह्म। १८ महापुराणोंमेंसे एक जिसमें १०,००० श्लोक हैं (भाग० १२.७.२३; १३.४)। यह प्रथम पुराण है (विष्णु० ३.६.२०)। वैशाख पूर्णिमाको इसका दान करे तो ब्रह्मलोक मिलता है (मत्स्य० ५३.१३; २९०.१७)।

ब्राह्मपुरेयक–पु० [सं०] वशिष्ठवंशका एकार्षेय प्रवरप्रवर्तक एक ऋषि (मत्स्य० २००.४)।

ब्राह्मविधि–स्त्री० [सं०] वैदिक आदेश (मत्स्य० २१५.५८)। ब्राह्म-पुरुषरूपी वेदके ब्रह्मरंध्रमें (वायु० १०४.८१)।

ब्राह्मी (निशा)–पु० [सं०] द्रविड़ाधिपति सत्यव्रतके समय की एक ब्रह्मरात्रि अर्थात् एक प्रलय जबकि भगवान् विष्णुका मत्स्यावतार हुआ था (भाग० ८.२४.३७)।

ब्राह्मी (सिद्धि)–स्त्री [सं०] श्राद्धोपयुक्त पवित्र स्थानोंमें शुद्धतापूर्वक श्रद्धासे श्राद्ध करनेसे यह सिद्धि प्राप्त होती है। इसका तात्पर्य है—ईश्वरमय हो जाना, ब्रह्ममें लीन हो जानेकी अवस्था (वायु० ७७.१२३)।

ब्राह्मी (संख्या)–स्त्री० [सं०] (१) संख्या, स्थावरके जीवजंतु १/१०००, पृथिवीमें रहनेवाले कीट-पतंग १/१०००, जिसका १/१००० जलजंतु हैं। इसका १/१००० पक्षी, पक्षियोंका १।१००० चौपाये। इसका १/१००० द्विपदजंतु (मनुष्य) हैं। उनका १/१००० धार्मिकजन हैं, उनका १/१००० स्वर्ग प्राप्त करते हैं, इसका १।१००० मोक्ष प्राप्त करते हैं। स्वर्ग जानेवालोंके बराबर ही नरक जाते हैं (ब्रह्मां० ४.२.१९९-२१०)। (२) ब्राह्मी आदि आठ शक्तियों, जो ब्रह्मादिके सदृश आकार तथा आयुधवाली हैं, मेंसे एक शक्ति (ब्रह्मां० ४.२०.१३; ३६.५८)। (३) अन्धकासुररक्तपानार्थ शिवजी द्वारा सृष्ट कई मानस पुत्री मातृकाओंमेंसे एक मानस-पुत्रिका (मत्स्य० १७९.९)। (४) कल्पलतादान नामक महादानमें विविध-दान की जानेवाली वस्तुओंपर स्थापित अनेक शक्तियोंमेंसे लवणोपरि स्थापित एक शक्ति। (५) केतुमाल देशकी सुवप्रा महानदी आदि कई महानदियोंमेंसे एक नदी (वायु० ४४.२१)।

भ

भंगकार–पु० [सं०] (१) हरिवंशके अनुसार सत्राजित् (शक्रजित्=वायु०)के १०१ पुत्रोंमेंसे ज्येष्ठ पुत्रका नाम। इसकी व्रतवती (द्वारवती=वायु०) पत्नीसे सत्यभामा, व्रतिनी तथा पद्मावती पुत्रियाँ उत्पन्न हुई जो श्रीकृष्णको ब्याही गयी थीं। यह शतधन्वासे मारा गया तथा इसकी स्यमंतक मणि अक्रूरको मिली (मत्स्य० ४५.१९-२१; वायु० ९६.५२-५, ५८; ब्रह्मां० ३.७१.५५)। (२) सोमवंशी महाराज कुरुके पौत्र तथा राजा अविक्षित्‌के पुत्रका नाम (महाभा० आदि० ९४.५३)। (३) एक अंधकश्रेष्ठ सुयज्ञकी पुत्री नराका पति शक्रघ्न और वन्धुमान् नामक दो विख्यात महाबली नरश्रेष्ठ पुत्रोंका पिता। इसके दोनों पुत्र इसके साथ ही युद्धमें अक्रूर द्वारा मारे गये (ब्रह्मां० ३.७१.८७-८)। (४) दैत्यराज बलिका अनुगामी एक असुर (मत्स्य० २४५.३१)।

भंगतीर्थ–पु० [सं०] नर्मदाके निकटवर्ती एकतीर्थ (मत्स्य० १९१.५२-३)।

भंगास्वन–पु० [सं०] एक राजा जिसने पुत्रकी कामनासे अग्निष्टुत यज्ञ किया था फलतः इसे सौ पुत्र हुए थे। महाभारतके अनुसार यह एक प्राचीन राजर्षि थे। इनका इन्द्रके साथ किसी कारण वैर हो गया था इसलिए इन्द्रकी प्रेरणा से ये स्त्रीभावको प्राप्त हो गये। वनमें जानेपर एक तापससे इनके सौ पुत्र हुए। इन्द्रके पूछनेपर इन्होंने इन्द्रको अपना वृत्तान्त सुनाया। विषयसुखकी अपेक्षा स्त्रीभावकी प्रशंसा की (महाभा० अनु० १२.२. १०, २४, ३४-४०, ५२-५३)।

भंजा–स्त्री० [सं०] भय आदिकी नाशक होनेके कारण अन्नपूर्णादेवीका एक नाम (हि० वि० को०)।

भंडित–पु० [सं०] एक गोत्रकार ऋषिका नाम (हि० वि० को०)।

भक्त–पु० [सं०] 'सर्वसुहृद्, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान् भगवान् के ऊपर निर्भर रहकर जो भक्ति करते हैं वे ही भक्त हैं।' भक्तिके अधिकारी ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, पापयोनि, स्त्री तथा दुराचारी सभी हैं। भक्तिके अधीन भगवान् सबका उद्धार करते हैं। 'चतुर्विधा भजन्ते मां जनाः सुकृतिनोऽर्जुन। आर्तो जिज्ञासुरर्थार्थी ज्ञानी च भरतर्षभ॥'—(गीता ३.१६)। भगवद्गीताके अनुसार आर्त्त, जिज्ञासु, अर्थार्थी और ज्ञानी ये चार प्रकारके भक्त होते हैं। आर्त्तभक्त जैसे द्रौपदी; जिज्ञासु जैसे उद्धव; अर्थार्थी जैसे ध्रुव तथा ज्ञानी जैसे उपमन्यु थे। उपर्युक्त चारों प्रकारोंमें अर्थार्थी सबसे निम्न श्रेणिका है, इससे श्रेष्ठ आर्त, आर्तसे श्रेष्ठ जिज्ञासु और ज्ञानी सर्वश्रेष्ठ है। अर्थार्थी=अपने बल बुद्धिपर नहीं बल्कि भगवान्‌पर भरोसा कर धनके लिए भक्ति करता है। आर्त्त=भगवान्‌पर भरोसा करता है, भजन भी करता है पर धन आदिके नाश तथा शरीर-कष्टको दूर करनेके लिए भगवान्‌को पुकारता है। आर्त्त अर्थार्थीके समान धनवैभव नहीं चाहता परन्तु प्राप्त वस्तुके नाश और शारीरिक कष्टोंको

सहन न कर सकनेपर भगवान्‌की शरणमें जाता है। जिज्ञासु भक्तको जन्म-मरण-रूपी सांसारिक दुःखोंसे परित्राण पानेकी इच्छाके द्वारा परमात्म-तत्त्व-प्राप्तिकी इच्छा होती है। ज्ञानी भक्त सर्वदा निष्काम होता है (गीता ३.१६)। नवधा-भक्तिके अनुसार भागवतमें नौ प्रकारके भक्त बतलाये गये हैं (भाग० ७.५.२३) :—'श्रवणं कीर्तनं विष्णोः स्मरणं पादसेवनम्। अर्चनं वन्दनं दास्यं सख्यमात्मनिवेदनम् ॥'

भक्ति—स्त्री० [सं०] निस्स्वार्थ उपासना जिससे आत्मज्ञान होता है तथा व्यक्तिके रज तथा तम गुणोंका नाश होता है, हमारे डर, भय, माया, मोह आदि निर्मूल होते हैं तथा पापोंका क्षय होता है (भाग० १.२.१२-२१; ५.२८; ७.७; ६१.१५)। विष्णुमें एकाग्रचित्त हो ध्यानलीन होनेकी पाँच विधियाँ हैं—(१) काम, जैसा कि गोपियोंने किया; (२) भय तथा घृणा जैसा कि कंसने किया था; (३) सम्बन्धी जैसे कि वृष्णिगण थे; (४) मित्रता जैसी युधिष्ठिरने निभायी; (५) भक्ति जैसी नारदने की थी। पर वेन उपर्युक्त किसी भी वर्गमें न था (भाग० ७.१.२९-३१)। प्रह्लादके अनुसार भक्तिके नव (९) मार्ग हैं (भाग० ७.५.२३)। स्त्रियोंमें पुरुषोंसे अधिक भक्ति होती है भाग० १०.२३.३८, ४१-४३)।

अन्य मतसे भक्ति तीन प्रकारकी है उत्तम यथा नारद तथा शुककी भक्ति। मध्यम यथा वशिष्ठकी भक्ति; निकृष्ट यथा अन्य साधारणजनोंकी (ब्रह्मां० ३.३४;३७-८)। दूसरा वर्गीकरण तीन प्रकारका है सांख्य, योग तथा ज्ञान। शुद्धाचरणका व्यक्ति 'प्रत्याहार'के आधारपर भक्ति कर सकता है तथा अंतमें सर्वोच्च ज्ञान प्राप्त होता है (मत्स्य० १८३.४९-५५)। भक्तिके अन्य मार्गोंके लिए द्रष्टव्य (वायु० १०४.१५)।

भक्तियोग—पु० [सं०] अलिप्त भक्ति (भाग० ११.१४.२) जो भिन्न प्रकारकी है=तामस, राजस, सात्त्विक, निर्गुण, आत्यंतिक (भाग० ३.२९.७-१४)। यह वेद, तपस्या तथा दानसे भी बढ़कर है जिससे श्वपाकों (चाण्डालों) तककी शुद्धि होती है (भाग० ११.१४.२०-२१; २०.६, ८, २९, ३३)।

भक्तिसूत्र—पु० [सं०] शांडिल्य मुनिका वैष्णव-संप्रदायका एक सूत्र ग्रंथ (शाण्डिल्यसंहिता)।

भक्ष्यक—पु० [सं०] एक जनपद जिसका स्त्रीराष्ट्रके साथ कनकाह्वय राजाने भोग किया, शासन किया (वायु० ९९.३८७)।

भग—पु० [सं०] (१) अदितिका एक पुत्र जिसका सिद्धिसे विवाह हुआ तथा महिमा आदि पुत्र हुए (भाग० ६.६.३९; १८.२; मत्स्य० ६.४; १५५.७; वायु० ६६.६६; विष्णु० १.१५.१३१)। (२) एक देवताका नाम जिनकी आँखें वीरभद्रने फोड़ दी थीं (भाग० ४.५.१७, २०; ६.५१; ७.३; ब्रह्मां० २.२४.३३; ३.३.६७)। राजमहलके निर्माणके पूर्व इनकी पूजा होती है (मत्स्य० १७१.५६; २६८.१९)। (३) पौष महीनेमें तपनेवाले सूर्यका नाम (भाग० १२.११.४२; ब्रह्मां० २.२३.१६; वायु० ५२.१६; विष्णु० २.१०.४)। (४) दिनके रौद्र आदि १५ मुहूर्तोंमेंसे एक मुहूर्त्त (ब्रह्मां० ३.३.४०)।

भगदत्त—पु० [सं०] (१) प्राग्ज्योतिषपुरका राजा जो नरकासुरका ज्येष्ठ पुत्र था। श्रीकृष्णने नरकासुरको मार इसे सिंहासनारूढ़ कराया तथा वहाँ भौमासुर द्वारा राजाओंको जीतकर हरी गयीं १६००० राजकन्याओंको देखा एवं सुन्दर वस्त्र तथा आभूषण पहनाकर पालकियों द्वारा उनको, बहुतसे घोड़ोंको तथा ऐरावतकुलमें उत्पन्न चतुर्दन्त ६४ सफेद हाथियोंको द्वारका भेजा (भाग० १०.५९.३२-३७)। युधिष्ठिरके राजसूय यज्ञके समय यह अर्जुनसे आठ दिनोंतक लड़ा था पर अन्तमें परास्त होकर इसने उनकी अधीनता स्वीकार कर ली थी। महाभारतके युद्धमें यह कौरवोंकी ओरसे लड़ा था तथा बड़ी वीरताका प्रदर्शन किया था। यह अर्जुनके हाथों मारा गया था (महाभा० सभा० २६.७-१६; द्रोण० २९.४८-५०; भाग० १०.७८.[(९५.५) १६]। (२) हिमालयपर्वतपर स्थित किन्नरोंके सैकड़ों नगरोंके द्रुम, सुग्रीव, सैन्य, भगदत्त आदि सैकड़ों किन्नरराजोंमेंसे एक किन्नरराज (वायु० ४१.३०)।

भगनेत्रहा—पु० [सं०] भगके नेत्र फुड़वा देनेके कारण शिवका एक नाम जिन्हें भगनेत्रहर तथा भगनेत्रांतक भी कहते हैं (ब्रह्मां० २.२७.३१; वायु० २५.१४; ३०.१७९, २५३)।

भगपाद—पु० [सं०] अत्रिकुलका त्र्यार्षेय प्रवरप्रवर्तक एक गोत्रकार ऋषि (मत्स्य० १९७.४)।

भगमाला—स्त्री० [सं०] आनन्द महापीठ नामके रथके मध्यमपर्वमें रहनेवाली ललितादेवीके तुल्य आकार और आयुधवाली तिथिनित्या, कालनित्या आदि १५ आक्षरदेवियोंमेंसे एक जिन्होंने भण्डके दीर्घजिह्व नामक सेनापतिका वध किया था (ब्रह्मां० ४.१०.५७; २५.९४)। भगमालाकी नगरीके लिए द्रष्टव्य (ब्रह्मां० ४.३१.२४)।

भगमालिनी—स्त्री० [सं०] (१) चक्ररथेन्द्रके द्वितीय पर्वमें स्थित धनुषबाण, पानपात्र, मातुलुंग, कृपाणिका, फलक नागपाश और घण्टा धारण की हुई आठ भुजाओंवाली मदिरासे मदमत्त कामेशी आदि तीन देवियोंमेंसे एक देवी (ब्रह्मां० ४.२९.५२; ३७.३३)। (२) अन्धकासुरके रुधिरपानके लिए शिवजी द्वारा सृष्ट कई मानसपुत्री मातृकाओंमेंसे एक मानसपुत्री मातृका (मत्स्य० १७९.११)।

भगवती—स्त्री० [सं०] जगत्‌के संरक्षणमें सदा जागरूकदेवी जिन्होंने सब देवता, असुर और मनुष्योंकी सृष्टि की और उनके संरक्षणके लिए १४ प्रकारके पशुओं, यज्ञों तथा यज्ञविधियोंकी रचनाकर कहा इस विधि-विधानसे पशुओं द्वारा तुम देवोंका यजन करो। यज्ञोंसे पुष्ट हुए देवगण तुम्हारा कल्याण करेंगे, तुम्हें अभीष्ट पदार्थ देंगे। इस देवीका नामान्तर माया है (ब्रह्मां० ४.६.५३; १२.४२)।

भगवत्पदी—स्त्री० [सं०] एक स्वर्गीय नदी=गंगा। त्रिविक्रमने अपने बाँये पैरके अँगूठेसे छेदनकर इसका ब्रह्मांडमें बाहरसे प्रवेश कराया, कुछ समयमें यह विष्णुपद पहुँची। ध्रुव आदि तथा सप्तर्षियोंने इसे अति पवित्र माना। चन्द्रलोक पारकर यह ब्रह्माके नगर पहुँची जहाँ इसकी चार धाराएँ हो गयीं और पूर्वी तथा पश्चिमी समुद्रोंमें यह गिरती है (भाग० ५.१७.१-९)।

भगवद्गीता—स्त्री० [सं०] भीष्मपर्वके अन्तर्गत १८ अध्यायों-

का एक प्रकरण जिसमें अर्जुनका मोह छुड़ानेके लिए श्रीकृष्ण द्वारा दिये गये उपदेशोंका संग्रह है। हिंदूधर्मावलम्बी इस ग्रन्थको सर्वश्रेष्ठ समझते हैं और यह सब सम्प्रदायोंका मान्य ग्रंथ भी है। महात्मा गांधीके अनुसार 'केवल ७०० श्लोकोंमें गीताने सारे शास्त्रोंका और उपनिषदोंका सार, गागरमें सागर भर दिया है।' भगवद्गीतापर लो० बालगंगाधर तिलककी टीका देशी भाषाओंकी टीकाओंमें सर्वश्रेष्ठ समझी जाती है। श्री अरविंद घोषके अनुसार 'गीताके संदेशका प्रभाव केवल दार्शनिक अथवा विद्वच्चर्चाका विषय नहीं है, अपितु आचार-विचारोंके क्षेत्रमें भी विद्यमान होकर मार्ग बतलानेवाला है। यह गीताका उपदेश राष्ट्र तथा संस्कृतिका पुनरुज्जीवन करता आया है। संसारके अत्युच्च शास्त्रविषयक ग्रन्थोंमें उसका अविरोधसे समावेश हुआ है।' 'गीता सुगीता कर्तव्या किमन्यैः शास्त्रसंग्रहैः। या स्वयं पद्मनाभस्य मुखपद्माद् विनिस्सृता॥' तथा 'सर्वशास्त्रमयी गीता सर्वदेवमयो हरिः। सर्वतीर्थमयी गङ्गा सर्ववेदमयो मनुः॥'—[महाभा०, भीष्म० ४३.१-२]।

भगवद्भक्त–पु० [सं०] वैष्णवोंका एक सम्प्रदाय जो अधिकतर दक्षिण भारतमें पाया जाता है (भाग०)।

भगवान्–पु० [सं०] (१) सर्वप्रधान तथा शाश्वतदेव (विष्णु० ६.५.६९-७९)। तीन वेदोंका सारांश। भ=संसारका शुभचिंतक तथा आधार, ग=नेता तथा सृष्टिकर्त्ता। 'भग' शब्दसे ६ भाव व्यक्त होते हैं—राज्य, शक्ति, विजय, शान-शौकत, बुद्धि तथा अलिप्तता। 'ऐश्वर्यस्य समग्र धर्मस्य यशसः श्रियः। ज्ञानस्याप्यथ मोक्षस्य षण्णां भग इतीङ्गना॥' अर्थात् समग्र ऐश्वर्य, समग्र धर्म, समग्र यश, समग्र सम्पत्ति, शोभा, समग्र ज्ञान और समग्र मोक्षसाधन वैराग्य आदिका नाम भग है। यह षड्विध—'भग' जिनमें है वे भगवान् हैं। पंचतत्त्व=तात्त्विकशक्ति जिसमें सारी सृष्टि निहित है और कोई प्राणी जिससे अछूता या परे नहीं है वह भगवान। यह वासुदेवका ही एक नाम हुआ (विष्णु० ६-५-६९-७९)। (२) तुषितदेवगण, जिसमें १२ देव हैं, मेंके एक तुषितदेवका नाम (ब्रह्मां० २.३६.१०)। (३) 'भग' के अस्तित्वके कारण श्रीहरि भगवान् कहलाते हैं। वह भग जिसमें रहे वह भगवान् (वायु० ५.३६)। (४) कश्यप तथा दनुके विप्रचित्ति आदि १०० पुत्रोंमेंसे एक पुत्र दानवका नाम (वायु० ६८.५)।

भगानंदा–पु० [सं०] अन्धकासुरके रुधिर पानके लिए शिवजी द्वारा सृष्ट कई मानसपुत्री मातृकाओंमेंसे एक मानसपुत्री मातृका (मत्स्य० १७९.११)।

भगीरथ–पु० [सं०] राजा दिलीपके पुत्र तथा श्रुत (सुहोत्र=विष्णु०)के पिता और अंशुमान्के पौत्र, अयोध्याके एक प्रसिद्ध सूर्यवंशी राजा। भगीरथ, विंदुसरके तटपर घोर तप करके गंगाको पृथ्वीपर लाये थे और कपिलमुनिके शापसे भस्म हुए अपने पुरखोंका इन्होंने उद्धार किया था (भाग० ९.९.२-१३, १६; ब्रह्मां० २.१८.२५; मत्स्य० १२.४४; १५.१९; १२१.२६; वायु० ८८.१६७; विष्णु० ४.४.३५-६)। इसीसे गंगाका नाम भागीरथी भी है (ब्रह्मां० ३.५४.४८-५१; ६३.१६६-८; वायु० ४७.४९)।

भजन–पु० [सं०] सत्वत (भाग०=सात्वत)के सात पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (विष्णु० ४.१३.१)।

भजमान–पु० [सं०] (१) सात्वतके कौशल्यासे उत्पन्न सात पुत्रोंमेंसे द्वितीय पुत्र तथा निमि, कृकण, वृष्णि, शतजित्, सहस्रजित् और अयुतजित् (भाग०=शताजित्, सहस्राजित्, अयुताजित्) छह पुत्रोंका पिता (भाग० ९.२४.८; विष्णु० ४.१३.२)। इसकी दो पत्नियाँ थी। ये संजयकी पुत्रियाँ दो बहिनें थी, पहलीका नाम बाह्यका और दूसरीका नाम उपबाह्यका था। पहलीसे तीन पुत्र तथा दूसरीसे भी तीन पुत्र थे (भाग० ९.२४. ६-८; ब्रह्मां० ३.७१.१-३; (मत्स्य० ४४.४७; विष्णु० ४.१३.१-२)। (२) शूरका पुत्र तथा शिनिका पिता (भाग० ९.२४.२६)। (३) सत्यकके कुकुर आदि चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्र जो काशीराजकी पुत्रीके गर्भसे उत्पन्न हुआ था। महारथी विदूरथ इसीका पुत्र था (ब्रह्मां० ३.७१.११६; वायु० ९६.११५, १३५; भाग० ९.२४.१९)। (४) अंधक (भाग०, ब्रह्मां० तथा वायु०=सत्यक)का एक पुत्र तथा विदूरथ, जो एक महारथी था, का पिता (मत्स्य० ४४.६१, ७७; विष्णु० ४.१४.१२)।

भजि–पु० [सं०] सात्वतका कौशल्यासे उत्पन्न एक पुत्र जो भजमानका भाई था (भाग० ९.२४.६; ब्रह्मां० ३.७१.१)।

भजिन–पु० [सं०] (भजि=ब्रह्मां०, भाग०। विष्णु०=भजन) सात्वत तथा कौशल्याका एक पुत्र (मत्स्य० ४४.४७; वायु० ९६.१)।

भज्य–पु० [सं०] बाष्कलि, जिन्होंने प्रत्येक शाखासे उद्धृतकर बालखिल्य संहिताका निर्माण किया, के तीन शिष्योंमेंसे एक शिष्य (भाग० १२.६.५९)।

भट्टादित्य–पु० [सं०] महीसागरसंगम तीर्थमें नारद द्वारा स्थापित सूर्यकी मूर्तिका नाम। यह नारद (भट्ट) द्वारा स्थापित होनेके कारण 'भट्टादित्य' कहलाये जिनकी उपासनासे सब पाप दूर होते हैं (स्कंदपु० माहे० कुमारिकाखण्ड)।

भतरौड़–पु० [हिं०] मथुरा और वृंदावनके बीचका एक स्थान विशेष। कहते हैं यहाँ श्रीकृष्णने चौबाइनोंसे भात मँगवाकर खाया था (हिं० वि० को०)।

भद्र–पु० [सं०] (१) दक्षिणा तथा यज्ञके पुत्र १२ तुषित देवोंमेंसे एक तुषितदेवका नाम (भाग० ४.१.७-८)। मनु तथा शतरूपाकी एक पुत्री—आकूति प्रजापति रुचिको ब्याही गयी इस शर्तपर कि इसका जो प्रथम पुत्र होगा वह हमारा (नानाका) पुत्र होगा। आकूतिने युगल बच्चोंको जना। उनमें जो बच्ची थी वह साक्षात् लक्ष्मी थी और जो बच्चा था साक्षात् भगवान् विष्णु था। दक्षिणा लड़की रुचिकी हुई और यज्ञ लड़का मनुका। लक्ष्मीनारायणके अवतार होनेसे दोनोंका विवाह हो गया। और १२ तुषित पुत्र हुए। (२) पौरवी तथा वसुदेवके भूतादि १२ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (भाग० ९.२४.४७)। (३) बलदेवके एक सहोदर भाईका नाम (भाग०)। (४) वासुदेव तथा देवकीके एक पुत्रका नाम (भाग० ९.२४.५४)। (५) उत्तर दिशाके दिग्गजका नाम—दे० दिग्गज। (६) बलिके वाहन एक चतुर्दन्त हाथीका नाम यह अञ्जन और सुप्रतीक दो पुत्रोंका पिता था (ब्रह्मां० ३.७.३२८)। (७) श्री रामचन्द्रकी सभाका एक

सभासद। सीताकी निंदा इसीसे सुनकर रामने सीताको वनवास दिया था। (८) मध्यदेशके एक जनपद (राज्य) का नाम (ब्रह्मां० २.१६.४२)। (९) विष्णुका एक द्वारपाल दरवाजेपर दाहिनी ओर रहता है (विष्णु०)। (१०) भारतके उत्तरका एक जनपद (राज्य) (ब्रह्मां० २.१६.४८; १८.४६)। (११) पुराणानुसार स्वायंभुव मन्वंतरके यज्ञरूपधारी विष्णुके लक्ष्मीरूपा दक्षिणासे उत्पन्न १२ पुत्रों जिन्हें तुषित भी कहते हैं, मेंसे एक तुषितदेव। (१२) विष्णुके एक पार्षदका नाम। (१३) एक दानवका नाम (ब्रह्मां० ३.६.६)। (१४) श्री रामचन्द्रके एक सखाका नाम (रामायण)। (१५) श्रीकृष्ण और कालिंदीके एक पुत्रका नाम जो अपने सहयोगियों सहित बाणकी नगरी शोणितपुर गये थे (भाग० १०.६१.१४;६३.३)। (१६) सुप्रतीक नामका एक नाग जो वरुणका वाहन है (ब्रह्मां० ३.७.३३०; वायु० ६९.२१२, २१४)। (१७) जाम्बवती और श्रीकृष्णके कई पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (ब्रह्मां० ३.७१.२४९; वायु० ९६.२४१)। (१८) रुक्मिणी तथा श्रीकृष्णके चारुदेष्ण, प्रद्युम्न आदि १० पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (मत्स्य० ४७.१६)। (१९) मेरु पर्वतपर स्थित एक पवित्र झील (मत्स्य० ११३.४६)।

भद्रक–पु० [सं०] (१) वसुमित्रका पुत्र तथा पुलिंदका पिता (भाग० १२.१.१७; ब्रह्मां० ३.७४.१५२)। (२) शिविके पृथुदर्भ आदि चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (मत्स्य० ४८.१९)। (३) शिविपुत्र भद्रकके नामसे प्रसिद्ध उसके राज्यका नाम (मत्स्य० ४८.२०)।

भद्रक-क्षुद्रकस्–पु० [सं०] खशाकी पुत्रियोंके खानदानके अनेक राक्षसगणोंमेंसे राक्षसगण जो यज्ञोंका ध्वंस करते हैं (वायु० ६९.१८९)।

भद्रकर–पु० [सं०] मध्यदेशका एक राज्य (ब्रह्मां० २.१६.४१)।

भद्रकर्णिका–स्त्री० [सं०] गोकर्णमें स्थापित सती देवी की एक मूर्ति (मत्स्य० १३.३०)।

भद्रकल्प–पु० [सं०] शठका एक पुत्र जो रोहिणीके परिवारका अर्थात् पौत्र था। वसुदेवपत्नी रोहिणीके बलराम, सारण, शठ आदि आठ पुत्र हुए थे। यह शठ-पुत्र था (ब्रह्मां० ३.७१.१७०; वायु० ९६.१६८)।

भद्रकाय–पु० [सं०] श्रीकृष्णके एक पुत्रका नाम (हरिवंश)।

भद्रकार–पु० [सं०] (१) एक प्राचीन देशका नाम। इस नामकके दो देश हैं जिनमें एक मध्यदेशके जनपदोंमें गिना गया है और दूसरा उत्तरदेशके जनपदोंमें (वायु० ४५.११०, ११६)। (२) एक जाति अथवा मध्यदेशके एक जनपदका नाम (मत्स्य० ११४.३५)। (३) महाभारतके अनुसार एक राजाका नाम जो जरासन्धके भयसे अपने भाइयों तथा सेवकोंके साथ दक्षिणकी ओर भाग निकला था (महाभा० सभा० १६.२६)।

भद्रकाली–स्त्री० [सं०] (१) दुर्गादेवीकी एक मूर्ति जिनकी १६ भुजाएँ मानी जाती हैं। एक योगमाया (भाग० १०.२.११)। यह देवासुरसंग्राममें शुंभ और निशुंभसे लड़ी थी (भाग० ८.१०.३१)। पुराणानुसार इनकी उत्पत्ति दक्ष-यज्ञके समय भगवतीके क्रोधसे हुई थी। इन्होंने वीरभद्रके साथ यज्ञध्वंस किया था (वायु० ३०.१४० १६५; महाभा० शान्ति० २८४.५३-५४)। (२) कुमार कार्तिकेयकी एक अनुचरी मातृका (महाभा० शल्य० ४६.११)।

भद्रकालीव्रत–पु० [सं०] आश्विन शुक्ला नवमीको वासस्थानसे पूर्वकी ओर भद्रकालीकी स्थापना कर पूजन करे तथा उपवास रखे। यह शारदीय नवरात्रमें पड़ता है (विष्णु धर्मोत्तर)।

भद्रकालेश्वर–पु० [सं०] पितरोंके श्राद्ध आदिके लिए एक पवित्र तीर्थ (मत्स्य० २२.७४)।

भद्रगण–पु० [सं०] उत्तम मन्वंतरके तीन देवगणोंमेंसे एक देवगणका नाम (भाग० ८.१.२४)।

भद्रगुप्त–पु० [सं०] जाम्बवती तथा श्रीकृष्णके भद्र आदि कई पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (ब्रह्मां० ३.७१.२४९; वायु० ९६.२४१)।

भद्रगुप्ति–पु० [सं०] शठके भद्राश्व आदि ९ पुत्रोंमें एक पुत्र जो रोहिणी और वसुदेवका पौत्र था (ब्रह्मां० ३.७१.१६९; वायु० ९७.१६७)।

भद्रगौड़–पु० [सं०] पुराणानुसार पूर्वी भारतका एक प्राचीन देश।

भद्रचारु–पु० [सं०] रुक्मिणीके गर्भसे उत्पन्न श्रीकृष्णके १० पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (भाग० १०.६१.८; (ब्रह्मां० ३.७१.२४६; मत्स्य० ४७.१६; वायु० ९६.२३७, विष्णु० ५.२०.१)।

भद्रचित्र–पु० [सं०] जाम्बवती तथा श्रीकृष्णके भद्र, भद्रगुप्त आदि कई पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (ब्रह्मां० ३.७१.२४९)।

भद्रज–पु० [सं०] शठके भद्राश्व आदि ९ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र। यह रोहिणी और वसुदेवके परिवारका अर्थात् पौत्र था (वायु० ९६.१६८)।

भद्रतीर्थ–पु० [सं०] पितरोंके श्राद्धादिके लिए एक पवित्र तीर्थ (मत्स्य० २२.५०)।

भद्रतुंग–पु० [सं०] एक प्राचीन तीर्थस्थान सदाचारी पुरुष जहाँ स्नानादिकर ब्रह्मलोकादि उत्तम गतिको प्राप्त होते हैं (महाभा० वन० ८२.८०)।

भद्रतुरग–पु० [सं०] जंबूद्वीपके नव (९) वर्षोंमेंसे एक वर्ष।

भद्रदेव–पु० [सं०] देवकी तथा वसुदेवके कंस द्वारा मारे गये सुषेण, कीर्तिमान् आदि छह पुत्रोंमेंसे एक (छठा) पुत्र (ब्रह्मां० ३.७१.१७५; विष्णु० ४.१५.२६-७)।

भद्रदेह–पु० [सं०] पुराणानुसार श्रीकृष्णका एक पुत्र (भाग०)।

भद्रद्वीप–पु० [सं०] पुराणानुसार कुरुवर्षके अंतर्गत एक द्वीपका नाम (ब्रह्मां०)।

भद्रनिधि–स्त्री० [सं०] पुराणानुसार एक प्रकारका दान।

भद्रवल्लभ–पु० [सं०] बलरामजीका नाम (भाग०)।

भद्रबाहु–पु० [सं०] (१) श्रीकृष्ण और जाम्बवतीके भद्र आदि कई पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (ब्रह्मां० ३.७१.२५०)। (२) रोहिणीके गर्भसे उत्पन्न वसुदेवका एक पुत्र (भाग०)। (३) शठका एक पुत्र जो रोहिणीके परिवारका यानी पौत्र था (ब्रह्मां० ३.७१.१७०; वायु० ९६.१६८; विष्णु० ४.१५.२२)।

भद्रभीमा—स्त्री० [सं०] पुराणानुसार कश्यप ऋषिकी एक पुत्रीका नाम जो दक्ष प्रजापतिकी पुत्री क्रोधाके गर्भसे उत्पन्न हुई थी (ब्रह्मां०)।

भद्रभूषणा—स्त्री० [सं०] देवीका एक नाम (देवीभाग०)।

भद्रम—पु० [सं०] कलि तथा मनुष्यभक्षीका एक पुत्र जिसकी पत्नीका नाम तामसीपूतना था। इसका केवल एक हाथ था (ब्रह्मां० ३.५९.१०)।

भद्रमुख—पु० [सं०] पुराणानुसार एक नागका नाम।

भद्ररथ—पु० [सं०] (१) हर्यङ्गका एक पुत्र तथा वृहद्रथका पिता (मत्स्य० ४८.९९; वायु० ९९.१०९; विष्णु० ४.१८.२२)। (२) शठके भद्राश्व, भद्रगुप्ति, भद्रविष्ट आदि ९ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र जो रोहिणीके परिवारका अर्थात् पौत्र था (ब्रह्मां० ३.७१.१७०; वायु० ९६.१६८)।

भद्रवट—पु० [सं०] पुराणानुसार एक प्राचीन तीर्थका नाम।

भद्रवती—स्त्री० [सं०] (१) पुरुद्वान्की पत्नीका नाम जिसका पुरूद्वह पुत्र हुआ (ब्रह्मां० ३.७०.४७; वायु० ९६.४७)। (२) श्रीकृष्णकी एक पुत्रीका नाम जो नाग्नजितीके गर्भसे उत्पन्न हुई थी पर ब्रह्मां० ३.७१.२५० के अनुसार यह जाम्बवतीकी पुत्री ठहरती है। (३) गंगा नदीकी सीता, अलकनन्दा आदि चार शाखाओंमेंसे एक शाखाका नाम (ब्रह्मां० ३.५६.५२)।

भद्रवाह—पु० [सं०] (भद्रबाहु), वसुदेव तथा पौरवीके भूतादि बारह पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (भाग० ९.२४.४७)।

भद्रविंद—पु० [सं०] नाग्नजितीके गर्भसे उत्पन्न श्रीकृष्णका एक पुत्र (विष्णु० ५.३२.३)।

भद्रविदेह—पु० [सं०] भद्रविदेहक; वसुदेव तथा देवकीके कंस द्वारा मारे गये छह पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (मत्स्य० ४६.१३; वायु० ९६.१७३)।

भद्रविद्य—पु० [सं०] शठके भद्राश्व, भद्रगुप्ति आदि ९ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र। यह रोहिणी,परिवारका अर्थात् पौत्र था (वायु० ९६.१६७)।

भद्रविंद्र—पु० [सं०] श्रीकृष्ण तथा जाम्बवतीके भद्र, भद्रगुप्त आदि कई पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (वायु० ९६.२४१)।

भद्रविष्ट—पु० [सं०] शठके कई पुत्रोंमेंसे एक पुत्र जो रोहिणी-परिवारका अर्थात् पौत्र था (ब्रह्मां० ३.७१.१६९)।

भद्रश्रवा—पु० [सं०] धर्मका एक पुत्र जिसके नामपर भद्राश्वदेशका नामकरण हुआ था। यह हयग्रीवका परम-भक्त था (भाग० ५.१८.१)।

भद्रश्रेण्य—पु० [सं०] महिष्मान्का पुत्र तथा १०० पुत्रोंका पिता जो वाराणसीका एक बड़ा शक्तिशाली तथा प्रतापी राजा था। इसके पुत्र सबके सब अच्छे धनुर्द्धर थे पर सबसे कनिष्ठ दुर्दम, जो बहुत ही अल्पवयस्क था, को छोड़ दिवोदासने सबका बध कर डाला था (वायु० ९२.६१; ९४.६; विष्णु० ४.११.१०)। प्रतर्दनने भद्रश्रेण्यका सारा परिवार नष्ट कर डाला था। सब शत्रुओंका नाश कर लेनेके कारण यह शत्रुजित् कहलाया (विष्णु० ४.८.१२)।

भद्रसीमा—स्त्री० [सं०] उत्तर कुरुवर्ष देशकी एक महानदी जो उक्त देशके चन्द्रकान्त शैल और सूर्यकान्त पर्वतके मध्य बहती है (वायु० ४५.२५)।

भद्रसुंदरी—स्त्री० [सं०] त्रिकूटमें स्थापित सती देवीकी एक मूर्ति (मत्स्य० १३.३६)।

भद्रसेन—पु० [सं०] (१)श्रीकृष्णका एक बालसखा जो खेलमें वृषभासुरको पीठपर बैठाकर ले चला था (भाग० १०.१८.२४)। (२) देवकी तथा वसुदेवके छह पुत्रों, जिन्हें कंसने मार डाला था, मेंसे एक पुत्र (भाग० ९.२४.५४; ब्रह्मां० ३.७१.१७५; मत्स्य० ४६.१३; वायु० ९६.१७३; विष्णु० ४.१५.२६-७)। (३) कुंतिराजके पुत्रका नाम (भाग०)। (४) ऋषभदेवके भरतादि १०० पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (भाग० ५.४.१०)।

भद्रसेनक—पु० [सं०] काशीका एक राजा जो महिष्मान्का पुत्र था जिसके १०० पुत्रोंका वधकर दिवोदासने इसके राज्य पर अधिकार कर लिया था। केवल एक बच्चा पुत्र जीवित बचा था (भाग० ९.२३.२२-३; ब्रह्मां० ३.६७.६५-६६; ६९.६.७)।

भद्रसेनी—स्त्री० [सं०] पुरुद्वान्की एक रानी जो विदर्भ राजपुत्री थी (मत्स्य० ४४.४५)।

भद्रसोमा—स्त्री० [सं०] (१) कुरुवर्षकी एक नदी जो मेरु-पर्वतसे निकल सवितावन, शंखकूट, वृषपर्वत, वत्सगिरि, नागशैल, नीलवर्षपर्वत, कपिंजल, इन्द्रनील, महानील, हेमशृंग, श्वेतपर्वत, सुनग, शतशृंग, पुष्कर, महाशैल, वराहपर्वत, द्विराज, जातुधि, त्रिशृंग, मर्यादापर्वत तथा विरूध पर्वत होती हुई पश्चिमी सागरमें गिरती है (वायु० ४२.६१-७४)। (२) गंगाका एक नाम।

भद्रा—स्त्री० [सं०] (१) श्रुतकीर्त्ति तथा केकयराजकी एक पुत्रीका नाम। जो श्रीकृष्णको ब्याही थी (भाग० १०.५८.५६; ६१.१७)। (२) छायासे उत्पन्न सूर्यकी एक पुत्री (भविष्योत्तरपु०)। (३) भद्राश्ववर्षकी एक नदीका नाम जो पुरागानुसार गंगाकी एक शाखा है। यह ब्रह्माकी नगरीसे निकलकर शृंगवान्पर्वतपरसे होकर उत्तर कुरुसे बहती उत्तरमें समुद्रमें गिरती है (भाग० ५.१७.५, ८; विष्णु० २२.३४; ८.११.११३-११५)। (४) भगवान् श्रीकृष्णकी बहिन सुभद्राका एक नाम (महाभा० आदि० २१८.१४)। (५) कामरूप देशकी एक नदीका नाम। (६) उतथ्य ऋषिकी पत्नीका नाम, जो अपने समयकी सर्व-श्रेष्ठ सुन्दरी मानी जाती थी। यह सोमकी पुत्री थी। इसने उतथ्यको पतिके रूपमें प्राप्त करनेके लिए तीव्र तप किया। सोमके पिता अत्रिने उतथ्यको बुलाकर इसे उनके अर्पण किया एवं उतथ्यने विधिपूर्वक इनका पाणिग्रहण किया। वरुण द्वारा इसका अपहरण होनेपर क्रुद्ध हुए उतथ्य द्वारा सारा जल पी लेनेसे भयभीत वरुण उनके शरणापन्न हुए तथा उनकी भार्या (भद्रा) उन्हें लौटा दी (महाभा० अनु० १५४.१०-१३,२४)। (७) राजा आग्नीध्रके पूर्वचित्ति अप्सरासे नाभि, किंपुरुष, हरिवर्ष, इलावृत, रम्यक, हिरण्मय, कुरु, भद्राश्व और केतुमाल ये नौ पुत्र हुए इनका मेरुकी नौ पुत्रियों मेरुदेवी, प्रतिरूपा, उग्रदंष्ट्री, लता, रम्या, श्यामा, नारी, भद्रा और देववीतिसे विवाह हुआ। मेरुकी आठवी पुत्री (भद्रा) आग्नीध्रके आठवें पुत्र भद्राश्वकी रानी थी (भाग० ५.२.२३)। (८) भद्राश्वकी घृताची अप्सरासे दस पुत्रियाँ उत्पन्न हुईं—भद्रा, शूद्रा, मद्रा,

शलदा, मलदा, वेला, खला, गोचपला, मानरसा तथा रत्नकूटा। ये सबकी सब महर्षि अत्रिको व्याही गयी थीं। भद्रासे सोम उत्पन्न हुए। यह भद्रा सोमकी माता है (ब्रह्मां० ३.८.७३-८१; वायु० ७०.६८.७०)। (९) वसुदेवकी १३ पत्नियोंमेंसे एक पत्नी जिसके उपविम्ब विम्ब आदि चार पुत्र हुए थे (ब्रह्मां० ३.७१.१६१, १७३) मतान्तरसे जिसका उपनाम कौशल्या भी था जो केशी आदि तीन पुत्रोंकी माता थी (भाग० ९.२४.४५, ४५; वायु० ९६.१६०, १७१; विष्णु० ४.१५.१८, २४)। (१०) उदारधीकी पत्नी तथा दिवंजयकी माताका नाम (ब्रह्मां० २.३६.१०१)। (११) सुरभिकी दो पुत्रियोंमेंसे एक रोहिणी थी। उसकी चार पुत्रियों सुरूपा, हंसकाली आदि मेंसे एक पुत्री जिससे भेड़, वकरियाँ उत्पन्न हुई थीं (ब्रह्मां० ३.३.७४-५; वायु० ६६.७२-३)। (१२) षोडशपत्राब्जपर स्थित दिनमिश्रा, तमिस्रा आदि सोलह शक्तियोंमेंसे एक शक्ति (ब्रह्मां० ४.३२.१३)। (१३) महाकाली, सरस्वती आदि छत्तीस वर्णशक्तियोंमेंसे एक वर्णशक्ति (ब्रह्मां० ४.४४.५९)। (१४) वर्धिनी आदि छह शक्तियोंमेंसे एक शक्ति (ब्रह्मां० ४.४४.९०)। (१५) भद्रेश्वरमें स्थापित सतीदेवीकी एक मूर्ति (मत्स्य० १३.३१)। (१६) अनुदाह दैत्यकी पुत्री तथा रजतनाभ यक्ष, जो गुह्यकोंका पितामह था, की पत्नी। इसके मणिवर और मणिभद्र दो पुत्र हुए (वायु० ६९.१५१)। (१७) गरुड़की भासी आदि पाँच पत्नियोंमेंसे एक पत्नी (वायु० ६९.३२८)।

भद्राकर–पु० [सं०] वायुका द्वीप जो चन्द्रद्वीपके पश्चिम है जहाँके निवासियोंकी आयु ५०० वर्ष है तथा वे धर्मात्मा हैं (वायु० ४५.६२-६)।

भद्रांग–पु० [सं०] वलरामका एक नाम (भाग०)।

भद्रानदी–स्त्री० [सं०] केतुमाल देशकी अनेक पुण्यनदियों मेंसे एक नदी (वायु० ४४.१८)।

भद्रायुध–पु० [सं०] एक राक्षसका नाम (हिं० श० सा०)।

भद्रारक–पु० [सं०] पुराणानुसार १८ क्षुद्र द्वीपोंमेंसे एकका नाम।

भद्रावत–पु० [सं०] ववादि करणोंमें ग्यारहवाँ करण, जिसमें सभी प्रकारके मंगलकार्य न तो आरम्भ किये जाते हैं और न समाप्त ही। पुराणानुसार भद्रा सूर्यकी पुत्री है जो शनिकी वहिन हुई। यों तो सब मांगलिक कार्योंमें इसका रहना निषिद्ध है पर इसके निमित्त किये दान तथा व्रतका फल उत्तम होता है। इसके व्रत तथा पूजाविधानके लिए द्रष्टव्य (भविष्योत्तरपु०)।

भद्रावती–स्त्री० [सं०] (१) एक प्राचीन नगरीका नाम (महाभारत)। (२) जाम्बवती तथा श्रीकृष्णकी एक पुत्रीका नाम (वायु० ९६.२४१)।

भद्राश्व–पु० [सं०] (१) मेरुसे पूर्व मंदर पर्वतपरका एक देश जो जंवूद्वीपका एक खण्ड है। इसके एक ओर गंधमादन है तथा सीता नदी यहींसे होकर वहती है। यह भद्राश्वनिवासी धर्मपुत्रोंकी राजधानी है जो हयग्रीवदेवकी उपासना करते हैं (भाग० ५.१६.१०; १७.६; १८.१-६; मत्स्य० ८३.३१, ११३.४४, ५२; वायु० ३४.५७; २३; विष्णु० ३.२.२४)। यहाँके निवासी सुन्दर तथा श्वेतवर्णके होते हैं जिनकी आयु हजारों वर्षकी है। यहाँ हिंसा तथा असत्यका नाम नहीं है। यहाँ गौरीशंकरकी उपासना होती है तथा विष्णु हयग्रीव रूपमें हैं (ब्रह्मां० २.१५.५०, ५७-६०; वायु० ४२.२४; ४३.५-९, ११-३८; (विष्णु० २ २.५०)। (२) आग्नीध्रका एक पुत्र जिसकी पत्नी मेरुपुत्री भद्रा थी तथा जो माल्यवंतका अधिपति था (भाग० ५.२.१९; ब्रह्मां० २.१४.४७, ५१; वायु० ३३.४१, ४४)। इनका राज्य मेरुके पूर्वमें था (वायु० २.१, १७, २२)। (३) इसकी घृताची अप्सराके गर्भसे उत्पन्न भद्रा आदि १० पुत्रियाँ थी, जो सबकी सब महर्षि अत्रिको व्याही गयी थीं (ब्रह्मां० ३.८.७४; वायु० ७०.६८)। (४) कुवलयाश्व (धुन्धुमार)के तीन पुत्रों, जो धुंधुराक्षसके मुखसे निकली अग्निसे बच गये थे जब कि इनके अन्य भाई मर गये थे, मेंसे एक पुत्र (भाग० ९.६.२३-२४; ब्रह्मां० ३.६३.६३; वायु० ८८.६१)। (५) शठका एक पुत्र जो रोहिणी-परिवारका (रोहिणीका पौत्र) था (ब्रह्मां० ३.७१.१६७; वायु० ९६.१६७; विष्णु० ४.१५.२२)। (६) रहंवर्चाका एक पुत्र जिसके घृता (धृता) नामकी अप्सरासे दस (१०) पुत्र थे (मत्स्य० ४९.४)। (७) पृथुका एक पुत्र तथा ५ पुत्रोंका पिता जो पाँचाल देशके निवासी थे (मत्स्य० ५०.२-४)।

भद्रासप्तमी–स्त्री० [सं०] मार्गशीर्ष शुक्ला ७ को घी, दूध और गन्नेके रससे सूर्यको स्नान करा पूजन और व्रत करे (भविष्योत्तरपु०)।

भद्रेश्वर–पु० [सं०] (१) एक पीठ स्थान जहाँ भद्रा नामसे सती देवीकी एक मूर्ति स्थापित है (मत्स्य० १३.३१)। (२) पितरोंके श्राद्ध आदिके लिए एक पवित्र तीर्थ (मत्स्य० २२.२५, ३२)।

भय–पु० [सं०] (१) कलि तथा दुरुक्तिके दो पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (भाग० ४.८.४)। (२) यवनोंका अधिपति जिसने कालकी पुत्रीको अपनी वहिन मान लिया था। प्रज्वार इसका भाई था (भाग० ४.२७.२३, ३०)। पुरंजनकी नगरीपर आक्रमण करते समय इसने स्वयं पुरंजनको ही पकड़ा (भाग० ४.२८.२२-२३)। लाक्षणिक अर्थ = मृत्यु, यवन = मानसिक चिंता (भाग० ४.२९.२२,२३)। (३) द्रोण नामक वसुके अभिमतिसे उत्पन्न कई पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (भाग० ६.६.११)। (४) अधर्म और हिंसाकी पुत्री निकृतिके दो पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (ब्रह्मां० २.९.६४; वायु० १०.३९)। (५) तामस मनुके १० पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (वायु० ६२.४३)।

भया–स्त्री० [सं०] (१) रुद्रकी (रौद्री) तीक्ष्णा आदि दस कलाओंमेंसे एक कला (ब्रह्मां० ४.३५.९६)। (२) एक राक्षसीका नाम जो कालकी वहिन, हेतिकी पत्नी और विद्युत्केशकी माता थी।

भयासख–पु० [सं०] वसुदेव तथा सहदेवाका एक पुत्र (वायु० ९६.१७७)।

भरणी–पु० [सं०] एक नक्षत्र जिसमें श्राद्ध करनेसे आयुकी वृद्धि आदि फल कहा गया है (ब्रह्मां० ३.१८.१४; वायु० ८२.१४)।

भरत–पु० [सं०] (१) कैकेयीके गर्भसे उत्पन्न राजा दशरथके पुत्र जिनका विवाह मांडवीसे हुआ था (भाग० ९.१०.

३; वायु० ८८.१८४, १८९; विष्णु० ४.४.८७)। यह प्रायः अपने ननिहालमें रहते थे और दशरथके मरनेके बाद अयोध्यामें श्राद्धादि इन्होंने किया था। कैकेयीने इन्हींको राज्य देनेके लिए श्रीरामको बनवास दिलवाया था। रामजीको बनवाससे लौटा लानेके लिए यही चित्रकूट गये थे और जब रामने पितृवचनकी रक्षाके लिए विवशता प्रकट की और नहीं आये तब इन्होंने उनकी खड़ाऊँ सिंहासनपर रख रामचन्द्रजीके आनेतक राज्य चलाया था। बनवासकी पूरी अवधितक यह नंदी ग्राममें रहे तथा तपस्वियोंका जीवन बिताया, भूमिशयन, वल्कल-वसन तथा गोमूत्र मिश्रित भोजन किया (भाग० ९.१०.३४-४०,४३; वायु० १०८.२४, ३३-५)। इनके तक्ष और पुष्कर नामके दो पुत्र हुए जिनका राज्य गांधारमें था (भाग० ९.११.१२; ब्रह्मां० ३.६३.१८३; विष्णु० ४.४.१०४) तथा परिशिष्ट झ। यह श्रीरामके राज्याभिषेकमें उपस्थित थे (विष्णु० ४.४.१००); (रामच० मानस अयो० दो० १५६ अंततक)। (२) शकुन्तलाके गर्भसे उत्पन्न दुष्यन्तके पुत्र जिनका जन्म कण्वऋषिके आश्रममें हुआ था। यह बड़े प्रतापी तथा चक्रवर्ती राजा हुए जिन्हें विदर्भराजकी तीन कन्याएँ ब्याही थीं। इन्होंने मामतेय (ममता-पुत्र) दीर्घतमा ऋषिके पौरोहित्यमें गंगा-यमुना तटपर ५५ अश्वमेध और राजसूय यज्ञ किये। यह सार्वभौम राजा थे तथा किरात, हूण, यवन, आंध्र और सब म्लेच्छ इनके अधीन थे। इस देशका नामकरण इन्हींके नामपर हुआ। पुत्रकी इच्छासे इन्होंने मरुत्स्तोम या मरुत्सोम यज्ञ किया और मरुतोंने भरद्वाजको वितथ नामसे भरतके यहाँ अर्पित किया था (भाग० ९.२०.१७-३५; मत्स्य० ४९.११-५, २८-३१; वायु० ९९.१३४, १५२-८; विष्णु० ४.१९.१०-१६)। (३) एक प्रसिद्ध ऋषि जो नाट्यशास्त्रके प्रधान आचार्य माने जाते हैं। इन्होंने लक्ष्मीस्वयंवर नाटकमें इन्द्र तथा पुरूरवाके समक्ष मेनका, उर्वशी तथा रंभाको भी नायिकाके रूपमें अभिनय करनेको बाध्य किया परन्तु जब उर्वशी पुरूरवाके रूपपर मुग्ध होकर अपना अभिनय-तक भूल गयी थी तब भरतने उसे शाप दिया (मत्स्य० २४.२७,३३)। (४) राजा ऋषभ (नाभि) तथा जयन्तीके १०० पुत्रोंमें ज्येष्ठ जो नारायणके परम भक्त थे (भाग० ५.४.९; ७.३; ११.२.१७)। विश्वरूपकी पुत्री पञ्चजनीसे इनका विवाह हुआ जिससे ५ पुत्र हुए थे। यह बड़ा धर्मात्मा राजा था तथा इन्होंने चतुर्होत्र नियमसे यज्ञ किये थे। बहुत दिनोंतक राज्य करनेके पश्चात् अपने पुत्र सुमतिको राजसिंहासन सौंप यह पुलस्त्यके आश्रम जा योगीकी तरह हरिकी तपस्यामें रत हो गये (भाग० ५.५.२८; ७ पूरा; १०.६०.४१; वायु० ३३.५१-३; ४१.४४)। एक बार इन्हें एक हिरनका बच्चा मिला जिसे इन्होंने बड़ी लगनसे पाला। इसपर प्रेम अधिक होनेके कारण इनका दूसरा जन्म मृग-योनिमें हुआ पर पूर्वजन्मकी कथाका स्मरण आनेपर इन्होंने जलमें गिरकर शरीर छोड़ दिया (भाग० ५.८ पूरा; विष्णु० २.१४.१६,२०)। इसके पश्चात् आंगिरस कुलमें एक ब्राह्मणके घर इनका जन्म हुआ जहाँ पिताकी मृत्युके पश्चात् भाइयोंने इन्हें अव्यावहारिक तथा पागल समझ खेतमें काम करनेपर नियुक्त किया। एक बार एक वृषल सरदारको भद्रकालीके समक्ष नरबलि देनी थी पर निश्चित पुरुषके भाग जानेपर सरदारके भृत्य इस जड़भरतको ही उसके स्थानपर बलपूर्वक ले गये। ठीक बलिदानके समय काली प्रकट हो गयी तथा उपस्थित लोगोंका संहार कर इनकी रक्षा की (भाग० ५.९ पूरा)। एक बार कपिलके आश्रम जाते समय राजा रहूगणको एक पालकी वहन करनेवालेकी आवश्यकता पड़ी। इक्षुमती नदीके तटपर इस मतिमंद ब्राह्मणको देख, पालकी ढोनेको कहा पर इनके जीव हिंसासे बचनेके कारण असंयमित गमनसे राजाको कष्ट हुआ और वह इनपर बरस पड़ा। सब सुन लेनेके पश्चात् कहा—"आपकी बातें तो सत्य हैं पर जिसे आत्मज्ञान हो गया है उसका कुछ नहीं बिगड़ सकता।" राजा स्तब्ध रह गया। भरतने मस्तिष्क तथा उसके ११ नियमों तथा माया द्वारा उपस्थित अड़चनोंका उल्लेख किया। ज्ञानकी महत्तापर प्रकाश डाला तथा सत्संगके प्रभावोंका भी वर्णन किया (भाग० अ० ५.१०.११ पूरा; १२.१५-१६)। भरतने संसार, जीव तथा तत्-सम्बन्धी बन्धनोंकी सुन्दर व्याख्या की। इच्छाओं तथा भोगविलासकी वृद्धि मनुष्यको अधिक काम करनेकी प्रेरणा देती है जिससे भविष्यमें जीवन-मरणके एक दूसरे नवीन चक्करका बीजारोपण होता है (भाग० ५.१३.१-२०; १४.१-४१)। (५) वाल्मीकि रामायणके अनुसार उत्तर भारतका एक देश। भारतवर्ष, मेरुसे लगा तथा हिमालयके दक्खिनका एक देश जिसके ९ खंड हैं। उत्तरसे दक्षिण=१००० योजन, कन्याकुमारीसे गंगाके उद्गमतक; पूर्वसे पश्चिमतक ९००० योजन। किरात लोग पूर्वमें थे और यवन लोग पश्चिममें, चार वर्ण, सात कुल-पर्वत, जिसमें आर्य तथा म्लेच्छ रहते हैं। गंगा तथा सिन्धु ऐसी नदियाँ यहाँ जल देती हैं, यहाँ अनेक राज्य तथा जातियाँ हैं (ब्रह्मां० २.१५.५०; १६.४-६९; २९.२३; वायु० ३४.५७; ४१.८५)। (६) पूर्वका एक राज्य जहाँ गंगा बहती है (ब्रह्मां० २.१८.५०)। (७) ब्रह्माके हाथके मध्य भागसे उत्पन्न उनके ९ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (मत्स्य० ३.११)। (८) त्रैसारि (त्रिसारि-पुत्र) करंधमका पुत्र दुष्यन्तका पिता (मत्स्य० ४८.२)। (९) तालजंघके १०० पुत्रोंमेंसे एक पुत्र तथा वृषका पिता (विष्णु० ४.११.२४-५)।

भरतवंश—पु० [सं०] एक वंश जिसका आदि पुरुष भरत था (मत्स्य० ४.१९.२३)।

भरता—स्त्री० [सं०] एक अप्सराका नाम जो सुयशाकी चार पुत्री अप्सराओंमेंसे एक थी (वायु० ६९.१४)।

भरताग्नि—पु० [सं०] (१) अपांसके पिताका नाम (वायु० २९.८)। (२) अंगिरा और स्मृतिके दो पुत्रोंमेंसे एक पुत्र, सद्वती (वायु०=संहूति) का पति तथा पर्जन्यका पिता (वायु० २८.१५; ब्रह्मां० २.११.१८)।

भरताश्रम—पु० [सं०] (१) हिमालयके वनमें स्थित अरण्य जो श्राद्धके लिए अति उपयुक्त तथा पवित्र है। यहाँ मतंगके पदचिह्न हैं। यहाँ किये गये श्राद्धका अक्षय फल होता है (ब्रह्मां० ३.१३.१०५; वायु० ७७.९८)। यहाँ सती देवीकी एक मूर्ति लक्ष्मीरंगनाके नामसे स्थापित है (मत्स्य०

१३.४६)। (२) गयामें स्थित भरतका आश्रम (वायु० ११२.२४)।

भरद्वसु—पु० [सं०] (१) वसिष्ठ, शक्ति आदि सात ब्रह्मवादी वाशिष्ठोंमेंसे एक ब्रह्मवादी वाशिष्ठ (ब्रह्मां० २.३२.११५; मत्स्य० १४५.११०)। (२) ब्रह्मक्षेत्रनिवासी वसिष्ठ, शक्ति आदि सप्तर्षियोंमेंसे एक ऋषिका नाम (वायु० ५९.१०५)।

भरद्वाज—पु० [सं०] (१) ममताके गर्भसे उत्पन्न उतथ्य ऋषिके पुत्रका नाम। उतथ्य-पत्नीकी गर्भावस्थामें बृहस्पतिने (उतथ्यके छोटे भाईने) उनसे, मना करनेपर भी, समागम किया था। गर्भस्थित बालकके विरोध प्रकट करनेपर उसको बृहस्पतिने शाप दे जन्मांध कर दिया, अतः ममताने भरद्वाजको (पति द्वारा तलाकके भयसे) त्याग दिया था। इसपर आकाशवाणी हुई—'भर द्वाज-दोसे उत्पन्न बच्चेको पालो। अतः यह भारद्वाज कहलाये पर इसपर भी ममताने इन्हें त्याग दिया। तब मरुतोंने इनका लालन-पालन किया और भरतके मरुत्सोमयज्ञ (दे० भरत—२)के अवसरपर मरुतोंने भरद्वाजको उपहारस्वरूप भरतको अर्पण कर दिया (भाग० ९.२०.३५-३९)। तीर्थराज प्रयागमें गंगा-यमुना-संगमसे थोड़ी दूरपर इनका (भरद्वाजका) आश्रम था। भरद्वाजकी दो पुत्रियाँ थीं जिनमें एक महर्षि याज्ञवल्क्यको ब्याही थी और दूसरी विश्रवा मुनिकी पत्नी थी जिसके पुत्र कुवेर हुए थे।

भरद्वाज आंगिरस गोत्रोत्पन्न एक वैदिक ऋषि, गोत्रप्रवर्त्तक तथा वैवस्वत मन्वंतरके सप्तर्षियोंमें एक ऋषि थे (भाग० ८.१३.५)। महाभारतके अनुसार एक वार यह गंगा स्नान कर रहे थे और घृताची अप्सराको देख इनका वीर्यपात हो गया जिसे इन्होंने द्रोणमें रख दिया है और इसीसे द्रोण (आचार्य) का जन्म हुआ। एक वार भ्रममें पड़कर इन्होंने अपने मित्र रैभ्यको शाप दे दिया और मारे शोकके जलकर प्राण त्याग किया। पर रैभ्यके पुत्र अर्वावसुने इन्हें तपोवलसे जीवित कर दिया। वन जाते समय तथा लंका-विजय कर लौटते समय श्री रामचन्द्र इनके आश्रममें आये थे और रामको लौटानेके लिए जाते समय भरत भी एक रात इनके आश्रममें रहे थे (राम० च० मा०, अयोध्याका० दो० १०६-१०८; २०५।२-२२४; आदि)। भावप्रकाशके अनुसार इन्होंने इन्द्रसे आयुर्वेद सीखा और ये सप्तर्षियोंमेंसे एक माने जाते हैं। यह युधिष्ठिरके राजसूय यज्ञमें आमंत्रित थे (भाग० १०.७४.७); मरणशय्यापर पड़े भीष्मसे मिले थे (भाग० १.९.६)। स्यमंतपंचकमें श्रीकृष्णसे मिले थे (भाग० १०.८४.३); प्रायोपवेशके समय परीक्षित्से भी इन्होंने भेंट की थी (भाग० १.१९.१०)।

नोट विशेष—ममताके गर्भसे उत्पन्न बृहस्पतिके पुत्र जिसे माता और पिताके त्यागनेपर मरुतोंने पाला और 'मरुत्सोम यज्ञ'के पश्चात् भरत (दुष्यंत-पुत्र) के हवाले कर दिया था और यह क्षत्रिय हो गये (मत्स्य० ९.२७; ४९.१५-३३; ब्रह्मां० २.३८.२७; वायु० ९९.१३७, १४८, १५०, १६९)। इनका निवास गोवर्धन पर्वतपर था जहाँ इन्होंने वृक्ष लगाये, यह वर्षमें कुछ दिनों सूर्यके साथ भी रहते हैं (मत्स्य० ११४.३९; १२६.१३; ब्रह्मां० २.१६.२५), एक मंत्रकृत् ऋषि (मत्स्य० १४५.९५, १०१; ब्रह्मां० २.३२.१०१, १०७) एक पंचार्षेय। १९ वें द्वारपरके वेदव्यासका नाम जिस द्वापरमें विष्णुका जटामाली नामसे अवतार मानते हैं (ब्रह्मां० २.३३.७; ३५.१२१; वायु० २३.१८५; विष्णु० ३.३.१६)। (२) बृहस्पति और मरुत्का पुत्र। दीर्घनमा जव गर्भमें थे तभी इनका जन्म हुआ और इन्हें मरुतोंने पाला तथा मरुत्स्तोम यज्ञकी समाप्तिपर ला भरतको दिया। यही भरतके वितथ नामक पुत्र हुए (वायु० ९९.१४०-१५६; विष्णु० ४.१९.१६-१९)। यह मन्युके पिता थे (विष्णु० ४.१९.२०)। (३) बृहस्पतिका पुत्र, आंगिरसकी १५ शाखाओंमें एक शाखाके प्रवर्तक (वायु० ६५.१०३, २०७)। एक मंत्रकृत् (वायु० ५९.१०१)। आयुर्वेदशास्त्रके आदि प्रवर्त्तक जिसे इन्होंने आठ (८) भागोंमें विभाजित कर अपने शिष्योंको दिया था (वायु० ९२.२२)। सप्तर्षियोंमेंसे एक (वायु० १००.१२; १०३.६३)। (४) फाल्गुन मासमें अन्य सौर गणके साथ सूर्यके रथपर अधिष्ठित रहनेवाले एक ऋषि (भाग० १२.११.४०; वायु० ५२.१२)। कार्त्तिक मासमें सूर्यके साथ रहनेवाले ऋषि (विष्णु० २.१०.१२)। (५) उत्तरका एक राज्य तथा जाति (ब्रह्मां० २.१६.५०; मत्स्य० ११४.४३)। (६) अमित्रजित्का पुत्र तथा धर्मांका पिता (वायु० ९९.२८६)। (७) वारहवें द्वापरके वेदव्यास (विष्णु० ३.३.१४)।

भरुक—पु० [सं०] चम्पापुरी वसानेवाले राजा चम्पका पौत्र, विजयका पुत्र तथा वृकका पिता (भाग० ९.८.२)।

भर्ग—पु० [सं०] (१) वीतिहोत्रका पुत्र तथा भार्गभूमिका पिता (भाग० ९.१७.९)। (२) तुर्वसु-सुत वह्निका पुत्र तथा भानुमान्का पिता (भाग० ९.२३.१६)। निवातकवचोंपर विजय प्राप्त करनेमें इसने अर्जुनकी सहायता की थी (मत्स्य० ६.२९)। (३) पितृमोक्षप्रद एक देवता। गयामें प्रेतशिलाके दक्षिणमें स्थापित कुण्डपर्वत तथा तिमिरादित्य, भर्ग, ईशान—ये सव पितरोंको मोक्ष देनेवाले कहे गये है (वायु० १०८.३२)।

भर्गाजन—पु० [सं०] एक गोत्रप्रवर्त्तक ऋषि।

भर्स्य—पु० [सं०] कश्यपकुलका एक त्र्यार्षेय प्रवरप्रवर्तक ऋषि (मत्स्य० १९९.१७)।

भर्तृहरि—पु० [सं०] एक प्रसिद्ध वैयाकरण और कवि जो राजा विक्रमादित्यके छोटे भाई तथा गंधर्वसेनके दासीपुत्र थे और संसारसे विरक्त हो गये थे (भर्तृहरिशतक)।

भर्म्याश्व—पु० [सं०] अर्कका पुत्र, पुरुजका पौत्र तथा मुद्गल आदि ५ पुत्रोंका पिता। जव ये पाँचों पुत्र शासन करने योग्य हो गये भर्म्याश्वने कहा था मेरे ये पुत्र मेरे राज्यकी रक्षाके लिए अलम् (समर्थ) हैं। पञ्च+अलम्=पञ्चाल इनका सामूहिक नाम 'पंचाल' पड़ा था (भाग० ९.२१.३१-३३)।

भलंदक—पु० [सं०] एक वैश्य मंत्रकृत् तथा वैश्यप्रवर। वैश्योंमें तीन मन्त्रकृत् हुए—भलन्दक, वासाश्व और संकील (मत्स्य० १४५.११६)।

भलंदन—पु० [सं०] (१) नाभाग अरिष्ट (भाग० तथा ब्रह्मां० दिष्ट)का पुत्र तथा वत्सप्रीति (प्रांशु=ब्रह्मां० तथा वायु०) का पिता (भाग० ९.२.२३; ब्रह्मां० ३.६१.३; वायु० ८६.

३-४)। (२) कन्नौज के एक राजाका नाम जिन्हें पुराणानुसार यज्ञकुंडसे एक कन्या प्राप्त हुई थी जिसका नाम कलावती रखा गया था। (३) (मत्स्य० = भलन्दक) एक वैश्य मंत्रकृत् (ब्रह्मां० २.३२.१२१)। (४) त्र्यार्षेय प्रवर-प्रवर्तक एक आत्रेय गोत्रकार ऋषि (मत्स्य० १९७.७)।

भल्ल—पु० [सं०] पुराणानुसार एक प्राचीन तीर्थ।

भल्लाट—पु० [सं०] गृह तथा प्रासाद निर्माणमें इनकी पूजा होती है (मत्स्य० २५३.२७; २५५.९; २६८.१८)।

भल्लाद—पु० [सं०] (भल्लाट = मत्स्य०) उदक्स्वन (उदक्सेन = ब्रह्मां०, मत्स्य० तथा वायु०) का पुत्र तथा बृहदिपुके वंशका अन्तिम पुरुष। इसके पुत्रका नाम जनमेजय था (भाग० ९.२१.२६; मत्स्य० ४९.५९; वायु० ९९.१८२)।

भल्लाभ—पु० [सं०] उदक्सेनका एक पुत्र (विष्णु० ४.१९.४७)।

भव—पु० [सं०] (१) (गिरीश, शंकर, महेश्वर) सर्वप्रथम स्वयं प्रकट होनेवाला देवता = शिव, जलका अधिष्ठाता देवता, अरुण पर्वत परका निवासी, ऊपाका पति तथा उशनाके पिता जिसने कुरु देशमें 'रुद्रकान्त सर' बनाया था (भाग० ४.१.४९; मत्स्य० ११.१६; १२९.३; १३२.१८, २१; १५६.१०; १८४.४, ७,१२; १८५.१२; २५०.५१; २६५.४१; ब्रह्मां० २.१८.१९, २१, ३२, ७२; वायु० ४.४३; २१.७; २७.८; १००.४३; १२१.२९)। स्वयंभूकी तामसी प्रकृति, संहारकर्त्ता देव (ब्रह्मां० ३.१.१५; ३.८५)। इन्होंने कामदेवको जला भस्म कर दिया था (मत्स्य० १३७.३६; १३८.३९-४१; १५४.२५१)। जंभको वर देकर शस्त्रोंसे अभेद्य कर दिया था (ब्रह्मां० ३.४२.१७; ६५.३१; ७२ ८०; ४.२.२४७; १.४०)। यह दक्षपुत्री सतीके पति थे तथा दक्षसे संघर्ष हुआ (ब्रह्मां० २.९.५४; वायु० ३०.३८)। सतीके पक्षमें बोलनेवाले सप्तर्षियोंको शाप दिया (वायु० ६५.२०)। (२) एक रुद्र जो भूत तथा सरूपाके पुत्र तथा सतीके पति थे (भाग० ६.६.१७; ब्रह्मां० ४.३४.२६; विष्णु० १.७.२६; ८.६-७)। (३) रौच्यमनुके दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (ब्रह्मां० ४.१.१०४; वायु० १००.१०८)। (४) वसुदेवका एक पुत्र (मत्स्य० ४६.२२)। (५) धर्म और साध्याके पुत्र बारह साध्यदेवोंमेंसे एक साध्य (मत्स्य० १७१.४३)। (६) प्रथम कल्पका नाम जिसमें भगवान्का नाम आनन्द है (वायु० २१.२८)। (७) चौथे कल्पका नाम (वायु० २१.३०)। (८) प्रतिहर्त्ताका पुत्र तथा उद्गीथका पिता (विष्णु० २.१.३७)। (९) ध्रुव नामके वसुका एक पुत्र (वायु० ६६.२०)।

भवदा—स्त्री० [सं०] कार्त्तिकेय स्वामीकी अनुचरी एक मातृका (महाभा० शल्य० ४६.१३)।

भवनंदि—पु० [सं०] एक कश्यपकुलका गोत्रकार ऋषि (मत्स्य० १९९.५)।

भवन—पु० [सं०] गृह। गृह निर्माणका समय = वैशाख, आषाढ़, श्रावण, कार्त्तिक, मार्गशीर्ष और फाल्गुन। चैत्र, ज्येष्ठ, भाद्रपद, आश्वयुज, पौष तथा माघ वर्जित हैं। शुभमुहूर्त (नक्षत्र) = अश्विनी, रोहिणी, मूल, तीनों उत्तरा, स्वाति, हस्त तथा अनुराधा। रविवार तथा बुधवार छोड़कर और सब दिन शुभ हैं। सूर्य और चन्द्रमाका स्थान निश्चित कर लेना उचित है। भिन्न-भिन्न जातिके लिए भूमि-संशोधनका अलग-अलग दृष्टिकोण है। सामूहिक वास्तुका प्रयोग आवश्यक है। भिन्न-भिन्न प्रकारकी लकड़ीके प्रयोगका विधान भी दिया है। चतुश्शाल, त्रिशाल और एक शालका विवरण २४५ परिच्छेदमें दिया है (मत्स्य० अध्या० २५२-४)।

भवनाशिनी—स्त्री० [सं०] पुराणानुसार उत्तर भारतकी प्रसिद्ध सरयू नदी।

भवमालिनी—स्त्री० [सं०] अन्धकासुरके रुधिरपानके लिए शिवजी द्वारा सृष्ट कई मानसपुत्री मातृकाओं द्वारा किये जा रहे जगदुत्पीडक उत्पात शमनके लिए शिवजीकी प्रार्थनापर नरसिंह भगवान् द्वारा भिन्न-भिन्न अंगोंसे सृष्ट ३२ मातृका शक्तियोंमेंसे एक शक्ति जिसकी सृष्टि नृसिंहके गुह्यसे हुई थी (मत्स्य० १७९.६४)।

भवलोक—पु० [सं०] रुद्रलोक (वायु० १०१.२०८)।

भववामा—स्त्री० [सं०] शंकरपत्नी पार्वतीका एक नाम (शिव०)।

भवा—स्त्री० [सं०] पृथ्वीसे उत्पन्न अप्सराओंकी जाति (वायु० ६९.५७)।

भवाचल—पु० [सं०] कैलाश पर्वतका एक नाम जो पुराणानुसार मंदर पर्वतके पूर्वमें है।

भवानी—स्त्री० [सं०] दुर्गा देवीका एक नाम जो शिव-पत्नी कही जाती हैं। उमा (भाग० ३.२३.१; ४.५.१; ब्रह्मां० ३.९.१; ४१.४२; ४३.१, २३; मत्स्य० १०१.१६; वायु० ७१.२)। स्थानेश्वरमें स्थापित सती देवीकी एक मूर्ति (मत्स्य० १३.३१)।

भवानीव्रत—पु० [सं०] शिवके प्रीत्यर्थ किया जानेवाला एक व्रत (मत्स्य० १०१.७७)।

भवायना—स्त्री० [सं०] शिवके मस्तकपर विराजनेवाली गंगाका एक नाम—दे० गंगा।

भविष्यपुराण—पु० [सं०] अट्ठारह महापुराणोंमेंसे ग्यारहवाँ जिसमें पाँच पर्व तथा १४,५०० श्लोक हैं। दूसरे पुराणोंके समान इसमें भी प्राचीन राजाओं तथा चंद्रसूर्यके वंश तथा अघोर कल्पका वर्णन है जिसे ब्रह्माने मनुसे कहा था। गुड़ और कुंभके साथ इस पुराणको पौष मासकी पूर्णिमामें दान देनेसे अग्निष्टोमका फल होता है (भाग० १२.७.२४; १३.६; मत्स्य० ५०.६८, ७३-७७; ५३.३१-३३; वायु० १०४.३; विष्णु० ३.६.२२)।

भव्य—पु० [सं०] (१) प्रियव्रतके ७ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (विष्णु० २.१.७), जिसे शाकद्वीपका राजा बनाया गया था (विष्णु० २.१.१४)। (२) नवें (दक्षसावर्णि) मन्वंतरके सप्तर्षियोंमेंसे एक ऋषिका नाम (विष्णु० ३.२.२३)। (३) ध्रुवके दो पुत्रोंमेंसे एक पुत्र जो शंभुका पिता था (विष्णु० १३.१)। (४) छठें (चाक्षुष) मन्वंतरके आप्य, प्रसूत आदि ५ देववर्गोंमेंसे एक देववर्गका नाम (विष्णु० ३.१.२७)।

भस्म—पु० [सं०] अग्निहोत्रमेंकी राख जिसे शिवभक्त भस्मसंच्छन्नदेह शिवका वीर्य समझ मस्तक तथा शरीरपर लगाते हैं (ब्रह्मां० २.२७.१०, ९२, १०५-२८; ३.२८.१२)। भस्म स्नान कर लेनेसे शरीर पवित्र हो जाता है (ब्रह्मां० २.२७.१०५-११५)।

भस्मकूट–पु० [सं०] गयास्थित शिलाकी दाहिनी ओरका एक पर्वत जहाँ यम और सपत्नीक अगस्त्य निवास करते हैं (वायु० १०८.५३, ८५)। यहाँ स्थापित भस्मनाथकी पूजाके पश्चात् स्वयम् सब पापोंसे मुक्त होता है तथा पितरोंके लिए पिंडदान कर उन्हें उबारता है (वायु० १०९.१५; ११२.५३)।

भस्मनाथ– पु० [सं०] गयाके भस्मकूट पर्वतपर स्थापित देव (वायु० ११२.५३)।

भस्माकूट–पु० [सं०] पुराणानुसार कामरूप देशका एक पर्वत विशेष, जिसपर शिवका निवास कहा गया है।

भस्मासुर–पु० [सं०] पुराणानुसार एक प्रसिद्ध दैत्य, जिसका पहिला नाम वृकासुर था। तपोबलसे प्रसन्न हुए शिवसे इसने यह वरदान प्राप्त किया कि मैं जिसके सिरपर हाथ रखूँ वह भस्म हो जाय। पार्वतीजीपर मोहित हो इसने शिवके ऊपर हाथ रख उन्हींको भस्म करना चाहा, पर श्रीकृष्णने बुद्धिकौशलसे इसका हाथ इसीके सिरपर रखवा दिया और वरके अनुसार यह भस्म हो गया था (भाग०)।

भांडायन–पु० [सं०] एक प्राचीन ऋषिका नाम (हिं० श० सा०)।

भाईदूज–स्त्री [सं०] कार्त्तिक शु० द्वितीया, जिस दिन बहिन अपने भाईको टीका लगा, भविष्यकी शुभकामना कर कुछ भोजन कराती है।

भाकर–पु० [सं०] पुराणानुसार एक देश विशेष जो नैर्ऋत्य कोणमें स्थित माना गया है।

भाक्ष–पु० [सं०] आंगिरसोंकी १५ शाखाओं (पक्षों) मेंसे एक शाखाका नाम (वायु० ६५.१०७)।

भागवत–पु० [सं०] शुंगवंशके राजा वज्रमित्रका पुत्र तथा देवभूति (ब्रह्मां०=देवभूमि) का पिता, जिसने ३२ वर्षोंतक राज्य किया था (भाग० १२.१.१८; ब्रह्मां० ३.७४.१५४; विष्णु० ४.२४.३५-६)।

भागवतधर्म– पु० [सं०] विरक्ति तथा भक्ति इसके ये ही दो प्रधान आधार हैं (भाग० ११.२.७, ११, ३१, ४२; ३.३३)।

भागवतपुराण–पु० [सं०] अट्ठारह पुराणोंमेंसे एकका नाम जिसका सारांश सृष्टिके आदिमें सर्वप्रथम भगवान् श्रीकृष्णने ब्रह्माको सुनाया था (भाग० ३.४.१३; १२.७.२३; विष्णु० ३.६.२१)। इसमें बारह स्कंध, २१२ अध्याय और १८००० श्लोक हैं, जिनमें अधिकांश श्रीकृष्णसंबंधी प्रेम और भक्तिरसकी कथाएँ हैं। हिन्दुओंमें और पुराणोंकी अपेक्षा इसका विशेष आदर है। वैष्णव इसे महापुराण मानते हैं, पर शाक्त लोग देवीभागवतको महापुराण और इसे उपपुराण मानते हैं। इसे सर्वप्रथम नारायणने नारदको बताया, नारदसे व्यास और व्याससे शुकने प्राप्त किया (भाग० १२.४.४१-३; १.७.८; २.१.८)। संकर्षणने सनत्कुमारको, इसने सांखायनको और सांखायनने पराशर और बृहस्पतिको, तदुपरांत पराशरने पुलस्त्यकी प्रार्थनापर मैत्रेयको बतलाया (भाग० ३.८.२-९)। शुकने परीक्षितको सुनाया तथा नैमिषालयमें सूतने ऋषियोंको कहा (भाग० १२.४.४१-४३)।

भागवतांड–पु० [सं०] एक करोड़ ५० नियुत (लाख) योजनकी दूरीपर ब्रह्मलोकके ऊपर यह 'अंड' स्थित माना गया है जहाँ प्रकृति तथा सूक्ष्म आदि हैं (वायु० १०१.२२१-६)।

भागवती–स्त्री० [सं०] गोल दानोंकी एक प्रकारकी कंठी जिसे वैष्णव लोग गलेमें पहिनते हैं (भाग०)।

भागवतोत्तम–पु० [सं०] हरिभक्त तथा उसकी विशेषताएँ (भाग० ११.२.४५-५५)।

भागवित्तायन–पु० [सं०] वशिष्ठवंशज त्र्यार्षेय प्रवरप्रवर्तक ऋषिगण (मत्स्य० २००-८)।

भागवित्ति–पु० [सं०] (१) भार्गवकुलका एक आर्षेय प्रवरप्रवर्तक ऋषि (मत्स्य० १९५.३७)। (२) कुशुमिके तीन पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (वायु० ६१.३८)।

भागान्य–पु० [सं०] विश्वामित्र, मान्धाता, संकृति, आर्ष्टिषेण, अजमीढ आदि अनेक तपसे सिद्ध हुए क्षत्रोपेत द्विज राजर्षियोंमेंसे एक राजर्षि जो ब्राह्मण हो गये थे (वायु० ९१.११६)।

भागासुर–पु० [सं०] पुराणानुसार एक असुरका नाम।

भागिल–पु० [सं०] भार्गवकुलका एक आर्षेय प्रवरप्रवर्तक ऋषि (मत्स्य० १९५.३७)।

भागीरथी–स्त्री० [सं०] राजा भगीरथ अपनी घोर तपस्या द्वारा गंगाको स्वर्गसे पृथ्वीपर लाये थे। गंगाकी सात धाराओंमेंसे एक (सातवीं) धारा भगीरथके पीछे-पीछे दक्षिणकी ओर लवणोदधिको चलीं। यह भगीरथकी पुत्री भी कही गयी हैं। अतः गंगाका यह नाम पड़ा (ब्रह्मां० २.१८.४२; ३.१३.१००; ५४.५१; ६३.१६८-९; मत्स्य० १२.४४; १६३.६०; वायु० ८८.१६९; विष्णु० ३.१८.५७; ४.४.३५, ५.३५.३०)।

भागुरि–पु० [सं०] एक महात्मा जिन्होंने पृथ्वीरूप पद्मके कर्णिकारूप मेरुको चतरस्त्र बताया था (वायु० ३४.६२)। प्रियव्रतसे विष्णुपुराण सुन स्तम्भमित्रको सुनाया था (विष्णु० ६.८.४४)।

भाजर–पु० [सं०] १४वें भौत्यमनुके चाक्षुप, कनिष्ठ, पवित्र आदि पाँच देवगणोंमेंसे एक देवगणका नाम। प्रत्येक गणमें सात देव हैं (वायु० १००.१११, ११२)।

भाण्डीरक–पु० [सं०] वृंदावनके निकटस्थ एक वटवृक्ष जिसकी छाया बड़ी सुखद कही गयी है। जहाँ भगवान् श्रीकृष्णने वनाग्निसे घिरे हुए गो-गोपोंकी अपनी अचिन्त्य योगशक्तिसे अग्नि पीकर, रक्षा की थी (भाग० १०.१८.२२; १९.१३)।

भाण्डीरवट–पु० [सं०] एक वटवृक्ष जो वृंदावनके निकट है जहाँ क्रीड़ा करते समय गोपरूपी प्रलम्ब नामक दैत्य बलराम द्वारा मारा गया था (विष्णु० ५.९.२)। यह ग्वालबालोंका क्रीड़ास्थल था (विष्णु० ५.९.३-१४)।

भाद्रपद–पु० [सं०] (१) मार्गी वीथीके तीन नक्षत्रोंमेंसे दो नक्षत्र (पूर्वा भाद्रपदा तथा उत्तरा भाद्रपदा) (मत्स्य० ५४.११; ५५.१०; वायु० ६६.५२)। (२) एक महीनेका नाम जो श्रावणके बाद तथा आश्विनके पूर्व आता है। इस मासके शुक्ल पक्षकी तृतीया मन्वंतरादि कही गयी है, जो

श्राद्धोंके लिए एक अत्यन्त उपयुक्त तिथि है। मन्वंतरादिमें किये गये श्राद्धका फल अक्षय कहा गया है (मत्स्य० १७.६)।

भानु–पु० [सं०] (१) भानु (दक्षपुत्री) तथा धर्मके कई पुत्रोंका सामूहिक नाम जो भानुगण अथवा भानुज भी कहलाये (ब्रह्मां० ३.३.३२; मत्स्य० ५.१८; २०३.८; वायु० ६६.३३; विष्णु० १.१५.१०६)। (२) प्रतिव्योमका पुत्र तथा दिवाक (दिवार्क) का पिता (भाग० ९.१२.१०)। (३) बीस सुतप देवोंमेंसे एक सुतप देवका नाम (ब्रह्मां० ४.१.१५; वायु० १००.१५)। (४) स्वारोचिष मनुके चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (मत्स्य० ९.७)। (५) सिद्ध, पूर्ण आदि १० देवगंधर्वों, जो क्रोधा तथा कश्यपके पुत्र थे, मेंसे एक देवगंधर्वका नाम (ब्रह्मां० ३.६.३९)। (६) श्रीकृष्ण तथा सत्यभामाके दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्र, जो श्रीकृष्णके १८ महारथी पुत्रोंमेंसे एक था (भाग० १०.६१.१०; ९०.३३; मत्स्य० ४७.१७; वायु० ९६.२३८; विष्णु० ५.३२.१)। जिसने एक बड़ा गिरगिट देखकर पितासे कहा था (भाग० १०.६४.१-४)। यह प्रभास-क्षेत्रमें भू-भार उतारनेकी भगवदिच्छासे हुए आपसी युद्धमें मारा गया था (भाग० ११.३०.१७; मत्स्य० २०३.८; वायु० ६६.३३)। (७) भार्गका एक पुत्र तथा त्रयीसानुका पिता (विष्णु० ४.१६.३)।

भानु–स्त्री० [सं०] (१) दक्षकी एक पुत्रीका नाम जिसका विवाह पुराणानुसार धर्मसे हुआ था (भाग० ६.६.४-५; मत्स्य० ५.१५; वायु० ६६.२; विष्णु० १.१५.१०५) और यह भानुओं अथवा भानुजोंकी माता थी, देवऋषभ (इन्द्रसेनका पिता) इसीका पुत्र था (ब्रह्मां० ३.३.२, ३२; मत्स्य० ५.१८; विष्णु० १.१५.१०६)। (२) ब्रह्मां०के अनुसार श्रीकृष्ण और सत्यभामाके दस पुत्रोंके अतिरिक्त चार पुत्रियाँ हुई थीं, जिनमेंसे एक कन्याका नाम (ब्रह्मां० ३.७१.२४७-४८; वायु० ९६.२४०)।

भानुचंद्र–पु० [सं०] चंद्रगिरिका एक पुत्र तथा श्रुतायुका पिता। यह भारतयुद्धमें मारा गया था (मत्स्य० १२.५५)।

भानुदेव–पु० [सं०] पाँचाल देशके एक राजकुमारका नाम जो भारत-युद्धमें पांडवोंकी ओरसे लड़ा था और कर्ण द्वारा मारा गया था (महाभा० कर्ण० ४८.१५)।

भानुप्रताप–पु० [सं०] कैकय देशके राजा सत्यकेतुके पुत्र एक राजाका नाम। एक बार ब्राह्मण-भोजनमें इनके शत्रुके कपट-छलसे मनुष्यका मांस परोस दिया गया, जिसपर आकाशवाणी हुई और सब ब्राह्मण बिना भोजन किये उठ गये। ब्राह्मणोंने इसे परिवार सहित राक्षस होनेका शाप दिया और यही भानुप्रताप मरनेपर रावण हुआ (रामायण)।

भानुमान्–पु० [सं०] (१) बृहदश्वका पुत्र तथा प्रतीकाश्वका पिता (भाग० ९.१२.११)। (२) भर्गका पुत्र तथा त्रिभानुका पिता। यह तुर्वसुवंशका था (भाग० ९.२३.१६-१७)। (३) कलिंग देशके एक राजाका नाम, जो महाभारतयुद्धमें कौरवोंकी ओरसे युद्ध करते हुए भीमसेन दारा मारा गया था (महाभा० भीष्म० ५४.३३-३९)। (४) सीरध्वज मैथिलका पुत्र तथा प्रतापी प्रद्युम्न (विष्णु० = शतद्युम्न) का पिता, जिसका भाई कुशध्वज काशीका अधिपति था (वायु० ८९.१८; विष्णु० ४.५.३०)। (५) श्रीकृष्ण तथा सत्यभामाके १० पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (भाग० १०.६१.१०)। (६) पुराणानुसार केशिध्वजके पुत्रका नाम जो शतद्युम्नका पिता था (भाग० ९.१३.२१) तथा सीरध्वजका भाई था (ब्रह्मां० ३.६४.१८)।

भानुमती–स्त्री० [सं०] (१) बृहत्कल्पके राजा धर्ममूर्त्तिकी १०,००० रानियोंमेंसे एक, जो अत्यन्त सुन्दरी लक्ष्मी-सी शोभा देती थी, पूर्व जन्ममें सौण्ड नामके सुवर्णकारकी पत्नी थी और लीलावतीके लवणाचल-दान करनेमें इसने उसकी सहायता की थी और इसके पतिने उस दानमें लगनेवाली सुवर्णकी सामग्री बिना पारिश्रमिक लिये बनायी थी, जिसके फलस्वरूप यह रानी हुई थी (मत्स्य० ९२.१९-२४)। (२) राजा भोजकी पुत्रीका नाम जो राजा विक्रमादित्यको ब्याही गयी थी। कहते हैं यह इंद्रजाल विद्याकी जानकार थी। (३) अंगिरा ऋषिकी पहली पुत्रीका नाम जो अत्यन्त रूपवती थी (महाभा० वन० २१८.३)। (४) दुर्योधनकी पत्नीका नाम (महाभा०)। (५) राजा सगरकी एक पत्नीका नाम जो असमंजसकी माता थी (मत्स्य० १२.३९, ४२)। (६) अहंयातिकी पत्नी तथा कृतवीर्यकी पुत्रीका नाम। इससे अहंयातिका सार्वभौम नामका पुत्र उत्पन्न हुआ (महाभा० आदि० ९५.१५)।

भानुमित्र–पु० [सं०] (१) पुराणानुसार चंद्रगिरिके राजाके एक पुत्रका नाम। (२) एक प्राचीन राजाका नाम जो पुष्यमित्रके पश्चात् गद्दीपर बैठा था।

भानुरथ–पु० [सं०] बृहदश्वका पुत्र तथा प्रतीताश्वका पिता (वायु० ९९.२८४; विष्णु० ४.२२.४)।

भानुलोक–पु० [सं०] सूर्यके लोकका नाम, हिरण्याश्वदान (महादान) करनेसे यह लोक प्राप्त होता है (मत्स्य० २८०.१०)।

भानुविंद–पु० [सं०] शाल्वसे द्वारकाकी रक्षामें प्रद्युम्न, सात्यकि आदि यदुवीरोंके साथ इसने सक्रिय भाग लिया था (भाग० १०.७६.१४)।

भानुव्रत–पु० [सं०] सप्तमीमें दिनभर व्रत रहकर रात्रिमें भोजन करे। एक वर्ष यों व्रत कर वर्षान्तमें दुधार गौका दान करे। इस विधिसे व्रत कर व्रती सूर्यलोक प्राप्त करता है (मत्स्य० १०१.६०)।

भानुसप्तमी–स्त्री० [सं०] माघ शुक्ला सप्तमी। मन्वंतरके आदिमें सूर्यप्रकाश इसी दिन सर्वप्रथम फैला था, अतः यह भानु-जयंती भी है। इस व्रतके प्रयोजन तथा प्रकार अनेक हैं, इसीसे इसे 'अर्कसप्तमी, अचला सप्तमी, रथ सप्तमी, सूर्य सप्तमी तथा भानु सप्तमी' कहते हैं। इसमें अरुणोदय व्यापिनी तिथि ले, जिससे अक्षय पुण्य होता है (भविष्योत्तरपु०)।

भानुसेन–पु० [सं०] कुंतीके गर्भसे उत्पन्न सूर्य-पुत्र दानवीर कर्णके एक पुत्रका नाम। महाभारतयुद्धमें भीमसेन द्वारा यह मारा गया था (महाभा० कर्ण० ४८.२७)।

भामिनी–स्त्री० [सं०] नामान्तर दंष्ट्रा। यह क्रोधा या क्रोधवशाके गर्भसे कश्यप द्वारा उत्पन्न १२ पुत्रियों, जो सबकी सब पुलह ऋषिको ब्याही गयी थीं, मेंसे एक पुत्रीका नाम। इनके गर्भसे बाघ, शेर, हाथी आदि उत्पन्न हुए थे (वायु० ६९.२८९)।

भारद्वाजि–पु० [सं०] आंगिरसवंशके त्र्यार्षेय प्रवरप्रवर्तक

एक ऋपिका नाम (मत्स्य० १९६.२८)।

भारत–पु० [सं०] व्यास द्वारा लिखित एक आख्यान जिसमें अति आवश्यक वेदार्थ विशद रूपमें दिया गया है (भाग० १.४.२५, २९; ५.३)।

भारतयुद्ध–न० पु० [सं०] इसी युद्धमें वृहद्वल अभिमन्यु द्वारा मारा गया था (महाभा० द्रोण० ४७.२.२२)। सहदेव भी इसी युद्धमें काम आये थे (ब्रह्मां० ३.७४.१०९; मत्स्य० १२.५५; १०३.२; २७१.१९; वायु० ९९.२९६; विष्णु० ४.४.११२)।

भारतवर्ष–पु० [सं०] ऋपभ पुत्र भरतपर इसका नामकरण हुआ था, यह हिमालयके दक्षिण तथा लवणसमुद्रके उत्तर वसा है (भाग० ५.४.९; ६.१३; १६.९; मत्स्य० ११३.२८, ४४; ११४.११; विष्णु० २.३.१-२२)। पुराणानुसार यह जंवूद्वीपके अंतर्गत सर्वश्रेष्ठ भूमि है। ब्रह्मपुराणमें इसे भारतद्वीप लिखा है, यह कर्मभूमि है (भाग० ५.१७.११)। जिसका क्षेत्रफल ९००० योजन है (ब्रह्मां० ३.५३.१४; ५६.२; २.१४.६२, ७२; १७.१; २१.६)। ब्रह्मां० में इन्द्रद्वीप, कशेरू, ताम्रपर्ण, गभस्तिमान्, नागद्वीप, सौम्य, गंधर्व और वरुण ये भारतवर्षके नौ विभाग लिखे हैं, जहाँ महेन्द्र, मलय, सह्य, शुक्तिमान्, ऋक्ष, विंध्य तथा पारियात्र सात मुख्य पर्वत हैं। भिन्न-भिन्न पुराणोंमें इसके संवंधमें अलग-अलग कथाएँ दी हुई हैं। यहाँ चार युगोंका समय है। इसका पहिला नाम अजनाभ था (भाग० ५.७.३) तथा परीक्षितने इसे जीता था (भाग० १.१६.१३)।

भारताख्यान–पु० [सं०] महाभारत जिसमें वेदोंके सारे आवश्यक तत्त्व १ लाख श्लोकोंमें वर्णित हैं (मत्स्य० ५३.७०)।

भारती–स्त्री० [सं०] (१) सरस्वती देवीका नाम जो प्रजापतिकी पत्नी तथा ललिताकी सहायक थीं (ब्रह्मां०)। (२) भारतवर्षकी एक नदीका नाम जिसकी गणना अग्नियोंको उत्पन्न करनेवाली नदियोंमें है (महाभा० वन० २२२.२५-२६)। (३) केतुमालकी सुवप्रा आदि अनेक नदियोंमेंसे एक नदी (वायु० ४४.२१)।

भारतीतीर्थ–पु० [सं०] एक तीर्थविशेपका नाम (हिं० श० सा०)।

भारद्वाज–पु० [सं०] (१) द्रोणाचार्यका नाम–दे० भरद्वाज। (२) शरद्ऋतुके आश्विन मासमें यह सौरगणके अन्य छहके साथ सूर्यके रथपर स्थित रहते हैं (ब्रह्मां०, २.२३.१२; ३५.६४)। (३) बृहस्पतिके एक पुत्रका नाम (वायु० ६६.१, २, ५५; ६४.२६)। (४) आंगिरसोंकी एक शाखा (वायु० ६५.९७, १०६)। (५) गर्भसे ही ऋपि (वायु० ५९.९२) एक मंत्र-ब्राह्मण कारक (वायु० ५९.९८, १३१)। (६) श्रौतसूत्र और गृह्यसूत्रके रचयिता एक ऋपिका नाम। इन्होंने कश्यप पदपर श्राद्ध किया तव दो हाथ निकले, एक काला, दूसरा श्वेत। माँसे पूछनेपर माँने काला हाथ पिताका वतलाया, किन्तु श्वेत हाथने अदृश्य होकर श्वेत हाथ पिताका कहा, अतः माताने क्षेत्री और वीजी दोनों पिताओंको पिण्ड देनेको कहा। तदनन्तर भारद्वाजने कश्यपपदपर पिण्ड प्रदान किया जिसमे दोनों पिता—क्षेत्री और वीजी—हंस-युक्त विमानसे ब्रह्मलोकको गये (वायु० १११.५८-६३)।

भारभूति–पु० [सं०] नर्मदा तटपर स्थित एक तीर्थ जहाँ विरूपाक्ष स्थापित हैं (मत्स्य० १९४.१८-३०)।

भारुकच्छ–पु० [सं०] दाक्षिणात्य जनपदोंमेंसे एक जनपद तथा एक जाति (मत्स्य० ११४.५०)।

भारुण्ड–पु० [सं०] (१) एक वनका नाम जो पंजावमें सरस्वती नदीके निकट था (रामायण)। (२) सामवेदका एक अंश, नवीनदेवालयके निर्माणके समय इसका सामवेदी ऋत्विक् द्वारा पश्चिम दरवाजेपर पाठ किया जाता है (मत्स्य० २६५.२८)। (३) उत्तरकुरुमें रहनेवाले महावलवान् विशालकाय पक्षियोंकी एक जाति। इनकी चोंच वहुत तीखी होती है। ये वहाँ मृत जीवोंके शवोंको उठाकर गुफाओंमें फेंक देते हैं (महाभा० भीष्म०)।

भारुण्डि–पु० [सं०] भारुण्ड सामके द्रष्टा एक ऋपि।

भार्ग–पु० [सं०] (१) वीतिहोत्रका पुत्र तथा भार्गभूमिका पिता (विष्णु० ४.८.२०)। (२) वह्निका पुत्र तथा भानुका पिता (विष्णु० ४.१६.३)।

भार्गभूमि–पु० [सं०] भार्गका एक पुत्र जो काश्यप वंशका अंतिम पुरुप था (भाग० ९.१७.९-१०)। इसने वर्णधर्मके प्रचलनार्थ प्रचार किया (विष्णु० ४.८.२०)।

भार्गव–पु० [सं०] (१) मार्कण्डेय पुराणानुसार एक जनपद जो भारतवर्पके अंतर्गत पूर्वकी ओर स्थित प्राग्ज्योतिप, पुण्ड्र आदि जनपदोंमें एक है (ब्रह्मां० २.१६.५४; वायु० ४५.१२३)। (२) सूर्य आदि नवग्रहोंमेंसे एक ग्रहका नाम (ब्रह्मां० २. २४.८९; १०४)। (३) वह्वृचोंके ८६ श्रुतर्पियोंमेंसे एक श्रुतर्पिका नाम (ब्रह्मां० २.३३.२)। देवीके १०८ नामका जप कर इसे धन मिला था (मत्स्य० १३.६२)। इसने सोलहों प्रकारके महादान किये थे (मत्स्य० २७४.११)। कहते हैं इसे वनारसमें सिद्धि मिली थी (मत्स्य० १८४.१५)। (४) जमदग्नि ऋषिके पुत्र। ये सावर्ण मनुके युगके सप्तर्षियोंमेंसे एक ऋपि थे। इन्होंने सिंहिकापुत्र क्रूर सैंहिकेय गणके १४ महाअसुरों तथा उनके १०००० अनुगामी असुरोंको मारा था (ब्रह्मां० ३.६.२२; ४.१.१०; वायु० ६२.१६, ४१, ५४,६५; ६४.२५; ८६.४९)। यह भृगुके परिवारके थे (वायु० ६४.२; १००.८२, ९७, १०७, ११६; १०६.३५)। (५) शुक्र नक्षत्र, जो चंद्रमाका १/१६ भाग है (मत्स्य० १२८.४७, ६३; वायु० ५३.६६; १११.५)। इनके रथमें ८ घोड़े (मत्स्य०) पर ब्रह्मां० और वायु० के अनुसार १० घोड़े हैं जो श्वेत, पिशंग, सारंग, नील, पीत, विलोहित, कृष्ण, हरित, पृषत तथा पृश्नि रंगके हैं (मत्स्य० १२७.७; ब्रह्मां० २.२३.८१; वायु० ५२.७४)। इसकी १६ किरणें हैं (वायु० ५३.८६)। चाक्षुष मन्वंतरमें यह तिष्यसे उत्पन्न हुए तथा तारा ग्रहोंमें सर्वप्रथम हैं (वायु० ५३.१११)। (६) तीसरे द्वापरके व्यासका नाम जिसमें विष्णुका दमन अवतार हुआ था, जिनके चार पुत्र थे (वायु० २३.१२३)। (७) नवें द्वारपरके भगवद् अवतार ऋपभके चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (वायु० २३.१४४)। (८) असुरोंके गुरु शुक्राचार्य (वायु० ५३.८०)। अंगारके व्रतकी उत्पत्तिके संवंधमें विरोचनसे इनकी वातें हुई थीं (मत्स्य० २४.५२; ७२.६)। (९) परशुराम जिनकी सृष्टि ललिताने भंडके युद्धमें की थी (ब्रह्मां० ४.२९.११०)।

भार्गवगण–पु० [सं०] तीनों लोकोंमें प्रसिद्ध मारीच, भार्गव, आंगिरस आदि सात देवगणोंमेंसे एक देवगणका नाम (ब्रह्मां० ३.१.५०) ।

भार्गवगोत्र–पु० [सं०] वत्स, विश्व, अश्विपेण, पाण्ड, पथ्य, शौनक, पक्ष अन्य ऋषियोंसे बहिर्भूत ये सब इसी गोत्रके अन्तर्गत हैं (वायु० ६५.९६) ।

भार्गवत–पु० [सं०] आंगिरसकुलका त्र्यार्पेय प्रवरप्रवर्तक एक ऋषि (मत्स्य० १९६.७) ।

भार्गवदेव–पु० [सं०] सात देवता जो तीनों लोकोंमें ७१ युगोंतक निवास करते हैं, मन्वंतरके अंतमें ये महर्लोक चले जाते हैं और अन्य लोक, तारे, ग्रहादि सब स्थान च्युत हो जाते हैं। वहाँ इन देवोंके १४ गण बन जाते हैं और संकलनके समय ये जनलोक चले जाते हैं। सारी सृष्टि नष्ट हो जाती है और नयी सृष्टि फिरसे आरंभ होती है (वायु० १००.११९-३२) ।

भार्गववन–पु० [सं०] पुराणानुसार द्वारकाका एक वन (भाग०) ।

भार्गवेश–पु० [सं०] विष्णुका एक पवित्र क्षेत्र (मत्स्य० १९२.१-२) ।

भार्गव्योम–पु० [सं०] विश्वामित्र, मान्धाता, संकृति, कपि आदि तपस्यासिद्ध क्षात्रोपेत ब्राह्मण राजर्षियोंमेंसे एक राजर्षि जो तपसे ऋषि हो गये थे (ब्रह्मां० ३.६६.८७) ।

भालचंद्र–पु० [सं०] विनायकका एक नाम (ब्रह्मां० ३.४२.३६) ।

भाललोचन–पु० [सं०] मस्तकमें तीसरा नेत्र होनेके कारण शंकरका एक नाम। कहते हैं इसी तीसरी आँखसे सारी सृष्टिका लय होता है। कामदेव भी इसी नेत्रसे भस्म हुआ था (मत्स्य० १३७.३६; १३८.३९-४१) ।

भालुकि–पु० [सं०] सामग आचार्य लांगलिके छह शिष्योंमेंसे एक शिष्य—लांगल (वायु० ६१.४२) ।

भावदर्श–पु० [सं०] २७वाँ कल्प। इसमें प्रजासृष्टि करनेके लिए ब्रह्माके परब्रह्मका ध्यान करनेपर अग्निदेव मंडली भूत हो गये तथा भूलोक और द्युलोकको व्याप्त कर चमकते रहे। १००० वर्षों पश्चात् सूर्यमंडलकी उत्पत्ति हुई (वायु० २१.६१-७) ।

भावन–पु० [सं०] (१) भृगुके पुत्र बारह भृगुदेवोंमेंसे एक भृगुदेव (ब्रह्मां० ३.१.८९; वायु० ६५.८७) । (२) औत्तम मन्वंतरके देवगण। देवगणका नाम (मत्स्य० ९.१३) ।

भावपुष्प–पु० [सं०] ये संख्यामें ८ हैं—दया, आत्मनियंत्रण या संयम, नम्रता, धैर्य, त्याग, भक्ति, ध्यान और सत्य (विष्णु० ५.७.६९) ।

भावभावना–पु० [सं०] इसके तीन रूप कहे गये हैं, ब्रह्मभावना, कर्मभावना तथा उभयभावना (टीकाकारके मतानुसार) (विष्णु० ६.८.७) ।

भावास्यायनि–पु० [सं०] आंगिरस वंशका त्र्यार्पेय प्रवरप्रवर्तक एक ऋषि (मत्स्य० १९६.२७) ।

भाविन्या–स्त्री० [सं०] श्रीरामपत्नी सीताकी एक सखी (रामा०) ।

भाविमंद्र–पु० [सं०] भद्र देशका एक जनपद (वायु० ४३.२२) ।

भावी–पु० [सं०] प्लक्षद्वीपके शूद्र जातिके लोग (विष्णु० २.४.१७) ।

भाव्य–पु० [सं०] चाक्षुष मन्वंतरके आठ-आठ देववाले पाँच देवगणोंमेंसे एक देवगणका नाम। इस गणके देवोंके नाम—विजय, सुजय, मन, उद्यान, मति, परिमति, विचेता तथा अर्थपति (ब्रह्मां० २.३६.६६, ७२; वायु० ६२.६०-१) ।

भाषी–स्त्री० [सं०] शूरकी पत्नी तथा वसुदेव आदि १० पुत्रोंकी माता (वायु० ९६.१४२) ।

भाष्यविद्या–स्त्री० [सं०] इसके ज्ञानका आरम्भ द्वापरमें हुआ था (ब्रह्मां० २.३१.२४; मत्स्य० १४४.१३, २३) ।

भास–पु० [सं०] (१) वालीके सामन्त तथा सेनानायक सैकड़ों वानर सरदारोंमेंसे एक प्रधान वानर (ब्रह्मां० ३.७.२४२) । (२) एक पर्वत, जिसकी गणना पर्वतराजोंमें की जाती है, का नाम (महाभा० अश्व० ४३.५) । (३) भापी और गरुड़के पुत्र (ब्रह्मां० ३.७.४५५) ताम्राके वंशकी चीलें (विष्णु० १.२१.१६) ।

भासकृत्–पु० [सं०] २० सुतप देवोंमेंसे एक सुतपदेवका नाम (वायु० १००.१५) ।

भासकर्ण–पु० [सं०] लंकापति रावणकी सेनाका एक प्रधान नायक, जो अशोकवाटिका उजाड़ते समय पवनसुत हनुमान् द्वारा मारा गया था (रामायण) ।

भासी–स्त्री० [सं०] (१) अरिष्टा और कश्यपकी तीन पुत्रियोंमेंसे एक पुत्री (ब्रह्मां० ३.७.१३) । (२) ताम्रा और कश्यपकी छह पुत्रियोंमेंसे एक पुत्री, जो गरुत्मान्की पत्नी थी। भास, उलूक, कौए, मुर्गियाँ, कोयल, पंडुक, लवा, तीतर, गौरैया, लावतित्तिर, उल्लू, गिद्ध तथा काक, कुक्कुट आदिकी माता थी (ब्रह्मां० ३.७.४४६-४४८, ४५५; मत्स्य० ६.३०-३१; वायु० ६९.३२५, ३२८, ३३५-३६; विष्णु० १.२१.१५-१६) । (३) एक अप्सरा (वायु० ६९.४८) ।

भासुर–पु० [सं०] एक तुषित देवता (ब्रह्मां० २.३६.१०) ।

भास्कर–पु० [सं०] (आदित्य, सूर्य), सूर्यका एक नाम (मत्स्य० ११.१०; ९३.१३; वायु० ३१.३५, ३७; विष्णु० २.८.२; ६.७.३, २०) । दिन तथा समयके सृष्टिकर्त्ता, एक संवत्सर (ब्रह्मां० २.१३.१२४; २१.६) । इसे रावणने परास्त किया था (ब्रह्मां० ३.५.७९; ७.२५४; ४.९.३५) । सूर्यमंडलका क्षेत्रफल ९००० योजन कहा गया है जो चंद्रमंडलका द्विगुण है (वायु० ५०.६१.६३) । इनका एक नाम द्वादशात्मा भी है (वायु० ५३.४२) ।

भास्वर–पु० [सं०] सूर्यका एक अनुचर जिसे तारकासुरके वधके समय सूर्यने स्कंदको दे दिया था—दे० सूर्य, स्कंदादि ।

भास्वान्–पु० [सं०]—दे० सूर्य ।

भिक्षु–पु० [सं०] (१) नारदने दक्षपुत्रोंको भिक्षुमार्गकी शिक्षा दी थी (भाग० ६.५.३६) । भिक्षुके कर्त्तव्योंके लिए द्रष्टव्य (मत्स्य० ४०.१५) । (२) ध्यान, इंद्रियोंकी समाधि, सात घरोंसे भिक्षा माँगना, शांति तथा संघसे मुक्ति, ये भिक्षुओंके पाँच प्रधान व्रत हैं जिनके ५ पूरक व्रत ये हैं—सदाचार, विनय, शौच, प्रतिहिंसासे अलग रहना

तथा सम्यक् दर्शन। इसके अतिरिक्त ब्रह्मचर्य, अहिंसा, अक्रोध, गुरुसेवा, संयत भोजन, भिक्षा, उदारता, आदि-आदि (ब्रह्मां० २.७.१७९; वायु० ८.१८६-७; १६.१८-९; ५९.२५; १०५.२५; विष्णु० ३.९.२४-४२)।

भिन्नदर्शन–पु० [सं०] वे जो त्रिमूर्ति त्रिदेवोंको भिन्न तथा पृथक्-पृथक् समझते हैं और उन्हें एक नहीं मानते। कोई उनमेंसे एकको ब्रह्मा, प्रजापति, शिव तथा विष्णु कहते हैं। वायु पुराणानुसार उन्हें यातुधान तथा पिशाचगण कष्ट देते हैं (वायु० ६६.१११-८)।

भिन्नदर्शी–पु० [सं०] ये यथार्थदर्शियों तथा तत्त्वदर्शियोंसे विपरीत हैं जिनके सिद्धान्त अलग हैं (ब्रह्मां० ३.३.८९-९०, ९७)।

भिल्ल–पु० [सं०] एक जंगली जाति (ब्रह्मां० ४.७.१९)।

भिषक्–पु० [सं०] हृदिक (हृदीक)के दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (ब्रह्मां० ३.७१.१४१)।

भिषग्द्वैतरत–पु० [सं०] (ब्रह्मां० = भिषक्+श्वेतरथ) हृदिक (हृदीक) के दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्र। [ये भिषक् और और द्वैतरथ दो नाम है ब्रह्माण्डका 'श्वेतरथ' ही यहाँ 'द्वैतरथ' कहा गया है] (वायु० ९६.१३०)।

भीम–पु० [सं०] (१) पाँचों पांडवोंमेंसे दूसरे जो कुंतीके गर्भसे उत्पन्न वायुके पुत्र कहे गये हैं (विष्णु० ४.१४.३५; भाग० ९.२२.२७) [जन्मकथाके लिए –दे० पांडु]। यह युधिष्ठिरसे छोटे और अर्जुनसे बड़े तथा बड़े वीर थे। भीम और दुर्योधनका जन्म एक ही दिन हुआ था। बलके कारण दुर्योधन इनसे ईर्ष्या करता था, अतः उसने एक दिन इन्हें विष खिला कर नदीमें फिकवा दिया था। वहाँ सर्पोंके काटनेसे इनका पहिला विष उतर गया। नागराजने इन्हें अमृत पिला तथा १०,००० हाथियोंका बल दे घर भेज दिया था (महाभा० आदि० १२७.४५-७१)। जब लाक्षा-गृह (लाहका बना घर) में पांडवोंको दुर्योधनने जलवा देना चाहा था, तब समाचार पाते ही यह सबको लेकर वन चले गये थे (महाभा० आदि० १४७.१०, २०-२१)। श्रीकृष्णने इस अवसरपर इन्हें सांत्वना दी थी (भाग० १०.७१.२७; ५८.४; ६४.९)। जंगलमें जानेपर हिडिंवा (हिडिंबकी बहिन) से इन्होंने भाईके कहनेसे विवाह किया जिससे इनका पुत्र घटोत्कच हुआ (महाभा० आदि० १५४.२०-३१)। यह श्रुतसेनके पिता थे तथा कालीसे इनका सर्वंगत पुत्र हुआ (भाग० ९.२२.२९-३१; विष्णु० ४.१४.३५; २०.४०)। अज्ञातवासके समय यह बल्लव नामसे विराटके यहाँ सूपकार रहे थे, जब कीचकने द्रौपदीसे छेड़छाड़ की थी, तब इन्होंने उसका वध करडाला था (महाभा० विराट० २२.५२-८२)। महाभारत युद्धमें इन्होंने अपनी प्रतिज्ञाके अनुसार दुर्योधनकी टाँग अपनी गदासे तोड़ी थी (महाभा० शल्य० ५८.४७; भाग० १०.७८[९५(५)३९]; ७९.२३, २८; १.७.१३) और दुःशासनका रक्तपान किया था (महाभा० कर्ण० ८३.२८.२९)। महाप्रस्थानके समय भी यह सबके साथ थे। सहदेव, अर्जुन तथा नकुलके मर जानेके पश्चात् यह मरे थे (महाभारत, महाप्रास्थानिक० अध्याय २)। इन्होंने जरासंधको मारा तथा उसका रथ श्रीकृष्णको दिया (विष्णु० ५.३५.२८; ब्रह्मां० ३.६८.२८)। (२) विदर्भराज तथा दमयंतीके पिता—दे० दमयंती। (३) महर्षि विश्वामित्रके पूर्व पुरुष जो पुरूरवाके पौत्र थे—दे० पुरूरवा। (४) कुंभकर्णके एक पुत्रका नाम जो रावणकी सेनाका एक सेनापति था (रामायण)। (५) कूर्मपुरनिवासी एक कुम्हारका नाम जो वेंकटेश्वरकी कृपासे पत्नी सहित वैकुण्ठ गया था (स्कंदपु० वैष्णव० भूमिवाराह-खंड)। (६) विजयका पुत्र तथा कांचनका पिता (भाग० ९.१५.३)। (७) शिवकी छठी भीम तनु, जो आकाश है, उसकी दिशाएँ पत्नियाँ हैं तथा स्वर्गपुत्र है (ब्रह्मां० २.१०.८१; वायु० २७.१४, ४५, ५४)। महादेवका छठा नाम, जिसमें आकाश तत्त्वोंकी प्रधानता रहती है, अतः खुले मैदानमें मलमूत्र त्यागना और स्त्रीप्रसंग निषिद्ध है (ब्रह्मां० २.१०.१४, ५०)। (८) १४ वैकुंठ देवोंमेंसे एक वैकुंठ देव (ब्रह्मां० २.३६.५७)। (९) वैशाख मासमें सूर्यके रथपर सौरगणके अन्य छहके साथ अधिष्ठित रहनेवाला एक ग्रामणी (ब्रह्मां० २.२३.३)। (१०) ४९ मरुतोंके ७ मरुद्गणोंमेंसे तीसरे मरुद्गणका एक मरुत् (ब्रह्मां० ३.५.९४; वायु० ६७.१२६)। (११) मुनि (दक्षपुत्री) और कश्यपके पुत्र १६ मौनेय देवगन्धर्वोंमेंसे एक मौनेय देवगन्धर्व (ब्रह्मां० ३.७.३)। (१२) खशा और कश्यपके राक्षस पुत्रोंमेंसे एक राक्षस पुत्र (ब्रह्मां० ३.७.१३३; वायु० ६९.१६५)। (१३) किष्किंधाधिपति वालीके महावली सामन्त तथा सेनापति सैकड़ों प्रधान वानरनायकों से एक प्रधान बंदर (ब्रह्मां० ३.७.२३५)। (१४) अमावसुका पुत्र तथा कांचनप्रभका पिता (ब्रह्मां० ३.६६.२३; विष्णु० ४.७.२-३)। यह एक विश्वजित् कहे गये हैं (वायु० ९१.५२)। (१५) ग्यारह रुद्रोंमेंसे एक जो भूत और सरूपाका पुत्र था (मत्स्य० १५३.१९; भाग० ६.६.१७; ब्रह्मां० ४.३४.४१; विष्णु० १.८.६)। यह आकाशका अधिष्ठाता देवता है (मत्स्य० २६५.४२)। (१६) अतलका निवासी एक असुर (वायु० ५०.१७)। (१७) खशा तथा कश्यपपुत्र राक्षसोंका एक राक्षस-गण (वायु० ६९.१६५)। (१८) महावीर्यका पुत्र तथा उभक्षयका पिता (वायु० ९९.१६२)।

भीमक–पु० [सं०] पुराणानुसार एक प्रकारके गण, जो पार्वतीके क्रोधसे उत्पन्न कहे जाते हैं।

भीमकर्मा–पु० [सं०] भंडका एक मंत्री जिसने उसे इन्द्रकी तपस्यामें विघ्न डालनेके निमित्त इन्द्रसे युद्ध करनेकी राय दी थी (ब्रह्मां० ४.१२.५६)।

भीमकुमार–पु० [सं०] घटोत्कचका नाम जो हिडिंवाके गर्भसे उत्पन्न भीमका पुत्र था (महाभा० आदि० १५४.३१)।

भीमगोड़ा–पु० [सं०] हरिद्वारके अंतर्गत एक प्रसिद्ध जलस्रोत। कहते हैं वनवासकालमें विचरण करते हुए पांडवोंको प्यास लगी और भीमने अपने पदाघात द्वारा भूमिसे जलस्रोत उत्पन्न कर दिये थे (महाभा०)।

भीमचंडी–स्त्री० [सं०] हरिद्वारमें हिमालय पहाड़पर स्थित एक देवीका नाम जहाँ इनका मंदिर भी है —दे० हरिद्वार तथा तीर्थ परिचय।

भीमतिथि–स्त्री० [सं०] (१) ज्येष्ठ शुक्ला एकादशी तथा (२) माघ शुक्ला एकादशी, जिन्हें भीमसेनी एकादशी भी

कहते हैं।

भीमद्वादशी–स्त्री० [सं०] कल्याणिनी-व्रतका ही बादवाले कल्पमें भीमसेनी द्वादशी नाम पड़ा, क्योंकि भीमसेनने इसे किया था। यह व्रत माघ शुक्ला द्वादशीको होता है (मत्स्य० ६९.५६-७)। श्रीकृष्णने सर्वप्रथम भीमसेनको इसका माहात्म्य कहा था। उर्वशी तथा सत्यभामाने इस व्रतको किया था। इसमें गरुड़, गोविंद, शिव, विनायक तथा दिक्पालोंकी पूजाका विधान है (मत्स्य० ६९.१९-५७)।

भीमनाद–पु० [सं०] प्रलय करनेवाले सात जलधरों—संवर्त, भीमनाद, द्रोण, चण्ड, बलाहक, विद्युत्पताक और शोण—मेंसे एक (मत्स्य० २.८)।

भीमबल–पु० [सं०] (१) एक प्रकारकी अग्नि —दे० अग्नि। (२) धृतराष्ट्रके सौ पुत्रों मेंसे एक पुत्रका नाम (महाभा० आदि० ६७.९८)।

भीममुख–पु० [सं०] एक प्रकारका बाण (रामायण)।

भीमरथ–पु० [सं०] (१) केतुमान्का पुत्र तथा दिवोदास (प्रजेश्वर=ब्रह्मां०) का पिता। वायुपुराणमें इसे ही दिवोदास लिखा है जो बनारसका राजा था (भाग० ९.१७.५-६; ब्रह्मां० ३.६७.१६; वायु० ९२.२३; विष्णु० ४.८.११)। (२) पुराणानुसार एक असुर जिसे विष्णुने अपने कूर्मावतारमें मारा था (विष्णु०)। (३) किष्किन्धापति वालीके सैकड़ों सामन्त तथा सेनानायक महाबलवान् प्रधान बन्दरोंमेंसे एक प्रधान बन्दर (ब्रह्मां० ३.७.२३८)। (४) धृतराष्ट्रके एक पुत्रका नाम (महाभा० आदि ६७, १०३)। (५) विकृतिके पुत्रका नाम जो नवरथ (रथवर=ब्रह्मां०) का पिता था (भाग० ९.२४.४; ब्रह्मां० ३.७०.४२; वायु० ९५.४१; विष्णु० ४.१२.४१)। (६) विमलका एक पुत्र तथा नवरथका पिता (मत्स्य० ४४.४१)। (७) कौरव-दलका एक योद्धा जो द्रोणाचार्यरचित गरुड़ व्यूहके मध्यमें नियुक्त था। इसने पाण्डव-दलके योद्धा म्लेच्छराज शाल्वका वध किया था (महाभा० द्रोण० २०.१२; २५.२६)।

भीमरथी–स्त्री० [सं०] पुराणानुसार एक नदी जो सह्य पर्वतसे निकली दक्षिणापथकी नदियोंके अन्तर्गत है (वायु० ४५.१०४; विष्णु० २.३.१२) जिसमें स्नान करनेका बहुत अधिक फल बतलाया जाता है। सह्य पर्वतसे बलराम यहाँ आये थे (भाग० ५.१९.१८; १०.७९.१२; ब्रह्मां० २.१६.३४)। यह पितरोंके श्राद्ध आदि कर्मके लिए एक पवित्र नदी है (मत्स्य० २२.४५;११४.२९)।

भीमरोमक–पु० [सं०] एक राज्य जहाँसे होकर गंगा बहती है (भाग० १२२.४७)।

भीमवेग–पु० [सं०] एक त्रिप्रवर (मत्स्य० १९६.३४)।

भीमव्रत–पु० [सं०] व्रती इस व्रतका विष्णुलोक प्राप्त करता है (मत्स्य० १०१.५०)।

भीमसेन–पु० [सं०] (१) कुन्तीके गर्भसे उत्पन्न महाराज पाण्डुके एक पुत्र जो अर्जुनसे बड़े तथा युधिष्ठिरसे छोटे थे। यह भीमद्वादशीव्रतके प्रवर्तक थे (मत्स्य० ६.४३; ६९.१२-३)। इन्होंने बायें पैरपर (वाम जानु निपात्य) बैठकर जनार्दनको पिण्ड दिया था, अतः भाइयों सहित ब्रह्मलोक गये तथा इनके सौ पीढ़ीके पितर भी ब्रह्मलोक गये (वायु० ८६.४८; १०८.९१)। (२) परीक्षित् पाण्डवके जनमेजय आदि पाँच पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (भाग० ९.२२.३५; विष्णु० ४.२०.१; २१.२)। (३) कश्यप और मुनि (दक्ष-पुत्री) के १६ मौनेय देवगन्धर्व पुत्रोंमेंसे एक मौनेय देवगन्धर्व (ब्रह्मां० ३.७.१)। (४) संगीतशास्त्रका एक विद्वान् लेखक (ब्रह्मां० ३.६१.४२)। (५) मागधराज जरासन्धके वंशज दक्षका पुत्र (मत्स्य० ५०.३८)। (६) जरासन्ध वंशके जनमेजय-सुत सुरथका एक पुत्र तथा जह्नुका पिता (वायु० ९९.२२९)। (७) उसी वंशके ऋक्षका पुत्र तथा दिलीपका पिता (वायु० ९९.२३३; विष्णु० ४.२०.७)।

भीमसेनी (एकादशी)–स्त्री० (हि०) —दे० भीमतिथि तथा भीमद्वादशी।

भीमा–स्त्री० [सं०] (१) हिमाद्रिमें स्थापित सती देवीकी एक मूर्ति (मत्स्य० १३.४७)। (२) अन्धकासुरके रुधिर पानके लिए शिवसृष्ट अनेक मानसपुत्री मातृकाओंमेंसे एक मातृकादेवी (मत्स्य० १७९.२२)। (३) केतुमाल देशकी एक नदी (वायु० ४४.१८)।

भीमेश्वर–पु० [सं०] नर्मदा-तटपर स्थित पितरोंके श्राद्ध आदिके लिए प्रशस्त एक तीर्थ (मत्स्य० २२.४६,७५; १९१.५)।

भीरु–पु० [सं०] एक यक्ष मणिभद्र और पुण्यजनीके २४ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (ब्रह्मां० ३.७.१२३; वायु० ६९.१५५)।

भीरूगण–पु० [सं०] अप्सराओंके १४ गणोंमेंसे एक गणका नाम जो मृत्युसे उत्पन्न है (ब्रह्मां० ३.७.२०)।

भीषक–पु० [सं०] खशा और कश्यपके कामरूपी अनेक राक्षस पुत्रोंके अतिरिक्त आलम्बा, उत्कचा, कृष्णा, निर्ऋता, कपिला, शिवा और केशिनी नामकी सात पुत्रियाँ हुईं। ये तथा केशिनीकी पुत्री नीला ये आठ राक्षस माताएँ कही गयी हैं। इनसे उत्पन्न अनेक प्रकारके राक्षण गणोंके अन्तर्गत एक राक्षस गणका नाम (वायु० ९९.१६४-१८३)।

भीषण–पु० [सं०] (१) श्वेता और पुलहसे उत्पन्न दस वानर पुंगवोंसे एक बन्दर (ब्रह्मां० ३.७.१७९)। (२) हृदीकके कृतवर्मा आदि दस महापराक्रमी पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (मत्य० ४४.८२)।

भीषणिका–स्त्री० [सं०] अन्धकासुररूधिर पानार्थ शिवजी-सृष्ट अनेक मानसपुत्री मातृकाओं द्वारा आरब्ध जगद्-दुःखदायी उत्पातोंके शमनार्थ शिवजीके प्रार्थना करनेपर भगवान् श्रीहरि द्वारा विभिन्न अङ्गोंसे उत्पादित ३२ मातृकाओंमेंसे रेवतीकी अनुगामिनी एक मातृकादेवी (मत्स्य० १७९.७३)।

भीषणी–स्त्री० [सं०] जानकीजीकी एक सखीका नाम (रामायण)।

भीष्म–पु० [सं०] गंगाके गर्भसे उत्पन्न राजा शांतनुके पुत्र, वसुओंमेंसे आठवें वसुके अवतार सर्वश्रेष्ठ क्षत्रिय, धर्मज्ञ, आत्मसंयमी, परम भागवत तथा बड़े वीर योद्धा (भाग० ९.२२.१९-२०; १.९.४-६, ३०; मत्स्य० १०३.५; वायु० ९९.२४०)। गंगाने शांतनुसे इस प्रतिज्ञापर विवाह किया था कि वह जो चाहेगी करेगी। शांतनुसे गङ्गाको ७ पुत्र हुए जिन्हें गङ्गाने जलमें फेंक दिया था। भीष्म आठवें थे जिन्हें जलमें फेंकनेसे शांतनुने गङ्गाको रोका। प्रतिज्ञा-भंग

होनेके कारण गङ्गा चली गयीं। यह बड़े वीर, धर्मात्मा तथा दृढ़प्रतिज्ञ थे। कुछ दिनों वाद राजा शांतनु एक धीवरकन्या मत्स्यगन्धापर आसक्त हुए। इस विवाहके सम्पादनके लिए भीष्मने आजन्म ब्रह्मचारी रहने तथा राज्य न लेनेकी प्रतिज्ञा की थी। इनका पहला नाम देवव्रत था पर इसी प्रतिज्ञाके कारण इन्हें भीष्म कहने लगे। मत्स्यगन्धाका एक नाम सत्यवती भी था जो समयानुसार चित्रांगद और विचित्रवीर्य नामक दो पुत्रोंकी माता हुई। भीष्म काशीराजकी तीन पुत्रियाँ—अम्बा, अम्बिका और अम्बालिकाको हर ले आये थे जिनमेंसे अम्बा और अम्बालिकाका विवाह विचित्रवीर्यसे करा दिया था (अम्बिकाकी कथाके लिए –दे० अम्बिका तथा शिखण्डी) चित्रांगद वाल्यकालमें ही मारे गये थे –दे० चित्रांगद (महाभा० आदि० ६३.९१; १००.८७, ९४-९६)।

महाभारत-युद्धमें १० दिनोंतक कौरवोंके पक्षसे भीष्मने भीषण युद्ध किया था और अन्तमें अर्जुनके हाथों घायल होकर शर-शय्यापर लेट गयें थे (भाग० १०.७८[९५ (५) २६], २८; १.९.८-१०; १५.१०) भाग० १.९.७ के अनुसार इस समय अत्रि ऋषि इनसे भेंट करने आये थे। युद्ध समाप्त होनेपर युधिष्ठिरको इन्होंने मोक्षधर्मके सुन्दर उपदेश दिये थे जो महाभारतके शांतिपर्वमें दिये हैं (महाभा० शांति० ५६.१२ से अनु० अध्या० १६५ तक)। माघ शु० ८ को सूर्यके उत्तरायण होनेपर यह अपने इच्छानुसार मरे थे (भाग० १.९.२५-४२; ११.१९.११-१२); महाभा० भीष्म ११९.३४-३५, ५६–६७,८७; अनु० १६९.२—२०)।

भीष्मक–पु० [सं०] कुण्डिन (वरार) विदर्भ देशका एक प्रतापी राजा (भाग० ३.३.३ विष्णु० ५.२६.१) तथा रुक्मिणी, पुत्री तथा रुक्मी, रुक्मरथ आदि पाँच पुत्रोंका पिता। इनका पुत्र रुक्मी अपनी वहिन रुक्मिणीका विवाह शिशुपालसे करना चाहता था। भीष्मक भी पुत्रस्नेहवश शिशुपालको कन्या देनेके पक्षमें हो गया था। सारी तैयारियाँ भी कर ली गयीं थीं पर उसकी इच्छाके विरुद्ध विवाह श्रीकृष्णके साथ होकर रहा (भाग० १०.५२.१६, २१–२२; ५३.७-३५)। गोमन्तके घेरेके समय जरासन्धने इसे उत्तरमें रखा था (भाग० १०.५२.११ (१५)।

भीष्मचंडिक–पु० [सं०] वनारसके निकटका एक स्थान (मत्स्य० १८३.६२)।

भीष्मपंचक–पु० [सं०] कार्त्तिक शुक्ला ११ से पंचमीतक जब व्रत रखते है तथा प्रतिदिन पद्मपुराणोक्त कथा सुनते हैं। अन्य मतसे कार्तिक शु० १५ को ही यह व्रत पूर्ण हो जाता है। अधिकांश स्त्रियाँ ११ और १२ को निराहार, त्रयोदशीको शाकाहार तथा १४ और १५ को फिर निराहार रह ब्राह्मण-भोजन करा स्वयं भोजन कर "पंचभीषण" नहाती हैं (पद्मपुराण)।

भीष्मपितामह–पु० [सं०] दे० भीष्म।

भीष्माष्टमी–स्त्री० [सं०] माघ शुक्ला अष्टमी जिस दिन भीष्मने शरीर छोड़ा था, अतः इस दिन भीष्मजीका श्राद्ध-तर्पण करनेसे अभीष्ट-सिद्धि होती है—धवलनिबन्ध।

भुजंग–पु० [सं०] मनुने प्रलय होनेपर, भुजंग (सर्प) से ही स्वर्गीय नौकाको मछलीके सींगोंमें बाँधा था (मत्स्य० २.१८;४.६)। वज्रांगकी पत्नी वरांगीकी तपस्यामें विघ्न उपस्थित करनेके लिए इन्द्रने भुजंगका ही रूप धारण किया था (मत्स्य० १४६.६५)।

भुजातपूर–पु० [सं०] कश्यप कुलका त्र्यार्षेय प्रवरप्रवर्तक एक ऋषि (मत्स्य० १९९.१६)।

भुज्यु–पु० [सं०] वैदिक कालके एक राजाका नाम जो तुग्रुके पुत्र थे। कहते हैं अश्विनीने समुद्रमें डूबनेसे इन्हें बचाया था।

भुमन्यु–पु० [सं०] सुहोत्रके पिताका नाम —दे० सुहोत्र।

भुरण्य–पु० [सं०] १२ देवोंवाले सुधामदेवगणमेंका एक सुधामदेव (ब्रह्मां० ४.१.६०)।

भुरुंड–पु० [सं०] एक गोत्रप्रवर्त्तक ऋषि (हि० श० सा०)।

भुर्भर–पु० [सं०] एक अस्त्रविशेष (वायु० ३०.२३६)।

भुव–पु० [सं०] (१) अन्तरिक्ष, सात लोकोंमेंसे दूसरा जिसका अधिष्ठाता देवता वायु है। यह प्रलयाग्निसे नष्ट हो जाता है (ब्रह्मां० २.१९.१५५; २१.२१; ४.१.१५६; २.१४–१७, २७–३०)। यहाँके निवासी=मरुत, मातरिश्वा, रुद्रगणः, अश्विनगण, आदित्य, साध्य. पितर, आंगिरस ऋषिगण आदि हैं यह पृथ्वी तथा सूर्यके बीचमें है जहाँके उपर्युक्त निवासी सोम तथा घृतका पान करते हैं (वायु० १०१.१९, २९,४०,४३)। (२) दूसरे कल्पका नाम (वायु० २१.२९)। (३) ग्यारहवें कल्पका नाम (वायु० २१.३१)। (४) उन्नेताका पुत्र तथा उद्गीथका पिता (वायु० ३३.५६)। (५) देवकीका सातवाँ पुत्र (वायु० ९६.१८१)।

भुवत–पु० [सं०] बृहद्रथवंशी मगधराज क्षेमका पुत्र, जिसने ६४ वर्षोंतक राज्य किया था। इसका उत्तराधिकारी निधर्मनेत्र था (वायु० ९९.३०३)।

भुवन–पु० [सं०] (१) भृगुके १२ पुत्र भृगुदेवोंमेंसे एक भृगुदेवका नाम (ब्रह्मां० ३.१.८९; मत्स्य० १९५.१२; (वायु० ६५.८७)। (२) लोक जो पुराणानुसार १४ हैं= सात स्वर्ग, सात पाताल। भू, भुवः, स्वः, महः, जनः, तपः और सत्य, ये सात स्वर्गलोक हैं। अतल, सुतल, वितल, गभिस्तमल, महातल, रसातल और पाताल ये सात (७) पाताल लोक हैं। (३) एक मुनिका नाम। (४) सुरभिमें कश्यपसे उत्पन्न एकादश रुद्रोंमेंसे एक रुद्रदेवका नाम (ब्रह्मां० ३.३.७१; वायु० ६६.७०)।

भुवनपति–पु० [सं०] एक देवता जो अग्निके भाई कहे जाते हैं (महीधर)।

भुवना–स्त्री० [सं०] बृहस्पतिकी वहिन जो योगसिद्धा, ब्रह्मवादिनी तथा आठवें वसु प्रभात की पत्नी थी (ब्रह्मां० ३.३.२८)।

भुवनांडगर्भ–पु० [सं०] ब्रह्मा, संसारका अधिपति ८.१०)।

भुवनाधीश–पु० [सं०] एक रुद्रका नाम —दे० रुद्र तथा शिवपु०)।

भुवनेश–पु० [सं०] शिवकी एक मूर्त्ति (शिवपु०)।

भुवनेशी–स्त्री० [सं०] शक्तिकी एक मूर्त्ति विशेष (देवीभाग०)।

भुवनेश्वर–पु० [मं०] जगन्नाथपुरीके पासके एक प्रसिद्ध तीर्थस्थानका नाम। दक्षिण समुद्रके किनारे नीलाचलसे विभूपित जो १० योजन विस्तृत क्षेत्र चित्रोत्पला नदीसे लेकर समुद्रतक फैला हुआ है, उसके उत्तर एक आम्रवन है जहाँ भुवनेश्वर नामक शिवलिंग है। इसीके आसपास की भूमि "एकाम्रक्षेत्र" (भुवनेश्वर) के नामसे प्रसिद्ध है। यहाँ अनेक शिव-मन्दिर हैं जिनमें सबसे प्रसिद्ध भुवनेश्वर-का मन्दिर है। लिंगराज-मन्दिर उत्कलीय कारुकार्यका सर्वोत्तम निदर्शन है। भुवनेश्वरको अब उड़ीसाकी नयी राजधानीके रूपमें मनोनीत किया गया है (स्कन्दपु० वैष्णव० उत्कल-खण्ड)।

भुवनेश्वरी–स्त्री० [सं०] दशमहाविद्याओंमेंसे एक देवी।

भुवपति–पु० [सं०] —दे० भुवनपति।

भुवमन्यु–पु० [सं०] वितथका पुत्र तथा बृहत्क्षेत्रादि चार पुत्रोंका पिता। वितथका पूर्व नाम भरद्वाज था। ये मरुतों द्वारा राजा भरतको अर्पित किये गये थे (मत्स्य० ४९.३५; वायु० ९९.१५८–५९)।

भुवर्लोक–पु० [सं०] अन्तरिक्ष अर्थात् ऊपरके सात लोकोंमें दूसरा लोक निरुक्ति (व्युत्पत्ति)के अनुसार यह दूसरा लोक है। तीन लोक भूत, भवत् और भव्य कहे गये हैं। भू-लोक भूत है, भुवर्लोक भवत् है और द्युलोक भव्य है। ब्रह्माने पहले 'भू' कहा तब भू-लोक हुआ। भू-धातुका सत्ता अर्थ है और लोकदर्शन भी। भूत होने तथा देखनेसे यह भू-लोक हुआ। अतः यह प्रथम लोक माना गया। इसके उत्पन्न हो जानेपर ब्रह्माने दूसरा 'भवत्' शब्द कहा। भवत् यह शब्द उत्पद्यमान कालमें कहा जाता है। भवनात् इस व्युत्पत्तिसे भुवर्लोकको सिद्धि होती है। अन्तरिक्ष भवत् है इसलिए यह दूसरा लोक है। इसके उत्पन्न हो जानेपर ब्रह्माने फिर 'भव्य' कहा—भव्यलोक उत्पन्न हुआ। भावी (होनेवाले)के लिए 'भव्य' शब्द प्रयुक्त होता है इसलिए द्युलोक भव्य है (ब्रह्मां० २.३८.१६; वायु० २३. ८४; ४९.१४८; ६४.१४; १००-१६०) भू आदि तीन लोक कृतक होनेसे अनित्य है। अतः प्रलयकालमें रुद्रकी ज्वाला से यह भस्म हो जाता है (विष्णु० २.७.१७;६. ३२६,३९)।

भुवस्थान–पु० [मं०] अच्छावाक अग्निका स्थान (वायु० २९.२८)।

भुवस्पति–पु० [सं०] वायु० भुवका अधिपति —दे० भुव।

भुशुण्डी–पु० [सं०] (१) अन्धकासुररुधिरपानके लिए शिवजी द्वारा सृष्ट कई मानसपुत्री मातृकाओंमेंसे एक मानसपुत्री मातृका (मत्स्य० १७९.१६)। (२) काकभुशुंडी जो अमर और त्रिकालज्ञ माने जाते हैं और कलियुगमें होनेवाली सब बातें देखा करते हैं (रामायण उत्तर०)। (३) एक युद्धास्त्र जिसका प्रयोग कुबेर-जंभ युद्धमें हुआ था (मत्स्य० १५०.७३) इसका प्रयोग कुजंभने किया था (मत्स्य० १५०.१०६) तारकासुर-संग्राममें इसीसे विष्णु भगवान्ने शुम्भके वाहन मेषको पीस डाला था (मत्स्य० १५०.२८) तारकने इसीसे यमको परास्त किया था (मत्स्य० १५३.१९५)।

भू–स्त्री० [सं०] (१) पृथिवी, ऊपरके सात लोकोंमेंसे प्रथम है। वराह अवतारमें विष्णुने रसातलसे पृथ्वीका उद्धार किया था। उत्तरकुरुमें यह देवी विष्णुकी उपासना इसी (वराह) रूपमें करती है (भाग० ४.१७.३४; मत्स्य० ६९.२)। जब खाद्य पदार्थोंके अभावमें आदिराज पृथु पृथ्वीको दण्ड देना चाहते थे तब मारे भयके यह काँप उठी और सारे धरातलको समतल कर सब पदार्थोंका रस दूहनेको कहा। पहाड़ी प्रान्त समतल किये गये तथा ग्राम और नगर बसाये गये। राजा, ऋषिगण, देवताओं तथा असुर आदिने पृथ्वीसे रस संचय किया (भाग० ४.१७.१३.३६; १८. २-३२)। कहते हैं "भू"ने राज्याभिषेकके समय आदिराज पृथुको योगमयी पादुकाएँ प्रदान की थीं (भाग० ४ १५. १८)। यहाँका अधिष्ठाता देव अग्नि है तथा प्रलयाग्निसे यह नष्ट हो जाती है (ब्रह्मां० २.१९.१५५; २१.२१; ४. १.१५६; २.९-१९, ४१, २२३)। हर्यश्वने पृथ्वीका (प्रमाण) क्षेत्रफल निकालनेकी चेष्टा की थी (मत्स्य० ५.६)। (२) एक कृत (प्राकृत) लोक, प्रथम लोक। सर्वप्रथम "भू" का ही उच्चारण हुआ था जिससे यह पृथ्वी उत्पन्न हुई (वायु० २३.१०७; २४.१८.१०१.११, ३४-३६)। यह पार्थिव लोक है (वायु० १०१.१८)। ये लोक प्रलयमें सातों सूर्योंके प्रकाशसे भस्म हो जाते हैं (वायु० १०१.२०)। यह मरीचि, कश्यप, दक्ष तथा अन्य प्रजापतियोंका निवासस्थान है (वायु० १०१.३४)। यहाँ अन्न और जल ही आहार है (वायु० १०१.४०.४२)।

भूत–पु० [सं०] (१) एक ऋषि जिन्हें भूता तथा सरूपा नामकी दक्षकी दो पुत्रियाँ ब्याही थीं और ग्यारह रुद्र इनके पुत्र थे जिनके करोड़ों अनुचर थे (भाग० ६. ६.२, १७-१८)। (२) पौरवी तथा वसुदेवका एक पुत्र (भाग० ९.२४.४७)। (३) प्रजापतिका एक नाम (वायु० १००.२३९)। (४) रोहिणीकी सन्ततिका एक व्यक्ति (विष्णु० ४.१५.२२)। (४) भूतपति, भयंकर तथा मोक्ष पानेवालोंसे परित्यक्त, बच्चोंको लगकर कष्ट पहुँचानेवाले (भाग० १.२·२६; २.६१३; ४.२.१५; ६.८.२४; ९.१४.६; १०.६.२७; ६६.३४; ११.१०.२८)। ये सब क्रोधवशाके वंशके हैं तथा रुद्र और निशाचरोंके अनुगामी हैं, इनमें कुछ तो मानस-पुत्र हैं और कुछका जन्म साधारण जीवोंकी तरह मैथुनसे हुआ है (ब्रह्मां० २.२५.३९; ३.७.२५६; ३५९-७४, ४४०; ८.७१; मत्स्य० ८.५)। ये भूतिके पुत्र रुद्र तथा उनके अनुचर हैं (वायु० ५४.३७-४३; ६९.२४२-५६)। (५) पंचभूत = पृथ्वी, वायु, अप्, आकाश तथा ज्योति (ब्रह्मां० ३.७२.५४; ४.२.११६)। (६) नैमित्तिक, प्राकृतिक तथा आत्यंतिक = ये तीन प्रकार-की गतियाँ। नैमित्तिक = ब्रह्मा, जीवोंके विलयमें और अन्य सौर प्राणियोंका विलीन होना निहित है। आत्यंतिक ज्ञानके कारण है न कि कर्मका फल। निद्राके पश्चात् उठनेपर ब्रह्मा, इन पदार्थोंके आधारपर फिरसे सृष्टिका कार्य आरंभ करते हैं। ब्रह्माकी निद्राकी अवधिमें वृष्टि नहीं होती, नदियाँ प्रायः जलविहीन रहती हैं। सूर्यकी सात किरणें सारी पृथ्वीको जलाकर सारा जल खींच

लेती हैं। प्रत्येक वस्तु जलकर रसविहीन हो जाती है। वृक्ष तथा वनस्पतियाँ नष्ट हो जाती हैं। उष्णता पाताल तथा वायुलोकोंतक पहुँच जाती है और सारे लोक भस्मीभूत हो जाते हैं। सर्वत्र केवल आगकी ज्वाला ही दीखती है। तदुपरांत चारों ओरसे जलधर मूसलाधार वृष्टि कर अग्निको शांत करते हैं और अग्नि जलमें प्रवेश कर जाती है अर्थात् एकार्णवकी स्थिति उत्पन्न हो जाती है जिसमेंसे ब्रह्माका, जो सबसे पहिले सृष्टिकर्त्ता तथा पुरुष हैं, प्रादुर्भाव होता है। सप्तऋषि, फिर ऋषि, मनुष्य, देवता तथा यहाँके अन्य पदार्थ क्रमशः उत्पन्न हो जाते हैं (ब्रह्मां० ४.१.१२८-२०७)।

भूतक–पु० [सं०] पुराणानुसार सुमेरु परके २१ लोकोंमेंसे एक (ब्रह्मां०)।

भूतकला–स्त्री० [सं०] पुराणानुसार पंचभूतोंको उत्पन्न करनेवाली एक शक्ति विशेष—दे० भूत।

भूतकेतु–पु० [सं०] दक्षसावर्णिके एक पुत्रका नाम (भाग० ८.१३.१८)।

भूतगण–पु० [सं०] एक देवयोनि विशेष। इन्होंने, इन्द्र तथा उपेन्द्र सहित सब देवोंने, विविध प्रमथगणोंने, विविध मातृका देवियोंने तथा अनेक विनायकगणोंने कुमार कार्त्तिकेयको सेनापतिपदपर अभिषिक्त किया था (वायु० ७२.५०)।

भूतग्राम–पु० [सं०] पृथिवी, जल, तेज, वायु तथा आकाश पाँच भूतोंका एक जत्था (ब्रह्मां० २.३७.६; ३.१.३२; मत्स्य० १.१५; १६५.२३-२४)। इन भूतोंसे चार प्रकारके जीव होते हैं—जरायुज (बच्चोंको जन्म देनेवाले), अंडज (अंडोंको पैदा करनेवाले), उद्भिज्ज (पृथ्वीको भेदकर उगनेवाले पेड़ पौधे) तथा स्वेदज (पसीनेसे होनेवाले) (वायु० २३.८२; ३०.१०१, २२७; ६३.५; ६५.१२२)। तड़ाग आदिके निर्माणके पूर्व इनकी (पंचभूतोंकी) पूजा होती है (मत्स्य० ५३.३१; ५८.२६; १६६.५-८)। ये वरुणके यज्ञमेंसे तम, रज तथा सत्त्वसे परिवेष्टित उत्पन्न हुए थे (वायु० ६५.३३)।

भूतचतुर्दशी–स्त्री० [सं०] 'नरक चौदस'का दूसरा नाम जो कार्त्तिक वदी चतुर्दशी है। इस दिन यमराजकी पूजा और तर्पण करते हैं (–दे० दीपावली तथा अ० ५९)।

भूतज्योति–पु० [सं०] सुमतिका पुत्र तथा वसुका पिता (भाग० ९.२.१७)।

भूतडामरी–पु० [सं०] अन्धकासुरके रुधिरपानके लिए शिवजी द्वारा सृष्ट अनेक मानसपुत्री मातृकाओंमेंसे एक मातृका देवी (मत्स्य० १७९.३१)।

भूततनुमात्र=सर्ग–पु० [सं०] भूतादि (वायु० ४.४९) प्राथमिक सृष्टि जो तामसिक अहंकारसे उत्पन्न हुई, शब्दमात्र, स्पर्शमात्र, रूपमात्र, रसमात्र तथा गन्धतन्मात्र (विष्णु० १.२.४६)।

भूतधामा–पु० [सं०] पुराणानुसार इन्द्रका एक पुत्र—दे० इन्द्र।

भूतनंद–पु० [सं०] एक राजा जो मौनगणोंके पश्चात् किलकिलासे ही शासन करता था (भाग० १२.१.३२)।

भूतपति–पु० [सं०] अग्नि (ब्रह्मां० ४.२.१९; वायु० १०१.२१) तथा शिव (ब्रह्मां० २.२५.३९)।

भूतबलि–पु० [सं०] यज्ञ, वास्तुनिर्माण आदिके अवसरपर भूतके निमित्त दी जानेवाली बलि—दे० अंधक (मत्स्य० २५२.५-१९)।

भूतमता–स्त्री० [सं०] महाकाली, सरस्वती आदि छत्तीस वर्णशक्ति देवियोंमेंसे एक वर्णशक्ति (ब्रह्मां० ४.४४.५८)।

भूतरया–पु० [सं०] (ब्रह्मां०=आभूतरया) रैवत मन्वंतरके १४ देवताओंवाले चार देवगणोंमेंसे एक देवगणका नाम जिसके १४ देव हैं—मति, सुमति, ऋत, सत्य, एधन, अधृति, विधृति, दम, नियम, व्रत, विष्णु, सह, द्युतिमान् और सुश्रवा (भाग० ८.५;३; ब्रह्मां० २.३६.५१, ५६; विष्णु० ३.१.२१)।

भूतल–पु० [सं०] पृथ्वी (ब्रह्मां० ३.२.२१)।

भूतलय–पु० [सं०] एक स्थान विशेषका नाम, प्राचीन कालमें यहाँ चोरों तथा डाकुओंका अड्डा था। यहाँ एक नदी थी जिसमें शव बहाये जाते थे (महाभा० वन० १२९.९)।

भूतवट–पु० [सं०] भगवान् त्र्यम्बकका निवासस्थान जो विभिन्न प्रकारकी आकृतिवाले भूतगणों तथा पार्षदोंसे भरा रहता है (वायु० ४०.२०-६)।

भूतवादी–(वि०) यह भूतानुवादियोंसे भिन्न हैं, इन्हें प्रवादी भी कहते हैं (ब्रह्मां० ३.३.१२५-६)।

भूतविनायक–पु० [सं०] शिवके अनुचरों तथा भूतोंके नायक (भाग० ६.६.१८)।

भूतसंताप–पु० [सं०] पुराणानुसार बलि तथा इन्द्रके देवासुरसंग्राममें सक्रिय भाग लेनेवाले नमुचि, शम्बर, बाण आदि प्रधान असुरोंमेंसे एक असुरका नाम (भाग० ८.१०.२०)।

भूतसंतापन–पु० [सं०] हिरण्याक्षके ९ पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम। इनकी माताका नाम रुपाभानु था। वृत्र-इन्द्र-युद्धमें यह वृत्रकी ओरसे लड़ा था (भाग० ७.२.१८; ६.१०.(२०); ब्रह्मां० ३.५.३१; मत्स्य० ६.१४; वायु० ६७.७८; विष्णु० १.२१.३)।

भूतसंप्लव–पु० [सं०] प्रलयकाल—जब कि ग्रह, नक्षत्र, ऋषि, मनु आदि अपना २ काम स्थगितकर अनामय महर्लोक चले जाते हैं (ब्रह्मां० २.२१.१५६-६४, २४.८५; २५.१०६; ३२.६३; ३५.१६८; १९८.२०३)।

भूता–स्त्री० [सं०] (१) भूतकी एक पत्नी तथा दक्षकी एक पुत्री, एकादश रुद्र इसीके पुत्र थे (भाग० ६.६.१७)। (२) क्रोधवशा (क्रोधा=वायु०)की एक पुत्री जो पुलहकी पत्नी थी (ब्रह्मां० ३.७.१७२; वायु० ६९.२०५)।

भूतादि–पु० [सं०] (अहंकार) यह छठे सर्गका है। पंचभूत ये हैं, पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु तथा आकाश प्रत्येक पहिलेसे दसगुना है (ब्रह्मां० १.५.५३-८; २.३२.७६; मत्स्य० १२३.५२; वायु० १०१.११६)।

भूतादिकसर्ग–पु० [सं०] सृष्टि; पहला महत्-सर्ग है, भूत-सर्ग दूसरा और ऐन्द्रियक सर्ग तृतीय है। ये तीन प्राकृत सर्ग हैं (वायु० ४.५०; ६.५८-६२)।

भूतावासि–पु० [सं०] पञ्चतत्त्वोंका :—पृथ्वी, वायु, आकाश, आप तथा ज्योति प्रत्येकका अलग-अलग काम है

यथा शरीर पृथ्वीका है, प्राण मरुतका है, छेद आकाशके हैं जलसे प्रश्राव होता है तथा नेत्रोंमें स्थित ज्योत्स्ना तेज है। भगवान् अपनी रचनात्मक शक्तिसे ग्राम और विपर्योंसे युक्त लोकोंकी रचना होती है ऐसे भगवान्ने मरणधर्मा मनुष्य शरीरको धारण किया। (वायु० ९७.५७–५८)।

भूति—पु० [सं०] (१) युयुधानका पुत्र तथा युगंधरका पिता (ब्रह्मां० ३.७१.१०१; वायु० ९६.१००)। (२) भौत्यमनुकी माताका नाम (ब्रह्मां० ४.१.५१)। (३) श्री, ह्री, पुष्टि, शान्ति, तुष्टि आदि ४८ शक्तिदेवियोंमेंसे एक शक्तिदेवी (ब्रह्मां० ४.४४.७४)। (४) धर्म और साध्याके १२ साध्यदेव पुत्रोंमेंसे एक साध्यदेव जो सब असुरोंको नाश करनेवाला कहा गया है (मत्स्य० १७१.४४)। (५) रुद्रके अनुगामी विविध आकार प्रकार तथा रूपरेखावाले भूतगणोंकी जन्मदात्री (वायु० ६९.२४२)। (६) भृगु आदि नौ प्रजापतियोंमें अन्यतम पुलस्त्यकी पत्नीका नाम (विष्णु० १.७.७)।

भूतितीर्था—स्त्री० [सं०] कुमार कार्त्तिकेयकी अनुचरी एक मातृकाका नाम (महाभा० शल्य० ४६.२७)।

भूतिनंद—पु० [सं०] धनधर्माका उत्तराधिकारी, जिसका छोटा भाई नंदियशा था और जो वैदिशका पाँचवाँ शासक था (ब्रह्मां० ३.७४.१८२; वायु० ९९.३६८)।

भूतियुवक—पु० [सं०] पुराणानुसार कूर्मचक्रका एक देश।

भूतेश—पु० [सं०] यक्षों, राक्षसों तथा भूतादिके लिए पृथ्वीको दुहनेके अवसरपर यह बछड़ा बना था। इन लोगोंने पृथ्वीरूपी गौसे मानवकी खोपड़ीमें आसव दूहा था (भाग० ४.१८.२१)।

भूपुत्र—पु० [सं०] नरकासुरका नाम—दे० नरकासुर।

भूपुत्री—स्त्री० [सं०] जनकनंदिनी सीताका नाम—दे० सीता।

भूमा—पु० [सं०] (१) प्रतिहर्ता तथा स्तुतिके दो पुत्रोंमेंसे एक पुत्र जिसकी पत्नी ऋषिकुल्या तथा उद्गीथ पुत्र था (भाग० ५.१५.५-६)। (२) उन्नेताका एक पुत्र (ब्रह्मां० २.१४.६६)।

भूमि—स्त्री० [सं०] (भू) स्त्रीरूपी पृथ्वी ब्रह्माजीकी पुत्री तथा भगवान् नारायणकी पत्नी है। भगवान् वराहके साथ समागम होनेपर इनके गर्भसे एक पुत्र हुआ जो यहाँ भौमासुर अथवा नरकासुरके नामसे विख्यात हुआ। भगवान् श्रीकृष्णके भौमासुर-हननपर इन्होंने स्वयं प्रकट हो अदितिके दोनों कुण्डल लौटा दिये तथा नरकासुरके पुत्रकी रक्षाके लिए श्रीकृष्णसे प्रार्थना की (महाभा० सभा० ३८.२९के बाद; भाग० ३.३.६)। यह मेरु पर्वतसे चारों ओर फैली है तथा इसका क्षेत्रफल १५० करोड़ योजन कहा गया है। अन्य मतसे यह ध्रुवकी पत्नी तथा सृष्टिकी माता है जिसे रस आदिकी प्राप्तिके लिए पृथु तथा चाक्षुपने दूहा था। ऋषियोंके लिए बृहस्पतिने; देवताओंके लिए सूर्यने; पितरोंके लिए अंतकने; असुरोंके लिए दितिपुत्रोंने; नागोंके लिए वासुकिने; यक्षोंके लिए रजतनाभने पृथ्वीको दूहा था (ब्रह्मा० २.२१.३, १२-१७; ३६.९६; २०२.२७; ४.३७.९०)। कंस आदि असुरोंका बोझ असह्य होनेपर पृथ्वीने विष्णुसे प्रार्थना की थी, अतः भूभार हरनेके लिए कृष्णावतार हुआ जिसमें बहुतसे असुर मारे गये (विष्णु० ५.१.१२-६६)। नरकासुरके पापोंको क्षमा करनेके लिए श्रीविष्णुसे पृथ्वीने प्रार्थना की थी (विष्णु० ५.२९.२३-३०)।

भूमिगोजरक—पु० [सं०] एक यक्षगणका नाम जिसके अन्तर्गत भूत, आवेशक, निवेशक, सुनार, कालभवन, निर्देशक, विदेशक आदि यक्ष हैं (वायु० ६९.४०)।

भूमिमित्र—पु० [सं०] (१) वसुदेव कण्वका पुत्र तथा नारायणका पिता। ये राजा काण्वायन कहे गये हैं। ये केवल ४५ वर्षतक शासक रहे (भाग० १२.१.२०; ब्रह्मां० ३.७४.१५८; मत्स्य० २७२.३४; विष्णु० ४.२४.४०)। (२) विन्ध्यसेनका एक पुत्र (मत्स्य० २७२.९)।

भूमिराक्षसगण—पु० [सं०] राक्षसमाता आठ राक्षसियोंमेंसे अन्यतम नीलाकी पुत्री विकचा तथा विरूपकके पुत्र जो अन्य राक्षसोंसे निम्नकोटिके होते हैं (ब्रह्मां० ३.७.१५३-५)। ये भिन्न २ रूपोंमें और अदृश्यरूपमें वायु तथा पृथ्वीपर विचरण करते हैं (वायु० ६९.१८४-७)।

भूमिसेन—पु० [सं०] पुराणानुसार दसवें मनुके एक पुत्रका नाम।

भूयसि—पु० [सं०] आंगिरस वंशका त्र्यार्षेय प्रवरप्रवर्तक एक ऋषि (मत्स्य० १९६.२६)।

भूयोमेधा—पु० [सं०] सुमेधा वर्गके १४ सुमेधा देवोंमेंसे एक सुमेधा देव (ब्रह्मां० २.३६.५९)।

भूरति—पु० [सं०] कृशाश्वके एक पुत्रका नाम—दे० कृशाश्व।

भूरि—पु० [सं०] (१) कुरुवंशी बाह्लीकसुत सोमदत्तके तीन पुत्रोंमेंसे एक पुत्र। लक्ष्मणाको स्वयंवरमें सांब द्वारा हर लेनेपर इसने रोष प्रकट किया था। युधिष्ठिरके राजसूय यज्ञमें इसने सक्रिय भाग लिया था (भाग० ९.२२.१८; १०.६८.५; ७५.६; वायु० ९९.२३५; विष्णु० ४.२०.३२; ५.३५.२७)। (२) गवेषण (गवेष = वायु०)के दो पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (ब्रह्मां० २.७१.२५९; मत्स्य० ४७.२२; वायु० ९६.२५०)। (३) विवक्षुके महाबल पराक्रमी आठ पुत्रोंमेंसे (ज्येष्ठ) पुत्र तथा चित्ररथका पिता (मत्स्य० ५०.८०)।

भूरिद्युम्न—पु० [सं०] (१)एक राजाका नाम (मैत्र्युपनिषद्)। (२) नवें मनुके एक पुत्रका नाम। (३) प्रथम सावर्ण मनुका एक पुत्र (ब्रह्मां० ४.१.६५,७२)।

भूरिबल—पु० [सं०] धृतराष्ट्रके १०० पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (महाभा० आदि० ६७.९८)।

भूरिवीर्य—पु० [सं०] पुराणानुसार एक राजाका नाम।

भूरिश्रवा—पु० [सं०] (१) पीवरी और शुकके छह पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (ब्रह्मां० ३.८.९३; वायु० ७०.८५)। (२) शुक आदि अनेक मध्यमाध्वर्युओंमेंसे एक मध्यमाध्वर्युका नाम ((ब्रह्मां० २.३३.१४)। (३) चंद्रवंशी राजा बाह्लीकके सुत सोमदत्तका पुत्र जो कुरुक्षेत्रमें कौरव-पक्षसे लड़ा था और अर्जुनके हाथों मारा गया था। इसे यूपकेतु तथा यूपकेतन भी कहते थे। गोमंतके घेरेके समय यह पश्चिममें था (भाग० ९.२२.१८; १०.५९.११(११); ५०.११(५); वायु० ९९.२३५; विष्णु० ४.२०.३२; ५.३५.२७)।

भूरिश्रुत—पु० [सं०] पाराशरकुलमें उत्पन्न शुकदेवके पितृकन्या पीवरीसे उत्पन्न पाँच पुत्रोंका सामूहिक विशेषण

तथा एकका नाम (ब्रह्मां० ३.१०-८१; वायु० ७३.३०)।

भूरिषेण–पु० [सं०] (१) शर्यातिके तीन पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (भाग० ९.३.२७)। (२) दशम मन्वंतरके सावर्णि मनुके दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (ब्रह्मां० ४.१.७१)। (३) ब्रह्मसावर्णिका पुत्र जो हरिकी योगशक्तिसे परिचित था (भाग० २.७.४५; ८.१३.२१)।

भूरिसेन–पु० [सं०] (१) द्वितीय सावर्ण मनुका एक पुत्र जो दस मनुओंमेंसे एक था (ब्रह्मां० ४.१.७१)। (२) राजा शर्यातिके तीन पुत्रोंमेंसे एक। (३) ब्रह्मसावर्णिका एक पुत्र (विष्णु० ३.२.२८)।

भूरीन्द्रसेन–पु० [सं०] गवेपण (गवेप)का एक पुत्र—दे० भूरि (२)।

भूर्भुव–पु० [सं०] ब्रह्माका एक मानसपुत्र—दे० ब्रह्मा।

भूर्लोक–पु० [सं०] भूलोक, पृथ्वी (ब्रह्मां० २.३८.१२, १४; मत्स्य० ७.२; वायु० २३.८४; ३०.१०१, २२७; ४९.१४८)। लोकोंमें प्रथम (वायु० ६४.१०-११; १००.१६०; ३०.६५)।

भूपिक–पु० [सं०] भारतवर्षके उत्तरके अनेक देशों (जनपदों)मेंसे एक देश (ब्रह्मां० २.१६.५०)।

भृंगराज–पु० [सं०] एक पक्षी (वायु० ३६.२) जिसकी पूजा गृहनिर्माणादिमें होती है (मत्स्य० २१९.१९; २५३.२५; २६८-१४)।

भृंगि–पु०[सं०] (१) शिवगणोंका मुखिया, नायक (ब्रह्मां० ३.४१. १८; ४.३०.७५; ३४.८९)। (२) शिवकी अर्चना करती हुई भृंगिकी मूर्त्ति (मत्स्य० २५९.२४; २६६.४२)।

भृगु–पु० [सं०] (१) एक प्रसिद्ध मुनि, चाक्षुष मन्वंतरके एक महर्षि तथा मंत्रकृत् (भाग० ३.१२.२२-२३; २४.२३; ४.१.४३; मत्स्य० ३.८; ५-१४; ९-२२; १९५.८; विष्णु० १.७.५,७, २६,३७;८.१५)। यह शिवके पुत्र माने जाते हैं। कर्दमकी पुत्री ख्याति इनकी पत्नी थी जिससे दो पुत्र तथा एक पुत्री थी। पुलोमाकी पुत्री इनकी दूसरी पत्नी थी जिससे १४ पुत्र हुए। इनका विष्णुकी छातीमें लात मारना प्रसिद्ध है। भृगुने ब्रह्मा, शिव तथा विष्णुमें, विष्णुको ही सर्वश्रेष्ठ माना है (भाग० १०.८९.२-१९)। परशुरामजी इसी वंशके थे। यह सप्तर्षियोंमेंसे एक माने जाते हैं और महाभारतके अनुसार ब्रह्माके वीर्यसे अग्निशिखामेंसे भृगुकी उत्पत्ति हुई थी। इन्होंने क्रियायोग ब्रह्मासे सीखा (मत्स्य० १४५.९०, ९८; १७१.२७; १९५.२९) तथा वेदकी शिक्षा मनुसे ली थी (भाग० ७.३.१४; ८.२३.२०-२७; ११.२७.३; १४.४)। मणिमान् (वीरभद्र)ने इन्हें बाँध दिया था तथा इनकी दाढ़ी काट ली थी, पर शिवकी इच्छासे बकरेकी दाढ़ी लगा दी गयी थी (भाग० ४.२.२७-८; ४.३२; ५.१७,१९; ७.५)। चर्षणी तथा वरुणके पुत्र रूपमें इनका जन्म हुआ (भाग० ६.१८.४)। इन्होंने विष्णुको ७ बार जन्म लेनेका शाप दिया (भाग० ४७.३९.१०५)।

इन्होंने राजा नहुषकी क्रूर दृष्टिसे अगस्त्य ऋषिका छुटकारा किया था। यह सूक्ष्मरूप धारण कर अगस्त्यकी जटामें जा बैठे और जब अगस्त्यको अपने रथमें जोत नहुष चलनेके लिए ऋषिके शिरपर प्रहार करने लगा तब भृगुने शाप दे नहुषको सर्प बना दिया था (महाभा० अनु० ९९.१५, २२-२८; १००.३४)। पद्मपुराणानुसार एक बार ऋषियोंका आराध्य देव कौन हो यह निश्चय करनेके लिए सरस्वती नदीके तटपर सभा हुई जहाँ सबने भृगुको ही ऋषियोंका प्रतिनिधि चुना और इस समस्याको हल करनेका भार भी उन्हींपर छोड़ा। भृगु पहले शंकरके यहाँ गये, पर शिव पार्वतीके संग क्रीड़ा करनेमें संलग्न थे, अतः भेंट न हो सकी। ऋषिने शाप दिया जिसके फलस्वरूप शिवकी मूर्त्ति "योनि-लिंग" रूप हुई और शिवका प्रसाद अग्राह्य हुआ। तदुपरांत भृगु ब्रह्माके निकट गये जो अपने चाटुकारोंसे घिरे तथा अपनी प्रशंसा सुन फूले न समाते थे। भृगुने समुचित आदर तथा प्रतिष्ठाका अभाव देख शाप द्वारा ब्रह्माको मनुष्योंके पूजनसे वंचित कर दिया। अंतमें भृगु विष्णुके निकट पहुँचे। विष्णु सोये थे, जिनकी अकर्मण्यता तथा आलस्य देख भृगु खीज उठे और भगवान्‌के वक्षस्थलपर एक लात मार जगानेकी चेष्टा की। विष्णु जाग गये और ऋषिके चरण सहलाने लगे। विष्णुने ब्राह्मणके चरणोंका स्पर्श पा अपनेको धन्य बताया। ऋषि विष्णुकी नम्रतासे पानी पानी हो गये और उन्हें ही देव, दानव तथा मनुष्योंकी आराधना योग्य पाया, अन्य ऋषि भी भृगुके निश्चयसे सहमत हुए। इनके भुवन, भावन, अन्त्य, अन्त्यायन आदि १२ पुत्र हुए जो यज्ञिय भृगुदेव कहे जाते थे। (ब्रह्मां० ३-१.८९; वायु० ६५.८७)। (२) श्रीकृष्णके समकालीन एक ऋषि, जो औरोंके साथ पिंडारक भी गये थे। कृष्णसे मिलने स्यमंतपंचक तथा प्रायोपवेश करते परीक्षित्‌से मिलने गये थे (भाग० १०.८४.४; ११.१.१२; १.१९.९)। (३) भाद्रपद मासमें सौरगणके अन्य छहके साथ सूर्यरथपर अधिष्ठित रहनेवाला एक ऋषि (भाग० १२.११.३८; विष्णु० २.१०.१०; वायु० २९.९; ५२.९)। (४) अथर्वण अग्निके पिता (ब्रह्मां० २.१२.१०)। (५) शिल्प तथा वास्तुविद्याके प्रवर्तकोंमेंसे एक (मत्स्य० २५२.२)। (६) विश्वचक्रनामक महादानकी विधिके अनुसार विश्वचक्रके द्वितीय आवरणमें अत्रि, वशिष्ठ, ब्रह्मा, कश्यप, मत्स्य, कूर्म, वराह, नृसिंह, वामन आदिके साथ इनकी भी स्थापना की जाती है। स्थापनाक्रममें इनका तीसरा स्थान है (मत्स्य० २८५.६)। (७) व्यासके शिक्षक (वायु० १.४२; ३.२; १०.२९)। (८) १०३७० ऋचाओं तथा १००० मंत्रोंके रचयिता (वायु० ६१.७१)। (९) इन्होंमें सारस्वतसे विष्णुपुराण सुन पुरुकुत्सको सुनाया था (विष्णु० ६.८.४५)। (१०) कश्यपकुलका त्र्यार्षेय प्रवरप्रवर्तक ऋषिगण (मत्स्य० १९९.१०)।

भृगुक–पु० [सं०] एक देशका नाम जो पुराणानुसार कूर्मचक्रमें पाया जाता है।

भृगुकच्छ–पु० [सं०] नर्मदाके उत्तरी तटपर स्थित एक प्राचीन तीर्थका नाम जो आधुनिक भड़ौच है। बलिने अपना अश्वमेध यज्ञ यहीं किया था (भाग० ८.१८.२१)।

भृगुक्षेत्र–पु० [सं०] यहाँके ऋषिगण द्वारका गये थे (भाग० १०.९०.२८(४)।

भृगुतीर्थ–पु० [सं०) वह स्थान जहाँ भृगुने बहुत कालतक तपस्या की थी। कहते हैं कि यहाँ उनका सारा शरीर

दीमकोंने मिट्टीसे ढँक दिया था, अतः उमाने प्रसन्न हो शिवसे उन्हें आशीर्वाद देनेके लिए कहा, पर इस समयतक भृगु क्रोधको वशमें न ला सके थे और शिव संतुष्ट नहीं थे। अंतमें भृगुने "करुणाभ्युदयम्" स्तुतिसे शिवको प्रसन्न किया और नर्मदातटके इस स्थानको तीर्थ बनाया (मत्स्य० १९३.२३-४९) ।

भृगुतुंग–पु० [सं०] पितरोंके श्राद्धादिके लिए एक उपयुक्त तथा पवित्र तीर्थस्थान (ब्रह्मां० ३.१३.८८; मत्स्य० २२.३१; वायु० २३.१४८; ७७.८२) । महाराज ययातिके जीवनके अंतिम दिन यहीं व्यतीत हुए थे (ब्रह्मां० ३.१४.८३; ६८.१०४; वायु० ९३,१०२) ।

भृगुदास–पु० [सं०] भार्गवकुलका आर्षेय प्रवरप्रवर्तक एक ऋषि (मत्स्य० १९५.३३) ।

भृगुनगर–पु० [सं०] ललितादेवीके ५१ पीठोंमेंसे एक पीठ, पवित्र स्थान (ब्रह्मां० ४.४४.९५) ।

भृगुपीठ–पु० [सं०] वेदपुरुषके श्रवणेन्द्रिय स्थानीय (वायु० १००.८१) ।

भृगुरेखा–स्त्री० [सं०] विष्णुकी छातीपर बना चरणचिह्न । कहते हैं कि भृगुमुनिने क्रोधमें आकर विष्णुकी छातीपर लात मारी थी, यह उसीका चिह्न है—दे० भृगु ।

भृतकील–पु० [सं०] कौशिक वंशके विश्वामित्र आदि १३ ब्रह्मिष्ठोंमेंसे एक ब्रह्मिष्ठ (मत्स्य० १४५.११२) ।

भृति–स्त्री० [सं०] रोहितवर्गके १० देवोंमेंसे एक रोहितदेव (वायु० १००.९०) ।

भृश–पु० [सं०] गृहनिर्माणके समय जिन ३२ देवोंकी गृहके बाहरी भागमें पूजा की जाती है उनमेंसे एक देव । इनकी पूजा मछलीसे की जाती है (मत्स्य० २५३.२४; २६८.१२) ।

भृशा–स्त्री० [सं०] उशीनरकी पाँच रानियोंमेंसे एक रानी तथा नृगकी माता (मत्स्य० ४८.१६-१७) ।

भृशि–पु० [सं०] दनु और कश्यपके १०० दानव पुत्रोंमेंसे एक प्रधान दानव (ब्रह्मां० ३.६.५) ।

भेत्ता–पु० [सं०] वैकुंठ देवगणमेंके १४ देवोंमेंसे एक वैकुण्ठ देव (ब्रह्मां० २.३६.५७) ।

भेद–पु० [सं०] (१) चार उपायोंमेंसे अथवा सात प्रयोगोंमेंसे एक प्रयोग दुष्ट, अहंकारी, दंभी आदिकी शक्ति कम कर अपने पक्षमें मिला लेनेका एक उपाय, कूटनीतिज्ञ तथा राजाओंके योग्य एक प्रकारकी नीति (मत्स्य० २२२.२; २२३.१, ४, १५) । (२) ऋक्षका पुत्र तथा मुद्गल, सृञ्जय, बृहदिषु आदि पाँच पुत्रोंका पिता जिनमें पांचाल राज्य बाँट दिया गया था (वायु० ९९.१९५) ।

भेरी–स्त्री० [सं०] सरोवर आदिके निर्माणके समय बजनेवाला एक बाजा (मत्स्य० ५७.२२) । एक युद्धवाद्य (मत्स्य० १३५.८३; वायु० ३७.१२; ४०.२४) । त्रिपुरसंग्राममें असुरों तथा देवोंने इसका प्रयोग किया था (मत्स्य० १३६.२७.५३) । तारकामयमें भी इसका प्रयोग हुआ था (मत्स्य० १४९.२; १७७.२४) । श्रीरामके अभिषेकमें यह बाजा बजाया गया था (विष्णु० ४.४.९९) ।

भेरुंड–पु० [सं०] जटायुके दो पुत्र हुए कर्णिकार और शतगामी उनसे उत्पन्न तीन पुत्रों (पक्षियों)मेंसे एक पक्षी (मत्स्य० ६.३६) ।

भेरुंडा–स्त्री० [सं०] आनन्दमहापीठमें रथके मध्यम पर्वमें निवास करनेवाली कामेशी आदि १५ अक्षर देवियोंमेंसे एक अक्षर देवी जिन्होंने भंडासुरके सेनानायक हुलुमल्लकको मारा था। यह नित्यादेवी भी कही जाती हैं। १५ नित्या देवियोंमेंसे यह एक नित्या देवी हैं (ब्रह्मां० ४.१९.५८; २५.९५; ३७.३३) ।

भैंसासुर–पु० [हि०] दे० महिषासुर ।

भैम–पु० [सं०] राजा उग्रसेनका नाम ।

भैरव–पु० [सं०] (१) शिवका एक प्रकारका गण जो शंकरका अवतार माना जाता है। पुराणानुसार अंधक राक्षसकी गदासे शिवका सिर चार खंड हो गया और उसमेंसे रुधिर बहने लगा। इसी रक्तधारासे पाँच भैरवोंकी उत्पत्ति हुई थी। तंत्र तथा पुराणानुसार इनकी संख्या ८ कही जाती है जिनकी उपासना तांत्रिक लोग अधिक करते हैं। शंकरका यह महा उग्ररूप है—दे० रुद्र। इस रूपमें शिवका तांडवनृत्य प्रसिद्ध है। (२) एक शिवगण (ब्रह्मां० ३.४१.२७; ४.१४.७; १७.४; १९.७८-९; ३३.१७) । (३) रुद्रका एक नाम तथा रूप, जो गौरीके तपस्यासे लौटनेपर शिवने धारण किया था। गौरी भैरवी बनी (मत्स्य० १५८.२४; १७९.१)। इस मूर्त्तिको हर मंदिरमें रख सकते हैं, पर मूलायतनमें नही (मत्स्य० २५२.१०; २५९.१४) । (४) चर्मण्वती नदीके तटपरका एक तीर्थ जो पितृश्राद्धादिके लिए उपयुक्त कहा गया है (मत्स्य० २.३०) । (५) ब्रह्माकी तपस्याका विशेषण (वायु० २६.१०) ।

भैरवजयंती–स्त्री० [सं०] मार्गशीर्ष कृष्णाष्टमी जिस दिन भैरवका मध्याह्नमें जन्म हुआ था, अतः पूजनके लिए मध्याह्नव्यापिनी अष्टमी ही शुभ है—दे० शिवरहस्य।

भैरवत्व–पु० [सं०] शिवजीकी भैरवरूपता (मत्स्य० १.८) ।

भैरवा–पु० [सं०] अप्सराओंके शोभयन्त्य, वेगवत्य, आयुष्मत्य आदि १४ गणोंमेंसे एक गणका नाम जो मृत्युसे उत्पन्न हुई (वायु० ६९.५७) ।

भैरवी–स्त्री० [सं०] (१) उमाकी एक उपाधि (जब शिव भैरव रहते हैं, उमा भैरवी होती हैं) (मत्स्य० १५८.२५) । लक्ष्मी, सरस्वती, गौरी आदि मातृकाओंमेंसे एक मातृका (ब्रह्मां० ४.७.७२; ४४.२२) देवी । (२) एक प्रकारकी देवी जिन्हें महाविद्याकी एक मूर्त्ति मानते हैं। भैरवीकी कई मूर्त्तियाँ कही गयी हैं—त्रिपुरभैरवी, कौलेशभैरवी, रुद्रभैरवी, नित्याभैरवी, चैतन्यभैरवी आदि (मत्स्य० १५८.२५; ब्रह्मां० ४.७.७२; ४४.२२) ।

भैरवीयातना–स्त्री० [सं०] पुराणानुसार मरनेके समय भैरवजी प्राणियोंकी शुद्धिके लिए कुछ यातनाएँ देते हैं जिसके पश्चात् वह स्वर्गका भागी होता है ।

भोगदेह–स्त्री० [सं०] पुराणानुसार मृत्युके पश्चात् स्वर्ग या नरकको भोगनेके लिए एक सूक्ष्म शरीर धारण करना पड़ता है, वही भोगदेह है ।

भोगवती–स्त्री० [सं०] (१) पुराणानुसार एक तीर्थका नाम। यह प्रयागमें वासुकिनागका तीर्थ है जो गंगामें है, इसमें स्नान करनेसे अश्वमेधयज्ञका फल प्राप्त होता है (महाभा०

वन० ८५.८६)। (२) सरस्वती नदीका दूसरा नाम (महाभा० वन० २४.२०)। (३) नागपुरी जिसकी तुलना द्वारकापुरी तथा पुरंजनकी नगरीसे करते हैं (भाग० १.११.११; ४.२५.१५)। प्रयागमें यह वासुकि ह्रदके उत्तर गंगामें है (मत्स्य० १६३.८०)। (४) कार्त्तिकेयकी अनुचरी एक मातृकाका नाम (महाभा० शल्य० ४६.८)। (५) पातालमें गंगाका एक नाम (भाग० १०.७०.४४)।

भोगवर्धन–पु० [सं०] दक्षिण देश तथा उसके निवासी (ब्रह्मां० २.१६.५८; वायु० ४५.१२७)।

भोगसंक्रांतिव्रत–पु० [सं०] संक्रांतिके समय ब्राह्मणको सपत्नीक बुला, भोजन करा, वस्त्र तथा दक्षिणा दे संतुष्ट करे (स्कंदपु०)।

भोगिनी–स्त्री० [सं०] चक्ररथेन्द्रके तृतीय पर्वमें स्थित वशिनी, कामेशी आदि आठ रहस्ययोगिनी देवियोंमेंसे एक रहस्ययोगिनी देवी (ब्रह्मां० ४.१९.४८)।

भोगी–पु० [सं०] नागवंशके नागराज शेषका पुत्र (ब्रह्मां० ३.७४.१८०; वायु० ९९.३६७)।

भोगेश्वर–पु० [सं०] पुराणानुसार एक तीर्थका नाम।

भोज–पु० [सं०] (१) एक यादव जाति जिसमें कंस था। ये लोग पांडवोंके संबंधी थे (भाग० १०.१.३५, ३७, ६९; ९.२४.११, ६३; १.१४.२५; मत्स्य० ११४.५२; २७३.७०)। ये आपसमें लड़कर नष्ट हो गये थे (भाग० १०.३६.३३. ३९.२५; ११.३०.१८)। महाभोज इनका मूल पुरूष था तथा ये मृत्तिकावरपुरके राजा थे। इन्हें मार्तिकावर भी कहा जाता था (विष्णु० ४.१३.७.११)। (२) पुराणानुसार वसुदेवका एक पुत्र जो शांति देवीके गर्भसे उत्पन्न हुआ था। (३) राजा द्रुह्युका एक पुत्र (महाभा०)। (४) एक विन्ध्य-जाति (ब्रह्मां० २.१६.६४; वायु० ४५.१३२; ८६.२८)। हैहय वंशकी पाँच शाखाओंमेंसे एक जो ययातिसुत द्रुह्युसे आरंभ होती है (ब्रह्मां० ३.६९.५२; ७४.२६५; मत्स्य० ३४.३०; ४३.४८; ४४.६९; १६३.७२; वायु० ९४.५२)। (५) श्रीकृष्णका एक ग्वालसखा (भागवत)। (६) एक यादव राजकुमार, जिसने स्वप्न देखा कि उसने शत्रुओंका उच्छिष्ट भोजन किया तथा शत्रुओंने उसकी पत्नियाँ तथा राज्य ले लिया। उसी दिनसे उसे वैराग्य उत्पन्न हुआ और परमात्माका भजन कर उसने ब्रह्मनिर्वाण प्राप्त किया। यह प्रभास क्षेत्रमें अक्रूरसे लड़ा था (भाग० १०.३६.३३; ६.१५.२६[१-४]; ११.३०.१६; ब्रह्मां० ३.६१.२३)। (७) भोजकट नामक देश जिसे आजकल भोजपुर कहते हैं (हि० श० सा०)। (८) कान्यकुब्जके एक प्रसिद्ध राजा जो महाराज रामभद्रदेवका पुत्र था। (९) एक राजा जो हस्तिसेनाके लिए प्रसिद्ध था (ब्रह्मां० २.७१.१२६-७)। (१०) बलिके बाणप्रमुख १०० पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (ब्रह्मां० ३.५.४३)। (११) ऋक्षराज जाम्बवान्के जयन्त, सर्वज्ञ आदि कई (१७) पुत्रोंमेंसे एक पुत्र तथा जाम्बवतीका भाई (ब्रह्मां० ३.७.३०३)। (१२) मालवाके परमारवंशी एक राजा जो संस्कृतके बहुत बड़े विद्वान् थे. जिनकी विरचित व्याकरण, अलंकार आदिकी कई पुस्तकें उपलब्ध हैं। (१३) प्रतिक्षेत्रका एक पुत्र तथा हृदीकका पिता (मत्स्य० ४४.८०)।

भोजकट–पु० [सं०] रुक्मीकी राजधानी। विना श्रीकृष्णका वध किये कुंडिन न जानेके प्रणको पूरा करनेके लिए ही रुक्मी यहाँ निवास करता था। प्रद्युम्नके पुत्र अनिरुद्धका विवाह यहीं रुक्मीकी पौत्री रोचनासे हुआ था जिसमें बलराम आदि आये थे (भाग० १०.५४.५२; ६१.१९.२३(५); ६१.२६.४०; विष्णु० ५.२८.९)।

भोजत्व–पु० [सं०] राजाओंकी एक उपाधि। शमीकने राजर्षित्वकी उपाधि प्राप्त होनेके कारण यह उपाधि त्याग दी थी (ब्रह्मां० ३.७१.१९४, २२३; वायु० ९६.१९०; मत्स्य० ४६.२८)।

भोजन–पु० [सं०] क्रौंचद्वीपके सात मुख्य पर्वतोंमेंसे एक पर्वतका नाम (भाग० ५.२०.२१)।

भोजपायन–पु० [सं०] कश्यपवंशके गोत्रकार ऋषि (मत्स्य० १९९.३)।

भोजा–स्त्री० [सं०] (१) मधुका सुमनासे वीरव्रत पुत्र हुआ उसकी रानीका नाम जिसके मन्थु तथा प्रमन्थु दो पुत्र थे (भाग० ५.१५.१५)। (२) शूरकी पत्नी जो १० पुत्रों तथा ५ पुत्रियोंकी माता थी (मत्स्य० ४६.१)।

भौतिक–पु० [सं०] पार्थिव, सौर और वैद्युत तीन अग्नियोंमेंसे एक अग्नि। वैद्युत, सौर और जाठर ये तीन अग्नियाँ अब्योनि अर्थात् जलमें उत्पन्न होनेवाली कही गयी हैं (ब्रह्मां० २.२४.६; वायु० ५३.५)।

भौत्य–पु० [सं०] चौदहवें मनुका नाम। यह भूति और कविके पुत्र थे (ब्रह्मां० ४.१.५१; मत्स्य० ९.३५; वायु० ६२.४; १००.५५, ११०)। चौदहवें पर्याय (मन्वंतर) के मनु जिनके समयमें कल्पका अंत होता है (ब्रह्मां० २.४६.४; ४.१.१०५-७, ११६)। युयुधानके पुत्र सात्यकि, सात्यकिके पुत्र भूति भूतिके वंशज (वायु० ९६.१००)।

भौम–पु० [सं०] (१) नरकासुरका नाम, एक सैंहिकेय असुर (भाग० १.१०.२९; १२.३.११; ब्रह्मां० ३.६.२०)। (२) मंगलग्रह, नवग्रहोंमेंसे एक जिसे अंगारक और कुमार भी कहते हैं। इसका रंग लाल है (ब्रह्मां० २.२३.८४; मत्स्य० ९३.१०; विष्णु० २.१२.१८)। इनके रथमें ८ घोड़े रहते हैं (मत्स्य० १२७.४)। सौर जगत्का यह ग्रह पृथ्वीके उपरांत पहिला पड़ता है जो सूर्यसे १४ करोड़ १५ लाख मील दूर है। (३) रुचिरका पुत्र तथा त्वरितायुका पिता (मत्स्य० ५०.३६)। (४) (ब्रह्मां०, मत्स्य०, वायु० = भौत्य) चौदहवें मनु, जिस समय शुचि इंद्र रहते हैं एवं अग्निबाहु आदि सप्त ऋषि तथा उरु, गंभीर आदि इनके पुत्र (विष्णु० ३.२.४२.५)। शतगाल आदि १४ सैंहिकेयों (विप्रचित्ति के सिंहिकामें उत्पन्न पुत्रों) मेंसे एक सैंहिकेय (वायु० ६८.१९)।

भौमतापन–पु० [सं०] गौर, नील, कृष्ण आदि छः प्रकारके पराशरोंमेंसे ५ गौर पराशरोंमेंसे एक गौर पराशरका नाम (मत्स्य० २०१.३३)।

भौमरि–पु० [सं०] श्रीकृष्ण तथा सत्यभामाके १० पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (वायु० ९६.२३९)।

भौमरिका–स्त्री० [सं०] (विष्णु० = भौमेरिका) सत्यभामा और श्रीकृष्णकी भानु आदि चार पुत्रियोंमेंसे एक पुत्री (वायु० ९६.२४०; विष्णु० ५.३२.१)।

भौमवती–स्त्री० [सं०] भौमासुरकी पत्नीका नाम—दे०

नरकासुर।

भौमव्रत–पु० [सं०] मंगलके दिन सुवर्णमय भौमका ताम्रपात्र लिखित भौमयन्त्रमें पूजन तथा व्रत करे (भविष्यपु०)।

भौमवारव्रत–पु० [सं०] भौमवार तथा स्वाति नक्षत्रमें मंगलदेवका पूजन करे। नक्तव्रत तथा भूशयनका विधान है। पद्मपुराणानुसार भौमके २१ नामोंका पाठ करनेसे व्रती ऋणमुक्त हो धनी होता है (पद्मपु०)।

भौमासुर–पु० [सं०] एक असुर विशेष जिसे नरकासुर भी कहते हैं—दे० नरकासुर तथा भौम।

भौवन–पु० [सं०] (१) मंथु और सत्याका पुत्र जिसकी रानीका नाम दूषणा था तथा पुत्रका नाम त्वष्टा (भाग० ५.१५.१५)। (२) महान्‌का पुत्र तथा त्वष्टाका पिता। इरावतीका पति। इन्द्रवाहन एरावण हस्तीका पिता जिसने सूर्यके अण्ड कपालोंको हाथसे पकड़कर रथंतरका गान किया था (वायु० ३३.५९; ब्रह्मां० २.१४.६९; ३.७.३२४-६)। (३) भृगुके पुलोमाकी पुत्री दिव्यासे उत्पन्न १२ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (मत्स्य० १९५.१२)। (४) दे० ऐरावत (वायु० ६९.२०९)।

भ्रमावर्त–पु० [सं०] दृष्टतत्त्व योगीके भी योगमें विघ्न डालनेवाले वहुतसे उपसर्ग होते हैं। उनमें एक यह भी है। विक्षिप्तकी तरह निरर्थक भ्रमण जिसकी प्रेरणा अंतःकरणसे मिली हो, ऐसे योगीको उन्मत्त ही जानना चाहिये (वायु० १२.७, ११, १२)।

भ्रमिशिरा–न० पु० [सं०] मुनि और कश्यपके पुत्र १६ मौनेय देवगंधर्वोंमेंसे एक मौनेय देवगंधर्वका नाम (वायु० ६९.३)।

भ्रमी–स्त्री० [सं०] शिशुमारकी एक पुत्री तथा ध्रुवकी पत्नी जिसके दो पुत्र कल्प और वत्सर थे (भाग० ४.१०.१; १३.११)।

भ्राजित–पु० [सं०] (विष्णु० = भ्राजिक) भौत्य मनुके समयके पाँच देवगणोंमेंसे एक देवगणका नाम। ये ही सात नदियाँ हैं (ब्रह्मां० ४.१.१०६-८), जो मनुके १४वें मन्वंतरके भ्राजित नामक देवताओंका एक वर्ग विशेष है (विष्णु० ३.२.४३)।

भ्राजिर–पु० [सं०] एक प्रकारके देवता जो पुराणानुसार भौत्य मन्वंतरके कहे जाते हैं—दे० भौत्य।

भ्राजिष्ठ–पु० [सं०] प्लक्षद्वीपके अधिपति घृतपृष्ठके सात पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (भाग० ५.२०.२१)।

भ्राजिष्णु–पु० [सं०] प्लक्षद्वीपके गोमेदक, चन्द्र आदि मुख्य सात पर्वतोंमेंसे एक (सातवाँ) पर्वतका नाम। यह स्फटिकका पर्वत दीप्तियोंसे जगमगाता है, अतः इसे वैभ्राज भी कहते हैं (ब्रह्मां० २.१९.१३)।

भ्रातृद्वितीया–स्त्री० [सं०] कार्त्तिक शुक्ला द्वितीया जिस दिन यम और चित्रगुप्तका पूजन किया जाता है। ऐसे तो वड़ा भाई वहिनके घर भोजन नहीं करता है, पर इस दिन वहिनके घर ही भोजन करनेका और यथाशक्ति उसे द्रव्य देनेका विधान है। अभिप्राय यह है कि भाई-वहिनका प्रेम वना रहे। स्कंद और ब्रह्मांड पुराणोंमें इसका महत्त्व दिया है। इस दिन यमराज अपनी वहिन यमुनाके घर आकर भोजन करते हैं। दूर-दूरसे भाई-वहिन इस दिन यमुनास्नान करने मथुरा पहुँचते हैं तथा पुण्यके भागी होते हैं (यमद्वितीया-कथा)।

भ्राष्ट्रकायणि–पु० [सं०] भार्गवकुलका एक गोत्रकार ऋषि (मत्स्य० १९५.२४)।

भ्राष्ट्रकृत्–पु० [सं०] आंगिरसवंशका त्र्यार्षेय प्रवरप्रवर्तक एक ऋषि (मत्स्य० १९६.२१)।

भ्रुकुटी–स्त्री० [सं०] अंधकासुररक्तपानार्थ शिवजी द्वारा सृष्ट अनेक मानसपुत्री मातृकाओंमेंसे एक मानसपुत्री मातृका (मत्स्य० १७९.२१)।

भ्रूणहत्या–स्त्री० [सं०] इसका प्रायश्चित्त शुभसप्तमीव्रत है (मत्स्य० ८०.१२; वायु० १०१.१५२)। इस पापकी शांति नवग्रहमखके कोटिहोमसे भी होती है (मत्स्य० ९३.१३९)। कलियुगमें तो ऐसे पापोंका होना साधारण-सी वात होगी। शुक्लतीर्थमें स्नान, दान, जप, होम आदि करनेसे इन महापापोंकी निवृत्ति कही गयी है (मत्स्य० १४४.५५; १९२.१६)।

म

मंकन–पु० [सं०] क्षेम नामक गणेशने दिवोदासकी नगरी वाराणसीमें जिस ब्राह्मणको स्वप्नमें दर्शन दिया था, उस ब्राह्मणका नाम (ब्रह्मां० ३.६७.४२)। वायुपुराणके अनुसार निकुंभ नामक गणेश्वरने वाराणसीमें जाकर मंकन नामकनापितसे कहा—मैं तुम्हारा मंगल करूँगा, तुम नगरीके समीपमें मेरे लिए मंदिर वनाकर मेरी प्रतिमा स्थापित कराओ (वायु० ९२.३८)।

मंकणक–पु० [सं०] (१) एक ऋषिका नाम जो वायु द्वारा सुकन्याके गर्भसे उत्पन्न हुए थे। सप्तसारस्वततीर्थमें इन्हें सिद्धि प्राप्त हुई थी। इनके सात पुत्र—वायुवेग, वायुवल, वायुहा, वायुमंडल आदि हुए थे, जो सवके सव ऋषि हुए (महाभा० वन० ८३-१२२-२३)।

मंकुती–स्त्री० [सं०] ऋक्ष पर्वतसे निकली एक नदी (ब्रह्मां० २.१६.३१)।

मंगल–पु० [सं०] (१) परशुरामजीके विरुद्ध, कार्तवीर्यके पक्षमें लड़ने आया हुआ चंद्रवंशी मत्स्यराजका नाम जिसे परशुरामने मारा था (ब्रह्मां० ३.३८.४९, ५१)। (२) पुराणानुसार यह ग्रह पुरुष, क्षत्रिय, सामवेदी, भरद्वाज मुनिका पुत्र कहा गया है जिसकी चार भुजाएँ हैं। यह क्रूर, लाल रंगके समस्त पदार्थोंका स्वामी और कुछ अंगहीन माना जाता है। इसके अधिष्ठाता देवता कार्त्तिकेय हैं तथा इसके सुवर्णमय रथमें ८ लाल रंगके घोड़े जुतते हैं (मत्स्य० १२७.४)। ब्रह्मवैवर्त्त पुराणानुसार यह पृथ्वीके गर्भसे उत्पन्न विष्णुका पुत्र है। भिन्न-भिन्न पुराणोंमें इसके विषयमें भिन्न-भिन्न कथाएँ दी हैं (ब्रह्मां० २.२३.८४; मत्स्य० ९३.१०; विष्णु० २.१२.१८)। पर्य्या०—अंगारक, भौम, कुज, वक्र, महीसुत, लोहितांग, ऋणांतक, आवनेय आदि। (३) मंडका एक सेनापति जिसे स्वप्नेशीने मारा था (ब्रह्मां०

४.२१.८५; २८.४१) । (४) यामनामक देवगणमेंके १२ यामदेवोंमेंसे एक यामदेवका नाम (वायु० ३१.७) ।

मंगलप्रस्थ–पु० [सं०] भारतवर्षके अनेक पर्वतोंमेंसे एक पर्वतका नाम (भाग० ५.१९.१६) ।

मंगला–स्त्री० [सं०] (१) पराम्बिका पार्वतीकी कई सखियोंमेंसे एक सखी अनुचरीका नाम (ब्रह्मां० ४.४०.२५) । (२) गंगामें स्थापित सती देवीकी एक मूर्त्तिका नाम (मत्स्य० १३.३५)। (३) अंधकासुररक्तपानार्थ शिवजीद्वारा सृष्ट कई मानसपुत्री मातृकाओंमेंसे एक मातृका (मत्स्य० १७९.२१) । (४) मंगलागौरी गयासुरके मस्तकपर देवरूपिणी शिलाके रखनेपर गयासुर हिलने-डुलने लगा । उसे निश्चल करनेके लिए उसपर बैठे अनेक देव-देवियोंमेंसे एक (वायु० १०६.५८) । काशीमें स्थापित एक देवीका नाम (वायु० ११२.५८) । (५) लक्ष्मीका एक नाम (वायु० १०९.२४) ।

मंगलागौरीव्रत–पु० [सं०] विवाहोपरांत ५ वर्षोंतक स्त्रीको प्रति श्रावण तथा भौमवारको यह व्रत करना चाहिये । प्रथम वर्ष पीहरमें तथा ४ वर्ष पतिगृहमें करे (व्रतराज, भविष्यपु०) ।

मंगलारार्ति–स्त्री० [सं०] ललिताके विरुद्ध युद्धार्थ जाते हुए भंडके पुत्रोंकी स्त्रियोंने की थी (ब्रह्मा० ४.२६.६२) ।

मंगु–पु० [सं०] गाँदिनीका एक पुत्र (ब्रह्मां० ३.७१.१११; वायु० ९६.११०) ।

मंजुघोष–पु० [सं०] तंत्रानुसार एक देवता विशेष ।

मंजुघोषा–स्त्री० [सं०] एक अप्सराका नाम (ब्रह्मां० ४.३३.१९) ।

मंड–पु० [सं०] एक भार्गव गोत्रकार ऋषिका नाम (मत्स्य० १९५.२१) ।

मंडप–पु० [सं०] ये प्रासादके अनुरूप तीन कोटिके होते हैं—उत्तम, मध्यम तथा निम्न । इनके नाम यों हैं—पुष्पक, पुष्पभद्र, सुव्रत, अमृतनंदन, कौशल्य, बुद्धिसंकीर्ण, गजभद्र, जयावह, श्रीवत्स, विजय, वास्तुकीर्त्ति, श्रुतिंजय, यज्ञभद्र, विशाल, सुश्लिष्ट, शत्रुमर्दन, भागपंच, नंदन, मानव, मानभद्रक, सुग्रीव, हरित, कर्णिकार, शतधिक, सिंह, श्यामभद्र और सुभद्र ये कुल २७ प्रकारके होते हैं । इनके पृथक्-पृथक् लक्षण भी बतलाये गये हैं। जैसे जिस मंडपमें ६४ स्तंभ (खम्भे) हों वह पुष्पक, जिसमें ६२ हों वह पुष्पभद्र, जिसमें ६० हों वह सुव्रत इत्यादि । उत्तरकी ओर फल-फूलोंके वृक्ष, चारों ओर जलाशय, इसके दक्षिणमें तपोवन, उत्तरमें देवीका मंदिर, आग्नेय कोणमें पाकशाला तथा नैर्ऋत्य कोणमें विनायकका मंदिर, पश्चिममें विष्णु भगवान्का मंदिर तथा यज्ञशाला । प्रवेशद्वार भी वेध बचाकर १० प्रकारके होते हैं, जिसके निकट घंटा रहता है (मत्स्य० २७०.१-३६) ।

मंडल–पु० [सं०] (१) एक पहाड़ी जनपद या राज्यका नाम (मत्स्य० ११४.५६)। (२) वर्तुल, वृत्ताकार राजमहल जिसका तोरण २० हाथ का होता है, कोने नहीं होते हैं, ऊँचाई बैलकी ऊँचाईके तुल्य होती है (मत्स्य० २६९.३६.४९) । (३) सूर्यमंडल । यह भास्वर शुक्ल है, जिसमें चंद्रमा, ग्रह, नक्षत्रादि स्थित रहते हैं (वायु० ५३.२८) । (४) मण्डल ब्राह्मण, इन्द्रसूक्त, अग्निसूक्त, सोमसूक्त, बृहद्रथन्तरसाम, ज्येष्ठसाम आदिके तुल्य श्राद्धादिमें पठनीय कहा गया है और उनकी उत्पत्ति भी इन्हीसे होती है (मत्स्य० १७.३७) । (५) प्रयागके निकटका स्थान जिसकी रक्षा स्वयम् विष्णु भगवान् करते हैं (मत्स्य० १०४.९) । इसका विस्तार पाँच योजन है (मत्स्य० १०८.९) । वहाँ प्रवेश करनेमात्रसे पग-पग (कदम-कदम) पर अश्वमेधका फल प्राप्त होता है (मत्स्य० १११.८) ।

मंडला–स्त्री० [सं०] मूर्त्तियोंके लिए दस पीठिकाओंमेंसे एक पीठिका जो वृत्ताकार होती है तथा इसमें मेखलाएँ अनेक होती हैं। मण्डला पीठिका कीर्त्तिवर्द्धक है (मत्स्य० २६२.६, ९, १७) ।

मंडलाध्याय–पु० [सं०] मूर्त्तियोंकी स्थापनामें इसका पाठ आवश्यक कहा गया है । यह श्रीसूक्त, विष्णुसूक्त, शांतिकाध्याय आदिके तुल्य वेदका एक अंश है (मत्स्य० २६ ·.२६) ।

मंडवा–पु० [सं०] श्राद्धके लिए उपयुक्त एक तीर्थस्थानका नाम (वायु० ७७.५६) ।

मंडूक–पु० [सं०] (१) एक यक्ष जो पुण्यजनी तथा मणिभद्रके २४ पुत्रोंमें अन्यतम पुत्र था (ब्रह्मां० ३.७.१२३) । (२) तड़ाग-निर्माणमें ताँबेके कड़े, कोए आदिके साथ दिया जानेवाला ताम्रमंडूक (मेंढ़क) (मत्स्य० ५८.१९) ।

मंत्र–पु० [सं०] (१) (मंत्रस्थान) राजाको वेदज्ञोंसे परामर्श लेकर ही कोई काम करना उचित है, वह राज्यके अनुभवी लोगोंसे भी विचार-विमर्श कर सकता है (मत्स्य० २१५.४८-५२) । राज्यका आधार मंत्री ही है (मत्स्य० २२०.३३) । राजाको न तो स्वयम् अकेले ही किसी कामका फैसला करना उचित है और न बहुत लोगोंसे परामर्श ही करना चाहिये (मत्स्य० २२०.३७) । राज्यमें परिषद् आवश्यक है । (२) पूर्व संहिताका एक भाग (वायु० ६१.६५) । (३) जिस प्रकार गौओंमे खोई अपनी माताको बछड़ा ढूँढ़ लेता है, उसी प्रकार मंत्र पितरोंके प्रीत्यर्थ दिये गये श्रद्धान्नको पितरोंतक पहुँचाता है (ब्रह्मां० २.२८.९१; वायु० ५९.६१) । ऋषियोंके असंतोष, भय, कठिनाइयों, प्रसन्नता तथा दुःखसे ही इनकी उत्पत्ति होती है, जिन्हें वे (ऋषि) बादको क्रमबद्ध तथा सुव्यवस्थित कर देते थे । मंत्रोंके २४ भेद कहे गये हैं (ब्रह्मां० २.३२.६८; ३३.४२; वायु० ५९.३५.६१; मत्स्य० १४५.६२-३) । मंत्रोंके ग्राम्य तथा आरण्यक ये ही दो प्रधान विभाग हैं (ब्रह्मां० २.३५.७३, ८५; ४.८.५१३, ५७) । सब वेदोंसे वेदमंत्र, श्रेष्ठतम हैं उनसे भी विष्णुमंत्र श्रेष्ठ हैं, उनसे भी दुर्गामंत्र उनसे भी गणपतिमंत्र इत्यादि (ब्रह्मां० ४.३८.४) ।

मंत्रद्रुम–पु० [सं०] चाक्षुष मन्वंतरके इन्द्रका नाम (भाग० ८.५.८) ।

मंत्रनाथा–पु० [सं०] इन्हें मंत्रिणी (ब्रह्मां० ४.१७.२२, २७.५८; १९.६१) तथा मंत्रिणी श्यामा भी कहते हैं । यह ललिता देवीकी युद्ध-अधिपति थीं जिनका निवास 'कदम्बवन-वाटिका'में था (ब्रह्मां० ४.३१.८२, ८९) । इसने भंडके पुत्रोंको परास्त करनेमें कुमारीकी सहायता की थी । इसका स्थान गिरिचक्रपर था तथा दंडनाथासे परामर्श किया था (ब्रह्मां० ४.२६.२, ८३, ११३; २७.५८) । इसने

मदिरासिंधुका भी आवाहन किया था (ब्रह्मां० ४.२८.१४, ४८, ९२, १०३)।

मंत्रनायिका–स्त्री० [सं०] दे० मंत्रनाथा (ब्रह्मां० ४.१७.३१, ३३, ४०)।

मंत्रप्रवचन–पु० [सं०] वैदिक साहित्यकी एक शाखा (वायु० ५८.१४)।

मंत्रब्राह्मण–पु० [सं०] वैदिक साहित्यकी एक शाखा (ब्रह्मां० २.३१.१२; ३३.५४; वायु० ५९.१३८)।

मंत्रमाला–स्त्री० [सं०] कुशद्वीपकी एक नदी (भाग० ५.२०.१५)।

मंत्रय–पु० [सं०] श्रीकृष्ण तथा सत्यभामाके सानु, भानु आदि दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (वायु० ९६.२३८)।

मंत्रवित्–पु० [सं०] (वायु०=मंत्रय) सत्यभामा तथा श्रीकृष्णके दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (ब्रह्मां० ३.७१.२४७)।

मंत्रशरीर–पु० [सं०] ब्रह्माके मुखसे उत्पन्न उनके १२ पुत्र (वायु० ६७.४)।

मंत्रात्मशक्तिका–स्त्री० [सं०] महालक्ष्मी आदि ४८ वर्णशक्तियोंमेंसे एक वर्णशक्ति (ब्रह्मां० ४.४४.५८)।

मंत्रिणी–स्त्री० [सं०] जिसे मंत्रनाथा कहते हैं (ब्रह्मां० ४.१७.३३; १९.२७; ३१.८२-९)।

मंत्रिप्रवर–पु० [सं०] महाराज सगरके पुत्र प्राप्तिका उपाय पूछनेके लिए और्वाश्रम जानेपर उनकी अनुपस्थितिमें जिस मंत्रि-परिषद्ने राज्यका काम चलाया था (ब्रह्मां० ३.५०.३२)।

मंत्री–पु० [सं०] (१) किष्किन्धाधिप वालीके अनेक सामन्त तथा सेनानायक महाबली प्रधान बन्दरोंमेंसे एक प्रधान बंदर (ब्रह्मां० ३.७.२३८)। (२) राजाका प्रधान सचिव (वायु० ५७.७०), जो राजाकी अनुपस्थितिमें राजकाज देखता है (मत्स्य० ११५-१७; २१७.१८)। कहीं आक्रमण करनेके पूर्व इसका परामर्श आवश्यक है (मत्स्य० २२३.९; २४०.२७)।

मंत्रोपनिषद्–पु० [सं०] संकर्षणके प्रीत्यर्थ जो गुप्तमंत्र नारदजीने राजा चित्रकेतुको बतलाया था (भाग० ६.१५.२७; १६.१८-२५)।

मंथरा–स्त्री० [सं०] रामायणके अनुसार कैकेयीकी एक दासी जो मायकेसे उनके साथ आयी थी। इसीके कहनेपर कैकेयीने श्रीरामको वनवासकी आज्ञाके लिए दशरथजीसे प्रार्थना की थी (रामच० मानस, अयो० दो० १२-२८)।

मंथु–पु० [सं०] वीरव्रत और भोजाके दो पुत्रोंमेंसे एक पुत्र जो सत्याका पति तथा भौवनका पिता था (भाग० ५.१५.१५)।

मंद–पु० [सं०] अभ्रमु हाथीका एक पुत्र (ब्रह्मां० ३.७.३३०), जिसे पद्म भी कहते थे और जो कुबेरका वाहन था (वायु० ६९.२१४, २१६)।

मंदक–पु० [सं०] श्रीदेवा और वसुदेवका एक पुत्र (ब्रह्मां० ३.७१.१८१)।

मंदग–पु० [सं०] शाकद्वीपके शूद्रोंका नाम (विष्णु० २.४.६९)।

मंदगा–स्त्री० [सं०] शुक्तिमान्से निकली एक नदी (ब्रह्मां० २.१६.३८; मत्स्य० ११४.३२; वायु० ४५.१०७)।

मंदगामिनी–स्त्री० [सं०] शुक्तिमान् पर्वतसे निकली एक नदी (ब्रह्मां० २.१६.३८)।

मंदनी–स्त्री० [सं०] एक मूर्च्छना जिसके अधिष्ठाता विश्वदेव देव हैं (वायु० ८६.६३)।

मंदपन्नग–पु० [सं०] एक मरुद्गण (मत्स्य० १७१.५४)।

मंदबाह्य–पु० [सं०] बलरामका एक पुत्र (ब्रह्मां० ३.७१.१६७)।

मंदर–पु० [सं०] (१) पुराणानुसार एक पर्वत जिससे देवताओंने समुद्र मथा था। मेरुके चारों ओरके विष्कंभ गिरियोंमेंसे एक जो शिवके लिए अति पवित्र है। इसीकी घाटियोंमें हिरण्यकशिपुने तपस्या की थी, देवताओंने क्षीर-सागर मथनेमें इसका उपयोग किया था और यह समुद्रमें डूब न जाय, इसलिए विष्णु स्वयम् कूर्मरूप धारण कर इसके आधार बने। इसे उठाकर समुद्रतक लानेमें देवता तथा असुरोंको असमर्थ देख विष्णुकी आज्ञासे गरुड़ अपनी पीठपर लाद इसे समुद्रतटपर लाया था (ब्रह्मां० ४.९.५१, ५६, ६०; भाग० १.३.१६; ३.२८.२७; ५.१६.११; ७.३.२; ७.२; ८.५.१०; ६.३३-९; १०.४०.१८; १२.१३.२; मत्स्य० ६९.१; २४९.१५; २५०.२६; २५१.३५; विष्णु० १.९.७७, ८४)। कहते हैं ११०० योजन ऊँचे एक दिव्य वृक्षसे गिरनेवाले पहाड़के शिखरके बराबर आम (फल) इसे प्राप्त हुए थे (भाग० ५.१६.१६)। महाराज पृथुकी मृत्यु तथा अन्त्येष्टिक्रिया यहीं हुई थी (भाग० ४.२३.२४)। इसे मंदरगिरि तथा मंदराचल भी कहते हैं। भद्राश्व वर्ष तथा चैत्ररथ उद्यान यहीं हैं (मत्स्य० ८३.२०, ३१)। विवाहके पश्चात् उमाके साथ महादेव कुछ दिनोंतक यहाँ रहे थे (मत्स्य० ११३.४५; १५४.४९६, ५७३; १६३.८७; १८३.१)। (२) कुशद्वीपका एक पर्वत जिसे जलके कारण मंदर कहते हैं (ब्रह्मां० २.१३.३६; १९.५६; वायु० ३६.१९; ४२.१४; ४५.९०; ४९.५१; १०१.२८८)। यह मेरुका एक पुत्र है (वायु० ३०.३३)। यह गंधमादनके दूसरी ओर है तथा केतुराट् इसका महावृक्ष है (वायु० ३५.१६)। (३) भारतवर्षका एक पर्वत (ब्रह्मां० २.१६.२०; ३.२७.२८)। (४) सती देवीकी एक मूर्ति कामचारिणीदेवीका एक पवित्र पीठ तीर्थस्थान (मत्स्य० १३.२८; १८४.१८)। (५) ककुद्मान्‌का ही दूसरा नाम (मत्स्य० १२२.६१)। (६) १२ मंजिला राजमहल जिसका तोरण ४५ हाथका होता है जो मेरु नामक राजमहलके तोरणसे ५ हाथ छोटा होता है (मत्स्य० २६९.२८, ३२, ४७)। (७) मलयद्वीपका एक पर्वत (वायु० ४८.२३)। (८) इलावृतके पूर्वमें स्थित एक पर्वत (विष्णु० २.२.१८)।

मंदरशोभि–पु० [सं०] पुण्यजनी और मणिभद्रके २४ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (वायु० ६९.१५५)।

मंदरहरिण–पु० [सं०] जंबूद्वीपके शुक्र, आवर्तन आदि आठ उपद्वीपोंमेंसे एक उपद्वीप (भाग० ५.१९.३०)।

मंदराचल–पु० [सं०] कुशद्वीपके विद्रुम, हेमशैल आदि सात मुख्य पर्वतोंमेंसे एक पर्वत (विष्णु० २.४.४१)।

मंदवाहिनी–स्त्री० [सं०] शुक्तिमान् पर्वतसे निकली ऋषीका आदि छह पुण्य नदियोंमेंसे एक नदी (मत्स्य० ११४.३२; वायु० ४५.१०७)।

मंदवाह्य–पु० [सं०] सारणका एक पुत्र (वायु० ९६.१६५)।

मंदाकि (मौदाकि?)–पु० [सं०] शाकद्वीपके अधिपति भव्यके सात पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (विष्णु० २.४.६०)।

मंदाकिनी–स्त्री० [सं०] (१) गंगाकी एक धारा जो स्वर्गमें स्थित कही जाती है। इसके रम्य और पुण्य तटपर, जहाँ सुवर्णमय भूमि है, सर्वकामनाओंको पूर्ण करनेवाले विविध फलोंसे लदे वृक्ष हैं, देवांगनाओं तथा सिद्ध ऋषि-मुनियोंका प्राचुर्य है, सुकृत कर्मोंसे मनुष्योंका निवास होता है (भाग० ५.१९.१८; १०.७०.४४; वायु० ४५.९९; १०५.१०)। कैलाशपरके मन्द नामके एक महान् सरोवरसे निकली एक नदी। उसके तीरपर सुन्दर महान् नन्दनवन है। ब्रह्मवैवर्त्तके अनुसार इसकी धार एक योजन लम्बी है। यहाँ कुछ (३८) वर्षोंतक ऐल तथा उर्वशीने निवास किया था (ब्रह्मां० २.१८.३; ३.६६.६; मत्स्य० १२१.४; वायु० ४१.१४-१७; ९१.६)। अलकनंदा तथा नंदा कैलाशकी अन्य नदियाँ हैं (वायु० ४१.१८; ४७.३)। (२) एक सर्वपापनाशिनी नदी जो चित्रकूटके पास बहती है। इसमें स्नान कर देवता और पितरोंका पूजन-तर्पण करनेसे अश्वमेधयज्ञका फल मिलता है (महाभा० वन० ८५.५८-५९)। महाकवि कालिदासने रघुवंशमें चित्रकूटके प्रसंगमें इसका वर्णन किया है—'एषा प्रसन्नस्तिमितप्रवाहा सरिद्विदूरान्तरभावतन्वी। मन्दाकिनी भाति नगोपकण्ठे मुक्तावली कण्ठगतेव भूमेः॥' (३) हरिवंशके अनुसार द्वारकाके पासकी एक नदी। (४) ऋष्यवान् पर्वतसे निकली आठ पुण्य नदियोंमेंसे एक नदी जो पितरोंके श्राद्ध, तर्पण आदिके लिए अति पवित्र मानी गयी है (मत्स्य० २२.२३; ११४.२५)। (५) ऋक्षवान् (मत्स्य० = ऋष्यवान्) पर्वतसे निकली १७ नदियोंमेंसे एक नदी (ब्रह्मां० २.१६.३०)।

मंदाकिन्य–पु० [सं०] कश्यपकुलके गोत्रकार ऋषि (मत्स्य० १९९.३)।

मंदार–पु० [सं०] (१) एक वृक्षका नाम जो स्वर्गके पाँच प्रसिद्ध देववृक्षोंमेंसे एक है। पाँच वृक्षोंके नाम—मंदार, पारिजात, संतान, कल्पवृक्ष और हरिचंदन। (२) हिरण्यकशिपुके एक पुत्रका नाम (भाग० तथा ब्रह्मां०)। (३) विन्ध्य पर्वतके किनारेपर स्थित एक तीर्थका नाम (हिं० श० सा०)। (४) शिवके नन्दीश्वर, महाकाल, रक्ताक्ष आदि कई गणोंमेंसे एक गणका नाम (ब्रह्मां० ३.४१.२७)।

मंदारवाटिका–स्त्री० [सं०] श्रीपुरम्का एक विभाग, जहाँ सदा वसंत निवास करता है (ब्रह्मां० ४.३२.२३)।

मंदारषष्ठी–स्त्री० [सं०] तीन दिनोंमें पूर्ण होनेवाला एक व्रत, जो माघ शुक्ला षष्ठीको होता है। प्रतिज्ञापूर्वक हर महीने प्रत्येक षष्ठीको वर्ष पर्यन्त व्रत करके सप्तम के दिन कलशपर रक्त सूर्यमूर्त्ति स्थापित कर पूजन करे तथा सूर्यमूर्त्ति साक्षर ब्राह्मणको दे। इस प्रकार व्रत करनेसे सब पाप दूर होते हैं और व्रती स्वर्ग जाता है (भविष्योत्तर; व्रतपरिचय २२२; मत्स्य० ७४.३; ७९.१)।

मंदारसप्तमी–स्त्री० [सं०] माघ शुक्ला ७ को सूर्य-प्रीत्यर्थ किया जानेवाला एक व्रत जिसमें रथारूढ सूर्यनारायणका पूजन करके उपवास करे तो सात जन्मके पाप दूर होते हैं तथा मनोवांछित फल मिलता है (मत्स्य० ७४.३; ७९.१)।

मंदेह–पु० [सं०] (१) ३ करोड़ राक्षस जो सूर्योदयके समय सूर्यपर आक्रमण करते हैं। ये संध्या करने तथा गायत्रीके जपसे नष्ट होते हैं (ब्रह्मां० २.२१.११०; वायु० ५०.१६३)। (२) कुशद्वीपके शूद्रगणोंका सामूहिक नाम (विष्णु० २.४.३८)।

मंदोदक–पु० [सं०] कैलाश पर्वतपरका एक सरोवर (झील) जिसका जल दहीके समान है, नंदनवन इसीके तटपर है तथा मंदाकिनीका उद्गम स्थान यहां है (मत्स्य० १२१.४-५)।

मंदोदरी–स्त्री० [सं०] (१) मय तथा रंभाकी एक पुत्री (ब्रह्मां० ३.६.२९; मत्स्य० ६.२१; वायु० ६८.२९)। (२) लंकापति रावणकी पटरानी जो मयदानवकी पुत्री तथा मेघनाद(थ) की माता थी। पुराणानुसार यह पंचकन्याओंमें है (भाग० ९.१०.२४-२८)। दे० स्वयंप्रभा, अहल्या। (३) पितरोंके श्राद्धादिके लिए एक पवित्र तीर्थ (मत्स्य० २२.४२)।

मकर–पु० [सं०] (१) एक प्रकारका जलजंतु जिसकी आकृति घड़ियालकी-सी होती है। इसका सिर और आगेके पैर बारहसिंघेकेसे, पर शरीर और पूँछ मछलीके शरीरसे मिलते हैं। इसे जलके स्वामी वरुणका वाहन कहा गया है। इसका आकार कामदेवकी पताकापर है—दे० बिहारीलाल—'मकराकृत गोपालके कुंडल सोहत कान। धस्यो मनो हिय घरसमर ड्योढ़ी लसत निसान॥' (२) मेरुके उत्तरमें स्थित दो पर्वतोंमेंसे एक पर्वत (भाग० ५.१६.२७)। (३) एक जलका निवासी असुर। सरोवर खुदवानेमें, सोनेका मकर दान करनेका माहात्य है (मत्स्य० ५८.१९)। (४) कुबेरकी आठ निधियोंमेंसे एक (वायु० ४१.१०)। (५) 'तई' नामक एक तामिल महीनेका नाम, जब सूर्य मकर रेखापर रहता है (वायु० १०५.४८)। इसके पश्चात् ही सूर्य उत्तरायण होने लगता है (विष्णु० २.८.२८, ६८)।

मकरंदक–पु० [सं०] यहाँ सती देवीकी एक मूर्त्ति चंडिकाके नामसे स्थापित है, इसलिए यह एक पवित्र शक्तिपीठ है (मत्स्य० १३.४३)।

मकरगण–पु० [सं०] ऋक्षकी पुत्रीका पुत्र (ब्रह्मां० ३.७.४१५)।

मकरध्वज–पु० [सं०] (१) अहिरावणका एक द्वारपाल जो पुराणानुसार हनुमान्का पुत्र माना जाना है। कहते हैं लंकाको जलानेके उपरांत जब हनुमान्ने समुद्रमें स्नान किया था, तब उनके पसीनेसे मिला हुआ जल एक मछलीने पी लिया, जिससे उसे गर्भ रह गया और समयानुसार इनका जन्म हुआ (रामायण सुंदरकांड)। (२) कामदेवका एक नाम जिसकी पताकापर मछलीका चिह्न रहता है (ब्रह्मां० ४.११.२८; १९.६७; ३०.५६; मत्स्य० १५४.२४४; २६१.५३)।

मकरध्वजा–स्त्री० [सं०] श्री, ह्रीं, पुष्टि आदि ४८ शक्तिदेवियोंमेंसे एक शक्तिदेवी (ब्रह्मां० ४.४४.७४)।

मकरव्यूह–पु० [सं०] जरासंधने यदुओंपर आक्रमण करनेके पहिले अपनी सेनाको इसी व्यूहमें सजा लिया था, पर

श्रीकृष्णने वृक्षोंकी गदासे उस व्यूहको तोड़ डाला था (भाग० १०.५२.६[१-४])।

मकराक्ष—पु० [सं०] एक राक्षस जो खरका पुत्र तथा रावणका भतीजा तथा सेनापति भी था। कुंभ और निकुंभके मारे जानेपर यह युद्धमें गया था और श्रीरामचंद्रके हाथों मारा गया था। स्कंदपुराणानुसार इसे विभीषणने मारा था (स्कंद० ब्राह्म० सेतु-माहात्म्य)।

मकरानन—पु० [सं०] शिवका एक अनुचर (शिवपु०)।

मक्रणा—स्त्री० [सं०] भारतवर्षकी ऋक्षवान् पर्वतकी तलहटीसे निकली स्वच्छजला १७ नदियोंमेंसे एक नदी (वायु० ४५.१०१)।

मख—पु० [सं०] यज्ञ (वायु० ९७.२६) जिसके एक अंशके भागी ४९ मरुत् हैं (मत्स्य० ७.६५)।

मखतीर्थ—पु० [सं०] शमीकी लकड़ीकी बनी अरणिको मथनेसे यह प्राप्त हुआ था (वायु० ११२.५१)।

मखशत्रु—पु० [सं०] भंडके एक पुत्र तथा सेनापतिका नाम (ब्रह्मां० ४.२१.८१; २६.४८)।

मखापेत—पु० [सं०] कार्तिक मासमें सौरगणके अन्य छह साथियोंके सहित सूर्य रथपर अधिष्ठित रहनेवाला एक राक्षस (भाग० १२.११.४४)।

मखास्कंदि—पु० [सं०] भंडके एक पुत्र तथा सेनापतिका नाम (ब्रह्मां० ४.२१.८१; २६.४८)।

मगध—पु० [सं०] (१) आधुनिक विहारका प्राचीन नाम जहाँ पाली भाषा बोली जाती थी। (२) जरासंधका राज्य (भाग० ३.३.१०; ब्रह्मां० ३.३९, २, ८)। (३) एक जनपद, एक पूर्वी राज्य (ब्रह्मां० २.१६.५५; १८.५१; वायु० ४५.१११, ४७.४८; ६२.१४७; ९९.२९४; विष्णु० २.३.१६)। इसको पृथुसे मागधने प्राप्त किया था। (४) विश्वस्फटिकने क्षत्रियोंपर दमन कर नये वर्ण स्थापित किये। यहाँके निवासी कैवर्त, वडु, पुलिंद आदिके समान थे (विष्णु० ४.२४.६१)।

मगधगोविंद—पु० [सं०] पूर्वका एक जनपद (वायु० ४५.१२३)।

मघ—पु० [सं०] पुराणानुसार एक द्वीपका नाम। कहते हैं इसमें म्लेच्छ ही रहते हैं।

मघवज्जित्—पु० [सं०] रावणका बड़ा लड़का इंद्रजित् जिसने इंद्रको जीत लिया था—दे० मेघनाद।

मघवा—पु० [सं०] (१) इंद्रका एक नाम—दे० इंद्र। (२) पुराणानुसार सातवें द्वापरके व्यासका नाम।

मघवान्—पु० [सं०] (१) इन्द्रका एक नाम (भाग० १.१६.२१; ब्रह्मां० २.१३.७९; वायु० ६४.७)। इसने वायुरूपमें देवयानी तथा शर्मिष्ठाके वस्त्र बदल दिये थे (मत्स्य० २७.३-४; १३८.१)। (२) एक दानवका नाम (ब्रह्मां० ३.६.५)।

मघा—पु० [सं०] २७ नक्षत्रोंमेंसे दसवाँ जो शिशुमारसे लगा है (भाग० ५.२३.६; ७.१४.२२; १२.२.२८-९; वायु० ६६.४९; ८०.४४; ८१.२५; ८२.६; ९९.४२३), जिसमें श्राद्ध करना शुभ माना गया है (ब्रह्मां० ३.१७.२१; २८.५; मत्स्य० १७.३; ५४.१८; ५५.१४, २०४.५)।

मचक्रुम—पु० [सं०] (१) स्यमन्तपंचक तथा कुरुक्षेत्रकी सीमाका निर्धारण करनेवाला एक स्थान जहाँ द्वारपालके रूपमें निवास करनेवाले एक यक्षका नाम। कहते हैं इस यक्षको नमस्कार करनेमात्रसे हजार गोदानोंका फल प्राप्त होता है (महाभा०)। (२) कुरुक्षेत्रके पासका एक पवित्र स्थान जिसकी रक्षा मचक्रुक यक्ष करता है (महाभा० वन० ९; शल्य० ५३-२४)।

मज्जा—स्त्री० [सं०] वर्धिनी, भद्रा आदि छह शक्तिदेवियोंमेंसे एक शक्तिदेवी (ब्रह्मां० ४.४४.९०)।

मठर—पु० [सं०] एक प्राचीन मुनिका नाम।

मणि—स्त्री० [सं०] (१) चक्रवर्ती राजाओंके प्राणहीन सात रत्नोंमेंसे एक रत्नका नाम (ब्रह्मां० २.२९.७५; वायु० ५७.६८; ७८.५३)। रत्नजड़ित नागों (पाताल लोकके सर्पों) के आभूषण (विष्णु० २.५.६)। (२) एक प्राचीन मुनिका नाम। (३) एक काद्रवेय नागका नाम (ब्रह्मां० ३.७.३७; वायु० ६९.७४)।

मणिक—पु० [सं०] वह जलपात्र जिसमें मनुने बढ़ती हुई मछली रखी थी (मत्स्य० १.२०)।

मणिकर्णिका—स्त्री० [सं०] वाराणसीके ५ प्रधान तीर्थोंमेंसे एक। यहाँ एक कुंड है जहाँ मरनेवाले मोक्ष पाते हैं; स्नान करनेसे सारी इच्छाएँ पूर्ण होती हैं। इसी नामका गंगाका घाट भी है (मत्स्य० १८२.२४; १८५.६९)। यहाँपर शिवकी मणिजटित कर्णिका गिर गयी थी, अतः यह नाम पड़ा (स्कंदपु० काशीखंड पूर्वार्ध)।

मणिकुट्टिका—स्त्री० [सं०] कार्त्तिकेयकी अनुचरी एक मातृकाका नाम (महाभा० शल्य० ४६.२०)।

मणिकूट—पु० [सं०] पुराणानुसार एक पर्वतका नाम जो कामरूपके निकटस्थ माना जाता है। यह प्लक्षका सीमापर्वत है।

मणिग्रीव—पु० [सं०] कुबेरका एक पुत्र जो नलकूबरसे छोटा था (भाग० १०.९.२२-२३; १० पूरा)।

मणिचक—पु० [सं०] (१) शाकद्वीपके अधिपति हव्यके सात पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (वायु० ३३.१६)। (२) पुराणानुसार शाकद्वीपके एक वर्षका नाम।

मणिजला—स्त्री० [सं०] शाकद्वीपकी एक प्रधान नदीका नाम (महाभा० भीष्म० ११.३२)।

मणितटा—स्त्री० [सं०] भद्राश्व देशकी अनेक स्वच्छजला नदियोंमेंसे एक नदी (वायु० ४३.२९)।

मणिदत्त—पु० [सं०] पुण्यजनी और मणिभद्रके सिद्धार्थ, सूर्यतेज आदि २४ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (वायु० ६९.१५४)।

मणिद्वीप—पु० [सं०] पुराणानुसार मणियोंका बना एक द्वीप जो क्षीरसागरमें है जहाँ त्रिपुरसुंदरीका निवासस्थान है।

मणिधर—पु० [सं०] रजतनाभका पुत्र एक यक्ष जो सुवर्णशिखर लोहित पर्वतपर रहता था (ब्रह्मां० २.१८.१२; ३६.२१६; मत्स्य० १२१.१३)।

मणिधान्यकवंश—पु० [सं०] मणिधान्य राजवंश जिसके अधीन नैषध, नैमिषक, कालकोश तथा कांजनपद थे (विष्णु० ४.२४.६६)।

मणिनाग—पु० [सं०] तृतीय तलमें निवास करनेवाला एक नाग (ब्रह्मां० २.२०.३०)।

मणिपर्वत—पु० [सं०] मंदरका चूड़ामणि जिसे 'नरक' चुरा ले गया था। श्रीकृष्णने इसका बध कर मणिको प्राग्ज्योतिष-

से हटाया था (विष्णु० ५.२९.१०, ३४; ३०.१)।

मणिपुर–पु० [सं०] कलिंगका एक नगर जहाँकी राज्य-कन्याका पुत्र अर्जुनपुत्र बभ्रुवाहन था (भाग० ९.२२.३२; विष्णु० ४.२०.५०)।

मणिपुष्पक–पु० [सं०] सहदेवके शंखका नाम (महाभा०)।

मणिभद्र–पु० [सं०] यक्षोंका मुखिया तथा यात्रियोका संरक्षक भगवान् शंकरका एक गण। यह रजतनाभ (भद्रा = वायु०) का पुत्र तथा पुण्यजनीका पति था जो बहुतसे यक्षोंकी माता थी (ब्रह्मां० ३.७.१२०; वायु० ६९.१५२. १५७)। चंद्रप्रभाके निवासी यक्षोंका यह सेनापति था (वायु० ४७.७)। चैत्ररथसे लगी पहाड़ीपर इसका निवास था (ब्रह्मां० २.१८.७-८; मत्स्य० १२१.८-९)। यह ललिताका भक्त था (ब्रह्मां० ४.३३.७८)।

मणिभूमि–स्त्री० [सं०] पुराणानुसार हिमालय पर्वतपर स्थित एक तीर्थका नाम।

मणिमंत–पु० [सं०] (१) एक यक्ष जो पुण्यजनी तथा मणिभद्रके २४ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र था (ब्रह्मां० ३.७.१२३)। (२) शाल्मलिद्वीपका एक पर्वत (ब्रह्मां० ३.७.४५३)।

मणिमंत्र–पु० [सं०] वितलका निवासी एक नाग (वायु० ५०.२९)।

मणिमती–स्त्री० [सं०] पितरोंके श्राद्धादिके लिए अति उपयुक्त एक पवित्र नदी (मत्स्य० २२.३९)।

मणिमान्–पु० [सं०] (१) देवजनी और मणिवरके ३० पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (वायु० ६९.१५८)। (२) एक असुर जिसे भीमने मारा था (महाभा०)। (३) ललिताका भक्त एक यक्ष जो सतीके साथ दक्षके यज्ञमें गया था (भाग० ४.४.४; ब्रह्मां० ४.३३.५८)। जहाँ इसने भृगुको धर दवाया था (भाग० ४.५.१७)।

मणिमेघ–पु० [सं०] पुराणानुसार एक पर्वतका नाम जो दक्षिण भारतमें स्थित कहा गया है।

मणिवक–पु० [सं०] (१) शाकद्वीपके अधिपति हव्यके सात पुत्रोंमेंसे एक पुत्र जिसके नामपर मणिवक वर्षका नामकरण हुआ था (ब्रह्मां० २.१४.१७-९)। (२) शाकद्वीपके एक खण्डका नाम, जिसका अधिपति हव्य-पुत्र मणिवक था (ब्रह्मां० २.१४.१९; १९.९२)।

मणिवक्त्र–पु० [सं०] 'आप'के चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (मत्स्य० ५.२२)।

मणिवप्रा–स्त्री० [सं०] भद्राश्व देशकी एक नदी (वायु० ४३.२८)।

मणिवर–पु० [सं०] (१) रजतनाभका एक पुत्र तथा देवजनीका पति (ब्रह्मां० ३.७.१२०; ७२.२)। कैलाशके यक्षोंका राजा (वायु० ४१.२५)। लोहित पर्वत इसका निवासस्थान कहा गया है (वायु० ४७.१२)। (२) जतुनाभ और मणिवराके दो पुत्रोंमेंसे एक पुत्र जिसकी पत्नी देवजनी थी। इसके अनेक (३०) पुत्र हुए थे जिन्हें गुह्यक कहते हैं (वायु० ६२.१८३; ६९.१५१; ९७.२)।

मणिवर्त–पु० [सं०] एक स्थानका नाम जहाँके तीन करोड़ निवासियों, जो हिरण्यकशिपुके कनिष्ठ पुत्रके वंशज दैत्य थे, का बध अर्जुनने किया था (वायु० ६७.७३-४)।

मणिवाहन–पु० [सं०] गिरिका और वियोपरिचरके सात पुत्रोंमेंसे एक (तृतीय) पुत्र जिसका दूसरा नाम कुश भी था (वायु० ९९.२२२)।

मणिशिला–स्त्री० [सं०] अरुणोद नामके सरोवरके तथा मेरु पर्वतके पूर्वमें स्थित शीतान्त, कुमुञ्ज आदि कई पहाड़ोंमेंसे एक पहाड़ (वायु० ३६.१८)।

मणिशैल–पु० [सं०] एक पर्वतका नाम जिसके एक ओर विकंक पर्वत है। दोनों पर्वतोंके बीचमें चम्पक वन है जो नाना प्रकारके खिले सुगंधवाले पुष्पोंसे व्याप्त है। देव, दानव, गंधर्व, यक्ष, राक्षस, किन्नर, अप्सराएँ, महानागोंका जिसमें निवास है। इसीके एक ओर कश्यप प्रजापतिका आश्रम है। यह मंदराचलके पूर्वमें स्थित कहा गया है (वायु० ३७.१६-२२)।

मणिस्कंध–पु० [सं०] एक नागका नाम (महाभा०)।

मणिस्थक–पु० [सं०] एक काद्रवेय नाग (ब्रह्मां० ३. ७.३६)।

मणीचक–पु० [सं०] शाकद्वीपके अधिपति हव्यके सात पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम। श्याम पर्वतके चारों ओरका एक वर्ष, जो शाकद्वीपका एक खण्ड कहा गया है तथा जिसका अधिपति उक्त मणीचक था (वायु० ३३.१८; ४९.८६)।

मतंग–पु० [सं०] (१) एक ऋषिका नाम जो शबरीके गुरु तथा मातंगके पिता थे (ब्रह्मां० ४.३१.९०)। (२) यह एक ब्राह्मणीके गर्भसे उत्पन्न एक नापितके पुत्र थे। ब्राह्मणीके पतिने इन्हें अपना ही पुत्र समझ पाला। गर्दभीके साथ संवादसे जब इन्हें यह विदित हुआ कि मैं ब्राह्मण-पुत्र नहीं हूँ, तब ब्राह्मणत्व प्राप्त करनेके लिए इन्होंने तप किया और इन्द्रके वरसे छंदोदेवके नामसे प्रसिद्ध हुए (महाभा० अनु० २७.८-२४)। रामायणके अनुसार ऋष्यमूक पर्वतके निकट इनका आश्रम था, जहाँ श्रीराम गये थे (वायु० ७७. ९८)। (३) एक प्राचीन राजर्षिका नाम, जो शापवश व्याध हो गये थे एवं जिन्होंने दुर्भिक्षकालमें विश्वामित्रजीकी पत्नीका भरण-पोषण किया था। महर्षि विश्वामित्रने बदलेमें इनका पुरोहित बन इनके यज्ञमें आचार्यत्वका सम्पादन किया था जिसमें इन्द्र स्वयं सोमपानके लिए आये थे (महाभा० आदि० ७१.३१-३३)। (४) एक दानवका नाम। (५) एक महर्षि जिनका आश्रम तीर्थ माना जाता है (महाभा० वन० ८४.१०१)।

मतंगपद–पु० [सं०] मतंग ऋषिका आश्रम जो गयाजीमें है जहाँ श्राद्ध करनेका अत्यधिक महत्त्व लिखा है (वायु० १०८.२५)।

मतंगवन–पु० [सं०] श्राद्धोंके लिए एक महत्त्वपूर्ण स्थान (ब्रह्मां० ३.१३.१०६)।

मतंगवाणी–पु० [सं०] (१) कोशल देश स्थित तथा श्राद्धके उपयुक्त एक अति महत्त्वपूर्ण स्थान (वायु० ७७.३६)। (२) गयामें स्थित मतंगाश्रम (वायु० १११.२४)। (३) गयामें स्थित एक तीर्थ जहाँ स्नान करके श्राद्धकर्त्ता मतंगेश्वरका दर्शन करे तथा 'धर्मसर्वस्व'की घोषणा करे तो बड़ा फल होता है (अग्निपु० ११५.३४-३५)।

मता–स्त्री० [सं०] सतीदेवीकी एक मूर्ति जो पारावारतटपर स्थापित है (मत्स्य० १३.४४)।

मति–पु० [सं०] (१) यामदेवगणमेंके १२ यामदेवोंमेंसे

एक यामदेव (ब्रह्मां० २.१३.९२; वायु० ३१.६) । ब्रह्माने भी इन्हें इसी नामसे संबोधित किया था (वायु० २३.८) । (२) आभूनरय देवगणमेंके १४ आभूतरय देवोंमेंसे एक आभूतरय देव (ब्रह्मां० २.३६.५५; वायु० ६२.४८) । (३) भव्यदेवगणमेंके ८ भव्यदेवोंमेंसे एक भव्यदेव (ब्रह्मां० २.३६.७२) । (४) भगवान्का एक नाम, क्योंकि भगवान् क्षेत्रज्ञ हैं, उनको क्षेत्रका ज्ञान रहता है । इस कारण उनको मति कहा गया है (वायु० ५९.७७) ।

मत्त–पु० [सं०] ५१ विघ्नेश्वर (गणेशों) मेंसे एक गणेशका नाम (ब्रह्मां० ४.४४.६९) ।

मत्तकासिक–पु० [सं०] केतुमालका एक जनपद तथा उसके निवासी (वायु० ४४.१५) ।

मत्स्य–पु० [सं०] (१) अठारह महापुराणोंमेंसे एक (१६वाँ) जिसमें १४००० श्लोक हैं (विष्णु० ३.६.२३; भाग० १२.७.२४; १३.८) । कहते हैं कि जब विष्णुने मत्स्यावतार धारण किया था, तब यह पुराण कहा था, इसीसे इसे महापुराण तथा पुराण-संहिता कहते हैं । इसमें सांख्य, योग तथा कर्मकी व्याख्या मत्स्य हरिने प्रलयके समय सत्यव्रत राजासे की थी (भाग० ८.२४.५४-५) । (२) विष्णुके १० अवतारोंमेंसे पहिला जो सत्ययुगमें हुआ था (भाग० १.१५.३५; १०.२.४०; ११.४.१८; ब्रह्मां० ३.७.४३३; २२.६६; ५७.६१; ४.४.२२; २९.१३६; मत्स्य० २६०.३९; २८५.६; २९०.२३; विष्णु० १.४.८) । इसका नीचेका अंग रोहू मछलीके समान तथा ऊपरका अंग मनुष्यके समान था, अतः इसे मत्स्यावतार कहते हैं । इसके सिरपर सींग थे, चार हाथ तथा सारे शरीरमें कमलके चिह्न थे (मत्स्य० २५९.२) । इन्हींके आशीर्वादसे राजा सत्यव्रत वैवस्वत मनु हो गये और जो बड़े तपस्वी थे (महाभारत) । इन्होंने एक मछलीका बच्चा पाला जिसे बढ़नेपर समुद्रमें छोड़ आये थे । इसने (मछलीने) वैवस्वत मनुसे सब चीजोंके बीज लेकर सप्तर्षियोंके साथ एक नावपर सवार होनेको कहा, जहाँ इसने आनेका वचन दिया था । यह सारी बातें इसलिए थीं कि प्रलयकाल शीघ्र ही आनेवाला था । मछलीके कथनानुसार सारी घटनाएँ घटीं और इसने मनुकी नाव हिमाचलकी सर्वोच्च चोटीपर बंधवा दी जिसे 'नौबंधन'के नामसे अबतक पुकारते हैं । मछली स्वयम् प्रजापति ब्रह्मा थी, जिसने हयग्रीव राक्षसको, जो सब वेदोंको चुरा ले गया था, मार वेदोंका उद्धार किया (भाग० ८.२४ पूरा) । वैवस्वत मनुको फिरसे सृष्टि करनेका आदेश दे मछली अंतर्धान हो गयी (भाग० २.७.१२; ११.४.१८; मत्स्य० २२.९२) । (३) पुराणानुसार एक प्रकारकी शिला जिसका रंग सुनहला है तथा उसके पूजनसे मोक्ष प्राप्त होता है । (४) एक देश जो अलवर और जयपुरके बीच था—दे० विराट तथा महाभा० । (५) चेदिप वसुपुत्र उपरिचर और गिरिकाके ७ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (भाग० ९.२२.६; मत्स्य० ५०.२८) । (६) सरोवर खुदवानेके समय जो चाँदीकी मछली दान दी जाती है (मत्स्य० ५८.१९) । (७) शाकल्यके मुद्गल, गोलक आदि पाँच शिष्योंमेंसे एक शिष्य (वायु० ६०.६४) ।

मत्स्यकाल–पु० [सं०] विद्योपरिचर और गिरिकाके सात पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (वायु० ९९.२२२) ।

मत्स्यगंध–पु० [सं०] भृगुवंशज आर्षेय प्रवरप्रवर्तक एक ऋषि (मत्स्य० १९५.४३) ।

मत्स्यगंधा–स्त्री० [सं०] राजा उपरिचर (जिसे वसु भी कहते थे) की पुत्री । राजाने बड़ी कठोर तपस्या की थी, पर इंद्रके कहनेसे फिर तप करना बंद कर दिया था । तदनन्तर इन्द्रने इन्हें स्फटिकमय आकाशगामी रथ और वैजंतीकी माला दी थी । उपरिचरकी पत्नीका नाम गिरिका था । एक बार अहेरमें इनका रेतःपात हुआ जिसे श्येन पक्षी द्वारा इन्होंने अपनी रानीको भिजवा दिया । मार्गमें ही वह रेतः यमुना नदीके जलमें गिर पड़ा । अद्रिका नामकी एक अप्सरा मछलीका रूप धर यमुनामें रहती थी । जलमें गिरा रेतः इस मछलीने पी लिया जिससे उसे गर्भ रह गया । मछुओंने इस अप्सरारूपी मछलीको पकड़ा और वसुको अर्पण किया । उसके पेटमें एक पुत्र और एक कन्या पायी गयी । यही पुत्र आगे चल मत्स्यके नामसे विख्यात हुआ । कन्या राजाने मछुओंको वापस दे दी । इसके शरीरसे मछलीकी गंध आती थी, अतः इसका नाम 'मत्स्यगंधा' पड़ा (ब्रह्मां० ३.१०.५४, ७४; वायु० ७२.२.२१; मत्स्य० अध्याय १४ पूरा, दे० अच्छोदा) । यह वेदव्यासकी माता थी—दे० पराशर । कुछ दिनों पश्चात् इसका विवाह महाराज शांतनुसे हुआ जिसके लिए देवव्रतको भीष्म प्रतिज्ञा करनी पड़ी थी जिसके कारण देवव्रत भीष्मपितामह हो गये—दे० शांतनु, देवव्रत ।

मत्स्यदग्ध–पु० [सं०] त्र्यार्षेय प्रवरप्रवर्तक एक ऋषि । अंगिरा, मुद्गलों और इनका परस्पर विवाह-संबंध नहीं होता है (मत्स्य० १९६.४२) ।

मत्स्यनदी–स्त्री० [सं०] पितरोंके श्राद्धादिके लिए अति उपयुक्त एक पवित्र नदी (मत्स्य० २२.४९) ।

मत्स्यपुराण–पु० [सं०] अठारह पुराणोंमेंसे एक जिसे भगवान् विष्णुने मत्स्यावतारके समय मनुको बतलाया था—दे० पुराण तथा मत्स्य० (२) ।

मत्स्यमांस–पु० [सं०] पितरोंकी तृप्ति हेतु दिया जाता था (विष्णु० ३.१६.१) । कलियुगमें श्राद्धमें मांसका उपयोग निषिद्ध है ।

मत्स्ययोनिजा–स्त्री० [सं०] २८वें द्वापरमें पितृकन्या अच्छोदाका जन्म मत्स्ययोनिमें हुआ जिसके गर्भसे पराशर ऋषिके प्रसिद्ध पुत्र वेदव्यासका जन्म हुआ था (मत्स्य० १४.१३; वायु० ७३.१६) ।

मत्स्यराज–पु० [सं०] चंद्रवंशी एक राजा जिसका मंगल नाम था एवं जो मत्स्यदेशका शासक था (ब्रह्मां० ३.३८.४२; ३९.१) ।

मत्स्याच्छाद्य–पु० [सं०] आंगिरस वंशका त्र्यार्षेय प्रवरप्रवर्तक एक ऋषि (मत्स्य० १९६.१६) ।

मत्स्यासुर–पु० [सं०] पुराणानुसार एक असुरका नाम (हिं० श० सा०) ।

मत्स्योत्सव–पु० [सं०] मार्गशीर्ष शुक्ला द्वादशीको मत्स्यावतारके प्रीत्यर्थ मनाया जानेवाला एक व्रत—दे० स्कंद-पु० वैष्णव० मार्ग-माहात्म्य) ।

मत्स्योदरी–स्त्री० [सं०] वेदव्यासकी माता मत्स्यगंधाका नाम—दे० मत्स्यगंधा, वेदव्यास, पराशर आदि ।

मथन–पु० [सं०] (१) तारकासुरके १० सेनापतियोंमेंसे एक सेनापति जिसका अस्त्र 'पाश' था (मत्स्य० १४८.४३, ५४)। इसने विष्णुके ऊपर भालेका प्रहार किया था (मत्स्य० १५०.२२४)। इसका वाहन घोड़ा था (मत्स्य० १५१.५)। गरुड़को इसके रथको नष्ट कर देनेकी आज्ञा विष्णुने दी थी। यह माधवकी गदासे परास्त हुआ था तथा मरकर गिर पड़ा था (मत्स्य० १५२.७-१४)। (२) शक्त (पुरुष सदाशिव) तथा शक्ति (जगद्धात्री जगदम्बा) का संयोग जिससे पच्चीस तत्त्व उत्पन्न हुए (ब्रह्मां० ४.८. २९, ३३)।

मथित–पु० [सं०] (१) श्वेता और पुलहसे उत्पन्न दस वीर वानरपुंगवोंमेंसे एक वीर वानरपुंगव (ब्रह्मां० ३.७.१७९)। (२) एक भार्गववंशका आर्षेय प्रवरप्रवर्तक (मत्स्य० १९५. ३६)। (३) भरताग्निका एक पुत्र (वायु० २९.८)।

मथुरा–स्त्री० [सं० मधुपुर] (१) मधुपुर = मथुरा जो पुराणानुसार सात पुरियोंमेंसे एक है तथा व्रजमें यमुनाके दाहिने तटपर स्थित है। रामायण (उत्तरकाण्ड)के अनुसार इसे मधु नामक दैत्यने बसाया था। शत्रुघ्नने मधुके पुत्र लवणासुरको हराकर इसे जीता था (भाग० ९.११.१४; ब्रह्मां० ३.६३·१८६; ४.४०.१९; वायु० ८८.१८५-६; विष्णु०४.४.१०१)पालीभाषाके ग्रंथोंमें इसे मथुरा लिखा है। महाभारतकालमें यहाँ सुबाहु तथा शूरसेन वंशियोंका राज्य था, जहाँ वसुदेव तथा देवकीका विवाह हुआ था जिनका आठवाँ पुत्र कंस-वध करेगा यह आकाशवाणी हुई थी (भाग० १०.१.२७-३४; २.४)। श्रीकृष्णका जन्म यहीं हुआ था अतः यहाँ हिन्दुओंके अनेक मन्दिर तथा अनेक कृष्णोपासक वैष्णव सम्प्रदायके आचार्योंका केन्द्र है। पुराणानुसार यह मोक्षदायिनी पुरी है। तीर्थराज प्रयागमें १००० वर्ष निवास करनेसे जो फल होता है वह मथुरामें केवल अगहनमें निवास करनेसे मिल जाता है।

द्वापरके अंतमें यहाँ उग्रसेन राज करते थे जिनका पुत्र कंस अपने श्वसुरकी सहायतासे पिताको कैद कर स्वयं राजा बन बैठा था। श्रीकृष्णका जन्म यहीं हुआ था जिन्होंने बड़े होनेपर कंसका वध कर अपने नाना उग्रसेनको पुनः राजा बनाया था। इसके पश्चात् जरासंधने १८ बार मथुरापर आक्रमण किया जिसके डरसे श्रीकृष्णने मथुरा छोड़ दी (भाग० १०.५३(५)२१–२.५०, ४५, ५३; ७२. ३१)। मुसलमानोंके समयमें भी इस नगरीकी यथेष्ट क्षति हुई थी और बहुत-से ऐतिहासिक स्थान नष्ट कर दिये गये थे। (२) (दक्षिण मथुरा) इसी नामका दक्षिणदेशमें स्थित एक तीर्थस्थान जहाँ तीर्थयात्राके सिलसिलेमें बलराम गये थे (भाग० १०.७९.१५)। (३) नागवंशी राजाओंकी राजधानी। नाग राजाओंमें सात प्रसिद्ध हुए। उन्हीं सातोंने इस रम्य नगरका उपभोग किया था (वायु० ९९.३८३)।

मथुरानाथ–पु० [सं०] श्रीकृष्णका एक नाम (ब्रह्मां० ३. ३६.३१)।

मथुरापीठ–पु० [सं०] यह वेदपुरुषकी ग्रीवामें स्थित कहा गया है (वायु० १०४.८१)।

मंद–पु०[सं०] कैलाशपरकी एक विशाल दिव्य झील जिससे पुण्य मन्दाकिनी नदी निकलती है। इसी नदीके तटपर दिव्य नन्दनवन है (ब्रह्मां० २.१८.३)।

मद–पु० [सं०] (१) दक्षके यज्ञमें जा रही सती देवीके साथ यह मणिमान् आदि अनेक पार्षदों सहित गया था (भाग० ४.४.४)। (२) कलि और सुराका एक पुत्र (ब्रह्मां० ३.५९. ९; वायु० ८४.९)। (३) ब्रह्माके अहंकारसे उत्पन्न एक विकार (मत्स्य० ३.११)। (४) आभूतरय नामक देवगण, जिसमें १४ देव थे, मेंसे एक आभूतरय देवका नाम (वायु० ६५.४०)।

मदगल–पु० [सं०] कौशीति, कंक, मुद्ग आदि नव (९) होत्रवद्ब्रह्मचारियोंमेंसे एक होत्रवद्ब्रह्मचारी (ब्रह्मां० २. ३३.११)।

मदजिह्वा–स्त्री० [सं०] श्री, ह्री, पुष्टि आदि ४८ वर्णशक्तियोंमेंसे एक वर्ण शक्तिका नाम (ब्रह्मां० ४.४४.७३)।

मदधार–पु० [सं०] एक पर्वतका नाम जिसे पूर्व दिशाका दिग्विजय करते भीमसेनने जीता था (महाभा० सभा० ३०.९)।

मदन–पु० [सं०] (१) महादेवके चार अवतारोंमेंसे तीसरा। (२) कामदेवका नाम जिसे मकरध्वज भी कहते हैं (भाग० ११.४.८)। (३) जनार्दनकी स्तुतिके उपरान्त जब ब्रह्माने महालक्ष्मीको देखा तब मदनकी सृष्टि हुई जिसे गन्नेका धनुष तथा पुष्पके बाण दिये गये थे तथा विष्णुने इन्हें कभी परास्त न होने अथवा सर्वदा विजयी रहनेका आशीर्वाद दिया (ब्रह्मां० ४.८.२४.९; ११.८)। इन्होंने सौभाग्य-शयन-व्रत भी किया था (मत्स्य० ६८.४९)। इंद्रादि देवताओंके कहनेपर यह शिवको कामपीड़ित करने गये थे पर शिवने जलाकर भस्म कर दिया (मत्स्य० १५४.२१२-५१, २६०-७०)। (४) वसुदेव और देवकीके सातवें पुत्रका नाम। सुषेण, कीर्त्तिमान् आदि पहले हुए छह पुत्र कंस द्वारा मार डाले गये (मत्स्य० ४६·१९)।

मदनक–पु० [सं०] भंडका एक सेनापति जिसे विषंगकी सहायताके लिए भेजा गया था (ब्रह्मां० ४.२१.७८; २५.२७)।

मदनचतुर्दशी–स्त्री० [सं०] चैत्र सुदी चतुर्दशी—दे० मदनमहोत्सव।

मदनत्रयोदशी–स्त्री० [सं०] चैत्र सुदी त्रयोदशी—दे० मदनमहोत्सव।

मदनद्वादशी–स्त्री० [सं०] चैत्र शुक्ला द्वादशी जिस दिन पुत्रकामनार्थ व्रत किया जाता है, जिसे दितिने किया था तथा जिस दिन पुराणानुसार मदनोत्सव आरभ होता है (मत्स्य० ७.७-२६; २९१.३)।

मदनप्रिया–स्त्री० [सं०] कश्यप और अरिष्टाकी आठ पुत्रियाँ अप्सराओंमेंसे एक अप्सराका नाम (वायु० ६९.४८)।

मदनमहोत्सव–पु० [सं०] (१) प्राचीन कालका एक उत्सव जो चैत्र शुक्ला द्वादशीसे चतुर्दशीतक मनाया जाता है। इसमें व्रत, कामदेवकी पूजा, गीत-वाद्य और रात्रि-जागरण आदि करते हैं—दे० धर्मशास्त्रसमुच्चय।

मदना–स्त्री० [सं०] सर्वसंक्षोभण नामक मन्दिरमें स्थित परमेश्वरी ललितादेवीकी सेविका कुसुमा आदि आठ शक्ति देवियोंमेंसे एक शक्ति देवी (ब्रह्मां० ४.३६.७६)।

मदनातुरा–स्त्री [सं०] पूर्वोक्त आठ शक्ति देवियोंमेंसे एक शक्तिदेवी (ब्रह्मां० ४.३६.७६)।

मदयंती–स्त्री० [सं०] अयोध्यापति सौदास, जिनका गुरुके शाप देनेपर बदलेमें उन्हें शाप देनेके लिए हस्तगृहीत जलको रानीके मना करनेपर पैरोंपर छोड़नेके कारण कल्मापपाद नाम हुआ, की रानीका नाम। कल्मापपाद अपनी राक्षस-स्थितिमें स्त्रीप्रसंगरत एक ब्राह्मणको खा गये थे अतः मृत ब्राह्मणकी स्त्रीने इन्हें स्त्री-प्रसंगसे मृत्युका शाप दिया था। यह निःसंतान थे अतः वशिष्ठके नियोगसे मदयंती गर्भवती हुई पर सात वर्षोंतक प्रसव न हुआ। तदुपरांत एक पत्थरकी सहायतासे बच्चा पैदा हुआ जिसका नाम अश्मक पड़ा (अश्मक=पत्थर) (भाग० ९-९.२०-४०; ब्रह्मां० ३.६०.१७७; विष्णु० ४.४.७२, ७३)।

मदालसा–स्त्री० [सं०] विश्वावसु गंधर्वराजकी पुत्रीका नाम। कहते हैं वज्रकेतुके पुत्र पातालकेतु दैत्यने मदालसाको उठा लेजाकर पातालमें रखा था (मार्कण्डेयपु०)। एक दिन राजा शत्रुजित्के पुत्र ऋतुध्वजने जो उन दिनों गालव ऋषिके आश्रममें रहते थे पातालकेतुको उसके उपद्रवोंसे तंग आकर मार दिया और मदालसासे उन्होंने विवाह कर लिया। कुछ दिनोंके बाद पातालकेतुके भाई तालकेतुने छलसे ऋतुध्वजका हार ले उनके पिताको ऋतुध्वजके असुरों द्वारा मारे जानेका झूठा संदेश दे दिया। इससे मदालसाने शोकमें प्राण दे दिये। लौटनेपर ऋतुध्वज पत्नीकी मृत्युसे सदा चिंतित रहा करते थे। यह देख नागराज अश्वतरने अपने पुत्रोंके कहनेसे मदालसा तुल्य एक दूसरी कन्या उत्पन्नकर ऋतुध्वजको प्रदान की। इसके चार पुत्र हुए जिनमें पहिले तीन बिलकुल विरक्त थे, अतः चौथा पुत्र अलर्क ही गद्दीपर बैठा और राजाने सपत्नीक वानप्रस्थ आश्रम ग्रहण किया (मार्कण्डेयपु० अलर्कोपाख्यान, २१.१०२; २२.२५, २७-३४, ४१-४५; २३.२०, २७६-११, १२—३२; २९.३१, ३५; ३१.६४; ३४.१८)।

मदिरा–स्त्री० [सं०] (१) वरुणकी पत्नी वारुणीका एक नाम जो सुराकी अधिष्ठात्री देवी है (विष्णु० ५.२५.३)। (२) वसुदेवकी एक पत्नी जिससे नंद, उपनंद आदि कई पुत्र उत्पन्न हुए थे (भाग० ९.२४.४५, ४८; ब्रह्मां० ३.७१.१६१, १७१–२; वायु० ९६.१००; विष्णु० ४.१५.१८, २३)। (३) क्षीरसागरके मंथनसे इसकी उत्पत्ति कही गयी है (मत्स्य० २५१.२)। बलराम इसके बड़े प्रेमी थे (विष्णु० ४.१३.१५७)।

मदिरासिंधु–पु० [सं०] जिसे सुरासिधु, सिंधुराज, सुराम्बुधि, सुधाम्बुधि तथा मैरेयसिंधु भी कहते हैं जो गिरिचक्ररथका एक देवता है (ब्रह्मां० ४.२०.७३; २८.५७-६२, ७८-९१)।

मदोत्कट–पु० [सं०] भंडके एक सेनापतिका नाम (ब्रह्मां० ४.२१.८८)।

मदोत्कटा–स्त्री० [सं०] चैत्ररथमें स्थापित सती देवीकी एक मूर्तिका नाम (मत्स्य० १३.२८)।

मदोद्धता–स्त्री० [सं०] अन्धकासुरके रक्तपानके लिए शिवजी द्वारा सृष्ट कई मानसपुत्री मातृकाओंमेसे एक मानसपुत्री मातृकाका नाम (मत्स्य० १७९;२२)।

मद्गुरक–पु० [सं०] पूर्वी जनपदोंमेंसे एक जनपदका नाम (मत्स्य० ११४. ४४)।

मद्य–पु० [सं०] (मद्य=शराब) ब्राह्मणोंको पीनेपर प्रायश्चित्तका विधान है पर देवियों तथा शक्तिकी उपासनामें उपासकों द्वारा व्यवहृत माना गया है (ब्रह्मां० ४.७.६६; ७३-६; ८. ४१)।

मद्रक–पु० [सं०] (१) मद्रकगण। एक जाति विशेष जिसे विश्वस्फूर्जि (ब्रह्मा० विश्वस्फाणि) पुरंजयने शासकोंकी श्रणीमें परिवर्तित कर दिया था (ब्रह्मां० ३.७४.१९१; मत्स्य० ११४.४१)। (२) भारतके उत्तरके अनेक जनपदोंमेंसे एक जनपदका नाम (भाग० १२.१.३६)। ये लोग भीमके दिग्विजयके समय उनके साथ थे (भाग० १०.७२.१३)। (३) शिविके चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्र जिसके राज्यका नाम माद्रक (मद्रक) था (भाग० ९.२३.३; ब्रह्मां० ३.७४.२३; विष्णु० ४.१८.१०; वायु० ९९.२३-२४)।

मद्रदेश–पु० [सं०] व्यास और चिनावके बीचके देशका नाम जहाँकी राजधानीका नाम सकल था। चाक्षुष मन्वंतरमें यहाँके राजा पुरूरवा थे (मत्स्य० ११५.७; ११८.४८.७७)।

मद्रव (मद्रवा)–एक पवित्र पर्वत (नदी)का नाम (ब्रह्मां० ३.१३.५२.५८)।

मद्रसुता–स्त्री० [सं०] नकुल और सहदेवकी माता—दे० माद्री।

मद्रा–स्त्री० [सं०] (१) अत्रिकी दस पत्नियों, जो घृताची अप्सरा और भद्राश्व (वायु० ९९.१२४में यही रौद्राश्व कहा गया है)की पुत्रियाँ थी मेंसे एक जो सोमकी माता थी (ब्रह्मां० ३.८.७५; वायु० ७०६८)। (२) विंध्याचलसे निकली १३ नदियोंमेंसे एक नदीका नाम (वायु० ४५.१०८)।

मद्रेश–पु० [सं०] महाभारत युद्धमें यह दुर्योधनकी सेनामें था और सूर्यग्रहणपर स्यमंतपंचक गया था (भाग० १०.७८(९५(५)१६); ८२.२६)।

मधु–पु० [सं०] (१) लवणासुरका पिता एक दैत्य (भाग० ९.११.१४) जिसका वध करनेके कारण विष्णुका नाम "मधुसूदन" पड़ा था (भाग० ७.९.३७; १०.४०.१७; (ब्रह्मां० २.३७.२; ३.६३.३८; ४.२९.७५)। (२) विन्दुमान् तथा संघाका एक पुत्र तथा वीरव्रतका पिता (भाग० ५.१५.१५))। (३) कार्तवीर्यार्जुनके १०० पुत्रोंमें बचे पाँच पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (शेष सब युद्धमें मारे गये थे) जिसके १०० पुत्र थे जिनमें वृष्णि सबसे बड़ा था (भाग० ९.२३.२७,२९; विष्णु० ४.११.२१)। (४) देवक्षत्र (देवक्षेत्र=मत्स्य० तथा विष्णु०)का एक पुत्र तथा कुरुवंश (पुरवश=मत्स्य०, कुमारवंश=विष्णु०)का पिता (भाग० ९.२४.५; मत्स्य० ४४.४४; विष्णु० ४.१२.४२)। (५) श्रीकृष्णका एक पुत्र (भाग० १०.९०.३३)। (६) एक पवित्र मास जिसमें धातानात्मक सूर्य तपते हैं (भाग० १२.११.३३; मत्स्य० ५३.४१) एवं जिसमें वराहपुराणका दान देना शुभ माना गया है (भाग० १६४.२११)। यह मास ऋतुओंके राजा वसन्तका ही एक अंश है जो कामदेवका

साथी है (मत्स्य० १५४.२४६; वायु० ३०.४१.५०.२०१)। चैत्र और वैशाख ये दो महीने वर्षकी ६ ऋतुओंमें प्रथम ऋतुके हैं (ब्रह्मां० २.१३.४,९; वायु० ३०.८; ३१,४९, ४५, २७; ५८.२०१; ५२.५)। (७) चाक्षुप युगके सप्तर्पियोंमेंसे एक ऋषि (आत्रेय) (ब्रह्मां० २.३६.७८; वायु० ६२.६६; विष्णु० ३.१.२८)। (८) प्रहेतिके दो पुत्रोंमेंसे एक पुत्र राक्षस (ब्रह्मां० ३.७-१३३)। (९) खशा तथा कश्यपके लालावि आदि अनेक राक्षस पुत्रोंमेंसे एक राक्षस पुत्र (ब्रह्मां० ३.८.१३३; वायु० ६९.१६६)। (१०) देवनका एक पुत्र तथा नंदन, मनु, महापुरुवश तथा मनुवशका पिता (ब्रह्मां० ३.७०.४६; वायु० ९५.४५)। (११) मरीचि देवगण, जो संख्यामें १२ थे, मेंका एक मरीचि देव (ब्रह्मां०५.१.५८)। (१२) औत्तम मनुके १० पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (मत्स्य० ९.१२)। (१३) एक राक्षस जिसने नारायणपर आक्रमण किया और विष्णु द्वारा मारा गया (मत्स्य० १३५.४९; १७८.६.१८)। (१४) विष्णुका एक मानस पुत्र (मार्कण्डेयपु०के अनुसार विष्णुके कानके मलसे उत्पन्न) जो कैटभके साथ उत्पन्न हुआ था तथा रज और तम गुणोंका प्रतिनिधित्व करता था (मत्स्य० १७०.१)। इसने क्षीरसागरमें सोये हुए विष्णुकी नाभिसे निकले (ब्रह्मासन) कमलनालको कैटभके सहयोगसे हिलाया तब मारे भयके ब्रह्माने विष्णुकी स्तुति की। भू, भुव तथा स्वर्का ब्रह्मामें प्रवेश हुआ। अनन्त भगवान्‌के मुँहसे विष्णु तथा जिष्णुने प्रादुर्भूत हो मधु कैटभसे युद्ध किया जिसमें ब्रह्मा मध्यस्थ बने पर युद्ध हजारों वर्षोंतक बन्द नहीं हुआ। अंतमें ब्रह्मा ध्यानमग्न हो गये और इसी बीच मोहिनी अथवा विष्णुमाया प्रकट हुई तथा मधु और कैटभ दोनों मारे गये। ब्रह्माने तब चार प्रकारके प्राणियोंकी सृष्टि करनेकी अनुमति माँगी और इसी हेतु वह ध्यानमग्न हो तपमें लीन हो गये। उनके क्रोध तथा अश्रुबिन्दुओंसे कफ, पित्त, वायु आदि तथा सर्प आदिकी उत्पत्ति हुई। मारे दुःखके ब्रह्माने अपनेको धिक्कारा कि मेरे तपसे इस प्रकारकी जगत्-दुःखदायी सृष्टि हुई। मारे क्रोधके वह संज्ञाहीन पड़ गये और तदुपरांत ब्रह्माके मुखसे ग्यारह प्रकारके रुद्र उत्पन्न हुए तथा उन्होंने ब्रह्माको पुनः जीवित किया। सृष्टि करनेमें उनकी सहायता पुत्रवत् की (वायु० २५.३०-८०)। (१५) धर्म और विश्वेशा (विश्वा)के १० विश्वेदेव पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (मत्स्य० १७१.४९)। (१६) श्राद्धमें पितरोंके अशनके लिए उपयुक्त होनेवाला पदार्थ अर्थात् मधु (शहद) (मत्स्य० २०४.५, ७)। देवताओंके स्नानके लिए पंचामृतमें भी इसका उपयोग होता है (मत्स्य० २६६.५१.५५) गयामें श्राद्धादिके लिए उपयोगी एक वस्तु (वायु० ३०.१५१; ५६.१२.१०५, ३४)। (१७) लांगली, जो विष्णुके अवतार थे,के चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (वायु०२३.२००)। (१८) वृषका पुत्र तथा वृष्णिप्रमुख १०० पुत्रोंका पिता (विष्णु० ४.११.२६-७,२९)।

मधुक–पु० [सं०] कई मध्यमाध्वर्युओंमेंसे भार्गव कुल-का एक मध्यमाध्वर्यु (ब्रह्मां० २.३३.१६)।

मधुकतृतीया–स्त्री० [सं०] फाल्गुन कृष्णा ३को होनेवाला एक पर्व जिस दिन उमा पार्वतीका पूजन होता है—दे० पुराणसमुच्चय।

मधुकसा–स्त्री० [सं०] एक वेदोक्त देवी जिसे वसुओंकी पुत्री तथा आदित्योंकी माता लिखा है। यह मरुतोंकी पौत्री है।

मधुकुंभा–स्त्री० [सं०] कुमार कार्त्तिकेयकी अनुचरी एक मातृकाका नाम (महाभा० शल्य० ४६.१९)।

मधुकुल्या–स्त्री०[सं०] (१) कुशद्वीपकी सात मुख्य नदियोंमसे एक नदीका नाम (भाग० ५.२०.१५)। (२) गयामें विष्णुपदके सान्निध्यमें स्थित अनेक देवतीर्थोंके साथ स्थित कई नदियोंमेंसे एक नदीका नाम (वायु० १०९.१७; ११२.३०)।

मधुकृष्णा–स्त्री० [सं०] वासंतचक्रके मध्यमें स्थित ३० शक्तियोंमेंसे १५ शक्तियाँ (ब्रह्मां० ४.३२.५२)।

मधुकैटभ–पु० [सं०] मधु और कैटभ नामके दो दैत्य थे जिन्हें विष्णुने मारा था। कैटभ मधुका भाई था—दे० मधु।

मधुगण–पु० [सं०] एक जाति विशेष जिसके अधिपति श्रीकृष्ण थे (भाग० १.८.४२)। ये पाण्डवोंके संबंधी थे (भाग० १.१४.२५; ९.२४.६३) तथा इन्होंने द्वारकाकी रक्षा की थी (भाग० १.११.११)। कहते हैं विष्णुने इनकी वीरताकी प्रशंसा की थी (भाग० ९.२४.६३)। ये आपसमें गृहयुद्ध कर मर गये थे (भाग० ११.३०.१८)।

मधुच्छंदा–पु० [सं०] विश्वामित्रजीके १०१ पुत्रोंमें बीचवाले एक पुत्रका नाम जो ऋग्वेदके अनेक मन्त्रोंके द्रष्टा थे (भाग० ९.१६.२९; विष्णु० ४.७.३८; वायु० ९१.९६)। यह युधिष्ठिरके राजसूय यज्ञमें आमंत्रित थे (भाग० १०.७४.९) तथा १३ ब्रह्मिष्ठ कौशिकोंमेंसे एक कौशिक ब्रह्मिष्ठ थे (मत्स्य० १४५.११२)।

मधुजा–स्त्री० [सं०] पृथ्वी, पुराणानुसार पृथ्वीकी उत्पत्ति मधुराक्षसकी मेदासे हुई थी दे० मधु तथा भाग०।

मधुदंष्ट्री–स्त्री० [सं०] अन्धकासुर रक्तपानके लिए शिवजी द्वारा सृष्ट कई मानस पुत्री मातृकाओंका अन्धकासुर-विनाशके अनन्तर जगत्-उत्पीड़क उत्पात देख शिवजी द्वारा प्रार्थित नृहरिरूप भगवान्‌के विभिन्न अंगोंसे उत्पन्न ३२ मातृकाओंमेंसे मायाकी अनुगामिनी एक देवी (मत्स्य० १७९.७०)।

मधुधेनु–स्त्री० [सं०] विशोक-द्वादशी व्रतमें, मधुमें धेनुकी कल्पना करके दान देनेका बड़ा माहात्म्य है (मत्स्य० ८२.१९)।

मधुनंदि–पु० [सं०] अंगोंमें नंदनका उत्तराधिकारी एक राजा जिसका भाई नन्दियशा था (वायु० ९९.३३९)।

मधुप–पु० [सं०] अजित देवगण, जो संख्यामें १२ थे,मेंका एक अजित देव (ब्रह्मां० २.१३.९४; वायु० ३१.७)।

मधुपर्क–पु०[सं०] एक स्वादिष्ट पेय जिसे दही, शहद, जल, घी और चीनी मिलाकर बनाते हैं। यह पूजाके सोलह उपचारोंमेंसे एक है जिससे देवता बहुत प्रसन्न होते हैं। इसके दान देनेसे सुख और सौभाग्य प्राप्त होता है (मत्स्य० २३०.११)। अगस्त्य ऋषिने इसीसे परशुरामका स्वागत किया था (ब्रह्मां० ३.३५.५२)।

मधुपात्र–पु० [सं०] कामेश्वरको इन्द्र द्वारा प्रदत्त एक विवाहोपहार (ब्रह्मां० ४.१५.२२)।

मधुपिंग—पु० [सं०] पुराणानुसार एक मुनिका नाम।

मधुपुरी—स्त्री० (सं०) मथुराका एक नाम (भाग० ७.१४.३१; १०.१.१०)।

मधुफला—स्त्री० [सं०] एक प्रकारके पौराणिक वृक्ष जो उत्तर कुरुमें उत्पन्न होते हैं एवं सदा फूल और फलोंसे लदे रहते हैं जिनसे वस्त्र रत्नादि भी प्राप्त होते है (ब्रह्मां० २.१५.७२; वायु० ४५.१२)।

मधुबन—पु० [सं०] (१) व्रजका एक प्रमिद्ध वन (भाग०)। (२) सुग्रीवके बगीचेका नाम जो अंगूरके लिए प्रसिद्ध था (रामच० मानस० सुंदर का० २७.४, २८)। —दे० मधुवन।

मधुब्राह्मण—पु० [सं०] श्राद्धोंमें इसका पाठ किया जाता है (मत्स्य० १७.३९)।

मधुमती—स्त्री० [सं०] (१) मधु दैत्यकी पुत्री जो हर्यश्वको व्याही थी—दे० (भाग० तथा ब्रह्मां०)। (२) पुराणानुसार नर्मदाकी एक सहायक नदी जो लुप्त हो गयी है।

मधुमान्—पु० [सं०] शीतोदके पश्चिमका एक पहाड़ (वायु० ३०.२८)। काश्मीरके समीप स्थित एक देशका नाम (महाभा० भीष्म० ९.५३)।

मधुर—पु० [सं०] स्कंदके एक सैनिक अनुचरका नाम (महाभा० शल्य० ४५.७१)।

मधुरा—पु० [सं०] दे० मथुरा (ब्रह्मां० ३.४९.६; विष्णु० १.१२.३; ४.४.१०१)।

मधुरावह—पु० [सं०] आर्षेयप्रवर (अंगिरस-वंशका) पञ्चार्षेय-प्रवरप्रवर्तक एक ऋषि (मत्स्य० १९६.२२)।

मधुरिपु—पु० [सं०] श्रीकृष्णने मधु नामक दैत्यको मारा था इसलिए तत्प्रयुक्त उनका एक नाम (विष्णु० ४.१३.४८)।

मधुरुह—पु० [सं०] क्रौंचद्वीपाधिपति घृतपृष्ठके सात पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (भाग० ५.२०.२१)।

मधुरोदक—पु० [सं०] पुराणानुमार पुष्करद्वीपके चारों ओरका समुद्र। यह सात समुद्रोंमेंसे एक हैं जिसका जल मीठा है (भाग०)।

मधुवटी—स्त्री० [सं०] कुरुक्षेत्रकी सीमामें स्थित एक प्राचीन तीर्थका नाम। यहाँके देवतीर्थमें स्नान, सन्ध्या, तर्पण और श्राद्ध करनेसे मनुष्योंको १००० गोदानका फल प्राप्त होता है (महाभा० वन० ८३.९४)।

मधुवन—पु० [सं०] (१) मथुराके पासय मुना तटपर स्थित एक प्रसिद्ध वन जहाँ अम्वरीषने महामिपेक विधिके अनुसार अभिपेकसे विष्णुकी स्तुति की थी। यहाँ मधु और लवण रहते थे (ब्रह्मां० ३.६३.१८६; वायु० ८८.१८५)। लवण नामक दैत्यको शत्रुघ्नने मारकर इसी स्थानपर मधुपुरी बसायी थी (भाग० ९.४.२९-३१; ११.१४; विष्णु० १.१२.२-४) तथा जहाँ भक्त बालक ध्रुवने उग्र तपस्या कर भगवान् विष्णुको प्रसन्न किया था जिसे वर देनेके लिए यहाँ विष्णु पधारे थे (भाग० १.१०.२६; ४.७.४२, ६२, ९.१)। (२) किष्किंधाके पासका सुग्रीवका बगीचा जहाँ सीताका समाचार लेकर लौटनेपर अंगद, हनुमान् आदिने मधुपान किया था (रामच० मा० सुन्दरका० २७.४-२८)।

मधुवर्ण—पु० [सं०] कुमार कार्तिकेयके एक सैनिक अनुचरका नाम (महाभा० शल्य० ३४.७१)।

मधुवाही—पु० [सं०] एक प्राचीन नदका नाम—दे० (महाभा०)।

मधुशुक्ला—स्त्री० [सं] कल्पकी वाटिकाकी रक्षिका ललिता देवीकी आज्ञापालक पुष्पसिंहासनमें विराजमान वासंतचक्रमें स्थित ३० शक्तियोंमेंसे १५ शक्तियाँ (ब्रह्मां० ४.३२.४९-५३)।

मधुश्री—स्त्री० [सं०] वसंत ऋतुकी दो रानियोंमें एक रानी (ब्रह्मां० ४.३२.२३.४६)।

मधुसूदन—पु० [सं०] मधुदैत्यको मारनेके कारण विष्णुका एक नाम। श्रीकृष्णका एक नाम (ब्रह्मां०३.६१.५२,२०८; मत्स्य०७.१५; ९.१; १६.३; विष्णु० ३.७.१४-६; ५.५.२१; ६.१; ७.५; १२.५; १३.१७; २०.७४,८५; २१.९; २६.११; ३१.१८; ३३.१७)। हिमालयपर इनका मंदिर है जहाँ पुरूरवा गये थे। इन्हें मधुद्विट् भी कहते हैं (विष्णु० ५.३३.३६, ३९; ३४.३४; ३७.१५; ६.४.६)। मधुसूदन-पूजा वैशाख शुक्ला १२ को होती है जिसका फल "अग्निष्टोमयज्ञ"के समान है (महाभा० वन० २०७.१६; दानधर्म तथा हेमाद्रि)।

मधुस्कंद—पु० [सं०] पुराणानुसार एक प्राचीन तीर्थका नाम।

मधुस्यंद—पु० [सं०] विश्वामित्र मुनिके एक पुत्रका नाम—दे० विश्वामित्र।

मधुहा—पु० [सं०] विष्णुका एक नाम—दे० मधुसूदन (भाग० १०.६.२३)।

मधौरेय—पु० [स०] केतुमाल देशका एक जनपद (वायु० ४४.१४)।

मध्य—पु० [सं०] (१) रिष्टाके पुत्र १० देवगन्धर्वोंमेंसे एक गन्धर्वका नाम (ब्रह्मां० ३.७.११)। (२) संख्याविशेषका नाम १०००००००×१०००×१०००० = मध्य १०००×करोड़×प्रयुत (अयुत = वायु०), (वायु०१०१.०८; ब्रह्मां० ३.२.९८, १०२)।

मध्यदेश—पु० [सं०] मनुस्मृतिके अनुसार हिमालय और विंध्याचलके बीचका प्रदेश जिसकी पश्चिमी हद विनशन (जहाँ सरस्वती नदी विलुप्त हो जाती हैं) और पूर्वी हद प्रयाग है, पर कुछ इसे दोआबतक ही कहते हैं। यह इक्ष्वाकुका राज्य था (ब्रह्मां० ३·७३.१०७; मत्स्य० १२.१९; वायु० ५८.७१; ९७.१०६)। दिवाकरके समयमें अयोध्या इसकी राजधानी थी (मत्स्य० ११४. ३६; २७१.५)। भारतवर्षके तीन विभागोंमेंसे एक (ब्रह्मां० २.३१.८१; ३५.११; विष्णु० २.३.१५)।

मध्यंदिन—पु० [सं०] (१) पुष्पार्ण तथा प्रभाके तीन पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (भाग०४.१३.१३)। (२)याज्ञवल्क्यके एक शिष्यका नाम जो एक वाजी (यजुर्वेदकी वाजसनेयीशाखावाला) था (वायु० ६१.२५; ब्रह्मां० २.३५.२९)।

मध्यम—पु० [सं०] (१) अठारहवाँ कल्प जिसमें मध्यम स्वरकी उत्पत्ति हुई (वायु० २१.३८)। (२) एक स्वर जो धैवतका पूज्य पवित्र स्वर है (वायु० २१.३९)।

मध्यममार्ग—पु० [सं०] बीचका मार्ग जिसमें आर्षभीवीथी, गोवीथी तथा जारद्गवीथी सम्मिलित हैं (ब्रह्मां० ३.३.

५१)।

मध्यमात्रेय–पु० [सं०] पुराणानुसार एक ऋपिका नाम।

मध्याह्न–पु० [सं०] (१) कालकी प्रत्यूप, पितृप्रसू आदि पाँच शक्तियोंमेंसे एक शक्ति (ब्रह्मां० ४.३३.१०)। (२) १२से १८ नालिकातक (वायु० ५०.९९; ५६.५६) जब सूर्य संगवसे तीन मुहूर्त्त आगे चल लेता है (वायु० ५०.१७२)।

मध्वमा–स्त्री० [सं०] वासंतचक्रस्थित ६० शक्तिदेवियोंमेंसे एक शक्तिदेवीका नाम (ब्रह्मां० ४.३२.५७)।

मध्वाचार्य–पु० [सं०] दक्षिण भारतके एक प्रसिद्ध वैष्णव आचार्य जो मध्वसंप्रदायके प्रवर्तक थे। ऋग्वेदके 'बलित्था' सूक्त तथा कई पुराणोंके आधारपर यह वायुके तीसरे अवतार माने जाते थे और तेरहवीं सदीमें हुए थे। इनका समय संवत् १२९५से १३७४ (ई० सन् १२३८से १३१७) था। यह नारायणभट्ट और वेदवतीके पुत्र थे और इनका जन्म पिङ्गल संवत्सरकी आश्विन शुक्ला १० (वजयादशमी)को हुआ था। पाँचवें वर्षमें इनका उपनयन हुआ और आठवें वर्षमें अच्युत प्रेक्षतीर्थसे बाल संन्यास-दीक्षा मिली। वचपनका इनका नाम वासुदेव था पर दीक्षाके बाद यह मध्वाचार्य हुए। इनका मूलमठ उडुपीका श्रीकृष्णमठ है। इनके बनाये कुल ३७ ग्रंथ हैं। इनके मत तथा सिद्धान्तोंके लिए इनके गीताभाष्य, ब्रह्मसूत्र-तात्पर्य-बोधक अनुव्याख्यान तथा ब्रह्मसूत्रानुभाष्य द्रष्टव्य है।

मध्वी–स्त्री० [सं०] जया नामके समुद्रतुल्य १२ झीलोंसे निकली दो नदियोंमेंसे एक नदी (मत्स्य० १२१.७७)।

मन–पु० [सं०] (१) ग्यारहवीं इन्द्रिय जो कर्मेन्द्रिय और ज्ञानेन्द्रियोंकी अधिष्ठात्री समझी जाती है। सृष्टि करनेकी इच्छा होते ही यह सृष्टिमें संलग्न हो जाती है (ब्रह्मां० २.९.१, ७; ४.३.२२; मत्स्य० ३.२१)। (२) जयदेवगणके १२ देवोंमेंसे एक जयदेव (ब्रह्मां० ३.३.७; ४.३; वायु० ६६.१८)। (३) साध्यदेव जो संख्यामें १२ हैं, गणमेंका एक साध्यदेव ब्रह्मां० ३.३.१६; वायु० ६६.१५)। (४) तुपितदेवगण, जिसमें १२ देव हैं, मेंका एक तुषितदेव (ब्रह्मां० ३.३.१९; वायु० ६.६.१७)। (५) श्रीपुरम्की सहस्रस्तंभशालासे संलग्न एक शाला जो अपनी अमृतवापीके लिए विख्यात है। इसका जलपान करनेसे योगी और सिद्धोंका शरीर पुष्ट हो जाता था (ब्रह्मां० ०.३५. २-२४)। (६) शतरूपाकी सात सन्तानोंमेंसे एक पुत्र (मत्स्य० ४.२५)। (७) २६वाँ कल्प; जो देवी शंकरीका यमजरूप हो गया था (वायु० २१.५९)। (८) महान्के बुद्धि आदि कई नामोंमेंसे एक (दूसरा) नाम (वायु० १०२.२१)।

मनसा–स्त्री० [सं०] एक देवी विशेषका नाम जो पुराणानुसार कश्यपकी पुत्री थी और जरत्कारु मुनिको ब्याही थी। वासुकि नाग इनका भाई था और आस्तीक इनका पुत्र। सर्पोंके विप उतारनेकी एक विशेष शक्ति इनमें थी अतः इनको विपहरा भी कहते थे।

मनसिज–पु० [सं०[कामदेवका एक नाम—दे० कामदेव।

मनस्ताल–पु० [सं०] श्रीदुर्गादेवीके सिंहका नाम (देवी-भाग०)।

मनस्तोका–स्त्री० [सं०] श्रीदुर्गाजीका एक नाम (देवी-भाग०)।

मनस्य–पु० [सं०] भव्य देवगणमेंके आठ भव्य देवोंमेंसे एक भव्य देव (ब्रह्मां० २.३६.७१)।

मनस्यु–पु० [सं०] (१) पुरुके वंशज प्राचीतत, जिसने प्राचीका निर्माण किया,का पुत्र तथा पीतायुधका पिता (मत्स्य० ४९.२)। (२) अविद्धका पुत्र तथा जयदका पिता (वायु० ९९.१२१)। (३) महांतका पुत्र तथा त्वष्टाका पिता (विष्णु० २.१.३९)। (४) प्रवीरका एक पुत्र तथा अभयदका पिता (विष्णु० ४.१९.१)।

मनस्विक–पु० [सं०] कश्यप और कद्रूके पुत्र हजार नागोंमेंसे कतिपय प्रधानकाद्रवेय नागोंमें एक नागका नाम (वायु० ६९.७३)।

मनस्विनी–स्त्री० [सं०] (१) मृकंडु ऋपिकी पत्नी तथा मार्कण्डेयकी माताका नाम (वायु० २८.५; ब्रह्मां० २.११.७)। (२) सोमकी माता तथा प्रजापतिकी एक पत्नी। (३) उत्तानपादकी दो पुत्रियोंमेंसे एक पुत्री और अंतिनारकी पत्नी तथा अमूर्तरया, त्रिवन दो पुत्रों और गौरी नामक पुत्रीकी माताका नाम (ब्रह्मां० २.३६.९०; मत्स्य० ४९.७; वायु० ६२.७६)।

मनावी–स्त्री० [सं०] मनुजीकी पत्नीका नाम।

मनु–पु० [सं०] (१) ब्रह्माके पुत्र और मनुष्योंके मूल पुरुष। वेदोंके अनुसार मनुको यज्ञोंका आदि प्रवर्तक माना जाता है। शतपथब्राह्मणके अनुसार एक मछलीने मनुसे प्रलयकी बात कही थी और अंतमें इन्हींसे सृष्टि चली—दे० मत्स्य। पुराणानुसार एक कल्पमें १४ मनु होते हैं जिनके अधिकार कालको मन्वंतर कहते हैं। मनुस्मृतिके अनुसार मनु विराट्के पुत्र थे और मनुसे प्रजापतियोंकी उत्पत्ति हुई थी (नारदपु० पूर्वभाग, प्रथम पाद; विष्णु० ३.१.१६, १७)। (२) धिषणा तथा कृशाश्वके तीन पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (भाग० ६.६.२०)। (३) एक प्रवर (मत्स्य० १९६.३०)। (४) साध्या और धर्मके पुत्र १२ साध्यदेवोंमेंसे एक साध्यदेव (मत्स्य० २०३.११)। (५) एक धर्मशास्त्रके प्रवर्तक जिनकी रची मनुस्मृति प्रसिद्ध है। गौके लिए काटी गयी घास अदंडनीय है, उसी प्रकार देवताओंके लिए उद्यानसे तोड़े पुष्प भी अदंडनीय हैं (मत्स्य० २२७.२७, ३२, ११३)। (६) वरुत्रीके पुत्रोंने इनसे देवताओंके नैवेद्योंको नष्ट करनेके लिए प्रार्थना की थी, पर इन्द्रने रोका था (वायु० ६५.७९)। (७) विरोचनपुत्र बाष्कलके चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (वायु० ६७.७९)। (८) अग्निवर्णसुत शीघ्रकका पुत्र जिसने योगबलसे अपनेको कलापग्राममें स्थापित कर लिया था (वायु० ८८.२१०)। (९) देवनसुत मधुके ४ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (वायु० ९५.४५)। (१०) (रैवत) पाँचवें मनु जो प्रियव्रतके पुत्र तथा तामस मनुके भाई थे और बलि, विन्ध्य आदि इनके पुत्र थे। विभु उस मन्वंतरके इन्द्र थे तथा भूतरया देवता थे। इस मन्वंतरमें वैकुंठ ही विष्णुका रूप था (भाग० ५.१.२८; ८.५.२-५)। देवबाहु आदि सप्तर्षि थे, पृथ्वीके

दोहनमें ये बछड़ा बने थे (ब्रह्मां० २.३६.३, ५१.६४; ३७.१७.८)। (११) चाक्षुष मनु, विश्वकर्मा (विश्वेश = मत्स्य०) तथा कृतीके पुत्र जो विश्वेदेव और साध्योंके पिता थे (भाग० ६.६.१५; मत्स्य० १७१.४८)। (१२) मनु सावर्णि, आठवें मनु जो छाया और विवस्वान्के पुत्र थे तथा निर्मोक आदिके पिता। इस मन्वंतरमें सुतप, विरज, अमिताभ तथा मुख्य देवता थे, बलि इन्द्र थे तथा गालव, कृप, राम आदि सप्त ऋषि थे। विष्णुका सार्वभौम रूपमें अवतार हुआ था (भाग० ६.६.४१; ८.१३.११-७; २२.३१; विष्णु० ३.२.४; १३.१९)। इन्हें नारदने भगवान्के रहस्यकी दीक्षा दी थी तथा यह नरनारायणकी उपासना करते थे (भाग० ५.१९.१०)। आदि रूपमें यह श्रुतश्रवा:थे तथा मेरुपर आज भी तपस्या कर रहे हैं (ब्रह्मां० ४.१.२८; ३.५९.४९, ८०)। (१३) मनु स्वायंभुव—ब्रह्माके प्रथम पुत्र तथा प्रथम सम्राट् और विराट्। इन्होंने सात समुद्रोंसे घिरी पृथ्वीपर वर्हिष्मती राजधानीसे राज्य किया, यह विप्रराजर्षि थे तथा पितासे वेदकी शिक्षा पायी थी। शतरूपा इनकी पत्नी तथा प्रियव्रत, उत्तानपाद पुत्र थे और देवहूति, आकूति तथा प्रसूति पुत्रियाँ थीं। अनंतासे इनके आठ पुत्र और हुए थे (भाग० ८.१.१.५, ७, ११.१४.४; ३.२०, १, १०; २१.१-३, २५-२६; २२.२६-९; ६.१.३; ब्रह्मां० २.१३.१०५; मत्स्य० ३.४४-५; ४-३४; १४५.९०; वायु० ३.२, ३६; २३.४७; ५९.५६-७; विष्णु० १.७.१४-१९; ३.१.६)। आकूति और प्रसूतिका विवाह क्रमशः दक्ष तथा रुचिसे हुआ तथा कर्दमसे इन्होंने अपनी पुत्री देवहूतिका विवाह कर दिया (भाग० ३.२१.४५; २२.३-४)। धन्या नामकी इनकी पुत्री ध्रुवकी पत्नी हुई, ध्रुवको इन्होंने यक्षोंका संहार बंद करनेको कहा तथा यक्षपति कुबेरसे क्षमा मँगवायी (भाग० ४.११.६-३४; मत्स्य० ४.३८)। प्रियव्रतको राज्यभार दे यह तप करने चले गये। यह ब्रह्माके एक अर्धभाग थे तथा शतरूपा दूसरा अर्धभाग था। ब्रह्माकी नासिकासे वराह इन्हींकी प्रार्थनापर प्रकट हुए थे जिन्होंने पृथ्वीको जलसे बाहर निकाल इन्हें शासन करनेको दी (भाग० ३.१२.५३-४; १३.३-१८)। संसार छोड़कर सुनंदाके तटपर इन्होंने एक पैरपर खड़े रहकर विष्णुकी उपासना की। असुरोंने इन्हें खा जाना चाहा था, तब विष्णुने यज्ञका रूप धारण कर असुरोंका संहार किया था (भाग० ८.१.७-१०)। इन्होंने सर्वप्रथम स्मार्त धर्म, वर्णाश्रम धर्म तथा शिष्टाचार संसारको दिया। ब्रह्माकी आज्ञापर इन्होंने वेदोंको चार भागोंमें विभक्त किया (ब्रह्मां० २.२९.४६, ६१–४; ३०.३४; ३२.३५-८, ९६; ३४.२-८; ३५.१७५; ३६.३; ३७.१४; ४.१.३२, १०९; मत्स्य० १४२.४२)। यह आदि पुरुष थे जिनसे विराजोंकी उत्पत्ति हुई थी (मत्स्य० ३.४५-६; १७१.२७; १९२.१०; २२७.३२)। (१४) मनु स्वारोचिष—मनु द्वितीय जो अग्निके पुत्र कहे गये हैं और द्युमान आदिके पिता थे। इस मन्वंतरमें रोचन, इंद्र तथा तुषित आदि देवता थे और ऊर्जस्तम्ब ६ अन्य ऋषियोंके साथ सप्तर्षि थे (भाग० ८.१.१९.२०; ब्रह्मां० २.३६.३, २३; ३७.१५)। (१५) मनु वैवस्वत—सातवें मनु जिन्हें श्राद्धदेव भी कहते हैं (भाग० ८.१३, १-९; ब्रह्मां० २.३६.४, ८१; ३.५९.२२, ३८; ६३.२१५; ४.१.६-२८; वायु० ८४.२२; विष्णु० ४.१.६-७)। समज्ञा और विवस्वान् (सुरेणु और विवस्वान्) के पुत्र, श्रद्धाके पति तथा इक्ष्वाकु (ज्येष्ठ) आदि १० पुत्रोंके पिता थे (ब्रह्मां० २.३८.१)। इस मन्वंतरमें पुरंदर, इन्द्र तथा कश्यप, अत्रि आदि सप्तर्षि थे। आदित्य तथा वसुगण देवता थे और वामन ही विष्णुके अवतार थे (भाग० ८.१३.१-९)। यह एक क्षत्रिय मंत्रवादी थे और इनके यज्ञमें विघ्न डालनेके कारण वरुत्रीके पुत्रोंको इंद्रने वेदीमें ही जला डाला था। यह एक प्रजापति, राजा तथा दण्डधर थे (ब्रह्मां० २.३२.१२०; ३८.२६, ३२; ३.१.३६; ८.२१; १०.९८; ६०.७; मत्स्य० १४५.११५; २४८.१५)। विष्णुके मत्स्यावतारने महाप्रलयमें इन्हें सुरक्षित रखा था। एक बार जलसे तर्पण करते समय इन्हींके हाथोंमें एक मछली आ गयी थी जिसे बड़ी होनेपर इन्होंने क्रमशः कमंडलु, कूप, तड़ाग, गंगा तथा अंतमें समुद्रमें रखा था। इसी मछलीने प्रलयमें सृष्टिको बीज रूपमें सुरक्षित रखनेके लिए कहा था। इसीके सहारे यह सुरक्षित रह सके थे (मत्स्य० १.११ अंततक; २.१६; ९.१; १६.१; ५२.३)। इन्होंने मित्र और वरुणके प्रीत्यर्थ एक अश्वमेध भी किया था तथा संसारकी वृद्धिके लिए वेदोंके चार विभाग किये थे (वायु० ७०-१८)। इन्होंने शब्दब्रह्मकी व्याख्या की थी (विष्णु० ६.५.६४)। (१६) दक्ष सावर्णि, नवें मनु जो वरुणके पुत्र तथा भूतकेतु आदिके पिता थे। पारस आदि इस मन्वंतरके देवता, अद्भुत इन्द्र तथा द्युतिमान आदि सप्तर्षि थे। इसी समय विष्णुका ऋषभ अवतार हुआ था (भाग० ८.१३.१८-२०)। (१७) रुद्र सावर्णि—बारहवें मनु जो देववान् आदिके पिता थे। ऋतधामा इन्द्र तथा हारित आदि देवता थे। तपोमूर्त्ति आदि सप्तर्षि थे तथा स्वधामातामसे विष्णुका अवतार इसी मन्वंतरमें हुआ था (भाग० ८.१३.२७-२९)। बारहवें पर्यायके चौथे सावर्ण मनु (ब्रह्मां० ४.१.८२-९३)। (१८) मनु सावर्ण या सावर्णि—वैवस्वत मन्वंतरके दूसरे मनु जो सावर्णके पुत्र थे (ब्रह्मां० ४.१.५१-५, ७३.८१)। इनके समयमें बलि ही सारे संसारमें राज करता था (ब्रह्मां० २.३६.४; ३.७३ ५२)। (१९) रौच्य मनु—तेरहवें पर्यायके एक सावर्ण मनु जिस समय देवताओंके तीन वर्ग थे जो सबके सब यज्ञोंके द्वारा दिये गये सोम तथा घीके प्रेमी थे (ब्रह्मां० ४.१.९५.११६)। (२०) चाक्षुष मन्वतर—भृगु आदि ऋषि इसी समयमें हुए थे (मत्स्य० २.१४; ६.३; ८.१२)। देवताओंके ५ वर्ग थे—लेख, ऋभव, ऋभाद्य, वारिमूल तथा दिवौकस्। रुरु आदि चाक्षुष मनुके दस पुत्र थे (मत्स्य० ९.२२.२५)। इसी मन्वंतरमें पुरूरवा हुए थे जो इसी कुलके थे (मत्स्य० ११५.७-८)। (२१) औत्तम मनु—तीसरे मनु (मत्स्य० ३.४७), जिनके १० पुत्र थे। भावन इस मन्वंतरके देवता थे तथा कौकुरुण्डि आदि सप्तर्षि थे जो सब योगमें रत थे (मत्स्य० ९.११)। (२२) चाक्षुष मनु ६—चक्षु तथा वीरणपुत्री वीरिणीके पुत्र जिनका विवाह नड्वला नामकी राजकुमारीसे हुआ जिससे इनके दस पुत्र थे (मत्स्य० ४.४०; विष्णु० १.१३.४)। (२३) हर्यश्वके पुत्र तथा प्रतीकके पिता (विष्णु० ४.५.२७)।

मनुकाल—पु० [सं०] चौदह मनुओंका समय जो एक हजार

युगोंका एक कल्प है—चौदह मन्वंतर (भाग० ८.१३.३६; १४.७१) ।

मनुग–पु० [सं०] क्रौंचद्वीपाधिपति द्युतिमान्‌के सात पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम, प्रियव्रत इनके दादा थे। क्रौंचद्वीपका जो जनपद (खण्ड) इनको मिला उसका नामकरण इन्हींके नामपर हुआ है (वायु० ३३.२१) ।

मनुगण–पु० [सं०] राज्यके लिए देवताओंके साथ इनकी पूजा होती है (भाग० २.३.९) । भाग० ८.१४.२-१० में भिन्न-भिन्न मन्वंतरोंमें इनके कार्य आदिका विवरण दिया है। इनकी संख्या कुल १४ (चौदह) है, जो अपने कार्यके तथा समयके वाद महर्लोक चले जाते हैं (ब्रह्मां० ४.२.२, ५) । स्वायंभुव, स्वारोचिष, औत्तम, तामस, रैवत, चाक्षुप—ये ६ व्यतीत हो चुके तथा भविष्यके आठ मनुओंके नाम ये हैं—वैवस्वत, पंचसावर्णि—सूर्यसावर्णि, दक्षसावर्णि, ब्रह्मसावर्णि, धर्मसावर्णि, रुद्रसावर्णि, रौच्य और भौत्य (वायु० ६२.३-४) ।

मनुज–पु० [सं०] धर्म और विश्वा या विश्वेशाके पुत्र दस विश्वेदेवोंमेंसे एक विश्वदेव (मत्स्य० २०३.१३) ।

मनुतीर्थ–पु० [सं०] रेवा नदी और माहिष्मतीपुरीके निकटवर्ती दक्षिण भारतका एक तीर्थ जहाँ वलराम गये थे (भाग० १०.७९.२१) ।

मनुत्त–पु० [सं०] (मनुत्त, मरुत्त) एक राजा जो चक्रवर्तीके तुल्य थे। संवर्त्तने इन्हें इष्ट-मित्र और वंधु-बांधवोंके साथ स्वर्ग पहुँचाया था। यह चक्रवर्ती नरिष्यंतके पिता थे (वायु० ८६.९) ।

मनुवंशधर–पु० [सं०] भगवान् हरिकी एक विशेषता (भाग० २.७.२०) ।

मनुवन्ती–स्त्री० [सं०] तुम्बुरुकी दो पुत्री अप्सराओंमेंसे एक पुत्रीका नाम (ब्रह्मां० ३ ७.१३) ।

मनुवश–पु० [सं०] मधुके चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (वायु० ९५.४५) ।

मनुष्य–पु० [सं०] इनकी सृष्टि राजस तत्त्वोंसे हुई (विष्णु० १.५.२३, ३७-८; ६.१) और इनके चार वर्ग निश्चित कर दिये गये (विष्णु० १.६.५) ।

मनुष्यपितृगण–पु० [सं०] ये लौकिक पितृगण अर्थात् पिता, पितामह, प्रपितामह आदि हैं (ब्रह्मां० २.२८.७१, ७८.९५) ।

मनुस्मृति–स्त्री० [सं०] मनुजी द्वारा रचित हिन्दूधर्मशास्त्रके एक प्रसिद्ध ग्रंथका नाम जिसमें १२ अध्याय तथा २५०० श्लोक हैं। इसमें सृष्टिकी उत्पत्ति, संस्कार, नित्य और नैमित्तिक कर्म, आश्रमधर्म, वर्णधर्म, राजधर्म, प्रायश्चित्त आदि अनेक विषयोंका उल्लेख है—दे० मनुस्मृति-टीका कुल्लूकभट्टप्रणीत।

मनोजव–पु० [सं०] (१) धर्म और वसुके १० पुत्र वसुओंमेंसे अन्यतम अनिल (अनल=मत्स्य०) और शिवाके दो पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (ब्रह्मां० ३.३.२६; मत्स्य० ५.२५; वायु० ६६.२५; विष्णु० १.१५.११४) । (२) शिवाके गर्भसे उत्पन्न भगवान् शिवकी चतुर्थ मूर्त्तिरूप वायुके एक पुत्रका नाम (ब्रह्मां० २.१०.८०; ३.३.२१; मत्स्य० ५.२१; २०३.३; वायु० ६६.२०, ३५; विष्णु० १.१५.११०.११४) । (३) शाकद्वीपके अधिपति मेधातिथिके सात पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (भाग० ५.२०.२५) । (४) लेखदेवताओंके गणके आठ देवताओंमेंसे एक लेखदेवताका नाम (ब्रह्मां० २.३६.७५) । (५) छठे चाक्षुप मन्वंतरके इंद्रका नाम (ब्रह्मां० २.३६.७६; विष्णु० ३.१.२६) । (६) हरित नामके देवगणके १० देवोंमेंसे एक देवका नाम (ब्रह्मां० ४.१.८४; वायु० १००.८९) ।

मनोजवा–स्त्री० [सं०] (१) अग्निकी एक जिह्वाका नाम (मार्कण्डेयपु०) । (२) स्कंदकी अनुचरी एक मातृकाका नाम (महाभा० शल्य० ४५.१६) । (३) क्रौंचद्वीपकी सात मुख्य नदियोंमेंसे एक नदीका नाम (ब्रह्मां० २.१९.७५; मत्स्य० १२२.८८; वायु० ४९.६९; विष्णु० २.४.५५) ।

मनोदंड–पु० [सं०] मनके ऊपर नियन्त्रण। त्रिदण्डियोंके लिए वाणीपर नियंत्रण, कर्मपर नियंत्रण और मनपर नियंत्रण आवश्यक कहा गया है (वायु० १७.६) ।

मनोनुग–पु० [सं०] (१) क्रौंचद्वीपके अधिपति द्युतिमान्‌के सात पुत्रोंमेंसे एक पुत्र जिसके नामपर मानोनुग राज्यका नामकरण हुआ था (ब्रह्मां० २.१४.२२, २४) । (२) क्रौंचद्वीपका एक प्रदेश जो वामन पर्वतसे संलग्न है (ब्रह्मां० २.१४.२४; १९.७१; मत्स्य० १२२.८४; वायु० ४९.६६) ।

मनोभवा–स्त्री० [सं०] मुनि (दक्षपुत्री) और कश्यपसे उत्पन्न १६ मौनेय देवगंधर्वोंकी २४ वहिन अप्सराओंमेंसे एक अप्सराका नाम (ब्रह्मां० ३.७.७) ।

मनोरथचतुर्थी–स्त्री० [सं०] फाल्गुन शुक्ला चतुर्थीको गणेशजीका पूजन कर नक्त व्रत करे। इसी प्रकार प्रत्येक शु० ४ को सालभर करे तो मनोरथ सिद्ध हो। गणेशकी मूर्त्ति सुवर्णकी हो तो उत्तम है (मत्स्य०) ।

मनोरथतृतीया–स्त्री० [सं०] चैत सुदी तीजको होनेवाला एक व्रत।

मनोरथद्वादशी–स्त्री० [सं०] चैत्र शुक्ला १२ को मनाया जानेवाला एक व्रत—दे० व्रतार्कः।

मनोरमा–स्त्री० [सं०] (१) अंधकासुर-रुधिरपानार्थ शिवजी द्वारा सृष्ट कई मानसपुत्री मातृकाओंमेंसे एक मानसपुत्री मातृका (मत्स्य० १०९.२६) । (२) इंदीवर नामक गंधर्वकी पुत्री (मार्कण्डेयपु०) । (३) १६ मौनेय देवगंधर्वोंकी २४ वहिन अप्सराओंमेंसे एक अप्सराका नाम (वायु० ६९.६) । (४) महाराज मित्रवर्माकी पत्नी तथा 'आकश' पुत्रकी माता—दे० मित्रवर्मा तथा स्कंद०, वैष्णव० भूमिवाराहखंड।

मनोवती–स्त्री० [सं०] (१) मेरु पर्वतपर स्थित ब्रह्माकी सभा जिसमें ईशान, इंद्र, अन्यान्य ऋषिगण तथा मुनि रहते हैं (वायु० ३४.७२-७) । (२) एक नगरीका नाम जो पुराणानुसार मेरु पर्वतपर है (हि० वि० को०) । (३) चित्रांगद विद्याधरकी पुत्रीका नाम—दे० चित्रांगद। (४) तुम्बुरुकी एक पुत्रीका नाम (वायु० ६९.४९) ।

मनोहर–पु० [सं०] नर्मदा तटपर स्थित पितरोंके श्राद्ध, तर्पण आदिके लिए उपयुक्त एक पवित्र तीर्थस्थान (मत्स्य० १९४.७) ।

मनोहरा–स्त्री० [सं०] (१) धर (विष्णु०=धर्म) नामक वसुकी एक पत्नीका नाम, जो प्राण, रमण और शिशिरकी माता थी। धरकी दूसरी पत्नीका नाम कल्याणिनी था। इससे धरके द्रविण और हव्यवाह दो पुत्र हुए (मत्स्य० ५.

२४; विष्णु० १.१५.११४)। (२) एक अप्सराका नाम (हि० वि० को०)।

मन्मथ—पु० [सं०] (१) संवत्सर ६० हैं जिनमें यह २९वाँ है—दे० संवत्सर। (२) कामदेवका एक नाम—दे० कामदेव। इसे शिवने भस्म कर दिया था, पर मायावती (रति) ने शंवरको अपने सौन्दर्यसे मोहकर इसे पुनः जीविता किया। कामदेवके अवतार प्रद्युम्नको इसने पाला था।

मन्मथकर—कुमारके एक अनुचरका नाम।

मन्मथा—स्त्री [सं०] हेमकूटपर स्थापित सती देवीकी एक मूर्ति (मत्स्य० १३.५०)।

मन्यु—पु० [सं०] (१) रुद्रका एक नाम जिसकी पत्नीका नाम धी था (भाग० ३.१२.१२)। (२) वितथ (भरद्वाज) राजाके पुत्र जो बृहत्क्षत्र आदि ५ पुत्रोंके पिता थे (भाग० ९.२१.१; विष्णु० ४.१९.२०,२१)।

मन्युमान्—पु० [सं०] (ब्रह्मां=मृत्युमान्) जठराग्निका पुत्र तथा विद्वान् अग्निका पिता (ब्रह्मां० २.१२.३४; वायु० २९.३२)।

मन्वंतर—पु० [सं०] ७१ (इकहत्तर) चतुर्युगियोंका समय। मनुष्योंके वर्षोंके अनुसार चारों युगोंके समयका जोड़ ४,३२०,००० वर्ष होता है, यह समय एक मन्वंतरका हुआ। दो हजार मन्वंतरोंका एक कल्प होता है—अर्थात् ४३२०००० × २००० = ८,६४०,०००,००० वर्षोंका ब्रह्माका एक दिन-रात हुआ—दे० युग।

१४ मनुओंका समय, जिनमें सात व्यतीत हो चुके और सात होनेवाले हैं। स्वायंभुव, स्वारोचिष, औत्तम, तामस, रैवत, चाक्षुष, सावर्णि (जो मत्स्य पुराणानुसार वैवस्वतके पश्चात् हुए थे), रौच्य (ब्रह्मां०), वैवस्वत (मत्स्यपुराणानुसार वर्तमान), भौत्य, मेरुसावर्णि, ऋत, ऋतधामा तथा विष्वक्सेन। अंतवाले सात भविष्यमें आनेवाले मनु हैं (ब्रह्मां० २.६.६,२०; ३६.१-४; मत्स्य० २.२२; ९.२-३६; वायु० २१.११, १४, १९, ३८, ४४; ५७.३३-६; विष्णु० १.३.१८)। पुराणोंकी ५ विशेषताओंमेंसे एक (मत्स्य० ५३.६५; ब्रह्मां० १.१.३७; वायु० ४.१०)। ७१ युगोंका समय जिसके अंतमें मानुष और दिव्यवत्सरके अनुसार 'क्षय' होता है (वायु० ६१.१३८-१४४; १५०.१७६) —दे० मनुगण।

ममता—स्त्री० [सं०] उशिज (असिज=वायु०) (उतथ्य=विष्णु०) की पत्नीका नाम। उशिजके छोटे भाई बृहस्पतिने ममताके साथ जव उसे आठ मासका गर्भ था, वलात्कार किया, पर गर्भस्थ वालकके कारण अतृप्त रहे, अतः गर्भस्थ वालकको जन्मान्ध होनेका शाप दे अंधा कर दिया, जिससे दीर्घतमा जन्माध उत्पन्न हुए। बृहस्पतिके संयोगसे ममताके गर्भसे भरद्वाज उत्पन्न हुए जिसे पतिके भयसे ममताने त्याग दिया था—दे० दीर्घतमा, भरद्वाज तथा (भाग० ९.२०.३७-३९; ब्रह्मां० ३.७४.३६-७; मत्स्य० ४८.३२-४१; ४९.१७.२६; वायु० ९९.३६-८; विष्णु० ४.१९.१६)।

मय—पु० [सं०] (१) पुराणानुसार एक प्रसिद्ध दानवका नाम जो देवगिरिपर निवास करता था। यह वड़ा कारीगर था और इसे असुरों तथा दैत्योंका शिल्पी कहते हैं। वाल्मीकीय रामायणके उत्तरकांडानुसार मय दितिका पुत्र एक दैत्य था जिसकी तेजवती नाम्नी पत्नी थी। मायावी और दुंदभि उसके पुत्र तथा मंदोदरी पुत्री थी। मंदोदरी लंकापति रावणकी पटरानी तथा वीर मेघनादकी माता थी अर्थात् मय रावणका श्वसुर और मेघनादका नाना था। रावणकी मृत्युके पश्चात् मंदोदरीका विवाह विभीपणसे हुआ था—दे० मंदोदरी (स्कंद० आवन्त्य० रेवाखंड)। (२) विश्वकर्माका पुत्र तथा सुरेणु (वहिन) का भाई (ब्रह्मां० ३.५९.२१; ४.१२.३; २०.४६; ३१-७; वायु० ८४.२०-१)। इसने आकाशमें असुरोंके लिए सुवर्ण, चाँदी तथा लोहेके तीन अपूर्व नगर वनाये थे। इन्द्रकी स्वर्गीय सभा भी इसीने वनायी थी। यह अपने वनाये त्रिपुरका स्वामी था और वलिके साथ देवासुर-संग्राममें लड़ा भी था। शंकरने अपने वाणसे त्रिपुरको नष्ट कर दिया तथा असुरोंका संहार किया। तारकामययुद्धमें यह अस्त्र-शस्त्रोंसे सुसज्जित हो एक सुवर्णरथपर चढ़कर लड़ने गया था। त्रिपुर नाशके पश्चात् इसे जीवित छोड़ दिया गया था और यह एक अलग मकानमें रहता था (मत्स्य० १२९ पूरा; १३१.२५-३०; १३४.९-३०; १३५-१४० अध्या०; १७३.२-३; १७७.३-६)। (३) एक प्रसिद्ध असुर शिल्पी जो श्रीकृष्णका समकालीन था। इसके पुत्रने गोपोंको दास वनाकर किसी खोहमें छिपा दिया था जिन्हें श्रीकृष्ण छुड़ा कर ले आये थे (भाग० २.७.३१)। खांडव-दहनसे इसे अर्जुन वचा कर ले आये थे। पांडवोंकी प्रसिद्ध सभा इसीने वनायी थी जिसमें दुर्योधन जलको स्थल और स्थलको जल समझ भ्रमवश गिर पड़ा था (भाग० १०.५५.२१; ७१.४०; ५८.२७; ७५.३४, ३७)। शिवकी आज्ञासे इसने शाल्वको एक जादूकी गाड़ी दी थी (भाग० १०.७६.७; ७७.२८)। (४) तलातलका अधिपति एक असुर जिसने शिवके आशीर्वादसे मोक्ष प्राप्त किया। यह वृत्रासुरके साथ इन्द्रसे लड़ने गया था (भाग० ५.२४.२८; ११.१२.५; ६.१०.३१)। रंभा इसकी पत्नी थी जिससे इसके ६ पुत्र उत्पन्न हुए थे (ब्रह्मां० ३.६.५, २८; वायु० ६८.२८-९)। उपदानवी आदि इसकी पुत्रियाँ थीं (ब्रह्मां० ३.६.५, २८; वायु० ६८.२८-९)। (५) मायाका पिता (ब्रह्मां० २.९.६४)। (६) स्थापत्यकलाका प्रवर्त्तक (मत्स्य० २.५२.२)।

मयूर—पु० [सं०] (१) एक विख्यात असुरका नाम, जो पृथिवीपर विश्व नामक राजाके रूपमें उत्पन्न हुआ था (महाभा० आदि० ६५.३५-३६)। (२) एक पर्वतका नाम जो सुमेरु पर्वतके उत्तर है और जहाँ सदा हिमपात होता रहता है और जहाँसे गंगा जारूधि आदि विविध पर्वतोंको चीरती हुई वहती है (मार्कण्डेय०, वायु० ४२.७०)। (३) कार्त्तिकेयका वाहन मयूर पक्षी, इस जातिके पक्षी भारतमें अनेक स्थानोंमें पाये जाते हैं (ब्रह्मां० २.२०.१६, २७; ३.१०.४७; मत्स्य० १६०.२१; वायु० ३६.२; ५४.१९)। एक मुर्गे और पताकाके साथ जिसे विष्णु और वायुने कुमार कार्तिकेयको उपहारस्वरूप दिया था (वायु० ७२.४६)।

मयूरकेतु—पु० [सं०] स्कंदका एक नाम।

मयूरध्वज—पु० [सं०] वाणासुर जिसकी ध्वजापर मयूर चिह्न वना था। इसका टूटना युद्धसूचक था (विष्णु० ५.३३.३)।

मयूरस्थल—पु० [सं०] पुराणानुसार एक तीर्थस्थान।

मयोभुव—पु० [सं०] यह अगस्त्य परिवारके गोत्रकार ऋषि थे (मत्स्य० २०२.२)।

मरीचक—पु० [सं०] शाकद्वीपके अधिपति भव्यके सात पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (विष्णु० २.४.६०)।

मरीचि—पु० [सं०] (१) पुराणानुसार एक ऋषिका नाम जो ब्रह्माके दस मानसपुत्रोंमेंसे एक थे और सृष्टिके आरंभमें अत्रि, अंगिरा, नारद आदिके साथ ही उत्पन्न हुए थे। मरीचिके पुत्र कश्यप थे, इसलिए उन्हें मारीच कहा जाता है (भाग० १.६.३१; ३.१२.२२; ९.१.१०; ब्रह्मां० २.३२.९६; ३.१.२१, ४३-४; मत्स्य० ३.६; ४.२६; १९५.९; वायु० ५०.१६८; ५२.९५; १०१.३५, ४९)। इन्हें एक प्रजापति माना जाता है। दारुवनके एक ऋषि तथा स्वायंभुव मन्वंतरके सप्तर्षियोंमें एक ऋषि। यह दक्षके यज्ञमें वर्तमान थे (भाग० ४.७.४३; २९.४३)। इन्होंने इंद्रके यज्ञका नियंत्रण किया था (भाग० ६.१३.२१) तथा त्रिविक्रमका दर्शन करने आये थे (भाग० ८.२१.१)। किसी पुराणमें इनकी पत्नीका नाम 'कला' कर्दमपुत्री (भाग० ३.२४.२२; ४.१.१३) और किसी-किसीमें 'संभूति' लिखा है जिनके गर्भसे पूर्णमास नामका एक पुत्र तथा कृष्टि, पुष्टि, त्विपा तथा भाग० अपचिति नामकी चार पुत्रियाँ हुईं (वायु० २८.९)। इनकी सुरूपा नामकी पुत्री अंगिराको ब्याही थी (मत्स्य० १.६, ३१; १४६.८६, २५०.४)। (२) भृगु ऋषिके पुत्र एक ऋषि जो कश्यपके पिता थे—दे० कश्यप। (३) दनुके एक पुत्रका नाम—दे० दनु। (४) प्रियव्रतके वंशमें उत्पन्न एक राजाका नाम। (५) सम्राट् तथा उत्कलाका एक पुत्र जो विन्दुमतीसे उत्पन्न विन्दुमान्का पिता था (भाग० ५.१५.१५)। (६) ऊर्णाके पति जिसे प्रथम मन्वंतरमें ६ पुत्र हुए थे। पुनः ये हिरण्यकशिपुके असुर पुत्र हुए जिन्हें योगमाया ले गयी, तदुपरांत यह देवकीके पुत्र हुए और कंस द्वारा मारे गये। (७) इनका जन्म कहते हैं नेत्रोंसे हुआ था तथा यह पुराणोक्त ९ ब्रह्माओंमें एक थे (ब्रह्मां० १.५.२, ९, ७०-१ २२; ११.१०-१३, २४)। (८) स्वायंभुव मन्वंतरके सप्तर्षियोंमेंसे एक ऋषिका नाम (वायु० ३.२; ३१.१६; ६२.११३; ६५.४४)। दक्षके जामाता (वायु० ३०.४८)। संभूतिके पति (ब्रह्मां० २९.५५; वायु० २८.८; विष्णु० १.१०.६; ११.४३)। इन्होंने ध्रुवको विष्णुकी उपासना करनेकी राय दी थी (विष्णु० १.१२.६)। (९) ब्रह्माके एक पुत्र जिसका विवाह धर्मव्रतासे हुआ था। धर्मव्रता धर्मकी पुत्री थी जिसे कर्त्तव्यकी अवहेलना रूप नगण्य अपराधसे रुष्ट हो ऋषिने शाप दे पत्थर कर दिया था। यह १०० पुत्रोंकी माता थी और इसने भी व्यर्थ शाप देनेके लिए पतिको शाप दिया (वायु० १०७.७, २६; ११२.३६)। (१०) ब्रह्माके नौ मानसपुत्रोंमेंसे एक मानसपुत्र जिसका विवाह ब्रह्मासे सृष्ट ख्याति आदि नौ मानसपुत्रियोंमेंसे सन्नतिसे हुआ था (विष्णु० १.७.५, ७, ३७)।

मरीचिगर्भ—पु० [सं०] (१) नवें मन्वंतरके १२ देवोंका एक गण (भाग० ८.१३.१९; ब्रह्मां० ४.१.५५, ५८-९; विष्णु० ३.२.२१)। (२) मार्तण्डमण्डलमें हविष्मंत पितरोंका लोक (मत्स्य० १५.१६)। (३) क्षत्रियगणके उपहूत पितरोंका लोक (वायु० ७३.३८-९)। (४) मेरुसावर्णिके पुत्रोंका नाम (वायु० १००.५९)।

मरीचिमान्—पु० [सं०] वालीके सामन्त तथा सेनानायक महावली सैकड़ों प्रधान वानरोंमेंसे एक प्रधान वानरका नाम (ब्रह्मां० ३.७.२०४)।

मरीचिरक्षक—पु० [सं०] दक्षपुत्री दनु और कश्यपके १०० दानवपुत्रोंमेंसे एक पुत्र (वायु० ६८.५)।

मरु—पु० [सं०] (१) नरकासुरके साथी एक दैत्यका नाम—दे० नरकासुर। (२) एक मरुभूमिका नाम (भाग० १.१०.३५)। (३) राजा इक्ष्वाकुवंशी शीघ्रका पुत्र तथा प्रसुश्रुत (प्रसुश्रक=विष्णु०) का पिता जो योगसिद्धि प्राप्त कर लेनेके पश्चात् कलाप ग्राममें निवास करते हैं। कहते हैं कलिके अंतमें यह सूर्यवंशका प्रारंभ करेंगे (भाग० ९.१२.५-७; ब्रह्मां० ३.६३.२१०-११; विष्णु० ४.४.१०८-११)। (४) हर्यश्वका पुत्र तथा प्रतीपक (प्रत्यंदक=ब्रह्मां०; प्रतित्वक=वायु०) का पिता (भाग० ९.१३.१५-६; ब्रह्मां० ३.६४.११; वायु० ८९.११)। (५) द्वारकासे हस्तिनापुरके मार्गमेंका एक स्थान (भाग० १०.७१.२१)। (६) इक्ष्वाकुवंशके एक योगी जिनका निवास कलापग्राम कहा गया है (भाग० १२.२.३७)। (७) ११वें मन्वंतरके तृतीय सावर्ण मनुके नौ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (ब्रह्मां० ४.१.८१)। (८) ललिता देवीके ५१ पीठस्थानोंमेंसे एक पवित्र पीठ (ब्रह्मां० ४.४४.९८)।

मरुत्—पु० [सं०] (१) एक देवगणका नाम जो वेदोंके अनुसार रुद्र तथा वृष्णिके पुत्र थे, पर पुराणोंमें इन्हें कश्यप और दितिका पुत्र लिखा है। इन्हें गर्भमें ही इन्द्रने ४९ (उनचास) टुकड़ोंमें काट डाला था। काटे जानेपर ये रोये, तब इन्द्र बोले—'मा रुदः' अतः ये ही ४९ मरुत् (मारुत) हुए। वेदोंमें इनका स्थान अंतरिक्ष लिखा है, पर वायु पुराणानुसार ये आवह, प्रवह आदि सात वातस्कन्धोंके निवासी कहे गये हैं (वायु० १०१.२९)। दितिके कहनेपर इन्द्रने इन्हें देवगण बना दिया और वे मरुद्गण कहलाये (मत्स्य० अध्या० ७)। इनके घोड़ेका नाम पृषत् कहा गया है, पर पुराणोंमें इन्हें वायुकोणका दिक्पाल लिखा है (वायु० ६७.१२९)। सिद्धेश्वरमें इन्हें सिद्धि प्राप्त हुई थी (मत्स्य० १९१.११७; २४६.६०)। ओजके लिए इनकी उपासना होती है (भाग० २.३.८)। (२) बृहद्रथ राजाका एक नाम—दे० बृहद्रथ। (३) मरुद्गणोंमेंसे एक मरुत्का नाम (वायु० ६७.१२८)। (४) करन्धमका एक पुत्र जो निःसंतान था, अतः पुरुके वंशके दुष्यंतको ही इसने पुत्रवत् ग्रहण किया था (भाग० ९.२३.१७)। (५) यह मरुत्वतीके गर्भसे उत्पन्न हुए थे (ब्रह्मां० १.१.११२, २.४१; वायु० १०.७१; ६६.३३)। (६) मित्रज्योति (पुत्री) का पिता (ब्रह्मां० ३.६.८१, ४)।

मरुद्गण—पु० [सं०] (१)—दे० मरुत्। ये आवह, प्रवह आदि सात वातस्कन्धोंमेंसे प्रत्येकमें सात-सात हैं इनकी कुल संख्या ४९ है। ये इन्द्रके भाई हैं और यज्ञोंमें ये अपने अंशके अधिकारी हैं (भाग० ६.१८.१९, २२-७७; ब्रह्मां० ३.५.७९, ९०, ९९-१०४; मत्स्य० ६.४७; १६३.२२-३)। ये वैवस्वत मन्वंतरके देवता थे और इन्होंने बृहस्पतिको

तारा लौटा देनेके लिए सोमसे प्रार्थना की थी (मत्स्य० ८.४; ९.२९; २३.३५; ३६.१)। देवासुरसंग्राममें ये निवातकवच नामके दैत्योंसे लड़े थे। ममताने जब भरद्वाजको पतिके भयसे त्याग दिया था तब इन्हीं लोगोंने उनका पुत्रवत् पालन-पोषण कर भरतको दिया था (भाग० ६.१०.१७; ९.२.२८; २०.३५-९; मत्स्य० ४९.१५.२५-३०; ५८.३३)। इन्द्रके साथ व्रजको तहस-नहस करने तथा देवताओंके साथ श्रीकृष्णसे वैकुंठ लौट जानेके लिए कहनेको ये भी गये थे (भाग० १०.२५.७; ११.६.२)। शोभवत्य वर्गकी अप्सराओंके ये (मरुत्) पिता थे तथा कालोपनत (कालोपंत) मूर्च्छनके अधिष्ठाता देवता थे—दे० मरुत्। (२) दितिके गर्भके सात खड ७ वातस्कन्धोंके निवासी सात गण हुए तथा प्रत्येक गणमें सात-सात उत्पन्न हुए, अतः कुल ४९ हुए (वायु० ३०.९९; ६४.२; विष्णु० १.९.६४, ७०; २१.४०)। यज्ञोंमें विशेषकर गरुड़-शयन यज्ञमें ये अपना भाग ग्रहण करते हैं (वायु० ६७.११०, १२३-२९)। ये भुवर्लोकके निवासी कहे गये हैं (वायु० १०१.२९)। ये विष्णुके अंश हैं (विष्णु० ५.१.१७)।

मरुत्त–पु० [सं०] (१) पुराणानुसार चंद्रवंशी महाराज अविक्षित्का पुत्र तथा करंधमका पौत्र जिसकी सात रानियाँ थीं जिनसे १८ पुत्र हुए थे (मार्कण्डेय०); परन्तु भागवतमें इन्हें यदुवंशी लिखा है और करंधमको इनका पिता बतलाया गया है। (२) वैवस्वत मनुका वंशज एक चक्रवर्ती राजा। विष्णुपुराणानुसार मरुत्तने एक अभूतपूर्व यज्ञ किया था जिसमें सब पात्र सुवर्णके बने थे, इन्द्र तथा अन्य याज्ञिक सोमरस पी-पी कर गद्गद हो गये थे। वायुने इस यज्ञकी चारों ओरसे रक्षा की थी तथा देवता दर्शक स्वरूप आये थे। वायुपुराणानुसार इस यज्ञके पुरोहित संवर्त्तजी मरुत्तको सपरिवार तथा मित्रों सहित स्वर्ग ले गये थे (विष्णु० ४.१.३१-४; ब्रह्मां० ३.६१.७; ८.३५)। परन्तु मार्कण्डेयपुराणानुसार राज्य परित्याग करनेके बाद जंगलमें यह मारा गया था। (३) सूर्यवंशी एक राजाका नाम जिसे वपुष्मान्ने मार डाला था। इसके पुत्र दमने बदला लेनेकी इच्छासे वपुष्मान्को मार उसीके रक्तसे पिताका श्राद्ध-तर्पण किया तथा राक्षसवंशोत्पन्न ब्राह्मणोंको इसीका मांस खिलाया था। (४) चक्रवर्त्ती महाराज अविक्षित्का पुत्र जो 'दम'का पिता था—दे० मरुत्त ३। संवर्त्तकी सहायतासे इसने बड़े प्रसिद्ध यज्ञ किये थे—दे० मरुत्त २। यह नरिष्यंतका पिता था (विष्णु० ४.१.३१-४; ब्रह्मां० ३.६१.७; ८.३५)। (५) करंधम (करंदन = विष्णु०) का एक पुत्र जो निर्वंश था। पुरुवंशके दुष्यंतको इसने दत्तक पुत्र लिया था, अतः तुर्वसुवंश पुरुवंशमें मिल गया जो ययातिके शापका परिणाम था (ब्रह्मां० ३.७४.२-४; वायु० ९९.२-४; विष्णु० ४.१६.३-६ तथा मरुत्त १। (६) उशनाका एक पुत्र जो एक योद्धा तथा राजर्षि था। यह कंबलबर्हिका पिता था (ब्रह्मां० ३.७०.२५; मत्स्य० ४४.२४; वायु० ९५.२४)।

मरुत्वती–स्त्री० [सं०] दक्षकी ६० पुत्रियोंमेंसे एक पुत्री, धर्मकी १० पत्नियोंमेंसे एक थी तथा मरुत्वान्, जयंत आदि मरुतोंकी माता थी (भाग० ६.६.४८; ब्रह्मां० ३.३.२, ३२; मत्स्य० ५.१५.१७; १७१.३२, ५१, ५५; २०३.९; वायु० ६६.२; विष्णु० १.१५.१०५)। मरुतोंके अन्य नामके लिए द्रष्टव्य (मत्स्य० १७१.५२-५)।

मरुत्वंत–पु० [सं०] मरुत्वती तथा धर्मका पुत्र (मत्स्य० ५.१७; ३६.१; १३२.३; १७१.५१; ब्रह्मां० ३.३.३२; भाग० ६.६.८; विष्णु० १.१५.१०५)।

मरुत्वान्–पु० [सं०] (१) इन्द्रका एक नाम—दे० इन्द्र। (२) देवताओंके एक गणका नाम जो धर्मके पुत्र कहे गये हैं (महाभा०)। (३) मरुतोंके गणोंके नाम (मत्स्य० १७१.५२; २०३.९)।

मरुत्सोम–पु० [सं०] (भाग० = मरुत्स्सोम) एक यज्ञ विशेष जिसे भरतने पुत्रकी इच्छासे किया था (भाग० ९.२०.३५; ब्रह्मां० ३.६८.२; मत्स्य० ४९.२८; वायु० ९९.१५३; विष्णु० ४.१९.६)। मरुतोंके प्रीत्यर्थ मरुत्तने इसे ६० वर्षोंतक प्रतिमास किया था जिससे उनको अन्नका अक्षय भंडार प्राप्त हुआ (वायु० ९३.२-३)।

मरुदेव–पु० [सं०] (१) सुप्रतीक (सुप्रतीप = मत्स्य०) के पुत्र तथा सुनक्षत्रके पिताका नाम (भाग० ९.१२.१२; मत्स्य० २७१.८; विष्णु० ४.२२.४)। (२) ऋषभदेवके पिताका नाम—दे० ऋषभदेव।

मरुदेश–पु० [सं०] मरुधन्व, एक मरुभूमि है जहाँ सूर्यपत्नी संज्ञा सूर्यके तेजसे तंग आकर घोड़ीके रूपमें विचरण करती थी (भाग० १.३०.३५; मत्स्य० ११.२६; वायु० ८.९७; ८८.३५)।

मरुद्वृधा–स्त्री० [सं०] भारतवर्षकी एक नदी (भाग० ५.१९.१८)।

मरुधन्वा–पु० [सं०] इन्दीवर नामक विद्याधरका पुत्र—दे० इन्दीवर।

मर्क–पु० [सं०] दैत्यगुरु शुक्राचार्यके चार पुत्रोंमेंसे एक। शण्ड और मर्क ये दो असुर गुरु शुक्राचार्यके पुत्र प्रह्लादके शिक्षक थे (भाग० ७.५.१-२, ४८-५०; ब्रह्मां० ३.१.७८; ७२.७२.२७; ७३.६२-४; मत्स्य० ४७.४१; वायु० ६५.७७)। देवासुरसंग्राममें यह देवताओंके पक्षमें हो गया था तथा यज्ञमें एक अंश पाता था (मत्स्य० ४७.२२४.३१; वायु० ९७.७२, ८६; ९८.६३; १०८.६०)।

मर्कोट–पु० [सं०] यहाँ सती देवीकी एक मूर्त्ति मुक्तेश्वरीके नामसे स्थापित है, अतः यह एक पीठस्थान है (मत्स्य० १३ ३३)।

मर्दल–पु० [सं०] युद्धके बाजे (वाद्य-यंत्र) (मत्स्य० १४०.४३; वायु० ५४.३७)।

मर्याद–पु० [सं०] (१) मेरुमूलके चारों ओर सब दिशाओंको घेरे हजारों पहाड़ जिनपर बड़े-बड़े राजमहल बने हैं, ये सीमापर्वत हैं (वायु० ३५.३; ४०.१; ४२.७२; वायु० १०.१, १५७)। इस सीमाको उल्लंघन करनेवाला दण्डित होता है (मत्स्य० २२७.१८४)। (२) वार्ताके आधारपर चलायी कुछ लौकिक प्रथाएँ जो लोककल्याणके लिए चलायी गयी हैं। इन्हें राजा चलाता है और स्थापित करता है तथा मर्यादा तोड़नेवाला नरक जाता है (ब्रह्मां० २.७.१५३; २९.८९; ३६.१३३; ४.२.१५९; मत्स्य० २२५.१०; विष्णु० १.६.३२)।

मर्ष—पु० [सं०] सहस्वान्का एक नाम (वायु० ८८.२११)।

मलंदरा—स्त्री० [सं०] पितरोंके श्राद्धादिके लिए एक प्रशस्त और पवित्र नदी (मत्स्य० २२.६३)।

मलक—पु० [सं०] (१) एक असुर जो स्वर्गमें प्रवेश कर धन्वंतरिके हाथसे अमृत छीन लाया था। मोहिनीने देवताओंकी सहायता की थी और मलक पाताल भाग गया (ब्रह्मां० ४.९.३८; १०.२.२३)। (२) भंडासुरका एक सेनापति (ब्रह्मां० ४.२१.८५)।

मलद—पु० [सं०] (१) भंडासुरके पक्षका असुर। इसपर उन्मत्त भैरवीने आक्रमण किया था (ब्रह्मां० ४.२८.४०)। (२) एक देश विशेष जिसे वाल्मीकीय रामायणके अनुसार मल्लभूमि भी कहते थे जहाँ ताड़का रहती थी (ब्रह्मां० २.१६.५३, ६३)।

मलदा—स्त्री० [सं०] (१) अत्रि ऋषिकी १० पत्नियोंमेंसे एक (ब्रह्मां० ३.८.७५)। (२) भद्राश्वकी घृताची अप्सरासे उत्पन्न दस पुत्रियोंमेंसे एक पुत्री (वायु० ७०.६८)।

मलमासव्रत—पु० [सं०] इस मासमें किये दान-पुण्यादिका अक्षय फल होता है (देवीभाग०)।

मलय—पु० [सं०] (१) पुराणानुसार पश्चिमी घाटका एक पहाड़ जो भारतवर्षके सात कुलपर्वतोंमें एक है (भाग० ५.१९.१६; ब्रह्मां० २.१६.१८; वायु० ४५.८९, १०५; विष्णु० २.३.३९)। यह विष्णुको अति प्रिय है (भाग० ७.१४.३२) तथा चंदनके लिए प्रसिद्ध है (भाग० १.८.३२)। अगस्त्यका यहीं निवास था (भाग० ६.३.३५; १०.७९.१७; १२.८.१६; मत्स्य० ६१.३७) तथा मनुने यहाँ तपस्या की थी (मत्स्य० १.१२)। (२) विष्णुवाहन गरुड़का एक पुत्र (विष्णु०)। (३) जयंती तथा ऋषभदेवके १०० पुत्रोंमेंसे एक पुत्र तथा मेरुदेवीका पौत्र (भाग० ५.४.१०)।

मलयगिरि—पु० [सं०] मैसूरके दक्षिण तथा ट्रावंकोरके पश्चिमवाला पहाड़ी हिस्सा जो पश्चिमी घाटमें है—दे० मलय १।

मलयद्वीप—पु० [सं०] जंबूद्वीपमें म्लेच्छोंका एक प्रदेश जहाँ महामलय पर्वत है जिसे द्वितीय मंदर, अगस्त्य आश्रम और लंका भी कहते हैं (वायु० ४८.१४, २०-३०)।

मलयध्वज—पु० [सं०] एक पांड्य जिसने विदर्भराज राजसिंहकी पुत्रीसे विवाह किया जिससे उसे एक पुत्री तथा सात पुत्र हुए थे। यह एक राजर्षि थे और अपने राज्यको पुत्रोंमें बाँट रानी सहित कुलाचलपर तपस्या करने चले गये थे, जहाँ कुछ दिनोंके पश्चात् उनकी मृत्यु हो गयी (भाग० ४.२८.२९-३०; ३३-३४, ३६-५०)।

मलयपर्वत—पु० [सं०] यहाँ सती देवीकी एक मूर्त्ति रंभा देवीके नामसे स्थापित है, इसलिए यह एक पीठस्थान है (मत्स्य० १३.२९), जो तमाल वृक्षोंके लिए प्रसिद्ध था (मत्स्य० ११४.१७, ३०; १६३.७१)।

मलयवर्तिका—पु० [सं०] भारतका एक पूर्वका जनपद या राज्य (ब्रह्मां० २.१६.५३)।

मलयाचल—पु० [सं०] यहाँ सती देवीकी एक मूर्त्ति कल्याणी देवीके नामसे स्थापित है, इसलिए यह एक देवीपीठ है (मत्स्य० १३.३६)।

मलहा—स्त्री० [सं०] राजा रौद्राश्वकी पुत्रीका नाम (हरिवंश)।

मलिन—पु० [सं०] त्रसुका एक पुत्र जो ब्रह्मवादी था (वायु० ९९.१३२)।

मल्ल—पु० [सं०] (१) चंद्रकेतु, जो लक्ष्मणके दो पुत्रोंमेंसे एक पुत्र था, का नामान्तर जिसके राज्यका भी नामकरण इसी नामपर हुआ था (वायु० ८८.१८८)। (२) राजगृहका अधिपति जिसे श्रीकृष्णने परास्त किया था (ब्रह्मां० ३.७३.१००)। (३) भारतका एक पूर्वी राज्य (जनपद) तथा जाति (ब्रह्मां० २.१६.५५; मत्स्य० १६३.६७)।

मल्लक्रीड़ा—स्त्री० [स०] प्राचीन कालमें मथुरामें होनेवाले पहलवानोंके दंगल (द्वंद्व) जिनमें एक निर्धनसे लेकर राजा तक भाग लेते थे (भाग० १०.३६.२४; ४२.३२-३८; ४४.२-५)।

मल्लग—पु० [सं०] द्युतिमान्का एक पुत्र जिसके नामपर 'मल्लग' राज्यका नामकरण हुआ था (विष्णु० २.४.४८)।

मल्लराज—पु० [सं०] इसे श्रीकृष्णने मारा था (वायु० ९८.१०१)।

मल्लगर्णक—पु० [सं०] एक जाति विशेषका नाम (मत्स्य० ११४.४४)।

मल्लिकार्जुन—पु० [सं०] श्रीशैलपर स्थित एक शिवलिंगका नाम (स्कंदपु० तथा शिवपु०)।

मसमूलिक—पु० [सं०] एक जनपद जहाँसे होकर चक्षु नदी बहती है (ब्रह्मां० २.१८.४६)।

मसूर—पु० [सं०] मसूर (एक प्रकारकी दाल) जो श्राद्धादिमें वर्जित है (विष्णु० १.६.२१; ३.१६.७)।

मसृण—पु० [सं०] कश्यपवंशका प्रवरप्रवर्तक एक ऋषि (मत्स्य० १९९.१७)।

मह—पु० [सं०] (१) भरताग्निका एक पुत्र (वायु० २९.८)। (२) बीस अमिताभ देवताओंमेंसे एक अमिताभ देवका नाम (ब्रह्मां० ४.१.१७; वायु० १००.१६)। (३) महर्लोक। मेरुपर तप करने तथा कार्य (अधिकार) शेष होनेके पश्चात् मनुगण यहीं चले जाते थे। अजितदेव, यामगण और आयुष्मंतोंके अतिरिक्त शुक्र, चाक्षुष आदि महर्लोकमें ही रहते हैं (ब्रह्मां० २.२१.२२; ३५.१७९, १९७; ४.१.२५, ३३, १२२; वायु० १०१.४१, ५२, २०८; १०९.४८)। यह ध्रुवलोक तथा जनलोकके बीचका भाग है जहाँके निवासी अपनी इच्छानुकूल सृष्टि करनेकी क्षमता रखते हैं तथा एक-दूसरेके प्रीत्यर्थ यज्ञादि करते हैं (ब्रह्मां० ४.२.२, २१, ४०, ४२-३; वायु० १०१.४४)। व्याहृतिसे इसकी सृष्टि कही गयी है (ब्रह्मां० ४.२.२, २१; वायु० १०१.२३)।

महत्—पु० [सं०] (१) एक तत्त्व या नियम (भाग० १.३.१; २.१.३५; मत्स्य० ३.१७)। इसे ब्रह्माके तुल्य समझा गया है (भाग० ३.६.२६; ११.१४.१४; १६.३७-८; २४.२५-२६; २८.१६)। यह रुद्रका एक नाम है (भाग० ३.१२.१२)। प्रधानसे आवेष्ठित (ब्रह्मां० २.२१.२७; ३२.७६; ४.३.२१)। अहंकारको यह समाप्त कर देता है (भाग० १२.४.१७)। भूतादिसे यह दसगुणा बड़ा है। सांख्यके अनुसार संसारका यही क्रम है (मत्स्य० १२३.५२, ६१; (मत्स्य० ३.१७-२६; वायु० १००.२४३)। (२) एक रुद्र, भूत तथा सरूपाका एक पुत्र (भाग० ६.६.१८)।

महत्तमाख्यशिवव्रत–पु० [मं०] यह भाद्रपद शुक्ला प्रतिपदाको होता है जिसमें शिवजीकी पूजा होती है। नैवेद्यमें ४८ मोदक या फल दिये जाते हैं। इससे पापोंका नाश होता है और परिवार सुखी रहता है (स्कंद०)।

महती–स्त्री० [सं०] (१) ऋष्यवान् पर्वतसे निकली भारतवर्षकी एक नदी (मत्स्य० ११४.२३; वायु० ४५.९७)। (२) कुशद्वीपकी सात प्रधान नदियोंमेंसे एक नदी जिसका दूमरा नाम धृति है (मत्स्य० १२२.७४)।

महतीसप्तमी–स्त्री० [सं०] माघ शुक्ला ७ को रथारूढ़ सूर्यका पूजन तथा उपवास करे तो सात जन्मके पाप दूर हों (मत्स्य०)।

महर्लोक–पु० [सं०] सात पातालोंको छोड़ जो सात लोक वचे, उनमें यह चौथा है (ब्रह्मां० २.१९.१५५; मत्स्य० ६०.२; ६१.१; १८४.२३; वायु० १०१.१७)। इसे पुरुषकी ग्रीवा कहा गया है (भाग० २.१.२८)। संकर्षणकी ज्वालाओंके कारण ऋपि लोग इसे छोड़ जनलोक चले जाते हैं (भाग० ८.२०.३४)। यह ध्रुवसे ऊपर है तथा यहाँ योगकी गति है अर्थात् योगीजन जाते हैं (भाग० ११.२४.१४)। जनलोक इससे २ करोड़ योजन दूर है। कल्पके अंतमें यह जीवरहित हो जाता है, पर इसका अंत नहीं होता (विष्णु० २.७.१३)। प्रलयमें यह जलकर भस्म हो जाता है (विष्णु० ६.३.२८-९)।

महर्षि–पु० [सं०] महर्षिगण ब्रह्माके मानसपुत्र कहे गये हैं जो संख्यामें सात हैं यथा भृगु, मरीचि, अंगिरा आदि (ब्रह्मां० २.३२.८९, ९७; मत्स्य० १४५.८५; २४७.१०)। ये वड़े ज्ञानी थे (ब्रह्मां० २.६.७१; वायु० ७.७४; ५९.८२, ८९)। (ऋषि गतौ = ज्ञान) सृष्टिमें इनका महत्त्वपूर्ण योग रहा (वायु० ७५-६)।

महस्वान्–पु० [सं०] अमर्षणका पुत्र तथा विश्वसाह्वका पिता (भाग० ९.१२.७)।

महापौरवनंदन–पु० [सं०] यह सार्वभौमके वंशका था (वायु० ९९.१८७)।

महावीर्य–पु० [सं०] राजा गयके पौत्र विराट्का पुत्र तथा धीमान्का पिता (वायु० ३३.५८)।

महांकुशा–पु० [सं०] आकर्पिणी, उन्मादिनी आदि कई मुद्राओंमेंसे एक मुद्रा। यह मुद्रा सर्वकार्यार्थसाधिका कही गयी है (ब्रह्मां० ४.४२.११)।

महांकुशी–स्त्री० [सं०] एक देवी (ब्रह्मां० ४.४४.११४)।

महांग–पु० [सं०] केतुमालका एक जनपद (वायु० ४४.१४)।

महांड–पु० [सं०] भंडासुरका एक सेनापति (ब्रह्मां० ४.२१.८९)।

महांत–पु० [मं०] राजा गयका वंशज धीमान्का पुत्र तथा मनस्युका पिता (विष्णु० २.१.३९)।

महाकन्य–पु० [सं०] एक प्रवरप्रवर्तक ऋषिका नाम।

महाकपाल–पु० [सं०] (१) एक राक्षसका नाम (हिं० श० सा०)। (२) शिवके एक अनुचरका नाम (शिवपु०)।

महाकपि–पु० [सं०] शिवके एक अनुचरका नाम (शिवपु०)।

महाकपोल–पु० [सं०] शिवके एक अनुचरका नाम (शिव पु०)।

महाकर्ण–पु० [सं०] (१) एक काद्रवेय नाग (ब्रह्मां० ३.७.३४; वायु० ६९.७१)। (२) वशिष्ठवंशज एक ऋपिका नाम (मत्स्य० २००.७)।

महाकर्णी–स्त्री० [सं०] कुमार कार्त्तिकेयकी अनुचरी एक मातृकाका नाम (महाभा० शल्य० ४६.२६)।

महाकल्प–पु० [सं०] पुराणानुसार ब्रह्माकी आयुका पूरा समय।

महाकापि–पु० [सं०] आंगिरसवंशज प्रवरप्रवर्तक एक ऋषि (मत्स्य० १९६.१४)।

महाकाय–पु० [सं०] (१) शंकर भगवान्का एक गण जो द्वारपाल भी है और जिसका नाम नंदी भी है। (२) भंडके चतुर्बाहु, चकोराक्ष आदि ३० पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (ब्रह्मां० ४.२६.४७)।

महाकाल–पु० [सं०] (१) यहाँ सती देवीकी एक मूर्त्ति महेश्वरीके नामसे स्थापित है, अतः यह एक पवित्र शक्तिपीठ कहा गया है (मत्स्य० १३.१४)। (२) सृष्टि और प्राणियोंका अंत करनेवाला – भगवान् शंकर जिन्हें संहारकारी देव भी कहते हैं—दे० रुद्र (२)। (३) एक गणेश्वर, शिवका एक सेवक। महाकालीके साथ यह ललिताका शरीर-रक्षक था। कालमृत्युकी तरह इसके सेवक हैं, श्रीपुरम्के प्रथम प्रवेशद्वारका द्वारपाल। अन्य शक्तियाँ जो इसे सहयोग देती हैं, वे ये हैं—त्रिकोणमें महासंध्या और महानिशा, पंचकोणपर ५ शक्तियाँ, षोडश पत्र तथा नाग पत्रपरकी शक्तियाँ। इसका आसन कालचक्र है (ब्रह्मां० ३.४१ २६; मत्स्य० १८३.६४; १९२.६; २६६.४२; ब्रह्मां० ३.३२.२३; ४.३०.७५; ३२.२.४०; ३४.८९)। (४) पुराणानुसार शिवके एक पुत्रका नाम। कालिका पुराणानुसार शंकरके वीर्यकी दो बूँदोंसे महाकाल और भृंगी नामके दो पुत्र उत्पन्न हुए, भवानीके शापसे ये दोनों वैताल और भैरव हुए। (५) गुहावासी, जो १७वें द्वापरके अवतार थे, के चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (वायु० २३.१७७)। (६) काशीके माण्टि नामक ब्राह्मणका पुत्र—दे० कालभीति। (७) शिवका रुद्रकोटि, सिद्धेश्वर, महालय, गोकर्ण आदिमेंसे एक पवित्र स्थान, जहाँ दोनों संध्याओंमें शिवजीका सांनिध्य रहता है (मत्स्य० १८१.२६)।

महाकालत्व–पु० [सं०] तपस्यासे भगवान् शिवको प्रसन्न कर वाणासुरने इसे प्राप्त किया था, यह शिवसाम्य रूप है (मत्स्य० ६.१३)।

महाकालवन–पु० [सं०] अवन्तीकी एक वाटिकाका नाम (मत्स्य० १७९.५)।

महाकाली–स्त्री० [सं०] (१) अंधकासुरके रुधिर पानके लिए शिवसृष्ट एक मानसपुत्री मातृका (मत्स्य० १७९.१४)। (२) महाकालस्वरूप शिवकी पत्नी जिन्हें पाँच मुख और आठ भुजाएँ हैं। कहते हैं शिवके क्रोधसे इनकी उत्पत्ति हुई थी (वायु० १०१.२९८; विष्णु० २.१३.४९)। (३) शक्तिकी एक अनुचरीका नाम। (४) दुर्गाकी एक मूर्त्तिका नाम (देवीभाग०)। (५) ३६ वर्णशक्तियोंमेंसे एक वर्णशक्तिका नाम (ब्रह्मां० ४. ४४.५७; ३२.४)।

महाकालेश्वर–पु० [सं०] दक्षिण समुद्र तटपर स्थित एक

तीर्थ जो राजा करंधमको अति प्रिय था, यहाँ बुदबुदा नामकी अप्सरा शापवश ग्राहरूपमें रहती थी और यात्रियोंको जलमें खींच ले जाती थी, अतः ऋषियोंने इस तीर्थको छोड़ दिया था। अर्जुन (पांडव) ने अप्सराका उद्धार किया था (स्कंदपु० कुमारिकाखंड, १.२१-२२; ४९, ५० आदि)।

महाकुंड–पु० [सं०] शंकरजीका एक अनुचर (हिं० वि० को)।

महाकूट–पु० [सं०] (१) पुराणानुसार एक देशका नाम। (२) एक पवित्र पर्वत (ब्रह्मां० ३.१३.५८)। श्राद्धोंके लिए यह शुभ कहा गया है (वायु० ७७.५७)।

महाकेश–पु० [सं०] भद्राश्व देशका एक जनपद (वायु० ४३.२०)।

महाक्षेत्र–पु० [सं०] एक क्षेत्रका नाम जो सुमदना नदीके पूर्व और ब्रह्मक्षेत्रके पश्चिममें स्थित है (कालिकापु०)।

महागंगा–स्त्री० [सं०] एक नदीका नाम जिसमें स्नान कर एक पक्षतक निराहार रहनेवाला पुरुष पापरहित हो स्वर्ग-जाता है (महाभा० अनु० २५.२२)।

महागणपति–पु० [सं०] शिवके एक अनुचरका नाम जिन्हें महागणेश्वर भी कहते हैं (ब्रह्मां० ४.१४.८; २७.८३)।

महागार्ग्य–पु० [सं०] दनु और कश्यपके सौ पुत्रों (दानवों) मेंसे एक पुत्रका नाम (वायु० ६८.५)।

महागिरि–पु० [सं०] (१) कुबेरके आठ पुत्रोंमेंसे एक। कहते हैं यह शिवपूजनके लिए कमल पुष्प लाया था जिसे इसने सूँघ लिया था, अतः पिताके शापसे यह कंसका भाई हुआ था। यह श्रीकृष्णके हाथों मारा गया था (हिं० वि० को)। (२) दनु और कश्यपके विप्रचित्ति प्रमुख कई दानव पुत्रोंमेंसे एक दानव (ब्रह्मां० ३.६.९; वायु० ६८.९)।

महागिरिनगर–पु० [सं०] हिमालय पर्वतपर स्थित एक नगर (मत्स्य० १५४.४६९)।

महागुरु–पु० [सं०] ब्रह्मोपदेश देनेवाला व्यक्ति (ब्रह्मां० ४.८.४)।

महागौरी–स्त्री० [सं०] एक नदीका नाम, जो विंध्यपर्वतसे निकली है (ब्रह्मां० २.१६.३३; मत्स्य० ११४.२८; वायु० ४५.१०३)।

महाग्रीव–पु० [सं०] (१) शिवके एक अनुचरका नाम (शिवपु०)। (२) पुराणानुसार एक देशका नाम।

महाग्रीवा–स्त्री० [सं०] अंधकासुर रुधिर पानार्थ शिवसृष्ट कई मानसपुत्री मातृकाओंमेंसे एक मानसपुत्री मातृका (मत्स्य० १७९.२४)।

महाघोर–पु० [सं०] एक नरकका नाम (वायु० १०१.१४८)।

महाघोष–पु० [सं०] घोड़ेके मुखवाला एक किन्नरगण (वायु० ६९.३२)।

महाचंड–पु० [सं०] शिवके एक अनुचरका नाम (शिव पु०)।

महाचक्रा–स्त्री० [सं०] भद्राश्व देशकी एक नदी (वायु० ४३.२५)।

महाचक्रि–पु० [सं०] कश्यपवंशज एक गोत्रकार ऋषि (मत्स्य० १९९.५)।

महाचित्ता–स्त्री० [सं०] एक अप्सराका नाम (हिं० श० सा०)।

महाचित्रा–स्त्री० [सं०] अंधकासुररक्तपानार्थ शिवसृष्ट कई मानसपुत्री मातृकाओंमेंसे एक मानसपुत्री मातृका (मत्स्य० १७९.२६)।

महाचूड़ा–स्त्री० [सं०] कार्तिकेयकी अनुचरी एक मातृकाका नाम (महाभा० शल्य० ४६.५)।

महाजंभ–पु० [सं०] शंकरका एक अनुचर जो सुतलका निवासी एक राक्षस था (ब्रह्मां० २.२०.२१; वायु० ५०.२०)।

महाजय–पु० [सं०] देवजनी और मणिवरके ३० पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (वायु० ६९.१५९)।

महाजया–स्त्री० [सं०] एक संक्रांति। किसी महीनेकी कोई भी संक्रांति यदि शुक्ला सप्तमी और रविवारको हो तब उसे महाजया कहते हैं—'शुक्लपक्षे तु सप्तम्यां यदा संक्रमते रविः। महाजया तदा सा वै सप्तमी भास्कर प्रिया।।" (ब्रह्म०)। अक्षतोंसे अष्टदल कमल बना सूर्यकी मूर्त्ति स्थापित कर उपवास सहित पूजन करे तो सूर्यलोक मिलता है तथा अश्वमेध यज्ञका फल होता है (ब्रह्म०)।

महाजवा–स्त्री० [सं०] कुमार कार्तिकेयकी अनुचरी एक मातृका (महाभा० शल्य० ४६.२२)।

महाजिह्व–पु० [सं०] पुराणानुसार एक दैत्यका नाम। (हिं० श० सा०)।

महाजिह्वा–स्त्री० [सं०] ब्रह्मधानात्मजा एक ब्रह्मराक्षसी। ये चार बहिनें थीं (ब्रह्मां० ३.७.९९; वायु० ६९.१३४)।

महाज्वाल–पु० [सं०] पुराणानुसार एक नरकका नाम जहाँ पुत्री, पुत्रवधूसे समागम करनेवाला, वेद वेचनेवाला आदि पापी भेजे जाते हैं (ब्रह्मां० ४.२.१४७, १५१, १५६-७; वायु० १०१.१४६, १५५; विष्णु० २.६.२, १२)।

महातप्तकृच्छ्र–पु० [सं०] एक व्रत विशेष जिसमें तीन दिनोंतक गरम घी, दूध या जल पीकर चौथे दिन उपवास करते हैं (व्रतपरिचय)।

महातल–पु० [सं०] पृथ्वीके नीचेका पाँचवाँ भुवन जिसे ब्रह्माकी घुट्टी कहते हैं (भाग० २.१.२६; ५.४१) और जहाँ नागोंका एक क्रोधवश नामक गण रहता है (भाग० ५.२४, ७, २९)। यह चौदह भुवनोंमेंसे एक है जिसकी भूमि पत्थरके रंग की है और जहाँ विरोचन नामक एक प्रधान असुर अन्य ८ असुरोंके साथ रहता है (वायु० ५०.१२, ३४-७)।

महात्रिपुरसुंदरी–स्त्री० [सं०] ललिताका एक नाम (ब्रह्मां० ४.१८.१४)।

महादंत–पु० [सं०] ललिताकी वैदूर्यशालाका एक नाग (ब्रह्मां० ४.३३.३६)।

महादंष्ट्र–पु० [सं०] भंडका एक सेनापति (ब्रह्मां० ४.२१.८६)।

महादान–पु० [सं०] (१) पुराणानुसार तुलादान, सोनेकी गौ आदि। पृथ्वी, हाथी इत्यादिका दान जिससे स्वर्ग मिलता है। (२) ग्रहणके समय दिये जानेवाले दान जो प्रायः डोमको देते हैं. इसे भी महादानोंमें गिनते हैं।

महादीप्त–पु० [सं०] किष्किन्धाधिपति वालीके सामन्त तथा सेनानायक सैकड़ों महाबली प्रधान वानरोंमेंसे एक प्रधान वानर (ब्रह्मां० ३.७.२३६)।

महादेव–पु० [सं०] भगवान शंकरका एक नाम अथवा शिवकी एक उपाधि (ब्रह्मां० २.२६.१; मत्स्य० ४७.७५; विष्णु०१.८.६.)। यह चन्द्रमाका अधिष्ठाता देवता है (मत्स्य० २४६.६१; २६५.४२)। अपने पूर्व जन्मोंमेंसे एकमें यह श्रीकृष्ण थे (मत्स्य० ४७.१)। इनका निवास कैलाश पर्वत है (मत्स्य० ५४.२)। लवणासुरने इनकी उपासना की थी (ब्रह्मां०३.३.७०; ७.९१–२)। भंडके अनुगामियोंने भी इनकी पूजा की थी (ब्रह्मां० ३.१०.१७; २१.७६’२५.१४; ६०.२८; ७२.३, १०८, ११६; ४.१०. २९; ११.३२; १२.१६)। कहते हैं भृगु इनके पुत्र थे (ब्रह्मां० ३.१.३८)। इनकी ही अकृपाके कारण दक्षके मानस-जनित जीवोंकी वृद्धि रुक गयी थी। इनके वरसे सुरभीके ग्यारह पुत्र जिन्हें रुद्र कहते हैं उत्पन्न हुए थे (ब्रह्मां० ३.२.४)। शुक्र इनके पास नीति सीखने गये थे (मत्स्य० ४७.७५)। पार्वतीके साथ यह महाकालवनमें भ्रमण करते थे (मत्स्य० १७९.३)। पूर्वके किसी युगमें इनका अवतार नहीं हुआ केवल कलियुगमें हुए (वायु० २६.२)। चंद्रमा इनकी मानसी तनु है (वायु० २७.१३)। वायुपुराणानुसार इनकी मानसी तनुरूप रोहिणी पत्नी तथा बुध पुत्र ठहरते हैं (वायु० २७.४७.५६)।

महादेवा–स्त्री० [सं०] देवककी, वृकदेवा उपदेवा आदि सात पुत्रियोंमें एकका नाम। ये सातों बहिनें वसुदेवको ब्याही गयी थीं (वायु० ९६.१३०)।

महादेवी–स्त्री० [सं०] (१) भगवती, देवीका एक नाम। इन्द्रके अग्निकुंडसे निकली ललितादेवीका एक नाम जिसकी स्तुति देवताओंने भंडसे छुटकारा पानेके लिए की थी (ब्रह्मां ०४.६.३; १२.७४; १३.२९; १४.२६; १५.३; १८.१५; ३६.४)। (२) अन्धकासुररक्तपानार्थ शिवसृष्ट कई मानसपुत्री मातृकाओंमेंसे एक मानसपुत्री मातृका (मत्स्य० १७९.३१)। (३) शालिग्राममें स्थापित सती देवीकी एक मूर्तिका नाम (मत्स्य १३.३३)।

महादैत्य–पु० [सं०] पुराणानुसार भौत्य मन्वंतरके एक दैत्यका नाम (गरुड़पु० अ० ७८)।

महाद्युति–पु० [सं०] मणिभद्र और पुण्यजनीके २४ पुत्रोंमें से एक पुत्र, एक यक्ष (ब्रह्मां० ३.७.१२४)।

महाद्रुम–पु० [सं०] (१) शाकद्वीपेश्वर हव्यके सात पुत्रोंमेंसे एक पुत्र जिसके नामपर माहाद्रुम वर्षका नामकरण हुआ (ब्रह्मां० २.१४.१६.२१; विष्णु० २.४.६०; वायु०३१.२०)। (२) पुराणानसार एक वर्ष या देशका नाम जो विभ्राज पर्वतके चारो ओर है (मत्स्य० १२२. २५)। (३) शाक्द्वीपका एक राज्य जो केशर पर्वतसे संलग्न है (ब्रह्मां० २.१६.२१; १९.९३; वायु० ४९.८७)। (४) हरिषेण, सुषेण आदि अनेक मनुष्याकृति किन्नरोंमेंसे एक मनुष्याकृति किन्नरका नाम (वायु० ६९.३५)।

महाधृति–पु० [सं०] विबुध (भाग० = विश्रुत)का पुत्र तथा कीर्तिरात (भाग० = कृतिरात)का पिता (ब्रह्मां० ३.६४.१२; भाग० ९.१३.१६-१७; विष्णु० ४.५.२०)।

महाध्वनि–पु० [सं०] पुराणानुसार एक दानवका नाम। (हि० वि० को०)।

महान्–पु० [सं०] (१) भीमान्का पुत्र तथा भौवनका पिता (ब्रह्मां० २.१४.६९; वायु० ३३.५९)। (२) बीस अमिताभ देवताओंमेंसे एक अमिताभ देवका नाम (ब्रह्मां० ४.१.१७; वायु० १००.१६)। (३) शतरूपाकी सात संतानोंमेंसे एक (मत्स्य० ४.२५)। (४) गुण साम्यावस्थारूप प्रकृतिसे उत्पन्न महान्से अन्य वस्तुएँ उत्पन्न हुई—मन= महान्।’ “मति” = ब्रह्मा, “बुद्धि” = भू, “ख्याति” ईश्वर, प्रज्ञाचिति; स्मृति, संवित् आदि। संकल्प तथा अध्यवसाय इसकी दो वृत्तियाँ हैं (वायु० ४.२४-३०, ४६; १०२. २९-२१) प्रलयमें यह ‘विराट’को प्राप्त करता है (वायु० १०२.६, १२) यह एक प्रधान तत्त्व है (विष्णु० १.२.३४-६, ५४)।

महानद–पु० [सं०] ऋक्षवान् पर्वतसे निकली अनेक नद-नदियोंमेंसे एक नदीका नाम (ब्रह्मां० २.१६.२९)।

महानदी–स्त्री० [सं०] (१) द्रविड़ देशमें पारियात्र पर्वतसे निकली एक नदी (भाग० ५.८.१; १०.१८; ११.५४०; ब्रह्मां २.१६.२८)। (२) भद्राश्व देशकी अनेक नदियोंमेंसे एक नदीका नाम (वायु० ४३.२९)।

महानन्द–पु० [सं०] मद्रदेशके राजकुमार जो नरिष्यन्त-पुत्र दम द्वारा वेतसपत्र वाणसे मारे गये थे (मार्कण्डेयपु०)

महानन्दि–पु० [सं०] नन्दिवर्द्धनका पुत्र, दस शिशुनागोंका अंतिम राजा जिसका पुत्र महापद्म एक शूद्रासे उत्पन्न हुआ था। ऐक्ष्वाक (इक्ष्वाकुवंशी), पांचाल, कालक, हैहय, कलिंग, शक, कुरु, मैथिल, शूरसेन तथा वीतिहोत्र वंश इसीके समकालीन थे (भाग० १२.१.७-९; ब्रह्मां० ३. ७४.२२७; मत्स्य० २७२.१२-१८; वायु० ९९.३२०-२५; विष्णु० ४.२४. १८-१९)।

महानवमी–स्त्री०[सं०]—दे० महाष्टमी। पूजनविधि दशमीके शस्त्रपूजनमें।—दे० हेमाद्रि, देवीभाग०।

महानस–पु० [सं०] शाकद्वीपके सात सीमा पर्वतोंमेंसे एक सीमा पर्वत (भाग० ५.२०२६)।

महानाद–पु० [सं०] (१) अतलका निवासी एक असुर (ब्रह्मां० २.२०.१६)। (२) ५१ विघ्नेश्वरोंमें एक विघ्नेश्वरका नाम (ब्रह्मां० ४.४४.६७)। (३) पितरोंके श्राद्ध आदिके लिए प्रशस्त एक पवित्र तीर्थस्थान (मत्स्य० २२. ५३)।

महानादा–स्त्री० [सं०] अन्धकासुर-रक्तपानके लिए शिवसृष्ट कई मानसपुत्री मातृकाओंमेंसे एक मातृका देवी (मत्स्य० १७९.३१)।

महानाभ–पु०[सं०] (१) हिरण्याक्षके शकुनि, शम्बर आदि ९ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (भाग० ७.२.१८; मत्स्य० ६.१४; वायु० ६७.६८; विष्णु० १.११.३)। वृत्रासुरके साथ यह इंद्रसे लड़ने गया था (भाग० ६.१०(२०); ब्रह्मां० ३.५. ३१)। (२) हरिकूटस्थ एक पर्वतका नाम जो हरिकूटमें स्थित भगवान् श्रीहरिके प्रभावसे प्रकाशमान रहता है (वायु० ३९.५८)।

महानास–पु० [सं०] केतुमालके निवासी तथा जनपद (वायु० ४४.१३)।

महानासा–स्त्री० [सं०] अन्धकासुररक्तपानके लिए शिवसृष्ट अनेक मानसपुत्री मातृकाओंमेंसे एक मानस-पुत्री मातृका (मत्स्य० १७९.२१)।

महानिरय–पु० [सं०] एक नरकका नाम।

महानिशा–स्त्री० [सं०] महाकालसे सम्बद्ध एक शक्ति (ब्रह्मां० ४.३२.९)।

महानील–पु० [सं०] (१) एक काद्रवेयनागका नाम (ब्रह्मां० ३.७.३४; मत्स्य० ६.३९; वायु० ६९.७१)। (२) अरुणोदके पूर्वमें स्थित एक पर्वत (वायु० ३६.१९) इसके ऊपर किन्नरोंके १५ नगर बसे हुए हैं (वायु० ३९.३२; ४२.६८)।

महानेत्र–पु० [सं०] (१) वेणुमंत पर्वत परका निवासी एक विद्याधर (वायु० ३९.३८)। (२) भद्राश्वदेशका एक जनपद (वायु० ४३.२१)। (३) घोड़ेके तुल्य मुखवाला एक किन्नरगण (वायु० ६९.३२)।

महापद्म–पु० [सं०] (१) कश्यप और कद्रूके पुत्र हजारों काद्रवेय नागोंमें एक काद्रवेयनागका नाम (ब्रह्मां० ३.७.३३; मत्स्य० ६.३०; वायु० ६९.७०; विष्णु० १.२१.२१)। जो ललिताकी वैदूर्यशालामें रहता है (ब्रह्मां० ४.२०.५४; ३३.३६)। हिरण्यकशिपुने इसे हिला दिया था (मत्स्य० १६३.५६) यह हेमंत ऋतुके मार्गशीर्ष मासमें सौरगणके अन्य छहके साथ सूर्यरथपर अधिष्ठित रहता है (ब्रह्मां० २.२३.१७; मत्स्य० १२६.१८; वायु० ५२.१७; विष्णु २.१०.१३)। (२) नव निधियोंमेंसे एक निधिका नाम (वायु० ४१.१०)। (३) आठ दिग्गजोंमेंसे दक्षिणदिशाका दिग्गज (ब्रह्मां० ३.७.३४६)। (४) कुबेरके एक अनुचर किन्नरका नाम। (५) एक शूद्राके गर्भसे उत्पन्न महनंदीका पुत्र जिसने ८८ (२८ = विष्णु०) वर्षोंतक राज्य किया था। परशुरामकी ही तरह इसने भी क्षत्रियोंका नाश किया था। सुमाल्य (सुमति = विष्णु०; सुकल्प = मत्स्य०) आदि इसके आठ पुत्र थे। मत्स्यपुराणानुसार कौटिल्य नामक ब्राह्मणने इस वंशका अंत किया था (भाग० १२.१.९-१२; ब्रह्मां० ३.७४ १३९-४२, २२८; मत्स्य० २७२,१८-२२; वायु० ९९.३२६-३१; विष्णु० ४.२४.२०-३, २६)। परीक्षित्से महापद्मतक १०५० वर्ष हुए (मत्स्य० २७३.३६-३७)।

महापद्मपुर–पु० [सं०] गङ्गाके दक्षिणतटपर बसे एक नगरका नाम (महाभा० शान्ति० ३५३.१)।

महापद्माटवी–पु० यह [सं०] श्रीपुरम्की शृंगारशालामें है (ब्रह्मां० ४.३५.६४, ६९,८०,१०५)।

महापर्णी–स्त्री० [सं०] श्रीपुरम्की मुक्ताफलशालाकी एक नदी (ब्रह्मां० ४.३३.५२)।

महापातक–पु० [सं०] ब्रह्महत्या, मद्यपान, सुवर्णकी चोरी करना, गुरुपत्नीसे समागम, आदि महापातक हैं जिनके लिए मृत्यु-दण्डका विधान है पर ब्राह्मण पातकीके मुखपर भिन्न-भिन्न चिह्न अंकित कर निर्वासित कर दिया जाता था (मत्स्य० २२६.१६१-१६५)।

महापांशु–पु० [सं०] विश्रवा और पुष्पोत्कटाके चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (वायु० ७०.४९)।

महापार्श्व–पु० [सं०] (१) हिरण्य कशिपुकी सभाके एक दानवका नाम (मत्स्य० १६१.८०)। (२) एक राक्षस जो पुष्पोत्कटाका एक पुत्र था (ब्रह्मां० ३.८.५५)।

महापीठ–पु० [सं०] जिसे बिन्दुपीठ भी कहते हैं (ब्रह्मां० ३.३७.४७)।

महापुण्या–स्त्री० [सं०] पुराणानुसार एक नदीका नाम।

महापुमान्–पु० [सं०] मोदाकी वर्षसे आगेके एक पर्वतका नाम (महाभा० भीष्म० ११.२६)।

महापुर–पु० [सं०] एक प्राचीन तीर्थस्थान जहाँ स्नान कर तीन रात्रितक पवित्रतापूर्वक उपवास करनेसे मनुष्य चराचर जीवोंसे प्राप्त होनेवाले भयसे मुक्त हो जाता है (महाभा० अनु० २५.२६)।

महापुराण–पु० [सं०] वैष्णवोंके मतसे भागवत तथा और पुराण—दे० पुराण।

महापौरवनंदन–पु० [सं०] सार्वभौमके कुलमें उत्पन्न एक राजा जो रुक्मरथका पिता था (मत्स्य० ४९.७२)।

महाप्रकाशा–पु० [सं०] मार्तण्ड भैरवकी तीन शक्तियोंमेंसे एक शक्ति (ब्रह्मां० ४.३५.४७)।

महाप्रकृति–पु० [सं०] पुराणानुसार दुर्गाका एक नाम, जो सृष्टिका मूल कारण मानी जाती हैं।

महाप्रभा–स्त्री० [सं०] पुराणानुसार एक नदीका नाम।

महाप्रलय–पु० [सं०] सारी सृष्टिके विनाशके बादका काल जब केवल अन्धकार ही रहता है। यह प्रत्येक कल्पके अंतमें होता है (मत्स्य० २.२५)।

महाप्रसाद–पु० [सं०] जगन्नाथजीको भोग लगा हुआ भात जिसे बिना भेद-भावके सब समानरूपसे ग्रहण करते हैं (स्कंदपु० उत्कलमा०)।

महाफण–पु० [सं०] श्रीपुरम्के वैदूर्यशालके निवासी शेष, कर्कोटक आदि कई नागोंमेंसे एक नागका नाम (ब्रह्मां० ४.३३.३६)।

महाबल–पु० [सं०] (१) तामस और रौच्य मन्वंतरके इन्द्रका नाम। (२) पितरोंके एक गणका नाम। (३) शिवके एक अनुचरका नाम। (४) विष्णुके एक अनुचरका नाम (भाग० ११.२७.२८)। (५) कश्यप और दनुके विप्रचित्ति प्रमुख १०० पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (मत्स्य० ६.१६; वायु० ६८-७)। (६) हृदीकके १० पुत्रोंमेंसे एक (मत्स्य० ४४.८२)। (७) हिरण्यकशिपुकी सभाका एक असुर (मत्स्य० १६१-८०)। (८) अश्वमुखीसे विक्रान्त द्वारा उत्पन्न भद्रसेन, कालिन्द आदि कई घोड़ेकी-सी आकृतिवाले किन्नरोंमेंसे एक किन्नर (वायु० ६९.३२)।

महाबाहु–पु० [सं०] (१) धृतराष्ट्रके १०० पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (महाभा० आदि० ६७.९८)। (२) एक दानवका नाम जो दनु और कश्यपके विप्रचित्ति प्रमुख १०० पुत्रोंमेंसे एक पुत्र था (मत्स्य० ६.१९)। (३) विष्णु भगवानका एक नाम। (४) हिरण्याक्षके उत्कुर, शकुनि आदि कई पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (विष्णु० १.२१.३)।

महाबोधि–पु० [सं०] पितरोंके लिए पवित्र एक तीर्थ (मत्स्य० २९.३३)।

महाबोधितरु–पु० [सं०] वृक्षोंका राजा अश्वत्थ वृक्षकी स्तुति। अश्वत्थ ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव त्रिमूर्तिका प्रतिनिधि समझा जाता है। इसके दर्शन, स्पर्श तथा नमस्कारसे पितरोंको दुर्गतिसे शाश्वती गति प्राप्त होती है (वायु० १११.२६)।

महाभद्र–पु० [सं०] (१) पुराणानुसार एक पर्वतका नाम। (२) एक झील जो पुराणानुसार मेरु पर्वतके उत्तरमें स्थित

कही गयी है। विष्णुपुराणानुसार वह इलावृतमें है (वायु० ३६.१६.; विष्णु २.२.२६)।

महाभद्रा–स्त्री० [सं०] पौष शुक्ला ८ बुधवारको स्नान-दानसे शिव प्रसन्न होते हैं (कृत्यकल्पतरु)।

महाभय–पु० [सं०] अधर्मकी स्त्री निर्ऋतिके गर्भसे तीन नैर्ऋतनामक राक्षसोंमेंसे एकका नाम (महाभा० आदि० ६६.५४,५५)।

महाभया–स्त्री० [सं०] पुराणानुसार एक नदीका नाम।

महाभाग–पु० [सं०) देवभागका पुत्र (ब्रह्मां० ३.७१.१८८)।

महाभागा–स्त्री० [सं०] महालयमें स्थापित सती देवीकी एक मूर्तिका नाम (मत्स्य १३.४४)।

महाभारत–पु०[सं०] एक बड़ा महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक महाकाव्य जिसमें कुरुक्षेत्रके प्रसिद्ध युद्धका वर्णन है। इसमें अट्ठारह (१८) पर्व हैं जिनके नाम ये हैं आदि सभा, वन, विराट, उद्योग, भीष्म, द्रोण, कर्ण, शल्य, सौप्तिक, स्त्री, शान्ति, अनुशासन, अश्वमेध, आश्रमवासी, मौसल, महाप्रस्थान और स्वर्गारोहण। इस ग्रन्थमें लगभग ८०-९० हजार श्लोक हैं।

कौरव-पांडव युद्धके पश्चात् व्यासजीने 'जय' नामक ऐतिहासिक काव्य लिखा जिसे वैशंपायनने कुछ बढ़ाकर उसका नाम 'भारत' रखा। तदुपरांत सौतिने इसमें और कथाएँ जोड़ दीं और 'महाभारत' बन गया। हिन्दुओंका यह एक महत्त्वपूर्ण धार्मिक ग्रंथ है (विष्णु० २.४.५; वायु० १.१८,४५)।

महाभिष–पु० [सं०] राजा प्रतीपके तीन पुत्रोंमेंसे (देवापि, शन्तनु और वाह्लीकमेंसे) एक महाराज शान्तनुके पूर्वजन्मका नाम (भाग० ९.२२.१२; वायु० ९९.२३७)।

महाभिषेक–पु० [सं०] भृगुओं द्वारा बलिका महा अभिषेक किया गया था (भाग० ८.१५.४)। अंबरीषने भी इसकी विधिका अनुसरण किया था (भाग० ९.४.३१)।

महाभीत–पु० [सं०] (१) राजा शांतनुका एक नाम (महाभा०)। (२) शिवके एक द्वारपालका नाम जिसे भृंगी भी कहते हैं—दे० भृंगी।

महाभूत–पु० [सं०] पृथ्वी, जल अग्नि, वायु और आकाश ये ही ५ तत्त्व=पंचभूत हैं (वायु० १०१.३४५)।

महाभूतघट–पु० [सं०] रत्न-जड़ित सुवर्ण घटका दान, जिसे दान करनेवाला जन्म-मरणकी श्रृंखलासे मुक्त होकर विष्णुलोक प्राप्त करता है (मत्स्य० २७४.१०; २८९.१-१७)।

महाभैरव–पु० [सं०] शिवका एक पवित्र स्थान (मत्स्य० १८१.२९)।

महाभोगपति–पु० [सं०] वह विशाल सर्प जिसपर विष्णु सोते हैं (वायु० २४.११)।

महाभोज–पु०[सं०] (१) सात्वतके कौशल्याके गर्भसे उत्पन्न ७ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र जो बड़ा धार्मिक तथा भोजवंशका आदि पुरुष था। एक महारथ जिसने सत्राजित्को मारकर स्यमंतक मणि अक्रूरको दी थी (भाग० ९.२४.७.११; ब्रह्मां० ३.७१.२, १७-७१; वायु० ९६.२; विष्णु० ४.१३.१,७)।

महाभौम–पु० [सं०] भद्राश्व देशका एक जनपद (वायु० ४३.२२)।

महाभ्राज–पु० [सं०] एक वनका नाम जहाँसे बहती हुई गङ्गा शीतोद झीलमें प्रविष्ट होती है (वायु० ४२.४६)।

महामख–पु० [सं०] ये सविता और पृश्निसे उत्पन्न हुए थे (भाग० ६.१८.१)।

महामना–पु० [सं०] जनमेजय (महाशाल=विष्णु०, मत्स्य, और वायु०)के योग्य पुत्रका नाम (ब्रह्मांडपुराणानुसार पुरंजय इनके पिता थे तथा उशीनर और तितिक्षु इनके पुत्र थे। यह एक चक्रवर्ती सम्राट थे (भाग० ९.२३.२; ब्रह्मां० ३.७४.१५-१७; मत्स्य० ४८.१४-१५; वायु० ९९.१६-८; विष्णु० ४.१८.६-७)।

महामलय–पु० [सं०] मलयद्वीपका एक पर्वत (वायु० ४८.२२)।

महामह–पु० [सं०] भंडके एक पुत्र तथा सेनापतिका नाम (ब्रह्मां० ४.२१.८६)।

महामाघी–स्त्री० [सं०] माघ शुक्ल १५ को मेषका शनि, सिंहके गुरु चंद्र तथा श्रवणका सूर्य हो तब महामाघी होती है। इसका फल अमिट होता है (कृत्यचंद्रिका)।

महामात्र–पु० [सं०] कंस हस्तिपकका इसी नामसे संबोधन करता था (भाग० १०.३६.२४(१-४)२५। कुवलयापीड़ हस्तीके लिए एकसे अधिक महामात्र थे पर श्रीकृष्णने सबका वध कर डाला था (भाग० १०.४३.१२,१४; ब्रह्मां० ३.३८.२४)।

महामान–पु० [सं०] स्वारोचिष मन्वंतरके दो देवगणोंमेंसे एक पारावत देवगणके १२ देवोंमेंसे एक देवका नाम (ब्रह्मां० २.३६.१४)।

महामाय–पु० [सं०] (१) भंडका एक पुत्र सेनापति जो दानव था (ब्रह्मां० ३.६.५; ४.२१.८१)। (२) एक विद्याधरका नाम।

महामाया–स्त्री० [सं०] शंबरको परास्त करनेके लिए एक विद्या जो मायावतीने प्रद्युम्नको सिखलायी थी। यह एक प्रकारका अस्त्र था जो सब प्रकारकी मायासे व्यक्तिकी रक्षा करनेमें समर्थ था (भाग० १०.५५.१६,२२)।

महामाली–पु० [सं०] कैलाशका निवासी यक्षोंका एक राजा (वायु० ४१.२५)।

महामुखी–पु० [सं०] अन्धकासुररक्तपानके लिए शिवसृष्ट अनेक मानसपुत्री मातृकाओंमेंसे एक मानस-पुत्री मातृका (मत्स्य० १७९.२१, २४)।

महामुद–पु० [सं०] देवजनी और मणिवरके ३० पुत्रोंमेंसे एक पुत्र यक्ष (ब्रह्मां० ३.७.१२८)।

महामुद्रा–स्त्री० [सं० आवाहनी मुद्रा जिसका नामान्तर त्रिखण्डा है। यह मुद्रा देवीके आवाहनमें प्रयुक्त होती है (ब्रह्मां० ४.४२.२)।

महामूल–पु० [सं०] मानससरोवरमें दक्षिणकी ओरके त्रिशिखर, शिशिर आदि अनेक पर्वतोंमेंसे एक पर्वत (वायु० ३६.२४)।

महामेघ–पु० [सं०] एक राक्षस जिसका निवासस्थान (नगर) पाँचवें तल (महातल=वायु०) में था (ब्रह्मां० २.२०.३७; वायु० ५०.३६)।

महाङ्कुशा–पु० [सं०] सर्वकार्योंकी साधिका एक मुद्रा

(ब्रह्मां० ४.४२.११)।

महाङ्कुशी—स्त्री० [सं०] आठ मुद्रा देवियोंमेंसे एक मुद्रा देवी (ब्रह्मां० ४.४४.११४)।

महायज्ञ—पु० [सं०] धर्मशास्त्रानुसार नित्य किये जानेवाले पाँच मुख्य कर्म जिनसे नित्यके किये पापोंका नाश हो जाता है। ये कर्म इस प्रकार है :—(क) ब्रह्मयज्ञ = संध्योपासन। (ख) देवयज्ञ = हवन। (ग) पितृयज्ञ = तर्पण। (घ) भूतयज्ञ = बलि। (ङ) नृयज्ञ = अतिथिसत्कार। इसे बिना मन्त्रोंके शूद्र भी कर सकते हैं और यह कई प्रकारसे फल-दायक हैं। इसमें पहिले पिंडदान है तब अतिथिसत्कार आता है। धार्मिक अतिथियोंको यों ही विदा नहीं करना चाहिये। उन्हें भोजन कराना आवश्यक है (ब्रह्मां० ३.१२.१६-२०; वायु० ७६.१७,२६,३०)।

महायशा—पु० [सं०] संकृतिका पुत्र तथा सत्कृतीका पति। गुरुधि तथा रंतिदेव इसके दो पुत्र थे (मत्स्य० ४९.३६-७)।

महार[illegible]ा—स्त्री० [सं] अन्धकासुर-रुधिरपानके लिए शिवजी द्वारा सृष्ट कई मानस-पुत्री मातृकाओंमेंसे एक मानस-पुत्री मातृका (मत्स्य० १७९.१३)।

महारथ—पु० [सं०] एक उपाधि जो कार्त्तवीर्यार्जुनके शूर शूरसेन आदि पाँच पुत्रोंने प्राप्त की थी एवं धर्मकेतुके पुत्र सत्यकेतुने भी यह उपाधि प्राप्त की थी (ब्रह्मां० ३.६९.४९; वायु० ९२.७०)। भण्डकी सेनाके आमिल नामक एक दैत्येन्द्रकी उपाधि विशेष (ब्रह्मां० ४.२९.२१)।

महाराज—पु० [सं०] पुरुषरूपी वेदकी एक उपाधि अर्थात् जैसे भृत्य महाराजकी सेवामें तत्पर रहते हैं वैसे ही वेदरूपी महाराजकी सेवामें पुराण, तर्क, तन्त्र, आगम आदि संलग्न रहते हैं (वायु० १०४.८५)।

महाराजिक—पु० [सं०] एक प्रकारके गण देवता जिनकी संख्या एक मतसे २२६ और अन्य मतानुसार ४००० कही जाती है।

महाराज्ञी—स्त्री० [सं०] श्री ललितादेवीका एक नाम (ब्रह्मां० ४.१८.१४; २५.१०८)।

महारात्रि—स्त्री० [सं०] महाप्रलयरूपी रात जिसके पश्चात् दूसरा महाकल्प आरम्भ होता है।

महारावण—पु० [सं०] पुराणानुसार वह रावण जिसके हजार मुख और २००० भुजाएँ थीं, जिसे जानकीजीने मारा था (अद्भुतरामायण)।

महाराष्ट्र—पु० [सं०] दक्षिणका एक राज्य (ब्रह्मां० २.१६.५७; वायु० ४५.१२५)।

महारुद्र—पु० [सं०] एक मन्त्र जो पितरोंको प्रिय तथा पवित्र है तथा शिवकी एक उपाधि भी है (मत्स्य० २२.३४; ब्रह्मां० ४.३३.८४; ३४.१, ५०-१)।

महारोमा—पु० [सं०] कृतिरात (कीर्त्तिराज = वायु० तथा विष्णु०। ब्रह्मां० = कीर्त्तिरात) का एक पुत्र तथा स्वर्णरोमाका पिता (भाग० ९.१३.१७; ब्रह्मां० ३.६४.१३-१४; वायु० ८९.१३; विष्णु० ४.५.२७)।

महारौरव—पु० [सं०] पुराणानुसार एक नरक जो २८ नरकोंमें एक है अर्थात् पृथ्वीके सात नरकोंके नीचे (वायु०)। जो लोग देवताओंका धन चुराते या गुरुपत्नीगमन करते हैं वे यहीं भेजे जाते हैं। यहाँ क्रव्याद नामक रुरु पापियोंको कष्ट देते हैं (भाग० ५.२६.७, १२; वायु० १०१.१७७; विष्णु० १.६.४१)।

महार्णव—पु० [सं०] पुराणानुसार एक दैत्यका नाम जिसे कूर्मावतारमें भगवान्ने अपने दाहिने पैरसे उत्पन्न किया था।

महार्थ—पु० [सं०] एक दानवका नाम।

महालक्ष्मी—स्त्री० [सं०] (१) लक्ष्मी-पूजनकी विशेषविधि—दे० 'सारसंग्रह'। (२) पुराणानुसार नारायणकी एक शक्ति (विष्णु०)। (३) लक्ष्मी देवीकी एक मूर्त्तिका नाम। (४) कामाक्षी (ब्रह्मां० ४.२९.८)। ब्रह्मा, विष्णु तथा ईशकी माता (ब्रह्मां० ४.३६.५८; ३९.२१.१११; ४०.५; वायु० १०९.२३)। यह त्रिपुरांबिका है.(ब्रह्मां० ४.४१.३; ४४.१११; ४३.८५)। (५) करवीरमें स्थापित सतीदेवीकी एक मूर्ति (मत्स्य० १३.४१)।

महालक्ष्मीपुर—पु० [सं०] यह ललितापीठका पवित्र स्थान है (ब्रह्मां० ४.४४.९९)।

महालक्ष्मीव्रत—पु० [सं०] भाद्रपद शुक्ला ८ से आरम्भ कर आश्विन कृष्ण ८ तक लक्ष्मीका पूजन करे—दे०महालक्ष्मी (१)।

महालय—पु० [सं०] (१) पितृपक्ष = आश्विनका कृष्णपक्ष जिसमें श्राद्ध-तर्पणादि करते हैं—दे० पितृपक्ष। (२) यहाँ महाभागाके नामसे सती देवीकी एक मूर्ति स्थापित है। यह एक शक्तिपीठ है (मत्स्य० १३.४४)। (३) सत्रहवें द्वापरके भगवदवतार गुहावासीके चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (वायु० २३.१७७)। (४) शिवके आठ पवित्र स्थानों, जिनमें शिवजीका दोनों संध्याओंमें सांन्निध्य रहता है, मेंसे एक पवित्र स्थान (मत्स्य० १८१.२९)। (५) सिद्धिक्षेत्रका एक नाम जहाँ महेश्वरका निवासस्थान है। यहाँ जानेवाले व्यक्तिके आगे तथा पीछे दस पीढ़ियोंकी तथा स्वयम् उसकी ऋणसे मुक्ति होती है (वायु० २३.१७५, १७९)।

महालया—स्त्री० [सं०] (१) पितृपक्षकी अमावस्या तिथि जिस दिन पितृविसर्जन करते हैं—दे० पितृपक्ष। (२) एक नदी जहाँ तीर्थ है (ब्रह्मां० ३.१३.८२, ८८)।

महालिंग—पु० [सं०] यहाँ कपिला नामसे सतीदेवीकी एक मूर्ति स्थापित है, अतः एक पवित्र तीर्थ है (मत्स्य० १३.३३)। पितरोंको प्रिय एक तीर्थ (मत्स्य० २२.३४)।

महावज्रेश्वरी—स्त्री० [सं०] एक अक्षरादेवी जिसने भण्डसेनापति केकिवाहनका वध किया था (ब्रह्मां० ४.१९.५८; २५.९६; ३७.३४)।

महावराह—पु० [सं०] वाराहपुराणमें इसका विवरण दिया है (मत्स्य० ५३.३९)।

महावसु—पु० [सं०] इन्द्रावरुणका एक नाम।

महावाग्वादिनी—स्त्री० [सं०] एक देवी, ललिताका एक नाम (ब्रह्मां० ४.२९.८९)।

महावारुणी—स्त्री० [सं०] चैत्र बदी १३ को यदि शतभिषा नक्षत्र हो तो वारुणी योग होता है और यदि उक्त तिथि शनिवारको पड़े तो महावारुणी योग होता है। पुराणानुसार ऐसे अवसर पर गंगास्नान करनेका बड़ा महात्म्य है।

महाविद्या—स्त्री० [सं०] काली, तारा, षोडशी, भुवनेश्वरी,

छिन्नमस्ता, धूमावती, बगलामुखी, मातंगी और कमलात्मिका, ये दस देवियाँ महाविद्या कही गयी हैं। यह शब्द देवीका द्योतक है (विष्णु० १.९.१२०)। ललिताका एक नाम (ब्रह्मां० ४.१८.१६)।

महाविश्व—पु० [सं०] कश्यप और दनुके विप्रचित्तिप्रमुख १०० पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (वायु० ६८.४)।

महावीत—पु० [सं०] (१) पुराणानुसार पुष्करद्वीपका एक पर्वत। (२) पुष्करद्वीपके अधिपति राजा सवनके दो पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (ब्रह्मां० २.१४.१४.१५; वायु०३३.१४)। (३) पुष्करद्वीपका एक राज्य जो मानस पर्वतसे संलग्न है तथा जिसका नामकरण सवन-पुत्र महावीतके नामपर हुआ (ब्रह्मां० २.१९.११७, १२५; वायु० ३३.१५; ४९.११३, १२१)।

महावीचि—पु० [सं०] एक नरकका नाम (मनु)—दे० नरक।

महावीर—पु० [सं०] (१) पवनसुत हनुमान्‌जीका एक नाम। (२) मखानल नामक मनुके एक पुत्रका नाम। (३) प्रियव्रतका एक पुत्र जो आजीवन अविवाहित रहा तथा आत्मविद्यामें लगा था (भाग० ५.१.२५-६)।

महावीर-जयन्ती—स्त्री० [सं०] —दे० हनुमान-जयन्ती।

महावीर्य—पु०[सं०] (१) बृहद्रथका पुत्र जो बड़ा वीर योद्धा था (बृहदुत्थ = वायु०) यह सुधृत (वायु० सुधृति)का पिता था (भाग० ९.१३.१५; वायु० ६१.४४; ८९.९)। (२) चाक्षुष मन्वन्तरके एक इन्द्रका नाम (ब्रह्मां० २.३६.७६)। (३) रैवत मनुके दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (ब्रह्मां० २.३६.६३)। (४) बृहदुक्थका पुत्र तथा धृतिमान् या (सुधृति = विष्णु०) का पिता था (ब्रह्मां० ३.६४.९; विष्णु० ४.५.२५)। (५) मन्यु (भुवमन्यु = वायु० तथा (मत्स्य०) का पुत्र तथा दुरितक्षया (दुरुक्षय = विष्णु०) का पिता (भाग० ९.२१.१,१९; मत्स्य० ४९.३६; वायु० ९९.१५९; विष्णु० ४.१९.२१,२४)। (६) विराटका एक पुत्र (ब्रह्मां० २.१४.६९)। (७) पुष्करद्वीपके सवनका एक पुत्र, जिसके नामपर राज्यका नामकरण हुआ (विष्णु० २.४.७३)।

महावीर्या—स्त्री० [सं०] सूर्य-पत्नी संज्ञाका एक नाम —दे० संज्ञा।

महावृक्ष—पु० [सं०] एक ऋषि जिन्होंने शाप द्वारा कुसुमपुर-नरेशकी ९९ पुत्रियोंको कुबड़ी बना दिया था। सौवीं पुत्री जो इनसे विवाह करनेको सहमत हुई वही ठीक रह गयी। इन कन्याओंमें पिताका नाम ब्रह्मदत्त लिखा है। इन्हीं कुबड़ी कन्याओंके नामपर कान्यकुब्ज देशका नामकरण हुआ—दे० ह्वेनसांग, कान्यकुब्ज।

महावृष—पु० [सं०] पुराणानुसार सुरम्य पर्वतके निकट स्थित एक तीर्थका नाम।

महावेगा—स्त्री० [स०] स्कन्दकी अनुचरी एक मातृका (महाभा० शल्य० ४६.१६)।

महाव्याहृति—पु० [सं०] (१) पुराणानुसार भूः, भुवः और स्वः इन तीन लोकोंका समूह ही महाव्याहृति कहा जाता है। (२) मोहिनीको ब्रह्मासे यह नाम मिला था जिन्हें सावित्री भी कहते हैं (वायु० २५.५०)।

महाव्रत—पु० [सं०] इस व्रतका व्रती गौरी लोकको जाता है (मत्स्य० १०१.५३)।

महाशंख—पु० [सं०] पातालका एक प्रधान नाग जिसके १०० फन थे (भाग० ५.२४.३१) यह मार्गशीर्षमासमें सौर गणके अन्य ऋषि आदिके साथ सूर्य रथपर अधिष्ठत रहता है (भाग० १२.११.४१; मत्स्य० ६.४०)।

महाश—पु० [सं०] श्रीकृष्ण और मित्रविन्दाके दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (भाग० १०.६१.१५)।

महाशन—पु० [सं०] कंसका मित्र एक असुर (भाग० १०.२.१.)।

महाशक्ति—पु० [सं०] श्री कृष्णके भाद्रीके गर्भसे उत्पन्न १० पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (भाग० १०.६१, १५)।

महाशाक—पु० [सं०] श्राद्धोंके लिए उपयुक्त एक शाकका नाम (मत्स्य० २०४.७)।

महाशाल—पु० [सं०] जनमेजयका पुत्र तथा महामनाका पिता जिसने इन्द्रसम ख्याति प्राप्त की थी (मत्स्य० ४८.१३; वायु० ९९.१५-६; विष्णु० ४.१८.६-७)।

महाशालनदी स्त्री० [सं०] पितरोंके श्राद्धादिके लिए उपयुक्त एक पवित्र नदी (मत्स्य० २२.४२)।

महाशास्ता—पु० [स०] यह शिवके उस वीर्यसे उत्पन्न हुआ जो मोहिनीका आलिंगन करनेसे गिरा था। यह शिवगणाग्रणी था (ब्रह्मां० ४.१०.७५; १४.७; ३९.५७)।

महाशास्त्री—स्त्री [सं०] एक मातृकादेवी जिनके पूजनमें मद्यका उपयोग किया जा सकता है (ब्रह्मां० ४.७.७२)।

महाशिरा—पु० [सं०] दनु और कश्यपके पुत्र विप्रचित्ति प्रमुख अनेक दानवोंमेंसे एक दानवका नाम (ब्रह्मां० ३.६ ७; वायु० ६८.७)।

महाशी—पु० [सं०] महाशि, भण्डका एक सेनापति (ब्रह्मां० ४.२१.८८)।

महाशीर्ष—पु० [सं०] (१) शिवके एक अनुचरका नाम। (२) भण्डके एक सेनापतिका नाम (ब्रह्मां० ४.२१.८८)।

महाशील—पु० [सं०] राजा जनमेजयके एक पुत्रका नाम जो महामनाका पिता था (भाग० ९.२३.२)।

महाष्टमी—स्त्री० [सं०] आश्विन शुक्लाष्टमीको देवीके कई अनुष्ठान होते हैं, अतः इसे महाष्टमी कहते हैं। इस दिन देवी शक्ति धारण करती है और नवमीको पूजा समाप्त होती है। यदि अष्टमी मूलयुक्त और नौमी पूर्वाषाढ़ायुक्त हो अथवा दोनोंसे युक्त हो तो महानवमी होती है। कहीं-कहीं इस दिन 'अखिलकारिणी' (खिलगाती) देवीकी पूजा होती है। इसमें त्रिशूल मात्रकी पूजा होती है—दे० (देवीपुराणादि तथा दुर्गोत्सवभक्ति तरङ्गिणी)।

महासन्ध्या—स्त्री० [सं०] महाकालसे संबद्ध एक शक्ति (ब्रह्मां० ४.३२.९)।

महासत्त्व—पु० [सं०] प्रसूतवर्गके आठ देवोंमेंसे एक देवका नाम (ब्रह्मां० २.३६.७१)।

महासांतपन—पु० [सं०] इसमें ३ दिन गोमूत्र, ३ दिन गोबर, ३ दिन दही, ३ दिन दूध, ३ दिन घी और ३ दिन कुशोदक तदुपरांत ३ दिन उपवास करे तो सब पाप दूर हो—(यम)।

महासुख—पु० [सं०] किष्किन्धाधिपति बालीके अनेक महाबली सामन्त तथा सेनापति प्रधान बानरोंमेंसे एक प्रधान

वन्दरका नाम (ब्रह्मां० ३.७.२३३)।

महासुरी–स्त्री० [सं०] अन्धकासुर रक्तपानके लिए शिवजी द्वारा सृष्ट अनेक मानस-पुत्री मातृकाओंमेंसे एक मानस-पुत्री मातृका (मत्स्य० १७९.२२)।

महासेन–पु० [सं०] एक पर्वतका नाम जिसे हिरण्यकशिपुने कँपा दिया था (मत्स्य० १६३.८०)।

महासेना–स्त्री [सं०] श्री ललितादेवीका एक नाम (ब्रह्मां० ४.१७.१९)।

महास्थल–पु० [सं०] भद्राश्व देशका एक जनपद (वायु० ४३.२०)।

महाहनु–पुं० [सं०] (१) भण्डका एक पुत्र तथा सेनापति (ब्रह्मां० ४.२१.८१; २६.४७)। (२) रोहिणी तथा आनक दुन्दुभिके कई पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (मत्स्य० ४६.१२)। (३) बलिका एक अनुगामी (मत्स्य० २४५.३१)।

महाहय–पु० [सं०] शतजित्के तीन पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (भाग० ९. २३.२१)।

महाहविविध–पु० [सं०] कालसूत्र नरकका एक नाम (वायु० १०१.१७९)।

महिनस्–पु० [सं०] एकादश रुद्रोंमेंसे एक रुद्र (भाग० ३.१२.१२)।

महिमा–स्त्री० [सं० महिमन्] (१) दस सिद्धि देवियोंमेंसे एक सिद्धिदेवी (ब्रह्मां० ४.१९.४; ३६.-१; ४४.१०८)। (२) अणिमा आदि ८ सिद्धियोंमेंसे एक—दे० १। (३) आठ योगैश्वर्योंमेंसे तीसरा योगैश्वर्य (वायु० १३.३, १३)। (४) भग तथा सिद्धिके तीन पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (भाग० ६.१८.२)।

महिमान्–पु० [सं०] आयु अग्निका एक पुत्र, जिसे शावान् कहते हैं (वायु० २९.३७)।

महिमावान्–पु० [सं०] एक प्रकारके पितृगण (मार्कण्डेय पुराण)।

महिम्न–पु० [सं०] पुष्पदन्ताचार्य द्वारा रचित शिवके एक प्रधान स्तोत्रका नाम—दे० (महिम्न स्तोत्रम्)।

महिरावण–पु० [सं०] एक राक्षसका नाम। ऐसा प्रसिद्ध है कि यह रावणका लड़का था और पातालमें रहता था। यह श्री रामचन्द्र तथा लक्ष्मणको पाताल ले गया था जहाँसे हनुमान्‌जी जाकर दोनों भाइयोंको ले आये थे। महिरावण हनुमान्‌से मारा गया था।

महिष–पु० [सं०] (१) एक महाअसुर जिसका वध दुर्गादेवीने किया था—दे० (दुर्गा सप्तशती)। (२) पुराणानुसार कुशद्वीप (शाल्मलिद्वीप=ब्रह्मां० वायु० तथा विष्णु०) के एक पर्वतका नाम। जलसे उत्पन्न महिष नामक अग्निका यहाँ निवास कहा गया है (ब्रह्मां० २.१९.४-४१; मत्स्य० १२२.५९, ६०; वायु० ४९.३७; विष्णु० २.४.२७)। (३) कुशद्वीपका एक वर्ष। (४) भागवतानुसार अनुह्राद तथा सूर्याके दो पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम। देवासुर-संग्राममें यह विभावसुसे लड़ा था (भाग० ६.१८.१६; ८.१०.३२)। (५) आयु अग्निका पुत्र तथा सहस अग्निका पिता (ब्रह्मां० २.१२.४०)। (६) शाल्मलि द्वीपके महिष पर्वतमें जलसे उत्पन्न एक अग्नि (ब्रह्मां० २.१९.४१; वायु० ४९.३७)। (७) मयके रम्भासे उत्पन्न छह पुत्रमेंसे एक पुत्र (ब्रह्मां० ३.६.२९; वायु० ६८.२८)। (८) कलिंग, महिष तथा महेन्द्रनिलय—इन तीन जनपदोंपर गुहका शासन था (ब्रह्मां० ३.७४.१८९)। (९) सुरभिसे कश्यपके रुद्रगण तथा गऊ महिषी, महिष आदि पुत्र-पुत्रियाँ उत्पन्न हुई। महिष (भैंसा) यम तथा वाराहीका वाहन है (मत्स्य० ६.४४; २६१.१३, ३०)। इसके मांसका श्राद्धोंमें उपयोग होता था (मत्स्य० १७.३३)। (१०) श्रीतलके निवासी एक असुरका नाम (वायु० ५०.३८)। (११) एक विन्ध्यजाति जिसका राजा पुष्प मित्र था (ब्रह्मां० ३.७४.१८७) यह हंसकालीसे उत्पन्न हुआ था (ब्रह्मां० ३.३.७५)। (१२) केतुमाल देशका एक जनपद (वायु० ४४.१२)।

महिष १ का नोट विशेष:—यह असुर रसातलका निवासी था (ब्रह्मां० २.२०.३९) तथा तारकके राज्यतिलकमें उपस्थित था। यह तारकका सेनापति था और इसके रथमें ऊँट जुतते थे (मत्स्य० १४७.२८; १४८.४२, ५०)। इसने कुवेरपर 'सावित्री' अस्त्रसे आक्रमण किया था; निऋ॑ति तथा वरुण दोनोंको पराजित किया तथा कुजम्भको पाशमुक्त किया था। असुरोंको अकर्मण्य करनेके लिए सोमास्त्र तथा वायव्यास्त्रका प्रयोग किया गया जिनसे बर्फ और वायुका प्रकोप बढ़ता था लेकिन कालनेमि की मायाग्निने इनका नाश कर दिया (मत्स्य० १५०.११३, १३५; १५१.१३)। जब मथन जनार्दनसे पराजित हो गया तब इसने उनपर शूलसे तथा गरुड़पर शक्तिसे आक्रमण किया पर जनार्दनने इसके सारे अस्त्रोंको निरर्थक करते हुए कहा था—'जातू एक स्त्रीसे मारा जायेगा'—(मत्स्य० २५२.१७-२४) इसीसे यह दुर्गासे मारा गया था (ब्रह्मां० ४.२९.७५.८८)।

महिषघ्नीव्रत–आषाढ़ शुक्लाष्टमीको उपवास कर महिषघ्नी देवीकी पूजा करनेसे इष्टसिद्धि होती है (देवीभाग०)।

महिषार्दन–पु० [सं०] स्वामी कात्तिकेयका एक नाम।

महिषासुर–पु० [सं०] रंभ नामक दैत्यका पुत्र एक असुर, जिसकी आकृति भैंसेकी सी थी। यह दुर्गासे मारा गया था (मार्कण्डेय पु०।)

महिषिक–पु० [सं०] दक्षिणकी एक जाति (मत्स्य० ११४.४७) इनके राज्यके लिए द्रष्टव्य (ब्रह्मां० २.१६.५७)।

महिष्मान्–पु० [सं०] (१) सोहञ्जिका पुत्र तथा भद्रसेनकका पिता (भाग०९.२३.२२) (२) संज्ञेयका पुत्र तथा भद्रसेन (वायु०=भद्रश्रेण्य)का पिता (ब्रह्मां० ३.६९.५; वायु० ९४.५) (३) संहतका पुत्र तथा रुद्रश्रेष्यका पिता (मत्स्य० ४३.१०)।

महिष्मती–स्त्री० [सं०] कात्तवीर्यार्जुनकी राजधानी (वायु० ९४.२६)।

मही–स्त्री० [सं०] (१) कुशद्वीपकी सात मुख्य नदियोंमेंसे एक नदी (ब्रह्मां० २.१९.६२ विष्णु० २.४.४३)। भारतकी एक नदी जो हिरण्यकशिपुके क्रोधसे काँप उठी थी (मत्स्य० १६३.६४;) (२) माधवी (वसुंधरा) विष्णु० १.४.७,२५-२८)। वराह अवतारमें विष्णुने पातालसे इसका उद्धार किया था। पृथ्वीका पर्वतों सहित वराहने उद्धार किया था और इसे सात द्वीपोंमें विभक्त कर दिया तथा भू आदि चार लोकोंकी सृष्टि हुई थी (विष्णु० १.४.

२७-४४; तथा ५.१.५७)। (३) विकेशीके साथ यह रुद्रका स्थान है (विष्णु० १.८.७), लोहितांग इनका पुत्र था (विष्णु० १.८.११)। (४) एक नदीका नाम जो सर्वतीर्थमयी तथा कल्याणकारिणी कही गयी है। यह मालवा देशसे उत्पन्न होकर दक्षिण समुद्रमें गिरती है। जहाँ यह समुद्रसे मिलती है वहाँ संगमपर विख्यात स्तम्भतीर्थ है जहाँ स्नान करने वाले सब पापोंसे मुक्त हो जाते हैं। यहाँका राजा धर्मवर्मा था (स्कंदपु० माहेश्वर० कुमारिकाखंड, ३.१७१-१७४;१२.१२४-१२७)।

महीदास–पु० [सं०] एक ऋषिका नाम जो इतरा नामक दासीका पुत्र था। ऐतरेय ब्राह्मण इन्हींकी रचना है।

महीधर–पु० [सं०] (१) विष्णुकी एक उपाधि (विष्णु० ५.५.२१)। (२) शुक्लयजुर्वेदके भाष्यकारका नाम—दे० सभाष्य शुक्लयजुर्वेद।

महीनेत्र–पु० [सं०] द्युमत्सेनका पुत्र तथा अचलका पिता (मत्स्य० २७१.२८)।

महीरण–पु० [सं०] पुराणानुसार धर्मके एक पुत्रका नाम जो विश्वेदेवाके अंतर्भूत हैं।

महीरावण–पु० [सं०] अद्भुतरामायणके अनुसार यह रावणका पुत्र था जो पातालमें रहता था। वाल्मीकिरामायण या पुराणोंमें इसकी कथा नहीं है। हनुमानने इसे मारा था—दे० महिरावण।

महेंद्र–पु० [सं०] (१) सात कुलपर्वतोंमेंसे एक जो भारतवर्षमें है (भाग० ५.१९.१६;७.१४.३२; ब्रह्मां० २.१६.१८; मत्स्य० ११४.१७,३१;१२४.२१; वायु० ४५.८९; विष्णु० २.३.३)। परशुरामने यहाँ २ बार १२ वर्षों तक तपस्या की थी (ब्रह्मां० ३.४४.३६;४६.२९; भाग० १०.७९.१२;९.१६.२६)। यह इंद्र तथा विष्णुको अतिप्रिय है (ब्रह्मां० ३.१३.१७)। भंडसे युद्धके समय देवीने इसे चारों ओर अग्निसे घेर दिया था (ब्रह्मां० ४.२६.१७-३२)। यहाँकी नदियोंके लिए द्रष्टव्य (वायु० ४५.१०६)। (२) इंद्रका एक नाम (भाग० १.१५.१२; वायु० ३९.१०;५३.३३; विष्णु० १.९.१८; ५.१०.३६; ११.४)। (३) पितरोंके श्राद्धादिके लिए उपयुक्त एक पवित्र तीर्थ (मत्स्य० २२.४४)।

महेंद्रनिलय–पु० [सं०] एक जनपदके निवासी (वायु० ९९.३८६; ब्रह्मां० ३.७४.१९८)।

महेंद्रपर्वत–पु० [सं०] श्राद्धके लिए एक पवित्र स्थान जहाँ इंद्र गये थे। यह एक विल्व वृक्षके लिए प्रसिद्ध है, जिसके नीचे श्राद्ध करनेसे दिव्य दृष्टि प्राप्त होती है (वायु० ७७.१७-१८)।

महेंद्रभौम–पु० [मं०] महेंद्रका पहाड़ी प्रदेश जहाँ गुह शासन करता था (विष्णु० ४.२४.६५)।

महेंद्रवनालय–पु० [सं०] राज्यभारसे मुक्त होकर वैवस्वत मनुने इस स्थानपर तपस्या की थी (मत्स्य० ११.४२)।

महेश्वर–पु० [सं०] (१) शिवजीका एक नाम। इनके शापके कारण सप्त ऋषियोंको प्रत्येक युगमें जन्म ग्रहण करना पड़ता था (ब्रह्मां० २.२७.४७; ३.१.९)। सुरभिसे इनको एक वृष मिला जो इनका वाहन था (ब्रह्मां० ३.३.७८-७९)। यह उमाके साथ जब काशी आकर रहने लगे और उसे छोड़ा नहीं तभीसे उसे 'अविमुक्त' कहने लगे (ब्रह्मां० ३.३१.३५; ६७.३२,६०)। ब्रह्माका एक मुख काट लेनेके कारण इनको 'कपाली' कहते थे जिसके कारण इन्हें ब्रह्महत्याका पाप लगा और काँचीमें कामाक्षीकी यथेष्ट स्तुति करने पर उससे छुटकारा हुआ। नर्मदा और कावेरीके तटपर तपस्या करनेके कारण इन्होंने कुबेरको यक्षोंका अध्यक्ष होनेका वर दिया था (मत्स्य० १८१.३-५; १८५.१२;१८९.१०)। (२) सृष्टिकर्त्ताके रूपमें इन्हें 'अचिंत्यात्मा' कहते हैं यह सब प्राणियोंके स्रोत हैं। मुखसे ब्राह्मण, हृदयसे क्षत्रिय, जाँघसे वैश्यगण तथा शूद्रोंकी उत्पत्ति इनके चरणोंसे हुई थी (वायु० ९.१२२) इन्होंने सब लोक, मनुष्य, देव, असुर, नक्षत्रगण, रात, दिन तथा वेद आदिकी सृष्टि की (ब्रह्मां० १.५.९५)। इन्हें महायोगी कहा गया है (वायु० २१.३६)। यह लोकेश हैं जिसकी उपासनाकी अनेक विधियाँ हैं (वायु० ४९.१७१; तथा १०१.२२६; १२.३१-३)।

महेश्वरव्रत–पु० [सं०] फाल्गुन शु० १४को उपवास तथा शिव-पूजन करे तो अग्निष्टोम यज्ञका फल हो। यदि एक वर्ष भर दोनों पक्षोंकी चतुर्दशी को व्रत करे तो कुलोद्धार हो तथा पुंडरीकाक्षकी शरण मिले (विष्णुधर्मोत्तर)।

महेश्वरी–स्त्री० [सं०] (१) महाकालमें स्थापित सती देवीकी एक मूर्तिका नाम (मत्स्य० १३.४१)। (२) श्री ललिता देवीका एक नाम (ब्रह्मां० ४.१०.७;१४.३;२८.८९;२९.१०२;४०.२)।

महोग्र–पु० [सं०] प्रहेति राक्षसके तीन पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (ब्रह्मां० ३.७.९१)।

महोत्पला–स्त्री० [सं०] कमलाक्षमें स्थापित सती देवीकी एक मूर्तिका नाम (मत्स्य० १३.३४)।

महोत्साह–पु० [सं०] औत्तम मनुके अज, परशु आदि १३ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (ब्रह्मां २.३६.३९; वायु० ६२.३४)।

महोदक–पु० [सं०] दनु और कश्यपके विप्रचित्ति आदि सौ दानव पुत्रोंमेंसे एक दानवका नाम (ब्रह्मां० ३.६.१०)।

महोदया–स्त्री० [सं०] नक्षत्रपतिकी सभाका नाम जहाँ बैठनेके आसन तथा वेदी शुद्ध पन्ना (Beryz)से निर्मित है (वायु० ३४.९०)।

महोदर–पु० [सं०] (१) कद्रु और कश्यपके पुत्र हजार काद्रवेय नागोंमेंसे एक नागका नाम (महाभा० आदि० ३५.१६) (२) एक राक्षसका नाम जो पुष्पोत्कटा तथा विश्रवाके चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्र था (ब्रह्मां० ३.८.५५; वायु० ७०.४९) (३) दनु और कश्यपके विप्रचित्तिप्रमुख सौ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र दानव (वायु० ६८.१०)। (४) धृतराष्ट्रके एक पुत्रका नाम (महाभा० आदि० ६७.९८)। (५) शिवके गणोंका एक नायक। देवासुरसंग्राममें शिवकी आज्ञासे यह परशुरामको देवोंकी सहायताके लिए बुलाने गया था (ब्रह्मां० ३.२४.५०,५७;२५.४६)। विशेषकर शरसे युद्ध करनेके लिए यह व्यवस्था हुई थी (ब्रह्मां० ३.४६.११)। (६) एक प्राचीन ऋषिका नाम, जिनकी जाँघमें श्रीरामचन्द्रजी द्वारा मारे गये एक राक्षसका सिर चिपक गया था जो औशनसतीर्थमें छूटा था। इसी कारण उस तीर्थका नाम कपालमोचन पड़ा (महाभा० शल्य०

३९.११-२२)।

महोदरी–स्त्री० [सं०] अन्धकासुर-रक्तपानके लिए शिवजी द्वारा सृष्ट कई मानसपुत्री मातृकाओंमेंसे एक मातृका देवी (मत्स्य० १७९,३१)।

महोरग–पु० [सं०] विश्वेशा और धर्मके १० पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (मत्स्य० १७१.४९)।

महोष्णीष–पु० [सं०] सुतलका निवासी एक राक्षस (ब्रह्मां० २.२०.२३; वायु० ५० २१)।

महौजा–पु० [सं०] (१) तुषितदेवगण, जिसमें १२ देव हैं, मेंका एक तुषित देव (ब्रह्मां० २.३६.११)। (२) एक असुरका नामजो कालका पुत्र था (३) भद्रा और वसुदेवके चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (वायु० ९६.१७१; ब्रह्मां० ३.७१.१७३)।

मांकायन–पु० [सं०] एक भार्गव गोत्रकार ऋषि (मत्स्य० १९५.२२)।

मांगलि–पु० [सं०] पौष्यंजिके पाँच शिष्योंमेंसे एक शिष्य जिसने १०० साम संहिताएँ सीखी थीं (भाग० १२.६.७९)।

मांडकर्णि–पु० [सं०] एक ऋषिका नाम जिन्हें शातकर्णि कहते थे। यह दंडकारण्यमें रहते थे और निराहार रहकर पंपासरमें खड़े हो घोर तपमें लीन रहते जिससे डरकर विघ्न डालनेके लिए इंद्रने पाँच अप्सराएँ भेजीं। अप्सराएँ अपने कार्यमें सफल हुईं और इसी तालावमें घर वना ऋषिकी स्त्रीके रूपमें रहने लगीं। पंपासर इन्हीं अप्सराओंके रहनेके कारण पंचाप्सर नामसे विख्यात हुआ—दे० पंचाप्सर।

मांगल्यसूत्र–पु० [सं०] वह पवित्र सूत्र जिसे विवाहित स्त्रियाँ पहनती हैं (ब्रह्मां० ४.३९.८७)।

मांडवी–स्त्री० [सं०] (१) श्रीरामके भाई भरतकी पत्नी जो राजा जनकके भाई कुशध्वजकी पुत्री थी (रामचरितमानस वाल०)। (२) मांडव्यमें स्थापित सती देवीकी एक मूर्त्तिका नाम (मत्स्य० १३.४२)।

मांडव्य–पु० [सं०] (१) यहाँ सती देवीकी एक मूर्त्ति 'मांडवी' नामसे स्थापित है, जिसके कारण यह शक्तिपीठ तथा पवित्र तीर्थ है (मत्स्य० १३.४२)। (२) एक प्राचीन ऋषिका नाम जो एक भार्गव गोत्रकार थे (मत्स्य० १९५.२१)। कहते हैं वाल्यावस्थाके पापोंके लिए यमराजने इन्हें शूली दिलवा दी थी। इसपर मांडव्यके शापसे यमराज एक दासीके गर्भसे (विदुर) महाराज पांडुके यहाँ उत्पन्न हुए थे (भाग० ३.५.२०; ब्रह्मां० २.२७.२५; महाभा० आदि० १०७.१६)। (३) ब्रह्माके यज्ञमेंके एक ऋत्विक् (वायु० १०६.३५)।

मांडुक–पु० [सं०] इन्द्रप्रमतिके पुत्र एक ऋषि जो कृतके शिष्य थे। इनका वनाया एक उपनिषद् है (ब्रह्मां० २.३५.५१)।

मांडुकि–पु० [सं०] ८६ श्रुतर्षियोंमेंसे एक श्रुतर्षि तथा इन्द्रप्रमतिका शिष्य जो ऋग्वेदके एक भागके अधिकारी थे (ब्रह्मां० २.३३.३; ३४.२८)।

मांडुकेय–पु० [सं०] एक ऋषि तथा कवि जिसे इन्द्रप्रमतिने ऋक्संहिताकी शिक्षा दी थी। देवमित्र इनका शिष्य था (भाग० १२.६.५६; विष्णु० ३.४.१९)।

मांडूक–पु० [सं०] एक भार्गव गोत्रकार ऋषि (मत्स्य० १९५.२१)।

मांधाता–पु० [सं०] युवनाश्वका पुत्र एक प्राचीन सूर्यवंशी राजा जिसकी राजधानी अयोध्यामें थी। विष्णुपुराणानुसार युवनाश्व निःसंतान थे, अतः पुत्रेष्टि यज्ञ किया गया और अभिमंत्रित जल एक घड़ेमें रख सव सो गये। युवनाश्वको प्यास लगी और यही जल पी गये जिससे उन्हें गर्भ रहा और दाहिनी कोख फाड़कर इन्हीं मांधाताका जन्म हुआ। जन्म होनेपर इन्हें दूध पिलानेके प्रश्नपर इन्द्र आये और 'माम् धाता' कहते हुए वच्चेके पीनेके लिए उन्होंने अपनी अँगुली दी थी। इसीसे इनका नाम इंद्रके कहे शब्दोंका संक्षिप्त रूप है (भाग० ९.६.१२-१५, ३१; विष्णु० ४.२.२९-३२)। मांधाताका विवाह (शतविंदु = विष्णु०) शशविंदुकी पुत्री विंदुमतीसे (भाग० तथा विष्णु०) जिसे चैत्ररथी भी कहते थे, हुआ था, जिसके गर्भसे इसे पुरुकुत्स, अंवरीष और मुचुकुंद नामक तीन पुत्र और पचास कन्याएँ हुई थीं। कन्याओंका विवाह सौभरि ऋषिसे हुआ था (भाग० ९.६.३०-३८; ७.१; १०.५१.१४; १२.३.९; वायु० ९९.१३०; विष्णु० ४.२.६१-११२; ब्रह्मां० ३.६३.६८-७२; मत्स्य० १२.३४; ४९.८)। उन लोगोंके लिए इसने विल्लौरके महल वनवा दिये थे तथा अन्य सव प्रकारके प्रसाधनकी भी व्यवस्था कर दी थी और अपने योगवलसे कुछ-कुछ दिनों सवके साथ रहते भी थे। उन सवके १५० वच्चे थे। यह एक क्षत्रोपेत द्विज था (ब्रह्मां० ३.६६.८६)। १५वें त्रेतामें यह उतथ्यके साथ मनुष्य रूपमें विष्णुके अवतार समझे जाते थे (मत्स्य पुराणानुसार १५वें त्रेतायुगमें उत्तंक पुरोहितके साथ) (ब्रह्मां० ३.७३.९०; मत्स्य० ४७.२४३; वायु० ९८.९०)। यह एक आंगिरस तथा मंत्रकृत् थे (ब्रह्मां० २.३२.१०८; मत्स्य० १४५.१०२; वायु० ५९.९९)। यह विष्णुकी यज्ञरूपमें उपासना करते थे। यह एक योगी थे तथा मायाके आकर्षणोंको जीत चुके थे (भाग० २.७.४४)। यह विजेता, लोकप्रिय शासक, एक 'यज्वा' तथा सच्चरित्र थे (वायु० ८८.६६-७०)। यह ब्राह्मण हो गये थे (वायु० ९१.११५)। तत्त्य(?) नामके इनके पुरोहित थे (वायु० ९९.१३०)।

मांकदी–स्त्री० [सं०] एक नगरका नाम। राजा द्रुपदका गंगातटवर्ती एक नगर (महाभा० आदि० १३७.७३)।

मांस–पु० [सं०] इसके अर्पणसे काली प्रसन्न होती हैं और अभीष्ट फल देती हैं (विष्णु० ५.१.८६)।

माकरी–स्त्री० [सं०] माघ शुक्ला सप्तमीकी पुण्यतिथि जिस दिन स्नान, पूजा आदिके उपरांत ब्राह्मणको दान देनेका माहात्म्य है।

माकलि–पु० [सं०] (१) चंद्रमाका एक नाम—दे० चंद्रमा। (२) मातलिका एक नाम जो इन्द्रका सारथि था—दे० मातलि।

माक्षतय–प० [सं०] वशिष्ठवंशज एक त्र्यार्षेय प्रवरप्रवर्तक ऋषि (मत्स्य० २००.१५)।

मागध–पु० [सं०] (१) जरासंधका एक नाम जिसे श्रीकृष्णने परास्त किया था (भाग० ३.३.१०; १०.२.२; ८३.२३)।

(२) ये पृथुके यज्ञसे सूतोंके साथ उत्पन्न हुए थे। पृथुको प्रसन्न कर इन्होंने मगधका राज्य उपहारस्वरूप पाया था (भाग० ४.१५.२०; १०.५.५; ५०.३७; ५३.४३; ७०.२०; ७१.२९; ८४.४६; ब्रह्मां० २.३६.११३, १५९-६०, १.७२; वायु० ६२.९५, १३७; विष्णु० १.१३.५२, ६४)। श्रीकृष्णके जातकर्ममें ये उपस्थित थे (ब्रह्मां० ३.२८.१, ४; २७.१३; ४९.२१; ५५.९.१४; ४.२६.६२)। ये सभी राजघरानोंमें होते थे (मत्स्य० २१२.१४; वायु० ६२.१४७-१४८)। (३) भौत्य मनुके चौदहवें मन्वंतरका एक पौलस्त्य ऋषि (भाग० ८.१३.३४; ब्रह्मां० ४.१.११२; वायु० १००.११६; विष्णु० ३.२.४४)। (४) एक गंधर्वका नाम (वायु० ६९.२६)। (५) सोमाधिका पुत्र (वायु० ९९.२२८)। (६) मगध देशके निवासी। मगध मध्यदेशका राज्य था (भाग० १०.२.२; ब्रह्मां० २.१६.४२; मत्स्य० ११४.४५; १२१.५०; १६३.६६)। (७) शाकद्वीपकी क्षत्रिय जाति (विष्णु० २.४.६९)। (८) बृहद्रथसे श्रुतश्रवा तकका राजवंश (मत्स्य० ५०.२७.३४)।

माघ—पु० [सं०] (१) एक महीनेका नाम जिसमें ब्रह्मवैवर्त्त-पुराण दान करनेवालेको ब्रह्मलोक प्राप्त होता है (मत्स्य० ५३.३६)। इस मासमें महेश्वरकी उपासना होती है (मत्स्य० ५६.२; ६०.३६; वायु० ५०.१२२; ५३.११३)। (२) माघी, पंचदशी=श्राद्धोंके लिए एक प्रशस्त युगादि। सप्तमी=एक मन्वंतरादि श्राद्ध तथा दानके लिए प्रशस्त (मत्स्य० १७.४, ७)।

माघी—स्त्री० [सं०] माघ महीनेकी पूर्णिमा, जिस दिन स्नानादिके बाद विष्णुका पूजन कर दान-पुण्य करनेका बड़ा फल लिखा है—दे० दानचंद्रोदय। कलियुगका आरंभ इसी तिथिसे माना जाता है। यह पूर्णिमा=श्राद्धोंके लिए प्रशस्त युगादि है। माघी अमावस्या तथा पूर्णिमा दोनों पर्व-तिथियाँ हैं जिस दिन पृथ्वीके किसी-न-किसी भागमें सूर्य या चंद्र ग्रहण हो ही जाता है। माघ सप्तमी=श्राद्धोंके लिए एक मन्वंतरादि (मत्स्य० १७.४, ७)।

माघीअमावस्या—स्त्री० [सं०] दे० माघी।

माठर—पु० [सं०] (१) ८६ श्रुतर्षियोंमेंसे एक श्रुतर्षि (ब्रह्मां० २.३३.३)। (२) सूर्यके दो पारिपार्श्वकोंमेंसे एक पारिपार्श्वक जिन्हें यम माना जाता है। (३) विन्ध्याचल पर्वतपरका एक वन जहाँ श्राद्ध करना शुभ माना गया है (ब्रह्मां० ३.१३.३३; वायु० ७७.३३)।

माणिकंधर—पु० [सं०] श्री ललिता देवीका भक्त एक यक्ष सेनापति (ब्रह्मां० ४.३३.७८)।

माणिचर—पु० [सं०] एक यक्षका नाम (मत्स्य० ४७.३०)।

मातंग—पु० [सं०] (१) खशा तथा कश्यपके लालावि, क्रथन आदि कई राक्षस पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (ब्रह्मां० ३.७.१३४; वायु० ६९.१६५)। (२) एक ऋषिका नाम जो मातंगी देवीके उपासक थे और मौन रहा करते थे, अतः जिस पर्वतपर यह रहते थे उसे ऋष्यमूक कहते हैं। कहते हैं यह शबरीके गुरु थे (रामच० मानस)। (३) मतंगका एक पुत्र जो ऋषि था। सिद्धिमतीसे इनकी पुत्री लघुश्यामा या मातंगीका जन्म हुआ था। गयामें क्रौंच तथा मातंग पदमें श्राद्ध करनेवाला व्यक्ति अपने पितरोंको शिवलोक प्राप्त कराता है (ब्रह्मां० ४.३१.८९, ९१-१०६; मत्स्य० १११.५३)।

मातंगी—स्त्री० [सं०] (१) दस महाविद्याओंमें नवीं महाविद्या जिनके चार हाथ और तीन नेत्र हैं। सिरमें अर्धचंद्र विराजमान है। इनका वस्त्र रक्तवर्णका है और खड्ग, चर्म, पाश तथा अंकुश इनके अस्त्र हैं। (२) कश्यप ऋषिकी एक पुत्री जिससे हाथी उत्पन्न हुए थे। (३) अंधकासुर रुधिर पानार्थ शिवजी द्वारा सृष्ट कई मानसपुत्री मातृकाओंमेंसे एक मानसपुत्री मातृका (मत्स्य० १७९.२७)। गीतिरथेन्द्र-चक्रके सातवें पर्वमें स्थित बाण और धनुष धारण की हुई कई देवियोंमेंसे एक देवी लघुश्यामा (ब्रह्मां० ४.१९.८०; ३१.१०४)।

मातृगण—पु० [सं०] वे मातृका देवियाँ जो वरुणके यज्ञमें उपस्थित थीं, जिनकी संख्या नव कही गयी है। लक्ष्मी, सरस्वती, गौरी, चंडिका, त्रिपुराम्बिका, भैरव, भैरवी, काली तथा महाशास्त्री। इनकी उपासनामें मदिराकी प्रधानता रहती है, परन्तु ब्राह्मणके लिए इनकी उपासनामें भी उसका उपयोग निषिद्ध है (ब्रह्मां० ३.१.२८; ४.७.७२; १४.६; २०.४६; ४४.१११-१२)। इनके पतिके लिए द्रष्टव्य (ब्रह्मां० २.२५.६९)। अन्य मतसे कीर्त्ति, लक्ष्मी, धृति, मेधा, पुष्टि, श्रद्धा, क्रिया, मति, बुद्धि, लज्जा, वपु, शांति, तुष्टि तथा कांति ये मातृ कही गयी हैं। इनका आवाहन गृहबलिके समय करनेका विधान है (मत्स्य० ९३.५३)। अन्यत्र शुभ कर्मोंमें होनेवाले मातृपूजनमें गणेश सहित १६ मातरोंके पूजनका विधान है। वे हैं—गौरी, पद्मा, शची, मेधा, सावित्री, विजया, जया, देवसेना, स्वधा, स्वाहा, धृति, पुष्टि, तुष्टि, कुलदेवी तथा गणेशजी।

अंधक असुरका नाश करनेके हेतु रुद्रने कुछ मातृकाओंकी सृष्टि की थी। जब उनको (मातृकाओंको) भूख तथा प्यास लगी और इन सबने शिवसे भोजन माँगा तथा सांसारिक प्राणियोंको ही खाना आरंभ कर दिया। शिवने यह लीला देख नृसिंहकी स्तुति की जिन्होंने इन्हें परास्त करनेके हेतु अनेक मातृका देवियोंकी सृष्टि की। तदुपरांत सब वरके प्रभावसे अमर तथा स्वर्गीय देवियाँ हो गयीं जिनका काम सांसारिक प्राणियोंकी स्तुति तथा प्रार्थनापर उनकी सहायता करना रह गया (मत्स्य० १७९.९-३२, ४१-८९)। एक देवगण (वायु० ७२.५०) जो देवासुर-संग्राममें उत्कलसे लड़ा था। ऊषा और अनिरुद्धके कारण बाण और श्रीकृष्णके युद्धमें शङ्कर भगवान्की ओरसे लड़ने आया। यह श्रीकृष्ण भगवान्के तीक्ष्ण बाणोंकी मारसे भाग गया था (भाग० २.१०.३८; ६.८.२५; ८.१०.३३ १०.६३.११)। दे० मातृ मातरका, (मत्स्य० १८४.११)।

मातरिश्वा—पु० [सं०] (१) वायुका एक नाम जिन्होंने ब्रह्मासे ब्रह्मांडपुराण सुनकर उशनाको कहा था (ब्रह्मां० ४.२.११२, ११४, २५९; ४.५८; वायु० १.४७; ५९.१११; १०१.७, ११२, ११४, ३२३; १०३.५८)। (२) भुवर्लोकके निवासी देवतागण (वायु० १०१.२९)।

मातलि—पु० [सं०] इन्द्रके सारथिका नाम—दे० माकलि, [मत्स्य० १४८.८]। देवासुर संग्राममें जंभने इसपर आक्रमण किया था तथा पाकने भी आक्रमण किया। तारकके

तीन वाण इसे लगे थे जिससे इसका मुद्गर रथपर टुकड़े-टुकड़े होकर गिर गया। मातलिकी मृत्यु नहीं हुई (भाग० ८.११-१६-१८, २२; मत्स्य० १५३.१६१, १८१, १९३; १७४.१०)। कहते हैं राम-रावण युद्धमें यही श्रीरामका सारथि था (भाग० ९.१०.२१)।

मातली–पु० [सं०] यम और पितरोंके साथ उत्पन्न एक प्रकारके वैदिक देवता (हि० वि० को०)।

माता–स्त्री० [सं०] (१) सिद्धपुर तथा कायावरोहणमें स्थापित सती देवीकी एक मूर्त्तिका नाम (मत्स्य० १३.४६.४८)। (२) जगन्माता श्री ललितादेवीका एक नाम (ब्रह्मां० ४.२९.४४, १४२)। (३) ऋषाकी पाँच पुत्रियोंमेंसे एक पुत्री जिससे चार प्रकारके ग्राह, (घड़ियालों), अनुज्येष्टक, निष्क और शिशुमारों (सूँसों) की उत्पत्ति हुई थी (वायु० ६९.२९१)।

मात्रंश–पु० [सं०] मनुष्यके शरीरका वह भाग जो उसे मातासे प्राप्त होता है। वेनके शरीरके इसी भागसे म्लेच्छ उत्पन्न हुए थे (मत्स्य० १०.८)।

मातुलुंगस्थली–स्त्री० [सं०] यह स्थली कुमुद और अंजन पर्वतोंके वीचमें दस योजन चौड़ी है। इसमें सिद्धों द्वारा निषेवित महापुण्य वृहस्पतिका आश्रम है (वायु० ३८.४२-४)।

मातुलसंबंध–पु० [सं०] मामाके परिवारमें विवाह करना। ययातिने अपने पुत्र यदुको ऐसे ही संवंधसे संतानोत्पत्तिका शाप दिया था (मत्स्य० ३३.८)।

मातृक–पु० [सं०] दीक्षामें एक मंत्रन्यास (ब्रह्मां० ४.४३.११)।

मातृका–[सं०] (१) भूत, प्रेतादि—दे० मातृका (भाग० १०.६.२८)। (३) अर्यमकी पत्नी तथा चर्षणिसकी माता (भाग० ६.६.४२)। (३) काम, क्रोध आदि ८ विकारोंकी आठ अधिष्ठात्री देवियाँ यथा कामकी योगेश्वरी, क्रोधकी माहेश्वरी, लोभकी वैष्णवी, मदकी ब्रह्माणी, मोहकी कौमारी, मात्सर्यकी ऐन्द्राणी, माशुन्यकी दंडधारिणी, असूयाकी वाराही ये अष्ट मातृका कहलाती हैं।

मातृगृह–पु० [सं०] पितरोंके श्राद्धादिके लिए एक उपयुक्त पवित्र तीर्थस्थान (मत्स्य० २२.७६)।

मातृदेवी–स्त्री० [सं०] एक देवी विशेषका नाम।

मातृनंदा–स्त्री० [सं०] अन्धकासुररुधिरपानार्थ शिवसृष्ट कई मानसपुत्री मातृकाओंमेंसे एक मानस-पुत्री मातृका (मत्स्य० १७९.१२)।

मातृपालित–पु० [सं०] एक दानवका नाम (हि० श० सा०)।

मातृसामान्य–पु० [सं०] वे राक्षस जो वच्चोंमें भय उत्पन्न करते हैं (वायु० ६९.१९०)।

मातेय–पु०[सं०] त्र्यार्षेय प्रवरप्रवर्तक वशिष्ठवंशज ऋषिगण (मत्स्य० २००.१२)।

मात्रा–पु० [सं०] समयका सवसे छोटा विभाग यानी निमेषकाल (विष्णु० ६.३.६)।

मात्स्य–पु० [सं०] (१) एक ऋषिका नाम (हि० श० सा०)। (२) कृतकसुत उपरिचर वसुके सात पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (विष्णु० ४.१९.८१)। (३) एक जनपद तथा जातिका नाम (वायु० ४७.४८)। (४) मत्स्यपुराण जिसे सर्वप्रथम गदाधरने कहा था (मत्स्य० १.१०)। मत्स्य रूपमें विष्णुने मनुसे कहा था जिसमें नृसिंह, सातों कल्प आदिका विवरण है। इसमें १४,००० श्लोक हैं। चैत्रकी प्रथम तिथिको यदि इस पुराणका एक सुवर्ण निर्मित मछली और गौके साथ दान दिया जाय तो सारे संसारका दान करनेके वरावर फल होता है (मत्स्य० ५३.५०-२; वायु० १०४.३)।

मात्स्यन्याय–पु० [सं०] 'जिसकी लाठी उसकी भैंस'वाली कहावतका न्याय। छोटी मछलीको वड़ी मछली खा लेती है, शक्तिका प्रभुत्व (मत्स्य० २२५.९)।

मात्स्यरूप–पु० [सं०] विष्णुका मत्स्यावतार। चाक्षुप मन्वंतरके समय वैवस्वत मनुकी रक्षाके लिए प्रलयके समय यह दसवाँ अवतार हुआ था (भाग० १.३.१५)।

माथुर–पु० [सं०] एक जनपद तथा जाति विशेष जिसका अन्त आपसमें लड़कर हुआ था (भाग० १०.१.२७; ११.३०.१८)।

माथैल्य–पु० [सं०] कृतकसुत विद्योपरिचर वसुके गिरिकाके गर्भसे उत्पन्न सात पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (वायु० ९९.२२२)।

मादि–पु० [सं०] आंगिरसवंशज एक ऋषिका नाम (मत्स्य० १९६.२६)।

माद्रव–पु० [सं०] धर्म और विश्वाके पुत्र क्रतु आदि १० विश्वेदेवोंमेंसे एक विश्वेदेवका नाम (ब्रह्मां० ३.३.३१)।

माद्रवती–स्त्री० [सं०] (१) अभिमन्यु-सुत राजा परीक्षित्की पत्नी तथा जनमेजयकी माताका नाम (महाभा० आदि० ९५.८५)। (२) पाण्डुकी द्वितीय पत्नी तथा नकुल और सहदेवकी माता माद्रीको भी माद्रवती कहा जाता था (महाभा० अश्व० ५२.५६)।

माद्राराम–पु० [सं०] इन लोगोंका एक देश जो इसी नाम का था (विष्णु० २.३.१८)।

माद्रि–पु० [सं०] एक त्रिप्रवर (मत्स्य० १९६.३३)।

माद्री–स्त्री० [सं०] (१) श्रीकृष्णकी एक पत्नीका नाम जो वृक तथा अपराजित आदि पुत्रोंकी माता थी (भाग० १०.-६१.१५; मत्स्य० ४७.१४; वायु० ९६.२३४; विष्णु० ५.३२.४)। (२) मद्र देशकी राजपुत्री जो पांडुराजकी एक पत्नी तथा अश्विद्वयकी कृपासे प्राप्त नकुल और सहदेवकी माता थी। पांडुके मरनेपर यह उनके साथ सती हुई थी (भाग० ९.२२.२८; ब्रह्मां० ३.७१.१५५; मत्स्य० ४६.१०; ५०.४८; वायु० ९६.१५४; ९९.२४३; विष्णु० ४.१४.३७-८; २०-४०)। (३) धृष्टिकी दो पत्नियोंमेंसे एक पत्नी जिसके गर्भसे युधाजित्, मिढ्वास (वायु० तथा मत्स्य० = देवमीढुष) अनिमित्र तथा शिन नामक पुत्र हुए थे। धृष्टिकी दूसरी पत्नीका नाम गांधारी था (ब्रह्मां० ३.७१.१८-१९; मत्स्य० ४५.१-२; वायु० ९६.१७-९)। (४) सहदेव(पांडव) की पत्नी तथा सुहोत्रकी माताका नाम (मत्स्य० ५०.५५)।

माद्रेय–पु० [सं०] मध्यदेशका एक राज्य (ब्रह्मां० २.१६.४०)।

माधव–पु० [सं०] (१) श्रीकृष्णका एक नाम (भाग० १.१५ १८; ब्रह्मां० २.३१.७७; ३.३३.१८; ७२.१४०; ४.९.६१; ३४.७२.७७; वायु० ११२.४०; विष्णु० ५.२०.३५)। (२)

एक पवित्र मास (वैशाख) का नाम जिसमें अर्यमा नामक सूर्य तपते हैं और उनके रथपर पुलह ऋषि, अथौजा यक्ष, प्रहेति राक्षस, पुञ्जिकस्थली अप्सरा, नारद गन्धर्व और कच्छनीर नाग अधिष्ठित रहते हैं (भाग० १२.११.३४) इसमें मधु (चैत्र) मासको मिलानेसे एक ऋतु (वसन्त) हो जाती है (ब्रह्मां० २.१३.९; वायु० ५२.५; मत्स्य० ६१.२२)। (३) औत्तम मनुके दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (मत्स्य० ९.१२)। (४) प्रयागमें यह वटेश्वरके साथ स्थित हैं (मत्स्य० २२.९)। शिवनारायणकी मूर्त्तिका एक अंश अर्थात् शिवनारायणकी मूर्तिका निर्माण यों करना चाहिये—आधे भागमें बाईं ओर माधवका रूप आधे दक्षिण भागमें शूलपाणिका रूप। कृष्णके दो बाहु मणिमय अंगदसे विभूषित, दो हाथोंमें शंख और चक्र रहे। अंगुलियाँ लाल और सुडौल सुन्दर रहें। कमरमें करधनी और पीला फेंटा रहे। आधे (दाहिने) भागमें जटाएँ अर्धचन्द्रभूपित हों, सर्पहार, सर्पवलय, हाथमें त्रिशूल तथा वरदमुद्रा, नागयज्ञोपवीत हो इत्यादि। यों शिवनारायण-मूर्तिमें कुछ अंश माधवका और कुछ शिवका रहता है (मत्स्य० २४९.४८; २६०.२२)। विश्वचक्रके मध्यमें स्थित देव (मत्स्य० २८५.१६)। (५) एक असुरका नाम जिसे शत्रुघ्नने मारा था (वायु० ८८.१८५)। (६) एक जाति जिसका नामकरण मधुपर हुआ (भाग० ९.२३.३०)।

माधववन–पु० [सं०] यहाँ सतीदेवकी एक मूर्ति सुगंधा नामसे स्थापित है, अतः यह एक पवित्र वन तथा शक्ति पीठ है (मत्स्य० १३.३७)।

माधवश्री–स्त्री० [सं०] वसंत ऋतुकी पत्नीका नाम (ब्रह्मां० ४.३२.२३.४६)।

माधवी–स्त्री० [सं०] (१) योगमायाका एक नाम (भाग० १०.२.१२)। (२) सुभद्राका एक नाम (भाग० १०.८४.१)। (३) काली, सरस्वती आदि ३६ वर्णशक्ति देवियोंमेंसे एक वर्णशक्तिका नाम (ब्रह्मां० ४.४४.६१)। (४) श्रीशैलपर स्थापित सती देवीकी एक मूर्त्तिका नाम (मत्स्य० १३.३१)। (५) वसुंधराका एक नाम (विष्णु० १.४.२०, २५-२८)।

माधवीय–पु० [सं०] श्रीकृष्णके प्रीत्यर्थ पढ़ा जानेवाला एक स्तोत्र (मत्स्य० २४८.५८]।

माध्यंदिन–पु० [सं०] (१) वशिष्ठवंशज त्र्यार्षेय प्रवरप्रवर्तक एक ऋषि (मत्स्य० २००.१५)। (२) शुक्लयजुर्वेदकी पन्द्रह शाखाओंमेंसे एक शाखाका (माध्यन्दिनी शाखाका) अध्ययन करनेवाले शुक्लयजुर्वेदी (भाग० १२.६.७४)।

माध्वी–स्त्री० [सं०] कुरु देशमें स्थित पद्म और मछलियोंसे भरे जयानामक समुद्रतुल्य १२ झीलोंसे निकली दो नदियोंमें से एक नदीका नाम (ब्रह्मां० २-१८.७३; वायु० ४७.७१)।

मान–पु० [सं०] (१) धर्म और साध्याके १२ साध्यदेव पुत्रोंमें से एक साध्य (मत्स्य० २०३.११)। (२) पुराणानुसार पुष्कर द्वीपके एक पर्वतका नाम (हि० वि० को०)। (३) नापका एक प्रकार जो चार तरहका होता है यथा—सौर, सौम्य, नाक्षत्र तथा सावन (वायु० ५०.१८८; ब्रह्मां० २.२१.१३७)।

मानद–पु० [सं०] महाराज पृथु विद्वानों, मुनियों और सज्जनोंके मानद थे (भाग० ४.१६.१६)।

मानदा–स्त्री० [सं०] चंद्रमाकी १६ कलाओंमेंसे एक कलाका नाम (ब्रह्मां० ४.३५.९२)।

मानरसा–स्त्री० [सं०] भद्राश्व तथा घृताची अप्सराकी दस पुत्रियों, जो सबकी सब अत्रि ऋषिको व्याही गयी थीं, मेंसे एक पुत्री (वायु० ७०.६९)।

मानव–पु० [सं०] (१) आंगिरसवंशका पञ्चार्षेय प्रवरप्रवर्तक एक ऋषि (मत्स्य० १९६.५०)। (२) बीसवें कल्पका नाम (मत्स्य० २९०.८)।

मानवकल्पसूत्र–पु० [सं०] मनुकी लिखी वैदिक धर्मपद्धति मानवश्रौतसूत्र आदि।

मानवधर्मशास्त्र–पु० [सं०] स्वायंभुव मनुकृत मनुसंहिताका नाम, मनुस्मृति। आजकलका 'हिन्दूलॉ' इसीके आधारपर बना है—दे० मनुसंहिता।

मानवाचल–पु० [सं०] पुराणानुसार एक पर्वत विशेषका नाम (हि० वि० को०)।

मानस–पु० [सं०] (१) पुराणानुसार शाल्मलिद्वीपके एक वर्षका नाम जिसके सीमा पर्वतका नाम महिप है (ब्रह्मां० २.१९.४५; वायु० ४९.४०)। (२) ईश्वरका नाम जो सर्वशक्तिमान्, अनंत, अनादि तथा हर जगह व्यापक है (महाभा०)। (३) पुष्करद्वीपका एक पर्वत जो पृथुके राज्यका सीमापर्वत था। यह वासवी पुरीके पश्चिम, यमपुरी (संयमनी) के उत्तर, वरुणपुरी (सुखा) के पूर्व तथा सोमपुरी (विभावरी) के दक्षिणमें था (ब्रह्मां० २.१९.११२-१४ ११७; मत्स्य० १२३.१६; वायु० ४९.१०८; विष्णु० २.८.७-८)। (४) शाल्मलिद्वीपाधिपति वपुष्मान्के सात पुत्रोंमेंसे एक पुत्र जो मानस राज्यका संस्थापक था (ब्रह्मां० २.१४.-३२, ३४; वायु० ३३.२८.३०; विष्णु० २.४.२३, २९)। (५) वंशवर्तिदेवगण, जिसमें १२ देव हैं, मेंका एक वंशवर्तिदेव (बह्मां० २.३६.२९)। (६) एक यक्ष जो देवजनी तथा मणिवरके ३० यक्ष पुत्रोंमेंसे एक पुत्र था (ब्रह्मां० ३.७.१३०)। (७) मेरु क्षेत्रके चार झीलोंमेंसे एक प्रधान झील जो मेरु (जिसपर लोकपालोंकी राजधानी है) के चारों ओर है। वैद्युत पर्वत (जिससे लोकपावनी सरयू नदी निकली है) के मूलमें स्थित (मत्स्य० ११३.४६; १२१.१६; १६३.८६; १८३.२; १९४.८; ब्रह्मां० २.१८.१५; २१.२९-३३; वायु० ४७.१४; ५०.८७-९०; १११.४)। यह गंगासे उत्तर है (ब्रह्मां० १.१-७६; मत्स्य० ७०.२०; १०७.२; वायु० ३६.१६; ४२.२७; ७७.११०-११)। यह एक पवित्र पीठस्थान तथा तीर्थ है जहाँ कुमुदा नामसे सती देवीकी मूर्ति स्थापित है (मत्स्य० १३.२७)। पितरोंके श्राद्ध आदिके लिए उपयुक्त एक पवित्र तीर्थ (मत्स्य० २२.२३)। इसके तटपर भगवान्का एक मंदिर भी है जहाँ जप करनेसे सिद्धि प्राप्त होती है (ब्रह्मां० ३.१३.५८, ११५-६; ४.२.२५-६)। कहते हैं यह इलावृतमें है (विष्णु० २.२.२६)। कर्दम सपत्नीक यहाँ आये थे (भाग० १.५.१०; ३.२३.४०)। यहाँके दो हंसोंकी कथाके लिए—दे० पुरंजन (भाग० ४.२८.५४-६३)। वृत्रासुरके बधसे लगी ब्रह्महत्याके फलस्वरूप इन्द्र यहाँ ही कमलनालमें १००० वर्षोंतक रहे थे (भाग० ६.१३.१४-१५)। कौशिकके सात पुत्रोंका तीसरा जन्म यहीं चक्रवाक पक्षियोंके रूपमें हुआ था और अन्तमें

उन सबने सिद्ध होकर यहीं मोक्ष प्राप्त किया था (मत्स्य० २०.१७;२१.३५) । उर्वशी और पुरूरवाकी जलक्रीड़ा यहीं हुई थी (विष्णु० ४.६.४८) । (८) ऋष्यंतके पिता, जो ग्यारहवें मन्वंतरके द्वापरके आरम्भमें हुए थे, का नाम (वायु० ७०.३०) (९) वशिष्ठ-पुत्र पितर जो ज्योति-लोकमें निवास करते हैं। इनकी मानस-पुत्री गौ शुक्रकी पत्नी थी (मत्स्य० १५.१२-१५) । (१०) शाकद्वीपकी वैश्य जातिका नाम (विष्णु० २.४.६९) । (११) शाल्मलिद्वीपका महिष पर्वतसे लगा वर्ष (प्रांत) (ब्रह्मां० २.१९.४५; वायु० ४९.४०) । अरुणोदय, मानस, शीतोद तथा .महाभद्र नामके चार महान् झीलोंमेंसे यह (मानस) दक्षिणकी ओर स्थित एक झील है (वायु० ३६.१६) ।

मानसताल–पु० [सं०] सिंहवाहिनी देवीके वाहन सिंहका नाम ।

मानसपुत्र–पु० [सं०] मनुस्मृतिके अनुसार ब्रह्मा आदि सृष्टिकर्ता हैं। इनसे स्वायंभुव मनु उत्पन्न हुए जिन्होंने १० ऋपियोंकी सृष्टि की जिनसे मानव-वंशकी वृद्धि हुई= मरीचि, अत्रि, अंगिरा, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु, वशिष्ठ, दक्ष, भृगु और नारद, ये ही दस ऋपि सर्वप्रथम हुए। अन्य मतसे इन ऋपियोंकी संख्या सात ही थी जो आकाशके सप्तर्षि हैं। शतपथ ब्राह्मणके अनुसार गोतम, भरद्वाज, विश्वामित्र, जमदग्नि, वशिष्ठ, कश्यप और अत्रि, ये ही सप्तर्षि हैं पर महाभारतमें मरीचि, अत्रि, अंगिरा, पुलह, क्रतु, पुलस्त्य और वशिष्ठ नाम हैं। वायुपुराण सातको भृगुका नाम जोड़ अष्टऋपिकर देता है और विष्णुपुराणमें भृगु और दक्षका नाम जोड़ सप्तर्षिको नव(९) ब्रह्मर्षि लिखा है।

मानसरोवर–पु० [सं०] हिमालयके उत्तरकी एक प्रसिद्ध झील। कहते हैं ब्रह्माने केवल अपनी इच्छा मात्रसे ही इसका निर्माण किया था—दे० मानस(७) ।

मानसा–स्त्री० [सं०] (१) नदीका नाम जिसे पुराणानुसार तृणबिंदु ऋपि मानसरोवरसे लाये थे । (२) ब्रह्मांडके ऊपरका लोक जहाँ सोमप पितृगण रहते हैं (मत्स्य० १५.२५) । सुकाली नामक पितर जो वशिष्ठ-पुत्र हैं, का देश (ब्रह्मां० ३.१०.९७; वायु० ७३.४७) ।

मानसी–स्त्री० [सं०] पुराणानुसार मानसी नामकी एक विद्यादेवी हैं। एक दीक्षा, जिसमें सेवासे तोपित गुरु मनसे चुपचाप दीक्षा देता है (ब्रह्मांड० ४.४३.७) ।

मानसीसिद्धि–स्त्री० [सं०] इसकी ५ विशेपताएँ हैं। उनमें पहली विशेपता यह कि वे जिस अभीष्ट वस्तुको चाहते हैं वह तुरन्त सम्पन्न हो जाती है इत्यादि। महर्लोकके निवासी देवताओंको यह शक्ति प्राप्त थी और वे यज्ञ करते थे (वायु० १०१.४४-५) ।

मानसीगंगा–स्त्री० [सं०] गोवर्धन पर्वतके निकटस्थ एक सरोवरका नाम ।

मानसोत्तर–पु० [सं०] पुष्करद्वीपका एक पर्वत जो मेरुसे पूर्व है। देवधानी—इंद्रकी नगरी तथा अन्य नगरियाँ यहाँ हैं। कहते हैं सूर्यके रथका पहिया इसी पर्वतपर कोल्हूकी तरह घूमा करता है। यह देवता तथा दैत्य दोनोंको प्रिय है (भाग० ५.२०.३०; २१.७.१३; विष्णु० २.४.७४; २.४.८०) ।

मानस्तोक–पु० [सं०] ग्रहहोममें उपयुक्त होनेवाला एक मंत्र (मत्स्य० २३९.९) ।

मानुपसर्ग–पु० [सं०] अर्वाक्स्रोतस् सर्गोंमेंसे सातवाँ सर्ग (वायु० ६.६४) ।

मानुषी–स्त्री० [सं०] केतुमाल देशकी अनेक श्रेष्ठ पुण्यजला नदियोंमेंसे एक नदीका नाम (वायु० ४४.२२) ।

मानुषीविश–पु० [सं०] ४९ मरुतोंके सात गणोंमेंसे सातवें मरुद्गणके सातवें मरुतका नाम (वायु० ६७.१२९) ।

मामतेय–पु० [सं०] ममता तथा उतथ्यके पुत्र दीर्घतमा, जो बृहस्पतिके शापसे जन्मान्ध उत्पन्न हुए थे तथा दुष्यन्त-पुत्र भरतके पुरोहित थे।

मायण–पु० [सं०] वेदभाष्यकार सायणाचार्यके पिताका नाम ।

माया–स्त्री० [सं०] (१) मोहन-विद्या जिसे मायावतीने प्रद्युम्नको सिखलाया था (विष्णु० ५.२७.१४) । (२) मय दानवकी पुत्रीका नाम। यह विश्रवाको ब्याही थी और खर, दूषण, त्रिशिरा तथा शूर्पनखाकी माता थी (रामायण)। (३) सृष्टिकी उत्पत्तिका कारण विशेष जिसे ईश्वरकी शक्ति भी कहते हैं (भाग० १.२.३०; ३.५.२५) । यह हमें बंदी-सा बना देती है और मनुष्य इसके जालमें फँस जाता है (भाग० ११.११.१-३; वायु० ९४.१५) । इसकी चार विशेपताओं, ज्ञानपर इसका प्रभाव तथा इसके बंधनसे मुक्त होनेके उपायके लिए द्रष्टव्य (भाग० ११.३.१-३३) । (४) अधर्मकी एक पुत्री (भाग० ४.८.२; ब्रह्मां० २.९.६४) । (५) योगमायाका नाम (भाग० १०.२.१२) । अन्धकासुर रुधिर-पानार्थ शिवसृष्ट कई मानसपुत्री मातृकाओंमेंसे एक मानस-पुत्री मातृका (मत्स्य० १७९.२१) । (६) अन्धकासुररक्त-पानके लिए शिवसृष्ट मानसपुत्री मातृकाओंका जगत्-उत्पीडक उत्पात देख उसके शमनार्थ शिवजीकी प्रार्थनापर भगवान् नृसिंह द्वारा उत्पादित ३२ शक्ति देवियोंमेंसे एक देवी। यह नृसिंहके हृदयसे उत्पन्न हुई थी (भाग० १७९.६४) । (७) लोकविमोहिनी, देवमानवादिकी सृष्टिकर्त्री भगवती (ब्रह्मां० २.२६.९, २९; ४.६.५३; १२.२१,४९, ४४.६२; वायु० २४.८६) । (८) 'भय'की पत्नी तथा 'मृत्यु' की माता (वायु० १०.४०) । (९) यह यज्ञरूपी वराह विष्णुकी सहायिका पत्नी थी (ब्रह्मां० १.५.१९) । (१०) गौरूपी पृथ्वीसे असुरों द्वारा दूहा हुआ सत्त (मत्स्य० १०.२१)। (११) राजाओंके उपयोगमें आनेवाले अनेक उपायोंमेंसे एक (मत्स्य० २२२.२)। (१२) वैष्णवी माया अति मोहिनी तथा त्रिगुणात्मक है (विष्णु० ५.२१.१; ३०.१४.९) । (१३) यह वेदोंका ओष्ठ है (वायु० १०४.७१)। इसके अनेक प्रकार कहे गये हैं तथा यह शीलोंके साथ अनेक गुणोंकी सृष्टि करती है (वायु० १०४.४१) ।

मायाकिरात–पु० [सं०] इससे शंकरके स्वर्गीय व्याध रूपका बोध होता है (भाग० ३.१.३८) ।

मायाक्षेत्र–नपु० [सं०] दक्षिण भारतका एक तीर्थ ।

मायाति–स्त्री० [सं०] अष्टमी अथवा नवमीको दुर्गाके सामने दी जानेवाली तांत्रिकोंकी नरबलिका नाम (तंत्रसार तथा तंत्रालोक) ।

मायादेवी—स्त्री० [सं०] एक देवी जिसकी उपासना धन चाहनेवाले करते हैं (भाग० २.३.३)।

मायापुरी—स्त्री० [सं०] सात बड़ी नगरियोंमेंसे एक माया-नगरी (ब्रह्मां० ४.४०.९१)। जहाँ कुमारी नामसे सती देवीकी एक मूर्ति स्थापित है, इसलिए यह एक पवित्र शक्तिपीठ तथा तीर्थस्थान है (मत्स्य० १३.३४)। यह नगरी पितरोंके श्राद्धादिके लिए उपयुक्त तथा पवित्र कही गयी है (मत्स्य० २२.१०)।

मायामयस्थान—पु० [सं०] ईश्वरका एक कण। सांख्यके मतानुसार प्रकृतिको मायाके स्थानपर लें (वायु० १०१. २१८)।

मायामोह—पु० [सं०] पुराणानुसार विष्णुके शरीरसे निकला हुआ एक कल्पित पुरुष। कहते हैं इसकी सृष्टि ह्रादकी अध्यक्षतामें असुरोंका नाश करनेके लिए की गयी थी। यह असुरोंके समक्ष एक नग्न साधुके रूपमें प्रकट हुआ था। यह मुक्त-केशश हो, मयूरोंका पंख लिये नर्मदा तटपर तपस्या करता था। इसने असुरोंकी वैदिक उपासना-विधि छुड़ा दी तथा उनको 'अर्हत' कहा करता था। इसके बाद असुरगण वैदिक कृत्यों तथा यज्ञोंकी उपेक्षा करने लगे जिसके फलस्वरूप वे दिनोंदिन निर्बल होते गये (विष्णु० ३.१७.१४-४५; १८.१-३२)।

मायावती—स्त्री० [सं०] शबरासुरकी पत्नी। कहते हैं शिव द्वारा पति (कामदेव) के भस्म हो जानेपर 'रति' शंबरकी पाकशालाकी निरीक्षकके रूपमें उत्पन्न हुई थी। कामदेवकी पत्नी ही दूसरे जन्ममें मायावती हुई थी। नारदजीसे इसे विदित हुआ था कि कामदेव ही प्रद्युम्न था जिसे शंबरने समुद्रमें फिकवा दिया और उसे जो मछली निगल गयी थी वही शंबरकी पाकशालामें लायी गयी थी। मायावतीने बच्चेको निकाल तथा पाल-पोसकर बड़ा किया। युवा होने पर उसे 'महामाया विद्या' सिखला दी जिससे प्रद्युम्नने शंबरका वध किया था। अन्तमें मायावती प्रद्युम्नको आकाश-मार्गसे ले श्रीकृष्णके यहाँ जा सुखसे रहने लगी (भाग० १०.५५.६-३८; विष्णु० ५.२७.७-१६; २७-३०)।

मायाविनोद—पु० [सं०] दैत्य, दानव तथा काद्रवेय जो इच्छानुकूल जीवनके सुखोंका उपभोग करते हैं। ये केवल विष्णुके चक्रसे डरते हैं (भाग० ५.२४.८, ११.१५)।

मायावी—पु० [सं०] एक असुर विशेष जो रंभा तथा मयके छह पुत्रोंमें एक पुत्र था (ब्रह्मां० ३.६.२९; वायु० ६८. २८)। किष्किंधामें इसे कपिराज वालीने मारा था (रा० मा० कि.ष्किं०)। वाल्मीकिके अनुसार यह दुंदभि नामक दैत्यका पुत्र था। नोट विशेष—"मय दैत्य दितिका पुत्र था और महातेजस्वी, मायावी तथा शिल्प-विद्यामें निपुण था। हेमा अप्सरासे उसके मायावी और दुंदभि ये दो पुत्र हुए। इंद्रने मयको वज्रसे मार डाला।" (वाल्मीकि० ४.५१)। वालि द्वारा दुंदुभि मारा गया जिसके वधपर उसका ज्येष्ठ भाई मायावी वालीसे बदला लेने किष्किंधा आया पर वह भी वाली द्वारा मारा गया—वाल्मी० ४.९।

मायासीता—स्त्री० [सं०] पुराणानुसार कल्पित सीता। रामायणानुसार सीताहरणके समय असली सीताके स्थानपर अग्निने मायासे एक नकली सीताकी सृष्टि कर दी थी।

मायास्त्र—पु० [सं०] कहते हैं इस अस्त्रका प्रयोग विश्वामित्रने श्रीरामको सिखलाया था (रामच० बाल० २०८ खा४; २०९)।

मायु—पु० [सं०] वानरोंकी द्वीपी आदि एकादश जातियोंमेंसे एक वानरजातिका नाम (ब्रह्मां० ३.७.३१९)। क्रोधवशाके वंशमें उत्पन्न एक राक्षस (ब्रह्मां० ३.८.७०)।

मायुराज—पु० [सं०] कुवेरके एक पुत्रका नाम (हि० श० सा०)।

मारकतशाल—स्त्री० [सं०] ललिताके मुक्ताशालसे लगा हुआ मरकत मणिका बना भवन, इसके समीप ही एक वाटिकामें ब्रह्मा रहते हैं तथा चौदहो विद्याएँ उपविद्याएँ और ६४ कलाओंका भी यहीं निवास है। यहाँसे कुछ दूरपर विष्णुलोक है और तदुपरांत शिवलोक है (ब्रह्मां० ४.३४.५४)।

मारिष—पु० [सं०] दक्षिणके विविध जनपदोंमेंसे एक जनपद (ब्रह्मां० २.१६.५९)।

मारिषा—स्त्री० [सं०] (१) प्रम्लोचा अप्सराके गर्भसे उत्पन्न कण्डु ऋषिकी पुत्री जो प्राचीनबर्हिके पुत्र प्रचेतागणको व्याही थी। (२) दक्ष प्रजापतिकी माताका नाम जिसे वनस्पतियोंकी पुत्री कहा गया है (ब्रह्मां० २.३७.३६-३८; विष्णु० १.१५.७)। मत्स्यपुराणानुसार यह चंद्रवती नदीकी भी माता थी। पूर्व जन्ममें यह राजमहिषी थी पर बालविधवा हो गयी तथा निःसंतान थी। इसकी उपासनासे प्रसन्न हो विष्णुने इसे एक संग १० पतियोंकी पत्नी होनेका वर दिया, ये ही १० प्रचेतागण थे जिनसे इसके अनेक पुत्र हुए। इसके जन्मकी कथा भी विचित्र ही है (भाग० ४. ३०.१३,४७-९; ब्रह्मां० १.१.१०७; २.१३.७०; ३७.३२-८; मत्स्य० ४.४९-५०; विष्णु० १.१५.८-९; ४६-५०, ६१-७१)। (३) राजा भोजकी एक पुत्री जो देवमीढ़की पत्नी तथा वसुदेव आदि दस पुत्रोंकी माता थी (भाग० ९.२४.२७; ब्रह्मां० ३.७१.१४५)। वृक्षोंकी पुत्री जिसका विवाह सोमने प्रचेतागणसे करा दिया था (वायु० ६३.३३-७)।

मारी—स्त्री० [सं०] अन्धकासुररुधिरपानार्थ शिवजी द्वारा सृष्ट कई मानसपुत्री मातृकाओंमेंसे एक मानस-पुत्री मातृका (मत्स्य० १७९.१५)।

मारीच—पु० [सं०] (१) शिखंडिनीके गर्भसे उत्पन्न अन्तर्धानके पुत्र तथा पृथुके पौत्रका नाम (ब्रह्मां० २.३७.२३; मत्स्य० ४.४५; वायु० ६३.२२; विष्णु० १.१४.१)। (२) ताड़का नामकी राक्षसी तथा सुंदका पुत्र जो रावणका एक सेनापति था। रावणकी आज्ञासे यह सोनेका मृग बनकर पंचवटी गया था। सीताकी इच्छानुसार श्रीराम इसे मारने गये थे और इसकी सहायतासे ही रावण सीताहरण कर सका था। यह राम द्वारा मारा गया था (भाग० ९.१०.५, १०; ब्रह्मां० ३.५.३५-६; वायु० ६२.७२; विष्णु० ४.४.८९) तथा (रामच०मा० आरण्य० २६-२७)। (३) एक पुराणके सम्पादक तथा प्रवर्त्तक। वैश्वानरकी पुलोमा और कालका नामकी पुत्रियाँ इन्हें व्याही थीं जिनसे १००० पुत्र हुए, इनके अतिरिक्त १४ और थे जो हिरण्यपुरमें रहते थे (ब्रह्मां० २.३८. ५; ३.६.२६; ७.४६४; ४७.६०)। इनकी वसुनामक पत्नी इन्हें छोड़ सोमके पास चली गयी थी (मत्स्य० २३.२५)

कहते हैं इनके पुत्रोंका निवास पितरोंके सोमपथ लोकमें है (मत्स्य० १४.१)। (४) एक देवगण (ब्रह्मां० ३.१.५०)। (५) कश्यपवंशज एक गोत्रकार ऋषि (मत्स्य० १९९.९)।

मारीच(कश्यप)–पु० [सं०] मरीचि और कलाके पुत्र एक प्रजापति जो अदिति आदि दक्ष-कन्याओंके पति तथा आदित्य आदिके पिता थे (भाग० ४.१.१३; वायु० ३०.७२; ६७.४३; १००.२०)।

मारीचवंश–पु० [सं०] इस युगमें जिस लोककी सृष्टि हुई थी जिसमें चल और अचल सब प्रकारकी संपत्तियाँ थीं। इन्होंने जलमें खड़े होकर ७००० वर्षोंतक तपस्या कर सुरुचिर्दितिको प्राप्त किया। सुरुचिर्दितिको अरिष्टनेमि प्राप्त हुए तब कश्यप आये जिन्हें दक्षकी पुत्रियाँ ब्याही थीं (वायु० ६५.१०२, ११८)।

मारीचि–पु० [सं०] कश्यप और दनुके विप्रचित्ति प्रमुख सौ पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम, जिसके पुलोमा और कालका नामक पत्नियों से ६०००० पुत्र थे। ये सबके सब हिरण्यपुरके निवासी थे और ब्रह्माके वरके प्रतापसे अवध्य हो गये थे, यहाँतक कि देवता भी इन्हें नहीं मार सकते थे। अर्जुनने इनका वध किया था (ब्रह्मां० ३.६.५; मत्स्य० ६.१८, २३-२५)। पुलोमा और कालका इनकी दोनों पत्नियाँ वैश्वानरकी पुत्रियाँ थीं (विष्णु० १.२१.८-९)।

मारीची–स्त्री० [सं०] (१) पर्जन्यकी पत्नी (ब्रह्मां० २.११.-१९; वायु० २८.१६)। (२) १६ मौनेय देवगन्धर्वोंकी बहिनें २४ अप्सराओंमेंसे एक अप्सराका नाम (ब्रह्मां० ३.७.६; वायु० ६९.५)।

मारुत–पु० [सं०] (१) पवनदेवका नाम जो भीमके पिता थे (ब्रह्मां० २.१०.४३; ३.७१.१५४; वायु० १०१.१९४; १०६.५९ तथा ९६.१५३; मत्स्य० ५०.४९)। अग्निके साथ इन्होंने असुरोंका नाश किया। तारक आदि पाँच असुर संग्रामसे भाग समुद्रमें जा छिपे थे, जिसपर इन्द्रने इन दोनोंको समुद्र सुखानेकी आज्ञा दी। इन लोगोंने यह करना अस्वीकार किया अतः इन्द्रने इन्हें पृथ्वीपर जन्म लेनेका शाप दिया। अगस्त्यके रूपमें एक ही साथ इन दोनोंका जन्म हुआ था (मत्स्य० ६१.३-१९)। यह गंधका अधिपति कहा गया है (वायु० ७०.११)। (२) भार्गवोंका एक प्रवर (मत्स्य० १९५.३१; १९६.१९)।

मारुतपुराण–पु० [सं०] वायुपुराणका एक नाम जिसे वेदोंके समकक्ष ही समझा जाता है (वायु० ४.१२)।

मारुत त–नपु० [सं०] राजाओंका एक व्रत विशेष जिसके गुप्तचर वायुकी ही तरह सर्वत्र प्रवेश कर जाते हैं (मत्स्य० २२६.१२)।

मारुतालय–पु० [सं०] नर्मदा तटपरका एक तीर्थ जहाँ स्नान तथा यथाशक्ति सुवर्ण दान करनेवाला पुरुष पुष्पक विमानसे वायुलोक प्राप्त करता है (मत्स्य० १९१.८६-८)।

मारुति–पु० [सं०] पवनसुत हनुमानका एक नाम, जिनकी उत्तम भक्तोंमें गणना है (ब्रह्मां० ३.३४.३९)।

मारुतेश्वर–पु० [सं०] (१) वायु, जिनकी तीन पत्नियाँ (शक्तियाँ) हैं, जिनके नाम—इड़ा, पिंगला और सुषुम्णा है। यह हाथमें ध्वजा लेकर विशाल मृगरूप वाहनपर सवार हो श्री ललिता देवीके यजन, पूजन और ध्यानमें तत्पर रहते हैं (ब्रह्मां० ४.३३.६९-७०)। (२) ललिताके कामरूप प्रभृति ५१ पीठोंमेंसे एक पवित्र पीठ (स्थानका) नाम (ब्रह्मां० ४.४४.९६)।

मार्कंड–पु० [सं०] एक भार्गव गोत्रकार ऋषि (मत्स्य० १९५.२०; १९६.४५)।

मार्कंडेय–पु० [सं०] (१) मृकंड ऋषिके पुत्र (भाग० ४.१.४५) जो अष्ट चिरंजीवियों तथा सिद्धोंमें हैं और प्रलयमें भी नष्ट नहीं होते (भाग० ६.१५.१२; मत्स्य० २.१३; १८६-३)। पद्मपुराणानुसार इन्हें यह वर शिवसे प्राप्त हुआ था। इन्होंने शिवकी स्तुति कर मृत्युपर विजय पायी थी (पद्मपु० उत्तर० २३७.७५-९०)। इनकी अनुपम तपस्या तथा आजन्म ब्रह्मचर्यका व्रत विशेप उल्लेखनीय है। प्रलयकालमें इनको एक वटवृक्षके पत्तेपर सोये हुए बाल भगवान्‌का दर्शन हुआ था। हिमालयकी तराईमें एक चित्रा नामक शिलाचित्रपर पुष्पभद्रा नदीके तटपर इनका आश्रम था जहाँ इंद्रने कामदेव तथा पुञ्जिकस्थली अप्सराको इनकी तपस्या भंग करनेके लिए भेजा था, पर सब व्यर्थ हुआ। विष्णुका नरनारायण रूप इनको भाया था। शिव, पार्वती आदि सब इनके कठिन तपसे प्रसन्न थे। कहते हैं भृगुवंशका यह भक्त आज भी अपनी इच्छासे सब लोकोंका भ्रमण करता रहता है (भाग० १२, अध्या० ८, ९ और १०)। (२) दत्तात्रेयके एक समकालीन ऋषि; चतुर्थांश धर्मके नष्ट होनेपर धर्म संस्थापनार्थ पन्द्रहवें त्रेतायुगमें दत्तात्रेयका पाँचवाँ अवतार हुआ। उनकी सहायताके लिए ये पुरोहित उत्पन्न हुए थे (ब्रह्मां० २.३३.११; ३.७३.८९; मत्स्य० ४७.२४२; वायु० ९८.८९; १०९.२४; ११२.३४)। इन्होंने मार्कंडेय पुराण कहा था (मत्स्य० ५३.२६)। परशुरामके यज्ञमें इन्होंने ब्रह्माका काम किया था (ब्रह्मां० ३.४७.४६; ४.३९.५५)। (३) मार्कंडेयने ही नर्मदाकी विशेषताएँ युधिष्ठिरको बतलायी थीं (मत्स्य० १९०.१; १९१.८१; १९२.६; १९३.६६; १९४.४८)। यह श्रीकृष्णसे मिलने स्यमंतपंचक गये थे (भाग० १०.८४.४)। (४) मनस्विनी तथा मृकंडुका एक पुत्र (वायु० २८.५; विष्णु० १.१०.४)। धूम्रपत्नी इनकी पत्नी तथा वेदशिरा पुत्र था (ब्रह्मां० २.११.७)। श्रीरामके अभिषेकके समय यह उपस्थित थे (विष्णु० ४.४.९९)। (५) इन्द्रप्रमतिका एक शिष्य जिन्हें उन्होंने एक संहिताका अध्यापन किया था। उनके दूसरे शिष्यका नाम सत्यश्रवा था जो उनका पुत्र था। सत्यहित उनका पौत्र था (वायु० ६०.२७-२८)। पीवरी तथा वेदशिराके वंशज पुत्र, शिष्य, पौत्रादिको ही मार्कंडेय कहते हैं (वायु० २८.६)। (६) मार्कंडेयपुराण जिसे मार्कंडेयने कहा था। इसे हाथसे लिखकर कार्त्तिक मासमें दान करनेवाला पुण्डरीक यज्ञका फल पाता है (भाग० १२.७.२४; १३.५; वायु० १०४.४; विष्णु० ३.६.२१. मत्स्य० ५३.२६-७)। पुराणानुसार मृकंडके पुत्र एक ऋषि (भाग० ४.१.४५)। कहते हैं यह सदा जीवित रहते हैं यानी चिरजीवी हैं (भाग० ६.१५.१२; मत्स्य० २.१३; १८६.३)।

मार्कंडेयपुराण–पु० [सं०] एक महापुराण जिसमें ९००० श्लोक हैं जिसके रचयिता मार्कंडेय मुनि हैं। दुर्गा-

माहात्म्य इसीके अंतर्गत है (भाग० १२.७.२४; १३.५; विष्णु० ३.६.२१; वायु० १०४.४; मत्स्य० ५३.२६-७)।

मार्कंडेयशिला—स्त्री० [सं०] वदरी क्षेत्रमें वह शिला जिसपर मार्कंडेयको विष्णुका दर्शन हुआ था (स्कंदपु०, वैष्ण० वदरिकाश्रम-माहात्म्य)।

मार्कंडेयी—स्त्री० [सं०] रक्ष (रजा=वायु०) की पत्नी जिसका पुत्र केतुमान् था (ब्रह्मां० २.११.४२; वायु० २८.३७)।

मार्कंटि—पु० [सं०] एक आर्षेय प्रवरप्रवर्तक आंगिरस ऋषि (मत्स्य० १९६.२२)।

मार्ग—पु० [सं०] मार्ग कई प्रकारके होते हैं। जैसे दिशामार्ग, ग्राममार्ग, सीमामार्ग, राजपथ, शाखारथ्या, गृहरथ्योपरथ्या, उपरथ्या, घंटापथ, गृहांतर, वृत्तिमार्ग तथा प्राग्वंश। इन सवकी नाप अलग-अलग है (वायु० ८.११८-२२; ब्रह्मां० २.७.११२-१६)।

मार्गदायिनी—स्त्री० [सं०] केदारमें स्थापित सती देवीकी एक मूर्त्ति (मत्स्य० १३.३०)।

मार्गपथ—पु० [सं०] एक भार्गव गोत्रकार ऋषि (मत्स्य० १९५.३३)।

मार्गपालीपूजन—पु० [सं०] कार्त्तिक शु० १ को सायंकाल कुशका वंदनवार वना मुख्य द्वारपर वाँधे और राजा वलिकी पूजा करे। इसी तिथिको वलिने तीन पग भूमि विष्णुको दी थी। विष्णुके वरदानसे ही वलिका पूजन करते हैं—दे० आदित्यपु०।

मार्गवती—स्त्री० [सं०] पथिकोंकी रक्षा करनेवाली एक देवी।

मार्गवेद—पु० [सं०] एक ऋषि-पुत्रका नाम।

मार्गशीर्ष—पु० [सं०] एक मास विशेषका नाम जिसमें अग्निपुराण दान करनेका माहात्म्य है (मत्स्य० ५३.२९)। सैन्य-संचालनके लिए भी यह मास उत्तम कहा गया है (मत्स्य० ५६.२; ६०.३५; २४०.५)।

मार्गा—स्त्री० [सं०] मुद्गला, तारा आदि कई ब्रह्मवादिनियोंमेंसे एक ब्रह्मवादिनी (ब्रह्मां० २.३३.१९)।

मार्गेय—पु० [सं०] एक भार्गव गोत्रकार ऋषि (मत्स्य० १९५.२०)।

मार्जार—पु० [सं०] (१) वंदरोंकी एक जाति जो हरि (हरिभद्रा) तथा पुलहसे उत्पन्न हुए थे (ब्रह्मां० ३.७.१७७; ३०५, ३१९; ५१.११)। (२) जाम्ववान्के एक पुत्रका नाम (ब्रह्मां० ३.७.३०३)।

मार्जारि—पु० [सं०] मागधराज सहदेवका एक पुत्र जो श्रुतश्रवाका पिता था (भाग० ९.२२.४६)।

मार्तण्ड—पु० [सं०] (१) वेदोक्त सूर्यका नाम। सृष्टिके आरंभमें ब्रह्माने त्रैलोक्यमें जो परम तेज इतस्ततः विखरा था, उसे चारों ओरसे वटोर कर कौशलसे अदितिके हृदयमें स्थापित कर दिया। अदितिके उदरमें अण्डकी स्थापना पहले ही की जा चुकी थी। अण्डेके अन्दर गर्भ अत्यन्त वृद्धिको प्राप्त हो वलवान हुआ। चारों ओरसे तेज वटोर कर गर्भ वनाया गया, यह जान कर देवगण निस्तेज निर्वल हो गये। उन्होंने ब्रह्मासे विनती की, भगवन् हम लोग कैसे वचेंगे। अवश्य विनष्ट हो जायँगे। केवल हम ही नहीं, स्थावर और जंगम सव जीव भी जल्दी नष्ट हो जायँगे, इसलिए आप अण्डेमें स्थापित तेज और वलको हटाइये। उनकी विनतीपर प्रजापतिने उसे खींच लिया। अण्डेमें वल, अण्डेके अन्दर शिशु रहा। अण्डा था वल और शिशु तेज। वह अदितिके गर्भसे मृत पिण्डके तुल्य निकला। प्रजापतिने उस अण्डेके दो टुकड़े किये। एकमें गर्भको दुर्वल रूपमें देखा। उसे उठा कर अदितिके अंकमें दे दिया। अण्डेके मृत (खण्डित) होनेपर यह हुआ। अतः यह नाम पड़ा (ब्रह्मां० ३.७.२७५-२८८; मत्स्य० २.३५)। अण्डेको त्वष्टा द्वारा दो खण्डोंमें विभक्त देख कश्यपने दुःखी होकर कहा—'तू कश्यप तथा दाक्षायणीका पुत्र मार्तण्ड वा विवस्वान् हो जा।' इससे यह नाम पड़ा। इनके सात पुत्र हुए जिनमें सावर्णि तथा शनैश्चर अंतिम थे (वायु० ८४.२५)। यमुना नदी इनकी पुत्री है (ब्रह्मां० ३.१३.७२)। नासत्य तथा दस्र इन्हींके पुत्र हैं (ब्रह्मां० ३.५९.२५; ४.३८.२३)। मत्स्य पुराणानुसार दानके लिए सूर्यकी सुवर्ण मूर्त्ति आवश्यक है (मत्स्य० ९.३; २८०.६)। (२) इन्होंने अश्वरूपधारी याज्ञवल्क्य (ब्रह्मराति) को यजुर्वेद (शुक्ल यजुर्वेद) दिया (वायु० ६१.२१)।

मार्त्तण्डकुल—पु० [सं०] क्षत्रियोंका सूर्यवंश (मत्स्य० २९०.२४)।

मार्त्तण्डमंडल—पु० [सं०] मरीचिगर्भका लोक यहीं स्थित है जहाँ अंगिरा ऋषिके पुत्र हविष्मंत पितरोंका निवास है (मत्स्य० १५.१६)।

मार्त्तण्डसप्तमी—स्त्री० [सं०] पौष शु० ७ को सूर्यका पूजन कर गोदान करनेका विधान है—दे० कृत्यकल्पतरु।

मार्त्तिकावत—पु० [सं०] पुराणानुसार चेदी राज्यका एक नगर।

मार्त्तिकावर—पु० [सं०] भोजोंको मृत्तिकावर नगरके नामानुसार मार्त्तिकावर कहते थे (विष्णु० ४.१३.७)।

मार्षा—स्त्री० [सं०] चाक्षुष मन्वंतरमें दक्षकी माताका नाम (वायु० ३०.६१, ७४)।

मार्ष्टिपिंगलि—पु० [सं०] अंगिरसवंशका एक त्र्यार्षेय प्रवरप्रवर्तक ऋषि (मत्स्य० १९४.१८)।

मार्ष्टि—पु० [सं०] वसुदेवसुत सारणके सार्ष्टि, सत्य, धृति आदि कई पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (विष्णु० ४.१५.२१)।

माल—पु० [सं०] पूर्वका एक जनपद (वायु० ४५.१२३)।

मालती—स्त्री० [सं०] मालवी। अश्वपतिकी रानीका नाम जो सावित्रीकी माता थी (मत्स्य० २०८.१०)। इसके पुत्रोंको मालव कहते थे जो शुद्ध क्षत्रियवंशके थे (मत्स्य० २१३.१६)।

मालद—पु० [सं०] (१) एक प्रदेशका नाम जिसे ताड़काने उजाड़ा था (वाल्मी० रामायण)। (२) एक अनार्य जाति (मार्कण्डेयपु०)।

मालय—पु० [सं०] विष्णुवाहन गरुड़का एक पुत्र (विष्णु०)।

मालयनि—पु० [सं०] एक भार्गव गोत्रकार ऋषि (मत्स्य० १९५.२६)।

मालव—पु० [सं०] (१) ललिताके ५१ पीठोंमेंसे एक पीठ (ब्रह्मां० ४.४४.९५)। (२) मालवके द्विज जो पुरंजयके वाद व्रात्य हो गये (भाग० १२.१.३८; विष्णु० २.३.

१७)। (३) विन्ध्याचलकी एक क्षत्रिय जातिके लोग जो अश्वपति तथा मालवीके पुत्र थे (मत्स्य० ११४.४४, ५२; १६३.६७; २१३.१६; वायु० ४५.१३२)। जरासंधने इन लोगोंको यदुओंके विरुद्ध लड़नेके लिए भेजा था (भाग० १०[५०(५)२]।

मालवी–स्त्री० [सं०] दे० मालती (मत्स्य २१३.१६)।

मालहायन–पु० [सं०] एक गोत्रकार ऋपिका नाम।

माला–स्त्री० [सं०] चिंतामणिमयी माला। कामेश्वरको विवाहोपलक्ष्यमें दिया गया कुवेरका उपहार (ब्रह्मां० ४.१५.२२)।

मालाकार–पु० [सं०] वे माली तथा मालिनें जिन्होंने श्रीकृष्ण तथा बलरामको उनकी रुचिके अनुसार पुष्पहारादि दिये थे और उनसे अपने तथा वंशजोंके लिए समृद्धि आदिका वरदान पाया था (विष्णु० ५.१९.१७-२८)।

मालिनी–स्त्री० [सं०] (१) स्कंदकी सात माताओंमेंसे एक। सर्वसंक्षोभण नामक चक्रपर स्थित कुसुमा, मेखला आदि आठ शक्तियोंमेंसे एक शक्ति तथा सर्वज्ञाद्यन्तर नामक सर्वरक्षाकर चक्रमें स्थित कई मुद्रा देवियोंमेंसे एक मुद्रा देवीका नाम (ब्रह्मां० ४.३६.७६, ९६)। (२) अंधकासुररुधिरपानके लिए शिवजी द्वारा सृष्ट कई मानसपुत्री मातृकाओंमेंसे एक मानसपुत्री मातृका (मत्स्य० १७९.९)। (३) हिमाचलकी एक नदी, जिसके तटपर पुराणानुसार मेनका अप्सराने शकुंतलाको जन्म दिया था—दे० शकुंतला तथा मेनका। (४) एक राक्षसकन्या, जो कुबेरकी आज्ञासे महर्षि विश्रवाकी परिचर्यामें तत्पर रहती थी। विश्रवाने इसके गर्भसे विभीषणको उत्पन्न किया था (महाभा० वन० २७५.३-८)। (५) रौच्य मनुकी माताका नाम (मार्कण्डेय पु०)। (६) पृथुलाश्वपुत्र चम्पकी रम्य चम्पा नगरीका प्राचीन नाम=चम्पावती (मत्स्य० ४८.९७; वायु० ९९.१०५)। (७) अंगदेशकी एक समृद्धिमती नगरी, जिसे जरासंधने कर्णको दिया था (महाभा० शान्ति० ५.६)।

मालिमंडन–पु० [सं०] पुराणानुसार एक राजाका नाम।

माली–पु० [सं०] (१) सुकेश राक्षसका पुत्र जिसके माल्यवान् और सुमाली दो भाई थे (रामचरित मा०)। (२) कैकसीका पिता तथा विश्रवाका श्वशुर। यह वृत्रासुरके साथ इन्द्रसे युद्ध करने गया था। यह पाँचवें 'तल'का निवासी राक्षस था जिसे देवासुरसंग्राममें विष्णुने मारा था (भाग० ६.१०.२१; ८.१०.५७; ब्रह्मां० २.२०.३७; ३.८.४०; वायु० ७०.३४)।

माल्यवती–स्त्री० [सं०] पुराणानुसार एक प्राचीन नदीका नाम।

माल्यवान्–पु० [सं०] (१) गंधर्वकन्या देववतीके गर्भसे उत्पन्न सुकेशका पुत्र एक राक्षस। इसीका भाई सुमाली था जिसकी पुत्री कैकसी लंकापति रावणकी माता थी। इसने रावणको श्रीरामसे युद्ध न करके सीताको लौटा देनेकी राय दी थी (रामच० मा० सुंदर० ३९.१, २)। (२) पुराणानुसार मेरुके पूर्वका एक पर्वत। सिद्धांतशिरोमणिके अनुसार नीलपर्वत से दक्षिण, निषध पर्वतके उत्तर तथा इलावृतसे पश्चिमतक इसका विस्तार १००० योजन कहा गया है। यह केतुमालका सीमा पर्वत है। चक्षु नदी इसीसे निकली है (भाग० ५.१६.१०; १७.७; मत्स्य० ११३.३५; वायु० ३४.३३-४; ४२.१९, ४२; विष्णु० २.२.२७, ३९)। अमरकंटक इसीकी चोटीपर है (ब्रह्मां० २.१५.३८; १७.१८; ३.१३.७, १३)। (३) प्रहेति राक्षसका एक पुत्र जिसे देवासुरसंग्राममें विष्णुने मारा था। इसीकी पुत्री पुष्पोत्कटा और वाका थी। यह विश्रवाका श्वशुर था (भाग० ८.१०.५७; ब्रह्मां० ३.७.९०; ८.३९; वायु० ७०.३४)। (४) एक वर्पका नाम, भद्राश्वका एक राज्य (ब्रह्मां० २.१४.५१; वायु० ३३.४४; ४३.५)। (५) लंकुके दो पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (वायु० ६९.१२९)।

माष–पु० [सं०] एक छोटी मुद्रा जो कूपपरसे रस्सी तथा बाल्टी आदि चुरानेके लिए दंडस्वरूप देनी पड़ती है (मत्स्य० २२७.९८)। एक तौल विशेप (विष्णु० ६.३.८)।

माषक–पु० [सं०] एक तौलका नाम। कुछ अपराधोंके लिए सुवर्ण तथा चाँदी इसी तौलमें दंडस्वरूप देना होता है (मत्स्य० २२७.७, ८९, १०८, १४६)।

माषशरावि–पु० [सं०] वशिष्ठवंशज एक गोत्रकार ऋपि (मत्स्य० २००.९)।

मास–पु० [सं०] ३० दिनों तथा रातोंका सामूहिक नाम जिसमें दो पक्ष—कृष्णपक्ष तथा शुक्लपक्ष होते हैं। दो मासोंका एक ऋतु तथा ६ मासोंका एक अयन और २ अयनोंका १ वर्प। मासोंके नाम हैं—मधु, माधव, शुक्र, शुचि, नभा, नभस्य, इप, ऊर्ज, सहा, सहस्य, तप और तपस्य (ब्रह्मां० २.७.२०; १३.१४,११४; वायु० ३.१४; ३०.१६१,७८; ३१.२६; ६५.५८; विष्णु० १.३.९-१०; २.८.८१; ६.३.१०)।

मासकृत्–पु० [सं०] सुतप देवगण, जो संख्यामें २० हैं, मेंका एक सुतप देव (ब्रह्मां० ४.१.१४)।

मासश्राद्ध–पु० [सं०] मनुष्य-पितरों तथा लौकिक पितरोंको भोजन कराना। सोमप, बर्हिपद्, अग्निष्वाता आदि मनुष्य पितर हैं। पिता, पितामह, प्रपितामह आदि लौकिक पितर हैं (ब्रह्मां० २.१८.६७, ७८; मत्स्य० १४१.६५; वायु० ८३.३-१०)।

माहित्थ–पु० [सं०] एक ऋषिका नाम—दे० शतपथब्राह्मण।

माहिष–पु० [सं०] गुह लोगोंके अधीन एक देश (विष्णु० ४.२४.६५)।

माहिषी–स्त्री० [सं०] केतुमाल देशकी अनेक नदियोंमेंसे, एक नदी (वायु० ४४.२२)।

माहिषक–पु० [सं०] दक्षिणापथके निवासी (वायु० ४५.१२५)।

माहिषिक–पु० [सं०] एक पतित क्षत्रिय जाति (ब्रह्मां० ३.६३.१४०)।

माहिष्मती–स्त्री० [सं०] एक प्राचीन नगरीका नाम जो हैहयोंकी राजधानी थी। महाभारत और पुराणानुसार यह नर्मदा (रेवा)के तटपर बसी थी जहाँ सहस्रार्जुन रहता था। पिताकी मृत्युका बदला लेनेके निमित्त परशुरामने वहाँ जाकर क्षत्रियोंको मार डाला था। बलराम भी वहाँ गये थे (भाग० ९.१५.२२; १६.१७; १०.७९.२१)। पहले

यहाँ नागोंकी राजधानी तथा कर्कोटक-सभा थी (ब्रह्मां० ३.३८.२; ४६.११; ६९.२६)। कार्त्तवीर्यार्जुनने कर्कोटकके पुत्रोंको परास्त कर यहाँ अपनी राजधानी स्थापित की थी (मत्स्य० ४३.२९)। यहींपर कार्त्तवीर्यने लंकापति रावणको बंदी वना कर रखा था (मत्स्य० ४३.३८)। हैहयवंशी सहजित् पुत्र महिष्मान्ने इस नगरीको वसाया था और कार्त्तवीर्यार्जुनकी यही राजधानी थी (वायु० ९४.२६; विष्णु० ४.११.९, १९)।

महिष्मान्–पु० [सं०] सहजितका पुत्र तथा भद्रश्रेण्यका पिता। इसीने माहिष्मती नगरी वसायी थी (विष्णु० ४.११.९-१०)।

माहेंद्र–पु० [सं०] अतलका निवासी एक राक्षस (वायु० ५०.१८)।

माहेंद्री–स्त्री० [सं०] (१) दे० अमरावती (ब्रह्मां० २.२१.३०)। (२) चक्रराजरथेन्द्रके नवम पर्वके पूर्वार्द्धमें स्थित ब्राह्मी आदि अष्ट शक्तियोंमेंसे एक शक्ति देवीका नाम तथा ब्रह्माद्यम्वरधिष्ण्यमें इन आठके आठ मन्दिर हैं (ब्रह्मां० ४.१९.७; ३६.७८)।

माहेश्वर–पु० [सं०] (१) २९वाँ कल्प जिसमें त्रिपुरको जला कर भस्म किया गया था (मत्स्य० २९०.१०)। (२) एक उपपुराणका नाम—दे० पुराण। (३) एक यज्ञका नाम। (४) यह प्रधान और पुरुषसे उत्पन्न हुए थे तथा संसार सृष्टिके जन्मदाता थे (वायु० १०३.३६)। संसारको इनके शरीरका अंग कहते हैं (वायु० १०३.७१-३)।

माहेश्वरज्वर–पु० [सं०] श्रीकृष्णपर आक्रमण करनेके लिए शिवने इसे उत्पन्न किया था, पर वैष्णवज्वरसे परास्त हो यह विलीन हो गया था (भाग० १०.६३.२२-३०)।

माहेश्वरधर्म–पु० [सं०] नंदीने नारदको माहेश्वर धर्म तथा व्रतकी व्याख्या वतलायी थी (मत्स्य० ९५.३, ४) जो स्कंदपुराणमें वर्णित है (मत्स्य० ५३.४२)।

माहेश्वरपुर–पु० [सं०] यहाँ सती देवीकी एक मूर्त्ति स्वाहा नामसे स्थापित है, इसलिए यह एक पवित्र पीठस्थान है (मत्स्य० २.२६.६५)।

माहेश्वरवल–पु० [सं०] शिवके महायोग-लिंगकी उत्पत्तिके अवसरपर उसके दर्शनसे विस्मित विष्णु द्वारा उक्त महादेव-माहात्म्य (ब्रह्मां० २.२६.६५)।

माहेश्वरव्रत–न० पु० [सं०] शिवचतुर्दशी-व्रत जिसका माहात्म्य नंदीने नारदसे कहा था। यह शंकरके प्रीत्यर्थ मार्गशीर्ष शुक्ल १३ से प्रारम्भ होता है तथा पूजाका विधान दूसरे दिन है। इसमें सुवर्ण, गौ तथा उसका वच्चा किसी सामग या श्रोत्रियको दान देना चाहिये। पतिकी आज्ञासे इस व्रतको करनेवाली स्त्रियाँ पिनाकपाणिका लोक प्राप्त करती हैं (मत्स्य० ९५.५-३८)।

माहेश्वरी–स्त्री० [सं०] (१) चक्रराजरथेन्द्रके नवम पर्वके पूर्वार्द्धमें स्थित ब्राह्मी आदि अष्ट शक्तियोंमेंसे एक शक्ति तथा अष्ट मातृकाओंमेंसे एक मातृका (ब्रह्मां० ४.१९.७; ३६.५८; ४४.१११)। महेश्वरकी ही तरह इनकी भी मूर्त्ति वनायी जाती है (मत्स्य० १७९.९; २६१.२५; २८६.१०)। (२) काशीराजके पुत्रने पिताकी मृत्युका श्रीकृष्णसे वदला लेनेके हेतु भगवान् शंकरकी आराधना कर दक्षिणाग्निसे इसकी उत्पत्ति की थी, पर श्रीकृष्णके सुदर्शनचक्रका विरोध करनेमें अपनेको असमर्थ पा यह काशी भाग गयी थी (विष्णु० ५.३४.३९)।

माहेश्वरीविद्या–स्त्री० [सं०] यह मृतसंजीवनी विद्या है जिसकी उत्पत्ति महेश्वरके मुखसे हुई थी। तपस्यासे संतुष्ट हुए शंकरसे शुक्राचार्यको प्राप्त हुई थी, जिसके प्रभावसे शुक्राचार्य युद्धमें मृत दैत्योंको सुप्तोत्थितकी तरह जिला देते थे (मत्स्य० २४९.६)।

माहेश्वर्य–पु० [सं०] एक योग, रुद्र द्वारा कहे गये पाँच धर्म—प्रायाणाम, ध्यान, प्रत्याहार, धारणा तथा माहेश्वर योगका स्मरण। ये धर्म आदित्यों, वसुओं, साध्यों, अश्विनों, मरुतों, मृगुओं, यम, शुक्र तथा अन्य पितृकालांतकों द्वारा उपयोगमें लाये गये हैं। अर्थात् इन सवने इन पाँच धर्मोंकी उपासना की है। इस योगको प्राप्त कर अन्यान्य देवता, वेदपारग ब्राह्मण, महात्मा निर्मल और ऊर्ध्वरेता होकर रुद्र-लोकको जाते हैं, फिर उन्हें आवागमनके चक्करमें पड़ना नहीं पड़ता (वायु० १०.७०-७४; २३.१५३, २२४)।

मित–पु० [सं०] (१) सात मरुद्गणोंमेंसे पाँचवें मरुद्गणका एक मरुत् (ब्रह्मां० ३.७.९६)। (२) सुधर्मा देवगण, जिसमें १२ देव हैं, मेंका एक सुधर्मा देव (ब्रह्मां० ४.१.६०)।

मितध्वज–पु० [सं०] धर्मध्वजके दो पुत्रोंमेंसे एक पुत्र तथा खांडिक्यके पिताका नाम (भाग० ९.१३.१९-२०)।

मितवान्–पु० [सं०] स्वायंभुव मन्वंतरके तीन देवगणोंमेंसे एक शक्त नामके देवगण, जिनकी संख्या १२ है, मेंका एक देव (ब्रह्मां० २.१३.९५)।

मिताहार–पु० [सं०] (क्षण-क्षण मिताहार) किष्किन्धाधिपति वालीके सैकड़ों सामन्त तथा सेनानायक प्रधान वानरोंमेंसे एक प्रधान वानरका नाम (ब्रह्मां० ३.७.२३९)।

मित्र–पु० [सं०] (१) ज्येष्ठ मासमें तपनेवाले सूर्यका नाम। इनके रथपर अत्रि ऋषि, पौरुषेय राक्षस, तक्षक नाग, मेनका अप्सरा, हाहा गन्धर्व तथा रथस्वन यक्ष अधिष्ठित रहते हैं (भाग० १२.११.३५; वायु० ५२.६; विष्णु० २.१०.७)। वारह आदित्योंमेंसे एकका नाम, अदितिके १२ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (भाग० ६.६.३९)। (२) पहले आदित्यका नाम। यह उर्वशीसे प्रेम करते थे, पर उसे वरुणपर आसक्त देख पृथ्वी-पर जन्म लेनेका शाप दिया और स्वयम् वद्रीनाथमें तप करने लगे, जहाँ उर्वशीको देख इनका रेतस् वह गया जिससे अगस्त्य और वशिष्ठ उत्पन्न हुए (मत्स्य० ६१.२७, ३१; १२६.६; १७१.५६; २०१.२३-९)। देवासुर-युद्धमें प्रहेतिसे लड़े (भाग० ८.१०.२८)। (३) पुराणानुसार पहले मरुत्का नाम (मत्स्य० १७१.५२)। (४) ऊर्जाके गर्भसे उत्पन्न वशिष्ठ ऋषिके चित्रकेतु प्रमुख सात पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम, जो ब्रह्मर्षि थे (भाग० ४.१.४१)। (५) आर्यों के एक प्राचीन देवता, वेदोंके अनुसार 'मित्र' ही प्रधान आदित्य हैं। मित्रकी पत्नी 'मित्रा' पारसियोंकी अग्निकी अधिष्ठात्री देवी हैं। (६) रेवतीके पति तथा उत्सर्ग आदिके पिता (भाग० ६.१८.६)। (७) वसुदेव तथा मदिराके नंद, उपनंद आदि १० पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (ब्रह्मां० ३.७१.१७१; वायु० ९६.१६९)। (८) राजाओंके मित्र जो तीन प्रकारके होते हैं—वंशपरम्परागत, शत्रुओंके

शत्रु, कृत्रिम (मत्स्य० १२०.१७-१८)। (९) मणिभद्र तथा पुण्यजनीके २४ पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (वायु० ६९.१५६)। (१०) एक वशिष्ठवंशज (वायु० ७०.९०)।

मित्रक–पु० [सं०] २८वें द्वापरके अवतार नकुलीके चार योगी पुत्रोंमेंसे एक पुत्र जो एक तपस्वी था (वायु० २३.२२३)।

मित्रकृत्–पु० [सं०] पुराणानुसार बारहवें मनुके पुत्रका नाम।

मित्रज्योति–स्त्री० [सं०] मरुत (मरुत्त=वायु०) की एक पुत्रीका नाम (ब्रह्मां० ३.६८.५; वायु० ९३.५)।

मित्रघ्न–पु० [सं०] एक राक्षस जो यज्ञकी सामग्री ले जाया करता था।

मित्रदेव–पु० [सं०] (१) १२वें मनुके पुत्रका नाम—दे० मनु। (२) एक राजाका नाम। यह त्रिगर्तराज सुशर्माका भाई था जो अर्जुन द्वारा महाभारत-युद्धमें मारा गया (महाभा० कर्ण० २७.३-२५)।

मित्रदेवी–स्त्री० [सं०] देवककी एक पुत्रीका नाम जो वसुदेवकी सात पत्नियोंमेंसे एक थी (मत्स्य० ४४.७३)।

मित्रपद–पु० [सं०] केदारमें स्थित पितरोंके श्राद्धादिके लिए उपयुक्त एक पवित्र तीर्थ (मत्स्य० २२.११)।

मित्रबाहु–पु० [सं०] (१) चौथे रुद्रसावर्ण मनु (ऋतु-सावर्ण=वायु०) के देववान्, उपदेव आदि १० पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (ब्रह्मां० ४.१.९५; वायु० १००.९९)। (२) नाग्नजिती तथा श्रीकृष्णके कई पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (ब्रह्मां० ३.७१.२५२; मत्स्य० ४७.१९; वायु० ९६.२४३)।

मित्रभानु–पु० [सं०] एक राजाका नाम (महाभा०)।

मित्रयु–पु० [सं०] (१) एक वशिष्ठवंशका पौराणिक जो पुराणमें व्यासका शिष्य था (ब्रह्मां० २.३५.६४; विष्णु० ३.६.१७)। (२) (विष्णु०=मित्रायु) राजा दिवोदासके पुत्रका नाम जो ब्रह्मिष्ठ थे तथा च्यवन ऋषिके पिता थे (मत्स्य० ५०.१३; वायु० ९९.२०६; विष्णु० ४.१९.६९-७०)।

मित्रवती–स्त्री० [सं०] पुराणानुसार श्रीकृष्णकी एक पुत्री (भाग०)।

मित्रवर्धन–पु० [सं०] एक राजाका नाम। पाँचजन्य नामक अग्निके पुत्र। पाँच देवविनायकोंमेंसे एक देवविनायकका नाम (महाभा० वन० २२०.१२)।

मित्रवर्मा–पु० [सं०] नारायणपुरका राजा जिसकी मनोरमा नामकी धर्मपत्नीके गर्भसे आकाशराजका जन्म हुआ था। आकाशराजकी पुत्री पद्मावती, पद्मिनी या पद्मालयाका विवाह वेंकटाचलनिवासी श्री विष्णुसे हुआ था। यही पद्मावती पूर्वजन्ममें राजा कुशध्वजकी पुत्री थी जिसका नाम वेदवती था—दे० वेदवती तथा स्कंदपु० वैष्णव० भूमिवाराह-खंड।

मित्रवान्–पु० [सं०] (१) चौथे रुद्रसावर्ण (ऋतु-सावर्ण=वायु०) मनुके १० पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (ब्रह्मां० ४.१.९४; वायु० १००.९९)। (२) एक असुरका नाम। (३) श्रीकृष्ण तथा मित्रविंदाका एक पुत्र (मत्स्य० ४७.१९)।

मित्रविंद–पु० [सं०] मित्रविंदा तथा श्रीकृष्णका एक पुत्र (मत्स्य० ४७.१९)।

मित्रविंदा–स्त्री० [सं०] (१) कुशद्वीपकी सात मुख्य नदियोंमेंसे एक नदीका नाम (भाग० ५.२०.१५)। (२) वृक, हर्ष, अनिल, गृध्र, वर्धन, अन्नाद आदि १० पुत्रोंकी माता तथा श्रीकृष्णकी एक पत्नीका नाम जिसके गर्भसे वह्नि नामक पुत्र भी हुआ था (भाग० १०.६१.१६)। यह अवंतिनरेश अनुविंद तथा विंदकी बहिन थी जो इसका विवाह श्रीकृष्णसे नहीं करना चाहते थे, पर दोनोंको परास्त कर श्रीकृष्ण इसे ब्याह कर ले आये थे। इनके पुत्रोंके लिए द्रष्टव्य (भाग० १०.५८.३१; ६१.१६; मत्स्य० ४७.१४; वायु० ९६.२३४; विष्णु० ५.२८.३)। अनिल भी इनका एक पुत्र हुआ था (भाग० १०.६१.१६)।

मित्रविंदु–पु० [सं०] ऋतु सावर्ण मनुके १० पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (वायु० १००.९९)।

मित्रसप्तमी–स्त्री० [सं०] मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी जिस तिथिको अदितिके गर्भसे 'मित्र' नामक दिवाकरका जन्म हुआ था। इस दिन सूर्यका पूजन तथा व्रत करनेका विधान है—दे० निर्णयामृत तथा ब्रह्मपु०।

मित्रसह–पु० [सं०] दे० सौदास और कल्मापपाद। ये वशिष्ठके शापसे राक्षस हुए थे। राक्षसावस्थामें एक ब्राह्मणीके पतिको खा जानेसे उसके शापवश अनपत्य थे (भाग० ९.९.१८, ३५; ब्रह्मां० ३.६३.१७६; वायु० ८८ १७६)।

मित्रसाहसा–स्त्री० [सं०] स्वर्गमें निवास करनेवाली एक देवी (हिं० श० सा०)।

मित्रसेन–पु० [सं०] चौथे रुद्रसावर्ण मनु (ऋतु सावर्ण=वायु०) के १० पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (ब्रह्मां० ४.१.९४; विष्णु० १००.९९)।

मित्रा–स्त्री० [सं०] (१) वैदिक देवता मित्रकी पत्नीका नाम—दे० मित्र। (२) शत्रुघ्नकी माता सुमित्राका नाम (रामचरि० मा०)। (३) उमा देवीकी अनुगामिनी सखीका नाम (महाभा० वन० २३१.४८)। (४) पराशरके शिष्य मैत्रेयकी माताका नाम। विदुरने इनके पुत्रको गंगातटपर देखा था (भाग० ३.४.३६)।

मित्रावरुण–पु० [सं०] (१) ईश्वरकी गुदा (भाग० २.१.३२)—दे० मित्र। यही पहले आदित्य थे जिनका उर्वशीको देखनेसे रेतःपात हुआ था जिसे उर्वशीके निकट एक घड़ेमें रख दिया था और इसीसे अगस्त्य तथा वशिष्ठका जन्म हुआ था (भाग० ६.१८.५-६; ९.१३.६)। मित्रने उर्वशीको पृथ्वीपर जन्म लेनेका शाप भी दिया (भाग० ९.१४.१७)। इन लोगोंके प्रीत्यर्थ जब मनुने एक धार्मिक कृत्य किया तब इलाका जन्म हुआ था (ब्रह्मां० ३.८.९९; ६०.५.८)। (२) सात ब्रह्मवादी वाशिष्ठोंमेंसे एक ब्रह्मवादी वाशिष्ठ (मत्स्य० १४५.११०)। (३) यज्ञके लिए १६ ऋत्विजोंमेंसे दो जो नारायणकी पीठमेंसे उत्पन्न हुए थे (मत्स्य० १६७.८)। (४) दो वैदिक देवता जिनके प्रीत्यर्थ प्रजापति मनुके यज्ञसे इड़ा (इला) की उत्पत्ति हुई थी (वायु० ८५.६-७)। इन्हींके तेजमें वशिष्ठके प्राण प्रवेश कर गये, पर निमिने इसे शाप दिया। ये लोग उर्वशीसे मिले और तब वशिष्ठको उर्वशीसे दूसरा शरीर प्राप्त हुआ (विष्णु०

४.५.११-१२) ।

मित्रावरुणेष्टि—पु० [सं०] पुत्रकी इच्छासे प्रजापति मनु द्वारा किया गया एक यज्ञ विशेष (विष्णु० ४.१.८) ।

मित्रावसु—पु० [सं०] विश्वावसुके एक पुत्रका नाम।

मित्री—पु० [सं०] चार योगनाथोंमेंसे एक योगनाथका नाम (ब्रह्मां० ४.३७.२९) ।

मित्रेयु—पु० [सं०] (१) मित्रायु। दिवोदासका एक पुत्र तथा च्यवनके पिता (भाग० ९.२२.१)। (२) भार्गवोंकी एक शाखाका नाम (ब्रह्मां० ३.१.१००) ।

मिथि—पु० [सं०] पुराणानुसार राजा निमिके पुत्र जनकका नाम। कहते हैं निमिको कोई पुत्र नहीं था, इससे मुनियोंने निमिके शरीरको अरणीसे मथा जिससे जनककी उत्पत्ति हुई थी। यह मथनेसे उत्पन्न हुए थे, इससे यह नाम पड़ा। इन्होंने मिथिलाकी स्थापना की थी, उदावसु नामक इनका एक पुत्र भी हुआ था (ब्रह्मां० ३.६४.४; वायु० ८९.४-६; विष्णु० ४.५.२३) ।

मिथिला—स्त्री० [सं०] विदेह जनक द्वारा स्थापित उत्तर-पूर्वकी एक नगरी जो विदेहोंकी राजधानी थी और जिसके राजा जनक थे। शतधन्वाका घोड़ा यहीं खो गया था, अतः श्रीकृष्णके डरसे वह पैदल ही भागा था। वलराम यहाँ कुछ दिनोंतक रहे थे (भाग० ९.१३.१३; १०.५७.२०-२६; ब्रह्मां० ३.६४.६; ७१.८०; वायु० ९६.७४; ९९.३२४) ।

मिथिलावन—पु० [सं०] श्रीकृष्णने शतधन्वाका वध यहीं किया था (विष्णु० ४.१३.९३) ।

मिथिलेश्वर—पु० [सं०] मिथिलाके राजाका नाम (ब्रह्मां० ३.३९.२, ८) ।

मिथिलोपवन—पु० [सं०] यहाँ श्रीकृष्णने भोजको परास्त किया था (ब्रह्मां० ३.७१.७६) ।

मिरिकावन—पु० [सं०] यह नर्मदा तटपर स्थित है (ब्रह्मां० ३.७०.३२) ।

मिश्रक—पु० [सं०] (१) नंदनवन। (२) एक तीर्थका नाम (ब्रह्मां०) ।

मिश्रकेशी—स्त्री० [सं०] वत्सककी पत्नी तथा मेनकाकी सखी एक अप्सराका नाम जो हिरण्यकशिपुकी सभामें रहती थी (भाग० ९.२४.४३; ब्रह्मां० ३.७.६; मत्स्य० १६१.७५; वायु० ६९.५) ।

मीढुष—पु० [सं०] इंद्रके एक पुत्रका नाम (भाग० ६.१८.७) ।

मीढुष्टम—पु० [सं०] शिवका एक नाम (भाग० ४.७.६) ।

मीढ्वान्—पु० [सं०] (१) दक्षका एक पुत्र तथा कूर्च (पूर्व =ब्रह्मां०) का पिता (भाग० ९.२.१९) । (२) शिवका एक नाम (भाग० ३.१४.३४; ब्रह्मां० ३.२४.२७) । (३) भजमान और वाह्यकाके पुत्र धृष्टिकी दो भार्याओंमेंसे एक भार्या, माद्रीके युधाजित् आदि चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (ब्रह्मां० ३.७१.१९) ।

मीन—पु० [सं०] एक मासका नाम जिसे तामिलमें पंगुनि कहते हैं। इस मासमें गयाश्राद्धका बड़ा महत्व कहा गया है (वायु० १०५.४६) ।

मीनकेतन—पु० [सं०] कामदेवका एक नाम—दे० कामदेव ।

मीना—स्त्री० [सं०] (१) वाणासुरकी पुत्री ऊपाकी पुत्रीका नाम जिसका विवाह कश्यप ऋषिसे हुआ था (हि० वि० को०) । (२) ऋपाकी एक पुत्री जिससे मकर, पाठीन, तिमि तथा रोहित आदि जलचर उत्पन्न हुए (ब्रह्मां० ३.७.४१४-५; वायु० ६९.२९१,२) ।

मीनाक्षी—स्त्री० [सं०] कुवेरकी पुत्रीका नाम—दे० कुवेर ।

मीमांसा—स्त्री० [सं०] (१) दर्शन विशेष जो ब्रह्माके मुखसे उत्पन्न हुआ था (मत्स्य० ३.४; ५३.६; विष्णु० ३.६.२७; ५.१.३८) जिसका अध्ययन असुर करते थे (ब्रह्मां० २.३५.८७; ४.१२.१७) । इसे वेदका अंग मानते हैं (वायु० ६१.७८) । (२) षड् आस्तिक दर्शनोंमेंसे एक जो पूर्वमीमांसा और उत्तरमीमांसाके नामसे प्रसिद्ध है। साधारणतः इससे पूर्वमीमांसा ही समझना चाहिये, क्योंकि उत्तरमीमांसाको तो वेदान्त कहते हैं। (३) जैमिनि कृत दर्शन जिसे पूर्व-मीमांसा कहते हैं। इसमें वेदके यज्ञपरक वचनोंकी व्याख्या तथा समन्वय वड़े विचारपूर्वक किया गया है।

मुंगा—स्त्री० [सं०] पुराणानुसार एक देवी (हि० वि० को) ।

मुंज—पु० [सं०] चौथे तल गभस्तिमत् या तलातलका निवासी एक राक्षस (ब्रह्मां० २.२०.३३; वायु० ५०.३२) ।

मुंजकेतु—पु० [सं०] एक राजा, जो युधिष्ठिरकी सभामें वैठते थे, का नाम (महाभा० सभा० ४.२१) ।

मुंजकेश—पु० [सं०] (१) अथर्ववेदाचार्य सैन्धवका एक शिष्य (वायु० ६१.५४) । (२) एक क्षत्रिय राजाका नाम जो निचन्द्र नामके असुरके अंशसे पैदा हुआ था (महाभा० आदि० ६७.२५,२६) ।

मुंजकेश्य—पु० [सं०] अथर्ववेदज्ञ एक ऋषि विशेष (ब्रह्मां० २.३५.६१) ।

मुंजग्राम—पु० [सं०] एक प्राचीन नगरका नाम (महाभा०)।

मुंजपृष्ठ—पु० [सं०] हिमालयके शिखरपर एक रुद्रसेवित स्थानका नाम (महाभा० शान्ति० १२२.४) ।

मुंजवट—पु० [सं०] (१) कुरुक्षेत्र-सीमामें स्थित एक स्थाणु तीर्थका नाम जहाँ एक रात्रि निवास करनेसे मनुष्यको गण-पति-पद प्राप्त होता है (महाभा० वन० ८३.२२) । (२) गंगातीरवर्ती एक उत्तम तीर्थ जहाँ महादेवजीका मन्दिर है। उन्हें प्रणाम कर परिक्रमा करनेसे गणपतिपद प्राप्त होता है एवं यहाँ गंगामें स्नान करनेसे सव पाप छूट जाते हैं (महाभा० वन० ८५.६७-६८) ।

मुंजवान्—पु० [सं०] हिमालयके पृष्ठ भागमें स्थित एक पर्वत (अरुण पर्वत) जहाँ भगवान् शंकर सदा तपस्यामें रत रहते हैं (ब्रह्मां० २.१८.२०) ।

मुंजाद्रि—पु० [सं०] पुराणानुसार एक पर्वतका नाम ।

मुंजिकेश—पु० [सं०] (वायु० =मुंजकेश) सैन्धवका एक शिष्य जिसने अथर्ववेदका पुनः संकलन तथा संगठन कर उसमें नक्षत्र-कल्प जोड़ा था (विष्णु० ३.६.१३) ।

मुंड—पु० [सं०] (१) पुराणानुसार एक दैत्य जो राजा वलि-का सेनापति था। (२) शुंभका सेनापति जो दुर्गासे लड़ा था पर मारा गया। चंड और मुंड दोनोंको मारनेके कारण भगवतीको चामुंडा कहते हैं (दुर्गासप्तश०, मार्कण्डेयपु० तथा ब्रह्मां० ४.२९.७५)।

मुंड—पु० [सं०] (१) एक जातिका नाम (मत्स्य० १६३.

६६)। (२) पूर्वका एक जनपद (वायु० ४५.१२३)। (३) कलियुगके सिर मुंडवाये घूमते-फिरते संन्यासी (वायु० ५८.५९)। (४) एक राजवंश जिसमें १३ राजा हुए (विष्णु० ४.२४.५३)।

मुंडक–पु० [सं०] दनु और कश्यपके विप्रचित्ति प्रमुख १०० पुत्रोंमेंसे एकका नाम (वायु० ६८.८)।

मुंडन–पु० [सं०] मनुष्यके सोलह संस्कारोंमेंसे एक जो यज्ञोपवीतसे पहले होता है—दे० चूड़ाकरणपद्धति विद्याधर कृत।

मुंडपृष्ठ–पु० [सं०] एक स्थान विशेष जहाँ महादेवने तपस्या की थी। यह श्राद्धके लिए उपयुक्त पवित्र स्थान है जिसकी रक्षा चारों ओर सर्पगण करते हैं। इसके पूर्वमें कनकनंदी तीर्थ है जहाँ स्नान करनेवाला अपने तीनों ऋणोंसे मुक्ति पाता है (ब्रह्मां० ३.१३.११०; वायु० ७७.१०२-७)। ऐसा एक तीर्थ गयामें भी है (ब्रह्मां० १०९.४५, ५२; १११.४५, ७४)।

मुंडपृष्ठाद्रि–पु० [सं०] गयाश्मकी पीठपर रखी शिला जो पितरोंको ब्रह्मलोक भेज देती है (वायु० १०८.१२)।

मुंडवेदांग–पु० [सं०] धृतराष्ट्र-कुलमें उत्पन्न एक नागका नाम जो जनमेजयके सर्पसत्रमें जला दिया गया था (महाभा० आदि० ५७.१७)।

मुंडी–पु० [सं०] (वृथामुंडी) (१) एक नास्तिक-वर्ग जिसे श्राद्धमें भोजन कराना वर्जित है (ब्रह्मां० ३.१४.४०; १५.४२.६२)। (२) ५१ विघ्नेश्वरोंमेंसे एकका नाम (ब्रह्मां० ४.४४.७०)। (३) तैंतीसवें कल्पके चार पुत्रोंमेंसे एकका नाम (वायु० २३.५९)।

मुंडीश्वरदण्डी–पु० [सं०] २५वें द्वापरमें भगवान्‌का एक अवतार (वायु० २३.२०९)।

मुकुंद–पु० [सं०] (१) श्रीकृष्णका एक नाम (भाग० १.५.१९; ब्रह्मां० ३.३३.१४; ४.९.४५, ४०.७)। (२) पुराणानुसार नौ निधियोंमेंसे एक निधिका नाम। (३) शाल्मलिद्वीपका एक पर्वत (भाग० ५.२०.१०)।

मुकुट–पु० [सं०] (१) सती देवीकी एक मूर्ति सत्यवादिनीके नामसे यहाँ स्थापित है अतः यह एक पीठस्थान तथा पवित्र तीर्थ है (मत्स्य० १३.५०)। (२) शीतोद झीलके पश्चिमका एक पर्वत (वायु० ३६.२८) जहाँ पन्नगोंका निवास है (वायु० ३९.६२; ४२.५२)। (३) एक क्षत्रिय-वंश, जिसमें विगाहन नामका एक कुलांगार नरेश उत्पन्न हुआ था (महाभा० उद्योग० ७४.१६)।

मुकुटा–स्त्री० [सं०] (१) ऋष्यवान् पर्वतसे निकली १५ नदियोंमेंसे एक नदीका नाम (मत्स्य० ११४.२६)। (२) कुमार कार्तिकेयकी अनुचरी एक मातृका (महाभा० शल्य० ४६.२३)।

मुकुटेश्वर–पु० [सं०] (१) एक शिवलिंगका नाम। (२) एक प्राचीन तीर्थका नाम।

मुकुटेश्वरी–स्त्री० [सं०] मकोटमें स्थापित सती देवीकी एक मूर्तिका नाम (मत्स्य० १३.३३)।

मुक्त–पु० [सं०] (१) भौत्य मनुके समयके सप्तर्षियोंमेंसे एक ऋषि जो पौलह (पुलहवंशज) था (ब्रह्मां० ४.१.११३)। (२) संसारके बंधनोंसे 'मुक्त' होकर व्यक्तिको अपनी वास्तविक स्थितिका ज्ञान होता है और उसका एक ऐसा रूप हो जाता है जो लौकिक संसारसे सर्वथा भिन्न रहता है (वायु० १६.२१-२; १०२.७६-७, १०५)।

मुक्ता–स्त्री० [सं०] शाल्मलिद्वीपकी सात प्रधान नदियोंमेंसे एक प्रधान नदी (विष्णु० २.४.२८)।

मुक्ताफलोदका–स्त्री० [सं०] श्रीनगरमें इन्द्रनीलमयशाल और मुक्ताफलमयशालके मध्य अत्यन्त चमकीली स्वच्छ महास्थलीमें बहनेवाली ताम्रपर्णी आदि महानदियोंमेंसे एक महानदीका नाम (ब्रह्मां० ४.३३.५२)।

मुक्ताभरण–पु० [सं०] भाद्रशुक्ला षष्ठीविद्धा सप्तमीको भवानी और शंकरकी मूर्ति लिखकर पूजन तथा व्रत करे (हिमाद्रि, भविष्योत्तरपु०)।

मुक्ताशाल–स्त्री० [सं०] यह श्रीललिता देवीका निवास-प्रासाद है (ब्रह्मां० ४.३४.५३)।

मुक्ति–स्त्री० [सं०] (१) आत्मैक्य ज्ञान, जो चिरकालीन तपस्या, यम, नियम और त्यागसे प्राप्त होता है (ब्रह्मां० ४.५.२३)। एक उत्तम सिद्धि (ब्रह्मां० ४.३६.५१)। (२) भवसागर पार करनेके लिए नौका-रूपी दो देवताओंमेंसे एकका नाम (वायु० १०८.३७) जिसके चार रूप हैं जिनमें 'गया' सर्वोत्कृष्ट है (वायु० १०५.१६)।

मुक्तिका–स्त्री० [सं०] अन्धकासुररक्तपानार्थ शिवजी द्वारा सृष्ट कई मानसपुत्री मातृका देवियोंमेंसे एक मातृका देवी (मत्स्य० १७९.३०)।

मुक्तिक्षेत्र–पु० [सं०] कावेरी नदीके तटपर स्थित एक प्राचीन तीर्थ जिसे नकुलारण्य भी कहते हैं—दे० नकुलारण्य।

मुक्तिमान्–पु० [सं०] ऋक्षवान् पर्वतके निकटका एक पर्वत (ब्रह्मां० ३.७०.३२)।

मुक्तेश्वर–पु० [सं०] एक शिवलिंग विशेष जो भुवनेश्वरके मंदिरोंमें सबसे सुन्दर है। यह ८वीं सदीकी कीर्त्ति है—दे० भुवनेश्वर।

मुख–पु० [सं०] (१) नन्दीश्वर, महाकाल, रक्ताक्ष, विकटोदर आदि मुख्य शिवगणोंमेंसे एक मुख्य शिवगण (ब्रह्मां० ३.४१.२८)। (२) सावर्ण वैवस्वत मनुके युगके तीन देवगणोंमेंसे एक देवगणका नाम। इन गणोंमेंसे प्रत्येक गणमें २० देवता हैं (वायु० १००.१३-१९)।

मुखमंडिका–स्त्री० [सं०] अन्धकासुररुधिरपानार्थ शिवजी द्वारा सृष्ट कई मानसपुत्री मातृकाओंमेंसे एक मानसपुत्री मातृका (मत्स्य० १७९.१२)।

मुखेबिला–स्त्री० [सं०] अन्धकासुररुधिरपानार्थ शिवजी द्वारा सृष्ट कई मानसपुत्री मातृकाओंमेंसे एक मानसपुत्री मातृका (मत्स्य० १७९.२१)।

मुख्य–पु० [सं०] अष्टम सावर्णि मन्वंतरके सुतप आदि तीन देवगणों (जिनमें प्रत्येकमें २०-२० देव हैं) मेंसे एक देवगणका नाम (विष्णु० ३.२.१५,१६)।

मुख्यतीर्थ–पु० [सं०] गयाकी शिलाका वामपद तथा नैमिपारण्यकी बगलमें जहाँ ब्रह्माने देवोंके साथ यज्ञ किया था (वायु० १०८.४०)।

मुख्या–पु० [सं०] पुरञ्जनकी नगरीके पूर्वका प्रवेशद्वार, लाक्षणिक अर्थ=मुख। आपण तथा बहूदनके राज्यमें रसज्ञ तथा विपण-सखाओंके साथ पुरञ्जन इसी द्वारसे गये थे

(भाग० ४.२५.४९; २९.११)।

मुचुकुंद–पु० [सं०] (१) सातवें तल (पाताल) का निवासी एक दैत्य (ब्रह्मां० २.२०.४४; वायु० ५०.४२)। (२) इक्ष्वाकुवंशोत्पन्न महाराज मान्धाताके पुत्रका नाम जो एक योगी था तथा विष्णुकी योगशक्तिसे परिचित था (भाग० ९.६.३८; २.७.४४; मत्स्य० १२.३५; वायु० ८८.७२)। इन्होंने देवताओंका पक्ष लेकर असुरोंका विनाश किया था जिससे प्रसन्न होकर देवताओंने यह वर दिया था कि इन्हें निद्रासे जो जगावेगा वह इनके देखते ही भस्म हो जायगा। इनकी पुत्रीका नाम शशिभागा था। मथुरापर विजय प्राप्त कर कालयवन श्रीकृष्णको ढूँढ़ता-ढूँढ़ता गिरनार पहुँचा जहाँ एक खोहमें यह सो रहे थे। उसने इन्हें श्रीकृष्ण समझकर लात मारकर जगाया और इनके देखते ही वह भस्म हो गया। तदुपरांत श्रीकृष्ण इनके सामने गये और इन्होंने श्रीकृष्ण भगवान्‌में लीन होनेकी इच्छा प्रकट की। श्रीकृष्णने इन्हें एक बार और धार्मिक ब्राह्मणके रूपमें जन्म लेनेको कहा तब यह ब्रह्ममें लीन हो सकेंगे। इसके पश्चात् इन्होंने कलियुगका आगमन देखा और गंधमादनमें प्रवेश कर गये। हरिके प्रीत्यर्थ इन्होंने बदरिकाश्रममें तप किया था (भाग० १०.५१ पूरा; ५२.१-४; ब्रह्मां० ३.३६.२६; विष्णु० ५.२३.१८-४७; २४.१-५)।

मुद–पु० [सं०] धर्म तथा तुष्टिसे उत्पन्न (भाग० ४.१.५१)।

मुदा–स्त्री० [सं०] अप्सराओंके १४ गणोंमेंसे एक गणका नाम जो वायुसे उत्पन्न हुआ था (ब्रह्मां० ३.७.१९)।

मुदावसु–पु० [सं०] पुराणानुसार दक्ष प्रजापतिके एक पुत्र का नाम।

मुदिता–स्त्री० [सं०] (१) प्लक्षद्वीपकी अनुतप्ता आदि सात प्रधान नदियोंमेंसे एक नदीका नाम (वायु० ४९.१७)। (२) सह नामके अग्निकी भार्याका नाम (महाभा० वन० २२२.१)।

मुद्गल–पु० [सं०] (१) भर्म्याश्वके पाँच पुत्रोंमेंसे एक पुत्र जिससे ब्राह्मणोंका मौद्गल्यवंश उत्पन्न हुआ तथा दिवोदास और अहल्या यमजके पिता। यह शाकल्यका शिष्य (भाग० ९.२१.३१-३४; १२.६.५७; ब्रह्मां० २.३२.१०९; ३५.२; वायु० ६०.६०, ६४; विष्णु० ३.४.२२) तथा एक मंत्रकृत् ऋषि था (वायु० ६५.१०७)। (२) भद्राश्वके पाँच पुत्रों, जिन्हें भद्राश्वने पाञ्चालका राज्य बाँट दिया था, मेंसे एक पुत्र (मत्स्य० ५०.३)। (३) तैंतीस आंगिरसश्रेष्ठोंमेंसे एक आंगिरसश्रेष्ठ तथा मंत्रकृत् (मत्स्य० १४५.१०३-५)। एक त्र्यार्षेय प्रवरप्रवर्तक ऋषि (मत्स्य० १९६.४१)। (४) इंद्रसेनाके पति एक गोत्रकार मुनिका नाम (वायु० ९९.२००; महाभा० वन० २६१.४४)। (५) भेदका एक पुत्र जिनके बाद क्षात्र-ब्राह्मण, जिन्हें मौद्गल्य कहते हैं, हुए थे (वायु० ९९.१९६, १९८)। (५) हर्यश्वका एक पुत्र जिसके बाद मौद्गल्य (क्षात्र-ब्राह्मण) हुए थे (विष्णु० ४.१९.५९, ६१)। (६) एक आत्रेयवंश (ब्रह्मां० ३.८.८५; वायु० ७०.७८)। (७) अंगिरसोंकी एक शाखा (वायु० ६५.१०७)।

मुद्गला–स्त्री० [सं०] एक ब्रह्मवादिनी (ब्रह्मां० २.३३.१८)।

मुद्गरक–पु० [सं०] एक पूर्वी राज्य (ब्रह्मां० २.१६.५३)।

मुद्रा–स्त्री० [सं०] आवाहनी-त्रिखंडा, संक्षोभिणी, विद्राविणी, आकर्षिणी, उन्मादिनी, महांकुशा, खेचरी, बीजमुद्रा तथा योनिमुद्रा देवीकी प्रीति उत्पन्न करनेवाली ये दस मुद्राएँ कही गयी हैं (ब्रह्मां ४.३६.६२; ४२.१-१९)।

मुद्राकर्पणिका–स्त्री० [सं०] बिंदुचक्रकी अधिष्ठात्री देवी (ब्रह्मां० ४.३६.७८-१)।

मुद्रादेवी–स्त्री० [सं०] जिसे प्रकटशक्ति भी कहते हैं। इनकी संख्या १० है जिनका स्थान चक्रराजरथके नवें पर्वकी अष्टशक्तियोंके ऊपर है (ब्रह्मां० ४.१०.१०)।

मुद्रिणी–स्त्री० [सं०] श्री ललिता देवीके षोडश नामोंमेंसे एक नाम (ब्रह्मां० ४.१७.३४; ३१.९१)।

मुनय–पु० [सं०] अजितदेवगण, जिसमें १२ देव हैं, मेंके एक अजितदेवका नाम (वायु० ६७.३४)।

मुनि–पु० [सं०] (१) 'आप' नामक वसुका पुत्र। (२) प्रसूत देवगण, जिसमें आठ देव हैं, मेंका एक प्रसूतदेव (ब्रह्मां० २.३६.७१)। (३) वरुणकी पत्नी शुनादेवी (ब्रह्मा०=स्तुता) उसके दो पुत्र हुए कलि और वैद्य। वैद्यके दो पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (ब्रह्मां० ३.५२.७; वायु० ८४.७)। (४) भानुमान्‌के आत्मज (कृष्णात्मज नहीं) प्रद्युम्नका पुत्र तथा ऊर्जवहका पिता (ब्रह्मां० ३.६४.२०; वायु० ८९.१९)। (५) क्रौंचद्वीपका एक देश=मुनिदेश (दे० ३)। (६) द्युतिमान्‌का सबसे बड़ा पुत्र जिसके नामपर क्रौंचद्वीपके 'मुनिदेश'का नामकरण हुआ था (ब्रह्मां० २.१४.२३, २६; वायु० ३३.२२-२३; विष्णु० २.४.४८)। (७) बीस अमिताभ देवोंमेंसे एक अमिताभ देवका नाम (ब्रह्मां० ४.१.१७; वायु० १००.१७)। (८) पुरुवंशी महाराज कुरु और वाहिनीके पाँच पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (महाभा० आदि० ९४.५०)। (९) रैवत मन्वंतरके सप्तर्षियोंमेंसे एक ऋषिका नाम (मत्स्य० ९.१९)। (१०) धर्म और विश्वाके पुत्र १० विश्वेदेवोंमेंसे एक विश्वेदेव (मत्स्य० २०३.१३; ब्रह्मां० ३.३.३०)। (११) कश्यप ऋषिकी एक पत्नी जो मौनेय देवगन्धर्वों तथा अप्सराओंकी माता थी (विष्णु० १.१५.१२५; २१.२५)। यह दक्ष प्रजापतिकी एक पुत्री थी जो कश्यप ऋषिको ब्याही थी और उनकी १३ पत्नियोंमेंसे एक थी। यह अप्सराओं तथा मौनेय देवगन्धर्वोंकी माता थी (भाग० ६.६.२६-७; ब्रह्मां० ३.३.५६; मत्स्य० ६.२, ४५; १४६.१९; १७१.२९, ६०; वायु० ६६.५५)।

मुनिक–पु० [सं०] रिपुंजयका मंत्री जिसने अपने राजा वीतिहोत्रको मारकर अपने पुत्र प्रद्योतको सिंहासनारूढ़ किया था (वायु० ९९.३१०; विष्णु० ४.२४.१-२)।

मुनिगण–पु० [सं०] मुनिगण वे हैं जो अध्यात्ममें ही निरत रहते हैं, आत्मोपलब्धि ही में आनन्दका अनुभव करते हैं।

मुनिदेश–पु० [सं०] (मौनिदेश) क्रौंचद्वीपके अधिपति द्युतिमान्‌के कुशल, मनोनुग आदि सात पुत्रोंमेंसे 'मुनि' नामक पुत्रको दिया गया क्रौंचद्वीपका एक देश जिसके पहले अन्धकारक देश है और बादमें दुन्दुभिस्वन देश (ब्रह्मां० २.१४.२६; १९.७३; मत्स्य० १२२.८६; वायु० ४९.६७)। कई जन्मोंके पश्चात् सब पदार्थोंसे वैराग्य होता जाता है यहाँतक कि ब्रह्मलोककी भी स्पृहा नहीं रहती है। भावाद्वैत, क्रियाद्वैत तथा द्रव्याद्वैत तीनों अद्वैतोंका आश्रयण कर ये परब्रह्मकी प्राप्ति करते हैं (भाग० ३.२७.२७; ७.

१५.६२-५; १०.२.२५)।

मुनींद्र—पु० [सं०] (१) पुराणानुसार एक दानवका नाम। (२) बुद्धका भी नाम—"मुनीन्द्रः श्रीघनः शास्ता मुनिः शाक्यमुनिस्तु यः"—दे० अमरकोष।

मुर—पु० [सं०] यह शंखासुरका पुत्र पाँच शिरवाला एक दैत्य था जिसे श्रीकृष्णने (विष्णुने) मारा था और इसका वध करनेके कारण ही उनका (कृष्णका) नाम 'मुरारि' पड़ा था। इसके एक पुत्रका नाम वत्सासुर था और कुल ७००० (भाग०=७) पुत्र थे जो अपने सेनापतिकी अध्यक्षतामें युद्धके लिए उठ खड़े हुए पर गरुड़ने सवको प्राग्ज्योतिष नगरके वाहर मार डाला था (भाग० १०.५९.६-१९; ३७.१६; ३.३.११; ४.२६.२४; विष्णु० ५.२९.१७,१८)।

मुररिपु, मुरारि—पु० [सं०] मुर दैत्यके शत्रु=विष्णुका (कृष्णका) नाम, दे० मुर तथा (भाग० ४.२६.२४; १०.१४.५८; ब्रह्मां० ३.३६.३४; मत्स्य० ५४.१९ आदि)।

मुरासुर—पु० [सं०] विष्णुके छद्मवेषमें रहनेवाला एक असुर (ब्रह्मां० ४.२९.१२५)।

मुर्मुर—पु० [सं०] (१) कामदेव। (२) सूर्यके रथके घोड़े—दे० सूर्य।

मुर्मुरा—स्त्री० [सं०] एक नदीका नाम, जो अग्निकी उत्पत्तिका स्थान कही गयी है (महाभा० वन० २२२.२५)।

मुषिक—पु० [सं०] कनकोंके अधीनका एक देश (विष्णु० ४.२४.६७)।

मुष्टिक—पु० [सं०] मथुरापति कंसका एक असुर पहलवान जिसे श्रीकृष्ण तथा वलरामका वध करने हेतु नियुक्त किया गया था पर मल्लयुद्धमें यह वलरामसे हार गया और मारा गया (भाग० १०.२.१; ३६.२१-२४; ३७.१५; ४२.३७; ४३.४०; ४४.१,१९, २४-२५; ब्रह्मां० ४.२९.१२३; विष्णु० ५.१५.७, १६; २०.१८, ६५.७८)।

मुसल—पु० [सं०] (१) वलरामका एक अस्त्र विशेष जिसका नाम सौनन्द था। गर्भावस्थामें गर्भिणीको इसपर वैठना मना है, इसीलिए गर्भावस्थामें दितिसे इसपर न वैठनेको कहा गया था (मत्स्य० ७.३८)। (२) विश्वामित्रके कई पुत्रोंमेंसे एक पुत्र। (३) शेषावतार वलरामका एक अस्त्र विशेष (विष्णु० २.५.१८; ५.३६.१३,१८; ३७.९)। जिससे ऋषियोंके शापके फलस्वरूप यादवोंका नाश होना था। यह सांवके गर्भसे निकला था जिसे चूर्ण कर समुद्रमें फेंक दिया गया था। इसका एक टुकड़ा एक मछली निगल गयी थी जिसे एक व्याधने प्राप्त किया जिससे वने तीरसे उसने भ्रमवश श्रीकृष्णपर वार कर दिया था। इसीसे आहत हो श्रीकृष्णकी मृत्यु हुई थी। मुसलके अन्य खंड कुशारूपी घास हो गये जो यादवोंके हाथमें लौह-शलाका हो गये थे जिससे उनलोगोंने आपसमें लड़ अपना नाश स्वयं कर डाला (विष्णु० ५.३७.११.१६, ४४.५; ३३.३०)।

मुसलायुध—पु० [सं०] मुसल था आयुध जिसका=वलराम (विष्णु० ५.३५.३१)।

मुहूर्त्त—पु० [सं०] समयकी गणनाका एक मान। जब दिन रात वरावर रहते हैं तव ३० कलाका दिन तथा ३० कलाकी रात होती है। २ कलाओंका एक मुहूर्त्त होता है तथा विषुवत्में १५ मुहूर्त्तोंका एक दिन होता है। दिनका विभाजन ३ मुहूर्त्तोंकी इकाईमें करते हैं (भाग० ३.११.८; ब्रह्मां० २.१३.१६; २१. ९५, ११६-२२; २४.५६; २९.६; ४.१.७६, २१३, २१६; ३२.१४; मत्स्य० १२४.८६-९१; १४२.४; २०३.१०; वायु० ३०.१३; १०५.२१५, २१८; विष्णु० १.३.९; २.८.५९-६१, ६.३.९)। दिनके मुहूर्त्तोंके नाम—रौद्र, सार्प, मैत्र, पित्र्य, वासव, आप्य, वैश्वदेव, ब्राह्म, प्राजापत्य, इन्द्र, इन्द्राग्नि, निर्ऋति, वारुण, अर्यमा तथा भग। रातके मुहूर्त्त—अजैकपात्, अहिर्बुध्न्य, पूषा, अश्वी, यम, देवता, आग्नेय, प्राजापत्य, सौम्य, आदित्य, वार्हस्पत्य, वैष्णव, सावित्र, त्वाष्ट्र तथा वायव्य। दिनमें सूर्यघड़ी तथा रात्रिमें चंद्रमासे समयका भान होता है (ब्रह्मां० ३.३.३२, ३९-४५; वायु० ६६.३३)। श्रीकृष्णका जन्म विजय मुहूर्त्तमें हुआ था (ब्रह्मां० ३.७१.२०६; ७२.३०)। आठवाँ मुहूर्त्त जिसे कुतप कहते हैं,। हर प्रकारके कार्यारम्भके लिए श्रेष्ठ माना गया है, क्योंकि इस समय सूर्य मंद पड़ जाता है (मत्स्य० २२.८४-५)।

मुहूर्त्तक—पु० [सं०] (१) ३० कलाओंका समय (ब्रह्मां० २.७.१९; वायु० ५७.६)। (२) मुहूर्त्ता और धर्मके पुत्रोंका नाम (मत्स्य० ५.१८; विष्णु० १.१५.१०६)।

मुहूर्त्ता—स्त्री० [सं०] दक्षकी एक पुत्री जो धर्मकी १३ पत्नियोंमेंसे एक थीं। इनसे मुहूर्त्तकगण उत्पन्न हुए (भाग० ६.६.४, ९; ब्रह्मां० ३.३.३, ३२; मत्स्य० ५.१६.१८; २०३.१०; वायु० ६६, ३३; विष्णु० १.१५.१०५-६)।

मूक—पु० [सं०] (१) उपसुंदका पुत्र एक दानव जो शूकरका रूप धारण कर अर्जुनको मारनेकी घातमें लगा था जिसे किरात वेशमें शिव तथा अर्जुनने मारा था (महाभा० वन० ३८.७; ३९.१६)। (२) ह्रादका एक पुत्र जिसे सव्यसाची अर्जुनने कैरातमें मारा था (ब्रह्मां० ३.५.३४, ३६; वायु० ६७.७२, ७३)। (३) तक्षककुलमें उत्पन्न एक नाग जो जनमेजयके सर्पसत्रमें जलाया गया था (महाभा० आदि० ५७.९)। (४) मध्यदेशकी एक जाति विशेष (मत्स्य० ११४.३६)।

मूकमेघ—पु० [सं०] आग्नेय वर्गके वादल जो वायु तथा आवहके प्रभावसे वृष्टि करते हैं (ब्रह्मां० २.२२.२४; वायु० ५१.२८, ३२)।

मूत्राकीर्ण—पु० [सं०] एक नरकका नाम जो मूत्रसे भरा है जहाँ विश्वासघाती तथा प्राक्रोशक लोग जाते हैं (ब्रह्मां० ४.२.१४८, १७०-७१; वायु० १०१.१६८)।

मूर्तय—पु० [सं०] जह्नुवंशी अजकसुत कुशके चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (भाग० ९.१५.४)।

मूर्त्ति—पु० [सं०] (१) दसवें मनु ब्रह्मसावर्णिके समयके सप्तर्षियोंमेंसे एक ऋषि (भाग० ८.१३.२२)। (२) वशिष्ठके सात पुत्रोंमेंसे एक पुत्र जो स्वारोचिष मन्वंतरके एक प्रजापति थे (मत्स्य० ९.९)।

मूर्त्ति—स्त्री० [सं०] दक्षकी एक पुत्री तथा धर्मकी १३ पत्नियोंमेंसे एक पत्नीका नाम। यह नर और नारायणकी माता थी (भाग० २.७.६; ४.१.५०, ५२)।

मूर्त्तिप—पु० [सं०] मंदिरका पुजारी या महंथ जो आवश्यकतानुसार ३२ या १६ या ८ वर्षकी अवस्थाका हो सकता है (मत्स्य० २६५.१-६, ४२; २६६.५४)।

मूर्त्तिव्यूह–पु० [सं०] वासुदेव, संकर्षण, प्रद्युम्न तथा अनिरुद्ध इन चारोंका नाम (भाग० १२.११.२१)।

मूर्धन्या–स्त्री० [सं०] मार्कण्डेयकी पत्नी तथा वेदशिराकी माताका नाम (वायु० २८.६)।

मूर्द्धन्वान्–पु० [सं०] (१) एक गंधर्वका नाम। (२) वामदेव ऋषिका नाम।

मूर्द्धा, मूर्धा–पु० [सं०] भृगुके १२ पुत्र भृगुदेवोंमेंसे एक पुत्रका नाम (मत्स्य० १९५.१३)।

मूल–पु० [सं०] एक नक्षत्र जो पितरोंके श्राद्धादि पूजनके लिए प्रशस्त माना गया है। इस नक्षत्रमें श्राद्ध करनेसे उत्तम आरोग्य प्राप्त होता है (भाग० ५.२३.६; ब्रह्मां० २.२१.७६; ३.१८.१०; वायु० ५०.१३०; ६६.५१; ८२.१०)।

मूलक–पु० [सं०] अश्मकका एक पुत्र। जब परशुराम क्षत्रियोंका संसारसे विनाश करनेके लिए तुले थे, तब कुछ स्त्रियोंने नग्न हो इन्हें चारों ओरसे घेर कर इनकी रक्षा की थी, अतः इनका नाम 'नारी कवच' पड़ गया। परशुराम द्वारा क्षत्रिय संहारके पश्चात् इनसे ही नया क्षत्रिय वंशका प्रारंभ हुआ। यह दशरथके पिता थे। इनका पुत्र ऐडविड था (भाग० ९.९.४०-१; ब्रह्मां० ३.६३.१७८; विष्णु० ४.४.७३-५; वायु० ८८.१७८-९)।

मूलकृच्छ्र–पु० [सं०] एक प्रायश्चित्त जिसमें पलाश, गूलर, पद्म, वेल और कुशके मूलका जल एक मास पीया जाता है —दे० मार्कण्डेय पु०।

मूलकोदर–पु० [सं०] कश्यप और दनुके विप्रचित्तिप्रधान कई प्रधान दानवोंमेंसे एक दानवका नाम (ब्रह्मां० ३.६.९)।

मूलचारी–पु० [सं०] लोकाक्षीके चार शिष्योंमेंसे एक शिष्यका नाम (वायु० ६१.३७)।

मूलतापी–पु० [सं०] पितरोंके श्राद्धादिके लिए उपयुक्त एक पवित्र तीर्थ (मत्स्य० २२.३३)।

मूलप–पु० [सं०] एक आर्षेय प्रवरप्रवर्तक (आंगिरस) (मत्स्य० १९६.९)।

मूलप्रकृति–पु० [सं०] सृष्टि तथा माया ही जगत्प्रसू लक्ष्मी हैं तथा 'पुरुष' वासुदेव हैं (ब्रह्मां० ४.८.२८)।

मूलसंहिता–स्त्री० [सं०]. काश्यप, सावर्णि, शांशपायन तथा याज्ञवल्क्य, ये ही चार प्रधान संहिताओंके प्रवर्त्तक हैं (ब्रह्मां० २.३५.६६, ६८)।

मूलहर–पु० [सं०] एक त्र्यार्षेय प्रवरप्रवर्तक (आंगिरस) (मत्स्य० १९६.१६)।

मूलिक–पु० [सं०] (१) पराशरकी एक शाखा (वायु० ७०.८७)। (२) मत्स्य पुराणानुसार एक प्रकारकी वनौषधियाँ (मत्स्य० २१८.२३-३५)।

मूली–स्त्री० [सं०] महेन्द्र पर्वतसे निकली त्रिभागा, ऋषिकुल्या आदि कई नदियोंमेंसे एक नदी (मत्स्य० ११४.३१)।

मूषक–पु० [सं०] भंडका एक सेनापति (ब्रह्मां० ४.२१.८७)।

मूषकवाहन–पु० [सं०] ५१ विघ्नेश्वरोंमेंसे एक विघ्नेश्वरका नाम (ब्रह्मां० ४.४४.६९)।

मूषिक–पु० [सं०] (१) दक्षिणका एक देश (ब्रह्मां० २.१५.५६)। (२) दक्षिणापथकी एक जाति (वायु० ४५.१२५)।

मृकंड–पु० [सं०] (विष्णु० = मृकण्डु) धाता (विधाता = विष्णु०) और नियतिके एक पुत्र तथा मनस्विनीके पतिका नाम। ये मार्कंडेय ऋषिके पिता थे (भाग० ४.१.४४-५; १२.८.२; ब्रह्मां० २.११.६; वायु० २८.५; ४१.४४; विष्णु० १.१०.४)। परशुरामकी तपस्याके समय यह अनेक ऋषियोंके साथ उनसे मिलने गये थे (ब्रह्मां० ३.२३.४)।

मृग–पु० [सं०] (१) चंद्रमाके रथके १० घोड़ोंमेंसे एकका नाम (ब्रह्मां० २.२३.५७; वायु० ५२.५३)। (२) एक शक्तिके वाहनका नाम (ब्रह्मां० ४.२९.४१)। (३) अभ्रमु हाथीका एक पुत्र जो कुमार कार्त्तिकेयका वाहन है। इसके आठ पुत्र हुए थे (ब्रह्मां० ३.७.२२९-३१; वायु० ६९.२१४, २१६)। (४) गृह तथा राजमहलोंके निर्माणके पूर्व शिखी, पर्जन्य आदि अन्य ३१ के साथ इसकी गृहके वाहर पूजा होती है। इसके नैवेद्य (आहार) के लिए जौका सत्तू देनेका विधान है (मत्स्य० २५३.२५; २६८.१४)। (५) उशीनरकी पाँच रानियोंमेंसे एक मृगाका पुत्र। इसकी राजधानीका नाम यौधेय था (वायु० ९९.२०-१)।

मृगकांता–स्त्री० [सं०] उत्तर मानससरोवरसे निकली दो नदियोंमेंसे एक नदीका नाम (मत्स्य० १२१.६९; वायु० ४७.६८)।

मृगकामा–स्त्री० [सं०] रुद्रकान्त सरोवरसे निकली दो नदियोंमेंसे एक नदी (ब्रह्मां० २.१८.७१)।

मृगकेतन–पु० [सं०] अनिरुद्धका एक पुत्र (मत्स्य० ४७.२३)।

मृगकेतु–पु० [सं०] कश्यपवंशज एक प्रवरप्रवर्तक ऋषि (मत्स्य० १९९.१७)।

मृगधूम–पु० [सं०] कुरुक्षेत्रकी सीमाके अन्तर्गत प्राचीन तीर्थका नाम। यहाँ महादेवजीकी पूजा करनेसे अश्वमेध यज्ञका फल प्राप्त होता है (महाभा० वन० ८३.१०१)।

मृगमंदा–स्त्री० [सं०] क्रोधवशा (क्रोधा = वायु०) के गर्भसे उत्पन्न कश्यप ऋषिकी वारह पुत्रियोंमेंसे एक जो पुलहकी पत्नी थी। यह सिंह, रीछ, चवर गाय, भैंस, ऊँट, शूअर, गैंडे आदिकी माता कही जाती है (ब्रह्मां० ३.७.१७२; वायु० ६९.२०५, २०७)।

मृगय–पु० [सं०] कश्यपवंशज गोत्रकार ऋषि (मत्स्य० १९९.३)।

मृगराज–पु० [सं०] एक राजमहल जिसमें चंद्रशाला तथा ६ भूमिका रहती हैं। इसका 'तोरण' १२ हाथोंका होता है (मत्स्य० २६८.४०,५०)।

मृगराट्–पु० [सं०] जाम्बवान्के व्याघ्रीके गर्भसे उत्पन्न १७ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (ब्रह्मां० ३.७.३०२)।

मृगव–पु० [सं०] अप्सराओंके आहत्य, शोभवत्य, वेगवत्य आदि १४ गणोंमेंसे एक गणका नाम जो भूमिसे उत्पन्न हुआ था (ब्रह्मां० ३.७.१९)।

मृगवीथी–स्त्री० [सं०] दक्षिण मार्ग जिसमें ज्येष्ठा, विशाखा और मैत्र नक्षत्र हैं (मत्स्य० १२४.५९)।

मृगव्याध–पु० [सं०] एकादश रुद्रोंमेंसे एक रुद्रका (शिव-

का) नाम (मत्स्य० १७१.३९; ब्रह्मां० ३.७२.१७३; विष्णु० १.१५.१२३)।

मृगशीर्ष—पु० [सं०] अश्विनी आदि २७ नक्षत्रोंमेंसे एक नक्षत्रका नाम (भाग० ५.२३.६)।

मृगा—स्त्री० [सं०] राजा उशीनरकी पाँच पत्नियोंमेंसे एकका नाम (वायु० ९९.१९)।

मृगावती—स्त्री० [सं०] यमुना तटपर स्थापित सती देवीकी एक मूर्त्तिका नाम (मत्स्य० १३.४०)।

मृगी—स्त्री० [सं०] कश्यप और क्रोधवशाकी १२ पुत्रियोंमेंसे एक पुत्री तथा पुलहकी पत्नी जो मृग, खरगोश आदिकी माता थी (ब्रह्मां० ३.७.१७२-७३; वायु० ६९.२०५, २०६)।

मृगेन्द्रस्वातिकर्ण—पु० [सं०] आंध्रवंशोत्पन्न स्कंदस्वाति राजाका पुत्र (मत्स्य० २७३.८)।

मृगोत्तमांग—पु० [सं०] मृगशीर्ष नक्षत्रका नाम (मत्स्य० ५४.१८; ५५.१३)।

मृग्या—स्त्री० [सं०] उत्तर मानससरोवरसे निकली दो नदियोंमेंसे एक नदीका नाम (मत्स्य० १९१.६९)।

मृड—पु० [सं०] भगवान् शिवका एक नाम (भाग० ४.२.८)।

मृतसंजीवनी—स्त्री० [सं०] मरे हुएको पुनः जीवन प्रदान करनेवाली एक वनौषधि। शाल्मलिद्वीपके द्रोणाचल (पर्वत) पर यह प्राप्त होती है (ब्रह्मां० २.१९.३९)।

मृतसंजीवनी-विद्या—स्त्री० [सं०] मृतको पुनः जीवन प्रदान करनेवाली विद्या जिसे महेश्वरने सिखलाया था। शुक्रको यह विद्या आती थी जिसे भृगुने सीखा। देवासुरसंग्राममें असुरोंके हितके लिए शुक्र (असुर गुरु) ने इसका उपयोग किया था (ब्रह्मां० ३.३०.५३; मत्स्य० २४९.४-६)। जमदग्नि इसीके प्रभावसे पुनः जीवित हुए थे (ब्रह्मां० ३.३०.५८)।

मृतसूतक—पु० [सं०] किसीकी मृत्युसे परिवारवालोंको लगनेवाला अशौच, 'दशाहे ब्राह्मणः शुद्धो द्वादशाहेन क्षत्रियः। वैश्यः पञ्चदशाहेन शूद्रो मासेन शुध्यति' (ब्रह्मां० २२०.६३)। ब्राह्मणोंको दस दिन, क्षत्रियोंको १२ दिन, वैश्योंको १५ दिन तथा शूद्रोंको एक महीनेका अशौच होता है (वायु० ७९.२२-३)।

मृतहार—पु० [सं०] शववहन करने (मुर्दा ढोने) वाले (ब्रह्मां० ३.१४.८८)।

मृता—स्त्री० [सं०] शाकद्वीपकी सात प्रधान नदियोंमेंसे छठी धेनुका नदीका दूसरा नाम (वायु० ४९.९४)।

मृति—पु० [सं०] रोहितदेवगण, जो संख्यामें दस हैं, मेंका एक रोहित देव (ब्रह्मां० ४.१.८५)।

मृत्तिकावरपुर—पु० [सं०] भोजोंकी नगरीका नाम (विष्णु० ४.१३.७)।

मृत्यु—स्त्री० [सं०] (१) कलिकी एक पुत्री तथा अधर्मका अंश जिसकी उत्पत्ति तथा विशेषताओंके लिए द्रष्टव्य (भाग० १.१६.८; २.१०.२८; ४.८.४; १३.३९; ७.१२.२७)। (२) छठे द्वापरके व्यासका नाम (ब्रह्मां० २.३५.११८; वायु० २३.१३३; विष्णु० ३.३.१२)। (३) प्रजापति अंगको ब्याही गयी सुनीथा, जो वेनकी माता थी, के पिताका नाम (ब्रह्मां० २.३६.१२७)। इन्होंने सूर्यसे पुराण सुनकर इन्द्रको सुनाया था (ब्रह्मां० ४.४.६०; विष्णु० १.१३.११; वायु० १०३.६०)। (४) रुद्रकी एक कलाका नाम (ब्रह्मां० ४.३५.९६)। (५) सुरभि तथा कश्यपसे उत्पन्न ग्यारह रुद्रोंमेंसे एक रुद्रका नाम (वायु० ६६.७०; ब्रह्मां० ३.३.७१)। (६) भैरवगणकी अप्सराओं, जो मृत्युसे उत्पन्न हुईं, के मूल पुरुषका नाम (वायु० ६९.५७; ब्रह्मां० ३.७.२४)। (७) माया और भयका पुत्र तथा व्याधि, जरा, शोक, क्रोध तथा असूयाका पिता। ये सब दुःख देनेवाले अधर्मी तथा परिवाररहित हैं और सब तामस सर्गके हैं (ब्रह्मां० २.९.६५-६६; वायु० १०.४०-२)। (८) मृत्युका अधिपति कालका नाम जो ब्रह्माके नेत्रोंसे उत्पन्न हुए थे (मत्स्य० ३.११; २१३.४)। इनकी एक कुरूप पुत्री सुनीथा अंग प्रजापतिको ब्याही थी (मत्स्य० १०.३)। यह यमराजके सहायक थे (मत्स्य० २१३.१८)। (९) अंधकासुर-रक्तपानार्थ शिवजी द्वारा सृष्ट कई मानसपुत्री मातृकाओंमेंसे एक मानसपुत्री मातृका (मत्स्य० १७९.१५)।

मृत्युंजय—पु० [सं०] शिवका एक नाम (ब्रह्मां० ४.३६.१९)।

मृत्युसुता—स्त्री० [सं०] अत्रिवंशमें उत्पन्न अंग नामक प्रजापतिको ब्याही गयी सुनीथा, जिसका लड़का वेन बड़ा अधार्मिक हुआ (ब्रह्मां० २.३६.१०७)।

मृदामृद—पु० [सं०] उपमद्गुका एक भाई, श्वफल्कके गान्दिनीके गर्भसे अक्रूर, उपमद्गु, मृदामृद आदि १२ पुत्र तथा एक कन्या हुई (विष्णु० ४.१४.९)।

मृदु—पु० [सं०] ब्रह्माके यज्ञके एक ऋत्विक्का नाम (वायु० १०६.३४)।

मृदुर—पु० [सं०] श्वफल्क तथा गान्दिनीके अक्रूरप्रमुख १२ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (भाग० ९.२४.१६; वायु० ९६.११०)।

मृदुविद—पु० [सं०] श्वफल्कका एक पुत्र (भाग० ९.२४.१६)।

मृलिक—पु० [सं०] १२ शुक्र या शक्तदेवगणमेंका शक्रदेव या शक्तदेव (वायु० ३१.९)।

मृषा—स्त्री० [सं०] अधर्मकी पत्नी तथा दंभ और मायाकी माताका नाम, जिन दोनोंको निर्ऋतिने दत्तक ले लिया था (भाग० ४.८.२)।

मेकल—पु० [सं०] (१) एक पहाड़ जहाँसे नर्मदा नदी निकलती है, अतः नर्मदा=मेकलकन्या या मेकला। (२) इसी पहाड़के निकट स्थित एक नगर, जहाँके निवासी इसी नामसे प्रसिद्ध थे। विन्ध्याचलकी एक जंगली जाति (ब्रह्मां० २.१६.६३; मत्स्य० ११४.५२)।

मेकला—स्त्री० [सं०] (१) पुष्पमित्रोंकी राजधानी (ब्रह्मां० ३.७४.१८८)। यहाँपर सात राजाओंने राज्य किया था (वायु० ९९.३७५)। (२) नर्मदा नदीका नाम—दे० मेकल।

मेखला—स्त्री० [सं०] (१) त्रैलोक्यमोहन चक्रमें स्थित ललितादेवीकी सेवामें तत्पर कुसुमा आदि आठ शक्तियोंमेंसे एक शक्ति (ब्रह्मां० ४.३६.७६)। (२) मेखलामें सार्ङ्गधरका मंदिर है (मत्स्य० २२.४१)।

मेघ—पु० [सं०] (१) सुतलका एक राक्षस (ब्रह्मां० २.२०.२२; वायु० ५०.२२)। (२) वादल तथा वर्षाका रहस्य। सूर्यकी किरणें जल खींचती हैं, जो पुनः वर्षाके रूपमें बरसती हैं, वायु इनका सहायक रहता है (मत्स्य० २.३३; १२५.१६-३५)। (३) तारककी सेनाका एक नायक जिसका रथ हाथी खींचते थे (मत्स्य० १४८.४२, ५१)। (४) एक पर्वतका नाम (मत्स्य० १६३.८२)।

मेघ(गण)—पु० [सं०] (१) देवताओंका एक वर्ग जिनमें पितृ-पूजा (श्राद्धों) में की जाती है (ब्रह्मां० ३.१०.११०)। (२) नौ नैषध राजा जिन्होंने कोशल (कोमला=वायु०) से राज्य किया था (ब्रह्मां० ३.७४.१७९; वायु० ९९.३७६)।

मेघकर—पु० [सं०] एक तीर्थ जहाँ विष्णु मेखलामें निवास करते थे। यह स्थान पितरोंके श्राद्धादिके लिए अति उपयुक्त तथा अति पवित्र है (मत्स्य० २२.४०)।

मेघजाति—पु० [सं०] नहुपके सात पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (मत्स्य० २४.५०)।

मेघदुंदुभि—पु० [सं०] एक असुर-बलि और इन्द्रके देवासुरसंग्राममें इसने भाग लिया था (भाग० ८.१०.२१)।

मेघनाद—पु० [सं०] (१) चंद्रहासका छोटा भाई जिसे लक्ष्मणने मारा था (ब्रह्मां० ४.२९.११३, ११६)। (२) लंकेश्वर रावणका पुत्र जो मयकन्या तथा रावणकी पटरानी मंदोदरीके गर्भसे उत्पन्न हुआ था। इसने जन्म लेते ही संवर्तक मेघके समान गर्जना की, अतः 'मेघनाद' नामसे ब्रह्माजीने इसे पुकारा था। यह बड़ा वीर तथा पराक्रमी था। देवराज इन्द्रको युद्धमें पराजित करनेके कारण इसका नाम 'इन्द्रजित्' भी था। इसने राम-रावण युद्धमें राम-लक्ष्मणको दो बार हराया था, पर अंतमें यह लक्ष्मणके हाथों युद्धके तीसरे दिन बड़े प्रयाससे मारा गया था। वासुकि नागकी पुत्री सुलोचना इसकी पत्नी थी जो पातिव्रत धर्मके लिए प्रसिद्ध थी—दे० सुलोचना। (३) हरिवंशके अनुसार एक दानवका नाम। (४) ५१ विघ्नेश्वरोंमेंसे एक विघ्नेश्वरका नाम (ब्रह्मां० ४.४४.७०)। (५) नर्मदातटवर्ती एक तीर्थका नाम, जहाँ मेघनाद गण परमगणताको प्राप्त हुआ (मत्स्य· १९०.४)।

मेघपुष्प—पु० [सं०] (१) इन्द्रके घोड़े (बादल) का नाम। (२) श्रीकृष्णके रथके चार घोड़ोंमेंसे एक घोड़ेका नाम (भाग० १०.५३.५; ८९.४९)।

मेघपूर्ण—पु० [सं०] मणिभद्र और पुण्यजनीके २४ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (वायु० ६९.१५६)।

मेघपृष्ठ—क्रौंचद्वीपाधिपति घृतपृष्ठ सात पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (भाग० ५.२०.२१)।

मेघमाल—पु० [सं०] (१) रंभाके गर्भसे उत्पन्न कल्किके पुत्रका नाम। (२) प्लक्षद्वीपके सात सीमापर्वतोंमेंसे एक पर्वतका नाम (भाग० ५.२०.४)।

मेघमाला—स्त्री० [सं०] कुमार कार्तिकेयकी अनुचरी एक मातृकाका नाम (महाभा० शल्य० ४६.३०)।

मेघमाली—पु० [सं०] सुयशा और प्रचेताके पुत्र कम्बल आदि पाँच यक्षोंके गणमेंके एक यक्षका नाम (वायु० ६९.१२)।

मेघयंत्रिका—स्त्री० [सं०] वर्षाऋतुकी रानी बारह शक्तियोंमें एक शक्ति (ब्रह्मां० ४.३२.२९)।

मेघवर्ण—पु० [सं०] एक यक्ष जो पुण्यजनी और मणिभद्रके २४ पुत्रोंमेंसे एक था (ब्रह्मां० ३.७.१२४)।

मेघवर्त्त—पु० [सं०] प्रलयकालके एक मेघका नाम।

मेघवान्—पु० [सं०] दनु और कश्यपके विप्रचित्तिप्रमुख १०० पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (मत्स्य० ६.१८)।

मेघवासा—पु० [सं०] हिरण्यकशिपुकी सभाका एक असुर (मत्स्य० १६१.८१)।

मेघवाहन—पु० [सं०] (१) इन्द्रका एक नाम। (२) बाइसवाँ कल्प जब विष्णु मेघी बने थे (वायु० २१.५०)।

मेघशैल—पु० [सं०] महाभद्रसरोवरके उत्तरमें स्थित शंकुकूट आदि १२ पर्वतोंमेंसे एक पर्वत (वायु० ३६.३२)।

मेघस्वाति—पु० [सं०] (१) चिविलक (विकल=ब्रह्मां०; पिलक=विष्णु०) का एक पुत्र तथा अटमान (पद्मान्=विष्णु०) का पिता (भाग० १२.१.२४; विष्णु० ४.२४.४५)। (२) एक अंध्र राजा जो आपीतकका पुत्र तथा स्वातिका पिता था (मत्स्य० २७३.५)।

मेघा—स्त्री० [सं०] भद्राश्व देशकी कई नदियोंमेंसे एक नदी (वायु० ४३.२६)।

मेघी—पु० [सं०] २२वें कल्पमें विष्णुका रूप जब कृत्तिवासाको १००० देव वर्षोंतक वह धारण किये रहे। अधिक बोझके कारण वह हाफने लगे थे जिसके फलस्वरूप उनके मुखसे 'काल' उत्पन्न हुआ था (वायु० २१.५०)।

मेढी—पु० [सं०] दँवरी आदि करनेवाले बैल आदिको बाँधने का खंभा। जैसे मेढीमें बँधे बैल दँवरीमें निरन्तर घूमते हैं वैसे ही ध्रुवमें बँधा वेगवान् ज्योतिश्चक्र निरन्तर घूमता है यों इसकी तुलना ध्रुवसे की जाती है (भाग० ४.१२.३९)।

मेदशिरा—पु० [सं०] पुरीमान्का एक पुत्र तथा शिवस्कन्दका पिता (भाग० १२.१. २७)।

मेदाश—पु० [सं०] यातुधानात्मज हेति आदि दस राक्षसोंमेंसे अन्यतम पौरुषेयके पाँच पुत्रोंमेंसे एक पुत्र राक्षस (ब्रह्मां० ३.७.९४)।

मेदिनी—स्त्री० [सं०]=पृथ्वी। जिसके प्रलयका संकेत मत्स्यवताररूपी मछलीने दिया था (मत्स्य० १.२४.९)। पुराणानुसार मधु-कैटभके मेदासे पृथ्वी उत्पन्न हुई है इसीसे इसका नाम मेदिनी पड़ा (हरिवंश)। इसमें सात द्वीप कहे गये हैं (वायु० १.८९)। इसके चारों ओर समुद्र है (वायु० ६३.१,२)।

मेधज—पु० [सं०] सुमेधा देवगणोंके १४ देवोंमेंसे एक देवका नाम (ब्रह्मां० २.३६.६०)।

मेधहंता—पु० [सं०] सुमेधा देवगणके १४ देवोंमेंसे एक देव (ब्रह्मां० २.३६.६०)।

मेधा—पु० [सं०] (१) कर्दम प्रजापतिकी पुत्री (काम्या ?) और प्रियव्रतके १० पुत्रोंमेंसे एक, जो राजकाजसे विमुख एवं योगसाधनमें ही निरत रहता था (ब्रह्मां० २.१४.९; वायु० ३३.९; विष्णु० २.१.७, ९)। (२) स्वायंभुव मनुके दस पुत्रोंमेंमें एक (ब्रह्मां० २.१३.१०४; मत्स्य० ९.५; वायु० ३१.१७)। (३) सुमेधा देवगणके १४ देवोंमेंसे एक देवका नाम (ब्रह्मां० २.३६.५८)। (४) अथर्ववेदके आचार्य देवदर्शके चार शिष्योंमेंसे एक शिष्य (विष्णु० .३६.१०)।

मेधा–स्त्री० [सं०] (१) ब्रह्मासे प्रसूत उमा, सीता आदि २० देवियोंमेंसे एक देवी (ब्रह्मां० २.२६.४५)। (२) पुष्टि, ऋद्धि आदि ब्रह्माकी दस कलाओंमेंसे एक कला (ब्रह्मां० ४.३५.९४)। (३) दक्ष प्रजापतिकी एक पुत्री जो धर्मकी १० पत्नियोंमेंसे एक पत्नी थी। स्मृति (श्रुत=वायु० तथा विष्णु०) इनका पुत्र था (भाग० ४.१.५०-५२; ब्रह्मां० २.९.४९, ५९; वायु० १०.२५, ३४; ५५.४६; विष्णु० १.१७.२३, २९)। (४) धृति, पुष्टि आदि सोलह मातृकाओंमेंसे एक। (५) श्री, ह्री आदि ४९ शक्तियोंमेंसे एक शक्ति (ब्रह्मां० ४.४४.७२)। (६) सती देवीकी एक मूर्ति, जो काश्मीरमंडलमें स्थापित है (मत्स्य० १३.४७)। (७) विराट रूपधारी भगवान् वामनके कटिप्रदेशस्थ लक्ष्मी आदि देवियोंमेंसे एक देवी (मत्स्य० २४६.६२)।

मेधातिथि–पु० [सं०] (१) काण्ववंशोत्पन्न एक ऋषिका नाम जो कण्वका एक पुत्र था जिससे कई वर्गके ब्राह्मण हुए। यह काण्वायन द्विजोंके मूलपुरुष थे (भाग० ९.२०.७; मत्स्य० ४९.४७; विष्णु० ४.१९.६-७, ३१-२)। (२) महाभा० शांति० २०८.२७ के अनुसार कण्व मुनिके पिताका नाम। (३) कर्दम प्रजापतिकी पुत्री और प्रियव्रतके १० पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम जो शाकद्वीप (प्लक्षद्वीप=विष्णु०) का अधिपति नियुक्त हुआ था। प्रियव्रत अपने सात पुत्रोंमें (क्योंकि उनके तीन पुत्रोंने राज्य नहीं चाहा वे योगसाधन रत महातपस्वी हुए) राज्य बाँटकर तप करने चला गया था (भाग० ५.१.२५, ३३; २०.२५; ब्रह्मां० २.१४.९, ११, ३५-७; ४०-४१; विष्णु० २.१.७, १५)। इनके शांतभय, शिशिर, सुखोदय, नंद, शिव, क्षेमक, ध्रुव सात पुत्र अपने-अपने नामके वर्षके राजा थे (ब्रह्मां० २.१४.३५-३९)। स्वायंभुव मनुके समयमें अपने ही नामके वर्षके ये राजा थे और तपोबलसे इन्हें मोक्ष मिला (ब्रह्मां० २.३०.३९)। (५) एक ऋषि जो राजा परीक्षित्से मिलने गये थे जब वह आमरण उपवास कर रहे थे (भाग० १.१९.१०)। (६) स्वायंभुव मनुके १० पुत्रोंमेंसे एक जिसने तपोबलसे स्वर्ग प्राप्त किया था (ब्रह्मां० २.१३.१०४; मत्स्य० ९.५; १४३.३८; वायु० ३१.१७)। प्लक्षद्वीपके लिए इनका राज्याभिषेक हुआ था (वायु० ३३.९) ये एक राजर्षि थे (वायु० ५७.१२२)। (७) सुमेधा गणके १४ देवताओंमेंसे एक देवताका नाम (ब्रह्मां० २.३६.५८)। (८) रोहित मन्वन्तरके सप्त ऋषियोंमेंसे एक ऋषि जो पौलस्त्य (पुलस्त्य-कुलके) थे (ब्रह्मां० ४.१.६२)। (९) अजमीढ़ और केशिनीके एक पुत्र कण्ठका नाम जिससे काण्ठायन ब्राह्मण हुए। अनुपमकी पुत्रीसे इनका विवाह हुआ जिससे अनेक पुत्र हुए थे (वायु० ९९.१३१; १६९)। (१०) नवें दक्षसावर्णि मनुके युगके सवन आदि सप्तर्षियोंमेंसे एक ऋषि (विष्णु० ३.२.२३)।

मेधाविक–पु० [सं०] एक तीर्थ जहाँ देवता और पितरोंका तर्पण करनेसे मनुष्यको अश्वमेधका फल मिलता है। (महाभा० वन० ८५.५५)।

मेधावी–पु० [सं] (१) सुनय (मत्स्य०=सुतपा)के पुत्र तथा नृपंजय (रिपुंजय=विष्णु० तथा मत्स्य०; दण्डपाणि=वायु०) के पिताका नाम (भाग० ९.२२.४२; वायु० ९९.२७६; विष्णु० ४.२१.१२-१३)। (२) कश्यपका एक पुत्र। (३) च्यवनके एक पुत्रका नाम। (४) बालधि मुनिका पुत्र जिसका जन्म पिताकी तपस्यासे हुआ था। पर्वत इसकी आयुके हेतु थे। मेधायुक्त होनेसे इसका यह नाम पड़ा था। यह बड़ा उद्दण्ड था। धनुपाक्ष नामके मुनिने इसकी आयु-हेतुभूत पर्वतको भैंसोंसे ढहा दिया था जिससे इसकी मृत्यु हो गयी (महाभा० वन० १३५.४५-५३)। (५) एक ब्राह्मण-बालक जिसने पिताको यह उपदेश दिया था कि शरीर तथा संसार अनित्य है (शांति० अध्याय ३७७)।

मेध्या–स्त्री० [सं०] बर्फ (शीत) उत्पन्न करनेवाली सूर्यकी किरणें (वायु० ५३.२१)।

मेनका–स्त्री० [सं०] (१) प्रसिद्ध अप्सराका नाम जिसे विश्वामित्रकी कठोर तपस्यासे डरकर इन्द्रने उनके तप-भंग करनेके लिए भेजा था। इसने अपना काम पूरा किया और इसीके गर्भसे विश्वामित्रकी पुत्री शकुन्तलाका जन्म हुआ था। यह शकुन्तलाको वनमें छोड़ चली गयी थी (भाग० ९.२०.१३)। (२) वृश्नाश्वकी पुत्रीका नाम (ऋग्वेद)। (३) हिमाचलकी पत्नी तथा पार्वती और गंगाकी माताका नाम। मैनाक पर्वत इसका पुत्र कहा जाता है—दे० मैनाक। (४) ज्येष्ठ मासमें सौर गणके अन्य साथियोंके साथ सूर्य रथपर अधिष्ठित रहनेवाली एक अप्सराका नाम (भाग० १२.११.३५; ब्रह्मां० २.२३.६; ३.७.१४; ४.३३.१८; वायु० ५२.७; ६९.४९; विष्णु० २.१०.७)। (५) हिरण्यकशिपुकी सभाकी एक अप्सरा (मत्स्य० १२६.७; १६१.७५) जिसे एक बार उर्वशी तथा रम्भाके साथ नाचना पड़ा था (मत्स्य० २४.२८)। (६) विन्ध्याश्व (वध्यश्व=वायु०) की अप्सरा पत्नी जिसके दिवोदास तथा अहल्या यमज उत्पन्न हुए थे (मत्स्य० ५०.७; वायु० ९९.२००)। (७) अन्धकासुररक्तपानार्थ शिवजी द्वारा सृष्ट कई मानसपुत्री मातृकाओंमेंसे एक मानस-पुत्री मातृका (मत्स्य० १७९.२०)।

मेना–स्त्री० [सं०] (१) हिमवान्की पत्नीका नाम जो पितरोंकी मानसी पुत्री थी। इसीके गर्भसे मैनाक नामक पुत्र तथा गंगा और उमा नामकी पुत्रीकी उत्पत्ति हुई थी। एक पितृकन्या; अग्निष्वात्त पितृगणकी मानस-पुत्री जो हिमवान्की पत्नी तथा मैनाक और क्रौंच तथा ३ पुत्रियोंकी माता थी। उमा (अपर्णा), एकपर्णा और एकपाटला इनकी तीन पुत्रियोंका विवाह क्रमशः रुद्र, असित और जैगीषव्य (द्विवर=वायु०) से हुआ था। दूसरी और तीसरी पुत्रीने न्यग्रोध तथा पाटल वृक्षका आश्रय लिया था पहलीने बिना किसी आश्रयके खुले मैदानमें हजारों वर्ष तपस्या की थी जिसपर उनकी माताने कहा था 'उ मा'=अतः उमा नाम पड़ गया। सप्तर्षियोंके कहनेपर मेना तथा हिमवान्ने उमाका विवाह शिवसे कर दिया था और इनका पुत्र देवसेनापति था (भाग० ४.७.५८; ब्रह्मां० २.१३.३०,७७; ३ ९.२; १०.६-२०; मत्स्य० १३.७; १५४.८६-९३, ४१३; वायु० ३०.२८-९, ३१-२; विष्णु० १.८.१४। विवाहके पश्चात् शिव भी हिमाचलके साथ रहने लगे (ब्रह्मां० ३.६७.३४)। (२) स्वधा और पितरोंकी दो पुत्रियोंमेंसे एक पुत्री तथा ब्रह्मवादिनी (ब्रह्मां० विष्णु० १.१०.१९)।

मेरक–पुं० [सं०] एक असुर विशेष जो विष्णुके हाथों मारा

गया था।

मेरु–पु० [सं०] (१) पुराणानुसार एक पर्वतका नाम जो सोनेका कहा जाता है। यह इलावृतके मध्यमें है और जम्बूद्वीपकी लम्बाईके वरावर ऊँचा है और मंदर, मेरुमंदर, सुपार्श्व तथा कुमुद इसको चारों ओरसे घेरे हैं। मेरुके पूर्वमें जठर और देवकूट हैं; पश्चिममें पवन तथा पारियात्र; दक्षिणमें कैलाश तथा करवीर; उत्तरमें त्रिशृंग तथा मकर। इसकी चोटीपर ठीक मध्यमें ब्रह्माकी चौकोर सुवर्ण निर्मित नगरी है जिसके वाहर तथा चारों ओर आठ दिक्पालोंकी ८ नगरियाँ है (भाग० ५.१६(पूरा); २०.२; ८.५.१८; ब्रह्मां० १.१.६९; ८.२८)। इन्हींके मूल भागमें एक वन है जो शिव-पार्वतीका क्रीड़ास्थल है। यह जम्बूद्वीपके मध्य भागका पर्वत ६ वर्ष पर्वतोंमें एक है जहाँ देवगण निवास करते हैं। इसकी चार दिशाओंमें चार देश हैं=भद्राश्व, भारत, केतुमाल तथा उत्तरकुरु (ब्रह्मां० २.१५.१६, ४२-५१; १७.१९, ३४,८४; २१.१४, २८-३४; ९.१७; विष्णु० २.१.२०-२२; २.३९-४१; ८.१९; ५.१.१२, ६६; ३८.७२)। सावर्णि मनुने यहाँ तपस्या की थी (मत्स्य० ११.३८)। (२) एक मंदिरका नाम, जिसके १०० गुंवज, चार फाटक, १६ खंड तथा तोरण ५० हाथका होता है (मत्स्य० २६५.२८, ३१, ४७)। (३) मनुष्यधर्म पालन करनेवाला एक दानव (वायु० ६८.१५)। (४) नियति तथा आयतिकी माताका नाम (विष्णु० १.१०.३)।

मेरुगुहा–स्त्री० [सं०] २८वें द्वापरमें जव कृष्णद्वैपायन व्यास हुए शिवका एक अवतार जो ब्रह्मा और विष्णुके साथ इसमें प्रविष्ट हुए एवं नकुली नामसे विख्यात हुए (वायु० २३.२२१)।

मेरुतीर्थ–पु० [सं०] वदरिकाश्रमक्षेत्रमें ब्रह्मकुंडसे दक्षिण नरका निवासभूत पर्वत है जहाँ विष्णुने मेरु पर्वतको लाकर स्थापित किया था (स्कंद० वैष्णव० वदरिकाश्रम-माहात्म्य)।

मेरुदान–पुं० [सं०] इसके दस प्रकार हैं=अन्न, लवण, शक्कर, सुवर्ण, तिल, रुई, घी, रत्न, चाँदी तथा चीनीका पर्वत वनाकर उसका दान करना। इसका परिमाण १००० द्रोण (मन) उत्तम, ५०० द्रोण (मन) मध्यम और ३०० द्रोण (मन) कनिष्ठ है (मत्स्य० ८३.२-१२)।

मेरुदेवी–स्त्री० [सं०] मेरुकी पुत्री और नाभिकी पत्नी जिनके गर्भसे विष्णुके अवतार ऋषभदेवका जन्म हुआ था (भाग० १.१३.१३; ५.२.२३; वायु० ३३.५०; विष्णु० २.१.२७)। यह अपने पतिके साथ तपस्या करने वद्रीनाथ गयी जहाँ दोनोंने तपोवलसे मुक्ति पायी थी (भाग० ५.३.१, १९, २०; ४.५; ब्रह्मां० २.१४.५९)।

मेरुमंदर–पु० [सं०] एक पर्वत जो मेरुके निकट है (भाग० ५.१६.११)।

मेरुमूल–पु० [सं०] कर्णिकामूल, इसकी ऊँचाई=७०,००० योजन तथा इसकी परिधि ४८००० योजन है।

मेरुसावर्णि–पु० [सं०] (१) मनुका नाम जो दक्षके पुत्र थे। इनके युगके मरीचिगर्भ, सुधर्मा तथा संभूत नामके ३ देवगण थे। जिनमें प्रत्येककी संख्या १२ थी (वायु० १००.५९)। (२) ब्रह्माके चार पुत्रोंमें प्रथम जो दक्षकी पुत्री क्रियाके पुत्र थे। यह मेरु पर्वतपर तप करके महर्लोक गये तथा चाक्षुष मन्वंतरमें इनका पुनः जन्म हुआ। पार, मरीचिगर्भ तथा सुधर्मा रोहित प्रजापतिके अन्य तीन पुत्र थे (ब्रह्मां० ४.१.२३.५३)। यह भविष्यके ग्यारहवें मनु थे (मत्स्य० ९.३६)।

मेष–पु० [सं०] (१) ताम्रा और कश्यपकी छह कन्याओंमेंसे अन्यतम सुग्रीवीसे उत्पन्न भेंड़ (मत्स्य० ६.३३)। इन्द्रने वज्रांगकी पत्नीकी तपस्या-भंग करनेके लिए यह रूप धारण किया था (मत्स्य० १४६.६४)। (२) सूर्यके मेष राशिमें स्थित होनेपर अर्थात् वैशाख महीनेमें गयामें पिण्डदान दुर्लभ कहा गया है (वायु० १०५.४६)।

मेषकीरिटकायन–पु० [सं०] कश्यपवंशज गोत्रकार ऋषिगण (मत्स्य० १९९.२)।

मेषप–पु० [सं०] एक कश्यपवंशज गोत्रकार ऋषि (मत्स्य० १९९.७)।

मेषसंक्रांति–स्त्री० [सं०] 'सतुआ संक्रांति', जिस दिन सत्तूका दान होता है। मेष राशिपर सूर्यके आ जानेसे इस पर्वका योग होता है। अक्षतोंका अष्टदल कमल वना सूर्यकी स्थापना कर पूजा करे तो सव प्रकारकी वृद्धि होती है (वङ्गऋषि सम्मत तथा लक्ष्मीनारायणसंग्रह)।

मेषांत–पु० [सं०] जव दिन और रात वरावर हों, भूगोलके अनुसार प्रत्येक वर्षके २१ मार्च तथा २२ सितम्बर (वायु० ५०.१९५)।

मैत्र–पु० [सं०] अपराह्णके आठ मुहूर्त्तोंमेंसे एक (ब्रह्मां० ३.३.३९; वायु० ६६.७०)।

मैत्रवर–पु० [सं०] आंगिरसवंशका एक पंचार्षेय प्रवरप्रवर्तक ऋषि (मत्स्य० १९६.५०)।

मैत्रायणावर–पु० [सं०] दिवोदासका एक पुत्र तथा मैत्रेयका पिता जिसके वंशज भार्गव ब्राह्मण कहलाये (मत्स्य० ५०.१३)।

मैत्रावरुण–पु० [सं०] ब्रह्मक्षेत्रका निवासी, एक वशिष्ठ आदि सप्तर्षियों (ब्रह्मां०=सात वशिष्ठ ब्रह्मवादियों) मेंसे छठा ऋषि (वायु० ५९.१०६; ब्रह्मां० २.३२.११६)।

मैत्रावारुणि–पु० [सं०] मित्र और वरुणके पुत्र अगस्त्य। कहते हैं कि उर्वशी अप्सराको देख मित्र और वरुण दोनों वैदिक देवताओंका वीर्य एक स्थानपर स्खलित हो गया था जिससे अगस्त्य और वशिष्ठका जन्म हुआ—दे० अगस्त्य, वशिष्ठ।

मैत्रि–पु० [सं०] कृष्ण यजुर्वेदका उपनिषद।

मैत्री–स्त्री० [सं०] दक्षकी एक पुत्री तथा धर्मकी एक पत्नी जो प्रसादकी माता थी (भाग० ४.१.४९-५०)।

मैत्रेय–पु० [सं०] (१) इन्हें कौषारन भी कहते हैं; यह मित्राके पुत्र तथा एक सिद्ध थे (भाग० ३.४.३६; ३.७.१)। भागवतानुसार एक ऋषि जो पराशरके शिष्य थे और विष्णुपुराणके वक्ता। कुषरव इनके पिता थे। स्वर्गारोहणके पूर्व श्रीकृष्णने इनसे विदुरके गुरु होनेके लिए कहा था। विदुरसे गंगा तटपर इनकी भेंट हुई तव सृष्टिका विवरण देनेके पश्चात् इन्होंने विदुरके प्रश्नोंका उत्तर दिया था (भाग० १०.८६.१८; ३.४.९, २६; ५.१.२२-३६; ८.१)। फिर विदुरको आत्मविद्याकी शिक्षा दी और हरिप्राप्तिको अंतिम लक्ष्य वतलाया (भाग० १.१३.१; १९.१०; २.१०.४९)

युधिष्ठिरके राजसूयमें भी यह आमंत्रित थे (भाग० १०.७४.७; १२.१२.८)। (२) मैत्रायणवरके पुत्रका नाम (मत्स्य० ५०.१३)। (३) पराशर ऋषिका एक शिष्य जिसने उनसे सृष्टि तथा संसारका रहस्य तथा उत्पत्तिके सम्बन्धमें पूछा था (विष्णु० १.१.१-१०)।

मैत्रेयी–स्त्री० [सं०] (१) याज्ञवल्क्य ऋषिकी पत्नीका नाम जो ब्रह्मवादिनी और बड़ी विदुषी थी। (२) अहल्याका एक नाम (हिं.श.सा.)।

मैथिल–पु० [सं०] (१) जनक जो सूर्यग्रहणपर स्यमंतपंचक गये थे (भाग० १०.८२.२६)। (२) मिथिलानरेश शतधन्वा का पुत्र (वायु० ९६.७८)।

मैन–स्त्री० [सं०] ऋषा और पुलहकी पुत्री मीनाकी मगर, मछली, तिमि, तिमिंगिल आदि संततिका सामूहिक नाम (ब्रह्मां० ३.७-४१.५)।

मैनाक–पु० [सं०] (१) आंबिकेय पर्वतके निकटस्थ वर्ष (देश) जिसका दूसरा नाम क्षेमक है (मत्स्य० १२२.२५)। (२) पुराणानुसार भारतवर्षका एक पर्वत। इन्द्रने पर्वतोंके पर काट डाले थे, इससे डरकर मैनाक समुद्रमें जा छिपा था। यह मेनाके गर्भसे उत्पन्न हिमालयका पुत्र कहा जाता है और क्रौंच पर्वत इसका पुत्र है। श्राद्धादिके लिए यह अति पवित्र समझा गया है (भाग० ५.१९.१६; ब्रह्मां० २.१३.३४-५; मत्स्य० १३.७; १२१.७२; वायु० ३०.३२; ४५.९०)।

मैन्द–पु० [सं०] द्विविद वानरका एक भाई जो अंगदका श्वशुर और सुग्रीवका सचिव था एवं यह किष्किन्धाधिपति वालीका सामन्त तथा सेनापति महाबली प्रधान वानर था (भाग० १०.६७.२; ब्रह्मां० ३.७.२२०,२३८)।

मैरेय–पु० [सं०] एक प्रकारका मद्य (मत्स्य० १२०.२६) उत्तरकुरुक्षेत्रकी कुछ नदियाँ इसीको बहाती हैं (वायु० ४५.२७)।

मोक्ष–पु० [सं०] शास्त्र तथा पुराणानुसार जन्म और मरणके बंधनसे जीवका छुटकारा पाना। मोक्षके तीन प्रकार हैं—ज्ञान द्वारा, 'राग'पर विजय प्राप्त कर तथा तृष्णाका नाश कर (ब्रह्मां० ४.३.५५; वायु० २३.८१; १०२.७६, ७८, ८०, ९३)। मोक्षधर्मके लिए द्रष्टव्य (ब्रह्मां० ३.१०.११६)। यह एक प्रकारकी योगसिद्धि है (ब्रह्मां० ४.३६.५२; ४४.१०८) जिसमें व्यक्ति ब्रह्ममें लीन हो जाता है (वायु० १०४.९४)।

मोक्षदा–स्त्री० [सं०] अगहन शुक्ला एकादशी। यह मोहका क्षय करनेवाली एकादशी है अतः यह नाम पड़ा। इसी दिन श्रीकृष्णने अर्जुनको गीताका उपदेश दिया था अतः इस दिन गीता, श्रीकृष्ण तथा व्यासजीका पूजन करे तथा गीताजयंती मनावे—दे० ब्रह्मां०।

मोक्षवादी–पु० [सं०] श्राद्धमें भोजन करनेके अयोग्य अर्थात् पङ्क्तिदूषक कहा गया है (वायु० ७९.६७)।

मोचिका–स्त्री० [सं०] शङ्करकी षोडश कला रूप निवृत्ति, प्रतिष्ठा आदि शक्ति देवियोंमेंसे एक शक्ति (ब्रह्मां० ४.३५.९८)।

मोद–पु० [सं०] (१) अथर्ववेदके आचार्य सुमन्तुके शिष्य देवदर्श (वायु० = वेदस्पर्श) के चार शिष्योंमेंसे एक शिष्य (ब्रह्मां० २.३५.५७; वायु० ६१.५१)।

मोदक–पु० [सं०] केतुमाल देशका एक जनपद (वायु० ४४·१५)।

मोदाक–पु० [सं०] (१) पुराणानुसार एक वृक्षका नाम। (२) हव्यका एक पुत्र जिसके नामपर मोदाक वर्षका नामकरण हुआ (ब्रह्मां० २.१४.१७, २०)। (३) आम्बिकेय पर्वतसे लगा शाकद्वीपका एक राज्य जिसका नामकरण मोदाकपर हुआ (ब्रह्मां० २.१४.२०; १९.९३; वायु० ३३.१९; ४९.८७)।

मोदाकी–पु० [सं०] केसर पर्वतके निकटस्थ शाकद्वीपके एक वर्षका नाम (महाभा० भीष्म० ११.२६)।

मोदिनी–स्त्री० [सं०] सर्वरोगहर चक्रमें पूर्व आदि दिशाके क्रमसे स्थित वशिनी आदि आठ देवियोंमेंसे एक देवीका नाम (ब्रह्मां० ४.३७.४)।

मोदोष–पु० [सं०] (ब्रह्मां० तथा वायु० = मोद) वेददर्शके चार शिष्योंमेंसे एक शिष्य (भाग० १२.७.२)।

मोनस–पु० [सं०] एक गोत्रप्रवर्त्तक ऋषि।

मोरध्वज–पु० [सं० मयूरध्वज] (१) एक पौराणिक भक्त राजाका नाम जिसने श्रीकृष्णकी बात मान अपना जीवित शरीर आरेसे चिरवाया था। (२) एक राजा जो वर्तमान आरा नगर (जो पहले जंगल था) तथा आसपासके देशका अधिपति था। इस जंगली देशमें एक दुर्गाका मंदिर था जिसे अरण्यदेवी कहते थे। यह निःसंतान था पर देवीकी कृपासे इसे पुत्र हुआ। देवीके आदेशसे राजा सपत्नीक इस पुत्रको आरासे चीर मंदिरमें बलि देने गया। ज्योंही राजा आरा चलानेको थे देवीने प्रकट हो अभयदान दिया। आरासे बलि देनेके कारण ही मंदिरके आसपासका जंगल आरा कहलाने लगा—दे० अरण्यदेवी।

मोह–पु० [सं०] ब्रह्माकी बुद्धिसे यह उत्पन्न हुआ था (मत्स्य० ३.११)।

मोहन–पु० [सं०] (१) यह गयाकी शिलामें विद्याधर गन्धर्वके साथ गीत गानेवाला एक गन्धर्व है (वायु० १०८.४८)। (२) श्रीकृष्णका एक नाम (हि० श० सा०)। (३) एक प्रकारका तांत्रिक प्रयोग जिससे किसीको अपने वशमें करते हैं या जिससे शत्रु घबड़ा जाय (सं० श० कौस्तुभ)। (४) एक प्राचीन कालीन अस्त्र विशेष जिसके द्वारा शत्रु मूर्छित हो जाता था (सं० श० कौ०)। (५) कामदेवके ५ बाणोंमेंसे एकका नाम। कामदेवने इसका प्रयोग शिवपर किया था (मत्स्य० १५४.२४४; १६२.२१,२४) 'उन्मादन', 'शोषण', 'तापन', 'सम्मोहन' तथा 'स्तंभन' = कामदेवके ५ बाण हैं।

मोहिनी–स्त्री० [सं०] (१) विष्णुका एक स्त्री-रूप जो अमृत बाँटनेके समय उन्होंने धारण किया था। इससे देवताओंमें और असुरोंमें झगड़ा बन्द हो गया था। एक बार शिवके सामने भी विष्णु इसी रूपमें आये थे और कामातुर होनेके कारण शिवका रेतःपात हो गया था (भाग० १.३.१७; ८.८.४१-४६; अध्याय ९, १२ पूरा; मत्स्य० २५१.७; वायु० २५.४८)। (२) एक शक्तिका नाम (ब्रह्मां० ४.१०.२७,३४; १९.६५.७४। (३) वैशाख शुक्ला एकादशी अन्य एकादशियोंकी तरह है। श्रीरामने सीताकी खोज करते समय इसे किया

था (कूर्मपु०)।

मौञ्ज–पु० [सं०] एक भार्गव आर्षेय प्रवर (मत्स्य० १९५.३७)।

मौञ्जकेश–पु० [सं०] एक आत्रेय गोत्रकार ऋषि (मत्स्य० १९७.७)।

मौञ्जवृष्टि–पु० [सं०] एक आंगिरस-वंशज प्रवरप्रवर्तक ऋषि (मत्स्य० १९६.१८)।

मौञ्जायनि–पु० [सं०] त्र्यार्षेय प्रवरप्रवर्तक कुशिकवंशज एक ऋषिका नाम (मत्स्य० १९८.२०)।

मौद्गलायन–पु० [सं०] एक भार्गव गोत्रकार ऋषि (मत्स्य० १९५.२२)।

मौन–पु० [सं०] इस वंशके ११ राजा हुए (वायु० १८ राजा) इन्होंने १०९९ तर्षतक राज्य किया (भाग० १२.१.३०-३२; ब्रह्मां० ३.७४.१७३-७; वायु० ९९.३६०; विष्णु० ४.२४.५३-५४)।

मौनव्रत–पु० [सं०] भाद्रशुक्ल १ को होता है पर प्रारम्भ श्रावण शुक्ल १५ से होता है। इससे पुत्र-पौत्रादिकी प्राप्ति तथा पापनाश होता है (स्कंदपु०)।

मौनिक–पु० [सं०] एक दाक्षिणात्य देश (वायु० ४५.१२७)।

मौनिदेश–पु० [सं०] एक देश जिसका नामकरण मुनिके नामपर हुआ (ब्रह्मां० २.१४.२६)।

मौनेय–पु० [सं०] देवगंधर्व जो संख्यामें १६ थे तथा मुनि (दक्षपुत्री) और कश्यपके पुत्र थे। २४ अप्सराएँ इनकी छोटी बहिनें थीं। इनकी सुयशा आदि ६ पुत्रियाँ थीं (ब्रह्मां० ३.७.१-५; वायु० ६९.१-४, १०)।

मौर्य–पु० [सं०] ये नंदवंशके पश्चात् आये थे तथा पुराणानुसार इस वंशमें १० राजा हुए जो विष्णुपुराणानुसार १७३ वर्षतक राज करते रहे। मत्स्यपुराणानुसार शतधन्वा, बृहद्रथ, शक आदि राजा थे (भाग० १२.१.१२-१५; ब्रह्मां० ३.७४.१४९; वायु० ९९.३३६; विष्णु० ४.२४.२७, ३२-३; मत्स्य० २७२.२२, २६)।

मौलि–पु० [सं०] (१) एक त्रिप्रवरप्रवर्तक ऋषि (मत्स्य० १९६.३३)। (२) पुण्यजनी और मणिभद्रके २४ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (वायु० ६९.१५६)।

मौलिक–पु० [सं०] दक्षिणका एक देश (ब्रह्मां० २.१६.५८)।

मौशल–पु० [सं०] महाभारतका एक प्रधान पर्व (मत्स्य० ७०.११)।

मौहूर्तिकी–स्त्री [सं०] सूर्यकी गति। माघमें सूर्य दक्षिणकी ओर जाता है फिर विषुवत् रेखाकी ओर बढ़ता है। श्रवण नक्षत्रमें यह उत्तरकी ओर बढ़ता है तथा शाकद्वीपके उत्तर छोरपर निकलता है (वायु० ५०.१२१-७)।

मौहूर्त्तिक–पु० [सं०] मुहूर्त्ता तथा धर्मसे उत्पन्न एक गण, जो मनुष्योंके कार्यका यथोचित फल देते हैं (भाग० ६.६.९)।

म्लेच्छ–पु० [सं०] (१) वेन राजाका शरीर जब मथा गया था तब ये उनके वाम भागसे उत्पन्न हुए थे (मत्स्य० १०.७)। ययातिके पुत्र अनुसे इनका प्रारम्भ हुआ, फिर दक्ष, तुर्वसु, और द्रुह्युसे ये उत्पन्न हुए। प्रचेताके १०० पुत्रों, जो म्लेच्छ राष्ट्रोंके अधिपति हुए, ने इनपर शासन किया (मत्स्य० ३४.३०; ४.५४; ३३.१४; भाग० ९.२३.१६) कुशद्वीपमें ये नहीं थे। शक, पह्लव, कम्बोज (आभीर=विष्णु०) गुरुंड, वृषल सब म्लेच्छ थे। इनका राज्य आर्योंके राज्यके साथ-साथ चला (मत्स्य० २७३.२५)। जो लोग इनके देशमें रहते थे वे सब पार्वण श्राद्धमें भोजनके लिए निषिद्ध कहे गये हैं (मत्स्य० १६.१६)। बनारसमें इन्हें मोक्ष मिल सकता है (मत्स्य० १८१.१९)। कल्कि अवतार इन्हें परास्त करेंगे (ब्रह्मां० २.१८.४३) प्रमतिदेवने इनका दमन किया (मत्स्य० ११४.११-१२; १२१.४३; १४४.५३)। (२) विश्वामित्रके १०१ पुत्र थे उन्होंने शुनःशेपको पुत्र मानकर पुत्रोंसे कहा इसे अपना ज्येष्ठ भाई मानो। उनके यह स्वीकार न करनेपर जो ज्येष्ठ मधुच्छंद थे उन्हें शाप दे दिया। वे विश्वामित्रके शापसे म्लेच्छ हो गये थे। भरतने उत्तरके म्लेच्छोंको परास्त किया था (भाग० ९.१६.३३; २०.३०; २३.१६)।

य

यक्ष–पु० [सं०] एक प्रकारके देवता जो कुबेरके सेवक और उसकी निधिके रक्षक कहे गये हैं। पुराणानुसार ये सुयशा और प्रचेताकी संतान हैं (वायु० ६९.११) तथा इनकी आकृति विकराल होती है यथा पेट फूला, कंधे भारी और हाथ पैर घोर काले (मत्स्य० १८९.४-११; १९१.८५)।

यक्षग्रह–पु० [सं०] एक कल्पित ग्रह जिसके आक्रमणसे व्यक्ति विक्षिप्त-सा हो जाता है (महाभा० वन० २३०.५३)।

यक्षतरु–पु० [सं०] वट वृक्ष जो यक्षोंको अति प्रिय है। ये इसीपर निवास करते हैं, अतः उसका यह नाम पड़ा।

यक्षनायक–पु० [सं०] (१) यक्षोंके स्वामी कुबेर। (२) जैनधर्मग्रंथानुसार वर्तमान अवसर्पणीके अर्हत्का चौथा अनुचर।

यक्षपति–पु० [सं०] 'मृत्यु कुबेर यक्षपति कहियत जहँ शंकरको धाम'—सूर।—दे० कुबेर।

यक्षरात्रि–स्त्री० [सं०] कार्तिक पूर्णिमाकी रात जो यक्षोंको प्रिय है।

यक्षलोक–पु० [सं०] वह लोक जहाँ यक्ष निवास करते हैं।

यक्षस्थल–पु० [सं०] पुराणानुसार एक तीर्थका नाम।

यक्षिणी–स्त्री० [सं०] (१) यक्ष-पत्नी। (२) कुबेरकी पत्नी। (३) दुर्गाकी एक अनुचरी। (४) एक देवी जिनके नैवेद्यके भक्षणसे ब्रह्महत्यासे छुटकारा प्राप्त हो जाता है (महाभा० वन० ८४.१०५)।

यजुर्वेद–पु० [सं०] चार वेदोंमेंसे दूसरा जिसमें यज्ञ-कर्मका विस्तृत विवरण निहित है। 'अध्वर्यु' जिन गद्यमंत्रोंका पाठ यज्ञोंमें करता है उसे 'यजु' कहते हैं जो इस वेदमें संगृहीत हैं अतः इसका नाम यजुर्वेद पड़ा। इसके दो भेद=कृष्ण यजुर्वेद तथा शुक्ल यजुर्वेद या वाजसनेयी संहिता प्रसिद्ध हैं। 'काठक, कपिष्ठल, कठ, मैत्रायणी और तैत्तिरीय, ये चारों

कृष्ण यजुर्वेदकी संहिताएँ हैं। शुक्ल यजुर्वेदकी काण्व तथा माध्यंदिनी दो शाखाएँ हैं। पतंजलिने यजुर्वेदकी १०१ शाखाएँ कही हैं पर चरणव्यूहमें ८६ और वायुपुराणानुसार केवल २३ शाखाएँ ठहरती हैं। पुराणानुसार यजुर्वेदके अधिपति शुक्र और वक्ता वैशंपायन हैं।

यज्ञ–पु० [सं०] पुराणानुसार यज्ञ रुचिका पुत्र तथा दक्षिणा का पति है जिसका सिर मृगका कहा गया है। दक्ष प्रजापतिके यज्ञमें इसे वीरभद्रने मार डाला था। ब्रह्माने इसे नक्षत्र वना दिया जिसे मृगशिरा कहते हैं—दे० हरिवंश।

प्राचीन समयमें कोई शुभकार्य करनेके समय या खेतकी उपजकी वृद्धिके लिए ऋग्वेदके सूक्तों तथा अथर्ववेदके मंत्रोंका उच्चारण कर प्रार्थनाएँ की जाती थीं जिन्हें 'गृहकर्म' कहते थे जो अधिक विकसित होनेपर यज्ञस्वरूप हो गये। क्रमशः इन यज्ञोंके नियम आदि वने। आगे ऋत्विजोंकी आवश्यकता हुई जिनमें पहला 'होता' कहलाया। यह यज्ञमें देवताओंका आह्वान करता था, 'उद्गाता' यज्ञ-कुंडमें आहुति देनेके समय सामगान करता था। 'अध्वर्यु' तीसरा ऋत्विज् था जो स्वयं यज्ञके सारे कृत्य करता था। चौथा ऋत्विज् 'ब्रह्मा' सर्व विघ्नोंका निवारण कर यज्ञोंकी रक्षा करता था। यह तीनों वेदोंका ज्ञाता होता था। यज्ञोंके सम्वन्धमें जो शास्त्र वने उन्हें 'ब्राह्मण' तथा 'श्रौतसूत्र' कहते हैं और गृहकर्मोंके शास्त्रको 'स्मृति' कहने लगे।

ईरानी लोगोंमें भी यज्ञोंका प्रचलन था जिन्हें 'यक्ष' कहते थे। फारसीका 'जक्ष' इसी 'यक्ष'से वना है।

यज्ञकेतु–पु० [सं०] एक राक्षसका नाम।

यज्ञकोप–पु० [सं०] एक राक्षसका नाम जो रावणके दलका एक प्रधान राक्षस था तथा राम-रावण युद्धके समय वर्तमान था (वा० रामा०)।

यज्ञगिरि–पु० [सं०] पुराणानुसार एक पर्वत।

यज्ञनेमि–पु० [सं०] श्रीकृष्णका एक नाम।

यज्ञपत्नी–स्त्री० [सं०] पुराणानुसार कुछ यज्ञ करनेवाले माथुर ब्राह्मणोंकी स्त्रियाँ पतियोंके मना करनेपर भी श्रीकृष्णके लिए भोजन वनमें ले गयी थीं (भाग० १०.२३.१७-२१)।

यज्ञपर्वत–पु० [सं०] एक पर्वतका नाम जो पुराणानुसार दक्षिणमें नर्मदा नदीके उत्तर-पश्चिममें स्थित है।

यज्ञपार्श्व–पु० [सं०] एक प्राचीन ऋषि (पराशरस्मृति)।

यज्ञपुरुष–पु० [सं०] विष्णुका एक नाम, उदाहरणार्थ—
"यज्ञ पुरुष प्रसन्न जव भये। निकसी कुंडसे दर्शन दये॥
—सूर।

यज्ञबाहु–पु० [सं०] (१) अग्निका एक नाम–दे० अग्नि। (२) पुराणानुसार शाल्मलिद्वीपके एक राजाका नाम।

यज्ञरुचि–पु० [सं०] पुराणानुसार एक दानवका नाम।

यज्ञलिंग–पु० [सं०] श्रीकृष्णका एक नाम।

यज्ञवराह–पु० [सं०] कहते हैं कि विष्णुने वराह अवतारके पश्चात् जव अपना शरीर छोड़ा तव उनके विभिन्न अंगोंसे यज्ञकी भिन्न-भिन्न सामग्री वन गयी। इसीसे उन्हें यज्ञवराह कहते हैं–दे० वराह।

यज्ञवल्क–पु० [सं०] याज्ञवल्क्य ऋषिके पिताका नाम।

यज्ञवाह–पु० [सं०] कार्त्तिकेय स्वामीका एक सैनिक अनुचर (महाभा० शल्य० ४५.७०)।

यज्ञशत्रु–पु० [सं०] खर राक्षसका एक सेनापतिजो राम-रावणयुद्धमें श्रीराम द्वारा मारा गया था (वाल्मी० रामायण)।

यज्ञसेन–पु० [सं०] (१) एक दानवका नाम (हिं० श० सा०) (२) पाञ्चालके राजा द्रुपदका एक नाम (महाभा० आदि० १३०.४२)।

यज्ञहोता–पु० [सं०] औत्तम मनुका एक पुत्र (भाग०)।

यति–पु० [सं०] (१) ब्रह्माके एक पुत्रका नाम (भाग०)। (२) राजा नहुषके छह पुत्रोंमेंसे एक (ज्येष्ठ) पुत्रका नाम (महाभा० आदि० ७५.३०)। इन्होंने राज्यकी इच्छा नहीं की थी, अतः इनके छोटे भाई ययाति राजा हुए (विष्णु० ४.१०.१-२)।

यतिचान्द्रायण–पु० [सं०] प्रतिदिन मध्याह्नमें हविष्यान्नके ८-८ ग्रास खानेसे ३० दिनोंमें यह पूर्ण होता है। 'अष्टावष्टौ समश्नीयात् पिण्डान् मध्यं दिने स्थिते। नियतात्मा हविष्यस्य यतिचान्द्रायणं चरेत्।' (मनु० ११.२१८)।

यतिसांतपन–पु० [सं०] (१) ब्रह्मकूर्चता व्रतमें दिये मिताक्षरा-वचनके अनुसार पंचगव्य (गोमूत्र, गोवर, दूध, दही और घी)को ३ दिनों तक पीनेसे यतिसांतपन होता है और उसी पंचगव्यको कुशोदकमें मिलाकर ७ दिन पीनेसे कृच्छ्रसांतपन होता है (जावालि०)। (२) इसमें तीन दिन पंचगव्य पीकर चौथे दिन उपवास और हवन करनेका विधान हैं—दे० प्रायश्चितेन्दुशेखर।

यदु–पु० [सं०] (१) देवयानीके गर्भसे उत्पन्न राजा ययातिके दो पुत्रोंमेंसे ज्येष्ठ पुत्र। सर्वप्रथम इन्हींसे राजा ययातिने अपनी जवानी देकर उनका बुढ़ापा लेनेके लिए कहा था, इनके अस्वीकार करनेपर ययातिने शाप द्वारा इनका राज्य नष्ट कर दिया था पर इंद्रने फिर राज्य दिला दिया था। श्रीकृष्ण इन्हींके वंशमें हुए थे (महाभा० आदि० ८४.८;१९६.३२-३३; विष्णु० ४.१०.२३-२७)। (२) पुराणानुसार राजा हर्यश्वके पुत्रका नाम। (३) अनुके पिताका नाम (विष्णु० ४.१४.१३-१४)। (४) सहस्त्रजि, क्रोष्टु, नील, अंतिक आदि पांचके पिताका नाम (मत्स्य० ४३.७)।

यदुध्र–पु० [सं०] पुराणानुसार एक ऋषिका नाम।

यदुनंदन–पु० [सं०] (१) श्रीकृष्णका नाम। (२) कृष्णचैतन्यके साथी एक भक्तका नाम (हिं० श० सा०)।

यदुनाथ, यदुपति, यदुभूप, यदुराज, यदुवंशमणि, यदुवर, यदुवीर–पु० [स०] श्री कृष्णके नाम,

यम–पु० [सं०] एक प्रसिद्ध देवताका नाम जो दक्षिण दिशाके दिक्पाल तथा मृत्युके देवता है। वैदिक कालमें 'यम और 'यमी' दोनों देवता, ऋषि और मंत्रकर्ता माने जाते थे। उस समय 'यम'का मृत्युसे कोई संवंध नहीं था पर वे मृत पितरोंके अधिपति समझे जाते थे। इनका एक अलग लोक 'यमलोक'के नामसे अवतक माना जाता है। मरनेके पश्चात् अपने यहाँ मृतके शुभाशुभ कृत्योंका धर्मपूर्वक विचार कर कर्मानुसार ये उसे स्वर्ग या नरकमें भेजते है। इन्हें 'धर्मराज' भी कहते हैं। विश्वकर्माकी पुत्री संज्ञाके गर्भसे उत्पन्न यह सूर्यका पुत्र है और सूर्यके शापसे यह मनुष्योंके प्राण लेनेका कार्य करता है। इसकी

बहिन 'यमी' ही आजकलकी यमुना नदी है। यम और यमी यमज थे। यमराजका वाहन भैंसा कहा गया है। पर्या० पितृपति, कृतांत, शमन, काल, दंडधर, श्राद्धदेव, धर्म, जीवितेश, महिषध्वज, महिषवाहन, शीर्णपाद, हरि, कर्मकर। यमराजको ईसाई मतावलंबी प्लूटो कहते हैं। —दे० मार्कण्डेयपु० तथा यमराज।

यमघंट—पु० [सं०] कार्त्तिक शुक्ला प्रतिपदा जिस दिन अभ्यंग और स्नानका महत्त्व है। इसी दिन पार्वतीने शंकरको द्यूतक्रीडा सिखायी थी—दे० अन्नकूट, गोवर्धन, भागवत तथा व्रतोत्सव।

यमतर्पण—पु० [सं०] कार्त्तिक कृष्णा चतुर्दशीको सायंकाल जल, तिल और कुश ले यमका मंत्र पढ़ तर्पण करे। यममें धर्मराजके रूपसे देवत्व और यमराजके रूपसे पितृत्व, ये दोनों अंश विद्यमान हैं अतः तर्पणमें तिल काले और सफेद दोनों रखने चाहिये—दे० कृत्यतत्त्वार्णव।

यमद्वितीया—स्त्री० [सं०] 'भाईदूज' कार्त्तिक शुक्ला द्वितीया को होनेवाला एक पर्व। हेमाद्रिके मतसे द्वितीया मध्याह्नव्यापिनी पूर्वविद्धा उत्तम होती है। स्मार्तमतानुसार आठ भागके दिनके पाँचवें भागकी द्वितीया श्रेष्ठ मानी गयी है और स्कन्दपुराणानुसार अपराह्णव्यापिनी अच्छी होती है। इस दिन यमराजने अपनी बहिन यमुनाके यहाँ भोजन किया था अतः इस तिथिको बहिनके यहाँ भोजन करने और उसे कुछ द्रव्य देनेकी प्रथा है जो शुभ समझी जाती है। यदि यमद्वितीयाको यमुना-तटपर भाई बहिनके हाथका बनाया भोजन करे तो इस कृत्यको आयुवर्धक भी मानते हैं। इसीसे इसे 'भाईदूज' कहते हैं। कहीं-कहीं वणिक्वृत्तिवाले मसीपात्रादिका पूजन करते हैं और उसे 'कलमदानपूजा' कहते हैं—दे० दिवाली।

यमदीपदान—पु० [सं०] कार्त्तिक कृ० १३ को सायंकाल दक्षिण दिशाकी ओर मुँह करके नवीन दीये जलाकर दान करे तो यमराज प्रसन्न होते हैं। इसका मन्त्र 'मृत्युना दण्डपाशाभ्यां कालेन श्यामया सह। त्रयोदश्यां दीपदानात् सूर्यजः प्रीयतां मम ॥' (स्कन्दपु०)।

यमपुर—पु० [सं०] यमका निवासस्थान जिसे यमलोक कहते हैं। मृत्युके पश्चात् यमदूत प्रेतात्माको कर्मानुसार शुभाशुभ फलके निर्णयके लिए यहीं ले जाते हैं—दे० यमराज।

यमप्रस्थ—पु० [सं०] कुरुक्षेत्रके दक्षिणका एक नगर जहाँके लोग यमके उपासक थे। बादको वे लोग शैव हो गये (हिं० श० सा०)।

यमराज—पु० [सं०] (१) धर्मराज। इनका रंग हरा कहा गया है और यह लाल वस्त्र धारण करते हैं। इनका वाहन भैंसा है और इनके मुंशी पाप-पुण्यका हिसाब रखते हैं जिन्हें 'चित्रगुप्त' कहते हैं। चित्रगुप्तकी बहीका नाम 'अग्रसन्धानी' है जिसमें प्रत्येक जीवका अलग-अलग पाप-पुण्यका हिसाब रहता है। इनकी नगरीको 'यमपुरी', राजमहलको 'कालीत्री' (?) और सिंहासनको 'विचार-भू' कहते हैं। महाचण्ड और कालपुरुष इनके शरीर रक्षक, यमदूत इनके अनुचर तथा वैध्यत (?) इनका द्वारपाल है। दो प्रचण्ड कुत्ते जिन्हें चार आँखें तथा चौड़े नथुने हैं इनके यहाँ पहुँचानेवाले पथके संरक्षक कहे गये हैं। इनकी विमाताने शाप दे इन्हें शीर्णपाद बना दिया है (मार्कण्डेयपु०)। स्मृतियोंके अनुसार, यम, धर्मराज, मृत्यु, अन्तक, वैवस्वत, काल, सर्वभूतक्षय, औदुम्बर, दध्न, नील, परमेष्ठी, वृकोदर, चित्र और चित्रगुप्त ये १४ यम हैं जिनमें से प्रत्येकके नाम ३-३ अंजलि जल तर्पणमें देते हैं। (२) एक धर्मशास्त्रकारका नाम भी यम है—दे० धर्मशास्त्रसंग्रह।

यमवन—पु० [सं०] इसे अनुपर्वत भी कहते हैं, इसका स्थान लौहित्य और सिन्धुके बीच कहा जाता है जो पद्म हाथीके वनके नामसे विख्यात था (ब्रह्मां० ३.७.३५९; वायु० ६९.२४)।

यमलार्जुन—पु० [सं०] गोकुलके दो प्रसिद्ध अर्जुनवृक्ष। पुराणानुसार ये कुबेरके पुत्र नलकूबर और मणिग्रीव थे। एक बार ये मद्य पीकर नंगे हो स्त्रियोंके साथ क्रीड़ा कर रहे थे जिससे रुष्ट होकर नारदने शाप दिया और ये वृक्ष हो गये। नन्द-पत्नी यशोदाने एक बार श्रीकृष्णको दण्ड देनेके निमित्त ऊखलमें बाँध दिया था। इसी समय श्रीकृष्णने यमलार्जुनका उद्धार किया था (भाग० १०.१०.२२७)।

यमव्रत—पु० [सं०] माघ शु० ४, भरणी नक्षत्र तथा शनिवार हो तो यमका पूजन करे तो यमभय नहीं होता—दे० हेमाद्रि।

यमादर्शन—पु० [सं०] इस व्रतको मार्गशीर्ष शुक्लपक्षकी जिस त्रयोदशीको क्रूरवार (सूर्य, भौम, शनि) न हो तथा सौम्यवार (सोम, बुध, बृहस्पति एवं शुक्र) हो, उसीसे प्रारम्भ कर वर्षभर करे। इस दिन यम नामके 'काल, दण्डधर, अन्तक, शीर्णपाद कङ्क, हरि और वैवस्वत' जैसे नामवाले १३ ब्राह्मणोंको भोजन करा ताँबेके १३ पात्रोंमें १६ सेर तिल और चावल दे। इससे यमका भयंकर रूप दिखायी नहीं देता—दे० (स्कन्दपु०)।

यमी—स्त्री० [सं०] संज्ञाके गर्भसे उत्पन्न सूर्यकी पुत्री तथा यमराजकी बहिन। यही आजकलकी यमुना नदी है—दे० संज्ञा; मार्कण्डेयपु०।

यमुना—स्त्री० [सं०] यमकी बहिन यमी जो विश्वकर्माकी पुत्री संज्ञाके गर्भसे उत्पन्न सूर्यकी पुत्री है—दे० यम, यमी तथा मार्कण्डेयपु०। संज्ञाने पतिके तेजके भयसे आँखें बन्द कर ली थी अतः सूर्यने क्रुद्ध होकर शाप दिया जिससे इसका पुत्र 'यम' सब लोकोंका संयमन करनेवाला हुआ। फिर संज्ञाने सूर्यकी ओर चंचल दृष्टिसे देखा और सूर्यके शापसे यमुना पुत्री चंचलतापूर्वक नदीके रूपमें बहने लगी (मार्कण्डेयपु०)।

यमुनाभिद्—पु० [सं०] श्रीकृष्णके बड़े भाई बलराम जिन्होंने अपने हलसे यमुनाको दो भागोंमें विभक्त कर दिया था (भाग० १०.६५.२३ ३१)।

ययाति—पु० [सं०] पितृकन्या विरजाके गर्भसे उत्पन्न राजा नहुषके पुत्र और चन्द्रवंशके पाँचवें राजा जिनका विवाह दैत्यगुरु शुक्राचार्यका पुत्री देवयानीसे हुआ था। देवयानीके गर्भसे यदु और तुर्वसु इनके दो पुत्र हुए थे और शर्मिष्ठाके गर्भसे द्रुह्यु, अनु और पुरु नामक तीन पुत्र हुए। यदुसे यादव और पुरुसे पौरव वंशका आरम्भ हुआ। एक बार यह स्वर्गसे इन्द्रके शापवश च्युत हो गये थे और

अंतरिक्षमें निवास करने लगे (मत्स्य० ३५.४; ३८.२०; ३९.११; ४१.८,१०) पर रास्तेमें अष्टक ऋपिने इन्हें रोककर पुनः स्वर्ग भेज दिया था। ब्रह्मांडपुराणानुसार यह तप करने वन गये और तपके अन्तमें भृगुतुंग नामक तीर्थमें सद्गति प्राप्त की—दे० अनु०—२ और अन्तरिक्ष, (विष्णु० ४.१०)।

महाभा० और विष्णु० के अनुसार शर्मिष्ठा (दैत्यराज वृषपर्वाकी पुत्री) से अनुचित सम्बन्ध रखनेके कारण देवयानीके पिताके शापवश ययाति असमय ही बूढ़े हो गये थे। अनुनय-विनयसे प्रसन्न हुए शुक्राचार्यके इस कथन से कि कोई तुम्हारा बुढ़ापा ले और अपना यौवन दे तो यह हट सकता है पुरुने इनसे बुढ़ापा ले अपनी जवानी इन्हें दी थी। पद्मपुराणनुसार इन्द्रने इन्हें स्वर्ग बुलाया था जहाँसे लौटनेपर ययातिके पुण्यसे इनकी सारी प्रजा मृत्युसे मुक्त हो गयी। यमराजके कहनेपर इन्द्रने अपनी पुत्री अश्रुविन्दुमती और कामदेवको भेजा जिससे ययातिमें प्रेमाकुंर उपजे। अपनी नववधूके योग्य वर होनेके हेतु ही इन्होंने पुरुसे जवानी उधार ली थी। भागवतपुराण और हरिवंश आदिमें भी यही कथा कुछ भिन्न रूपसे दी है। ययातिने अपने पुत्र अनुको शाप दे अग्निप्रस्कन्दन रोगसे पीड़ित कर दिया था (मत्स्य० ३३.२४) तथा—दे० शर्मिष्ठा, पुरु आदि आदि।

ययातिपतन—पु० [सं०] एक तीर्थका नाम जहाँ जानेसे तीर्थयात्रीको अश्वमेधका फल प्राप्त होता है (महाभा० वन० ८२.४८)।

ययुधेयी (?)—स्त्री० [सं०] राजा शिविकी पुत्री जिसका नाम देविका था। यह युधिष्ठिरकी पत्नी तथा यौधेयकी माता थी (महाभा० आदि० ९५.७६)।

यवक्रीत—पु० [सं०] भरद्वाजके पुत्र एक ऋपि जिसने घोर तप करके इन्द्रको प्रसन्न किया जिनके वरसे इन्हें बिना अध्ययनके ही वेदोंका ज्ञान प्राप्त हो गया। इससे यवक्रीत कुछ दंभी हो गये। बात यहाँतक बढ़ी कि भरद्वाजके मित्र रैभ्य ऋपिके पुत्र परावसुकी पत्नीसे यवक्रीत अनुचित सम्बन्ध स्थापित करना चाहते थे। परावसुने यज्ञ द्वारा एक राक्षस उत्पन्न किया जिसने यवक्रीतको मार डाला। पुत्रशोकातुर भरद्वाज पुत्रकी चितामें जल मर गये। अपनी मृत्युके पूर्व भरद्वाजने परावसुको रैभ्यकी मृत्युका कारण होनेका शाप दिया। शापवश पिताको मृग समझ परावसुने रैभ्यका वध कर डाला। अर्वावसुने तपस्या कर देवताओंकी कृपासे अपने पिता रैभ्य ऋषि, उनके मित्र भरद्वाज तथा यवक्रीतको भी पुनः जीवित कर लिया (रैभ्य; परावसु; स्कंदपु० ब्राह्मां० सुतुमाहात्म्य; महाभा० वन० १३६.१९; १३८.२२)।

यवक्षा—स्त्री० [सं०] भारतकी एक नदीका नाम (महाभा० भीष्म० ९.३०)।

यवन—पु० [सं०] (१) पुराणानुसार तुर्वसुके वंशज जो वीर तथा बुद्धिमान् थे। राजा सगरने इन्हें परास्त किया और इनके शिर मुंडवा दिये गये। (२) राजा कालयवनका नाम जो श्रीकृष्णसे कई वार लड़ा था—दे० कालयवन। (३) पुराणानुसार यवनोंकी उत्पत्ति वशिष्ठ-विश्वामित्रके झगड़ेके समय वशिष्ठ ऋपिकी गौके शरीरसे हुई थी। यवनोंकी उत्पत्ति गौकी योनिसे हुई थी, अतः यवन नाम पड़ा (हि० श० सा०)।

यवनारि—पु० [सं०] कालयवनके शत्रु होनेके कारण श्रीकृष्णका एक नाम—दे० कालयवन।

यवनाश्व—पु० [सं०] राजा बहुलाश्वके पिताका नाम जो मिथिलाका राजा था—दे० बहुलाश्व।

यवमध्य—पु० [सं०] (१) एक चांद्रायणव्रत —दे० चान्द्रायणव्रतकथा। (२) एक यज्ञ विशेप जो ५ दिनोंमें समाप्त होता है (यज्ञतत्त्वप्रकाशः म० म० पं० चिन्नस्वामिशास्त्री प्रणीत)।

यविष्ठ—पु० [सं०] अग्नियविष्टका दूसरा नाम। यह ऋपि बहुत प्रतापी तथा ऋग्वेदके एक मंत्रके द्रष्टा थे (ऋग्वेदमंत्राणां वर्णानुक्रमः)।

यवीनर—पु० [सं०] (१) पुराणानुसार राजा अजमीढ़का एक पुत्र—दे० अजमीढ़। (२) द्विमीढ़के पुत्र तथा कृतिमान्के पिताका नाम (भाग० ९.२१.२७)। (३) पुरुवंशोत्पन्न राजा द्विजमीढ़के पुत्र तथा धृतिमान्के पिता (विष्णु० ४.१९.४८)।

यशोदा—स्त्री० [सं०] (१) नंदकी पत्नी जिन्होंने श्रीकृष्णका लालन-पालन किया था—दे० नंद, गोकुल तथा (भाग० १०.३.५१, ५३)। (२) दिलीपकी माताका नाम—दे० दिलीप।

यशोधर—पु० [सं०] (१) रुक्मिणीके गर्भसे उत्पन्न श्रीकृष्णके एक पुत्रका नाम (महाभा० अनु० १४.३३)। (२) पाण्डवपक्षके दुर्मुरनका पुत्र (द्रोण० १८४.५)।

यशोमत्य—पु० [सं०] एक जातिका नाम (मार्कण्डेयपु०)।

यस्क—पु० [सं०] एक गोत्र-प्रवर्त्तक ऋपि (हि० स० सा०)।

याग—पु० [सं०] =यज्ञ, 'योग याग व्रत दान जो कीजै।' —केशवदास।

यागसंतान—पु० [सं०] इन्द्र पुत्रका एक नाम जिसे जयंत भी कहते थे (भाग० ६.१८.७; ८.२१.१७; ११.५.२६; काश्यप गोत्रोत्पन्न ब्रह्मां० ३.६.२४; वायु० ६८.२४)।

याज—पु० [सं०] (१) एक तपस्वी तथा कर्मनिष्ठ ब्राह्मणका नाम जिसने राजा द्रुपदकी प्रार्थनापर पुत्रेष्टि यज्ञका सकुशल संपादन किया था। इसी यज्ञके फलस्वरूप धृष्टद्युम्न और द्रौपदीका जन्म हुआ था—दे० द्रुपद, दौपदी तथा धृष्टद्युम्न।

याज्ञवल्क्य—पु० [सं०] (१) वैशम्पायनके शिष्य एक प्रसिद्ध ऋषि। गुरुके अप्रसन्न होनेपर उन्हींकी आज्ञासे इन्होंने सारी विद्या उगल दी थी जिसे वैशम्पायनके अन्य शिष्योंने तीतर बनकर ग्रहण किया जिससे इस शाखाका नाम तैत्तिरीय पड़ गया। फिर सूर्यकी उपासना तथा वरसे याज्ञवल्क्य वाजसनेयी संहिता (शुक्लयजुर्वेद) के आचार्य हुए। इनका एक नाम वाजसनेय भी था (भाग० १२.६.६४-५; ब्रह्मां० २.३५.७५; विष्णु० ३.५.१३; वायु० ६१.६६)। (२) राजा जनकके दरवारके एक ऋपिका नाम। मैत्रेयी और गार्गी इनकी पत्नियाँ थीं। यह योगीश्वर याज्ञवल्क्यके नामसे विख्यात थे। यह एक प्रसिद्ध स्मृतिकार थे। इनकी स्मृति (याज्ञवल्क्यस्मृति) का दायभाग अबतक अदालतोंमें माना जाता है।

याज्ञसेनी–स्त्री० [सं०] द्रौपदीका एक नाम (भाग० ९.२२.२-३; वायु० ९९.२११; विष्णु० ४.१९.७३)।

यातुधान–पु० [सं०] एक प्रकारके दानवोंका समूह जिसमें नाना प्रकारके प्रेत, भूतादि भी सम्मिलित हैं, कुछ तो पशुपक्षियोंके रूपमें भी मिलते हैं। ये राक्षसोंके साथ-साथ रहनेपर भी, उनसे भिन्न समझे जाते थे। रामायण, महाभारत तथा पुराणोंमें इन्हें राक्षसोंकी श्रेणीसे अलग नहीं रखा गया। वायुपुराणनुसार तो सुरसा राक्षसीके गर्भसे उत्पन्न कश्यपके पुत्र बारह यातुधानोंकी संख्या गिनायी गयी है, जिन्हें दस्युओंका सहचर कहा है (वायु०)।

यादवी–स्त्री० [सं०] सूर्यवंशी राजा बाहुकी दूसरी पत्नी जिनके गर्भसे राजा सगर उत्पन्न हुए थे—दे० बाहु (नारद-पु० पूर्वभाग, प्रथम पाद)।

याम–पु० [सं०] एक प्रकारके देवगण जो संख्यामें बारह हैं। इनका जन्म स्वायंभुव मनुके समय यज्ञ और दक्षिणासे हुआ था (मार्कण्डेयपु०)।

यामि–स्त्री० [सं०] धर्मकी एक पत्नीका नाम जो नागवीथी नामक धर्मकी पुत्रीकी माता थी (अग्नि पु०)।

यामिनी–स्त्री० [सं०] कश्यप ऋषिकी एक पत्नीका नाम—कश्यप।

यामुन–पु० [सं०] (१) एक तीर्थका नाम (महाभा०)। (२) एक वैष्णव आचार्य जो रंगक्षेत्रके निवासी थे। अन्य मतानुसार यह रामानुजाचार्यके गुरु थे। यह संस्कृतके विद्वान् थे जिनके रचे, आगमप्रामाण्य, सिद्धित्रय, भगवद्गीताटीका, आलमंदारस्तोत्र आदि अभी भी प्राप्य हैं (हि० श० सा०) तथा—दे० रामानुजाचार्य। (३) भारतके एक प्राचीन जनपदका नाम (महाभा० भीष्म० ९.५१)। (४) गंगा और यमुनाके मध्यवर्ती एक पर्वतका नाम (महाभा० अनु० ६८.३)।

यामेय–पु० [सं०] यामि तथा धर्मका एक पुत्र (मार्कण्डेय-पु०)।

यावककृच्छ्र–पु० [सं०] इसमें जलमें जौ उबालकर प्रतिदिन सात या पन्द्रह दिनतक पीनेक विधान है (प्रायश्चितेन्दु-शेखर)।

यावकश्रीकृच्छ्र–पु० [सं०] इसमें तीन दिन गोमूत्र, तीन दिन गोबर और तीन दिन यावक (उबाले जौका जल) पीया जाता है (प्रायश्चितेन्दुशेखर)।

यास्क–पु० [सं०] एक ऋषि जो वैदिक निरुक्तके रचयिता कहे गये हैं।

युगंधर–पु० [सं०] (१) पंजाबका एक नगर। (२) इस नगर तथा आस-पासके निवासियोंका नाम। (३) तूणिका पुत्र तथा सात्यकिके पौत्रका नाम (हरिवंश)। (४) एक पांडवपक्षीय योद्धा, जिसने द्रोणाचार्यपर आक्रमण किया था और अन्तमें द्रोणाचार्य द्वारा मारा गया था (महाभा० द्रोण० १६.३०-३१)।

युग–पु० [सं०] पुराणानुसार कालके चार विभाग जिनमें एक ही प्रकारकी घटनाएँ या कार्य होते रहे हों। युग चार माने गये हैं:—सत्ययुग, त्रेता, द्वापर और कलियुग। प्रत्येक युगके पहलेके समयको 'संध्याकाल' कहते हैं और युगके अन्तमें संध्याकालके समान ही 'संध्यांश' होता है। संध्याकाल और उसका संध्यांश युगका १।१० भाग होता है और देवताओंका प्रत्येक वर्ष मनुष्यके ३६० वर्षोंके बराबर होता है।

देवताओंके वर्षोंके अनुसार–सत्ययुग ४००० वर्षोंका, संध्याकाल ४०० वर्षोंका, संध्यांश ४०० वर्षोंका, ४८०० वर्षोंका। त्रेतायुग ३००० वर्षोंका, संध्याकाल ३०० वर्षोंका, संध्यांश ३०० वर्षोंका, ३६०० वर्षोंका। द्वापर युग २००० वर्षोंका, संध्याकाल २०० वर्षोंका, २४०० वर्षोंका। कलियुग १००० वर्षोंका, संध्याकाल १०० वर्षोंका, संध्यांश १०० वर्षोंका, १२०० वर्षोंका। कुल मिलाकर १२००० वर्ष हुए।

मनुष्योंके वर्षोंके अनुसार प्रत्येक युग–सत्ययुग-४८०० × ३६०=१७२८०००, त्रेतायुग-३६०० × ३६०= १२९६०००, द्वापरयुग-१२०० × ३६० = ८६४०००, कलियुग-१२०० × ३६०=४३२०००, मनुष्योंके वर्षोंके अनुसार चारों युगोंका जोड़=४,३२०,००० वर्ष हुआ। ४३,२०,००० वर्षोंका एक मन्वंतर होता है और २००० मन्वंतरोंका एक कल्प, अर्थात् ४३,२०,००० × २०००= ८,६४,००,००,०००, वर्षोंका ब्रह्माका एक दिन और रात। मनुष्योंका एक दिन-रात २४ घंटोंका होता है पर ब्रह्माका एक दिन-रात मनुष्योंके ८,६४,००,००,००० वर्षोंका होता है।

समयके इस विभागका ऋग्वेदादिमें कोई उल्लेख नहीं मिलता है, शायद यह रामायण और महाभारतके समय निश्चय किया गया होगा। भिन्न-भिन्न युगोंमें मनुष्योंके जीवनकी अवधि इस प्रकार थी:—सत्ययुगमें मनुष्य ४००० वर्ष जीते थे, त्रेतायुगमें ३००० वर्ष, द्वापरयुगमें २००० वर्ष, कलियुगमें कुछ निश्चित समय नहीं है।

युगाद्या–स्त्री०[सं०] वह तिथि जिससे किसी युगका आरंभ हुआ हो जो संवत्सरमें चार है:—वैशाख शुक्ल तीज—सत्य युगका, कार्त्तिक शुक्ला नवमी—त्रेता युगका, भाद्रपद कृष्ण त्रयोदशी—द्वापर युगका और पौष कृष्णा अमावस्या—कलियुगका आरंभ। ये चारों पुण्य तिथियाँ मानी गयी हैं जिनमें लोग दान-पुण्य करते हैं।

युद्धमुष्टि–पु० [सं०] राजा उग्रसेनके एक पुत्रका नाम। युद्धतुष्ट इसका नामान्तर था। वायु० तथा विष्णु०में यह युद्धमुष्टि कहा गया है, परन्तु भाग०में इसे सृष्टि नामसे अभिहित किया गया है (हि० वि०को०)।

युद्धाजि–पु० [सं०] एक ऋषि विशेषका नाम, जो अंगिराके गोत्रमें उत्पन्न हुए थे (हिं० श० सा०)।

युधांश्रौष्टि–पु० [सं०] एक राजाका नाम जिसका नारद तथा पर्वत ऋषिने ऐन्द्र महाभिषेक किया था (ऐतरेयब्रा० ८.२१.७)। पौराणिक साहित्यमें वर्णित युद्धमुष्टि या युद्धतुष्ट अथवा सृष्टि राजा यही है। कहीं-कहीं पर इन्हे युधांश्रौष्टि या औग्रसेन्य नामसे अभिहित किया गया है।

युधाजित्–पु० [सं०] (१) केकयराज अश्वपति राजाके पुत्र तथा भरतजीके मामाका नाम, जो कैकेयीके भाई थे (रामा० वाल्मी० बाल० ७७)। (२) वृष्णिके पुत्र शिनि तथा अनमित्रके पिताका नाम (भाग० ९.२४.१२-१४;

ब्रह्मां० ३.७१.२०)। (३) श्रीकृष्णका एक पुत्र (भाग०)। (४) क्रोष्टु राजाके पुत्रका नाम—दे० क्रोष्टु।

युधामन्यु–पु० [सं०] एक वीर राजाका नाम, जो पाञ्चाल देशका राजकुमार था। महाभारत-युद्धमें पांडवोंकी ओरसे लड़ा था (महाभा० उद्योग० १७०.५)।

युधासर–पु० [सं०] राजा नंदका एक नाम—दे० नंद।

युधिष्ठिर–पु० [सं०] पाँच पांडवोंमें सबसे बड़ेका नाम। यह कुंतीके गर्भसे उत्पन्न धर्मके पुत्र कहे गये हैं जो बड़े सत्यवादी तथा धर्मपरायण थे पर इन्हें जूएकी बुरी लत थी। यह जूएमें सारा राज्य तथा द्रौपदी तकको हार बैठे थे। अपनी धर्मपरायणताके कारण यह सदेह स्वर्ग गये थे। महाभारत-युद्धमें द्रोणाचार्यकी मृत्युके लिए श्रीकृष्णके बड़े अनुरोधपर इन्होंने केवल इतना ही कहा था, 'अश्वत्थामा हतो नरो वा कुञ्जरो वा' अर्थात् अश्वत्थामा मारा गया, न जाने हाथी या मनुष्य। पिछला वाक्य इन्होंने कुछ धीरेसे कहा था। इनके पूरे जीवनमें बस यहीं सत्यका कुछ अपलाप मिलता है। महाभारत-युद्धके पश्चात् यह हस्तिनापुरके राजसिंहासनपर बैठे थे। राजा शिविकी पुत्री देविकासे इनका विवाह हुआ था जिसके गर्भसे यौधेय नामक इनका पुत्र हुआ था (महाभा० आदि० ९५.७६)।

युधोन्मत्त–पु० [सं०] एक राक्षसका नाम जिसे महोदर भी कहते है। यह रावणका भाई था जिसे नील नामक बंदरने मारा था (रामायण)।

युयुत्सु–पु० [सं०] धृतराष्ट्र द्वारा वैश्य जातिकी भार्याके गर्भसे उत्पन्न एक पुत्रका नाम (महाभा० आदि० ६३.११८)।

युयुधान–पु० [सं०] श्रीकृष्णके सारथि सात्यकिका दूसरा नाम। ये सत्यकके पुत्र थे। पारिजात-हरणके समय ये देवलोक गये थे, जहाँ इन्होंने देव-शत्रुओंको परास्त किया था। कुरुक्षेत्रके प्रसिद्ध युद्धमें यह पांडवोंकी ओरसे लड़े थे। सुभापण तथा तूणि नामके इनके दो पुत्र विख्यात थे (भाग० महाभा० सभा० ४.३५)।

युवनाश्व–पु० [सं०] (१) इक्ष्वाकुवंशोत्पन्न एक सूर्यवंशी राजाका नाम। जो राजा प्रसेनजितका पुत्र तथा प्रसिद्ध मांधाताका पिता था (—दे० मांधाता; स्कंदपु०, आवन्त्य० रेवा-खंड)। (२) धुंधुमारके पुत्रका नाम (वा० रामायण)। (३) आर्द्रके पुत्र तथा श्रावस्तके पिता जिसने श्रावस्तीपुरी बसायी थी (ब्रह्मपु०)।

यूथग–पु० [सं०] चाक्षुष मन्वंतरके एक प्रकारके देवता (हिं० श० सा०)

यूपकेतु–पु० [सं०] सोमदत्तके पुत्र भूरिश्रवाका एक नाम (महाभा० सभा० ४४.१९)।

यूपाक्ष–पु० [सं०] लंकापति रावणकी सेनाका एक वीर नायक जिसे प्रमदवन उजाड़ते समय हनुमान्‌जीने मारा था (वाल्मी० रामाय० सु० ४६.१-१७)।

योग–पु० [सं०] एक ऋषिका नाम जो तीनों लोकोंमें विख्यात महान् तपस्वी थे (महाभा० अनु० १५०.४५)।

योगकन्या–स्त्री० [सं०] यशोदाके गर्भसे उत्पन्न एक कन्या। वसुदेव श्रीकृष्णको नंदके घर रख इसे ही देवकीके पास कारागारमें ले गये थे। कंसने ज्योंही योगकन्याको पत्थरपर पटक कर मारना चाहा यह कंसके हाथसे छूट कर आकाशको चली गयी थी। इसी समय आकाशवाणी हुई थी कि तेरा मारनेवाला गोकुलमें उत्पन्न हो गया है, सचेत रह (भाग० १०.४.४७)।

योगनिद्रा–स्त्री० [सं०] युगके अंतमें होनेवाली विष्णुभगवानकी निद्रा जिसे दुर्गाका रूप माना गया है (भाग०)।

योगमाया–स्त्री० [सं०] योगकन्याका दूसरा नाम—दे० योगकन्या; कृष्ण।

योगव्रत–पु० [सं०] तिथि, वार और नक्षत्रोंके साथ विष्कुंभादिका सहयोग होनेसे विशेष प्रकारके शुभाशुभ प्राप्त होते हैं। इनकी शांतिके लिए योग-व्रत आवश्यक है। अभीष्ट योगोंके दिन सूर्यकी पूजा करे, व्रत करे तथा अभीष्ट योगके पदार्थोंका दान करे (हेमाद्रि)।

योगवाणी–पु० [सं०] हिमालय पर्वतपर स्थित एक तीर्थ।

योगवाशिष्ठ–पु० [सं०] वशिष्ठ ऋषिका बनाया वेदांतशास्त्रका एक प्रसिद्ध ग्रंथ जिसमें वशिष्ठने श्रीरामचंद्रको वेदांतका उपदेश दिया था। इसे वाशिष्ठ महारामायण भी कहते हैं। अन्य मतसे यह वाल्मी० रामायणका उत्तर खंड माना गया है—दे० वाल्मी० रामायण; योगवाशिष्ठ; वाशिष्ठ-महारामायण तात्पर्य प्रकाश व्याख्या सहित।

योगा–स्त्री० [सं०] जानकीजीकी एक सखी (रामायण)।

योगिनी–स्त्री० [सं०] (१) नीचे लिखी आठ विशिष्ट देवियाँ :—१. शैलपुत्री, २. चंद्रघंटा, ३. स्कंदमाता, ४. कालरात्रि, ५. चंडिका, ६. कूष्मांडी, ७. कात्यायनी और ८. महागौरी।

दिशा	तिथि	योगिनीका नाम
पूर्व	प्रतिपदा और नवमी	ब्रह्माणी।
उत्तर	द्वितीया और दशमी	माहेश्वरी।
अग्निकोण	तृतीया और एकादशी	कौमारी।
निर्ऋतिकोण	चतुर्थी और द्वादशी	नारायणी।
दक्षिण	पंचमी और त्रयोदशी	वाराही।
पश्चिम	षष्ठी	इन्द्राणी।
वायुकोण	सप्तमी और अमावस्या	चामुंडा।
ईशानकोण	अष्टमी	महालक्ष्मी।

ज्योतिषियोंका योगिनीचक्र जो यात्राके समय देखा जाता है उसका फल इस प्रकार मिलता है :—

"वामे शुभप्रदा पृष्ठे वाञ्छितार्थप्रदायिनी।
दक्षिणे धनहन्त्री च सम्मुखे मृत्युदायिनी॥ (योगिनीजातक) (२) कालीकी एक सहचरीका नाम—दे० काली। (३) एक लोकका नाम।

योगिनी एकादशी–पु० [सं०] आषाढ़ कृष्णा एकादशी। इस तिथिको पुण्डरीकाक्ष भगवान्‌का यथाविधि पूजन, व्रत और रात्रिमें जागरण करनेवाला कुष्ठादि सब रोगोंसे मुक्त हो जाता है। कुबेरके कोपसे हेममालीको कोढ़ हो गया था। उसने मार्कंडेयजीके कहनेसे यही व्रत कर व्याधिसे छुटकारा पाया था—दे० 'ब्रह्मवैवर्तपुराण' तथा हेममाली।

योगिकुंड–पु० [सं०] हिमालय पर्वतपर स्थित एक तीर्थस्थान।

योगीश–पु० [सं०] याज्ञवल्क्य ऋषिका एक नाम—दे० याज्ञवल्क्य।

योगेश्वर–पु० [सं०] (१) पुराणानुसार नव बड़े योगियोंके नाम। ये भगवदवतार ऋषभदेवके सौ पुत्रोंमेंसे ९ योगीश्वर महात्मा महान् भगवद्भक्त थे। जो इस प्रकार है :—कवि, हरि, अंतरिक्ष, प्रबुद्ध, पिप्पलायन, आविर्होत्र, द्रुमिल, चमस और करभाजन (भाग० ५.४.११; ११.२.२०-२१)। (२) एक तीर्थका नाम।

योजनगंधा–स्त्री० [सं०] महाराज शांतनुकी पत्नी सत्यवतीका एक नाम जो वेदव्यासकी माता थीं—दे० मत्स्यगंधा, वेदव्यास, पराशर (महाभा० आदि० ६३.८२)।

योनि–स्त्री० [सं०] प्राणियोंके विभाग जो पुराणानुसार ८४ लाख हैं, पर अन्य मतानुसार अंडज, स्वेदज, उद्भिज्ज और जरायुज सब २१ लाख हैं। एक अन्य मतसे जलजंतु= ९ लाख; स्थावर=२० लाख; कृमि=११ लाख; पक्षी= १० लाख; पशु=३० लाख; मनुष्य=४ लाख हैं।

योनिवेश–पु० [सं०] क्षत्रियोंके एक देशका प्राचीन नाम (महाभा०)।

यौगंधरायण–पु० [सं०] राजा उदयनका एक मंत्री—दे० उदयन।

यौधेय–पु० [सं०] धर्मराज युधिष्ठिरका एक पुत्र जो राजा शिविकी पुत्री राजकुमारी देविकाके गर्भसे उत्पन्न हुआ था (महाभा० आदि० ९५.७६)।

यौवनाश्व–पु० [सं०] महाराज मांधाताका एक नाम। यह युवनाश्वके पुत्र एक प्राचीन सूर्यवंशी राजा थे—दे० मांधाता।

'र'

रंगदेवता–पु० [सं०] रंगभूमिके अधिष्ठाता एक कल्पित देवता।

रंगभूति–स्त्री० [सं०] आश्विनकी पूर्णिमा जिस दिन रातको जागरण करने वालेको लक्ष्मी धन देती है (कृत्यनिर्णय)।

रंतिदेव–पु० [सं०] पुराणानुसार एक बड़े दानी राजाका नाम जो महायशा तथा संकृतिके एक पुत्र तथा नरके पौत्र थे। विष्णुपुराणानुसार रंतिदेव और गुरुप्रीति संकृतिके पुत्र थे। यह भरतकी ५वीं तथा दुष्यंतकी छठी पीढ़ीमें हुए थे (विष्णु० ४.१९.२२)। एक वार इन्होंने सर्वस्व दान कर दिया और ४८ दिनों तक जल भी पीनेको नसीव नहीं हुआ। उंनचासवें दिन प्राप्त भोजन करनेके पहले एक ब्राह्मण, एक शूद्र और एक कुत्तेके साथ एक अतिथि आ गये। रंतिदेवका सारा भोजन अतिथि-सत्कारमें शेष हो गया केवल जल बचा। उसके लिए भी एक प्यासा चांडाल आ गया। राजाने जल भी नहीं पीया, चांडालको दे दिया। भगवानकी कृपासे इन्हें मोक्ष प्राप्त हुआ था (भाग० ९.२१.१-१८; मत्स्य० ४९.३६-७)।

रंतिभार–पु० [सं०] (विष्णु=रंतिनार) ऋतेयुके पुत्र, सुमति, ध्रुव और अप्रतिरथके पिता तथा कण्व और ऐलीनके दादा (भाग० ९.२०.६; विष्णु० ४.१९.४,५,८)

रंभ–पु० [सं०] (१) पुराणानुसार महिषासुरके पिताका नाम। शिवजीकी कृपासे महिषासुर ऐसा प्रतापी पुत्र इसे हुआ था। यही दूसरे जन्ममें रक्तबीज हुआ था—दे० रक्तबीज (मत्स्य० १५२.१७-२४; ब्रह्मां० ४.२९.७५.८८)। (२) राहुकी पुत्रीके गर्भसे उत्पन्न आयुका तृतीय पुत्र तथा पुरूरवाका पौत्र—दे० रजि।

रंभा–स्त्री० [सं०] पुराणानुसार इन्द्रसभाकी एक प्रसिद्ध अप्सराका नाम, जिसे इंद्रने विश्वामित्रकी तपस्यामें विघ्न डालनेके लिए भेजा था (विष्णु०)।

रंभातृतीया–स्त्री० [सं०] पुराणानुसार ज्येष्ठ मासके शुक्लपक्षकी तृतीया जिस दिन व्रत रखते हैं। इसमें पूर्वविद्धा तिथि ली जाती है। इसमें व्रत स्त्रियोंका घर सुख करनेवाली पुत्रादिसे पूर्ण रहता है। माताके कहनेसे पार्वतीने यह व्रत किया था (भविष्योत्तरपु०)।

रक्तदंतिका–स्त्री० [सं०] शुंभ और निशुंभको खानेके समय दुर्गाने यही रूप धारण किया था (ब्रह्मां० ३.२३.२४,४८,५९;४.१९.८१)।

रक्तबीज–पु० [सं०] शुंभ और निशुंभका सेनापति एक राक्षसका नाम। देवीभागवतके अनुसार इसके शरीरके प्रत्येक रक्तकी बूंदसे एक नये राक्षसकी सृष्टि हो जाती थी, अतः दुर्गाने इसका रक्त पीकर इसे मार डाला था। यह भी प्रसिद्धि है कि महिषासुरका पिता रंभ ही मर कर फिर रक्तबीजके रूपमें उत्पन्न हुआ था—दे० रंभ तथा (स्कंदपु० काशी-खंड उत्तरार्ध)।

रक्ताक्ष–पु० [सं०] संवत्सर ६० माने गये हैं, उनमें यह अट्ठारहवाँ है।

रक्तांग–पु० [सं०] धृतराष्ट्र नागके कुलमें उत्पन्न एक नागका नाम जो जनमेजयके सर्पसत्रमें अग्निसात् किया गया था (महाभा० आदि० ५७.१८)।

रक्तोद्गारी–पु० [सं०] दे० उद्गारी।

रक्षाबंधन–पु० [सं०] श्रावण मासकी पूर्णिमा जिस दिन वहिनें अपने भाईके हाथमें रक्षाके लिए एक डोरा बाँधती हैं। इस तिथिको भाई वहिनके घर भोजन करता है और उसे कुछ द्रव्य देता है। इस रक्षावंधनका कारण यह है कि इस तिथिको एक वार जब देवराज इंद्र राक्षसोंसे युद्ध करने चले तब उनकी पत्नी इंद्राणीने इंद्रके हाथमें राई, हल्दी, सुपारी, दूर्वा, रोली, चावल और गुड़ रख रक्षावंधन बाँधा था। सौभाग्यसे इंद्र विजयी रहे तबसे यह प्रथा चल निकली, पर अब तो झूठे मोती मूँगे राखीमें लगाये जाते हैं जो निरर्थक हैं। रक्षाबंधनका मंत्र इस प्रकार है :—"येन बद्धो वली राजा दानवेन्द्रो महाबलः। तेन त्वामनुबध्नामि रक्षे मा चल मा चल"॥ (मदनरत्न-भविष्योत्तरपु०; हमारे त्यौहार; भारतीय व्रतोत्सव)।

रक्षिता–स्त्री० [सं०] एक अप्सराका नाम। (महाभा० आदि० ६५.५०)।

रघु–पु० [सं०] रघुवंशके अनुसार सुदक्षिणाके गर्भसे उत्पन्न राजा दिलीप (विष्णुपुराणानुसार दीर्घबाहु)के पुत्र तथा श्रीरामचंद्रके परदादा। यह बड़े प्रतापी सूर्यवंशी राजा थे। इनकी वाल्यावस्थामें ही इनके पिताके अश्वमेध-यज्ञके घोड़ेको इंद्रने पकड़ा था पर इन्होंने इंद्रको युद्धमें पराजित कर

छुड़ा लिया था। प्रसिद्ध रघुकुलके यही मूल पुरुष थे और 'अज' इनके ही पुत्र थे—दे० परिशिष्ट झ, रघुवंश, विष्णु०।

रघुनंद, रघुनंदन रघुनाथ, रघुनायक रघुपति, रघुराई, रघुराज, रघुराय, रघुवंशकुमार, रघुवर, रघुवीर–पु० [सं०] श्रीरामचंद्रके नाम।

रचना–स्त्री० [सं०] पुराणानुसार विश्वकर्माकी पत्नीका नाम।

रज–पु० [सं०] (१) पुराणानुसार एक ऋपिका नाम कहते हैं यह वशिष्ठ ऋपिके पुत्र थे। (२) कुमार कार्त्तिकेयके एक सैनिक अनुचरका नाम (महाभा० शल्य० ४५.७३)।

रजत–पु० [सं०] पुराणानुसार शाकद्वीपके अस्ताचल पर्वतका नाम (हिं० श० सा०)।

रजतकूट–पु० [सं०] मलय पर्वतका एक शिखर (भाग० ५.१४.१६; ब्रह्मां० २.१६.१८; वायु० ४५.८९,१०५; विष्णु० ३.३.३)।

रजतनाभ–पु० [सं०] एक यक्षका नाम—दे० यक्ष।

रजतनाभि–पु० [सं०] कुवेरके एक वंशधरका नाम (हिं० श० सा०)।

रजतवाह–एक ऋपिका नाम।

रजताचल–पु० [सं०] पुराणानुसार नवाँ महादान जिसमें चाँदीका पर्वत दान करते हैं।

रजनी–स्त्री० [सं०] पुराणानुसार शाल्मलिद्वीपकी एक नदी (भाग० ५.२०.१०)।

रजि–पु० [सं०] पुरूरवाका ज्येष्ठ पुत्र आयु था जिसने राहुकी पुत्रीसे विवाह किया जिससे नहुष, क्षत्रवृद्ध, रंभ, रजि तथा अनेना ५ पुत्र हुए थे अतः यह चतुर्थ पुत्र थे (महाभा० आदि० ७५.२५)। एक प्राचीन राजाका नाम। एक समय जव देवासुर संग्राम आरंभ हुआ तव देवताओंके पूछनेपर ब्रह्माजीने कहा कि जिस पक्षमें राजा रजि रहेंगे वही पक्ष जीतेगा। दैत्य इनके पास सहायताके लिए गये तव इन्होंने स्वयम् इंद्र वननेकी इच्छा प्रकट की। दैत्योंने इन्हें इंद्र वनाना स्वीकार नहीं किया क्योंकि वे प्रह्लादके लिए यह पद देनेका निश्चय कर चुके थे। तव इन्होंने देवताओंसे भी इंद्र वननेकी शर्तपर उनकी सहायता की और असुरोंका नाश किया। अंतमें इंद्रने इनके पैरों पड़ कर इन्हें प्रसन्न किया और रजिने इंद्रको ही इंद्र पदपर रहने दिया (विष्णु० ४.८.१-२;९.५-५११; तथा ब्रह्मपु० रजिचरित्र)।

रजोगोत्र–पु० [सं०] पुराणानुसार वशिष्ठ ऋपिके पुत्रका नाम।

रटंती–स्त्री० [सं०] माघ कृष्णा चतुर्दशी (माव कृ० १४) जिस तिथिको प्रातःकाल सूर्योदयके समय स्नानका वड़ा माहात्म्य लिखा है।

रणछोड़–पु० [हिं०] श्रीकृष्णका एक नाम। जरासंधके आक्रमणोंसे तंग आकर श्रीकृष्ण रणभूमि त्यागकर द्वारका चले गये थे इसीसे उनका यह नाम पड़ गया।

रणरणक–पु० [सं०] कामदेवका नाम—दे० कामदेव तथा (हिं० श० सा०)

रणोत्कट—पु० [सं०] (१) कार्त्तिकेय स्वामीके एक सैनिक अनुचरका नाम (महाभा० शल्य० ४५.३८)। (२) एक दैत्यका नाम (हिं० श० सा०)।

रति–स्त्री० [सं०] दक्ष प्रजापतिकी पुत्री और कामदेवकी पत्नी। यह दक्ष प्रजापतिके शरीरके पसीनेसे उत्पन्न हुई थी और संसारकी सवसे रूपवती स्त्री मानी गयी है। इसे देख सव देवताओंका मन डोल गया था इसीसे इसका नाम 'रति' पड़ा। शिवके कोपाग्निसे कामदेवके नष्ट हो जानेके पश्चात् इसके ही कारण वह विना शरीरका या 'अनंग' होकर सदा वना रहा और रति सदा कामदेवके साथ रहती है—दे कामदेव (भाग० ३.१२.२६;८.७.३२;१०.५.५। रोमनोंके वेनससे इसकी तुलना करते हैं।

रतिपति–पु० [सं०] कामदेवका एक नाम (विष्णु० ५.२७.२८)।

रत्नगिरि–पु० [सं०] विहार प्रांतके एक पहाड़का नाम जिसपर राजगृह वसा हुआ कहा गया है (हिं० श० सा०)।

रत्नदाम–स्त्री० [सं०] राजा जनककी पत्नीका नाम जो सीता की माता थी (गर्गसंहिता)।

रत्नद्वीप–पु० [सं०] पुराणानुसार एक द्वीपका नाम।

रत्नधार–पु० [सं०] पुराणानुसार एक पर्वतका नाम।

रत्नधारा–स्त्री० [सं०] पुराणानुसार एक नदीका नाम।

रत्नधेनु–स्त्री० [सं०] रत्नकी वनी गाय जिसे दान करनेवाला स्वर्ग प्राप्त करता है—नारदपु०।

रत्नपीठ–पु० [सं०] एक तीर्थका नाम जो तंत्रशास्त्रियोंको अधिक प्रिय है (नारायणकृत तन्त्रसारसंग्रह)।

रत्नमाला–स्त्री० [सं०] राजा वलिकी पुत्री। वामन भगवानके ऐसे वालकको दूध पिलानेकी इच्छा इसमें जागृत हुई इसीलिए यह कृष्णावतारके समय पूतना हुई थी (देवीभागवत, श्रीमद्भागवत)

रत्नमाञ्जी–पु० [सं०] पुराणानुसार एक प्रकारके देवता।

रत्नवती–स्त्री० [सं०] राजा वीरकेतुकी पुत्रीका नाम। पुराणानुसार वीरकेतु पांचाल देशके राजा थे (भाग० ९.२१.३२-३३;२२.३; विष्णु० ४.१९.५९)।

रत्नसानु–पु० [सं०] सुमेरु पर्वतका एक नाम—दे० सुमेरु।

रत्नाकर–पु० [सं०] वाल्मीकिका पहला नाम जव यह डाकू थे (स्कंदपु० आवन्त्यखंड)।

रत्नाचल–पु० [सं०] रत्नका पहाड़ जिसे दान करनेवाला स्वर्ग प्राप्त करता है (नारदपु०)।

रत्नोत्तमा–स्त्री० [सं०] एक देवीका नाम जिनका तंत्रशास्त्रमें अधिक माहात्म्य है (देवीनामविलास; देवीमाहात्म्य)।

रत्नोल्का–स्त्री० [सं०] तंत्रशास्त्रकी एक देवीका नाम, (तंत्रसार)।

रथनवमी–स्त्री० [सं०] आश्विन शुक्ला नवमीको रथमें देवीकी स्वर्णनिर्मित मूर्ति स्थापित करे, भ्रमण कराकर लौटा लावे, पुनः पूजा करे जिससे व्रती सुख और समृद्धि प्राप्त करता है (भविष्यपु०)।

रथयात्रा–स्त्री० [सं०] आषाढ़ शुक्ला द्वितीया पुष्य नक्षत्रको होनेवाला हिन्दुओंका एक पर्व विशेष जिसमें जगन्नाथजी, वलभद्र तथा सुभद्राकी मूर्तियोंको रथपर चढ़ाकर निकालते हैं। यह उत्सव वहुत प्राचीन है जो पुरीमें वड़ी धूमधामसे मनाया जाता है। जयपुर आदिमें रामचन्द्रजीकी सवारी निकालते हैं और वाल्मीकि रामायणके युद्धकांडका पाठ सुनाते हैं। वौद्ध तथा जैनोंमें जिन या बुद्धकी सवारी

निकालते हैं। पुरीमें इसे 'गुण्डिचा' महोत्सव कहते हैं (स्कंदपु० वैष्णव०, उत्कल-खंड)।

रथसप्तमी–स्त्री० [सं०] माघ शुक्ला सप्तमी जिस दिन सूर्य रथपर चढ़ते हैं। इस दिन व्रत रख सुवर्ण रथमें स्थापित कर सूर्यका पूजन करे। यह क्रम सालभरतक चलता है (मत्स्य०, हेमाद्रि)।

रथाक्ष–पु० [सं०] कुमार कार्त्तिकेयके एक सैनिक अनुचरका नाम (महाभा० शल्य० ४५.६३)।

रथावर्त्त–पु० [सं०] शाकंभरी देवीके दक्षिण अर्धभागमें स्थित एक तीर्थका नाम। यहाँकी यात्रा करनेवाला श्रद्धासम्पन्न यात्री महादेवजीकी अनुकम्पासे परम गतिको प्राप्त होता है (महाभा० वन० ८४.२३)।

रथोत्सव–पु० [सं०] आश्विन शुक्ला चतुर्थीको होनेवाला एक उत्सव। इस तिथिको भगवतीका पूजन कर रथमें चढ़ा घुमावे (दुर्गाभक्तितरंगिणी)।

रथोष्मा–स्त्री० [सं०] पुराणानुसार एक नदीका नाम।

रभस–पु० [सं०] (१) एक राक्षसका नाम (वाल्मी० रामायण)। (२) शत्रुके चलाये हुए अस्त्रको निष्फल करनेकी विधि जिसे श्रीरामने विश्वामित्रजीसे सीखा था (वाल्मी० रामायण)।

रभेणक–पु० [सं०] एक राक्षसका नाम जो नागके रूपमें रहता था, यह तक्षक (नाग) के कुलमें उत्पन्न एक नाग था। जनमेजयके सर्पयज्ञमें अग्निसात् किया गया (महाभा० आदि० ५७.८)।

रमण–पु० [सं०] (१) कामदेवका एक नाम–दे० कामदेव। (२) द्वारकाके निकटवर्ती एक वन विशेषका नाम (महाभा० सभा० ३८.२९)। (३) सूर्यदेवके सारथिका नाम जिसे अरुण कहते हैं। (४) सोम नामक वसुका मनोहराके गर्भसे उत्पन्न पुत्र (महाभा० आदि० ६६.२२)।

रमणक–पु० [सं०] एक वर्ष, जो श्वेत पर्वतके दक्षिण और निषध पर्वतके उत्तर स्थित है। वहाँ जो मनुष्य जन्म लेते हैं वे उच्च कुलोत्पन्न, दर्शनीय तथा मनोहर स्वभावके होते हैं। वहाँ कोई किसीका शत्रु नहीं होता। वहाँके मनुष्य सदा प्रसन्न तथा दीर्घजीवी होते हैं (महाभा० भीष्म० ८.२-४)।

रमा एकादशी–स्त्री० [सं०] इस दिन व्रत करनेसे पापोंका क्षय होता है, अन्य नियम सब एकादशियोंकी तरह होते हैं (ब्रह्मवैवर्त)।

रम्य–पु० [सं०] (१) एक वायुका नाम जिसकी गति ८ से १४ मील प्रति घंटा है (वायु०; हिं.श.सा.)। (२) स्वायंभुव मनु-सुत अग्नीध्रके ९ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (वायु० ३१.१७; ३३.९, ११, ३९)।

रम्यक–पु० [सं०] वायव्य कोणमें स्थित जंबूद्वीपका एक खंड (वर्ष)। यह वर्ष नीलगिरिको लाँघनेपर मिलता है। अर्जुनने उत्तर दिशाविजयके समय इस वर्षपर विजय प्राप्त कर यहाँके निवासियोंपर कर लगाया था (महाभा० सभा० २८.६ के बाद) कहा जाता है कि यहाँके निवासी एक प्रकारके स्थानीय वृक्षको खाकर कई दिनोंतक जीवन-निर्वाह कर लेते हैं।

रम्यग्राम–पु० [सं०] एक गाँव विशेष या राजधानी अथवा वहाँके राजाका नाम जिसे दक्षिण दिग्विजयके समय सहदेवने अपने अधीन कर लिया था (महाभा० सभा० ३१.४)।

रम्या–स्त्री० [सं०] अग्नीध्रके पुत्र रम्यकी पत्नी तथा मेरुकी पुत्रीका नाम (वायु० ६८.१५)।

रवणरेती–स्त्री० [हिं०] यमुना नदीके किनारेकी वह रेतीली भूमि जो गोकुलके समीप थी। कहते हैं कि यहाँ श्रीकृष्ण अपने साथियोंके साथ खेलते थे (श्रीमद्भागवत)।

रवि–पु० [सं०] (१) पुराणानुसार एक आदित्यका नाम (आदित्यपु०)। (२) धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम, जो भीम द्वारा मारा गया था (महाभा० शल्य० २६, १४-१५)। (३) सौवीर देशका एक राजकुमार, जो जयद्रथके रथके पीछे हाथमें ध्वजा लेकर चलता था। यह अर्जुन द्वारा मारा गया (वन० २६५.१०; २७१.२७)।

रवितनय–पु० [सं०] यमराज; सावर्णिमनु; वैवस्वतमनु; शनैश्चर; सुग्रीव; कर्ण; अश्विनीकुमार; ये सब सूर्यपुत्र कहे गये हैं।

रवितीर्थ–पु० [सं०] पुराणानुसार एक प्राचीन तीर्थका नाम।

रविप्रिया–स्त्री० [सं०] पुराणानुसार एक देवीका नाम।

रविवारव्रत–पु० [सं०] मार्गशीर्ष शुक्लपक्षके पहले रविवारसे आरम्भ करे। सूर्यका पूजन कर मध्याह्नमें अलूना पदार्थ खाय तथा वर्ष भर यह व्रत कर उद्यापन करनेसे दाद, कोढ़ आदि रोग दूर होते हैं (व्रतरत्नाकर)। इस व्रतके विधानविशेषके लिए द्रष्टव्य (भविष्यपु०)।

रविसुअन–पु० [सं०] सूर्य-सुत होनेके कारण अश्विनी कुमारोंका एक नाम। ये अश्विनी-रूपी संज्ञाके गर्भसे उत्पन्न सूर्य-पुत्र थे—दे० अश्विनीकुमार। 'किधौं रविसुअन मदन ऋतुपति, किधौं हरिहर वेष बनाये'—तुलसी।

रश्मिकेतु–पु० [सं०] एक राक्षसका नाम।

रश्मिक्रीड़–पु० [सं०] एक राक्षस विशेष (वाल्मी० रामायण)।

रसकल्याणिनीव्रत–पु० [सं०] माघ शुक्ल तृतीयाको प्रातःकाल स्वयं गौके दुग्ध और तिल-जलसे स्नान कर देवीको मधु और ईखके रससे स्नान करावे तथा पहले उनके वामांगोंको पूजकर फिर दक्षिणांगोंको पूजे। तदनन्तर द्विज दम्पतीको दान-सम्मानसे संतुष्ट करे। इस व्रतके करनेसे अग्निष्टोम यज्ञका फल प्राप्त होता है (मत्स्य० ६३.१.२७)।

रसकुल्या–स्त्री० [सं०] पुराणानुसार कुशद्वीपकी सात प्रधान नदियोंमेंसे एक नदीका नाम (भाग० ५.१.३२; २०.१३-१७; मत्स्य० १२२.४९; वायु० ३३.१२; ४९.५१-५८)।

रसधेनु–स्त्री० [सं०] पुराणानुसार एक प्रकारकी गौ जिसकी कल्पना गुड़ आदिके रसमें की जाती है। इसके दानका बड़ा माहात्म्य लिखा है (नारदपु०)।

रसपति–पु० [सं०] चन्द्रमाका एक नाम जो सब वनस्पतियोंको रस देता है। उदा०—"राजपति, रामापति, रमापति, राधापति, रसपति, रासपति, रसापति रामपति"—केशवदास।

रससागर–पु० [सं०] पुराणानुसार प्लक्षद्वीपका एक सागर

जो सात पौराणिक समुद्रोंमेंसे एक है तथा रससे परिपूर्ण कहा गया है (ब्रह्मां० २.१९.१९; वायु० ४९.१७; विष्णु० २.४.११)।

रसातल–पु० [सं०] पुराणानुसार सात लोकोंमेंसे छठे लोकका नाम, जहाँकी भूमि पथरीली है और राक्षस राज्य करते हैं (भाग० २.१.२६; ५.४१; मत्स्य० १५४. ३९७; १६३. ९१; वायु० ४९.१६४; ९७.१८;।

रहस्या–स्त्री० [सं०] भारतवर्षकी एक नदीका नाम जिसका जल भारतीय प्रजा पीती है (महाभा० भीष्म० ९.१९)।

राका–स्त्री० [सं०] (१) विश्रवाकी पत्नी और खर तथा शूर्पणखाकी माताका नाम (रामायण)। (२) उस पूर्णमासीका नाम, जिसमें चन्द्रमा सब कलाओंसे युक्त रहता है।

राक्षस–पु० [सं०] राक्षसोंके तीन भेद माने गये हैं—(१) यक्ष जो कुवेरके कोपके रक्षक हैं, (२) वे असुर, जो देवताओंसे युद्ध किया करते थे और (३) वे जो श्मशानमें निवास करते, शव भोजन करते, ऋषि मुनियोंके यज्ञमें वाधा देते तथा मनुष्योंकों नाना प्रकारकी यातनाएँ देते थे। ये ही तीसरी कक्षावाले शायद पुलस्त्यके वंशज थे जिनका सरदार रावण था। विष्णुपुराणानुसार वे दक्ष-पुत्री खशाके गर्भसे उत्पन्न कश्यप ऋषिके पुत्र थे। रामायणानुसार ब्रह्माने जलकी सृष्टि कर इन राक्षसोंको उसकी रक्षाके हेतु उत्पन्न किया था। राक्षस शब्द रक्ष धातुसे वना है जिसका अर्थ रक्षा करना है। हनुमान्‌जी जव लंका गये थे तव उन्हें भिन्न-भिन्न रूप और रंग तथा आकृतिके राक्षस देखनेको मिले थे जिनका उल्लेख रामायणमें किया गया है।

राजकला–स्त्री० [सं०] चन्द्रमाकी १६ कलाओंमेंसे एक–दे० कला।

राजगृह–पु० [सं०] (१) विहारमें पटनाके पास स्थित एक प्राचीन स्थानका नाम जिसे गिरिव्रज भी कहते थे। महाभारतके अनुसार यहाँ मगधकी राजधानी थी जिसे कुशके पुत्र वसुने सोन और गंगाके संगमपर वसाया था। इसके आस-पास ५ पहाड़ियाँ थीं—वैहार, वराह, वृषभ, ऋषिगिरि और चैत्यक (महाभा०)। वायुपुराणमें इन पहाड़ियोंके नाम ये हैं=वैभार, गिरिव्रज, रत्नकूट, रत्नाचल और विपुल। महावीर तीर्थंकरके समयमें शोणिकने विपुल गिरिके उत्तर सरस्वती नदीके पूर्वमें नवीन राजगृह वसाया जिसे आजकल राजगिरि कहते हैं। महाभारतके समयमें यह मथुरापति कंसके श्वशुर जरासंधकी राजधानी थी। यह स्थान वौद्धों और हिन्दुओंका प्रधान तीर्थस्थान है। जैनियोंके २४वें तीर्थंकर महावीरने प्रथम उपदेश यहीं दिया था तथा २०वें तीर्थंकर मुनि सुव्रतका जन्म और महावीरके ११ मुख्य शिष्योंका निर्वाण यहीं हुआ था अतः जैनियोंका भी यह अति पवित्र तीर्थस्थान हो गया है।

वर्तमान युगकी वैज्ञानिक दृष्टिसे भी इस स्थानका वड़ा माहात्म्य है। यहाँ गर्म पानीके झरने सदा चलते रहते हैं जिनमें स्नान करनेवाला नाना प्रकारके चर्म रोगोंसे तथा पुराने हड्डीके रोगोंसे शीघ्र ही मुक्त हो जाता है। सर जगदीशचन्द्र वोस और डाक्टर पी० सी० रायके समान बड़े वैज्ञानिकोंने इस जलमें पाये जानेवाले द्रव्योंकी सूची वहाँ लिखकर टाँग दी है और इस जलकी मुक्तकंठसे प्रशंसा की है। (२) रामायणानुमार कैकय-राज्यकी राजधानीका नाम राजगृह अथवा गिरिव्रज था जो मगध देशके राजगृहसे भिन्न है। अयोध्यासे दूत गया था और भरत राजगृहसे अयोध्या आये थे। इनके आने-जानेके मार्गका जो उल्लेख रामायणमें है उससे पता चलता है कि यह राजगृह कहीं पश्चिममें था। कनिंगहमके अनुसार वितस्ता (झेलम) नदीके उस पार स्थित जलालपुर तथा उसके समीपके स्थान ही प्राचीन कैकय-राज्यके अन्तर्गत थे। काश्मीर-इतिहास राजतरंगिणीमें 'राजपुरी' नामक एक स्थानका उल्लेख है, संभवतः रामायणका राजगृह ही राजपुरी हो।

राजधर्म–पु० [सं०] कश्यप ऋषिके पुत्र एक वकराजका नाम जो सारसोंके राजा कहे गये हैं इनका दूसरा नाम नाडीजंघ था। यह ब्रह्माके मित्र भी कहे गये हैं (महाभा० शांति० १६९.१९-२०)।

राजराजेश्वरी–स्त्री० [सं०] महाविद्या दस हैं—काली, तारा, षोडशी, भुवनेश्वरी, भैरवी, छिन्नमस्ता, धूमावती, वगलामुखी, मातंगी और कमलात्मिका। भुवनेश्वरीका ही दूसरा नाम राजराजेश्वरी लिखा है (विष्णु० १.९.१२०; ब्रह्मां० ४.१८.१६)।

राजसूय–पु० [सं०] एक यज्ञ विशेष जिस यज्ञके करनेके पश्चात् राजा सम्राट् कहलाता है। पवित्र नामक सोमयज्ञसे इसका आरंभ और सौत्रामणीसे इसकी समाप्ति होती है। युधिष्ठिर आदिने राजसूय यज्ञ किया था। 'इष्टि, पशु, सोम और दर्वीहोम' इसके प्रधान अंग हैं (शतपथ-ब्राह्मण)।

राजस्तंब–पु० [सं०] एक ऋषिका नाम।

राजाधिदेवी–स्त्री० [सं०] राजा शूरसेनकी एक पुत्रीका नाम (हि० वि० को०)।

राजि–पु० [सं०] (रजि ?) आयु और स्वर्भानवीके ५ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र तथा ऐलका पौत्र—दे० ऐल और आयु तथा (भाग० २.७.४४; ब्रह्मां० २.२८.१-२; महाभा० आदि० ७५.२५)।

राज्ञी–स्त्री० [सं०] सूर्यकी तीन पत्नियाँ थीं—(१) विश्वकर्माकी पुत्री संज्ञा, (२) रैवतकी पुत्री राज्ञी और (३) प्रभा। राज्ञीसे उत्पन्न पुत्रका नाम रेवत था (मत्स्य० ११.५,९; २४८.७३; ब्रह्मां० ३.५९.३२-७७; ४.३५.४७; भाग० ६. ६.४१)।

राज्यप्राप्तिव्रत–पु० [सं०] इसे कार्त्तिक शु० १० से आरंभ करते हैं जिसमें क्रतु, दक्ष, वसु, सत्य, काल, काम, मुनि, कुरुवान्, मनुज, परशुराम और विश्वेदेवोंकी पूजा होती है और अन्तमें सुवर्णादि दान देते हैं (विष्णुधर्मोत्तर)।

राज्यवर्धन–पु० [सं०] दमके पुत्र एक राजा तथा दक्षिण देशके राजा विदूरथकी पुत्री मानिनीके पति। इनके वृद्ध होनेपर राज्यके ब्राह्मण आदि लोगोंने कामरूप पर्वतपर गुरुविशाल वनमें जा सूर्यदेवको स्तुतिसे प्रसन्न कर राजा राज्यवर्धनको पुनः युवा वना दिया था (मार्कण्डेयपु०)। इसपर राजाने रानी मानिनी सहित उपर्युक्त वनमें जा फिर सूर्यकी आराधना की जिससे इनकी प्रजाकी भी आयु इनके ही समान हो गयी थी और लोग इन्हें राज्यवर्धनसे आयुवर्धन कहने लगे थे (मार्कण्डेयपु०-सूर्यमहिमा)।

राधा–स्त्री० [सं०] (१) धृतराष्ट्रके सारथि अधिरथकी पत्नी-

का नाम, जिसने कुन्तीके गर्भसे उत्पन्न सूर्यके पुत्र कर्णको पुत्रवत् पाला था। कर्णको इसीसे राधेय कहते हैं। अधिरथ धृतराष्ट्रका सारथि था, इसीसे कर्ण कौरवोंकी ओरसे कुरुक्षेत्र-में लड़ा था (महाभा० आदि० ६७.१४०; ११०.२४)। (२) अयनघोष गोपकी पत्नी तथा वृषभानु गोपकी पुत्री और श्रीकृष्णकी विख्यात प्रेयसीका नाम। श्रीमद्भागवतमें राधा-का कहीं उल्लेख नहीं है पर ब्रह्मवैवर्त और देवीभागवतमें राधाका वर्णन है। इनके जन्मकी भिन्न-भिन्न कथाएँ मिलती हैं। ऐसी प्रसिद्धि है कि जन्म लेते ही यह पूर्णवयस्का हो गयी थी। श्रीकृष्णके साथ इनका विवाह नहीं हुआ था लेकिन गर्गसंहिता आदि कई ग्रंथोंके अनुसार इनका विवाह श्रीकृष्णसे हुआ था जिसका वर्णन भी उक्त ग्रंथोंमें है। ब्रह्मवैवर्त्त पुराणानुसार गोलोककी राधा, सुदामाके शापसे वृन्दावनमें वृषभानुके यहाँ उत्पन्न हुई थीं। सब स्थानोंपर इनका नाम श्रीकृष्णके नामके साथ मिलता है। अबतक इनके वृंदा आदि सोलह नाम मिले हैं (ब्रह्मवैवर्त्त तथा देवीभाग०)।

राधाकुंड–पु० [सं०] गोवर्धन पर्वतके निकटस्थ एक प्रसिद्ध सरोवर (देवीभाग०)।

राधाभेदी–पु० [सं०] अर्जुनका एक नाम—दे० अर्जुन। तथा (हि० वि० को०)।

राधाष्टमी–स्त्री० [सं०] भाद्रपद शुक्लाष्टमी जिसदिन राधा-का जन्म हुआ था, अतः इस दिन व्रत करते हैं। विधिवत् व्रत करनेवाला व्यक्ति व्रजका रहस्य जान लेता है तथा राधा-परिकरोंमें निवास करता है (बृहन्नारदीयपु० पू० अध्याय ११७)।

राधिक–स्त्री० [सं०] राजा जयसेनका पुत्र अयुतका पिता तथा क्रोधनका दादा (भाग० ९.२२.१०-११)।

राधेय–पु० [सं०] कर्णका एक नाम (राधा-२; महाभा० आदि० ११०.२४)।

राम–पु० [सं०] (१) परशुरामजीका नाम जो विष्णुके अंशावतार माने जाते हैं—दे० परशुराम (भाग० १.३.२०, २.७.२२)। (२) श्रीकृष्णके बड़े भाई बलरामका नाम—दे० बलराम तथा (भाग० ९.३.३३-६)। (३) सूर्यवंशी महाराज दशरथके पुत्र जो दस अवतारोंमेंसे एक माने जाते हैं—दे० रामचन्द्र, रामच० मानस बालका०।

रामक्षेत्र–पु० [सं०] पुराणानुसार दक्षिण भारतका एक प्राचीन तीर्थस्थान (स्कंदपु० तापी-खं० ७३ अ० भाग०)।

रामखंड–पु० [सं०] पुराणानुसार एक प्राचीन तीर्थस्थानका नाम (स्कंद तथा विष्णु०)।

रामगंगा–पु० [सं०] पीलीभीतके निकटसे निकली एक नदी जो कन्नौजके समीप गंगामें मिलती है।

रामगिरि–पु० [सं०] एक छोटा पर्वत जो कुछके मतानुसार चित्रकूट पर्वत ही है। अन्य मतसे इसे नागपुर जिलांतर्गत होना चाहिये। कालिदासजीने भी इसका उल्लेख अपने काव्यमें किया है—दे० मेघदूत।

रामचंद्र–पु० [सं०] त्रेता युगमें कौशल्याके गर्भसे उत्पन्न अयोध्याके राजा दशरथके बड़े पुत्र जो विष्णु भगवान्‌के मुख्य अवतारोंमें माने जाते हैं। इनकी पूरी कथा रामायण-में दी हुई है। वशिष्ठ मुनिकी देख-रेखमें इन्होंने शिक्षा पायी थी। बाल्यावस्थामें ही विश्वामित्रके यज्ञकी रक्षा करते समय इन्होंने अनेक राक्षसोंको मारा था—दे० ताड़का, सुबाहु। इसके पश्चात् यह विश्वामित्र तथा अपने छोटे भाई लक्ष्मणके साथ जनकपुर गये जहाँ शिवजीका धनुष तोड़ सीतासे विवाह किया। परशुरामजीसे यहाँ इनका कुछ वाद-विवाद हुआ था (वा०रा० १.७६.३, ६-७)। विवाहोप-रांत पिता इन्हें राजगद्दी देना चाहते थे पर कैकेयीके कहने से इन्हें १४ वर्षोंका वनवास दिया। पिताकी आज्ञानुसार यह वन गये और जानकी तथा लक्ष्मण इनके साथ ही गये। इस शोकसे इनके पिताका स्वर्गवास हो गया। कैकेयी अपने पुत्र भरतको राजा बनाना चाहती थी जिसे भरतने अस्वीकार किया। उस समय श्रीराम चित्रकूटमें थे अतः उन्हें लौटा लानेके लिए भरत चित्रकूट गये, पर जब यह नहीं आये तब भरत रामकी खड़ाऊँ लेकर लौट आये और उसे ही राजसिंहासनपर स्थापित कर राजकाज देखने लगे। चित्रकूटमें अधिक रहना ठीक नहीं समझ श्रीराम सबके साथ अत्रि ऋषिसे मिलते हुए अगस्त्य ऋषिके आश्रम पर पहुँचे और उन्हींके आदेशानुसार गोदावरीके किनारे नासिकके पास 'पंचवटी' नामक स्थानपर जा कुटिया बना निवास करने लगे। रामायणानुसार यह स्थान दंडकारण्य-के अन्तर्गत है जहाँसे लंकापति रावण छलसे सीताजीको हर ले गया। इसपर राम-रावण युद्ध हुआ और रावण अपने साथियों सहित मारा गया। रावणके छोटे भाई विभीषणको लंकाका राज्य दे सीताजीको लेकर श्रीराम अयोध्या लौट आये क्योंकि वनवासकी अवधि समाप्त हो चुकी थी। अब प्रजाको पूर्णतया संतुष्ट रख यह सुखसे राज्य करने लगे। आजतक अच्छे राज्यकी उपमा राम-राज्यसे ही दी जाती है। म० गांधीजीका 'रामराज्य' इसी ओर संकेत करता है (वाल्मी० रामायण; रामचरितमानस तथा परिशिष्ट झ)।

रामजयंती–स्त्री० [सं०] भगवतीकी एक मूर्ति (हि० वि० को०)।

रामटेक–पु० [हिं०] रामगिरि, एक पहाड़ी जो नागपुर जिलेमें स्थित है। यह इस प्रांतका एक प्रसिद्ध तीर्थस्थान है जहाँ श्रीरामका एक मंदिर भी है (रामायण)।

रामतारक–पु० [सं०] श्रीरामचन्द्रजीका मंत्र जो जपा जाता है। यह मंत्र इस प्रकार है—'रां रामाय नमः'। कहते हैं कि काशीमें मरनेवाले व्यक्तिको शिवजी इसी मंत्रका उपदेश दे मुक्ति दिलाते हैं (स्कंदपु० काशी-खंड)।

रामदास–पु० [सं०] (१) राम-भक्त हनुमान्‌का एक नाम (रामच० मा०)। (२) दक्षिण भारतके एक प्रसिद्ध महात्मा जिनका जन्म शक संवत् १५३० रामनवमीको गोदावरी तटपर बसे जम्बू नगरमें हुआ था। यह छत्रपति शिवाजीके गुरु थे। इनकी मृत्यु शक सं० १६०३ में हुई थी—दे० कल्याण भक्ति अंक तथा भारतका इतिहास।

रामधाम–पु० [सं०] साकेत लोक जहाँ भगवान रामके रूपमें नित्य विराजमान रहते हैं (हि० वि० को०)।

रामनवमी–स्त्री० [सं०] चैत्र शुक्ला नवमी जिस दिन मध्याह्न कालमें श्री रामचंद्रजीका जन्म हुआ था। इस तिथिको हिन्दू व्रत तथा जन्मोत्सव करते हैं। यह व्रत

नित्य, नैमित्तिक तथा काम्य भेदसे तीन प्रकारका होता है और दूसरे दिन दशमीको विसर्जन कर पारणा करनेका विधान है (विष्णुधर्मोत्तर)।

रामरक्षा–स्त्री० [सं०] विश्वामित्रजीका बनाया एक स्तोत्र जिससे अभिमंत्रित व्यक्ति सब प्रकारकी बाधाओंसे सुरक्षित रहता है (विष्णु०, रामायण)।

रामरज–स्त्री० [सं०] एक प्रकारकी पीली मिट्टी। रामभक्त इसका व्यवहार उसी प्रकार करते हैं जैसे कृष्णभक्त गोपीचंदनका। यह अधिकतर चित्रकूटकी मंदाकिनी नदीके किनारे-किनारे मिलती है (रामायण)।

रामवल्लभी–पु० [सं०] बंगालके एक वैष्णव सम्प्रदायका नाम (हि·श·सा)।

रामशिला–स्त्री० [सं०] गयाकी एक पहाड़ी जो तीर्थस्थान है (स्कंदपु० मानस० रामशिला-माहा०)।

रामसर–पु० [सं०] पुराणानुसार एक प्राचीन तीर्थका नाम, जिसमें स्नानकरनेसे मानव पापमुक्त हो जाता है (तापीखं० २६.२.१२)।

रामसेतु–पु० [सं०] रामेश्वरम्‌के निकट पहाड़ोंकी चट्टानोंका समूह जो समुद्रमें हैं। कहते हैं राम-रावण युद्धके समय श्रीरामचंद्रजीने यह पुल बँधवाया था—दे० 'सेतुबंध' तथा वाल्मी० रामायण युद्ध० २२.४०-४१; रामच० मानस० सुन्दर० ५९.१-२; लंका० १।

रामानंद–पु० [सं०] एक वैष्णव आचार्य जिनका जन्म पुण्यसदन या भूरिकर्मा नामक कान्यकुब्ज ब्राह्मणके घर सन् १३५६ ई० में प्रयागमें हुआ था और लोग इन्हें रामदत्त कहते थे। रामानुजी सम्प्रदायके श्री राघवानंदके यह शिष्य हुए और तभीसे रामदत्त रामानंद हुए। यह 'रामावत' सम्प्रदायके प्रवर्त्तक थे जो अबतक प्रचलित है। सन् १४६७ में इनकी मृत्यु हुई थी (कल्याण-भक्ति अंक)।

रामानुज–पु० [सं०] (१०३७-११३७ ई०)। श्रीवैष्णवसम्प्रदायके प्रवर्त्तक एक प्रसिद्ध आचार्य जिनका जन्म सं० १०७३ में तथा सं० ११०; में मृत्यु हुई थी। इनका सिद्धान्त 'विशिष्टाद्वैत' कहलाता है। भगवान् नारायणकी सेवा प्राप्त होना ही 'परम पुरुषार्थ' है। भगवान्‌के इस दासत्वकी प्राप्ति ही भक्ति है। इनके सिद्धान्तके अनुसार यह माना गया है कि जीवात्मा और जगत् दोनों ब्रह्मसे भिन्न होनेपर भी वास्तवमें भिन्न नहीं हैं (कल्याण–भक्ति अंक, भारतीयदर्शन, पं० बलदेव उपाध्यायकृत, १९४२ पृष्ठ ४८३)।

रामायण–पु० [सं०] एक प्रसिद्ध ग्रंथका नाम जिसमें श्रीरामचंद्रकी पूरी कथा दी हुई है। संस्कृतमें इस नामके अनेक ग्रंथ हैं जिनमें वाल्मीकिकृत अधिक प्रसिद्ध तथा प्रामाणिक माना जाता है। वाल्मीकि श्रीरामचंद्रके समकालीन थे इससे उनका ग्रंथ अधिक प्रामाणिक है। यह सात कांडों (खंडों) में विभाजित है जिनमें अनेक सर्ग हैं। गोस्वामी तुलसीदासजीने जो प्रसिद्ध भाषा काव्य लिखा है उसे 'रामचरितमानस' कहते हैं। यह ग्रंथ प्रायः हर हिन्दी जाननेवालेके पास मिलता है और अपनी बुद्धिके अनुसार सभी लोग इसका अर्थ समझ लेते हैं। यह वाल्मीकि रामायणसे अधिक प्रचलित है (वाल्मी० रामायण तथा रामच० मानस)।

रामावत–पु० [सं०] एक प्रसिद्ध सम्प्रदायका नाम जिसके प्रवर्त्तक रामानंदजी थे। इसमें जाति-पाँतिका कोई भेद नहीं है। ईश्वरकी भक्ति रामकी उपासनासे प्राप्त हो सकती है जिसके अधिकारी मनुष्य मात्र हैं (भारतीयदर्शन)।

रामेश्वर–पु० [सं०] दक्षिण भारतका एक प्रसिद्ध शिवलिंग जिसकी स्थापना लंका जानेके लिए पुल बाँधते समय श्रीरामचंद्रने की थी। कोई भी शिल्प कार्य आरम्भ करनेके पहले देवस्थापना करनेकी प्राचीन प्रथा थी। तदनुसार श्रीरामचन्द्रने पुल बनानेके पहले रामेश्वरकी स्थापना तथा पूजन करनेके बाद पुल बाँधनेमें हाथ लगाया था। ज्येष्ठ शु० १०, बुधवार, हस्तनक्षत्र, गदकरण, आनंद तथा व्यतीपात योग, कन्याराशिके चन्द्रमा तथा वृषके सूर्यमें इसकी स्थापना हुई थी (रामच० मानस, लंका० १-२.२)। रामेश्वरम् भारतके सबसे मुख्य और बड़े तीर्थोंमें तथा चार धामोंमेंसे एक माना जाता है। 'रामनाथ महादेव मां रक्ष करुणानिधे। इति यः सततं ब्रूयात् कलिनाऽसौ न बाध्यते ॥' (स्कंदपु० ब्राह्म० सेतु-माहात्म्य-४३.७१)।

रामोद–पु० [सं०] एक ऋषिका नाम (हि·वि·को)।

रामोपनिषद्–पु० [सं०] अथर्ववेदके अंतर्गत एक उपनिषद् (भारतीयदर्शन)।

रावण–पु० [सं०] लंकाका प्रसिद्ध राजा जिसे श्रीरामचंद्रने मारा था। विष्णुसे हारकर राक्षसगण पाताल भाग गये थे जिनमें सुमाली नामक एक राक्षस भी था जिसकी कैकसी या निकषा नामकी एक पुत्री थी। रावण पुलस्त्य-पुत्र विश्रवाका लड़का था जो इसी कैकसीके गर्भसे उत्पन्न हुआ था। इसके दस सिर थे और रूप अत्यन्त विकराल तथा स्वभाव अति क्रूर था। इसके बाद कैकसीको कुभकर्ण और विभीषण नामके दो पुत्र तथा शूर्पणखा नामकी एक पुत्री थी। पूर्व जन्ममें यह कैकय नरेश प्रतापभानु था पर ब्राह्मणोंके शापसे परिवार सहित रावण हुआ (रामचरित मानस बाल०, दो० १७५-१७६)। रावणने अपने सौतेले भाई कुबेरकी समता करनेकी इच्छासे भाइयों सहित १०,००० वर्षोंतक तपस्या की पर कुछ सिद्धि न मिली। इसने खीजकर अपने दसों सिर काटकर अग्निमें डाल दिये तब ब्रह्माने प्रसन्न हो वर दिया कि—दैत्य, दानव, यक्ष आदिमेंसे कोई तुम्हें मार न सकेगा (रामच० मानस बाल० १७६.१-३)। तदनन्तर सुमालीकी सलाहसे इसने कुबेरकी लंकापर अधिकार जमा लिया।

रावणका विवाह मय दानवकी पुत्री मंदोदरीसे हुआ था जिसके गर्भसे इसका महाप्रतापी पुत्र मेघनाद उत्पन्न हुआ था। ब्रह्माके वरके प्रभावसे इसने (रावणने) तीनों लोक जीत लिये और अब इसका अत्याचार बहुत बढ़ गया था। एक बार सहस्रार्जुनने इसे युद्धमें परास्त कर बंदी बना लिया था पर पुलस्त्यके कहनेसे छोड़ दिया। बालीने भी इसे बुरी तरह परास्त किया था। एक बार दंडकारण्यसे यह श्रीरामकी पत्नी जानकीको माघ कृ० ८ वृंद मुहूर्त्तमें, जब राम और लक्ष्मण दोनों आश्रमसे बाहर थे, छलसे हर ले गया था। इसपर रामचंद्रने इन्द्रके भेजे रथपर सवार हो जिसे मातलि हाँक रहा था घोर युद्ध करके अन्तमें ब्रह्मास्त्र-

के प्रयोगसे इसे मार डाला था—दे॰ निकषा; विश्रवा; सुमाली; स्कंदपु॰ ब्राह्म॰ सेतु-माहा॰।

रावणगंगा–पु॰ [सं॰] पुराणानुसार सिंहल द्वीपकी एक नदीका नाम (स्कंदपु॰ ब्राह्म॰ सेतु-माहात्म्य)।

रावल–पु॰ [सं॰] (१) मथुराके निकटस्थ एक गाँवका नाम जहाँ राधिकाका जन्म हुआ था (देवीभाग॰)। (२) श्री बदरीनाथके प्रधान पंडाकी उपाधि (स्कंदपु॰ बदरिकाश्रम–माहा॰)।

राष्ट्र–पु॰ [सं॰] पुराणानुसार पुरूरवा-वंशोत्पन्न काशिका पुत्र दीर्घतमाका पिता (भाग॰ ९.१७.४)।

राष्ट्रपाल–पु॰ [सं॰] मथुरापति कंसके आठ भाइयों तथा उग्रसेनके कंस प्रमुख नौ पुत्रोंमेंसे एकका नाम (भाग॰ ९.२४.२४)।

राष्ट्रभृत्–पु॰ [सं॰] राजा भरतका एक पुत्र (भाग॰ ९.२०.१७-३५; मत्स्य॰ ४९.११-५; २८-३; वायु॰ ९९.१३४ आदि)।

राष्ट्रवर्धन–पु॰ [सं॰] श्रीरामचंद्र (श्री दशरथ) के एक मंत्रीका नाम (वाल्मी॰ रामायण॰ बाल॰ ७.३)।

रासपूर्णिमा–स्त्री [सं॰] अगहनकी पूर्णिमा जिस दिन श्रीकृष्णने रासक्रीड़ाका आरम्भ किया था (भाग॰ १०.२९.१-४६)।

रासभ–पु॰ [सं॰] एक दैत्य जिसका नाम धेनुक था और जो गर्दभके रूपमें रहता था। यह तालवनमें बलदेवजी द्वारा मारा गया था (भाग॰ १०.१५.२३,.३३)।

रासयात्रा–स्त्री॰ [सं॰] (१) पुराणानुसार शरत्पूर्णिमाको होनेवाला एक उत्सव (देवीभाग॰)। (२) चैत्रपूर्णिमाको होनेवाला शाक्तोंका एक उत्सव (हि॰श॰सा॰)।

राहु–पु॰ [सं॰] पुराणानुसार नव ग्रहोंमेंसे एक, जो सिंहिकाके गर्भसे उत्पन्न विप्रचित्तिका पुत्र था। देवताओंकी पंक्तिमें बैठकर इसने चोरीसे अमृत पी लिया था। सूर्य और चन्द्रमाने इसका यह कृत्य देखकर विष्णुसे कह दिया। विष्णुने चक्रसे इसका शिर काट लिया। यह अमृत पी चुका था इससे अमर हो गया। इसका मस्तक 'राहु' और धड़ 'केतु' हो गया। तबसे यह चन्द्रमा और सूर्यसे वैर रखता है और समय-समयपर सूर्य और चन्द्रमाको केतु और राहुके रूपमें ग्रसता आता है जिसे ग्रहण कहते हैं। (मत्स्य॰ १.९; २४९.१४ से अन्ततक; अध्याय–२५०, २५१; वायु॰ २३.९०; ५२.३७; ९२.९; विष्णु॰ १.९०.८०-१११)।

रिपु–पु॰ [सं॰] पुराणानुसार शिष्टिके सुच्छायाके गर्भसे उत्पन्न ५ पुत्रोंमेंसे पुत्रका नाम, यह ध्रुवका पोता था। इसकी पत्नीका नाम बृहती और पुत्रका नाम चाक्षुष था (विष्णु॰ १.१३.१-२)।

रिपुञ्जय–पु॰ [सं॰] (१) राजा मनुके वंशोत्पन्न एक राजाका नाम। यह एक बार अविमुक्त क्षेत्रमें घोर तप कर रहे थे जहाँ प्रजापति ब्रह्माने इन्हें दर्शन दिया और इन्हें पृथ्वीपर शासन करनेका आदेश दिया था। देवता भी इन्हें स्वर्गीय रत्न तथा पुष्प प्रदान करते रहेंगे अतः 'दिवो दास्यन्ति' व्युत्पत्तिके अनुसार इनका नाम दिवोदास हुआ था (स्कंदपु॰ काशी-खंड, पूर्वार्ध)। (२) शिष्टि-पुत्र रिपुका एक भाई (विष्णु॰ १.१३.२)।

रिष्यमूक–पु॰ [सं॰ ऋष्यमूक] एक पर्वतका नाम जो दक्षिण भारतमें है जहाँ श्रीरामचंद्रकी सुग्रीवसे मित्रता हुई थी (रामच॰मा॰ किष्किंधा॰)।

रुक्म–पु॰ [सं॰] रुक्मिणीके एक भाईका नाम।

रुक्मकेश–पु॰ [सं॰] विदर्भ नरेश भीष्मकका छोटा पुत्र।

रुक्मपुर–पु॰ [सं॰] पुराणानुसार एक नगर जहाँ गरुड़ रहते थे।

रुक्ममाली–पु॰ [सं॰] विदर्भनरेश भीष्मकका एक पुत्र (विष्णु॰ ५ अंश)।

रुक्मबाहु–पु॰ [सं॰] पुराणानुसार विदर्भ देशके राजा भीष्मकके एक पुत्र (विष्णु॰ पंचम अंश)।

रुक्मरथ–पु॰ [सं॰] (१) मद्रराज शल्यके एक पुत्रका नाम जो अपने पिता और भ्राता रुक्माङ्गदके साथ द्रौपदी स्वयंवर में सम्मिलित हुआ था। यह महाभारत युद्धमें वीर अभिमन्यु द्वारा मारा गया (महाभा॰ आदि॰ १६५.१४ द्रोण॰ ४५.९-१३)। (२) राजा भीष्मकके एक पुत्रका नाम (विष्णुपु॰ पंचम अंश)। (३) सोनेके रथपर चलनेके कारण द्रोणाचार्यका भी यह नामान्तर (रुक्मरथ नाम) था (महाभा॰ विराट॰ ५८.२)।

रुक्मसेन–पु॰ [सं॰] रुक्मिणीका छोटा भाई (विष्णु॰ पंचम अंश)।

रुक्मांगद–पु॰ [सं॰] (१) एक सार्वभौम राजा जो बड़ा विष्णु भक्त था। इसके राज्यमें सब लोग राजाज्ञाके अनुसार एकादशी व्रत करते थे अतः उन्हें विष्णुलोक प्राप्त होता था। यमलोक शून्यसा हो गया अतः यमकी असमर्थता देख ब्रह्माजीने 'मोहिनी' अप्सराको रुक्मांगदका व्रत भंग करनेको भेजा पर उसके सारे उपाय निरर्थक हुए और वह राजा रुक्मांगदके पुरोहित विप्रवर 'वसु'के शापसे जलकर भस्म हो गयी थी पर देवताओंके अनुनय विनयसे उसे दशमीके अंतभागमें स्थान मिला था। रुक्मांगदकी बड़ी रानी संध्यावली थी जो राजकुमार धर्माङ्गदकी माता थी। रुक्मांगद वैदिशनगरके राजा थे (नारदपु॰ उत्तर॰ ६.३; ७.६, १०.३७-३८; ११.२१-२३; १३.३-४, १८.१९; १४.३९-४१)। (२) मद्रराज शल्यका दूसरा पुत्र (महाभा॰ आदि॰ १८५.१४)।

रुक्मिणी–स्त्री॰ [सं॰] विदर्भनरेश भीष्मककी पुत्री तथा श्रीकृष्णकी पटरानियोंमें सबसे बड़ी और पहली (भाग॰ ३.३.३; विष्णु॰ ५.२६.१) हरिवंशके अनुसार श्रीकृष्ण इनपर तथा रुक्मिणी कृष्णपर आसक्त थी पर श्रीकृष्णने कंसकी हत्या की थी इससे रुक्मिणीका भाई रुक्मी उनसे रुष्ट था। रुक्मिणीका विवाह जरासंधकी प्रेरणा तथा रुक्मी की सहमतिसे शिशुपालके साथ ठीक हो गया और विवाहके एक दिन पहले जब रुक्मिणी इन्द्राणीकी पूजा करने मंदिरमें गयी तभी श्रीकृष्ण भी बलरामके साथ रथ लिये वहीं उपस्थित थे। उसके मंदिरसे बाहर आते ही रुक्मिणीको रथपर बैठा श्रीकृष्ण चल दिये। समाचार पाकर शिशुपालादि श्रीकृष्णसे युद्ध करने लगे पर सब परास्त हुए। तदनन्तर श्रीकृष्ण द्वारका पहुँचे जहाँ रुक्मिणीके संग उनका विवाह हुआ। रुक्मिणीके गर्भसे श्रीकृष्णके दस पुत्र और एक पुत्री हुई थी। पुराणानुसार रुक्मिणी लक्ष्मीका अवतार

थी। इनके प्रद्युम्न, चारुदेष्ण, सुदेष्ण, चारुदेह, सुपेण, चारुगुप्त, भद्रचारु, चारुविंद, सुचारु और चारु ये दस पुत्र थे और चारुमती नामकी एक पुत्री (विष्णु० ५.२८.१-२; भाग० १०.५२.१६, २१-२२; ५३.७-३५)।

रुक्मिणी अष्टमी–स्त्री० [सं०] पौप कृष्णाष्टमीको रुक्मिणीका पूजन करे।

रुक्मी–पु० [सं०] विदर्भनरेश भीष्मकके ज्येष्ठ पुत्र तथा रुक्मिणीके भाई। रुक्मिणी-हरणके समय श्रीकृष्णके साथ नर्मदा तटपर इनका भीषण युद्ध हुआ था, तदुपरान्त भोजकट नामक एक दूसरा नगर वसा यह वहीं रहने लगे (विष्णु० ५.२६.१; भाग० १०.५२.१६, २१-२२; ५३.७-३५)।

रुचक–पु० [सं०] पुराणानुसार सुमेरु पर्वतके निकटका एक पर्वत (ब्रह्मां०)।

रुचि–पु० [सं०] (१) एक प्रजापतिका नाम जो रौच्य मनुके पिता थे। (२) स्त्री०—अलकापुरीकी एक अप्सराका नाम, जिसने अष्टावक्रके स्वागतके अवसरपर कुवेर-भवनमें नृत्य किया था (महाभा० अनु० १९.४४)। (३) महर्षि देवशर्मा की पत्नीका नाम, जो अनुपम सुन्दरी थी अतः इसपर इन्द्र आसक्त हुए थे अतः उसकी रक्षाका भार अपने शिष्य विपुलपर छोड़ ऋषि यज्ञार्थ वाहर गये। मोहित इन्द्रका आना-जाना और परिचय देना शुरू हुआ पर शिष्यने पूरी चौकसी की। ऋषिके आनेपर उनकी पत्नी सुरक्षित उन्हें सौंप दी (महाभा० अनु० ४०.१७.१८, २१-४१, ५८-६०; ४१.२-८, २७-२९)।

रुचिपर्वा–पु० [सं०] राजा आकृतिका पुत्र, जिसने भीमकी रक्षाके निमित्त भगदत्तके हाथीपर आक्रमण किया और भगदत्त द्वारा मारा गया (महाभा० द्रोण० २६.५१-५३)।

रुचिप्रभ–पु० [सं०] एक दैत्यका नाम, जो प्राचीन कालमें पृथ्वीका शासक था (महाभा० शांति० २२७.५२)।

रुचिमती–स्त्री० [सं०] महाराज उग्रसेनकी रानीका नाम जो श्रीकृष्णकी नानी तथा वसुदेवकी सास थी (भाग० ९.२४.२४; ब्रह्मां० १.१.१२५; ३.७१.१३२; वायु० १.१४८; ९६.१३१, १७३, २१६ आदि)।

रुचिर–पु० [सं०] सेनजित्का एक पुत्र—दे० सेनजित्।

रुणा–स्त्री० [सं०] सरस्वती नदीकी एक सहायक शाखा (महाभा०)।

रुद्र–पु० [सं०] (१) सृष्टिके आरम्भमें ब्रह्माकी भौंहोंसे उत्पन्न एक प्रकारके देवता जो क्रोधरूप माने जाते हैं और जिनसे भूत, प्रेत, पिशाचादि उत्पन्न कहे जाते हैं। अज, एकपाद्, अहिर्बुध्न्य, पिनाकी, अपराजित्, त्र्यम्बक, महेश्वर, वृपाकपि, शंभु, हरण और ईश्वर ये ही कुल ग्यारह रुद्र हैं। गरुड़पुराणमें इनके जो नाम दिये हैं वे कुछ भिन्न हैं पर संख्या ग्यारह ही है। कूर्मपुराणानुसार जव ब्रह्मा सृष्टि उत्पन्न न कर सके तव मारे क्रोधके उनकी आँखोंसे आँसू निकल पड़े जिससे भूत-प्रेतोंकी सृष्टि हुई और उनके मुखसे ग्यारह रुद्र निकल आये। ब्राह्मण-ग्रंथोंके अनुसार ये उत्पन्न होते ही जोर-जोरसे रोने लगे थे (रुद्र = रोना) इसीसे इनका नाम रुद्र पड़ा। वैदिक साहित्यमें अग्निको ही रुद्र माना है जिन्हें अग्नि-रूपी, वृष्टि करनेवाला और गरजनेवाला देवता कहा गया है। इन्हें अपार्थ भी कहते हैं (ब्रह्मां० ४.३४.४२; गरुड़पु०; कूर्मपु०; भाग ६.६.१७)। (२) भगवान शंकरका एक रूप जो कामदेवको भस्म करनेके समय और दक्षका यज्ञ ध्वंस करते समय उन्होंने धारण किया था। शंकरकी उपासना जव रुद्र या महाकालके रूपमें की जाती है तव उन्हें महाप्रलय या सारी सृष्टिको ध्वंस करनेवाला देवता समझा जाता है। लेकिन महाप्रलयके पीछे ही नयी सृष्टिका भाव छिपा रहता है शायद इसीसे भगवान शंकरकी पूजा 'लिंग और योनि' रूपमें की जाती है, क्योंकि ये अंग ही सृष्टिके द्योतक समझे जाते हैं। लिंग = पुरुषकी शक्ति = शिवका पुलिंग रूप और 'योनि' = शंकरकी उत्पादन शक्तिका स्त्रीलिंग रूप समझना चाहिये। संहारके पश्चात् शंकर सृष्टि भी करते हैं, इसके दोनों कार्योंने ही शंकरको 'महादेव' वना दिया है जिसे 'ईश्वर'की संज्ञासे विभूपित कर दिया गया है—दे० (शिव, महाकाल; मत्स्य० ४.५ पूरा; वायु० ३० पूरा)। विश्वकर्माके एक पुत्रका नाम।

रुद्रकाली–स्त्री० [सं०] (भद्रकाली) उमाका नामांतर। वीरभद्रके साथ इन्होंने जव दक्षका यज्ञ ध्वंस किया तवसे इन्हें रुद्रकाली कहते हैं (मत्स्य० ४.५; वायु० ३०.१४०-४१; ब्रह्मां० ४.३४.४)।

रुद्रकुंड–पु० [सं०] व्रजके अन्तर्गत एक तीर्थका नाम (देवी भाग०)।

रुद्रकोटि–पु० [सं०] एक प्राचीन तीर्थका नाम। महाभारतानुसार यहाँ दर्शनार्थी करोड़ों ऋषि-मुनियोंपर प्रसन्न हो शिवजीने करोड़ों शिव-लिंगोंके रूपमें उन्हें दर्शन दिया था। इस तीर्थमें स्नान करनेसे अश्वमेधयज्ञका फल प्राप्त होता है (वन० ८२.११८-१२४; ८३.७७)।

रुद्रगण–पु० [सं०] पुराणानुसार शंकरके गण जिनकी संख्या ३६,००,००,००० तक कही गयी है। इनके शिरपर जटा और मस्तकपर अर्धचंद्र रहता है (मत्स्य० ४.५; वायु० ३०.१४२-४३; ब्रह्मां० ४.३४.४)।

रुद्रपद–पु० [सं०] एक तीर्थका नाम, जहाँकी यात्रा कर शिवजीकी पूजा करनेसे अश्वमेधयज्ञका फल प्राप्त होता है (महाभा० वन० ८२.१००)।

रुद्रपीठ–पु० [सं०] तंत्रानुसार एक तीर्थका नाम।

रुद्रपुत्र–पु० [सं०] वारहवें मनु रुद्रसावर्णिका एक नाम (स्कंदपु०)।

रुद्रप्रमोक्ष–पु० [सं०] एक स्थान विशेपका नाम जहाँसे पुराणानुसार शंकरने त्रिपुरासुरपर वाण चलाया था (मत्स्य० १३३.६७; स्कंदपु० आवन्त्यखंड)।

रुद्रप्रयाग–पु० [सं०] गढ़वालकी राजधानी (प्राचीन) श्रीनगरसे १८ मील दूर गढ़वाल जिलामें स्थित एक तीर्थ जहाँ मंदाकिनी नदी अलकनंदासे आ मिलती है (वायु० ४१.१८; ४७.३; भाग० ५.१९.१८; १०.७०.४४)।

रुद्रभद्र–पु० [सं०] पुराणानुसार एक नदका नाम जो वड़ा पवित्र है।

रुद्रभैरवी–स्त्री० [सं०] दुर्गाकी एक मूर्तिका नाम (मत्स्य० १५८.२५; ब्रह्मां० ४.७.७२; ४४.२२)।

रुद्रयज्ञ–पु० [सं०] रुद्रके उद्देश्यसे किया जानेवाला एक

यज्ञ।

रुद्ररोमा–स्त्री० [सं०] कार्त्तिकेयकी एक अनुचरी मातृकाका नाम (वायु० ४१.३८; ७२.४३; विष्णु० १.१५.११६; महाभा० शल्य० ४६.७)।

रुद्रलोक–पु० [सं०] भगवान् शंकर तथा रुद्रोंका निवास-स्थान (मत्स्य० १००.४१)।

रुद्रवट–पु० [सं०] एक प्राचीन तीर्थका नाम (महाभा०)।

रुद्रव्रत–पु० [सं०] रुद्रकी प्रसन्नताके लिए किया जानेवाला एक व्रत जिससे रुद्रलोक प्राप्त होता है (मत्स्य० १००.४१)।

रुद्रसर–पु० [सं०] एक प्राचीन तीर्थका नाम।

रुद्रसावर्णि–पु० [सं०] पुराणानुसार वारहवें मनुका नाम, रुद्रपुत्र होनेसे जिनका यह नाम पड़ा (विष्णु० ३.२.३२; तथा स्कंदपु०)।

रुद्रसुन्दरी–स्त्री० [सं०] (भद्रसुन्दरी) भगवती सतीदेवीकी एक मूर्तिका नाम, जो विकूटमें स्थापित है (मत्स्य० १३.३६)।

रुद्राणी–स्त्री० [सं०] पार्वती (रुद्र-पत्नी) का एक नाम (महाभा० उद्योग० ११७.१०)।

रुद्राणीरुद्र–पु० [सं०] एक तीर्थस्थानका नाम, जहाँ उत्तर दिशाको जाते समय अष्टावक्र मुनि पधारे थे (महाभा०)।

रुद्रावर्त्त–पु० [सं०] एक प्राचीन तीर्थका नाम जहाँ स्नान करनेसे रुद्रलोक प्राप्त होता है (महाभा० वन० ८४.३७)।

रुद्रावास–पु० [सं०] काशीक्षेत्रका नाम जहाँ शंकरका निवास है (स्कंदपु० काशीखंड)।

रुद्रोपस्थ–पु० [सं०] पुराणानुसार एक पर्वतका नाम।

रुधिरांध–पु० [सं०] पुराणानुसार एक नरकका नाम।

रुधिराशन–पु० [सं०] एक वीर योद्धा जो खर राक्षसका सेनापति था जिसे श्रीरामने मारा था (वाल्मी० रामायण)।

रुमण–पु० [सं०] सौ करोड़ बानरोंका सेनापति एक बन्दर (रामायण)।

रुमण्वान्–पु० [सं०] (१) जमदग्नि द्वारा रेणुकाके गर्भसे उत्पन्न एक ऋषि। ये चार भाई थे—सुषेण, वसु, विश्वावसु और परशुराम। इन्हें माता रेणुकाका वध करनेकी पिताने आज्ञा दी। इन्होंने उसका पालन नहीं किया, जिससे कुपित हुए पिताके शापसे ये पशु-पक्षियोंकी तरह जड़बुद्धि हो गये। परशुरामने पिताको प्रसन्न कर इन्हें शाप-मुक्त कराया (महाभा० वन० ११६.१०-१८)। (२) पुराणानुसार एक पर्वतका नाम (देवीभा०)।

रुमा–स्त्री० [सं०] सुग्रीवकी पत्नीका नाम (वाल्मी० रामाय० किष्किं० १८.१९; २६.४१)।

रुरु–पु० [सं०] (१) पुराणानुसार एक प्रकारका बहुत ही हिंसक जन्तु। जिसे मारश्रृंग भी कहते हैं और यह सर्पसे भी अत्यधिक क्रूर होता है। जो लोग इस लोकमें जीवहिंसा करते हैं वे रौरव नरकमें जाते हैं और उनसे काटे गये जन्तु रुरु होकर नरकमें उन्हें काटते हैं (देवीभाग० ८.२२.१०-११; भाग० ५.२६.११)। (२) एक प्रसिद्ध ऋषिका नाम जो घृताची नामकी अप्सराके गर्भसे उत्पन्न प्रमतिके पुत्र तथा च्यवनके पौत्र थे। इनके पुत्रका नाम शुनक था। कहते हैं कि जब इनकी पत्नी प्रमद्वराका स्वर्गवास हो गया तब इन्होंने उसे अपनी आधी आयु दान कर दे दी और पुनः जीवित कर लिया था (महाभा० आदि० ८.२, १६-२७; ९.१५-१६)। (३) देवताओंका एक गण जो विश्वेदेवोंके अन्तर्गत हैं। (४) सावर्णि मनुके युगके सप्तर्पियोंमेंसे एक ऋषि। (५) महाभैरव, संहारभैरव, असितांगभैरव आदि आठ भैरवोंमेंसे एक भैरवका नाम (ब्रह्मवै० प्रकृतिखंड अ० ६१)।

रुरुभैरव–पु० [सं०] एक प्रकारके भैरव जिनकी पूजा दुर्गाजीके पूजनके समय की जाती है इनके नाम हैं—असितांग, रुरु चण्ड, क्रोध, उन्मत्त, कपाली, भीषण और संहार (तंत्रसार)।

रुपद्रु–पु० [सं०] एक प्राचीन राजा, जो यमराजकी सभामें रहकर उनकी उपासना करते थे (महाभा० सभा० ८.१३)।

रुपंगु–पु० [सं०] एक ऋषिका नाम, जिनके आश्रममें आर्ष्टिषेण मुनिने घोर तप किया था और विश्वामित्रको ब्राह्मणत्वकी प्राप्ति हुई थी (महाभा० शल्य० ३९.२४)।

रूपचतुर्दशी–स्त्री० [सं०] नरक चौदसका दूसरा नाम जो दीपावलीके एक दिन पहले होता है जिस दिन शरीरमें उबटन आदि लगा स्नान करते हैं। यद्यपि कार्तिक-स्नान करनेवालोंको तेल लगाना मना है पर इस दिन (नरक चतुर्दशीके दिन) तेल लगानेकी छूट दी गयी है—'नरकस्य चतुर्दश्यां तैलाभ्यङ्गं च कारयेत्' (कृत्यतत्त्वार्णव)।

रूपसंक्रांतिव्रत–पु० [सं०] सोना, चाँदी या पलाशके पात्रमें संक्रांतिके समय घीमें छायादान करे तो रूप बढ़ता है (मत्स्य०)।

रूपसेन–पु० [सं०] एक विद्याधरका नाम (हि०वि०को०)।

रूपेश्वर–पु० [सं०] एक प्रकारका शिवलिंग (स्कंदपु० काशी-खंड)।

रूपेश्वरी–स्त्री० [सं०] एक देवी विशेषका नाम। प्रभव आदि साठ संवत्सरोंमेंसे २१ संवत्सरोंमें इस देवीकी पूजा की जाती है। इसकी पूजा करनेसे सर्वाभीष्ट प्राप्ति होती है। देवीपुराणमें इसकी मूर्ति बनानेका प्रकार यों लिखा है—दो बैलोंमें स्थित, जटामुकुटभार, चन्द्रमा, त्रिशूल, सर्पसे विभूषित, मणि और मोतियोंकी शोभासे परिपूर्ण, सफेद चन्दनसे सुचर्चित, मनोहर पुष्प तथा पुष्पनालाओंसे पूजित इनकी मूर्ति हो।

रेणुक–पु० [सं०] रसातलमें रहनेवाला अत्यन्त शक्तिशाली सत्त्व-सम्पन्न एक नागका नाम, जिसने देवताओंकी प्रेरणासे दिग्गजोंके पास जाकर उनसे धर्मके विषयमें विविध प्रश्न किये थे (महाभा० अनु० १३२.२-६)।

रेणुका–स्त्री० [सं०] परशुरामकी माताका नाम जो विदर्भराज प्रसेनजित्की पुत्री और जमदग्निकी पत्नी थी। एक बार राजा चित्ररथको स्त्रियोंके संग क्रीड़ा करते देख इनके मनमें कुछ विकार उत्पन्न हुआ जिससे क्रुद्ध हो जमदग्निने परशुराम द्वारा इनकी हत्या करा दी। इसके उपरान्त परशुरामने जमदग्निसे ही इन्हें पुनः जीवित करा दिया था। कहते हैं कि यह पद्मसे उत्पन्न अयोनिजा थीं। प्रसेनजित् इनके पोषक पिता थे, ऐसा प्रतीत होता है—दे० परशुराम, जमदग्नि तथा (महाभा० ११६.२)।

रेभ–पु० [सं०] (१) एक ऋषि जिन्हें असुरोंने कुएँमें डाल दिया था और १० रातें और ९ दिनोंके बाद अश्विनी-

कुमारोंने इनका उद्धार किया था (ऋग्वेद १.११२.५; ११६.२४)। (२) कश्यपवंशीय एक दूसरे ऋषि, जो ऋग्वेदके पञ्चम-मंडलके ९७वें सूक्तके द्रष्टा कहे गये हैं (हि० वि० को०)।

रेवंत—पु० [सं०] सूर्यपत्नी वड़वारूपधारिणी संज्ञाके गर्भसे उत्पन्न सूर्यके एक पुत्रका नाम जो गुह्योंके अधिपति कहे गये हैं। कालिकापुराणमें लिखा है कि राजा लोग तोरण-प्रान्तमें प्रतिमा या घटमें सूर्यपूजाकी विधिके अनुसार रेवंत पूजा करें (कालिकापु० ८५ अध्याय)।

रेवत—पु० [सं०] रोहिणीपुत्र बलरामके श्वसुरका नाम जो कुशस्थलीके राजा थे। ब्रह्माकी आज्ञासे इन्होंने रेवती नामकी अपनी पुत्रीको बलरामसे व्याह दिया था (विष्णु० पु०)।

रेवती—स्त्री० [सं०] (१) रेवत मनुकी माताका नाम (हि० वि० को०)। (२) राजा रेवतकी पुत्री तथा बलरामकी पत्नी जिससे बलरामके निशठ और उल्मुक नामक पुत्र हुए थे (विष्णु० पु०)। (३) महर्षि भरद्वाजकी वहिन जो बड़ी कुरूप थी और कठ नामक मुनिको व्याही गयी थी। यह गोदावरीमें स्नान कर रूपवती हो गयी थी। जहाँ स्नान कर इन्होंने रूप पाया था वहाँ रेवती तीर्थ हो गया (ब्रह्म पु०)। (४) एक नक्षत्रका नाम। अश्विनी आदि सत्ताईस नक्षत्रोंमें अन्तिम नक्षत्र। इसके अधिष्ठाता पूषा नामके सूर्य हैं।

रेवा—स्त्री० [सं०] नर्मदा नदीका नाम। इस नदीमें शिवलिंगोंकी उत्पत्ति होती है जिन्हें नर्मदेश्वर कहते हैं।

रैक्व मुनि—पु० [सं०] रैक्वजी गन्धमादन पर्वतपर रहते थे और जन्मसे ही पंगु थे, अतः तपोबलसे ये यमुना, गंगा तथा गया तीर्थोंको अपने आश्रमके निकट आवाहन कर ले आये थे। राजा जानश्रुति (राजर्षि पुत्रके पौत्र)ने इन्हींसे दीक्षा ली थी। पंगु होनेके कारण रैक्व गाड़ीपर चलते थे अतः 'गाड़ीवाले रैक्व' के नामसे विख्यात थे (स्कंदपु० ब्राह्म० सेतु-माहात्म्य)।

रैभ्य—पु० [सं०] एक प्रसिद्ध ऋषि, जो भरद्वाज ऋषिके मित्र थे। अर्वावसु और परावसु नामके इनके दो पुत्र थे। भरद्वाजके शापवश एक रातको परावसुने भ्रममें पिताको बारासिंघा समझ मार दिया। भाईके पापोंका प्रायश्चित्त करनेके हेतु अर्वावसु घोर तप करने लगा। लौटनेपर परावसुने उसे ही पिताका घातक ठहराया इससे दुःखी होकर अर्वावसु पुनः तपमें लीन हो गया। इसकी तपस्यासे देवगण प्रसन्न हो गये और रैभ्य ऋषि जीवित कर दिये गये और परावसु भगा दिया गया। परावसु धनुष्कोटि तीर्थमें इस पापसे मुक्त हुआ —दे० यवक्रीत तथा (स्कन्द-पु० ब्राह्म० सेतुमाहात्म्य)।

रैव—पु० [सं०] वैवस्वतमनुके सुत शर्यातिके पौत्र तथा आनर्तके पुत्र, जो आनर्त देशके राजा थे तथा कुशस्थली (द्वारका) इनकी राजधानी थी (ब्राह्म० वैवस्वतवंश-परिचय; महाभा० सभा० २६.४)।

रैवत—पु० [सं०] (१) रैवके पुत्र जो प्रसिद्ध धर्मात्मा थे। इनका दूसरा नाम ककुद्मी भी था और यह कुशस्थलीके राजा थे। एक वार यह कन्याके साथ योग्य वर प्राप्तिके लिए ब्रह्माके पास गये थे पर जब लौटे तो कई युग बीत चुके थे और कुशस्थलीपर यादवोंका अधिकार हो गया था अतः इन्होंने अपनी पुत्री रेवती बलदेवजीको व्याह दी और मेरु पर्वतपर तप करने चले गये थे (ब्राह्मपु० वैवस्वत-वंशपरिचय)। (२) वर्तमान कल्पके पाँचवें मनुका नाम जिन्हें रेवतीके गर्भसे उत्पन्न कहा गया है—दे० रेवती।

रैवतक—पु० [सं०] (१) गुजरातप्रान्तमें आधुनिक जूनागढ़के पासका एक पर्वत जिसे गिरनार भी कहते हैं। इसी पर्वतपर अर्जुन (पाण्डव)ने सुभद्रा हरण किया था। सुभद्रा बलरामकी सहोदरा, रोहिणीके गर्भसे उत्पन्न हुई थी तथा अभिमन्युकी माता थीं (भाग० ९.२२.२९, ३३; ब्रह्मां० ३.७१. १५४, १७८; विष्णु० ४.४४.३५, २०, ४०; वायु० १२.१७-२४; ३५.२८)। (२) प्रियव्रतके पुत्र तथा पाँचवें मन्वन्तरके मनुका नाम—दे० प्रियव्रत।

रोचन—पु० [सं०] (१) रोगोंके अधिष्ठाता एक देवता (हरिवंश)। (२) एक पर्वतका नाम (मार्कण्डेयपु०)। (३) कामदेवके ५ बाणोंमेंसे एक—दे० काम०।

रोमपाद—पु० [सं०] अंग देशका राजा, जो बड़ा अत्याचारी तथा अन्यायी था। यह दशरथजीका मित्र था जिनसे इसे शान्ता नामकी पोष्य पुत्री प्राप्त हुई थी। इसके अत्याचारके फलस्वरूप राज्यमें अनावृष्टि हुई तथा प्रजा घबड़ा गयी तब ब्राह्मणोंकी रायसे इसकी पोष्य पुत्री शान्ताका विवाह ऋष्य-श्रृंग मुनिसे हुआ और वृष्टि हुई (वाल्मी० रामायण बाल० सर्ग ९; विष्णु० ४.)।

रोमहर्षण—पु० [सं०] एक प्रसिद्ध ऋषि, वेदव्यास-के शिष्य पौराणिक सूतजी—दे० लोमहर्षण तथा कल्किपु०।

रोहिणी—स्त्री० [सं०] (१) दक्ष प्रजापतिकी पुत्री तथा चन्द्रदेवकी पत्नी। २७ नक्षत्रोंमेंसे यह चौथा है जिसमें ५ तारे हैं जिनकी आकृति रथकी तरह है (कल्किपु०)। (२) वसुदेवकी पत्नी तथा बलरामकी माता जो पतिके साथ सती हुई थी (भाग० ९.३.३३-६; १०.१८; २.८.१३; विष्णु० ४.१३.९९; १५.१९)।

रोहिणीश—पु० [सं०] रोहिणीका पति चन्द्रमा—दे० चन्द्रमा तथा रोहिणी।

रोहिताश्व—पु० [सं०] अयोध्यापति राजा सत्यवादी हरिश्चन्द्रका पुत्र (हरिश्चन्द्रनाटक)।

रौच्य—पु० [सं०] १३वें मन्वन्तरके मनु तथा चित्रसेन, विचित्र आदि दस पुत्रोंके पिता (मत्स्य०; पद्मपु०; वायु० १००.१०९)।

रौद्राश्व—पु० [सं०] पुरुवंशोत्पन्न राजा अहंयातिका पुत्र तथा ऋतेपु आदि १० पुत्रोंका पिता। इसी वंशमें ऋतेपुके अन्तिनार हुए जिनके पुत्र अप्रतिरथके पुत्र ऐलीनसे दुष्यन्त आदि चार पुत्र हुए थे। दुष्यन्तका ही पुत्र सम्राट् भरत हुआ था (विष्णु० ४.१०.२-१०)।

रौरव—पु० [सं०] एक नरकका नाम जो २१ नरकोंमें पाँचवाँ है और बड़ा ही भयंकर बतलाया गया है (वायु० १०१.१४४-९२; विष्णु० २.६.२, ७)।

ल

लंकटंकटा–स्त्री० [सं०] (१) विद्युत्केशकी पुत्रीका नाम जो सुकेश राक्षसकी माता थी (रामायण)। (२) सन्ध्याकी पुत्रीका नाम (रामच० मा०)।

लंका–स्त्री० [सं०] भारतके दक्षिणका एक टापू जहाँ रावण-का राज्य होनेके पहले कुबेरका आधिपत्य था। ऐसा कहा जाता है कि रावणके समयमें यह टापू सोनेका था। पहले यह कुबेरके अधीन था और कुबेर धनका मालिक कहा जाता है अतः यह टापू निश्चय ही धनधान्यसे परिपूर्ण रहा होगा, शायद सोनेकी लंकाका यही अर्थ हो (रामायण वाल० १७७.३ से १७९)।

लंकादाही–पु० [सं०] हनुमान् (रामच० मा० सुन्दर० २४.२६)।

लंकापति–पु० [सं०] रावण (रामच० मा० बालका० १७७-१७९)।

लंकिनी–स्त्री० [सं०] एक राक्षसी जिसे लंकामें प्रवेश करते समय हनुमान्ने घूँसोंकी मारसे ही मार डाला था (रामच० मा० सुन्दर० ३.१-४)।

लंपाक–पु० [सं०] पुराणानुसार भारतके उत्तर-पश्चिमका एक देश जिसे मुरंड भी कहते हैं। यहाँके निवासियोंने कौरवोंकी ओरसे सात्यकिपर आक्रमण किया था किन्तु सात्यकिने इन्हें मार भगाया था (महाभा० द्रोण० १२१. ४२-४३)।

लंब–पु० [सं०] (१) प्रलंबासुर राक्षस जिसे श्रीकृष्णने मारा था पर भागवतके अनुसार इसे वलरामने मारा था —दे० प्रलंब तथा (भाग० १०.१८.१७-३०; २०.१; ४३.३०; ४६. २६; ५१.४२; विष्णु० ५.९.१३ अन्ततक; वायु० ६८.१५)। (२) एक मुनिका नाम (हिं० श० सा०)।

लंबनी–स्त्री० [सं०] 'कुमार कार्तिकेयकी अनुचरी एक मातृकाका नाम (महाभा० शल्य० ४६.१८)।

लंबपयोधरा–स्त्री० [सं०] कुमार कार्त्तिकेयकी अनुचरी एक मातृकाका नाम (महाभा० शल्य० ४६.२१)।

लंबा–स्त्री० [सं०] कुमार कार्तिकेयकी अनुचरी एक मातृका नाम (महाभा० शल्य० ४६.१८)।

लंबोदर–पु० [सं०] गणेशजीका एक नाम (स्कन्दपु०; गणेश-सहस्रनामावली)।

लंबोष्ठ–पु० [सं०] एक क्षेत्रपाल देवता।

लक्षणा–स्त्री० [सं०] एक अप्सराका नाम जिसने अर्जुनके जन्मोत्सवमें नृत्य किया था (महाभा० आदि० १२२.६२)।

लक्षतुलसीदलार्पणव्रत–पु० [सं०] कात्तिक या माघमें विष्णुको तुलसी-दल अर्पण करे। विष्णु सहस्रनामके एक-एक नामसे एक तुलसीपत्र दें और १०० दिनोंमें लक्ष दल दें (भविष्यपु०)।

लक्षपूजा–पु० [सं०] 'लक्षपूजाव्रत'। किसी महीनेकी कृष्णा चतुर्दशीको प्रदोषकालके पश्चात् ही पूजा आरम्भ करे जिसमें शिवका विधिवत् पूजन करते हैं। इसमें लक्ष-पुष्प "ॐ नमः शिवाय"के प्रत्येक उच्चारणके साथ अर्पण करे, समाप्तिमें एक सुवर्ण विल्वपत्र शिवको और एक सुवर्ण पुष्प शिवाको अर्पण करनेका विधान है। इस व्रतसे गोहत्या, ब्रह्महत्या, गुरुस्त्रीगमन, मद्यपान आदि महापातकोंका नाश होता है। इसका विसर्जन विष्णुसहस्रनामसे आहुति देकर करे (ब्रह्मां०)।

लक्षप्रणामव्रत–पु० [सं०] आषाढ़ शु० ११ को विष्णुका पचोपचार पूजन कर एक-एक करके जितने बन सकें प्रणाम करे तथा एकभुक्त व्रत करे। चार महीनोंमें एक लाख प्रणाम पूर्ण करे तथा कार्तिक शु० १५ को उद्यापन करे तो "अभक्ष्य-भक्षण, अगम्यगमन, अदृश्यदर्शन, अपेयपान और अनृत भाषण"के पापोंसे मुक्त हो जाता है (वसिष्ठाम्बरीष संवाद)।

लक्षप्रदक्षिणाव्रत–पु० [सं०] आषाढ़ शु० ११ से कात्तिक शु० ११ तक होनेवाला एक व्रत जिसमें भगवान् विष्णुकी प्रदक्षिणा की जाती है। एक लाख पूर्ण होनेपर उद्यापन करे तो इससे तीन जन्मोंके पाप दूर होते हैं (विष्णुधर्मोत्तर)।

लक्षवर्त्तिदानव्रत–पु० [सं०] किसी दिन शुभ देख कपास-की एक लाख वत्तियाँ घीमें भिगो किसी देव-मन्दिरमें देवके सम्मुख जलावे तो सव दुःखोंका नाश होकर देवलोककी प्राप्ति होती है (वायु०)।

लक्षवर्त्तिप्रदानव्रत–पु० [सं०] कपासकी एक लाख वत्तियाँ वना तैलपूर्ण दीपकोंमें एक-एक कर किसी देव-मन्दिरमें रखे और नक्तव्रत करे तो इससे देवलोक प्राप्त होता है (भविष्यपु०)।

लक्ष्मण–पु० [सं०] (१) रघुवंशोत्पन्न राजा दशरथके चार पुत्रोंमेंसे दूसरेका नाम जो सुमित्राके गर्भसे उत्पन्न हुए थे और त्रेता युगमें वर्तमान थे। जब श्रीरामका विवाह सीता से हुआ था तभी इनका विवाह भी सीरध्वज जनककी औरसजात पुत्री उर्मिलाके साथ हुआ था। यह स्वभावके बड़े क्रोधी थे पर श्रीरामके बड़े भक्त थे। इन्होंने राजसीय सुखोंको त्यागकर वनवासकालमें भी भाई रामका साथ दिया था। रावणकी बहिन शूर्पणखाकी नाक इन्होंने काटी थी तथा रावण-पुत्र मेघनादका वध भी इन्हींके हाथों हुआ था। राम-रावण युद्धमें यह एक बार शक्तिबाण लगनेसे मूर्छित हो गये थे और हनुमान् द्वारा लायी संजीवन बूटीसे इनकी मूर्छा दूर हुई थी। जानकीकी अग्नि-परीक्षाके समय श्रीराम-की आज्ञासे इन्होंने चिता लगायी थी। यह वहुत ही तेजस्वी, वीर तथा शुद्ध-चरित्रके थे। पुराणानुसार यह शेषनागके अवतार माने जाते हैं—दे० सुमित्रा; परिशिष्ट-झ; तथा रामचरित मान० वाल० अयोध्या आदि-आदि। (२) दुर्योधनके एक महारथी पुत्रका नाम। अभिमन्युके साथ इसका युद्ध हुआ था (महाभारत भीष्म० ५५०.८-१३)। अभिमन्युके द्वारा इसकी पराजय (भीष्म० ७३.३२-३७), शिखण्डीके पुत्र क्षत्रदेवके साथ युद्ध (द्रोण० १४.४९), समुद्री प्रान्तके अधिपतिके साथ युद्ध (द्रोण० २५.३४-३५), अभिमन्युके द्वारा इसका वध (द्रोण० ४६.१७)। व्यासजी द्वारा आवाहन करनेपर गंगाजीके जलसे प्रकट हुए कौरव और पाण्डव पक्षके युद्धमृत लोगोंमें यह भी एक था

(आश्रम० ३२.११)।

लक्ष्मणतीर्थ—पु० [सं०] गन्धमादन पर्वतपर स्थित एक तीर्थ जहाँ लक्ष्मण-मन्त्रका जप करनेसे मनुष्य शास्त्रों तथा वेदोंका ज्ञाता हो जाता है। इसके तटपर लक्ष्मणजीने एक शिवलिंग स्थापित किया था जिसे 'लक्ष्मणेश्वर' कहते हैं और जो मोक्षदायक है (स्कन्दपु० ब्राह्म० सेतु-माहात्म्य)।

लक्ष्मणा—स्त्री० [सं०] (१) श्रीकृष्णकी आठ पटरानियोंमेंसे एक जो मद्रदेशाधिपति बृहत्सेनकी पुत्री थी, इनके श्रीकृष्णसे सोमक आदि १० पुत्र हुए थे (भाग० १०-६१. १५; महाभा० सभा० ३८.२९)। (२) दुर्योधनकी पुत्रीका नाम (महाभा०)। (३) श्रीकृष्णकी पुत्रवधूका नाम जो साम्बकी पत्नी तथा दुर्योधनकी पुत्री थी (देवीभाग० तथा महाभा०)।

लक्ष्मी—स्त्री० [सं०] (१) धनकी अधिष्ठात्री एक प्रसिद्धदेवीका नाम जो समुद्र-मंथनसे प्राप्त १४ रत्नोंमेंसे एक हैं। इन्हें विष्णु भगवान्‌ने ग्रहण किया था अतः यह विष्णु-पत्नी कही गयी हैं। यह कंचन वर्णकी चार भुजाओंवाली कही गयी हैं। यह अत्यन्त सुन्दरी हैं और सदा युवती रहती हैं। इनकी पूजा अनेक अवसरोंपर विशेषतः धनतेरस और दीपावलीपर रातको होती है। भिन्न-भिन्न पुराणोंमें इनकी भिन्न-भिन्न कथाएँ दी हैं—दे० ख्याति. ब्रह्मवैवर्त्तपु०। (२) वशिष्ठ कुलोत्पन्न वीर शर्माकी पत्नी जो कुशिवंशकी कन्या थी जो मरकर पुनः जीवित हो उठी थी (स्कन्दपु० वैष्णव. भूमिवराह-खण्ड)।

लक्ष्मीजनार्दन—पु० [सं०] शालिग्रामकी एक मूर्त्ति जिसका रँग बहुत काला होता है और एक ओर ४ चक्र रहते हैं (स्कन्दपु० तथा विष्णु०)।

लक्ष्मीनारायण—पु० [सं०] काले पत्थरके शालिग्राम जिनपर चक्र बने होते हैं जिनकी पूजाका अधिक महत्त्व है (विष्णु०)।

लक्ष्मीनारायणव्रत—पु० [सं०] फाल्गुन शु० १५ प्रातःकालसे सायंकाल तक मन, वचन कर्मसे शुद्ध हो मौन व्रत रख भगवान्‌का पूजन करे और चन्द्रोदय होनेपर "श्रीनिशा चन्द्रस्त्वं वासुदेव जगत्पते। मनोऽभिलषितं देव पूरयस्व नमो नमः।" इस मन्त्रसे अर्घ्य दे और रातमें तैलवर्जित भोजन करे (विष्णुधर्म्मोत्तर)।

लक्ष्मीनिधि—पु० [सं०] राजा जनकके पुत्रका नाम (रामायण वाल०)।

लक्ष्मीनृसिंह—पु० [सं०] शालिग्रामकी एक मूर्त्ति विशेष जिसपर दो चक्र तथा एक वनमाला बनी होती है। गृहस्थोंके लिए इनका पूजन अति शभ समझा जाता है (ब्रह्मवैवर्त्त तथा विष्णु०)।

लक्ष्मीपति—पु० [सं०] विष्णुका एक नाम—दे० विष्णु० लक्ष्मी तथा समुद्रमन्थन।

लक्ष्मीपुत्र—पु० [सं०] लव और कुश, क्योंकि लक्ष्मी ही सीता थीं और विष्णु राम।

लक्ष्मीसहज—पु० [सं०]—दे० चन्द्रमा।

लक्ष्मी-सीताष्टमी—स्त्री० [सं०] फाल्गुन शुक्ला ८ को लक्ष्मी और सीताका पूजन करे फिर सन्ध्याको सामर्थ्यानुसार दीपक जलावे पर अष्टमी प्रदोषव्यापिनी हो (वीरमित्रोदय)।

लघिमा—स्त्री० [सं०] आठ सिद्धियोंमेंसे एक जिससे मनुष्य बहुत हलका बन जाता है (हठयोगप्रदीपिका, गोरक्ष संहिता)।

लता—स्त्री० [सं०] एक अप्सराका नाम। सातकर्णि मुनिकी तपस्या भंग करनेके कारण मुनिने शाप दे इसे ग्राह बना दिया था अतः यह वहीं सिद्धेश तीर्थमें रहती थी। पांडुसुत अर्जुनने इसका जलचरयोनिसे उद्धार किया था (स्कंदपु० कुमारिका-खण्ड)।

लतावेष्ट—पु० [सं०] द्वारकापुरीसे दक्षिणमें स्थित एक पर्वत (हरिवंश)।

ललितक—पु० [सं०] प्राचीन कालके एक तीर्थका नाम (हि० वि० को०)।

ललिता—स्त्री० [सं०] (१) राधिकाकी एक सखी जो उनकी आठ प्रधान सखियोंमें एक थी (पद्मपु० तथा ब्रह्मवैवर्त्तपु०)। (२) दुर्गादेवीका एक रूप। कुरण्डसे युद्ध करनेके हेतु यह अपराजित नामक घोड़ेपर चढ़कर गयी थी (ब्रह्मां० ४.२२.९४)। जब यह विश्वविजय करने निकली थी तब अप्सराओंने रास्तेमें जलते अंगार फैला दिये थे (?). (ब्रह्मां० ४.१८.९)। (३) एक नदीका नाम। कहते हैं इसे शंकरजी स्वयं लाये थे और वैशाख शुक्ला तीजको इसमें नहानेका बड़ा फल है। राजा निमिके शापसे वशिष्ठ जब देह-हीन हो गये तब कामरूप देश स्थित सन्ध्याचल पर्वतपर घोर तप द्वारा इन्होंने विष्णुको प्रसन्न किया। विष्णुके वरके प्रतापसे वशिष्ठने यहाँ एक अमृतकुण्डकी स्थापना की जो ललिता नदीके पश्चिम है। कालिकापु० में इस नदीकी कथा विस्तारपूर्वक दी हुई है (कालिकापु० ८१ अ०)।

ललितापंचमी—स्त्री० [सं०] इस तिथि अर्थात् आश्विन शुक्ला तीजको पार्वतीदेवीकी पूजा होती है और स्त्रियाँ व्रतादि करती हैं (भारतीयव्रतोत्सव)।

ललिता-षष्ठी—स्त्री० [सं०] भाद्रपद कृष्णा षष्ठीको स्त्रियाँ पुत्रके लिए व्रत करती हैं तथा कुश और पलाशकी टहनीपर पार्वतीजीका आवाहन कर पूजन करती हैं (भारतीयव्रतोत्सव)।

ललिता-सप्तमी—स्त्री० [सं०] भाद्रपद शुक्ला सप्तमीका व्रत। उस दिन पार्वतीपूजन करे।

ललितक—पु० [सं०] एक प्राचीन तीर्थस्थानका नाम, जिसमें स्नान करनेसे मनुष्यकी दुर्गति नहीं होती (महाभा० वन० ८४.३४)।

ललित्थ—पु० [सं०] एक देश तथा वहाँके निवासी। यहाँके सैनिकोंने सुशर्माके साथ अर्जुनका वध करनेके लिए प्रतिज्ञा की थीं (महाभा० द्रोण० १७.२०)।

लवंगलता—स्त्री० [सं०] राधिकाजीकी प्रधान ८ सखियोंमेंसे एक (देवीभाग०)।

लव—पु० [सं०] श्री रामचंद्रके दो यमज पुत्रों (लव और कुश) मेंसे एक। लोक अपवादके भयसे श्रीरामने अपनी पत्नी जानकीको गर्भावस्थामें ही वन भेज दिया था, अतः यह वाल्मीकिके आश्रमपर रहीं, जहाँ इनके उपर्युक्त यमज उत्पन्न हुए थे। जब वाल्मीकिके सिखाये रामायणका गान श्रीरामकी सभामें इन यमजोंने सुनाया, तब कहीं श्रीरामने

इन्हें पहिचाना था। यह श्रावस्तीके राजा थे—दे० श्रावस्ती तथा (रामायण लवकुशकांड ९-१८)।

लवणधेनु—स्त्री [सं०] लवणकी कल्पित गौके दान करनेका बड़ा माहात्म्य है (वाराहपु०)।

लवणवर्ष—पु० [सं०] पुराणानुसार कुशद्वीपके अंतर्गत एक खंड।

लवणसमुद्र—पु० [सं०] पुराणोक्त ७ समुद्रोंमेंसे एक। ब्रह्मवैवर्त्तपुराणानुसार श्रीकृष्णकी एक पत्नी विरजाके गर्भसे सात पुत्र हुए जो सात समुद्र हुए। इनमेंसे एकके रोनेके कारण जो श्रीकृष्णका थोड़ा-सा वियोग हुआ, उसे सहन न कर सकनेके कारण विरजाके शापसे वह पुत्र नमकीन पानीका समुद्र हो गया जिसे 'लवणसमुद्र' कहते हैं। और पुराणोंमें तो सातों समुद्रोंकी उत्पत्ति राजा सगरके पुत्रोंके खोदनेसे या राजा प्रियव्रतके रथके चलनेसे जो गड्ढे बने उनसे बतलायी गयी है, ब्रह्मवैवर्त्तकी कथा बहुत इधरकी ही कल्पित-सी जान पड़ती है (भाग० ५.१.३०-३३; ब्रह्मवैवर्त्तपु०)।

लवणाचल—पु० [सं०] पुराणानुसार लवणके कल्पित पहाड़के दानका बड़ा माहात्म्य लिखा है (मत्स्य० ८४.१-९)।

लवणालय—पु० [सं०] मधुपुरीका एक नाम जिसे लवणासुरने बसाया था। पीछे इसे मथुरा कहने लगे (रामायण लवकुश०)।

लवणासुर—पु० [सं०] मधु राक्षसका पुत्र जो लंकापति रावणकी मौसी कुंभीनसीके गर्भसे उत्पन्न हुआ था। मधुने घोर तप करके शिवसे एक शूल प्राप्त किया था जो शंकरके वरसे ही लवणासुरको मिला था। इस शूलके प्रभावसे यह देव, दानव और मनुष्योंसे अजेय हो गया था। प्रसिद्ध राजा मांधाताको इसने मार डाला था। महर्षिगण इसके अत्याचारसे पीड़ित होकर श्री रामचंद्रकी शरणमें गये जिन्होंने लवणासुरका दमन करनेके लिए शत्रुघ्नको भेजा। जिस समय लवणासुरके हाथमें शूल नहीं था, उस समय शत्रुघ्नने उसे मार डाला था। यह मथुराका राजा था जिसे मधुपुरी कहते थे। इसके पश्चात् शत्रुघ्न यहाँके राजा हुए (रामच० उत्तर० दो० ३२-४२)।

लांगली—पु० [सं०] (१) बलरामका एक नाम (भाग० १०.६८.४१, ५३)। स्त्री०—पुराणानुसार एक श्रेष्ठ नदीका नाम (मार्कण्डेयपु० ५७.२९)।

लांगलीश—पु० [सं०] एक प्रकारका शिवलिंग (शिवपु०, स्कंदपु०, काशीखंड; सौरपु० अ० ६)।

लाक्षकी—स्त्री० [सं०] जानकीजीका एक नाम (पद्मपु० उत्तरखण्ड अ० ५५)।

लाक्षागृह—पु० [सं०] महाभारतके अनुसार दुर्योधन द्वारा बनवाया गया एक घर जिसमें उसने पांडवोंको जला देनेका निश्चय किया था। यह घर वारणावतमें पुरोचन मंत्रीकी देख-रेखमें बना था। पर पाँचों पांडव सपरिवार पहले ही बचकर निकल गये थे और भीमसेनने घरमें आग लगा दी जिससे पुरोचन जलकर भस्म हो गया (महाभा० आदि० १४८.४, ९-१०)। यह स्थान इलाहाबाद जिलेमें हंडिया स्टेशनके पास गंगातटपर है जिसका कुछ अंश अब भी अवशेष है।

लालाभक्ष—पु० [सं०] पुराणानुसार एक नरक जहाँ वे लोग भेजे जाते हैं जो बिना भगवान्को भोग लगाये अथवा अतिथियोंको भूखा रख स्वयम् पेटभर भोजन कर लेते हैं (भाग० २६.७)।

लावण्यवती—स्त्री० [सं०] रथंतर कल्पके राजा पुष्पवाहनकी पत्नीका नाम—दे० पुष्पवाहन।

लिंग—पु० [सं०] भगवान् शंकरकी एक मूर्त्ति विशेष। पद्म पुराणानुसार एक बार ऋषियोंका आराध्य देव कौन हो, इस निश्चयके निमित्त सब ऋषि शंकरके निकट गये, पर वह क्रीडामें संलग्न थे, अतः नंदीने द्वारपर ही रोक दिया। बहुत देर हो जानेके कारण भृगु मुनिने रुष्ट होकर शाप दिया जिसके फलस्वरूप शंकरकी मूर्त्ति योनि-लिंग रूप हुई और इनका नैवेद्य कोई ग्रहण नहीं करता।

शिवके निष्क्रिय और जगत्कारण दो स्वरूपोंका उल्लेख मिलता है। पहला निष्क्रिय निर्गुण और अलिंग है, पर दूसरा जगत्कारण रूप शिवलिंग है। लिंग शिव, अलिंग शिवसे ही उत्पन्न हुआ। शिव = लिंग अतः लिंगको जगत्कारण रूप शिवका प्रतीक समझना चाहिये (लिंग पुराण)। 'किसी समय जगत्कारणके रूपमें देवता या ईश्वरकी उपासनाके लिए लिंगका ग्रहण प्राचीन मिस्र, अरब, यहूद, यूनान और रोम आदि देशोंमें भी था। प्राचीन यूनानी लिंगको 'फेलस' कहते थे। यहूदियोंमें 'बाल' देवताकी प्रतिष्ठा लिंग रूपमें थी।' बाबुलके खण्डहरोंसे प्राप्त लिंग भारतके शिवलिंगके ही समरूप दीखते हैं। आर्योंमें इसका पता नहीं मिलता, पर वैदिक कालकी कुछ अनार्य जातियाँ 'शिश्नदेवाः'की पूजा अवश्य करते थे। लिंगका शिवकी उपासनामें शिवप्रतिमाके रूपमें कबसे ग्रहण किया गया यह अभीतक विवादास्पद ही है—दे० रुद्र २।

संसारके प्रधान द्वादश शिवलिंग :—शिवपुराण तथा नंदी उपपुराणानुसार शंकरके बारह निश्चित तथा प्रधान रूप कहे गये हैं जो इस प्रकार है—(१) सोमनाथ—गुजरातके सोमनाथ जो पट्टनमें स्थापित हैं, महमूद गजनीने इस मंदिरको ध्वंस्त किया था। (२) मल्लिकार्जुन—कृष्णा नदीके निकट श्रीशैलपर। (३) महाकालेश्वर—उज्जैनमें स्थित, जिसे अलतमश शाहके समय (१२१३ ई०) दिल्ली ले जाकर तोड़ डाला गया था। (४) ओंकार—मध्यप्रदेशमें नर्मदाके तटपर मान्धाता ग्राममें इनका प्राचीन मंदिर है। (५) अमरेश्वर—यह उज्जैनमें स्थित है। (६) वैद्यनाथ—देवघर स्थानमें स्थित। (७) रामेश्वर—रामेश्वर नामक स्थानमें। यह लंका विजयके पूर्व श्रीराम द्वारा स्थापित किया गया था। (८) भीमशंकर वा भीमेश्वर—डाकिनीमें। (९) विश्वेश्वर—काशीमें स्थित जिनका प्राचीन मंदिर औरंगजेबके समयमें तोड़ दिया गया, तदुपरांत अहल्याबाईने पुनः बनवाया। (१०) त्र्यम्बकेश्वर—गोमती नदीके तटपर स्थापित। (११) गौतमेश्वर—वामेश्वरजी। (१२) केदारेश्वर—हिमालयपर।

लिंगपुराण—पु० [सं०] अठारह महापुराणोंमेंसे एकका नाम जिसमें शिवका माहात्म्य दिया है। इसमें ११००० श्लोक

हैं और ब्रह्मा इसके वक्ता हैं। शिवजीने अपने मुखसे २८ अवतारोंका वर्णन किया और शिव द्वारा परम शैव दधीचिकी रक्षाकी कथा इसमें कही गयी है। योग और अध्यात्मकी दृष्टिसे लिंग-पूजाका गुह्यार्थ बताया गया है (पुराण-काव्य-स्तोत्रसुधा)।

लिंगांकित–पु० [सं०] एक शैव सम्प्रदायका नाम—दे० लिंगायत।

लिंगायत–पु० [सं०] एक शैव सम्प्रदाय जिसका प्रचार दक्षिणमें अधिक है। इसके अनुयायी शिवभक्त होते हैं तथा शिवलिंग शरीरपर धारण करते हैं (लिंगपु०)।

लेखर्षभ–पु० [सं०] इंद्रका एक नाम—दे० इंद्र।

लोक–पु० [सं०] उपनिषदोंके अनुसार 'इहलोक' और 'परलोक'—ये ही दो लोक हैं। भूः, भुवः, स्वः, महः, जनः, तपः और सत्यम्—ये सब सप्त व्याहृतियाँ कहलाती हैं। पौराणिक कालमें ये ही सात लोकोंके आधार हुए और फिर सात पाताल मिलाकर कुल चौदह लोक बने। भूःसे भूलोक। भुवःसे भुवर्लोक। स्वःसे स्वर्लोक। ऐसे ही सातों लोकोंके नाम पड़े। अतल, वितल, सुतल, तलातल महातल, रसातल और पाताल, पद्मपुराणानुसार ये सात पातालोंके नाम हैं। इस प्रकार सब मिलाकर चौदह लोक हुए। निरुक्तमें पृथ्वी, अंतरिक्ष और द्युलोक ये ही तीन लोक हैं। भूः, भुवः और स्वः इन्हींका दूसरा नाम है। ये महाव्याहृति कहलाते हैं। सुश्रुतमें केवल दो लोक हैं—स्थावर तथा जंगम—दे० पद्मपुराण; निरुक्त तथा सुश्रुत।

लोकपाल–पु० [सं०] पुराणानुसार आठ दिशाओंके आठ अलग-अलग लोकपाल हैं। यथा—पूर्व दिशाके इन्द्र। अग्नि दक्षिण-पूर्वका। यम दक्षिणका। सूर्य दक्षिण-पश्चिमका। वरुण पश्चिमका। वायु उत्तर-पश्चिमका। कुबेर उत्तरका और सोम उत्तर-पूर्वका (देवीभाग०; मत्स्य०)। उपर्युक्त आठ लोकपालोंके आठ हाथी हैं जिन्हें दिग्गज कहते हैं जो निम्नांकित हैं :—

(१) इन्द्रका हाथी–ऐरावत है–जिसकी पत्नीका नाम–अभ्रमु है।
(२) अग्नि ,, –पुंडरीक ,,– ,, ,, ,, –कपिला है।
(३) यम ,, –वामन ,,– ,, ,, ,, –पिंगला है।
(४) सूर्य ,, –कुमुद ,,– ,, ,, ,, –अनुपमा है।
(५) वरुण ,, –अंजन ,,– ,, ,, ,, –अंजनावती है।
(६) वायु ,, –पुष्पदंत ,,– ,, ,, ,, –शुभदंती है।
(७) कुबेर ,, –सार्वभौम,,– ,, ,, ,, –अंजना है।
(८) सोम ,, –सुप्रतीक ,,– ,, ,, ,, –ताम्रकर्णी है।

रामायणके अनुसार इन्द्रके हाथीका नाम विरूपाक्ष, वरुणका सौमनस, यमका महापद्म और कुबेरका हिमपाण्डुर होना चाहिये। उपर्युक्त आठ दिशाओंकी रक्षा आठों लोकपाल इन हस्तियोंके साथ करते हैं (वाल्मी० रामायण)।

लोकालोक–पु० [सं०] पुराणानुसार एक पर्वतका नाम जो सातों समुद्रों तथा द्वीपोंको चारों ओरसे घेरे हुए है।

लोचारक–पु० [सं०] पुराणानुसार एक नरकका नाम।

लोपामुद्रा–स्त्री० [सं०] अगस्त्य ऋषिकी पत्नीका नाम। पुराणानुसार अगस्त्य ऋषिने बहुत दिनोंतक विवाह नहीं किया और ब्रह्मचर्य पालन किया था। संतानविहीन होनेके कारण इनके पितर इन्हें स्वप्नमें अधोमुख लटके दिखायी दिये। कारण जाननेपर इन्हें बड़ा दुःख हुआ और विवाह योग्य कोई कन्या नहीं मिलनेपर अनेक प्राणियोंके उत्तम-उत्तम अंग लेकर एक कन्याकी सृष्टि कर विदर्भराजको दे दी। बड़ी होनेपर इसी 'लोपामुद्रा' कन्यासे विदर्भराजकी सम्मति ले अगस्त्यने विवाह किया था। इन्होंने ऋग्वेद प्रथम मंडल, १८ अनुवाक, १७९ सूक्त १ और २ मंत्रकी व्याख्या की है (स्कंद० तथा ब्रह्मां०)।

लोमपाद–पु० [सं०] अयोध्यापति दशरथके मित्र तथा अंगदेशके एक राजाका नाम जिन्हें दशरथने अपनी पुत्री शांता पोष्य पुत्रिकाके रूपमें दी थी। ब्राह्मणोंका अपमान होनेके कारण इनके राज्यसे सब ब्राह्मण चले गये जिससे अनावृष्टि हुई। राजाने ऋष्यशृंग मुनिको बुलाकर संतुष्ट किया जिससे वर्षा होने लगी और प्रजा सुखी हुई (वाल्मी० रामायण बाल० ९.७-१२, १८; महाभा० शांति० २३४.३४)।

लोमपादपुरी–स्त्री० [सं०] अंगदेशान्तर्गत वर्तमान भागलपुरका प्राचीन नाम जिसे चम्पा भी कहते थे—दे० चम्पापुर।

लोमश–पु० [सं०] एक ऋषिका नाम जो स्कंदपुराणानुसार कलम्प ग्राममें रहते थे। पुराणानुसार यह अमर हैं और महाभारतके अनुसार इन्होंने युधिष्ठिरको तीर्थोंका परिचय दिया था। लोमश युधिष्ठिरके साथ तीर्थयात्राको भी गये थे। यह अपने ही कथनानुसार पूर्व जन्ममें एक दरिद्र शूद्र थे, केवल एक बार ही शिवलिंगकी पूजा करनेके पश्चात उनकी मृत्यु हो गयी और दूसरे जन्ममें यह एक ब्राह्मणके घर उत्पन्न हुए। इनकी पूजासे संतुष्ट हुए शिवके वरसे 'प्रत्येक कल्पके अंतमें इनके शरीरका एक रोम गिर जाता है और इस प्रकार सब रोम गिर जानेपर इनकी मृत्यु हो जायगी। तदुपरांत यह एक शिवगण हो जायंगे। लोमश ऋषिसे इन्द्रद्युम्न राजाने शिव आदिका माहात्म्य सुना था (स्कंदपु०, माहेश्वर० कुमारिकाखण्ड १०.५३-५५)।

लोमशा–स्त्री० [सं०] कई मंत्रोंकी रचयित्री एक स्त्री जो वैदिक कालमें थी।

लोमहर्षण–पु० [सं०] एक प्राचीन ऋषि जो उग्रश्रवा सूतके पुत्र थे और सूतजी वेदव्यासके शिष्य थे। यह परशुरामजी द्वारा मारे गये थे (कल्किपु०)।

लोलजिह्वाक्ष–पु० [सं०] राक्षसोंका एक राजा जिसने द्वेषवश धर्मारण्यमें आग लगा दी थी। इंद्रने इसे परास्त करनेके लिए नलकूबरको भेजा था, पर यह परास्त न हो सका, तब विष्णुने सुदर्शनचक्रसे इसका बध किया था (स्कंदपु० ब्राह्म० धर्मारण्य-माहात्म्य)।

लोलार्क–पु० [सं०] काशीका एक प्रसिद्ध तीर्थस्थान (स्कंदपु० काशीखंड)।

लोहगंध–पु० [सं०] एक जातिका नाम (महाभा०)।

लोहशंकु–पु० [सं०] पुराणानुसार एक नरकका नाम जो २१ नरकोंमेंसे एक है—दे० नरक।

लोहासुर–पु० [सं०] एक राक्षस जो ब्राह्मणका रूप धर धर्मारण्यके निवासियोंको कष्ट देता था। इससे दुःखी हो सारा धर्मारण्यपुर उजाड़ हो गया था (स्कंदपु० ब्राह्म० धर्मा०-माहात्म्य)।

लोहहारक—पु० [सं०] एक नरकका नाम—दे० 'मनु०'।

लोहित—पु० [सं०] एक पर्वतका नाम जो महान् सूर्यप्रभ पर्वतके निकट है और जिसकी तलहटीमें लोहित नामकी एक वड़ी झील है (मत्स्य० १२१.११, १२)।

लोहितोद—पु० [सं०] पुराणानुसार २१ नरकोंमेंसे एक—दे० नरक।

लोहित्य—पु० [सं०] (१) एक प्राचीन देशका नाम जिसके वहुतसे म्लेच्छ राजाओंको पूर्व दिग्विजयके समय भीमसेनने जीता था (महाभा० सभा० ३०.२६-२७)। (२) श्रीरामके प्रभावसे प्रकट हुआ एक तीर्थ जिसमें स्नान करनेसे वहुतसी सुवर्णराशि प्राप्त होती है (वन .८५.२)।

लोहित्या—स्त्री० [सं०] (१) एक नदीका नाम (महाभा० भीष्म० ९.३५)। (२) एक अप्सराका नाम।

लौगाक्षि—पु० [सं०] अनुके गुरुका नाम (ब्रह्मां० २.३५.४१)।

लौहचारक—पु० [सं०] पुराणानुसार एक अति भयंकर नरक—दे० नरक।

लौहि—पु० [सं०] अष्टकके एक पुत्रका नाम (हरिवंश)।

लौहित्य—पु० [सं०] (१) एक तीर्थ विशेषका नाम। (२) एक पर्वतका नाम। (३) एक पुण्य नदका नाम, जो लोहित नामक सरोवरसे निकलता है (मत्स्य० १२१.१२)।

व

वंक्षु—स्त्री० [सं०] आक्सस नदीका प्राचीन नाम जिसका उल्लेख वेदों तथा पुराणोंमें मिलता है। पुराणानुसार यह केतुमाल वर्षकी नदी ठहरती है। महाभारत और रघुवंश आदि ग्रन्थोंमें इसे अति पवित्र नदी माना गया है। इस नदीके तटपर पैदा हुए रासभ वहुत सुन्दर और वलवान् माने जाते हैं। वहुतसे म्लेच्छ देशोंके नरेश युधिष्ठिरके राजसूय यज्ञमें वहाँके सुन्दर रासभोंको भेंट रूपमें लाये थे (महाभा० सभा० ५१.१७-२०)।

वंजुला—स्त्री० [सं०] सह्याद्रि पर्वतसे निकलनेवाली एक नदीका नाम (वायु० ४५.१०४)।

वंदन—पु० [सं०] (१) एक ऋषिका नाम। (२) एक दैत्यका नाम।

वंशकरा—स्त्री० [सं०] मध्यप्रदेशके महेंद्र पर्वतसे निकली एक नदीका नाम। वायु० ४५.१०६ के अनुसार जो आज कल वंशधराके नामसे कही जाती है (मार्कंडेयपु०)।

वंशीवट—पु० [सं०] वृंदावनके एक वरगदके वृक्षका नाम। कहते हैं इसके नीचे श्रीकृष्ण अपनी वंशी वजाते थे (देवी भाग०)।

वक—पु० [सं०] (१) एक दैत्यका नाम जिसे श्रीकृष्णने अपनी वाल्यावस्थामें ही मारा था (भाग० १०.११.४६)। (२) एकचक्रा नगरीसे दो कोसकी दूरीपर यमुनातटवर्ती वनमें एक गुफाके भीतर रहनेवाला एक महावली राक्षस जिसे भीमने मारा था। कहते हैं कि इस नरभक्षी राक्षसका एकचक्रा नगरी तथा समीपवर्ती जनपदमें शासन चलता था। इसके वदलेमें इसके दैनिक भोजनका प्रवन्ध भी वहींके लोगोंको पारी वाँधकर करना पड़ता था। भीमसेनने इस दुष्टका वध कर वहाँकी जनताका घोर आतंक दूर किया —दे० वकासुर तथा (महाभा० आदि० १५९, ३-७; १६२-५ से अंततक)। (३) एक यज्ञका नाम (यज्ञमीमांसा)।

वककच्छ—पु० [सं०] दक्षिण भारतमें नर्मदाके तटपर स्थित एक राज्यका नाम। उज्जयिनीके राजा सातवाहन सर्ववर्माने कलाप व्याकरणका अध्ययन कर अपने गुरुको इसे गुरु-दक्षिणामें दे दिया था (कथासरित्सागर)।

वकदाल्भ्य—पु० [सं०] एक प्राचीन ऋषि, जो युधिष्ठिरकी सभामें विराजते थे (महाभा० सभा० ४.११)।

वकनख—पु० [सं०] विश्वामित्रके ब्रह्मवादी पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (महाभा० अनु० ४.५८)।

वकपंचक—पु० [सं०] कार्त्तिक शु० ११ से पूर्णिमातककी पाँच तिथियाँ (ज्योतिपसर्वसंग्रह)।

वकासुर—पु० [सं०] (१) कंसका अनुचर और पूतना राक्षसीका भाई एक राक्षस जिसे श्रीकृष्णने अपनी वाल्यावस्थामें ही मारा था (भाग० १०.२.१; ११.४८-५२; १२.१४; २६.८; ४३.३०; ४६.२६)। (२) एक राक्षसका नाम। लाक्षागृह जलनेपर जव पांडव वनमें जा रहने लगे थे, उसी समय भीमसेनने इसका वध किया था (महाभा० आदि० १६२.५ से १६३.१ तक)।

वकी—स्त्री० [सं०] एक राक्षसीका नाम —दे० वकी, पूतना तथा (भाग० १०.१२.१४)।

वकुलार्क—पु० [सं०] सूर्यपत्नी संज्ञा, पतिके तेजसे घवड़ा कर उत्तर कुरुमें स्थित 'वकुलवन'में तपस्या करने लगी थी जहाँ अश्विनी रूपा संज्ञासे अश्वरूपी सूर्यका समागम हुआ था जिसके फलस्वरूप अश्विनीकुमारोंका जन्म हुआ। यह वकुल वृक्षके नीचे हुआ, अतः सूर्यका यह नाम पड़ा (स्कंद पु० ब्राह्म० धर्मारण्य-मा०)।

वक्र—पु० [सं०] एक राजा जिसका नामान्तर दन्तवक्र है। इसने द्रौपदी स्वयंवरमें लक्ष्यवेधके लिए असफल प्रयास किया था (महाभा० आदि० १८६.१५)। यह भगवान् श्रीकृष्णके हाथों मारा गया था (उद्योग० १३०.४८)।

वक्रतुंडचतुर्थी—स्त्री० [सं०] माघ कृष्ण चंद्रोदयव्यापिनी चतुर्थी। इस व्रतको माघसे प्रारंभ कर प्रत्येक महीने करे तो संकट टले (भविष्योत्तरपु०)।

वक्रधर—पु० [सं०] द्वितीयाका टेढ़ा चंद्रमा मस्तकपर धारण करनेके कारण शंकरका एक नाम (स्कंदपु० तथा शिवपु०)।

वक्षोग्रीव—पु० [सं०] विश्वामित्रजीके ब्रह्मवादी पुत्रोंमेंसे एक पुत्र —दे० विश्वामित्र तथा (महाभा० अनु० ४.५३)।

वगलामुखी—स्त्री० [सं०] तंत्रानुसार दस महाविद्याओंमेंसे एकका नाम (वगलातंत्र तथा तंत्रसार)।

वग्गुद—पु० [सं०] एक प्रकारका पक्षी। पूर्व जन्ममें गुड़ चुरानेवाला दूसरे जन्ममें यह पक्षी होता है (मनुस्मृति)।

वज्र—पु० [सं०] (१) अनिरुद्धके पुत्रका नाम जिनकी

माताका नाम सुभद्रा या रूपा था। श्रीकृष्णने इन्हें इंद्रप्रस्थमें यादवोंका राजा बनाया था (महाभा० मौसल० ७.७२)। (२) पुराणानुसार देवराज इन्द्रका प्रधान शस्त्र जिसे भालेके फलके समान कहा गया है। ऐतरेयब्राह्मणके अनुसार दधीचि ऋषिको देखकर असुर भागते थे, पर उनके मरणोपरांत ये ऊधम मचाने लगे। अतः इंद्रने दधीचिके सिरकी हड्डीसे बने वज्रसे असुरोंका संहार किया था। भागवतानुसार वृत्रासुरके वधके लिए इन्द्रने दधीचिसे वज्र बनवानेके लिए उनकी हड्डी माँगी थी। उनके शरीरत्यागपूर्वक अपनी अस्थि देनेपर विश्वकर्माने उससे वज्र बनाया था (भाग० ६.१०. ११-१३)। मत्स्यपुराणानुसार श्री विश्वकर्माने सूर्यको खरादपर चढ़ाया था, तब उनका तेज कुछ छिलनेपर निकला था। इसी तेजसे विष्णुका चक्र, शिवका त्रिशूल और इन्द्रका वज्र बना था। भिन्न-भिन्न पुराणोंमें भिन्न-भिन्न कथाएँ मिलती हैं। अशनि, भिदुर, ह्रादिनी, कुलिश, पवि, शतकोटि, स्वरु, शम्ब, दम्भोलि आदि इसके अनेक नाम हैं (ऐतरेयब्राह्म०, भाग०, मत्स्य० आदि)।

वज्रकंकट—पु० [सं०] पवनसुत हनुमानका एक नाम—दे० हनुमान्।

वज्रकंटकशाल्मली—पु० [सं०] २१ नरकोंमेंसे एक नरक (भाग० ५.२६.७, २१)।

वज्रकृच्छ्रव्रत—पु० [सं०] यह गोबर और यावक (जौका उबाला जल) मिलाकर पीनेसे पूर्ण होता है (याज्ञवल्क्य)।

वज्रकेतु—पु० [सं०] एक राक्षसका नाम। कहते हैं यह नरकका राजा था (मार्कण्डेयपु०)।

वज्रज्वाला—स्त्री० [सं०] (१) विरोचन दैत्यकी पोतीका नाम (ब्रह्मां० २.२०.१२, १४, ३५, ३८)। (२) कुंभकर्णकी पत्नीका नाम (वाल्मी० रामा०)।

वज्रदंड—पु० [सं०] एक अस्त्र विशेष जिसे इन्द्रने अर्जुनको दिया था (महाभा०)।

वज्रदंत—पु० [सं०] एक बलवान् राक्षस जो रावणकी सभामें था (रामच० बालका० दो० १८०)। राम-रावण-युद्धमें विश्वकर्माके पुत्र नलने इसे मारा था (स्कंदपु० ब्राह्म० सेतु-माहात्म्य०)।

वज्रदंष्ट्र—पु० [सं०] एक असुरका नाम (महाभा०)।

वज्रदत्त—पु० [सं०] प्राग्ज्योतिषपुरका राजा, जो भगदत्तका पुत्र तथा युद्धमें अतिप्रवीण और महाबली था। इसका अर्जुनके साथ युद्ध हुआ। इसने अश्वमेधके घोड़ेको पकड़ लिया और नगरकी ओर चला गया। अर्जुनके साथ युद्ध और पराजय (महाभा० अश्व० ७५.१-५; ७६.२०)।

वज्रनाभ—पु० [सं०] (१) स्कंदके एक सैनिक अनुचरका नाम (महाभा० शल्य० ४५.६३)। (२) सुमेरु पर्वतके शिखरपर रहनेवाला एक महा असुर जो ब्रह्माके वरसे देवोंसे अवध्य हुआ था। इसे वज्रपुर नामकी नगरी मिली थी जहाँ यह बादको रहने लगा था। इसने देवताओं तथा ऋषियोंको बहुत कष्ट दिया था, पर अंतमें कश्यपके कहनेसे कुछ शांत हो गया था। (३) राजा उक्थके पुत्रका नाम (हिं० श० सा०)। (४) श्रीकृष्णके पौत्रका नाम जो मथुरामें रहते थे। पांडवोंके स्वर्गारोहणके पश्चात् परीक्षित् इनसे मिलने मथुरा गये थे। इन्होंने श्रीकृष्णसे सम्बद्ध स्थानोंपर नयी बस्तियाँ शांडिल्य मुनिकी सम्मति तथा परीक्षित्की सहायतासे बसा दी थीं (स्कंदपु० वैष्णव० श्रीमद्भागवत-माहात्म्य)।

वज्रबाहु—पु० [सं०] (१) दशार्ण देशके एक राजा जो सुमतिके पति थे। इन्होंने सुमतिको पुत्र सहित रोगग्रस्त होनेपर वनमें त्याग दिया था। इन दोनों माता-पुत्रने पद्माकर नामक वैश्यके यहाँ आकर आश्रय पाया। जहाँ इसके पुत्रकी मृत्यु होनेपर ऋषभ नामके शिवयोगीकी कृपासे सुमतिका मृत पुत्र पुनः जी उठा था। इसका नाम योगीने भद्रायु रखा था। इस बालकने वज्रबाहुके मगधराज द्वारा परास्त होनेपर पिताको बंधनसे छुड़ाया तथा राज्य प्राप्त किया। भद्रायुका विवाह निषधराज चंद्रांगद तथा सोमन्तिनीकी पुत्री कीर्त्तिमालिनीसे हुआ था (स्कंदपु० ब्राह्म०, ब्रह्मोत्तर-खण्ड)। (२) एक वानरका नाम जो राम-रावण-युद्धमें कुंभकर्णका मुखग्रास बन गया था (महाभा० वन० २८७.६)।

वज्रवारक—पु० [सं०] पुराणानुसार जैमिनि, सुमंतु, वैशंपायन, पुलस्त्य और अगस्त्य नामक ५ ऋषि। कहते हैं इनके नाम लेनेसे वज्र (बिजली) गिरनेका भय नहीं रहता।

वज्रविष्कंभ—पु० [सं०] गरुड़का एक पुत्र (महाभा० उद्योग० १०१.०१)।

वज्रवीर—पु० [सं०] महाकालका एक नाम—दे० महाकाल।

वज्रवेग—पु० [सं०] (१) एक राक्षसका नाम जो दूषण नामक राक्षसका छोटा भाई था और रावणके समान बली था। इसे हनुमान्ने मारा था (स्कंदपु० ब्राह्म० सेतु-माहात्म्य)। (२) एक विद्याधरका नाम—दे० विद्याधर।

वज्रहस्त—पु० [सं०] हाथमें वज्र धारण करनेके कारण इंद्रका एक नाम (ब्रह्मां०)।

वज्राभिषवण—पु० [सं०] एक अनुष्ठान विशेष जिसमें ३ दिन जौका सत्तू खाते हैं (कर्मकाण्ड-प्रवेशिका)।

वज्रायुध—पु० [सं०] वज्र है आयुध जिसका=इंद्रका एक नाम—दे० इंद्र।

वज्रावर्त—पु० [सं०] एक मेघका नाम, उदाहरणार्थ दे०—'सुनत मेघवर्तक सजि सैन्य लै आये। जलवर्त, वारिवर्त, पवनवर्त, वज्रावर्त, आगिवर्तक जलद संग लाये॥'—सूरदास।

वज्रासन—पु० [सं०] (१) हठयोगके चौरासी आसनोंमेंसे एक (योगदर्शन)। (२) गयामें बोधिवृक्षके नीचेकी एक शिला, जिसपर भगवान् बुद्धको ज्ञान प्राप्त हुआ था (त्रिपिटक)।

वज्री—पु० [सं०] वज्रको धारण करनेवाला=इन्द्र—दे० इंद्र।

वटसावित्री—स्त्री० [सं०] स्त्रियोंका एक व्रत विशेष जो स्कंद पु० तथा भविष्योत्तरके अनुसार ज्येष्ठ शु० १५को और निर्णयामृतादिके अनुसार ज्येष्ठ मासकी अमावस्याको होता है। इसे 'बरसाती अमावस्या' भी कहते हैं। जिस दिन वटवृक्षके नीचे पूजा होती है। यह व्रत पातिव्रत सिखानेको नियत किया गया था, जिस दिन सौभाग्यवती

स्त्रियाँ व्रत रखती हैं और सत्यवान्की रानी सावित्रीकी कथा सुनती हैं। इसी तिथिको सावित्रीको वर मिला था। यह व्रत सब स्त्रियोंको करना चाहिये—'नारी वा विधवा वापि पुत्री पुत्रविवर्जिता। सभर्तृका सपुत्रा वा कुर्याद् व्रतमिदं शुभम्॥' (स्कंदे धर्मवचनम्)।

वत्सद्वादशी—स्त्री० [सं०] भाद्रपद कृ० १२ को गोवत्सका पूजन करे एवं मूँग, मोठ तथा बाजरेका बना भोजन करे। इसमें दूध, दही या घी भैंसका वर्ते गौका नहीं (व्रतोत्सव)।

वत्सप्री—पु० [सं०] भनंदनके पुत्र तथा राजा विदूरथकी पुत्री मुदावतीके पति जिनके प्रांशु, प्रवीर आदि १२ पुत्र थे। प्रांशुके प्रजाति तथा प्रजातिके खनित्र आदि ५ पुत्र हुए। इन्होंने विदूरथकी आज्ञासे कुजृम्भ दैत्यको मारा था——दे० सुनंदा, विदूरथ तथा मार्कण्डेयपु०।

वत्सराज—पु० [सं०] पुरुवंशोत्पन्न राजा शतानीकके पौत्र, जिन्हें उदयन भी कहते हैं, का नाम। यह वत्सके राजा थे और कौशांबी इनकी राजधानी थी—दे० उदयन, शतानीक।

वत्सासुर—पु० [सं०] मथुरापति कंसका अनुचर एक राक्षस जिसका वध श्रीकृष्णने अपने बाल्यकालमें ही किया था (भाग० १०.११.४०, ४१)।

वनराजी—स्त्री० [सं०] वसुदेवजीकी एक दासीका नाम (देवीभाग०)।

वनायु—पु० [सं०] (१) (वायु०=विश्वायु) पुरूरवाके छह पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (महाभा० आदि० ७५.२५, २६; वायु० ९१.४८ आदि)। महाभारतके अनुसार पुरूरवाके शेष ५ पुत्रोंके नाम—आयु, धीमान्, अमावसु, दृढ़ायु और शतायु। वायु० के अनुसार शेष ५ मेंसे ४ के नाम पूर्ववत् दृढ़ायुके स्थानपर गतायु। भाग० के अनुसार छहके नाम—आयु, श्रुतायु, सत्यायु, रय, विजय और जय। (२) कश्यपपत्नी दनुके १०० पुत्रोंमेंसे विप्रचित्ति आदि दस प्रधान पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (महाभा० आदि० ६५.३०)। (३) एक भारतीय जनपद, जिसके घोड़े बहुत प्रसिद्ध थे (भाग० ९.५६)।

वनितामुख—पु० [सं०] मनुष्योंकी एक जाति विशेष (मार्कण्डेयपु०)।

वनेयु—पु० [सं०] यह पुरुके पुत्र रौद्राश्व द्वारा मिश्रकेशी अप्सराके गर्भसे उत्पन्न हुआ था। इसके ऋचेयु, कक्षेयु आदि नौ भाई और थे (महाभा० आदि ९४.८-११)।

वपु—स्त्री० [सं०] एक अप्सराका नाम जिसने दुर्वासाकी तपस्या भंग करनेकी चेष्टा की थी जिससे क्रुद्ध हो ऋषिने शाप दे इसे पक्षिणी बना दिया था। यह गरुड़-वंशमें कंधरकी तार्क्षी नामकी पुत्री हुई जिसका विवाह मंदपाल पक्षीके पुत्र द्रोणसे हुआ था। कालांतरमें तार्क्षी गर्भवती हुई और कुरुक्षेत्रमें अर्जुनके बाणसे घायल हो स्वर्ग सिधारी। इसके पेटसे ४ अंडे वहीं गिर पड़े, पर फूटे नहीं और भगदत्तके सुप्रतीक नामक गजराजकी पीठसे बन्धन कट जानेसे घंटा भी उसी समय गिरा जिससे अंडे ढक गये। इसके ४ बच्चे हुए जिनकी रक्षा महर्षि शमीकने की। ये चार पक्षिशावक बड़े तत्त्वज्ञ तथा शास्त्रोंका चिंतन करनेवाले थे—दे० सुकृष तथा मार्कण्डेयपु० जैमिनि-मार्कण्डेयसंवाद।

वपुष्टमा—स्त्री० [सं०] काशीराज सुवर्णवर्माकी एक पुत्रीका नाम जिसका विवाह परीक्षित्के पुत्र जनमेजयसे हुआ था (महाभा० आदि० ४४.८-११)। एक बार जनमेजय वपुष्टमाके साथ बैठे अश्वमेध यज्ञ कर रहे थे, उसी समय इंद्रने मरे घोड़ेमें प्रवेश कर वपुष्टमाके साथ सहवास किया। इससे रुष्ट हो जनमेजयने इन्द्रको शाप दिया तथा वपुष्टमाको त्याग दिया। ऋत्विजोंको निकाल देनेसे जनमेजयका पुण्य क्षीण हो गया था (हरिवंश)। गंधर्वराज विश्वावसुके कथनानुसार वपुष्टमा रंभा अप्सरा थी जिसे इन्द्रने जनमेजयके डरसे भेजा था (हरिवंश)। महाभा० आदि० ९५.८६ के अनुसार वपुष्टमाके गर्भसे शतानीक और शंकुकर्ण नामके दो पुत्र उत्पन्न हुए।

वपुष्मती—स्त्री० [सं०] कुमार कार्त्तिकेयकी अनुचरी एक मातृका (महाभा० शल्य० ४६.११)।

वपुष्मान्—पु० [सं०] विदर्भ देशके राजा संक्रन्दनका पुत्र। दशार्ण देशके राजा चारुवर्माकी पुत्री सुमनाने नरिष्यंत-पुत्र दमका वरण किया था जिससे रुष्ट हो इसने नरिष्यंतको, जब वह वानप्रस्थाश्रममें था, मार डाला। इससे क्रुद्ध हो दमने युद्धमें इन्हें परास्त कर मार डाला था (मार्कण्डेय पु० दम-चरित)।

वप्र—पु० [सं०] (१) द्वापर युगमें इस नामके एक व्यास हुए थे। (२) चौदहवें मनुके एक पुत्रका नाम।

वभ्रुवाहन—पु० [सं०] अर्जुनके एक पुत्रका नाम जो मणिपुरके राजा चित्रवाहनकी राजकुमारी चित्रांगदाके गर्भसे उत्पन्न हुआ था —दे० वभ्रुवाहन तथा (महाभा० आदि० २१६.२४)।

वरचतुर्थी—स्त्री० [सं०] यह व्रत भी कृच्छ्रचतुर्थीकी तरह मार्गशीर्ष शु० ४ से प्रारंभ हो चार वर्षोंमें पूरा होता है। यह सब प्रकारकी अर्थसिद्धि करनेवाला है (याज्ञवल्क्यस्मृति तथा स्कंद०)।

वरद—पु० [सं०] कुमार कार्त्तिकेयका एक सैनिक अनुचर (महाभा० शल्य० ४५.६४)।

वरदाचतुर्थी—स्त्री० [सं०] माघ शु० ४ को कुंदके फूलोंसे शिवका पूजन करे तो श्रीकी प्राप्ति होती है (निर्णयामृत)।

वरदान—पु० [सं०] द्वारकाके समीपवर्ती एक तीर्थका नाम, जहाँ दुर्वासा ऋषिने श्रीकृष्णको वरदान दिया था। यहाँ स्नान करने मात्रसे मनुष्यको हजार गोदानका फल प्राप्त होता है (महाभा० वन० ८२.६३-६४)।

वररुचि—पु० [सं०] एक प्रसिद्ध व्याकरणाचार्यका नाम जिसका विवाह उपवर्षकी पुत्री उपकोपासे हुआ था (कथासरित्सागर)।

वरशिख—पु० [सं०] एक असुर विशेष जिसे सपरिवार इंद्रने मारा था—दे० इन्द्र।

वरार्द्धक—पु० [सं०] देव-पूजनकी एक शास्त्रोक्त वस्तु। चंदन, कुंकुम और जल तीनों बराबर-बराबर लेकर इसे बनाते हैं (पूजासमुच्चय)।

वराह—पु० [सं०] (१) भगवान् विष्णुका एक अवतार, जिन्होंने एकार्णव जलमें मग्न पृथ्वीका उद्धार किया था तथा हिरण्याक्ष राक्षसका वध किया था (महाभा० सभा० ३८.२९ के बाद)। (२) एक प्राचीन ऋषिका नाम, जो

युधिष्ठिरकी सभामें विराजते थे (सभा० ४.१७)। (३) मगधकी राजधानी गिरिव्रजके समीपस्थ एक पर्वतका नाम (सभा० २१.२)।

वराहक–पु० [सं०] धृतराष्ट्र नागके कुलमें उत्पन्न एक नागका नाम, जो जनमेजयके सर्पसत्रमें स्वाहा हुआ था (महाभा० आदि० ५७.१८)।

वराहपुराण–पु० [सं०] अठारह पुराणोंमेंसे एक जिसमें विष्णुने वराह अवतारकी कथा पृथ्वीसे कही है। इसके वक्ता विष्णु हैं और उपलब्ध ग्रंथमें केवल १०,००० श्लोक मिलते हैं, पर कहा जाता है कि इसमें २४००० श्लोक हैं।

वराहमिहिर–पु० [सं०] यह उज्जयिनीके निवासी तथा आदित्यदासके पुत्र थे। ज्योतिषशास्त्रके एक प्रधान विद्वान् थे। बृहत्संहिता, पंचसिद्धांतिका और बृहज्जातक इनके प्रसिद्ध ग्रंथ हैं। यह ईसाकी ५वीं शताब्दीमें थे—द्रष्टव्य बृहज्जातकका उपसंहार।

वराहशिला–स्त्री० [सं०] हिमाचलके शिखरपर स्थित एक अति पवित्र प्राचीन शिला (स्कंदपु०, वै० बदरिकाश्रम-माहात्म्य)।

वरिष्ठ–पु० [सं०] (१) चाक्षुष मनुकेके पुत्रका नाम (महाभा० अनु० १८.२०)। (२) धर्मसावर्णि मन्वंतरके सप्तर्षियोंमेंसे एकका नाम (हि० वि० को०)। (३) उरूतमा ऋषिका एक नाम।

वरीयान्–पु० [सं०] पुलह ऋषिके गतिनामक भार्याके गर्भसे उत्पन्न तीन पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (भाग० ४.१.३४)।

वरुण–पु० [सं०] एक वैदिक देवताका नाम जिसे जलका स्वामी, दस्युओंका नाश करनेवाला तथा देवताओंका रक्षक माना गया है। ऋग्वेदमें वरुणके अनेक मंत्र हैं जिनमेंसे कुछ तो वे ही हैं जिन्हें शुनःशेफने स्तुति करते समय पढ़ा था। निरुक्तकार इन्हें द्वादश आदित्योंमें बतलाते हैं। महाभा० आदि० ६५.१५ के अनुसार कश्यप द्वारा अदितिके गर्भसे उत्पन्न द्वादश आदित्योंमें यह एक थे। इनकी ज्येष्ठ पत्नी देवीने इनके बल नामके एक पुत्र तथा सुरा नामकी एक पुत्रीको जन्म दिया था (आदि० ६६.५२)। वरुण पश्चिम दिशाके अधिपति (दिक्पाल) कहे जाते है। पुराणानुसार भी कश्यप-पुत्र वरुण अदितिके बारह पुत्रोंमेंसे एक माने गये हैं। भागवतके अनुसार चर्षणी नामकी पत्नीके गर्भसे भृगु और वाल्मीकि नामके वरुणके दो पुत्र हुए। इनका (वरुणका) अस्त्र पाश है। साहित्यमें वरुण करुणरसके अधिष्ठाता माने गये हैं (ऋग्वेद, भाग० ६.१८.४; आदिपु० तथा महाभा०)।

वेदोंमें वरुण बड़ा ही प्रतापी कहा गया है जिसे पृथ्वी और आकाश दोनोंका अधिपति माना गया है। सच तो यह है कि किसी अन्य वैदिक देवताको इतना ऊँचा आसन शायद नहीं मिला है। कुछ समय पश्चात् इन्हें आदित्योंमें प्रधानता मिली और आगे चलकर इन्हे केवल जलका स्वामी ही माना गया। महाभारतमें वरुणको कर्दमका पुत्र तथा पुष्करका पिता कहा गया है। एक बार यह उतथ्य ऋषिकी पत्नी भद्राको अपने घर ले आये, पर जब उतथ्यने अपने तपोबलसे सारा जल सुखा डाला तब कहीं वरुणने भद्राको लौटा दिया। उर्वशी अप्सराको देख इनका वीर्यपात हुआ था जिससे वशिष्ठ ऋषिका जन्म हुआ। वेदों तथा पुराणोंमें इनका प्रधान अस्त्र 'पाश' है जिसे 'नागपाश', 'पुलकाँग' या 'विश्वजित' कहते हैं। इनके छातेका नाम 'आभोग' है और इनके नगरको 'वसुधानगर' या 'सुखा' कहते हैं। जलपति, अंबुराज, उद्दाम, पाशभृत्, वारिप, आदित्य आदि इनके अनेक नाम है।

वरुणप्रघास–पु० [सं०] आषाढ़ या श्रावणकी पूर्णिमाको किया जानेवाला एक व्रत जिसमें जौका सत्तू खाकर रहना पड़ता है। कहते हैं इस व्रतका करनेवाला न तो जलमें डूबता ही है और न उसे जलजंतु ही पकड़ते हैं (व्रतसिंधु, व्रतनिर्णय)।

वरुथिनी-एकादशी–स्त्री० [सं०] वैशाख कृष्णा ११। इस एकादशीके व्रतसे व्रतीके सारे पाप दूर होते हैं तथा उत्तम लोक मिलता है (भविष्योत्तरपु०)।

वरेण्य–पु० [सं०] भृगुके एक पुत्रका नाम (ब्रह्मपु०)।

वर्करेश्वर–पु० [सं०] एक शिवलिंग विशेषका नाम जिसे महीसागर-संगम तीर्थमें कुमारिकाने स्थापित किया था (स्कंदपु०, माहेश्वर० कुमारिका-खंड)।

वर्करेश्वरतीर्थ–पु० [सं०] पंचाप्सरस तीर्थोंमेंसे एक जो दक्षिण समुद्रतटपर स्थित है और इंद्र-पत्नी शचीको अति प्रिय है। यहाँ शापवश सामेयी अप्सरा ग्राह रूपमें रहती थी तथा स्नान करनेवालोंको जलमें खींच ले जाती थी, अतः ऋषियोंने इसे त्याग दिया था। पांडु-पुत्र अर्जुनने इस अप्सराका उद्धार किया था (स्कंदपु०कुमारिका-खण्ड १. २१-२२, ४९-५० आदि)।

वर्चा–स्त्री० [सं०] एक अप्सराका नाम जो शातकर्णि मुनिके शापवश ग्राह रूपमें कुमारेश तीर्थमें रहती थी, जिसे अर्जुन पांडवने शापमुक्त किया था (स्कंदपु० कुमारिका-खण्ड)।

वर्ण–पु० [सं०] प्राचीन आर्यों द्वारा किये गये जनसमुदायका नाम जिसमें मनुष्योंके चार विभाग किये गये हैं—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। सर्वप्रथम इस शब्दका प्रयोग ऋग्वेदमें हुआ जिससे आर्यों और दस्युओंका ही बोध होता है। आर्य तथा अनार्यका यह विभाजन शायद रंग (वर्ण) के आधारपर ही था। आर्य गोरे थे और अनार्य (दस्यु) काले। आगे चलकर इनका विभाग व्यवसायके आधारपर हुआ और चार वर्ण माने गये। पुरुषसूक्तमें चारों वर्णोंकी उत्पत्ति दी है [ब्राह्मण ईश्वरके मुखसे; क्षत्रिय बाहुसे, वैश्य जँघासे और शूद्र पैरसे उत्पन्न कहे गये हैं]। स्मृतियोंमें चारों वर्णोंके पृथक्-पृथक् धर्म निरूपित है। भारतमें इस व्यवस्थाका रूप 'जन्मना' अर्थात् जातिगत हो गया है और यही 'वर्ण' और 'आश्रम'ने यहाँवालोंके धर्मको 'वर्णाश्रम धर्म' बना दिया—दे० ऋग्वेद, मनुस्मृति आदि।

वर्मक–पु० [सं०] आधुनिक बर्माका प्राचीन नाम। यहाँके निवासियोंको पूर्वदिग्विजयके समय अर्जुनने जीता था (महाभा० सभा० ३०.१३)।

वर्ष–पु० [सं०] पुराणोंमें उल्लिखित नौ देश—भारतवर्ष, किंपुरुषवर्ष, हरिवर्ष, रम्यकवर्ष, हिरण्यमय, उत्तरकुरु, इलावृत्त, भद्राश्व और केतुमाल।

वर्हीं–पु० [सं०] कश्यप ऋषिका एक पुत्र—दे० कश्यप ।

वल–पु० [सं०] एक असुर विशेष जो एक बार देवताओंकी गौएँ चुरा लाया था, पर इंद्र छीन लाये थे और यह बृहस्पतिके हाथों मारा गया था—दे० बल ।

वलक–पु० [सं०] तामस मन्वंतरके सप्तर्षियोंमेंसे एक (मार्कण्डेयपु०) ।

वलाहक–पु० [सं०] (१) श्रीकृष्णके रथका एक घोड़ा (भाग० १०.५३.५) । (२) कुशद्वीपका एक पर्वत (भाग० ५.१८.३२;२०.१३-१७; कुशद्वीप) ।

वल्गुजंघ–पु० [सं०] विश्वामित्र मुनिके कई पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (विष्णु० ४.७.३७.३८) ।

वल्लभाचार्य–पु० [सं०] श्री वल्लभ संप्रदायके प्रवर्त्तक आचार्य, जिनका जन्म १४७९ ई० और मृत्यु सन् १५३१ ई० में हुई । इन्होंने पुष्टिमार्गका विधान किया था जिसमें माहात्म्यज्ञानकी अपेक्षा भगवदनुग्रह ही विशेष नियामक है। प्रभुके सुखका विचार करना ही पुष्टि-भक्ति है । इनका शुद्धाद्वैतवाद प्रसिद्ध है । हिन्दीके प्रसिद्ध अष्टछापके कवि इन्हींके शिष्य थे (भाग० १०.२९.३२) ।

वल्वल–पु० [सं०] एक दैत्य विशेषका नाम जिसका वध बलरामजीने किया था (भाग० १०.७९.५) ।

वशिमा–स्त्री० [सं०] अणिमा, महिमा, गरिमा आदि दस सिद्धिदेवियोंमेंसे एक । ये दीप्तरथके नवम पर्वमें स्थित जपापुष्पकीसी कान्तिवाली चतुर्बाहु देवियाँ हैं । योगी जन इनकी सेवामें रत रहते हैं (ब्रह्मां० ४.१९.४;३६.५१;४४.१०८) ।

वसंत– पु० [सं०] वसंत ऋतुका अधिष्ठाता देवता । प्राचीन कालमें यह ऋतु चैत्र और वैशाखमें पड़ती थी पर अयनके खिसकनेसे अब फाल्गुन और चैत्र ही वसंत ऋतु हो गये हैं । इसी ऋतुमें वसंतोत्सव और मदनपूजाका विधान है । पुराणानुसार इस ऋतुका अधिष्ठाता देवता कामदेवका सहचर है । वसंत रागकी उत्पत्ति शिवके पाँचवें मुखसे कही गयी है जिसे वसंतपंचमीसे हरिशयनी एकादशी तक गा सकते हैं (संगीतदामोदर) पर संगीतदर्पणके अनुसार इसे वसंत ऋतुमें ही गाना उचित है ।

वसंतपंचमी–स्त्री० [सं०] माघ शुक्ला पंचमी जिस दिन वसंत और रति सहित कामदेवकी पूजाका विधान है और वसंत राग सुननेका बड़ा माहात्म्य है । इसी तिथिको समुद्रसे लक्ष्मीका जन्म हुआ था, अतः इसे श्रीपंचमी भी कहते हैं और इस दिन केवल एक वार भोजन कर आधा व्रत करते हैं, कोई-कोई एक ही पदार्थका भोजन करते हैं—दे० कामदेव ।

वसंतमहोत्सव–पु० [सं०] वसंतपंचमीके दूसरे दिन मनाया जाने वाला एक उत्सव जिस दिन वसंत और कामदेवकी पूजा करनेका विधान है —दे० होलिकोत्सव तथा धर्मशास्त्रसमुच्चय ।

वसाति–पु० (सं०] (१) यह सोमवंशी महाराज कुरुके वंशज राजा जनमेजयके अष्टम पुत्र थे (महाभा० आदि० ९४.५७) । (२) एक भारतीय जनपद । यहाँके वीर क्षत्रिय दुर्योधनकी आज्ञासे भीष्मकी रक्षामें नियुक्त हो तत्परतासे उनकी रक्षा करते थे (भीष्म० ५१.१४)

वसातीय–पु० [सं०] कौरव पक्षीय एक योद्धा जो अभिमन्युके साथ युद्ध करते हुए उनके हाथ मारा गया था (महाभा० द्रोणा० ४४.८-११)

वसिष्ठ–पु० [सं०] (१) एक प्राचीन ऋषि । वेदोंसे लेकर रामायण, महाभारत, पुराणादि सब ग्रंथोंमें इनका उल्लेख मिलता है । वेदोंके अनुसार यह मित्र और वरुणके पुत्र कहे गये हैं । ऋग्वेदके अनुसार काबुल, गांधारकी तरफ राज्य करनेवाले राजा दिवोदासके यह पुरोहित थे । पुराणानुसार सृष्टिके प्रथम कल्पमें यह ब्रह्माके मानस पुत्र ठहरते हैं । इनकी अनेक पत्नियाँ थी जिनमेंसे कर्दमकी पुत्री अरुंधतीको वशिष्ठ अधिक चाहते थे । विश्वामित्र तथा राजा निमिसे इनका जो झगड़ा हुआ वह अधिक प्रसिद्ध है । ब्रह्माके कहनेसे यह सूर्यवंशके पुरोहित हुए पर निमिसे विवादके कारण सूर्यवंशकी दूसरी शाखाओंका पुरोहित-कर्म छोड़ यह अयोध्याके समीप आश्रम बना रहने लगे और अब यह इक्ष्वाकुवंशके पुरोहित रह गये । इन्हींके कारण विश्वामित्र ब्राह्मणत्व प्राप्त करनेके लिए तप करने लगे थे । कहते हैं विश्वामित्रके १०० पुत्रोंको वशिष्ठने केवल हुंकारसे भस्म कर दिया था । यह ऋग्वेदके अनेक मंत्रोंके द्रष्टा थे । वशिष्ठ-पुत्र अय स्वारोचिष युगके प्रजापति थे (मत्स्य० ९.९) और शक्ति नामक इनके पुत्र एक गोत्रकार ऋषि थे (योगवाशिष्ठ, वशिष्ठसंहिता) ।

वसिष्ठपुराण–पु० [सं०] एक उपपुराणका नाम । कुछ लोग लिंगपुराण और वशिष्ठपुराणको एक ही मानते हैं (देवीभाग०) ।

वसिष्ठापवाह–पु० [सं०] एक स्थान विशेष । वशिष्ठ और विश्वामित्रका युद्ध विख्यात है । कहते हैं सरस्वती नदीने वशिष्ठको विश्वामित्रसे बचानेके लिए नहीं छिपाया था । (महाभा० शल्य० ४२ अ० ।)

वसुंधरा–स्त्री० [सं०] (१) सांबकी पत्नीका नाम जो श्वफल्ककी पुत्री थी । (२) पृथ्वीका एक नाम—दे० श्रीमद्भागवत ।

वसु–पु० [सं०] (१) देवताओंका एक गण जिसके अंतर्गत आठ देवता माने गये हैं । महाभारतके अनुसार आठ वसु ये हैं=धर, ध्रुव, सोम, विष्णु, अनिल, अनल, प्रत्यूष, और प्रभास । श्रीमद्भागवतके अनुसार=द्रोण, प्राण, ध्रुव, अर्क, अग्नि, दोष, वसु और विभावसु आठ नाम हैं । भागवतके अनुसार दक्ष प्रजापतिकी पुत्री तथा धर्मकी पत्नी 'वसु'के गर्भसे ही सब वसु उत्पन्न हुए थे । देवीभागवतके अनुसार अपनी गाय नंदिनीको चुरा लेनेके कारण वशिष्ठने वसुओंको मनुष्य-योनिमें उत्पन्न होनेका शाप दिया था । वसुओंके अनुनय-विनय करनेपर सात वसुओंके शापकी अवधि केवल एक वर्षकी कर दी । द्यो नामके वसुने अपनी पत्नीके बहकावेमें आकर उनकी धेनुका अपहरण किया था अतः उन्हें दीर्घकाल तक मनुष्योनिमें रहने तथा सन्तान उत्पन्न न करने, महान् विद्वान् और वीर होने तथा स्त्रीभोगपरित्यागी होनेको कहा । इसी शापके अनुसार इनका जन्म शांतनुकी पत्नी गंगाके गर्भसे हुआ । सातको गंगाने जलमें फेंक दिया, आठवें भीष्म थे जिन्हें बचा लिया गया—दे० शांतनु (महाभा० आदि ९९.६-९,२९-४१) । रामायणमें वसुओंको अदितिका पुत्र कहा गया है (महाभा० भाग० देवीभाग०) ।

(२) राजा नृगके एक पुत्रका नाम (भाग० ९.१.१२;२.१७;१०.६४.१०-३० आदि)। (३) धर्मकी पत्नी तथा आठ वसुओंकी माताका नाम, (भाग० ६.६.४.१०)। (४) एक निषादका नाम जो श्यामाकवन (सावाँके जंगल) की रक्षा करता था। वह सावाँके चावलोंका भात बना मधु मिला श्रीदेवी तथा भूदेवी सहित विष्णुको भोग लगा प्रसाद पाता था। चित्रवती नामकी पत्नीसे इसका 'वीर' नामक पुत्र था जिसके कारण वसुको विष्णुका दर्शन हुआ था (स्कंदपु० वैष्णव० भूमिवाराह-खंड)। (५) जमदग्निके एक पुत्रका नाम। इनकी माताका नाम रेणुका था। इनके भाई रुमण्वान्, सुषेण, विश्वावसु तथा परशुराम थे। पिताकी मातृ-वध करनेकी आज्ञा न माननेके कारण पिताका शाप इन्हें प्राप्त हुआ था। परशुरामजीने उक्त शापसे इन्हें मुक्त किया (महाभा० वन० ११६.१०-१७)। (६) उपरिचर वसुका नाम जो चेदिदेशके नरेश थे (आदि० ६३.१-२)। (७) भगवान् शिवका एक नाम (अनु० १७.१४०)। (८) भगवान् विष्णुका एक नाम (अनु० १४९.२५)।

वसुकेतु–पु० [सं०] भद्रवती नगरीके राजाका नाम। निःसंतान होनेसे दुखी हो यह एक घोर वनमें गया जहाँ ऋषियोंके आदेशसे पुत्रदा एकादशीका व्रत करनेसे इसे पुत्र हुआ था (ब्रह्मवैवर्तपु०)।

वसुदा–स्त्री० [सं०] (१) स्कंदकी अनुचरी एक मातृकाका नाम। (२) माली राक्षसकी पत्नीका नाम। अनल, निल, हर और संपाति नामके इसके चार पुत्र थे। ये चारों विभीषणके अमात्य थे, जो लंकापति रावणका प्रसिद्ध राम-भक्त भाई था —दे० रामायण।

वसुदान–पु० [सं०] (१) विदेहराजके एक पुत्रका नाम। (२) बृहद्रथका एक पुत्र (भाग० ९.१३.१५)। (३) एक चक्रवर्ती राजर्षिका नाम जिसकी राजधानी अयोध्या थी। इसने अमरेश्वर तीर्थमें एक यज्ञ किया जिसमें ब्रह्मा, विष्णु तथा शंकरका एक साथ पूजन हुआ। होमसे दूध और घी की अलग-अलग धाराएँ वह निकलीं और गोमूत्रकी भी एक धारा वह चली। ऋषि मुनियोंने देवताओंको जो स्नान कराया उस जलकी भी एक अलग धारा वही। इन सब धाराओंके योगसे एक नदी बन गयी जिसका नाम कपिला पड़ा। कपिला और नर्मदाका संगम 'रुद्रावर्त्ततीर्थ'के नामसे विख्यात हुआ (स्कंदपु० आवन्त्य० रेवा-खंड ३५.१५-२०)।

वसुदामा–पु० [सं०] (१) बृहद्रथका एक पुत्र (भाग० १२.१.१५; मत्स्य० २७२.२३)। स्त्री०—स्कंदकी अनुचरी मातृकाओंमेंसे एकका नाम (महाभा० शल्य० ४६.५)

वसुदेव–पु० [सं०] एक राजा जो श्रीकृष्णके पिता थे जो यदुवंशियोंके शूर कुलके थे। शूरसे रानी भोजाके गर्भसे उत्पन्न १० पुत्रोंमें वसुदेव सबसे ज्येष्ठ थे। अन्य मतानुसार मारिषाके गर्भसे उत्पन्न देवमीढ़के १० पुत्रोंमेंसे यह ज्येष्ठ पुत्र थे। इनके जन्मके समय स्वर्गमें दुंदभिका शब्द सुनायी पड़ा था, अतः इन्हें आनकदुंदभि कहते थे। रोहिणी, मदिरा, वैशाखी, भद्रा, सुनाम्नी, सहदेवा, शांतिदेवा, श्रीदेवा, देवरक्षिता, वृकदेवी, उपदेवी, तथा देवकी इनकी बारह पत्नियाँ थी। वायुपुराणानुसार अपरा इनमें एक थी (वायु० ९६.१६०)। रोहिणीके गर्भसे बलराम और देवकीके गर्भसे श्रीकृष्ण उत्पन्न हुए थे। वसुदेवकी बहिन कुंती पांडवोंकी माता थी। बलराम और श्रीकृष्णकी मृत्युके पश्चात् यह भी मर गये और इनकी चार पत्नियाँ सती हुईं (महाभा० मौसल० ७.१५,१९-२०)।

वसुधर्मा–पु० [सं०] एक राजाका नाम (महाभा०)।

वसुधा–स्त्री० [सं०] वरुणकी नगरीका नाम जिसे 'सुखा' भी कहते हैं। यह नैऋत्यपुरीसे उत्तर दिशामें है (स्कंदपु० काशी-खंड पूर्वार्ध)।

वसुधार–पु० [सं०] एक पर्वतका नाम (मार्कण्डेयपु०)।

वसुधारा–स्त्री० [सं०] (१) कुबेरकी अलकापुरीका नाम (—दे० कुबेर तथा वसुसारा) (२) बदरिकाश्रममें स्थित एक तीर्थका नाम जो मानसोद्भेदतीर्थसे पश्चिममें स्थित है, जहाँ नारदसे बदरिकाश्रमका माहात्म्य सुन सब वसु गये थे। वहाँ वसुओंने पत्ते चबा कर तथा जल पीकर तपस्या की थी। जहाँ वसुओंने तप किया वहाँ विष्णुने प्रकट हो दर्शन दिया और यहाँ स्नान कर पूजा करनेवाला मोक्ष प्राप्त करता है (स्कंदपु० बदरिकाश्रम-माहा; महाभा० वन० ८२.७६-७८)।

वसुप्रभ–पु० [सं०] कुमार कार्तिकेयका एक सैनिक अनुचर (महाभा० शल्य० ४५.६३)।

वसुमना–पु० [सं०] (१) अनेकपुराणोक्त एक मन्त्रद्रष्टा ऋषिका नाम। (२) एक प्राचीन राजाका नाम, जो अयोध्याधिपति हर्यश्व द्वारा ययातिपुत्री माधवीके गर्भसे उत्पन्न हुए थे। इनके निकट ही स्वर्गसे च्युत हुए राजा ययाति इनके सत्संगसे पुनः स्वर्ग चले गये (महाभा० आदि० ८६.५-६)। (३) एक राजाका नाम जो युधिष्ठिरकी सभामें विराजते थे (सभा० ४.३२)। (४) एक जनकवंशी राजकुमार, जिन्हें एक ऋषि द्वारा धर्मोपदेश प्राप्त हुआ (शांति० अ० ३०९)

वसुमान्–पु० [सं०] (१) पुराणानुसार एक पर्वत जो उत्तर दिशामें स्थित कहा गया है। (२) एक अग्निका नाम। यदि अग्निहोत्रसम्बन्धी अग्निको कोई रजस्वला स्त्री छू दे तो इन अग्निदेवको अष्टकपाल चरु द्वारा आहुति देनेकी विधि है (महाभा० वन० २२१.२७)

वसुमित्र–पु० [सं०] एक क्षत्रिय राजा जो, विक्षर नामके असुरके अंशसे उत्पन्न हुए थे (महाभा० आदि० ६७.४१)

वसुरुक–पु० [सं०] एक प्रकारके देवता।

वसुरुचि–पु० [सं०] एक गंधर्वका नाम।

वसुश्री–स्त्री० [सं०] स्कंदकी अनुचरी एक मातृकाका नाम (महाभा० शल्य० ४६.१४)।

वसुषेण–पु० [सं०] कुंतीके गर्भसे उत्पन्न सूर्य-पुत्र कर्णका एक नाम। यह अधिरथ तथा राधाके पोष्य-पुत्र थे जिन्होंने इनका यह नाम रखा था (महाभा० आदि० ६७.१४१)।

वसुसारा–स्त्री० [सं०] मेरु पर्वतपर स्थित कुबेरकी अलकापुरीका नाम (ब्रह्मां० २.१८.१-२; ३५.९४; ३६.१२८; मत्स्य० १२१.२-३;१३७. ३२; वायु० ६९.१९६)

वसुस्थली–स्त्री० [सं०] कुबेरकी अलकापुरीका नाम दे०—वसुसारा।

वसुहंस–पु० [सं०] वसुदेवके पुत्र एक यादवका नाम

(भाग०)

वसुहोम—पु० [सं०] पुराणानुसार अंगदेशका एक राजा, जिन्होंने मान्धाताको दण्डकी उत्पत्ति आदिका उपदेश दिया था (शांति० १२२.१-५४)

वसूज—पु० [सं०] ऋग्वेदके एक सूक्तके द्रष्टा एक अत्रिगोत्रोत्पन्न ऋषि (दे० ऋग्वेद)

वसोर्धारा—स्त्री० [सं०] अग्नि नामक एक वसु (अष्ट वसुओंमेंसे एक) की पत्नीका नाम जो द्रविणक आदिकी माता थी (भाग०, ६.६.११,१३) ।

वस्त्रप—पु० [सं०] (१) पुराणानुसार वस्त्रापथक्षेत्र नामक तीर्थस्थानका एक नाम जो आधुनिक गुजरातका 'गिरनार' स्थान है, जहाँ अभी भी बहुतसे यात्री हर साल जाते हैं (भाग०) (२) क्षत्रियोंकी एक जाति, इस जातिके राजकुमार युधिष्ठिरके यज्ञमें भेंट लाये थे (महाभा० सभा० ५२.१५-१७) ।

वस्त्रा—स्त्री० [सं०] भारतवर्षकी एक नदी जिसका जल भारतीय प्रजा पीती है (महाभा० भीष्म० ९.२५) ।

वह्नि—पु० [सं०] (१) मित्रविंदाके गर्भसे उत्पन्न श्रीकृष्णके १० पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (भाग० १०.६१.१६)। (२) तुर्वसुका पुत्र तथा भर्गका पिता (भाग० ९.१८.३३,४१;१९.२२;२३.१६; मत्स्य० २४.५३. वायु० ९३.१६) । (३) श्रीरामकी सेनाका सेनापति एक वंदर (रामायण) ।

वह्निमुख—पु० [सं०] देवताओंका एक नाम। अग्निमें डाला हुआ भाग देवताओंको मिलता है, अतः देवताओंका यह नाम पड़ा।

वह्निबीज—पु० [सं०] सोना। एक वार स्वर्गमें देवता गण बैठे रंभा अप्सराका नाच देख रहे थे। अग्निदेव काम पीड़ित हुए और उनका वीर्यपात हो गया जिसे उन्होंने कपड़ोंमें छिपा लिया। कुछ दिनों पश्चात् यह कपड़ोंमेंसे गिरा जिसे सोना कहने लगे (ब्रह्मवैवर्त्तपु० कृष्णजन्म-खंड) ।

वह्निव्रत—पु० [सं०] चैत्र कृ० ३०को किया जाने वाला एक व्रत जिसमें परविद्धा अमावस्या लेनी चाहिये। इसमें अग्निदेवकी स्वर्णनिर्मित मूर्तिकी पूजा की जाती है और वर्ष पर्यंत पूजा करनेके पश्चात् वह्निकी मूर्ति ब्राह्मणको दे दी जाती है (विष्णुधर्मोत्तर) ।

वाका—पु० [सं०] पौलस्त्यऋषिके पुत्र विश्रवाकी चार पत्नियोंमेंसे एक पत्नी, राक्षस माल्यवान्की पुत्री तथा त्रिशिरा, दूषण, विद्युज्जिह्व-तीन पुत्र और अनुपालिका (पुत्री) की माता (ब्रह्मां० ३.८.३८-३९,५६) ।

वाकिनी—स्त्री० [सं०] एक तंत्रोक्त देवीका नाम (तंत्रशास्त्र) ।

वाङ्मती—स्त्री० [सं०] नैपालकी एक नदी जो आजकल 'वागमती'के नामसे प्रसिद्ध है। वाराहपुराणोक्त गोकर्णमहात्म्यके अनुसार यह नदी गंगासे भी पवित्र है और इसमें स्नान करनेवाला वैकुंठ प्राप्त करता है (वाराहकुगोकर्ण पु० मा०) ।

वाजपेय—पु० [सं०] सात श्रौत यज्ञोंमेंसे पाँचवाँ जो अति प्रसिद्ध है—दे० यज्ञतत्त्वप्रकाश तथा यज्ञमीमांसा ।

वाजश्रवा—पु० [सं] एक गोत्रकार ऋषिका नाम जिसका पुत्र नचिकेता था जिसने इनके क्रुद्ध होनेपर यमराजके यहाँ जाकर उनसे ज्ञान प्राप्त किया था—दे० नचिकेता ।

वाजसनेयी—पु० [सं०] शुक्लयजुर्वेदकी एक शाखा। याज्ञवल्क्यने अपने गुरु वैशंपायनके रुष्ट होनेपर उनसे प्राप्त विद्या वमन कर दी थी और फिर सूर्यकी कृपासे इसे प्राप्त किया था जो पहले नष्ट हो गयी थी (मत्स्य०).।

वाजस्नजाक्ष—पु० [सं०] राजा वेनका एक नाम (भाग० ४.१३.१७-१८; तथा ब्रह्मपु० पृथु-चरित्र) ।

वाजिशिरा—पु० [सं०] (१) विष्णुका एक अवतार (हयग्रीवावतार)। (२) एक दैत्यका नाम (भाग०) ।

वातंड—पु० [सं०] एक गोत्रकार ऋषि जिनके गोत्रवाले वातंड्य कहे जाते हैं।

वातापि—पु० [सं०] विप्रचित्ति दानवका पुत्र तथा आतापि असुरका भाई एक असुर। ये दोनों भाई रामायणानुसार दंडकवनमें रहते थे और ऋषियोंको बहुत सताया करते थे। वातापि तो भेंड़ वन जाता और आतापि उसे मारकर ब्राह्मणोंको भोजन कराया करता था। भोजनोपरांत जव वह भाईका नाम लेकर पुकारता, तव वातापि ब्राह्मणोंका पेट फाड़ कर निकल आता था। एक दिन आतापिने वातपिको मारकर अगस्त्य ऋषिको खिलाया और फिर अभ्यासानुसार नाम लेकर पुकारने लगा। अगस्त्यजीने डकार लेकर कहा कि वह पच गया अव वातापि नहीं आ सकता। इसके पश्चात् आतापिको भी जलाकर भस्म कर दिया (ब्रह्मां० ४.३७.२५;३८.८)। महाभारतमें यह कथा कुछ भिन्न प्रकारसे लिखी है मणिमती नगरीका निवासी इल्वलका छोटा भाई वातापि वड़ा दुर्जय दानव था। इल्वल इसे भेंड़ या वकरी वनाकर पकाता ब्राह्मणको खिला वातापिका नाम लेकर पुकारता तो वह जीवित हो ब्राह्मणका पेट फाड़कर वाहर आ जाता था । इल्वलमें यह शक्ति थी कि वह किसी मृत व्यक्तिका नाम लेकर पुकारता तो वह जी उठता था (महाभा० वन० ९९.३९)

वातायन—पु० [सं०] (१) एक मंत्रद्रष्टा ऋषिका नाम। (२) एक जनपद विशेष (रामायण) ।

वात्स्यायन—पु० [सं०] (१) एक ऋषि। (२) कामसूत्रके प्रणेता एक प्रसिद्ध ऋषि —दे० कामसूत्र ।

वादरायणि—पु० [सं०] व्यासजीके पुत्र शुकदेव (ब्रह्मां० ३.१०.७५-८०) ।

वादूलि—पु० [सं०] विश्वामित्रके एक पुत्र (विष्णु ४.) ।

वाधूल—पु० [सं०] एक गोत्रकार ऋषि। इस गोत्रके लोग 'वाधौल' कहलाते हैं।

वाम—पु० [सं०] (१) ऋचीकका एक पुत्र (भाग० ९.१५.५-११; ब्रह्मां० २.१३.९५;३२.१०४;३.१.९५;२५.८३;३.६६.६४; वायु० ९१.६६,९२) । (२) रोहिणी और श्रीकृष्णके दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (भाग० १०.६१.१७) । (३) चंद्रमाके रथके एक घोड़ेका नाम (ब्रह्म० २.१०.८३) ।

वामकक्ष—पु० [सं०] एक गोत्रकार ऋषिका नाम।

वामदेव—पु० [सं०] (१) एक वैदिक ऋषिका नाम जो उशिजके पिता थे (वायु० ६५.१०२;९९.११४) । ऋग्वेदके चौथे मंडलमें इनके रचे सूक्त मिलते हैं जिनसे इनकी दैवी शक्ति तथा योगवलका पता चलता है। (२) दशरथजीके एक मंत्रीका नाम (रामायण) । (३) शिवका एक नाम। (४) एक रुद्रका नाम। (५) एक ऋषिका नाम जिनके

पास 'वाम्य' नामके दो अति तीव्रगामी घोड़े थे (महाभा० वन० १९२.४३,४८-५९)। (६) हाथियोंका एक वर्ग जिसमें अंजन (इरावतीका पुत्र) था (ब्रह्मां० ३.७.२९२, ३२७,३३९)।

वामदेव्य–पु० [सं०] (१) एक ऋषिका नाम। (२) पुराणानुसार शाल्मलिद्वीपके एक पर्वतका नाम (भाग० ५.२०.१०)।

वामन–पु० [सं०] (१) एक दिग्गजका नाम (भाग०), (२) क्रौंचद्वीपका एक पर्वत (ब्रह्मां० ३.१०.७,४८)। (३) विष्णुका पाँचवाँ अवतार जो वलिको छलनेके लिए अदितिके गर्भसे हुआ था (भाग० ८.१३.६; १०.३.४२; मत्स्य० १७२.५;१७८.२०; वायु० ९६.१९६;९७.२३)। (४) एक पुराणका नाम।

वामनद्वादशी–स्त्री० [सं०] भाद्र शुक्ला द्वादशी जिस दिन व्रत करके विष्णुके वामन अवतारकी पूजा करते हैं। राजा वलिने छल करके इंद्रका राज्य ले लिया था अतः वामन अवतारने वलिको छला। इसे 'ओक द्वास्सी' भी कहते हैं। अन्य मतानुसार आपाढ़ शुक्ला द्वादशीको यह पूजन होता है जिससे यज्ञके समान फल होता है (महाभारत)।

वामनपुराण–पु० [सं०] अठारह पुराणोंमेंसे एक जिसमें ब्रह्माने जीवनके तीन प्रधान लक्ष्योंकी व्याख्या की है। विष्णु और शिव दोनों ही इसके प्रधान देव हैं, दोनोंका इसमें गुणगान है लेकिन विष्णुके वामन अवतारकी प्रधानता है। यह प्राचीन नहीं दीखता और पुराणोंके लक्षण भी पूरे नहीं घटते। इसमें १०,००० श्लोक हैं।

वामना–स्त्री० [सं०] एक अप्सराका नाम (ब्रह्मपु०)।

वामनिका–स्त्री० [सं०] स्कंदकी अनुचरी एक मातृका नाम (महाभा० शल्य० ४६.२३)

वाममार्ग–पु० [सं०] दक्षिण मार्गका उलटा एक तंत्रोक्त मत जिसमें निषिद्ध वातोंका ही विधान है (वामकेश्वरी मतविवरण)।

वामरथ–पु० [सं०] एक गोत्रकार ऋषिका नाम, इस गोत्र वाले वामरथ्य कहे जाते हैं।

वामाचार–पु० [सं०] एक तंत्रोक्तमत जिसमें मद्य, मांस, मत्स्य, मुद्रा, और मैथुन इन पंच मकारोंसे पूजन करते हैं (तंत्रशास्त्र)।

वाम्नी–स्त्री० [सं०] एक गोत्रकार स्त्रीका नाम, इस गोत्रवाले वाम्नेय कहे जाते हैं।

वाम्य–पु० [सं०] महाभारतके अनुसार ऋग्वेदोक्त वामदेव ऋषिके घोड़ोंका नाम (महाभा० वन० १९२.४१)।

वायु–पु० [सं०] उपनिषद् और वेदांतानुसार यह आकाशसे उत्पन्न हुआ है। वैशेषिक दर्शन इसे द्रव्य मानता है और न्यायदर्शनमें इसे पंचभूतोंमें रखा है। सांख्यानुसार यह स्पर्शतन्मात्रासे उत्पन्न होता है। इसे अनिल भी कहते हैं और यह देवता माना गया है (ब्रह्मां० २.२५.१२)।

वेदोंमें वायुको इंद्रका मित्र और दोनों एक ही रथपर चढ़ कर चलते हैं कहा है। वर्षाकालमें इन दोनोंकी मित्रताका प्रत्यक्ष दर्शन होता है। निरुक्तके अनुसार पृथ्वीपरके अग्निदेव, वायुमंडलके पवनदेव और इंद्र तथा आकाशके सूर्य, इन तीन देवताओंमें घनिष्टता अधिक है। पुरुषसूक्तानुसार वायुकी उत्पत्ति 'पुरुष'के श्वाससे हुई पर दूसरी ऋचामें वायुको त्वष्ट्रीका जामाता कहा है। विष्णुपुराणानुसार वायु गंधर्वोंका राजा है। भागवतानुसार नारद ऋषिके वहकानेपर वायुने सुमेरु पर्वतके शिखरको अपने वेगसे ढाह कर समुद्रमें उठा फेंक दिया। यही लंकाका द्वीप वना। महाभारतके अनुसार वायु भीमके पिता हैं और हनुमान् भी इनके ही पुत्र कहे गये हैं। कुशनाभकी १०० पुत्रियोंको इन्होंने कुवड़ी वना दिया था जिनके नामपर कान्यकुब्ज देशका नामकरण हुआ—दे० भीम, अंजना, कुशनाभ, कान्यकुब्ज आदि।

वायुधारिणी पूर्णिमा–स्त्री० [सं०] आपाढ़ शु० १५ को सूर्यास्तके समय गणेशपूजन करके "सुदीर्घ शंकुके अग्रभागमें मंद वायुके संचालन मात्रसे संचालित होने वाले रुईके फाहेको लटका कर सीधा खड़ा करे और जिस ओरकी हवा हो तदनुसार शुभाशुभ निश्चित करे।"—(ज्योतिषशास्त्र)।

वायुपुराण–पु० [सं०] अठारह पुराणोंमेंसे एक जिसमें वायु द्वारा रुद्र-माहात्म्य कहा गया है। कहते हैं इसमें २४००० श्लोक थे जिनमेंसे अवतक सव नहीं मिल सके हैं। आदि सृष्टिकी रचनासे लेकर आनेवाली सृष्टितककी इसमें व्याख्या है। इसका संवंध शिवपुराणसे ही है, क्योंकि इसमें शिव-माहात्म्य ही विशेष है। पूरा पुराण चार खंडोंमें विभाजित है।

वायुहा–पु० [सं०] मंकण ऋषिके पुत्र, एक प्रसिद्ध ऋषिका नाम। सरस्वती नदीमें एक नग्न स्त्रीको देख इनका (मंकणका) वीर्य स्खलित हो गया। कलशमें रखे हुए जिससे वायुवेग, वायुवल, वायुहा, वायुमंडल, वायुज्वाल, वायुरेता और वायुचक्र नामके सात पुत्र हुए (महाभा० शल्य० ३८.३२-३७)।

वारणावत–पु० [सं०] गंगाके किनारे वसा एक नगर जहाँ युधिष्ठिर आदि पांडवोंको जलानेके लिए दुर्योधनने लाक्षागृह वनवाया था। यह दुर्योधनके मंत्री पुरोचनकी देखरेखमें वना था और शायद करनालके या इलाहावादके हँडिया नामक स्थानके निकट था। यहाँ पांडव एक वर्षतक रहे थे (महाभा० आदि० ६१.१७-२२)। पांडवोंने संधिके समय जिन पाँच ग्रामोंकी माँग की थी, उनमें एक वारणावत भी था (उद्योग० ३१.१९-२०)।

वारधान–पु० [सं०] पुराणानुसार वाटधान नामक स्थानका दूसरा नाम (भाग०)।

वारवासि–पु० [सं०] भारतके पश्चिमका एक स्थान (महा०)।

वारवास्य–पु० [सं०] एक भारतीय जनपदका नाम (महाभा० भीष्म० ९.४५)।

वाराणसी–स्त्री० [सं०] एक प्रमुख तीर्थ। काशीका प्राचीन तथा आधुनिक नाम। वरुणा और असीके बीच वसे रहनेके कारण काशीका यह नाम पड़ा (स्कंदपु०काशी-खण्ड)। यहाँ कपिल ह्रदमें स्नान कर भगवान् शंकरकी पूजा करनेसे राजसूय यज्ञका फल प्राप्त होता है। इसका मध्यक्षेत्र अविमुक्त कहलाता है। यहाँ प्राण त्याग करनेवालोंको मुक्ति प्राप्त होती है (महाभा० वन० ८४.७८-७९)।

वाराह–पु० [सं०] दे० वराह।

वाराहतीर्थ—पु० [सं०] त्र्यम्बकतीर्थांतर्गत एक विशिष्ट स्थान। पूर्वकालमें सिंधुसेन नामक राक्षस देवताओंको परास्त कर यज्ञको रसातल ले गया था, अतः पृथ्वीपर यज्ञका अभाव हो गया। जिस मार्गसे गंगा रसातल गयी थी विष्णु भी उसी मार्गसे रसातल जा राक्षसोंको परास्त कर यज्ञको मुँहमें रखकर ले आये। उसी मार्गसे निकल जहाँ विष्णुने अपने अंगोंका रक्त गंगाजलसे धोया वहाँ वाराह-कुंड वना और जहाँ यज्ञको मुँहसे निकालकर दे दिया वहाँ वाराहतीर्थ वना (ब्रह्मपु० वाराह-तीर्थ-महिमा)। यह कुरुक्षेत्रकी सीमाके अन्तर्गत स्थित एक उत्तम तीर्थ है, यहाँ स्नान करने मात्रसे अग्निष्टोम यज्ञका फल प्राप्त होता है (महाभा० वन० ८३.१८-१९)।

वाराही—स्त्री० [सं०] (१) एक मातृकाका नाम (स्कंदपु०)। (२) एक योगिनीका नाम।

वाराहीशिला—स्त्री० [सं०] वराह भगवान्‌ने रसातलसे पृथ्वीका उद्धार तथा हिरण्याक्ष दैत्यका युद्धमें वध करनेके पश्चात् प्रलयकालतक वदरी-क्षेत्रमें शिलाके रूपमें ही विश्राम किया था, अतः यह नाम पड़ा (स्कंदपु० वै० वदरिकाश्रम-माहात्म्य)।

वारिसार—पु० [सं०] चंद्रगुप्तके पुत्र तथा अशोकवर्द्धनके पिताका नाम (भाग० १२.१.१२)।

वारिसेन—पु० [सं०] एक राजाका नाम जो सूर्यपुत्र यमराजकी सभामें रहकर उनकी उपासना करते थे (महाभा० सभा० ८.२०)।

वारुणी—स्त्री० [सं०] (१) वरुण द्वारा प्रेषित वृंदावनके एक कदंवके खोखलेसे प्राप्त एक प्रकारका रस जिसे वलरामने छककर पीया था (भाग० १०.६५.१९)। (२) एक पर्व जो चैत्र वदी त्रयोदशीको शतभिषा नक्षत्रमें होता है। उसी दिन शतभिषा और शनिवार हो तो महावारुणी और यदि शतभिषा, शनिवार तथा शुभ योग भी हो महा-महावारुणी होती है (वाचस्पति० निवंध)। 'चैत्रासिते वारुणऋक्षयुक्ता त्रयोदशी सूर्यसुतस्य वारे। योगे शुभे सा महती महत्या गङ्गाजलेऽर्कग्रहकोटितुल्या ॥'—त्रिस्थलीसेतु।

वार्क्षी—स्त्री० [सं०] प्रचेतागणकी पत्नी 'मारिपा'का एक नाम। इसका जन्म कुंडमुनि और प्रम्लोचा अप्सराके संयोगसे हुआ था। मारिषा दक्ष प्रजापतिकी माता थी। वृक्षों द्वारा इसका पालन हुआ था, अतः यह नाम पड़ा (विष्णु० १.१५.७)।

वार्षक—पु० [सं०] पुराणानुसार सुद्युम्न द्वारा विभक्त किये पृथ्वीके दस खण्डोंमेंसे एक (मत्स्य० ११.४०,६६; १२.१-१४)।

वार्ष्णेय—पु० [सं०] (१) वृष्णिके वंशज होनेके कारण श्रीकृष्णका एक नाम (भाग०; गीता० ३.३६)। (२) राजा नलका सारथि (महाभा० वन० ६०.१०)।

वालखिल्य—पु० [सं०] दे० वालखिल्य।

वाली—पु० [सं०] वंदरोंका एक राजा जो सुग्रीवका वड़ा भाई और अंगदका पिता था। पुराणानुसार यह इंद्रका पुत्र था—दे० वाली। रामायणके अनुसार इसे इन्द्रसे वर मिला था (किष्किंधा० क्षेपक दो० १० के पश्चात्)। इसे ब्रह्मासे वर मिला था कि 'जो तुम्हारे सामने आये उसका आधा वल तुम्हारे अंदर आ जायगा' (रामा० किष्किंधा० क्षेपक दो० १० के पश्चात्)। इसीसे श्रीरामने इसे पेड़के पीछे छिपकर मारा था। इसकी पत्नी तारा पंचकन्याओंमें गिनी गयी है (किष्किंधा० दो० ११)।

वालुकाप्रभ—स्त्री० [सं०] एक नरकका नाम—दे० नरक।

वाल्मीकि—पु० [सं०] भृगुवंशोत्पन्न तथा प्रचेताके वंशज एक मुनि जो जगत्‌विख्यात रामायणके रचयिता और आदि कवि कहे जाते हैं। तमसा नदी (आधुनिक टौंस) के तटपर इनका आश्रम था। उत्तरी विहारके चम्पारन जिलांतर्गत भैंसालोटन ग्राममें इनका आश्रम कहा जाता है जिसका आधुनिक नाम 'वाल्मीकिनगर' १४.१.१९६४ ई०से घोपित किया गया है। एक दिन एक व्याधने क्रौंच पक्षीके जोड़ेमेंसे एकको मारा जिसे देख इनके मुखसे एक श्लोक निकला जो लौकिक छंदोंका प्रथम उदाहरण था—'मा निपाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः। यत्क्रौञ्चमिथुनादेकमवधीः काममोहितम् ॥' कविके मुखसे निकला छंद विशुद्ध वर्णयुक्त अनुष्टुप् था जो इन्हें इतना पसन्द आया कि इन्होंने सारे महाकाव्य रामायणकी रचना प्रायः इसी छंदमें कर दी। व्यासदेवने 'बृहद्धर्मपुराण'में इनकी तथा इनके रामायणकी प्रशंसा की है। महर्पिने दिव्यज्ञानके प्रभावसे रामावतारसे पहले ही रामायणकी रचना की थी। दुर्मुखसे सीताजीके संवंधमें लोकापवाद सुन श्रीरामने उन्हें वनवासकी आज्ञा दी थी। इस समय वाल्मीकिने ही उन्हें अपने आश्रमपर रखा था जहाँ श्रीरामके यमज पुत्रोंका जन्म हुआ। वाल्मीकिने ही लव और कुश रामचंद्रजीके दोनों पुत्रोंको शिक्षा दी थी और रामायण याद करायी थी (स्कंदपु० आवन्त्य० अवंतीक्षेत्र-माहात्म्य)।

नोट विशेष—पूर्वकालमें सुमति नामक एक भृगुवंशी ब्राह्मण थे जिनकी पत्नी कौशिक वंशकी कन्या थीं जिसके गर्भसे अग्निशर्मा नामक एक पुत्र हुआ जो पिताके कहनेपर भी वेदाभ्यासमें मन नहीं लगाता था। एक वार देशमें अकाल पड़नेपर यह परिवार विदिशाके वनमें चला गया तथा वहीं आश्रम वना रहने लगा। अग्निशर्माका साथ डाकुओंसे हो गया और यह एक प्रसिद्ध डाकू तथा लुटेरा वन गया। कुछ दिनोंमें उधरसे सप्तर्पि आये जिन्हें इसने घेरा। अत्रि ऋषिकी कृपासे इन्हें ज्ञान प्राप्त हुआ और इसने १३ वर्पोंतक अत्रिके आदेशानुसार 'राम' नाम जपकर सिद्धि प्राप्त की। १३ वर्पोंके पश्चात् सप्तर्पि पुनः आये और इनके ऊपर जमी वाँवी (वल्मीक) देख वोले—'तुम दीर्घकालतक वल्मीकमें वैठे रहे हो, अतः तुम वाल्मीकि नामसे विख्यात होगे।' सप्तर्पियोंके जानेके पश्चात् वाल्मीकिने कुशस्थलीमें शिवाराधनसे कवित्वशक्ति प्राप्त की थी। उत्तरी विहारके चम्पारन जिलांतर्गत भैंसालोटन ग्रामके निकट ही वाल्मीकिका आश्रम है और उसके खंडावशेष अभी भी विद्यमान हैं। नेपालराज्यमें त्रिवेणी नामक स्थानमें वाल्मीकिकी जन्मतिथि अभी भी जनवरी १४ को प्रत्येक वर्ष मनायी जाती है।

वाशिष्ठ—पु० [सं०] (१) एक उपपुराणका नाम। (२) एक तीर्थस्थानका नाम।

वाष्कल—पु० [सं०] समुद्रके निकटवर्ती प्रदेशका एक ग्राम

जहाँ वैदिक धर्मसे विमुख द्विज रहते हैं। विन्दुग नामक ब्राह्मण, जो चंचुलाका पति था, यहीं रहता था। इन दोनों भ्रष्ट व्यक्तियोंका उद्धार शिवपुराण सुनकर हुआ था। पहले चंचुला पाप-मुक्त हुई, फिर उसकी प्रार्थनापर पार्वतीकी आज्ञासे तुंबुरुने विन्ध्यपर्वतपर रहनेवाले विंदुंगका पिशाच योनिसे मुक्ति की (शिवपु०-माहा० अध्याय ४.५)।

वाष्कलि–पु० [सं०] प्राचीनकालके एक ऋषि जो महर्षि कालयावीके गुरु और ऋग्वेदके आचार्य थे (वायु० ६०.२६; विष्णु० ३.४.१८)।

वासवदत्ता–स्त्री० [सं०] उज्जयिनीके राजा चंद्रसेनकी पुत्री जो चंद्रवंशी सहस्रानीकके पुत्र उदयनको व्याही थी—दे० उदयन।

वासवि–पु० [सं०] = (वासव) इन्द्रका एक नाम—दे० इन्द्र।

वासवी–स्त्री० [सं०] व्यासजीकी माता मत्स्यगंधाका एक नाम (ब्रह्मां० ३.१०.५४, ७४; वायु० ७३.२.२१; मत्स्य० १४ अध्याय पूरा)।

वासुकि–पु० [सं०] आठ नागोंमेंसे दूसरा जो कद्रूके गर्भसे उत्पन्न कश्यपका पुत्र था। इसकी वहिनका नाम जरत्कारु था जो जरत्कारु ऋषिको व्याही थी। इसीके गर्भसे आस्तीकका जन्म हुआ था जिसने सर्पयज्ञके समय जनमेजयसे कहकर सर्पकुलकी रक्षा की थी। समुद्र-मंथनके समय वासुकि मंथन-रज्जु वने थे (शुकोक्ति-सुधासागर)।

वास्तुपूजा–स्त्री० [सं०] गृहप्रवेशके समय वास्तु पुरुषकी पूजाका विधान है।

वाहुक–पु० [सं०] अज्ञातवासके समय राजा नलका नाम। उन्होंने इसी नामसे अयोध्याके नरेश ऋतुपर्णके यहाँ अश्वाध्यक्षपद संभाला था (महाभा० वन० अध्याय ६७)।

विंद–पु० [सं०] (१) अवंतीके एक राजकुमारका नाम जो अनुविंदका भाई था। दक्षिण दिग्विजयके अवसरपर सहदेवने इसे परास्त किया था (सभा० ३१.१०)। यह एक अक्षौहिणी सेना लेकर दुर्योधनकी सहायताके लिए महाभारत-युद्धमें सम्मिलित हुआ था। भीष्म द्वारा इसकी श्रेष्ठ रथियोंमें गणना की गयी थी (उद्योग० १९.२४-२५; १६६.६)। (२) धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (महाभा० आदि० ६७.९४)।

विंदुमती–स्त्री० [सं०] राजा शशिविंदुकी पुत्री—दे० शशिविंदु।

विंदुमाधव–पु० [सं०] काशीमें स्थित एक प्रसिद्ध विष्णु-मूर्त्तिका नाम। एक वार विष्णु काशी आये थे, उसी समय अग्निविंदु नामक एक ऋषिकी स्तुतिसे प्रसन्न हो विष्णुने वर माँगनेके लिए कहा। ऋषिने कहा कि 'आप हमारे नामसे विख्यात हो पंचनद तीर्थपर निवास करें। विष्णुने इसे स्वीकार किया और ऋषिका आधा नाम अपने नामके आगे जोड़कर यहीं वास करते हैं। अतः इनका नाम 'विंदुमाधव' पड़ा और पंचनद तीर्थ 'विंदुतीर्थ कहलाता है (स्कंदपु० काशी-खण्ड)।

विंदुसर–पु० [सं०] (१). पुराणानुसार कैलाश पर्वतके दक्षिणमें स्थित एक सरोवरका नाम जिसके तटपर भगीरथने गंगाको भूलोकमें लानेके लिए तप किया था। गंगाजी इसी स्थानसे निकली हैं। देवताओंने यहाँ अनेक यज्ञ किये थे। गंगाके जलकणोंसे यह सर वन गया, अतः विंदुसर कहलाया (भाग० ९.९.२-१३; मत्स्य० १२१.२६; वायु० ८८.१६७; विष्णु० ४.४.३५-६)। (२) उड़ीसाके एक प्राचीन सरोवरका नाम जो भुवनेश्वरक्षेत्रमें पड़ता है (स्कंदपु० वैष्णव० उत्कल-खण्ड)।

विंध्य–पु० [सं०] एक प्रसिद्ध पर्वत-श्रेणि, जो आर्यावर्त देशकी दक्षिण सीमापर है। यहाँ सुन्द और उपसुन्दने घोर तपस्या कर इसे इतना तपा दिया था कि इससे धुआँ निकलने लगा था (महाभा० आदि० २०८.७, १०)। पुराणानुसार यह सात कुल पर्वतोंमें है। महाभारतके अनुसार इसने एक वार सूर्यसे कहा कि मेरी परिक्रमा किया करो। सूर्यके अस्वीकार करनेपर यह ऊपर वढ़ने लगा। कहीं यह सूर्यका मार्ग न रोक दे, यह सोचकर अगस्त्य ऋषि इसके पास आये। इसने उन्हें साष्टांग प्रणाम किया तव मुनि अपने लौटनेके समयतक इसे इसी तरह रहनेके लिए कह चले गये और फिर नहीं लौटे। इसीलिए यह पर्वत अवतक लेटा पड़ा है (महाभा० वन० १०४.६, १३-१४)। इस उत्तम पर्वतपर दुर्गा देवीका सनातन निवास है (विराट० ६.१७)। इसने कुमार कार्त्तिकेयको उच्छृङ्ग तथा अतिश्रृङ्ग नामके दो पार्षद दिये थे (शल्य० ४५.४९-५०)। जो मनुष्य हिंसाका त्यागकर सत्यप्रतिज्ञ हो विन्ध्याचलमें विनीतभावसे तपस्या करता हुआ रहता है, उसे एक महीनेमें सिद्धि प्राप्त होती है (अनु० २५.४९)।

विंध्यकूट–पु० [सं०] अगस्त्य ऋषिका एक नाम —दे० अगस्त्य।

विंध्यवासिनी–स्त्री० [सं०] देवीकी एक प्रसिद्ध मूर्ति जो मिर्जापुर जिलेमें विंध्यपर्वतपर अवस्थित है। वामनपुराणानुसार यह इन्द्र द्वारा स्थापित की गयी है। किसी-किसीके मतसे जव यज्ञस्थलसे शिव सतीका शव लेकर चले हैं तव इनके शरीरका एक खंड यहाँ भी गिरा जिससे यह सिद्धपीठ हो गया। अन्य मतानुसार जव कंसने योगमायाको पत्थरपर पटका था तव उनका एक अंग यहाँ आ गिरा। वात चाहे जो भी हो यह मूर्ति वहुत प्राचीन है और मूर्तिके आस-पासका स्थान विंध्याचल कहलाता है (ब्रह्मां०)।

नोटः—राजतरंगिणीमें विंध्यवासिनीको भ्रमरवासिनी लिखा है। आठवीं शताब्दीके वाक्पतिराजने 'गौड़वहो' नामक प्राकृत ग्रंथमें इनका वर्णन किया है (वामनपु०; राजतरंगिणी)।

विंध्यवासी–पु० [सं०] व्याड़ि मुनिका नाम।

विंध्यस्थ–पु० [सं०] व्याड़ि मुनिका नाम।

विंध्यावलि–स्त्री० [सं०] राजा वलिकी पत्नी तथा वाण आदि सौ पुत्रोंकी माताका एक नाम। इसकी शकुनी, पूतना आदि पुत्रियाँ थीं (भाग० ६.१८.१७; ८.२०.१७ आदि)।

विकंपन–पु० [सं०] रावणके पक्षके एक राक्षसका नाम, जो राम-रावण-युद्धमें मारा गया था (भाग० १०.९.१८)।

विकट–पु० [सं०] धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र। यह द्रौपदी स्वयंवरमें गया था (महाभा० आदि० ६७.९६; १८५.३)।

विकटानन–पु० [सं०] धृतराष्ट्रके १०० पुत्रोंमेंसे एक पुत्र

(महाभा०) ।

विकर्ण–पु० [सं०] (१) दानवीर कर्णका एक पुत्र (महाभा०) । (२) धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक महारथी पुत्र जो दुर्योधनका एक भाई था और कुरुक्षेत्र युद्धमें भीमसेन द्वारा मारा गया था (महाभा० आदि० ६३.११९; ६७.९४; द्रोण० १३७.२९-३५) । (३) एक भारतीय जनपदका नाम। यहाँके सैनिक दुर्योधनके पक्षमें रहकर शकुनिका संरक्षण करते थे (भीष्म० ५१.१५) ।

विकर्णक–पु० [सं०] शिवके एक गणका नाम जिसे व्याड़ि भी कहते हैं (शिवपु०) ।

विकस–पु० [सं०] चंद्रदेवका एक नाम (स्कंदपु०) ।

विकाथिनी–स्त्री० [सं०] स्कन्दकी अनुचरी एक मातृका (महाभा० शल्य० ४६.१९) ।

विकुंडभांड–पु० [सं०] पुराणानुसार एक दानवका नाम ।

विकुक्षि–पु० [सं०] सूर्यवंशोत्पन्न इक्ष्वाकुके १०० पुत्रोंमेंसे सर्वज्येष्ठ पुत्र अयोध्यापति। एक बार पिता इक्ष्वाकुने इन्हें अष्टका श्राद्धके लिए श्राद्धार्ह मृग मार लानेकी आज्ञा दी। इन्होंने वुभुक्षावश एक खरहेका मांस खा लिया था, अतः यह शशाद कहलाये। यह ककुत्स्थ, जिनके नाम पुरञ्जय तथा इन्द्रवाह भी थे, के पिता थे (भाग० ९.६.३-७, १२) ।

विकृत–पुं० [सं०] (१) दूसरे प्रजापतिका नाम। (२) पुराणोक्त परिवर्त्त राक्षसका पुत्र। (३) चौबीसवाँ संवत्सर।

विकेशी–स्त्री [सं०] (१) अग्निकी एक पत्नीका नाम (ब्रह्मां० २.२४.९१; ३.७.२१.२२९) । (२) शंकर भगवान्की पत्नीका नाम। (३) पूतना राक्षसीका एक नाम (भाग० १०.२.१; ६.२-१७, २८,३४-३८; १४.१५; २६.४ आदि; दे० पूतना) ।

विकोक–पु० [सं०] वृकासुरका पुत्र तथा कोकका छोटा भाई—दे० कोक और वृकासुर ।

विक्रम–पु० [सं०] धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (महाभा० आदि० ६७.९८) ।

विक्रमक–पु० [सं०] स्वामी कार्त्तिकेयका एक सैनिक अनुचर (स्कंदपु०) ।

विक्रांत–पु० [सं०] (१) पुराणानुसार हिरण्याक्षका एक पुत्र (रामच० मा० वाल० १२१-१२२) । (२) पुराणानुसार मदालसाके गर्भसे उत्पन्न कुवलयाश्वके पुत्रका नाम। राजा ऋतुध्वजको भी कुवलयाश्व कहते थे, मदालसा इन्हींकी पत्नी थी (वायु० ६९.२१-२३) ।

विक्षोभण–पु० [सं०] एक दानवका नाम (हिं० श० सा०) ।

विचक्र–पु० [सं०] पुराणानुसार एक दानवका नाम।

विचख्नु–पु० [सं०] एक प्राचीन राजाका नाम, जिन्होंने हिंसाकी निन्दा तथा अहिंसाकी प्रशंसा की थी। इन्होंने घोषणा की थी कि सुरा, आसव, मधु, मांस आदिका प्रचलन यज्ञोंमें जिह्वालौल्यवाले व्यक्तियोंने किया है। भगवान् तो पायस तथा पुष्पोंसे की गयी पूजासे प्रसन्न होते हैं (महाभा० शांति० २६५.३-१२) ।

विचारी–पु० [सं०] कवंध राक्षसका पुत्र (भाग० ९.१०.१२; ब्रह्मां० २.२०.१६; विष्णु० ४.४.९६) ।

विचारु–पु० [सं०] वसुदेवके पौत्र तथा श्रीकृष्णके एक पुत्र, जो रुक्मिणीके गर्भसे उत्पन्न १० पुत्रोंमेंसे एक थे (भाग० १०.६१) ।

विचित्र–पु० [सं०] पुराणानुसार रौच्य मनुके कई पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (वायु० १००.१०९) ।

विचित्रवीर्य–पु० [सं०] (१) चंद्रवंशी राजा शांतनुके पुत्रका नाम। महाभारतके अनुसार सत्यवती (मत्स्यगंधा) के गर्भसे चित्रांगद और विचित्रवीर्य राजा शांतनुके दो पुत्र हुए। चित्रांगद वाल्यावस्थामें ही एक गंधर्व द्वारा मारे गये, अतः विचित्रवीर्य राजा हुए। काशीराजकी अंविका और अंवालिका नामकी दो पुत्रियोंसे इनका विवाह हुआ, परन्तु थोड़े ही दिनों पश्चात् यह निःसंतान ही स्वर्ग सिधारे। तदुपरांत सत्यवतीके प्रथम पुत्र वेदव्यास (दे० पराशर और वेदव्यास) के नियोगसे अंविका और अंवालिकाके गर्भसे धृतराष्ट्र और पांडु नामके क्रमशः दो पुत्र हुए। धृतराष्ट्र जन्मांध थे और पांडुका रंग पीला था—दे० पांडु, अंविका, अंवालिका तथा महाभा० ९५.४९-५१; १०१.३-१३ आदि०) । (२) चित्रांगदका पुत्र जो पूर्वजन्ममें एक विधवा ब्राह्मणी तथा चांडालका पुत्र था, पर अनायास शिवरात्रि व्रतके करनेसे चित्रांगदका पुत्र हुआ। जन्मांतरमें शिवसायुज्यको प्राप्त होकर यही शिवगण वीरभद्र हुआ जिसने दक्षयज्ञका विध्वंस किया था। यह शांतनुसे पहलेकी वात है (स्कंदपु० माहेश्वर क० ३३.९२) ।

विजय–पु० [सं०] (१) कुंतीके गर्भसे उत्पन्न इन्द्रके पुत्र अर्जुनके प्रसिद्ध दस नामोंमेंसे एक नाम (महाभा० विराट० ४४.९,१४) । (२) मगध देशका एक ब्राह्मण जिसने महीसागर-संगम तीर्थमें अनेकों सिद्धियाँ प्राप्त की थीं। तदनंतर देवियों सहित देवताओंने इन्हें सिद्धैश्वर्य प्रदान कर इनका नाम सिद्धसेन रख दिया (स्कंदपु० माहेश्वर० कुमारिकाखंड ५९.८० आदि) । (३) जयद्रथकी ब्राह्मण और क्षत्रियके संसर्गसे उत्पन्न हुई पत्नीके गर्भसे उत्पन्न एक पुत्र जो धृतिका पिता था (विष्णु० चतुर्थ अंश) ।

विजयतीर्थ–पु० [सं०] पुराणानुसार एक तीर्थका नाम ।

विजयनंदन–पु० [सं०] इक्ष्वाकुवंशोत्पन्न राजा जयका एक नाम (भाग० ९.१५.१-२) ।

विजयपूर्णिमा–स्त्री० [सं०] विजया दशमीके वादवाली पूर्णिमा जिस दिन वंगालमें लक्ष्मीका पूजन होता है (श्रुति, स्मृति, पुराणादि) ।

विजया–स्त्री० [सं०] (१) गौतमकी पुत्रीका नाम, जो पार्वतीजीकी एक सखी थी (स्कंदपु०) । (२) यमराजकी पत्नीका नाम (मार्कण्डेयपु०) । (३) दक्ष प्रजापतिकी एक पुत्री (भाग० ६.४; विष्णु० १.१५.१०,८०-१; ब्रह्मां ४०.२-१००) । (४) श्रीकृष्णकी माताका नाम (भाग०) । (५) इंद्रकी पताका परकी एक कुमारीका नाम (ब्रह्मां० और वायु०) । (६) काश्मीरका एक पवित्र क्षेत्र—दे० राजतरंगिणी ।

विजयाएकादशी–स्त्री० [सं०] (१) आश्विन शुक्ला एकादशी। (२) फाल्गुन कृष्णा एकादशी, जिस दिन व्रत करनेसे व्रती जय लाभ करता है। वकदाल्य ऋषिकी आज्ञासे श्री रामचंदने समुद्रतटपर इस व्रतको कर लंका विजय किया था (स्कंदपु०) ।

विजयादशमी–स्त्री॰ [सं॰] आश्विन शुक्ला दशमीको श्रवणका सहयोग होनेसे विजयादशमी होती है। आश्विन शुक्ला १० पूर्वविद्धा निषिद्ध, परविद्धा शुद्ध तथा श्रवणयुक्त सूर्योदयव्यापिनी सर्वश्रेष्ठ होती है। यह हिंदुओंका और विशेषकर क्षत्रियोंका वहुत वड़ा त्योहार है। इस दिन देवी, घोड़े, हाथी और खड्ग आदिकी पूजा तथा राजा, नीलकंठ पक्षी आदिका दर्शन करते हैं। इस तिथितक वर्षाका अंत हो जाता है और सैनिक लोग अपने अस्त्र-शस्त्र साफ कर उसकी पूजा करते हैं। वर्षाकालमें किसी देशपर चढ़ायी नहीं होती थीं, इससे हथियार रख दिये जाते थे। रजवाड़ोंमें आजतक वड़े सजधजसे सवारी निकालते हैं। कहते हैं इस दिन श्री रामचंद्रने लंकापति रावणपर विजय प्राप्त की थी, इसीसे इस तिथिको विजयादशमी कहते हैं। इस तिथिको 'शमीवृक्ष'की पूजाका विधान भी कहीं-कहीं मिलता है। समस्त स्थानोंमें देखा गया है कि जौके पेड़ जो नवरात्रके पहले दिन वो दिये जाते हैं, इस तिथिको 'जयंती मंगला काली भद्रकाली कपालिनी। दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते॥' यह मंत्र पढ़कर कानपर रखते हैं (श्रुति-स्मृति-पुराणादि)। विजयादशमीके दिन सायंकालमें तारा निकलनेके समय 'विजय काल' रहता है जिस समय सव काम सिद्ध होते हैं—'ज्योतिर्निवन्ध'। इस दिन दश महाविद्याओंकी पूजा होती है। घोड़ी, शमी, पुस्तक, लेखनी, अस्त्र-शस्त्र आदिकी भी पूजा करते हैं।

विजयार्ध–पु॰ [सं॰] पुराणानुसार एक पर्वतका नाम।

विजयासप्तमी–स्त्री॰ [सं॰] किसी मासकी शुक्ला सप्तमी जो रविवारके दिन पड़े। पुराणानुसार इस दिन श्री रामचंद्रकी पूजा करते हैं।

विजयेश–पु॰ [सं॰] विजयके देवता शंकरका एक नाम (शिवपु॰)।

विजरा–स्त्री॰ [सं॰] ब्रह्मलोककी एक नदी (ब्रह्मपु॰)।

विजिताश्व–पु॰ [सं॰] राजा पृथुका एक पुत्र जो इन्द्रके वरदानसे विना दिखायी पड़े विचरण कर सकते थे (भाग॰ ४.२४.५)। इसीसे इन्हें 'अंतर्धान' भी कहते थे। इनकी पत्नी शिखण्डिनीके गर्भसे हविर्धान और मारीच इनके दो पुत्र हुए (ब्रह्मां॰ २.३७.२३; मत्स्य॰ ४.४५; वायु॰ ६२.२२; विष्णु॰ १.१४.४१)।

विजित्वरा–स्त्री॰ [सं॰] एक भगवतीका नाम।

विज्ञुली–स्त्री॰ [सं॰] पुराणानुसार एक देवीका नाम (देवीभाग॰)।

विज्ञानपाद–पु॰ [सं॰] वेदव्यासका नाम (स्कंदपु॰ प्रभास-खण्ड; पद्मपु॰ सृष्टि-खण्ड)।

विटक–पु॰ [सं॰] पुराणानुसार नर्मदा नदीके किनारेका एक देश जो आर्यावर्तके दक्षिणमें है (स्कंदपु॰)।

विटभूत–पु॰ [सं॰] एक असुरका नाम जो वरुणकी सभामें रहकर उनकी उपासना करता था (महाभा॰सभा॰ ९-६५)।

विट्ठल–पु॰ [सं॰] विष्णु भगवान्‌की एक मूर्त्ति जिनका मंदिर दक्षिण भारतमें है (भाग॰ तथा विष्णु॰)।

विडालाक्ष–पु॰ [सं॰] एक राजाका नाम जो युधिष्ठिरके राजसूय यज्ञमें गया था (महाभा॰)।

वितल–पु॰ [सं॰] पुराणानुसार एक पाताल जहाँ शिवजीको हाटकेश्वर कहते हैं। इन्हींसे हाटकी नदी निकली है जिसे हुताशन पीते हैं। हुताशनके फुफकारसे हाटक नामक सोना निकलता है।

वितस्ता–स्त्री॰ [सं॰] (१) काश्मीर तथा पंचनद प्रदेशकी झेलम नदीका नाम, जो वरुणकी सभामें रहकर उनकी उपासना करती है (महाभा॰ सभा॰ ९.१९)। इस नदीमें स्नान करके देवताओंका पूजन तथा पितरोंका श्राद्ध और तर्पण करनेसे वाजपेय यज्ञका फल प्राप्त होता है। (२) पुं॰—काश्मीरमें नागराज तक्षकका वितस्ता नामसे प्रसिद्ध भवन है जो सव पापोंको दूर करनेवाला है (वन॰ ८२.८९-९१)।

वित्तगोप्ता–पु॰ [सं॰] कुवेरके भंडारीका नाम (ब्रह्मां॰ २.१८.१-२; मत्स्य॰ १२१.२-३; वायु॰ ६९.१९६)।

वित्तदा–स्त्री॰ [सं॰] कार्त्तिकेयकी अनुचरी एक मातृका (महाभा॰ शल्य॰ १३.२८)।

वित्तपति–पु॰ [सं॰] कुवेर (भाग॰ ९.२·३२-३३; ४१.३७; ११.३३; वायु॰ ४०.८; ४७.१; ७०.३८)।

वित्तपाल–पु॰ [सं॰] कुवेरका एक नाम—दे॰ वित्तपति।

विद–पु॰ [सं॰] वैद ऋषिके पिता, एक प्राचीन ऋषिका नाम।

विदर्भ–पु॰ [सं॰] (१) भागवतके अनुसार एक देशका नाम जिनके राजा रुक्मिणीके पिता भीष्मक थे (भाग॰ १०.५३.२१)। (२) दक्षिणके विदार देशका प्राचीन नाम जिसकी राजधानी कुंडिनपुर थी जो आधुनिक कुंडपुर है। कुंडपुर अमरावतीसे ४० मील पूर्व है—दे॰ कुंडिन। (३) पुराणानुसार एक ऋषिका नाम।

विदर्भजा–स्त्री॰ [सं॰] (१) अगस्त्यकी पत्नी लोपामुद्राका एक नाम जिसने ऋग्वेद प्रथम मंडल, १८ अनुवाक, १७९ सूक्त १ और २ मंत्रकी व्याख्या की है—दे॰ लोपामुद्रा; स्कंदपु॰ तथा ब्रह्मां॰। (२) विदर्भनरेश भीष्मकी पुत्री दमयंतीका एक नाम जिसका विवाह निषध देशके राजा वीरसेनके पुत्र नलसे हुआ था (महाभा॰ वन॰ ५३.५-९, दमयंती, नल)। (३) रुक्मिणीका एक नाम (भाग॰ १०.५३.७, १५, २१; ५४.१९-२०,५२; विष्णु॰ ५.२६.१)।

विदर्भि–पु॰ [सं॰] एक प्राचीन ऋषिका नाम।

विदारिका–स्त्री॰ [सं॰] डाकिनी विशेष जो घरके वाहर अग्निकोणमें स्थित कही गयी है (वृहत्संहिता)।

विदिशा–स्त्री॰ [सं॰] पुराणानुसार एक नदी जो पारियात्र पर्वतसे निकली है (वायु॰ ४५.९८)।

विदुर–पु॰ [सं॰] कृष्णद्वैपायनके पुत्र जो राजा विचित्रवीर्यकी रानी अंविकाकी दासीके गर्भसे उत्पन्न हुए थे। यह कौरवोंके मंत्री थे और राजनीति, धर्मनीति तथा अर्थनीतिमें वड़े ही निपुण थे। यह धर्मके अवतार माने जाते हैं। अणीमाण्डव्य ऋषिके शापसे धर्मराजने ही शूद्रयोनिमें इनके रूपसे जन्म लिया था (महाभा॰ आदि॰ ६३.९३-९७)। राजा देवकके घरमें स्थित तथा ब्राह्मण द्वारा शूद्रागर्भसे उत्पन्न कन्याके साथ इनका विवाह भीष्मने कराया था (आ॰ ११३.१२, १३)। पहले यह राजा पांडुके मंत्री थे और इसीलिए इन्होंने पांडवोंकी अनेक संकटोंसे रक्षा की

थी। लाक्षागृह जलनेके समय इन्हींके परामर्शसे पांडवोंकी जान बची थी। महाभारत-युद्ध रोकनेके लिए इन्होंने धृतराष्ट्रको बहुत समझाया, पर उनके न माननेपर इन्होंने पांडवोंका पक्ष लिया था। युद्ध समाप्त होनेके बहुत दिनों बादतक यह मंत्री रहे। अंतमें तपस्या करने वन चले गये जहाँ इनका स्वर्गवास हुआ। यह 'विदुरनीति' प्रसिद्ध पुस्तकके रचयिता कहे गये हैं। ऐसी प्रसिद्धि है कि इनके यहाँ श्रीकृष्णने बासी साग बड़े प्रेमसे खाया था, दासीपुत्र होनेपर भी इनका तिरस्कार नहीं किया। व्यासजी द्वारा धर्म, विदुर और युधिष्ठिरकी एकताका प्रतिपादन (महाभा० आश्रम० २८.१६-२२)।

विदुला—स्त्री० [सं०] एक प्राचीन क्षत्रियाणी, जिसने समरभूमिसे विमुख होकर भाग आये अपने पुत्रको कड़ी फटकार सुनायी थीं तथा अपने पुत्रको युद्धके लिए प्रोत्साहन दिया तथा शत्रुओंको वशमें करनेके उपाय बतलाये (महाभा० उद्योग० अध्याय १३३, १३४ तथा १३५.२५-४०)।

विदूर—पु० [सं०] (१) ये महाराज कुरु द्वारा दशार्ह-कुलकी कन्या शुभांगीके गर्भसे उत्पन्न हुए थे। मधुवंशकी कन्या संप्रिया इनकी पत्नी थीं, जिसके गर्भसे अनश्वा नामका इनका पुत्र हुआ (महाभा० आदि० ९५.३९-४०)। (२) एक पर्वतका नाम जहाँ वैदूर्म्य मणि मिलती है।

विदूरथ—पु० [सं०] (१) कुरुक्षेत्रका एक नाम। (२) एक पौराणिक राजाका नाम जिनकी कीर्त्ति दूरतक फैली थी। सुनीति और सुमति इनके दो पुत्र थे। एक बार सुव्रत तपस्वीने इन्हें वनमें कुजृम्भ दानवकी करतूतका दिग्दर्शन कराया था। यह दानव भूमिको जृम्भित (छिद्रयुक्त) कर देता था, अतः यह नाम पड़ा। यह विश्वकर्मा निर्मित सुनंद नामक मूसलसे पृथ्वीमें छेद करता था। राजाकी पुत्रीको यह दानव हर ले गया तथा इनके दोनों पुत्रोंको बन्दी बना रखा था। भनंदन पुत्रवत्सप्रीने इस दानवको राजाज्ञासे मारा था तथा राजकुमारोंको राजकुमारी मुदावती सहित बन्धन-मुक्त किया। राजाने प्रसन्न हो राजकुमारीका विवाह वत्सप्रीसे कर दिया था (मार्कण्डेयपु०)। (३) एक वृष्णिवंशी क्षत्रिय, जो द्रौपदीके स्वयंवरमें सम्मिलित हुए थे। ये रैवतक पर्वतपर होनेवाले उत्सवमें गये थे। इससे उस उत्सवकी शोभामें पर्याप्त वृद्धि हुई थी (महाभा० आदि० २१८.१०)। इनकी गणना यदुवंशियोंके सात प्रधान मंत्रियोंमें है (सभा० १४.६०)। (४) एक पुरुवंशी राजा, जिसके पुत्रोंको ऋक्षवान् पर्वतपर रीछोंने पाला-पोसा था (शांति० ४९.७५)।

विदेव—पु० [सं०] एक प्राचीन ऋषिका नाम।

विदेह—पु० [सं०] (१) मिथिलाके राजा जनकका नाम (नारदपु० पूर्वभाग, द्वितीय पाद, श्लोक ७७ तक)। (२) राजा निमिका एक नाम (भाग० ९.६.४; १३.१-१३; १०-८६.३६; ब्रह्मां० ३.६३.९; ६४.१; विष्णु० ४.२.१२; ५.१.२३)। (३) प्राचीन मिथिलाका एक नाम (भाग० ९.१३.१३; १०.५७.२०-२६; ब्रह्मां० ३.६४.६; वायु० ९६.७, ४; ९९.३२४)।

विदेहक—पु० [सं०] पुराणानुसार एक पर्वतका नाम।

विदेहपुर—पु० [सं०] जनकपुरका एक नाम (भाग० ९.१३.१३; ब्रह्मां० ३.६४.६; वायु० ९६.७.४; ९९.३२४)।

विद्या—स्त्री० [सं०] जनकनंदिनी सीताकी एक सखी (रामा०)।

विद्यातीर्थ—पु० [सं०] एक प्राचीन तीर्थस्थानका नाम जहाँ जाकर स्नान करनेसे मनुष्यका जहाँ कहीं भी विद्याकी प्राप्ति हो जाती है (महाभा० वन० ८४.५२)।

विद्याधर—पु० [सं०] एक प्रकारके देवता जो इन्द्रके सहचर हैं और खेचर, नभचर आदि नामोंसे पुकारे जाते हैं (ब्रह्मां० ४.३७.१०; ४२.१४)।

विद्याधरी—स्त्री० [सं०] विद्याधरकी पत्नी (ब्रह्मां० ४.३७.१०; ४२.१४)।

विद्याधरेन्द्र—पु० [सं०] जांबवान् रीछका एक नाम जो ब्रह्माका पुत्र माना जाता है। यह सुग्रीवका मंत्री तथा रीछोंका राजा था। त्रेतायुगमें इसने श्रीरामकी सहायता की थी (भाग० ९.१०.१९, ४४)। भागवतके अनुसार इसकी पुत्री जांबवतीका विवाह श्रीकृष्णसे हुआ था (भाग० १०.५६.१४-३२; ब्रह्मां० ३.७१.३५)। कहते हैं सत्ययुगमें इसने वामन अवतारकी परिक्रमा भी की थी (भाग०८.२१.८; ब्रह्मां० ३.७.३००-४; विष्णु० ४.१३.३२.५८)।

विद्याधरेश्वर—पु० [सं०] पुराणानुसार शिवकी एक मूर्त्तिका नाम (स्कंदपु० काशी-खड; शिवपु०)।

विद्याराज—पु० [सं०] विष्णुकी एक मूर्त्तिका नाम (विष्णु०)।

विद्याराशि—पु० [सं०] एक शिवलिंग विशेष (शिवपु०)।

विद्याव्रत—पु० [सं०] चैत्र शु० १ को मनाया जानेवाला एक व्रत। यदि प्रत्येक शु० १ को विधिवत् १२ महीने व्रत करके गोदान करे और फिर १२ वर्षतक यथावत् अध्ययन करनेवाला महाविद्वान् बन जाता है (विष्णुधर्मोत्तर०)।

विद्युज्जिह्व—पु० [सं०] (१) रामायणके अनुसार शूर्पणखाके पतिका नाम जो रावणके पक्षका एक बड़ा वीर असुर था (रामायण)। (२) घटोत्कचका साथी एक राक्षस, जिसका महाभारत-युद्धमें दुर्योधन द्वारा वध हुआ था (महाभा० भीष्म० ९१.२०.२१)। (३) एक यक्षका नाम।

विद्युज्जिह्वा—स्त्री० [सं०] कुमार कार्त्तिकेयकी अनुचरी एक मातृका (महाभा० शल्य० ४६.८)।

विद्युता—स्त्री० [सं०] अलकापुरीकी एक अप्सराका नाम, जिसने अष्टावक्र मुनिके स्वागतके अवसरपर कुबेर-भवनमें नृत्य किया था (महाभा० अनु० १९.४५)।

विद्युताक्ष—पु० [सं०] कुमार कार्त्तिकेयका एक सैनिक अनुचर (महाभा० शल्य० ४५.६२)।

विद्यत्केश—पु० [सं०] कालकी पुत्री भयाके गर्भसे उत्पन्न हेति नामक राक्षसका पुत्र। इससे और पौलोमीसे राक्षसोंके वंशकी वृद्धि हुई थी (रामायण)।

विद्युत्पताक—पु० [सं०] प्रलयके समयके सात मेघोंमेंसे एकका नाम।

विद्युत्पर्णा—स्त्री० [सं०] एक अप्सराका नाम, जो कश्यपकी 'प्राधा' नामक पत्नीके गर्भसे उत्पन्न हुई थी (महाभा० आदि० ६५.४९)। इसने अर्जुनके जन्मके समय हुए उत्सवमें नृत्य किया था (आदि० १२२.६२)।

विद्युत्प्रभ—पु० [सं०] (१) एक दानवका नाम, जिसे रुद्रदेवकी कृपासे एक लाख वर्षोंतक तीनों लोकोंका आधिपत्य,

नित्य भगवत्पार्षदपद, एक करोड़ पुत्र तथा कुशद्वीपका राज्य—ये सब वरदान प्राप्त हुए थे (महाभा० अनु० १४. ८२-८४)। (२) एक तपस्वी ऋषि जिन्होंने पापसे छुटकारा पानेके विषयमें इन्द्रसे प्रश्न किया था। इनका उत्तर दे चुकनेपर इन्द्रको स्वयं सूक्ष्म धर्मका उपदेश दिया था (महाभा० अनु० १२५.४५-५७)।

विद्युत्प्रभा—स्त्री० [सं०] (१) उत्तर दिशाकी दस अप्सराओं-का एक गण (महाभा० उद्योग० १११.२१)। (२) दैत्यराज बलिकी पोतीका नाम (भाग०)।

विद्युदाक्ष—पु० [सं०] पुराणानुसार एक राक्षसका नाम (ब्रह्मां०)।

विद्युद्ध्वज—पु० [सं०] एक असुरका नाम।

विद्युन्माल—पु० [सं०] एक बंदरका नाम (रामा०)।

विद्युन्माली—पु० [सं०] (१) पुराणानुसार एक राक्षस जो तारकासुरका मझला पुत्र था। भगवान् शंकरसे इसे एक सोनेका विमान मिला था जिसपर चढ़कर यह सूर्यके पीछे-पीछे घूमा करता था, अतः इस विमानमें कभी अंधकार नहीं होता था। सूर्यने अपने तेजसे इसे गला दिया था (शिवपु०)। रामायणके अनुसार धर्मके पुत्र सुषेणसे इसका युद्ध हुआ था। ब्रह्मासे तप कर इसने एक लोहेसे निर्मित नगर माँगा था—दे० त्रिपुर (शिवपु० रुद्र-संहिता ५.१)। (२) एक असुरका नाम (महाभा० द्रोण० २०२.६४)।

विद्योता—स्त्री० [सं०] अलकापुरीकी एक अप्सराका नाम, जिसने अष्टावक्र मुनिके स्वागतके अवसरपर कुबेर-भवनमें नाच किया था (महाभा० अनु० १९.४५)।

विद्वेषिणी—स्त्री० [सं०] पुराणानुसार निर्म्मार्ष्टिके गर्भसे उत्पन्न दुःसह नामक यक्षकी आठवीं पुत्रीका नाम। यही लोगोंमें द्वेष उत्पन्न कराती है। दूध, घी, शहदमें मिले हुए तिलोंसे होम करनेसे इसका उपद्रव शांत होता है (स्कंदपु० माहे० केदार-खंड)।

विधाता—पु० [सं०] (१) ब्रह्माका एक नाम। (२) विधाता और धाताने उत्तंकको नागलोकमें दो स्त्रियोंके रूपमें दर्शन दिया था (महाभा० आदि० ३.१६६)। ये ब्रह्माजीके पुत्र हैं। इनके दूसरे भाईका नाम धाता है। ये दोनों भाई मनु-के साथ रहते हैं (आदि० ६६.५०)। कमलोंमें निवास करनेवाली लक्ष्मी इनकी बहिन कही गयी है (आदि० ६६.५१)।

विधानसप्तमीव्रत—पु० [सं०] एक व्रत विशेष जो माघ शुक्ला ७ को आरंभ होकर पूरे वर्षभर होता है। यह सूर्यदेवका व्रत है और कुछ कठिन भी है—दे० व्रत-परिचय।

विधिपुत्र—पु० [सं०] नारदजीका एक नाम जो ब्रह्माजीके पुत्र कहे जाते हैं (नारदपु० तथा ब्रह्मां०)।

विधिपूजा—स्त्री० [सं०] पौष शु० २ गुरुवारको विधि (ब्रह्मा) की पूजा तथा नक्त व्रत करे तो धन मिले (ब्रह्मां०)।

विधिरानी—स्त्री० [हिं०] ब्रह्माकी पत्नी सरस्वतीका एक नाम, 'बंदौ वाणी वीणाकर विधिरानी विख्यात'।—रघुराज।

विधुतुंद—पु० [सं०] चंद्रमाको दुःख देनेवाले राहुका एक नाम, उ०—'ज्ञान-राकेस-ग्रसन विधुतुंद दलन काम-करि मत्त हरि दूषनारि'—तुलसी।

विधु—पु० [सं०] (१) चंद्रमाका एक नाम—दे० चंद्रमा। (२) विष्णुका एक नाम (विष्णु०)। (३) एक राक्षसका नाम (हिं० श० सा०)।

विनत—पु० [सं०] सुग्रीवकी सेनाका एक बंदर (रामायण)।

विनता—स्त्री० [सं०] (१) दक्ष प्रजापतिकी पुत्री और कश्यप ऋषिकी पत्नीका नाम जो पक्षियोंकी माता कही गयी हैं। अरुण और गरुड़ नामक इसके दो पराक्रमी पुत्र उत्पन्न हुए थे। प्रणमें हार जानेके कारण इसको अपनी सौत कद्रू-की ५० वर्षोंतक दासी बनकर रहना पड़ा था, लेकिन गरुड़-ने इस बंधनसे इसे मुक्त किया था (भाग० ६.६.२२; ३. १९.११; ब्रह्मां० ३.७.२९; ८.११; मत्स्य० ६.३४.१४६; वायु० ४९.१०; ६९.६६; विष्णु० १. २१.१८)। (२) एक राक्षसीका नाम जो व्याधि लानेवाली कही गयी है (महाभा०)। (३) एक राक्षसी जिसे अशोक-वाटिकामें सीताको समझानेके लिए रावणने नियुक्त किया था (रामायण)।

विनायकचतुर्थी—स्त्री० [सं०] माघ शुक्ला चतुर्थीको होने-वाला एक पर्व विशेष जिसे गणेशचतुर्थी भी कहते हैं। इसमें गणपतिका पूजन तथा तत्संबंधी व्रतका विधान है—दे० व्रतपरिचय।

विनाशन—पु० [सं०] काला नामकी कश्यप पत्नीका पुत्र एक असुर। यह अस्त्र-शस्त्रोंके प्रहारमें अति प्रवीण तथा कालवत् अति भीषण था (महाभा० आदि० ६५.३४.३५)।

विनीत—पु० [सं०] पुलस्त्यका एक पुत्र (भाग०; मत्स्य० तथा रामायण)।

विपाशा—स्त्री० [सं०] पंजाबकी व्यास नदीका नाम। कहते हैं वशिष्ठ ऋषिने आत्महत्या करनेकी इच्छासे अपने हाथ-पैर बाँधकर इसके जलमें अपनेको फेंक दिया था, पर नदीने उन्हें पाशमुक्त कर किनारे फेंक दिया, इसीसे इसका यह नाम पड़ा (विपाशा = पाशमुक्तकारिणी)। ऋग्वेदमें शतद्रु (शतलज) नामसे इसे व्यक्त किया है (योगवाशिष्ठ, महाभा०, पुराणादि)।

विपुल—पु० [सं०] (१) सौवीर देशका एक राजा, जो संग्रामभूमिमें अर्जुनके हाथ मारा गया था (महाभा० आदि० १३८.२२)। (२) सुमेरु पर्वतका पश्चिमी भाग। (३) रोहिणीके गर्भसे उत्पन्न वसुदेवका एक पुत्र (भाग०)।

विपुला—स्त्री० [सं०] (१) विपुल पर्वतकी अधिष्ठात्री देवी। (२) प्रसिद्ध बहुला सतीका एक नाम (कालिकापु०)। (३) विपुला नामकी देवीका सिद्ध पीठस्थान (देवीभाग०)।

विप्रचरण—पु० [सं०] भगवान् विष्णुके हृदयपरका भृगु मुनिका चरणचिह्न—

'उर मनि-हार पदिककी सोभा।
विप्रचरन देखत मन लोभा॥'—तुलसी

विप्रचित्ति—पु० [सं०] एक दानवका नाम जिसकी पत्नी सिंहिकाके गर्भसे राहु (ग्रह) उत्पन्न हुआ था। दनुके गर्भ-से उत्पन्न यह कश्यपका महापराक्रमी प्रसिद्ध पुत्र था। कहते हैं आतापि और वातापि इसीके पुत्र थे (ब्रह्मां० ४.

३७.२५; ३८.८) तथा (मत्स्य० १.९; २४९.१४ अंततक)।

विपृष्ठ—पु० [सं०] एक यादव जो धृतदेवाके गर्भसे उत्पन्न वसुदेवजीका एक पुत्र तथा बलरामका छोटा भाई था (भाग० ९.२४.५०)।

विबुधतटिनी—स्त्री० [सं०] आकाशगंगा अथवा देवताओंकी नदी।

विबुधतरु—पु० [सं०] कल्पवृक्षका एक नाम (भाग०)।

विबुधधेनु—स्त्री० [सं०] कामधेनु गौका एक नाम (भाग०, स्कंद० तथा विष्णु०)।

विबुधपति—पु० [सं०] इंद्रका एक नाम (भाग०)।

विबुधवैद्य—पु० [सं०] देवताओंके वैद्य अश्विनीकुमारोंका एक नाम—दे० अश्विनीकुमार।

विबुधवन—पु० [सं०] नंदनवन (इंद्रका बगीचा) (भाग०)।

विभव—पु० [सं०] छत्तीसवें संवत्सरका नाम (भाग०)।

विभांडक—पु० [सं०] कश्यपके पुत्र तथा ऋष्यश्रृंगके पिता एक ऋषिका नाम जो संसारसे विरक्त हो अपने पुत्रको ले जंगलमें रहते थे (भाग० ११.८.१८; महाभा० वन० ११०.२३, ३२-३९)।

विभावसु—पु० [सं०] (१) आठ वसुओंमेंसे एक वसुका नाम। ये दक्षपुत्री वसु तथा धर्मके आठ पुत्रोंमें अन्यतम थे। इनकी पत्नीका नाम उषा था, जिससे इनके व्युष्ट, रोचि, आतप आदि पुत्र हुए थे (भाग० ६.६.१०-११, १६)। (२) नरकासुरके सात पुत्रों, जो पिताकी मृत्युके बाद भगवान् कृष्णसे लड़नेको उद्यत हुए थे, मेंसे एक दानव पुत्रका नाम (भाग० १०.५९.१४-२२; ३७.१६; १.१०.२९)। (३) एक क्रोधी ऋषिका नाम, जो अपने भाई सुप्रतीक मुनिके शापसे कछुवा हो गये थे (महाभा० आदि० ३९.१५-२३)। (४) एक गंधर्वका नाम जिसने गायत्रीसे देवताओंका सोम छीन लिया था (हिं० श० सा०)। (५) एक ऋषि जो युधिष्ठिरका विशेष आदर करते थे (वन० २६.२४)।

विभास—पु० [सं०] एक देवयोनिका नाम (मार्कण्डेयपु०)।

विभीषण—पु० [सं०] लंकेश्वर रावणका छोटा भाई, कैकसी (महाभारतके अनुसार मालिनी) के गर्भसे उत्पन्न विश्रवा मुनिका पुत्र तथा सुमालीका नाती। इसने तप करके ब्रह्मासे वर पाया जिससे भगवान्‌में निष्काम और अनन्य प्रेम था (रामच० मा० बाल० १७६-१७७)। अपने भाई रावणसे अपमानित हो यह भगवान् रामकी शरण गया। इसीके परामर्शसे रामचंद्रजी रावणको मार सके थे। रावणके मरनेके पश्चात् यह राजा हुआ था (रामच० मा०)। रामच० मा० बाल० दो० १७५, चौ० २-३ के अनुसार पूर्वजन्ममें यह कैकयनरेश सत्यकेतुका मंत्री धर्मरुचि था।

विभीषणा—स्त्री० [सं०] कुमार कार्त्तिकेयकी अनुचरी एक मातृकाका नाम (महाभा० शल्य० ४६.२२)।

विभु—पु० [सं०] शकुनिके एक भाईका नाम, जिसने अपने चार भाइयोंके साथ भीमपर आक्रमण किया था और उनके द्वारा मारा गया (महाभा० द्रोण० १५७.२३-२६)।

विभूति—स्त्री० [सं०] (१) देवीभागवत तथा शिवपुराणादिके अनुसार भगवान् शंकरके अंगमें लगानेकी भस्म। (२) भगवान् विष्णुका नित्य और स्थायी ऐश्वर्य। (३) दिव्य शक्ति जिसके अंतर्गत अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व और वशित्व आदि हैं—दे० योगदर्शनका विभूतिपाद। (४) एक अस्त्र जिसे श्रीरामने गुरु विश्वामित्रसे पाया था (रामायण)। (५) विश्वामित्रके ब्रह्मवादी पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (महाभा० अनु० ४.५८)।

विभूतिद्वादशी—स्त्री० [सं०] एक व्रत विशेष—दे० पुष्पवाहन।

विमलतीर्थ—पु० [सं०] एक उत्तम तीर्थ, जिसमें सुवर्ण और रजतकी मछलियाँ दिखायी देती हैं। इसमें स्नान करनेसे मनुष्यको इंद्रलोक प्राप्त होता है (महाभा० वन० ८२.८७-८७)।

विमलदान—पु० [सं०] वह दान जो ईश्वरके प्रीत्यर्थ दिया गया हो (गरुडपु०)।

विमला—स्त्री० [सं०] (१) कालिकापुराणानुसार वासुदेवकी नायिका एक देवीका नाम। (२) सुरभिकी पुत्री रोहिणीकी दो पुत्रियोंमेंसे एकका नाम। दूसरी पुत्रीका नाम अनला था (महाभा० आदि० ६६.६७-६८)।

विमोचन—पु० [सं०] कुरुक्षेत्रकी सीमामें स्थित एक तीर्थका नाम, जहाँ स्नान करनेसे क्रोध और इन्द्रियोंको वशवर्ती न होनेवाले पुरुषको प्रतिग्रहजन्य पापसे मुक्ति मिल जाती है (महाभा० वन० ८३.१६१)।

विमोहन—पु० [सं०] (१) कामदेवके पाँच बाणोंमेंसे एक—दे० पंचबाण, कामदेव। (२) एक नरकका नाम।

वियति—पु० [सं०] राजा नहुषके छह पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (भाग० ९.१८.१)।

विरजा—पु० [सं०] (१) भगवान् शिवका एक नाम (शिवपु०; स्कंदपु० काशी-खंड)। (२) रक्त नामक २०वें कल्पमें उत्पन्न ब्रह्माका एक मानस पुत्र—दे० वामदेव, शिवपु० शतरुद्र संहिता आदि। (३) धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र। इसने अपने अन्य भाइयोंके साथ भीमसेनसे युद्ध किया और मारा गया (महाभा० आदि० ११६.१४; द्रोण० १५७, १७-१९)। (४) भगवान् नारायणके तेजसे उत्पन्न एक मानस पुत्र, जिन्होंने पृथिवीपर राज्य करनेकी अभिलाषा न कर संन्यास लेनेका निश्चय किया। इनके पुत्रका नाम कीर्तिमान् था (शान्ति० ५९.८८.९०)। (५) कविके आठ पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम। इनके आठों पुत्र प्रजापति हुए (महाभा० अनु० ८५-१३२-१३४)। (६) स्त्री०—श्रीकृष्णकी एक प्रेमिका सखी। ब्रह्मवैवर्त्त पुराणके श्रीकृष्णजन्म-खंडके अनुसार गोलोकमें एक बार श्रीकृष्ण राधाकी अनुपस्थितिमें विरजाके पास चले गये। जब राधा दौड़कर आयी तब श्रीकृष्ण तो अन्तर्ध्यान हो गये और विरजा राधाके डरसे नदी हो गयी। श्रीकृष्णके बहुत व्याकुल होनेपर यह पूर्व रूप धारण कर उपस्थित हो गयी (भाग० ब्रह्मवैवर्त्त०)।

विरजाक्ष—पु० [सं०] मेरुके उत्तरमें स्थित एक पर्वत (मार्कण्डेयपु०)।

विरजाक्षेत्र—पु० [सं०] उड़ीसामें जाजपुरके निकटस्थ एक तीर्थ (स्कंदपु०)।

विराज—पु० [सं०] मनुके अनुसार ब्रह्माने अपने शरीरके दो भाग किये आधा पुरुष और आधा स्त्री। पुरुष-रूपी अर्ध

भागसे ही मनुकी सृष्टि हुई जिनसे संसारकी सृष्टिकी वृद्धि हुई। ऋग्वेदके अनुसार ‘पुरुष’से विराजकी उत्पत्ति हुई और विराजसे पुरुष उत्पन्न हुए। विराज जो ब्रह्माका पुरुषरूपी अर्ध भाग है संसारके पुरुषोंका द्योतक है और ब्रह्माका दूसरा अर्धभाग स्त्री स्वरूप है जिसे शतरूपा कहते हैं।

विराट–पु० [सं०] (१) महाभारतके एक पर्वका नाम (विराटपर्व)। (२) मत्स्य देशाधिपतिका नाम। यह देश अलवर और जयपुर रियासतोंके बींचमें स्थित था। पांडवगण महाराज विराटके यहाँ अज्ञातवासमें रहे थे। कीचक महाराज विराटका साला था जिसे भीमने मारा था—दे० कीचक। कुरुक्षेत्रके युद्धमें विराट पांडवोंकी ओरसे लड़े थे और युद्धके १५वें दिन द्रोणके हाथों मारे गये थे (महाभा० द्रोण० १८६.४३)। (३) आधुनिक जयपुरके समीपका एक देश। आजकलका विराटनगर दिल्लीसे १०५ मील दक्षिण है। यहाँके शासकको राजा विराट कहते थे (महाभा० विराट० ३०.२३)।

विराट्–पु० [सं०] (१) ‘विश्वशरीरमय अनंत पुरुष जिसकी व्याख्या ऋग्वेदमें दी है। संपूर्ण विश्व और भूत एक पाद है, आकाशका अमर अंश त्रिपाद। उससे विराट् उत्पन्न हुए और विराट्से अधिपुरुष। उन्होंने आविर्भूत होकर सम्पूर्ण पृथ्वीको आगे पीछे घेर लिया।’ (२) श्रीकृष्णका अर्जुनको विराट् रूपका दर्शन कराना जिसमें समस्त लोक दिखाई दिये थे (गीता ११)। (३) वलिको छलनेके लिए विष्णुके त्रिविक्रम रूपको भी विराट् कहते हैं। (४) पुराणानुसार विराट् ब्रह्माके प्रथम पुत्र कहे गये हैं। ब्रह्माके दो अंश स्त्री और पुरुष। स्त्री अंशसे विराट् हुए जिससे स्वायंभुव मनु हुए और स्वायंभुव मनुसे प्रजापतियोंकी उत्पत्ति हुई।

विरूढक–पु० [सं०] (१) इक्ष्वाकु वंशके एक राजाका नाम (भाग०)। (२) एक लोकपालका नाम।

विरूथिनी–स्त्री० [सं०] वैशाख कृष्णा एकादशी (व्रत परिचय)।

विरूपाक्ष–पु० [सं०] (१) भगवान् शंकरकी एकादश मूर्तियों (रुद्रों) में एक रुद्र (शिवपु०)। (२) लंकाधिपति रावणका एक सेनानायक जिसे प्रमदावन उजाड़ते समय हनुमान्ने मारा था (रामा०)। (३) एक राक्षस जो सुग्रीवके हाथों मारा गया था (महाभा० वन० २८५.९)। (४) रावणका एक मंत्री (रामा०)। (५) एक दिग्गजका नाम (भाग०)। (६) एक नाग (ब्रह्मां०)। (७) दनु (दक्षपुत्री) तथा कश्यपके पुत्र ३४ विख्यात दानवोंमेंसे एकका नाम (महाभा० आदि० ६५.२१)।

विरूपाक्षपूजन–पु० [सं०] पौष शुक्ला १४ को विरूपाक्षका पूजन कर तदनुकूल उपकरण सहित महोक्षका दान करे। इस प्रकार वर्षभर प्रत्येक शु० १४ को करे तो राक्षसादिका भय नहीं होता तथा धन-धान्यकी वृद्धि होती है (हेमाद्रि)।

विरोचन–पु० [सं०] प्रह्लादके पुत्र और वलिके पिता। पृथ्वी रूपी गौ दूहनेके समय यह असुरोंकी ओरसे बछड़ा वना था। वज्रज्वाला इसकी पोती थी और इसका निवासस्थान ‘अर्वाकतलम्’ ५वाँ लोक है—दे० अर्वाक्तल (ब्रह्मां० २.२०.१२, १४, ३५, ३८)।

विलोचन–पु० [सं०] पुराणानुसार एक नरकका नाम जहाँ आनेवाले अंधे हो जाते हैं और न दिखलायी पड़नेके कारण वड़ा कष्ट भोगते हैं।

विलोमा–पु० [सं०] कपोतरोमाका पुत्र तथा तुम्बुरुमित्र अनुका पिता (विष्णु० ४.१४.१३-१४)।

विलोमसोमायन–पु० [सं०] कृष्णपक्षकी चतुर्थीसे आरम्भ कर; ३ दिन चार स्तनोंका, ३ दिन दो स्तनोंका, ३ दिन एक स्तनका दूध पीये। फिर ३ दिन १ स्तनका, ३ दिन २ का, ३ दिन ३ स्तनोंका और ३ दिन ४ स्तनोंका दूध पी कुल २४ दिनोंमें यह व्रत पूर्ण होता है। इस व्रतके फलस्वरूप व्रती सोमलोक प्राप्त करता है (हारीतस्मृति)।

विवस्वान्–पु० [सं०] (१) सूर्यका एक नाम जो वारह आदित्योंमेंसे है। वारह आदित्योंके नाम विवस्वान्, अर्यमा, पूषा, त्वष्टा, सविता, भग, धाता, विधाता, वरुण, मित्र, शक्र तथा उरुक्रम। विवस्वान्के पुत्रका नाम श्राद्धदेव मनु था। पत्नीका संज्ञा। संज्ञासे इनकी यम, यमुना आदि और भी संतति हुई (भाग० ६.६-४१)। वर्तमान कालके मनु वैवस्वत इन्हींके पुत्र है। (२)पंद्रहवें प्रजापतिका नाम जो अदितिके गर्भसे उत्पन्न हुए थे (विवस्वान्) (विष्णु. ४.१.६)।

विवह–पु० [सं०] अत्यन्त वेगवान् वायुका नाम। जो जोरके शब्दके साथ वड़े-वड़े वृक्षोंको ढहा देता है। इसके द्वारा संगठित प्रलयकालीन मेघ वलाहक कहलाते हैं। इस वायुका संचार महान् उत्पातका द्योतक माना जाता है (महाभा० शान्ति० ३२८.४४-४५)।

विवाह–पु० [सं०] रक्त नामक २०वें कल्पमें उत्पन्न ब्रह्माके एक मानस पुत्र (—दे० विरजा, विशोक, विश्वभावन; शिवपु० शतरुद्र-संहिता)।

विविंध्य–पु० [सं०] एक दानवका नाम जिसे श्रीकृष्णके पुत्र चारुदेष्णने मारा था (महाभा० वन० १६.२२-२६)।

विविंश–पु० [सं०] विदर्भराजकुमारी वदिनीके गर्भसे उत्पन्न महाराज वीरका पुत्र तथा क्षुप और प्रमथाका पौत्र। राजा खनीनेत्र इसीका पुत्र था। इसकी मृत्यु संग्राममें हुई थी और कहते हैं इसे इंद्रलोक प्राप्त हुआ था (मार्कण्डेयपु० अध्याय ३४; महाभा० अश्व० ४.५-७)।

विविक्तनामा–पु० [सं०] पुराणानुसार हिरण्यरेताके सात पुत्रोंमेंसे एक।

विविक्षु–पु० [सं०] अधिसोमकृष्णके पुत्र तथा शतानीकके पौत्रका नाम (मत्स्य० ५०.६६,७८)।

विशद–पु० [सं०] जयद्रथका एक पुत्र (भाग०)।

विशल्या–स्त्री० [सं०] (१) लक्ष्मणजीकी पत्नीका नाम। (२) एक नदीका नाम, जो वरुण सभामें रहकर वरुणकी उपासना करती है। इस विख्यात नदीमें स्नान करनेसे मनुष्य अग्निष्टोमका फलभागी होता है (महाभा० वन० ८४.११४)। (३) शरीरमें चुभे वाणोंको निकालनेकी एक ओषधिका नाम (वन० २८९.६)।

विशसन–पु० [सं०] एक नरकका नाम (भाग०)।

विशाख–पु० [सं०] (१) कुमार कार्त्तिकेयके वज्र चलानेसे उत्पन्न एक देवताका नाम (मत्स्य० तथा स्कंदपु०)। (२) कार्त्तिकेयके छोटे भाई (स्कंदपु०)।

विशाखयूप—पु० [सं०] एक प्राचीन देश (नृसिंहपु०)।

विशाल—पु० [सं०] (१) राजा इक्ष्वाकुका पुत्र जिसने विशाल नामकी नगरीकी स्थापना की थी (रामायण)। (२) पुराणानुसार एक पर्वतका नाम।

विशालक—पु० [सं०] एक यक्षका नाम (महाभा० सभा० १०.१६)।

विशाला—स्त्री० [सं०] (१) दक्ष प्रजापतिकी एक पुत्री (भाग० ६.४; विष्णु० १.१५.१०, ८०-१)। (२) पुराणानुसार एक तीर्थ विशेष। (३) सोमवंशी राजा अजमीढ़की पत्नीका नाम (महाभा० आदि० ९५.३७)। (४) गय देशमें राजा गयके यज्ञसे प्रकट हुई सरस्वतीका नाम (महाभा० शल्य० ३८.२०-२१)।

विशालाक्ष—पु० [सं०] धृतराष्ट्रका एक पुत्र (महाभा० आदि० ६७.१०१)।

विशालाक्षी—स्त्री० [सं०] (१) देवीकी एक मूर्त्ति विशेष (देवीभाग०)। (२) ६४ योगनियोंमेंसे एक (देवीभाग०)।

विशालाक्षीयात्रा—स्त्री० [सं०] विशालाक्षीका व्रत भाद्रपद कृष्णा ३ को होता है जिसमें तिथि रात्रिव्यापिनी होना आवश्यक है। इस दिन उपवास और जागरण करे और भाद्रपद शुक्ला ३ को गौरीका पूजन करे तथा गुड़के पूये नैवेद्यमें दे (काशीखंड)।

विशिरस्क—पु० [सं०] पुराणानुसार सुमेरुके पासका एक पर्वत (ब्रह्मां०)।

विशुंडी—पु० [सं०] कश्यप ऋषिका पुत्र नाग (काद्रवेय) (महाभा० उद्योग० १०३.१६)।

विशोक—पु० [सं०] (१) भीमसेनके सारथिका नाम (महाभा० सभा० ३३.३०)। (२) केकयदेशका एक राजकुमार, जो युद्धमें कर्ण द्वारा मारा गया (द्रोण० ८२.३)। (३) पुराणानुसार ब्रह्माका एक मानसपुत्र (—दे० विरजा, विवाह, विश्वभावन; शिवपु० शतरुद्र-सं०)।

विशोक-द्वादशीव्रत—पु० [सं०] आश्विन मासमें द्वादशीको यह व्रत किया जाता है। दशमीके दिन लघु आहार कर नियमपूर्वक यह व्रत करनेका विधान है। एकादशीको निराहार रहकर द्वादशीको लक्ष्मीका पूजन करना चाहिये। इस व्रतके करनेसे प्रियवियोग दुख नहीं होता तथा अतुल सम्पत्ति प्राप्त होती है (मत्स्य० ८०.१-५)।

विशोका—स्त्री० [सं०] कुमार कार्तिकेयकी अनुचरी एक मातृका (महाभा० शल्य० ४६.५)।

विशोधनी—स्त्री० [स०] ब्रह्माकी पुरीका नाम।

विश्रवा—पु० [सं०] एक प्राचीन ऋषिका नाम जो हविर्भूके गर्भसे उत्पन्न पुलस्त्य मुनिके पुत्र थे। इनकी पत्नी इलविड़ाके गर्भसे उत्पन्न कुबेर, कैकसी या निकसाके गर्भसे उत्पन्न रावण कुंभकर्ण, शूर्पणखा तथा विभीषण भी इन्हींके पुत्र थे (रामायण सुन्दर०) महाभारतके अनुसार कुबेर ब्रह्माके उपासक थे जिससे रुष्ट होकर पुलस्त्यका ही आधा अंश विश्रवाके नामसे उत्पन्न हुआ। कुबेरने विश्रवाके पास सहचरीके रूपमें तीन राक्षसियाँ भेज दीं। पहली पुष्पोत्कटा जो रावण और कुंभकर्णकी माता हुई, दूसरी मालिनी जो विभीषणकी माता थी और तीसरी राक्षसीका नाम राका था जिसके गर्भसे खर और शूर्पणखाका जन्म हुआ था (महाभा० वन० २७५.७-८)।

विश्रांति—पु० [सं०] पुराणानुसार एक तीर्थका नाम जहाँ जनार्दनने विश्राम किया था (विष्णु०)।

विश्वंभरेश्वर—पु० [सं०] एक शिवलिंगका नाम जो हिमालय पर्वतपर स्थित है (स्कंदपु० काशी-खंड)।

विश्व—पु० [सं०] दक्षकी पुत्री विश्वाके गर्भसे उत्पन्न धर्मके पुत्रका नाम जो देवताओंके एक गण कहे जाते हैं। ब्रह्मां० के अनुसार इनके अन्तर्गत क्रतु, दक्ष, भव, सत्य, काल, काम, मुनि, पुरूरवा, मार्द्रवा और रोचमान नामके दस देवता हैं (ब्रह्मां० ३.३.३१)।

विश्वकंभ—पु० [सं०] दे० विष्कंभ।

विश्वकर्मजा—स्त्री० [सं०] सूर्यकी पत्नी संज्ञाका एक नाम (भाग० ८.१३.८, १०; मत्स्य० ११.५-९; २४८.७३; वायु० ८४.३९, ७७)।

विश्वकर्मा—पु० [सं०] एक प्रसिद्ध देवता जो सब प्रकारके शिल्प-शास्त्रके आविष्कर्ता तथा सर्वश्रेष्ठ ज्ञाता समझे जाते हैं। पुराणानुसार यह प्रभास वसुके पुत्र और रचनाके पति हैं तथा देवताओंके लिए यह विमान आदि बनाया करते हैं। महाभारतके अनुसार यह लावण्यमयीके गर्भसे उत्पन्न हुए। बृहस्पतिकी ब्रह्मवादिनी बहिन, जो योगमें तत्पर हो सम्पूर्ण जगत्में अनासक्त भावसे विचरती रही इनकी माता थीं (आदि० ६६.२६-२८) इन्हें सर्वश्रेष्ठ शिल्पी माना गया है। इसी ग्रंथने इन्हें अमर भी कहा है। रामायणानुसार इन्होंने राक्षसोंके लिए लंकाकी सृष्टि की थी और सूर्यपत्नी संज्ञा इन्हींकी पुत्री थी। जब सूर्यके तापको संज्ञा सहन न कर सकी तब इन्होंने उसका आठवाँ अंश काट उससे चक्र, वज्र आदि बनाकर देवताओंको प्रदान किये। भाद्रपदकी संक्रान्तिको इनकी पूजा हुआ करती है। यह एक प्रजापति हैं। नल नामक वानर इनका पुत्र था। इन्द्रके प्रति द्रोह-बुद्धि होनेसे इन्होंने तीन सिरवाले विश्वरूप नामक पुत्रको उत्पन्न किया (उद्योग० ९.३-४)। विश्वरूपके मारे जानेपर इन्द्रसे बदला लेनेके लिए इन्होंने वृत्रासुरको उत्पन्न किया (उद्योग० ९.४५.४८)। द्रष्टव्य (रामायण, महाभा० उद्योग० ९.४५-४८)।

विश्वकर्मेश—पु० [सं०] एक शिवलिंग विशेषका नाम।

विश्वकार्य—पु० [सं०] सूर्यकी प्रधान सात ज्योतियोंके समूहका नाम जो सात रंगकी हैं:—बैगनी, नीली, आसमानी, हरी, पीली, नारंगी और लाल। सूर्यके प्रकाशमें ये ही सात रंग वर्तमान हैं जो काँचसे अलग-अलग दिखायी पड़ते हैं।

विश्वकूट—पु० [सं०] पुराणानुसार हिमालय पर्वतकी एक चोटी।

विश्वकृत्—पु० [सं०] एक सनातन विश्वेदेवका नाम (महाभा० अनु० ९१.३६)।

विश्वकेतु—पु० [सं०] (१) अनिरुद्धका एक नाम—दे० अनिरुद्ध। (२) पुराणानुसार एक पर्वतका नाम। (३) कामदेवका नाम—दे० कामदेव।

विश्वगंधि—पु० [सं०] राजा पृथुका एक पुत्र (भाग०)।

विश्वग—पु० [सं०] ब्रह्मर्षि मरीचिके कला (कर्दमपुत्री) के गर्भसे कश्यप और पूर्णिमा नामक दो पुत्र हुए। पूर्णिमा

नामके पुत्रके दो पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (भाग० ४.१.-१३)।

विश्वगर्भ–पु० [सं०] पुराणानुसार रैवतका एक पुत्र—दे० रैवत।

विश्वचक्र–पु० [सं०] पुराणानुसार एक महादान जिसमें १६ आरोंसे युक्त एक हजार पल सोनेका चक्र बनवाकर दान किया जाता है। इसके दानसे सब पातकोंकी निवृत्ति हो जाती है (मत्स्य० २८३.१-२०)।

विश्वजित्–पु० [सं०] (१) एक प्रकारका यज्ञ। गुरु शुक्राचार्यके आदेशसे इन्द्रको परास्तकर इंद्रपुरीमें स्थायी निवासके हेतु विरोचनसुत राजा बलिने यह यज्ञ किया था (स्कंदपु० माहेश्वर० केदार-खंड)। (२) बृहस्पतिके तृतीय पुत्रका नाम। ये सम्पूर्ण विश्वकी बुद्धिको अपने वशमें किये हुए हैं अतएव अध्यात्म-शास्त्रके विद्वानोंने इन्हें विश्वजित् नाम दिया है (महाभा० वन० २१९.१६)। (३) एक दैत्य दानव या राक्षसका नाम जो पूर्वकालमें सम्पूर्ण पृथिवीका शासक था। कालके वशीभूत हो इसे छोड़कर चल बसा (शान्ति० २२७.५३)। (४) राजा सत्यजित्का पुत्र (भाग०)।

विश्वज्योतिष–पु० [सं०] एक गोत्र-प्रवर्त्तक ऋषिका नाम।

विश्वदासा–स्त्री० [सं०] अग्निकी सात जिह्वाओंका एक नाम (भाग०)।

विश्वदेव–पु० [सं०] नांदीमुख श्राद्ध आदिमें पूजा जानेवाला एक देवता।

विश्वधार–पु० [सं०] शाकद्वीपाधिपति मेधातिथिके सात पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (भाग० ५. २०.२५;

विश्वधारा–स्त्री० [सं०] पुराणानुसार एक नदीका नाम।

विश्वनंद–पु० [सं०] एक परम तेजस्वी ब्रह्मस्वरूप ऋषि जो ब्रह्माके शिष्य थे (शिवपु० शतरुद्रसं-हिता तथा श्वेतलोहित कल्प)।

विश्वनाथ–पु० [सं०] काशीविश्वेश्वर (स्कंदपु० काशी-खंड)।

विश्वभावन–पु० [सं०] रक्त नामक २०वें कल्पमें उत्पन्न ब्रह्माका एक मानस पुत्र—दे० विरजा, विशोक, विवाह तथा शिवपु० शतरुद्र-संहिता।

विश्वभुजा–स्त्री० [सं०] पुराणानुसार एक देवी (देवीभाग०)।

विश्वमया–स्त्री० [सं०] अग्निकी एक जिह्वाका नाम (भाग०)।

विश्वमुखी–स्त्री० [सं०] महादेव पत्नी पार्वतीका एक नाम (शिवपु०)।

विश्वरथ–पु० [सं०] पुराणानुसार राजा गाधिका एक पुत्र (भाग० ९.१५.४-१०; १६.२८, ३२; विष्णु० ४.७) तथा —दे० विश्वामित्र।

विश्वरुचि–पु० [सं०] (१) एक देवयोनि गन्धर्वराज, जो पृथिवी-दोहनके समय दोग्धा बने थे जिसका उल्लेख महाभारतमें मिलता है (महाभा० द्रोण० ६९.२५)। (२) एक दानवका नाम। [स्त्री०]–अग्निकी सात जिह्वाओंमेंसे एक —दे० अग्नि।

विश्वरूप–पु० [सं०] (१) एक कल्पका नाम जिसका शिवकल्पके पश्चात् आरम्भ हुआ था (शिवपु० शतरुद्र-संहिता, अध्याय १)। (२) पुराणानुसार त्वष्टाका एक पुत्र। एक बार बृहस्पतिकी अनुपस्थितिमें यह इन्द्रके पुरोहित हुए थे। इनके तीन मुख थे और यज्ञादिमें यह देवों, असुरों तथा मनुष्योंको भी तृप्त करते थे। इससे देवता तथा ऋषिगणका विनाश निश्चित था अतः इन्द्रने इन्हें मार डाला जिससे इन्द्रको ब्रह्महत्याका पाप लगा जो बृहस्पतिकी कृपासे छूटा था (स्कंदपु० माहेश्वर० केदार-खंड)। (३) अर्जुनको श्रीकृष्णने गीताका उपदेश देते समय जो स्वरूप दिखलाया था उसका नाम, जिसमें यह सिद्ध किया गया था कि सारे विश्वके नक्षत्रादि सब उन्हींके (कृष्णके) स्वरूप हैं। (४) पुराणानुसार एक तीर्थका नाम जो नर्मदाके उत्तर तटपर मेघनाद तीर्थके निकट विश्वरूपा नदी तथा नर्मदाके संगमपर स्थित है जहाँ मेघनादेश्वर, गोष्ठेश्वर, वागीश्वर, काकडेश्वर तथा लक्षेश्वर ५ प्रसिद्ध शिवलिंग हैं (स्कंदपु० आवन्त्य, रेवा-खंड)।

विश्वलोप–पु० [सं०] एक वैदिक ऋषिका नाम।

विश्ववारा–स्त्री० [सं०] ऋग्वेदके पाँचवें मंडलकी कुछ ऋचाओंकी ऋषि एक स्त्रीका नाम जो अत्रिगोत्रकी थी।

विश्वश्रवा–पु० [सं०] लंकापति रावण आदिके पिता एक प्रसिद्ध मुनि—दे० विश्रवा।

विश्वसहा–स्त्री० [सं०] अग्निकी सात जिह्वाओंमेंसे एक—दे० अग्नि।

विश्वसाम–पु० [सं०] अनेक वैदिक मंत्रोंके द्रष्टा एक वैदिक ऋषि जो आत्रेय गोत्रोत्पन्न थे।

विश्वा–स्त्री० [सं०] (१) दक्ष प्रजापतिकी एक पुत्री तथा धर्मकी पत्नी जो वसु, सत्य, क्रतु आदि दस विश्वेदेवोंकी जननी थी (वायु० १०.२६; ६३.४१; ६६.२; ७६.३; ब्रह्मां० २.९.१, ४९-५०)। (२) भारतवर्षकी एक महानदीका नाम (भाग० ५.१९.१८)।

विश्वाची–स्त्री० [सं०] एक अप्सरा जिसकी गणना छह प्रधान अप्सराओंमें है (महाभा० आदि० ७४.६८)।

विश्वानर–पु० [सं०] एक पुण्यात्मा ब्रह्मचारी तथा शिवभक्त जो नर्मदा तटपर स्थित नर्मपुर ग्राममें रहते थे। शुचिष्मतीसे विवाह कर यह गृहस्थोंकी तरह रहने लगे और काशीमें १२ महीनोंतक तप तथा शिवाराधना कर इन्हें गृहपति नामक पुत्र प्राप्त हुआ जिसने नारदजीसे अल्पायु होनेका समाचार पा मृत्युञ्जय महादेवकी पूजाकर अग्निका पद प्राप्त किया। यह अग्निकोणके अधिपति एक लोकपाल हो गये जहाँ यह अपने माता-पिता सहित चले गये (शिवपु० शतरुद्र-संहिता ८.१३)।

विश्वामित्र–पु० [सं०] पुरुवंशी महाराज गाधिके पुत्र एक प्रसिद्ध ब्रह्मर्षि जो क्षत्रिय होते हुए भी अपने तपोबलसे ब्रह्मर्षियोंमें परिगणित हुए थे। इनका क्षत्रिय-दशाका नाम 'विश्वरथ' था पर ब्राह्मणत्व करनेपर यह विश्वामित्रके नामसे विख्यात हुए। पुराणानुसार गाधिकी सत्यवती नामकी पुत्री ऋचीक ऋषिको ब्याही गयी थी। ऋचीकने अपनी पत्नी और सासके लिए दो अलग-अलग चरु बनाये पर सत्यवतीकी माताने सत्यवतीवाला चरु खा लिया और सत्यवतीने अपनी माताके निमित्त बना चरु खाया। सत्यवतीके पुत्र जमदग्नि हुए जो ब्राह्मण होते हुए भी क्षत्रियगुण सम्पन्न थे और महाराज गाधिकी पत्नीके गर्भसे यही विश्वामित्र हुए जो क्षत्रिय कुलमें होते हुए भी ब्राह्मणोंके सदृश गुणवाले हुए। शुनःशेफ, मधुच्छन्द, धनंजय, कृतदेव, अष्टक, कच्छप, हारीतक आदि इनके १०० पुत्र हुए। इनकी पत्नीका नाम

सती था। एक बार इनके तपसे डरकर इन्द्रने मेनका नाम की अप्सराको इनका तप भंग करनेको भेजा। मेनकाके गर्भसे विश्वामित्रको शकुन्तला नामकी पुत्री हुई जिसका विवाह राजा दुष्यन्तसे हुआ और यह भरत नामक प्रतापी पुत्रकी माता हुई—दे० भरत, दुष्यन्त, शकुन्तला। राजा त्रिशंकुको इन्होंने ही सदेह स्वर्ग पहुँचाया था। राजा हरिश्चन्द्रके सत्यकी सुप्रसिद्ध परीक्षा लेनेवाले भी यही विश्वामित्र थे। पुराणोंमें इनके सम्वन्धकी अनेक कथाएँ भरी पड़ी हैं (विष्णु० ४.७.१२-३८) इनके आश्रममें रावणके अनुचर मारीच और सुवाहु वरावर विघ्न उपस्थित कर यज्ञोंको दूषित कर देते थे अतः यह राम और लक्ष्मणको अयोध्यापति दशरथसे माँग लाये, जिन्होंने ताड़का आदिका वध कर डाला था (रामच० मानस वालकां० २०५-२०९.३)। इन्हींके कहनेसे राम और लक्ष्मण मिथिला गये जहाँ उनका विवाह सम्पन्न हुआ (रामच० मा० वालकां० २११-३२६ दो०)। विश्वामित्रके आदेशसे श्रीरामने गौतम-पत्नी अहल्याका उद्धार किया (रामच० मा० वालका० २०९.६ से २११)। महर्षि विश्वामित्रका पूरा जीवन ही परोपकारमें व्यतीत हुआ। यह वेदमाता गायत्रीके द्रष्टा हैं तथा इनके अनेक धर्मग्रन्थ भी हैं।

विश्वामित्रा—स्त्री० [सं०] भारतवर्षकी एक प्रधान नदीका नाम (महाभा० भीष्म० ९.२६)।

विश्वावसु—पु० [सं०] पुराणानुसार देवलोकके एक गंधर्वका नाम जो महासती मदालसाके पिता थे जिसे विवाहके लिए पातालकेतु हर ले गया। पातालकेतुको शत्रुजितके पुत्र ऋतध्वजने मारा था और इससे विवाह किया था—दे० ऋतध्वज-५, मदालसा, मार्कण्डेयपु० अलर्कोपाख्यान)।

विश्वेदेव—पु० [सं०] वेदोंके अनुसार देवताओंका एक समूह जिसमें नौ देवता हैं। अग्निपुराणानुसार क्रतु, दक्ष, वसु, सत्य, काम, काल, ध्वनि, रोचक, आर्द्रव और पुरूरवा ये ही दस विश्वेदेव हैं। इनमेंसे पाँचका जन्म विश्वामित्रके शापसे द्वापरमें द्रौपदीके गर्भसे हुआ था जिन्हें अश्वत्थामाने वाल्यकालमें ही मार डाला था (अग्निपुराण तथा महाभा० अनु० ९१.३०-३७)।

विश्वेदेवपूजन—पु० [सं०] आषाढ़ शु० १५ को यदि पूर्वाषाढ़ा हो तो विश्वदेवोंका पूजन करे इससे वे प्रसन्न होते हैं (ब्रह्मपु०)।

विश्वैकसार—पु० [सं०] काश्मीर राज्यमें स्थित एक प्राचीन तीर्थका नाम।

विषधात्री—स्त्री० [सं०] जरत्कारु ऋषिकी पत्नीका एक नाम जिन्हें मनसा देवी भी कहते हैं (ब्रह्मवैवर्त्तपु०)।

विषप्रस्थ—पु० [सं०] महाभारतके अनुसार एक पर्वतका नाम।

विष्कंभ—पु० [सं०] एक पर्वतका नाम (वराहपु०)।

विष्कर—पु० [सं०] एक दानवका नाम (महाभा० शान्ति० २२७.५३)।

विष्टिव्रत—पु० [सं०] पुराणानुसार एक व्रत जिसमें मार्गशीर्ष शुक्ला ४ को इसका संकल्प करे, तदुपरांत विद्वान् ब्राह्मणका पूजन करे साथ ही लोह, पाषाण या काष्ठकी भद्रा वनवाकर अष्टदल आसनपर प्रतिष्ठित कर पूजन करे। वृत्रासुरको मारनेके लिए इन्द्रने, त्रिपुरासुरको मारनेके लिए शिवने, विमानके लिए वरुणने और पाञ्चजन्य शंखके लिए विष्णुने यही व्रत किया था (भविष्योत्तरपु०)।

विष्णु—पु० [सं०] (१) हिन्दुओंके प्रधान तीन देवताओं (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) मेंसे एक जिनके ऊपर सृष्टिकी रक्षाका भार है। ऋग्वेदमें विष्णु गौण देवता माने गये हैं पर ब्राह्मण ग्रन्थोंमें इनका महत्त्व अधिक है। वैदिक कालमें इन्हें धन, वीर्य और वल दाता कहा गया है। प्रजापति कश्यपके औरस और अदितिके गर्भसे इनकी उत्पत्ति हुई है। इनकी पत्नीका नाम लक्ष्मी है। यह सृष्टिके कल्याणके लिए युग-युगमें उत्पन्न होते हैं। पुराणोंमें इनके दस अवतार लिखे हैं। पुराणानुसार इनके १००० नाम हैं। इनका रंग श्यामवर्ण तथा यह चतुर्भुज हैं। इनके शंखका नाम 'पांचजन्य'; चक्रका नाम 'सुदर्शन'; गदाका नाम 'कौमोदकी'; तलवारका नाम 'नंदक' और धनुषका नाम 'शार्ङ्ग' है। गरुड़ इनका वाहन है और अर्हण इनका एक सेवक (भाग० २.९.१४)। यह हिंदु-त्रिमूर्त्तिके एक प्रधान देवता हैं (स्कंद०, विष्णु० आदि)। (२) वारह आदित्योंमें पहलेका नाम (ब्रह्मां०, मत्स्य०, वायु०, आदित्यगण)। (३) एक धर्मशास्त्रके रचयिता एक प्राचीन ऋषि।

विष्णुकांची—स्त्री० [सं०] दक्षिणके एक प्राचीन तीर्थका नाम जिसकी स्थापना शायद शंकराचार्यने की थी।

विष्णुतिथि—स्त्री० [सं०] हर मासके प्रत्येक पक्षकी एकादशी तथा द्वादशी तिथियाँ जिनके अधिपति विष्णु हैं (भाग०)।

विष्णुद्वीप—पु० [सं०] पुराणानुसार एक द्वीप विशेष।

विष्णुधर्मोत्तर—पु० [सं०] विष्णुपुराणका एक अंग तथा एक उपपुराण।

विष्णुधर्मा—पु० [सं०] गरुड़की प्रमुख संतानोंमें एकका नाम (महाभा० उद्योग० १०१.१३)।

विष्णुधारा—स्त्री० [सं०] (१) एक प्राचीन तीर्थका नाम। (२) पुराणानुसार एक नदीका नाम।

विष्णुपजर—पु० [सं०] पुराणानुसार विष्णुका एक कवच (भाग०)।

विष्णुपदतीर्थ—पु० [सं०] एक तीर्थका नाम जिसमें स्नान कर भगवान् वामनका पूजन करनेवाला पुरुष विष्णुलोक प्राप्त करता है। यह प्रभासतीर्थके वाद विपाशा नदीके तटपर स्थित है (महाभा० वन० ८३.१०३-४; १३०-८-९)।

विष्णुपदी—स्त्री० [सं०] गंगा नदीका नाम। कहते हैं ब्रह्माने विष्णुके पैरका अँगूठा धोकर इनकी सृष्टि की थी, अतः यह नाम पड़ा (स्कंदपु० वै० वैशाख-मा०; मत्स्य० १०६.५३)।

विष्णुपुराण—पु० [सं०] अठारह पुराणोंमेंसे तीसरा जिसमें अन्य पुराणानुसार करीव २३००० श्लोक हैं। पुराणोंके पंचलक्षण इसमें अधिक मिलते हैं, इसीसे यह अति प्राचीन दीखता है—दे० पुराण। विलसन और डा० एफ० हालने इसका व्याख्या सहित अनुवाद भी कर दिया है। इस पुराणके ६ अंश हैं—(१) विष्णु-महिमा, ध्रुव तथा प्रह्लादकी कथा। (२) विविध लोक वर्णन, भरतचरित तथा ऋभुनिदाघका ज्ञानोपदेशमय इतिहास। (३) सदाचार निरूपण। (४) विविध इतिहास। (५) श्रीकृष्णकी कथाएँ। (६)

कलिधर्म, प्राकृत प्रलय आदिका निरूपण।

विष्णुप्रयाग–पु० [सं०] बदरिकाश्रमकी राहमें पण्डुकेश्वरके निकटका एक तीर्थस्थान जहाँ विष्णुगंगा अलकनंदासे मिलती है। नारद ऋषिने तप करके यहाँ विष्णुका दर्शन पाया था। इसी तीर्थके सामने हाथी पर्वत है, यहाँ जलकी धारा बड़ी तेज है।

विष्णुयशा–पु० [सं०] पुराणानुसार ब्रह्मयशाका पुत्र और कल्कि अवतारका पिता, सुमति इनकी पत्नी तथा कल्किकी माता होगी (वायु० तथा ब्रह्मां०)।

विष्णुरात–पु० [सं०] अर्जुन-सुभद्रात्मज अभिमन्यु और उत्तराके पुत्र, महाराज परीक्षित्का एक नाम, जिनकी हत्या अश्वत्थामाने गर्भमें ही कर दी, पर विष्णु (श्रीकृष्ण) ने ही इन्हें पुनः जीवित कर लिया (महाभा० अश्व० अध्याय ६८, ६९)।

विष्णुविवाह–पु० [सं०] यह वैधव्यहर है जिसमें कन्याका विवाह पहले विष्णुसे कर देते हैं (मार्कण्डेयपु०)।

विष्णुसप्तमी–स्त्री० [सं०] त्रितयसप्तमी, मित्रसप्तमी तथा विष्णुसप्तमी ये तीनों सप्तमियाँ मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमीको मनायी जाती हैं तथा तीनोंसे अभीष्टकी सिद्धि होती है और इनमें भगवान् विष्णुकी पूजा होती है (हेमाद्रि)।

विष्णुस्वामी–पु० [सं०] दक्षिण भारतके प्राचीन तीर्थ मदुराके राजा पांड्यविजयके कुलगुरु देवस्वामी तथा यशोमती देवीके पुत्रका नाम। यह वचपनसे ही भगवद्भक्त थे और वड़े होनेपर श्री वालगोपालकी भक्तिमें लीन रहते थे। ६ दिन उपवास कर सातवें दिन इन्हें गोपालका दर्शन हुआ। यह भागवत धर्मके प्रमुख प्रचारक थे और वैष्णवाचार्य कहलाये। वल्लभाचार्यने इन्हींके मतको आधार मानकर अपने पुष्टि-सम्प्रदायकी स्थापना की थी (सम्प्रदायप्रदीप, तृतीय प्रकरण)।

विष्वकसेन–पु० [सं०] (१) विष्णुका एक नाम। (२) मत्स्य पुराणानुसार तेरहवें विष्णुपुराणानुसार चौदहवें मनुका नाम। (३) एक प्राचीन ऋषिका नाम, जो इन्द्रकी सभामें विराजते थे (महाभा० सभा० ७.१८ के अनन्तर दाक्षिणात्य पाठ)। (४) पुराणानुसार शंकरके एक पुत्रका नाम (शिवपु०)।

विहंग–पु० [सं०] ऐरावतकुलमें उत्पन्न एक नाग (सर्प) का नाम, जो जनमेजयके सर्पसत्रमें स्वाहा हो गया था (महाभा० आदि० ५७.१२)।

विहुंडन–पु० [सं०] शिवका एक अनुचर विशेष (स्कंदपु० काशी-खंड)।

वीतसेन–पु० [सं०] राजा पुरूरवाके पिता (भाग० तथा ब्रह्मां०)।

वीतहव्य–पु० [सं०] शर्यातिवंशी वत्सके पुत्र, जिनका नामांतर हैहय था। इनके पुत्रों द्वारा काशीराज हर्यश्वका वध किया गया। इनके पुत्रोंने ही सुदेवको मार डाला और दिवोदासको परास्त किया (महाभा० अनु० ३०.१०-१४, २१-२२)।

वीति–पु० [सं०] एक अग्निका नाम। दक्षिणाग्निका गार्हपत्याग्नि और आहवनीयाग्निके साथ संसर्ग होनेपर अष्टकपाल पुरोडाशकी इस अग्निमें आहुतिका देनेका विधान है (महाभा० वन० २२१.२५)।

वीतिहोत्र–पु० [सं०] एक प्राचीन नरेशका नाम (महाभा० आदि० १.२३३)।

वीभत्सु–पु० [सं०] अर्जुनका एक नाम–दे० अर्जुन।

वीर–पु० [सं०] (१) कश्यप-पत्नी दनु या दनायु पुत्र एक दानव (महाभा० आदि० ६१.३३)। (२) खनित्र-पुत्र क्षुपकी पत्नी प्रमथाके गर्भसे उत्पन्न एक राजाका नाम जिनके विदर्भ-राजकुमारी नंदिनीके गर्भसे विविंश नामक पुत्र हुआ था। यह खनित्रके दादा थे (मार्कण्डेयपु०)।

वीरक–पु० [सं०] पुराणानुसार चाक्षुष मन्वंतरके एक मनु।

वीरकेतु–पु० [सं०] पांचाल देशके राजा द्रुपदके एक राजकुमार जिनकी पुत्रीका नाम रत्नवती था, महाभारत-युद्धमें द्रोणाचार्य द्वारा इनका वध किया गया था (महाभा० द्रोण० १२२.३३-४१)।

वीरण–पु० [सं०] एक प्रजापति जिनकी पुत्रीका विवाह दक्षसे हुआ था जो ५००० पुत्रोंकी माता थी (भाग० तथा ब्रह्मां०)।

वीरणक–पु० [सं०] धृतराष्ट्र नागके कुलमें उत्पन्न एक नाग (सर्प) का नाम, जो जनमेजयके सर्पसत्रमें आहुत हुआ था (महाभा० आदि० ५७.१८)।

वीरद्युम्न–पु० [सं०] एक प्राचीन वीर नरेश जिनके राजकुमारका नाम भूरिद्युम्न था और जो वनमें खो गया था। उसकी खोजमें वे महर्षि तनुके निकट गये थे (महाभा० शांति० १२७.१४-२०)।

वीरधन्वा–पु० [सं०] एक त्रिगर्त देशका योद्धा जो महाभारत-युद्धमें कौरवोंकी ओरसे लड़ा था और धृष्टकेतुके हाथों मारा गया (महाभा० द्रोण० १०६.१०)।

वीरधर्मा–पु० [सं०] एक राजाका नाम, जिसको पांडवोंकी ओरसे रणका निमंत्रण भेजनेके लिए निश्चय किया गया था (महाभा० उद्योग० ४.१७)।

वीरप्रमोक्ष–पु० [सं०] एक प्राचीन तीर्थका नाम, जहाँ जानेसे मनुष्य सव पापोंसे मुक्त हो जाता है (महाभा० वन० ४.५१)।

वीरबाहु–पु० [सं०] (१) धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (महाभा० आदि० ६७·१०३)। (२) चेदिदेशके राजाका नाम, जिनका विवाह दशार्णराज सुदामाकी पुत्रीसे हुआ था, जो नलपत्नी दमयन्तीकी मौसी थी। राजा नलके दमयन्तीको वनमें अकेले छोड़ जानेपर इन्हींके महलमें उन्हें आश्रय मिला था (वन० ६९.१३-१५)। (३) लंकापति रावणका एक पुत्र (रामायण)। (४) काम्पिल्यनगरका एक राजा जो परम विष्णुभक्त था। इसकी पत्नी भी वड़ी पतिव्रता थी। भरद्वाज ऋषिके अनुसार पूर्वजन्ममें वीरवाहु सपत्नीक जीवहिंसा परायण शूद्र था, पर इसकी पत्नी कांतिमती ही वहाँ भी इसकी पत्नी थी जिसके प्रतापसे ये दोनों देवशर्माका आतिथ्य सत्कार कर वैष्णव वीरवाहु हुए थे (स्कंदपु०, वै० मार्गशीर्ष-माहात्म्य० १२.२२-२४ आदि)।

वीरभद्र–पु० [सं०] भगवान् शंकरका एक प्रसिद्ध गण तथा पार्षद, जो शंकरजीका मूर्त्तिमान् क्रोध ही था (महाभा० शांति० २८४.३५)। दक्षके यज्ञका ध्वंस करनेके समय शिवजीने अपने मुँहसे इनकी सृष्टि की थी। स्कंदपुराणानुसार

दक्षकन्या सतीसे वियोग होनेपर उनकी जटा फटकारनेसे उन्हींके मस्तकसे यह उत्पन्न हुए थे, इसीसे इनको शिवका एक अवतार मानते हैं। इन्होंने अपने रोमकूपोंसे रौम्य नामक बहुतसे अन्य रुद्रगणेश्वरोंकी सृष्टि करके दक्षके यज्ञका ध्वंस किया था (शांति० २८४.३५-५०)। इस यज्ञमें सती बिना बुलाये ही चली गयी थीं, अतः उनका अनादर हुआ था। शंकरको इस यज्ञमें निमंत्रण नहीं मिला था, पर अपने अन्य जामाताओंको दक्षने बुलाया था, इसीसे क्रुद्ध हो शंकरगणोंने यज्ञ-ध्वंस किया और वीरभद्रने उनकी यथेष्ट सहायता की थी। वायुपुराणमें इनके भयंकर रूपका विस्तृत वर्णन है। एलिफैन्टा तथा एलोराकी गुफाओंमें इनकी अष्टभुजी मूर्त्ति है। स्कंदपुराणानुसार पूर्वजन्ममें यह चित्रांगद-पुत्र विचित्रवीर्य थे जो पूर्वजन्ममें एक विधवा ब्राह्मणी और चांडालसे उत्पन्न हुए थे। यह शिवकी कृपासे इस पदतक शिवसायुज्य होकर पहुँचे थे (स्कंदपु० माहेश्वर० केदार-खंड ३३.९२)।

वीरमणि–पु० [सं०] पुराणानुसार देवपुरके एक प्राचीन राजा। श्रीरामके यज्ञका घोड़ा पकड़ लेनेके कारण इनके पुत्र रुक्मांगद और शत्रुघ्नसे युद्ध हुआ था। भगवान् शंकर वीरमणिकी ओर थे। शिवने शत्रुघ्नको पाशमें बाँध लिया, पर श्रीरामने छुड़ा लिया (रामायण)।

वीरमती–स्त्री० [सं०] भारतवर्षकी एक नदी (महाभा० भीष्म० ९.२५)।

वीरमत्स्य–पु० [सं०] एक प्राचीन जातिका नाम (रामायण)।

वीरमर्दन–पु० [सं०] पुराणानुसार एक दानवका नाम।

वीररेणु–पु० [सं०] भीमसेन (पांडव) का एक नाम (महाभा०)।

वीरव्रत–पु० [सं०] पुराणानुसार सुमनाके गर्भसे उत्पन्न मधुके एक पुत्रका नाम (भाग० ९.११.१४)।

वीरशर्मा–पु० [सं०] वशिष्ठ कुलोत्पन्न एक सामवेदी ब्राह्मणका नाम। कुशिक वंशोत्पन्ना लक्ष्मी नामकी कन्या इनकी पत्नी थीं जिसे गर्भवती होनेके कारण यह राजा तोंडमानके यहाँ छोड़कर तीर्थयात्रा करने चले गये थे। तोंडमानने ६ महीनोंका भोजन भरवा दिया था, पर फिर भूल गया और वीरशर्मा २ वर्ष पश्चात् यात्रासे लौटे। ब्राह्मणी स्वाभिमानवश बिना भोजन माँगे घरमें ही सूख कर मर गयी। तोंडमान विष्णुभक्त था, अतः वेंकटाचलपर स्थित अस्थिकूट सरोवरमें स्नान करा ब्राह्मणीके अस्थिचर्मविशिष्ट शरीरको विष्णुकी कृपासे पुनः जीवित कर दिया था (स्कंदपु० वैष्णव०, भूमिवाराह-खंड)।

वीरसेन–पु० [सं०] निषध देशके राजा तथा राजा नलके पिताका नाम। ये धर्म और अर्थके तत्त्वज्ञ माने जाते थे। इन्होंने अपने जीवनमें कभी मांस नहीं खाया (महाभा० वन० ५२.५५; अनु० ११५.६५)।

वीरहोत्र–पु० [सं०] पुराणानुसार विंध्यपर्वतपर स्थित एक स्थानका नाम।

वीरा–स्त्री० [सं०] (१) शंयुके पुत्र भरद्वाज नामक अग्निकी भार्या। इनके गर्भसे वीर नामका पुत्र उत्पन्न हुआ था (महाभा० वन० २१९.९)। (२) भारतवर्षकी एक नदीका नाम (भीष्म० ९.२२)।

वीराचारी–पु० [सं०] एक वाममार्गी मत जिसमें शव-पूजनकी ही प्रधानता रहती है, यह दक्षिण मार्गका उलटा है।

वीराष्टक–पु० [सं०] कुमार कार्त्तिकेयका एक सैनिक अनुचर (स्कंदपु०)।

वीरिणी(वैरिणी)–स्त्री० [सं०] असिक्नीका एक नाम जो पंचजन प्रजापति (वीरण प्रजापति = विष्णु०) की पुत्री और दक्षकी पत्नी थी (भाग० ६.५.५२; विष्णु० १.१६. ९०-९१)।

वीर्यधर–पु० [सं०] पुराणानुसार प्लक्षद्वीपके खास निवासी क्षत्रियोंका नाम (विष्णु०)।

वीर्यसह–पु० [सं०] राजा कल्माषपादका एक नाम। यह सूर्यवंशीय राजा सौदासके पुत्र थे (भारतीय चरितांबुधि)।

वीर्यहारी–पु० [सं०] दुःसह नामक यक्षकी पुत्रीके गर्भसे किसी चोरके वीर्यसे उत्पन्न एक यक्ष। अपवित्र अवस्थामें रसोईघरमें जानेसे यह यक्ष अपने दो अन्य भाइयोंके साथ वहाँ निवास करता है (स्कंदपु० माहेश्वर० केदार-खंड)।

वृंदा–स्त्री० [सं०] श्रीकृष्णकी प्रेयसी राधाका एक नाम। अबतक राधाके सोलह नाम मिले हैं (देवीभाग०)।

वृंदावन–पु० [सं०] श्रीकृष्णका प्रधान क्रीड़ाक्षेत्र तथा मथुरा जिलेके एक प्रसिद्ध प्राचीन तीर्थका नाम। श्रीकृष्णने अपनी अधिकांश बाललीलाएँ यहीं की थीं। महमूद गजनवीने तो इस स्थानका सर्वनाश ही कर डाला था, पर चैतन्य महाप्रभुने यमुनाके किनारे दूसरे वृंदावनकी स्थापना की। यहाँ अनेक मंदिर तथा घाट बन गये हैं (भाग०)।

वृक–पु० [सं०] (१) एक राजाका नाम, जो द्रौपदी स्वयंवरमें उपस्थित था (महाभा० आदि० १८५.१०)। यह कौरवोंकी ओरका योद्धा था। युद्ध करते किसी पर्वतीय नरेश द्वारा मारा गया था (कर्ण० २५.१६-१७)। (२) पांडव पक्षीय एक योद्धा जिसका वध द्रोणाचार्यने किया (द्रोण० २१.९६)। (३) एक प्राचीन राजाका नाम, जिसने अपने जीवनमें कभी मांस नहीं खाया (अनु० ११५.६३)।

वृककर्मा–पु० [सं०] एक असुरका नाम।

वृकखंड–पु० [सं०] एक ऋषिका नाम।

वृकगर्त्त–पु० [सं०] एक प्राचीन जनपदका नाम।

वृकग्राह–पु० [सं०] एक ऋषिका नाम।

वृकजंभ–पु० [सं०] एक ऋषिका नाम।

वृकदंत–पु० [सं०] पुराणानुसार एक असुर जिसकी सानंदिनी नामकी पुत्री लंकापति रावणके भाई कुंभकर्णको ब्याही थी (रामायण)।

वृकदीप्ति–स्त्री० [सं०] पुराणानुसार श्रीकृष्णका एक पुत्र (भाग०)।

वृकदेव–पु० [सं०] पुराणानुसार वसुदेवके एक पुत्र (भाग० तथा विष्णु०)।

वृकदेवा–स्त्री० [सं०] पुराणानुसार वसुदेवकी पत्नी देवकीका एक नाम (भाग०)।

वृकनिवृत्ति–पु० [सं०] पुराणानुसार श्रीकृष्णका एक पुत्र (भाग०)।

वृकरथ–पु० [सं०] महाभारतके अनुसार दानवीर कर्णका एक भाई।

वृकल–पु० [सं०] पुराणानुसार श्लिष्ठिके एक पुत्रका नाम।

वृकाश्व–पु० [सं०] एक प्राचीन ऋषिका नाम।

वृकासुर–पु० [सं०] एक प्रसिद्ध असुर तथा कोक और विकोकका पिता—दे० कोक तथा विकोक।

वृकास्य–पु० [सं०] पुराणानुसार श्रीकृष्णके एक पुत्रका नाम जिसे वृकाश्व भी कहते थे (भाग०)।

वृकोदर–पु० [सं०] पेटमें वृक नामकी विकट अग्नि होनेके कारण भीमसेन (पांडव) का एक नाम (महाभा०)।

वृक्षवासी–पु० [सं०] एक यक्षका नाम जो कुबेरकी सभामें रहकर उनकी सेवा करता था (महाभा० सभा० १०-१८)।

वृजनीवान्–पु० [सं०] मनुवंशी राजा क्रोष्टाके पुत्रका नाम। इनके पुत्रका नाम उषंगु था (महाभा० अनु० १४७. २८-२९)।

वृत्त–पु० [सं०] कश्यप द्वारा कद्रूके गर्भसे उत्पन्न एक नागका नाम (महाभा० आदि० ३५.१०)।

वृत्ति–स्त्री० [सं०] पुराणानुसार रुद्रकी एक पत्नी (स्कंदपु० तथा ब्रह्मां०)।

वृत्र–पु० [सं०] पुराणानुसार एक दानव (वृत्रासुर)।

वृत्रखाद–पु० [सं०] वृत्रासुरको मारनेके कारण इंद्रका एक नाम। इसी कारण इंद्रको 'वृत्रघ्न' भी कहते हैं—दे० इंद्र, वृत्रासुर।

वृत्रघ्नी–स्त्री० [सं०] पुराणानुसार एक नदी जो पारिपात्र नामक कुलपर्वतसे निकली है (ब्रह्मां०)।

वृत्रहा–पु० [सं०] वृत्रासुरको मारनेके कारण इंद्रका एक नाम—दे० इंद्र।

वृत्रासुर–पु० [सं०] पुराणानुसार त्वष्टाका पुत्र एक दानव जिसका वध करनेके हेतु विष्णुकी रायसे इंद्रने दधीचिकी अस्थियोंसे एक वज्रका निर्माण किया था। एक बार इंद्रने विश्वरूप पुरोहितको मार डाला था जिससे दुःखी हो उसके पिता त्वष्टा ऋषिने बदला लेनेके निमित्त ब्रह्माके वरके फलस्वरूप तथा अपने तपोबलसे इसे उत्पन्न किया था। देवीभागवतके अनुसार इसने स्वर्गसे इंद्रको हटाकर अपना अधिकार कर लिया था। वेदोंमें भी इसका उल्लेख मिलता है, पर यह कोई दूसरा ही असुर मालूम पड़ता है (स्कंदपु० माहेश्वर० केदार-खंड)।

वेदोक्त वृत्रासुरकी कथासे मिलती-जुलती कथा पारसियोंके जोरोस्ट्रीयन धर्ममें भी मिलती है जिसके आधारपर यहूदियों, ईसाइयों तथा इस्लाम धर्मावलम्बियोंने भी अपने-अपने धर्ममें अनेक महत्त्वपूर्ण सिद्धान्तोंकी सृष्टि कर डाली। प्रो० डार्मेस्टेटरने पारसियोंके धर्मके आधारपर संसारमें दो प्रधान शक्तियाँ बतलायी हैं—अहूर मजद और अंग्रमैन्यू। दूसरी पहली शक्तिपर आक्रमण करती है, पर हार जाती है। ईसाइयोंका जेहोव, पारसियोंका अहूर मजद है और बाइबिलका शैतान। पारसी धर्मकी दूसरी शक्ति अंग्रमैन्यूका प्रतीक दीखता है। डा० हौगने भी पारसी और ईसाई धर्मकी इन कथाओंकी एकरूपता स्वीकार की है।

बाइबिलका शैतान सर्पाकार कहा गया है और पारसियोंका अजहीदहक भी अग्निमय सर्प कहा गया है। वेदोंमें वृत्रासुरका एक नाम 'अहि' भी है जिसका अर्थ सर्प है।—'अजहीदहक'का संस्कृत रूप 'अहिदहक' होगा।

यास्कके निरुक्तके अनुसार वृत्रासुरकी कथाके आधिभौतिक और आध्यात्मिक दो अर्थ हैं। पहले अर्थके अनुसार इंद्रसे सूर्यका बोध होता है और वृत्रसे मेघका। सूर्य संसारको प्रकाश, ऊष्णता तथा जीवन प्रदान करता है और मेघ इस कार्यमें बाधा पहुँचाते हैं, अतः सूर्य और मेघमें द्वंद्व उपस्थित होता है। मेघरूपी वृत्रासुर हार कर पृथ्वीपर जलके रूपमें गिर पड़ता है। आध्यात्मिक अर्थानुसार इंद्र = ईश्वर और वृत्रासुर = संसारकी सारी बुराइयोंकी जड़। जिस प्रकार कभी-कभी सूर्य मेघाच्छन्न हो जाता है, उसी प्रकार संसारकी बुराइयाँ और प्रलोभन मनुष्यकी आत्माको कलुषित करते हैं। संसारके प्रलोभन मनुष्यको पथभ्रष्ट कर देते हैं और उसे नाना प्रकारके दुःखोंको परिणामस्वरूप भोगना पड़ता है, अंतमें सत्यकी विजय होती है, ईश्वरीय ज्ञानका उदय होता है और वृत्रासुरकी पराजय। इसमें मनुष्यका हृदय ही युद्धक्षेत्र बनता है, जहाँ अच्छे और बुरेका द्वंद्व होता है।

वृद्धकन्या–स्त्री० [सं०] महर्षि कुणिगर्गकी पुत्री, जो बालब्रह्मचारिणी थी। इसने घोर तपस्या की थी। नारदजीके कहनेसे इसने शृंगवान्‌को आधा पुण्य प्रदान करनेकी प्रतिज्ञा कर उनके साथ अपना विवाह किया। महर्षि शृंगवान्‌के साथ एक रात रहकर और उन्हें अपनी तपस्याका आधा पुण्य प्रदान कर यह स्वर्ग चली गयी। जाते समय अपने स्थानको इसने तीर्थ घोषित किया और उसका फल यों बतलाया—जो अपने चित्तको एकाग्र कर इस तीर्थमें स्नान, देव-पितृ-तर्पण करेगा, उसे अठावन वर्षोंतक विधिपूर्वक ब्रह्मचर्य-पालनका फल प्राप्त होगा (महाभा० शल्य० ५२.५-२२)।

वृद्धकेशव–पु० [सं०] पुराणानुसार सूर्यकी एक मूर्त्ति विशेष (आदित्यपु०)।

वृद्धक्षत्र–पु० [सं०] (१) सिन्धुके राजा जयद्रथके पिताका नाम (महाभा० वन० २६४.६)। (२) एक पुरुवंशी राजाका नाम जो पांडव-पक्षके योद्धा थे। इनका अश्वत्थामाके साथ युद्ध और उनके द्वारा वध किया गया (द्रोण० २००. ७३-८४)।

वृद्धक्षेम–पु० [सं०] त्रिगर्त देशके राजाका नाम, जिनके पुत्रका नाम सुशर्मा था (महाभा० आदि० १८५.९)।

वृद्धगार्ग्य–पु० [सं०] एक तपस्वी महर्षि, जिन्होंने पितरोंसे नील वृषभ छोड़ने, वर्षाऋतुमें दीपदान करने और अमावास्याको तिलमिश्रित जलसे तर्पण करने, प्राप्त होनेवाले फलके विषयमें पितरोंसे प्रश्न किया और पितरोंने उसका समाधान किया था (महाभा० अनु० १२५.७७-८३)।

वृद्धशर्मा–पु० [सं०] आयुके द्वारा स्वर्भानु कुमारीके गर्भसे उत्पन्न पाँच पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (महाभा० आदि० ७५.२५-२६)।

वृद्धश्रवा–पु० [सं०] इंद्रका एक नाम—दे० इंद्र।

वृद्धाचल–पु० [सं०] मद्रास प्रांतका एक तीर्थस्थान (स्कंदपु०)।

वृद्धात्रि–पु० [सं०] एक प्राचीन ऋषिका नाम।

वृद्धिका–पु० [सं०] वृक्षोंपर गिरे हुए शिव-वीर्यसे उत्पन्न हुई स्त्रियाँ, जो मनुष्यका मांस भक्षण करनेवाली कही गयी हैं (महाभा० वन० २३१.१६)।

वृष–पु० [सं०] (१) इक्ष्वाकुवंशोत्पन्न त्रिवृष्णके पुत्र त्र्यरुण राजाके पुरोहितका नाम—दे० त्र्यरूण। (२) पुराणानुसार ग्यारहवें मन्वंतरके इंद्र। (३) श्रीकृष्णका नाम (भाग०)। (४) कुमार कार्त्तिकेयका एक सैनिक अनुचर (महाभा० शल्य० ४५.६४)।

वृषक–पु० [सं०] गांधारके राजा सुबलका एक राजकुमार, जो द्रौपदी स्वयंवरमें गया था (महाभा० आदि० १८५.५-६)।

वृषकेतु–पु० [सं०] (१) शंकरजीका एक नाम (शिवपु०; स्कंदपु० काशी-खंड)। (२) कलिंग देशका एक राजकुमार (महाभा० कर्ण० ५.३२)।

वृषणाश्व–पु० [सं०] इंद्रके घोड़ेका नाम—दे० इन्द्र तथा विष्णु०।

वृषदंश–पु० [सं०] मंदराचलके निकटका एक पर्वत, जो स्वप्नमें श्रीकृष्ण सहित शिवजीके समीप जाते हुए अर्जुनको मार्गमें मिला था (महाभा० द्रोण० ८०.३३)।

वृषदर्भ–पु० [सं०] (१) एक राजर्षिका नाम, जो यमसभामें रहकर विवस्वन्‌केपुत्र यमकी उपासना करते थे (महाभा० सभा० ८.२६)। इनका अपने राजत्व-कालमें एक गुप्त नियम था कि ब्राह्मणको सोने और चाँदीका ही दान दिया जाय (वन० १९६.३)। राजा सेदुकके कहनेसे एक ब्राह्मणने इनके पास आकर एक हजार घोड़े माँगे। इन्होंने उस ब्राह्मणको कोड़ोंसे पीटा। ब्राह्मणके इस मारका रहस्य पूछनेपर उसे बताया और अपने राज्यकी एक दिनकी आयको उसे दानमें दिया (वन० १९६.३-१३)। (२) काशी जनपदके राजा उशीनरके पुत्र राजकुमार शिविका नाम जिन्होंने शरणागत कबूतरकी रक्षाके लिए अपना सारा मांस दे डाला था (महाभा० अनु० अध्याय ३२)। (३) श्रीकृष्णका एक नाम (भाग०)।

वृषदानव्रत–पु० [सं०] फाल्गुन शु० १४ को यथोक्त गुणवाले वृषका पूजन कर दान करे तो संपूर्ण पाप दूर हों (वीरमित्रोदय)।

वृषनाशन–पु० [सं०] पुराणानुसार श्रीकृष्णका एक नाम (भाग०)।

वृषपर्वा–पु० [सं०] (१) विष्णु भगवान्‌का एक नाम—दे० विष्णुसहस्रनाम। (२) कश्यप ऋषि द्वारा दनुके गर्भसे उत्पन्न एक दानवका नाम जो दैत्योंका राजा, शर्मिष्ठा, जो १००० दासियोंके साथ देवयानीकी सेविका हुई, का पिता तथा एक प्रकारसे ययातिका श्वसुर था। दैत्य-पुरोहित शुक्राचार्य इसीके नगरमें रहते थे। वह दूसरे जन्ममें दीर्घप्रज्ञनामक राजाके रूपमें पृथिवीपर उत्पन्न हुआ था (महाभा० आदि० ६५.२४; ६७.१५-१६)।

वृषभ–पु० [सं०] (१) सूर्यकी एक वीथीका नाम (आदित्यपु०)। (२) एक प्राचीन तीर्थस्थानका नाम (नारदपु०)। (३) राम-रावण युद्धके एक वीर वानर सेनानायकका नाम (रामायण)।

वृषभतीर्थ–पु० [सं०] एक प्राचीन तीर्थका नाम (स्कंदपु० तथा ब्रह्मां०)।

वृषभा–पु० [सं०] भारतवर्षकी एक नदीका नाम (महाभा० भीष्म० ९.३२)।

वृषभानु–पु० [सं०] श्रीकृष्णकी प्रेयसी राधिकाके पिता। पुराणानुसार यह नारायणका अंश ले उत्पन्न हुए थे। पद्मावतीके गर्भसे उत्पन्न यह सुरभानुके पुत्र थे। रावल ग्राम जहाँ राधाका जन्म हुआ था, यह वहीं रहते थे, पर पीछे बरसाने चले आये थे (देवीभाग०)।

वृषभाषा–स्त्री० [सं०] इंद्रपुरी अमरावतीका एक नाम (ब्रह्मां० तथा विष्णु०)।

वृषभेक्षण–पु० [सं०] भगवान् श्रीकृष्णका एक नाम (महाभा० उद्योग० ७०.७)।

वृषसेन–पु० [सं०] (१) एक प्राचीन राजा जो यमकी सभामें रहकर यमकी उपासना करते थे (महाभा० सभा० ८.१३)। (२) युधिष्ठिरके राजसूय यज्ञमें उपस्थित एक अभिमानी राजाका नाम (सभा० ४४.२१-२२)। (३) कर्णका एक पुत्र जो दुर्योधनकी सेनाका एक श्रेष्ठ रथी था (उद्योग० १६७.२३)। (४) बलिके क्षेत्रज पुत्र अंगके वंशके अंतिम राजाका नाम (विष्णु०)।

वृषांड–पु० [सं०] महाभारतके अनुसार एक असुरका नाम।

वृषा–पु० [सं०] (१) इंद्रका एक नाम (भाग० तथा महाभा०)। (२) स्त्री०—भारतवर्षकी एक नदीका नाम (भीष्म० ९.३५)।

वृषाकपि–पु० [सं०] (१) भगवान् विष्णुका एक नाम (महाभा० शांति० २४२.८९)। (२) एक ऋषिका नाम, जो अन्य ऋषियोंके साथ देवताओंके यज्ञमें उपस्थित थे (अनु० ६६.२३)। (३) ग्यारह रुद्रोंमेंसे एक रुद्रका नाम (अनु० १५८.१२-१३)।

वृषाकपायी–स्त्री० [सं०] (१) विष्णुपत्नी लक्ष्मीका एक नाम। (२) शिवपत्नी गौरीका एक नाम। (३) अग्निपत्नी स्वाहाका एक नाम। (४) इन्द्रपत्नी शचीका एक नाम (भाग० तथा ब्रह्मां०)।

वृषादर्भि–पु० [सं०] भागवतके अनुसार शिविका एक पुत्र। काशीराज वृषदर्भके पुत्र युवनाश्व, जो सबका रत्न, अभीष्ट स्त्री और सुन्दर सर्वोपकरणसंपन्न गृह दान करनेसे स्वर्गमें निवास करते हैं (महाभा० शांति० २३४.२५)।

वृषासुर–पु० [सं०] भस्मासुरका एक नाम—दे० भस्मासुर।

वृष्ट–पु० [सं०] पुराणानुसार कुकुरके एक पुत्रका नाम।

वृष्णि–पु० [सं०] एक यादवका नाम जो मधुका पुत्र था और मधु यदुके ज्येष्ठ पुत्रका वंशज था। श्रीकृष्ण इसी वंशके होनेके कारण वार्ष्णेय कहलाये (भाग० ९.२४.१२-१४)। ब्रह्मां० ३.७१.२० के अनुसार यह अनमित्रके पुत्र थे।

बृहद्भानु–पु० [सं०] सत्यभामाके गर्भसे उत्पन्न श्रीकृष्णके दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (भाग० १०.६१.१०)।

बृहद्रथ–पु० [सं०] (१) पृथुलाक्षके तीन पुत्रोंमेंसे एक पुत्र तथा बृहन्मनाके पिताका नाम (भाग० ९.२३.१०-११)। (२) भागवतके अनुसार शतधन्वाका एक पुत्र। (३) देवरात

का एक पुत्र (भाग० ९.२४.५; ब्रह्मां० ३.७०.१४)।

वृहदश्व–पु० [सं०] कुवलयाश्वके पिता एक राजाका नाम —दे० कुवलयाश्व।

वृहन्नला–स्त्री० [सं०] अज्ञातवासके समय विराट नगरमें रखा अर्जुनका एक नाम। जव यह राजा विराटके घर (मत्स्य देशमें जो आधुनिक अलवर और जयपुरके वीच स्थित था) रहते थे (महाभा० विराट० २.२७)।

वेणा–स्त्री० [सं०] एक नदी जिसे पर्णासा भी कहते हैं (रामायण) महाभारतके अनुसार यह नदी वरुणसभामें रहकर उनकी उपासना करती है। दक्षिण दिग्विजयके समय सहदेवने वेणातटवर्ती जनपदके राजाको पराजित किया था (सभा० ९.१८; ३१.१३)। इस नदीके तटपर जाकर तीन रात उपवास करनेवाला मनुष्य सव पापोंसे मुक्त होकर मोर और हंसोंसे युक्त विमानसे स्वर्गको जाता है (वन० ८४.३२)।

वेणिका–स्त्री० [सं०] शाकद्वीपकी एक पुण्यसलिला नदीका नाम (महाभा० भीष्म० ११.३२)।

वेणी–स्त्री० [सं०] (१) भारतवर्षकी एक नदीका नाम (भाग० ५.१९.१८)। (२) पु०–कौरव्य-कुलमें उत्पन्न एक नागका नाम जो जनमेजयके सर्पसत्रमें आहुत हुआ (महाभा० आदि० ५७.१२.१३)।

वेणीस्कन्द–पु० [सं०] कौरव्य-कुलमें उत्पन्न एक नागका नाम जिसे जनमेजयके सर्प-सत्रमें भस्म किया गया (महाभा० आदि० ५७.१२.१३)।

वेणुजंघ–पु० [सं०] महाभारतके अनुसार एक प्राचीन ऋषिका नाम (सभा० ४.१८)।

वेणुदारि–पु० [सं०] महाभारतके अनुसार एक यादवका नाम जिसने वभ्रुकी स्त्रीका अपहरण किया था (सभा० ३८.२९)।

वेणुमती–स्त्री० [सं०] पुराणानुसार पश्चिमोत्तर देशकी एक नदी (मार्कण्डेय पु० ५८.३५)।

वेणुमान्–पु० [सं०] (१) पुराणानुसार एक वंशका नाम। (२) पुराणानुरार एक पर्वतका नाम। (हि० वि० को०)।

वेणुवन–पु० [सं०] एक उपवनका नाम जो राजगृहमें है जहाँ राजा विम्बसारके समय गौतम वुद्ध ठहरे थे (दे राजगृह-परिच०)।

वेणुवीणाधरा–स्त्री० [सं०] कुमार कार्त्तिकेयकी अनुचरी एक मातृका (महाभा०शल्य० ४६.२१; ब्रह्मां० ३.१०.५२)।

वेणुहोत्र–पु० [सं०] धृष्टकेतुका पुत्र तथा गार्ग्यका पिता (ब्रह्मां० ३.६७.७७; वायु० ९२.७२)।

वेण्या–स्त्री० [सं] भरतवर्षकी प्रधान पुण्य नदियोंमेंसे एक नदी (भ० ५.१९.१८।

वेण्वा–स्त्री० [सं०] पुराणानुसार विन्ध्य पर्वतसे निकली १४ नदियोंमेंसे एक नदीका नाम (वायु० ४५.१०२)।

वेतसवन–पु० [सं०] एक प्राचीन तीर्थका नाम, जहाँ मृत्युने तपस्या की थी (महाभा० द्रोण० ५४.२३)।

वेतसिका–स्त्री० [सं०] ब्रह्माजी द्वारा सेवित एक तीर्थका नाम, जहाँकी यात्रासे मनुष्य अश्वमेध यज्ञका फल पाता है (महाभा० वन० ८४.५६)।

वेतसिनी–स्त्री० [सं०] पुराणानुसार एक नदीका नाम।

वेतसु–पु० [सं०] वैदिक कालका एक असुर (ऋग्वेद ६.२०८ सायण भ०)

वेताल–पु० [सं०] पुराणानुसार एक भूतयोनि, जिसके भूत कुछ श्रेष्ठ होते हैं और श्मशानमें रहते हैं।

वेतालजननी–स्त्री० [सं०] कुमार कार्तिकेयकी अनुचरी एक मातृकाका नाम (महाभा० शल्य० ४६.१३)।

वेत्रवती–स्त्री० [सं०] पारियात्र पर्वतसे निकली १४ नदियोंमेंसे एक नदीका नाम (वायु० ४५.९८)। संभवतः यह आधुनिक वेतवा नदी (यमुनाकी सहायक नदी) है।

वेत्रासुर–पु० [सं०] पुराणानुसार प्राग्ज्योतिषपुरके राजा एक प्रसिद्ध असुरका नाम जिसने विश्वविजयी होकर इंद्र, अग्नि और यमको भी परास्त किया था। अन्तमें यह इन्द्र द्वारा मारा गया था। मालवासे निकल कालपीके निकट यमुनामें मिलनेवाली वेत्रवती नदीके गर्भसे उत्पन्न यह सिंधुद्वीप नामक राजाका पुत्र था अतः यह वेत्रासुर कहलाया।

वेद–पु० [सं०] भारतीय आर्योंके सर्वप्रधान तथा सर्वमान्य धार्मिक ग्रंथ जो संख्यामें चार हैं—ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद। विद=(जानना) से वेद शब्द वना है। इनका रचनाकाल निश्चित रूपसे विदित नहीं है पर इतना अवश्य कहा जा सकता है कि ये संसारके सवसे प्राचीन ग्रंथ हैं। यहाँके ऋषियोंने सर्वप्रथम इसे सुना था, और इसका विस्तार भी मौखिक ही हुआ, अतः इन्हें श्रुति कहने लगे। प्रत्येक वेदमें दो भाग होते हैं—मंत्र और ब्राह्मण। मंत्र वेदके वे वाक्य हैं जिनके द्वारा यज्ञ आदि करनेका विधान है। 'ब्राह्मण' मंत्र भागसे भिन्न है जो गद्यात्मक होते हैं तथा जिनमें आरण्यक और उपनिषद जुड़े रहते हैं। वेदोंके 'कर्मकाण्ड' और 'ज्ञानकाण्ड' ये दो भाग होते हैं। मंत्रभागमें किसी देवताकी स्तुति आदि संगृहीत रहती है और उपनिषद् आदि ज्ञानकाण्डमें आते हैं। ये दोनों मिलाकर श्रुति कहे जाते हैं। स्तुति वाला भाग संहिता कहा जाता है। ऋग्वेद और सामवेद, प्रत्येककी एक संहिता है पंर यजुर्वेदकी दो हैं।

ऋग्वेदके कुल १०२८ सूक्त हैं जो आठ अष्टकोंमें विभक्त हैं जिनमें कुल मिलाकर १५३८२६ पद हैं। कुछ इसे दस मण्डलोंमें विभाजित करते हैं जिसके ८५ अनुवाक माने गये हैं। सूक्तोंकी संख्या इस विभाजनमें भी पहलेकी ही इतनी है। अदिति, वरुण, ऊपा, अश्विनीकुमारद्वय, यम, और सोम आदिकी भी स्तुतियाँ इसमें मिलती हैं पर प्रधानता अग्नि, इंद्र, और सूर्यकी स्तुतियोंकी ही है जिनमें सवसे अधिक स्तुति अग्निकी है। प्रत्येक ऋचा किसी न किसी ऋपिके नाम की है जो उस ऋचाका द्रष्टा कहा जाता है। ये वेद मंत्र मौखिक रूपमें ही कई वंशों तक चले आये अतः इनकी शिक्षण पद्धति भी ऋषियोंने मौखिक ही रखी अतः भिन्न-भिन्न ऋपियोंकी भिन्न-भिन्न शाखाएँ स्थापित हो गयी थीं। ऋग्वेद सव वेदोंमें प्राचीन माना गया है और दूसरा स्थान यजुर्वेदका है जिसमें ऋग्वेदकी ऋचाओंका कुछ रूपांतर हो गया है और यह कर्मकांडका प्रधान ग्रंथ है। तैत्तिरीय (कृष्णयजुर्वेद) और वाजसनेय शुक्लयजुर्वेद इसकी दो प्रधान संहिताएँ हैं। तैत्तिरीयके सात

काण्ड, ४४ अध्याय, ६५१ अनुवाक और २८९८ कण्डिकाएँ हैं। वाजसनेयके ४० अध्याय, ३०३ अनुवाक और १९७५ कण्डिकाएँ हैं।

सामवेदमें गाये जाने वाले स्तोत्रोंका संग्रह है जिनकी संख्या कुल १५४९ है। यह तीसरा वेद है और इसमें प्रधानता सोमदेव की है। सोमके पश्चात् अग्नि और इंद्रका स्थान आता है। ऋग्वेदके मंत्रोंको जाननेवाले ऋपि 'होता', यजुर्वेद वालोंको 'अध्वर्यु' और सामवेदियोंको 'उद्गाता' कहते हैं। अथर्ववेद चौथा वेद है जिसकी नौ शाखाए हैं, (अथर्ववेद, नाना स्मृति, पुराणादि)।

वेदगंगा–स्त्री० [सं०] दक्षिण भारतके कोल्हापुर राज्यसे निकली एक नदी जो कृष्णामें मिलती है।

वेदगर्भापुरी–स्त्री० [सं०] पुराणानुसार एक प्राचीन तीर्थ (वायु०, मत्स्य०)।

वेदगाथ–पु० [सं०] पुराणानुसार एक प्राचीन ऋषि (ब्रह्मां०)

वेदगुप्त–पु० [सं०] (१) श्रीकृष्णका एक नाम (भाग०)। (२) भागवतके अनुसार पराशर मुनिके पुत्र व्यासका नाम (भाग० ९.२२.२२)

वेदतीर्थ–पु० [सं०] पुराणानुसार एक प्राचीन तीर्थका नाम।

वेददर्श–पुं० [सं०] पुराणानुसार एक प्राचीन ऋषिका नाम।

वेदनाथ–पु० [सं०] विश्वनाथ नामक ब्राह्मण तथा कमलालयाका पुत्र। इसने ब्राह्मणका साग चुराया था, अतः पुनर्जन्ममें यह वानर हुआ और सिन्धुद्वीप मुनिके आदेशानुसार यह धनुष्कोटितीर्थमें जा पापमुक्त हुआ था (स्कंदपु० ब्राह्म० सेतु-माहात्म्य)।

वेदबाहु–पु० [सं०] (१) श्री कृष्णका एक नाम (भाग०)। (२) पुलस्त्य ऋषिका एक नाम (रामायण तथा भाग०)।

वेदभू–पु० [सं०] महाभारतके अनुसार देवताओंका एक गण।

वेदमालि–पु० [सं०] रैवत मन्वंतरके एक वेद-वेदांगोंके पारदर्शी विद्वान् ब्राह्मणका नाम। आगे चलकर यह परिवारके लिए अनीतिसे धनोपार्जन करने लगे। तदनंतर इनके यज्ञमाली और सुमाली नामके दो पुत्र जुड़वाँ हुए। कुछ ज्ञान होनेपर इन्होंने अपने धनका दो भाग दोनों पुत्रोंको दे शेष अपने लिए रखा जिसे धर्मकार्यमें लगा दिया। तदनंतर नरनायणके आश्रम वदरीवन गये जहाँ तपकर पाप मुक्त हुए (नारदपु० पूर्वभा० ३५.२१.२४-२५) इन्हे जावंती मुनिसे ज्ञान मिला था।

वेदमुंड–पु० [सं०] एक असुरका नाम।

वेदवती–स्त्री० [सं०] (१) पारियात्र पर्वतसे निकली १४ नदियोंमें एक नदीका नाम (वायु० ४५.९७; महाभा० भीष्म० ९.१७)। (२) राजा कुशध्वजकी पुत्री जिसका विवाह उसके पिता विष्णुसे करना चाहते थे पर दैत्यराज शुंभके द्वारा वह मारे गये। शोकातुर होकर कुछ कारणवश वेदवती भी परलोक सिधारी और दूसरे जन्ममें यही सीता हुई थी (रामायण)। (३) एक अप्सराका नाम।

वेदव्यास–पु० [सं०] दे० द्वैपायन. सत्यवती अथवा व्यास। वेदव्यास कई हो गये हैं। तेरहवेंको अंतरिक्ष कहते थे इन्होंने त्रिविष्टसे पुराण सुनकर त्रैय्यारुणि (त्र्यारुण = विष्णु०) को सुनाया था (ब्रह्मां० २.३५.१२०; विष्णु० ३.३.१४)।

वेदशर्मा–पु० [सं०] वेदोंका पारङ्गत एक विद्वान् ब्राह्मण। ब्राह्मणोंको देनेके लिए सङ्कल्प किया हुआ धन भी इसने ब्राह्मणोंको नहीं दिया जिससे यह श्रृगाल-योनिमें उत्पन्न हुआ। यह वेदनाथका मित्र था और सिन्धुद्वीप मुनिके आदेशानुसार धनुष्कोटितीर्थमें शाप मुक्त हुआ था (स्कंदपु० ब्राह्म० सेतु-माहा०)।

वेदशिरा–पु० [सं०] (१) भागवतके अनुसार कृशाश्वका एक पुत्र। (२) पुराणोक्त एक अस्त्र (रामायण)। (३) पुराणानुसार मूर्द्धन्याके गर्भसे उत्पन्न मार्कंडेयके एक पुत्रका नाम (भाग० ४.१.४५; पद्मपु० उत्तर २३७.७५.९०)

वेदशीर्ष–पु० [सं०] एक पुराणोक्त पर्वतका नाम।

वेदश्री–पु० [मं०] एक प्राचीन ऋपिका नाम (नारदपु.)।

वेदश्रुत–पु० [सं०] भागवतके अनुसार वशिष्ठका एक पुत्र।

वेदश्रुति–स्त्री० [सं०] एक प्राचीन नदीका नाम (महाभारत)।

वेदसिनी–स्त्री० [सं०] एक नदी,—दे० वेतसिनी।

वेदस्पर्श–पु० [सं०] एक प्राचीन वैदिक आचार्यका नाम।

वेदस्मृती–स्त्री० [सं०] (वेदस्मृता = महाभारत) एक प्राचीन नदीका नाम (भाग० ५.१९.१८; महाभा० भीष्म ९.१७)।

वेदांग–पु० [सं०] (१) वेदोंके ६ अंगोंका नाम = शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष और छन्द। पुरुषरूपी वेदकी शिक्षाको नाक, व्याकरणको मुख, निरुक्तको कान, ज्योतिपको नेत्र, कल्पको हाथ तथा छन्दको पैर माना है। (२) वारह आदित्योंमेंसे एक—दे० आदित्य।

वेदान्त–पु० [सं०] उपनिपद् और आरण्यक आदि जो वेद के अन्तिम (शीर्ष) भाग हैं। उपनिपद्की ब्रह्मविद्या अद्वैतवादका आधार है और शंकराचार्यका भाष्य ही अधिक विख्यात है। वेदान्तसे साधारणतः शंकरके अद्वैतवादका ही बोध होता है। 'जगत्, जीव और ब्रह्म या परमात्मा इन तीन वस्तुओंके स्वरूप तथा इनके पारस्परिक सम्बन्ध का निर्णय ही वेदान्तशास्त्रका विपय है।' इस सम्बन्धमें परम भक्त रामानुज तथा वल्लभाचार्यके मतोंका अध्ययन आवश्यक है।

वेदान्तसूत्र–पु० [सं०] वेदांतशास्त्रके मूल सूत्र जो महर्षि वादरायणकृत हैं।

वेदाधिप–पु० [सं०] वेदोंके अधिपति ग्रह = ऋग्वेदके बृहस्पति, यजुर्वेदके शुक्र, सामवेदके मंगल तथा अथर्ववेदके बुध कहे गये हैं।

वेदाध्यक्ष–पु० [सं०] श्रीकृष्णका एक नाम (भाग०)।

वेदाश्वा–स्त्री० [सं०] भारतवर्षकी एक प्राचीन नदीका नाम (महाभा० भीष्म० ९.२८)।

वेदिजा–स्त्री० [सं०] द्रौपदीका एक नाम (महाभा० भीष्म ९.२८)।

वेदी–स्त्री० [सं०] ब्रह्माकी पत्नीका नाम (महाभा० उद्योग० ११७.१०)।

वेदीतीर्थ–पु० [सं०] (१) कुरुक्षेत्रकी सीमाके अन्तर्गत स्थित एक प्राचीन तीर्थका नाम जिसमें स्नान करनेसे मनुष्यको एक हजार गोदानका फल प्राप्त होता है।

(महाभा० वन० ८३.९९)। (२) एक परम दुर्गम तीर्थ, जो सम्भवतः सिन्धु नदके उद्गम स्थानके निकट स्थित है। जहाँकी यात्रा करनेवाले पुरुषको अश्वमेधयज्ञका फल प्राप्त होता है (वन० ८४-४७)।

वेधसी–स्त्री० [सं०] एक प्राचीन तीर्थस्थानका नाम।

वेधा–पु० [सं०] (१) दक्ष आदि प्रजापति। (२) राजा हरिश्चन्द्रके पिताका नाम। (३) अंगदका पुत्र एक यादव (वायु० ९६.२४७; ब्रह्मां० ३.७१.२५६)।

वेन–पु० [सं०] मृत्युकी मानसी कन्या सुनीथाके गर्भसे उत्पन्न राजा अंगका पुत्र तथा चाक्षुपमनु-पुत्र कुरुका पौत्र तथा चाक्षुप मनुका प्रपौत्र था। राजा होनेपर इसने लोगों-के धर्ममें वाधा डालनी शुरू कर दी। यहाँतक वात वढ़ी कि स्वयं अंग इसकी अधार्मिकतासे तंग आकर नगर छोड़ चले गये थे (भाग० ४.१३.१७-१८)। इसने यज्ञादि सव वन्द करा दिये थे अतः ऋपि मुनियोंने पहले इसे नम्रतासे समझाया, नही माननेपर कुछ कड़े शब्दोंमें चेतावनी दी गयी। पर जव सारे उपदेश निरर्थक सिद्ध हुए तव ऋपियों ने अभिमंत्रित कुशासे वेनका वध कर डाला। वेन निः-संतान था, राज्यसिंहासन शून्य देख देशमें अशांति तथा उपद्रवका साम्राज्य हो गया। यह विचारकर ऋषियोंने वेनके शवकी जाँघ मथना आरंभ किया, जिससे अति कुरूप तथा काले रंग तथा नाटे कदका एक व्यक्ति उत्पन्न हुआ जिसे अत्रि ऋपिने 'निपीद' (वैठ जाओ) कहा। इससे उसका नाम निपाद पड़ा और इसके वंशज ही निपाद कहलाये। इसके उपरांत एक अच्छी संतानकी अभिलापासे ऋषियोंने वेनका दाहिना हाथ मथा जिससे राजा पृथु उत्पन्न हुए (महाभा० शान्ति० ५९.९३.९८; विष्णु० १.१३.३-९; भाग० ४.१४.२-४७; १५.१-४ तथा हरिवंश)। पर पद्मपुराणानुसार वेन नास्तिक तथा जैनियोंका अनुयायी हो जानेके कारण ऋपियोंसे तिरस्कृत हुआ तथा पीटा गया जिससे उसकी जाँघसे निषाद और दाहिने हाथसे पृथुका जन्म हुआ था। पापमुक्त हो वेनने तपस्या कर मुक्ति प्राप्त की थी।

वेष्टकापथ–पु० [सं०] पुराणानुसार एक प्राचीन शिवस्थानका नाम (स्कंदपु० काशी-खं० तथा शिवपु०)।

वेहत–पु० [सं०] एक पौष्टिक ओषधिका नाम (महाभा० वन० १९७.१७)।

वैकर्ण–पु० [सं०] (१) वात्स्यमुनिका नाम। (२) एक प्राचीन जनपदका नाम (वेद)।

वैकर्त्तन–पु० [सं०] (१) सूर्यके एक पुत्रका नाम (आदित्य पु०)। (२) कुन्तीसुत कर्णका एक नाम (महाभा० आदि० ११०.३१)। (३) सुग्रीवके एक पूर्वजका नाम (रामायण)।

वैकुण्ठ–पु० [सं०] पुराणानुसार वह स्थान जहाँ विष्णु रहते हैं। यह सत्यलोकसे भी ऊपर है और सवसे श्रेष्ठ धाम माना गया है जहाँ मोक्ष पानेवाले व्यक्ति निवास करते हैं। यहाँके निवासी न तो वुड्ढे ही होते हैं और न मरते ही हैं (नानापुराणादि)।

वैखानसि–पु० [सं०] एक प्राचीन गोत्रप्रवर्त्तक ऋषिका नाम।

वैगलेय–पु० [सं०] पुराणानुसार भूतोंका एक गण।

वैजभृत्–पु० [सं०] भृगुवंशज एक गोत्रकार ऋपिका नाम (मत्स्य० १९५.३०)।

वैजयन्त–पु० [सं०] (१) इन्द्रके ध्वजका नाम (महाभा० वन० ४२.८)। (२) क्षीरसागरके मध्यमें स्थित एक पर्वत का नाम, जहाँ अध्यात्म गतिका चिन्तन करनेके निमित्त ब्रह्माजी नित्य जाते हैं (शांति० ३५०.९-१०)।

वैजयन्ती–स्त्री० [सं०] विष्णुकी माला जिसमें ५ रंगके पुष्प रहते है जो पंचभूतके द्योतक हैं, यह श्रीकृष्णको अति प्रिय थी (भाग०)।

वैतण्डी–पु० [सं०] पुराणानुसार एक प्राचीन ऋपि।

वैतरणी–स्त्री० [सं०] (१) एक प्रसिद्ध पौराणिक नदी जो यमराजके द्वारपर स्थित मानी गयी है। इसका जल वहुत गरम और वदवूदार तथा तेज प्रवाहवाला है। कहते हैं मृत्युके पश्चात् इसे पार करना होता है, जिसमें गोदान करनेवाला व्यक्ति ही सफल होता है। पुराणानुसार सतीके वियोगसे जो अश्रधारा शिवके नेत्रोंसे वही उसीसे यह नदी वनी जिसका विस्तार २ योजन माना गया है (भाग०)। (२) उड़ीसाकी एक पवित्र नदीका नाम।

वैतसेन–पु० [सं०] राजा पुरूरवाका एक नाम जो वीतसेना के पुत्र थे (भाग० ९.१.३५, ४२; ब्रह्मां० ३.६५.४५.६; मत्स्य० १२.१५; वायु० १.१०६; विष्णु० ४.१.१२.१६)।

वैताल्की–पु० [सं०] ऋग्वेदकी एक शाखाके प्रवर्त्तक एक ऋपि।

वैताली–पु० [सं०] कुमार कार्त्तिकेयका एक सैनिक अनुचर (महाभा० शल्य० ४५.६७)।

वैद–पु० [सं०] विद-ऋषिके पुत्र एक प्राचीन ऋपि।

वैदर्भ–पु० [सं०] (१) विदर्भ देशके राजा भीमसेन जो दमयन्तीके पिता थे (महाभा० सभा० ३१०-११-१२; वन० ५३.५-९)। (२) महाराज भीष्मकका एक नाम। इनकी पुत्री रुक्मिणी श्रीकृष्णको व्याही थी (भाग० १०-५२.१६; महाभा० उद्योग १५८.१०-१६)।

वैदर्भी–स्त्री० [सं०] (१) अगस्त्य ऋषिकी पत्नीका एक नाम (भाग०, मत्स्य० तथा अगस्त्य) (२) विदर्भाधिपतिकी पुत्री होनेके कारण दमयन्ती तथा रुक्मिणीके नाम (भाग० १०.५२.१८; महाभा० वन० ५५.१२; उद्योग० १५८-१०)।

वैदेह–पु० [सं०] राजा निमिके पुत्रका एक नाम। धर्मका कहीं लोप न हो जाय इससे ऋषियोंने निमिदेहको अरणिसे मथकर इन्हें उत्पन्न किया था। क्योंकि राजा निमिके कोई संतान न थी (भाग० ९.६.४; १३.१-१३; १०.८६.३६; ब्रह्मां० ३.६३.९; विष्णु० ४.२.१२ आदि)।

वैदेही–स्त्री० [सं०] सीताका एक नाम जो विदेह जनककी पुत्री थी। कहते हैं राजा कुशध्वजकी पुत्री वेदवती ही दूसरे जन्ममें सीता हुई थी (सीता, वेदवती तथा रामायण)।

वैद्यनाथ–पु० [सं०] मंथाल परगनेका एक प्रसिद्ध तीर्थ-स्थान जो जसीडीह स्टेशनके निकट वैद्यनाथ धामके नामसे प्रसिद्ध है जहाँ इसी नामका एक प्रसिद्ध शिवलिंग है। इसकी गिनती चार धामोंमें है। 'परल्यां वैद्यनाथं च'के अनुसार दक्षिण हैदरावादसे इधर, परमती जंक्शनसे परली ग्रामतककी लाइनपर परली ग्राममें यह शिवलिंग है (शिव-पु० कोटिरुद्रसंहिता, अध्याय १ तथा २७-२८)।

पुराणानुसार त्रेता युगमें लंकापति रावण शिवजीको कैलाशसे लंका ले जाना चाहता था। भक्तवत्सल शंकर चलनेको तैयार हो गये, पर शर्त यह थी कि बीचमें कहीं भी शिवलिंगको पृथ्वीपर न रखना होगा। हठी रावण जब शर्त मानकर मूर्तिको ले आकाश मार्गसे चला तब देवताओंमें खलबली मची। वरुण (जलका स्वामी) रावणके पेटमें घुस गये अतः रावणको लघुशंका मालूम हुई और उसे नीचे उतरना पड़ा। एक ब्राह्मण पथिकके हाथ मूर्ति दे रावण पेशाब करने बैठा। वरुणके प्रभावसे पेशाबमें देर हो गयी, अतः बटोही जो स्वयम् विष्णु थे मूर्तिको वहीं पृथ्वीपर रख चलते बने। काम बन चुका था अतः रावणको पेशाब भी बन्द हो गया था। उसने मूर्तिको उठानेकी पूरी चेष्टा की पर उठा न सका—शंकरकी शर्त जो भंग हो चुकी थी। वैद्यनाथ धाममें आज वही मूर्त्ति है जिसे उठानेमें असफल होनेपर रावणने क्रोधमें आ ऊपरसे दाब दिया था अतः वहाँका शिवलिंग बीचमें दबा हुआ है।

वैद्यत—पु० [सं०] पुराणानुसार शाल्मलिद्वीपके एक वर्षका एक नाम।

वैद्युत गिरि—पु० [सं०] पुराणानुसार एक पर्वतका नाम।

वैधस—पु० [सं०] राजा वेधाके पुत्र हरिश्चन्द्रका एक नाम।

वैधृत—पु० [सं०] ग्यारहवें मन्वन्तरके इन्द्रका नाम।

वैन्य—पु० [सं०] राजा पृथुका एक नाम (विन पुत्र) (भाग० ४.२३.१९.२८)।

वैनतेय—पु० [सं०] विष्णुवाहन गरुड़का एक नाम (भाग०)।

वैपश्चित—पु० [सं०] विपश्चितऋषिके वंशोत्पन्न तार्क्ष्यऋषिका एक नाम (वायु० तथा विष्णु०)।

वैभांडिक—पु० [सं०] एक गोत्रप्रवर्त्तक ऋषि।

वैभार—पु० [सं०] राजगृहके पासका एक पर्वत जिसे वैहार भी कहते हैं।

वैभौज—पु० [सं०] एक प्राचीन जातिका नाम जो द्रुह्युके वंशज कहे गये हैं, ये लोग कुछ असभ्य थे (महाभा०)।

वैभ्राज—पु० [सं०] (१) पुराणानुसार सुपार्श्व पर्वतपरके एक जंगलका नाम जो सुमेरुके पश्चिममें है—दे० सुमेरु। (२) पुराणानुसार एक पर्वतका नाम (स्कन्द)। (३) एक लोकविशेषका नाम (भाग०)। (४) पांचालके वैभ्राज राजा जो ब्रह्मदत्तके पिता थे (मत्स्य० २१.११)।

वैमानिक—पु० [सं०] एक प्राचीन तीर्थका नाम, जहाँ स्नान करनेसे मानवको अप्सराओंका लोक प्राप्त होता है और वह विमान द्वारा सर्वत्र इच्छानुसार विचरता है (महाभा० अनु० २६.२३)।

वैमित्रा—स्त्री० [सं०] (१) कुमार कार्त्तिकेयकी अनुचरी एक मातृकाका नाम (स्कंद)। (२) सात शिशुमाताओंमेंसे एकका नाम (महाभा० वन० २२८.१०)।

वैम्य—पु० [सं०] एक गोत्रप्रवर्त्तक ऋषिका नाम।

वैयमक—पु० [सं०] एक प्राचीन जातिका नाम (महाभा०)।

वैयश्व—पु० [सं०] विश्वमनाके पिता तथा वैदिक कालके ऋषि।

वैरंडेय—पु० [सं०] एक प्राचीन गोत्रप्रवर्त्तक ऋषि।

वैरत—पु० [सं०] पुराणानुसार एक प्राचीन जातिका नाम।

वैरदेय—पु० [सं०] वैदिक कालका एक असुर।

वैराज—पु० [सं०] (१) विराजपुत्र मनुका एक नाम। (२) सात पितृगणोंमेंसे एकका नाम। शेष छहके नाम—अग्निष्वात्त, सोमप, गार्हपत्य, एकशृंग, चतुर्वेद और कल। ये ब्रह्माजीकी सभामें रहकर उनकी उपासना करते हैं (महाभा० सभा० ११.४९)।

वैराजस—पु० [सं०] एक प्रकारके देवता जो अग्निसे नहीं जलते और तपोलोकके निवासी हैं पर सत्यलोकमें भी जा सकते हैं। ये उन साधु,महात्माओं तथा तपस्वियोंकी आत्माएँ हैं जिन्होंने तपश्चर्यासे यथेष्ट आत्मशुद्धि कर ली है और पितर कहे जाते हैं (स्कंदपु० काशी-खण्ड)।

वैराट—पु० [सं] धृतराष्ट्रके १०० पुत्रोंमेंसे एकका नाम, जो भारत-युद्धमें भीमसेन द्वारा मारा गया था (महाभा० भीष्म० ९६.२६)।

वैराम—पु० [सं०] एक प्राचीन जातिका नाम, इस जातिके लोग नाना प्रकारके रत्न और भाँति-भाँतिकी भेंट सामग्री लेकर युधिष्ठिरके राजसूय यज्ञमें उपस्थित हुए थे (महाभा० ५१.१२)।

वैरिवीर—पु० [सं०] पुराणानुसार राजा दशरथका एक पुत्र जिसे इलबिल भी कहते थे—दे० इलबिल तथा रामायण।

वैरोचन—पु० [सं०] (१) राजा बलिका एक नाम, जो विरोचनका पुत्र तथा प्रह्लादका पौत्र और दैत्य जातिका एक राजा था। विष्णुने वामन अवतार ले इसे पाताल भेजा—दे० बलि। (२) एक सूर्यपुत्र। (३) अग्निका एक पुत्र।

वैरोचि—पु० [सं०] बाण दैत्यका एक नाम जो राजा बलिका ज्येष्ठ पुत्र था और शिवके वरदानसे देवताओंपर भी शासन करता था। पातालमें शोणितपुरी नामकी इसकी राजधानी थी। यह ऊषाका पिता तथा अनिरुद्धका श्वसुर था (भाग०)।

वैवस—पु० [सं०] भृगुवंशज एक आर्षेय प्रवरप्रवर्त्तक गोत्रकार ऋषिका नाम (मत्स्य० १९५.३९)।

वैवस्वत—पु० [सं०] (१) सूर्यके एक पुत्रका नाम। (२) आज-कलके मन्वन्तरके मनुका नाम। इक्ष्वाकु, नृग, शर्याति, दिष्ट, धृष्ट, करूषक, नरिष्यन्त, पृषध्र, नाभाग और कवि इनके दस पुत्र थे। (ब्रह्मां० २.३८. ३०-३१ वैवस्वतवंशवर्णन)। एक बार पुत्रकी इच्छासे इन्होंने मैत्रावरुण याग किया जिससे इला नामकी कन्या उत्पन्न हुई जो कारणवश क्रमशः स्त्री और पुरुष दोनोंके लक्षणोंसे युक्त हुई थी। पुरुष होनेपर इसका नाम सुद्युम्न हुआ (भाग० ९.१. १५-२२)। (३) एक तीर्थका नाम, जहाँ स्नान करनेसे मानव स्वयं तीर्थरूप हो जाता है (महाभा० अनु० २५.३९)। (४) पुराणानुसार आजकलके मन्वन्तरका नाम जिसके प्रसिद्ध ऋषि अत्रि थे (भाग० ८.१३.५; ब्रह्मां० २-३८. २५; महाभा० आदि० ७५.१)।

वैशंपायन—पु० [सं०] व्यासजीके प्रधान शिष्य एक प्रसिद्ध ऋषि जो कृष्ण यजुर्वेदके प्रवर्त्तक कहे जाते हैं। इन्होंने व्याससे महाभारतका अध्ययन कर राजा जनमेजयको सुनाया था। कहते हैं हरिवंशका प्रचार भी इन्हींने किया था (तैत्तिरीयसंहिता तथा यागवल्क्य स्मृति)।

वैशाख—पु० [सं०] वर्षके १२ महीनोंमेंसे एक पुण्य मासका नाम। इस मासकी पूर्णिमामें विशाखा नक्षत्र रहता है। इस मासकी द्वादशीको उपवासपूर्वक श्रद्धासे जो भगवान्

मधुसूदनका पूजन करता है उसे अग्निष्टोम यज्ञका फल प्राप्त होता है और सोमलोककी प्राप्ति होती है (महाभा० अनु० १०६.१४;१०९.८)।

वैशाखी–स्त्री० [सं०] पुराणानुसार वसुदेवकी एक पत्नी (भाग०)।

वैशाखीअष्टमी–स्त्री० [सं०] वैशाख-शुक्ला अष्टमीको अपराजिता देवीको उशीर और जटामासीके जलसे स्नान करा व्रत तथा पूजन करे। इससे समस्त तीर्थोंमें स्नान करनेके समान फल होता है—दे० निर्णयामृत।

वैशाखीव्रत–पु० [सं०] वैशाखी पूर्णिमाकी पवित्र तिथिको भिन्न प्रकारसे व्रत करनेसे भिन्न-भिन्न फल होते हैं (भविष्य पु०, आदित्य पु० तथा जावालि स्मृति)।

वैशालाक्ष–पु० [सं०] ब्रह्माका नीतिशास्त्र, जो विशालाक्ष भगवान् शिवजी द्वारा संक्षिप्त किये जानेके कारण वैशालाक्ष कहलाता है (महाभा० शांति० ५९.८२)।

वैशालि–पु० [सं०] आंगिरसवंशज एक गोत्रकार ऋषिका नाम (मत्स्य० १९६.८)।

वैशालिनी स्त्री० [सं०] वैदिशके राजा विशालकी पुत्री जिसे बलपूर्वक राजा अवीक्षित्ने पकड़ लिया था, अतः स्वयंवरमें उपस्थित अन्य राजाओंसे अवीक्षित् परास्त हो बन्दी हुए। पर अवीक्षित्के पिता करन्धमने युद्धमें सबको परास्त कर पुत्रको बंधनमुक्त किया। हारनेसे लज्जित हो अवीक्षित्ने वैशालिनीका पहले पाणिग्रहण करना अस्वीकार किया। वैशालिनीने तप कर देवताओंसे पुत्रवती होनेका वर पाया, उधर करन्धम-पत्नी तथा अवीक्षित्की माता वीराने 'किमिच्छक' व्रत कर करन्धमसे पौत्रकी माँग कर पुत्रको वचनबद्ध कर लिया। दनुके पुत्र हृद्केश द्वारा वैशालिनी पकड़ी गयी थी। अवीक्षित्ने अज्ञानमें ही वैशालिनीको हृढ़केशसे मुक्त किया फिर इसीके गर्भसे 'मरुत्त' नामक अवीक्षित्का पुत्र हुआ था (मार्कण्डेयपु०)। यह पूर्वजन्ममें मय गंधर्वकी पुत्री भामिनी थी जो अगस्त्य ऋषिके शापसे विशालकी पुत्री हुई थी (मार्कंडेय पु०)।

वैशाली–स्त्री० [सं०] महाराज तृणबिंदुके पुत्र विशालकी बसायी एक नगरी जो जनरल कनिंघमके अनुसार पटनासे २७ मील उत्तर है। यह विशाला नगरीसे भिन्न है और बौद्धोंके समयमें इसकी यथेष्ट ख्याति बढ़ी।

वैशेषिक–पु० [सं०] षड्दर्शनके अंतर्गत एक दर्शन जो कणाद ऋषिका बनाया है—दे० दर्शन तथा कणाद।

वैश्रंभक–पु० [सं०] पुराणानुसार देवताओंके एक उद्यानका नाम (भाग०)।

वैश्रवण–पु० [सं०] धनाधिप कुबेरका एक नाम (महाभा० आदि० १९८.६)।

वैश्वानर–पु० [सं०] ऋग्वेदके अनुसार अग्निका एक नाम—दे० विश्वानर।

वैष्णव–पु० [सं०] एक प्रसिद्ध धार्मिक संप्रदाय जिसके अनुयायी विशेष आचार-विचारसे रहते हैं और विष्णु या कृष्णकी उपासना करते हैं। महाभारतके समय इसे नारायणीय धर्म कहते थे। तदुपरांत इसमें श्रीकृष्णकी उपासना प्रधान-रूपसे आयी और इसे भागवत धर्म कहने लगे जिसकी आजकल अनेक शाखाएँ हैं (भाग० स्कंदपु० तथा विष्णु० आदि)।

वैहायस–पु० [सं०] नरनारायणके समीपवर्ती एक कुंडका नाम (महाभा० शांति० १२७-३)।

वैहार–पु० [सं०]—दे० वैभार।

वोढु–पु० [सं०] एक प्राचीन ऋषि जिन्हें तर्पण करते समय जल दिया जाता है।

वौलि–पु० [सं०] वशिष्ठवंशज एकार्षेय प्रवरप्रवर्तक एक ऋषिका नाम (मत्स्य० २००.६)।

वौपडि–पु० [सं०] एक आंगिरस वंशज त्र्यार्षेय प्रवर-प्रवर्तक ऋषि (मत्स्य० १९६.२६)।

व्यंजनद्वादशी–स्त्री० [सं०] मार्गशीर्ष शुक्ला द्वादशीको विष्णुकी पूजा कर अन्नकूटकी तरह व्यंजन बना भोग लगावे—दे० व्रतोत्सव।

व्यंजनहारिका–स्त्री० [सं०] पुराणानुसार एक अमंगल करनेवाली शक्ति जो नव-वधुओंके बनाये भोजन उठा ले जाती है।

व्यंश–पु० [सं०] सिंहिकाके गर्भसे उत्पन्न विप्रचित्तिका एक पुत्र—दे० विप्रचित्ति तथा सिंहिका।

व्यतीपातव्रत–पु० [सं०] ज्यौतिष शास्त्रानुसार सूर्य और चंद्रमाके गणितसे व्यतीपातके आरंभ और समाप्ति सूचित होते हैं। पुराणानुसार यह सूर्य और चंद्रमाके क्रोधपातसे उत्पन्न हुआ है। सूर्यके क्रोधके आँसू पृथ्वीपर गिरे जिनसे व्यतीपात उत्पन्न हुआ। शुभ कार्योंमें इसका त्याग तथा लोकोपकार आदिमें इसका ग्रहण होता है। किसी शुभदिनके व्यीतपातको सुवर्ण निर्मित सूर्य और चंद्रमाकी मूर्तिकी विधिवत् पूजा करे (वाराहपु०)।

व्यय–पु० [सं०] एक नागका नाम (महाभा०)।

व्यश्व–पु० [सं०] (१) एक प्राचीन राजा जो यम-सभामें रह कर यमकी उपासना करते थे (महाभा० सभा० ८.१२)। (२) ऋग्वेदके कुछ मंत्रोंके द्रष्टा एक प्राचीन ऋषि (ऋग्वेद)।

व्याघ्रग्रीव–पु० [सं०] पुराणोक्त एक प्राचीन देश।

व्याघ्रदत्त–पु० [सं०] (१) पाण्डव पक्षके एक राजाका नाम, जिसकी गणना श्रेष्ठ रथियोंमें थी (महाभा० उद्योग० १७१.१९)। (२) मगध देशका एक राजकुमार, जो कौरवोंकी ओरसे महाभारत-युद्धमें लड़ा था। सात्यकिके साथ लड़ते हुए इसका सात्यकि द्वारा वध हुआ था (द्रोण १०६.१४; १०७.३१-३३)।

व्याघ्रपाद–पु० [सं०] वशिष्ठगोत्रोत्पन्न एक प्राचीन ऋषि जो ऋग्वेदके कई मन्त्रोंके द्रष्टा थे (ऋग्वेद)। महाभारत अनुशासन पर्व १४.४५ के अनुसार ये उपमन्युके पिता थे।

व्याघ्रमुख–पु० [सं०] (१) एक पर्वतका नाम (मार्कंडेय-पु० ५८.११)। (२) एक देशका नाम (बृहत्संहिता १४.५)।

व्याघ्राक्ष–पु० [सं०] (१) कार्त्तिकेयके एक सैनिक अनुचर विषका नाम (महाभा० शल्य० ४५.५९)। (२) पुराणानुसार एक राक्षस विशेष (हरिवंश)।

व्याडि–पु० [सं०] कोष और व्याकरणके रचयिता एक मुनि। इनके पर्याय—विन्ध्यवासी, नन्दिनीतनय,

विन्ध्यस्थ, नन्दिनीसुत आदि (हि० वि० को०)

व्यालग्रीव–पु० [सं०] एक देशका नाम (बृहत्संहिता १४.९)।

व्यास–पु० [सं०] (१) पराशर ऋपिके पुत्र श्री कृष्णद्वैपायन जिन्होंने वेदोंका संग्रह, विभाग और सम्पादन किया था। इस आशयका लेख प्रायः सभी पुराणोंमें प्रकारान्तरसे और कुछ विभिन्न रूपोंमें आया है (भाग० १२.६.४७)। कहा जाता है कि अठारहों पुराण, भागवत, महाभारत और वेदान्तसूत्र आदिकी रचना भी इन्होंने ही की थी 'अष्टादशपुराणानां वक्ता सत्यवती सुतः' (शिवपु०)।

एक बार धीवर-कन्या मत्स्यगन्धा, जिसे सत्यवती कहते थे, को देख पराशर मुनि आसक्त हो गये। दिनमें विहार करना निषिद्ध है, अतः पराशरने चारों ओर कुहरा खड़ा कर दिया और सत्यवतीके शरीरसे मछलीकी गन्ध वर देकर दूर कर दी। अब मत्स्यगन्धा योजनगन्धा कहलाने लगी। व्यासजी इसी सत्यवतीके गर्भसे उत्पन्न पराशरके पुत्र थे और नदीके बीच एक टापूमें जन्म होनेके कारण इन्हें 'द्वैपायन' तथा रंग काला होनेके कारण 'कृष्ण' कहते हैं। बड़े होनेपर इन्होंने वेदोंका संग्रह, विभाग तथा सम्पादन किया अतः इन्हें 'व्यास' अथवा 'वेदव्यास' कहते हैं। यह कुमारी अवस्थामें ही सत्यवतीके गर्भसे उत्पन्न हुए थे, पर पराशरके अशीर्वादसे इनकी माताका कुमारीपन अक्षुण्ण बना रहा और सत्यवतीका विवाह भीष्मपितामहके पिता महाराज शान्तनुसे हुआ। सत्यवतीके गर्भसे उत्पन्न शान्तनुके पुत्र विचित्रवीर्य निःसन्तान मरे अतः माताकी आज्ञासे विचित्रवीर्यकी अम्बिका और अम्बालिका नामक विधवा पत्नियोंसे नियोग कर इन्होंने क्रमशः धृतराष्ट्र तथा पाण्डुको उत्पन्न किया। अम्बिकाकी दासीके गर्भसे उत्पन्न 'विदुर' भी इन्हींके पुत्र थे।—दे० पराशर, मत्स्यगन्धा, सत्यवती, विचित्रवीर्य, पांडु, अम्बिका, अम्बालिका आदि। (२) पुराणानुसार भिन्न-भिन्न कल्पोंमें जन्म ग्रहण करके वेदोंका संग्रह और विभाग करनेवाले २८ महर्षियोंके नाम, जो इस प्रकार हैं—स्वयंभू, मनु, उशना, बृहस्पति, सविता, मृत्यु या यम, इन्द्र, वशिष्ठ, सारस्वत, त्रिधामा, ऋषभ या त्रिवृषा, सुतेजा या भारद्वाज, अन्तरिक्ष या धर्म, वप्रवा या सुचक्षु, त्र्यारुणि, धनञ्जय, कृतञ्जय, ऋतञ्जय, भरद्वाज, गौतम, उत्तम या हर्यतम, वाचश्रवा या नारायण जिन्हें वेण भी कहते हैं; सोम मुख्यायन या तृणबिन्दु, ऋक्ष या वाल्मीकि, शक्ति, पराशर, जातूकर्ण और कृष्णद्वैपायन। उपर्युक्त २८ को ब्रह्मा या विष्णुका अवतार मानते हैं।

'व्यास कोई एक व्यक्ति नहीं है, प्रत्येक द्वापरमें नवीन व्यास हुआ करते हैं। व्यास किसीका नाम नहीं अपितु उपाधि या पदवी है। गोलवृत्तमें जो एक सीधी रेखा निकल जाती है, उसका नाम व्यास है। इसी प्रकार वेदवृत्तमें जो सीधा निकल जाय उसका नाम वेदव्यास होता है। जितने व्यास हुए हैं वे वेद और पुराणतत्त्वके पूर्ण ज्ञाता हुए हैं' (युक्तिविशारद पण्डित कालूरामजी शास्त्रीकृत 'पुराणवर्म' प्रथम संस्करण पृष्ठ १३४)। यह व्यास परम भक्त थे और इन्होंने भक्तिकी विशद व्याख्या की है—दे० स्कन्दपु० प्रभास–खण्ड ११० अध्याय तथा आवन्त्यखण्ड अध्याय ७०। पद्मपु० सृष्टिखण्ड अध्याय १५.१६४—१९२; शिवपु० तथा लिंगपु० १.२७, ७६; २.२०-२६ अध्याय और मत्स्यपु० अध्याय २५७-२६९)।

व्यासकूट–पु० [सं०] (१) वेदव्यासके वे कूट श्लोक जो महाभारतमें हैं (महाभा०)। (२) सीताहरणके पश्चात् श्रीराम द्वारा माल्यवान् पर्वतपर कहे गये श्लोक जिनसे उन्हें शान्ति मिली थी (रामायण)।

व्यासगुफा–स्त्री० [सं०] बदरिकाश्रमके निकटस्थ एक गुफा। कहते हैं यहाँ व्यासजीने पुराणोंको लिखा था। इसीके निकट गणेशगुफा है। निर्मल जलवाली सरस्वती नदी तथा अलकनन्दाके संगमपर बसा केशवप्रयाग भी यहींपर है।

व्यासतीर्थ–पु० [सं०] पुराणानुसार एक तीर्थका नाम (महाभा०)।

व्यासपूर्णिमा–स्त्री० [सं०] आपाढ़शुक्ला पूर्णिमा जिसे गुरुपूर्णिमा भी कहते हैं। इस दिन अपने दीक्षागुरुका देवतुल्य पूजन करे (शंकराचार्यविरचित व्यासपूजाविधि)।

व्यासवन–पु० [सं०] कुरुक्षेत्रकी सीमामें स्थित एक प्राचीन वन, जहाँ मनोजतीर्थमें स्नान कर मनुष्य हजार गोदानका फल प्राप्त करता है (महाभा० वन० ८३.९३)।

व्यासस्थली–स्त्री० [सं०] कुरुक्षेत्रकी सीमाके अन्तर्गत एक अति प्राचीन तथा पवित्र तीर्थस्थान, जहाँ व्यासदेवने पुत्रवियोगसे संतप्त हो शरीर त्याग देनेका निश्चय कर लिया था। उस समय देवताओंने उन्हें उठाया था (महाभा० वन० ८३-९६.९८)।

व्याहृति–पु० [सं०] प्रजापति द्वारा वेदोंसे निकाले गये ३ गूढ़ रहस्यात्मक शब्द जिनका सर्वप्रथम उच्चारण मनुने किया था। ऋग्वेदसे 'भूं'; यजुर्वेदसे 'भुवः' और सामवेदसे 'स्वः' ये तीनों शब्द आये। पहले शब्दका उच्चारण करते ही पृथ्वीकी सृष्टि हो गयी, दूसरे शब्दसे अंतरिक्ष और तीसरेसे आकाश बना—दे० शतपथब्राह्मण। कोई-कोई इसमें 'महः' भी जोड़ देते हैं जिसे अथर्ववेदसे निकला कहा गया है—दे० लोक।

व्युपिताश्व–पु० [सं०] पुरुवंशी एक धर्मात्मा राजाका नाम। इन्होंने विविध यज्ञोंका अनुष्ठान किया था। राजा कक्षीवान्की पुत्री भद्रा, जो अपने समयकी अप्रतिम सुन्दरी थी, इनकी प्रिय पत्नी थी। उसके प्रति अत्यन्त आसक्त होनेके कारण क्षयरोगसे इनकी असामयिक मृत्यु हो गयी (महाभा० आदि० १२०.७-१९)।

व्यूक–पु० [सं०] एक भारतीय जनपदका नाम (महाभा० भीष्म० ९.६१)।

व्यूढोरु–पु० [सं०] धृतराष्ट्रके १०० पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (महाभा० आदि० ६७.१०५)।

व्यूह–पु० [सं०] युद्धकालमें चतुरंगिणी सेनाके विभिन्न अंगोंको संगठित कर विशेष प्रकारसे खड़ी करनेकी रीतिका नाम। दूसरे शब्दोंमें इसे मोर्चाबन्दी कह सकते हैं। महाभारतकालमें अनेक प्रकारकी व्यूह-रचना होती थी। कुछ व्यूहोंके नाम—अर्द्धचन्द्रव्यूह, क्रौंचव्यूह, गरुड़व्यूह, चक्रव्यूह, मकरव्यूह, मण्डलव्यूह, मण्डलार्द्धव्यूह, वज्रव्यूह, शकट-

व्यूह, श्येनव्यूह आदि।

व्यूहमति—पु० [सं०] एक राजपुत्रका नाम—दे० ललितविस्तर।

व्योमसृग—पु० [सं०] चंद्रदेवके दसवें घोड़ेका नाम—दे० चंद्रमा।

व्योमारि—पु० [सं०] एक सनातन विश्वेदेवका नाम (महाभा० अनु० ९१.३५)।

व्रज—पु० [सं०] 'व्रज' शब्दका अर्थ है 'व्याप्ति'। व्यापक होनेके कारण ही इसे व्रज कहते हैं। सत्व, रज, और तम इन तीन गुणोंसे अतीत जो परब्रह्म है, वही व्यापक है, अतः उसे व्रज कहते हैं।

मथुरा और वृंदावनके आसपासकी पवित्र भूमिका नाम, जहाँ श्रीकृष्णकी लीला होती थी और इस परब्रह्मस्वरूप व्रजधाममें श्रीकृष्णका निवास कहा गया है। पुराणानुसार मथुरासे ८४ कोस चारों ओरकी भूमि अति पवित्र कही गयी है। इसकी प्रदक्षिणा की जाती है (स्कंदपु० वैष्णव० श्रीमद्भागवत-माहात्म्यमें शाण्डिल्य मुनिका मथुराव्रजवर्णन)।

व्रजन—पु० [सं०] सम्राट् अजमीढ़के द्वारा केशिनीके गर्भसे उत्पन्न तीन पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (महाभा० आदि० ९४.३१)।

व्रतद्वयीपूर्णिमा—स्त्री० [सं०] फाल्गुन शुक्ला १५ को कश्यप ऋषिके औरस और अदितिके गर्भसे अर्यमा (आदित्य) एवं अनसूयाके गर्भसे चंद्रमा उत्पन्न हुए थे। अतः सूर्योदयपर सूर्यका और चंद्रोदयपर चंद्रमाका पूजन करे, उपवास न कर नक्तव्रत करनेका विधान मिलता है (कृत्यतत्त्वार्णव)।

व्रतेयु—पु० [सं०] पुरुवंशी राजा रौद्राश्व (मत्स्य० = भद्राश्व) के १० पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम जिसका उल्लेख पुराणोंमें मिलता है। राजा रौद्राश्वके १० पुत्रों, जो घृताची अप्सरासे उत्पन्न हुए थे, के नाम भिन्न-भिन्न पुराणोंमें विभिन्न हैं—ऋतेयु, कुक्षेयु, स्थण्डिलेयु, कृतेयु, जलेयु, सत्ततेयु, धर्मेयु, सत्त्येयु और व्रतेयु (भाग० ९.२०.१०)। रजेयु, कृन्तेयु, कक्षेयु, स्थण्डिलेयु, घृतेयु, जलेयु, स्थलेयु, धर्मेयु, सन्नतेयु और वनेयु (वायु० ९९.१२४-२५)। औचेयु, हृपेयु, कक्षेयु, सनेयु, घृतेयु, विनेयु, स्थलेयु, धर्मेयु, संनतेयु और पुण्येयु (मत्स्य० ४९.५-६)। ऋतेपु, कक्षेपु, स्थण्डिलेपु, कृतेपु, जलेपु, धर्मेपु, धृतेपु, स्थलेपु, सन्नतेपु तथा वनेपु (विष्णु० ४.१९.२)। महाभारतमें मिश्रकेशी नामक अप्सराके गर्भसे रौद्राश्वके अन्वग्भानु आदि दस पुत्रोंकी उत्पत्तिका वर्णन है (महाभा० आदि० ९४.८)।

श

शंकर—पु० [सं०] (१) शिवका एक नाम—दे० शिव, रुद्र तथा शिवपु०। (२) पाण्ड्य देशका एक राजा तथा सुरुचिका पिता जिसने भ्रमसे शाकल्य मुनि तथा उनकी स्त्रीका वध कर डाला था। यह रामेश्वरमें शापमुक्त हुआ था (स्कंदपु० ब्राह्म० सेतु-माहात्म्य)।

शंकरतीर्थ—पु० [सं०] पुराणानुसार एक तीर्थस्थान (शिवपु० तथा स्कंदपु०)।

शंकरशैल—पु० [सं०] कैलाश पर्वतका एक नाम। उदाहरणार्थ—'शंकर शैल शिला तल मध्य किधौं शुककी अवली फिरि आयी'—केशव।

शंकराचार्य—पु० [सं०] एक प्रसिद्ध शैव आचार्य, जो सुभद्राके गर्भसे उत्पन्न शिवगुरुके पुत्र थे जिनका जन्म सन् ७८८ में कालपीमें हुआ था। इनकी गुरुभक्ति प्रसिद्ध है तथा इनके कुलदेवता श्रीवल्लभ (रमापति) हैं। इन्होंने बौद्ध धर्मको मिथ्या प्रमाणित कर वैदिक धर्मको पुनरुज्जीवित किया था। यह अद्वैत मतके प्रवर्त्तक थे तथा इन्होंने 'वैराग्य, आत्मज्ञान और भक्ति' ये तीन मुक्तिके साधन बतलाये हैं। इन्होंने पूर्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिणमें चार मठोंकी स्थापना की थी जो अवतक बड़े पवित्र माने जाते हैं। यह शंकरके अवतार माने जाते हैं और इनके 'प्रश्नोत्तरमालिका, विवेकचूणामणि आदि ग्रंथ देखनेसे इनके मतका ज्ञान होगा। भक्ति ज्ञानकी पूर्वावस्था है, बिना भक्तिके मनकी शुद्धि नहीं होती, मन शुद्ध हुए बिना ज्ञानका आविर्भाव असंभव है (प्रबोध-सुधाकर, द्विधाभक्तिप्रकरण १६६-१६७)।

हिमालयपर केदारनाथ नामक स्थानमें केवल ३२ वर्षकी अवस्थामें इनकी मृत्यु हुई थी।

शंकु—पु० [सं०] (१) पुराणानुसार राजा विक्रमादित्यके नवरत्नोंमेंसे एक। (२) महाराज उग्रसेनके कंस आदि नौ पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (भाग० ९.२४.२४)। (३) एक गंधर्वका नाम जो शंकरजीका अनुचर था (स्कंदपु० तथा ब्रह्मां०)।

शंकुकर्ण—पु० [सं०] (१) धृतराष्ट्र (नाग) के कुलमें उत्पन्न एक नागका नाम जो जनमेजय सर्पसत्रमें अग्निमें स्वाहा किया गया था (महाभा० आदि० ५७.१५)। (२) भगवान् शिवके एक दिव्य पार्षदका नाम, जो कुबेरकी सभामें स्थित रहता है (सभा० १०.३४)। (३) पार्वती द्वारा कुमार कार्त्तिकेयको दिये गये दो पार्षदोंमेंसे एकका नाम (शल्य० ४५.५१)।

शंकुकर्णेश्वर—पु० [सं०] भगवान् शिवकी एक मूर्ति जिसका पूजन करनेसे अश्वमेध यज्ञका दस गुना फल प्राप्त होता है (महाभा० वन० ८२.७०)।

शंकुद्वार—पु० [सं०] गुजरातके समीपका एक छोटा टापू जहाँ नारायणकी मूर्ति है (हि० वि० को०)।

शंकुनारायण—पु० [सं०] नारायण भगवान्की एक मूर्त्तिका नाम जो गुजरातके निकटस्थ शंकुद्वार नामक एक छोटे टापूमें स्थित है (स्कंद०, भाग० तथा विष्णु०)।

शंकुर—पु०[सं०] पुराणानुसार एक दानवका नाम(विष्णु०)।

शंकुशिरा—पु० [सं०] दनुके गर्भसे उत्पन्न कश्यपके ६१ दानव पुत्रोंमेंसे एक प्रधान दानवका नाम (भाग० ६.६.३०)।

शंख—पु० [सं०] (१) शंखासुर राक्षसका एक नाम। यह बड़ा शक्तिशाली था और देवताओंको जीतकर वेदोंको चुरा ले गया था। इसके हाथोंसे वेदोंका उद्धार करनेके लिए ही

विष्णुका मत्स्यावतार हुआ था (भाग० १०.४५.४०)। (२) हैहय वंशोत्पन्न राजा श्रुताभिधानके पुत्र एक धर्मात्मा राजा जो विष्णुभक्त थे। ब्रह्माजीके आदेशसे यह वेंकटेश पर्वतपर स्वामितीर्थमें स्वामिपुष्करिणीके निकट कुटी बना तप करने लगे और वहीं अगस्त्य ऋषि भी विष्णुदर्शनके लिए तप कर रहे थे। देवगुरु बृहस्पतिके आदेशानुसार सब देवतागण भी वहीं जमा हो गये जहाँ विष्णुने सबको दर्शन दे कृतार्थ किया। वेंकटेश पर्वत उसी समयसे तीर्थ हो गया (अगस्त्य-संहिता तथा अध्यात्मरामायण, अरण्य-कांड ३.३४-४४)। (३) राजा विराटका पुत्र, (४) कुबेरकी नौ निधियोंमेंसे एक निधिका नाम (महाभा० सभा० १०.३९)। (५) धारानरेश गंधर्वसेनका ज्येष्ठ पुत्र, जो विक्रमादित्यका अग्रज था तथा जिसका वध कर विक्रमादित्य राजा हुए थे।

शंखकार–पु० [सं०] पुराणानुसार शूद्रामाता और विश्वकर्मा पितासे उत्पन्न एक जाति (ब्रह्मवैवर्तपु०)।

शंखकूट–पु० [सं०] पुराणानुसार एक पर्वतका नाम (मार्कण्डेयपु० ५५.१२)।

शंखचूड़–पु० [सं०] (१) दनुका वंशज, दंभ दानवका पुत्र तथा विप्रचित्तिका पौत्र एक राक्षस। पूर्व जन्ममें इसका पहला नाम सुदामा गोप था जो श्रीकृष्णका पार्षद था और राधाके शापसे राक्षस हो गया था। तुलसी नामकी इसकी पत्नी प्रसिद्ध पतिव्रता थी—दे० तुलसी। मथुरापति कंसने श्रीकृष्णको मारनेके लिए शंखचूड़को भेजा था, पर यह स्वयं श्रीकृष्ण द्वारा मारा गया (भाग०)। ब्रह्मवैवर्त्त तथा शिवपुराणानुसार इसे भगवान् शंकरने अपने त्रिशूलसे मारा था। शंखचूड़की हड्डियोंसे शंख जातिका प्रादुर्भाव हुआ। शंखका जल शंकरको छोड़ सब देवताओंके लिए पवित्र है (ब्रह्मवैवर्त्तप्र० प्रकृतिखं०; शिवपु० रुद्र-संहिता, खंड ५, अध्याय १३-२९, ३०-४०)। (२) कुबेरके एक सखाका नाम (भाग०)। (३) द्वारकाका एक व्यक्ति जिसके पुत्र उत्पन्न होनेके पश्चात् गायब हो जाते थे (भाग०)। (४) एक यक्षका नाम। (५) एक तीर्थस्थानका नाम।

शंखण–पु० [सं०] प्रवृद्धका पुत्र (रामायण)।

शंखतीर्थ–पु० [सं०] सरस्वती तटवर्ती एक प्राचीन तीर्थका नाम (महाभा० शल्य० ३७.१९-२६)।

शंखद्वीप–पु० [सं०] पुराणानुसार एक द्वीपका नाम।

शंखन–पु० [सं०] (१) अयोध्यापति कल्माषपादके एक पुत्र तथा सुदर्शनके पिताका नाम (ब्रह्मां०, मत्स्य०, वायु० तथा कल्माषपाद)। (२) वज्रनाभका पुत्र (स्कंदपु०)।

शंखनख–पु० [सं०] एक नागका नाम जो वरुणकी सभामें रहकर उनकी उपासना करता था (महाभा० सभा० ९.८)।

शंखपद–पु० [सं०] स्वारोचिष मनुके पुत्र, जिन्हें पिता द्वारा नारायणोक्त सात्वत धर्मका उपदेश मिला था (महाभा० शांति ३४८.३७-३८)।

शंखपाणि–पु० [सं०] शंख हाथमें रहनेके कारण विष्णुका एक नाम (भाग०, विष्णु०)।

शंखपाल–पु० [सं०] कर्दम ऋषिका पुत्र (ब्रह्मां० २.१४.९)।

शंखपिंड–पु० [सं०] कश्यप ऋषि द्वारा कद्रूके गर्भसे उत्पन्न एक नागका नाम (महाभा० आदि० ३५.२३)।

शंखमुख–पु० [सं०] एक काद्रवेय नागका नाम (महाभा० आदि० ३५.११)।

शंखमेखल–पु० [सं०] एक ऋषिका नाम, जो सर्पदंशसे मृत प्रमद्वराको देखनेके लिए स्थूलकेशके आश्रममें गये थे (महाभा० आदि० ८.२४)।

शंखलिखित–पु० [सं०] शंख और लिखित नामके दो प्रसिद्ध ऋषि जिनकी लिखी स्मृति मिलती है।

शंखासुर–पु० [सं०] (१) एक प्रचंड दैत्यका नाम जो ब्रह्माजीके पाससे कुल वेद चुरा समुद्रके भीतर अपने निवास-स्थानपर ले गया था। मत्स्यावतार लेकर विष्णुने वेदोंका उद्धार किया था—दे० शंख। (२) मुर दैत्यका पिता—दे० मुर।

शंडा–पु० [सं०] (१) दैत्यगुरु शुक्राचार्यका एक पुत्र, जो असुरोंका पुरोहित था। (२) एक यक्षका नाम (ब्रह्मां०; ब्रह्मपु० शुक्रतीर्थ माहात्म्य)।

शंडामर्क–पु० [सं०] शंड और मर्क नामके दो दैत्य जिनका नाम एकही साथ लिया जाता है (भाग० ७.५.१)।

शंडील–पु० [सं०] एक गोत्रकार ऋषि (ब्रह्मां०)।

शंवर–पु० [सं०] (१) दिवोदासका शत्रु एक दैत्य। इनकी रक्षाके हेतु इन्द्रने इसे पहाड़परसे गिराकर वध कर डाला था। रामायण और महाभारतमें इसे कामदेवका शत्रु कहा गया है। महाभारतके अनुसार यह एक दानव था, जो कश्यप और दनुके विख्यात महापराक्रमी ३४ पुत्रोंमेंसे अन्यतम था। इन्द्र द्वारा यह पराजित हुआ था। साम्बने बाल्यावस्थामें इसकी सेनाको नष्टभ्रष्ट कर दिया था। बादमें इन्द्र द्वारा मारा गया (महाभा० आदि० ६५.२२; १३७.४३; वन० १२०.१३; उद्योग० १६.१४)। (२) एक मायावी असुर जो रुक्मिणीनन्दन प्रद्युम्न द्वारा मारा गया था (अनु० १४.२८)।

शंबरारि–पु० [सं०] (१) कामदेवका नाम—दे० कामदेव। (२) प्रद्युम्नका एक नाम जिन्हें कामदेवका अवतार कहते हैं (भाग०)।

शंबसादन–पु० [सं०] एक दैत्यका नाम जिसे केशरी नामके बन्दरने मारा था (वाल्मी० रामायण)।

शंबूक–पु० [सं०] एक तपस्वी शूद्रका नाम जिसकी तपस्याके कारण त्रेतायुगमें रामराज्यके समय एक ब्राह्मणपुत्र अकाल मृत्युसे मर गया था। अतः श्रीरामने इसे मार कर मृत ब्राह्मण पुत्रको पुनरुज्जीवित किया था (वाल्मी-रामायण)।

शंभु–पु० [सं०] (१) ग्यारह रुद्रोंसेमें एक (स्कंदपु० तथा ब्रह्मां०)। (२) एक दैत्यका नाम (रामायण)।

शंभुमनु–पु० [सं०] स्वायंभुव मन्वंतरका नाम जो सबसे पहला मन्वंतर है—दे० स्वायंभुव और मनु।

शक–पु० [सं०] (१) राजा शालिवाहनका चलाया संवत् जो ईसासे ७८ वर्षों बाद आरम्भ हुआ था। (२) एक जातिका नाम। पुराणानुसार राजा नरिष्यंतसे यह जाति चली और वर्णाश्रमसे धर्मच्युत होनेके कारण ये म्लेच्छ हो गये थे जिन्हें राजा सगरने निर्वासित कर दिया था (भाग० ८.१३.

२; ९.१.१२; १९.२२; ब्रह्मां० ३.६०.३; मत्स्य० तथा वायु०)।

शकट–शकटासुर दैत्यका एक नाम जिसे श्रीकृष्णने मारा था (भाग०)।

शकटहा–पु० [सं०] शकटासुरको मारनेके कारण श्रीकृष्णका एक नाम (भाग०)।

शकटासुर–पु० [सं०] एक दैत्य जिसे कंसने श्रीकृष्णको मारनेके लिए भेजा था पर यह स्वयं ही उनसे मारा गया (भाग०)।

शकुंतला–स्त्री० [सं०] महाभारतके अनुसार भारतवर्षके सुप्रसिद्ध राजा भरतकी माता। यह मेनका अप्सरा तथा विश्वामित्रकी पुत्री थी जिसे मेनका वनमें छोड़ चली गयी और शकुन्त पक्षियोंने इनकी रक्षा की थी इसीसे इसका शकुंतला नाम पड़ा। यह कण्व ऋषिके आश्रममें पली थी और राजा दुष्यंतको व्याही थी। गांधर्व विवाहके पश्चात् चिह्नस्वरूप अपनी अँगूठी दे राजा दुष्यंत कण्वके आश्रमपर ही शकुंतलाको छोड़ अपनी राजधानीको चले गये। एक वार शकुंतला अपने पतिके ध्यानमें इतनी मग्न थी कि उसे आश्रमपर आये दुर्वासा ऋषिका पता ही न चला। देशविख्यात क्रोधी दुर्वासा इसे सहन न कर सके और शकुंतलाको शाप दे वैठे—'तेरा पति तुझे भूल जायगा'। जव शकुंतला दुष्यंतके पास गयी तो उन्होंने उसे अंगीकार करना अस्वीकार किया। दुर्भाग्यवश राजाकी दी अँगूठी शकुंतलासे नहाते समय नदीमें गिर गयी थी। दुर्वासाके अनुसार अँगूठी देखकर ही शापका प्रभाव हट सकता था। संयोगसे अँगूठीको एक मछली निगल गयी थी जिसे स्थानीय धीवरोंने पकड़ा और पेट चीरनेपर अँगूठी मिली जिसे मछुओंने राजा दुष्यंतको अर्पण की। अँगूठी देखते ही राजाको सारी वातें याद हो आयीं और उन्होंने शकुंतला तथा अपने पुत्र भरतको अंगीकार कर लिया। इसका सविस्तार विवरण महाभारत तथा कालिदासकृत शकुंतला नाटकमें दिया है। द्रष्टव्य—कण्व, दुष्यंत, मेनका तथा भरत।

शकुनि–पु० [सं०] (१) एक दैत्यका नाम जो हिरण्याक्षका पुत्र तथा वृकका पिता था (रामायण वाल०)। (२) निर्माष्टिके गर्भसे उत्पन्न दुःसहके आठ पुत्रोंमेंसे एकका नाम (स्कंदपु० माहेश्वर० केदार खंड)। (३) शकुनि गांधारीका भाई कौरवोंका मामा था। यह सुवल राजाका पुत्र था और इसीलिए सौवल कहलाता था। यह दुर्योधन का मन्त्री था और कौरवकुलके नाशका कारण यही था। कुरुक्षेत्रके युद्धमें सहदेवने इसका तथा इसके पुत्रका वध किया था (महाभा०)। (४) विकुक्षिके एक पुत्रका नाम जो अयोध्यापति कुक्षिका पुत्र था (रामायण)।

शकुनिका–स्त्री० [सं०] कार्त्तिकेयकी एक मातृका (स्कंदपु०)।

शकुनिग्रह–पु० [सं०] कार्त्तिकेयका एक अनुचर (स्कंदपु०)।

शकुनी–स्त्री० [सं०] पुराणानुसार एक वड़ी ही भयंकर तथा क्रोधी पूतनाका नाम।

शकुली–स्त्री० [सं०] पुराणानुसार एक नदीका नाम।

शक्ति–पु० [सं०] (१) वशिष्ठ मुनिका ज्येष्ठ पुत्र। एक वार राजा कल्माषपादने कुछ कहा-सुनीके कारण इन्हें एक कोड़ा जमा दिया जिससे इन्होंने उसे राक्षस होनेका शाप दिया। राजा राक्षस हो गया और पहले इन्हींको खा गया (महाभारत, विष्णु०)। (२) एक ऋषि जिनके पुत्र प्रसिद्ध पराशर थे (स्कंदपु० महाभा०, विष्णु०)।

शक्ति–स्त्री० [सं०] (१) शाक्तोंकी एक तंत्रोक्त देवी जो किसी पीठकी अधिष्ठात्री होती है। (२) पुराणानुसार भिन्न-भिन्न देवताओंकी भिन्न-भिन्न शक्तियाँ। यथा-विष्णुकी कीर्त्ति, कांति, तुष्टि, शांति, प्रीति आदि; रुद्रकी गुणोदरी, गोमुखी, ज्वालामुखी, लंवोदरी, खेचरी, मंजरी आदि शक्तियाँ। देवीकी इंद्राणी, वैष्णवी, ब्रह्माणी, कौमारी, वाराही, माहेश्वरी और सर्वमंगला आदि।

शक्तिवन–पु० [सं०] एक पुराणोक्त वन तथा तीर्थ स्थान।

शक्र–पु० [सं०] दैत्योंके नाश करनेके कारण इन्द्रका एक नाम—

शक्रक्रीड़ाचल–पु० [सं०] सुमेरु पर्वतका एक नाम (भाग०, मत्स्य०)।

शक्रजानु–पु० [सं०] रामायणके अनुसार एक वन्दरका नाम।

शक्रजित्–पु० [सं०] इन्द्रको जीत लेनेके कारण मेघनादका एक नाम जिसका पुत्र अपसवांत वड़ा लोकप्रिय था (वायु० ९६.५३; रामायण)।

शक्रदिशा–स्त्री० [सं०] पूर्व दिशा जिसका स्वामी इन्द्र है।

शक्रदेव–पु० [सं०] (१) एक कलिङ्ग-राजकुमार, जो महाभारत युद्धमें कौरवोंके पक्षका योद्धा था। यह भीमसेनके हाथों मारा गया (भीष्म० ५४.२४-२५)। (२) शृगालका एक पुत्र (हरिवंश) महाभारतके अनुसार शृंगाल स्त्री राज्यके स्वामी थे (शांति० ४.७)।

शक्रनंदन–पु० [सं०] अर्जुनका एक नाम—दे० महाभा० तथा अर्जुन।

शक्रप्रस्थ–पु० [सं०] एक नगरका नाम जिसे पांडवोंने खांडव वन जलानेके पश्चात् वसाया था, जिसका सुप्रसिद्ध नामान्तर इन्द्रप्रस्थ है (महाभा० २०६.२९)।

शक्रमाता–स्त्री० [सं०] इन्द्रकी माता अदितिका एक नाम (ब्रह्मां० ३.३.६२,६८)।

शक्रवापी–पु० [सं०] गिरिव्रजके समीपवर्ती गौतमके आश्रमके निकट रहनेवाले एक नागका नाम (महाभा० सभा० २१.९)।

शक्रसारथि–पु० [सं०] इन्द्रके सारथि मातलिका एक नाम —दे० मातलि (महाभा० सभा० २१.९; मत्स्य० १४८.८१)।

शक्रसुत–पु० [सं०] इन्द्र-पुत्र वालीका एक नाम जिसे श्री रामचन्द्रने सुग्रीवकी मित्रताके वाद मारा था (रामचरित मा० किष्किन्धा०)।

शक्रावर्त्त–पु० [सं०] एक प्राचीन तीर्थस्थानका नाम जिसमें देवताओं और पितरोंका तर्पण करनेवाले पुरुषकी पुण्य लोकोंमें गति होती है (महाभा० वन० ८४.२९)।

शची–स्त्री० [सं०] देवराज इन्द्रकी पत्नी तथा दानवराज पुलोमाकी पुत्री (मत्स्य० ६.२०-१) तथा—दे० पुलोमजा।

महाभारतके अनुसार इन्हींके अंशसे द्रौपदीका प्राकट्य हुआ था आदि० ६७.१५७)।

शचीतीर्थ–पु० [सं०] एक प्राचीन तीर्थका नाम (स्कन्द-पु०)।

शचीपति–पु० [सं०] शचीपति=इन्द्र।

शठ–पु० [सं०] एक दानवका नाम, जो कश्यपपत्नी दनुके गर्भसे उत्पन्न १०० पुत्रोंमेंसे एक था (महाभा० आदि० ६१.२९)।

शतकपालेश–पु० [सं०] शिवकी एक मूर्ति विशेष (स्कंद-पु० काशीखण्ड; शिवपु०)।

शतकुंभा–स्त्री० [सं०] एक नदीका नाम, जो तीर्थरूप है, जहाँकी यात्रा करनेवाला मनुष्य स्वर्गलोकमें जाता है (महाभा० वन० ८४.१०-११)।

शतकेशर–पु० [सं०] शाकद्वीपके सात मुख्य वर्षपर्वतोंमेंसे एक वर्षपर्वतका नाम (भाग० ५.२०.२६)।

शतक्रतु–पु० [सं०] सौ यज्ञोंका अनुष्ठाता देवता इन्द्र (भाग० ४.१९.२, २९)।

शतघंटा–स्त्री० [सं०] कुमार कार्तिकेयकी अनुचरी एक मातृकाका नाम (महाभा० शल्य० ४६.११)।

शतचन्द्र–पु० [सं०] कौरवपक्षीय एक महारथी वीर योद्धा, जो शकुनिका भ्राता था। यह भीमसेन द्वारा युद्धमें मारा गया (महाभा० द्रोण० १५७.२३)।

शतजित्–स्त्री० [सं०] (१) भगवान् विष्णुका एक नाम (विष्णु सहस्रनाम)। (२) यदुसुत सहस्रजित्का पुत्र तथा महाहय, वेणुहय और हैहय तीन पुत्रोंका पिता, जिसका उल्लेख भागवतमें मिलता है (भाग० ९.२३.२०)। (३) एक यक्षका नाम (ब्रह्मां०)।

शतजिह्व–पु० [सं०] शिवजीका एक नाम (वायु० ३०.१८४)।

शतज्योति–पु० [सं०] सम्राट्के तीन पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम जिसके एक लक्ष पुत्र हुए थे (महाभा० आदि० १.४४-४५)।

शतद्युम्न–पु० [सं०] एक प्राचीन राजा, जिन्होंने मौद्गल्य ब्राह्मणको सुवर्ण निर्मित गृह प्रदान कर स्वर्ग प्राप्त किया था (महाभा० शांति २३४.३२)।

शतद्रु–स्त्री० [सं०] सैकड़ों धाराओंमें बहनेके कारण पंजाबकी शतलज नदी जो हिमालयके रावणह्रदसे निकल, विपाशासे मिल सिन्धुमें जा गिरती है। टोलमीने इसे ज़रद्रुस तथा प्लीनीने हेसुद्रुस लिखा है।

शतधनु–एक राजाका नाम जो बड़ा विष्णुभक्त था। इसकी पत्नी शैव्या भी बड़ी धर्मज्ञानी तथा विष्णुभक्त थी। एक दिन इनकी भेंट एक नास्तिकसे हुई। शतधनु तो उससे बात करने लगे, पर शैव्या उससे विमुख हो सूर्यको देखने लगी। कुछ समयके पश्चात् शतधनु मर गये और शैव्या सती हो गयी। शैव्या तो राजकुमारी हुई पर शतधनुका जन्म कुत्तेकी योनिमें हुआ। राजकुमारीने कुत्तेको पहचानकर वरमाल उसीके गलेमें डाल दिया और उसके अधः-पतनका कारण भी उसे बतलाया। कुत्तेको अपनी भूल सुन इतना दुःख हुआ कि वह मर गया। उसके पश्चात् शतधनुका जन्म क्रमशः शृगाल, भेड़िया, काक तथा मोरकी योनिमें हुआ और हर बार उसकी पत्नी उसे पहचानती गयी और सुधारके लिए उत्साहित करती गयी। अन्तमें एक भद्र पुरुषके घर उसका जन्म हुआ और राजकुमारी उससे विवाह कर सुखसे रहने लगी। इसके उपरान्त दोनोंने मोक्ष प्राप्त किया (विष्णु०)।

शतधन्वा–पु० [सं०] (१) एक प्राचीन ऋषिका नाम। (२) हृदिक यादवका पुत्र एक वीर योद्धा। अक्रूर और कृतवर्माके उकसानेपर सत्यभामाके पिता सत्राजित्का सोतेमें वध करनेके अपराधमें श्रीकृष्णने इसे मारा था (भाग० १०.५७.३, १८, २३; महाभा० वन० १२.३०)।

शतधारवन–पु० [सं०] एक प्राचीन तीर्थका नाम।

शतपत्रक–पु० [सं०] एक पर्वत जिसका उल्लेख पुराणोंमें है।

शतपत्रवन–पु० [सं०] द्वारकाके पश्चिम भागके सुकक्ष पर्वतको चारों ओरसे घेरकर स्थित एक वनका नाम (महाभा० सभा० ३८.२९ के बाद प्रक्षिप्त भाग)।

शतपथब्राह्मण–पु० [सं०] याज्ञवल्क्य द्वारा सूर्यसे प्राप्त यजुर्वेदका एक ब्राह्मण ग्रन्थ जो और सब ब्राह्मण ग्रन्थोंसे अधिक नियमबद्ध, विश्वसनीय तथा सर्वांगपूर्ण है—दे० वेद।

शतपर्वा–स्त्री० [सं०] शुक्र अथवा भार्गवकी पत्नी। शुक्राचार्य भृगु-ऋषिके पुत्र थे अतः इन्हें भार्गव कहते थे (स्कंदपु० शुक्र-मा० तथा महाभा० उद्योग० ११७.१३)।

शतबला–स्त्री० [सं०] भारतवर्षकी एक प्राचीन नदीका नाम (महाभा० भीष्म ९.२०)।

शतबलि–पु० [सं०] रामायणानुसार एक यूथपति बन्दरका नाम (किष्किंधा० ३९.१४)।

शतबाहु–पु० [सं०] एक असुरका नाम (भाग०)।

शतभिषा–स्त्री० [सं०] सत्ताईस नक्षत्रोंमेंसे एक नक्षत्रका नाम, जिसके योगमें अगर और चन्दन सहित सुगन्धित पदार्थोंका दान करनेवाला पुरुष परलोकमें अप्सराओंका समुदाय तथा अक्षयलोक प्राप्त करता है (महाभा० अनु० ६४.३०)।

शतमख–पु० [सं०] शतक्रतु इन्द्रका नाम—दे० इन्द्र।

शतमन्यु–पु० [सं०] इन्द्र (शतक्रतु) का एक नाम—दे० इन्द्र (भाग०)।

शतमुख–पु० [सं०] एक महान् असुर, जिसने सौ वर्षोंतक अपने मांसकी आहुति दी थी। इससे प्रसन्न भगवान् शंकरने इसे वर दिया था (महाभा० अनु० १४.८४-८७)।

शतयातु–पु० [सं०] एक प्राचीन वैदिक ऋषि।

शतयूप–पु० [सं०] कैकय देशके एक धीमान् राजर्षि, जो पुत्रको राज्य देकर कुरुक्षेत्रके वनमें तपस्या करने गये थे। इनके आश्रममें ही धृतराष्ट्र आदि टिके थे। इन्होंने धृतराष्ट्रको वनवासकी विधि बतलायी थी। ये राजा सहस्रचित्यके पौत्र थे (महाभा० आश्रम० १९.८-१३;२०.६)।

शतरथ–पु० [सं०] महाभारतके अनुसार एक राजाका नाम जो यमकी सभामें रहकर यमकी उपासना करते थे (सभा० ८.२६)।

शतरात्र–पु० [सं०] सौ रातोंमें होनेवाला एक यज्ञ।

शतरुद्र–पु० [सं०] (१) रुद्रका एक रूप विशेष जिनके

१०० मुख हैं (स्कंदपु० माहेश्वर०)। (२) वेदका शतरुद्रियप्रकरण, जिसमें रुद्रदेवके १०० नामोंका उल्लेख है (महाभा० अनु० १५०.१४)। (३) एक शक्ति जो आत्माकी उत्पादक मानी गयी है (शैवदर्शन)।

शतरूप–पु० [सं०] एक प्राचीन ऋषिका नाम।

शतरूपा–स्त्री० [सं०] ब्रह्माकी एक मानसी पुत्री तथा स्वायंभुवमनुकी पत्नीका नाम (विष्णु० १.७.१६-१८)।

शतलोचन–पु० [सं० (१) स्कंदका एक सैनिक अनुचर (महाभा० शल्य ४५.६०)। (२) पुराणानुसार एक असुरका नाम।

शतशीर्ष, शतशीर्षा–पु० [सं०] (१) एक अस्त्र विशेष जो मन्त्रबलसे चलाया जाता है (रामायण)। (२) विष्णुका नाम (विष्णुसहस्र नाम तथा भाग०)।

शतशीर्षा–स्त्री० [सं०] नागराज वासुकिकी पत्नीका एक नाम (महाभा० उद्योग० ११७.१७)।

शतश्रृंग–पु० [सं०] (१) एक पर्वत जो महाभद्रके उत्तर (आधुनिक मैसूर राज्य) में स्थित है (ब्रह्मां०)। (२) शाल्मलिद्वीपके सात मुख्य वर्षपर्वतोंमेंसे एक पर्वतका नाम (भाग० ५.२०.१०)।

शतसंख्य–पु० [सं०] विष्णुपुराणानुसार दसवें मन्वन्तरके देवताओंका एक गण (विष्णु० ३.२.२४)।

शतसहस्र–पु० [सं०] कुरुक्षेत्रकी सीमामें स्थित एक सुविख्यात तीर्थका नाम जहाँ स्नान करनेसे सहस्र गउओंके दानका फल प्राप्त होता है। वहाँ किये गये दान और उपवासका महत्त्व अन्य तीर्थोंकी अपेक्षा हजार गुना अधिक है (महाभा० वन० ८३.१५७)।

शतसहस्रक–पु० [सं०] गोमतीके रामतीर्थके अन्तर्गत एक तीर्थका नाम, जिसमें स्नान करके नियमपालन-पूर्वक नियमित भोजन करनेवाला पुरुष सहस्र गोदानका फलभागी होता (महाभा० वन० ८४.७४)।

शतह्रद–पु० [सं०] एक असुर विशेषका नाम (हरिवंशपु०)।

शतह्रदा–स्त्री० [सं०] (१) दक्षकी एक पुत्री जो बाहुक-पुत्रकी पत्नी थी (मत्स्य० १४६.१७; वायु० ६३.४२)। (२) विराध राक्षसकी माता (वाल्मी० रामा० अरण्य० ३.५)। विराधको श्री रामने वनवासके समय अत्रि ऋषिसे मिलनेके पश्चात् रास्तेमें मारा था (रामचरितमा०)।

शताकरा–स्त्री० [सं०] एक किन्नरीका नाम (हिं०श०सा०)।

शताकारा–स्त्री० [सं०] एक गन्धर्व वधूका नाम (हिं० श० सा०)।

शताक्ष–पु० [सं०] एक दानवका नाम (हरिवंशपु०)।

शताक्षी–स्त्री० [सं०] देवी, दुर्गा (शिवपु० उमा-सं० ५०)।

शतानन्द–पु० [सं०] (१) विदेह-जनकके पुरोहितका नाम। ये अहल्याके गर्भसे उत्पन्न गौतमके पुत्र थे (वाल्मी० रामा० बाल० १.७०) उ० "शतानन्द तब वन्दि प्रभु बैठे गुरु पहँ जाय"—तुलसी (रामायण)। (२) एक दिव्य महर्षि, जो शरशय्यापर सोये भीष्मपितामहको देखने गये थे (महाभा० अनु० २६.८)।

शतानन्दा–स्त्री० [सं०] (१) कार्त्तिकेयकी अनुचरी एक मातृकाका नाम (महाभा० शल्य० ४६.११)। (२) एक नदीका नाम (नारदपु०)।

शतानन–पु० [सं०] शिवजीका एक नाम (वायु० ३.१८४)।

शतानना–स्त्री० [सं०] एक देवीका नाम।

शतानीक–पु० [सं०] (१) पुराणानुसार जनमेजयके पुत्र तथा सहस्रानीकके पिता जो चौथे युगमें चन्द्रवंशके द्वितीय राजा थे। मत्स्य० ५०.६६,६८ के अनुसार यह अधिसोमकृष्णके पिता थे जिन्होंने तीन बड़े-बड़े यज्ञ किये थे, पहला पुष्करमें दूसरा, कुरुक्षेत्रमें और रीसरा दृषद्वतीमें (मत्स्य० ५०-६७)। (२) सुदास राजाके पुत्रका नाम (भाग० ९.९.१८)। (३) चतुर्थ पांडव नकुलके पुत्रका नाम जो द्रौपदीके गर्भसे उत्पन्न हुआ था। महाभारत युद्धके अन्तिम दिन रात्रिमें अश्वत्थामाने पांडव शिविरमें घुसकर इसकी हत्या की थी (महाभा० आदि० २२.८४; सौप्तिक० ८.५७-५.८)। (४) एक असुरका नाम।

शतायु–पु० [सं०] (१) इलाके गर्भसे उत्पन्न बुधके पुत्र पुरूरवा द्वारा उर्वशीके गर्भसे उत्पन्न छह पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (महाभा० आदि० ७५-२४-२५)। (२) विष्णुपुराणानुसार उशनाका एक पुत्र (विष्णु०)।

शतायुधा–स्त्री० [सं०] एक किन्नरी विशेषका नाम।

शतावर्त–पु० [सं०] (१) एक पवित्र वनका नाम (हरिवंश)। (२) शंकरका एक नाम (वायु० ३०.१८४)।

शताह्वा–पु० [सं०] एक तीर्थस्थान।

शतोदर–पु० [सं०] (१) शंकरका एक नाम (वायु० ३०.१८४; स्कंदपु० काशी-खं०)। (२) रामायणके अनुसार एक अस्त्रविशेष (बाल० २८.५)। (३) शंकरका एक गण (वायु०)।

शतोदरी–स्त्री० [सं०] कुमार कार्तिकेयकी अनुचरी एक मातृका (महाभा० शल्य० ४६.१५)।

शतोलूखलमेखला–स्त्री० [सं०] कुमार कार्त्तिकेयकी अनुचरी एक मातृका (महाभा० शल्य० ४६.१०)।

शत्रुघाती–पु० [सं०] अयोध्याधिपति दशरथका पौत्र तथा शत्रुघ्नका पुत्र, जो विदिशाका राजा हुआ (वाल्मी० रामा० उत्तर० १०८. १०, ११)।

शत्रुघ्न–पु० [सं०] (१) राजा दशरथ तथा सुमित्राके पुत्र जो लक्ष्मणके सहोदर और श्रीरामके वैमात्रेय भाई थे। कुशध्वज जनककी कन्या श्रुतिकीर्त्ति इन्हें व्याही थी। शत्रुघ्नने मधु नामक राक्षसको मारकर मथुरा नगरीको नये सिरेसे बसाया था। इनका भरतके साथ वैसा ही प्रेम था जैसा लक्ष्मणका रामसे। इन्होंने श्रीरामके साथ सरयूमें देह-विसर्जन किया था—दे० सुमित्रा, लक्ष्मण तथा (वाल्मी० रामा० बाल० १८.१३-१४, ३३; ७२.६-८,११; ७३.३०)। (२) देवश्रवाका एक पुत्र—दे० देवश्रवा। (३) श्वफल्कके गान्दिनीके गर्भसे उत्पन्न १३ पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम—दे० श्वफल्क (भाग० ९.२४.१६-१७)।

शत्रुजित्–पु० [सं०] ऋतध्वजके पिताका नाम जिन्होंने अपने पुत्र (ऋतध्वज) तथा पुत्रवधू मदालसाकी मृत्युसे दुःखी प्रजा तथा महलकी रानियोंको उपदेश दे शान्त किया था। ऋतध्वजके मरनेकी झूठी खबर पातालकेतुके छोटे भाई तालकेतुने दी थी, क्योंकि ऋतध्वजने पातालकेतुका वध किया था—दे० (मदालसा, ऋतध्वज, पातालकेतु आदि तथा (मार्कण्डेयपु० २२; २५.२७-३४)।

शत्रुञ्जय–पु० [सं०] (१) सौवीर देशका एक राजकुमार, जो जयद्रथके रथके पीछे हाथमें ध्वजा लेकर चलता था। द्रौपदीहरणके समय अर्जुन द्वारा इसका वध (महाभा० वन० २६५.१०; २७१.२७)। (२) धृतराष्ट्रका एक पुत्र जिसे दुर्योधनने भीष्मपितामहकी रक्षाका भार सौंपा था (भीष्म० ५१.८)। (३) कौरव पक्षका योद्धा कर्णका भाई, जिसका अर्जुनने वध किया था (द्रोण० ३२.६१)।

शत्रुञ्जया–स्त्री० [सं०] कुमार कार्तिकेयकी अनुचरी एक मातृका (महाभा० शल्य० ४६.६)।

शत्रुतपन–पु० [सं०] (१) एक दैत्य विशेष जो नाना प्रकारके रोग फैलाता है। (२) शत्रुसन्तापी एक दानवका नाम, जो कश्यपपत्नी दनुके गर्भसे उत्पन्न हुआ था (महाभा० आदि० ६५.२९)।

शत्रुदमन–पु० [सं०] शत्रुघ्नका नाम–दे० शत्रुघ्न।

शत्रुमर्दन–पु० [सं०] (१) शत्रुघ्नका नाम–दे० शत्रुघ्न तथा (रामायण)। (२) ऋतध्वज कुवलयाश्वका पुत्र जो मदालसाके गर्भसे उत्पन्न ऋतध्वजका तृतीय पुत्र था जिसकी सकाम कर्मकी ओर रुचि नहीं थी। यह अपने दो बड़े भाइयों (विक्रान्त और सुबाहु) की तरह विरक्त था (मार्कण्डेयपु० अलर्कोपाख्यान)।

शद्बला–स्त्री० [सं०] पुराणानुसार एक नदीका नाम।

शनक–पु० [सं०] शंबरका एक पुत्र–दे० शंबर।

शनि–पु० [सं०] पद्मपुराणानुसार सूर्यका पुत्र जो छायाके गर्भसे उत्पन्न हुआ था। अपनी स्त्रीके शापसे यह क्रूर प्रकृतिका हो गया और पार्वतीके शापके फलस्वरूप यह 'खंज' रोगग्रसित हो लँगड़ा हो गया। यह काले रंगका, शूद्रवर्ण और सूर्यमुख माना गया है। इसका वाहन गृध्र है और इसे अशुभ फल देनेवाला ग्रह कहा गया है। इन्हींकी दृष्टि पड़नेसे गणेशजीका मनुष्योंका-सा सिर कटकर गिर पड़ा था और पार्वतीको शान्त करनेके हेतु विष्णुको हाथीका सिर लगा गणेशको जीवित करना पड़ा था। इनकी शांतिके लिए नीलमणि (नीलम) धारण करे (पद्मपु०)।

शनिप्रदोष–पु० [सं०] यह पर्व मासके कृष्णपक्षकी त्रयोदशी शनिवारको पड़नेसे होता है जिस तिथिको दिनभर व्रत रख सन्ध्याको शंकरकी पूजा कर भोजन करनेका विधान है।

शनिव्रत–पु० [सं०] शनिवारको शनिकी लोहमयी मूर्त्तिका कृष्णवर्णके पुष्पादिसे पूजनकर व्रत करे तो चतुर्थाष्टमद्वादश स्थान स्थित शनिजनित सकल अरिष्ट दूर हों (भविष्योत्तरपु०)।

शबर–पु० [सं०] एक म्लेच्छ जाति, जो वशिष्ठजीकी नन्दिनी नामक गऊके गोबर और गोमूत्रसे उत्पन्न हुई थी (महाभा० आदि० १७४.३६-३७)।

शबरी–स्त्री० [सं०] शबर जातिकी श्रमणा नामकी एक स्त्रीका नाम जो परम भगवद्भक्त थी। श्री रामचन्द्रने स्वयम् इसकी प्रशंसा की थी। इसके लिए मर्यादा पुरुषोत्तम रामने मर्यादाका भी उल्लंघन कर उसकी कुटियापर जा उसके दिये कन्दमूल फल खाये 'बारम्बार बखान'–दे० शबरी।

शबल–पु० [सं०] कश्यप द्वारा कद्रूके गर्भसे उत्पन्न एक नागका नाम (महाभा० आदि० ३५.७)।

शबला–स्त्री० [सं०] वशिष्ठजीकी कामधेनुका नाम जिसे वशिष्ठजीने राजा विश्वामित्रके आतिथ्यके लिए अभीष्ट वस्तुएँ प्रस्तुत करनेका आदेश दिया था (वाल्मी० रामा० बाल० ५२.२०-२३)।

शबलाक्ष–पु० [सं०] महाभारतके अनुसार एक प्राचीन दिव्य महर्षि, जो शरशय्यामें सोये भीष्मपितामहको देखने गये थे (महाभा० अनु० २६.७)।

शबलाश्व–पु० [सं०] (१) पंचजन कन्या असिक्नीके गर्भसे उत्पन्न दक्ष प्रजापतिके पुत्रोंका नाम जो संख्यामें १००० थे और नारदके कहनेसे सन्तति उत्पन्न करना अस्वीकार कर नारदके उपदेशके फलस्वरूप अपने अग्रज हर्यश्वोंकी भाँति निवृत्तिमार्गके पथिक हो गये अतः दक्षने नारदको शाप दिया (भाग० ६.५.२४, ३२; शिवपु० रुद्रसंहिता अध्याय १३ तथा हर्यश्व (२) और नारद)। (२) महाभारतके अनुसार ये महाराज कुरुके पौत्र तथा (अश्ववान्) अविक्षित्‌के पुत्र थे। इनके सात भाई और थे जिनके नाम हैं परीक्षित्, आदिराज, विराज, शाल्मलि, उच्चैःश्रवा, भंगकार और जितारि (महाभा० आदि० ९४.५२-५३)।

शम–पु० [सं०] (१) 'अहः, नामक वसुके चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (महाभा० आदि० ६६.२३)। (२) धर्मके तीन श्रेष्ठ पुत्रोंमेंसे एकका नाम। इसकी पत्नीका नाम प्राप्ति था (आदि० ६६.३२-३३)।

शमि–पु० [सं०] राजा उशीनरके चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (भाग० ९.२३.२)।

शमिक–पु० [सं०] एक प्राचीन ऋषिका नाम।

शमी–स्त्री० [सं०] एक वृक्षका नाम जिसके काष्ठसे याज्ञिक लोग यज्ञीय अग्नि उत्पन्न करते हैं (भाग० ९.१४.४४)।

शमीक–पु० [सं०] एक प्रसिद्ध क्षमाशील तपःप्रभावसम्पन्न ऋषि जिनके गलेमें राजा परीक्षितने मरा हुआ सर्प डाल दिया था। यह तो कुछ न बोले पर इनके पुत्र शृंगी ऋषिने परीक्षितको शाप दे दिया जिसके कारण तक्षकके काटनेसे परीक्षितकी मृत्यु हुई थी (भाग० १.१८.२४-५०; मार्कण्डेयपु० जैमिनि-मार्कण्डेयसंवाद; ४०.१७-२५; ४१.२०-३३; ४२-३-१२)।

शयनबोधिनी–स्त्री० [सं०] अगहनबदी एकादशी, उदाहरणार्थ–'अगहन असित एकादशी केरा। शयनबोधिनी नाम निवेरा ॥'–रघुनाथ।

शयनैकादशी–स्त्री० [सं०] आषाढ़शुक्ला एकादशी जिस दिनसे भगवान् विष्णु शयन आरम्भ करते हैं और हरिप्रबोधिनी एकादशीको उठते है (भाग० तथा स्कंदपु०)।

शरगुल्म–पु० [सं०] रामायणके अनुसार एक बन्दरका नाम जो सेनानायक था (रामायण)।

शरत्पूर्णिमा–स्त्री० [सं०] इसमें (आश्विन १५) प्रदोष और निशीथ दोनोंमें होनेवाली पूर्णिमा ली जाती है। इस तिथिको व्रत तथा विष्णुका पूजन करते हैं और सफेद वस्त्र, सफेद नैवेद्य भोग लगाते हैं। कहते हैं इस दिन अमृत बरसता है (कृत्यनिर्णयामृत)।

शरद्वान्–पु० [सं०] महर्षि गौतमके पुत्र जो शरकंडोंके साथ पैदा हुए थे। इनके अंशसे कृप और कृपीका जन्म हुआ था जिनका पालन-पोषण महाराज शांतनुने किया था।

महाभारतमें इनका वर्णन यों किया गया है—ये महर्षि गौतमके पुत्र थे और शरकंडोंके साथ उत्पन्न हुए थे। ये स्वयं भी गौतम कहलाते थे। इनका मन जितना धनुर्वेद-शिक्षामें लगता था उतना वेदोंके अध्ययनमें नहीं लगता था। जैसे अन्य ब्रह्मचारी तपस्यापूर्वक वेदोंका ज्ञान प्राप्त करते थे वैसे ही इन्होंने भी तपस्यामें निरत होकर सम्पूर्ण अस्त्र-शस्त्र संचालनकी शिक्षा प्राप्त की थी। ये धनुर्वेदके पारंगत विद्वान् हो गये। इनकी तपस्या भी बहुत बड़ी थी। इससे इन्होंने इन्द्रदेवके मनमें चिन्ता पैदा कर दी। इन्द्रने इनकी तपस्यामें विघ्न डालनेके लिए जानपदी नामक एक सुन्दर देवकन्याको इनके आश्रममें भेज दिया। जानपदी इनके रमणीय आश्रममें पहुँचकर विविध हावभाव और चेष्टाओंसे इन्हें लुभाने लगी। उस अनिन्द्य सुन्दरी अप्सराको देखकर इनके नयन प्रसन्नतासे खिल उठे एवं हाथोंसे धनुष और वाण छूटकर पृथिवीपर गिर पड़े। उसकी ओर देखनेसे इनके शरीरमें कम्प आदि विविध सात्त्विक भाव प्रगट हो गये। शरद्वान् ज्ञानमें बहुत चढ़े-बढ़े थे ही तपस्या भी इनमें कुछ कम नहीं थी, अतः ज्ञानी तथा तपस्वी मुनि धीरतापूर्वक अपनी मर्यादामें स्थित रहे उससे विचलित नहीं हुए। किन्तु मनमें सहसा जो विकृति आ गयी थी उससे इनका वीर्य स्खलित हो गया। परन्तु इसका इन्हें भान नहीं हुआ। ये धनुष वाण, कृष्णमृग-चर्म, वह आश्रम और वह अप्सरा सबको वहीं छोड़कर वहाँसे चल दिये। इनका वह वीर्य शरकंडेके झुण्डमें गिरकर दो भागोंमें विभक्त हो गया। उससे एक पुत्र और एक कन्याकी उत्पत्ति हुई। जिन्हें जंगलमें गये महाराज शांतनुने देखा और अपने घर ले आये। कृपापूर्वक पाला, अतः कृप और कृपी कहलाये (महाभा० आदि १२९.२-२२)।

शरद्वीप–पु० [सं०] पुराणानुसार जलद्वीपका एक नाम।

शरभंग–पु० [सं०] रामायणानुसार एक ऋषि जो दक्षिण भारतमें रहते थे। वनवासके समय श्रीराम दर्शनार्थ इनके आश्रमपर गये। यह समाचार पा इन्होंने इन्द्रके साथ ब्रह्मलोक न जा रामदर्शनको ही उत्तम समझा और श्रीरामके सामने ही योगाग्निसे अपने शरीरको भस्म कर दिव्य धामको गये थे (रामचरित-मानस अरण्यकां० ६.४-८.२)।

शरभ–पु० [सं०] (१) श्रीरामकी सेनाका एक यूथपति वन्दर जो सेनानायक था तथा जिसकी उत्पत्ति पर्जन्यसे हुई थी (वाल्मी० रामा० वाल० १७.१५)। (२) एक आठ पैरोंवाला काल्पनिक पशु जो हिमालयपर रहता है जिसे उत्पादक या कुंजरारापति भी कहते हैं। (३) दनुजका एक पुत्र (भाग०; मत्स्य०)। (४) तक्षक-कुलमें उत्पन्न एक नागका नाम जो जनमेजयके सर्पसत्रमें स्वाहा किया गया था (महाभा० आदि० ५७.९)।

शरमेश्वर–पु० [सं०] एक शिवलिंगका नाम (स्कंदपु० काशी-खण्ड)।

शरस्तंब–पु० [सं०] (१) एक प्राचीन तीर्थस्थानका नाम जिसके झरनेमें स्नान करनेवाला मनुष्य स्वर्ग में अप्सराओं द्वारा सेवित होता है (महाभा० अनु० २५.२८। (२) एक प्रवरकार ऋषिका नाम (महाभा०; भाग०)।

शरारि–पु० [सं०] श्रीरामकी सेनाका एक वन्दर, जिसे सुग्रीवने सीताको खोजने दक्षिण दिशाकी ओर भेजा था (वाल्मी० रामा० किष्किन्धा० ४१.३)।

शरावती–स्त्री० [सं०] (१) भारतवर्षकी एक प्राचीन नदी संभवतः वाणगंगाका प्राचीन नाम—(महाभा० भीष्म० ९.२०)। (२) रामसुत लवकी राजधानीका नाम (रामायण लवकुशकां०)।

शरासन–पु० [सं०] धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (महाभा० आदि० ११६.४)।

शरु–पु० [सं०] एक देवगन्धर्वका नाम, जो अर्जुनके जन्म-समयके महोत्सवमें उपस्थित था (महाभा० आदि० १२२-५८)।

शर्करा–पु० [सं०] एक देश जो पुराणानुसार कूर्मचक्रके पुच्छ-भागमें है।

शर्कराक्ष–पु० [सं०] एक प्राचीन ऋषिका नाम (चरक)।

शर्कराचल–पु० [सं०] पुराणानुसार चीनीका पहाड़ वनाकर दान दिया जाता है, जिसके दानसे विष्णु, सूर्य, रुद्र प्रसन्न होते हैं। आठ मन चीनीका पहाड़ दानके लिए उत्तम कहा गया है, ४ मनका मध्यम, २ मनका निकृष्ट कहा गया है। अल्पवित्त पुरुष एक मन, आधे मन तथा दस सेरके पहाड़का दान कर सकता है (मत्स्य० ९०.१-४)।

शर्कराधेनु–स्त्री० [सं०] पुराणानुसार चीनीकी कल्पित गौ जिसका दान करते हैं (भाग० तथा पद्म पु०)।

शर्करासप्तमी–स्त्री० [सं०] वैशाखशुक्ला सप्तमी जिस दिन सुवर्णाश्वके आगे घड़ेमें चीनी भरकर रखते तथा पूजन करते हैं। पूजनका मंत्र 'विश्वदेवमयो यस्माद्वेदवानिति पठ्यसे। त्वय्येवामृतसर्वस्वमतः पाहि सनातन ॥' इससे आयु तथा ऐश्वर्यकी वृद्धि होती है (पद्मपु०)।

शर्णचापिलि–पु० [सं०] एक गोत्रप्रवर्त्तक प्राचीन ऋषि।

शर्दि–पु० [सं०] वैदिक कालके एक प्राचीन ऋषि।

शर्मिष्ठा–स्त्री० [सं०] दैत्यराज वृषपर्वाकी पुत्री तथा दैत्य-गुरु शुक्राचार्यकी पुत्री देवयानीकी सखी। एक वार देवयानी और शर्मिष्ठामें साधारण-सी वातपर झगड़ा हो गया और शर्मिष्ठाने देवयानीको कुँएमें ढकेल दिया। राजा ययातिने देवयानीको कुँएसे निकाला और घर चले गये। देवयानीको प्रसन्न करनेके लिए वृषपर्वाने अपनी पुत्रीको देवयानीकी दासी वना गुरुके घर भेज दिया। देवयानीका विवाह कचके शापके फलस्वरूप राजा ययातिसे हुआ और शर्मिष्ठा भी संग गयी। ययातिसे शर्मिष्ठाको द्रुह्यु, अणु और पुरु ये तीन पुत्र हुए थे। शर्मिष्ठासे संवंध कर लेनेसे शुक्राचार्यने क्रुद्ध होकर ययातिको शीघ्र ही बूढ़े होनेका शाप दिया—दे० कच, ययाति, शुक्राचार्य आदि। ययातिने शर्मिष्ठाके लिए त्रिपुरम्के अशोक वनमें एक घर बनवा दिया था (मत्स्य० ३१.२.१०; १३०.१६; वायु० ३८.६८)। शुक्राचार्यके शापके ही अनुसार अपना बुढ़ापा दूसरेको दे फिर युवा हो सकते थे। शर्मिष्ठाके गर्भसे उत्पन्न पुरुको छोड़ और कोई पुत्र पिताका बुढ़ापा लेनेको तैयार नहीं हुआ। पुरुसे उसकी जवानी ले महाराज ययातिने बहुत दिनोंतक राज किया और अन्तमें पुरुको राज्य-भार दे वन

चले गये थे। इसी पुरुके वंशमें राजा दुष्यन्त पुत्र भरत हुए थे। कई पीढ़ियों बाद महाराज कुरु हुए जो कौरवोंके आदि पुरुष थे—दे० ययाति, देवयानी, पुरु, दुष्यन्त, भरत आदि तथा (भाग० ५.१.३४; मत्स्य० २४.५२-३; वायु० १.१५५; ६५.८४; ९८.२०; विष्णु० ४.१०.४.२० आदि आदि)।

शर्यणावत्—पु० [सं०] शर्यण नामक जनपदके निकटस्थ एक सरोवर जो वड़ा प्राचीन तीर्थस्थान कहा जाता है।

शर्याति—पु० [सं०] (१) वैवस्वत मनुके १० पुत्रोंमेंसे एक-का नाम जिनके दो जुड़वी सन्तानें हुईं=सुकन्या पुत्री तथा आनर्त नामक पुत्र। इनके दो पुत्र और थे उत्तानवर्हि और भूरिषेण (भाग० ९.३.२७)। सुकन्या च्यवन ऋषिको व्याही थी। इसी सुकन्याने ध्यानमग्न च्यवन ऋषिकी आँखोंमें जिन्हें दीमकोंने ढक लिया था कुछ अद्भुत पदार्थ समझ काँटे चुभा दिये थे। इस व्यवहारसे क्रुद्ध हो च्यवनने शर्यातिके परिवार तथा अनुचरोंका मलमूत्र रोक दिया था। यह सारा समाचार मिलते ही शर्याति ऋषिने क्षमा माँगी और अपनी पुत्री सुकन्याका विवाह इनसे कर दिया था। अश्विनीकुमारोंने भी सुकन्यासे विवाहका प्रस्ताव किया था और उसके अस्वीकार कर देनेपर तथा च्यवनका हाल सुन उन लोगोंने च्यवनको वृद्धसे युवा बना दिया। शायद इसी अवसरपर 'च्यवनप्राश' नामकी प्रसिद्ध ओषधि वनी थी। आनर्तके पुत्र रेवत हुए थे जिन्हें आनर्त देशका राज्य मिला था और राजधानी कुशस्थली (द्वारका) हुई—दे० ब्रह्मपु० तथा च्यवन। (२) वैवस्वत मनुके एक पुत्रका नाम (भाग० ९.३.१-१५; ब्रह्मपु० वैवस्वत मनुका वंशवर्णन)।

शर्वक—पु० [सं०] एक प्राचीन ऋषिका नाम।

शलंकट—पु० [सं०] एक प्राचीन ऋषिका नाम।

शलंकु—पु० [सं०] एक प्राचीन ऋषिका नाम।

शल—पु० [सं०] (१) मथुरापति कंसके अखाड़ेका एक पहलवान (भाग०)। (२) धृतराष्ट्रके १०० पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (महाभा० आदि० ११६.४)। (३) शल नामका राजा कंसका एक अमात्य भी था (भाग० १०.४२.३६-३७)। (४) वासुकिवंशमें उत्पन्न एक नागका नाम जो जनमेजयके सर्पसत्रके अग्निमें आहुत हुआ (महाभा० आदि० ५७.५)। (५) कुरुवंशी राजा सोमदत्तके पुत्र और भूरिश्रवाके भ्राता-का नाम, जो द्रौपदीके स्वयंवरमें उपस्थित थे (आदि० १८५.१५)। (६) इक्ष्वाकुवंशी राजा परीक्षित्के तीन पुत्रोंमेंसे एकका नाम। इनकी माता मण्डूकराजकी कन्या सुशोभना थी (वन० १९२.३८)।

शलकर—पु० [सं०] तक्षक-कुलमें उत्पन्न एक नागका नाम जो जनमेजयके सर्पसत्रमें अग्निसात् किया गया था (महाभा० आदि० ५७.९)।

शलभ—पु० [सं०] (१) दक्षपुत्री दनु तथा कश्यप ऋषिके ३४ विख्यात पुत्रोंमेंसे एक पुत्र। यह वाह्लीकराज प्रह्लादके रूपमें पृथिवीपर उत्पन्न हुआ था (महाभा० आदि० ६७.३०-३१)। (२) पाण्डवपक्षीय एक महावली योद्धा, जो कर्ण द्वारा भारतयुद्धमें मारा गया (कर्ण० ५६.४९-५०)।

शलभी—स्त्री० [सं०] कुमार कार्तिकेयकी अनुचरी एक मातृका (महाभा० शल्य० ४६.२६)।

शलाका—स्त्री० [सं०] एक प्राचीन नगरीका नाम (रामायण)।

शलातुर—पु० [सं०] एक प्राचीन जनपद जहाँ संस्कृत व्याकरणके रचयिता विख्यात पाणिनिका निवासस्थान था इसीसे पाणिनिको शालातुरी कहते हैं।

शलाथल—पु० [सं०] एक प्राचीन ऋषिका नाम।

शल्य—पु० [सं०] मद्र देशका एक राजा जो द्रौपदीके स्वयंवरमें भीमसेनसे मल्लयुद्धमें हार गया था (महाभा० आदि० १८५.१३-१४; १८९.२३-२९)। यह महाभारतके युद्धमें कौरवपक्षसे लड़ा था। युद्धके सोलहवें या सत्रहवें दिन यह कर्णका सारथि वना था और अट्ठारहवें दिन (कर्णकी मृत्युके पश्चात्) कौरवोंका सेनापति भी वना था। यह पांडुकी दूसरी पत्नी माद्रीका भाई अथवा नकुल तथा सहदेवका सगा मामा था और अर्जुनके हाथों मारा गया (महाभा० कर्ण ३१.५८-६९; अध्याय० ३२ तथा शल्य० ६.२८)।

शल्यकर्त्तन—पु० [सं०] एक प्राचीन जनपदका नाम (वाल्मी० रामा० अयोध्या० ७१.३)।

शवधाम—पु० [सं०] पुराणानुसार शरधान नामक एक प्राचीन देश।

शवरी—स्त्री० [सं०] रामायणके अनुसार शवर जातिकी श्रमणा नामकी एक स्त्री। अपने पतिके द्वारा पक्षियोंकी हत्या देख इसका मन अशांत हो उठता था, अतः एक रात अपना घरवार छोड़ इसने जंगलकी शरण ली और चलते-चलते यह पम्पासर पहुँची। यहाँ मतंग ऋषि द्वारा शिष्योंको दिये गये उपदेश सुन इसे ज्ञान हो गया और उन्हींके आशीर्वादसे यह परम भगवद्भक्त हो गयी। शवर जातिकी होनेके कारण अन्य ऋषियोंने इसका तथा इसके आश्रयदाता मतंग ऋषिका तिरस्कार किया जिसके फलस्वरूप पम्पासरके जलमें कीड़े पड़ गये थे और जल रक्तसम हो गया। कुछ दिनोंके पश्चात् सीताजीको ढूँढ़ते हुए श्रीराम और लक्ष्मण इस भिल्नीकी कुटियापर पहुँचे। उनका स्वागत करते और आसनपर विठानेके उपरान्त शवरी राम-लक्ष्मणके खानेके लिए जंगली वेर ले आयी। कहते हैं स्वयम् चख-चखकर मीठे वेर रामजीको देती थी और श्रीराम उन जूठे वेरोंको वड़ी प्रसन्नतासे खाते जाते थे। इसी समय सरोवरकी दुर्दशा देख श्री लक्ष्मणने उसका रहस्य वतलाया था और शवरीके स्पर्शसे पम्पासरका जल पुनः शुद्ध हो गया था। श्रीरामकी अनुमतिसे उनके सामने ही चितामें प्रविष्ट हो यह स्वर्ग सिधारी थी (रामच० मानस अरण्य०)।

शशक—पु० [सं०] एक जातिका नाम, इस जातिके राजा-को कर्णने दिग्विजयके समय परास्त किया था (महाभा० वन० २५४.२१)।

शशधर—पु० [सं०] चन्द्रमाका एक नाम जिसमें उनके कलंककी ओर संकेत है—दे० चन्द्रमा तथा (कालिकापु०)।

शशबिंदु—पु० [सं०] चित्ररथके पुत्र एक प्राचीन राजाका नाम। ये यम-सभामें रहकर यमकी उपासना करते थे (महाभा० सभा० ८.१७)। संजयको समझाते हुए नारदजीने इनके चरित्र तथा दान आदिका वर्णन किया

था (द्रोण० अध्याय ६५)। इनकी दस हजार स्त्रियाँ थीं और प्रत्येकके गर्भसे एक-एक हजार पुत्र हुए। इस प्रकार इनके कुल एक करोड़ पुत्र थे। भगवान् कृष्णने इनके प्रभावका वर्णन किया था (शांति० २९.१०५-११०; २०८.११-१२)। ये प्रातः स्मरणीय नरेश कहे गये हैं (अनु० १६५.५१; वायु० ९५.१७-१८, २०-२१) ये अयोध्यापति मांधाताके श्वसुर तथा मुचकुंदके नाना थे। शशबिन्दुकी पुत्री बिन्दुमतीसे मांधाताका विवाह हुआ था (वायु० ९५.१७-१८; २०-२१)।

शशभृत्–पु० [सं०] चन्द्रमाका एक नाम (कालिकापु०)।

शशयान–पु० [सं०] एक दुर्लभ तीर्थका नाम जहाँ सरस्वतीके जलमें प्रतिवर्ष कार्तिकी पूर्णिमाको शशके रूपमें छिपे पुष्करका दर्शन होता है। वहाँ स्नान करनेसे मनुष्य चन्द्रवत् प्रकाशमान होता है (महाभा० वन० ८२.११४)।

शशलांच्छन–पु० [सं०] चन्द्रमाका एक नाम—दे० चंद्रमा।

शशलोमा–पु० [सं०] एक राजा, जिसने कुरुक्षेत्रके तपोवनमें तपस्या कर स्वर्ग प्राप्त किया था (महाभा० आश्रम० २०.१४)।

शशांकज–पु० [सं०] चंद्रमाके पुत्र बुधका एक नाम।

शशाद–पु० [सं०] राजा इक्ष्वाकु, जिनकी उत्पत्ति छींकते हुए मनुके नाकसे हुई थी, के १०० पुत्रोंमेंसे एक पुत्र जिसका नाम विकुक्षि था। एक दिन अष्टका श्राद्धके लिए पिता (इक्ष्वाकु) ने मेध्य मांस लानेके लिए इन्हें जंगलमें भेजा वहाँ दौड़धूपके कारण भूख लग जानेके कारण इन्होंने श्राद्धार्थ एकत्रित मृगोंमेंसे एक शशको खा लिया, अतः इनका नाम शशाद पड़ा (भाग० ९.६.४, ६-११)।

शशिक–पु० [सं०] एक प्राचीन भारतीय जनपदका नाम (महाभा० भीष्म० ९.४६)।

शशिखंडिक–पु० [सं०] पुराणानुसार एक देशका नाम।

शशिज–पु० [सं०] बुधका एक नाम जो पुराणानुसार देवगुरु बृहस्पतिकी पत्नी ताराके गर्भसे उत्पन्न चंद्रमाके पुत्र हैं। चंद्रमामें कलंकका चिह्न इसी अनुचित सम्बन्धके कारण बृहस्पतिके शापसे है (मत्स्य० २४.३.१०; ९३.१०, १७; ११५.१; १२७.१.३; वायु० ५२.७२; विष्णु० १.८.११; ४.६.३२-३४)।

शशिध्वज–पु० [सं०] (१) सुशांताके पति एक राजाका नाम—दे० सुशांता। (२) पुराणानुसार एक असुरका नाम।

शशिभागा–स्त्री० [सं०] शशबिन्दुकी पुत्री बिन्दुमतीके गर्भसे उत्पन्न मांधाताके पुत्र मुचकुंदकी पुत्रीका नाम (वायु० ९५.१७-१८, २०-२१)।

शशिभाल–पु० [सं०] समुद्रमन्थनसे निकले चन्द्रमाको मस्तकपर धारण करनेके कारण शंकरका एक नाम (भाग०)।

शशी–पु० [सं०] चंद्रमाका एक नाम—दे० चंद्रमा।

शशोलूकमुखी–स्त्री० [सं०] कुमार कार्त्तिकेयकी अनुचरी एक मातृकाका नाम (महाभा० शल्य० ४६.२२)।

शांडिल्य–पु० [सं०] कश्यपवंशी महर्षि देवलके पुत्र जो रघुवंशीय दिलीपके पुरोहित थे। शतानीकके पुत्रेष्टियज्ञमें यह प्रधान ऋत्विक और त्रिशंकुके यज्ञमें होता थे। कुछ पुराणानुसार यह ब्रह्माके सारथि थे। स्मृतिकार शङ्ख और लिखित इन्हींके पुत्र थे। इनका भक्तिसूत्र प्रसिद्ध है जिसमें ३ अध्याय हैं जिन्हें शायद इन्होंने ६ दिनोंमें पूर्ण किया होगा जैसा कि आह्निकोंसे प्रतीत होता है। इन्होंने भगवद्भक्तिकी उपयोगिता और ज्ञानकी अपेक्षा उसकी श्रेष्ठता सिद्ध की है—दे० शांडिल्यसूत्र।

शांडिली–स्त्री० [सं०] दक्षकी पुत्री तथा धर्मकी पत्नी। इनके गर्भसे अनलका जन्म हुआ था अतएव जिसका अग्निकी माता मानकर पूजन करते हैं (महाभा० आदि० ६६.१७-२०)।

शांतनु–पु० [सं०] चन्द्रवंशके इक्कीसवें राजा जो राजा प्रतीपके द्वितीय पुत्र, देवापिके अनुज, वाह्लीकके अग्रज तथा 'भीष्मपितामह'के पिता थे। इनकी माताका नाम सुनन्दा था (महाभा० आदि० ९४.६१)। यह जिस-जिसको अपने हाथसे स्पर्श कर देते थे वह वृद्ध पुरुष भी युवा हो जाता था। इनके स्पर्शसे सम्पूर्ण जीव अत्युत्तम शांति लाभ करते थे। अतः यह शांतनु कहलाये (आदि० ९५.४६)। भीष्म (देवव्रत) शांतनुकी पत्नी गंगाके गर्भसे उत्पन्न हुए थे—दे० भीष्म। शांतनुने वसुराज नामक धीवरकी कन्या सत्यवती (मत्स्यगंधा) से भी विवाह किया था। इसी विवाहके सकुशल सम्पन्न करनेके हेतु देवव्रतने आजन्म ब्रह्मचारी रहनेका कठिन व्रत लिया था और इस भीष्म प्रतिज्ञाके कारण शांतनु देवव्रत सुत भीष्म कहलाये। सत्यवतीका पहला नाम मत्स्यगंधा था पर पराशर मुनिकी कृपासे मछलियोंकी गंध दूर हो गयी और मत्स्यगंधा योजनगंधा हो गयी थी। इस सत्यवतीके गर्भसे चित्रांगद और विचित्रवीर्य नामक शांतनुके दो पुत्र हुए थे—दे० विचित्रवीर्य, पराशर आदि तथा (विष्णु० ४.२०.८-१३)।

शांता–स्त्री० [सं०] अयोध्यापति दशरथकी पुत्री जो महर्षि ऋष्यश्रृंगको ब्याही गयी थी। दशरथके मित्र राजा लोमपादने (अंग देशके राजाने) शांताको दशरथसे पोष्य पुत्रिकाके रूपमें पाया था—दे० लोमपाद तथा (भाग० ९.२३.७; विष्णु० ४.१२.३७-३८)।

शांति–स्त्री० [सं०] (१) कर्दम ऋषिकी कला आदि नौ पुत्रियोंमेंसे सबसे छोटी एक पुत्री जिसका विवाह अथर्वा ऋषिसे हुआ जिसने संसारमें यज्ञोंकी प्रथा चलायी (भाग० ३.२४)। दध्यङ् इन्हींका पुत्र था जिसका शिर घोड़ेका था (भाग० ४.१.४२)।

शांति–पु० [सं०] अजमीढ़की नलिनी नाम्नी भार्यासे नील पुत्र हुआ तथा नीलका पुत्र शांति हुआ जो सुशांतिका पिता था। हर्यश्वके मुद्गल, सृंजय, बृहदिषु, यवीनर, काम्पिल्य नामके पाँच पुत्र हुए जिनका सामूहिक नाम 'पाञ्चाल' था (विष्णु ४.१९.५६-५९)।

शांतिपंचमी–स्त्री० [सं०] आश्विनशुक्ल ५ को इंद्राणीकी पूजा करते हैं। कुशके १२ नाग भी बनाये जाते हैं जिनकी पूजा करनेसे सर्पादिका भय जाता रहता है और 'ॐ कुरु कुल्ल्यं हुँ फट् स्वाहा' मंत्रसे सर्प-दंशका विष शमन होता है (हेमाद्रि)।

शांतिपर्व–पु० [सं०] महाभारतका बारहवाँ पर्व जो सब पर्वोंसे बड़ा है तथा युद्धके पश्चात् चित्तकी शांतिके लिए इसमें अनेक उपदेशप्रद कथाएँ दी हुई हैं (महाभा० शांति०)।

शाकंभरी–स्त्री० [सं०] अपने शरीरसे उत्पन्न हुए शाकोंसे समस्त संसारका भरण-पोषण करनेके कारण पड़ा देवीका एक नाम (शिवपु० उमा-संहिता अध्या० ५०)।

शाक–पु० [सं०] पुराणानुसार शाकद्वीपका एक वृक्ष, जिसके नामपर उस द्वीपका नाम प्रसिद्ध हुआ। शाकद्वीप सात प्रसिद्ध द्वीपोंमेंसे एक है (महाभारत० भीष्म० ११.२८)।

शाकद्वीप–पु० [सं०] पुराणानुसार सात द्वीपोंमेंसे एक जो चारों ओर क्षीर-समुद्रसे घिरा हुआ है और इसमें शाकका बहुत बड़ा पेड़ है। इसमें ऋतुव्रत, सत्यव्रत, दानव्रत और अनुव्रत बसते हैं। यहाँ सुकुमारी या अनुतप्ता आदि नामकी सात नदियाँ हैं (वायु० ४९.९१) तथा (भा०)के अनुसार इनका नाम अनघा, आयुर्दा, उभयस्पृष्टि, अपराजिता आदि है (भाग० ५.२०.२६)।

शाकल–पु० [सं०] पंजाबकी एक प्राचीन नगरी जो मद्र-देशकी राजधानी थी। आधुनिकोंके मतानुसार स्यालकोट ही शाकल है। संभव है टोलमीका सगल (व्यास नदीके तटपर स्थित) या सिकंदरका संगल नगर शायद यही हो।

शाकलद्वीप–पु० [सं०] एक देशका नाम, जहाँके नरेश प्रतिविन्ध्यको अर्जुनने जीता था (महाभा० सभा० २६.६)

शाकल्य–पु० [सं०] एक प्राचीन ऋषिका नाम जो जाङ्गलके पिता थे। इन्होंने ऋग्वेदका पदपाठ पहलेपहल ठीक किया था। स्कंदपुराणानुसार पांड्य नरेश शंकरने व्याघ्रके भ्रमसे पत्नीसहित इनका वध कर डाला था (स्कंदपु० ब्राह्म० सेतु-महात्म्य)।

शाकवक्त्र–पु० [सं०] कुमार कार्तिकेयका एक सैनिक अनुचर (महाभा० शल्य० ४५.७६)।

शाकसप्तमी–स्त्री० [सं०] कार्त्तिकशुक्ला सप्तमीको उपलब्ध शाक-पत्रादिका दान करे और रात्रिमें स्वयं भी यही भोजन करे। इस व्रतको वर्ष भर करनेसे सारी व्याधियाँ दूर होती हैं।

शाकाष्टका–स्त्री० [सं०] फाल्गुनकृष्ण ८, जिस दिन पितरोंके लिए शाक दान करनेका विधान है।

शाकिनी–स्त्री० [सं०] एक देवी, जो दुर्गाके गणोंमें गिनी गयी है (देवी भाग०)।

शाक्त–पु० [सं०] तंत्रोक्त नियमोंसे देवीकी उपासना करने वाला। 'दक्षिणाचार' और 'वामाचार' इसके दो भेद हैं (तंत्रतरंगिणी)।

शाबस्त–पु० [सं०] राजा युवनाश्वका पुत्र जिसने शावस्ती नगरी बसायी थी। इनके पुत्रका नाम वृहदश्व था। (भाग० ९.६.२०-२१)।

शामित्र–पु० [सं०] यज्ञके अन्तर्गत एक कर्मका नाम (महाभा० आदि० १९६.१)।

शारद्वती–स्त्री० [सं०] एक अप्सराका नाम, जिसने अर्जुनके जन्म-समयके महोत्सवमें गान-नृत्य किया था (महाभा० आदि० १२२.६४)।

शारिकाकवच–पु० [सं०] दुर्गाका एक कवच (रुद्रयामलतंत्र)।

शार्ङ्ग–पु० [सं०] विष्णुके धनुषका नाम जिसके कारण विष्णुको शार्ङ्गधन्वा या शार्ङ्गपाणि आदि कहते हैं (भाग० ४.१२.२३ महाभा० सभा २.१४)। कौरव-सभामें विश्वरूप धारण किये हुए भगवान् श्रीकृष्णकी एक भुजामें यह देदीप्यमान था (उद्योग० १३१.१०) लोकपितामह ब्रह्माने इसका निर्माण कर इसे श्री भगवान् विष्णुको अर्पित किया था।

शार्दूलकर्ण–पु० [सं०] महाराज त्रिशंकुका एक पुत्र (भाग०)।

शालकटंकट–पु० [सं०] वामनपुराणानुसार विद्युतकेशिके पुत्रका नाम जिसे सुकेशी राक्षस भी कहते थे। महाभारतके अनुसार इसका दूसरा नाम अलम्बुप था। यह बड़ा योद्धा था। महाभारत-युद्धमें इसने अनेक वीरोंके साथ युद्ध किया अन्तमें घटोत्कचके हाथों मारा गया था (महाभा० द्रोण १०६.२२-३१)।

शालंकायन–पु० [सं०] विश्वमित्रका एक पुत्र (भाग०)।

शालंकायनजा–स्त्री० [सं०] सत्यवती जो शालंकायनकी पुत्री तथा व्यासकी माता थी (भाग०) तथा–दे० सत्यवती, व्यास आदि।

शालग्राम–पु० [सं०] काले और गोल पत्थरकी मूर्त्ति जो गंडकी नदीमें प्राप्त होती है। इसे विष्णुकी मूर्त्ति मानते हैं (विष्णु० मत्स्य०)।

शालग्रामगिरि–पु० [सं०] एक पर्वतका नाम जहाँ शालिग्रामकी मूर्त्तियाँ मिलती हैं (भाग० तथा विष्णु०)।

शालवदन–पु० [सं०] पुराणानुसार कालवदन राक्षसका एक नाम जिसे शृगालवदन भी कहते हैं।

शालवानक–पु० [सं०] विष्णुपुराणानुसार एक देश।

शालाक्ष–पु० [सं०] वैदिक कालके एक ऋषि।

शालावती–स्त्री० [सं०] विश्वामित्र मुनिकी पुत्रीका नाम (हरिवंश)।

शालिक–पु० [सं०] एक दिव्य महर्षि, जो हस्तिनापुर जाते समय मार्गमें श्रीकृष्णसे मिले थे (महाभा० उद्योग० ८३.६४)।

शालिपिंड–पु० [सं०] महाभारतके अनुसार कश्यप ऋषिका कद्रूके गर्भसे उत्पन्न एक काद्रवेय नागका नाम (महाभा० आदि० ३५.१४)।

शालिवाहन–पु० [सं०] एक प्रसिद्ध शक राजा जिसने शकसंवत् चलाया। गजनीके राजा 'गज'का यह पुत्र था जिसे सात नामक गुह्यक उठाकर ले चला करता था अतः यह 'सातवाहन' कहलाया (कथासरितसागर)।

शालिशिरा–पु० [सं०] एक मौनेय देवगन्धर्वका नाम, जो कश्यप और उनकी पत्नी मुनिका पुत्र था (महाभा० आदि० ६५.४४)।

शालिसूर्य–पु० [सं०] शालिहोत्र मुनि द्वारा स्थापित एक तीर्थ जो कुरुक्षेत्रकी सीमाके अन्तर्गत है (महाभा० ११.८३.१०७)।

शालिहोत्र–पु० [सं०] एक मुनि जिनके आश्रममें श्री व्यासजी ठहरे थे। इनके आश्रमके पास एक सरोवर और एक पवित्र वृक्ष था। वह वृक्ष सर्दी, गर्मी और वर्षाका सहन भली भाँति करता था। वहाँ केवल जल पी लेनेसे भूख-

प्यास शान्त हो जाती थी। उस सरोवर और वृक्षका निर्माण श्री शालिहोत्र मुनिने अपनी तपस्यासे किया था। इनके आश्रममें हिडिम्बाके साथ पाण्डव आये थे। पांडवोंकी भूख-प्यास निवृत्ति इन्होंने की थी (महाभा० आदि० १५४.१५ और १८के बाद दाक्षिणात्य पाठ)। ये अश्वविद्याके आचार्य थे एवं अश्वोंकी जाति और गुण-अवगुणके पारखी थे (वन ७१.२७)।

शालूकिनी–स्त्री० [सं०] कुरुक्षेत्रकी सीमाके अन्तर्गत एक तीर्थका नाम। जहाँ दशाश्वमेधतीर्थमें स्नान करनेसे १० अश्वमेध यज्ञोंका फल प्राप्त होता है (महाभा० वन० ८३.१३)।

शाल्मलि–पु० [सं०] सोमवेशी महाराज कुरुके पौत्र तथा अविक्षित्‌के सात पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (महाभा० आदि० ९४.५२-५३)।

शाल्मली–पु० [सं०] (१) पुराणानुसार एक द्वीपका नाम जो क्रौंच द्वीपका दुगना तथा चारो ओर रसके समुद्रसे घिरा है। इसमें शाल्मलीका महान् वृक्ष है जिसके कारण इसका यह नाम पड़ा तथा सात वर्ष, सात पर्वत तथा सात ही प्रधान नदियाँ है जिनमें एकका नाम अनुमति है (भाग० ५.२८.१०)। (२) (भाग० = वज्रकंटकशाल्मली) पुराणानुसार एक नरकका नाम जहाँ शाल्मलीके काँटे चुभाये जाते हैं—दे० नरक तथा (भाग० ५.२६.७)।

शाल्व–पु० [सं०] सौभ नामक विमानके अधिपति एक राजा जो काशीराजकी पुत्रियों अम्बा आदिके स्वयंवरमें भीष्मके साथ युद्धमें मारे गये थे। दमघोषके पुत्र तथा चेदि देशके राजा शिशुपालके यह मित्र थे। जब शिशुपाल श्रीकृष्ण द्वारा मारा गया तब इन्होंने श्रीकृष्णको मारनेके लिए द्वारकापर धावा बोला था, पर स्वयं मारे गये (महाभा० वन० अध्याय १५से २२ तक)।

शाल्वकिनी–स्त्री० [सं०] रामायणानुसार एक नदीका नाम।

शाल्वसेनि–पु० [सं०] महाभारतके अनुसार एक दक्षिण भारतीय देशका नाम (भीष्म० ९.६१)।

शाल्वायन–पु० [सं०] एक प्राचीन राजा, जो जरासन्धके भयसे अपने भाइयों तथा सेवकोंके साथ दक्षिणकी ओर भाग गये थे (महाभा० सभा० १४.२७)

शाल्वेय–पु० [सं०] शाल्वदेश तथा वहाँके निवासी (महाभा० वन० २६४.६; विराट० ३०.२)।

शिंशुमा–स्त्री० [सं०] गान्धारराजकी पुत्री, जिसका नामान्तर सुकेशी था। यह भगवान् श्रीकृष्णकी रानी थी (महाभा० सभा० ३८.२९ के बाद प्रक्षिप्त पाठ)।

शिक्षक–पु० [सं०] कुमार कार्त्तिकेयका एक सैनिक अनुचर (महाभा० शल्य ४५.७६)।

शिखंडिनी–स्त्री० [सं०] (१) द्रुपदराजकी पुत्रीका नाम जो पूर्वजन्ममें काशीराजकी बड़ी पुत्री अंबा थी। यह पुरुषके रूपमें कुरुक्षेत्रके युद्धमें भीष्मसे बदला लेनेके लिए लड़ी थी। पुरुषरूपमें इसका नाम शिखंडी था (महाभा० उद्योग० १८८.४-१४)। (२) महाराज पृथुकी पुत्रवधू जिसके गर्भसे हविर्धान और मारीच दो पुत्र हुए (ब्रह्मां० २.३७.२३; मत्स्य० ४.४५; वायु० ६३.२२; विष्णु० १.१४.१)। (३) दो अप्सराओंका नाम जो कश्यप ऋषिकी पुत्रियाँ थी और ऋग्वेदके एक मंत्रकी द्रष्ट्री भी थीं (आर्षरामायण आदिकाण्ड तथा शुकोक्तिसुधासागर)।

शिखंडी–पु० [सं०] (१) पृषत्-पुत्र तथा पांचालके राजा द्रुपदकी एक पुत्रीका नाम। कहते हैं काशीनरेश इंद्रद्युम्नकी सबसे बड़ी पुत्री अंबाको उसकी दो छोटी बहिनोंके साथ भीष्म पितामह अपने भाई विचित्रवीर्यके लिए हरणकर लाये थे। अंबा राजा शाल्वसे विवाह करना चाहती थी। अतः भीष्मने उसकी इच्छाके अनुकूल उसे वहाँ भेज दिया। पर जब शाल्वने उसे ग्रहण करना अस्वीकार किया तब हताश हो उसने अपने बनवासी नाना महात्मा होत्रवाहनसे सलाह ली। इसके पीछे परशुरामजीने भी भीष्मको ही इससे विवाह करनेके लिए कहा पर भीष्मकी प्रतिज्ञा ही भीष्म थी अतः परशुराम तथा भीष्ममें युद्ध तक हुआ जिसमें भीष्म ही विजयी रहे। अब और कोई उपाय न देख अंबाने भीष्मसे बदला लेनेके हेतु घोर तप करना आरंभ किया। आशुतोष शंकर प्रसन्न हुए तथा वरदान दे बोले ‘इस देहसे यह कार्य (भीष्मको मारना) न हो सकेगा।’ बस अंबाने चिता लगायी और शरीरको जला भस्म कर दिया। यही अंबा समय पाकर द्रुपदके घर शिखंडी नामसे उत्पन्न हुई थी जो पुरुष रूपमें परिणत हो गयी। स्थूणाकर्ण नामक यक्षने इसका अभीष्ट पूर्ण करनेकी इच्छासे इसे पुरुष बना दिया था। कुरुक्षेत्रके युद्धमें अर्जुनने इसे ही आगेकर युद्धके दसवें दिन भीष्मका वध किया था। इसका पहला नाम ‘शिखंडिनी’ था। अश्वत्थामाने इसका वध किया था (महाभा० आदि० ६३.१२५;६७.१२६; भीष्म० ११७.४३;११९.४३-४४)। (२) श्रीरामके दलका एक बंदर (रामायण)

शिखरा–स्त्री० [सं०] एक गदाका नाम जिसे श्रीरामने विश्वामित्रसे प्राप्त किया था (रामायण)।

शिखा–स्त्री० [सं०] चूड़ाकर्णके समय शिरके बीचमें छोड़े हुए बाल = चोटी, हिंदुओंका एक जाति तथा धार्मिक चिह्न विशेष है।

शिखावर्त्त–पु० [सं०] एक यक्षका नाम, जो कुबेरकी सभामें जा उनकी सेवामें संनद्ध रहता है (महाभा० सभा० १०.१७)।

शिखावान्–पु० [सं०] एक ऋषि जो युधिष्ठिरकी सभामें विराजते थे (महाभा० सभा० ४.१४)।

शिखिध्वज–पु० [सं०] (१) मयूरध्वज राजाका नाम, (२) संखासुरका शिखी (मयूर) रूप चिह्नवाला ध्वज (विष्णु० ५.३३.३)। (३) एक प्राचीन तीर्थका नाम (स्कंदपु०)।

शित–पु० [सं०] विश्वामित्रके गोत्रके एक ऋषि—दे० सित।

शितिकंठ–पु० [सं०] (१)एक नाग, जो बलरामजीके परमधामजानेके समय उनके स्वागतमें उनके निकट आया था (महाभा० मौसल० ४.१६)। (२) शिवजीका एक नाम—श्रीकंठः शितिकंठः कपालभृत्—अमरकोष।

शितिकेश–पु० [सं०] स्कंदका एक सैनिक अनुचर (महाभा० शल्य० ४५.६१)

शितिपृष्ठ–पु० [सं०] एक यज्ञमें मैत्रावरुण बननेवाले

एक नागका नाम।

शितीक्षु—पु० [सं०] उशनाका एक पुत्र। (उशनाको एक वैदिक देवता माना गया है)—दे० उशना।

शिनि—पु० [सं०] (१) युधाजित्के दो पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (भाग० ९.२४.१२, १४; ब्रह्मां० ३.७१.२०)। (२) एक यादव वीरका नाम। वसुदेवके लिए देवकीका बलपूर्वक हरण करनेके समय सोमदत्तसे इसका भयंकर युद्ध हुआ था। इसके पुत्रका नाम सत्यक तथा पौत्रका नाम सात्यकि था। यह पांडवोंकी ओरसे महाभारतके युद्धमें लड़ा था (महाभा० द्रोण० १४४.६-१३)। (२) गर्ग ऋषिके पुत्र (ब्रह्मां० २.३२.१०७; मत्स्य० १४५.१०१)।

शिनिबाहु—पु० [सं०] वायुपुराणानुसार एक नदीका नाम।

शिरीषक—पु० [सं०] कश्यप तथा कद्रूसे उत्पन्न एक नागका नाम (महाभा० उद्योग० १०३.१४)।

शिरीषी—पु० [सं०] विश्वामित्र ऋषिके ब्रह्मवादी पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (भाग०)।

शिलंध्रि—पु० [सं०] एक गोत्रप्रवर्त्तक ऋषि।

शिल—पु० [सं०] पारियात्रका एक पुत्र।

शिलाजीत—पु० [सं० शिलाजतु] पुराणानुसार देवासुर-संग्रामके समय जब अमृत निकालनेके लिए देवताओं और राक्षसोंने मन्दराचल पर्वतको मथानी बनाकर समुद्रको मथा तब मथनेकी गर्मीसे पर्वतके भीतरकी सब धातुएँ पिघलकर बहने लगीं। इस स्रवका नाम शिलाजीत या गिरिस्वेद हुआ। पीछेसे देवताओंने ब्रह्मा और इन्द्रकी पूजाके पश्चात् मानव-कल्याणार्थ मन्दराचलका वही पसीना अन्य पर्वतोंको बाँट दिया (भाग०)।

शिलादान—पु० [सं०] एक प्रकारका दान जिसमें पुराणानुसार शालिग्रामकी मूर्त्ति दान कर ब्राह्मणको देते हैं (विष्णु०; भाग०)।

शिलायूप—पु० [सं०] विश्वामित्र ऋषिके ब्रह्मवादी पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (महाभा० अनु० ४.५४)।

शिलावर्षी—पु० [सं०] पुराणानुसार एक पर्वत।

शिलिन—पु० [सं०] वैदिक कालके एक प्राचीन ऋषि।

शिली—पु० [सं०] तक्षक-कुलमें उत्पन्न एक नागका नाम, जो जनमेजयके सर्पसत्रमें होमा गया था (महाभा० आदि० ५७-९)।

शिल्पप्रजापति—पु० [सं०] शिल्पोंके आविष्कर्त्ता विश्वकर्माका नाम (रामायण तथा महाभा०)।

शिव—पु० [सं०] (१) हिन्दुओंके एक प्रसिद्ध देवता जिनपर सृष्टिके संहार करनेका भार है। ब्रह्मा, विष्णु और महेश ये पौराणिक त्रिमूर्त्तिके नामसे प्रसिद्ध हैं और शिव इस त्रिमूर्त्तिके अन्तिम देवता हैं जिनका निवासस्थान कैलाश माना गया है। वैदिक कालके रुद्र ही पौराणिक कालमें शंकर, महादेव आदि नामोंसे प्रसिद्ध हुए। पुराणानुसार इनके सिरपर गंगा, मस्तक (भाल) पर चन्द्रमा तथा तीसरा नेत्र, गलेमें साँप तथा नरमुण्डकी माला, सारे शरीरमें भस्म, व्याघ्रचर्म ओढ़े हुए तथा संगमें पार्वती हैं। इनके पुत्र गणेश तथां कार्त्तिकेय, गण भूत और प्रेत; प्रधान अस्त्र त्रिशूल और वाहन नन्दी नामक बैल है। इनके धनुषाकार त्रिशूलका नाम 'पिनाक' है जिसके कारण इन्हें पिनाकी कहते हैं। इनके पास इनका 'पाशुपत' नामका एक प्रसिद्ध अस्त्र था जिसे अर्जुनने इन्हें तपोबलसे प्रसन्न कर प्राप्त किया था। इनके धनुषका नाम 'अजगव' तथा दण्डका नाम 'खट्वाँग' है। पापियोंके लिए इनके पास एक पाश भी है।

कामदेवको जलाकर इन्होंने भस्म कर दिया था—दे० अनंग। यह दक्षके यज्ञको ध्वंस करनेवाले माने जाते हैं—दे० (दक्ष तथा) शिवपु० रुद्र-सं० सतीखंड, ३२, ३६-३७)। समुद्र मन्थनसे निकले विषका संसारके कल्याणार्थ इन्होंने पान किया था। प्राणघातक होनेके कारण इसे इन्होंने कण्ठमें ही रोक लिया जिससे इनका कण्ठ नीला पड़ गया और यह 'नीलकण्ठ' कहलाये। परशुरामको इन्होंने ही अस्त्र विद्याकी शिक्षा दी थी। संगीत और नृत्यके भी यह प्रधान आचार्य माने जाते हैं। इनका 'शिवतांडव' नृत्य विख्यात है जिससे नृत्यकलाका प्रारम्भ माना गया है। यह नृत्य कलापूर्ण तथा ताल-लय युक्त है। इसीसे संगीतका प्रादुर्भाव हुआ।

इनके नामका शिवपुराण प्रसिद्ध है और इनके उपासक 'शैव' कहलाते हैं। पद्मपुराणादिमें इनके सम्बन्धमें अनेक कथाएँ दी हुई हैं। यह बड़े दयालु तथा शीघ्र ही प्रसन्न हो जानेवाले हैं, अतः इन्हें 'आशुतोष' भी कहते हैं। पौराणिक त्रिमूर्त्तिके 'ब्रह्मा'की पूजा शायद कोई नहीं करता जिसका कारण शिवका ही शाप बतलाया जाता है। शिवकी पूजाके सम्बन्धमें एक कथा है। पद्मपुराणानुसार ऋषियोंका आराध्य देव कौन हो यह निश्चय करनेके लिए सब ऋषि शिवके निकट गये। शिव क्रीड़ामें संलग्न थे अतः ऋषियोंसे भेंट करनेमें देर हुई इससे क्रुद्ध होकर भृगु मुनिने शाप दे दिया जिसके फलस्वरूप शिवकी मूर्त्ति 'योनि-लिंग' रूप हुई और इनका नैवेद्य कोई ग्रहण नहीं करता। शिवके अनेक मन्दिर हैं पर हर स्थानमें इनका यही रूप विद्यमान मिलता है(रुद्र, स्कन्द, शिव, ब्रह्म, ब्रह्मा आदिकी पूजा करनेकी विधिके लिए—दे० शिवपु० रुद्र-संहिता० अध्याय ११-१४। (२) एक कल्पका नाम जो पीतवासा कल्पके पश्चात् आरम्भ हुआ था—दे० शिवकल्प।

शिवकर्णी—कार्त्तिकेयकी अनुचरी एक मातृका (स्कंदपु०)।

शिवकल्प—पीतवासा कल्पके पश्चात् आरम्भ होनेवाला एक कल्प जिसमें प्रजाकी सृष्टि करनेका चिंतासे ध्यानस्थ ब्रह्माके समक्ष एक महापराक्रमी कुमार उत्पन्न हुआ जिसका रंग काला था और वह काले रंगका ही वस्त्र यज्ञोपवीत धारण किये था। उसका मुकुट तथा अनुलेपन भी काला ही था। ब्रह्माने इस अलौकिक कृष्णपिंगल वर्णवाले अघोरकी स्तुति की तब पार्श्वभागसे चार काले रंगवाले कुमार उत्पन्न हुए जो शिवकेसे ही रूपवाले थे और जिनके नाम ये थे=कृष्ण, कृष्णशिख, कृष्णास्य और कृष्णकंठधृक्। यह शिवका 'अघोर' नामक चौथा अवतार था जब 'घोर' नामक योगका प्रचार हुआ था (शिवपु० शतरुद्र-संहिता, अध्याय १)।

शिवकांची—स्त्री० [सं०] दक्षिण भारतके शैवोंका एक प्रधान तीर्थस्थान जो कृष्णा और पोलर नदीके बीच स्थित है तथा सप्तपुरियोंमेंसे एक है (भाग०, ब्रह्मां० आदि)।

शिवगुरु–पु० [सं०] विद्याधिराजके पुत्र तथा शंकराचार्यके पिताका नाम (प्रबोधसुधाकर, द्विधाभक्तिप्रकरण तथा शंकराचार्य)।

शिवचतुर्दशीव्रत–पु० [सं०] इसके लिए मार्गशीर्ष १३ को एक मुक्त व्रत कर १४ को निराहार व्रत तथा शिवपूजन करे। इसे हर महीनेकी दोनों पक्षोंकी १४ को करे और मास भेदसे पुष्प अर्पण करे आदि (मत्स्य०)।

शिवतीर्थ–पु० [सं०] शंकरका प्रधान तीर्थस्थान काशीका एक नाम।

शिवदूतिका–स्त्री० [सं०] स्कंदकी एक अनुचरी मातृकाका नाम (स्कंदपु०)।

शिवनाभि–पु० [सं०] एक सर्वश्रेष्ठ शिवलिंगका नाम।

शिवपुराण–पु० [सं०] अठारह महापुराणोंमेंसे चौथा जो शिव प्रोक्त माना जाता है और जिसमें शिवका माहात्म्य वर्णित है। इस पुराणमें विद्येश्वर-संहिता; रुद्र-सं० विनायक-सं० उमा-सं० मातृ-सं० एकादशरुद्र-सं० कैलाश-सं०; कोटिरुद्र-सं०; वायवीय-सं०; धर्म-सं०—ये बारह संहिताएँ हैं। और मूल शिवपुराणमें १ लाख श्लोक हैं पर व्यासजीने २४००० श्लोक कर दिये हैं। कहते हैं कि शैव धर्मका प्रचार करनेके लिए शिवजीने इसकी रचना की थी जिसमें वेदान्त विज्ञानमय, प्रधान तथा निष्कपट काम (निष्काम) धर्मका प्रतिपादन किया गया है (स्कंदपु०, नारदपु० तथा शिवपु० विद्येश्वर-संहिता अध्याय २)।

शिवपूजा–स्त्री० [सं०] ज्येष्ठ कृष्ण या शुक्ल पक्षकी अष्टमी को शिवका और केवल शुक्लाष्टमीको शुक्लादेवीका यथाविधि पूजन करे। दानवोंका संहार करनेके उपलक्ष्यमें देवताओंने शुक्लादेवीकी पूजा की थी। आपत्तियोंके निवारणार्थ यह व्रत किया जाता है (भविष्योत्तर पु०)।

शिवरात्रि–स्त्री० [सं०] फाल्गुन कृष्णा चतुर्दशीको मनाया जानेवाला शैवोंका एक पर्व। 'चतुर्दश्यां तु कृष्णायां फाल्गुने शिवपूजनम्। तामुपोष्य प्रयत्नेन विषयान् परिवर्जयेत् ॥—(शिवरहस्य) प्रतिवर्ष करनेसे यह 'नित्य' और कामनापूर्वक करनेसे 'काम्य' होता है (मदनरत्न)। इस दिन शिवकी पूजा करते हैं और उनके उद्देश्यसे व्रत भी करते हैं, क्योंकि १४ तिथिके स्वामी शिव हैं, अतः इसका शिवरात्रि नाम सार्थक भी है। यदि यह तिथि त्रिस्पृशा (सूर्योदय, प्रदोष और निशीथ व्यापिनी) हो तो अत्युत्तम यदि मंगलवार हो तो शिवयोग होता है (वायु० तथा स्कंदपु०)। कहते हैं इस दिन शिवजीका पार्वतीसे विवाह हुआ था, 'शिवरात्रिव्रतं नाम सर्वपापप्रणाशनम्। आचाण्डालमनुष्याणां भुक्तिमुक्तिप्रदायकम् ॥' के अनुसार इसे चारों वर्ण अछूत, स्त्री-पुरुष, बाल-युवा-वृद्ध सब कर सकते हैं, इसीलिए इसे परम पवित्र मानते हैं। स्कंदपुराणानुसार इस दिन पूजन, जागरण और व्रत करनेवालोंका पुनर्जन्म नहीं होता। तांत्रिक लोग भी इसे विशेष महत्त्व देते हैं। यह व्रत कठिन इतना है कि वेदपाठी ही कर पाते हैं और सरल इतना है कि गरीबसे गरीब भी कर ले। शिवको सबकी पूजा ग्राह्य है। ईशानसंहिताके अनुसार ज्योतिर्लिंगका प्रादुर्भाव फाल्गुन कृष्ण १४ को निशीथमें हुआ था 'शिवलिंगतयोद्भूतः कोटिसूर्यसमप्रभः'—अतः इसे महाशिवरात्रि कहते हैं।

भारतवर्ष अपने धार्मिक विचारों तथा संस्कृतिके लिए प्रसिद्ध रहा है। सृष्टिके आरम्भमें ब्रह्माने रुद्ररूपी शिवको उत्पन्न किया था और रुद्रके अवतीर्ण होनेका दिन और तिथि यही फाल्गुन बदी चतुर्दशी बतलायी जाती है। गत प्रलयके पश्चात् सारे पदार्थ विनष्ट हो गये थे। हर जगह शून्य ही शून्य था। कहते हैं फाल्गुन कृष्ण १४ को ही शंकरने ताण्डव नृत्य किया था तथा अपने डमरूके निनादसे सारे वायुमण्डलमें ज्ञान-विज्ञानको सूक्ष्मसूत्ररूपेण व्याप्त कर दिया था। तभीसे महाशिवरात्रिका माहात्म्य आजतक सुरक्षित चला आ रहा है। प्रत्येक आस्तिक हिन्दू चाहे वह सौर, गाणपत्य, शैव, वैष्णव या शाक्त ही क्यों न हो, श्रद्धासे अपनी सामर्थ्यके अनुसार शिवकी आराधना करता है। निराहार व्रत और रात्रि-जागरण ही इस पर्वके प्रधान अंग हैं। सामवेदीय तथा ऋग्वेदीय पद्धतिसे स्वस्तिवाचन और पूजन करनेके बाद चार बार प्रत्येक प्रहरमें शिवपूजनका विधान है। प्रथम प्रहरमें दुग्धसे शिवकी ईशान मूर्त्तिको, द्वितीय प्रहरमें अघोर मूर्त्तिको दधिसे, शिवकी वामदेव मूर्त्तिको तृतीय प्रहरमें घृतसे और चतुर्थ प्रहरमें सद्योजात मूर्त्तिको मधुसे स्नान करा पूजन करना चाहिये। दूसरे दिन अमावस्याको व्रत-कथा सुनकर पारण करना चाहिये। 'शिवरात्रिमें जागरण करके शिवतत्त्वोंकी समाराधना करना ही इस पर्वका उद्देश्य है। स्कंदपुराणानुसार जो मनुष्य इस तिथिको व्रत कर जागरण करता है और विधिवत् शिवकी पूजा करता है उसे फिर कभी अपनी माताका दूध नहीं पीना पड़ता; वह मुक्त हो जाता है। पार्वतीके पूछनेपर शंकरने भी इसी तिथिका नाम लिया और कहा कि इस पर्वको विधिवत् माननेवाला निश्चय ही मुझे सन्तुष्ट करता है। श्रद्धासे बिल्वपत्र मात्र चढ़ा देनेसे मेरी तुष्टि हो जाती है। शिवपुराणमें इस पर्वकी विशेष व्याख्या दी है (मत्स्य० ९५.५-३८)।

शिवशयनव्रत–पु० [सं०] आषाढ़ी पूर्णिमाको शिवजी सिंहचर्मपर शयन करते हैं, अतः पूर्वविद्धा पूर्णिमामें शिवपूजन करके रुद्रव्रत करनेसे शिवलोक मिलता है (हिमाद्रि; वामनपु०)।

शिवा–स्त्री० [सं०] (१) पार्वतीका एक नाम। (२) अनिल नामक वसुकी पत्नीका नाम जिनके मनोजव और अविज्ञातगति दो पुत्र थे (ब्रह्मां० २.१०.८०; ३.३.२१; मत्स्य० ५.२१; २०३.३; वायु० ६६.२०, २५; विष्णु० १.१५. ११०-११४)।

शिवाकु–पु० [सं०] एक प्राचीन गोत्रप्रवर्त्तक ऋषिका नाम।

शिवाचतुर्थी–स्त्री० [सं०] भाद्रपद शुक्लाचतुर्थीको होनेवाला एक पर्व। शिवा, शांता तथा सुखा—ये ३ चतुर्थी प्रसिद्ध हैं। इनमें स्नान, दान, जप और उपवास करनेसे सौगुना फल होता है। माघशु० ४=शांता और भौमयुक्त सुखा होती है (भविष्यपु०)।

शिवि–पु० [सं०] दृषद्वतीके गर्भसे उत्पन्न राजा उशीनरका पुत्र जो राजा ययातिका दौहित्र था। यह अपनी दयालुता और दानशीलताके लिए प्रसिद्ध है। अग्निने कबूतर और

इन्द्रने बाज पक्षीका रूप धर इनकी ही परीक्षा ली थी। बाजको सन्तुष्ट करनेके लिए तथा शरणागत कबूतरकी रक्षाके निमित्त इन्होंने अपना सारा शरीर ही अर्पण कर दिया था तब बाजरूपी इन्द्र प्रसन्न हो गये और इन्हें मोक्ष मिला। पृपदर्भ, सुवीर, केकय तथा मद्रक इनके चार पुत्र थे—दे० उशीनर तथा (ब्रह्मपु० ययातिवंश-वर्णन; विष्णु० ४.१८.१०)।

शिवोद्भेद–पु० [सं०] एक प्राचीन तीर्थस्थानका नाम, जहाँ सरस्वती नदीका दर्शन होता है, उसमें स्नानकर मनुष्यको सहस्र गोदानका फल प्राप्त होता है (महाभा० वन० ८२. ११२-११३)।

शिशिर–पु० [सं०] सोम नामक वसु द्वारा मनोहराके गर्भसे उत्पन्न चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (महाभा० आदि० ६६.२२)।

शिशिराक्ष–पु० [सं०] पुराणोक्त एक पर्वत जो सुमेरुके पश्चिममें है।

शिशुकृच्छ्र–पु० [सं०] एक चांद्रायण व्रत जिसे शिशुचांद्रायण या स्वल्प चांद्रायण भी कहते हैं। इसमें केवल चार ग्रास सवेरे और चार ही ग्रास सन्ध्याको भोजन करते हैं। यह तीन दिनोंमें पूर्ण होता है—दे० मनुस्मृति।

शिशुचांद्रायण–पु० [सं०] एक व्रत—दे० शिशुकृच्छ्र; तथा (मनुस्मृति)।

शिशुनाग–पु० [सं०] (१) भागवतके अनुसार एक राजाका नाम, जो काकवर्णका पिता था। यह सिशुनागवंशीय राज्यका प्रतिष्ठापक था इस वंशके शिशुनाग आदि १० राजाओंने ३६० वर्ष तक राज्य किया (भाग० १२-१-४-६)। (२) एक राक्षसका नाम (भाग०)।

शिशुपाल–पु० [सं०] महाभारतके अनुसार चेदि देशका एक प्रसिद्ध राजा जो दमघोषका पुत्र तथा श्रीकृष्णका मौसेरा भाई था (महाभा० आदि० ६७.५; १८५.२३)। इसके तीन नेत्र और चार हाथ थे और यह जनमते ही गदहेकी तरह रेंकने लगा था। इसके रूपसे डरकर मातापिताने इसे त्यागना चाहा, पर आकाशवाणी हुई कि इसे पालो। अतः इसका नाम शिशुपाल रखा गया। यह भी आकाशवाणीमें स्पष्ट किया गया था कि जिसकी गोदमें जानेसे इसकी एक (तीसरी) आँख और दो भुजाएँ विलीन हो जायँगी उसके हाथ इसकी मृत्यु होगी। श्रीकृष्णकी गोदमें जानेपर उसकी एक आँख दो भुजाएँ विलीन हो गयीं। अतः शिशुपालकी माता वसुदेवकी बहिन श्रुतदेवा या सुप्रभाको मालूम हुआ था कि श्रीकृष्णके हाथसे उसके पुत्रकी मृत्यु होगी। इससे उसने शिशुपालके सब अपराध क्षमा करनेके लिए श्रीकृष्णसे अनुरोध किया था पर श्रीकृष्णने केवल १०० अपराध क्षमा करनेका वचन दिया था। युधिष्ठिरके राजसूय यज्ञके समय भीष्मकी आज्ञासे जब यज्ञका अर्घ्य श्रीकृष्णको देना तय हुआ तब शिशुपाल बहुत बिगड़ा और सबके समक्ष ही श्रीकृष्णकी निन्दा कर गालियाँ देने लगा। श्रीकृष्ण चुपचाप गालियाँ सुनते जाते थे, पर कुवाच्य गिनते जाते थे और अपनी प्रतिज्ञानुसार १०० गालियोंतक तो शांत रहे पर १०१ होते ही उन्होंने चक्रसे उसका शिर काट डाला (महाभा० सभा० ३८.१-२९; अध्याय ४३ पूरा)। विष्णु पुराणानुसार पूर्वजन्ममें यह दैत्यराज हिरण्यकशिपु था। विष्णुका विरोधी होनेके कारण भगवान्ने नृसिंहावतार ले इसका वध किया था। तत्पश्चात् अभिलाषाएँ अतृप्त रहनेके कारण यह लंकापति रावण हुआ। इस बार भी विष्णुने ही इसकी गति की और यह श्री रामके हाथों मरा। तीसरी बार यह शिशुपालके रूपमें पुनः प्रकट हुआ और विष्णुके ही हाथों कृष्णावतारमें मारा गया (द्रोण० १८१.२१-२२)।

शिशुपालबध–पु० [सं०] माघ कविकृत एक महाकाव्यका नाम।

शिशुमारमुखी–स्त्री० [सं०] कुमार कार्त्तिकेयकी अनुचरी एक मातृका (महाभा० शल्य० ४६.२२)।

शिशुरोमा–पु० [सं०] तक्षक-कुलमें उत्पन्न एक नागका नाम, जो जनमेजयके सर्पसत्रमें अग्निमें होमा गया था (महाभा० आदि० ५७.१०)।

शीघ्र–पु० [सं०] सूर्यवंशोत्पन्न अग्निवर्णका पुत्र तथा मरुका पिता (भाग० ०.१२.५)।

शीघ्रराज–पु० [सं०] मरुका पिता तथा प्रश्रुतका दादा —दे० (मरु)।

शीघ्रा–स्त्री० [सं०] भारतवर्षकी एक नदीका नाम (महाभा० भीष्म० ९.२९)।

शीतकृच्छ्रव्रत–पु० [सं०] एक व्रत विशेष जिसमें ३ दिन ६ पल ठण्डा जल, ३ दिन ठण्डा दूध तथा ३ दिन ठण्डा घी पीनेसे व्रत पूर्ण होता है (मनु, याज्ञवल्क्य)। 'त्र्यहं शीतं पिबेत्तोयं त्र्यहं शीतं पयः पिबेत्। त्र्यहं शीतं घृतं पीत्वा वायुभक्षः परं त्र्यहम् ॥'—(यम)।

शीतभानु–पु० [सं०] चंद्रमाका एक नाम (ब्रह्मां० २. १०.८३)।

शीतमरीचि–पु० [सं०] चंद्रमाका एक नाम—दे० चंद्रमा तथा (स्कंदपु०)।

शीतलाषष्ठी–स्त्री० [सं०] माघ शुक्ला षष्ठी जिस दिन शीतलादेवीका पूजन करते हैं तथा अष्टमीको बासी खाते हैं।

शीतलाष्टमी–स्त्री० [सं०] चैत्रकृष्णाष्टमी जिस दिन शीतलादेवीकी पूजा होती है। स्कंदपुराणानुसार चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ और आषाढ़ इन चार मासोंकी कृष्णाष्टमीको शीतलाजीकी पूजा होती है जिसमें पूर्वविद्धा अष्टमी ली जाती है। ठण्डा और बासी भोजन करते हैं। ये दिन शीतला निकलनेके होते हैं, अतः ठंडा भोजन शरीरकी गर्मीको शांत रखता है, इसे 'बसिऔरा' भी कहते हैं। 'शीतला दिगम्बरा है, गर्दभपर आरूढ़ रहती है। शूप, मार्जनी (झाड़ू) और नीमके पत्तोंसे अलंकृत' कही गयी है। शीतलाके रोगीको कैसे रहना चाहिये, इसका इसीमें संकेत है। रोगी कपड़ोंको त्याग देता है (अतः दिगम्बरा), गर्दभपिण्डी' से फोड़ोंका दाह कम होता है (अतः गर्दभवाहिनी); झाड़ू लगने तथा फटकनेसे फोड़े बढ़ जाते हैं; नीमसे फोड़े सड़ते नहीं हैं)। हाथोंके कलशसे यह तात्पर्य है कि रोगी ठण्डा जल चाहता है (स्कंदपु०)।

शीतलासप्तमी–स्त्री० [सं०] इसे श्रावणकृष्णा ७ को मनाते हैं और मध्याह्नव्यापिनी तिथि ली जाती है। पूजाविधि

तथा स्तोत्र-पाठादि चैत्रकृष्णाष्टमीके समान ही हैं (हेमाद्रि, भविष्यपु०)।

शीतोदक–पु० [सं०] एक नरकका नाम।

शीर्णपाद–पु० [सं०] यमराजका एक नाम। पुराणानुसार माताके शापसे यमराजके पैर क्षीण हो गये थे। विमाता छायाके व्यवहारसे दुःखी हो यमराजने उन्हें लात मारी, अतः छायाने शाप दे इन्हें पंगु कर दिया (ब्रह्मां० ३.५९. ३२-७७; ४.४७; भाग० ६.६.४१)।

शीला–स्त्री० [सं०] कौंडिन्य मुनिकी पत्नी—दे० कौंडिन्य तथा (स्कंदपु०)।

शुंभ–पु० [सं०] गवेष्ठीका पुत्र, विरोचनका पौत्र तथा प्रह्लादका प्रपौत्र एक राक्षस। निशुंभ इसका भाई था (वायु० ६७.७७)। शुंभ दुर्गादेवी द्वारा मारा गया था (वामनपु०)।

शुंभपुरी–स्त्री० [सं०] शुम्भ राक्षसकी पुरी। मध्यप्रदेशांतर्गत आधुनिक संभलपुरी है (वामनपु०)।

शुक–पु० [सं०] लंकापति रावणका एक दूत (वाल्मी० रामा० लंका० २०.८)।

शुकदेव–पु० [सं०] कृष्णद्वैपायन व्यासके पुत्रका नाम जो पुराणोंके बड़े ज्ञाता माने जाते हैं। इनका उपनयन संस्कार स्वयं महादेवजीने किया था और देवराज इन्द्रने उन्हें कमण्डलु तथा आसन दिया। इन्होंने राजा परीक्षितको मृत्युके पहले मोक्षधर्म दिया था जो इन्होंने अपने पिता और महाराज जनकसे सीखा था। कहते हैं यही भागवतपुराण है। विरजा क्षेत्रके पितरोंकी पुत्री पीवरीसे शुकदेवका विवाह हुआ था (ब्रह्मां० ३.१०.७५-८०)।

शुकवाह–पु० [सं०] शुक (तोता) वाहन होनेके कारण कामदेवका एक नाम (अंगज, भाग०)।

शुकी–स्त्री० [सं०] कश्यप ऋषिकी पत्नी ताम्राकी पुत्रीका नाम (स्कंद तथा भाग०)।

शुक्तिमान्–पु० [सं०] सात कुलपर्वतोंमेंसे एक। सात कुल पर्वत हैं—१. महेन्द्र, २. मलय, ३. सह्य, ४. शुक्तिमान्, ५. ऋक्षपर्वत, ६. विन्ध्य और ७. पारियात्र (वायु० ४५. ८८)।

शुक्र–पु० [सं०] (१) एक अति ही चमकदार बड़ा तारा जो पुराणानुसार भृगुके पुत्र कवि तथा कविके पुत्र यही शुक्राचार्य थे जो दैत्योंके गुरु माने जाते हैं। वामनावतारके समय दैत्यराज बलिके कमण्डलुकी टोंटीमें यह बैठ गये थे जिससे बलि सारी पृथ्वी न दान कर सकें। सींक गोदनेपर इनकी एक आँख फूट गयी थी—दे० शुक्राचार्य। (२) ज्येष्ठ मास जो कुबेरका भण्डारी माना गया है—दे० कुबेर।

शुक्रतीर्थ–पु० [सं०] गोदावरी तटपरका एक स्थान विशेष जहाँ महेश्वरकी आराधना कर भृगु-सुत शुक्रने उनसे (शिवसे) मृतसंजीवनी विद्या पायी थी। यह गोदावरीके उत्तर तटपर है (ब्रह्मपु०)।

शुक्रलोक–पु० [सं०] बुधलोकसे ऊपर शुक्रलोक है जहाँ दानवों तथा दैत्योंके गुरु शुक्राचार्य निवास करते हैं। भगवान् शंकरकी कृपासे शुक्रको मृतसंजीवनी विद्या प्राप्त हुई थी (स्कंदपु० काशी-खण्ड पूर्वार्ध)।

शुक्रवारव्रत–पु० [सं०] शुक्रवारको ज्येष्ठाके योगमें शुक्रकी सुवर्ण मूर्ति चाँदी या काँसेके पात्रमें स्थापित कर पूजन करे तथा नक्तव्रत करे। यों ७ शुक्रवार व्रतोंको करे तो शुक्रजनित अनिष्ट मिटता है तथा व्रती सुखी होता है (भविष्योत्तरपु०)।

शुक्राचार्य–पु० [सं०] एक प्रसिद्ध ऋषिका नाम जो पुराणानुसार दैत्योंके गुरु और भृगुऋषिके पुत्र थे। कहीं-कहीं इन्हें भृगुका पौत्र भी कहा गया है। तदनुसार ये भृगुपौत्र तथा कविके पुत्र थे। ये ही ग्रह होकर तीनों लोकोंके जीवनकी रक्षाके लिए वृष्टि, अनावृष्टि, भय तथा अभय उत्पन्न करते हैं। ब्रह्माजीकी प्रेरणासे सब लोकोंका चक्कर लगाते रहते हैं। महाबुद्धिमान् शुक्र ही योगके आचार्य तथा दैत्योंके गुरु हुए। दैत्यराज बलि जब वामन भगवान्को पृथ्वी दान करने लगे थे तब उन्हें दान करनेसे रोकनेकी इच्छासे यह उस जलपात्रकी टोंटीमें जा बैठे जिसमें संकल्प करनेका जल था। इनके कारण जल रुक गया और तब उस समय सींकसे गोदनेके कारण इनकी एक आँख फूट गयी थी। इनकी पत्नीका नाम शुषमा या शतपर्वा लिखा है। देवयानी इनकी पुत्री त्वष्टा, वरुत्री, तथा पण्ड और मर्क इनके चार पुत्र थे। इनको संजीवनी विद्या मालूम थी जिसके प्रभावसे यह मरे दैत्योंको भी पुनः जीवित कर देते थे, अतः देवासुर-संग्राममें इनके शिष्य दैत्योंने देवताओंका नाकोदम कर दिया था। इसपर ही देवगुरु बृहस्पतिके पुत्र 'कच'ने इनसे संजीवनी विद्या सीखी थी जो इनकी पुत्री देवयानीके शापके कारण निष्फल हो गयी थी और तब कचने औरोंको यह विद्या सिखायी —दे० देवयानी, कच तथा (भाग० ७.५.१; ब्रह्मपु० शुक्रतीर्थमाहात्म्य०)।

हरिवंशानुसार इन्होंने शिवसे असुरोंकी रक्षाका उपाय पूछा था और उनके आदेशानुसार (एक हजार) १,००० वर्षतक धूम्रपान कर तपस्या करते रहे। इनकी अनुपस्थितिमें देवताओंने बहुतसे असुरोंका वध कर डाला और विष्णुने इनकी मातातकको मार दिया। इससे रुष्ट हो शुक्रके पिता भृगुने विष्णुको ७ बार जन्म-ग्रहण करनेका शाप दिया और अपनी पत्नी शुक्रमाताको पुनः जीवित कर लिया था। देवगण इनकी तपस्यासे बड़े घबड़ाये और इन्द्रने इन्हें तप-भ्रष्ट करने हेतु अपनी पुत्री जयन्तीको इनकी सेवामें भेजा। शुक्राचार्यने तपस्या पूर्ण कर जयन्तीसे विवाह कर लिया था (हरिवंशपु०)।

शुक्लतीर्थ–पु० [सं०] विष्णुतीर्थका एक नाम जो नर्मदाक्षेत्रमें स्थित है। यह अति प्राचीन तीर्थ है, जहाँ स्नानमात्रसे ब्रह्महत्याका पाप नष्ट हो जाता है। इसीके निकट नर्मदाके उत्तर तटपर भृगु मुनिका आश्रम है (स्कंदपु० माहेश्वर० कुमारिका-खण्ड)।

शुक्लोदन–पु० [सं०] महाराज शुद्धोदनके भाई—दे० ललितविस्तर।

शुचि–पु० [सं०] (१) अंधकका एक पुत्र (भाग०)। (२) एक राजाका नाम जो यमकी सभामें रहकर यमकी उपासना करते थे (महाभा० सभा० ८.१४)। (३) व्यापारी दलका स्वामी, जिसकी वनमें दमयन्तीसे (नलपत्नीसे) भेंट

हुई थी (वन० ६४.१२७-१३१)। (४) एक अग्निका नाम, जिसमें वायु संचारवश अग्नियोंका परस्पर सम्पर्क हो जानेसे अष्टाकपाल पुरोडाशकी आहुति देनेका विधान है (वन० २२१.२४)। (५) विश्वामित्रके ब्रह्मवादी पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (अनु० ४-५४)। (६) महर्षि भृगुके एक पुत्रका नाम (अनु० ८५.१२८)।

शुचि—स्त्री० [सं०] ताम्राके गर्भसे उत्पन्न पुराणानुसार कश्यप ऋषिकी एक पुत्रीका नाम—दे० ताम्रा तथा (वायु० ६६.५४)।

शुचिका—स्त्री० [सं०] एक अप्सराका नाम, जिसने अर्जुनके जन्म-समयके महोत्सवमें नृत्य किया था (महाभा० आदि० १२२.६२)।

शुचिवाचक—पु० [सं०] पुराणनुसार एक पर्वतका नाम।

शुचिव्रत—पु० [सं०] एक प्राचीन राजाका नाम (महाभा० आदि० १.२३६)।

शुचिश्रवा—पु० [सं०] भगवान् श्रीकृष्णका नाम (महाभा० शांति० ३४२.९१)।

शुचिस्मिता—स्त्री० [सं०] एक अप्सराका नाम, जो कुवेरकी सभामें रहकर उनकी सेवामें संलग्न रहती है (महाभा० सभा० १०.१०)।

शुद्धपुरी—स्त्री० [सं०] दक्षिण भारतका एक प्राचीन तथा पवित्र तीर्थ।

शुद्धोदन—पु० [सं०] भगवान् गौतम बुद्धके पिता एक शाक्य राजा जिनकी राजधानी कपिलवस्तुमें थी।

शुनःशेप—पु० [सं०] रामायणके अनुसार महर्षि ऋचीक (अजीगर्त)के पुत्र एक प्रसिद्ध ऋषि जो महाराज हरिश्चन्द्रके यज्ञमें यज्ञ-पशुरूपमें वलि देनेके लिए लाये गये थे। इन्होंने विश्वामित्रजीकी बतलायी अग्निकी स्तुति की जिससे अग्निदेव इतने प्रसन्न हुए कि आगसे इनका वाल भी बाँका नहीं हुआ और यह अग्निकुण्डसे वाहर निकल आये। इसके पश्चात् यह विश्वामित्रके यहाँ रहने लगे जहाँ इनका नाम देवरात रख दिया गया था।

ऐतरेय ब्राह्मणमें यही कथा कुछ दूसरी तरहसे है:—राजा हरिश्चन्द्र निःसन्तान थे। उन्होंने प्रथम पुत्र वरुणदेवको अर्पण करनेका प्रण किया। सौभाग्यसे एक पुत्र हुआ जिसका नाम रोहित रखा गया। कुछ दिनोंतक वलि प्रदानकी वात टलती गयी और अन्तमें रोहितने अपनेको वलि देना अस्वीकार किया और जंगलमें भाग गया। जंगलमें अजीगर्त्त ऋषिके दूसरे पुत्र शुनःशेपको रोहितने ऋषिसे खरीद लिया। वरुणदेवने भी रोहितके वदले शुनःशेपकी वलि स्वीकार की। ठीक समयपर शुनःशेप भिन-भिन्न देव-देवियोंकी स्तुतिका पाठ करने लगा जिससे प्रसन्न हो देवताओंने शुनःशेपकी प्राण रक्षा की। इसके पश्चात यह विश्वामित्र ऋषिके साथ रहने लगा। महाभारत और पुराणोंमें यही कथा दी है पर सब एक दूसरेसे कुछ न कुछ भिन्न है—दे० अजीगर्त्त; (भाग० ९.७.२०-२१; ९.१६.३२)।

शुनःसख—पु० [सं०] संन्यासीके वेशमें कुत्तोंके साथ विचरनेवाले एक प्राचीन ऋषि। इन्द्र ही इस रूपमें रहते थे (महाभा० अनु० ९३.५९)।

शुनःकर्ण—पु० [सं०] एक प्राचीन ऋषिका नाम।

शुनक—पु० [सं०] एक गोत्र प्रवर्त्तक ऋषि जो रुरुके पुत्र थे। इनका जन्म प्रमद्वराके गर्भसे हुआ था। ये वेदोंके महान् विद्वान् तथा धर्मात्मा थे। इन्हें शौनक पितामह कहा जाता था (महाभा० आदि० ५.१०)। ये युधिष्ठिरकी सभामें भी विराजते थे (सभा० ४.१०)।

शुनहोत्र—पु० [सं०] भरद्वाज ऋषिके पुत्रका नाम जो ऋग्वेदके कई मन्त्रोंके द्रष्टा थे (ऋग्वेद तथा भाग०)।

शुनोलांगूल—पु० [सं०] शुनःशेपके छोटे भाईका नाम जिनका उल्लेख देवीभागवतमें मिलता है।

शुभकूट—पु० [सं०] लंकाका एक प्रसिद्ध पर्वत जिसपर वने चरण चिह्न ईसाइयोंके अनुसार आदमके हैं और बौद्धोंके अनुसार बुद्धके।

शुभदन्ता—स्त्री० [सं०] पुष्पदन्त हाथीकी पत्नीका नाम (मत्स्य०)।

शुभवक्त्रा—स्त्री० [सं०] कुमार कार्त्तिकेयकी अनुचरी एक मातृका (महाभा० शल्य० ४६.७)।

शुभसूचनी—स्त्री० [सं०] एक देवीका नाम जिनकी पूजा विशेषकर स्त्रियाँ ही करती हैं। किसी अच्छे कामके होनेमें इनकी मन्नत मानी गयी है और काम पूर्ण होनेपर पूजा करते हैं।

शुभस्रवा—स्त्री० [सं०] पुराणानुसार एक नदीका नाम।

शुभांगद—पु० [सं०] एक राजाका नाम, जो द्रौपदीके स्वयंवरमें पधारे थे (महाभा० आदि० १८५.२२)।

शुभांगी—(१) कुवेरकी पत्नीका नाम (ब्रह्मां० ३.७.२५४; ३३१.८.४४)। (२) कामदेवकी पत्नी रतिका एक नाम (मत्स्य० ७.२३; २३.३०; १५४.२७२; २९१.३२; वायु० १०४.४८)। (३) एक दशार्हकुलकी कन्या, जो सोमवंशी राजा कुरुकी पत्नी थी। इनके गर्भसे विदुर नामका पुत्र उत्पन्न हुआ था (महाभा० आदि० ९५.३०)।

शुभाचल—पु० [सं०] पुराणोक्त एक कल्पित पर्वतका नाम।

शुभाचारा—स्त्री० [सं०] पुराणानुसार पार्वतीजीकी एक सखी।

शुभ्रदंती—स्त्री० [सं०] पुराणानुसार पुष्पदन्त नामक दिग्गजकी हथनीका नाम जिसे शुभदन्ता भी कहते हैं (ब्रह्मां०; वायु० मत्स्य०; दिग्गज)।

शुषेण—पु० [सं०]—दे० सुषेण।

शुष्कक्षेत्र—पु० [सं०] वितस्ता नदीके किनारेका एक पर्वत।

शुष्करेवती—स्त्री० [सं०] एक मातृकाका नाम (देवीभागवत)।

शुष्मा—स्त्री० [सं०] भृगुसुत शुक्राचार्यकी पत्नीका एक नाम जिन्हें शतपर्वा भी कहते थे (स्कंदपु०, भाग०)।

शूकर—पु० [सं०] (१) भगवान्का तीसरा अवतार = वराह अवतारका नाम (वराहपु०)। (२) एक देशका नाम, जहाँके राजा कृतिने युधिष्ठिरके राजसूययज्ञमें सैकड़ों श्रेष्ठ हाथियोंकी भेंट समर्पित की थी (महाभा० सभा० ५३.२५)।

शूकरक्षेत्र—पु० [सं०] नैमिषारण्यके पासका एक तीर्थस्थान जिसे आजकल सोरों कहते हैं। भगवान् विष्णुने वाराह अवतार धारण करनेपर हिरण्याक्षको यहीं मारा था

(भाग० ७.१.४६)।

शूद्र—पु० [सं०] चौथे वर्ण या जातिके मनुष्य। इन्हें नकुलने दिग्विजयके सिलसिलेमें जीतकर अपने अधीन कर लिया था (महाभा० सभा० ३२.१०)। एक दक्षिणभारत-जनपदका भी यह नाम है (भीष्म० ९.६७)। भगवान्‌की शरणमें जानेसे पापयोनिके जीव तथा शूद्र भी परम गतिको प्राप्त होते हैं (भीष्म० ३३-३२)।

शूद्रक—पु० [सं०] शंबूक नामका शूद्रकुलोत्पन्न एक व्यक्ति, जो श्री रामचन्द्रका समकालीन था। यह बड़ा तपस्वी था। इसी समय एक ब्राह्मण-पुत्र पिताके सामने मर गया। नारद आदि ऋषियोंने अपने तपोबलसे बताया कि कोई शूद्र तपस्या कर रहा है जिसके कारण ब्राह्मण-पुत्रका स्वर्गवास हुआ। श्री रामने इसका पता लगवाकर शूद्रका वध कर डाला (रामायण)।

शूद्रकेश्वर—पु० [सं०] एक शिवलिंग विशेष (स्कंदपु० काशी-खण्ड)।

शूर—पु० [सं०] (१) विष्णुका एक नाम (विष्णु सहस्रनाम) (२) श्रीकृष्णके पितामहका नाम जो अश्मकीके गर्भसे उत्पन्न हुए थे (ब्रह्मां० ३.७१-१४५,१८९)। ब्रह्मपुराणानुसार शूरसे रानी भोज्याके गर्भसे १० पुत्र हुए जिनमें वसुदेव ज्येष्ठ थे। कुंती भी इन्हींकी पुत्री थी और यह मथुरामें शूरसेनोंपर राज्य करते थे (ब्रह्मां० ३.७१.१४६-१५१)।

शूरपुत्रा—स्त्री० [सं०] अदितिका एक नाम जो दक्ष प्रजापतिकी पुत्री और मरीचि-पुत्र कश्यप ऋषिकी पत्नी थी। इनके गर्भसे ३३ देवता उत्पन्न हुए थे और इन्हें इसीसे देवमाता कहते हैं—दे० अदिति।

शूरभू या शूरभूमि—स्त्री० [सं०] वसुदेवके छोटे भाई श्यामककी पत्नीका नाम जो उग्रसेनकी पुत्री थी। हरिकेश और हिरण्याक्ष नामके इनके दो पुत्र थे (भाग० ९.२४.२६, ४२)।

शूरसेन—पु० [सं०] (भाग० =देवमीढ शूर) (१) श्रीवसुदेवके पिताका नाम। यह श्रीकृष्णके दादा और मथुराके प्रसिद्ध राजा थे (भाग० ९.२४.२१)। (२) एक इक्ष्वाकुराजाका नाम जिनकी राजधानी मथुरामें थी। इनके राज्यको मनुने शूरसेन लिखा है (भाग० १.१०.३४)।

शूर्पक—पु० [सं०] एक असुरका नाम जो कुछके मतानुसार कामदेवका पुत्र था और कुछ अन्यके अनुसार उनका शत्रु।

शूर्पकाराति—पु० [सं०] शूर्पक राक्षसका शत्रु=कामदेव (भाग०)।

शूर्पणखा—स्त्री० [सं०] लंकाधिपति रावणकी बहिन एक प्रसिद्ध राक्षसीका नाम जिसके नख सूपके समान थे। वनवासकालमें श्रीरामसे विवाह करनेकी इच्छासे यह उनके पास गयी थी श्रीराम उस समय पंचवटीमें रहते थे जहाँ रामजीके संकेतसे लक्ष्मणने इसके नाक-कान काट लिये थे। इस समाचारको इसने अपने भाई खर और दूपणसे कहा, पर ये दोनों श्रीरामजी द्वारा युद्धमें मारे गये। तब इसने रावणसे कहा और इसीका बदला लेनेके लिए रावण सीताको हर ले गया था (रामायण)।

शूलक—पु० [सं०] पुराणानुसार एक ऋषिका नाम।

शूलकार—पु० [सं०] पुराणानुसार एक नीच जातिका नाम।

शूलप्रोत—पु० [सं०] २८ नरकोंमेंसे एक नरकका नाम (भाग० ५.२६.७)।

शूलिनी—स्त्री० [सं०] त्रिशूल धारण करनेवाली दुर्गाका एक नाम (देवी भाग०; मार्कण्डेयपुराणान्तर्गत सप्तशती १.६१)।

शूली—पु० [सं०] (१) अग्निवेशके पिता जो २४वें द्वापरमें थे (वायु० २३.२०७)। (२) त्रिशूल धारण करनेके कारण शिवका एक नाम (३) एक नरकका नाम—दे० नरक।

शृंग—पु० [सं०] शंकरजीका एक वाद्य विशेष (महाभा० वन० ८८.८)।

शृंगवान्—पु० [सं०] (१) हिरण्यक वर्षका एक पर्वत, जो कुरु वर्षकी सीमापर स्थित है। यहाँ अर्जुन उत्तरकुरु दिग्विजयके समय गये थे। उन्होंने इसे लांघ कर उत्तरकुरुमें प्रवेश किया था। इसकी गणना वर्षपर्वतोंमें की गयी है। यह सब धातुओंसे सम्पन्न तथा विचित्र शोभावान् है। यहाँ सिद्ध और चारण निवास करते हैं (महाभा० भीष्म० ६.५)। संजयने इस पर्वतका धृतराष्ट्रसे भव्य वर्णन किया था (भीष्म० ८.८-९)। सायं प्रातः स्मरणीय पर्वतोंमें इसका भी नाम है (अनु० १६५.३२)। (२) गालव-पुत्र एक प्राचीन ऋषि जिन्होंने वृद्ध कन्याके साथ सशर्त विवाह किया था। वह एक रात उनके संग निवास कर स्वर्ग चली गयी थी। ऋषिजीने उसके रूपका चिन्तन करते हुए अतिदुःखी हो उसके पथका अनुसरण किया था (शल्य० ५२.१२-२४)

शृंगवेर—पु० [सं०] कौरव्यकुलमें उत्पन्न एक नागका नाम, जो जनमेजयके सर्पसत्रमें जल मरा था (महाभा० आदि० ५७.१३)

शृंगवेरपुर—पु० [सं०] एक प्राचीन नगरका नाम जहाँ श्रीरामके समयमें निषादराज गुहकी राजधानी थी। प्रतापगढ़ जिलेके अंतर्गत सिंगरौरा गाँव ही संभवतः शृगवेरपुर है जो गंगाके वामतटपर बसा तीर्थ है। यहाँ भगवान् श्रीरामने वन जाते समय गंगाको पार किया था (रामायण)।

शृंगाट—पु० [सं०] कामरूप देशका एक पर्वत।

शृंगारमंडल—पु० [सं०] व्रजका एक पवित्र स्थान जहाँ श्रीकृष्णने राधिकाजीका शृंगार किया था (देवीभाग०)।

शृंगाल—पु० [सं०] चेदि देशस्थित करवीर नगरके राजा—दे० (करवीर)। महाभारतके अनुसार स्त्रीराज्यके स्वामी एक राजाका नाम, जो कलिंगराज चित्राङ्गदकी कन्याके स्वयंवरमें सम्मिलित हुए थे।

शृंगी—पु० [सं०] शमीकके पुत्र एक ऋषिका नाम, पिता शमीकके गलेमें मरा साँप डाल देनेके कारण इन्हें महान् दुःख और क्रोध हुआ इन्हींके शापसे अभिमन्युके पुत्र राजा परीक्षित्‌को तक्षकने डंसा था। अपने गुरुकी सेवासे लौटते समय अपने सखाके मुखसे अपने पिताके गलेमें परीक्षित् द्वारा मृत सर्प डालनेका समाचार सुन इन्होंने सातवें दिन सर्पदंशसे मरनेका शाप दे डाला। परीक्षित् ऐसे धर्मात्मा राजाको शाप देनेके कारण शमीक ऋषि इनसे बहुत नाराज हुए और कहा छोटेसे अपराधके लिए इतना बड़ा शाप देकर तुमने बहुत अनुचित किया (भाग० १.१८.२५-५१; महा-

भा० आदि० ४०.२५ से ४१.१४ तक)।

शृंगीगिरि–पु० [हिं०] एक पर्वत जो हजारी वागके निकट है जिसपर शृंगी ऋषि तप करते थे।

शृंगेरी–पु० [सं०] दक्षिण भारतमें स्थित एक पवित्र तीर्थ जहाँ शंकराचार्यका एक प्रधान मठ है—दे० शंकराचार्य।

शेष–पु० [सं० (१) पुराणानुसार पातालके निवासी सहस्र फणोंवाले एक सर्पराजका नाम। कहते हैं इन्हींके फणोंपर पृथ्वी ठहरी है। यह अनंत कहे जाते हैं और क्षीरसागरमें विष्णु इन्हींपर शयन करते हैं। विष्णुपुराणानुसार शेष, वासुकि और तक्षक तीनों कद्रूके (दक्षपुत्री) गर्भसे उत्पन्न कश्यपके पुत्र हैं। लक्ष्मण और वलराम शेषके अवतार थे और कुछ अन्य पुराणोंके अनुसार गर्ग ऋषिने ज्योतिष विद्या इन्हींसे सीखी थी। पृथ्वी शेषनागके मस्तकपर ठहरी मानी गयी है अतः पुराणानुसार जब कभी यह करवट बदलते या जँभाई लेते हैं तभी भूकम्प होता है। प्रत्येक कल्पके पश्चात् अर्थात् ४.३२,०.००००,००० वर्षोंके अंतरपर सृष्टिके प्रलयके लिए यह विषमिश्रित अग्नि उगलते हैं। कुछ पुराणोंमें वासुकि ही शेष हैं और समुद्र-मंथनके समय यही रज्जु वनाये गये थे। यह नीलाम्वर धारण किये तथा श्वेत मणियोंका कण्ठा पहिने रहते हैं। इनके एक हाथमें हल और एक हाथमें मूसल है। ये ही वलरामके भी प्रधान अस्त्र कहे गये हैं। यदि यह अनंत माने गये हैं तो इनकी पत्नीका नाम अनंत शीर्षा हैं। इनके फनका नाम 'मणिद्वीप', और इनके निवासस्थानको 'मणिभित्ति या मणिमंडप' वतलाया गया है (भाग० ५.२५.६-१३; विष्णु० २.५.१३-२७)। (२) एक प्रजापतिका नाम (ब्रह्मां०)। (३) एक दिग्गज (भाग०)।

शेषनाग–पुं० [स०] नागराज अनन्तका नाम। ये साक्षात् नारायणके स्वरूप हैं एवं उनके लिए शय्या रूप हो उन्हें धारण करते हैं। इन्होंने मन्दराचलको उखाड़ा था। नागोंमें सर्वप्रथम इन्हींकी उत्पत्ति हुई थी। नागोंमें परस्पर विद्वेषसे खिन्न होकर इन्होंने पुष्कर आदि पुण्य क्षेत्रोंमें तपस्या की थी। धर्ममें अटल श्रद्धा वनी रहनेके निमित्त इन्होंने ब्रह्मासे वर माँगा था। त्रिपुरदाहके समय ये शिवजीके रथके अक्ष वने थे (महाभा० आदि० १८.८; ३५.२-५; ३६-३-५, १७)।

शेषशायी–पु० [सं०] पुराणानुसार प्रलय होनेपर सव लोकोंको अपनेमें रख भगवान् विष्णु क्षीरसागरमें शेषशय्यापर आराम करते हैं। कुछ समय पश्चात् उनकी नाभिसे कमल निकलता है और ब्रह्मा सृष्टि करनेको उत्पन्न हो कार्य आरम्भ करते हैं (पद्मपु० सृष्टिखण्ड)।

शैखावत्य–पु० [सं०] एक महातपस्वी प्राचीन ऋषि, जिन्होंने शाल्वसे परित्यक्त होकर रोती हुई काशिराज-पुत्री अम्बाको उपदेश दिया था। ये कठोर व्रतका पालन करनेवाले तपोवृद्ध ब्रह्मर्षि थे। शास्त्र और वेदांगकी शिक्षा देनेवाले सद्गुरु थे (महाभा० उद्योग० १७५.३८-४०)।

शैनेय–पु० [सं०] श्रीकृष्णके सारथि सात्यकिका एक नाम यह शिनिका पुत्र एक वीर यादव था। इसका नामान्तर युयुधान था (भाग० ९.२४.१३-१४ महाभा० आदि० ६३.१०५)।

शैलकंपी–पु० [सं०] कुमार कार्त्तिकेयका एक सैनिक अनुचर (महाभारत शल्य० ४५.३३)।

शैलगंगा–स्त्री [सं०] गोवर्धन पर्वतकी एक नदी। कहते हैं यहाँ श्रीकृष्णने सव तीर्थोंका आवाहन किया था (भाग० तथा विष्णु०)। उ०—'इन्हहिं आदि तीरथ सफल शैलगंग प्रति आँहि। जेहिं दरसे परसे परम गति कहँ मानव जाहिं॥'—गोपाल

शैलपुत्री–स्त्री० [सं०] नवदुर्गाओंमेंसे एक (मार्कण्डेयपु०)।

शैलशिविर–पु० [सं०] समुद्रका एक नाम जहाँ इन्द्रके कोपके भयसे पहाड़ जा छिपे थे (भाग०; ब्रह्मां०; मत्स्य० तथा —दे० मैनाक।

शैलोदा–स्त्री० [सं०] एक नदी जो उत्तर दिशामें मानी गयी है। इसके तटपर वसे हुए म्लेच्छ जातिके लोगोंको अर्जुनने जीता था। इसके दोनों तटोंपर वासोंकी छायामें रहनेवाले खस आदि म्लेछोंने युधिष्ठिरके राजसूयमें पिपीलक नामक सुवर्ण भेंट किया था (महाभा० सभा० ५२.२-४; वाल्मी० रामा० किष्किन्धा ४३.३८)।

शैव्य–पु० [सं०] (१) एक राजाका नाम जिनकी पुत्री देविका युधिष्ठिरको व्याही थी और जो यौधेयकी माता थी (महाभा० आदि० ९५.७६)। (२) पाण्डवोंके एक सेनापतिका नाम (महाभा०)। (३) श्रीकृष्णके रथके चार घोड़ोंमेंसे एक घोड़ेका नाम (भाग० १०.५३.५; महाभा० आदि० अध्याय २१९)। (४) एक प्राचीन राजाका नाम, इनके पुत्रका नाम सृंजय था, जिसकी पर्वत और नारद देवर्षियोंसे मित्रता थी (महाभा० आदि० १.२२५; द्रोण० ५५.५)।

शैव्या–स्त्री० [सं०] (१) राजा हरिश्चन्द्रकी रानी—दे० चण्डकौशिक। (२) राजा सगरकी एक रानी, जिससे वंशप्रवर्तक एक ही पुत्र असमंज उत्पन्न हुआ था (महाभा० वन० १०६.२०)। (३) शाल्वदेशके प्राचीन राजा द्युमत्सेनकी रानी, जिन्होंने अपने पुत्र सत्यवान् और पुत्रवधू सावित्रीके रातमें घर न लौटनेपर अनेक आश्रमोंमें जाकर उन्हें ढूँढ़ा था (वन० २५८.२)।

शोणगिरि–पु० [सं०] विहारकी एक पहाड़ी जिसपर मगधकी पुरानी राजधानी 'राजगृह' वसी थी (भाग०)।

शोणभद्रनद–पु० [सं०] विन्ध्याचलसे निकला यह नद पटनाके निकट गंगामें गिरता है। यह वृहस्पतिके मकर राशिमें आनेपर अत्यन्त पवित्र तथा अभीष्ट फल देनेवाला कहा गया है। यहाँ इस अवसरपर रहनेवाला व्यक्ति विनायक-पद प्राप्त करता है।

शोणितपुर–पु० [सं०] वाणासुरकी राजधानीका नाम। वाणासुर राजा वलिके १०० पुत्रोंमेंसे सवसे बड़ा वीर तथा पराक्रमी था और घोर तप कर इसने शिवजीसे वर पाया था। यह ऊपाका पिता था जो श्रीकृष्णके पौत्र अनिरुद्धको व्याही थी—दे० वाणासुर तथा (भाग० १०.६२.१-४)।

शोणितोद–पु० [सं०] एक यक्षका जो कुबेरकी सभामें रहकर उनकी सेवा करता है (महाभा० सभा० १०.१७)।

शोभन–पु० [सं०] (१) अग्निका एक नाम। (२) शंकरका एक नाम।

शोभना–स्त्री० [सं०] कुमार कार्त्तिकेयकी अनुचरी एक

मातृका (महाभा०शल्य० ४६.६) ।

शोलेप–पु० [सं०] एक अस्त्र विशेषका नाम (वाल्मी० रामा०) ।

शोषण–पु० [सं०] कामदेवके पाँच बाणोंमेंसे एक (भाग०) ।

शौंग–पु० [सं०] भरद्वाज ऋषिका एक नाम जो शुंगके अपत्य थे ।

शौंडायन–पु० [सं०] योद्धाओंकी एक वीर जाति ।

शौंडिक–पु० [सं०] एक प्राचीन जाति जिसके लोग मद्यका व्यवसाय करते थे और अछूत समझे जाते थे। इनके यहाँ भोजन करनेका निषेध था (पराशरस्मृति तथा मनुस्मृति) ।

शौकि–पु० [सं०] प्राचीन कालके एक ऋषि जो गोत्रप्रवर्त्तक थे ।

शौकेय–पु० [सं०] एक ऋषिका नाम (हि० श० सा०) ।

शौचिक–पु० [सं०] प्राचीन कालकी एक वर्णसंकर जाति जो पुराणानुसार शौंडिक पिता और कैवर्त्त मातासे उत्पन्न कही गयी है (मत्स्य०) ।

शौनक–पु० [सं०] (१) भृगुवंशी शुनक ऋषिके पुत्र एक प्रसिद्ध वैदिक आचार्य ऋषि। नैमिषारण्यमें इन्होंने एक बहुत बड़ा यज्ञ किया था, जो १२ वर्षोंतक चलता रहा। इसी यज्ञमें उग्रश्रवाने महाभारतकी कथा सुनायी थी। इनके लिखे ग्रंथ भी मिले हैं (महाभा० आदि० १.१९; अनु० ३०.६५) । (२) युधिष्ठिरके वनगमनके समय उनके साथ चलनेवाले एक ब्राह्मणका नाम। इन्होंने युधिष्ठिरसे विवेकी और अविवेकीकी गतिका वर्णन किया था। युधिष्ठिरको इन्होंने तप करनेकी सलाह भी दी थी (वन० २.६४-८४) ।

शौनायन–पु० [सं०] एक गोत्रप्रवर्त्तक ऋषिका नाम ।

शौरसेन–पु० [सं०] (१) आधुनिक व्रजमंडलका प्राचीन नाम, जहाँके राजा शूरसेन थे (भाग० १.१०.३४) । (२) (महाभा० = शूरसेन) एक जनपद और वहाँके निवासी (आधुनिक व्रजमंडल या मथुरामंडल) । यहाँके लोग जरासन्धके भयसे अपने परिवार और सेवकोंके साथ दक्षिणकी ओर भाग गये थे। सहदेवने दक्षिण दिग्विजयके समय इन्द्रप्रस्थसे चलकर सर्वप्रथम शूरसेन निवासियोंपर ही पूर्ण रूपसे विजय प्राप्त की थी। इस देशके लोग राजसूय यज्ञमें युधिष्ठिरके लिए भेंट लाये थे (महाभा० सभा० १४.२६; ३१.१; ५२.१३) ।

शौर्यव्रत–पु० [सं०] आश्विनशुक्ला ७ को संकल्प करे, अष्टमीको निर्जल व्रत (अन्न-जल वर्जित व्रत). रखे, भगवतीकी पूजा करे और स्वयं सत्तू खाये (ब्रह्मपु०) ।

शौलायन–पु० [सं०] प्राचीनकालके कौलायन ऋषिका एक नाम जो गोत्रप्रवर्त्तक थे ।

शौल्कायनि–पु० [सं०] अथर्ववेदी वेददर्शके चार शिष्योंमेंसे एक शिष्य—एक प्राचीन ऋषिका नाम (भाग० १२.७.२) ।

श्मशानकालिका–स्त्री० [सं०] तन्त्रानुसार देवी कालीकी एक मूर्त्ति विशेष। मांस इत्यादि खा तथा सुरा पान कर नंगे हो श्मशानमें इनकी पूजा की जाती है (तन्त्रसारसंग्रह) ।

श्मशानभैरवी–स्त्री० [सं०] श्मशानकी देवियाँ (तन्त्रराजतन्त्र) ।

श्याम–पु० [सं०] (१) काला शरीर होनेके कारण श्रीकृष्णका एक नाम (भाग० १०.८.१३, २६, ३३) । (२) एक पर्वतका नाम जिसके आसपासके देशको अनीचक कहते हैं (मत्स्य० १२२.२३) । (३) प्रयागके अक्षयवटका नाम (भाग०) ।

श्यामक–पु० [सं०] शूरसेन (शूर = भाग०) और मारिषाके वसुदेव आदि दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्र तथा वसुदेवके भाई (भाग० ९.२४.२७-२८) ।

श्याम-शवल–पु० [सं०] पुराणानुसार यमके अनुचर दो कुत्तोंके नाम जो यमराजके निवासस्थानपर पहरा देते हैं (ब्रह्मां० भाग०) ।

श्यामसुन्दर–पु० [सं०] श्रीकृष्णका एक नाम ।

श्यामायन–पु० [सं०] विश्वामित्रजीके ब्रह्मवादी पुत्रोंमेंसे एक, जो एक गोत्रप्रवर्त्तक ऋषि थे (विष्णु० ४.७.३३; महाभा० अनु० ४.५५) ।

श्याल–पु० [सं०] एक यदुवंशी राजकुमारका नाम, जिन्होंने गर्ग ऋषिका तिरस्कार किया था। कहते हैं इन्हींके आचरणसे रुष्ट हो गर्गने यदुवंशके नाशके लिए कालयवनकी सृष्टि की थी (भाग०) ।

श्यावक-पु० [सं०] वैदिक कालके एक प्राचीन राजर्षि ।

श्यावरथ–पु० [सं०] एक प्राचीन ऋषिका नाम (ब्रह्मां०) ।

श्यावाश्व–पु० [सं०] एक प्राचीन ऋषिका नाम (ब्रह्मां०) । एक वैदिक ऋषि जो अर्चनानस् ऋषिके पुत्र थे। कहते हैं एक वार श्यावाश्वके पिताने राजा रथवीतिकी पुत्रीसे इनका विवाह करनेका निश्चय किया। राजा तो राजी हो गये पर रानीने आपत्ति की, क्योंकि श्यावाश्व ऋषि नहीं थे। यह सुन श्यावाश्वने तपस्या आरम्भ कर दी और भिक्षा माँग अपना निर्वाह करने लगे। एक दिन यह राजा तरन्तके यहाँ भिक्षाके लिए गये। तरन्त और उनकी रानी शशिभासीने इन्हें यथेष्ट धन तथा गौ दे विदा किया। इसके पश्चात् यह तरन्तके छोटे भाई पुरुमील्ढके घर जा रहे थे, रास्तेमें मरुतोंसे भेंट हो गयी। मरुतोंकी स्तुति करनेपर उनके आशीर्वादसे श्यावाश्व ऋषि हो गये और तव राजा रथवीतिने अपनी पुत्री इन्हें व्याह दी थी (पौराणिक इण्डेक्स) ।

श्येन–पु० [सं०] (१) पक्षियोंकी एक जाति जो दक्षपुत्री ताम्रा और कश्यपकी पुत्री श्येनीकी संतान है (महाभा० आदि० ६६.५६) । (२) एक प्राचीन ऋषि जो इन्द्रकी सभामें विराजते हैं (सभा० ७.११) ।

श्येनगामी–पु० [सं०] रामायणनुसार एक राक्षसका नाम, जिसने खरके साथ रामपर आक्रमण किया और राम द्वारा मारा गया (अरण्य० २३.३२; २६.२६-३५) ।

श्येनचित्र–पु० [सं०] एक प्राचीन राजा, जिन्होंने अपने जीवनमें कभी मांस नहीं खाया (महाभा० अनु० ११५.६३) ।

श्येनजित्–पु० [सं०] (१) इक्ष्वाकुवंशी राजा दलका पुत्र, जो पिताको अत्यन्त प्रिय था (महाभा० वन० १९२-६३) । (२) एक महारथी राजा जो भीमसेनके मामा थे (उद्योग० १४१.२७) ।

श्येनी–स्त्री [सं०] दक्षप्रजापतिकी एक पुत्री ताम्राके गर्भसे उत्पन्न कश्यप ऋषिकी एक पुत्री जो पक्षियोंकी माता कही जाती हैं। यह गरुड़के बड़े भाई अरुणकी भार्या थी। इसके गर्भसे दो महाबली पुत्र उत्पन्न हुए जिनका नाम संपाति और जटायु था (महाभा० आदि० ६६.६९)।

श्यैनिक–पु० [सं०] एक दिनमें पूरा होनेवाला एक यज्ञ (यज्ञतत्त्वप्रकाश)।

श्रद्धा–स्त्री० [सं०] (१) दक्षकी पुत्री तथा धर्मकी पत्नी जो शुभकी माता कही गयी हैं (भाग० ४.१.४९-५०; महाभा० आदि० ६६.१३-१५)। (२) अत्रि ऋषिकी पत्नीका नाम जिन्हें अनसूयाके नामसे लोग अधिक जानते हैं। यह देवहूतिके गर्भसे उत्पन्न कर्दम मुनिकी कला आदि ९ पुत्रियोंमेंसे एक पुत्री थी और अपने पातिव्रत धर्मके लिए विख्यात हैं—दे० अनसूया। (३) अंगिरा ऋषिकी स्त्रीका नाम—दे० अंगिरा तथा (भाग० ३.२४.२२)। (४) अंगिराकी पुत्रियाँ—सिनीवाली, कुहू, राका तथा अनुमतिकी माता—दे० अनुमति तथा (भाग० ४.१.३४)। (५) वेदोंमें श्रद्धाको साकार देवीका रूप दिया गया है और ऋचाओंमें गुणगान भी है।

श्रवण–पु० [सं०] (१) नव प्रकारकी भक्तिमेंसे एक (भाग० ७.५.२३)। (२) अंधक मुनिके एक पुत्रका नाम। यह वैश्य तपस्वी थे—दे० (अंधक)। (३) राजा मेघध्वजके पुत्रका नाम। (४) बाइसवें नक्षत्रका नाम जिसमें ३ तारे हैं। यह तीरके आकारका है (नक्षत्र-विज्ञान)। इस नक्षत्रमें जो मनुष्य वस्त्रसे वेष्टित कम्बलका दान करता है वह सफेद विमान द्वारा स्वर्गमें जाता है (महाभा० अनु० ६४.२८)। इस नक्षत्रमें पितरोंका श्राद्ध करनेवाले मनुष्यको परलोकमें उत्तम गति प्राप्त होती है (अनु० ८९.११)।

श्रवणद्वादशी–स्त्री० [सं०] भाद्रपद सुदीकी श्रवण नक्षत्र युक्त द्वादशी। वामन द्वादशीका दूसरा नाम। इसी दिन वामन अवतार हुआ था—दे० वामनद्वादशी तथा (भाग० ८.१८.५-६)।

श्रवणपूजन–पु० [सं०] श्रावण शु० १५। अयोध्यापति दशरथने इसी दिन धोखेसे श्रवणकुमारको मार दिया था अतः उन्होंने इस तिथिको श्रवण-पूजाका सर्वत्र प्रचार किया जो आज भी किया जाता है—दे० व्रतोत्सव।

श्रवा–पु० [सं०] गृत्समदवंशी महर्षि सन्तके पुत्र तथा तमके पिता (महाभा० अनु० ३०.६३)।

श्रविष्ठ–पु० [सं०] वैदिक कालके एक प्राचीन ऋषि।

श्राद्धदेव–पु० [सं०] मार्कण्डेयपुराणानुसार वैवस्वत मनुका एक नाम। ब्राह्मण-ग्रंथोंमें श्रद्धदेव नाम दिया है पर महाभारतमें श्राद्धदेव ही है। इससे यमराजका भी बोध होता है—दे० ब्राह्मण-ग्रंथ तथा महाभारत।

श्राव–पु० [सं०] इक्ष्वाकुवंशी महाराज युवनाश्वके पुत्र तथा श्रावस्तके पिता (महाभा० वन० २०२.३-४)।

श्रावक–पु० [सं०] राजा श्रावस्तके पिताका नाम। श्रावस्ती नगरी श्रावस्तने ही बसायी थी (हरिवंश)।

श्रावणी–स्त्री० [सं०] श्रावण मासकी श्रवणयुक्त पूर्णिमा, जिस दिन ब्राह्मण लोग सप्तर्पिपूजन यज्ञोपवीतोंकी पूजा, प्रतिष्ठा आदि करते हैं—दे० सलोनो।

श्रावस्त–पु० [सं०] हरिवंशके अनुसार श्रावस्ती नगरी बसानेवाले राजा जो श्रावकके पुत्र थे (हरिवंश)।

श्रावस्ती–श्री रामचन्द्रके पुत्र लवकी राजधानीका नाम जो उत्तर कोशलके गंगा तटपर बसी हुई थी। इसका आधुनिक नाम सहेत महेत है, जो बलरामपुर राज्यमें स्थित है। कुछ दिनोंतक बुद्धने भी यहाँ निवास किया था। जैनी इसे सावत्थी कहते हैं (हरिवंश; रामायण)।

श्री–स्त्री० [सं०] (१) लक्ष्मीका नाम जो समुद्रमंथनसे निकली थी और विष्णुकी पत्नी हैं (भाग० ८.८.८,२३) (२) आदर सूचक शब्द जिसका प्रयोग देवताओं, राजाओं तथा ग्रंथोंके नामके आगे किया जाता है।

श्रीकंठ–पु० [सं०] (१) शिवका एक नाम। भगवान् शंकरके कंठमें श्रीनारायणके हाथसे अंकित चिह्न होनेके कारण वे श्रीकंठ कहलाते हैं (महाभा० शांति० ३४२. १३४)। (२) हस्तिनापुरके उत्तर-पश्चिमका कुरुजांगल देश।

श्रीकंठसखा–पु० (सं०) धनकुबेरका एक नाम जो शिवके मित्र कहे गये हैं—दे० कुबेर तथा भाग०।

श्रीकरगोप–पु० [सं०] अवन्तिकानिवासी एक शिवभक्त गोप जिसकी आठवीं पीढ़ीमें नन्द गोप हुए थे। यह राजा चन्द्रसेनकी शिवभक्तिसे प्रभावित हुआ था (शिवपु० कोटि-रुद्र-सं० १७)।

श्रीकुंज–पु० [सं०] कुरुक्षेत्रकी सीमाके अन्तर्गत सरस्वती नदीके तटपर बसा एक प्राचीन तीर्थस्थानका नाम। इसमें स्नान करनेसे अग्निष्टोम यज्ञका फल प्राप्त होता है (महाभा० वन ८३.१०८)।

श्रीकुंड–पु० [सं०] एक त्रिभुवनप्रख्यात कुंड, जहाँ जाकर श्री ब्रह्माजीको नमस्कार करनेसे हजार गउओंके दानका फल प्राप्त होता है (महाभा० वन० ८२.८६)।

श्रीकृच्छ्र–पु० [सं०] एक प्रकारका व्रत जिसमें बेलके फल उबालकर उनका जल एक मास पीया जाता है। इसे श्रीकृच्छ्र कहते हैं। आँवलोंको उबालकर भी पीते हैं। ‘श्रीकृच्छ्रः श्रीफलैः प्रोक्तः = (मार्कण्डेयपु०)। ‘मासेनामलकैरेवं श्रीकृच्छ्रपरमं स्मृतं।’ (मार्कण्डेयपु०)।

श्रीक्षेत्र–पु० [सं०] जगन्नाथपुरी तथा उसके आसपासके पवित्र प्रदेशका नाम (विष्णु०, भाग०)।

श्रीतल–पु० [सं०] विष्णुपुराणानुसार एक नरकका नाम।

श्रीतीर्थ–पु० [सं०] कुरुक्षेत्रकी सीमाके अन्तर्गत एक तीर्थस्थान, जहाँ जाकर स्नान तथा देवता और पितरोंका पूजन-तर्पण करनेसे मनुष्योंको उत्तम सम्पदा प्राप्त होती है (महाभा० वन० ८३.८६)।

श्रीदाम–पु० [सं०] श्रीकृष्णके सखा सुदामाका एक नाम, जिसका कुचैल भी नामान्तर था जिसे भगवान् कृष्णने अतुल सम्पत्ति प्रदान की थी (भाग० १०.८०.६-७)।

श्रीदेवा–स्त्री० [सं०] वसुदेवकी एक पत्नीका एक नाम। यह उग्रसेनकी सात पुत्रियों, जो सबकी सब वसुदेवको ब्याही थीं, मेंसे एक थी। इनके गर्भसे वसुदेवके वसु, हंस, सुहंस आदि छह पुत्र हुए। इन सात बहिनोंके नाम ये हैं—धृतदेवा, शांतिदेवा, उपदेवा, श्रीदेवा, देवरक्षिता, सहदेवा और देवकी (भाग० ९.२४.२२-२३, ५१)।

श्रीधन्वी–स्त्री० [सं०] एक तीर्थका नाम।

श्रीनगर–पु० [सं०] (१) टेहरी गढ़वालकी प्राचीन राजधानी, जहाँ श्रीकमलेश्वर महादेवका प्रसिद्ध मंदिर है। यह अलकनन्दा नदीसे तीन मीलकी दूरीपर स्थित है।

कमलेश्वर शिवलिंगकी स्थापना शंकराचार्यके शिष्य पद्मपादने की थी। श्रीनगरसे १८ मीलकी दूरीपर रुद्रप्रयाग स्थित है जहाँ मंदाकिनी अलकनंदासे मिलती है। (२) काश्मीरकी राजधानीका नाम (राजतरंगिणी)।

श्रीनितंबा–स्त्री० [सं०] श्रीकृष्णकी प्रेयसी राधिकाका एक नाम—दे० राधा तथा (देवीभाग०)।

श्रीपंचमी–स्त्री० [सं०] माघशुक्ला पंचमी जिसे वसंतपंचमी भी कहते हैं। इस दिन वसंत और रति सहित कामदेवकी पूजाका विधान है। जिस प्रकार श्रावणमें मलार राग अति प्रिय लगता है, उसी प्रकार इस तिथिको वसंत राग अच्छा लगता है। इस दिनसे वसंत, जो ऋतुराज कहा जाता है, का आरंभ होता है। ऋतुके परिवर्त्तनके कारण शरीर नयी उमंगसे ठीक वैसा ही भरा रहता है जैसा प्रकृतिके तृण-तृणमें दिखायी देता है। इस तिथिके दूसरे ही दिन 'वसंत-महोत्सव' मनाया जाता है। अन्य मत (भविष्योत्तर०)के अनुसार इसमें लक्ष्मीकी पूजा वर्ष भर होती है। १२ महीनोंमें १२ देवियोंकी पूजाका विधान है यथा मार्गशीर्षमें श्री, पौषमें लक्ष्मी, माघमें कमला, फाल्गुनमें सम्पत्, चैत्रमें पद्मा, वैशाखमें नारायणी, ज्येष्ठमें धृति, आषाढ़में स्मृति, श्रावणमें पुष्टि, भाद्रपदमें तुष्टि, आश्विनमें सिद्धि और कार्त्तिकमें क्षमा। इस व्रतसे सुत-सुख-सौभाग्य और अचल लक्ष्मी प्राप्त होती है (भविष्योत्तर० तथा पुराणसमुच्चय)।

श्रीपुर–पु० [सं०] मणि द्वीपनामक स्थान जो दक्षिणमें है। यह वाममार्गी शाक्तोंका प्रधान तीर्थस्थान है।

श्रीभानु–पु० [सं०] भागवतके अनुसार सत्यभामाके गर्भसे उत्पन्न श्रीकृष्णके दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (भाग० १०.६१.१०-११)।

श्रीभ्राता–पु० [सं०] अश्व, चंद्र, अमृत, गरल, कल्पवृक्ष, आदि समुद्र मंथनसे प्राप्त १३ रत्न (भाग०)।

श्रीरंगपट्टन–पु० [सं०] दक्षिणमें मैसूर राज्यके अंतर्गत एक प्रसिद्ध तीर्थ, जहाँ 'श्रीरंगस्वामी' नामकी एक प्रसिद्ध विष्णु-मूर्त्ति है (भाग० तथा विष्णु०)।

श्रीवत्स–पु० [सं०] अगूँठेके बराबर सफेद बालोंका एक समूह जो विष्णु भगवानके वक्षस्थलपर है और दक्षिणावर्त्त भौंरीके आकारका कहा गया है। इसे भृगु ऋषिका पदचिह्न माना जाता है (विष्णु तथा भाग० १०.८९.९-१२)। महाभारतके अनुसार यह भगवान् नारायणके वक्षःस्थलमें भगवान् शङ्करके त्रिशूलसे बना चिह्न है (महाभा० शांति० ३४२.१३४)।

श्रीव्रत–पु० [सं०] यह व्रत चैत्रशुक्ला पंचमीको किया जाता है जिससे लक्ष्मीकी प्राप्ति होती है (विष्णुधर्मोत्तर पु० तथा सौभाग्यलक्ष्मीसंग्रह)।

श्रुतानीक–पु० [सं०] विराटके भाईका नाम जो पाण्डवपक्षीय थे (महाभारत द्रोण० १५८.४१)

श्रुतावती–स्त्री० [सं०] एक तपस्विनी कन्याका नाम, जो धृताची अप्सराको देखकर भरद्वाजजीके स्खलित शुक्रसे उत्पन्न हुई थी। इसने घोर तप कर इन्द्रको पतिरूपमें प्राप्त किया था (महाभा० शल्य० अध्याय ४८ पूरा)

श्रुताह्व–पु० [सं०] पाण्डवपक्षके एक राजाका नाम, जो अश्वत्थामा द्वारा मारा गया था (द्रोण० ५६.१८२)

श्रुति–पु० [सं०] एक प्राचीन नरेशका नाम (महाभा० आदि० १.२३८)।

श्रुतकर्मा (श्रुतसेन)–पु० [सं०] द्रौपदीके गर्भसे उत्पन्न सहदेवका एक पुत्र (महाभा० आदि० ९५.७५)।

श्रुतकीर्त्ति–स्त्री० [सं०] (१) राजा जनकके भाई कुशध्वजकी पुत्री जो श्रीरामके भाई शत्रुघ्नको व्याही थी (वाल्मी० रामायण) (२) कुंती सुत अर्जुनका एक पुत्र जो द्रौपदीके गर्भसे उत्पन्न हुआ था (महाभा० आदि० ९५.७५)।

श्रुतञ्जय–पु० [सं०] त्रिगर्तके राजा सुशर्माके भाईका नाम। महाभारत-युद्धमें अर्जुन द्वारा यह मारा गया था (महाभा० कर्ण० २७.१२)

श्रुतध्वज–पु० [सं०] विराटके भाईका नाम, जो पाण्डवोंके पक्षके थे (महाभा० द्रोण० १५८.४१)।

श्रतश्रवा–पु० [सं०] (१) मत्स्यके अनुसार इन्होंने ६४ वर्ष राज्य किया था। ये अप्रतीपीके पिता थे जिसने ३६ वर्षों तक राज्य किया था (मत्स्य० २७१.२१)। ये अयुतायुका पिता तथा निरमित्रके दादा थे, जिसने ६७ वर्ष तक राज्य किया था (भाग० ९.२२.४६; ब्रह्मां० ३.७४.१११; विष्णु० ४.२३.४)। (२) एक ऋषिका नाम। इनके पुत्रका नाम सोमश्रवा था। सोमश्रवाको अपना पुरोहित बनानेके लिए जनमेजयने इनसे प्रार्थना की थी। इन्होंने अपने पुत्रके जन्मप्रसंग तथा उनके उदार स्वभावका वर्णन करते हुए उनकी प्रार्थना स्वीकार की थी (महाभा० आदि ३.१३-१९)। (३) एक राजर्षिका नाम, जो यमसभामें रहकर यमकी उपासना करते थे (सभा० ८.९) (४) स्त्री—चेदिराज दमघोषकी भार्या, श्रीकृष्णकी बुआ और शिशुपालकी माताका नाम। इन्होंने अपने पुत्र शिशुपालकी जीवन रक्षाके निमित्त श्रीकृष्णसे प्रार्थना की थी। इसपर भगवान्ने कहा था इसके १०० अपराध मैं क्षमा कर दूँगा (सभा० ४३.१-२०,२४)।

श्रुतश्री–पु० [सं०] एक दैत्यका नाम जिसका गरुड़ने वध किया था (महाभा० उद्योग० १०५.१२)।

श्रुतसेन–पु० [सं०] (१) महाराज जनमेजयके भ्राताका नाम जिन्होंने अपने अन्य भाइयोंके साथ सरमा (कुतिया) के पुत्र सारमेयको पीटा था (महाभा० आदि० ३.१)। (२) तक्षक नागके छोटे भाईका नाम (आदि० ३.१४१)। (३) एक दैत्यका नाम, जिसे विष्णुवाहन गरुड़ने मारा था (उद्योग० १०५.१२,१४)। (४) कौरवपक्षीय एक योद्धाका नाम जिसे अर्जुनने मारा था (कर्ण० २७.१०)।

श्रुतसोम–पु० [सं०] द्रौपदीके गर्भसे उत्पन्न भीमका एक पुत्र (महाभा० आदि० ९५.७५)।

श्रतायु–पु० [सं०] श्रीरामसुत कुशके वंशज एक राजा (रामायण लवकुशकांड)।

श्रुतायुध–पु० [सं०] पर्णाशाके गर्भसे उत्पन्न वरुणके पुत्र एक राजाका नाम जिसके पास एक ऐसी गदा थी जो युद्धकर्त्तापर फेंकनेसे उसका नाश अवश्य करती थी। पर युद्ध न करने वालेपर चलानेसे उलटा ही फल होता था—गदा

चलाने वालेके ही प्राण हर लेती थी। श्रुतायुधको यह गदा उसके पिता वरुणने दी थी (भाग० महाभा० द्रोण० २२. ४५-५१)।

श्रुतिविंदा–स्त्री० [सं०] (भाग०=श्रुतविंदा) कुशद्वीपकी एक नदी (भाग० ५.२०.१६; मत्स्य; कुशद्वीप)।

श्रौतश्रवा–पु० [सं०] शिशुपालका एक नाम (महाभा० और शिशुपाल)।

श्रौतसूत्र–पु० [सं०] कल्पग्रंथका वह अंश जिसमें पौर्णमासेष्टिसे लेकर अश्वमेध पर्यन्त यज्ञोंका विधान है। ये दो प्रकारके प्राप्य हैं—'श्रौतसूत्र' और 'गृह्यसूत्र'।

श्लिष्टि–पु० [सं०] ध्रुवका एक पुत्र (भाग०)।

श्लेष्मातकवन–पु० [सं०] पुराणानुसार गोकर्ण तीर्थके पासका एक वन। कहते हैं भगवान् शंकर इसमें बारहसिंघेका रूप धर छिपे थे।

श्वफल्क–पु० [सं०] अक्रूरके पिता जो वृष्णि यादवके पुत्र थे। गाँदिनी श्वफल्ककी पत्नी तथा अक्रूरकी माता थी श्रीकृष्ण अक्रूरके भतीजा और श्वफल्कके पोता थे (ब्रह्मपु०-क्रोष्टुवंशवर्णन)।

श्वभ्र–पु० [सं०] (१) एक नरकका नाम। (२) वसुदेवका एक पुत्र (भाग०)।

श्वेतकि–पु० [सं०] महाभारतके अनुसार एक राजा जो बड़ा ही धर्मपरायण था और इसकी ख्याति दूर-दूर तक फैली थी (महाभा० आदि० २२२.१९)।

श्वेतकेतु–पु० [सं०] महर्षि उद्दालकका पुत्र (वायु० ४१. ४४;६१.२५)।

श्वेततीर्थ–पु० [सं०] श्वेत नामक एक ब्राह्मण थे जो बड़े शिवभक्त तथा महर्षि गौतमके प्रिय सखा थे। गोदावरी तटपर रह कर यह शिवाराधना करते थे। समय आनेपर 'मृत्युदेव' यम इन्हें लेने आये पर भैरवने उन्हें मार भगाया, यहाँ तक कि स्वयम् यम शिवजीके पार्षदों द्वारा मारे गये। जिस स्थानपर यम मरे पड़े थे वहाँ नर्मदा तटपर दोनों ओर करीब २ लाख तीर्थोंने देवताओं सहित शिवकी पूजा की। जहाँ मृत्यु देवता मरे पड़े थे वह 'मृत्युतीर्थ' कहलाया (ब्रह्मपु० श्वेततीर्थ-माहात्म्य)।

श्वेतद्वीप–पु० [सं०] भगवान् नारायणका अनिर्वचनीय दिव्य धाम-क्षीरसागरके उत्तर ओरका एक अत्यंत उज्ज्वल द्वीप जो विष्णुका निवासस्थान कहा गया है। वहाँके निवासी इन्द्रियोंसे रहित होते हैं, निराहार रहते हैं तथा ज्ञान-विज्ञानसम्पन्न होते हैं। उनके अंग प्रत्यंगोंसे मनोहर सुगन्ध निकलती है। उनकी हड्डियाँ वज्रवत् सुदृढ होती हैं। दिव्य रूप और बलसे सम्पन्न होते हैं उनका वर्ण श्वेत होता है। वे अनन्त गुणोंके खान भगवान्को अपने हृदयमें धारण किये रहते हैं (महाभा० शांति० ३३५.८-१२)

श्वेतपाद–पु० [सं०] भगवान् शंकरका एक गण (शिवपु०)।

श्वेतलोहितकल्प–पु० [सं०] उन्नीसवाँ कल्प जिसमें शिवका सद्योजात अवतार हुआ था। इस कल्पमें जब ब्रह्मा ध्यानमग्न थे उसी समय एक श्वेत और लोहित वर्णवाला शिखाधारी कुमार उत्पन्न हुआ जो सद्योजात कुमार शिव ही थे। उसी समय श्वेत वर्ण वाले सुनंद, नंदन, विश्वनंद और उपनंदन ४ कुमार प्रकट हुए जो महात्मा थे और ब्रह्माके शिष्य हुए (शिवपु० शतरुद्र-संहिता)।

श्वेतभद्र–पु० [सं०] एक गुह्यकका नाम, जो कुबेरकी सभामें रहकर उनकी सेवा करता है (महाभा० सभा० १०. १५)।

श्वेतवक्त्र–पु० [सं०] स्कंदके एक सैनिक अनुचरका नाम (महाभा० शल्य० ४५.७३)।

श्वेतवाराह–पु० [सं०] (१) वराह भगवान्की एक मूर्त्ति विशेष। (२) एक कल्पका नाम जिसे ब्रह्माके मासका प्रथम दिन मानते हैं (वाराहपु०)।

श्वेतवाहन–पु० [सं०] (१) अर्जुनका एक नाम —दे० अर्जुन तथा (महाभा० आदि० १९९.१०)। (२) चंद्रमाका एक नाम (स्कंदपु० तथा भाग०)।

श्वेतसिद्ध–पु० [सं०] स्कंदका एक सैनिक अनुचर (महाभा० शल्य० ४५.६८)।

श्वेता–स्त्री० [सं०] (१) अग्निकी सात जिह्वाओंमेंसे एक। मुंडकोपनिषद्के अनुसार जिह्वाओंके नाम ये हैं :—काली, कराली, मनोजवा, लोहिता, धूम्रवर्णा, स्फुलिंगिनी और विश्वरूपी परन्तु बृहत्संहितामें स्फुलिंगिनी और विश्वरूपीके स्थानपर उग्रा और प्रदीप्ता नाम दिये हैं (मुंडकोपनिषद् तथा बृहत्संहिता)। (२) स्कंदकी अनुचरी एक मातृका, (महाभा० शल्य० ४६.२२)। (३) कश्यपकी क्रोधवशा पत्नीसे उत्पन्न एक पुत्रीका नाम जो शीघ्र गामी श्वेत नामक दिग्गजकी माता कही गयी है (भाग० विष्णु० तथा महाभा० आदि० ६६.६१,६६)।

श्वेतारण्य–पु० [सं०] कावेरी नदीके तटपरका एक वन, जिसे एक तीर्थस्थान माना गया है (हि० श० सा०)।

श्वेतोदर–पु० [सं०] (१) एक पर्वत विशेषका नाम जिसका उल्लेख मार्कण्डेयपुराणमें है। (२) कुबेरका एक नाम जिन्हें इंद्रके ९ निधियोंका भंडारी और महादेवजीका मित्र कहा जाता है—दे० कुबेर।

श्वैत्य–पु० [सं०] प्राचीन राजा संजयका नामान्तर (महाभा० द्रोण० ५५.५०)।

ष

षट्तिला-एकादशी–स्त्री० [सं०] इस तिथिको तिलोंके जलसे स्नान करे; पीसे तिलका उबटन करे; तिलोंका हवन करे; तिल मिला जल पीये; तिल दान करे; तिलके बने पदार्थ खाये तो पापोंका नाश हो तथा सुख, सौभाग्य और मोक्ष मिले (एकादशी-महात्म्य)।

षटवांग–पु० [सं०] एक राजर्षि जिन्हें केवल दो घड़ीकी साधनासे मुक्ति मिली थी। यह खट्वांगके नामसे प्रसिद्ध थे—दे० खटवांग तथा (भाग० २.१.१३)।

षड़ानन–पु० [सं०] कुमार कार्तिकेयका एक नाम जो शंकरके पुत्र थे तथा जिन्हें चंद्रमाकी पत्नी कृत्तिकाने पाला था, अतः कार्त्तिकेय कहलाये —दे० ब्रह्मवैवर्तपु० तथा कार्तिकेय। इन्हें ६ कृत्तिकाओंने पाला और इनके ६ मुँह

है अतः यह षडानन कहलाये (वायु० ४१.३८;७३.४३; विष्णु० १.१५.११६)।

षष्टिह्द—पु० [सं०] एक तीर्थका नाम, जहाँ स्नान करनेपर अन्नदान करनेसे जो फल होता है उससे अधिक फल मिलता है (महाभा० अनु० २५.३६)।

षष्ठपुर—पु० [सं०] ६ नगरोंके नाम जिन्हें ब्रह्माने असुरोंको प्रदान किया था, जहाँका राजा निकुंभ था। श्रीकृष्णने निकुंभसे इन नगरोंको लेकर ब्रह्मदत्तनामके एक ब्राह्मणको दान कर दिया था (हरिवंश)।

षष्ठान्नकाल—पु० [सं०] एक व्रत जिसमें तीन दिनोंके बीच केवल एक बार भोजन करनेका विधान है (व्रतकी विधि)।

षष्ठीदेवी—स्त्री० [सं०] ब्रह्माजीकी सभामें उनकी सेवाके लिए बैठनेवाली एक देवीका नाम (महाभा० सभा० ११.४१)।

षाडाहिक सांतपन—पु० [सं०] एक प्रायश्चित विशेष, जिसमें ५ दिन पंचगव्य पी छठे दिन उपवास करनेका विधान है (प्रायश्चितेन्दुशेखर)।

षोडशकला—स्त्री० [सं०] चंद्रमाके १६ भाग जो कृष्णपक्षमें एक-एक करके विलीन होते हैं तथा शुक्लपक्षमें एक-एक करके बढ़ते हैं—दे० कला।

षोडशगण—पु० [सं०] ५ ज्ञानेन्द्रिय, ५ कर्मेन्द्रिय, ५ भूत और एक मन।

षोडशदान—पु० [सं०] भूमि, आसन, पानी, कपड़ा, दीपक, अन्न, पान, छत्र, सुगंधि, फूलमाला, फल, सेज, खड़ाऊँ, गाय, सोना और चाँदीका दान।

षोडशमातृका—स्त्री० [सं०] गौरी, पद्मा, शची, मेधा, सावित्री, विजया, जया, देवसेना, स्वधा, स्वाहा, शांति, पुष्टि, धृति, तुष्टि, मातर और आत्म कुल-देवता।

षोडशोपचार—पु० [सं०] पूजाके १६ अंग=आवाहन, आसन, अर्घ्यपाद्य, आचमन, मधुपर्क, स्नान, वस्त्राभरण, यज्ञोपवीत, गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, ताम्बूल, परिक्रमा और वन्दना=ये ही पूजाके षोडशोपचार हैं (पूजासमुच्चय; पूजाभास्कर)।

स

संकट चौथ—स्त्री० [हिं०] माघकृष्ण चतुर्थी जिस दिन व्रत करते हैं और गणेशजीका पूजन करते हैं। सिल या चकलेपर ऋद्धि-सिद्धि सहित गणेशजीकी स्थापना कर कुटे तिल और पूओंका भोग लगा तथा अर्घ्य देकर स्वयं भोजन करते हैं—दे० (संकष्टचतुर्थी)।

संकटा—स्त्री० [सं०] संकटोंको नाश करने वाली देवी जिनका प्रसिद्ध मंदिर काशीमें है (देवीभाग०)।

संकर्षण—पु० [सं०] (१) बलरामका एक नाम जो रोहिणीके गर्भसे उत्पन्न श्रीकृष्णके भाई थे (भाग० १०.२.८,१२)। (२) ११ रुद्रोंमेंसे एक (स्कंदपु०)।

संकल्पा—स्त्री० [सं०] दक्षकी एक पुत्री तथा धर्मकी पत्नी जो संकल्पकी माता थीं (भाग० ६.६.४,१०)।

संकष्टचतुर्थी—स्त्री०[सं०] यह व्रत संकट निवारणके लिए सभी महीनोंमें कृष्णपक्षकी चतुर्थीको होता है जिसमें चंद्रोदयव्यापिनी चतुर्थी ली जाती है और गणेशका पूजन करते हैं। श्रावणकृष्ण ४ का विशेष माहात्म्य है। 'यदा संक्लेशितो मर्त्यो नानादुःखैश्च दारुणैः। तदा कृष्णचतुर्थ्यां वै पूजनीयो गणाधिपः॥'—भविष्यपु०। 'चतुर्थी गणनाथस्य मातृविद्धा प्रशस्यते। मध्याह्नव्यापिनी चेत् स्यात् परतश्चेत् परेऽहनि॥'—बृहस्पति। यदि आश्विनकृष्ण ४को व्रत हो और किसीका श्राद्ध भी हो तो दिनमें श्राद्ध करे और अपने भोजनको सूंघ कर गौ को खिला दे। रात्रिमें चंद्रमाको अर्घ्य दे कर भोजन करे। बाणपुत्री ऊषाने जब चित्रलेखाकी सहायतासे अनिरुद्धको मँगवा लिया तब अनिरुद्धकी माताने इस व्रतकी सहायतासे पुत्रका पता लगाया तथा ऊषासहित अनिरुद्ध घर आ गये थे।

संकृति—पु० [सं०] एक प्राचीन नरेशका नाम (महाभा० आदि० १.२६४)। ये रन्तिदेवके पिता थे (वन० २९४.१७)।

संकील—पु० [सं०] पुराणानुसार एक ऋषिका नाम।

संकोच—पु० [सं०] एक राक्षसका नाम, जो प्राचीन कालमें इस पृथिवीका शासक था (महाभा० शांति० २२७.५२)।

संक्रंदन—पु० [सं०] (१) इंद्रका एक नाम—दे० इंद्र। (२) पुराणानुसार भौत्य मनुका एक पुत्र। (३) विदर्भ देशके राजा तथा वपुष्मान्के पिता—दे० वपुष्मान् तथा (मार्कण्डेयपु० दम-चरित्र)।

संक्रम—पु० [सं०] भगवान् विष्णु द्वारा कुमार कार्त्तिकेयको दिये गये तीन पार्षदोंमेंसे एकका नाम (महाभा० शल्य० ४५.३७)।

संक्रांति—स्त्री० [सं०] ज्योतिषके अनुसार सूर्यकी १२ राशियाँ हैं जिनमें मकर और कर्क प्रधान हैं, जो ६ महीनोंके अंतरपर आती हैं। मकरसे सूर्य उत्तरायण तथा कर्कसे दक्षिणायन हो जाता है। पुराणानुसार उत्तरायणमें देवताओंका दिन तथा दक्षिणायनमें उनकी एक रात पूरी होती है। मकर-संक्रांतिसे ऋतु परिवर्तन होता है जब तिल दान करते तथा खाते हैं, अतः इसे तिल संक्रांति कहने लगे। उत्तर प्रदेशमें इसे खिचड़ी संक्रांति कहते हैं। महाराष्ट्रमें स्त्रियाँ इसमें कुंमकुम, हल्दी तथा तिल आदि दान करती हैं। पंजाबमें यह लोहड़ी या माघीके समान महत्त्व रखती है और दक्षिण भारतमें इसे 'पोंगल' कहते हैं। यह सारे भारतका पर्व है। मकरसंक्रांतिके दिन वर्षमें केवल एक बार गंगा-सागर संगमपर स्नान किया जा सकता है। इस तिथिपर तिल और गुड़का बड़ा महत्त्व है। कर्कसंक्रांतिको 'सतुआनी' कहते हैं जब ऋतुके फल, जल, कुंभादि तथा सत्तू दान करते हैं। सूर्य जब एक राशिसे दूसरी राशिमें जाते हैं तब संक्रान्ति होती है इस प्रकार वर्षमें बारह संक्रान्तियाँ होती है। जैसे—मेषसंक्रान्ति, वृषसंक्रान्ति, मिथुनसंक्रान्ति, कर्कसंक्रान्ति आदि।

'रवेः संक्रमणं राशौ संक्रांतिरिति कथ्यते'—नागरखंड)। ऐसी १२ संक्रांतियोंमें क्रमशः उत्तरायण और दक्षिणायन ये २ अयन होते हैं। अयन या संक्रांतिके समय व्रत तथा दान करनेके विषयमें मत भिन्न-भिन्न हैं—

(१) हेमाद्रिके अनुसार संक्रमण होनेसे पहले और पीछेकी १५-१५ घड़ियाँ शुभ हैं।

(२) बृहस्पतिके अनुसार दक्षिणायनके पहले और उत्तरायणके पीछेकी घड़ियाँ २०-२० शुभ हैं।

(३) देवलके अनुसार दक्षिणायनके पहले और उत्तरायणके पीछेकी ३०-३० घड़िया शुभ हैं।

संक्रांति-व्रत—पु० [सं०] संक्रांतिके दिन स्नानादिसे निवृत्त हो अक्षतका अष्टदल कमल बना सूर्यकी स्थापना कर पूजन करे। निराहार, साहार, अयाचित, नक्त या एकभुक्त व्रत यथाशक्ति करे तो सब पापोंका क्षय हो और सब प्रकारकी वृद्धि हो (वङ्ग ऋषि सम्मत)।

संग्रह—पु० [सं०] समुद्र द्वारा कुमार कार्त्तिकेयको दिये गये दो पार्षदोंमेंसे एकका नाम (महाभा० शल्य० ४५.५०)।

संग्रामजित्—पु० [सं०] भद्राके गर्भसे उत्पन्न श्रीकृष्णके १० पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (भाग० १०.६१.१९)।

संघात—पु० [सं०] २१ नरकोंमेंसे एक।

संचारक—पु० [सं०] कुमार कार्त्तिकेयका एक सैनिक अनुचर (महाभा० शल्य० ४५.७४)।

संज—पु० [सं०] (१) शिवका एक नाम। (२) ब्रह्माका एक नाम।

संजय—पु० [सं०] धृतराष्ट्रका मंत्री जिसे व्यासजीकी कृपासे दिव्य दृष्टि प्राप्त थी, अतः यह हस्तिनापुरमें बैठा-बैठा कुरुक्षेत्र-युद्धका हाल धृतराष्ट्रको सुनाता था (महाभा० भीष्म० २.१०)।

संजीवनी विद्या—स्त्री० [सं०] (१) एक विद्या जिससे मरे हुए व्यक्ति जिला दिये जा सकते थे। महाभारतके अनुसार दैत्यगुरु शुक्राचार्य यह विद्या जानते थे और देवगुरु बृहस्पतिके पुत्र 'कच'ने इन्हींसे इसे सीख कर और देवताओंको सिखा दिया था—दे० शुक्राचर्य, देवयानी तथा कच।

स्त्री० [सं०] विश्वकर्माकी पुत्री जो सूर्यकी पत्नी थीं और यम नामक पुत्र तथा यमुना नामकी पुत्रीकी माता बनी। सूर्यका तेज न सह सकनेके कारण संज्ञाने अपनी छायासे एक स्त्री की सृष्टि की और इसे ही अपने बच्चोंको दे पिताके घर चली गयी थी। इसके पिताने इसे बहुत फटकारा और पतिके पास लौट जानेको कहा। पर इसने यह न कर उत्तरकुरुवर्षमें जा घोड़ी रूपमें विचरण करने लगी। इसकी 'छाया' से सूर्यको सावर्णि और शनैश्चर दो पुत्र हुए। अब 'छाया' संज्ञाके बच्चोंको कम मानने लगी तब सारा भेद खुला और सूर्य संज्ञाकी खोजमें चले। अंतमें संज्ञा अश्विनी-रूपमें मिली और सूर्य घोड़ेका रूप धर उससे मिले। इस समागमसे अश्विनीकुमारद्वयका जन्म हुआ (मार्कण्डेयपु०)।

संततेयु—पु० [सं०] रौद्राश्वका एक पुत्र (भाग०)।

संतनु—पु० [सं०] पुराणानुसार एक बालकका नाम जो राधिकाके साथ रहता था (देवीभाग०)।

संतर्जन—पु० [सं०] कुमार कार्तिकेयका एक सैनिक अनुचर (महाभा० शल्य० ४५.५८)।

संतर्दन—पु० [सं०] भागवतानुसार केकयदेशके राजा धृष्टकेतु और श्रुतकीर्ति (शूर और मारिषाकी पाँच पुत्रियोंमेंसे एक तथा वसुदेवजीकी बहिन)के पांच पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (भाग०)।

संतान—पु० [सं०] महाभारतके अनुसार एक प्रकारका अस्त्र।

संतानक—पु० [सं०] पुराणानुसार एक लोकका नाम जो ब्रह्मलोकसे परे है (ब्रह्मां०)।

संतानगणपति—पु० [सं०] पुराणोक्त एक प्रकारके गणेशकी मूर्त्ति (शिवपु०, गणेशसहस्रनामावली तथा गणपति तत्त्वरत्न)।

संतानाष्टमी—स्त्री० [सं०] चैत्रकृष्णाष्टमीको होने वाला एक व्रत, जिसमें श्रीकृष्ण और देवकीकी पूजा करते हैं (विष्णुधर्मोत्तरपु०)।

संतापन—पु० [सं०] (१) कामदेवके ५ बाणोंमेंसे एक—दे० अंगज। (२) पुराणानुसार एक प्रकारका अस्त्र जो संताप देने वाला कहा गया है।

संतानिका—स्त्री० [सं०] कुमार कार्तिकेयकी अनुचरी एक मातृका (महाभा० शल्य० ४६.९)।

संतुषित—पु० [सं०] एक देव-पुत्रका नाम (ललितविस्तर)।

संत्य—पु० [सं०] अग्निदेवका एक नाम जो सब प्रकारके फल देने वाले कहे गये हैं।

संदर्शन—पु० [सं०] रामायणके अनुसार एक द्वीप विशेष।

संदेव—पु० [सं०] हरिवंशके अनुसार देवकका एक पुत्र।

संदेवा—स्त्री० [सं०] देवककी सात पुत्रियोंमेंसे एक पुत्री, जिन्हें श्रीदेवा भी कहते थे, वसुदेवकी पत्नी तथा—वसुहंस सुहंस आदिकी माता (भाग० ९.२४.२१-२३,५१ तथा हरिवंश)।

संध्या—स्त्री० [सं०] (१) ब्रह्माकी एक पुत्री=संध्या समयका साकार रूप। कहते हैं इसका विवाह शिवसे हुआ। शिवपुराणानुसार एक बार ब्रह्मा इससे बलात्कार करनेपर उद्यत हुए। यह देख इसने हिरनीका रूप धारण कर लिया और ब्रह्माने हिरनाका रूप धर इसका पीछा किया। शिवने एक तीरसे हिरनारूपधारी ब्रह्माका शिर काट दिया। तब ब्रह्माने असली रूपमें आ शिवकी स्तुति की। शिवका बाण अब तक आकाशमें है जिसे आर्द्रा नक्षत्र कहते हैं और हिरनेका शिर मृगशिरा नक्षत्र आजतक विद्यमान है। यही संध्या बादको तपोबलसे मेधातिथिकी पुत्री अरुंधती हुई जो वशिष्ठको ब्याही गयी थी (शिवपु० रुद्र-संहिता द्वितीय खंड, अध्याय १-२;३-६)। महाभारतके अनुसार सायंकालिक संध्याकी अधिष्ठात्री देवी सन्ध्या महर्षि पुलस्त्यकी पत्नी थी (उद्योग० ११७.१५)। (२) एक नदीका नाम, जो वरुणसभामें रहकर वरुणकी उपासना करती है (सभा० ९.२३)।

संपाति—पु० [सं०] (१) एक गिद्धका नाम जो विष्णुवाहन गरुड़का ज्येष्ठ पुत्र और जटायुका भाई था। रामायणानुसार इसका भाई जटायु बड़ा योगी था। सीता हरण कर जब रावण जा रहा था तब इसने रावणपर आक्रमण किया था पर लंकेशने उसके पंख काट दिये और वह पृथ्वीपर गिर पड़ा। इससे श्रीरामकी भेंट हुई थी जिनसे सीताका सारा हाल इसने कहा था। इसकी अंत्येष्टि क्रिया भी श्रीरामने ही की थी (रामचरितमानस, किष्किंधा दो० २६ से २८।३)। (२) माली नामक राक्षसका पुत्र जो उसकी पत्नी वसुदाके गर्भसे उत्पन्न हुआ था और रामजीका मित्र तथा विभीषणका मंत्री था (रामायण)। (३) रामायणके अनुसार

श्रीरामकी सेनाका एक वीर बंदर (रामायण)।

संप्रक्षाल–पु० [सं०] एक ऋषिका नाम जिनका जन्म प्रजापतिके पैर धोये जलसे हुआ था (ब्रह्मां० भाग०)।

संप्रदातन–पु० [सं०] एक नरकका नाम—दे० नरक।

संभल–पु० [सं०] एक स्थान विशेषका नाम जहाँ विष्णुयशा नामक एक ब्राह्मणके घर 'कल्कि अवतार' होनेवाला है। शायद यह मुरादाबाद जिलेका संभलपुर ही हो (कल्किपु०)।

संभूति–स्त्री० [सं०] दक्ष प्रजापतिकी एक पुत्री जो मरीचि ऋषिको व्याही थी। पूर्णमास इनका एक प्रतापी पुत्र था तथा कुष्टि, पुष्टि, त्विषा तथा अपचिति ये चार पुत्रियाँ थीं। मरीचिको एक प्रजापति माना जाता है तथा यह सप्तर्षियोंमें एक थे। किसी-किसी पुराणमें इनकी पत्नीका नाम कला (देवहूति और कर्दमपुत्रा भाग०) भी मिलता है (भाग० ३.२४.२२; वायु० २८.९;२४६.८६;२५०.४)।

संभेदतीर्थ–पु० [सं०] स्वर्णखनिसे दक्षिणमें तिलोदकी और सरयू नदियोंके संगमपर स्थित एक तीर्थ जहाँ स्नान करनेसे १० अश्वमेध यज्ञका फल प्राप्त होता है। भादों कृ० ३० को यहाँकी यात्रा करनी चाहिये। इसकी स्थापना श्रीरामने की थी (स्कंदपु० वैष्णव० अयोध्या-माहात्म्य)।

संयद्वसु–पु० [सं०] सूर्यकी ७ किरणोंमेंसे एक—दे० विश्वकार्य।

संयम–पु० [सं०] (१) राजर्षि कृशाश्वके पिता (भाग०)। (२) धूम्राक्षका एक पुत्र—दे० धूम्राक्ष।

संयमनी–स्त्री० [सं०] मेरु पर्वतके दक्षिण तथा मानसरोवरके पीछे वसी यमराजकी नगरी=यमपुरीका एक नाम, जिसे संयमनपुर भी कहते हैं (मत्स्य० १२२.२०-२१)। महाभारतके अनुसार यह यमकी राजधानी या पुरी है। इसका दूसरा नाम संयमन भी है (वन० १६३.८९; द्रोण० ७२.४४, ११९.२४; १४२.१०)। यहाँ कोई भी असत्य नहीं बोलता। निर्बल जन भी बलवान् द्वारा अपने ऊपर किये गये अन्यायका बदला लेते हैं। यह जीवोंको संयममें रखनेके कारण ही 'संयमनी' नामसे विख्यात है (अनु० १०२.१६)।

संयाति–पु० [सं०] (१) महाराज नहुषके छह पुत्रोंमेंसे एक (तृतीय) पुत्र (महाभा० आदि० ७५.३०-३१)। (२) महाराज पुरुके प्रपौत्र तथा प्रचिन्वानके पुत्रका नाम। यदुकुलकी पुत्री अश्मकी इनकी माता थी। दृषद्वान्की पुत्री वराङ्गी इनकी पत्नी थी, जिसके गर्भसे इनका अहंयाति नामका पुत्र उत्पन्न हुआ था (महाभा० आदि० ९५.१३-१४)।

संन्यासीय-श्राद्ध–पु० [सं०] किसी संन्यासी या यतिके पुत्रको चाहिये कि आश्विन कृ० १२ को उसके निमित्त श्राद्ध करे—'यतीनां च वनस्थानां वैष्णवानां विशेषतः। द्वादश्यां विहितं श्राद्धं कृष्णपक्षे विशेषतः॥' (पृथ्वीचंद्रोदये संग्रहे; मदन पारिजातमें वायु० का वचन)।

संवत्–पु० [सं०] विक्रमादित्यका चलाया हुआ सन् जो ५७ बी. सी. से चला है।

संवत्सर–पु० [सं०] (१) ब्रह्मां० २.१३.२३ के अनुसार यह अग्नि उर्फ ऋतके पिता थे। (२) प्रत्येक युगका पहला वर्ष जिसका देवता अग्नि होता है। संवत्सर उसे कहते हैं जिसमें मासादि भली भाँति निवास करते रहें—'स च संवत्सरः सम्यग् वसन्त्यस्मिन् मासादयः'—स्मृतिसार। 'द्वादश मासाः संवत्सरः'—श्रुति। कृष्णपक्षके आरंभमें मलमास आनेके भयसे शुक्लपक्षकी प्रतिपदासे संवत्सर आरंभ होता है। जब ब्रह्माजीने सृष्टिका आरंभ किया था तथा इसी दिन मत्स्यावतारका आविर्भाव और सत्ययुगका आरंभ हुआ था—दे० 'चैत्रे मासि जगद् ब्रह्मा ससर्ज प्रथमेऽहनि' (ब्रह्मां०)—दे० अनुसंधानमंजूषा।

ब्रह्माण्डपुराणानुसार संवत्सर-पूजन चैत्रशुक्ल १ को करना चाहिये, यदि चैत्र अधिक मास हो तो दूसरे चैत्रमें करे। प्रतिपदा पूर्वव्यापिनी रहनी चाहिये। 'प्रतिपत्सम्मुखी कार्या या भवेदापराह्णिकी' (स्कंद०)।

संवर्त्त–पु० [सं०] (१) धर्मशास्त्रके लेखकका नाम है (याज्ञवल्क्यस्मृति० १०४-५)। (२) अंगिरा ऋषिके आठ पुत्रोंमेंसे एक (तृतीय) पुत्र तथा देवताओंके आचार्य बृहस्पतिके अनुज एक ऋषिका नाम जिन्होंने इन्द्रद्युम्नको शिव माहात्म्यकी दीक्षा दी थी (स्कंदपु० माहेश्वर० कुमारिका-खं० १३.१२४-१२७)। महाभारतके अनुसार ये इन्द्रकी सभामें रहकर इन्द्रकी उपासना तथा ब्रह्माजीकी सभामें स्थित हो उनकी भी उपासना करते हैं (सभा० ७.१९; ११.१२)। इन्होंने प्लक्षावतरण तीर्थमें राजा उत्तंकको यज्ञ कराया था। बृहस्पतिने उत्तंकको यज्ञ कराना अस्वीकार कर दिया था (वन० ११९.१३-१७; शांति० २९.२०-२१)। ये शरशय्यापर पड़े भीष्मको देखने गये थे। उनके महाप्रयाणके समय भी उनके समीप थे (शांति० ४७.९; अनु० २६.५)।

संवर्त्तक–पु० [सं०] (१) कश्यप और कद्रूसे उत्पन्न एक काद्रवेय नागका नाम (महाभा० आदि० ३५.१०)। (२) श्रीकृष्णके भाई बलरामका एक नाम (भाग०)। (३) बलरामके हलका नाम (भाग०)। (४) माल्यवान् पर्वतपर सदा प्रज्वलित रहनेवाले अग्निदेवका नाम (महाभा० भीष्म० ७.२७-२८)।

संवर्तव्यापी–पु० [सं०] एक दुर्लभ तीर्थका नाम, जहाँ स्नान करनेसे मनुष्य सुन्दर रूपका भाजन बन जाता है (महाभा० वन० ८५.३१)।

संवेद्य–पु० [सं०] एक तीर्थका नाम, जहाँ प्रातःकालकी संध्याके समय स्नान करनेसे विद्या प्राप्त होती है (महाभा० वन० ८५.१)।

संश्रुत्य–पु० [सं०] विश्वामित्रके ब्रह्मवादी पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (महाभा० अनु० ४.५५)।

संस्थान–पु० [सं०] एक देशका नाम, महाभारत-युद्धमें जहाँके सैनिकोंको भीष्मकी रक्षाका भार सौंपा गया था (महाभा० भीष्म० ५१.७)।

संहतापन–पु० [सं०] ऐरावत-कुलका एक नाग, जो जनमेजयके सर्पसत्रमें जल मरा था (महाभा० आदि० ५७.११.९२)।

संहनन–पु० [सं०] राजा पुरुके प्रपौत्र तथा मनस्युके पुत्रका नाम। इनकी माताका नाम सौवीरी था। ये बड़े शूरवीर तथा महारथी थे (महाभा० आदि० ९४.५-७)।

संवह–पु० [सं०] (१) आकाश मार्गसे जानेवाले देववर्गके

विमानोंको स्वयं चालित करनेवाले एक वायुदेवको संवह कहते हैं। यह वेगवान् वायुदेव पर्वतोंतकका मान-मर्दन करनेवाले हैं (महाभा० शांति० ३२८.४१-४३)। (२) अग्निकी एक जिह्वाका नाम—दे० अग्नि।

संवृत्त–पु० [सं०] कश्यपकुलमें उत्पन्न एक काद्रवेवय नागका नाम (महाभा० उद्योग० १०३.१४)।

संवृत्ति–स्त्री० [सं०] ब्रह्माजीकी सभामें रहकर उनकी उपासना करनेवाली एक देवी (महाभा० सभा० १३.४३)।

संसृष्ट–पु० [सं०] पुराणानुसार एक पर्वतका नाम।

संहारभैरव–पु० [सं०] भैरवकी ८ मूर्त्तियोंमेंसे एक कालभैरव (स्कंदपु० काशी-खंड)।

संह्लाद–पु० [सं०] हिरण्यकशिपुके चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (भाग० ७.२.४७; ४.३१)।

सकाकोल–पु० [सं०] मनुके अनुसार एक नरकका नाम (मनुस्मृति ४.८९)।

सकृद्ग्रह–पु० [सं०] एक प्राचीन दक्षिण भारतीय देशका नाम (महाभा० ९.६६)।

सकृन्नंदा–स्त्री० [सं०] महाभारतके अनुसार एक नदीका नाम (महाभा०)।

सगर–पु० [सं०] अयोध्याके एक प्रसिद्ध सूर्यवंशी राजाका नाम जो राजा बाहुकी छोटी रानीके गर्भसे पिताकी मृत्युके पश्चात् उत्पन्न हुए थे। बाहुकी बड़ी पत्नीने गर्भवती छोटी रानीको विष दे दिया था और यह गर=विषके साथ उत्पन्न हुए थे, अतः 'सगर' नाम पड़ा। इनका विवाह काश्यपकी पुत्री सुमति तथा विदर्भराजकी पुत्री केशिनीसे हुआ था। भृगुवंशी मंत्रवेत्ता और्वके आशीर्वादसे विदर्भराजकन्या केशिनीके गर्भसे असमंजस नामका एक पुत्र हुआ। इसे अंशुमान् नामक एक पुत्र था। असमंजस अपने उद्धत स्वभावके कारण सगरके राज्यसे निकलवा दिया गया। सगरकी दूसरी रानी काश्यपपुत्री सुमतिके गर्भसे ६०,००० पुत्र हुए जो असमंजसके साथ सबके-सब दुष्ट हो गये। इन ६०,००० पुत्रोंको कपिल मुनिने जलाकर भस्म कर दिया था। इन्होंने एक अश्वमेध यज्ञ किया था जिसका घोड़ा इन्द्रने कपिलके आश्रमके निकट छिपा दिया था। घोड़ेको ढूँढते-ढूँढते ६०,००० सगर-पुत्र कपिल-आश्रम गये और उनका अपमान करने लगे जिससे कुपित हो कपिलने उन्हें भस्म कर दिया था (९.८.५-१२; नारदपु० पूर्व भाग प्रथम पाद ८.२१-२४, ८-१०३ आदि; विष्णु० ४.४.१-२२)। असमंजसके पुत्र अंशुमान् जिनके पुत्र दिलीप हुए जो भगीरथके पिता थे—दे० दिलीप तथा भगीरथ तथा (भाग० ९.९.१-२)।

सणु–पु० [सं०] एक भारतीय जनपदका नाम (महाभा० भीष्म० ९.४३)।

सतत–पु० [सं०] कुरुक्षेत्रकी सीमाके अन्तर्गत एक वैष्णव तीर्थका नाम, जहाँ श्रीहरिका सदा निवास रहता है, जहाँ स्नान करनेसे मनुष्यको अश्वमेध यज्ञका फल प्राप्त होता है (महाभा० वन० ८३.१०)।

सतमसा–स्त्री० [सं०] मार्कण्डेयपुराणानुसार एक नदीका नाम।

सती–स्त्री० [सं०] (१) दक्ष प्रजापतिकी पुत्री जो शंकर भगवान्को व्याही थी। दक्षके यज्ञमें सतीने प्राण त्याग दिये और फिर हिमाचलकी पत्नी मेनाके गर्भसे उत्पन्न हुई थी (भाग० ४.३.५,२७१-२९; शिवपु० रुद्र-संहिता १४-२३)। (२) विश्वामित्रजीकी पत्नीका नाम। (३) अंगिरा ऋपिकी पत्नीका नाम (इनकी स्मृति, स्वधा और श्रद्धा ये तीन पत्नियाँ और थीं)।

सतीपंथ सरोवर–पु० [हिं०] सत्यपथके निकट एक पवित्र सरोवर—दे० सत्यपथ।

सत्य–पु० [सं०] (१) एक ऋषिका नाम, जो युधिष्ठिरकी सभामें विराजते थे (महाभा० सभा० ४.१०)। (२) एक अग्निका नाम, जो निश्च्यवन् नामक अग्निके पुत्र हैं। ये निष्पाप तथा कुलधर्मके प्रवर्तक हैं। वेदनासे छटपटा रहे जीवोंको वेदनासे छुटकारा दिलानेके कारण इनका दूसरा नाम निष्कृति है। ये ही प्राणियों द्वारा सेवित घर और बाग-बगीचे आदिकी शोभा बढ़ाते हैं। इनके पुत्रका नाम स्वन है (वन० २१९.१३-१५)।

सत्यक–पु० [सं०] एक यदुवंशी क्षत्रियका नाम जो शिनिके पुत्र तथा सात्यकिके पिता थे (भाग० ९.२४.१३; महाभा० आदि० ६३.१०५)।

सत्यकर्मा–पु० [सं०] त्रिगर्तराज सुशर्माके भाईका नाम, जिसने अर्जुनको मारनेकी प्रतिज्ञा की थी। यह एक संशप्तक योद्धा था (महाभा० द्रोण० १७.१७-१८)।

सत्यकीर्त्ति–पु० [सं०] मंत्र बलसे चलाया जानेवाला एक अस्त्र।

सत्यकेतु–पु० [सं०] (१) अक्रूरजीका पुत्र। गांदिनीके गर्भसे उत्पन्न अक्रूर श्वफल्कके पुत्र तथा श्रीकृष्णके चाचा थे, अतः सत्यकेतु श्रीकृष्णके भाई हुए (भाग०)। (२) महाराज पुरूरवाके वंशोत्पन्न धर्मकेतुके पुत्र तथा विभुके पिता (विष्णु० ४.८.१९-२०)।

सत्यजित्–पु० [सं०] (१) राजा द्रुपदके भाईका नाम, जिन्हें साथ लेकर द्रुपदने अर्जुनपर धावा बोला था। अर्जुनके साथ इनका युद्ध हुआ था। अर्जुनसे हार खा कर इन्होंने युद्ध-भूमिका त्याग किया (महाभा० आदि० १३७.४२-४६, ५३)। (२) सत्यभामाके पिता, जिन्हें सत्राजित् भी कहते थे। यह श्रीकृष्णके श्वशुर थे (भाग० १०.५६.३८,४३-४४)। (३) तीसरे मन्वंतरके इंद्रका नाम (भाग० ८.२४)। (४) एक यक्षका नाम, जो कार्तिक मासमें विष्णु (आदित्य) के रथमें सौरगणके अन्य छह साथियोंके साथ अधीष्ठित रहता है (भाग० १२.११.४४)।

सत्यदेव–पु० [सं०] कलिंग देशकी सेनाका एक योद्धा, जो कलिंगके राजा श्रुतायुका चक्ररक्षक था। यह भीम द्वारा मारा गया (महाभा० भीष्म० ५४-७६)।

सत्यधर्मा–पु० [सं०] एक सोमवंशी राजकुमार जो युधिष्ठिरके सहायक थे (महाभा० उद्योग० १४१.२५)।

सत्यधृति–पु० [सं०] (१) शरद्वान्के द्वारा अहल्यामें शतानन्द उत्पन्न हुए। शतानन्द्के धनुर्वेदमें पारंगत सत्यधृति ऋपि हुए। उनकी तपस्यासे डर कर इंद्रने इनका तप भंग करनेके लिए एक अप्सरा उर्वशीको भेजा था पर वह असफल रही। इसके जानेके समय घासमें पड़े दो नवजात शिशु मिले जिन्हें महाराज शांतनुने दया करके पाल-पोस कर

बड़ा किया और दोनोंमेंसे लड़केका नाम 'कृप' और लड़कीका नाम 'कृपी' रखा गया। विष्णुपुराणानुसार कृप और कृपी शरद्वान् ऋषिके प्रपौत्र, शतानन्दके पौत्र और सत्यधृतिकी संतानें ठहरती हैं। ये उर्वशी अप्सराके गर्भसे उत्पन्न हुए थे जिन्हें घासमें छोड़ अप्सरा स्वर्ग चली गई थी और शांतनुने इन्हें पाला था, आगे चलकर कृपी द्रोणाचार्यकी पत्नी तथा अश्वत्थामाकी माता हुई (विष्णु० ४.१९.६२-६८)। (२) पाण्डव-पक्षके एक महारथी योद्धाका नाम, जिन्हें भीष्मने महारथी कह कर सम्मानित किया था (महाभा० उद्योग० १७१.१८)। ये द्रौपदी स्वयंवरमें संमिलित हुए थे। इन्होंने महाभारत-युद्धमें हिडिम्बा-पुत्र घटोत्कचकी सहायता की थी (भीष्म ९३.१३)। (३) राजा क्षेमके पुत्र एक पाण्डवपक्षके योद्धाका नाम (द्रोण० २३.५८)।

सत्यनारायण–पु० [सं०] विष्णु भगवानका एक नाम, जिनके नामसे एक कथा बहुत अधिक प्रचलित है। कहते हैं कि सम्राट् अकबरके धार्मिक मत 'दीन इलाही'के प्रचारके लिए यह कथा लिखवायी गयी थी पर पीछे पंडितोंने इसे पौराणिक तथा हिन्दूधर्मके अनुकूल कर लिया। प्रायः सब शुभ कार्योंमें इस कथाका स्थान रहता है, अतः आजतक इसका बहुत अधिक प्रचार है। बंगभाषाकी कथा 'सत्यपीर' शायद यही है—दे० सत्यनारायण तथा (इतिहास समुच्चय)।

सत्यपद–बदरीकाश्रम तीर्थमें स्थित एक तीर्थ जहाँ एकादशीको स्वयम् विष्णु स्नान करते हैं (स्कंदपु० वैष्णव० बदरिका-माहात्म्य)।

सत्यपथ–पु० [सं०] पर्वत राजके शिखरोंपर स्थित केदारनाथ तथा बदरीनाथके हिमाच्छादित दो पवित्र तीर्थोंके बीचमें स्थित एक पवित्र स्थान। बदरीनाथसे यह स्थान १५ मील दूर है और इसीके पास सतोपंथ सरोवर भी है जिसके तीन कोनोंमें ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव नामके तीन घाट है। कहते हैं यह सरोवर ही माँ प्रकृतिका प्रतिनिधिस्वरूप है।

सत्यपाल–पु० [सं०] एक ऋषिका नाम जो राजा युधिष्ठिरकी सभामें विराजते थे (महाभा० सभा० ४.१४)।

सत्यभामा–पु० [सं०] श्रीकृष्णकी आठ पटरानियोंमेंसे एक, जो सत्राजित् या सत्यजित्की पुत्री थी। स्कंदपुराणानुसार पूर्व जन्ममें यह हरिद्वारनिवासी देवशर्माकी गुणवती पुत्री थी जो कार्तिक-स्नान तथा तुलसी-पूजनसे श्रीकृष्णकी पत्नी हुई (स्कंदपु० वैष्णव० कार्तिक माहात्म्य)। इन्हींके लिए श्रीकृष्ण स्वर्गसे पारिजात लाने गये थे जिसके कारण इंद्रसे युद्ध भी करना पड़ा था। भानु, सुभानु, स्वर्भानु, प्रभानु, भानुमान्, चंद्रभानु, बृहद्भानु, प्रतिभानु, श्रीभानु, ये इनके १० पुत्र थे (भाग० १०.६१.१०)।

सत्ययुग–पु० [सं०] पुराणानुसार सबसे पहला युग जो सबसे उत्तम कहा गया है। इसका दूसरा नाम कृतयुग भी है। इसका मान १७२८००० वर्षोंका है और इसका आरंभ वैशाखशुक्ल ३से माना गया है। इस तिथिको अक्षय तृतीया कहते हैं जो अति पवित्र है और इसमें दान-पुण्य तथा स्नानका बड़ा माहात्म्य है। हनुमान्जीने महाभारतमें इस युगके धर्मका वर्णन किया है। मार्कण्डेयजीने भी इसका वर्णन किया है (वन० १४९.११-२५;१८८.२२)। कलियुगके पश्चात् श्री कल्कि अवतार द्वारा पुनः इस युगकी स्थापना की जायगी (वन० १९१.१-१४)।

सत्ययुगाद्या (तिथि)–स्त्री० [सं०] वैशाखशुक्ला तृतीया, जिस तिथिसे सत्ययुगका प्रारंभ माना गया है (हि० वि० को०)।

सत्ययौवन–पु० [सं०] एक विद्याधरका नाम (हि०वि०को०)।

सत्यरथ–पु० [सं०] (१) विदर्भ देशका एक बड़ा धर्मात्मा राजा जो शाल्व देशके राजाओंसे परास्त हुआ और मारा गया। इसकी गर्भवती रानी विधवा होकर डरसे भागती हुई एक सरोवरपर पहुँची जहाँ उसका गर्भस्थ बालक उत्पन्न हुआ और शीघ्र ही कुछ देर बाद सरोवरका एक ग्राह उसे (रानीको) निगल गया। स्वयम् शंकरने भिक्षुरूपमें आकर इस नवजात शिशुके लालन-पालनका भार एक विधवा ब्राह्मणीको दिया था (शिवपु० शतरुद्र-संहिता अध्याय ३१)। (२) त्रिगर्तके राजा सुशर्माका भाई जो अपने पांच रथी भाइयोंमें प्रधान था (महाभा० उद्योग० १६६.११)।

सत्यलोक–पु० [सं०] सबसे ऊपरका लोक जहाँ ब्रह्माका निवास स्थान कहा गया है (स्कंदपु० काशी-खंड, पूर्वार्ध)।

सत्यवती–स्त्री० [सं०] (१) वसु राजनामक धीवरकी कन्या जिसे मत्स्यगंधा भी कहते थे। यह वास्तवमें राजा उपरिचर वसुकी पुत्री थी। इस राजाका उप नाम वसु था और इनकी पत्नीका नाम गिरिका था। एक बार शिकार खेलते समय इनका रेतः पात हुआ जिसे श्येन पक्षी द्वारा इन्होंने अपनी रानीको भेजा था। परमार्गमें ही रेतः यमुनाके जलमें गिर पड़ा जिसे अद्रिका नामकी अप्सराने पी लिया क्योंकि वह मछलीका रूप धर यमुनामें ही रहती थी। इससे उसे गर्भ रह गया। कुछ दिनों पश्चात् मछुओंके जालमें यह फँस गयी और राजा वसुको अर्पण की गयी। इसके पेटसे एक पुत्र और एक कन्या निकली। पुत्र आगे चल मत्स्यके नामसे प्रसिद्ध हुआ और कन्या मछुओंको दे दी गयी। इस कन्याके शरीरसे मछलीकी गंध आती थी अतः इसका नाम 'मत्स्यगंधा' पड़ा। कुमारी अवस्थामें ही पराशर ऋषिके योगसे इसके गर्भसे कृष्ण द्वैपायन उत्पन्न हुए थे और यह 'व्यास-माता' कहलायी—दे० पराशर (महाभा० आदि० ६३.५०-८६)।

यह अति सुंदरी थी और अब तो पराशर मुनिकी दयासे इसके शरीरकी 'दुर्गंध' 'सुगंध'में परिणत हो गयी थी नाम भी मत्स्यगंधासे 'योजनगंधा' हो गया था। कुछ दिनों पश्चात् इनका विवाह चंद्रवंशी राजा शांतनुसे हुआ जो भीष्मके पिता थे सत्यवतीके गर्भसे शांतनुके चित्रांगद और विचित्रवीर्य दो पुत्र हुये (महाभा० आदि० १०१.१-२)। आगे चलकर विचित्रवीर्यकी अंबिका और अंबालिका दो स्त्रियाँ ही प्रसिद्ध कौरव तथा पांडुकी माता हुई—दे० अंबिका, अंबालिका, वेदव्यास, अच्छोदा तथा (ब्रह्मां० ३.१०.५४,७४, वायु० ७३.२.२१; मत्स्य अ० १४)। (२) विश्वामित्र ऋषिके पिता और कुशिक राजाके पुत्र गाधिकी पुत्री तथा ऋचीक ऋषिकी पत्नी जिनके गर्भसे जमदग्नि नामके पुत्र हुए थे। प्रसिद्ध परशुरामजी जमदग्निके ही पुत्र थे जो इक्ष्वाकुवंशोत्पन्न रेणुकी पुत्री रेणुकाके गर्भसे उत्पन्न हुए थे। कहते हैं यह (सत्यवती) कौशिकी नदी हो गयी थी (विष्णु० ४.७.१६-३८)।

सत्यवर्मा—पु० [सं०] त्रिगर्तराज सुशर्माका एक भाई, जिसने अर्जुन (पाण्डव)को मारनेकी प्रतिज्ञा की थी (महाभा० द्रोण० १७.१७-१८)।

सत्यवसु—पु० [सं०] दक्ष प्रजापतिकी पुत्री विश्वाके गर्भसे उत्पन्न धर्मके पुत्र १० विश्वेदेवोंमेंसे एकका नाम। ब्रह्मां० ३.३.३०; वायु० ६.३० आदिमें क्रतु, दक्ष, श्रव, सत्य, काल, काम, मुनि, पुरुरवा, मार्दवा और रोचमान यो विश्वेदेवोंके दस नाम कहे गये हैं। वायुमें अन्तिम ४ नाम यों है धुनि, कुरुवान्, प्रभवान् और रोचमान। परन्तु सत्यवसु कहीं दृष्टिगोचर नहीं हुआ।

सत्यवाक्—पु० [सं०] एक मौनेय देवगन्धर्वका नाम, जो दक्षपुत्री मुनि और कश्यप ऋषिका पुत्र था (महाभा० आदि० ६५.४३)।

सत्यवादिनी—स्त्री० [सं०] वोधिद्रुमकी एक देवीका नाम।

सत्यवान्—पु० [सं०] शाल्व देशके राजा द्युमत्सेनके पुत्र जिनकी पत्नी सावित्रीके पातिव्रत्य धर्मकी कथा पुराणोंमें प्रसिद्ध है—दे० सावित्री। इनके पिता अंधे होनेके कारण गद्दीसे उतार दिये गये थे अतः परिवार सहित वनमें रहते थे। मद्रदेशाधिपति अश्वपतिने अपनी पुत्री सावित्रीका विवाह सत्यवान्से कर दिया। अल्पायु होनेके कारण सत्यवान्की मृत्यु हो गयी पर सावित्रीने अपने पातिव्रत्य धर्मके बलसे यमराजको प्रसन्न कर पतिको पुनः जीवित कर लिया। इनका नाम सावित्रीके कारण ही विशेष प्रसिद्ध हो गया है। सावित्रीकी तपस्यासे इनकी आयु ४०० वर्ष हो गई थी—दे० सावित्री-व्रतकथा।

सत्यव्रत—पु० [सं०] (१) हरिवंशके अनुसार राजा त्रय्यारुणका पुत्र एक चंद्रवंशी राजा। इसकी बुद्धि खोटी थी अतः इसने दूसरेकी पत्नीका अपहरण कर लिया था जिससे रुष्ट हो त्रय्यारुणने इसे त्याग दिया था और यह चांडालोंके घरके निकट रहने लगा (विष्णु० ४.३.२१)—दे० त्रिशंकु। (२) धृतराष्ट्रके १०० पुत्रोंमें एक महारथी पुत्र (महाभा० आदि० ६३.११९-२०)। (३) सातवें मनुका नाम। (४) त्रिगर्तके राजा सुशर्माका एक भाई, जो एक संशप्तक योद्धा था (महाभा० द्रोण १७.१७-१८)।

सत्यसंध—पु० [सं०] (१) श्रीरामचंद्रका एक नाम (रामायण)। (२) राजा जनमेजयका एक नाम। (३) धृतराष्ट्रका एक पुत्र जिसका नामान्तर सत्यव्रत था यह सत्यसेन तथा संघके नामसे भी विख्यात था (महाभा० आदि० ६३.११९-१२०)। (४) मित्रद्वारा कुमार कार्त्तिकेयको दिये गये दो पार्षदोंमेंसे एकका नाम (शल्य० ४५.४१)। (५) एक महान् व्रतधारी प्राचीन नरेश, जिन्होंने अपने प्राणों द्वारा एक ब्राह्मणकी जीवन रक्षा की थी और जिससे स्वर्गगामी हुए थे (शांति० २३४.१६)।

सत्यसंधा—स्त्री० [सं०] द्रौपदीका एक नाम (महाभा०)।

सत्यसेन—पु० [सं०] धृतराष्ट्रके १०० पुत्रोंमेंसे एक। इसका नामान्तर सत्यव्रत था। यह ग्यारह महारथियोंमेंसे एक था (महाभा० आदि० ६३.११९)। यह अपने भाइयोंके साथ शल्यकी रक्षामें तैनात था (भीष्म० ६२.१७) अभिमन्युने इसे घायल किया था भीमसेन द्वारा इसका वध किया गया था (कर्ण० ८४.२-६)।

सत्यहित—पु० [सं०] (१) बृहद्रथ वंशोत्पन्न एक चंद्रवंशी राजा जो मगध नरेश ऊर्जका पिता था अर्थात् मथुरापति कंसके श्वशुर मगधराज जरासंधका यह परदादा था (हरिवंश)। (२) पुष्पवान्का पिता तथा जहूके दादाका नाम (भाग०)। (३) ऋषभ (वृषभ=विष्णु०)-पुत्र पुष्पवान्के पुत्र (वायु० ९९.२२४; विष्णु० ४.१९.८२)।

सत्या—स्त्री० [सं०] (१) जानकीजीका एक नाम (रामायण)। (२) व्यासजीकी माताका एक नाम (सत्यवती तथा महाभा०)।

सत्योपपावन—पु० [सं०] पुराणानुसार एक पवित्र फलके पेड़का नाम जो शरदंडा नदीके तटपर है।

सत्राजित्—पु० [सं०] सत्यभामाके पिता एक यादव। सत्यभामा श्रीकृष्णकी पटरानियोंमेंसे एक थीं। सत्राजित्ने सूर्यतपस्या कर स्यमंतक मणि प्राप्त की थी जिसकी चोरी इसने श्रीकृष्णको लगायी थी। यह मणि इसके भाई प्रसेनजित्को आखेटमें मार एक सिंह लिये जा रहा था जिससे जाम्बवान् रीछने छीना था। जाम्बवान्से यह मणि ले श्रीकृष्णने सत्राजित्को लौटा दी थी, अतः सत्राजित बड़ा लज्जित हुआ और अपनी पुत्री सत्यभामाका विवाह श्रीकृष्णसे कर दिया। सत्यभामासे विवाह न होनेसे हताश होकर शतधन्वाने सत्राजित्को मार दिया। जिसके अपराधमें श्रीकृष्णने शतधन्वाका वध किया। सत्राजित्ने स्यमंतक मणिकी चोरीका कलंक श्रीकृष्णको भादो सुदी चौथको लगाया था, अतः तबसे आजतक इस (भाद्रपदशुक्ला चतुर्थी) तिथिमें चंद्रमाको कलंक लगनेके भयसे कोई नहीं देखता (भाग०)। स्कंदपुराणानुसार सत्ययुगके अंतमें हरद्वारमें देवशर्मा नामके एक ब्राह्मण थे जो अत्रिकुलमें उत्पन्न हुए थे। यही पुनर्जन्ममें सत्राजित् हुए थे। देवशर्माकी पुत्री गुणवती ही पुनर्जन्ममें सत्यभामा हुई (स्कंदपु० वैष्णव० कार्तिक-महात्म्य) तथा —दे० प्रसेनजित्; जाम्बवान्; सत्यभामा; स्यमंतक।

सत्त्व—पु० [सं०] धृतराष्ट्रका एक पुत्र (महाभा०)।

सथिया—पु० [हिं०] देवताओंके तलवोंमेंका एक शुभ चिह्न जो इस आकारका होता है= 卐। यह चिह्न हिंदुओंके हर शुभ कार्यमें बनाया और पूजा जाता है

सदन—पु० [सं०] एक प्रसिद्ध भगवद्भक्त कसाईका नाम (भाग०)।

सद्योजात—पु० [सं०] शंकरका पहला अवतार जो श्वेतलोहितकल्पमें हुआ था—दे० श्वेतलोहितकल्प।

सद्वती—स्त्री० [सं०] पुलस्त्यकी एक पुत्री जो अग्निदेवको व्याही थी —दे० पुलस्त्य तथा अग्नि।

सधूमवर्णा—स्त्री० [सं०] अग्निकी ७ जिह्वाओंमेंसे एक—दे० अग्नि।

सनंदन—पु० [सं०] ब्रह्माके चार मानस पुत्रोंमेंसे एक, जिनका सांख्य मत कपिलके भी पूर्वका माना जाता है—दे० सन।

सनू—पु० [सं०] ब्रह्माके एक मानस पुत्रका नाम जिन्हें सनातन भी कहते हैं। सनक, सनंदन, सनत्कुमार और सनातन ये चार ब्रह्माके मानस पुत्र हैं जिनकी अवस्था शंकरजीसे भी अधिक कही गयी है। इनके मुखमें निरंतर 'श्रीहरिः शरणम्' मंत्र रहता है। इनकी अवस्था सदा

५ वर्षके शिशुकीसी रहती है। नारदपुराणका पूरा पूर्वभाग इनके ही द्वारा नारदको उपदिष्ट है (छान्दोग्योपनिषद् ७।१।१-२६; महाभा० शांति० २२७, २८६; अनु० १६५-१६९ कुम्भको०)। इन्होंने नारदजीको भगवत्तत्त्वका उपदेश दिया था। इन्होंने सांख्यायनको श्रीमद्भागवत पढ़ाया था।

सनक–पु० [सं०] ब्रह्माजीके चार मानस पुत्रोंमेंसे एक जो विष्णुके सभासद माने गये हैं—दे० सन तथा (भाग० ४.२२.३९)।

सनत्कुमार–पु० [सं०] ब्रह्माके चार मानस पुत्रोंमेंसे एक जो सबसे पहले प्रजापति कहे गये हैं। सनकादिके अनुसार भगवद्भक्तिके सहयोगसे बन्धनोन्मुक्ति जितनी सरल है, उतनी इंद्रियनिग्रह आदि योग अथवा संन्याससे नहीं (भाग० ४.२२.३९)।

सनत्सुजात–पु० [सं०] ब्रह्माके सात मानस पुत्रोंमेंसे एक। इनके द्वारा धृतराष्ट्रको उपदेश (महाभा० उद्योग० अध्याय ४२-४६)।

सन्नति–स्त्री० [सं०] (१) दक्ष प्रजापतिकी एक पुत्रीका नाम जिसका विवाह क्रतुसे हुआ था (ब्रह्मां० वायु० तथा क्रतु)। (२) प्रतर्दन तथा मदालसाके पुत्र अलर्कका एक पुत्र जो सुनीथके पिता थे (विष्णु० चतुर्थ अंश)।

सन्नतिमान्–पु० [सं०] पुरुवंशोत्पन्न राजा सुमतिका पुत्र तथा कृतका पिता। कृतको हिरण्यनामने योग विद्याकी शिक्षा दी थी तथा इसने प्राच्य सामग श्रुतियोंकी २४ संहिताएँ रची थी (विष्णु० ४.१९.४९-५२)।

सन्नादन–पु० [सं०] श्रीरामचंद्रकी सेनाका एक वानर सेनानायक (रामा०)।

सपत्नजित्–पु० [सं०] सुदत्ताके गर्भसे उत्पन्न श्रीकृष्णके एक पुत्रका नाम (भाग०)।

सप्तद्वीप–पु० [सं०] पुराणानुसार पृथ्वीके सात बड़े और मुख्य विभाग, यथा = जम्बूद्वीप, कुशद्वीप, प्लक्षद्वीप, शाल्मलिद्वीप, क्रौंचद्वीप, शाकद्वीप और पुष्करद्वीप—ये ही हैं ७ द्वीप (नानापुराणादि)।

सप्तपाताल–पु० [सं०] अतल, वितल, सुतल, तलातल, महातल, रसातल और पाताल—ये ही ७ पाताल हैं (भाग० ५.२४.७)।

सप्तपुरी–स्त्री० [सं०] अयोध्या, मथुरा, माया (हरिद्वार), काशी, कांची, अवंतिका (उज्जयिनी) और द्वारका—ये सात पवित्र तीर्थस्थान हैं, जो मोक्षदायक कहे गये हैं—दे० अलग अलग नामांकित विवरण।

सप्तमातृका–स्त्री० [सं०] तंत्रानुसार शुभ अवसरोंपर पूजी जानेवाली सात देवियाँ जिनके नाम ये हैं = ब्राह्मी, माहेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी, वाराही, ऐंद्री या इंद्राणी और चामुंडा। इनकी पूजाविधि अलग-अलग है। अन्य मतानुसार ये काम, क्रोध आदि ८ विकारोंकी ८ अधिष्ठात्रीदेवियाँ हैं—दे० मातृका।

सप्तरथा–स्त्री० [सं०] महाराज त्रय्यारुणके पुत्र सूर्यवंशी राजा सत्यव्रतकी पत्नी तथा प्रसिद्ध सत्यव्रती राजा हरिश्चंद्रकी माताका नाम जो केकैयवंशकी कन्या थीं (हरिवंश)।

सप्तराव–पु० [सं०] गरुड़की प्रमुख संतानोंमेंसे एकका नाम (महाभा० उद्योग० १०१.११)।

सप्तर्षि–पु० [सं०] सात ऋषियोंका समूह जो शतपथब्राह्मणके अनुसार ये हैं = गौतम, भरद्वाज, विश्वामित्र, जमदग्नि, वशिष्ठ, कश्यप और अत्रि, पर महाभारतमें दिये सप्तर्षियोंके नाम ये हैं = मरीचि, अत्रि, अंगिरा, पुलह, क्रतु, पुलस्त्य और वशिष्ठ। पुराणोंमें ये सात ब्रह्मा निश्चित किये गये हैं। सम्भूति, अनसूया, स्मृति, क्षमा, सन्नति, प्रीति और अरुन्धती क्रमशः इनकी पत्नियाँ हैं, जिन्हें लोकमाता कहते हैं।

सप्तर्षिकुण्ड–पु० [सं०] कुरुक्षेत्रकी सीमाके अन्तर्गत ब्रह्मोदुम्बर तीर्थमें स्थित एक कुण्डका नाम, जिसमें स्नान करनेका महान् माहात्म्य कहा गया है (महाभा० वन० ८३.७२)।

सप्तवध्र–पु० [सं०] एक वैदिक ऋषिका नाम जिनके सात भाई थे। सप्तवधृकी वंशवृद्धि न हो, इसलिए इनके भाई इनकी पत्नीसे इनका संयोग ही नहीं होने देते थे। प्रत्येक दिन रात्रिमें सातों भाई मिलकर इन्हें एक बड़ेसे पिंजड़ेमें बंद कर ताला लगा देते थे जिसमें यह अपनी पत्नीसे न मिल सकें। भाइयोंके इस आचरणसे दुखी होकर इन्होंने अश्विनीकुमारोंकी स्तुति की, जिनकी कृपासे यह रातको पिंजड़ेसे निकल जाते और प्रातःकालके पहले ही फिर उसीमें आ बैठ जाते थे।

सप्तसप्तमी–स्त्री० [सं०] वार आदिके योग विशेषसे माघ शुक्ला सप्तमीके भेद = जया, विजया, महाजया, जयंती, अपराजिता, नंदा और भद्रा। अथवा अर्कसंपुटक, मरीचि, निम्बपत्र, सुफला, अनोदना, विजया और कामिका। ये सब रविवारको पञ्चतारक (रो० श्ले० म० ह०) अथवा पुन्नाम (मृ० पु० पु० ह० अनु०) नक्षत्र होनेसे सिद्ध होती हैं। इसमें जप-तपका अनन्तफल होता है (सूर्यारुण-हेमाद्रि)।

सप्तसारस्वत–पु० [सं०] कुरुक्षेत्रकी सीमाके अन्तर्गत एक प्राचीन तीर्थ, जहाँ मंकणक मुनिको सिद्धि प्राप्त हुई थी (महाभा० वन० ८३.११५-११६)। यह सरस्वतीतीर्थोंमें सर्वश्रेष्ठ है। श्रीबलराम तीर्थयात्राके सिलसिलेमें यहाँ पधारे थे (महाभा० शल्य० २७.६१)।

सप्तसिंधु–पु० [सं०] (१) वेदोंमें ७ नदियोंका उल्लेख मिलता है जिसके अनुसार सात नदियाँ ये हैं = गंगा, यमुना, सरस्वती, शतद्रु (शतलज), परुष्णि, मरुद्वृद्धा और आर्जीकीया (अथवा विपाशा या व्यास)। विलसन साहब परुष्णिको इरावती अथवा हाइड्रोटस् अथवा रावी नदी बतलाते हैं, परन्तु वेदोक्त मरुद्वृद्धा ही इरावती है, क्योंकि इसे असिक्नी (अंकसिनी, चंद्रभागा, चिनाब) और वितस्ता (हाइडासपेस या झेलम)से मिलनेवाली नदी कहा गया है।

महाभारतके अनुसार गंगा, यमुना, प्लक्षगा, रथस्था, सरयू, गोमती और गंडक अथवा वस्वोकसारा, नलिनी, पावनी, गंगा, सीता, सिन्धु और जंबूनदी ही सात नदियाँ हैं। रामायण और पुराणानुसार शिवकी जटासे गिरनेके पश्चात् जिन सात धाराओंमें गंगाजी विभाजित हो गयी हैं वे ही सात धाराएँ सात नदियाँ (सप्तसिंधु) हैं। गंगाकी सात धाराएँ ये हैं = नलिनी और ह्लादिनी, पावनी = पूर्वको बहनेवाली तीन धाराएँ; चक्षु, सीता, और सिंधु = पश्चिमको बहनेवाली तीन धाराएँ; सातवीं भागीरथी दक्षिणकी

ओर बही। (२) संसारके ७ समुद्रोंका सामूहिक नाम। (३) सात नदियोंके एक देशका नाम।

सफला–स्त्री० [सं०] पौष कृष्ण एकादशी, जिस दिन व्रतादि करते हैं। चम्पावतीके माहिष्मान् राजाके लुम्यक नामक पुत्रने यह व्रत कर अपना खोया राज्य तथा ऐश्वर्य पुनः प्राप्त किया था (पद्मपु०)।

सभानर–पु० [सं०] (१) कक्षका एक पुत्र (हरिवंश)। (२) भाग० ९.२३.१ के अनुसार अनुके तीन पुत्रोंमेंसे एक पुत्र तथा कालनरका पिता।

समंतपंचक–पु० [सं०] कुरुक्षेत्रका एक नाम। जमदग्निके पुत्र परशुरामने क्षत्रियोंका संहार करके उनके ही रक्तसे यहाँ ५ तालाव वनवाये और उसी रक्तसे अपने पिताका श्राद्ध किया था (महाभा० आदि० २.४-५; वन० ११७.९-१०) परशुरामजीके पितरोंके वरदानसे यह प्रसिद्ध तीर्थ हो गया (आदि० २.८-११)। कार्त्तवीर्य सहस्रार्जुनसे इनका कुछ झगड़ा था जिससे इन्होंने उसके सव हाथ काट डाले और कार्त्तवीर्यके पुत्रोंने जमदग्निको मार डाला। अतः क्रुद्ध हो परशुरामने २१ वार क्षत्रियोंका संहार कर उपर्युक्त तालाबोंको रक्तसे भर पिताका श्राद्ध भी उसी रक्तसे किया था (भाग० १.३.२०;२.७.२२;१०.४०.२०)। द्वापर और कलियुगकी सन्धिमें कौरवों और पांडवोंका महाभारत-युद्ध भी यही हुआ था (आदि० २.१३)।

समंतर–पु० [सं०] एक प्राचीन देशका नाम (महाभा० भीष्म० ९.५०)।

रामकोश–पु० [सं०] एक प्राचीन देशका नाम (महाभा०)।

समता–स्त्री० [सं०] उतथ्य ऋषिकी पत्नीका नाम (भाग० ९.२०.३५-३६ = ममता)।

समयानन्द–पु० [सं०] भैरवकी एक मूर्त्तिका नाम (तन्त्र-शास्त्र)।

समरथ–पु० [सं०] राजा विराटके भाईका नाम, जो पांडवोंके प्रधान सहायक थे (महाभा० द्रोण० १५८.४२)।

समुद्रचुलुक–पु० [सं०] चुल्लुओंसे समुद्र पी जानेके कारण अगस्त्य ऋषिका एक नाम—दे० अगस्त्य।

समुद्रमथन–पु० [सं०] पुराणानुसार एक दानवका नाम।

समुद्रवेग–पु० [सं०] कुमार कार्त्तिकेयका एक सैनिक अनुचर (महाभा० शल्य० ४५.६३)।

समुद्रसेन–पु० [सं०] एक क्षत्रिय नरेशका नाम, जो एक कालेयसंज्ञक दैत्यके अंशसे उत्पन्न हुए थे। ये धर्म तथा अर्थ तत्त्वके ज्ञाता थे। समुद्रपर्यन्त सारी पृथ्वीपर इनकी ख्याति थी (महाभा० आदि० ६७.५४)।

समुद्रस्थली–स्त्री० [सं०] समुद्रतटपर स्थित एक प्राचीन तीर्थ (महाभा०)।

समुद्राभिसारिणी–स्त्री० [सं०] एक कल्पित देववालाका नाम। कहते हैं यह समुद्रकी सहचरी है।

समुद्रो मादन–पु० [सं०] कुमार कार्त्तिकेयका एक सैनिक अनुचर (स्कंदपु०; महाभा० शल्य० ४५.६८)।

समुन्नत–पु० [सं०] एक राक्षस विशेष, जिसका उल्लेख रामायणमें मिलता है (वाल्मी० रामा० लंका० ५८.१९)।

समूह–पु० [सं०] एक सनातन विश्वेदेवका नाम (महाभा० अनु० ९१.३०)।

समृद्ध–पु० [सं०] धृतराष्ट्र कुलमें उत्पन्न एक नागका नाम, जो जनमेजयके सर्पसत्रमें होमा गया था (महाभा० आदि० ५७.१८)।

समेत–पु० [सं०] पुराणानुसार एक पर्वतका नाम (हिं० वि० को०)।

समेडी–स्त्री० [सं०] कुमार कार्त्तिकेयकी अनुचरी एक मातृकाका नाम (महाभा० शल्य० ४६.१३)।

समेध–पु० [सं०] पुराणानुसार मेरु पर्वतके अन्तर्गत एक पहाड़।

सम्मद–पु० [सं०] एक वहुत वड़ा मत्स्यरत्न (मछली) जो गहरे जलमें रहता था तथा पुत्र, पौत्र, दौहित्र आदिसे युक्त विशाल परिवारवाला था, जिसके पारिवारिक सुखको देखकर सौभरि ऋषिको विवाह करनेकी इच्छा हुई थी (विष्णु० ४.२.६९-७५)।

सम्मर्दन–पु० [सं०] वासुदेवके देवकीके गर्भसे उत्पन्न ६ पुत्रों, जिन्हें कंसने मार डाला, मेंसे एक पुत्र (भाग० ९.२४.५४)।

सम्मोहन–पु० [सं०] कामदेवके ५ वाणोंमेंसे एक—दे० अंगज, कामदेव।

सयन–पु० [सं०] विश्वामित्रके पुत्र तथा गाधिका पौत्र (विष्णु० ४.७.३८)।

सरमा–पु० [सं०] (१) देवताओंकी एक कुतियाका नाम। ऋग्वेदके अनुसार यह इन्द्रकी कुतिया तथा यमराजके चार आँखवाले कुत्तोंकी माता है। कहते हैं पणि लोग इन्द्रकी गौएँ चुरा ले गये थे और इसीकी सहायतासे गौएँ फिर मिल गयी थीं। देवशुनीके नामसे इसका उल्लेख महाभारतमें हुआ है। यह ऋग्वेदके एक मंत्रकी द्रष्ट्री भी कही गयी है (ऋग्वेद तथा महाभा० आदि० ३.१)। यह पीटे गये पुत्रके दुःखसे दुःखी होकर सर्पसत्रमें गयी थी। इसने जनमेजयको शाप दिया था इसके शापसे राजा जनमेजय वहुत घवराये (आदि० ३.७-१०)। यह ब्रह्माजीकी सभामें रहकर उनकी उपासना करती है (सभा० ११.४०)। (२) कश्यपकी एक पत्नीका नाम जो दक्षकी पुत्री तथा जंगली पशुओंकी माता थी (भाग० ६.६.२६)। (३) विभीषणकी पत्नी जो गन्धर्वराज शैलूषकी पुत्री थी। (वाल्मी० रामा० किष्किंधा० ४१.४३; उत्तर० १२.२४)। रावणकी मृत्युके पश्चात् यह लंकाकी रानी हो गयी थी, क्योंकि श्रीरामचन्द्रने विभीषणको लंकापति घोषित किया था (रामायण)।

सरयू–स्त्री० [सं०] (१) एक प्रसिद्ध नदी जिसका उल्लेख ऋग्वेदमें मिलता है और श्रीरामकी विख्यात नगरी अयोध्या जिसके तटपर वसी है। भूगोलकी घाघरा नदी यही है (ऋग्वेद तथा रामायण)। महाभारतके अनुसार यह हिमालयके स्वर्णशिखरसे उद्भूत गंगाकी सात धाराओंमेंसे एक है। जो लोग इसका जल पीते हैं उनके सव पाप-ताप नष्ट हो जाते हैं (आदि० १६९.२०-२१)। यह इन्द्रप्रस्थसे गिरिव्रजको जाते हुए श्रीकृष्ण, अर्जुन और भीमसेनके मार्गमें पड़ी थी। इसे उन्होंने पार किया था (सभा० २०.२८)। गोप्रतार नामक तीर्थ सरयूके ही जलमें है, जहाँ गोता लगाकर श्री रामचन्द्रजीने दलवलके साथ अपने परम धामको प्रस्थान किया था (वन० ८४.७०) श्री

वशिष्ठजी कैलासकी ओर जाती हुई गंगाको मानसरोवरमें ले आये। वहाँ आते ही गंगाने सरोवरका बाँध तोड़ दिया। गंगासे सरोवरका भेदन होनेपर जो स्रोत निकला वही सरयूके नामसे प्रसिद्ध हुआ (अनु० १५५.२३-२४)। यह सायं प्रातः स्मरणीय नदियोंमें है (अनु० १६५.२१)। (२) वीर नामक अग्निकी पत्नीका नाम, जिसके गर्भसे उनका सिद्धि नामक पुत्र उत्पन्न हुआ था (वन० २१९.११)।

सरवन–पु० [सं० श्रवण]=श्रमण। अंधक मुनिके पुत्र। कहते हैं यह अपने अंधे माता-पिताको एक बहँगीमें बैठाकर तीर्थ यात्रा कराया करते थे। रामायणके अयोध्याकांडमें इनकी कथाका उल्लेख है। यह अपने प्यासे माता-पिताके पीनेके लिए जल किसी जलाशयसे लाने गये थे और अयोध्यापति दशरथ भी वहीं शिकार खेलने गये थे। दशरथने समझा कोई हाथी जल पी रहा है और इसी भ्रममें उन्होंने शब्दवेधी बाण चला दिया जिससे श्रवणकुमार स्वर्ग सिधारे। पुत्रशोकाकुल अंधक मुनिने शाप दिया, 'जा राजा तू भी हमारी ही तरह पुत्रवियोगमें तड़पकर प्राण त्याग करेगा।' फलतः श्रीराम-वनगमनके पश्चात् दशरथजी 'हा राम, हा राम' कहते मरे थे। 'श्रवणकुमार' नाटक प्रसिद्ध है जिसे महात्मा गांधीने भी देखा था और उन्हें इससे माता-पिताकी भक्तिकी शिक्षा मिली थी (रामच० मानस अयोध्या०)। वाल्मीकि रामायणमें केवल 'तापसकुमार' मिलता है, अंधक मुनिका नाम नहीं है—दे० गांधीजीकी आत्मकथा।

सरस्वती–स्त्री० [सं०] (१) पंजाबकी एक प्राचीन नदी जिसकी क्षीण धारा कुरुक्षेत्रके पास अब भी वर्तमान है। महाभारतके अनुसार उतथ्य ऋषिके शापसे इसका जल सूख गया है। स्कंदपुराणानुसार मार्कण्डेय ऋषिने इसे भाद्रपद शुक्ला १२ को धर्मारण्यके अंतर्गत द्वारावती (द्वारका) तीर्थमें उतारा था। यह स्वर्ग और मोक्षकी एकमात्र हेतु है (स्कंदपु० ब्राह्म० धर्मारण्य-मा०; शिवपु० विश्वेश्वरसं० अध्याय १२)। (२) विद्या या वाणीकी देवीका नाम। कहीं-कहीं सरस्वतीको सरसई (प्राकृत) भी लिखा है। 'सरसई ब्रह्म-विचार-प्रचारा।'—तुलसी सरस्वतीका जन्म विश्वरूप कल्पमें हुआ था (शिवपु० शतरुद्र-संहिता अध्याय १)।

नोटविशेष—वेदोंके अनुसार सरस्वती नदीके तटका देश पवित्र माना गया है। ऋग्वेदमें इसके समुद्रमें गिरनेका उल्लेख है। कहते हैं यह लुप्त होकर प्रयाग संगममें मिली है। यह नदियोंकी माता कही गयी है। इसकी सात बहिनें बतलायी गयी हैं। वाजसनेयी संहिताके अनुसार सरस्वतीने वाचादेवीके द्वारा इंद्रको शक्ति प्रदान की थी। ब्राह्मण-ग्रंथोंमें तो सरस्वतीको वाग्देवी ही मान लिया गया है। पुराणानुसार सरस्वतीदेवी ब्रह्माकी पुत्री और स्त्री दोनों ही कही गयी हैं। महाभारतके अनुसार यह दक्ष प्रजापतिकी पुत्री ठहरती हैं, जिनके हाथमें वीणा और पुस्तक है। हंस इनका वाहन है। अन्य मतानुसार यह विष्णु-पत्नी हैं और इनमें तथा लक्ष्मीमें सौतोंवाला जगत्प्रसिद्ध वैर भी चलता रहता है। कहते हैं जिस भक्तपर इनकी कृपा होती है, लक्ष्मी उससे रुष्ट रहती हैं और लक्ष्मीके उपासकोंपर सरस्वतीकी कृपा नहीं होती। स्मरण रहे यह केवल विद्या या वाणीकी देवी मानी गयी हैं पर बुद्धिका मालिक गणेश है यह नहीं।

सरस्वतीकी उपासना केवल वैदिक धर्मावलम्बी हिन्दू ही नहीं करते, बल्कि जैन और बौद्ध धर्मवाले भी इनके उपासक हैं। चीननिवासी इन्हें 'नीलसरस्वती'के रूपमें और तिब्बतवाले 'वीणासरस्वती'के रूपमें इनकी पूजा करते हैं। सत्यलक्ष्मी, वीरलक्ष्मी, धनलक्ष्मी, धान्यलक्ष्मी, राजलक्ष्मी, मोक्षलक्ष्मी, विद्यालक्ष्मी, धैर्यलक्ष्मी और सौभाग्यलक्ष्मी, ये नव (९) लक्ष्मियाँ सरस्वतीकी सहचरी बतलायी गयी हैं। यों तो इनका वाहन हंस कहा गया है पर मारवाड़में मयूरको ही इनका वाहन कहते हैं और कहीं-कहीं इनका वाहन 'बकरा' लिखा है जिसका तात्पर्य शायद यह कि यह देवी अपने उपासकोंकी मूर्खता तथा अज्ञानतासे रक्षा करती है, क्योंकि बकरा मूर्खता तथा अज्ञानताका द्योतक है। बौद्धोंकी 'वागीश्वरी' सिंहवाहिनी कही गयी है। जैनोंने भी सरस्वतीको विद्या, बुद्धि तथा विवेककी अधिष्ठात्री देवी माना है। वैदिक विद्वानोंने इन्हें 'वेदमध्या' नाम दिया है और इसीलिए इन्हें शिवसहोदरी भी कहते हैं। श्री शंकराचार्यके शारदापीठ, (जो शृंगेरी पर्वतपर है) की शारदा (सरस्वती) ही अधिष्ठात्रीदेवी है। कहते हैं हैदरअली और टीपू सुलतान भी इस पीठके उपासक और भक्त थे। मंत्रशास्त्रानुसार दुर्वासा ऋषिके शापसे सरस्वतीने कश्मीरमें शारदाके नामसे (जहाँ इन्हें कश्मीरपुरवासिनी कहते हैं) जन्म ग्रहण किया था। ब्रह्माने मिथिलामें मंडन मिश्रके नामसे जन्म ग्रहण किया और इन दोनोंने पति-पत्नीके रूपमें सहरपा नामक स्थानमें निवास किया। मंडन मिश्र शंकराचार्यके शिष्य हो गये थे और शारदा भी इनके साथ सहधर्मिणी होनेके नाते चलीं। शंकराचार्यने (शृंगेरी)को अपने धर्मका केन्द्र बनाया और शारदाने अपने नामपर इसे शारदापीठ नामसे विभूषित किया। सुरेश्वराचार्य (मंडन मिश्र)की समाधि भी तुंग नदीके तटपर यहीं बनी है। यहाँ महासरस्वतीकी उपासना होती है।

सरस्वतीशयनसप्तमी–स्त्री० [सं०] आश्विन शुक्ला ७ से ९ तक सरस्वतीका शयनव्रत करते हैं। सप्तमीको पुस्तक आदिका पूजन कर सरस्वतीका शयन कराये, पठन-पाठन बंद रखे तथा दशमीको श्रवणतक पूजन करे—दे० वीरमित्रोदय।

सरस्वती-संगम–पु० [सं०] एक परम पुनीत लोकविख्यात तीर्थका नाम, जहाँ ब्रह्मा आदि देवता, तपोधन महर्षि तथा पुण्यात्मा भक्त भगवान् केशवकी उपासना करते हैं। चैत्र-शुक्ला चतुर्दशीको यहाँकी विशेष यात्रा होती है। यहाँ स्नान करनेसे प्रभूत स्वर्णकी प्राप्ति होती है एवं मनुष्य निष्पाप शुद्धचित्त हो ब्रह्मलोकमें जाता है (महाभा० वन० ८२.१२५-१२७)।

सरस्वतीसागर-संगम–पु० [सं०] एक तीर्थ, जो पश्चिमके समुद्र तटपर, जहाँ सरस्वती सागर-संगम हुआ है, स्थित है। वहाँ जाकर स्नानपूर्वक महादेवजीकी आराधना करनेसे चन्द्रमाको अपनी खोयी हुई कान्ति पुनः प्राप्त हुई थी (महाभा० शल्य० ३५.७७)।

सराहुकेतुशनिवारव्रत–पु० [सं०] इस व्रतके लिए लोहे

और शीशेकी शनि, राहु तथा केतुकी तीन मूर्त्तियाँ बनवावे (भविष्योत्तर पु०) फिर उनको कृष्णवर्णके अक्षरोंसे २४ दलके कमलपर मध्यमें शनि, दक्षिण भागमें राहु और वाम भागमें केतुको स्थापित कर पूजन करे, व्रत करे तथा विधिवत् हवन करे और ब्राह्मण भोजनके पश्चात् विसर्जन करनेसे सब कष्टोंका नाश होता है तथा व्रती सुखी होता है—दे० (मत्स्य० तथा भविष्यपु०)।

सरिद्द्वीप–पु० [सं०] गरुड़की प्रमुख सन्तानोंमेंसे एक (महाभा० उद्योग० १०१.११)।

सरूपा–स्त्री० [सं०] भूतकी पत्नी जो असंख्य रुद्रोंकी माता कही गयी है (भाग० ६.६.१७-१८)।

सर्प–पु० [सं०] ग्यारह रुद्रोंमेंसे एक ब्रह्माजीके पौत्र तथा स्थाणुके पुत्र (महाभा० आदि० ६६.२)।

सर्पदेवी–स्त्री० [सं०] कुरुक्षेत्रकी सीमाके अन्तर्गत एक तीर्थ जहाँ जाकर उत्तम नागतीर्थका सेवन करनेसे मानवको अग्निष्टोम यज्ञका फल प्राप्त होता है (महाभा० वन० ८३ १४)।

सर्पमाली–पु० [सं०] (१) सर्पोंको मालाके रूपमें धारक भगवान् शंकरका एक नाम। (२) एक दिव्य महर्षि जिनसे हस्तिनापुर जाते समय मार्गमें भगवान् श्रीकृष्णकी भेंट हुई थी (महाभा० उद्योग० ८३.६४)।

सर्पान्त–पु० [सं०] गरुड़की प्रमुख सन्तानोंके वंशमें उत्पन्न एक पक्षी (महाभा० उद्योग० १०१.१२)।

सर्पसत्री–पु० [सं०] सर्प-यज्ञ करनेके कारण राजा जनमेजयका नाम (भाग० १.१६.२; ब्रह्मां० ३.६८.२०)।

सर्पास्य–पु० [सं०] एक वीर योद्धाका नाम जो खर राक्षसका सेनापति था और श्रीराम द्वारा मारा गया था (रामायण)।

सर्व–पु० [सं०] भगवान् श्रीकृष्णका एक नाम (महाभा० उद्योग० ७०.१२)।

सर्वकर्मा–कल्मापपादके पुत्र तथा अनरण्यके पिताका नाम (मत्स्य० १२.४७)।

सर्वकामदुघा–स्त्री० [सं०] सुरभि (दक्षपुत्री तथा कश्यपपत्नी) की धेनुरूपा पुत्रीका नाम (महाभा० उद्योग० २०२.१०)।

सर्वजित्–पु० [सं०] २१वाँ संवत्सर।

सर्वत्रग–पु० [सं०] (१) वायुकी एक उपाधि (विष्णु० १.८. ३५)। (२) मनुका एक पुत्र (भाग०)। (३) भीमसेन द्वारा वलंधाराके गर्भसे उत्पन्न हुआ पुत्र (महाभा० आदि० ९५. ७७)।

सर्वतोभद्र–पु० [सं०] जलके अधिदेव वरुणका समृद्धिसम्पन्न निवासस्थान (महाभा० उद्योग ९८.१०)

सर्वदमन–पु० [सं०] दुष्यन्त और शकुन्तलाका वीर पुत्र (महाभा० आदि० ७४.८)।

सर्वदेवमयरथ–पु० [सं०] विश्वकर्माका बनाया एक सुवर्णरथ विशेष जिसे त्रिपुरनाश करनेके समय शिवने बनवाया था। इसके दाहिने चक्रमें सूर्य और वामचक्रमें चन्द्रमा तथा २७ नक्षत्र विराजते थे। दाहिने पहियेमें १२ अरे थे जिनमें बारहो सूर्य तथा वामचक्रमें १६ अरे थे जिनमें चन्द्रमाकी सोलहों कलाएँ थीं। छहों ऋतुएँ दोनों पहियोंकी नेमि, अन्तरिक्ष रथका अग्र भाग बना और मंदराचलने रथकी बैठकका स्थान लिया। अस्ताचल और और उदयाचल रथके कूबर, महामेरु अधिष्ठान और शाखापर्वत आश्रय स्थान बने। संवत्सर रथका वेग, उत्तरायण और दक्षिणायन दोनों लोहधारक, मुहूर्त्त बन्धुर (रस्सा) और चौसठ कलाएँ कीलें हुईं। काष्ठाएँ रथके नासिकारूप अग्र भाग, क्षण अक्षदण्ड, निमेप अनुकर्प (नीचेका काठ) और लव ईपादण्ड हुए। द्युलोक इस रथका वरूथ (ऊपरी पर्दा), स्वर्ग और मोक्ष ध्वजाएँ। ऐरावतकी पत्नी अभ्रमु तथा कामधेनु जुएके अन्तिम छोरपर स्थापित की गयीं। अव्यक्त (प्रकृति) ईपादण्ड, बुद्धि नड्वल, अहंकार कोना और पंचमहाभूत उसका बल। इन्द्रियाँ उसे चारों ओरसे विभूपित कर रही थी और श्रद्धा उसकी (रथकी) चाल थी। वेदके छहों अंग (शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्दःशास्त्र और ज्योतिप) उसके भूपण। पुराण, न्याय, मीमांसा और धर्मशास्त्र उपभूषण हुए। शेपनाग बन्धनरज्जु, दिशाएँ और उपदिशाएँ रथके पाद बनी। तीर्थोंने पताकाका स्थान लिया और समुद्र आच्छादन वस्त्र बने। गंगादि नदियाँ उपचारिका, सातों वायु सोपान बने, मानस आदि सरोवर बाहरी विपम स्थान हुए। ब्रह्मा सारथि, ऊँकार चाबुक, अकार छत्र, हिमालय धनुप, शेपनाग उसकी प्रत्यञ्चा, सरस्वती देवी धनुपकी घंटा, विष्णु बाण, अग्नि उस बाणकी नोक। चारों वेद रथके चार घोड़े, वायु बाजा बजानेवाला आदि-आदि संसारकी सब वस्तु उस रथमें थी (मत्स्य० १३१.१५-४६)।

सर्वदेवतीर्थ–पु० [सं०] कुरुक्षेत्रकी सीमाके अन्तर्गत एक तीर्थका नाम जिसमें स्नान करनेसे मनुष्यको हजार गोदान करनेका पुण्य प्राप्त होता हैं (महाभा० वन० ८३.८८)।

सर्वधारी–पु० [सं०] (१) २२वें संवत्सरका नाम (भाग०)। (२) भगवान् शंकरका एक नाम (काशीखंड, स्कंदपु०)।

सर्वपा–स्त्री० [सं०] दैत्योंके राजा बलिकी स्त्रीका नाम (भाग०)।

सर्वपापमोचनकूप–पु० [सं०] समस्त पापोंको दूर करनेवाला एक कूप जो नारायण-स्थानमें है। उसमें सदा चारों समुद्र रहते हैं। उसमें स्नान करनेसे मनुष्यकी कभी दुर्गति नहीं होती है (महाभा० वन० ८४.१२६)।

सर्वर्तुक–पु० [सं०] रैवतक पर्वतके समीपका एक वन (महाभा० सभा० ३८.३०)।

सर्वसारंग–पु० [सं०] धृतराष्ट्र (नाग) के कुलमें उत्पन्न एक नागका नाम, जो जनमेजयके सर्पसत्रमें जल मरा था (महाभा० आदि० ५७.१८)।

सर्पसेन–पु० [सं०] काशीके एक राजाका नाम जिनकी पुत्री सुनन्दाके साथ भरतने विवाह किया था। उसके गर्भसे भुमन्यु नामक पुत्र उत्पन्न हुआ था (महाभा० आदि० ९५.३२)।

सर्वस्वी–पु० [सं०] एक संकर जातिके लोग, जो नापित पिता तथा गोप मातासे उत्पन्न कहे गये हैं (ब्रह्मवैवर्त्तपु०)।

सर्वा–स्त्री० [सं०] एक पुण्यसलिला नदीका नाम (महाभा० भीष्म० ९.३६)।

सर्वार्तिहरव्रत–पु० [सं०] फाल्गुनशुक्ल १४ को संकल्प करके

'काम, क्रोध, लोभ, मोह, अनाचार और मिथ्याभाषणादि दोषोंका त्याग कर सूर्योदयसे सूर्यास्त पर्यन्त करबद्ध और विनम्र होकर सूर्यके सम्मुख अविचल खड़ा रहे।' सूर्यास्त होनेपर फिर भगवान्‌का पूजन कर निराहार व्रत रखे, दूसरे दिन भोजन करे। इससे सब रोग दूर हों, कष्ट तथा चिंता मिटे और व्रती सुखी हो (सनत्कुमारसंहिता)।

सर्वांवसु–पु० [सं०] सूर्यकी किरणोंमेंसे एकका नाम—दे० सूर्य।

सर्वपारुण–पु० [सं०] असुरोंका एक गण जिसका उल्लेख पारस्करगृह्यसूत्रमें मिलता है (पारस्करगृह्यसूत्र)।

सलिलह्रद–पु० [सं०] एक तीर्थका नाम, जिसमें नियमपूर्वक गोता लगानेसे अश्वमेधयज्ञका फल प्राप्त होता है (महाभा० अनु० २५.१४)।

सलेक–पु० [सं०] एक आदित्यका नाम (तैत्तिरीयसंहिता)।

सलोनो–पु० [हिं०] रक्षाबन्धनका एक नाम। श्रावणकी पूर्णिमाको होनेवाला एक पर्व—दे० रक्षाबन्धन तथा श्रावणी।

सल्लक्षणतीर्थ–पु० [सं०] एक प्राचीन तीर्थका नाम।

सवन–पु० [सं०] (१) महर्षि भृगु मुनिके सात पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (महाभा० अनु० ८५.१२९)। (२) वशिष्ठ ऋषिके एक पुत्र—दे० वशिष्ठ। (३) रोहित मन्वन्तरके सप्तर्षियोंमेंसे एक। (४) स्वायम्भुव मनुके एक पुत्र (ब्रह्मां०)। (५) अग्निदेवका एक नाम।

सवर्णा–स्त्री० [सं०] सूर्यपत्नी संज्ञाका एक नाम जो सूर्यका तेज न सह सकनेके कारण अपने ही वर्णकी एक छायारूपी स्त्री (सवर्णा)को छोड़ पिताके घर चली गयी थी। इसी सवर्णा छायासे सूर्यपुत्र सावर्णि उत्पन्न हुए थे—दे० निरुक्त। लेकिन विष्णुपुराणानुसार सवर्णा समुद्रकी पुत्री ठहरती है जो प्राचीनवर्हि प्रजापतिको ब्याही थी जिनके संयोगसे यह १० प्रचेताओंकी माता बनी—दे० संज्ञा, छाया।

सविता–स्त्री० [सं०] पृश्निकी पत्नीका नाम—दे० पृश्नि।

सविता–पु० [सं०] कश्यप और अदितिके पुत्र विवस्वान्, अर्यमा आदि बारह आदित्योंमेंसे एक आदित्यका नाम (भाग० ६.६.३९-४०)।

सवितृतनय–पु० [सं०] सूर्य-पुत्र हिरण्यपाणिका नाम।

सवितृ-दैवरा–पु० [सं०] हस्त नक्षत्र, जिसका स्वामी सूर्य है।

सविताफल–पु० [सं०] एक पर्वतका नाम। पुराणानुसार मेरुके उत्तरमें स्थित कहा गया है—दे० मेरु।

सविभास–पु० [सं०] सूर्यदेवका नाम।

सव्य–पु० [सं०] (१) सूर्य तथा चंद्र ग्रहणके कुल १० प्रकारोंके ग्रासमेंसे एकका नाम। (२) अंगिरा ऋषिका एक पुत्र जो ऋग्वेदके कई मंत्रोंके द्रष्टा भी हैं। कहते हैं अंगिराकी तपस्यासे प्रसन्न होकर इन्द्रने ही इनके पुत्र रूपमें जन्म लिया जिन्हें 'सव्य' कहते हैं—दे० इन्द्र, अंगिरा।

सव्यचारी–पु० [सं०] अर्जुनका एक नाम—दे० सव्यसाची।

सव्यसाची–पु० [सं०] दोनों हाथोंसे तीर चला लेनेके कारण अर्जुनका एक नाम—दे० सव्यचारी तथा अर्जुन (महाभा० विराट० ४४.१९)।

सहजन्य–एक यक्षका नाम।

सहजन्या–स्त्री० [सं०] छह श्रेष्ठ अप्सराओंसेसे एक अप्सराका नाम (महाभा० आदि० ७४.६८)। यह दस विख्यात अप्सराओंमें एक है। इसने अर्जुनके जन्म समयके उत्सवमें गाना गाया था (आदि० १२२.६४)। यह कुबेरकी सभामें उनकी सेवाके लिए उपस्थित होती है (सभा० १०.११)।

सहजपंथ–पु० [हिं०] गौडीय वैष्णवसंप्रदायकी एक शाखा जिसमें एक नवयुवती परकीया स्त्रीके प्रति सब अर्पण कर भजन करते हैं। इस सम्प्रदायके अनुयायियोंका विश्वास है कि इससे रसिकशिरोमणि श्रीकृष्णकी भक्ति शीघ्र ही प्राप्त होती है।

सहदेव–पु० [सं०] (१) राजा पांडुका सबसे छोटा पुत्र जिसका जन्म दुर्वासा ऋषिके बतलाये मंत्रके प्रभावसे तथा अश्विनीकुमारोंके योगसे हुआ था—दे० माद्री। द्रौपदीके गर्भसे इन्हें श्रुतसेन (श्रुतकर्मा) नामक पुत्र उत्पन्न हुआ था। इनकी एक पत्नी और थी मद्रराज द्युतिमान्‌की पुत्री विजया उसके गर्भसे सुहोत्र नामक इनका एक पुत्र और था (महाभा० आदि० १.११४; ६३.११७; ६७.१११, ९५.८०)। यह बड़े विद्वान् थे। महाभारतके महाप्रस्थानिक पर्वानुसार पांडव हिमालयपर चले पर ठंडके मारे सबसे पहले द्रौपदी मरी और उसके बाद सहदेव ही गिरे और स्वर्ग सिधारे। युधिष्ठिरके कथनानुसार अपनी बुद्धिका गर्व ही इनके शीघ्र मरनेका कारण था (महाप्र० २.२-१७)। (२) जरासंधका एक पुत्र इसकी दो छोटी बहिनें थीं—अस्ति और प्राप्ति। दोनों कंसको ब्याही थीं (सभा० १४.३१)। यह द्रौपदीस्वयंवरमें सम्मिलित हुआ था (आदि० १८५.८)। जरासंधके मारे जानेपर भेंट लेकर यह श्रीकृष्णकी शरण गया था। श्रीकृष्णने इसे अभयदान देकर पिताके राज्यमें अभिषिक्त किया और अपना अभिन्न मित्र बना लिया (सभा० २४.४२)। एक अक्षौहिणी सेना लेकर यह युधिष्ठिरकी सहायताके लिए महाभारत-युद्धमें सम्मिलित हुआ था (भाग० तथा महाभा० उद्योग १९.८)। (३) हयश्वके एक पुत्र—दे० हरिवंश। (४) पुरुवंशोत्पन्न सौदासका पुत्र तथा सोमकका पिता (विष्णु० ४.१९.७१)। (५) पुरूरवाके वंशज हर्यधनका पुत्र तथा अदीनके पिताका नाम (विष्णु० ४.९.२७)। (६) एक महर्षि जो इन्द्रकी सभामें विराजते थे (सभा० ७.१६)। (७) एक प्राचीन नरपति, जो यम-सभामें रहकर उनकी उपासना करते थे। कहते हैं ये सुप्रसिद्ध राजा सृञ्जयके पुत्र थे। इन्होंने यमुनाके अग्निशिर नामक तीर्थमें एक लक्ष सुवर्ण मुद्राओंकी दक्षिणा देकर विशाल यज्ञानुष्ठान किया था (वन० ९०.५-७)।

सहदेवा–स्त्री० [सं०] देवक राजाकी सात पुत्रियोंमेंसे एक पुत्री तथा वसुदेवकी पत्नी (भाग० ९.२४.२१-२३)।

सहभोजन–पु० [सं०] गरुड़की प्रमुख सन्तानोंके वंशमें उत्पन्न एक पक्षीका नाम (महाभा० उद्योग १०१.१२)।

सहरुण–पु० [सं०] चंद्रमाका एक घोड़ा—दे० चंद्रमा।

सहवसु–ऋग्वेदके अनुसार एक असुर विशेष।

सहस्रचक्षु–पु० [सं०] अहल्यापति गौतम ऋषिके शापके

कारण देवराज इन्द्रके शरीरभरमें भगके आकार वन गये थे जो वादको वड़ी प्रार्थनापर नेत्रमें वदल दिये गये थे। इसीसे इन्द्रका यह नाम पड़ा—दे० सहस्राक्ष तथा इन्द्र।

सहस्रचित्य—पु० [सं०] एक प्राचीन नरेशका नाम, जिन्होंने एक ब्राह्मणके लिए अपने प्राणोंका वलिदान किया था जिसके फलस्वरूप उन्हें स्वर्गप्राप्ति हुई थी (महाभा० अनु० १३७.२०)। ये महान् तेजस्वी नरेश केकय देशकी प्रजाका पालन करते थे। ये अपने परम धर्मात्मा ज्येष्ठ पुत्रको राज्यका भार सौंपकर वनमें तपस्या करने चले गये थे (आश्रम० २०.६-९)।

सहस्रजित्—पु० [सं०] (१) जाम्ववतीके गर्भसे उत्पन्न श्रीकृष्णके दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (भाग० १०.६१.११-१२)। (२) विष्णुका एक नाम (विष्णुसहस्रनाम)। (३) सत्त्वतके पुत्र भजमान, जो सात भाई थे, के छह पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (विष्णु० ४.१३.२)।

सहस्रज्योति—पु० [सं०] सम्राट्के तीन पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम। इनके दस लाख पुत्र थे (महाभा० आदि० १.४६)।

सहस्रणी—पु० [सं०] हजार रथोंकी रक्षा करनेमें समर्थ होनेके कारण भीष्मका एक नाम (भाग० १.९.३०)

सहस्रधारा—पु० [सं०] अयोध्याका एक प्रसिद्ध तीर्थस्थान, जो पापमोचन तीर्थसे पूर्व दिशामें १०० धनुषपर स्थित है। श्री रामचन्द्रकी आज्ञासे लक्ष्मणने योगशक्ति द्वारा प्राण त्यागकर अपने शेष-स्वरूपको प्राप्त किया था। इससे पहलेकी वात यह है कि श्री राम और काल एकान्तमें मंत्रणा कर रहे थे और इसी समय दुर्वासा पधारे जिनके आगमनकी सूचना देने लक्ष्मण राम-काल वार्ताके स्थानमें दुर्वासाके शाप-भयसे चले गये। पूर्व निश्चयके अनुसार श्री रामने लक्ष्मणको त्याग दिया था। इसी स्थानपर सहस्र फणोंवाला शेषनाग यहाँ आया जिसके फणके सहस्र मणियोंसे वहाँकी पृथ्वी दग्ध हो गयी थी अतः इस स्थानका नाम सहस्रधारा पड़ा (स्कंदपु० वैष्णव-खंड, अयोध्या-माहात्म्य)।

सहस्रपाद्—पु० [सं०] महाभारतके अनुसार एक प्राचीन ऋषिका नाम, जो शापवश डुंडुभ सर्प हो गये थे। इन्होंने रुरुको अपना परिचय दिया था (आदि० १०.७)। रुरुके द्वारा सर्पसत्रके सम्बन्धमें जिज्ञासा करनेपर 'तुम ब्राह्मणोंके मुखसे आस्तीकका चरित्र सुनोगे' ऐसा कहकर ये अन्तर्धान हो गये (आदि० १२.३)।

सहस्रवाहु—पु० [सं०] (१) राजा वलिका ज्येष्ठपुत्र वाणका नामान्तर (भाग० १०.६३.३०-३१)। (२) कार्त्तवीर्यार्जुन, जो क्षत्रिय राजा कृतवीर्यका पुत्र था, का नाम इसका दूसरा नाम हैहय था और इसकी राजधानी माहिष्मतीमें थी। पुराणानुसार एक वार रुष्ट होकर रावण इससे लड़ा था पर परास्त हो गया (भाग० ९.१५.२१-२२; ब्रह्मां० ३.३३.५०; मत्स्य० ४३.३७-४०)। यह जमदग्नि मुनिकी कपिला गौ वलपूर्वक ले आया था और रोकनेपर इसने जमदग्निको मार दिया (भाग० ९.१५.२३-२६; ब्रह्मां० ३.२६.७ (पूरा)। परशुरामने पिताका वदला लिया और इसका वध किया (भाग० ९.१५.२७-३६; ब्रह्मां० ३.३०.५-१५; तथा—दे० जमदग्नि, अर्जुन २। (३) कुमार कार्त्तिकेयका एक सैनिक अनुचर (महाभा० शल्य० ४५.५९)।

सहस्रभागवती—स्त्री० [सं०] देवीकी एक मूर्त्ति विशेष (देवीभाग०)।

सहस्रभुजा—स्त्री० [सं०] महिषासुरके वध करनेके समय देवीकी १००० भुजाएँ हो गयी थीं, इसीसे यह नाम पड़ा (मार्कण्डेयपु०)।

सहस्रवाक—पु० [सं०] धृतराष्ट्रके १०० पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (महाभा० आदि० ६७.१००; ११६.९)।

सहस्रशिखर—पु० [सं०] विन्ध्य पर्वतका एक नाम—दे० विन्ध्याचल।

सहस्रस्रुति—पु० [सं०] शाल्मलिद्वीपके एक वर्षपर्वतका नाम (भाग० ५-२०-१०)।

सहस्रस्तुति—स्त्री० [सं०] एक नदीका नाम (भाग० ५.२०.२६)।

सहस्रस्रोत—पु० [सं०] पुराणानुसार शाक द्वीपक एक वर्षपर्वतका नाम (भाग० ५.२०.२६)।

सहस्रहर्यश्व—पु० [सं०] देवराज इन्द्रके रथका नाम।

सहस्राक्ष—पु० [सं०] (१) इन्द्रका एक नाम। इन्होंने छलसे गौतम ऋपिका रूप धर उनकी पत्नी अहल्यासे रमण किया था। गौतमने इन्द्रको अपनी कुटीसे निकलते देख लिया। देवराज होनेपर भी कामवासनाके पीछे पागल रहनेके कारण गौतमने इन्द्रको शाप दे उनके शरीर भरमें योनिके हजारों आकार वना दिये। वड़ी प्रार्थनाके पश्चात् ऋपिने योनि आकारको नेत्र वना दिया। शरीरभरमें नेत्र ही नेत्र होनेके कारण इन्द्रका यह नाम पड़ा।

जव इन्द्रने अहल्याका सतीत्व-भंग किया तव चन्द्रमाने इन्द्रकी सहायता की थी और इससे चिढ़कर गौतमने कमण्डलु और मृगछाला फेंककर (चन्द्रमाको) मारा था, इससे चन्द्रमामें धव्वे दिखायी देते हैं। अपनी पत्नीसे रुष्ट हो गौतमने उसे पत्थर वना दिया था जिससे अहल्याका उद्धार श्रीरामने किया—दे० अहल्या। (२) एक सिद्धपीठस्थान, जहाँकी देवी उत्पलाक्षी कही जाती है (देवीभाग०)।

सहस्रावर्त्तक—पु० [सं०] एक तीर्थस्थान, जिसका उल्लेख पुराणोंमें है।

सहस्रावर्त्ता—स्त्री० [सं०] देवीका एक नाम (देवीभाग०)।

सहा—स्त्री० [सं०] एक अप्सराका नाम, जिसने अर्जुनके स्वागतोत्सवमें इंद्र-भवनमें नृत्य किया था (महाभा० वन० ४३.३०)।

सहोढ—पु० [सं०] एक प्रकारका पुत्र जो अवन्धु दायाद कहलाते हैं (महाभा० आदि० ११९.३४)। जो कन्या कन्यावस्थामें ही गर्भवती होकर व्याही गयी हो उसके गर्भसे उत्पन्न हुआ पुत्र सहोढ कहलाता है।

सह्य—पु० [सं०] भारतवर्षके सात कुलपर्वतोंमेंसे एक पर्वत। यह क्षार समुद्रके तटपर स्थित है। सीताकी खोजमें गये हुए हनुमान् आदि वानरोंको मार्गमें यह दिखायी दिया था (महाभा० वन० २८२.४३)।

संकर्षण—पुं० [सं०] (१) विष्णुका एक नाम (विष्णुसहस्रनाम)। (२) योगमाया द्वारा भगवान्के आदेशसे देवकीके गर्भको रोहिणीके गर्भमें संक्रमण करनेसे रोहिणीके पुत्रका

नाम (भाग० ९.२४.५४; १०.२.७-८, १३)।

सांकाश्य–पु० [सं०] एक प्राचीन राजा, जो यमसभामें रह कर यमकी उपासना करते हैं (महाभा० सभा० ८.१०)।

सांकृति–पु० [सं०] (१) एक राजा जो, यमकी सभामें रह कर यम की उपासना करते थे (महाभा० सभा० ८.१०)। (२) एक अत्रिवंशज ऋषि, जिन्होंने शिष्योंको निर्गुण ब्रह्मका उपदेश देकर उत्तम लोक प्राप्त किया था (शांति० २३४.२२)।

सांख्य–पु० [सं०] महर्षि कपिलका बनाया एक दर्शन, जिसमें सृष्टिकी उत्पत्तिका क्रम दिया है। इसमें ईश्वरकी सत्ता नहीं मानी गयी है। आकाश आदि पाँचों भूत तथा ग्यारह इंद्रियाँ ही प्रकृति कही गयी हैं, जिन्हें सबका आधार माना है (सांख्यदर्शनका इतिहास)।

सांखायन (शांखायन)–पु० [सं०] ऋग्वेदके सांखायन-ब्राह्मणके रचयिता एक प्रसिद्ध आचार्य।

सांतपन–पु० [सं०] (१) ६ रात्रिका उपवास करनेसे 'सांतपन' होता है। (२) पहले दिन केवल पंचगव्य पीये दूसरे दिन उपवास करे (प्रायश्चित्तेन्दुशेखर)।

सांतपनकृच्छ्र–पु० [सं०] एक व्रत विशेष, जिसमें पहले दिन गोमूत्र, एक दिन गोमय, एक दिन दूध, एक दिन दही और एक दिन घी तथा एक दिन कुशोदक पीया जाता है और दूसरे दिन उपवास होता है। 'गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दधि सर्पिः कुशोदकम्। एकैकं प्रत्यहं पीत्वा त्वहोरात्रमभोजनम्। कृच्छ्रं सांतपनं नाम सर्वपाप प्रणाशनम् ॥'—'जाबालि'।

सांदीपनि–पु० [सं०] एक प्रसिद्ध मुनि, जो बहुत बड़े धनुर्धर तथा सकल शास्त्रोंके ज्ञाता थे। पुराणानुसार श्रीकृष्ण और बलरामको धनुर्वेदकी शिक्षा इन्होंने दी थी। यह श्रीकृष्णके गुरु थे, जहाँ प्रसिद्ध ब्राह्मण सुदामा भी श्रीकृष्णके सहपाठी थे। इनका आश्रम उज्जयिनीमें था। सांदीपनिसे केवल ६४ दिनोंमें अस्त्रमंत्रोपनिषत्, अस्त्र-प्रयोगके सहित सम्पूर्ण धनुर्वेद श्रीकृष्ण तथा बलरामने सीख लिया; अंगों सहित चारों वेद, सम्पूर्ण शास्त्र और सब प्रकारकी अस्त्रविद्या सुनते ही प्राप्त कर ली थी (भाग० १०.४५.३१-३६; विष्णु० ५.२१.१९-३४)। शिक्षाके उपरान्त अपनी स्त्रीकी सलाहसे इन्होंने अपने मृत पुत्रको श्रीकृष्णसे गुरुदक्षिणामें माँगा था। पंचजन असुर ऋषिके पुत्रको चुरा पाताल ले गया था। इसी असुरको मार श्रीकृष्ण सांदीपनिके पुत्रको लाकर गुरुको दे सके थे और पंचजनकी हड्डियोंसे श्रीकृष्णका 'पंचजन्य' शंख बना था (भाग० १०.४५.३७-४८; विष्णु० ५.२१.२४-३१)। उज्जयिनीमें श्रीकृष्णके चरणोंसे अंकित अंकपाद नामक तीर्थ है, जहाँ मरे मनुष्य यमराजका दर्शन नहीं करते (स्कंदपु० आवन्त्य० अवंतीक्षेत्र-माहात्म्य)। कंसवधके पश्चात् उग्रसेनको मथुराका राज्य देकर श्रीकृष्ण अपनी शिक्षाके लिए सांदीपनि मुनिके आश्रममें चले गये। सांदीपनि अवन्तिपुरवासी थे। शिक्षाके बाद जब श्रीकृष्णने इनसे गुरुदक्षिणा लेनेको कहा तब अपनी पत्नीकी सलाहसे ऋषिने अपने मृत पुत्रको चाहा (भाग० १०.४५.३०-३८)। पंचजन नामक असुर, जो पातालमें रहता था एवं सांदीपनि आचार्यके पुत्रको चुरा पाताल ले गया था। उस को मार श्रीकृष्ण गुरु-सुतको छुड़ा लाये थे। पंचजन राक्षसकी हड्डियोंसे 'पांचजन्य' शंख बना, जिसे श्रीकृष्णचंद्र बजाया करते थे (भाग० १०.४५.४१-४३)।

सांब–पु० [सं०] जांबवतीके गर्भसे उत्पन्न श्रीकृष्णके १० पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम, जो जांबवान् रीछका दौहित्र हुआ। भविष्यपुराणानुसार यह अति सुन्दर थे और इन्होंने बलदेवजीसे अस्त्रविद्या सीखी थी। दुर्वासा तथा पिताके शापसे ये कोढ़ी हो गये थे, पर नारद ऋषिके परामर्शसे सूर्यकी मित्र नामक मूर्त्तिकी उपासना कर यह रोग मुक्त हो गये थे। जहाँ यह सूर्यकी उपासना करते थे, उसका नाम 'मित्रवण' पड़ा। महाभारतके युद्धमें यह जरासंध आदिसे खूब लड़े थे। सांबपुर इन्हींका बसाया हुआ है। दुर्योधनकी पुत्री लक्ष्मणा तथा श्वफल्ककी पुत्री वसुन्धरा इनकी दो पत्नियाँ थीं (भाग० १०.६८.१-३, ३९-४२; ब्रह्मपु० बलराम द्वारा हस्तिनापुरका आकर्षण)।

सांबपुर–पु० [सं०] आधुनिक मुलतानका प्राचीन नाम जिसे श्रीकृष्णके पुत्र सांबने चंद्रभागा नदीके तटपर बसाया था। यह नगर पंजाबमें है—दे० सांब तथा भाग०।

सांबपुराण–पु० [सं०] एक उपपुराण (नारदपु०)।

सांयमनि–पु० [सं०] सोमदत्तके पुत्र शलका दूसरा नाम (महाभा० भीष्म ६१.११)।

सागरक–पु० [सं०] सागर जनपदके निवासी एक क्षत्रिय नरेशका नाम, जो युधिष्ठिरके राजसूय यज्ञमें भेंट लेकर आये थे (महाभा० सभा० ५२.१८)

सागरोदक–पु० [सं०] समुद्रका तीर्थरूप जल, जिसमें स्नानकर मनुष्य विमानमें बैठ कर स्वर्ग जाता है (महाभा० अनु० २५.९)।

सागेश्वर–पु० [सं०] एक तीर्थ विशेषका नाम।

साद्यायन–पु० [सं०] एक ब्राह्मण ग्रंथका नाम।

सात्यकि–पु० [सं०] एक यदुवंशी विख्यात वीर जो सत्यकका पुत्र था जिसका दूसरा नाम युयुधान भी था (भाग० ९.२४.१३-१४)। कुरुक्षेत्रमें यह पांडवोंके पक्षमें विशाल चतुरंगिणी सेना लेकर लड़ा था (महाभा० उद्योग० १९.१)। कौरव भूरिश्रवा इसीके हाथोंसे मारा गया था (द्रोण० १४३.५४)। इसने श्रीकृष्ण और अर्जुनसे धनुर्वेद सीखा था (सभा० ४.३४-३६)। यह श्रीकृष्णका सारथि था और सत्यभामाके लिए जब श्रीकृष्ण पारिजात लाने स्वर्ग गये थे तब यह भी उनके साथ देवलोक गया था। तूणि नामका इसका एक पुत्र था जिसका लड़का युगंधर था (हरिवंश)।

सात्यदूत–पु० [सं०] देवी-देवताओंके लिए किया जानेवाला एक प्रकारका यज्ञ विशेष।

सात्यहव्य–पु० [सं०] वशिष्ठवंशोत्पन्न एक प्राचीन ऋषि (भाग०)।

सात्राजित–पु० [सं०] राजा शतानीकका एक नाम (सत्राजित्-वंशोत्पन्न)।

सात्राजेती–स्त्री० [सं०] सत्राजित्की पुत्री सत्यभामाका नाम (भाग० १०.५६.४३-४४;५७.७)।

सात्वत–पु० [सं०] (१) यदु-कुलमें उत्पन्न एक श्रेष्ठ महा-

पुरुष, जिनके वंशमें उत्पन्न पुरुष सात्वत कहे गये हैं। सात्यकि भी सात्वत कुलके एक रत्न थे (महाभा० सभा० २.३०) (२) भगवान् श्रीकृष्णका एक नाम (शांति ३४२.७७-७८)।

सात्वती–स्त्री० [सं०] (१) शिशुपालकी माताका नाम जिसका दूसरा नाम श्रुतश्रवा था। यह वसुदेवकी पृथा आदि पाँच बहिनोंमें एक थी तथा श्रीकृष्णकी फूआ (बूआ) थी (भाग० ९.२४.३०)। शिशुपाल चेदिनरेश दमघोषका पुत्र था जो श्रीकृष्णका फुफेरा भाई था और युधिष्ठिरके राजसूय यज्ञके समय १०० अपराध पूरे होनेपर कृष्ण द्वारा मारा गया। (२) सुभद्राका एक नाम जो बलभद्रकी सहोदरा तथा श्रीकृष्णकी सौतेली बहिन थी। रैवतक पर्वतपरसे एक उत्सवके पश्चात् अर्जुन इन्हें श्रीकृष्णकी सम्मतिसे हर ले गये थे, पर बादको श्रीकृष्णने द्वारकाकी परिस्थिति सँभाली और इन दोनोंका विधिवत् विवाह कर दिया (भाग० १०.८६.२-१२; महाभा० आदि० २१८.१४-१९; २१९.६-७;२२० अध्याय)।

साद्यस्क–पु० [सं०] एक प्रकारका यज्ञ जिसे राजर्षि करते हैं और जो एक ही दिनमें पूर्ण हो जाता है (महाभा० वन० २४०.१६)।

साधारणी–स्त्री० [सं०] एक अप्सराका नाम, उ० दे०—'ग्रहण कियो नहिं तिन्है सुरासुर साधारण जिय जानि। ताते साधरणी नाम तिन लह्यो जगत छवि खानी ॥'—रघुराज।

साधिका–स्त्री० [सं०] दुर्गाका एक नाम जिसके सरणसे सब कार्योंकी सिद्धि होती है। सवार्थसाधिका—सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके। शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ मार्कण्डेयपु०)।

साध्य–पु० [सं०] एक प्रकारके देवता जो गण देवताके नामसे प्रसिद्ध हैं, जिनकी संख्या १२ कही गयी है। कुछ ग्रंथोंमें इनकी संख्या १७ मिलती है। विष्णुपुराणानुसार यह दक्ष प्रजापतिकी पुत्री साध्याके गर्भसे उत्पन्न धर्मके पुत्र हैं (भाग० ६.६.७;७.३; विष्णु० १.९.६४,७०)।

साध्या–स्त्री० [सं०] दक्ष प्रजापतिकी पुत्री जो अपनी नौ बहिनोंके साथ धर्मको ब्याही थी और साध्योंकी माता थी (भाग० ६.६.४,७;)।

सानंदनी–स्त्री० [सं०] पुराणानुसार एक नदी।

सानंदूरी–पु० [सं०] पुराणानुसार एक नदी।

सासाहिकसांतपन–पु० [सं०] पंचगव्यके पदार्थोंको यथाक्रम एक-एक करके पाँच दिन पी छठे दिन कुशोदक पीये, सातवें दिन उपवास करे तो यह व्रत पूरा होता है (प्रायश्चित्तेन्दुशेखर)।

सामंतेय–पु० [सं०] एक ऋषि विशेषका नाम।

सामपुष्पि–पु० [सं०] एक गोत्रप्रवर्त्तक ऋषि।

सामवेद –पु० [सं०] साम तीसरा वेद जिसकी एक ही संहिता है जिसके दो भाग हैं। इसमें कुल १८१० ऋचाएँ हैं। भारतीय संगीतशास्त्रका आरंभ इसीसे होता है और गाधर्व वेद इसका उपवेद है।

सामश्रवा–पु० [सं०] एक प्राचीन ऋपिका नाम जो वैदिक कालके थे।

सामस्तंबि–पु० [सं०] वैदिक कालके एक प्राचीन ऋषि।

सामुद्रनिष्कुट–पु० [सं०] एक प्राचीन जनपदका नाम (महाभा० भीष्म० ९.४९)।

सामुद्रिकतीर्थ–पु० [सं०] एक पवित्र तीर्थका नाम, जो अरुन्धतीवटके समीपमें है। इसमें स्नान कर ब्रह्मचर्यपालनपूर्वक तीन रात उपवास करनेसे अश्वमेध यज्ञ तथा सहस्र गोदानका फल प्राप्त होता है (महाभा० वन० ८४.४१-४२)।

सामेयी–स्त्री० [सं०] एक अप्सराका नाम, जिसे सातकर्णि मुनिने शाप दे ग्राह बना दिया था और जो वर्करेश्वरतीर्थ (पंचाप्सरस)में रहती थी। अर्जुनने इसे शापमुक्त किया था (स्कंदपु० कुमारिका-खंड)।

सायंसंध्यादेवता–स्त्री० [सं०] श्रीसरस्वती देवीका एक नाम जिनकी उपासना संध्या समय करते हैं—दे० सरस्वती।

सायण–पु० [सं०] एक प्रसिद्ध आचार्यका नाम जो पहले राजमंत्री थे और बादको शृंगेरीमठके अधिष्ठाता हुए। इनका चारों वेदोंका भाष्य प्रसिद्ध है। १४वीं शताब्दी ई० इनका समय है।

सायवस–पु० [सं०] वैदिक कालके एक ऋपि।

सारंगनाथ–पु० [सं०] काशीके समीप चार मील उत्तरपूर्वमें स्थित सारनाथ नामक स्थान। यही प्राचीन मृगदाव है। यह बौद्धों, जैनियों तथा हिन्दुओंका प्रसिद्ध तीर्थस्थान है। आज कल यहाँ बौद्धोंके अनेक नये-नये मठ और मंदिर बन गये हैं। एक अजायब घर भी बना है (स्कंदपु० काशीखंड)।

सारण–पु० [सं०] (१) लंकापति रावणका एक मंत्री जो श्रीरामकी सेनाका भेद पता लगाने गया था। यह अचिष्मतीका पिता था (ब्रह्मां० ३.७१.१६८; वायु० ९६.१६६)। (२) वसुदेवजीके रोहिणीके गर्भसे उत्पन्न बलराम आदि आठ पुत्रोंमेंसे एक (द्वितीय) पुत्रका नाम (मत्स्य० २६.१६२)।

सारदातीर्थ–पु० [सं०] एक प्राचीन तीर्थका नाम।

सारनाथ–पु० [सं०] सारंगनाथ—दे० सारंगनाथ।

सारमेय–पु० [सं०] श्वफल्कके गान्दिनीके गर्भसे उत्पन्न अक्रुर आदि १३ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र तथा अक्रूरका एक भाई (भाग० ९.२४.१६-१७)।

सारस–पु० [सं०] गरुड़की प्रमुख संतानोंमेंसे एकका नाम (महाभा० उद्योग० १०१;११)।

सारमेयादन–पु० [सं०] २८ नरकोंमेंसे एक नरका नाम (भाग० ५.२६.७)।

सारस्वत–पु० [सं०] (१) महाभारतके अनुसार एक प्राचीन ऋषि, जो अलम्बुषा अप्सराको देखकर स्खलित हुए दधीचि ऋषिके वीर्य और सरस्वती नदीके गर्भसे उत्पन्न पुत्र कहे गये हैं (महाभा० शल्य० ५१.७-११)। इनका स्थान सरस्वतीतीर्थके नामसे प्रसिद्ध हुआ। कहीं-कहीं इनके स्थानका 'तुङ्गकारण्य' नामसे भी उल्लेख दिखायी देता है (वन० ५.४६)। कहते हैं एक बार अकाल पड़नेपर इनकी माताने इन्हें मछलियाँ खिलाकर इनकी प्राण-रक्षा की और यह वेदाध्ययन करते रहे, पर और ब्राह्मण भोजनके अभावमें सब भूल गये। अकालके बाद इन्होंने करीब ६०,००० ब्राह्मणों-

को वेद-ज्ञान दिया था (शल्य० ५१.३)। (२) सरस्वती नदीके किनारेका देश। (३) पञ्चविध गौड़ ब्राह्मणोंमेंसे एक ब्राह्मणभेद विशेष जो अधिकतर पंजाबमें मिलते हैं पर पहले ये लोग सरस्वती नदीके आसपासके देशमें रहते थे।

सारस्वतव्रत-पु० [सं०] सरस्वतीके उद्देश्यसे किया जाने वाला एक व्रत जो प्रति रविवार या पंचमीको किया जाता है। इसमें ब्राह्मणकी पूजा करना तथा ब्राह्मणको भोजन कराना आवश्यक है। इस व्रतसे मनुष्य विद्यालाभ करता है और वंधु-बांधवका प्रेम प्राप्त करता है।

सारिक-पु० [सं०] युधिष्ठिरकी सभामें विराजमान होनेवाले एक ऋषिका नाम (महाभा० सभा० ४.१३)।

सारिसूक्त-पु० [सं०] ऋग्वेदके कुछ मंत्रोंके द्रष्टा एक प्राचीन ऋषि।

सारिसंजय-पु० [सं०] एक राजाका नाम, जो द्रौपदीके स्वयंवरमें सम्मिलित हुए थे (महाभा० आदि० १८५.१९)।

सारिसृक्क-प० [सं०] एक शार्ङ्गिक, जो पक्षिरूपधारी मन्दपाल ऋषिके द्वारा जरिताके गर्भसे उत्पन्न हुआ था। अग्निकी स्तुति करनेसे खाण्डव वन दाहसे अग्निने इसकी रक्षा की थी (महाभा० आदि० २२८.१७;२३१.३-११,२१)।

सार्वभौम-पु० [सं०] (१) पुरुवंशोत्पन्न राजा अहंयातिके द्वारा कृतवीर्य-कुमारी भानुमतीके गर्भसे उत्पन्न पुत्र। इसकी पत्नीका नाम सुनन्दा था, जो केकयदेशकी कन्या थी, उसके गर्भसे इनका जयत्सेन नामका पुत्र हुआ (महाभा० आदि० ९५.१५-१६)। (२) भागवतके अनुसार विदूरथका पुत्र (भाग०९.२२.१०)। (३) आठ दिग्गजोंमेंसे एक दिग्गजका नाम (द्रोण० १२१.२६)।

सार्वभौमव्रत-पु० [सं०] कार्त्तिकशुक्ल १०मी को दिशाओंका पूजन करे तथा अर्धरात्रिमें दही भात खाय। इसे सालभर प्रत्येक शुक्ला १०मी को करे तो दिग्विजयी हो (वाराहपु०)।

सालंकायन-पु० [सं०] विश्वामित्रके ब्रह्मवादी पुत्रोंमेंसे एकका नाम (महाभा० अनु० ४.५२)।

सालकटंकटी-स्त्री० [सं०] राक्षसी हिडिम्बाका दूसरा नाम (महाभा० १४५.११)।

सावर्ण-पु० [सं०] एक महर्षिका नाम, जो युधिष्ठिरकी सभामें विराजते थे (महाभा० सभा० ४.१५)।

सावित्र-पु० [सं०] (१) एकादश रुद्रोंमेंसे एक रुद्रका नाम (महाभा० शांति० २०८.२०)। (२) सुमेरु पर्वतके एक शिखरका नाम, जिसका नामान्तर ज्योतिष्क है। यह सब प्रकारके रत्नोंसे पूर्ण, सबका अगम्य शिवपार्वतीका निवास है (शांति० २०३.५-१०)।

सार्ष्टि-स्त्री० [सं०] सालोक्य आदि चार प्रकारकी मुक्तियोंमेंसे एक। मुक्ति चार प्रकारकी कही गयी है सालोक्य, सामीप्य, सायुज्य और सार्ष्टि। ब्रह्मदो ब्रह्मसार्ष्टिताम्, (मनु० ४.२३२)।

सालग्रामी-स्त्री० [सं०] गंगाजीकी सात धारामेंसे एक धारा गंडकी कहलाती है। गंडक नदीका एक नाम, जिसके जलका पान करनेसे मानव तत्काल पापरहित हो जाते है (महाभा० आदि० १६९.२०-२१)। ग्रन्थकारोंमें इसके दो नाम और प्रसिद्ध हैं—नारायणी और सालग्रामी। शालग्रामीमें शालग्रामकी मूर्त्तियाँ मिलनेके कारण इसका यह नाम पड़ा (महाभारत भीष्म० ९.२५ में) तथा बौद्धग्रन्थान्तरोंमें इसका हिरण्वती या हिरण्यवती नाम भी दृष्टिगोचर होता है। भगवान् श्रीकृष्ण, अर्जुन और भीमसेनने इन्द्रप्रस्थसे गिरिव्रज जाते समय इसे पार किया था (सभा० २०.२७)। यह नदी सब तीर्थोंके जलसे उत्पन्न हुई है। इसमें स्नान करनेसे मनुष्यको अश्वमेध यज्ञका फल प्राप्त होता है (वन० ८४.११३)। अग्निकी उत्पत्ति करनेवाली नदियोंमें इसकी भी गणना है (वन० २२२.२२)। यह भारतकी प्रधान नदियोमें एक है (भीष्म० ९.२५)।

सावर्णि-पु० [सं०] (१) आठवें मनुका नाम। सूर्यका तेज सहन न कर सकनेके कारण उनकी पत्नी संज्ञा पिताके घर चली गयी और अपने वर्णकी एक छाया (सवर्णा) छोड़ गयी। सावर्णि इसी सावर्णाके गर्भसे उत्पन्न सूर्यके पुत्र थे—दे० संज्ञा, सवर्णा, छाया आदि। (२) एक ऋषिका नाम जो इन्द्रसभामें विराजमान होते हैं (महाभा० सभा० ७.१०-१२)। सत्ययुगमें इन्होंने छह हजार वर्षों तक तपस्या की थी जिससे प्रसन्न हुए शंकरने प्रत्यक्ष दर्शन देकर इन्हें विख्यात ग्रन्थकार तथा अजर अमर होनेका वर दिया था (अनु० १०३.१०४)।

सावित्री-स्त्री० [सं०] (१) सूर्यकी पृश्नी नामकी पत्नीके गर्भसे उत्पन्न ब्रह्माकी पत्नीका नाम (ब्रह्मपु०)। (२) दक्ष प्रजापतिकी एक पुत्री जो धर्मको व्याही थी। (३) मद्रदेशाधिपति अश्वपतिकी पुत्री जो शाल्वदेशके राजा द्युमसेनके पुत्र सत्यवान्को व्याही थी। यह सावित्री देवीकी उपासना करनेसे उत्पन्न हुई थी, अतः सावित्री नाम पड़ा था। सत्यवान् अल्पायु थे इस कारण साल भर बीतते ही वह मर गये। सावित्रीने अपने पातिव्रत धर्मके बलपर यमराजको प्रसन्न कर सत्यवान्को पुनः जीवित कर लिया था। सावित्रीके १०० पुत्र हुए थे। पुराणोंमें इनकी कथा सविस्तारसे दी हुई हैं। सावित्रीको यमराजसे ज्येष्ठकी अमावस्याको वर प्राप्त हुआ था, इससे आज तक सब सुहागिन स्त्रियाँ ज्येष्ठकी अमावस्याको व्रत रखती हैं और सावित्रीकी कथा सुनती हैं। ज्येष्ठकी गर्मीसे बचनेके लिए स्त्रियाँ वट वृक्षके नीचे एकत्र हो पूजन करती हैं अतः इस व्रतका नाम 'वटसावित्री' रखा गया है। सावित्रीने अपने अंधे सास-ससुरकी आँखे ठीक करा दीं तथा अपने पतिकी आयु ४०० वर्ष करा ली (मत्स्य० २०८.५-११.२११.११-१४)। (४) उमादेवीकी अनुगामिनी एक सहचरीका नाम (महाभा० वन० २३१.४९)।

सावित्रीतीर्थ-पु० [सं०] हिंदुओंका एक प्राचीन तीर्थ (स्कंदपु०)।

सावित्रीव्रत-पु० [सं०] सौभाग्यवती स्त्रियोंका एक व्रत जिसे सौभाग्य अचल रहनेके उद्देश्यसे ज्येष्ठ बदी ३०को करते हैं (स्कंदपु० तथा हेमाद्रि-व्रत खंड)। 'नारी वा विधवा वापि पुत्री पुत्रविवर्जिता। सभर्तृका सपुत्रा वा कुर्यादू व्रतमिदं शुभम् ॥, (स्कंदपु०)।

सावित्रीसूत्र-पु० [सं०] यज्ञोपवीत, जो गायत्रीमंत्रकी दीक्षाके समय धारण किया जाता है (हि० वि० को०)।

साशिव-पु० [सं०] भारतकी उत्तर दिशाके एक प्राचीन

देशका नाम, जिसे जीतकर अर्जुन ८ घोड़े लाये थे (हिं० वि० को०)।

साश्व–पु० [सं०] एक प्राचीन नरेशका नाम, जो यमसभामें रहकर यमकी उपासना करते थे (महाभा० सभा० ८.१७)।

साहसी–पु० [सं०] वलिका पुत्र जो शापके कारण गदहा हो गया था और श्रीकृष्णके भाई बलराम द्वारा मारा गया (हिं० श० सा०)।

साहस्रक–पु० [सं०] कुरुक्षेत्रकी सीमाके अन्तर्गत एक प्रसिद्ध तीर्थ, जहाँ स्नान करनेसे सहस्र गोदानका फल प्राप्त होता है और जहाँ किये गये दान और उपवासका फल अन्यत्र किये गये दान और उपवाससे हजार गुना अधिक होता है (महाभा० वन० ८३.१५८-५९)।

सिंगरौर–पु० [हिं०] सं० शृंगवेर। यह प्रयागसे पश्चिम-उत्तर कोणमें करीव १० कोसपर है। कहते हैं निषादराज गुहकी राजधानी यहीं थी (रामच० मानस ८६-९०)।

सिंदूरतृतीया–स्त्री० [सं०] आश्विनशुक्ला ३ को चंपाके तेलमें सिंदूर मिला देवीको लगावे तथा दर्पण दिखावे (दुर्गाभक्तितरंगिणी)।

सिंधु–पु० [सं०] (१) एक महानद, जिसे इंडस नदी कहते हैं, तथा यहाँके देश और निवासियोंका नाम (सिंध, सिंधी)। (२) गंधर्वोंके एक राजाका नाम। (३) मालवा देशकी एक नदीका नाम।

सिंधुजन्मा–पु० [सं०] चंद्रमाका एक नाम—दे० चंद्रमा।

सिंधुजा–स्त्री० [सं०] समुद्रसे निकलनेके कारण लक्ष्मीका नाम (भाग० ८.८.८)।

सिंधुद्वीप–पु० [सं०] (१) अयुतायुके पिता तथा ऋतुपर्णके दादाका नाम (भाग० ९.९.१६-१७; ब्रह्मां० ६३.१७२; विष्णु० ४.४.३७)। (२) एक प्राचीन राजर्षिका नाम जिन्होंने पृथूदक तीर्थमें तपस्या कर ब्राह्मणत्व प्राप्त किया था (महाभा० शल्य० ३९.३७)। ये राजा जह्नुके पुत्र तथा बलाकाश्वके पिता थे (अनु० ४.४)।

सिंधुनंदन– पु० [सं०] चंद्रमाका एक नाम (भाग०)।

सिंधुप–पु० [सं०] समुद्र पी जानेके कारण अगस्त्य ऋषिका नाम (अगस्त्य —दे०)।

सिंधुपुत–पु० [सं०] जलंधर नामक राक्षस जिसे शंकरने मारा था (भाग०, विष्णु० तथा ब्रह्मां०)।

सिंहनाद–पु० [सं०] रावणका एक पुत्र (रामायण)।

सिंहमुख–पु० [सं०] शंकर भगवान्का एक गण (काशी-खंड)।

सिंहल–पु० [सं०] (१) भारतके दक्षिणका एक टापू (जनपद)। कहते हैं यही लंका थी जहाँका राजा रावण था (रामायण)। (२) एक जातिका नाम। नन्दिनीके पार्श्व भागसे सिंहल नामके म्लेच्छ जातियोंकी उत्पत्ति हुई थी (महाभा० आदि० १७४.३७)।

सिंहसेन–पु० [सं०] पाञ्चाल देशका पाण्डव पक्षीय एक योद्धा, जिसका द्रोणाचार्यके साथ युद्ध हुआ और उनके हाथों वध हुआ (महाभा० द्रोण० १६.३२-३७)।

सिंहिका–स्त्री० [सं०] (१) प्रजापति कश्यप ऋषिकी पत्नी तथा दक्षकी पुत्री दितिके गर्भसे उत्पन्न तीन संतानोंमेंसे एक (पुत्री)का नाम। इनके शेष दो पुत्रोंका नाम हिरण्यकशिपु और हिरण्याक्ष था। यह दानव श्रेष्ठ विप्रचित्तिको ब्याही थी। इससे विप्रचित्तिके राहु आदि० १०१ पुत्र हुए थे (भाग० ६.६.३७-३८)। राहुकी माता जो लंकाके समीप समुद्रमें रहती थी। यह उड़ते हुए जीवोंको खींच लेती थी और उन्हें खा जाती थी। लंका जाते समय इसे हनुमान्ने मारा था (रामच० मानस सुंदर २.१-३)।

सितकुंजर–पु० [सं०] ऐरावत हाथी (जो सित=सफेद है) के स्वामी इंद्रका एक नाम (भाग०)।

सितसप्ति–पु० [सं०] सफेद घोड़ेवाला=अर्जुन (महाभा०)।

सितोदर–पु० [सं०] सफेद पेट होनेके कारण कुबेरका नाम—दे० कुबेर।

सिद्ध–पु० [सं०] वायुपुराणानुसार एक प्रकारके देवता जिनकी संख्या ८८००० है। सूर्यके उत्तर और सप्तर्षियोंके दक्षिण अंतरिक्ष (भुवर्लोक)में इनका वास लिखा है। ये एक कल्प भरके लिए अमर कहे गये हैं (वायु० १००.२१०)।

सिद्धकामेश्वरी–स्त्री० [सं०] दुर्गाकी पंच मूर्त्तियोंमेंसे पहली मूर्त्तिका नाम (देवीभाग०)।

सिद्धकूप–पु० [सं०] कार्त्तिकेयकी शक्ति जो पृथ्वीको छेद कर प्रलंब दैत्यका वध कर पातालसे लौट आयी। इससे बने छिद्रको स्कंदने 'सिद्धकूप' कहा, जिसमें पाताल गंगाका जल भर गया (स्कंदपु० माहेश्वर० कुमा०-खंड)।

सिद्धक्षेत्र–पु० [सं०] दंडक वनका एक भाग विशेष (तंत्रशास्त्र)।

सिद्धपात्र–पु० [सं०] स्कंदका एक सैनिक अनुचर (स्कंदपु० महाभा० शल्य० ४५.६६)।

सिद्धर–पु० [सं०] एक ब्राह्मणका नाम जो मथुरापति कंसकी आज्ञानुसार श्रीकृष्णको मारने गया था पर असफल रहा (भाग०)। उ० 'सिद्धर बांभन करम कसाई। कहौ कंस सो वचन सुनाई'—सूर।

सिद्धवट–पु० [सं०] महीसागर-संगम तीर्थका एक वट वृक्ष जिसका महात्म्य प्रयागके अक्षयवटके समान है (स्कंदपु० माहेश्वर० कुमारिका-खंड)।

सिद्धविनायक–पु० [सं०] सिद्धेश्वर-क्षेत्रमें स्थापित गणपतिकी मूर्त्ति जिसकी स्थापना देवताओंने सिद्धिके लिए की थी (स्कंदपु० माहेश्वर० कुमारिका-खंड)।

सिद्धसप्तक–पु० [सं०] सिद्धेश्वरनाथ, सिद्धवट, सिद्धाम्बिका, सिद्धविनायक, सिद्धेशक्षेत्राधिपति, सिद्धसर तथा सिद्धकूप ये सात तीर्थ जो महीसागर-संगम तीर्थमें हैं। सिद्धसप्तककी पूजा, तथा दर्शन करने-वाला सब दोषोंसे मुक्त हो जाता है (स्कंदपु० मोहेश्वर० कुमारिका-खंड)।

सिद्धस्थाली–स्त्री० [सं०] एक वटलोई (धातुका बना पात्र) विशेष, जो वनवासके समय व्यासजीसे द्रौपदीको मिली थी। इसमेंसे इच्छानुकूल भोजन निकाला जा सकता था (महाभा० वन०) —दे० अक्षयपात्र।

सिद्धाम्बिका–स्त्री० [सं०] महीसागरसंगम तीर्थकी महाशक्ति देवी, जो इस क्षेत्रकी रक्षा करती है। यह सिद्धेश्वरलिंगके उत्तर है (स्कंदपु० माहेश्वर० कुमारिका-खंड)।

सिद्धार्थ–पु० [सं०] (१) विष्णुके नये अवतार बुद्धका पहला नाम। (२) महाराज दशरथके एक मंत्रीका नाम (रामायण)। (३) महाभारतके अनुसार एक राजा जो क्रोधवश नामके दैत्यके अंशसे उत्पन्न कहा गया है (आदि० ६७.६०)। (४) कुमार कार्त्तिकेयका एक सैनिक अनुचर (शल्य० ४५.६४)।

सिद्धार्थी–पु० [सं०] साठ संवत्सरोंमेंसे ५३वें संवत्सरका नाम।

सिद्धि–स्त्री० [सं०] (१) गणेशकी दो पत्नियोंमेंसे एकका नाम जो 'क्षेम'की माता थी (शिवपु० कुमारखंड, अध्याय २०)। स्कंदपुराणानुसार गणेशकी दूसरी पत्नी 'ऋद्धि' हैं। शिवपुराणानुसार बुद्धि दूसरी पत्नी है। (२) राजा जनककी पुत्रवधूका नाम जो लक्ष्मीनिधिकी पत्नी थी (रामायण)। (३) योग द्वारा प्राप्त अलौकिक शक्तियाँ जिनके नाम ये हैं—अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व और वशित्व। पुराणानुसार=अंजन, गुटिका, पादुका, धातुभेद, बेताल, वज्र, रसायन और योगिनी ये आठ सिद्धियाँ हैं। सांख्यानुसार=तार, सुतार, तारतार, रम्यक, आधिभौतिक, आधिदैविक तथा आध्यात्मिक ये ही सात सिद्धियाँ ठहरती हैं (भाग०)। (४) महाभारतके अनुसार एक देवी, जो कुंतीके रूपमें पृथिवीपर प्रकट हुई थी (आदि० ६७.१६०)। ये दैत्योंके साथ युद्ध करनेके लिए जाते हुए कुमार कार्त्तिकेयके सैनिकोंके आगे-आगे चलती थीं (शल्य० ४६.६४)। (५) वीर नामक अग्निके पुत्रका नाम, इनकी माताका नाम सरयू था। इन्होंने अपनी प्रभासे सूर्यको भी आच्छादित कर दिया था (वन० २१८.११)।

सिद्धिविनायकव्रत–पु० [सं०] भाद्रपदशुक्ला चतुर्थीको किया जानेवाला एक व्रत, जिस दिन मध्याह्नमें गणेशका जन्म हुआ था। इस दिन रवि या भौमवार हो तो यह महाचतुर्थी कही जाती है। रात्रिमें चंद्रदर्शनसे मिथ्या कलंक लगता है जिसके निवारणके लिए स्यमंतक-कथा सुनी जाती है। इसमें गणेश-पूजन होता है। राजपूतानामें गणपति चतुर्थी बड़े धूमधामसे मनायी जाती है। महाराष्ट्रमें भी इस पर महोत्सव होते हैं (कृत्यरत्नावली)।

सिद्धीश्वर–पु० [सं०] हिन्दुओंका एक तीर्थस्थान जो अति प्राचीन है।

सिद्धेश–पु० [सं०] पंचाप्सरस तीर्थोंमेंसे एक जो दक्षिण समुद्रके तटपर है। यहाँ लता नामकी अप्सरा शापवश ग्राहके रूपमें रहती थी और स्नानार्थियोंको जलमें खीच ले जाती थी, अतः तपस्वियोंने इस तीर्थको त्याग दिया था। महर्षि भरद्वाजको यह तीर्थ अति प्रिय था। कुंती-सुत अर्जुनने पंचाप्सरस तीर्थकी पाँचों अप्सराओंका उद्धार किया था (स्कंदपु० माहेश्वर० कुमारिका-खंड १.२१-२२ आदि)।

सिद्धेश्वर–पु० [सं०] एक शिवलिंग जिसे विष्णु, इन्द्र आदि देवताओंने मिलकर स्थापित किया था। इसके पास एक सरोवर तथा स्कंदका स्थापित एक सिद्धकूप भी है, जिनमें स्नान कर सिद्धेश्वरका पूजन करनेसे अनेक जन्मोंका पाप दूर होता है (स्कंदपु० माहेश्वर० कुमारिका-खंड)।

सिद्धोदक–पु० [सं०] एक तीर्थस्थान जो अति प्राचीन है।

सिनि–पु० [सं० शिनि] यादव कुलोत्पन्न सात्यकिके पिता।

सिनीवाक्–पु० [सं०] एक महर्षिका नाम, जो युधिष्ठिरकी सभामें बैठते थे (महाभा० सभा० ४-१४)।

सिनीवाली–स्त्री० [सं०] (१) एक वैदिक देवीका नाम, जो गर्भ-प्रसवकी अधिष्ठात्री हैं। अथर्ववेदानुसार यह विष्णुकी पत्नी हैं। (२) अंगिरा ऋषिकी श्रद्धासे उत्पन्न चार पुत्रियों—सिनीवाली, कुहू, राका और अनुमति-मेंसे एक पुत्रीका नाम (भाग०४.१.३४)। महाभारतमें इसे अंगिराकी तृतीय पुत्री (चतुर्दशीयुक्त अमावास्या) कहा गया है। इसका दूसरा नाम दृश्यादृश्या कहा है, क्योंकि इसमें अत्यन्त क्षीण होनेसे चंद्रकला कभी दिखायी देती है और कभी नहीं (वन० २१८.५)। (३) मार्कण्डेयपुराणानुसार एक नदीका नाम।

सिप्रा–स्त्री० [सं०] एक पवित्र नदीका नाम, जिसके तटपर उज्जयिनी नगरी स्थित है तथा जो पारियात्र पर्वतसे निकली १४ नदियोंमेंसे एक है (मत्स्य० ४५.९८)। यहाँ महाकालका एक अति प्राचीन मन्दिर है और प्रसिद्ध विक्रमादित्य यहाँके राजा थे, यह मालवामें है।

सिलोच्च–पु० [सं० शिलोच्चय] पर्वतका नाम। विश्वामित्रजीके सिद्धाश्रमसे मिथिला जाते समय श्रीराम यहाँसे होते गये थे (रामायण)।

सीतवन–पु० [सं०] कुरुक्षेत्रकी सीमाके अन्तर्गत एक वन, जो महान् तीर्थरूप है। एक बार वहाँ जाने या उसका दर्शन करनेमात्रसे वह तीर्थ मनुष्यको पुनीत कर देता है। वहाँ केशोंको धो लेनेमात्रसे मनुष्य निष्पाप हो जाता है। (महाभा० वन० ८३.५९-६०)।

सीता–स्त्री० [सं०] (१) वेदोंके अनुसार सीता कृषिकी अधिष्ठात्रीदेवी तथा कई मंत्रोंकी देवता है। (२) दाक्षायणीदेवीका एक नाम (देवीभाग०)। (३) मेरु पर्वतपर गिरनेके पश्चात् बनी आकाशगंगाकी एक धारा जो पुराणानुसार भद्राश्व द्वीपमें मानी गयी है। (४) मिथिला-नरेश सीरध्वज जनककी पुत्री जो श्री रामचंद्रको ब्याही थी। यह पृथ्वीसे अर्थात् जुती हुई भूमिकी कूँड़=(सीता) से उत्पन्न हुई थी। इनके विवाहके लिए धनुर्यज्ञ हुआ था जिसमें शिवप्रदत्त एक विशेष प्रकारके धनुषको तोड़कर श्रीरामने इन्हें ब्याहा था। बनवासके समय यह श्रीरामके साथ वन गयी थीं और तभी पंचवटीसे लंकापति रावण छलपूर्वक इन्हें हर ले गया था। बस इसीपर राम-रावणयुद्धका श्रीगणेश हुआ, जिसमें श्रीराम विजयी हुए तथा रावणका बध कर सीताको छुड़ा लाये थे। इन्हें लक्ष्मीका अवतार माना जाता है। जब रामने लोकमर्यादाके अनुसार सीताकी अग्नि-परीक्षा की थी तब स्वयं अग्निदेवने सीताको लेकर श्रीरामको सौंपा था। दुर्मुख नामक गुप्तचरके कथनानुसार श्रीरामने सीताको त्याग दिया था और यह वाल्मीकिके आश्रमपर रहने लगीं। जहाँ लव और कुश नामके दो यमज पुत्र उत्पन्न हुए थे। कुछ दिनोंके पश्चात् वाल्मीकि ऋषिके कहनेपर सीताजी फिर बुला ली गयी, परन्तु कानाफूसी बन्द न हो सकी और इससे दुःखी हो सीताने पृथ्वीसे प्रार्थना की और सबके देखते-देखते पृथ्वीमें समा गयी थीं (रामायण)।

सीताकुंड–पु० [सं०] इस नामके कई कुंड प्रसिद्ध हैं और

इन सबका सम्बन्ध सीतासे है जिसके कारण ये पवित्र तीर्थ-स्थान माने जाते हैं। ये कुंड निम्नांकित स्थानोंपर स्थित हैं—(१) मुँगेरसे २॥ कोसपर। (२) मंदार पर्वतपर। (३) मोतिहारीसे ६ कोस पूर्व। (४) चटगाँव जिलेमें पर्वतपरका एक कुंड। (५) विन्ध्याचलके पासका एक कुंड। (६) सरयू तथा तिलोदकी नदियोंके संगमपर स्थित संभेद तीर्थसे पश्चिममें तटपर ही स्थित एक तीर्थ जिसका निर्माण सीताजीने किया था। श्रीरामके अनुसार मार्गशीर्ष कृष्ण १४ को यहाँका पर्व है (स्कंदपु० वैष्णव अयोध्या-माहात्म्य)।

सीतावट—पु० [सं०] एक वटवृक्ष विशेषका नाम जो प्रयाग और चित्रकूटके बीचमें स्थित है। वन जाते समय यहाँ श्री रामचंद्रने विश्राम किया था (रामायण)।

सीतासरोवर—पु० [सं०] श्रीरामको अपने सतीत्वका विश्वास दिलानेके हेतु सीताने देवताओंके समक्ष अग्निमें प्रवेश किया था और सकुशल बाहर निकल आयी थीं। तभी इस तीर्थका निर्माण उन्होंने किया था तथा स्वयं भी इसमें स्नान किया था। यह गंधमादन पर्वतपर स्थित है (स्कंदपु. ब्राह्म० सेतु-माहात्म्य)।

सीताष्टमी—स्त्री० [सं०] फाल्गुनकृष्णाष्टमी जिसे कालाष्टमी भी कहते हैं। इस तिथिको सीताका जन्म माना जाता है। देवीके उपासक इसे कालाष्टमी मान देवी-पूजन तथा अष्टका श्राद्ध करते हैं—दे० निर्णयसिन्धु।

सीतोद—पु० [सं०] एक सरोवरका नाम, कुमुद, मधुमान, अंजन आदि पहाड़ इसके पश्चिममें हैं (वायु० ३६.२६-२८)।

सीमन्तिनी—स्त्री० [सं०] आर्यावर्तके राजा चित्रवर्माकी पुत्री। यह निषधराज नलके पुत्र इन्द्रसेनकी पुत्रवधू तथा चंद्रांगदकी पत्नी थी, जो परम शिवभक्त थी। चंद्रांगदके यमुनामें डूब जानेसे यह विधवा हो गयी थी पर शिवकृपासे इसके पतिको पातालराज तक्षकने पुनः लौटा दिया था। (स्कंदपु० ब्राह्म० ब्रह्मोत्तरखंड तथा शिवपु० शतरुद्र-संहिता अध्याय २६-२७)।

सीरध्वज—पु० [सं०] महाराज जनकका एक नाम ये ह्रस्वरोमाके पुत्र तथा कुशध्वजके पिता थे। यज्ञार्थ भूमिको जोतते हुए इनके सीराग्रसे सीताकी उत्पत्ति हुई थी, इसलिए इनका नाम सीरध्वज पड़ा (भाग० ९.१३.१७-१८)। अन्य मतसे इनकी पताकापर हलका राजचिह्न है इसलिए यह सीरध्वज कहलाते हैं।

सीसर—पु० [सं०] एक कुत्तेका नाम जो देवताओंकी कुतिया सरमाका पति है (पाराशरगृह्यसूत्र तथा महाभा०)।

सुंद—पु० [सं०] (१) निकुंभका पुत्र एक असुर जो उपसुंदका भाई था। सुंद और उपसुंद तिलोत्तमा अप्सराके लिए आपसमें ही लड़ मरे थे। सुंद बड़ा था और उपसुंद छोटा। त्रिलोक जीतनेकी इच्छासे ये दोनों विंध्याचल पर्वतपर तप करने लगे (महाभा० वन० २०८.४-६)। इन्हें ब्रह्माने वर दिया था कि यदि ये आपसमें नहीं लड़ेंगे तो इनको कोई नहीं मार सकेगा (आदि० २०८.२४-२५)। वरप्राप्तिके पश्चात् ये घोर अत्याचार करने लगे तब ब्रह्माने तिलोत्तमा अप्सराको भेजा जिसे प्राप्त करनेके लिए सुंद और उपसुंद ब्रह्मासे प्राप्त वर तकको भूल आपसमें ही लड़ दोनों मर गये।—दे० उपसुंद और तिलोत्तमा तथा (महाभा० आदि० २११.१९)। (२) एक वानरका नाम (रामायण)। (३) एक राक्षसका नाम। (४) संह्लादका पुत्र (संहाद)। (५) निसुंदका पुत्र तथा उपसुंदका बड़ा भाई (ब्रह्मां० ३.५.३४; वायु० ६७.७१)।

सुंदर—पु० [सं०] वीरबाहुका पुत्र एक गंधर्व जो श्रीरंग क्षेत्रके एक जलाशयमें सैकड़ों स्त्रियोंके साथ नग्नावस्थामें जल-विहार करनेके कारण वशिष्ठके शापसे राक्षस हो गया था। १६ वर्षों पश्चात् यह विचरण करता चक्रतीर्थके पद्मनाभ मुनिको जब खाने दौड़ा तो चक्रसुदर्शनने इसका गला काट इसे शापमुक्त किया था (स्कंदपु० वैष्णव० भूमि-वाराह-खंड)।

सुंदरकांड—पु० [सं०] रामायणके सात कांडोंमेंसे एक जिसका नामकरण लंकाके सुंदर पर्वतके नामपर हुआ (रामायण)।

सुंदरी—स्त्री० [सं०] (१) त्रिपुरसुंदरीदेवीका नाम (देवी-भाग०)। (२) नर्मदा गन्धर्वीकी पुत्री जो गन्धर्वकन्या देववतीके गर्भसे उत्पन्न सुकेशके पुत्र माल्यवान् राक्षसको ब्याही थी। माल्यवान्का भाई सुमाली लंकापति रावण आदिका नाना था (रामायण)।

सुकंकवान्—पु० [सं०] मेरु पर्वतके दक्षिणमें स्थित एक पर्वत (मार्कण्डेयपु०)।

सुकंठ—पु० [सं०] श्रीरामके सखा तथा वालीके भाई सुग्रीवका एक नाम।

सुकंदक—पु० [सं०] एक प्राचीन भारतीय जनपदका नाम (महाभा० भीष्म० ९.५३)।

सुकक्ष—पुं० [सं०] अंगिराके वंश, में उत्पन्न एक ऋषि जो ऋग्वेदके कई मंत्रोंके द्रष्टा कहे जाते हैं (भाग० मत्स्य० तथा ऋग्वेद)।

सुकन्या—स्त्री० [सं०] शर्याति राजाकी पुत्री तथा च्यवन ऋषिकी पत्नी (भाग० ९.३.२-२६; ब्रह्मां० २.३२.९८; ३.८.३१)।

सुकालिन—पु० [सं०] पितरोंका एक गण विशेष जो शूद्रोंके पितर माने गये हैं (मनु०)।

सुकुंडल—पु० [सं०] धृतराष्ट्रके १०० पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (महाभा० आदि० ६७.९८)।

सुकुट्ट—पु० [सं०] एक प्राचीन देश तथा वहाँके निवासियोंका नाम (महाभा० १४.२६)।

सुकुमार—पु० [सं०] (१) तक्षक-कुलमें उत्पन्न एक नागका नाम जो जनमेजयके सर्पसत्रमें जलाया गया था (महाभा० आदि० ५७.९)। (२) पुलिन्दोंके महान् नगर या राजधानीके शासक एक राजकुमार या नृपतिका नाम जो सम्भवतः राजा सुमित्रके पुत्र थे। सुकुमार और सुमित्र दोनोंको पूर्वदिग्विजयके समय भीमसेनने परास्त किया था (सभा० २९.१०)। (३) शाकद्वीपके जलधार पर्वतके निकट का एक वर्ष (भीष्म० ११.२५)।

सुकुमारवन—पु० [सं०] एक कल्पित वनका नाम जो सुमेरुके निकटस्थ कहा गया है। इसे शंकर-पार्वतीका क्रीड़ास्थल माना गया है (भाग०)।

सुकुमारी—स्त्री० [सं०] (१) परीक्षित-पुत्र राजा भीमसेनकी

पत्नीका नाम (महाभा० आदि०)। (२) सृंजय राजाकी पुत्री, जो नारदकी पत्नी थी (महाभा० शांति० ३०.१४-३०)। (३) शाकद्वीपकी एक नदीका नाम जिसे अनुतप्ता भी कहते हैं (वायु० ४९.९१)।

सुकुसुमा–स्त्री० [सं०] स्कंदकी अनुचरी एक मातृकाका नाम (महाभा० शल्य० ४६.२४)।

सुकृत–पु० [सं०] (१) स्वारोचिष मंवन्तरके एक प्रजापति, जो वशिष्ठ ऋषिके पुत्र थे (पद्मपु० सृष्टि० ७)। (२) राजा पृथुका पुत्र तथा विभ्राजका पिता (मत्स्य० ४९.५५)।

सुकृतव्रत–पु० [सं०] द्वादशीके दिन किया जानेवाला एक व्रत विशेष, जिसमें फाल्गुनशुक्ला १०मी को मध्याह्न-भोजन, एकादशीको उपवास तथा द्वादशीको एकभुक्त और त्रयोदशीको अयाचित भोजन करनेका विधान है—दे० पुराण-समुच्चय।

सुकृति–पु० [सं०] ब्रह्मसावर्णि मंन्वतरके सप्तर्षियोंमेंसे एक सप्तर्षि (विष्णु० ३.२.२७)।

सुकृप–पु० [सं०] विपुलस्वान मुनिके पुत्र तथा तुम्बुरुके भाई। इनके ४ पुत्र थे जो इनके शापसे पक्षियोंकी योनिमें उत्पन्न हुए। ये कन्धर-पुत्री तार्क्षीके गर्भसे उत्पन्न मंदपाल पक्षीके पुत्र द्रोणके सुत कहलाये (वराहपु० तथा मार्कण्डेयपु० ३.४७-४८, ७१-७२, ८१; ४.६,४३)।

सुकेतन–पु० [सं०] सुनीत (विष्णु=सुनीथ) राजाके पुत्र, जिन्हें निकेतन भी कहते थे, धर्मकेतुके पिता तथा सत्यकेतुके दादाका नाम (भाग० ९.१७.८; विष्णु० ४८.१९)।

सुकेतु–पु० [सं०] (१) एक यक्षका नाम जो ताड़का राक्षसीका पिता और विहारमें बक्सरके ही निकट रहता था, जहाँ विश्वामित्रका आश्रम था। रामायणके अनुसार यह महान् पराक्रमी तथा सदाचारी था, किन्तु इसको कोई सन्तान न थी, उसके लिए इसने बड़ी तपस्या की। इसकी तपस्यासे प्रसन्न हो ब्रह्माने इसे ताड़का नामकी कन्या दी। इसकी यह पुत्री (ताड़का) बड़ी शैतान निकली यह विश्वामित्रजीकी तपस्यामें विघ्न डालती थी। उसका वध विश्वामित्रजीके अनुरोधपर श्रीरामने किया था (रामच० मा० बाल० २०८.२२-३)। (२) चित्रकेतु राजाका नाम जो भागवतानुसार शूरसेन देशका राजा था। इस पुत्रशोकाकुल राजाको नारदजीने उपदेश दिया था (भाग० ६.१४.१०; १५.१)। (३) एक राजाका नाम, जो अपने पुत्र सुनामा और सुवर्चाके साथ द्रौपदी-स्वयंवरमें सम्मिलित हुए थे (महाभा० आदि० १८.५.९)। (४) शिशुपालका एक पुत्र, जो द्रोणाचार्यके हाथ मारा गया था (कर्ण० ६.३३)। (५) पांडव-पक्षीय एक महाबली राजा, जो चित्रकेतुका पुत्र था कृपाचार्यके साथ युद्ध करते यह महाभारतयुद्धमें वीरगतिको प्राप्त हुआ था (कर्ण० ५४.२१-२९)।

सुकेशी–पु० [सं०] सालकटंकटा और विद्युत्केश राक्षसका पुत्र तथा माल्यवान्, सुमाली और माली राक्षसोंका पिता। पार्वतीके कहनेपर महादेवने इसे चिरजीवी होने और आकाशमें गमन करनेका वरदान दिया था। इसका विवाह एक गंधर्वकन्या, जो ग्रामणी नामक गंधर्वकी पुत्री थी, से हुआ था जिसका नाम देववती था (वाल्मी० रामा० उत्तर० ४.२६-३२; ५.१-२)।

सुकेशी–स्त्री० [सं०] (१) अलकापुरीकी एक अप्सराका नाम, जिसने अष्टावक्रके स्वागत समारोहमें कुबेर-भवनमें नृत्य किया था (महाभा० अनु० १९.४५)।

सुक्रीड़ा–स्त्री० [सं०] भागवतके अनुसार एक अप्सराका नाम।

सुक्षत्र–पु० [सं०] (१) निरमित्रका पुत्र—दे० निरमित्र। (२) पांडव पक्षका एक योद्धा, जो कोसलराजका पुत्र था (महाभा० द्रोण० २३-७५)।

सुक्षेत्र–पु० [सं०] मार्कण्डेय-पुराणानुसार दसवें मनुके पुत्रका नाम (मार्कण्डेयपु०)।

सुखदा–स्त्री० [सं०] कुमार कार्त्तिकेयकी अनुचरी एक मातृका (महाभा० शल्य० ४६.२८)।

सुखचतुर्थी–स्त्री० [सं०] माघशुक्ला ४ को यदि मंगलवार हो तो गणेशजीका पूजन तथा व्रत करे। माघ, वैशाख, भाद्रपद और पौषका एक वर्ष व्रत करे। प्रत्येक चतुर्थीको मंगल होना आवश्यक है (भविष्यपु०)।

सुखा–स्त्री० [सं०] मेरु पर्वतके पश्चिम मानस सरोवरके ऊपर स्थित वरुणकी पुरीका नाम (मत्स्य० १२३.२१-२२)।

सुखाश–पु० [सं०] वरुणका एक नाम—दे० वरुण।

सुखीवल–पु० [सं०] (भाग०=सुखीनल) राजा नृचक्षुके पुत्र तथा परिप्लवका पिता (भाग० ९.२२.४१; मत्स्य० ५०.८२)।

सुगंधा–स्त्री० [सं०] देवीभागवतके अनुसार एक देवीका नाम जिसका स्थान माधव वनमें है, जो २२ पीठस्थानोंमेंसे एक है (देवीभाग०)।

सुगणा–स्त्री० [सं०] कुमार कार्त्तिकेयकी अनुचरी एक मातृका (महाभा० शल्य० ४६.२७)।

सुगतिद्वादशी–स्त्री० [सं०] फाल्गुनशुक्ला १२ को विष्णुका पूजन कर 'श्रीकृष्ण' मंत्रका १०८ जप कर व्रत करे (पृथ्वीचंद्रोदय)।

सुगल–पु० [सं०] सुग्रीवका एक नाम—दे० सुग्रीव तथा (रामच० मा० किष्किन्धा०)।

सुगवि–पु० [सं०] विष्णु पुराणानुसार प्रसुश्रुतका एक पुत्र।

सुग्रीव–पु० [सं०] (१) बालीका भाई और वानरोंका राजा, जो किष्किन्धामें रहता था। यह श्रीरामका भक्त तथा सखा भी था। सीताहरणके पश्चात् सीताजीको ढूँढ़ते हुए जब श्रीराम किष्किंधा पहुँचे थे तब हनुमान्ने इसकी मित्रता उनसे करा दी थी। इसके कहनेसे श्रीरामने बालीका बध कर इसे राज्य दिलाया तथा बालीके पुत्र अंगदको युवराज बनाया था। राम-रावणयुद्धमें सुग्रीवने श्रीरामकी बड़ी सहायता की थी। सुग्रीव सूर्यके पुत्र कहे जाते हैं (रामच० मानस किष्किंधा०)। (२) श्रीकृष्णके चार घोड़ोंमेंसे एक (भाग० १०.५३.५)। (३) शुंभ और निशुंभका एक दूत जो इन लोगोंके विवाहका संदेश लेकर दुर्गाके पास गया था (मार्कण्डेयपु०)। (४) वर्तमान अवसर्पिणीके नवें अर्हतके पिताका नाम।

सुग्रीवा–स्त्री० [सं०] एक अप्सराका नाम (भाग०)।

सुग्रीवी–स्त्री० [सं०] दक्ष प्रजापतिकी एक पुत्री तथा कश्यपकी पत्नी। इसे घोड़ों, ऊँटों तथा गधोंकी माता कहते हैं (भाग० तथा ब्रह्मपु०)।

सुघोष–पु० [सं०] चतुर्थ पांडव नकुलके शंखका नाम (महाभा० भीष्म० २५.१६) ।

सुचंद्र–पु० [सं०] (१) एक देवगन्धर्वका नाम (भाग० तथा महाभा० आदि० ६६.४६-४८) । (२) एक असुरका नाम,

सुचक्र–पु० [सं०] कुमार कार्तिकेका एक सैनिक अनुचर (महाभा० शल्य ४५.५९) जो सिंहका पुत्र था (भाग० तथा महाभा० आदि० ६५-३१ । (३) धूम्राश्वके पिता जो हेमचंद्रके पुत्र थे (ब्रह्मां० ३.६१.१४) ।

सुचारु–पु० [सं०] (१) श्रीकृष्ण तथा रुक्मिणीके प्रद्युम्न, सुदेष्ण आदि १० पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (भाग० १०.६१.८-९) । (२) विश्वक्सेनका पुत्र (विष्णु० ४) । (३) धृतराष्ट्रके १०० पुत्रोंमेंसे एक, इसने अपने अन्य सात भाइयोंके साथ होकर अभिमन्युपर आक्रमण किया था (महाभा० भीष्म० ७९.२२-२३) ।

सुचित्र–पु० [सं०] (१) धृतराष्ट्रकुलमें उत्पन्न एक नागका नाम जो जनमेजयके सर्पसत्रमें अग्निसात् किया गया था (महाभा० आदि० ५७.१८) । (२) द्रौपदीके स्वयंवरमें उपस्थित एक राजाका नाम, जिसके साथ सुकुमारका नाम भी उल्लिखित है (आदि० १८५.१०) । (३) धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक जिसने अपने सात भाइयोंके साथ अभिमन्युपर आक्रमण किया था (भीष्म ७९.२२-२३) । (४) पांडव पक्षका एक वीर महारथी, जो चित्रवर्माका पिता था (कर्ण६.२७-२८) ।

सुचीरा–स्त्री० [सं०] यदुवंशोत्पन्न श्वफल्ककी गान्दिनीके गर्भसे उत्पन्न पुत्री और अक्रूर आदि १३ भाइयोंकी बहिनका नाम (भाग० ९.२४.१५-१७) ।

सुचेता–पु० [सं०] वीतहव्यवंशी गृत्समदके पुत्र तथा वर्चाके पिताका नाम (महाभा० अनु० ३०.६१) ।

सुजन्मद्वादशी–स्त्री० [सं०] पौष शु० १२ ज्येष्ठ नक्षत्रमें विष्णुका पूजन करे तो कुलमें प्रधानता तथा सम्पत्ति मिले (वीरमित्रोदय) ।

सुजात–पु० [सं०] (१) धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (महाभा० शल्य० २६.५-१८) । (२) भरतका एक पुत्र (भाग०) ।

सुजाता–स्त्री० [सं०] महर्षि उद्दालककी पुत्री, जिसका कहोड ऋषिके साथ विवाह हुआ था । इनके पुत्रका नाम अष्टावक्र था (महाभा० वन० १३२-२०) ।

सुजानु–पु० [सं०] एक दिव्य महर्षिका नाम, जो हस्तिनापुर जाते समय मार्गमें भगवान् श्रीकृष्णसे मिले थे (महाभा० उद्योग० ८३.६५) ।

सुज्येष्ठ–पु० [सं०] सुंगवशी राजा अग्निमित्रके पुत्र (भाग० १२.१.१५) ।

सुतनु–पु० [सं०] (१) एक गंधर्वका नाम (भाग०) । (२) महाराज उग्रसेनका पुत्र (वायु० ९६.१३२) । (३) कलापग्रामवासी एक बालक ब्राह्मण जिसने नारदजीके जटिल प्रश्नोंका समाधान किया था । नारदजीके प्रश्नोंके लिए द्रष्टव्य (स्कंदपु० माहेश्वर० कुमारिका-खंड ३.३०५-२१२) ।

सुतनु–स्त्री० [सं०] (१) अक्रूरकी पत्नी तथा आहुककी पुत्री (महाभा० सभा० १४-३३) । (२) उग्रसेनकी पुत्री (सभा० १४.३३ तथा अमिचगित्के पिताका नाम । (३) वसुदेवकी एक उपपत्नी (भाग०) ।

सुतपा–पु० [सं०] (१) रौच्य मनुके एक पुत्रका नाम (भाग०) । (२) अन्तरिक्षके पुत्र और पुष्करके पौत्र (भाग० ९.१२.१२) । (३) हेमका पुत्र, रुशद्रथ का पौत्र तथा बालिका पिता (विष्णु० ४.१८.११-१२) ।

सुतल–पु० [सं०] पुराणानुसार पातालके सात लोकोंमेंसे एक जहाँका अधिपति विरोचनपुत्र बलि है । देवीभागवतके अनुसार विष्णु भगवान् स्वयं यहाँ बलिकी रक्षाके लिए पहरा देते हैं भाग० ८.२२.३१-३५ ।

सुतीक्ष्ण–पु० [सं०] अगस्त्य मुनिके (भाई) शिष्यका नाम जिनका आश्रम दंडकारण्यमें था । वनवास कालमें श्रीराम, सीता आदि सहित इनसे मिलने आये थे और फिर सुतीक्ष्ण श्रीरामके साथ ही अगस्त्यजीके पास आये, क्योंकि इन्होंने अपने गुरुको भगवान्का दर्शन करा देनेका ही व्रत गुरु दक्षिणास्वरूप लिया था (रामच० मा० अरण्यकां० ९.१.१२) ।

सुतेजा–पु० [सं०] गृत्समदका पुत्र—दे० गृत्समद तथा (भाग०, मत्स्यादि) ।

सुत्रामा–पु० [सं०] एक मनुका नाम (भाग०) । (२) देवराज इंद्रका एक नाम—दे० इन्द्र ।

सुदंता–स्त्री० [सं०] एक अप्सरा का नाम (भाग०) ।

सुदंती–पु० [सं०] एक दिग्गजकी पत्नी (हथनी) का नाम (भाग०) ।

सुदंष्ट्र–पु० [सं०] (१) शबरका एक पुत्र (भाग०) । (२) श्रीकृष्णका एक पुत्र (भाग०) (३) एक राक्षसका नाम ।

सुदंष्ट्रा–स्त्री० [सं०] एक किन्नरीका नाम ।

सुदक्षिण–पु० [सं०] (१) राजा पौंड्रकका एक पुत्र—दे० पौंड्रक । (२) विदर्भका एक राजा ।

सुदक्षिणा–स्त्री० [सं०] (१) राजा दिलीपकी पत्नी जिसके गर्भसे महाराज रघु उत्पन्न हुए थे—दे० रघुवंश । हरिवंश तथा वाल्मीकिके अनुसार दिलीप राजा सगरके परपौत्र थे—दे० दिलीप । (२) पुराणानुसार श्रीकृष्णकी एक पत्नी (भाग०) ।

सुदर्शन–पु० [सं०] (१) खांडव वन जलानेके लिए अग्निको दिया भगवान् विष्णुके चक्रका नाम । यह चक्र विष्णुको हरीश्वरलिंग (शंकर) से प्राप्त हुआ था (शिवपु० कोटिरुद्र-संहिता अ० ३४) । यह श्रीकृष्णको मिला था जिसमें इंद्र रुकावट न डाल सके (भाग०) । (२) अग्निका एक पुत्र—दे० अग्नि । (३) वर्त्तमान अवसर्पिणीके १८वें अर्हत्के पिताका नाम । (४) ध्रुवसंधिका एक पुत्र (भाग० ९.१२.५; ब्रह्मां० ३.६३.२०९, —दे० तथा ध्रुवसंधि । (५) दधीचिका एक पुत्र—दे० दधीचि । (६) राजा अजमीढ़का एक पुत्र—दे० अजमीढ़ । (७) भरतका एक पुत्र—दे० (भरत) ।

सुदर्शनद्वीप–पु० [सं०] जम्बूद्वीपका एक नाम (स्कंदपु०) ।

सुदर्शनपाणि–पु० [सं०] हाथमें सुदर्शनचक्र धारण करनेके कारण विष्णुका एक नाम (भाग०) ।

सुदांत–पु० [सं०] (१) शाक्य मुनिका एक शिष्य—दे० शाक्य । (२) शतधन्वाका एक पुत्र—दे० शतधन्वा ।

सुदामन–पु० [सं०] (१) विदेह जनकके एक मंत्रीका

नाम। (२) एक दैवी अस्त्रका नाम (रामायण)।

सुदामा–पु० [सं०] (१) श्रीकृष्णके सहपाठी एक दरिद्र ब्राह्मण, जो उनके सखा थे और उन्हींकी कृपासे ऐश्वर्यवान् हो गये थे (भाग०)। (२) मथुरापति कंसका एक माली जो श्रीकृष्णके मथुरा जानेपर उनसे मिला था (भाग०)। (३) इंद्रके हाथी ऐरावतका नाम जो समुद्र-मंथनसे निकले १४ रत्नोंमेंसे एक है (विष्णु० भाग०)। (४) महाभारतके अनुसार एक प्राचीन जनपद का नाम (महाभा०) एक गंधर्व (स्कंदपु०)।

सुदामा–स्त्री० [सं०] उत्तरभारतकी एक नदीका नाम (रामायण)।

सुदामिनी–स्त्री० [सं०] शमीककी पत्नीका नाम (भाग०)।

सुदास–पु० [सं०] (१) कोसल देशके राजाका नाम जो दिवोदासके पुत्र तथा सर्वकामके पौत्र तथा ऋतुपर्णके परपोते थे (विष्णु० ४.३८-४०)। काशीखंड और महाभारतके अनुसार दिवोदास चंद्रवंशी राजा भीमरथके एक पुत्र थे। (विष्णु० ४.८.११) सुदाससे महादेवने काशी ली थी। दिवोदासको धन्वन्तरिका अवतार माना जाता है। दिवोदासके पुत्र मित्रेयु थे। मित्रेयुके पुत्र थे च्यवन, यू च्यवनपुत्र थे (भाग० ९.२२.१)। इंद्रने इन्हें रहनेके लिए एक पुरी दी थी। (२) बृहद्रथके पुत्रका नाम, भागवतानुसार यह दूर्वके पौत्र तथा शतानीके पिता थे (भाग० ९.२३.४२)। (३) च्यवन ऋषिके पुत्रका नाम—दे० च्यवन।

सुदिवातंडि–पु० [सं०] एक प्राचीन ऋषिका नाम, वानप्रस्थधर्मका सम्यक् पालन करनेसे यह स्वर्ग सिधारे थे (महाभा० शांति० २४४.१७)।

सुदीति–पु० [सं०] एक वैदिकसूक्तद्रष्टा प्राचीन ऋषिका नाम जो आंगिरस गोत्रके थे (ऋग्वेद ८.७१.१४)।

सुदेव–पु० [सं०] (१) देवकर (उग्रसेनके भाई) का एक पुत्र (वायु० ९६.१२)। (२) पौंड्र वासुदेवका एक पुत्र (भाग० =सुदक्षिण) (भाग० १०.६६.२७) (महाभा०)। (३) विष्णुका एक पुत्र (भाग० विष्णु०)। (४) एक ब्राह्मण जिसने दमयन्तीके कहनेसे राजा नलका पता लगाया था (महाभा० वन० ६८.२-३०; ६९.१-५)। (५) परावसु गन्धर्वके ९ पुत्रोंमेंसे एक जो ब्रह्माके शापसे हिरण्याक्ष दैत्यके घर उत्पन्न हुआ था (परावसु; भाग०)। (६) देवकके चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम इनकी धृतदेवा आदि सात बहनें थीं जो सबकी सब वसुदेवको ब्याही थीं (भाग० ९.२४.५२)। (७) हर्यश्वका पुत्र जो काशीका राजा था—दे० काशीखंड।

सुदेवा–स्त्री० [सं०] देवककी सात पुत्रियोंमेंसे एक पुत्री वसुदेवकी पत्नी जिसे श्रीदेवा भी कहते थे (भाग० ९.२४.२१-२३)।

सुदेवी–स्त्री० [सं०] नाभिकी पत्नी जो ऋषभकी माता थी। इनका दूसरा नाम मेरुदेवी भी मिलता है (भाग० ५.३.१, २०)।

सुदेष्ण–पु० [सं०] (१) श्रीकृष्णके दस पुत्रों, जो रुक्मिणीके गर्भसे उत्पन्न हुए थे, मेंसे एक पुत्रका नाम (भाग० १०.६१, ८)। (२) भारतीय जनपदका एक पर्वतका नाम (महाभा० भीष्म० ९.४६)।

सुदेष्णा–स्त्री० [सं०] (१) महाभारतके अनुसार कीचककी बहन जो राजा विराटको ब्याही थी। यह अपने भाई कीचकको बहुत प्यार करती थी। महाराज विराटके दरबारमें इसके सगे संबंधियोंका ही राज्य था और कीचक सबका सरदार तथा सेनापति था। जब कीचक सैरन्ध्री (द्रौपदीका अज्ञातवासका नाम)से विवाह करनेके लिए उतावला था तब सुदेष्णाने उसे बहुत समझाया पर वह न माना और अंतमें भीम द्वारा मारा गया। सुदेष्णा इस काण्डसे बहुत दुखी हुई थी (महाभा० विराट०)। (२) सुतपाके पुत्र पुरुवंशी राजा बलिकी पत्नी, सुतपाकी पुत्रवधू, राजा बलिकी प्रार्थनापर दीर्घतपा मुनिके नियोगसे इनके गर्भसे अङ्ग, वङ्ग, सुह्म, पुण्ड्र तथा कलिङ्ग नामके पाँच पुत्र हुए जिनका सामूहिक नाम बालेय था। इनके राज्योंका नामकरण इन्हींके नामोंसे हुआ था (हरिवंश १.३१.३२-४०)।

सुद्यु–पु० [सं०] पुरुवंशोत्पन्न राजा चारुपदके पुत्रका नाम। विष्णुपुराणानुसार सुद्यु अभयदका पुत्र तथा बहुगतका पिता था। इसी पुरुवंशमें बहुगतका संयाति, संयातिका अहंयाति जिसका पुत्र रौद्राश्व था (विष्णु० ४.१९.१)।

सुद्युम्न–पु० [सं०] (१) वैवस्वत मनुने अपुत्र होनेके कारण पुत्रार्थ मित्रावरुणकी इष्टि की। मनुकी पत्नी श्रद्धाने होतासे प्रार्थना की कि पुत्रके बदले पुत्री हो। होताने वैसा ही किया इसलिए उक्त पुत्रेष्टिसे पुत्रके बदले पुत्री इला हुई। इससे मनुने असंतुष्ट होकर गुरुजीसे पूछा। गुरुने ध्यानदृष्टिसे कारण जानकर उसके पुरुप होनेके लिए जतन किया। उससे इला सुद्युम्न हो गयी। उक्त मनुका पुत्र जो "इल" नामसे ही अधिक विख्यात है। एक दिन अनजाने शंकर-पार्वतीकी क्रीड़ा-भूमिमें जा पहुँचा! महादेवजीने पार्वतीजीकी प्रसन्नताके लिए ऐसा नियम कर दिया था कि जो पुरुष इस भूमिमें आवेगा वह स्त्री हो जायगा, फलतः सुद्युम्न इला हो गया। सोमके पुत्र बुधके सहवाससे इलाके गर्भसे पुरूरवाका जन्म हुआ। अंतमें गुरु वशिष्ठकी आराधनासे प्रसन्न होकर शिवने इसे शापमुक्त किया और वह पुनः पुरुष हो गया था और ३ पुत्रोंका पिता हुआ (भाग० ९.१.१३-४१; मत्स्य० ११-४०.६६; १२.१-१४)। (२) एक प्राचीन ऋषि जो यमकी सभामें रहकर उनकी उपासना करते थे (महाभा० सभा० ८.१६)। अपने भाई महर्षि शंख द्वारा प्रेषित ऋषि लिखित इनके पास न्यायके लिए गये थे और इन्होंने चोरीके अपराधमें लिखितके हाथ कटवा दिये थे (शांति० २३.२९-३६)। दण्डरूप धर्मके पालनसे लिखितको परम सिद्धि प्राप्त हुई। महर्षि लिखितको धर्मतः दण्ड देनेसे इन्हें परम उत्तम लोककी प्राप्ति हुई (अनु० १३७.१०)।

सुधन–पु० [सं०] परावसु गन्धर्वके ९ पुत्रोंमेंसे एक जो ब्रह्माके शापसे हिरण्याक्ष दैत्यका पुत्र हुआ (भाग० तथा ब्रह्म०)।

सुधनु–पु० [सं०] सूर्यकी पुत्री तपतीके गर्भसे उत्पन्न राजा कुरुका एक पुत्र (मत्स्य०)।

सुधन्वा–पु० [सं०] (१) विश्वकर्मा। (२) महर्षि अंगिराके आठवें पुत्रका नाम (महाभा० अनु० ९५.३१-३२)। (३) कुरुका एक पुत्र जो सुभास, सुहोत्र आदिका पिता था (मत्स्य०)। हरिवंशानुसार त्रिधन्वा भी इसका पुत्र

था। (४) एक संशप्तकयोद्धाका नाम, जो अर्जुन द्वारा भारत-युद्धमें मारा गया (द्रोण० ९८.४२)। (५) पाण्डव-पक्षीय एक पांचालयोद्धा जो द्रुपद-पुत्र तथा वीरकेतुका भाई था। द्रोणाचार्य द्वारा मारा गया (द्रोण० २३.५५; १२२.४४-४९)।

सुधर्मा–स्त्री० [सं०] (१) इंद्रके सभाभवनका नाम। कहते हैं श्रीकृष्णके कहनेपर इंद्रने यह भवन यदुवंशियोंके उपयोगके लिए उग्रसेनके हवाले कर दिया था। श्रीकृष्णकी मृत्युके पश्चात् यह इंद्रके पास पुनः चला गया था (भाग०)। (२) दृढ़नेमिका एक पुत्र।

सुधांशु–पु० [सं०] चन्द्रमाका एक नाम—दे० चन्द्रमा।

सुधाकर–पु० [सं०] चन्द्रमाका एक नाम—दे० चन्द्रमा।

सुधाधार–पु० [सं०] किरणोंमें अमृत होनेके कारण चन्द्रमाका एक नाम।

सुधापाणि–पु० [सं०] पुराणानुसार धन्वंतरिजी समुद्र-मंथनसे हाथमें सुधा (अमृत कलश) लिए निकले ये अतः यह नाम पड़ा—दे० धन्वंतरि।

सुधाम–पु० [सं०] (१) रैवत मन्वंतरका एक देवगण। (२) पुराणानुसार एक राजाका नाम जिसका संवंध क्रौंचद्वीपके अंतर्गत वर्षसे है। (३) एक प्राचीन ऋषि (विष्णुपुराण)।

सुधूम्रवर्णा–स्त्री० [सं०] अग्निकी सात जिह्वाओंमेंसे एकका नाम (मुंडकोपनिषद् तथा वृहत्संहिता)।

सुनंद–पु० [सं०] (१) वलरामजीके मूसलका नाम—दे० भाग०। (२) कुजृम्भ दैत्यके मूसलका नाम जिसे विश्वकर्माने वनाया था। इस दैत्यकी मृत्युके वाद इस मूसलको अनंत नागराज ले गये थे। युवतीके स्पर्शसे इसकी शक्ति नष्ट हो जाती थी। विदूरथ पुत्री मुदावलीने इसे अँगुलियोंसे स्पर्श किया था, अतः यह शक्तिहीन हो गया था—दे० मार्कण्डेय पु०। (३) श्रीकृष्णके एक मन्त्रीका नाम (भाग०)। (४) एक ज्ञानसम्पन्न महात्मा (शिवपु० शतरुद्र-सहिता तथा श्वेतलोहितकल्प)।

सुनंदन–पु० [सं०] श्रीकृष्णके एक पुत्रका नाम (भाग०)।

सुनंदा–स्त्री० [सं०] (१) राजा विदूरथकी पुत्री मुदावलीका नाम जो कुजृम्भके मूसल सुनंदको स्पर्श करनेके कारण अनंत नागराजने रखा था (मार्कण्डेयपु०)। (२) उमाकी एक सखीका नाम (स्कंदपु० तथा शिवपु०)। (३) वाहु और वालिकी जननीका नाम (भाग०)। (४) काशिराज सर्वसेनकी पुत्री दुष्यन्त-पुत्र सम्राट् भरतकी पत्नीका नाम, जिसके गर्भसे भुमन्यु नामके पुत्रका जन्म हुआ था (महाभा० आदि० ९५.३२)। (५) चेदिनरेश सुवाहुकी वहिनका नाम। यह दमयंतीकी मौसेरी वहिन थी। इसके पिताका नाम वीरवाहु था। राजा नल जव दमयंतीको वनमें अकेले छोड़ चले गये थे तव इसने इसकी वड़ी सहायता की थी (महाभा० वन० ६५.७३-७६; ६९.१०-१५)। (६) केकयराजकुमारीका नाम, जो कुरुवंशी राजा सार्वभौमकी पत्नी थी, इनके गर्भसे जयत्सेनका जन्म हुआ था (आदि० ९५.१६)। (७) शिवि देशकी राजकन्याका नाम, जो महाराज प्रतीपकी पत्नी थीं। इनके गर्भसे देवापि, शान्तनु तथा वाह्लीकका जन्म हुआ था (आदि० ९५.४४)।

सुनय–पु० [सं०] एक दक्षिण भारतीय जनपदका नाम (महाभा० भीष्म० ९.६४)।

सुनयना–स्त्री० [सं०] महाराज जनककी पत्नीका नाम (रामायण)।

सुनाभ–पु० [सं०] (१) धृतराष्ट्रके १० पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (महाभा०आदि० ११६.५)। (२) गरुड़का एक पुत्र (भाग०)। (३) मैनाक पर्वतका नाम–दे० मेनाक। (४) वरुणके एक मंत्रीका नाम जो अपने पुत्रों और पौत्रोंके साथ वरुण सभामें स्थित हो उनकी उपासना करता है (सभा० ९.२८)।

सुनामद्वादशी–स्त्री० [सं०] यह व्रत हर महीनेकी शुक्ला द्वादशीको किया जाता है जिसका वड़ा माहात्म्य है (अग्निपु०)।

सुनामा–पु० [सं०] (१) मथुरानरेश उग्रसेनके ९ पुत्रोंमेंसे एक, कंसका एक भाई जो शूरसेनका राजा था। कंसवधके समय यह वलराम द्वारा मारा गया था (भाग० ९.२४.२४; १०.४४.४०)। (२) सुकेतुके दो पुत्रोंमेंसे एक जो अपने पिता तथा भाई सुवर्चाके साथ द्रौपदी-स्वयंवरमें गया था (महाभा० आदि० १८५.९)। (३) अपने वंशका विस्तार करनेवाला गरुड़का एक पुत्र (उद्योग० १०१.२)। (४) कुमार कार्त्तिकेयका एक सैनिक अनुचर (शल्य० ४५.५९)।

सुनाम्नी–स्त्री० [सं०] देवक राजाकी पुत्री और वसुदेवकी पत्नीका नाम (भाग०)।

सुनायक–पु० [सं०] (१) कुमार कार्त्तिकेयका एक सैनिक अनुचर (स्कंदपु०)। (२) एक दैत्यका नाम। (३) वैनतेयके पुत्र (भाग०)।

सुनीत–पु० [सं०] सुवलका पुत्र तथा एक राजाका नाम।

सनीति–स्त्री० [सं०] ध्रुवकी माताका नाम। विष्णुपुराणानुसार ध्रुवके पिता उत्तानपादकीसुनीति और सुरुचि दो पत्नियाँ थीं। राजा सुरुचिको अधिक चाहते थे (भाग० ४.८.८; विष्णु० १.११.३)।

सुनीथ–पु० [सं०] (१) श्रीकृष्णका एक पुत्र (भाग०)। (२) सुषेणका एक पुत्र (रामायण)। (३) शिशुपालका एक नाम (महाभा० सभा० ३९.११)। (४) सुवलका एक पुत्र। (५) एक मन्त्र, जिसका दिन या रात्रिमें स्मरण करनेपर सर्पभय नहीं होता (आदि० ५८.३३)। (६) एक महर्षि जो इन्द्र-सभामें रहकर उनकी उपासना करते थे (सभा० ७.१६)।

सुनीथा–स्त्री० [सं०] राजर्षि अंगकी पत्नी और मृत्युकी मानसी पुत्री जो अपने रूप और गुणके लिए तीनों लोकोंमें विख्यात थी। यह वेनकी माता थी जो मुनियोंके शापसे निहत हुआ था (भाग० ४.१३.१८-१९; महाभा० शांति० ५९.९३)।

सुन्द–पु० [सं०] निकुम्भ दैत्यका पुत्र तथा उपसुन्दका भाई।

सुनृता–स्त्री० [सं०] यह धर्मकी पुत्री तथा उत्तानपाद राजाकी पत्नी थी। इसका नामान्तर सूनृता था (विष्णु० १.१२.१००)। अपस्यंत, अपस्यति तथा कीर्त्तिमान् ध्रुव इनके गर्भसे उत्पन्न उत्तानपादके पुत्र थे (मत्स्य० ४.३५)।

सुनेत्र–पु० [सं०] (१) सोमवंशी महाराज कुरुके वंशज धृतराष्ट्रके १२ पुत्रोंमेंसे एक लोकविख्यात पुत्र (महाभा० आदि० ९४.५९-६०)। (२) तेरहवें मनुका पुत्र (भाग०)। (३) अपने वंशका विस्तार करनेवाला गरुड़का एक पुत्र (महाभा० उद्योग० १०१.२)।

सुपर्ण–पु० [सं०] (१) भगवान् विष्णुके वाहन, तार्क्ष्य और

विनता (सुपर्णा)के पुत्र गरुड़का नाम (भाग० ६.५.२२; १०.५९.१८)। (२) एक देवगंधर्व। (३) अन्तरिक्षके पुत्र, किन्नराश्व (वायु० तथा विष्णु० = किन्नर)के पौत्र तथा अमित्रजित्के पिता (मत्स्य० २७.९; वायु० ९९.२८५; विष्णु० ४.२२.५)।

सुपर्णकेतु–पु० [सं०] ध्वजापर गरुड़के विराजनेके कारण विष्णुका एक नाम (भाग० ४.९.२७; विष्णु०)।

सुपर्णा–स्त्री० [सं०] दक्ष प्रजापतिकी ६० पुत्रियोंमेंसे एक जिसका नामान्तर विनता भी था। यह अपनी तीन बहिनोंके साथ तार्क्ष्यको ब्याही थी। तथा यज्ञेशवाहन गरुड़ और सूर्य-सारथि अरुणकी माता थी (भाग० ६.६.२१-२२)।

सुपर्णी–स्त्री० [सं०] (१) एक वाग्देवीका नाम जिसका उल्लेख कद्रूके साथ हुआ है—दे० कद्रू तथा देवीभाग०। (२) अग्निकी सात जिह्वाओंमेंसे एक (मुंडकोपनिषद् तथा बृहत्संहिता)।

सुपर्वा–पु० [सं०] राजा भगदत्तका नामान्तर यह प्राग्ज्योतिषपुरका अधिपति था। कहते हैं यह वाष्कल नामक असुरके अंशसे उत्पन्न हुआ था (महाभा० आदि० ६७.९)। यह द्रौपदी-स्वयंवरमें गया था। यह राजा पाण्डुका मित्र था। जरासन्धसे मिला होनेपर भी युधिष्ठिरके प्रति पितृवत् स्निग्ध था (सभा० १४.१४-१६)।

सुपार्श्व–पु० [सं०] (१) देवीभागवतानुसार एक पीठस्थान जहाँकी देवीका नाम नारायणी है। (२) रुक्मरथका एक पुत्र (विष्णु०)। (३) रामायणके अनुसार संपातिका पुत्र तथा जटायुका भतीजा एक गृद्धका नाम जो अपने पिताको यथासमय आहार प्रदान कर उनका पोषण करता था। इसने अपने पिता संपातिको सीता और रावणको देखनेका वृत्तान्त सुनाया था (वाल्मी० रामा० किष्किन्धा० ५९.८-२१)। (४) पुरुवंशोत्पन्न दृढ़नेमिका पुत्र तथा सुमतिका पिता (विष्णु० ४.१९.४९)। (५) सुमालिके पुत्र एक राक्षसका नाम (वाल्मी० रामा० उत्तर० ५.४०)। जब रावणने अपने पुत्र मेघनादके वधका समाचार सुना तब मारे क्रोधके सीताको मारनेको उद्यत हुआ था तब इसीने उसे इस दुष्कृत्यसे रोका था (लंका० ९२.६०-६५)।

सुपुण्या–स्त्री० [सं०] भारतवर्षकी एक प्रमुख नदीका नाम। (महाभा० भीष्म० ९.३६)

सुप्तघ्न–पु० [सं०] एक राक्षसका नाम, जो अस्त्र-शस्त्रोंसे सुसज्जित होकर रावणकी सभामें उपस्थित हुआ था (वाल्मी० रामा० लंका० ९.१)। इसने रामके साथ युद्ध किया था (लंका० ४३.११)।

सुप्तमाली–पु० [सं०] २३वें कल्पका नाम—दे० कल्प।

सुप्रतीक–पु० [सं०] (१) ईशानकोणका दिग्गज जिसके वंशमें नागराज ऐरावत, वामन, कुमुद, अंजन आदिकी उत्पत्ति हुई। (२) कामदेवका नाम (भाग०)। (३) भगदत्तके हाथीका नाम जो अद्भुत पराक्रमी था—दे० भगदत्त तथा (महाभा० भीष्म० ९५.२४-८६)। (४) इक्ष्वाकुवंशी प्रतीताश्वके पुत्र तथा मरुदेवके पिताका नाम (विष्णु० ४.२२.४)।

सुप्रतीकिनी–स्त्री० [सं०] सुप्रतीक दिग्गजकी हथिनी—दे० भाग० तथा दिग्गज।

सुप्रभ–पु० [सं०] (१) पुराणानुसार शाल्मलि द्वीपके अंतर्गत एक वर्षका नाम (वायु० ५१.४१)। (२) एक दानवका नाम।

सुप्रभदेव–पु० [सं०] महाकवि माघ, जो शिशुपालवधके प्रणेता थे, के दादाका नाम।

सुप्रभा–स्त्री० [सं०] (१) अग्निकी सात जिह्वाओंमेंसे एक—दे० (मुंडकोपनिषद् तथा बृहत्संहिता)। (२) स्कंदकी अनुचरी एक मातृकाका नाम (महाभा० शल्य० ४६.१०)। (३) पुष्करमें बहनेवाली सरस्वतीका नाम जो ब्रह्माजीके आवाहन करनेसे प्रकट हुई थी (शल्य० ३८.१३-१४)। (४) सात सरस्वतियोंमेंसे एक (देवीभाग०)। (५) वदान्य ऋषिकी कन्या, जिसका विवाह अष्टावक्रके साथ हुआ (अनु० १९.१२; २१.१८)।

सुप्रभाता–स्त्री० [सं०] पुराणानुसार एक नदीका नाम।

सुप्रयोगा–स्त्री० [सं०] सह्य पर्वतसे निकली दक्षिण भारतकी ८ नदियोंमेंसे एक नदी (वायु० ४५.१०४)।

सुप्रवृद्ध–पु० [सं०] सौवीर देशका एक राजकुमार, जो हाथमें ध्वजा लेकर जयद्रथके पीछे-पीछे चलता था (महाभा० वन० २६५.१०)। यह अर्जुन द्वारा युद्धमें मारा गया (वन० २७१.२७)।

सुप्रसाद–पु० [सं०] (१) स्कंदका एक सैनिक पार्षद (महाभा० शल्य० ४५.७१)। (२) एक असुरका नाम (हिं० श० सा०)।

सुप्रसादा–स्त्री० [सं०] स्कंदकी अनुचरी एक मातृका (महाभा० शल्य० ४६.१३)।

सुप्रिय–पु० [सं०] गंधर्वोंके एक मुखियाका नाम (भाग०)।

सुप्रिया–स्त्री० [सं०] एक अप्सराका नाम, जो दक्षपुत्री प्राधाके गर्भसे कश्यप द्वारा उत्पन्न हुई थी (महाभा० आदि० ६५.५१)।

श्वफल्क–पु० [सं०] एक यादवका नाम जो अक्रूर आदि १३ पुत्रोंके पिता थे। इनकी पत्नीका नाम गांदिनी था (भाग० ९.२४.१५-१७)।

सुबल–पु० [सं०] (१) सुमतिका एक पुत्र (नारदपु० पूर्व भाग, प्रथम पाद)। (२) गांधारके एक राजाका नाम जो गांधारी और शकुनिके पिता थे। धृतराष्ट्र इन्हींके जामाता थे (महाभा० आदि० ६३.१११-११२)। (३) पुराणानुसार भौत्य मनुका पुत्र (वायु० ६२.४;१००.५५,११०; ब्रह्मां० ४.१.५१; मत्स्य० ९.३४)। (४) श्रीकृष्णके एक सखाका नाम (भाग० १०.१५.२०)। (५) मगधवंशी राजा दृढसेनके पुत्र, सुनीतके पिता तथा सत्यजित्के दादाका नाम (विष्णु० ४.२३.७-१०)। (६) इक्ष्वाकुवंशी एक राजाका नाम, जिनका पुत्र जयद्रथका साथी था (वन० २६५.८)। (७) अपने वंशका विस्तार करनेवाला गरुड़का एक पुत्र (उद्योग० १०१.३)। (८) लंकाका एक पहाड़ जिसपर समुद्र पार करनेके पश्चात् हनुमान् सर्वप्रथम उतरे थे (रामायण)।

सुबाहु–पु० [सं०] (१) श्रीकृष्णके कालिन्दीके गर्भसे उत्पन्न १० पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (भाग० १०.६१.१४)। (२) एक यक्ष। (३) एक राक्षस जो विश्वामित्रके यज्ञमें विघ्न डाला करता था। यह ताड़काका पुत्र था और मारीचका भाई

था। विश्वामित्रकी प्रार्थनापर श्रीराम द्वारा मारा गया था (रामा० वाल्मी० वाल० ३०.२२)। (४) चेदिके एक राजा, जो वीरबाहुके पुत्र और सुनन्दाके भाई थे। ये दमयन्तीके भी मौसेरे भाई थे (महाभा० वन० ६५.४५)। धृतराष्ट्रके १०० पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (महाभा० आदि० ६७.९४)। (५) शत्रुघ्नका एक पुत्र जो मथुराका राजा था (वाल्मी० रामा० उत्तर० १०८.१०-११)। (६) कुवलयाश्व, जिसका नामान्तर ऋतध्वज था, की पत्नी मदालसासे उत्पन्न हुआ था और ऋतध्वजका द्वितीय पुत्र था (मार्कण्डेयपु० अलर्कोपाख्यान)। (७) एक प्रमुख वानरका नाम। किष्किंधाकी शोभा निहारते हुए लक्ष्मणने इसके भवनको देखा था (वाल्मी० रामा० किष्किन्धा० ३३.११)। यह लंकाके परकोटेपर चढ़ गया और वहाँ अपनी सेनाका पड़ाव इसने डाल दिया था (लंका० ४२.२२)। (८) एक प्रमुख काद्रवेय नागका नाग जो कश्यप और कद्रूकी संतान-परम्परामें उत्पन्न हुआ था (महाभा० आदि० ३५.१४)। (९) एक क्षत्रिय राजाका नाम, जो हर नामके दानवके अंशसे उत्पन्न हुआ था (आदि० ६७. २३-२४)। पाण्डवोंकी ओरसे इसे रणनिमंत्रण भेजनेका निश्चय हुआ था (उद्योग० ४-१४)। (१०) काशीके एक राजाका नाम जो युद्धमें पीठ दिखाने वाले नहीं थे। भीमने पूर्व-दिग्विजयके समय जिन्हें बलपूर्वक पराजित किया था (सभा० ३०-६-७)।

सुबाहु—स्त्री० [सं०] एक अप्सराका नाम जो दक्षपुत्री प्राधाके गर्भसे महर्षि कश्यप द्वारा उत्पन्न हुई थी (महाभा० आदि० ६५.५०; वायु० ६९.६)। अर्जुनके जन्मकालीन उत्सवमें इसने नृत्य किया था (आदि० १२२.६३)।

सुबाहुक—पु० [सं०] एक यक्षका नाम—दे० भाग० तथा कुबेर।

सुबाहुशत्रु—पु० [सं०] श्रीरामचंद्रका एक नाम। सुबाहुको श्रीरामने विश्वामित्रजीके आश्रमपर मारा था। यह और मारीच दोनों विश्वामित्रके आश्रमके निकट ही रहते थे और ऋषिके यज्ञादिमें विघ्न डालते थे। इन्हींके वधके लिए श्रीराम और लक्ष्मणको दशरथसे माँग ऋषि ले आये थे—दे० ताड़का तथा (रामच० मा० बाल० २०८.३;२०९.३)।

सुब्रह्मण्यक्षेत्र—पु० [सं०] मद्रासके कनाडा जिलांतर्गत एक तीर्थ स्थान।

सुभगदत्त—पु० [सं०] भौमासुरका पुत्र। भौमासुर 'नरकासुर'के नामसे ही अधिक प्रसिद्ध है जिसे पुराणानुसार पृथ्वीके गर्भसे उत्पन्न विष्णुपुत्र कहते हैं। जब रावण मरा तब उसी स्थानपर पृथ्वीके गर्भसे इस असुरका जन्म हुआ था। विदर्भराजकुमारी मायासे इसका विवाह हुआ था, जिसके गर्भसे सुभगदत्त उत्पन्न हुआ। भौमासुरने १६००० राजकन्याएँ कारागारमें डाल रखी थीं, अतः श्रीकृष्णने सत्यभामाके साथ प्राग्ज्योतिष जाकर सुभगदत्तके पिताका वध नरक चतुर्दशीको किया था—दे० नरकासुर, माया तथा (भाग० १०.५९.१४-२१)।

सुभगा—स्त्री० [सं०] अरिष्टाकी आठ अप्सरा पुत्रियोंमेंसे एक अप्सराका नाम (वायु० ६९.४८)।

सुभगानंदनाथ—पु० [सं०] एक भैरवका नाम जिनकी पूजा कालीकी पूजाके साथ करते हैं (तंत्रशास्त्र)।

सुभद्र—पु० [सं०] (१) पौरवीके गर्भसे उत्पन्न वसुदेवके भूत, सुभद्र, भद्रबाहु, दुर्मद, भद्र आदि १२ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (भाग० ९.२४.४७)। (२) श्रीकृष्णके भद्राके गर्भसे उत्पन्न दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (भाग० १०.६१.१७)। (३) प्लक्षद्वीपके अंतर्गत एक वर्षका नाम (भाग० ५.२०.३)।

सुभद्रा—स्त्री० [सं०] (१) वसुदेवजीकी पुत्री, बलरामकी सहोदरा, रोहिणीके गर्भसे उत्पन्न श्रीकृष्णकी बहन जो अर्जुनको ब्याही थी। रैवतक पर्वतपर एक बार सुभद्राको देख अर्जुन आसक्त हो गये और श्रीकृष्णके आदेशसे बलपूर्वक उनका अपहरण कर ले आये थे। परिस्थिति शांत होनेपर इनका विवाह अर्जुनसे कर दिया गया था। यह वीर अभिमन्युकी माता थीं जो समय पाकर महाभारतका एक प्रधान पात्र हुआ था। अभिमन्युको सात महारथियोंने मिल कर मारा था (महाभा० द्रोण० ४९.१३-१४)। सुभद्राहरण तथा इनके विवाह आदिका विस्तारपूर्वक वर्णनके लिए द्रष्टव्य (महाभा० आदि० २१८.१४-१८)। जगन्नाथपुरीमें श्रीकृष्ण और बलभद्रके साथ इनकी भी मूर्त्ति है। (२) किष्किंधाके राजा बालीकी पुत्री तथा अवीक्षित्‌की पत्नी (रामायण)। (३) पुराणानुसार सुरभिकी एक गौरूपा पुत्रीका नाम जो पश्चिम दिशाको धारण करनेवाली है (महाभा० उद्योग० १०२.९)।

सुभाद्रिका—स्त्री० [सं०] श्रीकृष्णकी छोटी बहन (भाग० ९.२४.५५)।

सुभव—पु० [सं०] (१) साठ संवत्सरोंमेंसे अंतिम—दे० संवत्सर। (२) इक्ष्वाकुवंशोत्पन्न एक राजा (भाग०)।

सुभा—स्त्री० [सं०] महर्षि अंगिराकी पत्नीका नाम, जो बृहत्कीर्त्ति आदि सात पुत्रोंकी माता थी (महाभा० वन० २१८. १-२)।

सुभागा—स्त्री० [सं०] रौद्राश्वकी एक पुत्री (विष्णु० चतुर्थ अंश)।

सुभानु—पु० [सं०] (१) श्रीकृष्णके सत्यभामाके गर्भसे उत्पन्न दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (भाग० १०.६१.१०)। (२) चतुर्थ हुताश युगका दूसरा वर्ष।

सुभाषण—पु० [सं०] युयुधानका एक पुत्र (महाभा० तथा भाग०)।

सुभास—पु० [सं०] सुधन्वाका एक पुत्र—दे० सुधन्वा तथा (मत्स्य०)।

सुभीम—पु० [सं०] (१) तप नामसे प्रसिद्ध पाञ्चजन्य नामके अग्निके पुत्र, जो यज्ञमें विघ्न डालने वाले १५ उत्तरदेवों (विनायकों)मेंसे एक है (महाभा० वन० ५२०.११) यह एक प्रकारके दैत्यविशेष हैं।

सुभीमा—स्त्री० [सं०] श्रीकृष्णकी एक रानी (मत्स्य० ४७. १३)।

सुभुजा—स्त्री० [सं०] मौनेय देवगन्धर्वोंकी छोटी बहिने ३४ अप्सराओं, जो महर्षि कश्यप और दक्षपुत्री मुनिसे उत्पन्न हुईं, मेंसे एक अप्सराका नाम (वायु० ६९.४-८)।

सुभूमि—पु० [सं०] उग्रसेनका पुत्र—दे० उग्रसेन तथा (भाग०)।

सुभूमिक—पु० [सं०] सरस्वती नदीके तटपर बसा एक प्राचीन तीर्थका नाम (महाभा० शल्य० ३७.३-८)।

सुभूमिप–पु० [सं०] उग्रसेनका एक पुत्र (भाग०)।

सुभूषण–पु० [सं०] राजा उग्रसेनका पुत्र (भाग०)।

सुभ्राज–पु० [सं०] सूर्य द्वारा कुमार कार्त्तिकेयको प्रदत्त दो पार्षदोंमेंसे एकका नाम। दूसरेका नाम था भास्वर (महाभा० शल्य० ४५.३१)।

सुभ्रू–स्त्री० [सं०] कुमार कार्त्तिकेयकी अनुचरी एक मातृका (महाभा० शल्य० ४६.८)।

सुमंगला–स्त्री० [सं०] (१) कुमार कार्त्तिकेयकी अनुचरी एक मातृका (महाभा० शल्य० ४६.१२)। (२) एक अप्सराका नाम (विष्णु०)। (३) एक नदी जो हिमाचलसे निकल कामाक्षामें बहती है (कालिकापु०)।

सुमंगा–स्त्री० [सं०] पुराणानुसार एक नदीका नाम।

सुमंत–पु० [सं०] राजा दशरथके मंत्री तथा सारथि। वन जानेके समय श्रीराम आदिको रथपर चढ़ा यही कुछ दूर तक पहुँचा आये थे। दुर्मुख नामक गुप्तचरसे सीताके आचरणपर प्रजाका संदेह सुन, श्रीरामने सीताको वनमें छोड़ आनेका जब आदेश दिया था तब सबको वन पहुँचाने यही गये थे। इन्हींसे श्रीरामको वनमें छोड़ आनेका संदेश सुन अयोध्यापति दशरथने प्राण त्यागे थे (अयोध्याकांड, ९३ से ९८; १५२-१५५)।

सुमंतु–पु० [सं०] (१) वेदव्यासके शिष्य एक मुनि जिनका बनाया एक धर्मशास्त्र है और यह अथर्ववेदके शाखा-प्रचारक भी थे (भाग० १२.७.१)। (२) जह्नुके पुत्र अजकके पिता (विष्णु० ४.७.७)

सुमंत्र–पु० [सं०] (१) महाराज दशरथके श्रेष्ठ मंत्री तथा सारथि (वाल्मी० रामा० बाल० ८.४)। (२) कल्किके बड़े भाईका नाम। प्राज्ञ, कवि और सुमंत्र ये कल्किके तीन बड़े भाई हैं जिन सबकी सहायतासे अधर्मका नाश और धर्मकी स्थापना होगी (कल्किपु० तथा भाग०)।

सुमणि–पु० [सं०] चन्द्रमा द्वारा स्कंदको दिये गये दो पार्षदोंमेंसे एक पार्षद (महाभा० शल्य० ४५.३३)।

सुमति–पु० [सं०] (१) सावर्णि मन्वंतरके एक ऋषिका नाम। (२) भरतका एक पुत्र (महाभा०)। (३) जनमेजयका एक पुत्र—दे० जनमेजय। (४) सूतका एक शिष्य —दे० सूत। (५) एक दैत्यका नाम। (६) सोमदत्तका पुत्र। (७) वर्त्तमान अवसर्पिणीके पाँचवें अर्हत्। (८) पुरुवंशोत्पन्न राजा सुपार्श्वका पुत्र तथा सन्नतिमान्‌का पिता (विष्णु० ४.१९.४९)। (९) अंतिनारके पुत्र तथा ऋतेपुके पौत्र। ये तीन भाई थे (विष्णु० ४-१९,३-४)।

सुमति–स्त्री० [सं०] (१) पुराणानुसार राजा सगरकी दो पत्नियोंमेंसे एक पत्नी जो ६०,००० पुत्रोंकी माता थी (नारदपु० भाग० ९.८.९ पूर्वभाग प्रथम पाद)। (२) विष्णुयशाकी पत्नी और कल्किकी माताका नाम (कल्किपु० २.४,११,२३)। (३) क्रतुकी पत्नीका नाम —दे० क्रतु। (४) दशार्ण देशके राजा वज्रबाहुकी पत्नी तथा भद्रायुकी माता (स्कंदपु० ब्राह्म० ब्रह्मोत्तर-खंड)।

सुमतिबाई–स्त्री० [हिं०] ओड़छा नरेश मधुकर शाहकी रानी गणेश बाईकी एक सहचरीका नाम जो अपनी भक्तिके लिए विख्यात थी (हिं० वि० को०)।

सुमतिरेणु–पु० [सं०] (१) एक यक्ष विशेषका नाम (२) एक नागासुर।

सुमद–पु० [सं०] श्रीरामचंद्रकी सेनाका एक बंदरनायक (रामायण)।

सुमदना–स्त्री० [सं०] एक नदीका नाम (कालिकापु० ७८ अ०)।

सुमन–पु० [सं०] (१) ऊरु और अग्नेयीका पुत्र—दे० ऊरु। (२) हर्यश्वके पुत्रका नाम—दे० (हर्यश्व)। (३) एक दानवका नाम (भाग०)। (४) प्लक्षद्वीपके अंतर्गत एक पर्वतका नाम—दे० प्लक्ष। (५) उल्मुकके पुष्करिणीके गर्भसे उत्पन्न छह पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (भाग० ४.१३.१७)।

सुमना–स्त्री० [सं०] (१) एक केकयराजकन्याका नाम जिसने देवलोकवासिनी शाण्डिलीसे सती स्त्रियोंके सदाचार (पातिव्रत)के सम्बन्धमें प्रश्न किया था। इन दोनोंका वार्तालाप शाण्डिली-सुमनासंवादके नामसे प्रसिद्ध है (महाभा० अनु० १२३.२-२०)। (२) वीरव्रतकी माता तथा मधुकी पुत्री। (३) दशार्ण देशके अधिपति राजा चारुवर्णकी पुत्री तथा 'दम' की पत्नी। पुराणानुसार 'दम' बभ्रुकी पुत्री इंद्रसेनाके गर्भसे उत्पन्न मरुत राजाका पोता था। यह ९ वर्षों तक गर्भमें रहा था। यह वेदवेदांगोंका पण्डित और धनुर्विद्याका आचार्य था (मार्कण्डेयपु० दमचरित्र)। (४) सोमशर्माकी पत्नी तथा सुव्रतकी माता।

सुमनोमुख–पु० [सं०] महर्षि कश्यप और कद्रूसे उत्पन्न काद्रवेय नाग वंशमें उत्पन्न एक नाग (महाभा० उद्योग० १०३.१२)।

सुमन्तु–पु० [सं०] एक ऋषि, जो महर्षि व्यासशिष्य थे। व्यासजीने इन्हें सम्पूर्ण वेदों तथा महाभारतका अध्यापन किया था (महाभा० आदि० ६३.८-९)।

सुमन्यु–पु० [सं०] एक प्राचीन राजा जिन्होंने शांडिल्य मुनिको खाद्य पदार्थोंकी कई पर्वततुल्य राशियाँ दानमें दी थीं (महाभा० अनु० १३७.२२)।

सुमल्लिक–पु० [सं०] भारतका एक जनपद (महाभा० भीष्म० ९.५४)।

सुमह–पु० [सं०] परशुरामजीके सारथिका नाम (महाभा० विराट १२.९)।

सुमाल–पु० [सं०] महाभारतके अनुसार एक प्राचीन स्थानका नाम।

सुमाली–पु० [सं०] सुकेश राक्षसका पुत्र तथा रावणके नानाका नाम। इसीकी पुत्री कैकसी, जो विश्रवाको ब्याही थी, रावण, कुंभकर्ण, शूर्पणखा और विभीषणकी माता थी। कहीं मय दानवकी पुत्री माया खर, दूषण, त्रिशिरा और शूर्पणखाकी माता कही गयी है। माया भी विश्रवाको ब्याही थी—दे० रावण, विश्रवा आदि तथा (वाल्मी० राम० सुन्दर० ६.२१)।

सुमालयक–पु० [सं०] पुराणानुसार एक पर्वतका नाम।

सुमित्र–पु० [सं०] (१) श्रीकृष्णके जांबवतीके गर्भसे उत्पन्न साम्ब आदि १० पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (भाग० १०.६१.११-१२)। (२) अभिमन्युके सारथिका नाम (महाभा० द्रोण० ३६.३-४)। (३) एक दानवका नाम। (४) महाभारतके अनुसार राजा उशीनरके पुत्र शमिका पुत्र (महाभा०)। शमीक ऋषिका एक पुत्र (महाभा०)। (५) वृष्णिके दो

पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम। यह अनमित्रका पिता था (विष्णु० ४.१३.८-९)।

सुमित्रा–पु० [सं०] (१) अयोध्यापति दशरथकी एक रानी जो लक्ष्मण और शत्रुघ्नकी माता थी। रामवनवासके समय लक्ष्मण श्रीरामके साथ बन गये थे। शत्रुघ्नका प्रेम भरतसे वैसा ही था जैसा लक्ष्मणका श्रीरामसे—दे० परिशिष्ट (झ)। इनके पुत्र लक्ष्मण १२ वर्षों तक सोये नहीं थे इसीसे यह मेघनाद (रावणपुत्र) को मार सके थे, क्योंकि उसे यह वर प्राप्त था कि वही उसे मार सकेगा जो १२ वर्षों तक जागा रहा हो (रामायण)। (२) मार्कण्डेयकी माताका नाम, जिनका विवाह पुराणानुसार मृकंड ऋषिसे हुआ था (मृकंड, भाग०)। (३) भगवान् श्रीकृष्णकी एक रानीका नाम (महाभा० सभा० ३८.२९ के बाद प्रक्षिप्त पाठ)।

सुमीढ–पु० [सं०] महाराज सुहोत्रके ऐक्ष्वाकीके गर्भसे उत्पन्न ३ पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम, शेष दोका अजमीढ और पुरुमीढ नाम था (महाभा० आदि० ९४.३०)।

सुमुख–पु० [सं०] (१) अपने वंशका विस्तार करनेवाला गरुड़का एक पुत्र (महाभा० उद्योग० १०१०२)। (२) द्रोणका पुत्र। (३) किन्नरोंका एक राजा। (४) कश्यप और कद्रूकी संततिपरंपरामें उत्पन्न एक प्रमुख नागका नाम (आदि० ३५.१४) यह ऐरावत (नाग) कुलमें उत्पन्न आर्यकका पौत्र, वामनका दौहित्र तथा चिकुरका पुत्र था। भगवान् विष्णुकी आज्ञासे इन्द्रने इसे दीर्घायु बनाया। मातलिकी कन्या गुणकेशीसे इसका विवाह हुआ था। भगवान् विष्णुने इसे पैरके अँगूठेसे उठाकर गरुडकी छातीपर रख दिया था, तभीसे यह इसे सदा साथ लिये रहता है (उद्योग० १०३.२४;१०४.२७-२९;१०५.३१)। (५) गरुड़की प्रमुख संतानोंमें उत्पन्न एक पक्षीका नाम (उद्योग० १०१.१२)।

सुमुखी–स्त्री० [सं०] (१) कर्णके सर्पमुख बाणमें प्रविष्ट अश्वसेन नामक नागकी माता। मुखसे पुत्रका रक्षण करनेके कारण इसका सुमुखी नाम पड़ा (महाभा० कर्ण० ९०.४२)। (२) अलकापुरीकी एक अप्सराका नाम, जिसने अष्टावक्रके स्वागत-समारोहमें नृत्य किया था (अनु० १९.४५)।

सुमेद्य–पु० [सं०] रामायणानुसार एक पर्वतका नाम।

सुमेधा–पु० [सं०] (१) चाक्षुप मन्वतरके सप्तर्षियोंमेंसे एक ऋषि (विष्णु० ३.१.२८)। (२) पाँचवें मन्वतरके चार देव गणोंमेंसे, जिसमें १४ देव है, एक देवगण (विष्णु० ३.१.२१)। (३) वेदमित्रका एक पुत्र।

सुमेरु–पु० [सं०] पुराणानुसार पर्वतोंका राजा एक पर्वत जो सोनेका कहा गया है। जंबूद्वीपके नौ (९) वर्षोंमेंसे इलावृत्त नामक अभ्यंतर वर्षमें यह स्थित माना गया है जिसके आश्रित मंदर, मेरुमंदर, सुपार्श्व और कुमुद नामके चार पहाड़; दूध, मधु, गन्नाका रस तथा स्वच्छ जलसे भरे ४ जलाशय और नंदन, चैत्ररथ, वैभ्राजक और सर्वतोभद्र नामक ४ उद्यान भी कहे गये हैं। देवता इन उद्यानोंमें विहार करते हैं। नृसिंहपुराणानुसार सुमेरुकी स्फटिक, वैदूर्य और रत्नमय तीन चोटियाँ हैं जिनपर २१ स्वर्ग हैं जहाँ देवताओंका निवास रहता है। इस पर्वतके ऊपरका भाग १२८,००० कोस और मध्यभाग ४००० कोसका माना गया है। भागवतानुसार यह पर्वतोंका राजा है (भाग० ५.१६.७,११-१५)।

सुयजु–पु० [सं०] सम्राट् भरतका पौत्र तथा भूमन्युका पुत्र इसकी माताका नाम पुष्करिणी था (महाभा० आदि० ९४.२४)।

सुयज्ञ–पु० [सं०] (१) आकूतिके गर्भसे उत्पन्न रुचि प्रजापतिका एक पुत्र (भाग० १.३.१२,५५-५६; ४.१.१-४; ८.१.५; ब्रह्मां० ३.३.११३; वायु० १०.१७-९)। (२) वशिष्ठके एक पुत्रका नाम (भाग०)। (३) ध्रुवका एक पुत्र—दे० ध्रुव।

सुयज्ञा–स्त्री० [सं०] प्रसेनजित्की पुत्री पुवंरुशी राजा महाभौमकी पत्नीका नाम। इनके पुत्रका अयुतनायी था (महाभा० आदि० ९५.२०)।

सुयम–पु० [सं०] राक्षस शतशृंगके तीसरे पुत्रका नाम, जो अम्बरीषके सेनापति सुदेव द्वारा मारा गया था (महाभा० शान्ति० ९८.१२)।

सुयशा–स्त्री० [सं०] (१) अनश्वाके पुत्र महाराज परीक्षितकी एक पत्नी जो बाहुदराजकी पुत्री तथा भीमसेनकी माता थी (महाभा० आदि० ९५.४१-४२)। (२) एक अप्सराका नाम जो छह गन्धर्व पुत्री अप्सराओंमें एक थी। जिनके नाम हैं—सुयशा, गान्धर्वी, विद्यावती, चारुमुखी, सुमुखी तथा वरानना। सुयशाके कम्बल, हरिकेश, कपिल, काञ्चन और मेघमाली पाँच पुत्र हुए जो यक्षगण कहे गये। इसकी चार कन्याएँ अप्सराएँ हुईं—लोहेयी, भरता, कृशाङ्गी और विशाला। इनसे चार यक्ष गणोंको उत्पत्ति हुई जो लौहेय, भरतेय, कृशाङ्गेय और विशालेय नामसे पुराणोंमें प्रसिद्ध हैं (वायु० ६९.९-१६)। (३) दिवोदासकी पत्नी। यह काशीराज भीमरथकी पुत्रवधू थी (वायु० ९२.२३, ४४)।

सुयाति–पु० [सं०] हरिवंशपुराणानुसार राजा नहुषका एक पुत्र।

सुयाम–पु० [सं०] (१) दक्षिणाके गर्भसे उत्पन्न सुयज्ञका पुत्र और रुचि प्रजापतिके पौत्र जिनका उल्लेख पुराणोंमें है। यह देवताओंका एक गण कहा गया है—दे० दक्षिणा तथा (विष्णु० १. ७.२१)। (२) एक देवपुत्रका नाम —दे० ललितविस्तार।

सुयोधन–पु० [सं०] धृतराष्ट्र और गान्धारीके १०० पुत्रोंमेंसे सर्वज्येष्ठ पुत्र दुर्योधनका नाम। युधिष्ठिर दुर्योधनको सुयोधन ही कहा करते थे (महाभा० आदि० ६३.११८-१२०)।

सुर–पु० [सं०] पुराणानुसार चन्द्रप्रभा नदीके तटपरका एक नगर।

सुरकृत्–पु० [सं०] विश्वामित्रके ब्रह्मवादी पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (महाभा० अनु० ४.५७)।

सुरक्ष–पु० [सं०] पुराणानुसार एक पर्वतका नाम (ब्रह्मां०)।

सुरजा–स्त्री० [सं०] (१) पुराणोक्त एक नदी। (२) एक अप्सरा, जो दक्षपुत्री प्राधाके गर्भसे उत्पन्न महर्षि कश्यपकी पुत्री थी (महाभा० आदि० ६५.५०)। यह अर्जुनके जन्म समयके महोत्सवमें नृत्य करने आयी थी (आदि १२२.६३)।

सुरथ–पु० [सं०] (१) राजा द्रुपदका एक पुत्र जो युद्धमें मारा गया था (महाभा० द्रोण० १५६.१८०)। (२) जय-

द्रथका एक पुत्र, जो दुःशलाके गर्भसे उत्पन्न हुआ था। इसने अश्वमेधके अश्वके साथ अर्जुनके सिन्धुदेश पहुँचनेपर पिताकी मृत्युका स्मरण कर प्राण त्याग दिये थे (आश्व० ७८.२८-३०)। (३) पुराणानुसार स्वारोचिप मन्वंतरका एक चन्द्रवंशी राजा जिसने सर्वप्रथम दुर्गाकी आराधना की थी और दुर्गाके वरसे यह सावर्णि मनुके नामसे प्रसिद्ध हुए (मार्कण्डेयपु० तथा देवीभाग०)। (४) जनमेजयका एत्र पुत्र—दे० जनमेजय। (५) सुदेवका एक पुत्र। (६) अधिरथका एक पुत्र। (७) हंसध्वजका एक पुत्र जो चंपकपुरीका राजा था।

सुरथा–स्त्री० [सं०] (१) एक अप्सराका नाम (भाग०)। (२) पुराणोक्त एक नदीका नाम। (३) राजा शिविकी माताका नाम (महाभा० वन० १९७.२५)।

सुरदेवी–स्त्री० [सं०] विन्ध्यवासिनीदेवी योगमाया जिसका जन्म यशोदाके गर्भसे हुआ था। इन्हें कंसने देवकीकी पुत्री समझ पत्थरपर पटककर मारना चाहा था पर यह हाथसे छूट आकाशको चली गयी—दे० विन्ध्यवासिनी आदि (भाग० १०.४.८-१३)।

सुरधेनु–स्त्री० [सं०] कामधेनुका एक नाम (भाग०)।

सुरपति–पु० [सं०] इन्द्रका एक नाम (भाग०)।

सुरपुर–पु० [सं०] अमरावतीका एक नाम (भाग० तथा विष्णु०)।

सुरभि–स्त्री०[सं०] कामधेनु नामक गऊ। यह समुद्रसे समुद्रमन्थन करते समय प्रकट हुई थी (विष्णु० १.९.९२)। इन्हें दक्षकी पुत्री माना गया है। देवी सुरभिके गर्भसे कश्यप द्वारा एक गौका जन्म हुआ था जिसका नाम नन्दिनी था। महर्षि वशिष्ठने नंदिनीको अपनी होमधेनुके रूपमें प्राप्त किया था (महाभा० आदि० ९८.८-९)। ये ब्रह्माजीकी सभामें रहकर उनकी उपासनी करती हैं (सभा० ११.४०)। इनको अपने पुत्र वैलके लिए दुःख प्रकट करते हुए देख इन्द्र द्वारा आश्वासन दिया गया (वन० ९.९.१४)।

सुरभिपट्टन–पु० [सं०] एक दक्षिणभारतीय प्राचीन नगरका नाम, जिसे सहदेवने दक्षिणदिग्विजयके समय दूतोंके द्वारा ही अधीन कर लिया था (महाभा० सभा० २१.३८)।

सुरभिमान्–पु० [सं०] एक अग्निका नाम, जिनके निकट मृत्यु सूचक विलाप सुनायी देने या आदिके द्वारा छू जानेपर अष्टाकपाय पुरोडाशकी आहुति देनेका विधान है (महाभा० वन० २२१.२८)।

सुरस–पु० [सं०] एक काद्रवेयवंशी नागका नाम (महाभा० उद्योग० १०३.१६)।

सुरसा–स्त्री० [सं०] (१) रामायणके अनुसार समुद्रमें रहनेवाली एक प्रसिद्ध नागमाता। समुद्र पार करनेके समय इसीने हनुमानजीको रोका था और मुँह फैलाकर खानेको उद्यत हुई थी, समझानेपर भी जब यह नहीं मानी तव हनुमानजीने अपना शरीर उससे भी वढ़ा दिया। ज्यों-ज्यों सुरसा अपना मुँह वढ़ाती गयी त्यों-त्यों हनुमानजीने अपना शरीर वढ़ाया। इसके पश्चात् हनुमानजीने बहुत छोटा रूप धारण करके उसके मुँहमें प्रवेश किया और बाहर निकल आये। इससे प्रसन्न होकर सुरसाने हनुमानजीको आशीर्वाद दिया तथा उनकी सफलताकी कामना की (रामच०मानस० सुन्दर १।१ से २)। (२) रुद्राश्वकी एक पुत्री—दे० रुद्राश्व। (३) क्रोधा या क्रोधवशाकी वारह पुत्रियों, सवकी सव पुलह ऋषिको व्याही गयी थीं, मेंसे एक जिससे सर्प और नागोंकी उत्पत्ति हुई (ब्रह्मां० ३.७.१७१-१७३, ४४३-४४४)। (४) एक अप्सरा, जो मौनेय देवगन्धर्वोंकी ३४ वहिनोंमें एक है। यह दक्षपुत्री मुनि तथा कश्यप ऋषिकी संतति है (वायु० १६९.३-८)। इसने अर्जुनके जन्मसमयके महोत्सवमें नृत्य किया था (महाभा० आदि० १२२.६३)। (५) विष्णुपुराणानुसार कश्यपकी १३ पत्नियों, जो अदिति आदि दक्षपुत्रियाँ थीं, मेंसे एकका नाम (विष्णु० १.१५.१२६)।

सुरहन्ता–पु० [सं०] तप नामधारी पाञ्चजन्य नामक अग्निके पुत्र, जो यज्ञमें विघ्न डालनेवाले १५ उत्तरदेवों (विनायकों) मेंसे एक हैं (महाभा० वन० २२०.१३)।

सुरा–स्त्री० [सं०] एक देवी, जो समुद्रसे प्रकट हुई (महाभा० आदि० १८.३५)। यह वरुणके द्वारा उनकी ज्येष्ठ पत्नी देवीके गर्भसे उत्पन्न हुई, इन्हें वारुणी भी कहते हैं (आदि० ६६.५२)।

सुराब्धि–पु० [सं०] पुराणानुसार ७ समुद्रोंमेंसे तीसरा जो इक्षु-समुद्रसे दुगना बताया गया है—दे० सप्तसिंधु तथा मार्कण्डेयपु०।

सुरारि–पु० [सं०] एक राजाका नाम, जिसे पाण्डवोंकी ओरसे रणनिमन्त्रण भेजनेका प्रस्ताव किया गया था (महाभा० उद्योग० ४.१५)।

सुराव–पु० [सं०] इल्वल द्वारा अगस्त्यजीको दिये गये रथके एक घोड़ेका नाम (महाभा० वन० ९९.१७)।

सुरावती–स्त्री० [सं०] अदितिका एक नाम जो कश्यप ऋषिकी पत्नी तथा देवताओंकी माता थी—दे० अदिति, तथा (विष्णु०)।

सुराष्ट्र–पु० [सं०] महाराज दशरथके एक मन्त्री का नाम (वाल्मी० रामा० वाल० ७.३)।

सुरुच–पु० [सं०] अपने वंशका विस्तार करनेवाला गरुड़का एक पुत्र (महाभा० उद्योग १०१.३)।

सुरुचि–स्त्री० [सं०] ध्रुवकी विमाता तथा उत्तमकी माता, जो राजा उत्तानपादकी प्रधान रानी थी जिन्हें राजा अधिक मानते थे। ध्रुवमाता सुनीतिकी यह सौत थीं, जिनके व्यवहारसे दुःखी हो ध्रुव तपोवलसे अमर हो गये। कैकेयीकी तरह सुरुचिको भी यह कलंक लगा जिससे विमाताओंका अब वैमात्रेय व्यवहार लोकप्रसिद्ध-सा हो गया है (भाग० ४.८.७-११)।

सुरुचि–पु० [सं०] (१) एक गंधर्व राजाका नाम (भाग०)। (२) एक यक्षका नाम (विष्णु०)।

सुरूप–पु० [सं०] (१) कामदेव, दोनों अश्विनीकुमार, नकुल, पुरूरवा, नलकूबर और सांबको सुरूप कहते हैं, क्योंकि ये सब अति सुन्दर थे। (२) मणिवरके देवजनीसे उत्पन्न ३० पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (वायु० ६९.१६१)।

सुरूपद्वादशी–स्त्री० [सं०] पौषकृष्णा पुष्ययुक्त द्वादशीको सुरूपद्वादशी कहते हैं। इस दिन व्रत करे तथा विष्णुका पूजन करे—दे० व्रतार्क।

सुरूपा–स्त्री० [सं०] (१) यह मरीचिकी पुत्री तथा अंगिराकी

पत्नी बृहस्पति, गौतम, संवर्त, उत्तम, उतथ्य वामदेव अजस्य आदि १० आंगिरसोंकी माताका नाम (मत्स्य० १९६-१-४)। (२) सुरभिकी धेनुरूपा एक पुत्री, जो पूर्व दिशाको धारण करनेवाली है (महाभा० उद्योग० १०२.८)।

सुरेणु–स्त्री० [सं०] (१) विवस्वान्‌की पत्नी तथा त्वाष्ट्रीकी पुत्री (२) सात सरस्वतियोंमेंसे ऋषभद्वीपमें बहनेवाली सरस्वती नदीका नाम (महाभा० शल्य० ३८.२६)।

सुरेश–पु० [सं०] तप नामधारी पाञ्चजन्य नामक अग्निके पुत्र, जो यज्ञमें विघ्न डालनेवाले १५ उत्तरदेवों (विनायकों) मेंसे एक है (महभा० वन० २२०.१३)।

सुरोचन–पु० [सं०] यज्ञबाहुका एक पुत्र।

सुरोचना–स्त्री० [सं०] कुमार कार्त्तिकेयकी अनुचरी एक मातृका (महाभा० शल्य० ४६.२९)।

सुरोचि–पु० [सं०] वशिष्ठके चित्रकेतु आदि सात पुत्रों, जो सबके सब ब्रह्मर्षि थे, मेंसे एक पुत्र (भाग० ४.१.४०-४१)।

सुरोद–पु० [सं०] सुराका समुद्र, जो दधिमण्डोदके बाद पड़ता है (महाभा० भीष्म० १२.२)।

सुरोध–पु० [सं०] तंसुके एक पुत्रका नाम।

सुरोमा–पु० [सं०] तक्षक-कुलमें उत्पन्न एक सर्पका नाम, जो जनमेजयके सर्पसत्रमें अग्निमें होमा गया था (महाभा० आदि० ५७.१०)।

सुरोषण–पु० [सं०] देवताओंका एक सेनापति।

सुलक्षणा–स्त्री० [सं०] पार्वतीजीकी एक सखीका नाम (शिवपु०)।

सुलभा–स्त्री० [सं०] एक ब्रह्मवादिनी स्त्रीका नाम जो वैदिक कालकी कही जाती है (गृह्यसूत्र)। महाभारतके अनुसार यह संन्यासिनी कुमारी थी जो योगधर्मके अनुष्ठानके द्वारा सिद्धि प्राप्त कर अकेली ही इस पृथ्वीपर विचरती थी (शांति ३२०.७)। इसने त्रिदण्डी संन्यासियोंके मुखसे मोक्षतत्त्वकी जानकारीके विषयमें मिथिलाधिपति राजा जनककी प्रशंसा सुनी। इसके मनमें उनके दर्शनका संकल्प उठा। उसने योगशक्तिसे अपना पहला शरीर त्यागकर दूसरा परमसुन्दर रूप धारण किया। फिर पलभरमें विदेहकी राजधानी मिथिला पहुँची। वहाँ इसने भिक्षा लेनेके बहाने राजा जनकके दर्शन किये। राजाने इसका स्वागत पूजन करके अन्न देकर इसे संतुष्ट किया। तदनन्तर यह योगशक्तिसे राजाकी बुद्धिमें प्रविष्ट हो गयी और उनके मनको बाँध लिया। तदुपरान्त एक ही शरीरमें रहकर राजाका और सुलभाका संवाद आरम्भ हुआ। राजाने अनुचित वचनोंसे इसका तिरस्कार किया। राजाके वचनोंसे विचलित न होकर इसने विद्वत्तापूर्ण भाषण द्वारा राजाको उत्तर दिया और अपना परिचय देते हुए कहा—मैं राजर्षिप्रधान कुलमें उत्पन्न हुई हूँ। क्षत्रिय-कन्या हूँ। मैंने अखण्ड ब्रह्मचर्यका पालन किया है। मेरा नाम सुलभा है। मैं सदा धर्ममें स्थित रहती हूँ (शांति० ३२०.८-१९२)।

सुलोचन–पु० [सं०] (१) धृतराष्ट्रके १०० पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (महाभा० आदि० ६७.९४)। (२) श्रीकृष्णके श्वशुर तथा रुक्मिणीके पिता भीष्मकका नामान्तर (भाग०)। (३) एक दैत्यका नाम। (वायु० ६९.६१)।

सुलोचना–स्त्री० [सं०] (१) लंकापति रावणकी पुत्रवधू, मेघनादकी पत्नी तथा वासुकि नागकी पुत्री। सुलोचनाके पिता ८ नागोंमेंसे एक थे अतः यह कश्यपकी पोती हुई। यह बड़ी पतिव्रता थी और मेघनादकी मृत्युके पश्चात् भी इसने अपने तेजसे पतिकी कटी हुई गर्दन समेत मुंडको श्रीरामके संतोषके लिए हँसा दिया था (रामच० मा० लंकाकांड)। (२) एक अप्सराका नाम।

सुवर्णघोष–पु० [सं०] अश्वमुखीके गर्भसे उत्पन्न विक्रान्तके पुत्र अश्वमुख किन्नरोंके गणका एक किन्नर (वायु० ६९.३२)।

सुवर्णचूड–पु० [सं०] गरुड़की प्रमुख सन्तानोंमेंसे एकका नाम (महाभा० उद्योग० १.१.९)।

सुवर्णतीर्थ–पु० [सं०] एक पुण्यमय तीर्थका नाम, जहाँ भगवान् विष्णुने शिवजीकी प्रसन्नताके लिए उनकी आराधनाकर देवदुर्लभ वर प्राप्त किये थे। इस तीर्थमें जाकर शिवाराधना करनेसे अश्वमेध यज्ञका फल प्राप्त होता है (महाभा० वन० ८४.१८-२२)।

सुलोहिता–स्त्री० [सं०] अग्निकी ७ जिह्वाओंमेंसे एक मुंडकोपनिषद् तथा बृहत्संहिता)।

सुवंश–पु० [सं०] वसुदेवके श्रीदेवाके गर्भसे उत्पन्न छह पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (भाग० ९.२४.५१)।

सुवक्त्र–पु० [सं०] (१) स्कंदका एक सैनिक अनुचर (महाभा० शल्य० ४५.७३)। (२) दंतवक्त्रका एक पुत्र।

सुवक्षा–स्त्री० [सं०] विभीषण तथा त्रिजटाकी माता जो मयदानवकी पुत्री थी, जिसे 'माया' भी कहते थे (रामायण)।

सुवरा–स्त्री० [सं०] मौनेय देवगन्धर्वोंकी बहिन ३४ अप्सराओं, जो कश्यप महर्षि और दक्षपुत्री मुनिकी संतान हैं, मेंसे एक (वायु० ६९.६)।

सुवर्चला–स्त्री० [सं०] (१) परमेष्ठीकी पत्नी तथा प्रतीहकी माता। (२) सूर्यकी पत्नीका नाम।

सुवर्चा–पु० [सं०] (१) दसवें मनुका पुत्र। (२) धृतराष्ट्रके १०० पुत्रोंमेंमें एक पुत्र (महाभा० आदि० ६७.१०२)। (३) हिमवान् द्वारा स्कंदको दिये गये पार्षदोंमेंसे एक पार्षद (शल्य० ४५.४६)। (४) अपने वंशका विस्तार करनेवाला गरुड़का एक पुत्र (उद्योग० १०१.२)। (५) राजा सुकेतुका एक पुत्र जो अपने पिता तथा भाई सुनामाके साथ द्रौपदीके स्वयंवरमें गया था (आदि० १८५.९)। (६) तपनामधारी पाञ्चजन्य नामक अग्निके पुत्र, जो यज्ञमें विघ्न डालनेवाले १५ उत्तरदेवों (विनायकों) मेंसे एक हैं (वन० २२०.१३)। (७) सूर्यवंशी राजा खनीनेत्रके पुत्रका नाम। प्रजा द्वारा खनीनेत्रको राजगद्दीसे उतारकर इनका राज्याभिषेक किया गया था। इनका नामान्तर करंधम था। इसका त्रेतायुगके आरम्भमें एक कान्तिमान् पुत्र हुआ, जो कारंधम कहलाया। इसीका नाम अवक्षित् था (आश्व० ४.९-१८)।

सुवर्चा–स्त्री० [सं०] दधीचि ऋषिकी पत्नी तथा पिप्पलादकी माताका नाम (स्कंदपु० माहेश्वर० केदार-खंड)। यह दधीचिके अस्थिदानके पश्चात् तथा पिप्पलादके जन्मके बाद समाधि लगा सत्यलोकमें पतिके समीप चली गयी (स्कंदपु० माहेश्वर० केदार-खंड तथा शिवपु० शतरुद्र-संहिता, अध्याय २१-२५)।

सुवर्ण–पु० [सं०] (१) दशरथजीका एक मन्त्री (रामायण)। (२) एक मुनि। (३) अंतरिक्षके एक पुत्रका नाम। (४) एक ब्रह्मचारी तथा विख्यात गुणवान् देवगन्धर्वका नाम, जो अर्जुनके जन्मकालीन समारोहमें उपस्थित हुआ था (महाभा० आदि० १८२.५८)। (५) एक तपस्वी ब्राह्मण, जिनकी कान्ति सुवर्णतुल्य थी (महाभा० अनु० ९८.३-९)।

सुवर्णमुखरी–स्त्री० [सं०] एक नदी विशेष जिसका प्रादुर्भाव अगस्त्य ऋषिकी तपस्यासे हुआ था, उदाहरणार्थ—'अगस्त्याचलसम्भूतां दक्षिणोदधिगामिनीम्। समस्तपापहन्त्रीं त्वां सुवर्णमुखरीं श्रये॥ महापातकविप्लुष्टं गात्रं मम तवोदकैः। क्षालयामि जगद्धात्रि श्रेयसा योजयस्व माम्॥' (स्कंदपु० वैष्णव-वेङ्कटाचलमाहा० ३३.४२-४३ तथा शिवपु० विद्येश्वर-संहिता अध्याय १२)।

सुवर्णवर्मा–काशीके राजा, जो वपुष्टमाके पिता थे। जनमेजयके मन्त्रियोंने इनके समीप जाकर उन (जनमेजय) के लिए राजकुमारी वपुष्टमा देनेकी प्रार्थना की थी। राजाने मंत्रियोंकी प्रार्थना स्वीकार कर राजा जनमेजयके साथ अपनी पुत्रीका विवाह कर दिया (महाभा० आदि० ५५.८-९)।

सुवर्णशिरा–पु० [सं०] पश्चिम दिशामें रहकर सामगान करनेवाले एक महर्षि। इनके केश सुनहले थे। इनका प्रभाव अपरिमेय था (महाभा० उद्योग० ११०.१२)।

सुवर्णशिलेश्वर–पु० [सं०] एक शिवलिंग विशेष (स्कंदपु० काशीखंड)।

सुवर्णष्ठीवी–पु० [सं०] महाभारतके अनुसार संजयका पुत्र, इसका लुटेरों द्वारा हरण और वध किया गया (द्रोण० ५५.३०-३१)। नारदजीके वरदानसे इसे पुनः जीवन प्राप्त हुआ था (द्रोण० ७१.८-९)।

सुवर्णा–स्त्री० [सं०] (१) अग्निकी सात जिह्वाओंमेंसे एक—दे० अग्निजिह्वा तथा (मुंडकोपनिषद्; बृहत्संहिता)। (२) इक्ष्वाकुकी पुत्री, पुरुवंशी राजा सुहोत्रकी पत्नी तथा अजमीढ, सुमीढ और पुरुमीढकी माताका नाम (भाग०; महाभा० आदि० ९४.३०) तथा—दे० सुहोत्र।

सुवर्णाभ–पु० [सं०] स्वारोचिष मनुके पौत्र तथा शंखपदके पुत्र जो दिक्पाल थे, इन्हें पिताने सात्वत धर्मका उपदेश दिया था (महाभा० शांति० ३४८.३८)।

सुवर्मा–पु० [सं०] धृतराष्ट्रके १०० पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (महाभा० आदि० ६७.९७)।

सुवर्ष–पु० [सं०] दुर्योधनका एक भाई (महाभा० आदि० ६७.९७)।

सुवसंतक–पु० [सं०] मदनोत्सव जो प्राचीनकालमें चैत्रपूर्णिमाको मनाया जाता था—दे० वसंतोत्सव (भाग०)।

सुवस्त्रा–स्त्री० [सं०] भारतीय एक पुण्य नदी (महाभा० भीष्म० ९.२५)।

सुवामा–स्त्री० [सं०] आधुनिक रामगंगाका प्राचीन नाम, जो मुरादाबादके समीपसे बहती है—दे० रामगंगा तथा (महाभा० भीष्म० ९.२८)।

सुवार्त्ता–स्त्री० [सं०] श्रीकृष्णकी एक पत्नी (भाग०)।

सुवास्तुक–पु० [सं०] महाभारतके अनुसार एक राजाका नाम, जिसे पांडवोंकी ओरसे रणनिमन्त्रण भेजा गया था (उद्योग० ४.१३)।

सुवाहु–पु० [सं०] (१) कुमार कार्तिकेयका एक सैनिक अनुचर (महाभा० शल्य० ४५.६६)। (२) महर्षि कश्यपके दक्षपुत्री दनुके गर्भसे उत्पन्न विप्रचित्तिप्रधान १०० पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (वायु० ६९.७)।

सुवृत्ता–स्त्री० [सं०] १६ मौनेय देवगन्धर्वोंकी ३४ मौनेय अप्सराओंमेंसे एक अप्सराका नाम। ये सब दक्षपुत्री मुनिके गर्भसे महर्षि कश्यप द्वारा उत्पन्न हुईं (वायु० ६९.१-८)।

सुविशाला–स्त्री० [सं०] स्कंदकी अनुचरी एक मातृकाका नाम (महाभा० शल्य० ४६.२८)।

सुवीर–पु० [सं०] (१) भगवान् शंकरका एक नाम (काशी खंड)। (२) शिवजीका एक पुत्र (शिवपु०)। (३) क्षेम्यका एक पुत्र—दे० क्षेम्य। (४) देवश्रवाका एक पुत्र–दे० देवश्रवा। (५) राजा द्युतिमान्के धर्मात्मा पुत्र, जो सम्पूर्ण लोकोंमें विख्यात थे। ये इन्द्रके समान पराक्रमी थे। इनके पुत्रका नाम दुर्जय था (महाभा० अनु० २.१०-१२)। (६) राजा शिविके चार पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (वायु० ९९.२३)।

सुवृद्ध–पु० [सं०] एक दिग्गजका नाम जो दक्षिण दिशाका अधिपति कहा गया है—दे० दिग्गज।

सुवेणा–स्त्री० [सं०] महाभारत तथा हरिवंशके अनुसार एक नदीका नाम जिसे मार्कण्डेयजीने बालमुकुन्दके उदरमें देखा था (वन० १८८.१०४)।

सुवेल–पु० [सं०] रामायणानुसार लंकामें स्थित त्रिकूट पर्वत जो समुद्रके किनारे था जहाँ श्रीराम सेना सहित उतरकर ठहरे थे (राम च० मानस० लंकाकांड १०।१)।

सुव्रत–पु० [सं०] (१) एक प्रजापतिका नाम। (२) राजा उशीनरकी पाँच रानियाँ थीं मृगा, कृमी, नवा, दर्वा और दृषद्वती। उनसे उनके पाँच पुत्र हुए। दर्वासे सुव्रत हुए (वायु० ९९.१७-२०)। (३) प्रियव्रतका एक पुत्र—दे० प्रियव्रत। (४) रौच्य मनुका एक पुत्र—दे० रौच्य। (५) सोमशर्मा तथा सुमनाका पुत्र जो पूर्वजन्ममें धर्माङ्गद नामक राजकुमार था जिसने पिताके सुखके लिए मस्तक दे दिया।—दे० सोमशर्मा तथा सुमना। यह बचपनसे ही श्रीकृष्णका भक्त था। युवा होनेपर नर्मदाके दक्षिण तटपर वैदूर्यपर्वतपर जा यह भगवानका भजन करने लगा। इसे विष्णुका दर्शन हुआ और यह माता-पिता सहित स्वर्ग गया। (६) नाभागके दो पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम, जिनके ज्येष्ठ भ्राताका नाम अज था—'अजश्च सुव्रतश्चैव नाभागस्य सुतावुभौ।' (वाल्मी० रामा० अयोध्या ११०.३१)। (७) एक अनन्तकीर्ति महातेजस्वी महात्माका नाम, जिनका आश्रम उत्तर भारतमें है (महाभा० वन० १२-१३)। (८) मित्र द्वारा कुमार कीर्तिकेयको दिये गये दो पार्षदोंमेंसे एकका नाम, दूसरेका नाम सत्यसंध था। (शल्य० ४५.४१)। (९) विधाता द्वारा कुमार कार्तिकेयको दिये गये दो पार्षदोंमेंसे एकका नाम। दूसरेका नाम सुकर्मा था। (९) जरासंधवंशी राजा क्षेम्यका पुत्र तथा धर्मका पिता (विष्णु० ४.२३.६)।

सुव्रता–स्त्री० [सं०] (१) दक्षप्रजापतिकी पुत्री। (२) एक अप्सरा (भाग०)।

सुशर्मा–पु० [सं०] वृद्धक्षेमके पुत्र तथा त्रिगर्त्त देशके राजाका नाम, जो द्रौपदीस्वयंवरमें गया था (महाभा० आदि० १८५.९)। महाभारतके विराट पर्वानुसार दुर्योधन के कहनेपर सुशर्माने मत्स्यदेशाधिपति राजा विराटपर आक्रमण किया था (विराट ३०.१-२६)। इसी समय पांडव लोग विराटके यहाँ अपने अज्ञातवासकी अवधि बिता रहे थे और भीमने गंधर्वके रूपमें विराटके साले तथा सेनापति कीचकका वध कर डाला था। सेनापति कीचकके मरनेकी सूचना सुन, सुशर्माने आक्रमण किया और राजा विराटको बन्दी कर लिया था। पर युधिष्ठिरकी आज्ञा पा भीम सुशर्मापर टूट पड़े और शीघ्र ही उसे बन्दी कर अपने आश्रय दाता विराटको छुड़ा लाये थे (विराट ३३.७-२, २५-४८)।

सुशांता–स्त्री० [सं०] राजा शशिध्वजकी पत्नी—दे० शशिध्वज (१)।

सुशांति–पु० [सं०] (१) राजा अजमीढ़का पुत्र—दे० अजमीढ़। (२) तीसरे मन्वन्तरके इन्द्रका नाम (भाग०)। शांतिका पुत्र—दे० शांति तथा (भाग०)।

सुशारद–पु० [सं०] वैदिककालके एक प्राचीन आचार्य जो शालंकायन गोत्रके थे।

सुशीला–स्त्री० [सं०] (१) श्रीकृष्णकी एक पत्नी (भाग०)। (२) यमराजकी पत्नी (मार्कण्डेयपु०)। (३) श्रीकृष्णके सहपाठी तथा सखा सुदामाकी पत्नी (भाग०)। (४) श्रीराधिकाजीकी एक अनुचरी (देवीभाग०)।

सुशोभना–स्त्री० [सं०] मंडूक राजाकी कन्याका नाम, जिसका इक्ष्वाकुवंशी परीक्षित्से विवाह हुआ था। अपनी शर्तके अनुसार यह बावलीमें लुप्त हो गयी (महाभा० शल्य० १९२.९-२२)। पुनः इसका राजासे मिलन हुआ और इसके गर्भसे राजाके शल, दल और बल नामके ३ पुत्र हुए (शल्य० १९२.३५-३८)।

सुश्रम–पु० [सं०] धर्मका एक पुत्र (स्कंद तथा भाग०)।

सुश्रवा–पु० [सं०] (१) एक प्रजापतिका नाम (भाग०)। (२) एक ऋषिका नाम। (३) एक नागासुरका नाम। (४) जरासंधवंशी राजा सुव्रतका पौत्र, धर्मका पुत्र तथा सुश्रवाका पिता (विष्णु० ४.२३.७)।

सुश्रवा–स्त्री० [सं०] जयत्सेनकी पत्नी एक वैदर्भीका नाम।

सुश्रुम–पु० [सं०] धर्मका एक पुत्र (स्कंद०)।

सुश्रोणा–स्त्री० [सं०] हरिवंशके अनुसार एक नदीका नाम।

सुसधि–पु० [सं०] (१) मांधाताका एक पुत्र—दे० (भाग० रामा० तथा मांधाता। (२) (भाग०=संधि) प्रसुश्रुतका पुत्र, अमर्षका (भाग०=अमर्पण) का पिता तथा सहस्वान् (भाग०= महस्वान्) का दादा (विष्णु० ४.४.१११, भाग० ९.१२.७)।

सुपिनंदि (सुनन्दी)–पु० [सं०] विष्णुपुराणानुसार कैंकिल राजाओं, जिन्होंने आठ पीढ़ीतक १०६ वर्ष राज्य किया, मेंसे एक राजाका नाम। इसका नामांतर सुनन्दी हो सकता है। इसके तीन भाई थे नन्दियशा, शुक्र और प्रवीर (विष्णु० ४.२४.५६)। वायु० के अनुसार यह भूतिनन्दि ठहरता है (वायु० ९९.३६२)। भागवतके अनुसार इसका नाम शिशुनन्दि प्रतीत होता है। इसके भाई यशोनन्दि और प्रवीरक थे (भाग० १२.१.३३)। ब्रह्मां० के अनुसार यह नागकुलोद्भव राजा था। इसका नाम भूतनन्द था। इसके छोटे भाईका नाम नन्दियशा था (ब्रह्मां० ३.७४.१८२)।

सुषेण–पु० [सं०] (१) रुक्मिणीके गर्भसे उत्पन्न श्रीकृष्णका एक पुत्र (भाग०)। (२) धृतराष्ट्र नागके कुलमें उत्पन्न एक नागका नाम, जो जनमेजयके सर्पसत्रमें होमा गया (महाभा० आदि० ५७.१६)। (३) पुरुवंशीय महाराज अविक्षित्के पौत्र तथा राजा परीक्षितके पुत्रकानाम (आदि० ९४.५२-५५)। (४) दुर्योधनके भाई तथा धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (आदि० ६७.९७)। (५) देवकीके गर्भसे उत्पन्न वसुदेवके ८ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (भाग० ९.२४.५४)। (६) रामायणानुसार एक वानरका नाम जो वरुणका पुत्र वानरराज वालीका श्वशुर, ताराका पिता और सुग्रीवका वैद्य था। लक्ष्मणको शक्ति लगनेके समय इसका उल्लेख मिलता है। वन० २८३.२ के अनुसार यह हजार करोड़ (दस अरब) वानर सेना लेकर श्रीरामचन्द्रजीके निकट उपस्थित हुआ था (रामच० मानस लंका० ५३.४; ५४.४; ५५ आदि)। (७) शंबर दैत्यका एक पुत्र—दे० शंबर तथा (रामायण)। (८) एक गंधर्वका नाम जो माघ मासमें पूणा नामके सूर्यके रथ पर सौर गणके अन्य संगियोंके साथअधिष्ठित रहता है (भाग० १२.११.३२)। (९) एक यक्षका नाम—दे० कुबेर। (१०) भगवान् विष्णुका एक नाम (विष्णु सहस्रनाम श्लोक ५८)। (११) हरिषेण, वारिषेण, सुषेण आदि १० चंद्रवंश श्रेष्ठ किन्नरोंमेंसे एक किन्नरका नाम (वायु० १६९.३५-३६)। (१२) कर्णका पुत्र तथा चक्ररक्षक (उत्तमौजाके हाथ यह मारा गया था (कर्ण० ४८.१८; ७५.१३)। (१३) जमदग्निका एक पुत्र जिनकी माता रेणुका थीं। पिता द्वारा दी गयी मातृवधकी आज्ञा न माननेसे इन्हें पिताने शाप दिया था (वन० ११६.२२)। परशुरामजीने पिताकी आज्ञासे माताकी हत्या कर फिर पिताके आशीर्वादसे उन्हें जीवित किया था और पिता द्वारा इन्हें दिये गये शापसे भी पिताको सन्तुष्ट कर इनका उद्धार किया था (वन० ११६.१७)।

सुष्कंत (कुन्ति)–पु० [सं०] हैहय-पुत्र धर्मनेत्रके पुत्रका नाम कुन्ति था जो संहतका पिता था (मत्स्य० ४३.९)। हैहयके पुत्रका नाम धर्मतन्त्र था। धर्मतन्त्र-पुत्र कीर्ति कहा गया है और वह संज्ञेयका पिता कहा गया है (वायु० ९४.४)। हैहय-पुत्र धर्म और धर्म-पुत्र कुन्ति था जो सहजित्का पिता तथा महिष्मान् (माहिष्मती नगरी बसानेवाला)का दादा था (विष्णु० ४.११.८)। हैहय-पुत्र धर्मनेत्रके पुत्रका नाम कुन्ति था, जो संज्ञेयका पिता तथा महिष्मान्का दादा थां (ब्रह्मां० ३.६९.४-५)। महाभारतमें भी धर्मनेत्रका उल्लेख है (आदि० ९४.६०)। वहाँ भी सुष्कंत धर्मनेत्रका लड़का है यह नहीं कहा गया है।

सुसंकुल–पु० [सं०] उत्तरभारतके एक जनपदका नाम इसे तथा यहाँके राजाको अर्जुनने जीता था (महाभा० सभा० २७.११)।

सुसंभाव्य–पु० [सं०] रैवत मनुका पुत्र (विष्णु० ३.१.२३)।

सुसत्या–स्त्री० [सं०] कालिकापुराणानुसार राजा जनककी

एक रानी।

सुस्रोता–स्त्री० [सं०] एक नदीका नाम (हरिवंश)।

सुहनु–पु० [सं०] एक दानवका नाम जो वरुणसभामें रहकर उनकी उपासना करता था (महाभा० आदि० ९४.२४)।

सुहस्त–पु० [सं०] धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (महाभा. आदि० ६७.१०२)।

सुहिता–स्त्री० [सं०] अग्निकी ७ जिह्वाओंमेंसे एक (मुंडकोपनिषद्)।

सुहृदय–पु० [सं०] भीमपुत्र घटोत्कच तथा मुर पुत्री कामकंटकटाके पुत्र वर्वरीका एक नाम जो श्रीकृष्णने रखा था (स्कंदपु० माहेश्वर० कुमारिका-खंड)।

सुहू–पु० [सं०] राजा उग्रसेनके कंस आदि ९ पुत्रोंमेंसे एक (भाग० ९.२४-२४)।

सुहोत्र–पु० [सं०] (१) सहदेवका एक पुत्र जो मद्रराज द्युतिमानकी पुत्री विजयाके गर्भसे उत्पन्न हुआ था (महाभा. आदि० ९५.८०)। (२) सम्राट् भरतके पौत्र तथा भुमन्युके पुत्रका नाम, यह पुष्करिणीका अग्रज था। इसने राजसूय, अश्वमेध आदि अनेक यज्ञ किये थे। इसकी पत्नीका नाम सुवर्णा था उससे इसके ३ पुत्र थे। (३) सुधन्वा कुरुका पौत्र तथा (विष्णु = सुधनु) का पुत्र तथा च्यवनका पिता (विष्णु० ४.१९.७८-९)। (४) पितथका एक पुत्र। (५) एक दैत्यका नाम जो प्राचीन कालमें इस भूतलका शासक था (महाभा० शांति० २२७.५१)। (६) कांचनके पुत्र जह्नुके पिता अजकके परदादा वलाकाश्वके परदादाके पिता थे (ब्रह्मां० ३.६६.३०; वायु० ९१.५३-६१; विष्णु० ४.७.३-८)।

सूकरक्षेत्र–पु० [सं०] मथुरा जिलामें स्थित एक प्राचीन तीर्थ जिसका आधुनिक नाम 'सोंरो' ही अधिक प्रसिद्ध है। वराह अवतार धारण करनेपर विष्णुने हिरण्याक्षको यहीं मारा था (ब्रह्मां० वदरीकाश्रम-माहात्म्य)।

सूकरमुख–पु० [सं०] २८ प्रधान नरकोंमेंसे एक नरकका नाम (भाग० ५.२६.७)।

सूक्ष्म–पु० [सं०] महर्षि कश्यप द्वारा दनु (दक्षपुत्री) के गर्भसे उत्पन्न दानवोंमेंसे एक विख्यात दानवका नाम यही इस भूतलमें राजा वृहद्रथके रूपमें उत्पन्न हुआ था (महाभा० आदि० ६५.२५; ६७.१८-१९)।

सूचीमुख–पु० [सं०] तामिस्र, अन्धतामिस्र आदि २८ नरकोंमेंसे एक नरकका नाम (भाग० ५.२६.७)।

सूचीवक्त्र–पु० [सं०] स्कंदका एक सैनिक अनुचर (महाभा० शल्य० ४५.७२)।

सूत–पु० [सं०] (१) एक ऋषि, जो शरशय्यापर पड़े भीष्मको देखने गये थे। ये विश्वामित्रके ब्रह्मवादी पुत्रोंमेंसे एक पुत्र थे (महाभा० शांति० ४७.१२; अनु० ४.५७)। (२) राजाओंके एक प्रकारके स्तुतिपाठक, जिन्हें वन्दी भी कहते हैं जो भाट जातिके माने गये हैं (भाग० ४.१५.२०-२६)। वेदव्यासके शिष्य सूत, जो लोमहर्षणजीके पुत्र थे, अधिक प्रसिद्ध हैं। यह वहुत बड़े विद्वान् तथा अच्छे कथावाचक थे। पौराणिक कथाओंके अच्छे ज्ञाता थे, इसलिए ब्राह्मणों तथा ऋषियोंमें इनका अच्छा आदर होता था। नैमिपारण्यमें ८८००० ऋषियोंके वीच इन्होंने पौराणिक कथा कही (भाग० १.१.४-७; २.१)।

सूततनय–पुं० [सं०]—दे० सूत-पुत्र।

सूतपुत्र–पु० [सं०] कुंती-सुतं कर्णको अधिरथ नामके सारथि और उसकी पत्नी राधाने पुत्रवत् पाला था, क्योंकि यह कुंतीके विवाह होनेके पहले ही उत्पन्न हुए थे ये वड़े ब्राह्मणभक्त तथा महादानी थे—दे० कर्ण। अधिरथके पालनेके कारण कर्णको सूत-पुत्र कहते थे। यह द्रौपदी-स्वयंवरमें भी गये थे। वहाँ लक्ष्यवेधके लिए उद्यत कर्णको देखकर सूत-पुत्र होनेके कारण इनका वरण न करनेके सम्वन्धमें द्रौपदीने कहा था (महाभा० आदि० ६७.१४३; ११०.२३; १८६.२३)।

सूति–पु० [सं०] (१) विश्वामित्रके एक पुत्र का नाम (हि० वि० को०) (२) चंद्रमाका एक नाम (चंद्रमा)।

सूत्पलावती–स्त्री० [सं०] एक नदीका नाम (मार्कण्डेयपु०)।

सूनृता–स्त्री० [सं०] (१) धर्मकी पत्नी लक्ष्मीके गर्भसे उत्पन्न पुत्रीका नाम जो महाराज उत्तानपादकी पत्नी थी उसके गर्भसे राजा उत्तानपादको ४ पुत्र ध्रुव, कीर्तिमान्, आयुष्मान् तथा वसु उत्पन्न हुए एवं दो कन्याएँ स्वरा और मनस्विनी हुईं थीं (ब्रह्मां० २.३६.८४.९०; वायु० ६२.७२)। (२) एक अप्सराका नाम (भाग०)।

सूपकर्ता–पु० [सं०] भाँति-भाँतिके व्यञ्जन वनानेवाला रसोइया [महाभा० विराट २.९)।

सूरकृत–पु० [सं०] विश्वामित्रका एक पुत्र (विष्णु०)।

सूरदास–पु० [सं०] एक अति प्रसिद्ध कृष्णभक्त महाकवि जो महात्मा भी थे। यह अकवरके समकालीन थे (सूरसागर)।

सूर्य–पु० [सं०] प्रजापति कश्यपके पुत्र जो अदितिके गर्भसे उत्पन्न हुए थे। यह आकाशके देवता माने गये हैं और इनका रथ ७ घोड़ोंका कहा गया है। इनका दूसरा नाम विवस्वान् भी मिलता है। इनकी कई पत्नियाँ कही गयी हैं। विश्वकर्माकी पुत्री संज्ञा इनकी पत्नियोंमें सर्वप्रधान हैं। इन्हींके गर्भसे 'यम' नामक पुत्र और 'यमुना' नामकी पुत्री उत्पन्न हुई थी। इनकी दूसरी पत्नीका नाम छाया था जिसके गर्भसे 'शनि' नामक पुत्र तथा तपती पुत्री हुई। कपिराज सुग्रीव और कर्ण इन्हींके औरससे उत्पन्न हुए थे। पक्षिराज गरुड़के वड़े भाई अरुण इनके सारथि हैं जो लँगड़े (अनूरु) माने गये हैं। इनके रथके ७ घोड़े शायद सूर्यकी प्रधान ७ ज्योतियाँ हैं जो सातों ७ रंगकी हैं—वैगनी, नीला, आसमानी, हरा, पीला; नारंगी; लाल। सूर्यके प्रकाशमें ये ही ७ प्रधान रंग वर्तमान है जो (प्रिज्म नामक यंत्रसे अलग अलग दिखायी पड़ते हैं। सूर्यके उपर्युक्त सातो रंग इंद्र धनुपमें भी मिलते हैं। ये सातों रंग मिलकर एक रंग हो जाते हैं और सूर्यकी धूपका वही रंग है। सूर्यके रथमें एक ही पहिया माना गया है पर घोड़े सात हैं। शायद सूर्यकी प्रधान सात रश्मियाँ ही सात घोड़े हैं और इन सातोंका मिलकर एक रूप हो आगे वढ़ना ही रथके एक ही पहियेका द्योतक है। सूर्यका काम कभी वन्द नहीं होता या यों समझिये कि सूर्यका रथ कभी भी नहीं रुकता। नियमित रूपसे विना विश्राम सृष्टिका कार्य इसके सहारे चलता ही रहता है शायद इसीसे सूर्यका सारथि अरुण रथ

छोड़ कहीं जा नहीं सकता अतः उसे शायद इसीलिए विकलांग माना गया है (सूर्य०)।

सूर्यकी उपासनाका उल्लेख मेक्सिकोकी माया जातियोंमें भी मिलता है जहाँके राजदरबारके मन्दिरके प्रवेश द्वारपर ही सूर्यकी मूर्त्ति अंकित थी।

सूर्यकान्त–पु० [सं०] एक पर्वतका नाम (मार्कण्डेयपु०)।

सूर्यचक्षु–पु० [सं०] रामायणमें इस नामका एक राक्षस है।

सूर्यतीर्थ–पु० [सं०] कुरुक्षेत्र सीमाके अन्तर्गत एक प्राचीन तीर्थका नाम, जहाँ स्नान और देवता पितरोंका पूजन कर उपवास करनेवाला मनुष्य अग्निष्टोम यज्ञका फल प्राप्त करता है (महाभा० वन० ८३.४८)।

सूर्यदत्त–पु० [सं०] विराटके भाईका नाम। इनका एक नाम शतानीक भी था। गोहरणके समय इन्होंने त्रिगर्तोंकी सेनापर आक्रमण किया था (महाभा० उद्योग० ५७.६)

सूर्यनाभ–पु० [सं०] एक दानवका नाम (हरिवंशपु०)।

सूर्यध्वज–पु० [सं०] एक राजा जो द्रौपदी-स्वयंवरमें गया था (महाभा० आदि० १८०.१०)।

सूर्यनेत्र–पु० [सं०] गरुड़का एक पुत्र (भाग०)।

सूर्यपुराण–पु० [सं०] एक छोटा-सा ग्रंथ जिसमें सूर्यका महत्त्व दिया है।

सूर्यप्रभ–पु० [सं०] श्रीकृष्णकी पत्नी लक्ष्मणाके भवनका नाम (भाग०)।

सूर्यभानु–पु० [सं०] एक यक्षका नाम, जो कुबेरका द्वारपाल था। कुबेर-भवनमें प्रवेश करते समय इसने रावणको रोकनेका प्रयत्न किया था, किन्तु रावणने इसका वध कर दिया (वाल्मी० रामा० उत्तर० १४.२५)।

सूर्यभ्राता–पु० [सं०] ऐरावत हाथीका नाम (भाग०)।

सूर्यमंडल–पु० [सं०] एक गंधर्वका नाम (रामा०)।

सूर्यलोक–पु० [सं०] एक लोक विशेष जहाँ सूर्यके भक्त तथा युद्धमें मरनेवाले भी जाते हैं (काशी-खंड; विष्णुधर्मोत्तरपु०)।

सूर्यलोचना–स्त्री० [सं०] एक गन्धर्वीका नाम (हिं० श० सा०)।

सूर्यवंश–पु० [सं०] क्षत्रियोंके एक प्रधान कुलका नाम दूसरेका नाम चंद्रवंश है। इक्ष्वाकु इस वंशके आदि पुरुष कहे जाते हैं। पुराणानुसार कश्यपके पुत्र सूर्य और सूर्यके वैवस्वत मनु जिनके पुत्र इक्ष्वाकु हुए थे। जो त्रेतायुगमें अयोध्याके राजा थे। इसी वंशमें महाराज दशरथ हुए थे जिनके यहाँ श्रीराम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न नामके चार प्रतापी पुत्र उत्पन्न हुए। श्रीराम विष्णुके अवतार माने गये हैं जिनके चमत्कारपूर्ण कार्योंका विस्तारपूर्वक विवरण रामायणमें दिया है (भाग० ९.१०.३)।

सूर्यवर्चा–पु० [सं०] एक यक्षराजका नाम जो पुनर्जन्ममें घटोत्कचका (भीमपुत्रका) पुत्र कामकंटकटा (मुरकी पुत्री)के गर्भसे उत्पन्न हुआ था और श्रीकृष्ण द्वारा मारा गया था —दे० दर्वरीक तथा (स्कंदपु० माहे० कुमारिका-खंड)।

सूर्यवर्मा–पु० [सं०] त्रिगर्त्तके एक राजाका नाम, जो अश्वमेधीय अश्वके रक्षार्थ गये हुए अर्जुनके साथ युद्धमें परास्त हुआ था। इसके भाईका नाम केतुवर्मा था, जो अर्जुन द्वारा मारा गया था (महाभा० अश्वमे० ७४.९-१५)।

सूर्यव्रत–पु० [सं०] चैत्र शुक्ल सप्तमीको होनेवाला एक व्रत जिसे प्रत्येक शुक्ला सप्तमीको विधिवत् करनेसे सूर्यलोक प्राप्त होता है (विष्णुधर्मोत्तरपु०)।

सूर्यवान्–पु० [सं०] एक पर्वतका नाम जहाँ सीताजीकी खोजके लिए सुग्रीवने हनुमान् आदि वानरोंको भेजा था (वाल्मी० रामा० किष्किन्धा० ४१.३२)।

सूर्यशत्रु–पु० [सं०] (१) एक राक्षसका नाम, जिसके भवनमें हनुमान्ने सीताकी खोज की तथा आग लगायी थी (वाल्मी० रामा० सुन्दर० ६.२१; ५४.१२)। (२) हनुमान् (रामा०)।

सूर्यश्री–पु० [सं०] एक सनातन विश्वेदेव (महाभा० अनु० ९१.३३)।

सूर्यशिष्य–पु० [सं०] (१) याज्ञवल्क्यका एक नाम। याज्ञवल्क्यने अपने गुरु वैशम्पायनके साथ कुछ विवाद हो जानेसे उनके रुष्ट होनेपर उनकी पढ़ायी वेदविद्या उगल दी थी तथा सूर्यकी आराधना कर शुक्ल यजुर्वेद या वाजसनेयी संहिता प्राप्त की थी (भाग० १२.६.७३)। (२) जनकका एक नाम (भाग० ९.१३.१३)।

सूर्यषष्ठी–स्त्री० [सं०] कार्त्तिकशुक्ला षष्ठी। उस दिन पुत्र-प्राप्ति तथा उनके दीर्घायु होनेके निमित्त व्रत किया जाता है। पंचमीको एक बार अलोना भोजन, षष्ठीको निर्जल उपवास और सप्तमीको एक समय पारणका विधान है। इसमें नदी या किसी जलाशयके तटपर जाकर सूर्यकी पूजा कर कच्चे दूधसे अर्घ्य देते हैं। सूप या डालेमें फल आदि रख स्त्रियाँ सूर्यकी ओर मुख कर खड़ी रहती हैं और उसी डालेपर अर्घ्य देती हैं। कहीं-कहीं इसे डाला छठ भी कहते हैं। विहारप्रान्तमें यह पर्व विशेष महत्त्व रखता है और पटनाका छठ पर्व प्रसिद्ध है (भविष्योत्तरपु०)। सूर्यके प्रसिद्ध चार मंदिरोंके स्थान ये हैं :—कोणार्क=उड़ीसामें समुद्रके निकट; पुण्यार्क=बाढ़के निकट पुंडारक स्टेशन; वकुलार्क=…। लोलार्क=काशीमें। सूर्यषष्ठी चैत्रशुक्ला षष्ठीको भी करते हैं, जिसे चैतीछठ कहते हैं।

सूर्यसप्तमी–स्त्री० [सं०] इसे मार्तण्ड-सप्तमी, रथसप्तमी या अचला सप्तमी भी कहते हैं और माघशुक्ला सप्तमीको मनाते हैं। इसमें सूर्यका पूजन कर यथाशक्ति गोदान करनेका विधान है जिससे अरिष्टोंकी शांति होती है। कल्पारम्भके समय इसी दिन सूर्यने अपने सात घोड़ोंके रथपर सवार हो संसारको प्रकाशित करनेके हेतु अपना भ्रमण आरम्भ किया था, अतः तभीसे इस तिथिके महत्त्वका प्रारम्भ समझना चाहिये (सूर्यपु०; भविष्योत्तरपु०)।

सूर्यसावर्णि–पु० [सं०] संज्ञाके गर्भसे उत्पन्न सूर्यके पुत्र जो आठवें मनु कहे गये हैं (मार्कण्डेयपु०)।

सूर्यसावित्र–पु० [सं०] एक सनातन विश्वेदेवका नाम (महाभा० अनु० ९१.३४)।

सूर्यसूक्त–पु० [सं०] सूर्यकी स्तुतिका एक ऋग्वेदका सूक्त (ऋग्वेद)।

सूर्यस्तुत–पु० [सं०] एक दिनमें होनेवाला एक यज्ञ।

सूर्याकर–पु० [सं०] एक प्राचीन देशका नाम (रामा०)।

सूर्याक्ष–पु० [सं०] (१) रामायणके अनुसार एक बन्दरका नाम। लक्ष्मणने किष्किन्धापुरीकी शोभा देखते हुए इनके

भवनको भी देखा था (वाल्मी० रामा० किष्किन्धा० ३३.१०)। महाभारतके अनुसार एक राजाका नाम, जो क्रथ नामक असुरके अंशसे उत्पन्न हुआ था (आदि० ६७.५७)।

सूर्याद्रि–पु० [सं०] एक पर्वतका नाम (मार्कण्डेयपु०)।

सूर्यानन–पु० [सं०] रामकी सेनाके एक वानरका नाम, जिसे इन्द्रजित्‌ने आहत कर दिया था (वाल्मी० रामा० लंका० ७३.५९)।

सूर्यापीड़–पु० [सं०] परीक्षित्‌का एक पुत्र (महाभा०)।

सूर्योद्यान–पु० [सं०] सूर्यवन नामक तीर्थस्थानका एक नाम (सूर्यपु०)।

सृंजय–पु० [सं०] (१) ये महाराज श्वितिके पुत्र तथा पर्वत और नारद दोनों ऋषियोंके मित्र थे (महाभा० आदि० १.२२५; सभा० ८.१५; द्रोण० ५५.५)। इनकी एक पुत्री थी जो नारद मुनिको ब्याही थी। नारदके वरसे इन्हें सुवर्णष्ठीवी नामक एक पुत्र हुआ था, जिसका मूत्र, थूक सभी सुवर्णमय होता था, अतः इन्हें चोर उठा ले गये और मार दिया (द्रोण० ५५.१३-२४)। पर नारद मुनिने पुनः जीवित कर दिया था (द्रोण० ७१.८; ब्रह्मवैवर्त्तपु०)। (२) पुराणानुसार एक वंश विशेषका नाम जिसमें धृष्टद्युम्न आदि उत्पन्न हुए थे। महाभारतके युद्धमें यह पांडवोंकी ओरसे लड़े थे (महाभा० आदि० ६३.१०८-११०)। (३) सुचन्द्रपुत्र धूम्राश्वके पुत्रका नाम (वाल्मी० रामा० बाल० ४७.१४)। (४) एक दक्षिण भारतीय जनपद (भीष्म० ९.६३)।

सृंजयी–स्त्री० [सं०] हरिवंशके अनुसार भजमानकी दो पत्नियोंके नाम।

सृमर–मृगमंदाकी सन्तानोंमेंसे एकका नाम (वाल्मी० रामा० अरण्य० १४.२३)।

सृविंद–पु० [सं०] ऋग्वेदके अनुसार एक दानव विशेष जिसे इन्द्रने मारा था (ऋग्वेद)।

सृष्टि–पु० [सं०] (१) उग्रसेनके कंस आदि नौ पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (भाग० ९.२४.२४)।–स्त्री० एक देवी, जो ब्रह्माकी सभामें रहकर उनकी उपासना करती है (महाभा० सभा० ११.४७)।

सेक–पु० [सं०] एक देशका नाम, जिसे दक्षिण दिग्विजयके समय सहदेवने जीता था (महाभा० सभा० ३१.९)।

सेतु–पु० [सं०] द्रुह्युके दो पुत्रोंमेंसे एक पुत्र, अरुद्धके पिता तथा गांधारके दादाका नाम (ब्रह्मां० ३.७४.७, ९; वायु० ९९.७-९)।

सेतुबंध–पु० [सं०] श्रीरामने लंकापर आक्रमण करनेके समय समुद्रपर जो पुल बँधवाया था उसका नाम। नल और नीलने अन्य बन्दरोंकी सहायतासे श्रीरामकी सेनाको पार ले जानेके लिए यह पुल बनवाया था (वाल्मी० रामा० लंका० २२.४०-४१; रामच० मानस सुंदर० ५९.१-२; लंका० दो० १)। इस स्थानपर शिवका एक मंदिर है, जो 'सेतुबन्ध रामेश्वर मंदिर'के नामसे प्रसिद्ध है। यह हिन्दुओंके मुख्य चार धामोंमेंसे एक है। आजकल कन्या कुमारी और सिंहलके बीचके छिछले समुद्रमें कहीं-कहीं चट्टानें निकली हैं। इसे सेतुबन्धका ही खंडावशेष बतलाते हैं। लंका विजय हो जानेपर विभीषणकी प्रार्थनापर इस सेतुको श्रीरामने धनुषसे इसके १-१ योजनके टुकड़े कर दिये थे (पद्मपु० सृष्टि-खंड ३८.२८-३२)।

सेदुक–पु० [सं०] महाभारतके अनुसार एक प्राचीन राजाका नाम जो नीतिमार्गपर चलनेवाले तथा अस्त्र और उपास्त्रोंकी विद्यामें अति निपुण थे। इन्होंने अपने निकट आये हुए गुरुदक्षिणार्थी ब्राह्मणको राजा वृषदर्भके समीप भेज दिया था (महाभा० वन० १९६.२-६)।

सेन–पु० [सं०] एक नाईका नाम जो रीवाँ-नरेश राजारामकी सेवा करता था। यह बड़ा भक्त था और एक दिन भगवान्‌की सेवामें लगा रह गया, राजा साहबके यहाँ नहीं जा सका। भगवान्‌ने स्वयं इसका रूप धर राजाकी सेवा की, पर किसीको यह रहस्य मालूम नहीं हुआ। बात खुलनेपर यह विरक्त हो गया और राजा भक्त हो गये (भक्तमाल)।

सेनक–पु० [सं०] शंबर राक्षसका एक पुत्र (हरिवंश)।

सेनजित्–पु० [सं०] (१) श्रीकृष्णका एक पुत्र (भाग०)। (२) सुक्षत्रके ५६ वर्ष राज्य करनेके पश्चात् तत्पुत्र बृहत्कर्मा राजा हुआ उसने २३ वर्ष राज्य किया। तदुपरान्त उसका पुत्र सेनजित् (सेनाजित्) राजा हुआ (ब्रह्मां० ३.७४.११३; मत्स्य० ४८.१००)। (३) कृशाश्वका एक पुत्र—दे० कृशाश्व। (४) पुरुवंशी जगद्रथ-सुत विश्वजित्‌का पुत्र (विष्णु० ४-१९.३४-३५)। (५) एक प्राचीन राजाका नाम। व्यासजीने इनके शोकपूर्ण उद्गारोंका कारुणिक वर्णन किया है। पुत्रशोकाकुल सेनजित्‌ने एक ब्राह्मणके साथ आलाप किया (महाभा० शांति० २५.१४-२८; अध्याय १७४)।

सेनजित्–स्त्री० [सं०] एक अप्सराका नाम (भाग०)।

सेनस्कंध–पु० [सं०] हरिवंशके अनुसार शंबर राक्षसका एक पुत्र।

सेनानी–पु० [सं०] (१) कार्तिकेयका एक नाम (स्कंदपु०)। (२) धृतराष्ट्रका एक पुत्र (महाभा० आदि० ६७.९७)। (३) शंबर राक्षसका एक पुत्र (हरिवंश)।

सेनामुख–पु० [सं०] सेना विशेष। पत्तिकी तिगुनी सेनाको सेनामुख कहते हैं (महाभा० आदि० २.२०)।

सेनाबिन्दु–पु० [सं०] एक क्षत्रिय राजाका नाम, जो तुहुण्ड नामक दैत्यके अंशसे उत्पन्न हुआ था। यह द्रौपदी-स्वयंवरमें गया था (महाभा० आदि० ६७.१९-२०; १८५.९)। अर्जुनने उत्तरदिग्विजयके समय उलूक राजाके साथ इसपर आक्रमण कर इसे राज्यच्युत किया था (सभा० २७.१०)।

सेनापति–पु० [सं०] (१) कार्तिकेयका एक नाम, जो महादेवके पुत्र कहे जाते हैं। इनका लालन-पालन चंद्रमाकी पत्नी कृत्तिकाने किया था, अतः इन्हें कार्तिकेय कहते हैं। यह देवसेनापति हैं—दे० कार्तिकेय। (२) धृतराष्ट्रके १०० पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (महाभा० आदि० ६७.९७; ११६.९)।

सेनाहन–पु० [सं०] शंबर दैत्यका एक पुत्र (रामा०, हरिवंश)।

श्येनी–स्त्री० [सं०] दक्ष प्रजापतिकी नतनी और कश्यप ऋषिकी एक पुत्री जो दक्ष प्रजापतिकी पुत्री ताम्राके गर्भसे उत्पन्न पाँच कन्याओंमेंसे एक थी, जो पुलह ऋषिको ब्याही

थी। यह संपाति और जटायुकी माता थी (वायु० ६६.५४; ६९.३२५-३२६)।

सेनी–पु० [सं०] अज्ञातवासके समय सहदेव (पांडव)का नाम। जब यह अपने भाइयों तथा द्रौपदी सहित मत्स्य-देशाधिपति विराटके यहाँ रहते थे, वहाँ इन्होंने अपना परिचय अरिष्टनेमि नामक वैश्यके रूपमें दिया था। (महाभा० विराट १०.५-१६) तथा—दे० मत्स्यदेश)।

सैंधव–पु० [सं०] सिन्धु देशके निवासी अथवा अधिपतिका नाम (महाभा० वन० ५१.२५)।

सैंधवायन–पु० [सं०] विश्वामित्र ऋषिके ब्रह्मवादी पुत्रोंमेंसे एकका नाम (महाभा० ४.५१)।

सैंधवारण्य–पु० [सं०] एक प्राचीनतीर्थका नाम (महाभा० वन० ८९.१५)।

सैम–पु० [सं०] मछुओंके एक देवताका नाम (हि० श० सा०)।

सैरंध्री–स्त्री० [सं०] द्रौपदीका 'अज्ञातवास'का नाम। पाँचों पांडवोंने अज्ञातवासके समय मत्स्यदेशाधिपति विराटके यहाँ सेवावृत्ति स्वीकार की थी और महाभारतके अनुसार द्रौपदी इसी नामसे रनवासमें बाल-चोटी तथा शृंगार करनेके लिए रख ली गयी। शर्त यह थी कि न तो वह जूठा भोजन करेगी और न पैर दबायेगी। इसी अवधिमें विराटके सालेने द्रौपदीसे कुछ छेड़खानी की और बात बढ़ गयी, फलतः भीमने कीचकका वध कर डाला (महाभा० विराट० ३.१८-१९); तथा—दे० द्रौपदी।

सैरिंध्र–पु० [सं०] एक प्राचीन जनपद (बृहत्संहिता)।

सैरिष्ट–पु० [सं०] एक प्राचीन जनपदका नाम (मार्कंडेयपु०)।

सैलि–पु० [सं०] एक प्राचीन जनपदका नाम (बृहत्संहिता)।

सैसिकूत–पु० [सं०] एक प्राचीन जनपदका नाम (महाभा०)।

सैसिरिंध्र–पु० [सं०] एक भारतीय जनपदका नाम (महाभा० भीष्म० ९.५७)।

सोदर्यवान्–पु० [सं०] जरासन्धका ध्वजा-पताकासे सुसज्जित दिव्य रथ, जिसे इन्द्रने उसके मारे जानेके पश्चात् अपने अधिकारमें कर लिया था। इसमें दो महारथी एक साथ बैठकर युद्ध कर सकते थे। इसमें बारबार शत्रुओंपर आघात करनेकी सुविधा थी। यह दर्शनीय तथा दुर्जय था (महाभा० सभा० २४.३.५२)।

सोम–पु० [सं०] (१) ऋग्वेदके अनुसार एक प्रकारका पेय, जो देवदानव दोनोंको प्रिय था। यह एक प्रकारकी लताका रस है, जो देवताओंके भोग लगानेमें काम आता था और प्रसादरूपेण इसे ब्राह्मण लोग भी ग्रहण करते थे। इससे उत्तेजना मिलती, अतः यह देव-दानव सबका प्रियपेय बन गया। (२) चन्द्रमाका एक नाम, जिनमें कुछ दिनोंके पश्चात् सोमरसके कतिपय गुणोंका आरोप होने लग गया था। पुराणानुसार चंद्रमामें अमृत है। शुक्लपक्षमें चन्द्रमा कला-कला बढ़ता है और कृष्णपक्षमें एक-एक कला करके देवता लोग १५ कला तो पी जाते हैं, १६ वीं कला अमावस्याको जल और ओषधियोंमें प्रवेश कर जाती है—दे० कला। अतः चन्द्रमाको ओषधिपति कहते हैं। चन्द्रमा वनस्पतियोंका स्वामी तथा यज्ञों और ओषधियोंका अधिष्ठाता भी बन बैठा। अतः चन्द्रमाका नाम सोम पड़ गया। पुराणोंमें कहीं यह अत्रि-सुत, कहीं धर्मपुत्र, कहीं समुद्रके पुत्र और कहीं प्रभाकरके पुत्र कहे गये हैं। विष्णुपुराणानुसार यह ब्राह्मणोंके राजा हैं, लेकिन बृहदारण्यमें इन्हें क्षत्रिय कहा गया है। रोहिणीको अधिक चाहनेके कारण दक्षके शापसे इन्हें राजयक्ष्मा हो गया था, पर दक्षने अपनी कन्याओंकी प्रार्थनापर चन्द्रमाके 'क्षय'को अस्थायी कर दिया जिससे वह १५ दिन घटता और १५ दिन बढ़ता है। देवगुरु बृहस्पतिकी पत्नी ताराके साथ रमण करनेके कारण शंकरने त्रिशूलसे इनके शरीरका दो भाग कर दिये और इन्हें 'भग्नात्मा'की उपाधि मिल गयी (विष्णुपु०, बृहदारण्यक आदि)। क्षयरोगग्रस्त होनेपर सोमने ब्रह्माके आदेशसे प्रभासक्षेत्रमें मृत्युञ्जयमन्त्रका जप कर शिवको प्रसन्न कर अपनेको रोगमुक्त कराया था। देवताओंकी प्रसन्नताके लिए शंकर यहीं प्रकट हुए तथा सोमेश्वर नामसे विख्यात हुए (शिवपु० कोटिरुद्र-संहिता, अध्याय ८-१४)। (३) आठ वसुओंमेंसे एक (ब्रह्मां० ३.३.२१)। (४) एक वैदिक देवताका नाम। ऋग्वेदका प्रायः पूरा एक मण्डल ही इसके माहात्म्य, प्रयोग और गुणगानसे भरा है। इसे सर्वशक्तिशाली, सर्वरोगनाशक, अतुलसम्पत्तिदायक आदि कई गुणोंसे विभूषित किया गया है। सोम नामका एक देवता ही मान लिया गया जो सोमरसका अधिष्ठाता देवतातक कह दिया गया। यह वैदिक देवता यूनियनोंके बैसकडाइओनिससके समान हो गया। उस समयके आर्य लोग प्रायः प्रकृतिके ही उपासक थे। प्रकृतिकी इस देनसे उनमें एक नयी स्फूर्त्ति, एक नयी उत्तेजना जागृत हो जाती थी। अतः इसमें कुछ दैवी शक्तिका अनुमान कर लेना उस समयमें अस्वाभाविक न था। (५) अत्रि ऋषिके पुत्रका नाम जिनका राजयक्ष्मा अत्रिने श्राद्धादिसे छुड़ाया था (ब्रह्मां० ३.१०.१११; वायु० ७३.६३)।

सोमक–पु० [सं०] (१) भागवतके अनुसार श्रीकृष्णके कालिन्दीके गर्भसे उत्पन्न दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (भाग० १०.६१.१४)। (२) सोमवंशी क्षत्रियोंका समुदाय (महाभा० आदि० १४०.२२)। (३) पुरुवंशोत्पन्न सौदासके पौत्र तथा सहदेवके पुत्र जो १०० पुत्रोंके पिता थे। जन्तु सबसे बड़ा तथा पृषत सबसे छोटा था। पृषतका पुत्र द्रुपद था जो धृष्टद्युम्नका पिता था (विष्णु० ४.१९.७१-७३)। यह राजा यम-सभामें रहकर यमकी उपासना करते थे। ये पांचाल देशके सुप्रसिद्ध दानी राजा थे। इन्होंने सौ पुत्रोंकी प्राप्तिके लिए अपने इकलौते पुत्रकी बलि देकर, यज्ञानुष्ठान किया था तथा इनको सौ पुत्रोंकी प्राप्ति हुई थी। इन्होंने अपने पुरोहितके साथ नरक और पुण्यलोकोंको भोगकर छुटकारा पाया था (महाभा० वन० १२८.२-१८)। इन्होंने अपने जीवनमें कभी मांसभक्षण नहीं किया था। गोदानसे इन्हें स्वर्ग प्राप्त हुआ था (अनु० ७६.२५-२७; ११५.६३)।

सोमकल्प–पु० [सं०] पुराणानुसार २१ वाँ कल्प (भाग०)।

सोमकीर्त्ति–पु० [सं०] धृतराष्ट्रके १०० पुत्रोंमेंसे एक पुत्र तथा दुर्योधनका भाई (महाभा० आदि० ६७.९९)।

सोमकुल्या–स्त्री० [सं०] मार्कण्डेयपुराणानुसार एक नदी।

सोमकेश्वर–पु० [सं०] भरद्वाज ऋषिके शिष्य एक राजर्षि (वामनपु०)।

सोमगिरि–पु० [सं०] महाभारतके अनुसार एक प्राचीन पहाड़, जो सायं-प्रातः स्मरणीय है (अनु० १६५.३३)। रामायणानुसार यह सिन्धु नद और समुद्रके संगमपर स्थित सौ शिखरोंसे युक्त एक महान् पर्वत है। इस क्षेत्रमें सीतान्वेषणके लिए सुग्रीवने सुषेण आदि वानरोंको भेजा था (वाल्मी० रामा० किष्किन्धा० ४२.१५)।

सोमतीर्थ–पु० [सं०] (१) महाभारतके अनुसार कुरुक्षेत्रकी सीमाके अन्तर्गत एक प्राचीन तीर्थ, जो जयन्तीमें है। वहाँ स्नान करनेसे मनुष्यको राजसूयका फल प्राप्त होता हैं (महाभा० वन० ८३.१९)। (२) कुरुक्षेत्रकी सीमाके अन्तर्गत एक प्राचीन तीर्थ, जिसमें स्नान करनेसे सोमलोककी प्राप्ति होती है (वन० ८३.११४-१५)। (३) एक तीर्थस्थान। बदरिकाश्रममें स्थित पंचतीर्थके बाद सोमकुंड है, जहाँ चन्द्रमाने तपस्याकर विष्णुका दर्शन पाया था। यहाँ चंद्रमाने "ॐ नमो नारायणाय" नामक अष्टाक्षर मंत्रका जप किया था (स्कन्दपु० वैष्णव० बदरी-माहात्म्य०)।

सोमदत्त–पु० [सं०] कुरुवंशी महाराज प्रतीपके पौत्र तथा वाह्लीकके पुत्रका नाम। इनके तीन पुत्र थे भूरि, भूरिश्रवा और शल। ये अपने तीनों पुत्रोंके साथ द्रौपदी-स्वयंवरमें पधारे थे (महाभा० आदि० १८५.१४-१४)। महाभारत-युद्धमें सात्यकि द्वारा इनका वध किया गया (द्रोण० १२०. ३३; विष्णु० ४.२०. ३१-३३)।

सोमदा–स्त्री० [सं०] एक गन्धर्वीका नाम जो उर्मिलाकी पुत्री थी तथा चूली मुनिकी उपासना करती थी। इसकी सेवासे प्रसन्न होकर मुनिने इसे मानसिक तपसे प्रकट ब्रह्मदत्त नामक पुत्र प्रदान किया (वाल्मी० रामा० बाल० ३३. १२-१८)।

सोमदेव–पु० [सं०] काश्मीरके एक विद्वान् जो कथासरित्सागरके रचयिता थे (ग्यारहवीं शताब्दी)।

सोमधेनु–पु० [सं०] एक प्राचीन जनपदका नाम (महाभा० सभा० ३०.१०)।

सोमनंदी–पु० [सं०] शंकरका एक अनुचर। देवीका सिंह, जिसने उमा सहित महादेव और नंदीको आनन्दित किया था, अतः सोमनंदी कहलाया। यह पार्वतीके अन्तःपुरका द्वारपाल था (शिवपु० वायवीय-संहिता अध्या० २७)।

सोमनंदीश्वर–पु० [सं०] एक शिवलिंग विशेष (शिवपु० तथा काशीखं०)।

सोमनाथ–पु० [सं०] प्रसिद्ध द्वादश ज्योतिर्लिंगोंमेंसे एक, जिसका मंदिर काठियावाड़के पश्चिम तटपर स्थित प्रभासक्षेत्रके सोमनाथ नगरमें है। सोम अपनी सब पत्नियोंसे रोहिणीको अधिक मानते थे, अतः दक्षने उन्हें शाप दे क्षयरोगग्रस्त कर दिया था। सोमने ब्रह्माके आदेशसे इसी प्रभासक्षेत्रमें मृत्युंजयमंत्रका जप कर शिवको प्रसन्न कर अपनेको रोगमुक्त कराया था। देवताओंकी प्रसन्नताके लिए शंकर यहीं प्रकट हुए तथा सोमेश्वर नामसे विख्यात हुए (शिवपु० कोटिरुद्र-संहिता, अध्याय ८-१४)।

सोमप–पु० [सं०] (१) एक सनातन विश्वेदेवाका नाम (महाभा० अनु० ९१.३४)। (२) कुमार कार्तिकेयका एक सैनिक अनुचर (शल्य० ४५.७०)। (३) एक असुरका नाम (हरिवंश)। (४) जरासंध-पुत्र सहदेवका पुत्र, जो श्रुतिश्रवाका पिता था (विष्णु० ४.१९.८२-८४)। (५) एक प्राचीन जनपद (बृहत्संहिता)।

सोमपद–पु० [सं०] (१) हरिवंशके अनुसार एक लोकका नाम। (२) महाभारतके अनुसार एक तीर्थस्थानका नाम, जहाँ माहेश्वरपदमें स्नान करनेसे अश्वमेध यज्ञका फल प्राप्त होता है (वन० ८४.११९)।

सोमपा–पु० [सं०] सात प्रकारके पितृगणोंमेंसे एक प्रकारके पितृगण। इनकी चार मूर्त्त पितृगणोंमें गणना है। इनके तृप्त होनेसे सोमदेवताओंकी तृप्ति होती है। ये सभी पितृगण ब्रह्माजीकी सभामें उपस्थित हो प्रसन्नतापूर्वक उनकी उपासना करते हैं (महाभा० सभा० ११.४७-४९)।

सोमपाल–पु० [सं०] सोमरक्षक होनेके नाते गन्धर्वोंका एक नाम —दे० गन्धर्व तथा (भाग०)।

सोमप्रदोष–पु० [सं०] स्कन्दपुराणानुसार एक व्रतविशेष जिसमें दिनभर उपवास करके संध्याको (प्रदोषो रजनीमुखन्) भगवान् शंकरकी पूजा करनेके उपरांत भोजन करते हैं। इसमें दिनभर द्वादशी तदुपरांत त्रयोदशी रहती है। संध्याको त्रयोदशीका रहना आवश्यक है। यह संतानके लिए होता है और मासमें दो बार (पाक्षिक प्रदोष) पड़ता है (स्कंदपु०)।

सोमभवा–स्त्री० [सं०] नर्मदा नदीका एक नाम, जो चंद्रमा-पुत्री कही गयी हैं—दे० नर्मदा।

सोमभू–पु० [सं०] चंद्रमाके पुत्र-बुधका नाम—दे० बुध।

सोमभोजन–पु० [सं०] गरुड़का एक पुत्र—दे० गरुड़।

सोमवती अमावस्या–स्त्री० [सं०] सोमवारको पड़नेवाली अमावस्या, जो पुराणानुसार पुण्यतिथि मानी जाती है। उसमें गंगानान, दानादिका बड़ा माहात्म्य कहा गया है।

सोमवर्चा–पु० [सं०] (१) एक सनातन विश्वेदेवका नाम (महाभा० अनु० ९१.३३, ३६)। (२) एक गंधर्वका नाम (हरिवंश)।

सोमवारव्रत–पु० [सं०] यह व्रत चैत्र, वैशाख, श्रावण, कार्त्तिक और मार्गशीर्षमें होता है पर विशेषकर श्रावणके 'सोमप्रदोष' अधिक प्रसिद्ध है। इसमें शिव-पार्वतीके पूजन तथा एकभुक्त भोजनका विधान है (स्कंदपु० तथा शिव-रहस्य)।

सोमशर्मा–पु० [सं०] सुमनाका पति तथा सुव्रतका पिता। सुव्रत पूर्व जन्ममें धर्मांगद नामक राजकुमार था, जो बड़ा कृष्णभक्त था। पुत्रकी सहायतासे यह (सोमशर्मा) पत्नीसहित स्वर्ग गये थे।

सोमश्रवा–पु० [सं०] एक तपस्यानिरत मुनिका नाम, जो श्रुतश्रवाके पुत्र थे। इनको पुरोहित बनानेके लिए जनमेजयने इनके पितासे प्रार्थना की। ये सर्पिणीके गर्भसे उत्पन्न महातपस्वी तथा स्वाध्यायशील थे (महाभा० आदि० ३०.१३-२०)।

सोमसद–पु०[सं०] विराट्के पुत्र तथा साध्यगणके पितर—मनु।

सोमसेन–पु० [सं०] शंबर राक्षसका एक पुत्र (रामाय०; महाभा०)।

सोमा–पु० [सं०] (१) एक अप्सराका नाम, जिसने अर्जुनके जन्मोत्सवमें आकर नृत्य किया था (महाभा० आदि० १२२.६१)। (२) मार्कण्डेय पुराणानुसार एक नदीका नाम।

सोमापि–पु० [सं०] पुराणानुसार सहदेवका एक पुत्र—दे० सहदेव।

सोमायन–पु० [सं०] एक व्रत जिसमें ३ दिनोंतक उपवास कर २७ दिनोंतक केवल दूध पीकर रहनेका विधान है (मार्कण्डेयपु०)।

अन्य मतानुसार ७ दिन गायके चारों स्तनोंका, ७ दिन तीन स्तनोंका, ७ दिन दो स्तनोंका और ६ दिन एक स्तनका दूध पीये और ३ दिनोंका उपवास करे। इसमें धारोष्ण दूध पीनेका विधान है (याज्ञवल्क्य)।

सोमावती–स्त्री० [सं०] चन्द्रमाकी माताका नाम—दे० चन्द्रमा।

सोमावर्त–पु० [सं०] एक स्थानका नाम (वायुपु०)।

सोमाश्रम–पु० [सं०] महाभारतके अनुसार एक तीर्थस्थान, जिसकी यात्रा करनेसे मनुष्य इस भूतलपर पूजित होता है (वन० ८४.१५७)।

सोमाश्रयायण–पु० [सं०] गङ्गातटवर्ती एक प्राचीन तीर्थस्थानका नाम। एकचक्रा नगरीसे पांचाल जाते समय यहाँ पाण्डव आये थे। चित्ररथ गन्धर्व यहाँ स्त्रियोंके साथ जलक्रीड़ा करता था। वह अर्जुन द्वारा परास्त किया गया था (महाभा० आदि० १६९.३-३३)।

सोमाहुति–पु० [सं०] मंत्रद्रष्टा भार्गव ऋषिका एक नाम।

सोमेश्वर–पु० [सं०] काशीमें स्थित एक शिवलिंगका नाम। कहते हैं भगवान सोमने यह शिवलिंग प्रतिष्ठित किया था (स्कन्दपु० काशी-खण्ड)।

सोहंजि–पु० [सं०] भागवतके अनुसार कुंतिभोजका एक पुत्र (भाग० ९.२३.२१)।

सौकरतीर्थ–पु० [सं०] एक प्राचीन तीर्थस्थान।

सौगन्धिक–पु० [सं०] कुवेरका एक वन, जिसकी सुगन्धिके साथ पवन कुवेरसभामें कुवेरकी सेवा करता है (महाभा० सभा० १०.७)।

सौगंधिकवन–पु० [सं०] महाभारतके अनुसार एक तीर्थस्थानरूप वन, जहाँ ब्रह्मा आदि देवता, तपोधन मुनि, सिद्ध, गन्धर्व, नाग, किन्नर आदि निवास करते हैं। वहाँ जाते ही मनुष्यके सब पापताप छूट जाते हैं (वन० ८४.४-६)।

सौगंधिका–स्त्री० [सं०] धनपति कुवेरकी नगरीमें इस नामकी एक नदी है (वाल्मी० रामा०)।

सौगत–पु० [सं०] धृतराष्ट्रका एक पुत्र (महाभा०)।

सौति–पु० [सं०] रोमहर्षणके पुत्र उग्रश्रवाका नाम, जिन्होंने नैमिषारण्यमें शौनक आदि ऋषियोंको महाभारतकी कथा सुनायी थी (महाभा० आदि० १.५)।

सौत्रामणी–पु० [सं०] सुत्रामा (इन्द्र) देवता है जिसका एक यज्ञ जो इन्द्रके प्रीत्यर्थ किया जाता है (यज्ञतत्त्वप्रकाश)।

सौदामनी–स्त्री० [सं०] (१) विष्णुपुराणानुसार विनताके गर्भसे उत्पन्न कश्यप ऋषिकी एक पुत्री। (२) बालरामायणके अनुसार एक अप्सराका नाम।

सौदास–पु० [सं०] (१) पुरुवंशोत्पन्न दिवोदासके मित्रायु, मित्रायुके च्यवन और च्यवनके सुदास पुत्र हुए जिनका पुत्र सौदास था। यह सहदेवका पिता था (विष्णु० ४.१९.६९-७१)। (२) इक्ष्वाकुवंशोत्पन्न राजा ऋतुपर्णके परपौत्र, सर्वकामके पौत्र तथा सुदासके पुत्रका नाम जिन्हें मित्रसह या कल्मापपाद भी कहते हैं (विष्णु० ४.४.३८-४०, ५७)।

सौधक–पु० [सं०] एक गंधर्वका नाम, जो परावसुगंधर्वका पुत्र था (भाग० ८.११.४४; ब्रह्मां० २.२३.१३; वायु० ७९.१३)।

सौधन्वा–पु० [सं०] ऋभुका एक नाम जो सुधन्वाके पुत्र थे—दे० ऋभु।

सौनंद–पु० [सं०] श्रीकृष्णके भाई बलदाऊका मूसल, (भाग०१०.६७.१६; ७८.४)।

सौनंदा–स्त्री० [सं०] वत्सप्रीकी पत्नीका नाम। कहते हैं यह बड़ी रूपवती थी (मार्कण्डेयपु०)।

सौपर्ण–पु० [सं०] विष्णुवाहन गरुड़के अस्त्रका नाम (भाग०)।

सौपाक–पु० [सं०] एक वर्णसंकर जाति (महाभा०)।

सौवल्य–पु० [सं०] एक प्राचीन जनपदका नाम (महाभा०)।

सौभ–पु० [सं०] (१) महाभारतके अनुसार राजा हरिश्चन्द्रकी नगरीका नाम। ऐसी कल्पना है कि यह आकाशमें स्थित है (महाभा०)। (२) महाभारतमें इस नामके और देश भी मिलते हैं जैसे शाल्वोंका एक नगर।

सौभग–पु० [सं०] बृहच्छोकके एक पुत्रका नाम (भाग०)।

सौभद्र–पु० [सं०] एक तीर्थ (महाभा०)।

सौभरि–पु० [सं०] एक बहुत बड़े तपस्वीका नाम, जिनका उल्लेख भागवतमें मिलता है। एक बार इनमें मीनराज (मछली)का गार्हस्थ-सुख देखकर भोग-लालसा जागी और तपोबलसे अपना बुढ़ापा दूर कर एक सुन्दर युवक हो गये। मान्धाताकी ५० पुत्रियोंके साथ इनका विवाह हुआ जिनके गर्भसे ५००० पुत्र उत्पन्न हुए। यह बह्वृचाचार्य ऋषि एक बार एकान्तमें मछलीको देखकर हुई अपनी आत्म प्रच्युतिका विचार कर सांसारिक सुखोंको त्याग फिर भजन करने लगे। अन्तमें यह ईश्वरमें लीन हो गये और इनकी पत्नियाँ सहगामिनी हुईं (भाग० ९.६.३९-४४, ४९-५०)।

सौभाग्यतृतीया–स्त्री० [सं०] भाद्रपद शुक्ला तृतीया जो अति पवित्र मानी गयी है (विष्णु० तथा व्रतपरिचय)।

सौभाग्यव्रत–पु० [सं०] फाल्गुन शुक्ला तृतीयाको किया जानेवाला एक व्रत जिसे स्त्री-पुरुष दोनों करते हैं (वाराहपु०)।

सौमन–पु० [सं०] एक अस्त्र विशेष (रामायण)।

सौमनस–पु० [सं०] (१) पुराणानुसार पश्चिम दिशाका दिग्गज (भाग०)। (२) एक पर्वतका नाम जो उदयगिरिका एक शिखर है। इसकी चौड़ाई एक-योजन और ऊँचाई दस योजन है। सुग्रीवने सीताजीकी खोज करनेके निमित्त विनत नामक वानरको इस ओर भेजा था (वाल्मी० रामा० किष्किन्धा० ४०.५५)।

सौमनसा—स्त्री० [सं०] रामायणके अनुसार एक नदीका नाम।

सौमनस्य—पु० [सं०] (१) श्राद्धमें पुरोहितके हाथमें फूल देनेका कृत्य (भाग०)। (२) एक वर्पका नाम जिसके देवता सौमनस्य हैं। यह वर्प प्लक्षद्वीपके अन्तर्गत है (भाग०)।

सौम्य—पु० [सं०] पुराणानुसार एक द्वीपका नाम।

सौम्यकृच्छ्रव्रत—पु० [सं०] पहले दिन प्राणरक्षा प्रमाण पिण्याक (तिलोंकी खली), दूसरे दिन आचाम (उबाले चावलोंका माँड़), तीसरे दिन तक्र (मठा), चौथे दिन जल और पाँचवें दिन सत्तू पीये। अन्तमें ३ दिन उपवास करे (प्रायश्चित्तेन्दुशेखर)।

सौम्यगिरि—पु० [सं०] हरिवंशके अनुसार एक पर्वतका नाम।

सौरधर्मोक्तरविवारव्रत—पु० [सं०] यह व्रत मार्गशीर्षसे वर्ष पर्यंत किया जाता है। १२ दलका कमल बना उसपर हर महीने सूर्यका पूजन करे तो इससे सब मनोरथ सिद्ध होते हैं (स्कंदपु०)।

सौरनक्त—पु० [सं०] नरसिंहपुराणानुसार एक व्रत जो रविवारको हस्त नक्षत्र होनेपर किया जाता है (नरसिंहपु०)।

सौरभेयी—स्त्री० [सं०] एक अप्सराका नाम जिसने पंचाप्सरतीर्थमें सातकर्णि मुनिकी तपस्या भंग की थी और शापवश वहीं स्तंभेशतीर्थमें ग्राहरूपमें रहती थी। इसका उद्धार अर्जुन (पांडव)ने किया था (स्कंदपु० कुमारिकाखण्ड)। महाभारतके अनुसार यह वर्गा नामक अप्सराकी सखी थी। ब्राह्मणके शापसे यह ग्राहभावको प्राप्त हुई थी। अर्जुनने इसका ग्राहयोनिसे उद्धार किया था (आदि २१५.२०-२३; २१६.२१)।

सौरसेय—पु० [सं०] कार्त्तिकेय स्वामीका एक नाम (स्कंदपु०)।

सौरी—स्त्री० [सं०] संवरणकी पत्नी, कुरुक्षेत्राधिपति कुरुकी माता तपतीका एक नाम, यह सूर्यकी पुत्री थी (भाग० ९.२१.३-४)।

सौवर्चला—स्त्री० [सं०] रुद्रकी पत्नीका नाम (शिवपु० तथा स्कंदपु०)।

सौवीर—पु० [सं०] (१) एक समृद्धिशाली देशका नाम, जहाँ महाराज दशरथका आधिपत्य था (वाल्मी० रामा० अयोध्या० १०.३८)। (२) सिंधु अथवा उससे लगा देश, जहाँका राजा विपुल अर्जुन द्वारा मारा गया (महाभा० आदि० १३८.२०-२२)।

सौवीरक—पु० [सं०] जयद्रथका नाम जो सिंधुसौवीरका राजा और दुर्योधनका बहनोई था। यह दुःशला (दुर्योधन की बहिन) का पति था और महाभारत युद्धमें अर्जुनके हाथों मारा गया था—दे० जयद्रथ तथा (महाभा०)।

सौवीरी—स्त्री० [सं०] राजा पुरुके पौत्र तथा प्रवीरके पुत्र मनस्युकी पत्नीका नाम (महाभा० ९४.५-७)।

सौल्य,सौशल्य—पु० [सं०] एक अति प्राचीन देशका नाम (महाभा० भीष्म० ९.४०)।

सौश्रुति—पु० [सं०] त्रिगर्तराज सुशर्माका भाई, जिसका महाभारत युद्धमें अर्जुनके साथ संग्राम हुआ था और उसमें उन्हींके द्वारा गया था (महाभा० कर्ण० २७.३-२२)।

सौहृद—पु० [सं०] एक दक्षिण भारतीय जनपदका नाम (महाभा० भीष्म० ९-५९)।

स्कंद—पु० [सं०] कार्त्तिकेयका एक नाम जो शिवके पुत्र, देवताओंके सेनापति और युद्धके देवता माने गये हैं। ब्रह्मवैवर्त्तके अनुसार यह अग्निसे उत्पन्न हुए और इन्हें षड़ानन या कार्त्तिकेय भी कहते हैं। इनके ६ मुख हैं और यह बहुत ही सुन्दर कहे गये हैं। तन्त्रानुसार देवसेना या षष्ठी देवी इनकी पत्नी हैं। कुछ अन्य पुराणानुसार अग्निसे शंकरका वीर्य हजम न हो सका अतः गंगामें वमन कर आये जहाँसे ६ कृत्तिकाएँ उठा लायी और अपना दूध पिला बड़ा किया—दे० कार्त्तिकेय तथा (वैवर्त्तपु०)। इनके द्वारा तारकासुर, महिषासुर, त्रिपाद तथा ह्रदोदरका वध, बाणासुरकी पराजय तथा क्रौंचपर्वतका विदारण किया गया (महाभा०शल्य० ४६.७३-८४)।

स्कंदग्रह—पु० [सं०] मातृकाग्रह तथा पुरुषग्रहोंका समूह (महा० वन० २३०.४३-४४)।

स्कंदपुराण—पु० [सं०] १८ पुराणोंमेंसे एक जिसमें स्कंदने तत्पुरुष कल्पकी व्याख्या की है। इसमें कुल ८१८०० श्लोक हैं तथा इसके अन्तर्गत ६ संहिताएँ हैं और सात खंड हैं जिनमें काशीखंड अति प्रसिद्ध है। इसके बाद उत्कलखण्ड है जिसमें पुरीका माहात्म्य दिया गया है।

स्कंदरेश्वरतीर्थ—पु० [सं०] एक प्राचीन तीर्थका नाम (स्कंदपु०)।

स्कंदषष्ठी—स्त्री० [सं०] (१) वराहपुराणानुसार एक पर्व जो चैत्र शुक्ला षष्ठीको मनाया जाता है। कहते हैं इसी तिथिको कार्त्तिकेय देवताओंके सेनापति नियुक्त हुए थे (वाराहपु०)। (२) गुहषष्ठीका नाम जो कार्त्तिकेयके लिए होती है। यह कार्त्तिक या अगहन शुक्ला षष्ठीको पड़ती है। (३) यह पंचमीयुक्त ली जाती है। आषाढ़ शुक्ला ५ को व्रत और षष्ठीको स्कंदपूजन करे तथा एक बार भोजन करे। यह तिथि कार्त्तिकेयकी है, अतः इसे 'कौमारिकी' तिथि कहते हैं (वाराहपु०)।

स्कंदापस्मार—पु० [सं०] स्कंदके शरीरसे उत्पन्न हुआ प्रसव-ग्रह (महाभा० वन० २३.२६)।

स्कंध—पु० [सं०] (१) धृतराष्ट्रके कुलमें उत्पन्न एक नागका नाम, जो जनमेजयके सर्पसत्रमें होमा गया था (महाभा० आदि० ५७.१८)। (२) एक वानरका नाम, जिसने मूर्च्छित श्रीराम और लक्ष्मणको घेर कर उनकी रक्षा की थी (वाल्मी० रामा० लंका० ४७.३)।

स्कंधपाद—पु० [सं०] मार्कण्डेयपुराणानुसार एक पर्वतका नाम।

स्कंधाक्ष—पु० [सं०] स्कंदका एक सैनिक अनुचर (महाभा० शल्य० ४५.६०)।

स्तंबमित्र—पु० [सं०] महाभारतके अनुसार एक शार्ङ्गक पक्षी, जो मन्दपाल ऋषिके द्वारा उनकी पत्नी जरिता (पक्षिणी) के गर्भसे उत्पन्न हुए जरितारि आदि चार पुत्रोंमेंसे एक।

स्तंभ—पु० [सं०] विष्णुपुराणानुसार एक ऋषिका नाम।

स्तंभतीर्थ—पु० [सं०] खंभातका प्राचीन नाम जो एक प्रसिद्ध तीर्थ था।

स्तंभन-पु० [सं०] कामदेवके पाँच बाणोंमेंसे एक—दे० अंगज तथा कामदेव।

स्तनकुंड-पु० [सं०] महाभारतके अनुसार एक प्राचीन तीर्थ, जहाँ स्नान करनेसे वाजपेय यज्ञका फल प्राप्त होता है (वन० ८४.१५२)।

स्तनपोषिक-पु० [सं०] स्तनपायिक, स्तनपोषिक तथा स्तनयोधिक नामक दक्षिणभारतीय प्राचीन देशका नाम (महाभा० भीष्म० ९.६८)।

स्तनबाल-पु० [सं०] एक दक्षिण भारतीय प्राचीन देशका नाम (महाभा० भीष्म० ९.२२)।

स्तम्भेशतीर्थ-पु० [सं०] दक्षिण समुद्रतटपर स्थित एक तीर्थस्थान जो सौभद्र मुनिको प्रिय था। यहाँ सौरभेयी नामकी अप्सरा शापवश ग्राह होकर रहती थी और स्नानार्थियोंको जलमें खींच ले जाती थी, इससे ऋषियोंने इस तीर्थको त्याग दिया था। यहाँ आये पांडुनंदन अर्जुनने ग्राहरूपी अप्सरा सौरभेयीका उद्धार किया था। यह पंचाप्सरस तीर्थोंमें दूसरा तीर्थ है (स्कंदपु० कुमारिका-खंड, १.२१-२२, ४९-५०)।

स्तम्भेश्वर-पु० [सं०] एक शिवलिंगका नाम, जिसे विश्वकर्माने प्रस्तुत किया तथा स्कंदने स्थापित किया था। देवताओंने जलमें एक 'विश्वनंदक' नामक स्तम्भ स्थापित कर चारों ओर एक चबूतरा बनाया जिसके पश्चिम भागमें यह शिवलिंग तारकासुर-बधके फलस्वरूप स्कंदने स्थापित किया और इसीके पश्चिममें एक कूपका निर्माण भी किया जिसमें पातालगंगा प्रकट हुई। माघ कृ० १४ अथवा माघ १५ तथा ३० को यहाँ पूजा तर्पणका बड़ा माहात्म्य है (स्कंदपु० माहेश्वर० कुमारिका-खंड)।

स्तावा-स्त्री० [सं०] एक अप्सराका नाम (वाजसनेयी-संहिता १८.४२)।

स्तीर्ण-पु० [सं०] शिवका एक अनुचर (शिवपु०)।

स्तुति-स्त्री० [सं०] (१) दुर्गाका एक नाम (देवीभाग०)। (२) प्रतिहर्त्ताकी पत्नीका नाम (भाग० ५.१५.५)।

स्तुत्यव्रत-पु० [सं०] (१) हिरण्यरेताका एक पुत्र—दे० हिरण्यरेता। (२) एक वर्षका नाम जिसके अधिष्ठाता देवता स्तुत्यव्रत हैं (भाग०)।

स्त्रीमानी-पु० [सं०] मार्कण्डेयपुराणानुसार भौत्य मनुके एक पुत्र (मार्कण्डेयपु०)।

स्त्रीराज्य-पु० [सं०] प्राचीन कालके एक राज्यका नाम जहाँ केवल स्त्रियोंकी ही प्रधानता रहती थी, जहाँके राजा युधिष्ठिरके राजसूय यज्ञमें आये थे (महाभा० वन० ५१.२५)।

स्त्रीवाह्य-पु० [सं०] एक जनपदका नाम (मार्कण्डेयपु०)।

स्थंडिलशायी-पु० [सं०] एक प्रकारके ऋषियोंके नाम, जिन्होंने शरभंग ऋषिके स्वर्गलोक चले जानेके पश्चात् श्रीरामके समक्ष उपस्थित होकर राक्षसोंसे अपना त्राण करनेकी प्रार्थना की थी (वाल्मी० रामा० अरण्य० ४.८-२६)।

स्थंडिलेयु-पु० [सं०] पुरुके तृतीय पुत्र रौद्राश्वके द्वारा मिश्रकेशी अप्सराके गर्भसे उत्पन्न एक पुत्रका नाम (महाभा० आदि० ९४.८-१०)।

स्थल-पु० [सं०] भागवतके अनुसार बलका एक पुत्र (भाग०)।

स्थलकाली-स्त्री० [सं०] दुर्गाकी एक सहचरीका नाम (देवीभाग०)।

स्थलेयु-पु० [सं०] रौद्राश्वका एक पुत्र (हरिवंश)।

स्थाणु-पु० [सं०] (१) ब्रह्माजीके एक मानसपुत्र, जो मरीचि आदि नौ पुत्रोंमेंसे अतिरिक्त थे, ग्यारह रुद्र इन्हींके पुत्र कहे गये हैं। ब्रह्माजीके पौत्र तथा स्थाणुके पुत्र एकादश रुद्रोंमेंसे एक (महाभा० आदि० ६६.१-३)। एक रुद्रका नाम (काशीखंड)। (२) एक (छठे) प्रजापतिका नाम, जो बहुपुत्रके बाद हुए थे (वाल्मी० रामा० अरण्य० १४.८)। (३) एक राक्षसका नाम। (४) एक नागका नाम—दे० नाग। (५) एक महर्षिका नाम, जो इन्द्रकी सभामें विराजते थे (सभा० ७.१७)।

स्थाणुतीर्थ-पु० [सं०] थानेश्वरका प्राचीन नाम जो एक प्रसिद्ध तीर्थस्थान था। मुसलमानोंके आक्रमणोंने इसे बर्बाद कर दिया।

स्थाणुमती-स्त्री० [सं०] एक प्राचीन नदीका नाम। केकयसे लौटते समय भरतने इसे पार किया था (रामा० अयोध्या० ७१.१६)।

स्थाणुवट-पु० [सं०] कुरुक्षेत्रकी सीमामें स्थित एक प्रसिद्ध प्राचीन तीर्थ, जहाँ स्नान कर एक रात निवास करनेवाला मनुष्य रुद्रलोकमें जाता है (महाभा० वन० ८३.१७८-७९)।

स्थाणुस्थान-पु० [सं०] महात्मा स्थाणुका मुञ्जवट नामक स्थान, जहाँ एक रात रहनेसे गणपतिपदकी प्राप्ति होती है। सरस्वती नदीके पूर्व तटपर जो वशिष्ठाश्रम है वहीं भगवान् स्थाणुने तपस्या की। सरस्वतीका पूजन और यज्ञ कर तीर्थकी स्थापना की थी, इसलिए इसे स्थाणुतीर्थ कहते हैं। यहीं देवताओंने कुमार कार्त्तिकेयका अभिषेक सेनापतिपदपर किया था (महाभा० वन० ८३.२२; शल्य० ४२.४-७)।

स्थाण्वीश्वर-पु० [सं०] वामनपुराणानुसार स्थाणुतीर्थ स्थित एक प्रसिद्ध शिवलिंगका नाम (शिवपु० तथा वामनपु०)।

स्थान-पु० [सं०] एक गंधर्वराजका नाम (रामा०)।

स्थिर-पु० [सं०] मेरु द्वारा स्कन्दको दिये गये दो पार्षदोंमेंसे एक पार्षदका नाम। दूसरेका नाम अतिस्थिर था (महाभा० शल्य० ४५-४८)।

स्थूण-पु० [सं०] विश्वामित्र ऋषिके ब्रह्मवादी पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (महाभा० अनु० ४.५१)।

स्थूणकर्ण-पु० [सं०] एक प्राचीन ऋषिका नाम, जो अजातशत्रु युधिष्ठिरका समादर करते थे (महाभा० वन० २६.२३)।

स्थूणाकर्ण-पु० [सं०] (१) महाभारतके अनुसार एक यक्ष, जिसने शिखण्डीको अपना पुरुषत्व दिया था (महाभा० उद्योग० १९१.२४-२५)। (२) एक रोगग्रह (हरिवंश तथा महाभा०)।

स्थूलकेश-पु० [सं०] एक प्राचीन ऋषिका नाम, जो प्राणिमात्रके हितमें सदा निरत रहते थे। इनके द्वारा वनमें

अनाथ पड़ी हुई प्रमद्वराका पालन-पोषण, नामकरण एवं महर्षि रुरुको उसका वाग्दान दिया गया था (महाभा० आदि० ८.९-१६)।

स्थूलबालुका–स्त्री० [सं०] एक प्राचीन नदीका नाम (महाभा० भीष्म० ९.१५)।

स्थूलशिरा–पु० [सं०] एक ऋषिका नाम, जो राजा युधिष्ठिरकी सभामें विराजते थे। युधिष्ठिर भी इनके सुरम्य आश्रममें गये थे। ये शरशय्यापर पड़े भीष्मपितामहको देखनेके लिए उनके निकट गये थे (महाभा० सभा० ४.११; वन० १३५.८; अनु० २६.५)।

स्थूलाक्ष–पु० [सं०] (१) रामायणके अनुसार खर राक्षसका सखा, जो रामके विरुद्ध युद्ध करनेके लिए खरके साथ आया था। दूषणके धराशायी होनेपर इसने श्रीरामपर आक्रमण किया था, किन्तु श्रीरामने इसके नेत्रोंको तीरोंसे भर दिया, जिससे यह भी पृथिवीपर गिर पड़ा (वाल्मी० रामा० अरण्य० २६.१८-२२)। (२) एक दिव्य महर्षि, जो शरशय्यापर पड़े भीष्मपितामहको देखने गये थे (महाभा० अनु० २६-७)।

स्नानयात्रा–स्त्री० [सं०] ज्येष्ठपूर्णिमाको मनाया जानेवाला एक त्योहार जिस दिन जगन्नाथजीके दर्शनका बड़ा माहात्म्य लिखा है (स्कंदपु० उत्कल-खंड)।

स्मृति–स्त्री० [सं०] (१) अंगिरस ऋषिकी पत्नीका नाम। (२) स्मृति = जो स्मरण द्वारा सुरक्षित रहे। वह श्रुतिसे भिन्न है, श्रुतिको कर्णेन्द्रिय द्वारा सुनकर सुरक्षित रखते हैं। मनुके अनुसार श्रुतिसे वेदका बोध होता है और स्मृतिसे धर्मशास्त्रोंका। यदि स्मृतिका विस्तृत अर्थ करें तो वेदांग, सूत्र, रामायण, महाभारत, पुराण और धर्मशास्त्र सब इसके भीतर आ जाते हैं, पर प्रायः ऐसा न कर केवल धर्मशास्त्र-तक ही इसे सीमित रखना ठीक है।

स्यंदिका–स्त्री० [सं०] एक नदीका नाम, जिसे श्रीराम आदिने पार किया था (वाल्मी० रामा० अयोध्या० ४९.११)।

स्यमंतक–पु० [सं०] पुराणोक्त एक प्रसिद्ध मणि जो सत्राजित् यादवने सूर्यसे पायी थी और जिसकी चोरीका कलंक श्रीकृष्णको लगा था। भागवतके अनुसार सत्राजित्का भाई प्रसेनजित् इस मणिको धारण कर शिकार खेलने गया था जहाँ उसे एक सिंहने मार मणि ले ली। रास्तेमें जांबवान्ने सिंहसे मणि ले ली जहाँसे श्रीकृष्ण ले आये और सत्राजित्को पुनः मणि मिल गयी—दे० सत्यभामा, जाम्वती तथा (भाग० १०.५६.१०-३२)।

स्यमंतपंचक–पु० [सं०] भागवतके अनुसार एक तीर्थका नाम, जहाँ श्री परशुरामजीने खूनसे तर्पण किया था (भाग० १०.८२.२-१०)।

स्युवक–पु० [सं०] एक प्राचीन देशका नाम (विष्णु०)।

स्यूमरश्मि–पु० [सं०] एक प्राचीन ऋषिका नाम, जो गऊके भीतर प्रविष्ट हुए थे। प्रवृत्ति और निवृत्तिके विषयमें इनका श्री कपिल मुनिके साथ संवाद हुआ था (महाभा० शांति० अध्याय० २६८-२७०)।

स्रज–पु० [सं०] एक सनातन विश्वेदेव (महाभा० अनु० ९१.३३)।

स्रुघ्न–पु० [सं०] एक प्राचीन देश जो हस्तिनापुरसे उत्तर था (बृहत्संहिता)।

स्वक्ष–पु० [सं०] एक भारतीय जनपदका नाम (महाभा० भीष्म० ९.४५)।

स्वकंबला–स्त्री० [सं०] एक नदीका नाम (मार्कण्डेयपु०)।

स्वधा–स्त्री० [सं०] (१) प्रसूति वा अग्निके गर्भसे उत्पन्न दक्ष प्रजापतिकी एक पुत्री जिन्हें पितरोंकी पत्नी माना है। मेना, धन्या और कलावती इनकी मानसी पुत्रियाँ थीं, अतः ये अयोनिजा थीं। एक बार ये तीनों बहिनें श्वेतद्वीपमें विष्णुका दर्शन करने गयीं जहाँ सनकादि सिद्धगण भी गये, पर ये बहिनें उन्हें देख मर्यादारक्षार्थ खड़ी नहीं हुईं, अतः सनत्कुमारने स्वर्गसे दूर होकर 'नर-स्त्री' बननेका शाप दिया। सबसे बड़ी मेना हिमालय-पत्नी तथा पार्वतीकी माता हुई; दूसरी धन्या राजा जनककी पत्नी तथा सीताकी माता हुई और छोटी कलावती द्वापरके अंतमें वृषभानु वैश्यकी पत्नी तथा 'राधा'की माता हुई (शिवपु० रुद्र-संहिता, पार्वती-खंड १-२)। (२) अंगिराकी ऋषिकी पत्नीका नाम—दे० अंगिरा।

स्वन–पु० [सं०] सत्यके पुत्र, ये रोगके कारण होनेसे अग्नि कहे गये हैं। इनसे पीड़ित होकर लोग वेदनासे कराह उठते हैं। स्वन (चीत्कार) करनेके कारण होनेसे इनका नाम 'स्वन' हुआ (महाभा० वन० २१९.१५)।

स्वनाभ–पु० [सं०] प्रजापति कृशाश्वके पुत्र एक अस्त्रका नाम, जिसे विश्वामित्रने श्रीरामको समर्पित किया था (वाल्मी० रामा० अयोध्या० २८.६)।

स्वभूमि–पु० [सं०] (१) विष्णुपुराणानुसार राजा उग्रसेनका एक पुत्र।

स्वयंप्रभा–स्त्री० [सं०] इन्द्रकी एक अप्सरा जिसे मयदानव हर ले गया था। मंदोदरी इसीकी पुत्री थी। सीताको ढूँढ़ते समय हनुमान्की भेंट इससे हुई थी। इसने हनुमान् आदिसे ऋक्षबिलमें प्रवेश करनेका कारण पूछा। इसके पूछनेपर हनुमान् आदिने सीताहरण तथा अपने विफल अन्वेषण प्रयासोंका वर्णन किया। यह सर्वज्ञ थी। इसने हनुमान् आदिके वर्णनको सुनकर संतोष प्रकट किया और सब वानरोंकी आँखें बंद कराकर ऋक्षबिलसे एक क्षणमें बाहर निकाल दिया। यह मेरु सावर्णिकी पुत्री, रावणकी सास तथा मेघनादकी नानी थी। इसी स्वयंप्रभाकी पुत्री मंदोदरीको पंचकन्याओंमें गिना गया है (वाल्मी० रामा० किष्किंधा० ५२.१-२, १८-१९, २६-२८)। (२) एक अप्सराका नाम, जिसने अर्जुनके स्वागतसमारोहमें इन्द्र-भवनमें नृत्य किया था (महाभा० वन० ४३.२९)।

स्वयंभू–पु० [सं०] ब्रह्मा, शिव, विष्णुका एक नाम जिनकी राजसिक प्रवृत्ति सृष्टिकारिणी, सात्त्विक प्रवृत्ति पालन-कारिणी तथा तामसिक प्रवृत्ति अंतकारिणी है (वायु० ६६.१०३)।

स्वयंभोज–पु० [सं०] भागवतके अनुसार राजा शिबिका एक पुत्र (भाग०)।

स्वयंहारिका–स्त्री० [सं०] पुराणानुसार निर्मार्ष्टिके गर्भसे उत्पन्न दुःसहकी एक पुत्री। रसोईघरसे अधपका अन्न, गौके स्तनसे दूध, कपाससे सूत आदि चुरा लेनेके कारण

ही इसका यह नाम पड़ा था—दे० दुःसह ।

स्वर्भानु–पु० [सं०] सत्राजित्‌की पुत्री सत्यभामाके गर्भसे उत्पन्न श्रीकृष्णका एक पुत्र (भाग० १०.६१.१०) ।

स्वराष्ट्र–पु० [सं०] पुराणानुसार तामस मनुके पिता जो एक प्रसिद्ध राजा थे (भाग० ८.१.२७) ।

स्वरेणु–स्त्री० [सं०] विश्वकर्माकी पुत्री संज्ञाका एक नाम जो सूर्यको ब्याही थी—दे० संज्ञा तथा छाया ।

स्वरोचि–पु० [सं०] पुराणानुसार वरुथिनी नामकी अप्सराके गर्भसे उत्पन्न कलिंगंधर्वका पुत्र । यह स्वारोचिष मनुके पिता थे ।

स्वर्ग–पु० [सं०] सात लोकोंमेंसे एक जो सूर्यलोकसे लेकर ध्रुवलोकतक विस्तृत माना गया है। यहाँ देवताओंका निवासस्थान है और पुण्यात्मा लोगोंकी आत्माएँ मरनेपर यहीं आती हैं । यहाँ दुःख, रोग, शोक, मृत्यु आदिका नाम नहीं है । पुण्योंकी अवधि पूरी हो जानेपर जीवको फिर कर्मानुसार जन्म लेना पड़ता है । स्वर्गकी कल्पना नरककी कल्पनाके बिलकुल ही विपरीत है (विष्णु०, भाग०) ।

नोट–ईसाइयोंके अनुसार स्वर्ग ईश्वरका निवासस्थान है जिसे वे 'हेवन' कहते हैं । मुसलमान इसे बिहिश्त कहते हैं जो खुदा और फरिश्तोंके रहनेकी जगह कही गयी है । यहूदियोंके यहाँ ३ स्वर्गोंकी कल्पना की गयी है । सबके धर्मोंके अनुसार स्वर्ग पुण्यात्माके लिए ही हैं जहाँ सब सुख है । कबाला विज्ञानके पंडितोंके अनुसार स्वर्गके सात खण्ड माने गये हैं । एकके ऊपर दूसरा और दूसरेके ऊपर तीसरा तब चौथा और इसी तरहसे सबके ऊपर सातवें स्वर्गकी कल्पना की गयी है । सातवें खण्डमें ही इस मतानुसार ईश्वरका निवासस्थान माना गया है जहाँ अन्य सब खण्डोंसे अधिक सुख है। इसीको 'सातवाँ फलक' कहते हैं ।

महाभारतमें दिये पांडवोंकी स्वर्ग-यात्रासे भी यह स्पष्ट है कि सब कोई स्वर्ग नहीं जा सकते—दे० महाभारत, महाप्रस्था० तथा स्वर्गारोहण० ।

स्वर्गतीर्थ–पु० [सं०] एक तीर्थका नाम जो नैमिषारण्यमें है। यहाँ एक महीनेतक पितरोंको जलांजलि देनेसे पुरुषमेध यज्ञका फल प्राप्त होता है (महाभा० अनु० २५.३३) ।

स्वर्गद्वार–पु० [सं०] (१) सरयू नदीके जलमें सहस्रधारा तीर्थसे लेकर पूर्व दिशाकी ओर ६३६ धनुषतक पुराणोंने इस तीर्थका विस्तार बतलाया है (स्कंदपु० वैष्णव० अयोध्या-माहा०) । (२) कुरुक्षेत्रकी सीमाके अन्तर्गत एक प्राचीन तीर्थ जिसके सेवनसे मनुष्यको स्वर्ग प्राप्त होता है (महाभा० वन० ८३.१६७) ।

स्वर्गमार्गतीर्थ–पु० [सं०] एक तीर्थ, जहाँ स्नान करनेसे मनुष्य ब्रह्मलोकमें जाता है (महाभा० अनु० २५.६१) ।

स्वर्णग्रीव–पु० [सं०] कुमार कार्त्तिकेयका एक सैनिक अनुचर (महाभा० शल्य० ४५.७५) ।

स्वर्णग्रीवा–पु० [सं०] कालिकापुराणानुसार एक अति पवित्र नदी ।

स्वर्णगौरीव्रत–पु० [सं०] एक व्रत जो श्रावण कृष्णा ३ को होता । इसमें मिट्टीकी गौरीकी एक मूर्त्ति बनाकर पूजा करे । सूत या रेशमके १६ तारके डोरेमें १६ गाँठ लगाकर स्थापित करे और पूजनके पश्चात् डोरेको दाहिने हाथमें बाँधे । सरस्वती-तटपर विमलपुरीके राजा चंद्रप्रभने अप्सराओंके कहनेसे यह व्रत किया था (स्कंदपु०) । कुछ इसे श्रावण शु० ३ को भी करते हैं और इसे मधुश्रवा तीज, मधुश्रावणी या ठकुराणीतीज कहते हैं ।

स्वर्णविंदु–पु० [सं०] महाभारतके अनुसार एक प्राचीन तीर्थस्थान, जिसमें स्नान करनेसे मनुष्यको स्वर्ग प्राप्त होता है ।

स्वर्णशृंगी–पु० [सं०] सुमेरु पर्वतके उत्तरमें स्थित एक पर्वत ।

स्वर्णाद्रि–पु० [सं०] भुवनेश्वर तीर्थका एक नाम जिसे स्वर्णाचल भी कहते हैं (स्कंदपु० उत्कल-खंड) ।

स्वर्भानवी–स्त्री० [सं०] स्वर्भानुकी पुत्री, जो पुरूरवाके पुत्र आयुकी पत्नी थी । इसके गर्भसे आयुके नहुष आदि पाँच पुत्र हुए थे ।

स्वर्भानु–पु० [सं०] सत्यभामाके गर्भसे उत्पन्न श्रीकृष्णके १० पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (मागध १०.६१, १०) ।

स्वलीन–पु० [सं०] एक दानवका नाम ।

स्वस्ति–स्त्री० [सं०] पुराणानुसार ब्रह्माकी एक पत्नीका नाम । ब्रह्माकी अन्य दो स्त्रियाँ संध्या और सावित्री हैं ।

स्वस्ति–पु० [सं०] महाभारतके अनुसार एक प्राचीन तीर्थस्थान ।

स्वस्तिक–पु० [सं०] (१) गिरिव्रजमें रहनेवाले एक नागका नाम । यह वरुणकी सभामें रहकर उनकी उपासना करता था (महाभा० सभा० ९.९; २१.९१) । (२) कुमार कार्त्तिकेयका एक सैनिक अनुचर (शल्य० ४५.६५) ।

स्वस्तिपुरतीर्थ–पु० [सं०] कुरुक्षेत्रकी सीमामें स्थित एक तीर्थका नाम, जिसकी परिक्रमा करनेसे सहस्र गोदानका पुण्य प्राप्त होता है (महाभा० वन० ८३.१७४) ।

स्वस्तिमती–स्त्री० [सं०] स्कन्दकी अनुचरी एक मातृकाका नाम (महाभा० शल्य० ४६.१२) ।

स्वस्त्यात्रेय–पु० [सं०] एक प्राचीन ऋषिका नाम जो इन्द्रकी सभामें विराजते थे । ये दक्षिण दिशामें निवास करनेवाले ऋषि हैं (महाभा० शांति० २०८.२८) ।

स्वाति–स्त्री० [सं०] (१) उरु और आग्नेयीका एक पुत्र—दे० उरु तथा आग्नेयी । (२) २७ नक्षत्रोंमेंसे एक (१५वाँ) नक्षत्र । इस नक्षत्रमें जो अपनी अत्यन्त प्रिय वस्तुका दान करता है, वह शुभ लोकोंमें जाता है तथा यहाँ महान् यशस्वी होता है (महाभा० अनु० ६४.१८) ।

स्वादुकर–पु० [सं०] एक वर्णसंकर जाति (महाभा०) ।

स्वामिकुमार–पु० [सं०] शंकर तथा पार्वतीके पुत्र कार्त्तिकेयका एक नाम ।

स्वामिजंघी–पु० [सं०] राजा प्रसेनजित्‌की पुत्री रेणुकाके गर्भसे उत्पन्न जमदग्नि ऋषिके पुत्र परशुरामजीका एक नाम—दे० परशुराम ।

स्वर्गभूमि–पु० [सं०] एक प्राचीन देशका नाम जो काशीसे पश्चिम था जहाँ भगवतीने दुर्ग राक्षसका वध कर दुर्गा नाम पाया था (मार्कण्डेयपु०) ।

स्वापमहोत्सव–पु० [सं०] एक उत्सवका नाम जो आषाढ़ शुक्ला ११ को, जब विष्णु क्षीरसागरमें शयन करते हैं,

किया जाता है। इसके लिए सर्वलक्षण संयुक्त मूर्ति बनायी जाती है और विधिवत् उसका पूजन किया जाता है। देवशयनके चतुर्मासीय व्रतोंमें पलंगपर सोना, मिथ्याभाषण तथा मूली आदि खाना त्याग देना चाहिये—दे० "मञ्चखट्वादिशयनं वर्जयेद् भक्तिमान्नरः। अनृतौ वर्जयेद् भार्यां मासं मधु परौदनम्॥ पटोलं मूलकं चैव वृन्ताकं च न भक्षयेत्। (स्कंदपु०)। "रामार्चनचन्द्रिकामें"में भगवान्‌की मूर्त्तिको रथारूढ़ कर जलाशयमें ले जाकर जलमें शयन करानेका विधान है (मदनरत्न)।

स्वामिपुष्करिणी—स्त्री०[सं०] वेङ्कटाचलपर स्थित श्रीनिवासके स्थानसे उत्तरमें स्थित एक पुष्करिणीका नाम, जो सब पापोंका निवारण करनेवाली कही गयी है (स्कंदपु० वैष्णव, भूमिवाराह-खण्ड)।

स्वायंभुव—पु० [सं०] पुराणानुसार स्वयंभू ब्रह्मासे उत्पन्न पहले मनुका नाम। संसारकी सृष्टि करके ब्रह्माने अपने दाहिने अंगसे स्वायंभुव मनुकी और बायेंसे शतरूपा नामकी स्त्रीकी सृष्टि की थी और दोनोंमें पति-पत्नीका सम्बन्ध स्थापित किया था जिनसे और सृष्टि आगे चली (भाग० ३.१२.५१-५५)। मनुकी एक पत्नी अनंती भी थी (मत्स्य० ४.३३)।

ईसाइयोंके यहाँ भी इसी प्रकारकी मिलती-जुलती कल्पना है। इनके यहाँ सबसे पहले ईश्वरने या ब्रह्माने जिसे ये लोग "गॉड" कहते हैं, "आदम और इवा"की सृष्टि की थी जिनसे आगेकी सृष्टिका कार्यक्रम चला। मुसलमानोंने "आदम"को "आदम" और "इवा"को "हौआ" कहा है। अर्थात्—आदम = "स्वायंभुव मनु" और हौआ = "शतरूपा"। स्वायंभुवके १० पुत्र थे जिनमें एकका नाम अग्निबाहु था (ब्रह्मां० २.१३.१०४; मत्स्य० ९.४०; वायु० ३१.१७)। अतिबाहु भी इनके एक पुत्र थे (शिवपु० रुद्रसंहिता अध्याय १६)।

स्वारोचिष—पु० [सं०] दूसरे मनुका नाम जो स्वरोचिस्वरोके पुत्र थे लेकिन श्रीमद्भागवतमें इन्हें अग्निका पुत्र लिखा है (भाग० ८.१.१९)। मार्कण्डेयपुराणानुसार इनका नाम "द्युतिमान्" होना चाहिये (भाग० तथा मार्कंण्डेयपु०)। इन्हें ब्रह्माने शाश्वतधर्मका उपदेश दिया था। इन्होंने अपने पुत्र शंखपदको उक्त धर्मकी शिक्षा दी थी (महाभा० शांति० ३४८.३६-३७)।

स्वाहा—स्त्री०[सं०] (१) प्रसूतिके गर्भसे उत्पन्न दक्षकी पुत्रीका नाम जो अग्निदेवको ब्याही थी (वायु० १.७६; ब्रह्मां० २.९.५६; १२.१)। कुमार कार्त्तिकेयके अभिषेकके समय स्वाहा देवी भी उपस्थित थीं (महाभा० शल्य० ४५.१३)। (२) बृहस्पतिकी पुत्री, जो अधिक क्रोधवती है, वह सब भूतोंमें निवास करती है। इसका पुत्र 'काम' नामकी अग्नि है (वन० २१९.२२-२३)।

स्वाहेय—पु० [सं०] कार्त्तिकेय स्वामीका एक नाम—दे० कार्त्तिकेय तथा स्कंद।

स्विष्टकृत्—पु० [सं०] (१) प्रत्येक गृह्यकर्ममें अग्निके लिए सदा घीकी धारा दी जाती है, जिसका प्रवाह उत्तराभिमुख होनेसे अभीष्ट फल प्राप्त होता है। अतएव इस अभीष्ट साधक उत्कृष्ट अग्निका नाम 'स्विष्टकृत्' है। यह बृहस्पतिका छठा पुत्र माना जाता है (महाभा० वन० २१९.२१)। (२) मनुके द्वितीय पुत्र विश्वपति नामक अग्नि, तथा मनुकी कन्या रोहिणी भी 'स्विष्टकृत्' मानी गयी है। इन्हींके प्रभावसे हविष्यकी आहुति सुन्दरतासे सम्पन्न होती है, अतः ये 'स्विष्टकृत् कहलाते हैं (वन० २२१.१६-१८)।

स्वेच्छामृत्यु—पु० [सं०] महाराज शांतनुके ज्येष्ठ पुत्र देवव्रतका एक नाम, जो अपनी भीष्म प्रतिज्ञाके बादसे भीष्म पितामह कहलाये थे। यह बाल ब्रह्मचारी थे और इनकी मृत्यु इनकी ही इच्छानुकूल हुई थी जबतक सूर्य। उत्तरायण न हो गये तबतक यह शरशय्यापर पड़े रहे थे। महाभारतके अनुशासन पर्वमें भीष्म पितामहके स्वर्गारोहणका पूरा विवरण दिया गया है (महाभारत भीष्मपर्व)।

स्वैरथ—पु० [सं०] (१) पुराणानुसार ज्योतिष्मान्‌के एक पुत्रका नाम—दे० ज्योतिष्मत्। (२) एक वर्षका नाम जिसके अधिष्ठाता देवता भी स्वैरथ ही हैं (विष्णुपु०)।

ह

हंस—पु० [सं०] (१) मेरुके उत्तरमें स्थित एक पहाड़का नाम। (२) भगवान् विष्णुका एक अवतार। सनकादिकको इसी रूपमें भगवान्‌ने ज्ञान दिया था और बतलाया था कि विषय और उनका चिन्तन दोनों ही माया है। दोनोंमें कुछ भेद नहीं है (विष्णु०)। (३) महाभारतके अनुसार जरासन्धके एक पहलवान श्रेष्ठ मन्त्रीका नाम, जो डिंभकका भाई था। इसे किसी अस्त्र-शस्त्रसे न मारे जानेका देवताओंका वरदान प्राप्त था (सभा० १४.३७)। अपने भाई डिंभककी मृत्युका समाचार सुनकर यह यमुनामें कूदकर मर गया (सभा० १४.४२)। जरासन्धको सम्मति प्रदान करनेके लिए ये ही दोनों भाई नीतिनिपुण मंत्री थे (सभा० १९.२६)। भीमसेनके साथ युद्धका निश्चय हो जानेपर जरासन्धने अपने इन दोनों श्रेष्ठ स्वर्गीय मन्त्रियोंका स्मरण किया था (महाभा० सभा० २२.३२)। (४) सूर्यका एक नाम। (५) एक श्रेष्ठ पक्षी, जो कश्यपपत्नी ताम्राकी पुत्री धृतराष्ट्रीसे उत्पन्न हुए थे (आदि० ६६.५६-५८)। सुवर्णमय पंखोंवाले एक हंसने नल और दमयन्तीके निकट एकको दूसरेका सन्देश पहुँचाकर उनमें परस्पर प्रेम उत्पन्न किया था (वन० ५३.१९-३२)। (६) जरासन्धकी सेनाका एक राजा, जो सत्रहवीं बारके युद्धमें बलरामजी द्वारा मारा गया था (सभा० ५२.१४)।

हंसकायन—पु० [सं०] क्षत्रियोंकी एक जाति, इस जातिके श्रेष्ठ क्षत्रिय युधिष्ठिरके राजसूययज्ञमें भेंट लेकर उपस्थित हुए थे (महाभा० सभा० ५२.१४)।

हंसकूट—पु० [सं०] एक पर्वतका नाम, जहाँ पत्नियों सहित पाण्डु गये थे। इस पर्वतको पारकर वे शतशृंग पर्वतपर पहुँचे थे (महाभा० आदि० ११८.५०)। इस पर्वतके शिखरको श्रीकृष्णने द्वारकापुरीमें स्थापित किया था, जो साठ ताड़वृक्षोंके बराबर ऊँचा तथा आधा योजन चौड़ा था (सभा० ३८.२९ के बादका प्रक्षिप्त पाठ)।

हंसचूड़—पु० [सं०] एक यक्षका नाम, जो कुबेरकी सेवाके लिए उनकी सभामें रहता था (महाभा० सभा० १०.१७)।

हंसज—पु० [सं०] कुमार कार्त्तिकेयका एक सैनिक अनुचर (महाभा० शल्य० ४५.६८)।

हंसपथ—पु० [सं०] एक देशका नाम जहाँके निवासी सैनिक द्रोणाचार्य द्वारा रचे गये गरुड़व्यूहके ग्रीवाभागमें स्थित थे (महाभा० द्रोण० २०.७)।

हंसवाहन—पु० [सं०] ब्रह्माका एक नाम।

हंसवाहनी—स्त्री० [सं०] सरस्वतीका एक नाम।

हंसप्रपतनतीर्थ—पु० [सं०] प्रयागमें स्थित एक सर्वलोक-प्रख्यात तीर्थ, जो भागीरथीके तटपर स्थित है (महाभा० वन० ८५.८७)।

हंसवक्त्र—पु० [सं०] कुमार कार्त्तिकेयका एक सैनिक अनुचर (महाभा० शल्य० ४५.७५)।

हंसिका—स्त्री० [सं०] सुरभिकी पुत्री जो दक्षिण दिशाको धारण करनेवाली है (महाभा० उद्योग० १०२.७-८)।

हंसी—स्त्री० [सं०] राजर्षि भगीरथकी यशस्विनी पुत्री।

हनुमज्जन्म-महोत्सव—पु० [सं०] 'आश्विनस्यासिते पक्षे भूतायां च महानिशि। भौमवारेऽञ्जनादेवी हनूमन्तमजीजनत्॥' कार्त्तिककृष्णा १४ को सीताजीने अपना सौभाग्य द्रव्य सिंदूर प्रदान किया था उसीसे उस दिन उत्सव मनाते हैं अन्यथा चैत्र शु० १५ इनकी जन्मतिथि थी (व्रतरत्नाकर)।

हनुमज्जयन्ती—स्त्री० [सं०] (१) महावीर जयन्ती वैशाख शुक्ला १५ को मनायी जाती है उस दिन यदि माँ अपनी सन्तानको स्वयं परोसकर खिलावे तो सन्तान वलवती तथा दीर्घायु हो। महाराष्ट्रमें इस दिन मारुति जन्म उत्सव मनाते हैं और इसी दिन वैशाख स्नान भी आरम्भ होता है। वैष्णव लोग इस दिनसे 'जलदान' आरम्भ करते हैं। (२) इसी दिन जैनधर्मावलम्बी अपने २४वें तथा अन्तिम तीर्थंकर भगवान् महावीरका जन्म दिन मनाते हैं।

हनुमद्व्रत—पु० [सं०] यह व्रत हनुमान्‌जीकी जयन्तीके उपलक्ष्यमें किया जाता है। किसी मतसे हनुमान्‌की जन्मतिथि कार्त्तिककृष्णा १४ है और अन्य मतसे चैत्र १५ है। जन्मतिथिका दो होना कुछ विचित्र-सा है। पहला जन्मदिन है और दूसरा 'विजयाभिनन्दन' पर्व। 'उत्सवसिंधु'के अनुसार कार्त्तिककृष्णा १४ ही जन्मतिथि है। 'व्रतरत्नाकर' भी यही तिथि देता है पर 'हनुमदुपासनाकल्पद्रुम'में चैत्र १५ दिया है। किन्तु वाल्मीकीय रामायणके अनुसार (किष्किन्धा० सर्ग ६६ तथा उत्तर० सर्ग ३५) हनुमानजी अमावस्याको उत्पन्न हुए थे। इन सबका विचार करनेसे यही पता चलता है कि पहली तिथि ही ठीक है। इस व्रतमें रात्रिव्यापिनी तिथि लेनी चाहिये। इस व्रतके करनेसे सब इच्छाएँ पूर्ण होती हैं एवं व्रती दीर्घायु तथा सुखी रहता है।

हनुमान्—पु० [सं०] श्रीरामभक्त कपिवर, जो अंजनीके गर्भसे उत्पन्न वायु या मारुत देवताके पुत्र कहे जाते हैं। वाल्मीकीय रामायण किष्किन्धा० सर्ग ६६ और उत्तर० सर्ग ३५ के अनुसार यह अंजनीके गर्भसे उत्पन्न हुए थे। भूखे होनेके कारण सूर्यको फल समझ उनके पास चले गये। उस दिन अमावस्या थी, अतः पर्वतिथि होनेके कारण सूर्यको ग्रसने राहु भी आया था पर इनके डरसे भागने लगा। इनके गिरफ्तमें आते ही सूर्य कराह उठे और इन्द्रसे विनती की जिसपर इन्द्रने इनपर वज्रका प्रहार किया जिससे इनकी ठोड़ी टेढ़ी हो गयी। अतः यह इस (हनुमान्) नामसे विख्यात हुए। पुत्रपर हुए अत्याचारसे पवनदेवको दुःख हुआ और उन्होंने पवनका संचार रोक दिया अतः संसारमें खलबली मची और देवता लोग इनके पास आये, क्षमा माँगी और हनुमानको अजर अमर होनेका वरदान दे चले गये। सीताहरणके पश्चात् श्रीराम और लक्ष्मण दोनों भाई जानकीकी खोज करते शबरीके आश्रमपर पहुँचे और वहाँसे चलकर किष्किन्धापुरी गये जहाँ इन लोगोंकी भी भेंट हनुमान्‌से हुई थी। हनुमान् ही दोनों भाइयोंको सुग्रीवके पास ले गये तथा मित्रता करा दी थी। सीताका अनुसन्धान करनेके लिए यही समुद्र पार कर सबसे पहले लंका गये थे। इस समय यह श्रीरामकी अँगूठी भी प्रमाण-स्वरूप ले गये थे। लंका जाते समय समुद्रके किनारे हनुमान्‌की भेंट जटायुके भाई संपातिसे हुई थी। रावणका वन उजाड़ते समय इन्होंने उसके कई राक्षस रक्षकोंको मार डाला था और अन्तमें लंका जलाकर ही श्रीरामके पास लौटे थे। इसी समय इन्होंने रावण-पुत्र 'कुमार' को मार दिया था पर इन्द्रजित्‌के नागपाशमें बँध गये थे। लंकासे लौटते समय यह सीताजीसे 'चूडामणि' निशानीके लिए ले आये थे। लक्ष्मणजीके मूर्च्छित हो जानेपर हनुमान् ही संजीवन बूटी लाये थे। श्रीरामके अयोध्या लौट आनेकी सूचना इन्होंने भरतको दी थी। रामभक्तोंमें यह सर्वश्रेष्ठ कहे जाते हैं और इनकी पूजा सारे भारतमें होती है। —दे० अंजना० (वाल्मी० रामा०)। शिवपु० शतरुद्र-संहिताके अनुसार यह शिवके अवतार थे (शिवपु० अध्याय १९-२०)।

हन्यमान—पु० [सं०] एक दक्षिण भारतीय जनपद (महाभा० भीष्म ९.६९)।

हयग्रीव—पु० [सं०] (१) विष्णुके १४ अवतारोंमेंसे एक। वेद, जिन्हें मधु और कैटभ नामके दैत्य उठा ले गये थे, के उद्धारके लिए विष्णुने यह अवतार लिया था—दे० मधु और कैटभ तथा (भाग०; विष्णु०)। (२) एक असुरका नाम जो कल्पांतमें ब्रह्माकी निद्राके समय वेद उठा ले गया था। विष्णुने मत्स्य अवतार लेकर इसका वध किया था (मत्स्य०)। (३) दनुके गर्भसे महर्षि कश्यप द्वारा उत्पन्न ६१ दानव पुत्रोंमेंसे एक प्रधान दानवका नाम (भाग० ६.६.३०)। (४) रामायणके अनुसार दानवोंके एक वर्गका नाम, जिनका विष्णुने वध किया था (वाल्मी० रामा० किष्किंधा ४३.२६)। देवी भागवतमें लिखा है—यह असुर दितिका पुत्र था, सरस्वती नदीके तटपर महामायाकी प्रसन्नताके लिए इसने कठोर तपस्या आरंभ की। तपस्या करते करते हजार वर्ष बीत गये। महामाया इसकी तपस्यासे प्रसन्न हुईं और इसे वरदान देने आयीं। हयग्रीवने कहा यदि आप प्रसन्न हो तो मुझे ऐसा वर प्रदान कीजिये कि मुझे देवता, असुर, मनुष्य आदि कोई मार न सके। मैं अजरामर होकर सदा जगत्‌में विचरण करूँ। देवीने कहा

यह सम्भव नहीं है; इस जगत्में आकर कोई भी अमर नहीं हो सकता। जन्म लेनेपर मृत्यु अवश्यम्भावी है, इसलिए तुम कोई दूसरा वर माँगो। असुरने कहा, यदि पूर्वोक्त वरकी प्राप्ति सम्भव न हो तो यह वर दीजिये कि हयग्रीवके सिवा अन्य किसी भी प्राणीसे मेरी मृत्यु न हो। देवी तथास्तु कह अन्तर्हित हो गयीं। तदुपरान्त बलोन्मत्त होकर वह देव, ऋषि, मुनि सबको कष्ट देने लगा। सब विष्णुजीकी शरणमें गये। उन्होंने हयग्रीवावतार लेकर उस असुरको मारा और शान्ति स्थापित की (देवीभाग० अध्या १-५)। महाभारतमें हयग्रीवकी कथा यों है—कल्पान्तमें जब यह पृथिवी जलमग्न हो गयी तब विष्णुको पुनः जगत् सर्जनका विचार हुआ। वह जगत्की विविध विचित्र रचनाका विषय सोचते हुए योगनिद्राका अवलम्बन कर जलमें सो रहे। कुछ समयके पश्चात् भगवान्ने कमलके मध्य दो जलबिन्दु देखे। एक बिन्दुसे मधु तथा दूसरेसे कैटभकी उत्पत्ति हुई। उत्पन्न होते ही दैत्योंने कमलके मध्यमें ब्रह्माको देखा। दोनों सनातन वेदोंको ले रसातलमें चले गये। वेदोंका अपहरण होनेपर ब्रह्मा चिन्तित हुए कि वेद ही मेरे चक्षु हैं उनके अभावमें लोकसृष्टि मैं कैसे कर सकूँगा। उन्होंने वेदोद्धारके लिए भगवान् विष्णुकी स्तुति की। स्तुति सुन भगवान्ने हयग्रीवकी मूर्त्ति धारण कर वेदोंका उद्धार किया (महाभा० शान्ति० ३४७. २४–७५)।

हयज्ञान–पु० [सं०] अश्वसंचालनकी विद्या, जिससे घोड़ोंकी गति बहुत अधिक हो जाती है एवं उनके गुण-दोष भी जाने जाते हैं (महाभा० वन० ७७.१७)।

हयमुख–पु० [सं०] रामायणके अनुसार बड़वानलका एक नाम। यह और्व ऋषिका क्रोधरूपी तेज है जो समुद्रमें स्थित माना गया है समुद्रमें स्थित चराचर प्राणियों सहित जल ही इसका आहार कहा गया है। इसे देख इसके अपने ऊपर गिरनेके भयसे समुद्रनिवासी असमर्थ जीव-जन्तुओंका आर्तनाद निरन्तर सुनायी देता है (वाल्मी० रामा० किष्किंधा०)। इसे बड़वानल कहते हैं—दे० बड़वानल।

हयशिर–पु० [सं०] एक दिव्य अस्त्रका नाम (वाल्मी० रामा० बाल० २७.११)।

हयशिरा–पु० [सं०] (हयग्रीव) भगवान्का एक नाम (महाभा० शांति० ३४७ अ०)।

हयानन–पु० [सं०] (हयग्रीव) भगवान्का एक नाम (वाल्मी० रामा०)।

हर–पु० [सं०] (१) शिवका एक नाम। यह स्कंदके अभिषेकमें पधारे थे (महाभा० शल्य० ४५.१०)। (२) वसदाके गर्भसे उत्पन्न माली राक्षसका पुत्र एक राक्षस जो विभीषणका मंत्री था (वाल्मी० रामा० उत्तर० ५.४४)। (३) एक विख्यात दानव, जो दनुके गर्भसे कश्यप द्वारा उत्पन्न हुआ था (महाभा० आदि० ६५.२५)

हरतालिका–स्त्री० [सं०] एक व्रतविशेषका नाम, जो भाद्रपदके शुक्ला तृतीयाको मनाया जाता है—"भाद्रस्य कज्जली कृष्णा शुद्धा च हरतालिका।" यह व्रत सर्वप्रथम पार्वतीजीने शंकरसे विवाह करनेकी इच्छासे किया था। उनकी मनोकामना इसी दिन पूरी हुई थी और स्त्रियाँ तभीसे इस व्रतको पतिमें अचल भक्ति बनी रहनेके उद्देश्यसे करती हैं। इसमें आठ प्रहर उपवास करनेके पश्चात् भोजन करनेका विधान है तथा रात्रिमें शिवपार्वतीकी पूजा, कथाश्रवण और जागरण भी करते हैं। "अवैधव्यकरा स्त्रीणां पुत्र-पौत्रप्रवर्धिनी" इसका फल है। इसी दिन 'हरिकाली'; 'हस्तगौरी' और 'कोटीश्वरी' आदि व्रत भी होते हैं। ये व्रत विशेषतया स्त्रियोंके हैं जिनमें पार्वतीकी पूजा होती है (भविष्योत्तरपु०)।

हरनाकस–पु० [सं० हिरण्यकशिपु] कश्यप और दितिका पुत्र एक प्रसिद्ध विष्णुविरोधी दैत्योंका राजा जो भक्त प्रह्लादका पिता था—दे० हिरण्यकशिपु।

हरानत–पु० [सं०] हर=शिवके लिए आनत=प्रणत रहनेके कारण रावणका एक नाम—दे० रावण।

हरि–पु० [सं०] (१) हरति पापानि-इति हरि इस व्युत्पत्तिसे विष्णु अथवा श्रीकृष्ण तथा श्रीरामका नाम (महाभा० शांति० ३४२.६८)। (२) रावणकी सेवामें रहनेवाले पिशाच तथा अधम राक्षसोंका एक दल, जिसने वानरी सेनापर आक्रमण किया था (महाभा० वन० २८५.१-२)। (३) गरुड़के महाबली तथा यशस्वी वंशजोंमेंसे एकका नाम (उद्योग० १०१.१३)। (४) घोड़ोंकी एक जाति, जिनकी गर्दन पर बड़े-बड़े बाल और शरीरके रोयें सुनहले रंगके हों; जो रंगमें रेशमी पीतांबरके समान प्रतीत होते हों, वे घोड़े हरि कहलाते हैं (द्रोण० २३.१३)। (५) राजा अकंपनका पुत्र, जो बलमें भगवान् नारायणके तुल्य, अश्वविद्यामें पारंगत, मेधावी, श्रीसम्पन्न तथा युद्धमें इन्द्रतुल्य पराक्रमी था। यह युद्धमें शत्रुओं द्वारा मारा गया था (द्रोण० ५२.२७-२९)। (६) एक असुरका नाम, जो तारकाक्षका महाबली पुत्र था। इसने अपनी तपस्यासे ब्रह्माजीको प्रसन्न कर उनके वरदानसे अपने तीनों पुरोंमें मृतसंजीवनी बावलीका निर्माण किया था (कर्ण० ३३.२७-३०)। (७) पाण्डवपक्षका एक योद्धा, जो कर्ण द्वारा मारा गया था (कर्ण ५६. ४९-५०)। (८) कुमार कार्त्तिकेयका एक सैनिक अनुचर (शल्य० ४५.६१)।

हरिकेश–पु० [सं०] (१) सूर्यकी सात कलाओंमेंसे एक—दे० सूर्य। (२) शिवका एक नाम (ब्रह्मां० ४.३४.७)। (३) शिवगणोंका एक नायक जो एक यक्ष था तथा शिवकी कृपासे गणनायक हुआ था (शिवपु०)। (४) वसुदेवके भाई श्यामक नामक यादवके शूरभूमिके गर्भसे उत्पन्न दो पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (भाग० ९.२४.४२)।

हरिक्षेत्र या हरिहरक्षेत्र–पु० [सं०] एक तीर्थस्थान जो पटनाके निकट स्थित है, जहाँ एन० ई० रेलवेके सोनपुर स्टेशनमें उतरकर जाना पड़ता है। कार्त्तिक पूर्णिमाको यहाँ बहुत बड़ा मेला लगता है। यह क्षेत्र मही और गंडक नदियोंके संगमपर बसा हुआ है। गज और ग्राहकी प्रसिद्ध लड़ाई यहींपर हुई थी और गजराजका उद्धार करनेके लिए स्वयं भगवान् विष्णुको आना पड़ा था (भाग० ८.३.३०)।

पुराणानुसार तृणबिन्दुकी पुत्री देवहूतिसे उत्पन्न जय और विजय नामक कर्दमऋषिके दो पुत्र थे। राजा मरुत्तके

प्राप्त दक्षिणाके लिए जय और विजयमें झगड़ा हुआ और एकने दूसरेको शाप दे दिया जिसके फलस्वरूप विजय ग्राह और जय गज हो गया। कार्त्तिक पूर्णिमाको गजरूपी जय गंडकी नदीमें स्नान करने गया जहाँ ग्राहरूपी विजय शापवश निवास करता था। ग्राहने गजके पैर पकड़ लिये, दोनोंमें घोर युद्ध हुआ और अंतमें कार्त्तिक पूर्णिमाको ही गजकी पुकारपर विष्णुने आकर गजको ग्राहसे छुड़ाया। पुराणोंके अनुसार जब गजेन्द्र-मोक्षके लिए विष्णु घटनास्थल (आधुनिक सोनपुर)पर आये तब उन्होंने (हरिने) हरकी (शंकरकी) स्थापनाकर शिवका पूजन किया था। वही विष्णु द्वारा स्थापित शिवलिंग "हरिहरनाथ"के नामसे प्रसिद्ध हुआ और उस क्षेत्रका नाम हरिहरक्षेत्र पड़ा जहाँ आज भी कार्त्तिक पूर्णिमाको एक जगत्प्रसिद्ध मेला लगता है और लाखों यात्री स्नान करने आते हैं।

हरिचंदन–पु० [सं०] स्वर्गके ५ प्रसिद्ध वृक्षोंमेंसे एक। अन्य चार वृक्षोंके नाम इस प्रकार है—पारिजात, मंदार, सन्तान और कल्पवृक्ष (भाग०; विष्णु०)।

हरिजटा–स्त्री० [सं०] एक राक्षसीका नाम, जिसकी आँखें बिल्लीकी आँखोंके तुल्य थीं तथा जिसे लंकापति रावणने सीताको समझानेके लिए भेजा था। इसने रावणके पराक्रमका वर्णन करते हुए सीताको उसकी भार्या बन जानेके लिए समझाया था (वाल्मी० रामा० सुन्दर० २३.९-१३; रामच० मा० सुन्दर० १०-१२)।

हरिण–पु० [सं०] ऐरावतकुलमें उत्पन्न एक नाग (सर्प), जो जनमेजयके सर्पसत्रमें जल मरा था (महाभा० आदि० ५७.११-१२)।

हरिणाश्व–पु० [सं०] एक प्राचीन राजा जिन्हें महाराज रघुसे खड्गकी प्राप्ति हुई थी और उन्होंने वह खड्ग शुनकको दिया था (महाभा० शांति० १६६.७८-७९)।

हरित–पु० [सं०] (१) कश्यपके एक पुत्रका नाम (भाग०)। (२) यदुका पुत्र (विष्णु० ४)। (३) मान्धाताके पौत्र, युवनाश्वके पुत्रका नाम (भाग० ९.७.१-२)। लिंग-पुराणानुसार सूर्यवंशी इक्ष्वाकुवंशोत्पन्न राजा युवनाश्वके पुत्र हरितके लड़के हारीत कहलाये। लिंग और वायु पुराणानुसार क्षत्रिय कुलोत्पन्न ये हारीत अंगिरा ऋषिके वंशज ब्राह्मण कहलाये। संभवतः राजा हरितकी वंशवृद्धिके लिए अंगिराने इन पुत्रोंको उत्पन्न किया हो। हरितगणके देवताओंमें एकका नाम 'अनुचर' है (ब्रह्मां० ४.१.८४)।

हरिता-अमावस्या–स्त्री० [सं०] श्रावणकी अमावस्या जिसमें श्राद्धादि करनेसे पितृगण प्रसन्न होते हैं।

हरिताल–पु० [सं०] एक पर्वतीय धातु, जो संध्या-समयके बादलोंके तुल्य सुनहले रंगकी होती है (महाभा० वन० १५८.९४)।

हरिद्रक–पु० [सं०] कश्यपकुलमें उत्पन्न एक प्रधान नागराजका नाम (महाभा० आदि० ३५.१२)।

हरिद्रागणपति–पु० [सं०] गणेशजीकी एक मूर्त्ति, जिसपर मंत्र पढ़कर हल्दी चढ़ायी जाती है (गणपतिसहस्रनाम आदि)।

हरिद्वार–पु० [सं०] एक प्रसिद्ध तीर्थस्थानका नाम, जहाँ गंगा नदी पहाड़ोंको छोड़ मैदानमें आती हैं। इसे गंगाद्वार भी कहते हैं। ऐसा विश्वास है कि इस तीर्थके सेवनसे हरि (=विष्णु) लोकका द्वार खुल जाता है। यहाँ 'हरिपैड़ी' घाट भी है और गंगाजीके जलमें एक मंदिर भी बना है जिसकी परिक्रमाका बड़ा माहात्म्य है। मायापुरी भी हरिद्वारको ही कहते हैं। यह अयोध्या, मथुरा आदि सात मोक्षदायक पुरियोंमें गिनी जाती है —दे० विष्णु०, भाग० तथा गंगा।

हारिपिंडा–स्त्री० [सं०] कुमार कार्त्तिकेयकी अनुचरी एक मातृकाका नाम (महाभा० शल्य० ४६.२४)।

हरिपैड़ी–स्त्री० [हिं०] हरिद्वारमें गंगाजीका एक घाट, जहाँ स्नान-तर्पणका बड़ा माहात्म्य है—दे० गंगा।

हरिप्रबोधिनी–स्त्री० [सं०] देवोत्थान एकादशीका नाम, जिसके व्रत, उत्सव आदि कार्त्तिक शुक्ला एकादशीको मनाये जाते हैं। इस दिन विष्णु भगवान् अपनी शेषशय्यापरसे सोकर उठते हैं। कहते हैं विष्णु देवशयनी एकादशी (आषाढ़ शु० ११) को सोते हैं और इस तिथिको सोकर उठते हैं। पर वास्तवमें इसका अभिप्राय कुछ और है। देव अर्थात् दिव्य या श्रेष्ठ गुणवाले पुरुष जो वर्षाकालमें चुपचाप बैठते हैं, इस तिथिके पश्चात् वर्षाकी समाप्तिके कारण चैतन्य हो काममें लग जाते हैं। भला ईश्वरको सोनेका अवकाश कहाँ? और वह भी चार महीनेतक। कुंभकर्ण बिचारा केवल ६ महीनोंतक सोता था। वह अपनी निद्राके लिए संसारभरमें बदनाम तथा कलंकित है (भाग०, विष्णु० तथा भविष्योत्तरपु०)।

हरिबभ्रु–पु० [सं०] एक जितात्मा तथा जितेन्द्रिय मुनिका नाम, जो युधिष्ठिरकी सभामें विराजमान होते थे (महाभा० सभा० ४.१६)।

हरिमेधा–पु० [सं०] एक प्राचीन राजर्षिका नाम, जिनके यज्ञके समान जनमेजयका यज्ञ बतलाया गया है (महाभा० आदि० ५५.३)। इनकी कन्याका नाम ध्वजवन्ती था, जिसका पश्चिम दिशामें निवास बतलाया गया है (उद्योग० ११.१३)।

हरिवंश–पु० [सं०] महाभारतका ही एक अंग तथा पुराणोंकी श्रेणिका १६३७४ श्लोकोंवाला एक ग्रंथ जिसमें श्रीकृष्ण और उनके कुलोत्पन्न यादवोंका वृत्तांत दिया है। इसके तीन खण्ड हैं—पहलेमें प्रजापतियों तथा अनेक राजपरिवारोंकी वंशावलियाँ दी गयी हैं, साथमें सृष्टिका भी हाल है। दूसरेमें श्रीकृष्णके जीवनवृत्तांत है। तीसरे खण्डमें भविष्यकी बातें तथा कलियुगका भ्रष्टाचार दिया है। ग्रंथ देखनेसे पता चलता है कि यह दक्षिणमें लिखा गया होगा।

हरिवर्ष–पु० [सं०] जंबूद्वीपके ९ खण्डोंमेंसे एक—दे० जंबूद्वीप।

हरिवल्लभा–स्त्री० [सं०] अधिक मासकी कृष्णैकादशी।

हरिशयनी–स्त्री० [सं०] आषाढ़ शुक्ला एकादशी जिस दिन पुराणानुसार विष्णु भगवान् अपनी शेष-शय्यापर सोते हैं। इसमें एकभुक्त, नक्तव्रत, अयाचित भोजन या सर्वथा उपवास करनेका विधान है। यह व्रत करनेवाले व्रती परान्नका त्याग कर पूर्वोक्त इन चार प्रकारोंमेंसे किसी एकको ग्रहण कर व्रत करे तो महाफल होता है। आषाढ़

शुक्ला ११ से कार्त्तिक शुक्ला ११ तक हिंदुओंके सब शुभ कार्य बंद रहते हैं—दे० हरिप्रबोधिनी तथा भविष्योत्तरपु० ।

हरिशर–पु० [सं०] शंकर भगवान्का एक नाम । महाभारतके अनुसार तारकासुरके तीन पुत्रोंके लिए मय दानवने तीन नगर बसाये थे । इनका अत्याचार बढ़नेपर शंकरने विष्णुको अपने धनुषका बाण बना इन तीन पुरियोंको एक ही बाणसे नष्ट कर दिया था । इन तीनों पुरियोंको नष्ट करनेके लिए शंकरने हरि=विष्णुको शर=बाण बनाया था, अतः यह नाम पड़ा (मत्स्य० १८६.३) ।

हरिश्चंद्र–पु० [सं०] इक्ष्वाकुवंशी राजा त्रिशंकुके पुत्र एक सूर्यवंशी राजा जो पुराणानुसार बड़े दानी और सत्यव्रती थे । इनकी माताका नाम सत्यवती था । ये इन्द्रकी सभामें विराजते थे (महाभा० सभा० ७.१३) । ये बड़े बलवान् तथा समस्त भूपालोंके सम्राट् थे । भूमण्डलके सभी नरेश इनकी आज्ञाका पालन सिर झुकाकर करते थे । इन्होंने अपने एकमात्र जैत्र रथपर चढ़कर अपने अस्त्र-शस्त्रोंके प्रतापसे सातों द्वीपोंपर विजय प्राप्त की थी । इन्होंने राजसूय यज्ञका अनुष्ठान किया था, याचकोंके माँगनेपर उनकी माँगसे पचगुना अधिक धन दान किया था । ब्राह्मणोंको धनरत्न प्रदान कर सन्तुष्ट किया था, इसलिए ये अन्य राजाओंकी अपेक्षा अधिक तेजस्वी और यशस्वी हुए थे तथा अधिक सम्मानपूर्वक इन्द्रकी सभामें विराजते थे (सभा० १२.११.१८) । इन्द्रने ईर्ष्यावश इनकी परीक्षा ली, जिसके लिए विश्वामित्र ऋषि नियुक्त किये गये थे । दक्षिणा चुकानेके लिए यह कुटुम्ब सहित बिके, स्त्रीने दासीका काम स्वीकार किया तो यह चांडालके यहाँ श्मशानकी रखवाली करनेको बाध्य हुए । राजा होते हुए भी इन्हें नाना प्रकारके कष्ट भोगने पड़े, पर यह अपने व्रतसे न डिगे । अंतमें परीक्षोत्तीर्ण हुए और परिवार सहित स्वर्ग मिला (भाग० ९.७.७; वायु० ८८.११८) । ऐतरेयब्राह्मणमें इनकी कथा कुछ भिन्न है । इसमें हरिश्चन्द्र राजा वेधाके पुत्र कहे गये हैं—दे० शुनःशेफ; वेधा; मार्कण्डेयपु० ।

हरिश्मश्रु–पु० [सं०] हिरण्याक्ष दैत्यके ९ पुत्रोंमेंसे एक जो ब्रह्मकल्पमें परावसु गंधर्वका पुत्र था —दे० हिरण्याक्ष तथा भाग० ७.२.१९) ।

हरिषेण–पु० [सं०] विष्णुपुराणानुसार दसवें मनुका एक पुत्र ।

हरिसुत–पु० [सं०] (१) श्रीकृष्णसुत प्रद्युम्न (भाग०) । (२) अर्जुन, जो इन्द्रके अंशावतार थे (महाभा०) ।

हरिश्रावा–स्त्री० [सं०] भारतवर्षकी एक नदीका नाम (महाभा० भीष्म० ९.२८) ।

हरिहरक्षेत्र–पु० [सं०] हरि (विष्णु) द्वारा स्थापित हर (शिव) की मूर्त्ति=हरिहरनाथ जो मही और गंडकके संगमपर स्थित है और जहाँ कार्त्तिक १५ को स्नान होता है—दे० हरिक्षेत्र ।

हरी–स्त्री० [सं०] क्रोधवशाके गर्भसे उत्पन्न कश्यपकी मृगी, मृगमन्दा आदि १२ पुत्रियों, जो सबकी-सब पुलह ऋषिको ब्याही गयी थीं, मेंसे एक पुत्री जो घोड़ों, बंदर आदि पशुओंकी माता कही गयी है । पशुओंकी सृष्टि इन्हींसे आगे चली (ब्रह्मां० ३.७.१७१-१७६; महाभा० आदि० ६६.६०-६४) ।

हर्यश्व–पु० [सं०] (१) अनरण्यका पुत्र, त्रसद्दस्युका पौत्र तथा अरुणका पिता (विष्णु०=अनरण्यपुत्र पृषदश्व, पृषदश्वपुत्र=हर्यश्व) (भाग० ९.७.४; विष्णु० ४.३.१७-१८) । (२) पुरुवंशोत्पन्न ऋक्षका पुत्र जो मुद्गल, सृञ्जय, बृहदिपु, यवीनर और कांपिल्य नामके ५ पुत्रोंका पिता था । इनके बारेमें हर्यश्वने कहा था कि ये मेरे पाँचों पुत्र आश्रित देशोंकी रक्षा करनेके लिए ‘अलम्’ हैं, अतः ये पुत्र पांचाल कहलाये (विष्णु० ४.१९; ५७-५९) । (३) दक्ष प्रजापति तथा वीरण प्रजापतिकी पुत्री वीरिणीके गर्भसे उत्पन्न १०,००० पुत्र जिन्हें नारदने उपदेश दे संसारसे विरक्त कर दिया था और दक्षके शापसे नारद कहीं स्थिर होकर ठहर नहीं सकते हैं (शिवपु० रुद्र-संहिता अध्याय १३) तथा—दे० नारद । (४) अयोध्याके एक राजाका नाम, जो महापराक्रमी, चतुरंगिणी सेनासे सम्पन्न, कोष, धन-धान्य तथा मन्त्रशक्तिसे समृद्ध थे । प्रजा इन्हें बहुत अधिक प्रिय थी । ब्राह्मणोंपर इनकी असीम श्रद्धा थी । ये प्रजावर्गके हित एवं संतानकी कामना करते थे और शांतभावसे तपस्यामें निरत रहते थे । इनके निकट ययाति कन्याके साथ गालव ऋषि पधारे । इन्होंने गालवको शुल्करूपमें दो सौ श्यामकर्ण घोड़े देकर ययाति-कन्या माधवीको पुत्रोत्पादनार्थ पत्नीके रूपमें ग्रहण किया एवं माधवीके गर्भसे इनका वसुमना नामक पुत्र उत्पन्न हुआ । पुत्रोत्पत्तिके पश्चात् माधवीको गालव मुनिको लौटा दिया (महाभा० उद्योग० ११५.१८-२१; ११६.१६-२०) । इन्होंने जीवनमें कभी मांस नहीं खाया (अनु० ११५-६७) । (५) काशीराज सुदेवके पिता जो वीतहव्यके पुत्रों द्वारा मारे गये थे (अनु० ३०.१०-११) । (६) राजर्षि धृष्टकेतुके पुत्र तथा मरुके पिताका नाम (वाल्मी० रामा० बाल० ७१.८) ।

हर्ष–पु० [सं०] (१) धर्मके तीन श्रेष्ठ पुत्रोंमेंसे एकका नाम, शेष दोका नाम शम और काम है । हर्षकी पत्नीका नाम नंदा है (महाभा० आदि० ६६.३२-३३) । (२) अष्ट वसुओंमेंसे द्रोण नामक एक वसुके अभिमति नामक पत्नीके गर्भसे उत्पन्न कई पुत्रोंमेंसे एक पुत्रका नाम (भाग० ६.६.११) । विष्णु पुराणके अनुसार हर्ष धर्मका पौत्र तथा काम द्वारा रतिसे उत्पन्न काम-पुत्र है (विष्णु० १.७.३१) ।

हलधर–पु० [सं०] बलरामका एक नाम (भाग० १०.६६.२३; १०.६७.१६; १०.६८.४०) ।

हलायुध–पु० [सं०] हल है अस्त्र जिसका=बलराम=हलधृत् ।

हलाहल–पु० [सं०] देवासुर-संग्रामके समय समुद्र-मंथनसे १४ रत्न निकले थे और हलाहल (भयंकर विष) भी इसी समय निकला था । ऐसा प्रतीत होता था कि प्रलयके पहले ही सृष्टिका नाश हो जायगा । अतः संसारके कल्याणार्थ शंकर भगवान्ने इसे अपने कण्ठमें रख लिया । विषके प्रभावसे शंकरका कण्ठ नीला पड़ गया और तभीसे उनका नाम ‘नीलकण्ठ’ हो गया—‘ततः करतलीकृत्य व्यापि हालाहलं विषम् । अभक्षयन्महादेवः कृपया भूतभावनः ॥” (भाग० ८.७.४२) ।

हलिक–पु० [सं०] कश्यप-कुलमें उत्पन्न एक प्रमुख नागराजका नाम (महाभा० आदि० ३५.१५)।

हलिमा–स्त्री० [सं०] (१) कुमार कार्त्तिकेयकी अनुचरी एक मातृका (स्कंदपु०)। (२) शिशुकी सप्त मातृकाओंमेंसे एक (महाभा० वन० २२८.१०)।

हलीमक–पु० [सं०] वासुकि-कुलोत्पन्न एक नागका नाम, जो जनमेजयके सर्पसत्रमें जल मरा था (महाभा० आदि० ५७.५)।

हवन–पु० [सं०] ११ रुद्रोंमेंसे एक रुद्रका नाम (महाभा० अनु० १५०.१३)।

हविर्धान–पु० [सं०] मत्स्यपुराणानुसार (मत्स्य० ४.४५) ये आदिराज पृथुके दो पुत्रोंमेंसे एक अन्तर्धानके शिखंडिनीके गर्भसे उत्पन्न पुत्र तथा पृथुके पौत्र थे। इनके आग्नेयी धिषणाके गर्भसे प्राचीनवर्हि आदि छह पुत्र हुए (ब्रह्मां० २.३७.२३; वायु० ६३.२२; विष्णु० १.१४.१-२)।

हविर्भू–स्त्री० [सं०] पुलस्त्यकी पत्नी तथा कर्दम ऋषिकी सात पुत्रियोंमेंसे एक पुत्री। पुलस्त्य ब्रह्माके मानसपुत्रोंमेंसे एक थे जो विश्रवाके पिता तथा कुबेर और रावणके पितामह थे जिन्हें सप्तर्षियों और प्रजापतियोंमें गिना जाता है (भाग० ३.२४.२१-२२; ४.१.३६-३७) तथा—दे० पुलस्त्य।

हविष्मती–स्त्री० [सं०] महर्षि अंगिराकी पाँचवीं पुत्रीका नाम, जिसकी संनिधिमें हविष्यसे देवताओंका यजन किया जाता है (महाभा० वन० २१८.६)।

हविष्मान्–पु० [सं०] (१) छठे (चाक्षुष) मन्वंतरके सप्तर्षियोंमेंसे एक ऋषि (भाग० ८.४.८; विष्णु० ३.१.२८)। (२) अंगिराका एक पुत्र - दे० अंगिरा तथा (भाग०)। (३) एक प्राचीन महर्षिका नाम, जो इन्द्र-सभामें रहकर इन्द्रकी उपासना करते थे (महाभा० सभा० ७.१३)।

हविष्यंद–पु० [सं०] विश्वामित्रके एक पुत्रका नाम (वाल्मी० रामा० वाल० ५७.३)।

हव्यवाहन–पु० [सं०] अग्निका एक नाम—दे० अग्नि तथा (भाग० १.१५.८; ब्रह्मां० ३.१०.२४-३५)।

हसन–पु० [सं०] स्कन्दके एक सैनिक अनुचरका नाम (स्कंदपु०; महाभा० शल्य० ४५.६७)।

हस्त–पु० [सं०] वसुदेवके रोचनाके गर्भसे उत्पन्न पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (भाग० ९.२४.४९)।

हस्तिकश्यप–पु० [सं०] एक प्राचीन ऋषि, जो पर्वतपर तप करते समय श्रीकृष्णके समीप गये थे (महाभा० अनु० १३९.११)।

हस्तिपद–पु० [सं०] कश्यपकुलमें उत्पन्न एक प्रमुख नागराजका नाम (महाभा० आदि० ३५.९)।

हस्तिपिंड–पु० [सं०] कश्यपकुलमें उत्पन्न एक प्रमुख नागराजका नाम (महाभा० आदि० ३५.१४)।

हस्तिपृष्ठक–पु० [सं०] एक ग्राम (नगर) का नाम, अपने ननिहाल केकयसे लौटते समय भरत इससे होकर आये थे (वाल्मी० रामा० अयोध्या० ७१.१५)।

हस्तिनापुर–पु० [सं०] महाभारतकालका एक प्रधान नगर जहाँ कौरवोंकी राजधानी थी जिसके लिए कुरुक्षेत्रका प्रसिद्ध युद्ध हुआ था। यह महाराज हस्तीका वसाया था (विष्णु० ४.१९.२८) और दिल्लीसे ५७ मील उत्तर-पूर्वके कोनेपर वसा था। इसके खंडहर इसी स्थानपर अब भी विद्यमान हैं। पहले गंगा नदी इसीके समीपसे होकर वहती थी। कुछ लोग इसे हस्तीका नगर कहते हैं अर्थात् हस्तीसे हाथी न समझ महाराज हस्तीका ही वोध होना उचित है। हस्तिनापुरकी स्मृति सुरक्षित रखनेकी इच्छासे ही शायद दिल्लीके नवीन राजभवनमें हस्तीकी सूँड़ सहित आकृति वनायी गयी है। हस्तिनापुरके ही नाम गजाह्वय, नागसाह्वय तथा नागाह्व और हस्ती या हास्तिनपुर भी है। यह कौरवोंकी रमणीय राजधानी थी। यहाँ किसी समय महाराज शान्तनु राज्य करते थे। गंगाजीके द्वारा हस्तिनापुरके वहाये जानेपर अधि-सोमकृष्णके पुत्र राजा निचक्नुने कौशाम्बी नगरीको राजधानी वनाया (महाभा० आदि० ९५.५४; १००.१२; विष्णु० ४.२१.८)।

हस्तिमल्ल–पु० [सं०] पाताल स्थित शंख नामक नागका एक नाम।

हस्तिमुख–पु० [सं०] एक राक्षसका नाम। सीताजीकी खोज करते हुए हनुमान्‌जीने इसके भवनमें प्रवेश कर उसमें आग लगायी थी (वाल्मी० रामा० सुन्दर० ६.२५; ५६.१३)।

हस्तिसोमा–स्त्री० [सं०] भारतवर्षकी एक नदीका नाम (महाभा० भीष्म० ९.१९)।

हस्ती–पु० [सं०] (१) सोमवंशी महाराजा कुरुके वंशज धृतराष्ट्रका एक पुत्र (महाभा० आदि० ९४.५८)। (२) पुरुवंशोत्पन्न सुहोत्रका पुत्र जिसने हस्तिनापुर वसाया था। यह चंद्रवंशी राजपूत था जिसके अजमीढ़, द्विजमीढ़ और पुरुमीढ़ नामके तीन पुत्र थे (विष्णु० ४.१९.२८-२९)।

हाटक–पु० [सं०] हिमालयके उत्तर भागवर्ती एक देशका नाम, जो गुह्यकोंका निवासस्थान है। उत्तरदिग्विजयके समय अर्जुन यहाँ गये और गुह्यकोंको समझा-बुझाकर अपने अधीन कर लिया (महाभा० सभा० २८.३-४)।

हाटकलोचन–पु० [सं०] हिरण्याक्ष दैत्यका एक नाम—दे० हिरण्याक्ष।

हाटकेश–पु० [सं०] गोदावरी-तटपर स्थित भगवान् शंकरकी एक मूर्त्तिका नाम (स्कंदपु० नर्मदा-माहात्म्य)।

हार–पु० [सं०] एक देशका नाम, यहाँके नरेशको नकुलने पश्चिमदिग्विजयके समय आज्ञामात्रसे अपने अधीन कर लिया था। यहाँके नरेश युधिष्ठिरके राजसूय यज्ञमें भेंट लेकर आये थे (महाभा० सभा० ३२.१२-१३; ५१-५४)।

हारीत–पु० [सं०] (१) सूर्यवंशी इक्ष्वाकुवंशोत्पन्न राजा युवनाश्वका पुत्र (भाग० ९.७.२)। (२) जावाल ऋषिका पुत्र जिसका निवास कलाप ग्राममें था जहाँसे स्कंद पुराणानुसार नारदजी अन्य ब्राह्मणोंके साथ इसे भी महीसागर-संगमतीर्थ (स्तम्भतीर्थ) ले आये थे (स्कंदपु० माहेश्वर० कुमारिका-खंड)। (३) एक प्राचीन ऋषिका नाम, जो युधिष्ठिरका विशेष सम्मान करते थे। ये शरशय्यापर पड़े भीष्मपितामहको देखने गये थे (महाभा० वन० २६.२३; शांति० ४७.७)।

हार्दिक्य–पु० [सं०] (१) अश्वपति नामक दैत्यके अंशसे उत्पन्न एक क्षत्रिय नरेशका नाम (महाभा० आदि० ६७.१५)। इसे पाण्डवोंकी ओरसे रणनिमंत्रण भेजनेका निश्चय

किया गया था (उद्योग० ४.१२)। (२) यदुकुलोत्पन्न हृदिकके पुत्र कृतवर्माका नाम, जो रैवतक पूर्वतपर हुए महोत्सवमें विद्यमान था (आदि० २१८.११-१२)। (३) एक दानवका नाम, जिसका भगवान् विष्णुने वध किया था (वाल्मी० रामा० उत्तर ६.३५)।

हालेय–पु० [सं०] अनिष्टकर्माके पुत्र, अटमानके पौत्र तथा तलकके पिताका नाम (भाग० १२.१.२५)।

हाहा–पु० [सं०] (वायु०=हहा) एक गंधर्वका नाम, जो संगीतविशारद सात गन्धर्वोंमें एक है एवं ब्रह्मलोकमें अतितान नामक संगीत गाता है (विष्णु० ४.१.६८; वायु० ६९.४६)।

हिंगलाज–स्त्री० [सं० हिंगुलाजा] वेलुचिस्तानकी पहाड़ियोंमें स्थित एक देवी जो एक गुफामें हैं। समुद्रके किनारे-किनारे कराचीसे ४५ कोस जानेपर यहाँ पहुँचते हैं—दे० हिंगुला।

हिंगुला–पु० [सं०] सिंध और वेलुचिस्तानके वीचका वह प्रदेश जहाँ हिंगलाज देवीका मन्दिर है—दे० हिंगलाज।

हिडिंब–पु० [सं०] एक नरभक्षी क्रूर राक्षस, जो वारणावतके दक्षिणवाले वनमें शालवृक्षपर रहता था। इसका मुख विकराल था। जब पांडव वनवासमें थे तब इसने अपनी वहिन हिडिंवाको उनके मारनेके लिए भेजा था पर वह पांडवोंके रूप-लावण्यपर मुग्ध हो गयी और उसने भीमके सामने अपने विवाहका प्रस्ताव रखा। इतनेमें ही पांडवोंपर आक्रमण करनेके लिए हिडिंब आया और भीमसे युद्धमें हारकर मारा गया—दे० हिडिंबा तथा (महाभा० आदि० १५१.१-२०; १५२.२२-४२; १५३.३०-३२)।

हिडिंबवन–पु० [सं०] एक वनका नाम, जिसमें हिडिंव राक्षस रहता था (महाभा० वन० १२.९३)।

हिडिंबा–स्त्री० [सं०] हिडिंब राक्षसकी वहिन जो अनिंद्य सुन्दरी थी और भीमको देख उनपर आसक्त हो गयी थी। हिडिंवका वध करनेके पश्चात् माता कुंतीकी आज्ञासे भीमने हिडिंवाके साथ विवाह कर लिया। इसीके गर्भसे भीमका महावली पुत्र घटोत्कच उत्पन्न हुआ था (महाभा० आदि० ६१-२५; १५४.३१)। महाभारतके युद्धमें यह वड़ी वीरतासे लड़ा था और इसने अश्वत्थामाको खूब छकाया था (महाभा० द्रोण १७९.१५-४७)। कर्णने इन्द्रकी दी अमोघशक्तिसे इसे मारा था। कर्णने इस शक्तिको अर्जुनके वधके लिए ही इन्द्रको प्रसन्न कर प्राप्त किया था। श्रीकृष्णकी दूरदर्शितासे कर्णने घवराकर घटोत्कचपर उसे चलाया और वह एक वारके प्रयोगके पश्चात् इन्द्रके पास लौट गयी (महाभा० द्रोण० १७९.५८) तथा—दे० घटोत्कच।

हिमवत्खंड–पु० [सं०] स्कंदपुराणका एक खण्ड (स्कंदपु०)।

हिमवत्सुत–पु० [सं०] मैनाक पर्वतका एक नाम—दे० मैनाक।

हिमवत्सुता–स्त्री० [सं०] पार्वतीका एक नाम—दे०पार्वती।

हिमवान्–पु० [सं०] चन्द्रमाका एक नाम जो पितृगणके अधिपति कहे गये हैं। वर्हिषद पितृगणकी मानसी कन्या मीनाका विवाह इनसे हुआ था (वायु० ३०.२७-९, ३१; विष्णु० १.१०.१९; ब्रह्मां० २.१३.३१; मत्स्य० १४.२; १८.२१; १९.५; १४१.४,१३, १६)।

हिमांशु–पु० [सं०] चन्द्रमाका एक नाम—दे० चन्द्रमा।

हिमालय–पु० [सं०] भारतवर्षका एक वहुत वड़ा और ऊँचा पहाड़ जो इस देशके उत्तर सीमापर स्थित है। पुराणानुसार यह मेनकाका पति और पार्वतीका पिता कहा गया है। गंगाजी इसकी वड़ी पुत्री हैं। भगवान् शंकरका निवासस्थान 'कैलास' इसी पर्वतपर है। महाभारतके महाप्रस्थानिक पर्वके अनुसार कुरुक्षेत्रके युद्धादिके अन्तमें पांडव इसी पर्वतपर महाप्रस्थानके लिए आये थे। यहीं देवराज इन्द्रसे युधिष्ठिरका साक्षात्कार हुआ जब देवरथपर वैठकर इन्द्रके साथ युधिष्ठिर सशरीर स्वर्ग गये थे। यह संसारका सर्वश्रेष्ठ पहाड़ माना गया है (महाभा० आदि० ३०.१८;३६.३-४; विष्णु०)।

हिरण्मय–पु० [सं०] (१) एक प्राचीन ऋषि, जो इन्द्र सभामें विराजते थे (महाभा० सभा० ७.१८)। (२) सुदर्शन या जम्वूद्वीपका एक वर्ष, जो नीलपर्वतसे दक्षिण और निषध पर्वतसे उत्तर है (भीष्म ८.५-८)।

हिरण्यकवर्ष–पु० [सं०] जम्वूद्वीपका एक खण्ड जो श्वेत पर्वतसे आगे है (महाभा० सभा० २८.६ के वाद प्रक्षिप्त पाठ)।

हिरण्यकशिपु–पु० [सं०] कश्यप ऋषिका एक पुत्र जो दक्ष प्रजापतिकी पुत्री दितिके गर्भसे उत्पन्न एक दैत्यराज था। पूर्वजन्ममें यह विष्णुका जय नामक द्वारपाल था पर सनकादिके शापसे असुर हुआ (रामच० मा० वाल० १२१-१२२)। इसकी माता दिति 'दैत्यमाता' कही गयी है। विष्णु द्वारा इसके भाई हिरण्याक्षका वध किये जानेके कारण यह विष्णुका घोर विरोधी हो गया था, पर इसका पुत्र प्रह्लाद इसके ठीक विपरीत विष्णुका अनन्य भक्त था। हिरण्यकशिपु को ब्रह्मासे वर प्राप्त था कि यह किसी प्राणीसे मारा नहीं जा सकेगा, जिससे यह वड़ा प्रवल और निडर हो गया था। भक्त प्रवर प्रह्लाद इसका पुत्र था, जिसे भगवद्भक्तिके लिए इसने घोर यातनाएँ दी थीं। ब्रह्माके वरको वचाते हुए विष्णुने नृसिंह (आधा सिंह आधा मनुष्य) रूप धारण कर तथा इसे जँघोंपर रख हाथके नखोंसे इसका (हिरण्यकशिपुका) वध किया था। पुनर्जन्ममें यही रावण हुआ था (रामच० मानस, वाल० १२२।१) तथा—दे० नृसिंह। विहार राज्यांतर्गत पूर्णिया जिलेके एकदम पश्चिम भागमें रानीगंजसे १२ मील दक्षिण धरहरा गाँवमें सतलीगढ़ किलेका खण्डहर है जिसके उत्तर-पश्चिम 'माणिक स्तभ' नामका एक स्तम्भ है। कहते हैं हिरण्यकशिपुने अपने पुत्र प्रह्लादको इसी खंभमें वाँधा था जिसे फाड़कर नृसिंह भगवान् प्रकट हुए थे तथा हिरण्यकशिपुका वध किया था।

हिरण्यकामधेनु–स्त्री० [सं०] १६ महादानोंमेंसे एक जिसमें सोनेकी गौ वना दान करते हैं जिसका वड़ा माहात्म्य है (मत्स्य० २७८.१-५; दानक्रियाकौमुदी; दानदीपिका)।

हिरण्यगर्भ–पु० [सं०] ऋग्वेदानुसार सर्वप्रथम इसीकी सृष्टि हुई थी। यही आकाश, पृथ्वी, सारी सृष्टिका आधार देवताओंका भी देव था। मनुके अनुसार सूर्यसम तेजसे युक्त सुवर्णके अंडेमें सर्वप्रथम ब्रह्मा उत्पन्न हुए जिसमें एक वर्ष रहनेके पश्चात् ब्रह्माने इसके दो खण्ड किये—एकसे

पृथ्वी और दूसरे खण्डसे स्वर्गकी सृष्टि की गयी। इन दोनोंके बीचमें आकाश बना (ऋग्वेद तथा मनुस्मृति)।

हिरण्यपुर–पु० [सं०] हरिवंशके अनुसार वायुमण्डलमें स्थित असुरोंका एक नगर। महाभारतके अनुसार पुलोमा और कालकाकी प्रार्थनापर उनके पुत्रोंके लिए ब्रह्माजीके द्वारा निर्मित एक विमानके तुल्य आकाशचारी दिव्य नगर, जो पौलोम और कालेय नामक दानवोंका निवासस्थान था एवं उन्हींके द्वारा सुरक्षित था। अर्जुनने इसका संहार किया (महाभा० वन०)।

हिरण्यधनु–पु० [सं०] एक निषादराजका नाम, जो एकलव्यका पिता था (महाभा० आदि० १३१.३१)।

हिरण्यनाभ–पु० [सं०] (१) संजयपुत्र सुवर्णष्ठीवी जब मृत्युके पश्चात् नारदजीकी कृपासे जीवित हुआ, तब इसका यही नाम रखा गया था। इसकी आयु एक सहस्र वर्षोंकी हो गयी थी (महाभा० शान्ति १२९.१४९)। (२) सूर्यवंशी राजा विधृतिका पुत्र, खगणका पौत्र तथा पुष्यका पिता (भाग० ९.१२-३-५)।

हिरण्यबाहु–पु० [सं०] वासुकि नागके वंशमें उत्पन्न एक नागका नाम, जो जनमेजयके सर्पसत्रमें होमा गया था (महाभा० आदि० ५७.६)।

हिरण्यबिन्दु–पु० [सं०] हिमालयके निकटका एक तीर्थ, जहाँ तीर्थ-यात्राके सिलसिलेमें अर्जुनका आगमन हुआ था (महाभा० आदि० २१४:४)। जो पुरुष मन और इन्द्रियोंका संयमन कर इस तीर्थमें स्नानकर भगवान् कुशेशयको प्रणाम करता है उसके सब पाप धुल जाते हैं (अनु० २५.१०-११)।

हिरण्यरेता–पु० [सं०] (१) अग्निका एक नाम (महाभा० आदि० ५५.१०)। (२) सूर्यका नाम (वाल्मी० रामा० लंका० १०५.८७)। (३) शिवजीका एक नाम (वायु० ३०.२४१)।

हिरण्यरोमा–पु० [सं०] (१) मरीचिका पुत्र एक लोकपाल, —दे० मरीचि। (२) महाभारतके अनुसार दाक्षिणात्य देशोंके अधिपति विदर्भराज भीष्मकका एक नाम (महाभा० उद्योग० १५८.१)।

हिरण्यवती–स्त्री० [सं०] कुरुक्षेत्रमें बहनेवाली एक पवित्र नदीका नाम जो स्वच्छ और विशुद्ध जलसे भरी रहती है जिसमें कंकर-कीचड़ का नाम तक नहीं है। यह भारतकी प्रमुख नदियोंमें है (महाभा० उद्योग १५२.७-८)।

हिरण्यवर्मा–पु० [सं०] दशार्णदेशके राजाका नाम, जिन्होंने अपनी कन्याका विवाह शिखण्डीसे किया था। शिखंडीके स्त्रीत्वकी जानकारीसे कुपित होकर इन्होंने राजा द्रुपदपर चढ़ाई करनेका निश्चय किया। राजा द्रुपदकी राजधानीके निकट जाकर अपने पुरोहित द्वारा द्रुपदको संदेश भेजा। युवतियों द्वारा शिखण्डीकी परीक्षा कराकर इन्हें उसके पुंस्त्वकी प्रतीतिसे प्रसन्नता हुई और द्रुपद तथा शिखण्डीका सम्मान कर घर लौटे (महाभा० उद्योग० १८९.१०, २१-२२; १९०.९-१०; १९२.२०-३२)।

हिरण्यशृंग–पु० [सं०] कैलास पर्वतसे उत्तर मैनाक पर्वतके समीपस्थ एक मणिमय पर्वत।

हिरण्यश्राद्ध–पु० [सं०] एक श्राद्ध जिसमें प्रत्येक अवसरपर जो सामग्री अपेक्षित होती है उसकी पूर्त्तिके लिए निष्क्रयरूपसे सुवर्ण दक्षिणामात्र दे देते हैं (स्कंदपु० ब्राह्म-खण्ड)।

हिरण्यसर–पु० [सं०] पश्चिम दिशाका एक प्राचीन तीर्थस्थान। यहाँ स्नान कर चन्द्रमाने पापसे छुटकारा प्राप्त किया था, तभीसे इसका नाम प्रभास हुआ (महाभा० शांति० ३४२.५७)।

हिरण्यहस्त–पु० [सं०] एक प्राचीन ऋषि। जिन्हें राजा मदिराश्वसे उनकी सुन्दरी कन्याका दान प्राप्त हुआ था (महाभा० आदि० २३४.३५)।

हिरण्याक्ष–पु० [सं०] (१) दक्ष प्रजापतिकी पुत्री दैत्यमाता दितिकेसे गर्भ उत्पन्न कश्यप ऋषिका एक पुत्र तथा हिरण्यकशिपुका भाई। पूर्वजन्ममें यह विजय नामक विष्णुका द्वारपाल था, पर सनकादिके शापसे असुर हो गया था (रामच० मान० बाल० १२१-१२२)। वृषपर्वाकी पुत्री उपदानवी (भाग० = रुपाभानु) से इस प्रसिद्ध दैत्यका विवाह हुआ था। यह पृथ्वीको ही उठा पाताल ले गया था। विष्णुने वराह अवतार लेकर इसका वध किया और पृथ्वीका उद्धार किया था। यही पुनर्जन्ममें रावणका भाई कुंभकर्ण हुआ (रामच० मानस० बाल कां० १२२।१; शिवपु० रुद्र-संहिता, खंड ५, अध्याय ४२; भाग० ६.६.३४,३७; ७.२.१८-२७)। (२) वसुदेवका भतीजा तथा श्यामकके दो पुत्रों, जो शूरभूमिके गर्भसे उत्पन्न हुए थे, मेंसे एक पुत्र (भाग० ९-२४.४२)।

हिरण्याश्व–पु० [सं०] १६ महादानोंमेंसे एक, जिसमें सोनेका घोड़ा बनवाकर दान करते हैं (मत्स्य० १७९.१-१०; दानक्रियाकौमुदी तथा दानदीपिका)।

हिरश्वान्–पु० [सं०] विष्णुपुराणमें दी हुई स्वायंभुव मनकी वंशतालिकामें इसका उल्लेख है। स्वायंभुव मनुके दो पुत्र थे—पहला प्रियव्रत और दूसरा उत्तानपाद। प्रियव्रतके ९ पुत्र हुए जिनमें केवल अग्नीध्र पुत्रवान् हुए। उनके भी ९ पुत्र हुए जिनमें हिरश्वान् छठे थे (विष्णु०)।

हीक–पु० [सं०] विपाशामें रहनेवाला एक राक्षस, जो बहि नामके निशाचरका साथी था। इन्हीं दोनोंकी संताने वाहीक कहलाती है (महाभा० कर्ण० ४४.४१-४२)।

हीनबाहु–पु० [सं०] शिवका एक गण (शिवपु० तथा काशी खण्ड)।

हुंड–पु० [सं०] एक जनपद, जहाँके सैनिकोंके साथ नकुल और सहदेव क्रौंचारुण व्यूहके बायें पंखके स्थानपर स्थित थे (महाभा० भीष्म० ५०.५२-५३;)।

हुंडन–पु० [सं०] शिवका एक गण (शिवपु०)।

हुताशन–पु० [सं०] —दे० अग्नि (भाग० १.१५.८; ब्रह्मां० ३.१०.२४-३५)।

हुहव–पु० [मं०] एक नरक विशेष—दे० नरक।

हुहु–पु० [सं०] (विष्णु = हूंहू) एक गंधर्वका नाम जो ब्रह्मलोकमें अतितान नामक देवसंगीता गाते हैं—दे० हाहा; (वायु० ६९.४६; विष्णु० ४.१.६८)।

हूराहूरी–स्त्री० [सं०] दीवालीके तीसरे दिन मनाया जानेवाला एक पर्व।

हृदयरविवारव्रत–पु० [सं०] सूर्यसंक्रांतिके दिन यदि रविवार हो तो 'हृदय' योग होता है। इसमें सूर्यका पूजन कर आदित्यहृदयके १०८ पाठ करे तो सब काम सिद्ध हों (भविष्योत्तरपु०)।

हृदिक–पु० [सं०] शतधन्वाका पिता एक यादव—दे० शतधन्वा।

हृषीकेश–पु० [सं०] (१) हरिद्वारके पास स्थित एक तीर्थस्थान। (२) भगवान् विष्णु या श्रीकृष्णका एक नाम (विष्णु०; महाभा० शांति० ३४२.६७)।

हृष्टवृक–पु० [सं०] गर्गसंहिताके अनुसार हिरण्याक्ष दैत्यका एक पुत्र। यह कुल ९ भाई थे (भाग० ७.२.१९) में इनकी नामावली इस प्रकार है—(१) शकुनि। (२) शंवर। (३) धृष्ट, (४) भूतसंतापन, (५) वृक (६) कालनाभ, (७) महानाभ, (८) हरिश्मश्रु और (९) उत्कच (गर्गसंहिता)।

हेति–पु० [सं०] (१) प्रहेतिका भाई तथा विद्युत्केशका पिता, जो प्रथम राक्षस राजा था। ब्रह्माने प्रारंभमें जलकी सृष्टि करनेके पश्चात् प्राणियोंकी सृष्टि की। उन प्राणियोंसे जब उन्होंने जलकी रक्षा करनेके लिए कहा तो उनमें कुछने जलका यक्षण करने तथा अन्योंने जलका रक्षण करनेकी बात कही। जिन्होंने यक्षणकी बात कही वे 'यक्ष' और जिन्होंने रक्षणकी बात कही वे राक्षस कहलाये। इन्हीं आदि राक्षसोंमेंसे एकका नाम हेति और दूसरेका प्रहेति था। हेतिने कालकी कुमारी भगिनी 'भया'के साथ विवाह कर उसके गर्भसे एक पुत्र विद्युत्केशको जन्म दिया। विद्युत्केशका विवाह सन्ध्या-पुत्री साल कटंकटासे हुआ (वाल्मी० रामा० उत्तर, ४.१२-(२) २०) एक राक्षस जो चैत्र मासमें सूर्यके रथपर ७ अन्य साथियोंके साथ अधीष्ठित रहता है। यह प्रहेतिका भाई और विद्युत्केशका पिता था। रामायणानुसार कालकी पुत्री भया इसकी पत्नी थी जिसके गर्भसे विद्युत्केश उत्पन्न हुआ था। विद्युत्केश और पौलोमीसे राक्षसवंशकी वृद्धि हुई थी (भाग०; रामायण)। (३) स्कंदपुराणानुसार हेति और प्रहेति नामके दो गंधर्व थे जो इंद्रसभाकी एक अप्सरा-पर मोहित हो गये थे और उसे रिझानेको मुर्गे तथा मयूर-की बोली बोलने लगे। पता लगनेपर इंद्रने इन दोनोंको मुर्गा तथा मयूर ही बना दिया। नारद ऋषिकी कृपासे यह दोनों नर्मदाके दक्षिण तटपर मृकण्ड ऋषिके आश्रममें आये जहाँ स्नान कर शाप मुक्त हुए थे (स्कंदपु० आवन्त्य० रेवा-खंड) तथा—दे० प्रहेति, विद्युत्केश। (४) भागवतके अनुसार एक असुरका नाम।

हेमकांत–पु० [सं०] राजा कुशकेतुका पुत्र तथा वंग देशका एक राजा। आखेटमें थकनेपर इसने अपने राजमदमें शतर्चि ऋषिके आश्रमके ३०० शिष्योंको मार डाला था। इससे रुष्ट हो इसके पिताने इसे त्याग दिया और यह वनमें जा रहने लगा। जंगलमें पलाशके बने छत्रसे श्रितनामक महा-मुनिकी इसने धूपसे रक्षा की। इस कृत्यसे हेमकांतकी ३०० ब्रह्महत्याएँ नष्ट हो गयीं। विष्णुकी आज्ञासे विश्वक्सेनने कुशकेतुसे कह इसका पुनः राज्याभिषेक कराया (स्कंदपु० वैष्णव० वैशाख-माहात्म्य)।

हेमकूट–पु० [सं०] (१) पुराणानुसार किंपुरुष वर्ष और भारतवर्षकी सीमापर स्थित हिमालयके उत्तरका एक पर्वत, जहाँ अर्जुनने अपनी सेनाका शिविर डाला था और वहाँसे वह हरिवर्षमें गये थे। (२) नन्दा नदीके तटपरका एक दुर्गम पर्वत जहाँ राजा युधिष्ठिर भी तीर्थ यात्रार्थ आये थे। इसे ऋषभकूट भी कहते हैं। युधिष्ठिरने यहाँ बहुत सी अद्भुत बातें देखी थीं। यहाँ बिना वायुके बादल उत्पन्न होते और ओले बरसाते थे। वेदोंके स्वाध्यायकी ध्वनि सुनायी देती थी पर कोई दिखायी नहीं देता था आदि (महाभा० वन० ११०.२-१८)।

हेमगर्भ–पु० [सं०] उत्तर दिशाका एक पर्वत (वाल्मीकि)।

हेमगिरि–पु० [सं०] सिन्धुनद और समुद्रके संगमपर स्थित सौ शिखरोंसे युक्त एक विशाल पर्वतका नाम, जिसके क्षेत्रमें सीताकी खोजके लिए सुग्रीवने सुषेण आदि वानरोंको भेजा था (वाल्मी० रामा० किष्किधा० ४२.१४)।

हेमगुह–पु० [सं०] कश्यपवंशमें उत्पन्न एक प्रमुख नाग-राजका नाम (महाभा० आदि० ३५.९)।

हेमचंद्र–पु० [सं०] विशालके तीन पुत्रोंमेंसे एक पुत्र, तृणबिन्दुका पौत्र तथा धूम्राक्षका पिता इक्ष्वाकुवंशोत्पन्न एक राजा (भाग० ९.२.३०-३४)।

हेमदंता–स्त्री० [सं०] हरिवंशके अनुसार एक अप्सरा।

हेमधन्वा–पु० [सं०] ग्यारहवें मनुके सत्यधर्मादि दस पुत्रोंमेंसे एक पुत्र (मत्स्य; भाग० ८.१३-२५)।

हेमनेत्र–पु० [सं०] एक यक्षका नाम, जो कुबेरकी सभामें रहकर उनकी उपासना करता था (महाभा० सभा० १०.१७)।

हेमपर्वत–पु० [सं०] १६ महादानोंमेंसे एक (मत्स्य० दानदीपिका, दानक्रियाकौ०) इसमें सुवर्णका पर्वत बनवा दान करते हैं।

हेमन्त–पु० [सं०] एक ऋषिका नाम, जिनका लक्ष्मणने विस्तारके साथ वर्णन किया है (वाल्मी० रामा० अरण्य० १६.१-३६)।

हेममाला–स्त्री० [सं०] यमराजकी पत्नी—दे० (मार्कंडेयपु० यमराज)।

हेममाली–पु० [सं०] खर राक्षसका सेनापति एक राक्षस। खर, मय दानवकी पुत्री मायाके गर्भसे उत्पन्न विश्रवाका पुत्र तथा दूषण, शूर्पणखा और त्रिशिराका भाई था। लंकापति रावण भी इसका वैमात्रेय भाई था। हेममाली अन्य सैनिकोंके साथ खरकी आज्ञासे शूर्पणखाकी नाक कटनेके पश्चात् श्रीरामसे युद्ध करने गया था, पर परास्त हो मारा गया था (वाल्मी० रामा० अरण्य० २३.३३;२६.२९-३५; रामच० मा० अरण्य० १६.२–२०)। कुबेरके कोपसे इसे कुष्ट रोग हो गया था पर मार्कण्डेय-जीके कहनेसे यह योगिनी एकादशीका व्रतकर रोग मुक्त हो गया था (ब्रह्मवैवर्त्तपु०) तथा—दे० योगिनी एकादशी।

हेमलंब, हेमलंबक–पु० [सं०] बृहस्पतिके ६० संवत्सरोंमेंसे ३१ वाँ संवत्सर।

हेमवर्ण–पु० [सं०] राजा रोचमानके पुत्रका नाम, जो पाण्डवपक्षके योद्धा थे (महाभा० द्रोण० २३.६७)।

हेमा–स्त्री० [सं०] (१) इंद्रकी एक अप्सरा जिसकी सखीका नाम स्वयंप्रभा था। इसे मय दानव हर ले गया था। देवराज इन्द्रने मयका वध कर ऋक्षबिलमें स्थित मयके समस्त

भवन आदि हेमाको दे दिये थे। तदनन्तर हेमाने अपनी सखी स्वयंप्रभाको उस भवनकी रक्षाके लिए नियुक्त कर दिया था (वाल्मी० रामा० किष्किन्धा० ५१.१४-१७)। कहते हैं एक समय देवताओंने इसे मय दानवको समर्पित कर दिया था। मय इसके साथ सहस्रों वर्षों तक रहा, किन्तु एक दिन यह देवताओंके कार्यसे स्वर्ग चली गयी, फिर लौटी नहीं। मयने इसके लिए एक सुवर्ण नगर निर्मित किया था, जहाँ वह इसके चले जानेपर वियोगमें निवास करता था। इसने मयके दो पुत्रों तथा एक पुत्रीको जन्म दिया (वाल्मी० रामा० उत्तर० १२.६-१२)। रावणकी पटरानी मंदोदरी मयसे उत्पन्न इसीकी पुत्री थी, अतः यह मेघनादकी नानी हुई। सीताको ढूँढते समय हनुमान्‌जीसे इसकी भेंट हुई थी—दे० स्वयंप्रभा तथा (रामायण)। (२) एक अप्सराका नाम जो यमदुहिता कही गयी है (वायु ६९.६१)। (३) भारतवर्षकी एक नदीका नाम (महाभा० भीष्म० ९.२३)।

हेमांगद–पु० [सं०] (१) कलिंग देशका एक राजा। (२) वसुदेवका एक पुत्र (भाग० ९.२४.४९)।

हेरम्बक–पु० [सं०] एक दक्षिणभारतीय जनपदका नाम वहाँके निवासी भी इसी नामसे व्यवहृत होते थे। सहदेवने दक्षिणदिग्विजयके अवसरपर इन्हें परास्त किया था (महाभा० सभा० ३१.१३)।

हेरुक–पु० [सं०] (१) गणेशका एक नाम (शिवपु०)। (२) महाकाल—भगवान् शंकरका एक गण (काशीखंड) तथा—दे० शिव।

हैमवत–पु० [सं०] (१) एक राक्षसका नाम (ब्रह्मां०)। (२) पृथ्वीके एक वर्षका नाम, जो हिमालयके उत्तर हैं। मेरुसे मिथिला जाते समय श्री शुकदेवजीने इसे पार किया था तब वे भारतवर्षमें आये थे (महाभा० शांत० ३२५.१४)।

हैमवती–स्त्री० [सं०] (१) हिमालयसे निकली नदियाँ, शतद्रु तथा गङ्गाजीके लिए हैमवती शब्द प्रयुक्त हुआ है (महाभा० आदि० १७६.८-९) (२) विश्वामित्रजीकी प्रिय पत्नीका नाम (उद्योग० ११७.१३)। (३) भगवान् श्रीकृष्णकी एक पत्नीका नाम, जिन्होंने पतिकी दाहक्रियाके समय चितारोहण किया था (मौसल० ७.७३)।

हैहय–पु० [सं०] (१) पश्चिम दिशाका एक पर्वत (बृहत्संहिता)। (२) पुराणानुसार यदुसे उत्पन्न एक क्षत्रिय-वंश जिसमें कार्तवीर्य सहस्रार्जुन उत्पन्न हुआ था। पुराणानुसार इस वंशकी पाँच शाखाएँ हैं—तालजंघ, वीतिहोत्र, आवंत्य, तुंडिकेर और जात। कृतवीर्यके पुत्र कार्त्तवीर्यका दूसरा नाम ही 'हैहय' था जो बड़ा भारी तांत्रिक था। 'कार्त्तवीर्य तंत्र' इसीका बनाया है। त्रिलोकविजयी लंकापति रावण भी इससे युद्धमें हार बंदी हो गया था। रामायण तथा ब्रह्मवैवर्त्तपुराणानुसार 'कपिला' गौके पीछे परशुरामके पिता जमदग्निसे यह लड़ा और उनका वध कर डाला था। फल स्वरूप परशुरामने इसके सहित क्षत्रियोंका कई बार संहार किया था—दे० कार्त्तवीर्य तथा परशुराम।

होई–स्त्री० [हिं०] कार्त्तिक वदी अष्टमी अर्थात् दीपावलीके ८ दिन पहले होनेवाला एक त्यौहार जिसे 'अहोई अष्टमी' कहते हैं। इस दिन २ स्त्रियोंकी कथा कही जाती है जिनमें एकको संतान होती ही नहीं थी तथा दूसरीकी संतान उत्पन्न होती तो थी, पर मर जाती थी। इस व्रतको पुत्रवती स्त्रियाँ ही पुत्रनिमित्त करती हैं।—दे० हमारे त्यौहार।

होलामहोत्सव–पु० [सं०] एक उत्सव जो होलीके दूसरे दिन चैत्रकृष्णा प्रतिपदाको होता है, जिसे धुरड्डी, धुलेंडी, तथा फाग या बोहरा जयंती भी कहते हैं। शास्त्रोंमें इस दिन 'नवान्नेष्टि' यज्ञका विधान है, वैसे तो माघ शुक्ला ५से चैत्र शुक्ला ५ तक 'वसन्तोत्सव' मनाते ही हैं—दे० होली; पुराण समुच्चय-मुक्तक संग्रह।

होलाष्टक–पु० [सं०] होलीके पहलेके ८ दिन जिनमें हिंदूशास्त्रानुसार शुभकार्य करना वर्जित है (वसन्तोत्सव-निर्णय)।

होली–स्त्री० [सं०] (होलिका होलाका) हिंदुओंका एक बड़ा त्यौहार जो फाल्गुनकी पूर्णिमाको वसंत ऋतुके आरंभमें मनाया जाता है। इसमें लोग एक दूसरेपर रंग आदि डालते हैं और अनेक प्रकारके विनोद करते हैं। यह प्राचीन कालके 'मदनोत्सव' या 'वसंतोत्सव'का ही रूपांतर है। इस दिन विष्णुभक्त प्रह्लादको उसके पिता हिरण्यकशिपुने, जो विष्णुका घोर विरोधी था, अपनी बहिन होलिकाकी गोदमें बिठा कर अग्निमें जलवा दिया था। राक्षसोंके इस कामके कारण ही यह शूद्रोंका त्यौहार माना जाता है। दैत्यराज हिरण्यकशिपुके साथी अन्य दैत्योंने यह समझा था कि प्रह्लाद जलकर भस्म हो जायेगा और वरदानानुसार 'होलिका' जीवित निकल आयेगी। देवभक्त प्रह्लादका अंत हो गया इस आनंदमें राक्षसगण शराब पीकर नाचते कूदते तथा अपशब्द बकते थे, अतः यह त्यौहार दैत्यकुलोत्पन्न शूद्रोंका है पर अब तो सब वर्णके लोग इसे मनाने लगे हैं और खेदकी बात यह है कि नशेमें चूर हो अपशब्द तक बकनेमें गौरव समझते हैं।

यह फाल्गुन-पूर्णिमाको होता है जिसमें पूर्वविद्धा प्रदोषव्यापिनी पूर्णिमा ली जाती है—'प्रदोषव्यापिनी ग्राह्या पूर्णिमा फाल्गुनी सदा'—(नारद)। 'निशागमे तु पूज्येत होलिका सर्वतोमुखैः'—(दुर्वासा)। 'सायाह्ने होलिकां कुर्यात् पूर्वाह्णे क्रीडनं गवाम्'—(निर्णयामृत)। यदि प्रदोषमें भद्रा हो तो भद्रामें होलिका दहन न करे। इससे जनताका नाश होता है। प्रतिपदा, चतुर्दशी, भद्रा और दिनमें होली जलाना सर्वथा त्याज्य माना गया है—प्रतिपद्भूत भद्रासु यार्चिता होलिका दिवा। संवत्सरं तु तद्राष्ट्रं पुरं दहति साद्भुतम्॥'—(चंद्रप्रकाश)। होली जलानेके अन्य नियमों तथा तिथियोंकी विशेषताके लिए द्रष्टव्य—भविष्योत्तरपु०, लल्ल, ज्योतिषतत्त्व, स्मृतिकौस्तुभ आदि।

नोट विशेष–इस त्यौहारमें मनोविनोदादि करनेकी प्रथा है और इसे फसल कटनेपर ही मनाते है। वर्षके अंतमें होनेके कारण होलिका दहनको संवत् जलाना भी कहते हैं। बीते हुए संवत्का अंतिम दिन और आगामी संवत्का प्रथम दिन, दोनों इस उत्सवमें शामिल हैं, इसीसे यह बड़ा महत्त्वपूर्ण उत्सव है, जो सारे भारतवर्षमें बिना किसी भेदभावके मनाया जाता है।

ईसाईमतावलंबी वर्गमें भी ठीक इससे मिलता-जुलता एक पर्व मनाया जाता है जिसे 'अप्रेल फूल' कहते हैं।

यह अप्रेलकी पहली तिथिको मनाया जाता है। यह पर्व भी वित्तीय वर्षके ठीक अंतमें ही होता है जब कि फसल कट जाती है। इस तिथिको ईसाई लोग मनोविनोदके लिए एक दूसरेका उपहास करते हैं। बेवकूफ बननेवाला व्यक्ति 'अप्रेल फूल' कहलाता है। शायद यह किसी प्राचीन केल्टिक उत्सवका स्मरणमात्र है, जिसे पहलेके "Hathens" मनाते थे। स्काटलैंडमें इसे "Gowk" = A Fool कहते हैं।

ह्लाद–पु० [सं०] (१) एक नागका नाम, जो बलरामजीके परमधाम गमनके समय स्वागतार्थ आया था (भाग०)। (२) हिरण्यकशिपुका एक पुत्र (भाग० ७.४.३१; ब्रह्मां० ३.५.३३)।

ह्लादिनी–स्त्री० [सं०] एक प्राचीन नदीका नाम जिसे 'ह्लादिनी' और 'दूरपारा' भी कहते थे। केकय देशसे अयोध्या लौटते समय भरतने इसे पार किया था। (वाल्मी० रामा० अयोध्या० ७१.२)।

ह्री–स्त्री० [सं०] दक्ष प्रजापतिकी पुत्री तथा धर्मकी पत्नी, जिसका दूसरा नाम लज्जा है।

ह्लाद–पु० [सं०] हिरण्यकशिपुका एक पुत्र (भाग० ७.४.३१; विष्णु० १.१५.१४३)।

परिशिष्ट—(क)

अप्रचलित भौगोलिक नामोंकी अकारादि क्रमसे व्याख्या सहित सूची ।

अगस्त्याश्रम—इगतपुरी । नासिकके आगे वम्बईके समीप जी० आई० पी० रेलवेका एक स्टेशन ।

अधिराज—दतियाराजका एक नाम । यहाँके राजा दंतवक्रको पाँडवोंके सबसे छोटे भाई सहदेवने मारा था जब कि वह दिग्विजय करने निकले थे ।

अपरान्ता—कोंकण और मालावार देशका नाम ।

अवन्ती—अवन्तिका राज्यका नाम । इसकी राजधानी उज्जैन थी ।

अश्वतीर्थ—कान्यकुब्ज देशका एक तीर्थस्थान । कहते हैं ऋचीक ऋषिने वरुणसे एक सहस्र श्यामकर्ण घोड़े यहीं पाये थे ।

अहिच्छत्र—उत्तर पाञ्चाल देशका ही एक नाम । यहाँके राजा द्रुपद (द्रौपदीके पिता) थे । जब द्रोण महर्षि अग्निवेशके यहाँ पढ़ते थे तो द्रुपद भी इनके सहपाठी थे । द्रोणने किरीटीको पराजित कर द्रुपदको राज्य दिलवाया था जिससे प्रसन्न हो कर इन्होंने द्रोणको आधा राज्य देनेकी शपथ कर प्रतिज्ञा की थी जो द्रुपदके पास ही न्यास स्वरूप द्रोणने उस समय छोड़ दिया था । शिक्षा समाप्त कर अपने परिवारके भरण-पोषणके लिए जब द्रुपदसे द्रोणने आधा राज्य माँगा तो उसने इन्हें अपमानित कर वापस लौटा दिया था । पाँडवोंको शिक्षा दे उनकी ही सहायतासे द्रोणाचार्यने गुरुदक्षिणामें द्रुपदसे वाचा दिया हुआ आधा राज्य छीना था । वह छीना हुआ आधा राज्य ही अहिच्छत्र था जिसकी राजधानी रामनगर (रुहेलखण्ड) थी ।

इक्षुमती—संयुक्त प्रांतके उत्तरीय भागमें वहने वाली कालिंदी नामकी नदी । कलिंद पर्वतसे निकली कालिंदी नदीका आधुनिक नाम यमुना है ।

उज्जयन्त—सौराष्ट्र काठियावाड़के जूनागढ़के समीपके गिरनार पर्वतका एक नाम ।

उज्जानक—काश्मीरके पश्चिम सिन्धु नदीके तटका एक पवित्र क्षेत्र विशेष ।

उत्कल—वर्त्तमान उड़ीसा देशका प्राचीन नाम ।

ऋक्षवान्—विन्ध्य पर्वतका पूर्वी भाग ।

ऋष्यश्रृङ्गाश्रम—भागलपुर जिलेमें, सिंहेश्वरमें, कुशी नदीके तटपर स्थित ऋष्यश्रृङ्ग ऋषिके आश्रमका नाम ।

औदुम्बरा—कच्छ देशका नाम । इसकी प्राचीन राजधानीका नाम कोटेश्वर (कच्छेश्वर) कहा जाता है ।

कटदेश—यहाँके राजाका नाम सुनाम था । इसे अर्जुनने, जब वे दिग्विजयके लिए निकले थे, परास्त किया था ।

कण्वाश्रम—रुहेलखंडका वह भाग जहाँ आज कल विजनौरकी वस्ती है ।

कन्यातीर्थ—ट्रावंकोर राज्यके अंतर्गत कन्याकुमारी नामक प्रसिद्ध स्थान । इसे 'केप कैमोरिन' कहते हैं ।

करीषक—विहार प्रांतके अंतर्गत शाहावाद जिलेका पूर्वी भाग । यहाँका राजा महाभारतकालमें दंतवक्र था ।—दे० महाभारत ।

काम्पिल्य—काम्पिल्य दक्षिण पांचालकी राजधानी थी । यह फर्रुखावाद जिलेका एक कस्बा है जहाँ द्रौपदीका जन्म हुआ था । उत्तर पांचाल पांडवोंकी सहायतासे द्रोणाचार्यने राजा द्रुपदसे छीन लिया था और उसकी राजधानी रामनगर (रुहेलखण्ड) थी ।

किंपुरुष—हिमालय पर्वतके उत्तर भागका नाम । शायद यहाँके निवासियोंको किन्नर कहते थे ।

किष्किंधा—यह स्थान मद्रास हातेके विलारी जिलेके हम्पी ग्रामके समीप तुंगभद्रा नदीके उत्तर तटपर है । रामायणके अनुसार हनुमान्‌जीसे भेंट करके रामचन्द्रजी यहाँके राजा सुग्रीवसे मिले थे । वाली भी यहीं रहता था ।—दे० मूलग्रंथ । नकशा ।

कुण्डिन—यह स्थान वरार प्रांतमें अमरावती नगरसे चालीस मील पूर्वकी ओर है ।

कुलिन्दा—कुरुक्षेत्रके उत्तरवाला देश । आधुनिक सहारनपुर यहींपर वसा है ।

कृष्णवेणा, कृष्णवेणी, कृष्णा—आधुनिक कृष्णा नदीके ही नाम हैं जो दक्षिण भारतमें किष्किन्धाके उत्तर और क्रौंचारण्यसे दक्षिणवाले भागसे होकर वहती है ।

कोटितीर्थ—इस नामके तीर्थ जिला वांदा, गोकर्ण और मथुरामें हैं ।

कोलाहल—मालवा और वुन्देलखण्डको अलग करनेवाली एक पर्वतमालाका नाम जो चन्देरीके पास है ।

क्रथकैशिक—विदर्भराजकी राजधानीका नाम, यह आधुनिक वरारमें है ।

गिरिव्रज—विहारप्रान्तके राजगृह स्थानका नाम । वख्तियारपुरतक ई० आई० आरसे जाना होता है और वहाँसे छोटी लाइनकी गाड़ी विहार—वख्तियारपुर लाइट रेलवे (वी० वी० एल० आर०) से जाना पड़ता है । राजगीर स्टेशन है । यहाँ वौद्धों, जैनों तथा हिन्दुओंका तीर्थ है, अनेक मन्दिर और धर्मशालाएँ हैं । यह पहाड़ी स्थान है और यहाँ गर्म जलकी धाराएँ चलती रहती हैं तथा अनेक कुंड भी हैं । इसका पौराणिक महत्त्व भी है । मथुरापति कंसका श्वसुर जरासंध यहीं रहता था । इसी जरासंधके आक्रमणोंके कारण श्रीकृष्णको 'रणछोड़' की उपाधि मिली थी जब वे रणभूमि छोड़कर द्वारकाकी ओर भाग गये थे । (२) केकय देशकी राजधानीका नाम ।

गोकर्ण—मालाबारका एक शैव क्षेत्र । यह गोवासे तीस मील

उत्तरी कमनाड़में है और यहाँ एक प्रसिद्ध शिवलिंग है जिसके दर्शनार्थ हजारों यात्री जाया करते हैं ।

गोप्रतार—सरयू नदीका एक प्रसिद्ध घाट । यह अयोध्यामें है और 'गुप्तारघाट'के नामसे विख्यात है । यहाँ अयोध्या उतरकर जाते हैं । यह ई० आई० आर० का स्टेशन है, जो फैजाबाद 'लूप लाइन'में पड़ता है ।

चित्रकूट—एक प्रसिद्ध पर्वत, जिसपर वनवासके समय राम और सीता बहुत दिनोंतक रहे थे । यह प्रयागसे २७ कोस दक्षिण है । वाल्मीकि रामायणके अनुसार यह भारद्वाज आश्रमसे ३॥ योजन दक्षिण है । प्रयाग या इलाहाबाद दोनों ही ई० आई० आर० के स्टेशन हैं । भारद्वाज आश्रम प्रयागमें ही श्री पण्डित जवाहरलाल नेहरूके निवासस्थानके समीप है । यहाँ हर साल रामनवमीको मेला-सा लग जाता है । भरतके चले जानेके पश्चात् रामचन्द्रजी यहाँसे पंचवटी चले गये थे जो गोदावरीके किनारे नासिकके समीप है —दे० रेखाचित्र—मूलग्रंथ ।

चेदि—महाभारतके अनुसार शिशुपाल यहाँका राजा था । यह शुक्तिमती नदीके पासका देश था जिसमें बुन्देलखण्डका दक्षिणी भाग और जबलपुरका उत्तरी भाग सम्मिलित था ।

छत्रवती—पांचालके उत्तरका राज्य । दक्षिण पांचालका राजा द्रुपद था और पांडवोंकी सहायतासे उत्तर पांचालके राजा द्रोणाचार्य हो गये थे । महाभारत, हरिवंश और विष्णु पुराणानुसार इसे 'अहिच्छत्र या अहिक्षेत्र' कहते हैं ।

जनस्थान—दक्षिण हैदराबादके अन्तर्गत एक स्थानका नाम । आधुनिक औरंगाबाद यहीं है । कहते हैं यहाँ राक्षसोंकी चौकी थी ।

तमसा—रामायणकी एक प्रसिद्ध नदीका नाम जिसे आजकल 'टौंस' कहते हैं । रामायण-बालकांडके अनुसार यहाँ वाल्मीकिका आश्रम था । प्रयागसे चित्रकूट जाते समय श्री रामचन्द्रजी यहाँ आये थे ।

तक्षशिला—आधुनिक 'तक्षिता'का प्राचीन नाम । हालमें खुदाई होनेपर यह नगर रावलपिंडीके समीप निकला है । महाभारतके अनुसार यह नगरी गांधारमें होनी चाहिये । भरतके पुत्र तक्षकी राजधानी यहीं थी और जनमेजयने सर्पयज्ञ यहीं किया था । तक्षशिला प्राचीन समयका विख्यात विद्यापीठ था तथा संसार-प्रसिद्ध कूटनीतिज्ञ चाणक्य (कौटिल्य, विष्णुशर्मा) यहींका था ।

ताम्रपर्णी—मद्रास हातेकी एक नदी जिसके तटपर टिनेवली नगर बसा हुआ है ।

त्रिगर्त—पंजाबका जालन्धर जिला ।

दण्डकारण्य—विन्ध्याचल पर्वतसे गोदावरीतक फैला एक प्रसिद्ध वन । यहाँ वनवासके समय श्री रामचन्द्र बहुत दिनोंतक रहे थे ।

दरद—काश्मीर राज्यका दरदस्तान ।

दृषद्वती—एक नदीका नाम । महाभारतके अनुसार यह थानेश्वरसे तेरह मील दक्खिन है । इसका आधुनिक नाम कग्गर या घग्घर है और राखी भी इसे कहते हैं । इसका उल्लेख ऋग्वेद और मनुस्मृतिमें मिलता है ।

देवगिरि—आधुनिक दौलताबादका नाम ।

देवपत्तन—काठियावाड़में स्थित सोमनाथका मंदिर जहाँपर है । पुराणानुसार इसे प्रभासक्षेत्र कहते हैं ।

द्वारावती—काठियावाड़ गुजरातकी एक प्राचीन नगरी । इसे द्वारका कहते हैं । जरासंधके उपद्रवसे डरकर कृष्णजी यहीं आगये थे । आजकलके पोरबन्दरसे पन्द्रह कोस दक्षिण समुद्रमें इसका स्थान बताया जाता है । कुछ लोग इसे 'कुशस्थली' भी कहते हैं ।

धर्मारण्य—गयाके समीपका देश ।

नन्दगाँव—मथुरासे चौदह कोसपर स्थित बृन्दावनके एक गाँवका नाम । नन्द यहीं रहते थे ।

नन्दग्राम—नन्दिग्रामका एक नाम । यह अयोध्याके समीप है जहाँ भरतने रामके बनवासकालमें तपस्या की थी । अयोध्यासे यह चार कोसपर स्थित है ।

नाथद्वारा—उदयपुर राज्यमें स्थित एक तीर्थस्थान, जहाँ जी० आई० पी० और बी० बी० सी० आई० रेलवेके स्टेशन उदयपुरसे जाना पड़ता है ।

नैमिषारण्य—अवधके सीतापुर जिलेका एक स्थान गोमती नदीके तटपर सीतापुरसे बीस मीलकी दूरीपर यह प्राचीन तीर्थस्थान है । विष्णुपुराणानुसार यह बड़ा पवित्र स्थान है ।

पंचवटी—यह स्थान गोदावरीके तटपर नासिकके समीप है, जहाँ श्रीराम बनवासके समय रहे थे ।

पांचाल—वर्त्तमान रुहेलखण्डका प्राचीन नाम । इसका यह नाम हर्यश्वके पाँच पुत्रोंके कारण पड़ा था—दे० पंचाल (मूलग्रन्थ)

पर्णाशा—एक नदी, यह राजपूतानेमें है । इसे बनास कहते हैं ।

पावनी—वर्माकी इरावदी नदीका नाम ।

पुरुषपुर—आधुनिक पेशावरका प्राचीन नाम ।

पृथूदक—पीहो—जहाँ प्रसिद्ध ब्रह्मयोनि तीर्थ है ।

प्रभास—महाभारतके अनुसार द्वारकाके अन्तर्गत एक प्राचीन तीर्थ । काठियावाड़ (गुजरात)में सोमनाथजीका मंदिर इसीके अन्तर्गत था = पट्टन स्थान ।

प्राग्ज्योतिष—कामरूप देशका नाम । यह आसाममें स्थित है । महाभारत तथा पुराणोंमें इसका उल्लेख है । रामायणके अनुसार कुशके पुत्र अमूर्तराजने यहाँकी राजधानी प्राग्ज्योतिषपुर बसाया था ।

बाहुदा—धवला नदी । इसे आजकल बूढ़ी राप्ती कहते हैं ।

बिंदुसर—गंगोत्रीसे दो मील हटकर रुद्रहिमालयमें स्थित एक पवित्र कुण्ड । यहींपर भागीरथीने गंगाको पृथ्वीपर बुलानेके लिए तप किया था ।

भतरौंड़—मथुरा और वृंदावनके बीचका एक स्थान ।

भृगुकच्छ—भड़ौच नगरका प्राचीन नाम । यहीं महर्षि भृगुका आश्रम था ।

भोजकट—इलिचपुरका प्राचीन नाम । यह बरारमें है । यहाँ रुक्मिणीका भाई रुक्मी रहता था ।

मत्स्य—जैपुरके पासका प्रदेश । इसमें अलवर राज्य भी सम्मिलित है ।

मलद—बक्सरके समीपका एक वन-प्रान्त जिसमें ताड़का राक्षसी रहती थी ।

मद्र—रावी और चिनाब नदियोंके बीचका देश यह

पंजावमें है।

मार्कण्डेयाश्रम–गोमती और सरयू नदीके संगमपर यह आश्रम है।

मालिनी–यह एक नदी है जो अयोध्यासे पचास मीलकी दूरीपर सरयू नदीमें मिलती है। यहींपर कण्व ऋषिका आश्रम था।

रैवतक–गिरनार पर्वतका नाम। यह जूनागढ़में है।

रोहितक–रोहतक जिला, जो पंजावमें है।

लम्बका–लामकन देश, जो काबुल नदीके तटपर है।

वंशगुल्मतीर्थ–एक पवित्र कुंडका नाम। अमरकंटककी उपत्यकामें यह नर्वदाके मुहानेसे साढ़े चार मीलपर है।

वककच्छ–दक्षिण भारतका एक राज्य। यह नर्मदाके तटपर स्थित है।

वसोर्धारा–यह तीर्थ अलकनन्दा नदीके मुहानेपर वद्रीनारायणसे चार मील उत्तर है।

विदेह–तिरहुतप्रान्त।

विदेहपुर–आधुनिक जनकपुरका नाम। सीतामढ़ीतक ओ० टी० आर० से फिर वैलगाड़ी या मोटरसे जाना पड़ता है।

विरजाक्षेत्र–उड़ीसामें जाजपुरके निकटस्थ एक तीर्थ। यहाँ बी० एन० आर० से जाते हैं।

विनशनतीर्थ–सरहिन्दके रेतीले मैदानका वह भाग जहाँ सरस्वती नदी विलीन होती है।

विपाशा–व्यास नदीका एक नाम। यह पंजावमें है।

वेत्रवती–बुंदेलखंडकी वेतवा नदी।

वैतरणी–उड़ीसा प्रान्तमें कटक नगरके पासकी वेतवा नदी।

शतद्रु–पंजावकी सतलज नदीका नाम।

शरावती–गुजरातकी साँवरमती नदी।

शिवकांची–दक्षिण भारतमें कृष्णा और पोलर नदियोंके बीचमें स्थित एक प्रधान-शैव-तीर्थ-स्थान।

शुद्धिमान्–उज्जैनके समीपकी पश्चिमीय विंध्य-पर्वतमाला।

शूकरक्षेत्र–नैमिषारण्यके पासका एक तीर्थस्थान। इसका आधुनिक नाम सोरों है। हिरण्यकेशीवध यहीं हुआ था।

शूर्पारक–बीजापुर जिलेमें जमखण्डीके समीपका स्थान। जमदग्नि ऋषिके पुत्र परशुरामजी यहीं रहते थे। इस स्थानका नाम शूरपल्य भी है।

शृंगवेरपुर–प्रतापगढ़ जिला अंतर्गत सिंगरौरा या सिगनौर गाँवका नाम। यह प्रयागसे उत्तर-पश्चिमकी ओर अठारह मीलपर गङ्गाके तटपर वसा है।

शोण–सोन नदका एक नाम। पटनाके समीप यह गङ्गामें मिलता है।

सदानीरा–करतोया नदीका नाम। यह अवधमें है और रंगपुर तथा दिनाजपुरके पास होकर वही है।

सांवपुर–आधुनिक मुलतानका प्राचीन नाम। इसे श्रीकृष्णके पुत्र सांवने वसाया था और यहाँ चन्द्रभागा नदी वहती है।

सारंगनाथ–काशीके निकट सारनाथका नाम। सारनाथ ओ०टी०आर०का एक स्टेशन भी है।

सिन्धु–यह देश सिन्धु (Indus) और झेलम नदीके बीचमें वसा है।

सुब्रह्मण्यक्षेत्र–मद्रासके कनाडा जिलेका एक तीर्थस्थान।

सेक–यह देश चम्वलसे दक्षिण और उज्जैनसे उत्तरकी ओर है।

सौवीर–सिन्धु देशके समीपका प्रदेश—दे० जयद्रथ।

हरिहरक्षेत्र–उत्तर विहारका एक प्रसिद्ध तर्थस्थान। यहाँका रेलवे स्टेशन सोनपुर है जो पूर्वोत्तर रेलवेका एक प्रसिद्ध स्टेशन है। यहाँका रेलवे प्लेटफार्म संसारभरमें सवसे लम्वा है।

हस्तिनापुर–यह दिल्लीसे उत्तर-पूर्वकी ओर था। अव गङ्गाजीने इसका नाम निशानतक नहीं रखा है। यह नगर मेरठसे वाईस मील उत्तर-पूर्व गङ्गाके दाहिने तटपर वसा था।

हिमवान्–हिमालय पर्वतका नाम।

परिशिष्ट—[ख]

संक्षिप्त व्याख्या सहित बौद्ध धर्मके कुछ प्रचलित शब्द जिनका प्रयोग हिन्दी साहित्यमें किया गया है।

अकुशलधर्म—प्राणियोंका पाप करनेका स्वभाव ही अकुशल धर्म कहा गया है।

अव्याकृतधर्म—वह स्वभाव जिससे शुभ और अशुभ दोनों प्रकारके कर्म किये जा सकें।

अम्बपाली—वैशालीकी अति रूपवती एक गणिका। गौतम बुद्धने दीक्षा देकर इसका उद्धार किया था।

अहिंसा—स्थावर या जंगम किसी भी प्राणीको किसी प्रकारका दुःख मन, वचन और कर्म तीनोंसे न देना अहिंसा है।

आश्रव—बौद्ध दर्शनके अनुसार विषय जिसके कारण मनुष्य बंधनमें पड़ जाता है। इसके चार प्रकार बतलाये गये हैं—कामाश्रव, भवाश्रव, दृष्टाश्रव और अविद्याश्रव।

काय—बौद्ध भिक्षुओंके संघको "काय" कहते हैं।

किसागौतमी—एक गरीब लड़कीका नाम जो अति दुबली पतली थी। कृशा=दुर्बल=किशा (पालि भाषामें)। यह महाप्रजापति गौतमीसे पृथक् थी। इसका पुत्र मर गया था जिससे यह विक्षिप्त सी हो गयी थी। बुद्धके उपदेशसे इसे ज्ञान प्राप्त हुआ था। यह दीक्षित हो संघ-शरणमें आ गयी और धीरे धीरे अर्हत् पदपर पहुँच गयी थी।

कुंभ—बुद्धके गत चौबीस जन्मोंमेंसे एकका नाम।

कुकुत्संद—एक बुद्ध, जो गौतमसे पहले हुए थे।

कुक्कुटपाद—गयासे सोलह मील उत्तर-पूर्व बौद्धोंका एक प्राचीन तीर्थस्थान।

कुलिशासन—बुद्धदेवका एक नाम।

कुशीनार—गोरखपुर जिला अन्तर्गत एक स्थान। यहाँ शाल वृक्षके नीचे गौतम बुद्धका शरीर छूटा था। आजकल इसे कसया कहते हैं। कुशीनार=कुशीनगर।

कृष्ण—बुद्धका शत्रु एक राक्षस।

केयुरबल—एक बौद्ध देवता।

क्रकुच्छंद—भद्रकल्पके पाँच बुद्धोंमेंसे पहलेका नाम।

खदूरवासिनी—बुद्धकी एक शक्तिका नाम।

खसर्प—बुद्धका एक नाम।

खेमा—महाराज बिम्बसारकी पत्नीका नाम। इसने प्रव्रज्या ग्रहण कर ली थी। इसके कामसे प्रसन्न हो बुद्धने इन्हें "महाप्रज्ञावती"की उपाधि दी थी।

गया—महात्मा बुद्धदेव राजगृहसे आकर यहीं ठहरे थे। बादको यहाँसे कुछ दूर निरञ्जना नदीके किनारे उरुवेला गाँवमें तप करने चले गये थे। इस स्थानको आजकल बोधगया कहते हैं।

गोपा—गौतम बुद्धकी स्त्रीका नाम। कपिलवस्तुके निकट स्थित कलिराजके राजा दण्डपाणिकी यह कन्या थीं। पतिके चले जानेके पश्चात् इन्होंने कठोर व्रतका पालन किया था और महलमें भी सादे वेषमें रहती थीं। इसीके कारण इन्हें यशोधरा कहने लगे थे।

चक्रसंवर—एक बुद्धका नाम।

चक्रांतर—एक बुद्धका नाम।

चरणाद्रि—चुनारके एक पहाड़की चट्टान, जिसपर बुद्धदेवके चरण-चिह्न बन गये हैं।

चलासन—सामयिक व्रतमें आसन बदलनेसे एक प्रकारका दोष होता है।

चातुर्महाराजिक—बुद्धभगवान्का एक नाम।

छंदक—बुद्धदेवके सारथिका एक नाम।

जलगर्भ—बुद्धके प्रधान शिष्य आनंदके पूर्व जन्मका नाम।

ज्वलनांत—बौद्धग्रंथानुसार दस हजार देवपुत्रोंका नायक, जिसने बौद्धमठमें प्रवेश करते ही बोधि-ज्ञान प्राप्त कर लिया था।

तथागत—बुद्ध भगवान्का नाम।

तनुभूमि—बौद्धशवोंके जीवनकी एक अवस्था।

त्रिपिटक—बौद्धोंके प्रधान ग्रंथको त्रिपिटक कहते हैं।

त्रिमुखी—बुद्धकी माता मायादेवीका एक नाम। यह कोलिया देशकी राजकन्या थी। यह सिद्धार्थके जन्मके सातवें दिन स्वर्ग सिधारी थीं।

त्रियान—"महायान, हीनयानऔर मध्यमयान"—बौद्धोंके ये तीन भेद त्रियान कहे जाते हैं।

त्रिरत्न—बुद्ध, धर्म और संघ। इन तीनोंके समूहको त्रिरत्न कहते हैं।

थेरगाथा—एक ग्रंथका नाम। इसमें बौद्ध भिक्षुओंके वार्तालाप संगृहीत हैं।

थेरीगाथा—गौतमी (बुद्धकी विमाता जिन्होंने बुद्धको पाला था) तथा अन्य भिक्षुओंके वार्त्तालाप इस ग्रंथमें संगृहीत हैं। प्रोफेसर कौशाम्बीके मतानुसार भिक्षुणी-संघका पूर्ण ह्रास ईसवी सन्‌की चौथी शताब्दीमें हुआ था।

दंतपुर—प्राचीन कलिंगके एक नगरका नाम। यहाँ राजा ब्रह्मदत्तने बुद्धदेवका एक दंत (दाँत) स्थापित कर एक स्तूप बनवाया था जिससे यह बौद्धोंका एक तीर्थ स्थान बन गया।

दशबल—बुद्धदेवका एक नाम।

देवदत्त—बुद्धदेवके चचेरे भाईका नाम। यह बुद्धसे बहुत जलता था और उनकी जानतकका ग्राहक था। अंतमें यह कोढ़ी होकर एक तालाबके कीचड़में फँसकर मर गया था।

द्रोणोबन—सिंहहनुके पुत्रका नाम। ये बुद्धके चाचा थे।

धमेख—सारनाथ (काशीसे उत्तर-पूर्व)में स्थित एक स्तूपका नाम। इस स्थानपर बुद्धने अपना धर्मोपदेश दिया था। यह तीर्थस्थान हो गया है।

धर्मदिन्ना—राजा बिम्बसारके मित्र विशाखकी स्त्रीका नाम।

यह दीक्षित होकर भिक्षुणी-संघमें आ गयी थी। यह अपने भाषणोंके लिए प्रसिद्ध थी और श्रोताओंको शीघ्र ही बौद्ध धर्मकी ओर आकृष्ट कर लेती थी।

नंदा—महा प्रजापति गौतमीकी पुत्रीका नाम। यह भिक्षुणी-संघमें रहने लगी थी। बुद्धसे ज्ञान प्राप्त कर 'जनपद-कल्याणी'के नामसे विख्यात हुई थी।

नदीकुक्कंठ—नैपालके बौद्धोंके एक तीर्थ-स्थानका नाम।

नलक—काल देवलका भतीजा। नलकको बुद्धने उपदेश दिया था।

नागार्जुन—बौद्ध महात्माका नाम। माध्यमिक शाखाके ये प्रवर्त्तक थे। इनका बौद्धोंमें वहुत मान है।

पटाचारा—श्रावस्तीके एक सेठकी पुत्रीका नाम। अपने सारे परिवारके नष्ट होनेपर यह बुद्धकी शरण गयी और वड़ा ही सुंदर धर्मोपदेश दिया करती थी। एक वार पाँच सौ स्त्रियोंकी सभामें उपदेश देकर इसने सवको इसी धर्मकी दीक्षा दिला दी थी।

पूर्णकाश्यप—एक प्रसिद्ध तीर्थकका नाम। भगवान् बुद्धने इन्हें पराजित किया था। इस बौद्ध साधुको अपने सिद्धांतों-पर गर्व था।

पूर्णमैत्रायणी-पुत्र—बुद्ध भगवानके एक अनुचरका नाम।

पृथुभैरव—एक देवताका नाम।

प्रजापति—दे० महाप्रजापति।

ब्रह्मदत्ता—काशी-नरेशकी पुत्रीका नाम। राजकुमारी होते हुए भी इसने काश्यपसे दीक्षा ले सिद्धि प्राप्त की।

बुद्ध—बौद्ध धर्मके प्रवर्त्तकका नाम। इनका जन्म ईसासे ५५० वर्ष पूर्व माघपूर्णिमाको हुआ था। ये महामायाके गर्भसे उत्पन्न शुद्धोदनके पुत्र थे और इनका नाम सिद्धार्थ था। इनके पिताका राज्य नैपालकी तराईमें था और उसकी राजधानीका नाम कपिलवस्तु था। 'लुम्बनी' नामके स्थानमें इनका जन्म हुआ था और ४८० (बी० सी०) वर्ष ईसासे पूर्व कुशीनगरमें इनकी मृत्यु हुई थी।

भद्राकपिला—कौशिक ब्राह्मण वंशोत्पन्न एक कन्याका नाम। यह कपिलकी पुत्री थी जो सागल गाँवमें रहती थी। इसके पति कश्यपने अपनी सारी सम्पत्ति समर्पण कर बुद्धका शिष्य हो संघकी शरण ली थी। यह भी पीछे विरक्त हो महाप्रजापति गौतमीके भिक्षुणी-संघमें चली आयी थी। इसने अर्हत् पद प्राप्त किया था। बुद्धके वाद महाकश्यप भिक्षु-संघके नेता हुए और गौतमीके वाद यह भिक्षुणी-संघमें सवसे ऊँचे पदपर पहुँच गयी थी।

मंडपदायिका—वैशाली नगरीके एक धनी कुटुम्बमें उत्पन्न एक कन्या। यह गौतम बुद्धकी शिष्या हो गयी थी और अपनी सारी संपत्तिसे विरक्त हो गयी थी।

महाप्रजापति—कोलिया देशकी राजकन्या तथा मायादेवीकी छोटी वहिनका नाम। राजकुमार सिद्धार्थके जन्मके सातवें दिन मायादेवी स्वर्ग सिधारीं और यह राजा शुद्धोदनकी पटरानी हुईं। गौतमगोत्रमें उत्पन्न होनेके कारण इन्हें गौतमी कहते थे। अपनी वड़ी वहिनकी मृत्युके पश्चात् इन्होंने सिद्धार्थका लालन-पालन किया था। प्रोफेसर भागवतके अनुसार 'गौतम बुद्धकी पिछली वयमें ज्ञान-लालसा, दया, उत्साह, बुद्धिकी तीव्रता, उद्योग, विशद दृष्टि, कार्य-दक्षता, नेता वननेकी कुशलता आदि जो गुण प्रकट हुए थे, उनका अधिकांश श्रेय गौतमीको ही है।'

लुंबनी—कपिलवस्तुके निकटका एक वन जहाँ गौतम बुद्धका जन्म हुआ था।

वज्रकालिका—बुद्धकी माताका एक नाम यह भी था।

वज्रगर्भ—बौद्धोंके महायान शाखाके अनुसार एक बोधि-सत्त्वका नाम।

वज्रभैरव—महायान शाखाके एक देवता, भूटानमें इन्हें यमान्तक शिव कहते हैं।

वज्रवाराही—एक देवीका नाम।

वज्राचार्य—तिब्बतके लामाका एक नाम।

वासवदत्ता—मथुरापुरीकी एक प्रसिद्ध गणिका। बुद्धके शिष्य उपगुप्तने शिक्षा देकर इसका उद्धार किया था।

विनयपिटक—एक आदि बौद्धधर्मग्रंथका नाम। यह पाली भाषामें है।

विमलकीर्त्ति—महायानके एक आचार्य। इनके रचे कई सूत्र हैं जो इन्हींके नामसे प्रसिद्ध हैं।

विशाख—राजा बिम्बसारके एक मित्रका नाम। यह बुद्धका वड़ा भक्त था। धर्मदिन्ना इसीकी स्त्री थी जो वड़ा सुन्दर भाषण देती थी।

संघमित्रा—सम्राट् अशोक महान्‌की पुत्रीका नाम। राज-कुमार महेन्द्र इनका भाई था। ये दोनों बौद्ध धर्ममें दीक्षित हो भिक्षु और भिक्षुणी वन गये थे। महेन्द्रका नाम धर्मपाल और संघमित्राका नाम आयुपाली पड़ा। इन दोनोंने सिंहल द्वीपमें जाकर जो धर्मप्रचार किया था वह आज तक चालू है।

समंतदर्शी—बुद्धका एक नाम।

सुजाता—उरुवेला गाँवके भूमिपति सेनानीकी कन्याका नाम। यह गोपालनके काममें दक्ष थी। उस गाँवके उपवनमें एक वट वृक्ष था जिसे वनदेवताका निवास समझ लोग पूजते थे। सुजाता भी पूर्णिमाको पूजा करती और खीर भोग लगाती थी। एक दिन सुजाताके आनेके पहले ही संयोगसे बुद्ध वहाँ पहुँच बैठे और ध्यानस्थ हो गये। भगवान्‌ने उसकी श्रद्धाभक्ति देख, सुजाताकी दी हुई खीर खायी थी। सुजाताके जानेके पश्चात् ही गौतमको सत्य ज्ञानकी प्राप्ति हुई और वह बुद्ध हो गये।

सुजीता—एक ग्रामीण कन्याका नाम जिसने ज्ञान (बुद्धत्व) प्राप्त करनेपर बुद्ध भगवानको भोजन कराया था। शायद सुजीताको ही सुजाता भी कहते हैं।

परिशिष्ट—(ग)

संक्षिप्त व्याख्या सहित जैन धर्मके कुछ शब्द जिनका प्रयोग हिंदी-साहित्यमें किया गया है:—

अंतराय—इसमें जैन धर्मका संक्षिप्त इतिहास दिया हुआ है।

अचक्षुदर्शनावरणीय—जैन शास्त्रकारोंने जीवनके आठ मूल कर्म माने हैं। उनमें दर्शनावरणीय कर्मके नौ भेदोंमें यह एक है।

अच्छुप्ता—जैनोंकी सोलह देवियोंमेंसे एकका नाम।

अच्युत—जैनियोंके देवता चार श्रेणियोंमें विभाजित हैं। यह चौथी अर्थात् वैमानिक श्रेणीके कल्पभव देवताओंका एक भेद है।

अजितनाथ—दूसरे तीर्थंकरका नाम।

अणुव्रत—गृहस्थ धर्मका एक अंग।

अतिथि-संविभाग—जैन शास्त्रके अनुसार चार शिक्षाव्रतोंमेंसे एक। इसमें विना अतिथिको दिये भोजन करना निषिद्ध है। इसके पाँच अतिचार बतलाये गये हैं:—सचित्त निक्षेप, सचित्त पीहण, कालातिचार, परव्यपदेश मत्सरे, अन्योपदेश।

अतिपांडुकंबला—सिद्धशिलाके दक्षिणके सिंहासनका नाम। इसपर तीर्थंकर बैठते हैं।

अतिरिक्तकंबला—सिद्धशिलाके उत्तरके सिंहासनका नाम। इसपर तीर्थंकर बैठते हैं।

अद्धामिश्रितवचन—काल संबंधी मिथ्या भाषण।

अमरनाथ—अठारहवें तीर्थंकरका नाम।

अरुणोद—एक समुद्र जो पृथ्वीको चारों ओरसे घेरे है।

अवधिदर्शन—जल, पृथ्वी, पवनादिको यथावत् देखना।

अवसर्पिणी—गिरावका समय। जब रूप रंगका धीरे-धीरे ह्रास होता है।

अविरति—धर्मशास्त्रकी मर्यादासे रहित बर्ताव करना—यह बारह प्रकारका कहा गया है।

असुरकुमार—एक त्रिभुवनपति देवताका नाम।

अस्तेय—अदत्त दानका त्याग करना। चोरी न करनेका व्रत।

आदेयकर्म—वह कर्म जिससे वाक्यसिद्धि हो।

कंदीत—एक प्रकारके देवता।

कायोत्सर्ग—अर्हत्की वीतरागावस्थामें खड़ी मूर्त्ति।

काश्यप—महावीर स्वामीके गोत्रका मनुष्य।

कुंभ—वर्त्तमान अवसर्पिणीके उन्नीसवें अर्हत्का नाम।

कृष्ण—नौ काले वसुदेवोंमेंसे एक वसुदेवका नाम।

खरतरगच्छ—जैनोंकी एक शाखा।

गवालीक—चौपायोंके संबंधका मिथ्या भाषण।

गिरनार—एक तीर्थस्थानका नाम। यह गुजरातमें जूनागढ़के निकट स्थित कहा गया है।

गुणव्रत—जैनियोंके मूल व्रतोंकी रक्षा करने वाले तीन व्रत।

गोपालदारक—एक जैनी आचार्यका नाम।

चंडकौशिक—एक साँपका नाम। इसने महावीर स्वामीके दर्शन करनेके पश्चात् काटना तक छोड़ दिया था।

चंद्रप्रभ—आठवें तीर्थंकरका नाम। यह लक्ष्मणाके गर्भसे उत्पन्न महासेनके पुत्र थे।

चक्रेश्वरी—महाविद्याओंमें एक।

ढुढ़िया—श्वेताम्बर जैनोंका एक भेद। ये मूर्त्ति नहीं पूजते हैं और मुँहपर कपड़ा बाँधे रहते हैं।

तड़ित्कुमार—जैनोंके एक देवता।

तीर्थंकर—जैनियोंके चौबीस उपास्य देव। ये देवताओंसे श्रेष्ठ, सर्वदोषरहित तथा मुक्तिदाता कहे गये हैं। चौबीस तीर्थंकरोंके नाम और जन्मस्थान इस प्रकार हैं:—

नाम— जन्मस्थान।
१. ऋषभदेव—अयोध्या।
२. अजितनाथ—अयोध्या।
३. सम्भवनाथ—श्रावस्ती।
४. अभिनन्दननाथ—अयोध्या।
५. सुमतिनाथ— ,,
६. पद्मप्रभ—कौसाम्बी।
७. सुपार्श्वनाथ—काशी।
८. चन्द्रप्रभ—चन्द्रपुरी।
९. पुष्पदन्त—काकण्डी।
१०. शीतलनाथ—वद्रिकापुरी।
११. श्रेयांसनाथ—सिंहपुरी।
१२. वासुपूज्य—चम्पापुरी।
१३. विमलनाथ—कांपिल्य।
१४. अनन्तनाथ—अयोध्या।
१५. धर्मनाथ—रत्नपुरी।
१६. शान्तिनाथ—हस्तिनापुर।
१७. कुंथुनाथ— ,,
१८. अर्हनाथ— ,,
१९. मल्लिनाथ—मिथिलापुरी।
२०. मुनिसुव्रत—कुशाग्रनगर (राजगृह)।
२१. नमिनाथ—मिथिलापुरी।
२२. नेमिनाथ—सौरिपुर (द्वारिका)।
२३. पार्श्वनाथ—काशी।
२४. महावीर—कुन्दपुर।

त्रिरत्न—मोक्ष प्राप्त करनेके लिए तीन मार्ग (त्रिरत्न) बतलाये गये हैं। वे तीन मार्ग ये हैं:—(१) सम्यक् दर्शन=सब तत्त्वोंमें अंतर्दृष्टि—जीव, अजीव, आस्रव, कर्मबंध, संवर, निर्जरा और मोक्ष। (२) सम्यक् ज्ञान=वास्तविक विवेक।

(३) सम्यक् चरित्र=दोष रहित और पवित्र आचरण। इसके दो रूप हैं श्रावकाचार—ये गृहस्थोंके लिए हैं। श्रमणाचार—ये मुनियोंके लिए हैं। दोनोंका एक लक्ष्य है अर्थात् अहिंसाका पालन।

त्रिशला—महावीर स्वामीकी माताका नाम।

दिगम्बर—जैनियोंकी दो शाखाओंमेंसे एकका नाम। इस मत वालोंके साधु और देवता दोनों नग्न रहते हैं।

देवर्द्धि—एक प्रसिद्ध स्थविर। जैनोंके सिद्धांत इन्हींने लिपिवद्ध किये थे।

धर्मसेन—द्वादश अंगाविदोंमेंसे एक।

पार्श्वनाथ—२३ वें तीर्थंकर जिनका निर्वाण पारसनाथ पहाड़पर हुआ था जो हज़ारीवागके दक्षिण-पूर्व ४४८ फीट ऊँचा पहाड़ है।

पावापुरी—पटना-राँची रोडपरका एक ग्राम जो जैनियोंका एक प्रसिद्ध तीर्थस्थान है, जहाँ महावीर स्वामीकी मृत्यु हुई थी। जहाँ महावीर स्वामी मरे थे वहाँ थल-मंदिर तथा जहाँ जलाये गये थे वहाँ जल-मंदिर वना है।

प्रज्ञप्ति—एक विद्यादेवी।

मल्लिनाथ—उन्नीसवें तीर्थंकरका नाम। इनका जन्म मिथिलापुरीमें हुआ था।

महावीर—चौवीसवें और अंतिम तीर्थंकरका नाम। ईसासे छः (६) शताब्दी पूर्व ही इनका समय माना गया है। ये वैशालीके राजकुमार थे और इनका पहिला नाम वर्धमान वतलाया गया है। विहारके निकट ही 'राँची-पटना रोड' पर पावापुरी नामक स्थानमें इनकी मृत्यु हुई थी जिसका समय ४७७-४६७ वी० सी० के वीचका वतलाया जाता है।

वज्रशाखा—वज्रस्वामीका चलाया एक मत।

वज्रश्रृंखला—सोलह महाविद्याओंमेंसे एकका नाम।

श्वेताम्बर—जैनियोंकी दो शाखाओंमेंसे एकका नाम। इसमें देवताओं तथा साधुओंको श्वेतवस्त्र पहिननेकी प्रथा है। दूसरी शाखाका नाम दिगम्बर है।

सर्वास्त्रा—जैनियोंकी सोलह विद्यादेवियोंमेंसे एकका नाम।

परिशिष्ट—(घ)

संक्षिप्त व्याख्या सहित इस्लाम-धर्मके कुछ प्रचलित शब्द जिनका प्रयोग हिन्दी-साहित्यमें किया गया है :—

अज़ान—मसजिदके ऊपरसे खड़े होकर नमाज़की सूचना देनेकी क्रिया या आवाज। इस सूचनाके देनेवालेको मुअज्ज़न कहते हैं।

अदन—यहूदी, ईसाई और मुसलमानोंके मतसे स्वर्गका वह उपवन जहाँ आदमको ईश्वरने रखा था।

अरव—मुहम्मदके जन्मस्थानका नाम।

इमाम—अलीके वेटोंकी उपाधि।

इसमाईल—इब्राहिमके वेटेका नाम। यह हाज़िरा नाम्नी दासीके गर्भसे उत्पन्न हुए थे।

ईद—रमज़ानके तीस दिनोंके पश्चात् चाँद देखकर दूसरे दिन मनाया जानेवाला एक पर्व विशेष।

ईदगाह—वह मस्जिद जहाँ ईदकी नमाज़ पढ़ते हैं।

उर्स—मुसलमान साधु, पीर आदिकी निर्वाणतिथिके कृत्यका नाम।

उसमान—मुहम्मदके चार प्रधान सखाओंमेंसे एकका नाम।

औलिया—मुसलमान मतके पहुँचे हुए फकीर।

कँदूरी—वह खाना जिससे फातमा या अन्य पीरका फातिहा किया जाय।

क़यामत—मुसलमानों, ईसाइयों और यहूदियोंके अनुसार मृत्युके पश्चात् व्यक्तिगत पाप पुण्यके अनुसार ईश्वरीय निर्णयका दिन।

करवला—(१) अरवका वह स्थान जहाँ हुसैन मारे गये थे। (२) वह स्थान जहाँ ताज़िये दफन किये जायँ।

कलमा—इस्लाम धर्मका मूल मंत्र। जो इस प्रकार है—'ला इलाह इल्लिलह, महम्मद रसूलिल्लाह।'

क़ाज़ी—न्यायाध्यक्षकी उपाधि।

क़ारूँ—हज़रत मूसाका चचेरा भाई। यह वड़ा धनी पर कृपण था। चालीस खच्चरोंपर उसके ख़जानेकी कुंजियाँ चलती थीं।

कुरान—मुसलमानोंका प्रधान धर्मग्रंथ।

ख़तना—सुन्नत, मुसलमानी। इसमें लिंगके अगले भागका वढ़ा हुआ चमड़ा काट दिया जाता है।

ख़ाकी—ख़ाकी शाहके अनुयायी फकीरोंकी उपाधि।

ख़ालिक़—ईश्वर।

खुदा—ईश्वर।

ग़ाज़ी—जो धर्मके लिए विधर्मियोंसे युद्ध करे।

चारयारी—सुन्नियोंकी मंडली, जो सिर्फ अवूवक्र, उमर, उसमान, अली खलीफाको मानते हैं।

चहेलुम—मुहर्रमके चालीसवें दिनका पर्व विशेष।

जानमाज़—नमाज़ पढ़नेका एक आसन विशेष।

जिन—मुसलमान भूत।

जिहाद—अपने धर्मके प्रचारके लिए दूसरे धर्मवालोंसे मुसलमानोंकी लड़ाई।

तवक़—मुसलमान स्त्रियोंकी वह नमाज़ या पूजा जो परियोंकी वाधासे वचनेके लिए की जाती है।

ताज़िया—मकवरेके आकारका मंडप। मुहर्रममें शिया लोग इसकी आराधना करते हैं और अन्तिम दिन इसे दफना देते हैं।

तिलाक़—एक नियम विशेष जिसके अनुसार पति-पत्नीका सम्बन्ध-विच्छेद कर दिया जाता है। यह नियम ईसाइयोंके यहाँ डाइवोर्स कहलाता है।

तीजा—मरनेके तीसरे दिन मृतकके सम्बन्धी गरीबोंको रोटियाँ देते हैं और पाठ करते हैं।

दरगाह—किसी सिद्ध पुरुषकी जहाँ मज़ार (क़ब्र) हो उसे दरगाह कहते हैं।

दाहा—मुहर्रमके दस दिन, जिनमें ताज़िया दफन किया जाता है।

दुलदुल—एक घोड़ा, जो मिस्रके हाकिमने मुहम्मद साहबको नज़रमें दिया था। मुहर्रमकी आठवींको अब्बासके नामका और नवींको हुसैनके नामका घोड़ा निकालते हैं।

दोज़ख—नरक। पापियोंके रहनेका स्थान।

नमाज़—ईश्वर-प्रार्थना। यह पाँच बार नित्य होती है।

निकाह—मुसलमानी पद्धतिके अनुसार विवाह।

फतवा—मुसलमानोंके धर्मशास्त्रके अनुसार व्यवस्था।

मक्का—अरबका एक प्रसिद्ध नगर, जहाँ मुहम्मद साहबका जन्म हुआ था।

मदीना—अरबका एक प्रसिद्ध नगर। यहाँ मुहम्मद साहबकी समाधि बनी है। मक्का और मदीना दोनों ही मुसलमानोंके प्रधान तीर्थस्थान हैं।

मंसूर—सूफ़ीमतका आचार्य एक प्रसिद्ध मुसलमान साधु। यह बैजानगरमें हुसैन हल्लाजके घर नवीं शताब्दीमें उत्पन्न हुए थे।

मसजिद—ईश्वर-वन्दना (नमाज़) करनेका स्थान, जहाँ सिजदा भी होती है।

मुअज़्ज़न—मसजिदके ऊपरसे अज़ान पढ़नेवाला व्यक्ति।—दे० अज़ान।

मुजावर—वह व्यक्ति जो किसी दरगाह आदिपर रहकर सेवा करता हो और पुजाता हो।

मुहम्मद—अरबके एक प्रसिद्ध धर्माचार्य तथा इस्लाम धर्मके प्रवर्त्तक। इनका जन्म मक्कामें ५७० ई० में हुआ था और मृत्यु सन् ६३२ ई० में मदीना नामके नगरमें हुई थी। ये अमीनाके गर्भसे उत्पन्न अब्दुल्लाके पुत्र थे।

मुहर्रम—अरबी वर्षका पहला महीना। इमाम हुसैन इसीमें शहीद हुए थे।

रोज़ा—रमज़ानमें मनाया जानेवाला एक ३० दिनोंका व्रत। इसके समाप्त होनेपर ईद होती है।

वज़ु—नमाज पढ़नेके पहिले अपनेको शुद्ध करनेका कृत्य। इसमें तीन बार हाथ धोते हैं, तीन बार कुल्ली कर नथनोंमें पानी देते हैं। फिर मुँह धो कुहनियोंतक हाथ धोते हैं और सिरपर पानी लगे हाथ फेरते हैं। सबके अन्तमें पैर धोते हैं।

वहाबी—अब्दुल वहाब नजदीका चलाया एक संप्रदाय। इस मतके लोग किसी स्थान या व्यक्तिकी प्रतिष्ठा नहीं करते। ये अरब और फारसमें अधिक हैं।

शबबरात—मुसलमानोंके आठवें महीनेकी चौदहवीं या पन्द्रहवीं रात। कहते हैं इस रातको फरिश्ते सबको भोजन बाँटते हैं और आयुका हिसाब लगाते हैं। इस दिन दुआ माँगते हैं और न्याज़ करते हैं। रातमें आतशबाज़ी भी छोड़ते हैं।

शिया—मुसलमानोंका एक प्रधान संप्रदाय जो सुन्नियोंके विरोधी हैं। ये हज़रत अलीको 'पैगम्बर' मानते हैं मुहम्मद साहबके पीछेके चार खलीफा ये नहीं मानते। ये अलीके बेटों हसन और हुसैनको मानते हैं।

शेख़सद्दो—एक पीर जिनकी पूजा स्त्रियाँ विशेषकर करती हैं।

साचक़—मुसलमानोंके यहाँ विवाहका एक रस्म। इसमें वर पक्ष कन्याके लिए फल, मेवे, मेंहदी आदि भेजता है।

सिजदा—प्रणाम करना।

सिपारा—क़ुरान शरीफके तीस भाग हैं और हर एकको सिपारा कहते हैं।

सुन्नत—मुसलमानी।—दे० खतना।

सुन्नी—मुसलमानोंका एक प्रधान संप्रदाय। मुहम्मद साहबके बादके चार खलीफाओंको ये प्रधान मानते हैं, जिन्हें शिया लोग नहीं मानते हैं। ये शिया लोगोंसे भिन्न हैं।—दे० शिया।

हज—मक्का शरीफकी तीर्थ-यात्रा।

हदीस—मुसलमानोंका एक धर्मग्रंथ जिसमें मुहम्मद साहबके वचनों और शिक्षाओंका संग्रह है।

हनफी—सुन्नियोंके अन्तर्गत एक संप्रदायका नाम।

हसन—अलीके लड़केका नाम। शिया लोग इन्हींके मरनेका शोक मुहर्रममें मनाते हैं। यजीदके साथ लड़ाई करनेमें ये मारे गये थे।

हुसैन—अलीके पुत्र और मुहम्मद साहबके नाती (दौहित्र) का नाम। ये कर्बलामें मारे गये थे। इन्हींके शोकके मुहर्रम मनाया जाता है।

परिशिष्ट (ङ)

संक्षिप्त व्याख्या सहित ईसाईधर्म और पारसीधर्मके कुछ प्रचलित शब्द जिनका प्रयोग हिन्दी-साहित्यमें यत्र-तत्र मिलता है।

ईसाई धर्मके कुछ शब्द निम्नांकित हैं:—

इंजिल—ईसाइयोंकी धर्मपुस्तकका एक नाम।

ईसवी—ईसामसीहके जन्मकालसे चला हुआ संवत्।

ईसा—ईसाई धर्मके प्रवर्त्तकका नाम, जिन्हें Jesus Christ कहते हैं। इन्होंने लोककल्याणार्थ अपनी जान-तक दे दी थी।

कलीसिया—ईसाइयों और यहूदियोंकी धर्म-मण्डली।

क्राइस्ट—ईसामसीहका नाम।

गिरजा—ईसाइयोंका प्रार्थना-मंदिर। यहाँ वे ईश्वर-वंदना करते हैं।

पोप—कैथोलिक संप्रदायका प्रधान धर्मगुरु।

बपतिस्मा—ईसाई बनानेके समयका एक प्रधान संस्कार। पादरीजी अभिमंत्रित जल ईसाई होनेवाले व्यक्तिपर छिड़कते हैं और तब वह दीक्षित समझा जाता है।

बाइबिल—ईसाइयोंकी धर्मपुस्तक। इसके दो भाग हैं—ओल्ड टेस्टामेन्ट तथा न्यू टेस्टामेन्ट।

मिशनरी—ईसाई-धर्मका प्रचारक तथा धर्मपुरोहित।

पारसी-धर्म सम्बन्धी कुछ शब्द:—

ज़रदुश्त—पारसी धर्मका एक प्राचीन प्रतिष्ठाता। यह ईसासे ६०० वर्ष पूर्व हुए थे। इन्होंने अग्नि और सूर्यकी पूजाकी प्रथा चलायी थी। पारसियोंकी प्रसिद्ध धर्म-पुस्तक "जंद-अवस्था, इन्होंने लिखी थी। शाहनामेके अनुसार ये तूरानियोंके हाथों मारे गये थे।

दखमा—पारसियोंके शव रखनेका स्थान जहाँसे शवको चील कौए खा जाते हैं।

विशेप—हिन्दुओंके यहाँ शव जलाये जाते हैं (जलंत), मुसलमानों और ईसाइयोंके यहाँ शव गाड़ दिये जाते हैं—(गड़ंत) और पारसियोंके यहाँ शवको इस स्थानपर रख देते हैं जहाँसे चील और कौए खा लेते हैं—(उड़ंत)।

परिशिष्ट (च)

कौरवों और पाण्डवोंका वंशवृक्ष :—

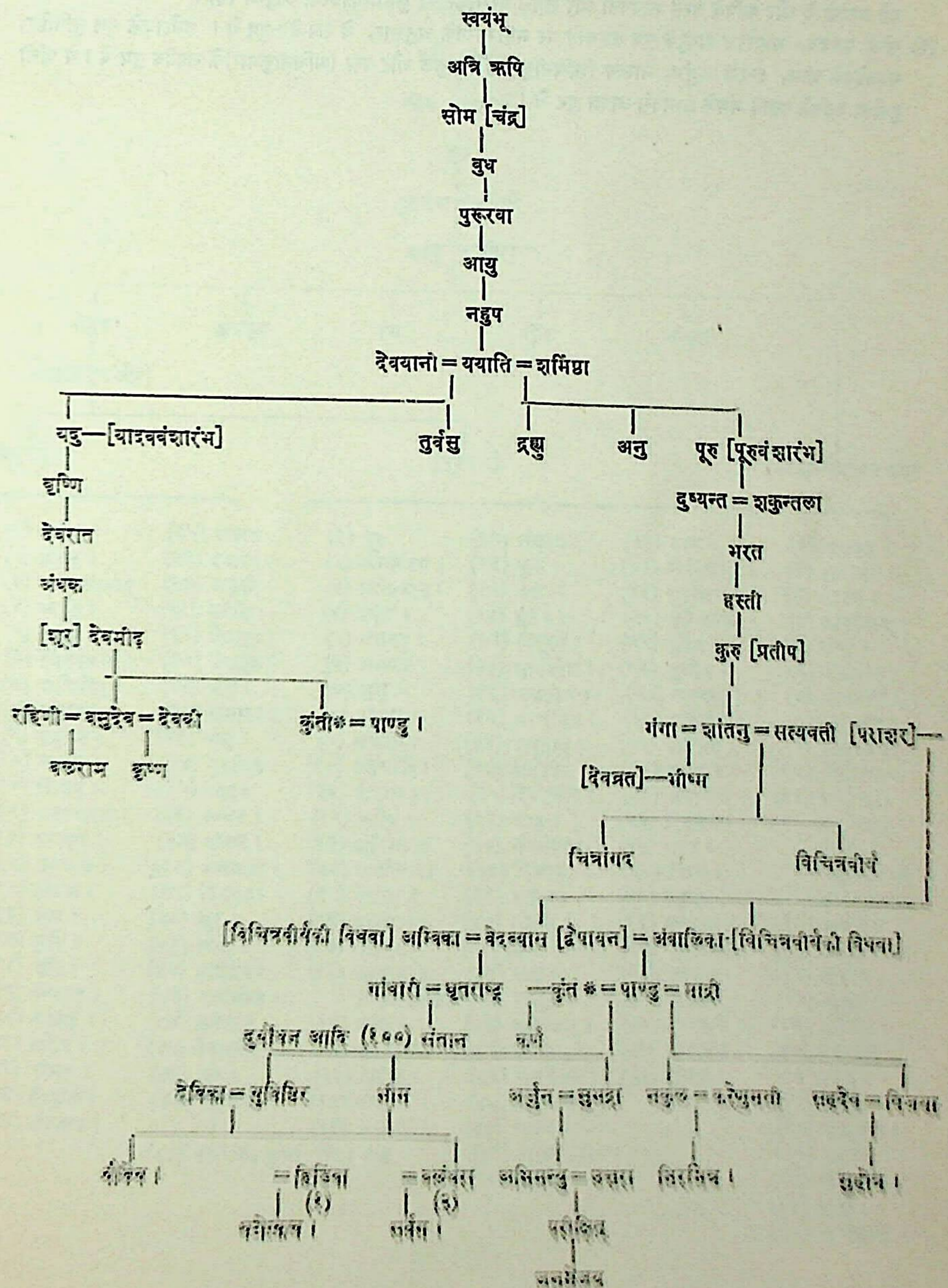
स्वयंभू
अत्रि ऋषि
सोम [चंद्र]
बुध
पुरूरवा
आयु
नहुष
देवयानी = ययाति = शर्मिष्ठा
यदु—[यादववंशारंभ]
तुर्वसु
द्रुह्यु
अनु
पूरु [पूरुवंशारंभ]
वृष्णि
देवरात
अंधक
[शूर] देवमीढ़
रोहिणी = वसुदेव = देवकी
बलराम
कृष्ण
कुंती* = पाण्डु।
दुष्यन्त = शकुन्तला
भरत
हस्ती
कुरु [प्रतीप]
गंगा = शांतनु = सत्यवती [पराशर]—
[देवव्रत]—भीष्म
चित्रांगद
विचित्रवीर्य
[विचित्रवीर्यकी विधवा] अम्बिका = वेदव्यास [द्वैपायन] = अंबालिका [विचित्रवीर्यकी विधवा]
गांधारी = धृतराष्ट्र
—कुंती* = पाण्डु = माद्री
दुर्योधन आदि (१००) संतान
कर्ण
देविका = युधिष्ठिर
भीम
अर्जुन = सुभद्रा
नकुल = करेणुमती
सहदेव = विजया
यौधेय।
= हिडिंबा
(१)
घटोत्कच।
= बलंधरा
(२)
सर्वग।
अभिमन्यु = उत्तरा
परीक्षित
जनमेजय
निरमित्र।
सुहोत्र।

नोट विशेष:--

(१) द्रौपदी के पाँच पुत्र थे,—युधिष्ठिरसे प्रतिविंध्य, भीमसे सुतसोम, अर्जुनसे श्रुतकीर्त्ति, नकुलसे शतानीक और सहदेवसे श्रुतकर्मा। युद्धकी अठारहवां रातको अश्वत्थामाने कृप और कृतवर्माको साथ ले द्रौपदीके इन पाँचों पुत्रोंका सोते हुएमें वध कर डाला था।

(२) व्यास और कर्ण दोनों सत्यवती और कुंतीके ज्येष्ठ पुत्र थे। ये माताके विवाह होनेके पूर्व ही उत्पन्न हुए थे, अतः माता द्वारा त्याग दिये गये थे और कानीन कहलाये। पराशर ऋषि तथा सूर्यके पुत्र होनेके कारण, व्यास और कर्ण दोनों ही बड़े प्रतापी थे और ऋषिके वरसे सत्यवती और सूर्यके वरसे कुंतीकी कुमारिकावस्था अक्षुण्ण रही।

(३) पाँचों पाण्डव, महाराज पाण्डुके पुत्र कहलाये पर महाभारतके अनुसार, ये सब देव-पुत्र थे। धर्मराजके पुत्र युधिष्ठिर, पवनदेवके भीम, इन्द्रके अर्जुन, नासत्य (अश्विनीकुमार)के नकुल और दस्र (अश्विनीकुमार)के सहदेव पुत्र थे। ये पाँचो दुर्वांसा ऋषिके बताये मंत्रके प्रभावसे उत्पन्न हुए थे।

परिशिष्ट (छ)

विष्णुपुराणानुसार चंद्रवंशी-क्षत्रियोंका वंशवृक्ष :—

स्वयंभू
अत्रि ऋषि
सोम [चंद्रमा]
बुध
पुरूरवा = उर्वशी
आयु [५ और]

नहुष
क्षत्रवृद्ध
रंभ
रजि
अनेना

ययाति [५ और]

[यदुवंश]

(१) यदु ।
(२) क्रोष्टु ।
(३) ध्वजिनीवान् ।
(४) स्वाति ।
(५) रुशंकु ।
(६) चित्ररथ ।
(७) शशिविंदु ।
(८) पृथुश्रवा ।
(९) पृथुतम ।
(१०) उशना ।
(११) शितपु ।
(१२) रुक्मकवच ।
(१३) परावृत् ।
(१४) ज्यामघ ।
(१५) विदर्भ ।
(१६) क्रथ ।
(१७) कुंति ।
(१८) धृष्टि ।
(१९) निधृति ।
(२०) दशार्ह ।
(२१) व्योम ।
(२२) जीमूत ।
(२३) विकृति ।
(२४) भीमरथ ।
(२५) नवरथ ।
(२६) दशरथ ।
(२७) शकुनि ।
(२८) करंभि ।
(२९) देवरात ।
(३०) देवक्षत्र ।
(३१) मधु ।
(३२) कुमारवंश ।
(३३) अनु ।
(३४) पुरुमित्र ।
(३५) अंशु ।
(३६) सत्वत ।
(३७) अंधक ।
(३८) भजमान ।
(३९) विदूरथ ।
(४०) शूर ।
(४१) शमी ।
(४२) प्रतिक्षत्र ।
(४३) स्वयंभोज ।
(४४) हृदिक ।
(४५) देवगर्भ ।
(४६) शूर ।
(४७) वसुदेव
(४८) बलराम, कृष्ण

[पूरुवंश]

(१) पूरु ।
(२) जनमेजय ।
(३) प्रचिन्वान् ।
(४) प्रवीर ।
(५) मनस्यु ।
(६) अभयद ।
(७) सुद्यु ।
(८) बहुगत ।
(९) संयाति ।
(१०) अहंयाति ।
(११) रौद्राश्व ।
(१२) ऋतेषु ।
(१३) अंतिनार ।
(१४) अप्रतिरथ ।
(१५) ऐलीन ।
(१६) दुष्यंत ।
(१७) भरत ।
(१८) भरद्वाज वा वितथ-(गोद) ।
(१९) मन्यु ।
(२०) बृहत्क्षत्र ।
(२१) सुहोत्र ।
(२२) हस्ती ।
(२३) अजमीढ़ ।
(२४) ऋक्ष ।
(२५) संवरण ।
(२६) कुरु ।
(२७) जह्नु ।
(२८) सुरथ ।
(२९) विदूरथ ।
(३०) सार्वभौम ।
(३१) जयत्सेन ।
(३२) आराधित ।
(३३) अयुतायु ।
(३४) अक्रोधन ।
(३५) देवातिथि ।
(३६) ऋक्ष ।
(३७) भीमसेन ।
(३८) दिलीप ।
(३९) प्रतीप ।
(४०) शांतनु ।
(४१) विचित्रवीर्य ।
(४२) पांडु ।
(४३) अर्जुन ।
(४४) अभिमन्यु ।
(४५) परीक्षित् ।
(४६) जनमेजय ।
(४७) शतानीक ।
(४८) अश्वमेधदत्त ।
(४९) अधिसीमकृष्ण ।
(५०) निचक्नु ।
(५१) उष्ण ।
(५२) विचित्ररथ ।
(५३) शुचिरथ ।
(५४) वृष्णिमान् ।
(५५) सुषेण ।
(५६) सुनीथ ।
(५७) नृपचक्षु ।
(५८) सुखिवल ।
(५९) पारिप्लव ।
(६०) सुनय ।
(६१) मेधावी ।
(६२) रिपुंजय ।
(६३) वस्त ।
(६४) तिग्म ।
(६५) बृहद्रथ ।
(६६) वसुदास ।
(६७) शतानीक ।
(६८) उदयन ।
(६९) अहीनर ।
(७०) दंडपाणि ।
(७१) निरमित्र ।
(७२) क्षेमक ।

काशीनरेशोंका वंश

(१) क्षत्रवृद्ध ।
(२) सुहोत्र ।
(३) काश्य ।
(४) काशीराज ।
(५) राष्ट्र ।
(६) दीर्घतपा ।
(७) धन्वन्तरि ।
(८) केतुमान् ।
(९) भीमरथ ।
(१०) दिवोदास ।
(११) प्रतर्दन, शत्रुजित, वत्स, ऋतुध्वज या कुवलयाश्व ।
(१२) अलर्क ।
(१३) संनति ।
(१४) सुनीथ ।
(१५) सुकेतु ।
(१६) धर्मकेतु ।
(१७) सत्यकेतु ।
(१८) विभु ।
(१९) सुविभु ।
(२०) सुकुमार ।
(२१) धृष्टकेतु ।
(२२) वीतिहोत्र ।
(२३) भार्ग ।
(२४) भार्गभूमि ।

परिशिष्ट (ज)

विष्णुपुराणानुसार सूर्यवंशी क्षत्रियोंका वंशवृक्ष:—

इक्ष्वाकु [सूर्यका पौत्र]

अयोध्याका राजवंश

(१) विकुक्षि (शशाद)।
(२) पुरञ्जय (ककुत्स्थ)।
(३) अनेना।
(४) पृथु।
(५) विष्टराश्व।
(६) युवनाश्व।
(७) शावस्त।
(८) बृहदश्व।
(९) कुवलयाश्व।
(१०) दृढाश्व।
(११) हर्यश्व।
(१२) निकुम्भ।
(१३) संहताश्व(अमिताश्व)।
(१४) कृशाश्व।
(१५) प्रसेनजित्।
(१६) युवनाश्व।
(१७) मांधाता।
(१८) पुरुकुत्स।
(१९) त्रसद्दस्यु।
(२०) अनरण्य।
(२१) पृषदश्व।
(२२) हर्यश्व।
(२३) हस्त।
(२४) सुमना।
(२५) त्रिधन्वा।
(२६) त्रय्यारुणि।
(२७) सत्यव्रत = त्रिशंकु।
(२८) हरिश्चन्द्र।
(२९) रोहिताश्व।

(३०) हरित।
(३१) चञ्चु।
(३२) विजय।
(३३) रुरुक।
(३४) वृक।
(३५) वाहु।
(३६) सगर।
(३७) असमंजस।
(३८) अंशुमान्।
(३९) दिलीप।
(४०) भगीरथ।
(४१) सुहोत्र
(४२) श्रुत।
(४३) नाभाग।
(४४) अंवरीष।
(४५) सिंधुद्वीप।
(४६) अयुतायु।
(४७) ऋतुपर्ण।
(४८) सर्वकाम।
(४९) सुदास।
(५०) मित्रसह =
सौदास =
कल्माषपाद
(५१) अश्मक।
(५२) मूलक =
नारीकवच।
(५३) दशरथ।
(५४) इलिविल।
(५५) विश्वसह।
(५६) खट्वांग।
(५७) दीर्घवाहु।
(५८) रघु।
(५९) अज।
(६०) दशरथ।

(६१) रामचन्द्र।
(६२) कुश।
(६३) अतिथि।
(६४) निषध।
(६५) अनल।
(६६) नभा।
(६७) पुंडरीक।
(६८) क्षेमधन्वा।
(६९) देवानीक।
(७०) अहीनक।
(७१) रुरु
(७२) पारियात्रक।
(७३) देवल।
(७४) वच्चल।
(७५) उत्क।
(७६) वज्रनाभ।
(७७) शंखण।
(७८) व्युषिताश्व।
(७९) विश्वसह।
(८०) हिरण्यनाभ।
(८१) पुष्य।
(८२) ध्रुवसंधि।
(८३) सुदर्शन।
(८४) अग्निवर्ण।
(८५) शीघ्रग।
(८६) मरु।
(८७) प्रशुश्रुक।
(८८) सुसंधि।
(८९) अमर्ष।
(९०) सहस्वान्।
(९१) विश्वभव।
(९२) बृहद्बल।

मिथिलाका राजवंश

(१) निमि।
(२) जनक।
(३) उदावसु।
(४) नन्दिवर्धन।
(५) सुकेतु।
(६) देवरात।
(७) बृहदुक्थ।
(८) महावीर्य।
(९) सुधृति।
(१०) धृष्टकेतु।
(११) हर्यश्व।
(१२) मनु।
(१३) प्रतिक।
(१४) कृतरथ।
(१५) देवमीढ़।
(१६) विबुध।
(१७) महाधृति।
(१८) कृतरात।
(१९) महारोमा।
(२०) सुवर्णरोमा।
(२१) ह्रस्वरोमा।
(२२) सीरध्वज।
(सीताके पिता)।
(२३) भानुमान्।
(२४) शतद्युम्न।
(२५) शुचि।
(२६) ऊर्जनामा।
(२७) शतध्वज।
(२८) कृति।
(२९) अंजन।
(३०) कुरुजित्।

(३१) अरिष्टनेमि।
(३२) श्रुतायु।
(३३) सुपार्श्व।
(३४) सृंजय।
(३५) क्षेमावी।
(३६) अनेना।
(३७) भौमरथ।
(३८) सत्यरथ।
(३९) उपगु।
(४०) उपगुप्त।
(४१) स्वागत।
(४२) स्वानन्द।
(४३) सुवर्चा।
(४४) सुपार्श्व।
(४५) सुभाष।
(४६) सुश्रुत।
(४७) जय।
(४८) विजय।
(४९) ऋत।
(५०) सुनय।
(५१) वीतहव्य।
(५२) धृति।
(५३) वहुलाश्व।
(५४) कृति।

परिशिष्ट (झ)

महाकवि कालिदासके वर्णनके अनुसार श्रीराम आदिका वंशवृक्ष :—

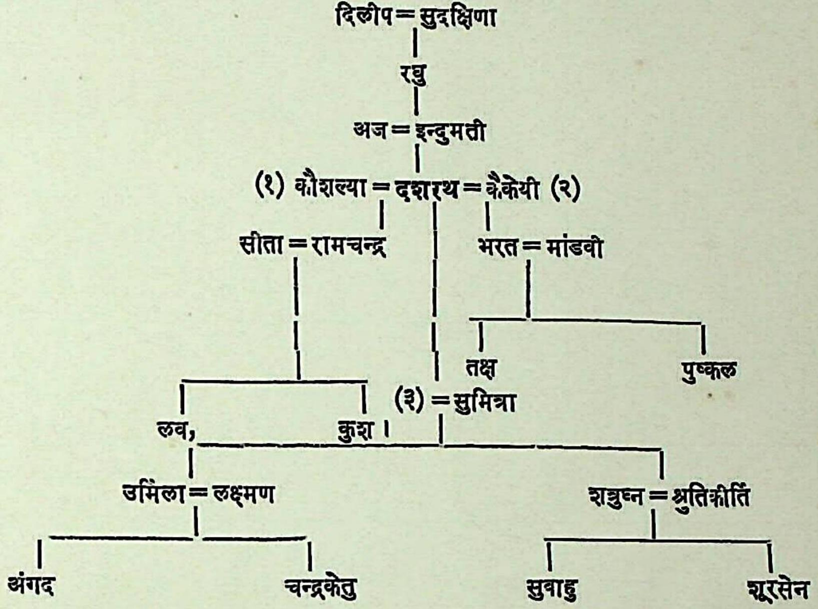
दिलीप = सुदक्षिणा
रघु
अज = इन्दुमती
(१) कौशल्या = दशरथ = कैकेयी (२)
सीता = रामचन्द्र
भरत = मांडवी
तक्ष
पुष्कल
(३) = सुमित्रा
लव,
कुश।
उर्मिला = लक्ष्मण
शत्रुघ्न = श्रुतिकीर्ति
अंगद
चन्द्रकेतु
सुबाहु
शूरसेन

महाराज दशरथके पुत्रोंके सम्बन्धका विवरण:—

महाराज दशरथ निःसंतान होनेके कारण बड़े ही चिंतित थे। राजगुरु वशिष्ठके आदेशानुसार ऋष्यश्रृंग ऋषिको बुलवाकर पुत्रेष्टि यज्ञ किया गया था जिसके फलस्वरूप दशरथके चार पुत्र उत्पन्न हुए थे। दशरथजीने यज्ञका प्रसाद अपनी दो प्रधान तथा बड़ी रानियोंको दे दिया। जब सुमित्राने (तीसरी रानीने) भी पतिसे यज्ञका प्रसाद माँगा तब दशरथने कौशल्या और कैकेयीसे प्रसादका थोड़ा थोड़ा भाग सुमित्राको भी देनेके लिए कहा। राजाज्ञाके अनुसार दोनों रानियोंने चरुका कुछ अंश सुमित्राको दिया। प्रसाद खानेपर तीनों रानियाँ गर्भवती हुईं। कौशल्याके गर्भसे राम और कैकेयीके गर्भसे भरतका जन्म हुआ। सुमित्राको चरुका दो चौथाई भाग मिला अतः उन्हें दो पुत्र हुए थे। कौशल्याके दिये प्रसादसे लक्ष्मण उत्पन्न हुए और कैकेयीके दिये भागसे शत्रुघ्नका जन्म हुआ। इसी कारण लक्ष्मण रामचंद्रके भक्त थे और शत्रुघ्नका प्रेम भरतसे विशेष था, क्योंकि उनका जन्म कैकेयीके दिये चरुसे हुआ था।

रामायणके अनुसार यज्ञके चरुका आधा भाग कौशल्याको मिला था इसीसे रामचंद्रमें विष्णुका आधा अंश था, कैकेयीको चौथाई भाग मिला अतः भरतमें विष्णुका चतुर्थांश था। बचा चौथाई हिस्सा तीसरी रानी सुमित्राने पाया जिनके गर्भसे लक्ष्मण और शत्रुघ्न दो पुत्र हुए अतः इन दो पुत्रोंमें विष्णुका अष्टमांश ही आ सका।

पौराणिक कोश